Patel Jimit Dashrathbhai.

॥ ॐ ॥ श्री ॥

॥ श्री गजानन प्रसन्नप ॥ ॥ श्री सिध्दनाथ प्रसन्न ॥ ॥ श्री धन्वन्तरये नमः ॥

आयुर्वेद समुच्चय

(A Perfect Notes For All Ayurvedic Competitive Examinations)

* Author *

Dr. Sanjay Sakharam Patil
M.D.(Kayachikitsa)

Lecturer: L. R. P. Ayurvedic Medical College, Islampur Sangli, Maharashtra Pin - 415409.

*

Published - by

Dr. Mrs. Varsharani Sanjay Patil
Sangli. M.D(Scholar)

*

Distributed by

Chaukhamba Publishing House, New Delhi.

COLLECTION OF PAINTING

- HUMAN ACTIVITIES
- HUMANS
- HUMAN
- ANIMAL
- ANIMALS

FIND ALL AT HTTPS://DISCORD.GG/DHEMAL

Dhemal Handicraft Handicraft Dhemal

© All right reserved No part of this book in general and diagrams/charts may be reproduced or transmitted in any form without the prior written permission of the author. Information contained in this book upto date, when checked whit available means. at the time of publication. However modifications may be done in case of modern notes with passage of time particularly PSM; pharmacology; Medicine concerned text books. Not for medico-legal use.

Publisher & Author
First Edition 2011
Second Edition 2012
Third Edition 2013
Price: 660/-

Published by:

Dr . Mrs. Varsharani Sanjay Patil
At.Dhandorma, Atpadi,Tal.Atpadi, Dist.Sangli.
(Maharashtra 415 301)
Mobile No.9960992124,9730984686
Email:drpvarshrani@rediffmail.com
Web Site : wwwshreenathacademy.com
Contact Address : Omkar, Patil Galli,
Opposite to Siddhanth mandir, Urun
Isampur Tal.Walwa, Dist.Sangli 415 409.

Sole Distributor:

Chaukhamba Publishing House
4697/2,21/A,Ansari Road; Daryaganj,
New Delhi-110002.
Phone:011-23286537,32996391.
Email:chaukhamba_neeraj@yahoo.com

Type Setting & Designing

VISHAL SHINDE
8805104807

Printed At:

Step in services, Pune

Cover Design - **Vijay Patil**

Cover Designed by

Smita Patil & Ganesh Patil (Dada)

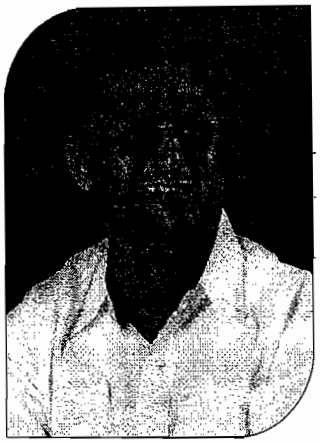

FOREWARD

I'm very much pleased to see "AYURVED SAMUCCHAYA" 3rd edition by Dr. Sanjay Sakharam Patil, M. D. (Kayachikitsa) Lecturer in Loknete Rajarambapu Patil Ayurvedic Medical College, Hospital, P. G. Institute & Research Centre, Urun-Islampur.

I hope, it would be of great help to the entire fraternity of Ayurveda in particular to undergraduate, post graduate and teaching faculty for a compreshensive Ayurvedic study.

I congratulate Dr. Sanjay S. Patil for his sincere efforts in bringing out this Third edition of 'AYURVED SAMUCCHAYA'

And wish him all the best for his future endeavor.

Place : Islampur

Date : 26/10/2012

Mr. Nishikant Prakashrao Patil (Dada)

Founder
L. R. P. Ayurvedic Medical College
Hospital, P. G. Institute & Research
Centre, Urun, Islampur

FOREWARD

Ayurveda the science of life, is an outcome of continuous efforts of thousands of years experience, experimentation and wisdom of ancient sages. For the development of any science, continuous efforts and assimilation of existing knowledge is essential.

Competition means common strife for the same objects or where two or more persons are engaged in the same. Number of students prepare for different ayurvedic competitive exams but few of them get success. In my view to get success in competitive exams your study should be very much systematic and pin point. In the field of systematic arrangement of ayurvedic and modern text Dr. Sanjay S. Patil have tried keenly and this is the fruit of his painful efforts that this book is in your hands in the form of **'AYURVED SAMUCCHAYA'**.

As Sanjay of Mahabharat described events to King Dhritrashtra by his divine vision; Dr. Sanjay S. Patil have tried to summaries the exhaustive text of ayurveda and modern in this book.

I hope this book will relieve the great mental strain of students to face the examination with confidence and achieve the desired goal. I am sure that Dr. Sanjay S. Patil will continue his work making the book up to date in future also.

Date : 26-10-2012

Place : Chandegarh

Srivastava

(Vd. Sumit Srivastava)
Lecturer : Dept. of Rognidan
Shri Dhanwantary Ayurveda College,
Chandegarh - 160047

FOREWARD

First I congratulate to Dr. Sanjay S. Patil for his 2nd edition of 'Ayurveda Samucchaya'

In this book not only Ayurvedic aspects but also modern aspect of notes & M.C.Qs are covered This book produced with a great deal of efforts by Dr.Sanjay Patil. It was already well accepted & popularised by students & teachers of Ayurveda through out the India.

This book is one of the milestones in the world of Ayurvedic competitive examinations for students. **'AYURVED SAMUCCHAYA'** is one of the perfect way for topmost sucess

Wishing All The best to Dr.Sanjay S. Patil. & his book For future.

Jain

Date : 06-11-2012

Place : Ujjain (M.P.)

(Dr.Salil Jain)
Lecturer : Samhita
Govt.Ayurved College,
Ujjain. M. P.- 456001

प्रस्तावना

आयुष्यो वेदः आयुर्वेद। जिस प्रकार से आयुर्वेद का प्रयोजन है की, स्वस्थ्य व्यक्तीका स्वास्थ्य रक्षण करना और व्याधिपिडीत को व्याधिमुक्त करना उसी प्रकार आयुर्वेद के निरंतर अध्ययन से ज्ञान प्राप्त होकर जीवन में भी सफलता प्राप्त होती है। इससे जीवन में अलग-अलग व्याधियोंका नाश होता है। और अपने आप स्वास्थ्य प्राप्त होता है। स्पर्धात्मक परिक्षाओं में निरंतर और सभी विषयोंका समिश्र अध्ययन जरूरी है।

आयुर्वेद सम्बधी सभी विषयों का ज्ञान संहिता ग्रंथो से होता है । स्नातकोत्तर सभी आयुर्वेद सम्बधी परिक्षाओं में, अधिकतर प्रश्न संहितायोंसे पूछे जाते है । शेष प्रश्न अन्य विषयों (Non संहिता) से पूछे जाते है। किसी भी परिक्षा में सफलता के लिए संहिता ग्रंथो का विस्तृत और तूलनात्मक अध्ययन के साथ साथ अन्य विषयों का अध्ययन भी आवश्यक है । सद्यपरिस्थिती में देश के कई परिभाषाओं में Modern Medicine के प्रश्न की संख्या बढते जा रही है। उसका भी संक्षिप्त रूप में अध्ययन करने की जरूरत है ।

अधिकांश विद्यार्थी संहिता ग्रंथो का अध्ययन करते है तो उनको Non संहिता और Modern के प्रश्न छुडाने में कठिनाई का सामना करना पडता है । विद्यार्थी सिर्फ Text Book की पढाई करते है तो मुल संहिता के और Modern के प्रश्न छुडाने में कठीनाई होती है । संपूर्ण पढाई अच्छी होने के बावजुद सफलता न मिलने का कारण यह देखा गया है, बहुपर्यायी प्रश्न (MCQ) और टेस्ट छुडाने की कमी।

इसी कठीनाई का सामना और सफलता प्राप्त के लिए संहिता ग्रंथो का विस्तृत व तुलनात्मक अध्ययन, Non संहिता विषयों का अध्ययन, आधुनिक विज्ञान के संक्षिप्त नोट्स और ज्यादा से ज्यादा बहुपर्याय प्रश्न, इन सबका वर्णन एक ही पुस्तिका में होना जरूरी है । ये सभी चीजों के एकत्रीकरण से अन्य कोई कर्म कठीन या दूष्कर नहीं है। लम्बे समय से, दिन रात एक करके अथक परिश्रम के बाद ईश्वर की कृपासे और विद्यार्थीयोंकी मदद से, ये अत्यंत कठीनऔर दूष्कर कार्य पूरा हुआ है जो विद्यार्थीयोंके अध्ययन के लिए उपलब्ध है ।

सभी विद्यार्थी बी.ए.एम.एस. के समय एक ही अभ्यासक्रमकी पढाई करते है, फिर भी वही विद्यार्थी स्नातकोत्तर परिक्षामें सफलता करते है जो Entrance की दृष्टीकोन से पढाई करते है। Entrance की दृष्टीकोनसे पढाई में सबसे कठीन कार्य है, सभी विषय एकसाथ एक ही समयपर ध्यान में रखना इसलिए सभी विषयों के नोट्स समुच्चय के रूप में विद्यार्थीयोंके पास अत्यंत आवश्यक है । इसी दृष्टीकोन से सभी विषय नोट्स के रूप में इस 'आयुर्वेद समूच्चय' पुस्तिका में दिए है।

शुरूवात में अनुक्रमणिका में चरक संहिता के विषय अन्य जगह बृहत्त्रयी में कहा आये है उसकी सूची दि है। उससे विद्यार्थीयोंको तुलनात्मक पढाई में आसानी होती है।

इस पूस्तिका के प्रथम भाग में संहिता विषयके विस्तृत अध्ययन एवं तुलनात्मक अध्ययन और Non संहिता के नोट्स दिये है । व्दितीय भाग में आधुनिक विज्ञान के नोट्स और तृतीय भाग में बहुपर्यायी प्रश्न दिये है।

प्रथम भाग –

इसमें सर्व प्रथम सबसे महत्वपूर्ण चरकसंहिता के स्थान और अध्याय के अनुसार विस्तृत नोट्स है । बाद में Common List दि गई है, जो इस पूस्तिका का प्राण है। उसको बनाने के लिए कई साल लगे है। उसकी महती बताने की जरूरत नहीं है। इसके बाद में सुश्रुत संहिता के स्थान और अध्याय के अनुसार विस्तृत नोट्स दिये है । अष्टांग संग्रह व अष्टांग हृदय में अधिकांश भाग चरकसंहिता और सुश्रुत संहिता का होने के कारण उसका विस्तृत वर्णन न करके, जहाँ जहाँ वाग्भट का भिन्न मत है उसी जगह पें चरक व सुश्रुत में वाग्भट का नोट्स दिये है । इससे विद्यार्थीयोंको आसानी होती है। वाग्भट का भिन्न कहना या महत्वपूर्ण चीजें ही संग्रह और हृदय की नोट्स में दि गई है। इसके बाद शारंगधर, काश्यप, हारीत, भेल, उनके विस्तृत नोट्स दिये है । बाद में शेष संहिता के नोट्स है । Non संहिता विषय के भी नोट्स विस्तृत दिये है ।

व्दितीय भाग –

आधुनिक विज्ञान के नोट्स में शरीर रचना के नोट्स में आयुर्वेदिक (मराठी) नाम दिये है, जो सभी विद्यार्थीयोंको विशेषत: महाराष्ट्र के Entrance परिक्षा में उपयोगी है । बाद में शेष विषयों के साररूप नोट्स दिये है।

तृतीय भाग :

तृतीय भाग में 7000 से भी ज्यादा बहुपर्यायी प्रश्न दिये है । उसमें पहले चरक संहिता के प्रश्न दिये है । उसमे चरक के संख्यात्मक प्रश्न भी अलग से दिये है । उसके बाद में शेष विषयोंके प्रश्न है Recent Paper में अंतिम कूछ साल के

परिक्षायोंके प्रश्न दिये है। उससे विद्यार्थी जान सकते है की, परिक्षा मे पूछे जानेवाले प्रश्न किस प्रकार के होते है ।

धी, धृती, स्मृती ये तीनों चीजों की P.G. Entrance मे आवश्यकता होती है। उसमें भी प्रधान धृती (धैर्य) (Patience) है । धैर्यवान विद्यार्थीही परिक्षामें सफलता प्राप्त करते है। अधिकांश विषय स्मृती में रखने के लिए इस पुस्तिका में टेबल के स्वरूप में दिया है ।

सफलता के लिए –

1. परिक्षाओं की व्याप्ती का ज्ञान।
2. परिक्षाओंकी तैयारी का ज्ञान।
3. सभी विषयों का साथ में अध्ययन।
4. विषयोंके अध्ययन के साथ बहुपर्यायी प्रश्न छुडाना जरूरी है।
5. पढाई के दौरान शरीर स्वास्थ रखने हेतू पंचकर्म लेना जरूरी है।
6. पी.जी. के प्रति दृढ जिद्द होना आवश्यक है।
7. अध्यात्म से संलग्नता।
8. परिक्षा की आसानी के लिए नॅशनल level की test series की आवश्यकता है।
9. विषय की रिव्हीजन 0, 3, 5, 7, 15, 30 दिन के अन्तराल से आवश्यक है।
10. पढाई के दौरान Job या तत्सम अन्य चीजे वर्ज्य।

इस पुस्तिका में अधिकांश परिक्षाओं और आयुर्वेद के अखंडित अध्ययन का अनुभव दिया है । जीवन के सभी दु:खो का मूल भय है । जिस समय आपके मन में भय होगा ऊसी समय आपकी सभी शक्ती नष्ट हो जाएगी और असफलता मिलेगी । इसलिए इस डर को छोडके पी.जी.का संकल्प (ध्येय) किजिए । इस संकल्प को ही सोच में रखकर इसी का ही चिंतन करिए । ''कोशीश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।'' ये पढकर चलीए आजसे ही इस शुभ कार्य की शुरूवात किजिए । उसे प्राप्त किये बिना मत रूकिए । उसके लिए आवश्यक जो भी चिजे, वह आपमें है बस उसको सिर्फ चेतना कि जरूरत है । इससे आप खुद ही आपका जीवन बदल सकते है।

इस पुस्तिका में त्रुटीयाँ हो सकती है। उसके लिए निवेदन करता हूँ की हमें जरूर सुचित किजीए। मुझे आशा है की, यह पुस्तिका विद्यार्थीयों को सफलता के शिखर तक पहूँचाएगी ।

व्दितिय आवृत्ती

इस पुस्तिका के व्दितीय प्रकाशन के समय पुस्तिका की मूलभूत रचना मे कोई परिवर्तन नहीं किया है। इस पुस्तिका को परिपूर्ण बनानेके लिए अथवा सभी विषयों का समावेश करने के लिए कुच्छ नये विषयोंका समावेश किया है। उदा. काय चिकित्सा, बालरोग आदी (काय चिकित्सा में ज्यादातर भाग माधव निदान से लिया है।) पुन:लिखित विषय उदा. आयुर्वेद इतिहास, भावप्रकाश आदि. सबसे महत्वपूर्ण नया विषय चरक संख्या. चरक संहिता के हर एक अध्याय में जितनी भी संख्याओंका वर्णन है, उन्हे चढते क्रमसे प्रस्तुत किया गया है। जो संख्या से संबंधित और महत्वपूर्ण एम. सी. क्यु के लिए उपयोगी होता है। व्दितीय भाग मॉडर्न आधुनिक शास्त्र नोटस विभाग में ENT, Opthalmology और FMT इन विषयोमें बढोतरी की है। Modern MCQ कि संख्या बढायी गयी है। Recent papers मे 6 नये Papers समाविष्ट किये है। प्रार्थना, संयम और सतत परिश्रम इसकी फलश्रुती है आयुर्वेद समुच्चय व्दितीय आवृत्ती

तृतीय आवृत्ती:– इस पुस्तिका के तृतीय प्रकाशन के समय, पुस्तिका के मूलभूत विषयो में कोई बदलाव नही किया है। कुच्छ विषयो के नोटस में बढोत्तरी की है। मॉडेल पेपर में 1 पेपर बढाया है।

Receut Papers में 8 नये पेपर समाविष्ट किये है।

Common list जो इस पुस्तिका का महात्वपूर्ण भाग है। उसमें बढोत्तरी की है।

11/11/12

आयुर्वेद समुच्चय तृत्तीय आवृती, प्रार्थना, संयम, सतंत अध्ययन और परिश्रम की फलश्रूति है।

स्थल – पुणे

दिनांक – 10/11/2012

Index

Section - I - (Samhita & Subjective)

चरक संहिता – सुत्रस्थान

भेषज चतूष्क:

1) दीर्घञ्जीवितीय च.सु.15,18,20,27,30; सु.सु.1,21,45;सु.नि.1,5,12;अ.हृ.सु.1 02
2) अपामार्गतण्डुलीय --- 05
3) आरग्वधीय --- 05
4) षड्विरेचनशतीय सु.सू. 37 से 39; अ.हृ.सू.15; अ.हृ.क.6 06

स्वस्थ चतूष्क:

5) मात्राशितीय च.चि. 26; सु.चि.24,40; सु.उ.18; अ.हृ.सू.2,21,22,23 07
6) तस्याशितीय च.वि.8; सु.सू.6; वा.सू.3; सु.चि.24; सु.उ.64 09
7) न वेगान् धारणीय सु.उ.55; वा.सू. 2,4; अ.सं.सू.5 09
8) इन्द्रियोपक्रमणीय सु.चि.24; अ.हृ.सू.2; अ.सं.सू.3 10

निर्देश चतूष्क:

9) खुड्डाकचतुष्पाद सु.सू.34; अ.हृ.सू.1 11
10) महाचतुष्पाद सु.सू.35; अ.हृ.सू.1 11
11) तिस्रौषणीय अ.हृ.सू.7 12
12) वातकलाकलीय अ.हृ.सू.12; अ.हृ.नि.15 13

कल्पना चतूष्क:

13) स्नेहोपक्रम सु.चि.31; वा.सू.16; अ.सं.सू.25 13
14) स्वेदोपक्रम सु.चि.32; अ.हृ.सू.17,अ.सं.सू.26 15
15) उपकल्पनीय च. सि.1,2,6; सु.चि.33,39; अ.हृ.सु.18; अ.हृ.क.3 15
16) चिकित्साप्राभृतीय च. सि.1,2,6; सु.चि.33,39; अ.हृ.सु.18; अ.हृ.क.3 16

रोग चतूष्क:

17) कियन्त: शिरसीय च.चि.26; च.सि.9; सु.सू.15; सु.नि. 9; सु.उ.25;वा.सु.11;अ.हृ.उ.23; वा.नि.11; वा.चि.6,15 16
18) त्रिशोथीय – सु.सु.15,17; सु.नि.1; सु.चि.23; च.चि.12; अ.हृ.सु.11,29; अ.हृ.नि.13 17
19) अष्टोदरीय --- 17
20) महारोग सु.सु.21; अ.हृ.सु.13 18

योजना चतूष्क:

21) अष्टौनिन्दितीय सु.सु.15;अ.हृ.सु.14; सु.शा.4;अ.हृ.सु.7 19
22) लंघनबृंहणीय सु.उ.39; अ.हृ.सु.14 19
23) सन्तर्पणीय सु.चि.1; अ.हृ.सु.14 20
24) विधिशोणितीय सु.सु.14;सु.उ.46; अ.हृ.सु.27; अ.हृ.नि.6; अ.हृ.चि.7 20

अन्नपान चतूष्क:

25) यज्ज: पुरूषीय अ.हृ.उ.40 20
26) आत्रेयभद्रकाप्यीय सु.सु.40से42; अ.हृ.सु.7,9व10 22
27) अन्नपानविधि सु.सु.45व46;अ.हृ.सु.5,6,8;अ.सं.सू.6,7 23
28) विविधाशितपीतीय सु.सु.24; अ.हृ.सु.13 25

संग्रहाध्याय:

29) दशप्राणायतनीय सु.सु.10 25
30) अर्थेदशमहामूलीय सु.शा.10; अ.हृ.शा.3 25

निदानस्थान

1) ज्वर निदान – च.चि.3; सु.सु.21,35, सु.उ.39, अ.हृ.नि.1,2 26
2) रक्तपित्त निदान – च.चि.4; सु.उ.45, अ.हृ.नि.3, अ.हृ.चि.2 26
3) गुल्म निदान – च.चि.5; सु.उ.42, अ.हृ.नि.11 27
4) प्रमेह निदान – च.चि.6;सु.नि.6, अ.हृ.नि.10 27
5) कुष्ठ निदान – च.चि.7;सु.नि.5, अ.हृ.नि.14 27
6) शोष निदान – च.चि.8;सु.उ.41, अ.हृ.नि.5 28
7) उन्माद निदान – च.चि.9; सु.उ.60,62, अ.हृ.उ. 4 से 6 28
8) अपस्मार निदान – च.चि.10; सु.उ.61, अ.हृ.उ.7 28

विमानस्थान

1) रस विमान – सु.उ.64, अ.हृ.सु.1 28
2) त्रिविध कुक्षीय – सु.उ.56, अ.हृ.सु.8,13;अ.हृ.नि.11,30
3) जनपदोध्वंसनीय – च.क.1, सु.सु.35, अ.हृ.शा.3 29
4) त्रिविध रोग विशेष विज्ञानीय – सु.सु.10, अ.हृ.सु.1 30
5) स्त्रोतो विमान – च.सु.28, सु.शा.9, अ.हृ.शा.3 30
6) रोगानिक विमान – च.चि.15, सु.सु.35,46, अ.हृ.सु.13, अ.हृ.शा.3 31
7) व्याधितरूपिय – सु.उ.54, अ.हृ.नि.14, अ.हृ.चि.20 31
8) रोगभिषग्जितीय – सु.सु.2 से 4,35,व 42, सु.शा.4, अ.हृ.सु.10, अ.हृ.शा.3 32

शारीरस्थान

1) कतिधापुरूषीय – सु.शा.1 34
2) अतुल्यगोत्रीय – सु.शा.2, अ.हृ.शा.1 35
3) खुड्डिकागर्भावक्रान्ती – सु.शा.3, अ.हृ.शा.3 36
4) महतिगर्भावक्रान्ती – सु.शा.3,4, अ.हृ.शा.1,3 36
5) पुरूषविचय – 37
6) शरिरविचय – सु.शा.3,5, सु.नि.15, सु.चि.15,अ.हृ.शा.2 37
7) शरीर संख्या – च.सु.29, सु.शा.4,5, अ.हृ.शा.3 38
8) जातीसुत्रीय – सु.नि.8,10, सु.शा.2,10, सु.चि.24, अ.हृ.सु.7, अ.हृ.शा.1 से 2, अ.हृ.उ.1 से 2 38

इंद्रियस्थान

* अरिष्ट वर्णन संदर्भ – सु.सु.28 से 33, अ.हृ.शा. 5,6 40
* यस्य श्वाय निमित्त: अष्ट महागद वर्णन – सु.सु.33,अ.हृ.नि.8 41

चिकित्सास्थान

1) रसायनाध्याय – सु.चि.27 से 30, अ.हृ.उ. 39 42
2) वाजीकरण – सु.चि.26, अ.हृ.उ. 40 43
3) ज्वर – सु.उ.39, अ.हृ.चि. 1 44
4) रक्तपित्त – सु.उ.45, अ.हृ.चि. 2 45
5) गुल्म – सु.उ.42, अ.हृ.चि. 14 46
6) प्रमेह – सु.चि.11,12, अ.हृ.चि. 14 46
7) कुष्ठ – सु.चि.9,10, अ.हृ.चि. 19 47
8) राजयक्ष्मा – सु.उ.41, अ.हृ.नि. 5, अ.हृ.चि. 5 48
9) उन्माद – सु.उ.60,62, अ.हृ.नि. 4 से 6 48
10) अपस्मार – सु.उ.61, अ.हृ.नि. 7 49
11) क्षतक्षीण – 49
12) क्षयथु – च.सु.18, च.चि.25, सु.सु.17, सु.नि.4,11,12,13 सु.चि.8,18,19,23, अ.हृ.सु.29, अ.हृ.नि.11,13, अ.हृ.चि.17, अ.हृ.उ.21,22,28,29,31 49
13) उदर – सु.चि.14, अ.हृ.चि.15 50
14) अर्श – सु.नि.2, सु.चि.6, अ.हृ.नि.7, अ.हृ.चि.8 51
15) ग्रहणी दोष – सु.सु.46, सु.उ.40, अ.हृ.नि.8, अ.हृ.चि.10 51

16) पाण्डू – सु.उ.44, अ.हृ.नि.13, अ.हृ.चि.16 52
17) हिक्काश्वास – सु.उ.50,51, अ.हृ.नि.4, अ.हृ.चि.4 53
18) कास – सु.उ.52, अ.हृ.नि.3, अ.हृ.चि.3 54
19) अतिसार – सु.उ.40, अ.हृ.नि.8, अ.हृ.चि.9 54
20) छर्दि – सु.उ.49, अ.हृ.नि.5, अ.हृ.चि.6 54
21) विसर्प – सु.नि.10, सु.चि.17, अ.हृ.नि.13, अ.हृ.चि.18 55
22) तृष्णा – सु.उ.48, अ.हृ.नि.5, अ.हृ.चि.6, 55
23) विष – सु.क.1से8, अ.हृ.उ.35से38, सु.सु.13, अ.हृ.सु.26 55
24) मदात्यय – सु.उ.47, अ.हृ.नि.6, अ.हृ.चि.7 56
25) द्विव्रणीय – सु.सु.11,12,17,18,22,23,25,28,37, सु.नि.15, सु.चि.1से3, अ.हृ.सु.29,30, अ.हृ.उ.25से27, 57
26) त्रिमर्मीय – च.सु.17, च.सि.9, सु.नि.3,16, सु.चि.22, सु.उ.18,21,22,24 से 26,43,53,57,व 59, अ.हृ.सु.23,अ.हृ.नि.5,7,9, अ.हृ.चि.5,6,11, अ.हृ.उ.19 से 24 57
27) उरूस्तंभ – सु.चि.5, अ.हृ.नि.15, अ.हृ.चि.21 58
28) वातव्याधी – सु.नि.1, सु.चि.4 व 5, अ.हृ.नि.15, अ.हृ.चि.21 58
29) वातशोणित – सु.नि.1, सु.चि.5, अ.हृ.नि.16, अ.हृ.चि.22 59
30) योनीव्यापद – सु.नि.10, सु.शा.2, सु.चि.26, सु.उ.38,64, अ.हृ.सु.13; अ.हृ.उ.33 60

कल्प

* सु.सू. 35,36,43; अ.हृ.कल्पसिध्दी.1,2,6; अ.हृ.शा.362

सिध्दि

1) कल्पना – सु.चि.33 से 35, अ.हृ.सु.18 व 19 66
2) पंचकर्मीया – सु.चि.33,35 से 38, अ.हृ.सु.18,19 67
3) बस्तिसुत्रीय – सु.चि.35 से 38, अ.हृ.सु.19, अ.हृ.क.सि.5, 69
4) स्नेहव्यापत – सु.चि.37, अ.हृ.क.सि.5, 69
5) नेत्रबस्तिव्यापत – सु.चि.35, अ.हृ.सु.19 70
6) वमनविरेचनव्यापत – सु.चि.34, अ.हृ.क.सि.3 70
7) बस्तिव्यापत – सु.चि.36, अ.हृ.क.सि.5 71
8) प्रासृतयोगीक – 71
9) त्रिमर्मीय – सु.चि.37,40, सु.उ.25,26,58,59, अ.हृ.सु.20, अ.हृ.नि.9, अ.हृ.चि.11, अ.हृ.उ.23,24 72
10) बस्तिसिध्दि – 73
11) फलमात्रासिध्दि – 74
12) उत्तरबस्तिसिध्दि – सु.चि. 39, सु.उ. 64,65 74
चरकचिकित्सा योग – 75
Common List - 78
Charak Numericals 93

सुश्रुत संहिता

सुत्रस्थान

1) वेदोत्पत्ती – सु.सु.24; च.सु.1,30; अ.हृ.सू.1,2 100
2) शिष्योपनीय – च.वि.8 101
3) अध्ययनसम्प्रदानीय – च.सु.30; च.वि.8 101
4) प्रभाषणीय – च.वि.4,8 102
5) अग्रोपहरणीय – च.सु.15; च.चि.25; सु.सु.17;अ.हृ.सु. 29 102
6) ऋतूचर्या – सु.उ. 64, च.वि.8, च.सु.6, अ.हृ.सु.3 102
7) यन्त्रविध्यध्याय – अ.हृ.सु.25, अ. सं. सू.34 103
8) शस्त्रावचारणीय – अ.हृ.सू.26, अ.हृ.सू.34, च.चि.25 104
9) योग्यासुत्रीय – --- 105
10) विशिखानुप्रवेशणीय – च.वि.4,8; अ.हृ.सु. 1 105
11) क्षारपाक विधी – च.सू.11,अ.हृ.सू.30, च.वि.1, च.चि.25, अ.सं.सू.39 105
12) अग्निकर्मविधी – च.सू.11,अ.हृ.सू.30,च.चि.25,अ.सं.सू.40 106
13) जलौकावचारणीय – अ.हृ.सू.26, अ.सं.सू.35, च.चि. 23 107
14) शोणितवर्णनीय – च.सू.24, अ.हृ.सू.27, सु.सू.14 और शा.8, अ.सं.सू.36 108
15) दोषधातुमलक्षयवृध्दि – च.सू.17, अ.हृ.सू.11 109
16) कर्णव्यध बन्धविधी – अ.हृ.उ.1,16,17 110
17) आमपक्वेषणीय – च.सू.18, अ.सं.सू.29,38, च. चि.12, च.चि. 25, सु.सू.17, वा.सु. 29, वा. नि.13 110
18) व्रणालेप बन्धविधी – च.चि.25, वा.सू.29 111
19) व्रणितोपासनीय – च.सू.15, अ.हृ.सू.29, अ.सं. सू.38 112
20) हिताहितीय – च.सू.26,27, अ.हृ.सू.7 112
21) व्रणप्रश्न – च.सु. 1,20, अ.हृ.सू. 1,12 112
22) व्रण स्त्राव विज्ञानीय – च.चि.25,अ.हृ.उ. 25,अ.सं.उ.29,30 113
23) कृत्याकृत्यविधी – च.चि.25,अ.हृ.उ. 25,अ.सं.उ.29,30; सु. चि. 1/7 113
24) व्याधि समुपदेशीय – च.सु. 28, च. वि. 6 113
25) अष्टविधशस्त्रकर्म – च.चि. 25, अ.हृ.सू. 29 113
26) प्रनष्टशल्यविज्ञानीय – अ.हृ.सू. 28, अ.सं.सू. 37 115
27) शल्यापनीय – अ.हृ.सू. 28, अ.सं.सू. 37 115
28) विपरितअविपरित व्रण विज्ञानीय – च.चि. 25, च.इ. पूर्ण, अ.हृ.शा. 5,6, अ.हृ.उ. 25 115
29) से 32) – च.इ. पूर्ण, अ.हृ.शा. 5,6, 115
33) अवारणीय – च.इ. पूर्ण, अ.हृ.नि. 8/30 116
34) युक्तसेनीय – च.सु. 9,10, अ.हृ.सु. 1 116
35) आतुरोपक्रमणीय – च.वि. 8, च. चि. 15, च. क.1, अ.हृ.सु. 1, अ. हृ. शा. 3 116
36) भूमिप्रविभाग – च. क. 1, अ.हृ.क. 6 117
37) मिश्रक – च.सु. 4, च. सु. 25, अ.हृ.सु. 15 117
38) द्रव्य संग्रहणीय – च.सु. 4, च. सु. 25, अ.हृ.सु. 15 117
39) संशोधन संशमनीय – च. क., अ.हृ.सु. 15 118
40) द्रव्य रस गुण वीर्य विपाक – च.सु. 26, च. वि.8, अ.हृ.सु.9 119
41) द्रव्य विशेष विज्ञानीय – च.सु.1,26, अ.हृ.सु. 9 119
42) रस विशेष विज्ञानीय – च.सु.26, च. वि. 8, अ.हृ.सु. 10 119
43) वमन द्रव्य विकल्प – च. क. 1 से 6, अ.हृ.क. 1 120
44) विरेचन द्रव्य विकल्प – च. क. 7 से 12, अ.हृ.क. 2 120
45) द्रव द्रव्यविधी – च.सु. 27, अ.हृ.सु. 5, अ.सं.सु. 6 120
46) अन्नपानविधी – च.सु. 27, अ.हृ.सु. 6, अ.सं.सु. 7 122

निदान स्थान

1) वातव्याधी – च.सु.12; च.सु.20; च.चि.28; च.सि.9; अ.सं.नि.15; अ.हृ.नि.15 125
2) अर्शोनिदान – च.चि.14; अ.हृ.नि.7 125
3) अश्मरी – च.चि.26; अ.हृ.नि.9; अ.सं.नि.9 126
4) भगन्दर – च.नि.12; अ.हृ.उ.28; अ.सं.उ.14 126
5) कुष्ठ – च.नि.5; अ.हृ.नि.14 126
6) प्रमेह – च.सु.17; च.नि.4; अ.हृ.नि.10 127
7) उदर – च.चि.17; अ.हृ.नि.12 127
8) मूढगर्भ – अ.हृ.शा. 2 127
9) विद्रधी – च.सु.17; अ.हृ.नि.11 128
10) विसर्पनाडी स्तनरोग – च.सु.18; च.चि.21; अ.हृ.नि.13 128

11) ग्रंथी अर्बुद गलगण्ड – च.चि.12; अ.हृ.उ.29 128
12) वृध्दी उपदंश श्लीपद – च.सु.18; च.चि.12; सु.चि.19; अ.हृ.नि.11; अ.हृ.उ.29,33 129
13) क्षुद्ररोग – च.सु.18; च.चि.12; अ.हृ.उ.23,31,33 129
14) शुकदोष – अ.हृ.उ.33 131
15) भग्न निदान – च.चि.25; अ.हृ.उ.27 131
16) मुखरोग – च.चि.12,26; अ.हृ.उ.21 151

शारीर स्थान

1) सर्वभूतचिंता – च.शा.1 134
2) शुक्रशोणित शुध्दी – च.शा.2,3; च.चि.30; अ.हृ.शा.1 134
3) गर्भावक्रांती – च.शा.2,3; अ.हृ.शा.1 135
4) गर्भव्याकरण – च.सु.21; च.शा.7; अ.हृ.सु.7; अ.हृ.शा.3 136
5) शरीर संख्याव्याकरण – च.शा.7; अ.हृ.शा.3 137
6) प्रत्येक मर्म निर्देश – च.शा.7; च.सि.12; अ.हृ.शा.4 138
7) सिरावर्ण विभक्ती – च.सु.24; अ.हृ.सु.27 139
8) सिराव्यधविधी शारीराध्याय – सु.सु.25; च.सु.24; अ.हृ.सु.27; अ.सं.सु.36 140
9) धमनीव्याकरण – च.वि.5; अ.हृ.शा.3 140
10) गर्भिणीव्याकरण – च.शा.8; अ.हृ.उ.2; अ.हृ.उ.2; 141

चिकित्सा स्थान

1) द्विव्रणीय – च.चि.25; अ.हृ.उ.25 142
2) सद्योव्रण – च.चि.25; अ.हृ.उ.26 143
3) भग्न चिकित्सा – च.चि.25; अ.हृ.उ.27 144
4) वातव्याधी – च.चि.28; अ.हृ.चि.21 144
5) महावातव्याधी – च.चि.27 से 29; सु.नि.1; अ.हृ.नि.15; अ.हृ.चि.21,22; 154
6) अर्शचिकित्सा – च.चि.14; अ.हृ.चि.8 146
7) अश्मरी – च.चि.26; अ.हृ.चि.11 146
8) भगन्दर – च.चि.12/96,97; अ.हृ.चि.28; अ.सं.उ.14 146
9) कुष्ठ – च.चि.7; अ.हृ.चि.19 146
10) महाकुष्ठ – च.चि.7; अ.हृ.चि.19 146
11) प्रमेह,12) प्रमेह पिडका,13) मधुमेह – च.सु.17;अ.हृ.चि.12 147
14) उदर चिकित्सा – च.चि.13; अ.हृ.चि.15 147
15) मूढगर्भ चिकित्सा – अ.हृ.शा.2; अ.सं.शा.4 148
16) विद्रधी – च.सु.17; च.चि.12; अ.हृ.चि.13; अ.सं.चि.15 148
17) विसर्पनाडीस्तनरोग – च.चि.21; अ.हृ.चि.18; अ.हृ.उ.29,30 148
18) ग्रंथीअपची अर्बुदगलगण्ड – च.चि.12; अ.हृ.उ.21,30 148
19) वृध्दी उपदंश श्लीपद – च.चि.12; अ.हृ.चि.13; अ.हृ.उ.30,34 149
20) क्षुद्ररोग – च.चि.12; अ.हृ.उ.32 149
21) शुकदोष चिकित्सा – अ.हृ.उ.34 149
22) मुखरोग – च.चि.12; अ.हृ.उ.22 149
23) शोफ चि. – सु.सु.17; च.सु.18; च.चि.13; अ.हृ.नि.13; अ.हृ.चि.17 149
24) अनागतबाधाप्रतिषेध – च.सु.5,6,8; अ.हृ.सु.2; अ.सं.सु.3 150
25) मिश्रक चिकित्सा – अ.हृ.उ.17,18 150
26) क्षीणबलीय वाजीकरण – च.चि.2; अ.हृ.उ.40 150
27) सर्वोपघात शमनीय – 150
28) मेधाआयुष्कामीय, 29) स्वभाव व्याधिप्रतिषेध – 151
30) निवृत्त संतापीय – च.चि.1; अ.हृ.उ.39 151
31) स्नेहोपयौगिक – च.सु.13; अ.हृ.सु.16; अ.हृ.क.6 151
32) स्वेदावचारणीय – च.सु.14; अ.हृ.सु.17; अ.सं.सु.26; 152
33) वमन विरेचन साध्य उपद्रव – च.क.12; च.सि.1,2,6; अ.हृ.सु.18 152
34) वमन विरेचन व्यापद चि. – च.क.12; च.सि.6; अ.हृ.क.3 152
35) नेत्रबस्ति प्रमाण प्रविभाग – च.सि.1,2,3; अ.हृ.सु.19 153
36) नेत्रबस्ति व्यापद चि. – च.सि.5,17; अ.हृ.सु.19; अ.हृ.क.3 153
37) अनुवासनोत्तर बस्ति चि.– च.सि.4; अ.हृ.सु.19; अ.हृ.क.4,5 153
38) निरूहक्रम चि. – च.सि.7; अ.हृ.सु.19; अ.हृ.क.4 153
39) आतुरोपद्रव चि. – च.सि.12 154
40) धूमनस्य कवलग्रह – च.सु.5; च.सि.1,2,9; अ.हृ.सु.20,21,22; अ.सं.सु.29,30 154

कल्पस्थान

1) अन्नपान रक्षा – च.चि.23; अ.हृ.सु.7; 155
2) स्थावर विष – च.चि.23; अ.हृ.उ.35; 155
3) जांगम विष – च.चि.23; अ.हृ.उ.36; 157
4) सर्पदष्ट – च.चि.23; अ.हृ.उ.36; 157
5) सर्पदष्ट विष चि.– च.चि.23; अ.हृ.उ.36; 158
6) दुन्दुभिस्वनीय – च.चि.23; अ.हृ.उ.36; 159
7) मूषीककल्प – च.चि.23; अ.हृ.उ.38; 159
8) किटकल्प – च.चि.23; अ.हृ.उ.37; 160

उत्तरतंत्र

1) औपद्रविक – 162
2) सन्धिगतरोग – अ.हृ.उ.10; 163
3) वर्त्मगतरोग – अ.हृ.उ.8; 163
4) शुक्लगत – अ.हृ.उ.10; 163
5) कृष्णगत – अ.हृ.उ.10; 164
6) सर्वगत रोग – च.चि.26; अ.हृ.उ.15; 164
7) दृष्टीगत – अ.हृ.उ.12; अ.सं.उ.16; 164
8) चिकित्सीत प्रविभाग – 164
9) वाताभिष्यंद – च.चि.26; अ.हृ.उ.16 164
10) पित्ताभिष्यंद – च.चि.26; अ.हृ.उ.16 165
11) श्लेष्माभिष्यंद – च.चि.26; अ.हृ.उ.16 165
12) रक्ताभियंदी – च.चि.26; अ.हृ.उ.16 165
13) लेख्यरोग – 14) भेद्य – 15) छेद्य – 165
16) पक्ष्मकोप – अ.हृ.उ.9 165
17) दृष्टीगत – अ.हृ.उ.13 165
18) क्रियाकल्पाध्याय – च.सु.5; च.चि.26; अ.हृ.सु.23,24 165
19) नयनाभिघात प्रतिषेध.... 166
20) कर्णगतरोग– 21) कर्णगत रोग चि.–च.चि.26; अ.हृ.उ.18 167
22) नासागतरोग– 23) प्रतिषेध– च.चि.8; च.चि.26; अ.हृ.उ.19,20; अ.सं.उ.23; 168
24) प्रतिश्याय – च.चि.8; च.चि.26; अ.हृ.उ.19,20 168
25) शिरोरोग/26)शिरोरोगप्रतिषेध – च.चि.26;च.सि.9;अ.हृ.उ.24 168
27) से 37) ग्रहविज्ञान – अ.हृ.उ.3 169
38) योनी व्यापत – च.चि.30; अ.हृ.उ.33,34 169
39) ज्वर – च.नि.1; च.चि.3; अ.हृ.नि.1; अ.हृ.चि.1 169
40) अतिसार – च.चि.15,19; अ.हृ.नि.8; अ.हृ.चि.9,10 170
41) शोष – च.नि.6; च.चि.8; अ.हृ.नि.5; अ.हृ.चि.5 171
42) गुल्म – च.नि.3; च.चि.5; अ.हृ.नि.11; अ.हृ.चि.14 171
43) हृद्रोग – च.चि.26; च.सि.9; अ.हृ.नि.5; अ.हृ.चि.6 171
44) पाण्डुरोग – च.चि.16; च.चि.13; अ.हृ.नि.16; 171
45) रक्तपित्त – च.नि.2; च.चि.4; अ.हृ.नि.3; अ.हृ.चि.2 171

	46) मूर्च्छा – च.सु.24; अ.हृ.नि.6; अ.हृ.चि.7	171
152	47) पानात्यय – च.चि.24; अ.हृ.नि.6; अ.हृ.चि.7	172
152	48) तृष्णा – च.चि.22; अ.हृ.नि.5; अ.हृ.चि.6	172
153	49) छर्दि – च.चि.20; अ.हृ.नि.5; अ.हृ.चि.6	172
153	50) हिक्का – च.चि.17; अ.हृ.नि.4; अ.हृ.चि.4	161
153	51) श्वास – च.चि.17; अ.हृ.नि.4; अ.हृ.चि.4	172
153	52) कास – च.चि.11,18; अ.हृ.नि.4; अ.हृ.चि.3	172
154	53) स्वर भेद – च.चि.8; अ.हृ.नि.5; अ.हृ.चि.5	172
	54) कृमीरोग – च.वि.7; अ.हृ.नि.14; अ.हृ.चि.20	172
154	55) उदावर्त – च.सु.7; च.चि.26; अ.हृ.सु.4	173
	56) विसुचिका – च.वि.2; अ.हृ.सु.8,13; अ.हृ.नि 11	173
155	57) अरोचक – च.चि.8; अ.हृ.नि.5; अ.हृ.चि.5	173
155	58) मुत्राघात – च.चि.26; च.सि.9; अ.हृ.नि.9; अ.हृ.चि.11	173
157	59) मुत्रकृच्छ्र – च.चि.26; च.सि.9; अ.हृ.नि.11	173
157	60) अमानुषोपसर्ग – च.नि.7; च.चि.9; अ.हृ.उ.4,5	173
158	61) अपस्मार – च.नि.8; च.चि.10; अ.हृ.उ.7	173
159	62) उन्माद – च.नि.7; च.चि.9; अ.हृ.उ.6	173
159	63) रसभेद – च.सु.26; अ.हृ.सु.10	173
160	64) स्वस्थवृत्त – च.सु.6; सु.सु.6; अ.हृ.सु.3	173
	65) तन्त्रयुक्ती – च.सि.12;	173
162	66) दोषभेद विकल्प – च.सु.17;	173
163	अष्टांग संग्रह –	174
163	अष्टांग हृदय –	180
163	शांरगधर –	187
164	भैषज्य रत्नावली –	193
164	योगरत्नाकर –	195
164	हारित –	197
164	भेल –	199
164	काश्यप –	201
165	आयुर्वेद इतिहास –	214
165	पदार्थ विज्ञान –	223
165	द्रव्यगुण –	233
165	रसशास्त्र –	268
165	भैषज्य कल्पना –	289
165	काय चिकित्सा	294
165	पंचकर्म	310
166	बालरोग	313
167	स्वस्थवृत्त –	316
	व्यवहार आयुर्वेद –	311
168	शारीर क्रिया	323
168	भावप्रकाश –	323
168		
169	**Section II (Modern)**	
169		
169	1. Anatomy	01
170	2. Physiology	14
171	3. Pathology	19
171	4. Pharmacology	19
171	5. Preventive and Social medicine	28
171	6. Forensic medicine and Toxicology	33
171	7. Medicine	14
	8. Surgery	44
	9. Paediatrics	48
	10. Gyanec & Obestetrics	52
	11.ENT And Opthalmology	55
	Section III (MCQ)	
	1) Charak Samhita	01
	2) Charak Numericals	16
	3) Sushrut Samhita	26
	4) Ashtang Sangraha & Hrudaya	41
	5) Ayurved itihas and Padarth Vidnyan	43
	6) Dravya Guna Vidnyan	48
	7) Ras Shashtra & Bhaishajya	53
	8) Madhav Nidan	58
	9) Modern	61
	Model Question Paper	
	1) Model Question Paper - I	81
	2) Model Question Paper - II	83
	3) Model Question Paper - III	86
	4) Model Question Paper - IV	88
	5) Model Question Paper - V	90
	6) Model Question Paper - VI	93
	7) Model Question Paper - VII	95
	8) Model Question Paper - VIII	97
	9) Model QuestionPaper - IX	100
	10) Model Question Paper - X	102
	11) Model Question Paper - XI	104
	12) Model Question Paper - XII	107
	13) Model QuestionPaper - XIII	109
	14) Model Question Paper - XIV	111
	15) Model Question Paper - XV	114
	16) Model Question Paper - XVI	116
	Recent Papers	
	1) UPSC 2010	122
	2) Maharashtra 2009	126
	3) Maharashtra 2010	131
	4) Jamnagar Jaipur 2009	135
	5) Jamnagar Jaipur 2010	137
	6) Shimla 2010	139
	7) Maharashtra 2011	146
	8) Jamnagar Jaipur 2011	150
	9) Kerala Cet 2011	152
	10) Vijaywada Hyd. 2011	153
	11) Himachal Pradesh (MO) 2011	156
	12) B. H. U. Varanasi 2011	169
	13) Maharashtra 2012	164
	14) Associate Maharashtra 2012	169
	15) B. H. U. Varanasi 2012	174
	16) Jamnagar 2012	180
	12) Demostratar RAU 2012	182
	17) Jodhapur 2012	185

18) KLE Belagaon 2012 187
19) Kerala Cet 2012 189

Answer Key

1) Charak Samhita 201
2) Charak Numericals 201
3) Sushrut Samhita 202
4) Ashtang Sangraha & Hrudaya 203
5) Ayurved itihas and Padarth Vidnyan 203
6) Dravya Guna Vidnyan 203
7) Ras Shashtra & Bhaishajya 204
8) Madhav Nidan 204
9) Modern 204

Model Question Paper

1) Model Question Paper - I to V 205
2) Model Question Paper - VI to XIII 207
3) Model Question Paper - XIII to XV 208
4) Model Question Paper - XVI 206

Recent Papers

1) UPSC 2010 208
2) Maharashtra 2009 208
3) Maharashtra 20010 209
4) Jamnagar Jaipur 2009 209
5) Jamnagar Jaipur 2010 209
6) Shimla 2010 210
7) Maharashtra 2011 210
8) Jamnagar Jaipur 2011 210
9) Kerala Cet 2011 210
10) Vijaywada Hyd. 2011 210
11) Himachal Pradesh (MO) 2011 210
12) B. H. U. Varanasi 2011 210
13) Maharashtra P G A CET 2012 211
14) Associate Maharashtra 2012 211
15) B. H. U. Varanasi 2012 211
16) Jamnagar 2012 212
17) Demostratar RAU 2012 212
18) Jodhapur 2012 212
19) KLE Belagaon 2012 212
20) Kerala Cet 2012 212

चरक संहिता

संहिता वैशिष्ट्य

संहिता: विषयों के समान अंगो का समावेश.

तन्त्र: जिसका सूत्ररूप में वर्णन तथा भविष्य में विस्तार की अपेक्षा उदा. अग्निवेश तन्त्र.

बृहत्त्रयी:चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अ. सं/ अ.हृ.
(2 or 3) शती इ.पू. 3 री शती (इ.पू.) 6 वी शती 7 वी शती

लघुत्रयी: माधव निदान, शारंगधर, भाव प्रकाश/ योगरत्नाकर
7 वी शती 13 वी शती 16 वी शती 17 वी शती

संहिता ग्रंथ: आदिकाल: ब्रह्मसंहिता, धान्वन्तरसंहिता.

प्राचिनकाल: बृहत्त्रयी, काश्यप संहिता, भेल संहिता, हारित संहिता.

मध्यकाल: माधव निदान से Start.

(संग्रहकाल/ टिकाकारकाल): 1) अधिकांश टिकाकार हुए तथा जेज्जट (9 शतक) टिका प्रारम्भ हुई.

आधुनिककाल: भाव प्रकाश से Start.

ब्रह्मसंहिता: प्रथम संहिता (ब्रह्माद्वारा रचित), 1 हजार अध्याय: 1 लक्ष श्लोक

क्षारपाणी: भूलोक पर सबसे बडी संहिता परंतु (अप्राप्य/अनुपलब्ध)

* याज्ञवल्क संहिता यह चिकित्सा ग्रंथ न होने पर भी आचार्य चरक उससे सबसे अधिक प्रभावित. * याज्ञवल्क स्मृति के मिताक्षरा टिका में आयुर्वेद शिक्षा की आयु 4 वर्ष वर्णन.

चरकसंहिता: i) मुल उपदेष्टा - आत्रेय पुनर्वसु, (Updeshta)

ii) तंत्रकर्ता– अग्निवेश..... इ. स. पूर्व 1000 (Creator)

iii) प्रतिसंस्कर्ता – चरक (भाष्यकर्ता) ..... 2 रे शती. (Redactor)

iv) प्रतिसंस्कर्ता & संपूरण – दृढबल..... 4 थे शती.

चरक is Redactor of अग्निवेश तंत्र. दृढबल is Redactor of चरक संहिता.

चरक द्वारा लिखित चिकित्सा स्थान के अध्याय – 13 (1 से 8), 14 (अर्श), 19 (अतिसार), 21(विसर्प), 24 (मदात्यय), 25(द्विव्रणीय)

दृढबल द्वारा लिखित चिकित्सा के अध्याय: उपरोक्त छोड के शेष 17 (+ कल्प (12) + सिध्दि (12)) 41..... चक्रपाणी.

बृहत्त्रयी में चरक संहिता यह मूर्धन्य (शीर्षस्थ) मानी है।

सूत्रस्थान (चरक) - (7 चतुष्क - 2 संग्रहाध्याय).

दृढबल ने अग्निवेश ग्रंथ के लिए तन्त्र शब्द प्रयोग कीया.

चरक ने अग्निवेश ग्रंथ के लिए संहिता शब्द प्रयोग कीया.

चरक: विशुध्द के पूत्र & महर्षि वैशम्पायन के शिष्य, कनिष्क राजा के राजवैद्य., वास्तविक नाम: कपिष्ठल चरक, निवासस्थान: पंचनद प्रान्त में एरावती व चंद्रभागा नदी के मध्य कपिस्थल गाँव में, भाव प्रकाशानुसार चरक: शेषनाग के अवतार तथा यायावर कोटी के ऋषी.

आत्रेय उल्लेख in चरक संहिता: i) पुनर्वसु आत्रेय (चन्द्रभागी), ii) कृष्णात्रेय, iii) भिक्षु आत्रेय → बौध्द भिक्षु, कालवाद समर्थक

दृढबल: (4 शती) * कपिलबल के पुत्र. * पंचनन्दपुर: निवास.

दृढबल ने अगस्त्य ऋतू में विष मन्दता वर्णन.

मूल अग्निवेश तंत्र अधिकांश गद्यात्मक है।

प्रतिपाद्य विषय सुचि वर्णन: (च. सू. 30) , सुश्रुत में (सु. सू. 3)

अ. सं. सु. 1, अ. हृ. सु. 1 व काश्यपसंहिता कल्पाध्याय

(अग्निवेश तंत्र प्राय: सुश्रुत तंत्र पश्चात् धान्वन्तर सम्प्रदाय उल्लेख.)

चरक संहिता में सूत्र प्रकार: 4 (गुरू, शिष्य, प्रतिसंस्कर्ता, एकीय) सूत्र.

इतिहास शब्द: 2 बार, सांख्य शब्द: 4 बार, वायु प्रकार: 5 वर्णन किये।

अग्निवेश तंत्र: सूत्र, संग्रह, तथा भाष्य क्रमसे परिणत होकर चरक संहिता रूप में विद्यमान. चरक संहिता में: i) 14 देश वर्णित, ii) 64 आचार्य, iii) 1950 योग, iv) ज्ञान पूर्वक चिकित्साक्रम उपदेश, v) षडधात्वात्मक पुरूष., vi) चिकित्सा अधिकृत पुरूष.

त्रिस्कंध वर्णन,निदानपंचक वर्णन,आचार रसायन - चरक की मौलिक देन., द्रव्य - 50 महाकषाय कर्मानुसार, पुरूष - षोडशकला., ओज को मधु कहा। सर्व प्रथम अयस्कृति शब्द उल्लेख - चरक. सर्व प्रथम अयस्कृति वर्णन - सुश्रुत. क्षणिक विज्ञान वाद & स्वभाव परमवाद वर्णन., 36 तंत्रयुक्ति.

4 प्रमाण..... (युक्ति प्रमाण, (परादि गुण) चरक वैशिष्ट्य).

6 पदार्थ..... (No अभाव), 360 अस्थिसंख्या, 10 प्राणायतन.

मनुष्य परम आयु: चरक - 100 yrs., सुश्रुत - 101 yrs.,

चित्तविरोधी निरोध पश्चात्: चरक – वंशित्व उत्पत्ति, पातंजल – वैराग्य.

63 रसायन योग, 50 वाजीकरण योग, राजमाष प्रथम उल्लेख, 3 एषणा वर्णन

आतुरलय में 7 प्रकार के सेवक, विषगरवैरोधिक प्रशमन वर्णन

आयुर्वेद शिक्षण: 3 वर्ण के लिए. 48 सामान्यज विकार.

ग्रहचिकित्सा को उपायाभिप्लुता कहा है।

विषमज्वर – विष्णु सहस्त्रानाम पाठ वर्णन।

रोगी त्रिविध,दशविध परिक्षा वर्णन, त्रिदोष,पंचमहाभूत,सप्तधातु सिध्दांत वर्णन. फलवर्ग शुरूवात मृद्विका से, Charak Club was established at New York in 1898. सूत्र स्थान = श्लोक स्थान, शरीर स्थान = आश्रय स्थान, विमान स्थान = मानस्थान & मानसस्थान.

चिकित्सा स्थान = औषधि स्थान/गुप्तस्थान/रहस्यस्थान/श्रेष्ठस्थान.

इंद्रिय स्थान - अरिष्ट स्थान, कल्प स्थान - विकल्प स्थान.

स्थान	चरक	सुश्रुत	अ.सं.	अ.हृ.
सूत्र	30	46	40	30
निदान	8	16	16	16
विमान	8	–	–	–
शारीर	8	10	12	6
इंद्रिय	12	–	–	–
चिकित्सा	30	40	24	22
कल्प	12	8	8	6
सिध्दि	12	–	–	–
उत्तरतन्त्र/ उत्तरस्थान	–	66	50	40
कुल अध्याय –	120	186	150	120

चरक - मनस्मृती काल में, सुश्रुत - याज्ञस्मृती काल में,

चरक संहिता पर - 41 टिका: (44 अन्य जगह),

17 संस्कृत टिका इस में - 6 उपलब्ध.

टिका	टिकाकार	काल
1) चरकन्यास	भट्टारहरिशचंद्र (प्रथम व श्रेष्ठ)	6 शती
2) चरकपंजिका	स्वामिकुमार	7 शती
3) चरकवर्तिका	स्वामिदत्त एवं पतंजलि	7-8 शती
4) निरंतर पदव्याख्या	जेज्जट (बृहत्त्रयी टिकाकार)	9 शती
5) परिहारवर्तिका	आषाढ वर्मा	9 शती
6) बृहत तंत्र प्रदीप	नरदत्त	10 शती
7) चरक चंद्रिका	गयदास	10 शती
8) आयुर्वेददिपीका/चरकतात्पर्य	चक्रपाणी दत्त	11 शती
9) चरकव्याख्या	जीनदास	11 शती
10) चरकभाष्य	श्रीकृष्ण वैद्य	11 शती
11) चरकतत्व प्रकाशकौस्तुक	नरसींह कविराज	11 शती
12) चरकतत्व प्रदीपीका	शिवदास सेन	16 शती
13) चरकोपस्कार	योगिन्द्रनाथ सेन	19 शती
14) जल्पकल्पतरू	गंगाधर राय	19 शती
15) चरकप्रदिपीका	ज्योतिषचंद्र सरस्वती	20 शती

हिन्दी टिकाकार:

1) श्रीकृष्ण लाल, 2) रामप्रसाद शर्मा, 3) जयदेव विद्यालंकार, 4) अत्रिदेव विद्यालंकार, 5) विनयचंद्र वशिष्ठ, 6) काशिनाथ पाण्डेय एवं गोरखनाथ चतुर्वेदी, 7) ब्रह्मानंद त्रिपाठी, 8) विद्याधर शुक्ल एवं रविदत्त त्रिपाठी.

इंग्रजी अनुवादक: अविनाश चंद्र - अपूर्ण प्रकाशित from Kolkata.

संहिता: आचार्य संख्या: चरक - 64, सुश्रुत - 10, अ.सं. - 38, अ.हृ. - 19, मा. नि. - 80, काश्यप - 15.

संहिता	सूत्र संख्या	श्लोक संख्या
ब्रह्मसंहिता	1 हजार (अध्याय)	1 लाख
चरक	9295	12 हजार
सुश्रुत	8, 300	–
अ.सं.	–	13 हजार
अ.हृ.	7, 445	7, 444
शारंगधर	–	2, 600
भाव प्रकाश	10,831	–
काश्यप	7, 446	–

7 सम्भाषा परिषद:

परिषद अध्याय	स्थान	विषय
1) (च.सू.1) दीर्घजिवितीय	हिमपार्श्ववत्	रोगउत्पत्ती आचार्य 52
2) (च.सू.12) वातकलाकलीय		त्रिदोष गुणधर्म विवेचन (आचार्य 8)
3) (च.सू. 25) यज्जपुरूषीय	काशी (आयोजक - काशीपत्ति वामक)	पुरूष–विकार उत्पत्ति हेतु (आचार्य 9)
4) (च.सू. 26) आत्रेयभद्रकापीय		रससंख्या विवेचन (आचार्य 10)
5) (च.शा. 3) गर्भावक्रान्ति		गर्भोत्पत्ति विचार
6) (च.शा.6) शरीर विचयशारीर		गर्भ प्रथमअंग उत्पत्ति
7) (च.सि.11) फलमात्रासिध्दि	दृढबल ने वर्णन किया.	निरूह बस्ति हेतु सर्वोत्तम फल निर्धारण.

* (तिब्बति, युनानी) चिकित्सक - कांकायन

चिनी चिकित्सक - पेंगी, युरोपीय चिकित्सक - हिरण्याक्ष, दक्षिण भारत चिकित्सक - अगस्त्य.

* महर्षि आत्रेय - i) महर्षि अत्रि के पुत्र एवं शिष्य दोनों.

ii) माता - चन्द्रभागा

iii) पुनर्वसु आत्रेय एवं कृष्णात्रेय अलग - अलग आचार्य है।

* आत्रेय के शिष्य - 6 (अग्निवेश, भेल, जतूकर्ण,पाराशर, हारीत, क्षारपाणि) अग्निवेश प्रमुख थे,इन्होंने गुरूपदेशों को शास्त्र के रूप में ग्रथित कीया - अग्निवेशतन्त्र. (धन्वन्तरी 12 शिष्य)

* अग्निवेश – महर्षि आत्रेय के प्रमुख शिष्य एवं अग्निवेशतन्त्र रचयिता।

* आतुरालय, सुतिकागार, कुमारागार का वर्णन.

आयुर्वेद को त्रिगुणात्मक कहा है, यह शाश्वत और पुण्य है।

1) दीर्घञ्जीवितीयध्याय

Topics: आयु व्याख्या व पर्याय, त्रिसुत्र आयुर्वेद, षट पदार्थ, शोधनार्थ षट वृक्ष, अष्टमूत्र, दुग्ध,श्रेष्ठतम भिषक आदि वर्णन.

'दिर्घजिवितीयध्यायं व्याख्यास्याम।'

इस प्रथम सूत्र में 8 पाद है। दिर्घ जिवित = 100 वर्ष आयु

1) आयु व्याखा व पर्याय:

शरीरेन्द्रिसत्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्। नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरूच्यते।।

शरीर + इंद्रिय + सत्व + आत्मा

पर्याय: धारि, जीवितम्, नित्यग,अनुबन्ध

हिताहितम् सुख,दु:ख आयुतस्य हिताहितम्।

मानंच तच्च यत्रोक्तं आयुर्वेद:स उच्यते।। (च.सू.1/41)

प्रकार - 4 (सुखायु, दु:खायु, हितायु, अहितायु)

आयुषो वेद: - आयुर्वेद:

आयुरस्मिन विद्यते, अनेन वाऽयुर्विन्दतीत्यायुर्वेद। (सु.सू.)

आयु:कामयमानेन धर्मार्थसुखसाधनम्।

आयुर्वेदोपदेशेषु विदेहपरमादर:।। (अ.हृ.सू.1)

आयुर्वेदयति ज्ञापयति प्रकृतिज्ञानरसायन

दूतारिष्टाद्युपदेशादित्यायुर्वेद:। ..... (अरूणदत्त)

धमार्थ काम मोक्षाणाम् आरोग्यं मूलम् उत्तमम्। च. सु. 1/15

2) आयुर्वेद प्रयोजन:

चरक: धातुसाम्यक्रिया चोक्ता तन्त्रस्य आस्य प्रयोजनं।..... (च. सू.1)

स्वस्थस्य स्वास्थ रक्षणं आतुरस्य च विकार परिमोक्ष:।..... (च. सू. 30)

सुश्रुत: व्याध्युपसृष्टानां व्याधिपरिमोक्ष:,स्वस्थस्य स्वास्थ रक्षणम्।.....(सु. सू.1)

3) आयुर्वेद पर्याय: ज्ञान, शाखा, विद्या, सूत्र, शास्त्र, लक्षण, तन्त्र.

4) त्रिसूत्र: (त्रिस्कन्ध) हेतुसूत्र - 5, लिंग - 7, औषध (द्रव्य) - 3

i) हेतुसूत्र - 5 - काल, इंद्रियार्थ (असात्म्यइंद्रियार्थ), कर्म, परिणाम (जरा, क्षुधा, तृष्णा, मृत्यु), प्रज्ञापराध (धीभ्रंश, धृतिभ्रंश, स्मृतिभ्रंश)

ii) लिंगसूत्र - 7 - पूर्वरूप, रूप, उपशय, अनुपशय, सम्प्राप्ती, शारीरिक दोष - वात, पित्त, कफ, मानसिक दोष - रज, तम.

iii) औषध (द्रव्य) - दोषशामक, दोषप्रकोपक, स्वस्थ के लिए हितकारी

त्रिस्कन्ध में लिंग सुत्र श्रेष्ठ है।

त्रिसुत्रं शाश्वतं पूण्यं बुबुधे यं पितामह:। च. सु. 1/24

त्रिदण्ड - i) सत्व ii) आत्मा iii) शरीर

(आयुर्वेद अधिकारण - 3) लोक/जिवात्मपुरूष का आधार

5) पदार्थ 6:

i) द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय (दर्शन शास्त्रोक्त - वैशेषिक)

ii) सामान्य, विशेष, गुण, द्रव्य, कर्म, समवाय..... (चरक) (क्रम)

iii) द्रव्य, गुण, कर्म, रस, वीर्य, विपाक, प्रभाव ..... (सप्त पदार्थ)

iv) नवन्याय अनुसार पदार्थ - 2 प्रकार a) भाव b) अभाव

भाव पदार्थ - 6 पदार्थ, कूल 7 पदार्थ

6) पदार्थ संख्या:आयुर्वेद चरक 2 सेंद्रिय,निरिद्रीय,(च.वि.)व 6 - चरक, आयुर्वेद (च.सु.); नवन्याय - 7, प्रभाकर और माधव - 8, गौतम सूत्र - 16 (पुराणन्याय), पतंजलि - 25, असंख्य - सुश्रुत.

7) ज्ञान देवता: 8 i) बुध्दि: ii) सिध्दि: iii) स्मृति iv) मेधा: v) धृति: vi) कीर्ति: vii) क्षमा: viii) दया.

8) द्रव्य: यत्राश्रिता कर्मगुणकारणसमवायि यद् तद् द्रव्यम् ।..... (चरक)

a) i) कारण द्रव्य (द्रव्य संग्रह): 9 पंचमहाभूत, आत्मा, मन, काल, दिशा,

ii) कार्य द्रव्य: असंख्य.

b) द्रव्य: 2 चेतन और अचेतन - 2 प्रकार,

चेतन: 2 i) अन्तश्चेतन उदा. वनस्पती, ii) बहिश्चेतन उदा.मनुष्य,

c) प्रभाव भेद से द्रव्य: i) चरक: 3 i) दोषप्रशमन, ii) धातुप्रदूषण, iii)स्वस्थवृत्त

ii) वाग्भट: 3 i) शमन (तैल, घृत, मधु),

ii) कोपन (यवक, पाटला, माष, दहि), iii) स्वस्थहित

d) उत्पत्ति भेदसे: 3 i) जांगम द्रव्य - मधु, मांस, गोरोचन.

ii) औद्भिद द्रव्य (वानस्पतिक). iii) पार्थिव द्रव्य.

i) जांगम: 4 उद्भिज्ज - भूमिको भेदकर बाहर;

स्वेदज - स्वदे से उत्पन्न, युका, लिक्षा; अण्डज - अण्डे से उत्पन्न;

जरायुज - गर्भ में जरायु के व्दारा पोषण प्राप्त - मनुष्य.

ii) औद्भिद: वनस्पति, वानस्पत्य (सुश्रुत - वृक्ष), वीरूध्द, औषधि.

9) सामान्य विशेष वर्णन: i) द्रव्य सामान्य लक्षण: सर्वदा सर्व भावानां सामान्यं वृध्दिकारणम् ii) द्रव्य विशेष लक्षण:-हासहेतुर्विशेषश्च,
iii) गुण सामान्य लक्षण: सामान्यमेकत्वकरं (चरक), iv) गुण विशेष लक्षण: विशेषस्तु पृथकत्वकृत्, v) कर्म सामान्य लक्षण: तुल्यार्थता हि सामान्यं,
vi) कर्म विशेष लक्षण: विशेषस्तु विपर्यय:

विशेष	लक्षण	उदाहरण
द्रव्यविशेष	हासहेतुर्विशेषश्च	शंख, शुक्ति भस्में और बाजरा, मांस-हासकारक
गुणविशेष	विशेषस्तु पृथकत्वकृत्	वायु वृध्दि होनेपर तैल प्रयोग
कर्मविशेष	विशेषस्तु विपर्यय:	चलने से कफ का क्षय.

10) सामान्य भेद: a) चरक: 2 (परसामान्य, अपरसामान्य)
b) चक्रपाणि: 3 द्रव्यसामान्य - मांसभक्षण से मांस की वृध्दि
गुणसामान्य - दुग्ध मधुर होने से शुक्र का वर्धन
कर्मसामान्य - आलस्य से कफ वृध्दि
अन्य आचार्य: सामान्य 3 -अत्यन्त सामान्य, मध्य सामान्य, एकदेश सामान्य
आचार्य: सामान्य 2 - उभयवृत्ति - मासं मासवर्धक है।
एकवृत्ति - घृतसेवन से अग्निवाह देने से वायुवृध्दि, बैठे रहने से कफकारक।

11) गुण: सार्थागुर्वादयो बुध्दि: प्रयत्नान्ता: परादय:। गुणा: प्रोक्ता। च.सु.1
गुण गणना: 41 (आयुर्वेद); 24 (न्याय), वैशोषिक -17
20 - गुर्वादि / शारीरिक / द्रव्य - गुरूमंद हिमस्निग्ध श्लक्ष्णसांद्रमृदु स्थिरा:।
गुणा: ससूक्ष्म विशद: विंशति: सविपर्यय:।। (अ. हृ. सू. 1/12)
10 - परादि / चिकित्सीय गुण:(परत्व, अपरत्व, संख्या, संयोग, विभाग, पृथकत्व, परिमाण, युक्ति, संस्कार, अभ्यास)
6 - अध्यात्म गुण / आत्म गुण (बुध्दि, सुख, दु:ख, इच्छा, व्देष, प्रयत्न),
5 - (सार्थ / इंद्रिय / वैशेषिक / अर्थादि) - (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध)
मूर्त गुण - 26 (गुर्वादी + परत्व + अपरत्व + शब्द छोड के सार्थ गुण)
अमूर्त गुण - 10 (आत्म गुण 6, धर्म, अधर्म, संस्कार व शब्द)
मूर्त - अमूर्त गुण - 5 (संख्या, परिणाम, पृथकत्व, संयोग, विभाग)

12) कर्म: प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते। (च.सू.1/49)

13) समवाय: समवायोऽपृथग्भावो भूम्यदिनां गुणैर्मत:। सनित्यो।

14) द्रव्य लक्षण: यत्राश्रिता: कर्मगुणा:कारणं समवायि यत् तद् द्रव्यं(च.सु.1/51)
क्रियागुणवत् समवायिकारणं द्रव्यम्। (सु.सू. 40)
क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्। (वैशेषिक)

15) गुण लक्षण: समवायि तु निश्चेष्ट: कारणं गुण:। (च.सू. 1/51)

16) कर्म लक्षण: 4 i) संयोगे च विभागे च, कारणं, ii) द्रव्यमाश्रितम्, iii) कर्तव्यस्य क्रिया कर्म, iv) कर्म नान्यदपेक्षते.
6 पदार्थ जगत के कारण (सृष्टी) सामान्य विशेष गुण द्रव्य कर्म समवाय

17) कर्म भेद: कणाद: 5 (उत्क्षेपण,अपक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण, गमन)
पंचकर्म - वमन, विरेचन, आस्थापन, अनुवासन, नस्य ..... चरक
त्रिविधकर्म - पूर्वकर्म, प्रधानकर्म, पश्चातकर्म
व्रण सम्बन्धी अन्य त्रिविधकर्म: पूर्वकर्म - षष्ठी उपक्रम में प्रथम 11
प्रधानकर्म - छेदन भेदनादि अष्टविध शस्त्रकर्म,पश्चातकर्म - व्रणितोपासन
लौकिक कर्म: 3 i) सत्प्रत्यय, ii) असत्प्रत्यय, iii) अप्रत्यय,

18) समवाय लक्षण: i) ऽपृथग्भावो, ii) स नित्यो.

19) रोग कारण 3 : कालबुध्दि: इन्द्रियार्थ के मिथ्यायोग,अयोग,अतियोग (निमित्त कारण), त्रिदोष.....(समवाय कारण)

20) आत्मा: i) गुण निर्विकार -(सुख, दुख से रहित),ii) पर -(श्रेष्ठ और सूक्ष्म), iii) सत्वभूतगुणेंद्रिय - चैतन्य, iv) नित्य, v) द्रष्टा - जगत् का दर्शक, vi) पश्यति - क्रियाओं को देखता है। निर्विकार: परस्त्वात्मा सत्वभूतगुणेन्द्रियै:।

21) दोष: वायु: पित्तं कफश्चोक्त: शारीरो दोषसंग्रह:।
मानस: पुनरूद्दिष्टो रजश्च तम एव च।। (च. सू. 1/57)
वायुपित्तं कफ चोक्त त्रयोदोषा समासत:। (वा. सु. 1)

22) शारीररोग चिकित्सासूत्र: दैवयुक्तिव्यापाश्रय
मानसरोग चिकित्सासूत्र - ज्ञानविज्ञानधैर्यस्मृतिसमाधिभि (च. सू. 1/58)
धीधैर्यात्मादिविज्ञानं मनोदोषौषधंपरम ..... (वा. सू. 1)
रोग आश्रय - शरीरं समनत्वसंज्ञ च व्याधीनामाश्रयो मत:।
तथा सुखानां योगस्तु सुखानां कारणं सम:।।
(काल, बुध्दी, इंद्रियार्थ के सम्यक् योग से सुख प्राप्ति)

23) रस: रसनार्थो रसस्तस्य द्रव्यमाप: क्षितिस्तथा।.... (च. सु. 1 / 64)
जिव्हा से ग्राह्य विषय, जल - उत्पत्ति में कारण, पृथ्वी - उत्पत्ति में कारण आकाश, वायु, तेज - विशेष ज्ञान में कारण.

24) रस	भेद	कारक
मधुर	पृथ्वी	+ जल
अम्ल	पृथ्वी	+ तेज (च.); जल + तेज (सु.) (पाठभेदानुसार)
लवण	जल	+ तेज (च.); पृथ्वी + तेज (सु.) (पाठभेदानुसार)
कटु	वायु	+ तेज (अग्नि)
तिक्त	वायु	+ आकाश
कषाय	वायु	+ पृथ्वी

25) दोषकर्म:

वातशामक - स्वाव्दम्ललवणा	वातप्रकोपक - कटुतिक्तकषाय
पित्तशामक - कषायस्वादुतिक्तका	पित्तप्रकोपक - कट्वम्ललवण
कफशामक - कषायकटुतिक्तका	कफप्रकोपक - स्वाव्दम्ललवणा

26) दोष गुण एवं कर्म: 1) वायु: i) **गुण**
a) रूक्ष:शीतो लघु: सूक्ष्मश्चलोऽथ विशद: खर:
- (7) (च. सू. 1 / 59) (आत्रेय व्दारा)
b) रूक्ष लघुशीत दारूण खर विशद:।-(6) (च.सू.12) कुश नामक वैद्य
c) अव्यक्तो व्यक्तकर्माच रूक्ष: शीतो लघु: खर:।
तिर्यग्गो द्विगुणश्चैव रजोबहुल एव च।। - 6 (सु.नि.1) (द्विगुण - शब्द,स्पर्श)
d) तत्र रूक्षो लघु शीत खर: सूक्ष्मश्चलोऽनिल। - 6 (अ.हृ.सू.1/10)
रासायनिक गुण - योगवाही ...(चरक)आशुकारी एवं अचिन्त्य शक्ति. (सुश्रुत)
चरक - वायु पर्याय - तन्त्रयन्त्रधर, भगवान, मृत्यु, यम, नियन्ता, प्रजापति, अदिति, विश्वकर्मा, विश्वरूप, विभु, विष्णु।

ii) वायु स्थान एवं प्रकार:

वायु	च.चि.28	सु.नि.1	अ.हृ.सू.12
प्राणवायु	मूर्धा, मस्तक, उरस्, कण्ठ, जिव्हा, नासा	मुखगुहा	शिरप्रदेश
उदानवायु	कण्ठ,नासा,नाभि,उरस्	उर, कण्ठ	उर, कण्ठचरो
समानवायु	कोष्ठ, अन्तरग्नेश्च, पार्श्व	आम पक्वाशय	आग्निसमीप,कोष्ठचर
व्यानवायु	हृदय, संपूर्ण शरीर	रससंवहन, स्वेदसृक्स्त्रवण	हृदय
अपानवायु	श्रोणि,बस्ति,मेढ्र,वृषण नाभी,वंक्षण,उरू,गुदा	पक्वाशय	गुद

iii) वायु के विशेष स्थान:

(च.सु.20/8)	(सु.सू.21)	(अ.हृ.सू.1)
बस्ति, पुरीषाधान	श्रोणि	पक्वाशय,कटि,श्रोत्र,अस्थि,त्वचा
कटि,सक्थी,अस्थियाँ,	गुद	पक्वाशय - मुख्य स्थान
पक्वाशय,(विशेष स्थान)		वायु - नाभि के नीचे
		पित्त - नाभि व हृदय के मध्य
		कफ - हृदय के उपर

iv) 5 प्रकार के वायु के कर्म:

वायु	(च.चि.28)	(सु.नि.1)	(अ.हृ.सू.12)
प्राण	छीवन,क्षवथु,उद्गार,देहधारण,अन्नप्रवेश, श्वास,आहार ग्रहण	प्राणावलम्बन	बुध्दि,इन्द्रियधारण, छीवन,क्षवथु,उदगार, अन्नप्रवेश.
उदान (श्रेष्ठ)	वाकप्रवृत्ति,प्रयत्न, उर्जा,बल,वर्ण	भाषण,गायन	वाक्प्रवृत्ति,प्रयत्न,उर्जा, बल, वर्ण, स्मृति
व्यान	शीघ्रगति,प्रसारण, आक्षेप,निमेषादि,	आकुंचनादि 5 गतियाँ	गति एवं उत्क्षेपणादि क्रियायें
समान	अग्निबलप्रद	जाठराग्नि पोषण	अन्नंगृहनाति पचति विवेचयतिमुंचाति
अपान	शुक्र,मूत्र,शकृत, प्रवृत्ति,आर्तव एवं गर्भ को निकलने वाला	पुरीष,मूत्र,शुक्र, गर्भ एवं आर्तवगति	शुक्र आर्तव शकृद् मूत्र निष्कर्षति

v) 5 प्रकार की वायु की विकृति से उत्पन्न रोग:

वायु	(सु.नि.1)	वायु (कर्म) (सुश्रुत)
1) प्राण	हिक्का, श्वास	पुरण
2) उदान	उर्ध्वजत्रुगतरोग	उद्वहन
3) व्यान	सर्वशरीररोग	प्रस्पन्दन
4) समान	गुल्म, अग्निसाद,	विवेक
5) अपान	बस्तिरोग, गुदरोग	धारण

vi) वायु के कर्म:

a) उत्साहोच्छ्वासनि: श्वासचेष्टा धातुगति: समा।
समो मोक्षो गतिमतां वायो: कर्माविकारजम्।। .....(च.सू.18/49)

b) प्राकृत वायु कर्म .....(च.सू.12) दोषों का विशेष स्थान:

स्थान	चरक	सुश्रुत	वाग्भट	काश्यप
वात	पक्वाशय	श्रोणिगुद	पक्वाशय	पक्वाशय
पित्त	आमाशय	पक्वामाशयमध्य	नाभि	आमाशय
कफ	उर: प्रदेश	आमाशय	उर:	हृदय

2) पित्त के कर्म:

दर्शनं पक्तिरूष्मा च क्षुत्तृष्णा देहमार्दवम्।
प्रभा प्रसादो मेधा च पित्तकर्माविकारजम्।। ..... (च.सू.18/50)

चरक ने (लघु विस्त्र) के जगह (अम्ल, कटु)

पित्त: i) गुण: सस्नेहमुष्णं तीक्ष्णं द्रवमम्लं सरं कटु। ....(च.सू.1)
पित्तं तीक्ष्णं द्रवं पूति नीलं पीतं तथैव च।
उष्णं कटुरसं चैव विदग्धं चाम्लमेव च।। .....(सु.सू.21/11)

पित्त सस्नेहं तीक्ष्णोष्णं लघु विस्त्रं सरं द्रवम्। (अ.हृ.सू.1/11)

रासायनिक गुण: कटु, विस्त्र, पूति और विदग्धावस्था में अम्ल.

ii) पित्त प्रकार,	स्थान	कर्म:
a) पाचक पित्त	पक्वामाशयमध्य	पक्तिकृत
b) रंजक पित्त	यकृत – प्लीहा (सुश्रुत) आमाशय (वाग्भट)	रागकृत
c) साधक पित्त	हृदय	मेधाकृत
d) भ्राजक पित्त	त्वक्	उष्मकृत
e) आलोचक पित्त	नेत्र	तेज:कृत

iii) पित्त स्थान:

(च.सू.20/8)	(सु.सू.21)	(अ.हृ.सू.12)
स्वेद,रस,लसीका,रक्त विशेषकर = आमाशय	पक्वामाशयमध्य	नाभि,आमाशय,स्वेद,लसिका, रूधिर,रस,दृष्टि,त्वचा. विशेषस्थान = नाभि

3) कफ: i) गुण: गुरूशीतमृदुस्निग्धमधुरस्थिर पिच्छिल:। .....(च. सू.1)
श्लेष्मा श्वेतो गुरू: स्निग्ध: पिच्छिल: शीत एवच।

चरक ने (श्लक्ष्ण, मृत्स्न) के जगह (मधुर पिच्छिल)

रासायनिकगुण - सामान्यावस्था - मधुर. दुषित अवस्था - लवण (सु.सू. 21)

स्निग्ध: शीतो गुरूर्मन्द: श्लक्ष्णो मृत्स्न: स्थिर: कफ:। ....(अ.हृ.सू.1/12)

ii) प्रकार और स्थान:

a) क्लेदक - आमाशय – अन्नसंघात, क्लेदन.

b) अवलम्बक - उर: प्रदेश, हृदय एवं त्रिक, c) श्लेषक - सन्धि,

d) बोधक - रसना (जिव्हा), e) तर्पक - शिर.

iii) कफ के कर्म: स्नेहो बन्ध: स्थिरत्वं च गौरवं वृषता बलम्।
क्षमाधृतिश्लोभश्च कफकर्मविकारजम्।। .....(च.सू.18/65)

iv) कफ विशेष स्थान:

(च.सू. 20/8)	(सु.सू. 29)	(अ.हृ.सू.12)
उर: स्थल,शिर,ग्रीवा, पर्व,आमाशय,मेद, वि. स्थान = उर: प्रदेश	आमाशय	उर,कण्ठ,शिर,क्लोम, पर्व,आमाशय,(रस,मेद) धातु, घ्राण, जिव्हा

27) द्रव्यों का वर्गीकरण:

i) मूलिनी - 16, ii) फलिनी -19, iii) महास्नेह - 4

iv) लवण - 5 (सैंधव, सौर्वचल (कालानमक),विड, औदभिद, सामुद्र)

v) मूत्र-8, vi) दुग्ध -8(अन्नपानविधि में वर्णन) (च.सू.27), vii) शोधनवृक्ष - 6

श्रेष्ठ द्रव्य: i) वामक - मदनफल, ii) विरेचक - त्रिवृत् मूल,

iii) शिरोविरेक - अपामार्ग, iv) आस्थापन - पाटला.

28) मूलिनी - 16:

a) वमन - 3 i) शणपुष्णी (वनसनई), ii) बिम्बी, iii) वचा (हैमवती),

b) शीर्षविरेचन - 2 i) श्वेता (अपराजिता)(नस्य)

ii) ज्योतिष्मती (मालकांगनी) c) विरेचन - शेष 11

29) फलिनी – 19

a) नस्य = 1 अपामार्ग (प्रत्यक पुष्पा)

b) वमन: 8 - i) मदन, ii) जीमूतक, iii) इक्ष्वाकु, iv) धामार्गव,

v) कुटज, vi) कृतवेधन, vii) त्रपुष, viii) हस्तिपर्णी.

विरेचन - शेष 10 (औषधी के फलों का प्रयोग)

(त्रिफलामे से सिर्फ हरितकी का समावेश फलिनी में है।)

30) लवणगुण - पंचकमार्थ, शस्त्रकमार्थ।

31) अष्टविध दुग्ध: अविक्षीर अजाक्षीर माहिषं च यत्।
उष्ट्रीणामथ नागीनां वडवाया: स्त्रियास्तथा।। .....(च.सू.1/106)

32) महास्नेह -4 : सर्पि, तैल, वसा, मज्जा - उपयोग - पान, अभ्यंग, बस्ति, नस्य

33) मूत्र सामान्य गुण: उष्ण,तीक्ष्ण,अरूक्ष, रस - कटु, लवण
मारूतं चानुलोमयेत्, (वायु अनुलोमन), कर्षेत पित्तमधोभागम् (पित्त अधोभाग को खिंचकर निकालना), श्लेष्माणं शमयेत्पीतं, (कफ को शान्त करता है)
प्रधान रस - कटु,अनुरस (अप्रधान) - लवण (अ.हृ.सू.5/82)..सु.सू. 45)
(डल्हण - प्रधान रस - लवण, अनुरस - कटू)
[Note: मूत्र, सुश्रुत– त्रिदोषहर, वाग्भट - पित्तवर्धक
नरमूत्र - रसायन और विषघ्न.]

34) शोधनार्थ वृक्ष: 6 - (क्षीरीवृक्ष) i) स्नुहीक्षीर–विरेचनार्थ,
ii) अश्मन्तक - वमनार्थ, iii) अर्कक्षीर - वमन और विरेचन,
चरक क्षीरत्रय - अर्क, अश्मन्तक, स्नुही (र. त. अर्क, वट, स्नुही)
* त्वक् उपयोगी वृक्ष: iv) पूतीक - (लताकरंज) छाल प्रयोग विरेचनार्थ,
v) कृष्णगन्धा (सहिजन) - विसर्पशोथ ,अर्श, दद्रु, विद्रधी, गलगण्ड, कूष्ठ, अलजी. vi)तिल्वक -विरेचनार्थ. लोध्र by चक्रपाणि - वह ग्राही होने से यह अर्थ अग्राह्य और असंगत.

35) श्रेष्ठतम भिषक्: योगमासां तु यो विद्याद्देशकालोपपादितम्।
पुरूषं पुरूषं वीक्ष्य स ज्ञेयो भिषगुत्तमः।। (च. सू. 1/123)
योग्य औषध और श्रेष्ठ वैद्यः तदेव युक्तं भैषज्यं यदारोग्याय कल्पते।
स चैव भिषजां श्रेष्ठो रोगेभ्यो यः प्रमोचयेत्।।....(च. सू. 1/134)
यथा विषं यथा शस्त्रं यथा अग्निरशनिर्यथा।
तथौषधमविज्ञातं विज्ञातममृतं यथा। च. सु. 1/124
औषधि के सम्बन्ध में 3 चिजे पता रहना जरूरी अन्यथा अनर्थ - नाम, रूप, गुण

36) दुग्ध सामान्य गुण: i) मधुर, स्निग्ध, शीत, ii) प्रीणनं,बृहणं,वृष्य,मेध्य, iii)जीवनीय,श्रमहर, iv) रक्तपित्तनाशक,विहत (भग्न) का संधान करने वाला, v) सर्वप्राणभृतां सात्म्य, vi) पथ्यं वातपित्तविकारिणाम् और पुरीष ग्रथित (विबंध)

Common: गुण: i) लवण,मूत्र,दुग्ध–आस्थापन,आलेप,विरेचन,
ii) लवण,मूत्र - स्वेद,उत्सादन, iii) लवण,दुग्ध -नस्य,वमन,विरेचन, स्नेह,

37) मूत्र	दुग्ध
1)अविः तिक्त(5) पित्त अविरोधी	हिक्का श्वास करं
2)अजाः कषाय मधुर (6,1) पथ्य त्रिदोषघ्न	कषाय मधुर (6,1) रक्तपित्तातिसारघ्न क्षतकास ज्वरापहम्
3)गौः मधुर (1) कृमीकुष्ठनुत	मधुर (1) दशगुण प्रवरं जिवनीयाणां रसायनम्
4)माहिषः क्षार अर्श शोफ उदरघ्न	अनिद्रा व अत्यानि में हितकर
5)हस्तिः लवणा (3) प्रशस्त बध्द विण्मुत्र विष श्लेष्मा अर्श	स्थैर्यकरं परम् बल्य
6)उष्ट्रः तिक्त (5) श्वासकासघ्न अर्शोघ्न	इषत् लवणं (3) लघु आनाह कृमी शोफ उदर अर्श साम
7)अश्वः तिक्त कटू (5, 4) कुष्ठ व्रण विषापहम्	घोडीआदी एकशफ– शाखा वातहर, लघु, अम्ल लवण (2,3)
8)खरः अपस्मार उन्मादग्रह विनाशनम्	स्त्री

स्त्री - जिवनं बृंहणं सात्म्यं स्नेहनं मानूषे पयः।
नावनं रक्तपित्तेच तर्पणं चाक्षिशूलीनाम्।।
(श्रैष्ठचिकित्सक व तत्वविद्यवर्णन संदर्भ च. सु. 1)
(कूल चिकित्सार्थ औषधि प्रथम अध्याय में: 62)

2) अपामार्गतण्डुलीयमध्याय

Topics: i) अन्तः परिमार्जन सम्बन्धी पंचकर्म द्रव्य एवं उनका प्रयोग, ii) युक्ति महत्व, iii) 28 यवागु, iv)चिकित्सक गुण.

1) शिरोविरेचन प्रमुख द्रव्यः i) अपामार्ग बीज, ii) पिप्पली, iii) मरिच iv) विडंग, v) शिग्रु, vi) सर्षप, vii) तुम्बरू,
(सुरसा, श्वेता, कुठेरक फणिज्झक) तुलसी के भेद,
उपयोग: i) शिरः गौरव, शिरः शूल, पीनस, अर्धावभेदक, क्रिमि, अपस्मार, घ्राणनाश, प्रमोह (मूर्च्छा).
(अपामार्गतण्डुलीय - अपामार्ग के बीज की भूसी अलग करके ही उसका प्रयोग।)..... (चक्रपाणि)

2) वमन द्रव्यः मदन, जीमूत, इक्ष्वाकु, धामार्गव, कुटज, कृतवेधन,मधुक, निम्ब,पिप्पली, एला,
उपयोग: i) कफपित्त विकार, ii) आमाशयस्थ व्याधि, iii) वमनार्थ

3) विरेचन द्रव्यः त्रिवृत्, त्रिफला, दन्ती, नीलनी, सप्तला, वचा,
उपयोग: i) पक्वाशयगत दोष, ii) विरेकार्थ.

4) आस्थापन बस्ति द्रव्यः दशमूल,(बिल्व, अग्निमंथ, श्योनाक, पाटला, काश्मरी, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, बृहती, निदिग्धिका,गोक्षुर) 4 स्नेह, 5 लवण,
उपयोग: i) उदावर्त, ii) विबन्ध

5) युक्ति महत्व : मात्राकालाश्रया युक्तिः सिध्दिर्युक्तो प्रतिष्ठिता।
विविधानां विकाराणां तत्साध्यानां निवृत्तये।।.....(च.सू. 2/35)
(यवागु साधन द्रव्यः 2 प्रकार i) वीर्य प्रधान औषध, ii)रस प्रधान आहार औषधि द्रव्यः 3 प्रकार i) तीक्ष्ण वीर्य उदा. शुण्ठि,
ii) मध्य वीर्य उदा. बिल्व, iii) मृदु वीर्य उदा. आमलकी.)

6) यवागुः 28 - i) दीपन, शूलनाशक यवागु - पंचकोल साधित,
ii) पाचनी, ग्राहिणी पेया - दधित्थ, बिल्व, चांगेरी, तक्र, दाडिम सिध्द,
iii) सवाते पेया - पंचमूल (छोटी),
iv) आमातिसार - अतिविषा, नागर, अम्ल,
v) विषघ्नी - सोमराजी सिध्द (बावची),
vi) बृंहणी यवागु - वराह निर्यूह (मांसरस),
vii) कास,हिक्का,श्वास, कफहर -दशमूल सिध्द,
viii) पक्वाशयरूजाहर - यमके मदिरा सिध्दा,
ix) रेचक-शाक, मांस, तिल, उडद,
x) ग्राही - जम्बू, आम्रास्थि, दधित्थ अम्ल (खट्टे कैथ बिल्व),
xi) भेदिनी-क्षार, चित्रक, हिंगु, अम्लवेतस,
xii) वातानुलोमनी - अभया पिप्पलीमूल, विश्व,
xiii) घृतव्यापत् नाशनी - तक्रसिध्द,
xiv) तैलव्यापत् नाशनी - तक्रपिण्याक (तिल की खली),
xv) विषमज्वरघ्नी - गव्यमांसरस, अम्ल सिध्द,
xvi) शिश्नपीडाशामक - मुर्गेका मांस (ताम्रचूडरसे),
xvii) वृष्या - माषविदला (उडंद दाल), घृतक्षीर,
xviii) मदविनाशिनी - उपोदिका,दधि सिध्द,
xx) क्षुधानाशक - अपामार्ग, क्षीर, गोधारस (गोह के मांसरस).

7) चिकित्सक गुणः स्मृतिमान हेतुयुक्तिज्ञ जितात्मा प्रतिपत्तिमान्।
भिषगौषधसंयेगैश्चिकित्सां कर्तुमर्हति।। .....(च.सू. 2/36)
[i) दीपनीय,शूलघ्नी यवागु - (पंचकोल): पिप्पली पिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः।
ii) पाचनी, ग्राहिणी पेयाः दधित्थबिल्व चांगेरी तक्र दाडिम साधिता।
iii) सवाते पांचमुलिकी (लघु)
iv) रक्तातिसारघ्नी : छागे पयस्यर्धोदके ह्रीबेरोत्पलनागरैः पृश्निपर्णी
v) मूत्रकृच्छ्र : श्वदंष्ट्रा कण्टकारिभ्यां सफाणिताम
vi) विषघ्नी सोमराजी विपाचिता
vii) वराह निर्युह यवागु बृंहणी मता
viii) गवेधुकानां भृष्टानां कर्शनीया समाक्षिका
ix) दशमूलीश्रृता श्वासकासहिक्काकफापहा
x) क्षार चित्रकहिंग्वम्लवैतसैः भेदिनी मता
xi) तक्रसिध्दा यवागुस्याद् घृतव्यापत्तिनाशिनी
xii) तक्रपिण्याक साधिता तैलव्यापदि
xiii) गव्यमांसरसैः साम्ला विषमज्वरनाशिनी
xiv) ताम्रचूडरसे सिध्दा रेतोमार्गरूजापहा
xv) उपोदिकादधिभयां तुसिध्दा मदविनाशिनी
xvi) क्षुधा हन्याद् अपामार्गक्षीरगोधारसैः]

3) आरग्वधीय

Topics : i) बहिः परिमार्जन द्रव्यों एवं उनके प्रयोगों का वर्णन
ii) आरग्वध से प्रारम्भ होने के कारण यह नाम,
iii) 32 प्रकार के लेपो (सिध्दतम चूर्ण प्रदेह) का वर्णन

1) कुष्ठनाशक लेपः 6 पहले 6 योग - 6 प्रकार के लेप निर्माण चूर्ण को, गोरोचन की भावना देकर सर्षप तैल के साथ प्रयोग करे। उपयोग- कुष्ठ (न्यच्छ)नवकिलास,किटिभ,सुरेशलुप्त(इंद्रलुप्त),दद्रु,भगन्दर,अर्श,अपची,पामा.

2) उदरशूलनाशक लेपः तक्र; जौ (यवचूर्ण), क्षार, गरम लेप

3) वातहर लेप (उपनाह स्वेद/ पवनापह):
आनुप, मत्स्य मांस से निर्मित वेशवार का सुखोष्ण प्रलेप।

4) विषघ्न लेप: शिरीष, सिन्धुवार

5) दौर्गन्ध्यहरलेप:पत्राम्बुलोध्राभयचन्दन (तेजपत्र,सुगन्धबाला,लोध्र,अभय चंदन) चरक व्दारा वर्णित रस शास्त्र द्रव्य इस अध्याय में सुमन, प्रवाल, गैरिक, अंजन, मन:शिला,कासीस,तुतिया,कम्पिल्लक, गन्धक, सर्जरस (राल); तुत्थ (करंज + एडगज) बीज + गोमूत्र - पर कुष्ठनाश

i) कुष्ठहर लेप - 12, ii) कुष्ठादि चूर्ण - 1, iii) वातहर लेप - 4,

iv) वातरक्तहर लेप - 3, v) वातरक्त - छागलीपय, घृत, गोधूमचूर्ण.

6) शिरोरूजा: चन्दन, उत्पल, 7) पार्श्वरूजा: सितोपला.

[i) रक्त चंदन - बाह्य प्रयोग, ii) श्वेत चंदन - आभ्यंतर प्रयोग]

4) षड् विरेचनशताश्रितीय

Topics : वामक, विरेचक योग, कषाय योनियाँ, कषाय और 50 महाकषाय.

1) i) षड् विरेचनशतानि - 600 विरेचन योग,

ii) षड् विरेचनाश्रय - 6 आश्रय (आधार) (मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक् क्षीर),

iii) पंच कषाययोनय: 5 कषाय योनियाँ (मधुर, अम्ल, कटु, तिक्त, कषाय) (अपवाद लवण)

2) पंच कषाय कल्पना - 5 कषाय कल्पना (निर्माणविधि)

i) स्वरस कल्क श्रृत शीत फाण्ट .....(चरक) - **5** तेषां यथापूर्व बलाधिक्यम्। अतः कषायकल्पना व्याध्यातुरबलापेक्षिणी (चरक)

ii) क्षीरं रस:कल्कमथो कषाय: श्रृतश्च शीतश्च तथैव चूर्ण।(सु.सू.44/90)-6

iii) रस कल्क श्रृत शीत फाण्ट। .....(वा.क 6) - 5

d) काश्यप - **7** कषाय कल्पना - चूर्ण, अभिषव Extra वर्णन.

v) पंचाशन्महाकषाय - 50 महाकषाय कर्मानुसार (10-10) औषधि (च.सू.4)

vi) पंच कषायशतानि - 500 कषाय,

3) विरेचन योग: 600

i) वामक - 355: ii) विरेचक - 245:

स्वरस: यन्त्रनिष्पीडिताद् द्रव्याद् रस: स्वरस उच्यते।

कल्क: यत्पिण्डं रसपिष्टानां तत्कल्कं परिकीर्तितम्।

श्रृत: वन्हौ तु क्वथितं द्रव्यं श्रृतमाहुश्चिकित्सका:।

शीत: द्रव्यादापोत्थितात्तोये प्रतप्ते निशि..... क्षीत समुदाहृत।।

फाण्ट: क्षिप्तोष्णतोये मृदितं तत् फाण्टं परिकीर्तितम्।। (च.सू.4)

4) महाकषाय वर्णन:

i) चरक - द्रव्यों का वर्गीकरण कर्म के आधार पर।दशेमानि बृंहणीयानि.

ii) सु. सू. 37 - शोथ संबंधी उपक्रमार्थ द्रव्यों का उपदेश

सु. सू. 38 - औषध गणों का उल्लेख (290), सु. सू. 39 - संशोधनीय अध्याय में वमन, विरेचन, वातादि द्रव्यों का उल्लेख।

सुश्रुत - द्रव्य का वर्गीकरण प्रमुख द्रव्य नाम, उदा. वीरतर्वादिगण.

iii)वाग्भट-सुश्रुत अनुसार वर्गीकरण सभी द्रव्यों को शोधनादिगणसंग्रह में सम्मिलित

50 महाकषाय: (जी.ब.तृ.स्त.स्ने.छ.पु.का.दा.शो. - 6,4,6,4,7,3,5,5,5,5)

i) जीवनायादि वर्ग - 6, ii) बल्यादि वर्ग - 4, iii) तृप्तिघ्नादि वर्ग - 6,

iv) स्तन्यजननादि वर्ग - 4, v) स्नेहोपगादि वर्ग - 7, vi) छर्दिनिग्रहणादि वर्ग - 3, vii) पुरीषसंग्रहणीयादि वर्ग - 5, viii) कासहरादि वर्ग - 5,

ix) दाहप्रशमनादि वर्ग - 5, x) शोणितस्थापनादि वर्ग - 5

1) जीवनीयादि वर्ग: 6 - i) जीवनीय: जीवकऋषभक मेदामहामेदाकाकोली क्षीरकाकोली मृद्गपर्णी माषपर्णी जीवन्ती मधुक। जीवनीय (अष्टवर्ग की 6 औषध), **ii) बृंहणीय:** (सुश्रुत - काकोल्यादी गण से समान) - क्षिरीणी..... अश्वगंधा, श्वेतबला, पितबला है।

iii) लेखनीय: मुस्तकुष्ठहरिद्रादारूहरिद्रावचा अतिविषाकटुरोहिणीचित्रक चिरबिल्व हैमवत्य, **iv) भेदनीय:** सुवहा.... **v) सन्धानीय:** मधुक मधुपर्णी.....

vi) दीपनीय: पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकश्रृंगबेर अम्लवेतसमरिचाजमोदा भल्लातकस्थिहिंगुनिर्यास. (पाचनीय महाकषाय वर्णन नही)

2) बल्यादि वर्ग: 4 - i) बल्य: (बला, अतिबला है) ऐंद्री....

ii) वर्ण्य: चन्दनतुंगपद्मकोशीरमधुक मंजिष्ठासारिवा पयस्यासितालता (हरिद्रा नही), **iii) कण्ठय:** सारीवा, इक्षूमूल,कण्टकारी ..

vi) हृद्य: आम्राम्रातक लिकुचकरमर्दवृक्षाम्ल अम्लवेतसकुवल बदर दाडिम मातुलुंगानि, (अर्जुन नहीं).

3) तृप्तिघ्नादि: 6 - i) तृप्तिघ्न: नागर...सुंठ,चित्रक,

ii) अर्शोघ्न: कुटज, बिल्व,चित्रक...(सुरण,भल्लातक नहीं),

iii) कुष्ठघ्न: खदिर... आवला, हल्दी है। (No बाकुची),

iv) कण्डूघ्न: चंदन..,**v) क्रिमिघ्न:**अक्षीव,विडंग, **vi) विषघ्न:** शिरीष है।

4) स्तन्यजननदि: 4 - i) स्तन्यजनन:

(विरणशालि षष्टिकेक्षुवालिका दर्भ कुशकाशगुन्द्रा इत्कट तृणमूल),

ii) **स्तन्यशोधन:** पाठा महौषध...

iii) **शुक्रजनन:** (जीवक ऋषभक काकोलीक्षीरकाकोली मृद्गपर्णीमाषपर्णी मेदा वृध्दरूहा जटिला कुलिंगा), iv) **शुक्रशोधन:** कुष्ठ, एला उशिर है।

5) स्नेहोपगादि वर्ग: 7 - i) स्नेहोपग: मृद्विका... ii) **स्वेदोपग: शोभाञ्जन...**

iii) **वमनोपग:** मधु मधुक कोविदार कर्बुदार नीप द्राक्षा काश्मर्य, विदुल बिम्बी शणपुष्पी सदापुष्पी प्रत्यकपुष्पा...

iv) **विरेचनोपग:**

द्राक्षाकाश्मर्य परूषकाभयामलक बिभीतक कुवल बदर कर्कन्धु पीलु...

v) आस्थापनोपग: त्रिवृत्त बिल्व--(पाटला नहीं),

vi) **अनुवासनोपग:** रास्ना सुरदारू....

vii) **शिरोविरेचनोपग:** जोतिष्मति---अपामार्ग है।

6) पुरीषसंग्रहणीय: 5 - i) पुरीषसंग्रहणीय: प्रियंगु, अनन्ता...

ii) **पुरीषविरजनीय (भृष्टमृद):** जम्बू शल्लकी...

iii) मूत्रसंग्रहणीय: जम्ब्वाम्र प्लक्षवटक...iv)मूत्रविरजनीय:पद्योत्पल कमल...

v) मूत्रविरेचनीय: वृक्षादनीश्वदंष्ट्रा..(इक्षु नहीं)...

7) छर्दिनिग्रहणादि: 3 - i) छर्दिनिग्रहण: जम्ब्वाम्रपल्लव, लाजा...

ii) तृष्णानिग्रहण: नागर धन्वयास... iii) **हिक्कानिग्रहण:** शटीपुष्करमुल...

8) कासहरादि: 5 - i)कासहर: द्राक्षा अभया कण्टकरि है, वासा नही है..

ii) **श्वासहर:** शटी पूष्करमुल अम्लवेतस.....

iii) **शोथहर:** पाटला अग्निमंथ ..... दशमूल (पुनर्नवा नहीं)

iv) **ज्वरहर:** शर्करसु पाठा सारिवा मंजिष्ठा द्राक्षा,पीलु परूषकाभयामलक विभीतक (मुस्ता नहीं) (त्रिफला है।) (वाग्भट = शर्करा के जगह गुडूची)

v) **श्रमहर:** द्राक्षाखर्जुरप्रियालबदर, दाडिमफल्गु परूषकेक्षु यवषष्टिका..... (प्रतिदीन प्रयुक्त महाकषाय)

9) दाहप्रशमनादि: 5 - i) दाहप्रशमन: लाजा चन्दन...

ii) शीतप्रशमन: तगर अगरु... iii) **उदर्दप्रशमन:** तिन्दुक, प्रियाल... **अर्जुन**

iv) **अंगमर्दप्रशमन:** विदारीगन्धा... v) **शूलप्रशमन:** पिप्पली.... **गण्डिर.**

10) शोणितस्थापन: 5 - i) शोणितस्थापन: मधु...गैरिक

ii) वेदनास्थापन: शाल... **अशोक,**

iii) **संज्ञास्थापन:** हिंगु...जटामांसी, पलंकषा, अशोकरोहिणी,

iv)प्रजास्थापन:ऐन्द्री ब्राह्मी शतवीर्या सहस्त्रवीर्याऽमोघा ऽव्थाशिवाऽरिष्टावाट्यपुष्पी विष्वसेनकान्ता.

v) वय: स्थापन:

अमृताऽभयाधात्री मुक्ताश्वेता जीवन्तीअतिरसामण्डूपर्णीस्थिरा पुनर्नवा,

महाकषाय विशेष:

1) काकोली, क्षीरकाकोली - जीवनीय, बृंहणीय, शुक्रजनन, स्नेहोपग

2) काकोली - अंगमर्द प्रशमन, 3) तृणपंचमुल - स्तन्यजनन, मूत्रविरेचन

4) पंचपल्लव -मूत्रसंग्रहणीय,(पंचपल्लव -आम्र,जम्बु, कपित्थ, बीजपुरक, बिल्व)

5) अश्वगंधा - बल्य, बृंहणीय, 6) हरिद्रा - लेखनीय, कुष्ठघ्न, विषघ्न

7) मुक्ता - वय:स्थापन, 8) त्रिफला - ज्वरहर, विरेचनोपग
9) दारूहरिद्रा - लेखनीय, अर्शोघ्न, कण्डुघ्न, 10) मृत्तिका- छर्दिनिग्रहण
11) भृष्टमृत्तिका - पुरीषविरजनीय, 12) मृत्कपाल - शोणितस्थापन
13) आम्र - हृद्य, मूत्रसंग्रहणीय, आम्र पल्लव - छर्दिनिग्रहण, आम्रास्थि - पुरीषसंग्रहणीय, 14) भल्लातक - मूत्रसंग्रहणीय,कुष्ठघ्न,भल्लातकास्थि - दीपनीय
15) पंचक्षीरीवृक्ष - मूत्रसंग्रहणीय, 16) तामलकी - कास, श्वासहर
17) मधु - शोणितस्थापन, वमनोपग,
18) मोचरस - संधानीय, पुरीषसंग्रहणीय, वेदनास्थापन, शोणितस्थापन,
19) तगर - शीतप्रशमन,
20) अर्जुन - उदर्दप्रशमन, 21) शोथहर महाकषाय - दशमूल द्रव्ये.
(महाकषायमें पिप्पली 9 बार वर्णन, मधुक 11 बार वर्णन)

5) मात्राशितीय:

Topics: अग्निबल के आधार पर आहार मात्रा।
मात्रापूर्वक आहार, निरन्तरसेवनीय द्रव्य, स्वस्थवृत्त, अंजन, धूमपान, नस्य, दन्तधावन, जिव्हानिर्लेखन, गण्डूष, अभ्यंग, कर्णपूरणादि.
चरकसंहिता स्वस्थवृत्त वर्णित: a) मात्राशितीय, सद्वृत्त in b) इंद्रियोपक्रमणीय
1) आहारमात्रा: (आश्रित on) आहारमात्रा पुनरग्निबलापेक्षिणी। (च.सू. 5)
(चरक सुश्रुत - आहार प्रकार - 4
शारंगधर - 6 - भोज्य, भक्ष्य, चर्व्य, लेह्य, चोष्य, पेय.)
आहारमात्रा निर्धारण: अनुपहत्य प्रकृतिं जरां गच्छति
i) प्रकृति को अबाधा कर, ii) यथा समय पचने वाला.
प्रकृतिगुरूण्यपि मात्रामेवापेक्षन्ते।
द्रव्य लघु हो या गुरू मात्रा की अपेक्षा रखते है। (च.सू. 5/5) (च.सू. 5/6)
i) लघु - वायु, अग्नि प्रधान, अग्नि प्रदिप्त करने वाला और स्वल्प दोषकर है।,
ii) गुरू - पृथ्वी, सोम, अति दोष उत्पन्न करने वाला और व्यायाम करने वाले और दीप्तग्नि के लिए अल्पदोषकर.
इस लिए आहार की मात्रा: अग्निबल से।
आहारमात्रा की द्रव्यसापेक्षता: (च. सू. 5/7)
i) त्रिभागसौहित्यम् अर्धसौहित्यं वा गुरूणामुपदिश्यते। (गुरू द्रव्यों को 3/4 और 1/2 भाग लें), लघुनामपि च नातिसौहित्यम अग्नेर्युक्त्यर्थम्।
(लघु की अतिसौहित्य जठराग्नि को ठीक नहीं रखते) लघु - नातितृप्तता.

आहारमात्रा:	चक्रपाणी	कौटिल्य
अन्न	1 कुडव	1 प्रस्थ
सूप	1 पल	1 कुडव
मांस	2 पल	–
घृततैल	1 पल	1/4 कुडव
लवण	1/2 पल	1/6 कुडव

गुण	महाभूत	अग्नि	दोष	मात्रा	उदा.
लघु	वायु,अग्नि	अग्नि सन्धुक्षण	अल्प	नातिसौहित्यम् नातितृप्त	शालि षाष्टिक, मुद्ग
गुरू	पृथ्वी,सोम	न अग्निसंधुक्षण	अधिक	3/4&1/2	पिष्टेक्षु क्षीरविकृति

मात्रा के अनुसार आहार से लाभ: प्रकृतिं बलवर्ण सुखायूषा
(अन्य संदर्भ च. सु. 24 / 4 - विशुध्द रूधिर - बलवर्ण सुखायूषां, युक्तनिद्रा / परानिद्रा – देहसुखायूषाम।)
2) न जातु भुक्तवान्: गुरू पिष्टमय तस्मात् तण्डुलान् पृथुकानपि।
3) न अभ्यासे: वल्लुर, शुष्कशाक, शालूक, बिसानि च।
न शीलयेत: कूर्चिका, किलाट, शौकर, गव्यमाहिषे।
मत्स्य, दधि, माष, **यवकश्च न शीलयेत्।।**
4) निरन्तर सेवनीय: षष्टिक शालि मुद्गांश्च सैन्धवामलके यवान।
आन्तरीक्षं पय सर्पि जागंल मधु चाभ्यसेत।।

5) दिनचर्या क्रम:

चरक	सुश्रुत	वाग्भट
i) अंजन	दन्तधावन	ब्राह्ममुहूर्त उत्तिष्ठते
ii) धूमपान	जिव्हानिर्लेखन	शौच
iii) नस्य(अणुतैल)	मुख प्रक्षालन	दन्तधावन
iv) दन्तधावन	नेत्रधावन	अंजन
v) जिव्हानिर्लेखन	ताम्बुलसेवन	नस्य
vi) ताम्बुल सेवन	शिरोऽभ्यंग	गण्डुष
vii) गण्डुष	चक्रतैल	धूम
viii) मूर्ध्नि तैल	केशप्रसाधनी	ताम्बुल सेवन
ix) कर्णपूरण	कर्णपूरण	अभ्यंग
x) अभ्यंग	अभ्यंग	व्यायाम
xi) उबटन	व्यायाम	उबटन
xii) स्नान	उबटन	स्नान
	उद्घर्षण	
	उत्सादन	
	स्नान	

Common in all: दंतधावन, अभ्यंग, उबटन, स्नान, ताम्बुल सेवन.
चरक + सुश्रुत: जिव्हानिर्लेखण कर्णपूरण; **सुश्रुत + वाग्भट:** व्यायाम; **चरक + वाग्भट:** गण्डुष
6) अंजन वर्णन:
i) सौवीरमंजनं नित्यम् हितम् अक्ष्णो: .....।
ii) पंचरात्रेऽष्टरात्रे वा स्त्रावणार्थे रसांजनम्, iii) स्त्राव्यं निशायां तु.....। (रसांजन (शोधनांजन)रात्रि), iv) विशेषाच्छ्लेष्मतो भयम्। तत: श्लेष्महरं कर्म हितं दृष्टे: प्रसादनम्, (कफनाशक कर्म नेत्रदृष्टि को निर्मल बनाते हैं।)
तीक्ष्ण अंजन प्रयोग दिन में निषेध
अंजन औरआश्च्योतन: दृष्टिर्निशकुला भाति निर्मले नभसीन्दुवत्।(च.सु.)
अंजन शलाका: (चरक - 8 अंगुल?), सुश्रुत -12 अंगुल, मुकुलाकृतिमुख, कलाय परिमण्डल,तनुमध्ये,सुकृत,साधुनिग्रह,वाग्भट -10अंगुल,मुकुलानन, तनुर्मध्ये.
[अंजन: अ. सं. - i) सौवीरांजन नित्य प्रयोग, ii) रसांजन, प्रयोग 7न
भा.प्र.: रसांजन - दारूहरिद्रा क्वाथ घनसत्व + अजाक्षीर
अंजन प्रकार: रा.नि. - 3 (कालांजन, पुष्पांजन, रसांजन)
अंजन दोष - 9. अंजनार्थ यशद शलाका उत्तम.]
7) धूमवर्तिका: यवसन्निभाम् अंगुष्ठसंमितां, 8 अंगुल, पिबेतप्रायोगिकी सुखाम्।
(सुश्रुत: 12 अंगुल - मटर सदृश छिद्र, वाग्भट: त्रिकोश,कोलस्थि अग्रभाग वाग्भट 12 अंगुल)
8) धूमपान:
स्नैहिक धूमवर्ति: i) चरक - वसाघृतादि मधुरवर्ग, ii) सुश्रुत - स्नेहफलसार मधुच्छिष्टादि, iii)) वाग्भट - (स्निग्ध) अगुरू, गुग्गुलादि
वैरेचनिक वर्ति: i) चरक - श्वेता(अपराजिता), ज्योतिष्मति आदि हरताल मनशिला ii) सुश्रुत - शिरोविरेचन द्रव्य, iii) वाग्भट - तीक्ष्णधूमद्रव्य
9) धूमपान लाभ: चरक - वातकफज, उर्ध्वजत्रुगत रोग।
10) धूमपान काल:

धूमपान	चरक	सुश्रुत – 12	वाग्भट
वैरेचनीक:	(3 - 4) बार	वैरेचनीक: 3	तीक्ष्ण: (3 - 4) बार
स्नेहीक:	1 बार (9आपान)	स्नेहीक: 5	स्निग्ध: 1 बार
प्रायोगीक:	2 बार (18आपान)	प्रायोगीक: 4	मध्यम: 2 बार

8 प्रायोगिक - अंजन, निद्रा, दातुन, स्नान, भोजन, वमन, नावन, क्षुत्वा.
i) प्रायोगिक: 2 times (9 x 2 = 18 आपान) व्दिकाल
ii) स्नैहिक -1 बार स्नैहिके त्वेक (9 आपान), iii) वैरेचनिक – 3 - 4

रोगास्तस्य तु पेया: स्याद आपानस्त्रिस्त्रयस्त्रय:। 1 काल - 9 आपान (कश)
सुश्रुत: वैरेचनिक - 3 काल, स्नेहिक - 5 काल, प्रायोगिक - 4 काल, कूल - 12 काल.....(सुश्रुत),
वाग्भट: स्निग्ध धूमपान - 1 बार में त्रिपर्यय, मध्य धूमपान - 2 बार, तीक्ष्ण धूमपान - 3 - 4 बार (वाग्भट),
धूमपान उपद्रव चिकित्सा: शीतं तु रक्तपित्ते, श्लेष्मपित्ते विरूक्षणम्

11) धूमपान भेद: भेद: चरक - 3 (वैरेचनीक,स्नेहीक,प्रायोगीक), सुश्रुत - 5 (वैरेचनीक, स्नेहीक, प्रायोगीक, कासघ्न, वामक), वाग्भट - 3 (स्निग्ध - वात विकार; मध्यम - वातकफ: तीक्ष्ण - कफ), शारंगधर - 6 (सुश्रुतोक्त 5 + व्रणधूपन)

12) धूमनेत्र परिमाण:

धूमनेत्र:	चरक	सुश्रुत	वाग्भट		शारंगधर
वैरेचनीक	24	24	तीक्ष्ण	24	24
स्नेहीक	32	32	स्निग्ध(मृदु)	32	32
प्रायोगीक	36	48	शमन(मध्यम)	40	40
कासघ्न	–	16		–	16
वामक	–	16		–	10
व्रणधूपन	–	8		–	10

13) सम्यक् धूमपान: i) लघुता (हृत्,कण्ठ,इंद्रिय, शिर), ii) शमन (दोष)

14) अकाल में धूमपान: बाधिर्य, आन्ध्य, मूकत्व, रक्तपित्त.

15) अविधि धूमपान उपद्रव चिकित्सा: i)वातपित्त रोग: सर्पिपान,नावन अंजन,तर्पण, ii) कफपित्त रोग: रूक्षण चिकित्सा, iii) रक्तपित्त रोग: शीतं.

16) धूमपान निषेध:
चरक- मद्य, दुग्ध, स्नेह,माक्षिक,पान पश्चात, शंखक, तालुशोष,तिमिर, रोहिण्यां, मेहे, मदात्यय,(सुश्रुत -बाल, वृध्द,शारंगधर - वर्ज्य -12 से 80 वर्ष छोडकर.)

17) धूमपान विधि: शिरोघ्राणाक्षिसंश्रये घ्राणेन्
चरक - (शिर, नासा, नेत्र) विकार में नासिका से, कण्ठ विकार में मुख से. (सुश्रुत - धूमपान प्रथम मुख से लें पश्चात नासिका से लें: मुख से बाहर निकालें। प्रायोगिक, वैरेचनिक - नासिका से, स्नेहिक - मुख, नासिका से कासघ्न व वामक - मुख से (सुश्रुत),
वाग्भट कासघ्न धूमपान - शरावसम्पुट की सहायता से.)

18) चरक: सम्यक्योग (धूमपान): लघुता, कफ तनुता (चरक) रोगशान्ति (सुश्रुत)
अयोग (धूमपान): अविशुध्द स्वर,सकफ कण्ठ, स्तिमित मस्तिष्क (च),
अतियोग (धूमपान): चरक - शुष्यते (तालु, मूर्धा, कण्ठ), तप्यते, स्त्रवते, भ्रम, मूर्च्छा, इन्द्रियाण्युमतपयन्ते.

19) नस्य वर्णन: i) प्रावट, शरद, वसन्त में अणुतैल दिन में ३ बार,
ii) अणुतैल निर्माण: पर्याय - नावनिक तैल (च. चि. 3 / 255)
विपाचयेच्छतगुणे, माहेन्द्र (वर्षा) जल (तैल 1 भाग, जल 100 भाग), तैलाद्दशगुणं शेषं (10 भाग शेष), दशकृत्वो विपाचयेत्, दशमे पाके (10 भाग तैल + 10 भाग पय:), छागलं (बकरी) पय: (10 भाग), मात्रा - 1/2 पल (2 तोला), त्र्यहात्त्रहाच्च (3 - 3 दिन पर अर्थात प्रति तिसरे दिन, 1 सप्ताह के लिए) सप्ताहमे नावन के लिए। अणुतेल त्रिदोषघ्न है।

20) दन्तधावन: (सु.वा.) - 12 अंगुल,
दिन में २ बार,कषाय कटु, तिक्त रसात्मक
लाभ - गंध, वैरस्य, मल और अरूचि हर (चरक)
वृक्ष - करंज, करवीर, अर्क, मालती, अर्जुन व विजयसार... चरक
(खैर - स्वर्ण वर्ण, आम्र - वीर्य वर्धक, कदम्ब - बुध्दि वर्धक...हारित)
(सुश्रुत कनिष्ठिका सदृश मोटी, मधुर- मधुक, तिक्त - निम्ब, कषाय - खदिर, कटु - करंज....सुश्रुत,) (अ. सं. कनीनिक सदृश मोटी, अर्क,ककुभ (अर्जुन) आदि...अ.सं.: 12 अंगुल; कनिनीक अग्र; समस्थौल्य)
मौलसरीवृक्ष दातौन परम हितकर (Or 12 बार गण्डुष,दन्तकाष्ठ केअभाव में)
(दातौन, चूर्ण, मंजन विधान .....सुश्रुत.)

21) जिव्हा निर्लेखन: i) चरक - 10 अंगुल, अतीक्ष्ण, अऋजु

22) ताम्बुल सेवन: (अ.सं.) सेवन काल - 3 बार (सोकर उठने पर; भोजन पश्चात; वमन पश्चात) निषेध - पित्तविकार, विषरोग, रक्तपित्त.

23) गण्डूष वर्णन: a) कवल-संचारी, b) गण्डूष - अंसचारी..(सभी आचार्य)
तैल गण्डूष धारण लाभ, a) न च दन्ता: क्षयम, दृढमूला. ..... (चरक)
b) गण्डूष - 4 भेद ....(सु. और वा.), (स्निग्ध, शमन, शोधन, रोपण)
c) धारण अवधि कवल और गण्डुष - 4 वर्ष के बाद....(शारंगधर)

24) i) मूर्ध्निंतैल: शिर: शूल, खालित्य, पालित्य, में लाभकर। (चरक)
मूर्धतैलधारण लाभ - इंद्रीय प्रसन्न,सुत्वक्, आनन, निद्रालाभ व सुख (वाग्भट प्रकार - 4 अभ्यंग, सेक, पिचु, शिरोबस्ति, उत्तरोत्तर श्रैष्ठ है।)
ii) कर्णपूरण: न कर्णरोगा; वातोत्था न मन्याहनुग्रह नोच्चै: श्रुति:, न बाधिर्यं
iii) स्नान लाभ: वृष्यं, आयुष्यम, शरीर बलसंधानम, स्नानमोजस्करं परम्। (वाग्भट – दीपनं, सुश्रुत – तन्द्रा, पापोपशमनम्।),
iv) तैलाभ्यंग: दृढक्लेशसहो प्रशान्तमारूत आबाद, स्पर्शनं च त्वगाश्रितम त्वच्यश्च परम्।,
v) पादाभ्यंग - दृष्टीप्रसाधंलभते, न च स्यादगृध्रसीवत्,
vi) पादत्रधारण: चक्षुष्यं, वृष्यं,
vii) क्षौरकर्म: पौष्टिकं वृष्य, आयुष्यं, शुचि, रूप,
viii) छत्रधारण: गुप्त्यावरण, शंकरं,घर्मानिलरजोऽम्बुघ्नम्।बल्य,
ix) दण्डधारण: भयघ्न. स्खलतः सम्प्रतिष्ठान
स्वच्छवस्त्रधारण – काम्यं, यश, आयुष्य, अलक्ष्मीघ्न, श्रीमदत्परिषदं शस्तं.
रत्न आभूषणधारण– धन्यं, मंगल्य आयुष्यं श्रीमदव्यसनसुदनम्।
मलमार्गशुध्दी–मेध्य, पवित्र आयुष्य अलक्ष्मी व कलिनाशनम्।
छत्रधारणम्–गुप्त्यावरणशङ्रम्। ईते प्रशमनं। (ईतिभेद 6 सुश्रुत)

कर्म	फल	वृष्य	आयुष्य
कर्णपूरण:	मन्याहनुसंग्रह		
स्नान:	ओजस्करं परं	✓	✓
	शरीरबलसंधानम् तन्द्रापापोपशमन		
गंधमाल्यधारण:	पुष्टी बलप्रदम,अलक्ष्मीघ्न	✓	✓
क्षौरकर्म:	पौष्टीक	✓	✓
तैलाभ्यंग:	दृढक्लेशसहो,		
पादाभ्यंग:	दृष्टिप्रसादं, न गृध्रसी(चक्षुष्य)		
	न सिरास्नायुसंकोच:		
पादत्रधारण:	चक्षुष्य	✓	
शौचाधान:	मेध्यं अलक्ष्मीकलिहर		✓
	(अलक्ष्मीघ्न = गंधमालाधारण)		
छत्रधारण:	बल्यं		
दण्डधारण:	भयघ्नं		✓

(पादप्रक्षालन = चक्षुप्रसादन)
नगरी नगस्येव रथस्येव रथी यथा। च. सु. 5/103
(क्षारपाणी क्षौरकर्म– 3 मास में 1 बार)

विषय	चरक	सुश्रुत	वाग्भट
अंजन शलाका	8	12	10
धूमवर्ती	8	12	12
जिव्हा निर्लेखन	10	-	10
दन्तधावनकाष्ठ	-	12	12

6) तस्याशितीय

Topics : ऋतुचर्या, ओकसात्म्य व हंसोदक वर्णन

ऋतू पर्याय नाम: शिशिर - हिम प्रावृट - तापात्यय

वसंत - कुसुम, शीतात्यय ग्रीष्म = निदाघ

वर्षा - घर्मान्ते, मेघावनधाम्बरी शरद - घनात्यय, मेघान्ते, अगस्त

हेमन्त - तुषार, हिमागम: चक्रपाणी - माधव - वैशाख

1) चरक - क्रम i) शिशिर, वसंत, ग्रीष्म - उत्तरायन - आदान काल

ii) वर्षा, शरद, हेमंत - दक्षिणायन - विसर्गकाल

सुश्रुत - रसोत्पत्ती नुसार क्रम - शिशिर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत.

दोषोंका संचयादी (शोधनोपयोगी) क्रम - हेमंत, वसंत, ग्रीष्म, प्रावृट, वर्षा, शरद

ऋतू	मास	स्निग्ध/रूक्ष	बल
शिशिर	माघ,फाल्गुण	अल्प रूक्षता	अल्प दौर्बल्य
वसंत	चैत्र, वैशाख	मध्य रूक्षता	मध्य दौर्बल्य
ग्रिष्म	जेष्ठ, आषाढ	तीव्र रूक्षता	तीव्र दौर्बल्य
वर्षा	श्रावण, भाद्रपद	अल्प स्निग्धता	अल्प बलवृध्दी
शरद	अश्विन, कार्तिक	मध्य स्निग्धता	मध्य बलवृध्दी
हेमंत	मार्गशिष, पौष	श्रेष्ठ स्निग्धता	तीव्र बलवृध्दी

वाग्भट - शिशिर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत.

सुश्रुत शोधनपयोगी क्रम:

ऋतू	मास	दिन	राशी (शारंगधर)
हेमंत	पौष, माघ	प्रत्युष	धनु - मकर
वसंत	फाल्गुन, चैत्र	प्रात:	कुम्भ - मीन
ग्रीष्म	वैशाख, जेष्ठ	मध्यान्ह	मेष - वृषभ
प्रावृट	आषाढ, श्रावण	अपरान्ह	मिथुन - कर्क
वर्षा	भाद्रपद, अश्विन	प्रदोष (पूर्वरात्री)	सिंह - कन्या
शरद	कार्तिक, मार्गशिष	मध्यरात्री	तुला - वृश्चिक

ऋतू	सुश्रुत	रस	हरितकी	अग्रेजी मास
हेमंत	सह सहस्य	मधुर	शुण्ठी	Dec., Jan.
वर्षा	नभ नभस्य	अम्ल	सैंधव	Aug., Sep.
शरद	ईष उर्ज्य	लवण	शर्करा	Oct., Nov.
ग्रिष्म	शुचि शुक्र	कटू	गुड	June, July
शिशिर	तप: तपस्य	तिक्त	पिप्पली	Feb., March
वसंत	मधु माधव	कषाय	मधू	April, May

* संत्वसर, षडंग, कालर्तुरसदोषदेहबलनिर्वृत्ति ..... (च.)

(वैदिक काल: शरद ऋतु से काल गणना,ज्योतिषशास्त्र : वैशाख मास से)

2) हेमन्त ऋतु: i) वायु रूध्द, रसं हिनस्, ii) उष्ण, स्निग्ध, गुरू, स्निग्धाम्ललवण iii) मूर्ध्नि तैल, **जेन्ताकस्वेदन**,अगुरू लेप, iv) प्रकामं च निषेवेत मैथुनं शिशिरागमे (सामर्थ्यानुसार), v) वर्ज - वातलानि, लघुनि, प्रमिताहार, उदमन्थ (सत्तु)

3) शिशिर ऋतु : i) हेमन्तशिशिरौ तुल्यौ, निवातमुष्णं, गृहमाश्रयेत।

ii) कटू तिक्त कषाय, iii) वर्ज - वातलानि, लघुनि, शीतान्नपान,

अग्निकर्म - शरद, ग्रीष्म के अतिरिक्त (सु. सू. 12)

क्षारकर्म - शीतोष्णवर्षा दुर्दिने प्रवातेषु ..... (वाग्भट)

आदावन्ते च दोर्बल्यं विसर्गादानयोनृणाम्।

मध्ये मध्यबलम त्वन्ते श्रेष्ठमग्रे च निर्दिशेत ।। च. सु. 6 / 8

(अग्रे - शिशिर) (हेमन्त)

4) वसन्त ऋतु : i) निचित: श्लेष्म, कायग्निंबाधते, वमनादीनि कारयेत।,

ii)वर्ज्य - गुरू,स्निग्ध,अम्लमधुर,दिवास्वप्न,

iii) आहार - कवल, **सीधु, माध्वीक**

5) ग्रीष्म ऋतु: i) स्वादु, शीतं, द्रवं,

ii) वर्ज्य - मद्यमल्प, न वा, सुबहूदकम्, व्यायाम, लवणाम्ल, कटु,

iii) दिवा शीतगृहो निद्रां, निशि चन्द्रांशु शीतलै मैथुनाद विरतो नर:

6) वर्षा ऋतु : i) आदानदुर्बले देहे, पक्ता भवति दुर्बल:, भूबाष्पान्मेघनिस्यन्द पाकादम्लाज्जलस्य, वर्षास्वग्निबले क्षीणे, कुप्यन्ति पवनादय:,

ii) वर्ज्य - **उदमन्थ, दिवास्वप्न,** नदीजल, व्यायाम, आतप,

iii) आहार - क्षौद्र (मधु), अम्ललवणस्नेह, अग्निसंरक्षणवता माध्वीकारिष्ट, माहेन्द्र, तप्तशीत कौप्य,सारस जल, भजेदक्लेदि (अक्लेदि स्थान में निवास)

सभी अजीर्ण से घातक - मधू सेवन अजीर्ण

(अजीर्ण दीपन चिकित्सा - उष्णमधू - विष समान) इसलिए घातक.

7) शरद : i) पित्तं प्राय: शरद कुप्यति, मधुर लघु शीत तिक्त,सर्पि:पान, रक्तमोक्षण, ii) वर्ज्य: आतप, दिवास्वप्न, प्राग्वात, क्षार, दधि,

iii) **हंसोदक:** चरक व अष्टांग हृदय (अष्टांग संग्रह में वर्णन नहीं) दिवासूर्यसन्तप्तं निशि चन्द्रांशु शीतलम्, निर्दोषमगस्त्येन,अगस्त्य नक्षत्र के कारण निर्विष

उपयोग - स्नान, पान, अवगाहे.

8) सात्म्य वर्णन : उपशेते यदौचित्याद ओक: सात्म्यं तदुच्यते।

प्रकार: 4 (ऋतु, ओक, देश, रोग) सात्म्य

3 (प्रवर, मध्य, अवर)

Common:

मन्थ - ग्रीष्म में पथ्य	उद्मन्थ वर्ज्य - हेमंत, वर्षा
सीधु - हेमंत, वसंत	माध्वीक - वर्षा, वसंत
जांगल रस - वर्षा, ग्रीष्म	मधु, यूष - वर्षा
नये धान्य - हेमंत में	पुरान - वर्षा में

ग्रिष्म व वर्षा - व्यवाय व व्यायाम वर्ज्य

काल के व्दादश प्रकार:

सुश्रुत	वाग्भट
(लघु अक्षर उच्चारण में समय - 1 अक्षिनिमेष)	(नेत्रपलक के बन्द करने में लगा समय - 1 मात्रा)
15 अक्षिनिमेष - 1 काष्ठा	15 मात्रा - 1 काष्ठा
30 काष्ठा - 1 कला	30 काष्ठा - 1 कला
20 1/10 कला - 1 मुहूर्त	20 1/10 कला - 1 नाडिका
30 मुहूर्त - 1 दिन - रात	2 नाडिका - 1 मुहूर्त
15 दिन - रात - 1 पक्ष	3 $^3/_4$ मुहूर्त - 1 याम (प्रहर)
2 पक्ष - 1 मास	4 याम - 1 दिन
12 मास - 1 संवत्सर	4 याम - 1 रात
2 मास - 1 ऋतु	15 दिन रात - 1 पक्ष
3 ऋतु - 1 अयन	2 पक्ष - 1 मास
2 अयन - 1 वर्ष	2 मास - 1 ऋतु
5 वर्ष - 1 युग	3 ऋतु - 1 अयन
	2 अयन - 1 वर्ष

सर्वदोष प्रकोपक ऋतु - वर्षा, सर्वदोष शामक ऋतु - शरद

अंशुदक वर्णन ऋतु (भा.प्र.),

ऋतुसंधि - 14 दिन–प्रथम ऋतू के अन्त के 7 दिन व अगले ऋतू के शुरूवाती के 7 दिन..... (अ. सं.)

इसके अपालन से असात्म्यज रोग उत्पन्न होते है।

(यमदंष्ट्रा -16 दिन (शारंगधर) कार्तिक के 8 दिन-मार्गशीर्ष के 8 दिन)

7) नवेगान्धारणीय

Topics : i) अधारणीय, धारणीय वेग, ii) व्यायाम, प्रकृति, आहार,

iii) दोषनिर्हरण काल, iv) रसायन, वृष्य द्रव्य सेवन.

v)पादांशिक क्रम vi) दधि सेवन नियम

1) अधारणीय वेग : चरक – 13 - मूत्र, पुरीष, शुक्र, वायु, छर्दि, क्षवथु, उद्गार, जृम्भा, क्षुत्, पिपासा, बाष्प (अश्रु), निद्रा, श्रमेण निश्वास,
b) वाग्भट = 13 (उद्गार की गणना नही की, कास वर्णन)

वेग	लक्षणे	चिकित्सा
1) मूत्र	विनाम,अंगभंग,अश्मरी शिरोरूजा	अवपीडक घृत, त्रिविध बस्ति
2) पुरीष	शिर: शूल, पिण्डिकोव्देष्टन, परिकर्तन,उर्ध्ववात,पुरीष मुख से आना, प्रतिश्याय, हृदयोपरोध	वर्ति, बस्तिकर्म, प्रमाथि अन्नपान
3) शुक्र	अंगमर्द, हृदिव्यथा, विबध्द मूत्र,शुक्राश्मरी,क्षवथु, ज्वर,अंगभंग,षण्डता,वृध्दिरोग	अभ्यंग, अवगाह, मदिरा, चरणायुधा, दुग्धपान, निरूह
4) अपान	संग, आध्मान, क्लम, हृदयोपरोध,शिरोरूजा, प्रतिश्याय,मुख से मल आना, उदावर्त,गुल्म,दृष्टिवध,अग्निवध	शस्तं वातानुलोमनं
5) छर्दि	पाण्डु,ज्वर,कास,अक्षिरोग	रूक्ष (छर्दन,धूम,लंघन,अन्नपान, रक्तमोक्षण,व्यायाम, विरेचन) क्षारलवणतैल अभ्यंग गण्डुष
6) क्षवथु	मन्यास्तंम्भ,इन्द्रिय दौर्बल्यं, शिर:शुल, अर्दित, अर्धावभेदक, क्षवथु	घृतं उत्तरभर्क्ति, नावन, तीक्ष्णांजन, अवपीड प्रधमन
7) उद्गार	विबन्ध हृदयोरसो:, कम्प, वातज घोर व्याधी, आध्मान	हिक्कायास्तुल्यमौषधम्
8) जृम्भा	विनाम,आक्षेप,कम्प, जृम्भा,लक्षणे क्षवथु समान	सर्वं वातघ्नमौषध
9) क्षुधा	वैवर्ण्य दृष्टिदौर्बल्य, अंगभंग, शुल	स्निग्ध उष्ण लघुभोजन
10) पिपासा	बाधिर्य,हृदिव्यथा,मोह,भ्रम	शीत तर्पण,मन्थ,यवागु
11) बाष्प (अश्रु)	प्रतिश्याय,हृद्रोग,पीनस, गुल्म,मन्यास्तंम्भ	स्वप्न, मद्य, प्रियकथा
12) निद्रा	जृम्भा,शिरोगौरव,अक्षिगौरव	स्वप्न,संवाहन,क्षीरपान
13) श्रमजन्य निश्वास	गुल्म, हृद्रोग, संमोह:	विश्राम, वातघ्न क्रिया,मांस रस भोजन
14) कास	अरूचि, हृद्विकार, शोष. (वाग्भट)	

Common: 1) i) हृदयोपरोध - पुरीष, ii) हृदरोग - बाष्प, श्रमजन्य निश्वास, iii) हृदव्यथा - शुक्र, पिपासा, iv) हृदविबंध - उद्गार, v) कम्प - उद्गार, जृम्भा.

2) विनाम - मूत्र, जृम्भा 3) भ्रम - बाष्प, क्षुधा, तृष्णा
4) अंगमर्द - निद्रा, क्षुधा, शुक्र अंगभंग - मूत्र
5) शिर:शूल - मूत्र, पुरीष, क्षवथु (छिंक)
6) अरूचि - बाष्प, उद्गार, क्षवथु, छर्दि
7) गुल्म - श्रम:निश्वास, बाष्प (अश्रु)8) मन्यास्तंम्भ - क्षवथु, बाष्प (अश्रु)
9) अश्मरी - शुक्र, मूत्र 10) प्रतिश्याय - अश्रु, पुरीष

2) धारणीय वेग: 3 (मनो, वाक्, काय)
शरीर धारणीय वेग - परपीडया, स्त्रीभोग, स्तेय, हिंसा.
वाक – मिथ्याभाषण, कठोरवचन.
मन –भय, क्रोध, अभिमान, अतिकाम वासना, अभिध्या, लोभ, ईर्ष्या.
वेगधारणसे लाभ - 3 (धर्मार्थकाम)

3) व्यायाम: a) परिभाषा - स्थैर्य, बलवर्धिनी, मात्रया तां समाचरेत्,
b) लाभ - लाघवं, कर्मसामर्थ्य, स्थैर्य, दु:ख सहिष्णुता, दोषक्षयो, अग्निवृध्दि
c) लक्षण - स्वेदागम:, श्वासवृध्दि, लाघवं, हृदयाद्युपरोध
सुश्रुत - i) शरीरायास जनकं कर्म व्यायाम् संज्ञितम्।
ii) मांसधातु स्थिरता। (व्यायाम सीमा – अर्धबल..(सुश्रुत), अर्धशक्ति...(वाग्भट), थकावट आनेतक.....(चरक)

4) पादांशिक क्रम: चरक - 7 दिन का
चक्रपाणि - 1/4 भाग करते जाए, गंगाधर - 1/16 भाग करते जाए,
योगिन्द्रनाथ सेन - 10 दिन से पथ्य सेवन शुरू करे।
चक्रपाणि - 15 वे दिन हितकर आहार शुरू करे।
(वाग्भट अरूणदत्त - 21 दिन,
सुश्रुत - अहितकर छोडना - 1/4 क्रम से सु. चि. 24)
पादांशिक क्रम से लाभ: क्रमेणापचिता दोषा: क्रमेणोपचिता गुणा:।
सन्तो यान्त्यपुनर्भावत प्रकम्प्या भवन्ति च।।

शरीरप्रकृती वर्णन - दोषानुशयिता हयेषा देह प्रकृतिरूच्यते।
देहप्रकृती 4- वात, पित्त, कफ व सम
समप्रकृति - अनातूर; वात आदी प्रकृती - सदातूर होती है।
(प्रकृति के विरूध्द गुण वाले आहार सेवन हितकर है।)
i) समसर्वरस सात्म्यं समधातो: प्रशस्यते।
ii) मलवृध्दि - मलवृध्दि, गुरूतया मलक्षया - मलक्षय, लाघवम्,
iii) मलायन 9 - व्दे अध: + सप्तशिरसि(2 अधो + 7 शिरप्रदेश)

5) दोष निर्हरण काल:
i) माधवे प्रथमे मासि, वैशाख के पहले चैत्र में (कफ) – वमन,
ii) नभस्य प्रथमे पुन:। भाद्रपद के पहले श्रावण में (वात) बस्ति,
iii) सहस्य प्रथमे चैव; पौष के पहले अगहन में (पित्त) विरेचन.,
i) मनोविकाराक्ते ऽप्युक्ता सर्वे प्रज्ञापराधजा: ..... (7 / 52)
ii) आगन्तुकरोग प्रतिषेध = सदवृत्तस्यानुवर्तनम्।
iii) उत्पन्नरोग शमन और अनुत्पत्ति – आप्तोपदेश प्रज्ञानं

6) दधि सेवन: न नक्तं दधि भुञ्जीत न चाप्यघृतशर्करम्।
नामुद्गयूषं नाक्षौद्रं नोष्णं नामलकैर्विना।।
दधि + a) मुद्ग्युष-रक्तवात नाशक b) क्षौद्र-सुरस,अल्पदोष
c) आमलक-उष्णपित्तासृकदोष d) घृत - श्लेष्मलं मारूतं सुदनं
e) सक्कर - तृष्णादाह नाशक i) असम्यक सेवन से उत्पन्न रोग -ज्वरासृकृपित्त वीसर्प कुष्ठ पाण्डू,भ्रम, उग्र कामला.
(दधि प्रकार - 3 (सुश्रुत) i) मधुर, ii) अम्ल, iii) अत्याम्ल.)

8) इन्द्रियोपक्रमणीय

Topics: मन, इन्द्रिय पंचपंचक, अध्यात्मद्रव्यवर्णन, सद्वृत्तवर्णन.
(इंद्रिय निरूक्ति - इन्द्र शब्देन आत्मा उच्यते।) ..... (च. इ. 1/2)
1) पंचेंद्रिय - तत्र चक्षु: श्रोत्रं घ्राणं रसनं स्पर्शनम् इति पंचेंद्रियाणि।
पंचेंद्रियद्रव्य - खं वायुर्ज्योतिरापो भूरिति
पंचेंदियाधिष्ठानानि - अक्षिणी कर्णो नासिके जिव्हा त्वक् चेति।
पंचेंद्रियार्थ - शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा:।
पंचेंद्रियबुध्दय - चक्षु: बुध्दयादिका:, इन्द्रिय इंद्रियार्थ सत्वात्म सन्निकर्षजा: क्षणिक, निश्चयात्मक।
पंचेंन्द्रिय: श्रोत्र, स्पर्शन, चक्षु, रसन, घ्राण.
पंचेंन्द्रिय द्रव्य: ख, वायु, अग्नि, जल,भू (पृथ्वी).
पंचेंन्द्रिय अधिष्ठान: कर्ण, त्वक्, अक्षि, जिव्हा, नासिका.
पंचेंन्द्रिय अर्थ / विषय/गुण: शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध.
पंचेंन्द्रिय बुध्दि: श्रोत्रबुध्दि, स्पर्शनबुध्दि, चक्षुबुध्दि, रसनबुध्दि, घ्राणबुध्दि.
मन: अतीन्द्रिय,सत्वसंज्ञक,उभयात्मक, पर्याय चेतस,गुण 2 (अणुत्व, एकत्व)

2) अध्यात्म द्रव्य संग्रह: 4 (मन, मनोऽर्थ, बुध्दि, आत्मा)
शुभ अशुभ हेतू - प्रवृत्ती, निवृत्ती
3) अध्यात्मिक द्रव्य: 2(मन,आत्मा),आध्यात्मिक गुण: 6(मन, मनोऽर्थ)
अर्थ - 5 (चिन्त्य, विचार, उह्य, ध्येय, संकल्प)
कार्य - मनसस्तु चिन्त्यमर्थ:
4) हेतुचतुष्टय: हेतु - 4 (1- प्रकृति - समयोग)
(3 - विकृति - अति, हिन, मिथ्या, योग)
(इंद्रियो का ज्ञान - अनुमान प्रमाण से।
सर्वव्यापक इंद्रिय - स्पर्श इंद्रिय, सर्वप्रधान इंद्रिय - चक्षु (श्रेष्ठ इंद्रिय))
5) सद्वृत्त : i) लाभ - अर्थव्दय- आरोग्यं, इन्द्रियविजयम्, ii) वर्णन - व्दौ कालावुपस्पृशेत, (स्नान 2 बार), त्रि: पक्षस्य केशश्मश्रुलोमनखान (15 दिन में 3 बार, (5 दिन में 1 बार), iii) करणीय - चतुष्मथानां नमस्कर्ता,
करणीय - प्राक श्रमाद व्यायाम वर्जी स्यात।
अकरणीय - अशूचि रहने पर अभिचार चैत्य/देवता पुजा,अध्ययन नही करना।
संध्याकाल में भोजन, अध्ययन, मैथुन और निद्रा नही करना चाहिए।
iv) उपसंहार - ब्रह्मचर्यज्ञान दान मैत्रीकारूण्य हर्षोपेक्षा प्रशम परश्च.
6) आहार संबंधी सद्वृत्त: दधि, मधु, लवण, सक्तु, घृत छोडकर अन्य आहार का कुछ अंश शेष छोड दें। दधि रात्री में सेवन निषेध।
7) सत्तु: अकेले सेवन निषेध,अधिक मात्रा में एवं दिन में 2 बार सेवन न करे। भोजन के पश्चात, जल पीने पश्चात चबाकर सेवन न करे।

9) खुड्डाकचतुष्पाद

Topics: चिकित्सा चतुष्पाद, वैद्य वृत्ति, राजाह, प्राणाभिसर वैद्य, उत्तम वैद्य
भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्टयम्।,
गुणवत् कारण ज्ञेयं विकारव्युपशान्तये।।
विकारो धातुवैषम्यं, साम्यं, प्रकृतिः उच्यते।
सुखसंज्ञकमारोग्यं विकारो दुःखमेव च ।।
चिकित्सा प्रवृत्ति: प्रवृत्तिर्धातुसाम्यार्था चिकित्सेत्यभिधीयते। संदर्भ.
1) भिषक: चरक - श्रृतेपर्यवदातत्वम बहुशो दुष्टकर्मता। दाक्ष्यं शौचं इति ज्ञेयं गुणक। (वाग्भट - दक्ष, तीर्थात्तिशास्त्रार्थो, दृष्टकर्मा, शुचि,
सुश्रुत - स्वयंकृती, लघुहस्त, शूर, सज्रोपस्करभेषज)
2) औषध: चरक -बहुता तत्र योगत्वं अनेकविध कल्पना।
सम्पच्चेति चतुष्कोयं द्रव्यानां गुणोच्यते।
(वाग्भट - बहुकल्पं, बहुगुणं, सम्पन्नं, योग्यमौषधम्।
सुश्रुत - दोष दूर करनेवाली, अविकारि, समीक्ष्यदत्तं काले।)
3) उपस्थाता: चरक - उपचारज्ञता (सेवाज्ञान), दक्ष, अनुराग, शुचि
(वाग्भट - अनुरक्त, शुचि, दक्ष, बुध्दिमान
सुश्रुत - अजुगुप्सू बलवान, आदेश मानने वाला।)
4) रोगी: चरक - स्मृतिवान, निर्देशकारिता, अभीरूता, ज्ञापकता
(वाग्भट - आढ्य, भिषग्वश्य, ज्ञापक, सत्ववान्
सुश्रुत - आयुष्यमान, द्रव्यवान, आस्तिक, स्मृतिनिर्देशकारित्वम
अभीहृत्वमताभिज। ज्ञापनत्वं च रोगाणाम आतुरस्य गुणास्मृत)
(भेल: i) उपस्थाता को प्रतिभावी कहा है। ii) वैद्य को अंतिम स्थान दीया है।
iii) धनवान रोगी का असाध्य रोग भी साध्य होता है।)
5) वैद्य प्रधानता: कारणं षोडशगुणं सिध्दो पादचतुष्टयम्।
विज्ञाता, शासिता, योक्ता
6) प्राणाभिसर वैद्य: तस्माच्छास्त्रेऽर्थेविज्ञाने प्रवृतौ कर्मदर्शने।
7) राजार्ह वैद्य: हेतौ लिंगे प्रशमने रोगाणामपुनर्भवे।
8) पात्र की अपेक्षा: शस्त्रं शास्त्राणि सलिल गुणदोषप्रवृत्तये। पात्रापेक्षीण्यत:
9) उत्तमवैद्य 6 गुण: विद्या, वितर्को, विज्ञानं, स्मृति, तत्परता, क्रिया
शुभ गुण (6): विद्या मति: कर्मदृष्टि अभ्यास: सिध्दि आश्रय:।
10) वैद्य 4 वृत्ति: मैत्री कारूण्य आर्तेषु शक्ये प्रीतिरूपेक्षणम्।
षोडशगुणं सिध्दौ पादचतुष्टयम्।
11) बुध्दिब्राह्मी और चतुर्विध भिषक: i) अज्ञ वैद्य,
ii) प्राणाभिसर वैद्य, iii) राजार्ह वैद्य, iv) उत्तम वैद्य.
12) शास्त्र ज्योति: प्रकाशार्थ दर्शनं बुध्दिरात्मन:। संदर्भ

10) महाचतुष्पाद

Topics: साध्यासाध्यत्व, प्रत्याख्येय, याप्य वर्णन।
1) चतूष्पादं षोडश्कलं भेषजमिती भिषजो भाषन्ते।
2) मैत्रेय शंका - चतुष्पाद संदिग्धता
3) परिक्ष्यकारिणो हि कुशला भवन्ति। संदर्भ च. सु. 10/5
4)आतूर के अनुसार चि.- क्षाम- अक्षामेण, कृश दुर्बल - आप्यायन; स्थूल मेदस्वी - अपतर्पण, शीत - उष्ण, उष्ण को शीत; न्युनान - धातू पूरण; व्यतिरिक्तान (धातू)- न्हासयाम; व्याधिन, मूल विपर्ययेणोपचरन्तः सम्यक प्रकृतो स्थांपयाम्।
5) रोग: साध्य - सुखसाध्य, कृच्छ्रसाध्य,
सुखसाध्य - a) अल्पचिकित्सा साध्य, b) मध्यचिकित्सा साध्य,
c) उत्कृष्ट चिकित्सा साध्य, असाध्य - याप्य, अनुपक्रम्य.
i) सुखसाध्य रोग लक्षण: पूर्वरूपाणि, रूपाण्यल्पानि, न च तुल्यगुणो दूष्यो न दोष: प्रकृतिर्भवेत्। (दूष्य, दोष, प्रकृति तुल्य न होना अपवाद प्रमेहं मै तुल्य दुष्य, ज्वर में तुल्य दोष) न च कालगुणास्तुल्यो,
(अपवाद - रक्तगुल्म का प्राचीन होना), गतिरेका, नवत्वं, रोगस्योपद्रवा न च दोषश्चेक:, सर्वौषधक्षम:, चतुष्पादा
अपवाद वर्षा ऋतू में प्राकृत वातज ज्वर कृच्छ्रसाध्य है।
ii) कृच्छ्रसाध्य रोग लक्षण: निमित्त पूर्वरूपाणां रूपाणां मध्यबले, काल प्रकृतिदूष्य, गर्भिणी, वृध्द, बालानां, नात्युपद्रव, शस्त्रक्षारग्निकृत्य विद्यादेकपथं, नातिपूर्ण चतुष्पदम्,व्दिपथं। व्दिदोषज।
(कोष्ठ + शाखा) आश्रित - गुल्म,अर्श,शोथ,विसर्प, विद्रधी.
iii) याप्य रोग लक्षण: शेषत्वादायुषो, पथ्यसेव्या, लब्धाल्प सुखमल्पेन, हेतुनाऽऽशुप्रवर्तकम्, गम्भीरं, मर्मसंधिसमाश्रितम, नित्यानुशायिनं रोगं दिर्घकालमवस्थितम्। व्दिदोषज।
कर्मजव्याधी - याप्य रोग ....(वृध्दवाग्भट)

	सुखसाध्य	कृच्छ्रसाध्य
हेतु, पुर्वरूप, रूप	अल्प	निमित्त पूर्वरूप
गुण-दुष्य दोष-प्रकृती	न च तुल्य	गर्भिणी,बाल, वृध्द, शस्त्र क्षारग्निकृत,मध्यबल
काल–गुण देश	--	कृच्छ्रदेशजम्
गति	एक (एकपथ वा)	एकपथ, व्दिपथ
नव/जिर्ण	नव	नातिकालं, अनव
उपद्रव	न च	नातिउपद्रव
दोष	एक	द्वि
चतुष्पाद	सर्वोषधक्षम:	नातिपूर्णचतुष्पाद
इतर	अनुकुलग्रह(वाग्भट)	असाध्य लिंग संकीर्णस्तथा (अ.सं.)

	याप्य	प्रत्याख्येय
	आयुशेष पथ्यसेवया	--
देश	गम्भीर, बहुधातुस्थ, मर्मसंधिसमाश्रित	क्रियापथमतिक्रान्तं, सर्वमार्गानुसारिणम्
नव/जिर्ण दिर्घकालमवस्थितम्	नित्यानुशायिनं रोग, इंद्रियनाशनम्, व्याधींसारिष्टम	औत्सुक्य, अरतिसम्मोह,
दोष	द्विदोष	त्रिदोष

iv) प्रत्याख्येय रोग लक्षण:
त्रिदोषजम्,क्रियापथमतिक्रान्तम्,सर्वमार्गानुसारिणम्, औत्सुक्य, अरतिसम्मोह, इन्द्रियनाशनम, दुर्बलस्य, व्याधिं सारिष्टमेव।
(सुखसाध्यत्व लक्षण: ....(सु. सू. 35/46)
i) देशविपरीत रोग - जांगलदेश में कफरोग उत्पत्ति,
ii) प्रकृतिविपरीत रोग - पित्तप्रकृति पुरूष को कफरोग
iii) सात्म्यविपरीत रोग - कटुसात्म्य वाले को कफरोग
iv) ऋतुविपरीत रोग - शरद में वातिक और हैमन्त में पैत्तिकरोग
v) अचिरोत्थविपरीत रोग - रोग पुराना न हो।
vi) वैद्यसम्पत्,बल,आयु का प्रमाण अच्छा हो।
vii) केवल 1 रोग और समदेह, समग्नि से युक्त।)
6) संदर्भ - रोगपरिक्षा के बाद चिकित्सा-
भिषजा प्राक परीक्ष्यैवं विकाराणां स्वलक्षणम्।
पश्चात कर्म समारम्भः कार्यः साध्येषु धीमता।।
7) साध्यासाध्यत्व ज्ञान का फल: साध्यासाध्यविभागज्ञो ज्ञानपूर्व चि.। (अर्थ,विद्या,यश) हानि,उपक्रोशम; आत्रेय - मैत्रेय के मतो का विचार किया गया।

11) तिस्रैषणीय

Topics: त्र्यैषणां, चतुर्विध परिक्षा, पुनर्जन्म सिध्दि, अष्ट त्रिक, त्रिविध बल, आयतन, आदि। (अष्टत्रिक वर्णन Also च. चि.24)
1) त्र्यैषण: प्राण, धन, परलोक,
(प्राण, धन, धर्म).... (भेल संहिता) (वित्त, पूत्र, लोक)..... (उपनिषद)
इंद्रियो का ज्ञान अनुमान से। ..... (च.सू. 8/18)
i) प्राणैषणा: स्वस्थस्य स्वस्थवृत्तानुवृत्ति, आतुरस्य च विकारप्रशमने, दीर्घमायुरवाप्नोति, प्राणपरित्यागे हि सर्वत्यागः।
ii) धर्नेषणा: दीर्घमायु (कृषि पशुपाल्यवाणिज्य राजोपसेवा उपकरण आदी)
iii)परलोकेषणा-जन्म का कारण-चरक(5)प्रत्यक्ष,मातृपितृ,स्वभाव,पर, यदृच्छा,
2) प्रमाण: प्रत्यक्षं हि अल्पं,अनल्पम् अप्रत्यक्षमस्ति (आगम,अनुमान,युक्ति) प्रमाण से पूर्वजन्म की अनुभूति।
3) प्रत्यक्ष ज्ञान न होने में कारण: 8
i) अतिसन्निकर्ष, ii) अतिविप्रकर्ष,iii) आवरण,iv) करण दौर्बल्य,
v) मनोऽनवस्थानात्,vi) समान अभिहार, vii) अभिभव,viii) अतिसौक्ष्म
संदर्भ- संयोगेच वियोगे च तेषां कर्मेव कारणम्।
प्रमाण: च.सू.11 - 4 (आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान, युक्ति)
च.वि.4 -3 (युक्ति व्यतिरिक्त), सु.सू.1-4(शब्द, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान)
(आप्तोपदेश, शब्द, आगम = पर्याय)

अन्य आचार्य	प्रमाण
1) चार्वाक	1 (प्रत्यक्ष)
2) जैन, बौध्द, वैशेषिक	2 (प्रत्यक्ष, अनुमान)
3) सांख्य, योग	3 (2 + शब्द)
4) न्याय	4 (3 + उपमान)
5) प्रभाकर मिमांसक	5 (4 + अर्थापत्ति)
6) वेदान्त और कुमारिल भट्ट	6 (5 + अभाव (अनुपलाब्धि)
7) पौराणिक	8 (6 + ऐतिह्य, सम्भव)
8) तांत्रिक	9 (8 + चेष्टा)
9) अन्य	10 (9 + परिशेष)

आयुर्वेद में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाला प्रमाण आप्तोपदेश
पदार्थ–2 (सत्,असत्)
लक्षण (षण्णां धातूनां):i) पृथ्वी का काठिन्य, ii) जल की द्रवता, iii) अग्नि की उष्ण, iv) वायु का तिर्यकगमन, v) आकाश का अप्रतिघात, vi) आत्मा – चेतना

4) चतुर्विध प्रमाण: आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान, युक्ति
i) आप्तोपदेश: रजस्तमोभ्यां निर्मुक्ताः तपोज्ञानबलेन ये, येषां त्रिकालम अमलं ज्ञानम अव्याहतं, आप्ताः शिष्टा विबुदास्ते तेषाम् वाक्यम् असंशयम्।
ii) प्रत्यक्ष: आत्मेन्द्रियोमनोऽर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते।
व्यक्ता तदात्वे या बुध्दिः प्रत्यक्षं सा निरूच्यते।।
इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष – 6 (संयोग, संयुक्तसमवाय,समवाय, संयुक्तसमवेत समवाय, समवेतसमवाय, विशेषणविशेष्याभाव)

a) भेद: 2
- प्रत्यक्ष
  - सविकल्पक = 2
    - लौकिक =2
      - बाह्य (चक्षु, श्रवण, घ्राण, रास्ना, त्वक)
      - आभ्यतर (मानस्)
    - अलौकिक = 3
      - 1) सामान्यलक्षणप्रत्यासति
      - 2) ज्ञानलक्षणप्रत्यासत्ति
      - 3) योगज
  - निर्विकल्पक

iii) अनुमान: प्रत्यक्षपूर्वं त्रिविधं त्रिकालं चानुमीयते।
a) भेद – 2 (स्वार्थानुमान, परार्थानुमान),
3 -(पूर्ववत -बीज से फल,शेषवत - मैथुन गर्भदर्शन,सामान्यतोदृष्ट - वन्हिधूमेन,)
b) अवयव - लिंग, व्याप्ति, पक्षधर्मता, परामर्श
iv) युक्ति: बुध्दिः पश्यति या भावान बहुकारणयोगजान।
युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यथा।।
त्रिकाल ज्ञान - आप्तोपदेश, अनुमान व युक्ती.
5) अष्टत्रिक वर्णन: (8) - i) उपस्तम्भ - आहार, स्वप्न, ब्रह्मचर्य,(चरक) आहार, स्वप्न, अब्रह्मचर्य (अ.सं.), आहार, शयन, अब्रह्मचर्य (अ.हृ.), (तीन स्तंभ - वात, पित्त, कफ), ii) बल - सहज, कालज, युक्तिकृत, iii)आयतन - असात्म्येन्द्रियार्थसंयोग, कर्म, काल, iv) रोग - निज, आगन्तु, मानस, v) रोगमार्ग - शाखा, मर्मास्थिसंधि, कोष्ठ, vi) भिषक् - छद्मचर, सिध्दसाधित, वैद्यगुणैर्युक्ता, vii) औषध - दैवव्यपाश्रय (मन्त्रौषधिमणि), युक्तिव्यपाश्रय (आहारौषधयोजना), सत्वावजय (अहित से मनोनिग्रह), viii) ऐषणा - प्राण, धन, परलोक,
त्रिगुण (त्रिसूत्र) त्रिस्कंध - हेतु,लिंग,औषध, (स्कंधत्रय - हेतु, दोष, द्रव्य)
बल: i) सहज - शरीर सत्व प्राकृतः,
ii) कालज - ऋतुविभागज, वयःकृत, iii) युक्तिकृत - आहार, चेष्टा
आयतन: i) अर्थ ii) कर्म iii) काल - अतियोग, अयोग, मिथ्यायोग (वाग्भट - अयोग के स्थानपर हिनयोग)
त्रयरोगमार्ग: शाखा - रक्तादयो धातवः त्वक बाह्य (बाह्य मार्ग)
मर्मास्थिसंधि - बस्ति हृदयमूर्धादी अस्थि सन्धयो अस्थिसंयोग (मध्यममार्ग)
कोष्ठ - महास्त्रोतः, शरीरमध्य महानिम्न (अंभ्यन्तरमार्ग)
(14) शाखानुसारि - गण्डपिडकालज्यपचीचर्मकीलाधिमांसमषक कुष्ठव्यंगादयो विकारा बहिर्मार्गश्च विसर्पश्वयथुगुल्मार्शोविद्रध्यादयः
(12) मर्मास्थिसंधि - पक्षवधग्रहापतानक अर्दितशोष राजयक्ष्मा अस्थिसंधिशूलगुदभ्रंशादयः शिरोहृब्दस्तिरोगादयश्च मध्यमार्गानुसारिणो
(16) कोष्ठ - ज्वरातिसारच्छर्द्यलसक विसूचिका कासश्वासहिक्कानाहोदरप्लीहादयोऽन्तमार्गजाविसर्पश्वयथुगुल्मार्शोविद्रध्यादयः
त्रिविध वैद्य: i) छद्मचर वैद्यः वैद्यभाण्ड औषधैःपुस्तैः लभन्ते ये भिषकुशब्दमज्ञास्ते प्रतिरूपकाः।
ii) सिध्दसाधित वैद्यः श्रीयशोज्ञानसिध्दानां व्यपदेशादतद्विधाः।
वैद्यशब्दं लभन्ते ये ज्ञेयास्ते सिध्दसाधिताः।

iii) वैद्यगुणैर्युक्ता चि. प्रयोगज्ञान विज्ञान सिध्दिसिध्दा: सुखप्रदा:।
जीविताभिसरास्ते।

त्रिविधऔषध: दैवव्यपाश्रय, युक्तिव्यपाश्रय - पुनराहारोषधद्रव्याणां योजना सत्वावजय - मनोनिग्रह:

6) शरीर दोष प्रकोप में 3 चिकित्सा: अन्त: परिमार्जन, बहि: परिमार्जन (परिषेक, उन्मर्दन) (लेप उव्दर्तन), शस्त्रप्रणिधान - 12 (छेदन, भेदन, वेधन, दारण, लेखन, उत्पाटन, प्रच्छान, सीवन, ऐषण, क्षार, अग्नि, जलौकस)

7) i) माता - पिता का खण्डन : निरन्तरं नावयव: कश्चित् सूक्ष्मस्य चात्मन:। ii) स्वभाववाद का, खण्डन,(कर्मकारण -संयोग, विभाग स्वभाव का खण्डण) संयोग च वियोगे च तेषां कर्मैव कारणम्। iii) यदृच्छा का खण्डन : पात केभ्य: पर चैतत पातकं नास्तिकग्रह:। कर्म वाङ्मन: शरीर प्रवृत्ति त्रिविधविकल्प प्रज्ञापराधमूलक है,इति त्रिविधविकल्पं त्रिविधमेव कर्म प्रज्ञापराध इति व्यवस्थेत्।

8) चार प्रमाण से सत असत परीक्ष्य विषयों की परिक्षा।

12) वातकलाकलीय

Topics: वायु - 6 गुण:- (प्राकृत, विकृत, शरीरस्थ, लोकसंचारी) वायु लक्षण, (प्राकृत, विकृत) पित्त, कफ लक्षण।

सम्भाषापरिषद: शंका का समाधान।

(Note: (च.सू.1)- वात, पित्त, कफ गुण,
(च. सू.12) - वात गुण, कर्म वात, पित्त, कफ सामान्य लक्षण,
(च. सू. 17) - दोषमानविकल्प भेद, क्षय - 18 प्रकार, दोष गतियाँ,
(च. सू.18) - प्राकृत दोष कर्म, (च.सू.20) - दोष कर्म,
(च. सू.28)- धातु प्रदोषज विकार,(सु.सू.15/21) (वा.सू.12 और नि15)
(च. चि.18) - दोष स्थान (वात)

1) वायु गुण: कुश - 6 वा दारूण, आत्रेय - 7 सूक्ष्म चल (रूक्ष, लघु, शीत, खर, विशद - Common)

आचार्य	वर्णित विषय
कुश	वायु - 6 गुण
भरव्दाज (कुमाराशिरा) -	वायु प्रकोपक कारण
कांकायन (बाल्हीकदेश) -	वायु प्रशमन
धामार्गव (बडिश) -	वायु प्रकोप - प्रशमन
वायोर्विद -	वात प्रधान, कर्म
मरीचि -	पित्त प्रधान
काप्य -	कफ प्रधान

कुमारशिरा भारव्दाज - वायू प्रकोप हेतू वर्णन.
संदर्भ- समानगुणाभ्यासो हि धातूनां वृध्दिकारणमिती।
काकांयन - बाल्हीक भिषक - वात शामक हेतू
प्रकोप विपर्ययो हि धातूनां प्रशमकारणमिती।
बडीशधामार्गव-
वातप्रकोप-रूक्ष, लघु, शीत, दारूण, खर, विशद, शुषिर कराणि शरिराणांम्।
वातशमन-स्निग्धगुरू उष्ण श्लक्ष्ण मृद पिच्छिल, घनकराणी शरिराणांम्।

2) प्राकृत शरीरस्थ वायुकर्म: शरीरव्यवस्था वायुस्तन्त्रयन्त्रधर:, प्रवर्तकश्चेष्टा, नियन्ता प्रणेता च मनस:,सर्वेन्द्रियाणामुद्योजक:, सर्वेन्द्रियार्थानामभिवोढा, सर्वशरीरधातुव्यूहकर:, सन्धानकर: शरीरस्य, प्रवर्तको वाच:,प्रकृति स्पर्शशब्दयो, श्रोत्रस्पर्शनयोर्मूलं, हर्षोत्साहयोर्योनि:, समीरणोऽग्रे:,दोषसंशोषण:,क्षेप्ता बहिर्मलानां, स्थूलाणुस्त्रोतसां भेत्ता,कर्ता गर्भाकृतीनाम्, आयुषोऽनुवृत्तिप्रत्ययभूतो भवत्यकुपित:।
[उदान - 1 प्रवर्तको वाच:, समान - 1 समीरणोऽग्रे:
व्यान - 5 (प्रवर्तको चेष्टा, सर्वशरीर धातुव्युहकर, संधानकर,दोषसंशोषण, स्थुलाणुस्त्रोतस:),अपान - 2 कर्तागर्भाकृतिना, क्षेप्ताबहिर्मलानां. प्राण 7 (शेष)]

3) विकृत शरीरस्थ वायुकर्म: नानाविधैर्विकारैरूपतपति, बलवर्ण, सुखायुष्यामुपघाताय, गर्भ - अतिकालं वा धारयति.
वायु के 4 कर्म - शरीर और सृष्टि में प्राकृत, विकृत,

4) वायु विशेषताये/पर्याय: स हि भगवान प्रभवश्चाव्ययश्च,भूतानां भावाभावकर:,सुखासुयोर्विधाता, मृत्यु: यम:, नियन्ता, प्रजापति:, अदिति:, विश्वकर्मा, विश्वरूप:, सर्वग:, सर्वतन्त्राणां विधाता, भावानामणु:, विभु:, विष्णु, क्रान्ता लोकानां, वायुरेव भगवानिति।

5) वायोर्विद उत्तर: पवनमति बलम, आत्ययिकं, भवत्यारोग्याय बलवर्णविवृध्दये, वर्चस्वित्वायोपचयाय ज्ञानोपपत्तये परमायु:

6) मरीचि: अग्निरेव शरीरे पित्तान्तर्गत: कुपिताकुपित: शुभाशुभानि करोति: i) पक्तिम् -अपक्तिम्, ii) दर्शनं - अदर्शनम् iii) उष्णण: मात्रावत् - अमात्रा, iv)वर्ण प्रकृति - विकृति, v) शौर्य - भय, vi)हर्ष - क्रोध,vii) प्रसाद - मोह.

7) काप्य: सोम एव शरीरे श्लेष्मान्तर्गत: कुपिताकुपित: शुभाशुभानि करोति: i) दाढर्यं - शैथिल्य, ii) उपचय - कार्श्य, iii) उत्साह - आलस्य, iv) वृषता - क्लीबता, v) ज्ञान - अज्ञान, vi) बुध्दि - मोह.

वायु: गुणा: षड् (6) द्विध हेतु (प्रकोपक, प्रशामक)
चतुर्विध कर्म: (कुपित शरीरचर, अकुपित शरीरचर)
(कुपित अशरीरचर, अकुपित अशरीरचर)

13) स्नेहाध्याय

1) स्नेह योनि: 2 i) स्थावर, ii) जांगम - मत्स्य, मृग, पक्षि.

2) स्नेह भेद: 4 - सर्पि, तैल, वसा, मज्जा. सर्पि श्रेष्ठता - संस्कारस्यानुवर्तनात् (अ. सं. - माधुर्यात, अविदाहित्वात्, आजन्मात एवच, शिलनात्.)
सर्पि: पित्तानिलहरं रसशुक्रौजसां निर्वापणं मृदुकरं स्वरवर्णप्रसादनम।
तैल: न च श्लेमवर्धनं बलवर्धनं त्वच्यं उष्ण स्थिरकरं योनि विशोधनं।
वसा: विध्द भग्नहतभ्रष्ट योनिकर्ण शिरोरूजि पौरूषोपचये व्यायामे।
मज्जा: बलशुक्ररसश्लेष्ममेदो विशेषतोऽस्थनां बलकृत्स्नेहने।

3) स्नेहसेवन	सर्पि	तेल	वसामज्जा
ऋतु	शरद	प्रावृट्	माधव (वसन्त)
अनुपान	उष्णजल	यूष	मण्ड

i) सर्वेषां तैलजातानां तिलतैलं विशिष्यते। बलार्थे स्नेहने.....।।
ii) च अग्रयम् एरण्डं तु विरेचने।

4) स्नेहपान काल:ग्रीष्म (वात, पित्त वृध्दि होनेपर) - रात्रि
शीत (कफ वृध्दि होनेपर) - दिन
विपरीत काल में और वात पित्त प्रधान पुरूष दिन मे स्नेहपान से हानि: ग्रीष्म - मूर्च्छा,पिपासा,उन्माद,कामला, शीत - आनाह, अरूचि, शूल, पाण्डु।
(सुश्रुत - भल्लातक, तुवरक स्नेह में नित्य शीत अनुपान)

5) प्रविचारणा:(उपनय कल्पना) i) स्नेह प्रविचारणा (द्रव्यानुसार) - (24) (निरूह, कवल नहीं।), ii) रसानुसार - 64 (63 + अच्छस्नेह),
iii) अच्छपेय - प्रथम कल्प, (सर्वोत्तम, मुख्य कल्पना),
iv) 64 प्रविचारणा के लिए हेतू - 4 (ओक,ऋतु,व्याधि,पुरूष) के बलानुसार (प्रविचारणा वाग्भट 64, काश्यप 20)
घृततैलवसामेदोमज्जा यथोत्तर गुरूविपाका वातहरा - (सु.सू.45)
सर्पिस्तैलं वसा मज्जा सर्वस्नेहोत्तमा मता:। (च.सू.13)
सर्पिमज्जा वसातैलं स्नेहेषु प्रवरं मतम्।
पित्तंघ्नास्ते यथा पूर्व इतरघ्न यथोत्तरम।। (अ.सं.सू.25)
तैलवसामज्जसर्पिषां यथापूर्व श्रेष्ठं वातश्लेष्माविकारेष्वनुवासासनीयेषु।
(च.वि.8/50)

6) स्नेह मात्रा: जरां प्रति

मात्रा	प्रधान	मध्यम	ऱ्हस्व
जरण काल	अहोरात्र (24hrs.)	1 दिन(12hrs.)	1/2 दिन (6hrs.)
वाग्भट -	8 प्रहर	4 प्रहर	2 प्रहर

(हसीयसी मात्रा अ.हृ.– 1-2 तोला, दोष दुष्यका विचार कर परीक्ष के रूप में उपयोगी मात्रा।)

सेवन से लाभ: i) प्रधान मात्रा: विकार शीघ्र शमन, दोषानुकर्षिणी, सर्वमार्गानुसारिणी,बल्या,पुनर्नवकारी शरीरेन्द्रिय चेतसाम।(वाग्भट - शोधन)

ii) मध्य मात्रा: मन्दविभ्रंशा, न चातिबलहारिणी, सुखेनच स्नेहयती शोधनार्थे (शमन वाग्भट) **iii) ह्रस्व मात्रा:** स्नेहन, बृंहणी वृष्या बल्या निराबाधा। **स्नेह मात्रा:** (चरक–3, सुश्रुत–5)

[सुश्रुत: 5 - i) 1/4 दिन में पचने वाली (1 प्रहर)
– अग्निदीपक,अल्पदोषप्रकोप में हितकर (प्रशस्त मात्रा)
ii) 1/2 दिन में पचने वाली (2 प्रहर) – वृष्या, बृंहणी, मध्यदोष पूजिता
iii)3/4 दिन में पचने वाली (3 प्रहर) –स्नेहन और प्रबल दोष प्रकोप में हितकर
iv) 1 दिन में पचने वाली (4 प्रहर)– श्रेष्ठ,ग्लानि,मूर्च्छा,मद मे हितकर
v) अहोरात्र मे पचने वाली (8 प्रहर) – कुष्ठ विषोन्माद ग्रहापस्मार नाशक]

	प्रधानमात्रा	मध्यम	ह्रस्व
7)योग्य पुरूष:	क्षुतिपासासहा गुल्मिन: सर्पदष्ट विसर्प उन्मत्ता: कृच्छ्रमूत्र गाढवर्चस्	कुष्ठि, प्रमीढाश्च मृदुकोष्ठ	ज्वरातिसार कास, रिक्तकोष्ठ, चिर मन्दाग्नि
शरिरबल	उत्तम बल	मध्यम बल	अवर बल

8) स्नेह सेवन योग्य:

घृत: वात,पित्त (प्रकृति, विकार), दीप्त्योज:, स्मृतिमेधाग्निबुध्दि, इन्द्रियबलर्थिन, दाह, शस्त्र, विष, क्षतक्षीण, वृध्द, बाल, अबलवान, पुष्टिकामा, प्रजाकामा

तैल: प्रवृध्द,(श्लेष्म, मेद, वातव्याधी), कृमिकोष्ठ,क्रुरकोष्ठ, नाडी व्रण. वातप्रकृति, बल, तनूता, लघुता, स्थिरगात्रता, कांक्षति

वसा: वातातपसहा, शुष्क (रेतोरूधिर),निष्पित कफमेदसा:,महारूज: (अस्थि, संधि, सिरा), महाच्चाग्निबलं, व्यायामकर्षीत, वसासात्म्य

मज्जा: दीप्ताग्नय:, क्लेशसहा, घस्मरा, वातार्ता:, क्रूरकोष्ठ. क्रुराशय (सुश्रुत), अत्याग्नि (अ.हृ.)

9) स्नेह प्रकर्ष: i) चरक - क्रूरकोष्ठ - 7 रात्र; मृदुकोष्ठ - 3 रात्र; मध्यम -4,5,6 दिन, ii) सुश्रुत - 3,4,5 और 6 दिन । सप्तरात्रांत् परं स्नेहसात्म्य। वाग्भट - क्रूर–7 दिन; मृदु - 3 दिन, iii) भोज - दोषानुसार स्नेहन अवधि. कफ -3 दिन; पित्त–5 दिन; वात-7 दिन तक स्नेहन (अच्छपान के लिए)

10) स्नेहन योग्य पुरूष: स्वेद्या शोधयितव्याश्च रूक्षा वातविकारिण:।
व्यायाम मद्य स्त्रीनित्या: स्नेहया: स्युर्येच चिन्तका:।।

11) स्नेहन अयोग्य: नित्य मन्दाग्न्यश्च, उत्सन्नकफमेदसाम् मदातुरा:, नस्तो (नस्य), बस्ति, (स्नेहन - नित्यमघपी, अयोग्य – मद्य पीये हुए)

12) अस्निग्ध लक्षण: पुरीषं ग्रथितं रूक्षं वायु:प्रगुणो मृदु:।
पक्ता खरत्वं रौक्ष्यंच गात्रस्यास्निग्धलक्षणम्।।

13) सम्यक्स्निग्ध लक्षण: वातानुलोम्यं दीतोऽग्नि: वर्च:स्निग्धम् असंहतम्।
मार्दवं स्निग्धता चाङ्गे स्निग्धानामुपजायते।।

14) अति स्नेहन: पाण्डुता गौरवं जाडयं पुरीषक्षयाविपक्वता।
तन्द्रा अरूचि उत्क्लेश स्यादतिस्निग्धलक्षणम् ।।

15) स्नेह विधि: स्नेहपान पूर्व: (द्रव, उष्ण,अनभिष्यन्दि) भोजन नंतिस्निग्ध,असंकीर्ण

स्नेहपान समय: संशमन - भोजन समय भुख लगने पर
संशोधन - रात्रि का आहार पचने पश्चात (नैशे जीर्णे)
(वाग्भट - स्नेहन काल - 3 संशमन, स्नेहन, शोधन)

क्रूरकोष्ठ लक्षण: इनमें गुड, इक्षुरसादि से विरेचन न करे। क्योंकि ग्रहण्यत्युल्बणानिल. मृदूकोष्ठ- उपयोगी - (द्राक्षा, पीलु, त्रिफला) रस, मद्य तरूण, (सुश्रुत दुग्ध)

मृदुकोष्ठ लक्षण: उदीर्णपित्त, ऽल्पकफा, ग्रहणी, मन्दमारूत – मृदुकोष्ठस्य (मृदुकोष्ठ - सुखविरेचनीय - चरक)
(ग्रहणी -अग्निधिष्ठान..(चरक) पित्तधरा कला..(सुश्रुत)
अग्निधरा कला....(शारंगधर))
(कोष्ठ - आमाशय से पक्वाशय तक - 14 हस्त - पुरूष, 12 हस्त - स्त्रि
वात - क्रूर, पित्त - मृदु, कफ - मध्य.)

स्नेहपान अविधि से उपद्रव:स जग्ध्वा स्नेहमात्रां तामोज: प्रक्षारयन् बली। तृष्णा (आम स्वरूप), शीतजल चिकित्सा.

स्नेहाजीर्ण से उत्पन्न तृष्णा चिकित्सा: वमन, शीतोदक, पुन: रूक्षान्न कराकर वमन, सुश्रुत -उष्णाम्बु वमेतम्। (पित्त प्रकृति में - ठण्डे पानी से वमन) (कफवात प्रकृति में - उष्ण जल से वमन)

16) अच्छसर्पि निषेध सामपित्त:में
i) सर्व शरीर को रंग देता है, ii) संज्ञा नाश कर मृत्यु जनक है।

17) दोषानुसार स्नेह : वात - सर्पि + लवण, पित्त - सर्पि, कफ - सर्पि + व्योष + क्षार

18) स्नेहव्यापद: 19 - ग्रहणी दोष
(Note: i) पित्ताशय शोधन = केवल घृतपान निषेध। (इन्दु)
ii) सर्व संशमन में घृत उत्तम।) **चिकित्सा:** स्त्रंसन,रूक्ष अन्नपान सेवन, तक्रारिष्ट, त्रिफला, वमन, स्वेद:, कालप्रतीक्षणम्

उपद्रवकारक स्नेहपान: अकाले अहितश्चैव मात्रया न च योजित:।
स्नेहो मिथ्योपचाराच्च व्यापद्येत् अतिसेवित:।।

19) स्नेहपान पश्चात नियम: (वमन 1 दिन बाद, विरेचन 3 दिन बाद)
i) स्नेहात् प्रस्कन्दन जन्तु: त्रिरात्रोपरत: पिबेत्।
ii) एकाहोपरतस्तद्वदमुक्त्वा प्रच्छर्दनं पिबेत्।
iii) उभय में आहार – द्रव, उष्ण, मांसरस, चावल (ओदन)

20) विचारणा योग्य:स्नेहव्दिष,स्नेहनित्या, मृदुकोष्ठा, क्लेशासहा, मद्यनित्या.
i) वात प्रधान पुरूष में; तैल सुराया मण्डेन वसां मज्जानमेव वा.
ii) पांचप्रासृतिकी पेया -सर्पितैलवसामज्जातण्डुल- प्रत्येक 1 प्रसृत (8 तोला) 2 पल, iii) स्नेह प्रयोग में निषेध - आनुप मांस (कुष्ठ, शोथ, प्रमेही) (चक्रपाणि - प्रमेह - त्रिफलाघृत, कुष्ठ - पिप्पली सिध्द स्नेह, शोथ - हरितकी घृत, iv) योनिशुक्रप्रदोषेषु - 4 स्नेह + बदर + त्रिफला रसै:)

21) लवण युक्त स्नेह गुण:
i) अभिष्यंद, (स्त्रोतोरोध कर शरीर में अधिक समय तक रूककर स्नेहन), ii) अरूक्ष, iii) सूक्ष्म, iv) उष्ण, v) व्यवायी.

22) संदर्भ - स्नेहमग्रे प्रयुंजीत ततः स्वेदमनन्तरम्।
स्नेहस्वेदोपपन्नस्य संशोधनमथेतरत् ।। च. सु. 13/99
(12 प्रश्न BYअग्निवेश)
[(अ.हृ.सू.16)- भोजन पश्चात स्नेहपान -उर्ध्वदेह रोगहर, भोजन पूर्व स्नेहपान -अधोदेह रोगहर,भोजन मध्य स्नेहपान-मध्यदेह रोगहर,सद्य: स्नेहन योग- 7]

14) स्वेद अध्याय

1) स्वेद साध्या: प्रशाम्यत्ति गदा वातकफात्मका:।
स्वेदन वात,कफ, वातकफ सभी के लिए।

2) स्वेदन लाभ: स्नेहपूर्व स्वेदन करना चाहिए।
i) स्वेदन सफलता हेतु: (रोग, ऋतु, व्याधीत (रोगी)) में नातिउष्णोऽतिमृदुर्न,

3) स्वेदन: 3 प्रकार i) महान्: महाबली व्याधी, शीत, शरीर,
ii) मध्यम - मध्यम iii) दुर्बल- दुर्बल
दोषानुसार: 3 i) वातकफ - स्निग्ध रूक्ष, ii) वात - स्निग्ध, iii) कफ - रूक्ष.
स्थानानुसार: i) आमाशयगत वात - रूक्ष पश्चात् स्निग्ध.
ii) पक्वाशयगत कफ - स्निग्ध पश्चात रूक्ष स्वेद,
iii) वंक्षण - मध्य स्वेद, iv) वृषण, हृदय, दृष्टि - मृदु स्वेद.

(वाग्भट: a) आमाशयगत वात, पक्वाशयगत कफ - रूक्ष पूर्व स्वेदन,
b) पक्वाशयगत वात - स्नेह पूर्व स्वेदन,
सुश्रुत: हृदय, दृष्टि, मुष्क – मृदु स्वेद.)
4) स्वेद सीमा: शीतशूलव्युपरमे स्तम्भ गौरव निग्रहे।
सञ्जाते मार्दवे स्वेदे स्वेदनाव्दिरतिर्मता।।
अतियोग: पित्तप्रकोपो मूर्च्छा च शरीरसदनं तृषा।
दाह स्वेदांगदौर्बल्यम् अतिस्विनस्य लक्षणम्।।
उपचार: i) ग्रैष्मिक सर्व विधि, ii) द्रव्य – मधुर, स्निग्ध, शीतल:
(वाग्भट - स्तम्भन चिकित्सा), (सुश्रुत - शीतोपचार चिकित्सा)
5) स्वेदन अयोग्य: i) मधुमेहि:कषाय मद्यनित्या,रक्तपित्त,गर्भिणी,
ii) पित्तमेहि: अतिसार, रूक्षाणां,आढ्यरोगि,
iii) नष्ट संज्ञानां,स्थूलानां,विषमद्यविकारिणाम् वातरक्त,तिमिर
वाग्भट - कुष्ठ, प्रसूता में स्वेदन वर्ज्य
6) स्वेदन योग्य: i) सभी वातकफ रोग, मूत्राघात, ii) सर्वांगेषु विकार, ज्वर, मूत्रकृच्छ, शोथ.
7) चरक सग्नि स्वेद. 13 -
[स्वेद प्रकार - सुश्रुत - 4,वाग्भट - 4, हारित -7, भेल - 8, काश्यप - 8, वंगसेन - 8 i) ताप - जेन्ताक, कर्षु, कुटी, कूप, होलाक (5) (कफ),
ii) उपनाह,(वात) iii) द्रव (2) - परिषेक, अवगाह (2) (पित्त संसर्ग),
iv)उष्म = (पिंड, संस्तर,नाडी,घनाश्म, कूप, कूटी, कुम्भी, जेन्ताक)(कफ)]
चरक: साग्नि स्वेद - 13, निराग्नि स्वेद - 10 (सुश्रुत निराग्नि स्वेद 8)
साग्नि स्वेद: I) **प्रस्तर** (उपस्वेदन) – उष्णशय्या व्दारा स्वेदन,
II) **संकर** (पिंड,उपनाह) वस्त्रांतर, सिकता, गो, खर, शकृद, इ.,
III) नाडी: a) गजाग्रहस्तसंथानया (नली - हाथी के सुँड की तरह),
b)- लांबी 1 व्याम, 1/2 व्याम. मोटाई मुल – 1/4, अग्र भाग – 1/8
(1 व्याम - 3 1/2 हाथ), c) 2 - 3 स्थान से मुडी हुई ।
(चक्रपाणि-नाडी स्वेद-3 प्रकार: i) ग्राम्य औषध से नाडी स्वेद- वात नाशक,
ii)वरूणादि से नाडी स्वेद-कफ नाशक,iii)भूतिक प्रभूत द्रव्य-वातकफ नाशक)
IV) **अवगाह:** पित्त संसृष्ट वात ओर वात रोग में,
V) **कूप:** शयनविस्तारं व्दिगुणं हस्त्यश्वगोखरोष्ट्राणा करिषे
(इसे कर्षु स्वेद में अ सं. ने लिया है।) VI) **कुटी:** अनत्युत्सेधविस्तारां वृत्ताकारामलोचनाम्। धनभिती कुटी, हसन्तिका. VII) **जेन्ताक:** जेन्ताकस्वेद के लिए भूमी-पूर्व उत्तर दिशा कुटागार.जलाशय से 7 या 8 अरत्नी अंतर पे.
i)उत्सेधविस्तारत: परमरत्नी: षोडश (लांबी - रूंदी - उंची -16 हस्त)
ii) कुटागार चतुष्किष्कुमांत्र पुरूषप्रमाणं (4 हस्त लांबी, पुरूष प्रमाण)
iii) कन्दुसंस्थानं (भट्टी), बहुसुक्ष्मछिद्र.
सीमा: i) न च त्वया स्वेद मूर्च्छापरितेनापि सता पिण्डिकैषा विमोक्तव्या आप्राणोच्छ्वासात्।
(स्वेद होने पर –मूर्च्छा आने के पहले बाहर आ जावे), श्वास में अबाधा रहने तक
पश्चात्कर्म: शीतोदकमुपस्पृशेया, सुखोष्णेन वारिणा,
VIII) **परिषेक:** वात प्रधान में, कुम्भीवार्षुलिका:, IX) **अश्मघन:**अश्मशिलासे स्वेदन X) **कर्षु:**, XI) भू:विधि अश्मघन सम, एवाश्मघन स्वेदविधिर्भूमौ स एव तु XII) **कुम्भी:** जमीन कें (अर्ध,त्रि) भाग नीचे कुप रखे,
XII) **होलाक:** धीतीका तु करीषाणां शयनान्त: प्रमाणेन
[**उपनाहस्वेद** : i) द्रव्य - लवण, अम्ल, स्नेह, उष्ण, वात नाशक, चरक अग्निस्वेद, ii) **बन्ध** - रात्रो बध्दं दिवा, रात्रौ दिवा कृतम् विदाहपरिहारार्थ.
वाग्भट - i) अग्निसंस्कार युक्त उपनाह स्वेद - विकार, ii) अग्निसंस्कार युक्त उपनाह स्वेद - वात विकार,उपनाह - अग्नि,निराग्नि, सुश्रुत-उपनाह - अग्नि में]
8) निरग्नि स्वेद: 10 (व्यायाम,उष्णसदन, गुरूप्रावरण, क्षुधा, बहुपान भय, क्रोध,उपनाह, युध्द, आतपसेवन)स्वेदन पश्चात - व्यायाम वर्ज्य, पथ्याशन.

9) संग्रहभेद से स्वेद:संग्रहेण च षट् स्वेदा: स्वेदाध्याये निदर्शित:।(संक्षेप से स्वेद के 6 प्रकार) त्रिविध व्दन्द(सग्नि,निराग्नी,एकांग,सर्वांग,रूक्ष, स्निध)
(चरक उपनाह स्वेद - सग्नि व निराग्नी दोनो में वर्णन)
(चक्रपाणी-कर्षु स्वेद से अधिक काल तक और उत्तम स्वेद दीया जाता है।)
(कुप स्वेद से कम काल तक और उत्तम स्वेद दीया जाता है।)
(अ.सं.: i) वातकफ जन्य रोग में सुरसादि गण से उपनाह,
ii) वातपित्त जन्य रोग में पद्यकादि गण से उपनाह,
iii) स्वेदन - अन्नजीर्ण होने पर,
iv) उपनाह स्वेद केवल वातहर, वातकफ, वातपित्त,
v) पिंड स्वेद को, संकर,
vi) संस्तर – प्रस्तर, vii) घनाश्म – शिलास्वेद अश्मघ्न कहा।)
(सुश्रुत : i) ताप, उष्म स्वेद कफ जनित रोग में, ii) उपनाह – वात नेत रोग में, iii) द्रव –पित्त संसर्ग, iv) उपनाह – वातपित्त दुष्टि,
v) अनग्नि स्वेद –मेदधातु वात आवृत होने पर, vi) अनग्नि स्वेद – 8) अवगाह स्वेद काल – 4 मुहुर्त ..... (भेल)

15) उपकल्पीयमध्यायं

Topics : संभार संग्रह, औषधमात्रा, वमन, सम्यक, अयोग,अतियोग वर्णन, वमन - विरेचन अयोग, अतियोग जन्य उपद्रव, संसर्जनक्रम, संशोधन लाभवर्णन.(अग्निवेश प्रश्न–12)
उप - समीप, कल्पनीय - संभार संग्रहणं (उदा. पंचकर्म मे उपयोगी द्रव्य)
(पंचकर्म में आवश्यक द्रव्य - स्थान - चरक, कल्पस्थान, च.सू.15)
1) अध्याय वर्णन हेतु 3: i) सम्यग्प्रयोगनिमित्ता - सम्यक्प्रयोग,
ii) सर्वकर्मणां सिध्दि – सर्व कर्म सिध्दि,
iii) व्यापच्चसम्यक्प्रयोगनिमिता - उपद्रव शांति.
मदनफलकषाय: (मधु, मधुक, सैन्धव, फाणित)
संभार– दृढं निवातं प्रवात एकदेश.
2) संशोधनपूर्वकम– संशोधन के पूर्व कोई मन या शरीर सम्बन्धी व्याधि हो गई ता उसकी चिकित्सा करे।जितने समय तक रोग रहा हो या उसकी चि.कि हो, उतने समय तक उसी प्रकार चिकित्सा व पथ्य व्यवस्था करे।
3) मात्रा: a) प्रतिपुरूष अलग, b) दोषहरण करनेवाली, c) अयोग अतियोग न करने वाली। औषध पान पश्चात् 1 मुहुर्त में वमन.
4) लक्षण: 1st - स्वेदप्रादुर्भाव - दोषं प्रविलयनम्,
2nd - लोमहर्षेण- स्थानेभ्य: प्रचलित,
3rd - कुक्षिसमाध्मापनेनें - कुक्षिमनुगतं,
4th - हृल्लासास्यस्त्रवण - उर्ध्वमूखीभूत.
5) वमन: ललाटप्रतिग्रहे, पार्श्वोपग्रहणे, नाभिप्रपीडने, पृष्ठोन्मर्दने करे।
6) वमन अयोग: i) अप्रवृत्ति:, ii) केवलस्य वाऽप्यौषधस्य,
iii) विबन्धा वेगान iv) विभ्रंशो (वमन प्रतिलोम) सुश्रुत - कफप्रसेक.
7) वमन सम्यग्योग: i) काल प्रवृत्ति, ii) नाव्यथा,
iii) यथाक्रम दोषहरं, iv) स्वयं वेग रूकना.
(च.सि. कफपित्तऽनिल, सुश्रुत प्रसेक, औषध, कफपित्तऽनिल)
8) वमन अतियोग: फेनिलरक्त, चन्द्रिकोपगमन
9) वमन विरेचन: (अतियोग, अयोग जन्य) उपद्रव: आध्मानं, परिकर्तिका, परिस्त्रावो, हृदयोपसरण, अंगग्रह, जीवादान, सविभ्रंश, स्तम्भ, क्लम.
धूमपान: वमन के 1 मुहुर्त पश्चात करें स्नेहीक,वैरेचनिक, उपशमनीय इनमेंसे एक. (सुप्रक्षालितपाणिपादास्यं मुहुर्तमाश्वास्य)
10) संसर्जन क्रम: (पथ्य विधि) मण्डपूर्वां सुखोष्णं यवागूं पाययेदग्निबलम्.
विरेचन कर्म: i) त्रिवृत्कल्कम् अक्षमात्रं, ii) सम्यग्विरिक्तं चैव वमनोक्तेन धूमवर्जेन विधि. चरक – विट्,पित्त,कफ,ऽनिल, सुश्रुत – मूत्र,पुरीष,पित्त,औषध,कफ
11) संशोधन लाभ: मलापहं रोगहरं बलवर्णप्रसादनम्। सम्यगायुषा.....।।

16) चिकित्साप्राभृतीय

Topics : विरेचन - सम्यक, अयोग, अतियोग, वमन अतियोग लक्षणे वर्णन, बहुदोषलिंगानी, चिकित्सा, संशोधन लाभ व स्वभावपरमवाद् वर्णन. चिकित्साप्राभृत - वैद्य विशेष संज्ञा,

(चिकित्सा सामग्री से परिपूर्ण व चिकित्सा ज्ञान से परिपूर्ण).... गंगाधर.

1)चिकित्याप्राभृत वैद्य उपयोगिताः

शास्त्रवान, कर्मतत्पर। नरं विरेचयति यं स योगात सुखमश्नुते ।

अज्ञवैद्य दुःखदायक-यं वैद्यमानी त्वबुधो विरेचयति मानवम्।

सोऽतियोगाद अयोगाच्य मानवो दुःखमश्नुते।

2) सम्यग्विरेचन लक्षण: ग्लानि, दौर्बल्यं, लाघवं, काले वेग प्रवर्तनम्, हृद्वर्णशुध्दिः, अनुलोमता, कायाग्नेश्चानुवर्तनम्.

3) अविरिक्त लक्षण: उत्क्लेश: श्लेष्मपित्तयोः, मारूतस्य च निग्रहः, ष्ठीवन, पीनस, हृदय अशुध्दि: आध्मानारूचि उत्क्लेश:

4) विरेचन अतियोग: विट् पित्त श्लेष्मवातानामागतानां यथाक्रमम्।

परं स्रवति यद्रक्तं मेदो मांसोदकोपमम्।।

निः श्लेष्मपित्तमुदकं शोणितं कृष्णमेव वा।

5) वमन अतियोग: उर्ध्वग वातरोग, वाग्ग्रह.

6) बहुदोष लिंगानि:

स्थौल्य, पाण्डूता, पिडका,कोठ,कण्डु,तन्द्रा,क्लैब्य, बलवर्णप्रणाश

7) संशोधन निर्देश: श्लेष्मपित्त समुत्क्लेशो, निद्रानाशो ऽतिनिद्रता, चिकित्सा- यथादोषं यथा बलं. उर्ध्व चैवानुलोमं।

8) संशोधन लाभ: विशुध्द कोष्ठस्य, कायग्निरभिवर्धते, व्याधयश्चोपशाम्यन्ति, प्रकृतिश्चनुवर्तते. इंद्रिय, मन, बुध्दी, प्रसाद, बल, पूष्टी, अपत्य, वृषता, जरां कृच्छ्रेण लभते चिरं जीवत्यनामयः।

9) संशोधन महत्व:

संदर्भ - दोषाः कदाचित कूप्यन्ती जिता लंघनपाचनैः।

जिताःसंशोधने र्ये तु न तेषां पूनरूद्भवा।। च. सु. 16/20

(अन्यसंदर्भ- अ. सं. सु. 5/36, अ. हृ. सु. 4/26)

10) संशोधन से कृश हुए में: निरूह, अनुवासन,घृतमांसक्षीरद्ययूष.

11) वमन - विरेचन अतियोग में: सर्पिपान, तैलं मधुरकैः, अनुवासन,

12) स्वभावोपरमवाद वर्णन:

स्वभावोपरम - कारणनिरपेक्ष विनाश... (चक्रपाणि)

चिकित्साप्राभृतस्तमाद्दाता देहसुखायुषाम्।

13) चिकित्सा परिभाषा- याभि क्रियाभिजायन्ते शरीरे धातवः समाः।

सा चिकित्सा विकारणां कर्म तद् भिषजां मतम्।। च. सु. 16/34

17) कियन्तः शिरसीयाध्याय

Topics: शिरोरोग, हृदयरोग, दोषमान विकल्प - 62 रोग,18 प्रकार के क्षय, प्रमेह पिडका, विद्रधी, दोषगती आदी. (बस्तिरोगोंका वर्णन नहीं)

(प्रश्न संख्या 6) व्याधीनां व्दयधिका षष्टि (रोग = 62)

1) शिरोरोग: चरक 5,सुश्रुत,मा.नि.11,वाग्भट10 दुष्य-त्रिदोष + रक्त शिर - प्राणा: प्राणभृतां यत्र श्रिताः सर्वेद्रियाणिच। शिर-उत्तम/प्रधान अंग प्राणा: प्राणभृता .....शिर, प्राणिनां प्राण: ....जल

i) वातज शिरोरोग: धमनीर्वायुराविश्य कुप्यति, शूलं महत्तस्य

लक्षण:(शंखौ और भुवोर्मध्यं ललाटं) में वेदना, तपतीव्रतिवेदनम्,स्वनत: श्रोत्रे, घूर्णतीव, स्फुरत्यतिसिराजालं, स्तभ्यते,

ii) पित्तज शिरोरोग लक्षण - दहयते, रूज्यते, भ्रम, शीतं सुषूयते

iii) कफजशिरोरोगहेतू - आस्या सुखैः स्वप्न सुखै गुरू स्निग्धातिभौजनैः।

कफज शिरोरोग लक्षण - सुप्तं, मन्दरूजं, स्तिमितभारिकम् iv) सन्निपातज में: वात से - भ्रम, कम्प, शूल, पित्त से - मद, तृष्णा, दाह,कफ से - गुरू, तन्द्रा,

v) कृमिज शि. लक्षण: व्यधच्छेद,रूजा,कण्डु,शोफ,दौर्गन्ध्य,दुख,हेतु - पापकर्म

2) हृदयरोग: (सुश्रुत - 4, चरक - वाग्भट - 5)

i) वातज लक्षण - दर, वेपथु,वेष्टन,स्तम्भ,प्रमोह, शून्यता, अत्यर्थवेदना

ii) पित्तज लक्षण - क्लम,तिक्तम्लोद्गार,

iii) कफज लक्षण - सुप्तं, अश्मावृत तन्द्रा, अरूचि स्तिमित्रभारिकम्,

iv) सन्निपातज लक्षण - (हेतु लक्षण संसर्गादुच्यते सन्निपातिकः कष्टसाध्य,

v) कृमिज लक्षण हेतु: ग्रन्थि: तस्योपजायते, त्रिदोषज हृदरोगी तीलगुडक्षीरादि सेवन,मर्मैकदेशे,क्लेदं रसधास्योपाच्छति,मर्मैकदेशे संजाताः सर्पन्तो भक्षयन्तिच। लक्षण: तुद्यमानं, शस्त्रैर्जात, सूचीभिरिव, सुदारूणं, छिद्यमानं, कण्डू, महारूजं.

3) दोषमान विकल्प: 62 रोग (असंख्य - तरतम अनुसार)

वृध्दिनुसार दोष - 25 (सन्निपात - 13, संसर्ग - 9, एकदोषज - 3)

क्षयानुसार दोष - 25 (सन्निपात - 13, संसर्ग - 9, एकदोषज - 3)

वृध्दि - क्षय - साम्य से - 12

4) स्थानापकर्ष: 4 लक्षण (भेद,दाह, श्रम, दौर्बल्य) प्राय: पित्त में दाह व वात में शूल परंतू आवृत्त वात में दाह और पित्त में शुल (आशयापकर्ष)

5) 18 प्रकार के क्षय: वातादीनां रसादीनां मलानामोजसस्तथा।

क्षयास्तत्रानिलादीनामुक्तं संक्षीणलक्षणम्।।

(क्षय - शारंगधर - 5, हारित 10)

धातु	क्षय
रस:	हृदय ताम्यति,शब्द असहन, शूल
रक्त	परूष, स्फूटित म्लानत्वक्
मांस	स्फिग्ग्रीवोदर शुष्कता
मेद	संधिनां स्फुटनं,ग्लानि,अक्ष्णो: आयास,तनुत्वं उदरस्य
अस्थि	केशादिप्रपतनं, श्रमः,संधिशैथिल्यम्
मज्जा	लघुनि प्रततं वातरोगिणी शीर्यन्त अस्थिनि दुर्बलानि
शुक्र	दौर्बल्यं,मुखशोष,पाण्डुत्व,सदन,श्रम, क्लैब्य, शुक्राविसर्ग

पुरीष: वायु - आन्त्रों में पीडा, रूक्ष उन्नमयन् कुक्षिं तिर्यग्उर्ध्व च गच्छति।

मूत्रः मूत्रकृच्छ मूत्रवैवर्ण्य, पिपासा, चास्य मुखं परिशुष्यति।

मलायन के क्षय: शून्यानि, लघूनि, विशुष्कानि.

ओज: i) ओजक्षय लक्षण: बिभेति दुर्बलोऽभीक्ष्णं ध्यायति व्यथितोन्द्रिया। दुश्छायो दुर्मना रूक्षः क्षामश्चैवौजसः क्षये।।

ii) जन्म पश्चात का ओज: हृदि स्थित, शुध्द वर्ण - रक्त इषत्पीत

प्रथमं जायेत हि ओज शरीरेऽस्मिन्शरीरीणाम् (मनुष्य शरीर में प्रथम ओज की उत्पत्ति.),iii) गर्भ स्थित ओज: सर्पिवर्ण, मधुरसं, लाजगन्धि प्रजायते।।

6) मधुमेह और सप्त पिडका: मधुमेह : समश्नाताम्, (श्लेष्मा, पित्त, मेद, मांस) अतिप्रवर्धते, आवृत वायु ओज को लेकर बस्ति में प्रवेश, यदा बस्तिं तदा कृच्छ्रो मधुमेहः प्रवर्तते.

(Note : मधुमेह हेतु: i) अवरोध जन्य (च.सू.17)

ii) वातकोप धातुक्षय जन्य (च.नि.4))

प्रमेह पिडका: हेतु: प्रमेह उपेक्षया, स्थान - मांस, मर्म, संधि, संख्या - चरक - 7,सुश्रुत, वाग्भट (10) (मसूरिका, पुत्रिणी, विदारिका) भोज (9)- कूर्मिका, कुलत्थिका, काश्यप (8) - अरूंषिका अधिक वर्णन भेल - बतालिका पिडका वर्णन.

मधुमेह:दर्शयत्याकृतिं गत्वा क्षयमाप्ययते पुनः।(कभी कमऔर कभी बढता है)

i) शराविका: मध्यनिम्ना, क्लेद, रूग्, अन्तोन्नता, श्यावा.

ii) कच्छपिका: महावस्तुपरिग्रहा, श्लक्ष्णा

iii) जालिनी: महाशया, सिराजालवती, स्निग्धस्त्रावा, सूक्ष्माच्छिद्रा

iv) सर्षपिका: महारूजा, क्षिप्रपाका

v) अलजी: दहती विसर्प त्यनिशं, तृष्णामोहज्वरप्रदा

vi)विनता: पृष्ठ-उदर पर, नीला पिडका

vii) विद्रधि: व्दिविध-बाह्य, आभ्यंतर

बाह्य - आश्रय - त्वक् स्नायु मांस, आकार - कण्डरा, लक्षण- महारूजा
अन्तः - स्थान - 9 (हृदय, क्लोम, यकृत, प्लीहा, कुक्षो, वृक्क, नाभि, वंक्षण, बस्ती), (सुश्रुत - 10 गुद extra)
पच्यमान विद्रधि : शस्त्र, उल्मुक, दद्यते, व्यम्लता, वृश्चिकैरिव दंशते।
पित्त विद्रधि – तिलमाषकुलत्थोदकसन्निभं.
A) आभ्यंतर विद्रधी: i) हृदय (प्रधानमर्म):हृद्घट्टन,तमक,प्रमोह, कास, श्वास ii) क्लोम : पिपासा, मुखशोष, गलग्रह, iii) यकृत : श्वास, iv) प्लीहा : उच्छ्वासोपरोध, v) कुक्षि : (पार्श्वान्तर, अंस) शूल vi) वृक्क : पृष्ठकटिग्रह, vii) नाभि : हिक्का, viii) वंक्षण : सक्थिसाद, ix) बस्ति : कृच्छ्र, पूति (मूत्र, वर्चः)
B) अभ्यंतर विद्रधि स्त्रावमार्ग: 3
i) उर्ध्वज - मुख से, ii) अधोज - गुद iii) उभयज - नाभिज (सुश्रुत:a) उर्ध्वस्त्राव - प्रायःमृत्यु (मृत्यु निश्चित), b) अधःस्त्राव - जीवित रह सकता है।)(हृदय,नाभि, बस्ति इन स्थान की विद्रधी की चिकित्सा पाक होने पूर्व करे otherwise असाध्य) बिना प्रमेह की पीडकाएँ Because of दुष्टमेदसः
a) शराविका,कच्छपिका, जालिनी – दुःसहा, अतिबलाः,प्रभूतश्लेष्म मेद
b) शेष 4 – साध्य – पित्तोल्बण, अल्पमेद.

7) दोषगतियाँ:
i) क्षयः स्थानंच वृध्दिश्च, उर्ध्वचाधश्च तिर्यक् च कोष्ठ शाखामर्मास्थिसंधि,
ii) कालकृत कालानुसार – चयाद्या गति,
संदर्भः सर्वा हि चेष्टा वातेन स प्राणः प्राणिनां स्मृतः। च. सु. 17/118
iii) व्दिविध (प्राकृत, वैकृत),

प्राकृत	विकृत
वात – सर्वा हि चेष्टा वातेन स प्राणःप्रणिनां स्मृतः।	रोगोत्पत्ति
पित्त – उष्मणः पक्तिः नराणामुपजायते	विकारान् कुरूते बहुन्
कफ – बल, ओज (प्राकृत श्लेष्मा)	मल, पाप

18) त्रिशोथीय

Topics: शोथ, स्थानीक शोथ संग्रह, त्रिविध बौध्द संग्रह, दोषकर्म आदि.
1) प्रकारः i) एकविध - उत्सेध, ii) व्दिविध - निज, आगन्तुज, iii) त्रिविध - वात,पित्त,कफ, iv) चतुर्विध - वात,पित्त,कफ + सन्निपातज, v) सप्तविध - 4 + वातपित्त, पित्तकफ, वातकफ, vi) अष्टविध - 7 + आगन्तुज (च. सू.18), आकृतिनुसार - 3 (पृथु, उन्नत, ग्रंथित)...(वाग्भट)
साध्यासाध्यानुसार - 3 (उर्ध्व, अधः, मध्यम)... (मा.नि.)

विषय	वातज शोथ	पित्तज शोथ	कफज शोथ
स्थान	त्वक,मांस,शोणित	त्वक,मांस,शोणित	त्वक,मांस,शोणित
उत्थान	क्षिप्रोत्थान प्रशमो	क्षिप्रोत्थान प्रशमो	कृच्छ्रउत्थानप्रशमो
वर्ण	प्रकृतिवर्ण	कपिलताम्रलोम	पाण्डुश्वेत
स्पर्श	पिपीलिका इव,चल, स्पन्दन,सर्षपकल्कलिप्त जैसे चिमचिमायता	उष्णो,मृदुः,स्विद्यते, क्लिद्यते, उष्णस्पर्श असहन,	उष्णस्पर्श सहन
लक्षण	शूयन्ते गात्राणि,स्वपन्तीव पीडितान उन्नमन्त आशु शोथो नक्तं प्रणश्यति	मध्यात् प्रशूयते, तनुत्वक्,अतिसारी	स्पर्श शीतल,अगति, निपीडितो न उन्नमति, शस्त्रकुंशच्छिन्नाच्छोणितं न प्रवर्तते पिच्छा स्त्रवति

2) शोथ साध्यासाध्यत्वः कष्टसाध्यः पुरूष में पाद से शुरू पूरे शरीर मै फैल जाय, स्त्रि में मुख से शुरू पूरे शरीर मै फैल जाय तो कष्टसाध्य.
कष्टतमः i) पुरूष और स्त्रि में गुह्यभाग से उत्पन्न, ii) उपद्रवयुक्त शोथ
3) शोथ उपद्रवः चरक - 7 (छर्दि श्वास अरूचि तृष्णा ज्वर अतीसार दौर्बल्य), सुश्रुत - 9 (हिक्का, कास Extra)

4) स्थानिक शोथ संग्रह :

व्याधी	दोष	स्थान	लक्षण
उपजिव्हिका	कफ	जिव्हामूल	आशु शोथं
गलशुण्डिका	कफ	काकले(तालुमुल)	आशु शोफं
गलगण्ड	कफ	गलबाह्य	शनैः (धीरे) शोफं
गलग्रह	कफ	अन्तःगल स्थिर	आशु शोथं
विसर्प	पित्त	रक्त, त्वक्	राग, सर्पति शोथ
पिडका	पित्त	रक्त, त्वक्	राग, शोथ
तिलक,पिप्लु	पित्त	शोणितं शुष्यति	
व्यंग,नीलिका	पित्तज	शोणितं शुष्यति	
शंखक	पित्त	शंखयोः	दारूण
कर्णमूलशोथ	पित्त	कर्णमूल	ज्वर अन्ते दुर्जयो शोथ
प्लीहावृध्दि	वात	प्लीहा	तोद शनैः (धीरे)
गुल्म	वात	महास्त्रोतस+हृदयादि	शूल, शोथ
वृध्दिरोग	वात	वंक्षण, वृषणौ	शोथ, शूल कर संचरण
उदररोग	वात	त्वक और मांस मध्य	शोथ
आनाह	वात	कुक्षि	नाधो न उर्ध्व जायते

अधिमांस, अर्बुदादि - उत्सेध
रोहिणीः वातपित्तकफ युग्पत कुपित, जिव्हामूलस्थान, शीघ्रकारिणं त्रिरात्रं परमं (3 दिन में मृत्यु)
5) रोग असंख्यः प्रकृति, अधिष्ठान, लिंग, आयतन, विकल्प विशेष - च. सु. 20 रूजा, वर्ण, समुत्थान, स्थान, संस्थान (च.सू.18)
6) त्रिविध बौध संग्रहः परिक्षणीय विषयः 3 - प्रकृति, अधिष्ठान, समुत्थान
7) दोषकर्मः i) वात - धातुगति समा, ii) पित्त - देहमार्दवम् मेधा, iii) कफ -स्नेहो, वृषता, क्षमा,धृति,अलोभ,(अ.हृ.वात - उत्साह,कफ - प्रसन्नता)

19) अष्टोदरीय

पर्याय नामः रोग संग्रह अध्याय
Topics: सामान्यज व्याधीयों के प्रकार वर्णन.
सामान्यज व्याधि - 48, (काश्यप - 50), (वात नानात्मज व्याधि - 80, पित्त नानात्मज व्याधि - 40, कफ नानात्मज व्याधि - 20)
1) एक प्रकार के 3: i) उरूस्तम्भ - त्रिदोष + आम,
ii) सन्यास - त्रिदोषज, मन शरीर अधिष्ठान, iii) अतत्वाभिनिवेश (महागद)
2) 2 प्रकार के 8: i) ज्वर - (शीतसमुत्थ उष्णाभिप्राय, उष्णसमुत्थ शीत) ii) व्रण - (निज, आगन्तुज), iii) आयाम - (बाह्य, आभ्यन्तरायाम), iv)गृध्रसि - (वात, वातकफ), v) कामला - (कोष्ठाश्रित, शाखाश्रित), vi)आमरोग -(अलसक, विसूचिका),vii) वातरक्त - (गम्भीर,उत्तान),(सु. 1,वा.2,शारंगधर 8)viii)अर्श-(शुष्क, आर्द्र) (सु.2और6,वा.2,शारंगधर 6)
3) 3 प्रकार के 3: i) शोथ - वातपित्तकफ,(सु. 6, वा. 3, 9, मा. नि. 9)
ii) किलास - रक्त, ताम्र, शुक्ल (वर्णानुसार च.चि. - धातुगत), (सु. 3 वा. 3, मा. नि. 3) iii) लोहितपित्त -(उर्ध्व, अधः, उभय) (सु. 4,और 7 मा. नि. व शारंगधर 3, भेल 2, हारित - 4)
4) 4 प्रकार के 10: i) वात,पित्त,कफ,सन्निपातज - a) अपस्मार, b) नेत्ररोग, कर्णरोग, मुखरोग, (नेत्ररोग चरक 4 - 96; सु 76; वा. व, शारंगधर 94) (भा. प्र, यो .र 78, कराल 96)
कर्णरोग -चरक 4; (सुश्रुत 28;वा 25; शारंगधर 18; भा.प्र. यो.र 28)
मुखरोग – चरक 4 और 64; (सुश्रुत 65; वा 75; शारंगधर 74; भा. प्र. 67; भोज 65)
C) प्रतिश्याय, ग्रहणीदोष, मद,मूर्च्छा,
प्रतिश्याय- चरक 4; (सुश्रुत 5; र र.स. 5);(ग्रहणी– चरक,सु. व. मा.नि 4)
मद चरक 4; (मदात्यय प्रकार सुश्रुत 4; वाग्भट व शारंगधर 7)

(मदअवस्था चरक 3, सुश्रुत व वाग्भट 3; मा. नि. 4)
मूर्च्छा– 4 (शारगंधर 4; सुश्रुत व मा.नि. 6, हारित – 4)
शोष – साहस सन्धारण क्षय विषमाशन, (सुश्रुत. शोष–7 प्रकार)
क्लैब्य– बीजोपघात,ध्वजभंग,जरया, शुक्रक्षय,
5) 5 भेद के 12: i) गुल्म - वात,पित्त,कफ,सन्निपातज,रक्तज
(सु व वा. 5; शारगंधर 8) ii) प्लीहदोष - वात,पित्त,कफ,सन्निपातज,रक्तज,
iii)कास - वात,पित्त,कफ,क्षतज,क्षयज,(कास- सु,वा. व शा.5),हारित - 8
iv)श्वास- महा,उध्व,छिन्न,तमक, क्षुद्र, (श्वास - सु,वा व.मा.नि. 5)
v) हिक्का-अंत्रजा,क्षुद्रा,व्यपेता,गंभीरा,महती,(हिक्का–सु, वा.,शा. 5)
vi) तृष्णा - वात पित्त आमज, क्षयज, ओपसर्गिक,
(तृष्णा - वाग्भट, शारगंधर 6; सुश्रुत, मा.नि.7)
vii) छर्दि - वात, पित्त, कफ, सन्निपातज, दिष्टार्थसंयोगज,
(छर्दी - सु.व.मा.नि.5 ; शारंगधर 7)
viii) भक्त्यनशन - वात,पित्त,कफ व्देष,आयास (अरोचक–सु.व.मा.नि.5)
ix) शिरोरोग - वात,पित्त,कफ,सन्निपातज, क्रिमिज,
(शिरोरोग -सुश्रुत व मा.नि.-11 शेष सभी आचार्य 10)
x) हृदयरोग - वात, पित्त, कफ, सन्निपातज, क्रिमिज,(सुश्रुत-4 मा.नि.5)
xi) पाण्डुरोग - वात, पित्त, कफ, सन्निपातज मृद्भक्षणजन्य,
(पाण्डु – सु. 4, व. मा. नि. शारंगधर - हारित 8)
xii) उन्माद –वात, पित्त, कफ, सन्निपातज, आगन्तुज. (सु. 6)
6) 6 भेद के 2: i) अतीसार – वात, पित्त,कफ,सन्निपातज,शोकज,भयज,
(अतिसार – सुश्रुत, मा. नि. – 6, शारगंधर –7)
ii) उदावर्त – वातमूत्रपुरीषशुक्रच्छर्दिक्षवथु निरोधज
(भेल – 4, सुश्रुत, मा. नि., वाग्भट – 13)
7) 7 भेद के 3: i) कुष्ठ –कपाल, उदुम्बर, मण्डल, ऋष्यजिव्ह, पुण्डरीक, सिध्म,काकणक, कुष्ठ –(चरक 7,18 व असंख्य, सुश्रुत, वा, मा.नि.18)
ii) पिडका – शराविका,कच्छपिका, जालिनी, सर्षपी, अलजी, विनता, विद्रधि,
(पिडका – मा. नि., शारंगधर, सुश्रुत 10, वाग्भट 7, काश्यप 8, भोज 9)
iii) विसर्प – (वात,पित्त,कफ अग्नि, कर्दम, ग्रंथि, सन्निपातज)
(विसर्प – सु. 5, मा. नि. 7, शारंगधर 9.)
8) 8 भेद के 4: i) उदर: वात,पित्त,कफ,सन्निपातज प्लीहबध्दाच्छिद्रोदकोदर:,
ii) मूत्राघात: वात,पित्त,कफ,सन्निपातज, अश्मरी, शर्करा,शुक्रज, रक्तज,
(मूत्राघात - सुश्रुत 12, मा. नि. 13 वाग्भट-20)
iii) क्षीरदोष: वैरस्यं, वैवर्ण्यं, वैगन्ध्यं, पैच्छिल्यं, फेनसंघातो, रोक्ष्यं,गौरवम्, अतिस्नेहश्च,(क्षीरदोष - हारित - 5) iv) वीर्यदोष: तनु, शुष्क, फेनिल, अश्वेत,पूति,अतिपिच्छिल,अन्यधातूपहितम्,अवसादि.(वीर्यदोष – सुश्रुत–8)
9) 20 भेद के 3: 1) क्रिमिजातियाँ:
i) पुरीषज - 5 ककेरूक, मकेरूक, लेलिह, सशूल, सौसुराद.
ii) रक्तज - 6 केशाद, लोमाद, लोमव्दिप, सौरस, औदुम्बर, जन्तुमाता.
iii) कफज -7 अन्त्राद,उदराद,हृदयाद,चुरू,दर्भपुष्प, सौगन्धिक, महागुद,
iv) बाह्य - 2 युका, पिपीलिका.
(कृमी चरक – पुरक - 5, 6, 7 सुश्रुत 7, 7, 6 पुरिषज, रक्तज, कफज)
2) प्रमेह: i) कफज- 10 – उदक, इक्षुवालिकारस, सान्द्र, सान्द्रप्रसाद, शुक्ल, शुक्र, शीत, सिकता, शनै, लाला,
ii) पित्तज - 6 क्षार, काल, नील, लोहित, मंजिष्ठा, हरिद्र,
iii) वातज - 4 वसा, मज्जा, हस्ति, मधु,
3) योनिरोग: वात, पित्त, कफ, सन्निपातज – दोषज (4)
i) अरजस्का, अचरणा, अतिचरणा, प्राक्चरणा, उपप्लुता, परिप्लुता,
ii) रक्तयोनि, उदावर्तिनी, कर्णिनी, पुत्रघ्नी, अन्तर्मुखी, सूचीमुखी,
iii) शुष्का, वामिनी, षण्डीयोनि, महायोनि.

20) महारोगाध्याय

Topics: नानात्मज रोग वर्णन, दोषों के स्थान, कर्म, चिकित्सा आदि.
रोगत्वम् एकविधं रूक् सामान्यात्।
1) रोग प्रकार: i) चतुर्विध- आगन्तुज, वात,पित्त,कफ,
i) व्दिविध - प्रकृति नुसार -निज,आगन्तुज,अधिष्ठान नुसार - मन:, शरीर
अपरिसंख्य - प्रकृति, आयतन, अधिष्ठान, लिंग, विकल्प, विशेष.
रोग प्रेरक - 3 (असात्मेन्द्रियार्थसंयोग, प्रज्ञापराध, परिणाम)
आगन्तुज - व्यथापूर्व,पश्चात दोष वैषम्यता, निज-दोष वैषम्य पश्चात व्यथा.
2) दोष: i) दोष स्थान: वात - पक्वाशय, बस्ति, पुरीषाधान, कटि सक्थिनि पादावस्थित . विशेष स्थान - पक्वाशय.
पित्त - आमाशय, स्वेदो, रसो,लसीका, रूधिर. विशेष स्थान– आमाशय
कफ - उर: शिरो, ग्रीवा, पर्वण्यामाशय, मेद, विशेष स्थान - उर
common: स्पर्श इंद्रिय - वात, पित्त. आमाशय, रस - पित्त, कफ
ii) कार्य - 2 शुभ,अशुभ सर्वशरिरचरास्तु वातपित्तश्लेष्माण: सर्वस्मिशरीरे कुपिताकु पित्ता शुभाशुभानि कुर्वन्ति ।
शुभ - उपचय, बल, वर्ण, प्रसाद,
3) विकार: 2 (सामान्यज, नानात्मज): i) कूल नानात्मज विकार -140
ii) नानात्मज: वात - 80, पित्त - 40, कफ - 20), iii) सामान्यज - 48,
iv) रक्तज नानात्मज - 10...(शारंगधर), (काश्यप). लवणास्यता
नानात्मज विकार: वात: अशब्दश्रवण,केशभूमिस्फुटन,भ्रम, जृम्भा, विड्भेद, हृन्मोह, दन्तशैथिल्य, अरसज्ञता, घ्राणनाश, अस्वप्न, विषाद, तम, विपादिका, उरुस्तंभ, वेपथू, वक्षोपरोध.
पित्त: दवथु, अंगगन्धश्च, अंगावदारण,शोणितक्लेद, चर्मदल, कक्षा, तिक्तास्यता, लोहितगन्धास्यता, जीवादान, तम: प्रवेश, अतृप्ति, कामला, रक्तपित्त, रक्तकोठ
कफ: कफनानात्मज– तृप्ति, तन्द्रा, निद्राधिक्य, स्तैमित्य, अपक्ति, मलाधिक्य मुखस्त्राव, बलासक, धमनीप्रतिचय, हृदयोपलेप, शीताग्नि, उदर्द.
4) दोष कर्म: i) वात-रोक्ष्यं शैत्यं लाघवं वैशद्यं गति: अमूर्तत्वम् अनवस्थितम्
प्रकोप लक्षण - स्त्रंसभ्रंस व्यास संग भेद साद हर्षतर्षकम्पवर्तचालतोदव्यथा चेष्टादीनि, खरपरूषविशद सुषिरारूणवर्णकषायविरस मुखत्वशोष शूलसुप्ति संकोचन स्तम्भन खंजतादीनि च वायो कर्माणी।
चिकित्सा - तत्र आस्थापन अनुवासन तु खलु सर्वत्रोपक्रमेभयो वाते प्रधानतमम्,
ii) पित्त - औष्ण्यं तैक्ष्ण्यं द्रवत्वमनतिस्नेहो वर्णश्च शुक्लारूणवर्जो गन्धश्च विस्त्रो रसौ च कटुकाम्लौ सरत्वं –
पित्त आत्मरूप - दाहौष्ण्य पाकस्वेद क्लेद कोथ कण्डू स्त्राव रागा गन्धवर्ण रसाभिनिर्वर्तन पित्तस्य कर्माणि.
iii) कफ - स्नेह शैत्यशौक्ल्यगौरव माधुर्यस्थैर्य पैच्छिल्यमात्स्न्यानि-
आत्मरूप - श्वैत्य शैत्य कण्डू स्थैर्य गौरव स्नेह सुप्ति क्लेदोपदेहबन्ध माधुर्य चिरकारित्वानि.
5) चिकित्सा:

दोष	रस	उपक्रम	सर्वश्रेष्ठ	मुलस्थान	दृष्टांत
वात	मधुर, अम्ल, लवण	स्निग्ध,उष्ण,स्नेह,स्वेद, आस्थापन,अनुवासन,नस्य, अभ्यंग,उत्सादन,परिषेक	आस्थापन,	पक्वाशय अनुवासन	(वृक्ष के मुल कटने जैसा)
पित्त	मधुर, तिक्त, कषाय,	शीतोपक्रम,स्नेहविरेक, प्रदेह,परिषेक,अभ्यंग	विरेचन	आमाशय (ग्रहणी)	अग्निगृह
कफ	कटु, तिक्त, कषाय,	तीक्ष्ण,उष्ण,रूक्ष, (स्वेदन वमन, शिरोविरेच, व्यायाम)	वमन	आमाशय	केदार कुल्या

6) रोगमादौ परीक्षेत ततोनन्तरमौषधम ।
तत: कर्मभिषक पश्चाज्ज्ञानपूर्व समाचरेत ।। च. सु. 20/22.

21) अष्टौनिंदितीय

Topics: निंदीतपुरूष, स्थौल्य, कार्श्य व निद्रा वर्णन.

1) निंदित पुरूष: i) अतिदिर्घ, ii) अति-ह्रस्व, iii) अतिलोमा, iv) अलोमा, v) अतिकृष्ण, vi) अतिगौर, vii) अतिस्थूल, viii) अतिकृश.

निन्दित विशेष – अतिस्थूल, अतिकृश

अतिस्थूल, कारण - गुरु मधूर शीत स्निग्ध अतिउपयोग, अव्यायाम, अव्ययाय, दिवास्वाप,बीजस्वभाव.

2) अतिस्थूल 8 दोष:

पुरूष दोष	कारण
i) आयुष -ह्रास	मेद उपचय अन्यधातू वृध्दी नही
ii) जवोपरोध	शैथिल्यात सौकुमार्यद गुरूत्वाच्य
iii) कृच्छ्रव्यवायता	मेदसाऽऽवृतमार्गत्वाच शुक्र क्षय
iv) दौर्बल्य	असमत्वाद्धातूनां
v) दौर्गन्ध्यं	मेदोदोषान्मेदसःस्वभावात स्वेदनत्वाच्य
vi) स्वेदाबाधः	श्लेष्मसंसगार्द विषन्दित्वाद बहुत्वाद, गुरूत्वाद, व्यायाम, असंहत्वात्
vii) क्षुदतिमात्रं	तीक्ष्णाग्नित्व प्रभूतकोष्ठवायू
viii) पिपासातियोग	तीक्ष्णाग्नित्व प्रभूतकोष्ठवायु

3) मेदस्वी पुरूष: वायु - सन्धुक्षय, शीघ्रं जरयत्याहार, उपद्रवकर - अग्नि, वायु

4) अतिकृश कारण: स्नानाभ्यास, क्रोध, अतिकृश परिणाम: अति सौहित्य, ग्रहणीरोग (ग्रहणीगत व्याधी) – बीज दोष हेतू.

अतिकृश की परिभाषा: शुष्क (स्फिक्, उदर, ग्रीवा), धमनीजाल, स्थुलपर्वा, त्वगस्थिशेषो,

स्थुल की चिकित्सा कष्टकर (समोपकरणो)

स्थुल कृश चिकित्सा सिध्दान्त - कर्षन, बृंहण

स्थुल चिकित्सा - गुरू चापतर्पण चेष्टं स्थूलानां कर्षणं प्रति।

कृश चिकित्सा - कृशानां बृंहणार्थंच लघु संतर्पणं च यत्।।

5) अतिस्थुल चिकित्सा: वातघ्न,श्लेष्ममेदोहर, रूक्ष उष्ण तीक्ष्ण बस्ति, रूक्ष उद्वर्तन, गुडुची, भद्रमुस्ता, त्रिफला, तक्रारिष्ट,माक्षिक (मधु), लोहरज, यवामलकचूर्ण, बिल्वादिपंचमूल + क्षौद्र, शिलाजतु + अग्निमंथ,

विहार - जागरण, व्यवाय, व्यायाम, चिन्तन. पथ्य - मधुदक.

(स्थौल्यनाशक - व्योषादि योग..... (वाग्भट))

6)अतिकृशता चिकित्सा: नवान्न, नवमद्य,रसायन, वृष्याणां,योगानामुपसेवनम्

अतिकृशतानाशक: अचिन्तन, सन्तर्पण, स्वप्नप्रसंग. स्निग्ध मधुर बस्ति

शुक्लवासो यथाकालंदोषावसैचनम्।

(उपरोक्त से मनुष्य = वराह सदृश पुष्ठ)

7) स्वस्थ पुरुष संदर्भ: सममांसप्रमाणस्तु समसंहननो नरः।च.सु. 21/18

8) निद्रा: यदा तु मनसिक्लान्ते कर्मात्मानः क्लमान्विता ।

विषयेभ्यो निवर्तन्ते तदा स्वपति मानवः ।।

निद्रायन्तं सुखं दुःखं पुष्टि कार्श्य बलाबलम ।

वृषता क्लीबता ज्ञान अज्ञानं जीवितं न च ।।

निद्रा दुखकारक हेतु 3: अकाल, अतिप्रसंग, निषेविता

9) दिवास्वप्न: अजीर्ण में उपवास कर सोना कहा है। अतीसार, पतिताभिहतोन्मत्ताः, क्लान्त, सर्व एते दिवास्वप्नं सेवेन सार्वकालिकम् गीत अध्ययन, श्वास हिक्का, वृध्दबाल, कृश, आदान, रूक्ष, ग्रिष्मऋतू

दिवास्वप्न निषिध्द: श्लेष्म पित्त, दूषीविषार्त.

(विषार्त: कण्ठरोगी.....(अ.हृ.), कफ, मेद व विष में रात्रि जागरण...(सुश्रुत))

दिवास्वप्न जन्य विकार: हलीमक;कफज,अर्धावभेदक, इन्द्रियाणासामर्थ्य. विषवेगप्रवर्तनम्, त्रिदोष प्रकोप (रात्री जागरण– वातपित्त प्रकोप)

10) i) रात्रौ जागरणं रूक्ष, ii) स्निग्धं प्रस्वप्न दिवा, iii) बैठे - उठते निद्रा लेना - अरूक्ष, अनाभिष्यन्दि.

11) निद्रा निवारण उपाय: i) शोधन - शिरोविरेक, छर्दन, धूम, रक्तमोक्षण. ii) शमन - तमो जयः, निद्रानाश कारण: विकार प्रकृति, वायु के साथ पित्त.

12)निद्रा प्रकार: चरक - 6, वाग्भट - 7, (काश्यप, शारंगधर1),(सुश्रुत - 3) i) तमोभवा - पापमूलीनी -(तामसी) ii) रात्रिस्वभाव प्रभवा - भूतधात्री - (वैष्णवी) iii) श्लेष्मसमुद्भवा, iv) मनः शरीरश्रमसम्भवा, v) आगन्तुकी,vi) व्याध्यनुवर्तिनी – (iii) ते vi) व्याधिषु - वैकारिक)

13) स्थुल–कृशता: स्वप्न आहार समुत्थे च स्थौल्यकार्श्ये विशेषतः। (क) (रसनिमित्तं एव स्थौल्य कार्श्य। (सुश्रुत)

निद्रा से उत्पन्न तन्द्रा ($3^1/_2$) रात्र पश्चात् असाध्य. (अ. सं. सु. 9)

3 रात्रि पश्चात् तन्द्रा असाध्य. (अ. सं. सु. 9))

22) लंघन बृंहणीय

Topics: षडविध उपक्रम.

लंघन: यत्किंचिल्लाघवकरं देहे तत्लंघनं स्मृतम्।

बृंहण: बृहत्वं यच्छरीरस्य जनयेत् तच्च बृंहणम्।

रूक्षण: रौक्ष्यं खरत्वं वैशद्यं यत् कुर्यात् तध्दि रूक्षणम्।

स्नेहन: स्नेहनं स्नेहविष्यन्दमार्दवक्लेदकारकम्। (संदर्भ)

स्वेदन: स्तम्भ गौरव शीतघ्नं स्वेदनं स्वेदनकारकम्। (संदर्भ)

स्तम्भन: स्तम्भनं स्तम्भयति यद् गतिमन्तं चलं ध्रुवम्।

1) षट्उपक्रम गुण :

i) लंघन: लघु, उष्ण, तीक्ष्ण, विशद, रूक्ष, सुक्ष्म, खर, सर, कठिन

ii) रूक्षण: लघु, उष्ण, तीक्ष्ण, विशद, रूक्ष, -- खर, स्थिर, कठिन

iii) स्वेदन: गुरू, उष्ण, तीक्ष्ण, द्रव, रूक्ष, स्निग्ध सुक्ष्म, – स्थिर, सर

iv) बृंहण: गुरू, शीत, मृदु, पिच्छिल, स्निग्ध, मन्द, स्थूल, श्लक्ष्ण, स्थिर, बहल

v) स्नेहन: गुरू, शीत, मृदु, पिच्छिल, स्निग्ध, मन्द, सूक्ष्म, --- सर, द्रव

vi) स्तम्भन: लघु, शीत, मृदु, --- रूक्ष, मन्द, सूक्ष्म, श्लक्ष्ण, स्थिर, द्रव

2) लंघन 10 प्रकार: चतुष्प्रकारः संशुध्दिः पिपासा मारूतातपौ ।

पाचनान्युपवासश्च व्यायामश्चेति लंघनम्।। (अनुवासन बस्ति नहीं)

चरक – शोधन - 4 - वमन, विरेचन, निरूह, नस्य

शमन - 6 - पिपासा, मारूत, आतप, पाचन, उपवास, व्यायाम

(लंघन - 12 वाग्भट a) शमन - 7, क्षुधा व दिपन Extra

b) शोधन - 5 रक्तमोक्षण Extra)

लंघन काल: शिशिर, वातरोगी के लिए

वात रोग लंघन –a) अवस्थानुसार (कफसंसृष्ट वात) b) ऋतुनुसार (आवृत्त वात)

द्वारालंघन	बल	दोष	व्याधि
1. शोधन	उत्तमबल	त्रिदोषरक्त	--
2. पाचन	मध्यबल	कफपित्त	छर्दी, अतिसार, हृद्रोग, अलसक, विसुचिका, ज्वर विबंध, गौरव, हृल्लास,अरोचक
3.पिपासा वउपवास	अल्पबल	--	उपरोक्त व्याधि
4.व्यायामआदी द्वारा		बलवान व्यक्ती मध्यम बलवालेरोग	

5) बृंहण योग्य: धातुक्षय अवस्था, ऋतुनुसार - ग्रीष्म; शोष, अर्श, ग्रहणी दोष, क्रव्यादमांसनाम, मांसभक्षी प्राणी.

6) रूक्षण योग्य: अभिष्यन्द, मर्मस्था, महादोषा, उरूस्तम्भ

रूक्षण द्रव्य - खल्ली, पिण्याक, तंक्र, मधु

7) स्तंभन योग्य: पित्तप्रकृति, क्षार अथवा अग्निदग्ध, वमन, अतिसार, विष, स्वेद अतियोग. स्तंभन द्रव्य - स्वादुतिक्तकषाय

बृंहण अतियोग - स्थौल्य

रूक्षण का सम्यक व अतियोग लंघनवत

षडउपक्रम अयोग लक्षण – रोगाणाम अशमो वृध्दी एव च

सभी रोगों की चि.षडउपक्रमसे मात्रा और काल का विचार कर करनी चाहिए।
संदर्भ: षटत्वं तु नाति वर्तन्ते त्रित्वं वातादयो यथा।

7)अतिलंघन लक्षण:पर्वभेदो,क्षुत्प्रणाशोऽरूचिस्तृष्णा,तमो हृदि, देहाग्निबलनाश

8) स्तम्भन अतियोग: श्यावता, हृद्वर्चोनिग्रहश्च, उद्वेगो, हनुसंग्रह.

9) षड् उपक्रम की सफलता: मात्रा, काल पर निर्भर.

(पिप्पली, भल्लातक - उष्ण होनेपर भी बृंहण, रसायन करनेवाले है।
* प्रियंगु, सारिवा - शीत होनेपर भी लंघन, रसायन करनेवाले है।)

23) सन्तर्पणीय

Topics: सन्तर्पणजन्य व अपतर्पनवजन्य रोग व चिकित्सा.

1) सन्तर्पणजन्य रोग: प्रमेह पिडका कुष्ठ कण्डू पाण्ड्वामयज्वरा:।
कुष्ठान्याम प्रदोषाश्च मूत्रकृच्छ्रम् अरोचक:।। तन्द्रा क्लैब्य, बुध्देर्मोह: प्रमीलक:।
सतर्पणजन्य रोग चिकित्सा - वमन, विरेचन, रक्तमोक्षण, व्यायाम, उपवास, अगस्तिहरितंकी, धूम, स्वेदन, रूक्षान्न, चूर्ण प्रदेह
* प्रमेह नाशक: तक्र, अभया, त्रिफला.
कल्प: (त्रिफलादि, मूस्तादि) क्वाथ; कुष्ठादि चुर्ण.
त्र्युषणादि मन्थ, व्योषाद्य सक्तु, यव गोधूम भोजन.

2) अपतर्पणजन्य रोग: देहाग्निबलवर्णोज्य: शुक्रमांसपरिक्षय:।
ज्वर कासानुबन्धश्च पार्श्वशूलमरोचक:।। विण्मूत्र संग्रह:, वातज गदा: उर्ध्ववात।
उन्माद, प्रलाप, हृदव्यथा, पर्वस्थि सन्धी भेद, जंघाउरू त्रिकशुल

3) संतर्पण प्रकार: 2 i) सद्य ii) अभ्यास

4) सद्य: क्षीण में - सद्य तर्पण (सन्तर्पण)

5) सद्य: सन्तर्पण मन्थ: स्वादुरम्लो जलकृत: (निम्बु शरबत) स्थैर्यवर्णबलप्रद

6) चिर क्षीण में - सन्तर्पण अभ्यास (देह,अग्नि,दोष,औषध,मात्रा,काल)
मांस रस, पय, घृत, स्नान, बस्ति, अंभ्यग

7) मद्य विकार नाशक: खर्जुर, मृद्वीका, वृक्षाम्ल, अम्लीक, दाडिम, मन्थ. ज्वर, कास, मुत्रकृच्छ, तृष्णा, उर्ध्ववात में शर्करा, पिप्पली, तैल, घृत, क्षौद्र, सक्तु से बनाया मन्थ उपयोगी है।

संतर्पण - अपतर्पण common: अरोचक, (ज्वर - ज्वर कास)
मूत्रकृच्छ्र - विण्मूत्र संग्रह,

8) व्योषाद्य सक्तु में (16 गुना सक्तु लें)

24) विधिशोणीतीय

Topics: शुध्द शोणित, रक्तदूष्टीजन्य रोग, रक्तमोक्षण,मद, मूर्च्छा व संन्यास वर्णन.

1) रक्तशुध्दि: देश, काल, ओक, विधि, सात्म्य से समान आचार व आहार पालन से उत्पन्न रक्त
तदविशुध्द हि रूधिरं बलवर्ण सुखायुषा।। युनक्ती प्राणिनां प्राण: शोणीतं ह्यनुवर्तते।।
(प्राणिनां प्राण: के अन्यसंदर्भ वात, जल, अन्न, नाभि)

2) रक्तदुष्टि कारण: कुलत्थ, माष, हरित; (जलज, आनूप, बिल) प्राणी; भोजन पश्चात् दिवास्वाप; अत्यादानं, छर्दिवेग प्रतिघात; शरत्कालस्वभाव..
भुक्तवा दिवा प्रस्वपतां द्रवस्निग्धगुरूणि। चरक... सु.24/8
भुक्त्वा दिवा प्रस्वपतां मांस प्रदोषे..... (च.वि.5/14)

3) रक्तदुष्टिजन्य रोग: प्रमीलक: गुल्म, उपकुश, वातरक्त,लवणास्यता, मद, कम्प. i) धातु (वृध्दि,क्षय) हेतु - रक्त, ii) स्थौल्य,कार्श्य हेतु - आहार,निद्रा.

4) रक्तज रोग चिकित्सा: विरेक, उपवास, स्त्रावणं, रक्तपित्तहरि क्रिया

5) रक्त से दुषित दोष: वात - फेनिल, तनु, पित्त - औष्ण्याच्चिरेण,कफ -तन्तु

6) शुध्द शोणित लक्षण - तप तपनियेन्द्रगोपाभ पद्मालक्त्सन्निभम।
गुंजाफलसवर्ण च विशुध्द विध्दि शोणितम।।

7) शुध्द शोणित पुरुष लक्षण -
प्रसन्न वर्णेद्वियमिन्दियार्थानिच्छन्तमव्याहत पक्तवेगम।
सुखान्वितं पुष्टिबलोपपन्न विशुध्द रक्तं पुरुषं वदन्ति।।

8) रक्तमोक्षण पश्चात् पथ्य - अग्नि रक्षण.

9) रक्तमोक्षण प्रमाण - चरक बल दोषप्रमाण के अनुसार. सार्धत्रयोदश पल (1प्रस्थ).....(शांरगधर, भावमिश्र, वाग्भट)

10) मद,मूर्च्छा,सन्यास: यथोत्तरं बलाधिक्यं- रक्त, रस, संज्ञा वह स्त्रोतस + दोषकारण - मालिनाहार, शीलस्य (आत्मा) रजोमोहावृत्तात्मन:।
A) मदरोग - चेतस: स्थानं यदा वायु:
* मद भेद - 4 i) वात मदरोग, ii) पित्त मदरोग - सम्प्रहारकलिप्रियम्
iii) कफ मदरोग: स्वल्पासम्बध्दवचन,
iv) सन्निपातज मदरोग: जायते शाम्यति त्वाशु मदो मद्यमदाकृति:।
(शीघ्र उत्पन्न और शीघ्र शान्त) मदिरा पान से नशा जैसी स्थिति.
* मद्य, विष, रौधिर (रक्तज) - जन्य मद वात, पित्त, कफ युक्त होता है।
B) मूर्च्छा i) वात मूर्च्छा: वेपथु, अंगमर्दश्च,- शीघ्रं च प्रतिबुध्यते।
ii) पितज मूर्च्छा - सस्वेद प्रतिबुध्यते। iii) कफज मूर्च्छा-चिराच्च प्रतिबुध्यते
iv) त्रिदोषज मूर्च्छा: सन्निपातज अपस्मार वत् विना विभत्स चेष्टा.
- मद, मूर्च्छा, सन्यास; - सन्यास बिना औषध के शमन नहीं होता।
C) सन्यास: i) स्थानसंश्रय - (वाक्, देह, मन और प्राणायतन संश्रित)
ii) लक्षण - काष्ठीभूतो मृतोपम: iii) आत्ययिक चिकित्सा - अंजन, अवपीड,धूम, प्रधमन, सुचि तोद, दाह, नखान्तर पीडा, केश लुंचन,त्रासन, पिडन; आत्मगुप्ता; कपिकच्छु (हिंगु + उष्ण पिप्पली) मुँह में डाले.
संज्ञा प्रबोधनम् (होश में लाने के लिए),
होश में आने पश्चात् लघु अन्न खिलाएँ;
चिकित्सा - विस्मापन, स्मरण, प्रियश्रृती, स्त्रंसन, वमन, अंजन, कवल, रक्तमोक्षण व्यायाम, धूम.

11) मद - मूर्च्छा में पंचकर्म. मद, मूर्च्छा, सन्यास तिनों में औषधोपचार:
a) अष्टाविंशत् औषध/ पानीय कल्याणघृत, कुष्ठ - तिक्त घृत. षट्पल घृत,
b) कौम्भ सर्पि, c) रक्तावसेक, पिप्पली प्रयोग, शिलाजतू, सघृत क्षौद्रशर्करा.

12) अनुपशय द्वारा रक्तज रोग निर्णय:- शीत उष्ण स्निग्ध चिकित्सा जब काम न करें तो रक्तज रोग जानना चाहिए। संदर्भ च.सु. 24 / 17

25) यज्ज: पुरूषीय

Topics: राशीपुरूष उत्पत्ती व रोगोत्पत्ती विषयक संभाषापरिषद, हित-अहित द्रव्य, अग्यद्रव्य, आसव वर्णन.
आत्मेन्द्रिय मनोऽर्थाना योऽयं पुरुष संज्ञक:।
काशिपती वामक का प्रश्न - जिन कारणों से पुरूष बनता है, उसी कारणों से रोग बनते है। या नही ?

1) राशिरस्य आमयानां च प्रागुत्पत्तिविनिश्चये (राशि (पुरूष) में विकार उत्पत्ति)

ऋषि	मत	निष्कर्ष		
i) मौद्गल्य पारीक्षि	- आत्मवाद	- पुरूष & रोग	आत्मज	(मौत)
ii) शरलोम	- मनोवाद(सत्व)	- शरीर & विकार	सत्वज	(शरम)
iii) वार्योविद	- रस वाद	- प्राणि & व्याधी	रसज	(वायर)
iv) हिरण्याक्ष	- षड्धातु वाद	- पुरूष & रोग	षड्धातुज	(हिरष)
v) कौशिक	- मातृ-पितृ वाद	- पुरूष & रोग	मातृपितृज	(कौमा)
vi) भद्रकाप्य	- कर्म वाद	- पुरूष & रोग	कर्मज	(भद्रक)
vii) भरद्वाज	- स्वभाव वाद	- पुरूष & रोग	स्वभावज	(भस्व)
vii) कांकायन	- प्रजापति वाद	- पुरूष & रोग	प्रजापतिज	(काप्र)
ix) आत्रेय भिक्षु	- काल वाद	- पुरूष & रोग	कालज	(भिका)
x) आत्रेय पुनर्वसु	- गर्भ वाद	- -	-	(पुग)

2) आहार भेद: 1 - आहारत्वम् आहारस्य एक विधम्.
2 - द्वियोनि: स्थावर जांगम्, 2 - द्विविध प्रभाव: हिताहित,
4 - चतुर्विध उपयोग - पान अशन भक्ष्य लेह्य. 6 - षडास्वाद:, रस भेदात्;
20 - विंशतिगुण: अपरिसंख्येयविकल्प: द्रव्यसंयोगकरणबाहुल्यात्.

आहार द्रव्य वर्ग	हिततम	अहिततम
i) शूकधान्य	लोहितशालि	यव
ii) शमीधान्य	मुद्ग	माष
iii) जल	आन्तरीक्ष	वर्षा में नदी का
iv) लवण	सैन्धव	औषर
v) पत्रशाक	जीवन्ती	सर्षप
vi) मृग मांस	ऐणेय	गोमांस
vii) पक्षी मांस	लावा	काणकपोत
viii) बिलेशय	गोधा	मण्डूक
ix) मत्स्य	रोहित	चिलचिम
x) घृत	गोघृत	मेषीघृत
xi) दुग्ध	गोदुग्ध	मेषीदुग्ध
xii) स्थावरस्नेह	तिल तैल	कुसुम्भतैल
xiii) आनूपमृगवसा	वराहवसा	महिषवसा
xiv) मत्स्यवसा	चुलुकीवसा	कुम्भीरवसा
xv) जलचर – पक्षिवसा	पाकहंसवसा	काकमद्गुवसा
xvi) विष्किर पक्षिवसा	कुक्कुटवसा	चटकवसा
xvii) शाखामेदस्	अजामेदस्	हस्तिमेदस्
xviii) कन्द	आर्द्रक (श्रृंगवेर)	आलुक
xix) फल	मृद्विका	लकुच (निकुच)
xx) इक्षुविकार	शर्करा	फाणित

3) अग्याणां: 152 - (वर्णित 156); अ.सं. 155, उत्तरस्थान 50; अ.हृ. 52, उत्तरस्थान 40, (वाजीकरण अध्याय)

i) विघातायोपदिश्यते (रोगनाश,रोग निवारण),ii)चिकित्सा प्रयोग के लिए वर्णित 1) अन्न - वृत्तिकर, 2) उदक - आश्वासकर (स्तम्भनकर) अ.सं.= क्लेदन, 3) सुरा - श्रमहर, 4) क्षीर - जीवनीय, 5) मांस - बृंहणीय, 6) मांस रस तर्पणीय, 7) लवण - अन्नद्रव्यरूचिकर, 8) अम्लरस - हृद्य, 9) कुक्कुट - बल्य, 10) नक्रस्तो - वृष्य, 11) मधु - कफ,पित्त प्रशमन, 12) सर्पि - वात, पित्त प्रशमन, 13) तैल - वात, कफ प्रशमन, 14) क्षार - पुंसत्वोपघाति, 15) तिन्दुक - अन्न द्रव्य अरूचिकर, 16) आमकपित्थ - अकण्ठय, 17) अविसर्पि - अहृद्य, 18) अजाक्षीर - शोषघ्न स्तन्य सात्म्य रक्तसांग्राहिक रक्तपित्त प्रशमन, 19) अविक्षीर - कफ,पित्त जनन, 20) महिष क्षीर - स्वप्न जनन, 21) मन्दक दधि - अभिष्यंदकर, 22) गवेधुक - कर्शनीय, 23) उद्दालक - विरूक्षणीय, 24) इक्षु - मूत्र जनन, 25) यव - पुरीष जनन, 26) जम्बु - वात जनन, 27) शष्कुली - कफ,पित्त जनन, 28) कुलत्थ - अम्लपित्त जनन, 29) (उडद) माष - कफ, पित्त जनन, 30) मदन-फल - वमन आस्थापन अनुवासन उपयोग, 31) त्रिवृत् (निशोथ) - सुखाविरेचन, 32) चतुरंगुल (अमलतास) - मृदु विरेचन, 33) स्नूकपय (थूहर दूध) - तीक्ष्ण विरेचन, 34) प्रत्यक् पुष्पा (अपामार्ग)- शिरोविरेचन, 35) विडंग - क्रिमिघ्न, 36) शिरिष - विषघ्न, 37) खदिर - कुष्ठघ्न, 38)रास्ना (बस्ति) - वातहर, 39) आमलक - वय:स्थापन, 40) एरण्डमुल - वृष्य वातहर, 41) पिप्पलीमुल - दीपन, पाचन, आनाह प्रशमन, 42) चित्रकमुल - दीपन, पाचन, गुदशोथार्श: शूलहर, 43) पूष्कर मुल - हिक्का, श्वास, कास, पार्श्वशूलहर, 44) मुस्तक (नागरमोथा) - सांग्रहिक दीपन पाचन (संदीप), 45) उदीच्य निर्वापण - दीपन पाचन छर्द्यतीसारहर, 46) कट्वंग (सोनापाठा) सांग्रहिक पाचन दीपन, 47) अनन्ता (अनन्तमुल) - सांग्रहिक रक्तपित्त प्रशमन, 48) अमृता (गुडूची) - सांग्रहिक , वातहर, दीपन, कफ, रक्त, विबन्ध प्रशमन, 49) बिल्व - सांग्राहिक, दीपन, वात, कफ प्रशमन, 50) अतिविषा - दीपन पाचन सांग्रहिक सर्वदोषहर, 51) उत्पल कुमुद पद्माकिंजल्क: - सांग्रहिक रक्तपित्त प्रशमन, 52) दुरालभा (जवासा)-पित्त,कफ प्रशमन, 53)गन्धप्रियंगु: -रसायन, पित्त अतियोग प्रशमन, 54) कुटजत्वक् -कफ, पित्त, रक्त सांग्रहिकोपशोषण,55) काश्मर्यफल (गम्भारीफल)-रक्त सांग्रहिक, रक्तपित्त प्रशमन, 56) पृश्निपर्णी - सांग्रहिक, दीपन (वातहर) वृष्य, 57) विदारिगन्धा (शालपर्णी) - वृष्य, सर्वदोषहर. 58) बला - सांग्रहिक बल्य वातहर, 59) गोक्षुर - मूत्रकृच्छ्र अनिलहर, 60) हिंगुनिर्यास - छेदन दीपन अनुलोमि, वात, कफ प्रशमन, 61) अम्लवेतस - भेदन दीपन अनुलोमि, वात, कफहर, 62) यावशूक: (यवक्षार) - स्त्रंसन पाचन अर्शोघ्न, 63) चंदन प्रलेप - दुर्गन्धहर दाहनिर्वापण, 64) रास्नालेप, अगुरूलेप - शीतापनयन, 65) लामज्जकोशीर - दाहत्वग्दोष स्वेदापनयन, 66) कुष्ठ - वातहर अभ्यंग उपनाह, 67) मधुक (मुलहठी) - चक्षुष्य वृष्य केश्य कण्ठय वर्ण्य विरंजनीय रोपणीय, 68) वायु - प्राणसंज्ञा प्रदानहेतु, 69) अग्नि - आम स्तम्भ शीत शूलोद्वेपन प्रशमन, 70) जल - स्तम्भन, 71) मृद्भृष्टलोष्ट्रानिर्वापित उदकं - तृष्णा छर्द्यतियोग प्रशमन, 72) मद्य - सौमनस्य जनन, 73) तक्राभ्यास - ग्रहणीदोष शोफ अर्श घृतव्यापत् प्रशमन, 74) क्रव्यादमांसरसाभ्यास – ग्रहणीदोष शोष अर्शघ्न, 75) क्षीरघृताभ्यास - रसायन, 76) सम घृतसक्तु प्राशाभ्यास - वृष्य उदावर्तहर, 77) तैल गण्डुषाभ्यास - दन्तबल रूचिकर, 78) वमन - कफ संशोधन, 79) विरेचन - पित्त, 80) बस्ति - वात संशोधन, 81) स्वेदन - मार्दवकर 82) व्यायाम - शरीरस्थैर्यकर, 83) अतिमात्राशन - आमदोष हेतु, 84) यथाग्न्यभ्यवहार - अग्निसन्धुक्षण, 85) यथासात्म्य चेष्टाभ्यवहार -सेव्यानाम् (सेवनीय), 86) कालभोजन - आरोग्यकर, 87) तृप्ति - आहारगुण, 88) वेगसंधारण - अनारोग्यकर, 89) मद्याक्षेप -धी धृति स्मृतिहर, 90)गुरू भोजन दुर्विपाककर, 91) एकाशन भोजन(एक काल भोजन) - सुख परिणामकर, 93) स्त्रीष्वतिप्रसंग - शोषकर, 94) शुक्रवेगनिग्रह - षाण्ढ्यकर, 95) पराघातनम् - अन्न अश्रध्दा जनन, 96) अनशन - आयु ऱ्हासकर, 97) प्रमिताशन - कर्शनीय, 98) अजीर्णाध्यशन - ग्रहणीदूषण, 99) विषमाशन - अग्निवैषम्यकर, 100) विरूध्दवीर्याशन - निन्दित व्याधीकरण 101) प्रशम: - पथ्यानाम, 102) आयास - सर्व अपथ्याम, 103) मिथ्यायोग - व्याधिकर, 104) रजस्वलाभिगमन - अलक्ष्मीमुख, 105) ब्रह्मचर्य - आयुष्य, 106) परदाराभिगमन (परस्त्रीगमन) - अनायुष्य, 107) संकल्पो - वृष्य, 108) दौर्मनस्य (मनखिन्नता) - अवृष्य, 109) अयथाबलारम्भ - प्राणोपरोधि, 110) विषाद - रोगवर्धन, 111) स्नान - श्रमहर, 112) हर्ष - प्रीणन, (अ.सं. = रस प्रीणनानां), 113) शोक - शोषण, 114) निवृत्ति: - पुष्टिकर, 115) पुष्टि - स्वप्नकर, 116) अतिस्वप्न - तन्द्राकर, 117) सर्वरसाभ्यास - बलकर, 118) एकरसाभ्यास - दौर्बल्यकर, 119) गर्भशल्य - आहार्य, 120) अजीर्ण - उध्दार्य, 121) बालो - मृदुभेषजीय, 122) वृध्दो - याप्य, 123) गर्भिणी - तीक्ष्णौषधव्यवाय व्यायाम वर्जनीय, 124) सौमनस्य - गर्भधारणा, 125) सन्निपात -दुश्चिकित्स्य,126)ाम - विषमचिकित्स्य,127) ज्वर - रोगाणाम्, 128) कुष्ठ - दीर्घ रोगाणाम्, 129) राजयक्ष्मा - रोगसमूहानाम्, 130) प्रमेह - ऽनुषंगिणाम्, 131) जलौका - अनुशस्त्र में, 132) बस्ति- तन्त्र,133) हिमवान- औषधिभूमी, 134) सोम - औषधी, 135) मरूभूमि - आरोग्यदेश, 136) आनूप - अहितदेश, 137) निर्देशकारित्व - आतुरगुण, 138) भिषक् - चिकित्सांग, 139) नास्तिक - वर्ज्य, 140) लौल्य - क्लेशकर, 141) अनिर्देशकारित्व - अरिष्ट, 142) अनिर्वेद (मन:संताप न होना) - वार्तलक्षण (श्रेष्ठ आरोग्य लक्षण), 143) वैद्यसमूह - नि:संशयकर, 144) योगो (मन की एकाग्रता) - वैद्यगुण, 145) विज्ञान (व्यावहारिक ज्ञान) - औषधी, 146) शास्त्रसहित: तर्क: - साधन, 147) सम्प्रतिपत्ति: (यथायोग कर्म करना)- कालज्ञान प्रयोजन, 148) अव्यवसाय - कालातिपत्ति हेतु (समय बेकार करना), 149) दृष्टकर्मता - नि:संशयणाम, 150) असमर्थता - भयकर, 151) तद्विद्यसम्भाषा - बुध्दिवर्धन, 152) आचार्य: - शास्त्रअधिगमहेतु (शास्त्र ज्ञान कराने वाला), 153) आयुर्वेद - अमृत, 154) सद्वचम् - अनुष्ठेय (पालनीय), 155) असद्ग्रहण (दुर्जन समता)- सर्व अहित, 156 - सर्वसन्यास – सुखानाम्.

अनशन	– आयुऱ्हासकर	अतिस्त्री प्रसंग	– शोष जनक
प्रमिताशन	– कर्शनीय	रजस्वला स्त्री	– अलक्ष्मीकर
एककालभोजन	– सुखपरिणामकर	परस्त्रीगमन	– आयुनाशक

विषमाशन	– अग्निविषमताकारक	ब्रह्मचर्य	– आयुवर्धक
अतिमात्राशन	– आमदोषवर्धक	विषाद	– रोगवर्धक
गुरू भोजन	– अजीर्ण जनक दुर्विपाककर	स्त्री संकल्प	– वाजीकर
अजीर्ण में भोजन	– ग्रहणी विकार कारक		
अनिर्वेद	– श्रेष्ठ आरोग्य लक्षण (वार्तलक्षण)		
यथासमय भो.	– आरोग्यकर	दौर्मनस्य	– अवृष्य
अग्निनुसार भो.	– अग्निसन्धुक्षणकारक	अजीर्ण	– उध्दार्यानां
हितकर चेष्ट भो.	– सेवनीय	आमविष	– विषमचिकित्स्य
विरूध्दवीर्य भो.	– निंदित व्याधिजनक	सन्निपात	– दुष्चिकित्स्य

श्रेष्ठ – अ.सं.उ. 50 श्रेष्ठ द्रव्य चरक से अतिरिक्त

1) उपवासो – ज्वरहराणाम

2) लसून – गुल्म अनिल हराणाम

3) रक्तवसेको - विद्रधि विसर्प पिटीका गण्डमालाहराणाम

4) उष्टीक्षीर - उदरश्वयथूध्नानाम

5) त्रिफला - तिमिर हराणाम

6) त्रिफला गुग्गुल - व्रण्यानाम

7) पादाभ्यंग - उद्वर्तन - अन्नश्रध्दाजननानाम

8) आश्वासो - बलकराणाम 9) सिध्दी - वैद्य गुणानाम

10) आत्मवन्त - उपकारिणा 11) सदवैद्यद्वैष - प्राणत्याग हेतूनाम

संदर्भ - पथ्यं पथोऽ न पेतं यद्यच्चोक्तं मनसःप्रियम ।

यच्चाप्रिय अपथ्यं च नियत तान लक्षयेत ।।

मात्राकाल क्रिया भूमि देह दोष गुणान्तरम ।

4) आसव योनि: 9

i) शर्करा -1, ii) पत्र - 2 (पटोल, ताड), iii) त्वक - 4 (तिल्वक, लोध्र, एलवालुक, क्रमुक), iv) काण्ड - 4 (इक्षु, काण्डेक्षु, इक्षुवालिका, पुण्ड्रक), v) धान्य - 6 (सुरा, सौवीर, तुषोदक, मैरेय, मेदक, धान्याम्लाः), vi) पुष्प - 10, vii) मूल - 11, viii) सार - 20, ix) फल - 26,

* आसव - 84 (इसमें संधान क्रिया होती है।)

5) आसव गुण: i) मन: शरीराग्निबल प्रदान,

ii) (अस्वप्न, शोफ, अरूचि) नाशक, iii) संहर्षण.

26) आत्रेयभद्रकाप्यीय

Topics: रस निर्धारण संभाषा परिषद, द्रव्य, गुण, विर्य, विपाक प्रभाव व विरूध्द आहार वर्णन.

1) रस संख्या निर्धारण: संभाषापरिषद–चैत्ररथवन-10 आचार्य

खण्डन	आचार्य	रससंख्या	रस
योनि	– भद्रकाप्य	1	आप्य
कर्म	– शाकुन्तेय	2	छेदनीय, उपशमनीय.
कर्म	– मौद्गल्य	3	छेदनीय, उपशमनीय, साधारण
प्रभाव	– हिरण्याक्ष	4	स्वादु, अस्वादु, हितकर, अहितकर
आश्रय	– कुमारशिराभरद्वाज	5	भौम, आप्य, तेजस, वायव्य, अन्तरिक्ष
गुण	– वार्योर्विद	6	गुरू लघु, शीतोष्ण, स्निग्ध रूक्ष.
द्रव्य	– निमि	7	मधुर, अम्ल, लवण, कटू, तिक्त, कषाय, क्षार
अव्यक्त (प्रकृती,अनुरस)	– धामार्गव	8	मधुर, अम्ल, लवण, कटू, तिक्त, कषाय, क्षार, अव्यक्त.
(आश्रय, गुण, कर्म, स्वाद अपरिसंख्य)	– कांकायन	असंख्य	
	– पुनर्वसू आत्रेय:	6 - मधुर, अम्ल, लवण, कटू, तिक्त, कषाय,	

= सर्वं द्रव्यं पांचभौतिकमाऽस्मिनर्थे। कर्म पंचविधमुक्तं वमनादि।।

2) द्रव्य	गुण	कर्म	विपाक
1) आकाश	मृदु, श्लक्ष्ण	मार्दव, सौषीर्य, लाघव	लघु
2) वायु	लघु	रौक्ष्य,ग्लानि,विचार,वैशद्य,लाघव	लघु
3) तेज	उष्ण,तिक्ष्ण	दाह,पाक,प्रभा,प्रकाश,वर्ण	लघु
4) जल	द्रव,स्निग्ध, पिच्छिल	उपक्लेद,स्नेह,बंध, विष्यंद,मार्दव, प्रल्हाद	गुरू
5) पृथ्वी	गुरू	उपचय,संघात,गौरव, स्थैर्य	गुरू

* युक्ति के अनुसार द्रव्य - औषधि.

* अनेनोपदेशेन नानौषधिभूतं जगति किंचिद् द्रव्यमुपलभ्यते तां तां युक्तिमर्थ...

3) यत् कुर्वन्ति तत् कर्म, येन कुर्वन्ति तद् वीर्यम्।
यत्र कुर्वन्ति तद् अधिकरण, यदा कुर्वन्ति स काल।
यथा कुर्वन्ति स उपाय, यत् साधयन्ति तत् फलम्।।

(सुश्रुत– यत निष्पादयति तद फलम) (सु.सु. 42)

4) रस भेद: i) संयोगानुसार - 57

ii) विकल्प अनुसार - 63 (द्रव्य, देश, काल, प्रभावात्)

iii) रस, अनुरस अनुसार - अपरिसंख्य, iv) तर तम भाव अनुसार - अपरिसंख्य

5) रसों के गुण.... (चरक)

गुण	प्रवर	मध्य	अवर	
गुरू	मधुर	कषाय	लवण	(163)
लघु	तिक्त	कटु	अम्ल	(542)
शीत	मधुर	कषाय	तिक्त	(165)
उष्ण	लवण	अम्ल	कटु	(324)
स्निग्ध	मधुर	अम्ल	लवण	(123)
रूक्ष	कषाय	कटु	तिक्त	(645)

सुश्रुत अम्ल मध्यम गुरू

6) रस: शुष्कस्य व्यक्त: आदौ, अनुरस - विपर्यय

(पाच रस वाले - हरितकी, रसोन: भल्लातक, रौप्य, शिलाजीत.

* सहा रस वाले - पारद, कृष्ण एण, पृथ्वी, शुक्र आमलकी, क्षार)

रसो नास्ति हि सप्तम:। [1) रस Not more than 6,

2) उपक्रम Not more than 6, 3) दोष Not more than 3,]

7) परादि गुण: चिकित्सा सिध्दि उपाय

i & ii) परत्व, अपरत्व - देश काल वयोमान पाकवीर्य रसादिषु परापरत्वे।

iii) युक्ति - युक्तिश्च योजना या तु युज्यते। vi) संख्या स्याद् गणितम्

v) योग: सहसंयोग. vi) विभागस्तु विभक्ति: स्याद् वियोगो भागशो ग्रह:।

vii) पृथकत्वं स्याद संयोगो वैलक्षण्यमनेकता. viii) भावाभ्यसनम् अभ्यास: शीलनं सतत क्रिया. ix) परिणामं पुनर्मनिं x) संस्कार: करणं

- जल (अंतरिक्ष) - प्रकृति - शीत, लघु, अव्यक्त रस

8) अपवाद : i) महत्पंचमूल - कषाय, तिक्त परंतु उष्ण वीर्य.

ii) जलज, आनुप मांस - मधुर परंतु उष्ण वीर्य,

iii) कपित्थ - अम्ल परंतु संग्राही, iv) आमलक - अम्ल परंतु भेदि,

v) पिप्पली, नागर - कटु परंतु वृष्य, vi) अभया - कषाय परंतु अनुलोमक

9) रस: – धातु: मधुर - सुवर्ण, घृत. अम्ल - रजत, मद्य.

लवण - सीस,त्रपु,सिन्धुत्थ क्षार. कटु - पित्त, मूत्र, नागर.

तिक्त - कांस्य, लोह, पटोल. कषाय - मुक्ता, प्रवाल, अंजन, गैरिक, अभया

10) मधुर	अम्ल	लवण
लक्षण:		
1) प्रीणन	1) मुखबोधनात	1) क्लेदविष्यन्दमार्दव
2) लिम्पतीव	2) मुखास्त्राव, स्वेदन	2) विदाहमुखस्य
3) आल्हाद (प्रसन्नता)	3) विदाह कण्ठ आस्य	

गुण कर्म:

* शरीरसात्म्य	* भक्तं रोचयति	*स्तम्भबन्धसंघातविधामन:
* सप्तधातु, ओजवर्धक	* मनो बोधयति	* सर्वरस प्रत्यनीकभूत:
* षडिन्द्रिय प्रसादन	* इंद्रिय दृढिकरोति	*सर्वशरीरावयवान् मृदुकरोती
* क्षीणक्षत संधानकर	* हृदय तर्पयति	* रोचयत्य (रूचिकर)
* बृंहण	* अग्नि दीपन	* पाचन क्लेदन
* रस पुंसत्ववर्धन	* बृंहण	* छेदन भेदन वातहर:
* विषघ्न	* वातानुलोम	* कफ विष्यंद
* त्वच्य, केश्य		* मार्ग विशोधन

अतिसेवन से:

* मांसाभिवृध्दि	* रक्त दूषयति	* रक्तं वर्धयति
(मांस स्थिरीकर-तिक्त)	* मांस विदहति	* विषं वर्धयति
मांस विदहति-अम्ले)	* दंत हर्षति	* पुंसत्वमुपहन्ति
मांस विलेखति-कटु)	* कायं शिथिल करोति	* वलीपालितखालित्य
	* संवेजयति लोमानि	* दारयति
	* कफ विलापयाति	* कृष्णाति मांसानि
	* पित्तमभिवर्धयति	* प्रगालयति कुष्ठानी,
	* क्षीण क्षतकृशदुर्बलानां	* इंदिय उपरूणध्दि
	* क्षवथु	

कटु	तिक्त	कषाय
लक्षण:		
1) संवेजयेद्यो रसना	1) प्रतिहन्ति निपाते	1) वैशद्य स्तम्भ जाड्यै:
2) निपाते तुदतीव च	2) मुखवैशद्य, शोष	2) बध्नात् कण्ठ(गला बंधा)
3) विदहन्मुखनासाक्षि स्त्राव	3) प्रल्हादकारक:	
गुण कर्म:		
* रोचयत्यशनं	* स्वयं अरोचक	* सशंमन
* वक्त्र शोधयति	अरोचकघ्न	* संग्राही
* भुक्तं शोषयति	* ज्वरघ्न	* संघातकर:
* कण्डू विनाशयति	* शोषण	* रोपण
* अग्नि दीपन	* कृमिघ्न	* स्तंभन
* व्रण अवसादयति	* विषघ्न	* शरीरक्लेदस्योपक्ता
* क्रिमी हिनस्ति	* कुष्ठघ्न	* अविदाही
* मांस विलेखति	* त्वकमांस स्थिरीकर	
* चक्षु विरेचयति		
अतिसेवन से:		
* विपाक प्रभाव से पुंसत्वमुपहंति	* शोषण	* आस्यं शोषयति
* वात विकारान्	* वात विकार	* वाचं निगृह्णाति
* शरीरतापं उपजनयति	* कर्षयति	* पुंसत्वमुपहन्ति
* कर्शयति	* ग्लपयति	* हृदयं पीडयति
* मूर्च्छयति	* मोहयति	
* नमयति, तमयति	* भ्रमयति	

Common: *विदाही–अम्ल, लवण, कटु * पुंसत्वमुपहंति– कषाय,लवण,कटु * ग्राही, अविदाहि–कषाय*दीपन, पाचन–तिक्त * कृमिघ्न, कंडूघ्न – तिक्त,कटु

11) विपाक: i) मधुर – सृष्टविण्मूत्रो, शुक्रल * मधुर, अम्ल, लवण में स्निग्ध इसलिए वातविण्मूत्र प्रवृत्ति सुखेन, ii) अम्ल– सृष्टविण्मुत्र, शुक्रनाशन. iii)कटु – बध्द विण्मूत्रो, शुक्रनाशन * कटु, तिक्त, कषाय– रूक्ष इसलिए वात विण्मूत्र दुखेन.

12) वीर्य: = क्रियते येन या क्रिया.

8 (मृदु तीक्ष्ण गुरू लघु स्निग्ध रूक्षोष्ण शीत), 2 (शीत, उष्ण)

13) *रसो निपाते द्रव्याणां विपाक: कर्मनिष्ठया।*
वीर्य यावद् अधीवसान् निपाताच्चोपलभ्यते ।। (च. सु .26)

(रस का ज्ञान – निपात से, वीर्य का ज्ञान निपात+अधिवास से, विपाक का ज्ञान कर्मनिष्ठ से।)

14) प्रभाव: i) विशेष कर्मणा (जिसके द्वारा विशेषकर्म होता है।)
ii) प्रभावो ऽचिन्त्यु उच्यते (अचिन्त्य वीर्य वाग्भट)
दंती – कटु – कटु – उष्ण व विरेचक परंतु चित्रक नही
* बलवत्तता: रस → विपाक → वीर्य → प्रभाव.

15) वैरोधिक आहार:
देह धातु प्रत्यनीक भूता,देह धातु विरोधम्,परस्पर गुणविरूध्दानि,
i) गुणविरूध्द - मछली + दुध, ii) संयोगविरूध्द - गुड + मकोय,
iii) संस्कारविरूध्द - हारिद्रक पक्षी मांस + सरसों तैल, iv) देशविरूध्द - आनूप देश में स्निग्ध, शीत औषध प्रकोप. v) कालविरूध्द - शीतकाल में शीत & सेवन, vi) मात्राविरूध्द - सममात्रा में घी & मधु,
vii) स्वभावविरूध्द - शाको में सरसों का शाक, दूध में भेड का दूध.
viii) अनुपान विरूध्द- दूध के बाद मंथ- कफ प्रकोप,
ix) संपद् विरूध्द - (वीर्यवान + अवीर्यवान) औषध.
वैरोधिक आहार: पदमोत्तरिकाशाकं शार्कर मैरेय व मधुसह सेवन – वातकोपक
हारिद्रक - सर्षप तैल में भूनकर खाना - पित्तकोपक
पायस के बाद सत्तू घोलकर पिना - कफकोपक
i) मछली + दूध -i) विरूध्द वीर्य: रक्त दुषित, ii) महाभिष्यंदी : मार्गावरोध
ii)बलाका मांस + (वारूणी, कुल्माष सुकर मांस - सद्य व्यापद (शीघ्र मारक)
iii) मत्स्य + (पिप्पली /काकमाची /मधु) - मृत्युजनक,
iv) मधु + सर्पि, अंतरिक्ष जल, पुष्करबीज (कमल बीज), उष्णोदक,
v) भल्लातकोष्णोदक, vi) तक्र सिध्द कंपिल्लक:,
vii) पर्युषित काकमाची vii) भास पक्षी मांस अंगारशुल्य (भूनकर)
ix) संस्कार विरूध्द - एरण्डसीस कासक्त शिखिमांसं

16) विरुध्द आहार:
अवस्था विरूध्द - परिश्रम, मैथून, व्यायाम, आसक्त को वातप्रकोप आहार
क्रमविरूध्द - बिना नित्य कर्म किये भोजन ।
परिहार विरूध्द - उष्ण घृतपान फिर शीतल जल पिना
वराह मांस सेवनोपरान्त उष्णं वस्तु सेवन ।
उपचार विरूध्द- स्नेहपान के बाद शीतल आहार विहार

17) वैरोधिक आहार लक्षण:
यत् किंचित् दोषम् स्त्राव्यं न निर्हरति कायत: ।
आहारजातं तत् सर्वमहितायोपपद्यते ।।

18) वैरोधीक आहार भेद 18.
* विरूध्दहार जन्य व्याधी: 20 कुछ महत्वपूर्ण व्याधी – षाण्ढय, आन्ध्य, मद, मूर्च्छा, मृत्यु, अम्लपित्त, कृष्ठ, ग्रहणी.
वैरोधिक आहार चिकित्सा - वमन, विरेचन, शमन. (बस्ति उल्लेख नही।)
पूर्व वा हितसेवनम्, सात्म्य, अल्पमात्रामें, दिप्ताग्नी, तरूणव्यक्ती, स्निग्ध, व्यायाम बलिनां रहनेपर वैरोधिक आहार से व्याधि उत्पत्ती नहीं होती।

27) अन्नपानविधि

Topics: हितकर – अहितकर आहार द्रव्य कर्म; आहार द्रव्य वर्ग.
इष्टवर्णगन्ध रसस्पर्श विधिविहित अन्नपानमं प्राणिनां प्राणसंज्ञकानां प्राणमाचक्षते।
हितकर - अहितकर आहार द्रव्यों के कर्म: i) उदकं स्वभावात् क्लेदयति, ii) लवण विष्यंदयति, iii) क्षार: पाचयति, iv) मधु संधाति (जोडने वाला), v) सर्पि स्नेहयति, vi) क्षीरं जीवयति, vii) मांस बृंहयति, viii) रस: प्रीणयति (मांसरस तर्पणीय च.सु:25), ix) सुरा जर्जरीकरोति (शरीर को जर्जर & शिथिल) x) शीधुवरधमति (शरीर को कृश), xi) द्राक्षासवो दीपयति, xii) फाणित आचिनोती (राब = (मलों,दोषों को संचय), xiii) दधि शोफं जनयति,
xiv) पिण्याक शाकं ग्लपयति, xiv) प्रभूतान्तर्मलो माषसूप:, xvi) क्षार दृष्टिशुक्रघ्न.

संदर्भ–रस अपवाद के उदाहरण: i) मधुर द्रव्य कफकारक अपवाद मधु,पुराण शालि षष्टि, यव, गोधुम ii) अम्ल द्रव्य पित्तकारक अपवाद दाडिम, आमलक, iii) कटु द्रव्य वात, अवृष्यकारक अपवाद पिप्पली, सोठं, रसोनं,iv) लवण अचक्षुष्य अपवाद सैंधव v) तिक्त द्रव्य वात, अवृष्यकारक अपवाद वेत्राग, अमृता, पटोल. vi) कषाय द्रव्य, स्तम्भन अपवाद हरितकी.

चरक आहार द्रव्य वर्ग – 12 :- शुक, शमी, मांस, शाक, फल, हरित, मद्य, जल, गोरस, इक्षु, कृतान्नवर्ग, आहारयोनी.

(सुश्रुत - द्रव द्रव्य - 10, अन्न द्रव्य - 13,

अ. सं. - द्रव द्रव्य - 6, अन्न द्रव्य - 6,

अ. हृ. - द्रव द्रव्य - 5, अन्न द्रव्य - 7)

1) शुक - सर्व धान्य में रक्तशालि श्रेष्ठ महाशाली से, महाशाली कलम से.

* षष्टिक धान्य में गौर श्रेष्ठ कृष्ण से * यव - शकृद्वर्धन में श्रेष्ठ

* गोधूम - संधान, वातहर

2) शिम्बी - मधुर, शीत, गुरू, रूक्षताकारक.

* मुद्ग - कफ,पित्त नाशक

* तिल - (1546) कफ,पित्त बढानेवाला

3) मांस - * प्रसह - झपट के खाने वाले प्राणी

* वारिशय - जल में रहनेवाले प्राणी

* विष्किर - चोंच से बिखेर कर खाने वाले प्राणी

* प्रतुद - (प्रहर, कुरेद, चुगकर) खाने वाले प्राणी

* मांस योनि: 8 - प्रसह,भूशय,आनुप,जलज,जलेचर,जांगल,विष्कीर,प्रतूद.

* कुक्कुट मांस - शुक्र वर्धक * बकरा मांस – धातु साम्य

* रोहित मांस - महाबल:अनिश्चितयोनी - अवी और अजा जांगल और आनुप देशो में सर्वत्र होती है,इस लिए इनकी योनी अनिश्चित है ।

मयूर मांस - हिततमो, हंस मांस - यकृत व वातनाशक,

तितर मांस - वातप्रधान सन्निपात में उपयोगी, लावा मांस - सन्निपात प्रशमना

गोधा मांस - वातपित्त प्रशमना, सन्निपात

शुक मांस - शोषकास क्षयहितं, चरक व शश मांस - सन्निपात शामक

एण मांस - त्रिदोष शामक शिवा । हंस मांस - सद्यबलकर

4) शाक – पुरीष भेदन करने वाले

शाकवर्ग: i) पाठा, कासमर्द, शटी, चांगेरी शाक - ग्राही, त्रिदोषघ्न

ii) वास्तुक - भिन्नवर्चस iii) काकमाची -त्रिदोषघ्न, वृष्य, रसायनी

iv) राजक्षवक - त्रिदोषघ्न विशेष्षेणग्रहणी अर्श विकारिणाम.

v) कालशाक - गरशोफजित

vi) तण्डूलियक शाक - मदविषघ्नो प्रशस्त रक्तपित्तीनाम ।

vii) शण - कोविदार, कर्बुदार, शाल्मली पूष्प प्रशस्त - च रक्तपित्त विशेषत

viii) वातहर शाक - वत्सादनी, श्रेयसी, बिल्वपर्णी बिल्वपत्रा

ix) वातपित्तहर शाक - भण्डी, शतावरी,बला जिवन्ती, पर्वणी, पर्वपूष्पी

x) कफनाशक - चित्रक गण्डीर xi) सार्षपशाक - त्रिदोषकर, बध्दविण्मुत्रकर

5) फलवर्ग: चरक – द्राक्षा श्रेष्ठ, सुश्रुत - आमलकी श्रेष्ठ.

* आमकपित्थ: कण्ठघ्न विषघ्न ग्राही. * पक्वकपित्थ - दोषघ्न विषघ्न ग्राही.

* बालबिल्व: दिपन कफवातजित. * पक्वबिल्व - दुर्जरं, दोषल, पूतिमारूतम्।

* आम आम्र: पित्तवर्धक, रक्तपित्तकर. * पक्व आम्र - वातनाशक, मांसशुक्रबलप्रद.

* बिभितक: रसासृऽमांसमेदोजान्दोषान् हन्ति बिभितकान्।

6) हरितवर्ग: i) मूलक: बाल, दोषहरं; वृध्द त्रिदोषं; मारूताहम - स्निग्ध, सिध्द; विशुष्क - कफवातजित्।

ii) सुरसा – हिक्काकास विषश्वास पार्श्वशूल विनाशन:

iii) खरावहा - बस्तिरोगरूजापहा

iv) गृज्जन - स्वेदने भ्यवहारे च योजयेतम पितित्रानाम

v) पलाण्डू - पित्तनुत, आहारयोगो, बल्य, वृष्य

vi) लशुन - क्रिमीकूष्ठ किलासघ्नो वातघ्नो गुल्मनाशन

7) मद्य: सुरा:वातघ्नी:स्तन्यक्षय,रक्तक्षय

* अरिष्ट - दिपन -पाचन: कफ नाशक.

मद्य - अम्लरस, अम्लविपाक, उष्णवीर्य

सुरा - कृशाना सक्तमुत्राणा ग्रहणी अर्श विकारिणाम

मंदिरा - हिक्काश्वास प्रतिश्याय कास वचोग्रह अरूचि

जगल - शूलप्रवाहिका आटोप कफवात अर्शसां ज्वरान

शार्कर - वस्तिरोगनुत

सुरासव - तीव्रमदो, वातघ्न, वदनाप्रिय

मध्वासव - छेदी

मैरेय - मधुर गुरु

नयामद्य - गुरु, दोषसमीरणम

जीर्णमद्य - स्त्रोतसां शोधनं, दीपण, लघु, रोचन

मद्य - सात्वीकै विधिवद युक्त्या पीतं स्यादमृत यथा

8) जल वर्ग: वर्षा जल - गुरू * हेमंत जल - गुरू

* ग्रीष्म जल - अनभिष्यंदी * पश्चिमाभिमूख नदीजल- पथ्य,निर्मल

* पूर्वाभिमुख नदीजल- गुरू निर्मल * समुद्र जल - त्रिदोष कर

दिव्य उदक - 6 गुण - शीत, शुचि, शिवं, मृष्टं, विमलं, लघू

(शेषभाग सुश्रुत संहिता नोटस में)

9) गोरस: गोदुग्ध: प्रवर जीवनीय * माहिष: निद्रा, अत्यग्नि में हितकर

* उँटनी - इषत लवण, (भस्मक) लघु * 1खुर वाले प्राणी - शाखावातहर

* भेड दुग्ध - हिक्का श्वास * हथिनी दुग्ध - स्थैर्यकर

दधि: शरद ग्रीष्मवसंतेषु प्रायशो दधि गर्हितम्, * मन्दकं त्रिदोषकं

* जात वातघ्न, * सर: शुक्रल: (दही की मलाई) * मण्ड: स्त्रोतोविशोधन:

10) इक्षु वर्ग: गुड भेद: 3 (1/4,1/3,1/2 शेष) * यथा पूर्वं गुरू.

* मत्स्यण्डिका - खण्ड - शर्करा - निर्मलता, शीतता

* मधु - 4 माक्षिक - तैलवर्ण, भ्रामर - श्वेत, गुरूपाकी, क्षौद्र - कपिलवर्ण, पैत्तिक - घृतवर्ण, * मधु सेवन जन्य आमदोष अधिक कष्टकर,

* मधु - वात कारक: रक्तपित्त कफापहम्: संधान, छेदन, योगवाहि परं

11) कृतान्न वर्ग: * पेया - स्वेद जननी, वातवर्चोऽनुलोमनी.

* विलेपी - तर्पणी, ग्राहिणी, * मण्ड: प्राणरक्षा दीपनत्वात् लघु.

* लाज पेया - श्रमघ्नी,

* यूषभेद: 6 (कृत, अकृत, अम्ल, अनम्ल, तनु, संस्कारिक)

* वेशवार: अस्थिरहित मांस, पिसकर गुड, घृत, मरिच से संस्कृत मांस.

* रसाला - बृंहणी, वृष्या, स्निग्धा, बल्या. * रागषाडव - (चटनी.)

12) आहार योनि वर्ग:

* एरंड तैल: कफ वर्धन, वातासृगुल्म हृद्रोग जीर्णज्वरहरं परम्

तैल - संयोगसंस्कारात सर्वरोगापह मतमं।।

* कुसुभ तैल - रक्तपित्त प्रदूषणम्, * सामान्य तैल - सर्वदोष प्रकोपणम्.

* सैंधव - मधुर रस: वृष्य, चक्षुष्य, अविदाहि, त्रिदोषघ्न.

* सामुद्र लवण - मधुर, सतिक्त कटु पांशुजम्. (लवण सु-संहिता नोटस्)

* शुक्र, शमी धान्य - 1 वर्ष के बाद श्रेष्ठ. पुराने रूक्ष व नव गुरू होते है।

न आतुर न दुर्बल - व्यायाम नित्य, स्त्रीनित्य, मद्यनित्य, नित्यमांसाहार सेवी

अनुपान संदर्भ – यदाहार गुणैः पानं विपरित तदिष्यतें ।

अन्नानुपान धातूनां दुष्ट यन्न विरोधी च ।।

* **अनुपान:** अनुपान तर्पयति: प्रिणयती उर्जयति, बृंहयती

भुक्तमवसायदयति, अन्नसंघाताभिन्नती, मार्दवमापादयाति,क्लेदयति,जरयति।

संदर्भ – अनुपान हित युक्त तर्पयत्याशु मानवम ।

युखं पचति चाहारमायुषे च बलाय च ।।

i) स्निग्धोष्ण मारूते, ii) मधुर शीतलं पित्ते, iii) रूक्षोष्ण कफे,

iv) मांसरस:क्षये, v) सुरा कृशानां, vi) स्थुल को मधुदक.

* भोजन पश्चात् जल निषेध : a) उर्ध्वजत्रु गत रोग, b) अध्ययन प्रसक्ता.

* **अन्नपान में परीक्षणीय विषय: 9 -**

चर, शरीरावयवा, धातव:, लिंग, संस्कार, स्वभाव, क्रिया, प्रमाण, मात्रा.

* सक्थि → स्कंध → उर → शिर - उत्तरोत्तर गुरू,

* रसादि धातू उत्तरोत्तर गुरू, शुक्र धातु - गुरू,

* अग्नि - मात्रा और द्रव्य की अपेक्षा रखती है.

* प्राण, आरोग्य, आयु, बल, अग्नि पे आश्रित.

* हित भोजन से षट्त्रिंशतं सहस्त्र रात्रि,(36 हजार रात्री) की आयु प्राप्त = 100 वर्ष

* प्राणा: प्राणभृतामन्नम् अन्न लोकोऽभिधावति।...च.सू.27/349

* तुष्टि: पुष्टिर्बलं मेधा सर्वं अन्ने प्रतिष्ठितम्।

	चक्रपाणि	कौटिल्य
भात	1 कुडव (175 gm)	1 प्रस्थ (700 gm)
सूप	1 पल (40 gm)	1 कुडव (175 ml)
लवण	1/2 पल (20 gm)	1/6 कुडव (30 gm)
घी-तैल	1 पल (40 gm)	1/4 कुडव (40 gm)
मांस	2 पल (80 gm)	

28) विविधाशितपीतीय

Topics:आहार, धातुजन्य रोग व चिकित्सा, दोष कोष्ठ ↔ शाखा गती, परिक्षक गुण

1) आहार प्रकार: 4

(भा.प्र. - 6 (भोज्य, भक्ष्य, चोष्य, चर्व्य, लेह्य, पेय) (शा. सं. 6)

(आहार पाचन क्रम) i) अशित, ii) पीत, iii) लीढ, iv) खादित.

* धातवो हि धात्वाहारा: प्रकृतिमनुवर्तन्ते। (धातु ही धातु का आहार है।)

अहितकर आहार शीघ्र ही दोष प्रकोपक नही, क्योंकी देश, काल,संयोग, वीर्य, प्रमाण आदी उस अपथ्य की अपथ्यता का ऱ्हास करते है।

* व्रीही धान्य शरद काल में अपथ्यतर और हेमंत में दुर्बल अपथ्य है।

2) रसादि धातु जन्य रोग: .....(च.वि. 5 देखिए)

3) इंद्रियज रोग में सर्वदोष प्रकोप: उपघात, उपताप: चिकित्सा - (च.चि.26)

त्रिमर्मीय अनुसार. * (स्नायु सिरा, कण्डरा) रोग में: स्तंभ, संकोच, खल्ली, ग्रंथिस्फुरण, सुप्ति. चिकित्सा - (च.चि.28) वातरोग चिकित्सा.

4) मलदोषज रोग: भेद, शोष; संग, उत्सर्ग,

चिकित्सा: (च.सू.7) नवेगान्धारणीय, कही और भी वर्णित है।

5) धातुगत रोग चिकित्सा सूत्र: रस- लंघनमौषधम्;रक्त - रक्तमोक्षण, विरेचन, उपवास; मांस - शस्त्र क्षार अग्नि कर्म; मेद - गुरू चापतर्पण, लघुसंतर्पण; अस्थि पंचकर्माणि, बस्ति, क्षीर सर्पि, तिक्त; मज्जा, शुक्र - मधुरतिक्त औषध.

6) दोषों का कोष्ठ से शाखा में जाना: (4): व्यायामाद उष्मण: तैक्ष्ण्याद् अनवचारणात्।.... कोष्ठच शाखा मलायन्ति द्रुतत्वान्मारुतस्य च।।

7) दोषों का शाखा से कोष्ठ में जाना:(5)

वृध्या विष्यंदनात पाकात् स्त्रोतोमुखविशोधनात। वायोश्च निग्रहात।।

8) परीक्षक विद्वान के गुण: 9 -

श्रुत, बुध्दि, स्मृति, दाक्ष्यं, धृति, हितनिषेवणम, वाग्विशुध्दी, शमो, धेर्य

9) आहार परिक्षा - 8 विशेष हेतु (अष्टो आहार विधी विशेषायतने)

29) दशप्राणायतनीय

Topics: दशप्राणायतन, प्राणाभिसर व रोगाभिसर वैद्य.

1) 10 प्राणायतन: प्राणा येषु प्रतिष्ठिता

च. सू. 29 - शंखौ मर्मत्रयं कंठ रक्त शुक्र ओज गुद

सु. शा. 7 - शंखौ के जगह नाभि और मांस,

(अ. सं. - मांस की जगह जिव्हाबंध, शेष शारीरस्थान समान.)

2) द्विविध भिषग: i) प्राणाभिसर वैद्य: प्राणानामेकेऽभिसरा हन्तारो रोगाणाम्।

ii) रोगाभिसर वैद्य: रोगाणामेकेऽभिसरा हन्तार: प्राणानामिती।

भिषक छद्मप्रतिच्छन्ना: कण्टकभूता लोकस्य प्रतिरूपक सधर्माणो राज्ञा प्रमादाच्चरान्ति राष्ट्राणि।

* उपनय कल्पना: (स्नेह प्रविचारणा) 24

* उपकल्पनीय विचारणा: (रसानुसार स्नेह प्रविचारणा) 64

* सूत्रस्थान = श्लोकस्थान

30) अर्थेदशमहामूलीय

Topics: हृदय व दशधमन्या, षडअय आयु व आयुर्वेद, ओज व अष्टांग आयुर्वेद, संहिता विषय वस्तु वर्णन, षडविध एकदेशिका.

1) हृदय: i) पर्याय - महत्, अर्थ, दशधमन्या: - महामूला, महाफला: आगारकर्णिका - बँडेरी (घर की छत के लिए आधार) उसी प्रकार हृदय पूर्ण शरीर के लिए आधार.

ii) इसपर आश्रित: षडंगमंग, विज्ञान, इंद्रिय, अर्थपंचक, आत्मा, मन, चिन्त.

iii) हृदय: उपघात से मूर्च्छा, iv) हृदय: भेद से मरण, मूर्च्छा,

v) हृदय: पर ओज का स्थान: स्पर्श, विज्ञान धारि, आदी आश्रीत.

2) ओज: i) शुक्र - शोणित के सार पदार्थ के रूप में (गर्भ के आदि में) (कलल अवस्था), ii) रस के सार रूप में.

iii) पर्याय - a) शरीर रस स्नेह, b) महाफला - तत् फला बहुधा.

* ओजोवहा: शरीरेऽस्मिन् विधम्यन्ते समन्तत:।

*प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणमातुरस्य विकार प्रशमन च। (च.सु.30)

3) धमनी स्त्रोतस सिरा:

ध्मानाद् धमन्य स्त्रवणात् स्त्रोतांसि सरणात् सिरा:। (च.सु. 30/12)

4) श्रेष्ठता: षडय i) अहिंसा - प्राणिनां प्राणवर्धनानाम उत्कृष्टतम्,

ii) वीर्य - बलवर्धनानाम्, iii) विद्या - बृंहणानाम्, iv) इंद्रियजयो - नन्दनानाम्,

v) तत्वबोधो - हर्षणानाम्, vi) ब्रह्मचर्य - अयनानाम्

*(पंचावयव - प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन)

त्रिविध शिष्य बूध्दी - तीव्रबूध्दी, मध्दबूध्दी, मन्दबूध्दी,

5) आयु: चेतना अनुवृत्ति - जीवितम् अनुबंधो धारि

* सुख और असुख आयु के लक्षण.

आयुर्वेद - अतश्चायुष्यायनायुष्याणि च द्रव्यगुणकर्माणि वेदयत्यतोऽप्यायुर्वेद

6) मृत्यु (मरण)पर्याय: स्वभाव, प्रवृत्ति का उपरम(नाश),अनित्य,निरोध।

* अध्यात्म विचारानुसार: मरण को प्रकृति, जीवन को विकृति कहा है।

* आयुर्वेद पर्याय: शाखा, विद्या, सूत्रं, ज्ञान, शास्त्र, लक्षण, लिंग.

7)आयुर्वेदशाश्वत:

i) अनादित्व, ii) स्वभावसंसिध्दलक्षण, iii) भावस्वभावनित्यत्वात.

8) अष्टांग आयुर्वेद: चरक: काय, चिकित्सा, शालाक्यं, शल्य, विषगरवैरोधिक प्रशमन, भूतविद्या, कौमारभृत्य, रसायन, वाजीकरण.

सुश्रुत: शल्य, शालाक्यं, काय, चिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायन वाजीकरण.

वाग्भट - काय, बाल, ग्रह, उर्ध्वांग, शल्य, दंष्ट्रा, जरा, वृषान्।

9) आयुर्वेदाध्ययन नियम:

चरक - आयुर्वेद कौन पढे ? (4 वर्ण ब्राह्मणादि) धर्म, अर्थ, काम प्राप्ती मोक्ष.

सुश्रुत - आयुर्वेद क्षुद्र के लिए भी, जो गुणवान है।

i) अनुग्रहणार्थ ब्राह्मणै: (आरोग्य प्रदान हेतु)

ii) आरक्षार्थ राजन्यै: (स्वास्थ्य - रक्षा, प्राणियों की रोग से रक्षा)

iii) वृत्यर्थं वैश्यै: (जिविका (धन) हेतु) आयुर्वेद

iv) धर्मार्थकाम परिग्रहार्थ सर्वे:।

10) वैद्य द्वारा दुसरे वैद्य की परिक्षा: अष्टविध प्रश्न - i) तंत्र, ii) तंत्रार्थ, iii) स्थान, iv) स्थानार्थ, v) अध्याय vi) अध्यायार्थ,vii) प्रश्न viii) प्रश्नार्थ.

तन्त्र - तत्रायुर्वेद शाखा विद्या सुत्र ज्ञान शास्त्रं लक्षण तन्त्रामित्यनर्थान्तरम

तन्त्रार्थ - इस प्रकरण में दश प्रकरण है।

शरीर, वृत्ती, हेतू, व्याधि, कर्म, कार्य, काल, कर्ता, कारण, विधि,
स्थान 8 - सुत्र - श्लोक;चिकित्सा - औषध, इंद्रिय - अरिष्ट,
कल्प - विकल्प; विमान - मान; शारीर - आश्रय स्थान ।
शास्त्र सुर्य के समान प्रकाशक है ।
* सर्वत: सर्वं यथास्वं हि अर्थसंग्रहात (उद्देश और सार प्रति अध्याय)
11) प्रश्न, प्रश्नार्थ: प्रश्नार्थ युक्ति, तंत्रानुसार प्रश्न का उत्तर
* तंत्र: तंत्रण करना * स्थान: विषय का क्रम और प्रसंग अनुसार जिसमें वर्णन.
* पाल्लव वैद्य: छद्मचर वैद्य.
अध्याय उपसंहार में: 1) 15 प्रश्न, 2) षड्ग्रय (6 श्रेष्ठ वर्णन),
3) षड्विध एकदेशिका. i) पाल्लविक ii) मौखर्यसाधन iii) अबुध्दि
iv) दम्भी v) परनिन्दक vi) शास्त्रदूषक.
आयु परिभाषा - च.सु. 1 व च.सु. 30
आयुर्वेद परिभाषा - च.सु. 1 व च.सु. 30
व आयुर्वेद प्रयोजन - च.सु. 1 व च.सु. 30

निदानस्थान

1) ज्वर निदान

1) **व्याधी - पर्याय** - आमय, गद, आतंक, यक्ष्मा, ज्वर, विकार, रोग (वाग्भट Extra - आबाध, पाप्मा, दु:ख)
2) **प्रकार:** A) 3 i) आग्नेय - पित्त ii) सौम्य - कफ iii) वायव्य - वात.
B) 2 प्रकार: i) राजस, ii) तामस,

3) निदान	पूर्वरुप	रुप	उपशय	संप्राप्ति
पर्याय:				
हेतु, निमित्त, आयतन,		लिंग, आकृति,		जाति,
कर्ता, कारण,		लक्षण, चिन्ह,		आगति
प्रत्यय, समुत्थान		संस्थान, व्यंजन		
प्रकार:				
3 प्रकार	2 प्रकार		चिकित्सार्थ	च. = 5
i) असात्म्येद्रियार्थसंयोग	i) सामान्य		उपशय भेद-6	वा. = 6
ii) प्रज्ञापराध	ii) विशिष्ट		Total	मा. नि. 6
iii) परिणामश्चेति			उपशय=18	
व्याख्या:	पूर्वरुप प्रागुत्पत्ति।	प्रादुर्भूत पुर्नलिंगम		
मा. नि.	लक्षणं व्याधे:।			
हेतू प्रकार 14	भाविव्याधि बोधकमेव			
	लिंगम पूर्वरुपम्।			

4) उपशय(18) चक्रपाणी

प्रकार	औषध	अन्न	विहार
हेतु विपरीत	शीत कफजज्वर में शुण्ठि	श्रम, वातजन्य ज्वर में मांसरस	दिवास्वाप से उत्पन्न कफ में रात्रिजागरण
व्याधी	अतिसार मे स्तंभनार्थ पाठा, कुटज	अतिसार में स्तंभनार्थ मसूर	उदावर्त मे प्रवाहण
हेतु व्याधी	वात शोथ में वातहर व शोथहरदशमूल क्वाथ	VK ग्रहणी मे तक्र. P में दुग्ध V ज्वर में पेया	स्निग्ध सेवन & दिवास्वाप जन्य तंद्रा में रुक्ष रात्रि जागरण
विपरीतार्थकारी			
हेतु	P प्रधान व्रण में उष्ण उपनाह	P व्रण मे विदाही अन्न	V जन्य उन्माद में भय
व्याधी	छर्दि में मदनफल	अतिसार में क्षीर	छर्दि में प्रवाहण
हेतु व्याधी	a) अग्नि से जलनेपर अगुरु लेप, b) विष गत रोग मे विष	मद्यपानजन्य मदात्यय में मद्य	व्यायामजन्य संमूढवात (उरुस्तंभ) मे तैरने का व्यायाम

अनुपशय का अन्तर्भाव निदान में होता है।
5) **सम्प्राप्ति :** यथा दुष्टेन दोषेण यथा चानुविसर्पता।
i) संख्या उदा.अष्ट ज्वर, पंचगुल्म इ.
ii) प्राधान्य तर तमा भ्याम उदा.त्रिषु तम,
iii) विधि उदा. व्याधी 3 प्रकार (दोष भेद से), 2 प्रकार (निजागन्तु),
iv) विकल्प- अंशा अंश कल्पना., समवेताना पुनर्दोषाणामंशांशबल विकल्पो विकल्पोऽस्त्रिर्थे (कितने गुणो (अंश) दोष प्रकोप हुआ है ।)
v) बलकाल- बलकालविशेष:
पुनर्व्याधीनामृत्वहोरात्राहारकाल विधिविनियतो भवति।
6) निदानस्थान की 8 व्याधी का कारण - लोभ, अभिद्रोह, कोप.
शरीर गत रोगों मे ज्वर सर्वप्रथम उत्पन्न; ज्वर कारण - 8

7) वात ज्वर	पित्त ज्वर	कफ ज्वर
लक्षण:		
विषमारम्भ,विसर्गित पाद सुप्तता,स्वनश्च कर्णयो,उष्णाभिप्रियता	युगपदेव केवले शरीरे (एकसाथ पूरे शरीर में ज्वर आगमन व वृद्धि) शरद, कटुकास्यता,अतिसार, अन्नद्वेष सदन हरीत हारिद्रत नखनयन-वदनमूत्रपूरीषत्वंक	युगादेव केवल शरीरे (एकसाथ.....) -हृदयोपलेप, स्तिमितत्वं -उष्णाभिप्रियता - अत्यर्थ शीतपिडका

आगंतुज ज्वर: 4 व्यथापूर्व (अभिघातज - वात, रक्त; अभिषंगज - वात, पित्त; अभिचार - त्रिदोषज; अभिशापज - त्रिदोषज)
8) **ज्वर प्रकार:** i) संताप लक्षण, ii) निजागन्तुज, iii) दोषानुसार (त्रिविध, चतुर्विध, सप्तविध), ज्वर प्रत्यात्मिकं लिंग सन्तापो देहमानस: ।....(च.चि.) ज्वरस्त एक एवं सन्ताप लक्षण। च. नि. 1
9) **पूर्वरुप:** चक्षुषोराकुलत्वम, निद्राधिक्यम, दीर्घसूत्रता, प्रतीपता स्वकार्येषु (अपने कार्यो को उलटा करना), बालेभ्य: प्रद्वेष: (ये पूर्वरुप ताप बढने से पूर्व होते है, संताप बढने पर भी बने रहते है)
10) उत्पत्ति: महेश्वर कोप प्रभव: ।
11) ज्वर : सर्वप्राणभृतां प्राणहरो देहेन्द्रियमनस्तापकर, सर्वरोगाधिपति, दारुण, बहुपद्रवा, दुश्चिकित्स्य
12) चिकित्सा सूत्र : पूर्व रूपमें लघ्वशनं अपतर्पण- आमाशयसमुत्थत्वात जीर्णज्वरेषु तु सर्वेष्वेष सर्पिष: पान प्रशस्यते । (औषध सिद्ध) (क्षीर पान च.चि.)
सर्पि त्रिदोष शामक:
i) स्नेहाद्वातं शमयति ii) संस्कारात कफ iii) शैत्यात पित्तमूष्माणं.
[पंचविध गदम- आग्नेय, सौम्य, वायव्य, राजस, तामस
पंचविध ग्रह- निदानपंचक, अर्थसंग्रह.
व्याधि बोधक निदान - निदान, पूर्वरूप, रूप, संप्राप्ति, उपशय
(निदान स्थान में 8 व्याधीयों की चिकित्सा भी सुत्ररूप से वर्णित है।)]

2) रक्तपित्त (लोहितपित्त)

1) **हेतु:** वनकोदो उद्दालक, कोरदूष, यव गण्डीर (स्थलज) (जलज गण्डीर चिकित्सा उपयोगी) प्रमाणातिवृत्ते पित्तं प्रकुपितं शरीर मनुसर्पद्यदेव यकृत्प्लीह प्रभवाणां लोहितवहानां च स्त्रोतसाम् ।
2) निरुक्ति: संसर्गाल्लोहित प्रदूषणात लोहितगंधवर्ण अनुविधानाच्च पित्तं लोहित पित्तमित्याचक्षते ।
3) **पूर्वरुप:** i) उद्गार- शुक्ताम्लगन्ध रस, ii) लोहलोहितमत्स्य गंधि आस्य, iii) स्वप्ने दर्शनमभीक्ष्मणमिति.
4) **उपद्रव:** दौर्बल्य अरोचक अविपाकश्वास कास
ज्वर अतिसार शोफ शोष पाण्डुरोग स्वरभेदश्च ।
5) **साध्यासाध्यता:** पित्त कफ साध्य-उर्ध्वग Because बहु औषध, पित्त वात याप्य- अधोग Because अल्पौषध,
पित्त वात कफ असाध्य- उभय Because योगित्वादनौषध
रक्तपित्त उत्पत्ति - दक्षप्रजापति के यज्ञ के विध्वंस के समय रुद्रकोप, इसीसे ज्वर & रक्तपित्त.

6) चिकित्सा: 1) आत्ययिकस्याशु प्रशान्त्यै मात्रा, देश, काल अनुसार
2) संतर्पणेन, अपतर्पणेन, प्रदेह, परिषेक, अवगाह, संस्पर्शन, वमन.
नहि संशोधन किश्चिदस्तस्य प्रतिमार्गगम।
प्रतिमार्गं च हरणं रक्तपित्ते विधीयते ।।
उर्ध्वग में विरेचन, अधोग में वमन.
त्रिविधोदर्क रक्तं मार्गविशेषतः।
(साध्य, याप्य, प्रत्याख्येय रुप 3 तरह के परिणाम वाला रक्तपित्त)
(आन्तिकी गति रक्तपित्त च.चि.),
7) संदभ- विरेचन तु पित्तस्य जयार्थे परमौषधम।
वमनं हि न पित्तस्य हरणे श्रैष्ठमुच्यतें।। च. नि.2
8) असाध्यता: प्रेष्य उपकरणाभावाद दौरात्म्याद वैद्यदोषतः। अकर्मतश्च ---
(असाध्यता Due to absence of चतुष्पाद.)

3) गुल्म निदान

सभी गुल्मों में वायु की प्रधानता
1) प्रकार: 5 (वात पित्त कफ सन्निपात (निचय) रक्त)
गुल्म भेदों का ज्ञान: समुत्थान पूर्वरुप लिंग वेदनाउपशय विशेषभ्यो विशेषविज्ञानं भवति। वेदनारुपं च लिंग गुल्मलिंगान्तर्गतमपि। (चक्रपाणि)
2) पूर्वरुप: अनन्नाभिलषणम्,अरोचक, अविपाको,अग्निवैषम्य, अबुभुक्षा.

3)रूप	वात गुल्म	पित्त गुल्म	कफ गुल्म	रक्त गुल्म
हेत	बिना स्नेहपान के वमन विरेचन			क्षीप्र वात: प्रकोपम्
स्थान	हृदि बस्तौ पार्श्व नाभ्य	आमाशयैकदेशे	आमाशयैकदेशे	
लक्षण	मुर्हुराधमति मुर्हुरल्पत्वमापद्यते मुहु:पिपीलिकासम्प्रचार उच्छवासश्चोपरूध्यते	उद्गार सधूमाम्ल स्पर्शासह अल्परोमांच	कास श्वास प्रतिशाय राजयक्ष्माणं- चातिप्रवृध्द	पाद शोथ, योन्याश्चाटा- लत्वम, स्पंदन तामगर्भा, गभिणी मूर्छा

(क्षारपाणि पुरूष को भी रक्त गुल्म हो सकता है।)
रक्तगुल्म में प्रकूपित दोष-वात.
4) चिकित्सा: i) सन्निपातिक - असाध्य, ii) एकदोषज - दोषानुसार चिकित्सा
iii) द्विदोषज - साधारण कर्म करें, (स्नेहस्वेदौ, मृदुविरेचन, बस्ति),
iv) गुरु उपद्रवों की चिकित्सा - शीघ्र, लघु उपद्रवों की चिकित्सा - पश्चात
v) गुल्मिनामानिल शान्तिरुपायैः सर्वशो विधिवद आचरितव्या।

4) प्रमेह निदान

1) त्रिदोषप्रकोपनिमित्ता विंशति:।
त्रयो निदान विशेषा: चरक - निदान, दोष, दूष्य

परस्पर न अनुबंधत्व	कालप्रकर्षादबलीयां	सोऽनुबन्धनान्ति
↓	↓	↓
न विकार	चिराद विकार	तनुविकार न सर्वलिंग
विपर्यय:	विपर्यय:	विपर्यय:
↓	↓	↓
रोग उत्पत्ति	शीघ्र रोगोत्पत्ति	सर्वलिंग युक्त रोगोत्पत्ति

2) निदान: मृजाव्यायामवर्जनं, श्लेष्ममेदोमूत्रसंजनन,हायनकयवचीन कोंदूदालक.
3) स्वरुप: बहुद्रव श्लेष्मा दोषविशेष:। (दुष्य अस्थि नहीं) विशेष दूष्य- मेद
4) साध्यासाध्यत्व: कफ प्रमेह साध्य i) समानगुणमेद स्थानकत्वात,
ii) कफस्य प्राधान्य, समक्रियत्व,
पित्त प्रमेह: निदान विषमाहारोपसेवि, याप्य विरुद्धोपक्रम,
वात प्रमेह: असाध्य महात्ययिकत्वाद, विरुद्धोपक्रम.
5) कफज प्रमेह: चरक i) उदकमेह- निर्गन्धमुदकोपमम, शीत,ii) इक्षुवालिकारस अत्यर्थमधुरं काण्डेक्षुरससंकाश, iii) सान्द्र- सान्द्रीभवति, iv) सान्द्रप्रसाद- संहन्यते मूत्रं किंचित् किंचित, v) शुक्ल - शुक्लपिष्टनिभं, vi) शीत - अत्यंतमधुरं, शीत, vii) सिकता- दोषानणून्मेहति, viii) शनैः - मन्दं मन्दवेगं तु कृच्छ्र,
ix) आलाल - तन्तुबंध्दामीवालालम्,
(सुश्रुत: फेनमेह - स्तोकं स्तोकं सफेनं, पिष्टमेह - हृष्टरोमा पिष्टरसतुल्यं).
वाग्भट - श्वेतमूत्रत्याग.
6) वातज प्रमेह: i) हस्ति मेह-हस्ती मत्त इवाजसं.
ii) मज्जा मेह, iii) वसामेह, iv) मधु - कषाय रूक्ष (वात) मधुर (ओजस्वभाव)
पाण्डु - यहा वात प्रकोप जन्य, (च. सु. अवरोधजन्य.)
(वाग्भट प्रकार: 2 i) धातुक्षय कारण वात प्रकोपजन्य, ii) दोषावृत्त पथजन्य.)
7) पित्तज प्रमेह: i) क्षारमेह,
ii) कालमेह- मसीवर्णमजस्त्रं उष्णं (मषीनिभं वाग्भट),
iii) रक्त - विस्त्रं लवणमुष्णं, iv) मंजिष्ठा - विस्त्रं,
v) नील- चाषपक्षनिभं मूत्रम्लं, vi) हारिद्र - हारिद्रोकसंकाश, कटुकं
8) पूर्वरुप: जटिलीभावं केशेषु, माधुर्यमास्यस्य,
करपादयो, सुप्तदाहौ, मुखतालुकण्ठशोषं, पिपासा परिदाहं, सुप्ततां चांगेषु षटपदपिपीलिकाभिश्चशरीरमूत्राभिसरणं, विस्त्रं शरीरगन्धं, निद्रां तन्द्रां,

5) कुष्ठ निदान

1) सप्त द्रव्याणि: त्रयो दोषा + (सप्त धातु) दुष्याश्च शरीरधातवस्त्वक मांसशोणितलसीकाश्चतुर्धा, चरक - सभी कुष्ठ त्रिदोषजा,
सुश्रुत - स (वात, पित्त, कफ, क्रिमी)
2) भेद चरक: 7,18, अपरिसंख्येय, सुश्रुत - 7,11,18
3) सामान्य हेतु: शीतोदक, चिलचिम + पयस, शीतोष्ण व्यत्यासम (सेवन): भयश्रम सन्तापोपहत, सन्तर्पणापतर्पण एक साथ: स्नेहांश्चातिचरत, मधुफाणित मत्स्य लकुच मूलक काकमाची, हायनक यवक चीनकोददालक, ग्राम्यान औदकमांसानि वा पयसा...(सुश्रुत).
4) पूर्वरुप: अस्वेदनम अतिस्वेदनम्, कायच्छिद्रेषूपदेह: अतिमात्रं वेदना, स्वल्पानामपि च व्रणानां दुष्टिसंरोहणं, असृजः कृष्णता.
5) लक्षण: चरक i) कपाल: विषमविसृत, आशुगतिसमुत्थानाशुभेदीनी, जन्तु. ii) औदुम्बर: आशुगति समुत्थान भेदी, पक्वोदुम्बर फल वर्ण.iii) मण्डल: सकागतिसमुत्थानभेदी, परिमण्डलानि iv) ऋष्यजिव्ह: आशुगतिसमुत्थान, शुकोपहतोपम वेदना उत्सन्नमध्यानि तनुपर्यन्तनि,v) पुण्डरीक: आशुगतिसमुत्थान भेदी, vi) सिध्म: लघु समुत्थान अल्पभेद अलाबुपुष्प वर्णवत् (सु. उर्ध्वकाय में होनेवाला) vii) काकणक: आदौपश्चात सर्वकुष्ठलिंग समन्वित.
दद्रु- अतसी पुष्पवर्णानी ताम्राणि विसर्पाणि पिडकवन्तिच दद्रुकष्ठानि.
पुण्डरिक व दद्रु: परिमण्डलता, कण्डु चिरोत्थान,
पित्त कुष्ठ: क्षिप्रोत्थान प्रपाक भेदी, क्रिमीजन्य.
(कुष्ठ मे दोषज लक्षण: क्रिमी (त्वक मांसरक्त लसिका) 4 धातु खाने के पश्चात.
(सिरा, स्नायु, अस्थि (तरुण) खा जाते है।....चरक
6) उपद्रव: प्रस्त्रवणम् अंगभेद: पतनान्यंगावयवानां
तृष्णा ज्वरातीसार दाहदौर्बल्य रोचक विपाकश्च...(चरक)
साध्यो ऽयमिति य पूर्व नरो रोगमुपेक्षते।
स किंचित कालमासाद्य मृत एवावाबुध्यते ।। ...(चरक नि 5/12)

6) शोषनिदान

1) प्रकार: 4 (साहस, संधारण, क्षय, विषमाशन)
2) लक्षण:i) साहसजन्य शोष लक्षण- क्षणनाच्चैवोरसो विषमगतित्वाच्च वायो: कण्ठयस्य चोदध्वंसनात कास:।
सततमस्य संजायते: सकास प्रसगात उरसी क्षते शोणितं ष्ठीवति।
शोणितमागमन्नाच्चास्य दुर्बल जायते।
ii)सन्धारणजन्य शोष लक्षण:पार्श्व अतिरुजा,अंसाववमृदनाति,कण्ठमुरश्चावधमति शिरश्चोपहन्ती,कास श्वासं,ज्वरं स्वरभेद प्रतिश्याय च उपजनयति।

iii) शुक्रक्षयजशोष लक्षण- संरूजतिपार्श्वे, अवमृदनास्यो कण्ठमुदध्वंसति, शिर: श्लेष्माणमत्क्लेश्य प्रतिपरयाति श्लेष्मणा: सन्धीश्च प्रपीडयन करोति अंगमर्द, अरोचक अविपाको।

iv) विषमभोजनजन्य शोष लक्षण-पित्त-ज्वर, अतिसार, अन्तर्दाह

श्लेष्मा - प्रतिश्याय, शिरोगुरुत्व, अरोचक, कास

संदर्भ - हिताशी स्यात मिताशी स्यात कालभोजी जितेंद्रिय:।

पश्यन रोगान बहून कष्टान बुध्दिमान विषमाशनात।

विषमाशन: तस्माच्छुष्यतो, विशेषण पुरीषम् अनुरक्ष्यं

3) शरीर प्रधानता: सर्वमन्यत्परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्।

(शरीर का पालन 1st जगत के अन्य कर्म बाद में)

आहार का सर्वस्व शुक्र: आहारस्य परं धाम शुक्रं तद् रक्ष्यमात्मन:।

(शरीररस स्नेह: ओज)

4) उत्पत्ति: पहले नक्षत्र के राजा चंद्रमा को हुआ था.

i) तं सर्वरोगाणां कष्टतमत्वाद राजयक्ष्माणम आचक्षते।

ii) यस्माद्वा पूर्वमासीद भगवत: सोमस्योऽराजस्यतस्माद राजयक्ष्मा इति।

5) पूर्वरुप: मुखमाधुर्य, प्रतिश्याय, श्लेष्म प्रसेक, क्षवथु, मुख पाद शोफ, खड्ष्ट खरवदाह से छुजाना., पाण्योश्चेवक्षणमत्यर्थम (बार बार हाथ को देखना) अक्ष्णो: श्वेताभासता (आखे सफेद), बाहुश्च प्रमाण जिज्ञासा (हाथ की लम्बाई जानने की जिज्ञासा), बीभत्सदर्शनता (खुद को बिभत्स रुप मे देखना)निर्घृणित्व.

6) एकादश राजयक्ष्मा: शिर परिपूर्णत्व, पार्श्वरुज, कास, अंसावमर्द, श्वास, ज्वर, स्वरभेद, अतिसार, श्लेष्मछर्दन, अरोचक, शोणितष्ठीवनं.

7) उन्माद निदान

1) प्रकार: 5 - वात, पित्त, कफ, सन्निपातिक, आगन्तुज.

2) संप्राप्ती: दोष: प्रकुपिता हृदयमुपसृत्य मनोवहानि।

आगंतुज उन्माद:

i) अवलोकयन्तो देवां- देव लोग दृष्टि से देखने मात्र से उन्माद,

ii) गुरुवृद्धसिद्ध अभिशाप- गुरु सिद्ध जन - शाप देकर,

iii) पितरो दर्शयन्त - पितर लोग अपने को दिखाकर,

iv) यक्षा- आविशन्तो - यक्ष शरीर मे प्रविष्ट होकर.

3) प्रत्यात्म लक्षण:

उन्मादं पुनर्मनोबुद्धिसंज्ञा ज्ञान स्मृति भक्ति शीलचेष्टाचार विभ्रमं विद्यात।

4) पूर्वरूप: उच्छावासधिक्य,सतत लोमहर्ष, उदर्दितवंम, चक्षुषोराकुलता, स्वनकर्णयो, शिर शून्यता, आर्दिताकृतिकरण व्याधे,स्वप्ने चाभीक्ष्ण दर्शन-

आंगन्तुज: हेतु - प्रज्ञापराध - (आत्रेय) पूर्वरूप:-देवगो ब्राह्मण तपस्विनां हिंसा रुचित्वं, अभिभर्त्सनं प्रवर्तन, लक्षण: अनियतश्चोन्माद काल,देवादिग्रह का आक्रमण काल, पर्वसंधीषु ,देवादिग्रह चिकित्सा, हिंसा, रति, अभ्यर्चन.

5) वात	पित्त	कफ	दोषज उन्माद चि.
यानमयानै:	अमर्ष:	रहस्कामता	विस्मापन,विस्मारण
अलंकरमनलंकारीद्रव्यै:		शौचद्वेष श्वयथुरानने	वित्रासन

6) आगन्तुज उन्माद कारण, स्वकर्म सुखदु:ख का कर्ता स्वयं मनुष्य है।

8) अपस्मार

1) प्रकार: चत्वारो अपस्मार - वात, पित्त, कफ, सन्निपातिक.

2) प्रत्यात्म लक्षण: अपस्मार पुन: स्मृति बुध्दि सत्वम्प्लवाद् बीभत्सचेष्टम् आवस्थिकं तम: प्रवेशमाचक्षते।

3) पूर्वरूप: भ्रुव्युदास: (भौहे नचाता है), शब्द श्रवणं (शब्द न होने पर भी सुनाई), मोह: तमो दर्शन.

4) रूप: वात अपस्मार: अभीक्षणमपस्मरन्तं, क्षणेन संज्ञां प्रतिलभं मानम्, वमन्त फेनम्, आविद्धशिरस्कं, विषमविनत अंगुलिम्,उत्पिण्डीताक्षम.

पित्त अपस्मार:अभीक्षणमपस्मरन्त, क्षणेन संज्ञा,प्रतिलभमानम्,आस्फलयन्तं भूमी

कफ अस्पमार: चिराद पस्मारन्त, चिराद् संज्ञा प्रतिलभं.

5) चिकित्सा: दोषज अपस्मार-तीक्ष्ण संशोधन, आगंतुज अपस्मार-मंत्रादी, त्रिदोषज अपस्मार- प्रत्याख्याय

6) निदानस्थान के 8 व्याधी के हेतु:

i) ज्वरस्तु - महेश्वर ललाट प्रभव, ii) तत् संतापाद्-रक्तपित्तम्,

iii) धावन् प्लवन से गुल्म, vi) हविष्प्राशात्-प्रमेह कुष्ठानां,

v) अतिव्यवायात्-राजयक्ष्मा, vi) भयत्रासशोके-उन्मादानां,

vii) विविध भूत, अशुचि संस्पर्शाद्, अपस्माराणा.

(अनेक प्रकार के जीव व अपवित्र वस्तु के स्पर्श से)

7) निदानार्थकर रोग: रोग भी रोग का हेतु रोग उत्पन्न करने वाला.

i) ज्वर संताप से रक्तपित्त (रक्तपित्त से ज्वर उत्पन्न), ii) ज्वर रक्तपित्त से शोष,

iii) प्लीहावृद्धि से (उदर) जठर, iv) उदर से शोथ,

v) अर्श से (उदर) जठर, गुल्म, vi) प्रतिश्याय से कास,

vii) कास से क्षय, viii) क्षय से शोष,

8) व्याधिसंकर: एक ही समय 2 व्याधी उत्पन्न.

9) विशुध्द चिकित्सा:

उत्पन्न रोग को शांत कर दें व अन्य रोग उत्पन न करें। संदर्भ

10) सुखसाध्य, याप्य:

i) सुखसाध्य सुखोपाय कालेनाल्पेन साध्यते।

ii) साध्यते कृच्छ्रसाध्यस्तु - यत्नेन महता चियत,

iii) याति नाशेषतां व्याधि असाध्यो याप्य - संज्ञित,

iv) परोऽसाध्य: क्रिया: सर्वा प्रत्याख्येयो ऽतिवर्तते.

11) लक्षण व्याधि: ज्ञानार्थ यानि चोक्तानि व्याधिलिंगानि संग्रहे।

हेतव: पूर्वरुपाणि रुपाण्युपशयस्तथा।

सम्प्राप्ति : पूर्वमुत्पत्ति सूत्रमात्रं चिकित्सतम।। (च.नि.8)

विमानस्थान

1) रसविमान

Topics: 2 सिध्दांत (प्रकृति समसमवेत, विकृति विषम समवेत);

3 द्रव्य (पिप्पली, क्षार,लवण,अतिसेवन निषेध);

सात्म्य,अष्टो आहार विधीविशेषायतने, आहार नियम.

1) तस्माद् दोषादि मानज्ञानार्थ विमान स्थानमुपदेशाम। (च.वि.1)

* विशेषेण मीयते ज्ञायते दोष भेषजाद्यनेनेति विमानम्। चक्रपाणी

(विमान स्थान में दोष & औषध का अभ्यास.)

2) औषधि आदि का विचार

(दोष भेषज देश काल बल शरीराहार सार सात्म्यसत्व प्रकृतिवयसा),

3) 4 प्रभाव: रस, द्रव्य दोष, विकार, a)रस - सम्यक् प्रयोग - शरीर यापयन्ति, मिथ्या प्रयोग- दोषप्रकोप b) दोष - प्रकृतिभूत:- शरीरोपकारक, विकृतिं- शरीरम् उपतापयन्ति (रोग उत्पन्न), Ref. संसर्ग, विकल्प भेद से रस & दोष असंख्य.

* रस के संसर्ग - 63 (चरक): दोष का संसर्ग - 63 (वाग्भट)

4) प्रकृतिसमसमवेत (चरक): (प्राकृत गुणहानि बिना संसर्ग होना)

1) समान प्रत्यारब्ध द्रव्य, 2) विचित्र प्रत्यारब्ध द्रव्य...(वाग्भट) Ref.

विकृतिविषमसमवेत् -नानात्मक (विकृत रूप मे),परस्पर उपहतानाम,(विषम रूप मे) ,विकल्पनै: (अनेक प्रमाण मे) विकल्पितानाम्, अवयवप्रभावानुमानेन. उदा. मधुरे तण्डुलीयके: c) द्रव्य - तैल, सर्पि, मधु - वात,पित्त,कफ के लिए।

प्रभाव: i) तैल: स्नेहाष्ण्यगौरवो वातं जयति सततमभ्यस्यमान.,

ii) घृत: माधुर्याच्छैत्यान्मन्द

iii) मधु: रौक्ष्यात्तैक्ष्ण्यात् कषायत्वाच्च.(Not स्निग्ध गुरू)

5) अतिसेवन निषेध द्रव्य – 3

पिप्पली	क्षार	लवण
1) गुण		
कटुका:मधुरविपाका, नात्यर्थ स्निग्धोष्ण गुरू, प्रक्लेदि	उष्ण, तीक्ष्ण, लाघवो क्लेदी & पश्चात् विशोषयति	उष्ण, तीक्ष्ण; नातिगुरू ,नातिस्निग्ध: उपक्लेदि, विस्त्रंस, अन्नद्रव्यरूचिकर
2) कर्म		
आपातभद्रा	पचन, दहन, भेदन.	आपातभ्रद,रोचन, पाचन, क्लेद, नविस्त्रंस
3) सतत उपयोग		
कफ,उत्क्लेश:गुरू,क्लेदि पित्त प्रकोप: उष्ण वात शमन: अल्प स्नेहोष्ण	आन्ध्य, षाण्ढ्य, खालित्य पालित्य, हृदयापकर्तिनश्च	शिथिल, मांस शेणित अक्लेशसहा.ग्लानि, शैथिल्य, दौर्बल्य
4) अतिसेवन से		
--	केश अक्षिहृदय पुंसत्वोपघातकर	खालित्य पालित्य, इंद्रलुप्त,अकाल वलय.
5)इतर		
योगवाहि	(प्राच्य,चीन) देश के लोग इससे अधिक प्रभावित	वाहिका सौराष्ट्रिक सिंधु, सौवीरका:लोग दुध+नमक खाते है.

3) सात्म्य: (Ref. Also in च.सु.06) (च.सु. 06 - ओकसात्म्य - 4 प्रकार)

*सात्म्यं नाम तद् यदात्मन्युपशेते। च. वि.1 *सात्म्यार्थो हि उपशयार्थ:।च. वि.1

* प्रकार - 3 (प्रवर, मध्य, अवर); 7 (1-1 रस के 6 + सर्वरस का 1)

– सर्वरसमपि च सात्म्यम्

4) आहारविधिविशेषायतन:

चरक – 8 प्रकृति करण संयोग राशि देश काल उपयोगसंस्था उपयोक्ता,

वाग्भट – 7 (उपयोक्ता Not mentioned. सप्तआहार कल्पना)

i) प्रकृति: तत्र प्रकृतिरूच्यते स्वभावो य:। उदा. माष (गुरू), मुद्ग:(लघु) शुकर (गुरू), ऐण. (लघु)

ii) करण: पुन: स्वाभाविकानां द्रव्याणाम् अभिसंस्कार:।

* संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते। च.वि.1

By (जल, अग्नि) सन्निकर्ष, Also, शौच, मन्थन, देश, काल, वासन, भावना.

काल: 1 वर्ष पुराना चावल – लघु, नया चावल – गुरू.

भोजन: i) त्रिफला कल्क को लोह पात्र पर लेप पश्चात् उपयोग से वह रसायन.

ii) 10 दिन तक कास्य पात्र में रखा घृत – विष.

* अपवाद कुछ गुण अपरिवर्तनीय:

उदा. अग्नि में उष्णता, वायु में चंचलता, तिल में स्नेह

iii) संयोग: पुन:द्वयोर्बहूनां वा द्रव्याणां संहतीभाव:।

उदा. मधुसर्पि,मधु मत्स्य पयस.

iv) राशि: (चरक - 2, वाग्भट & सुश्रुत – 2) राशीस्तु सर्वग्रह परिग्रहौ, मात्रा मात्रफलविनिश्चयार्थ:। i) सर्वस्याहारस्य प्रमाणग्रहणम् एक पिण्डेन सर्वग्रह:। उदा. थाली मे रखा खाना. ii) परिग्रह में (1-1) चीज का विचार i.e. प्रमाण ग्रहण.

* सर्वस्य हि ग्रह: सर्वग्रह:, सर्वतश्च ग्रह: परिग्रह उच्यते।

v) देश: पुन: स्थानं, – उत्पत्ति का ज्ञान होने से गुण का ज्ञान होता है.

उदा. a) हिमालय की औषधि – शीत वीर्य, b) विंध्य की औषधि –उष्ण वीर्य.

vi) काल (2) : नित्यगस्तु ऋतुसात्म्यापेक्ष:, आवस्थिका विकारम् अपेक्षते.

उदा. a) जीर्णज्वर में दुध–अमृत वत; Not in नवज्वर.

b) हेमंत ऋतु में अग्नि वृध्दी। : Use (गुरू & स्थुल) द्रव्य.

vii) उपयोगसंस्था: तु उपयोग नियम: e.g जीर्ण लक्षणापेक्ष:

viii) उपयोक्ता: पुन:य:तम् आहारम् उपयुक्ते।

* यदा यत् तम् ओकसात्म्यम (जिसके अधिन ओकसात्म्य है)

5) आहार ग्रहणार्थ नियम: (उपयोग संस्था) (चरक – 10, सुश्रुत –12)

i) उष्ण – उष्णं भुज्यमानं स्वेदते, अग्निमौदर्यमुदीरयति क्षीप्रं जरां गच्छति, वातमनुलोमयति, श्लेष्मा ऱ्हास.

ii) स्निग्ध – भुज्यमानं स्वेदते, भुक्तअनुदीर्णम् अग्निमुदीरयति क्षीप्रं जरां गच्छति (जल्दी पचन), वातमनुलोमयति. शरीरउपचय

iii) मात्रावत् – अव्यथं च परिपाकम्:(बिना पिडा पचता है) शरीर की उष्मा नष्ट नहीं होने देना. iv) जीर्णपश्चात – v) अविरूध्दवीर्य –

vi) इष्ट देशोपकरण – मनोविकार नही होते

vii) तन्मना, आत्मानम अभिसमीक्ष्य –

viii) नातिद्रुतं – उत्स्नेहन, अवसाद, भोजन के गुण को अनिश्चित नियति,

ix) नातिविलम्बित – अतृप्त, विषम प्राक,बहूभुक्ते

x) अजल्पन, अहसन – अतिशिघ्रवत.

2) त्रिविधकुक्षीय विमान

Topics: 3 कुक्षी विभाग व 2 आमदोष वर्णन.

* अजीर्ण में भोजन पर = सर्वान् दोषान् प्रकोपयत्याशु।)

1) कुक्षी – 3 भाग (1 भाग – मूर्त पदार्थ, 1 भाग द्रव पदार्थ, 1 भाग त्रिदोष) वाग्भट – 4 (घन पदार्थ – 2 भाग) (काश्यप –4)

2) मात्रावत् आहार लक्षण: पार्श्वयोरविपाटनम् (दोनो पार्श्व फटने जैसी पीडा न हो) बलवर्णोपचयकरत्वं.

* आहार मात्रा - 2 [मात्रावत्, अमात्रावत् (हिन, अधिक)]

a) हीन मात्रा आहार लेने से प्राय: धातुक्षय लक्षण, अतृप्तिकर, उदावर्त, अनायुष्य, अवृष्य, अनोजस, शरीरमन, बुध्दि, इंद्रिय, उपघातकर, सार का क्षय, वातविकार

b) अतिमात्रा आहार से: सर्वदोष प्रकोपणम्, सर्वे युगपत् प्रकोपम् आपद्यन्ते, वात प्रकोप – भ्रम अग्निवैषम्य, पित्त प्रकोप – i) ज्वरासह अतिसार ii) मद भ्रम, iii) प्रलाप, कफ प्रकोप – i) छर्द्दि, ii) शीतज्वर.

3) अजीर्ण हेतु: चिन्ताशोक भयक्रोध दु:खशय्याप्रजागरै:।

4)आमदोष: 2 विसूचिका, अलसक, i) विसूचिका लक्षण – दोष प्रवृत् उर्ध्व, अध: चिकित्सा लघन, विरेचन पश्चात् का संसर्जन क्रम,

ii) अलसक – छर्दी, अतिसार चिकित्सा - वमन

a) अलसक से दण्डालसक उत्पन्न होने में 3 हेतु: i) दुर्बल ii) अल्पाग्नि बहुश्लेष्मा iii) वेगधारण (वातमूत्र पुरीष), लक्षण – दोष वृध्दी, मार्गबध्द होकर, दोष तिर्यक होकर शरीर दण्डवत.

b) आम दोष से आमविष उत्पन्न में 3 हेतु: i) विरूध्द ii) अध्यशन iii) अजीर्णाशन

* आमविष: परमसाध्य क्योंकि आशुकारि & विरूध्दोपक्रम साध्य में चिकित्सा – वमन, स्वेदन वर्ति, उपवास.

i) आमदोष में अपतर्पण: परम चिकित्सा व हेतु–व्याधीविपरीतार्थकारी औषध प्रयोग.

ii) विमुक्त आम में अग्नि दीप्ती, आस्थापन अनुवासन(शोधन), स्नेहपान.

* सूचिभिरव गात्राणि तुदन् सन्तिष्ठतेऽनिल: ।.....(मा. नि.)

5) आमाशय वर्णन – नाभिस्तनान्तरं जन्तोरामाशय इति स्मृत। च. वि.2/17

3) जनपदोध्वंसनीय

Topics:जनपदोध्वंस,आयुसम्बधी दैव व पुरूषार्थ वर्णन,उष्णजल,अपतर्पण वर्णन

* स्थल: जनपदमण्डले, पांचालक्षेत्रे, द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) की आवासानगरि काम्पील्य राजधानी गंगातीरे में घूमते हुए अग्निवेशसे कहने लगे.

* काल – धर्ममासे (आषाढ)

1) जनपदोध्वंस: (चरक), सुश्रुत – मरक; भेल – जनमार

घटक – i) वायु जल देश काल, * हेतु – अधर्म – मूल; प्रज्ञापराध – योनि

* वायुजलदेशकाल बलवत्तता, * चिकित्सा – पंचकर्म रसायन, सद्वृत पालन.

2) कृतयुग: भोजन। – भारीपन → आलस्य → संचय → परिग्रह → लोभ

3) युगे युगे धर्मपाद : क्रमेणानेन हीयते। (प्रत्येक युग में 1 पाद आयु ऱ्हास)

* सवत्सर शते पूर्णे याति संवत्सरः क्षयम्।
जिस युग में मनुष्य की जितनी आयु बतलाई गयी है। उस युग का शतांश भाग समाप्त होनेपर उस युग में मनुष्य की आयु 1 वर्ष घट जाती है।
4) दैवं पुरुषकारेण दुर्बलं ह्युपहन्यते * दैव से भी पुरुषार्थ बलवान.
(दुर्बल दैव को बलवान पुरुषार्थ पराजित करता है।)
दैवमात्मकृतं विद्यात्कर्म यत् पौर्वदैहिकम्। स्मृतः पुरुषकारस्तु क्रियते यदिहापरम्॥
5) त्रिविध कर्म = हीन, मध्य, उत्तम
काल व अकाल मृत्यूवर्णन
ज्वर में उष्णजल पाचनार्थ।
6) उष्णजल निषेधः सन्निपात ज्वर, दाह, भ्रम प्रलाप अतिसारे
7) अपतर्पणः 3 i) लंघन (अल्पदोष) ii) लंघनपाचन (मध्य दोष)
iii) दोषावसेचन. (बहुदोष)
* मुमूर्षलिंगान्वितस्य (मृत्युसूचक लक्षण)
8) देश भेदः 3 i) जांगल - अल्पोदक, आतप↑, अल्परोग, प्रवात,
ii) आनुप - ओदक↑, ↓आतप, बहुदोष, निवात, iii) साधारण - समः

4) त्रिविधरोगविशेषविज्ञानीयं

Topics: त्रिविधप्रमाण वर्णन.
1) त्रिविध रोगविशेषविज्ञानः आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान..
(च.सू.11-4 परीक्षा (+ युक्ति)),
a) आप्तोपदेशः आप्तोपदेशो नाम आप्तवचनम्।
आप्ता हि अवितर्क स्मृति विभाग विदो निष्प्रीत्युपतापदर्शिनश्च॥
b) प्रत्यक्षः प्रत्यक्षं तु खलु तद्यत् स्वयमिन्द्रियैर्मनसा चोपलभ्यते।
c) अनुमानः अनुमानं खलु तर्को युक्त्यपेक्षः। च. वि.-4
अनुमान नाम तर्को युक्त्यपेक्षः। च. वि.-8
* न हि ज्ञानावयवेन कृत्स्ने ज्ञेये ज्ञानमुत्पद्यते।
(किसी 1 अंश का ज्ञान होने से पूर्ण वस्तु का ज्ञान नहीं होता।)
i) आप्तोपदेश - में ऐतिह्य, ii) प्रत्यक्ष - अनुपलब्ध.
iii) अनुमान - (अर्थपत्ति, युक्ति, उपमान, सम्भव)
* सभी इंद्रिय परीक्षा प्रत्यक्ष से, अपवाद रस परीक्षा.
i) चक्षुरेंद्रिय द्वारा - वर्ण,संस्थान, प्रमाण, छाया, शरीर, प्रकृति, विकृती
ii) घ्राणेंद्रिय द्वारा - शरीर प्राकृत वैकृत गंध
iii) स्पशनेंद्रिय द्वारा - स्वभाविक अस्वभाविक स्पर्श
iv) श्रोत्रेंद्रियद्वारा ज्ञान - अंगुली पर्व स्फुटन, अंत्रकुजन, संधिस्फुटन
(सुश्रुत - रसज्ञान भी प्रत्यक्ष से करें)
2) अनुमान द्वारा ज्ञेय भावः 1) अग्नि जरणशक्त्या, 2) बल व्यायामशक्त्या, 3) श्रोत्रादी शब्दाद्यर्थग्रहणेन, 4) मनो ऽर्थव्यभिचरणेन्, श्रध्दा अभिप्रायेण, 5) विज्ञान व्यवसायेन, 6) रजः संगेन, 7) मोह अविज्ञानेन, 8) क्रोध अभिद्रोहेण, 9) शोकं दैन्येन,10) हर्षण आमोदेन, 11) प्रीति तोषेण, 12) भय विषादेन, 13) धैर्य अविषादेन,14) वीर्य उत्थानेन, 15) अवस्थान अविभ्रमेण, 16) मेधा ग्रहणेन, 17) संज्ञा नामग्रहणेन, 18) स्मृति स्मरणेन, 19) ह्रियम (लज्जा) पत्रपणेन, 20) शीलं अनुशीलनेन, 21) द्वेष प्रतिषेधेन, 22) उपधि अनुबन्धेन,23) धृति अलौल्येन, 24) वश्यता विधेयतया, 25) वयो... काल.., 26) गुढलिंग व्याधिमुपशयानुपशया, 27) दोषप्रमाण अपचार, 28) आयुषःक्षयं अरिष्टैः 29) उपस्थितश्रेयस्त्वं कल्याणाभिनिवेशेन, 30) ग्रहण्यास्तु मृदुदारूणत्वं, 31) अमलं सत्वम् अविकारेण.
* व्याधी सम्यक् परीक्षण By 3 प्रमाण (आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान),
(त्रिविधं ज्ञानसंग्रहम्)

5) स्त्रोतोविमान

* यावन्तः पुरुषे मूर्तिमन्ता भावविशेषास्तावन्त ।
* सर्वे हि भावाः पुरुषे नान्तरेण स्त्रोतांस्यभिनिर्वर्तन्ते,
(दोष,धातु, आदि की क्षय वृध्दि स्त्रोतस के माध्यमसे) क्षयं वाऽप्यगच्छन्ति.
* स्त्रोतांसि खलु परिणाम आपद्यमानानां धातूनामभिवाहीनि.
- स्त्रोतांसि परिसंख्ये पुनरन्ये.,
1) स्त्रोतस प्रकारः दृश्य स्त्रोतस, * स्थुल मान से - 13
प्राणोदकान्न रस रूधिर मांस मेदो ऽस्थि मज्जा शुक्र मूत्र पुरीष स्वेद
* अस्थि, मज्जा, स्वेद वह स्त्रोतस योगवाहि नहीं है। (स्त्रोतस - योगवाही सुश्रुत) * आत्मा, मन, त्रिदोष स्त्रोतस नहीं है, क्योंकि सर्व शरीर व्यापी.
i) **प्राणः** दूष्टी हेतू - क्षयात्सन्धारणात् रौक्ष्याद् व्यायामात क्षुधितस्यच।
प्राणवाहीनी दुष्यन्ति स्त्रोतांस्यन्यैश्च दारूणैः॥
लक्षणः अतिसृष्टम् अतिबंध कुपितमल्पाल्पमभीक्ष्णं सशब्दशूलमुच्छ्वसन्तं (सशब्द श्वास) मुलस्थानः हृदयं मूलं महास्त्रोतसश्च. चरक
(सुश्रुतः हृदय, रसवाही धमन्या.
लक्षणः क्रोशन, विनमन, मोहेन, भ्रमण, वेपनानी, मरणं.(सु. शा. 9))
ii) **उदकः** औष्ण्यादामाद्भयात्पानाद्अतिशुष्कान्नसेवनात्।
अम्बुवाहीनी दुष्यन्ति तृष्णायाश्चातिपीडनात्॥
लक्षण - जिव्हातालवोष्ठकण्ठक्लोम शोषं पिपासां चातिवृध्दां.
मुलस्थानः तालु मूलं,क्लोमच्. चरक
(सुश्रुतः तालु क्लोम, लक्षणः पिपासा, सद्योमरणं. (सु. शा. 9))
iii) **अन्नः** अतिमात्रस्य चाकाले चाहितस्यच भोजनात्।
अन्नवाहीनि दुष्यन्ति वैगुण्यात् पावकस्य ॥.. (अग्निविकृत)
लक्षण - अनन्नभिलषणमरोचका विपाकौ छर्दि.
मुलस्थानः आमाशयो, वामपार्श्व. चरक; (सुश्रुतः आमाशय, अन्नवाही धमन्या)
लक्षणः आध्मान, शूलो, ऽन्नद्वेष, छर्दिः पिपासा, आन्ध्य,मरणं.(सु. शा. 9))
iv) **रसः** गुरूशीतमतिस्निग्धमातिमात्रं समश्नताम्।
रसवाहिनी दुष्यन्ति चिन्त्यानां चातिचिन्तनात्॥
लक्षण - अश्रध्दा च अरूचिश्चास्य वैरस्यमरसज्ञता।
हृल्लासो गौरवं तन्द्रा सांगमर्दो ज्वरस्तमः॥
पाण्डुत्वं स्त्रोतसां रोधः क्लैब्यं सादः कृशांगता। (च. सु. 28)
नाशोऽग्नेर यथाकाल वलयः पलितानि च ।
मुलस्थानः हृदयं, दशं धमन्या, चरक
(सुश्रुतः हृदय, रसवाहि धमन्या, लक्षणः प्राणवह समान, मरणं.(सु. शा. 9))
v) **रक्तः** विदाहीन्यन्नपानानि स्निग्धोष्णानि द्रवाणिच।
रक्तवाहिनी दुष्यन्ति भजतां चातपानला॥
कुष्ठवीसर्पपीडका रक्तपित्तमसृग्दरः।
गुदमेढ्रास्यपाकश्च प्लीहा गुल्मोऽथविद्रधी।
नीलीका कामला व्यंगः पिप्लवस्तिलकालकाः।
दद्रुचर्मदलं पामाश्चित्रकोठास्त्र मण्डलम्॥ (च. सु. 28)
मुलस्थानः यकृत, प्लीहा, चरक, (सुश्रुतः यकृत प्लीहा, रक्तवाही धमन्या
लक्षणः श्यावांगता, ज्वरो, दाहः,पाण्डुता, शोणितागमन, रक्तनेत्रता.,(सु.शा. 9))
vi) **मांसः** अभिष्यंदीनी भोज्यानि स्थुलानि गुरूणि च।
मांसवाहीनी दुष्यन्ति भुक्तवा च स्वपतां दिवा॥
अधिमांसार्बुदं कीलगलशालूक शुण्डिके ।
पूतिमांसालजीगण्ड गण्डमालोपजिव्हिका॥ (च. सु. 28)
मुलस्थानः स्नायु, त्वक्, चरक
(सुश्रुतः स्नायुत्वक्, रक्तवह धमन्या,
लक्षणः श्वयथु, मांसशोष, सिराग्रंथयो, मरणं. (सु. शा. 9))
vii) **मेदः** अव्यायामाद दिवास्वप्नान्मेद्यानां चातिभक्षणात्।
मेदोवाहीनी दुष्यन्ति वारूण्याश्चातिसेवनात॥
निन्दितानि प्रमेहाणां पूर्वरूपाणि यानि च। (च. सु. 28)
मुलस्थानः वृक्कौ, वपावहन, चरक (सुश्रुतः कटी,वृक्कौ,
लक्षणः स्वेदागमन,स्निग्धांगता,तालुशोष,स्थुलता,शोफ, पिपासा.(सु. शा. 29))

viii) अस्थि: व्यायामादतिसंक्षोभादस्यंतामतिविघट्टनात।
अस्थिवाहीनी दुष्यन्ति वातलानां च सेवनात॥
अध्यस्थिदन्तौ दन्तास्थि भेद शूलं विवर्णता।
केश लोम नख श्मश्रु दोषाश्चस्थिप्रदोषजा:। (च. सु. 28)

मुलस्थान: मेदो, जघनं.

ix) मज्जा: उत्पेषादत्यभिष्यांदाद अभिघातात् प्रपीडनात्।
मज्जावाहीनी दुष्यन्ति विरूध्दानां च सेवनात्॥
रूक पर्वणां भ्रमो मूर्च्छा दर्शन तमस्तथा।
अरूषां स्थूलमूलानां पर्वजानां च दर्शनम्॥ (च. सु. 28)

मुलस्थान: अस्थि, सन्धय.

x) शुक्र: अकालयोनिगमनान्निग्रहादतिमैथुनात्।
शुक्रवाहीनी दुष्यन्ति शस्त्रक्षाराग्निभिस्तथा॥
शुक्रस्य दोषात् क्लैब्यम् अहर्षणम्।
रोगी वा क्लीबम् अल्पायुविरूपं वा प्रजायते॥
न चास्य जायते गर्भ: पतति प्रस्त्रवत्यपि।
शुक्रं हि दुष्ट सापत्यं सदारं बाधतेनरम्॥ (च. सु. 28)

मुलस्थान: वृषणौ, शेफश्च, चरक,
(सुश्रुत: स्तनौ, वृषणौ, लक्षण: क्लीबता, चिरात्प्रसेको, रक्तशुक्रता.(सु. शा. 9))

xi) मूत्र: मूत्रीतोदकभक्ष्य स्त्रीसेवनात मूत्रनिग्रहात्।
मूत्रवाहिनी दुष्यन्ति क्षीणस्याभिक्षतस्य॥
अतिसृष्ट अतिबध्दम् प्रकुपितमल्पाल्पमभीक्ष्य वा बहलं सशूल मूत्रयन्तम् दृष्टवा।
मुलस्थान: बस्ति, वंक्षणौ चरक,
(सुश्रुत: मेढ्र, बस्ति, लक्षण: मूत्रनिरोध, स्तब्धमेढ्रता.,(सु. शा. 9))

xii) पुरीष: सन्धारणाद् अत्यशनाद् अजीर्ण अध्यशनात् तथा।
वर्चोवाहिनी दुष्यन्ति दुर्बलाग्नेः कृशस्यच॥
कृच्छ्रेणाल्पाल्पं सशब्दशूलम् अतिद्रवमतिग्रथितम् इति बहुचोपविशन्तं दृष्टवा।
मुलस्थान: पक्वाशय, स्थुलगुद, चरक,
(सुश्रुत: पक्वाशयो, लक्षण: आनाह, दुर्गन्धिता, ग्रंथितांत्रता. (सु. शा. 9))

xiii) स्वेद: व्यायामाद् अतिसंतापात् शीतोष्णक्रमसेवनात्।
स्वेदवाहिनी दुष्यन्ति क्रोध शोक भयस्तथा॥
अस्वेदनमतिस्वेदन (कुष्ठ,वातरक्त पूर्वरूप) पारूष्यमतिश्लक्षणताम् अंगस्य परिदाह लोमहर्ष. मुलस्थान: मेदो, लोमकूप

Common: हृदय मुलस्थान– प्राण व रसवह. क्लैब्य लक्षण – रसवह व शुक्रवह. व्यायाम हेतू – प्राण, अस्थि व स्वेदवह. अतिमात्रा आहार – रस व अन्नवह. दिवास्वाप हेतू – मांस व मेद दूष्टी. सन्धारण हेतू – प्राण व पुरिषवह.

2) स्त्रोतस: i) पर्याय: स्त्रोतांसि,सिरा,धमन्य:,रसायन,रसवाहिन्य,नाड्य:,पन्थान मार्गा:,शरीर छिद्राणि,संवृत्तसंवृतानि स्थान,आशया:निकेत,शरीर धात्ववकाश.

ii) दुष्टि कारण: आहारश्च विहारश्च य:स्याद् दोषगुणै: सम:।
धातुभिर्विगुणश्चापि स्त्रोतसां स प्रदूषक॥

iii) दुष्टि लक्षण:(4)अतिप्रवृत्ति: संगो वा सिराणां ग्रंथयोऽपि।
विमार्गगमनं चापि स्त्रोतसां दुष्टिलक्षणम्॥

iv) आकृति: / परिभाषा: स्वधातु समवर्णानि वृत्त स्थूलान्यणूनि च।
स्त्रोतांसि दीर्घाण्याकृत्या प्रतानसदृशानि च॥

v) चिकित्सा:
प्राण - श्वास वत्, उदक - तृष्णा वत्, अन्न - आमदोष वत्,
मूत्र - मूत्रकृच्छ्र वत्, मल - अतिसार वत्, स्वेद - ज्वर वत्, रस - लंघनं, रक्त - रक्तपित्तहर विरेक, उपवास, स्त्रावण, मांस - शोधन - शस्त्रक्षाराग्नि कर्म, मेद - स्थूल में गुरू अपतर्पण; कृश में लघु संतर्पण अस्थि -पंचकर्म, बस्त्य क्षीरसर्पीष, मज्जा शुक्र - स्वादुतिक्तमौषधम् अन्न, (* क्लेद – प्रमेह, कुष्ठ, कृमी)
(कुष्ठ, ज्वर अधिष्ठान समान इसलिए चिकित्सा समान)

6) रोगानीकविमान

Topics: रोगभेद, अग्निभेद, दोष शामक उपाय, राजवैद्य.

* रोगानीक - रोगों का अनीक - समूह, दशरोगानिक

1) रोग भेद: i) प्रभाव से - साध्य असाध्य, ii) बल - मृदु दारूण, iii) अधिष्ठान - मनो, शरीर अधिष्ठान, iv) निमित्त - स्वधातुवैषम्य आगन्तु, v) आशय-आमाशय,पक्वाशय.,

* वातपित्तश्लेष्माणस्तु खलु शारीर दोषा:। (च. वि .6)

2) दोष प्रकोप में 3 कारण:
असात्म्येद्रियार्थ संयोग:, प्रज्ञापराध, परिणामश्चेति. (समवाय कारण - दोष)

3) अनुबध्य दोष: स्वतंत्र व्यक्तलिंग यथायुक्त समुत्थान प्रशमो
अनुबन्ध: अनुबन्ध्य के विपरित

4) अग्नि बलभेद से: 4
तीक्ष्ण - सर्वापचार सह:, मन्द - तीक्ष्ण के विरोधी
सम - खल्वपचारतो (कुपथ्य से विकृत & पथ्य से सम हो)
विषम - सम के विरोधी.

* त्रयस्तु पुरूषा भवन्त्यातुरा:।
(3 प्रकार के वात, पित्त, कफ,प्रकृती पुरूष रोगी होते है।)

5) दोष शामक उपाय वर्णन:
वात शामक उपाय, पित्त शामक उपाय,कफ शामक उपाय,

6) राजवैद्य लक्षण: सर्वरोगविशेषज्ञ: सर्वकार्यविशेवित्।
सर्वभेषजतत्वज्ञो राज्ञ: प्राणपतिर्भवेत्॥ (Also in च. सु. 9/19)

* केवल प्रत्यक्ष से ज्ञान करना ज्ञान का अंश या ज्ञानावयव कहा जाता है।

7) व्याधितरूपीय विमान

Topics: कृमी वर्णन.

1) 2 पुरूष: गुरूव्याधित: लघुव्याधित

2) कृमी: चरक - पू. र. क. - 5,6,7 सुश्रुत - पू. र. क. - 7,7,6 वाग्भट 5,6,7

पूरीषज	रक्त ज	क फ ज
हेतु समुत्थान श्लेष्मजै:	कुष्ठ वत्	क्षीरगुडतिल,विरुध्द असात्म्य भोजन
स्थान पक्वाशय	रक्तवाहिन्य धमन्य:	आमाशय
संस्थान सूक्ष्मवृत्त परीणाह,स्थुलवृत्त	अणु,वृत्त,अपाद,सूक्ष्म अदृश्य	त्रिविध = i) पृथुब्रध्न श्वेता: ii) वृत्त परिणाहा गण्डूपदाकृति iii) अणु or दीर्घ श्वेता
वर्ण: श्वेता दीर्घ,ऊर्णांशु संक्रशा श्यावनीलहरितपीता:		ताम्र:श्वेतताम्रा
नाम: 1) ककेरूक	1) केशाद	1) अन्त्राद्
2) मकेरूक	2) लोमाद	2) उदराद
3) लेलिह	3) लोमद्विप	3) हृदयाद
4) सशूलक	4) सौरस,5) औदुम्बर	4) चुरू,5) दर्भपुष्प
5) सौसुराद	6) जन्तुमाता	6) सौगन्धिक, 7) महागुद
प्रभाव लक्षण:		
* पुरीषभेद, कार्श्य, पारूष्य लोमहर्ष	*केशलोमनखश्मश्रु अपध्वंस	* हृल्लास, आस्यस्त्रवण, *अरोचकाविपाकौ,ज्वर मूर्च्छा,
गुदमुख (तोद,कण्डु)	*व्रण होनेसे(हर्षकण्डू तोद संसर्ग)	*जृम्भा,क्षवथु:आनाह, अगमर्द, छर्दि, कार्श्य, पारूष्य
चिकित्सा:	* कुष्ठ वत	

3) मलज कृमि: प्रकार - 2 बाह्य - इन्हें ही प्राय: मलज संज्ञा, आभ्यन्तर समुत्थान मृजावर्जन (स्वच्छता न रखना), स्थान: केश लोम श्मश्रु पक्ष्म; संस्थान (आकृति) अणु, तिलाकृति, बहुपाद. वर्ण कृष्ण, शुक्ल; नाम यूका, पिपीलिका., प्रभाव: (सामान्य लक्षण) कण्डू, कोठ, पिडका,

चिकित्सा: i) अपकर्षण ii) मलोपघात (मलों का नाश)
iii) मलकरने वाले भाव का असेवन.
4) कृमिरोग चिकित्सा:
i) अपकर्षणम् – 4 प्रकार से – शिरोविरेचन, वमन,विरेचन, आस्थापन,
कृमिरोग चिकित्सा में शोधन के बाद कर्म - कषाय - शैखरिक कषाय यवागु -
फल पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक ----
वमनार्थ मदनफल पिप्पली क्वाथ - अर्धाजली
विरेचनार्थ - त्रिवृत्त कल्क 1 अक्ष
ii) प्रकृतिविघात - कटुतिक्तकषायक्षारोष्ण द्रव्य उपयोग. iii) निदानपरिवर्जन.
कृमीसप्त गण– हेतू, स्थान, संस्थान, वर्ण, नाम, प्रभाव, चिकित्सा.
[द्रव्य (कल्प): 1) मदन फलपिप्पली कषाय - 1/2 अंजलि,
2) त्रिवृत् कल्क - अक्ष 3) शैखरीक कषाय- परिषेक; 2 or 3 बार अनुवासन बस्ति
4) घोडे की लीद (काचूर्ण) - पाणितल (1 कर्ष / 1 तोला)
5) भल्लातकास्थि - कलश (4 आढक - 102 4 तोला)
भद्रदारू, देवदारू,सरल काष्ठ – (पानार्थ प्रयोग)]

8) रोगभिषग्जितीय

Topics: शास्त्र ज्ञान के उपाय, सम्भाषाविधी, परिषद, वादमार्ग ज्ञानार्थ 44 पद.
त्रिविध शिष्यबूध्दी, शास्त्र लक्षण - 18.
1) शास्त्र परिक्षा पहले, बाद में आचार्य परिक्षा करनी चाहिए।
* हवन: i) पूर्व or उत्तर, ii) प्राक्मुखी, iii) मधुसर्पि
2) शास्त्र प्रवृत्ती (ज्ञान) के उपाय: 3 (कुशल वैद्य बनने के उपाय - 3)
i) अध्ययन - काल - कृत्क्षण, ii) अध्यापन - उत्तरायण काल; शुक्लपक्ष; (तिष्य (पुष्य), हस्त, श्रावण, अश्विनी, नक्षत्र में से किसी 1 में, iii) तद्विद्यसम्भाषा.
* कृत्स्नो हि लोको बुध्दिमतामाचार्य: शत्रुश्चाबुध्दिमताम्
(बुध्दिमान का संपूर्ण संसार गुरू & मूर्ख का शत्रु है)
3) सम्भाषाविधी: i) भिषक् भिषजासह सम्भाषेत।
(वैद्य को वैद्य के साथ वार्तालाप करना चाहिए), ii) ज्ञान वर्धन.
* प्रकार: 2 i) सन्धाय (अनुलोम/मित्र भाव से की हुई) सम्भाषा.
ii) विगृह्य (पराजित करने हेतु/चूक बताने हेतु) सम्भाषा.
4) परिक्षा: 2 (ज्ञानी व्यक्ति के लिए) i) प्रत्यक्ष, ii) अनुमान. त्रिविध परिक्षा - 2 + आप्तोपदेश. * शत्रु के साथ जल्प (वाद - विवाद) व शास्त्रचर्चा न करें।
5) प्रतिपक्षी: 3 (प्रवर, प्रत्यवर, सम)
शास्त्रचर्चा * इसमें जल्प (वाद–विवाद) न करें As other are मूर्ख
6) परिषद: **2** - i) ज्ञानवती - सुहृत्परिषद - उदासीन - प्रतिनिविष्ट
ii) मूढ - सुहृत् - उदासीन - प्रतिनिविष्ट (शत्रु)
7) वादमार्ग पद: वादमर्यादा लक्षण - इदं वाच्यम्, इदं अवाच्यम्
(यह कहना चाहिए) (यह....नहीं.) * वादमार्ग ज्ञानार्थ 44 पद.
1) वाद: शास्त्रपूर्वक विगृह्य. कथन * प्रकार: 2
i) जल्प – स्वस्वपक्षं स्थापयत: जल्प - गुण 5, दोष -5
ii) वितण्डा – परपक्षे दोषवचनमात्रम्.
2) **द्रव्य: गुण-- समवाय:** (सूत्र) श्लोकस्थान में.
3) **प्रतिज्ञा:** साध्यवचन (जो पाना है) उदा. नित्य पुरूष.
*स्थापना *प्रतिज्ञा को हेतु,दृष्टान्त,उपनय,निगमन से सिध्द करना स्थापना है।
i.e. पूर्व हि प्रतिज्ञा, पश्चात स्थापना. i) प्रतिज्ञा – नित्य: पुरूष इति.
ii) हेतु - अकृतकत्वाद् इति. i.e. किसी के द्वारा निर्मित नही.
iii) दृष्टान्त-यथा आकाशम इति. (As ये किसी के द्वारा निर्मीत नही नित्य है)
iv) उपनय - यथा चा ऽकृतकम् आकाशं, तच्च नित्यं तथा पुरूष इति.
(जैसे आकाश को किसी ने नहीं बनाया, वैसे ही पुरूष को किसी ने नहीं बनाया)
v) निगमन – तस्मात् नित्य इति.
असत् हेतु (दर्शन शास्त्र) हेत्वाभास, अहेतु (चरक)
10) **प्रतिष्ठापना:** परप्रतिज्ञा विपरीतार्थ स्थापना.
(प्रतिवादी द्वारा, की गई प्रतिज्ञा के विपरीत प्रतिज्ञा को स्थापित करना)
i) प्रतिज्ञा - अनित्य: पुरूष इति. ii) हेतु - ऐन्द्रियकत्वाद् इति. (i.e. आँख से दिखाई पडता है), iii) दृष्टान्त - यथा घट इति., iv) उपनय - घट ऐन्द्रियक: स च अनित्य: तथा चायमिति., v) निगमन - तस्माद् अनित्य इति.
11) **हेतु:** हेतु: नामोपलब्धिकारणम्.
तत्व: एभि: हेतुभि: यद् उपलभ्यते तत् तत्वम्.
प्रत्यक्ष, अनुमान, ऐतिह्य,(आप्तोपदेश), उपमान इन 4 हेतु (प्रमाण) से जो ज्ञान होता है, वही तत्व (प्रामाणिक ज्ञान) होता है।
12) **दृष्टान्त:** यत्र मुर्खविदुषा बुध्दिसाम्यं.
उदा. अग्निरूष्ण:, द्रवमुदक, स्थिरा पृथिवी, आदित्य प्रकाशक,
13) **उत्तर:** सविपर्ययम् उत्तरम्.
(परस्पर विपरीत प्रदर्शन करना - उत्तर)
14) **सिध्दांत: परीक्षकै: बहुविधं परीक्ष्य हेतुभिश्च साधयित्व स्थापते निर्णये:।**
4 प्रकार - i) सर्वतंत्रसिध्दांत - उदा. संति निदानाति, संति व्याधय:, संति सिध्दुपाया: **(पांचभौतिक सिध्दांत)**, ii) प्रतितंत्रसिध्दांत - उदा. अन्यत्राष्टौ रसा: षडत्र; पंचेंद्रियाण्यत्र षाडेंद्रियादा., iii) अधिकरणसिध्दांत -
iv) अभ्युपगमसिध्दांत - सिध्दांत नहीं हैपरंतु सिध्दांत के तरह उपयोग करते है।
(i.e शास्त्रानुसार सिध्द नहीं) उदा. द्रव्य प्रधानम, गुणा: प्रधान, वीर्य प्रधानम्.
15) **शब्द:** शब्दो नाम वर्णसमाम्नाय: 4 प्रकार
i) दृष्टार्थ ii) अदृष्टार्थ iii) सत्य iv) अनृत - झूठ बोलना.
(शब्द: 2 (ध्वनात्मक, वर्णात्मक) वर्ण के समूह)
16) **प्रत्यक्ष:** यद् आत्मना च इंद्रियैश्च स्वयम् उपलभ्यते,
तत्र आत्म प्रत्यक्षा: सुख दु:ख इच्छाद्वेषादय; शब्दादय:
(आत्म्येंद्रिय मनोऽर्थाना सन्निकर्षात् प्रवर्तते। च. सु. 11)
* प्रत्यक्षतुखलु विद्यात् स्वयम् इंद्रियै:मनसा चोपलभ्यते। च. वि. 4
17) **अनुमान:** (नाम तर्को युक्त्यपेक्ष:) युक्ति के आधारित किया हुआ तर्क उदा. अग्नि जरणशक्त्या, बलं व्यायामशक्त्या.
18) **ऐतिह्य:** आप्तोपदेशो वेदादि: ऐतिह्य (ऐसा होकर गया है।)
19) **उपमान:** सादृश्यम अधिकृत्य प्रकाशनम्. (समानता दिखाने वाला)
उदा. दण्डेन दण्डकस्य, धनुषा धनु:स्तम्भस्य.
20) **संशय:** सन्देह लक्षण....अनिश्चय:। (संदिग्ध/अनिश्चित)
उदा.अकाल मृत्यु पर संशय. * **परिक्षा** - पर्याय प्रमाण (चरक)
* प्रवृत्ति: प्रतिकम समारम्भ: व लक्षण - क्रिया समायोग:
* प्रवृत्तिस्तु खलु चेष्टा कार्यार्था:।
21) **प्रयोजन:** प्रयोजनं नाम यद् अर्थमारभ्यन्त: आरम्भा:।
(जिसके लिए कीया) (जिसके द्वारा व्यभिचार होता है।)
22) **सव्यभिचार:** सव्यभिचरणं नाम यद् व्यभिचरणं।
उदा. औषध इस रोग में हितकर होगा या नहीं.
(हेत्वाभास:5 i) सव्यभिचार, ii) विरूध्द, iii) असत् प्रतिपक्ष, iv) सिध्द, v) बाधित.)
सव्यभिचार: 3 i) साधारण, ii) असाधारण, iii) अनुपसंधारि.
23) जिज्ञासा नाम परिक्षा। 24) व्यवसायो नाम निश्चय:।
25) **अर्थप्राप्ति:** अर्ध वाक्य बोलने पर जो न कहा हो उसका अर्थ समझ लेना.
i) संतर्पणसाध्य नहीं है तो अपतर्पण साध्य. a) श्रृतार्थ पत्ति, b) दृष्टार्थ पत्ति.
26) **सम्भव:** यो यत: सम्भवति स तस्य सम्भव:।
(जो जहाँ से मिलता है उसे) उदा. षड्धातु गर्भ का सम्भव है & अहितसेवन रोग का सम्भव है. * अप्रासंगिक बात बार–बार कही जाय तो वो पुनरूक्त नहीं है। प्रासंगिक बात बार - बार कही जाय तो वह पुनरूक्त है।
27) अनुयोज्य: अनुयोज्यं नाम यद् वाक्य वाक्यदोषयुक्त।
(जो वाक्य उच्चार किया, उसी पर प्रश्न उठना)

28) **अननुयोज्य:** अननुयोज्यं नामातो विपर्ययेण,।
उदा. अयम् असाध्य: (यह रोग असाध्य है।)
29) **अनुयोग:** उदा. नित्य: पुरूष:
30) **प्रत्यनुयोग:** प्रत्यनुयोगो नामानुयोग:।
Counter question (अनुयोग के बाद फिर (पुन:) अनुयोग करने को)
31) **वाक्यदोष:5-** i) न्युन ii) अधिक iii) अनर्थक iv) अपार्थक v) विरूध्द
समय: 3 - i) आयुर्वेदिक - चतुष्पादं भेषजम् - इति., ii) याज्ञिक - आलभ्या (वध) - यजमानें: पशव., iii) मोक्षशास्त्रिक - अहिंसा.
32) **वाक्यप्रशंसा:**
33) **छल:** परिशठम् अर्थामासम् अनर्थक वाग्वस्तुमात्रमेव।
Type - 2 i) वाक्छल, ii) सामान्य छल
* न्याय के अनुसार 3 - उपचार छल. Extra
34) **अहेतु:** (Wrong diagnosis)
Type - 3 i) प्रकरणसम, ii) संशयसम, iii) वर्ण्यसम.
35) **अतीतकाल:** जिसे पहले बोलना चाहिए उसे अन्त में बोलना.
36) **उपालम्भ:** हेतो : दोषवचनम् (हेतु में दोष बताना)
37) **परिहार:** दोषवचनस्य परिहरणं (Group of reasons)
(दोषयुक्त वाक्य को ठीक बताने हेतु जो बोलना)
38) **प्रतिज्ञाहानि:** जो पाना है उससे अलग मिलना।
(प्रतिज्ञा पर्यनुयुक्तो यत् परित्यजति - प्रतिज्ञाहानि)
39) **अभ्यनुज्ञा:** इष्टानिष्ट अभ्युपगम:।
(योग्य-अयोग्य विषय का विचार करना) उदा. पथ्यापथ्य एकसाथ विचार करना.
40) **हेत्वन्तर:** प्रकृतहेतौ वाच्ये यद् विकृतहेतुमाह।
(जहाँ प्रकृत हेतु कहना चाहिए वहाँ विकृत हेतु कहना)
41) अर्थान्तर नामैकस्मिन् वक्तव्यऽपरं यदाह।
उदा. ज्वर का लक्षण कहना हो वहाँ प्रमेह का लक्षण कहना.
42) निग्रहस्थानं नाम पराजय प्राप्ति:।
a) लक्षण: 3 बार पुछने पर भी उत्तर नहीं देना. b) संख्या: 15
न्यायशास्त्र में 4 अधिक: i) अप्राप्तकाल,ii) अननुभाषण, ii) अप्रतिभा, iv) विक्षेप
कुल निग्रहस्थान – 19.

8) 10 परिक्ष्य (दशविध परिक्ष्य):
i) कारण - यत् करोति (जो करता है) उदा. वैद्य व उसके लक्षण.
ii) करण - यद् उपकारणायोपकल्पतेकर्तु: कार्याभिनिर्वृत्त में प्रयत्नशील.
iii) कार्ययोनि - कार्यत्वमापद्यते उदा. धातु की विषमता.
iv) कार्य - अभिनिर्वृत्तिमभिसंधाय कर्ता प्रवर्तत उदा. धातुसाम्य
v) कार्यफल - यत्प्रयोजना कार्याभिनिर्वृत्ति (जिसके लिए कार्य किया जाता है)
उदा. सुखप्राप्ती, vi) अनुबंध - (आयुष्य, सुख) (क्रिया पश्चात् जो प्राप्त होता है)
vii) देश - अधिष्ठानम् उदा. शरीर, आतुर, viii) काल - परिणाम.
ix) प्रवृत्ति - (क्रिया, कर्म, यत्न, कार्यसमारम्भ) - चेष्टा कार्यार्था.
x) उपाय - कारणादीनां सौष्ठवम् अभिविधानम्.
* सुखेन प्रतिबोधनम्.
भेषज प्रकार – 2: दैवव्यपाश्रय, युक्तीव्यपाश्रय.

भाव	उदाहरण	लक्षण:
1) कारण	भिषक	सूत्रार्थ प्रयोगकुशल:
2) करण	भेषज	उद्देश: धातुसाम्य, भेषज- 2 (दैवव्यपाश्रय, युक्तिव्यापाश्रय) द्रव्यभूत, अद्रव्यभूत
3) कार्ययोनि	धातुवैषम्यं	विकारागम: (रोग का आगमन)
4) कार्य	धातुसाम्यं	विकारोपशम:
5) कार्यफल	सुखावाप्ति:	(मनो बुध्दि इंदिय शरीर) तुष्टि
6) अनुबंध	खल्वायु:	प्राणै: सह संयोग:
7) देश	भूमिरातुरश्च	आतुरस्तु खलु कार्यदेश:

[आतुर परीक्षा –10 (प्रकृति, विकृति), प्रकृति –4 प्रकार, (शुक्रशोणित, आहार विहार, कालगर्भाशय, महाभूतविकार) देश परिक्षा उद्देश: 2 a) आयुष:प्रमाण ज्ञान b) बलदोष प्रमाण ज्ञान]

8) काल	संवत्सरश्चातुरावस्था	साधारण ऋतु-प्रावृट,शरद,वसंत
9) प्रवृत्ति	प्रतिकर्मसमारम्भ:	क्रियासमायोग (चतुष्पाद का अपना सहयोग देने पर)
10) उपाय	भिषकादीनां सौष्ठवं अभिविधानं	

* कारण, करण, कार्ययोनि – कार्य के लिए अनुकुल है।
प्रयोजन of दशविध परीक्षा – प्रतिपत्तिज्ञान (यथार्थज्ञान)
(जो रोग जैसा है उसे वैसा ही समझकर चिकित्सा करना),

9) आतुर परीक्षा 1) प्रकृति

श्लेष्मा प्रकृति		पित्त प्रकृति		वातज प्रकृति	
सार (गुण)	कार्य	गुण	कार्य	गुण	कार्य
↓	↓	↓	↓	↓	↓
सारत्वात्	सारसंहतस्थिर शरीर	औष्ण्य-सुकुमारावदात गात्रा: पिप्लुव्यंगतिल...		रूक्ष – जागरूक	
सान्द्रत्वाद्	उपचित परिपूर्ण सर्वांग:	क्षुत्पिपासावन्त वलीपलितखालित्य		शीघ्र-शीघ्रसमारंभ क्षोभ विकार	
स्तैमित्याद्	अशीघ्रारम्भ क्षोभविकारा:	तीक्ष्ण-पराक्रमा:(क्रोधी) प्रभूताशन क्लेशसहिष्णवो		शीत-शीतासहिष्णव: विशद: स्फुटितांगावयवा:	
गुरूत्वात्	साराधिष्ठित.	दन्दशूका:		सतत	
विज्जलत्वात्	सुश्लिष्ट (सार सधिबंध:)	द्रव: मृदुशिथिल संधिमांस मध्यबला मध्यायुषे		संधिशब्दगमिनश्च अल्पबल अल्पायु	
	उत्तमबल उत्तम आयुष्य	विस्त्र-पूतिकक्षास्यशिर: शरीर गंध:, कट्वाम्ल अल्पशुक्र,व्यवाय अपत्या			

2) विकृति: * उद्देश – व्याधिबल ज्ञान. * हेतु, दोष, दूष्य,....
3) सार: 8 **सार (च.वि. 8)**
i) त्वक्: स्निग्धश्लक्षणमृदुप्रसन्नसूक्ष्म,अल्पगम्भीर, सुकुमारलोमा, सुखसौभाग्य, ऐश्वर्योपभोग,बुध्दि,विद्या,आरोग्य,प्रहर्ष.
ii) रक्त: स्निग्धरक्तवर्ण(अवयव):मेधा,मनस्विता,न बल,क्लेश उष्णोसहिष्णुता सुकुमार, श्रीमद भ्राजिष्णू
iii)मांस: स्थिरं, गुरू, शुभ (अवयव+संधि), वित्त, विद्या क्षमा धर्ति, अलौल्य,
iv) मेद: विशेष: स्नेद्ये; वित्त, ऐश्वर्य, सुखोपभोग, सुकुमार(सु. बृहदशरीर)
v)अस्थि: पर्वस्थुला, स्थूलस्थि; क्रियावन्त, क्लेशसहा महोत्साहा: स्थिरशरीरा, आयुष, (सु. महाशिर)
vi) मज्जा: स्निग्धवर्णस्वरा:, स्थूलदीर्घवृत्तसन्धयश्च, मृदंग, बलवन्त: श्रुत, वित्त, दीर्घायु, विज्ञान, अपत्य, सम्मान. (सु. महानेत्र)
vii) शुक्र: क्षीरपूर्णलोचन, प्रहर्षबहुला, प्रसन्नस्निग्धवर्णस्वरा, समसंहता शिखरदशना:, महास्फिकश्च, स्त्रीप्रियोपभागा बलवन्त: सुख ऐश्वय, आरोग्य, वित्त, सम्मान.
viii) सत्व: स्मृतिमन्तो, भक्तिमन्तो, कृतज्ञा, प्रज्ञा, महोत्साहा
स्निग्धवर्णस्वरा = मज्जा, शुक्र (प्रसन्न) * उद्देश – बल प्रमाण ज्ञान हेतु.
4) संहनन (संहति/संयोजन) * तत्र सुसंहत शरीरा: पुरूषा बलवन्त:
5) शरीर प्रमाण परीक्षा,
6) सात्म्य (उपशय): सातत्येनोपसेव्यमानम् उपशेते।
भेद- 3 प्रवर, मध्य, अवर.
7) सत्व: * सत्वमुच्यते मन: * बल भेद से – 3 प्रकार (प्रवर, मध्य, अवर)
8) आहार शक्ति परिक्षा: 2 i) अभ्यवहरण शक्ति, ii) जरण

* बल, आयुष इस पर आधारित है।,

9) व्यायाम शक्ति परिक्षा: कर्म शक्ति. बल इस पर आधारित है।,

10) वय: स्थूल भेद से – 3 प्रकार * वय परिक्षा: 3,

i) बाल: अपरिपक्वधातु –जन्म से 16 yrs, विवर्धमानधातु – (16 - 30)yrs. – जन्म से 30 yrs., ii) मध्य: (30 - 60) yrs., iii) जीर्ण: (60 - 100) yrs. (अ. सं. वृध्दावस्था 60 वर्ष से आगे, अ. हृ. वृध्दावस्था 70 वर्ष से आगे)

10) आयुष:प्रमाण:1) इंद्रिय स्थान में,

2) जातिसूत्रीय अध्याय शारीर स्थान.

काल : संशोधन निषीध्द काल:

1) हेमन्त में बध्ददोष संशोधन करने पर वातोपद्रव,

2) ग्रीष्म में प्रविलीनदोष संशोधन करने पर पिपासोपद्रव.

3) वर्षा में गुरूपदार्थ सेवन से कृशता उंत्पत्ती व शरीर में शक्ति देर से आयेगी.

संशोधन काल–साधारण ऋतू–प्रावृट,शरद,वसन्त.

11) पंचकर्मार्थि द्रव्य संग्रह, वमन – फलजीमुतक...विरेचन – श्यामात्रिवृत

a) षडास्थापन स्कन्ध – रसानुसार

मधुर स्कंध	अम्ल	लवण	कटु	तिक्त	कषायस्कंध
शुरूवात:					
जीवकर्षभक	आम्र	सैंधव	पिप्पली	चंदन	प्रियंगु
शमन:VP	V	V	K	PK	PK

मधुर स्कंध: तामलकी, पर्णी(6), कुमारी, शतावरी, अश्वगंधा वृश्चीर (श्वेत पूनर्नवा) बृहती,कण्टकारी, रक्तपूनर्नवा, वल्ली (5) तृणपंचमूल, (Max.pairs) (सुश्रुत:शाली,यव,गोधुम, माष,क्षीर,घुत,वसा, मज्जा, काकोल्यादी गण आदी.)

अम्ल स्कंध: आम्र, आम्रातक आदी हृघगण, आसव, दधि, तक्र, मद्य. (सुश्रुत: सुरा, सुक्त, सौविरक, तुषोदक, धान्याम्ल)

लवण स्कंध: सैधंव आदी सभी लवण

कटू स्कंध: सभी पिप्पली, चव्य, चित्रक श्रृंगवेर , मरिच, अजमोदा, विडंग, पीलु, एला, भल्लातकास्थि, हिंगुनिर्यास, कुस्तुम्बरू, मूलक, सर्षप, लशुन, करंज,शिग्रु, मधुशिग्रु, सुगन्धतृण, सुरस, नकछिकनी, क्षार, मुत्र, पित्त आदी (तूलसी भेद वर्णन.)

(सुश्रुत: गुग्गुलु, लांगली, पिप्पल्यादी व सुरसादी वर्ग आदी)

तिक्त स्कंध: चंदन,कटूरोहिणी,गुडूची,सप्तपर्ण,वचा,तगर,बालक,उशीर आदी (सुश्रुत: द्रवन्ती, अपामार्ग, अशोक, आरग्वधादि, गुडूच्यादी आदी)

कषाय स्कंध: प्रियंगु, आम्रास्थि, मोचरस, लोध्र, मंजिष्ठा, आम्र, जम्बू, भल्लातक बीज, अशोक, गुग्गुलु, नागकेशर, बिभितक, धातकीपूष्प, अनन्ता, पाठा, अर्जुन, श्योनाक, सप्तपर्ण, बदर, प्लक्ष, वट, उदूम्बर (No हरितकी)

(सुश्रुत: त्रिफला, जीवन्ती, पाषाणभेद, रोध्रादीगण, न्यग्रोधादीगण आदी.)

Common: आम्र, - अम्ल व कषाय, आम्रास्थि - कषाय.

मधुर स्कंध द्रव्य क्वाथ बस्ति: घृत, तैल, वसा, मज्जा, लवण वात विकार में दूध, मुध, मिश्र, शित – पित्त विकार में.

अम्ल व लवण स्कंध क्वाथ – सिद्ध बस्ति – वात रोग

कटू स्कंध क्वाथ बस्ति – कफ रोग

तिक्त स्कंध क्वाथ बस्ति – मधु, घृत पित्तज रोग

कषाय स्कंध - लवण तैल,मधु – कफ विकार

मधु, घृत, शीत – पित्त विकार

b) शिरोविरेचन में 1st – अपामार्ग

शिरोविरेचनार्थ रस – लवण, कटू, तिक्त, कषाय (मधूर अम्ल नही)

* शिरोविरेचन सप्तविधं; फल पत्र मूल कन्द निर्यास त्वक् पुष्प

12) विमानस्थान: निरूक्ती

दोषादीनां तु भावानां सर्वेषामेव हेतुमत्।

मानात् सम्यग् विमानानि निरूक्तानि विभागश:।। च. वि. 8

शारीर स्थान

1) कतिधापुरुषीय शारीर

अग्निवेशने 23 प्रश्न पुच्छे।

Topics: पुरूष वर्णन, इंद्रिय (मन), प्रकृति विकृती, नैष्ठिकी चिकित्सा, योग व मोक्ष वर्णन.

1) पुरुष: i) एकधातुज – चेतना, ii) षड्धातुज पुरुष: (चिकित्सा पुरूष) आप, वायु, तेज, जल, पृथ्वी + चेतना, iii) चतुर्विंशतिक पुरूष: राशी पुरूष/ संयोग पुरूष– 1 मन, 10 इंद्रियाँ (वाक पाणी पाद पायु उपस्थ, श्रोत्र चक्षु, त्वक्, जिव्हा, नासिका; अर्थ – 5 (शब्द स्पर्श रुप रस गंध),

प्रकृति – 8 (अव्यक्त, महत्त, अहंकार, महाभूत)

धातू भेद से– पुरुष भेद–3 एक धातूज, षड धातूज, चतुर्विंशतिक

सुश्रुत: अस्मिन शास्त्रे पंचमहाभूत शरीरिसमवाय: पुरुष इत्युच्यते ।

तस्मिन क्रिया सो ऽधिष्ठानम ।.... सु.सु.1/18

2) सांख्यसम्मत 25 तत्व: i) अव्यक्त – प्रकृति:1(मुल प्रकृती),

ii) महान अहंकार पंचतन्मात्रा–प्रकृति विकृति: 7,

iii) इंद्रिय + पंचमहाभूत– विकृति: 16 iv) पुरुष – न प्रकृति न विकृति: 1

सांख्यसम्मत पुरूषसृष्टि (सुश्रुतानुसार):

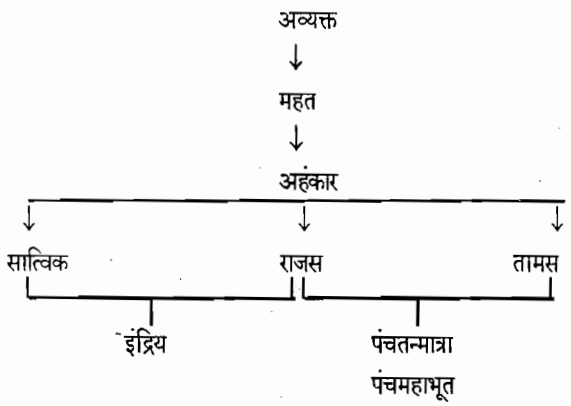

3) मन:

1) लक्षण: 2 - ज्ञान अभाव, ज्ञान भाव), 2) गुण: 2 - अणुत्व, एकत्व, 3) प्रकार: 3 - शुध्द, राजस, तामस, 4) कर्म: 4 - इन्द्रियांभिग्रह, कर्म मनस स्वस्य निग्रह, उहो विचारश्च, तत: परं प्रवर्तते, 5) अर्थ: 5 - चिन्त्यं, विचार्य, उह्यं, ध्येयं, संकल्प.

सांख्य – इंद्रियाँ–अहंकारीक, आयुर्वेद– इंद्रिया भौतिक

पंचकर्मेन्द्रिय कर्म: जिव्हा - वागिन्द्रिय, पाद – गमण, पाणी – ग्रहण धारण, पायु – विसर्ग, उपस्थ - मूत्र विसर्ग.

4) महाभूत में भुतान्तर प्रवेश:

आकाश में शब्द, वायू में शब्द + स्पर्श.....

5) महाभूत लक्षण: भू जल अनिल तेजसाम, क्रमश: खर द्रव चल उष्णत्वं, आकाशस्य अप्रतिघातो, लक्षणं सर्वमवैतत **स्पर्शनेन्द्रियम** गोचरम।

(शब्दादि सुक्ष्म होने पर गुण, स्थुल होने पर अर्थ, इंद्रिया द्वारा ग्राह्यं)

6) राशिपुरुष (चतुर्विंशति): बुद्धि इन्द्रिय मनोऽर्थानां विद्यात् योगधरं परम।

(योगधरं परम का अष्ट प्रकृती अर्थ ग्रहण किया है),

उत्पत्ति मे कारण – मोह,इच्छा,द्वेषकर्मज:

चरक: उत्पत्ति कारण: पुरुष, सुश्रुत: अव्यक्त, चक्रपाणी: पुरूष=आत्मा, गंगाधारादि: चतुर्विंशतिक - पुरूष, (केचिदिति: बौद्धा हि निरात्मकं..... चक्रपाणी)

7) करण:मन बुद्धि ज्ञानेंद्रिय कर्मेंद्रिय.

अनादि पुरुषो नित्या (पुरुष नित्य है)

8) आत्मा: आत्मा इंद्रिय द्वारा ज्ञाय नहीं परंतु अनुमान द्वारा जाना जाता है।

पर्याय: क्षेत्रज्ञ, शाश्वत, विभु:, अवयव, अव्यक्त।

अष्ट प्रकृति: खादि, बुद्धि, अव्यक्त, अहंकार, 16 विकार: 11 इद्रिय + पंचार्थ अव्यक्त को छोडकर बाकी क्षेत्र 23 तत्व, अव्यक्त: क्षेत्र को जानेवाला क्षेत्रज्ञ

9) अभ्युदित: अव्यक्त सम्पूर्णसर्वांगो जोतऽभ्युदित उच्यते।

10) प्रलय: इस काल मे सर्वतत्व अव्यक्त में विलीन होते है।

जन्म मरण मे कारण: i) अत्यासक्ति, ii) अहंकार

11) पुरुष लक्षण: स्वप्ने पंचवग्रहणं,

(सुश्रुत कर्मपुरुष गुण आत्मा गुण: 16 - सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, प्राणापान, निमेष,उन्मेष, बुद्धि, मन, संकल्प, विचारणा, स्मृति, विज्ञान, अध्यवसाय, विषयोपलाब्धि.)

मन - अचेतन, क्रियावान, आत्मा: चेतन कर्ता.

12) नैष्ठिकी चिकित्सा: उपधा रहित चिकित्सा, मोक्ष दायानि,

(निष्ठा: दु:ख सदैव निवृत्ति),

वैद्य तीनों कालों मे होने वाली वेदनाओं की चिकित्सा करता है.

दु:ख हेतु: 3-

i) धीधृति स्मृतिं विभ्रंश, i) सम्प्राप्ति कालकर्मणाम, i) असात्म्यार्थागमश्चेति.

13) प्रज्ञापराध: धीधृतिस्मृतिविभ्रष्ट: कर्म यत कुरुते ऽशुभम।

प्रज्ञापराधं तं विद्यात सर्वदोष प्रकोपणं।

14) कालज रोग/कालज विषमज्वर:, कालज रोग हेतु- पूर्वकर्म(दैव)

अनागत चिकित्सा: रोग आरम्भ होने के पूर्व

कालज स्वाभाविक रोग: जरा, मृत्यु-चिकित्सा नास्ति.

वेदनाप्रर्वतक: द्विविध स्पर्श i) स्पर्शइंद्रिय स्पर्श, ii) मानस स्पर्श.

तृष्णा च सर्वदुखानां कारणं पुनरुच्यते.

15) वेदनाधिष्ठान : मन, देह, इन्द्रिय, मोक्षे निवृत्तिर्नि : शेषा योगो मोक्षप्रवर्तक:।

16) चित्त वृत्ति: 5 (प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति)

17) यौगिक 8 सिद्धियाँ:- i) आवेश, ii) चेतसो ज्ञान, iii) अर्थानां क्रिया iv) दृष्टि, v) श्रोत्र, vi) कान्ति, vii) स्मृति, vii) स्वेच्छया अदर्शन.

18) मोक्ष: मोक्ष वियोग सर्वसंयोगै अपुनर्भव उच्यते।

स्मृति-दृष्टश्रुतानुभूतानां स्मरणात स्मृतिरुच्यते ।

19) स्मृतिजनक: 8 कारण - i) निमित्त ii) मन की एकाग्रता iii) रुपग्रहण iv) अभ्यास, v) सादृश्य, vi) ज्ञान, vii) विपरीत वस्तुदर्शन, vii) पुन: श्रवण.

20) सत्याबूध्दी- संदर्भ च शा.1

2) अतुल्यगोत्रीय शारीर

Topics: शुक्र, गर्भवर्णन, विकृत संतान 8; सद्योगृहीत गर्भलक्षण.

अग्निवेशने 36 प्रश्न पुच्छे ।

1) शुक्र: स्याच्यतुष्पात प्रभवंच षडभ्यो यत स्त्रीषु गर्भवतवमुपैति पुंस:।

4 पाद: महाभूत (आकाश नहीं) 6 - रस.

2) चिराद् गर्भ धारण हेतु: योनि प्रदोष,मनसोऽभिताप, शुक्रासृक दुष्टि, आहारविहार दोष, अकालयोगाद, बलसंक्षया।

[वन्ध्या - चरक 3 प्रकार

i) वन्ध्या - जन्मजात गर्भाशय या आर्तव की अनुपस्थिती

ii) अप्रजा-प्राथमिक वन्धत्व, वन्धत्व के कारण को दू किया जा सकता है।

iii) सप्रजा - व्दितीयक वन्धत्व कूच्छ काल एक/अनेक अपत्य होते है बाद में नही।

हारित वन्ध्या भेद 6 (र. र. स. 9)

i) काकवन्ध्या - एक प्रजोपरान्त वन्ध्यत्व ii) अनपत्या

iii) गर्भस्त्रावी iv) मृतवत्सा v) बलक्षय

vi) अजातरजासा, बाल्यावस्था गर्भकोश भंग आदी कारणों से उत्पन्न.

साध्यासाध्यत्व - प्रथम पाँच साध्य, षष्ठ -? कष्टसाध्य.

त्रेवृतयोग - सुतिका - अभ्यंग, पान, बस्ति -

वातसे उत्पन्न सभी विकार शान्त - काश्यप

नागर खण्ड - सुतिकारोग भा.प्र.

मीन तैल - काश्यप - वातव्याधि

बलाकादी तैल - काश्यप - षण्ड, वन्ध्या

(प्रदर - जीरकाअवलेह, यो.र. खण्डकूक्ष्माण्डावलेह (भा.प्र.)

बृहत्कूषमाण्डअवलेह (भा.प्र.), खण्डकूष्माण्डक (भा.प्र., यो.र.)

खण्डामलक (यो.र.), शाल्मलीघृत (यो.र.), शीतकल्याणक घृत (यो.र.)]

3) रक्तेन कन्याधिकेन पुत्रं शुक्रेण तेन।

(गर्भ लिंग निर्माण कारण योगरत्नाकर - दक्षिणनाडी से पुत्र एवं वाम नाडी से कन्या उत्पत्ती. शारंगधर - परमेश्वर इच्छा प्रधानता मानी.)

4) यमल गर्भ में कारण- वायु:

(हारित - पती पत्नी भ्रांत होकर संभोग करते है, तो दोषधातु संयोग प्रभाव से मन द्रवता होता है तब यमल गर्भ उत्पत्ती होती है।

काश्यप - यूग्म गर्भ में सुख दु:ख आदी समान होने में कारण गर्भाधान, गर्भवृध्दी, जन्म से एक ही स्तन्य सेवन है। युग्म गर्भ मे एक पूष्ट व एकदूर्बल होने में कारण - शुक्रार्तव विषमांश)

5) विकृत संतान 8 प्रकार: i) द्विरेता (शुक्र, आर्तव), ii) पवनेन्द्रिय, iii) संस्कारवाही, iv) नारीषण्ड,v) पुरुषषण्ड, vi) ईर्ष्यक, vii) वक्री,vii) वातिकषण्ड इत्येवमष्टौ विकृतिप्रकारा कर्मात्मकानामुपलक्षणीया:।

6) सद्योगृहीत गर्भा लक्षण: निष्ठिविका गौरवम अंगसादस्तन्द्रा प्रहर्षो हृदये व्यथाच। तृप्तिश्च बीजग्रहणं च योन्यां गर्भस्य सद्यो ऽनुगतस्य लिंगम।। चरक

(श्रमो ग्लानि: पिपासा सक्थिसदनं,

शुक्रशोणितयोवबन्ध: स्फुरणञ्च योने:। (सु.शा.3)

अ.हृ. हृदयस्पन्दन, लोमहर्ष अ.सं.- हृल्लास, प्रसेक.)

7) स्त्री पुरूष कर सामान्य भाव: वर्णन संदर्भ.

8) गर्भ प्रकार: चार महाभूत - मातृज, पितृज, आहारज, आत्मकृत भेद से 16 महाभूत अंश देह में विद्यमान रहते है।

9) विकृत संतान: हेतू 5 - i) बीज दोष, ii) पूर्वजन्म अशुभ कर्म, iii) गर्भाशयदोष, iv) काल दोष, v) माता (आहार विहार) दोष.

(सुश्रुत: गर्भविकृति: 3

i) माता-पिता नास्तिकता, ii) दोष प्रकोप, iii) पूर्वजन्म कृत कर्म.)

(विकृत संतान हेतू - अ. हृ. वातादी दोषो के विकार, अरूणदत्त - दोषों को उन्मार्ग गमन, योगरत्नाकर - पापकर्म, गर्भांग विकृति - पिप्पली - गर्भ में एक अथवा अनेक पिप्पली समान दोषरहित मांसाकुर (अ. हृ. उ.19/16))

10) रोग जनक हेतु: 3 (प्रज्ञापराध, विषमास्तथार्थ, परिणामकाल)

शमन(चिकित्सा): 3 (ज्ञान, अर्थ, काल) का सम्यकयोग।

धार्मिक क्रिया - हर्ष, अधार्मिक - क्रिया शोक।

11) अनागत ऋतूजन्य रोग चिकित्सा: हैमान्तिकं दोषचयं वसन्ते: ग्रैष्मिकम, अभ्रकाले, घनात्यय वार्षिकतम आशु।

नरो हिताहारविहारसेवी समीक्ष्यकारी विषयोष्वसक्त:। (संदर्भ)

3) खुड्डिका गर्भावक्रान्ति शारीर

Topics: संभाषा परिषद, गर्भोत्पादक भाव, आत्मावर्णन.

1) गर्भ उत्पादक भाव: 6 - i) मातृज- 20,ii) पितृज: 10,iii) आत्मज: 22, iv) सत्वज :18, (ये चार मुख्य भाव), v) सात्म्यज:8, vi) रसज:6, (ये दोनों सहाय्यक भाव),सर्वेभ्य एभ्यो भावेभ्य: समुदितेभ्यो गर्भो ऽभिनिर्वतेत। आत्रेय मत.

2) गर्भ के: i) मातृज भाव: अवयव,ii) पितृज भाव:केश श्मश्रुनख लोमदन्तास्थि सिरास्नायुधमन्य: चेति पितृजानि। iii) आत्मज: गर्भात्मा ह्यन्तरात्मा तं जिव इत्याचक्षते। प्राण,अपान,प्रेरण,धारण, आकृति, स्वर, वर्ण, सुख,दु:ख, इच्छा,

द्वेष, चेतना, धृति, बुध्दि, स्मृति, अंहकार व प्रयत्न.

आत्मा पर्याय: अछेद्य,अलोड्यं,विश्वरुप,विश्वकर्माव्यक्तमनादि अनिधनम अक्षयम

iv) सात्म्यज: आरोग्यम अनालस्यम अलोलुपत्वम इन्द्रियप्रसादः स्वरवर्णबीज सम्प्रहर्षभूयस्त्वम चेति।

(मातृज Extra असं नेत्र का कृष्णगंडल,पितृज Extra अ सं नेत्र का शुक्लमंडल, आत्मज Extra अ.सं.अह धर्माधर्मशिलता),

v) चरक सत्वज - भक्ती शीलं शौचं द्वेष: स्मृति मोंह स्त्यागो मात्स्र्य शौर्य भयं, क्रोधं स्तन्द्रोत्साह स्तैक्ष्ण्यं मार्दवं गांभीर्यममवस्थितत्वम्

vi) रसज: शरीरस्याभिनिर्वृत्तिरभिवृद्धि प्राणानुबन्धस्मृतिः पुष्टि उत्साहश्चेति। (शरीरोपचयो बलं वर्णः स्थितिर्हानिश्च रसजानि)... सुश्रुत

सत्वः इन्द्रियाणामभिग्राहकं च मन इत्यभिधीयते।

Common: द्वेष, स्मृति-आत्मज+ सत्वज, उत्साह - रसज+सत्वज, स्वर, वर्ण - आत्मज + सात्म्यज.

3) मन प्रकार: 3 - शुद्धं,राजस, तामस.

4) जातिस्मर: यस्यानुवृत्ति पुरस्कृत्य पुरुषो, जातिस्मर इत्युच्यते ।

	सुश्रुत	वाग्भट
i) मातृज	मांस, शोणित,मेदो मज्जा, इंद्रिय नाभि, यकृत प्लीहा, आन्त्र, गुद	मृदुभाग रक्तमांसमज्जागुदा
ii) पितृज	बालादि	स्थिरभाग शुक्र धमनि अस्थि
iii) आत्मज	इंद्रिया,ज्ञान,विज्ञानआयु सुख दुःख	चित्त,इंद्रिय, नानायोनियों में जन्म
iv) सात्म्यज	वीर्य,आरोग्य,बल,वर्ण, मेधा	आयु,आरोग्य,अनालस्य,प्रभा,बल
v) रसज	शरीरोपचय,बल वर्ण हानि स्थिती	जन्म, वृत्ती, वृद्धिअलौल्य.
vi) सत्वज	--	सात्वीक, शौच, आस्थिक्य, शुक्लधर्मरूचि मति

5) चतुर्विध योनि: चतुर्विधा भूतानां योनिर्भवति-जराण्डस्वेदोभ्दिदः

6) आत्मा: तस्माज्ज्ञ प्रकृतिश्च द्रष्टा कारणमेव च।

4) महती गर्भावक्रान्ति शारीर:

Topics: ऋतूमति, मासानुमासीक गर्भवृध्दी, दोहद, व्यक्त गर्भा, स्त्री-पुरूष व्यापद, सत्वभेद, गर्भशुभअशुभ भाव.

1) गर्भ: शुक्रशोणित जीवसंयोगे तु खलु कुक्षिगते गर्भसंज्ञा भवति ।

गर्भस्तु खल्वन्तरिक्षा वाय्वाग्नि तोयभूमि विकारश्चेतनाधिष्ठानभूतः ।

चेतना -षष्ठो धातु.

2) गर्भोत्पत्ति क्रम: अनुपूर्व्या ऽभिनिर्वर्तते।

3) ऋतुमति लक्षण: गते पुराणे रजसि नवे चावस्थिते शुद्धस्नातां स्त्रियमव्यापन्न योनिशोणितगर्भाशयम ऋतुमतीमाचक्ष्महे।

पर शरीरधात्वात्मा शुक्र। (शुक्र शरीरका श्रेष्ठ धातु)

4) चेतना धातु पर्याय: हेतु, कारण, निमित्त, अक्षर, कर्ता, मन्ता, वेदिता,बोद्धा, द्रष्टा, धाता, ब्रह्मा, विश्वकर्मा, विश्वरुप, पुरुष, प्रभवो, अव्ययो, नित्य, गुणी, ग्रहण, प्रधान, अव्यक्त, जीव, इन्द्रियात्मा, अन्तरात्मा.

5) दोहद काल: चरक व हारित 3 मास, सुश्रुत - भावमिश्र: 4, अ.सं.-3 पक्ष पश्चात 5 मास पूर्ण होने तक, अ.हृ.- 2 मास.

6) मासानुमासिक गर्भवृद्धि: i) चरक: प्रथमे मासि सम्मूर्च्छित सर्वधातुकलुषीकृत खेटभूतो, भवत्यव्यक्तीविग्रह सदसदभूतांगवयवः ।

सुश्रुत: प्रथमे मासि कललं जायते (बुदबुद अवस्था 7 दिन), वाग्भट: कलल. अरूणदत्त-सप्ताहा के पूर्व- श्लेष्म पिण्डींभूत माना।

ii) चरक-घनः सम्पद्यते पिण्ड पेश्यर्बुदं वा तत्र घन पुरुष, पेशी स्त्री,अर्बुद नपुसंकम

सुश्रुत - द्वितीये शीतेष्मनिलैरभिप्रपच्यमानानां महाभूतानां संघाते घन संजायते यदि पिण्ड पुमान, स्त्री चेत पेशी, नपुंसकं चेदर्बुदमिति।

iii) सर्वेन्द्रियाणि सर्वांगावयवाश्च यौगपद्येनाभिर्निर्वतन्ते। गर्भस्पंदन

सुश्रुत: तृतीये हस्तपाद शिरसां पंचपिण्डका निर्वत्तन्ते,

अंगप्रत्यंग विभागश्च सूक्ष्मो भवति।

वाग्भट: व्यक्तिभावी मासे अस्य तृतीये गात्रं पंचकम मूर्धा द्वय सक्थिनी बाहु सर्वसूक्ष्मांग जन्मच सुख दुःख ज्ञान।

काश्यप: युगपत निर्वतेन्ते यथा क्रमम। वेदनायश्च अवबुद्धयते अधिका ।।

iv) स्थिरत्वमापद्यते गर्भः तस्मात्तदा गर्भिणी गुरुगात्रत्वमाधिकमापद्ते विशेषण।

सुश्रुत: चतुर्थे सर्वांगप्रत्यंग विभाग प्रव्यक्तो भवति, हृदय प्रव्यक्ति, चेतना धातु अभिव्यक्ति दौहृद।

वाग्भट: चतुर्थे व्यक्तता अंगानां, काश्यप: स्थिरतां याति गर्भा कुक्षो निरामया।

सुश्रुत: दौहृद अपुर्ति :

कुब्जं कुणि खंजं जडं वामनं विकृताक्षम अनक्षम सन्तान उत्पत्ति।

v) चरक: गर्भस्य मांसशोणितापचयो भवत्यधिकमन्येभ्यो मासेभ्य, तस्मात्तदा गर्भिणी कार्श्यम आपद्यते विशेषेण।

सुश्रुत: पंचमे मन प्रतिबुद्धतरं भवति।, वाग्भट: चेतनायाश्च पंचमे।

काश्यप: चरक समान।

vi) गर्भस्य बलवर्णोपचयो भवत्यधिकमनोभ्यो मासेभ्य, गर्भिणी बलवर्णहानिम आपद्यते विशेषेण।

सुश्रुत: षष्ठे बुद्धि, वाग्भट: षष्ठे स्नायु सिरा रोम बाल वर्ण नख त्वचाम।

काश्यप: बलवर्ण ओजसाम वृद्धि षष्ठे मातु, श्रमाधिकाः।

vii) गर्भ सर्वेर्भावैराप्याय्यते, तस्मादतदा गर्भिणी सर्वाकारैः क्लान्ततमा भवति।

सप्तमे सर्वांगप्रत्यंगविभाग प्रव्यक्ततरः भवति। सुश्रुत

वाग्भट: सर्वे ही सर्वांग सम्पूर्णो भावैः पुष्यती सप्तमे। नित्य क्लान्ता अत्र गर्भिणी।

viii) ओज अनवस्थित, मुहुर्मुहुर्युदा युक्ता, मुर्हुमुर्हुश्च म्लाना, अस्मै दायपेत अष्ट मे अस्थिरी भवति ओजः। चिकित्सा बली.....

x- xi) प्रसव काल इसके पश्चात विकृति:। प्रसव चरक 9,10 मास सुश्रुत, अ. सं. अ. हृ. (भा. प्र. व.यो.र.- (9 व 12) प्रसव काल... हारित 10,11 मास

काश्यप: पूर्वकर्म गर्भावस्था सुख दुःख भुलकर नया जीवन प्रारम्भ करता है। गर्भवास-दशमास-काश्यप.

हारित मासानुमास गर्भवृद्धिक्रम:

1 दिन बुदबुद स्वरुप, 10 दिन - शोणित, 15 दिन - घन, 20 दिन - मांसपिण्ड, 25 दिन -पंचभूतात्म सम्भव, 1 मास - पंचत्व प्रकट, 50 दिन - अंकुरोत्थ, सम्भव: 3 मास - हस्त पादो प्रवर्धते, 3 1/2 मास - शिर स्पष्ट, 4 मास - लोम स्पष्ट दर्शन, 5 मास - गर्भ सुजिव, 6 मास - प्रस्फुरण, 8 मास - जाठराग्नियोग प्रवर्धते, 9 मास - चेष्ठा, 10 मास - प्रसव काल.

गर्भावस्थाकाल 280 दिन, 9 सुर्यमास, 10 चंद्रमास, न्युनतम ज्ञात समय- 180 दिन और अधिकतम 334 दिन

7) महाभूतजन्य भाव उत्पत्ति:

आकाश	वायु	तेज	जल	पृथ्वी
विवेक (चरक)	धातुव्यूहन	-	कफ,मेद,रक्त,मांस.	गंध.

8) यावन्तो हि लोके मूर्तिमन्तो भावविशेषास्तावन्तः पुरुष।

यावन्त पुरुषे तावन्तो लोके इति। च.शा. 4/13 व च.शा 5/3

9) एवमस्येन्द्रियाण्यंगावयवाश्चः योगपद्येन निर्वतन्ते।

10) गर्भ में स्त्रीत्व व्यक्त करने वाले भाव: क्लैब्यं भीरुत्वम अवैशारद मोहो ऽनवस्थानम अधोगुरुत्वम असंहननं शैथिल्यं मार्दव

गर्भाशयबीजभागस्तथायुवक्तानि चापराणी स्त्रीकराणि। विपरीतानि पुरुषकारणि,उभयभागावयवा नपुंसककराणि।।

11) **दौहृदः** तस्मात तदा प्रभृति गर्भ स्पन्दते - दौहृद।

12) **दौहृद अपूर्तीः** विनाशो, विकृतिर्वा.

योगः सुखकारक कारणों का होना, क्षेमः विघ्नो का परिहार करना.

13) **व्यक्तगर्भा लक्षणः** चरकः आर्तव अर्दर्शनम, आस्यसंस्रवणम, अनन्नाभिलाषा, अरोचक, अम्लकामता (5अ) छर्दि, चक्षुषोग्लानि, स्तन्यो स्तन्मोष्ठयोः स्तनमण्डलयोश्च, कार्ष्यम अत्यर्थ श्वयथु पादयो, लोमराज्युदगमो, योन्याश्चाटालत्वमिति।

(सुश्रुतः अक्षिपक्ष्मणि, शुभगन्धानि, प्रसेक, प्रसन्न।

वाग्भटः क्षाम, मूर्च्छा, जृम्भा; अ.हृ. - लोमहर्ष.)

14) **गर्भोपघातकर भावः** सर्वगतिगुरुष्णतीक्ष्णं दारुणाश्च चेष्टाः।

15) **गर्भवृद्धि कारणः** 5 - i) सम्पद, ii) वृत्तस्य सौष्ठवान्मातृत (गर्भिणी), iii) उपस्नेह,उपस्वेद, iv) कालपरिणाम, v) स्वभावसंसिद्ध.

16) **स्त्री व्यापतः** 3 - i) वन्ध्या - शोणिते गर्भाशयबीजभाग प्रदोषमापद्यते तदावन्ध्यांजनयति, ii) पूति, प्रजा- भागावयव पूतिप्रजां,

ii) वार्ता- स्त्रीकरणांच शरीरबीजभागानामेकदेशः प्रदोष।

17) **पुरुष व्यापतः** 3 - i) वन्ध्या- पुरुषस्य यदा, बीजे बीजभाग प्रदोषमापद्यते, वन्ध्या, ii) पूतिप्रजं - पुनस्यबीजे बीजभागावयव,

iii) तृणपुत्रिक - पुरुषाकृतिभूयिष्ठम, अपुरुषं तृणपुत्रिकं।

18) **आत्माः** निर्विकार परस्त्वात्मा सर्वभूतानां निर्विशेष।

19) **चतुर्विध शरीर योनिः** तत्र शरीरं योनिविशेषच्चतुर्विधमुक्तमग्रे।

20) **सत्व भेदः** 3 - शुद्ध, राजस, तामस.

शुद्ध अदोषमाख्यात कल्याणांशत्वात, राजस सदोषमाख्यातं रोषांशत्वात, तामस सदोषमाख्यातं मोहांशत्वात.

21) प्रकृति सत्विकः 7	राजसः6	तामसः3
i) ब्राह्म-अत्यन्तशुध्दं	i) आसुर	i) पाशव
ii) आर्ष	ii) राक्षस	ii) मात्स्य
iii) ऐन्द्र	iii) पैशाच	iii) वानस्पत्य
iv) याम्य	iv) सार्प	
v) वारुण	v) प्रेत	
vi) कौबेर	vi) शाकुन	
vii) गान्धर्व		

22) **गर्भशुभअशुभभावः** पंचार्था शुभसंज्ञिता (गर्भ शुभ भाव - 5) - गर्भ-निमित्त, आत्मा, प्रकृति, क्रमिक वृध्दि, वृध्दि हेतु,

त्रीन अशुभान (गर्भ अशुभ भावः 3)- गर्भ - अजन्म,विनाश,विकृति.

शुभाशुभसमाख्यातान अष्टौ (शुभाशुभ भावः 8)

5) पुरुषविचय शारीरध्याय:

Topics: लोक पुरूष साम्य, प्रवृत्ती निवृत्ती मोक्ष वर्णन.

1) यावन्तो हि लोके (मूर्तिमन्तो) भावविशेष पुरुषे, यावन्त, पुरुषे तावन्तो लोके।

लोक भाव	तत्सम पुरुष भाव	लोक भाव	तत्सम पुरुष भाव
1) पृथिवी	मूर्ति	2) आप	क्लेद
3) तेज	अभिसन्ताप	4) वायु	प्राण
5) आकाश	सुषिर	6) ब्रह्म	अन्तरात्मा
7) ब्रह्म की विभूति	अन्तरात्मा की विभूति	8) प्रजापति	सत्व (मन)
9) इन्द्र	अहंकार	10) आदित्य	आदान
11) रुद्र	रोष	12) सोम	प्रसाद
13) वसु	सुख	14) अश्विनीकुमार	कान्ति
15) मरुत	उत्साह	16) विश्वदेव	इंद्रियाँ और इंद्रियार्थ
17) तम	मोह	18) ज्योती	ज्ञान
19) सृष्टि	गर्भाधान	20) कृतयुग	बाल्यावस्था
21)) त्रेता	युवावस्था	22) द्वापर	वार्धक्य
23) कलियुग	रुग्णता	24) युगान्त	मरण

2) **षडधातुक पुरुष की दशाए 5** :i) हेतु - हेतुरुत्पत्तिकारण, ii) उत्पत्ति उत्पात्तिर्जन्म, iii) वृद्धि-वृद्धिपराप्यायनम, iv) उपप्लव - उपप्लवो दुःखागम, v) वियोग - षडधातुविभागो वियोग सं जीवापगम स प्राणनिरोधः, स भंगः स लोकस्वभावः

3) **प्रवृत्ति कारण 8** : i) अहंकार, ii) संग, iii) संशय, iv) अभिसम्प्लव, v) अभ्यवपात, vi) विप्रत्यय, vii) अविशेष, vii) अनुपाय.

4) **दुःख का कारणः** मोहेच्छाद्वेषकर्ममूला प्रवृत्ति।

5) **निवृत्तिपवर्गः** तत परं प्रशान्तं तत्तदक्षरं तद ब्रह्म स मोक्षः।

निवृती पयार्य - अपवर्ग, ब्रह्म, मोक्ष

6) **मोक्षार्थी पुरुष के लिए उपायः** अग्नेरेवोपचर्या, प्राणधारणार्थम एककालमग्रायो,धर्मशास्त्रानुगमनं, तदर्वावबोध, यथोपपन्नोऽभ्यवहार, असंगति दुर्जनेन,ध्यानहेतो कायनिबन्धनं, शौचादानहेतो जलकुण्डिका, योगारम्भे सततनिर्वेद.

7) **सत्याबुद्धि पर्यायः** विद्या सिद्धिर्मतिमैधा प्रज्ञा ज्ञानं च सा मता।

8) **मुक्तात्मा लक्षणः** स सर्वकरणायोगानमुक्त इत्यभिधीयते।

9) **मोक्ष पर्यायः** विपाप, विरंज, शान्तं, परम, अक्षर, अव्ययं.

अमृतंस ब्रह्म निर्वाणं पर्यायें शान्तिरुच्यते।

6) शरीर विचय शारीरः

Topics: संभाषापरिषद (गर्भअंगउत्पत्ती), शरीर वर्णन, गर्भ-स्थिती,आहार, गति, आयु.

शरीरविचय शरीरोपकारार्थमिष्यते। संदर्भ च. शा. 6

1) **शरीरः** तत्र शरीरं नाम चेतनाधिष्ठानभूतं पंचमहाभूतविकार समुदायात्मकं समयोगवाहि।

2) **धातुसाम्यकर नियमः 4**

i) देशकालात्म गुणविपरीतानां हि कर्मणामाहार विकाराणांच क्रियोपयोग सम्यक, ii) सर्वातियोग सन्धारण, iii) वेग अधारण, iv) साहस वर्ज.

3) **शरीरधातुगुणाः** संख्यासामर्थ्यकरा गुर्वादि 20 गुण।

4) **क्षय में समान गुण भूयिष्ठ द्रव्यः**

i) शुक्रक्षये - क्षीरसर्पिः ii) मूत्रक्षये - पुनरिक्षुरस,

iii) पुरीषक्षये - कुल्माष, माष iv) वातक्षय - कटुतिक्तकषाय.

v) पित्तक्षय - अम्ललवणकटु, vi) कफक्षय - स्निग्धगुरुसान्द्रपिच्छिल.

5) **शरीरवृद्धिकर भावः 4** - (वाग्भट 17)

i) कालयोग, ii) आहारसौष्ठव, iii) स्वभावसंसिद्धि iv) अविघात,

6) **बलवृद्धिकर भाव : 13** - i) बलवत्पुरुष देश मे जन्म,ii) बलवत कुल में जन्म iii) काल, iv) सुखकाल, v) बीजक्षेत्रगुप्त, vi) आहार, vii) शरीर, vii) सात्म्य, ix) सत्व, x) स्वभावसंसिद्ध, xi) यौवन, xii) कर्म, xiii) संहर्ष.

Common:स्वभावसंसिध्द-गर्भवृध्दीकर भाव, शरिरवृध्दीकर, बलवृध्दीकर भाव.

7) **आहार परिणामकर भावः 6** - उष्मा, वायु, क्लेद, स्नेह, काल, समयोग.

i) उष्मा पचति, ii) वायु अपकर्षति, iii) क्लेद- शौथिल्यमापादयति,

iv) स्नेहो मार्दव जनयति, v) कालः पर्याप्तिमभिनिर्वर्ययति,

vi) समयोगः तेषां परिणामधातुसाम्यकरः सम्पद्यते.

8) **शरीर गुणः**/(धातू) i) मलभूत- मलभूतास्ते ये शरीरस्याबाधकराः

ii) प्रसादभूत- गुर्वादी से द्रवान्त, रसादि से शुक्रान्त।

9) दुष्टदोष गतिर्यावत संस्पर्शनाच्छरीर धातूनाम.

(शरीर धातुओं को दुषित करने मे दुष्ट दोष की गति स्पर्शनेद्रिय तक है।),

10) **गर्भ स्थितिः**

गर्भाशय गर्भस्तु खलु मातुः पृष्ठाभिमुख,उर्ध्वशिरा(प्रसव काल में शिर नीचे) (सुश्रुतः आभुग्न अभिमुख।

गर्भस्थिती- गर्भस्तु मातुः पृष्ठाभिमुखो ललाटे कृताअंजलीः संकुचितांगौ गर्भकोष्ठे दक्षिणपार्श्वम् नाभित्यावतिष्ठते पुमान, वामं स्त्री, मध्यं नपुंसकम्।(अ.सं शा))

ALS TVRM

11) गर्भ पोषण: गर्भ को क्षुधा, पिपासा नही लगती।
उपस्नेह उपस्वेद, सर्वरसवानाहारः
गर्भिणी आहार रस 3 भागो मे: i) स्वशरीरपुष्टि, ii) स्तन्य, ii) गर्भवृद्धि

12) सद्य मृत्यु हेतु: विषमसेविताभ्यां जातः सद्य उपहन्यतेः (तुरन्त मृत्यु)

13) देवादि प्रकोपजन्य रोग: 4 - i) आप्तोपदेश, ii) अदभुत रुपदर्शन, iii) समुत्थानलिंगचिकित्सितविशेषाच्च, iv) दोषप्रकोप.

14) काल: कालो ह्यायुष प्रमाणमाधिकृत्योच्यते, काले देवो वर्षत्यकाले देवो वर्षति, परमायु वर्षशतं खल्वायुष प्रमाणमस्मिन काले, (गर्भ की परमायु - 100 वर्ष)

15) परमायु प्राप्त होने में कारण: 4 (प्रकृति,गुण, आत्म, सात्म्य)
इस अध्याय में 9 प्रश्न पुछे।

7) शरीरसंख्याशारीर:

Topics: त्वचा वर्णन, शरीर अवयव व संख्या वर्णन.

1) शरीर षट् त्वचा: चरकः i) उदक धरा, ii) असृकधरा, iii) सिध्म किलास संभवाधिष्ठाना(SK). iv) दद्रु कुष्टसभवाधिष्ठाना(DK), v) अलजी विद्रधी संभवाधिष्ठाना(AV), vi) अरुंषी दुश्चिकित्सितसतमानि कृष्णरक्तानि स्थुलमुलानि (ADTKS) (त्वक् सु. 7, अ. सं. 7, अ. ह 6, आधुनिक 7)

त्वचा	अधिष्ठान	प्रमाण व्रीही
सुश्रुतः		
A अवभासिनी	सिध्म, पदमकुंटक	1/18
L लोहिता	तिलकालक, न्यच्छ, व्यंग	1/16
S श्वेता	अजगलिका, चर्मदल, मषक	1/12
T ताम्रा	किलास, कुष्ठ	1/8
U वेदिनी	कुष्ठविसर्प	1/5
R रोहिणी	अलजी, गलगण्ड, अपची, ग्रंथी, गण्ड माला, श्लीपद	1
M मांसधरा	अर्श, भगंदर विद्रधी.	2

संपूर्ण त्वचा जाडी 3।। व्रीहि

2) अंगविभाग: 6 - दौ बाहु द्वे सक्थिनी शिरोग्रीवम अन्तराधिः
सुश्रुतः शाखा, मध्यपंचम, षष्ठमशिर इति.

अस्थिनाम	अस्थिसंख्या	अस्थिनाम	अस्थिसंख्या
जत्रु	1	भगास्थि	1
हन्वास्थि	1	नासिका,गण्ड,कुट,लालाट (प्रत्येकी)	1
पार्ष्णि	2	मणिबन्ध	2
जान्वस्थि	2	जानुकपाल	2
उरुनलक	2	बाहुनलक	2
अंस	2	अंसफलक	2
अक्षकास्थि	2	तालु	2
श्रोणिफलक	2	हनुमूलबन्धनास्थि	2
शंखास्थि	2	पाणीपाद-शलाकाधिष्ठान	4
गुल्फ	4	अरत्नि	4
जंघास्थि	4	शिरःकपालस्थि	4
उरोऽस्थि	14	ग्रीवास्थि	15
नख,पाणीपाद, शलाका	20 (प्रत्येकी)	पार्श्व की पर्शुकाएँ	24
पर्शुकास्थालक	24	पर्शुकास्थालकार्बुद	24
दन्त,दन्तोलुखल	32(प्रत्येकी)	पृष्ठगतअस्थि	45

पाणीपाद अंगुली अस्थियाँ- 60

3) अस्थिसंख्या: i) चरक, वाग्भट, काश्यप, वेद -360
ii) सुश्रुत, भाव प्रकाश, शारंगधर: 300.
iii) आयुर्वेद प्रकाश: 246, iv) आधुनिक मते - 206,

4) हृदयं चेतनाधिष्ठानमेकमः । संदर्भ

5) दशप्राणायतन: 10 - मूर्धा,कण्ठ, हृदय, नाभि, गुद, बस्ति, ओज, शुक्र, शोणित.- सुत्रस्थान.
2 शंख स्थान के जगह नाभि मांस.... । शारीरस्थान
वाग्भट: मांस के जगह जिव्हाबंधन शेष शारीरस्थान समान..(सुश्रुत प्राण: 12).

6) कोष्ठांग: चरक -15 (सुश्रुत : 8, अ.हृ.- 12. अ.सं.: 8, काश्यप: 13) नाभी, हृदय, क्लोम, यकृत, प्लीहा, वृक्क, बस्ति, पुरिषाधार,आमाशय, पक्वाशय, उत्तरगुद, अधर गुद, क्षुदान्त्र, स्थुलान्त्र, वपावहन. (फुफ्फुस नहीं)
प्रत्यंग- 56

7) नव महान्ति च्छिद्राणि सप्त शिरसि, द्वेअधः ।

8) संख्या: i) मर्म -107, ii) संधि - 200, (सुश्रुत - 210), iii) धमनी - 200, (सुश्रुत - 24) iv) पेशी - 400 (सुश्रुत - 500), (आधुनिक - 519), v) सिरा - 700, vi) स्नायु - 900, vii) सिराधमनीमुखाग्र - 29956. viii) केश श्मश्रु लोम - 29956. (रोम- 30.5 core.)
लसीका: त्वग्न्तरे व्रणगतं लसीका शब्दं लभते।

9) यत प्रयोक्तं तत प्रधानं बुद्धिर्मनश्च।
(आत्मज अंश सर्व तत्व में प्रधान है, बुध्दी मन उसके अंश है।)

10) शरीरावयवास्तु परमाणुभेदेन अपरिसंख्येया भवन्ति।
परमाणु अतिबहुत्व, अतिसौक्ष्म, अतिइंद्रिय।
वायु कर्म, स्वभाव: परमाणु परस्पर संयोग वियोग में हेतु।

11) प्रमाण: मज्जा मेदो वसा मूत्र, पित्त, श्लेष्म, शकृत, असृक, रसौ जलम च देहे अस्मिन एकैक अंजलि वर्धितम। (अ.हृ.), स्वेद- 10 अंजली, आर्तव - 4 अंजली, स्तन्य-2 अंजली, (मास्तिष्क्य, शुक्र, अपर ओज 1/2 अंजली), पर ओज-8 बिंदु, (डल्हण-अपर ओज 1 अंजली, वाग्भट-1 प्रसृत) (काश्यप ओज 6 अंजली, अ. हृ. परओज -6 बिंदू)

8) जातिसूत्रीय शारीर:

Topics: पुत्रेष्टी यज्ञ, शिशुवर्ण, पुसंवहन, गर्भोघातकर भाव, गर्भिणी, सुतिका, जातमात्र - परिचर्या, धात्री व स्तन्य परीक्षा, कुमारागार.

1) गर्भाधान पूर्वकर्म: स्नेहस्वेद, वमन, विरेचन, आस्थापन, अनुवासन- दोनों के लिए। पुरुष- मधुरौषध संस्कृत घृतक्षीर; स्त्रि-तैलमाष।
मैथुन: युग्मेष्वहः सु पुत्रकामौ, अयुग्मेषु दुहितृकामौ।

2) गर्भाधान विधिः i) न च न्युब्जां पार्श्वगतां वा संसेवेत्।
(न्युब्ज मे वात बलवान स योनि पीडयाति), पार्श्वगत - दक्षिणे श्लेष्माच्युता, वामे पित्तच्युत। उत्तान बीजं गृह्णीयता:
ii) स्नान - शीतोदकेन. (मैथुन पश्चात),
iii) मैथुनवर्ज - अतिबाला, अतिवृद्धा, दीर्घरोगिणी, (पुरुषेऽप्येत एव दोषा),
iv) शय्या पर - दक्षिणपादेन पुमान, वामपादेन स्त्री.

3) पुत्रेष्टियज्ञ: इच्छित पूत्र प्राप्ती के लिए। (वर्णन चरक व काश्यप)
i) ऋत्विक निवासग्रह- पूर्वउत्तर, ii) मधुसर्पि श्वेत गो (सफेद गाय),
i) पात्र- रजत, कांस्य, iv) सायं प्रातश्च शश्वच्छेतं महान्तं वृषभमाजानेयं वा हरिचन्दनांगदं पश्येत, v) आहुति: 3, vi) पुत्रेष्टियज्ञ -पूर्वकर्म 7 दिन,
vii) सहवास: 8 रात्रि,
* होम विधि वर्णन संदर्भ
* क्षुद्रा तु नमस्कारमेव कुर्यात:।

4) शिशु वर्णः	सुश्रुत	चरक
i) गौर (अवदात)	तेज,जल	तेज,जल, आकाश
ii) कृष्ण	तेज, पृथ्वी	तेज, पृथ्वी, वायु
iii) गौर श्याम	जल, आकाश	
iv) कृष्ण श्याम	पृथ्वी, आकाश	

v) श्याम समसर्व धातु प्राय: श्यामवर्णकर:

गर्भवर्ण - हारित- शरीरवर्ण - वात और कफसे श्याम, पित्तसे गौर, वात: रक्त से कृष्ण, पित्त रक्त से पिंगल, तथा कफरक्त से श्याम वर्ण.

5) पुंसवनसंस्कार: काल - i) व्यक्तभाव के पूर्व... चरक,

ii) सुश्रुत - लब्ध गर्भा होने पश्चात, iii) अ.हृ.- गर्भलक्षण व्यक्त होने पूर्व लक्ष्मणा, वटश्रृंगा, सहदेवा, विश्वदेवा आदी औषधीयों को क्षीरके साथ पीसकर, स्वयं हीपुत्र की इच्छा से दक्षिण नासापूटमें एवं पुत्रीकी इच्छा से वाम नासापुट में 3/4 बुंद डाले न च निष्ठीवेत ।

(बलवान पुंसवन कर्म दैव को परिवर्तित करता है),

iv) अ.सं.-लब्ध गर्भा पहचानकर श्वेता बृहती मुल कल्क स्वरस या 8 वटशृंगका नस्य; व्यक्त भाव के पूर्व पुष्य नक्षत्र में (1 मास), v) इंदु - दिन, युग्म दिनों मे, प्रत्येक दिन, 12 दिनों मे युग्म दिन, vi) कुछ आचार्य 12 दिन,

vii) अन्य आचार्य 12 दिन मे युग्म दिन,

viii) भाव प्रकाश: पलाश पत्र दुग्ध में उबालकर पान, पुत्रमंजरी मूल विस्वकांता मुल, शिवलिंग बीज में देना।

6) गर्भोपघातकर भाव: गोधामांसप्रिया शार्करिणमश्मरिणां शनैर्मेहिणं; वराहमांस-रक्ताक्ष क्रथनयुक्त, मधुरनित्या प्रमेहिणं मूकम अतिस्थुलम; कटुकनित्या दुर्बलम अल्पशुक्रम, अनपत्यं;

तिक्तानित्या शोषिण अबलम अनुपचितं।

(सुश्रुत - गोधांमांस - निद्रालु, धारणात्मक, वराह मांस - स्वप्नालु, शुर)

7) गर्भिणी चिकित्सा:

i) मृदु, मधुर, शिशिर, सुख, सुकुमार: प्राय: औषध आहार उपचारेत।

ii) न (वमन, विरेचन, शिरोविरेचन, रक्तमवसेचयेत, आस्थापन, अनुवासन), आत्ययिक अवस्था में मृदु स्वरूप में करना चाहिए।

चक्रपाणी - गर्भीणीको वमन के जगहनिष्ठीवन व विरेचन के स्थान मे फलवर्तीका प्रयोग करना चाहिए।

8) गर्भस्त्राव: 2-3 मास में रक्तस्त्राव, (3 मास मे गर्भ सहीत गर्भस्थापन)

गर्भपात: 4 मास पश्चात रक्तस्त्राव. (भेल-3 मास गर्भस्त्राव)

9) गर्भस्थापन विधि:

i) शयन -इषत अवनत शिरस्कं (Head Low Position), ii) योनि पिचु.

आम गर्भ स्त्राव: असाध्य विरूध्दोपक्रमत्वात.

10) गर्भव्यापद: i) उपविष्टक: गर्भो वृध्दी न प्राप्नोति नि:स्त्रुतत्वात।

उपविष्टक - अ सं शा 4 - स्फूरण होता है। लेकिन, न च कुक्षीविवर्धते।

ii) नागोदर/उपशुष्क: गर्भो वृध्दी न प्राप्नोति परिशुष्कत्वात। अस्पन्दन

सुश्रुत: वात - उदर कभी फुल जाता है कभी स्वत: लीन। वाग्भट: चिरात स्फुरण।

नागोदर/उपशुष्क - कूक्षिश्च वृध्दोऽपि परिहीयते। भेद - वात, पित्त, कफ

iii) लीन गर्भ: चरक - सुप्त गर्भ, न स्पन्दन.

लीनगर्भ - अ.सं. - स्पंदन नही सुश्रुत: वात प्रकोप, लम्बे समय तक गर्भ अन्दर रह जाता है।, वाग्भट स्फुरण।

गर्भोपद्रव - हारित - शोषो हृल्लास छर्दीश्च शोफोज्वरस्ताथारुचि:।

अतिसारो विवर्णत्वमष्टौ गर्भस्योपद्रवा:।।

11) उदावर्त: गर्भ गर्भिणी का नाश, अष्टममास, चिकित्सा निरूह बस्ति.

12) मृतगर्भ लक्षण:

स्तिमित स्तब्धम उदरम शीत, अश्मान्तर्गत अस्पन्दन, शूल, न चाव्य प्रादुर्भवन्ति, योनि न प्रस्रवति, अक्षिणीचास्या: स्रस्ते भवत: ताम्याति,

व्यथते, भ्रमते, श्वसिति, अर्तिबहुला, न चास्य वेग प्रादुर्भाव।

चिकित्सा: i) जरायु प्रपातन कर्म, ii) अथर्ववेदविहित मन्त्र।

13) सुतिकागार: पूर्व अथवा उत्तर दिशी, निर्माण: के पुर्व बेल काष्ठ, तिन्दुक, भल्लातक, वारुण, खदिर; प्रवेश: नवम मास में,

(गो, ब्राह्मण, अग्नि, जल)

सुतिका का प्रवेश दाहिने पैर से सुतिकागार में प्रवेश.

मासानुमासिक पथ्य:

मास	चरक	सुश्रुत	हारित
1	अनुपसंस्कृत क्षीर मात्रावत, शीतलकर पान, भोजन प्रात: साय	विशेषत: (1,2,3) मास मधुर, शीत, द्रव आहार	यष्टिमधु, परुषक, मधुक, पुष्पादि द्रव्य, (नवनीत+ मधु+मधुर द्रव्य) क्षीर
2	मधुरौषध क्षीर		षष्टिकोदन पायस भोजन
3	क्षीर मधु सर्पि		कृशरा
4	क्षीरनवनीत (मात्रा=अक्ष (तोला)	क्षीर नवनीत + जांगल मांस	संस्कृत ओदन
5	पंचमे मासे क्षीर सर्पि	क्षीर सर्पि	पायस
6	क्षीर सर्पि + मधुरौषध	गोक्षुर सिध्द घृत	मधुर दधि
7	क्षीर सर्पि + मधुरौषध	पृथकपर्णि सिध्द घृत	घृतखण्ड
8	क्षीरयवागु	आस्थापन बस्ति मलशोधन	घृतपूरक/ घेवर

सुश्रुत -8 मास

मलशोधनार्थ व वायू अनुलोमनार्थ बलादी - बदरक्वाथसे निर्मित आस्थापन बस्ति पश्चात मधुरऔषधी सिध्द तैल अनुवासन बस्ति.

(भद्रकाप्य निषेध यवागु - पैगुल्य निर्माण.)

आत्रेय - क्षीर यवागू

9	मधुरौषध सिध्द तैल अनुवासन+योनि पिचु	विविध प्रकार के अन्न 9/10 मास

क्षीरयवागु- क्षीरपेया प्रतिदिन घृतसह, खेडकाप्य - मलशोधनार्थ मधुरौषध सिध्द, पैंगुल्य

(कोलाम्ल व शतहवा कल्क सिध्द)

न्युब्ज में - निरुह बस्ति, आस्थापन अनुवासन बस्ति

(चरक यवागु 8 मास; सु. 6 मास)

(भेल - नवममास- कदम्बमाष तैल, अनुवासन बस्ति.

अ.सं. गर्भिणी स्नानार्थजल- बिल्व, कार्पास, फम्फणा पाटली, पिचूमर्द, अग्निमंथ जटामांसी, एरण्ड पत्र इनका क्वाथ शीत करके अथवा सर्वगन्धोदक से प्रतिदीन स्नान करे।अ हृ वातघ्न पत्रों के क्वाथ को शीत करके प्रतिदीन स्नान.

काश्यप - त्रिवृत्त मणी गर्भिणी श्रोणी मे धारण करना.)

14) किक्किस: 7 मास में उत्पत्ती, चिकित्सा: 1कोल नवनीत + मधुर औषध - 1 पाणीतल मात्रा मं पान, चंन्दन मृणाल कल्क लेप, स्तन व उदरपर, पृषत हरिण शशा:, रूधिर यूतया त्रिफला वा करविर पत्र सिध्द तैल, मालती मधुक सिध्द जल परिषेक।

15) प्रजननकाल लक्षण:

क्लमो गात्राणां, कुक्षेरवस्त्रंसनम, अधोगुरुत्वं, वंक्षणबस्तिकटीकुक्षिपार्श्वपृष्ठनिस्तोद, योने प्रस्त्रवण, ततोऽ नन्तरमावीना प्रादुर्भाव प्रसेकश्च गर्भौदक ।

16) प्रजायेता लक्षण: बस्तिशिरो ऽवगृहानि, त्वरयन्त्येनामाव्य:

* आवि न होने पर प्रवाहण गर्भ विकृति (श्वासकासशोष प्लीहा)

17) प्रजाता लक्षण: अपरापतन न होने पर:

i) पीडन अपरा पतन, ii) कण्ठ मे स्त्री के बाल का प्रवेश, iii) योनि धूपन, पिचु, iv) सांड का कान काटकर पान, v) अनुवासन, आस्थापन;

सुश्रुत - 3 अवस्था: i) प्रजायिनी, ii) आसन्नप्रसवा, iii) प्रजयनयिषमाना.

सुतिका स्वस्थवृत्त: i) स्निग्ध यवागु, पान, ii) उष्णोदक परिषेचन।

18) सुतिकारोग कृच्छ से असाध्य हेतु:

i) धातु क्षीण, ii) शिथिल, iii) शरीर शून्य

19) शिशु परिचर्या:

चरक	सुश्रुत	अ.हृ (वाग्भट)
i) प्राण प्रत्यागमन	i) उल्व अपनीय	i) उल्वोपरिमार्जन
ii) स्नान	ii) मुखशोधन	ii) प्राणप्रत्यागमन
iii) मुखाविशोधन	iii) पिचुधारण	iii) नालछेदन
vi) गर्भोदक वमन	vi) नालछेदन	vi)स्नान
v) नाल छेदन	v) जातकर्म	v) पिचुधारण
vi) जातकर्म	vi) स्नान	vi) सुवर्णप्राशन
vii) रक्षाकर्म	vii) गर्भोदक वमन	vii) जातकर्म

i) प्राण प्रत्यागमन: अश्मनो संघटन कर्ण योमूलं, शीतादेकेन उष्णोदकेन वा मुख परिषेक, कृष्ण कपालिका शुर्प से हवा, वा. बलातेल परिषेक. **ii) स्नान:,**

iii) मुखाविशोधन: अंगुली से(कर्पासपिचु),

iv) गर्भोदक वमन: सैंधव सर्पिषा- चाटन,

v) नाल छेदन: 8 अंगुल अंतर पे, दोन बंधन, अर्धधार शस्त्र से,

सुश्रुत - 8 अंगुल अंतर पे, वाग्भट -4 अंगुल अंतर पे, क्षोमसुत्र से बांधकर तिक्ष्ण शस्त्रसे छेदन. कुष्ठ तैल सेचन

vi) जातकर्म: अभिमंत्रित मधुरसर्पि - चाटन, चरक दक्षिण स्तनपान प्रथम दिन से शुरूवात करें, **vii)** रक्षाकर्म:

20) असम्यक नाडी कल्पन (छेदन)-4 विकार:

i) उत्तुण्डिता, ii) पिण्डलिका, iii) विनामिका, iv) विजृम्भिका.

चिकित्सा- वात पित्त शामक अभ्यंग, परिषेक. (वाग्भट 2 विनामिका, विजृम्भिका)

21) नामकरण: दशम दिन 2 नाम रखे- i) नक्षत्रिक ii) अभिप्रायिक

22) दीर्घायु बालक लक्षण: शिर अर्ध चन्द्राकृति.

23) धात्री परिक्षा: समानवर्णा, यौवनस्था, अनातुर, जुगुप्सित कुला, कुशलोपचारा.

24) उत्तम स्तन: (स्तनसम्पत - 6)

नात्यूर्ध्वो नातिलम्बावनाति कृशावनातिपीनौ युक्तकपिप्पलकौ सुखप्रपानौ चेति स्तनसम्पत। पुष्टिकर आरोग्यकर, प्रकृति (वर्ण गन्ध रस स्पर्श)

25) दुष्ट स्तन्य: पित्त दोष - कुणप गन्धी, कफ दोष - लवण, अनुरस, घृत तैलवसा मज्जा गन्धी पिच्छिल।

चिकित्सा: दुग्ध वर्धक (सीधु) छोडकर अन्य मद्य,(वीरण षष्टिकशालि इक्षुवालिका, दर्भ, कुशादि। (स्तन्यजनन महाकषाय)

स्तन्य विशोधक रस - तिक्त, कषाय, कटू, मधूर.

26) कुमारागार: निवातं प्रवातैकदेशं, **वस्त्र-** मृदु, शुचि, धूपित.

मणि धारण - (ग्रीवा बाहु मे मणि धारण),

औषध धारण- ऐन्द्री आदी व जिवक ऋषभक

27) क्रीडनक: विचित्र अगुरु, अतीक्ष्णाग्र, न आस्य प्रवेशीनी, अप्राणहराणि, अवित्रासनामि (भयावने न हो)

28) कुमार के पालन की अवधि, 16 वर्ष तक।

[i) पुत्रेष्टियज्ञ, ii) होमविधि, iii) सुतिकागार, कुमारागार.]

इंद्रियस्थान

1) वर्णस्वरीय,2) पुष्पितक, 3) परिमर्शनीय, 4) इंद्रियानीक, 5) पूर्वरूपीय, 6) कतमानी शरीरीय,7) पन्नरूपीय,8)अवाक् शिरसीय, 9) यस्य श्यावानिमित्तीय, 10) सद्यो मरणीय, 11) अणुज्योतीय, 12) गोमयचूर्णीय.

1) वर्णस्वरीय इंद्रिय

इन्द्रशब्देन आत्मा उच्यते, तस्यान्तर्गतस्य लिंग रिष्टाख्यमिन्द्रियम्।.(चक्रपाणी) नियतमरणख्यापकं लिंगमरिष्टम्।..(माधव निदान).

पर्याय: अरिष्ट: सूतिकागार, रीठा, निम्ब, करंज, रसोन (लहसुन) अपशकुन, विपत्ति, आयु:क्षय, प्रतिकूलता.

3 प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, आप्तोपदेश) से 47 भाव की परिक्षा.

शरीर में अनाश्रित भाव परिक्षा - आप्तोपदेश, युक्ति.

शरीर में आश्रित भाव परिक्षा - प्रकृति, विकृति.

1) प्रकृति: 6 - i) जातिप्रसक्ता, ii) कुलप्रसक्ता, iii) देशानुपातिनी, iv) कालानुपातिनी, v) वयोपातिनी, vi) प्रत्यात्मनियता.

2) विकृति: **3 -** i) लक्षणनिमित्ता- दैवात् - (पूर्वकृत कर्मो से उत्पन्न), ii) लक्ष्यनिमित्त तु यस्या उपलभ्यते निमित्त यथोक्तं निदानेषु।, iii) निमित्तानुरूपा- निमित्तानुरूपा तु निमित्तार्थानुकारिणी या,निमित्तमायुष: प्रमाण ज्ञानस्येच्छान्ती, प्रेतलिंगरुपा.

3)प्राकृत वर्ण:4 कृष्ण, श्याम:,श्यामावदात:,अवदात (गौर) (श्याव नहीं).

4) विकृत वर्ण: **5 -** नील, श्याव, ताम्र, हरित, शुक्ल.

प्राकृत वर्ण	विकृत वर्ण	प्रभा(7)	प्राकृत स्वर	वैकारिक स्वर
कृष्ण	नील	रक्त	हंस	एडक
श्याम	श्याव	पीत	क्रौचं	कल
श्यामावदात	ताम्र	सिता	नेमि	ग्रस्त
अवदात	हरित	श्याव	दुन्दभि	अव्यक्त
	शुक्ल	हरित	कलविंक	गद्गद
		पाण्डुरा	काक	क्षाम
		असित	कपोत	दीन
		(कृष्ण)	जर्जर	अनुकीर्ण

2) पुष्पितक इंद्रिय

लिंगमरिष्टाख्यं पूर्वरूपं मरिष्यत:। अरिष्ट लक्षण यह मृत्यु का पूर्वरूप है। मृत्यु के पूर्व अरिष्ट आवश्यक व अरिष्ट के बाद मृत्यु निश्चित.

पुष्पित पुरूष- **1** वर्ष में मृत्यु.

1) शुभ गंध- चन्दन, कुष्ठ, तगर, अगुरू, मधु, माल्यं(माली).

2) अशुभ गंध- मूत्र, पुरीष, मृत कूणप (शव)

3) रसविकृति 2 भेद: i) वैरस्य, ii) स्वादु विपूलं (अत्यन्त मधुर)

रसगत अरिष्ट ज्ञान अनुमान से(विकृत रस(अरिष्ट) के पास प्राणी नहीं आते है। पुष्प एवं अरिष्ट में समानता बताया है - पुष्पित इंद्रिय.

संस्थान- स्वप्न की अवस्था नहीं है।

3) परिमर्शनीय इंद्रिय

स्पर्श द्वारा ज्ञेय अरिष्ट:

मृदुनां दारूणत्वं (चिकने अंगो में खुरदुरापन), स्वेदानुबन्ध:, स्तम्भो.

लक्षण: उच्छासो: ऽति दिर्घोऽतिह्रस्वो, दन्त: परिकीर्णा, श्वेता, जात शर्करा, पक्ष्म: जटाबध्द, नख-पक्वजम्बुवर्णा:, अंगुलि: न स्फुटेथ.

व्यासत् भाव वर्णन

4) इंद्रियानीक इंद्रिय

अनुमानात् परीक्षेत् दर्शनादीनि तत्वत:।

(पंचेंद्रिया परीक्षा अनुमान से.), इंद्रियों को ज्ञान अतीन्द्रिय से.

चक्रपाणी: जिन अरिष्टों के वर्णन में अवधि नही बतायी है। उनमें 1 वर्ष समझें (इससे अधिक सीमा अरिष्ट में नही).

जिव्हा का अरिष्ट: मुख न पका हो,फिर भी वह रसों का ज्ञान सर्वथा न कर पाये

इंद्रियों का सामान्य अरिष्ट: बिना तप और योगसाधना के ही इंद्रियों की पहुँच से दूर की चीजों का ज्ञान प्राप्त.

5) पूर्वरूपीय इंद्रिय

1) ज्वर: पूर्वरूपाणि सर्वाणि ज्वरोक्तान्यतिमात्रया। (सभी पूर्वरूप उग्र रूप में)

2) रक्तपित्त: सब कुछ लाल दिखता है।

3) गुल्म: स्वप्न में कांटेदार लता हृदय में उत्पन्न।

4) प्रमेह: स्वप्न में चांडाल सह स्नेहपान।
5) कुष्ठ: पद्मान्युरसि जायन्ते, स्वप्न में उर:प्रदेश पर कमल के फुल उत्पन्न।
6) राजयक्ष्मा: स्वप्न में प्रेत सह मद्यपान, कुत्ते(शुन) खींचते है।
7) उन्माद: स्वप्न में राक्षस सह नृत्य.
8) अपस्मार: तम: पश्यति, शब्द न होने पर भी सुनाई दें.
स्वप्न: नृत्य, प्रेत उसके सिर नीचे कर उठा के ले जा रहे है।
9) बहिरायाम: स्वप्न में षष्कुली/मालपुआ खाके उठकर छर्दी करता है।
स्वप्नदर्शन सिध्दात: मनोवहानां पूर्णत्वाद् दोषैरतिबलै: त्रिभि:।
मनोवह स्त्रोत अति प्रबल वात-पित्त-कफ दोषों से पूर्ण हो जाते है।
(मनुष्य के मन, आत्मा, शरीर की 4 अवस्था का वर्णन वेदान्त में.
i)जाग्रत,ii) सुषुप्ति, iii) स्वप्न, iv) तुरीयवस्था; स्वप्न: अर्धनिद्रित अवस्था)
स्वप्न भेद: 7 (काश्यप:10)
दृष्टं श्रुतानुभूतं च प्रार्थित कल्पित तथा।
भाविकं दोषज चैव स्वप्नं सप्तविधं विदु:।।
i) पहले 5 निष्फल (दिवा- स्वप्न, बहुत बडा और छोटा स्वप्न निष्फल)
ii) अल्पफल: प्रथम प्रहर (रात्र) का स्वप्न.
iii) महाफल: स्वप्न देखने पश्चात् फिर नहीं सोना चाहिए।
प्रतिलोम, अनुलोम रोग यदि मिल गये हो तथा ग्रहणी दूषित हो यह अरिष्ट है-15 दिन का (1 पक्ष)

6) कतमानि शरीरीय इंद्रिय

त्याज्य रोगी: तृष्णा, अर्ति, हृदि, शूल.
i) हिक्का गम्भीरजा, ii) शोणितं अतिसार्यते, iii) आनाहश्चातिसारश्च दुर्बल में,
iv) आनाहश्चाति तृष्णा दुर्बल में, v) मध्यान्ह ज्वर, शुष्क कास बलमांसहीन,
vi) जठरिण श्वसनो में मूत्र पुरीष ग्रथित, vii) उर: में कफ बहु,नील:पीत से लोहित, viii) कासज्वरार्दित: हृष्टरोमा, सान्द्रमूत्र, शून, क्षीण मांस,
ix) ग्रहणी मांसशोणित बल, क्षिप्रं (शीघ्र), क्षिप्रं, क्षय.

7) पन्नरूपीय इंद्रिय

सर्व प्रथम जिस कुमारी का रूप नष्ट हुआ.
1) आकृति: 2 - i) सुषमा, विषमा; ii) (अल्प, मध्यम, महत्)
2) छाया: 5 - i) आकाश-नाभसी,निर्मला,नीला; ii) वायु-रूक्षा श्यावारूणा या तु वायवी; iii) आग्नेय-दीप्ता; iv) अम्भ - शुध्द वैदूर्य विमला सुस्निग्धा; v) पार्थिव-स्थिर घना श्यामा श्वेता;
वायवी तु विनाशाय क्लेशाय.
3) प्रभा: 7 - रक्ता, पित्ता, सिता, श्यावा हरिता पाण्डुरा, असिता.
4) कामला: (अक्षी,मुख) शोथ: शंख, मांस क्षीणता.
सप्ताह: 7 दिन - बिस्तर पर से उठते समय बार-बार मूर्च्छा,
अर्धमास: 15 दिन-संसृष्ट व्याधी प्रतिलोम-अनुलोम हो जाना,ग्रहणी व्यापन (विकृत)
छाया: i) वर्ण को आच्छादित, ii) 5 प्रकर, iii) उत्पत्ति 1-1 महाभूत की अधिकता से, iv) वर्ण व प्रभा पर आश्रित, v) निकट से दिखाई....
प्रभा: i) वर्ण को प्रकाशित कर प्रकट, ii) 7 प्रकार, iii) उत्पत्ति में अग्नितत्व प्रधानता, iv) वस्तुगत होते हुए भी स्वयं प्रकाश, v) दूर से ही.....
5) श्वास अरिष्ट: प्रकूजति, प्रश्वसिति, शिथील, अतिसार.
बलहीन: पिपासा, शुष्क कास,
मास: मांस क्षीण, त्वचा अस्थि पर अवलंबित.
निचितं यस्य मांस स्यात् त्वगस्थिष्वेव दृश्यते।
क्षीणस्थानश्न तस्तस्य मासमायु: परं भवेत्।।

8) अवाक्शिरसिय इंद्रिय

1) नेत्र अरिष्ट: जटीभूत, पक्ष्म.
i) 3 दिन - रोगी व्यक्ति में लक्षण होने पर.
ii) 6 दिन - स्वस्थ व्यक्ति में लक्षण होने पर.
2) केश अरिष्ट: 6 दिन में मृत्यु.

9) यस्य श्यावनिमित्तीय इंद्रिय

1) पित्तज अरिष्ट: लोमकुप संवृता:
2) राजयक्ष्मा अरिष्ट: हाथ-पैर सुंदर दीखे (शरीरान्ताश्च शोभन्ते), र शुष्यति. * पार्श्वशूल शोष;
3) अचिकित्स्य व्याधी: 8 - महारोग (अष्टमहागद) वातव्याधी मधुमेही कुष्ठी उदर शोफी गुल्मी राजयक्ष्मी अपस्मारी...चरक;
सुश्रुत: वातव्याधी, प्रमेह, कुष्ठ, उदर, अश्मरी, अर्श, भंगदर, मूढगर्भ...सुश्रुत
वाग्भट: मूढगर्भ के जगह ग्रहणी शेष सुश्रुत समान.
4) उर्ध्वश्वास अरिष्ट: शरीर शीत,वंक्षण शूल. सहसा रोगनाश होना: अरिष्ट; 1 मास तक मांस मांसरस सेवन करने पर भी अरिष्ट;
5) ष्ठिवन, पुरीष,रेतस(शुक्र)जल में डुब जाता है तो भी मृत्यु निश्चित;
6) शंखक: 3 रात्र में मृत्यु;
7) बल,मांस क्षय तीव्र रोगवृध्दि अरोचक में 45 दिन में मृत्यु (3 पक्ष).

10) सद्योमरणीय इंद्रिय

चक्रपाणी- (7 दिन-3 दिन) में मृत्यु सद्य:
1) तृष्णा में हृदय स्थान पर वाताष्ठिला होने पर वह सद्य: मरण.
2) हिक्का में अन्तर्दाह से सद्य:मरण.
3) उर्ध्व वायु में क्षीण शोणित मांस से सद्य:मरण.

11) अणुज्योतीय इंद्रिय

1) 1 वर्ष का अरिष्ट:
i) शरीर में आग्निय भाव कम, चित्त चंचलता, छाया विकृत,
ii) हाथों से दी हुई बलि खानेवाले जीव नहीं खाते,
iii) अरून्धती तारा (रात में) नहीं देखता है,
iv) बिना कारण के शरीर में कांति, स्थुलता व धन को प्राप्त.
2) 6 मास का अरिष्ट:
v) इच्छा,अभ्यास,स्मृति,बुध्दि,बल का आकरण नाश,
vi) ललाट में धमनियों का जाल,
vii) ललाट चन्द्रमा के समान टेढी अनेक रेखाओ से भरा हुआ.
3) 1 मास का अरिष्ट:
viii) पागल वत शरीर कँपन, मूर्च्छीत होना, असम्बध्द प्रलाप,
ix) हाथ-पैर, मुख सुख गये हों, मध्य शरीर में शोथ.
x) भाई-बन्धु मित्र से द्वेष करने वाला: वीर्य,मूत्र,पूरीष पानी में डुब जावे.
4) शीघ्र मारक अरिष्ट:
xi) ललाट, शिर, बस्तिस्थान के उपर कुटिल नीली रेखाएँ दीख पडे,
xii) शरीरावयों पर मुँगे के दाने समान लालवर्ण मसूर आकार की पिड्काएँ,
xiii) ग्रीवा में दर्द:जिव्हा सूजन, गुदा, मुख गले में पाक,
xiv) काल (मृत्यु) के फन्दे में फँस जाता है।
5) संदर्भ -क्रियापथमातिक्रान्ता: केवल देहमाप्लुता।
चिन्हं कुर्वन्ती यद्दोषास्तदरिष्ट निरुच्यते ।। (च.इ.11/29)

12) गोमयचूर्णीय इंद्रिय

15 दिन का अरिष्ट: स्नान पश्चात् जिनका 1st वक्षस्थल का भाग सुखता है और शेष शरीर गीला रहता है।
1 मास का अरिष्ट: शिर में गोबर के चूर्ण (रूसी) वत चूर्ण उत्पन्न.
प्रशस्त दूत के लक्षण वर्णित-(च.इ.12)

****

चिकित्सास्थान

1) रसायनाध्याय

1) अभयामलकीय

1) भेषज पर्याय: (9)चिकित्सितं व्याधिहरं पथ्यं साधनमौषधम् ।
प्रायश्चितं प्रशमनं प्रकृतिस्थापनं हितम्।।

2) भेषज प्रकार: 2 i) स्वस्थस्योर्जस्कर ii) आर्तस्य रोगनुत्
स्वस्थस्योर्जस्कर: 2 i) रसायन – (कुटीप्रावेशिक, वातातपिक) ii) वाजीकरण

3) अभेषज प्रकार: 2 i) बाधन ii) सानुबाधन.

4) रसायन परिभाषा: a) दिर्घम् आयु स्मृति मेधा आरोग्यं तरूणं वय:।
प्रभावर्ण स्वरौदार्यम देह इंद्रिय बलंपरम्।।
वाक्सिध्दी प्रणितम् कांती लभते ना रसायनात।
लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम्।।.....(चरक)
b) यज्ञराव्याधिविध्वंसि भेषजं तद्रसायनम्।। .....(शारंगधर)
c) भेषजाश्रितानां रसवीर्यविपाक प्रभाव परमायुर्बलवीर्य्याणां
वय: स्थैर्यकराणामयनं लाभोपायो रसायनम्।। ....(डल्हण)

5) वाजीकरण: अपत्यसन्तानकरं यत्सद्य: सम्प्रर्हषणम्।
यश: श्रिय बलं पुष्टिं वाजीकरणमेव तत्।। .....संदर्भ च.चि.1/1/12

6) कुटीनिर्माण: पूर्वोत्तरस्यां, त्रिगर्भा, सूक्ष्मलोचनम्, ऋतुसुखं, स्त्रीविवर्जितम्.
कुटी–प्रवेश = उदगयन (उत्तरायण), शुक्लपक्ष.

7) हरितकी:i) गुण: पंचरसामुष्णामलवणां शिवाम्,वय: स्थापनी पराम,
सर्वरोग प्रशमनीं ii) निषेध: अजीर्ण,रुक्षभुज,स्त्रीमद्य विषकर्शिता क्षुत्तृष्णोष्णा

8) आमलकी:(हरितकी समान) वीर्यस्य तु विपर्यय: (आंमलकी – शीतवीर्य)

9) अमृतकल्पानि – हरितकी, आमलकी शस्यानि (बीजरहीत)

10) औषधीनां परा भूमिर्हिमवाञ् (हिमालय सर्वोत्तम औषध भूमि)

11) संशोधन प्रयोग: त्रिरात्रं यावकं दद्यात् पंचाहं वाऽपि सर्पिषा।
सप्ताहं वा पुराणस्य यावच्छुदेस्तु वर्चस:।।

12) योग: i) प्रथम ब्राह्म्यरसायन: हरीतकी 1000, आमलकी 3000,
पंचपंचमुल प्रत्येकी 10 पल,वैखानसा बालखिल्यास्तथाचान्ये तपोधना:
(नः ीवन प्राप्त करानेवाला)

ii) द्वितीय ब्राह्म्यरसायन: आमलकी 1000 और पिष्टस्वेदन, नागबला
सहस्त्रपलस्वरस, स्थापयेद् अन्तर्भूमे: पक्ष ,कनक रजत ताम्र प्रवाल कालायस
चूर्णाष्ट भागसंयुक्तम्, अर्धकर्षवृध्द्या, वायुना समविक्रम:, महाबल:

iii) च्यवनप्राश: (पर्याय भार्गवप्रोक्त अवलेह) 500 आमलकी, ज्ञात्वा
गतरसा, कास श्वास हर,मूत्र शुक्र स्थान्दोषांश्चाप्यपकर्षति,अस्य प्रयोगाच्यवन:
सुवृध्दोऽभूत पुनर्युवा, जीर्णोऽपि कुटिप्रवेशात्.

iv)आमलकरसायन:पलाशत्वगवनध्दानां,मृदा अलिप्तानां, पलसहस्त्रमुलूखले,
भक्षयेदनन्नभुग्यथोक्तेन (अन्नाहार परित्याग), मात्रा अग्निबलसे, परं यथासुखविहार:

v) हरितकी योग

vi) षष्ठ हरितक्यादियोग: आमला स्वरस में आवला चूर्ण, मात्रा
पाणितलमात्रं, त्रिवर्षप्रयोगादस्य वर्षशतमजरं वयास्तिष्ठति.
यथाऽमराणाममृतं यथा भोगवता सुधा।
तथाऽभवन्महर्षीणा रसायन विधीः पुरा।। च. चि. 1/1/78
कूल 6 रसायन योग वर्णन.

2) प्राणकामीय

1) रसायन फलश्रुति : अनिलकफ पित्तसाम्यकरं, अग्निसन्धुक्षणं

2) ग्राम्याहार जन्य विकार : निरुत्साह, असमर्थचेष्टानां

3) योग:

i) आमलक घृत: सर्वामया: प्रशाम्यति, 3 वर्ष प्रयोग
प्रतिदीन प्रातः कूटीप्रावेशिक विधीसे से 100 वर्ष आयु,
बृहच्छरीरं, स्थिरेंद्रिय गिरीसार सारम

ii) आमलकावलेह: आमलकी1000,पिप्पली 1000, तरुण पलाश,6 मास
स्थापयेदअन्तर्भूमे, प्रयोगो नापराह्लिक, पौर्वाह्लिक में उपयुक्त, 100 वर्ष आयु

iii) आमलकचूर्ण: आमलकी 1000 का स्वरस, 100 वर्ष आयु,

iv) विडंगावलेह: फलश्रृती पूर्वोक्त समान

v) अपर आमलकावेलह: आमलकी 1000, घृतभावित कुम्भ में 21त्र
रखना, 100 वर्ष आयु प्राप्ति.

vi) नागबलारसायन:प्रदेश धन्वनि कुशास्तीर्णे,
संग्रह - तपसि तपस्ये वा मासे, मात्रा –1 पल / कर्ष / तोला / अक्ष चूर्ण,
1 वर्ष प्रयोग से 100 वर्ष आयु प्राप्ति.

vii) बलादि रसायन: 19 बला, अतिबला, चन्दन, अगरु, धव, तिनिश,
खदीर,शिंशप, असन, गुडूची,हरीतकी आमलकी, मुक्ता (रास्ना),
श्वेतअपराजिता, जीवन्ती, शतावरी,मण्डूकपर्णी , सारीवा, पूनर्नवा.

viii) भल्लातक क्षीर: भल्लातक - पक्वजम्बूवर्ण, संग्रह शुचौ - शुक्रे
(जेष्ठ - आषाढ), प्रयोग में जितने दिन प्रयोग उससे 2 गुणा क्षीर प्रयोग,
चरक -10 से 30 - 41 days - (810) भल्लातक,
चक्रपाणि - पूर्नरावृत्ती करे 55 days - 1000 भल्लातक
सुश्रुत अर्श (1 से 65), वाग्भट (8 से 40) भिलावा,
गंगाधर (22से 27) दिन तक 30 भिलावा,

ix) भल्लातक योग: 10 -
क्षीर,तैल, सर्पि,पलल, क्षौद्र, सक्तु, गुड, लवण, युष, तर्पण,
* भल्लातक गुण: कफजो न रोगोऽस्ति, स्त्रोतो अवरोध को नष्ट मेधा ऽग्निवर्धनम.
भल्लातक क्षौद्र 1 भाग - भल्लातक स्वरसः 8 भाग मधुः 2 भाग घृत
मिलाकर प्रातः कालमे सेवन. कूल 37 रसायन योग वर्णन.

3) करप्रचितीय

1) आमलकायस ब्राह्म्यरसायन: आमलक संग्रह- माघ- फाल्गुन, जीवनीय,
बृहणीयानां, स्तन्यजननानां, शुक्रजननानां, वय:स्थापनानां, महाकषाय द्रव्य,
मात्रा चूर्ण 8 भाग, अनुपान मधुसर्पि, ब्रह्मा ने बनाया, वसिष्ठ, कश्यप,
अंगिरा: जमदग्नि, भरव्दाज, भृगु इन आर्चार्योंने सेवन कीया था।,
जराव्याधिप्रशमनं बुध्दिन्द्रियबलंप्रदम्. मात्रा के अष्टमांश भाग लोह मिलाकर
मधुसर्पि के साथ सेवन.

2) केवलामलक रसायन: संवत्सर पयो प्रयोग: सावित्री(गायत्री)मन्त्र
जप, 3 दिन उपवास कर, फिर पौष, माघ, फाल्गुन के शुक्ल पक्ष, जीतने
आँवले खाता है, उतने 1000 वर्ष जीता है।

3) लौहादि रसायन: तीक्ष्ण (लोह प्रकार), चतुरंगुल दीर्घ, तिलोत्सेध
प्रमाण, धीमान, यशस्वी, श्रुतधारी, सर्व रोगनुत.

4) ऐन्द्र रसायन: जराव्याधिप्रशमन स्मृतिमेधाकरं परम्.

5) मेध्य रसायन: 4 i) मण्डूकपर्णी - स्वरस,
ii) यष्टीमधु- चूर्ण क्षीर सहित, iii) गुडूची - स्वरस,
iv) शंखपुष्पी - मुल, पुष्प, कल्क - विशेष मेध्य.

6) पिप्पलीरसायन: i) 5,8,7,10, पिप्पली, मधुसर्पिसह
ii) (3-3)पिप्पली पूर्वाह्ण में(प्रात:काल)-दोषाधिक्य,भोजन पूर्व-
मध्यवृध्ददोष, भोजन पश्चात - अल्प दोष,
किंशुक (पलाश) क्षारभावित घृतभर्जित.

7) वर्धमान पिप्पली प्रयोग:
चरक – प्लीहा, उदर
(सुश्रुत चि. 5 – वातशोणित,विषमज्वर, अरोचक, पाण्डु, प्लीहा, उदर,अर्श,
कास,श्वास, शोफ, शोष, अग्निसाद, हृद्रोग.)
(काश्यप राजयक्ष्मा व शोथ में)

उत्तम क्रम 1000 = 10 पिप्पली से start 19 दिन
मध्यम् क्रम 1014 = 6 पिप्पली से start 25 दिन
कनिष्ठ क्रम 1026 = 3 पिप्पली से start 36 दिन.

(जेज्जट प्रकृती नुसार सेवन)
* गंगाधर - 6 पिप्पली क्रम से 1014 और - 3 पिप्पली क्रम स 1026

वर्धमान पिप्पली चरक बलवान व्यक्ती - कल्क के स्वरूप में,
मध्य बलवान व्यक्ती - श्रृतशित (कषाय),
अल्प बलवान व्यक्ती - शित कषाय

8) त्रिफला रसायन: i) 1 हरितकी चूर्ण- प्रात:काल (पूर्व आहार जरणान्ते), 2 बहेडा चूर्ण - भोजनपूर्व (प्राग्भुक्त), 4 आमलकी चूर्ण - भोजनपश्चात (मधुसर्पि सह.), (भेल - भोजनपूर्व आमलकी, भोजन पश्चात हरितकी,भोजनजीर्ण विभितकी) ii) त्रैफलेनायसीं पात्री (नई लोहे की कडाही), iii) त्रिफला धातु भस्म के साथ सेवन, iv) सर्वलोह:

9) शिलाजतु: गुण: नात्युष्णशीत, अनम्लं, कषाय, कटुपाके, रसायन : जराव्याधिप्रशमनं देहदाढर्यकरं परम्।, प्रयोग :

शिलाजित सेवन में अपथ्य – कूलत्थ,गुरु,विदाही पदार्थ

	पर	मध्य	अवर
मात्रा	1 पल	1/2 पल	1कर्ष
प्रयोगकाल (सप्ताह)	7	3	1

प्रकार : वर्ण		रस	वियं	विपाक	विकार
i)सुवर्ण	जपापुष्प	मधुर तिक्त	शित	कटू	वात,पित्त
ii)रजत	श्वेर्ते	कटु	शित	मधुर	कफ,पित्त
iii)ताम्र	बर्हिकण्ठाभ	तिक्त	उष्ण	कटू	कफ
iv)लौह	गुग्गुलकाभा (कृष्ण)	तिक्त लवण	शित	कटू	त्रिदोष

दिशा: रसायनप्रयोगेषु पश्चिमस्तु विशिष्यते.

कूल 16 रसायन योग वर्णन.

Note: लोह शिलाजतु - रसायन में श्रेष्ठ, गोमुत्र - रोग दूर करने में श्रेष्ठ

[वाग्भट - शिलाजतु प्रयोग: i) ज्वर - नागरमोथा + पित्तपापडा के क्वाथ
ii) रक्तपित्त - मुलहठी क्वाथ, iii) क्षयरोग - मांसरस,
iv) कृशता, मानसविकार - दूध, v) स्थूलता - मधु शर्बत,
vi) पाण्डु, उदर, शोथ - भैंस मूत्र,
vii) अश्मरी - वीरतर्वादि गण क्वाथ, viii) कुष्ठ - खदिरक्वाथ,
ix) विषविकार - विषघ्न औषध क्वाथ.]

4) आयुर्वेद समुत्थानीय:

ऋषियों का हिमालय गमन:मन्दचेष्टा,नातिकल्याश्च,सर्वासामिति कर्तव्यतानामसमर्था:

1) इन्द्रोक्त रसायन:
18 वनस्पती, 6 मास दुग्ध प्रयोग, परमायु, तरुणम, अनाभयत्वं

2) द्रोणीप्रावेशिक रसायन: 9 वनस्पती -
i) ब्रह्मसुवर्चला - हिरण्यक्षीरा, पुष्करसदृशपत्रा,
ii) आदित्यपर्णी - सूर्यकान्ता,सुवर्णक्षीरा,सूर्यमण्डलाकार पुष्पा,
iii) नारी - अश्वबला, बल्वजसदृशपत्रा, iv) काष्ठगोधा - गोधाकारा,
v) सर्पा - सर्पाकारा, vi) सोम - औषधिराज,15 पर्वा, सोम इव हीयतेवर्धते,
vii) पद्मा - पद्माकारा, पद्मरक्ता, पद्मगंधा, viii) अजा - अजश्रृंगी,
ix) नीला - नीलक्षीरा, नीलपुष्पा, लताप्रतानबहुलेति.
द्रोणी - आर्द्रपलाशद्रोणी, 6 मास पश्चात, अजा दुग्ध सेवन, गतिर्योजनसहस्त्रं (400 कोस पैदल चलने की शक्ति), 10 सहस्त्र वर्ष जीवित,

3) व्दितीय इन्द्रोक्त रसायन:
बल्यांना, वय:स्थापनानां, जीवनीयानां, बृंहणीया, महाकषाय द्रव्य.

4) आचार रसायन: अद्रव्य रसायन, नित्य क्षीर व घृत सेवन.

* अश्विनिकुमार चमत्कार वैशिष्ट्य : (देववैद्य, यज्ञवाह)
i) यज्ञशिर, ii) पूष्णो दशन, iii) भगस्य नेत्रे,
iv) वज्र धारी (इन्द्र) की भूजा स्तम्भ,
v) चन्द्रमा सोमाभिपतित (सोम धातु की क्षीणता) से राजयक्ष्मा,
vi) भार्गवश्च्यवन को पुनर्युवा

* प्राणाचार्य लक्षण: शीलवान्, मतिमान्, व्दिजाति, शास्त्रपारग:
* न वैद्य: पुर्वजन्मना (कोई व्यक्ति पूर्वजन्म में वैद्य नहीं होता)
* वैद्य व्दिज - ब्राह्म, आर्ष. कूल 4 रसायन योग वर्णन.

[वाग्भट: **रसायन** 1) ब्राह्मीघृत -ऐन्द्ररसायन सम वर्णन,
2) पंच अरविंद घृत, 3) चतुष्क वलय घृत, 4) गोक्षुर रसायन -1 प्रसृत मात्रा, 5) चित्रक रसायन - 3 प्रकार के चित्रक (पीत, श्वेत, कृष्ण - श्रेष्ठ), अनुपान - वात - तैल, श्वित्र - गोमुत्र, अर्श - तक्र.
6) तुवरक रसायन: संग्रह - वर्षा, मात्रा -1 पाणितल (कर्ष), 5 दिन सेवन, कुष्ठनाश - त्रिगुण खदीर कषाय से 1 मास सेवन, खलितपलित विमुक्त - 50 बुंद नस्य करने से, स्थिरस्मृति, त्रिशतायुष.
7) सोमराजी रसायन - कुष्ठनाशन (कृष्ण तैलासह)
8) लसुन रसायन: अमृतसम्भवा: रसायन में श्रेष्ठ (अग्र्यं)
कफ,वात - वसंत (ग्रीष्म में ऋतुचर्या पालन करें)
मात्रा - सुरासहित - 1 कुडव, केवल रसायन 1/2 कुडव, कल्क - 1 पल सभी आवृत्त में उपयोगी अपवाद पित्त और रक्तावृत. 9) वातातपिक रसायन - 2 हरितकी 1 वर्ष सेवन 10) लांगल्यदि रसायन -(लांगली, त्रिफला, लोह - 500 पल),भावना-भृंगराज स्वरस, मात्रा - 360 गोली - 365 दिन सेवन. (प्रथम 4 दिन 1/2 गोली, बाद में 1 गोली लें)
असाध्य रोग साध्य और 1 वर्ष सेवन– 500 वर्ष जीवित.
11) भल्लातक – संग्रह – ग्रीष्म ऋतू
प्रयोग – हेमन्त ऋतू
वर्धमान भल्लातक – 8 से प्रारंभ 1- 1 बढाकर 21 दिन सेवन, फिर 3 -3 बढाकर 40 दिन सेवन, 100 भल्लातक सेवन करे ।
12) नरसिहं घृत - 1 पल मात्रा
13) नित्यरसायन– सत्यवादी, अक्रोधी,अध्यात्म प्रवणेन्द्रिय, शान्त, सद्वृत्त पालन.
14) पूर्णरसायन– शास्त्रनुसारिणीचर्या चित्तज्ञा: पार्श्ववार्तिन:।
बूध्दीरस्खलिता र्थेषु परिपूर्ण रसायनम् ।।]

2) वाजीकरण

1) संयोगशरमूलीय

प्रयोजन: पूष्टीबलप्रदा; **1) वाजीकरण** - पुरूष - नित्य, आत्मवान.
स्त्री-परं प्रीतिकरा:,धर्म,अर्थ,लक्ष्मी वाजीकरणम्र्यं- पुत्र के आयतन (कारण)है।

2) वृष्यतमा स्त्री: सरुपा, यौवनस्था, वश्या, शिक्षिता,
सा स्त्री वृष्यतमा तस्य नानाभावा हि मानव:।

3) सन्तानार्थ सम्भोग: अतुल्यगोत्रां, वृष्यां, शुध्दस्नातां स्त्री सह.

4) निसन्तान पुरुष निन्दनीय: अच्छाय: ऐकशाखश्च निष्फलश्च,चित्रदीप, तृणपूली, अप्रतिष्ठश्च, शून्य, ऐकेन्द्रियश्च,

5) सन्तानीय पुरुष पूजनीय:
बहुमूर्ति, बहुमुखो, बहु व्यूहो, बहुक्रिय:, बहुचक्षु:, बहुज्ञानो, बहुप्रज:

6) योग: i) बृंहणी गुटिका:शरमूल, इक्षुमूल, काण्डेक्षु, आत्मगुप्ता (कपिकच्छु), फलश्रृती – बृंहणो बलवर्धन: अनेनाश्व इवोदीर्णो बली लिंग समर्पयेत।

ii) वाजीकरण पिण्डरस: कौकुट, शिखि, तित्तिर, हंस मांस.
फलश्रृती – अनेनाश्व इवोदीर्णो बली लिंग समर्पयेत।

iii)वाजीकरण घृत:नवम्(माष,आत्मगुप्ता) भोजन पूर्व लीढवा (चाटना)1 पल

iv) 4 वृष्य रस: चटक + तित्तिर, तित्तर + कौकुट,
कौकुट + बर्हिण, बर्हिण + हंस.

v) वृष्य मांस: चटक मांस, पय पान (दुध),

vi) वृष्यमाषयोग: (माषयूष + दुग्ध)

कूल 15 वाजीकरण योग वर्णन.
(नित्य, आत्मवान, पुरूष – वाजीकरण सेवन,धर्म, अर्थ, प्रीति, यश वाजीकरण पे आश्रित)

2) आसिक्तक्षीरिक

प्रयोजन: पौरुषार्थ के लिए

योग: 1) षष्टिकादि गुटिका: अशुष्क शुध्दषष्टिक, गुलिका बदरतुल्य

2) अपत्यकर स्वरस 3) वृष्य दधिसरप्रयोग: शरच्चन्द्रसन्निभम् (शरद ऋतु के (पूर्णिमा के पूर्ण) चन्द्र के सदृश स्वच्छ आणि निर्दोष)

4) वृष्य पूपलिका: अनुपान वारुणीमण्ड, (2, 3, 4) वाजीकरण पाद में वर्णित वाजीकरण योग फल: 8 वर्ष के अश्व समान प्रहर्षयुक्त.

कूल 8 वाजीकरण योग वर्णन.

3) माषपर्णभृतीय

प्रयोजन: शुक्र बलप्रदा

योग: 1) वृष्य केवल क्षीरप्रयोग: माषपर्णभुतां + गृष्टी क्षीर, (प्रथम प्रसूता गाय का क्षीर) इक्षु, अर्जुन केवलं तु पयस्तस्या: श्रृतं - (धारोष्ण दुग्ध), अश्रृतं - (गरम कर पान), शर्कराक्षौद्रसर्पिसह सेवन.

2) वृष्य क्षीर:

(शुक्रल,जीवनीय, बृंहण, बलवर्धन, क्षीरसञ्जनन महाकषाय सिध्द दुग्ध),

3) वृष्य शतावरीघृत: 4) अपत्यकर क्षीर योग

5) अपत्यजनन क्षीर योग. कूल 15 वाजीकरण योग वर्णन.

4) पुमान्‌जातबलादिक

प्रयोजन: मैथून पूर्व व मैथून पश्चात सेवन योग, गर्भधानकर योग.

1) पूर्वकर्म: पूर्वं निरुह, अनुवासन

2) योग: i) गर्भाधानकर योग

ii) अपत्यकर घृत: शतावरी, विदारीकन्द, माष, आत्मगुप्ता

वृष्य – यत् किंचित् मधुरं स्निग्धं जीवनं बृंहणं गुरु।
हर्षणं मनसश्चैव सर्वं तदवृष्यमुच्यते।।

स्त्रीसंभोग पश्चात पान - गौदुग्ध/मांस रस - शयन.

3) स्त्रीसहवास योग्य आयु: (16 ते 70 वर्ष)

वीर्यक्षीणता कारण 6: जरया, चिन्ता, व्याधि, कर्मकर्षणात्, अनशनात, स्त्रीणांच अतिसेवनात्।

क्लीबता 8 कारण - शुक्रशय, भय, विश्रम्भ, शोक, स्त्रीदोष दर्शनात् नारिणाम अरसज्ञत्वाद, अभिचाराद, असेवनात्

4) वीर्यस्त्राव 8 कारण: हर्ष तर्ष सरत्वाच्य पैच्छिल्य गौरवादपि।
अणु, प्रवणभावाच्च, द्रुतत्त्वान्मारुतस्य च।।

शुक्र - विश्वरुप (वायु गुण) विश्वात्मा का रुप द्रव्य है।

5) शुक्र(प्रशस्त) गुण: बहलं मधुरं स्निग्धम् अविस्त्रं गुरु पिच्छिलम्।
शुक्लं बहु च यच्छुक्रं फलवत्तदसंशयम।।

6) वाजीकरण: येन नारीषु सामर्थ्यं वाजीवल्लभते नर:।
व्रजेच्चाभ्यधिकयेन वाजीकरणमेव तत्।।

कूल 12 वाजीकरण योग वर्णन.

3) ज्वरचिकित्सित

विज्वरं-पुनर्वसु का विशेषण, चरक - रोगराट्, (सुश्रुत - रोगराज, वाग्भट - रोगपति) देहेन्द्रियमनस्तापी सर्वरोगाग्रजो बली।

1) ज्वर पर्याय: ज्वर विकारो रोगश्च व्याधि आतंक.

2) प्रकृति: प्रकृतिरूदर्दष्टा दोषा: शारीरमानसा:।

3) स्वभाव: क्षयस्तमो ज्वर: पाप्मा मृत्युश्चोक्ता यमात्मका:।

4) प्रवृत्ति: प्रवृत्तिस्तु परिग्रहात्। निदाने पूर्वमुद्दिष्टा रुद्रकोपाच्य दारुणात्।

5) स्वरुप (क्रोध): त्रिशिरा, नवलोचन, ऱ्हस्वजंघोदर: क्रमात्। ज्वालामाला

6) प्रभाव: सन्ताप: सारुचिस्तृष्णा सांगमर्दो हृदिव्यथा। ज्वरप्रभावो

7) कारण: निदाने कारणान्यष्टौ पूर्वोक्तानि विभागश:।

8) पूर्वरुप: भक्तव्देषावनिश्चितौ, शीलवैकृतमल्पं

9) अधिष्ठान: केवलं समनस्कं च ज्वराधिष्ठानमुच्यते।,

10) प्रत्यात्म लक्षण: ज्वरप्रत्यात्मिकं लिंग सन्तापो देहमानस:।

11) भेद:

i) द्विविध:शारीरमानस, सौम्यश्चाग्नेय, अन्तर्वेगो बर्हिर्वेगो, प्राकृत वैकृत, साध्यासाध्य,

ii) पंचविध: दोषकाल बलाबलात् - सन्तत सततऽन्येद्युस्तृतीयक चतुर्थको,

iii) सप्तविध: आश्रयभेदेन धातूनां,

iv) अष्ट: कारणभेदेन - वातपित्तात्मका: शितम् उष्णम् वातकफात्मक:।

योगवाह: परं वायु (चरक, सुश्रुत और शारंगधर)

अंतर्वेगीज्वर: अन्तर्दाहोऽ धिकस्तृष्णा प्रलाप: श्वसनं भ्रम:।
सन्ध्यास्थिशूलम् अस्वेदो दोषवर्चो विनिग्रह: ।।

बहिर्वेगी: सन्तापोऽभ्यधिको बाह्यस्तृष्णादीनांच मार्दवम्।
प्राकृत: सुखसाध्यस्तु वसन्त शरदुद्भव:।

(परंतु वर्षा में प्राकृत वातज्वर कृच्छसाध्य है।)

प्राणान्तक ज्वर - i) बहुभिर्हेतु, बहुलक्षण, ii) वात + प्रलाप - 7 दिन में, iii) पित्त + भ्रम - 10 दिन में, iv) कफ + श्वास - 12 दिन में,

असाध्य - असाध्यो बलवान यश्च केशसीमन्तकृज्ज्वर:।

विषमज्वर भेद - 5 (काश्यप 7)

I) सन्तत ज्वर: रसवाहि (आश्रय): सर्वदेहानुगा: स्तब्धा, दशाह, व्दादशाह वा सप्ताह , सुदु:सह:। निष्प्रत्यनीक: कुरुते तस्माज्ज्ञेय: सुदु: सह:।

सन्तत ज्वर के 12 आश्रय: धातू, दोष, मूत्र, पुरीष.

क्रियाक्रमविधौ युक्त: प्राय: प्राग अपतर्पणै:

II) सतत: रक्तधातु, आश्रय, सप्रत्यनीक: कुरुते कालवृध्दिक्षयात्मकम्। अहोरात्रे सततको द्वौ कालावनुवर्तते।

III) अन्येद्युष्क: मेदोवह:सिरा:

प्रतिदिनं दिनं हित्वा तृतीयक:। दिन द्वयं यो विश्रम्य प्रत्येति सचतुर्थक: ।
दोषोऽस्थिमज्जग: कुर्यात्तृतीयकचतुर्थकौ।

विषमज्वर संप्राप्ति: कृत्वा वेगं गतबला: स्वे स्वे स्थाने व्यवस्थिता:।
पुनर्विवृध्दा: स्वे काले ज्वरयन्ति नरं मला:।।

IV) तृतीयक: 3 प्रकार - वातपित्त - शिर:शुल,

पित्तकफ - त्रिक्प्रदेश जकडाहट, वातकफ - पृष्ठपीडा.

V) चतुर्थक: 2 - a) वात - शिर:शूल, b) कफ - जंघा में वेदना.

चतुर्थक विपर्यय: वर्णित (च.,सु.,वा. द्वारा) त्रिदोष + अस्थि, मज्जा (चरक) (मेद, अस्थि, मज्जा, वाग्भट) चतुर्थक विपर्यय: 3 दिन वेग रहता है। तृतीयक: 2 दिन ज्वर रहता है। (सुश्रुत)

विषमज्वर काल परिवर्तन कारण: 5 - ऋतूहोरात्र दोषाणां मनसश्च बलाबलात्। कालामर्थवशार्च्येवं ज्वरस्तं तं प्रपद्यते ।।...संदर्भ.

(ऋतु, अहोरात्र, दोष, मन, कर्म),

धातुगतज्वर: रस -छर्घरोचक, बहिस्ताप; रक्त - पिडका, तृष्णा; मांस - अर्न्तदाह, गात्रविक्षेप; मेद - वम्यभीक्ष्णश, स्वगन्धस्यासहत्वं, अस्थि - विरेकवमने, प्रकुजनं, विक्षेपणं चगात्राणांकृच्छ्र; मज्जा - हिक्काश्वासकास, मर्मच्छेदो, बहि:शैत्यं, अन्तर्दाहौ; शुक्र - विनाश्य,

Common: वमन –रस, मेद व अस्थि. गात्रविक्षेप- मांस व अस्थि अर्न्तदाह–मांस व मज्जा.

साध्य - रस, रक्त, मांस, मेद; कृच्छ्र - अस्थि, मज्जा; असाध्य– शुक्र.

व्दंव्दज ज्वर: i) वातपित्त - अरूची, रोमहर्ष,

ii) कफ पित्त - मुहुर्दाहो मुहु: शीतं स्वेदस्तम्भो मुहुर्मुहु:।,लिप्ततिक्तास्यता

iii) वात कफ - स्वेदाप्रवर्तनम्, मध्यवेग

सन्निपात: प्रकार -13 - सम - सन्निपात - क्षणे दाह: क्षणे शीतम्, परिदग्धा खर स्पर्श जिव्हा, शिरसो लोठंन, हृदी व्यथा, मूकत्व.

आगन्तुज ज्वर: a) अभिघात - वातरक्त, b) अभिषंग - कामशोकभयाद वायु, क्रोधात्पित्तं,त्रयो मला: (चिकित्सा - विषनाशक विषवृक्षानिलस्पर्शात्)

c) अभिचार - सन्निपात d) अभिशाप - सन्निपातज्वर वत लक्षण.
i) कामज्वर - ध्यान नि:श्वासबहुलम्, ii) शोकज्वर - बाष्पबहुलं,
iii) भयज्वर - त्रासप्राय, iv) क्रोधज्वर - बहुसंरम्भं, v) भूतावेशे त्वमानुषम्,
vi) विषज्वर - मूर्च्छामोह मद ग्लानि भूयिष्ठ,

12) ज्वर सम्प्राप्ति: दोष - त्रिदोष, पित्तप्रधान; दूष्य - कोष्ठाग्नी व रस; अधिष्ठान - आमाशय व सर्वशरीर

13) तरुणज्वर मे स्वेद अभाव: i) स्त्रोतस निरुध्द, ii) प्रच्युते अग्नौ.

14) आमज्वर:ज्वरोऽविसर्गी, बहुमूत्रता, अरुचिश्चाविपाकश्च गुरुत्वमुदरस्यच।
हृदस्याविशुध्दिश्च तन्द्रा चालस्यमेव च।।

15) पच्यमान: ज्वरवेगोऽधिकस्तृष्णा प्रलाप: श्वसनं भ्रम:।
मलप्रवृत्तिरुत्क्लेश: पच्यमानस्य लक्षणम्।।

16) निराम ज्वर: क्षुत्क्षामता लघुत्वं च गात्राणां ज्वरमार्दवम्।
दोषप्रवृत्ति अष्टाहो निरामज्वरलक्षणम्।।

17) ज्वर में त्याज्य:9
दिवास्वप्न,स्नान, अभ्यंग, अन्न, मैथुन, क्रोध,प्रवात, व्यायाम, **कषाय**

18) तरुण ज्वर चिकित्सा: लंघनं स्वेदनं कालो यवाग्वस्तिक्तको रस:।
पाचनान्यविपक्वानां दोषाणां तरुणे ज्वरे।।

i) लंघन निषेध: वात ज्वर, क्षयज, भयज, क्रोधज, कामज, शोकज, श्रमज, पुराणे, क्षतजे,

ii) जल प्रयोग: a) सलिलं चोष्णं दद्याद् वातकफज्वरे।
b) मद्योन्थे पैत्तिके वाथ शीतलं तिक्तकै श्रृतम्: ।।
c) षडंगपानीय: मुस्तपर्पटकोशीरचन्दनोदीच्यनागरै:।
श्रृतशीतं जलं दद्यात् पिपासाज्वर शान्तये।।

iii) वमन: दोष कफप्रधान, उत्क्लिष्ट, आमाशयस्थित रहने पर.
वमन निषेध: तरुणज्वर और अनुपस्थितदोष इसमें वमन करने पर - हृदरोगं श्वासमानाहं मोहं चजनयेद् भृशम्.

iv) यवागु: a) 6 दिन सेवन, b) मृदुभावात (वेग मन्द होने तक),
यवागु निषेध: ग्रीष्मे, मदात्यये, मद्यनित्ये, उर्ध्वग्रक्तपित्त, तर्पणमेवाग्रे प्रयोज्यं.

v) दंतधावन: अन्नकालेषु चाप्यस्मै विधेयं दन्तधावनम्।

vi) कषाय:6 दिन तक यवागु, 7 वे दिन भोजन (लघु), 8 वे दिन कषाय- आमदोष - पाचन कषाय, पक्वदोष - शमन कषाय. तरुणज्वर में कषाय निषेध कुर्वन्ति विषमज्वरम्, य: कषायकषाय: स्यात् स वर्ज्यतरुणज्वरे।

vii) घृतपान: अत ऊर्ध्व कफे मन्दे वातपित्तोतरे ज्वरे।
परिपक्वेषु दोषेषु सर्पिष्पानं यथाऽमृतम्।।

viii) दुग्धपान: दाहतृष्णा वातपित्तोत्तरं, निराम ज्वर में

(x) विरेचन: अक्षीणबलमांसअग्नि शमयेत विरेचनै:। पयसा तस्य निरुहैर्वा
निरुह फल: बलमग्निं च विज्वरत्वं,परिपक्वेषु पित्ताशय पित्तं वा कफपित्तं वा हरेत।

19) जीर्णज्वर चिकित्सा: i) अनुवासन: कफपित्त, दृढाग्नेय, बध्दपुरीष में अनुवासन ii) मूर्धविरेचन (नस्य)
बाह्य उपचार: अभ्यंग, प्रदेह, परिषेक, अवगाह - शीत ज्वर में उष्ण से और उष्ण उत्पन्न जीर्णज्वर में शीत.
जीर्ण ज्वर में आगन्तु अनुबंध - धूपन व अंजन.

20) ज्वर में अनुपान: घर्माम्बु (उष्णजल)

21) विषमज्वर नाशक 5 कषाय:
कलिंगका: पटोलस्य पत्रं कटुकरोहिणी।।
पटोल: सारिवा मुस्तं पाठा कटुकरोहिणी।
निम्ब: पटोलस्त्रिफलामृव्दीका मुस्तवत्सको।।
किराततिक्तममृता चन्दनं विश्वभेषजम्।
गुडुच्यामालकं मुस्तमर्धश्लोकसमापना:।।
क्रमश: पंचविध विषमज्वर के लिए।

22) ज्वरनाशक कषाय: शट्यादि कषाय: शटयादिको वर्ग: सन्निपातज्वरापह:।
बृहत्यादि क्वाथ: बृहत्यादिर्गण: प्रोक्त: सन्निपातज्वरापह:।

2 तैल: चन्दनाद्य तैल– दाहज्वर प्रशमनार्थ,
अगुर्वाद्य तैल– शीतज्वरप्रशमनार्थम.

3 घृत: (पिप्पल्यादि, वासादि, बलादि) घृत

23) ज्वर में संशोधन: बहुदोषभ्य ऊर्ध्वं चाधश्च,दद्यात संशोधनं।
वमन द्रव्य-i) कफ प्रधानता में मदनफल + पिप्पली चूर्ण +उष्णाम्बु क्षौद्राम्बु,
ii) पित्तकफ प्रधानता में(मदनफल + कलिंग) चूर्ण + उष्णाम्बु + इक्षुरस,
ii) दाह, तृष्णा में (मदनफल + मधुक मूलहठी) चूर्ण + उष्णाम्बु + इक्षुरस
क्षीरपान: जीर्णज्वराणां सर्वेषां पय: प्रशमनं परम्।... च.चि.
(च.नि: घृत) नस्य: नावनिंकं तैल (अणु तैल) व धूमवर्ति.
दाहज्वर में अभ्यंग:सहस्रधौतं सर्पिवा तैलं वा चन्दनादिकम ।दाहज्वर प्रशमनम्.

24) सन्निपातज्वर चिकित्सा: वर्धनेनैकदोषस्य क्षपणेनोच्छ्रितस्य वा।
कफस्थानानुपूर्व्या वा सन्निपातज्वरे जयेत्।।
उपद्रव:कर्णमूले सुदारुण:शोथ,चिकित्सा-रक्तावसेचन,सर्पिपान,प्रदेह, कवलग्रह शाखानुसारी ज्वर -रक्तस्य सोऽवसेका प्रशाम्यति। सर्पिपान-अभिघात, विसर्प, विस्फोटक में सर्पिपान, कफपित्त अप्रधान रहने पर.
कर्म साधारणं जह्यात् तृतीयक चतुर्थकौ।
आगन्तुरनुबन्धो हि प्रायशो विषमज्वरे।

25) विषमज्वरनाशक: i) षट्पल घृत - सर्पिषो महती मात्रा उत्तम पीत्वा वा छर्दयेत्पुन:। ii) दैवव्यपाश्रय चिकित्सा - विष्णुं सहस्रनाम्।।

26) धातुगत ज्वर चिकित्सा: ज्वरे रसस्थे वमनं उपवासं च कारयेत।
सेक प्रदेहौ रक्तस्थे तथा संशमनानि च।।विरेचनं सोपवासं मांस मेद:स्थिते हितम्।
अस्थिमज्जगते देया निरुहा: सानुवासन:।।(काश्यप - रक्तगत - रक्तमोक्षण)

27) आगन्तुज ज्वर चिकित्सा: i) दैवव्यपाश्रय: शाप, अभिचार, अभिषंग, भूतानाम,अभिघातज्वरो नश्येत पानाभ्यंगेन सर्पिष:।, ii) हर्षण–(काम,शोक,भय) ज्वर, iii) कामात् क्रोधज्वरो नाशं क्रोधात् कामसमुद्भव:।

28) ज्वर मुक्ती लक्षण: विगतक्लमसन्तापम् अव्यथं विमलेन्द्रियम्।
युक्तं प्रकृतिसत्त्वेन विद्यात पुरुषमज्वरम्।।

29) पुनरावर्तकज्वर चिकित्सा: i) मृदु शोधनै: ii) यापना बस्ति iii) क्वाथ: किरातिक्तकं तिक्ता मुस्तं पर्पटकोऽमृता। पुनरावर्तक नाशक
[वाग्भट: i) ज्वर में प्रति 6 दिन अग्निदीपनार्थ पेया शुरूवात लाजा पेया से, बाद में पाचन,दीपन कषाय, ii) चतुर्थक ज्वर क्वाथ - क्षौद्र, (शेष सभी चरक समान), iii) ज्वर में घृतपान 10 दिन बाद व अपराजित धूम]

4) रक्तपित्तचिकित्सित

पूर्नवसु विशेषण: पंचगंगे

1) महागद, महावेग, अग्निवच्छीघ्रकारि,
रक्तस्य पित्तमाख्यातं रक्तपित्तं मनीषिभि:।

2) स्थान: प्लीहा, यकृत.

3) पैत्तिक रक्तपित्त: कषायाभं कृष्णं गोमूत्रसन्निभम्।
मेचकागार धूमाभम अंजनाभं च पैत्तिकम्।।

4) साध्यासाध्यत्व: एकदोष,उर्ध्वग -साध्य; द्विदोष, अधोग-याप्य; त्रिदोष, उभय- असाध्य.अनुबंध - उर्ध्वग - कफ; अधोग - वात; तिर्यक - कफवात.

5) 2 गति आर 9 व्दार: उर्ध्व और अध:उर्ध्वसप्तविधद्वार व्दिव्दारा त्वधरा।

6) अन्तिकी गति:
सर्वच्छिद्रेभ्यो रोमकुपेभ्य वर्तते तामसंख्येयां गतिं तस्याहु आन्तिकीम्।

7) असाध्य	याप्य	साध्य
तुल्यं कुणपगन्धेन	a) शान्त शान्त प्रकुप्यति b) मार्गान्मार्गं चरेद्यव्दा (मार्ग बदल-बदलकर स्त्राव)	सुखे काले (हेमंत शिशिरे)

8) रक्तपित्त कारण: उर्ध्वग में स्निग्ध उष्ण, अधोग में रुक्ष उष्ण प्राय:आहार

9) रक्तपित्त स्तम्भन निषेध: अक्षीण बलमांसस्य रक्तपित्तं यदश्नत:।
तद् दोष दुष्टम् उत्क्लिष्टं नादौ स्तम्भनं अर्हति।।

स्तम्भन से 16 व्याधी – ज्वर, कुष्ठ, भगन्दर.

तस्माद् उपेक्ष्यं बलिनो बलदोषविचारिणा। रक्तपित्तं प्रथमत:प्रवृध्दं सिध्दिमिच्छता।।

10) रक्तपित्त चिकित्सा: उर्ध्वगे तर्पणं पूर्व पेयां पूर्वमधोगते।

(वाग्भट– उर्ध्वग म शुण्ठि रहित षंडगपानीय... वा.चि. 2/7),

11) योग: (खर्जुरादि, लाजा,अम्ल) तर्पण

(पद्मोपलादी, चन्दनादि, किरातिक्तादि, धातक्यादि) पेया,

12) पथ्य: शालि षष्टिक नीवार कोरदूष प्रशान्तिका:।

श्यामाकश्च प्रियंगुश्च।।गण्डीर: जलज: रक्तपिताहारक;(स्थलज:रक्तपित्त कारक)

13) कफानुगे यूषशाकं दद्याद वातानुगे रसम्।
उर्ध्वगे शुध्दकोष्ठस्य तर्पणादि: क्रमो हित:।
अधोगते यवाग्वादिर्न चेत्स्यान्मारुतो बली।।
शोषेण सानुबंधं वा तस्य संशमनी क्रिया।

14) मूत्रमार्गी रक्तपित्त चिकित्सा: शतावरी,गौक्षुर,सिध्द दुग्ध.
4 पर्णी (शाल, पृश्नि, मुदग, माष) सिध्द दुग्ध.

15) गुदमार्ग रक्तपित्त चिकित्सा:

मोचरस वासाघृत शतावर्यादिघृत: पंचमूलैरथ पंचभिर्वा सिध्दं घृतं,सर्पिगुड.

16) नासिका रक्तपित्त में: अवपीड नस्य.
कफानुबंध में क्षारप्रयोग.

[वाग्भट वासा: श्रेष्ठ - i) वासाघृत, ii) पलाशवृंत सिध्द घृत, iii) त्रायमाण घृत]

5) गुल्मचिकित्सित

1) गुल्म निदान: विट् स्त्राव,विचेष्टितैर्वा विषमातिमात्रं कोष्ठे प्रकोपं समुपैति वायु:।

2) सम्प्राप्ति: कफं पित्तं च स दुष्टवायु रुधूदय मार्गान्....।

3) स्थान: 5 - बस्ति, नाभि, हृदय, पार्श्व (2), दुष्य - निराश्रय

i)वातज गुल्मलक्षण: शिशिरज्वरं, करोति जीर्णेऽभ्यधिकं प्रकोपं, भुक्ते मृदुत्व

ii) पित्तज गुल्म लक्षण: शूलं महज्जीर्यति भोजने, व्रणवच्च गुल्म: स्पर्शासह:

iii) त्रिदोषज लक्षण: महारुजं, दाह, शीघ्रविदाहि, अश्मवद् घनोन्नतं,

iv) रक्तज लक्षण: समगर्भलिंग:, 10 मास पश्चात चिकित्सा - चरक

(10 मास पश्चात चिकित्सा काश्यप)

4) गुल्म : चरक, सुश्रुत, काश्यप - 5, वाग्भट 8

वातज गुल्म चिकित्सा: स्नेह पानं हिंतं गुल्मे विशेषेण उर्ध्वनाभिजे।
पक्वाशयगते बस्ति उभयं जठराश्रये।

पुन: पुन: स्नेहपान निरुहा: सानुवासना:। प्रयोज्या वातगुल्मेषु

5) वायु रक्षण: आदावन्ते च मध्ये च मारुत परिरक्षता।।

वात गुल्म: वमन (कफो वृध्दो), गुल्मघ्नानि च तैलानि वक्ष्यन्ते वातरोगिके।

गुल्म में - अवसेक (रक्त मोक्षण).

6) पित्त गुल्म चिकित्सा: i) स्त्रंसन, ii) सर्पि प्रशमनं परम, iii) क्षीरबस्ति,

iv) विरेचन - तिल्वक घृत, v) रक्तावसेचन.

शस्त्रकर्म - रक्तपित्ततिवृध्दत्वात क्रियामनुपलभ्यच.

7)अपक्व गुल्म लक्षण: गूढमांसान्तराश्रय: गुरु,कठिन संस्थानो, अविवर्ण, स्थिर

8) पच्यमान गुल्म लक्षण: दाह शूलार्ति संक्षोभ, स्वप्ननाश, अरति ज्वरै.

9) पक्व गुल्म लक्षण: संस्पर्शे बस्तिसन्निभे, स्तब्धे, सुप्ते, तत्पार्श्वपीडनात्,

पक्व गुल्म चिकित्सा: व्यधन, शोधन, रोपण (अन्तर्विद्रधिवत् चिकित्सा)

पक्व गुल्म में: स्वयं प्रवृत्त पूय को न रोके, (10-12) दिन पथ्य पालन कराए

(दशाहं व्दादशाहं वा रक्षान भिषगुपद्रवान्।).

10)कफगुल्म चिकित्सा: लंघन,वमन,जयेत् कफकृतं गुल्मं क्षारारिष्टाग्नि कर्मभि:।

11) योग: i) त्र्यूषणादि घृत, ii) परम् त्र्यूषणादि घृत,

iii) षट्पल घृत -(राजयक्ष्मा अधिकार में पठीत), iv) क्षीरषट्पल घृत,

v) हिंगुसौवर्चलाद्य घृत,vi) निलिन्याद्य घृत-मात्रा 1 पल vii) हिंग्वादिचूर्ण गुटिका,

viii) हपुषाद्य घृत, ix) शटयादि चूर्ण (शट्यादि कषाय सन्निपातज्वर),

x) एरण्ड तैल योग- वात गुल्म,कफ अनुबंध में वारुणीमण्ड + एरण्ड तैल,

पित्त अनुबंध में दुग्ध+ एरण्ड तैल, xi) लशुनक्षीर: लशुन चतुष्पलं, (गृध्रसी),

xii) तैलपंचक:तैलं प्रसन्ना गोमूत्रम् आरनालं यव अग्रजम्।गुल्मं जठरम् आनाहं..।।

xiii) शिलाजतु प्रयोग: पंचमूलीयकषायेण सक्षारेण शिलाजतु।

* बस्तिकर्म परं विद्याद् गुल्मघ्नं तध्दि मारुतम्।

वातज गुल्म पथ्य: मन्देऽग्नौ वर्धते गुल्मो, दीप्ते चाग्नौ प्रशाम्यति.,

1st चिकित्सा – सर्वत्र गुल्मे प्रथमं स्नेहोस्वेदोपपादिते।

xiv) रोहिण्याद्य घृत: श्रृताच्छेषं घृतसमं सर्पिषश्च चतुष्पलम।

xv) त्रायमाणाद्य घृत:, xvi) आमलकाद्य घृत:, xvii) द्राक्षाद्य घृत:,

xviii) वासा घृत:, xix) दशमूली घृत:, xx) भल्लातकाद्य घृत:,

xxi) मिश्रक स्नेह, आम में – यवागु, खडयूष.

* तस्माद अग्निं सदा रक्षेत निदानानि च वर्जयेत्।

xxii) दन्ती हरितकी: 25 अभया, 25 पल (दन्तीमूल और चित्रकमूल),

दोषप्रस्थमनामय: (प्रस्थ दोष का विरेचन), मात्रा - 1 पल,

अनुपान - निरत्यय: क्रमश्चास्या द्रवो मांसरसौदन:

12) कफज गुल्म में पथ्य: बीजकपूरक हिंग्वम्लवेतसक्षारदाडिमै:।
तक्रेण तैल सर्पिर्भ्यां व्यंजनान्युपकल्पयेत्।।

13) वात गुल्म चिकित्सा: स्नेह स्वेदबस्तिसर्पिचूर्णानि बृंहणं गुटिका:।

14) पित्त गुल्म चिकित्सा: सर्पि: सतिक्त सिध्दं क्षीरं प्रस्त्रंसनं निरुहाश्च।
रक्तस्य चावसेचनमाश्वासन संशमन योगा:।। उपनाहं सशस्त्रं

15) कफ गुल्म चिकित्सा: स्नेह: स्वेदो भेदो लंघनमुल्लेखनं विरेकश्च।

[वाग्भट: i) दाधिक घृत, ii) रसोन घृत, iii) वैश्वानर चूर्ण,

iv) हिंग्वाष्टक चूर्ण, v) हिंग्वादि चूर्ण, vi) क्षार्दूल चूर्ण,

vii) हिंगु त्रिगुण योग - हिंगु, सैंधव, एरंडतैल, रसोन स्वरस (1:3:9:27),

viii) लशुनक्षीर, निलिनी घृत, भल्लातक घृत, ix) क्षारागद.]

(सामान्य लक्षण वर्णित नहीं)

6) प्रमेहचिकित्सित

1) सामान्य हेतु: आस्यासुंख स्वप्नसुखं दधीनि ग्राम्यौदकानूपरसा: पयांसि।
नवान्नपानं गुडवैकृतं च प्रमेहहेतु: कफकृच्च सर्वम्।।

2) सम्प्राप्ति: मेदश्च मांसं च शरीरजं च क्लेद कफो बस्तिगतं प्रदूष्य।
करोति मेहान्, समुदीर्णमुष्णैस्तानेव पित्तं परिदूष्य चपि।।
क्षीणेषु दोषेष्ववकृष्य बस्तौ धातून प्रमेहाननिल: करोति।

3) साध्यासाध्यता: कफ प्रमेह - समक्रियत्वाद् - साध्य;

पित्त प्रमेह - विषमक्रियत्वात - याप्य; वात प्रमेह - महात्ययत्वाच्य - असाध्य

4) दोष दुष्य: वातपित्तकफ। विशेषत: कफ

मेदोऽस्त्रशुक्राम्बुवसालसीका मज्जा रसौज: पिशितं च दूष्या:। विशेषत: मेद

5) प्रकार:

कफ: 10	पित्त - 6	वात - 4
i) उदक (जल)	i) क्षार	i) मज्जा
ii) इक्षु	ii) काल	ii) ओज
iii) सान्द्र (घन)	iii) नील	iii) वसा
iv) सान्द्रपसाद	iv) रक्त	iv) लसीका
v) शुक्ल	v) मंजिष्ठा	(वाताच्छेषेषु धातुष्वपकर्षितेषु)
vi) शुक्र	vi) हरिद्रा	
vii) शीत (शिशिर)		
viii) सिकता (वालुकया)		
ix) शनै		
x) लाला		

6) पूर्वरुप: केशनखातिवृध्दि,करपाददाह:,शीतप्रीयत्वं,मूत्रेऽभिधावन्ति पिपीलिकाश्च, माधुर्यमास्ये.

7) प्रमेह चिकित्सा: स्थुल: प्रमेही बलवानिहैक: कृशस्तथैक: परिदुर्बलश्च।
संबृहणं तत्र कृशस्य कार्यं संशोधनं दोषबलाधिकस्य।।

बलवान प्रमेही - संशोधन के बाद संतर्पण उपचार।

8) प्रमेह में पथ्य: (विष्किर, प्रतुद, विहंग) प्राणी मांस, यवौदन, यवप्रधानस्तु भवेत् प्रमेही + मधुसम्प्रयुक्तान्.

कफज प्रमेह चिकित्सा: संशोधनोल्लेखनलंघनानि काले प्रयुक्तानि कफप्रमेहान्।

पित्तज प्रमेह चिकित्सा: पित्तप्रभवान् विरेक: सन्तर्पण: संशमनो विधिश्च।।

कफपित्त प्रमेह में कम्पिल्ल, कपित्थ.

वात प्रमेह कफ अनुबंध– कफनाशक कषाय सिध्द तैल

वात प्रमेह पित्त अनुबंध – पित्तनाशक कषाय सिध्द घृत

9) योग: i) त्रिकण्टकाद्य स्नेह, ii) फलात्रिकादि क्वाथ,
iii) लोध्रासव/मध्वासव: रसोऽर्धभागं मधुन: प्रदाय
(क्वाथ से आधे प्रमाण में मधु) ग्रहणी किलासं विविधकुष्ठम्।, मात्रा 2 पल
iv) दन्त्यासव, v) भल्लातकासव,

10) पेय द्रव: i) सारोदक, ii) कुशोदक, iii) मधूदक, iv) त्रिफलारस, v) सीधु, vi) माध्वीक.

11) संतर्पणजन्य प्रमेह में:
भृष्ट यव, शुष्क सत्तु मुद्गामलक से श्वित्र, मूत्रकृच्छ्र, कच्छु नही होता

12) प्रमेह व्यवच्छेद: हारिद्रवर्णं रुधिरं मुत्रं विना प्रमेह स्य हि पूर्वरुपै। रक्तस्य पित्तस्य.

13) प्रमेह मुत्र: मधुरं,सपिच्छं,मधुपमं - मूत्र में दो विचार -
a) क्षीणेषु दोषेष्वनिलात्मक: वात प्रमेह,
b) प्रमेह पित्त सन्तर्पणाव्दा कफसम्भव: कफ प्रमेह.

14)साध्यासाध्यत्व: साध्य - कफ प्रमेह, पित्त प्रमेह– मेदो यदि न प्रदुष्टम,
याप्य - पित्तकृतास्तु (Without पूर्वरुप भी याप्य),
असाध्य – a) सपूर्वरुपा: कफपित्तमेहा:, b) वातकृताश्च,
c) जात: प्रमेही व मधूमेही d) बीजदोषज.

15) चिकित्सा प्रमेह पिडका: ता: शल्यविध्दि कुशलैश्चिकित्स्या: शस्त्रेण संशोधन रोपणैश्च।..संदर्भ च.चि.6/57
(मेही व्दिविध: त्रिविधं भिषग्जितम् अतिक्षपणदोष:)
[वाग्भट - धान्वन्तर घृत, लोध्रासव, अयस कृत
शिलाजतु प्रयोग: शिलाजित 1 तोला प्रयोग, नवायस लोह + मधु सेवन
प्रमेह रोग के सर्वप्रथम रोगी - गणेश and also हाथी को हुआ था।]

7) कुष्ठचिकित्सित

1) हेतु: शीताम्बुसेवन, विरोधीन्यन्नपानानि, दिवास्वाप, पाप कर्म, घर्मश्रम भयार्तानां, अजीर्णाध्यशनां, पंचकर्मापचार, व्यवाय चाप्यर्जीर्ण.

2) सम्प्राप्ति: वातादयस्त्रयो दुष्टास्त्वग्रक्त मांसमम्बु च।
दूषयन्ति स कुष्ठानां सप्तको द्रव्यसंग्रह:।।
न च एकदोषजं किंचित् कुष्ठ समुपलभ्यते।
(च.नि.कुष्ठ – असंख्य)

3) पूर्वरुप: स्पर्शाज्ञत्वम्, वैवर्ण्यम्:
चरक महाकुष्ठ: i) कापाल, ii) औदुम्बर, iii) मण्डल, iv) ऋष्यजिव्ह, v) पुण्डरीक, vi) सिध्म, vii) काकणक,
(चरक काकणक - असाध्य, सुश्रुत - पुण्डलिक व काकण असाध्य)
सुश्रुत महाकुष्ठ: कपाल,उदुम्बर, अरुण, ऋष्यजिव्ह, पुण्डरीक, दद्रु, काकण
चरक क्षुद्रकुष्ठ:i) एककुष्ठ, ii)चर्मकुष्ठ iii)किटिभ, iv) विपादिका, v) अलसक, vi) दद्रु, vii) चर्मदल, viii) पामा, ix) विस्फोट, x) शतारु, xi) विचर्चिका.
सुश्रुत क्षुद्रकुष्ठ: i) एककुष्ठ, ii) स्थूलारूष्क, iii) किटिभ, iv) महाकुष्ठ,v) विसर्प, vi) परिसर्प, vii) चर्मदल, viii) पामा, ix) सिध्म x)रकसा, xi) विचर्चिका.
काश्यप – 18 (9 साध्य, 9 असाध्य):

4) लक्षण: i) कपाल: विषमं, तोदबहुलं,
ii) औदुम्बर: लोमपिंजरम्, उदुम्बरफलाभासं, iii) मण्डल: कृच्छ्रमन्योन्यसंसक्तं,
iv) ऋष्यजिव्ह: कर्कशं रक्तपर्यन्तमन्त: श्यावं, v) पुण्डरीक: सश्वेत रक्तपर्यन्तं,
vi) सिध्म: अलाबु पुष्पवर्णं, चोरसि, रजो घृष्टं,
vii) काकणक: नैव सिध्यति, तीव्रवेदनम, काकणन्तिकावर्णम् अपाकं.
क्षुद्रकुष्ठ: i) एककुष्ठ: महावास्तु, मत्स्यशकलोपमम्, अस्वेदन,
ii) चर्मकुष्ठ: हस्तिचर्मवत्, iii) किटिभ: किणखरस्पर्श, विपादिका – पाणिपादस्फुटनं, तीव्रवेदनम, iv) चर्मदल: स्पर्शासहमुच्यते, v) पामा: पिडका,
vi) शतारु: बहुव्रणम्, vii) विचर्चिका: बहुस्त्रावा, स कण्डू पिडका श्यावा.
सर्वकुष्ठ त्रिदोषज:

5) दोषस्य यस्य पश्येत् कुष्ठेषु विशेषलिंगमुद्रिक्तम्।
लक्षण से दोष और हेतु ज्ञान: ज्ञायन्ते, तैर्हेतुर्हेतुस्तांश्च प्रकाशयति।
दोषज लक्षण: पित्त क्लेदस्तथाऽङ्.गपतनं च पित्तकृतम्।
कफ स्थैर्यं चोत्सेधगौरव,जन्तु:

6) साध्यासाध्यत्व: साध्य - वातकफ प्रबलं,एकदोषज;
कृच्छ्र - वातपित्त,पित्तकफ; असाध्य - सर्वैर्लिंगैर्युक्तं.

7) चिकित्सा: वातोत्तरेषु सर्पि वमनं श्लेष्मोत्तरेषु कुष्ठेषु।
पित्तोतारेषु मोक्षे रक्तस्य विरेचनं चाग्रे।।
प्रच्छन्नमल्पे कुष्ठे महतिच शस्तं सिराव्यधनम्।
i) शोधन: (15 -15) दिन में वमन, (1-1) मास में विरेचन,
(3 - 3) दिन - अवपीड नस्य (चक्रपाणि) व शुध्दमूर्धिन,
(6 - 6) मास से - रक्तमोक्षण..... चक्रपाणि (अ.ह.चि.19) (सु.चि.9)
ii) त्रिवृत, दन्ती, त्रिफला विरेचनार्थ, iii) वात प्रधान कुष्ठ में अनुवासन,
iv) अल्प कुष्ठ में - स्थिरकठिनमण्डलानां में स्वेदन (प्रस्तर, नाडी),
(कूर्च, श्रृंग, अलाबु, प्रच्छान, जलौका)
v) क्षार प्रयोग: स्पर्शेन्द्रियनाशनानि - विस्त्राव्य क्षार,
vi) अगद प्रयोग: पाषाण कठिन परुषे सुप्ते स्थिरे पुराणे
vii) प्रदेह प्रयोग: स्तब्ध, सुप्त (कूर्च से)

8) पित्त कुष्ठ में: तिक्त घृत, रक्तपित्तनुतकर्म
कुष्ठशामक: दार्वी, रसांजन, गोमूत्र, अभया, 1 मास सव्योष गुडतैला
(गुडतैल–कुष्ठकारक,त्रिकटु के साथ कुष्ठहर)

9) योग: i) मुस्तादिचूर्ण, ii) त्रिफलादि चूर्ण - सुप्तिनुत्परमं,
ii) मध्वासव - कुष्ठकिलासे,क्षौद्रपस्थं, iv)कनक बिन्द्वरिष्ट: स्वर्ण वत् कांति,
a) खदिरकषाय द्रोणं, b) मास में महाकुष्ठ:,पक्ष में अल्प क्षुद्रकुष्ठ नष्ट होता है।
c) प्रात: प्रात: पिबेत्, d) कनकवर्ण:

10) 17 प्रकार के कुष्ठनाशक: i) लेलितक + जात्या + मधु परम्
ii) स्वर्णमाक्षिक + गोमूत्र,
कुष्ठ में शिलाजतु, रस, योगराज (पाण्डु) कृतमालक्वाथ- कफकृत कुष्ठ,

11) पथ्य: तिक्त, पूराणधान्य, मुद्ग, पटोल.
संस्कारात पथ्य– भल्लातक, निंबपत्र, त्रिफला.

12) अपथ्य: गुरु, अम्ल, दधी, मत्स्य, गुड, तिल.
योग: v) सिध्दार्थाक स्नान, vi) श्वेतकरवीराद्य तैल,
vii) श्वेतकरवीर पल्लवाद्य तैल,
viii) कनकक्षीरी तैल: कनकक्षीरी, शैला स्थाप्यं कटुकालाबुतत्सिध्दं मण्डलान्याशु,
ix) सिध्म लेप: a) सप्ताहं (1 सप्ताह तक लगाने से कुष्ठ नष्ट),b) मासान्नवं किलासं (1 मास में), c) स्नानं मुक्तवा विशुध्दतनो: (स्नान न करायें)

13) कुष्ठ में घृत प्रयोग: (खदिर, निम्ब, पटोल) घृत, दार्वीघृतुत्तम.
योग: x) तिक्तषट्पलक घृत:, xi) महातिक्तक घृत: योगशतैरप्यजितान

महाविकारान महातिक्तम्। (100 से अधिक व्याधी ठीक करने वाला),
xii) महाखदिर घृत - पान, अभ्यंग, xiii) मन: शिलादि लेप- काकोदुम्बरिका,
14) गलत्कुष्ठ: में गोमूत्र पान विशिष्यते. कुष्ठहर खदिर:।
खदिरोदकसंयुक्तं खदिरोदकपानम्अग्र्यं वा।
15) श्वित्रे स्त्रंसनमग्र्यं मलपूरस इष्यते सगुड:।
16) कुष्ठ में विरेचन पश्चात: 3 दिन तक सूर्यपादसन्तापम्
17) श्वित्र: (त्रिदोषज)
a) भेद:3 दारुण, अरुण, किलास, b) आश्रय: 3 - i) रक्ताश्रित - रक्तवर्ण,
ii) मांस श्रित - ताम्रवर्ण, iii) मेदाश्रित - श्वेतवर्ण, (उत्तरोत्तर गुरू)
c) असाध्य श्वित्र: रक्तलोमवत्, वर्षगणोत्पन्नं (दूषिविष भी),
d) साध्य श्वित्र: i) अरक्तलोम, ii) तनु, iii) मध्यावकाशे, चोच्छूनं,
किलास: हेतु - i) अतथ्य (असत्य), ii) पापक्रिया, iii) विरोधि अन्न
[वाग्भट: i) रक्तमोक्षण – ललाट आणि हस्तपाद प्रदेश,
ii) (वज्रक, महावज्रक) घृत, iii) आवर्तक घृत: तिक्तघृत, महातिक्त घृत,
iv)मणिभद्र योग: 1मास सेवन (महर्षि भिक्षु की इसके सेवन से प्राणरक्षा हुई।),
v) सप्तसमा गुटिका – रसायन आणि वृष्य,
vi) लेलितक वसा - गायत्री असनोदक के साथ सेवन,
vii) रसायन प्रयोग - तुवरकास्थि, भल्लातक, बाकुची, चित्रक, शिलाजीत,
viii) धार्मिक उपचार – शिवारीवसुख, तारा, भास्कर की अराधना,
ix) योग: a) मांससर्पि, एलादि सर्पिगुड,
b) यवानीषाडव, तालीसादि चूर्ण, c) स्त्रोतोशोधन के लिए पुराणमद्य.]

8) राजयक्ष्माचिकित्सित

1) उत्पत्ति: क्रोधो नि:श्वासरुपेण मूर्तिमान् नि:सृतो मुखात्।(प्रजापति के)
(चन्द्रमस: के शरीर मे प्रवेश) ओजसा वर्धितोऽश्विभ्यां शुध्दं सत्त्वमवाप च।
2) यक्ष्मा पर्याय: क्रोधो, यक्ष्मा, ज्वरो, रोग, दु:ख.
3) 4 कारण: अयथाबलारम्भं, वेगसन्धारणं, क्षयम्, विषमाशन,
वेगसन्धारणजन्य यक्ष्मा लक्षण: प्रतिश्याय, ज्वर, अंसमर्द, मुहु: छर्दि.
4) पूर्वरुप: बीभत्सदर्शनम्,बलमांसपरिक्षय:, प्रतिश्यायोग स्त्रीमद्यमांस प्रीयता,
केशानां नखानां चाभिवर्धनम्, स्वप्ने केशास्थिराशीनां भस्मनश्चाधिरोहणम्,
5) संप्राप्ती: स्त्रोतसा च यथास्वेन धातू: पूष्यति धातुत:।
स्त्रोतसां सन्निरोधाच्य रक्तादीनां च संक्षयात्।
धातूष्मणां च अपचयाद राजयक्ष्मा प्रवर्तते।। च. चि. 8/29
सर्वधातुक्षयार्तस्य बलं तस्य हि विड्बलम्।
रस: स्त्रोत: सु रुध्देषु स्वस्थानस्थो विदह्यते।
6) लक्षण: – 11 लक्षण: कासोंऽसतापो वैस्वर्यं ज्वर पार्श्वशिरोरुजा।
छर्दनं रक्तकफयो: श्वासवर्चोगदोऽरुचि:।।
6 लक्षण: कासो ज्वर पार्श्वशूलं स्वरवर्चोगदोऽरुचि। (वर्चोगद - अतिसार)
3 लक्षण: अंसपार्श्वाभितापश्च सन्ताप: करपादयो:।
ज्वर: सर्वांगश्चेति लक्षणं राजयक्ष्मण:।।
(षडरूप में -पार्श्वशूल के जगह श्वास,अतिसार के जगह शोणीतदर्शन सुश्रुत.
एकादश में सुश्रुत - श्लेम छर्दि व श्वास के जगह दाह व कण्ठोध्वंस.
वाग्भट रक्त वमन के जगह पीनस Rest Same.)
7) स्वरभेद सम्प्राप्ति (राजयक्ष्मा): स्वर भेद 6 चरक
वातात् पित्तात् कफाद रक्तात् कासवेगात सपीनसात्।
पीनस स्वरभेद में कफ वात लक्षणे:
(सु. व. वा. पिनस 6 भेद - वात, पित्त, कफ, त्रिदोष, मेदोज व क्षयज)
8) अरुचि: वात - कषाय, पित्त - तिक्त, कफ - मधुर मुखरसै
9) चिकित्सा: दोषाधिकानां वमनं शस्यते सविरेचनम्।
स्नेहस्वेदापपन्नानां सस्वेदं यन्न कर्शनम्।।
शोषि मुंचति गात्राणि पुरीषस्त्रंसनादपि।
अबलापेक्षिणी मात्रां किं पुनर्यो विरिच्यते।।
शिर: पार्श्वंअंसशूलघ्नं, कासश्वास में भोजन पश्चात घृत प्रयोग.
10) योग: i) सितोपलादि चूर्ण: सिता, तुगाक्षिरी, पिप्पली, एला, दालचिनी,
यथापूर्व दुनी मात्रा मे. अनुपान – मधुसर्पि, अधिकार – राजयक्ष्मा, आर्द्रकास
ii) वासाघृत, शतावरीघृत: परम हितम,
iii) जीवन्तीआदि घृत: एकादशविध राजयक्ष्मा नष्ट करने में श्रेष्ठ
iv) ज्वर, दाह में, ज्वरवत् चिकित्सा,
v) यक्ष्मा में बृंहणार्थ मांसप्रयोग: शुष्यतांक्षीणमांसानां कल्पितानि विधानवित्।
vi)दघात् मांसादमांसानि बृंहणानि विशेषत:।।(मांस खाने वाले प्राणी का मांस)
vii) मांसेनोपचितांगानां मांसं मांसकरं परम्।
viii) यवानीषाडव: 100 पिपली, 200 मरिच
ix) तालीशादि चूर्ण: a) तालीसपत्रं मरिच नागर पिप्पली शुभा। यथोत्तर
भागवृध्दी b) त्वक्, एला – अर्धभाग c) पिप्पली के 8 (गुणा) सक्कर,
11) पथ्य: अजा, पयस, जांगल रसा, यूषार्थे, चणका, मुद्गा.
12) जुगुप्सीत: (छद्मनाम से मांसप्रयोग)
13) पेय: माध्वीक, वारुणीमण्ड नित्य मद्यं तैक्ष्णयौष्ण वैशद्य सूक्ष्मत्वात्
स्त्रोतसां मुखाम्।
14) यक्ष्मा में: क्षतक्षीणवत चिकित्सा, पथ्य.
(क्षीरषट्पल घृत)..च.चि.8/169
15) यक्ष्मा में: दैवव्यपाश्रय चिकित्सा
वेदविहिताम् इष्टिमारोग्यार्थी प्रयोजयेत्।

9) उन्मादचिकित्सित

1) निदान: विरुध्द, दुष्ट, अशुचि भोजन.
2) सम्प्राप्ति: तैरल्पसत्वस्य मला: प्रदुष्टा बुध्देर्निवासं हृदयं प्रदुष्य।
स्त्रोतांस्यधिष्ठाय मनोवहानि प्रमोहन्त्याशु नरस्य चेत:।।
3) सामान्य लक्षण:
धीविभ्रम:, सत्वपरिप्लवश्च, दृष्टिधीरता, अबध्दवाकत्वं, हृदयं च शून्यं.
4) उन्मादं पंचविधं: (5 प्रकार) i) वात लक्षण: जीर्णे बलम्
ii) पित्त लक्षण: अमर्षसरंम्भ विनग्नभावा:, प्रच्छाय शीतान्नजलभिलाषा
iii) कफ लक्षण: बलं भुंक्ते, (भोजन पश्चात बलवान) नखादिशौकल्यं,
iv) सन्निपातिक लक्षण: विरुध्दभैषज्यविधिर्विवर्ज्य:
v) भूतोन्माद लक्षण: उन्मादकालोऽनियतश्च, अमर्त्यवाग, विक्रमवीर्यचेष्टो,
ज्ञानादि विज्ञान. भूतोन्माद – (च.सु. 8, वा. 18)
देवोन्माद गुरू अभिशाप, पितृग्रहज, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, ब्रम्हराक्षस, पिशाच
(सुश्रुत - गुरु, ब्रह्मराक्षसादि के जगह देवशत्रु, भुजंग)
ग्रहावेश - चरक : 8 प्रकार
5) चिकित्सा: मन्त्रभैषज्यविधि i) वात चिकित्सा: स्नेहपान मृदु शोधन,
तीक्ष्ण (नस्य, अंजन) ii) आगन्तुज चिकित्सा: सर्पिपान.
6) योग: i) हिंग्वाद्य घृत: गोमूत्रसिध्द, उन्मादनाशनम् ii) कल्याणक घृत:
(अष्टविंशति घृत) अलक्ष्मी पाप रक्षोघ्नं सर्वग्रहविनाशनम्। श्रेष्ठं पुंसवनेषु,
iii) महाकल्याणक: 21 द्रव्य, बृंहणीय विशेषेण सन्निपातहरं परम्।
iv) महापैशाचिक घृत: बुध्दिस्मृतिकरं चैव बालानां चांगवर्धनम्।
v) लशुनाद्य घृत: a) (100 लशुन, 300 अभया)
b) विषमज्वर, अपस्मार, उन्माद शीघ्र नष्ट
c) पान, अभ्यंग, नावन,अपरं घृत: सर्वान् उन्मादांश्च अपकर्षति,
vi) सिध्दार्थक घृत: सगोमूत्र, पीनस,
vii) पुराण घृत: त्रिदोषघ्न, उग्रगन्ध, कटु तिक्त रस.
viii) प्रपुराण घृत: लाक्षारसनिभं, सर्वग्रहापहम्, मेध्यं विरेचनेष्वग्र्यं,
ix) 100 वर्ष पुराना घृत: न असाध्यं नाम तस्यासि यत् दृष्टं स्पृष्टम् अथाघ्रात
तध्दि सर्वग्रहापहम्। अपस्मार, ग्रहोन्माद में विशेषत:

[i) पुराणघृत–1 वर्ष...(भा. प्र.),10 वर्ष .(च.; यो.र.),15 वर्ष ...(अरुणदत्त)
ii) प्रपुराणघृत – (10-100) वर्ष...(चरक)
iii) कौम्भसर्पि –10वर्ष..(चक्रदत्त),(11-100)वर्ष.(सुश्रुत),100 वर्ष.(यो.र.)
iv) महासर्पि – ↑ 100 वर्ष ....(सुश्रुत)]
पित्त उन्माद में; तिक्तक घृत, जीवनीय घृत, मिश्रक स्नेह.
उन्माद, विषमज्वर, अपस्मार में; शंखकेशान्तसन्धौ प्रदेश में सिरावेध।
7) उन्माद में: i) आश्वासन, ii) प्रतिव्दन्दिता – मनोविकार,(काम–क्रोध, हर्ष – शोक) iii) रुद्रस्य प्रमथा नाम (बलि वैश्वदेव करने से)
8) अपस्मार – उन्माद में हेतु, दुष्य साम्य, इसलिए चिकित्सा समान.
9) विगतउन्माद लक्षण: प्रसादश्चेन्द्रियार्थानां बुध्दयात्ममनसां तथा।
धातूनां प्रकृतिस्थत्वं विगतोन्मादलक्षणम्।।
[वाग्भट: i) हिंग्वाद्य घृत, ii) ब्राह्मी घृत –1 पल से 4 पल तक,
iii) उन्माद सुदनीवर्ति, iv)(कल्याणक, महाकल्याणक, महापैशाचिक) घृत]

10) अपस्मारचिकित्सित

1) हेतु: अहित अशूचि भोजनात
2)लक्षण: तम:प्रवेशं, बीभत्सचेष्टं, धीसत्त्वसम्प्लव-त्, स्मृतेरपगमं प्राहुरपस्मारं.
3) सम्प्राप्ति: धमनीभि: श्रिता दोषा हृदयं पीडयन्ति।
सम्पीडयमानो व्यथते मूढो भ्रान्तेन चेतसा ।।
4) पूर्वरुप: जिव्हाऽक्षिभ्रू:, हस्तौ पादौ च विक्षिपन,
दोषवेगे च विगते सुप्तवत् प्रतिबुध्दयते।
5) प्रकार: चत्वार अपस्मार (प्रकार - 4) - वात, पित्त, कफ, सन्निपातज.
6) अपस्मार वेग: वातादी दोष प्रकूपित्त होनेपर
(12-12) दिन,(15-15) दिन,(1-1) मास पर
7) चिकित्सा: तैरावृतानां हृत् स्त्रोतोमनसां सम्प्रबोधनम्।
तीक्ष्णैरादा भिषक् कुर्यात् कर्मभिर्वमनादिभि:।।
वातीकं बस्तिभूयिष्ठै, पैतं प्रायो विरेचनैः।
श्लैष्मिकं वमन प्रायैः अपस्मारमुपचारेत्।।
ब्राह्मी घृत - फलश्रुती - अपस्मार पापनुत
सैन्धवादीघृत– अपस्मार हृदग्रहाभयनाशनम्।
8) योग: i) पंचगव्यघृत ii) महापंचगव्य घृत - व्दे पंचमूल, प्रतिदिन प्रयोग
iii) पलंकषादि तैल - अपस्मारविनाशनम,
iv) त्रिफलादि तैल व प्रधमन नस्य - अपस्मारविनाशनम.
उबटन द्रव्य: जलौका शकृत, बस्तरोम, खरास्थि, हस्तिनख, गोपुच्छलोम.
नस्य: कपिलानां गवां मूत्रं नावनं परमं हितम्।
(कपिला नामक गाय का मूत्र नस्य में परम् हितकर।)
श्व, श्रृगाल, विडाल, सिंह इनका मुत्र भी नस्य के लिए.
अंजन: पुष्य नक्षत्र में शून का पित्त निकालकर अंजनार्थ प्रयोग।
9) अतत्वाभिनिवेश: महागदं सौम्य,
हेतु: मलिनाहार शलिस्य वेगान्नप्राप्तनिगृह्णत:। (मद, मूर्च्छा, सन्यास),
सम्प्राप्ति: हृदयं समुपाश्रित्य मनोबुध्दिवहा: सिरा:।
लक्षण: विषमां कुरुते बुध्दिं नित्यानित्ये हिताहिते।
अतत्वाभिनिवेश तमाहुराप्ता महागदम।।
चिकित्सा: स्नेहस्वेदोपपन्नं तं संशोध्य वमनादिभि:।
कृतसंसर्जनं मेध्यैः अन्नपानैरुपाचरेत्।।
योग: पंचगव्य घृत (ब्राह्मीस्वरस/शंखपुष्पी)/मेध्य रसायन (रसायनाध्याय)
धैर्य बँढाए, प्रयुज्जाततैललशुनं.
10) दुश्चिकित्स्य और चिरकारी अपस्मार में रसायन प्रयोग.
11)अपस्मार रोगी को:
जल, अग्नि, द्रुम (वृक्ष), शैलेभ (पहाड) पर जाने से निषेध.
[वाग्भट: i) (पंचगव्य, महापंचगव्य, ब्राम्ही) घृत, ii) कुष्माण्ड घृत]

11) क्षतक्षीणचिकित्सित

(उदार कीर्ति, ब्रह्मर्षि) आत्रेय
1) निदान: धनूषाऽऽयस्यतोऽत्यर्थ स्त्रीषु चातिप्रसक्तस्य रुक्षाल्प प्रमिताशिन:।
2) लक्षण: क्रमाद् वीर्यं बलं वर्णो रुचिरग्निश्च हीयते:।
कफ– श्याव: सुदुर्गन्ध: पीतो, विग्रथितो बहु:,
श्लेष्मा सरक्त: सम्प्रवर्तते, शुकौजसो क्षयात्.
3) पूर्वरुप: अव्यक्तं लक्षणम् तस्य पूर्वरुपमिति स्मृतम्। च. चि. 11/12
(अव्यक्त लक्षणं तेषां पूर्वरूपमति स्मृतम् ।। च. चि. 28)
4) विशेष लक्षण: उरोरुक् शोणितच्छर्दि: कासो वैशेषिक: क्षते।
क्षीणे सरक्तमूत्रत्वं पार्श्वपृष्ठकटिग्रह।
5) साध्यासाध्यत्व: परिसंवत्सरो याप्य:
6) चिकित्सा: उरो मत्वा क्षतं लाक्षां पयसा मधुसंयुताम्।
सद्य एव पिबेज्जीर्णे पयसादद्यात् सशर्करम्।। अग्निमांद्य–लाक्षामद्यासह
लाक्षासर्पि – दीप्तानल: पिबेत्
(दक्षाण्ड, चटकाण्डरस, छाग जांगलम), क्षतक्षीण के लिए, रक्तनिर्गमन में।
7) योग:i)एलादि गुटिका: एला,तेजपत्र,दालचिनी ½ - ½ कर्ष,पिप्पली–अर्धपल,सिता,मधुक,खर्जुर, मृव्दिका -1पल, गुटीका -1 कर्ष मात्रा की 1 -1 गुटीकाa)मात्रा-अक्षमात्रां, दिनेदिने: b)गुटिका तर्पणी वृष्या रक्तपित्त च नाशयेत्।
ii) अमृतप्राश घृत: a) छागमांसरसं पय: b) पुत्रदम् C) नित्यसेवन
iii) श्वदंष्ट्रादि घृत: श्वदंष्ट्रा, पृथक्पर्णी, स्थिरा, स्वगुप्ता, मृव्दीका.
उर:क्षत में मूढवात: अजामेद: सुराभृष्टं ससैन्धवम्।
पुष्टिकर योग: क्रव्याद मांसनिर्यूहम,
iv) प्रथम सर्पिगुड: घृतं तु पित्तेऽभ्यधिके लिह्याद, वातेऽधिके पिबेत्
v)व्दितीय सर्पिगुड: भूर्जपत्रेण वेष्टयेत्,vi) तृतीय सर्पिगुड:
vii) चतुर्थ सर्पिगुड: दत्त्वा बिल्वसमान् गुडान् सद्यो रसादीनां वृध्दया पुष्टिं स विन्दति. viii) पंचम सर्पिमोदक

सर्पिगुड	प्र.घटक	सर्पि	शर्करा	गुड	मात्रा
1	धात्रिफल	1प्रस्थ	1प्रस्थ	0	-
2	बला	1आढक	32पल	0	1 पल
3	तुगाक्षीरी		1प्रस्थ 50पल	0	-
4	नवामलक	1आढक	1तुला	0	-
5	(सर्पिमोदक)	1प्रस्थ	30पल	0	-

बृंहण योग – पंचसार
ix) षाडव: षोडशिका धान्याद् व्दे व्दे (16 पल– शर्करा)
x) नागबला कल्प:1/2 कर्ष शुरूवात से 1 पल तक सेवन, उसी क्रम से कम करें, 1 मास तक दुग्ध के साथ सेवन करें।
मण्डूकपर्णी, सोंठ, मुलहठी – नागबला कल्प समान उपयोग.
8)पथ्यापथ्य:यक्ष्मा, कास, रक्तपित्त समान. क्षतक्षीण की उपेक्षा से राजयक्षा

12) श्वयथु चिकित्सा

1) निजशोथ कारण: अचेष्टा, मर्मोपघात, विषम प्रसूति:
2) आगन्तुज शोथ हेतु: काष्ठाश्मशस्त्राग्निविषायस
3) निजशोथ भेद: 3 - सर्वार्धगात्रावयवाश्रित
4)विशिष्ट सम्प्राप्ती: जहाँ वायु स्थित उस स्थान में शोथ(गंगाधर-विपरीत),
5) पूर्वरुप: उष्मा स्याद् दवथु: सिराणामायाम इत्येव च पूर्वरुपम्।
6) सामान्य लक्षण: सिरातनुत्व, लोमहर्ष
वात लक्षण: प्रोन्नमति प्रपीडितो, प्रसुप्ति,हर्ष,दिवाबली.
कफ लक्षण: निपीडितो न चोन्नमेद, रात्रिबली.
गोमूत्र हरितकी: कफ शोथ.
7) चिकित्सा सूत्र: निदान दोष ऋतु के विपरीत
चिकित्सा– बलदोषकाल के अनुसार

8) अन्य चिकित्सा: i) आमज - लंघन पाचन, ii) उल्बण - विशोधनै,
iii) स्नेहभवं - विरुक्षणं, iv) विबध्दविट् - निरुहणं,
v) पित्तानिलजे - घृतं सतिक्तकं, vi) मूर्च्छारतिदाह - पयश्च तर्पिते, विशोधनीये समूत्रे, vii) कफोत्थितं - क्षारकटूष्ण.
9) अपथ्य: नवान्न, शुष्कशाक, गुड
10) दुग्धाहार: 1 मास अथवा 1 सप्ताह (गोमूत्र + माहिषक्षीर)
विड्वातसंग में चिकित्सा भोजन के पूर्व दूध अथवा मांसरस, मद्य, अरिष्ट.
11) योग: i) गण्डीराद्यरिष्ट: खुले आसमान के नीचे (वैहायसे स्थापितमादशाहात्) कृष्णादि चूर्ण – अयोरज
ii) अष्टशत अरिष्ट: कूल 800 पल द्रव्य (जीर्णगुड तुला).
ii) पुनर्नवाद्यरिष्ट: षड्जठराणि (अपवाद छिद्रोदर, जलोदर),मांसररसान्नभोजी अर्श,पाण्डु मे वर्णित अरिष्ट शोथोपयोगी iv) क्षारगुटिका: कोल मात्रा,
v) गुडार्द्रक प्रयोग: मात्रा –(अर्धपलाभिवृध्दया आणि 1 मास तक 5 पल),
vi ;शिलाजतु त्रिफला क्वाथ सह,
vii) कंसहरितकी: व्दिपंचमूल, हरितकी-100
1 अभया खाकर 2 कर्ष अवलेह चाटकर कोष्णजल पान,
(2 अभया खाकर 2 कर्ष अवलेह – अगस्त्यहरितकी),
(चक्रपाणी पर्याय – दशमुलहरितकी)
viii) चित्रकघृत: तक्रेण सिध्दं श्वयथुघ्नमग्न्यम्
कल्याणकं वाऽपि सपंचगव्य तिक्तं महद् वा तिक्तं।, ix) शैलेयादि तैल प्रदेह:
12) स्थानिक शोथ वर्णन:
i) शालूक: अन्तर्गले घुर्घरिकान्वितं च शालूकम् उच्छ्वासनिरोधकारि।,
ii) विडालिका: गल सन्धौ, चिबुके गले वलयीकृता सा,
iii) तालुविद्रधि –त्रिदेष,
iv) जिव्होपरिष्टादुपजिव्हिका कफाद अधस्ताद् अधिजिव्हिका
v) उपकुश: दन्तमांसेषु तु रक्तपित्तात पाको भवेत उपकुश:,
vi) दन्तविद्रधि: कफरक्त,
vii) गलगण्ड: गलस्य पार्श्वे गलगण्ड, बहुभिश्च गण्डमाला:,
viii) ग्रन्थि शोथ: स्फुरण: सिराभि: मासभव त्वनर्ति: मेदोभव स्निग्धतमश्चल. चिकित्सा - दग्ध व्रण वत्,असाध्य - कुक्ष्युदर,गले,स्थुल: खर,
ix)अर्बुद चिकित्सा: ग्रन्थि वत्. प्रदेश हेत्वाकृति दोषदूष्ये: समान
x) अलजी: परिस्मृताग्रा,xi) मांसास्रदूषी:चर्मनखान्तरे (सु – चिप्प/कुनख),
xii) विदारिका: कफवात ज्वर, स्थान: कक्षावंक्षण. चिकित्सा अपक्व - विस्त्रावण पक्व –व्रण वत, xiii) कक्षा: वातपित्त: यज्ञोपवीत प्रतिमा:,
xiv) रोमान्तिका: पित्तकफ में चिकित्सा– विसर्प वत् कुष्ठ वत्,
xv) मसूरिका: पित्तकफ, xvi) ब्रध्नरोग: प्रकार - 3 (मूत्र, मेद, कफज) लक्षण - मूत्रेण पूर्ण: कठिन वृध्दी भेद चरक - 3 (सुश्रुत - 7)
xvii) भगन्दर: गुदस्य पार्श्वे पिडका चिकित्सा - क्षारसूत्र परंतु सर्वप्रथम विरेचन, (सुश्रुत 5, वाग्भट - 8) xviii) श्लीपद: दोष: मांसकफस्र चि. सर्षपलेप (नित्यानंद रस, शाखोटक घनवटि),(चरक -1, सुश्रुत–3)
xix) जालकगर्दभ: पित्त प्रधान वात कफचि. धात्री प्रयोग: शिशिरान प्रदेहान (शीतल प्रदेह), xx) आगन्तुक शोथ चिकित्सा: वीसर्प, वातरक्त, विषघ्न.

13) उदर चिकित्सा

1) उदररोगी: शुष्कवक्त्रा कृशैर्गात्रिराध्मातोदरकुक्षय:प्रनष्टाग्निबलाहारा:
2) सम्प्राप्ति:रोगसंघा पृथग्विधा:
(जिसके कारण अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होने लगे),
मन्देऽग्नौ मलिनैभुक्तै अपाकाद् दोषसंचय:।
प्राणाग्न्यपान: सन्दूष्य त्वक्मांसान्तरमागम्य,
3) निदान: अशुचिभोजन, पाप कर्म, मन्दाग्नि
4) पूर्वरुप: भोजन के विदग्ध, पचने, अजीर्ण होने का ज्ञान न होना,पाद शोफ, राजीजन्म वलीनाश,अल्प, लघु भोजन से भी जठर (पेट) तन जाना
5) उत्पत्ति: रुध्दवा स्वेदाम्बुवाहीनि दोषा: स्त्रोतांसि संचिता।
प्राणाग्न्यपानान्सन्दूष्य जनयन्त्युदरं नृणाम्।।
6) प्रकार: 8 पृथकदोषै: समस्तैश्च प्लीहबध्दक्षतोदकै:।
7) सामान्य लक्षण: कुक्षेराध्मानमाटोप: शोफ: पादकरस्य च।
मन्दोऽग्नि: श्लक्ष्णगण्डत्वं कार्श्य चोदरलक्षणम्।। (सुश्रुत – दुर्बलाग्नि)

उदर	नखनेत्रमूत्रत्वक्मल	उदरपर रेखा(राजी)	आदी
वातोदर	श्यावारुण	तनूसित	आध्मातदृति
पित्तोदर	हरितहारिद्र	नीलपीतहरिद्र हरितताम्र	क्षिप्रपाक
कफोदर	शुक्ल	शुक्ल	स्तिमित, स्थिर, कठिन

उदर	हेतु	लक्षण
त्रीदोषज्	मन्दविष स्त्रीदैत रजोरोमविण्मूत्रादि	नानावर्णराजीसिरासन्ततं
प्लीहोदर	---	कठिण अष्ठिल पत्थर वत् कच्छपसंस्थान
बध्दोदर	पक्ष्मबालउदावर्त, अर्श होने से	नाभ्युपरि (नाभि के उपर उभार)गोपूच्छवत
छिद्रोदर	शर्करातृणकाष्ठादि	अधोनाभि
जलोदर	अत्यम्बुपान, स्नेहपीत मन्दाग्नि,अतिकृश	(नानावर्णराजिसिरासन्तत) उदकपूर्णदृति संक्षोभसस्पर्श. शीघ्र चि.

8) उदर साध्यासाध्यत्व: वातपित्तकफात् प्लीहन: सन्निपात् तथोदकात्।
परं परं कृच्छ्रतरम् उदरं भिषगादिशेत।।
असाध्य (मृत्यु): पक्षाद् बध्दगुदोदर(15दिन),सर्व जातोदक, छिद्रान्त्र उदर
9) असाध्य उदर लक्षण:
शूनाक्षं (पलकों में शोथ),कुटिलोपस्थ (लिंग टेडी होना)
10) चिकित्सा:
वात उदर: स्नेह,स्वेद,स्नेह विरेचन,वेष्टयेद् वाससोदरम् (वस्त्र बन्धन)
पित्त उदर: बलवान में विरेचन, दुर्बल में अनुवासन, क्षीरबस्ति, शोधन
कफ उदर: शोधन(वमन निषेध),गोमूत्र,अरिष्ट,चूर्ण अयस्कृति: क्षारतैल पान,
प्लीहोदर:वाम बाहु सिरावेध, दहन–वाम मणिबंधपर, षट् पलघृत (क्षीरषट्पलघृत); क्षार अरिष्ट गुडामभयां (गुडहरितकी),
वात कफ प्रधान प्लीहोदर मे अग्निकर्म.
रोहितक घृत –रोहितक्यादि योग.
बध्दोदर : तीक्ष्ण विरेचन, उदावर्तहर कर्म,
छिद्रोदर : स्वेद से व्यतिरीक्त श्लेष्म उदर समान चिकीत्सा;
जातंजातं जलं स्त्राव्यमेवं,
जलौदर चि: जल विकार नष्ट करनेवाले उपचार.
11) उदर में नित्य विरेचन: दोषाति मात्रोपचयात् स्त्रोतोमार्ग निरोधनात्।
सम्भवत्युदरं तस्मा नित्यमेव विरेचयेत्।।
दुर्बल वातोदर में: शमन: सर्पि,यूष, मांसरस, ओदन, बस्ति, अभ्यंग, अनुवासन,
सभी उदररोग – त्रिदोषज
12) पथ्य : रक्तशालीन यवान् मुद्गान जांगलांश्च मृगाव्दिजान।
पयो मूत्र आसव अरिष्टान मधु सीधु, मूत्र का उदर पर सेचन,पान.
अपथ्य:तिल,तोयपान (जलपान),
13) योग: i) पटोलमूलाद्य चूर्ण: उदरेषु प्रपूजितम् (श्रेष्ठ)
ii) नारायण चूर्ण: सातला - 4 भाग, a) तक्रेणोदरिभि, b) गुल्मि: बदराम्बु,
c) आनध्दवाते सुरया, d) वातरोगे प्रसन्नया, e) अर्शसे: दाडिमाम्बु,
f) परिकर्ते वृक्षाम्ल, g) अजीर्ण – उष्णजल.
iii)हपुषाद्य चूर्ण: हपुषा, iv)नीलिन्यादि चूर्ण:उदर(नीलिन्यादि घृत वात गुल्म)

14) उदररोग में तक्र प्रयोग:

वातोदर - लवणान्वितम् (वातोदरी पिबेत् तक्रं पिप्पली लवणान्वितम्)

पित्तोदर - शर्करा (शर्करामधुकोपेतं स्वादु पित्तोदरी पिबेत)

कफोदर - यवानीसैधवाजाजीव्योषयुक्तं कफोदरी

त्रिदोषज् - त्र्यूषणक्षारलवणैर्युक्तं तु निचयोदरी

प्लीहा: मधु, तैल, वचा, शुण्ठी, शताव्हा, कुष्ठ, सैंधव.

बध्द: बध्दोदरी तु हपुषा यवान्य अजाजी सैंधव

क्षत छिद्रोदर: पिप्पली क्षौद्र संयुतम जलोदर: सव्योषं तूदकोदरी

15) उदररोग में क्षीर: अन्नत्याग कर;

i) 1 सप्ताह माहिंष मूत्र, क्षीर (सप्ताहं माहिषं),

ii) 1 मास उष्ट्र क्षीर (मासमौष्ट्रं), iii) 3 मास छाग क्षीर (पयश्छागं त्रीन्मासान),

iv) 1000 हरितकी +क्षीर, 1हरितकी सेStart(शिलाजतु, गुग्गुल Same way)

16) दूष्योदर चिकीत्सा:दन्तीद्रवन्ती फलजं तैलम*क्षारवटी: कोल प्रमाण अक्रियायां ध्रुवो मृत्यु: क्रियायां संशयो भवेत।

(चरक - उदर, सुश्रूत -अश्मरी,वाग्भट - अश्मरी,

अ. सं.:उदर, अश्मरी, मूढगर्भ, हारित - जलोदर)

17) उदर में विषप्रयोग: पान,भोजन

18) शल्य - चिकित्सा: बध्दोदर वामकुक्षि नाभ्यध चतुरंगुल (कुक्षि के Lt. नाभी के नीचे 4 अंगुलं),क्षतो (छिद्र) उदर-पिप्पलीका प्रयोग,जलोदर: वामपार्श्वे नाभ्यध, नाडीयंत्र से जल निकालें, वेष्टयेत्

19) जलोदर में पथ्य: i) अ(स्नेहलवण)पेया, ii) षण्मासान क्षीर (6 मास क्षीर) iii) त्रीन्मासान् पयसा पेयां (3 मास क्षीर पेया)

20) उदररोग में दुग्ध सर्वोत्तम,

i) दोषानुबन्धरक्षार्थ, ii) बलस्थैर्यार्थ iii) सर्वधातुक्षय में.

14) अर्श चिकित्सा

1) अर्श प्रकार -

i) सहज, मातापित्रोरापचार:, पूर्वकृत कर्म,

ii) उत्तरकालज (हारित अर्श भेद 6)

अर्श - अधिमांसविकार,दूष्य - मेदो,मांस, त्वक

2) अर्श स्थान: गुदस्यार्धपंचांगुलावकाशे (4 1/2 अंगुल),त्रिभागान्तरास्तिस्रो गुदवलय:(3 गुदवली)आचार्यअर्श स्थान-शिश्न,अपत्यपथ,गल,तालु,मुख,त्वक्

3) सहज अर्श लक्षण: शर्कराश्मरी से ग्रस्त, पुरीष:कूणपगन्ध्याम पुरीष नाभिबस्तिवंक्षणोद्देश परिकर्तिका वत पीडा, उद्गार: तिक्ताम्लोद्गार अग्नि: सुदुर्बल:, सुदुर्बलाग्नि, अल्पशुक्र, कर्णरोगी, शूनपाणिपादवदनाक्षिकूट: समानव्यानप्राणोदानान् पित्तश्लेष्माणौ च प्रकोपयति,पंच वायव: पित्तश्लेष्माणौ

4) अर्श निदान: बस्तिकर्म विभ्रम,यानोष्ट्र यानाद, उत्कटविषमकठिनासन सेवन, बस्तिनेत्र असम्यक प्रणिधानात, अतिव्यवायाद

5) सम्प्राप्ति: प्रकुपितो वायुरपानस्तं, मलमुपचितमधोगमासाद्य गुदवलिष्वाधत्ते, ततस्तास्वर्शासि प्रादुर्भवन्ति

6) लक्षण: वात अर्श - तीक्ष्णाग्राणि, स्वरोपघातकराणि, वक्राणि, पित्त अर्श - विस्रगन्धि, कफ अर्श - प्रवाहिका,परिकर्तिकाहल्लासनिष्ठीविका, प्रमेह कराणि, दीर्घकालानुबन्धीनि, क्लैब्यकराणि,

7) उपद्रव: बध्दगुदोदर, पूर्वरुप : ग्रहणीदोष पाण्ड्वर्तेराशंका चोदरस्य च।

8) साध्यासाध्यता: असाध्य-शोथ, हस्त पादे मुखे नाभ्यां गुदे वृषणयोस्तथा सहज, त्रिदोषज, अन्तर वलि; कृच्छ्रसाध्य - व्दन्व्दज, व्दि वलि, संवत्सर अर्श कृच्छ्रतम- पंचात्मा मारुत: पित्तं कफो गुदवलित्रयम्

9) चिकित्सा सिध्दांत : शस्त्र, क्षार, दाह, अग्नि

अर्श चिकित्सा म:a) प्रथम स्वेदन-स्तब्यानी स्वेदयेत पूर्व, अभ्यज्य कुष्ठतैलेन, स्वेदयेत पोट्टलीकृतै:, b) रक्तमोक्षण, c) गुडहरितकी - हरीतकी तक्र, d) तक्रारिष्ट - अम्लकटु रस, e) वातकफ अर्श में तक्र परं, f) प्रक्षालन - पत्रभंगोदकै:

10) तक्र प्रयोग अवधि: (7,10,15,30) दिन प्रयोग,

त्रिविध तक्र: आहार विहार: कफ में -रुक्ष शीत,वात - में - स्निग्ध शीत

तक्र	दोष	अग्नी	बल
रुक्ष तक्र	कफ	मंद	हिन
अर्धोद्धृत तक्र	पित्त	मंदतर	मध्यम
अनुद्धृत तक्र	वात	मंदतम	उत्तम

11) तक्र विशेष गुण: वातश्लेष्मविकाराणाम् शतं चापि निवर्तते।

नास्ति तक्रात्परं किंचिदौषधं कफवातजे।।

12) योग: i) अभयारिष्ट: हरितकी -1/2 प्रस्थ, आमलक -1प्रस्थ

ii) फलारिष्ट: हरितकी -1 प्रस्थ; आमलक -1 प्रस्थ, कृष्णात्रेय भाषित

iii) कनकारिष्ट नये आमलक-तुला-प्रमुख घटक

(शरीर सुवर्ण समान कांतिमान)

13) अर्श (रक्तार्श) में तिक्तरस :

अग्निसंदीपनार्थं, रक्तसंग्रहणाय,दोषाणां पाचनार्थं

iv) कुटजादिरसक्रिया: a) कुटजत्वक -100 पल, b) महेंद्रजल-400 पल (वर्षा जल) c) चावल + बकरी दुग्ध,v) पिच्छावस्ति: जल- 3 प्रस्थ, क्षीर-1प्रस्थ, प्रवाहिका गुदभ्रंश रक्तस्त्राव ज्वरापह:, vi) ह्रीबेरादि घृत, vii) सुनिषण्णक चांगेरी घृत: अन्नपान के साथ अकेले इसका प्रयोग, निरत्ययम्- इसके प्रयोग से No उपद्रव,viii) अरिष्टा: सशर्करा (शर्करारिष्ट),

14) रक्तार्श : शूल युक्त अर्श में : घृत दाडिमसिध्द, निदिग्धिका.....

15) निदानार्थकर रोग-3 अर्श, अतिसार, ग्रहणीदोष-अग्निबल,

16) अर्श में: व्यत्यासात चिकित्सा (शीतोष्ण) (मधुराम्ल)

15) ग्रहणीदोष चिकित्सा

1) प्राकृत अग्नि कार्य:/अग्नि महत्व:

(जठराग्नि:) आयु, बलवर्ण, स्वास्थ, उत्साह, उपचय, प्रभा, ओज, तेज, प्राण-अग्नी पे अश्रित, शोन्तौऽग्नौ म्रियते, युक्ते चिरं जीवत्यनामय:।

ओजस्तेजोऽग्न्य: प्राणाश्चोक्ता देहाग्निहेतुका:।

2) अवस्थापाक : i) मधुर - आमाशयकफ फेनभुत,

ii) अम्ल - (ग्रहणी) पित्त अच्छपित्त उत्पत्ति

iii) कटु - पक्वाशय वात मलपिण्डरुप

3) भौतिक अग्नि -5 भौमाप्याग्नेयवायव्या: पंचोष्माण:, धात्वाग्नि - 7. धातु व्दिविध - प्रसाद, किट्ट

4) रसादि धातोत्पत्ति: रसाद्रक्तं ततो मांसं ...। ... शुक्राद् गर्भ प्रसादज:।

5) संदर्भ: उपधातु उत्पत्ति: रसात्स्तन्यं ततो रक्तमसृज: कण्डरा: सिरा:।

मांसाव्दसा त्वच: षट् च मेदस: स्नायु सम्भव:।।

6) न्याय: i) क्रम परिणाम पक्ष/सर्वात्म परिणाम पक्ष/क्षीरदधिन्याय:(दृढबल): क्षीर संपूर्ण से दधि में रुपांतरीत - पूर्वधातु पूर्णरुपसे उत्तरधातु में, (न्याय अमान्य), (आहार नहीं लिया तो शरीर में केवल शुक्र धातु रहेगा)

ii) केदारकुल्या न्याय: अंश - अंश परिणमन,सुश्रुत सहिता;

समर्थन by भावप्रकाश - रक्तसंवहनार्थ

(आहार रस सबसे पहले रसधातु को मिलता है बाद में दूसरे को.)

iii) खलेकपोतन्याय: जिस तरह कबुतर दाना लेकर अपने - अपने मकान वापस, वैसे ही विभिन्न धातु अपना अंश आहार रस से स्विकारते (उत्तरोत्तर धातु में ज्यादा समय लगता है) है।

एककालधातु पोषण न्याय (अरुणदत्त): एक ही समय सर्वधातु का पोषण

7) अग्नि	दोष	कार्य
विषम	वात	धातुवैषम्य, विषम पाचन
तीक्ष्ण	पित्त	धातुशोषण
सम	समदोष	धातुसाम्य, सम पाचन
मन्द/दुर्बल	कफ	विदाह

8) धातुपरिवर्तन: मल: रस - कफ, रक्त - पित्त, मांस - खमल, मेद - स्वेद, अस्थि- केशलोमस्थनो किट्ट, मज्जा - स्नेहोऽक्षिविट्

धातु i) रस - रसाग्निपाक + रंजकपित्त - रक्त

ii) रक्त - रक्ताग्निपाक + वायु, जल, घनता - मांस

iii) मांस - मांसपाक + तेज, जल, स्निग्धगुण - मेद

iv) मेद - मेदपाक + पृथ्वी, तेज, वायु, खरत्व अस्थि

v) अस्थि - अस्थि + वायु व्दारा छिद्र - मज्जा

vi) मज्जा - मज्जा + स्नेह भाग मज्जा - शुक्र

प्रसाद और किट्ट भाग उपस्नेहन से एक दुसरे को धारण करते है।

9) वृष्यादीनां प्रभावस्तु पुष्णाति बलमाशु हि।

(वृष्यादि द्रव्यों का कार्य प्रभाव से)

10) धातुपरिवर्तन: चरक - (6/7)दिन और चक्रवत (निरंतर), (सु.-1 मास) व्यान-रस धातु को सब तरफ ले जाता है।

11) जाठराग्नि प्रधानता : अन्नस्य पक्ता सर्वेषां पक्तृणामधिपो मत:।
तन्मूलास्ते हि तद् वृध्दिक्षय वृध्दिक्षयात्मका:।।

12) ग्रहणी हेतु: लौल्य,अभोजनाद अजीर्णाद् अतिभोजनाद विषमाशनात्।
असात्म्यगुरु शीतातिरुक्षसन्दुष्टभोजनात्।।
विरेक वमन स्नेह विभ्रमाद् व्याधिकर्षणात्।
देशकालर्तुवैषम्याद् वेगानां विधारणात्।।

13) ग्रहणी सम्प्राप्ती: दुष्टयाग्नि: स दुष्टोऽन्नं न तत पचति लघ्वपि।
अपच्मानं शुक्तत्वं यात्यन्नं विषरुपताम्।।

14) अजीर्ण लक्षण: अम्लपित्त-पित्त अजीर्ण; (प्रकार: सु.-4, आम, विदग्ध, विष्टब्ध, रसशेष, माधवकर - 6 (4+ दिनपाकी, प्राकृत))

15) ग्रहणी लक्षण:

अतिसृष्ट विबध्दं वा द्रवं - मल, शूनपादकर:,लोहामगन्धि - मुख, तिक्ताम्लोद्गार.

16) ग्रहणी पूर्वरुप: पूर्वरुपं तु तस्येदं तृष्णाऽऽलस्यं बलक्षय:।
विदाहोऽन्नस्य पाकश्च चिरात्कायस्य गौरवम।।

17) ग्रहणी परिचय: अग्निंधिष्ठानमन्नस्य ग्रहणाद ग्रहणी मता:।
नाभेरुपरि अपक्वं धारयति अन्नं,

18) ग्रहणीरोग - 4: वात, पित्त, कफ, सान्निपातिक,

19) ग्रहणीदोष - 3: मंद, विषम, तिक्ष्ण (समवर्ज प्रचक्ष्महे)

20) ग्रहणी लक्षण: वात - शुक्तपाकं, तिमिरं, कर्णयो: स्वन:,विसूचिका, गृध्दी सर्वरसानां (सभी रस सेवन इच्छा), जीर्णे जीर्यति चाघ्मानं, भुक्ते स्वास्थमुपैति (भोजन पश्चात स्वस्थता अनुभव), वातगुल्म हृदरोग प्लीहाशंकी च मानव:, पित्त - अम्लोद्गार, कफ - स्त्रीष्वहर्षणम,अकृशस्यापि दौर्बल्यम

(मा.नि. i) संग्रहणी - दिन में प्रकोप, रात्री में शांती; दुचिकित्स्य.

ii) घटीयन्त्रग्रहणी - असाध्य)

21) ग्रहणीउपचार: लीन पक्वाशयस्थ आम में - स्त्राव्यं दीपनै:
शरीरानुगते - सामे रसे लंघनपाचनम्।

वातज ग्रहणी चिकित्सा - घृतपान, निरुह, विरेचन, अनुवासन:

योग i) दशमुलाद्य घृत- 7 लवण, 2 क्षार,

ii) त्र्यूषणाद्य घृत - वातज गुल्म, कास, iii) पंचमूलाद्य घृत, चुर्ण,

iv) चित्रकाद्य गुटिका - भावना मातुलुंग, दाडिम रस v) मरिच्याद्य चुर्णम्,

तक्र: तक्रं तु ग्रहणीदोषे दीपनग्राहिलाघवात्।
मधुरपाकि, कषायोष्णविकासित्वात् स्वाव्दम्लसान्द्रत्वात।।

पित्तज् ग्रहणी चिकित्सा-वमन, विरेचन

योग i) चंदनाद्य घृत, ii) नागरराद्य चूर्ण: कृष्णात्रेय पूजित (क्षौद्र + तण्डुलोदक)

iii) भूनिम्बाद्य चूर्ण, iv) किराततिक्तादि चूर्ण: कामलां सन्निपातं मुखरोगश्च नाशयेत

कफज् ग्रहणी चिकित्सा- योग i) मधूकासव: -1 द्रोण मधुक पुष्प,

ii) दुरालभादि क्षार: ग्रहणीबलवर्धनम iii) मुलासव iv) पिण्डासव-रसायन, स्वस्थ व्यक्ती भी एक मास सेवन करे, द्रव नही,पिण्ड स्वरुप है।

v) मध्वरिष्ट vi) क्षारघृत-विड,काल लवण, सर्जीक्षार,यवकक्षार vii)क्षार गुटिका: कृष्णात्रेयेण, त्रिलवण viii) चतुर्थक्षार - पलाशक्षार

ix) पंचम त्रिफलादि क्षार - मुष्कक व यव क्षार a) विधी-अन्तर्धूम,b) मात्रा - पाणितल c) औषध पचने पश्चात -मधुरमांसरस /दूध + पुराना चावल.

त्रिदोषज् ग्रहणी चिकित्सा: पंचकर्म, व्यत्यासात चिकित्सा

22) चिकित्सा सूत्र: स्नेहनं स्वेदन शुध्दि: लंघनं दीपनं च यत्।

स्नेह (घृत) सर्वोत्तम अग्निदीपन, कठिन मल रहने पर - (घृत + लवण)

23) मन्दाग्नि में कारणानुसार उपचार :

रुक्षता - जन्य मन्दाग्नि में -सर्पितैल दीपन औषधि;

अतिस्नेह -जन्य मन्दाग्नि -चूर्ण अरिष्ट आसव क्षार;

गुदलेप मल जन्य मन्दाग्नि - तैल सुरा;

उदावर्त-जन्य मन्दाग्नि - निरुह स्नेहबस्त्य;

दोषवृध्दि - जन्य मन्दाग्नि - शोधन.व्याधिमुक्त-जन्य मन्दाग्नि-सर्पि (घृत);

उपवास - जन्य मन्दाग्नि - यवागु घृत,

24) अत्याग्नि (भस्मक .... वा) : कफक्षीण, पित्त वात कुपीत

भुक्तेऽन्ने लभते शान्ति - जीर्णमन्ने प्रताम्यति

चिकित्सा अत्यग्नि: i) मुहु:मुहु अजीर्णेऽपि भोज्यानास्योपहारयेत (पहले का आहार पचने पूर्व आहार देते रहें) ii) विशेष रुप से मत्स्य मांस

iii) भेड मांस, स्निग्ध, पैष्टिक, गुडवैकृत, सिरावेध iv) भोजन पश्चात दिवास्वाप

v) मधुच्छिष्टसर्पि - शीताम्बु vi) 3 स्नेह (no तैल)

25) समशन-पथ्यापथ्य एकत्र भुक्तं,

विषमाशन-बहुवाऽल्पं,अप्राप्त, अतीतकाले,

अध्यशन- भुक्तं पूर्वान्नशेषे तु पुन:

(वाग्भट: विषमाशन अकाले बहु चाल्प वा भुक्तं।)

[वाग्भट: ग्रहणीमाश्रितं दोषमजीर्णवदुपाचरेत्।

अतीसारोक्तविधिना तस्यामं च विपाचयेत्।। (वा.चि.10)]

16) पाण्डुरोगचिकित्सित

1) पाण्डुरोग भेद : चरक वाग्भट मा. नि.-5,

वात, पित्त, कफ, सान्निपातिक, मृदभक्षणजन्य,

सुश्रुत - 4 (पानकी, लाघरक, अलस) ये 3 पर्याय माने हैं, हारित - 8 (कामला, कुंभकामला, हलीमक) Extra

2) सम्प्राप्ती: सोऽल्परक्तो ऽल्पमेदस्को नि:सार: शिथिलेंद्रिय:।
प्रदुष्य कफवात असृक्त्वकमांसानिकरोति तत।
पाण्डुहरिद्रहरितान वर्णान बहुविधांस्त्वचि।।

समुदीर्ण यदा पित्तं हृदये समवस्थितम्। (साधक पित्त:)

विशेष सम्प्राप्ती दुष्य - त्वक मांस रक्त

3) पूर्वरुप: हृदयस्पन्दनं, रौक्ष्यं, स्वेदाभाव:, श्रमस्तथा।

4) हेतु: निष्पावमाषपिण्याकतिलतैल, चिन्ताभयक्रोधशोक, मृदभक्षण पाण्डु - कषाया - वात; पित्तमुषरा - पित्त; मधुरा - कफ,

पाण्डुरोग असाध्य लक्षण - कालप्रकर्षात शूनो, पीत दिखता है, श्वेत - शरीर वर्ण

5) सामान्य लक्षण : कर्णक्ष्वेडीहतानल: (अग्निनाश) पिडितोन मथिनैरिव, शूनाक्षिकूट हरित:, हत प्रभ:, शीर्णलोमा (रोम गिरना), शिशिरव्देषी: व्याधीप्रभाव: (शिशिरप्रिती- रक्तक्षय में)

6) मृद्भक्षण पाण्डु: शूनगण्डाक्षिकूटभ्रू:, अतिसारयेत्, शून (नाभि: मेहन:) रक्त + कफ मल, क्रिमीकोष्ठो,

7) कामलारोग सम्प्राप्ती: पाण्डुरोगी तु योऽत्यर्थं पित्तलानि निषेवते।
तस्य पित्तम असृक्मांसं दग्धवा रोगाय कल्पते।।

लक्षण: हरिद्रनेत्र, रक्तपीत शकृन्मूत्रो, भेकवर्णो हतेन्द्रिय:

कुम्भकामला: कालान्तरात खरीभूता कृच्छ्रा स्यात् कुम्भकामला।

कृष्णपीतशकृन्मूत्रो - असाध्य लक्षण:,

8) पाण्डु कामला चिकित्सा: तत्र पाण्ड्वामयी स्निग्धस्तीक्ष्णैरुर्ध्वानुलोमिकै:।
संशोध्यो मृदुभिस्तिक्तै:, कामली तु विरेचन: ।।

9) स्नेहनार्थं घृत: पंचगव्यं, महातिक्तं, कल्याणकम.

10) पाण्डुरोग चिकित्सा: वातिके स्नेहभूयिष्ठं, पैत्तिके तिक्तशीतलम्।
श्लैष्मिके कटुतिक्तोष्णं, विमिश्रं सन्निपातिके।।

11) मृद्भक्षणजन्य पाण्डु चिकित्सा: तीक्ष्णशोधन, घृतपान.

12) शाखाश्रित कामला चिकित्सा: तिलपिष्टनिभं यस्तु वर्च: सृजति कामली।
कफ हर चिकित्सा पित्त के लिए,लक्षण: हारिद्रनेत्रत्वक् श्वेतवर्चो: तदा नरा:।

13) हलीमक: दोष: वात,पित्त,पाडुरोगी का वर्ण हरित श्याव,पीतक: स्त्रीष्वाहर्षो.
चिकित्सा: गुडूची स्वरस - महिष दूग्ध + घृत; त्रिवृत्त क्षीरबस्ति,
यापना: द्राक्षालेह अरिष्ट उपयोग

14) योग: i) दाडिमाद्य घृत: मूढवाते दु:ख प्रसविनीना वन्ध्यानां,
ii) कटूकाद्य घृत, iii) पथ्याघृतं: पथ्याशतरसे (100 पक्वीर्य हरितकी) (50 का कल्क स्वरुप), iv) दन्तीघृत: प्लीहापाण्डवर्ति शोफजित, v) द्राक्षाघृत
vi) हरिद्राघृत: कामलाहरं उत्तमम, त्र्यूषणं बिल्वपत्रं पिबेन्ना कामलापहम्।,
पक्षं (15 दिन)–महिष/गो (मूत्र+क्षीर), सप्ताह (7 दिन)–गोमूत्र + त्रिफला,
vii) नवायसचूर्ण: 10 औषध (त्रिफला, त्रिकटू, त्रिमद + लोह भस्म),
अनुपान–मधुसर्पि: कृष्णात्रेय,
viii) योगराज: शिलाजीत, माक्षिक (स्वर्ण,रजत), लौह, मात्रा: उदुम्बर,
वर्ज: कुलत्थानि, काकमाची, कपोतकम, रसायनमिदं श्रेष्ठ सर्वरोगहरं शिवम.
ix) मण्डुरवटक: मात्रा: उदुम्बर, तक्र, प्राणदा: पाण्डुरोगिणाम्,
x) शिलाजतुवटक: (अ.सं.- वज्रवटक)
xi) पुनर्नवामण्डुर: a) 20 द्रव्य, 20 पल, b) 40 पल -मण्डुर, c) 2 आढक - गोमूत्र, d) कोल - वटि, e) तक्र.
xii) व्योषाद्य घृत: मृद्भक्षण पांडु.

17) हिक्का–श्वास चिकित्सा:

1) अधिष्ठान: चरक - पित्तस्थानमुद्भव: (i.e. आमाशय), आमाशय (चक्रपाणि) दोष - कफवात.

कामं प्राणहरा रोगा बहवो न तु ते तथा।
यथा श्वासश्च हिक्का च प्राणनाशु निकृन्तत:।।

कफ, वात, पित्तस्थानसमुद्भवौ, परमर्दुजौ: आशीविष by मिथ्योपचार.

2) पूर्वरुप: हिक्का - कण्ठोरसोर्गुरुत्वं वदनस्य कषायता।
हिक्कानां पूर्वरुपाणि कुक्षेराटोप एव च।।
श्वास - आनाह: पार्श्वशूलं च पीडनं हृदयस्य च।
प्राणस्य च विलोमत्वं श्वासानां पूर्वलक्षणम्।।

3) विशेष सम्प्राप्ती: हिक्का –प्राणोदकान्नवाहीनि स्त्रोतांसि सकफोऽनिल:।
हिक्का: करोति संरुध्य तासां लिंगं पृथक् श्रृणु।।
श्वास - यदा स्त्रोतांसि संरुध्य मारुत: कफपूर्वक:।
विष्वग्रजति संरुध्दस्तदा श्वासान्करोति स:।।
प्राणहरा, वर्जाघोरास्ते हि आशुकारिण:

हिक्का भेद - चरक - 5, सुश्रुत - 5 (व्यपेता की जगह यमला वर्णन)

4) साम्य हिक्काश्वास : कारणस्थानमूल,

5) हिक्काश्वास सम्प्राप्ति: मारुत: प्राणवाहीनि स्त्रोतांस्याविश्य कुप्याति।,
उर: स्थ: कफमुध्द्य हिक्काश्वासान करोति स:।।

6) हिक्का: श्वास चिकित्सा : हिक्का श्वासार्दितं स्निग्धैरादौ स्वेदैरुपाचरेत।
आक्तं लवणतैलेन नाडी प्रस्तर संकरे:।।

7) वमन: विरेचन प्रयोग: (कास, स्वरभंग मे वमन),
कासिने छर्दनं दद्याद स्वरभंगे च बुध्दिमान्।,
वातश्लेष्म हरैर्युक्त तमके तु विरेचनम।। संदर्भ :

8) मानसिक उपचार : शीताम्बुसेक: सहसा त्रासो विस्मापनं भयम्।
क्रोधहर्षप्रियोद्वेगा हिक्काप्रच्यावना मता: ।।

9) यत् किंचित् कफवातघ्नंउष्णं वातानुलोमनम। भेषजं पानमन्नं वा तध्दितं श्वासहिक्किने।।

10) वातकृव्दा कफहरं कफकृव्दाऽनिलापहम्।
कार्यं नैकान्तिकं ताभ्यां प्राय: श्रेयोऽनिलापहम्।। वात नाशक चिकित्सा सर्वोत्तम.

महाहिक्का	गंभीरा	व्यपेता	क्षुद्रहिक्का	अन्नजा
उच्चैर्घोषवती	गंभीर अनुनाद	आहारपरिणामन्ते	क्षुद्रवात से उत्पन्न	उरु: स्त्रोत: समाविश्य
सतत हिक्कां	उद्गम (नाभे	विप्लुताक्ष	भुक्तमात्रेच मार्दवम	पीते भुक्ते च शमं
ऐकव्दित्रि गुणा (वेग)	पक्वाशयाद)	उदगम (जत्रुमूलादसन्तता)	स्थान हृदयं क्लोम	(खाने पीने से शांत)
महामूला, महावेगा	प्रनष्टबलचेतस:		कंठच तालुक	अति भक्तोद्भव (वा)
महाशब्दा, महाबला			साध्या प्रकीर्तिता	
सद्य: प्राणहरा (बहुच्युती, सर्वगात्राकम्पनी सु.)	प्राणन्तिकी	प्राणोपरोधिनी		
असाध्य	असाध्य	असाध्य	मृव्दी (साध्य)	साध्य

महाश्वास	उर्ध्व	छिन्न	तमक	क्षुद्र
वात	वात	वातकफ	कफ	वात
उच्चै: श्वसिति संरुद्य	दीर्घ श्वासिति	न वा श्वसिति	प्राणप्रपीडकं	आयासोदभव:
मत्तर्षभ इवानिशम्	यस्तूर्ध्व		न चापि लभते निद्रां शयान: श्वासपीडित:)	
प्रनष्ट ज्ञानविज्ञान	अध:श्वास निरुध्यते		आसीनो लभते सौख्यमुष्णं अभिनन्दति	
विभ्रान्तलोचन	विभ्रान्ताक्ष	विप्लुताक्ष	उच्छ्रितांक्षो	
बध्दमूत्रवर्च विशीर्णवाक		रक्तैकलोचन:	श्लेष्मलैश्च विवर्धते, प्रतमक : ज्वर,मूर्च्छा + तम्,	
दुराद्विज्ञायते क्षिप्रमेव विपद्यते			सन्तमक: तमसा, वर्धतेऽत्यर्थं शीतैश्चाशु प्रशाम्यति	
असाध्य	असाध्य	असाध्य	याप्य	साध्य

11) बृंहण और कर्षण चिकित्सा: सर्वेषां बृंहणे हि अल्प: शक्यश्च प्रायशो भवेत्। नात्यर्थ शमनेऽपायो भृशोऽशक्यश्च कर्शने।।

12) अस्वेद्य: गर्भिणी: पित्त, विकार, क्षीणधातुबला, रुक्षा;
अस्वेद्य को मृदुस्वेदन– उत्कारीका उपनाह से.

13) नवज्वर, आमदोष में रुक्षस्वेद, लंघनं, उल्लेखन लवणाम्बु,

14) हिक्काश्वास में नस्य – लशुन, पलाण्डु, गृंजन, चंदन, नारिक्षीर.

15) खरादि शकृद्श्च प्रयोग,

16) मुक्तादि चूर्ण: मात्रा – पाणितल, मधुसर्पि,

अंजनात् तिमिरं काचं नीलिकां पुष्पकं तम:।
पिल्लं कण्डू अभिष्यंदमर्म चैव प्रणाशयेत।।

17) शमन और बृंहण: तस्मात शुध्दान अशुध्दांश्च शमनैर्बृंहणैरपि।
हिक्काश्वासार्दित अंजन तून प्रायश: समुपाचरेत।।

18) कास चिकित्सा

1) भेद: 5 (वात, पित्त, कफ, क्षतज, क्षयज), हारित 8 प्रकार:
कासा वर्धमाना क्षयप्रदा: (इनकी उपेक्षा से बढकर शरीर का नाश।)

2) पूर्वरुप: पूर्वरुपं भवेत्तेषां शूकपूर्णगलास्यता।
कण्ठे कण्डुश्च भोज्यानाम् अवरोधश्च जायते।।

3) सम्प्राप्ति: अध:प्रतिहतो वायुरुर्ध्वस्त्रोत: समाश्रिता। कसनात कास उच्यते।।

4) लक्षण: वातज कास: अल्पप्रमिताशन,लक्षण,स्वरभेद,भोजन पेय पश्चात शांत
पित्तज कास: उरोधूमायंन प्रततं कासम, ज्योतिषीवं पश्याति.
कफज कास: कासम अरुक् वक्ष:
क्षतज कास: अतिव्यवाय,पूर्व कासते शुष्कम,ष्ठीवेत् सशोणितम,पारावत इव कूजन.
क्षयज कास: अतिव्यवाय, वेग निग्रह,असात्म्यभोजन, ष्ठीवेत् रक्त, दूर्गधहरितं, पूयोपमं कफम, श्रीमद्दर्शनलोचन:, पाणिपादतल श्लक्ष्णै:, सततासूयको घृणी

5)साध्यासाध्यत्व: साध्य – क्षयज: (बलवान); याप्य - क्षतज, जराकास; असाध्य - क्षयज (क्षीणधातु)

6) चिकित्सा: वात कास: स्नेहोपचारेत, सर्पि, बस्ति, कंटकारी घृत, त्र्युषणाद्य घृत, रास्ना घृत, **पित्त कास:** वमन सर्पिषा,
कफ कास: बलवान में वमन,
कफ कास + पित्त अनुबंध - पित्त की चिकित्सा;
वात कास + कफ अनुबंध - कफ कि चिकित्सा;
वातकफ कास + पित्त अनुबंध - पित्त की चिकित्सा; कंटकारी घृत,
क्षतज कास: कासमात्ययिकं, त्वरया जयेत्, पित्त कास समानं,
क्षयज कास: दुर्बलस्य विवर्जयेत,बलवान - प्रत्याख्येय, बृंहणं आदौ,अग्निश्च दीपनम्, मृदु स्नेहं बहुदोषाय, व्यत्यासात, सन्निपात में दारूण.
अगस्त्यहरितकी: -100 हरितकी, पंचकास क्षयं श्वासं हिक्कांच विषमज्वरम.
मात्रा -2 हरितकी, (1 हरितकी + 2 कर्ष अवलेह... कंस हरितकी)
अगस्त्यविहितं श्रेष्ठं रसायनम्

7) कास में भेषज प्रयोग: (संग्रह)

भोज्यं पानानि सर्पीषि लेहाश्च सह पानकै:।
क्षीरं सर्पिगुडा धूमा: कासभैषज्यसंग्रह।।

[Extra वाग्भट: कुष्माण्ड रसायन - अश्विनिकुमार वर्णित,
वशिष्ट हरितकी - 1100 हरीतकी, विजया लेह,
वर्धमान नागबला रसायन – 1 पल से Start; then 1/2 कर्ष increase.]

19) अतीसार चिकित्सा

पर्याय उदरामय: भेद - चरक, वाग्भट - 6, सु. और मा. नि. भयज के जगह आमज वर्णन.

1) हेतु: i) गो मांस (गौरवाद औष्ण्याद् असात्म्य अशस्त),
g oA (X CnhV MVg nt→ अतिसार, ii) मूत्र स्वेद का पूरीषाशय में जाना,

2)लक्षण:वातज आम अतिसार-विज्जलमामं, विप्लुत,अवसादि,आमगंधि, पुरीष; पित्तज अतिसार - अल्पाल्प सशब्दं, मुहुर्मुहु: विग्रथितम्;कफज अतिसार - सप्रवाहिंक,कृतेऽप्यकृत;सन्निपातज अतिसार-धातु दूषित होता है, हरिद्र हरित नील,संज्ञ: मंजिष्ठ मांसधावन, सन्निकाशं, गुदपाक, वराह मेद सदृश मल; असाध्य अतिसार लक्षण - यत्कृत्खण्डोपमं, मेदोमांसोदक सन्निकाशं,.दधिघृत मज्जतैल वसा क्षीर वेसवार सदृश मल;
कृच्छ्रसाध्य अतिसार लक्षण - विहतमुखरसश्च,(मुख से स्वादनुभव न हो), भयज अतिसार-आश्वासन (विस्मापन), शोकज अतिसार - हर्षण (विस्मारण),

3) आमावस्था: लंघन पाचन.
आमातिसार में संग्रहण न दें: न तु संग्रहणं देयं पूर्वम् आमातिसारिणे।

4) स्तंभन से: दण्डालसक, आध्मान, ग्रहण्य, अर्शो, शोथं, पाण्ड्वामय, प्लीहाकुष्ठगुल्मोदर, ज्वरान्.

5)हरीतकी प्रयोग:अतिसार में मल कठिनाई से आता हो तो हरीतकीप्रयोग

6) प्रमथ्या प्रयोग: मध्यदोषाणां दद्याद् दीपन पाचनीम्, लंघन च अल्पदोषाणां,

7) प्रमथ्या पेय जल: आम पाचनार्थं i) कफ - ह्रीबेर श्रृंगवेर,
ii) पित्त - मुस्तपर्पट, iii) वात - वचा अतिविषा.

8) योग: वातश्लेष्महरो हि एष गणो, दीपनपाचन:, खड्यूष:,(बालबिल्व) धान्ययूष: दध्न: सर: व्यंजनार्थे, मेषरक्त उपयोग, अम्लघृत अनुवासन।
i) चांगेरीघृत: गुदभ्रंशरुजा में अनुवासन, पिचु,ii) चव्यादि घृत: गुदभ्रंश

9) पित्त अतिसार: अजाक्षीर, क्षीर विरेचन के लिए,
पिच्छाबस्ति – प्रवाहिका.

10) पिच्छाबस्ति: i) क्षीर -1 प्रस्थ, शाल्मली –1 पल
ii) शाल्मले वृन्त,कृष्णमृत्तिका लेप, गोमयाग्नि.
iii) ज्वर, शोथ, गुल्म, जीर्णातिसार, ग्रहणी दोषात.

प्रयोग वातश्लेष्म विबंधे वा कफे वाऽतिस्त्रवत्यपि।
शूले प्रवाहिकायां वा पिच्छाबस्तिं प्रयोजयेत्।

11) अजादुग्ध: समधुशर्करम शितं – पान, व्यंजनार्थ, गुदप्रक्षालन,

12) कपिंजल मांसरस.

13) प्रवाहिका चिकित्सा: पिच्छाबस्ति, बिल्वतैलेन अनुवासयेत

14) सन्निपातज अतिसार चिकित्सा: वातस्यानुजयेत पित्तम पित्तस्यानुजयेत् कफम्। [(ज्वर, मदात्यय– कफ की प्रथम चिकित्सा)
(वायो: स्थानानुपूर्व्या अश्मरी (च.चि.26) सुश्रुत: ज्वर, सन्निपात अतिसार में पित्तकी प्रथम चिकित्सा, अन्य स्थान मे वात की प्रथम चिकित्सा)]
[वाग्भट: i) सर्वतिसार में लंघन श्रेष्ठ,also in वातज अतिसार,
ii) गुदभ्रंश में. a) चांगेरी घृत, b) गोफणा बंध, c) मुषिक तैल,
iii) बिंबिशी नाशक - अपराजित खल, iv) दाडिमाष्टक चूर्ण: a)वंशलोचन कर्ष, b) चतुर्जात द्रव्य - 2 कर्ष, c) दाडिम,सिता - 8 पल,
v) अतिसार मुक्ति लक्षण: a) दीप्ताग्नी लघु कोष्ठ, b) मूत्र,वायु बिना मल.]

20) छर्दि चिकित्सा

1) प्रकार: 5 - चरक - वात, पित्त, कफ, सन्निपातज, व्दिष्टार्थ.
सुश्रुत - वात, पित्त, कफ, सन्निपातज, आगन्तुज,

2) पूर्वरुप: तासां हृद् उत्क्लेश कफप्रसेकौ द्वेषौऽशने चैव हि पूर्वरुप।

3) लक्षण: वातज छर्दि: उद्गारशब्दप्रबलं, (विच्छिन्नं, कृष्ण तनुकषाय) कृच्छ्रेण अल्पं महत्ताच वेगे, चिकित्सा - घृतपान, मांसरस.
पित्तज छर्दि: हरित सतिक्तं,धूम्रं,चिकित्सा,अनुलोमन,वमन,मृद्भृष्टलोष्ट प्रभंवजल
कफज छर्दि: लोमहर्षा,ऽल्परुजं,चिकित्सा - वमन -पिण्डितक सैंधव,
सन्निपातज छर्दि: प्रमोहप्रबला,प्रसक्त,
असाध्य छर्दि: उपद्रवा, अतिप्रसक्ता, शोणितपूययुक्त, सचन्द्रिका.
व्दिष्टर्थज में चिकित्सा: षाडव रागलेह (यूषा रसा:काम्बलिका: खडाश्च मांसानि

4) सामान्य चिकित्सा:आमाशयोत्क्लेशभवा-लंघनम,कफपित्तहारि (कफपित्त - संशोधनं, वातज छर्दी - लंघन, शोधन नहीं.

5) छर्दी अतियोग में चिकित्सा: अतिप्रवृत्तसु विरेचनस्य, कर्मतियोगो

6) चिरकालीन छर्दि में:
i) सर्पिगुडा:,ii) कल्याणक घृत,iii) त्र्यूषण घृत, iv) जीवनीय घृत.
[वाग्भट: i) कृमिजन्य छर्दि - कृमिवर्ज्य, ii) छर्दि में बृहंण और स्तम्भन, चिकित्सा: वातनाशक उपचार भी करें।]

21) विसर्पचिकित्सा (परिसर्प)

विविधं सर्पणात विसर्प: (सर्वत: परिसर्पणात् परिसर्प:),
(दोषदुष्य कुष्ठ के समान और लक्षण ज्वर समान –विसर्प)
1) भेद: 7 (सप्तधातुक),वात,पित्त, कफ, आग्नेय - वातपित्त, कर्दम - पित्तकफ घोर:, ग्रंथि - वातकफ, सन्निपातज (सुश्रुत - 5)
7 दूष्य विसर्प: रक्तं लसिका त्वक् मांसं दूष्यं दोषास्त्रयो मला:।
विसर्पणाम समुत्पत्तौ विज्ञेया: सप्त धातवा:।।
2)अधिष्ठान:3 - i) बहि:श्रित-साध्य, ii)अन्त:-कृच्छ्र, iii)उभय-दारुण (असाध्य)
3) सम्प्राप्ति: अन्त: प्रकुपिता दोषा विसर्पन्त्यन्तराश्रये।
बर्हिबहि प्रकुपिता: सर्वत्रोभयसंश्रिता:।।
4)आभ्यंतर विसर्पलक्षण: मर्मोपघातात,अग्निबलक्षयात्,विषम वेगान प्रवर्तनात,
5) अरिष्ट लक्षण विसर्प: सर्व लिंगानि, उपद्रवा, मर्मगो,
6) लक्षण: वात विसर्प: दूष्यान विसर्पति यथाबलम, चक्षुषो:आकुलत्वम, अंगागमनं, पिप्पलिकासंचार, चिकित्सा - स्नैहिक.
पित्त विसर्प:धमनी:पूरयन वै विसर्पति, चक्षुषो आकुलत्वम्,चिकित्सा-शीत क्रिया
कफ विसर्प:कृच्छ्रम् अंग विसर्पति, शीतक: शीतज्वरो,चिकित्सा-रुक्ष क्रिया
आग्नेय (वातपित्त) विसर्प: मर्मानुसारी,(क्लिष्टभूयिष्ठच आशु निद्रां भजति)
कर्दम (पित्तकफ)विसर्प: शीतज्वर:,शिरोगुरुत्वं दाह:,प्रायश्चामाशये, ऐकदेशग्राही, मेचकाभ:, कुणपगंधि, संज्ञास्मृतिहन्ता.
ग्रंथि (वातकफ) विसर्प: स्थान-उदर, कफाशये संजनयति, रक्तपित्त विकार. चिकित्सा - घृत कषायतिक्त:,उपनाह, दन्त्यादि लेप,ग्रंथि पाषाणकठिनो दाहकर्म (शरै:हेम्) ,क्षारेण,कम्पिल्लकादि तैल,वातकफघ्न, सिरावेध, जलौका, रूक्षण, लंघन, वमन, विरेचन.
7) उपद्रव: उपद्रवस्तु खलु रोगोत्तरकालजो रोगाश्रयो रोग एव स्थूलोऽणुपुर्वा, रोगात् पश्चाज्जायत इत्युपद्रवसंज्ञ:। तत्र प्रधानो व्याधि:, व्याधेर्गुणभूत: उपद्रव:, तस्य प्राय: प्रधानप्रशमे प्रशमो भवति। संदर्भ
8) सन्निपातज विसर्प अचिकित्स्य: महात्ययिक,सर्वधातु अनुसारि, आशुकारि असाध्य विरुध्दोपक्रम.
9) स्थानगत सामदोष चिकित्सा:

वात स्थानगत:	पित्त स्थानगत	कफ स्थानगत
i) विरुक्षण चिकित्सा,	i) अवसेक	ii) लंघन, तिक्तकानां
ii) स्नेहनं न हितं	i) विरेक	ii) रुक्षशांतै:

कोष्ठगत विसर्प - विरेचन:, शाखागत विसर्प - वात विसर्प - विषाणेन श्रृंग विनर्हरेत; पित्त विसर्प - जलौका; कफ विसर्प - अलाबु.
10) प्रदेह: i) त्रिभाग अंगुष्ठमात्र: (1/3 of अंगुष्ठ मोटाई),
(सु. आर्द्र माहिष चर्म उत्सेध)
ii) नातिस्निग्धो नातिरुक्षो न पिण्डो न द्रव: सम:, न च पयुर्षितं लेपं.
11) गलगण्ड: (पित्तज गलगण्ड वर्णन नहीं)
2 - कफ और वात गलगण्ड चिकित्सा ग्रंथिविसर्प वत्.
12) एकतस्तानि सर्वाणि रक्तमोक्षणमेकत:। रक्तमोक्षण -1/2 चिकित्सा.
विसर्पो त न्हासंसृष्टो रक्तपित्तेन जायते।
(जबतक रक्त पित्त दूषित नहीं होता तब तक विसर्प रोग नहीं होता)
[वाग्भट: a) अग्नि विसर्प: i) पानलेपनसेकेषु,मद्यतिक्तं परं हितम्
b) ग्रंथिविसर्प: i) रक्तपित्तघ्न चिकित्सा, i) पिण्डस्वेद,iii) उपनाहस्वेद]

22) तृष्णाचिकित्सा

विसर्प के उपद्रवस्वरुप तृष्णा होती हे।
1) हेतु:पित्त वात प्रवृध्दौ, पीतं पीतं हि जलं शोषयतस्तावतो न याति शमम्।
(बार - बार पानी पीने पर भी उसे सुखा देता है।)
घोरव्याधि और कृश व्यक्ती को उपसर्ग स्वरूप तृष्णा होती है।
2) पूर्वरुप: प्राग्रुपं मुखशोष, स्वलक्षणं सर्वदाऽम्बुकामित्वम्।
तृष्णानां सर्वासां लिंगानां लाघवमपाय:।। (चक्रपाणि–तृष्णानाश, अल्प होना।)
(वातव्याधी लक्षण: आत्मरुपं तु यद व्यक्तमपायो लघुता पुन:।।)
3) भेद: 5 - वातज, पित्तज, आमज, क्षयज, उपसर्गज,
सुश्रुत: 7 - वातज, पित्तज, कफज, क्षतज, क्षयज, आमज,अन्नज.
वाग्भट: 6 - वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज,
रसक्षयज, उपसर्गज, आमज, (7 वर्णन किये।) हारित - 8
4) लक्षण: वात तृष्णा: निद्रानाश, शुष्कवैरसमुखता, स्त्रोतोऽवरोध
चिकित्सा – क्षयज कास में वर्णित घृत व क्षीर
पित्त तृष्णा: तिक्तास्यता. आमज तृष्णा: आग्नेया,आमपित्तजनित्वात, अरुचि,आध्मान,कफप्रसेक,चिकित्सा –वमन.
क्षयज तृष्णा: दीनस्वर:,शुष्कहृदय गलतालु.
चिकित्सा: क्षयकास वत, क्षतक्षीण, शोष की औषधि
उपसर्गज तृष्णा: शोषिणी, कष्टा, उपद्रव, ज्वरमेहक्षय शोषश्वासाद.
(शरीर व मानस तृष्णा - चक्रदत्त)
5) असाध्य तृष्णा लक्षण: रोगकृशानां, वमिप्रसक्तान, घोरोपद्रवयुक्ता.
तृष्णाजनित तृष्णा चिकित्सा: तृष्णा,उदावर्त में- क्षीर,घृत,तालुशोष में घृत, क्षीर;मद्यज तृष्णा में - मद्यपान (मद्याम्बु,गुडाम्बु), मूर्च्छा में - रक्तपित्त नाशकचिकित्सा; पित्त तृष्णा में -शित जल स्नान व पान के लिए निषेध.
6)शीतजल प्रयोग:(उष्ण कर)तृट् दाह भ्रम मूर्च्छाक्लम मदात्यय यास्त्र विषपित्ते।
7) शस्तं स्वभावशीं, श्रृतशीतं सन्निपातेऽम्भ:।। सभी साध्य व्याधी.
8) उष्णजल प्रयोग: हिक्का श्वास, नवज्वर, पीनस घृतपित,पार्श्व गलरोग, कफवात कृते स्त्यान, सद्यशुध्द.
9) जल प्रयोग निषेध: अतिसार, पीनस, उदर, पाण्डु, प्लीहारोग, मेह, गुल्म, मदाग्नि, जलपान निषेध, असह्य होनेपर अल्पपान करें।
तृष्णाजनित मूर्च्छा में रक्तपित्तघ्न चिकित्सा
[वाग्भट: सितायुक्त पक्वोदुम्बर रस, पंचसाराम्बु, सारिवादि गण कषाय]

23) विषचिकित्सा

योनि - स्थावर, जांगम, उत्पत्ति -अम्बु संभवम्,
अष्टवेगं दशगुणं चतुर्विंशति उपक्रमम्।
1) ऋतु प्रभाव विष: i) वर्षा अम्बुयोनि क्लेदं गुडवद्,गतम्।
ii) शरद अगस्त्य उदय मन्दवीर्य,(घनात्यय)
2) गरविष: (गर/गदप्रदम्) संयोगजं, कालान्तरविपाकि शीघ्र मारक नहीं।
3) जांगम विष लक्षण: निद्रां तन्द्रां क्लमं दाहं सपाकं लोमहर्षणम्।
शोफं चैवतिसारं च जनयेत जांगम विषम्।।
4) स्थावर विष लक्षण: स्थावरं तु ज्वरं हिक्कां दन्तहर्ष गलग्रहम्।
फेनवम्यारुचिश्वास मूर्च्छाश्च जनयेद्विषम्।।
जंगमं स्याद् अधोभागम् उर्ध्वभागं तु मुलजम्।
स्थावर विष भेद - चरक 21, सुश्रुत - 55, भा. प्र. - 9
5) विष 10 गुण: लघु रुक्षमाशु विशदं व्यवायि तीक्ष्णं विकासि सूक्ष्मंच।
उष्णम अनिर्देश्यरसं दशगुणमुक्तं विषं तज्ज्ञै:।।
(सु. 10, वा. 11, शारंगधर - 8)
शरीर पर विष के गुणों का प्रभाव, मनुष्य में विष वेग लक्षण और चिकित्सा.
पशु (प्राणी), पक्षी में विष लक्षण (सुश्रुत कल्प नोटस् देखिए।)
6) दूषीविष लक्षण:दूषिविषं तु शोणितदुष्टयारु: किटिभकोठलिंग च।

विषमेकैकं दोषं सन्दूष्य हरत्यसूनेवम।। (चिकित्सा -सिराकर्म, पंचकर्म)

7) 24 उपक्रम: (23 विषचिकित्सा) मन्त्रारिष्टोत्कर्तन निष्पीडन चूषणाग्नि परिषेक,अवगाह रक्तमोक्षण वमन विरेकोपधानानि, हृदयावरण अंजननस्य धूम लेह औषध प्रशमनानि, प्रतिसारणं प्रतिविषं संज्ञास्थापनं लेपः, मृत्संजीवनं.

8) आचूषण: चरक - यवचूर्ण पांशु (धूल) मुख में रखकर,(सुश्रुत–वस्त्र)

9) विषजन्य उपद्रव: - 4 मद, मूर्च्छा, विषाद, हृदयद्रवा:

त्वक्मांसगतं दाहो दहति (त्वक्, मांसगत विष में दाहकर्म)

स्त्रावणं हरति रक्तात् (रक्त में पहुँचे विष में स्त्रावण)

पीतं वमनैः सद्यो (तुरंत पीया विष में तुरंत वमन करायें)

सर्पदष्ट के 7th वेग पर चिकित्सा - सर्प से कटवाना,

श्वासावरोध में काकपद, फलप्रधमन.

10) विषयुक्त अन्न परीक्षा: पात्र - विवर्ण, क्षामस्वरांश्च काकान (कौआ-मंदस्वर),विरजयेच्चकोराक्षि (चकोर अक्षि -लाल),

पेय - नीलवर्ण,छाया नहीं दिखती, लवण फेन उत्पन्न,

गंध से शिरोरुजा हृदि मूर्च्छा, स्पर्शेन पाणिशोथ.

11) विष प्रदाता की पहचान:

अत्यर्थशंकित, बहुवाक्, अल्पवाक्,विगतलक्ष्मी: प्रकृतिविकारं.

12) योग: i) मृतसंजीवन अगद: a) पुष्यनक्षत्र में द्रवसंग्रह,

b) सर्वविषघ्नो,ज्वरानिहन्ता, c) अमृत निकलने पूर्व ही: ब्रह्मा ने इसे बनाया,

ii) गंधहस्तीनामा अगद:

a) अजा मूत्र, गोश्वपित्त, b) शिर: मे व्याप्त विष शीघ्रनष्ट,

c) मूढगर्भ में योनपट लेप, d) प्रतिश्याय में ललाटलेप.

iii) महागन्धहस्तीनामा अगद:

a) 60 वनस्पति, फलश्रुति b) भावना,गोपित्त,

c) साप पकड सकता है।, d) पानाञ्जन: प्रलेप,

e) विष खा सकता है, f) ग्रह का प्रभाव नही होता,

g) लक्ष्मी का निवास, h) मम माता जया नाम,

i) सर्वभेषजोत्तमे स्वाहा. iv) क्षारागद:

13) सर्पभेद: 3 (चरक) (सुश्रुत–5)

सर्प	दर्विकार (D)	मण्डलि (M)	राजिमान (R)
	(कृष्णसर्प)	(गोनस)	
वर्णन	फणि	मडलाफन्ना	बिन्दुलेखविचित्रांग
दोष	वात प्रकोप	पित्त प्रकोप	कफ प्रकोप
विष :	रुक्ष कटु	अम्ल उष्ण	मधुर शीत
घातक अवस्था	तरुण	वृध्द	मध्य
घातक काल	वर्षा	शीत	ग्रीष्म
अवस्था वाग्भट	तरुण	मध्य	वृध्द

14) सर्पदंश लक्षण: a) गर्भिणी सर्प: i) चेहरा पीत, ii) शूनौष्ठो (सूजन), iii) ऑखे काली b) नपुंसक – मिश्रित: c) पुरुष सर्प: विपर्यय,

d) सर्पिणी: i) अधोदृष्टि, ii) स्वरहीन, iii) प्रकम्पते, e) सुतिका सर्पिणी: i) उपजिव्हा, ii) रक्तमूत्रता. f) गोधेरक सर्प: चतुष्पाद कृष्णसर्पेन तुल्य

15) दंश भेद: 5 - सर्पित, लम्बित, पीडित, वृत्त, गूढसम्पादित

16) सर्प दंत विष मात्रा: बिंदू मुदगमात्रोऽत्र (अ.सं.उ)

दक्षिण	वाम
श्याव	पित
4 बिंदु	2 बिंदु
रक्त	कृष्ण
3 बिंदु	1 बिंदु

17) शंका विष: आश्वासन, मंत्र. मन्दविषवाले – बाल, वृक्ष, त्वचा मुक्त (केचुली छोड चुके वो) स्तम्भयेत् सैकै: प्रदेहैश्चापि

18) कीट प्रकार: 2 सर्पणामेव विण्मूत्रात कीटा: स्यु: (दुषीविषा, प्राणहरा) दंश is असाध्य when दंष्ट during पक्षसंधिषु, अर्धरात्रे, मध्यान्ह, अष्टमीष,

19) उच्चिटिंग व वृश्चिक: वात प्रकोप (उष्णोपचार),

कीटा:– वातपित्त प्रकोप, कणभ – कफ प्रकोप.

20) वृश्चिक विष चिकित्सा:

वृश्चिके स्वेदमभ्यंग घृतेन लवणेन च। सेकांश्चोष्णान.

21) अलर्कविष--पागल कुत्ते के लक्षण:त्रिदोषप्रकोप,धातुविपर्यय, अधोवक्त्र (सुश्रुत – वातकफज)

22) विष में वमनार्थ: ताम्र चूर्ण

सुवर्ण मात्रा – 1 शाण (हेमचूर्ण) हेम सर्वविषाण्याशु गराश्च विनियच्छति।

23) योग: i) परम अगद, ii) पंचशिरीष अगद: विषनष्ट में सर्वश्रेष्ठ,

iii) अमृत घृत: सर्वविषाणां स्याद् घृतोत्तमम्, iv) मांसगत विष– खदिरारिष्ट

24) मदात्यय चिकित्सा

देवान् अमृतं भूत्वा स्वधा भूत्वा पितृंश्च, सोमो भूत्वा व्दिजातीन.

मदीरा को एकविरा कहा है ।

1) सुरा सेवन लाभ: महात्तेजो, बलं, आश्विनं, वीर्यमैन्द्रं, रति,सारस्वतं, महाबला, सिध्दासोम: सौत्रामणौ यज्ञ,

सजल मद्यपान – मद्य -- अमृतसमान जीवनदायिनी,

वात में गुड चावल से बना मद्य, पित्त –माधव (महुआ),कफ–मार्व्दीक(मुनक्का)

2) मदात्यय संप्राप्ती: मद्य हृदयमाविश्य स्वगुणैरोजसो गुणान।

मद्य गुण– 10 - लघु, उष्ण, तीक्षण, सुक्ष्म, अम्ल, व्यवायी, आशु, रूक्ष, विकासी, विशद. सुश्रुत – 8 (लघु, अम्ल नहीं), वाग्भट – 10

प्रधानस्यौजस स्थान – हृदय. अतिमद्यपान में: हतेर्तोजसा, हृदय विकृति

3) मद्य 3 अवस्था:

पूर्वो	मध्यमा	उत्तम
हृदि प्रतिबोधिते	विहतेऽल्पे	विहते
	औज गुण अंशत:-ह्रास	ओज के गुण नष्ट

4) चावल की मदिरा ओजविघातक नहीं। कारण – विकासि,रुक्ष,विशद

5) मद लक्षण: हर्ष, तर्ष, रति:,सुखम: जायन्ते मोह निद्रान्ता स मद्यविभ्रमो नाम्ना मद इत्यभिधीयते।

6) मद: 3 प्रकार (प्रथम, मध्यम, अन्त) (अवस्था)

प्रथम मद लक्षण: न बुध्दि स्मृतिहरा, सुख निद्रा प्रबोधश्च, प्रतिकर:, विषयेषु न चाक्षम:, पंचेद्रियार्थ की स्नेहासहानुभूति, अत्यादिक आनंद.

मध्यम मद लक्षण: मुहु: स्मृर्ति मुहु: मोहो, वाक्मुहु: व्यक्त, अव्यक्त, युक्तायुक्त प्रलापश्च,खानपीना भी कभी कम ज्यादा. मदन्तर:-अशुभ कॉर्य,उन्माद, दारुणं.

अंत: (तृतीय) – निष्क्रिय, मृतै: सम:, रति से मद्यपान, कार्य – अकार्य सुख – दुख, हित – अहित का ज्ञान नहीं।

7) मद्यपान जन्य व्याधी: उन्माद मद मूर्च्छाद्या: सापस्मारपतानका: मदात्यय/महादोष/महागद.

प्राणा: प्राणभृताम अन्न विषं प्राणहरमयुक्तियुक्तमं रसायनम्।

8) त्रिक: 8

i) अन्नत्रिक (वातकर, पित्त, कफ), ii) पानत्रिक (वातकर, पित्त, कफ), iii) वयत्रिक (बाल्य, युवा, वार्धक्य), iv) व्याधित्रिक (मृदु, मध्य, दारुण), v) बलत्रिक (उत्तम, मध्यम, अवर), vi) कालत्रिक (शीत, उष्ण, वर्षा), vii) दोषत्रिक (वात, पित्त, कफ), viii) सत्वत्रिक (सात्विक,राजस, तामस)

9) लक्षण चिकित्सा: वातज मदात्यय लक्षण बहु प्रलाप, हेतु – परिणत (पुराना) मद्य,चिकित्सा, सलवण मद्य, मांसरस, वारुणी मद्य, दाडिम रस पंचमूलि, रागषाडव.पित्तज मदात्यय: आशु प्रशमं वा हन्ति,चिकित्सा - खर्जुरादी दाडिम रस, शीत सक्तु, वमन, गुडूचीभद्रमुस्ता, द्राक्षारस शीत, छागमांसरस.

अनुतर्ष: भोजन पश्चात तृष्णा शमनार्थ अनुपान रूप में मद्य,जिससे नशा न हो।

कफज मदात्यय: हेतु गुड (चावल) से बनामद्य,

चिकित्सा – वमन (उल्लेखन), उपवास.
अष्टांगलवण: एक ही प्रकार कालवण सौवर्चल.
अग्निदीपनम् परम, स्त्रीतोविशोधन.
मृदीकाराग - श्रेष्ठ रोचनदीपन:, कारवीराग - दीपन पाचन.
त्रिदोष मदात्यय – सर्व लिंग विष = मद्य - अंतिम अवस्था,
9) मदात्यय चिकित्सासूत्र: अधिक बढे दोष की प्रथम चिकित्सा: कफ स्थानानुपूर्व्यावा - (कफ, पित्त, वात,)
अविधि मद्यपान जन्य रोग में सविधि मद्यपान (अनुपान शीत), (सौर्वचल, विड, सैंधव) उपयोग.
10) मद्य गुण/श्रेष्ठ मद्य गुण: 14 - चत्वानुरस: मधुर, कषाय, तिक्त, कटु
11) तृष्णानाशक योग: i)चतुपर्णी (शालपर्णी, पृश्नि...), ii) शिशिर जल, iii) पंचाम्लक मुखालेप (कवल or गण्डुष), प्रिय नशि (कामिनी) का साहचर्य मदात्यय रोग नाशक, क्षीर प्रयोग in मदात्यय.
12) अतिमद्यसेवन: 2 – रोग ध्वंसक, विक्षय
(4 – सुश्रुत – पानात्यय, पानाजीर्ण, परमद, पानविभ्रम)
a)ध्वंसक –तंद्रानिद्रातियोश्च, b) विक्षय–हृत्कण्ठरोग: सम्मोहछर्दि: अंगरुजा ज्वर:।
तृष्णा कास: शिर: शूलमेतद् विक्षय लक्षणम्।।.... चिकित्सा वातहर
[वाग्भट: पंचकर्माणि चेष्टानि सेचनं शोणितस्य च।
मद्य (हीन - अति) में वही मद्य फिर समप्रमाण में सेवन
दाह शांति - शिशिर ऋतुचर्या, रोहिणी सिरा वेध
मद्यपान पूर्व - (तालीसादि चूर्ण, वृध्दचूर्ण इलादि चूर्ण) सेवन
मद्यपान परिणाम, दृष्टि विभ्रम, चित्तविक्षेप होने तक.
भोजन मध्य - वात प्रकृति - पैष्टिक, गौडितम.
भोजन पश्चात - पित्त प्रकृति - अम्भौमधु,
भोजन पुर्व - कफ प्रकृति - मृव्दिका, अरिष्ट, माधवं
मद - मूर्च्छा नाशक चिकित्सा:, संन्यास - लसुन स्वरस]

25) व्दिव्रणीय चिकित्सा

1) व्रण भेद: आगंतुजव्रण: विषस्पर्शा,अग्निशस्त्र,एकदेश निर्दष्ट.
निज व्रण: बहिमार्गं आश्रितं.
वात व्रण चिकित्सा: स्नेहपान,स्वेद,उपनाह, प्रदेह, परिषेक
पित्त व्रण: मोह,गंध,स्त्राव, चिकित्सा – शीतल, मधुरतिक्ते
कफ व्रण: मन्दवेदना, चिकित्सा – लंघन पाचनै:
2) नानात्व भेदेन निरुक्ता विंशतिर्व्रणा:
3) व्रण भेद: कारण भेद से 2- निज,आंगतु; स्थान भेद से 8 - त्वक्, सिरा, मांस, मेद, अस्थि, स्नायु, मर्म, कोष्ठ (सुश्रुत मेद की जगह संधि)
गंध भेद से 8 - घृत,तैल, वसा,पूय, रक्त, श्याव, आम्ल, पूतिक (मज्जा नहीं)
दुष्टि भेद से 12 - स्त्राव भेद से 14 - पूय रक्त.....
उपद्रव भेद से 16 - नानात्व भेद से 20 -
दोष भेद से 24 - अजीर्ण....
उपक्रम 36 - शोफघ्न, षडविध शस्त्रकर्म, लोमरोहणं.
4) त्रिविध परिक्षा: दर्शन प्रश्न संस्पर्शै: (दर्शन, स्पर्शन प्रश्नै वाग्भट)
a) दर्शन – वयो वर्ण शरीराणामिंद्रियाणां,
b) वचनाद – हेत्वर्तिसात्म्याग्निबलं, c) स्पर्शान – मादर्व शैत्ये,

कृच्छ्रसाध्यव्रण लक्षण	सुखसाध्यव्रण लक्षण	व्रण चिकित्सा.
i) बहुदोषाणां	i) त्वकमांस	1 प्रथम शोधन
ii) गन्ध	ii) सुख देशे	पूर्वरुप में - रक्तावसेचन
iii) स्त्राव	iii) अनुपद्रव	बहुदोष में - शोधन
	iv) बुध्दिमान में	अल्पदोष में - लंघन

5) पच्यमान शोफ लक्षण:	पक्वशोफ लक्षण:
रुक्, दाह, राग, तोदैश्च, विदग्धं	जलबस्तिसमस्पर्श, पीडितोन्नतम

6)एषण:योग्य (पीडन योग्य) सूक्ष्मान कोषवन्त, बहुस्त्रावा: न मर्माश्रित व्रण
एषणी प्रकार: 2 (3 - सुश्रुत), मृदु - औद्भिद,
कठिन - लोहशलाका - गम्भीरे मांसले देशे पाटंय लोहशलाकया,
7) 6 शस्त्रकर्म:पाटनं भेदन व्यधनं चैव छेदनं लेखनं तथा।(सु.8, वा.13)
पाटन - नाडीव्रणा पक्वशोथारु क्षत्गुदोदरम अन्तंशल्य
छेदन - अर्श अधिमांस; लेखन - किलासानि, कुष्ठानि;
वेधन - विसर्प, दकोदर,पक्व (गुल्म,रक्त गुल्म);
प्रच्छान - ग्रंथि, पिडका, कोठ, कुष्ठ, रक्तमण्डल;
सीवन - कुक्ष्युदर तु गम्भीरं व्रण.
8) व्रणबंध: 2 (वाम, दक्षिण) (14 सुश्रुत, 15 - वाग्भट उत्संग)
9) दाहकर्म:

अयोग्य	योग्य	उपकरण	योग्य पुरूष
बालदुर्बल	कफग्रंथि	मधूच्छिष्ट तैल	रुक्ष, वात प्रकृतिवाले
वृध्द गर्भिणी	गण्ड	मज्जा क्षौद्र,	सुकुमार मोम से दहन,
रक्तपित्त	वातस्तम्भ	तप्त (लोह)	विपर्यय में लोह,मधु से

10) त्वक्जनक: ककुभोदुम्बराश्वत्थ लोध्रजाम्ब कट्फलै:।
11) त्वक्शुध्दिकर: मन:शिलैला मंजिष्ठा लाक्षा च रजनी व्दयम्।
12) कृष्णकर योग: अयोरज: कासीस त्रिफला कुसुमानि
13) सवर्णीकरण:
पर: कालीयक,अगर,आम्रास्थि,नागकेशर,प्रियंगु,रसोत्तमै (पारद),
14) लोमसंजनन योग: चतुष्पदांना त्वक्, लोम, खुर श्रृंगांस्थि भस्मना

26) त्रिमर्मीय चिकित्सा

1) 107 मर्म: (3 प्रधान – बस्ति, हृदय, शिर)
प्राणाश्रय इनपर आघात से महागद उत्पन्न.
2) उदावर्त: चरक 6 (अष्टोदरीय अध्याय में)
चिकित्सा: शीतज्वरनाशक (अगुवार्द्यतैल) अभ्यंग, वर्ती, निरूह, स्नेह, बस्ति, विरेचन.
द्विरुत्तरं हिंग्वादि चूर्ण: 6 द्रव्य
(हिंगु वचा अग्नि कुष्ठ सज्जीक्षार विडंग क्रमश: द्विगुण भाग में)
आनाह...(सुश्रुत: 2 प्रकार – (आमाशयोत्थ) (पक्वाशयोत्थ))
लक्षण: हृद्रस्तंभ मूर्धामय गौरवं उद्गारसंगेन सपीनसेन। आमप्रभव.
चिकित्सा: प्रच्छर्दन लंघनपाचनै, एरण्डतैल – 5 पल:
दोषानुबंधयोगात् प्रशस्तं एरण्डजं तैलम्, मृदुकोष्ठ,अल्पबल में भोजन के साथ एरण्ड तैल.
3) मूत्रकृच्छ्र: 8

वात मूत्रकृच्छ्र	पित्त मूत्रकृच्छ्र	कफ मूत्रकृच्छ्र	सन्निपातज मूत्रकृच्छ्र
स्वल्प मुहु:मूत्र	कृच्छ्रान मुहु: मूत्र	सपिच्छं मूत्र	कृच्छ्रतमं हि कृच्छ्रम

4) अश्मरी: (सुश्रुत–4 भेद)
i) सम्प्राप्ति: बस्तिगतं सशुक्र मूत्रं सपित्तं पवन: कफं वा।
अश्मरी उपजायते तु क्रमेण पित्तेष्विव रोचना गो:।।
ii) स्वरुप: वात –कदम्बपुष्प त्रिकोनी. पित्त – त्रिपुटयप्यथवाऽपि मृदी
कफ – अश्मतुल्या श्लक्ष्णा ।
iii) लक्षण: मुहु शकृत् मुंचति मेहते च।
iv) चिकित्सा कफ मुत्रकृच्छ्र वत, शर्करा चिकित्सा वात मुत्रकृच्छ्र वत,
5) मुत्रकृच्छ्र चिकित्सा: वात मुत्रकृच्छ्र – स्नेहनपान, बस्ति
पित्त मुत्रकृच्छ्र – ग्रिष्म ऋतूचर्या
कफ मुत्रकृच्छ्र – प्रवाल चूर्ण + तण्डूलोदक
त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र वायो:स्थानानुपूर्व्या (अश्मरी,सन्निपातज अतिसार)
6) हृदरोग: वात हृद्रोग: हृद्शून्य, द्रव, पित्त हृदरोग: सन्त्रास(डर) चिकित्सा - सर्पिगुड, धन्वरस, कफ हृद्रोग: चिकित्सा - स्वेदन, वमन, लंघन,

रसायनार्थ:, शिलाजीत, प्राशं, अगस्त्य, ब्रह्म, आमलक.
त्रिदोषज हृद्रोग: प्रथम लंघन
7) प्रतिश्याय:(पीनस)
i) भेद: चरक: 4, सुश्रुत: 5 (वा.)...रक्तज Extra
ii) दुष्टप्रतिश्याय (के उपद्रव) 25 - शोथ, अर्बुद, पूयरक्ता:, अरुंषि, खालित्य तृट्श्वासकासज्वर रक्तपित्तवैस्वर्यशोषाश्च.
ii) नासिका में अर्बुद, अधिमांस रोग= क्षारकर्म.
8) शिरोरोग: 5
वात शिरोरोग: भृशार्तिशूलं; पित्त शिरोरोग: सदाह; कफ शिरोरोग: गुरू, कृमिजशिरोरोग: कण्डुदौर्गन्ध.

9) मुखरोग	10) कर्णरोग	11) नेत्ररोग
च - 4; 64	च - 4	च. - 4, 96
सु - 65	सु - 28	सु - 76
वा - 75	वा - 25	वा - 94

12) अरोचक: 5 (हर्षण, आश्वासन)
वात अरोचक: कषायवक्त्र, पित्त अरोचक: लवणवक्त्र, कफ अरोचक: माधुर्य, सन्निपातज अरोचक: अनेक रस वाला, आगंतुज अरोचक: मुखस्वाद स्वाभाविक.
खालित्य - आशु (जल्दी उत्पन्न) पालित्य वर्णन.
13) अणु तैल: अजा दुग्ध, 10 बार तैलपाक
14) मायूर घृत: मयूर मांस, उर्ध्वजत्रुगदापहम, शिरोरोग, अर्दित
15) महामायूर घृत: a) आत्रेय वर्णित, b) शिरोरोगेषु,(सर्व कास श्वास) महा आखु घृत, महाकूक्कूट घृत, महाहंस घृत,महाशश घृत निर्माण विधि - महामायुर घृत सम. उपयोग - उर्ध्वजत्रुगत रोग में.
16) कालक चूर्ण: मुखरोग. **17) पीतक चूर्ण:** श्रेष्ठ मुखरोग में.
18) खदिरादि गुटिका: दन्तास्यगलरोगेषु. **19) कारव्यादि योग:**
20) गंध तैल: (चरक) कर्णशुल (सु. for भग्न),
क्षारतैल - कर्णरोग (बाधीर्य, स्त्राव, शूल, कृमी)
21) चरक नेत्रक्रिया कल्प - (3)बिडालक, अंजन, आश्चोतन.
नेत्ररोग में अंजन 3 दिन बाद,
22) सुखावर्ति: तिमिर पटल काच.
23) दृष्टिप्रदा वर्ति: अंधे को भी दृष्टि प्राप्त (पुतली नष्ट न हुई तो),
24) महानील तैल:पलितघ्नम् उत्तमम्,पाननस्य शिरोऽग्यंग,बिभीतक तैल प्रयोग,
25) स्वरभेद: (चरक 6, सुश्रुत 6- रक्तज के जगह क्षयज वर्णन)
वात स्वरभेद चि: भोजन पूर्व घृतपान, (सर्पिष्य उपरिभक्तनि),
पित्त स्वरभेद चि: सर्पिगुड, तिक्त, जीवनीय घृत.
कफ स्वरभेद चि: तीक्ष्ण मूर्धविरेचन,
सन्निपातज स्वरभेद चि: सिरावेध निषेध.
रक्त स्वरभेद चि: (क्षयजकास व पित्तज स्वरभेद वत) सिरावेध.
26) अध्यात्मलोको वाताद्यै: लोको वातरवीन्दुभि:।
पीड्यते धार्यत चैव विकृताविकृतैस्तथा।। संदर्भ

27) उरुस्तम्भ चिकित्सा

एक उरुस्तम्भ आमत्रिदोषसमुत्थान: (च.सु. 19) पंचक्रर्म निषेध व्याधि.
1) हेतु: दिवास्वप्न, प्रजागरै: उरुस्तंभ में कफ प्रबलता
उदा. तिष्ठति स्थिरमक्षोभ्यं तद्वद् उरुगत: कफ:।
सुश्रुत व मा. नि. वात प्रधान माना है।
2) पूर्वरुप: प्राग्रूपं ध्यानमनिद्रातिस्तैमित्य अरोचक ज्वरा:।
लोमहर्षश्च छर्दिश्च जंघोर्वो सदनं तथा।।
3) मारक लक्षण: दाह रूक सुप्ति कंप। भेद स्फूरण तोद.
4) स्नेहन करने पर: पादयो: सदनं सुप्ति कृच्छ्राद उध्दरणं तथा।
पंचकर्म से वृध्दये श्लेष्मणो। उदा. गहरे स्थान से जल निकलना कठिन है। वैसेही कफ निकालना कठिन है।
5) चिकित्सा: तस्य संशमनं नित्यं क्षपणं शोषणं तथा।
युक्त्यपेक्षी भिषक् कुर्याद् अधिकत्वात् कफामयो:।।
6) पथ्याहार: क्षार, अरिष्ट, हरीतकी, मधूदक, पिप्पली
7) अवस्थानुसार चिकित्सा:
रुक्ष चिकित्सा से वात प्रकोप,निद्रानाश, होने पर स्नेह, स्वेद.
8) विहार: शीतल जल वाली नदी में (लहरो के) विपरीत दिशा में तैरायें
9) चिकित्सा सिध्दान्त: श्लेष्मण: क्षपणं, न मारुतकोपनम.
10) योग- i) अष्टकट्वंर तैल: अष्टकटवर (मटटा -16 पल), दधि -1 प्रस्थ,सर्षप तैल-1 प्रस्थ, पिप्पली, शुण्ठी -1-1 पल
गृध्रसि उरुस्तम्भ (अभ्यंतर प्रयोग)
व्दिविधं भेषजं प्रोक्तम् उरुस्तम्भचिकित्सिते। (अभ्यंतर व बाहयप्रयोग)
ii) शार्गेष्टादि चूर्ण iii) कुष्ठादी तैल-पानार्थ,
iv) पीलूपर्ण्यादी तैल-मात्रा 1 प्रस्तृत/1 अंजली मधासह पान,
v) सैन्धवादी तैल -पानार्थ (एकही लवण - सैन्धव 2 पल)
vi) बाहययोग a)वल्मीक मृत्तिकादी उत्सादन b) अश्वगन्धादी उत्सादन.

28) वातव्याधि चिकित्सा

1) वायु: आयुर्बलं वायुर्वायुर्धाता शरीरिणाम्।
वायुर्विश्वमिदं सर्व प्रभुर्वायुश्च किर्तित:।।
2) वायु स्वाभाविक स्थिती में - आयु 100 वर्षे.
3) वायु भेद: 5 (प्राणोदान समान व्यानापानै:)

प्राण	उदान	व्यान	समान	अपान
उर:कण्ठ	नाभि,	देहं	स्वेद दोषाम्बु	नाभि
(मूर्धा,जिव्हास्य	उर:कण्ठ	व्याप्नोतिसर्व	वाहिनीअन्तरग्ने	
नासिका			पार्श्वस्थ	

4) वातरोग-हेतु: देहे स्त्रोतांसि रिक्तानि पूरयित्वाऽनिलो बली।
करोति विविधान व्याधीन सर्वांगएकांगसंश्रितान्।।
पूर्वरुप: अव्यक्त लक्षणं तेषां पूर्वरुपमिति स्मृतम्।
लक्षण: आत्मरुपं तु यद व्यक्तमपायो लघुता पुन:।
प्रकुपित वात कार्य- ग्रीवायाश्चापि हुण्डनम। (Neck Stiffness)
5) कोष्ठाश्रित वात: निग्रहो मूत्रवर्चसे, ब्रध्न, अर्श. चिकित्सा - क्षार
6) सर्वांगकुपित वात:
सर्वांगकर्षित वात, गात्रस्फुरण भंजन, चिकित्सा - अनुवासन.
7) गुदगत वात: शर्करा, विण्मूत्रवात ग्रह, आध्मान.चिकित्सा -उदावर्त हर
8) आमाशयगत वात: विसूचिका, चिकित्सा - शोधन
9) पक्वाशय वात:कृच्छ्रमूत्रपुरीष,आनाह,त्रिकबेदना चिकित्सा-उदावर्त हर
10) इंद्रियगत वात: इंद्रियवध
11) त्वक्गत वात:पर्वरुक,सुप्ता, चिकित्सा-स्वेदाभ्यंग,अवगाह, हृद्यं अन्न
12) रक्तगत: भुक्तस्य स्तम्भ, (भोजन गात्रसंग)
चिकित्सा - शीत प्रदेह, विरेक, रक्तमोक्षण.
13) मांस मेद गत: दण्डमुष्टिहतं, चिकित्सा - निरूह, शमन.
14) मज्जास्थिगत: अस्वप्न, भेदोऽस्थिपर्वणां, संधिशूलं, सन्तता रुक्
चिकित्सा - बाह्याभ्यंतर, महास्नेह.
15) शुक्रगत: विकृति, क्षिप्रं मुंचति बध्नाति शुक्र, विकृति गर्भमयथापिवा.
16) स्नायुगत वात लक्षण: खल्लि, कुब्जत्व
17) सिरागत: मन्दरुक, सुप्तास्तन्व्यो
18) संधिगत वात: वातपूर्ण द्रूतिस्पर्श: शोथ संधिगतेऽनिले।
प्रसारणाकुंचनयो: प्रवृत्तिश्च सवेदना।।
19) मन्यास्तम्भ (अन्तरायाम): शिरोग्रह: (दंतानां दशनं लाला पृष्ठाक्षेप) धनुस्तम्भ (बहिरायाम) - वाक्ग्रह (दंतानां दशनं लाला जृम्भा)

(अंतरायाम बहिरायाम caused by स्नायुगत वात प्रकोप - सुश्रुत
सिरागत मन्या में वात प्रकोप - चरक, धमनीगत प्रकोप - वाग्भट
स्नायु, कंडरा में प्रकोप - माधव निदान/तन्त्रान्तर)

20) हनुस्तंभ: 2 -विवृत-मुख खुला रह जाये(स्तब्धम अवेदनम्)
संवृत - मुख बन्द

21) आक्षेपक:-

22) दण्डक: पाणीपादं च संशोष्य सिरा: स्नायुकण्डरा:। सोऽनुपक्रम।

23) अर्दित: 2 (अर्धांगवात, विशेषअर्धांगवात)
अर्दिते नावनं मूर्ध्नि तैलं तर्पणमेव च।
नाडी स्वेदोपनाहाश्चाप्यानूप पिशितै र्हिता:।।

24) पक्षवध: हत्वैकं मारुत: पक्षं दक्षिणं वाममेव वा।
कुर्याच्चेष्टानिवृत्ति हि रुजं वाकस्तम्भमेव च।।
गृहीत्वाऽर्ध शरीरस्य सिरा: स्नायुर्विशोष्य च।
पाद संकोचयत एकं हस्तं वा तोद शूलकृत।।
एकांगरोगं तं विद्यात् सर्वांगम सर्वदेहजम्।
चिकित्सा: स्वेदनं स्नेह संयुक्त पक्षाघाते विरेचनम।।

25) गृध्रसी: स्फिक् पूर्वा कटिपृष्ठोरुजानुजंघापदं क्रमात।
गृध्रसी स्तम्भरुक्तोदै गृहणाति स्पन्दते मुहु:।।
प्रकार: 2 - वात, वातकफ, चिकित्सा -कण्डरा और गुल्फ के बीच में अग्निकर्म

26) खल्ली: खल्लि तु पादजंघोरुकरमूलावमोटनी। खल्ल्यां तु उष्णोपनाहम

27) वात प्रकोप - 2 कारण - धातुक्षय व मार्गावरोध.

28) तीनों दोषो में वायु प्रधान क्योंकि सुक्ष्मत्वात.

29) आवृत्त वात: वायु के आवरण
मांसावृत वात में पिपीलिका संचार,मेद- आढ्यवात, मज्जा- विनाम, अन्नावृत्त मे रुक्जीर्णे (भोजन पश्चात शूल, पचने पर शूल शांत),मलावृत्त - परिकृन्तति (कैची कर्तनवत पीडा), भोजन पश्चात आनाह उत्पन्न, अविलोमश्च मारुत:

30) यत्नसाध्य/असाध्य व्याधी:/प्रसिध्द वातव्याधि:हनुस्तम्भ,कुंचन, कुब्ज,खुडवात,स्तम्भन,अर्दित, पक्षाघात, पंगु, आढ्यवात, मज्जास्थिगत वात

31) वात रोग चिकित्सा: केवलं निरुपस्तम्भमादौ स्नेहैरुपाचरेत।
स्वभ्यक्तं स्नेहसंयुक्तै: नाडीप्रस्तरसंकरै:।

32)स्थानगत चिकित्सा:हृदयगत वात-अंशुमती(शालिपर्णी)सिध्द दुग्ध.
नाभिगत वात: बिल्व (मत्स्यान्न),
अधो नाभिगत वात: अवपीडक, बस्ति.
बाहुशीर्ष वात: नस्य पानं, उत्तर भक्तिक स्नेह.

33) योग: i) दशमुलादि घृत (केवलवातनुत), ii) चित्रकादि लेप (वातरोगहरं परं),
iii) चित्रकादि महास्नेह: सिरामज्जास्थिगे वाते सर्वांगैएकांगरोगेषु,
iv) बलातैल: (कृष्णात्रेय), श्रेष्ठं वातव्याधीनाशनम, बला -100 पल,
गुडूची - 25 पल,रास्ना 12 $^1/_2$ पल, तिल तैल -1आढक, दूध -1/2 आढक
वातव्याधिचिकित्सा अध्याय के बला तैल से आगे वर्णित सभी तैल का उपयोग पान, अभ्यंग, नस्य,निरूह के लिए है।
v) सहचर तैल:सहचर - 1 तुला,तिलतैल 1 आढक, 1 पलशर्करा,
उपयोग -दारूण वात व्याधि
vi) अमृताद्य तैल: गुडूची 5 तुला, जल 8 द्रोण, कृष्णात्रेय भाषितम,
पान /अभ्यंग / नस्य व अनुवासन वातव्याधीहरं श्रेष्ठ, तैलाग्रयम.
vii) रास्नातैल -1000 पल रास्ना, viii) मूलकादि तैल,
x) मूलक तैल: वर्णायुबलवर्धनं

34) पित्तावृत चिकित्सा: व्यत्यासात् कारयेत, क्षीरबस्ति:, सर्पिजीवनीयं.
महास्नेहोऽस्थिमज्जस्थे, मूत्रावृत्त में उत्तरबस्ति,
मला आवृत्त में तैलमैरण्डं स्निग्धोदावर्त क्रिया।
कफपित्त संसृष्ट वात
चिकित्सा: संसृष्टे कफपित्ताभ्यां पित्तमादौ विनिर्जयेत।

35) 5 वात भेद के चिकित्सा सिध्दांत:
उदानं योजयेद उर्ध्वम् अपानं चानुलोमयेत।
समानं शमयेच्चैव त्रिधा व्याने च योजयेद।।
प्राणो रक्ष्यश्चतुर्योऽपि स्थाने हि अस्य स्थितिर्ध्रुवा।।
उदान - उर्ध्वम, अपान - अनुलोमन, समान - शमन,
व्यान - उर्ध्व, अध व शमन, प्राण - रक्षण.

36)आवृत वात की उपेक्षा से उपद्रव: हृद्रोग,विद्रधि,प्लीहा,गुल्मो,असा र

37) सर्वस्थानावृत्त चिकित्सा: कफपित्ताविरुध्दं यद्यच्च वातानुलोमनम्। सर्वस्थानावृतेऽप्याशु तत्कार्य मारुते हितम।। रसायनानां सर्वेषाम् उपयोग:प्रशस्यते। विशेषत: शिलाजित, गुग्गुल, भार्गवप्रोक्त अवलेह (चव्यनप्राश), अभयामलकी, एकादशसिताशतम् (ब्राह्मरसायन) प्राण

38) वायु परस्पर आवरण: 20
i) प्राणावृत्त व्यान - लक्षण - सर्वेद्रियांना शुन्यत्व ज्ञात्वा स्मृतिबलक्षय।
चिकित्सा - उर्ध्वजत्रुगत व्याधिसमान
ii) व्यानावृत्त प्राण - स्वेद अत्यर्थ, रोमहर्ष, त्वकदोष
चिकित्सा- स्नेहयुक्त विरेचन
iii) प्राणावृत्त समान - जड, गदगद, मुकता
चिकित्सा - यापन बस्ति और स्नेह 4 प्रकार से प्रयोग
iv) समानावृत्त अपान - ग्रहणी पार्श्वहृत्दगद चिकित्सा - दिपण घृत
v) प्राणावृत्त उदान - शिरोग्रह,प्रतिश्याय,नि:श्वास उच्छवास हृदरोग
चिकित्सा- उर्ध्वभाग कर्म, आश्वासन
vi) उदानावृत्त प्राण - कर्मोजोबलवर्णनां नाशो मृत्यू
चिकित्सा - शीतजलसिंचन, आश्वासन
vii) उदानावृत्त अपान - छर्दी, श्वास आदी,
चिकित्सा - बस्ति, वातनुलोमक भोजन
viii) अपानावृत्त उदान - मूर्च्छा,अग्निमांद्य, अतिसार
चिकित्सा - वमन,दिपण,ग्राही
ix) व्यानावृत्त अपान - वमन,आध्मान,उदावर्त,गुल्म
चिकित्सा - स्निग्ध अनुलोमन
x) अपानावृत्त व्यान - विण्मुत्ररेतसाम अतिप्रवृत्ती
चिकित्सा - संग्रहण
xi) समानावृत्त व्यान - मूर्च्छा, प्रलाप, तन्द्रा,अंगसाद,अग्नि ओज बलक्षय
चिकित्सा - व्यायाम, लघुभोजन
xii) उदानावृत्त व्यान - स्तब्धता, अल्पग्नी अस्वेद चेष्टा हानी
चिकित्सा - पथ्य, मित व लघु आहार
चरक कूल आवरण भेद 42, (वाग्भट 22, सुश्रुत 13)

29) वातरक्त चिकित्सा

पर्याय: खुड, वातबलास, आढ्यवात
वातरक्ताभ्यां जनितो रोगोऽपि वातरक्तशब्देनोच्यते। (जेज्जट)
आढ्यानां प्रायो भवति इति आढ्यरोग:। (चक्रपाणि)
खुडदेशप्राप्न्या खुड: खुडशब्देन संधिरुच्यते। (चक्रपाणि)
वातस्यावरणेन बलमत्स्यस्मिन शोणिते इति वातबलास:।

1) हेतु: प्लवन: अम्बुक्रीडा उष्ट्रखरयान

2) सम्प्राप्ती: वायुर्विवृध्दो वृध्देन रक्तेनावारित: पथि:।
कृत्स्नं सन्दूष्ययेद् रक्तं तज्ज्ञेयं वातशोणितम।।

3) विशेष स्थान वातरक्त: करौ पादावंगुल्य: सर्वसन्धय:
कृत्वाऽऽदौ हस्तपादे तुमूलं देहे विधावति।

4) पूर्वरुप: कण्डु: संधिषु रुग्भूत्वा नरयति चासकृत।

5) भेद: 2 - उत्तान - त्वकुमांसाश्रयम, गंभीर - गम्भीरं त्वन्तराश्रय,
दोष भेद से 8, सु. दोष भेदसे 4 (वाग्भट 2) (शारंगधर 8)

6)साध्यासाध्य:साध्य-1दोषज, नव;याप्य -व्दिदोषज; असाध्य-3 दोषज

7) चिकित्सा रक्तमोक्षण: रुग्दाहशूलतोदार्तादि असृक स्त्राव्यं जलौकसा।
श्रृंगैतुम्बैहरेत सुप्तिकण्डूचिमचिमायनात।
देशाद्देशं व्रजत् स्त्राव्य सिराभि: प्रच्छनेन वा।

8) वातरक्त के रोगी में अति अवसेचन (रक्तमोक्षण)से: खांज्य,वातरोग,मृत्यु कुर्यात् तस्मात प्रमाणेन स्निग्धाद रक्तं विनिर्हरेत।

9) शोधन चिकित्सा: निर्हरेव्दा मलं तस्य सघृतं क्षीरबस्तिभिः।
न हि बस्तिसमं किंचिद् वातरक्त चिकित्सितम्।

(आवश्यकतानुसार बार-बार अनुवासन और निरुह बस्ति)

वातरक्त रोगी मलावृत होने पर मृदुस्नेह

10)योग: i) श्रावण्यादि घृत:, ii) गुडूची क्षीर, iii) द्राक्षाघृत,
iv) जीवनीयघृत घृत 1 - आढक, मात्रा 1कर्ष,
v) मधुयष्ट्यादि तैल: मधुयष्टि -1 तुला (पान, अभ्यंग, नस्य, बस्तो),
vi) सुकुमारक तैल: मधुक 100 पल (पान, नस्य , अभ्यंग,बस्ति),
vii) अमृताद्य तैल: तैलाप्रयम् अमृतापहम्,पुंसवन (प्रसवनं),
viii) महापद्म तैल:वातासृक्ज्वरनाशनम, ix) खुड्डाकपद्मक तैल: वातास्रदाहनूत,
x) शतपाक मधुकतैलम: सुक्ष्मता, xi) सहस्त्रापाक बलातैल: रसायनमिंद श्रेष्ठमिंद्रियाणां प्रसादनम्।, xii) सर्जरस तैल, xiii) पिण्डतैल अभ्यंग:
xiv) प्रपौण्डरीकादि लेप: मधुच्छिष्ट प्रलेप,

30) योनिव्यापत् चिकित्सा

यद् अपत्यांना मूलं नार्य: परं नृणाम्।

1) हेतु: 4 मिथ्याचार, बीजदोष, दुष्टेनार्तव,दैव
(वाग्भट- अपद्रव्य सेवन,विषमाशयन.)

2) योनिव्यापत से हानि: न शुक्रं धारयेत, न गर्भ धारण, गुल्म अर्श प्रदर

3) विकृतांग योनि का पुन: स्थापन:
i) दु:स्थितां स्थापयेत पुन:, ii) संवृता वर्धयेत पुन:, iii) विवृतां परिवर्तयेत्
iv) योनि: स्थानापवृत्ता हि शल्यभूता, v) प्रवेशयेन नि:सृतां

4) योनिव्यापत में: मृदु पंचकर्म
i) वातला: पिपीलिकासृप्तिम: वातला कर्कशा स्तब्धा शूल निस्तोद पीडिता।
अक्तां लवणतैलेन साश्म प्रस्तरसंकरै:। (च .चि. 30)
(नाडी (हिक्का-श्वास) (च.चि.17))
ii) पित्तला: कुणपस्त्रावा: अत्यर्थं पित्तला योनिर्दाह पाकज्वरान्विता।
iii) कफजा: श्लेष्मला पिच्छिला योनि: कण्डुयुक्ताऽतिशीतला।
iv) सन्निपातज: श्वेतापिच्छिलवाहिनी: सर्वलिंगसमुत्थाना सर्वदोषप्रकोपजा।
v) असृजा: लोहितक्षया, अतिरक्तस्त्राव
vi) अरजस्का: कार्श्यवैवर्ण्यजननी भृशम(वाग्भट-वातपीत लोहितक्षया-रजक्षय)
vii) अचरणा: जन्तु - कण्डु: अतिनरकांक्षिणी,
(पूर्वं पुरुषादतिरिच्यते- सुश्रुत) (विप्लुता नित्यवेदना - वाग्भट)
viii) अतिचरणा: हेतु - अतिव्यवाय, शोफ सुप्तीरूज: स्त्रीया
(बीजं न विन्दति (गर्भधारणा नही करती))
अतिचरणा - चरक, वाग्भट वातज, सुश्रुत कफज
ix) प्राक्चरणा: मैथुनाद् अतिबालाया: पृष्ठकटी उरूवंशण में रूजा
x) उपप्लुता: गर्भिणी में होने वाला: (हेतु - छर्दि नि:श्वास निग्रहात्)
पाण्डूं सतोदमास्त्रावं श्वेत स्त्रवति वा कफम्।
वाग्भट - श्वेत पिच्छील वाहिनी। वातश्लेष्मआमय व्याप्ती.
xi) परिप्लुता: (हेतु- क्षवथुउद्गार धारणात्) शून्या (स्पर्शासहत्व) स्पर्शअक्षमा श्रोणी वंक्षण पृष्ठार्ती ज्वरार्ताया परिप्लुता.
xii) उदावर्तिनी: रजसो गमनाद्ऽर्ध्व: आर्तव स्त्राव से तत्क्षण सुखानुभूति सुश्रुत सफेनिलम् उदावर्ता रज: कृच्छेण मुंचति।
xiii) कर्णिनी: अकाले वाहमाणाया गर्भेण पिहितोऽ निल। रक्तमार्गावरोधिनी कर्णिन्यां कर्णिका योनौ श्लेष्मासृक प्रजायेत।
xiv)पुत्रघ्नी: गर्भं जातं जातं विनाशयेत,सुश्रुत स्थितं स्थितं हंति गर्भ (जातघ्नी)
दुष्ट शोणितज योनीव्यापद - पुत्रघ्नी.
xv) अंतर्मुखी: वक्रंयोनि मुखं; मैथुन में अशक्त पिडा
अतितृप्त स्त्री के व्दारा विषम अंगमे शयन कर,
मैथून सेवन से अस्थि एवं मांस मे वायू वेदना.
xvi) सूचीमुखी: हेतु - मातृदोषाद्: सुश्रुत - सूचिवक्त्राऽतिसंवृता
xvii) शुष्का: हेतु - व्यवाय समयी वेगधारण: विण्मूत्रसंग(अतिवेदना)
xviii) वामिनी (6-7) रात्रमें शुक्रस्त्राव, सरुजं नीरुजं
सुश्रुत सवातम् उदगिरेत बीजं वामिनी रजसा युतम। वाग्भट-वामिनी-वातज
xix) षण्ढी: बीजदोष-नृव्देषिनी अस्तनी, अनुपक्रमा,
सुश्रुत अनार्तवा षण्डी खरस्पर्शा च मैथूनै।
xx) महायोनी: हेतु विषम दुखशय्या; रुक्षफेनास्त्रवाहिनी, (पर्ववंक्षण शूलिनी)
[सुश्रुत विवृताऽतिमहायोनि (जिस योनी का छिद्र बढा - विवृता)
सुश्रुत बन्ध्यां नष्टार्त्तवां, विप्लुतां नित्यवेदनाम.
सुश्रुत लोहितक्षरा - सदाहं प्रक्षरत्यस्त्रं यक्ष्यां सा लोहितक्षरा.
सुश्रुत प्रस्त्रंसिनी: स्यंदते तु क्षोभिता दु:प्रसूश्च या।
(स्थान से हटकर, मैथुन समय स्त्राव और कठिनाई से संतान उत्पत्ति)
अत्यानंदा न संतोषं ग्राम्यधर्मेण। (मैथुन से संतोष नहीं)
अष्ठिली: फलिनी - अतिकायगृहीताया: तरुण्या: फलिनी भवेत।
(दीर्घकाय पुरुष + तरुणी) के मैथुन से उत्पन्न।]

5) चरक - पित्तज -3 पित्तजा, असृजा, अरजस्का;कफज -1कफजा,
वात पित्त-2 वामिनी,परिप्लुता,वातकफ-2 उपप्लुता,कर्णिनी,वातज- शेष11
[सुश्रुत: वातज - 5 (वातज, बंध्या,उदावर्ता, विप्लुता, परिप्लुता)
पित्तज - 5 (पित्तज,लोहितक्षया, वामिनी, प्रस्त्रांसिनी, पुत्रघ्नी)
कफज - 5 (कफज, अत्यानंदा, अचरणा, अतिचरणा, कर्णिनी)
सन्निपातज - 5 (त्रिदोषजा, षंडी, फलिनी, विवृता, अतिसंवृता)
* अरजस्का - सिर्फ चरक, * बन्ध्या,प्रस्त्रंसिनी,अत्यानंदा,फलिनी -सुश्रुत,
* रक्तयोनि - वाग्भट, * अचरणा - च. सु. * विप्लुता- सु.वा.
* प्राक्चरणा, उपप्लुता, अंतर्मुखी, शुष्का - च., वा.
वाग्भट - चरक के अचरणा कि जगह विप्लुता, शेष चरक समान
माधवनिदान - सुश्रुत सम - केवल लोहितक्षरा की जगह लोहितक्षया
शारंगधर - उदावृत्ता एवं षण्डी के स्थानपर खण्डिता एवं नन्दा अन्य वाग्भट सदृश.
भा.प्र.- सुश्रुत सदृश अचरणा के जगह आनन्दचरणा,फलिनी की जगह अण्डिनी]

6) चिकित्सा:
I) वात - हिंस्त्राकल्क, तैलाम्लसंयुता, उत्तर बस्ति (हिंस्त्राकल्कं तु वातार्ता)
II) पित्त - पंचवल्कल, समधुरक्षीरा, उत्तर बस्ति (पंचवल्कस्य पित्तार्ता)
III) कफ - श्यामादी, कटुप्राया समूत्रा, उत्तर बस्ति (श्यामादीनां कफातुरा)
योनीव्यापद उपद्रव - संताननाश, शुक्रधारण नही, गर्भधारण नही, गुल्म, अर्श, प्रदर आदी व्याधि

7) योग: i) बलादी यमक,
ii) काश्मर्यादि घृत, गर्भदं परम, (गर्भ धारण कराने वाला श्रेष्ठ),
iii) बृहत शतावरी घृत-मात्रा पाणितल (1कर्ष),पुंसवन, उन्माद, अपस्मार,
iv) उदुम्बरादि तैल - पिचुधारण 1सप्ताह,
v) धातक्यादि तैल,
vi) पुष्यानुग चूर्ण: पाठा, अनुपान तण्डूलोदक, पुष्यनक्षत्र में द्रव्यसंग्रह आत्रेयपूजितं.
IV) रक्तज, अरजस्का, पुत्रघ्नी:काश्मर्यकुटज क्वाथ सिध्द उत्तर बस्ति,
V) अरजस्का: जीवनीय क्षीर,

VI) अचरणा: गोपित्त व मत्स पित्त 21 भावना की वर्ति
VII) प्राक्चरणा: शतपाकतैल, VIII) अतिचरणा: उपनाह
IX) वामिनी उपप्लुता: स्नेहपिचु संतर्पणं, X) विप्लुता:(शल्लकी पंचवल्कल)
XI) उदावर्ता: स्नेह वातला, XII) महायोनि: वसा (भालू, सुअर) से
XIII) प्रस्त्रंस: वेशवार बंध बांधे,

8) श्वेतप्रदर: रोहीतक मूलकल्क

[श्वेतस्राव- सभी कफज योनीव्यापद में (अत्यानंदा, कर्णिनी, अचरणा अतिचरणा), वातकफज (कर्णिनी, उपप्लुता चरक) प्रसंसिनी का लक्षण है।

चि. रोहितकमूल कल्क जल के साथ पान

आमलकी बीज अथवा आमलकी कल्क + शक्कर + मधू चाटण।]

9)क्लैब्यं: यच्च चतुर्विधम बीज ध्वजोपघाता, जरया,शुक्रसंक्षयात(सु.5)

10) शुक्र: 8 दोष–वैरस्य, वैवर्ण्य दौर्गन्ध फेनिलं तनु रुक्षं च विवर्ण पूति पिच्छिलम। अन्यधातूपसंसृष्टम अवसादी तथाऽष्टमम।।

11) क्षीरदोष: (वात - वैरस्यं फेनसंघातो रौक्ष्य,
पित्त - वैवर्ण्य दौर्गन्ध, कफ - स्नेह पैच्छिल्य गौरवम्)

12) शुध्द शुक्र लक्षण: स्निग्धं घनं पिच्छिलं च मधुरं चाविदाहि च।
रेत: शुध्दं विजानीयात श्वेत स्फटिक सन्निभम्।।

13) शुक्र दोष सामान्य चिकित्सा: वाजीकरण, जीवनीय घृत, रक्तपित्तहर, च्यवनप्राश, योनिव्यापद, गिरिजस्य (शिलाजतु) प्रयोग

14) शुक्रदोष दोषानुसार चिकित्सा: वात - निरुह सानुवासना, पित्त - अभयामलकीय, कफ - 5 रसायन
पिप्पलीरसायन, आमलकी रसायन, लोहरसायन, त्रिफलारसायन,भल्लातक

15) ध्वजभंग लक्षण: पुलाकोदकसंकाश: स्त्राव(पिच्छिल, पाण्डुवर्ण स्त्राव)
आचार्य ध्वजभंग - 5 प्रकार, जराजन्य क्षयज में चिकित्सा यापनाबस्ति:

16) क्लैब्य (नंपुसकता) चिकित्सा: क्षतक्षीण, विरेचन, रसायन प्रयोग, दैवव्यपाश्रय चिकित्सा, (सुश्रुत नपुसक भेद 5, क्लैब्य 6)

17) प्रदर: प्रदररोग सम्प्राप्ति: रजोवहा: समाश्रित्य रक्तमादाय तद्रज:।
प्रदर – चरक, सुश्रुत काश्यप – शोणितज व्याधि, पित्तावृत्त अपान, योनीरोग उपद्रवस्वरुप।
प्रकार: 4- वात प्रदर -किंशुकोदकसंकाश (पलाश पुष्प के पानी वत रक्त), वेदनां तीव्राम; पित्त प्रदर - स्त्रवति मुहुर्मुहु; कफ प्रदर - मन्दरूजा; सन्निपातज प्रदर - सर्पिमज्जावसोपमम, दुर्गंध पिच्छिलं पीतं विदग्धं,
असाध्य लक्षण: तृष्णाज्वरदाह, क्षीणरक्तां, दुर्बलां
चिकित्सा: रक्तातिसार वत्, रक्तार्श, शोणितपित्त
पित्तवातज असृग्दर की चिकित्सा उल्लेख इसलिए द्वंद्वज असृग्दर भी माना।
सन्निपातीक प्रदर - असाध्य

[(सोमरोग - स्त्रियों को प्रसन्न, विमल, शीतल, गन्धरहित, वेदनारहित एवं अत्यधिक मात्रा में. श्वेतस्राव मुत्रमार्गसे होता है। भा.प्र. भेद - 1 शारंगधर सोमरोग उपद्रव - मुत्रातिसार अथवा सोमरोग भेद मुत्रातिसार चि. कदलीकन्दघृत. भा. प्र. तथा योगरत्नाकर स्त्रीयो हर मास में रजस्त्राव होता है।
शरीर की सभी दोषधातू शुध्द होती है। इसलिए स्त्रीयों को प्रमेह नही होता।
(यो.र. अन्नपान विशेष एवं दोषदूष्य क्रम के कारण स्त्रीयो को प्रमेह नही होता)]

18) शुध्द आर्तव लक्षण: पंचरात्रानुबंधि गुंजाफलसवर्ण, पद्मालक्तम,इंद्रगोपमं रजकाल–भावमिश्र 3 दिन, हारित व भेल 7 दिन

19)8 क्षीरदोष: i) वैरस्य - कृशता, न आस्य स्वदते क्षीर, कृच्छेण विवर्धते
ii) फेनसंघात - कृच्छ्रात प्रवर्तते (स्तन्य से दुग्ध कठिनाई से निकलता है)
iii) रौक्ष्यं - बलहास, iv) वैवर्ण्य - तृष्णा, भिन्नविट् नित्पोष्ण शरीर, न अभिनंदति स्तनम, v) दौर्गन्ध्यं - पाण्डु, कामला
vi) स्नेह - छर्दि, लाला, कास श्वास, प्रसेक, तमक
vii) पैच्छिल्य - लाला:, शूनवक्त्राक्षिर्जड: चि. = तक्रारिष्ट
viii) गौरव - हृद्रोग चिकित्सा (क्षीरदोष वमन)

20) बालरोग चिकित्सा: मात्रा औषध:
3 बालक अन्नाद - अल्प, क्षीरान्न - अल्पतर, क्षीराद - अल्पतम
त एव सर्वे बालानां मात्रा त्वल्पतर मता।
निवृत्तिर्वमनादीनां मृदुत्वं परतन्त्रताम।
बालक जब तक दूसरेपर निर्भर तब तक पंचकर्म नहीं
इति सर्वविकाराणाम उक्तम एतत चिकित्सितम।

21) स्थानम् एतध्दि तंत्रस्य रहस्यं परम् उत्तमम।।
दोषदूष्यनिदानानां विपरीतं हितं ध्रुवम।

22) आस्याद् आमाशयस्थान हि रोगन नस्त: शिरोगतान।
गुद पक्वाशयस्थांश्च हन्त्याशु दत्तमौषधम्।।
विसर्पपिडकादिषु यथादेशं प्रदेहादि शमनं स्यात ।।

23) कालापेक्ष सम्यक योग: 6 - दिन आतुर औषध व्याधी जीर्णलिंगऋतू पेक्षणाम, I) दिनापेक्षा:काल का सम्यक योग: दिनापेक्ष: पूर्वान्हे वमन
II) रोग्यपेक्ष: निरन्नो बलवान,लघु पथ्याअन्नैर्युक्ताम अद्यान तु दुर्बल:
III) औषधापेक्ष काल:
औषध सेवन काल –10,अ. सं. 11, (वा., काश्यप 10), शा. 5
i) भक्तौदा - प्रात: निरन्नसेवन, ii) भोजन पूर्व iii) भोजन मध्य, iv) पश्चात - प्रात:, v) सायं भोजन पश्चात, vi) मुहुर्मुहु भोजन समय बार बार, vii) सामुद्ग - भोजन के आदि अंत में, vii) सभक्त - अन्नाहार, ix) ग्रास - ग्रासा सह, x) ग्रासांतर - ग्रास के बिच में.
प्राण प्रदुष्टे ग्रासग्रासान्तर इष्यते (ग्रास के मध्य)
उदान प्रदुष्टे भोजनोत्तरम, व्याने तु प्रात: राशितम (प्रात: भोजन पूर्व) समाने मध्यभोजनम, अपाने विगुणे भोजन पूर्व, मुहुर्मुहु: श्वास कास पिपासा, सामुद्गं हिक्किने (भोज के शुरूवात और अंत में),
सभुक्तं अरुचौ हितम (भोजन)
IV) ज्वर में षडहे - षडहे (6 दिन) बीत जाने पर पेया, कषाय, दुग्ध, सर्पि, विरेचन प्रयोग.
V) आहार जीर्ण होने पश्चात औषध.

मुहुर्मुहुश्च रोगाणाम अवस्थान आतुरस्य च।
अवेक्षमाणस्तु भिषक् चिकित्सायां न मुंचति।।

VI) ऋतु
कालापेक्ष: 6

काल	वातरोग	पित्तरोग	कफरोग
ऋतु	वर्षा	शरद	वसन्त:
दिन	दिनान्त	मध्यदिन	प्रात:
रात	निशान्त	मध्यरात्रि	आदिरात्रि
वय	वार्धक्य	मध्यवय	बाल्यावस्था
भोजन	जीर्णान्त	जीर्यमाण	भुक्तमात्र

24) सात्म्य: देश - वाल्हीक, पल्हवा, चीन, शूलीका, यवन: शक: (मांस, गोधूम, माध्वीक, शस्त्र, वैश्वानरोचिता)अभ्यासी
मत्स्यसात्म्या प्राच्या: क्षीरसात्म्याश्च सैंधवा:(सिंधू प्रदेश)
अश्मकावन्तिकानां तु तैलाम्लं कंदमूल सात्म्य मलयवासिनम
दक्षित: पेया मन्थरचोत्तर पाश्चिमे
मध्यदेशे भवेद सात्म्यं यवगोधूमगोरसा:

26) परीक्ष्य देश: दोष, औषध, देश,काल,सात्म्य,अग्नि,सत्व,ओक,वय,बल.

यो हि सम्यड् न जानति शास्त्र शास्त्रार्थमेव च।
न कुर्यात स क्रियां चित्रमचक्षुरिव चित्रकृत।। (च. चि. 30)

।। चरक संहिता कल्पस्थान ।।

कल्प	संख्या	पर्याय	उपयुक्तांग	प्रयोग	मात्रा	आस्थापन श्रेष्ठ द्रव्य - सिध्दी ११	
वमन	355					आत्रेय	आचार्य
मदनफल (Randia spinosa) वृक्ष	133	मदन, करहाट, राठ पिण्डितक, फल, श्वसन	मदनफल पिप्पली	सर्व व्याधी, मदनफलं श्रेष्ठ अनपायित्वात, श्लेष्म ज्वर, गुल्म, प्रतिश्याय, विशेषण.	अन्तर्नख मुष्टि	सर्व	-
जीमूतक (देवदाली) (Luffa echinata)	39	गरागरी वेणी देवताडक	फल पुष्प	त्रिदोषघ्न यथा औषधकल्पित ज्वर श्वास हिकादि आमय	१ शुक्ति (२ कर्ष)	कुष्ठ	शौनक
इक्ष्वाकु (Lagenaria siceraria) लता	45	लम्बा कटुकालाबू तुम्बी पिण्डफला, इक्ष्वाकु, फलीनी. भा.प्र. बृहत्फला	अपुष्प प्रवाल, फल, बीज	कास, श्वास, विष, छर्दि ज्वराते कफकर्षित प्रताम्यति ग्लानि (वर्धमान योग वर्णन)	बीजचूर्ण अन्तर्नख मुष्टि	प्रमेह	वामक
धामार्गव (Luffa cylindrical) लता	60	कर्कोटकी, कोठफला, महाजालिनी, राजकोशातकी	फलं पुष्पं प्रवाल	गरे गुल्मे उदरे कासे वाते आमाशय गतवात कफे च कण्ठ वक्त्रस्थे कफसंचय स्थिर व गुरुव्याधीत मानसव्याधी		पाण्डू	गौतम
वस्तक (कुटज) वृक्ष (Holarenna antidysentrica)	18	वत्सक, कुटज, शक्र, वृक्षक, गिरिमल्लिका, बीज इन्द्रयव कलिंगक	फल, पुष्प, बीज- इन्द्रयव कलिंगक	रक्तपित्त कफज, विकार हृद्रोग ज्वर वातरक्त विसर्प सुकुमार	भेद स्त्री पुरुषअन्त र्नखमुष्टि	हृद्रोग	बडीश
कृतवेधन (luffa acutangulata)लता	60	क्ष्वेड कोशताकि मृदुंगफल	पुष्प, फल	गाढेषु गदेषु कुष्ठ पाण्डवामयेषु, प्लीहशोफगुल्मगरादिषु		उदर	काप्य
विरेचन	245						
श्यामा त्रिवृत्त (निशोत्तर) (Operculina turpethum) वल्ली	110	त्रिभण्डी, त्रिवृत्ता, श्यामा, कुटरणा सर्वानुभूति सुवहा	मूलं ^ श्याम अरुण (श्रेष्ठ)	कषाय, मधूर, रुक्ष, कटू विपाक, कफपित्त प्रशमन रौक्ष्यात, वातकोपन, सर्वरोग शमन स्व. औषधध्दि सर्वरोगहरा	ऋतुनुसार विरेचन योग श्रेष्ठ विरेचन कल्याणक गुड, व्योषादी गुटीका, त्र्युषणादीयोग, पथ्यादी मोदक, मनोनुकुल द्रव्य योग वर्णन		
चतुरंगुल (आरग्वध) वृक्ष (Cassia fistula)	12	आरग्वधो राजवृक्ष: शम्पाक, चतुरंगुल, प्रग्रह, कृतमालश्च कर्णिकारो अवघातक:	फल मज्जा	ज्वर हृद्रोग, वातरक्त उदावर्त, पथ्य, मृदु, बाल वृध्द क्षते क्षीणे सुकुमारे अनपायित्वात	अनपायि त्वात		
तिल्वक (लोध्र) वृक्ष (Symplococcus racemosis)	16	लोध्र, बृहत्पत्र, तिरीटक	मूल, त्वक, शुष्कामन्तर्वल्क वर्जितम	उत्तम विरेचन, मुलत्वचं शुष्कामन्तर्वल्कवर्जितम			
सुधा (स्नुही) वृक्ष (Euphorbia nerifolia)	20	स्नुक, गुडा, नंद, सुधा, निस्त्रिंशपत्रक, महावृक्ष	क्षिर बहुकंटक-श्रेष्ठ अल्पकंटक तीक्ष्ण	पांडु, उदर, गुल्म, कुष्ठ, दुषिविषार्दित, मधुमेह, दोषविभान्त चेतसि, शोथ	तीक्ष्णतम विरेचन		
सप्तला (Acacia concinna)	39	चर्मसाहा, बहुफेनरसा, सप्तला	मूल	गुल्म, गर, हृद्रोग, कुष्ठ, शोफ, उदर, श्लेष्माधिक्य, (विकासि, तीक्ष्ण, रुक्ष)			
शंखिनी		तिक्तला, यवतिक्ता, अक्षिपीडक,शंखिनी	फल (नातिशुष्क)				
दन्ती (Baliospermum montanum)	48	उदुम्बरपर्णी, निकुम्भ, मुकुलक, दन्ती	मूल (स्थिर, बहल) श्याव-ताम्र	विलायन्ति दोषो, दौ मारुतं कोपयन्ति च गुल्म, उदर, पाण्डु, कृमीकोष्ठ, भगंदर			
द्रवन्ती (Croton tinglium) वृक्ष		चित्रा, न्युग्रोधी, मुशिकाह्वया, द्रवन्ती	मूल, (दन्ती- श्याम,-द्रवन्ती ताम्र)				

कल्पस्थानम

(संदर्भ: सु. सु. 35, 36, अ. हृ. क. 1,2,6)

1. मदनफल

1) कल्पस्थान प्रयोजन:

2) विरेचनव्याख्या:

'तत्र दोषहरणं उर्ध्वभागं वमनसंज्ञकम अधोभाग विरेचन संज्ञकम्।
उभयं वा शरीरमल विरेचनाद विरेचन संज्ञा लभते।'

3) औषध उष्ण, तीक्ष्ण, सुक्ष्म, व्यवायी, विकासी होता है।
(आग्नेयत्वाद विष्यन्दयति, तैक्ष्ण्याद विच्छिन्दन्ति),
दोष संघात अणुप्रवण भाव से तथा कोष्ठ गमनमुख रहने से आमाशय मे आकर उदानवायु को प्रेरित करता है।
औषध अग्नि व वायू अधिक्य, उर्ध्वभागहर प्रभावसे वमन;
औषध पृथ्वी व जल अधिक्य होने से अधोभागहर प्रभाव से विरेचन.
(सुश्रुत वमन कार्मुकता प्रभाव से, विरेचन कार्मुकता गुण से)

4) तत्र फल जीमुतक इक्ष्वाकू धामार्गव कुटज कृतवेधनानां श्यामा त्रिवृत्त चतुरंगुल तिल्वक महावृक्ष सप्तला शंखिनी दन्ती द्रवन्तीनांच।
षड विरेचन योग शतानी व्याख्यास्याम: इन द्रव्यों के परस्पर संयोग से अपरिसंख्येय कल्पना हो सकती है। निर्देश हेतू आचार्यो ने 600 योग बताये है।

5) तानी तु द्रव्याणी देश काल गुण भाजन संपद वीर्य बलाधानात क्रियासमर्थतमानि भवन्ति।

6) त्रिविध देश - जांगल, आनूप, साधारण.

i) जांगल: पर्याकाशभुयिष्ठ (निरभ्रआकाशयुक्त)प्रततमृगतृष्णिकोपगुद, तनु खर परुष सिकता शर्कराबहुल: लावा तित्तिरचकोर भ्रमण.
वातपित्त बहुल स्थिरकठीण मनुष्य
(सुश्रुत - आकाशसम,प्रवीरलअल्पकण्टकीवृक्ष अल्पवर्षा एवं जल,उष्णदारुण वात, प्रवीराल्प शैल, स्थिर कृश शारिर मनूष्यप्रायो, वातपित्तरोग भूयिष्ठ.)

ii) आनुप: शिशिरपवनबहुल: सरितसमुद्रपर्यन्तप्राय:
स्निग्ध तनु प्रतानोपगुढ, **पवनकफ प्रायो**, सुकुमार पुरुष
(सुश्रुत - बहुदकनिम्नोन्नतनदीवर्षगहनो, मृदशीतनिलो, बहुमहापर्वतवृक्षो, मृदु सुकुमार, उपचित शरीर मनुष्य, **कफवातरोग** भूयिष्ठ.)

iii) साधारण: व्ययोदेशयो वनस्पती वानस्पत्य, वृक्ष, पक्षी, मृगगण स्थिर सुकुमार बल वर्ण संहनन साधारण गुण युक्त पुरुष (Also वर्णन च.वि. 3 & 8)
(सुश्रुत - समहा:साधारणे यस्मात्शीतवर्षाउष्म मारुता: । दोषाणांसमता ।)
(अ. हृ .सुत्रस्थान 1 - जांगलं वातभूयिष्ठं अनूपं तु कफोल्बणम्।
साधारणं सममलं त्रिधा भूदेशादिशेत् ।।)

7) औषध प्रशस्त भुमि:
कुश रोहिष्यस्तीर्णा, स्निग्ध, कृष्ण मधुर मृत्तिका, सुवर्ण वर्ण मधुर मृत्तिका

8)औषध संग्रह:शाखा व पलाश (पत्र), अचिरप्ररुढ (नूतन)-वर्षा व वसंत
शीर्णप्ररूढपर्णानां, मूल - ग्रीष्म / शिशिर
त्वक्, कन्द, क्षीर - शरद
सार - हेमन्त
यथा ऋतु - पूष्प व फल

[सुश्रुत : (केचिदआहुआचार्या)

वसन्त - सार	ततू न सम्यक
ग्रीष्म - फल	सौम्य(अतिमधूरस्निग्धशीत)
प्रावृट - मूल	औषधी सौम्य ऋतू मे
वर्षा - पत्र	आग्नेय औषधी - आग्नेय ऋतू मे]
शरद - त्वक	
हेमन्त - क्षीर	

औषध संग्रह आगार: पुर्व तथा उत्तर दिशा व्दार.

9) दोषानुसार अनुपान:
वात विकृती - सुरा, सौवीरक, तूषोदक, मैरेय, मेदक, धान्याम्ल, आम्लदधी
पित्त विकृती - मृव्दीका, आमलक, मधु,मधुक परुषक, फाणित क्षीर आदी
कफ विकृती - मधु, मुत्र, कषायादि
वमन द्रव्याणां मदनफलानि श्रैष्ठतमान्याचक्षते, अनपायित्वात।

10) मदनफल संग्रह: वसन्त ग्रीष्मयो अन्तरे
पुष्य, अश्विनी, मृगशिरा, नक्षत्र, मैत्र - मुहूर्त
मदनफल - पक्व, अकान्य, अहरित, पाण्डू वर्ण, अन्हस्व,
पोट्टली - गोमय लिप्त, यव, तूष, माष, शाली, कुलत्थ, मुद्ग इनमें से एकमे 8 रात्र रखे.
मृदुभूत, महिवष्टगन्ध (मधसदृश) - सुखाना
घृत, दही, मधु, तिलकल्कसे मर्दन - सुखाना
नव कलशमे संग्रहित करे.

11) वमन विधी: 2/3 दिन स्नेह स्वेदन
ग्राम्यआनूपऔदकमांसरस क्षीरदधिमाष तिलशाक, - श्लेष्मउत्क्लेष, जीर्ण आहार, पूर्वान्हे, घृतमात्रा, यवागू - मदनफल पिप्पली अन्तर्नखमूष्टि, यष्टिमधू कषाय, कोविदार, कर्बुदार, नीप, विदुल, बिन्बी, शणपूष्पी, सदापूष्पी, प्रत्यकपुष्पी इन मे से 1 कषाय में, एक रात्र रखे - छानले - प्रात: कालीन मधुसैंधव युक्त सुखोष्ण ले, ॐ ब्रह्मदक्षश्विरुद्र इंद्र.... ।। Ref. पूर्व अथवा उत्तर मूख रुग्ण श्लेष्मज्वर गुल्म प्रतिश्यायार्त विशेषेण,पिनेको दे.पित्तआगम होनेतक वमन करे हिनवेग- पिप्पली आमलक सर्षपवचा कल्क लवण उष्णोदकै:पूनपून: प्रवर्तयेद.
सर्वेषु तु **मधुसैन्धव** कफविलयन - छेदार्थ वमनेषु विद्यात।
मधु मिलाना विरोधी नही, कारण अविपक्वप्रत्यागमनाद् दोषनिर्हरणाच्च।
(विना पाचन निकलता है)

12) मदनफल योग: 133 (सुश्रुत 31)

i) चुर्ण
ii) फाणित — 1 योग
iii) नस्य

क्षीर व घृत मे - 5 योग
वर्तिक्रिया व्दारा - 6 योग
मात्राव्दारा - 8 योग
कषायव्दारा - 9 योग
षाडव व्दारा - 10 योग

i) पूप
ii) शुष्कुली- — 16 योग
iii) लेह

i) मोदक
ii) उत्कारिका — 20 योग

मदनफल का कोविदारादी 8 द्रव्यों के कषाय से 21 बार परिस्त्रावीत करके, तीव्र कफस्त्राव, ग्रथिक ज्वर, अरूची में उपयोग करे।
मदनफल पिप्पली -
सिध्द क्षीर सन्तानिका -1 अंजलि, पित्त प्रकूपित व उर, कण्ठ, हृदय में तनु कफ में उपयोग करे।

2) जीमूतक कल्पाध्याय

1) जीर्ण, सशुष्क जीमूतक फल चुर्ण मात्रा 1 शुक्ती,
वात-पित्त रोगमे दूध के साथ

2) जीमुतकके मदनफल सदृश मात्राव्दारे 8 योग
(वाग्भट - जीमूताद्याच फलवत)

3) जीमूतक सिध्द घृत - श्रेष्ठ वामक

3) इक्ष्वाकूकल्पं

1) चरक 6 द्रव्यों के कषाय के साथ 50 से 100 ऐसे 6 योग वर्णन

इक्ष्वाकू वर्धमान प्रयोग (चरक)

दिन	चरक – बीज संख्या	क्वाथ द्रव्य	चक्रपाणी बिजसंख्या
1	50	मदन	10
2	60	जीमूतक	20
3	70	इक्ष्वाकू	30
4	80	धामार्गव	40
5	90	कूटज	50
6	100	कृतवेधन	50

2) 5 लेह योग वर्णन - अनुपान प्रमथ्या

3) लेह परिक्षा वर्णन

i) यावत स्यात तन्तुमत ii) तोये पतितं तू न शीर्यते।

(भा. प्र. इक्ष्वाकू पर्याय - बृहत्फला)

(वाग्भट हृदय कल्प 1 वमनकल्पाध्याय

भावयित्वाऽऽजदुग्धेन बीजं तेन एव वा पिबेत ।

विष गुल्म उदर ग्रन्थि गण्डेषु श्लीपदेषु च ।।)

4. धामार्गव:

1) छर्दी व हृद्रोगमें धामार्गव अन्न के साथ दे

2) धामार्गव चूर्ण युक्त गंध पूष्प प्रयोग

3) शकृद रस से 2 योग

4) विषनाशक योग - 1

धान्य तुम्बरु यूषेण कल्क सर्व विषापह :।

5) मानसिक रोगनाशक 11 कषाय योग (मनोविकार मे)

6) नस्य योग 1

5) वत्सक कल्पं:

1) स्त्री- पुरुष भेद वाला एकमेव द्रव्य

2) पूमान - बृहत्फल : श्वेतपुष्प : स्निग्धपत्र

स्त्री - श्यामा आरुणपूष्पा अणूफलवृन्त

3) संग्रह - शुष्क फल - फलोद्गमकालमे

4)अन्तर्नखमुष्टिं प्रमाण वत्सक बीज - मधुक अथवा कोविदार कषाय मे भिगोने रखे - प्रात: लवण तथा मधु के साथ दे - वमन - पित्तश्लेष्म विकार मे श्रेष्ठ

5) जलासह - 3 योग 6) कृशरा सह - 1 योग

(वाग्भटानुसार प्रयोगस्थानमे सिर्फ कुष्ठ अतिरिक्त)

6) कृतवेधन कल्प:

1) कृतवेधन के क्षीर के साथ 4 योग तथा सुरा के साथ 1 योग जिमूतक सम

2) पिच्छा 10 योग - शाल्मलीआदी 10 द्रव्यों के साथ

3) कृतवेधन योगों की कल्पना मदनफल योग सदृश करते है।

4) कषायेषु फलादीनां आनूपं पिशितं पृथक ।

कोशातक्या समं पक्त्वा रसं सलवणं पिबेत् ।।

5) इक्षूरस के साथ 1 योग कास मे

(**सुश्रुत** - कृतवेधनके फलपिप्पलीको वामक द्रव्य क्वाथसे भावित कर सिर्फ सुंघनेसे वमन होता है.

अनवबध्द दोषों मे आकण्ठ यवागूपान कर के इसका उपयोग करे.)

विरेचन कल्प

(संदर्भ: चरक कल्प 7 से 12 अध्याय सुश्रुत सुत्र 44, अ.हृ.क. स्थान 2)

7) श्यामात्रिवृत्त कल्पं

1) विरेचने त्रिवृन्मूलं श्रेष्ठमाहु

2) त्रिवृत्तभेद - 2 श्याम व अरुण, इसमें अरुण श्रेष्ठ

3) अरुण मुल उपयोग - सुकुमार, शिशु, वृध्द, मृदुकोष्ठ

श्याममूल - प्रयोग - बहूदोष, क्रुरकोष्ठ.

आशुकारित्वाद होने से मोह, धातूक्षीण मूर्च्छा उत्पन्न, तीक्ष्ण से हृदय व कण्ठ कर्षण, आशु दोषं हरति.

4) त्रिदोषनाशक औषधों के साथ सर्व रोगहर है ।

5) संग्रह - शुष्क मूल शुक्लपक्ष मे.

विरेचन के एक रात्र पुर्व सिर्फ पेया. विरेचन पूर्व स्नेहस्वेदन

6) **कल्याणक गुड** - 5 प्रकार के लवण, आहार विहार त्याज्य नही, पुसंवन के लिए उपयोगी, सर्वऋतु मे उपयोगी, बदर अथवा उदुम्बर आकार की गोलीया.

(वाग्भट-मात्राम् अयन्त्रण(जितनी मात्रा में विरेचन होगा उतनी मात्रा में लेना है))

7) **व्योषादी गूटीका:** सर्वविषनाशक, मात्रा 1 पल

सभी प्रकारके मुत्ररोग, अनुपान शितजल

8) पथ्यादी मोदक: ऐश्वराणां (धनी, सुकुमार व्यक्तींयों को विरेचनार्थ)

9) **ऋतूनुसार 6 योग वर्णन:** (परंतु वर्णन 4) ग्रिष्म में - शर्करासह, वर्षा - विश्वभेषजं (शब्द), हेमन्त - चित्रक, शरद-चंदन

10) **सभीऋतु मे उपयोगी योग:** त्रिवृत्त, त्रायमाण, हपूषा, सातला, कटूरोहिणी,

स्वर्णक्षीरी, समभाग + गोमुत्र 3 भावना

11) त्र्यूषणादीचूर्ण - अनुपान मांसरस

12) मनोनुकूल द्रव्य युक्त प्रयोग वर्णन

13) विरेचन औषधी से वमन होने पर मुख पर शीतजल सिंचन करे

14) **योग:**

i) मधुयष्टी
ii) तर्पण तथा चूर्ण
iii) मद्य
iv) कांजी
] 2

i) सिता
ii) घृत तथा दूध
] 4

i) पानक	5
ii) मोदक	5
ऋतूनुसार	6
दूध आदी से	7
अवलेह	8
अम्लादी द्रव्य	9
षाडवादी	10
सैधवादी	12
जीवकादी	14
गोमुत्रादी	18
	110

8) चतूरंगुल कल्प:

1) आरग्वध - मृदू, मधुर शीतल, अनपायित्वाद

2) संग्रह - सिक्तामे 7 रात्र रखे.

3) 4 ते 12 वर्ष के बालक को दाह तथा उदावर्त रहने पर आरग्वध मज्जा द्राक्षारस के साथ

4) अनुपान - हृद्य / मधुर / कटू / लवण

9) तिल्वकः

1) लोध्र, सुरा योग मद्यपी लोगो में विरेचनार्थ श्रेष्ठ है ।

2) लोध्र त्वक चूर्ण निर्माण विधि वर्णन. 3) कम्पिलक 1 योग - लोध्र चुर्ण + कम्पिलक 10 भावना, अनूपान कम्पिलक क्वाथ

10) सुधाकल्पः

1) विरेचनानां सर्वेषां सुधा तिक्ष्णतमा मता ।

2) मृदूकोष्ठीमे निषेध तथा अल्पदोष व अतिमार्गक्रमण में भी.

3) 2 भेद a) अल्प कण्टक - तीक्ष्ण कण्टक b) बहुकण्टक - श्रैष्ठ (साश्रेष्ठा कण्टैकस्तीक्ष्णैः बहुभिश्च समाचिता ।। वाग्भट)

4) संग्रह - 2 अथवा 3 वर्ष पुराने, शिशिर ऋतु के अंतमें ग्रहण करे

5) शोधन - बिल्वादी पंचमुल क्वाथ (बृहद पंचमूल) बृहती एवं कण्टकारी कषाय में.

6) घ्रेय 1 योग - मृदुकोष्ठी, सुकुमार, राजा, (गन्ध)

11) सप्तला शंखिनी कल्पः

संग्रह i) सप्तलामूल - शंखिनी - फल नतिशुष्क, निस्तुषीकृत (वाग्भट - सप्तलामुल शंखीणी फल,तीक्ष्ण,विकासी, मात्रा प्रत्येकी 1 अक्ष)

ii) 5 मद्य योग iii) 6 तैल योग

12) दन्ती द्रवन्तीः

(सु. सु. 44, सु. चि. 31, अ. हृ.क. 2 - 6)

1)संग्रहःस्थिर, बहल,हस्तिदन्त सदृश्य श्याव व ताम्रवर्ण दन्ती/ द्रवन्ती मूल. पर्याय - मूषकपर्णी, उपचित्रा, शम्बरी, प्रत्यकेश्रैणी, सुतश्रैणी, दन्ती, रण्डा.

2) गुणः तीक्ष्ण, उष्ण, आशुकारी, विकाशी, गुरु, होने से कफ व पित्त का विलयन करते है तथा वात का प्रकोप करते है.

3) उपयोगः गुल्म उदर - दोषवृध्दी से खिन्न व्यक्ती. गो मृग अजारसासह - पाण्डू, कृमिकोष्ठ, भगन्दर में

4) 6 लेह योग मे से 3 - i) दशमूल ii) बिभितक iii) हरितकी क्वाथासह

5) 1 गोमुत्र भावीत चूर्ण योगः सभी ऋतूमे उपयोगी, सर्वरोगहर, अनअपायीत्व होने से बाल व वृध्दो में श्रेष्ठ

6) पाण्डू रोगनाशक योगः दन्तीक्वाथ 2 पल + द्राक्षा अर्धप्रस्थ

7) कामला रोगनाशक योगः दन्तीमुल व गुडसमभाग व शीतजल

8) दन्ती व द्रवन्ती के योगः रुचि, दोष व रोगानुसार 3 षोडशको में (16 + 16 +16) - 48 वर्णन किये है

9) वमन 355 योग विरेचन 245 योग कुल 600 योग यह प्रमुख रुपसे 15 द्रव्योंपर आधारित है।

10) योगो में द्रव्य तुल्यवीर्य होनेपर क्रिया सामर्थ्य बढता है। विरुध्दवीर्यमप्येषा प्रधाननामबाधकम् । (प्रधान गुणों को बाधीत न करने वाली विरुध्दवीर्य द्रव्ये योगो में ले सकते है)

11) रोगानुसार औषध निर्माण में इष्टवर्णरसस्पर्शगंध व विरुध्दवीर्य द्रव्य उपयोग करें ।

12) वमन विरेचन द्रव्यो के बल बढाने हेतू स्वरस भावना दे। स्वरस तुल्य वीर्य (द्रव्य)

13) अल्पस्यपि महार्थत्व प्रभूतस्याल्प कर्मताम् । कुर्यात् संयोग विश्लेष कालसंस्कार युक्तीभिः । संदर्भ

14) योग संख्या स्वबुध्दी से करे बहुद्रव्य विकल्प होने से असंख्य (सहस्र... कोटी) 600 योग संक्षेप में बताए है।

15) योगों का नामकरण प्रधान द्रव्यों के आधारपर होता है.

तीक्ष्ण वीर्य औषध - जल, अग्नि व किटो से अप्रभावित, देशकालगुणान्वितम्। (ईषन्मात्राधिकैयुक्तं, तुल्यवीर्य सुभावित, स्नेह स्वेदोपपन्नस्य) (प्रयुक्त)

मध्यवीर्य औषध - किंचीद गुणहिन, अल्पमात्रा मे उपलब्ध, स्नेह स्वेद के सम्यक योग बिना प्रयुक्त कि गयी औषध है।

मन्दवीर्य औषध - मन्दवीर्य, विरुक्षस्य, हीनमात्रं, अतुल्यवीर्ये, संयुक्तं, मन्दवेग से, दोषों को बाहर निकालती है.

16)वमन औषध देने के पश्चात दोषो के पूर्नतया निर्हरण न होनेपर पून औषध दे. अपवाद - रोग व रोगी हिन होनेपर न दे।

रोग व रोगी मध्यबल 1 बार दे।

रोग व रोगी बलवान - बार-बार दे।

17) अपक्वं वमन दोष पच्यमानं विरेचनम् । वामक औषधी पाक प्रतिक्षा न करे

18) विरेचक औषधी देने पर, पच गयी अथवा वमन होने पर दुसरे दिन पुनः विरेचन दे.

19) दुर्बल, बहुदोष, पक्कदोष, रेचन होते समय वातानुलोमक अन्न दे।

20) शेष दोषाश्च - भोजन व अन्तरपान (क्वाथपान)

21) दुर्बल, शोधित, अल्पदोष, अपरिज्ञातकोष्ठ - मृदू औषध दे।

22) दुर्बल बहुदोष - मृदू औषध बार बार दे।

23) विरेचन औषध से वमन होनेपर - कवलधारण, मुखशोधन, लंघन, पुनः विरेचन कराये

24) विबध्द, अल्प, चिराददोष - उष्णजल दे।

25) स्नेहन के अतियोग मे रुक्ष विरेचन दे।

26)औषध दोषो से अवरुध्द होने पर उद्गार व अंगशूल रहने पर स्वेदन कराये.

27) विरेचन अतियोग - वमन, स्तंभन

28) कफावृत्त विरेचन औषध - तीक्ष्ण, उष्ण, कटू औषध दे ।

29) क्रुरकोष्ठी मे अल्प विरेचन होनेपर लंघन दे ।

30) स्नेहबस्ति के बाद विरेचन - रुक्ष, वातप्रकृती, क्रुरकोष्टी, व्यायाम शालीन, दिप्ताग्नी में दे।

31) स्नेहनयोग्य पुरुषः रुक्षाशना, कर्मानित्या, दिप्तपावका, तेषा दोषाक्षयं यान्ति कर्मवात आतप अग्निभीः । विरुध्दाशन, अध्यशन, अजीर्ण सहन कर सकते है ऐसे व्यक्ती.

32) मान वर्णनः मान द्विविध - i) कलिंग, ii) मागध - श्रेष्ठ द्रव्य प्रमाणं तु यदुक्तम्अस्मिन्मध्येषु तत् कोष्ठवयोबलेषु । (कल्प स्थानका मान मध्यकोष्ठ, मध्य वय, मध्यबल व्यक्तीयों के लिए है।)

मागध मान - शुरुवात ध्वंशी शुष्कद्रव्यों के लिए वर्णित

6 ध्वंशी - 1 मरिची ..... 3 माषक - 1 शाण

8 प्रस्थ - 1 कंस बाकी आचार्य 4 प्रस्थ - 1 कंस

(शारंगधर - परमाणु)

33) द्रवपदार्थ व सद्य उद्घृत - दोगुनी मात्रा मे दे.

34) मान मे पल अथवा तुला शब्द रहने पर इतनी ही मात्रा में दे।

35) अनुक्ते परिमाणे तु तुल्यं मानं प्रकिर्तितम्।

37) द्रव न निर्देश उस स्थान पर सलिल 38) पाद निर्देश चतुर्थांश ग्रहण

39) संदर्भः स्नेहपाक 3 प्रकार

मृद -भेषज कल्क निर्यास समान होनेपर मृदुपाक - नस्य,[सु.पान भोजन (P.Bh.)]

मध्य - कल्क संयाव (हलुवा) समान और मध्यो दर्वी विमुच्यते - पानार्थ बस्ति, [सु. नस्य अभ्यंग (NA.)]

खर - कल्क शीर्यमाण तथा वर्तमाने होनेपर खर - अभ्यंग [सु. बस्ति व कर्णपुरण (B. K.)]

(सुश्रुत मृदु - स्नेह व औषध पृथक पृथक दिखना

वाग्भट - मन्दपाक - कल्कसमै (अपरिवर्तन)

सुश्रुत मध्य - मधुच्छिष्ट एव विशहम् अविलेपि

वाग्भट - चिक्कणपाक - मदन सदृश कल्क

सुश्रुत खर - कृष्णअवसन्न ईशदविशद चिक्कण

वाग्भट खरचिकणपाक - कल्क, कृष्ण व वर्तिवत.)

सिद्धिस्थान

1) कल्पनासिद्धिरध्याय:

Topics: पंचकर्म सम्बन्धि (12) प्रश्न..... By (अग्निवेश)

1) पंचकर्म कल्पना: स्नेहन काल: i) 3 दिन - मृदुकोष्ठ,

ii) 5 दिन - मध्यमकोष्ठ, iii) 7 दिन - क्रूरकोष्ठ ..... 7 दिन पश्चात् स्नेह सात्म्य.

स्नेहन फल: स्नेहोऽनिलं हन्ति मृदुकरोति देहं मलाना विनिहन्ति संगम्।

स्वेदन: दोषो (सुक्ष्मस्त्रोतस में लीन) को द्रवीभूत कर बहिर्गमनोमुखी।

i) वमन पूर्व दोष का उत्कलेशन; ग्राम्योदकानुपरसैः + पयसा - कफोत्क्लेश

[एकोहोपरतस्तद्वद् भुक्तवा प्रच्छर्दनं पिबेत्।..... (च. सू. 13 / 81)]

स्नेह पीने के 1 दिन बाद द्रव, उष्ण, मांसरस, चावल खिलाकर वमन करायें.

स्नेहन के 3 दिन बाद विरेचन (प्रस्कन्दन) करायें

ii) विरेचन पूर्व आहार: रसैस्तथा जांगलजैः यूषैःस्निग्धः कफअवृध्दिकरे।

iii) वमन के लिए वृध्दकफ; विरेचन के लिए मन्दकफ वांछनीय।

v) वमनार्थ में कफक्षीण हो तो वमनौषध नीचे चली जाती है

& if विरेचनार्थी में कफवृध्दि Then वह वमन करा देती है।

कफवृध्दि - Easy वमन और विरेचन औषध Then वमन.

कफक्षय - Easy विरेचन वमन औषध Then विरेचन.,मन्दकफ - सम्यक विरेचन.

(वमन, विरेचन,रक्तमोक्षण में उत्सृष्ट द्रव्य 1 प्रस्थ -13. 5 पल

(सार्धत्रयोदशपल) - 54 तोले)

2) पंचकर्म क्रम: अंतर्बाह्य स्नेहन, स्वेदन, वमन, संसर्जनक्रम, स्नेहन, स्वेदन, विरेचन, संसर्जनक्रम.

संसर्जनक्रम: पेयां विलेपीमकृतं कृतं च यूषं रसं त्रिर्द्विरथैकशश्च।

क्रमेण सेवेत विशुध्दकाय: प्रधानमध्यावर शुध्दि शुध्द:॥

i) प्रधानशुध्दि - पेया, विलेपी, अकृत& कृत यूष, मांसरस के 3 - 3 अन्नकाल (∴ 12 अन्नकाल), ii) मध्यशुध्दि - 2 - 2 अन्नकाल (8 अन्नकाल).

iii) अवरशुध्दि - 1 - 1 अन्नकाल (4 अन्नकाल).

	जघन्यशुध्दि	मध्यमशुध्दि	प्रधानशुध्दि
वमन मानिकी	1 प्रस्थ	$1^1/_2$ प्रस्थ	2 प्रस्थ
(वाग्भट	1/2 प्रस्थ	1 प्रस्थ	2 प्रस्थ)
विरेचन मानिकी	2 प्रस्थ	3 प्रस्थ	4 प्रस्थ
(वाग्भट	1 प्रस्थ	2 प्रस्थ	4 प्रस्थ)
वमन वैगिकी	4 वेग	6 वेग	8 वेग
विरेचन वैगिकी	10 वेग	20 वेग	30 वेग
वमन आन्तिकी	पित्तान्त	पित्तान्त	पित्तान्त
विरेचन आन्तिकी	कफान्त	कफान्त	कफान्त
वमन विरेचन लैंगिकी	सम्यक् योग लक्षण	सम्यक् योग ल.	सम्यक् योग ल.

3) सम्यग्योग लक्षण - i) वमन:

a) क्रमात् कफ: पित्तमथानिलश्च यस्यैति सम्यकवमित: स इष्ट:।

हृत्पार्श्वमूर्धेन्द्रियमार्गशुध्दौ तथा लघुत्वेऽपि च लक्ष्यमाणे॥ च.सि. 1

b) कफ पश्चात् पित्त, हृत्कण्ठशिर स्वच्छ, देहलघुता, कफस्त्रावण..(सु.चि.33)

i) निविबंध प्रवर्तन्ते, ii) वैपरित्यमअयोगानाम्, iii) न च अति महती व्यथा.

c) कफपित्तानिलक्रमात्, मन:प्रसाद, स्वस्थता, अधिक कष्ट न होना। .... (वा.सू.18)

ii) वमन हिनयोग: a) स्फोट कोठ कण्डु, हृद्स्त्रोतो अशुध्दि, गुरुगात्रता.

b) कफ प्रसेक, हृदयविशुधि, कण्डू.

c) i) वेगाना अप्रर्वतनं; ii) प्रवृत्ति सविबंधा, iii) केवलस्य औषधस्य वा.

iv) निष्ठीव, कण्डू, कोठ, ज्वर,

iii) वमन अतियोग: a) च. सू. 15 - फेनिलरक्त चन्द्रिकोपगमन.

च.सि.1 – तृण्मोहमूर्च्छानिलकोपनिद्राबलादिहानि.

Note : a) - चरक, b) - सुश्रुत, c) - वाग्भट.

b) पित्तातियोग, विसंज्ञता, हृत्कण्ठपीडा.

c) फेनचन्द्ररक्तवत, घोर वातव्याधी, तम, भ्रमादि, तथा जीवरक्त निकलने से (मृत्यु) संभव। दाह, कण्ठशोष.

विरेचन - i) सम्यग्योग:

a) च. सू. 16 - दौर्बल्य, लघुता, ग्लानि, आदि;.

च.सि.1 विट,पित्त,कफ,वायु:निस्सरण,स्त्रोतोविशुद्धि,इन्द्रियप्रसाद,लघुत्व,अग्निवृध्दि

b) कफयुक्त दोष बहिर्गमन, नाभि में लघुता, मनतुष्टी, अनुलोमन.

c) विरेचन हीनयोग विपर्यय.

विरेचन - ii) हिनयोग:

a) छीवन, हृदयाशुध्दि, उत्क्लेशश्लेष्मपित्तयों; छर्दि, स्तैमित्यादि, पीनस ...(च.सू.16)

स्याच्छलेष्मापित्तनिल सम्प्रकोप: सादस्तथाऽग्नेगुरुता, प्रतिश्याया।

तन्द्रा तथा छर्दिरोचकश्च वातानुलोम्यं न च दुर्विरिक्ते॥ च.सि.1

b) हृदय,कुक्षि अशुध्दि; परिदाह, कण्डु, विण्मूत्रसंग.

c) हृत्कुक्षिऽशुध्दि, अरुचि, पिटका, पीनस, वातविट्ग्रह। (उत्क्लेश/श्लेष्मपित्तयो)

विरेचन - iii) अतियोग:

a) च.सू 16 - विट्पित्तश्लेष्म वातानाम्; मेद मांसोदक सदृश्य रक्त नि: श्लेष्मपित्तमुदकं, कृष्णशोणित, तृणादि।

च. सि. 1 - कफास्त्रपित्तक्षयजानिलोत्थ सुप्तमंगमर्दक्लम वेपनाद्या।

निद्राबलाभावतम: प्रवेश: सोन्माद हिक्काश्च॥

b) मूर्च्छा, गुदभ्रंश, कफातियोग, शूल.

c) गुदभ्रंश, भ्रम, नेत्रप्रवेश, नि:श्लेष्म उदक श्वेत कृष्णसलोहित मांस धावनतुल्य मेदखण्ड सदृश मल.

निरूहबस्ति - i) सम्यग्योग.

प्रसृष्टविण्मूत्र समीरणत्वं रूच्याग्निवृध्द्याशयलाघवानि।

रोगोपशान्ति: प्रकृतिस्थताच बलं च तत् स्यात् सुनिरूढलिंगम्॥

निरूहबस्ति - ii) अयोग.

स्याद् रूक्छिरोहृद् गुदबस्तिलिंगे शोफ: प्रतिश्याय विकर्तिके च।

हृल्लासिका मारूतमूत्रसंग: श्वासो न सम्यक् च निरूहिते स्यु:॥

निरूहबस्ति - iii) अतियोग. विरेचन अतियोग सदृश.

अनुवासनबस्ति - i) सम्यग्योग.

प्रत्येत्यसक्तं सशकृच्च तैलं रक्तादिबुध्दिइन्द्रियसम्प्रसाद:।

स्वप्नानुवृत्तिलघुता बलं च सृष्टाश्च वेगा: स्वनुवासिते स्यु:॥

अनुवासनबस्ति - ii) अयोग.

अध:शरीरोदरबाहु पृष्ठपार्श्वेषुरूग् रूक्षखरंच गात्रम्।

ग्रहश्च विण्मूत्र समीरणानाम् असम्यगेतान्यनुवासिते स्यु:॥

अनुवासनबस्ति - iii) अतियोग.

हृल्लास मोहक्लमसादमूर्च्छविकर्तिका.

शिरोविरेचन - i) सम्यग्योग.

a) उर: शिरोलाघवम् इन्द्रियाच्छ स्त्रोतोविशुध्दिश्चभवेतविशुध्द।

b) लाघवंशिरस : स्त्रोतोशुध्दि, व्याधिनिर्णय: चितेन्द्रियप्रसाद॥

शिरोविरेचन - ii) अयोग.

a) गलोपलेप: शिरसोगुरूत्वं निष्ठीवनं.

b) कण्डू, उपदेह, गुरूता, स्त्रोतों से कफ का निकलना.

शिरोविरेचन - iii) अतियोग.

a) शिरोऽक्षिशंखश्रवणार्तितोदवत्यर्थशुध्द तिमिरं च पश्येत्।

b) मस्तुलुंगक्षय, वातवृध्दि, इन्द्रियविभ्रम, शिर में शून्यता॥

Note - सु. ने नस्य & शिरोविरेचन के योगावियोग के अलग लक्षणे बताए है। ....(सु.चि.2

बस्ति कल्पना: 8th दिन - आहार

i) वमन - विरेचन से शोधन पश्चात् 9th दिन अनुवासन बस्ति दें।

ii) इसके पश्चात् 3 दिन तक तैलाक्तगात्रस्य (मालिश) कर नाति बुभुक्षित

(भूखा न हो) दशा में निरूह बस्ति प्रयोग।

iii) बस्ति प्रत्यागमन पश्चात धन्वरसेन भोज्य (जांगल पशु–पक्षि मांस) & उसीदिन रात्री में अनुवासन बस्ति दें।

अनुवासन बस्ति प्रयोग काल:

i) शीते वसन्ते च दिवा ii) रात्रौ शरद ग्रीष्म घनामेष (वर्षा)

अनुवासन & निरूह क्रमः

i) अनुवासन बस्ति प्रत्यागम बाद उस दिन अनाहर & दूसरे दिन प्रात भोजन दें।

ii) निरूह बस्ति के 3 - 3 दिन के अन्तराल पर अनुवासन बस्ति दें।

वायु न बढे हो तो 3 दिन अनुवासन बस्ति दें।

कफपित्त बढे हो तो 5 दिन अनुवासन बस्ति दें।

4) अनुवासन बस्ति संख्या: i) कफज विकार -1-3, ii)पित्तज विकार -5 -7 iii) वातज विकार - 9 - 11, iv) बस्ति सदैव अयुग्म संख्य में देना चाहिये।

v) विरेचन के बाद निरूह बस्ति & vice a versa का प्रयोग 7 दिन तक नही करना चाहिये।

5) निरूह बस्ति गुण: शिशुवृध्दयानां, निरत्ययः वयःस्थापन, सर्वार्थकारी, सर्वगदापहश्च, विष्वक्स्थितं, दोषचयं निरस्य, सर्वान् विकारान् शमयेन.

अनुवासन बस्ति गुण : i) बलवर्ण प्रद न तैलादानात्

ii) परमस्ति (वातजन्य वेदना में तैल सर्वश्रेष्ठ) iii) पुष्पफल प्रदश्च तथा नरः।

बस्ति सामान्य गुण: भग्न, शूल, नृभिःसमेताः,

a) स्तब्धा, संकोच, पंगु.... क्षीणेन्द्रिय, कृश नर के लिये।

c) गुल्म, आनाह, खुड (वातरक्त - वै. निघण्टु), प्लीहा, वृध्दि, अश्मरी, भीषणवातरोग.....(वा.सू.19)

6) बृंहण बस्ति निषेध:

a) कुष्ठ, प्रमेहादि, मेदस्वी, विशोधित, शोधन योग्य पुरूष,

b) उदरी, प्रमेही, कुष्ठी, स्थूलव्यक्ति.

c) पाण्डु, कामला, प्रमेह, पीनस, अभिष्यन्दि, आढ्यमारूत (उरूस्तम्भ), गरविष.

निरूह बस्ति निषेध: a)क्षीणक्षताना,शोषीणां,भृशदुर्बलानाम्,मूर्च्छा, विशोधित जिनका बल विड के आश्रित

b) अतिस्निग्ध,आमातिसार,श्वास, कास, दकोदर, मधुमेह, सप्त मास के उपर गर्भिणी।

सुश्रुता नुसार बस्ति निषेध (Both निरूह & अनुवासन):

भय, शोक, पिपासा, अरोचक, अजीर्ण, अर्श, पाण्डु, भ्रम, मद, मूर्च्छा, कुष्ठ, प्रमेह, श्वास, कास, क्षत, क्षीणः 3 - 4 मास की गर्भावस्था।

बस्ति प्रधानता:

a) शाखागताः कोष्ठगताश्च रोगा मर्मोर्ध्वसर्वावयवांगजाश्च।
ये सन्ति तेषां नहि कश्चिदन्यो वायोः परं जन्मनि हेतुरस्ति।।
विण्मूत्रपित्तादिमलाशयानां विक्षेपसंघातकरः स यस्मात्।
तस्यातिवृध्दस्य शमाय नान्यद् बस्ति विना भेषजमस्ति किंचित्।।
तस्माच्चिकित्सार्धामिति ब्रुवन्ति सर्वा चिकित्सामपि बस्तिमेके। . (च.सि.1)

b) इह खलु बस्तिर्नानाविध द्रव्य संयोगात् दोषाणा संशोधन संशमनं संग्रहाणि करोति।
क्षीण शुक्रं वाजी करोति, कृशं बृंहति, स्थूलं कर्शयति, चक्षुः प्रीणयति।।
शरीरोपचयं वर्ण बलमारोग्यमायुषः। सुश्रुत

* बस्तिर्वातेच पित्तेच कफे रक्तेच शस्यते।
संसर्गे सनिपाते च बस्तिरेव हितः सदा।। .....(सु.चि.19)

* अनुवासन प्रत्यागमन काल - 3 याम (9 hrs.)

संख्यानुसार बस्तिभेद:

बस्ति	अनुवासन			निरूह	कूल आनुवासन
	आदि	मध्य	अन्त	मध्य	
कर्म -30)	1	12	5	12	18
काल 16,चक्र.(वा.-15)	1	6	3	6	10
योग (8)	1	3	1	3	5

वर्क - कालस्ततोऽर्धेन

शिरोविरेचन: i) शोधनोपरान्त शिर का तलस्वेद.

ii) प्रबल दोष में - 3 बार ; मध्य - 2 बार, अल्प - 1 बार शिरोविरेचन दें।

iii) शिरोविरेचन अतियोग में तर्पण (तृप्तिप्रद), मदु, तरल पदार्थ & शीततैल से मालीश।, iv) शिरोविरेचन अयोग में स्नेहन के बाद तीक्ष्ण शिरोविरेचन।

7) वर्ज्य: अत्यासन, दिवास्वाप, मैथून, वेगधारण आदि

8) पथ्य: a) द्वि परिहारकालः। पंचकर्म में दुने समय तक पथ्य सेवन करे.

b) (सुश्रुत 1 मास / बलप्राप्त होने तक)

9) बस्ति किस कारण भीतर नहीं जाती ?

i) बध्दे ii) प्रणीते विषम iii) अर्श iv) कफविड्विबध्दे।

10) शीघ्र लौट आती है ?

i) अत्युष्ण, ii) तीक्ष्ण, iii) मृदौ कोष्ठे, iv) वर्चोऽनिलमूत्रवेगे,
v) वातेऽतिवृध्दे, vi) ऽल्पबलेगुदे.

11) देर से बाहर निकलती है ? i) दोषावृतो, ii) ऽल्पो (द्रव्य), iii) ऽल्पवीर्यः

12) बस्ति बाहर न निकली तो मेद कफ अधिक्य से शूलाङ्गसुप्ति श्वयथू उत्पत्ती - विकार नष्ट नहीं होते.

2) पंचकर्मीया – सिध्दि.

Topics:वमन, विरेचन, निरूह,अनुवासन योग्य, अयोग्य व्यक्ति,अनुपक्रम्य रोगी.

वमन अनर्ह (अवाम्य)

1) क्षतक्षीण - रक्तातिप्रवृत्ति.

2) अतिस्थूल,अतिकृश, बाल, वृध्द दुर्बल श्रात पिपासित क्षुधित - औषध बल असहत्वात प्राणोपरोधः

3) कर्मभाराध्व हत, उपवास, मैथून, अध्ययन, व्यायाम, चित्त प्रसक्त क्षाम - रौक्ष्याद, वातरक्तच्छेदक्षतभयं स्यात्

4) गर्भिणी - गर्भव्यापद आमगर्भभ्रंश, दारूण रोग.

5) सुकुमार - हृदयापकर्षणाद् उर्ध्वअधोवा रूधिर अतिप्रवृत्ती.

6) संवृत्तकोष्ठ, दुच्छर्दन - अतिप्रवाहण - उत्क्लीष्टदोष अन्तकोष्ठमे जाकर विसर्प स्तंभ, जाड्य, वैचित्य, मरणं.

7) उर्ध्वग रक्तपित्त, प्रसक्तछर्दी - उदान वायु प्राण को नष्ट करके रक्तातिप्रवृत्ती.

8) उर्ध्ववात, आस्थापित, अनुवासित - उर्ध्व वातातिप्रवृत्ती.

9) हृद्रोगी - हृदयोपरोध. 10) उदावर्त - घोरतर उदावर्त शीघ्रतरहन्ता

11) मुत्राघात, प्लीहा, गुल्म उदर, अष्ठीला स्वरोपघात - तीव्रतर शूल प्रादुर्भाव.

12) तिमिर - तिमिरातिवृध्दी. 13) शिरशंखकर्णक्षिशूलार्ता - शूलातिवृध्दी उपरोक्त व्याधी विष,गर,विरूध्दभोजन,आमसे उत्पन्न होने पर वमन निषेध नही.

14) कृमीकोष्ठ, वातव्याधी, 15) अर्श, भ्रम, पार्श्वरूक.

वमन अर्ह (वाम्य)

पीनस, नवज्वर, राजयक्ष्मा, कास, श्वास, श्लीपद, मदाग्नी, विषपित, अधोग रक्तपित्त,मुखप्रसेक,हृल्लास,उन्माद,अतिसार,स्तन्यदुष्टी,कफव्याधि,विरूध्दाजीर्ण, अरूचि,अपस्मार, मेदोरोग,गलग्रह,गलगंड, अर्श, शोफ,पाण्डु,मुखपाक,कुष्ठ, प्रमेह, विषदग्ध,दष्ट,विध्द,अपची,अलसक,विसूचिका,विदारिका, हृद्रोग, चित्तविभ्रम,विसर्प, विद्रधी,पूतिनासा, कण्ठपाक, कर्णस्त्राव, अधिजिव्हीका, गलशुण्डिका, ग्रंथि, अर्बुद, *अर्श(वा)अयोग्य,चरक योग्य.[चरक चिकित्सा 30अध्यायोमे गुल्म क्षतक्षीण उदर ग्रहणी हिक्का छर्दी तृष्णा मदात्ययासे आगे सभी व्याधी छोडके शेष व्याधी वाम्य.]

विरेचन अनर्ह

1) सुभग - सुकुमार दोष (वमन के समान)

2) क्षतगुद - प्राणोपरोधकरीं रूजाजनयेत 3 मुक्तनाल - अतिमल प्रवृत्तिं हन्यात

4) अधोक रक्तपित्त - अतिरक्त प्रवृत्ती हन्यात्

5) विलंघीत दुर्बलेंद्रिय, अल्पाग्नि, निरूढ - औषध वेगं न सहेरन्.

6) कामादि व्यग्र - न प्रवर्तते कृच्छ्रेन वा, प्रवर्तमानम् अयोग दोषान कुर्यात

7) अजीर्ण - आमदोष स्यात् 8) नवज्वर - अविपक्व दोष निर्हरणसे वात प्रकोप

9) मदात्यय - क्षीण देहं वायु प्राणोपरोधं कुर्यात

10) आध्मान - वायु कोष्ठ में विसर्पन सहसाऽऽनाहं तीव्रतरं मरणं वा - जनयेत्.

11) शल्यार्दित - अभिहत - क्षतामध्ये वायु आश्रीत होकर जिवितं हिस्यात

12) आतिस्निग्ध - अतियोगभयं 13) अतिरूक्ष - अंगप्रग्रह.

14) दारूण कोष्ठ - हृत्शूल,पर्वभेद,आनाह, अंगमर्द, छर्दी, मूर्च्छा,क्लम - मृत्यू.

15) क्षतादीनां गर्भिण्यन्तानां छर्दनोक्ता दोषस्यात, तष्मादेते न विरेच्या

16) नवप्रसूता 17) नवप्रतिश्याय 18) अतिसार, नित्य दु:खीत, हृद्रोगी, भीत.

विरचेन अर्ह

ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, उर्ध्वग रक्तपित्त, अर्श भंगदर, प्लीहा दोष,गुल्म, ग्रंथि, मुत्राघात, कृमिकोष्ठ, विसर्प, पाण्डु, शिर: शूल, वातरक्त, योनीदोष, तिमिर,उदर, छर्दी, विस्फोट, श्वयथु, ब्रध्न,अर्बुद,अलसक,विसुचिका,हृद्रोग, आस्यदाह, अरूचि, अपस्मार, गर, पक्वाशय रूजा, विबंध, विद्रधि, दूष्टव्रण काच अभिष्यंद, व्यंग, हलीमक, श्वास, कास, कामला, अपचि, रेतोदोष, हृल्लास, गलगंड, पार्श्वशूल, उदावर्त, निलिका, उन्माद, नेत्रस्त्राव, नासास्त्राव, अविपाक, शस्त्रक्षत, क्षार, अग्निदग्ध, अक्षिपाक, गुददाह, मेढ्रदाह, नासादाह, कर्णदाह, आनाह, स्तन्यदोष.

* वमन विरेचन अनर्ह : क्षतादिनां गर्भिण्यान्ता, निरूहित,

* वमन विरेचन अर्ह - प्रमेह कुष्ठ, उन्माद अपस्मार, पाण्डु, शोथ, श्वासकास, अलसक विसुचिका, गलगण्ड, अर्श, वाम्य (नवज्वर), विरेच्य (ज्वर), (विसर्प सुश्रुत)

[चरक चिकित्सा 30 अध्यायोमें क्षतक्षीण, हिक्का, छर्दी, तृष्णा, मदात्यय, राजयक्ष्मा, अतिसार छोडके शेष व्याधी विरैच्य.]

अनास्थाप्य

1) अजीर्ण, अतिस्निग्ध, पीतस्नेह - दुष्योदर, मूर्च्छा, श्वयथू

2) उत्क्लिष्ट दोष, अल्पाग्नि - तीव्र अरोचक.

3) यान क्लान्त, अतिदुर्बल, क्षुधार्त, श्रमार्त, तृष्णार्त - आशु देहं शोषयेत्

4) अतिकृश - कार्श्यम् पुनर्जनयेत

5) भुक्तभक्त, पितोदक - वायु उत्क्लेश होकर, क्षीप्रं घोरान विकार जनयेत्

6) वमित, विरीक्त - रूक्ष शरीर क्षतं क्षार इव दहेत्

7) कृत् नस्यकर्म - विभ्रंश, भृशसंरूध्दस्त्रोतस

8) क्रुध्द, भीत - बस्ति ऊर्ध्वम् उपप्लवेत्

9) मत्तमूर्च्छित - संज्ञा विचलितं, चित्तोपघात

10) प्रसक्त छर्दि श्वासकासहिक्का - ऊर्ध्वीभूतो वायु, ऊर्ध्वं बस्ति नयेत्.

11) बध्द छिद्रोदकोदर, आध्मान - भृशतरमाध्मान, प्राणान् हिंस्यात्

12) अलसक, विसुचिका, आमप्रजाता, आमातिसार - आमदोष वृध्दि

13) मधुमेह, कुष्ठि - व्याधे: पुनर्वृध्दि:

14) क्षतक्षीण, सप्तमांस गर्भिणी, पाण्डु, भ्रम, अरोचक, उन्माद, शोफ, स्थौल्य, कंठशोष, अल्पवर्च:, शूनपायू (गुदशोथ)

आस्थाप्य

शूल, शिर:शुल, योनीशूल, हृदय,पार्श्व,पृष्ठ, कटी शूल,स्फिगजानु जंघा उरू शुल, गुल्म प्रपदशूल,बाहूअंगुलीस्तन दंत नखपर्वास्थी शूल,शर्कराशुल,रज:क्षय, शुक्रक्षय, बल-मांस-दोष क्षय,स्तन्यक्षय.वातसंग,मुत्रसंग,मलसंग,आध्मान,गुल्म, शुध्दातिसार,सर्वांगरोग,एकांगरोग,उदावर्त, ब्रध्न, आक्षेप, तिमिर, अर्दित, पक्षाघात, मन्याग्रह, ज्वर प्रतिश्याय, वातरक्त, अश्मरी, मूढगर्भ, शुक्रसंग, वातव्याधी, अंगसुप्ती कृमीकोष्ठ,पर्वभेद,अभिताप,प्लीहादोष, हृद्रोग, भंगदर, उन्माद,वेपन (कंप) अंगगौरव, अतिलाघव,विषमाग्नि, पाणिभूत, शोष स्तंभआन्त्रकूजन परिकर्तिका हनुग्रह, अधिमंथ, उपदंश, अर्श, मूत्रकृच्छ्र.

अनअनुवास्य

1) अनास्थाप्य 2) अभुक्त - अनआवृत्तमार्ग स्नेह उर्ध्वगामी.

3) नवज्वर, पाण्डू, कामला, प्रमेह -दोष उत्क्लीष्ट होकर उदर उत्पत्ती

4) अर्श - अभिष्यंद आध्मानं कुर्यात 5) अरोचक - अन्न गृध्दी नष्ट होती है

6) मंदाग्नी व दुर्बल - मन्दतरमग्निं कुर्यात् 7) प्रतिश्याय, प्लीहोदर, कफोदर, उरूस्तंभ, वर्चोभेद, विषपीत, पित्त, कफाभिष्यंद, गुरुकोष्ठ, श्लीपद, गलगण्ड, अपचि कृमीकोष्ठ - दोषवर्धन 8) कुष्ठ स्थौल्य, पीनस, कृश.

अनुवास्य

सर्व आस्थाप्य वही अनुवास्य विशेषत: रूक्ष, तीक्ष्णाग्रय: केवल वातरोग अनुवासन प्रधानतम् इतिउक्तं मुले द्रुमप्रसेकवत्॥

अनस्यार्ह

1) अजीर्ण,भुक्तभक्त-उर्ध्व स्त्रोतस आवृत्त करके कास,श्वास,छर्दी,प्रतिश्याय

2) पीतस्नेह,मद्य,तोय आंकाक्षा - मुखनासास्त्राव,अक्षिउपदेह,तिमिर, शिरोरोग

3) स्नात: शिरस:, स्नातुकाम: - प्रतिश्याय 4) क्षुधार्त - वातप्रकोप.

5) तृष्णार्त - तृष्णावृध्दी, मुखशोष. 6) श्रमार्त, मत, मूर्चित - चित्तोपघात

7) शस्त्रदण्डहत - तीव्रतररूजा 8) व्यवाय व्यायाम पानक्लातांना - शिर स्कंध नेत्र उर: पीडा 9) नवज्वर, शोकाभितप्त - उष्मा द्वारा नेत्र नाडीव्याप्त करके तिमिर व ज्वरवृध्दी. 10) विरिक्त-वायू - इंद्रिय उपघात 11) अनुवासित - कफ प्रकोप, शिरोगुरूत्व, कण्डू, कृमीदोष.12) गर्भिणी - गर्भस्तंभ, काण, कुणि, पक्षहत, पीठसर्पी बालक.13) नवप्रतिश्यार्त - स्त्रोतस व्यापद. 14) अनृऋतू, दुर्दिन - शीतदोषात् पुतिनस्य शिरोरोग स्यात.15) अपतर्पित, पीतद्रव, गरार्त, वेगार्त: 16) वृध्द, बाल, रक्तस्त्रावित, सुतिका, श्वास, कास.

नस्यार्ह

शिरोरोग, दन्तरोग, मन्यास्तंभ, गलग्रह, हनुग्रह, पीनस, गलशुण्डिका, कण्ठशालुक, शुक्ररोग, तिमिर, वर्त्मरोग, व्यंग, उपजिव्हीका, अर्धावभेदक, ग्रीवास्कंन्ध अंस, मुख, नासीका, कर्ण, नेत्र, शिर: कपाल, शिरोरोग, अर्दित, अपतन्त्रक, अपतानक, गलगण्ड, दन्तशूल, दन्तहर्ष, दन्तचाल, अक्षिरोग, अर्बुद, स्वरभेद, वाकग्रह, गदगद क्रथन (निसंज्ञता), उर्ध्वजत्रुगत, परिपक्व वातविकार.

चरक

	वमन		विरेचन		आस्थापन		अनुवास्य		नस्य	
	अनर्ह	अर्ह	अनर्ह	अर्ह	अनर्ह	अर्ह	अनर्ह	अर्ह	अनर्ह	अर्ह
नवज्वर		✓	✓				✓		✓	
ज्वर				✓		✓				
बालवृध्द	✓		✓						✓	
पीनस		✓								✓
प्रतिश्याय						✓	✓		✓	
प्रमेह		✓		✓	✓		✓			
कुष्ठ		✓		✓	✓					
मन्दाग्नि		✓	✓		✓		✓			
अजीर्ण		✓	✓		✓				✓	
अलसक		✓		✓	✓					
विसुचिका		✓		✓	✓					
राजयक्ष्मा		✓								
श्वास कास		✓		✓	✓					
उन्माद		✓		✓		✓				
अपस्मार		✓		✓						
तिमिर					✓					✓
हृद्रोग	✓			✓		✓				
गर्भिणी	✓		✓		✓			✓	✓	
सुतिका			✓		✓			✓		

नस्यकाल: a) प्रावट्, शरद, वसन्त ऋतु में।

ग्रीष्म - पुर्वान्ह में, शीत (हेमन्त) - मध्यान्ह में, वर्षा - अदुर्दिन में.

कफजरोग - प्रात: काल, पित्त - मध्यान्ह, वात - सायंकाल

Also; शरद, वसन्त - प्रात : काल, शीतकाल - दोपहर

ग्रीष्मकाल - सायं, वर्षाकाल - धूप निकल जाने पर * सीमा: 1 सप्ताह तक।

3) बस्तिसूत्रीया – सिध्दि

Topics : बस्ति नेत्र, बस्तिपुटक, नेत्रप्रमाण, द्रव्यप्रमाण, बस्तिदोष.

1) बस्तिसिध्दि के आवश्यक अंग (10):

दोषौषधदेशकालसात्म्यग्निसत्वौकवयोबलानि।

बस्ति: प्रयुक्तो नियत गुणाय स्यात सर्व कर्मानीच सिध्दीमन्ति।।

2) बस्तिनेत्र द्रव्य: त्रिकर्णिका युक्त नेत्र ; सुवर्ण, रौप्य, अस्थि, दन्त, मणि।

3) बस्तिनेत्र प्रमाण :

	आयु	नेत्रप्रमाण	परिणाह
चरक a)	1 - 6 yrs.	- 6 अंगुल	मुद्गप्रमाण
	प्रतिवर्ष	1/3 अंगुल से बढाना	
	9 yrs.	- 7 अंगुल	मुद्गप्रमाण
	12 yrs.	- 8 अंगुल	(मटर) सतीन
	प्रतिवर्ष	1/2 अंगुल से बढाना	
	20 yrs.	- 12 अंगुल	(छोटीबेर) कर्कंधु
	20 yrs. से आगे	- 12 अंगुल	(छोटीबेर) कर्कंधु

नेत्र मूलभाग (with 2 कर्णिका) स्वांगुष्ठ सदृश & अग्रभाग (with 1 कर्णिका) कनिष्ठिका सदृश; ऋजु, गोपुच्छाकृति, श्लक्ष्ण, गुडिकामुखानि;

b) आयु	लम्बाई	मोटाई	कर्णिका	प्रवेशद्वार	अग्रछिद्र
1 yrs.	6 अंगुल	कनिष्ठिका	1.5 अंगुल	कड्कपक्ष-सदृश	मुद्गबीज
8 yrs.	8 अंगुल	अनामिका	2 अंगुल	श्येनपक्ष-सदृश	माष
16 yrs.	10 अंगुल	मध्यमा	3.5 अंगुल	मोरपक्ष - सदृश	मटर
25yrs.↑	12 अंगुल	अंगुष्ठोदर	3 अंगुल	गृध्रपक्षनाडी–तुल्य	कोलास्थि

c) Upto - 1 yrs. - 5 अंगुल, 1 - 7yrs. - 6 अंगुल, 7 yrs. - 7 अंगुल, 7-12yrs. -8 अंगुल, 16 yrs.- 9 अंगुल, 20 yrs. - 12 अंगुल,

i) मूलभाग मोटाई अंगुष्ठ सदृश, प्रान्तभाग मोटाई कनिष्ठिका सदृश।

ii) नेत्रमुल से 2 अंगुल दूरी पर कर्णिका

वाग्भट –	आयु	मूलभागछिद्र	प्रान्तभाग छिद्र
	(1 - 6) yrs.	1 अंगुल	मुद्गसदृश.
	(7 - 11) yrs.	1.25 अंगुल	माषसदृश.
	(12 - 15) yrs.	1.5 अंगुल	माषसदृश.
	(16 - 20) yrs.	1.75 अंगुल	कलायसदृश.
	20 yrs. ↑	3 अंगुल	कर्कन्धुसदृश.

4) बस्तिपुटक निर्माण: a) वृध्दबैल, माहिष, हरिण, सूकर etc की बस्ति; दृढ, तनु, नष्टसिरो, विगन्ध:, कषायरक्ता, सुबध्दसुत्र.

निरूह प्रयोग: ✻ निरूह बस्ति देने का काल - 3

i) शुक्लपक्ष, ii) जीर्णान्तिम्, iii) प्रशस्तनक्षत्रमुहुर्तयोग.

5) बस्तिविधी:

i) वामपार्श्व शयन; वाम पैर ऋजु & दक्षिण संकुचित; पैर की ओर की हिस्सा उँचा।

ii) नेत्र का चौथाई भाग गुदा में & 1बार में द्रव्य गुदा में प्रविष्ट करना.

6) बस्ति में वाम पार्श्व शयन: i) अग्नि, ग्रहणी, गुदा, वाम भाग में होने से. ii) गुदवली लीन होने से. iii) औषधमार्ग व्यवस्थित.

बस्तिप्रयोग दोष: i) तिर्यक प्रवेश - औषध धारा के रूप में प्रवेश नहीं।

ii) चलित नेत्र - गुदव्रण. iii) अल्प पीडन - आशय में नहीं जाती.

iv) अति पीडन - कण्ठ तक जाकर वमन करती है। (कण्ठं प्रधावत्य)

v) शीतद्रव्य - अतिस्तम्भकर. vi) अति उष्ण द्रव्य - विदाह,मूर्च्छा कर

vii) अतिस्निग्ध द्रव्य - अतिजाड्य. viii) रूक्ष द्रव्य - वातप्रकोप.

ix) तनुद्रव्य, अल्पमात्रा, अल्पलवण - अयोग. x) अधिकमात्रा - अतियोग.

xi) सान्द्र द्रव्य - चिरकाल में बाहर. xii) अति लवण - दाहातिसार.

7) बस्ति में औषध मिलाने का क्रम: मधु,सैंधव+स्नेह + कल्क + कषाय. (माक्षिकं लवणं स्नेहं कल्कं क्वाथम् इति क्रमात) ..... (वा.)

9 & 10) बस्ति संख्या: 1 बस्ति - वात को बाहर निकालती है।

2 बस्ति - पित्त को बाहर निकालती है।

3 बस्ति - कफ को बाहर निकालती है।

निरूह बस्ति पश्चात् कर्म:

i) सुखोष्ण जल स्नान. ii) मांसरस के साथ शालिचावल & उसी दिन सायंकाल में अनुवासन लेना चाहिये।

✻ अनुवासन में स्नेह को निकलनेसे रोकने के लिये स्फिक् को पाणितल से थपथपाना, पैरों का सिंचन।

(Note: निरूह पश्चात् पेयादिक्रम नहीं अपनाया जाता, because विरेचन की तरह इसमें आम का अभाव होता है।)

5) निरूह कल्पना:

	वातविकृति	पित्तविकृति	कफविकृति
माक्षिक (मधु)	1.5 प्रसृत	2 प्रसृत	3 प्रसृत
लवण	1.5 प्रसृत	2 प्रसृत	1.5 प्रसृत
स्नेह	3 प्रसृत	2 प्रसृत	1.5 प्रसृत
कल्क	1 प्रसृत	1 प्रसृत	1 प्रसृत
क्वाथ	5 प्रसृत	5 प्रसृत	5 प्रसृत
निरूह मात्रा -	12 प्रसृत	12 प्रसृत	12 प्रसृत

✻ क्वाथ & कल्क - Same ✻ All मात्रा in प्रसृत (for च.सि. 3 / 30)

i) कषाय 5 भाग ; ii) वातविकार में स्नेह 1/4 भाग; P - 1/6 ; K - 1/8 सर्वदोष में 2.5 प्रसृत स्नेह प्रयोग.

निरूह मात्रा: (1 प्रसृत - 2 पल - 8 तोले) (1 प्रस्थ-16 पल-64 तोले.)

चरक a) 1 yrs. - 1/2 प्रसृत (1 पल), प्रतिवर्ष 1/2 प्रसृत से बढाना.
12 yrs. - 6 प्रसृत (12 पल), प्रतिवर्ष 1 प्रसृत से बढाना.
18 - 70 yrs. - 12 प्रसृत (24 पल), 70 yrs.↑-10 प्रसृत (20ं)

सुश्रुत b) 1 yrs. - 2 अंजलि, 8 yrs. - 4 अंजलि, 16 yrs. - 8 अंजलि, 25 yrs. - 12 प्रसृत, 70 yrs. ↑ - 8 अंजलि.

वाग्भट c) i) 1 yrs. = 1 प्रकुंच (1 पल)

ii) (2 - 12) yrs. प्रतिवर्ष is 1 प्रकुंच बढाना ∴ 12 yrs. = 12 प्रकुंच (12ं)

iii) (12 - 18) yrs. प्रतिवर्ष is 1 प्रसृत (2 प्रकुंच) बढाना ∴ 18 yrs. = 24.

✻ दोषानुसार बस्ति : वात - i) स्निग्धोष्ण एक पवने समांशो।

पित्त - ii) द्वौ स्वादुशीतो पयसा:च पित्ते।

कफ - iii) कटु, उष्ण, तीक्ष्ण, को गोमूत्र में 3 कफ में।

✻ निरूह बस्ति पश्चात् पथ्य:

i) वात - मांसरस. ii) पित्त - क्षीर. iii) कफ - यूष.

✻ अनुवासन बस्ति : i) वातज रोग - बिल्वतैल.
ii) पित्त रोग - जीवनीयगण सिध्दतैल.
iii) कफ रोग - मदनफलसिध्दतैल.

✻ द्विपंचमूलादि बस्ति - निरूहमुख्य:

✻ पुनर्नवादि निरूह बस्ति - सर्वसंसर्गकृतामयघ्न:

4) स्नेहव्यापत्सिध्दि.

Topics: स्नेह बस्ति (त्रिदोषनाशक) से होनेवाले व्यापत्।

1) अनुवासन बस्ति लाभ: व्याधि, व्यायाम,कर्म,अध्वसे क्षीण, अबल & निरूज व्यक्ति क्षीणशुक्र में बल प्रद, जनयेदप्रजानां.

2) स्नेहबस्ति व्यापत् 6:

वातपित्तकफात्यन्न पुरीषैरावृतस्य च।
अभुक्तेच प्रणितस्य स्नेहबस्ते षडापद।।
शितोऽल्पो वाऽधिके वाते, पित्ते ऽत्युष्ण:, कफे मृदु।
अतिभुक्ते गुरू, वर्चसंचयऽल्पबलस्तथा।।

वात, पित्त, कफ, अत्यन्न, पुरीषावृत, अभुक्त.

व्यापद	स्नेहबस्ति	लक्षण	चिकित्सा
1. वात	अल्प/ शित	अंगमर्द, ज्वर, आध्मान, शीत, स्तम्भ, उरूपीडा, पार्श्वरूक , वेष्ठन.	पितद्रु तैल व रास्नातैल निरूह बस्ति व सायं अनुवासन बस्ति.
2. पित्त	अत्युष्ण	दाह, राग, तृषा, मोह, तमकश्वास, ज्वर.	मधुर व तिक्त रसयुक्त निरूह बस्ति.
3. कफ	मृदु	तन्द्रा, शीतज्वर, आलस्य, प्रसेक, मूर्च्छा, ग्लानि.	कषाय कटुतीक्ष्ण उष्ण, गोमुत्र, फलतैल व अम्ल युक्त निरूह बस्ति.
4. अन्न	गुरू	छर्दि, मूर्च्छा, ग्लानि, अंगमर्द, आम के लक्षण, दाह.	पाचन, आमनाशक व मृदुविरेचन
5. पुरिष	अल्पबल	विण्मूत्रानिलसंग, अर्ति, गुरूत्व, आध्मान, हृद्ग्रह।	स्नेहन स्वेदन फलवर्ति, उदावर्तनाशक, श्यामा व दशमुल,सिध्द,निरूह व अनुवासन बस्ति.
6. अभुक्त	अनावृत्त मार्ग	धावत्युर्ध्वं कण्ठादुर्ध्वेभ्य:	श्यामा, बदर, कूलथ, सिध्द निरूह व सिध्द तैलअनुवासन, कण्ठग्रह

स्नेहबस्ति व्यापद: सु. i) संशुध्द व्यक्ति में स्नेहव्यापद ii) अस्विन्न में व्यापद iii) अहोरात्र में वापस आनेवाला स्नेह अल्पगुणी & व्यापद रहित।

वा. i) सवातप्रयुक्त बस्ति ii) अतिद्रुत एवं उत्क्षिप्त. iii) उल्लुप्त. iv) अतिवेगव्यापद्

3) प्रतिदिन अनुवासनीय:

रूक्ष भोजी, दीप्ताग्नि, व्यायामी, मारूतामयी, वंक्षणश्रोणि के वातविकार, उदावर्ती.

4) मात्राबस्ति: कर्मव्यायाम भाराध्वयानस्त्रीकर्षितेषु च।
दुर्बल वातभग्ने च मात्राबस्ति: सदा मत:॥
यथेष्टाहारचेष्टस्य सर्वकालं निरत्यय:।
ह्रस्वाया: स्नेहमात्राया मात्राबस्ति: समो भवेत्।.... (च.सि.4)
बल्यं, सुखोचर्य, सुखं, बृहणं, वातरोगनुत.

5) मात्राबस्ति लाभ:

a) बल्य, सुखोचर्य, सुखं सृष्टपुरीषकृत्, बृंहण, वातरोगनुत्.

b) मात्रा - अनुवासन से अर्ध

* i) चन्दनाद्य यमक - पित्तघ्नम् अनुवासनम्.

ii) सैन्धवादि अनुतैल - कफजरोग नाशक.

iii) विडंगादि तैल (3 प्रकार से प्रयुक्त) - पानाभ्यंगानुवासनै:

6) अनु. बस्ति लाभ - जनयेप्रजानां च प्रजां स्त्रीणां तथा नृणाम्।

7) अनुवासित को - उष्णं केवलं जलं
(स्नेहाजीर्ण जरयति, श्लेष्माणं तद्भीन्नति, मारूतस्यानुलोम्यं)

8) न चैव गुदकण्ठाभ्यां दद्यात्स्नेहमनन्तरम्।
उभयस्मात् समं गच्छन् वातमग्निं च दूषयेत्॥.... (च.सि.4/49)

5) नेत्रबस्तिव्यापत्सिध्दि

Topics: (बस्तिनेत्र, बस्ति, बस्तिदाता) के दोषों का वर्णन।

1) बस्तिनेत्र दोष:

a) चरक: 8 - ह्रस्व दीर्घ तनु स्थुल, जीर्ण शिथिलबन्धनम्।
पार्श्वछिंद्र तथा वक्रंऽष्टौ नेत्राणि वर्जयेत्॥ ..... (5/4)
अप्राप्त्यतिगतिक्षोभ कर्षणक्षणनस्त्रवा:।
गुडपीडा गतिर्जिह्मा तेषां दोषा यथाक्रमम्॥.... (5/5)

i) ह्रस्व - औषध पक्वाशय तक न पहुँचता है। ii) दीर्घ - औषध की अतिगति.
iii) तनु - गुद क्षोभ. iv) स्थुल - गुदकर्षण (खरोच)
v) जीर्ण - क्षणन (व्रणोत्पत्ति) vi) शिथिलबन्धन - औषध बाहर स्त्रवित.
vii) पार्श्वछिंद्र - गुदपीडा. viii) वक्र - औषध की गति उपयुक्त नहीं होती.

b) सु. - 11 i) अतिस्थुल ii) कर्कश iii) अवनत iv) अनुभिन्न v) सन्निकृष्टकर्णिक vi) विप्रकृष्टकर्णिक vii) सूक्ष्म छिद्र viii) अति छिद्र ix) अतिदीर्घ x) अतिह्रस्व xi) अस्त्रिमत.

2) बस्तिदोष:

a) चरक: 8 विषम मांसल छिद्र स्थूल जालिक वातला:।
स्निग्ध: क्लिन्नश्च तानष्टौ बस्तिन् कर्मसु वर्जयेत्॥. (5/6)
गतिवैषम्यविस्त्रत्व स्त्रावदौर्ग्राह्यनिस्त्रवा।
फेनिल च्युत्यधार्यत्वं बस्ते: स्युर्बस्तिदोषत:॥

i) विषम - गतिवैषम्य ii) मांसल - विस्त्रागन्ध आना
iii) छिद्र - बस्तिद्रव्य स्त्राव. iv) स्थूल - दुर्ग्राह्य.
v) जालिका - निस्त्रवा. vi) वातयुक्त - फेनिल एवं गुदा में वायु प्रवेश
vii) स्निग्ध - हाथ से फिसलने का भय. viii) क्लिन्नबस्ति - धारण में कठिनाई.

b) सुश्रुत - 5 i) बहुलता ii) अल्पता iii) सच्छिद्रता iv) प्रस्तीर्णता v) दुर्बध्दता.

3) बस्तिदाता दोष: a) चरक: 10
सवातातिद्रुतोत्क्षिप्ततिर्यगुल्लुप्त कम्पिता:।
अतिबाह्याग मन्दातिवेगदोषा: प्रणेतृत्॥..... (5/8)

व्यापद	लक्षण	चिकित्सा
1. सवात बस्ति	वायु पक्वाशय में प्रविष्ट: शूल,तोद,	अभ्यंग,स्वेद,वातशामक उपचार.
2 & 3. अतिद्रुत उत्क्षिप्त	कटि गुदजंघार्ति, बस्तिस्तम्भ, उरूवेदना,	स्नेह, स्वेद, वातघ्न भोजन.
4. तिर्यक नेत्र	गुदवली द्वारा गुदमार्गावरोध.	पुन:बस्ति, निरूह बस्ति
5. उल्लुप्त	गुदप्रतिहतोऽनिल, उर:शिरोऽर्तिमूर्वोश्च सदनं।	बिल्वादी निरूह बस्ति
6. कम्पनयुक्त	आघात से दाह, दवथु, शोफ.	कषाय, मधुर, सेक.
7. अतिबस्ति	वली में क्षत; गुदार्ति, दाह, तोद, वर्च प्रवर्तन,	पिच्छाबस्ति, सर्पि:पिचु.
8 & 9. बाह्याग मन्दगति	बाह्याग से द्रव बाहर रहने मन्दगति से द्रव पक्वाशय तक न पहुचने से।	पून: बस्ति
10. अतिप्रपीडित	गले तक चली जाती है।	गलपीडादि कर्म, बस्ति विरेचन

b) सुश्रुत - i) नेत्रप्रणिधान जन्य 6 दोष
ii) बस्तिपीडन जन्य 4 दोष (सु.चि.35,36)

6) वमनविरेचनव्यापत्सिधि

Topics: i) संशोधन -ऋतु ii) वमन विरेचन के 10 (सु.15, वा. 12) व्यापद

1) संशोधन ऋतु : (अत्युष्णवर्षशीत ग्रीष्मवर्षाहिमागम:)

i) प्रावृट् वात शुचिनभौ [शुचि (आषाढ), नभ (श्रावण)]
ii) शरद पित्त उर्जसहौ [उर्ज(कार्तिक), सह (आगहन)]
iii) वसन्त कफ तपस्यश्चमधुश्चैव [तपस्य (फाल्गुन, मधु (चैत्र)]

विरेचन अयोग्य: विसर्पपीडका शोफकामला पाण्डु।
अभिघातविषार्ताश्च नातिस्निग्धान्॥

2) अजीर्ण में संशोधन से हानि: अजीर्ण
ग्लानि, **विबन्ध;** वमन औ. से विरेचन & Vice Versa

3) मात्रायुक्त औषध: अल्पमात्र महावेगं बहुदोषहरं सुखं।
लघुपाकं सुखास्वादं प्रीणनं व्याधिनाशनम्॥
अविकारी, नातिग्लानिकर, गन्धवर्णरसोपेत।

Note : i)वमन पूर्व (सुजरं, द्रवभूयिष्ठ) कफवर्ध्दक, द्रव आहार प्रयोग for कफवृध्दि
ii) विरेचन पूर्व कफक्षयकरनेवाला लघु, उष्ण आहार प्रयोग।
iii) शरीर में स्तैमित्य, वायुसंग, निरूद्गार होने पर वमन करायें।
iv)वमन पश्चात् अग्निवृध्दि, दोषों का शमन ।वमन सम्यग्लक्षण न होने पर लंघन

वमन सम्यक् लक्षण होने पर पेयादि क्रम से संसर्जन.

v) कफपित्तज रोग में अल्पशोधन ;

मद्यपी & वातपैत्तिक प्रकृति में पेया के स्थान पर तर्पण कर्म करें।

As पेया से अभिष्यंद होता है।

सुश्रुत ने जीर्णऔषध & सावशेषौषधं को उपद्रव में गिना है।

4) जीर्णौषध लक्षण:

a) अनुलोमोऽनिल: स्वास्थ क्षुत्तृष्णोर्जो मनस्विता। लघुत्वमिन्द्रियोद्गारशुध्दि...

b) सुश्रुत - जीर्णौषध का कारण क्रूरकोष्ठी की तीव्र जाठराग्नि माना।

5) सावशेषौषध लक्षण:

a) क्लमो दाहोऽङ्गसदनं भ्रमो मूर्च्छा शिरोरूजा। अरतिर्बलहानिश्च.....

6) औषध उपद्रव करने में कारण: 6

अकालेऽल्पातिमात्रं च पुराणं न च भावितम्।

असम्यक्संस्कृतं चैव व्यापद्येतौषधं द्रुतम्।।..... (च. सि. 6 / 28)

7) वमन विरेचन उपद्रव: a) चरक - 10

आध्मानं परिकर्तिश्च स्त्रावो हृद्गात्रयोर्ग्रह:।

जीवादान सविभ्रंश स्तम्भ सोपद्रव: क्लम: अयोगादतियोगदशैता।।

(परिकर्तिका, जिवादान व सविभ्रंश - अतियोग जन्य, Other अयोग जन्य)

b) सुश्रुत - 15 वमन अधोगति, विरेचन में उर्धगति, सौवशेष औषध जीर्णऔषधत्व, अल्पदोषरूत वातरूत, अयोग, अतियोग, जीवादान.

c) वमन प्रतिकुल गति, विरेचन प्रतिकुल गति के अतिरिक्त 12 अन्य. ग्रथित्व,पाक, गौरव, भृशध्मन, प्रवाहिका, परिस्त्रव, परिकर्तिका, हृदग्रह, गात्रग्रह, धातूस्त्राव, जिवादान, गुदभ्रंश.

व्यापद	हेतु	औषध	लक्षण	चिकित्सा
1.आध्मान	बहुदोष,रूक्ष हिन अग्नि	अल्प	नाभिप्रदेश आध्मान, पृष्ठपार्श्वशिरोरूजा,	अभ्यंग,स्वेद, वर्ति, बस्ति उदावर्तहर.
2.परिकर्तिका	मृदुकोष्ठी, सामदोष	बलवान	तीव्रशूल,सामदोष सपिच्छा रक्तस्त्राव	लंघन पाचन
3.परिस्त्राव	बहुदोष	अल्प	अल्पाल्प स्त्राव,कण्डू,दोषअल्प शोथ, कुष्ठ, स्तैमीत्य.	शमन बहु वमन विरेचन
4.हृदग्रह	औषध सेवन के बाद वेग निग्रह		अक्षिविभ्रम, जिव्हा खादति,मूर्च्छा,नि:संज्ञ,	वमन
5.अंगग्रह	औषध सेवन के बाद वेग निग्रह		स्तम्भ, वेपथु, निस्तोद.	स्नेह, स्वेद व वातनाशक.
6.जीवादान	लघुदोष, मृदुकोष्ठ	अतितीक्ष्ण	रक्त को बाहर निकालना.	पित्तघ्न, रक्तपान, रक्तबस्ति, शितबस्ति, पिच्छा बस्ति, घृतमण्ड अनुवासन बस्ति.
7.गुदभ्रंश संज्ञाविभ्रंश			विरेचन अतियोग मुर्च्छा	कषाय सेक व कल्क लेप साम गान्धर्व (Songs)
8.स्तंभ	स्नेहन के बाद मृदु औषध सेवन		वातसंग, अल्पमल शूलसहित	तीक्ष्णबस्ति, विरेचन, लंघन पाचन.
9.उपद्रव	रूक्ष, व्यक्ती रूक्ष औषध		घोर उपद्रव, घोरस्तंभ मोह, शुल	स्नेह, स्वेद व वातनाशक.
10.क्लम	स्नेहन के बाद मृदु औषध सेवन		तन्द्रा, गौरव, क्लम, दौर्बल्य, अंगसाद,	शीघ्रवमन, उपवास, पाचन.

8) i) कर्मणां वमनादीनामन्तरेष्वन्तरेषु च ।

स्नेह स्वेदौ प्रयुञ्जीत स्नेह चान्ते प्रयोजयेत्।।.... (च. सि. 6 / 7)

ii) नातिस्निग्धशरीरस्य दद्यात् स्नेहविरेचनम्।

स्नेहोत्क्लिष्ट शरीराय रूक्षं दद्याद्विरेचनम्।।....(च. सि. 6 / 8)

Same श्लोक in च. क. 12 / 79

iii) स्नेह स्वेदोपन्नेन जीर्णे मात्रावदौषधम्।

एकाग्रमनसा पीतं सम्यग्योगाय कल्पते।।.....(च. सि. 6 / 10)

iv) वमिते वर्धते वन्ही शम दोष व्रजन्ति हि। .....(च. सि. 6 / 22)

v) कफपित्ते विशुध्देऽल्पं मद्यपे वातपेत्तिके।

तर्पणादिक्रमं कुर्यात पेयाऽभिष्यन्दयेध्दि तान्।।....(च. सि. 6 / 25)

9) विरेचन औषध विपरीत गमन - श्लेष्मोत्क्लिष्टेन, दुर्गन्धमहृद्यमति, अजीर्ण.

vii) वामक औषध विपरीत गमन - क्षुधार्त, मृदुकोष्ठ, स्वल्पोत्क्लिष्टकफेन, तीक्ष्णं पीत.

10) औषध पच जाने पर - तस्मिन् पुन: पिबेत्।

- गुरूकोष्ठ, बलवान में तीक्ष्णौषध; लघुकोष्ठ, अल्पबल में मृदु औषध।

11) अयोग में चिकित्सा - पाययेत पुनर्जीर्णे समूत्रैवा निरूहयेत्।

12) संशोधन अतियोग जन्य चि. - वमन तु विरेक: स्याद्विरेके वमनं पुन:।

13) विरेचन अतियोग में औषध & पथ्य -

लाजचूर्णे: पिबेन्मन्धमतियोगहरं परम् पिच्छाबस्ति।.

14) वमन अतियोग चि. - जिव्हा नि:सृतां तु तिलद्राक्षाकल्कलिप्ता प्रवेशयेत्।

7) बस्तिव्यापत्सिध्दि

Topics: निरूह बस्ति व्यापद वर्णन.

1) निरूह बस्ति दोष: a) चरक: 12

नातियोगौ क्लमाध्माने हिक्का हृत्प्राप्तिरूर्ध्वता।

प्रवाहिका शिरोड्.गर्ति: परिकर्त: परिस्त्रव:।।

b) सुश्रुत - 9 i) अयोग ii) आध्मान iii) परिकर्त iv) परिस्त्रव v) प्रवाहिका vi) हृदयोपसरणं. vii) अंगग्रह viii) अतियोग ix) जीवादान

c) अं. संग्रह - 12 d) वाग्भट-5(विबंध, आध्मान, उर्ध्वमारूत, कुक्षिशूल, स्त्राव)

व्यापद	कारण	बस्ति	चिकित्सा
1) अयोग	गुरूकोष्ठ	शीत, अल्प द्रव्य, लवण,मात्रा व घन	उष्णप्रमथ्यापान, फलवर्ति, बिल्वादि बस्ति, विरेचन
2) अतियोग	मृदुकोष्ठ	तीक्ष्ण, उष्ण	विरेचन (शोधन) समान.
3) क्लम	आमदोष;	मृदु, निरूह	दशमुलक्वाथ+गोमुत्र+ माधुतैलिक बस्ति
4) आध्मान	मृदुकोष्ठ महादोष,		श्यामाफलवर्ति, सिध्दार्थक
रूक्ष & क्रूर	आशय,	अल्पवीर्य	धूम,बिल्वादि निरूह अनु.
5) हिक्का	मृदूकोष्ठ, दुर्बल	अतितीक्ष्ण	अनुवासन.
6) हृत्प्राप्ति	सवात,असम्यक	अतितीक्ष्ण	वातघ्न, अनुवासन, अम्ललवण स्वेद सिध्द निरूह
7) उर्ध्वता	वेगधारण		वस्त्रपाणिग्रहं कण्ठाम्
8) प्रवाहिका	महादोष;	मृदु,अल्पभेषज	लंघन, वातानुलोमन, शोधन बस्ति.
9) शिर:शूल	क्रूरकोष्ठ, दुर्बल, तीव्रदोष;	मृदु, शीत,अल्प	प्रधमन नस्य, वैरेचनिकधूम, अनुवासन.
10) अंगमर्द	अस्नेह स्वेद;	गुरू, तीक्ष्ण	उष्णजल स्नान, प्रस्तर स्वेद,दशमुल निरूह अनु.
11) परिकर्तिका	मृदुकोष्ठ,अल्पदोष;	अतितीक्ष्ण	स्वादुशीत द्रव्य, सिध्द ब. केवल दुग्धाहार.
12) परिस्त्राव	पित्तरोगी में;	उष्ण, तीक्ष्ण मोह गच्छति	सेक, प्रदेह, रक्तपित्त, अतिसार चिकित्सा, पिच्छा बस्ति.

2) तीक्ष्ण & मृदुबस्ति: i) तीक्ष्ण बस्ति -(मूत्रपील्वग्निलवणक्षारसैन्धवै:) गोमूत्र, पीलु, चित्रक, सैन्धव, यवक्षार, सर्षप.

ii) मृदु बस्ति - क्षीर, मधुर, शीतलद्रव्य.

3) बस्ति प्रभाव: आपादतलमूर्धस्थान् दोषान् पक्वाशये स्थित:।

8) प्रासृतयोगीया – सिध्दि.

प्रासृत बस्ति उपदेश: सुकुमार, मृदुशरीर

1) चतु: प्रासृतिक बस्ति: (मधु, तैल, दुग्ध, घृत) प्रत्येक - 1 प्रसृत सैंधव - 1/2 कर्ष, हपुषा - 1 कर्ष - शुक्रकृत्परम्.

2) पंचप्रासृतिक बस्ति: दुग्ध - 2 प्रसृत; (मधु, तैल, घृत) प्रत्येक - 1 प्रसृत वातघ्न, बलवर्णकृत, पंचतिक्त पंचप्रासृतिक बस्ति - मेहाभिष्यन्दकुष्ठनुत.

3) षट् प्रासृतिक बस्ति: क्रिमिनाशन.

4) सप्त प्रासृतिक बस्ति: वृषत्वकृत.

5) अष्टप्रासृतिक बस्ति: (तिलतैल, प्रसन्न, क्षौद्र, सर्पि) प्रत्येक - 1 प्रसृत बिल्वादिमूल क्वाथ - 2 प्रसृत (वातघ्न) कुलत्थ क्वाथ - 2 भाग

6) नवप्रासृतिक बस्ति: (मधु, घृत) प्रत्येक - 1 प्रसृत, तिलतैल - 2 प्रसृत, बृहत्पंचमूल कषाय - 5 प्रसृत.

अतिविरिक्त मलक्षय में माषयूषेण कुल्माषात् पिबेन्मध्वथवा सुराम्।

* मृदुबस्ति असफलता - मृदुबस्तिजडीभूते चिकित्सा - तीक्ष्णाऽन्यो बस्ति. बस्तिरामे हि प्रतिषिध्यते

7) आमज शूल में: साम चेत्कुणपं शूलैरूपविशेदरोचकी।
स घनातिविषाकुष्ठनतदारूवचा:पिबेत्॥

8) अतिसार उपद्रव: शूलप्रवाहिकाध्मान परिकर्त्यरूचि ज्वरात्।
स तृष्णादाहमूर्च्छान्तांश्चैषां

- कुल 36 प्रकार के अतिसार हो सकते है। 36 वा रक्तातीसार

9) अतिसारनाशक योग:

i) उदुम्बरफलशलाटु. ii) जम्बू, आम्र, उदुम्बरत्वक

iii) शंख; सर्जरस (राल); लाक्षा. iv) कमल मूल का पंक (कीचड).

- पिष्ट्वा तै: सर्पिष: प्रस्थं क्षीराद्विगुणितं पचेत्।

10) अतिसार चि. सिध्दांत:

i) वातज अतिसार - स्निग्धाम्ललवणमधुर + उष्ण जल.

ii) पित्तज अतिसार - शीततिक्तकषायमधुर + (कषायस्वादुतिक्तकै.)

iii) पित्तज अतिसार - तिक्तउष्णकटुकषाय (कषायकटुतिक्तके)

iv) रक्तज अतिसार - पिच्छाबस्ति or बकरे आदि के रक्त बस्ति प्रयोग.

v) आमज अतिसार - पाचन द्रव्य.

vi) शकृद्ज अतिसार - वातनाशक, संग्राही द्रव्य.

ii) पञ्च प्रासृतिक बस्ति - वातघ्नो, बलवर्णकृत.

v) अष्ट प्रासृतिक बस्ति - वातनुत्.

vi) नव प्रासृतिक बस्ति - स्नेहनीयो, अनिलापह:

* पाचनं शस्यते बस्तिरामे हि प्रतिषिध्यत।..... (च. सि. 8 / 23)

* निरामाणां तु पंचानाम् बस्ति: षाड्रसिको मत:॥..... (च. सि. 8 / 35)

आम छोड के शेष 5 - वात, पित्त, कफ, रक्त, शकृद इनके संसर्ग में षडरस युक्त बस्ति

9) त्रिमर्मीया - सिध्दी

Topics: i) त्रिमर्म (हृदबस्ति शिर) रोग एवं चिकित्सा

ii) मर्माभिघात iii) अपतन्त्रक; तन्द्रादि का वर्णन.

iv) बस्तिरोग एवं उत्तरबस्ति वर्णन. v) नस्यविधि वर्णन.

1) मर्म: i) Total - 107 शाखा स्कंध समाश्रीत - हृद्बस्तिशिर (सद्य: प्राणहर)

हृदय - 10 धमनी, प्राण, अपान, मन, बुध्दि, चेतना, महाभूत अधिष्ठान (नाभ्यामरा इव प्रतिष्ठित.)

बस्ति - स्थुल गुद, मुष्क, सेवनी, शुक्र & मूत्रवाहिनी के मध्य स्थित. (नदियों का आश्रय समुद्र)

शिर - इन्द्रिय, प्राणवह स्त्रो. अधिष्ठान. As सुर्य का संबंध सुर्यकिरण से

2) मर्माभिघात लक्षण:i) हृदय - कास, श्वास, हृदय, बलक्षय, क्लोमाकर्षण, अपस्मार,उन्माद,प्रलाप, चित्तनाश।

ii) शिर - मन्यास्तम्भ, अर्दित, चक्षुविभ्रम,मोह, चेष्टानाश, मूकत्व, गद्गद, गण्डस्पन्दन, स्वरहानि, मुखवक्रता।

iii) बस्ति - वातमूत्रवर्चोनिग्रह, वंक्षणमेहनबस्तिशूल, बस्तिकुण्डल, वाताष्ठीला, कुक्षिगुदश्रोणिग्रह गुल्म.

- वात की रक्षा सर्वोपरि है, बस्ति वात की श्रेष्ठ चिकित्सा।

3) मर्माघात चिकित्सा:

i) हृदय - हिंगुचूर्ण, लवण मातुलुंगरस सह; पंचमूलीरस शर्करा.

ii) शिर - अभ्यंग, स्वेदन, उपनाह, नस्य, अवपीडन, धूपन.

iii) बस्ति - तृणपंचमूल, दशमुल, उत्तरबस्ति, कुम्भोस्वेद, तिल्वकघृतविरेचनार्थ

4) मर्माभिघात से रक्षा: आबाधवजतं, स्वस्थवृत्तानुवतनम्.

Note - हृदये मूर्ध्नि बस्तौ च नृणां प्राणा: प्रतिष्ठिता:।

5)अपतन्त्रक: i) प्रकुपित वायु, हृदय,शिर,का पीडन कर गात्र को धनुषा समान

ii) गात्रविक्षेप, मोह, उच्छ्वास, स्तब्धाक्ष, निमिलन, कपोत इव कूजेज्ञ, नि:संज्ञ

6) अपतानक

a) चिकित्सा - i) वायु दृष्टि को स्तब्ध कर संज्ञानाश कर कण्ठेन कूजति;

ii) हृदय दोषों से मुक्त होने पर स्वास्थ & दोषावृत्त रहनेपर अस्वस्थ

b) सुश्रुत - आक्षेप, रूक-रूककर बार-बार

c)वाग्भट कपोत इव कूजेच्च, नि:संज्ञ, इसे अपतानक Or अपतन्त्रक कहा.

अपतन्त्रक चिकित्सा: तीक्ष्ण प्रधमन, शिरोविरेचन.

7) तन्द्रा: प्रकुपित वात कफ को चंचल बनाकर हृदय को आक्रान्त कर चेतना को आच्छादित करके तन्द्रा उत्पत्ती.

लक्षण: i) हृदये व्याकुलीभावो ii) वाक्चेष्टेन्द्रियगौरवं. iii) मनो, बुध्दय अप्रसादश्च

चिकित्सा: कफनाशक, शोधन एवं शमन, व्यायाम, रक्तमोक्षण, कटुतिक्तभोजन

8) बस्तिरोग: मूत्रदोष - 13...(चरक)

a) i) मूत्रौकसाद ii) मूत्रजठर iii) मूत्रकृच्छ्र (के जगह मूत्रशुक्र) iv) मूत्रोत्संग

v) मूत्रक्षय vi) मूत्रातीत vii) वाताष्ठीला viii) वातबस्ति ix) उष्णवात

x) वातकुण्डलिका xi) मूत्रग्रन्थि xii) विड्विघात xiii) बस्तिकुण्डल.

b) सुश्रुत - 12 (मूत्राघात) - बस्तिरोग को सु. ने यह पर्याय.

c) वाग्भट - 20 (Above 12 + 4 अश्मरी + 4 मूत्रकृच्छ्र)

i) मूत्रौकसाद:

a) पीतघनमूत्र सृजन or दाह, सान्द्र मूत्रत्याग - पित्तकफनाशक चिकित्सा

b) पित्तज & कफज मूत्रौकसाद वर्णन - पित्तज में गोरोचनचूर्ण सदृश मूत्रत्याग कफज में शंखचूर्णसदृश मूत्रत्याग.

ii) मूत्रजठर: मूत्रवेग धारण से

a) अपक्ति, मूत्रविटसंग. चिकित्सा मूत्रविरेचन, हिंगुद्विरूत्तरचूर्ण.

iii) मूत्रकृच्छ: a) मूत्रवेग धारणकर समयी व्यवाय से उत्पन्न.

b) & c) ने मूत्रशुक्र कहा है।

iv) मूत्रोत्संग: a) मणिसंधि में मूत्र रूकना, गुरूशेफस्.

b) विगुणवायुजन्य.

c) मूत्रमार्ग विगुणता, मणि में रूका मूत्र सरूज or निरूप प्रवृत्त।

v) मूत्रक्षय: a) वायु के कारण मूत्र का क्षय.

vi) मूत्रातीत: a) मूत्र देर से रूक रूकर आना becasue मूत्र वेगधारण

b) मूत्रवेगधारण से मूत्र न आना or मन्दरूज।

vii) वाताष्ठीला: पौरूषग्रंथिवृध्दी BPH (Benign Prostate Hypertrophy)

a) मूत्रविण्मार्गरोधिनाम्।,

b) वातरोग निदान अ. में वातष्ठीला नामक रोग वर्णन परंतु उसके ल. अष्ठिला समान only ग्रन्थि को अचल बताया है।

viii) वातबस्ति: a) मूत्ररोध, अर्ति, कण्डु मूत्रवेगधारण.

b) मूत्रसंग, बस्तिकुक्षिनिपीडन, कृच्छ्रप्रसाधन.

c) 2 types of वातबस्ति. (चरक1st प्रकार - वातबस्ति, 2nd प्रकार - बस्तिकुण्डल.

i) दुस्तर, ii) दुस्तस्तर

ix) उष्णवात: a) रक्तपीत वर्ण मूत्र; उपस्थ में से दाह, अर्ति के साथ.

x) वातकुण्डलिका: a) वेष्ठन, तीव्ररूजा, मूत्रविट्संग.

xi) रक्तग्रन्थि: a) अश्मरी सम दारूण शूल :सु. & वा.ने इसे मूत्रग्रन्थि कहा

xii) विड्विघात: a) शकृद् को उदावर्त कर विट्संसृष्ट Or विट्गंधी मूत्र त्याग

xiii) बस्तिकुण्डल: a) स्वस्थान से हटकर गर्भवत्; मूत्र का बुंद-बुंद त्याग, पवनबलजन्य, घोर, शस्त्रविशोपमं। चिकित्सा मूत्रकृच्छ्र चि, बस्ति, उत्तरबस्ति.

9) उत्तरबस्तिवर्णन: त्रिरात्रं कर्म कुर्वित स्नेहमात्रां विवर्धयेता।
अनतेव विद्यानेन कर्मकुर्यात् पुनस्त्र्यहात।। संदर्भ

उत्तरबस्तिनेत्र:

	स्त्री	पुरूष
चरक	10 अंगुल	12 अंगुल
सुश्रुत	10 अंगुल	14 अंगुल

a) स्वर्णनिर्मित (हेमपुष्पनेत्र)
(Position - उत्तानाया शयानाया: सम्यक संकोच सक्थिनी।)
जाति or अश्वहन वृन्त समान; गोपुच्छाकृति, सर्षपछिन्द्र, द्विकर्ण, 12 अंगुल; अजाबस्ति प्रयोग; स्नेहमात्रा - 1/2 पल.
(वाग्भट - Both ऋतु व रजोकाल) में दे सक्तते है।
* स्त्री में उत्तरबस्ति-
ऋतुकाल में प्रयोज्य,बस्तिविकार,योनिभ्रंश,योनीशूल,असृग्दर, मूत्रावरोध.
* पुष्पनेत्र - 10 अंगुल; परिणाह - मुद्ग, स्त्री - अपत्यमार्ग - 4 अंगुल; मूत्रमार्ग - 2 अंगुल, बालिका - मूत्रमार्ग - 1 अंगुल.
b) 14 अंगुल ; अग्रभाग - मालतीपुष्प वृन्त सदृश, छिद्र - सर्षप.
* स्त्री में परिमाण मूत्रस्त्रोत के बराबर; छिद्र - मुद्ग, नेत्र - 10 अंगुल.
(Some आचार्य - नेत्र प्रमाण - पुरूष जननेंद्रिय समान.)
* उत्तरबस्तिकर्णिका : पुरूष में मध्य में & स्त्री में 4 अंगुल दूर.
i) स्त्रियों में उत्तरबस्ति 4 अंगुल प्रविष्ट;
ii) मूत्रकृच्छ & युवा में 2 अंगुल प्रविष्ट;
iii) कन्या में 1 अंगुल प्रविष्ट;
iv) पुरूष में मूत्रशोधन शलाका प्रवेश के बाद 6 अंगुल प्रविष्ट.
c) 12 अंगुल मूत्रमार्ग हेतु ; सिध्दार्थ प्रवेशाग्रं, गोपुच्छ्वतमूल.
- मूत्रमार्ग में 1st शलाका Then बस्तिनेत्र का प्रवेश।
* स्त्रि में उत्तर बस्ति - ऋतुकाल & रजोकाल में प्रवेश.
नेत्र -10 अंगुल ; अपत्यपथ में 4 अंगुल; स्त्रि में -2 अंगुल & कन्या में -1 अंगुल.

10) शिरोरोगवर्णन:
i) सूर्यावर्त: रक्तमारूतो ; दिनवृध्दया विवर्धते.
a) रक्त, वात,दिन के साथ वृध्द वेदना.
सर्पिरौतरभक्तिम्घृतपान, शिरोविरेचन, कायविरेचन.
b) कभी शीतोपचार कभी उष्णोपचार, त्रिदोष.
c) वात,पित्त, क्षुधा में रूजा^ ;पित्तानुबंधीवात अव्यवस्थितशीतोष्ण सुखा शामयत्यत परं।
ii) अनंतवात: स्पन्दनं गण्डपार्श्वस्य,
a) त्रिदोषज; ग्रीवा तीव्र वेदना, नेत्र, भ्रू, शंख में वेदना स्थिरक नेत्ररोग हनुग्रहं. (सिरामोक्ष) b) त्रिदोषज.
iii) अर्धा वभेदक: a) वात और वात,कफ लक्षण - शस्त्रभेदवत् पीडा. शिरोबस्ति, जीर्णघृत, दहन, नाडीस्वेद, प्रतिश्याय & शिरोरोग चिकित्सा अतिवृध्दस्तु नयन श्रवण वा विनाशयेत्।
b) त्रिदोषज ; 15,10 दिन में Or अकस्मात् अर्धशिर में पीडा।
c) अर्धशिर पीडा; इसका प्रकोप 15 days or 1 Month में।
iv) शंखक:
a) रक्त पित्त वात; 3 दिन में प्राणान्त. शिरोविरेक, सेक, विसर्प चि.
b) वात, पित्त, कफ, रक्त; उद्गतमृत्युकल्प; सहस्त्र वैद्यो द्वारा दुर्निवार.
c) वात, पित्त, कफ, रक्त; पीतवदन; 3 दिन में मृत्यु.

11) शिर: कम्प: a) वात; अमृताबलाशरास्नामहाश्वेताश्वगन्धा प्रयोग.
b) सु. - शिर: कम्प को स्नायुगत वात का लक्षण।
c) वात प्रधान दोष द्वारा उत्पन्न।

12) नस्य वर्णन: नस्त: कर्म तु पंचधा।
भेद: चरक 5- (नावन, अवपीड, ध्मापन, धूम, प्रतिमर्श); & 3 (कर्मानुसार) रेचन, तर्पण, शमन.,
सुश्रुत 2 - (शिरोविरेचन, नस्य) ; पुन: - 5 (नस्य, शिरोविरेचन, प्रतिमर्श, अवपीड, प्रधमन),
वाग्भट 3 - i) विरेचन - 2 (अवपीड, ध्मापन)
ii) बृंहण - 2 (मर्श, प्रतिमर्श) iii) शमन,
भोज - 2 प्रायोगिक स्नेहिक
शारंगधर - 2 (रेचन, स्नेहन),
काश्यप - 2 (बृंहण, कर्षण)
विदेह - 2 (संज्ञाप्रबोधन, स्तम्भन)
a) चरक - 5 (नावन (स्नेहन,शोधन),
अवपीड (शोधन, स्तंम्भन),
ध्मापन (चूर्णरूप देहस्त्रोतोविशोधन नलिका - 6 अंगुल),
धूम (3 V,S,P), प्रतिमर्श, दाढर्यकृत्)
b) सुश्रुत - 2 (शिरोविरेचन, नस्य)
पुन: प्रकारान्तर - 5 (नस्य, शिरोविरेचन, प्रतिमर्श, अवपीड, प्रधमने)
c) वाग्भट - 3 विरेचन - (2 अवपीड, ध्मापन),
बृंहण - (2 मर्श,प्रतिमर्श,) शमन,
Note: i) नस्य पश्चात् धूमपान करें।
ii) ज्वर, शोक, मद्य में नस्य लेने से तिमिर;
चि. - रूक्ष, शीतांजन, लेखन, शमन.

13) प्रधमन नस्य: 6 अंगुल लम्बी नाडी से प्रयोज्य.

नस्यमात्रा:

नस्यप्रकार	ऱ्हस्व	मध्यम	उत्तम
प्रतिमर्श	2 बिंदू	2 बिंदू	2 बिंदू
कल्क	4 बिंदू	6 बिंदू	8 बिंदू
मर्श	6 बिंदू	8 बिंदू	10 बिंदू
शोधन	8 बिंदू	12 बिंदू	16 बिंदू
शमन	16 बिंदू	32 बिंदू	64 बिंदू

Extra : i) श्लैष्मिका ये शिरोगदा: शिरोविरेचनं.
ii) शिर: कम्पार्दितादय: शिरसस्तर्पणं & वातरोग.
iii) रक्तपित्तादिरोगेषु शमनं.

[मूत्रदोष - (Also 13..... च. सि.) सुश्रुत - 12 ; मा. नि. - 13, वाग्भट - 20
च.सू.अष्टोदरीय - 8 मूत्राघात - (वात,पित्त,कफ, त्रिदोषज अश्मरी, शर्करा, शुक्र,)
च. चि. 26 - 8 मूत्रकृच्छ, च. सि. 9 - 13 मूत्रदोष
चरक के शुक्रज & शोणितज के जगह सुश्रुत ने - शकृतज, अभिघातज मूत्रकृच्छ (मूत्रोपघात) वर्णन.
काश्यप - 8 मुत्रकृच्छ- अश्मरी, शर्करा, शुक्रज के जगह द्वंदज प्रकार के मूत्रकृच्छ.]

10) बस्तिसिध्दि

1) बस्तिभेद: 3 - अनुवासन, निरूह, उत्तरबस्ति
i) विरेचन की अपेक्षा बस्ति उत्तम है।
ii) बालकों & वृध्दो विरेचन अयोग्य है। (आस्थापन दें)

2) बस्तिप्रयोग योग्य रोग: शाखागत वातविकार,संकुचित,स्तब्ध,भग्न संधि, विट्संग, आध्मान, अरूचि परिकर्तिका.

3) विशोधनीय बस्ति विषय: मेदस्वी, कुष्ठ, प्रमेह.

4) शोधन बस्ति निषेध:
क्षीण,क्षत, दुर्बल,मूर्च्छित, कृश, शुष्कदेह दोषनिबध्दायुषो
i) सिध्द बस्ति: विभिन्न रोगों में प्रयुक्त.
ii) वातनाशक बस्ति: बृहत् पंचमूल, लघुपंचमूल, यवकोलकुलत्थ निर्मित बस्ति।

iii) पित्त बस्ति: नल, वांजुल, वानीर, शतपत्रादि.

iv) कफ बस्ति: अर्क, अलर्क, पुनर्नवा, हरिद्रादि.

v) शुक्रमांसल बस्ति: काकोली, क्षीरकाकोली, मुदगपर्णी, शतावरी.

Note : प्रमेह में सोमवल्कज कषाय (विट्खदिर क्वाथ.)

* कूल सिध्द बस्ति संख्या - 37

i) कर्मान्यद् बस्तिसमं न विद्यते शीघ्रसुखविशोधित्वात्।
आश्वपतर्पणतर्पणयोगाच्च निरत्ययत्वाच्च ।।..... (च. सि.10 / 5)

ii) बृंहण बस्ति निषेध - विशोधनीयेषु.

iii) प्रयोजन अनुसार बस्ति -

A) वाजीकरण, ऽसृक्पित्त में - मधुघृतपयोयुक्ता.

B) कफवाते - तैलमूत्रारनाललवणाश्च.

C) सर्व बस्ति-अम्लं मूत्रं पय: सुरां क्वाथान्। (Abies पक्षी नामसे बस्ति उत्पत्ती)

11) फलमात्रासिध्दि

Topic : i) ऋषियों की सम्भाषा परिषद वर्णन. ii) सदातुरा वर्णन.

1) ऋषी	विचार
i) शौनक	- फ़ल में जीमुतक श्रेष्ठ, कफपित्तहर
ii) वामक	- जीमुतक मृदुवीर्य, मल का उचित भेदन नहीं & कटु तुम्बी श्रेष्ठ
iii) गौतम	- उष्ण,तीक्ष्ण,कटु,रूक्ष,अवृष्य,कटुतुम्बी श्रेष्ठ नहीं, धार्मागव श्रेष्ठ
iv) बडिश	- धामार्गव,वातवर्ध्दक,क्षीणकर, बलनाशक,कुटज श्रेष्ठ,कफपित्तनाशक
v) काप्य	- कुटज-अति पिच्छिल, वमनकारक, पवनक्षोभी; कृतवेधन श्रेष्ठ.
vi) भद्रशौनक	- कृतवेधन - कटु ∴ बलघ्न Thus श्रेष्ठ नहीं.

vii) आत्रेय मत: i) देवदाली - कुष्ठ, ii) इक्ष्वाकु (कटु तुम्बी) - प्रमेह,
iii) कुटज (इंद्रजौ) - हृद्रोग, iv) धामार्गव - पाण्डु
v) कृतवेधन - उदर vi) मदनफल - सर्वरोग

* रस - मधुर

कषायतिक्त, कटु; रूक्ष,उष्ण,पिच्छिल; अनपाय, पवनानुलोमि, फल.

2) सदातुरा: a) चरक - 4 श्रोत्रिय, राजसेवक, वेश्या, पण्यजीवि (दुकानदार)

b) दुर्विरिच्य व्यक्ति ; लज्जा, भय, लोभ जन्य वेगाघातशील e. g. स्त्री, राजसमीपस्थ, वणिज्य, श्रोत्रिय etc. चिकित्सा - अतिस्नेहन, अतिस्वेदन.

पशुरोग - एकमात्र चिकित्सा - बस्ति.

3) पशुओं में i) बस्तिपुटक ii) बस्ति नेत्र iii) निरूह बस्ति, मात्रा, प्रमाण;

* सबको अनुवासन, निरूह के, 1/8 होती है ।

प्राणी	नेत्रप्रमाण	निरूह मात्रा	अनुवासन मात्रा
हस्ति	1 अरत्नी	4 आढक	2 प्रस्थ
उष्ट्र	18 अंगुल	2 आढक	1 प्रस्थ
अजा,भेड, बुढे बैल	10 अंगुल	1 प्रस्थ	2 पल
गौ,अश्व	16 अंगुल	2 to 3 time of अवि, अजा	4 to 6 पल

12) उत्तर बस्तिसिध्दि

Topics: i) अष्टमहादोषकर भाव, ii) यापनबस्ति, iii) तन्त्रयुक्ति वर्णन

1) अष्टमहादोषकर भाव: a) चरक: 8 / अप्राप्त प्रकृती Person 8

उच्चैर्भाष्यं रथक्षोभम् अतिचंक्रमणासने।
अजीर्ण अहितभोज्ये च दिवास्वप्नं समैथुनम ।।
तज्ञा देहोउर्ध्व, सर्व, अधो, मध्यपिडा, आम,दोषजा।
श्लेष्मजा, क्षयजाश्च व्याध्यया स्यु यथाक्रमम ।।

b) क्रोध, आयास & शोक, मैथुन, दिवास्वाप, पशुवत् भोजन.

अष्टमहादोषकर भाव चिकित्सा: (1, 2, 3 - वातनाशक, 4 - निदान परिवर्जन, 5, 6 - वमन, 7- कफनाशक, 8 - मधु i. e जीवनीयक्षीर सिध्द बस्ति)

2) यापना बस्ति: यापनाश्च बस्ति: सर्वकालं देय:।

i) इस अध्याय में यापना बस्ति 216 का उल्लेख।

ii) इनमें निरूह & स्नेह दोनों का समावेश।

यापन बस्ति लाभ: सर्वरोग प्रशमना:, सर्वेष्वृतुषु,

-सभी को हीतकर, सर्वरोगशामक, प्रजापद, अतिव्यवाय शिलीनां शुक्रमांसबलपदा:, सभी ऋतुओं में प्रयोज्य, उभयार्थ (शोधन, स्नेहते) नारीणामप्रजातानां नराणां,

यापन बस्ति काल में अपथ्य: व्यायाम,मैथुन,मद्य, शिशिराम्बु,सम्भोजनं रथक्षोभ

* उपरोक्त बस्ति में मधु मिलाकर प्रयोग से अतिवृष्य होती है।

यापन अतियोग: शोफ, अग्निनाश, पाण्डुत्व, शूल,अर्श,परिकर्तिका,ज्वर,अतिसार.

चिकित्सा - अरिष्ट, क्षीर, सीधु, दीपन.

* 3 विशेष बस्तियाँ - शिखि गोनर्द हंसाण्डरसेषु मूर्गी मोरनी हंस.

i) मूस्तादि यापन बस्ति - सद्यो बलजननो रसायनश्चेति.

ii) एरण्डमूलादि बस्ति - सर्वेषा प्रशस्ति, अपत्यकामानां.

iii) प्रथम बलादि बस्ति - सद्योबलजनन रसायन.

iv) ह्रस्वपंचमूलादि बस्ति - विषमज्वर कर्शितस्य.

v) चतुर्थबलादि बस्ति - ज्वर,

vi) शालीपर्ण्यादि बस्ति - विषमज्वर.

(रसाभ्यासक्रम - i) अम्लस्वादु (21) ii) अम्ललवण (23)
iii) स्वादुतिक्त (15) iv) कषायक्टु (64))

3) चरक संहिता अध्ययन फल:

दीर्घायु, यश, स्वास्थ, त्रिवर्ग, धर्म, अर्थ, काम, प्राप्ति

4) ग्रंथसंस्कर्ता कर्तव्य: पंचनदपुर में उत्पन्न दृढबल ने भगवान शंकर की पुजा कर तंत्र को सम्पूरित किया।

चिकित्सास्थान के 17 अध्याय & कल्पसिध्दि (12 +12) (कुलत्रिभाग)

5) तंत्रयुक्ति:

A) चरक,(अं. सं.) - 36 (प्रयोजन, प्रत्युत्सार, उध्दार, सम्भव)

B) सु. उ. 65 - 32

C) भट्टारहरिश्चंद्र - 40 (हेतु, व्याकरण, परिप्रश्न, व्युत्क्रान्ताभिद्यान)

तन्त्रयुक्ति कार्य - प्रबोधन, प्रकाश.

तन्त्रयुक्ति:

अधिकरणं, योगो, हेत्वर्थोडर्थ:, पदस्य, उद्देश, प्रयोजन,उपदेश, अपदेश, एकान्त, नैकान्त,अपवर्ग, विपर्यय, पूर्वपक्ष, विधान, अतितवेक्षण, निदर्शन, निर्वचन, सन्नियोग, विकल्प, उध्दार, सम्भव (विस्तार से पदार्थ विज्ञान नोटस में देखिए),

चक्र पाणिनुसार:

i) हेतु - प्रत्यक्ष, अनुमान, आप्तोपदेश प्रमाण में.

ii) व्याकरण - व्याख्यान. iii) परिप्रश्न - उद्देश.

iv) व्युत्क्रान्ताभिधान - निर्देश.

6) अग्निवेशतंत्र - त्रिभागेनोपलक्ष्यते, पंचनदपुर; वृत्ति - उच्छ, शिल (संस्कार & प्रतिसंस्कार) सप्तदशौषधाध्याय + कल्प + सिध्दि - 41

7) चरक संहिता श्लोक संख्या 12000

8) Ref. - यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्।
अग्निवेशकृते तन्त्रे चरक प्रतिसंस्कृते ।।

9) Def. - कर्मणां वमनादीनाम् असम्यक्करणापदाम्।
यत्रोक्तं साधनं स्थाने सिध्दिस्थानं तदुच्यते।।... सि.12/33

****

चरक चिकित्सा - योग

1) रसायनाध्याय (63):

i) अभयामलकीय (6) :

1) प्रथम ब्राह्म रसायन,
2) द्वितीय ब्राह्म रसायन,
3) च्यवन प्राश,
4) चतुर्थामलक रसायन,
5) पंचमो हरितकी योग,
6)- षष्ठो हरितकी रसायन.

ii) प्राणकामीय (37):

1) आमलक घृत,
2) आमलक आवलेह,
3) आमलक चूर्ण,
4) विडंगावलेह,
5) अपर आमलकावलेह,
6) नागबला रसायन,
(7 -25) बलादि रसायन -19,
(26 - 36) भल्लातक योग - 10,
37) भल्लातक तैल.

iii) करप्रचितीय (16):

1) आमलकाय ब्राह्मरसायन,
2) केवलामलक रसायन,
3) लौहादि रसायन,
4) ऐंद्र रसायन,
(5 - 8) मेध्य रसायन - 4,
(9 - 10) पिप्पली रसायन,
11) वर्धमान पिप्पली रसायन,
(12 - 15) त्रिफला रसायन (1,2,3,4)
16) शिलाजतु रसायन,

iv) आयुर्वेद समुत्थानीय (4)

1) इंद्रोक्त रसायन,
2) द्रोणी प्रादेशिक रसायन,
3) द्वितीय इंद्रोक्त रसायन,
4) आचार रसायन,

2) वाजीकरणाध्याय (50)

i) संयोगशरमूलीय (15)

1) बृंहणी गुटिका,
2) वाजीकरण घृत,
3) वाजीकरण पिण्डरस (कुक्कुट,मयुर,तित्तिर,हंस),
4) वृष्यरस - (चटक - तित्तिर - कुक्कुट - मयुर - हंस),
5) वृष्यमांस (चटक),
6) वृष्यमांस योग,
7) वृष्यकुक्कुटमांस प्रयोग,
8) वृष्य अण्ड रस.

ii) आसिक्तक्षीरक (8)

1) अपत्यकारीषाष्टिकादि गुटिका,
2) वृष्य भक्ष्या,
3) अपत्यकर स्वरस,
4) वृष्य क्षीर,
5) वृष्य घृत,
6) वृष्य दधिसर प्रयोग,
7) वृष्य षष्टिक ओदन,
8) वृष्य पूपलिका.

iii) माषपर्णभृतीय (15):

1) वृष्य केवल क्षीर प्रयोग (माषपर्ण - इक्षु - अर्जुन),
2) सिध्द क्षीर (शुक्रल - जीवनीय - बृहणीय - बल्य - क्षीरसंजनन),
3) अपत्यकर क्षीर,
4) अपत्यजनन क्षीर,
5) वृष्य पिप्पली,
6) वृष्य पायस,
7) वृष्य पूपलिका,
8) वृष्य मधूक योग,
9) शतावरी घृत.

iv) पुमांजातबलादिक (12):

1) वृष्य बस्ति * गर्भादानकरयोग,
2) गुटिका - 2; (वृष्यमांस, वृष्य) गुटिका,
3) मांसरस - 3 (वृष्य माहिष, घृतभृष्टमत्स्यमांस घृतभृष्ट छागरस),
4) वृष्य घृतयोग,
5) पूपलिका - 3; वृष्य (मत्स्य, माहिषरस, माषादि) पू.,
6) अपत्यकर घृत,
7) वृष्या उत्कारिका.

सुश्रुत: रसायन - वाजीकरण

1) बस्ताण्ड योग,
2) बस्ताण्ड क्षीर,
3) वृष्य पूपलिका,
4) विदारीकन्द योग,
5) आमलकी रसायन,
6) शुक्रपान.

वाग्भट

1) ब्राह्मी घृत (च.- ऐंद्र रसायन),
2) पंचारविंद घृत,
3) चतुष्कवलय घृत,
4) गोक्षुरक रसायन,
5) चित्रक रसायन,
6) तुवरक रसायन,
7) रसोन रसायन,
8) लांगल्यादि रसायन,
9) नरसिंह घृत
10) नित्य रसायन.
11) पूर्ण रसायन.

3) ज्वरचिकित्साध्याय

1) षडंगपानीय,
2) पंचमूलीघृत पय,
3) तैल -
i) चंदनाद्य, ii) अगुर्वाद्य.
सु. - 1) वर्धमानपिप्पली,
2) पंचकोल घृत - विषम ज्वर,
3) कल्याणक घृत - जीर्ण ज्वर,
4) महाकल्याणक घृत - सर्व ज्वर,
5) पंचगव्य घृत - विषम ज्वर,
6) पंचसार प्रयोग - विषम ज्वर.
वा. - अपराजित धूप.

4) रक्तपित्तचिकित्साध्याय

1) वासाघृत,
2) शतावर्यादि घृत
(वृष्य शतावरी घृत - माषापर्णभृतीय)
सु. - वा. - 1) वासाघृत,
2) पलाशवृन्तसिध्द घृत.

5) गुल्मचिकित्साध्याय

1) त्र्यूषणादि घृत,
2) श्रेष्ठ त्र्यूषणादि घृत,
3) षट्पल घृत,
4) हिंगुसौर्वचलाद्य घृत,
5) हपुषाद्य घृत,
6) पिप्पल्यादि घृत,
7) हिंग्वादि चूर्ण गुटिका,
8) शट्यादि चूर्ण,
9) एरंड तैल योग,
10) लशुन क्षीर,
11) तैल पंचक,
12) शिलाजतु,
13) निलिन्याद्य घृत,
14) रोहिण्याद्य घृत,
15) त्र्यामाणाद्य घृत,
16) आमलकाद्य घृत,
17) द्राक्षाद्य घृत,
18) वासाद्य घृत,
19) दशमूली घृत,
20) भल्लातकाद्य घृत,
21) क्षीरषट्पल घृत
22) मिश्रक स्नेह,
23) दन्ती हरितकी.
सु. - 1) दधिक घृत,
2) षडंग घृत,
3) हिंगुसौवर्चलाद्य घृत,
4) दधिसौवरीक सर्पि,
5) क्षारावलेह,
6) वृश्चीवाद्यरिष्टम्.
वा. - 1) दधिक घृत,
2) रसोन घृत,
3) चूर्ण - 3 (वैश्वानर, हिंग्वाष्टक, शार्दुल),
4) हिंग त्रिगुण योग (हिंगु:1, सैंधव:3,एरण्ड तैल:9, रसोन:27),
5) क्षारागद योग.

6) प्रमेह चिकित्सा:

1) फलत्रिकादि क्वाथ,
2) मध्वासव/लोध्रासव,
3) दन्त्यासव,
4) भल्लातकासव.
सु. - a) प्रमेह पिडका चिकित्सा.
i) धान्वन्तर घृत,
ii) सालसारादि अवलेह,
iii) नवायस योग, iv) लोहारिष्ट.
b) प्रमेह चिकित्सा.
i) 1 तूला शिलाजतु प्रयोग,
ii) माक्षिक प्रयोग,
iii) तुवरक तैल प्रयोग,
iv) यवकल्प.
वा. - 1) धान्वन्तर घृत,
2) रोध्रासव,
3) असनादि अयस्कृति.

7) कुष्ठ-चिकित्सा:(मकत्रिसि)

1) मुस्तादि चूर्ण,
2) मध्वासव,
3) कनकबिन्द्वरिष्ट,
4) त्रिफलासव,
5) सिध्दार्थक स्नान,
6) श्वे त कर वी राद्य तैल,
7) श्वेतकरवीर पल्लवाद्य तैल,
8) तिक्तेक्ष्वादि तैल,
9) कनकक्षीरी तैल,
10) विपादिकाहर घृत तैल,
11)) सिध्म लेप,
12) एडगजादि लेप,
13) मन:शिलादि लेप.
14) तिक्तषट्पल घृत,
15) महातिक्तक घृत,
16) महाखदिर घृत,
सु. - 1) तुवरक तैल,

2) भल्लातक तैल,
3) महातिक्तक तैल,
4) तिक्तक तैल,
5) महानिल तैल,
6) वज्रक तैल,
7) महावज्रक तैल,
8) कारभमूत्रपान.
महाकुष्ठ - 1) यवकल्प,
2) मंथ - आसव - अरिष्ट -
सुरा अवलेह - अयस्कृति - चूर्णक्रिया,
3) गुडूची स्वरस,
* खदिर & बीजक श्रेष्ठ.
वा. - 1) तिक्तक - महातिक्तक घृत,
2) वज्रक - महावज्रक घृत,
3) दंती - आवर्तकी,
4) मणिभद्र योग,
5) सप्तसमा गुटिका.

8) राजयक्ष्मा चिकित्सा

1) षट्पल घृत,
2) सितोपलादि चूर्ण -
अतिसार एकादश राजयक्ष्मा,
3) तालिसादि चूर्ण & गुटिका,
4) यवानी षाडव-(षाडव in क्षतक्षीण)
5) चन्दनाद्य तैल,
6) रास्नाघृत,
7) बलाघृत + क्षीर... भोजन
मध्य Or पश्चात्.
सु. - शोष प्रतिषेध, एलादि रसायन,
रसोन, नागबला, वर्धमान पिप्पली,
शिलाजतु प्रयोग
वा.- 1) मांससर्पि,
2) एलादि सर्पिगुड,
3) यवानी षाडव,
4) तालीसादी चूर्ण.

9) उन्माद चिकित्सा.

1) हिंग्वाद्य घृत,
2) कल्याणक,
3) महाकल्याणक घृत,
4) महापैशाचिक घृत,
5) रसोनाद्य घृत,
6) द्वितीय रसोनाद्य घृत,
7) पुराण घृत,
8) प्रपुराण घृत,
सु. - 1) कल्याणक
- महाकल्याणक घृत,
2) फलघृत.
वा. - 1) हिंग्वादि घृत,
2) ब्राह्मी घृत,
3) कल्याणक - महाकल्याणक घृत,
4) महापैशाचिक घृत,
5) उन्माद सुदनी वर्ति.

10) अपस्मार चिकित्सा

1) पंचगव्य घृत,
2) महापंचगव्य घृत,
3) ब्राह्मी घृत,
4) पलंकषादि तैल.
5) सिध्दार्थक घृत
6) सिध्दार्थक अगद
सु. - 1) सिध्दार्थक घृत,
2) पंचगव्य घृत.
वा. - 1) पंचगव्य - महापंचगव्य घृत,
2) ब्राह्मी घृत,
3) कूष्माण्ड घृत.

11) क्षतक्षीण चिकित्सा

1) एलादि गुटिका,
2) अमृतप्राश घृत,
3) श्वदंष्ट्रादि घृत,
4) सर्पिगुड (1, 2, 3, 4),
5) पंचम सर्पिमोदक,
6) सैंधवादि चूर्ण
(सैंधवादि तैल-उरूस्तंभ....च.),
7) षाडव (राजयक्ष्मा - यवानी षाडव),
8) वर्धमान नागबला योग.

12) श्वयथु चिकित्सा

1) गण्डिराद्यरिष्ट - (खुले आसमान में)
2) अष्टशत अरिष्ट,
3) पुनर्नवाद्य अरिष्ट,
4) त्रिफलाद्य अरिष्ट,
5) क्षारगुडिका,
6) गुडार्द्रक वर्धमान प्रयोग,
7) वर्धमान आर्द्रक स्वरस.
8) शिलाजतु प्रयोग (Also in गुल्म),
9) कंस हरितकी,
10) चित्रक घृत,
11) शैलेयादि तैल प्रदेह.
सु. - 1) तिल्वक घृत,
2) मूत्रवर्ति क्रिया.
वा. - 1) वर्धमान गुडार्द्रक प्रयोग,
2) आर्द्रक घृत,
3) धान्वन्तर घृत,
4) महातिक्तक घृत,
5) कल्याणक घृत,
6) अभया घृत,
7) दशमूल हरितकी.(व्याघ्री हरितकी)

13) उदर चिकित्सा.

1) पटोलमूलाद्य चूर्ण,
2) नारायण चूर्ण,
3) हपुषाद्य चूर्ण,
4) निलिन्याद्य चूर्ण,
5) क्षारवटी,
6) रोहितक घृत,
7) षट्पल घृत.
सु. - 1) गुडहरितकी,
2) मूत्रवर्ति,
3) आनाहवर्ति,
4) तिल्वक घृत,
5) षट्पल घृत.
वा. - 1) नारायण चूर्ण,
2) हरितकी घृत,
3) स्नुहीक्षीर घृत,
4) पीलुकल्कसिध्द घृत,
5) क्षार गुटिका.

14) अर्श चिकित्सा

1) तक्रारिष्ट,
2) अभयारिष्ट,
3) दन्त्यारिष्ट,
4) फलारिष्ट,
5) द्वितीय फलारिष्ट,
6) कनकारिष्ट,
7) कुटजादि रसक्रिया,
8) पिच्छा बस्ति,
9) हीबेरादि घृत,
10) सुनिषण्णक चांगेरी घृत.
सु. - 1) गुडहरितकी,
2) गोमूत्र,
3) भल्लातक प्रयोग,
4) वृक्षक & अरूष्कर श्रेष्ठ.
वा. - 1) कासीसादि तैल,
2) तक्रारिष्ट,
3) गोमूत्र हरितकी,
4) वर्धमान पिप्पली,
5) कुटजादि पिप्पली,
6) पिच्छा बस्ति,
7) अभयारिष्ट,
8) दन्त्यारिष्ट,
9) दुरालभारिष्ट,
10) पलाशक्षार घृत,
11) चांगेरी घृत,
12) कल्याणक क्षार,
13) पूतिकरंज चुक्र & शुक्त,
14) दशमूल गुड,
15) चित्रकावलेह,
16) सूरण पूटपाक,
17) बडवामुख चूर्ण.

15) ग्रहणी चिकित्सा.

1) दशमूलाद्य घृत,
2) त्र्यूषणाद्य घृत,
3) पंचमूलाद्य घृत & चूर्ण,
4) चित्रकाद्य गुटिका,
5) मरिच्याद्य चूर्ण,
6) तक्रारिष्ट,
7) चन्दनाद्य घृत,
8) नागराद्य चूर्ण,
9) भूनिम्बाद्य चूर्ण,
10) किरातिक्तादि चूर्ण,
11) मधूकासव,
12) दुरालभासव,
13) मुलासव
14) पिण्डासव,
15) मध्वरिष्ट,
16) क्षारघृत,
17) क्षारगुटिका,
18) चतुर्थक्षार,
19) पंचमक्षार.
सु. - 1) हिंग्वादि चूर्ण,
2) चांगेरी घृत,
3) क्षीरषट्पल घृत.
वा. - 1) तालीसादि वटक,
2) मधुकासव,
3) क्षारगुटिका,
4) क्षारघृत.

16) पांडु चिकित्सा

1) दाडिमाद्य घृत,
2) कटुकाद्य घृत,
3) पथ्या घृत,
4) दन्ती घृत,
5) द्राक्षा घृत,
6) हरिद्रादि घृत,
7) गोमूत्र हरितकी,
8) अयोरज: (लौहभस्म),
9) नवायस चूर्ण, (सु. प्रमेहपिडका),
10) मण्डूर वटक,
11) शिलाजतु वटक,
12) योगराज वटक,
13) पुनर्नवा मण्डूर,
14) धात्र्यावलेह,
15) गौड अरिष्ट,
16) बीजकारिष्ट,
17) धात्र्यारिष्ट.
सु. - 1) अयोरजोव्योषाद्यावलेह,
2) गौडोऽरिष्ट,
3) मध्वासव,
4) शर्करासव,
5) मूत्रासव,
6) क्षारासव.
वा. - 1) नवायस चूर्ण,
2) ताप्यादि चूर्ण,
3) मण्डूर वटक,

कुम्भकामला - i) शिलाजतु,
ii) स्वर्णमाक्षिक,
iii) स्वर्ण मण्डूरभस्म.
कामला - 100 हरितकी स्वरस +
ii) स्वर्णमाक्षिक,
iii) स्वर्ण मण्डूरभस्म.
कामला - 100 हरितकी स्वरस +
50 हरितकी वृन्त सिध्द प्रयोग
हलीमक - a) द्राक्षावलेह,
b) अभयावलेह
* पाण्डुरोगी कुशला शोफोक्तम्
च क्रियाक्रमम्।

17) हिक्का - श्वास चिकित्सा.

1) मुक्तादि चूर्ण (मुस्तादि चूर्ण - कुष्ठ),
2) तेजोवत्यादि घृत,
3) मन: शिलादि घृत
(मन:शिलादि लेप - कुष्ठ).,
सु. - हिक्का - प्राणायाम, श्वास -
i) वासाघृत, ii) षट्पल घृत,
iii) भृंगराज तैल.
वा. - श्वासहिध्मा चि. -
1) गुडनागर योग,
2) धान्वंतर घृत,
3) वृष घृत,
4) दाधिक घृत,
5) हपुषादि घृत.
* कास, श्वास, क्षय,
छर्दि, हिक्का - परस्पर चिकित्सा

18) कास चिकित्सा.

V - i) कण्टकारि घृत,
ii) पिप्पल्यादि घृत,
iii) त्र्यूषणाद्य घृत,
iv) रास्ना घृत,
* चित्रक घृत - शोथ... (च.)
v) चित्रकादि लेह,
vi) अगस्ति हरितकी
गुल्म - दन्ती हरितकी,
शोथ - कंस हरितकी,
कास - अगस्ति हरितकी.
P - कासहर गुटिका.
K - 1) दशमुलादि घृत,
2) कण्टकारी घृत,
3) कुलत्थादि घृत.
क्षयज - i) द्विपंचमूलादि घृत,
ii) गुडुच्यादि घृत,
iii) हरितकी लेह,
iv) पद्मकादि लेह.
सु. - कल्याणक गुड, अगस्ति अवलेह.
वा. - 1) कंटकारी & अमृतप्राश घृत,
2) कुष्माडंक & नागबला रसायन,
3) एलादि गुटिका,
4) अगस्ति हरितकी रसायन,
5) वसिष्ट हरितकी रसायन,
6) विजया लेह.

19) अतिसार चिकित्सा.

1) चांगेरी घृत,
2) चव्यादि घृत - गुदभ्रंश
सु. - पिच्छा बस्ति.
वा. - 1) अपराजित खल,
2) पिच्छा बस्ति,
3) दाडीमाष्टक चूर्ण

20) छर्दि चिकित्सा.

1) सर्पिगुड,
2) कल्याणक, त्र्यूषण
घृत - (चिरकालीन छर्दि)
3) जीवनीय घृत,
4) मृद्भृष्टलोष्ट्र प्रभावज जल.
सु. -
V - 1) क्षीरघृत - सैंधवसर्पिपान,
2) मृद्गामलक यूष,
3) पंचमुलासिध्द यवागु.
P - 1) तिल्वक सर्पि.
K - 1) दशांग योग.
* माक्षिकाशकृद् प्रयोग,
* गृहगोधिका प्रयोग.
वा. - 1) ससैंधव सर्पि,
2) व्योषत्रिलवणाढयं दाडीमाम्बु.

21) विसर्प चिकित्सा.

1) त्रायमाण घृत,
2) दन्त्यादि लेप.
सु. - 1) गौर्यादि घृत.
वा. -* अग्निविसर्प :
1) शतधौतघृत,
2) घृतमण्ड,
3) मधुकाम्बु.

22) तृष्णा चिकित्सा.

(ऐंद्र, लोष्ट्र, मृद्भ्रष्ट संयुक्ता) जल.
सु. - 1) श्रमज -गुडोदक / मांसरस,
2) भक्तोपरोध - उष्णयवागु/
शितल मंथ,
3) स्नेहपीत - उष्णजल.
4) मद्यज - अर्धजलमिश्रित मद्य.
वा. -
a) V - 1) सगुड दधि.
b) P - 1) सितायुक्त
पक्वोदुम्बररस पंचसाराम्बु.
c) स्निग्धजन्य - हिमसदृश गुडौदक,
d) उपसर्गज - धान्याम्बु स सितामधु.

23) विष चिकित्सा.

1) मृत संजीवन अगद,
2) गन्धहस्तिनामा अगद,
3) महागन्धहस्तिनामा अगद,
4) पंचशिरिष अगद,
5) परमोऽगद,
6) अमृत घृत,
(अमृतप्राश घृत - क्षतक्षीण),
7) खदिरारिष्ट

24) मदात्यय चिकित्सा.

* अष्टांगलवण - K मदात्यय.
वा. - अष्टांगलवण

25) द्विव्रणीय चिकित्सा.

कम्पिल्लकादि तैल - व्रणरोपण.

26) त्रिमर्मीय चिकित्सा.

1) द्विरूत्तर हिंग्वादि चूर्ण - उदावर्त,
2) सर्पिगुड & घृत - हृद्रोग
(Also in क्षतक्षीण),
3) a) च्यवनप्राश - K हृद्रोग,
b) अगस्ति हरितकी लेह - K हृद्रोग,
c) ब्राह्मरसायन - K हृद्रोग,
d) आमलकी रसायन - K हृद्रोग,
* अणुतैल,
4) मायूरघृत - उर्ध्वजत्रुगत रोग,
5) महामायुर घृत,
6) क्षारगुटिका,
7) कालक चूर्ण,
8) पीतकचूर्ण - श्रेष्ठ,
9) खदिरादि गुटिका तैल,
10) सुखाववर्ती & दृष्टिप्रदा वर्ति,
11) महानिल तैल - पलित,
12) गन्धतेल - कर्णशुल,
13) क्षारतेल - कर्णरोग

27) उरूस्तंभ चिकित्सा.

1) शाङ्गेष्टादि चूर्ण,
2) कुष्ठादि - सैंधवादि तैल,
3) अष्टकट्वर तैल,ड
4) वल्मीकमृत्तिकादि उत्सादन,
5) अश्वगंधादि उत्सादन.
सु. - 1) स्नेहरहित षड्धरणयोग -
गोमूत्र गुग्गुल, शिलाजतुसह प्रयोग.

28) वातव्याधी चिकित्सा.

1) दशमुलादि घृत,
2) चित्रकादि घृत,
3) त्रिफलादि महास्नेह,
4) सहचर तैल,
5) बला तैल,
6) अमृताद्य तैल,
7) रास्ना तैल,
8) मूलकाद्य तैल,
9) वृषमूलादि तैल,
10) मूलक तैल.
सु. - 1) आमाशयगतवात
- षडधरण योग – 7 days.
2) पक्वाशयगतवात - लवणोत्तर प्राश,
3) तिल्वक घृत,
4) अणुतैल,
5) शतपाक सहस्त्रपाक तैल,
6) पत्रलवण,
7) काण्ड लवण,
8) स्नेह लवण,
9) कल्याणक लवण.
वा. - 1) कोष्ठगतवात
- क्षार चूर्ण तिल्वक घृत,
2) सहचरादि कषाय,
3) निम्बादि घृत,
4) प्रसारणी तैल,
5) सहचरादि तैल,
6) बला तैल.

29) वातरक्त चिकित्सा.

1) अमृताद्य तैल
(Also in वातव्याधी....च.),
2) सुकुमार तैल,
3) खुड्डाकपद्मक तैल,
4) महापद्मक तैल,
5) मधुयष्टयादि तैल,
6) शतपाकमधुक तैल,
7) शत पाकमधुपर्णी तैल,
8) शतपाक सहस्त्रपाक बला तैल
(बला तैल-वातव्याधी...च.)
9) सर्जरस तैल,
10) पिण्ड तैल,
11) प्रपौडरिकादि लेप,
12) मधुच्छिष्ट लेप.
सु. - 1) शतपाक बला तैल - V,
2) गुडहरितकी - K,
3) वर्धमान पिप्पली,
4) पिण्डतैल.
वा. - 1) सर्जरस लेप,
2) पिण्डतैल,
3) बला तैल - सहस्त्र शतपाक.

30) योनिव्यापद् चिकित्सा.

1) पुष्यानुग चूर्ण,
2) बृहत् शतावरी घृत....
(वृष्य शतावरी घृत -
माषपर्ण भूतीय)
(शतावर्यादि घृत-रक्तपित्त)... (च.)
वा. - 1) शतावरी अवलेह,
2) बलादि यमक स्नेह,
3) पुष्यानुग चूर्ण,
4) धातक्यादि तैल,
5) फल घृत.

COMMON LIST

1) कृतेऽप्यकृतसंज्ञ: मूत्रवृद्धी, कफ अतिसार.

2) योगवाही: मधु, वायू, शिलाजित, घृत.

3) श्वदंष्ट्रादी घृत: क्षतक्षीण, मूत्रकृच्छ्र.

4) प्रतिद्वंदी चिकित्सा: उन्माद चिकित्सा

5) शीघ्र कूपित: आगन्तुज अतिसार,महा हिक्का

6) पाक न होने दे: अंभ्यतर विद्रधी, उपदंश.

7) महर्षि 4: ऋषिका, ऋषिपुत्रा, देवर्षय, महर्षय

8) कृशानां बृंहण,स्थूलाना कर्षण - बस्ति, तिल तैल

9) योन्याश्चाटालत्वम् - रक्तगुल्म + व्यक्तगर्भालक्षण.

10) आशिविषवत: हिक्काश्वास, आशीविषोपमम् - विसर्प

11) मर्मस्य विसर्प: कृच्छ्रसाध्य, मर्मस्य व्रण - प्रत्याख्येय.

12) दंतचाल लक्षण: दंतवेष्टक, उपकुश, महासौषिर, वैदर्भ.

13) रूधिरस्त्राव लक्षण: दंतवेष्टक, उपकुश, शीताद, परिदर.

14) दैवकृत छिद्र: लिंगनाश शस्त्रकर्म, कर्णवेधन संस्कार.

15) स्पर्शासहत्व लक्षण: पित्त गुल्म, शिरोरोग, वातरक्त, दंतहर्ष

16) आहार: 3 - 3 दिनपर यवागु और तर्पण - उन्माद (सु. उ. 62)

17) विसर्प में: दोष, दुष्य - कुष्ठ समान, लक्षण - ज्वर समान

18) भोजनपूर्व घृतपान: अन्यतोवात / मारूतपर्याय, वातज स्वरभेद.

19) पिच्छाबस्ति: परिकर्तिका, जिवादान, प्रवाहिका, गुदभ्रंश, रक्तस्त्राव.

20) पंचकर्म निषिद्ध: आमाजीर्ण, गर्भिणी, सुतिका, उरूस्तंभ, मंदाग्नि, मूर्च्छीत.

21) विनाम लक्षण:व्यपेता हिक्का, मूत्र &जृंभा वेगधारण, मज्जा आवृत्त वात.

22) आवस्थिकी क्रिया: ग्रहणी दोष, अतिसार, वातरक्त, पुर्नरावर्तकज्वर.

23)दारूण: क्षयज कास, रक्त अतिसार, विसर्प, नेत्ररोग, रक्तपित्त, श्वित्र (चरक)

24) घृत, तैल, वसा, मज्जा, सदृश्य गंध– सन्निपातिक प्रदर, कफज स्तन्यदूष्टी

25) सर्व छिद्र समुह – आकाश. सर्व चेष्टा समुह – वायू.
सर्व द्रव समुह – आप. सर्व मूर्त्त समुह – पृथ्वी.

26) सुश्रुतार्थ संदिपन - हाराणचंद्र
आयुर्वेद तत्व संदिपन - अम्बिकादत्तशात्री.

27) अग्निकर्म: पक्वग्रंथी, प्लीहोदर, गृध्रसि, ग्रंथि विसर्प, अर्श (सु.)
अर्धावभेदक, शीघ्र कुपित आगतुंज विकार, कफज गुल्म.

28) व्याधि प्रकार: सन्निपातज मदात्यय - 10, दृष्टप्रतिश्यायजन्य - 12.
सन्निपातज ज्वर - 13, सन्निपातज अतिसार - 36.

29) क्षीर बस्ति:
पित्तज गुल्म, पित्तज उदर, हलिमक, पित्तावृत्त वात, वातरक्त, गर्भक्षय (सुश्रुत)

30) चिकित्सा वमन: (कफानुबंध पित्त रहने पर),
पित्तज छर्दी, पित्तज गुल्म, पित्तज कास, पित्तज अजीर्ण, पित्तज मदात्यय.

31) रात्रि वर्जित: i) दधी
i) आश्च्योतन...(च.), iii) आलेप... (सु. सू.)

32) वर्षगणानुबंधी: दुषिविष, अपची (सुश्रुत)
(दिर्घकालानुबंधी - कफ अर्श चरक चिकित्सा - 14, वाग्भट अपची)

33) दशमासानुपयुज्य: वर्षसहस्त्रायुर्भवति, भल्लातक स्नेह,
(वर्धमान भल्लातक योग), शिलाजतु सेवन (मधुमेह)

34) वेदनारहित: कफ ओष्ठरोग, अजगल्लिका, जतुमणि, मषक,
तिलकालक, न्यच्छ, व्यंग, निरूध्दप्रकश, विवृत्त हनुस्तंभ.

35) पूर्व दिशा: (मुख), i) शस्त्रकर्म वैद्य - पश्चिम, रूग्ण - पूर्व.
ii) अध्यापन समय हवन मे, iii) दुग्धपानसमय धात्री,

36) अलस - क्षुद्ररोग व पाण्डुरोग पर्याय
अलस - जिव्हारोग अलसक - आमरोग.

37) पूर्वोत्तर दिशा: i) कुटिनिर्माण, ii) पूत्रेष्टीयज्ञ,
iii) न्यग्रोध की शाखा पुंसवन के लिये। iv) पूर्वी उत्तर For अध्यापन

38)(सुश्रुत) पूर्व + दक्षिण: सुतिकागार द्वार, रसशाला मुख,
उत्तर - औषधी विर्यवान पश्चिम - दिशा रसायन प्रयोग

39) पुनर्वसु आत्रेय द्वारा वर्णित योग: पिप्पल्यादी घृत - वात कास,
बीजकादी घृत, महामायुर घृत, पूष्यानुग चूर्ण.

40) त्रिदोषज व्याधि: विषमज्वर, प्रमेह, कूष्ठ, राजयक्ष्मा, उदर, अर्श,
क्षतजकास, मदात्यय, उरूस्तंभ, प्रमेह पिडका.

41) असाध्य: दण्डालसक - असाध्य आमदोष - परम् असाध्य
मर्मस्थ अर्बुद - असाध्य मर्मस्थ ग्रंथि - असाध्य

42) शुक्ल वस्त्र- व्रणित, विशीखा हेतु, वैद्य गुण, प्रशस्त दूत.
कषाय वस्त्र - शिष्य.

43) आमतैल प्रयोग: हस्त तल भग्न.
कर्णपाली सम्यक विद्ध के बाद आमतैल से सेचन For 3 days

44) मुल फल: - मूलिनि 16, फलिनी 19,
मुलासव 11. फलासव 26. मुलविष 8, फलविष 12,

45) गुड प्रयोग: (शारंगधर) आम में - शुण्ठी के साथ, अर्श - अभया,
मूत्रकृच्छ - जीरक, अजीर्ण - पिप्पली के साथ.

46) हर्षण चिकित्सा: काम, शोक, भयज ज्वर
भयज अतिसार - हर्षण (विस्मारण), अरोचक - हर्षण + आश्वासन Both

47) पापजन्य व्याधी:
i) कुष्ठ, ii) उदर, iii) सहज अर्श, iv) किलास, v) कृमिज शिरोरोग.

48) जल: भोजनपूर्व – अध: कायरोग,
भोजनमध्य – जठरसंचित रोग. भोजन पश्चात – उर्ध्वजत्रुगत रोग.

49) सुखसाध्य व्रण लक्षण:
i) चरक - त्वकमांस, ii) सुश्रुत - त्वक (सुपचार)

50) निदान परिवर्जन: रक्तपित्त, गुल्म, प्रमेह, शोथ, उदर, हिक्का, नेत्ररोग,
कृमी चिकित्सा, उच्चै भाष्य (च. सि. 12)

51) सर्वाग सुंदर By अरूणदत्त on अ. हृ.
सर्वाग सुंदरी By लालचंद्र वैद्य on मा. नि

52) ऋजू: भंगदर, शल्यगाति, धुमपत्रनेत्ररचना, शिष्य गुण –
आक्षवक्त्रनासा, ऋजुग्रंथी –सीवनप्रकार,ऋजुकरण–यन्त्रकर्म,मूढगर्भ क

53) शलाका भ्रमण दोष: 5
क्षोभक, उर्ध्वप्रणयन, अधोनयन, अतिघटन, अतिप्रेरण
लिंगनाश दोष: 5 स्फुटन, अवघलन, विसरण, उत्प्लवन, लीन.

54) फासी - संदर्भ सु. क. 5
बाहू रज्जू लतापाशौ - सु. सु. 27 (Stangulation / Hanging)

55) सुश्रुत देहवर्णन - स्थूल, कृश, मध्यम.
संदर्भ - सु. सु. 15, सु. सु. 35

56) प्राणायतनमुत्तमम - प्राणायतन में श्रैष्ठ
ओज सु. सु. 15; सु. नि. 3 में बस्ति बताया है।

57) गुग्गुल (सुश्रुत चिकित्सा 5)
i) सुक्ष्म - अग्निदीपन, ii) सर - मलपित्तनुत, iii) तीक्ष्ण - कफवातघ्न
iv) उष्ण - कफवातघ्न, v) सुगंधि - पूतिकोष्ठघ्न

58) मद्य गुण: i) तैक्ष्ण्यात् - मनोगतिम, ii) वैशद्यात - कफशुक्रनुत्
iii) व्यवायित्वात - हर्षदंच, iv) विकाशि - विसर्पति,
v) सौक्ष्मस्त्राव - विशत अवयवान, vi) औष्ण्यात - शीतोपचारं

59) अजीर्ण:

	सुश्रुत	वाग्भट	काश्यप.	यो. र.
आमाजीर्ण	लंघन	लंघन	लंघन	वमन
विदग्धाजीर्ण	वमन	वमन	शयन	लंघन
विष्टब्धाजीर्ण	स्वेदन	स्वेदन	-	स्वेदन
रसशेषाजीर्ण	शयन	शयन	शोषण	शयन

60)

नाडी परिक्षा व देवता	प्राणायाम व देवता
वात - ब्रह्मा	पुरक - ब्रह्म
पित्त - शंकर / महेश	कुंभक - विष्णू
कफ - विष्णू	रेचक- रूद्र / महेश

61) पंचकर्म चिकित्सा:
सान्निपातीक ग्रहणी, दुषिविष, विरेचन अयोग, अस्थिमज्जागत वात, मदात्यय चिकित्सा, वातज उन्माद, योनिव्यापद (मृदुपंचकर्म) मदमूर्च्छा (च.सु. 24)

62) पक्ष: शुक्ल: रसशाला शुभारंभ, कर्णविधन, कुटी प्रवेश, केवलामलक रसायन में आवले तोडना, अध्यापन.
माणिक्यधारण - श्रावणमास में

63) अपथ्य: पारद सेवन - शोभांजन, ककाराष्टक वर्ग,
शिलाजित सेवन - कूलत्थ, गुरू, विदाही वर्ज्य, स्वर्ण सेवन - बिल्वफल,
माक्षिक सेवन अपथ्य - कुलत्थ, कपोतमांस

64) 3 - 4: पुंसवन मात्रा - 3 - 4 बिंदू, पक्षाघात चिकित्सा - 3 - 4 मास,
स्तन्य प्रवर्तन काल - 3 - 4 दिन, स्त्री मे उत्तर बस्ति - 3 / 4 बार,
वैरेचनिक धूम चरक, प्रायोगिक धूम सुश्रुत: 3 - 4 बार, आनाह वर्ति - 3 - 4
वाग्भट - जलोदर मे जलविस्त्रावण 3 - 4 दिन के अंतर से.

65) अग्नि कर्म प्रकार वलय: मुखरोग (कण्ठगतरोग) - अस्थि प्रकार

66) साम्य: गुल्म और विद्रधी:- तुल्यदोषासमुत्थान; उन्माद,अपस्मार - हेतु,
दुष्य: हिक्का, श्वास:- दोषहेतुमुलस्थान (कारण, स्थान, मूल) - पित्त; ग्रंथि - अर्बुद - प्रदेश, हेतु, आकृती, दोष, दुष्य Bcoz अर्बुद की ग्रंथिवत चिकित्सा

67) लक्षण: पिपलिकासंचार इव - वात विसर्प,
पिपलिकाथिरिव संसृप्यते - वात शोथ, पिपलिकाना संचार - मांसावृत्त वात,
पिपलिकासृप्तिमिव - वात योनी व्यापद, मुहु: पिपलिकासम्प्रचार - वात गुल्म.

68) कृष्णात्रेयव्दारा वर्णित योग:
फलारिष्ठ, नागराद्य चूर्ण (पित्त ग्रहणी), क्षारगुटीका, नवायस लौह,
नवायस चूर्ण, बलातैल, अमृताद्य तैल, प्रपौण्डरिकादी तैल

69) रस संयोग 57
रस भेद विपल्प 63
दोष भेद विपल्प 62
तरतम भेद से रस और धातूमल दोषा नुसार रस भेद - असंख्य.

70) कुष्ठ: चक्रपाणी नुसार, 3 - 3 दिनपर - अवपीड नस्य, (लेप)
(RRS - नस्य 7 - 7 दिनपर), 15 -15 दिनपर - वमन,
1 - 1 मासपर - विरेचन, 6 - 6 मासपर - रक्तमोक्षण (वाग्भट और सुश्रुत भी)

71) कर्णयो स्वन:वाग्भट ग्रहणी लक्षण, उन्माद पूर्वरुप (च. नि.),
पाण्डु सा. लक्षण. कर्णक्ष्वेड -(धूमपान अतियोग लक्षण.), वात ज्वर ल.
- स्वनश्च कर्णयो, वात शिरोरोग लक्षण. - स्वनत: श्रोत्रे (वाग्भट)

72) शिलाजतू प्रयोग:
रसायन, गुल्म, प्रमेह, कूष्ठ,राजयक्ष्मा, शोथ, वातरक्त.
शिलाजतू + दुग्ध - उदर
शिलाजतू + गोमुत्र - कामला
शिलाजतू + लघुपंचमूल - वातज गुल्म.

73) पूर्वकर्म: क्षार कर्म - वात लेखन, पित्त घर्षण, कफ प्रच्छान
अग्निकर्म - पिच्छिल आहार, रक्तमोक्षण - यवागुपान.
जलौका - रूक्षणकर्म By मृत्तिका & गोमय.

74) बालको में शुक्र उपस्थित - चरक & सुश्रुत.
पुष्पमुकुलगंध संदर्भ - (14 / 15 सुश्रुत सुत्रस्थान)
स्त्री में शुक्र उपस्थित सुश्रुत शारीरस्थान Only

75) विरेचन कर्म: पाण्डू -मृदूविरेचन, मृदभक्षणजन्य पाण्डू -तीक्ष्ण विरेचन, पक्षाघात - तीक्ष्ण विरेचन, उदर - नित्य विरेचन, कामला - मृदू विरेचन, तमक श्वास - विरेचन, वातरक्त - स्नेहयुक्त विरेचन, उन्माद - शिरसश्च विरेचन.

76) शीघ्र चिकित्स्य: (आशु चिकित्सा) क्षतज कास, राजयक्ष्मा, क्रिमिज हृदरोग, जलोदर (च. चि. 13 / 84), अर्श Otherwise causes बद्धगुदोदर, हिक्का - श्वास, रक्तपित्त - आशुकारी चिकित्सा

77) शीतल जल अनुपान: तुवरक तैल, त्रिवृत्तदष्टक योग,
भल्लातक तैल, पिष्ठान्न - (सुश्रुत) वाग्भट - उष्णजल, इच्छाभेदी रस,
कृष्णतील प्रात:काली, सुदर्शन चूर्ण.

78) सामान्य लक्षण / सम्प्राप्ति: उन्माद-तैरल्पसत्वपरिप्लव,स्मृती विभ्रम
अपस्मार - धीसत्वसम्प्लव, स्मृतीनाश. अतत्वभिनिवेश - बूध्दीवैषम्य

79) सौत्रमणी - इंद्र
सौत्रमणी पूजा - आयुर्वेदसमुत्थानीय रसायनपाद
सौत्रमण्या हुयते - च. चि. 24 मदात्यय

80) पुष्यनक्षत्र:
i) शुन (कुत्ता) का निकाला पित्त अंजनार्थ - अपस्मार
ii) द्रव्यसंग्रह - मृंतसंजीवनी अगद.
iii) द्रव्यसंग्रह - महागंध हस्तीनाम अगद,
iv) द्रव्यसंग्रह - पुष्यानुग चूर्ण
v) अध्यापन (Also हस्त, श्रावण अश्विनी नक्षत्र मे भी) कर सकते है.

81) रसायन - वर्षशतम् आयुप्राप्ती: आयुष्य (सुश्रुत), भल्लातक स्नेह,
अयस्कृती (लोहरसायन), खदिर विधान, शिलाजतु, शतपाक बला तैल,
वराहीकंद रसायन योग, विजयसारादी रसायन, श्वेतावल्गुज रसायन (6 मास),
कृष्णावल्गुज रसायन (1 मास), मण्डुकपर्णी स्वरस रसायन (12 days),
हेमवती वचा रसायन स्नेहपान (100 yrs.) आदी
शतशतआयुवृद्धी: शिलाजतु सेवन (मधुमेह), शतपाक बलातैल, विडंगतण्डुल योग.

82) रसायन - आयुप्राप्ती: i) ब्राम्हीघृत रसायन - 300 वर्ष,
ii) कल्याणक घृत - 300 वर्ष,
iii) ब्राम्ही स्वरस रसायन प्रयोग - 500 वर्ष आयुप्राप्ती
iv) शतपाक वचा घृत - 500 वर्ष
v) द्वि विंडग तण्डुल योग -800 वर्ष आयुप्राप्ती
vi) अनुवासन बस्ति फल - 1,000 वर्ष
vii) बस्ति रसायन - 1, 000 वर्ष viii) रसायन औ. सेवन - 2, 000 वर्ष
ix) बिल्व रसायन - 10, 000 वर्ष - 1 वर्ष सेवन से
x) सोम सेवन - 10, 000 वर्ष xi) बिस रसायन - 1,00,000 वर्ष

83) याप्य व्याधि: रक्तपित्त अधोग, मेदोगत कुष्ठ, द्वद्वंज कुष्ठ, तमकश्वास, पित्तज प्रमेह, जरा कास, क्षतज कास,1 वर्ष पूराणा वातरक्त, द्वद्वंज रोग, क्षतक्षीण 1 वर्ष पूराणा, दुषिविष - 1 वर्ष के बाद (सु. क. 3),रक्तज उपदंश (सु.), दंतहर्ष, दंतभेद (वा.), नकुलांध्य (वा.), पक्ष्मकोप, दुष्टापिनस, निरूद्धप्रकश, स्त्रस्त, अश्च्युत हतद्रुक, पिच्चित अवसन्न नयन.

84)सर्पिउत्तरभक्ति: सूर्यावर्त,राजयक्ष्मा, बाहुशीर्षगत वात, भोजन पश्चात घृत.
राजयक्ष्मा में (शिर, पार्श्व,अंस) शूल,कास, श्वास मे, भोजन पश्चात घृत च.चि.8.
अधो नाभिप्तवात - अवपीडक घृत च. चि. 28,
वात अभिष्यंद (सुश्रुत),अन्यतोवात, कर्णक्ष्वेड भोजन पश्चात घृतपान,
क्षवथु वेग; मूत्रवेग - अवपीडक घृत, (वातज स्वरभेद - भोजन पूर्व घृतपान)

85)		अपक्वावस्था (आम)	पक्वावस्था
भंगदर पिडका	-	व्रणशोफ समान (11 उपक्रम)	छेदन
प्रमेह पिडका	-	शोफवत	व्रणवत
विद्रधी	-	शोफवत	व्रणवत
ग्रंथी	-	शोफवत	विदारण
अजगल्लिका	-	जलौकावचारण	लेप
पित्त वृद्धी	-	पित्त ग्रंथीवत	भेदन
विदारिका (सु.)	-	प्रच्छान & जलौका	भेदन, शोधन, रोपन
विदारिका (च.चि)	-	विस्त्रावण	व्रणवत
ब्रघ्नरोग	-	-	व्रणवत
विसर्प	-	-	व्रणवत

86) शुन शब्द: ग्रहणी लक्षण - शुनपादकर, सहज अर्श - शुनपाणिपाद,
वदनक्षिकुट, असाध्य उदर - शुनाक्षं; उदर पूर्वरूप - पादशोफ;
पाण्डू (सा.ल.) शुनाक्षिकुट; मृदभक्षणजन्य पाण्डु लक्षण
- शुनगण्डाक्षिकुटभु; आमाजीर्ण - गण्डाक्षिकुटशोथ;
कफ क्षीरदोष (पिच्छिल गुण) - शनुवक्त्राक्षिर्जड:
87) वर्ण: i) निस्सार शिथिलेंद्रिय - पाण्डु संप्राप्ति,
ii) हतप्रभ: शिरिरद्वेषी - पाडु सामान्य लक्षण.
iii) भेकवर्णो हतेंद्रिय - कामला सा. ल., iv) मेचकाभ - कर्दम विसर्प,
v) हतेऔजस - अतिमद्यपान, vi) भेकाभ वर्ण, हतौज - रक्तज अर्श.
88) Not logical: मुख मे स्वाद अनुभव न होना - कृच्छ्रसाध्य अतिसार,
वात विसर्प - स्नेहनं न हितं (वर्ज्य), पित्त तृष्णा - Don't use शीत जल,
वृश्चिकविष - उष्णोपचार, पित्त मदात्यय - महुआ से बना मद्य,
कफ मदात्यय - मुनक्का से बना मद्य, मद्यगुण - 8 - (सुश्रुत)
अश्मरी चिकित्सा - कषाय रस, प्रमेह पिडका: अस्वेद्य (सुश्रुत).
89) उद्गार लक्षण: पित्तज हृदरोग - तिक्ताम्लोद्गार,
सहज अर्श - तिक्ताम्लोद्गार; ग्रहणी - लक्षण तिक्ताम्लोद्गार.
रक्तपीत्त- शुक्ताम्ल, पित्तज गुल्म - धुमाम्ल; अर्श - पूर्वरूप - अम्लोद्गार,
पित्तज ग्रहणी - पूती; पित्तज पाण्डु - अम्लोद्गार.(सु. नि 2)
90) अनुपान मधुसर्पि: आमलकायस ब्राम्हरसायन, पिप्पली रसायन, 4 त्रिफला
रसायन, नवायस चूर्ण, सितोपलादी चूर्ण, मुक्तादी चूर्ण, सम्यक दग्ध (सु. सु.12/13)
अलस मूषकदष्ट चिकित्सा - महागद मधुसर्पि लेहन,
हिक्का - नारीक्षीर मधुसर्पि सह
91) हेतु (शीत): i) शीतोदक - कुष्ठ,
ii) शीतोदक स्पर्श - अर्श iii) शीताम्बु - हिक्का - श्वास,
iv) शीताम्बु - कुष्ठ (चरक) v) सन्निपातज उदर - शीतवात. (च. चि.),
शीतोष्णव्यत्यासात - हेतु - कुष्ठ, स्वेदवह स्त्रोतसदूष्टी.
92) पूर्वरूप में चिकित्सा: ज्वर - अपतर्पण,
अश्मरी - स्नेहपानादी उपक्रम, कूष्ठ - उभयत शोधन,
प्रमेह - पिडका - अपतर्पण, कषाय, बस्तमुत्र etc

93) मृत्यु: i) अग्निरोहिणी 7,10,15 दिन में मारक (असाध्य),
ii) रक्त रोहीणी - सद्यमारक (सुश्रुत) (3 दिन में)
iii) Also सद्य चिकित्सा Of जलोदर, iv) बध्दगुदोदर - 15 दिन के बाद,
v) महासौषिर - 7 दिन मे मृत्यु, vi) श्वित्र 1 वर्ष के बाद असाध्य,
vii) अर्दित 3 वर्ष के बाद असाध्य, viii) उन्माद 13 वर्ष के बाद असाध्य.
94) मुहूर्त: i) विष से मृत प्राणी का मांस भक्षण योग्य समय
ii) दंश की 1 मुहूर्त उपेक्षा करने पर रोगी की मृत्यु iii) वमन,
iv) धुमपान After वमन.
v) दिवास्वाप For बाल, वृद्ध, स्त्री etc.
vi) सम्यक वेधन बाद रक्तस्त्राव रूक जाना
vii) जेतांक स्वेद में सुखोष्णस्नान
viii) ओदन परिक्षा, 1 मुहूर्त जल में रखकर
95) लक्षण: वात पित्त ज्वर - रोमहर्ष लिप्ततिक्तास्यता.
वात कफ ज्वर - स्वेद प्रवर्तन, संताप
ग्रहणी लक्षण - पक्वं वा सरुजंपूति मुहुर्बध्दं मुहुर्द्रवम्
वात अतिसार - पक्वं वा विबध्दमल्पाल्पं सशब्दं सशूलफेनपीच्छा परिकर्तिका
वात पक्वातिसार - मुहुमुहुर्विग्रथितमुपवेश्यते पुरीषं
96) वर्णित नहीं: पित्तज गृध्रसी, पित्तज गलगण्ड, वातज पूयस्त्राव,
पित्त कफ भागंदरी पिडका, सन्निपातिक ग्रंथी, अर्बुद (अपवाद कर्णार्बुद),
वातज मुत्राघात, त्रिदोषज अशमरी, क्षतज उपदंश. वात कफ - कास (हारित),
मा. नि. - वातज व सन्निपातीक दाह वर्णन नही.
वातोक्लिष्ठ वर्त्म (वाग्भट), सन्निपातिक हृदरोग (सुश्रुत)
97) वाग्भट - 1 वर्ष पुराणा अर्श - कृच्छ्रसाध्य
चरक - 1 वर्ष पुराणा क्षतक्षीण - याप्य
सुश्रुत - 1 वर्ष पुराणा श्लीपद - असाध्य
1 वर्ष पुराणा गलगण्ड - असाध्य
1 वर्ष पुराणा वातरक्त - याप्य
3 वर्ष पुराणा अर्दित - असाध्य
13 वर्ष पुराणा उन्माद - असाध्य
1 वर्ष पुराणा विष - याप्य
1 वर्ष के बाद आवरण – कष्टसाध्य या असाध्य.
10 दिन के बाद - मूर्च्छित व उपद्रवयुक्त धनूस्तंभ असाध्य.
98) शीतलक्रिया: दंतवैदर्भ, पुष्परिका (शुकदोष), विषजन्य उपद्रव (चरक),
अतिदग्ध चिकित्सा (सुश्रुत), विष वेगांतर चिकित्सा (सुश्रुत), पित्त सर्वसर,
जालगर्दभ - शिशिरात प्रदेह, दिप्त रोग में, संतमक श्वास - शीतल उपचार,
दाह - शीतल उपचार, हिक्का - शीताम्बु सेक, अत्याग्नि चिकित्सा - मधुच्छिष्ट,
सर्पि शिताम्बु, मैथुनपश्चात - शीतोदक स्नान (च.शा.6), सद्यक्षत - शीतसेक,
99) कुणपगंधि: i) कुणपगंधि शुक्र - रक्तज दुष्टि
ii) कुणपगंधि आर्तव - रक्तज दुष्टि
iii) कुणपगंधि स्तन्य - पित्तज दुष्टि
iv) कर्दम विसर्प (वात कफ) - कुणपगंधि
v) सहज अर्श ल. - कुणपगंधि
vi) असाध्य रक्तपित्त - कुणपगंधि स्त्राव
vii) सन्निपातज रक्तप्रदर - कुणपं स्त्राव ....(मा. नि.)
viii) पित्तला योनिव्यापत - कुणपं स्त्राव ....(चरक)
100) नस्य: अवपीडक - अधोनाभीगत वात, बृंहण - सुर्यावर्त,
शीतलजल नस्य - अवबाहुक, मन्यास्तंभ. सर्षपस्नेहयुक्त अवपीड - उन्माद,
अणुतैल नस्य - मन्यास्तंभ, हनुग्रह, अर्दित रेचन - अपस्मार, कुष्ठ ,

101) गंध	गंध (सुश्रुत)	(वाग्भट)
कफगंध	क्षतज संगंधिक	वसारक्तगंध
कफप्रसार	-	पूयशोणित
मेदगंध	वसा	वसागंध
वमन (वा)		विट्गंध
मूत्रगंध (वा)		शुक्रगंध
पूतना	काकतुल्य	काकणकवतपुतिगंध
आमपूतना	आमगंध	वसावतविस्त्रगंध
अम्लपूतना	अम्लगंध	मत्स्याम्लगंध
रक्तपूतना	-	बस्त
शकृत्पूतना (वा)	-	गृद्ध गंधित्व
मूत्रपूतिका	मूत्रतुल्य	गोमूत्रगंध
शकृत्पूति	विष्ठा	शकृन्निगंध

अधपूतना - सुश्रुत, दृष्टीपूतना - वाग्भट., गंधपूतना - यो. र.

102) पुराणघृत: चरक / सुश्रुत / यो. र. - 10 वर्ष

सुश्रुत - 11 वर्ष, अरुणदत्त - 15 वर्ष, चरक - 10 - 100 वर्ष - प्रपुराण घृत,

सुश्रुत - 11 - 100 वर्ष - कौंभसर्पि यो. र. - Up to 100 वर्ष - कौंभसर्पि

चक्रदत्त - 10 वर्ष - कौंभसर्पि सुश्रुत - 100 वर्ष के बाद - महासर्पि

103) च. शा. 4	कूल भाव	कूल गुण 54
पार्थिव	18	14
आप्य	15	14
आग्नेय	5	11
वायवीय	11	9
आकाशीय	5	6
ब्राह्म	2	–
Total	56	54

104) यकृतदाल्योदर - अश्मरी, आमवात - अधिकतर बालकों में

प्लीहा, पित्ताशय शोथ, Raynaut's disease - स्त्रियों में,

Vaginal Hydrocoel - only पुरुष,

Burgers disease - पुरुषों में - अम्लपित्त - मध्यमावस्था

105) सम्यक दग्ध: मधुघृत, जलौका व्रण - शतधौत घृत,

शस्त्रनिपातजन्य वेदना - कोष्ण यष्टीमधुसिद्ध घृत

क्षार पश्चात - तिलकल्क + मधुघृत - व्रणरोपण

अतिबंध चिकित्सा - कषाय + घृतमिश्रित लेप/मधुच्छिष्ट सर्पि आदि

अतिरक्तस्त्रावण - वातवृद्धी चि. - कोष्ण सर्पि परिषेचयेत्।

उष्ण प्रदेह - शतधौत घृत, ज्वर में दाह - सहस्त्रधौत घृत अभ्यंग

106) यज्ञ - मारुती, इष्टी यज्ञ - विकृत वर्षा (काश्यप)

स्थालीपाक प्राजापत्य - हिनांगे अधिक (काश्यप)

काम्येष्टी यज्ञ - जातहारिणी आक्रमण (काश्यप)

[illegible] यज्ञ - 100 पल शतपुष्पा सेवन (चरक - शारिरस्थान)

अग्नियष्टीम यज्ञ - सोमसेवन (सुश्रुत)

[illegible] यज्ञ - अतिसार चिकित्सा अध्याय (चरक)

[illegible] दाह, [illegible] - रक्त

[illegible] दाह - पित्त (बाह्याभ्यंतर दाह)

[illegible] रक्तस्त्राव में - दुःसह दाह - चिकित्सा - रक्तपित्तसमान

शुक्रक्षयजन्य दाह - Due to मूर्च्छा & तृष्णा, चिकित्सा - रक्तपित्तसमान

[illegible] - वातपित्त ज्वर, स्वेदप्रवर्तन, संताप - वातकफ ज्वर

[illegible] - वातपित्त ज्वर

108) ज्वर: चरक-सर्वरोग अग्रज, रोगराट, सुश्रुत - रोगराज,वाग्भट-रोगपति

अ. सं. - वातबलासक ज्वर (वात/कफ)

(हरिद्रक ज्वर / रात्रिक / पूर्वरात्रिक)

सुश्रुत - प्रलेपक ज्वर (वात / कफ) in राजयक्ष्मा

यो. र. - मंथक ज्वर (मथर ज्वर - आन्त्रिकज्वर)

काश्यप - षाण ज्वर (ईशानकोण संबंधीत ज्वर)

मा. नि. - विषजन्य / औषधिगंधज ज्वर

(ज्वरातिसार & रक्तातिसार वर्णन)

हारित - वर्णानुसार ज्वर

सन्निपातिक ज्वर - 13 (चरक & काश्यप) only 1 सुश्रुत

पर्याय - हतौजस / अभिन्यास (वा.)

यो. र. - विषमज्वर / मधुर ज्वर / मंथक ज्वर

काश्यप - रुद्रपुजा in ज्वर / यक्ष्मा

ज्वर मे 11 प्रकार की चिकित्सा वर्णन - भेल

चतुर्थक ज्वर का भेद नही - वात

पाचन काल: सतत ज्वर काल,

चरक - 7,10,12 दिन वात पित्त कफ

हारित - 14, 18, 22 दिन क्रमशः

109) क्षय वर्णन:

रक्तक्षय -	त्वकपारूष, त्वकरूक्षता (चरक)
स्वेदक्षय -	त्वक शोष
कफक्षय -	श्लेष्माशयशून्यता, पिपासा
मेदक्षय -	संधिशुन्यता, संधिस्फुटन (च.) कटिशुन्यता (वा)
मज्जाक्षय -	अस्थिशुन्यता, अस्थितोद
अस्थिक्षय -	अस्थिशूल
कफक्षय -	संधिशैथिल्य (च.), अस्थिक्षय
रक्तक्षय -	सिराशैथिल्य , रक्तवृद्धी - सिरापूर्णच
मांसक्षय -	धमनीशैथिल्य, संधिवेदना (वा.)
कफवृद्धी -	संधिविश्लेष Also in ओजविस्त्रंस
	अस्थिसौषिर्य - मज्जाक्षय
रस, पुरिषक्षय -	हृत्पीडा, मांसक्षय - गात्राणां सदन
वातवृद्धी -	गात्रस्फुरण, मांसवृद्धी - गुरुगात्रता
पुरिषवृद्धी -	आटोप, मूत्रवृद्धी - आध्मान

110) च्यवन मंत्र: मूढगर्भ,

गायत्री मंत्र: रसायन कर्म / सोमसेवन / अरिष्ट उत्पन्न होने पर

केवल आमलक रसायन बनाते समय - योग निर्माण करते समय (सु. चि. 28)

ग्रह चिकित्सा (सु. उ. 60)

111) वर्णभेदसे विष प्रकार: 4

ब्राम्हण - श्वेतवर्णी विष - रसायन औषधार्थ

क्षत्रिय - रक्तवर्णी विष - रसकर्म

वैश्य - पीतवर्णी विष - क्षद्र कार्य हेतु

क्षुद्र - कृष्णवर्णी विष - मारण कर्मार्थ

112) परिक्षा: त्रिविध परिक्षा - चरक, वाग्भट, भावप्रकाश

चतुर्विध परिक्षा - भावप्रकाश

पचविध परिक्षा - चरक निदान, माधव निदान (निदानपचक)

षडविध परिक्षा - सुश्रुत

अष्टविध परिक्षा - यो. र.

दशविध परिक्षा - चरक

113) वैद्य: राजवैद्य - सर्वरोग विशेषज्ञ, सर्वकार्यविशेषवित

सर्वभेषजतत्वज्ञो। च. वि 6/19 (राजवैद्य - च. सू.)

वैद्य प्रकार 2 - कुशल, अकुशल,

तस्कर वैद्य - शोफ अवस्था न जाननेवाला.

श्वपच / चाण्डाल - आमशोफ का छेदन व पक्वशोफ की उपेक्षा करनेवाला.

114) बंध प्रयोग: i) गुदभ्रंश - गोफणा,

ii) मेढवृद्धी - गोफणा, स्थगिका iii) मूत्रवृद्धी - स्थगिका

iv) छिन्नव्रण - शाखा पतन होने के बाद - वेल्लित, वातघ्न औषध सिंचन -गोफणा

v) छिन्नव्रण - निःशेषतः शाखा (संपूर्ण रूप से कटी हुई शाखा)

- तैलेन दग्धवा - कोश बंध.

vi) मुष्क बाहर निकलने के बाद -

तुन्नसेवनी सीवन Then कटि प्रदेश मे गोफणा बंध.

vii) अंससंधी विसंहत - स्वस्तिक बंध.

viii) हनुसंधी भग्न - पंचांगी बंध ix) जलोदर विस्त्रावण - स्थगिका.

x) स्वस्तिक बंध - असच्युति

xi) स्थगिका बंध - उदर, मूत्रवृध्दि

xii) गोफणिका बंध - गुदभ्रंश, मुष्कबहिर्गमन

xiii) गाढ बंध (सु. चि. 3)

a) अक्षकास्थि भग्न

b) अर्बूद छेदन के बाद (सु.चि.18)

xiv) जलोदर - गाढतर बंध (सु.चि.14)

xv) वेशवार बंध - प्रस्त्रंसिनी योनी व्यापद.

xvi) वरण बंध - गर्भपात 8 मासपूर्व

xvii) प्रजावरण - निश्चित संतोत्पत्ती (का.)

115) स्थानानुसार वातरोग (सु. नि.)

त्वचा - वैवर्ण्य, स्फुरण,रौक्ष्य, सुप्ति, चिमचिमायण, निस्तोद, त्वकभेद,परिपुटन

रक्त - व्रण.,

मांस - सशुलग्रंथि.,

मेद - मंदरूप अव्रण ग्रंथि.

सिरा - सिरा आंकुचन, पूरण, शुल, विस्तुति

संधि - हंति, शूल, शोथ.,

अस्थि - अस्थिशोष, प्रभेद, शूल.,

मज्जा - कभि न शांत होने वाली वेदना, मज्जाशोष.

शुक्र - अप्रवृत्ती, विकृतप्रवृत्ती

(वा. - मांसमेदोगत वात मे तोदादी की अधिकता वाली, कर्कश ग्रंथी, श्रम, गुरू अंग, अतिरूक, स्तब्धता, मुष्टीदण्डहतोपमम)

आक्षेपक - धमनीया वायु द्वारा व्याप्त

कृच्छ्रसाध्य दण्डापतानक - कफयुक्त वायु धमनि मे स्थित

पक्षाघात - वायु - सिरा, स्नायु को विशेष करके

116) साध्यासाध्यत्व: कुष्ठ:

साध्य - वातकफज, एकदोषोल्बण

कृच्छ्रसाध्य - वातपित्त व कफपित्तप्रबल कुष्ठ

असाध्य - सर्वलिंगयुक्त, अबल, तृष्णादाह - परित, शांतांग्री, जतुभिजग्धम

पक्षाघात साध्यासाध्यता - (सुश्रुत) केवल वात - कृच्छ्रसाध्य

धातुक्षयजन्य - असाध्य, रक्त - कफ के साथ - साध्य

अंश साध्यासाध्यता - (सुश्रुत) बाह्य - मध्यमवली स्थित - साध्य,

1 वर्ष पुराना - कृच्छ्रसाध्य, अंतर्वली स्थित - प्रत्याखेय.

सु. नि. 10 विसर्प साध्यासाध्यता:

वात, पित्त, मर्मस्थानगत - कृच्छ्रसाध्य, त्रिदोषज, क्षतज - असाध्य.

वात विसर्प - विषमाकार गण्ड होने पर वर्ज्य

पित्त विसर्प - स्त्रोतोजकर्दमनिभ होने पर वर्ज्य

त्रिदोषज विसर्प - मांससिराप्रशासन

नाडीव्रण (सु. 8 वा. 5), वातज नाडीव्रण - रात मे अधिक स्त्राव (सुश्रुत)

पित्तज नाडीव्रण - दिन मे अधिक स्त्राव (सुश्रुत)

कफज नाडीव्रण - रात्री मे अधिक क्लेद (वाग्भट)

त्रिदोषज नाडीव्रण - कालरात्री की तरह घातक

आगतुज नाडीव्रण - सहसा सरूजा स नित्यम् (सुश्रुत), नित्य रूजा (वाग्भट)

117) अर्श - अश्मरी:

वात अश्मरी - Oxalate type calculus,

पित्त अश्मरी - Uric acid calculus

कफ अश्मरी - Phosphate calculus

वातज अर्श - कदम्बपुष्प, तुण्डिकेरीपुष्प, नाडी, मुकुल, सुचिमुखाकृती

पित्तज अर्श - यकृत्प्रकाशनि, शुकजिव्हासदृश्य, यवमध्यानि, जलौका वक्त्रसदृश, प्रविलन्न

कफज अर्श - करिर पनसास्थि, गोस्तनसदृश्य न भिद्यन्ते न स्त्रवन्ति

रक्तज अर्श - न्यग्रोधप्ररोह, विद्रुम गुंजा फल सदृश.

सहज अर्श - दुर्दर्शन, परूष, पांशु, दारूण, अंतर्मुख.

वातज अश्मरी - कदंबपुष्प कण्टकांचित.

पित्तज अश्मरी - कृष्ण, भल्लातकास्थीसदृश्य, मधुवर्ण

कफज अश्मरी - कुक्कुटाण्डप्रतिकाश, मधुकपुष्पपवर्ण.

118) मूत्रविकार: श्वेत, रक्तवर्ण, पीतघनमूत्र, सांद्र मूत्र - मूत्रौकसाद

भस्मोदकसदृश्य - मूत्रकृच्छ्र

गोरोचन सदृश मूत्र - पित्त मुत्रौकसाद

शंखचूर्ण सदृश मूत्र - कफ मुत्रौकसाद

रक्तवर्ण मूत्र हारिद्रवर्ण - उष्णवात

अनिमित्तरुजा - मूत्रजठर

अध स्त्रोत:का निरोध करनेवाली व्याधी मूत्रजठर

खर्वेगुण्य - मूत्रोत्सग

वातविकृती के सभी लक्षण - मूत्रक्षय

पौरूषग्रंथीवृद्धीवत लक्षण - वाताष्ठीला

कृच्छ्रसाधन व्याधी - वातबस्ति

सदारूण व्याधी - वातकुण्डलीका

अश्मरीसम दारूणशुल - स्त्रग्रंथी / मूत्रग्रंथी

गर्भवत्बस्ति - बस्तिकुण्डल

बुद - बुद मूत्रत्याग - बस्तिकुण्डल

पवनबलसजन्य, घोर शस्त्रविषोपमं - बस्तिकुण्डल

119) अर्श चिकित्सा: औषधसाध्य - नव, अल्पदोष, उपद्रवयुक्त,

क्षारसाध्य - मृदु, प्रसृत, अवगाढ

अग्निसाध्य - कठिण, कर्कश, स्थिर, पृथु

शस्त्रसाध्य - तनुमूल, दारिकाभी, बलेतद्युक्त

120) चक्रतैल

i) Deep के सुश्रुत व्रण में तर्पण By चक्रतेल

ii) शिरोऽभ्यंग में तर्पण By चक्रतेल

iii) पित्त भग्न में परिषेकार्थ By चक्रतेल

iv) मन्दवृश्चिकदंश पर परिसेचन By चक्रतेल

v) उरु भग्न मे चक्रयोग से खींचे

121) विषगुण:

	सुश्रुत	चरक
गुण	वातप्रकोप	वातप्रकोप
रूक्ष	पित्त & रक्त प्रकोप	पित्तप्रकोप
उष्ण	मोह, मर्म बंधाश्छिन्नती	मर्मघ्न
तीक्ष्ण	शीघ्र प्रवेश, विकारउत्पत्ती	रक्तप्रकोप
सूक्ष्म	शीघ्र प्राणनाश	शीघ्र घातक
आशु	प्रकृति भजेत	व्याप्नोती केवलं देहं
व्यवायि	दोष, धातु, मल नाश	प्राणघ्न
विकासी	चिपकता नहीं	अतिरिच्यते
विशद	दुश्चिकित्स्य	दुरूपक्रम
लघु	कष्ट से बाहर निकलता है	---------
अव्यक्त	---------	कफ प्रकोप
अनिर्देश्यरस		

122) शारंगधर नुसार – गर्भ व्यापद: 8

सुश्रुत	मुढगर्भ	मक्कल	गर्भपात
वाग्भट	गुढगर्भ	विष्कंभ	जरायुदोष
सर्वअक्षिरोग -	(8 शारंगधर)		
वातविपर्यय	अल्पशोफ	पाकात्यय	हताधिमंथ
अन्यतोवात	शोफ	शुष्काक्षिपाक	अध्युषित

मदात्यय - 4 पानात्यय + परमद + पानाजीर्ण + पानविभ्रम (सु. उ. 47)

123) दाह: दाह - सर्वांगदाह, ओष - स्वेदारतिमान,

ओष - नजदिकी अग्निका दाह. प्लोष - प्रादेशिक स्वेदरहित दाह.

दव: - मुख, ओष्ठ, तालु, दाह., दवथु - चक्षुरादी इंद्रिय दाह.

विदाह - पाणिपाद मे संताप, अंतर्दाह - कोष्ठ मे दाह.

124) पथ्य आवश्यक नहीं ऐसे योग:

कल्याणक गुड, रेचक मोदक, त्रिवृत्तदष्ठक योग.

सर्वथा अन्नत्याग - आमलक रसायन, नागबला कल्प – Only दुग्ध

मुद्गपर्णी, शुण्ठी, यष्टीमधु - Only दुग्ध.

125) वर्णित नहीं: व्रणके षष्टी उपक्रम में - गण्डुष नहीं

कृता - दशोपक्रमा में - गण्डुष, बस्ति, दहन, प्रच्छान, लेप नही

शारदपुजा - दर्शन नही विष - बीज अधिष्ठान नही

स्नेहप्रविचारणा - कवल & निरूहबस्ति नहीं.

प्रमेह दुष्य - अस्थि नही (मा. नि.)

महाकषाय - पाचनीय व शुक्रस्तंभक नही.

शल्य विधी - बस्ति, दिपन, नस्य नही.

विकेचन आश्रय - बीज, निर्यास, सार नही.

126) यथादोषं यथाबलम् - सुतिका चिकित्सा, वातरक्त चिकित्सा.

यथादोष यथाव्याधि - क्षारदग्धव्रण (सु. सु. 11)

यथादोष यथाविभवं - जातकर्म - सु. शा. 10

यथान्याय यथाभ्यास - सिरावेध (न्यच्छ व्यंग निलिका)

127) हरितकी सेवन

	चरक	भेल
भोजनकाल जरणांते	1 हरितकी H	B बिभितकी
भोजनपूर्व (प्रा:भुक्त)	2 बिभितकी B	A आमलकी
भोजनके बाद (भुक्त्वा)	4 आमलकी A	H हरितकी

128) द्रव्यसंग्रहणीय: च. - 274 द्रव्य - 50 महाकषाय

सु. - 290 द्रव्य - 37 गण - वात, पित्त ,कफ शामक 9, 11, 17

भे. - 33 गण, अ. सं: - सुत्र 14 अध्याय में 10 गण

भे. सं. सु. 15 - 45 महाकषाय अ. सं. सु. 16 - 25 गण

129) शल्य गती: 5 सुश्रुत उर्ध्व, अध: तिर्यक, ऋजु, अर्वाचिन

वाग्भट उर्ध्व, अध: तिर्यक, ऋजु, वक्र

130) वर्त्मगत: नेत्र रोग

एकपिडिका	अनेक पिडिका
उत्संगिनी, कुंभिका	पोथकी
अंजननामिका, अर्शोवर्त्म	वर्त्मशर्करा
शुष्कार्श, लगन	बहलवर्त्म

131) संख्या:

कण्डरा - सु. & भा. प्र. - 16 का - 14

सिवनी - सु. - 07 वा. - 18

सिमंत - सु. - 14 अं.सं. - 18

आशय - सु. - 7 (पु.), 08(स्त्री); शा. - 10 (पु.), 13 (स्त्री)

अस्थि - सु. - 300 च. / का - 360

132)	संधि	चेष्ठावान	स्थिर
	शाखा	68	0
	कोष्ठ	03	53
	उर्ध्वजत्रुगत	10	73

(कोष्ठगत संधी-- 3 शिर - 5)

133) मुलसिरा - 40 (Total 700)

वात - 10	वात - 175	100 शाखा
पित्त - 10	पित्त - 175	34 कोष्ठ
कफ - 10	कफ - 175	41 उर्ध्वजत्रु
रक्त - 10	त्रिदोषज - 175	

नासागत सिरा – 24 वात - 6, पित्त - 6, कफ - 6, रक्त - 6

134) 1 वर्ष अरिष्ट: i) दुश्चायो दुर्मना रति न लभते,

ii) हस्त से पशु बलि न खाते हो iii) अरुंधती तारा न देखना,

iv) Without any हेतु - कांती, धन,स्थूलता प्राप्त होना.

135) छेदन: पर्वणी - $^1/_3$ भाग पकड के $^1/_2$ भाग छेदन

अर्म - $^1/_4$ भाग रखकर $^3/_4$ भाग छेदन

कंठशालुक - $^1/_3$ भाग छेदन, गलशुण्डिका में $^1/_3$ छेदन.

136) लिंगनाश शलाका दोष 6: i) कर्कश - शुल

ii) खर - दोषपरिप्लुतं (दोषप्रकोप, व्रणवेदना)

iii) स्थुलाग्र - विशालव्रण iv) तीक्ष्णाग्र - अनेक क्षत

v) विषम - जलस्त्राव vi) अस्थिर - क्रियासंग/दृष्टीअवरोध

137) आहार रस से धातु उत्पत्ती.

सुश्रुत - आहार रस - 1st day - रस धातु - 5th day (चरक - 6th - 7th day,)

पाराशर - 8th day, वाग्भट - 6th day

138) हेतु: i) अशुचि भोजन - उन्माद, उदर, अपस्मार

ii) मलिनाहार - अतत्वाभिनिवेश, मद, मूर्च्छा, संन्यास

iii) विरूध्द दूष्ट अशुचि भोजन – उन्माद

iv)अहित अशुचि भोजन – अपस्मार

v) मलिनाहार शीलस्य वेगनिग्रहणात अतत्वभिनिवेश

vi) अचेष्टा - निज शोथ vii) हिनअग्निबल - अर्श, अतिसार, ग्रहणीदोष.

viii) विषम चेष्टा - उन्माद ix) अत्याम्बुपान - जलोदर

x) असात्म्य भोजन - क्षयज कास xi) प्लवन - वातरक्त

xii) अम्बुक्रिडा - वातरक्त xiii) जलक्रिडा - कर्णरोग

xiv) जलभिसरणम् - अतिसार xv) अल्प प्रमिताशन - वात कास

xvi) रुक्षाल्प प्रमिताशन - क्षतक्षीण xvii) विचेष्टितम् - गुल्म

139) लक्षण: बहुमूत्रता - आमवात, आमज्वर, प्रमेह, प्रसुता
विट.अल्पप्रवृत्ती बहुमूत्रता - अर्श

140) भोजन के सम्बध में लक्षणः

i) वात गुल्म - करोति जीर्णेऽभ्यधिकं प्रकोपं (पचने पश्चात पीडा वृध्दी)
भुक्ते मृदुत्वं (भोजन से पीडा शांत / मृदु)
वात गुल्म - मंदेऽग्नौ वर्धते गुल्मो, (If जठराग्नि मंद Then)
दीप्ते चाग्नौ प्रशाम्यति गुल्म बढता है and vice versa)
ii) पित्त गुल्म - शूलं महत् जीर्यति भोजने (पचते समय तीव्र शुल)
iii) वात उन्माद - जीर्णेबलं (पचने पर लक्षण तीव्र)
कफ उन्माद - बलं भुक्ते (भोजन पश्चात तीव्र)
iv) वात ग्रहणी - जीर्णे जीर्यतिचाध्मानं, (पचते समय, पचने पर आध्मान)
भुक्ते स्वास्थमुपैति. (भोजन पश्चात स्वस्थता अनुभव)
v) अत्यग्नि - भुक्तेऽन्नेलभते शांति, (खाने पश्चात शांति)
जीर्णमन्ने प्रताम्यति (पचने पश्चात ग्लानि etc.)
vi) व्यपेता हिक्का - आहारपरिणामान्ते (पचने पश्चात वृध्दि)
vii) क्षुद्र हिक्का - भुक्तमात्रेच मार्दवम् (भोजन पश्चात शांत)
viii) अन्नजा हिक्का - पीते भुक्ते च शमम् (खाने पीने से शांत)
ix) वात कास - भोजन और पेय पश्चात शांत
x) उदर पूर्वरुप - जीर्णपरिज्ञानविदाहवत्यो
(भोजन पचने, अपचन का ज्ञान नही होता)
xi) रक्तगत वात - भुक्तस्य स्तम्भ (भोजन पश्चात गात्रस्तम्भ)
xii) परिणामशूल- भुक्ते जीर्यति यच्छूलं तेदवं परिणामजम(परिपाककालमें शुल)
भुक्तमात्रेऽथवा वान्ते जीर्णेऽन्तेच प्रशाम्यति।(वमन से शांति)
(भोजन के तुरंत बाद, छर्दि पश्चात, पाचन पश्चात् शांत होता है)
xiii) अन्नद्रवशूल - जीर्णे जीर्यत्यजीर्णे वा यच्छूलमुपजायते।
पथ्यापथ्यप्रयोगेण भोजनाभोजनेन च।। न शमंयाति

141) स्त्रोतोदुष्टि: i) सन्यास - में रसरक्तसंज्ञावहानि,
ii) मूर्च्छा - संज्ञा. iii) विसूचिका - अतिप्रवृत्ति व विमार्गगमन
iv) रक्तपित्त - अतिप्रवृत्ति व विमार्गगमन
v) छर्दि, अतिसार - अतिप्रवृत्ति vi) कास, तमकश्वास - विमार्गगमन
vii) राजयक्ष्मा - संग viii) ज्वर, तमकश्वास, रुध्दपथकामला - संग

142) यंत्र: अश्मरी - आहरण यंत्र -
मूत्र मार्गस्थित अश्मरी - बडिश यंत्र. सर्पफणा By (वाग्भट)
मुढगर्भ - मण्डलाग्र शस्त्र (No वृद्धीपत्र)
मूत्रवृद्धी, दकोदर - वेधनकर्म By व्रिहीमुख यंत्र
त्रिदोषज उपदंश - दहनकर्म By जाम्बौष्ठ शस्त्र
नाभीनाल कर्तन - अर्धधार यंत्र - चरक

143) शस्त्र प्रयोग:
1) अर्म, पर्वणी - बडिश यंत्र - पकडने हेतु, मण्डलाग्र शस्त्र. - छेदनार्थ
2) नाडीव्रण (अर्बुद) - यववक्त्रा सुची - अर्बुद के चारो ओर छेद
3) लिंगनाश - यववक्र शलाका - वेधनार्थ
4) अश्मरी - अग्रवक्त्र यंत्र - अश्मरी निर्हरणार्थ, (सुश्रुत)
5) अश्मरी - सर्पफणा शलाका (वाग्भट)
6) अश्मरी - बडिश यंत्र - मूत्रमार्ग से अश्मरी निर्हरणार्थ (सुश्रुत)
7) मेदोज वृध्दि - वृध्दिपत्र - से दारण
8) मूत्रज वृध्दि - व्रीहीमुख - वेधनार्थ, द्विमुखनाडी - विस्त्रावण, स्थगिका - बंध
9) वंक्षणस्थ वृध्दि - अर्धचंद्राकार शलाका - दहन
10) वंक्षण स्थित आंत्रवृध्दि - अर्धेन्दुवक्त्र शलाका - दहन
Urinary Catheter शलाका - मालतीपुष्प मुख शलाका
11) साध्य लुता दंश - वृध्दिपत्र - दंश स्थान उध्दरेत (निकाल दें)
12) उपकुश - गोजिपत्र - विस्त्रावणार्थ
13) शुष्कार्श - मण्डलाग्र - छेदन
14) सिराजाल - मण्डलाग्र - लेखन
15) अजकाजात - सुची - पार्श्व में वेधन, विस्त्रावण, स्वर्णशलाका दहन
16) कुष्ठ - कूर्च शस्त्र, गलशुंडिका - पंचांगि वर्ति
17) मुढगर्भ - अंगुलीशस्त्र, मण्डलाग्र, गर्भशंकु
18) नखसंधी क्षत - आराशस्त्र से अवमथन करके रक्त विस्त्रावण
19) अर्श - दर्वी, कुर्च, शलाका
20) अस्थिमज्जागत वात प्रकोप - पाणि मन्थेन (आराशस्त्र वेधन)
21) अस्थिगत वात - आराशस्त्र से अस्थिदारण & वायु आचुषण
22) विमार्ग / अजपद, शस्त्र - गुल्म भेदन (च.चि. 5)
23) कुर्च - कठीण, मण्डल कुष्ठ मे विघट्टन (घर्षण) (चरक चिकित्सा 7)
24) जलोदर - नाडीयंत्र – चरक, व्रिहीमुख – सुश्रुत
25) गलशुण्डिका - मण्डलाग्र शस्त्र से छेदन
26) उत्तमा (शुकदोष) - बडिश शस्त्रद्वारा उद्धरण.

144) कृमि उपस्थिती:
i) मांसज ओष्ठरोग ii) सन्निपातज उपदंश
iii) उन्मार्गि भगंदर iv) पित्त कुष्ठ (सुश्रुत)
v) दुष्टप्रतिश्याय (वाग्भट) vi) रक्तज प्रतिश्याय (सुश्रुत)
vii) अस्थिमज्जागत कुष्ठ viii) मेदोगत कुष्ठ

145) i) वात शोथ - दिवाबलि ii) वात शिरशुल - रात्रि में बढता है
iii) पित्त शिरशुल - रात्रि में शांत

146) महावास्तु लक्षण: एककुष्ठ, कच्छप, (प्रमेह पीडिका), सन्निपातज गुल्म, असाध्य गुल्म.

147) अणुतैल: अर्श शस्त्रकर्म पश्चात वेदना शमन हेतु, पक्षाघात में अभ्यंगाथ, भंगदर गुदगत वेदना में परिसेचनार्थ.

148) i) परिम्लायि काच हेतु - रक्ततेजसा
ii) कर्णगुथ - पित्ततेजसा iii) अश्मरी उत्पत्ति - पित्ततेजसा
iv) तज्जीर्यति यथाकालं शोषितं पित्ततेजसा (सु. शा. 4)

149) पर्याय: i) व्याधी - आमय, गद, आतंक, यक्ष्मा, ज्वर, विकार, रोग
ii) ज्वर - ज्वर, विकार, रोग, व्याधि, आतंक
iii) यक्ष्मा - क्रोधो, यक्ष्मा, ज्वर, रोग,दुख
iv) कुष्ठ - स्पर्शघ्न (सुश्रुत - त्वकदोष), पापरोग, कष्टतर रोग
v) अर्श - अधिमांसविकार, गुदज, दुर्नाम
vi) हिक्का श्वास - परमदुर्जयो
vii) अतिसार - उदरामय
viii) कर्दम विसर्प - घोर
ix) तृष्णा - घोर (पित्त वात प्रधान) x) विष - पावकोपमम्
xi) अश्मरी - यमराजतुल्य (सुश्रुत)
xii) प्रमेह - मृत्युरुप (चरक)
xiii) आढ्यरोग - वातरक्त (चरक) खुडवात, वातबलास.
xiv) शोष - राजरोग (चरक निदान.)
xv) चर्मदल - उत्पात - न विश्वास्य: कथश्चन: (काश्यप)
(इस रोग पर कभी विश्वास न करें)
xvi) अम्लपित्त - शुक्तका (काश्यप)
xvii) अम्बुपूर्ण - उल्बक xviii) आढ्यवात - उरुस्तम्भ

150) शालाक्य् व्याधि: i) सिरोत्पात - अवेदनो वा सवेदनो
पूतिकर्ण - अवेदनो वा सवेदनो
ii) कर्णकण्डु → कर्णगुथ → कर्णप्रतिनाह → पूतिकर्ण → कृमिकर्ण
(उपेक्षा करने पर)
iii) लक्षण (सामान्य) अधिमंथ - शिरसोऽर्ध्दभेदकृत्
वात अधिमंथ - शिरसोऽर्ध्दभेदकृत
कर्णप्रतिनाह - शिरसोऽर्ध्दभेदकृत
iv) दुष्ट प्रतिश्याय- मुहुरानद्य, मुहुर्वीर्यते (नासिका कभी खुली- कभी बंद)
गंधज्ञान नष्ट
v) रक्त प्रतिश्याय - गंधज्ञान नष्ट
vi) अपीनस - गंधरस ज्ञान नष्ट
vii) सन्निपात प्रतिश्याय - स्वयं शांत , या अचानक पाक होना.
viii) वात प्रतिश्याय - कीटिकाश्च सर्पन्ती मन्यते

151) i) उन्माद - सिर्फ लक्षण वर्णन, पूर्वरूप नही.
ii) क्षतक्षीण, वातव्याधि - सिर्फ लक्षण वर्णन, पूर्वरूप नही.
iii) अतिसार - सामान्य लक्षण नही
iv) गुल्म - सामान्य लक्षण नही
v) रक्तपित्त - सिर्फ पूर्वरुप, सा. लक्षण नहीं
vi) प्रमेह - पूर्वरुप है, लक्षण है.

152) स्राव: i) वात अतिसार - शकृत् आमं सरुक् शब्दं मल प्रवृत्ति
ii) सन्निपातज अतिसार - मांसधावनसंकाश (वराहमेद) मल
iii) असाध्य अतिसार - यकृत्खण्डोपमं, मेदोमांसोदकसन्निकाशं
iv) विरेचन अतियोग - यद् रक्तं, मेदोमांसोदकोपमम
(मांसधावनतुल्य, मेदखंडसदृश मल प्रवृत्ति)
v) विरेचन अतियोग - मेदमांसोदक सदृश रक्तस्राव + कृष्णशोणित
vi) कफ अर्श - मांसधावन सदृश मल
vii) परिस्राव्युदर - गुदा से सलिल प्रकाश स्राव
viii) व्रण में - किंशुकोदक वत स्त्राव
x) विषभक्षित ल. - गृहधूमाभ पुरीष लक्षण.

153) आकार Special: i) लिंगार्श आकृति - छत्राकार
ii) नाभिस्थ - गण्डुपदकृमिवत्,
iii) भग (बाहं) - गवाक्षाकार
iv) योनी - शंखनाभ्याकृती, शकटाकृती (काश्यप)
v) गर्भाशय - रोहितमत्स्य मुखाकृती.

154) आश्वासन, etc. चिकित्सा:
i) आमज्वर में यवागु & 8th day से कषाय if taken early causes विषमज्वर
ii) उर्ध्वग रक्तपित्त - तर्पण ....(चरक)
अधोग रक्तपित्त - पेया अक्षीणबलमांसाग्नेः कर्तव्यम अपतर्पणम्
iii) अतिसार में प्रमथ्या मध्यदोषाणां, लंघनंच अल्पदोषाणां
iv) भयज अतिसार - आश्वासन (विस्मापन)
v) शोकज अतिसार - हर्षण (विस्मारण)
vi) आम गुल्म - यवागु, खडयूष use, पित्तगुल्म - आश्वासन चिकित्सा
vi) उन्माद - आश्वासन vii) भक्तोपघात - आश्वासन
viii) विषमज्वर - त्रासन चिकित्सा
(काम, शोक, भयज) ज्वर - हर्षण चिकित्सा
ix) हिक्का - त्रासन,विस्मापन भय
x) शकविष - आश्वासन, मंत्र चिकित्सा
xi) अरोचक - हर्षण, आश्वासन

155) पथ्य Follow period :
i) जलोदर: 6 मास - क्षीर + जांगलमास (सुश्रुत)
3 मास - क्षीर पेया
3 मास - क्षीरोदन संवत्सर (सुश्रुत.)
ii) उदर में क्षीर: 7 दिन - महिष मूत्र, क्षीर
1 मास - उष्ट्र क्षीर
3 मास - छाग क्षीर
iii) शोथ में दुग्धाहार 1 सप्ताह (गोमूत्र + माहिषक्षीर) or1 मास
iv) पांडु - 7 दिन - गोमूत्र + त्रिफला
15 दिन - गो,माहिष (क्षीरमूत्र)
v) कुष्ठ - 3 - 3 दिन अवपीडन नस्य
15 - 15 दिन वमन
1 - 1 मास विरेचन (स्त्रंसन)
6 - 6 मास - रक्तमोक्षण (वा., सु. Also वर्णन)
6 मास - गधी मूत्र और जीर्ण होने पश्चात क्षीरभोजन
vi) अर्श - 1 मास - No भोजन only तक्रसेवन
(Also तक्रसेवन For (7, 10, 15, 30) दिन)
vii) अश्मरी - 1 वर्ष - पथ्यपालन
भगंदर - 1 वर्ष - पथ्यपालन
viii) शोष - 1 मास (सु.) अजा Related all to use
6 मास (वा.)
ix) नेत्ररोगी - 1 मास - पथ्यापथ्य Follow after शस्त्रकर्म
x) लिंगनाश शस्त्रकर्म - 10 दिन - पथ्यापथ्य follow
(दशाहं एवं संयम्य हित दृष्टिप्रसादनम्।)
xi) मूढगर्भ - 4 मास - पथ्य पालन for सुतिका
xii) क्षतक्षीण - पथ्यापथ्य (यक्ष्मा, कास, रक्तपित्त)
xiii) व्रण - 6 - 7 मास (वाग्भट) xiv) रक्तमोक्षण 1 - मास
xv) क्रियाकल्प - द्विगुण काल परिहार

156) वायु Involved: i) छर्दि - उदान ...(सु.)
ii) अग्निदीप्ती - प्राण, समान, अपान ... (no व्यान)
iii) हिक्का - उदान, प्राण (सु.) स्त्रोतस involved in हिक्का,प्राण,उदक,अन्न
iv) कास - उदान, प्राण, v) उदावर्त - अपान वायु is mainly involved.

157) आगार: i) कक्षा - यज्ञोपवीत प्रतिमा: (चरक)
ii) क्षित्र चि. - दीप्तभवन वत (वाग्भट)
iii) विसर्प - रुद्रस्याभितेजसा (काश्यप)
iv) हृदय - आगारकर्णिका (चरक)
v) पित्त वात विसर्प ल. - शांतागार प्रकाश (चरक)
vi) वृध्द -जीर्णागारभिवाभिवृष्टमवसीदन्तं (सुश्रुत) (सु. जीर्ण गृह के समान)
vii) अतिपातिषु - प्रदीप्तागार वत् शीघ्र चि. (सु. सू. 5)
viii) सर्पविष - प्रदिप्तागार वत चि. (वाग्भट)
ix) गर्भाशय - कुटागार (वरा पर्याय)
x) पित्त रक्तपित्त - आगारधूमाभज्ञानाभं

158) चरक - स्त्रीसहवास योग्य आयु - (16 - 70) yrs. (च. चि. 2)
स्त्री संभोग:

ऋतु	सुश्रुत	वाग्भट
वसंत, शरद	3 - 3 दिन पर	Other All
ग्रीष्म, वर्षा	15 - 15 दिन पर	ग्रीष्म
हेमंत, शिशिर	---	इच्छानुसार

159) प्रश्न संख्या: (चरक संहिता)

i) च. सू. 13 - स्नेहोपक्रम - 12 प्रश्न By अग्निवेश्

ii) च. सू. 15 - उपकल्पनीय - 12 प्रश्न By अग्निवेश् की आशंका

iii) च. सू. 17 - कियन्त: शिरसीय - 6 प्रश्न By अग्निवेश् की आशंका

iv) च. सू. 30 - अर्थेदशमूलीय - 15 प्रश्न

v) च. शा. 1 - कतिधापुरुषीय - 23 प्रश्न By अग्निवेश् on पुरुष

vi) च. शा. 2 - अतुल्यगोत्रीय - 36 प्रश्न By अग्निवेश् on गर्भ

vii) च. शा. 6 - शरीरविचय - 9 प्रश्न By अग्निवेश् on अंगनिर्माण

viii) च. चि. 21 - विसर्प - 7 प्रश्न By अग्निवेश् As in कुष्ठ

ix) च. सि. 1 - कल्पना सि. - 12 प्रश्न By अग्निवेश्

160) आध्मान लक्षण: Others Is आटोप, आनाह

i) मुत्रक्षय लक्षण — i) पुरीषक्षय - आटोप

ii) अन्नवह स्त्रोतोविध्द लक्षण — ii) पुरीषवह स्त्रो विध्द - आनाह

iii) गुदगत वात — iii) पक्वाशयगतवात - आनाह

iv) आमाशय गत विष — iv) कोष्ठगतशल्य - आनाह आटोप

v) सिरागत शल्य

vi) मूत्रावृत वात - आध्मातबस्ति

vii) व्यानावृत अपान

161) चिकित्सा साम्य: ग्रहणी चिकित्सा अजीर्ण और अतिसारवत (वाग्भट)

क्षतज कास चिकित्सा - पित्तकास चिकित्सा,

कफ, वात गलगण्ड चिकित्सा - ग्रंथिविसर्प चिकित्सा

आगंतुज और रक्त विद्रधी - पित्तज विद्रधी चिकित्सा

आमग्रंथी - शोफवत चिकित्सा,

रक्तपित्त - पित्तज्वर वत (यो. र.) रक्तपित्त - क्षतक्षीण वत (यो. र.)

अर्बुद चिकित्सा - ग्रंथिसदृश्य

पित्त वृद्धी चिकित्सा - पित्त ग्रंथिसदृश्य,

(पित्त विद्रधी में जो घृत वहि सद्योव्रण में उपयोग)

कफ वृद्धी चिकित्सा - कफ ग्रंथिसदृश्य

अप्राप्त फलकोष चिकित्सा - वात वृद्धीसदृश्य,

सन्निपातज उपदंश चिकित्सा - दृष्टव्रण सदृश्य

असृद्गर चिकित्सा - रक्तपित्त वत

क्षीणार्तव चिकित्सा - नष्टार्तव वत (i.e use अम्लपदार्थ)

मेदावृत्तवात चिकित्सा - शोफवत चिकित्सा,

शतपोनक चिकित्सा - नाडीव्रणवत

<u>पित्त विसर्पवत चिकित्सा</u> - विद्रधि, इंद्रवृधा, गर्दभ, विस्फोट, गंधनामा, कक्षा जालगर्दभ, इरिवेल्लिका,

अनुशयी चिकित्सा - कफ विद्रधी वत — मेदार्बुद चिकित्सा - शर्करार्बुद वत,

मुसरिका में - पित्तकफविसर्प वत (कुष्ठघ्न लेप)

निरूद्धप्रकाश भेदन पश्चात चिकित्सा सद्यक्षत वत

अग्निरोहीणी चिकित्सा - विसर्पवत,

सन्निरूद्ध गुद - निरूद्धप्रकश वत, — वल्मिक - अर्बुदवत,

वृषण कच्छु - अहिपुतना और पामा — अष्ठिलिका - कफ ग्रंथिवत उद्धधरेत,

त्वकपाक - विसर्पवत — रक्तज अर्बुद - रक्तज विद्रधी

कंठशालुक विस्त्रावण और तुण्डिकेरी वत और एक काल यवान्न सेवन

अधिजिव्हा - उपजिव्हिकावत,

पित्त अभिष्यंद, पित्त अधिमंथ - पित्त विसर्पवत्

धूमदर्शि - रक्तपित्त + पित्त नाशक + पित्त विसर्पवत,

अर्जुन - रक्त अभिष्यंद — अर्म - शुक्रवत् चिकित्सा;

सद्य नयनाभिघात - पित्तरक्त अभिष्यंद, कर्णपाक - पित्त विसर्प (सुश्रुत),

दुष्टव्रण चिकित्सा (वाग्भट) पूयरक्त - नाडीव्रण — मूषिकविष - दुषिविष

अनंतवात - सूर्यावर्त, — नैगमेष - स्कंधापस्मार नाशक चिकित्सा

रक्त गुल्म - पित्त गुल्मवत — हृदय शुल - हृदयरोग (सुश्रुत),

पित्त हृदरोग नाशक - पित्तघ्न द्रव्य कषाय

पाण्डू चिकित्सा - शोफवत (सुश्रुत और वाग्भट)

दाह लक्षण चिकित्सा - पित्त ज्वर, रक्तपूर्ण कोष्ठ दाह - सद्योव्रणवत

कृमिज हृदरोग लक्षण - कृमिज छर्दिवत,

मेदज स्वरभेद चिकित्सा - कफज स्वरभेद वत,

मूर्च्छा - ज्वरघ्न कषाय, — रक्तज कृमी– कुष्ठवत चिकित्सा

मूत्राघात चिकित्सा - अश्मरी, मूत्रोदावर्तवत

अभिघातज मूत्रकृच्छ - वातबस्ति, पुरिषज मूत्रकृच्छ - वातहरी क्रिया

अपस्मार चिकित्सा - उन्माद और ग्रहरोग वत,

अतिस्वेद चिकित्सा - विसर्पवत (काश्यप)

विद्रधी चिकित्सा - गुल्मवत (चरक सुश्रुत 17)

ग्रंथी शोथ चिकित्सा - दग्धव्रण व्रत (चरक चि.12)

रोमांतिका, मसुरिका चिकित्सा - विसर्प/कुष्ठवत

असृग्दर में अल्पोल्पद्रव में रक्तपित्तवत चिकित्सा.

अष्ठीला, प्रत्याष्ठीला चिकित्सा - गुल्म & अभ्यंतरविद्रधी वत.

आगंतुज अपस्मार चिकित्सा - आगंतुज उन्मादवत

मसुरिका चिकित्सा - विसर्प & कुष्ठसमान (चरक चि.12)

आगंतुज शोथ - विसर्प चिकित्सा, वातनाशक

छिद्रोदर चिकित्सा - स्वेदन छोड के कफोदर वत

भय, शोक अतिसार चिकित्सा - वातातिसारवत

ध्वंसक/विक्षय - वात मदात्यय. (ध्वजभंग चिकित्सा - व्रणवत चिकित्सा)

व्रणित - श्रृतजल, ज्वर - धर्माम्बु (उष्णजल),

नपुंसकता चिकित्सा - दैवव्यपाश्रय वत, नपुंसकता चिकित्सा - क्षतक्षीणवत

162) i) मात्रा कालाश्रया युक्ति: (औषध) द्रव्य

ii) कषाय कल्पना - व्याध्यातुरबल अपेक्षिणी

iii) आहार मात्रा - अग्निबल अपेक्षीणी...(च.), द्रव्यबल अपेक्षिणी...(अ.सं.)

<u>हेतु</u> For using 64 प्रविचारणा- 4 (ओक,ऋतु,व्याधि,पुरुष) के बलाबल अनुसार

iv) मात्रावत आहार - बलवर्णउपचय करत्वम्

मात्रावत् आहार से लाभ बलवर्णसुखायुषा

युक्ति से भी - त्रिवर्ग प्राप्ति ..... (च. सू. 11)

v) वेगधारण लाभ - (धर्म अर्थ काम) (i. e. 3 पुरुषार्थ लाभ)

निदानस्थान की 8 व्याधी का कारण (लोभ,अभिद्रोह,कोप) (i.e. 3 कारण)

vi) दशविध परिक्षा - प्रतिपत्तिज्ञान (यथार्थज्ञान)

देश परिक्षा - आयुष: प्रमाण ज्ञान, बलदोष प्रमाण ज्ञान

विकृति परिक्षा - व्याधिबल ज्ञान

सार परिक्षा - बल प्रमाण ज्ञान

आहारशक्ति - बल, आयुष निर्भर

व्यायामशक्ति - बल आयुष निर्भर

vii) षड उपक्रम - मात्रा, काल का विचार

viii) रक्तमोक्षण - बल, दोष, प्रमाण....(चरक)

ix) अग्नि - मात्रा, द्रव्य की अपेक्षा रखती है ...(च. सू. 27)

x) सद्य: संतर्पण मंथ - स्थैर्य, बल, वर्ण, प्रद

xi) अर्श में - नित्यमग्निबलपेक्षी द्रव्य to use

xii) ग्रंथि - नित्य बल का रक्षण करें

विसर्प (सुश्रुत),
कविष - दुषिविष
मार नाशक चिकित्सा
सुश्रुत),
सद्योव्रणवत
चिकित्सा
वातहरी क्रिया
त.
- व्रणवत चिकित्सा
सा - क्षतक्षीणवत
अपेक्षिणी...(अ.सं
) के बलाबल अनुसा
र्थ लाभ)
कोप) (i.e. 3 कारण
प्रमाण ज्ञान
27)

163) स्थान: (पुर्नवसु)
i) अतिसार चिकित्सा - पार्श्व हिमवत Also in च.सू.1
ii) रक्तपित्त चिकित्सा - पंचगंगे, iii) उदर चिकित्सा - कैलास पर्वत

164) द्रव्य	नया	पुराना	पक्व
1) मधु	सारक	ग्राही	
2) मद्य	बृंहण गुरु, दोषजनक	लेखन	त्रिदोषनाशक
3) गुगुल	बृंहण, वृष्य	अपकर्षण	
4) गुड	कफकर, अग्निसादकर	हृद्य, पच्यं	

165) कल्प Used as:
i) पिण्डतैल - अभ्यंग - वातरक्त ii) क्षीर तैल - पान, अभ्यंग - अर्दित
iii) निर्गुंडी तैल - पान, अभ्यंग, पूरण in वातव्याधि
iv) मधुयष्ट्यादि तैल - पान, अभ्यंग, नस्य, बस्ति
v) सुकुमारक तैल – वातरक्त
vi) अमृताद्य तैल - वातरक्त (Also पुंसवनार्थ used)
vii) महाखदिर घृत - पान, अभ्यंग
viii) लशुनाद्य घृत - पान, अभ्यंग, नावन
ix) गोमूत्र in उदररोग पान, सेचन, विष in उदररोग पान, भोजन
x) सर्पि in अभिघातज्वर पान, अभ्यंग
xi) अजादुग्ध अतिसार में पान, अंजन, गुदप्रक्षालन
xii) महागंधहस्तिनामाऽगद - पान, अंजन, आलेप,
महागद - पान, नस्य, आलेप
xiii) अष्टकट्वर तैल - अभ्यंतर प्रयोग xiv) मूषक तैल - पान, अभ्यंग (सु.)
xv) लाक्षादि तैल - पान, अभ्यंग (सु.)(कुष्ठ)
xvi) पुराण सर्पि - पान, अभ्यंग (सु.) (अपस्मार)
xvii) रसांजन in गुदपाक बाह्याभ्यंतर प्रयोग.
xviii) वातव्याधि अध्याय में वर्णित सभी तैल - चतूष्प्रयोग - पान, अभ्यंग, नस्य, अनुवासन.
166) ब्रम्हा - मृतसंजीवन अगद, अश्विनीकुमार - कुष्मांड रसायन (कास), तालिसादी चूर्ण, गुटिका in राजयक्ष्मा
धारसूत्र 1st वर्णन in चक्रदत्त By चक्रपाणी
167) ओजक्षय - क्षतक्षीण, पाण्डु.
संक्रामक रोग वर्ण - सु. नि. 5, अ. हृ. नि. 14
(तीव्रवेगी श्वास in तमक श्वास is due to स्त्रोतो विमार्गगमन)
168) क्लोम i) गणनाथसेन - कण्ठनाडी
ii) डल्हण - पित्ताशय iii) चक्रपाणी - हृदय
iv) गणाधर - फुफ्फुस व उण्डुक v) शारंगधर - अग्न्याशय
169) धातू पयार्य: रस - आत्रेय, रक्त - वशिष्ठ
मांस - काश्यप, मेद - गौतम, अस्थि - भारद्वाज,
मज्जा - विश्वमित्र, शुक्र - भृगू.
170) विशेषण – पुर्नवस : चन्द्रभगी, व्याजहार, उदारकिर्ती परमार्थवित
अग्निवेश - सौम्य, हुताशवेश, अनघ (निष्पाप सत्वगुण प्रधान)
भारद्वाज - उग्रतपा.
171) दिपिका आढमल्ल on शारंगधर.
दिपिका - हजारिलाल शुक्ल on र.र.स
आयुर्वेददिपिका - चक्रपाणी on चरक संहिता.
आयुर्वेददिपिका - रूद्रभटट on शारंगधर.
आयुर्वेदरहस्य दिपिका - भास्कर गोविंद घाणेकर on सुश्रुत
गुढार्थ दिपिका - काशीराम वैद्य.

172) आसव अरिष्ठ निर्माण - Co_2 gas
Odour of Gas gangrene - H_2s
Laughing - N_2o
गिरिसंदुर निर्माण So_2
173) प्रत्याख्याय व्याधि:
मज्जागत विद्रधि, रक्तज व सन्निपातीक उपदंश, क्षयज कास, सन्निरूधगुद, वल्मीक, अग्निरोहिणी, सन्निपातीक अपस्मार
174) व्यत्यासात चिकित्सा: अर्श (मधुर,अम्ल रस), त्रिदोषज ग्रहणी, हिक्का - श्वास (शीत,उष्ण दुग्ध), क्षयज कास (दिपन, बृंहण), पित्तावृतवात, आवृत्तवात (शीत उष्ण), रसाभ्यास (च. सि. 12), आंत्रवृद्धी.
175) मद्य: अयुक्तीयुक्तं रोगाय तदयुक्त्य यथाऽमृतम ।
प्राणा: प्राणभृतामन्नं तदयुक्त्या निहत्यसून ।
विषं प्राणहरं तच्च युक्तियुक्तं रसायनम । च. चि. 23
176) उष्ट यान सेवन हेतू - अर्श का
अश्वपृष्टयान सेवन हेतू - भंगन्दर का .
उत्कटासन हेतू - अर्श, भंगन्दर का
177) शकृद योग: अजा शकृद - त्वक दाह के लिए
जलौका शकृद लेप - अपस्मार
खरादीशकृद योग - हिक्का श्वास चिकित्सा.
178) रात्री जागरण – वात पित्त प्रकोपक.
दिवास्वप्न – त्रिदोष प्रकोपक
179) गर्भ का मूल कारण – आत्मज भाव
गर्भ का औपपादीक कारण – सत्वज भाव
180) तत्व – तत्व बोध – अ. हृ.
उत्तरतंत्र पर – शिवदाससेन
तत्व चन्द्रीका – चक्रदत्त पर – शिवदाससेन
चरक तत्व प्रदिपिका – चरकसंहिता – शिवदाससेन
तत्व बोधनी – र.र.स. पर – शिवदाससेन
181) प्राण:
प्राणभृता यत्रश्रिय: सर्वेन्द्रियाणि च –शिर (च. सु. 17/12)
सर्वा हि चेष्टा वातेन स प्राण: प्राणीनां स्मृत (च. सु. 17/118)
युनक्ती प्राणीनां प्राण: शोणितं ह्यनुवर्तते (च. सु. 24/4)
प्राण: प्राणभृतामन्नम लोको अभिधावति - अन्न (च. सु. 27)
प्राणीनां पूनर्मुलाहारो बलवर्ण ओजसाच । (च. सु. 46)
बाहयप्राण: अन्न (सुश्रुत) प्राणवायू - (शांरगधर),
अन्न व वायू (चरक)
182) तिलकालक - क्षुद्ररोग + शुकदोष
विदारिका, कच्छपिका - प्रमेह पिडका + क्षुद्ररोग
सर्षपिका - प्रमेह पिडका + क्षुद्ररोग + शुकदोष
अलजी - प्रमेह पिडका + शुकदोष
अन्धालजी - क्षुद्ररोग Only
शतपोनक - शुकदोष + भगन्दर
विचर्चिका, रकसा - क्षुद्ररोग + क्षुद्रकुष्ठ
कुम्भिका - शुकदोष + नपुंसक प्रकार
छिन्न - काण्डभग्न + सघोव्रण.
183) संदर्भ: धातूसाम्य क्रिया चोक्ता तन्त्रस्य आस्य प्रयोजनं । च. सु.1
स्वस्थस्य स्वस्थानुवृत्ती आतुरस्य च विकार प्रशमने ।।----- च.सु.11
स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं आतुरस्य च विकारपरिमोक्ष । च.सु. 30

184) ज्वर मुक्ती लक्षण वर्णन - चरक और मा. नि.

विगत उन्माद लक्षण - चरक अतिसार मुक्ती लक्षण - वाग्भट

विगत विष लक्षण - सुश्रुत

प्रमेह निवृत्ती लक्षण - सुश्रुत चिकित्सा 12 (प्रमेह पिडका)

185)दोष	प्राकृत रस	वैकृत रस
वात	कषाय/ विरस	कटू
पित्त	कटू/ तिक्त	अम्ल
कफ	मधुर	लवण.

186) अस्थि संधि भेद: चरक 200

सुश्रुत - 2 (स्थिर व चेष्टावान)

8 (कोर, उदुखल ---)

210 (पेशी, स्नायु, आदी संधी - असंख्य)

काश्यप - 381 पूनर्वसु आत्रेय - 2000

187) तालफ ल वर्ण: मेदोवृध्दी, सम्यक दग्ध

पक्वजम्बू फ ल वर्ण - सम्यक क्षार दग्ध (वा) सम्यक अग्नि दग्ध वर्ण, कान्त लोह भस्म वर्ण

188) पंचकर्म काल: शारंगधर - धूमपान काल - 12 ते 80 वर्ष, गण्डूष - 5 साल के बाद

भा. प्र.16 ते 70 वर्ष वाजीकरण सेवन योग्य वय अ.सं

i) प्रतिमर्श व बस्ति प्रयोग जन्म से कभी भी कर सकते है ।

ii) 5 साल से कम बालक को कवल ना दे ।

ii) 7 साल से कम और 80 से ज्यादा आयु के व्यक्ती को नस्य ना दे ।

iv) <10 yrs और > 70 yrs शोधन ना करे ।

v) <18 yrs. Dhumpan contraindicated

189) महा:

i) महाहिक्का: महामूला, महावेगा, महाशब्दा, महाबला

ii) रक्तपित्त: महागद, महावेगम्, अग्निवद शिघ्रकारी

iii) महागद - अतत्वाभिनिवेश, श्ववथु, मदात्यय, (परिणाम शुल - मा. नि.)

iv) महागद-अत्वत्वभिनिवेष, सौम्य.

v) महाव्याधी - हलिमक(च.),श्वास -(सु.)

vi) महाबला - तृष्णा

vii) महागद, महादोष - मदात्यय

viii) महाफला, महामुला - हृदय दशधमन्या कहा है ।

ix) महाग्रंथी - वात श्लिपद

x) महाशोफी, महारूजा - अधिमांस

xi) महाबली - राजयक्ष्मा (सु.)

xii) महानेत्र – मज्जासार (सु)

xiii) महाउत्साह (अस्थिसार – च) महाउत्साह (सत्वसार – सु)

xiv) महामोह स्वरूप - मृत्युदायक ज्वर (च.)

xv) महाभैषज्य - काश्यप ने आहार को कहा है ।

xvi) महारस - भेल ने जल को कहा है।

xvii) महौषध - भेल ने अन्न को कहा है।

xviii) महौषध - शुण्ठि, रसोन, वत्सनाभ, मण्डूकपर्णी.

xix) महाशिर अस्थिसार सुश्रुत

xx) महारूजा - जालीनी

xxi) महाशया - सर्षपिका (प्रमेह पिडका)

xxii) महापूष्पा - कफज कृमी (सुश्रुत)

xxiii) महाशरिर मेदसार सुश्रुत

190) हरितकी: चरक

i) Among triphala only Haritaki is included in phalini dravya

ii) पंच और षष्ट हरितक्यादी योग (अभयामलकीय रसायनपाद)

iii) गोमुत्र हरितकी - च. चि.12

iv) दन्ती हरितकी - गुल्म

v) कंस हरितकी - शोथ

vi) अगस्त्य हरितकी - कास

vii) गोमुत्र हरितकी - पाण्डु

viii) हरितकी लेह - क्षयज कास

ix) अगस्ति हरितकी लेह - कफज हृद्रोग

सुश्रुत:- हरितकी वर्णन (सु. सु. 44)

i) हरितकी - सन्तर्पणकृत रोग सु. सु. 44

ii) गुड हरितकी:

सुश्रुत चिकित्सा 5 - कफप्रधान वातरक्त में

सुश्रुत चिकित्सा 6 - अर्श चिकित्सा

सुश्रुत चिकित्सा 14 - उदर चिकित्सा

सुश्रुत चिकित्सा 23 - शोफचिकित्सा

वाग्भट: i) दशमुल हरितकी - श्वयथू चिकित्सा

ii) वाशिष्ठ हरितकी - कास

iii) गोमुत्र हरितकी - अर्श

iv) अगस्ति हरितकी - रसायन - कास चिकित्सा

वाशिष्ठ हरितकी - रसायन - कास चिकित्सा

हारित - हरितकी कल्प - कल्पस्थान.

काश्यप - अगस्त्य हरितकी - वातज हलिमक

गुड हरितकी - पित्तज हलिमक

कास - हरितकी - शोथ

योग रत्नाकर: i) बाल हरितकी योग - उदावर्त चिकित्सा

ii) चित्रक हरितकी - नासारोग.

iii) ऋतू हरितकी - रसायन

iv) दशमुल हरितकी - शोथ

v) अमृत हरितकी - अजीर्ण

भाव प्रकाश: i) ऋतू हरितकी

सिन्धुत्थ शर्करा शुण्ठी कणामधुगुडै क्रमात ।

वर्षादिष्वाभया प्राश्या रसायन गुणैषिमा ।

ii) एरण्डतैल हरितकी - आमवात.

iii) मधुपक्व हरितकी - वाजीकरण

भैषज्य रत्नावली: व्याघ्री हरितकी, अगस्ति हरितकी - कास

हरितकी खण्ड - शुल.

चित्रक हरितकी - नासारोग.

वंगसेन: घृतभर्जित हरितकी - अर्श

मधु हरितकी - रसायन

वासिष्ठ हरितकी अवलेह - कास

वृ. नि. रत्नाकर:i) गोमुत्र हरितकी - पाण्डु

ii) भर्जित हरितकी योग - ग्रहणी

ii) मधुपक्व हरितकी योग - ग्रहणी

Other: अभ्रक - हरितकी - (र. र. सु.)

गुड हरितकी - गदनिग्रह

हरितक्यादी चूर्ण - अम्लपित, शुल

व्याघी हरितकी, भृगु हरितकी - कास

191) दुष्य: i) कुष्ठ–त्वकमांसरक्तलसिका (सु.) (दुष्य – 4, दोष - 3)
त्वकमांसरक्ताम्बु ....(चरक)
ii) प्रमेह - मेदोऽस्त्रशुक्राम्बु वसालसिका मज्जारसौज: पिशितं च दूष्या:
iii) विसर्प - त्वकमांसरक्त (सु.) (च. - रक्तलसिकात्वकमासं)
iv) विद्रधि - त्वकमांसरक्त मेद .....(सु.) (च. - त्वकमांसस्नायु)
v) ग्रंथि - कफवात मांसरक्त मेद (च.)
vi) पांडु - त्वकमांसरक्त ....(च.) (कफवात रक्त मांस)
vii) अर्श - त्वकमांसमेद .....(च.) (मा.नि. - त्वकमांस)
viii) स्तनरोग - रक्तमांस ix) भगंदर - रक्तमांस
x) कामला - रक्तमांस xi) श्लीपद - मांसमेद
xii) प्रमेहपीडका - वसामेद xiii) पिडका - मांस मर्मसंधि अश्रित

192) अर्न्तभूत व्याधि / विषय वर्णन:- चरक
i) अष्टोनिदितीय में स्थौल्य, कार्श्य, निद्रा वर्णन.
ii) विधिशोणितीय में मद, मूर्च्छा, सन्यास वर्णन.
iii) चरक अपस्मार में अतत्वभिनिवेष.
iv) श्वयथू - स्थानिक शोथ संग्रह
v) ग्रहणी - अत्यग्नी
vi) पाण्डु चिकित्सा - कामला व हलिमक
vii) हिक्काश्वास चिकित्सा
viii) विसर्प - उपद्रव वर्णन.
ix) मदात्यय - ध्वंसक व विक्षय वर्णन.

सुश्रुत
i) विसर्प, नाडी, स्तनरोग
ii) ग्रंथि, अपची, अर्बुद, गलगण्ड iii) वृध्दी, उपदंश, श्लीपद
iv) मिश्रक चिकित्सा - कर्णपाली रोग.
v) अतिसार प्रतिषेध में प्रवाहिका व ग्रहणी वर्णन.
vi) गुल्म में शूल वर्णन. vii) पाण्डू प्रतिषेध में कामला वर्णन.
viii) मूर्च्छा प्रतिषेध में संन्यास वर्णन.
ix) पानात्यय प्रतिषेध में दाह वर्णन.
x) विसुचिका प्रतिषेध में आनाह वर्णन.

वाग्भट: (अ. हृ)
i) श्वास हिध्माचिकित्साध्याय
ii) राजयक्ष्मादि चिकित्सा में स्वरभेद, अरोचक, प्रसेक, पीनस,चिकित्सा
iii) छर्दी,हृद्रोग, तृष्णा,चिकित्सा
iv) मदात्यय में विक्षय, ध्वंसक, मद, मूर्च्छा, संन्यास वर्णन.
v) ग्रहणी दोष चिकित्सा – अत्यग्नी वर्णन.
vi) मुत्राघात में अश्मरी चिकित्सा वर्णन. vii) विद्रधी – वृध्दी
vii) पाण्डू में कामला, कुम्भकामला, हलिमक वर्णन.
ix) श्वित्रकृमी चिकित्सा.
x) ग्रंथि, अर्बुद, श्लीपद, अपची, नाडी व्रण, प्रतिषेध.

प्रमेह पिडका वर्णन:
चरक सुत्र कियन्तशिससीय में
सुश्रुत – प्रमेह पिडका चिकित्सा स्वंतत्र अध्याय वर्णन.
वाग्भट – प्रमेह चिकित्सा में वर्णन
अ.सं. ज्वर व जीर्णज्वर चिकित्सा स्वंतत्र वर्णन.

193) अपवाद / निषेध:
1) तुल्य दोष अपवाद - प्रमेह (कफ)
2) तुल्य दूष्य अपवाद - ज्वर (पित्त)
3) चिरकालीन व्याधि कष्टसाध्य अपवाद - गुल्म.
4) तुल्य ऋतु - वर्षा ऋतू में प्राकृत वातज ज्वर कष्टसाध्य.
5) भल्लातक तैल, तुवरक तैल उष्ण जल अनुपान निषेध.
6) पित्तज अजीर्ण, छर्दी, कास, मदात्यय - विरेचन चिकित्सा अपवाद है। (वमन चिकित्सा है)
16) वातज विसर्प - स्नेहन निषेध.
17) त्रिदोषज स्वरभेद - सिरावेध निषेध.
18) अवबाहुक, स्वरभेद - सिरावेध निषेध.
19) उष्टग्रीव भंगदर - अग्निकर्म निषेध.
20) धूमपान - कूष्ठ व तगर वर्ज्य
21) शिलाजतू सेवन - कूलत्थ वर्ज्य
22) अम्लाध्युषित एवं शुक्तीका -
सिरामोक्ष वर्ज्य, रागप्राप्त तिमिर में सिरामोक्ष निषेध.
23) क्षयज, कृमिज शिरोरोग - शिरोविरेचन वर्ज्य.
24) आश्चोतन - रात्री निषेध.
आलेप रात्री व शुष्क निषेध
तीक्ष्ण अंजन दिन में निषेध.
दधि सेवन रात्री में निषेध.
25) हारित - ज्वरातिसार में लंघन निषेध.
26) उल्बकं - बालक को स्नान, अभ्यंग निषेध.
27) वमन अपवाद - पित्तज व रक्तज मसूरिका
28) नेत्र्याभिष्यंद - में त्राटक निषेध.
29) सर्पदंश - में तैल, कूल्यत्थ, मद्य, सौविरक - वमनार्थ निषेध.
30) तरूण ज्वर में कषाय रस का कषाय निषेध.
31) ज्वर - लंघन निषेध - वात, पुराण, क्षय, क्षत, काम, क्रोध, भय, शोक,श्रमज
32) नूतन प्रतिश्याय - घृतपान निषेध.
33) स्तन विद्रधी उपनाह निषेध:
34) वृध्दीपत्र निषेध - मूढगर्भ.
35) तरूण ज्वर - दुग्ध व नवधान्य निषेध (सुश्रुत)
36) अतिसार व्याधि में जलपान निषेध या अल्पजलपान.
37) व्रणित - नवधान्य से तक्रान्त वर्ग निषेध.

194) Sequences: क्रम:
1) पदार्थ क्रम: आयुर्वेद - सामान्य, विशेष, गुण, द्रव्य, कर्म, समवाय
दर्शनशास्त्र - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय
2) सैधव, सामुद्र, विड, सौवर्चल, रोमक, औदभिद,
यथोत्तर उष्ण, वातहर, पित्तकफहर यथापूर्व स्निग्ध, स्वादू, सृष्ट मुत्र पुरिष
3) स्वरस, कल्क श्रृत, शीत, फाण्ट - तेषां यथापूर्व बलाधिक्यम.
क्षीर, रस, कल्क, कषाय, श्रृत, शीत, फाण्ट - यथोत्तर लाघव - सुश्रुत
4) दिनचर्या - चरक, सुश्रुत, वाग्भट के अनुसार क्रम.
5) ऋतूचर्या - चरक, सुश्रुत, वाग्भट के अनुसार क्रम.
6) चतूष्पाद - भिषक द्रव्य, उपस्थाता रोगी. (चरक / वाग्भट)
वैद्य, व्याध्युपसुष्टश्च, भैषज, परिचारक (सु. सु. 34)
भैषज, प्रतिश्रावी आतुर, वैद्य (भेल)
7) पंचेद्रिय द्रव्य - ख, वायू, ज्योति, आपो, भू.
8) त्र्येषणां - प्राण, धन, परलोक
9) चतूर्विध प्रमाण - आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान, युक्ती.
10) तैल, वसा, मज्जा, सर्पि, यथापूर्व श्रेष्ठ,
वातश्लेष्म विकारेष्वनुवासनीयेषु। (च. वि. 8 / 59)
घृत, तैल, वसा, मेदो, मज्जा, यथोतर गुरू विपाका वातहरा (सु. सु. 45)
सर्पि, तैल, वसा, मज्जा, स्नेहेषु प्रवरं मतम पित्तघ्नास्ते यथा पूर्व इतरघ्न यथोतरम (अ. सं. सु. 25)
घृत, तैल, वसा, मेदो, मज्जा, - पूर्व पूर्व श्रेष्ठ - काश्यप
12) स्वेद - आमाशयगतवात - रूक्ष पश्चात स्निग्ध स्वेद
पक्वाशयगत कफ - स्निग्ध पश्चात रूक्ष स्वेद.
13) वमन लक्षण - क्रम स्वेदप्रादूर्भाव, लोमहर्ष, कूक्षी समाध्मापन,

हृल्लास आस्यस्त्रवण.

14) संसर्जनक्रम (च. सु. 15 व च. सि. 1)

15) मद, मूर्च्छा, संन्यास यथोत्तर बलाधिक्य.

16) रसो के गुण गुरू, लघू, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष - प्रवर, मध्य, अवर.

17) रस, विपाक, वीर्य, प्रभाव यथोत्तर बलवान.

18) क्रम वैरोधिक आहार - बिना नित्य कर्म किये भोजन.

19) गुरूता - चरक - मांस - सक्थि, स्कंध, उर, उदर, शिर, उत्तरोत्तर गुरु
वृषण, चर्म, मेढ, श्रोणी, वृक्क, यकृद, गुद, मध्य देह,
अस्थि, मांस उत्तरोत्तर गुरु.
रसदिधातू मांस उत्तरोत्तर गुरु.
सुश्रुत - सक्थि, स्कंद, क्रोड, हृदय, शिर, पाद, हस्त, कटी, पीठ, चर्म,
कालेयक, यकृत, आंत्र उत्तरोत्तर गुरु.
वाग्भट - पुरूष के पूर्वार्ध का, स्त्री के उत्तरार्ध का, उत्तरोत्तर गुरु.
गर्भिणी स्त्री का मांस गुरु.
चतूष्पाद में स्त्री यों का मांस गुरु, पक्षियो में पुरूष पक्षी मांस गुरु.
अवयव - शिर,स्कंध,उरू, पृष्ठ, कटी, सक्थि उत्तरोत्तर गुरु.
पक्वाशय से आमाशय गुरू.
वृषण मेढ्र वृषण यकृत गुद उत्तरोत्तर गुरु.
पूष्प पत्र, फल, कन्द, नाल,उत्तरोत्तर गुरु.

20) ज्वर निदान - आग्नेय, सौम्य, वायव्य व्याधि.

21) निदान, पूर्वरूप, रूप, उपशय, अनुपशय, संप्राप्ति.

22) आमदोष - विसुचिका, अलसक.

23) जनपदोध्वंस - वायू, जल, देश, काल क्रमश बलवान.

24) कृतयुग भोजन - भारिपन, आलस्य - संचय, परिग्रह, लोभ.

25) दशविध परिक्ष्यभाव - कारण, करण, कार्ययोनी, कार्य, कार्य फल,
अनुबंध, देश, काल, प्रवृत्ती, उपाय.

26) दशविधरोगी परिक्षा - प्रकृति, विकृती, सार, संहनन, प्रमाण, सात्म्य, सत्व,
आहार शक्ती, व्यायाम शक्ती, वय.

27) महाभूत में भूतान्तर प्रवेश - आकाश में शब्द, वायू में शब्द स्पर्श -------

28) गर्भोत्पत्ती क्रम - अनुपूर्व्या अभिनिर्वर्तते।

29) सुतिकागार में प्रवेश - गो, ब्राह्मण अग्नि, जल.

30) शिशु परिचर्या - क्रम - चरक, सुश्रुत, वाग्भट के अनुसार.

31) समसन्निपातीक ज्वर चिकित्सा - क्रम कफ, पित्त, वात.

32) क्षतक्षीण - में क्रम से वीर्य, बल, वर्ण, रुचि, अग्नि क्षीणता.

33) उदर साध्यासाध्यत्व - वात, पित्त, कफ, प्लीह, सन्निपात उदक
उदर परंपरं कृच्छतरम

34) ग्रहणी चिकित्सा अवस्थापाक क्रम - मधुर, अम्ल, कटू.

35) क्रम परिणाम पक्ष - क्षीर दधि न्याय.

36) समसन्निपातीक अतिसार चिकित्सा - क्रम वात, पित्त, कफ.

37) विष उपक्रम - 24 क्रमसे.

38) समसन्निपातीक मदात्यय चिकित्सा - क्रम कफ, पित्त, वात.

39) समसन्निपातीक मुत्रकृच्छ - वायो स्थाननूपूर्वा वा ।

40) गृध्रसी - शुल स्फिक,पूर्वा, कटि, पृष्ठोरू, जानु, जंघा, पदं क्रमात ।

41) पंचकर्म - अंर्तबाह्य स्नेहन, स्वेदन, वमन, संसर्जन क्रम स्नेहन, स्वेदन,
विरेचन , संसर्जन क्रम

42) संसर्जन क्रम - पेया, विलेपी, अकृत, कृत यूष रस

43) वमन: चरक - कफ, पित्त, अनिले
सुश्रुत - प्रसेक, औषध, कफ, पित्त, अनिल,
अ. सं. स्वेद, प्रसेक, औषध, कफ, पित्त, वायू
विरेचन: चरक - विट , पित्त, कफ, अनिल,
सुश्रुत मुत्र. पुरिष, पित्त औषध, कफ.
अ. सं. वायू मुत्र, मल, पित्त, कफ, वायू
चरक - विरेचन अतियोग - विट , पित्त, कफ, वात, रक्त, मेद, मांसोदक.

44) बस्ति - माक्षिक, लवन, स्नेह,कल्क, क्वाथ इति क्रमात.

45) अष्टविध शस्त्रकर्म - छेद्य, भेद्य, लेख्य, वेद्य,एष्य, आहार्य, विस्त्राव्य, सीव्य

46) रक्त स्त्रावरोधक उपक्रम -संधान,स्कंदन, पाचन, दहन उत्तरोत्तर श्रेष्ठ.

47) प्रिणन जीवन लेप: स्नेहो धारण पुरणे ।
गर्भोत्पाश्च धातूनां श्रेष्ठ कर्म क्रमात स्मृतम ।।

48) व्रण शोफ उपक्रम विम्लापन, अवसेचन, उपनाह, पाटन, शोधन, रोपन,
वैकृतापहम ।

49) पैत्तिक व रक्तज व्रण में - गाढ के स्थान पर सम, समके स्थान प
शिथिल, शिथिल के स्थान पर बन्धन न बांधे ।
वातज व कफजव्रण में -
शिथील → सम, सम → गाढ, गाढ → गाढतर बंध बांधे ।

50) क्रियाकाल क्रम - संचय, प्रकोप, प्रसर, स्थानसंश्रय, व्यक्ती, भेद.

51) वाग्भट - मण्ड, पेया, विलेपी नाम ओदनश्च लाघवम यथापूर्वम ।

52) कफ, पित्त, मल, खेषू स्वेद स्यान नख रोमच।
नेत्र विट त्वक्षु च स्नेहो धातूनां क्रमशो मल ।।

53) गुदवली - क्रमश प्रथम प्रवाहणी, द्वितीया विसर्जनी, तृतीया संवरणी

54) त्वचा - अवभासिनी लोहिता, श्वेता, ताम्रा, वेदीनी, रोहिणी, मांसधरा.

55) कला - मांसधरा, रक्त, मेद, श्लेष्म,पुरिष, पित्त,शुक्रधरा कला ।

56) अर्श चिकित्सा क्रम - दक्षिण, वाम,पृष्ठ, अग्र.

57) हृतदोष में यवागु, विलेपी, अकृत कृतयूष .

58) प्रयोग भोजन क्रम (सुश्रुत चिकित्सा 39)

59) सर्पदंश प्रकार - सर्पित, रदित, निर्विष (सुश्रुत)
तुण्डाहत, व्यालीढ, व्यालुप्त, दंष्ट, दंष्टानिपिडित - वाग्भट

60) जांगम विष वेग क्रम - रक्त, मांस, मेद, कोष्ठ, अस्थि, मज्जा, शुक्र.

61) मूषिक विष चिकित्सा - दग्ध, विस्त्रावण, प्रच्छान, प्रलेप,

62) परिम्लायीकाच - तिमिर, काच, लिंगनाश

63) क्रियाकल्प - तर्पण, पर्पण, पूटपाक , सेक, आश्चोतन, अंजन (सुश्रुत
आश्चोतन, अंजन तर्पण, पर्पण, पूटपाक (वा. सु. 23, 24) और (शारंगधर)

64) सुश्रुत - ज्वर व अतिसार सम सन्निपात में, पित्त की प्रथम चिकि
अन्य जगह वात की.

65) रसक्रम - चरक मधुर, अम्ल, लवण, कटू तिक्त, कषाय.
वाग्भट - मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, उषण, कषाय.

66) मज्जा, मेदो, वसा, मुत्र, पित्त, श्लेष्म, शकृतसृक ।
रसो जलंच देहेस्मिन एकैक अंजली वर्धितम ।। वाग्भट

67) भैषज सेवन काल - शारंगधर
i) किंचित सुर्योदये ii) दिवा भोजन iii) सायंभोजन iv) मुहुर्मुहु v) नि

68) रस, गुण, वीर्य, विपाक, शक्ति, ज्ञान क्रमश शारंगधर.

69) लेह - अवलेह - प्राश - अधिकाधिक घन

70) योग रत्नाकर - अष्टविध परिक्षा - नाडी, मल, मुत्र, जिव्हा, शब्द,
दृक, आकृती .

71) गर्भ के शोणित से क्रमश अवयव उत्पत्ती - काश्यप - शोणित , हृ
यकृत, प्लीहा. फुफ्फुस.

72) रसोन में स्वादु, तिक्त, कटू, क्रमश बलवान - काश्यप.

73) आयुर्वेदावतरण क्रम संहिता के अनुसार.

74) पदार्थ - दर्शनशस्त्र - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव.

75) पंचकर्म क्रम - चरक - वमन, विरेचन, आस्थापन, अनुवासन, शिरोविरेचन.
सुश्रुत - वमन, विरेचन,बस्ति, नस्य, रक्तमोक्षण
अ. हृ. सु. - निरूह, वमन, काय शिरेको, अस्त्रविस्त्रुति.

76) शिलाजीत - त्रपू, सीस,ताम्र, रौप्य, सुवर्ण, कृष्णलौह, उत्तरोत्तर श्रेष्ठ .
(सु. चि. 12)

77) कामला उपेक्षा → कुंभकामला, उपेक्षा → अलसाख्य, उपेक्षा → हलिमक.

78) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, क्षुद्र - क्रमशः श्वेत, रक्त,पीत, कृष्ण भूमि में सुतिकागार
(सु. शा.10)

79) सर्पदंश में प्रच्छान, प्रलेप, परिषेक.

80) क्रम - प्रसन्ना, कांदम्बरी, जगल, मेदक, वकस, तक्र,

81) क्रम - घोल, मथित, तक्र उदश्वित,च्छछिका,

82) पर्वानुप्लव - शिरपृष्ठ, मुष्क और पाद क्रमशः पीडा.

83) भोजन में उत्तरोत्तर क्रम- पेय→ लेह→ अक्ष→ भक्ष्य.

84) दोष गंभीरता से रक्तमोक्षण क्रम उत्तरोत्तर:
प्रच्छान→ जलोका→ तुम्बी→ श्रृंग→ सिरावेध.

85) भाव ऱ्हास: बाल्यं वृध्दि छवि मेधा त्वक् दृष्टी शुक्रं विक्रमो।
बुध्दि कर्मेन्द्रियं चेतो, जीवितं दशतो ऱ्हसेत।। शा.

195) ऋतू	मास(चरक)	मास (सुश्रुत)
प्रावृट	शुचिनभो	-
शरद	ऊर्ज सह	इस्त्र ऊर्ज
वसन्त	तपस्य मधू	मधू माधव

196) दैवकृत छिद्र वेधन :
लिंगनाश शस्त्रकर्म ,कर्णव्यधन (सु.सु.16)

197) लेप जाडी
चरक -त्रिभाग अंगुल मात्र सात्प्रलेप कल्कपेषित:।
सुश्रुत - आर्द्रमाहिषचर्म उत्सेध आलेप । सु.सु.18

198) i) रजस्वाला निषेध:
डल्हण - नस्य, वाग्भट- स्वेदन, काश्यप नस्य व वमन निषेध
ii) ऋतूमती निषेध - सुश्रुत - क्षारकर्म
iii) गर्भिणी निषेध: सुश्रुत - स्नेहादी क्रिया,रक्तमोक्षण, क्षारकर्म
वाग्भट - अग्निकर्म, अ. स. अभ्यंग, उबटन प्रथम मास में,
[illegible] मास तक दोषकर पदार्थ निषेध.
काश्यप-अभ्यग,नस्य,शीतजल,रसोन निषेध
योगरत्नाकर - स्वेदन, वमन, क्षार, विषम अन्न.
iv) सुतिका निषेध: चरक - आस्थापन,
सुश्रुत, शारंगधर भा. प्र. - विरेचन,
वाग्भट - स्वेदन, नस्य,
[illegible]क्रपाणी - आनुप देशस्थ सुतिका - स्नेहपान निषेध.
v) शिशु / बाल निषेध: निरन्तर औषधी सेवन, रक्तमोक्षण.

199) सन्निपातज:

व्याधी	लक्षणे	चिकित्सा (सन्निपातिक)
1) ज्वर -	13 प्रकार	कफस्थनानुपूर्वा वा
2) गुल्म -	महारुजं,दाह घनोन्नतं परित अश्मवद शीघ्रविदाही, मन शरिर जठराग्नी बल अल्प	असाध्य (मिश्र चिकित्सा)
3) कुष्ठ -	काकणक - तीव्रवेदना	असाध्य
4) उन्माद -	सर्वांणी रुपाणी अतिघोर	विरुद्धभैषज्यविधी विर्वज्ये (परस्परदोष विपरीत चि. So. चिकित्सा मत करे)
5) अपस्मार-	सभी लक्षण	असाध्य
6) उदर -	सर्वेषाम,दोषाणां नानावर्णराजी सिरासन्ततं	V. P. K - चिकित्सा सभी की
7) ग्रहणी-	पृथग्वादिदोष, हेतुलिंग	पंचकर्म, व्यतासात चिकित्सा
8) पांडु	सर्वददोषज लक्षण	मिश्रित चिकित्सा
9) अतिसार -	सभी दोष लक्षण	विषमातिसारमे दोषप्रधानता के नुसार चिकित्सा
10) छर्दी-	लवणाम्लनीलसांद्रोष्णरक्तं	पृथक दोषान्वये / दोषप्रधानता के नुसार चि.
11) विसर्प-	सर्व धात्वानुसारीणं, आशु कारिण महात्यिकम	स. विसर्प अचिकित्सीत
12)मदात्यय-	सभी मदात्यय शूल, अविपाक, अरूचि	समसान्निपात में कफस्थानानूपूर्व्या वा
13)मुत्रकृच्छ्र-	सर्वांणीरुपाणि (कृच्छ्रतमं हि कृच्छ्रम)	दोषबलाबलतेन्वये OR वायोस्थानेपूर्व्यां वा
14) हृद्रोग-	सर्वलिंग	लंघन,अन्न, दोषानुसार चि
15) पीनस/ प्रतिश्याय	सर्वांगी रुपाणी	कष्टसाध्य/तीव्रपीडाकर त्रिदोष नाशक चिकित्सा
16) मुखरोग-	सर्वांणी रुपाणी	त्रिदोष नाशक चिकित्सा
17) नेत्ररोग-	सर्वांणी रुपाणी	त्रिदोषज नेगरोगोमें तिनो दोषात्मक लेप, बिडालक, योग
18) कर्णरोग-	सर्वाणीरूपाणी	त्रिदोष नाशक चिकित्सा
19) शिरोरोग-	----	3 नो दोष दुष्टन्वये चिकित्सा करें
20) अरोचक-	दोषान्वये नैकरसं (अनेकरस)	दोषान्वये (आंगतुज -हर्षणी,आश्वासन)
21) स्वरभेद	-----	सर्व चिकित्सा दोषान्वये केवल सिरोवेध मत करे.
22) वातरक्त -	दोषान्वये लक्षण	असाध्य

व्याधि	साध्य	कृच्छ्र	याप्य	असाध्य
ज्वर	रस,रक्त	अस्थि,	-	शुक्रगत
	मांस, मेदोगत	मज्जागत		
कुष्ठ	त्वक, रक्त,	-	मेदोगत	अस्थि,मज्जा शुक्रगत
	मांस			
मसुरिका	त्वक, रक्त	मांसगत	-	मेदो, अस्थि, मज्जा गत

अष्टांगआयुर्वेद	1	2	3	4	5	6	7	8
चरक	कायचिकित्सा	शालाक्य	शल्य	विषगर वैरोधिक प्रशमन	भूतविद्या	कौमारभृत्य	रसायन	वाजिकरण
सुश्रुत	शल्य	शालाक्य	कायचि.	भूतविद्या	कौमारभृत्य	अगद	रसायन	वाजिकरण
अ.सं.अ.हृ.	कायचिकित्सा	बाल	ग्रह	उर्ध्वांग	शल्य	दंष्टा	जरा	वृष
हारित	शल्य	शालाक्य	काय	बालचिकित्सा	अगद/विष	भूतविद्या	रसायन	वाजिकरण
काश्यप	कौमारभृत्य	कायचिकित्सा	शल्य	शालाक्य	विष	भूतविद्या	अगद	रसायन
राजनिघण्टू	द्रव्यगुण	निदान	कायचि.	शल्य	शालाक्य	भूतविद्या	अगद	कौमारभृत्य

शिशिर	वसंत	ग्रीष्म	वर्षा	शरद	हेमंत
1) इस ऋतु में भग्न सुखसाध्य	1) हिंगु संग्रह	1) शिलाजीत उत्पत्ति (सु.)	1) तुवरक संग्रह	1) जलौकाअवचरण	1) भौम जल ग्रहण
2) इस ऋतु में रक्तपित्त सुखसाध्य	2) रसोन संग्रह (वसन्तान्ते)	2) अग्निकर्म निषेध	2) यूष पान	2) प्रतिसारणीय क्षार निर्माण	2) रक्तपित्त सुखसाध्य
3) शिशिर जल – तृष्णानाशक	3) भल्लातक सेवन काल	3) स्वेदन अतियोग चि.	3) स्नेह पान निषेध	3) कूटज संग्रह	3) प्रवाहित वायु विष समान–हारित
4) प्राय: शिशिर ऋतु मे उदर्द होता है	4) कर्बुदार पुष्प काल	4) भल्लातक रसायन संग्रह		4) Haemostasis of त्रिदोष	4) भल्लातक संग्रह
5) आमलकायस ब्राह्मरसायन में आमलकी संग्रह	5)आरग्वध पुष्प काल	5) यवागु निषेध (सु.) च. चि.3		5) अग्निकर्म निषेध	5) व्रणबंधन प्रति ३ रे दिन
6) लंघन योग्य ऋतू	6) कांचनार पुष्प काल	6) दधि निषेध, तक्र निषेध		6) दधि निषेध	
7) कर्णवेधन योग्य ऋतू	7) व्रणबंधन प्रति 3 रे दिन	7) वत्सनाभ सेवन		7) स्वाभाविक रक्तदुष्टी	
8) अहिफेन, स्नुही, आमलकी, नागबला संग्रह	8) वत्सनाभ सेवन	8) बृंहण योग्य		8) कोविदार पुष्पित, सप्तपर्ण पुष्पित	
		9) घर्ममास–जनपदोध्वंस चर्या		9) अर्धरात्रि आलेप करे	
		10) श्रृतशीत जल		10) वृष्य दधिसर प्रयोग	
		11) व्रणबंधन दिन मे 2 बार		11) विष – अगस्त्य उदय से मन्दवीर्य	
				12) व्रणबंधन दिन मे २ बार	

क्षार संग्रह और वातातपिक रसायन सेवन किसी भी ऋतू में कर सकते है।

(इस Common List में और भी Addition हो सकती है। पुस्तिका के तृतीय प्रकाशन तक का Collection इस में दिया है।)

CHARAK NUMERICALS

1/3

1) चरक संहिता का 1/3 भाग अनुपलब्ध था।

½

1) नाडी स्वेद नलिका लम्बाई ½ व्याम

2) शिलाजीत सेवन मध्यम मात्रा ½ पल

3) एलादी गूटीका मात्रा ½ कर्ष

4) अमृतप्राश घृत ½ प्रस्थ मधु, शर्करा ½ तुला

5) तृतीय सर्पिगुड ½ तुला सिता

6) ½ कर्ष- वर्धमान नागबला रसायन

प्रारंभ मात्रा व प्रतिदिन बढाने की मात्रा

7) गुडार्द्रक प्रयोग (शोथ) मात्रा ½ पल और

प्रतिदिन ½ पल से बढाना

8) वर्धमान आर्द्रक स्वरस (शोथ) मात्रा

½ पल और प्रतिदिन ½ पल से बढाना

9) अभयारिष्ट में हरितकी ½ प्रस्थ

10) रास्ना -अजा मांस ½ तुला

11) कल्याणक गुड - में गुड ½ तुला

1

1) फलीनी में नस्यार्थ 1 द्रव्य

2) स्नैहिक धूमपान दिन में 1 बार

3) वमन में स्नेहपान के बाद विश्राम काल 1 दिन

4) नाडी स्वेद नलिका लम्बाई 1 व्याम

5) हिन शुध्दी में अन्नकाल 1 दिन

6) विरेचनार्थ त्रिवृत्त कल्क मात्रा प्रमाण 1 अक्ष / कर्ष

7) उरूस्तंभ, अतत्वभिनिवेष, संन्यास प्रत्येकी 1 भेद

8) शर्करासव संख्या - 1

9) भद्रकाप्य के अनुसार रस संख्या

10) 6 रसों के संयोग

10) उभय इंद्रिय मन

11) नासिका, गण्ड, कूट, ललाट संख्या

12) मज्जा प्रमाण 1 अंजली

13) जातकर्म संस्कार

14) शिलाजित - अवर सेवन मात्रा 1 कर्ष

15) शिलाजित प्रवर सेवन मात्रा - 1 पल

16) शिलाजीत-अवर सेवन काल 1 सप्ताह

17) दन्ती हरितकी मात्रा - 1 पल, 1 प्रस्थ दोष विरेचन.

18) कूष्ठ में 1 - 1 मास के बाद विरेचन

19) मध्वासव - 1 प्रस्थ - मधु व सिता

20) कनकबिन्द्वारिष्ट - 1 मास सेवन महाकूष्ठ नष्ट, 1 द्रोण खदीर कषाय

21) सिध्महर लेप - 1 मास प्रयोग - नव किलास नष्ट

22) अपस्मार वेग 1 - 1 पक्ष, 1 - 1 मास पर

23) 1 वर्ष पुराणा क्षतक्षीण याप्य

24) एलादी गूटीका- सिता, मधुक, खर्जुर, मृद्विका 1-1 पल, मात्रा- 1 अक्ष

25) द्वितीय सर्पिगुड - 1 आढक घृत, मात्रा- 1 पल

26) चतूर्थसर्पिगुड - घृत - 1 आढक, सिता - 1 तुला

27) पंचम सर्पिमोदक - गोघृत - 1 प्रस्थ

28) षाडव में एक ही प्रकार का लवण है।

29) वर्धमान नागबला रसायन की कूल सेवन मात्रा - 1 पल - काल - 1 मास

30) शोथ में औष्ट्र दुग्ध प्रयोग - 1 सप्ताह या 1 मास

31) अष्टशत अरिष्ट -पुराण गुड - 1 तुला

32) पूनर्नवाद्यारिष्ट - 1 प्रस्थ मधु

33) कंस हरितकी मात्रा - 1 हरितकी

34) उदर - पटोलमुलाद्य चूर्ण - मात्रा 1 पल

35) उदर - 1 सप्ताह माहिष मुत्र प्रयोग, 1 मास - औष्ट्र दुग्ध प्रयोग

36) जलोदर पथ्य - 1 वर्ष

37) उदर - तक्र प्रयोग - 1 सप्ताह / 1 दशाह / 1 पक्ष / 1मास

38) 1 वर्ष पुराने अर्श कृच्छ्रसाध्य

39) अभयारिष्ट - आमलकी - 1 प्रस्थ

40) फलारिष्ट-हरितकी व आमलकी 1 प्रस्थ

41) कनकारिष्ट - आमलकी - 1 तुला

42) पिच्छाबस्ति - 1 प्रस्थ दुग्ध

43) मधुकासव - मधुक पूष्प - 1 द्रोण

44) पिण्डासव - गुड - 1प्रस्थ

45) मध्वरिष्ट - 1 आढक मधु

46) दाडीमाद्य घृत - दाडीम - 1 कुडव

47) पाण्डु - गोमुत्र + त्रिफला - 1 योग

48) धात्र्यावलेह मात्रा - 1 कर्ष

49) पिप्पल्यादी घृत - 1 पल मात्रा

50) गन्धहस्ती अगद - गो,अश्व पित्त भावना - 1 सप्ताह

51) अष्टांग लवण में एकही प्रकार का लवण है।

52) द्विरूत्तरहिंग्वादी चूर्ण - हिंग - 1 भाग

53) खदीरादी गूटीका खदीर - 1 तुला

54) सैंधवादी तैल - एकही प्रकार का लवण

55) जिवनीय घृत मात्रा - 1 अक्ष

56) वमन हिन शोधन मानिकी 1 प्रस्थ

57) वातशमन के लिए बस्ति प्रयोग संख्या - 1

58) निरूह बस्ति - कल्क प्रमाण 1 प्रसृत

59) भेड के लिए निरूह बस्ति द्रव्य मात्रा - 1 प्रस्थ

60) गज के लिए बस्ति नेत्र प्रमाण - 1 अरत्नी

61) दोष हिन बल - शिरोविरेचन 1 बार

11) विष – अगस्त्य उदय से मन्दवीर्य
12) व्रणबंधन दिन मे २ बार

11) व्रणबंधन दिन मे 2 बार

क्षार संग्रह और वातातपिक रसायन सेवन किसी भी ऋतु में कर सकते है।

(इस Common List में और भी Addition हो सकती है। पुस्तिका के तृतीय प्रकाशन तक का Collection इस में दिया है।)

1½

1) कनकारिष्ट - मधु 1½ प्रस्थ

2) वमन मध्य शोधन मानिकी 1½ प्रस्थ

2

1) मुलीनी में 2 द्रव्य शिरोविरेचनार्थ
2) दन्तधावन दो बार 3) स्नान दो बार
4) मानस दोष
5) प्रायोगिक धूमपान दिन में 2 बार
6) पदार्थ - 2 - (सत, असत)
7) स्नेह योनी 8) मध्यशुध्दी अन्नकाल
9) विद्रधी के भेद 10) साध्य भेद
11) असाध्य भेद 12) ज्वर भेद
13) व्रण भेद 14) आयाम भेद
15) गृध्रसी भेद 16) कामला भेद
17) आमदोष - (आमरोग) 18) वातरक्त भेद
19) अर्श भेद 20) रोग कारण
21) उत्पत्ती भेद से आहार योनी
22) आहार प्रभाव 23) पत्रासव
24) शाकुन्तेय ब्राम्हण नुसार रस संख्या
25) वीर्य भेद 26) पूर्वरूप भेद
27) रक्तपित्त मार्ग 28) सिध्दान्त भेद (च.वि.2)
29) कृमी भेद 30) स्त्रोतसों के प्रकार
31) अमात्रावत आहार भेद
32) प्रभाव, वल, अधिष्ठान, आशय व निमित्त भेद से रोग के प्रकार प्रत्येकी- 2
33) तद्विद्य संभाषा भेद
34) परिषद भेद 35) वाद भेद
36) छल भेद 37) देश भेद
38) मन के गुण 39) द्विविध स्पर्श
40) तालु अस्थि संख्या 41) मेद प्रमाण - 2 अंजली
42) आत्मज अंश संख्या 43) नाभीबंधन
44) संस्थान (आकृती) भेद 45) भेषज भेद
46) अभेषज भेद 47) स्वस्थ उर्जस्कर भेद
48) रसायन भेद 49) तृतीयक ज्वर भेद
50) रक्तपित्त गति 51) देह प्रकृती भेद से प्रमेह भेद
52) लोध्रासव / मध्वासव सेवन मात्रा -2 पल
53) एलादी गूटीका - पिप्पली 2 कर्ष
54) अमृतप्राश घृत - 2 प्रस्थ घृत
55) श्वदंष्ट्रादी घृत - 2 प्रस्थ घृत
56) सैंधवादी चूर्ण- 2 प्रकार के लवण
57) पूनर्नवाद्याशिष्ट -गुड 2 तुला
58) क्षार गुडीका शोथ - 2 क्षार
59) कंस हरितकी मात्रा - 2 कर्ष अवलेह चाटण
60) नारायण चूर्ण – 2 द्वय क्षार
61) उदर - क्षारवटी - 2 क्षार
62) कनकारिष्ट - 2 तुला शर्करा
63) अगस्ती हरितकी - मात्रा - 2 हरितकी
64) विषयोनी 65) खदीरादी गूटीका - 2 तुला अरीमेद
66) व्रणबंध - 2 67) हनुस्तंभ / हनुग्रह भेद
68) वातरक्त अवस्था
69) कूटज श्यामा त्रिवृत्त व स्नूही भेद- 2
70) विरेचन मानिकी जंघन्य शुध्दी
71) वमन - उत्तम शुध्दी मानिकी - 2 प्रस्थ
72) स्त्रीयों में मुत्रमार्ग में बस्ति नेत्र प्रवेश - 2 अंगुल
73) पित्तशमन के लिए बस्ति संख्या - 2
74) अनुवासन स्कंध - 2
75) नावन, अवपीडनस्य भेद - 2
76) संग्रहाध्याय 2

3

1) स्कंध 2) दण्ड (अधिकरण)
3) सामान्य भेद 4) विशेष भेद
5) हेतू 6 शरीर दोष
7) द्रव्य भेद 8) त्वक उपयोगी वृक्ष 3,
9) क्षीर उपयोगी वृक्ष - 3 10) मूलीनी में 3 द्रव्य वमनार्थ
11) धूमपान भेद 3
12) 1 दिन में वैरेचनिक धूमपान - 3 बार
13) धारणीय वेग
14) एषणा, उपस्तंभ, बल, आयतन, रोग, रोगमार्ग, भिषक और औषध प्रत्येकी 3, त्रय स्तंभ (वात, पित्त,कफ)
15) त्रिविध विकल्प - अतियोग, अयोग मिथ्यायोग च.सु.11
16) त्रिविध रोग 17) स्नेह मात्रा
16) मश्दूकोष्ठ स्नेहन काल - 3 दिन
17) विरेचन के लिए स्नेह प्रयोग के बाद विश्राम काल 3 दिन
18) स्वेदद्रद्व 19) प्रधान शुध्दी में अन्नकाल
20) दोषगती 21) शोथ भेद
22) बोध्य संग्रह (रोग परिक्षणीय विषय)
23) किलास भेद 24) रक्तपित्त भेद
25) पूर्णाक्ष मोदगल्य नुसार रस संख्या
26) विपाक भेद 27) क्षुद्र गुड भेद
28) शिष्य बूध्दी 29) त्रिविध उदर्क (रक्तपित्त निदान)
30) त्रयोनिदान विशेष प्रमेह निदान
31) त्रिरूप राजयक्ष्मा 32) अतिसेवन निषेध द्रव्य
33) वात,पित्त,कफ शामक / वर्धक रस संख्या
34) सात्म्य भेद 35) कूक्षी भेद
36) अपतर्पण भेद 37) देश भेद
38) रोग ज्ञान साधन 39) कृमि चिकित्सा 3
40) प्रतिपक्ष 41) अहेतू
42) संहनन भेद 43) निग्रह स्थान प्रकार
44) धातुभेद से पुरूष प्रकार
45) मन भेद 46) बल भेद
47) दु:ख कारण 48) त्रिविध औषध
49) तामस प्रकृती संख्या 50) गर्भ अशुभ भाव
51) स्त्री व्यापद 52) पुरूष व्यापद
53) सत्व भेद 54) वसा प्रमाण 3 अंजली
55) शरीरप्रमाण - 3 56) दोहृद अवस्था 3 मास में
57) विकृती भेद
58) पिप्पली रसायन 3 (पिप्पली संख्या 3, 5,7,8, 10)
वर्धमान पिप्पली रसायन (10, 6,3)
59) त्रिफला रसायन
60) शिलाजतू सेवन मध्यम मात्रा काल 3 सप्ताह

61) चतुर्थक ज्वर भेद 62) हेतू भेद से प्रमेह 3 प्रकार
63) कुष्ठ में 3-3 दिन के बाद अवपीड नस्य
64) वृध्दी भेद - 3 (मुत्र,मेदोज, कफज)
65) उदर - 3 मास तक अजादूग्ध प्रयोग
66) अर्शचिकित्सा - तक्र भेद 3
67) अवस्थापाक भेद - 3 68) क्षार गूटीका - 3 लवण
69) अधिष्ठान भेद से विसर्प भेद
70) प्लेपजाडी-त्रिभाग अंगुष्ठ
71) अन्न त्रिक,पानत्रिक,वयत्रिक,बलात्रिक, कालत्रिक दोषत्रिक, सत्वत्रिक
72) अश्मरी स्वरूप - त्रिपूटी 73) स्नेहपाक भेद - 3
74) अवर शुध्दी संसर्जन क्रम-3दिन
75) विरेचन मानिकी - मध्य शोधन
76) कफशमन के लिए - 3 बस्ति
77) 3 प्रधान मर्म

4

1) आयुभेद 2) महास्नेह
3) वैरेचनिक धूमपान दिन में 4 बार
4) देहप्रकृती (वातज, पित्तज, कफज, सम)
5) अध्यात्म द्रव्य गुण संग्रह
6) हेतू - 4 (इंद्रियोपक्रमणीय अध्याय)
7) चिकित्सा पाद - 4 प्रत्येकी गुण संख्या 4
8) वैद्यभेद- खुड्डाक चतूष्पाद
9) परिक्षा (प्रमाण) 10) स्वेद-अंगारकोष्ठक स्तंभ-4हस्त लम्बाई
11) हिन शुध्दी कूल अन्नकाल
12) अपस्मार,अक्षिरोग,प्रतिश्याय, कर्णरोग, मुखरोग, ग्रहणी, मद, मूर्च्छा, क्लैब्य प्रत्येकी 4 भेद
13) वातज प्रमेह भेद 14) दोषज योनी रोग
15) शोधन भेद 16) मधु व शर्करा भेद
17) त्वक व काण्डासव - 4
18) दोष कोष्ठ से शाखा में जाने के हेतू
19) आगन्तु ज्वर भेद 20) राजयक्ष्मा हेतूनुसार भेद
21) जनपदोध्वंस भाव 22) प्रभाव भेद (च.वि.1)
23) कृमी कारण भेद से प्रकार
24) अपकर्षण भेद 25) हेतू 4(च. वि. 8) (प्रमाण)
26) सिध्दान्त भेद 27) शब्द भेद
28) मन के कर्म 29) प्राणीज जांगम योनी प्रकार
30) दुःख प्रवृत्ती कारण 31) शरीर वृध्दीकर भाव
32) पाणीपाद शलाका अधिष्ठान
33) पार्ष्णिसंख्या 34) गुल्फ संख्या
35) अरत्नी संख्या 36) शिर कपालास्थी संख्या
37) मुत्र प्रमाण- 4 अंजली 38) नाभी रोग
39) प्राकृत वर्ण 40) 4 मेध्य रसायन
41) त्रिफला रसायन 42) आयुर्वेद समुत्थनीय रसायन योग
43) शिलाजतू भेद 44) यवानी षाडव-सिता 4 पल
45) क्षार गुडीका - शोथ - 4 लवण
46) भल्लातकासव - भल्लातक - 4 पल
47) अग्निभेद 4 47) हिक्काश्वास रूग्ण भेद 4
48) चतूष्पाद में विषवेग संख्या
49) अरिष्ट बंधन 4 अंगुल उपर
50) अम्ल स्वभाव मद्य में 4 अनुरस
51) प्रदर भेद 52) विरेचन मानिकी प्रवर शुध्दी 4 प्रस्थ
53) वमन वेगिकी हिन शुध्दी 4 वेग
54) नारी अपत्यपथ में बस्ति नेत्र प्रवेश 4 अंगुल
55) हस्ती में निरूह वस्ति मात्रा 4 आढक
56) चरकसंहिता सुत्रभेद 4

5

1) वैशेषिक गुण 2) लवण भेद
3) रसांजन प्रयोग पंचरात्री 4) कषाय कल्पना
5) कषाय योनी
6) इंद्रिय - इंद्रिय द्रव्य, इंद्रियार्थ इंद्रिय अधिष्ठान, इंद्रिय बुध्दी प्रत्येकी 5
7) क्षौरकर्म - 5 दिन के अन्तराल से
8) मध्य कोष्ठ में स्नेहन
9) शिरोरोग, हृदयरोग, गुल्म, प्लीहा, कास, श्वास, हिक्का, तृष्णा, छर्दी,अरोचक, पाण्डु, उन्माद प्रत्येकी भेद 5
10) पूरिषज कृमी 11) कुमारशिरा भरद्वाज नुसार रस संख्या
12) दोष शाखा से कोष्ठ में आने के हेतू
13) संप्राप्ती भेद 14) पंचविध गदम,पंचविध ग्रहम(च.नि.1)
15) वाक्यदोष 16) मन विषय 17) चित्त वृत्ती
18) लोक/षडधातू पुरूष दशाए
19) पित्त प्रमाण 5 अंजली 20) अग्निमहाभूतात्मक अंश
21) विकृत वर्ण 22) छाया भेद
23) हरितकी व आमलकी में रस संख्या
24) पाच वृष्य क्षीर 25) विषम ज्वर भेद
26) विषम ज्वर नाशक क्वाथ
27) गुल्म स्थान - 5 28) तैलपंचक
29) शोथ गुडार्द्रक प्रयोग - कुल सेवन मात्रा 5 पल
30) नारायण चूर्ण - पंचलवण
31) उदर - क्षारवटी पंचलवण है।
32) ग्रहणी - पंच उष्मा
33) उदावर्त चिकित्सा - एरण्ड तैल अधिकतम मात्रा - 5पल
34) अमृताद्य तैल - गुडूची 5 तुला
35) आर्तव - पंचरात्रानुबंधी 36) मदनफल - क्षीर व घृत योग
37) कल्याणक गुड - 5 लवण है।
38) निरूह बस्ति - कषाय - 5 प्रसृत
39) पित्तजनित विकार में बस्ति प्रयोग संख्या 5/7
40) नस्य भेद - 5

6

1) पदार्थ 2) रस 3) आत्रेय शिष्य
4) ऋतूभेद 5) शोधन वृक्ष
6) आध्यात्मिक गुण 7) विरेचन द्रव्य आश्रय
8) उत्तम वैद्य गुण 9) गर्भकर - शुभ गुण संख्या
10) वात गुण 6 (वात कलाकलीय अध्याय)
11) संग्रह/संक्षेप भेद से स्वेद के प्रकार
12) अतिसार,उदावर्त भेद
13) रक्तज कृमी 14) निद्रा प्रकार
15) चिकित्सा प्रकार (षट उपक्रम)
16) शमन भेद 17) धान्यासव
18) राजर्षी वार्योविद नुसार रस संख्या
19) पुर्नवसु आत्रेय नुसार रस संख्या
20) पांच रस के संयोग 21) अंग (षडंग)
22) षड अग्र्य/श्रेष्ठ (च. सु. 30)

23) एकदेशिका 6 24) षडरूप राजयक्ष्मा
25) षडविध आस्थापन स्कंध 26) गर्भ निर्मापक भाव
27) रसज भावों की संख्या 28) गर्भतत्व
29) राजस प्रकृती भेद 30) आहार परिणाम कर भाव
31) त्वचा भेद 32) कफ प्रमाण 6 अंजली
33) प्रकृति भेद (च.इ.)
34) अभया आमलकी पाद रसायन योग संख्या
35) वीर्यक्षीणता के कारण
36) ज्वर में 6 दिन तक यवागु प्रयोग
37) रक्तद्वार
38) कूष्ठ में 6-6 मास के बाद रक्तमोक्षण
39) स्वरभेद 6 प्रकार
40) षटपल घृत राजयक्ष्मा उदर
41) क्षीरषटपल घृत -गुल्म 42) शस्त्रकर्म 6
43) दोषभेद से अर्श भेद 6
44) रस से शुक्र धातू उत्पत्ती - 6 दिन
45) अनुपेक्षणीय षडविध काल
46) कालापेक्ष
47) मदनफल वर्ति क्रियेद्वारे योग
48) मध्यम शुध्दी वमन वेगिकी संख्या
49) स्नेह बस्ति व्यापद 50) च. सु.
17 प्रश्न संख्या
51) च.सि. 6 औषध से उपद्रव उत्पत्ती में कारण - 6

7

1) वात,पित्त,कफ गुण - 7 (च. सु.1)
2) पादांशिक क्रम सेवन - 7 दिन
3) उत्तम शुध्दी संसर्जन क्रम - 7 दिन
4) स्नेह सात्म्य सिमा 5) मधुमेह पिडका संख्या
6) शोथ उपद्रव 7) कूष्ठ, विसर्प, पिड़का भेद
8) कफज कृमी 9) निमी अनुसार रस संख्या
10) सात्म्यभेद 11) प्रकृति भेद
12) सात्वीक प्रकृति भेद 13) पुरिष प्रमाण - 7 अंजली
14) पुत्रेष्टी यज्ञकर्म पूर्वकर्म -7 दिन
15) किक्कीस उत्पत्ती - 7 मास
16) प्रभा भेद - 7 17) स्वप्न भेद - 7
18) कूष्ठ व्याधि - 7 दूष्य
19) शिलाजतू प्रयोग पवर सेवन काल 7 सप्ताह
20) ज्वर सामता - 7 दिन 21) धातूगत ज्वर
22) सिध्महर लेप - 1 सप्ताह प्रयोग
23) ग्रहणी सप्तधात्वाग्नी
24) निरूह - विरेचन परस्पर विश्राम काल
25) चरक संहिता में 7 चतूष्क
26) 7 संभाषा परिषद 27) च. वि. 21 प्रश्न संख्या

8

1) अथातो दिर्घजीवितीयमध्यायं व्याख्यास्याम: में 8 पद है।
2) फलीनी वमनार्थ - 8 द्रव्ये
3) ज्ञान देवता 4) मुत्रभेद 5) दूग्ध भेद
6) रसायन प्रयोग अष्टरात्री
7) धूमवर्ति लंबाई
8) प्रत्यक्ष ज्ञान में बाधाकारक कारण
9) धूमपान काल
10) तिस्त्रैषनीय व मदात्यय चिकित्सा में अष्ट त्रिक वर्णन
11) वातकलाकलीय अध्याय - वातसम्बन्धी प्रश्न
12) मध्यम शुध्दी कूल अन्नकाल
13) उदर रोग,मुत्राघात, दुग्ध दोष व वीर्य दोष
14) निंदित पुरूष प्रकार
15) अतिस्थौल्य दोष व हेतू
16) बडीश धार्मागव-रस संख्या
17) वीर्यभेद
18) मांस योनी
19) आयुर्वेद संबंधी प्रश्न 8
20) आयुर्वेद अंग
21) वैद्य परिक्षा के लिए प्रश्न
22) चरकसंहिता स्थान
23) निदान,विमान,शारीर स्थान अध्याय संख्या
24) ज्वर कारण भेद
25) भूतोन्माद
26) आहार विधी विशेषायतन
27) सार
28) लौकिक स्मृती जनक कारण
29) योग सिध्दियां
30) विकृत संतान
31) सात्म्यज भाव
32) रक्त प्रमाण - 8 अंजली
33) नाभीनाल छेदन 8 अंगुल
34) आसिक्त क्षिरिक अध्याय में वाजीकरण योग
35) वाजीकरण फल 8 वर्ष के अश्व समान प्रहर्ष
36) वीर्यक्षीणता के कारणे
37) वीर्यस्त्राव कारणे
38) ज्वर में 8 दिन से कषाय प्रयोग
39) ग्रहावेश भेद
40) दूरालभासव - 8 पल मधु
41) शिलाजतू वटक - 8 पल शुध्द शिलाजित, 8 पल सिता
42) योगराज - 8 पल सिता
43) विषयोग संख्या
44) व्रण स्थान, व्रण गंध
45) शुक्रदोष
46) दूग्ध दोष (क्षीर दोष)
47) मदनफल संग्रह में धान्यराशी में 8 दिन रखना
48) मदन फल मात्रेद्वारा 8 योग
49) योग बस्ति में बस्ति संख्या
50) बस्ति दोष, बस्ति नेत्र दोष
51) वमन प्रधान शुध्दी वेगिकी
52) अष्ट महादोषकर भाव (अप्राप्त प्रकृती)

9

1) कारण द्रव्य संख्या
2) मलायन
3) दोषसंसर्ग भेद
4) अंतविद्रधी स्थान
5) आसव योनी
6) बर्हिमुख स्त्रोतस संख्या
7) अन्नपान में परिक्षणीय विषय

: त्रिक वर्णन
श्न

ा

ोग
प्रहर्ष

, 8 पल सिता

खना

8) परिक्षक विद्वान गुण
9) रसप्रमाण – 9 अंजली
10) द्रोणी प्रावेशिक रसायन वनस्पती संख्या
11) मदनफल सिध्द कषाय योग
12) वातजनित विकार में बस्ति प्रयोग संख्या 9/11
13) अतिसार उपद्रव संख्या
14) सभाषा परिषद यज्ज पुरीषीय अध्याय आचार्य संख्या
15) च. शा. 6 अध्याय प्रश्न संख्या

10

1) फलीनी मे से विरेचन द्रव्य 10
2) परादी गुण
3) जिह्वा निर्लेखन
4) निरूती स्वेद
5) कफज प्रमेह
6) लसीका भेद
7) पुष्पासव
8) गोदुग्ध गुण
9) गणायतन
10) तन्त्रार्थ में प्रकरण
11) प्रमेह दूष्य संख्या
12) आहारविधी भेद
13) दश रोगानिक
14) दशविध परिक्षा
15) पितृज भाव
16) उदक मात्रा 10 अंजली
17) अल्लातक योग
18) उदर तक प्रयोग अवधि 10 दिन
19) नवायस लौह घटक द्रव्ये 10
20) विष गुण
21) मद्य गुण
22) सन्निपातीक मदात्यय 10 भेद
23) भेषज काल
24) दशविध रोगी परिक्ष्य भाव
25) मदनफल षाडव योग
26) बस्ति दाता दोष
27) वमन विरेचन व्यापद
28) पुष्पनेत्र लंबाई स्त्रीयों के लिए 10 अंगुल
29) बस्ति परिक्षणीय विषय
30) पुरुषों के लिए बस्ति नेत्र लंबाई -10 अंगुल
30) सभाषा परिषद-आत्रेय भद्रकाप्यीय अध्याय आचार्य संख्या -10

11

1) फलीनी में से 11 द्रव्य विरेचनार्थ
2) कूल इंद्रिय
3) वात महाभूतात्मक अंश
4) मलासव
5) एकादश रूप राजयक्ष्मा
6) वायु आवरण

12

1) मध्यम मार्गाश्रीत व्याधि
2) स्थान शुध्दी कूल संसर्जन काल
3) आहार द्रव्य वर्ग
4) इंद्रिय स्थान, कल्प स्थान, सिध्दी स्थान अध्याय संख्या
5) निग्रह स्थान
6) वर्हिमुख स्त्रोतस स्त्रीयों में
7) पुमानजात वलाधिक वाजीकरण पाद योग संख्या
8) संतत ज्वर आश्रय
9) दूष्ट व्रण के प्रकार
10) दूष्ट प्रतिश्याय जन्य व्याधि
11) चतुरंगुल कल्प संख्या
12) निरूह बस्ति परम प्रमाण - 12 प्रसश्त
13) उत्तर वस्ति नेत्र लम्बाई
14) वस्ति निरूह व्यापद
15) च.सु. 13,15 व च. सि. 1 अध्याय प्रश्न संख्या

13

1) स्त्रोतस भेद
2) वलवर्ध्दीकर भाव
3) मुत्र दोष च. सि. 9

14

1) उरोस्थी संख्या
2) व्रण स्त्राव
3) 14 गुण युक्त मद्य अम्ल पदार्थों में श्रेष्ठ
4) चरक संहिता 14 देश वर्णन

15

1) दो रसों के संयोग
2) 4 रसों के संयोग
3) ग्रीवास्थी संख्या
4) कोष्ठांग
5) जलमहाभूत अंश संख्या
6) संयोग शरमुलीय वाजीकरण पाद व माषपर्णभश्तीय वाजीकरण पाद योग संख्या
7) कल्पस्थान के 600 योग 15 द्रव्योंपर आधारित है।
8) कूष्ठ 15-15 दिन के बाद विरेचन
9) कनक बिन्दारिष्ट 15 दिन सेवन क्षुद्र कूष्ठ नष्ट
10) अपस्मार वेग 15-15 दिनपर
11) 15 दिन के बाद बध्द गुदोदर असाध्य
12) पाण्डू गोमुत्र + गोदुग्ध प्रयोग 15 दिन
13) पाण्डू माहिष मुत्र + माहिष दूग्ध -15 दिन प्रयोग

16

1) मूलिनी द्रव्य संख्या
2) जेन्ताक स्वेद कूटागार प्रमाण(लंबाई,चौडाई,उंचाई 16 अंगुल
3) चतुष्पाद गुण
4) भेषज कला
5) अंभ्यन्तर मार्गाश्रीत व्याधि
6) करप्रचितीय अध्याय रसायन योग
7) षाडव
6 पल चिनी
8) बीजकारिष्ट 16 पल विजयसार
9) उपद्रव भेद से व्रण भेद
10) जांगम विष आश्रय
11) मदन फल को पूप व शष्कूली द्वारा
16 योग
12) लोध्र योग

13) कालबस्ति संख्या
14) गो व अश्व के लिए बस्ति नेत्र लम्बाई 16 अंगुल.
15) चरक संहिता पर संस्कशतटिका

18

1) क्षय के भेद
2) विरूध्द आहार भेद
3) चक्रपाणी उपशय भेद
4) सत्वज भाव
5) पश्थ्वी महाभूतात्मक अंश
6) इंद्रोक्त रसायन वनस्पती संख्या
7) कूटज योग संख्या
8) उष्ट्र के लिए बस्तिनेत्र लम्बाइ - 8 अंगुल

19

1) फलिनी द्रव्य संख्या
2) स्नेह व्यापद
3) शोथ संग्रह

20

1) गुर्वादी गुण
2) प्रमेह प्रकार
3) कश्मी संख्या
4) योनी रोग
5) कफज नानात्मज विकार
6) सारासव
7) तीन रसों के संयोग
8) विरूध्द आहार सेवन जनित व्याधि संख्या
9) मातश्ज भाव
10) पाणीपाद शलाका संख्या
11) नानात्म भेद से व्रण प्रकार
12) वायू आवरण
13) मदन फल के लेह मोदक व उत्कारिका से योग 20
14) सुधा कल्प
15) विरेचन मध्यम शुध्दी वेगिकी

21

1) स्थावर विष संख्या

22

1) आत्मज भाव

23

1) क्षेत्र में 23 तत्व
2) दूष्ट प्रतिशाय जन्य उपद्रव
3) च.शा.1 प्रश्न संख्या

24

1) स्नेह प्रविचारणा
2) चतूविंशति पुरूष
3) दन्त,पर्शुका स्थलक, पर्शुका स्थलकार्बुद संख्या
4) विष चिकित्सा उपक्रम
5) दोष भेद से व्रण प्रकार
6) विरेचनिक धुमपान - धूमनेत्र लम्बाई

25

1) यथा वृध्द स्तथा क्षीण दोषेपु भेद
2) दन्ती हरितकी में दन्ती हरितकी और चित्रक 25 पल

26

1) फलासव

28

1) अपामार्ग तण्डूलीय यवागू संख्या
2) पानीय कल्याण घृत 28 द्रव्ये (अष्टविंशती घृत)

30

1) सुत्रस्थान, चिकित्सा स्थान अध्याय संख्या
2) लशुनाघ घृत हरितकी संख्या 30
3) पंचम सर्पिमोदक - चिनी - 30 पल

32

1) आरग्वधीय अध्याय चूर्णप्रदेह/लेप संख्या
2) स्नैहिक धुमपान धूमनेत्र लम्बाई
3) दंतोलुखल संख्या
4) द्वितीय सर्पि सिता 32 पल
5) द्विरूत्तर हिंग्वादी चूर्ण विडंग 32 भाग
प्रमुख घटक द्रव्य

36

1) प्रायोगिक धूमवर्ति लम्बाई 36 अंगुल
2) व्रणोपक्रम
3) च सि. 8 अतिसार कै द्विसंसर्ग स 36 भेद
4) तंत्रयुक्ती,
5) च. शा. 2 अध्याय प्रश्न संख्या

37

द्वितीय रसायन पाद रसायंन संख्या

39

1) जीमुतक, सप्तला शंखिनी योग

40

1) पित्तज नानात्मज विकार
2) पूर्ननवा मण्डूर में 40 पल

41

1) दृढबल द्वारा रचित अध्याय संख्या - 41
2) चरक संहिता पर कूल टिका 41

44

1) वाद मार्ग ज्ञानार्थ पाद

45

1) पृष्ठगत अस्थि संख्या
2) इक्ष्वाकू योग संख्या

47

अरिष्ट विज्ञान में परिक्षणीय विषय

48

1) सामान्यज रोग / रोगाधिकरण
2) दन्तीद्रवन्ती योग संख्या

50

1) महाकषाय
2) द्वितीय लसूनाद्य घृत लशून 50 पल
3) वाजीकरण योग

52

प्रथम संभाषा परिषद उपस्थित आचार्य

56

त्यग

60

मनग्रन्थ हस्ती अगद द्रव्य संख्या षष्टयांग

मार्गव व कृतवेधन योग

62

दोष मान विकल्पज रोग

63

रसायन योग

64

स्नेह प्रविचारणा रस भेद से

रस विकल्प (द्रव्य देश व काल भेद से)

खरीता

80

वातज्ञानात्मज विकार

84

आसव

96

तरंग भेद

100

कलीयुग में मनुष्य आयू 100 वर्ष

गर्भ की परम आयू 100 वर्ष

लशून घृत - लशून संख्या

कंस हरितकी - हरितकी संख्या

द्वितीय फलारिष्ट - शर्करा 100 पल

बला तैल - बला 100 पल

पथ्यांघृत - 100 हरितकी

कटजादी रसक्रिया कूटज त्वक 100 पल

बृहस्ती हरितकी 100 हरितकी

सुकुमार तैल - मधुक 100 पल

107

संख्या

110

मात्रिवृत्त योग संख्या

120

पल संख्या

133

योग

152

श्रेष्ठ द्रव्य / अग्न्य

200

द्वापर युग मनुष्य आयू

मनी संख्या

संख्या

पवानी षाडव, मरिच, पिप्पली प्रमाण

भयारिष्ट 200 पल पुराणा गुड

पलभासव व मूलासव 200 पल

216

संख्या

245

विरेचन योग

300

त्रेतायुग मनुष्य आयू

355

वमन योग संख्या

360

अस्थिसंख्या

400

सतयुग में मनुष्य आयू

500

1) कषाय संख्या,
2) पेशी संख्या,
3) चव्यन प्राश में आमलकी संख्या

600

1) विरेचन योग

700

सिरा

800

1) अष्टशत अरिष्ट कूलद्रव्य प्रमाण 800 पल

1000

1) प्रथम ब्राह्मय रसायन हरितकी संख्या
2) द्वितीय ब्राह्मय रसायन आमलकी संख्या
3) भल्लातक रसायन 1000 भल्लातक सेवन
4) वर्धमान पिप्पली रसायन
5) उदर 1000 हरितकी सेवन

1200

कलयुग 1200 दिव्य वर्ष

1950

चरकसंहिता योग

2000

धात्र्यारिष्ट 2000 आमलकी

2400

द्वापर युग 2400 दिव्य वर्ष

3600

त्रेतायुग 3600 दिव्य वर्ष का

4800

सतयुग दिव्य वर्ष का

9295

चरक संहिता सुत्रसंख्या

12000

चरकसंहिता श्लोक संख्या

29956

सिरा धमनी मुखाग्र

अपरिसंख्येय

1) व्याधिभेद - च.सु. 18/42, च. सु. 20/3, च. वि. 7/8
2) कूष्ठ भेद.
3) काकायन - रस भेद.
4) स्त्रोतस. 5) बहू द्रव विकल्प से कल्प स्थान के योग.

सुश्रुत संहिता

उपदेष्टा - धन्वन्तरी..... (इ.स.पूर्व 2350)
आद्य / वृध्द सुश्रुत - उपनिषदकालिन - सौश्रुत तंत्र... (इसपू 1000-1500)
प्रथम प्रतिसंस्कर्ता - सुश्रुत..... (2 रे शतक)
द्वितीय प्रतिसंस्कर्ता - नागार्जुन..... (4 - 5 शतक)
तृतीय प्रतिसंस्कर्ता और पाठशुध्दिकर्ता - चन्द्रट ..... (10 शतक)
धन्वन्तरी - 3 परंतु आयुर्वेद सम्बधी - 2
1) प्रथम धन्वन्तरी: काशदीघ तपा धन्व धन्वन्तरी
भरद्वाज से आयुर्वेद ग्रहण और अष्टांग में विभक्तकर अपने शिष्यों को दिया.
2) द्वितीय धन्वन्तरी: दिवोदास (केतुमान भिमरथ दिवोदास धन्वन्तरि)
वाराणसी नगर के संस्थापक.
(सुधेव भिमसेन - पिता व ययाति कन्या माधवी के पुत्र)
12 शिष्य.....सुश्रुत, औपधेनवादि. - काल - (इ. स. पूर्व 2400)
नागार्जुन ने उत्तरतन्त्र की रचना की।
सुश्रुत का उल्लेख नागार्जुन ने उपांग हृदय में किया।
धन्वन्तरी के हाथ में अमृत कलश & अश्विनी के हाथ में मधु कलश.
* अरिष्ट वर्णन in सूत्रस्थान...(सु. संहिता)
* शुकनास व्याधी प्रथम उल्लेख. (शुकनास घृत - अपतंत्रक....(भेल))
* अयस्कृति सर्वप्रथम वर्णन. * अरिष्ट निर्माण सर्वप्रथम वर्णन.
* औपसर्गिक रोग सर्वप्रथम वर्णन. * पित्त के 5 भेद सर्वप्रथम वर्णन.
* शवच्छेद संक्षिप्त सर्वप्रथम वर्णन. * षट्क्रियाकाल सर्वप्रथम वर्णन.
* तुवरक उल्लेख सर्वप्रथम वर्णन. * योग्याद्वारा विविध शस्त्रकर्म वर्णन.
* फेनाश्म, हरताल, मन:शिला, माक्षिक, वत्सनाभ - सर्वप्रथम वर्णन.
* आतुरालय, सुतिकागार, व्रणागार, कुमारागार, भेषजागार वर्णन.
(आतुरालयको काश्यप ने अरिष्टागार कहा।)
ऋतु गणना: 2 प्रकार से
(सुश्रुत: शिशिर से शुरूवात, चरक: हेमन्त से शुरूवात, पाणिनी: वसंत से)
नाभिस्थ प्राणिनां प्राण: (आहार इति, तस्मिश्च प्राण:।)...(सु. सू. 40)
* तैल दोणी, घृत द्रोणी विधान. * प्रभाव का अन्तर्भाव वीर्य में.
* षड्विधकषाय कल्पना वर्णन. * जलसंत्रास वर्णन (अलर्क विष.)
* जनपदध्वंस को मरक शब्द प्रयोग और चिकित्सा – स्थान परित्याग.
* लोहमल और कांस्य मल उल्लेख, * पित्त = अग्नि.
* मुर्खवैद्य के लिए विदग्ध और तस्कर वृत्ति शब्द प्रयोग.
* शोणित चतुर्थ दोष...(सु. सू. 21 / 2)
* चन्दन - मलयज (पर्याय), * लाघरक रोग वर्णन.
* स्वस्थ परिभाषा वर्णन..(सु. सू.15)
* केशर - बाल्हिक और कुम्कुम शब्द, * शोभांजन - मुरंगि शब्द.
* शल्यविषयार्थ - मर्म: * शल्यचिकित्सार्थ - सिरावेध.
सुश्रुत: उपसर्ग को उपद्रव और चन्द्रट ने उपसर्ग - संक्रामक.
* वायु, जल शुध्दि विस्तार से वर्णन.
* विष कन्या उल्लेख परंतु सर्व प्रथम विष कन्या वर्णन - वाग्भट
* भूतविद्या: अध्याय 3, तन्त्रभूषण: अध्याय 4 वर्णन.
* पुटपाक विधि - विस्तार पूर्वक वर्णन.
* चूर्ण क्रियादि वर्णन - रसोन, पलाण्डु प्रयोग अधिकतर
* अत्यायिक चिकित्सा - धूमोपहत, उदकपूर्णउदर, बाहुरज्जुलतापाश का वर्णन.
* प्रमेह पिडका चिकित्सा अधिकार: नवायस लोह, लोहारिष्ट, धान्वन्तर घृत.
वैशिष्ट पूर्ण औषधियाँ: कुष्ठ - खदिर,तुवरक, बीजक., अर्श - कुटज, भल्लातक., प्रमेह - हरिद्रा., आढ्यवात - गुग्गुलादि., दूष्योदर - वानस्पतिक विष वर्णन.
चन्द्रट: i) पिता - तिसटाचार्य., ii) लिंगनाश शस्त्रकर्म सर्व प्रथम वर्णन.
iii) सुश्रुत संहिता की पाठशुध्दि.,
iv) औपसर्गिक रोग, व्यापन्न, जलशुध्दि, निक्षेपण, शितीकरण वर्णन.,
v) युक्तसेनिय अ. में सैनिकी चिकित्सा वर्णन.
* सनक - विष विद्या ग्रंथ सुश्रुत कल्प पर आधारित.
सुश्रुतोक्त आचार्य -10, गण - 37, औषध द्रव्य - 537,
सुत्र संख्या - 8300, रोग -1120,
सुश्रुत में द्वादश अशनविचार(सु.शा.)और एकादश प्राण. (सु.उ.66)
सुश्रुत - जत्रुर्ध्व रोग संख्या - 213 और वाग्भट - 231.
हिन्दी टिका:
1) आयुर्वेद रहस्य दिपिका - सूत्र, निदान और शारीर
- भास्कर गोविंद घाणेकर - 20 शतक.
2) आयुर्वेद तत्व संदिपन - अंबिका दत्त शास्त्री. (श्रेष्ठ हिंदी टिका)
संस्कृत टिका: 19 (कूल)

सुश्रुत टिका:	टिकाकार	काल
1) जेज्जट -	बृहत्त्रयी टिकाकार (प्रथम टिकाकार)	9th शतक
2) माधवकर -	रत्नमाला टिपनी	9th शतक
3) ब्रह्मदेव -	टिप्पनी	10th शतक
4) गयदास -	न्यायचंद्रिका (बृहत्पंजीका)	
	पंचकलिका निदानस्थान	10th शतक
5) चक्रपाणी -	भानुमति/तात्पर्य टिका (सुत्रस्थान)	11th शतक
6) भास्कर -	चंद्रिका/लघुपंजिका/सुश्रुत पंजिका	12th शतक
7) डल्हण -	निबंधसंग्रह व्याखा (श्रेष्ठ टिका)	12th शतक
8) हारणचंद्र -	सुश्रुतार्थ संदिपन/आयुर्वेद संदिपनी (अंतिम संस्कृत टिका)	20th शतक
9) माधव -	प्रश्न सहस्त्र विधान	20th शतक
10) गणनाथ सेन -	सिध्दान्त निदान, प्रत्यक्ष शारिरम	20th शतक

1) अरबी में: चरक - सरक; सुश्रुत – सस्रद,
2)काशिराज धन्व के पूत्र धन्वन्तरी,धन्वन्तरी के केतुमान के भीमरथ के दिवोदास
3)धन्वन्तरी के पास अध्ययनार्थ औपधेनव, वैतरण, औरभ्र, पौष्कलावत, करवीर्य, गोपुरक्षित सुश्रुत (भोजादिक + निमि + कांकायन, गार्ग्य, गालव
4) सु.सू. के 1 और 3 अध्याय में 120 अध्याय, 5 स्थान लिखे है।

सुत्रस्थान

1) वेदोत्पत्तिम् अध्याय

Topics: व्याधी, चिकित्सा, अष्टांग आयुर्वेद, आयुर्वेद व्याख्या, प्रयोजन, द्वि
औषधी, बीजचतूष्टय.
* अथ शब्द मंगलाचरण का घोतक है।....(च. सु., महाभाष्य) धनु: शल्य
1) प्रधान शिष्य: (काशिराज दिवोदास भगवान धन्वन्तरी के): 7 -
i) औपधेनव, ii) वैतरण, ii) औरभ्र, iv) पौष्कलावत, v) करवीर्य,
vi) गोपुररक्षित, vii) सुश्रुत प्रभृति.
2) चिकित्सा: 3 प्रकार (चिकित्सा व व्याधि - 3 (शारीरागन्तुमानस))
i) शारीर, ii) मानस, iii) आगन्तुक.
3) व्याधि: 4 प्रकार - i) आगन्तुक (शस्त्र,लाठी आदि),
ii) शारीरिक (कुपितदोष), iii) मानसिक (क्रोध, शोकादि),
iv) स्वाभाविक - क्षुतपिपासाजरामृत्युनिद्रा प्रकृतय:
ब्रह्मसंहिता: ब्रह्मदेव ने (1 लाख श्लोक) (1 हजार अध्याय):
आयुर्वेद 8 अंगो में विभक्त
सुश्रुत: आयुर्वेद अथर्ववेद का उपांग है। (Also चरक व हस्तायुर्वेद)

आयुर्वेद ऋग्वेद का उपवेद -(व्यासकृत चरणव्यूह और शंकरोक्त आयुर्वेद ग्रन्थ)
आयुर्वेद की 8 अंगो में विभक्ति ब्रह्मदेव नहीं बल्कि अग्निवेशादिकृत।...(अ. संग्रहकार)
i) अंग: i) शल्य, ii) शालाक्य, iii) कायाचिकित्सा, iv) भूतविद्या,
v) कौमार भृत्य, vi) अगदतन्त्र, vii) रसायनतन्त्र, viii) वाजीकरणतन्त्र.
क्रम (Sequence): कायची, शालाक्य, शल्य, विषगर वैरोधिक प्रशमन, भूतविद्या,
कौमारभृत्य, रसायन, वाजीकरण, वाग्भट - कायबाल ग्रहोर्ध्वांग शल्य दंष्ट्राजरा वृषान्.
i) शल्य: विविध तृण काष्ठ पाषाण पांशु लोह लोष्ट अस्थि बाल नंख पूय आस्त्राव
आक्रमणान्तर्गर्भ शल्योध्दरणार्थ यन्त्र शस्त्र क्षार अग्नि प्रणिधान व्रण विनिश्च
चिकित्सा.... सु. सू. 1/9
ii) शालाक्य: नामोर्ध्वजत्रुगताना रोगाणां श्रवण नयन वदन घ्राणादिसंश्रिताना
व्याधीनामुपशमनार्थम्, शलाकायन्त्र प्रणिधानार्थं च । (अ. हृ. ऊर्ध्वांग)
(जत्रु - ग्रीवा, ग्रीवामूल, हनुसंधि, परंतु गणनाथसेन जत्रु = अक्षकास्थि)
iii) कायचिकित्सा: सर्वांगसंश्रिताना व्याधीनां ज्वर रक्तपित्त शोषोन्मादापस्मार
कुष्ठ मेहातिसारादि नामुप्रशमनार्थम् ।....1/11
iv) भूतविद्या: देवासुर गन्धर्व यक्ष रक्ष: पितृ पिशाच नाग ग्रहाद्युपसृष्ट चेतसां
शान्तिकर्म बलिहरणादि ग्रहोपशमनार्थम्।....सु. सू. 1/12
v) कौमारभृत्य: कुमारभरण, (बालक, पोषण) धात्रीक्षीर दोष संशोधनार्थ दुष्टस्तन्य
संशोधनार्थाचं, व्याधीनामुपशमनार्थ च। ....1/13 बालचिकित्सा: (अ.हृ.,अ.सं.)
vi) अगदतन्त्र: अगदतन्त्र नाम सर्पकीटलूतामूषिकादिदष्ट विष व्यंजनार्थ विविध
विष संयोगोपशमनार्थ च । 1/14
vii) रसायनतन्त्र: रसायनतन्त्र, नाम वय:स्थापनम् आयुर्मेधाबलकरं
रोगापहरणसमर्थंच। 1/15
viii) वाजीकरणतन्त्र: अल्प दुष्ट क्षीण विशुष्करेतसाम।
आप्यायन प्रसादोपचय जननिमित्त प्रहर्षजननार्थं च।(पुष्टि शोधन वृध्दी उत्पत्ति)
वाजीकरण भेद: 3 (डल्हण)
i) स्तंभिकर - स्त्रीस्पर्शादि, ii) वृध्दिकर - क्षीरादि, iii) उभय - माषादि
a) अल्परेतस - 25 वर्ष, b) क्षीणरेतस - मध्यमवय, c) शुष्करेतस - वृध्द
5) आयुर्वेद प्रयोजन: 2 - i) रोगों से व्याप्त मनुष्यों की रोगों से मुक्ति,
ii) स्वस्थ के स्वास्थ की रक्षा (सु.सू.1)
6) आयुर्वेद: आयुरस्मिन् विद्यतेऽनेन वा आयुर्विन्दतीत्यायुर्वेद:।
आयु के हिताहित का विचार जिसमें, (दिर्घ) आयु की प्राप्ति
संस्कृत 4 प्रमाण: i) प्रत्यक्ष, ii) आगम, iii) अनुमान, iv) उपमान
(3 प्रमाण...(न्यायसूत्र) वैशेषिक सांख्य: i) प्रत्यक्ष, ii) अनुमान, iii) उपमान)
(अश्विनिकुमारों ने यक्ष के कटे शिर का संधान किया।)
7) शल्यतंत्र प्रधानता: 3
i) शीघ्र क्रिया, ii) सर्वतन्त्रसामान्य iii) यन्त्र, शस्त्र, क्षार, अग्नि प्रयोग।
चरक - शल्यचिकित्सा का महत्त्व....(च. चि.13) (गुल्मरोग, उदररोग, अर्शचि.)
8) शल्यतन्त्र: i) श्वाश्वत (नित्य), ii) पुण्यदायक, iii) स्वर्गदायक,
iv) यशस्वी करनेवाला, v) आयु को हितकर, vi) जीविकोपयोगी.
9) आयुर्वेद अवतरण:
ब्रह्मा → दक्ष प्रजापति → अश्विनीकुमार → इन्द्र → धन्वन्तरि.
(वाग्भट - ब्रह्मा स्मृत्वाऽऽयुषो वेदं प्रजापतिमजिग्रहत।
सोऽश्विनौ तौ सहस्त्राक्षं सोऽत्रिपुत्रादिकान्मुनीन्।)
10) अहं हि धन्वन्तरिरादिदेवो जरारुजामृत्युहरोऽमराणाम्।
शल्याङ्गमण्डैरपपैरुपेतम् प्राप्तोऽस्मि गां भूयइहोपदेष्टुम्॥
11) अस्मिन् शास्त्रे पंचमहाभूत शरिरी समवाय: पुरुष इत्युच्यते। संदर्भ:
(पुरुष - पंचमहाभूत + शरीरि (आत्मा))
12) लोक: द्विविध, औषधि - 2, सजीव सृष्टि - 2, i) स्थावर, ii) जांगम.
प्राणिवर्ग: 4 - i) उद्भिज - उदा. इंद्रगोप ,मण्डूक आदी
ii) स्वेदज - उदा. युका, लिक्षा, इत्यादी कृमिकीटपिपीलिका,
iii) अण्डज - उदा. खग (पक्षी) सर्प, मत्स्य, सरीसृप.
iv) जरायुज - उदा. पशु, मनुष्य, आदी व्याल (हिसंक पशु)
13) तद् दु:ख संयोगा व्याधय उच्यन्ते। संदर्भ: सु.सु.1
तद दु:ख संयोगा व्याधय इति। (सु.सु.24)
14) रोगों का प्रतीकार: निग्रहहेतू i) देश ii) काल iii) वय iv) मात्रा
आदि रूप से सम्यकप्रयुक्त: i) संशोधन ii) संशमन iii) आहार
iv) आचार (विहार) से होता है।
15) स्थावर औषधि: 4 -
i) वनस्पति - अदृष्य पुष्प,पुष्प नहिं किन्तु फल आते है। उदा.वट, औदुम्बर,पीपल,
ii) वृक्ष - पुष्प और फल दोनों आते है। उदा. पुष्पफलवन्तो वृक्षा:।
iii) वीरूध - जो फैलने वाली गुल्म स्वरूप हो। उदा. त्रपुष (खीरा), अलाबु (लौकी),
iv) औषधि - फलों के पकने तक ही जीवित। उदा. यव, तिल, गोधूम, अपुष्पा: फलवन्तों, पार्थिव द्रव्य में - सुवर्ण, रजत, मणि, मुक्ता, मनशिला, मिट्टी कपाल,
16) रोगाधिष्ठान: 2 (मन, शरीर)
17) प्राणीना पुनर्मुलमाहारो बलवर्णोजसान्च। द्रव्य - को औषध कहते है।
18) दोषाणां संचय प्रकोप पशम प्रतिकार हेतू - चतुवर्ग (4)
(स्थावर, जांगम, पार्थिव, कालकृत)
19) कालकृतास्तु: प्रवात, निवात, आतप, छाया, आदि..... संवत्सर विशेष:
20) बीज चतुष्ट: पुरूष, व्याधि, औषध, क्रियाकाल.
21) सविशमध्यायशतं पंचसु स्थानेषु सुत्र निदान ...सु. सु.1/49,
(सुश्रुत संहिता 5 स्थान,120 अध्याय)

2) शिष्योपनयनीयम्

Topics: शिष्यगुण.

1) उपनयन: अध्ययन के लिये शिष्य का गुरू के समीप आना।
2) शिष्यगुण: तनुजिव्हौष्ठदन्ताग्र, ऋजुवक्त्र अक्षिनासं,प्रसन्नचित्तवाकश्चेष्टं, क्लेशसहत्वे, उन्का – उपनयन और ब्राह्मण वर्णो, क्षत्रिय, वैश्य इन में से एक ब्राह्मण – प्रशस्तायां दिशि शुचौ, दक्षिणतो ब्राह्मणं स्थापयित्वा. त्रि.परिणीयाग्निसाक्षिकं (3 बार प्रदक्षिणा, कषाय वस्त्र धारण)
3) पक्ष में 3 बार नख, श्मश्रुकेशलोम कर्तन
4) ब्राह्मण 3 वर्णो के लडको कां, क्षत्रिय दो, वैश्य केवल वैश्य का उपनयन कर सकता है। क्षुद्र भी अध्ययन कर सकते है। ...
5) i) कब अध्ययन न करें।.....(सु. सू. 2/9 -10)
ii) किसकी चिकित्सा करें और किसकी नहीं। (Also in च. वि. 3)
इस के पालन से मित्र, यश, धर्म, अर्थ, काम मिलता है।

3) अध्ययनसम्प्रदानीय:

1) संहिता वस्तु -विषय वर्णन-सु.सू.3,(च.सू.30)(अ.सं.सु.1)(अ.हृ.सु.1)
सुत्रस्थान - 46, निदान - 16, शारिर - 10, चिकित्सा - 40, कल्प - 8,
उत्तर तंत्र 66 (5 स्थान - 120) कूलअध्याय -186
सविशमध्यायशतं पंचसु स्थानेषु। सु. सु. 3/3
2) उत्तरतन्त्र निरुक्ति:
i) श्रेष्ठ होने के कारण, ii) अनेक विषय संग्रह, iii) उत्तर में होने से.
(यस्तूभयज्ञो मतिमान स समर्थोऽर्थ साधने।
त्राहवे कर्म निर्वोढुं व्दिचक्र स्पन्दनो यथा ॥)
चिकित्सा पयार्य - प्रशमन, प्रायश्चित, शांतीकर्म,
3) अष्टांग विभाजन: i) उत्तरतन्त्र (श्रेष्ठ) - शालाक्य, कौमारभृत्य, काय चिकित्सा,भूतविद्या , ii) चिकित्सास्थान - वाजीकरण, रसायन.
iii) कल्पस्थान - विष, iv) शल्य का सर्वत्र वर्णन.
4) अमृत तुल्य औषधियाँ मूर्ख वैद्य द्वारा दी जाने पर शस्त्र, शनि, विष समान घातक।

4) प्रभाषणीय:

Topics: तस्कर वैद्य आदि.

1)तस्कर वैद्य:शास्त्र को गुरुमुख से पढकर जो वैद्य कर्माभ्यास कर चिकित्सा कार्य प्रवृत्त होता है वह वैद्य है शेष तस्कर है । और सु. सू. 17/11 में वर्णन.

2) मूलतन्त्र शल्यतन्त्र: i) औपधेनवतन्त्र, ii) औरभतन्त्र, iii) सौश्रुततन्त्र, iv) पौषकलावततन्त्र.

3) विविध शास्त्रज्ञान उपयोगी ।.....(सु. सू. 4/7)
एकं शास्त्रमधीयानो न विद्याच्छास्त्रनिश्चयम् ।
(अधीतशास्त्र का अर्थत: व्याख्यान करना ।....(च. वि. 4,8))
तस्माद् बहुश्रुत: शास्त्र विजानीयाच्चिकित्सक: ।।.....4/7

4) धन्वन्तरि काशिराज शिष्य: (12) सुश्रुत सहपाठी: (11)

5) अग्रोपहरणीय:

Topics: अष्टविध शस्त्रकर्म, प्रशस्त व्रण, शल्यचिकित्सक गुण,छेदन,बंधन आदि.

1) त्रिविध कर्म: (पूर्व, प्रधान, पश्चात) कर्म,

Jimit → **2) अष्ट विध शस्त्र कर्म:**

i) छेद्य - (छेद्या भगन्दरा ग्रन्थि: श्लेष्मिकास्तिलकालका सु .सू. 25)
ii) भेद्य - (भेद्या विद्रधयोऽन्यत्र सर्वजाद ग्रन्थयस्त्रय: । सु. सू. 25)
iii) लेख्य - (लेख्याचतस्त्रो रोहिण्य:किलासमुपजिह्विका । सु. सू. 25)
iv) वेध्य - (वेध्या:सिरा बहुविधा मूत्रवृध्दिर्दकोदरम् । सु. सू. 25)
v) एष्य - (एष्या नाड्य: सशल्याश्च व्रणउन्मार्गिणश्च ये । सु. सू. 25)
vi) आहार्य - (आहार्य, शर्करास्तिस्त्रो दन्तकर्णमलोअश्मरी ।
शल्यानि मूढगर्भश्च वर्चश्च निचित गुदे ।। सु. सू. 25)
vii) विस्त्राव्य - (स्त्राव्या विद्रधय पंच भवेदु:सर्वजादृते । सु. सू. 25)
viii) सीव्य - (सीव्या मेद: समुत्थाश्च भिन्न: सुलिखिता गदा । सु. सू. 25)
(चरक - शस्त्रकर्म 6,वाग्भट 13 उत्पाटन, कूट्टन, मंथन, ग्रहण, दहन Extra)
सद्योव्रणाश्च ये चैव चलसन्धिव्यपाश्रिता: ।
* अस्मिन शास्त्रे शस्त्रकर्मप्राधान्य:

3) प्रशस्त व्रण:

व्रण गुण - 5 - आयत विशाल सम: सुविभक्त निराश्रय (धातुअनाश्रित)
आयतश्च विशालश्च सुविभक्तो निराश्रय ।
प्राप्तकालकृतश्चापि व्रण: कर्मणि शस्यते ।। .....(सु. सू. 5/9)
i) प्राङ्मुखम आतुर (पूर्व मुख) ii) प्रत्यङ्मुखो वैद्यो (पश्चिम)
iii) शस्त्र अनुलोम दिशा.
iv) महत्स्वपि च पाकेषु द्व्यंगुलान्तरं त्र्यंगुलान्तरंवा शस्त्रादि ।... सु. सू.
(पाक स्थान महत (महान) होने पर (2 - 3) अंगुलि पर व्रण करें ।)

4) शल्यचिकित्सक गुण: 6 * शौर्यमाशुक्रिया शस्त्रतैक्ष्ण्यम् अस्वेदवेपथु ।
असम्मोहश्च वैद्यस्य शस्त्रकर्मणि शस्यते ।।....(सु. सू. 5/10)
यतो यतो गति विद्यात उत्संगो यत्र यत्र च । व्रणं कुर्याद..... ।। (5/12)

5) छेद: तिर्यक छेद:
सुश्रुत - भ्रू गण्ड शंख ललाट अक्षिकुट ओष्ठ दन्तवेष्ट कक्षा कुक्षि वंक्षणेषु ।
(वाग्भट: ललाट,भ्रू,दन्तवेष्ट,जत्रु,कुक्षि,कक्षा,अक्षिकूट,ओष्ठ, कपोल, गल, वंक्षण ।)
चन्द्रमण्डल छेदन: हस्त, पाद, अर्धचन्द्राकार: गुद,मेढ्र

6) उपरोक्त छेदन न करने से: i) सिरास्नायु छेदन, ii) अतिमात्रं वेदना, iii) चिराद् व्रणसंरोहो, iv) मांसकंदप्रादुर्भाव.

7) खाली पेट शस्त्रकर्म करने योग्य व्याधी: 6 (सु. सू. 5)
मूढगर्भोदरार्शोश्मरी भगन्दर मुख रोग
वाग्भट - मूढगर्भ, अश्मरी, मुखरोग, उदररोग
व्रणकर्म -कषाय से प्रक्षालन: तिलकल्कमधुसर्पि:प्रगाढ औषध नातिस्निग्ध नातिरूक्ष.

8) व्रणधूपन द्रव्य: गुग्गुल, अगरु, सर्जरस, वच, गौरसर्षप, चूर्णआदि ।
निम्बपत्र, आज्य (घृत) से लेप.

9) बन्धन: 3 रे दिन व्रणबन्धन खोलकर पट्टी बन्धन ।
ग्रीष्म, वर्षा,शरद-व्दितीय दिन पट्टी बदलना,हेमन्त, शिशिर, वसन्त-तृतीय दिन
(वाग्भट के - वात के चयप्रकोपप्रशम ऋतु में 2 रे दिन के बाद पट्ट बंधन खोलना)
(वाग्भट - 3 रे दिन पट्टी बदलना।)
उपद्रव: i) विग्रथित, ii) चिराद्उपसंरोहीत, iii) तीव्ररूजा.

10) व्रणित के लिए वर्ज: सुश्रुत - अजीर्ण, व्यायाम, व्यवाय, हर्ष,क्रोध,भय।
वाग्भट - दिवास्वाप करने से कण्डू, रूजा, राग, शोष, पूयकृत है।

11) आपातकालीन चिकित्सा:
अतिरक्तस्त्राव में प्रथम प्रतिक्रिया अतिपातेषुरोगेषु नेच्छेद्विधिमिमं भिषक् ।
प्रदीप्तागारवच्छीघ्रं तत्र कुर्यात प्रतिक्रियाम् ।।...(सु. सू. 5 / 41)

12) व्रण से उत्पन्न तीव्र वेदना में यष्टिमधुकसिध्द - घृत का उपयोग।

Jimit (13) (निम्न से) - (रक्षण):
अग्नि - जिव्हा, वायु - प्राण, सोम - व्यान, पर्जन्य - अपान,
विद्युत - उदान, पान्तु (मेघ) - समान, बलपति इन्द्र - बल की,
मनु - मन्या तथा बूध्दी, इंद्र -सत्व की, सूर्य - चक्षु, दिशा - श्रोतो,
आकाश - शरीर छिद्र, चंद्र - मन, नक्षत्र - रूप , जल - वीर्य, औषध - रोमपत्ती
पृथ्वी - देह, विष्णु - पराक्रम, ब्रह्मा - आत्मा / पुरुष

(6) ऋतुचर्या

1) काल: भगवान, स्वयंभू, अनादि (वात - भगवान...चरक)
कारण: रसव्यापत्, सम्पत्ति, जीवितमरण काल के अधीन है ।

2) काल निर्धारण: स सूक्ष्ममपि कलां न लीयत इति काल: ।
(काल भेद - 11 (सुश्रुत), 12 (वाग्भट).....(अ. सं. सू. 4),
लघ्वक्षरोच्चारणो - निमेष- अकारादि एक उच्चारण में लगा समय (19/60 sec)
काष्ठा -15 निमेष,कला - 30 काष्ठा, मुहूर्त - 20 कला एवं, 3 काष्ठा
(1 मुहूर्त - 20.1 कला:/20 कला - 3 काष्ठा), अहोरात्र - 30 मुहूर्त, पक्ष - 15
अहोरात्र, मास - 2 पक्ष, (2 पक्ष - शुक्ल और कृष्ण), ऋतु - 2 मास
अयन - 3 ऋतु, सवंत्सर - 2 अयन, युग - 5 सवंत्सर
* निमेष युग - कालचक्र, (आषाढ श्रावणौ प्रावृटिति ।)

3) उत्तरायण (आदानकाले):
शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म - कटु, तिक्त, कषाय रसोत्पत्ति बल की हानी.

4) दक्षिणायन (विसर्ग):
वर्षा, शरद, हेमन्त - मधुर,अम्ल, लवण. रसोत्पत्ति बल की उत्पत्ति.
(प्रावृट्शरदवसंत च प्रकुपितानां निर्हरणं ।)
सुश्रुत - शिशिर वसन्त ग्रीष्म वर्षा शरद हेमन्त. (रसोत्पत्ती नुसार)
पर्याय: शिशिर - हीम, वर्षा - मेघ, वसन्त - कुसुम, शरद - घनात्य,
मेघांते ग्रीष्म - निदाघ, हेमन्त - तुषार.

5) प्राणियों के बल एवं रसोत्पत्ति के आधार पर ऋतु - विभाग

मास	ऋतू	मास
माघ - फाल्गुन	- शिशिर	*तप - तपस्य
चैत्र - वैशाख	- वसंत	मधु - माधव
ज्येष्ठ - आषाढ	- ग्रीष्म	शुचि - शुक्र
श्रावण - भाद्रपद	- वर्षा	नभ - नभस्य
आश्विन - कार्तिक	- शरद	इष - ऊर्ज
मार्गशिष - पौष	- हेंमत	सह:- सहस्य

6) दोषों के संचय प्रकोपादि के आधार पर:
प्रावृट् वर्षा के पहले Delete शिशिर.

मास		ऋतू
पौष - माघ	-	हेमन्त
फाल्गुन - चैत्र	-	वसन्त
वैशाख - जेष्ठ	-	ग्रीष्म
आषाढ - श्रावण	-	प्रावृट्
भाद्रपद - आश्विन	-	वर्षा
कार्तिक - मार्गशीर्ष	-	शरद

7) ऋतु में औषध द्रव्य: i) वर्षा - तरूण,अल्पवीर्य
ii) शरद ऋतु में औषधियाँ अल्पवीर्यवान होती है।,
iii) ग्रीष्म में — सारहीन + रूक्ष: अतिलघु,
iv) अन्य — (परिणतवीर्य) परिपक्व + बलवती,
v) वसन्त — श्लैष्मिकान् व्याधींजनयति.
vi) प्रावृट — वातिकान् व्याधिंजनयति:
8) दिन एवं ऋतु तुलना: प्रात: काल (पूर्वान्हे) - वसन्त (दिन की शुरूआत.)
मध्यान्ह (मध्यान्हे) - ग्रीष्म, अपरान्हे - प्रावृट् , पूर्वरात्री (प्रदोषे) -वर्षा
(प्रदोषे वार्षिक), अर्धरात्री - शरद, प्रत्युष - हेमन्त - सूर्योदय के पूर्व ब्राह्ममुहूर्त,
* संचय, प्रकोप, प्रशम: सुश्रुत same as वाग्भट. सिर्फ वर्षा की जगह प्रावृट्.
9) दोषों का शास्त्रोक्त उपायों व्दारा निर्हरण:
हेमन्त, ग्रीष्म - संचित दोष.
वसन्त, प्रावृट् - प्रकुपित दोष.
10) दोषों का स्वभावत: शमन: पित्तजन्य रोग का शमन - हेमन्त,
कफजन्य रोग का शमन - ग्रीष्म, वातजन्य रोग का शमन - शरद
10) अव्यापन्न (अविकृत, शुध्द) ऋतुओं में औषधियाँ:
i) प्राणशक्ति, ii) आयु, iii) बल, iv) वीर्य, v) ओज के वर्धक।
11) अदृष्ट (अधर्म) से ऋतुओ की विकृति:
ऋतुओं की व्यापत् - अदृष्ट (अधर्म से) व्यापन्य औषधी सेवन विविधरोग→ मरक
12) शरदे वसन्ते श्लेष्मणां पित्तं शरदि निहरेत।
वर्षासु शमयेद् वायुं प्राग् विकारसमुच्छ्रयात् ।।.....(सु. सू. 6/40)
13) हेमन्त ऋतु - उत्तर दिशा (की शीत वायु): सूर्य तुषार (बर्फ) से आवृत्त.
शिशिर ऋतु - शीतमधिक वातवृष्ट्याकुला: दिश, शेष लक्षण हेमन्तवत्।
वसन्त: दक्षिणो, मलयाचल से आती वायु कामीजनों में आनन्द:
दिशाय विमल: कोकिला के स्वर से मनोहर ध्वनि युक्त।
ग्रीष्म: पूर्वदिशा की वायु: चक्रपक्षी जल की खोज में: वृक्ष पत्र रहित.
प्रावृट: पश्चिम दिशा की वायु: विद्युत एवं गर्जना.
वर्षा: नदियाँ जल से परिपूर्ण: अतिगर्जना रहित बादलों का बरसना.
शरद: सूर्य उष्ण कपिल एवं पिंगलवर्ण युक्त.
14) दोष प्रकोप में 3 कारण: i) मात्रा अधिक ii) विपरीत होने से iii) विषम
(वातपित्त संसर्ग - ग्रीष्मवत उपचारेत, वातकफ संसर्ग - वसन्तवत उपचारेत
कफपित्त संसर्ग - शरदवत उपचारेत. वाग्भट)

7) यन्त्रविधि

Topics: यन्त्र परिभाषा, भेद, कर्म, गुण, दोष, एवं उपयंत्र आदि।
1) यन्त्र: तत्र मन: शरीराबाधकराणी शल्यानि, तेषामाहरणोपायो
यन्त्राणि।...(सु. सू. 7/4), सर्वशरीर बाधाकर शल्ये।....(सु. सू. 26)
2) यन्त्र संख्या: सुश्रुत: 101 (हस्तमेव प्रधानतमं.....सू. 7/3)
(कफमुख प्रधान) (वाग्भट - असंख्य) (108)
3) यन्त्र प्रकार: 6 ....(आकृतिभेद से.)

यन्त्र	संख्या	लंबाई (अंगुल में)	(अंष्टाग हृदय)
i) स्वस्तिक यंत्र	24	18	24
ii) सन्दंश	2	16	4
iii) ताल	2	12	02
iv) नाडी	20	यथावश्यक	24
v) शलाका	28	यथावश्यक	35
vi) उपयंत्र -	25	यथावश्यक	19

4) नानी प्रायश लोहाणी भवती:तत्र,नाना प्रकाराणां: व्यालानां, मृग, पक्षिणां,
मुखैर्मुखानि यन्त्राणा प्रायश: सदृशानि ।.....(सु. सू. 7/8)
5) उत्तम यंत्र: (यंत्रगुण: 6) समहितानि यन्त्राणि खरश्लक्ष्ण मुखानि च।
सुदृढानि सुरूपाणि सुग्रहाणि च कारयेत् ।।.....(सु.सू.7/9)

6) स्वस्तिक यंत्र: 18 अंगुल
कर्म - अस्थिविदष्ट शल्योध्दरणार्थमुपदिश्यन्ते। (अस्थिगत शल्य निर्हरण।)
i) (9 पशु) और (15 पक्षी) मुखी, ii) मसुराकृतिभि कीलै: मुलेअंकुशवद
7) सन्दश यंत्र: 16 अंगुल Types - 2 (सन्निग्रह, अनिग्रह)
कर्म - त्वक्मांससिरास्नायुगत शल्योध्दरणार्थमुपदिश्येते।
(वाग्भट - Above 2 के अतिरिक्त (3rd) 6 अंगुल का सन्दंश।
(4th) मुचुण्डीसन्दंश - उपयोग सुक्ष्मशल्य, पक्ष्मनिर्हरण.)
8) तालयंत्र: 12 अंगुल. (एकताल, द्विताल - Types): मत्स्यतालु सदृश्य.
कर्म - कर्णनासानाडी शल्यानामाहरणार्थम्।
9) नाडीयंत्र: अनेकप्रकार, अनेकप्रयोजन, एक या उभयमुख
* मुलनाडी यंत्र: 12, कर्म - स्त्रोतोगतशल्योध्दरणार्थ, रोगदर्शनार्थ, आचूषणार्थ,
क्रियासौकर्यार्थ।, मोटाई स्त्रोतोव्दार समान। लम्बाई योगदीर्घ (आवश्यकतानुसार)
(डल्हण - 20 - भगन्दरयंत्र: 2 (एकछिद्र, द्विछिद्र)
अर्शोयंत्र - 2 (एकछिद्र, द्विछिद्र), बस्तियंत्र - 4 (6,8,10,12) अंगुल लम्बे)
धूमयंत्र - 3 (वैरेचनिक, स्नैहिक, प्रायोगिक), कूल - 20 नाडीयंत्र माने है।
* हारणचंद्र - अर्शोयंत्र - 2 (स्त्री, पुरूष), बस्तियंत्र - 4
उत्तरबस्ति - 5 (स्त्रियों के 2, पुरूषों के 2, कन्या - 1)
धूमयंत्र - 5 (वैरेचनिक, प्रायोगिक, स्नेहीक, कासघ्न, व्रणधूपनार्थ))
(वाग्भट - सुश्रुतोक्त मुल के 12, टिकाकारों के 20 यंत्र के सिवाय
4 नाडीयंत्र extra :i) कण्ठशल्यावलोकिनी नाडी,
(10 अंगुल लंबाई, 5 अंगुल मोठाई) ii) अंगुली त्राणक,
iii) योनिव्रणेक्षणयंत्र -16 अंगुल लंबाई iv) घटी यंत्र)
मुलनाडीयंत्र:12 i) भगन्दर,ii) अर्श,iii) व्रण,iv) बस्ति,v)उत्तरबस्ति, vi) मूत्रवृध्दि,
vii) दकोदर, viii) धूम, ix)निरूध्दप्रकश,x) सन्निरूध्दगुदयंत्र xi)अलाबू,xii) श्रृंग.
नाडी यंत्र - अनेकप्रकाराणि, अनेकप्रयोजनानि,एकतोमुखानि, उभयतोमुखानि
10) शलाका यंत्र: नानाप्रकाराणि, नानाप्रयोजनानि.

नाम	संख्या	कर्म	आकार
i) गण्डूपदमुखी	2	एषण	केंचुए मुख सदृश
ii) सर्पफणमुखी	2	व्यूहन	सर्प मुख समान अग्रभाग
iii) शरपुंखमुखी	2	चालन	बाण के मुल के समान
iv) बडिशमुख	2	आहरण	Hook Like.
v) मसुरदलमात्रमुखी द्वे	2	स्त्रोतोगतशल्यनिर्हरण	अग्रभाग (मसूरदाल) सदृश
vi)षट्कार्पासिकृतोष्णीमुखी	6	प्रमार्जन	अग्रभाग में रूई होती है.
vii) दर्व्याकृतिखल्लमुखी	3	क्षारौषध प्रणिधान	कडछी समान अग्रभाग.
viii) जाम्बववदन	3	अग्निकर्म	जामुन समान अग्रभाग
ix) अंकुशवदन	3	अग्निकर्म	अंकुश सदृश अग्रभाग
x) कोलास्थिदलमात्रमुख	1	नासार्बुदहरण	तीक्ष्ण ओष्ठ युक्त
xi) अंजनशलाका	1	अंजन	कलायपरिमंडल बीच से मोटी एंव मुकुलाग्र
xii) मूत्रमार्गविशोधनी	1	मूत्रमार्गविशोधन	परिमण्डल या गोल एवं मालती पुष्पवृन्ताग्र

xi) अंजनार्थमेकं कलायपरिमण्डलमुभयतो मुकुलाग्र।
xii) मूत्रमार्गविशोधनार्थमेकं मालतीपुष्पवृन्ताग्र प्रमाण परिमण्डलमिती।
(वाग्भट - 7 शलाकाएं अधिक.
i) गर्भशंकु - मूढगर्भनिर्हरणार्थ (8 अंगुल), ii) सर्पफणमुखी - अश्मरी हरण
iii) कर्णशोधनयंत्र - अश्वशापत्र के अग्रभाग सदृश नुकीला;स्त्रुव (चमची)सदृश मुख
iv)शरपुंखमुखयंत्र - दन्तपातनयंत्र (4 अंगुल),v) अर्धेन्दुमुखीशलाका - आन्त्रवृध्दि,
vi) पायू यंत्र (2) vii) घ्राण एवं कर्ण यंत्र (2-2))
11) उपयंत्र: 25 - i) रज्जु, ii) वेणिका, iii) पट्ट, iv) चर्म, v) अन्तर्वल्कल,
vi) लता, vii) वस्त्र,viii) अष्ठिला आकार का, ix) अश्म, x) मुद्गर,xi) पाणिपादतल,

xii) अंगुली, xiii) जिव्हा, xiv) दन्त, xv) नख, xvi) मुख, xvii) बाल, xviii) अश्वकटक, xix) शाखा, xx) ष्ठीवन, xxi) प्रवाहण, xxii) हर्ष, xxiii) अयस्कान्त xxiv) क्षार, अग्नि, xxv) भेषज.

(वाग्भट- 4 उपयंत्र अलग वर्णन:(उपयंत्र को अनुयंत्र कहा है।) संख्या -19)

i) आन्त्र - Catgut, ii) काल - रक्तगुल्म की चिकित्सा 10 मास पश्चात.

iii) पाक - पाक के साथ शल्य का बाहर निकलना,

iv) भय - भय / त्रासन मानसिक उपचार है।

12) यंत्र, उपयंत्र का प्रयोग संधि, कोष्ठ, धमनि में यथायोग्य।

13) यंत्रकर्म: 24 (वाग्भट – 15: वृध्दवाग्भट – 24)

निर्घातन, पूरण.....आहरण.....एषण, प्रमार्जन आदि।

14) यंत्रदोष: 12 - i) अतिस्थुल (मोटा), ii) असार (अशुध्द लौह), iii) अतिदीर्घ, iv) अतिह्रस्व, v) अग्राहि (पकडरहित), vi) विषमग्राहि, vii) वक्र, viii) शिथिल (ढिला), ix) अत्युन्नत (कील आदि का उठा होना), x) मृदुकील (कील ढिली होना), xi) मृदुमुख (मुख मुलायमी:शल्यादि का पीडन), xii) मृदुपाश (यन्त्र के बन्धन का ढीला होना.)

(अष्टांग संग्रह: 8 दोष - i) दीर्घ, ii) ह्रस्व, iii) स्थूल, iv) तनु, v) वक्र, vi) विषम, vii) अग्राहि, viii) शिथिल.)

असंख्येयविकल्पत्वाच्छल्पानामिति निश्चय:।.....(सु.सू.7/19)

15) प्रशस्त यंत्र: i) 12 दोषों से रहित। ii)18 अंगुल लम्बा also 6 अंगुल

16) (दृश्य सिंहमुखाद्यैस्तु) (गूढं कंकमुखादिभि:।) जो शल्य बाहर से दिखाई देता हो उसे सिंहमुखादियंत्र से। गूढ (छिपे हुए) को कंकमुखादियंत्र से निकाले।,

17) यंत्रेष्वत कंकमुख प्रधानं...(7/23)

* कंकमुखयंत्र को सब यंत्रो में प्रधान - i) ठीक तरह से व्रण में प्रविष्ट, ii)उत्तम रूप से व्रण में उसका अवगाहन(शल्य पकडने के लिए इधर-उधर घुमाना)

	यंत्र	अं.स.	अ.हृ.	शस्त्र
1) गुण	6			6
2) दोष	12	8		8
3) कर्म	24	24	15	8
4) संख्या	101			20

8) शस्त्रावचारणीय

Topics : शस्त्र, अनुशस्त्रों का वर्णन।

1) शस्त्र संख्या: सुश्रुत - 20, (वाग्भट - 20 + 6: i) सर्पास्य, ii) लिंगनाश वेधनी शलाका, iii) कूर्च, iv) खज, v) कर्तरी, vi) कर्णवेधनशस्त्र.)

नाम	संख्या	कर्म
i) मण्डलाग्र	2	छेदन,लेखन
ii) करपत्र	1	छेदन, लेखन
iii) वृध्दिपत्र	2	छेदन, भेदन
iv) नखशस्त्र	1	छेदन, भेदन
v) मुद्रिका	1	छेदन, भेदन
vi) उत्पलपत्र	1	छेदन, भेदन
vii) अर्धधार	1	छेदन, भेदन
viii) सूची	3	विस्त्रावण, सीवन, वेधन
ix) कुशपत्र	1	विस्त्रावण
x) आटीमुख	1	विस्त्रावण
xi) शरारीमुख	1	विस्त्रावण, रोमापहरण
xii) अर्न्तमुख	1	विस्त्रावण
xiii) त्रिकूर्चक	1	विस्त्रावण, लेखन
xiv) कुठारिका	1	वेधन (अस्थिप्रदेश)
xv ब्रीहिमुख	1	वेधन (मांसप्रदेश)
xvi) आरा	1	वेधन (कठिन कर्णपाली)
xvii) वेतसपत्र	1	वेधन
xviii) बडिश	1	आहरण
xix) दन्तशंकु	1	आहरण
xx) एषणी	3	एषण

2) शस्त्रग्रहण विधि:

i) वृध्दिपत्र भेदक शस्त्र - फल एवं वृन्त के साधारणभाग पर ग्रहण.

ii) लेखनकर्मार्थ वृध्दिपत्र - मण्डलाग्र - किंचित उत्तानेन पाणिना.

iii) विस्त्रावणार्थ - वृन्ताग्र ग्रहण (वृन्ताग्रे विस्त्रावणानि)

iv) बाल वृध्द सुकुमार भीरू नारी राजादि का विस्त्रावण - त्रिकुर्च शस्त्र से.

v) ब्रीहिमुख - तलप्रच्छादितवृन्तम् अंगुष्ठ प्रदेशिनीभ्या.(ब्रीहिमुख शस्त्र के वृन्त भाग को हस्ततल में ढक कर अंगुष्ठ + प्रदेशिनी से उसे पकडना),

vi) कुठारिका - वाम हस्त से ग्रहण, दक्षिण हस्त की मध्यमा से अंगुष्ठ का सहारा लेकर उसके शिर पर ठोकना, vii) आरा, करपत्र, एषणी - मूल से ग्रहण.

3) शस्त्रप्रमाण: i) मुद्रिका - प्रदेशिनी अग्र पर्व प्रमाण,

ii) नखशस्त्र, एषणी - अष्टांगुले (8 अंगुल) + डल्हण - आरा

iii) शरारीमुख / कर्त्तरी दशांगुल (10) iv) अन्य शस्त्र - षडांगुल (6).

4) शस्त्रसम्पत्: गुण - 6 - i) सुग्रहाणि, ii) सुलोहानि, iii) सुधाराणि, iv) सुरूपाणि, v) सुसमहितमुखाग्राणि, v) अकरालानि.

(यन्त्रशस्त्र समान ग्रह रूप होकर ह्रस्व, दिर्घ, स्थुल व वक्र दोषसे युक्त होते है।)

Common: यन्त्रशस्त्रकर्म - एषण, आहरण.

5) शस्त्रदोष: 8 - i) वक्र (टेढे), ii) कुंठ (धार में कुण्ठित), iii) खण्ड (2 खण्डित होना), iv) खरधार (खुरदरे), v) अतिस्थूल, vi) अतितुच्छ (पतले) अतिअल्प, vii) अतिदीर्घ (लम्बे), viii) अतिह्रस्व. - करपत्र अस्थिछेदन में प्रयुक्त होने के कारण (खरधार) होता है।

6) शस्त्रधारा: भेदनानां मासूरी, लेखनानामर्ध्दमासूरी, व्यधनानां विस्त्रावणानां कैशिकी, छेदनानाम अर्धकैशिकीति।

7) बडिश दंतशंकुश्चानताग्रे - बडिश दंतशंकु दोनो शस्त्र अग्रभाग पर मुडे हुए

एषणी 3: i) तीक्ष्णकण्टक (तीक्ष्ण कांटे के समान मुखवाली),

ii) प्रथमयवपत्रमुखी (यव के नवीन उत्पन्न पत्र के समान मुखवाली)

iii) गण्डूपदाकारमुखी (केंचुए के समान आकार तथा मुखवाली)

(हाराणचन्द्रजी) - i) बडिश - तीक्ष्णकण्टक, ii) दंतशंकु - प्रथमयव पत्रमुखी

iii) एषणी - गण्डूपदाकारमुखी.

8) शस्त्रपायना: 3 प्रकार -

i) क्षारपायना - शर (बाण) के शल्य को निकालने तथा अस्थिछेदन में प्रयुक्त

ii) उदक - मांस छेदन, भेदन, पाटन, iii) तैल - सिराव्यध, स्नायुच्छेदन.

9) शस्त्र निशातिनी: निशानार्थं श्लक्ष्णशिला माषवर्णा

(शस्त्र धार तेजं करने के लिए उडद के रंग की (काली) खुरदरी शिला.)

धारा संस्थापनार्थ - शाल्मलीफलक मिती।

(शस्त्र धारा को स्थिर रखने के लिये सेमल के वृक्ष का फलक उपयोग.)

* धारा Should be - रोमच्छेदी, सुसंस्थित.

(वाग्भट ने शस्त्रों को सुरक्षित रखने के लिये एक शस्त्रकोष का वर्णन किया है।

शस्त्रकोष 12 x 9 अंगुल)

10) अनुशस्त्र: 14 - (वाग्भट 12) i) त्वक्सार, स्फटिक, काच, कुरूविन्द जोंक, अग्नि, क्षार - (शिशुनां शस्त्रभीरूणां शस्त्राभावे (छेदन एवं भेदन)

ii) नख - आहरण, छेदन, भेदन.

iii) गोजी, शेफालिका, शाकपत्र - मुख एवं नेत्रवर्त्म में विस्त्रावण के लिये

iv) करीर, बाल, अंगुली - एषण

(अ. सं. - 3 अतिरिक्त अनुशस्त्र।

i) सूर्यकान्त - त्वग्दाह के लिये, ii) समुद्रफेन – लेखनकर्म, iii) शुष्कगोमय

* शुध्द, शैक्यायस (फौलाद / Steel), से कारण प्राप्त(उपकरण बनाने में

कर्मकोविद (लौहकार शास्त्र के पण्डित) एसे कर्मार (लौहार) से शस्त्र बनाया

प्रयोगज्ञस्य वैद्यस्य सिध्दिर्भवति नित्यश:।

तस्मात् परिचय कुर्याच्छस्त्राणां ग्रहणो सदा॥...(8/20)

Common: अनुशस्त्र, उपयंत्र–(नख, क्षार, बाल, अग्नि, अंगुलि)

9) योग्यासूत्रीयमध्याय

1) अधिगत सर्वशास्त्रार्थमपि शिष्यं योग्यां कारयेत ।

2) सुबहुश्रुतोऽप्यकृतयोग्यः कर्मस्वयोग्यो भवति ।।....(9 / 3)

3) योग्या के उदाहरण:

i) छेदन (उत्कर्तन / परिकर्तन भी) - पुष्पफल (कोहडा), अलाबू,(लौकी), कालिन्दक, त्रपुस (खीरा), एर्वारू (ककडी), कर्कारूक,

ii) पीडन - दृति (मशक), बस्ति, प्रसेवक, (भाण्ड) को जल / पंक (कीचड) से भरकर।

iii) लेखन - सरोम चर्म के उपर, iv) वेधन - मृत पशु की सिरा, उत्पलनाल

v) एषण - शुष्क अलाबु के मुखों में; घुण लगी काष्ठ, कमलनाल (वेणुनाल)

vi) आहरण - पनस, बिम्बीफल, बिल्वफलमज्जा, मृतपशुदन्त.

vii) विस्रावण - मधुच्छिष्ट (मोम) आलेपित, शाल्मली फलक.

viii) सीवन - वस्त्र के प्रान्त भाग एवं मृदुचर्म

ix) बन्धन - वस्त्र अथवा मृत्तिका से बनाये गये पुतलों के ऊपर

x) क्षाराग्निकर्म - मृदुमांसखण्ड,

xi) कर्णसन्धि बन्धन - मृदुमांस, उत्पलनाल, मांसपेशी

xii) बस्ति - जल से भरे घडे के पार्श्वछिद्र में ।

xiii) पीडन - उदकपूर्व घट पार्श्व स्त्रोतस्य अलाबुमुखादिषुच, नेत्रप्रणिधान बस्ति, व्रणबस्ति का अभ्यास करे ।

Common: अलाब - छेदन, एषण, पीडन

उत्पलनाल - क्षाराग्निकर्म, वेधन. कमलनाल - एषण.

10) विशिखानुप्रवेशनीय

Topics: वैद्यगुण, षडविध परिक्षा

1) विशाखा हेतु वैद्य के गुण:अधिगततन्त्र - गुरूमुख से शास्त्र का अनुशीलन, उपासि तन्त्रार्थ - गुरूमुखसे तन्त्रार्थ को जानना, दृष्टकर्मणा - कर्मों को देखना, कृत योग्या - योग्या को करना, शास्त्रार्थ निगदता - शास्त्र में प्रवीणता, राजानुज्ञा - Registration, शुचि शुक्लवस्त्रपरिहितेन - शुध्द श्वेतवस्त्रधारण. ऊर्ध्वता, दण्डहस्तेन - छाता, दण्ड धारण, सुमनसा एवं सुसहायवता - मन के भाव उच्च रखकर, मंगलकारी शब्द बोलते हूए उत्तम सहाय्यक (भृत्य) के साथ।

2) षड्विध रोगी परिक्षा: षड्विधो हि रोगाणा विज्ञानोपायः।

तद्यथा - पंच्यभिः श्रोत्रादिभिः प्रश्नेन चेति ।।.....(सु. सू.10/4)

दर्शनस्पर्शनप्रश्नैः परीक्षेत च रोगिणम् ।....(अ. हृ. सू.1/22)

(चरक - त्रिविध, चतुर्विध, दशविध.

सुश्रुत - षड्विध. (श्रेष्ठ) वाग्भट - त्रिविध, यो.र. - अष्टविध.)

श्रवणेंद्रिय व्दारा परिक्षा -शब्द परिक्षा (तत्र सफेन रक्तभीरयन्नलिः सशब्दो निर्गच्छति),

स्पर्शनेंद्रिय - शीतोष्णश्लक्ष्णकर्कशमृदुकठीन आदि की ज्वरशोफादि में परिक्षा।

चक्षुरिंद्रिय - शरीरोपचय, अपचय, आयु लक्षण, बलवर्ण विकार।

रसनेंद्रिय - प्रमेहादिषु रसविशेषा।,

(चरक - यह ज्ञान मक्षिका, पिपीलिका, युका, काक, व्दारा करना लिखा है।)

घ्राणेंद्रिय - अरिष्टलिंग, व्रणगन्ध।

प्रश्नपरिक्षा - देश, काल, जाति, सात्म्य, आतंक समुत्पत्ति, वेदना समुच्छ्राये, बलन्तराग्नि, वातमूत्र पुरूष प्रवृत्ति अप्रवृत्ति, कालप्रकर्ष।

Common - बल - चक्षु और प्रश्न में.

असाध्यान नोपक्रमेत् परिसंवत्सरोत्थितांश्च विकारान प्रायशो वर्जयेत ।सु.सू.10/7

अपवाद - रक्तगुल्म रोग पुराना होने के पश्चात उसकी चिकित्सा करनी चाहिए।

मिथ्यादृष्ट विकारा ही दुराख्यातास्तथैव च।

तथा दुष्परिमृष्टाश्च मोहित कर्तव्याकर्तव्य ज्ञानशून्य युचिकित्सकम् ।...(10/6)

3) निम्न व्यक्तियों में साध्य व्याधियाँ भी दुच्चिकित्स्यतम होती है।

श्रोत्रिय (वेदपाठी),दुर्बल, नृपति (राजा),वैद्यविवन्ध,स्त्री व्याधिगोपक (व्याधी छुपानेवाले), बाल, दरिद्र, वृध्द, कृपण, भीरू, क्रोधी, राजसेवक, अनात्मवान, कितव (धूर्त), अनाथ.

4) वैद्य के लिए नीतिवचनः स्त्रीभिः सहास्य संवास परिहास च वर्जयेत्।

दत्तं च ताभ्यो नादेयमन्नदन्याद्भिषग्वरैः ।।....(सु. सू.10/10)

(वैद्य स्त्री के साथ न तो बैठे, न तो रहे, न ही परिहास (मजाक) करे, अन्न के अतिरिक्त कोई वस्तु स्वीकार न करे।)

(* त्रिविध खलु रोगविशेषविज्ञान भवति, तद्यथा; आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान.

* आप्तोपदेश में निदानपंचक का समावेश ।

* गूढलिंग व्याधि की परिक्षा उपशय तथा अनुपशय से।)

11) क्षारपाकविध्यध्याय.

Topics: i) क्षार परिभाषा, ii) क्षार श्रेष्ठता, iii) क्षार भेद, iv) क्षार निर्माण-विधि, v) क्षार विषय, vi) क्षार गुण एवं दोष, vii) क्षार प्रयोग विधी

1) क्षार परिभाषा: i) तत्र क्षरणात् क्षणनाद्वा क्षारः।.....(सु. सू.11/4)

(क्षरण एवं क्षणन करने के कारण इसे क्षार।) - (काटने, हिंसन)

ii) भित्त्वा भित्त्वाऽऽशयान् क्षारः क्षरत्वात् क्षारयत्यधः।

क्षर - स्यन्दने, क्षण हिंसायं वा ततः क्षारः।। .....(च.)

क्षार - त्रिदोषघ्न, शुक्लत्वात, सौम्य दहनपचन दारणादिशक्ति।

रस - कटु, गुण - तिक्ष्ण; पाचन, विलयन, शोधन, रोपण, शोषण.

वीर्य - उष्ण, कर्म - स्तम्भन, लेखन, कृमि, आम, कफ, कुष्ठ, विष, मेद,

2) क्षार श्रेष्ठता: 3 कारण

a) i) छेद्यभेद्यलेख्यकरणात्, ii) त्रिदोषघ्न (As made from नानौषध)

iii) विशेषक्रियावचारण - सौम्य होने पर भी दहन, पाचन, दारण।

व्रणशोधन, रोपण, व्रणक्लेदशोषण। - अतिमात्रा में सेवन से पुंस्त्वनाशक।

शस्त्रानुशस्त्रों में प्रधानतम-क्षार(सुश्रुत,वाग्भट),जलौका अनुशस्त्र में श्रेष्ठ(च.)

b) सभी शस्त्रों, अनुशस्त्रों में क्षार श्रेष्ठ। छेद्यभेद्य कर्म,

विषमस्थान में भी प्रयोज्य, (पान के लिये भी प्रयुक्त.... वाग्भट)

c) पुंसत्वघ्न में श्रेष्ठ.....चरक

3) क्षार भेद: 2 a) i) प्रतिसारणीय ii) पानीय (निर्माण विधि विस्तृत रूप से गुल्माध्याय में).(सुश्रुत),b) i) बाह्यपरिमार्जन ii) अन्तः परिमार्जन..(अ.सं.)

* प्रतिसारणीयक्षार - (सप्त मुखरोगः उपजिव्हा, अधिजिव्हा, उपकुश, दन्तवैदर्भ, 3 रोहिणी, गुल्म, उदर, शर्करा, अश्मरी.

* पानीयक्षार निषेधः i) रक्तपित्त ii) ज्वरित, iii) पित्तप्रकृति iv) बालक v) वृध्द vi) दुर्बल vii) भ्रम viii) मद ix) मूर्च्छा x) तिमिर रोग (पित्त सौकुमार्य दुर्बल),

4) प्रतिसारणीय क्षार निर्माण विधि: 3 (मृदु, मध्य, तीक्ष्ण)

i) शरद ऋतु में (मुष्कक पंचांग) को छाया में सुखाकर सुधाशर्करा के साथ तिलनाल से जलाए । (मध्यमवय महान्तम् असित मुष्कक)

ii) भस्मशर्करा एवं राख को अलग करें।

iii) राख को 6 गुना (जल) में 21 बार छान लें। iv) छाने हुये द्रव्य को पकायें।

v) जब द्रव्य अच्छ,रक्त,तीक्ष्ण,पिच्छिल हो जाये तो छान लें। vi) यह मृदु क्षार है।

(4 भेद कोशातकी – (बडे फल, छोटे फल, पीले पुष्प, श्वेत पुष्प))

क्षार भेद: 3 (वीर्य भेद से) a) मृदुक्षार (संव्यूहिम) – उपरोक्त

b) मध्यक्षार - कटशर्करा, भस्मशर्करा, क्षीरपाक & शंखनाभि को मृदुक्षार के साथ पकाकर तैयार। व्दिद्रोण (8 पल का प्रतिवाप)

c) तीक्ष्ण (पाक्य) - दन्ती, द्रवन्ती, चित्रक, लांगली, पूतिकप्रवाल, तालपत्री, विड, (हुलहुल, स्वर्जिक्षार) सुवर्चिका, स्वर्णक्षीरी, हिंगु, वचा, अतिविषा, से। (दन्तिद्रवन्ति (शुक्ति) प्रमाण में)

मृदुक्षार - एष एवअप्रतीवापः पक्वः संव्यूहिमो मृदुः।

(वाग्भट - जल और मूत्र समान भाग में मिश्रित कर क्षार पकाएँ।)

क्षार निर्माणः i) क्षार भस्मः पानी - 1: 6, ii) 21 बार छान लें, पाचन अग्नि, iii) इसमें से (1-1½) कुडव side में रखे.

मध्यमक्षारः Above+ कटशर्करादि द्विद्रोणेऽष्ट पलसम्मित शंखनाभ्यादीना नतिसान्द्रो नातिद्रव.

5) क्षार गुण: 8 (चरक अं. सं. 10) - a) i) न तीक्ष्ण ii) न मृदु
iii) शुक्ल (श्वेत) iv) श्लक्ष्ण (मुलायम), v) पिच्छिल (चिकना)
vi) अविष्यन्दी (अ प्रसरणशील), vii)शिव (सौम्य) viii) शीघ्र (सुश्रुत)
रस - अम्लवर्ज कटु प्रधान,लवण अनुरस, (सु.), डल्हण -लवण प्रधान, कटु अनुरस.
b) वाग्भट - 10: उपरोक्त 8 + ix) शिखरी , x) न चतिरूक
c) तीक्ष्णोष्णो लघुरूष्णश्च क्लेदी पाकी विदारण:।
दाहनो दीपनश्छेता सर्वक्षारोऽग्निसन्निभ: ।।....(चरक)
6) क्षार दोष: 9, वाग्भट: 10
a) i) अतिमार्दव ii) बैत्य iii) उष्ण iv) तीक्ष्ण v) पिच्छिल vi) सर्पि
vii) सान्द्र viii) अपक्व ix) हिनद्रव्यता (शास्त्रोक्त औषधि न पडी हो)
b) वाग्भट - अतिशीत, अतितनु
तीक्ष्ण क्षार: दन्तीद्रवन्तीआदि (शुक्तिप्रमाण)
सप्रतीवाप: पक्व: पाक्य स्तीक्ष्ण.
vii) क्षार प्रयोग: दत्त्वा (वाक्शतमात्रम्) उपेक्षेत।
A) i) 100 गिनती पर एरण्डनाल जलानेवाला - तीक्ष्ण
ii) 100 गिनती के पूर्व एरण्डनाल जलानेवाला - अति तीक्ष्ण
iii) 100 गिनती के बाद एरण्डनाल जलानेवाला - अति मृदु
a) वात दुष्ट स्थान पर - लेखन, b) पित्त दुष्ट स्थान पर - घर्षण
c) कफ दुष्ट स्थान पर - प्रच्छान * शतवाक्मात्रा तक प्रयोग.....(सुश्रुत)
B) i) शस्त्र से लेखन पश्चात्, क्षार प्रयोग शतवाक्मात्रा तक।
ii) अर्श में क्षार प्रयोग शतवाक्मात्रा तक।
iii) नासार्श & कर्णार्श में पद्मपत्र के समान क्षार का लेप 50 वाक्मात्रा तक।
iv)पश्चात्,क्षार को साफ कर कांजी या मधुयष्ठी का लेप कर अभिष्यन्दी भोजन
(उदा. दधी, माष, उडद)
* शलाकाया क्षार प्रतिसारयेत्। (हस्त Never use करें)
7) क्षार दग्ध लक्षण: कृष्णता
शमनके लिए अम्लवर्ग, मधुक, सर्पि उपयोग करे,
i) सम्यक् दग्ध: a) विकारोपशम्, लाघवम्, अनास्त्रावश्च ....(सुश्रुत)
b) पक्व जम्बू समान असित एंव सन्न .....(वाग्भट)
ii) हिनदग्ध: a) तोदं, कण्डु, जडता, व्याधि वृध्दि।....(सुश्रुत)
b) (दुर्दग्ध) ताम्रता, तोद, कण्डु आदि का होना।.....(वाग्भट)
ii) अतिदग्ध: a) दाह पाक राग स्त्रावांगमर्द क्लम पिपासा मूर्च्छा मरण।.....(सुश्रुत)
b) रक्तस्त्राव, मूर्च्छा, दाह, ज्वर, कास होना।.....(वाग्भट)
8) पश्चात कर्म: i) शमन अम्लवर्ग सर्पिमधुक (अम्ल + क्षार = मधुर.)
क्षार - रस - अम्लवर्जीत 5 रस, कटू प्रधान,
लवण - अनुरस: तीक्ष्ण. वीर्य - उष्ण
(डलण - लवण प्रधान, कटू - अनुरस.)
ii) लेपनार्थ - अम्लकांजिबीजानि तिलान मधुकमेव च। स्थिर मुल में
3)व्रणरोपण: घृत, तिलकल्क, मधुक नेत्ररोगो में सिर्फ वर्त्म रोगों में प्रयोग.
9) क्षारकर्म के निषेध: a)
i) दुर्बल,बाल, वृध्द,भीरू,उदर,सर्वांगशोथ, रक्तपित्त, नख, गर्भिणी,ऋतुमती, प्रवृध्द ज्वर, प्रमेही, क्षतक्षीण; तृष्णा, मूर्च्छा के उपद्रव; अपवृत्त क्लीब एवं फलयोनि।
ii) वर्त्म रोग छोडकर नेत्र के सब रोगों में निषेध (सु. सू.11/30)
b) पित्तरक्त, निर्बल, ज्वर, अतिसार, शिरोरोग, पाण्डूरोग:
तथा वमन और विरेचन कर्म किये हुये में वाग्भट.
प्रतिसारणीय निषेध - सिरास्नायू संधी, तरूणास्थि, धमनी, नखान्त आदि.
* शूनगात्रस्थिशूलिनम् अन्नद्वेषिणं हृदय सन्धि पीडोपद्रुतं।.....(11/32)
(वाग्भट - शीतोष्ण वर्ष दुर्दिन प्रवातेषु च क्षारो न योक्तव्य:)
10) संदर्भ: विषाग्निशस्त्राशनिमृत्युकल्प: क्षारो भवत्यल्पमतिप्रयुक्त।
स धीमता सम्यगनुप्रयुक्तो रोगान्निहन्यादचिरेण घोरान्।। ...(सु.सू.11/33)

12) अग्निकर्म विध्यध्याय.

Topics: i) अग्निकर्म की श्रेष्ठता, ii) दहनाकृति, iii) दहन उपकरण,
iv) त्वकादि में दहन लक्षण, v) प्रमाददग्ध,vi) शीतवर्षानिलदग्ध लक्षण & उपचारादि
1) अग्निकर्म श्रेष्ठता:
क्षारात अग्नि: गरीयान तद् दग्धांना रोगाणाम् अपुनर्भवाद,
भेषज शस्त्र क्षारै असाध्यानां तत्साध्यत्वाच्च.....(सु.सू.12/3)
अग्निदग्ध से साध्य रोगों की पुनरावृत्ती नहीं।
औषध, शस्त्र, क्षार से साध्य न होनेवाले अग्निकर्म से साध्य।.....(सुश्रुत)
पाकभय नहीं होता है।.....(डल्हण),
गुण की दृष्टी से क्षार श्रेष्ठ & कर्म की दृष्टी से अग्निकर्म श्रेष्ठ है।....(सुश्रुत)
2) दहनाकृती: 4 - i) वलय, ii) बिंदू iii) विलेखा (रेखा)
iv) प्रतिसारण..... (सुश्रुत व डल्हण) (वाग्भट - 3 Extra उपरोक्त +
v) अर्धचंद्र - वलयप्रकार, vi) स्वस्तिक विलेखा vii) अष्टापद....)
3) दहन उपकरण:
* त्वचा:- सुश्रुत - पिप्पली, अजाशकृद, गोदन्त, शर, शलाका(हस्तीदंत नही
(वाग्भट - वर्ति, गोदन्त, सूर्यकान्तमणि, शर
रोग - मषक, अंगवलानि, मूर्धार्ति, अधिमन्थ, चर्मकील, तील)
* मांस: जाम्बौष्ठेतर लौहा मांसगताना. जाम्बौष्ठ एवं धातु
(वाग्भट - अर्श, भगन्दर, ग्रन्थि, नाडीव्रण, दुष्टव्रण - रोग,
में मधु, स्नेह, जाम्बौष्ठ, गुडादि से दाह.)
* सिरा, स्नायु, अस्थि, सन्धि:
सुश्रुत - मधु, गुड, स्नेह (क्षौद्रगुडस्नेहा: सिरास्नायुसंधिअस्थिगता नाम.)
(वाग्भट - Same उपकरन As for मांस,
रोग - श्लिष्ट वर्त्म,रक्तस्त्राव, असम्यक सिरावेधन)
(वाग्भट - पिचुवर्ति, सूर्यकान्त, मधुच्छिष्ट यह दहन उपकरण अधिक माने है।
शर सें ग्रन्थिविसर्प का दाह करते है।
दहन द्रव्य (चरकानुसार): i) मधुच्छिष्ट (मोम) ii) तैल iii) मज्जा iv) क्षौद्र
v) वसा vi) घृत vii) लौह शलाका.....(च. चि. 25))
4) दहनकाल: शरद, ग्रीष्म इनके अतिरिक्त अन्य सभी ऋतुओं म(सु.सू.12/
(क्षार: शितोष्णवर्षा दुर्दिणे के अतिरिक्त... वा. सु.30)
5) अग्निकर्म में भोजन: पिच्छिल अन्न - सर्व व्याधी व ऋतुमें, अपवाद
i) अश्मरी ii) भगन्दर iii) अर्श iv) मुखरोग v) मूढगर्भ vi) उदर सेग
* अश्मरी भगन्दर अर्शो मुखरोगेषु अभुक्तवत:।
(सु. सू.12) अग्निकर्म के लिए: 6
(* मूढगर्भोदरार्शोऽश्मरी भगन्दर मुखरोगेष्वभुक्तवत: कर्म कुर्वित् ।..
(सु. सू. 6 / 5) शस्त्रकर्म लिए: 6)
* अग्नीकर्म भेद : त्वक्दग्ध & मांसदग्ध .... (सुश्रुत) (खंडन)
6) अग्निकर्म के लक्षण: a) त्वकदग्ध - शब्दप्रादुर्भावा , दुर्गन्धता, त्वक्संक
b) मांस - कपोतवर्णता, अल्पश्वयथुवेदना, शुष्कसंकुचित, व्रणता.
c) सिरास्नायु - कृष्णोन्नतव्रणता, स्त्रावसन्निरोधश्च (वाग्भट - सिरादग्ध में स्
d) अस्थिसंधि - रूक्षारूणता, कर्कशस्थिरव्रणता.
(अग्निकर्म - i) शिरोरोग & अधिमन्थ में अग्निकर्म भ्रू, ललाट, शंखप्रदेश में
ii) वर्त्मरोग में दृष्टि को आर्द्रवस्त्र से ढककर वर्त्मरोमकूप का दहन।
(लाक्षारस का प्रयोग पक्ष्म के बालों में निशान लगाने को।....वाग्भट)
7) अग्निकर्म के विषय: त्वक्मांसादि.... अतिरूजि, आन्त्रवृध्दि, नाडी, वात
तीव्ररूजा, ग्रंथि, अर्श, अर्बुद, शोणितातिप्रवृत्ति ....(सु. सू.12/10)
(For अग्निकर्म notice 5 pt. - संस्थान, मर्माणि, बलाबल, व्याधि, ऋतु)
b) रूधिरेऽतिप्रवृत्ते, छिन्न, अधिमांसक, गलगण्ड... चरक
8) अग्निकर्म के अयोग्य: i) पित्तप्रकृति, अन्त: शोणित, भिन्नकोष्ठ, अनु
शल्य, दुर्बल, बाल, वृध्द, भीरू, अनेकव्रणपीडित, अस्वेद्य....(सु.सू.12/

।.
हन उपकरण,
दग्ध लक्षण & उपचार
नर्भवाद,
सु.सू.12/3)
से साध्य।.....(सुश्रुत
र्म श्रेष्ठ है।....(सुश्रुत)
रेखा)
3 Extra उपरोक्त +
i) अष्टापद....)
, शलाका(हस्तीदंत
ल, तील)
धातु
रोग,
संधिअस्थिगता नाम.)
उपकरण अधिक माने है
तैल iii) मज्जा iv) क्ष
))
सभी ऋतुओं म(सु.सू.
0)
ी व ऋतुमें, अपवाद
र्भ vi) उदर सेग
: कर्म कुर्वित् ।..
ा) (खंडन)
विा , दुर्गन्धता, त्वक्सं
कुचित, व्रणता.
वाग्भट - सिरादग्ध में
, ललाट; शंखप्रदेश में
कूप का दहन।
ने को।....वाग्भट)
आन्त्रवृध्दि, नाडी, वात
सु. सू.12/10)
लाबल, व्याधि, ऋतु)
चरक
ोणित, भिन्नकोष्ठ, अनुद
, अस्वेद्य....(सु.सू.12/2

i) दुर्बल, वृध्द, गर्भिणी, रक्तपित्त, तृष्णा, ज्वर, अबल, विष, स्नायुमर्मव्रण,
ii) शल्यरक्तव्रण नेत्ररोग, कुष्ठव्रण। ....(च. चि. 25)
iii) गरिके अयोग्य:अन्त: शल्य या रक्त, भिन्नकोष्ठ, अनेकव्रणयुक्त रोगी। (वाग्भट)
iv) तत्रथा दग्ध:2-
a) स्नेहदग्ध - (स्नेह सिराओं में प्रवेश कर वेदना) b) रूक्षदग्ध,
तस्मात् स्नेहदग्धे अधिका रूजो भवन्ति। (इतरथादग्ध को प्रमाददग्ध वाग्भट)
रूक्षदग्ध भेद: 4 - i) प्लुष्टदग्ध: (वाग्भट - तुत्थ) अत्यंत वेदना
ii) विवर्णता: प्लुष्यतेऽतिमात्र; उष्ण चिकित्सा....(सुश्रुत)
iii) रूक्षविवर्णता, जलन, स्फोट का न होना; चिकित्सा - उष्ण .....(वाग्भट)
iv) दुर्दग्ध: a) स्फोट, तीव्र, चोष, दाह, राग, पाक, वेदना, चिरशांति...(सुश्रुत)
चिकित्सा शीत और उष्ण परंतु घृत, आलेप, सेक का उपयोग शीत रूप में।
b) स्फोट, दाह, तीव्र, ओष;
चिकित्सा - प्रारम्भ में शीत और उष्ण, बाद में शीतोपचार ....(वाग्भट)
v) सद्यग्र: a) अनवगाढ, तालफलवर्ण, सुसंस्थित:
चिकित्सा - पित्तविद्रधिवत्....(सुश्रुत)
b) सद्यदग्धे मधुसर्पि अभ्यंग:। तुगाक्षीरीप्लक्षचन्दगैरिके:....(चिकित्सा)
vi) पक्वजम्बु असित (उष्णवर्ण)
vii) अतिदग्ध: a) मांसावलम्बन, गात्रविश्लेष, चिररोहण, रूढश्चविवर्णता
+ शीतल क्रिया + सिरास्नायुअस्थिसंधिव्याप्त; चिकित्सा - पित्तविसर्पवत.....(सुश्रुत)
b) मांसावलम्बन, संकोच, दाह, धूपन, वेदना, सिरादिनाश, तृष्णा,
[illegible] गाम्भीर्य, मृत्यु: चिकित्सा - पित्तविसर्प...(वाग्भट)
(सद्यग्र: सिरा में अग्निकर्म का निषेध।)
(दुर्दग्ध चिकित्सा - कफज विद्रधी वत।)
अग्निदग्ध रक्त पित्त प्रकुपित परंतु तुल्यवीर्य
10) धूमोपहत - धूम के कारण श्वासकष्ट.
लक्षण a) श्वसिति (श्वास में कठिनाई) ii) क्षैति (क्षवथु) iii) आध्मानवृध्दी
iv) कासवृध्दी v) चक्षुपरिदाह & राग vi) तृष्णा vii) दाह viii) ज्वर ix) मूर्च्छा
चिकित्सा i) सर्पि, इक्षुरस, द्राक्षा, पय or शर्कराम्बु से वमन
ii) [illegible]लवण द्रव्य कवलग्रह iii) शिरोविरेचन
[illegible] लघु स्निग्धमाहार
11) i) उष्णवातातप दग्ध - शीतक्रिया (शीतकार्यो)
ii) शीतवर्षानिल दग्ध - स्निग्ध, उष्ण चिकित्सा.
iii) अतितेजसा दग्ध - असाध्य (सिध्दिर्नास्ति)
iv) [illegible]वज्राग्नि दग्ध - जीवित रहने पर स्नेह अभ्यंग,परिषेक, प्रदेह
[illegible] सर्पि - अग्निदग्धरोपक .....(सु. सू.12/27)
[illegible]दग्धे क्रिया रूक्षा विशेषेणावचारयेत्।

13) जलौकाऽवचारणीयमध्याय.

Topics: जलौकावर्णन

1) नृपाढ्यबालस्थविरभीरूदुर्बलनारी सुकुमाराणाम् अनुग्रहार्थ
[illegible]कुमारेऽय शोणितावसेचनोपायोऽभिहितो जलौकस:। ...(सु. सू. 13 / 3)
[illegible] रक्तस्रावाय योजयेत्.....(अ. हृ. सू. 26 / 34)
[illegible] तथा शस्त्र द्वारा सिरावेध कर रक्त निकालना कष्टदायी।
[illegible] अलाबु Or Cupping glass द्वारा रक्त साधारण सुकुमार विधि।
[illegible] द्वारा रक्तस्त्रुति परम सुकुमार विधि।]
[illegible] नुसार रक्तावसेचन: i) वातदुष्टि- श्रृंग - उष्ण, मधुर, स्निग्ध होने के कारण।
[illegible] - जलौका - शीताधिवासा, मधुरा (स), वारिसम्भवा।
[illegible] - अलाबु - कटु, रूक्ष, तीक्ष्ण, अन्तर्दीप्त ।
3) जलौका: जलमासामायुरिति जलायुका: जलमासामोक इति जलौकस:।
i) जलायुका - जल ही जिसकी आयु है। ii) जलौकस - जिसका ओक (आगार) है।
4) भेद: 12 - i) सविष: 6, ii) निर्विष: 6

5) सविष जलौका: 6 - i) कृष्णा - अंजनचूर्णवर्णा, पृथुशिरा,
ii) कर्बुरा - वर्मिमत्स्यवदायता, छिन्नोन्नतकुक्षि,
iii) अलगर्दा - रोमशा, महापार्श्वा, कृष्णमुखी,
iv) इंद्रायुधा - पृष्ठ इन्द्रधनुष की तरह चित्रित,
v) सामुद्रिका - ईषदसितपीतिका, विचित्रपुष्पाकृति,
vi) गोचंदना - गोवृषणवद अधोभाग, अणुमुखी,
इंद्रायुधा का दष्ट असाध्य होता है।

6) सविष जलौकास्थान:
i) सविषमत्स्यकीट दर्दुरमूत्रपुरीषकोथ जाता: कलुष जल में निवास।...(सुश्रुत),
ii) दुष्टाम्बु: मत्स्य,भेकादि के कोथ एवं मल में उत्पन्न, रक्त, श्वेत, कृष्ण, चपला, स्थुल, पिच्छिल...(वाग्भट)

7) सविष जलौकादंश:
i) कण्डु, शोथ, ज्वर, मूर्च्छा दाह । सविष - मलिन जल में। ...(चरक)
ii) श्वयथुरतिमात्रं कण्डु, मूर्च्छा, ज्वर, दाह, छर्दि, मद, सदन।
चिकित्सा: महागद का पान, लेप नस्यादि।...(सुश्रुत)
iii) कण्डु, पाक, ज्वर, भ्रम। चिकित्सा विषनाशक रक्तपित्तनाशक.....(वाग्भट)

8) निर्विष जलौका:
i) कपिला - मन:शिलारजित पार्श्वो, पृष्ठे स्निग्ध मुद्गवर्णा.
ii) पिंगला - किंचिद् रक्ता, वृत्त काया, पिंगा (वर्ण), आशु गति.
iii) शंकुमुखी - यकृत वर्ण, शीघ्रपायिनी, दीर्घतीक्ष्ण शंकुमुखी.
iv) मूषिका - मूषिकाकृति, अनिष्टगंधा (दुर्गंधि).
v) पुण्डरीकमुखी - मुद्गवर्णा, पुण्डरीकतुल्यवक्त्रा.
vi) सावरिका - पद्मपत्रवर्णा, 18 अंगुल प्रमाण, पश्वर्थे.

9) निर्विष जलौका का स्थान:
i) सुगंधित एवं जल बहुल जलाशय में; यह जलौका क्षेत्र – (4) यवन, पाण्डय, सह्य, पौतन प्रदेश में मुख्यतया पायी जाती है।.....(सुश्रुत)
ii) शुध्दाम्बुजा, शैवालश्यावा, वृत्त, नीलोर्ध्वराजया, कषायपृष्ठा, तनु अंग, पीतोदर..(वाग्भट)
i) 3 - 3 दिन पर घडे का पुराना जल हटाकर उसमें नविन जल।
ii) 3 - 3 दिन पर भक्ष्य पदार्थ देवे (उदा. शैवाल, वल्लुर)
iii) 7 दिन पर घडे को बदल दे। .....(सु.सू.13/17)

10) अयोग्य जलौका:
a) स्थूलमध्या,परिक्लिष्टा पृथु, मन्दविचेष्टा,ऽल्पपान करनेवाली, सविष.....(सुश्रुत)
b) वमन न कीया हो, प्रतत निपात, रक्तमता. .....(वाग्भट)
Note: i) प्रयोग पश्चात् जलौका को हरिद्रा जल से वमन।
ii) सम्यक् वमन पश्चात् पात्र में छोडने से विचरण करने लगती है, अगर न कर नीचे बैठ जाए तो दुर्वान्ता कहलाती है।
iii) दुर्वान्ता जलौका को असाध्य इन्द्रमद रोग हो जाता है।
[i) इन्द्रमद को वाग्भट - रक्तमत्ता, ii) 1 बार प्रयुक्त जोंक को 7 दिन तक पुन: रक्तावसेचन के लिये प्रयुक्त नही करनी चाहिये। .....(अ.सं.)]

11) जलौका द्वारा रक्तग्रहण पहचान: i) अश्वखुरवत मुख,
ii) कृत्वोन्नम्य च स्कन्धं।...(स्कंध को उँचा उठाकर) ऐसे में उसे आर्द्र वस्त्र से ढक देना चाहिये।, iii) शुध्द रक्त का पान करे तो दंश स्थान में तोद & कण्डु।,
iv) तोदकण्डु प्रादुभर्वेजानीयाच्छुध्दं। सैंधवचूर्णेनावकिरेत्।
(जलौका को दंशस्थल से छुडाने के लिये - सैंधव लवण अवकीर्णन का प्रयोग)

12) जलौकावचारण विधी:
i) जोंक लगाने के स्थान पर मृद्गोमयचूर्ण से घिसे
ii) जोंक पर सर्षपरजनी (सरसा+हल्दी)कल्क लिप्त कर जलपात्र में 1 मुहूर्त रखे।
iii) If नहीं लगती Then, क्षीरबिंदु, शोणितबिंदु, शस्त्रपद.
iv) सबकुछ करने के बाद भी न लगे तो दुसरी लें (अन्यां ग्राह्येत्)

विधि होने के पश्चात्:

i) जोंक के रक्तपीकर गीरने पश्चात् शरीर पर-तण्डुलकण्ड,मुख -तैललवण मसले,

ii) वाम हस्त के अंगुष्ठ से पुच्छ पकडे और दक्षिणहस्त अंगुष्ठ अंगुली से शनैः शनैः अनुलोम, अनुमार्णयेद् मुखात,

iii) दुर्वान्त को असाध्य *इन्द्रमद* (रक्तमद) व्याधी। वा.– इन्द्रमद को रक्तमत्ता,

iv) Once used सप्तरात्र तक Not to use same जोंक।....(अ.सं.),

v) दंश स्थान पर - a) शस्त्रधौतघृत अभ्यंग, पिचुधारण, b) or मधु से घर्षण, c) or शीतल जल सेचन. d) or बन्धन, e) or कषायमधुरस्निग्धशीत प्रदेह।

* शोणितगन्ध - शोणितलौल्य (As जौंक को गन्धेन्द्रिय नहीं होती)

14) शोणितवर्णनीयमध्याय.

Topics : i) रस, रक्त, वर्णन. ii) प्रकृतिस्थ और दुषित रक्तवर्णन.

iii) रक्तस्त्रावण साध्य व्याधियाँ. iv) रक्तस्त्रावण के अयोग्य.

v) रक्तस्त्रावण विधियाँ vi) प्रच्छान वर्णन. vii) रक्त सन्धान विधियाँ

1) रसः i) आहार - परिणामः सम्यक् परिणतस्य, ii) तेजोभूत,सार, परमसूक्ष्म, सौम्य, iii) स्थान - हृदय (24 धमनी -10 उपर, 10 नीचे, 4 तिर्यक),

iv) अर्हअर्हतर्पयति, अर्हअर्हगच्छति (शरीर को बढाता है।),

धारयति, यापयति. (वाग्भट - प्रीणन.)

* पंचमहाभूत, चतुर्विध, अन्न (पेय, लेह्य, भक्ष्य, भोज्य):

द्विविध वीर्य (शीतोष्ण): अष्टविध वीर्य (शीतोष्णस्निग्धरूक्षविशदापिच्छिल मृदुतीक्ष्ण.)

षड्रस युक्त आहार रस को रस कहते है।

2) - स खल्वाप्यो रसो *यकृत्प्लीहानौ* प्राप्य रागमुपैति।

(रस प्रथम यकृत & प्लीहा में जाकर राग को प्राप्त होता है।)

Note :a) रस का यकृत्प्लीहा में रंजक पित्त द्वारा रक्त।.(च.चि.15) और (सु.सू.14)

b) रंजक पित्त द्वारा आमाशय में।....(वाग्भट)

c) रस का रक्त में Coversion in हृदय।.....(शारंगधर)

3) रक्तः i) प्रसन्न तेज से रंजित।

ii) अव्यापन्न (निर्मल) जो आहार प्रसादाख्य जलीय रस।

Note : a) रक्तकण उत्पत्ति - यकृत्प्लीहा में

(गर्भवस्था मध्यकाल से जन्म के 1 मास पूर्वतक),

b) पश्चात् रक्तकण उत्पत्ति रक्तमज्जा में

4) आर्तव शोणितं त्वाग्नेयम् (अग्निसोम् इयत्वाद गर्भस्य)....(सु. सू.14)

रस से रज (अग्नि गुण प्रधान क्योंकि, गर्भ - अग्नि + सोम गुण प्रधान)

की उत्पत्तिः जो रजोदर्शन - (12 साल) से Starts (50 वर्ष) तक Persist.)

5) रक्त पांचभौतिकताः i) विस्त्रता - पृथ्वी, ii) द्रवता - जल,

iii) राग - तेज, iv) स्पन्दन - वायु, v) लघुता - आकाश.

रसादि धातु की क्षय & वृध्दि रक्त के आधीन।

6) रसाद्रक्तं ततो मांस मांसान्मेदः प्रजायते।

मेदसोऽस्थि ततो मज्जा मज्जः शुक्रं तु जायते।। .....(सु. सू.14/10)

(रसाद्रक्तं....शुक्राद गर्भःप्रसादजः। .....(च. चि.15/16))

i) क्षीरदधिन्याय - क्रम परिणाम पक्षः चरक सम्मत (दृढबल)

ii) केदारीकुल्यान्याय - सुश्रुत सम्मत iii) खलेकपोतन्याय - सुश्रुत सम्मत

iv) एककालधातु पोषणपक्ष - अरूणदत्त in सर्वांगसुंदरी टिका.

आयुर्वेद - 7 धातु Modern - 4 धातु

i) Epithelial tissue ii) Connetive tissue

iii) Muscular tissue iv) Nervous tissue.

शुक्र - सुक्ष्म - ओज, (मल नहीं बनता) परंतु, वाग्भट - ओज - शुक्र का मल.)

7) *रसज* पुरूष विद्याद्रसं रक्षेत्प्रयत्नतः।....(14/7)

8) रसः i) रस 3015 कला तक 1 धातु में रूकता है।

ii) 1 मास में पुरूषों में शुक्र & स्त्रियों में आर्तव में परिणत।, iii) गती– 3

a) शब्द - तिर्यक b) अर्चि (अग्नि) - उर्ध्वग c) जल संतानवत- अधोगामी

iv) रस से शुक्र बनने के समुचय में इस तंत्र तथा अन्य तंत्र अनुसार 18090 कला समय लगता है।

रक्त मे 3015 कला तक, मांस मे 6030 कला तक,

मेद मे 9045 कला तक, अस्थी मे 12068 कला तक,

मज्जा मे 15075 कला तक, शुक्र मे 18090 कला तक,(एक दिन = 603 कला)

- तत्र रस गतौ धातुः *अर्हरहगच्छती* त्यतो रसः।

v) रस - प्रीणन, रक्त - जीवन

[रस रक्त संवहन वर्णन - भेल संहिता (हृदो रसो निःसरति तत एवं च सर्वतः। सिराभिर्हृदयन्त्रैति तस्माद् हृदप्रभावः सिरा।। भेल)]

9) सुश्रुतः

बालकों में शुक्र की उपस्थिती के सन्दर्भ में पुष्पमुकुलगंध से उसकी तुलना।

10) वृध्दावस्था में शरीर के परिपक्व होने से अन्नरस शरीर का पोषण नहीं करता। मनूष्य की आयु धमनीपर निर्भर है।

11) वाजीकरण्यस्त्वोषधयः स्वबलगुणोत्कर्षाद विरेचनवद् उपयुक्ता शुक्रं शीघ्र विरेचयन्ति ..... (सु.14 / 17)

12) त एते शरीरधारणाध्दातव इत्युच्यन्ते। संदर्भ सु. सु. 14/20

13) प्रकृतिस्थ रक्तः

i) इन्द्रगोपप्रतीकाश	चरक -	i) इन्द्रगोपसन्निभं
ii) असंहत		ii) पद्मालक्तकसन्निभं
iii) अविवर्ण .....सुश्रुत		iii) गुंजाफलसवर्ण

14) दूषित रूधिरः क्षयवृध्दि शोणितनिमित्ते तस्मात् तद् अधिकृत्यवक्ष्याम

i) वातदूषित - फेनिलमरूणं, कृष्ण, पुरूष, तनु, शीघ्रगम, अस्कन्दि.

ii) पित्त - नील, पीत, हरित, श्याव, विस्त्र अस्कन्दि.;

पिपीलिका & मक्षिका को अप्रिय.

iii) कफ -गैरिकोदक प्रतीकाश,स्निग्ध,शीतल,बहल,पिच्छिल,चिरस्त्रावी, मांसपेशीप्रभ

iv) त्रिदोष - सर्वलक्षणयुक्त, कांजी काभं, (विशेषतो दुर्गंधी).

पित्तवद रक्ते, नातिकृष्ण च द्विदोषलिंग संसृष्टम्।

15) रक्तविस्त्रावण अयोग्यः i) सर्वांगशोफ, ii) क्षीणस्य चाम्लभोजननिमि

iii) पाण्डु, अर्श, उदर, शोष, गर्भिणीशोथ.

16) रक्तविस्त्रावण विधीः i) अशस्त्र - श्रृंग, जलौका, अलाबु,

ii) सशस्त्र - प्रच्छान, सिरावेध. (14/25)

17) रक्तविस्त्रावणः i) श्रृंग - वात दूषित रक्त का निर्हरण में।

ii) जलौका - पित्त दूषित रक्त का निर्हरण में।

iii) अलाबु - कफ दूषित रक्त का निर्हरण में।

प्रच्छान विधिः ऋजु, असंकीर्ण, सूक्ष्म, सम, अनवगाढ, अनुत्तान, आशु, मर्मस्नायुसिरा को क्षति न हो।

18) विस्त्रावण में रक्त न निकालने में हेतुः

i) दुर्दिन, दुर्विध, आदि.....(सु.27), ii) भय, मुच्छर्ा,.....(वाग्भट)

19) दुष्टरक्त निर्हरण न होने से: कण्डु, शोफ, राग, दाह, पाक, वेदना.

20)अतिरक्तस्त्राव कारणःअत्युष्णकाल,अतिस्विन्न, अतिविध्द,अज्ञ द्वारा

21) अतिरक्तस्त्राव से उपद्रवःशिरोऽभितापम्, आन्ध्यम् अधिमंथ, तिमि धातुक्षय,आक्षेपक, पक्षाघातम्,एकांगविकारं, दाह, हिक्का, कास, श्वास, पाण्डु मरण

22) रक्तविस्त्रावण कालः i) न शीतकाल, ii) उष्ण, iii) न स्विन्ने,

iv) न तपिते v) यवागु प्रतिपीतस्य (प्रथम यवागु पान कराकर रक्तमोक्षण

23) सम्यक् विस्त्रावणः i) रक्तं स्वयमेवावतिष्ठते (स्वयमेंव रक्तबहना बंद जाय) ii) लाघवं, वेदनाशान्ति, व्याधिवेगक्षय, प्रसादोमनः

24) रक्तविस्त्रावण फलः त्वगदोष ग्रंथयः शोफा रोगाःशोणितजायश्च ये।

रक्तमोक्षणशीलीना न भवन्ति कदाचन।।

प्रच्छान से रक्त प्रवर्तित न हो तो एला, शीत, कपूर शिव, कुष्ठादि चूर्ण + लवण + तैल से व्रणमुख घर्षण।

य तंत्र अनुसार 180

(एक दिन = 603 क

ति तत एवं च सर्वत

गंध से उसकी तुल

शरीर का पोषण नहीं

द् उपयुक्ता शुक्रं शीघ्र

सु. 14/20

ोपसन्निभं
क्तकसन्निभं
कलसवर्ण
तद् अधिकृत्यवक्ष्या
म, अस्कन्दि.

,चिरस्त्रावी, मांसपेशीप्र
धी).
म्।
य चाम्लभोजननि

अलाबु,

रण में।

अनुत्तान, आशु,

.....(वाग्भट)
दाह, पाक, वेदना,
विध्द,अज्ञ द्वारा
यम् अधिमंथ, ति
मस, श्वास, पाण्डु म
i) न स्विन्ने,
कराकर रक्तमोक्षण
यमेंव रक्तबहना बं
गोणितजायश्च ये।
। कदाचन।।
।,

25) अतिप्रवृत्त रक्त निरोध उपाय: a) आयुर्वेद: 6 (शीतप्रयोग,उष्णप्रयोग, दहन, रक्तरोधक औषध, अवपीडन, बन्धन), अस्कंदमाने - सन्धान

b) सुश्रुत: 4 क्रमशः श्रेष्ठ

i) संधान - कषाय संधते।, ii) स्कंदन - स्कंधयते हिमम्।,

iii) पीडन - समपाचयेभस्म। iv) दहन - दाह: संकोचयेत् सिरा।

(आभ्यन्तरीय औषध प्रयोग: After रक्तमोक्षण:

i) वात दोष - में मांसरस, ii) पित्त - क्षीर, iii) कफ - यूष..(डल्हण)

i) मन्दाग्नि में - मांसरस देना, ii) मध्यम - यूष iii) दीप्त - क्षीर.. अन्य आचार्य)

शरीर से ज्यादा से ज्यादा 1 प्रस्थ रक्त निकालने का प्रमाण है।

(एक प्रस्थ - सार्ध्दत्रयोदशपलं), देहस्य रूधिरं मूलं रूधिरेणैव धार्य्यते।

तस्माद्यत्नेन संरक्षं रक्तं जीव इति स्थिति।.....(14/44)

26) पश्चात् कर्म: i) शीत सेक, ii) शोफ, तोद में कोष्ण सर्पि परिषेक.

शेषदोष यतो रक्ते...सावशेष i.e.(रक्त में कुछ दोष रहने पर ही रक्तस्त्राव बंद करें।)

i) रक्तक्षय (धातुक्षय) - अम्ल शिशिर प्रिति.

ii) रक्तमोक्षण पश्चात् - धातुक्षय, मन्द:अग्नि, वात कोप,

चिकित्सा: ईषद अम्ल, न अम्ल भोजन.

15) दोषधातुमल क्षयवृध्दिविज्ञानीय

Topics: i) (दोष, धातु) के क्षय, वृध्दि लक्षण: कर्म, ii) ओज वर्णन, iii) स्थौल्य, कार्श्य वर्णन. vi) दोषधातु परिभाषा, v) स्वस्थ व्याख्या.

1) दोषधातुमलमूलं ही शरीरम्।.....(सु. सू.15/3)

(दोष धातुमलामूलं सदा देहस्य तम् चल:। .....(वा. सू.11))

2) वायु कर्म: प्रस्पन्दनोद्वव्हन पूरणविवेक धारण लक्षण...।

i) प्राण वायु - पूरण, ii) उदान वायु - उद्वव्हन, iii) व्यान वायु - प्रस्पन्दन

iv) समान वायु - विवेक, v) अपान वायु - धारण

3) पित्त कर्म अग्नि की तरह: रागपक्तिओज तेजोमेधोष्मकृत्पित्त....।

i) पाचक पित्त - पक्ति कृत, ii) रंजक पित्त - राग, iii) साधक पित्त - मेधा,

iv) भ्राजक पित्त - उष्म v) आलोचक - तेज

4) कफ कर्म: संधिसंश्लेषण स्नेहन रोपण पूरण बलस्थैर्य कृच्छ्रश्लेष्मा..।

i) अवलम्बक - बलस्थैर्य, ii) क्लेदक - स्नेहन, iii) बोधक - रोपण

iv) तर्पक - पूरण, v) श्लेषक - संधिसंश्लेषण

5) धातु - धारण और पोषण, All others (i.e. उपधातु, दोष, मल) - धारण.

5) धातु प्राकृर्त कर्म: a) i) रसधातु - तृप्ति, प्रीणन, रक्तपुष्टि,

ii) रक्तधातु - वर्णप्रसादन, मांसपुष्टि, जीवन, iii) मांसधातु - शरीरपुष्टि मेदपुष्टि,

iv) मेदधातु - स्नेहन, स्वेदन, दृढता, अस्थिपुष्टि,

v) अस्थिधातु - देहधारण, मज्जापुष्टि,

vi) मज्जाधातु - प्रीती, स्नेह, बल, शुक्रपुष्टि,अस्थिपूरण,

vii) शुक्रधातु - धैर्य, च्यवन, प्रीती, देहबल, हर्ष, बीजार्थ.

(कम्पवात में चिकित्सा – शुक्रवर्धक)....(सुश्रुत)

(प्रीणन जीवन लेप: स्नेहो धारण पूरणे।

तस्मादाद्यश्च धातुनां श्रेष्ठ कर्म क्रमात्स्मृतम्।।....(वा.सू.11))

6) मल प्राकृत कर्म: पुरीषम् उपस्तंम्भ वाय्वग्निधारणं बस्तिपूरण विक्लेदकृन्मूत्रम्

a) पुरीष - उपस्तम्भ, वायु, अग्निधारण; मूत्र - बस्तिपूरण, विक्लेदकृत;

स्वेद - क्लेद त्वक् सौकुमर्याकृत.....(सुश्रुत)

b) पुरीष - अवष्टम्भ. मूत्र - क्लेदवाहन. स्वेद - क्लेदविधृति....(वाग्भट)

7) कर्म: i) आर्तव - रक्तलक्षणमार्तवं, गर्भकृच्च, ii) गर्भ - गर्भलक्षण,

iii) स्तन्य - स्तनयोरापीनत्वजननं जीवन.

8) दोषक्षय लक्षण: i) वातक्षय - मन्दचेष्टा, अल्पवाक्त्व, अप्रहर्ष, मूढसंज्ञता,

ii) पित्तक्षय - मन्दोष्मनिता, निष्प्रभता,

iii) कफक्षय - रूक्षता उन्तर्दाह, आमाशयेतरश्लेष्माशय शून्यता, संधिशैथिल्य, तृष्णा, दौर्बल्य, प्रजागरण तत्र स्वयोनिवर्धनान्येव प्रतीकाश:। .....(15/12)

9) धातुक्षय लक्षण: i) रसक्षय - हत्पीडा कम्प शून्यतास्तृष्णा च।

ii) रक्तक्षय - त्वक पारूष्यम् अम्लशीत प्रार्थना सिराशैथिल्य च।

iii) मांसक्षय - स्फिकगण्डादि शुष्क, रौक्ष्य, तोद; गात्रसदन; धमनीशैथिल्य।

iv) मेदक्षय - प्लीहावृध्दि; संधिशून्यतारौक्ष्यं; मेदुरमांस प्रार्थना।

v) अस्थिक्षय - अस्थिशूल; नख, दंतभंगरौक्ष्य ।

vi) मज्जाक्षय - ऽल्पशुक्रता, पर्वभेद, अस्थितोदशून्यता ।

vii) शुक्रक्षय - मेढ्रवृषण वेदना, ऽशक्तिमैथुने, चिराद् प्रसेक; प्रसेके ऽल्परक्तशुक्रता।

* सर्व एव चास्य रोगा बलवन्तो भवन्त्यल्प प्राणवत्। चरक में सद्य:क्षीण

10) मलक्षय लक्षण: i) पुरीषक्षय - हृदय पार्श्वपीडा; सशब्द वायु उर्ध्व गमनं.

ii) मूत्रक्षय - बस्तितोद (मूत्रवृध्दि), ऽल्पमूत्रता,

iii) स्वेदक्षय - स्तब्धरोमकूपता, त्वक्शोष, स्पर्शवैगुण्य, स्वेदनाश.

स्वेद चिकित्सा - अभ्यंग, स्वेदन.

11) उपधातु क्षय लक्षण:

i) आर्तव - यथोचित काल दर्शन ऽल्पता;योनिवेदना, चिकित्सा शोधन, आग्नेयद्रव्य,

ii) स्तन्यक्षय - स्तनयोर्म्लान्ता, स्तन्यऽल्पता: चिकित्सा –श्लेष्मवर्धन द्रव्य,

iii) गर्भक्षय - गर्भअस्पन्दन, अनुन्नतकुक्षिता:

चिकित्सा - गर्भिणी 8th मास में क्षीरबस्ति, मेध्यअन्न.

12) दोष, धातु वृध्दि लक्षण: A) दोषवृध्दि लक्षण:

i) वातवृध्दि - वाकपौरूष्य, कार्श्य, कार्ष्ण्य, गात्रस्फुरणं,उष्णकामिता, निद्रानाशो, ऽल्पबल, गाढवर्चस्व.

ii) पित्तवृध्दि - पीतावभासता, सन्ताप, शीतकामित्वम् अल्पनिद्रता, मूर्च्छा, बलहानि, इन्द्रियदौर्बल्य,

iii) कफवृध्दि-शौक्ल्य,शैत्य स्थैर्य, गौरव,अवसाद, तन्द्रा, निद्रा, सन्धि अस्थि विश्लेष।

B) मलवृध्दि लक्षण: i) पुरीषवृध्दि - आटोप , कुक्षौ, शूल, ii) मूत्रवृध्दि - मुहु-मुंहू प्रवृत्ती, बस्तितोद, आध्मान, iii) स्वेदवृध्दि - अतिस्वेद, दौर्गन्ध्य, कण्डू.

C) धातुवृध्दि लक्षण:

i) रसवृध्दि - हृदयोत्क्लेद, प्रसेक, ii) रक्तवृध्दि - रक्तांगक्षिता, सिरापूर्णत्व,

iii) मांसवृध्दि - स्फिग् गण्ड, ओष्ठ, उपस्थ उरू, बाहु, जंघा वृध्दि, गुरूगात्र,

iv) मेदवृध्दि - स्निग्धांग, उदर - पार्श्व वृध्दि; कासश्वासादि, दौर्गन्ध्य.

v) अस्थिवृध्दि - अस्ध्यध्यस्थीन्यधिदन्तांश्च,

vi) मज्जावृध्दि - सर्वांगनेत्रगौरव, vii) शुक्रवृध्दि - शुक्राश्मरी, शुक्र प्रादुर्भाव.

D) उपधातुवृध्दि लक्षण:

i) आर्तव - अंगमर्द, अतिप्रवृत्ति, दौर्गन्ध्य,

ii) स्तन्य स्तनयोरापीतत्वं, मुहुर्मुहू प्रवृत्ति, *तोद*

iii) गर्भ - जठराभिवृध्दि (उदरवृध्दि), *स्वेद.*

अतिवृध्द दोषादि चिकित्सा – संशोधन, क्षपण (ऱ्हास or संशमन)

पूर्व: पूर्वोऽतिवृध्दत्वाद्.....। ऱ्हासनं हितम्।।.....(15/23)

13) ओज: i) ओज लक्षण: रसादीना शुक्रान्ताना धातूनां यत् परं तेज तत् खल्वोजस्तदेव बलमित्युच्यते।

ii) ओज प्राकृत कर्म: स्थिरोपचितमांसता, सर्वचेष्टसर्वप्रतिघात:, स्वरवर्ण प्रसाद, बाह्याभ्यंतर करण स्वकार्य, प्रतिपादन।

iii) ओज गुण: ओज: सोमात्मक स्निग्ध शुक्ल शीत स्थिरम सरम्।

विविक्त मृदु मृत्स्न च प्राणायतनमुत्तमम्।।

iv) ओजक्षय हेत: अभिघात, क्षय, क्रोध, शोक, ध्यान, श्रम, क्षुधा.

v) ओज विकृतियां: 3 (क्षय, विस्त्रंस, व्यापत्)

विस्त्रसं - सन्धिविश्लेषो गात्राणां सदन दोषच्यवनं क्रियाऽसन्निरोधश्च विस्त्रंसे।

व्यापत् - स्तब्ध गुरूगात्रता वातशोफो वर्णभेदो ग्लानिस्तन्द्रा निद्रा च व्यापन्ने।

क्षय - मूर्च्छा मांसक्षयो मोह: प्रलापो मरणमिति च क्षये।

vi) बलविस्त्रंस लक्षण: विश्लेषसादौ गात्राणां दोषविस्त्रंस श्रम:।

अप्राचुर्य क्रियाणां च बलविस्त्रंस लक्षणम्।।..... (सु.सू.15/30)

vii) बलव्यापद लक्षण: (ओजक्षय लक्षण):

गुरूत्वं स्तब्धताअंगेषु ग्लानि वर्णस्यभेदनम्।

तन्द्रा निद्रा वातशोफो बलव्यापदि लक्षणम्।।.....(15/31)

* तत्र विस्त्रंसे व्यापन्ने च क्रियाविशेषैरविरूध्दैर्बलम् आप्याययेत्।

इतर च मूढसंज्ञ वर्जयेत् ।। .....(15/33) (ओजक्षय वर्ज्य)

14) स्थौल्य (हेतु: लक्षण: चिकित्सा): रस निमित्तमेव स्थौल्य कार्श्य च।

लक्षण - गदगदवाक, अल्प व्यवाय,अल्प प्राण.

चिकित्सा- शिलाजतु,गुग्गुल,गोमुत्र,त्रिफला,लोहरजो, रसांजन,मधु, लेखन बस्ति

15) कार्श्य: लक्षण - वात रोग प्रायोऽल्प प्राणश्च क्रियासु भवति।

चिकित्सा - बृंहणबस्ती

16) दोषों की क्षय - वृध्दि का ज्ञान अनुमान से किया जाता है।

17) शरिर - 3 - स्थूल,मध्य,कृश श्रेष्ठो मध्यशरीरस्तु.

श्रेष्ठो मध्यशरीरस्तु कृश स्थूलात्तु पुजित: .....(15/42)

18) स्वस्थ परिभाषा: समदोष, समग्निश्च समधातु मलक्रिया।

प्रसन्नात्मेंद्रिय मन: स्वस्थ इत्यभिधीयते।।.....(15/48)

* अत्यन्तगर्हितावेर्तो सदा स्थूलकृशौ नरौ।

19) *दोष धातुमलानां तु परिमाणं न विद्यते* ।.....(15/44)

(मज्जा मेदो वसा मूत्र. पित्त श्लेष्म शकृत् असृक्।

रसौ जलम् च देहे तस्मिन् एकैक अंजलि वर्धितम्।। वाग्भट)

(स्वेद - 10 अंजलि, आर्तव - 4, स्तन्य - 2, मस्तिष्क्य शुक्र,

अपर ओज - 1 / 2 अंजलि, पर ओज - 8 बिंदु.)

16) कर्णव्यद्यबन्धविध्यध्याय.

Topics: i) कर्ण वेधन ii) कर्णसन्धान विधि, iii) सन्धान का निषेध,

iv) कर्णपालिसन्धान उपद्रव, v) नासा & ओष्ठ सन्धान वर्णन.

1) कर्णव्यध परिचय: ऋजु विध्येत्, पिचु वर्ती प्रवेशयेत ।

* वाम हस्तेनाकृष्य कर्ण दैवकृते छिद्रे (वाम हाथ से कर्ण खिंचे)

a) सुश्रुत - i) कर्णवेधन प्रयोजन - रक्षा, आभूषण।

ii) 6 - 7 माह में: पतले कर्ण में सूची और शुक्लपक्ष में: बडे कर्ण में आरा से

दैवकृत बिंदु में।, दक्षिण कुमारस्य: वामं कुमार्या: । हिमागमे विध्येत्

b) वाग्भट: i) रक्षाभूषणनिमित्त (6,7,8) मास; शीतकाल, शुभ दिन ।

2) कालिकादि सिरा विध्द लक्षण:

i) कालिका - ज्वर,दाह, श्वयथु, वेदना।

ii) मर्मरिका - वेदना,ज्वरो, ग्रंथयश्च।,

iii) लोहितिका - मन्यास्तम्भ, अपतानक, शिरोग्रह, कर्णशूलानि।

3) सम्यक् विध्द में: i) आमतैलेन परिषेचयेत।

ii) प्रति 3 दिन रूई की वर्तिका उत्तरोत्तर बडी प्रविष्ट कर आमतैल

(कच्चा तिल तैल) से सेचन।

छिद्र धीरे - धीरे बढाने हेतु (लघु) वर्धनको का प्रयोग।

* बाहर की कर्णपाली लम्बी हो तो भीतर की और संन्धान करें ।

4) कर्णसन्धान विधी: 15 (10+5): साध्य: 10, असाध्य 5

i) नेमिसंधानक	सम उभयपाली	पृथु, आयत,
ii) उत्पलभेदक	सम उभयपाली	वृत्त आयत,
iii) वेल्लुरक	सम उभयपाली	ह्रस्व, वृत्त
ix) आसंगिम	अभ्यंतर दीर्घएक पाली	
v) कपाटसंधिक	अभ्यंतर दीर्घएक पाली अल्पपालि.	
vi) गण्डकर्ण	बाह्य दीर्घ पाली	
vii) अर्धकपाट संधिक	बाह्य दीर्घ पाली	आंतर अल्पपालि.
viii) आहार्य	अपाली उभयतो,	
ix) निर्वेदिम	अपाली उभयत पीठोपम्	क्षीण पुत्रिका
x) व्यायोजिम	स्थुलअणुविषमसम पाली	

असाध्य: 5 - (काही सवय)

i) काकोष्टक - निर्मास वल्लीकर्ण संक्षिप्त

ii) हीनकर्ण - अनधिष्ठानपालि: पर्यन्तयो: क्षीणमांसो।

iii) संक्षिप्त - शुष्कशष्कुलिरूत्सन्नपालिरितराल्पपालि:।

iv) वल्लीकर्ण - तनुविषम अल्पपाली

v) यष्टिकर्ण - ग्रंथित मांस स्तब्ध शिरास्तत सूक्ष्म पालि।

5) कर्णपीठ समे मध्य में वेधन.....(16/13)

जिस मनुष्य के कर्ण में दोनों पाली न हों उसके कर्णपीठ के मध्य के समान स्थ

में (वेधन) करके वर्धन करना चाहिये।

6) सानुबंध संधान: गण्डदुत्पाट्य मांसेन सानुबंधेन जीवता।...(16/16)

(कर्णपालि के न होने पर गण्ड प्रदेश से (कपोल) जीवन सानुबंध मांस सन्धा

करना चाहिये।) (Pedicle Flap plasty)

7) पश्चात कर्म: i) अग्रोपहरणीय में वर्णित सामग्रि जुटा ले।

ii) वात - (वायु से दुषित रक्त में.) धान्याम्लोष्णोदक से प्रक्षालन

पित्त - शीतोदक पयोभ्याम् - इसके पश्चात् लेखन कर्म करें.

कफ - सुरामण्डोष्णोदक, iii) कपालचुर्ण, द्विव्रणीय अध्याय में वर्णित औषधि

8) कर्णबन्ध पश्चात् त्याज्य:

विघट्टन, घर्षण, दिवास्वाप, व्यायाम, अतिभोजन, व्यवाय, अग्निसन्ताप, वाक्

9) संधान निषेध:

* न चाशुध्दरक्तम् अतिप्रवृत्तरक्त क्षीण रक्तं वा सन्दध्यात्। ....(16/19)

सन्धान करने पर - i) वात दुष्ट - रूढऽपि परिपुटनवान्,

ii) पित्त - दाह, पाक, राग, वेदना. iii) कफ - स्तब्ध कण्डूमान,

iv) अतिप्रवृत्त रक्त - श्याव, शोफ, v) क्षीणरक्त - वृध्दि हानि (न वृध्दि)

10) आमतैलेन त्रिरात्रं परिषेचयेत् । त्रिरात्राच्च पिचु परिवर्तयेत्।

11) तेषाम् अपांग प्रदेशे तु कुर्य्यात् प्रच्छानमेव तु। ....(16/25)

(जो कर्ण स्वेदन, स्नेहन, उदवर्तन अभ्यंग करने से नहीं बढतें हो उनके

अपांग प्रदेश में प्रच्छान करना चाहिये।)

12) वर्ध्दन योग्य पाली:

जातरोमा, सुवर्त्मा, शिलष्टसन्धि सम: स्थिर सुरूढो,ऽवेदनो

13) कर्णपालि संधान उपद्रव: 14 -

i) उत्पाटक, ii) उत्पुटक, iii) श्याव, iv) अतिकण्डुयुक्त, v) अवमन्थ,

vi) सकण्डूक, vii) ग्रन्थिक, viii) जम्बूल, ix) स्त्रावी, x) दाहवान.

14) i) वात कुपित होने पर - विस्फोट स्तब्धता शोफ,

ii) पित्त कुपित होने पर - दाह विस्फोटजनन शोफ.

iii) कफ कुपित होने पर - कण्डू श्वयथु स्तम्भ गुरूत्व.

15) नासासन्धान एरण्डनाल का उपयोग, और ओष्ठसन्धान का

भी इसी अध्याय में। इसी के साथ अस्थिसन्धान के बारे में सुश्रुत ने बताया

17) आमपक्वैषणीयमध्यायं.

Tpoics: i) शोफ लक्षण, ii) शोफ अवस्थाये, iii) सप्तोपक्रम वर्णन.

1) व्रणशोथ: ग्रंथि, विद्रधि, अलजी से भिन्न पृथु, ग्रथित, सम, त्वकमांसस्थ

दोषासंघात: शरीरैकदेशोत्थित:।.....(सु.सू.17/3)

2) शोथ भेद: चरक - 1 (उत्सेध प्रत्यात्म लक्षण); 3 (वात, पित्त, कफ

2 (निज, आगन्तुज); 8 (निज - आगन्तुज)

सुश्रुत: 6 (वात,पित्त,कफ, शोणित,सन्निपातिक, आगन्तुज)

वाग्भट: 9 (वात,पित्त,कफ, संसर्गज - 3, सन्निपातज, अभिघातज, विषज

3) शोथ लक्षण: i) वातज शोथ - रूक्ष, कृष्णो, परूषो, मृदु,अनवस्थि

तोद, वेदनाविशेष, ii) पित्त - पीत, मृदु, सरक्त, शीघ्रानुसारि, ओषादि, वेदनाव

iii) कफ - पाण्डु, शुक्ल , कठिना, शीत, स्निग्ध, मन्दानुसारी, कण्डू, वेद

iv) सन्निपात - सर्ववर्ण वेदन: v) रक्त पित्तवच्छोणितजोऽतिकृष्णश्च,

vi) आगन्तुज a) पित्तरक्तलक्षण, लोहितावभास..(सुश्रुत),

...स्वाति से छेद से पित्त के लक्षण वाला शोथ ...(वाग्भट)

A) आमशोथ लक्षण:

i) सुश्रुत - मन्दोष्मता, त्वकसवर्ण, शीतशोफ, स्थैर्य, मन्दवेदना, ऽल्पशोफ,

ii) वाग्भट - अल्पशोफ, अल्पोष्म, अल्परूक्, समवर्ण, कठिन, स्थिर.

B) पच्यमान शोफ लक्षण: i) सुश्रुत - सूचिभिरिव निस्तुघते, पिपीलिकाभि, छिद्यते इव शस्त्रेण, भिद्यत इव शक्तिभिस्, ताड्यात इव दण्डेन, दह्यते अभिक्षारा, ओषचोष परिदाह, वृश्चिकविध्द; शोफ बस्ति की तरह तना हुआ, (आध्मातबस्तिरिवाततश्च शोफो,) त्वकवैवर्ण्य,शोफ,दाह, पिपासा, भक्तारुचि.

ii) वाग्भट: विवर्ण, रागी, बस्तिरिवाततः, स्फुटतीव्र सनिस्तोदः, अंगमर्दादि, घृतपिण्ड का शोफ के ऊपर रखने से पिघलना, व्रणवत् स्पर्शासह.

* पच्यमानावस्था में पूरा बढता है।

C) पक्वशोफ लक्षण: i) चरक - जलबस्तिसमस्पर्श,पीडितोन्नत,सुर्रियाँ, पूरस्य, ii) सुश्रुत - वेदनोपशान्ति, वलीप्रादुर्भाव, त्वक्परिपुटन, वस्ताविवोदक संचल मुहूर्महतोद, उपद्रवशान्ति, भक्तरुचि, कण्डु, अल्पशोफ.

iii) वाग्भट - अल्पवेगता, म्लानि, पाण्डुता, वलिसम्भव, किनारे निचे मध्य से ऊपर कण्डुशोफमार्दव, बस्ति में भरे पानी सदृश पूय संचार ,पाण्डूता, अल्पशोफ.

अन्न को प्राण संज्ञा।.... प्राणो वा अन्नम्.....(17/18)

4) शोथ अवस्था: 3 (आम, पच्यमान, पक्व)

5) कफज शोफ पक्वापक्व होने में सन्देह: कफज प्रधान शोफ गम्भीर धातुगत, शोफ त्वक्सवर्णता, शीतशोफता, स्थौल्य, अल्परूजता, (ऽश्मकच घनता), ऐसे लक्षण होने पर उसे पक्व समझें।

6) तस्करवृत्तायः.....(17/11) (सु.सू.4), शोफ की आमादि 3 अवस्थाओं को जीतनेवाला वैद्य कहलाता है, शेष सब तस्करवृत्ति होते है।

7) वातादृते नास्ति रूजा नपाकः पित्तादृते नास्तिकफाच्चपूयः।.(सु.सू.17/12)

शूलं नर्तेऽनिलाद्दाहः पित्ताच्छोफः कफोद्यात्।

रागो रक्ताच्च पाकः स्यादतो दौषैः सशोणितः।।.....(अ.हृ.सू.29/6)

8) आमछेद से उपद्रव: i) सुश्रुत - मांस, सिरा, स्नायु, सन्धि, अस्थि व्यापादनमतिमात्रं; शोणितातिप्रवृत्ति, वेदनाप्रादुर्भाव, अवदरण, क्षतविद्रधि.

ii) वाग्भट - सिरास्नायु व्यापद्, रक्त स्त्रुति, रूजा, दारण, क्षतविसर्प.

9) पक्वशोफ उपेक्षा - नाडीव्रण निर्माण → कृच्छ्रसाध्य असाध्य....(17/14)

जो वैद्य आमशोथ छेदन एवं पक्वशोथ की उपेक्षा करता है, वह अपच।

10) शस्त्रकर्म पूर्व रोगी को भोजन और मद्यपान।

भोजन से रोगी को मूर्च्छा प्राप्त नहीं होती, मद्यपान से पीडा नही होती।

11) व्रणशोफ उपेक्षा हानिकर:

अल्पो महान् वा क्रिया विनायःसमुच्छ्रतः पाकमुपैति शोफः।

विशालमूलो विषम विदग्धः स कृच्छ्रतां यात्यवगाढदोषः।। ..(17/19)

12) सामोपक्रम (व्रणशोफ में): i) विम्लापन ii) अवसेचन iii) उपनाह iv) भेदन v) शोधन vi) रोपन vii) वैकृतापहम्.

18) व्रणालेपनबन्धविधिध्याय.

Topics: i)व्रण में आलेप एवं बन्धन, ii) बन्ध द्रव्य,लाभ, iii) बन्ध्य एवं अबन्ध वर्णन

1) आलेप: i) आद्य उपक्रम, ii) प्रधानतम् (in सर्वशोफ),

ii) बन्ध प्रधानम्: व्रणरोपण, अस्थिसंधि स्थिरता,

iv) प्रतिलोम गती क्योंकि रोमकूप, स्वेदवाहिस्था, सिरामुख. v) रात्रि निषेध.

आलेप - आद्य उपक्रम सर्व शोफमें. सामान्य व प्रधान. (सु.सु.18)

(अपतर्पण आद्य उपक्रम सर्व शोफमें। सु. चि. 1/11)

* न च शुष्यमाणमुपेक्षेत, अन्यत्र पीडयितव्यात्।

A) आलेप प्रकार: 3 -

i) प्रलेप - शीतस् तनु (पतला). अविशोषी विशोषी च।,

ii) प्रदेह - उष्णः शीतो वा बहलोऽबहु अविशोषी च।,

iii) आलेप - मध्यमो; दाहप्रशमनं श्रेष्ठ - (सुश्रुत)

आलेपः त्वक्प्रसादनमेवाम्यं मांसरक्त प्रसादनम्।

दाहप्रशमनम् श्रेष्ठम् तोदकण्डुविनाशनम्।।.....(सु.सू.18/9)

कल्क / निरूध्दालेपन - क्षत पर प्रयुक्त होनेवाला, स्त्रावनिरोधक.

* यस्तु क्षतेषूपयुज्यते स भूय कल्क इति संज्ञा लभते निरूध्दालेपन संज्ञः (अ. सं.- Opp. of सुश्रुत....(प्रलेपादि की परिभाषा)

i) शीतस्तनु मुहुर्मुहु प्रयुज्येत स. प्रदेहो रक्तपित्त त्वचा प्रसादकृत।

ii) प्रलेप उष्णः शीतो वा बहुलश्च, (वात,कफ))

B) आलेप स्नेह मात्रा: i) वातिक -1/4 भाग, ii) पित्त -1/6, iii) कफ -1/8

* अविदग्धेषु शोफेषु हितमालेपनं भवेत्।

न च आलेप रात्रौ पयुंजीत। प्रदेह साध्ये व्याधौ तु हितमालेपनं दिवा।

C) आलेप प्रमाण: आर्द्रमाहिषचूर्ण उत्सेधम्.

(चरक - त्रिभागाअगुंष्ठ मात्रः स्यात्प्रलेपः कल्कपेषितः।)

2) व्रणबन्धन द्रव्य: i) सुश्रुत - क्षौम, कार्पास, कौशेयादि. (20)

ii) वाग्भट - उष्ण - (अवि एवं हरिण) चर्म, कौशेय (रेशमा).

शीत - क्षौम, अतसी. शीतोष्ण - तूलसन्तानकार्पासस्नायुवल्कजम्.

मेदकफादिक व्रण - ताम्र, लौह, त्रपु, शीस. भंग - फलक, चर्म, वल्कलादि।

3) बन्धन प्रकार और स्थान:

सुश्रुत- 14; वाग्भट - 15 उत्संगी अधिक वर्णन; चरक - 2 (वाम व दक्षिण)

i) कोश - अंगुष्ठ अंगुलि पर्व, ii) खट्वा - हनुशंखगण्डेषु, iii) पंचांगी - जत्रुगउर्ध्व,

iv) प्रतोली (मुतोली) - ग्रीवामेढ्रयो, v) विबंध - पृष्ठोदरोरः

vi) वितान - मूर्धानि, vii) स्वस्तिक - संधिकूर्चक भ्रू स्तनान्तर, तल, कर्णेषु,

viii) स्थगिका - अंगुष्ठ अंगुलिमेढ्राग्रेषु, ix) उत्संग - बाहु,

x) यमक - यमलव्रण, xi) मण्डल - वृत्तेऽङ्गे, xii) अनुवेल्लित - शाखासु,

xiii) दाम - सम्बाधेऽङ्गे, xiv) गोफणा - चिबुकनासौष्ठांसबस्तिषु.

4) विकेशिका औषधे:- नऽतिस्निग्धे नऽतिविषमे। अति स्निग्ध होने से क्लेद, रूक्ष होने से व्रण छेद और विषम से व्रण मार्ग में घर्षण होता है।

5) यन्त्रणम् उर्ध्वमधस्तिर्यक्। ग्रंथी(लपेट) - उपर, नीचे, तिरछी.

6)बन्ध भेद: 3 i) गाढ - पीडयन्नरूजो; नितम्ब, स्फिक, कुक्षि, कक्षा, वंक्षण, ऊर, शिर, ii) शिथिल-सोच्छ्वास; अक्ष्णोःसन्धिषु, iii) सम - नैवगाढो न शिथिलः

* i) पैत्तिक और रक्तज व्रण में: गाढ के स्थान पर सम → सम के स्थान पर → शिथिल, शिथिल के स्थान पर → खुला रखें।

ii) कफज और वातज: शिथिल के स्थान पर → सम, सम के स्थान पर → गाढ, गाढ के स्थान पर → गाढतर।

iii) पित्तदुष्टि और रक्तदुष्टी में शरद, ग्रीष्म ऋतु में दिन में 2 बार बांधे।

iv) कफ और वात में हेमन्त, वसन्त तीसरे दिन।

7) बन्धन के लाभ: 3 - वेदनोपशान्ति, असृक्प्रसादो, मार्दवं।

सुखमेवं व्रणी शेते (ठीक से सो सके), सुखम् गच्छति तिष्ठति,

क्षीप्र संरोहति व्रणः (व्रण शीघ्र भरे)

8) अबन्ध्य व्रण: पित्त,रक्त, अभिघात, विष, प्रशीर्णमांस, क्षार,अग्निदग्ध, पिडका, मधुमेहि, मूषिकविष, गुद पाक जन्य, कुष्ठ.

(Note: i) उर्ध्व तिर्य्यगधस्ताच्च यन्त्रणा त्रिविधा मता।

ii) पूय को अनुलोम गती से निकालें।

a) पित्त और रक्त में 1 बार दबाकर स्त्राव निकालें।

b) कफ और वात बार-बार...।)

9) ओष्ठस्याप्येष सन्धाने यथोदिष्टो विधिः स्मृत।.....(18/43)

Also in अस्थि सधांन

10) प्रदेह उपयोग में नियम - i) दिवा, ii) न पर्युषित,

iii) उपरयु परिलेप न कदाचित् प्रदापयेत् iv) न दापयेत् पुनः

11) व्रणस्थान में प्रथम विकेशिका / वर्ति लगा के औषध कल्क लगाये, फिर उस पर कवलिका रख कर मुलायम पट्ट से बांध दें।

19) व्रणितोपासनीयमध्याय.

Topics: i) व्रणितागार वर्णन, ii) व्रणित सामान्य परिचर्या, iii) मद्य वर्णन.

1) व्रणित परिचर्या: i) व्रणी शिर पूर्व दिशा, तकिये के निचे शस्त्र, सहचर., ii) दिवास्वप्न वर्जित,स्त्री निषेध,नवधान्य, तिल, माष, कुलत्थ,क्षीर, दधि, तक्र निषेध। दिवास्वप्न से 6 उपद्रव: राग, शोथ, वेदना, स्त्राव, कण्डू, गात्रगौरव.

a) धूपन द्रव्य: सर्षप, अरिष्टपत्र, सर्पि, लवण इनके द्वारा दिन में 2 बार, 10 दिन तक करे।

b) व्रणित वर्जित आहार: नवधान्यादि (तिलकुलत्थ निष्पाव, अम्ल,लवण , कटु, पिष्टविकृति, आनुप उदक मांस, शित जल, कृशरा, पायस, हरित शाक) नवधान्य वर्ग से शुरूवात तक्रान्तो (तक्र पर्यन्त के वर्ग)

c) व्रणित निषेध: i) आयास इससे शोथ, ii) जागरात् - राग + शोथ, iii) दिवास्वप्न - रूक् + शोथ + राग, iv) मैथुन - रूक् + शोथ + राग + मृत्यू

* व्रण में पाक - रक्त, मांस.

2) मद्य वर्णन: मद्यमम्लं तथा रूक्षं तीक्ष्णमुष्णं च वीर्यत:।
आशुकारि च तत् पीतं क्षिप्र व्यापादयेद् व्रणम्।।.....(19)

* मद्यपश्च मैरेय अरिष्टआसव शीधुसुराविकारन् परिहरेत्।
* व्रणित को पथ्य: जीर्णशाल्योदन, जीवन्ती, सुनिषण्णक, वास्तुक, वार्ताक, कारवेल्लक, सदाडिम, ससैन्धव, श्रृतंपिबेत्.
* व्रण में वर्जित आहार: तक्रान्तो नवधान्यादि i) दोषसंजनन, ii) पूयवर्धन
* उत्तर दिशा में स्वस्थ, रोगी या किसी का शिर नहीं करना चाहिए।

20) हिताहितीयाध्याय.

Topics: i) हितकर एवं अहितकर द्रव्य संयोग, कर्म, मानादि से ii) वायु गुणादि,उभयार्थकारि.

1) एकान्तहितकर द्रव्य: जल, घृत, ओदन, क्षीर,

i) एकान्त अहितकर द्रव्य: अग्नि, क्षार, विष

ii) पथ्यतम आहार द्रव्य: जीवन्ती, सुनिषण्णक, मण्डुकपर्णी, गौघृत, सैन्धव, दाडिम, आमलक, मसूर, गोधूम.

iii) एकान्तहितकर पथ्यतम विहार: ब्रह्मचर्य, निवातशयन, उष्णोदकस्नान, निशास्वप्न, व्यायाम, (भा.प्र.: 6 हितकारी द्रव्य)

iv) हिताहितकर द्रव्य: तैलकांजिक

2) अहितकर द्रव्य: a) कर्मविरूध्द: i) नारिकेलेन वराहवसापरिभृष्टां बलाकाम्, ii) कपोत को सर्षपतैल में भूनकर. iii) कांस्यपात्र में 10 दिन रखा घृत, iv) मधु चोष्णैरूष्णे b) मानविरूध: i) मधु + जल, ii) मधु + घृत, iii) 2 प्राणियों की वसा, iv) मधु + स्नेह, v) जल + स्नेह, vi) मधु + स्नेह समान मात्रा में व अन्तरिक्षजल के अनुपान से सेवन नहीं करना चाहिए।

c) संयोग विरूध्द: i) ग्राम्योदक + आनुप मांस – से नवांकुरित धान्य, वसा, मधु, दुग्ध, गुड, माष, सह ii) दुग्ध + मधु - रोहिणी / पौष्कर शाक, iii) मकोय - पीपल / मरिच, iv) उष्णजल - मधु, v) मदिरा - कृशरा एवं दुग्ध, vi) मत्स्य - गुडविकार, vii) मधु - मूली, iii) शूकरमांस - गुड, मधु, ix) दुग्ध - आम, जामुन, मूली, गोहमांस, x) दुग्ध - मछली, xi) केला - तालफल, दुग्ध, दही, तक्र, xii) लकुच - दुग्ध, दही, माष. सर्वांश्च मत्स्यान पयसा विशेषेण चिलचिम।

3) रस विरूध	रस वीर्य विरूध्द	रस विपाक	सर्वत: विरूध्द
1) अम्ल + लवण	मधुर - अम्ल	मधुर - तिक्त	मधुर - कटु
2) तिक्त + कषाय	मधुर - लवण	मधुर - कषाय	लवण - तिक्त
	कटु - तिक्त	लवण - कटु	लवण - कषाय
	कटु - कषाय	अम्ल - कटु	अम्ल -तिक्त
			अम्ल - कषाय
* एकान्त हितकर - जल		* एकान्त अहितकर - अग्नि	

4) विरूध्दाहार: यत्किंचित् दोषमुत्क्लेश्यं भुक्त कायान्न निर्हरेत्।

5) विरूध्दाहार से उत्पन्न रोग में: वमन, विरेचन, शमन, हितकर भोजन.

6) विरूध्दाहार भी अहितकर नही: i) सात्म्यताऽल्पतया, ii) दीप्ताग्नि, iii) तरूणस्य, iv) स्निग्ध, v) व्यायाम, vi) बलिनां

7) वायु गुण: i) पूर्वदिशा - रक्तपित्तभिवर्धन, विषजुष्टानां, रोगाविवर्धन, व्रण क्लेद विवर्धता. ii) पश्चिम - कफमेदोविशोषण, सद्य:प्राणक्षयकर, शरीरशोषण iii) उत्तर - क्लेदनो, बलवर्ध्दन; क्षीणक्षयविष में श्रेष्ठ (पूजित:) iv) दक्षिण - श्रेष्ठचक्षुष्यो, बलवर्ध्दन, रक्तपित्त प्रशमन्, अविदाहि, न च वातप्रकोप

8) संयोगादपराणि विषतुल्याणि भवन्ति।
(संयोग से अच्छे द्रव्य भी विषतुल्य हो जाने से एकान्तरूप से अहितकर है।)
(द्रव्य हिताहितकर - i) स्वभाव ii) संयोग)

21) व्रणप्रश्नमध्यायं.

Topics: त्रयस्तंभ व्याख्या, दोषों का स्थान, कर्म, गुण, प्रकार; शोणित लक्ष वातपित्तकफ सामान्य प्रकोप हेतू, क्रियाकाल वर्णन, व्रणपरिभाषा.

1) त्रयस्तम्भ/त्रिस्थुण: वातपित्तश्लेष्माण एवं देहसम्भवहेतव:।
त एव च व्यापन्न: प्रलयहेतव:। ....(सु.सू. 21/4)
सर्वेषाञ्च व्याधीन वातपित्तश्लेष्माण एव मूलं।.....(सु. सू. 24)
वातपित्तकफ (शोणित 4th दोष) सम्भव स्थिती, प्रलय में कारणभूत. सदा धारण करते है। इनके विना देह नही है।

2) वातपित्तकफ परिभाषा:रूप i) तत्र वा गतिगन्धनयोरिती धातु, ii) तप सन्ताप, iii) श्लिष आलिंगने.

3) दोष स्थान: i) वात: श्रोणिगुदश्रय: ii) तद्उपर्यधो नाभे: पक्वाशय:, पक्वामाशयमध्यपित्तस्य, iii) आमाशय श्लेष

4) दोष उपप्रकार: i) वात - वातव्याधी अध्याय, ii) पित्त - यकृत, प्लीहा, हृदय, दृष्टि, त्वक्, iii) कफ - उर, शिर, कण्ठ, सन्धय, जिव्हामूल

5) विसर्ग आदान विक्षेपै: सोमसुर्य्या अनिला यथा।
धारयन्ति जगद्देह कफ पित्त अनिल स्तथा।।...(21/8)
सुश्रुत - पित्त - अन्तरग्नि, चरक - पित्त - अग्नि (उष्म:)

*पित्त प्रकार:	स्थान	कर्म
i) पाचक:	पक्वामाशयमध्य;	पचति, विवेचयति,शक्त्या शेषाणां, अग्नि संज्ञा.
ii) रंजक:	यकृत्प्लीहा:	रसस्य रागक्दुक्त,
iii) साधक:	हृदय:	प्रार्थित मनोरथ साधनकृदुक्त
iv) आलोचक:	दृष्टि:	रूपग्रहणाधिकृत,
v) भ्राजक:	त्वचा:	अभ्यंग,परिषेक, अवगाह, आलेप; आदीनां क्रिया द्र पक्ता, छायानां प्रकाशक

6) पित्त गुण: पूति, कटु, विदग्धं चाम्लमेव च। तीक्ष्ण, द्रव नील, पीत,

7) आमाशय: i) पर्याय - चतुर्विधस्याहारस्याधार:
ii) स्थान: आमाशय: पित्ताशयस्योपरिष्टात्. (आमाशय - पित्ताशय के उपर आमाशये श्लेष्मा - मधुर, शीतल: शेष कफ स्थानों को बलप्रदान कर (वाग्भट - उरस्थ कफ शेष स्थानों को बलप्रदान करता है।)
* आहार के मधुर, पिच्छिल, प्रक्लेदी, होने से आमाशय में कफ भी मधुर, शीतल, उत्पन्न होता है।

8) श्लेष्मा गुण - पिच्छिल, विदग्धो लवण:, अविदग्ध - मधुर
पंचविध श्लेष्मा: i) श्लेष्मस्थान - श्रेष्ठ शरीरस्य चोदककर्मणाऽनुग्रहं कर्
ii) उर स्थान - हृदयावलम्बन, iii) जिव्हामूल - रसज्ञान,
iv) शिर:स्थ - इन्द्रियाणामात्मवीर्य्येणानुग्रहं,
v) संधिस्थ - संधिसंश्लेषात् सर्वसन्धयनुग्रहं.

...न निर्हरेत्।
, हितकर भोजन.
पतया, ii) दीप्ताग्नि
ां, रोगाविवर्धन,
णक्षयकर, शरीरश
जित:)
दाहि, न च वातप्रक
रूप से अहितकर
प्रकार; शोणित ल
गपरिभाषा.
नवहेतव:।
। ....(सु.सू. 21/4
, 24)
में कारणभूत.
योरिती धातु,
, iii) आमाशय श्लेष
/8)
:)
वेवेचयति,शक्त्या
अग्नि संज्ञा.
गक्दुक्त,
नारथ साधनकृदुक्त
धिकृत,
रिषेक, अवगाह,
आदीनां क्रिया द्रव्य
छायानां प्रकाशक
द्रव नील, पीत, उष्
पित्ताशय के उपरो
ो बलप्रदान करत
है।)
। है।
- मधुर
कर्मणाऽनुग्रहं करोति

...ायुर्वेद समुच्चय

...) शोणितस्य स्थानो यकृत्प्लीहानौ।.....(21/16)

...) शोणित लक्षण: *अनुष्णशीत* मधुर स्निग्ध रक्तश्च वर्णत:।
शोणित गुरु विस्त्र विदाहश्चास्य पित्तवत्।।.....(21/17)

...) क्रियाकाल:

...) संचय: तत्र संचिताना खलु दोषाणां स्तब्धपूर्णकोष्ठता: पीतावभासता, ...चागानां गौरवम्,आलस्यं,चयकारणविद्वेषश्चेति लिंगानि भवन्ति।

...) प्रकोप: अध्ययन, जागरण; शाक, वल्लुर, वरकोद्दालककोर, निष्पाव, ...विषमाशन, अध्यशन, वेगविघात.

...) प्रकोप काल - शीत, अभ्र, प्रवातेषु, धर्मान्त, प्रत्यूषऽपरान्हे, जीर्णेऽन्ते.

...) प्रकोप: मैथुन, तिल, पिण्याक, दधि, सर्षप, तक्र, कूर्चिका

...) प्रकोप काल - उष्णैरूष्णकाले, मेघान्ते, मध्यान्हे, अर्धरात्रे

...) प्रकोप: दिवास्वप्न, महामाष, दुग्ध, इक्षुविकार, समशन, अध्यशन

...) प्रकोप काल - शीतै: शीतकाले, वसन्ते, पूर्वान्हे, प्रदोषे, भुक्तामात्रे:

iv) रक्त प्रकोप: दिवास्वप्न, श्रम, अभिघात, अजीर्ण, विरूध्द, अध्यशन,और ...प्रकोपक हेतू

...ion - दधि - पित्त, कफ प्रकोपक.

...शन, अध्यशन, दिवास्वाप - कफ रक्त प्रकोपक.

...वात पित्त प्रकोपक. अध्यशन - वात कफ रक्त प्रकोपक.

* ...स्माद् रक्तं विना दोषैर्न कदाचित् प्रकुप्याति। (∴ रक्त दोष नहीं।)

...तीय प्रकोप: तेषां प्रकोपात् कोष्ठतोदसंचरण, अम्लिकापिपासपरिदाह, अन्नद्वेष ...त्यालस्यदाश्च, जायन्ते। तत्र द्वितीय क्रियाकाल:।

...वायो: पित्तस्थानगतस्य पित्तवत् प्रतीकार: उदा.प्रवाहिका में अनुलोमन, स्तम्भन ...पित्तस्य च कफस्थानगतस्य कफवत्, कफस्य च वातस्थानगतस्य वातवत्।

c)तृतीय- प्रसर: एवं प्रकुपितानां, प्रसरतां च वायोविमार्ग गमनाटोपौ, ओषचोष परिदाहधू ...मायनानि पित्तस्य, अरोचाविपाकोऽगसादाश्छर्दिश्चेति श्लेष्मणो लिंगानि भवन्ति।

...प्रसर - 15..... शोणितनिमित्त.

...दोषा: कदाचिएकशो द्विशा: समस्ता:

...णितसहिता वा अनेकधा प्रसरन्ति। .....(सु. सू. 21)

...मतश - स्थानसंश्रय: उदर - गुल्मविद्रधिउदरग्रिसंगानाहविसूचिकातिसार, ...प्रमेहाश्मरी मूत्राघात मूत्रदोष,

...वृध्दी)। (वृध्दी - 7 प्रकार: वातपित्तकफरक्त मेदोमूत्रान्त्र)

...निरूध्दप्रकशोपंदशशूकदोष, त्वक्मांसशोणितस्तथा: क्षुद्ररोगान् कुष्ठानि ...। अस्थिगता विद्रध्यनुशयी पूर्वरूपप्रादुर्भाव: तं प्रतिरोगं वक्ष्याम:।

...व्यक्ती: व्याधेदर्शनं वक्ष्याम: शोफार्बुदग्रन्थिविद्रधिविसर्पप्रभृतीनां ...लक्षणता, ज्वरातिसार प्रभृतीनांच।

...भेद: व्रणभिव आपनानां ज्वरातिसारप्रभृतीनांच दीर्घकालानुबन्ध:। ...क्रियमाणोऽसाध्यताम् उपयान्ति।

...) षष्ठ क्रियाकाल: संचयचं प्रकोपश्च प्रसरं स्थानसंश्रयम ।
व्यक्ती भेदश्च यो वेत्ती दोषांणा भवेद भिषक ।। सु.सु. 21/36

...) क्रियाकाल महत्व: संचयेऽपहृता दोषा लभन्ते नोत्तरा गती:।
ते तूत्तरासु गतिषु भवन्ती बलवत्तरा:।। सु. सु. 21/37

...) संसर्ग सन्निपात चिकित्सा: संसर्गे यो गरीयान् स्थादुपक्रम्य: स वै भवेत्।
शेषदोषाविरोधेन सन्निपाते तथैव च ।।.....(21/39)

...) व्रण परिभाषा:वृणोति यस्माद् रूढेऽपि व्रणवस्तु न नश्यति।..(सुश्रुत 21/40)
व्रणयति गात्रवैवर्ण्य करोति च। ..... (डल्हण)

...दि की तरह सुश्रुत भी 3 दोष मानते है परंतु शल्यप्रकरण में उन्होंने 4 दोष ...नि क्योंकि रक्त भी दोष के साथ सभी स्थानों में जाकर रोगोत्पत्ति। बिना रक्त के व्रणस्थान की दुष्टि, शोथ, पूयभवन, रोहण नहीं होता।)

(निराम पित्त: आताम्रं पीतमत्युष्णं रसे कटुकमस्थिरम्।
पक्वं विदग्धं विज्ञेयं रूचिपक्तिबलप्रदम्।।
साम पित्त: दुर्गन्धं हरितं श्यावं पित्तम्ल स्थिरम्,गुरू।
अम्लिका कण्ठ हृद्दाहकरं सामं विनिर्दिशेत्।।)

	काल	दिन	ऋतु	भोजन	रात्र
वातप्रकोप	शीताभ्र	अपरान्ह	वर्षा (धर्मान्ते)	जीर्णऽन्ने	ब्राह्ममुहूर्त प्रत्युष
पित्तप्रकोप	उष्ण	मध्यान्ह	शरद (मेघान्ते)	जीर्यत्यन्ने	अर्धरात्रे
कफप्रकोप	शीतै:	पूर्वान्ह	वसन्ते	भूक्तमात्रे	प्रदोष

22) व्रणास्त्रावविज्ञानीय.

Topics: व्रण - वस्तु, स्थान, आकृती, स्त्राव, वेदना, वर्ण.

1) व्रण वस्तु: 8 त्वक्मांससिरास्नायु अस्थिसन्धि कोष्ठमर्माणी (चरक सन्धि के जगह मेद)

2) व्रण स्थान: त्वग्भेदी व्रण: सूपचर:।

3) व्रण आकृति: 4 आयत, चतुरस्त्र, वृत्त, त्रिपुटक सभी 4 साध्य, शेष विकृत (कृच्छ्रसाध्य)

4) दुष्टव्रण: 6 वात, पित्त, कफ, रक्त, सन्निपातज, आगन्तुज.

5) दुष्टव्रण लक्षण: अतिसंवृत, अतिविवृत,अतिकठिन, अतिमृदु, उत्सन्न, अवसन्न, अतिशीत,अतीउष्ण,उन्मार्गी, उत्संग,दुष्टशोणितास्त्रावी, दीर्घकालानुबन्धी.

* तस्य दोषोच्छ्रायेण षट्त्वं विभज्य यथास्वं प्रतीकारे प्रयतेत्।

6) व्रणस्त्राव: i) त्वक् - सलिलप्रकाशो, ii) मांस - सर्पिप्रकाश, iii) सिरा - रक्तातिप्रवृत्ति, नाडीभिरिव तोयागमनं पूयस्य:ऽवश्यायप्रतिमश्च; पिच्छिलऽवलम्बी, iv) स्नायु - सिंघाणप्रतिम:सरक्तश्च, v) अस्थि - नि:सारं, शक्तिधौतमिवाभाति, स्फुटिते, भिन्ने, दोषावदारिते, vi) संधि - पिच्छिलऽवलम्बी, vii) कोष्ठ - रक्तमूत्रपुरीष पूयोदकानि, viii) मर्म - त्वक्दि सदृश

7)असाध्य स्त्राव: i) पक्वाशय से पुलाकोदकसन्निभ, ii) रक्ताशय से क्षारोदक, iii) आमाशय, त्रिकसंधि - कलायाम्भो.

8) व्रणवेदना: i) वात - अनिमित्तविविधवेदनाप्रादुर्भावो, मुर्हूमुर्हू. ii) पित्त - क्षारावसिक्तवच्च, iii) कफ - अल्पवेदना.

9) व्रण वर्ण: i) वात - भस्मकपोतास्थि वर्ण:, ii) पित्त - श्याव, iii) कफ - पाण्डु.

10) दोषानुसार व्रणस्त्राव:

	वात स्त्राव	पित्त स्त्राव	कफ स्त्राव	सन्निपातिक स्त्राव
त्वक	पारूष्य	गोमेद	नवनित	नारिकेल
मांस	श्याव (काला)	गोमूत्र	कासीस	एरवारूक
सिरा	अवश्याय	भस्म	मज्जा	कांजी
स्नायु	दधि	शंख	पिष्ट	आरूकोदक
अस्थि	क्षारोदक	कषायोदक	तिल	प्रियंगुफल
संधि	मांसधावन	माध्वीक	नारिकेलोदक	यकृत
कोष्ठ	पूलाकोदक	तिल, तैल	वराहवसा	मुदग्यूष

23) कृत्याकृत्यविधि.

Topics: व्रण - सुचिकित्स्य, दूश्चिचिकित्स्य, याप्य, असाध्य.

1) सुचिकित्स्य व्रण - वय:स्थाना, दृढानां, प्राणवतां, सत्त्ववतांच.

2) कष्टसाध्य - एव विपरीतगुण वृध्दकृश अल्पप्राणभीरूषुद्रष्टव्या।

3) सुखरोपणीय व्रण: स्फिक्, पायु, प्रजनन, गण्ड, ओष्ठ, कर्ण, फलकोष, ललाट, पृष्ठ उदर, जत्रु, मुखाभ्यंतर संस्था.

4) दुश्चिकित्स्य: नेत्र दन्त, नाभि,नासा,अपांग,श्रोत्र जठर, नितम्ब, संधि, अन्त:शल्य, अन्तर्मुख, सेवनी, पार्श्व कुक्षी, वक्ष, कक्षा, स्तन, सन्धि भाग, भगंदर, सेवनीकुट, कुटकास्थिसंश्रितम्।

5) कुष्ठिनां विषदुष्टानां शोषिणां।
मधुमेहिनां व्रणा: कृच्छ्रेण, व्रणो व्रणा:। ....(23 / 07)

6) याप्य: अवपाटिका, निरूध्दप्रकाश, सन्निरूध्दगुद, जठर, ग्रंथिक्षत,कोष्ठ, प्रतिशायज, त्वक, प्रमेहरोगी, कृमी, शर्करा, सिकतामेहो, विसर्प, अस्थिक्षत, उर:क्षत, व्रणग्रन्थि शर्करा, सिकतामेह, वातकुण्डलीका, अष्ठीला, दन्तशर्करा, उपकुश, कण्ठशालुक, दन्तवेष्टक, विसर्प से अस्थिक्षत.

7) असाध्य - ऽश्वापानवदुदवृत्तौष्ठा:, गोश्रृंगवदुन्नत, मृदुमांसप्ररोहा; शणतुलवत स्नायुजालवन्तो, वसामेदोमज्जमस्तुलुंगस्त्राविणश्च दोषसमुत्था:। मस्तुलुंगदर्शन, त्रिदोषलिंग प्रादुर्भाव, कासश्वास.

Common: सुखसाध्य,दुश्चिकित्स्य - कर्ण.
सुखसाध्य, दुश्चिकित्स्य, याप्य - जठर.

8) आगन्तु व्रण: सिध्येत्, न सिध्येद्दोषसम्भव:।
(आगन्तु साध्य परंतु दोष की दुष्टि में असाध्य)

9) व्रण पुनर्भव: अजीर्ण, हर्ष, क्रोध, भय आदि

10) शुध्दव्रण: त्रिभिदोषरनाक्रान्त: श्यावौष्ठ पिडकीसम:।
अवेदनो निरास्त्रावो व्रण: शुध्द इहोच्यते ।।

11) रूहयमान व्रण:कपोतवर्णप्रतिमा यस्यान्त: क्लेदवर्जिता ।
स्थिराश्चि पिटीकावन्तो रोहतिती तमादिशेत ।।

12) रूढ व्रण: रूढवर्त्मानमग्रन्थिमशुनमरूजं व्रणम ।
त्वकसवर्णं समतलं सम्यकरूढं विनिर्दिशेत ।।

(वाग्भट - 6 / 7 मास व्रण नियम पालन उपदेश)

24) व्याधीसमुद्देशीय.

Topics: द्विविध व्याधि, त्रिविध दु:ख,धातू प्रदोषज विकार वर्णन, चतूर्विध मलायतनदोष.

1) द्विविध व्याधि: शस्त्रसाध्य, स्नेहादिक्रियासाध्य...(सु. सू. 24)
* शस्त्रसाध्य में स्नेहादिक्रिया, स्नेहादिक्रिया में शस्त्रकर्म न क्रियते।
* तद् दु:खसंयोगा व्याधय इति। (सु. सू. 24)
(तद् दु:ख संयोग व्याधय उच्यते । (सु. सू. 1))

2) दु:खम् त्रिविधम्: आध्यत्मिकम, आधिभौतिकम्, आधिदैविकम्.
* पुन: सप्तविधा व्याधय:।

आध्यात्मिक (आजदो): 3 - i) आदिबलप्रवृत्त: 2 - a) मातृज, b) पितृज
ii) जन्मबल: 2 - a) रसकृत, b) दौहृदापचारकृत,
iii) दोषबल: 2 - a) आमाशयोत्थ, पक्वाशयोत्थ, b) शारीर, मानस
आधिभौतिक: 1 -
i) संघातबलप्रवृत्त - a) शस्त्रादिकृत, b) व्यालादिकृत
आधिदैविक (कादैस्व): 3 i) कालबलप्रवृत्त: 2 - (सामान्य - असामान्य)
ii) दैव: 2 (विद्युतश्मकृत - पिशाचादिकृत) (संसर्गज - आगन्तुज)
iii) स्वभाव: 2 - (कालकृत - अकालकृत)
((आजदो संघ को, कल दैव स्वभावत: देगा।))

	व्याख्या	प्रकार	उदा.
1) आदिबलप्रवृत्त	शुक्रशोणित दोषनिमित्ता	मातृज, पितृज	प्रमेह, कुष्ठ, अर्श.
2) जन्मबलप्रवृत्त	मातुरपचारात्	रसकृत, दौहृदापचार	पंगुजात्यन्धबधिर, मूकम्मिन्मिन वामन.
3) दोषबलप्रवृत्त	आंतकसमुत्पन्न मिथ्याहाराचारकृत	आमाशयोत्थ, पक्वाशयोत्थ शरीर - मानस	शेष सभी
4) संघातबल	आगन्तुज	शस्त्रकृत, व्यालादिकृत	दुर्बलस्य बलवद्विग्रहान.
5) कालबल	शीतोष्ण वातवर्षा प्रभृति निमित्ता:	व्यापन्नऋतुकृत अव्यापन्नऋकृत	---
6) दैवबल	देवद्रोह, अर्थव, उपसर्गज.	विद्युतश्मकृत, पिशाचादिकृत संसगर्ज-(आगन्तुज)	
7) स्वभावबल	क्षुत्पिपासाजरामृत्यु निद्रा.	कालकृत, अकालकृत	

3) सर्वेषाञ्च व्याधीनां वातपित्तश्लेष्माण एव मूलं।...(सु.सू.24/9)

4) धातू प्रदोषज रोग - i) रसदुष्टि - अंगमर्द, ज्वर, पाण्डु, तृप्ति, कार्श्य.
ii) रक्तदुष्टि - अर्श, अर्बुद, अंगमर्द, असृक्दर, रक्तपित्त, इंद्रलुप्त
iii) मांसदुष्टि अर्श, अर्बुद, गलगण्ड, iv) मेददुष्टि - मधुमेह, अर्बुद, गलगण्ड,
v) अस्थिदुष्टि - vi) मज्जादुष्टि - तमोदर्शन, भ्रम, नेत्राभिष्यंद, पर्वस्थूलमूल,
vii) शुक्रदुष्टि - क्लैब्य.

5) मलायतन दोष: 4 (त्वग्दोष, संग, अतिप्रवृत्ती, अप्रवृत्ती)

6) ख वैगुण्य कूपितानां हि दोषाणां शरिरे परिधावताम्।
यत्र संग खवैगुण्याद् व्याधि तत्रोप जायते।। (सु. सु. 24/19)
(रोगोत्पत्ति में दोष - निमित्त कारण।)
(आदिबलप्रवृत्त को: चरक - कुलज. वाग्भट - कुलोद्भव, सहज, याज्ञवल्क - संचारी, भेल - प्रकृती भाव कहते है)

25) अष्टविधशस्त्रकर्मीय.

Topics: अष्टविध शस्त्रकर्म योग्य, सुचीभेद शस्त्रकर्म व्यापद.

1) शस्त्रकर्म:
i) छेद्या: नाडीव्रण, मांससंघात, भगन्दरा, वल्मीक, अर्श,चर्मकील शतपोनक, कफज ग्रंथी, अर्बुद, जतूमणि, अधिमांस, मांसकन्द, अघुष, उपदंश.
ii) भेद्या: विद्रधी अन्यत्र सर्वजात, ग्रन्थास्त्रया, (सन्निपात विद्रधी के सिवा सभी, Alsoसन्निपात ग्रंथि छोडकर अन्य) वृध्द: अलजी, विदारिका, तालुपूप्पूट, विसर्प, दन्तपूप्पूट, प्रमेह, पीडका, अवमन्थक, कुम्भिका, अनुशयी, नाड्यो, क्षुद्ररोग,तुण्डिकेरी, गिलायु, मेदजरोग, व्रणशोफ, स्तनरोग,वृन्द,एक वृन्द अश्मरी
iii) लेख्य: मांसकंदी, अर्श, ग्रंथि, रोहिणी (4), किलास, उपजिव्हीका,दंतवेदर्भ, अधिजिव्हीका, ग्रंथीवर्त्म, मण्डल. iv) वेध्य: सिरा, मूत्रवृध्दि दकोदर
v) एष्या: नाड्या, सशल्याश्च व्रणा: उन्मार्गिणश्च।
vi) आहार्य: शर्करा: 3 (दन्त, पाद, मूत्र); दन्तकर्णमल, अश्मरी, मूढगर्भा, वर्चश्च निचित गुदे, शल्यानि.
vii) स्त्राव्य: कुष्ठ, श्लिपद, विसर्प, ग्रंथि, स्तनरोग, क्षुद्ररोग, विद्रधि (सन्निपातीक छोडकर), अर्बुद, उपदंश, पित्तासृक्कफजाश्चौष्ठ्याःतालुकंटक, पालीरोग,विदारिका,सोषीर, गलशालुक, दन्तवेष्ट , उपकुश, शीताद, दन्तपुप्पुट
viii)1) सीव्य: मेद: समुत्थाश्च भिन्ना; सुलिखिता गदा:, सद्योव्रण, चलसंधिव्याश्रित
2) सीवन निषेध: क्षार अग्निविष, मारूतवाहित: अन्तलोहितशल्याश्च.
3) सीवन द्रव्य(8): सूक्ष्मसुत्रेण,कल्केनाश्मन्तक,शण,क्षौमसुत्र,स्नायू,बाल,मूर्वा, गुडूची
4) सीवन प्रकार: 4: i) वेल्लितक ii) गोफणिका iii) तुन्नसेवनी iv) ऋजुग्रन्थि.

Common: छेद्य, भेद:- नाडीव्रण. छेद्य - लेख्य:- मांसकन्दी व अर्श.
भेदन, आहार्य:- अश्मरी. भेदन, विस्त्रावण - विद्रधी, ग्रंथी, क्षुद्ररोग, स्तनरोग, विसर्प, दन्तपूप्पट, विदारिका. छेद्य, भेद्य,लेख्य विस्त्राव्य - ग्रंथी.
छेद्य, विस्त्राव्य - अर्बुद.

2) सूची भेद: तीक्ष्णग्र + मालतीपुष्पवृन्ताग्र परिमण्डला.
i) वृत्त - अल्पमांसे सन्धौ, 2 अंगुल.
ii) आयत - त्र्यंगुला त्र्यस्त्रा (त्रिकोन मुख)मांसले,
iii) धनुर्वक्र - मर्म फलकोशोदर
सीवन विधि: न अतिदूर, निकृष्टे वा दूराद्रुजो, व्रणौष्ठस्य सन्निकृष्टे अवलुंचन

3) शस्त्रकर्म व्यापद्: 4 - हिन, अति, तिर्यक्, आत्म गात्रच्छेद
i) मर्मघात लक्षण: प्रमोह, संलयन, मांसोदकाभं, रुधिरच्य गच्छेत्.
ii) सिरा लक्षण: सुरेन्द्रगोपप्रतिमं, प्रभूत, रक्त.

iii) स्नायु: कौब्जत्वं शरीरावयवावसाद;, चिराद् व्रणो रोहति.
iv) संधि: शोफातिवृध्दि, रूजश्च, पर्वसु, भेदशोफौ.
v) अस्थि: घोरा रूजो in निशा दिनेषु, सर्व अवस्थासु न शांती, तृष्णा, श्वयथु.
vi) मांस: स्पर्श अभाव, विपाण्डुवर्णा, मांसमर्मण्य.
4) चिकित्साफल: धर्म, अर्थ, कीर्ति, ग्रहणमुत्तमम्, स्वर्गवासंच.
(शस्त्रकर्म: चरक - 6, सुश्रुत - 8, वाग्भट - 13)

26) प्रनष्टशल्यविज्ञानीय.

Topics: शल्य - प्रकार, गती, स्थानानुसार लक्षणे.
1) शल्य: शल्य, श्वल, आशुगमने धातु:।
तद् द्विविधं - शरीरम् आगन्तुश्च. सर्वशरीरबाधकरं शल्यं ।
तदिहोपदिश्यत इत्यत: शल्यशास्त्रम (सु. सू. 26) और (सु. सू. 7)
* शरीरं - रोमनखादि धातवोऽन्नमला दोषाश्च दुष्य:।
* आगन्तु - शरीरशल्यव्यतिरेकेण.
* लोहानामपि दुर्वारत्वाद् अणुमुखत्वाद् दूरप्रयोजनकरत्वाच्च शर एवाधिकृत:।
2) शर (शल्य) द्विविध: कर्णी, श्लक्ष्ण.
3) शल्य गति : 5 - उर्ध्वम्, अधो, अर्वाचीन, तिर्य्यक,ऋजु.
(अ. हृ. - वक्र गति अर्वाचीन के जगह)
(अ.सं. 3 - उर्ध्व, अध, तिर्यक (इनकी प्रत्येकी 2 ऋजू और वक्र))
4) शरीरस्थ शल्य लक्षण: 2 - a) सामान्य लक्षण: श्याव पिडका, शोफवेदनावन्त, मुहुर्मुहु: शोणितास्त्राविणं, बुदबुद्वदुन्नतं, मृदुमांसंच व्रण.
b) विशेष लक्षण: i) त्वग्गत - विवर्ण: शोफा कठीन
ii) मांस - चोषपाकौ, पीडनसहिष्णुता, शोफाभीवृध्दी.
iii) पेशी - मांसवात चोषशोफवर्जम्; iv) सिरा - आध्मानं, सिराशूल, सिराशोफ,
v) स्नायु - संरम्भ, उग्ररूक्. vi) स्त्रोतो - स्वकर्मगुणहानि.
vii) धमनी - सफेनरक्त, सशब्दो निर्गच्छति, पिपासा, हृल्लास.
viii) अस्थि - वेदनाप्रादुर्भाव, शोफ, अस्थिविवर - अस्थितोद, संहर्ष.
ix) संधि, अस्थिवत x) कोष्ठ - आटोपानाह.
5) अस्थ्यात्मकं भूज्यते ...प्रायो निर्भुज्यते शार्ङ्गम् (श्रृंग) आयस (लोह)
6) रक्त और मांस पाक करनेवाले: वार्क्ष (वृक्ष), वेण (बास), तृण.
7) चिरस्थानाद् विलीयन्ते: कनक,रजत,ताम्र, रैतिक (पिताम्ब), त्रपुस (रांगा).
8) न विशीर्यन्ते: विषाण (सींग), दन्त, केश, अस्थि, वेणु (बांस), दारू (लकडी), पत्थर, मिट्टी.

27) शल्यापनयनीय

Topics: शल्य निर्हरण उपाय; जल निम्मजन, बाहूरज्जूलतापाश आदि.
1) शल्यं द्विविधम्: अवबध्द, अनवबध्द.
2) शल्योध्दरणार्थ पंचदश हेतू: 15 - अनवबध्द
i) स्वभाव - अश्रुक्षवथुउद्गार कासमूत्रपुरीषानिल, ii) पाचन - मांस अवगाढ शल्य
iii) भेदन - पक्वमभिद्यमान, iv) दारण, v) पीडन, vi) प्रमार्जन - अक्षशल्यानि,
vii) निर्ध्मापन - आहार श्लेष्म हिन अणु शल्य viii) वमन - अन्नशल्यानि,
ix) विरेचन - पक्वाशय: x) प्रक्षालन - व्रणदोषाशयगतानि.
xi) प्रतिमर्श - अंगुली घर्षण xii) प्रवाहण - वातमूत्र पुरीष गर्भसंग.
xiii) आचुषण, xvi) अयस्कान्त, xv) हर्ष - शोकशल्यं.
(अष्टविध शस्त्रकर्म में से समावेश - भेदन.
व्रणोपक्रम मे - पाचन, वमन, विरेचन, दारण, पीडन.)
3) सर्वशल्य निर्हरण: 2 i) प्रतिलोम - अर्वाचीन, ii) अनुलोम - पराचीन
4) कण्ठ शल्य में बाल (केश) उपयोग.
5) जल निम्मजन में चिकित्सा: i) अवाक्शिरसम् अवपीडयेद्। अधोमुख (Nelson method), ii) धूनीयाद् (Eve's method).
6) संदर्भ: बाहुरज्जुलतापाशै:
(Throtting. i) Strangulation. ii) Hanging.)
7) If शल्य न निकाला then, शोथ, पाक, रूजा, वैकल्य, मरण.

28) विपरीताविपरीतव्रणविज्ञानीय.

Topics: अरिष्ट, दोषानुसार प्राकृत व्रणगंध.
* फलअग्निजलवृष्टींना पुष्पधूमअम्बुदा यथा।
ख्यापयन्ति भविष्यत्त्वं तथा रिष्टानि पंचताम्।।...(28/3)
1) अरिष्टज्ञान न होने में कारण: 4
सौक्ष्म्णात्, प्रमाद, आशु व्यतिक्रम, मृत्यु (नोद्गतान्यज्ञैर्मुर्मूर्षेने त्वसम्भवात।)
2) अरिष्ट होने पश्चात् मृत्यू रोकने उपाय: 3
ब्राह्मणैस्तत किलामलै:, रसायन, तपोज (जप (गायत्री)
* गतायुष:.....लक्षयेत् कुशलो भिषक्। .....(28/7)
(गतायूषी रोगी कि चिकित्सा करने से असिध्दी प्राप्त होती है ।)
3) दोषानुसार प्राकृत गंध: i) वात - कटु, ii) पित्त - तीक्ष्ण, iii) कफ - विस्त्र,
iv) रक्त - लोह, v) वातपित्त - लाजा, vi) पित्तकफ - तीलतैल,
vii) कफवात - अतसी, viii) सन्निपात - मिश्रित.

29) विपरीताविपरीतस्वप्ननिद्रर्शनीय.

Topics: शुभअशुभ, स्वप्न संबंधी अरिष्ट वर्णन.
1) चिकित्सा में सफलतादायक:पाखण्ड,आश्रम, वर्णानां सपक्षा:कर्मसिध्दये।
अशुभ - नपुंसक, स्त्री दूत - असूयका:
2) स्विन्नाभितप्ता मध्यान्हे ज्वलनस्य समीपत:।
गर्हिता: पित्तरोगेषु दूता वैद्यमुपागता:।। त एव कफरोगेषु कर्मसिध्दिकरा: स्मृत:।
3) रक्तपित्त अतिसारेषु प्रमेहेषु तथैव च। प्रशस्तो जलरोधेषु दूतवैद्यसमागम:।।
4) i) पुन्नामान: खगा वामा: स्त्रीसंज्ञा दक्षिणा: शुभा:।
ii) श्व, श्रृगाल (सियार) - दाए से बाएं निकलना प्रशस्त (श्रेष्ठ)
iii) खरगोश, सर्प भासपक्षी, उल्लु - किसी भी ओर निकलना अप्रशस्त,
5) अशुभ: कुलत्थ, तिल, कार्पास, तुष, पाषाण, भस्म, अंगारतैल, कर्दम;
i) शुभ: प्रसन्ना अन्य मद्य - अशुभ, ii) ग्रंथि, अर्बुद में छेद शब्द,
iii) विद्रधि, उदर, गुल्म में भेद शब्द, iv) रक्तपित्त, अतिसार में छ्द .
अशुभ - छर्द्या गर्दभोष्ट्रयो: वातपुरीषाणां शब्दौ वै।
(वमन में गदहे और उँट का शब्द) (वात और मल के निकलने के शब्द)
6) स्वप्न संबंधि अरिष्ट: व्याधि - मैत्री i) ज्वरितानां शुना संख्य,
ii) कपिसख्यं तु शोषिणाम्, iii) उन्मादे राक्षसै:, iv) अपस्मारे प्रवर्तनम्,
v) मेहातिसारिणां तोयपानं, vi) स्नेहस्य कुष्ठिनाम्, vii) गुल्मेषु स्थावरोत्पत्ती:
कोष्ठे, viii) मूर्ध्नि शिरोरूजि, ix) शष्कुलीभक्षणं छर्द्या, x) अध्वा श्वासपिपासयो:,
xi)रक्तपित्ती पिबेद्यस्तु शोणित, xii) हारिद्र भोजनं वाऽपि यस्य स्यात् पाण्डुरोगिण:।
7) उपरोक्त स्वप्न मुक्ति उपाय:
i) माष,तिल,लोह,कांचन (स्वर्ण) का दान।
ii) गायत्री मन्त्र, त्रिपाद: (महामृत्युंजय)।
iii) देवताऽऽयतने चैव वसद्रात्रित्रयं(3 दिन (रात्र) मन्दिर में रहना), iv) पूजयेत्नित्य

30) पचेंद्रियार्थविप्रतिपत्ति.

1) अरिष्ट: शरीर, शील, प्रकृति में विकार होना।
2) श्रृणोति विविधान् शब्दान यो दिव्यानाम् अभावत्।
3) न पश्यति सनक्षत्रां यश्च देवीम् अरून्धतीम्।
ध्रुवम् आकाशगंगम् वा तं वदन्ति गतायुषम्।।
4) यो वा मयुरकण्ठाभं विघूम वह्निमीक्षते।
आतुरस्य भवेन्मृत्यु: स्वस्थो व्याधिमवाप्नुयात्।।
5) अरिष्ट: - i) इंद्रिय क्षमता नष्ट, ii) मिथ्या योग, iii) न योग.

31) छायाविप्रतिपत्ति.

1) छाया: 4 (श्यावा,लोहितिका,नीला,पीतिका) (चरक: (5 छाया)- (7 प्रभा))
2) मृत्यु सूचक:लज्जा नष्ट होना और प्रभा, धृति, स्मृति, श्रिय (शोभा) अकस्माद प्राप्त होना।

a) ओष्ठ: उभौ, जाम्बवाभासौ, क्षिप्तश्रोर्ध्व, b) दशन: खंजन प्रतिभा

3) श्वास कास में अरिष्ट: अतिसारो ज्वरो हिक्का छर्दि: शुनाण्डमेढ्रता।
श्वासिन: कासिनो वाऽपि यस्य तं क्षीणमादिशेत्॥

4) ज्वरातिसारशोफा:.स्युर्यस्यान्योन्यावसादिन:।
प्रक्षीणबलमांसस्य नासौ शक्यश्चिकित्सितुम्॥

5) प्रवाहिका शिर:शूलं कोष्ठशूलञ्च दारूणम् ।
पिपासा बलहानिश्च तस्य मृत्युरूपस्थित:॥ (31/27)

6) मृत्यु कारण: 3 i) विषमेणोपचार, ii) कर्मभिश्च पूराकृतै: iii) अनित्यत्वाच.

32) स्वभावविप्रतिपत्ति.

1)यस्य वाऽप्सु कफ पुरीष रेतांसि निमज्जन्ति। स्नेहाभ्यक्तकेशांग इव यो भाति।

2) यस्तु पूर्वाह्णे भुक्तमपराह्णे छर्दयत्यविदग्धम् ।

अतिसार्यते वा ज्वरकासाभिभूत: स श्वासान् म्रियते।...(32/5)

3) अरिष्ट को जानकर तथा साध्यासाध्यता परिक्षा करने वाला वैद्य राज्ञ: सम्मतो भवेत् (राजा के सम्मान का पात्र)।

33) अवारणीय.

अवार्य (असाध्य) रोग वह जो उपद्रवों से युक्त और रसायन के बिना असाध्य है।

1) महागद: चरक, सुश्रुत, वाग्भट

चरक - i) वातव्याधी, ii) कुष्ठ, iii) उदर, iv) मधुमेह, v) गुल्म, vi) शोफ, vii) यक्ष्मा, viii) अपस्मार.

सुश्रुत - i) वातव्याधी, ii) कुष्ठ, iii) उदर, iv) प्रमेह, v) अर्श, vi) भगन्दर, vii) अश्मरी, viii) मूढगर्भ (दुश्चिकित्स्य)

(वाग्भट - Same as सुश्रुत only ग्रहणी in place of मूढगर्भ.)

वातव्याधी - शून, सुप्त, कम्पाध्माननिपीडितम्, रूजा.

कुष्ठ - पंचकर्मगुणातीतं कुष्ठं हन्तीह कुष्ठिताम्.

उदर - पार्श्वभंगा अन्नविद्वेष शोफ अतीसार पीडित, पूर्यमाणश्च.

प्रमेह - पिडका पीडितं, अर्श - शूल, शोफ अतिसार संयुक्त.

भगन्दर - किमय:, शुक्रमेव, अश्मरी - प्रशूननाभिवृषणं, रूध्दमूत्रं.

मूढगर्भ - गर्भकोष अपरासंगो मक्कले योनिसंवृति:। यक्ष्मा - शुक्लाक्षम्

विद्रधी - आध्मातं, बध्दनिष्यंदं (मूत्रावरोध)

पाण्डु - पाण्डुदन्तनखो, पाण्डुनेत्र, पाण्डुसंघातदर्शी.

रक्तपित्त - लोहितं छर्दयेत्, बहुशो लोहितेक्षण:, रक्तानांच दिशा द्रष्टा.

उन्माद - अवांड्मुख, उन्मुखो, क्षीणमांसबलो, जागरिष्ण.

अपस्मार - वेगबहुशो, चलिभ्रुवम्. (अरिष्ट वर्णन अध्याय 28 to 33)

34) युक्तसेनीय.

Topics: चतूष्पाद वर्णन.

1)विष देने के स्थान:पन्थान,उदक,छाया,भक्त,यवस,इन्धन...(सु.सू.34/5)

2) मृत्यु संख्या (101): 1 कालमृत्यु, Others आगन्तुज.

3) राजा की रक्षा By रसविशारद, मन्त्रविशारद. ....(सु.सू.34/8)

4) राजा गुण: 5 –आज्ञा, त्याग, क्षमा, धैर्य, विक्रम.

5) चतुष्पाद क्रम: वैद्यो व्याध्युपसृष्टश्च भेषजं परिचारक:।

i)वैद्य: तत्त्वाधिगतशास्त्रार्थो, दृष्टकर्मा, शुचि,सज्जो पस्करभेषज:,सत्यधर्मपरो, विशारद.

ii) रोगि: आयुष्मान,सत्ववान्, साध्यो, द्रव्यवान, आत्मवान, आस्तिक,वैद्यवाक्यस्थो

iii) ओषधि: मनस्कान्त, अग्लानिकर, अविकारी, समक्ष्य दत्तं काले.

iv) परिचारक: स्निग्धो, अजुगुप्स, बलवान, अश्रान्त: वैद्यवाक्यकृद्
(वैद्य के वाक्य अनुसार रोगी की सेवा).

6)राजा और उसकी सेना का विष से रक्षण - वैशिष्ट्य सुश्रुत

35) आतुरोपक्रमणीय.

Topics: आयु लक्षण, प्रमाण (संख्या), सार, व्याधि, अग्नि, वय, देह, देश, साध्यासाध्यत्व वर्णन.

* दीर्घायु लक्षण: महापाणीपाद पार्श्व पृष्ठ स्तनाग्र दशन वदन स्कंध ललाट दीर्घांग, अंगुल पर्वोच्छ्वास प्रेक्षण बाहु दीर्घ, ह्रस्वजंघामेढ्रग्रीवं, स्नानानुलिप्तं, मूर्ध्दानुपूर्व्या विशुष्यमाणशरीर.

(उपरोक्त लक्षण के विपरीत - अल्प आयु और मिश्रित लक्षण - मध्यम आयु)

1) दीर्घायु लक्षण (100 वर्ष):
गूढसंधिसिरास्नायु:, संहतांग, स्थिरेन्द्रिय, उत्तरोत्तरसुक्षेत्रो.

2) मध्यम लक्षण (70 वर्ष): द्वे वा तिस्त्रोऽधिका वापि
(नेत्र के नीचे 2 अथवा 3 लम्बी रेखाएँ),
पादे कर्णो च मांसलो, नासाग्रमूर्ध्वंच, भवेदूर्ध्व लेखाश्च पृष्ठत:।

3) अल्पआयु लक्षण (25 वर्ष):
ह्रस्वानि यस्य ह्रस्व पर्वाणि सुमहच्चापि दिर्घ मेहनम्। प्रेक्षते यश्च विभ्रान्तं.

4) नयनत्रिभागपरिणाहा तारका: नवमस्तारकांशो दृष्टि:। .....(सु.सू.35)
(नेत्र के 1/3rd तारका और तारका के 1/9th दृष्टि)
(नेत्रबुदबुद के 1/3rd कृष्णमण्डल और कृष्णमण्डल के 1/7th दृष्टि। ..(सु.उ.1)

5) 25Yrs.पुमान् और 16 Yrs. नारी - समत्वागत वीर्यो. ..(सु. सू. 35/15)
(सु. शा.10 - विवाह काल - पुरूष - 25 वर्ष, स्त्री - 12 वर्ष के बाद)
(पूत्रोत्पत्ती - पूरूष - 25 वर्ष, स्त्री - 16 वर्ष.),

6) प्रमाण: i) नासापुट - त्रिभांगागुलविस्तार,
ii) 2 अंगुल - पादांगुष्ठ,प्रदेशिनी;वृषणचिबुकदशन नासापुट कर्णमूल नयनान्तराणि।
iii) 3 1/2 अंगुल - अंगुष्ठ, कनिष्ठिका,
iv) 4 अंगुल - मेहन वदनान्तर नासाकर्ण ललाट ग्रीवोच्छाय दृष्टयन्तराणि।,
v) 4 1/2 अंगुल - प्रदेशिनी, अनामिका,
vi) 5 अंगुल - अंगुष्ठमूल प्रदेशिनी श्रवणापांगान्तर मध्यमांगुल्यौ।,
vii) लम्बाई - 4, रूंदी - 5 - पादाग्र, पादतल. लम्बाई – 5, रूंदी - 4 - पाष्णि, लम्बाई - 6,रूंदी - 6 - हस्ततल,
viii) 10 अंगुल - मस्तकादवटुकेशान्तो, ix) 11 अंगुल - केशान्तमस्तकान्तरम्,
x) 12 अंगुल - भगविस्तार मेहननाभिहृदय ग्रीवा स्तनत्तर मुखायाम मणिबन्ध प्रकोष्ठ स्थौल्यानि।

[(स्मरातपत्र/भगशिश्निका (Clitoris) / स्मरमन्दीर - भग के उपर के भाग में पिप्पल सदृश अंग. डल्हण भा.प्र.ने. इसको मदनातपत्र कहा है।)]

xi) 14 अंगुल - कर्णावट्वन्तरं: (परिणाह - पाद गुल्फ जंघा जानु)
मध्यानि, चतुर्दशांगुलायत: पाद:,
xii) 16 अंगुल-इंद्रबस्तिपरिणाह, अंसपीठ, कूर्परान्तरायाम:।,
xiii) 18 अंगुल जंघा उरू (स्त्री उर और पुरूष कटिसदृश,)
(डल्हण - 12 एवं 24 अंगल पुरुष उर: कहा है।)
xiv) 20 अंगुल - ग्रीवा परिणाह, xv) 24 अंगुल - हस्त,
xvi) 32 अंगुल - उरू की गोलाई, उरू परिणाह, भुजा.,
xvii) 120 अंगुल - पुरूष लम्बाई.
(चरक व अ. सं. - पुरूष प्रमाण - 84 अंगुल, अ. हृ. 31/2 हस्त)

7) सार वर्णन:
श्रेष्ठ: त्वकसार - सुप्रसन्नमृदुत्व,
रक्त - स्निग्ध ताम्र नख नयन तालू प्राणीपाद
मांस - अच्छिद्रगात्रं, गूढास्थिसन्धि,
मेद - स्निग्धमूत्रस्वेदस्वरं, आयाससहिष्णुं,
अस्थि - महाशिर:स्कन्धं. मज्जा - महानेत्रं च,
शुक्र - स्निग्धस्त्रंहतश्वेतास्थिदन्तनेखं, बहुलकामप्रजं.
सत्व - स्मृती, भक्ती, प्रज्ञा, शोर्य.

प्रकार: 3 (साध्य, याप्य, प्रत्याख्येय) से इनकी परिक्षा

	b) प्राक्केवल	c) अन्य लक्षण
	i) न उपद्रव न पूर्वरूप	i) स पूर्वरूप
	ii) प्राक्केवल यथास्वं प्रतिकुर्वीत	ii) अन्यलक्षणोत्वादिव्याधौ प्रथम अवस्थावत
	iii) अनुबन्ध्य	iii) प्रयत्नेन

Symptomatic चिकित्सा By सुश्रुत (सु .सू. 35 / 23)

क्रियाकालं न हापयेत्। .....(सु. सू. 35)

i) विषम - कदाचित् पचति कदाचित् आध्यमानादि

आशु पचति. iii) मन्द - कालेन् पचति, शिरागौरवकासश्वासादी

समदोष - सम्यक् पचति. (दोषानभिपन्न)

विषमे स्निग्धाम्ललवणे: क्रिया तीक्ष्णे मधुर स्निग्धशीतै विरेकश्च.

कृतितकषार्येर्म्ने. समे परिक्षणं कूर्वित. अत्याग्नि - माहिषक्षीरदधिसर्पि.

पर्याय: जाठर, भगवान, ईश्वर, अन्न पाचक, रसान् आदान,

दोषी: प्राण, अपान, समान.

3

बाल्यावस्था: 3	i) क्षीरप	जन्म से 1 वर्ष तक.
	ii) क्षीरान्नाद	1 - 2 वर्ष.
	iii) अन्नाद	(2 to 16) yrs.
मध्यमा: 4	i) वृध्दि	(16 to 20) yrs.
	ii) यौवन	(20 to 30) yrs.
	iii) संपूर्णता	(30 to 40) yrs.
	iv) परिहाणि	(40 to 70) yrs.
वृध्दा:	- जरा	70 to मृत्युपर्यंत.

वृध्द - जीर्णागारभिवाभिवृष्टमवसीदन्त (जीर्ण मकान के समान)

वृध्द की चिकित्सा बालक समान, & vice - versa

बाल और वृध्द में - अग्नि, क्षार, विवर्जित उपयोग मृदु क्रिया.

देह 3 (स्थुल, कृश, मध्य)

स्थूल का कर्षण; कृश का बृंहण और रक्षणनचैव मध्यस्य.

कर्षणप्रवृत्तीस्तस्मात् बलमेव प्रधानमधिकरणानाम्।

बल का अनुमान: देह स्थिरता (दृढता) और व्यायाम

देश 3 (आनूप, जांगल, साधारण)

साध्यासाध्यत्व: सुखसाध्य:

देशविपरीत - जांगल देश में कफ रोग.

प्रकृति - पित्त प्रकृति में कफ रोग उत्पत्ति.

सात्म्य - कटु सात्म्य मनुष्य में कफ रोग

विपरीत - शरद ऋतु में वात रोग और दुष्य विपरीत

आवरात्यित: (Except. रक्तजगुल्म - पुराना होने पर सुखसाध्य)

सम्पत्, बल, सत्व, आयु का प्रमाण अच्छा हो।

कृच्छ्रसाध्य में एक ही चिकित्सा अधिक दिन तक उपयोग न करें।

यस्या अपि फल न दृश्यते साऽपि *सप्तरात्र* प्रतिकर्तव्या। क्रियासंकर निषेध

कम 7 दिन तक औषध का प्रभाव देखे और उसके पश्चात् ही औषध

)... (डल्हण)

36) भूमिप्रविभागीय.

औषध संग्रह, भूमी, भेषजागार वर्णन.

आदीतेत्येष भूमिपरीक्षाविशेष: सामान्य:।

उत्तर की ओर बैठकर ग्रहण करे)

भूयिष्ठ: स्थूल वृक्ष.

भूयिष्ट - कोमल, अग्निगुणभूयिष्ट - पाण्डु वृक्षप्ररोह,

भूयिष्ट - अल्परस, आकाशगुणभूयिष्ट - सर्वतोऽसार वृक्ष.

संग्रह काल: केचिदाहुराचार्य्या:

वर्षाशरद्हेमन्तवसन्तग्रीष्मेषु यथासंख्यं मूल पत्रत्वक्क्षीर सारफलान्याद)

सुश्रुत संमत (अन्यआचार्य)	राजनिघण्टु
वसन्त - सार	पुष्प
ग्रीष्म - फल	शाखा अचिरपत्र
प्रावृट - मूल	-
वर्षा - पत्र	-
शरद - त्वक्	पंचांग
हेमन्त - क्षीर	कन्द
	शिशिर - मूल

तत् तु न सम्यक्।

i) आग्नेय औषधि आग्नेय ऋतु में:

ii) अतिमधुरास्निग्धशीत - सौम्य (i.e जगत - सौम्य और आग्नेय)

4) विरेचक औषधि:

पृथ्वीजल; वमन औषधि - अग्न्याकाशवायु,संशमन औषधि - आकाश.

5) मधु, घृत, गुड, पिप्पली, विडंग नित्य पुराना उपयोग करें.

शेष द्रव्य नूतन प्रयोग.

6) सर्वाण्येव सक्षीराणि वीर्य्यवन्ति।

(if असम्पत् (गुण Absent) then 1 वर्ष के भीतर प्रयोग करे।)

औषध ज्ञान में सहायक - 4 लोग

i) गोपाल, ii) तापस (तपस्वी), iii) वनचारि, iv) मूलाहारा वाले

7) क्षार ग्रहण में No specific ऋतु.

8) जल - अव्यक्त रस

9)जंगमानां वय:स्थानां रक्तरोमनखादिकम्।क्षीरमूत्रपुरीषोणि *जीर्णाहारेषु* संहरेत्।।

युवावस्था वाले जंगम पशु - पक्षि का रक्त, रोम, नखादि ग्रहण करणा चाहिए।

आहार जीर्ण होने पश्चात् क्षीर, मूत्र, पुरीष औषधार्थ प्रयोग करें।

10) भेषजागार वर्णन

37) मिश्रकध्याय.

Topics: (मिश्रक गण वर्णन नहीं) शोफहर और शोफ संबंधी द्रव्य वर्णन.

i) वात शोफ हर - मातुलुंग, अग्निमन्थ, भद्रदारू, महौषध, अहिंस्त्रा, रास्ना.

ii) पित्त - दूर्वा, नलमूल, मधुक, चन्दन , शितल गुण

(काकोल्यादि, उत्पलादि, न्यग्रोधादि),

(कषाय लेपयो: प्रायो युज्यते रक्तचन्दनम्।)

iii) कफ - अजगन्धा,अश्वगन्धादि,

iv) सन्निपातज - लोध्र,पथ्या,पिण्डीतक,अनंत्ता.

वात शोफ में - स्निग्धाम्ललवणो, कोष्ण: लेप.

पित्त शोफ में - शीत: पयोयुक्त:

कफ शोफ में - क्षार, मूत्र (गोमूत्र), ओष्ण.

i) पाचन - उष्ण, ii) दारण - क्षार, iii) पीडन - पिच्छिल,

iv) शोधन - आरग्वध , v) व्रणशोधनार्थ रसक्रिया - सालसारादि पटोल त्रिफला.

vi) व्रणधूपन - सालसारादि गण, vii) रोपण - शीतकषाय, काकोल्यादि, न्यग्रोधादि,

viii) व्रणरोपणार्थ - न्यग्रोधवर्ग, त्रिफला,

ix) उत्सादन - काकोल्यादि, x) अवसादन - धातुचूर्ण,

xi) विम्लापन आदी के लिए - समस्त वर्ग, अर्धवर्ग,या जीतने प्राप्त उतने द्रव्य का प्रयोग करे ।

38) द्रव्यसंग्रहणीय अध्याय

[गण संख्या: सुश्रुत - 37, अ. सं. - 25, अ. हृ. - 33

चरक - Not mentioned द्रव्य गण:

i) (अ. सं. सू.14) शोधनादि संग्रहाध्याय -10 गण का वर्णन -वमन, विरेचक, निरूहोपयोगी, शिरोविरेचन, (प्रायोगिक, स्नैहिक, तिक्ष्ण)धूम: (वात, पित्त, कफ) शामक),

ii) (अ. सं. सू.15) महाकषाय संग्रहाध्याय - 45 महाकषाय वर्णन.

450 कषाय वर्णन, Not mentioned - (वमनोपग, विरेचनोपग, आस्थापन, अनुवासन, शिरोविरेचन), (चरक – 50 महाकषाय)

iii) (अ. सं. सू.16) विविधगण संग्रहाध्याय:

a) गण की संख्या: 25 परंतु वर्णन 26

b) पिप्पल्यादि गण (Not in अ.हृ.; Only different)

(अ. हृ. - गण संख्या: 33),

सुश्रुत - गण संख्या: 37, (वात शमन - 9, पित्त - 11, कफ - 17,)

प्रभाव - 81 - कूल द्रव्य - 290

(चरक - महाकषाय में कूल Drug - 274)

सुश्रुत	अ. सं. / अ. हृ.
i) विदारीगन्धादि	विदार्यादि
ii) विरतर्वादि	विरतरादि
iii) सालसारादि	असनादि
iv) काकोल्यादि	पद्मकादि

वत्सकादि - अ.हृ. में है, परंतु सुश्रुत में नहीं.

सुश्रुत में है, परंतु अ. हृ. में नहीं - i) बृहत्यादि, ii) लाक्षादि, iii) आमलक्यादि, iv) उत्पलादि, v) त्रप्वादि, vi) पिप्पल्यादि , vii) त्रिकटु, viii) त्रिफला.]

द्रव्य गण: 37 ..... (सुश्रुत)

1) विदारीगंधादि गण - शोष, गुल्म, वातपित्त नाशक वाग्भट - (हृद्य, बृंहण)Extra,

2) आरग्वधादि - श्लेष्मविषापह; व्रणशोधन,

3) वरूणादि - कफमेद नाशक, शिर:शूल, गुल्म, आभ्यंतर, विद्रधी, वाग्भट - मदाग्नि उरूस्तम्भ,

4) वीरतर्वादि - अश्मरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात,

5) सालसारादि - कुष्ठ, पाण्डु (वाग्भट - असानादि में श्वित्र, कृमि),

6) रोध्रादि - (मेदकफ, योनिदोष) हर,

7) अर्कादि - कफमेदविषापह व्रणशोधन,

8) सुरसादि - कफ, कृमि, प्रतिश्याय, अरूचि, कास, श्वास; व्रणशोधन,

9) मुष्ककादि - मेदोघ्न, शुक्रदोषहृत्; (वाग्भट - गुल्म) Extra,

10) पिप्पल्यादि - दीपन, गुल्म, शूल, आमपाचन (वाग्भट - अर्श, पीनस),

11) एलादि - विष, व्रण प्रसादन,

12) हरिद्रादि - स्तन्यविशोधन, आमातिसारशमनो, दोषपाचन (वा.- आढ्यवात),

13) श्यामादि - उदावर्तनाशन, गुल्म, विष, आनाह, उदर, विड्भेदी. (वाग्भट - हृद्रोग मूत्रकृच्छ्र),

14) बृहत्यादि गण - हृद्रोग,

15) पटोलादि गण - ज्वरोपशमन: (वाग्भट - कामला),

16) काकोल्यादि गण - (स्तन्यश्लेष्मकर), जीवन, बृंहण, वृष्य. (अष्टवर्ग समावेश - जीवनीय गण),

17) उषकादि गण - अश्मरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्रा,

18) सारिवादि गण - पित्तज्वर प्रशमन, दाहनाशन,

19) अंजनादि गण - अभ्यंतरम् (भीतरी दाह),

20) परूषकादि गण - मूत्र दोषहर, हृद्य (गण includes त्रिफला),

21) प्रियंग्वम्बष्ठादि - पक्वातीसार नाशन, सन्धानीय,

22) न्यग्रोधादि गण - मेदोघ्न, योनिदोषहर.

23) गुडूच्यादि गण - सर्वज्वरान्, 24) उत्पलादि गण - हृद्रोग,

25) मुस्तादि गण - स्तन्यशोधन. 26) आमलक्यादि गण - सर्वज्वरापह:,

27) त्रप्वादि गण - गरक्रिमिहर:, 28) लाक्षादि गण - दुष्टव्रण विशोधन.

29)त्रिफला:कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठविनाशनी। चक्षुष्या दीपनीचैव *विषमज्वरनाशनी*।।

30) त्र्यूषणं कफमेदोघ्न:

31) लघु पंचमूल - वातघ्नं, पित्त शमन, बलवर्ध्दन, बृंहण.

32) बृहत्पंचमूल - कफपित्तघ्नं, लघ्वग्निदीपन, मधुरानुरस.

33) वल्लीपंचमूल - विदारी सारिवारजनी गुडूची अजश्रृंगी

34)कंटकपंचमूल-रक्तपित्तहरौ, शोफत्रयविनाशनौ। सर्वमेहहरौ शुक्रदोषविनाशनौ।।

35) तृणपंचमूल - मूत्रदोष, रक्तपित्त.,

(परंतु वाग्भट Extra - मध्यम पंचमूल - कफवात शामक, जीवन पंचमूल - पित्तवात शामक.)

* द्रव्य के 37 गण. (सुश्रुत)

i) विदारीगंधादि - शोष, गुल्म, वातपित्त नाशक.

ii) वरूणादि - अभ्यंतर विद्रधी नाशक.

iii) विरतर्वादि - अश्मरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात नाशक.

iv) सुरसादि - कृमिनाशक, v) न्यग्रोधादि - रक्तपित्त, योनिशोथ, भगंदर

vi) काकोल्यादि - जीवन, बृंहण, वाजीकरण, vii) पद्मकादि - स्तन्य.

[गण - द्रव्य: i) त्रप्वादि गण - Metals (षड्लोह)

ii) उषकादि गण - खनिज (उषक, सैंधव, शिलाजतु, कासीस, हिंगु)

iii) परूषकादि गण - फल, iv) श्यामादि गण - विरेचन द्रव्य,

v) एलादि गण - सुगंधि,

vi) उत्पलादि गण - उत्पल (कमल) और उसके भेद + यष्टिमधु,

vii) न्यग्रोधादि गण - वृक्ष + भल्लातक,

viii) दशमुल गण - चरक - शोथहर,

ix) वत्सकादि गण - दीपनीय और शूलप्रशमनीय.]

Common:

i) कफमेदनाशक गण -वरूणादि, सालसारादि, रोध्रादि, अर्कादि, उषकादि, त्र्यूष

ii) मेदोघ्न गण - मुष्ककादि, न्यग्रोधादि.

iii) व्रणशोधन गण - आरग्वधादि, अर्कादि, सुरसादि.

iv) दुष्टव्रणविशोधक गण - लाक्षादि,

v) योनिदोषहर गण - रोध्रादि, मुस्तादि.

vi) योनिदोषहृत गण - न्यग्रोधादि,

vii) सर्वज्वर गण - आमलक्यादि, दशमुल, गुडूच्यादि,

viii) शुक्रदोषविनाशनी गण - मुष्ककादि,

ix) शुक्रदोषहृत गण - वल्ली और कंटक पंचमूल.

39) संशोधन संशमनीय.

1) उर्ध्वभागहर: i) फल - मदन कुटज जीमुतकेक्ष्वाकुधामार्गवकृवेधनसर्षप विडंग पिप्पली करन्ज प्रपुन्नाड, ii) मूल - कोविदार कर्बुदारारिष्टश्वग... (निम्ब

2) अधोभागहर: i) मूल - त्रिवृताश्यामा....कुश काश, ii) त्वक्-तिल्वक, पाटल iii) फलरज - कम्पिल्लक, iv) फल - पूगहरितकी आमलकबिभीतक...एरण्ड v) पत्र - पूतीक, आरग्वध, vi) क्षीर - सप्तछद, आक, ज्योतिष्मती.

3) उभयभागहर: (कोशातकी, सप्तला, शंखिनी, देवदाली, कारवेल्लिका)

4) शिरोविरेचक: i) फल - पिप्पली विडंगापामार्ग शिग्रु....मरिच.

ii) पत्र - तालीश तमाल सुरसाऽर्जक, iii) मूल - करवीर ...अर्क,

iv) त्वच - इंगुदी मेषश्रृंगी, v) कन्द - अलर्क, लसुन, श्रृंगवेर,

vi) पुष्प - मातुलुंगी सुरंगी पीलु जाती,

vii) सार - शाल, ताल, मधुक, viii) निर्यास - हिंगु लाक्षे.

लवण - पार्थिव में विशेष, मद्य - सन्धान से निर्मित, मल - शकृद्, मूत्र.

5) वात संशमन वर्ग: विदारी गंधादि + (लघु, बृहत्) पंचमूल i.e आद्यपंच

6) पित्त संशमन वर्ग: अंजनादि, सारिवादि, काकोल्यादि, उत्पलादि, न्यग्रो + तृणपंचमूल,

7) कफ संशमन वर्ग: पिप्पल्यादि, बृहत्यादि, मुष्ककादि, सुरसादि, आरग्व (वल्ली, कण्टक) पंचमूल.

8) सर्व औषधि व्याधि, अग्नि, पुरूषबल का विचार करके प्रयुक्त करें।

i) व्याधिबल से अधिक बल वाली औषध उपयोग से पूर्व व्याधिनष्ट परंतु अन्य उत्पन्न।

हरौ शुक्रदोषविनाशन

ग,

ाशक.

पित्त, योनिशोथ, भ

छमकादि - स्तन्य,

कासीस, हिंगु)

दे गण - विरेचन द्रव्य

- यष्टिमधु,

अर्कादि, उषकादि, अ

I.

कुधामार्गवकृवेधनस

कर्बुदारारिष्टाश्वग... (

ii) त्वक्-तिल्वक, पा

ामलकबिभीतक...

, ज्योतिष्मती.

वदाली, कारवेल्लिक

शिग्रु....मरिच.

ीर ...अर्क,

, लसुन, श्रृंगवेर,

ंगु लाक्षे.

मल - शकृद्, मूत्र.

) पंचमूल i.e आद्यप

ादि, उत्पलादि, न्यग्रो

ादि, सुरसादि, आरग्व

करके प्रयुक्त करें।

र्व व्याधिनष्ट परंतु अन्य

ाधिबल से अधिक बल वाली औषध उपयोग से अजीर्ण,विष्टम्भ,अपच्य: उत्पन्न

) मुरूषबल से अधिक बल वाली औषध उपयोग से ग्लानि, मूर्च्छा, मद उत्पन्न.

) औषध मात्रा: व्याधि मध्यम होने पर. (General dose)रूग्णबल मध्यम

) बिडालपदक (1 कर्ष - 1 तोला)

) अक्ष (1 कर्ष - 1 तोला)

) अंजलि (4 पल - 16 तोला)

40) द्रव्यरसगुणवीर्यविपाकविज्ञानीय.

Topics: द्रव्य, रस आदि प्राधान्य वर्णन.

) द्रव्य प्राधान्य कारण: (सुश्रुत - 9: नागार्जुन: 3)

i) स्थितत्व, ii) नित्यत्व, iii) स्वजात्यवस्थानाच्च, iv) पंचेंद्रियग्रहणाच्च,

v) आश्रयत्वाच्च, vi) आरम्भसामर्थ्याच्च, vii) शास्त्रप्रामाण्याच्च,

viii) कर्मापेक्षितत्वाच्च, ix) एकदेशसाध्यत्वाच्च.

) i) तरतमयोग अनुपलब्धि, ii) विकल्पसामर्थ्य, iii) प्रतिघातसामर्थ्य.

चरक: 4 - i) बहुत्व, ii) योगत्व, iii) बहुविधकल्पना, iv) संपत्.

) रस प्राधान्य कारण: 4

i) आहार रस के अधिन है और आहार प्राण है।

ii) उपदेश, iii) अनुमान, iv) ऋषिवचन.

) वीर्य प्रधानता हेतु: वीर्य द्विविधं उष्णंशीतं:

केचिद अष्टविधमाहु: शीतोष्ण स्निग्धरूक्ष विशदपिच्छिल मृदुतीक्ष्ण.

i) वातशामक - a) बृहत्पंचमूल कषाय रसात्मक परंतु उष्णवीर्य.
b) कुलत्थ कषाय है परंतु स्निग्ध वीर्य,
c) पलाण्डु कटुरस परंतु स्निग्ध वीर्य.

ii) वात वर्धक - इक्षुरस मधुर हे परंतु शीतवीर्य.

iii) पित्त शामक - a) पिप्पली कटुरस है परंतु मृदुशीतवीर्य.
b) आमलक अम्ल है परंतु मृदुशीतवीर्य,
c) सैंधव लवण है परंतु मृदुशीतवीर्य.

iv) पित्त वर्धक - a) काकमाची तिक्त है परंतु उष्णवीर्य,
b) मत्स्य मधुर है परंतु उष्णवीर्य,

v) कफ शामक - a) कपित्थ अम्ल है परंतु रूक्षवीर्य,
b) क्षौद्र (मधु) मधुर है परंतु रूक्षवीर्य,

vi) कफ वर्धक - मूलक (मूली) कटु है परंतु स्निग्धवीर्य.

) विपाक: i) द्विविध - मधुर - गुरू: कटु - लघु:

(- गुरू - पृथ्वी,जल, लघु - तेज, वायु, आकाश),

ii) त्रिविध - केचित् त्रिविधं इच्छन्ति मधुरम्लकटु तत्तु न सम्यक्,

iii) पंचविध - पंचमहाभूतानुसार, iv) षड्विध - यथारस - केचिदाहु:

v) अव्यवस्थित (i.e अनियत विपाक वाद.)

(चरक और वाग्भट) विपाक - मधुर, अम्ल, कटु

(सुश्रुत) विपाक: 2 मधुर (गुरू) और कटु (लघु)

* प्रभाव - अमीमांस्यान्यचिन्त्यानि...(सुश्रुत), अचिंत्यशक्ति ...(च. व वा.)

) शक्तिरूप वीर्यवाद - चरक,

) पारिभाषिक वीर्यवाद - (सु.;वा.), c) कर्मलक्षण वीर्यवाद - नागार्जुन.

* वीर्य संख्या - असंख्य (नागार्जुन व चरक)

) द्रव्य श्रेष्ठतमं स्मृतम्। वर्णन.

41) द्रव्यविशेशविज्ञानीय.

) विधीभूतं जगति किंचित द्रव्यमस्तितिकृत्वा ।

) यदा कुर्वन्ती स काल, यत्कुर्वन्ती तदधिकरण ।

कुर्वन्ती स उपाय, यन्निष्पादयन्ति तत फलमिती ॥

) महाभूत प्राधान्य: i) पृथ्वी + जल - बृंहण, विरेचन, अधोगुणभुयिष्ठ.

) अग्नि - वायु - लेखन, वमन, उर्ध्वगुणभुयिष्ठ.

) आकाश - संशमन, iv) वायु - संग्राहि, v) अग्नि - दीपन.

4) पंचमहाभूत और दोष प्रकोप व शमन:

दोष	शामक	प्रकोपक
i) वात	तेज, जल, पृथ्वी	आकाश, वायु
ii) पित्त	वायु, जल, पृथ्वी	तेज.
iii) कफ	आकाश, वायु, तेज.	जल, पृथ्वी

5) अष्टवीर्य और पंचमहाभूत:

अग्नि - तीक्ष्ण, उष्ण, जल - शीत, पिच्छिल पृथ्वी, जल - स्निग्ध.
जल, आकाश - मृदु, वायु - रूक्ष, वायु, पृथ्वी - विशद
(क्षितिसमीरणगुणभूयिष्ठं वैशद्यम्)

6) दोषघ्नता वीर्य और विपाक:

i) उष्णस्निग्धौ - वातघ्नौ वातपित्तघ्न - गुरू विपाक.
ii) शीतमृदुपिच्छिला - पित्तघ्न कफ - लघु विपाक
iii) तीक्ष्ण रूक्षविशद - कफघ्न,

7) गुण वीर्य विपाक: i) मृदुशीतोष्ण - स्पर्शग्राह्य,
ii) पिच्छिल विशदौ - चक्षू, स्पर्श, iii) स्निग्ध रूक्ष - चक्षुषो.
iv) तीक्ष्णो मुखे दु:खोत्पादनात्।
[a) गुरूपाक - सृष्टविण्मूत्रतया कफोत्क्लेशन चरक
b) लघु: - बध्दविण्मूत्रतया वातकोपेन चरक]

8) स्थानवृध्दिक्षयास्तस्माद् देहिनां द्रव्य हेतुका:।

42) रसविशेषविज्ञानीय.

1) महाभूत संसर्ग प्रकार: 3

i) परस्परसंसर्गात्., ii) परस्परानुग्रहात्., iii) परस्परानुप्रवेशाच्च.

2) महाभूत और रसोत्पत्ति Same As चरक.

परंतु पाठभेदानुसार - सुश्रुत - अम्ल - जल + तेज. लवण - पृथ्वी + तेज.

3) मधुराम्ललवणा वातघ्ना:, मधुर तिक्त कषाया: पित्तघ्ना:,
कटु तिक्त कषाया श्लेष्मघ्ना:

4) वायुरात्मैवात्मा: पित्तमाग्नेयं: श्लेष्मा सौम्या.

* त एते रसा: स्वयोनिवर्ध्दना, अन्ययोनिप्रशमनाश्च।"

5) योनि (केचिदाहुर) - As जगत् - सौम्याग्नेय Thus रस - सौम्याग्नेय.

a) सौम्य - मधुरतिक्तकषाय; स्निग्ध, गुरू - मधुराम्ललवण
b) आग्नेय - कट्वम्ललवण, रूक्ष, लघु - कटुतिक्तकषाय.
i) वायु: समानयोनि: कषायो रस:। ii) पित्त समानयोनि: कटुको रस:।
iii) श्लेष्म समानयोनि: मधुर रस:। श्लेष्म पुनरन्ययोनि: कटु को रस: ।

रस	लक्षण	कर्म.
i) मधुर:	परितोषम् उत्पादयति प्रल्हादयति.	षडिन्द्रियप्रसादन, धातुवर्धन, • चक्षुष्य, शोणितरसप्रसादन, अभिष्यंद.
ii) अम्ल:	दन्तहर्ष, मुखस्त्राव.	पाचन, दीपन, अनुलोमन, हृद्य, दन्तहर्ष.
iii) लवण:	भक्तरूचि, मार्दवं.	सर्वरसप्रत्यनीक, मार्गविशोधन, पुंसत्वोपघात, इंद्रियोपताप,मुखाक्षिपाक,रक्तपित्त, वातशोणित.
iv) कटु:	जिव्हाग्रं बाधते	स्थौल्यालसक, कण्डू, सन्धिबन्धविच्छेद, दीपन, पाचन, रोचन, शोधन,भ्रम, मद.
v) तिक्त:	मुखवैशद्य जनयति	स्नन्यशोधन, छेदन, रोचन, दीपन, शोधन, गात्रमन्यास्तम्भ, आक्षेपक, अर्दित.
vi) कषाय:	जिव्हां स्तम्भयति. कण्ठं बध्नाति.	संग्राहक, रोपण, स्तम्भन,शोधन, लेखन, शोषण, पीडन, हृत्पीडा,मन्यास्तम्भ, गात्रस्फुरण, आक्षेप.

a) मधुर वर्ग - काकोल्यादि गण, क्षीर, मोरट. b) अम्ल वग –
c) कटु वर्ग - पिप्पल्यादि, सारसारादि, सुरसादि गण,
d) तिक्त वर्ग - आरग्वधादि, गुडूच्यादि,
e) कषाय वर्ग - न्यग्रोधादि, अम्बष्ठादि, जिवन्ती, प्रियंग्वादी,त्रिफला, आम्र.

6) रस भेद: 63 - 1 रस से - 6, 2 रस से - 15, 3 रस से - 20, 4 रस से - 15, 5 रस से - 6, 6 रस से - 1 (कुल - 63)

43) वमनद्रव्यविकल्पविज्ञानीय

1) मदनफल: 31 योग

i) मदनफल पुष्प - (1 प्रकूंच) कायूष + प्रत्यक्पुष्पा सदापुष्प निम्ब कषाय, मधु सैंधव, ii) मदनशलाटु - का यूष + बकुल: मधु, लवण.

iii) मदनफल पिप्पली - अन्तर्नखमुष्टी + मधु सैंधव:

iv) मदनफल मज्जाचूर्ण - तत्क्वाथ परिभावित, मदन फल मज्जासिध्द वा पयस: सन्तानिका क्षौद्रयुक्त., a) यवागु b) पयस - अधोगरक्तपित्त, दाह.,

c) दधि के साथ - कफ प्रसेक, तमकश्वास छर्दि, मूर्च्छा.

d) जीवन्ती कषायेण पित्ते कफस्थानगते,

e) निम्बरूपिकाकषाययोरन्यतरेण सन्तर्पण कफज व्याधिहर, मदनफलमज्जाचूर्ण i. e. मज्जाचूर्ण + क्वाथ + (पयस, दधि, यवागु) भावना

2) जीमुतक - 6 प्रयोग (कुल) कफरोचक कास श्वास पाण्डु यक्ष्मा

3) इक्ष्वाकु - क्षीरFor कास, श्वास, छर्दि कफरोग और चूर्ण for as जीमुतक)

4) धामार्गव - गरगुल्मोदर कास श्वास श्लेष्मायेणु वायो च कफस्थानगते।

5) कृतवेधन - बहुशश्चूर्णम् उत्पलादिषु दत्तामाघ्रातं वामयति अनववध्देदोषेषु यवागु कण्ठात्पीतवत्सु.

(जीमुतक, धामार्गव – मदनफल मज्जावत प्रयोग)

44) विरेचनद्रव्यविकल्पविज्ञानीय.

1) सर्वश्रेष्ठ विरेचक: i) मूल - त्रिवृत् (अरूण श्रेष्ठ),

ii) त्वक् - तिल्वक (तिल्वकत्वक्), iii) फल - हरितकी, iv) तैल - एरण्ड,

v) स्वरस - कारवेल्लिका (करेला), vi) दुग्ध - सुधापय: (स्नुही)

2) त्रिवृत्: i) वात रोग में - महत्त्रैवृत + सैन्धव नागराख्यमम्लै:

ii) पित्त रोग में - इक्षुविकार, मधुररस, क्षीर. iii) कफ रोग में - गुडूची, अरिष्ट, त्रिफला, त्रिवर्ण, त्र्युषण को त्रिवृत चूर्ण एवं गुड के साथ.

* त्रिवृत् मोदक, आसव, सुरा * पुटपाक (सु. सू. 44)

* सौवीरक - (6 - 7) रात्र सन्धान.

तुषोदक - सौवीरक + अम्ल रस.

* दन्तीपुटपाक, दन्तीघृत. a) रेचक मोदक: दन्ती, चित्रक - 1 पल: पिप्पली, त्रिवृत्त - 1 कर्ष, गुड: 8 पल, पथ्या - 20, Every 10th day 1 मोदक सेवन (उष्णजलसह), No need to follow (पथ्यापथ्य) ग्रहणी, पाण्डु, अर्श, कुष्ठ.

b) त्रिवृदअष्टक योग: त्रिवृदष्टगुण,(8 गुणा) व्योष, त्रिजात, मुस्ता, विडंग, आमलक, दन्तीभागद्वयं; शर्करा - 6 भाग: इषत्सैन्धवमाक्षिकै: (अनुपान - शीताम्बु)

No need to follow पथ्यापथ्य , प्रशस्त पित्तरोगिणाम्

बस्तिरूक्, तृट्, ज्वर, छर्दि, शोष, पाण्डु, भ्रम.

3) तिल्वक: तिल्वकस्य त्वचं शुष्काम अन्तर्वल्काविवर्जिताम्।

4) हरितकी: a) हरीतक्या: फलं - त्रिवृत् विधानेन; सर्वव्याधिनिर्हणम्। रसायन, परमेध्य, दुष्टअन्तर्व्रणशोधनम्।।

b) हरितकी गुण - नागर, गुड, सैंधव के साथ लेने पर; अग्निदीपनी, वातानुलोमनी, वृष्या, सन्तर्पणकृतान् रोगान् प्रायो हन्ति हरितकी।

5) आमलकी: शीतम् आमलक रूक्ष पित्तमेद: कफापहम्।

6) बिभीतक: अनुष्ण, कफपित्तनिहराम्.

7) त्रिफला: त्रिफला सर्वरोगघ्नी त्रिभागघृत मूर्च्छिता।

वय:स्थापन When नित्य सेवन.

8) आरग्वध : तैल उपयोग 12 वर्ष के बच्चे.

9) एरण्ड तैल: त्रिफलाक्वाथ, क्षीर मांसरस बाल, वृध्द, क्षतक्षीण, सुकुमार.

10) स्नुही: तीक्ष्ण विरेचन में परम्.

अज्ञप्रयुक्तं तध्दन्ति विषवत् कर्म विभ्रमात्।
विजानता प्रयुक्तन्तु महान्तमपि संचयम्।।

11) कषायकल्पना: i) 5 - (चरक, शारंगधर),

ii) 6 - (सुश्रुत) – क्षीर , iii) 7 - (काश्यप),

सुश्रुत: क्षीर रस: कल्कमथो कषाय: श्रृतश्च शीतश्च तथैव फाण्टम्।
कल्पा: षडते खलु भेषजानां यथोत्तरं ते लाघव प्रदिष्ट:।।

45) द्रवद्रव्यविधिम

[आहार द्रव्य वर्गिकरण: 1) चरक - 12 वर्ग.

शुक,शमी, मांस, शाक, फल, हरित: मद्य, जल, गोरस, इक्षु, कृतान्न, आहारयोनी.

2) सुश्रुत - a) द्रवद्रव्य वर्ग - 10, b) अन्न वर्ग - 13

a) द्रवद्रव्य वर्ग - जल, क्षीर, दधि, तक्र, घृत; इक्षु, तैल, मद्य, मूत्र, मधु.

b) अन्न वर्ग - शालि, कुधान्य, मुद्गादि, मांस, शाक, फल, कृतान्न, पुष्प, कन्द, क्षार, लवण, भक्ष्य, अनुपान.

3) अ. सं. - a) द्रव द्रव्य वर्ग - 6: जल, क्षीर, इक्षु, तैल, मद्य, मूत्र.

b) अन्न वर्ग - 6: शुक, शिम्बी, मांस, शाक, फल, कृतान्न.

4) अ. हृ. - a) द्रव द्रव्य वर्ग - 5: जल, क्षीर, इक्षु, तैल, मद्य; (मूत्र, मधु)

b) अन्न वर्ग - 7: शुक, शिम्बी, मांस, शाक, फल, कृतान्न, ***औषध.***

चरक - i) गोरस वर्ग में दुध,दहि, तक्र, घृत का समावेश.

परंतु सुश्रुत अलग - अलग वर्णन.

सुश्रुत - i) मधु - वैशिष्ट्य सुश्रुत,

ii) शुक धान्य को शालि और कुधान्य स्वतंत्र वर्णन,

iii) पुष्प, कन्द, क्षार, लवण, भक्ष्य, अनुपान - नवीन वर्ग

iv) लवण वर्ग में रत्न, धातु वर्णन.

अ. हृ. - i) औषध वर्ग - (वैशिष्ट्य/देन)]

1) जलवर्ग: आन्तरिक्ष जल-अनिर्देश्यरस, अमृतं, जीवनं, एकान्त पथ्यतम,

(चरक - दिव्योदक: 6 गुण (ऐन्द्रजल प्रधान) और उत्तम जल - ईषत्कषायमधुर)

सुश्रुत - प्रशस्त जल: 8 गुण (निर्मलता, शितलता प्रात: जल के - पर गुण)

इनमें क्षार प्रधान है क्योंकी लघु है।

धार - 2 भेद गांग और सामुद्र.

गांग - प्राय अश्विन मास में बरसता है।

जल परिक्षा - शालोदन पिण्ड से 1 मुहुर्त में - वर्ण अपरिवर्तन गांग जल और वर्ण परिवर्तन सामुद्र जल अग्राह्य

(अश्विन मास का सामुद्र जल गांग के समान दोषरहीत और पीने योग्य है।)

गांग के अभाव में भौम जल आकाश गुण प्रधान उपयोगी है।

सभी प्रकार के भौम जल प्रत्यूष (सुर्योदय के पूर्व) काल में ग्रहण करे।

i) अन्तिरीक्ष चतुर्विधम् - धार, कार, तौषार, हेम. (चरक - 3 धार, कार, हेम)

ii) भौम जल:7 प्रकार (कौप,नादेय, सारस, ताडाग, प्रास्त्रवण, औद्भिद, चौण्ड) वाग्भट 8 उपरोक्त + बाष्प.,

iii) जल दोष: 6 - स्पर्शरूप रसगन्धवीर्य विपाक दोषा:

(व्यक्तरसता रसदोषा:, चिराद विपच्येत विष्टम्भयति विपाकदोष)

* दूषित जल शोधन - i) प्रधान दुष्टि में - अग्नि क्वथन,

ii) मध्य दुष्टि - सूर्य, आतप से तापन:, iii) अल्प दुष्टि - पिण्डसिकतालोष्ट्र

जल शुध्दि उपाय: 7 (सप्त कलुषस्य प्रसादनानि भवन्ती)

कतकगोमेदकबिसग्रन्थिशैवालमूलवस्त्राणि मुक्तामणिश्चेति।

पंचनिक्षेपणानि: (जल पात्र रखने के पंच साधन)

फलकं, त्र्यष्टकं, मुंजवलय, उदकमंचिका, शिक्य.

सप्तशितीकरण: (जल शित करने के सात उपाय) प्रवात स्थापन, उदकक्षेपनं, यष्टीका भ्रामण, व्यंजन, वस्त्रोध्दरणं, वालुकाप्रक्षेपण शिक्यावलम्बन

* नदी जल: i) सह्य: कुष्ठं जनयति, ii) विन्ध्यप्रभवा: कुष्ठं पाण्डुरोगाश्च.

iii) मलय: कृमीन्, iv) माहेन्द्र: श्लीपद उदराणि, v) हिमवत्: हृद्रोग श्वयथु शिरोरोग श्लीपद गलगण्डान्, vi) प्रोच्यावन्त: अर्श (i.e. अपरावन्त्याश्चर्शा:)

vii) पारियात्र प्रभवा: पथ्या बलारोग्यकर

सामुद्रजल - त्रिदोष प्रकोपक * प्रावृट - चौण्ट

वसन्त - कौप्य, हृस्व, ग्रीष्म - कौप्य, वर्षा - अन्तरिक्ष, औद्भिद्

शरद - सर्वजलग्राह्य, हेमंत - सारस/ताडाग.

महाभूत गुण अधिक्य भूप्रदेश	जल का रस
पृथ्वी	अम्ल / लवण
आप	मधुर
तेज	कटू, तिक्त
वायू	कषाय
आकाश	अव्यक्त

जल-रस	चरक (देश)	सुश्रुत(देश)	अ.सं.(देश)
मधुर	कृष्णमृत्तिका	लोहित	कृष्ण
अम्ल	कपिल	कपिल	क्षार - कपिल
लवण	उषर	पाण्डु	उषर
कटु	पर्वतविस्तार	पीत	-----
तिक्त	पाण्डु	नील	पाण्डु
कषाय	श्वेत	शुक्ल	श्वेत
			कषायमधुर - नीलदेश

(लोकपापीनहीं शुक्ला))

[अ.हृ. - 1) जलपान - i) भोजनादि - कृशता, ii) भोजनमध्य - समभाव iii) भोजनपश्चात् - स्थुलता,

2) वर्षा ऋतु में का दिव्य जल - प्रवर और नादेय जल - अवर.

अ.सं. - 1) जलगन्धनाशन में - पाटला और करवीर फुल.

2) आम और विष्टब्धाजीर्ण में - प्यास न लगने पर भी कोष्ण जल सेवन.

3) स्वस्थ पुरूष को भी शरद,ग्रीष्म, ऋतु छोडकर शेष ऋतु में अल्प जल पान]

2) क्षीरवर्ग: चरक - गोदुग्ध 10 गुण

	चरक	सुश्रुत	वाग्भट
1) गोदुग्ध	10 गुण	अल्पाभिषंदी, रसायन, रक्तपित्तहर	क्षतक्षीण, जीर्णज्वर, मूत्रकृच्छ्र,रसायन, रक्तपित्तहर
2) माहिष	(अनिद्रा, अत्याग्नि) में हितकर	महाभिष्यंदि, वह्निनाशम	अनिद्रा, अत्याग्नि में हितकर
3) उष्ट्र	इषत् लवण.	(3)गुल्म, कुष्ठ,रूक्ष,उष्ण विष,स्वादु,लवण	कृमि, शोफ, उदर, अर्श
4) एकशफ		(1,2) शाखावातहर,शाखावातहर, बल्य	जडताकरक.
5) अजा		गोतुल्य; सर्वव्याधिहर	शोष,ज्वर,श्वास, अतिसार, रक्तपित्त
6) अवि	हिक्काश्वासकर, उष्णवीर्य	पथ्यं केवल वातेषु, कासे	अहृद्य
7) हस्ति	मधुर, कषाय,चक्षुष्य	वृष्य, स्थैर्यकर	स्थैर्यकर
8) नारी	VPR अभिघात जन्य में, अक्षिरोग में	प्रातकाली– गुरू, विष्टंभी, शीतल, संध्या, – श्रांतिघ्न चक्षुष्य नस्य, आश्च्योतन	चरक सम

स्त्रीवर्ग: नारी दुग्ध - नार्यास्तु मधुर स्तन्यं कषायानुरसं हिमम ।
नस्याश्चोतनयो:पथ्यं जीवनं लघु दिपनम ॥

स्त्री दुग्ध के अलावा, शेष दुग्ध को गरम करके पीये, क्योंकि स्त्री दुग्ध कच्चा ही विष्टंभकर। (i.e, not अभिष्यंदी), 9) धारोष्ण धारोष्णममृतोपमम्.

3) दधिवर्ग: (चरक - दधि - अम्लविपाक, उष्ण वर्ज - शरदग्रीष्मवसन्तेषु)

सुश्रुत - मधुर, अम्ल, अत्याम्ल, कषायानुरस, उष्ण, स्निग्ध, प्राणकर, मंगल्यच.

(वाग्भट - रूक्षदधि - ग्रहणीरोग में हितकर अग्निशोफकृत.)

सुश्रुत दधि प्रकार 7 - (भा.प्र. 5) i) मधुर - महाभिष्यंद, ii) अम्ल, iii) अत्याम्ल, iv) मन्दजात - त्रिदोषकृत v) श्रृतक्षीर भव vi) सर vii) असार

दधि - i) गौ - श्रेष्ठ ii) अश्व - चक्षुष्य, iii) स्त्री - चक्षुष्यऽग्र.

[चरक - i) त्रिदोषक मन्दकम - ज्यादा समय का दधि. ii) जातं वातघ्न दधि, iii) शुक्रल: सर: iv) श्लेष्मानिलघ्नस्तु मण्ड: स्त्रोतोविशोधन:]

4) तक्रवर्ग: स्नेहव्यापद में, गर (विषरोग) में मधुराम्ल; लघु, रूक्ष, कषायानुरस, उष्णवीर्य, गुल्म - घृत व्यापद. सन्तानिक रक्तपित्त प्रसादनी

नवनीत: संग्राहि (मक्खन), किलाट - पुंसत्व,

नवनीत: अर्दितापह विशेषत बालानां प्रशस्यते,

[गो (दुग्ध, दधि, सर्पि) - श्रेष्ठ, तिलतैल - श्रेष्ठ,
अवि (दुग्ध,सर्पि) - कनिष्ठ, कुसुम तैल - कनिष्ठ]

5) घृतवर्ग: अलक्ष्मीज्वरापहम्,वय:स्थापनं,परिसर्प, शस्त्राग्नि में हितकर, सर्व स्नेहोत्तमम्, विषघ्नं, रक्षोघ्नं.

गो घृत - विपाक मधुर, शीत, वात पित्त विषापहम । चक्षुष्यम अम्य

अजा घृत - दीपनीय लघुपाकी, कास श्वास क्षय में पथ्य.

माहिष घृत - रक्तपित्तघ्न, वात पित्त प्रशम मधुर । गुरु

औष्ट्र घृत - कटू विपाकी, शोफ, कृमी, विष, गुल्म, कूष्ठ, उदर.

भेडी घृत - लघु, वात कफ रोग, योनी दोष, शोष, कम्प

एकशफ घृत - कषाय, लघू, उष्णवीर्य, दिपण, बध्दमुत्रकर

स्त्री घृत - लघु, देह व अग्नि वर्धक, विषनाशक और अमृतोपमम

हस्तिणी घृत - कषाय तिक्त - कफ, विष, कृमी

क्षीर घृत -(अपक्व दूग्ध से बनाया घृत) संग्राही, रक्तपित्त, भ्रम, मूर्च्छा प्रशमन.

Common: गो घृत, अजा घृत,स्त्री घृत, क्षीर घृत - चक्षूष्य.

पुराण - सर्पि - त्रिदोषनाशक कुम्भसर्पि - रक्षोघ्न

सर्पिमण्ड व पुराण सर्पि - बस्ति, नस्य, अक्षी पुरण उपयोगी

महासर्पि - वात कफघ्न, बल्य, पवित्र, मेध्य विशेष से तिमिर हर सर्व भूत हर

पुराणघृत - व्रणशोधन, रोपण, सहस्त्रवीर्य, कर्मसहस्त्रकृत्.

(1000 प्रकार के कार्य करने में समर्थ)

महासर्पि - 100yrs.(सुश्रुत), प्रपुराणघृत - (10-100)yrs. (चरक)

पुराणघृत - 10yrs. (च.सु.(यो.र.)), 1yrs. (भा.प्र.), 15yrs. (अरूणदत्त)

कौम्भसर्पि - (11-100)yrs. (सुश्रुत), 100yrs. (यो.र.), 10yrs. (चक्रदत्त)

6) तैलवर्ग: तैल सामान्य गुण:

स्वाद, कषायानुरस, व्यवयि गर्भाशयशोधन वर्त्म(बुध्दी),उदर, विषमज्वर, शोफ

संयोगसंस्कारान् सर्वरोगापहं परिषेकावगाहाभ्यंगतिलतैल – संस्कारत सर्वरोगजीत.

i) तिल तैल - उपयोग - बस्ति, पान, नस्य,कर्ण,अक्षी पुरण,अन्नपान,वात शांत्यर्थ

ii) एरण्ड तैल - सुक्ष्मं स्त्रोतो विशोधनम, अधोभागदोषहर

iii) इंगूदी तैल - कृमिघ्न

iv) सर्षप तैल कण्डु,कोष्ठ, कुष्ठापहम् अर्श,व्रणजन्तु

v) प्रियाल तैल वातपित्त हितकर

vi) अतसी तैल / (क्षौम तैल) - रक्तपित्त प्रकोपक, अचक्षुष्यं

vii) कुसुम तैल – सर्वदोष प्रकोपक, रक्तपित्तकर कटुविपाक (वा. कफपित्तकर)

viii) तुवरक तैल - उभयभाग दोषहर

ix) भल्लातक तैल - उभयभाग दोषहर

x) यवतिक्त तैल - सर्वदोषप्रशमन, रसायन ,पथ्यं

सभी तैल में तिल तैल प्रशस्त है ।

संदर्भ - तत्र घृत तैल वसा मेदो मज्जानो यथोत्तर गुरु विपाका ह्यातहराश्च ।

7) मधुवर्ग: प्रकार - चरक - 4, (अ.सं. - 4) परंतु (अ.हृ.- 0), सुश्रुत - 8

4: भ्रामरं, पौत्तिकं, क्षौद्र, मक्षिकं.....चरक

सुश्रुत - उपरोक्त + छात्र, आर्ध्य, औद्दालक, दाल

भ्रामरं पैत्तिकं क्षौद्रमाक्षिक यत उत्तरम ।

वरं जीर्ण च तेष्वन्ते द्वे एव ही उपयोजयेत।। (अ.सं.)

सामान्य गुण - मधुर कषायनुरसं रूक्ष शीत लघु. सुकुमार, वाजीकरण चक्षूष्य, सुक्ष्ममार्गानुसर, त्रिदोष शामक

(लघु से कफघ्न, पिच्छिल मधुर कषाय से वातपित्तघ्न)

i) पैत्तिक - रूक्ष उष्ण - वात रक्त पित्तकर, मदकृत

ii) भ्रामर - पिच्छिल, मधुर, गुरु iiii) क्षौद्रमधू - शीत, लघु, लेखन

iv) माक्षिक - लघुतर , रूक्ष, श्रैष्ठ, श्वासादी रोगो में प्रशस्त

v) छात्र - मधुरविपाकी, गुरु, शीत, पिच्छिल, रक्तपित्त, श्वेतकूष्ठ, प्रमेह, कृमी नाशक गुणोत्तरम.

vi) आर्ध्य - अतिचक्षूष्य, कफपित्तहर, कषाय,कटू विपाकी

vii) औद्दालक - रुचिकर, स्वर्य, कूष्ठ, विषापहम ।

viii) दाल - कषाय, उष्ण, अम्ल, छर्दी व प्रमेह नाशक

नव मधु - बृंहण, सर नतिकफहर.

पुराण मधु - मेद स्थौल्यपह, ग्राही, अतिलेखन करनेवाला.

आम मधु - अम्ल, त्रिदोषकृत. पक्व मधू - त्रिदोषनाशक.

संदर्भ - मधु - नानाद्रव्यात्मकत्वाच योगवाही परं मधू ।

मधु - उष्ण द्रव्यो के साथ विरूध्द है।

मध्वाजीर्ण - सभी अजिर्ण में कष्टदायक क्योंकी विरूध्दोपक्रमत्वाच ।

8) इक्षुवर्ग: प्रकार: 12 - पौण्ड्रक इक्षु – श्रेष्ठ.

* यान्त्रिकस्तु विदह्यते विष्टम्भी, गुरू,

दंतपीडित शर्करा समा. कफकर,वात पित्त सामक वृष्य

इक्षुरस - सामान्य गुण - मधुर विपाकी, गुरु शीत स्निग्ध रक्तपित्तप्रशमन.

इक्षुमूल - अतीमधुर, इक्षूमध्य - साधारण मधुर, इक्षुअग्र - लवण

गुड, मत्स्याण्डिका, खण्ड, शर्करा - उत्तरोत्तर विमल, शीत,स्निग्ध गुरु,मधुर, वृष्य रक्तपित्त प्रशमन

i) गुडशर्करा - वृष्या क्षतक्षीणहिता,

ii) यासशर्करा - कषाय मधुरा शीता

iii) मधुशर्करा - वम्यतिसारघ्नी छेदनी,

iv) सर्वशर्करा - तृष्णासृक्पित्तदाहेषु.

गुड: 1 वर्ष पुराना पथ्यतम:

(पुराण गुड - हृद्य, पच्यं गुड - नवीन - कफकर, अग्निसादकर वाग्भट)

9) मद्यवर्ग: मद्य - सामान्य गुण - अम्ल, हृद्य, बस्ति विशोधनम, इंद्रिय बोधनम स्वर, आरोग्य, प्रतिभा, वर्णकृत, कृशस्थुल हीत, स्त्रोतांविशोधन, अर्श, वातहर.

i) द्राक्षामद्य - रक्तपित्त, शोष, विषमज्वर

ii) खार्जुरमद्य - सुगन्धी,इंद्रिय बोधनम

iii) सुरा - प्रसन्न (सुरामण्ड), जगल (मद्य का नीचे का भाग),

वक्कस (सुरा कल्क)

जगल - तृट्कफशोफहृत, वल्कस - विष्टम्भी

अरिष्ट

अरिष्ट द्रव्य संयोग संस्करादधिको गुर्णे:।

अरिष्ट - अधिक गुण: (आसव से अधिक गुणवान)

गुडशुक्त, रस शुक्त, मधु शुक्त - यथा पूर्व गुरुतर अभिष्यंद कर

तूषाम्बू - (तूषोदक) दीपन, हृद्य, पाण्डू, कृमी रोगनूत.

सौविरक - ग्रहणी, अर्श विकारघ्न

धान्याम्ल (कांजी) - स्पर्श से दाहनाश, पान से वात, कफ और तृष्णानाशक है। समुद्रतटवर्ती मनूष्य के लिए सात्म्य है ।

10) मूत्रवर्ग: कटु तिक्त प्रधानरस, लवण अनुरस.

कफ - शमन, वात - अनुलोमन, पित्त - कर्षण (कर्षेत् पित्तमधोभागम्)

मूत्र	रस	गुण (चरक)	गुण (सुश्रुत)
अवि	सतिक्त	स्निग्धपित्ताविरोधी	सक्षार, तिक्त कटु उष्ण.
अजा	कषाय	पथ्य, त्रिदोषनाशक	कास श्वास शोफ कामला पाण्डु
गो	मधुर	कृमिकुष्ठहर,उदर नाशक	साक्षार,मेध्य, विरेक,आस्थापन.
माहिष	क्षार	अर्श, उदर	कुष्ठ, मेह
हस्ति		कृमिकुष्ठहर, अर्श	क्षार, किलास
औष्ट्र	सतिक्त	अर्श	मारूत कृमिनाशन
वाजि		कुष्ठ व्रणविषहर	कृमि, दद्रु
खर		उन्माद,अपस्मार	ग्रहणीरोगनुत,कृमिवातकफापह

[वाग्भट: अजामूत्र - पुरणात कर्ण शूल जीत,हस्तिमूत्र - किलास, क्षार, वाजीमूत्र

अ.सं.: i) उपरोक्त 8 प्राणीयों का मल - ओजक्षय हर,

ii) विष्कीर प्राणी मल-वातनाशक, iii) प्रसह प्राणी मल-उन्माद, अपस्मार नाशक,

iv) महामृग प्राणी मल - कुष्ठ नाशक, v) जलचर प्राणी मल - नेत्ररोग हर]

46) अन्नपानविधि.

Topics: अन्नद्रव्यवर्ग वर्णन, अजीर्ण, गुण पांचभौतिक आहार, सप्तधातूमल, हृदयसम्बधी वर्णन.

प्रागाभिहित: प्राणिनां पुनर्मुलमाहारो बलवर्णोजसां च ।

द्रव्यरस गुणवीर्य विपाक निमित्ते च क्षयवृध्दी दोषाणां साम्यश्च ।

1) शालिवर्ग: i) रक्तशालि - श्रेष्ठ, हेमन्त में पकने वाला धान्य,

ii) षष्टिक गौर - श्रेष्ठ, ग्रीष्म में पकते है, iii) षष्टिक (साठी) श्रेष्ठ

iv) कृष्ण वीही - वर्षा ऋतू में पकते है । कृष्ण वीही श्रैष्ठ

2) कूधान्य वर्ग: प्रियंगु 4 भेद कृष्ण, रक्त, पीत तथा श्वेत यत्तोत्तर श्रैष्ठ रूक्ष व कफ नाशक है ।

3) मुद्गदिवर्ग: मुदग - हरित मुदग श्रैष्ठ. मुदग नात्तर्थ वातल दृष्टीप्रसादन

शिम्बी - श्वेत, कृष्ण, पीत व रक्त शिम्बी उत्तरोत्तर श्रैष्ठ.

मकुष्ठका: कृमिकरा: * चना - पुंसत्वनाशना:

* मुद्ग, मसूर के सिवाय अन्य वैदल आध्मात कारक है।

* कृष्ण तील – श्रेष्ठ

नवं धान्यं अभिष्यंदी: लघु संवत्सरोषितम्

अ.सं. - 1) उद्दालक - उष्णवीर्य, 2) मधुलिका - शीतवीर्य,

3) मसुर - वर्ण्य: पर परं प्रलेपाद्यै: मसुर: ग्राहिणी भृशम्।

4) मांसवर्ग: चरक - 8 वर्ग,

सुश्रुत - 6 मांसवर्ग - (जलशय, आनूप, ग्राम्य, क्रव्यभुज, एकशफ, जांगल)

पून:द्विविध - जांगल - 8 वर्ग, आनुप - 5

प्रसह वर्ग - मांस विशेष कर, शोष के लिए हितकारी है ।

जांगल - जांगल, विष्कीर प्रतुद, गुहाशय, प्रसह, पर्णामृग बिलेशय ग्राम्या जांगल में विष्कीर प्रधान है ।

आनूप - 5 - कूलचरा, प्लवा , कोषस्था, पादिन: मत्स्या

कुलचर - चरकोक्त अनुप वर्ग का कूलचर में समोवश है ।

मत्स्य भेद - 2 - नादेय, सामुद्र

आनूपो महाभिष्यन्दि मांसवर्गो व्याख्यात : ।

मांस		परिणाम:
शूष्क मांस	-	प्रतिश्याय,अरूचि
विषव्याधिहत प्राणीमांस	-	मृत्यू
बाल प्राणी मांस	-	छर्दी
वृध्द प्राणीमांस	-	कास, श्वास
रोगग्रस्त प्राणी मांस	-	त्रिदोषप्रकोप
क्लीन्न मांस	-	उत्कलेशजनन
दूर्बल प्राणी मांस	-	वातप्रकोप

प्रधान मांस - चतूष्पाद में स्त्रीयो का, पक्षियो में पुरूष जाती का, बडे प्रणियो में छोटे प्रणियो का, छोटे शरिर वालो में बडे प्रणियो का, एक जाती के बडे शरिर वाले बडे प्राणियो-अपेक्षा कृश शरिर वाले प्रणियो का मांस प्रधान होता है।

[वाग्भट - मृग, विष्किर, प्रतुद, बिलेशय, प्रसह, महामृग, जलचर, मत्स्यवर्ग * रूक्षोष्ण स्निग्धमधुरा: वर्गाश्च आत्ये यत् उत्तरम्.

* मत्स्या: परम् कफ करा....(वाग्भट) * चिलचिम - त्रिदोषकृत]

(*उ. सु. - मृगमांस - जांगल में वर्णन. * वाग्भट - 1) मृगमांस: स्वतंत्र वर्णन. 2) शाखि, अजा की योनि: अनिश्चित... किसी वर्ग में नहीं लिया है, क्योंकि दोनों जांगल और अनुप दोनों में विचरण करते है। (व्यामिश्रोगोचरत्वीत्))

सुश्रुत - गुरु मांस: 1) पक्षी में गुरू पूर्व, 2) रक्तादि शुक्रान्तेषु धातुषूत्तरोतरा गुरू, सक्थि स्कंध क्रोड शिर: पादकर कटी पृष्ठ चर्म कालेयक यकृन्त्राणि - उत्तरोत्तर गुरू. 3) प्राय: सभी प्रणियों में मध्य भाग का मांस गुरु होता है।

4) स्त्रीयों का अधोभाग का, पुरुष का पूर्व वक्ष भाग का, पक्षियो में उर तथा गुरु का मांस प्रधान होता है।

(वाग्भट - पक्षी-शिर स्कंध उरू पृष्ठस्य कटि सक्थि आमाशय पक्वाशय यथापूर्वगुरू)

(सुश्रुत - शिर: स्कंध कटी पृष्ठ सक्थिनी चात्मपक्षयो: - गुरू पूर्व

(वाग्भट - वृषण मेढ्र वृक्क यकृत गुद - उत्तरोत्तर गुरू)

[illegible]

	श्रेष्ठ	सर्वश्रेष्ठ	निंदित मांस
1) जांगल	ऐन, कुरंग, हरिण, शशा	ऐन	
2) विष्किर	लावा, कुरंज,कपिंजल,क्रकद्	लावा	
3) प्रतुद	सारिका	–	कानकपोत (ऋष्य)
4) बिलेशय	गोधा, श्वाविद	गोधा	(दुर्दूर)
5) प्रसह	गिध्द, सिंह	सिंह	गोमांस.
6) महामृग	न्युक.	–	
7) जलचर	हंस	–	
8) मत्स्यवर्ग	रोहित, कच्छप, वर्त्मि	–	

सुश्रुत - 1) सर्वशरीर में यकृत स्थान का मांस प्रधानतम्.

मांस परिक्षा भाव - 9 चर, शरिरअवयव, स्वभावो, धातव: क्रिया, लिंग, संस्कार, मात्रा

1) फलवर्ग: * सुश्रुत - फल में आवला सर्वश्रेष्ठ.

2) शाक: मृद्विका श्रेष्ठ * वाग्भट - द्राक्षा

1) आमलक - अम्ल से वातनाशक, मधुर शीत से पित्तनाशक, कषाय से कफनाशक.

2) [illegible] - अपक्व - आत्याम्ल, वातघ्न, पित्तजनक

[illegible] वातपित्त प्रसादन, वात पित्तघ्न

[illegible] - अपक्व उपयोगी

[illegible] - कफवात हर पक्व - दोषकृत

3) [illegible] भेद 2 a) मधुर - त्रिदोषघ्न b) अम्ल - वात कफापहम

4) आम्र - बाल - वातपित्तकर, बध्दकेसर - पित्तकर, पक्व - वातघ्न पित्तअविरोधि, शुक्रवर्ध क

5) [illegible] आम्र - 4 प्रकार. i) पक्व - वात जीत ii) बालाम्र - वात पित्त कफ कृत iii) बध्दास्थि - कफ पित्त कृत iv) स्वाद्वम्ल - कफ शुक्र कृत.)

[illegible] वर्ग: i) कूष्माण्ड - बाल - पित्तघ्न, मध्य - कफवहम: [illegible] बस्तिशोधन, सर्व दोषहर, पथ्य.

[illegible] बाल सुनिल - पित्तहर, श्वेत त्रपुस - कफकर, जीर्णत्रपूस - [illegible] शीर्णवृन्त त्रपुस - सक्षार, कफहर, हृद्य, आनाह, अष्ठीलाहर

[illegible] पिप्पली - आर्द्र पिप्पली - कफकर. शुष्क - वातकफनाशक, वृष्य

[illegible] मरिच - आर्द्र कृष्ण मरिच - कफस्त्रावकर,

[illegible] कृष्णमरिच कफवात नाशक. श्वेतमरिच - नात्युष्णं, नतिशीत, चक्षूष्य.

v) शुण्ठी - नागर - कफवातघ्न, विपाक मधुर, वृष्य:,

आर्द्रक - कफवातहर, विषंध आनाह शुलनत

vi) हिंगू - शूल अजीर्ण विबंध नुत

vii) जीरकद्वय - श्वेत व कृष्ण - कफवातहर; कारवी - सुक्ष्मजीरा, करवी - सुक्ष्म कृष्ण जीरक, उपकुंचिका - कृष्ण जीरक

viii) सुरसा - हिक्काकास....

ix) पलाण्डु - पित्त नुत् न्यातूष्णवीर्यो, अग्नि वर्धक.

x) मूलक - बाल - दोषहर, वृध्द त्रिदोष शुष्क - त्रिदोषशमन, स्नेहसिध्द - कफवात जित:

मुली के अलावा अन्य शाक शुष्क लेने पर विष्टंभि, वातल.

xi) रसोन - क्रिमी कुष्ठकिलास भग्नास्थिसंधानकर, गुल्म

xii) चांगेरी - ग्रहण्यार्शविकारघ्नी

xiii) पूर्वनवा - विशोषाच्छ शोफ नाशनम

xiv) तण्डूलीयक - रक्तपीत मद विषापह,

उपोदिका - वातपित्त मदापह

xv) चांगेरी - ग्रहणी, अर्श विकारानी अम्ला.

(शाकं च (दशाविधम्) स्मृतम्। पित्तावृत तथा रक्तावृत्त वात के सिवाय अन्य सब वात रोगों में रसोन उत्तम् माना है।)

7) पुष्पवर्ग: अगत्स: नक्तांधाना प्रशस्यते, नातिशीतोष्णं

पिण्याक - सर्व दोष प्रकोपक - सर्वशाक - विडभेदि, विष्टंभि, दुर्जरम्.

* पुष्पं पत्र फल नालं कन्दाश्च गुरव: क्रमात.

8) कन्दवर्ग: महा शतावरी - हृद्या, मेधाग्निबलवर्धिनी; रसायनी.

सुरण - गुदकीलहा

वाराह - मेहकुष्ठक्रिमिहर, बल्यो वृष्य रसायन.

9) लवणवर्ग: चरक - 5 सैधंव, सौर्वचल, विड, सामुद्र, औद्भिद,

सुश्रुत: 6 - उपरोक्त + रोमक, (वाग्भट: 7 - कृष्ण लवण. Extra)

लवण - सुश्रुत - सैधंव, सामुद्र, विड, सौवर्चल, रोमक, औदभिद - यथोत्तर उष्ण वातहर. पित्तकफकराणी. यथापुर्व – स्निग्ध स्वादु सृष्टमुत्र पुरिषानी.

1) सैंधव - वृष्यं, चक्षुष्यं, त्रिदोषघ्नं लवणोत्तमम्।

2) सौर्वचल - सज्जीक्षार - उष्णवीर्य, गुल्मशूलविबन्ध नाशक सौगन्ध, उद्गारशुध्दि रूचिप्रदम् (वा)

3) औदभिद - उत्क्लेदी, सतिक्त सक्षार,वातानुलोमक

4) विड् - वातानुलोमन (उर्ध्व और अध) क्षसा

5) सामुद्र - समधुर,भेदनं ,शुलघ्न

6) काललवण - गंध छोडकर सौवर्चल समगुण

गुटिका लवण - कफवात कृमीहर भेदी

रोमक - तीक्ष्ण, अति उष्ण, व्यवयि, कटुपाकी च

10) क्षारवर्ग: यवक्षार - कफ अर्श ,गुल्म प्लीहघ्न

पाकीमक्षार - बस्तिविशोधन

टंकण - पित्त दूषण, अग्नि दिप्तीकर

सुवर्ण - रसायन, चक्षुष्य, विषसूदनम

रूप्य (रौप्य) - पित्तवात नुत

ताम्र - कषाय, मधूर, लेखन

कास्य - चक्षुष्य, कफवात जित

त्रपू व सीसं - कृमिघ्न, लवण, लेखन

11) कृतान्नवर्ग: i) पेया - वातवर्चोऽनुलोमन स्वेदगनी जननी बस्ति शोधनी.

ii) विलेपी - ग्राही हृद्या, तर्पणी,ज्वर, अतिसार, बस्ति शोधन बलवर्धीनी क्षुधातृषापहा

iii) मण्ड - दीपनलाघवात मण्ड, स्यात प्राणधारण: वातानुलोमन

iv) लाजमण्ड - धातुसाम्यकर:शिव: सुसंस्कृत सुकुमार (चरक)

v) वेशवार - निरास्थिमांस सुस्विन्नं, गुरूपाकी, बल्य, वात रूजापह
vi) रागषाडव - रूचीष्यो.
vii) कृशरा - वात नाशनी
viii) सौराव - मुखशोषिणाम्, क्षुत्तृष्णावहः श्रेष्ठ
ix) उल्लुप्त - सुखामांस
x) काम्बलिकः - दधिमस्त्वम्लासिध्दस्तु यूष काम्बलिकःस्मृत.
xi) मन्थः - नातिद्रव नातिसान्द्रा मन्थ

12) भक्ष्यवर्ग मोदक सट्ट, सामित - मोदकास्तु सुदूर्जयः सट्टकाः प्राणवर्धनः
सामित - हृद्या पथ्यतमा
सुश्रुत - सिक्थैर्विरहितो मण्ड पेया सिक्थसमन्वित।
विलेपी बहुसिक्था स्याद् यवागूर्विरलद्रवा ।।....(सु. सू. 46 / 347)
हेमाद्रि - असिक्त्थ द्रवं मण्ड ससिक्त्थं यवागु सा द्विविधा।
बहुसिक्था विलेपी अल्पसिक्थ पेया। अद्रवानि सिक्थान्योदनः।
वाग्भट मण्ड पेया विलेपी नाम ओदनश्च लाघवम् यथा पूर्वम्। शिवस्तत्र मण्ड
(अ. सं. - मण्ड पेया विलेपी ओदनश्च लाघवम् यथा पूर्व शिवः।
* वातानुलोमी कुलत्थौ गुल्म तूनिप्रतुनी जीत्।)
[वाग्भटः i) पिशितेन रसः तत्र युषो धान्ये ही खलः फलैही।
ii) मूलैश्च तिलकल्क अम्ल प्रायः काम्बलिका स्मृतः।
iii) अल्पः मांसद्य स्वच्छा दक लावाणिका स्मृतः।
iv) विद्यात् यूषै रसै सूपै शाके च एव उत्तोरेत्तरेत गौरवम्
तनो सान्द्र अम्लस्वादुष्व एषु पृथक् ततः।
v) प्रमेह क्षय कुष्ठानि न च सिव मंथ पायिनः।
मंथ पीने वालों को 3 dis. नहीं होते है.... अ.सं.]

13) अनुपान वर्गः चरक - अनुपान - स्निग्धोष्णं मारूते; क्षये मांसरसःमधुर शीतल पित्ते ; सुरा कृशानां, रूक्षोष्णं कफे; (क्लान्तानम् पयः पथ्य यथाऽमृतम्)
अनुपान गुण तर्पयति, ऊर्जयति, बृंह्यति, मार्दवम पाचयती, क्लेदयति, जरयति.
* भल्लातक, तुवरक तैल अतिरिक्त सभी में उष्णजल अनुपान.
* रक्तपित्त में - क्षीरइक्षु अनुपान, विष मे - अर्कशेलुशिरिष आसव
वर्गो के अनुपानः i) जांगलाना धन्वजान पिप्पल्यासवः,
ii) एकशफानां त्रिफलासवः खदिरासवः अनेकशफानां,
iii) नोद्याना मत्स्यानां मृणालासवः, iv) सामुद्राणां मातुलुंगासवः,
v) त्रिकटुकयुक्तः खण्डासवः,
vi) जीवन्त्यादीना त्रिफलाऽऽसवः,
vii) सैन्धवद्विनां सुरासवः
सुश्रुत - i) भोजन पूर्व - कर्शयेत्, ii) भोजन मध्य - स्थापयेत्,
iii) भोजन पश्चात् - बृंह्याति
अनुपान निषेधःश्वास,कास,उर्ध्वजत्रुगतरोग उरःक्षत (वा. प्रमेह व व्रण Extra)

भोजन	देय पात्र
घृत	कृष्ण लोह
द्रव, मांसरस, पेय पदार्थ	रजत
फल व भक्ष्य पदार्थ	ढाक, केला आदी पत्र
शुष्क व प्रदिग्ध	सुवर्ण
कटवर व खडखूष	कटोरी (पत्थर की)
श्रृत शीत पयः	ताम्र पात्र
पानीय, पानक व मद्य	मृत्तीका / काच / स्फटीक पात्र
राग, षाडव सट्टक	वैडूर्य पात्र

फल, सर्व भक्ष्य व शुष्क पदार्थ भोजन करने वाले के दक्षिण पार्श्व में रखे.
द्रव पदार्थ, मांस रस जल, पानक, खड्यूष, दुग्ध भोजन करने वाले के वाम पार्श्व.
गुड निर्मित पदार्थ, राग,षाडव,सट्टक - भोक्ता के सम्मुख तथा अन्य में मध्य में
भोजन में रस सेवन क्रम - मधुर, अम्ल, लवण, कटू, तिक्त, कषाय.

ऋतू	भोजन काल
हेमन्त व शिशिर	प्रातःकाल
शरद व वसन्त	मध्यान्ह
ग्रीष्म व प्रावृट	अपरान्ह

(वाग्भट - i) गोधुम, यव, दधि, मद्य, विष, औषध, मधु - जल अनुपानार्थ.
ii) पिष्टान्न - उष्णजल, iii) शाक, मुद्ग - मस्तु, तक्र, अम्ल कांजी,
iv) अग्नि मांस, मांसरस सेवन पश्चात् - मद्य, v) श्रम - दुग्ध.)
श्रेष्ठ सुश्रुतः i) धान्यों में यव, गोधूम, रक्तशील, मुंग, आढक, मसूर,
ii) मांस - (लाव, तित्तर, सारंग) पक्षीः कुरांग, एण, कच्छप,
iii) फल - दाडिम, आवला, द्राक्षा, खजुर, परूषक,
iv) शाक - सतीन (मटर), वास्तुक, मण्डुकपर्णी, जीवन्ती.
v) दुग्ध और घृत गो, vi) पेय मधु, द्राक्षासव,
vii) उख (के बन पदार्थ) शर्करा viii) मधुर में - घृत, शहद,
ix) अम्ल में - आवला, दाडिम, x) लवण में-सैंधव, xi) कटु में - पिप्पली, नागरे,
xii) तिक्त - पटोल (परवल), वार्ताक (बैगन),
xii) कषाय - पूगफल (सुपारी), परूषक (फालसा),
xiii) 1 साल पुरान चावलः मध्यम वय के पशु - पक्षी का मांस.
(सर्व अनुपानो में माहेन्द्र अन्तरिक्ष जल उत्तम्...(सुश्रुत)
* सर्ववर्ग में जल अनुपान श्रेष्ठ। * सर्वश्रेष्ठ अनुपान - मधु)
अजीर्णः 4 (शारंगधर व काश्यप –3 मा. नि. –6)

अजीर्ण	दोष	लक्षण	चिकित्सा	यो.र.
1) आमाजीर्ण	वात	माधुर्यान्त	लंघन	वमन
2) विदग्ध	पित्त	गतमम्लभाव	वमन	लंघन
3) विष्टब्ध	कफ	किंचिद्विपक्वं भृशतोफशुलं.	स्वेदन	स्वेदन
4) रसशेष	-	उद्गारशुध्दि भक्तकांक्षा	शयन	शयन

* उपद्रवः 7 मूर्च्छा प्रलापो वमथुः प्रसेकः सदनं भ्रमः।
उपद्रव भवन्त्येते मरण चाप्यजीर्णत।।
चिकित्सा तत्रामें लघनं कार्य विदग्धे वमनं हितम्।
विष्टब्धे स्वेदने पथ्यं रसशेषे शयीत च।।
गुणः
सुश्रुत - गुणः पहले 10 - शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, स्तम्भन; खरः, विशद,
पिच्छिल क्लेदाचूषण रोपण, गुरू, लघु, तीक्ष्ण, मृदु.
पूनः 10 - द्रवः प्रक्लेदनः, सान्द्र, श्लक्ष्ण पिच्छिलवत, कर्कश विशदो यथा।
सुगंध रोचनाकर, दुर्गंध घृल्लसारूचिकर सर, मंदो यात्रा करः स्मृतः, आशुकारी
जल में तैल डालने वत् सर्वशरीर फैलता है। व्यवायी चाखिलं देहं व्याप्य पाकाय
कल्पते, विकासी विकसन्नेव धातुबन्धान विमोक्षयेत्.
सुश्रुत - व्यवायी, विकासी, सुगंध, दुर्गंध, आशुकारी, कर्कश. (वैशिष्ट्य)
खर, कठिन, स्थिर वर्णन नहीं. (भावप्रकाश - शुष्क गुण वर्णन)
(नागार्जुन कर्मण्य गुण - विशिष्ट सामर्थ्य सम्पन्न)
पांचभौतिक आहार से पांचभौतिक शरीर उत्पत्तिः
पंचभूतात्माके देहे ह्याहारः पांचभौतिक।
विपक्वः पंचधा सम्यक् गुणान स्वानभिवर्ध्येत्।।
सप्तधातु के मलः कफः पित्त मलः खेषु स्वेदः स्यान् नखरोम च।
नेत्रविट् त्वक्षु च स्नेहो धातूना क्रमशो मलाः।।
संदर्भ - हृदय दिवा विबुध्दये हृदये जाग्रतः पुण्डरीकवत्।
अन्नमक्लिन्नधातुत्वाद् अजीर्णेऽपि हितं निशी।।
संदर्भ - हृदि सामिलिते रात्रोः प्रसुप्तस्य विशेषतः।
क्लिन्नविस्त्रस्तधातुत्वाद् अजीर्णे न हितं दिवा।।

निदानस्थान

1) वातव्याधिनिदान

1) वाय → स्वयम्भू- भगवान,अव्यक्तो व्यक्तकर्मा, तिर्यग्गो, द्विगुणश्च, रजोबहुल, आशुकारी, अचिन्त्यवीर्यो, दोषाणां नेता, रोगसमूहराट.

जिस प्रकार अग्नि: 5 उसी प्रकार वायु 5 (नाम, स्थान, क्रिया आमय भेद से)

प्राण, उदान, समान, व्यान, अपान.

a) प्राण - वायुर्यो वक्त्रसंचारी स प्राणो नाम देहधृक प्राणांश्चाप्यवलम्बते - हिक्काश्वासादि, b) उदान - पवनोत्तम् - उर्ध्वजत्रुगतान रोगान.

c) समान - समानो वह्निसंगत - गुल्माग्निसादातिसार,

d) व्यान - पंचद्या चेष्टस्यापि - क्रुध्दश्च कुरुते रोगान प्रायश: सर्वदेहान,

e) अपान - पक्वाधान बस्तिगुदाश्रयान् – शुक्रदोष प्रमेहास्तु व्यानापान प्रकोपजा: ।

रोगान बस्ति गुदाश्रयानं

आमाशयगत वायु - छर्दि, मोह,मूर्च्छा पिपासा,हृदग्रह पार्श्ववेदनम

पक्वाशयगत वायु - आन्त्रकूजं, शूलं नाभौ, त्रिकवेदनम,

श्रोत्रादि इन्द्रियाँगत वायु - इंद्रियवध, त्वकगत वायु - परिपोटन,

रक्तगत वायु - व्रणाश्च रक्तगो, मांसगत वायु - सशूल ग्रंथी,

मेदगत वायु - अव्रण, मन्दरुज ग्रंथी, सिरागत वायु - सिराऽऽ कुंचन, पूरण,

स्नायुगत वायु - स्तम्भ, कम्प ,आक्षेप,

मज्जागत वायु - रुक् कदाचित् न प्रशाम्यति.

2) वातरोग हेतु: प्रायश: सुकुमाराणां मिथ्या ऽऽ हारविहारिणाम ।

अत्यवाय,स्थूल, हस्त्यश्वौष्ट्रर्गच्छतो ऽन्यैश्च.

3) वातरक्त: आखोर्विषमिव (चूहे के विष सदृश सारे देह में फैलता है)

a) भेद -5 (वात,पित्त,कफ,रक्त,सन्निपातज)

वात - स्पर्श उद्विग्नो, तोद, भेद (शोष), पित्त रक्त –उग्रदाह, रक्तशोफ मृदु.

b) पूर्वरुप - पैर (शिथिलौ,स्विनौ,शीतलौ),

c) असाध्य वातरक्त लक्षण - आजानुस्फुटितं, प्रभिन्न, प्रस्त्रुत, प्राणमांसक्षय, याप्य - संवत्सर: 4) आक्षेपक: धमनी में कुपित वायु.

मुहुर्मुहुर्देहं मुहुश्चर: मुहुर्मुहु तद आक्षेपाद। आक्षेपक प्रकार–4-V,P,K अभिघातज

5) अपतानक: सोऽपतानकसंज्ञो य: पातयत्यन्तराऽन्तरा।

असाध्यता - गर्भपात, शोणितातिस्त्राव, अभिघातनिमित्त, कृच्छ्रो दण्डापतानक:

6) धनुस्तम्भ: धनुस्तुल्यं नमेद्यस्तु स धनु: स्तम्भसंज्ञक: ।

a) अन्तरायाम: विष्टब्धाक्ष : स्तब्धहनुर्भग्नपार्श्व: कफं वमन् ।

अभ्यन्तरं धनुरिव यदा नमाति मानव : ।।

b) बाह्यायाम:बाहय स्नायू प्रतानस्थो बाह्यायाम।

असाध्य लक्षण – प्राहुर्वक्ष:काय उरू भंजनम्

7) पक्षाघात: साध्यासाध्यता - a) केवल वात - कृच्छ्रसाध्यतमं,

b) संसृष्ट - साध्य, c) क्षयहेतु - असाध्य

8) अपतन्त्रक: कफवात - निमिलिताक्षो निश्चेष्ट: स्तब्धाक्षो वाऽ पि कूजति।

स्वस्थ: स्याद् हृदये मुक्ते ही आवृते तु प्रमुहयति, ।।

वाग्भट व मा. नि. अपतन्त्रक अपतानक एक ही है।

च. और सु. - Separate वर्णन of both) 9) मन्यास्तम्भ: वातकफ.

10) अर्दित: पूर्वरुप - रोमहर्षो, वेपथु, नेत्रम आविलम (नेत्र आसु युक्त)

असाध्य - 3 वर्ष, गाढं, वेपनस्य, अं.सं.- अर्दित को एकायाम कहा ।

11) गृध्रसी - पार्ष्णी तथा प्रत्येक अंगुली की कण्डरा में वातप्रकोप

12) विश्वाची - बाव्हो: कर्मक्षयकरी विश्वाचीति

13) क्रोष्टुकशीर्ष: वातरक्त, जानु में महारुज:

14) कलायखंज: कलायखंजं तं विद्यान्मुक्तसान्धिप्रबन्धनम् वेपते।

15) वातकण्टक: खुडकाश्रित 16) पादहर्ष - कफ वात

17) पाददाह: पादयो: कु रुते दाहं पित्तासृकऽनिल ।,

18) अवबाहुक:, 19) कर्णशूलऽनिल:,

20) मूकमिन्मिनगदगद: कफवात (धमनी व शब्दवाहिनी) अवरोध.

21) तूनि: गुदोपभ्योत्थिता (वर्चोमूत्राशय से वेदना नीचे की ओर)

प्रतितूनी - वेगै: पक्वाशयं याति प्रतितूनी.

22) आध्मान: वात, प्रत्याध्मान - कफवात.

23) वाताष्ठीला: ग्रन्थिम् उर्ध्वम उन्नतम बर्हिमार्ग अवरोधिनाम ।

प्रत्यष्ठीला–ग्रंथी +रुजा. वात विण्मुत्र रोधिनाम।

[वाग्भट: 1) वातव्याधी (निदान/15) वातशोणित नि./16 Separately वर्णन

2) वातव्याधी में उरुस्तम्भ को आढ्यवात.

खल्लीवात - विश्वाची और गृध्रसी में तीव्र रुजा होने पर.

3) वातशोणित अध्याय मे a) वायु के 22 आवरण वर्णन.

b) वायु के 20 परस्पर आवरण. ∴ कुल - 42 आवरण.

c) मेदावृत्त वात को आढ्यवात और कष्टसाध्य कहा।

अ.हृ. विशेषाश्च जिवितं प्राण: उदानो बलं उच्यते ।

स्यात तयो: पीडनात् निरायुष्यश्च बलशश्च ।।

आवृत्तवात की उपेक्षा से विद्रधी, प्लीहा, हृद्रोग, गुल्म, अग्निमांद्यादि उत्पन्न.]

2) अर्शोनिदान:

अर्श - a) अरिवत प्राणान श्रृणातीत्यर्श: ।...(वाग्भट)

b) त्वकमांस मै दोष आश्रित ।....(माधव निदान)

1) प्रकार सुश्रुत: 6 (वात,पित्त,कफ,रक्त,सन्निपातज, सहज)

च., वा. - 2 (शुष्क – वातकफ, स्त्रावी - रक्तपित्त)

अ.सं.- 2 (जन्मज, कालज)

2) हेतु: मन्दग्नि,(विशेष हेतू है) शीतोदक स्पर्शन, तृणकाष्ठोपल लोष्ठ वस्त्रादिभि: शीतोदक संस्पर्शनादा कन्दा: परिवृद्धिमासादयान्ति

3) गुद वर्णन: (4½ अंगुल कुल)

स्थूलान्त्रप्रतिबद्धम अर्ध्दपंचांगुलं गुदमाहु: अध्यर्द्धाङ्गुलान्तर

(1½ अंगुल अंतर पर) प्रवाहणी विसर्जनी संवरणी., चतुरंगुलायता:

(Length - 4 अंगुल)शंकावर्तनिभाश्चापि, गजतालुनिभाश्चापि वर्णत, रोमान्तेभ्यो

यवाध्यर्द्धो गुदौष्ठ परिकीर्तित:(रोमान्त से गुदोष्ठ – 1½ यव अन्तर पर)

प्रथमा प्रवाहणी गुदौष्ठ से 1 अंगुल अंतर पर.

(मलस्याध: पीडनात् प्रथमा प्रवाहणी.

गुदविस्फारणेन मलविसर्जनाद द्वितीया विसर्जनी

गुदसंकोचन्याख्य पेशीद्वयकृता चक्राकारा बलिस्तु संवरणी)

4) पूर्वरुप: अन्ने ऽश्रद्धा, आशंका पाण्डु, ग्रहणीदोष, अम्ल उदगार, गुदपरिकर्तन.

5) लक्षण: i) वात अर्श: कदम्ब पुष्प, तुण्डिकेरी, नाडी मुकुल सूची मुखाकृतीनि, गुल्माष्ठीला प्लीहोदराणि चास्य.

ii) पित्त - नीलाग्र तनु:, विसर्पी, यकृत प्रकाशनि: शकजिव्हासंस्थान: यवमध्यानि, जलौकोक्त्रसदृश. iii) कफ - महामूलानि; करीरफनसास्थि गोस्तनाकार: न भिद्यन्ते न स्त्रवन्ति; तैरुपद्रुत सश्लेष्माणम अनल्पमांसधावनप्रकाशमतिसार्यते

iv) रक्त - काकणन्तिकाफल: (गुंजा) न्यग्रोधप्ररोह विद्रुम, दुष्टम अनल्पमसृक: चातिप्रवृतौ शोणितातियोगोपद्रवा.

v) सहज: दुष्टशोणित शुक्रनिमित्त; तेषां दोषत एव प्रसाधनं कर्तव्यम.

दुर्दर्शनानि, परुष पाण्डु दारुणान्यन्तमुखानि: क्षीणरेता: क्षामस्वर:

उपद्रव - सततमन्त्रकूजाटोपहृदयोपलेप.

6) साध्यसाध्यत्व: i) बाह्यमध्यम - साध्य,

ii) अन्तर्वलिसमुत्थानां प्रत्याख्याय आचरेत क्रियाम।

(वाग्भट - सन्निपातज, सहज, अभ्यंतरवली - असाध्य)

(अर्श चिकित्सा शीघ्र न करने पर बद्धगुदोदर)

[वाग्भट साध्य (सुख) 1 दोषज, बाह्य वली, अचिरोत्थित.

कृच्छसाध्य -	द्वि दोषज	मध्यम,	(1 वर्ष पुराना, (सुश्रुत))
असाध्य -	त्रि दोषज	अभ्यंतर,	सहज.]

7) लिंगार्श: दोष - मांसशोणित कण्डु - क्षत - प्ररोहा
आकार - छत्राकार: और करीरजनयन्ति.
नाभिस्थ अर्श - गण्डुपदकृमिसदृश; कर्ण अर्श - बाधीर्य,शूल, पूतिकर्णता.
नेत्र अश - वर्त्मावरोध, दर्शननाश; घ्राण अश - प्रतिश्याय, क्षवथु, पूतिनस्य.
वक्त्र (कण्ठ ओष्ठ तालु) अर्श - गद्गद्वाक्यता, रसाजान मुखरोग.
8) चर्मकील: व्यान वायु, कफ दोष.
प्रकार - 4 (वात, पित्त, कफ, रक्त)
वात - निस्तोद, कफ - ग्रन्थि, पित्तरक्त - कृष्ण, शुक्ल
* संसर्गज (द्विदोषज) - 6 अर्श (षडविध संसर्ग)
सुश्रुत: याप्य - त्रिदोष ऽल्पलिंगानि. कृच्छसाध्य - द्वन्दज, द्वि वली.

3) अश्मरी निदान.

चतुस्त्रोऽश्मर्यो भवन्ति श्लेष्माधिष्ठाना (कफ, वात, पित्त, शुक्र)
मा. नि. 4 शारंगधर 4
1) हेतु: *असंशोधन* शीलस्यापथ्यकारिण प्रकुपित: ।
2) पूर्वरुप: बस्तगन्धित्व मूत्र, दुष्टं सान्द्रमथाविलम्
3) लक्षण: मूत्रधारासंग, सरुधिरमूत्रता, मूत्रविकिरणं, ससिक्त, गोमेद प्रकाश मत्याविलं. (धावन, लंघन, प्लवन, पृष्ठयानोष्ण, अध्वगमन) से वेदना वृध्दी.
i) कफ अश्मरी - कुक्कुटाण्डप्रतीकाशा, मधुकपुष्पवर्णा,
ii) पित्त अश्मरी - भल्लातकास्थिप्रतिमा, मधुवर्णा,
iii) वात अश्मरी - दन्तान खादान्ति, कदम्बपुष्पवत्कण्टकाचिता:
(वाग्भट - क्वनन..(दंत कटकटाना),- मुहुर्मेहती विन्दुशा सानिल मुंच्यत।)
अश्मरी - विशेषेण बालाणां भवन्ती.
हेतु: a) अल्पवस्ति काय, b) अनुपचितमांस त्वाच्च वस्ते,
c) सुखग्रहण आहरणा भवन्ति.
iv) शुक्र अश्मरी: पीडितमात्रे चा तस्मिन्ने व प्रदेशे प्रविल्यमापद्यते ।
(दबाने पर उसी स्थान पर लीन हो जाना)
4) अश्मरी विकृति: शर्करा, सिकता, भस्म.
5) बस्ति: / मुत्राशय / मलाधार / प्राणायातनमुत्तमम् - नाभि पृष्ठ कटी मुष्क गुद वंक्षङणशेफसाम। एकद्वार, अधोमुख,
* मूत्रोत्पात्ति - आमाशय और पक्वाशय में....(आयुर्वेद) (सु. नि.3)
* वृक्क - वृक्को पुष्टिकरौ प्रोक्तौ जठरस्थस्य मेदस: ।
वायु सहित अग्नि, कफ को बस्ति में शुष्क कर अश्मरी उत्पन्न
बस्तिविकार - मूत्राघात, प्रमेह, शुक्रदोष, मूत्रदोष.

मूत्रकृच्छ्र	मूत्राघात
1) मधुकोष: मूत्रकृच्छ्रे कृच्छ्रत्वम अतिशयितम इषद विबन्ध	मूत्राघाते तु विबन्धो बलवान कृच्छ्रत्वमल्पमिति.
2) चक्रपाणी: यन्मूत्रकृच्छ्रे मूत्रं कृच्छ्रेण वहति.	मूत्राघाते मूत्रं शोष्यते प्रतिहन्यते वा.
3) डल्हण: मूत्रकृच्छ्र दु:खेन मूत्रप्रवृत्ति	मूत्राघातो मूत्रावरोध:
4) वाग्भट: मूत्रकृच्छ्र विशेषानेव	मूत्राघातानाहु:

4) भगन्दर निदान

1) प्रकार: सुश्रुत 5 - i) वात - शतपोनक, ii) पित्त - उष्ट्रग्रीव, iii) कफ - परिस्त्रावी, iv) सन्निपातज - शम्बूकावर्त, v) आगन्तुज - उन्मार्गी, वाग्भट - 8, उपरोक्त + vi) वातपित्त - परिक्षेपी, vii) पित्तकफ - अर्शोभगन्दर, viii) वातकफ - ऋजु. (शारंगधर 8 भेद)
सुश्रुत - 2 : a) पराचीन (बहिर्मुख), b) अर्वाचीन (अन्तर्मुख)
2) भग गुदबस्ति प्रदेशदारणाच्च भगंदरा इत्युच्यन्ते ।
अपक्वा: पिडका:, पक्वास्तु भगन्दरा: ।
3) पूर्वरुप: कटीकपालवेदना कण्डूर्दाह : शोफश्च गुदस्य भवन्ति
(सवारी यान से मलोत्सर्ग से गुदा में कण्डू रुक दाह शोफ कटी वेदना)
4) साध्यासाध्यत्व: सन्निपातज, आगंतुज - असाध्य Others घोर कृच्छ्रसाध्य
वाग्भट प्रवाहिणीवली और आश्रित सेवनी - असाध्य

	पिडका	वेदना	स्त्राव	व्रणवेदना	उपद्रव	उपेक्षा से
1) शतपोनक	अरुण	तोद	अच्छफेन अनुविद्ध	ताडन,भेदन	अप्रतिक्रियमाना च पाकमुपैति	वातमूत्रपुरीष स्त्राव
2) उष्ट्रग्रीव	उष्ट्रग्रीव	तोद	दुर्गंध उष्ण	अग्निक्षारवत	उपरोक्त	उपरोक्त
3) परिस्त्रावी	शुक्ल स्थिर कण्डूमति	कण्डु	पच्छिल	कठोर, संरम्भी		
4) शम्बूकावत	पादांगुष्ठ प्रमाण (अनेक गति)	तोद दाहु कण्डु	नानविध वर्ण अस्त्राव	शम्बुकावर्त सदृश	उपरोक्त	उपरोक्त
5) उन्मार्गी	कृमि उत्पत्ति,कोथ.				उपरोक्त	उपरोक्त
6) परिक्षेपी	गुदा के चारो ओर दिवार रुखाई (परिखा)					
7) ऋजु	ऋजु गति गुददारण					
8) अर्शोभगन्दर	स्त्राव (निरंतर स्त्राव होना)					

[वाग्भट (Extra) भगन्दरपिटिका : i) वात:,
ii) पित्त: उष्ट्रग्रीवा सदृश, रागिणी, तनुरुष्माढ्य,
iii) कफ: स्थिर, स्निग्ध महामूल, पाण्डू कण्डूमति,
iv) वातपित्त: श्यावा, ताम्रा, सदाहोषा, घोररुक,
v) कफवात: पाण्डुरा, कृच्छ्रपाका,
vi) सन्निपातज: पादांगुष्ठसमा, लालारोचक तृटदाहज्वरछर्दि.]

5) कुष्ठ निदान

1) कूष्ठ पयाय: पापरोग, कष्टतर रोग
2) पूर्वरूप: त्वक पारूष्य, अकस्माद रोमहर्ष, कण्डू, स्वेद बाहूल्य, अस्वेदन, अंगप्रदेशांना स्वाप:, क्षतविसर्पण, असृज: कृष्णता ।
3) संदर्भ: सर्वाणि कूष्ठानि सवातानि सपित्तानि सश्लेष्माणि सक्रिमीणी च भवन्ती।
4) महाकूष्ठ: आरूण: तनू विसर्पीणी तोद भेद स्वाप युक्त
औदुंम्बर: पकोदुम्बर फलाकृतिवर्णानी
ऋषजिव्ह: ज्वर पुण्डरिक: पुण्डरिकपत्रा प्रकाशानि
दद्रु: अतसीपूष्प वर्णानि ताम्राणि वा विसर्पीणी पिडकावन्ती
कफज कूष्ठ में उत्सन्नता, परिमण्डलता, कण्डू चिरोत्थान लक्षण
5) संदर्भ: स्त्रीपुंसयो कूष्ठदोषाद दुष्टशोणितशुक्रयो ।
यदपत्यं तयोर्जातं ज्ञेयं तदपि कूष्ठितम ।। सु.नि. 5 / 27
6) साध्यासाध्यत्व: त्वक, रक्त, मांस मे उत्पन्न - साध्य,
मेदोगत - याप्य, अस्थि, मज्जा, शुक्र - असाध्य
7) संदर्भ - प्रसंङ्गाद गात्रसंस्पर्शा न्निश्वासात्सहभोजनात ।
सहशय्यासनाच्चपि वस्त्रमाल्यानुलेपनात ।।
कूष्ठंज्वरं शोषश्च नेत्रभिष्यन्द एव च ।
औपसर्गिक रोगाश्च संक्रामन्ति नरानरम ।। सु.नि.
8) दोषदूष्टी महाकूष्ठ: वात - अरूण
पित्त - ऊदुम्बर, ऋष्यजिव्ह, कपाल, काकनक
कफ - पुडरिक,दद्रु उत्तरोत्तर असाध्य.
असाध्य - आदिबलप्रवृत्त, पौण्डरीक, काकणं.
9) क्षुद्रकुष्ठ लक्षण: i) महतकुष्ट: त्वकूसंकोच भेद स्वप्नांगसाद,
ii) एककुष्ठ: कृष्णारुणं भवेच्छशरीरं,
iii) परिसर्प: पूरे शरीर में स्त्राव वाली पिडका
iv) विसर्प विसर्पवत: सर्पति मूर्च्छादाहारति तोदपाक.,
(शीर्घ विसर्पेन - विसर्प. शनै: विसर्पेन - परिसर्प)
v) सिध्म: प्रायश उर्ध्वकाये vi) विचर्चिका: राज्यो ऽतिकण्डू,अतिरुज:
vii) विपादिका:पादमें कण्डू दाह, रूजा viii) रकसा: स्त्रावहिना, कण्डुयुक्त पिडका

10) **क्षुद्रकुष्ठ दोषदूष्टी:** वातज - परिसर्प,
पित्तज:- विसर्प,किटिभ,विचर्चिका, पामा, चर्मदल,
कफज:- स्थुलारूष्क, महाकूष्ठ,सिध्म,रकसा, एककुष्ठ, किलास.
11) **किलास: 3** - (वात,पित्त,कफ)
किलासमपि कुष्ठविकल्प: । त्वक्गत, अपरिस्रावि.
वात - मण्डल, अरुणवर्ण, परिध्वंसी;
पित्त - पद्मपत्रसदृश, दाह; कफ - श्वेत, स्निग्ध बहल, कण्डु;
12) **धातुस्थ कुष्ठ लक्षण:** रस - स्पर्शहानि, विवर्णता, इषत्कण्डू
रक्त - रोमहर्ष, त्वकस्वाप, विपूय, मांस - वक्त्रशोष, पीडकोदगम,
मेद - गात्राणांभेद, क्रिमी, पूय,
अस्थिमज्जा - नासाभंग, स्तरोपघात, क्रिमीसम्भव. शुक्र - कौण्य, क्षतसर्प.
(सुश्रुत - i) महाकुष्ठ में चरकोक्त मण्डल के जगह अरुण और दद्रु का समावेश, सिध्म का क्षुद्र में समावेश किया)
ii) क्षुद्रकुष्ठ में विसर्प, परिसर्प, रकसा, स्थुलारूष्क, महाकुष्ठ नये वर्णन
वाग्भट: i) महाकुष्ठ में सिध्म के जगह दद्रु.
ii) क्षुद्रकुष्ठ में दद्रु के जगह सिध्म. शेष चरक समान)
(कूष्ठ चिकित्सा - तपस्चर्या उल्लेख)

6) प्रमेह निदान

1) **हेतू :** दिवास्वप्न अव्यायाम प्रसक्तं, शीत स्निग्ध धुरमेद्य द्रवान्नपान सेवि
2) **सम्प्राप्ति** i) वातपित्तमेदोभिरन्वि: श्लेष्मा श्लेष्म प्रमेहांजनयति ।
ii) वात कफ शोणितमेदाभिरन्वितं पित्तं पित्त प्रमेहान् ।
iii) कफपित्त वसा मज्ज मेदोभिरन्वितो वायु वात प्रमेहान् ।
3) **पूर्वरूप:** हस्तपादतलदाह, मधुरशुक्लमूत्रता तालुजिव्हादन्तेषु मलोत्पत्ति, जटिलीभाव: केशानां, वृध्दिश्च नखानाम.
4) **सामान्य लक्षण:** तत्राविल प्रभूतमूत्रलक्षणा सर्व एव प्रमेहा: । (सुश्रुत)
(वाग्भट सामान्य लक्षण - तेषां प्रभूतताविल मुत्रता ।)
5) **लक्षण सुश्रुत:** कफज प्रमेह
i) उदकमेह ii) सिकतामेह - सरूजं iii) शनै सकफ मृत्स्नं शनैमेही
iv) विशद लवण तुल्यं लवणमेही v) हृष्टरोमा पिष्टरस तुल्यं पिष्टमेही
vi) आवील सान्दं सान्द्रमेही vii) स्तोक स्तोक सफेन फेन मेहति
पित्तज प्रमेह: नीलप्रमेह - सफेन अच्छं हारिद्र - सदाह
वातज प्रमेह - हस्तिमेह - मत्तमामगंवदनुप्रबन्ध हस्तिमेहा
6) **उपद्रव:** तृष्णातीसार ज्वर दाह दौर्बल्यारोचकाविपाका: ।
पूतिमांस पिडकालजी विद्रध्यादयश्च तत्प्रसंगादभवन्ति ।
कफ - प्रमेह उपद्रव - माक्षिकोपसर्पणमालस्यं, पित्त - वृषणयो अवदरणं बस्तिभेदो,
वात - हृदयग्रहो लौल्यमनिद्रा, बद्धपुरीषत्वं.
7) **प्रमेह पिडका:** सर्व एवं सर्वदोषसमुत्था: सह पिडकाभि:।
प्रमेह पिडका - 10 (चरक 7) i) सर्षपी - गौरसर्षपसंस्थाना,
ii) पुत्रिणी - महत्यल्पाचिता, iii) अलजी - रक्ता, स्फोटवती.
8) **असाध्य:** i) पिडका - गुदे हृदि शिर अंसे पृष्ठे ममर्णि सोपद्रव ...(सुश्रुत)
ii) मधुमेह - प्रमेह पिडका व उपद्रवयुक्त प्रमेह को मधुमेह कहते है।
और मधुमेहिनमाचष्टे असाध्य: (सुश्रुत)
*सर्व एवं प्रमेहास्तु कालेना प्रतिकारिण:.....मधुमेह.....।। (सुश्रुत)
स चापि गमनात स्थानं स्थानादासनमिच्छति ।
आसनाद वृपुते शय्यां शयनात स्वप्नमिच्छान्ति ।
[सुश्रुत ने शीत के जगह फेन, मज्जा को सर्पि
आलाल के जगह लवण मेह मधु को क्षौद्र
काल के जगह अम्ल मेह शुक्ल को पिष्ट वर्णन किया.
सान्द्रप्रसाद को सुरा कहा।
वा. व मा.नि. - सान्द्रप्रसाद को सुरा, शुक्ल को पिष्ट कहा । शेष चरक वत
(कफ: सपित्त पवनश्च दोषा मेदो ऽस्त्रशुक्राम्बुवसालसीका: ।
मज्जा रसौज: पिशितञ्य दूष्या: प्रमेहिणां विशतिरेव मेहा:।। .....(माधव))]

7) उदर निदान

1) **प्रकार: 8** वात, पित्त, कफ,सन्निपातज प्लीह,बद्ध (आगन्तुक) क्षत, उदक
2) **सम्प्राप्ति:** कोष्टादुपस्नेहवदन्नसारो नि: सृत्य दुष्टो ऽनिलवेगनुन्न:
(दूषित हुआ अन्न सारभूत रसभाग वायु के वेग से प्रेरित होके उपस्नेहाद्वारे जल संचिती.)
3) **पूर्वरुप:** बलवर्णकांक्षा, जीर्णापरिज्ञानविदाहवत्यो
(भोजन पचने न पचने का ज्ञान नहीं होना), बस्तौ रूज, पादगतश्च शोफ:
4) i) वात उदर: कृष्णासिरावनद्धम, ii) पित्त उदर: तत्वाचिराभिवृध्दि,
iii) कफ उदर: तत्तु चिराभिवृद्दि, iv) प्लीहोदर - क्षीणबलोऽतिपाण्डु,
v) बद्धगुद: बालांश्मभिर्वा सहितै: पृथग् वा, हृन्नाभिमध्ये परिवृद्धिम्
(हृदय नाभि के मध्य वृद्धि)
vi) परिस्त्राव्युदर: नाभे अधश्च उदरमिती (नाभि के नीचे उदर फुल जाता है),
vii) दकोदर महत्सम्परिवृत्तनाभि - (नाभि उलट कर बाहर आना)
5) अन्ते संलिलभाव ही भजन्ते जठराणि तु ।
(सभी प्रकार के उदर रोग समय बीतने पर सलिल (जलोदर) अवस्था को प्राप्त होते है. उनकी चिकित्सा वर्ज्य है।)

8) मूढगर्भ निदान

1) **हेतु:** यान, वाहन, अध्वगमन.
2) **परिभाषा:** तमेव कदाचिद विवृध्दम् असम्यगागतम्, अपत्यपथमनुप्राप्ति अनिरस्यमानं विगुणापान सम्मोहितं गर्भं मूढगर्भमित्याचक्षतें ।
3) **भेद: 4** - i) कील (माधवकर ने संकीलक कहा है।) - उर्ध्वबाहुशिरोपादो
ii) प्रतिखुर - नि:सृतहस्तपादशिरा कायसंगी, iii) बीजक - निर्गच्छत्येकशिरोभुज:
(माधव निदान बीजक - गच्छेद भूजद्वयशिर:स)
iv) परिघ - तिष्ठेत योनिमुखमावृत्य.
4) **मूढगर्भ गति: 8** - अंतिम 2 असाध्य
7) कश्चिद आभुग्नमध्यो हस्तपादशिरोभि (दोनों हाथ, पैर सिर से आता है)
8) एकेन सक्थिना योनिमुखं प्रतिपद्यते पायुम् ।
(एक पैर से पायु को दबाकर दुसरे पैर से योनिमुख की ओर)
वाग्भट Called both As विष्कम्भ और शस्त्रसाध्य साध्य.
(2 असाध्य सुश्रुत, अन्यआचार्य (विपरीतोन्द्रियार्थ, आक्षेप, योनिभ्रंश, संवरण, मक्कल, श्वास, कास, भ्रम) लक्षण होने पर असाध्य।)
(हारित- दोषज मुढगर्भवर्णन - वात, पित्त, कफ, व्दव्दजे, सन्नीपातिक.)
5) **प्रसवकारण:** कालस्य परिणामेन मुक्तं वृन्ताद यथा फलम्
(काल परिणाम से पक्व फल डाल से मुक्त होकर गिरता है)
कालप्रकर्षेण मुक्तो नाडीर्वबन्धनात ।
(बिना काल के पूर्ण हुए गर्भ और फल दोनो अपने स्थान से गिर नहीं सकते।)
6) गर्भविच्युति: कृमि (संक्रमण), वात, अभिघात.
कृमिवाताभिघातैस्तु तदेवोपद्रुतं फलम् (से फल अपक्व होने पर भी गिरता है)
7) **गर्भस्त्राव: 4** मास (भोज 3 मास गर्भस्त्राव)
गर्भपात - (5 - 6) मास मे स्थिर शरीर नष्ट होना. । (सु. मा. नि, भा. प्र,यो.र.)
8) **गर्भिणी के मृत्युसूचक लक्षण:** शीतांगी, निरपत्रपा (लज्जारहित)
प्रविध्यती शिरो (सर पटकना) नीलोद्धसिरा (सिराए उभरना)
9) **अन्तर्मृतगर्भ लक्षण:** उच्छवासपूतित्वं, गर्भास्पन्दनम्,
आवी प्रणाश: श्याव, पाण्डुता, शूलं.
उदरपाटन: Ref. of L.S.C.S. seen
बस्तमारविपन्नाया: कुक्षि प्रस्पन्दते यदि ।
तत्क्षणाज्जन्मकाले तं पाटयित्वोद्धरेभ्दिषक् ।।
बस्तिद्वारे विपन्नाया:....वाग्भट.(अ.ह.शा. 2/53)

9) विद्रधी निदान

1) परिभाषा: त्वक रक्तमांस मेदांसि प्रदूष्यास्थिसमाश्रिताः।
दोषाः शोफं शनैर्घोरं जनयन्त्युच्छ्रिता भृशम् ।। महामूलं, रुजावन्तं वृत्तं.

2) प्रकार: 6 (सु) (वात,पित्त,कफ,सन्निपातज, क्षत, असृजा)

विद्रधि	वेदना	आकृति	स्राव
i) वात विद्रधि	अत्यर्थवेदन	चित्रोत्थान, प्रपाकश्च	तनु
ii) पित्त विद्रधि	पक्वोदुम्बर श्याव	क्षिप्रोत्थान	पीत
iii) कफ विद्रधि	शरावसदृश अल्पवेदना	चिरोत्थान	सित

iv) त्रिदोषज विद्रधि (असाध्य) नानावर्णरुजास्त्रावो, घाटालो (उभरी हुई) विषमो महान विषमं पच्यते,

v) रक्त विद्रधी श्याव तीव्रदाह रुजाकर, पित्तविद्रधी वत लक्षण कृष्णस्फोट

3) अन्तर्विद्रधि: (चरक - 9: सुश्रुत - 10 (गुद Extra)
गुदे बस्तिमुखे नाभ्यां कुक्षौ वंक्षणयोस्तथा ।।
वृक्कयो यकृति प्लीहन हृदये क्लोम्नि वा तथा ।।
(Note : वाग्भट ने इन स्थानो मे बाह्य विद्रधी होना भी लिखा है।
मर्मस्थ विद्रधि कष्टसाध्य. क्लोम - पित्ताशय Said by max. आचार्य)

	च.सू.17	सुश्रुत	वाग्भट
हृदय	घटटन,तमक श्वास, प्रमोह, कास	सर्वांग प्रग्रहतीव्रो हृदि	
क्लोम	पिपासा मुखशोष गलग्रह	पिपासा क्लोमजेऽधिका	तृष्णा गलग्रह
यकृत	श्वास	श्वास कृच्छ्रता	श्वास
प्लीहा	उच्छवासावपरोध	उच्छवासावरोध प्लीहानी	उच्छासावपरोध
कुक्षी	कुक्षिपार्श्वातरअंसशूल	कुक्षौ मारुतकोपनं	आटोप, पार्श्ववेदना
वृक्क	पृष्ठकटिग्रह	वृक्कयो पार्श्वसंकोच	कटिपृष्ठग्रह & पार्श्ववेदना
नाभि	हिक्का	हिक्का आटोपः	हिक्का
वंक्षण	साक्थिसाद	कटिपृष्ठग्रहतीव्र	सक्थिग्रह
बस्ति	कृच्छ्रेतिमूत्रवर्च	कृच्छ्राल्पमूत्रता	मूत्रकृच्छ्र पूतिमूत्र
गुद	---	वातानिरोधस्तु	वातनिरोध

(विद्रधी के लक्षण चरक; सुश्रुत, विद्रधी के उपद्रव by वाग्भट)

4) स्राव: (असाध्य) स्रुतेषूर्ध्व न जीवति । हृन् नाभि बस्ति

5) मक्कल - रक्तजं विद्रधि कुर्यात कुक्षौ मक्कल्ल संज्ञितम्।
मक्कल विद्रधि सप्ताह (7 दिन) पश्चात पक जाती है।

6) असाध्य विद्रधि: हृन्नाभिबस्तिजः पक्वो वर्ज्यो यश्च त्रिदोषजः
हृदय, नाभि, बस्ति स्थान की पक्व विद्रधि और त्रिदोषज विद्रधि are असाध्य.

7) गुल्म विद्रधि: a) साम्य - तुल्यदोषसमुत्थानाद्,

b) भेद-	विद्रधि	गुल्मः
i) पाक	✓	x
ii) विबंध	✓	x
iii) दुष्य	✓(मांस शोणित)	x

पाक हेतु: i) विवरानुचरो ग्रंथि, ii) मांसशोणित बाहुल्यात

8) अस्थि विद्रधि लक्षण: मज्जपरीपाको, विकारः शल्यभूतोऽयं,
(मेद वत, स्निग्ध, शुक्लं, शीत, गुरु) स्राव, सर्वदोष+ रुजा.

10) विसर्पनाडीस्तनरोग निदान

विसर्प: 1) प्रकार: चरक व वाग्भट 7 ; सुश्रुत-5 :

2) परिभाषा: त्वक मांसशेणितगताः कुपितस्तु दोषाः सर्वांग सारिणमिहास्थित आत्मलिंगम। कुर्वान्ति विस्तृतमनुन्नतम् आशु शोफं.

i) वात विसर्प - (गण्डैः विषमैः अतिदुषित) से युक्त होने पर वर्जनीय

ii) पित्त विसर्प - क्षतज प्रकाश - स्रोतोजकर्दमनिभो न तदा स सिध्येत।

iii) कफ विसर्प - पक्वो न सिध्यतिच मांससिराप्रणाशात.

iv) क्षतज विसर्प - पित्तरक्त स्फोटे. कुलत्थसदृश

3) साध्यासाध्यत्व: कृच्छसाध्य - मर्मसु + पित्त और वात (सर्व लिंग युक्त)
असाध्य - त्रिदोषज, क्षतज, साध्य - वात,पित्त,कफ

नाडी

1) व्याख्या: शोफं न पक्वमिति पक्वमुपेक्षते ये यो वा व्रणं प्रचुरपूयम स्राधुवृत्तः।

2) प्रकार: 8 और 5 :

i) वात नाडी - फेनानुविद्ध, अधिक स्रवति क्षपायाम (रात्रि मे स्राव वृध्दी),

ii) पित्त नाडी - दिन मे स्राव वृध्दी, iii) कफ नाडी - रात्रि मे स्राव वृध्दी,

iv) सन्निपातज नाडी - कालरात्रि की तरह घातक,

v) शल्यज नाडी - सहसा सरुजा च नित्यम्. (माधव निदान, भावप्रकाश 5.)

स्तनरोग:

1) व्याख्या: यावत्यो गतयो यैश्च कारणैः सम्भवन्ति ही।
तावन्तः स्तनरोगा स्यु स्त्रीणं तैरेव हेतुभिः।

2) लक्षण: विद्रधी समान (रक्तज Except),
प्रकार: 5 - वात, पित्त, कफ, सन्निपातज, क्षतज

* No स्तनरोग in कन्या a) धमन्या संवृतद्वारा, b) दोषाविसरणात्तासां

3) स्तन्य परिभाषा: रसप्रसादो मधुरु पक्वाहारनिमित्तज ।
कृत्स्नेहात स्तनौ प्राप्तः स्तन्यमित्यभिधीयते ।।

4) स्तन्य स्राव हेतु: अपत्य का i) स्पर्श, ii) दर्शन, iii) स्मरण iv) ग्रहण
(शुक्रस्राव स्त्री का स्पर्श, दर्शन, स्मरण, शब्दसंश्रवण प्रहर्ष)

5) शुद्ध स्तन्य लक्षण: क्षीरमुदके क्षिप्तमेकी, पाण्डुरम, मधुरं, अविवर्ण, प्रसन्नं

6) दुष्ट स्तन्य लक्षण: i) वात दुष्ट - कषाय, प्लवतेऽम्भसि,
ii) पित्त दुष्ट - अम्ल कटुकं, राज्योऽम्भसि, iii) कफ दुष्ट - जले चाप्यवसीदति.

11) ग्रन्थ्यपच्यर्बुदगलगण्डानां निदान

ग्रंथी: चरक 6, सुश्रुत 5, वाग्भट 9

1) व्याख्या: वातादयो मांसमृसृक् च दुष्टाः सन्दूष्य मेदश्च कफानुविद्धम्।
वृत्तोन्नतं विग्रथित तु शोफं

2) प्रकार: (भोज) सुश्रुत - 5 (वात,पित्त,कफ मेदोज, सिराज)
चरक - 6 (मांसज) Extra, वाग्भट - 9 (रक्तज, अस्थिज, व्रणज)

i) वात ग्रंथि - कृष्णो ऽमृदूर्बस्तिरिवाततश्व (अकस्माद् वृध्दीक्षय वाग्भट)

ii) कफ ग्रंथि - पाषाणवत् संहननोपन्नः

iii) मेदोज ग्रंथि - शरीरवृद्धिक्षयवृद्धिनि: पिण्याक प्रतिमं स्राव:

सिराज ग्रंथि: वृत्त व उन्नत.

3) साध्यासाध्यत्व: सिराज ग्रंथी, सरुज चल - कृच्छसाध्य
अरुक, अचल, महा, मर्मोत्थित - असाध्य

अपची

परिभाषा: हन्वस्थिकक्षाक्षक बाहुसंधि मन्यागलेषूपचित तु मेदः।
स्थिरं, वृत्त, आयतं, स्निग्धं, अल्परुंज, आमलकास्थि, मत्स्याण्डजालप्रतिमैः चयप्रकर्षादपची वदन्ती, स्रवन्ति नश्यान्ति भवन्ति चान्ये। (एक नष्ट होने के पश्चात दुसरी उत्पन्न), वर्षगणानुबन्धी - (वाग्भट - दीर्घकालानुबंधि).

अर्बुद

1) अर्बुद - वृत्त, स्थिरा, मन्द रुज, महान्त, अनल्पमुलं, अपाकी.

2) भेद - सुश्रुत,वाग्भट 6 - वात पित्त कफ, रक्त मांसज, मेद.

3) लक्षण - ग्रंथी समान मांस, रक्तार्बुद - असाध्य.

4) पाक न होने के कारण:

i) कफाधिक्य, ii) मेदाधिक्य, iii) दोषस्थिरत्वात, iv) ग्रथनाश्च.

5) अध्यर्बुद - यज्जायते ऽन्यत खलु पूर्वजाते ज्ञेयं तद्ध्यर्बुदम अर्बुदज्ञै:।

द्विरर्बुद - यद द्वद्व जातं युगपत क्रमातवा द्विरर्बुद तच्च भवेत. दोनो असाध्य.

गलगण्ड

1) परिभाषा: निबद्ध श्वयथुर्यस्य मुष्कवल्लम्बते गले ।
महान वा यदि वा ऱ्हस्वो गलगण्ड तमादिशेत ।।

2) प्रकार: 3 - वात, कफ मेदोज (पित्तज नहीं।)

मेदोज गलगण्ड - i) अलाबुवत्, ii) देहानुरुपक्षयवृद्धिश्च,
iii) गलेऽनुशब्दं कुरुते च नित्यम्। (गले में सदा अस्पष्ट शब्द)

3) साद्यासाध्यता: असाध्य i) कृच्छ्रश्वास, ii) मृदूसर्वगात्र,
iii) संवत्सरा, अरोचक iv) भिन्नस्वर.

12) वृद्धयुपदंशश्लीपदाना

वृद्धि:

1) प्रकार: वातपित्तश्लेष्मशोणित मेदोमूत्रान्त्रनिमित्त : सप्त वृद्धय:।
तासां मूत्रान्त्रनिमित्ते वृद्धि वात समुत्थे,(मूत्र, आन्त्र वृद्धि में केवल वात कारण है)
चरक - 3 (मेदोज, मूत्रज, आन्त्रज) ब्रध्नरोग, सुश्रुत - 7, वाग्भट - 7

2) पूर्वरुप: बस्तिकटीमुष्क मेढ्रेषु वेदना, मारुतनिग्रह: फलकोश शोफ.

3) लक्षण: i) वात वृद्धि - बस्तिमिवाततां, ii) पित्त वृद्धि - पक्वोदुम्बर संकाशां,
iii) कफ वृद्धि - अल्पवेदनां कण्डूमती, iv) रक्त वृद्धि - कृष्णस्फोटवृतां पित्त वत,
v) मेदो वृध्दि - तालफलप्रकाशा, कण्डुमती अल्पवेदना,
vi) मूत्र वृध्दि - मूत्रसन्धारणशीलस्य (मूत्र वेग रोकने से), अम्बुपूर्णा, मूत्रकृच्छ्र वेदना, वृषणयो: श्वयथु,
vii) आन्त्र वृद्धि - आध्मातो वस्तिरिवातत, प्रदीर्घ: शोफो, सशब्दम अवपीडितश्चोर्ध्वमुपैति,(दबाने पर शब्द सहित उपर की ओर चला जाता है) विमुक्तश्च पुनराध्मायते.
(दबाव छोडने पर पुन: फलकोष मे जाकर फुलने का सा हो जाता है)

उपदंश

1) प्रकार सुश्रुत:5 (वात, पित्त, कफ, सन्निपातज, रक्त)
वात उपदंश - स्तब्धमेढ्रता; पित्त उपदंश - पक्वोदुम्बर संकाश;
कफ ------ रक्त उपदंश - कृष्णस्फोटप्रादुर्भावऽत्यर्थम असृक प्रवृत्ति, याप्य,
सन्निपातज उपदंश - अवदरणं शेफस: कृमिप्रादुर्भाव मरण.

श्लीपद:

1) प्रकार (सुश्रुत,वाग्भट) 3 - (वात,पित्त,कफ), स्थान-वंक्षणोरु जानुजंघा,
शनै: शोफं जनयन्ति, वात श्लीपद - इषन्मृदु, महाग्रंथी
कण्टकैरुपचितं [कण्टक (अंकुरो) से व्याप्त]

2) असाध्य लक्षण: 4 -
संवत्सर अतिमहत, वल्मीकजातं, प्रसृतम इति वर्जनीयानी । त्रीण्यप्येतानि जानीयाश्लीपदानि कफोच्छ्रयात गुरुत्व च महत्व च यस्मान्नति विनाकफात ।।

3) श्लीपद: पुराणोदकभूयिष्ठा: (तालाबदि में पुराना पानी भरा हुआ)
शीतला: देशास्तेषु (जो देश सभी ऋतु में शीतल:)

4) श्लीपद स्थान: पादवत हस्तयोश्चपि श्लीपदं जायते नृणाम।
कर्णाक्षिनासिकौष्ठेषु केचिदिच्छान्ति तद्विद: ।।

13) क्षुद्ररोग

(चरक Not given this संज्ञा व अध्याय)

1) संख्या - (सुश्रुत - 44, वाग्भट - 36, माधवकर - 43, शारंगधर - 60)

वाग्भट	सुश्रुत
विद्धा	इंद्रवृद्धा
अलजी	अन्धालजी - अन्त्रालजी (माधवकर, भोज)
मश	मशक
लांछन	न्यच्छ

(वाग्भट ने - शिरोरोग में - इंद्रलुप्त, पलित, दारुणक, अरुंषिका वर्णन.
गुह्यरोग में- परिवर्तिका, अवपाटिका, निरुद्दप्रकाश; बालरोग में - अहिपुतना.
अनुशयी, रकसा, पाददारि, वृषणक्च्छु, गुदभ्रंश वर्णन नहीं।
New वर्णन: गर्दभ, गन्धनामा, राजिका, प्रसुप्ति, इरिवेल्लिका, कोठ, उत्कोठ)
(माधवनिदान - a) मसुरिका, विस्फोट स्वतंत्र वर्ण,
b) निलिका, वराहदंष्ट्रा अलग(नविन) वर्णन.)
(भोज: मुष्ककोश, फलार्श, मुषिकाकर्ण आदि, का वर्णन.)

क्षुद्ररोग - दोष दूष्टी:

वात - पाददारी, मषक, निरुद्धप्रकाश, सन्निरुद्धगुद.
पित्त - विवृत्ता, पलित, कक्षा, (जालगर्दभ), राजिका.
वात पित्त - इंद्रलुप्त, व्यंग, तिलकालक (माधवनिदान), चिप्प
कफ रक्त - जतुमणि, अहिपुतना, इंद्रलुप्त, (अरंषिका- कफ,रक्त कृमि)
सन्निपातज - वल्मिक, अग्निरोहिणी, विदारी, तिलकालक.
वात कफ-अजगल्लिका,यवप्रख्या,अंधालजी,पाषाणगर्दभ,दारुणक, पद्मनीकंटक, पनसिका, कच्छपिका,

[Note : 1) मसूरिका - सु. वा. मे संक्षिप्त वर्णन, परंतु माधवकार, भावप्रकाश मे स्वतंत्र, विस्तृत वर्णन.
माधवकार - 7 प्रकार मसूरिका (वात, पित्त, कफ, सन्निपातज द्वंद)
भावप्रकाश 5 (वात,पित्त,कफ,रक्त,सन्निपातज) व 7 (सप्तधातुनुसार)
2) मसूरिका जब शीतला नामक देवी से आक्रान्त हो तो उसे शीतला कहते है।]

व्याधी	दोष	स्थान	लक्षण क्षुद्ररोग	चिकित्सा (सु.चि.20)
1) अजगल्लिका	कफवात	-	बालानाम,मुद्ग सन्निभ	जलौका, लेप
2) यवप्रख्या	कफवात	मांस	-	प्रलेप, भेदन, व्रणवत
3) अन्धालजी	कफवात	-	परिमण्डल	प्रलेप, भेदन, व्रणंवत
4) विवृता	पित्त	-	पक्वोदुम्बर (महादाह ज्वरकरी)	पित्त विसर्प वत
5) कच्छप	कफवात	-	(वा. अलजी वत वृत्त)	प्रलेप भेदन, वण्रवत
6) वल्मीक	सन्निपातज	पाणी पादतल सन्धौ ग्रीवा उर्ध्वजत्रु	-	अर्बद वत (अस्वास्थ्य)
7) इन्द्रवृद्धा	वातपित्त	-	पद्मपुष्करवन्मध्ये पिडकाभि	पित्त विसर्प वत
8) पनासिका	कफवात	कर्णोपरि पृष्ठे	शालूकवत	प्रलेप, भेदन, व्रणवत
9) पाषाणगर्दभ	कफवात	हनुसन्धौ	-	प्रलेप, भेदन, व्रणवत
10) जालगर्दभ	पित्त	-	विसर्पवत सर्पति, अपाक	पित्त विसर्प वत
11) कक्षा	पित्त (अ.सं.VP)	बाहुपार्श्वांसकक्षा	च-यज्ञोपवीतप्रतिमाःप्रभूताः वा गन्धनामा-कक्षावत वटिका	पित्त विसर्प वत
12) विस्फोटक	रक्तपित्त	एकप्रदेश, सर्वत्र	अग्निदग्धनिभा	पित्त विसर्प वत
13) अग्निरोहिणी	त्रिदोष (वा.पित्त)	कक्षाभागेषु	अन्तर्दाह ज्वरकरा, (7,10,15)दिन में मारक, असाध्य	विसर्प वत (असाध्य)
14) चिप्प	वातपित्त	नख मांस	(पर्याय क्षतरोग,उपनख)	दहन
15) कुनख	अभिघात	-	नखो रुक्षासित खर, कुलीन	दहन
16) अनुशयी	कफ	-	गम्भीरामल्प सरंम्भ	-
17) विदारीका	सन्निपातज	कक्षावंक्षणसंधिषु	विदारीकन्द वत वृत्त	अपस्व में प्रच्छान, जलौका
18) शर्करार्बुद	कफवातमेद	मांससिरास्नायु	मधुसर्पिवसा निभम	मेदोअर्बुद वत
19) पामा	20) विचर्चिका	21) रकसा		
22) पाददारी	वात	-	परिक्रमणशील में	सिरावेध
23) कदर	मेद रक्त	पाद	कोलमात्र सकीलकठिनग्रंथि (भोज स्थान- हस्तपाद, मांसकिल)	स्नेहन
24) अलस	-	अंगुल्यन्तरौ पादौ	दुष्टकर्दमसंस्पर्शा,कण्डदाहरुक	लेप, रक्तमोक्षण
25) इन्द्रलुप्त	वातपित्त/कफरक्त	-	रूह्या (वाग्भट), रूढ्या (माधव)	सिरामोक्ष
26) दारुणक	कफवात	-	-	सिरावेध, अवपिड
27) अरूंषिका	कफरक्तकृमि	मूर्धनि	बहुवक्त्राणि,बहुक्लेदी वा-कंगुसिद्धार्थक निभा	रक्तमोक्षण
28) पलित	पित्त	-	(केस पीकने)	-
29) मसुरिका	-	-	ताम्रवर्ण (वा.मसुरमात्रा तद वर्ण)	पित्त कफ विसर्प वत, कुष्ठघ्न लेप
30) यौवन पीडिका	कफवातरक्त	-	शाल्मली कंटक प्रख्या (मुखदूषिका)(वा.मेदोगर्भा)	2 लेप
31) पद्मनीकंटक	कफवात	-	पाण्डुमण्डलम	निम्बक्काथ से वमन मधुसर्पि पान
32) जतुमणी	कफरक्त सहज	-	नीरुज	-
33) मषक	वात	-	माषवत्कृष्ण, नीरुज	क्षारअग्निदहन
34) तिलकालक	त्रिदोष(VP मा.नि)	-	नीरुज	-
35) न्यच्छ	सहज	-	महदल्पं वा श्यावं वा मण्डल	सिरामोक्ष सितम
36) चर्मकील	व्यान कफ	-	(वाग्भट - चर्मकील - मषक का भेद)	-
37) व्यंग	वातपित्त	मुखप्रदेश	निरुज (वा- 4 प्रकार - VPK,R)	-
38) निलिका	-	मुखव्यतिरिक्त	(मा.नि.नीलिका मुख पर भी होता है)	-
39) परिवर्तिका	-	मेढ्र	कोशश्च ग्रंथीरुपेण लम्बते	घृतलगाकर स्वेदन
40) अवपाटिका	-	मेढ्र	-	-
41) निरुद्धप्रकश	वात	मेढ्र	मन्दधारम अवेदनम सरुजम वातसम्भवम	चक्रतैल ३-३ दिन पर
42) सन्निरुद्धगुद	वात	गुद	कृच्छ्रेण पुरीषं गच्छति, सुदुस्तरम (कष्टसाध्य)	निरुद्धप्रकशवत (असाध्य)
43) अहिपूतन	रक्तकफ	शिरोरोग	कण्डु,स्फोट (भोज-दुष्टस्तन्यपान जन्य) पर्याय (मातृका दोष, पृष्टारु,अनामक, गुदकण्डु,गुदकुटट)	धात्री स्तन्य शोधन, रसांजन लेपो
44) वृषणकच्छु	कफरक्त	-	कंडु, स्फोट	अहिपूतन, पामा वत
45) गुदभ्रंश	-	-	प्रवाहणातिसाराभ्यां, रुक्षदुर्बलदेहस्य	मुषकतैल पानं, अभ्यंग
46) राजिका	पित्त	-	धर्मस्वेदपरीत राजिकावर्णसंस्थान पिटिका	
47) इरिवेल्लिका	सन्निपातज	उर्ध्वजत्रु	वृत्त पीटिका	पित्त विसर्प वत
48) प्रसुप्ती	वातकफ	-	त्वचा पाण्डु, त्वचा में प्रसुप्ती (शून्यता)	-
49) उत्कोठ	-	-	अतिकण्डु रागवान	-
(कोठ) उपरोक्त रोग बार बार होने पर यह संज्ञा.				
50) गर्दभ	वातपित्त	-	मण्डल, विपुल (बडी), सराग पीटिका	पित्त विसर्प वत
51) गन्धनामा	पित्त	-	कक्षा वत	पित्त विसर्प वत

14) शूकदोष निदान

शुकदोष: 18 - व्याख्या: लिंगवृद्धि कारक योगों के मिथ्या प्रयोग से उत्पन्न विकृती को शुकदोष कहते है।

व्याधी	दोष	लक्षण	चिकित्सा
सर्षपिका	KR	गौरसर्षपतुल्या, शूकदुर्भग्नहेतुका	लेख्य
अष्ठीलिका	V	विषमै, विषसम्भुग्नै:	जलौका,कफग्रंथिवत
ग्रथित	K	-	नाडीस्वेद,उपनाह
कुम्भिका	RP	जाम्बवास्थिनिभा	भेदन,रोपन
अलजी	-	मृदित, सम्मूढपिडका	जलौका
मृदित	V	सम्मूढपिडका	----
सम्मूढपिडका		पाणीभ्यां	जलौका
अवमन्थ	KR	वेदनारोमहर्ष	भेदन
पुष्करिका	PR	पद्मपुष्कर संस्थाना	जलौका
त्वकपाक	PR	ज्वरदाह	विसर्प वत
स्पर्शहानि	R	-	----
उत्तमा	RP	मुदगमाषोपमा	निर्हरण
शतपोनक	VR	-	लेखन,रसक्रिया
विद्रधि, मांसपाक, तिलकालक - सन्निपातज,			शोणितताबुंद

(असाध्य - मांसार्बुदं, मांसपाकश्च,विद्राधिश्च, तिलकालक (सु.नि.14))

[**Common**: - सर्षपिका, विद्रधी - शूकदोष + प्रमेहपिडका

अलजी - उपरोक्त + संधिगत नेत्ररोग (वाग्भट क्षुद्ररोग)

कुम्भीका - शूकदोष + वर्त्मगत,

शतपोनक - शूकदोष + भगंदर प्रकार तिलकालक - शूकदोष + क्षुद्ररोग]

15) भग्नांना निदान

1)) भग्न हेतु: व्यालमृगदशन

2) भग्न प्रकार: सुश्रुत - 2 (संधिमुक्त - 6, काण्डभग्न - 12)

वाग्भट - 2 (संधिभग्न, अस्थिभग्न), मधुकोष - 2 (सव्रणभग्न, अव्रणभग्न)

संधीमुक्त: 6 -

1) उत्पिष्टे: सन्धावुभयतः शोफो, नाना प्रकारा वेदना रात्रौ प्रादुर्भवन्ति,

2) विश्लिष्टे: ऽल्पः शोफो वेदनासातत्यं संन्धिविक्रिया.

3) विवर्तिते: संधिपार्श्वपगमाद्विषमांगता वेदना.

4) अवक्षिप्ते: संधिविश्लेषस्तीव्ररुजत्वं.

5) अतिक्षिप्त: द्वयोः सन्ध्यस्यतोरतिक्रान्तता वेदना (अस्थि दूरदूर इसलिये वेदना),

6) तिर्यकक्षिप्ते: त्वेकास्थिपार्श्वपगमनमत्यर्थ वेदना (एक अस्थि पार्श्व में) गमन

*संधिमुक्तसामान्य लक्षण: प्रसारणाकुञ्चनविवर्त्तनाक्षेपणा शक्ति स्त्ररुजत्वं स्पर्सा सहत्वं.

* काण्डभग्न लक्षण: सर्वास्ववस्थासु न शर्मलाभ

(किसी भी अवस्था में अंगको रखने पर भी सुख नहीं मालूम होता है)

* **काण्डभग्न:12** - 1) ग्रंथिरिवोन्नतं कर्कटकम

2) अश्वकर्णवदुद्गतम श्वकर्णक, 3) स्पृश्यमानं शब्द च्चुर्णितम्।

4) पिच्चितं पृथुतां गतमनल्पशोफम्,

5) पार्श्वयोरस्थि हीनोदगतमस्थिच्छल्लितम,

6) वेल्लते प्रकम्पानं काण्डभग्नम्,

7) अस्थि निः शेषिताश्छिन्नमतिपातितम,

8) आभुग्नभविमुक्तास्थि वक्रम्,

9) अन्यतर पार्श्ववशिष्ट छिन्नम्, 10) पाटितं अणुबहुविदारितं वेदनावच्च

11) शूकपूर्णमिवाध्यातं विपुल विस्फुटीकृतं स्फुटितम्, 12) मज्जानुगत.

[1) अश्वकर्ण, 2) अस्थिच्छल्लित - हिनोदगतम,

3) अतिपातित - नि:शेषतश्छिनम्, 4) वक्र आभुग्नअविमुक्तास्थि,

5) काण्ड - कंम्प, 6) चुर्णित -शब्द,

7) कर्कटक - ग्रंथी, 8) पिच्चित-शोफ,

9) छिन्न अन्सन्तर पार्श्वविशिष्ट, 10) पाटीत - विदारित,

11) मज्जानुगत-टुटे अस्थि का अवयव अस्थि के भीतर घुसकर मज्जा बाहर,

12) स्फुटित- शूकपूर्ण आध्मान.]

3) कृच्छसाध्य भग्न 4 : चुर्णितच्छिन्नातिपातित मज्जानुगतानी

4) असाध्य भग्न: कपालं कट्यां तु संधिमुक्तं च्युतम जघनं प्रतिपिष्टं, भग्नं स्तनान्तरे शंख पृष्ठे मूर्घ्नि, दुर्जातमस्थि संधिस्थापि (भग्ने होने के पूर्व ही जन्मजात) खराब अस्थि, दुर्निबन्धनात (अनुचित बंध बांधने से) संक्षोभाद्वाऽपि यद गच्छेद्विक्रियां (भग्न को हिलाने से विकृती)

5) मध्यस्य वयसो स्थिरो भवेत:

(मध्यमायु की जो 3 अवस्था (बाल, युवा, प्रगल्भ (प्रौढ) है) उनमें भग्न चिकित्सा करने पर स्थिर हो जाता है।

6) तरुणास्थिनि नम्यन्ते भज्यन्ते नलकानि तु।
कपालानि विभिद्यन्ते स्फुटन्ति रुचकानि च।।

(वाग्भट - तरुणास्थिनी भुज्यन्ते)

16) मुखरोगणां निदान

मुखपरिभाषा :

ओष्ठौच दन्तमुलानि दन्ता जिव्हाच तालुच।

गलो गलादि सकलं सप्तांगण् मुखमुच्यते। (भावप्रकाश)

1) मुखरोग संख्या: चरक - 4-64, सु.मा.नि.भोज-65 - (सु.नि.16), वाग्भट-75, भा.प्र., यो.र. 67, शारंगधर - 74.

अधिष्ठान	सुश्रुत	वाग्भट
1) ओष्ठगतरोग	8	11
2) दन्तमुल रोग	15	13
3) दन्त रोग	08	10
4) जिव्हा रोग	05	06
5) तालु रोग	09	08
6) कण्ठ रोग	17	18
7) सर्वमुख	03	08
8) गण्ड	-	1
कूल -	65	75

(लक्षण: i) रक्त स्त्राव- शीताद, दंतवेष्टक, उपकुश, परिदर

(उप परिदर में शीत दन्तवेष्टन करने पर भी रक्तस्त्राव)

ii) दन्तचाल- महाशौषिर दंतवेष्टक, उपकुश,वैदर्भ.

(उपविदर्भ में महा दंतवेष्टन करने पर भी दंत हिलते है))

2) दन्तमुलगत: में दन्तवेष्टक, परिदर, वर्धन Not mentioned by वाग्भट

वा. भा.प्र. यो र -दन्तविदधि, मा. नि. - कराल

3) दन्तगत: वा. शा. ने हनुमोक्ष जगह दन्तचाल, कराल, अधिदन्त

मा. नि. ने हनुमोक्ष के जगह कराल.

4) जिव्हागत: वाग्भट ने अधिजिव्हा Extra

5) तालुगत: वाग्भट मांससंघात = तालुसंहति, तुण्डिकेरी = कण्ठगत में

अधुष - Not mentioned , तालुपिटीका - New mentioned

शारंगधर - तालुशोष = तालुक्ष्वेद

6) कण्ठगत: चरक गलग्रह कण्ठरोग में समावेश, कफ दुष्टि,

सुश्रुत - 17 (एकवृन्द, वृन्द एक ही)

वाग्भट: 18 i) एकवृन्द, बलास, मांसतान विदारी Not mentioned,

ii) तुण्डिकेरी, गलार्बुद, 3 गलगण्ड New mentioned,

iii) अधिजिव्हा - जिव्हागत रोग

सर्वसर संख्या 3 परंतु वर्णन 6 व्याधि.

(शारंगधर - कण्ठगत को गलरोग कहा, रक्त रोहिणी-के जगह मेदोज रोहिणी.)

* दन्तहर्ष, दन्तभेद - याप्य - (वाग्भट).

ओष्ठ रोग	दोष	लक्षण	चिकित्सा (सु.चि.22)
1) वात	-	दाल्यते, परिपाट्यते	चतुर्विधस्नेह, नाडीस्वेद, साल्वण उपनाह.
2) पित्त	-	सर्षपाकृति पीडका	जलौका, पित्त विद्रधीवत
3) कफ	-	पीडकाभी अवेदनौ	शिरोविरेक, धुम, स्वेद, कवल, रक्तमोक्षण
4) सन्निपातज	-	कृत्कृष्णौ, कृत्पीतौ, कृत्क्ष्वेतौ	-
5) रक्त	-	खर्जुरफलवर्ण पीडका	जलौका, पित्त विद्रधीवत
6) मांसज	-	कृमि उत्पत्ति	-
7) मेदज	-	घृतमण्डाभौ, अच्छस्फटिक संकाश स्त्राव	-
8) अभिघातज	-	विदीर्यत पाटयते (भोज आघात	जलौका, पित्त विद्रधीवत
1) खण्डोष्ठ	वात	ओष्ठ के 2 भाग, प्रायःजन्म से	-
2) अर्बुद/रक्तार्बुद	-	खर्जुरसदृश	-
3) जलार्बुद	वातकफ	बुदबुदवत	भेदन क्षाराग्निकर्म
गण्डालजि	वातकफ	स्थिर शोफो गण्डे	शोफवत

दन्तमुलगतरोग	दोष	लक्षण	चिकित्सा(सु.चि.22)
1) शीताद	कफरक्त	दन्तमांसानि शीर्यन्तेअकस्माद रक्तस्त्राव	रक्तमोक्षण,
2) दन्तपुप्पुटक	कफरक्त	(2 अथवा 3) दंत में महान शोफ	तरुण में रक्तमोक्षण
3) दन्तवेष्टक	रक्त	दन्तचाल, पुयरक्तस्त्राव	विस्त्रावण
4) सौषिर	कफरक्त (पित्तरक्त)	दन्तमूलेशू शोथ रुजा,लालस्त्राव, कण्डू	रक्तमोक्षण
5) महासौषिर	सन्निपातज	दन्तमांसानि पच्यन्ते मुखं परिपीडयते.	7 दिनों मे मृत्यु
6) परिदर	कफपित्तरक्त	दतमांसानि शीर्यन्ते, ष्ठीवतीश्चप्यऽसृकु	रक्तमोक्षण
7) उपकुश	पित्तरक्त	मूखं पूति,दन्तचाल,रक्तस्त्राव	उभय शोधन, गोजीपत्र से रक्तविस्त्राव
8) दंतवैदर्भ	अभिघातज	दंतमुलेषू संरम्भ,चलदन्त	शस्त्र, क्षार, शीतल क्रिया
9) वर्धन	वात	दंत आते समय तीव्र वेदना	उध्दरेत, अग्निकर्म, कृमिदन्तवत
10) अधिमांस	कफ	लालास्त्रावी, महाशोफो,महारुज	छेदन
11) दंतनाडी 5	वातपित्तकफत्रिदोषशल्य	-	नाडीव्रणवत, दंतनिर्हरण, क्षार से दहन
1) दंतविद्रधि	सन्निपातजरक्त	बाह्यान्तः गुरु शोथ, भेद होने पर पूयस्त्राव	-

दन्तगत	दोष	लक्षण	चिकित्सा(सु.चि.22)
1) दालन	वात	सदागतिनिमित्तज (वा.-उष्णसहा; शीतस्पर्श से अधिक व्यथा)	-
2) कृमिदन्त	वात	कृष्णाछिद्री: अनिमित्त रूजा, चल; (वा.- कृमि उत्पत्ति)	-
3) दन्तहर्ष	वात (वातपित्त माधवकर)	दशना शीतमुष्णं सहन्ते न च स्पर्शन (i.e. दोनों भी असहन) (वा. अम्ल सेवन से रूजा; प्रवात अम्ल, शीत, भक्ष्य अक्षमा)	त्रिवृत्त घृत कोष्ण कवल
4) भंजनक	कफवात	वक्त्रं वक्रं, दन्तभंग, तीव्ररूक	-
5) दन्तशर्करा	वात (वातपित्त मा.नि.)	दन्तानां गुणघ्नी	उध्दरेत, दन्तहर्शवत्
6) दन्तकपालिका	पित्तरक्त	दशनानां विनाशनी	स्नेहनगण्डूषधारण, लेप
7) श्यावदंत	पित्तरक्त (रक्तपित्तवात)	दन्त श्याव नील वर्ण	-
8) हनुमोक्ष	वात	हनुसंधि विसंहत, अर्दित लक्षण: अन्यआचार्य ने वातव्याधी में वर्णन किया है।	अर्दितवत्
1) दन्तचाल	-	चलदन्त, भक्षण में अधिका व्यथा	गण्डूष
2) कराल	-	करालानां दशनानां समुदग्म।	-
3) अधिदन्त	-	-	उपाटन, दग्ध.

जिव्हागत	दोष	स्थान	लक्षण	चिकित्सा(सु.चि.22)
1) वात जिव्हाकंटक	-	-	शाकच्छदन प्रकाशा	ओष्ठ प्रकोप वत
2) पित्त जिव्हाकंटक	-	-	रक्त कंटकै	विघृष्ट रक्तमोक्षण
3) कफ जिव्हाकंटक	-	-	शाल्मली कंटक	लिखिते रक्तमोक्षण
4) अलास	कफरक्त	जिल्हातलं श्वयथु	जिव्हा के नीचे शोथ,जिव्हास्तम्भ (मत्स्यगंधि, मांसशातन)	-
5) उपजिव्हा	कफरक्त	जिव्हाग्ररुपवत	जिव्हा के नीचे शोथ, (वा. विपर्यय)	लेखन, क्षार, प्रतिसारण, गण्डूष, धूम, शिरोविरेक
1) अधिजिव्हा	कफपित्तरक्त	जिव्हाग्रवत	उपजिव्हा वत सु.	बडीश से ग्रहण, मण्डलाग्र से छेदन

तालुगत	दोष	स्थान	लक्षण	चिकित्सा (सु.चि.22)
1) गलशुण्डिका (कण्डशुण्डी)	KR	तालुमुल	दीर्घ शोफोध्मात बस्ति प्रकाशा वाग्भट मत्सबस्तिनिभ शोफ	संदश से आकृष्टकर मण्डलाग्र से (1/3) छेदन, प्रतिसारण, कवल, पंचागि वर्ती
2) तुण्डिकेरी	KR	तालुदेश	कार्पासिफलवत् शोथ	गलशुण्डिका वत
3) कच्छप(कूर्म)	K		कुर्मोत्सन्नो, अवेदनो,अशीघ्रजन्मा,	गलशुण्डिका वत
4) अधुष	R	तालु	स्तब्ध शोफ	गलशुण्डिका वत
5) तालुअर्बुद	R	तालुमध्य	पद्माकार शोफ	-
6) मांससंघात	K, मांस	ताल्वान्तस्था	-	गलशुण्डिका वत
7) तालुपुप्पुट	K, मेद	-	निरूक् स्थायी कोलमात्रा शोथ	गलशुण्डिका वत
8) तालुशोष	VP	-	श्वास	वात नाशक
9) तालुपाक	P	-	पूयास्रावी, महारुजा	पित्त नाशक
1) तालुपिटिका	V, मांस	-	बहु घनस्रावि पिटिका	

कण्ठगत रोग	दोष	लक्षण	चिकित्सा(सु.चि.22)
1) रोहिणी	-	प्रदूष्यमांस गलरोधिनो ऽकुरान्। सृजन्ति यान् साऽसुहरा हि रोहिणी ।।	
वात रोहिणी	-	कण्ठनिरोधन, मांसाकुर (हनुश्रोत्र रूककरी)	रक्तमोक्षण
पित्त रोहिणी	-	क्षीप्रोदगम, क्षीप्रविदाह.	पतंग शर्करा क्षौद्र से प्रतिसारण
कफ रोहिणी	-	स्रोतोनिरोधिनी	आगारधूम कुटकीचूर्ण प्रतिसारण
सन्निपातज रोहिणी	-	गम्भीर पाक	-
रक्त रोहिणी	-	स्फोटाचिता लक्षण पित्तवत, असाध्य,सद्यमारक	पित्तरोहिणीवत
2) कण्ठशालुक	K	कोलास्थिमात्र, कण्टकशूकभूत,शस्त्रसाध्य	विस्त्राव तुण्डिकेरीवत
3) अधिजिव्हा	KR	जिव्हाग्ररुप वत शोथ, पाक पश्चात असाध्य	उपजिव्हावत्
4) वलय	K	बलास एवायतमुन्नतं शोफ, करोत्यन्नगति निवार्य (अन्नगति अवरोध)	-
5) बलास	KV	मर्माघाति,दुस्तरम	-
6) एकवृंद	KR	अपाकी, वृत्तम, उन्नत शोथ	विस्त्रावण शोधन
7) वृद	PR	समुन्नतम वृत्तम, सतोद	-
8) शतघ्नी	S	वर्तिर्धना, कण्ठनिरोधिनी	-
9) गिलायु	KR	आमलकास्थि शस्त्रसाध्य	शस्त्रकर्म
10) गलविद्रधी	S	सर्वगल व्याप्त शोफ	भेदन
11) गलौघ	KR	महान्न जलावरोधी	-
12) स्वरघ्न	K	प्रताम्यश्च श्वसति भिन्नस्वर	-
13) मांसतान	S	प्रतानवत शोथ, सुकष्टो गलोपरोध प्राणहर	-
14) विदारी	P	अन्तर्गले पूतिविशीर्णमांसम पार्श्वे विशेषता शेते	-
1) गलार्बुद	S	जिव्हा ऽव साने (जिव्हा के चारो ओर)कण्ठादऽपाकं श्वयथु निरुजा	-
2) गलगण्ड	-	(वा. वर्धमान सकालेन मुष्काऽलम्बते इतिरुक)	

सर्वसर	लक्षण(सुश्रुत 3, भा. प्र. 5, शा. 8)	चिकित्सा(सु.चि.22)
1) वात	-	लवण प्रतिसारण
2) पित्त व रक्त	-	पित्तहर शुध्दकाय शीतल क्रिया
3) कफ	-	अतिविषादी चूर्ण गोमूत्रसह 1 धरण मात्रा में पान

1) उर्ध्वगुद — अर्शगुल्मदि से वायु प्रतिहत होकर वक्त्र दौर्गन्ध उत्पन्न

2) कफार्बुद/(मुखार्बुद)अंतस्त्राव आश्रित श्याव पाण्डु,पाटन, छेदन, भेदन करने पर भी बढता है।

3) पूतिवक्त्रता — मुखशोधन न करने से, दन्तकाष्ठादि द्विद दिषा.

रोहिणी सुश्रुत 5, भोज 2, मा. नि. 3)

रोहिणी -संद्यस्त्रिदोषजा हन्ति त्र्यहाच्छलेष्म समुद्भवा।

त्रिहात पित्तसम्भूता सप्ताहात पवनोत्थिता ।। (खरनाद)

सुश्रुत शारीर स्थान

1) सर्वभूतचिन्ताशारीर

Topics: सृष्टी उत्पत्ती, पंचमहाभुत, प्रकृतिपुरूष साम्य, भेद, आत्मा वर्णन.

1) सृष्टि उत्पत्ति: (चरक - वेद का समर्थन, सुश्रुत - सांख्य का समर्थन)

अव्यक्त: सर्वभूतानां कारणम, स्वयं अकारण, क्षेत्र ज्ञानामधिष्ठानं,

महत: महतस्तल्लक्षण एवाहंकार उत्पद्यते.

अहंकार: स त्रिविधो वैकारिक (सात्विक) तैजसो (राजस) भूतादि (तामस) इति

इंद्रिया संख्या: 11 - ज्ञानेंद्रिय - 5, कर्मेंद्रिय - 5, उभयात्मक मन

2) पंचमहाभूत विशेष: तेषां विशेषा शब्द स्पर्श रुप रस गन्धः ।

[विशेष व अनुभवयोग्यै सुख दुःख मोहरुपैधर्मे: विशिष्यन्त इति विशेषा:।

तन्मात्रा - अनुदभूतस्वाभावानि बाह्योन्द्रिया अग्राह्याणि,

तन्मात्रा शब्दादीन्येव तन्मात्राणि ।]

तत्र बुध्दि इन्द्रियाणां शब्दादयो विषया:। शब्द - आकाश, रूप - चक्षु.....

कर्मेंद्रियाणां यथासंख्यं वचन, आदान, आनन्द, विसर्ग, विहरणानि ।।

वाक, पाणी, उपस्थ, पायु, पाद.

अव्यक्त महनहक्कार: पंच तन्मात्राणि च। अष्टौ प्रकृतय षोडश विकारा:

3) तत्व - अधिदैव: 13 - i) बुद्धि - ब्रह्मा, ii) अहंकार - ईश्वर,

iii) मनस - चन्द्रमा, iv) श्रोत - दिश:, v) त्वचा - वायु, vi) चक्षुष - सूर्य,

vii) रसन - आप, viii) घ्राण - पृथिवी, ix) वाचो - अग्नि, x) हस्तयो - इन्द्र,

xi) पादयो - विष्णु, xii) पायो - मित्र, xiii) उपस्थ - प्रजापति,

4) प्रकृति पुरुष: साद्यर्म्य i) नित्य, ii) अनादी, iii) अनन्त,

iv) अलिंगो (अनाकार), v) अनपर (इसके पहले कोई नहीं)

[इंद्रिया भौतिक....आयुर्वेद, सांख्यशास्त्र में सर्वगत आत्मा.]

5) वैधर्म्य:	प्रकृति	पुरुष
	एक	अनेक
	अचेतन	चेतन
	त्रिगुणात्मक	निर्गुण
	बीजधर्मी	अबीजधर्मि
	प्रसवधर्मी	अप्रसवधर्मी
	अमध्यस्थधर्मिणी	मध्यस्थधर्मिणी

6) सृष्टि उत्पत्ति में 6 कारण:स्वभावम इश्वरं कालं यदृच्छां नियति परिणाम,

7) आत्मा: सर्वगता-क्षेत्रज्ञा नित्य, अनुमानग्राह्या, परमसूक्ष्माश्चेतनावन्त:, शाश्वता, लोहितरेतसो: सन्निपातेष्वभिव्यज्यन्ते ।

16 गुण: सुख दुख इच्छाद्वेषा प्रयत्न: प्राणापानावुन्मेषनिमेषो बुद्धिर्मन संकल्पो विचारण स्मृतिविज्ञानम अध्यवसायो विषयोपलब्धिश्च.

8) संदर्भ: पंचमहाभूत शरीरी समवाय: पुरूषइति ।

स एव कर्मपुरूषचिकित्साऽधिकृत: ।

9) सर्व छिद्र समुह - आकाश. सर्व चेष्टा समुह - वायू .

सर्व द्रव समुह - आप. सर्व मूर्त्त समुह - पृथ्वी.

10) पंचमहाभूतों में गुण: सत्वबहुलमाकाश - सत्व, रजोबहुल वायु - रजो; सत्वरजो बहुलो ऽग्नि- सत्वरजो; सत्वतमोबहुल आप: सत्वतम, तमोबहुला पृथिवीति - तम.

(सुश्रुत सांख्य का मार्ग स्वीकार करते हुये 25 तत्वों का उपादान करता है। चरक सांख्य वेदान्त के बीच का मार्ग स्वीकार करते हुये 24 तत्व को मानता है।)

2) शुक्रशोणित शुद्धि शारीर

Topics: शुक्रशोणित - दोष चिकित्सा, शुध्द लक्षणे. पुसंवन, गर्भवर्ण, नंपुसक प्रकार, स्त्रीशुक्र, गर्भसंबंधी प्रश्न.

1) शुक्र दोष: 8 (11 अन्य जगह वर्णीत है)

वात,पित्त,कफ,रक्त कुणपगंधि ग्रन्थि पूति पूय क्षीणमूत्र पुरीष रेतस: प्रजोत्पादने न समर्था.

2) वीर्यदोष लक्षण: वात - वातवर्णवेदनं वातेन,

पित्त - पित्तवर्णवेदन पित्तेन, कफ - श्लेष्मवर्णवेदनं श्लेष्मेण,

(वाग्भट - कफज आर्तवदूष्टी - मज्जोपसंसृष्टं प्रभूतं विबध्दं चाम्भासि च निमज्जति श्लेष्मणा। अ.सं.शा. 1/24)

रक्त - कुणपगन्ध्यनल्पं च रक्तेन, वातपित्त-क्षीणं प्रागुक्तं पित्तमारुताभ्यां,

पित्तकफ - पूतिपूयनिभ पित्तश्लेष्माभ्यां (वाग्भट पूयाभं रक्तपित्ताभ्याम),

ग्रंथीभूत - वातश्लेष्माणां, सन्निपातज - मूत्रपुरीषगन्धि सन्निपातेनेति.

कृच्छ्रसाध्य - कुणप, ग्रन्थि, पूतिपूय, क्षीणरेतस:

असाध्य मूत्रपुरीषरेतस:, शेष साध्य.

3) आर्तव दोष:- वीर्य दोष - अबीजं भवति (प्रजोत्पादन में असमर्थ.)

सुश्रुत असाध्य - कुणपग्रंथि पूति पूय क्षीण मूत्र, पूरीष प्रकाशम; शेष - साध्य

शक्रार्तव दोष - व्याधिस्वभाव के कारण याप्य नही होते.

(साध्यासाध्यत्व अ.सं. मुत्रपुरिषगन्धी,कुणपगन्धी, ग्रन्थी,

एंव पूयार्तव - असाध्य है। शेष एकदोषज व क्षीण साध्य है।

अ.हृ. - त्रिदोषज मुत्रविटसदृश आर्तव असाध्य अन्य सभी वातज से क्षीणार्तव तक साध्य।)

4) सामान्य चिकित्सा: (शुक्र आर्तव दोष)

स्निग्धं वान्तं विरिक्तं च निरुहम अनुवासितम।

योज्येत शुक्रदोषार्तं सम्यक उत्तरबस्तिना।।

5) शुद्ध शुक्र लक्षण: स्फटिकाभं द्रवं स्निग्धं मधुरं मधुगंधिश्च।

शुक्रमिच्छान्ति केचित्, तैल क्षौद्रनिभं तथा ।।

6) आर्तव: शशासृकप्रतिमं यत्तुयद्वा लाक्षारसोपमम्।

तदार्तवं प्रशसन्ति यदवासो न विरंजयेत् ।।

7) शुक्रदोष चिकित्सा:

i) वात,पित्त,कफ में: स्नेह स्वेदादि + उत्तरबस्ति.

ii) कुणपरेतसि: धातकीपुष्प खदिर दाडिम अर्जुन साधित/ शालसारादि घृत.

iii) ग्रंन्थि भूते शटीसिद्ध पलाशे (घृत).

iv) पूय प्रख्ये परुषक वटादिभ्यां (घृत).

v) विट प्रभे चित्रकोशीरहिंगुभि(घृत).

8) आर्तव चिकित्सा:

i) विधिमुत्तरबस्त्यन्तं कुर्याद आर्तवं शुद्धये।

ii) ग्रन्थिभूते पिबेत पाठां त्र्यूषणं वृक्षकाणि च।

ii) दुर्गंधिपूय मज्जतुल्ये-चन्दन क्वाथ पिबेत।

iii) वात आदि दुष्टि में शुक्रदोषसमान चिकित्सा- करे ।

पथ्य: अन्नं शालियवं मद्यं हितं मांस च पित्तलम।(पित्तवर्धक आहार हितकर है)

9) असृगदर: तदेवातिप्रसंगेन प्रवृत्तम अनकृतावपि।

असृग्दरं विजानीयादतो ऽन्यद्रक्तलक्षणात।

(ऋतुकाल के व्यतिरिक्त रक्तस्राव व रक्तलक्षण असृग्दर)

असृग्दरो भवेत सर्व सांगमर्द, सवेदन:

दाह प्रलाप: पाण्डुत्वं तन्द्रा रोगाश्च वातज:।

चिकित्सा - असृग्दर में ऽल्पोद्रवे रक्तपित्त विधान.

10) नष्टार्तव: दोषैरावृतमार्गत्वादार्न्तवं नश्यति स्त्रिय: ।

चिकित्सा - अम्ल पदार्थ, मुद्ग, दधि, शुक्त.

11) क्षीणार्तव: क्षीणं प्रागीरितं रक्तं सलक्षणचिकित्सितम।

चिकित्सा - नष्टार्तव वत (अम्लपदार्थ)

12) ऋतुकाल में अपथ्यजन्य विकार: i) दिवा स्वाप - स्वापशील,

ii) अंजनाद- अन्ध, iii) रोदनाद - विकृतदृष्टि,

iv) स्नानानुलेपनाद - दु:खशील, v) तैलभ्यगात-कुष्ठी,

vi) नखापकर्त्तनात - कुणखी, vii) प्रधावनात-चचंल:,

vii) हसनात - श्यावदन्तौष्ठतालुजिव्ह:,

ix) अतिकथनात- प्रलापी, x) अतिशब्द श्रवणात-बधिर,

xi) अवलेखनात - खलति, xii) मारुत आयास सेवनात-उन्मत्तो.

13) स्नान पश्चात: पति दर्शन.

पुरूष - 1 मास तक ब्रह्मचारी रहकर - संभोग करें.

14) संभोग परिणाम:

ऋतूकाल	सुश्रुत	काश्यप	भा. प्र.
1 दिन	अनायुष्य, गर्भ रहने पर प्रसव समय मृत्यु	वातगर्भ,फलशुन्य.	चाण्डाली सदृश्य
2 दिन	सुतिकागृह में मृत्यु	गर्भपात	ब्रम्हघातिनी सदृश्य
3 दिन	असम्पूर्णांग, अल्पायु	सुतिकागृह में मृत्यु	रजकी सदृश्य
4 दिन	सम्पूर्णांग, दीर्घायु	दीर्घायु	

पूत्रीय विधीवर्णन-संदर्भ (सु.)शा. 2/27 अ सं शा 1/53 (अ ह शा 1/28)

यूग्म व अयुग्म दिन - युग्म रात्री में आर्तव अल्प होता है।

और अगुम रात्री में बढता है।

15) पुंसवन: (चरक शारीर देखिए)

16) गर्भ सामुग्री: ध्रुव चतुर्णां सान्निध्याद गर्भ:स्यादविधिपूर्वक:।

ऋतू क्षेत्राम्बूबीजानां साम्रयादङ्कुरो यथा ।। सु. शा. 2/35

17) गर्भवर्ण: (चरक शारीर देखिए)

18) तेज धातु का नेत्र पर परिणाम:

i) दृष्टिभागम अप्रतिपन्नं तेजो जात्यन्धं करोति, ii) तदेव रक्तानुगतं रक्ताक्षं,

iii) पित्तानुगतं पिंगाक्षं, iv) श्लेष्मानुगतं शुक्लाक्ष, v) वातानुगत: विकृताक्षम.

19) नुतन आर्त्तव: घृतपिण्डो यथैवग्निमाश्रित प्रविलीयते

20) यमलौ उत्पत्ति: (2 गर्भ) वायु, अधर्म,

21) नपुसंक प्रकार: 5i) आसेक्य: (मुखयोनिपुरुष) माता पिता के अत्यल्प शुक्र से उत्पन्न. (चरक ने इसे 8 वा - वक्रध्वज),

ii) सौगान्धिक:(नासायोनिपुरुष) -पूतियोनी में उत्पन्न योनिशेफस के गन्ध से ध्वजोत्थान, iii) कुम्भिक : (गुदयोनि) स्व. गुदे ऽब्रह्मचर्याद्य: स्त्रीषु पुंवत प्रवर्त्तते),

iv) ईर्ष्यक: दृग्योनि: दुसरे को व्यवाय में प्रवृत्त देखकर स्वयं प्रवृत्त,

v) षण्ड: शुक्ररहित होता है।

a) नरषण्ड- पुरुष स्त्रीवत नीचे लेटकर सम्भोग.

b) नारीषण्ड- स्त्री, पुरुषवत ऊपर से सम्भोग में प्रवृत्त.

22) स्त्री शुक्र: 2 नारी के सम्भोग से स्त्री शुक्र से उत्पन्न, अनअस्थी गर्भ उत्पन्न

23) कलल: मासि मासि विवर्धेत गर्भिण्या गर्भलक्षणम।

कलल जायते तस्या वर्जितं पैतृकैः गुणैः ।।

(स्वप्न में पैदा गर्भ पितृ गुण रहित)

24) दौहद अपूर्ति से भवेत कुब्जः कुणि पंगुर्मूको मिन्मिन एव वा वात प्रकोप

25) विकृत गर्भ उत्पत्ति: 3

i) माता-पिता नास्तिक, ii) पूर्वजन्म कृत अशुभ कर्म, iii) वातादि प्रकोप.

26) गर्भ मलोत्सर्ग नहीं करता ?

i) अल्प मल, ii) अल्प वायो, ii) अल्प पक्काशय

27) गर्भ रोता नहीं ?

i) मुखे च्छन्ने जरायुणा, ii) कण्ठे कफवेष्टिते, ii) वायोः मार्गानिरोध.

28) स्वाभाविक कार्य: सन्निवेश शरीराणां दन्तानां पतनोदभवो।

तलेष्वसम्भवो यश्च रोम्णामेतत स्वभावत: ।।

29) जातिस्मरा वर्णन: पूर्वदेह - सततं, शास्त्रबुध्दता, सत्वभूयिष्ठ

(भा. प्र. स्त्रीया-आर्तव-सप्तमधातू, शुक्र- अष्टम धातू)

(भा.प्र. रजस्वाला गमन से दृष्टी, आयु, तेज हानी व अधर्म होता है।)

3) गर्भावक्रान्तिशारीर

1) सौम्यं शुक्रम, आतर्वम आग्नेयम,

2) भूत: i) परस्परोपकारात:, ii) परस्परानुप्रवेशाच्च:

3) गर्भ पर्याय: क्षेत्रज्ञो, वेदयिता, स्प्रष्टा, धाता, द्रष्टा, श्रोता, रसयिता, पुरुष:, त्रष्टा, गन्ता, साक्षी, घ्राता. गर्भप्रविष्ट आत्मा पर्याय.

4) शुक्रबाहुल्यात पुमान, आर्तवबाहुल्यात स्त्री, साम्यादे उभयो नपुंसकमिति.

5) ऋतुकाल: 12 रात्र (वाग्भट 12 रात्र) - ऋतुस्तु द्वादशरात्रं भवति दृष्टार्तव (अन्यआचार्य 16 दिन)

(ऋतुकाल - अ सं, अ. ह.12 रात्र (अन्य आचार्य 16 दिन अथवा 1 मास)

काश्यप- ब्राह्मणी के लिए 12 दिन, क्षत्रिय-11, वैश्या 10, व अन्य 9 दिन.

भावमिश्र-ब्राह्मणी के लिए 12 दिन,क्षत्रिय-10, वैश्या 8, व अन्य 6 दिन.)

6) ऋतुमती लक्षण: पीनप्रसन्नवदनां, नरकामा, प्रियकथा स्त्रस्तकुक्ष्यक्षिमूर्धजाम

वाग्भट - क्षाम प्रसन्नवदना स्फुरच्छ्रोजिपयोधराम।

स्त्रस्ताक्षिकुक्षि पुंसकामा विद्यात ऋतुमती स्त्रियाम।।

7) ऋतुकाल के अतिरिक्त काल मे योनि का द्वार बंद

ऋती व्यतीत नार्यास्तु योनि संब्रियते तथा।

8) मासिक स्त्राव: *इषत कृष्णं विबंध* (विगंध पाठभेद)

9) रजोनिवृत्तिकाल: वर्षात द्वादशातकाले पंचाक्षत क्षयम्।

10) पुत्रउत्पत्तिकाल: युग्मेषु तु पुमान

11) सद्योगृहीतगर्भा लक्षण: श्रमो ग्लानि, पिपासा सक्थिसदनं, शुक्र शोणितयोरवबन्ध, स्फुरणच्य योने.

12) गृहीतगर्भा लक्षण: (गर्भिणी)

स्तन्यो कृष्णमुखता, रोमराज्युदगमस्तथा।

अक्षिपक्ष्माणि चाप्यस्या: संमील्यन्ते विशेषत:।।

अकामतछर्दयति गन्धादुद्विजते शुभात।

प्रसेक सदनं चापि गर्भिण्या लिंगमुच्यते।।

13) गर्भधारण के बाद वर्जनीय: स्नेहादिक्रियां शोणितमोक्षणं.

(अ. सं. प्रथममास में अभ्यंग एवं उबटन निषेध

5th मास तक दोषकर पदार्थ निषेध.

काश्यप - गर्भिणीको अंभ्यग,नस्य शीतल जल व लसुन प्रयोग निषेध

योगरत्नाकर - गर्भिणी स्त्री को स्वेदन, वमन, क्षार व विषम अन्न निषेध.)

14) मासानुमासिक गर्भवृद्धि (चरक शारीर देखिए)

15) दौहद से होनेवाले सन्तान के गुणों की पहचान:

i) राजा दर्शन - अर्थवन्तं, महाभागम, ii) दुकुल भूषण - अलंकारैषि, ललित,

iii) आश्रमे - धर्मशील, iv) देवता प्रतिमा- पार्षदोपमं (देवानुचर-तुल्य)

v) व्याल जाती-हिंसाशील, vi) गोधामांस-सुषुप्सु धारणात्मकम,

vii) गवां मांसे- बलिनं सर्वक्लेशसहं, viii) माहिषे - शूरं, रक्ताक्षं, लोमसंयुतम,

x) वराहमांस-स्वप्नालु शूर, xi) मार्गाद-विक्रान्त जंघालं वनचर,

xii) सृमर (महाशुकर) - विग्रमनस, xiii) तैत्तिर- नित्य भीतं,

16) गर्भ पोषण: गर्भ का उपस्नेह न्याय से पोषण: मातुस्तुखलु रसवहायां नाड्या गर्भनाभिनाडी प्रतिबध्दा - साऽस्य मातुराहाररसवीर्यमभिवपति ।।

(गर्भपोषण - गर्भस्य नाभौ मातूश्च हृदीनाडी निबध्यते।

यया स पूष्टिमाप्नोति केदार एव कूल्यया। अ.ह.शा. 1/56)

जरायू उत्पत्ती - डल्हण रक्त से जरायू तथा रससे गर्भनाभी नाडी उत्पत्ती.

17) गर्भोत्पत्ति क्रम: (सर्व प्रथम अंगउत्पती)

अंग	चरक	सुश्रुत	भेल
शिर	कुमारशिरा	शौनक	भरव्दाज
हृदय	कांकायन	कृतवीर्य	पाराशर
नाभि	भद्रकाप्य	पाराशर	खण्डकाप्य
पाणिपाद	बडिश	मार्कण्डेय	बडीश
गुद पक्काशय	भद्रशौनक	मध्यशरिर-सुभुति गौतम	गुदपक्वाशय
इन्द्रिय	वैदेहजनक	-	-
अविचार्य	मरिच कश्यप	-	चक्षु-काश्यप
सर्वांग	धन्वन्तरी	धन्वन्तरी	

18) प्रसव कारण: कालप्रकर्षात प्रव्यक्तानि भवति.

(प्रसव कारण - हारित - गर्भवासवैराग्य भेल - गात्र संपूर्णता)

19) गर्भ भाव: (चरक शारीर देखिए)

20) गर्भलिंग निश्चिती: पुत्र के लिए - i) दक्षिणे स्तने पाक पयोदर्शन, ii) दक्षिण अक्षि महत (बडी), iii) संक्थि उत्कर्ष, iv) स्वप्नेषु पद्योत्पल कुमुद आम्रातकादी लभते, v) प्रसन्नमूखर्वा, इसके विपरीत कन्या और मिश्र नपुंसक (अ. सं. व डल्हण रोमराजी उर्ध्व-पुत्रोत्पत्ती होना. काश्यप- योनी मध्य निबिडा कन्या प्रजननाय, उन्नतरमणीय मांसल योनी पुत्र जन्म के लिए।)

नपुंसक गर्भ: पार्श्वद्वयमुन्नतं पुरस्तान निर्गतमुदरं नपुंसक.

युग्म गर्भ: मध्ये निम्नं द्रोणीभूतमुदरं सा युग्म.

21) विकृत अंग-प्रत्यंग में कारण:

अंग-प्रत्यंग निर्वत्ति स्वभावादेव जायते।

उत्कृष्ट निकृष्ट धर्माधर्मानिमित्तज.

4) गर्भव्याकरणशारीर

Topics: त्वचा, कला, निद्रा, प्रकृति, आदि वर्णन.

1) प्राण: 12 - अग्नि सोम वायु सत्व रज तम पंचेंद्रियाणि भूतात्मा प्राण:

2) त्वचा वर्णन: त्वचा 7 (वाग्भट 7, चरक व काश्यप 6)

i) अवभासिनी-सर्वान वर्णान अवभासयति, पंचविध छायां प्रकाशयति, 1/18 व्रीहि- सिध्म पद्म कण्टकाधिष्ठाना.

ii) लोहिता - 1/16 व्रीहि - तिलकालक न्यच्छ व्यंग.

iii) श्वेता- 1/12 व्रीहि - चर्मदलाजगल्ली मशक.

iv) ताम्रा- 1/8, व्रीहि - किलास कुष्ठ.

v) वेदिनी- 1/5 व्रीहि - कुष्ठ, विसर्प.

vi) रोहिणी- 1 व्रीहि - ग्रन्थ्यपच्यर्बुदश्लीपदगलगण्ड,

vii) मांसधरा- 2 व्रीहि - भगन्दर विद्रध्यर्शो

3) त्वचा प्रमाण: प्रमाण मांसलभाग के लिए समझना चाहिए, निर्दिष्टं तन्मांसलेष्ववकाशेषु न ललाटे सूक्ष्मांगुल्या दिषु। क्योंकि व्रीहि मुखेनांगुष्ठोदर प्रमाणमवगाढं विध्येत, ऐसा गहरा छेद लेने के लिए कहा है।

4) कला: कला खल्वपि सप्त भवन्ति धात्वशयान्तर मर्यादा: धातू मासेंषु छिन्न मानेषु दृश्यते। स्नायुभिश्च प्रतिच्छन्नान, सनन्ताश्च जरायुणा। श्लेष्मणा वेष्टिताश्चपि।।

सुश्रुत सार: काष्ठेषु ,वा. कला- काष्ठसारवत.

कला	स्थान:	वर्णन
i) मांसधरा	सिरास्नायुधमनी स्त्रोतसां,(बिसमृणाल दृष्टान्त)	
ii) रक्तधरा	मांसाभ्यन्तर शोणितं विशेषत: सिरासु यकृत प्लिहाश्च	
iii) मेदो	उदरम अण्वस्थि च महतसुच मज्जा (छोटी अस्थि)	
iv) श्लेष्म	सर्वसन्धिषु (शारंगधर-यकृत)	
v) पुरीष	अन्त कोष्ठे, मलम विभजते पक्वाशयस्थ	
vi) पित्त	चतुर्विधमन्नपानमाशयात प्रच्युतं पक्वाशयोपस्थितं धारयति	
vii) शुक्र	सर्वशरीरव्यापि	

5) स्थूलास्थिषु विशेषेण मज्जा त्वभ्यन्तराश्रित, अथेतरेषु सर्वेषु सरक्त मेद उच्यते।

6) शुद्धमांसस्य य स्नेह सा वसा परिकीर्तिता।

7) यकृत्समन्तात कोष्ठं च तथाऽन्त्राणि समाश्रिता।

उण्डुकस्थं विभजते मलं मलधरा कला।

8) अशितं खादितं पीतं लीढं कोष्ठगतं नृणाम।

तज्जीर्यति यथाकालं शोषितं पित्ततेजसा।

विधाय पित्ततेजसा शोषयन्ती पचति (अ.सं.शा.)

9) शुक्रमार्ग: द्वयंगुले दक्षिणे पार्श्वे बस्तिद्वारस्य.

10) उत्पत्ति: i) गर्भस्य यकृत्प्लीहानौ शोणितजौ, ii) शोणितफेन प्रभव: फुफ्फुस iii) शोणितकिटट प्रभव उण्डुक, iv) आन्त्रस, गुद, बस्ति: असृज: श्लेष्मणश्चापि य: प्रसाद: परो मत:। पच्यमानं पित्तेन वायु v) कफशोणितमांसाना सारो जिव्हा

11) पेशी: यथार्थमूष्मणा युक्तो वायु: स्त्रोतांसि दारयेत।

अनुप्रविश्य पिशितं पैशी: विभजते तथा।।

a) सिराणां तु मृदु पाक, b) स्नायुनां च तत खर:,

vi) रक्तमेद प्रसादाद वृक्कौ, vii) मांसासृक कफमेद प्रसादात वृषणौ.

viii) शोणित कफ प्रसादजं हृदयं.

12) हृदय: यदाश्रया हि धमन्य: प्राणवहा: तस्याधो वामत: प्लीहा फुफ्फुसश्च दक्षिणतो यकृत क्लोमच. हृदय तद विशेषेण चेतनास्थानम हृदय पुण्डरीकेण सदृश्यं हृदयं स्यादधोमुखम।

जाग्रतस्तद्विकसाति स्वपतश्च निमीलति: ।।

13) निद्रा: तमोगुण से आच्छादित होने पर।

निदा उत्पन्न: - i) हेतु - तम, ii) प्रधान कारण - स्वभाव,

iii) जागरुक होने का कारण - सत्व बोधन, iv) पर्याय - वैष्णवी, पाप्मान,

v) प्रकार: तामस्वी तमोभूयिष्ठ, प्रलयकारी सम्भवत्यनवबोधिनी. (दिनरात्र)

रजोभूयिष्ठ- अनिमित्त, काल सत्व भुयिष्ट लोग - अर्धरात्रे निद्रा प्राप्त

निद्रा प्रकार: i) वैष्णवी- स्वभावज, ii) तामसी-गुण प्रलयकारी,

iii) वैकारिकी - विकारजन्य. (गरीयान् हेतू-स्वभाव)

14) दिवास्वाप नियम:

i) बाल, वृद्ध, स्त्री कर्शित, क्षत, क्षीण, मद्य, नित्यपान, वाहन:अजीर्ण

ii) जितने समय रात्रिजागरण उससे अर्ध समय दिवास्वाप,

iii) दिवास्वाप से अधर्म, सर्वदोष प्रकोप,कास,श्वास,प्रतिश्याय,शिरोगौरव अंगमर्द, अरोचक, ज्वर, अग्निदौर्बल्य. दिवास्वाप समय-1 मुर्हत

रात्रिजागरण से वातपित्त जन्य विकार, निद्रा सम्बंधित पथ्य करने से

अरोग:, सुमना, बलवर्ण,वृष, नातिस्थूलकृश: श्रीमाननरो, जीवेत शतम धनवान्

15) निद्रानाश के कारण: अनिल, पित्त, मनस्ताप, क्षयात, अभिघात

16) निद्रा के उपाय: अभ्यंग, मूर्ध्नि तैल, गात्रस्थाद्वर्न्तन, संवाहन.

17) अतिनिद्रा चिकित्सा: वमन,संशोधन,लंघन, रक्तमोक्षण, मनोव्याकुलनानि

18) रात्रिजागरण हितकर कफ मेदो विषार्त्ताना,

19) दिवास्वाप हितकर: तूट, शूल, हिक्का जीर्णातिसार.

20) तन्द्रा लक्षण: इंद्रियार्थ का अज्ञान होना,गौरवं,जृम्भणं, क्लम,

21) जृम्भ: पीत्व एक अनिल उच्छवास स नेत्रास्त्रं,

22) क्लम: ऽनायास श्रमो, इन्द्रियार्थप्रबाधक,

23) आलस्य: अनुत्साह, **24) उत्क्लेशन:** प्रसेकष्ठीवन, हृदयं पीडयते,

25) ग्लानि: वक्त्रे, मधुरता, हृदयोद्वेष्टन,

26) गौरव: आर्द्रचर्मावभ्दं वा गात्रं, शिरो ऽ त्यर्थ गुरु.

27) मूर्च्छा पित्ततम प्राया, रज पित्तानिलाद भ्रम:।

तमोवातकफात तन्द्रा, निद्रा श्लेष्मतमो भवा।।

28) गर्भवृद्धि: रसानिमित्त, मारुताध्मान निमित्त

तस्यान्तरेण नाभेस्तु ज्योति: स्थानं ध्रुवं स्मृतम।(गर्भ नाभी में अग्नि स्थान है।

29) कभी न बढनेवाले अंग: दृष्टि,रोमकूप.

30) नित्य बढनेवाले अंग: नख, केश.

31) प्रकृति बढने के कारण: शुक्रशोणितसंयोगे यो भवेददोष उत्कट:।

प्रकृतिर्जायते तेन तस्या मे लक्षणं श्रृणु।

32) प्रकृति: 7 - (वात,पित्त,कफ, वातपित्त, पित्तकफ, वातकफ, सन्निपातज

वात प्रकृती- दुर्भग,स्तेन, गान्धर्वचित्त, क्रोधी, हिंसाशील, अधृति, कृतघ्न

पित्त प्रकृति-दुर्गन्ध, मध्यमबलो मध्यमायु, मेधावी, विगृह्य वक्ता,व्यथितास्यगति

भुजंगोलूक गन्धर्वयक्षमार्जारवानरै:, व्याघ्रर्क्षनकुलालूकै:

कफ प्रकृति - सुभग- रक्तान्तनेत्र, सत्त्वगुणोपपन्न, परिनिश्चितवाक्यपद सतत

ब्रह्मरुद्रेन्द्रवरुणै: सिंहाश्वगजगोवृषै: तार्क्ष्य हंस.
सात्विक (7) राजस (6) तामस (3)

	रजकाल	ऋतुकाल	ऋतुव्यतीतकाल
अवधि	(3 - 5) दिन	(12 -16) दिन	(9 -13) दिन
Modern	Menstrual phase	Proliferative & Secr.	
जननांग	रजस्त्राव	हर्ष,औत्सुक्य,कामेच्छा योनि,गर्भाशय स्फुरण	योनिद्वार बंद योनि संवरण
दोष	वात प्रकोप	कफ प्रकोप	पित्त प्रकोप
रज	मलरूप	प्रसादरूप	पुराण रज

5) शरीरसंख्याव्याकरण शारीर

Topics - गर्भ व्याख्या,शरीर व्याख्या, संख्या शास्त्र,शवविच्छेदन वर्णन.

गर्भ: शुक्रशोणितं गर्भाशयस्थम् आत्मप्रकृतिविकार संमूर्च्छितम् गर्भ इत्युच्यते।

संदर्भ

गर्भस्थ महाभुत कर्म: आकाशं विवर्धयति, वायु - विभजति,तेज - पचति , आप: - क्लेदयन्ति, पृथिवी - संहन्ति.

(भावमिश्र गर्भवृध्दी में पंचमहाभूत का कार्य वर्णन करते समय, तेज को वाणी का अधिदेव और जल को मन का अधिदेव कहा।)

एवं विवर्धित: स यदा हस्त - पाद - जिव्हा - घ्राण - कर्ण. नितम्बादिभि रंगैरूपेतस्तदा शरीर इति संज्ञां लभते। संदर्भ

सुश्रुत प्रत्यंग: 56 -

1

(शिर, बस्ति, ग्रीवा, उदर पृष्ठ, नाभि, ललाट, चिबुक)...प्रत्यंग में वर्णन (यकृत, प्लिहा, उण्डुक, हृदय, आमाशय)

2

(कर्ण, नेत्र, भ्रु, शंख, गण्ड, कक्ष, स्तन, वंक्षण, वृषण, पार्श्व, स्फिग्, जानु, कूर्पर, बाहु, उरू)....प्रत्यंग में वर्णन.

(फुफ्फुस, आन्त्र, वृक्क, संधिप्रकार)

संधि - व्दिधा चेष्टावन्, स्थिर,(शाखासु हन्वो: कट्यांच चेष्टावन्तस्तु सन्धय:।) शेषास्तु सन्धय: सर्वे स्थिरा:।

3

स्त्री आन्त्र लम्बाई 3 व्याम, पुरूष आन्त्र 3 ½ व्याम

4

रज्जु, स्नायु (चतुरस्त्रो रज्जोवा)

(मांसरज्जु उपयोग - पृष्ठवंश उभयत: पेशी निबन्धनार्थ)

प्रतानवती - शाखासु सर्वसंधिसु,

वृत्तास्तु - कण्डरा (गोल स्नायु को कण्डरा कहते है),

पृथुल - पार्श्वोर पृष्ठ शिरसु,

सुषिर - (आमाशय, पक्वाशय) के अन्त, बस्तिषु.

5

अस्थि प्रकार: i) कपाल-जानु नितम्बां-स-गण्ड तालु शंखशिर:सु कपालानि।

ii) रूचक - दशनास्तु रूचकानि,

iii) तरूण - घ्राणकर्ण ग्रीवाक्षिकोषेषु तरूणानि

iv) वलय - पार्श्व पृष्ठोर:सु वलयानि, v) नलक - शेष.

6

षट्कूर्चा: (हस्त ((2), पादं (2), ग्रीवां (1), मेढ्रषु (1))

षडंग (कूर्चमर्म - 4)

स्नायु धमनी सन्निपात - कूर्चा.

7

त्वचा कला आशय धातु सीवनी

सीवनी - (पंचशिरसि + जिव्हा, शेफ), परिहर्त्तव्या: शस्त्रेण, (i.e. Don't use शस्त्र here)

आशय - वात,पित्त,कफ,रक्त, आमाशय, पक्वाशय, मूत्राशय.स्त्री - गर्भाशय,

8

स्त्रीआशय (शारंगधर - स्त्रीआशय -10), संधि.

संधि प्रकार: कोर - अंगुलि मणिबंध गुल्फ जानु कुर्परेषु कोर:सन्धय:,

उलूखल-कक्षावंक्षणदशनेषूलूखला:,

सामुद्ग - अंसपीठगुद भग नितम्बेषु सामुद्ग:

प्रतर - ग्रीवा पृष्ठवंशयो: प्रतरा:,

तुन्नसेवनी - शिर: कटिकपालेषु तुन्नसेवन्य:,

वायसतुण्ड - हनोरूभयतस्तु वायसतुण्ड:,

मण्डल - कण्ठहृदयनेत्रक्लोमनाडिषु मण्डला:,

शंखावत - श्रोत्रश्रृंगाटकेषु शंखावर्त:

9

स्त्रोतस (पुरूष बहिर्मुख),

12

स्त्री बहिर्मुख स्त्रोतस, (9 + 3 अधिक - 2 स्तन,1 अधोरक्तवह)

14

संघात, सीमन्त, (वा - 18 सीमन्त) शिर: कपाल में 5 सीमन्त.

16

कण्डरा, जालिनी: (षोडशकण्डरा, षोडशजालिनी.)

20

अंगुल्या (विंशति अंगुल्या:)

22

योगवाहि स्त्रोतस: (चरक - 13 स्त्रोतस, वाग्भट -14)

24

धमन्या: (चरक - 200),

107

मर्म: (चरक 3 व 107, वाग्भट धमनी मर्म अलग वर्णन)

210

संधि (Also previously संधि - 8) (चरक - 200 संधि) (पुनर्वसु आत्रेय - 2000 संधि) (काश्यप - 381)

300

अस्थि (परंतु वेदवादि (i.e. च., अग्निवेश etc) -360,आयुर्वेद प्रकाश ...246)

500

पेशी, स्त्री में 520,(चरक - 400)

700

सिरा (मुल सिरा 40)

900

स्नायु

* श्रोणि में अस्थि संख्या: चरक - 3, सुश्रुत - 5, वाग्भट - 4, श्रोण्यां पंच, गुदभगनितम्बेषु चत्वारि त्रिकसंश्रितमेकम...सुश्रुत. व्दे श्रोणिकलके, 1 भगास्थि (चरक)

(वाग्भट - भग - 1, त्रिक - 1, नितम्ब - 2)

श्रोणि अस्थि- संधि संख्या: त्रय: कटीकपालेषु, पंच शिर: कपालेषु, गुदभगनितम्बेषु सामुद्गा, कटिकपालेषु तून्यसेवन्य:।

* अस्थनां तु संधयो ह्येते केवला: परिकीर्तिता:।
पेशीस्नायुशतानां तु संधिसख्या न विद्यते।।

(अस्थि संधि की संख्या कहीं गई है, as पेशी, स्नायु की संधि असंख्य है।)

* पेशी: पेशीभि: संवृत्तान्यत्र बलवन्ति

स्त्री में 20 पेशी अधिक: 10 - स्तनों मे (5 in each).

4 - अपत्यपथे चतस्र: प्रसृतेऽभ्यन्तरतो व्दे, मुखाश्रिते बाह्ये च वृत्ते व्दे.

गर्भाशय पेशी: 3 - गर्भच्छिद्रसंश्रितास्तिस्त्र: 3 - शुक्रार्तव प्रवेशिन्यतिस्त्र.

* **योनी आकृती:** पित्त पक्वाशययोर्मध्ये गर्भशय्या:, यत्र गर्भस्तिष्ठति.

पेशी स्वरूप: बहल, पेलव, स्थूला, अणु, पृथु, वृत्ता, ह्रस्व, दीर्घ, स्थिर,मृदु, श्लक्ष्ण, कर्कश, स्न्ध्यस्थिसिरा, स्नायु, प्रच्छादका.

* **गर्भशय्या:** शंखनाभ्याकृति, योनिस्त्र्यावर्ता, तृतीये आवर्ते गर्भशय्या. (काश्यप–शकटाकृती) (योनी नाडीयाँ - 3 (भा.प्र.)

1) समरिणा - भगशिश्नीका में–यदी इसपर शुक्र गिर गया तो निष्फल होता है।

2) चान्द्रमसी - योनीनलिका मध्यमेस्थित सुखभोगी - कन्याप्रसवी

3) गौरी - उपस्थगर्भ - कष्टभोगी, पुत्रप्रसवी)

* **गर्भाशय:** रोहितमत्स्यमुख,

* **गर्भाशय में स्थित शिशु स्थिति:** आभुग्नोऽभिमुख:

* **ज्ञानविवर्धन में:** प्रत्यक्ष दृष्टि, शास्त्र दृष्टि.

* **शवविच्छेदन:** i) विष से मृत न हो, दीर्घव्याधी से मृत्यु न हो, 100 वर्ष आयु के पूर्व का, आन्त्र से पुरीष निकाले हुए पुरूष, उपयोग.

ii) प्रत्यंगों को 7 दिनों तक आँखों से देखें।

अस्थिसंख्या	चरक	सुश्रुत
जत्रु	1	कण्ठनाडी 4
हन्वस्थि	1	2
शिर:कपाल	4	5
ताल्वास्थि	2	1
दन्त	12	2
श्रोणिफलक	2	4
पृष्ठास्थि	45	30
उर अस्थि	14	6
शिर, ग्रीवा	92	63
मध्य शरीर	140	117
शाखा	128	120
कुल	360	300

6) प्रत्येकमर्म निर्देशशारीर

1) मर्म: मर्माणि नाम मांससिरास्नायु अस्थिसंधिसन्निपात:

तेषु स्वभावत: एव विशेषेण प्राणा: तिष्ठन्ति

2) संख्या: 107, प्रकार: 5

मर्म	सुश्रुत	वाग्भट	
मांस	11	10	
सिरा	41	37	2 विटप, 2 कक्षधर स्नायु के जगह सिरामर्म में
स्नायु	27	23	2 अपांग सिरा के जगह स्नायु में
अस्थि	8	8	
संधि	20	20	
		धमनी 9	1 गुदा मांस में, 2 अपस्तंभ सिरा में, 2 विधुर, 4 श्रृंगाटक

शाखा में (प्रत्येक) 11

उदर उर - व्दादश (12)

पृष्ठे - चतुर्दश (14)

ग्रीवां प्रत्यउर्ध्व - सप्तत्रिंशत (37)

3) रचनेनुसार:

i) तलहृदयेन्द्रबस्ति गुद स्तनरोहितानि मांसमर्माणि,

ii) नीलाधमनी - मातृका - श्रृंगाटका - पांग - स्थपनी - फण, स्तनमूलापलापापस्तम्भ हृदय नाभि पार्श्वसंधि बृहती - लोहिताक्षो उर्वी: सिराममर्माणि,

iii) आणि विटप कक्षधर कूर्चशिरो बस्ति क्षिप्र अंस विधुर उत्क्षेप: स्नायू मर्माणि

iv) कटीकतरूण - नितम्बाअंसफलक - शंखास्त्वस्थिमर्माणि।

v) जानु कूर्पर सीमन्ता - धिपति गुल्फ मणिबन्ध, कुकुन्दर आवर्त कृकाटिकाश्चेति संधिमर्माणि.

[अ.सं.: 7 महामर्म (हृदय, बस्ति, मूर्धा, जिव्हाबंध, कंठ, नाभि, गुदा)

अ.हृ.शा.: विषमम स्पन्दनम् यत्र पीडितेरूकच मर्म तत्।

(मर्म स्थान पर क्षारादि कर्म निषेध)]

4) परिणामा नुसार: -

सद्य:प्राणहार: 19 आग्नेय, 7 रात्र में मृत्यु

श्रृंगाटकान्यधिपति: शंखौ कण्ठसिरा गुदम्।

हृदयं बस्तिनाभी च घ्नन्ति सद्योहतानि तु।।(संख्या क्रमश:4,1,2,8,1,1,1,1)

कालांतर प्राणहर मर्म: 33 सोमआग्नेय, 15 दिन में मृत्यु

वक्षोमर्माणि सीमन्त तल क्षिप्रेन्द्रबस्तय:।
कटीकतरूणे सन्धी पार्श्वजौ बृहती च या ।।
नितम्बाविति चैतानि कालान्तरहराणि च।
(संख्या क्रमश:8,5,4,4,4,2,2,2,2)

(वक्षोमर्म: 8 - स्तनमूल,स्तनरोहित, अपलाप, अपस्तम्भ प्रत्येकी 2)

विशल्यघ्नमर्म: 3 वायु उत्क्षेपौ स्थपनी चैव विशल्यघ्नानि निर्दिशेत। (संख्या क्रमश:2,1)

वैकल्यकर: 44 सोम

लोहिताक्षणि जानु उर्वी कूर्च विटप कूर्परा:। कुकुन्दरे .....

(संख्या क्रमश: 4,4,2,4,4,2,2.....)

रूजाकर मर्म: 8 अग्नि,वायु

गुल्फौ व्दौ मणिबन्धौ व्दौ व्दे व्दे कुर्चशिरांसि च।

रूजाकराणि जानीयाद् अष्टावेतानि बुध्दिमान।। (संख्या क्रमश सभी 2)

5) क्षिप्राणि कदाचिदाशु मारयन्ति.

क्षिप्राणि विध्दमात्राणि घ्नन्ति कालान्तरेण च।

Both (कालान्तर Also सद्य:प्राणहर)

केचिद् आहु: (i.e. अन्य आचार्य)

i) मांसादि पांचो के संयोग से - सद्य:प्राणहर

ii) 1 हीन (i.e. 4) होने पर - कालान्तर प्राणहर

iii) व्दिहीन (i.e. 3) होने पर - विशल्य प्राणहर

iv) त्रिहीन (i.e. 2) होने पर - वैकल्य कराणि,

v) एक होने पर - रूजाकर

6) परंतु सुश्रुत अस्थिमर्म अभिहतेषु शोणितागमनं भवति।

(i.e. अस्थिमर्म पर ताडन होने पर भी रक्तस्त्राव होता है)

i) तत्र सद्य: प्राणहरमन्ते विध्द कालान्तरेण मारयति।

(सद्य के समीप आघात होने पर कालान्तर से मृत्यु)

ii) कालान्तर प्राणहरमन्ते विध्दं वैकल्यमापादयति।

(कालान्तर प्राणहरमन्ते विध्दं वैकल्यता उत्पन्न)

iii) विशल्यघ्नं वैकल्यकरं च भवति।

(विशल्यघ्न वैकल्यकरं वैकल्पता च भवति)

iv) वैकल्यकरं कालान्तरेण क्लेश्यति रूजां च करोति।

(वैकल्कर कालान्तरेण कालान्तर में पीडा और वेदना)

v) रुजाकरं अतीव्रवेदनं भवति।

(रुजाकरं अतीव्रवेदनं भवति)

कालान्तर प्राणहर और विशल्यघ्न के समीप आघात से वैकल्यकर, विशल्यप्राणहराणि वैकल्यकराणि च कदाचिदत्यभिहतानि मारयन्ति।

(विशल्य, प्राणहर, वेकल्यकर पर आघात से कदाचित् मृत्यु.)

7) विध्द लक्षण:

सक्थिमर्म:(शाखा) स्थान	आघात लक्षण
i) क्षिप्र (पादस्यांगुष्ठागुल्योर्मध्य)	आक्षेप, मरण
ii) तलहृदय (मध्यमांगुलिगुल्योर्मध्य)	रूजा, मरण
iii) कूर्च क्षिप्रउपरि	पादस्य भ्रमण वेपने
iv) कूर्चशिर (गुल्फ संधे अध: उभयत:)	रूजा शोफौ
v) गुल्फ (पादजंघयो सन्धान)	रूजास्तब्धपादता खंजता
vi) इंद्रवस्ति (पार्ष्णि प्रति जंघामध्ये)	शोणितक्षये, मरण
vii) जानु (जंघोर्वी सन्धाने)	खंजता
viii) आणि (जानु उर्ध्वत्रयंगुल)	शोफाभिवृध्दि:स्त्ब्धसक्थिता
ix) उर्वी (उरूमध्ये)	शोणितक्षय, सक्थिशोष:
x) लोहिताक्ष (उर्व्या ऊर्ध्वमधो वंक्षण संधे)	लोहितक्षय, मरण, पक्षाघात
xi) विटप (वंक्षणवृषणयोरन्तरे)	षाण्ढयं, अल्पशुक्रता

सक्थि में = बाहु में,
गुल्फ → मणिबन्ध – कुण्ठता,
जानु → कूर्पर – कुणि (लुलापन),
विटप → कक्षधर – पक्षाघात.

उदरोरसो मर्म:

मर्म	आघात लक्षण
गुद(स्थूलान्त्रबध्दं)	सद्योमरण
बस्ति (अल्पशोणितमांसऽभ्यंतरत: कट्यां मूत्राशय)	सद्योमरण अश्मरीव्रणादृते
नाभि (पक्वामाशयोर्मध्ये सिराप्रभवा)	सद्योमरण
हृदय (स्तनयोर्मध्यम् अधिष्ठायोरपय आमाशयव्दारं सत्वरज: तमसामधिष्ठानं)	सद्य मरण
स्तनमूल (स्तनयो: अधस्ताद् व्दयंगुल)	कफपूर्णकोष्ठात (कासश्वास) मरण
स्तनरोहित (स्तनचूचुकयो:उर्ध्व व्दयंगुल)	लोहित पूर्णकोष्ठत मरण (कासश्वास)
अपलाप (अंसकूटयो: अध: पार्श्वे)	रक्तेन पूयभावं गतेन मरण
अपस्तम्भ (वातवह नाड्यौ)	वातपूर्णकोष्ठत (कासश्वास) मरण (वा. – रक्तपूर्णकोष्ठ)

पृष्ठमर्म:

i) कटीकतरूण	शोणितक्षयात् पाण्डुविवर्णोहीनरूपश्च
ii) कुकुन्दर	स्पर्शज्ञानंअध:काये चेष्टोपघातश्च
iii) नितम्ब	अध:कायशोषो दौर्बल्याच् मरणं
iv) पार्श्वसंधी (जघनपार्श्वमध्य)	लोहपूर्णकोष्ठ मरण
v) बृहती (स्तनमूलादरूंजु पृष्ठवंश)	शोणिततिप्रवृत्तिनिमित्तै:उपद्रव मरण
vi) अंसफलक	बाहवो: स्वापशोषी
vii) अंस	स्तब्धबाहुता

मर्म	संधी	अस्थि	पेशी	सिरा	स्नायु सिरा	अवेध्य सिरा	वातवह	
37	83	63	34	164	70	50	41	शिर(ग्रिवा उर्ध्व)
26	59	117	66	136	230	32	34	मध्य शरीर
44	68	120	400	400	600	16	100	शाखा
107	210	300	500	700	900	98	175	कुल

उर्ध्वजत्रुगत मर्म:

i) 4 धमनी (2 नीला,(2 मन्या) व्यत्स्या सेन)	मूकता, स्वरवैकृतं अरसग्राहिता
ii) सिरा मातृका	सद्यमरण
iii) कृकाटिका (शिरोग्रीवयो: संधान)	चलमूर्ध्दता
iv) विधुर (कर्णपृष्ठ अधो:)	बाधिर्य
v) फणा (घ्राणमार्ग, स्त्रोतोबध्द बाह्य)	गन्ध अज्ञानम्
vi) अपांग (भ्रुपुच्छान्तयो, ऽक्षणो बाह्य)	आन्ध्यं दृष्ट्यपघातो
vii) आवर्त (भ्रुवो: उपरि निम्न)	आन्ध्यं दृष्ट्यपघातो
viii) शंखौ (भ्रुवोअन्त उपरि कर्ण ललाट म)	सद्योमरण
ix) उत्क्षेप, (केशान्त, शंखयो: उपरी)	सशल्यो जीवेत् पाकात्
x) स्थपनी (भ्रुवोमध्य)	पतितशल्यो नोद्धृत शल्य:
xi) सीमन्त (पंच संधय: शिरसि)	उन्माद, भय, चित्तनाश,मरण
xii) श्रृंगाटक	सद्योमरण
xiii) अधिपति (मस्तकाभ्यन्तर, सिरासंधिसन्निपात रोमावतर्तो)	सद्योमरण

8) मर्म प्रमाण: 1 अंगुल – उर्व्य: शिरासि विटपे सकक्षापार्श्व, स्तनपूर्वमूलम (स्तनमूल) (वाग्भट 2 अंगुल)
2 अंगुल – मणिबन्ध गुल्फं, (स्तनमूल वा.)
3 अंगुल – जानु,कूर्पर. 4 अंगुल – स्वपाणितल – हृदय, बस्ति, कूर्च, श्रृंगाटक, (सीमन्त), गुद, नाभि, (2 नीला, 2 मन्या, 8 मातृका)
½ अंगुल – शेष: 56 (अ.सं. – ½ अंगुल also 1 ½ यव)
(अन्य आचार्य – तील व्रीहि प्रमाण), Some others
(व्रीहि प्रमाण कलाय प्रमाण स्तनरोहित उत्क्षेप: तथा अन्येय तिल प्रमाण).
काश्यप – महामर्म – 3 As चरक (हृदय, बस्ति, मूर्धा)

9) शाखा पर क्षत से: छिन्नेषु पाणि चरणेषु सिरा – अल्प असृक् निरेति क्षिप्रेषु तलेषु हेतषु – अति तीव्र रक्त गच्छति, रूजं तस्मात् तयो: अभिहतस्य तु पाणिपादं छेत्तव्यम् आशु मणिबन्धन गुल्फदेशे.
(i.e. तलहृदय और क्षिप्र मर्म विध्द होने पर मणिबन्ध और गुल्फ प्रदेश में हस्त और पैर काट दें)

10) मर्म – शल्य विषयार्ध,(सु.शा. 6/35) (बस्ति – काय चिकित्सार्ध)
(सिराव्यध: चिकित्सार्धं शल्यतन्त्रे प्रकीर्तित:। सु.शा. 8/23)
मर्म में सोम मारुत तेजांसि रज: सत्व तमांसि च। (सु.शा. 8) भूतात्मा

11) मर्मघात सामान्य लक्षण:
i) सद्य:प्राणहर:इंद्रियार्थ अग्रहण,मनो बुध्दि विपर्यय,रूजश्चतीव्र.,
ii) कालान्तर: धातुक्षय, वेदना से नश्यति (मृत्यु)
iii) वैकल्य: विकलत्व.

7) सिरावर्णविभक्तिशारीर

1) सिरा: मुल – नाभि...सुश्रुत... (उर्ध्व, अध:, तिर्यक्) (हृदय, वाग्भट)
2) सिरा से शरीर पोषण: as केदारी कुल्या न्याय से
3) मुल सिरा–40रक्तवाहिन्यश्च यकृल्प्लीह्नो:,वात,पित्त,कफ,रक्त प्रत्येकी 10
वात वह सिरा: साक्थिन पंचविविंशति:, कोष्ठे चतु:त्रिशत्.
वातवह – 175: - 25 x 4 बाहु = 100
34 कोष्ठ: 2 x 2 - पार्श्व = 4, 6 x 2 –पृष्ठ और उदर में = 12, 8 – श्रोणि,10–वक्ष.
41 - जत्रु के उपर: 4 कर्ण, 6 नासा, 8 नेत्र, 9 जिव्हा, 14 ग्रीवा कुल 175
पित्त वह सिरा: नेत्र – 10, कर्ण – 2. (नेत्रयो:दश, कर्णयो:व्दे)
(रक्तवह: कफवहा)
4) सिरा कार्य:–
वात– अप्रतीघातम्, अमोह, बुध्दिकर्म में भ्रम वायु.
पित्त – भ्राजिष्णुताम् अन्नरुचिम् अग्निदीप्तिम अरोचताम
कफ – स्नेहभंगेषु संधीनां स्थैर्य बलम उदीर्णताम्
रक्त – धातूनां पूरणं वर्ण स्पर्शज्ञानम् असंशयम
5) सुश्रुत – सिरा मुल, धमनी मुल – नाभि,
(वाग्भट – सिरा मुल – हृदय, धमनी मुल – नाभि)

6) सिरा सर्ववहा:-

नहि वात सिरा: केचित् न पित्तं केवलं तथा।

श्लेष्माणं वा वहन्त्येता अत: सर्ववहा: स्मृता।।

(i.e. कोई भी सिरा एक नहीं बल्कि तीनों दोषों का वहन करती है।)

वात - अरुणा पूर्यन्ते वायुना; पित्त - नीला उष्ण; कफ - गौर्य: शीता;

रक्त - रोहिण्य: नात्युष्णशीतला:.

7) अवेध्य सिरा: 98, शाखा:16(जालंधरा (1),उर्वी (2)लोहिताक्ष (1))

कोष्ठ: 32 (विटप (4), कटीकतरुण (4), पार्श्वसंधि(2), बृहती(2), रोमराजी (4), हृदय (2), स्तनमूल (4), स्तनरोहित (4), अपलाप (2), अपस्तंभ (2) पार्श्व (2))

ग्रीवा से उपर अवेध्य शिरा: 50

स्थपनी, कर्ण, नेत्र, आवर्त, जिव्हा, हनु, केशान्त, नासिका, शिर, ग्रीवा

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓

1 2 2 2 4 4 4 5 8 16

8) सिरा व्यधविधिशारीर

1) सिरावेध वर्ज्य: स्थविर (वृध्द), वमित, विरिक्त, आस्थापित,अनुवासित, गर्भिणी, कास,श्वास,शोष,आक्षेप, पक्षाघात,मूर्च्छा,अदृष्टा,दृष्टाश्च अयन्त्रिता:, यन्त्रिताश्च अनुत्थित.

2) सिरावेध: विषोपसर्ग, आत्यधिक अवस्था में निषेध नही

3) सिरावेध पूर्वकर्म: स्निग्ध, स्विन्न, यवागु, नातिगाढं नातिशिथिलं बन्धन.

4) सिरावेध ऋतु: न(अतिशीत, अतिउष्ण, प्रवाते, अभ्रिते)(समशीतोष्ण)

5) भिन्न: भिन्न स्थानों की नियन्त्रविधि:

i) अरत्नि मात्रोच्छ्रिते उपवेश्यासने, (1 अरत्नि उँची चौकी पर बीठाए)

ii) दक्षिणहस्तेन सिरोत्थापनार्थं, (बायें हस्त से दोनो सिरा पकडकर)

iii) असृक्स्त्रावर्णार्थं च यन्त्रं पृष्ठमध्ये पीडयेति

(रक्तनिर्हरण हेतु यन्त्र पृष्ठमध्य में दबायें),

iv) हस्ताभ्यां प्रपीडयागुल्फं व्यध्यप्रदेशस्योपरि चतुरंगुले

(वेध प्रदेश के 4 अंगुल उपर प्लोत (कपडा) बांधे).

6) सिरावेध प्रमाण: मांस प्रदेश - यव मात्रं,

अस्थि प्रदेश - 1/2 1/2 यव By कुठारिका शस्त्र,

अन्य प्रदेश - 1/2 यव/व्रीहि मात्रं By ब्रीहिमुख शस्त्र

7) सम्यक् विध्द लक्षण: 1 मुहुर्त पश्यात रक्तस्त्राव अपने आप बंद

8) क्षीण व्यक्ति में स्त्रावण: अपरान्ह, त्र्यहे (3rd day)

स्त्रावण प्रमाण - 1 प्रस्थ परं प्रमाण (13 1/2 पल - 540 ml),(56 तोले)

9) रोग	वेधस्थान
i) पाददाह, पादहर्ष, अवबाहुक चिप्प; विसर्प,वातशोणित वातकण्टक विचर्चिका, पाददारि	क्षिप्रमर्म उपरि व्दयंगुल ब्रीहिमुखा शस्त्र से.
ii) क्रोष्टुकशिर:, खंज, पंगुल, वातवेदना	गुल्फ उपरि चतुरंगुल
iii) अपची इंद्रवस्ते:अध:व्दयंगुल	इंद्रवस्ति के नीचे 2 अंगुल
iv)जानुसन्धे: उपर्यधो वा चतुरंगुल गृध्रस्यजानु संधि के 4 अंगुल उपर / नीचे	
v) गलगण्ड	उरुमूलसंश्रितां
vi) प्लीहि	वाम बाहुकूर्परसन्धे अभ्यन्तरतो /कनिष्ठिका, अनामिका यो मध्ये
vii) यकृत, कास, श्वास, कफोदर दक्षिणबाहु(दक्षिणबाहौ यकृदाख्ये कफोदरे)	
viii) गृध्रस्य विश्वाच्याम	जानु के 4 अंगुल उर्ध्व/अधो
ix) प्रवाहिका शूलयुक्त	श्रोणि प्रति समन्ताद् व्दयंगुले
x) परिवर्तिकापदंश शूकदोष शुक्र	मेढ्र मध्ये
xi) मूत्रवृध्दि	वृषणयो: पार्श्वे
दकोदर	नाभे: अधश्चतुरंगुल वामपार्श्वे सेवन्यां
xii) अन्तर्विद्रधी, पार्श्वशूल	वाम कक्षा,स्तनयो:ऽन्तरे (मध्य)
xiii) बाहुशोष अवबाहुक	अंस अन्तरे (मध्ये)
xiv) त्रिकसन्धिमध्यगतां तृतीयकेज्वर	
xv) चतुर्थक	स्कंध संधि अध: गत सिरा
xvi) हनुसंधिमध्यगताम् अपस्मारे	
xvii) उन्माद	शंखकेशान्तसंधि,उरो, ऽपांग, ललाटेषु
xviii) जिव्हारोग, दन्तरोग	अधोजिव्हा (जिव्हामुल)
xix) गन्ध अग्रहण, नासारोग	नासाग्रे
xx) तिमिर, अक्षिपाक, अक्षिरोग	नासिके ललाट अपांगयां (नासा समीप)

10) दुर्वेध्य सिरा - 20 - i) दुर्विध्दा, ii) अतिविध्दा, iii) कुञ्चिता, iv) पिच्चिता, v) कुट्टिता, vi) अप्रस्त्रुता, vii) अत्युदीर्णा, viii) अन्तेऽविध्दा, ix) परिशुष्का, x) कुणिता, xi) वेपिता, xii) अनुत्थितविध्दा, xiii) शस्त्रहता, xiv) तिर्यकृविध्दा, xv) अपविध्दा, xvi) अव्यध्या - अशस्त्रकृत्याऽव्यध्या, xvii) विद्रुता - अनवस्थितविध्दा विद्रुता,

xviii) धेनुका, xix) पुन: पुन: विध्दा,

xx) स्नायु, अस्थि, संधि,सिरा,मर्मविध्दा - रुजां शोफं वैकल्यं मरणं, सिरा विशेषत: स्वभावत: चंचल, मत्स्यवत परिवर्तन.

11) सिरावेध चिकित्साऽर्धं शल्यतन्त्रे प्रकिर्तत। सु. शा. 8/23

12) अवगाढे जलौका: स्यात प्रच्छन्नं पिण्डिते हितम्।

शिराऽगंव्यापके रक्ते श्रृंगालाबू त्वचि स्थिते।।

[Extra वा.कर्णरोग - कर्णमुल सिरा, पीनस - नासा और ललाट मध्यस्थ सिरा, उर्ध्वजत्रुग्रांथि - ग्रीवा, कर्ण, शंख, शिर, उन्माद - अपांग, ललाट, अपस्मार-हनुसंधि,भ्रुमध्य, तृतीयक-स्कंध मध्य, चतुर्थक-त्रिकसंधि मध्य]

9) धमनीव्याकरणशारीर

1) धमनी: मुल: 24 - मूल धमनी Are further divided into 64

24 → 30 + 30 + 4 = 64

चतुर्विंशति: धमन्यो नाभिप्रभवा: अभिहिता:।

2) सिरा,धमनी,स्त्रोतस:

a) Above तीनों एक नहीं:	b) तीनों एक हैं:
i) व्यंजनान्यत्वात	i) परस्परसन्निकर्षात
ii) मूलसन्नियमात	ii) सदृशागमकर्मत्वात
iii) कर्मवैशेष्यात	iii) सौक्ष्म्याच्च
iv) आगमाच्य	

3) उर्ध्वग धमनी: अभिवहन्त्य: शरीरं धारयन्ति, हृदयम अभिप्रपन्ना: त्रिधा जायन्ते, वात, पित्त, कफ, रक्त रसान व्दे व्दे वहतस्ता दशं, व्दे स्तन्यं स्त्रिया वस्त: स्तनसंश्रिते, शुक्र नरस्य स्तनाभ्याम अभिवहत:

30 उर्ध्वं: हृदय को प्राप्त होने के कारण 3 भागों विभक्त होकर 30 होती है।

10 (वात, पित्त, कफ, रक्त रस के 2- 2 Each)

8 (शब्द, रुप, रस, गंध 2 - 2 Each) No स्पर्श

2 भाषण (बोलने), 2 घोष (अव्यक्त ध्वनि निकालने हेतु Used), 2 स्वपिति (सोने की लिए), 2 प्रतिबुध्यने (जागने के लिए), 2 अश्रुवहन, 2 स्तनवह (पुरुष में स्तन मे रहकर शुक्र का वहन),

30 अध: 10 वात, पित्त, कफ, रक्त रस

8 तिर्यग् जानेवाली धमनियों के स्वेद को अर्पीत, 2 अन्नवहन, 2 जल, 2 शुक्रवहन, 2 शुक्रविसर्ग (स्त्रि में आर्तवहन), 2 मलविसर्ग और 2 मूत्रविसर्ग

4 तिर्यक: 4) अधोगम धमनी: पित्ताशयम् अभिप्रपन्ना:, शरीरं तर्पयन्ति, अर्पयन्ति उर्ध्वग् तिर्यग्गाणां, रसस्थानं अभिपूरयन्ति, मूत्रपुरीष विवेचयन्ति, आमपक्वाशयान्तरे च त्रिधा जायन्ते,
(आमाशय और पक्वाशय के मध्य 3 भागों में विभक्त)
वात, पित्त, कफ, रक्त रसान व्दे व्दे, आर्तवसंज्ञम.
अष्टावन्या: तिर्यगामिनीनां धमनीनां स्वेदम् अर्पयन्ति
5) तिर्यग्गाणां धमनी: शतधा, सहस्त्रधा,तासां मुखानि रोमकूपप्रतिबध्दानि, स्वेदम अभिवहन्ति, रसं च अभितर्पयन्ति, अभ्यंग परिषेकावगाहालेपन वीर्याण्य अन्त: शरीरम् अभिप्रपद्यते, (इन मुखों से अभ्यंग, परिषेक,अवगाहन, आलेपन आदि का त्वचा में परिपक्व हुआ वीर्य शरीर के भीतर पहुँचता है।)
(इन्हीं मुखो व्दारा तेल, जल, आलेप का शोषण होता है।)
यथा स्वभांग: ध्वानि मृणालेषु बिसेषु च।
(जैसे मृणाला (कमलनाल) और बीस (सूक्ष्मतर कमलमाल) में स्वभावत: छिद्र, उसी प्रकार धमनी में)
6) धमनी के संदर्भ में:पंचाभिभूतत्स्वथ पंचकृत्व:, पंचेंदियं पंचसु भावयंति।
पंचेंद्रियं पंचसु भावयित्वा, पंचत्वमायान्ति विनाशकाले।। सु.शा.9/11
7) स्त्रोतस: मूलात खादन्तरं देहें पसृतं त्वभिवाहि यत।
स्त्रोतस्तदिति विज्ञेयं सिरा धमनीवर्जितम्।।
8) सेवनीच्छेदात रूजा प्रदुर्भावा (सु. शा. 9)
9) आर्तववहे द्वे तयोर्मुलं गर्भाशय आर्तववाहिन्यश्च धमन्य:।
तत्र विध्दायां व्यन्धात्वं मैथूनासहिष्णुत्वम् आर्तवनाशश्च।। सु.शा.
(स्त्रोतस विध्द लक्षण व मुलस्थान चरक विमान में देखीए)

10) गर्भिणीव्याकरणशारीर

Topics: गर्भिणी परिचर्या, सुतीका परिचर्या, जातकर्म, मक्कल, औषधमात्रा, विवाहकाल आदि.
1) गर्भिणी के लिए। सामान्य नियम: तैलाभ्यंगोत्सादन आदि निषेवेत, हृद्यं द्रवं मधुरप्रायं स्निग्धं दीपनीयसंस्कृतं च भोजनं.
विशेष (भोजन) नियम: (च.शा.8 देखिए)
नवमे मासि सूकिागारमेनां प्रवेशयेत (अरिष्टमागार)
अरिष्टमगारं (पुर्वदक्षिण व्दार), ऽष्टइस्तायतं, चतुर्हस्तविस्तृत.
सुतिकागार - सुश्रुत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एव क्षुद्र के लिए क्रमश: श्वेत, रक्त, पीत एवं कृष्ण भूमिमें. बिल्व,न्यग्रोध,तिन्दुक, भल्लातक के काष्ठ से निर्माण करे।
(भेल - अष्टममास के बाद तिन्दुक पलाश, अश्वत्थ से पूर्व या उत्तर व्दार वाला सुतिकागार बनाये.)
2) प्रसुति लक्षण: (प्रजायिनी) जाते हि शिथिले कुक्षौ मुक्ते हृदयबन्धने। सशूले जघने नारी ज्ञेया सा तु प्रजायिनी।।
3) आसन्न - प्रसुति लक्षण: तत्रोपस्थितप्रसवाया: कटपिष्ठ प्रति समन्ताद वेदना भवत्यभीक्ष्णं पुरीषप्रवृत्तिमूत्र प्रसिच्यते योनिमुखाच्छलेष्मा च।
आसन्न प्रसुति समयकर्तव्य: यवागुं आकण्ठात् पाययेत.
चतस्त्र: स्त्रिया (4 स्त्री required)
4)प्रवाहण विचार:i) ततो विमुक्तगर्भनाडीप्रबन्धेसशूलेषु श्रोणिवंक्षणबस्तिशिरस्यु च प्रवाहेथा: शनै: शनै:।
ii) अकाल प्रवाहणाद बधिरं मूकं कुब्जं व्यस्तहनुं मूर्ध्दाभिघातिनं कासश्वास शोफोपद्रुतं विकटं जनयति।
* गर्भसंग चिकित्सा: (कृष्णसर्पकेंचुली + पिण्डीतक) योनि धूपन, हिरण्यपुष्पीमूल हस्तपाद में बन्धन. सुवर्चला, विशल्या धारयेत्.
* नाभीनाडीकर्तन अष्टांगुलमायम्य सूत्रेण बध्दवा छेदयेत.
5) सद्योजातकर्म: शीतलजल से आश्वासन मधुसर्पि: अनन्त चूर्ण अनामिका से लेहन, बलातैलेनाभ्यंग, क्षीरवृक्षकाषायेण,सर्वगन्धोदकेन रुप्य-हेमप्रतप्तेन वारि, कपित्थपत्रकषायेण कोष्णोनं स्नानार्थ, (3-4) दिन में स्तन्य प्रवर्तन कुमार को:1st day - मधु सर्पिरनन्त (अनन्ता पा) मन्त्रभूतं त्रिकालं पाययेत.
2nd day - लक्ष्मणासिध्दं सर्पि: 3rd day - लक्ष्मणासिध्दं सर्पि:
Further - प्रांगनिवारितस्तन्यं मधुसर्पि स्वपाणितलं (विषममात्रा में) व्दिकालं
6) सुतिका काल : सुश्रुत - 45 दिन (आधुनिक 45 दिन)
(अ.सं. अ.हृ. - भा.प्र. योर डेढ मास या पूर्न: आर्तव दर्शनतक
काश्यप - 6 मास
सुतिका पथ्य व्यवस्था - सुश्रुत व वाग्भट - 4 मास और काश्यप, भा.प्र. यो.र.-1 मास)
7)सुतिका चिकित्सा: i) बला तैलाभ्यंग,ii) व्दिरात्र त्रिरात्र दृष्टशोणित विशुध्दे, iii) विदारीगन्धादि सिध्द स्नेह यवागूं क्षीरयवागूं, iv) 1 1/2 मास तक करें.
मांसरस - 10 दिन, For बलवान - स्नेहपान - (3 ते 5) दिन
For अबलवान - यवागु
* सुतिका विकार कष्टसाध्य: हेतू मिथ्याऽऽचार, कृच्छ्रसाध्योऽसाध्यो भवेद अपतर्पणात (चरक - धातु का शिथिल)
8) सुतिका निषेध - आस्थापन चरक, स्वेदन और नस्य- वाग्भटव्दय, विरेचन - सुश्रुत, शारंगधर, भा. प्र.
शारंगधर - प्रसव पश्चात स्वदेन व बलातैल प्रयोग प्रशस्त माना.
वाग्भट - सुतिका - बृंहणयोग्य
काश्यप - सुतिका को मण्ड प्रयोग निर्देश दिया।
देश के अनुसार सुतिका परिचर्या काश्यप और चक्रपाणी
चक्रपाणी - आनूप देशस्थ सुतिका स्नेहपान निषेध
जांगलदेश में स्नेहपान वर्णित है।
9) अपरापतन न होने पर: कण्ठम् अस्या: केशवेष्टित अंगुल्या, कटुकालाबु etc योनि धूपन, लांगलीमूलकल्क से पाणिपादतलं लिम्पेत (लेपन), महावृक्ष क्षीरम् मूर्ध्नि अनुसेचयेत, कुष्ठ लागली मूलकल्कं मद्यमूत्र से पाययेत्, आस्थापन, उत्तरबस्ति, स्निग्धेन वा कृत्तनखेन हस्तेनाचरेत,
अपरा निकालने के लिए 9 विधि दी गई है।
10) मक्कल: (वातरक्त) रक्तं वायुना, नाभिबस्त्य उदरशूल.
(सु. नाभी के निचे, पार्श्व, बस्ति या बस्तिशिरप्रदेशीग्रंथी उत्पती वाग्भट शिर बस्ति कोष्ठ शूल.)
चिकित्सा: वीरतवादिगण सिध्द जल में उषकादिगण प्रक्षेप दें।
अच्छं वा पिबेद. अरिष्टम् इति.,
बालक सेवार्थ: क्षौमवस्त्र, रक्षोघ्न धूप, व्रणितोपासनीयं वत विधान
नामकरण: 10 दिन.
11) धात्री: मध्यम प्रमाणा,प्रसन्नक्षीर,न लम्बौष्ठी,न लम्बोर्ध्वस्तनी, कुलेजाता, श्यामा, तत्रोर्ध्वस्तनी करालं कुर्य्यात, लम्बस्तनी नासिकामुखा छादयित्वा मरणम् आपादयेत्। दुग्धपान समय धात्री प्रांमुखी.
(वाग्भट - ऊर्ध्वस्तनी - उर्ध्वाक्ष
लम्बस्तनी - ऊच्छवासावरोध कर जीवन मै संशय उत्पन्न
अतिस्थूलस्तन ग्रीवास्तंभ.)
12) स्तन्यनाश कारण: (क्रोध, शोक अवात्सल्य)
स्तन्य जनन: सुरा, सौवीरक, पिण्याक, लशुन, मत्स्य
13)दुग्ध परिक्षा:शंखावभासम,अफेनिल,अतन्तु,अप्लवते,न अवसीदति - शुध्दम
14) दुग्धपान निषेध: धात्री (क्षुधित, शोकार्त, गर्भिणी, ज्वरित)
नाजीर्णौषध च बालं (बालक को औषध जीर्ण न हुई हो)
15) शिशु रोग निदान:
a) शिरोरोग: अक्षिनिमीलन, मूर्धस्थ न धारयेत (शिरो न धारयति काश्यप)
b) बस्तिरोग: मूत्रसंग, रुजा, तृष्णा, मूर्च्छा
c) कोष्ठ: विण्मूत्रसंग, वैवर्ण्य, छर्द्या, आध्मान, आन्त्रकूजनै: d) सर्वत्र: रोदनै:
16) औषध मात्रा: क्षीरपस्य क्षीरसर्पि संयुक्तं, धात्र्याश्च केवलं.

क्षीरान्नादः धात्र्याश्च पूर्ववत,अन्नादस्य कषायादीन न धात्र्याः (औषध देना.)

	सुश्रुत	विश्वामित्र
जातमात्र	----	विडंग फलवत
क्षीरप	अंगुलीपर्वव्ययग्रहण	कोलास्थि
क्षीरान्नाद	कोलास्थि	कोल
अन्नाद	कोल	उदुम्बरसदृश

विरेक - बस्तिवमनान्यते कुर्याच्च न आत्ययात।

a) **मस्तुलुंगक्षय** चिकित्साः लक्षण - वायु ताल्वास्थि नामयेत्, तृष्णा चिकित्सा - सर्पिमधुः पानाभ्यंगार्थ, शीताम्बु उव्देजन.

b) **तुण्डि नाभिः** लक्षण -वातेनाध्मापितां,चिकित्सा-वातघ्न (स्नेह स्वेदोपनाह)

c) **गुदपाकः** चिकित्सा - पित्तघ्नी, रसांजन पानालेपन.

घृतपानः क्षीरान्नादाय मधुक वचा पिप्पली चित्रक त्रिफला सिध्द अन्नादाय - व्दिपंचमुली.

माता का दुग्ध अपर्याप्त होने पर, आजं, गव्यम्

अन्नप्राशन षड् मासात्.

17) ग्रहपीडित बालक लक्षणः

उव्दिग्न,त्रस्त, रोदित, नष्टसंज्ञो, नखदशनैः धात्रीम आत्मानं (स्वां और धात्री को काटता है), भिन्नामवर्चा, स्तन्यमभिलषति (बालक शक्तिमान हो जाय तो वर्णानुसार विद्या पढाना चाहिए) शक्तिमन्तं चैनं ज्ञात्वा यथावर्ण विद्यां ग्राहयेत।

18)

विवाहकालः	गर्भधारण/पूर्णवियता
पंचविंशति पुरूष (25 वर्ष)	(25 वर्ष)
व्दादवर्शा स्त्रि (12 वर्ष)	(16 वर्ष)
पाठभेद (16 वर्ष)	कमआयु दोषः
(वाग्भट-विवाह पुरूष-(21 वर्ष)	i) गर्भ कुक्षि में नष्ट
स्त्री (12 वर्ष)	ii) जन्मा भी तो दुर्बलेन्द्रिय.

19) गर्भदोष चिकित्साः शीतैः, परिषेकावगाह प्रदेह, क्षीरपान

गर्भस्फुरण में: मृत्पलाद्विसिध्द पाययेत प्रस्त्रंसमान लक्षणः मूत्रसंग.

गर्भ स्थानात्स्थानं (एक स्थान से दूसरी ओर)

लक्षण - कोष्ठे संरम्भ (क्षोभ), चिकित्सा - स्निग्ध शीताः

गर्भपतन होने परः लवण, स्नेह वर्जित उद्दालकादि से बनी यवागुः पाचनीय द्रव्यों के साथ(जितने मास का गर्भपतन हो उतने दिन तक पिलाना चाहिए)

कालातीत गर्भ में: मूसल से कूटना, विषम आसन सवारी

20) नैगमेषहृतः शुक्रशोणित वायु + जीवात्मा – पेट फूलता है, परंतु Without any reason पेट फुलना.

21) गर्भस्त्राव मासानुमासिक चिकित्साः प्रथम मास - मधुक, व्दितीय मास - अश्मन्तक, तृतीय मास - वृक्षादनी, चतुर्थ मास - अनन्ता, पंचम मास - बृहती, षष्टी मास - पृश्निपर्णी, स. मास - श्रृंगाटक, अ. मास - कपित्थ, न. मास - मधुका - अनन्ता, दशमे मास - क्षीर शुण्ठि पयस्या से तीव्र रुक् शाम्यती.

[गर्भचलन मासानुमासीक चिकित्सा - वर्णन By यो र और हारित

हारित - प्रथममास - मधुक, मृव्दिका, चन्दन, रक्तचन्दन दूग्ध मै मिलाकर पान

व्दितीयमास - मृणाले नागकेशरम दूग्ध मे घोलकर पान

तृतीय - मूषक किट्ट व शर्करा दूग्ध मे घोलकर पान

चतूर्थ - उशीर चन्दन नागकेशर तथा धातकीपूष्प + घृत + मधू, दधि

पंचम - दाडीम पत्र व चन्दन + दधी + मधु

षष्ट - गैरिक कृष्णमृत्तिका + गोमयस्य साधितजल + चन्दन + शर्करा

सप्तम - उशीर, गोक्षूर, घनसंमगा, नागकेशर, पध्मक + मधू

अष्टम् - लोध्र व मागधिका चूर्ण मधु एवं दूग्ध के साथ पान]

22) गर्भशोष - चरक - हेतू - रक्तस्त्राव/पोषण अभाव - चिकित्सा जिवनीय, बृंहणीय स्निग्ध द्रव्य.

सुश्रुत – हेतू वातप्रकोप – चि.मृदूस्नेह, मांसरस, धान्यकुटन, बृंहणीय.

23) निवृत्त प्रसवाः षड्भ्यो वर्षेभ्य उर्ध्व

गर्भिणी चिकित्साः गर्भ अविरुध्दाश्च क्रिया यथायोगं विदधीत मृदुप्रायाः।

24) बालकार्थ योगः

a) सौवर्ण, कुष्ठ, मधु, घृत, वचा.

b) मत्स्याक्ष (ब्राह्मी), शंखपुष्पी, मधुसर्पि, कांचन (स्वर्ण)

c) अर्कपुष्पी मधुघृत कनकं (स्वर्ण) वचा

d) हेमचूर्ण (स्वर्ण) कैडर्य (पर्वतनिम्ब), श्वेता, दूर्वा, मधुघृत वपुर्मेधाबलबुध्दिवर्धनाः

चिकित्सा स्थान

1) द्विव्रणीय चिकित्सित

1) व्रण व्याख्याः व्रण गात्रविचूर्णने, व्रणयति इति व्रणः। (सु.चि.1)

तत्र तुल्ये व्रणसामान्येद विकारणोत्थान प्रयोजन सामर्थ्याद् 'द्विव्रणीय' इत्युच्यते

2) प्रकारः 2 - शारीर, आगन्तुज...(सु.), शुध्द, दुष्ट...(अ.स.)

दोषभेद से - 15 प्रकार.... (व्रण प्रश्निय अध्याय)

परंतु अन्यआचार्य - 16 प्रकार + "शुध्द" भेद

3) व्दिविध व्रण हेतुः 2 - i) उत्पादक हेतु, ii) प्रतीकार पद्धति

4) मधुघृत प्रयोग में हेतु 3 -

i) क्षताष्मः शमनार्थ, ii) पित्तवत, शीतक्रिया, iii) सन्धानार्थ.

7 दिन तक सद्योव्रण व इसके बाद शारीर व्रण वत चिकित्सा.

5)) **लक्षणः** व्दिविध सामान्यं वैशेषिकं सामान्यं रूकं।

विशेषलक्षण पुनर्वातादिलिंगविशेषः।

6) दोषानुसार व्रणभेदः

i) वात व्रण - चटचटायनशील,स्फुरण,आयाम, निर्मास, पिच्छिल

ii) पित्त व्रण - किंशुकादकामोष्ण स्त्रावी, पीतपिडकाजुष्ट,

iii) कफ व्रण - प्रततचण्डकण्डूबहुलः स्थूलौष्ठः,

iv) रक्त व्रण - प्रवालदल निचय प्रकाशः कृष्णस्फोटापिडकाजाल, तुरंगस्थानगन्धिः, धूमायन, v) पित्तरक्त व्रण - घृतमण्डाभो,

vi) वात, पित्त, कफ, रक्त व्रण - निर्दघ्ननिर्मथन,नाना वर्ण वेदनास्त्राव,

vii) **शुध्द व्रण** - जिव्हातलाभो मृदुः स्निग्ध श्लक्ष्णो विगतवेदनः सुव्यवस्थितो निरास्त्राव.

7) व्रण उपक्रमः 60 (गण्डूष वर्णन नहीं)

प्रथम 11 उपक्रम - व्रणशोफ पूर्वकर्म के लिए।

शस्त्रकर्म - 8. बन्ध, पत्रदानं, कृमिघ्न, बृहणं, विषघ्न, यन्त्रं, रक्षाविधान

For cosmetic purpose - 5 उपक्रम -

कृष्णकर्म, पाण्डुकर्म, प्रतिसारण, रोमसंजनन, लोमापहरण.

(गयदास पाचन कर्म नहीं मानते, जेज्जट लोमापहरणं नहीं मानते.)

7 + 8 +7 +10 :

7 - कषायो वर्तिः कल्कः सर्पितैलं रसक्रियां ऽव चूर्ण शोधरोपणानि

8 - अष्टौ शस्त्रकृत्याः, 7 - शोणितस्थापनं क्षारा ऽग्निं यन्त्रमाहारो रक्षाविधानं बन्धविधानं चोक्तानि. 10 - स्नेहस्वेदन वमन विरेचन बस्ति उत्तर बस्ति शिरोविरेचनस्य धूमकवलधारण, षड्विधाः प्रागुपदिष्टः शोफः

तस्यैकादशोपक्रमा भवन्त्यपतर्पणादयो विरेचनान्ताः।

अपतर्पणमाद्य उपक्रमः एष सर्वशोफानां सामान्य प्रधानतमश्च। (सु.चि.1)

आलेप आद्य उपक्रमः एष सर्वशोफानं सामान्यः प्रधानतमश्च।.. (सु.सू.18)

अपतर्पण निषेधः उर्ध्वमारुत तृष्णा क्षुन्मुखशेष श्रमन्वितैः गर्भिणी.

आलेपः शोफेमृत्थिमात्रषु उग्ररुजेषु रुजाशान्त क्षिप्रं प्रशमयत्याग्निम् एव आलेपनं रुजः।

लेप कार्यः प्रल्हादने, शोधने, शोफस्य हरणें, उत्सादने, रोपणे.

परिषेकः वात - सर्पितैल, धान्याम्ल, पित्त - मधुशर्करा, कफ - तैल, मूत्र, मदिरा, etc

दोषाग्निरेवं सहसा परिषेकेण शाम्याति।

अभ्यंगः स्वेदनविम्लापनादि, विस्त्रावणादिषु

(डल्हण पित्तरक्त व विष में शतधौत घृत, वातकफ - तैल)

स्वेदः रुजा, दारुणा, कठीना, शोफानां.

विम्लापनः स्थिर, मन्दवेदना में वेणु, पाणिपादतलः व अंगुष्ठ से मर्दन

उपनाहः अविदग्धः शमं, विदग्धः पाकम् ,

विस्त्रावणः हेतु 2 - वेदनोपशमार्थ अचिर (नविन) शोथ में व पाक शमन.

स्नेहपानः उपद्रव, व्रणशोषि में. दीर्घकालानुबंधी व्रण - विरेचन

लेखनः कठिन - समलेखन, स्थुलवृत्त - सुलिखित, दीर्यमाण - निरवशेष लेखन, कठिनोन्नतमांस - वर्त्मणानुप्रमाण.

लेखन द्रव्यः क्षौमं प्लोतं पिंचु फेनं यावशुकं संसैन्धवम्, कर्कश पत्राणि.

एषण (द्रव्य):करीर, बाल, अंगुलि,एषणी से (नाडीव्रण,सशल्य उन्मार्गी व्रण में)

सिवन व सन्धानः अपाक, उपद्रव, मांसस्थ, विवृता

पीडनः व्रण के मुख पर लेप नहीं लगायें

निर्वापणः पित्तकोप i.e. दाह,पाक,ज्वर

सेकः शीतलद्रव्य सेक लेपौ दौ निर्वापणावुक्तो ।...(डल्हण)

उत्कारिकाः काकोल्यादि गण,

रसक्रियाः तैल से भी शुध्द न हुए, स्थिर मांस, 3rd दिन प्रयोग.

कल्क में (तिल व यव) कल्क वर्णन.

उत्सादनः परिशुष्काल्पमांसानां, गम्भीराणां उत्सादनं निम्नव्रणस्योन्नतिकरणम्। (डल्हण)

अवसादनः उत्सन्न मृदुमासानां. अवसादनं उन्नतव्रणस्य निम्नं च करणम्। (डल्हण)

कृष्णकर्म मेंः भल्लातक, पिण्डितक, बिभीतक तैल उपयोग.

पाण्डुकर्मः i) रोहिणीफल + छागल क्षीर For सप्तरात्र.

(रोहिणीफलमिती रोहिणी हरितकीभेदः तत्फलम्।

अन्ये तु कटुतुम्बीः फलमाहु।....(डल्हण))

ii) नवकपालिका चूर्ण बैदुल सर्जनाम्, कासीस मधुकं क्षौद्र

iii) कपित्थ + अजा मूत्र अथवा कासीस रोचनां तुत्थ हरितालम् मनःशिला.

(1) मास से ज्यादा समय तक लेप (मासाद् उर्ध्व)

रोमसंजननः i) हस्तिदन्तमसी + रसांजन in अजा दुग्ध

(इससे पाणितल भाग पर भी बाल उत्पन्न होते है।)

ii) चतुष्पाद कीं त्वग् रोम खुर, श्रृंगास्थि भस्म + तैल

iii) कासीस, नक्तमाल, पल्लव, कपित्थरस

लोमापहरणः i) क्षुर, कर्तरि, सन्दश. ii) शंख + हरताल + शुक्ती

iii) भल्लातक तैल + स्नुहीक्षीर

बस्तिः अधः काये विशेषण तत्र बस्ति विधियते।

उत्तरबस्तिः मूत्राघातें, मूत्रदोषे, शुक्रदोषे ऽश्मरी,

पत्रदानः स्थिर, अल्प, रूक्षव्रण

बृंहणः बृंहणीयो विधिःसर्वःकायाग्निं परिरक्षता।

शिरोविरेचनः कण्डूमन्तः संशोफ, जत्रूपरी व्रणाः

नस्यः रुजावन्तो ऽनिलाविष्टा रुक्षा उर्ध्वाजत्रुजाः

कवलधारणः मुख्यजस्य व्रण में

धूमपानः उर्ध्वजत्रुगतान् रोगान व्रणाश्च कफवातजान

मधुसर्पिः सद्योव्रण, आयत व्रण,

यन्त्रः अवगाढास्त्वणुमुखा

आहारः लघुमात्रो, लघुश्च, उष्णो

षण्मूलोऽष्टपरिग्राही पंचलक्षणलक्षितः।

षष्ट्या विधानैर्निर्दिष्टैश्चतुर्भिः साध्यते व्रणः।।

मूल कारण 6 - i) वात, ii) पित्त, iii) कफ, iv) रक्त, v) सन्निपात, vi) आगन्तुज

अधिष्ठान (परिग्राही)	लक्षण	विधान (उपक्रम)	चतुर्भि (चतुष्पाद)	उपद्रव
8	5	60	4	2
त्वक्	गन्ध		वैद्य	व्रण के (5)
मांस	वर्ण		आतुर	व्रण से पीडित के (10)
सिरा	स्त्राव		परिचारक	
स्नायु	वेदना		औषध	
सन्धि	आकृती			
अस्थि				
कोष्ठ				
मर्म				

(2 लक्षण - सामान्य, विशेष)

* व्रण से पिडित (व्रणी) उपद्रव 10

ज्वरातिसारौ मूर्च्छा हिक्का छर्दिःअरोचकः।

श्वासकासाविपाकाश्च तृष्णा च व्रणितस्य तु।।

Common:- उर्ध्वजत्रुगत व्रण - शिरोविरेचनं, नस्य, धूमपान

2) सद्योव्रण चिकित्सित

1) सद्योव्रणः सु. - 6 (छिन्न, भिन्न, विध्द, क्षत, पिच्चित, घृष्ट)

[अ. हृ. - 8 (घृत, अवकृत, विच्छिन्न, प्रविलम्बित, पतित,विध्द,भिन्न, विदलित)

अ. स. 3- i) पिच्चित - 2 (सव्रण, अव्रण), ii) छिन्न - 5 (घृष्ट, अवकृत, विछिन्न, विलम्बित,पातित), iii) विध्द - 8 (अनुविध्द, उत्तण्डुत, अतिविध्द, निर्विध्द, अनुभिन्न, अतिभिन्न, निर्भिन्न, भिन्नउत्तुण्डित) (मा. नि. 6, शारंगधर 8)]

2) कोष्ठ - 8: स्थानान्याम् अग्निपक्वानां मूत्रस्य रुधिरस्य च।

हृदउण्डुकः फुफ्फुश्च कोष्ठ इत्याभिधीयेते ।।....(सु. चि. 2)

* पक्वाशयगत रुधिर लक्षणः शीतता चाप्यधो नाभेः

i) छिन्नः तिरश्चीनंऋजुवाऽपी आयतो गात्रस्य पातनं

ii) भिन्नः कुन्ताग्र, आशयः हतः, किंचिद स्त्रवेद.

iii) विध्दः आशयाव्दिना उत्तुण्डितं निर्गतं वा.

iv) क्षतः **नातिच्छिन्नं नातिभिन्नं** उभयो लक्षण विषमं व्रणम् अंगे,

v) पिच्चितः प्रहार पीडनाभ्यां तु यदंगम् पृथुतां गतम्। **सस्थि** मज्जरक्त परिप्लुतम्,

vi) घृष्टः विगत त्वक यद अंगं संघर्षाद्; उषा स्त्राव (त्वचा निकलना).

3) छिन्ने भिन्ने तथा विध्दे क्षते वा ऽसृकातिस्त्रवेत्।

सामान्य चिकित्साः स्नहपान, सेक, वैशवार, कृशरा, धान्यस्वेद, स्नेहबस्ति.

(वेशवार - वैशवारैः निरस्थिस्विन्नस्निग्धपिष्टमांसैः।

कृशरा - तिलतण्डुल माषकृता यवागुः। उपनाहनं बन्धनम्।....डल्हन)

4) पिच्चिते विघृष्टेच नातिस्त्रवति शोणितम्।

सामान्य चिकित्साः शीत (आलेप व परिषेक)

* कृकाटिका में छेदन परः अजा सर्पि से परिषेक. उत्तनोऽन्नं (भोजन)

* छिन्न शाखाः छिन्न निःशेषतः शाखां दग्ध्वा तैलेन बुध्दिमान। कोशबन्धेन चन्दनाद्य तैल - व्रणरोपणार्थ, त्रयोदशांग तैल - परिषेक & व्रणरोपण.

* भिन्न नेत्र मेंः पध्मपत्रान्तरेण, तर्पणं कार्यं नस्यं सर्पिषा

*उदरान्मेदसो (उदर में मेदवर्ति बाहर आने पर) -

कषायभस्म, कृष्णमृत्कीः बध्दवा व्रणं.

5) आभ्यन्तर रक्तस्त्रावः तत्रान्तर्लोहितं पाण्डुं शीतपादकराननम्।

शीतोच्छासं रक्तनेत्रमानध्दं च विवर्जयत्।।

आमाशयस्थे रुधिरे वमनं पक्वाशयस्थे देयं च विरेचनं।

* रक्तपान उल्लख By सु. अतिनिः स्त्रुसरक्तो वा भिन्नकोष्ठः पिबेद असृक्।

भिन्नकोष्ठ साध्यासाध्यत्वः स्वमार्ग प्रतिपन्नास्तु यस्य विण्मूत्रमारुतः।

व्युपद्रवः स भिन्नेऽपि कोष्ठे जीवति मानवः।।

6) बाहर निकली आन्त्र में:

पिपीलिकाशिरोग्रस्त (चिटी लगवाकर शिर तोड दें)

अण्डकोष बाहर आने परः प्रवेश्य तुन्नसेवन्या मूष्कौ सीव्येत् परम्,

गोफणिकाबन्ध शिरो ऽभिधात में **बालवर्ती** .

गात्राद् अपहृतेऽन्यास्मात स्नेहवर्ति प्रवेशयेत् ।

(i.e.अन्य अंग से शल्य निकालकर स्नेहवर्ति प्रविष्ट करें)

दुरावगाढ सूक्ष्म नेत्रयुक्त व्रण में चक्रतैलेन तर्पयेत।

7) क्षते क्षतविधिः कार्यः पिच्चिते भग्नवदविधिः।

घृष्टे रुजो विगृह्याशु चूर्णारुपचरेद व्रणम्।।

8) विश्लिष्टदेहं पतितं मथितं हतमेव च।

तैलपूर्ण द्रोण्यां मांसरसाशनम्

9) पित्तविद्रधि में जो घृत उपयोग वही सद्योव्रण में।

* सद्यः क्षतव्रण मेंः नतिशीत बलातैलेन परिषेचयेत।

10) कषायमधुराः शीताः क्रियाः स्निग्धाश्च योजयेत।

सद्योव्रणानां सप्ताहं पश्चात पूर्वोक्तमाचरेत।।

11) दुष्टव्रणविधिः कार्यो मेहकुष्ठ व्रणेष्वपि।

3) भग्न चिकित्सित

* अस्थिविश्लेषोऽत्रभग्नो ऽभिप्रेतः,स च काण्डभग्ने सन्धिमुक्ते चास्तीति न दोषः। (विजयरक्षित) (* वा. - भंग शब्द For भग्न.)

1) कष्टसाध्य: अल्पशि, अनात्मवत, वातात्मकस्य, उपद्रवै, पाक (भग्न में)

2) अपथ्य in भग्न: लवण, कटु, क्षाराम्ल.

पथ्य in भग्न: शालि, मांसरस, क्षीरं, सर्पि.

3) आलेप: मंजिष्ठा, मधुका, रक्तचंदन, शतधौतघृत, शालिपिष्टं

4) For कुशा Use मधुक उंदुम्बर,अश्वत्थ,पलाश,ककुभ,त्वक, वंश,वट,सर्ज

5) बन्धन समय:

सप्ताहाद सौम्य, ऋतुषु पंचमे - पंचमे साधारणेषु, त्र्यह्यात आग्नयेषु.

6) बन्धन स्वरुप: शिथिल से - अस्थिर संधि

गाढ से - शोफ, रुक, पाक., साधारण बंध भग्न में उपयोग करें।

7) For परिषेक: वात - पंचमुलि क्षीर.

पित्त - न्यग्रोधादि कषाय, चक्रतैल.

गृष्टिक्षीर (प्रथम प्रसववाले गाय का दुध) लाक्षासह प्रातः मे पान करायें.

8)सुखसाध्य भग्न: प्रथम वय(बाल्य काल),अल्पदोष,सुकुमार,शिशिर ऋतु का.

9) भग्नसन्धान (स्थिरता) कालः प्रथमे वयसि - मासात (1 मास) बाल्य, मध्यमें - द्विगुणात (2 मास), कालादुत्तरे (वृध्द) - त्रिगुणात (3 मास)

10) भग्न चि. सिध्दांतः अवनामितम् उन्नयद् उन्नतं चावपीडयेत्।

आच्छेद अतिक्षिप्तम् अधोगतं चोपरिवर्धयेत।

(i.e. नीचे झुकी हुई को उपर व उपर उठी हुई को नीचे दबानाः दुर स्थित अस्थि को खींचकर पास व नीचे खिसकी हुई को उपर उठाकर यथास्थान)

11) Stages of reduction: 4 आंछनैः पीडनैश्चैव संक्षेपैः बन्धनैस्तथा।

पीडन - पीडनग्रहणेन नमन्नोमनपरिवर्तनानि गृह्न्ते (डल्हण)

संक्षेप सम्यक् प्रेरणमित्यर्थः (डल्हण), गयी तु संक्षेपशब्देन आकुंचनमाह।

12) उत्पिष्ट, विश्लीष्ट में न घट्टयेत. (न हिलाये) व शीत परिषेक प्रदेह.

* भग्न यथास्थान स्थापन पश्चात घृत से पट्ट बन्धन

13) संधिः नखसंधिः रक्तानुगतम आरया, शालिपिष्टेन लेप.

अंगुलीः स्थापयेद, घृतसेक.

पादतल भग्नः सर्पि अभ्यंग, कुशा.

उरु भग्नः (उर्वस्थि भग्न) चक्रयोग से आछेद (खींचे) वृक्षत्वच दत्त्वा.

बस्ति For **कटिभग्नः**

पर्शुकाः तैलपूर्ण कटाहे वा द्रोण्यां. (रोगी को तैल पूर्ण द्रोणी मे सुलावें)

अंससंधिः मुसलेनोत्क्षिप्त, स्थानस्थित स्वस्तिक बन्ध.

कौर्पर (कूर्पर,जानु, गुल्फ, मणिबंध) संधिन अंगुष्ठेन् अनुमार्जयेत, (अंगुष्ठ से मर्दन) प्रसार्याकुंचनं, स्नेहसकं.

तलभग्नः आमतैलेन परिषेक। मृत्पिण्डं धारयेत् पूर्व लवणंच तत परम।

हस्ते जातबले चापि कुर्यात पाषाणधारणम् ।।

अक्षकः मुसलेन, गाढबंध **बाहुः** उरुवत्.

ग्रीवः उत्तानं शाययेत सप्तरात्रम (7 रात्री उत्तान सुलायं)

हनुसंधिः ***पंचांगी*** बंध (हनुभग्न मेंः खटवा बंध)

दन्तः उत्पल नालेन क्षीरपान.

नासाः ऋज्वी कृत्वा शलाकाया, व्दिमुख नाड्यौ प्रवेशयेत, घृतसेक.

कर्णः घृतप्लुतः पश्चात में सद्यः क्षत वत् चि.

कपालः मस्तुलुंगाव्दिना, मधुसर्पि, सप्ताहं च पिबेद घृतम्

जंघेरु भग्न मेंः कपाटशयन पंच किल Used

(श्रोण्यां, पृष्ठवंश, वक्ष, अक्षक भग्न मेंः कपाटशयन)

14) कुसंयोजन की चिकित्साः काण्डभग्ने प्ररुढे तु विषमोल्बण संहिते।

आपोथ्य शमयेदभग्नं ततो भग्नवदाचरेत।।

(i.e.संधान तोडकर भग्न को समान रुप में स्थित करें)

15) ऊर्ध्वकाये तु भग्नानां मस्तिष्कं कर्णपूरण्।

घृतपानं हितं नस्यं प्रशाखास्वनुवासनम्।।

i) उर्ध्व भाग भग्न में मस्तिष्क्य, कर्णपूरण, घृतपान, नस्य.

ii) शाखा - अनुवासन,

16) गन्धतैलः कृष्ण तिल उपयोग

कुल भावना - 11 (गोक्षीर + यष्टिमधु + क्षीर पुनः)

(3 days) (7 days) (1 days)

पथ्यं भग्नानां (सर्वकर्मसु)

पथ्यं पाने तथाऽभ्यंगे नस्ये बस्तिषु भोजने

सर्ववातविकारानः राजार्हमेतत कर्तव्यं

17) त्रपुसादि तैल For भग्न.

18) भग्न में पाकः मांस, सिरा, स्नायु में पाक से भग्न कृच्छ्रसाध्य.

19) भग्न संधान सम्यक् लक्षणःअनाविध्द, अहीनांग, अनुल्बण, सुखचेष्टाप्रचार.

4) वातव्याधी चिकित्सित

1) आमाशयगत वातः षड्धरण योगः सप्तरात्र उपयोग सुखाम्बुना (सुखोष्ण) (6 द्रव्य - चित्रक, इन्द्रयव, पाठा, कटुका, ऽतिविषा, ऽभया)

2) पक्वाशयगत वातः स्नेह विरेचन, बस्त्यः लवण प्रधान आहार (प्राश) (डल्हण - न तु लेहाद)

3) बस्तिगत वातः बस्तिविशोधन.

4) श्रोत्रादिः स्वेद उपनाह अभ्यंग.

5) त्वक्मांसासृक्सिराप्राप्तेः असृकविमोक्षण.

6) स्नायु, अस्थि, संधिः स्नेहोपनाहाग्निकर्मबन्धनोन्मर्दन

7) निरुध्दऽस्थिनी वायौः (अस्थिमज्जागत वायु में) पाणिमन्थेन दारणेन (आरा शस्त्र से वेधन) नाडी दत्त्वाऽस्थिनी (नाडी प्रवेश)- चुषयेत पवनं बली

8) शुक्रगतवात में शुक्रदोष चिकित्साःअवगाह कर्षु कुटी प्रस्तराभ्यंग बस्तिभिः

9) सर्वांग वातः सिरामोक्ष जयेत सर्वांगजं वातं **सिरामोक्षैश्च** बुध्दिमान।

10) एकांग वातः मातिमाअंगैश्चावास्थितं

(एक अंग वात में वायु को सींग के द्वारा निकाले)

11) सुप्त वातः रक्तमोक्षण बहुशो, लवण आगार धूम.

पथ्यः पंचमुलीश्रृत क्षीर, फलाम्लो रस सुस्निग्ध धान्ययूष शाल्वणः उपनाह

12) स्कन्ध, वक्ष, त्रिक, मन्यागत वातः वमनं, नस्यं

13) शिरोगत वातः शिरोबस्ति, असृक्विमोक्षण, स्नेहं सहस्त्र मात्रं धारयेत

14) योगः i) तिल्वकसर्पि, ii) अणुतैल - कोल्ह तैल, iii) सहस्त्रपाक, शतपाक - राजार्ह तैल, iv) पत्रलवण, v) स्नेहलवण (काण्डलवण).

5) महावातव्याधी चिकित्सित

वातरक्तः 1 [च. - 2] परंतु निदान में - 5

(उत्तान, अवगाढ) कुष्ठवद उत्तानं भुत्वा कालान्तरेपावगाढीभवति.

(कुष्ठ वत उत्तान होकर कालान्तर में गंभीर होता है)

1) **पूर्वरूपः** पूर्व हस्तपाद्योवस्थानं कृत्वा पश्चात देहं व्याप्नोति।

सिक पारूष्य सिरा स्नायु धमनी स्पन्दन श्यावारूण मण्डलोत्पात्ति पाणिपादतलांगुलिगुल्फमणिप्रभृति तस्य लक्षणमुक्तं तत्राप्रतिकारिणो **वैकल्यं** भवति।

2) **हेतुः** सुकुमार, मिथ्याहारविहार, स्थुलान, सुखिनां

3) **चिकित्साः** i) वातप्रबले पुराणघृतंः अजाक्षीर + अर्धतैल. / मधुक अक्ष युक्त/ श्रृगालविन्ना/ शर्करामधु मधुरं/शुण्ठिश्रृंगाटक कशेरूकासिध्द/ श्यामारास्ना द्विपंचमुली. बलातैल शतपाक

ii) रक्त प्रबल में बहुशो रक्तमोक्षण, शीत प्रदेह,

iii) कफ प्रधान में गुडहरीतकी सेवन.

4) **वर्धमान पिप्पलीः** वातशोणित, विषमज्वर,अरोचक,पाण्डु, प्लीहा, उदर, अर्श, कास, श्वास, शोफ, शोष, अग्निसाद, हृद्रोग.

वर्धमान पिप्पलीः (5 or 10) के क्रम से बढाकर 10 दिन तक क्षीरौदन,15 कर्म प्राप्त के बाद घटाये.पिण्डतैल अभ्यंग, शोणितमोक्षं चाभीक्ष्णं(निरंतर) कुर्वीत

विहारः मृदुगण्डापधान, मृदुसंवाहन.

5) **अपतानकः** अस्त्राक्षम (रुप ग्रहण में सर्वथा अक्षम न हो) अखट्वापातिनम् (शय्या से भूमि पर न गिरता हो) चिकित्सा योग्य है।

चिकित्साः i) अवपीड नस्य (तीक्ष्ण) त्रिवृत घृत - परिषेकावगाहाभ्यंगपान भोजनानुवासन, ii) अभुक्तवता पीतम् अम्ल दधि मरिचवचा युक्तं अपतानक हन्ति, iii) तैलसर्पिवसाक्षौद्राणि, iv) वेगान्तेरेषु चावपीडं दद्याद, v) 10 दिन के बाद भी वेग शान्त न हुआ हो तो रक्षाकर्म.

6) **पक्षाघातः** यथाकालम् आक्षेपक विधानेनोपचरेत.

अणुतैलमभ्यांगार्थे, शाल्वणमुपनाहार्थे, **बलातैलमनुवासनार्थे,** त्रीश्चतुरो (3-4) मास चिकित्सा.

7) **मन्यास्तम्भः** पक्षाघात समान चिकित्साः वातकफ हर नस्य, रुक्ष स्वेद.

8) **अपतन्त्रकः** अपतन्त्रातुरं न अपतर्पयेत् न अंजनं, नावनेषवेत् वमन, आस्थापन, अनुवासन. चि. - तीक्ष्ण प्रधमन.

(60 हरितकी) पथ्याशतार्धे,सौर्वचलेव्दिपले चर्तुर्गुणो पयसि सर्पिप्रस्थं सिध्दं घृत, वातकफ नाशक चिकित्सा.

9) **अर्दितः** मस्तिष्क्य, शिरोबस्ति, नस्य, धूम, उपनाह, स्नेहन, नाडीस्वेद. क्षीरतैल पान, अभ्यंग. क्षीरसर्पिः अक्षितर्पण.

10) **गृध्रसी,विश्वाची, क्रोष्टुकशिरः** खंज,पंगु,वातकंटक और वातव्याधी में शिरावेध चिकित्सा, अपवाद अवबाहुक.

11) **कर्णशूलः**i) मधुतैल सैंधव संसृष्ट सुखोष्ण ii) मधु तैल+अजामूत्र पूरन

12) **शूनीप्रतूनीः** बस्ति.

13) **आध्मानः** अपतर्पण, पाणितापः प्रत्याध्माने छर्दनापतर्पणदीपनानि कुर्यात।

14) **अष्ठीलाप्रत्यष्ठोलयोः** गुल्माभ्यन्तरविद्रधिवत् क्रिया.

15) **मेदायुतवातः** शोथवत चिकित्सा. (मेदायुत - मेद आवृत्त)

16) **उरुस्तम्भ** (आढ्यवात) (7 days use) स्नेहवर्ज षड्धरण योग

17) **श्रेष्ठ गुग्गुलं पिबेदवाऽपि शिलाजतु। (गोमूत्र) (उत्तम गुग्गुल).**

18) **गुग्गुल वर्णनः संदर्भ.** सुगंधि - पूतिकोष्टघ्न, सुलघु - सूक्ष्म - अग्निदीपन, तीक्ष्ण, उष्ण - कफवातघ्न

कटु रसः कटु पाक - सर - मलपित्तनुत्

रुक्ष, स्निग्ध, पिच्छिल -

नवो बृहणे वृष्यः पुराणस्त्वपकर्षणः।

त्रिफला दार्वी पटोल कुश वारिः

मूत्रैः क्षार उष्णोदकेन, प्रातःकाल में सेवन.

अधिकारः गुल्म मेह उदावर्तं उदरं सभगन्दरम् कृमि कण्डु अरुचि श्वित्र अर्बुदं ग्रंथि, जीर्ण यूषरसैः क्षीरैः भुजनो हन्ति मासतः।

6) अर्श चिकित्सित

1) चतुर्विध चि.: भेषजं क्षारोऽग्निः शस्त्रम इति।

भेषजं - अचिरकालजातान्यल्पदोषलिंगोपद्रवाणि ।

क्षार - मृदुप्रसृतावगाढान्युच्छ्रितानि।

अग्नि - कर्कशस्थिर पृथु कठिनान्यग्निना।

शस्त्र - तनुमूलान्युच्छ्रितानि क्लेदवन्ति।

2) अर्श में क्षारप्रयोगः स्निग्धम उष्णम अल्पम अन्नं द्रवप्रायं भुक्तवन्तम शलाकयोत्पीड्य, वाकशतमात्रुपेक्षेत.

3) सम्यक दग्ध लक्षणः पक्वजाम्बवप्रतीकाशम.

* क्षारं प्रक्षालयेद् अम्लेन दधिमस्तुशुक्तफलाम्लैः याष्टिमधुभिक्षेण सर्पि निर्वाप्य

* उष्णोदकोपविष्टं शीताभिराभ्दिः परिषेचयेत (उष्णोदक में बीठायें) (शीत से परिषेक).

4) सप्तरात्राद् सप्तराद् एकैकम् उपक्रमेत्.

5) चिकित्सा क्रमः तत्र बहुषु पूर्वं दक्षिणं साधयेत,दक्षिणाव्दामं, वामात् पृष्ठजं; ततो अग्रजम् इति। (1st - दक्षिण (Rt.), 2nd - वाम (Lt.), 3rd - पृष्ठ (Back), 4th - अग्र (Ant.))

6) क्षार मात्राः नखोत्सेधप्रमाण - पित्त - आदध (अवर)

व्दिगुण - कफ (मध्यम), त्रिगुण (दृढ) - वात महती (उत्तम)

7) वातश्लेष्मनिमित्त आग्निक्षाराभ्यां साधयेत, पित्तरक्त निमित्तानि क्षारेणमृदुना.

8) अर्श चिकित्साः i) महत - छेदन, दहन, ii) निर्गत, दोषपूर्ण - विनायन्त्राद, स्वेदाभ्यंगस्नेहावगाह, iii) प्रवृत्तरक्त - रक्तपित्तवत, iv) भिन्नपुरीष - अतीसारवत, v) बध्दवर्चा - उदावर्तवत, स्नेहपान, vi) सर्वस्थानगत् - दहन. * क्षार लगाने हेतु - दर्वीकूर्चकशलाका.

9) अर्शोयंत्रः पुरुष - गोस्तनाकारं चतुरंगुलायतं पंचांगुल परिणाह.

स्त्री - षड्डांगुल परिणाह, तलायात

तद द्विच्छिंद दर्शनार्थम् एक च्छिंद्र तु कर्मणि.

छिद्र प्रमाणं तु त्र्यंगुलायत, अंगुष्ठोदर परिणाह,

यद् अंगुलमवशिष्टं तस्यार्धांगुलाद अधः तादं अर्धांगुलोच्छ्रितो परिवृत्तकर्णिकम्.

लेप अर्श - स्नुहीक्षीर, अर्कक्षीर.

10) योग (अदृश्य अर्श चिकित्सा):

a) प्रातः गुडहरितकी, ब्रह्मचारी, गोमूत्रद्रोणी सिध्द हरीतकी शतं क्षौद्रसह. अपामार्ग, चित्रक, भल्लातक.

निरन्नो वा तक्रमहरहमासमुपसेवेत (भोजन नहीं: 1 मास तक्र सेवन)

b) भल्लातक वर्धमान योगः मात्रा - शुक्ति (1/2 पल) प्रातः काल.

1 भल्लातक से शुरूवात 5 तक, पुनः

5 भल्लातक से बढाये 70 तक, पुनः 5 से कम करें।

5 संख्या आनेपर 1 - 1से कम करें।

1 मास भल्लातक सेवन, 3 मास परिहार काल.

11) यथा सर्वाणि कुष्ठानि हतः खदिरबीजकौ।

तथैवार्शांसि सर्वाणि वृक्षकारूष्करौ हतः॥

हरिद्रायाः प्रयोगेण प्रमेहा इव षोडश। संदर्भ

क्षाराग्नि नातिवर्तन्ते तथा दृश्या गुदोद्भवाः।

(जिस तरह हरिद्रा 16 प्रमेह के लिये, उसी तरह क्षार अग्नि दृश्य अर्श के लिये)

12) दोष प्रधान अर्श चिकित्साः

i) वात प्रधान - स्नेहस्वेद वमनविरेचनास्थापनानुवासन

ii) पित्त प्रधान - विरेचनम्, iii) रक्तजेषु संशमनम् (रक्तज अर्श में संशमन चिकित्सा), iv) कफजेषु श्रृंगबेरकुलत्थो.

13) दोषवृध्दि नुसारःi) घृतानि दीपनी,ii) लेह, iii) अयस्कृत,iv) सुरा,v) आसव.

[वा. स्त्रावी अर्श में - कूटज, और शुष्क अर्श में – भल्लातक श्रेष्ठ है।]

7) अश्मरी चिकित्सित

अश्मरी दारूणो व्याधिः अन्तकप्रतिमो मतः।
औषधैः तरूणः साध्यः प्रवृध्दश्छेदमर्हति।।

1) पूर्वरूप में: स्नेहादिक्रम (इससे व्याधी का समुल नाश)

2) द्रव्यः i) वरूणादिगण, गुग्गुल
(त्रिकण्टक (गोक्षुर) बीज + मधु + अविक्षीर) से सप्ताह में अश्मरी भेदन
ii) तिल अपामार्ग कदली पलाश यव कल्कजाः।
क्षार पेयो ऽविमूत्रेण शर्करानाशनः।।

वीरतरादी - अश्मरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र नाशक गण - सब प्रकार से सेवन (घृत, क्षीर, कषाय, यवागु)

3) आक्रियायां ध्रुवो मृत्युः क्रियायां संशयो भवेत
चरक: त्रिदोष उदर के लिये, सुश्रुत: अश्मरी के लिये, अ.सं.: अश्मरी,मूढगर्भ के लिये, वाग्भट: अश्मरी के लिये, हारित जलोदर के लिये।

4) अश्मरी निर्हरणार्थ यंत्रः अग्रवक्त्र (आहरण यंत्र)
- ततःसेव्ये पार्श्वेसेवनी यवमात्रेण मुकत्वा ऽवचारयेच्छस्त्रम् अश्मरीप्रमाणम।

5) क्षीरवृक्षकषायं पुष्पनेत्रेण विदध्यात।
मूत्रमार्गविशोधनार्थ चास्मै i) a) गुडसौहित्यं (गुड़ + भात)
b) यवागु For 3 दिन, ii) गुड + दुग्ध + भात For 10 दिन,
iii) After फलाम्लैःजांगलरस, iv) द्रवस्वेदन For 10 दिन, v) सात (7) दिन पश्चात मूत्र स्वाभाविक रुप से न निकले तो दहन अग्नि से, vi) बड़िश शस्त्र अश्मरी उदधरणात, vii) 1 वर्ष पथ्य पालन (in अश्मरी, भगन्दर).

6) मूत्रमार्ग की अश्मरी बडिश यंत्र से निकालते है। (वा. सर्पफण शलाका यंत्र.)

7) शस्त्रकर्म में बचाने योग्यः i) मूत्रवह - मूत्रपूर्णबस्ति मरणं, ii) शुक्रवह - क्लैब्यं मरणं, iii) मुष्कस्त्रोत - ध्वजभंगे, iv) मूत्रप्रसेक - मूत्रक्षरणं, v) सेवनी - रुजा, vi) योनि - रूजा vii) गुद, viii) बस्ति - मर्मघात वत .
(Also called स्त्री विशिष्ट 8 मर्म)

8) भगन्दर चिकित्सित

1) भगन्दर चिकित्सा: अपक्व भगन्दर में अपतर्पण आदी 11 उपक्रम
पक्व भगन्दर मे शस्त्र से उध्दरेत
अन्तर्मुख भगन्दर मे एषणी शस्त्रं पातयेत.
नाड्यन्तरे व्रणान् कुर्याद्भिषक तु शतपोनके।
(i.e. शतपोनक चिकित्सा नाडीव्रण समान)

2) शतपोनक छेदन आकृतिः
अर्धलांगलकम (L shaped), लांगलक (T shaped),
सर्वतोभद्रक (C shaped), गोतीर्थक (Semi Circular)

द्वाभ्यां समाभ्यां पार्श्वाभ्यां छेदो लांगलको मतः।
ह्रस्वमेकतरं यच्च सोऽर्धलांगलकःस्मृतः।
सर्वतोभद्रकं छेदमाहश्छेदविदो जनाः।।
पाश्वागतेन छिद्रेण छेदो गोतीर्थको भवेत। (वा.)

3)उष्ट्रग्रीवःएषण,क्षार अग्निकर्म निषेध, 3rd day पट्टी खोलें & शोधन करे।

4) परिस्त्रावीः क्षार, दहन, **अणुतैल से सेचन;** छेदन आकृति-खर्जूरपत्रक, चन्द्रार्ध, अवांगमुख, चन्द्रचक्र, सूचीमुख.

5) शिशु में: बहि और अन्तर मुख भगन्दर में विरेक, अग्नि, शस्त्र, क्षार निषेध, नाति तीक्ष्ण, नाति मृदु कर्म., आरग्वधादि वर्ति For भगंदर.

6) आगन्तुज भगन्दरः उपयोग नाडी शस्त्र जाम्बोष्ठ अग्निवर्ण तप्त शलाकासे दहन, कृमिघ्न, शल्य निर्हरण विधि प्रयोग.

7) शस्त्र कर्म की वेदना शमन में: अणुतैल प्रयोग। नाड़ीस्वेद उष्णोदक अवगाह

8) स्यन्दन तैल For भगन्दर - शोधन, रोपन, सवर्णिकरण.

9) पथ्यापथ्य पालनः 1 yrs [Extra वा.:परिक्षेपी - नाड़ी, क्षारसूत्र, अर्शभगंदर First अर्श चि. then भगंदर चि.

* भगंदर में बीच बीच में विरेचन (कोष्ठ शुध्दि हेतु)
योगः i) ज्योतिष्मति तैल, ii) मधुकादि तैल, iii) विंडगादि योग,
iv) गुग्गुलादि योग, v) त्रिफलादि गुग्गुल.]

9) कुष्ठ चिकित्सित

1) हेतुः पापक्रिया पुराकृतकर्म.

2) पथ्यः शालिषष्टिक,मेद रहित जांगलमांस, वज्रतैल अभ्यंगार्थे, आरग्वधादि कषाय उत्सादनार्थ, खदिर कषाय पानपरिषेकावगाह.

3) अपथ्यः
मांस वसा दुग्ध दधि तैल कुलत्थ माष निष्पाव इक्षुपिष्टविकारा दिवास्वप्न

4) धातुगत चिकित्साः पूर्वरुप में - उभयतः शोधन,
i) त्वक - शोधन आलेप,
ii) शोणित - शोधन आलेप, कषाय पान, शोणितावसेचन,
iii) मांस - शोधन...शोणितावसेचन, अरिष्टमन्थप्राशाः,
iv) चतुर्थ (मेद) - याप्य, शोधन, शोणितावसेचन, भल्लातक शिलाजतु, धातुमाक्षीकगुग्गुल्वगुरु, तुवर, अयस्कृतिविधान
v) पंचम (अस्थि) - नैव चोपक्रमेत. (असाध्य)

5) चिकित्साः सर्वप्रथम स्नेहपान, (अनुपान शीतजल)
सर्वेषां तुवरकतैलं भल्लातकतैलं.

6) योगः i) महातिक्त घृतः कुष्ठ, विषमज्वर, रक्त, हृद्रोग, उन्माद, गुल्म, पिडका, असृग्दर, गलगण्ड, गण्डमाला.
ii) तिक्तक घृतः उर्ध्वजत्रुगतरोगघ्न, iii) सिन्धूभूत लेप iv) हेमक्षीरी लेप
v) मलपु चिकित्सा श्वित्र, पुण्डरिक.
vi) (कृष्ण सर्प + बैभितीक तैल) लेप - सर्वकुष्ठ
vii) प्रपुनाडबीज कुक्कुट को खिलाकर उस के पुरिष का लेप श्वित्र.
viii) **नील घृत** (लोहरज 2 प्रस्थ + त्रिफला 3 प्रस्थ)
ix) **महानील घृत.**, x) **वज्रक तैल** अभ्यंग से नाडी दुष्टव्रण नष्ट.
xi) **महावज्रक तैल** सर्वकुष्ठ गण्डमाला, भगंदर
xii) लाक्षादि तैले पान, अभ्यग.

7) कुष्ठ में दोषशोधन क्रमः (च. वा.)
कुष्ठरोगी को 15 दिन - 15 दिन पश्चात वमन 1 मास पश्चात (विरेचन) 6 मास (वर्ष में 2 बार) रक्तमोक्षण 3 - 3 दिन पे नस्य.

8) हरिद्रा 1 पल + गोमूत्र 1 मास में पापरोग (कुष्ठ) नष्ट
चित्रक, पिप्पली, हरिद्रा उपरोक्त समान प्रयोग.

9) प्रतिदिन प्रातः काल रेचक औषधि उपयोग करके 5,6,7,8 रेचन करें।

10) कारभ मूत्रः जीर्णहोने पश्चात क्षीरभोजन 6 मास तक करे।

11) खदिरः स्नान, पान अशन (आहार) उपयोग.

10) महाकुष्ठ चिकित्सित

इस अध्याय में जो योग वे: कुष्ठेषु मेहेषु कफामयेषु, सर्वांगशोफेषु दारुण में उपयोगी है। 1) यवकल्प, 2) सर्वमन्थकल्पना,
3) अरिष्ट - सालसारादि, न्यग्रोधादि, आरग्वधादि,
4) आसव - सालसारादि, न्यग्रोधादि, आरग्वधादि, तिलादिनां क्षारेषु, मूत्रे
5) सुरा - सालसारादि, न्यग्रोधादि, आरग्वधादि,
6) अवलेह - पाणितल मधुमिश्रं लिह्यात,
7) चूर्णक्रिया - सालसारादिकषाय, न्योधादिफल, आरग्वधादि, पुष्प,
8) अयस्कृति - सालसारादि कषाय निर्वापयेत 16 बार (तीक्ष्णपत्रलोह (उपयोग सभी लोह like this)
राजयक्ष्माः इस महौषधायस्कृति का 15 days/ 1 मास पश्चात प्रयोग. ((1-1) तुला सेवन पर 100 वर्ष आयु वृध्दि)
9) खदिर विधान - भल्लातकविधानवदाहारः परिहारश्च
10) अमृतवल्लिस्वरस - प्रातः घृत से सिध्द कर उपयोग करें
अपरान्ह - घृत ओदन + यूष. 1 मास सेवन से सर्वकुष्ठनाश
11) कृष्णतिलः प्रयोग

11) प्रमेह चिकित्सित

1) प्रमेहः	सहज	अपथ्य निमित्तज
हेतु	मातृ-पितृ बीज दोष,	अहित आहार
रूप	कृश	स्थूल
आहार	रुक्ष,अल्पाहार,बहुपिपासा (प्रसरणशील)	स्निग्ध,बहवाशी (स्वप्नशील)

चिकित्सा अन्नपानप्रतिसंस्कृत → अपतर्पण

2) **प्रमेह में पथ्यः** चणक, आढकी, कुलत्थ; तिक्त कषाय शाक. (निकुम्भ, इंगुदी, अतसी) तैल, सर्षप

3) **अपथ्यः** सुरा, तैल, घृत, यवागू, ग्राम्यानपौदमांस

प्रमेह में शोधन (तिक्ष्ण वमन)

4) **मधु उपयोग हेतुः 3 -** i) योगवाहि, ii) स्वाभाविक शक्ति, iii) लेखन, विशोधन, मेदनाशक, कषायरस.

कफजः (सभी कषाय मधु सह सेवन)

उदकमेह - पारिजातक इक्षुमेह - वैजयन्ति

सान्द्र मेह - सप्तपर्ण, सुरा - निम्ब

पिष्ट - हरिद्रादारुहरिद्रा शुक्र - दुर्वाशैवलप्लव हठकरंजकसेरुक ककुभचंदन

सिकता - चित्रक शनैः - खदिर

लवण - पाठा ऽ गुरुहरिद्रा फेनमेह - त्रिफलारग्वधमृव्दीका.

पित्तजः

क्षारमेह - त्रिफला नील - सालसारादि

शोणित - गुडुचीतिन्दुकास्थिकाश्मर्य खर्जुर

मंजिष्ठा - मंजिष्ठाचन्दन हारिद्र - राजवृक्ष (आरग्वध)

अम्ल - न्यग्रोधादि

वातजः वसा मेह - अग्निमंथ शिंशपा सर्पि - कुष्ठकुटज

हस्ति - तिन्दुककपित्थ क्षौद्र - खदिरक्रमुक

* असाध्य मेह को याप्य बनाने हेतु योगों का कथन.

5) **प्रवृध्द प्रमेह मेंः** व्यायाम नियुध्दक्रीडा गजतुरगरथ पदातिचर्या परिक्रमणान्यस्त्रोपास्त्रे वा सेवेन्

6) **विहार For different प्रमेहीः** अधनः पादत्राण शतमधिक वा गच्छेत

करीब: 100 कदम चले.

महाधनः (धनवान) कपित्थ, तिन्दुक, अश्मन्तक, फलाहार, गोमुत्र, गोशकृद

ब्राह्मणः शिलोच्छवृत्ति वेदपाठ

(किसान) कृषेत्: खनेद कूप (कुँआ खोदे) कृश सत्त रक्षण.

12) प्रमेह पिडका चिकित्सित

शराविकाद्या नव पिडकाः प्रागुक्ताः।

1) **प्रमेहपिडका पूर्वरुप चिकित्साः** अपतर्पण, वनस्पतिकषाय, बस्तमूत्र (उपेक्षा से प्रमेह),

2) **प्रमेहअभिव्यक्तिः** उभयत: संशोधन उपेक्षा करने से

3) **रक्त, मांस दुष्टि लक्षणः** शोफ चिकित्सा सिरावेध, (अपर्तपण से विरेचन तक 11 उपक्रम) उपेक्षा करने से शोफ पिडा

4) **शोफ पीडाः** शस्त्रक्रिया, व्रणचि. इसिकी भी उपेक्षा करने से असाध्य

5) **असाध्यः** दुर्विरेच्य क्योंकि मेद, चिकित्सा– तीक्ष्ण विरेचन.

6) **अस्वेद्यः** स्वेदन से उनका शरीर गलता है।

(Note: मधुमेह 2 प्रकार - क्रुध्दे धातुक्षयाद वायौ दोषावृतपथेऽथवा। च.)

7) पिडका नीचे होने में कारण - रसवाहिनी की दुर्बलता.

8) **पिडका चिकित्साः** अपक्व में शोफवतः पक्व - व्रणवत.

आरग्वधादि कषाय - उत्सादनार्थ शालसारादि कषाय - परिषेचनार्थ

पिप्पल्यादि - पानभोजनषु

9) **योग : i) धान्वन्तर घृत - प्रमेहपिडका,** ii) शालसारादि लेह, iii) नवायास लौहः कृष्णायश्चूर्ण नवभागं + सर्पिमधु, iv) लोहरिष्टः महागुणः

10) **प्रमेह निवृत्ति लक्षणः** अपिच्छिलम, अनाविलम्, विशद तिक्तकटुं मूत्रमं.

13) मधुमेह चिकित्सित

1) शिलाजतुः

* शिलाजीत उत्पत्ति - मासे शुक्रे शुचौ. शिलाजत्विती विख्यातं सर्वव्याधिविनाशम्।

i) शिलाजीत भेदः 6 (षड्योनि) त्रपु,सीस,ताम्र,रौप्य,सुवर्ण,कृष्णलोह ये उत्तरोत्तर श्रेष्ठ, त्रपुसीसायसादीनी प्रधानान्युत्तरोत्तम।, ii) तिक्तकटुकं कषायानुरसं सरम।

iii) शोधन By शालसारादि क्वाथ, iv) सेवनः 1 तुला (100 yrs)

1 तुला से 100 yrs & 10 तुला से 1000 yrs. आयु प्राप्ती.

2) तुवरकः महावीर्यस्तुवरकः कुष्ठमेहापहः परः।

शिलाजतु, माक्षिक सेवन में 2 वर्जित - कपोत, कुलत्थ.

(सुश्रुत - मज्जासार महावीर्य सर्वान् धातून विशोधय.)

14) उदर चिकित्सित

1) सर्वाण्येव प्रत्याख्यायोपक्रमेत। कालप्रकर्षात सर्वाण्येव शस्त्रसाध्यानि वर्जयितव्यानि (वाग्भट उपेक्षा करने पर)

वात, पित्त, कफ उदर, त्रिदोषज उदर - औषधसाध्य: (कृच्छ्रसाध्य)

प्लोहोदार, दकोदर - शस्त्रसाध्य, - (कृच्छ्रसाध्य)

बध्दगुदोदर, आगन्तुज शस्त्रसाध्य - असाध्य

अपथ्यः परिषेकावगाहन् परिहेत.

2)	वात	पित्त	कफ
स्नेह	विदारीगंधादि घृत	मधुरगण घृत	पिप्पल्यादि कषाय
अनुलोमन	तिल्वक	श्यामत्रिकृत	स्नुहीक्षीर
अनुवासन	एरण्डतैल	न्यग्रोधादि	मुष्ककादि कषाय
उपनाह	शाल्वण	पायस	शणअतसी धातकी
भोजन	विदारिगंधादि सि. क्षीर + जांगलरस	विदारीगंधादि सि. क्षीर	त्रिकटु, कुलत्थ यूष/ पायस

दूष्योदर में चिकित्साः विरेचन (मास, 1/2 मास) + सप्तलाशंखिनी.

अश्वमारक गुंजा काकादनी मूलकल्कं. मलजं कन्दजं वा विषमासेवयेत (इससे रोगी या तो ठीक या मृत्यू को प्राप्त)

3) उदर (वात में) अनुलोमनः

a)एरण्डतैल प्रतिदिन (1 to 2) मास, केवल (दूध/गोमूत्र)जल त्यागकर सेवन.

b) निराहार रहकर भैंस मूत्र 7 दिन सेवन करें.

c) अन्न जल त्यागकर ऊंटनी दुग्ध सेवन 15 दिन.

d) पूर्वोक्त जैसा पिप्पली सेवन 1 मास तक

e) गुडहरितकी (1/2-1) मास.

4) योगः तिल्वक घृत, मूत्रवर्ति, आनाहवर्ति,

* षट्पल सर्पि - (घृत, दुग्ध) (1-1) प्रस्थ

* मन्दाग्निर्वा हिंग्वादिकं चूर्णमुपयुंजीत।

5) यकृददाल्युदर मेंः दक्षिणबाहौ सिराव्यध

6) प्लीहोदरः वामांगुष्ठ समिरिताम सिरादहन

7) बध्दगुदोदर, परिस्त्राव्युदरः नाभी के नीचे रोमराजी से 4 अंगुल दूर उदरपाटन - अन्त्र में फसे शल्य निर्हरण - पिपीलिका से सीवन. ऐसे को तैलद्रोणी सर्पिद्रोणी में बिठाये और दूग्ध आहार

8) जलोदर चि.: i) नाभी के नीचे रोमराजी से 4 अंगुल दूर ब्रीहीमुखशस्त्र से अंगुष्ठोदर प्रमाण में वेधन, ii) व्दिव्दार पक्षनाड़ी प्रवेश कर दोष निकालें, iii) (3, 4, 5, 6 , 8,10,12,16) रात्री में से कोई एक से जल निकाले, iv) गाढतर वस्त्रबंध, v) 6 मास दूग्ध और जांगलमांसरस सेवन, vi) 3 मास आधा जल मिश्रित दूग्ध + फलाम्ल, vii) 3 मास लघु अन्न.

9) उदररोगी मेंः क्षीर, जांगल रस, आस्थापन, पान, विरेचन, आहार.

10) दकोदर में व्रीहीमुख शस्त्र प्रयोग.

15) मुढगर्भ चिकित्सित

* नातो ऽन्यत् कष्टतममस्ति यथा मूढगर्भ।

(i.e.मूढगर्भ को निकालने के समान दूसरा कठिन कर्म नही)

1) कर्मः 10 i) उत्कषण, ii) अपकर्षण, iii) स्थानपर्वतन, iv) उव्दर्त्तन, v) उत्कर्तन, vi) भेदन, vii) छेदन, viii) पीडन, ix) ऋजुकरण, x) दारण.

(अष्टविध शस्त्रकर्म में से सिर्फ 2 कर्म का समोवश - छेदन,भेदन)

इसमें योनि, यकृत, प्लीहा आन्त्र, गर्भाशय को स्पर्श होता है ।

2) मूढगर्भ गतीः 8 और संग - 3 (त्रय संग) (शिरोऽस जघन)

* अंत के 2 मूढगर्भ असाध्य. दारण - शिशु और माता की मृत्यु.

3) शस्त्रप्रयोगः i) शिरोविदारण में मण्डलाग्र और अंगुलीशस्त्र प्रयोग और शंकुयंत्र से पकडकर उर और कक्षा बाहर निकालें।

ii) मण्डलाग्र शस्त्र से छेदन.

वृध्दिपत्र निषेध- तीक्ष्णाग्र - स्त्री की प्राणहानि संभावित.

मृत गर्भ की उपेक्षा माता को शीघ्र मार डालता है ।

4) मूढगर्भ निकालने पश्चात्: सुतिका पथ्य पालन 4 मास

बलातैलः

i) सुतिका (जिसका मूढगर्भ निकाला गया हो) राजा,सुकुमार,धनि के लिए.

ii) योनिसन्तर्पण, अभ्यग, पान, बस्ति, भोजने,

iii) 6मास तक प्रयोग से आन्त्र वृध्दि नष्ट * 100 वर्ष आयु वृध्दी,

iv) अन्त्र दुगुना खाता है ।

उपरोक्त बलातैल वत् निम्न का भी प्रयोगः

गुडूची, अतिबला, सूर्यावर्त, कटसरैया, वीरतरु, शतावर, गोखरु, मुलेठी.

5) सुश्रुत - मंत्र प्रयोग चावन मंत्र.

[वाग्भट:i) विष्कंभ चिकित्सा सुश्रुत समान, ii) गर्भगात्र विषम होनेपर आंच्छन, उत्पीडन, सम्पीडन,विक्षेप, उत्क्षेप, क्रियाओं व्दारा सीधाकर निकालें।]

16) विद्रधि चिकित्सित

1) विद्रधयःषड्: असाध्य- सन्निपातजः

2) चिकित्साः वात विद्रधि में पाचन करायें। आमेषु-शोफवत क्रिया

* पित्त विद्रधी में: जलोका.

* कफ विद्रधी में: इष्टका,सिकता, लोष्ट,गोशकृत, तृष, पांशु, उष्ण मूत्र से सतत स्वेदन. आरग्वधकषाय से धावन.

* रक्त और आगन्तुज विद्रधी में पित्त विद्रधी वत चिकित्सा

3) अपक्व विद्रधि में: i) वरुणादिगण, उषकादि का प्रक्षेप

ii) उपरोक्त (वरुणादि,उषकादि) में सस्नेह बस्ति का प्रयोग और दोषानुसारः पान, आलेप, भोजनः में मधुर शिग्रु उपयोग करे ।

iii) यथोदिष्टा **सिरा विध्येय** कफजें विद्रधौ भिषक्।

परंतु कुछ आचार्य रक्त, पित्त में बाहु (कर्पूर में) सिरावेध,

iv) शिलाजतु प्रयोग.

4) विद्रधि में पाक न हो. i) मज्जागत विद्रधीः प्रत्याख्याय, रक्तावसेचन.

ii) पक्वे अस्थि तु भेदयेत् Then रोपण तैल

5) करंजादिघृतः विद्रधी और 4 व्रणः

i) सद्यो व्रण, ii) दुष्ट व्रण, iii) नाडी व्रण, iv) क्षाराग्निकृत व्रण

[वाग्भट: i) विद्रधि सर्व एव आमं शोफवत समोपचारेत।

प्रततं हरेत रक्तं पक्वेषु हरणं क्रिया।। (अ.हृ.चि./13)]

17) विसर्पनाडीस्तनरोग चिकित्सित

1) साध्यः वात,पित्त,कफ:कृच्छ्रसाध्य - मर्मस्थ, असाध्य - सन्निपातज, क्षतज

2) गौर्यादिघृतः in पित्त विसर्प.

i) परिषेचन पैत्तीनिहन्यात तु विसर्प नाडोः।

ii) पान से विस्फोट, दुष्टव्रण, शीर्षरोग, पाकं (मुखरोग)

iii) बालक में ग्रह, शोष.

3) विसर्प में सर्वक्रिया में वरुणादि गण

4) विसर्प में श्रेष्ठ चिकित्सा - शोधन, रक्तमोक्षण

5) सभी पक्व विसर्प में - व्रणकर्म.

[Extra वा.: आदौ एव विसर्पेषु हितम लंघन रुक्षणम्।

रक्तावसेकौ वमनम विरेकः स्नेहनं न तु।। (अ. हृ.चि.18)]

नाड़ीव्रण

असाध्य - सन्निपातज,

यत्नसाध्य - वात,पित्त,कफ शल्यज (प्रयत्नसाध्यः)

* बृहत पंचमूल क्वाथ

* आगन्तुज नाडीव्रण में:(मधुसर्पि + तिले) रोपणार्थ.

* क्षारसुत्र - नाडीव्रण (भगंदर)

यववक्त्रा सूचि से अर्बुद के चारों ओर छेद.

स्तनविद्रधि

1) धात्री को घृत पीलाकर वमन करायें। वमन (3/4/6) दिन

भारंगी, वचा, अतिविषा, सुरदारू, पाठा, मुस्ता, मधुरसा,कटुरोहिणी कषाय शोधन के लिए.

2) उपनाह (पुल्टिस) निषेध स्तनरोग में

3) स्तनविद्रधी में पाक होनेपरः

i) शस्त्रकर्म By preventing injury to

a) दुग्धवाही नाडो, b) कृष्ण भाग, c) चूचुक

ii) धात्री स्तन से बार - बार दुग्ध निकालना (दोहन).

18) ग्रंथपच्यर्बुदगंड चिकित्सित

ग्रंथीः * आमग्रंथि में शोफवत क्रिया

* नित्यं बल का रक्षण करें * आमग्रंथि में स्नेहपानः

व्दय, (घृत, तैल) त्रिवृत,(2 + वसा) चतुः(3 + मज्जा)

i) वात ग्रंथिः प्रक्षालन - बिल्व, अर्क, नरेन्द्रंतोयें से, पक्व का विदारण.

ii) पित्त ग्रंथिः जलौका.

iii) कफ ग्रंथिः स्वेदन, विम्लापन, (अंगुष्ठलोहो पलवेणुदण्डैः)

iv) अमर्मजात, उपरोक्त विधि से भी अशांत में: दहन,सद्यः क्षतवत चि.

V) मेदोज ग्रंथिःस्वेदन, शस्त्र, दहन, तिल कल्क + गोमूत्र लेप

[Extra वाग्भट: i) कफ ग्रंथि चि. - वात ग्रंथि वत.

ii) मांसज, मेदज, व्रणज में पाटन, रोपण.

iii) सिराज ग्रंथि - में सहचर तैल, उपनाह, बस्तिकर्म, सिरावध.]

अपची

1) चिकित्साः शाखोटक स्वरस सिध्द तैल नस्य,विरेचन.

2) 3 विशेष चिकित्सा अग्नि कर्म - (सु.) अपचीः

i) पार्ष्णि से 12 अंगुल इन्द्रबस्ति मर्म बचाकर चीरा लगायें,

मत्स्याण्ड सदृश मेद का जाल निकालकर आग्निकर्म,

ii) गुल्फ के कर्ण से अष्टभाग (2. 5 अंगुल) इंद्रबस्ति छोडकर, कण्डरा में नासिका समान ऋजु (सिधा) चीरा. अन्यआचार्य 2 अंगुल छोड के.

iii) मणिबन्ध के उपर 1 अंगुल पर 3 रेखा बनाये।

अर्बुद

1) बड़े अर्बुदः दधि मस्तु युक्त कल्क लेप

कृमि उत्पत्ति - कृमि अर्बुद खाएँगे.

2) अर्बुद कम आकार होने पर दहन, समूल से उसका च्छेदन.

गाढ बन्ध और यवभोजन.

[Extra वाग्भट: i) अर्बुद चिकित्सा - ग्रंथि सदृश,

ii) अपची चि.में कांचनार प्रयोग, **करंज तैल,** लांगली तैल.]

19) वृध्दयुपदंश श्लीपद चिकित्सित

1) अपथ्यः (Except for अन्त्रवृध्दि):
अश्वदि, व्यायाम, मैथुन, वेगनिग्रह, अत्यासन, चक्रमण, उपवास, गुरूणि.
2) चिकित्साःi) वात वृध्दिः विदग्ध वृध्दो में पाचन कर सेवनी बचाकर भिन्द्यः
ii) पित्त : पित्त ग्रंथि वत (अपक्व में): जलौका से रक्तनिर्हरण.
iii) कफ : कफ ग्रंथि वत.
iv) मेदोजःवृध्दिपत्र से दारण (सेवनी बचाकर) कासीससैन्धव गोफणा / स्थगिका बंध
v) मुत्रजः वेधन व्रीहिमुखशस्त्र, (सेवनी के पाश्व, नीचे) विस्त्रावण व्दिमुख नाड़ी सेः स्थगिका बन्ध.
3) वृध्दि अन्त्र के कारणः शस्त्र प्रयोग नहीं करना चाहिए.
चिकित्साः त्वचं भित्वाऽगुंष्ठमध्ये दहेच्च अंगविपर्ययात्।
अन्त्रवृध्दि 2 प्रकारः i) प्राप्त फलकोष (त्याग दें)
ii) अप्राप्त फलकोष (वात वृध्दि सदृश)
4) वंक्षणस्थ वृध्दि में अर्धचंद्राकर शलाका से दहन.
5) वात, कफ जन्य वृध्दि में; स्नायुच्छेदो ऽधिकः
6) अन्त्रवृध्दि रोकने हेतुः शंखप्रदेश के ऊपर कर्ण के अन्त में सेवनी बचाकर विरूध्द दिशा में सिरावेधन करें.
[वा.: आन्त्रवृध्दि सुकुमार रसायन (सर्वऋतु में सेवन करें)]

उपदंश

1) सामान्य चिकित्साः मद्रमध्य में सिरावेध, जलौकः
2) उपदंश में पाक न होने देः Otherwise
सिरास्नायुत्वक्मांस विदग्ध से क्षीयते ध्वजः
3) गुन्द्रा भस्म - उपदंश.,
4) रक्त, पित्त उपदंश में प्रत्याख्याय चि.
5) सन्निपात उपदंश → दुष्टव्रण वत् चि.

श्लीपद

1) सिरावेधः i) वात श्लीपद में गुल्फ संधि के उपर 4 अंगुल (अग्निकर्म की अपेक्षा दाहकर्म श्रेष्ठ)
ii) पित्त श्लीपद गुल्फ संधि के नीचे 4 अंगुल
iii) कफ श्लीपद क्षीप्र के उपर 4 अंगुल (अंगुठे की प्रसीध्द सिरा का वेधन)
2) सुश्रुत - श्लीपद में पानीयक्षार प्रयोग.

20) क्षुद्ररोग चिकित्सित

कुनख चिकित्साः उपाचरेद् अनुशयीं श्लेष्मविद्रधिवद् भिषक्।
* उत्कृत्य दग्ध्वा स्नेहेन जयेत् कदर संज्ञकम्।
* इन्द्रलुप्ते सिरां मुर्ध्नि स्निग्धस्विन्नस्य मोक्षयेत।
* अंरुषिका हृते रक्त सेचयेन् निम्बवारिणा।
* सिरा दारुणके विद्ध्वा स्निग्धास्विन्नस्वमूर्धनि।
* न्यच्छे व्यंगे सिरामोक्षे नीलिकायां च शस्यते।
(शेष चिकित्सा सु.नि. 13 नोटस में देखे)

21) शुकदोष चिकित्सित

1) जलौका Use in अष्ठीलिका, अलजी, सम्मूढपिडका पुष्परिका.
2) शीत क्रियाः पुष्करिका
* संलिख्य सर्षपी * बलातैलेन कोष्णेन मृदितं परिषेचयेत्।
* क्रियां पुष्करिकायां तु शीतां सर्वा प्रयोजयेत।
3) असाध्य शुकदोषः
4 - अर्बुद, विद्रधि, मांसपाक, तिलकालक.
* त्वकपाक में विसर्पवत चि.
* शोणितऽर्बुद में रक्तविद्रधि वत चि.
[वाग्भटः i) कुम्कुमादि लेप, (क्षुद्ररोग) ii) भृंगराज नस्य,
iii) मंजिष्ठा स्नेह प्रयोग निलिका प्रयोग में, iv) कोठ में कुष्ठ नाशक चि.
v) उत्कोठ में कफ पित्त , vi) प्रसुप्ती क्षुद्ररोग चि. वात कुष्ठ सदृश.]

22) मुखरोग चिकित्सित

(मुखरोग चिकित्सा सु.नि. 13 के नोटस में देखे)
1) उत्तर/उपर के दंत निकालने पश्चात रक्तस्त्राव से उपद्रव स्वरुप होता है - काण.
2) दंतहर्ष मेंः चतुर्विध स्नेह (घृत, तैल, वसा, मज्जा)
(त्रैवृत्त घृत महावातव्याधी में)
3) दंतनाडो मेंः i) नाडीव्रण वत चि., ii) दंत निर्हरण,
iii) क्षार से दहन, iv) उपर के दांत न निकाले.
4) हनुमोक्षे कुर्याद अर्द्धितवत्.
5) दंतरोग में वर्ज्यः i) आम्लफल, ii) शीताम्बु, iii) रुक्षान्न, iv) दन्तधावन
6) गलशुण्डिका मेंः पंचांगिवर्ति - i) अतिछेदन सेः रक्तस्त्राव,मृत्यु,
ii) हिनछेदन सेः शोफ,लाला,निद्रा, भ्रम,तमः
* गलशुण्डिका वत चिकित्सा in तुण्डिकेरी, अध्रुष, कूर्म, संघात, तालुपुप्पुट.
7) साध्यानां रोहिणीनां तु हितं शोणितमोक्षणम्।
छर्दनं धूमपानं च गण्डूषो नस्यकर्म च।।
8) भेदयेत् ग्रलविद्रधिम.
9) कुल असाध्य मुखरोग - 19
ओष्ठप्रकोपे वर्ज्याःस्यःमांसरक्तत्रिदोषजाः।
दन्तमूलेषु त्रिदोषजनाड़ी सौषिर, (Considered महासौषिर,)
दन्तेषु श्याव दालन भंजनाः
जिव्हागतेष्व अलासस्तु तालवोष्व अर्बुद तथा.
स्वरघ्नो वलयो वृन्दो विदार्यलस एव च।
गलौघो मांसतनानश्च शतघ्नी रोहिणी च या।।
डल्हण - ओष्ठजास्त्रयः 3, दन्तमूलेशु दूयं : 2, दन्तभवेषु त्रयः 3,
जिव्हायामेकः 1, तालुन्यघ्येकः 1, स्वरघ्नादयो नव गलेः 9.

23) शोफ चिकित्सित

षड्विधेऽवयसमुत्थः शोफोंऽभिहितो.
सर्वसरस्तु पंचविधाः वात,पित्त,कफ,सन्निपातज, विष निमित्तः।

1) हेतुः	2) वर्ज्यः
हरितक शाक,	अम्ललवणदधिगुडवसा,
क्षीण में अतिऽम्ल सेवन,	पयःतैल घृत पिष्टमयगुरु
3) लक्षणेः i) वात शोथ लक्षण	ii) पित्त शोथ लक्षण
मृदुःअनवस्थित	शिघ्रानुसारी

iii) विषज शोथः a) हेतु गरोपयोगाद्, (सविषमूत्रपुरीषशुक्र), दुष्टतोयसेवनात् (तृणकाष्ठ स्पर्श), प्रकृपितोदकावगाहनात.
लक्षणः मृद क्षिप्रोत्थान (शीघ्र उत्पन्न) ऽवलम्बी चलोऽचलो (चल अथवा अचल) दाहपाकरागप्रायश्च.
4) i) आमशय में स्थित दोष उर्ध्व भाग में शोथ उत्पन्न
ii) पक्वाशय में स्थित दोष मध्य भाग में शोथ उत्पन्न
iii) वर्चःस्थानमें स्थित दोष अधः भाग में शोथ उत्पन्न
iv) सर्वसर में स्थित दोष सर्वांग भाग में शोथ उत्पन्न
अर्धांग & नीचे से उपर परिसर्पति अरिष्टभूत (घातक है)
5) शोथ उपद्रवः चरक - 7, सुश्रुत - 9 (हिक्का, कास)
श्वास पिपासा दौर्बल्यं ज्वरश्छर्दिःअरोचकः।
हिक्कातीसारकासाश्च शूनं संक्षेपयन्ति हि।।
6) विशेष चिकित्सा
i) वात शोथ में चि.: त्रैवृतम्, एरण्डतैल (1/2 or 1) मास सेवन.

ii) पित्त शोथ में चि.: न्यग्रोधादि सिध्द सर्पि,

iii) कफ शोथ में चि.: आरग्वधादि सिध्द सर्पि

iv) सन्निपात शोथ चि.: स्नुहीक्षीरपत्रं व्दादशभिःअम्लपात्रैः

(दन्तिद्रवन्ती प्रतीवाप सर्पिः).

7) सामान्य चि.: i) तिल्वक घृत, ii) मूत्रवर्तिक्रिया,

iii) नवायस + मधु Daily, iv) गुडहरितकी, v) श्रृंगबेर.

* यथादोषं च वमन विरेचनास्थापनानि तीक्ष्णान्यस्त्रमुपसेवेत् स्नेह स्वेदोपनाहांश्च सिराभिश्चाभीक्ष्णं शोणितमवसेचये दन्यत्रोपद्रवशोफादिती.

24) अनागतआबाध प्रतिषेध चिकित्सित

(सम्भावित दुखः प्रतिरोध) (स्वस्थवृत्त वर्णन संदर्भ)

1) दन्तपवनः i) 12 अंगुलः कनिष्टिकापरीणाह, कषाय में खादिर, मधुर में मधुक, तिक्त में निम्ब, कटु में करन्ज उपयोगी.

ii) तेजोवती चूर्ण दंतविशोधन,

iii) निषेध - उर्ध्वजत्रुगत रोग + (अर्दित, कर्णशूली)

2) जिव्हानिर्लेखनः रौप्य, सुवर्ण, वार्क्षः 10 अंगुल,

3) गण्डुषः दन्तदाढर्यकरं रुच्यं स्नेहगण्डुषधारणम्।

4) मुखप्रक्षालनः क्षीरवृक्षकषाय, भिल्लादक (लोध्रोदक)

नेत्रे स्वस्थः शीतोदकेन.

5) अंजनः i) श्रेष्ठ अंजन - सिन्धुसम्भवम,

ii) निषेधः श्रान्त, छर्दन वाहनैः रात्रौ जागरण, ज्वर.

6) ताम्बुल सेवनः i) मुखवैशध, सौगन्ध, कान्ति, सौष्ठावकर गुण

ii) हनु, हृद्य, गलामयविनाशन,

iii) Contraindication:रक्तपित्त, क्षतक्षीण, तृष्णा,मूर्च्छा,रुक्ष,दुर्बल, मुखशोष.

7) शिरोऽभंगः चक्रतैल.

8) केशप्रसाधनीः केशप्रसाधनी केश्या रजो जन्तुमलापहा।

9) कर्ण पूरणः हनुमन्याशिरः कर्णशूलह्र **कर्णपूरणम्।**

10) अभ्यंगोः मार्दवकरःकफवात निरोधनः।

धातूनां पुष्टिजननो मृजावर्णबलप्रदः।।

11) सेकः क्षताग्निदग्धाभिहत विघृष्टानां रुजापहः।

* स्नेहन वर्ज्यः तरुणज्वर, अजीर्णःवान्त, विरित्क, निरुह. If done अग्निमान्दय उत्पत्ती.

12) व्यायामः i) शरीरायासजननं कर्म व्यायामसंज्ञितम्।

ii) सुदर्शन, विरुध्द भोजन भी पचता है, iii) अर्धबल होने तक.

13) a) उद्वर्तनं *वातहरं* कफमेदोविलापनम्।

स्थिरीकरणं अंगानां त्वक्प्रसादकरं परम्।।

b) उत्सादनाद् भवेत् स्त्रीणां विशेषात कान्तिम् (सस्नेहाषध)

c) उद्घर्षणं तु विज्ञेयं कण्डूकोठानिलापहम्। (अस्नेह)

14) उद्घर्षणं अत्स्नेहौषध चूर्णादिभिर्घर्षणम्।.....(डल्हण)

i)फेनकः स्थैर्य लाघवे (समुद्रफेन से कीया गया उद्घर्षणं जंघा में स्थिरता और लघुता लाता है।), ii) तेजनं त्वग्गातस्याग्नेः

(त्वचा की अग्नि i.e.भ्राजक पित्त को दीप्त करता है)

15) मुखालेपः अव्यंगपिडकं **16)** आहार-

17) पादप्रसाधन - चक्षुप्रसादन **18)** पादाभ्यंग - चक्षुष्य

19) पादत्रधारण - वृष्यं **20)** दण्डधारण

21) शय्यासन **22)** संवाहन

23) निद्राः पुष्टिवर्णबलोत्साहम् अग्निदीप्तिमतन्द्रिताम।

करोति **धातुसाम्यं** च निद्रा काले निषेविता।।

24) अहितकर द्रव्य छोडने का क्रमः

i) सेवन क्रमशः (1/4)th के त्याग तथा स्वीकार

ii) किसी वस्तु का पुर्णरुप से परित्याग न करें

25) दहिः खाने के नियम चरकवत - हेतु कुष्ठाविसर्पादीन् गदान्

26) सीध्वरिष्टः हेमन्त व वंसत में श्रृतशीतं पयो ग्रीष्मे, प्रावृट्काले रसं पिबेत्, यूषं वर्षति, तस्यन्ते प्रपिबेच्छीतलं जलम.

27) स्नेहः सैन्धवचूर्णेन पिप्पलीभिश्च पिबेद अग्निवृध्द र्थम।

न च वेगान् विधारयेत, अग्निदीप्तीकरं नृणां रोगाणां शमनं

प्रावृट शरद वसन्तेषु सम्यक् स्नेहादिम् आचेरत।

(i.e. स्नेहादि क्रिया to be done in प्रावृट, शरद, वसन्त)

28) स्त्रीसंभोगः

सुश्रुतः i) (3 - 3) दिन पर - सभी ऋतु में, ii) (15 - 15) दिन - ग्रीष्म

मैथुन	सु.	वा.
i) (3 - 3) दिन पर	सर्वऋतु	वसन्त, शरद
ii) (15 - 15) दिन पर	ग्रीष्म	ग्रीष्म, वर्षा
iii) इच्छानुसार	- -	हेमंत, शिशिर

29) अतिप्रसंग सेः अतिप्रतिसंगोद् भवति शोषः शुक्रक्षयावहः।

व्याधितस्य रुजा प्लीहि मृत्युमूर्च्छाच जायते।।

मूत्र के उपस्थित वेग (उच्चरिते मूत्रिते),रोकने सेः शुक्राश्मरी.

25) मिश्रक चिकित्सित

मिश्रकाध्याय व्रणशोफ हर द्रव्य (सु.सू.36)

मिश्रकचिकित्सित कर्णपाली के रोग की चिकित्सा (सु. चि. 25)

1) कर्णपाली रोग - 5 > i) परिपोट, सुकुमार मेंः (वात),

ii) उत्पात - गुर्वाभरण (गुरुआभुषण से):

iii) उन्मन्थ - बलाद् वर्धयतः (वात कफ), iv) दुखः वर्धन - त्वक्स्थ,

v) परिलेही - सर्षपाभा, कफ रक्त विसर्पन्नित.

2) सामान्य चि.: अभ्यंग, परीषेक, प्रदेह, रक्तमोक्षण

* निलीदलादि तैल पलित * सैरेयकादि तैल केश काला करने हेतु

* लाक्षादि घृत * अंगराग

26) क्षीणबलीयं वाजीकरण चिकित्सित

1) स्थविर, क्लीबानाम् अल्परेतस.

वाजीकरणः सेवमानो यदौचित्याद्वाजीवार्त्यवेगवान्।

नारीस्तर्पयते तेन वाजीकरणमुच्यते।।

{वाजीकरणम् त्रिविधम जनकं, प्रवर्तकं, जनकप्रवर्तकं

जनकं - मांसघृतादि, प्रवर्तक - उच्चटाचुर्णादि, जनकप्रवर्तकं - गव्यघृत गोधूम माष काकण्डफल...(डल्हण)}

2) क्लीबताः मान्सिक, अत्याधिमैथुन, सहज, शुक्रक्षय, मेढ्ररोग (मर्मच्छेदते), शुक्रवेग धारण.

3) वाजीकरण योगः

i) वाजीकरण शष्कुली (पूरी), ii) वाजीकरण बस्ताण्ड, iii) वाजीकरण पूपलिका, iv) वाजीकरण विदारिकन्द योग, v) वाजीकरण आमलक,

vi) वाजीकरण महिषादि शुक्रयोग, (माहिष + बैल + बकरा) का शुक्रपान,

vii) वाजीकरण अश्वत्थ योग, viii) वाजीकरण माष,

ix) वाजीकरण पादाभ्यंग योग, x) वाजीकरण स्वयंगुप्तादि योग.

4) वाजीकरण क्षीर योगः i) गृष्टी - (प्रथम प्रसुता गौ.)

ii) वृध्दवत्स - (बडे बछड़ेवाली गौ.)

iii) माषपर्णमृतां गवाम् - (उड़द के पत्ते खानेवाली) सभी का क्षीर.

* वाजीकरण में काकोल्यादि गण श्रेष्ठ.

27) सर्वोपघातशमनीय चिकित्सित

1) युवा/मध्यावस्था में शरीर की शुध्दि न कि गई हो ऐसे मनुष्य में रसायन सेवन अनुचित।

पुर्वे वयसि मध्ये वा स्निग्धशुध्दतनोः सदा।।

रसायन भेदः 3 i) काम्य - बल, बुध्दि बढाने वाला.
ii) नैमित्तिकः व्याधि विषयक, iii) अजस्त्रिक - दुग्ध + घृत निरंतर सेवन.
[डल्हणः वयः स्थैर्यकराणामयनं लाभोपायो रसायनम्
वध्दकं स्थापकप्राप्तमापकं वेत्यर्थ।।]
3) वयःस्थापक रसायनः (According to दोषप्रकृती)
i) शीतोदकं - रक्त प्रधान दोष में ii) पयः - वात प्रधान दोष में
iii) क्षौद्र - कफ प्रधान दोष में iv) सर्पि - पित्त प्रधान दोष में
1 - 1, 2 - 2, 3-3 अथवा समस्त चारों एक साथ पिने से आयु स्थापित होती है।
3) विडंग तण्डुल योगः i) इसके 5 प्रयोग वर्णन,
ii) (1 - 1) मास में (100 - 100) वर्ष आयु वृध्दि.
4) द्वितीय विडंग-तण्डुलः प्रथम मास-कृमि (शरीर से बाहर निकलती है)
2nd मास - पिपीलीका (अणुतैल अभ्यंग), 3rd मास - यूका,
4th मास - दंतनखरोम का पतन, 5th - मास प्रशस्तगुण लक्षण.
अजबलो ऽश्वजः पुनर्युवा, अणुतैलमभ्यंगर्धि (अणुतैल अभ्यंग)
अजकर्णकषायमुत्सादनार्थे (शाल उत्सादनार्थ), उशीरं कूपोदकं स्नानार्थ
(उशीर स्नानार्थ) (800वर्षे).
5) काश्मर्य रसायनः (गम्भारी) As above for शोणितपित्त
6) बलामूल रसायनः i) 12 रात्र सेवन से 12 वर्ष वय स्थिर होता है।
ii) 100 days से 100 yrs.वय स्थिर होता है।
iii) अतिबला -उदक सह, नागबला - मधु, विदारी - क्षीर, शतावरी - क्षीर
7) वाराहीकन्द रसायन योगः 100 yrs की वय में अक्षयता
(शुक्रक्षयन होना) प्राप्त करता है।
8) विजयसारादि रसायनः चक्षुः कामः
(नेत्र में ज्योति तथा बल की कामना वाले में उपयोग करें) 100 yrs.आयु.
9) शणफल रसायनः दुग्धासह - वयःस्थापक.

28) मेधायुष्यकामीय चिकित्सित

1)) श्वेतावल्गुज रसायनः कुल 3 रसायनः a) बाकुची रसायन
i) सूर्योदय के पूर्व पिण्ड (पल) मात्रा में सेवन + उष्णादक
ii) 6 मास सेवन से 100 yrs वय
b) iii) कृष्ण बाकुची अर्धपल मात्रा + गोमूत्र, iv) 1 मास सेवन से 100 yrs., c) v) (चित्रक हरिद्रा रसायन 2 पल पिण्ड मात्रा में)
2) मण्डुकपर्णीः i) मात्रा - बिल्व (1पल/पिण्ड),ii)12 रात्री - 100yrsवय
3) ब्राह्मीस्वरस रसायनः प्रथम - i) 7 रात्र - ब्रह्मवर्चसि, मधावि
द्वितीय - ii) 7 रात्र - ग्रन्थम इप्सित उत्पादयति.
(अभिलषिक ग्रंथ की रचना और विस्मृत रचना स्मरण होती है)
तृतीय - iii) 7- रात्र - व्दिरुच्चारित शतमप्यवधारयति
(2 बार कही गई 100 वाणी भी स्मरण) 500 वर्ष आयु
4) ब्राह्मीघृत रसायनः 300 yrs आयु वृध्दी, सेवन से उपर, नीचे और मध्य शरीर से कृमि निकलते है।
5) हेमवती वचा रसायन योगः i) मात्रा - आमलक + पयस्.
प्रथम - ii) 12 रात्र उपयोग से - श्रोत्रं विव्रियेते. (श्रवण शक्ति↑)
द्वितिय - iii) 12 रात्र उपयोग से - स्मृतिमान्
तृतीय - iv) 12 रात्र उपयोग से - अभ्यासात् शतमादत्त.
(श्रवण की हुई वाणी को धारण) चतुर्थ - v) 12 रात्र उपयोग से - सर्व निरति किल्विषं (सभी पापो से मुक्त) 100 yrs वय.,
6) शतपाक वचा घृतः 500 yrs वय.
7) बिल्व रसायनः (आयुवर्धक रसायन): 10, 000 yrs,
आयु प्राप्त by 1 yrs सेवन.,
8) बिस रसायनः 1 lakh yrs.
9) मध्वादि योगः i) मधु + आमलक + सुवर्ण भस्म चाटन.
ii) अरिष्ट (लक्षण युक्त) और प्राणनाश संशय से भी मुक्त.
10) गायत्री मंत्रः योग निर्माण अनुक्त मंत्र में त्रिपदा गायत्री मंत्र जप करे
11) बुध्दिमेधावर्ध्दक गणः 4 i) सतत अध्ययन, ii) वादः,
iii) परतन्त्रावलोकन, iv) तव्दिद्याचार्यसेवा
(विद्यापठन और उनके आचार्यो की सेवा)
12) आयुवर्धकः 4 i) जीर्ण भोजन, ii) वेग अविधारण,
iii) ब्रह्मचर्य, अहिंसा, iv) साहस वर्ज.

29) स्वभावव्याधी चिकित्सित

('सोम' नामक अमृत वर्णन - ब्रह्मा)
1) ब्रह्म ने साम नामक औषधः i) जरामृत्युविनाशन.
सोम प्रकार - 24 (स्थान,नाम,आकृति,वीर्य) भेद से अंशुमन,गायत्र,त्रैष्टुभ.
2) सोम सेवन विधिः (कुटि प्रावेशिक)
i) त्रिगर्भा बाला गृह, ii) अंशुमन्तम् (सोमकन्द), सौवर्णे (राजते वा),
iii) मात्रा - 1 अंजलि, 1 मास तक सेवन करें।
3) सोम सेवन पश्चात चर्याः 1stday सन्ध्यामें भोजन, बाद में शांतिपाठ
2ndday कृमिमिश्रित छर्दि, 3rd day कृमि अतिसार,
4th day शोथ उत्पत्ति, 7th day शरीर मांसरहितः त्वचा, अस्थि युक्त
9th day to 12th day अभ्यंग परिषेक.
13th day to 16th day सोमवल्क कषाय परिषेक.
17th day to 18th day नविन दंत उत्पत्ति, 28th day यवागु सेवन.
4) सोम सेवन फलः i) 10,000 yrs तक.
नाग्निर्न तोयं न विषं न शस्त्रं नास्त्रमेव च।
(अग्नि, जल, विष, शस्त्र, अस्त्र कुछ भी सोम सेवन करने वाले मनुष्य को नष्ट करने मे असमर्थ) (सोम - 15 पत्र)
5) सोम वर्णनः i) चन्द्रमा, कनकाभास जल.
ii) गरुडाहृत, श्वेतास की केचुलीवत, पाण्डुर वर्ण, iii) मण्डलाकार,
iv) सभी सोमः 15 पत्ते, v) क्षीर, कन्द लतावन्त, पत्र नाना प्रकार
6) प्राप्तीस्थानः
हिमवत, अर्बुद, सह्ये, महेन्द्र, मलये श्रीपवर्त, देवगिरी, गिरी, देवसहे.
हठवत प्लवते चंद्रमाः सोमस्तमः। (श्रेष्ठ सोम (चंद्रमा) हठ वत तैरता है।)

30) निवृत्तसन्तापीय चिकित्सित

1) रसायन सेवन के अयोग्य पुरुषः
(सप्त पुरुषा रसायनं नोपयुज्जीरन्)
i) अनात्मवान, ii) दरिद्रः, iii) प्रमादी, iv) व्यसनी, v) पापकृद,
vi) भेषजापमानी, vii) अलसी.
2) सोम सदृश (18) औषध वर्णनः (दिव्य औषधी) अजगरी,श्वेतकापोती,
कृष्णकापोती, गोनसी, वाराही,कन्या..चेत्याष्टादश
सोमसमवीर्या महौषधयो.
3) रसायन औषधः 2000 yrs वय
(* सोमादि औषधि Are available at सोमगिरी.)

31) स्नेहोपयौगिक चिकित्सित

Topics: स्नेह,मान, कषायपाक विधि, स्नेहपाक विधि वर्णन.
1) स्नेहः i) 2 योनि, ii) 4 विकल्प भेद,
iii) जंगम मे गव्यघृत प्रधान, स्थावर में तिल तैल.
2) स्थावर स्नेहों के गुण और उपयोगः
a) महाव्याधिषुः तुवरक कपित्थ कम्पिल्लक भल्लातक पटोलस्नेहाद्य.
b) प्रमेहेषुः कुसुम्भ सर्षप अतसी पिचुमर्द अतिमुक्तक भाण्डी कटुतुम्बी कटभी.
c) पित्तसंसृष्ट वायुः ताल नारिकेल पनस मोच प्रियाल बिल्व मधूक श्लेष्मातक आम्रातक फलस्नेहा.
d) कृष्णी करणः बिभीतक, भल्लातक, पिण्डीतक स्नेहा

पाण्डुकरणः श्रवण, कंगुक, टुण्टुक स्नेहाः

3) मान परिभाषाः (कुडव).....संदर्भ.

शुरूवात चरक - ध्वंसि, सुश्रुत - धान्यमाष, शांरगधर - परमाणु.

मध्यमनिष्पावा एकोनविंशतिधरणं. (19 निष्पाव - 1 धरण)

तान्यर्धतृतीयानि कर्षः (2 1/2 धरण - 1 कर्ष) तुलाः पुनः पलाशतं

4) कषायपाक विधी (8/16) Times जल में रखकर क्वाथ करे बाद में अग्नि पर रखकर (1/4) शेष रखे.

5) For स्नेहपाक - कल्क द्रव्य, उसके चौगुना स्नेह,स्नेह के चौगुना द्रव. स्नेहपाक विधी - मृदु, मध्य, खर.

6) स्नेहसिध्दि लं.: i) घृतपाक - फेनस्योपशम, ii) तैलपाक - फेनोदगम

7) स्नेहपान कालः उदगिरि शिखर संस्थित सवितार

(i.e. (प्रातःकाल)तपे हुए सुवर्णसमूह के समान पीले और लाल वर्ण के सूर्य के आगमन पर)

वात दोष में -सर्पि+लवण, पित्त दोष में - सर्पि, कफ दोष में -सर्पि +व्योष क्षार. दोष के संसर्ग विशेष में 63 रस योग.

8) अच्छ स्नेहपानः i) जो क्लेशसहः है, ii) नात्युष्णशीतकाले. वात,पित्त में रात्रि में स्नेहपान. iii) स्नेहसात्म्य.

9) स्नेह मात्राः सुश्रुत - 5

पाचन काल	गुण
i) 3 hrs. चतुर्थभाग (1/4 दिन)	अग्निदीप्त, अल्पदोष में हितकर
ii) 6 hrs. अर्धदिवस	वृष्य,बृंहणी, मध्यदोष मैं
iii) 9 hrs. चतुर्भागावशेष	बहुदोष.
iv) 12 hrs. परिणतेऽहानि	ग्लानी, मूर्च्छा, मद न उत्पन्न करें, पुजिता
v) 24 hrs. अहोरात्र	कुष्ठविषोन्माद ग्रहापस्मार नाशक

स्नेहसात्म्य in 7 days, प्रसवपश्चात 10 days बाद यथाविधी स्नेहपान, स्नेहपान फल - 100 yrs आयु.

32) स्वेदावचारणीय चिकित्सित

1) चतुर्विध स्वेदः (वाग्भट 4, हरित 7, काश्यप 8)

i) ताप - जेन्ताक, कर्षु, कूटी - (चतुर्द्वारा), कूप, होलाक, — कफ

ii) उष्म - संकर, प्रस्तर, अश्मघ्न, नाडी, भू, कुम्भ. — कफ

iii) उपनाह - — वात

iv) द्रव - परिषेक, अवगाहन. — पित्त संसृष्ट

a) **तापस्वेदः** पाणिकांस्य कन्दुककपाल बालुका वस्त्रैः खदिरांगा

b) **उष्मस्वेदः** कपालपाषाणेष्टकालोहपिण्डानग्नि

नाडीवर्णनः i) 1/2 व्याम, त्रिवक्रा (3 जगह से मुडी हुई)

हस्तिहस्तसमाकृति (हाथी के सुंडवत आकृती) कैलिंजी (कुश द्रव्य से निर्मित)

कर्षु, कूप - Not mentioned by(सु.)

c) **उपनाहः** - कृशरा, पायस, उत्कारिका से स्वेदन

d) **द्रव्यस्वेदः** द्रोण्यां ऽवगाह्य (द्रोणी [tub] में बिठाकर द्रव स्वेद दें)

तापाष्म स्वेदौ विशेषतः श्लष्मघ्नौ, उपनाह स्वेदो वातघ्नः

अन्यतरास्मीन पित्तसंसृष्टे द्रवस्वेद.

2) i) पूर्व स्वेदन - in शोधन योग्य व्यक्ति (शोधनीय)

ii) पश्चात स्वेदन - in सम्यक प्रजाता.

iii) पूर्व पश्चात - in भगन्दर, अर्श, अश्मरी.

3) स्वेद गुण - स्त्रोतसां निर्मलत्वम,

4) मृदु स्वेद - हृन्मुष्कदृष्टि (हृदय, अण्डकोष, नेत्र).

(अवगाह स्वद मात्राः 4 मुहुर्त (भा.प्र.))

33) वमनविरेचनसाध्योपद्रव चिकित्सित

दोषाः क्षीणा बृंहयितव्याः **कुपीताः प्रशमयितव्याः**, वृध्दाः निर्हर्तव्याः, समाः परिपाल्य इति सिध्दान्तः।

1) वमनः सम्यक् वमन पश्चातः धूम

उष्णजल स्नान, यूष और जांगल मांसरस भोजन.

वमन के अयोग्य रोगों में वमन कराने से रोग कष्टसाध्य/असाध्य.

2) स्नेहन, स्वेदन और वमन के विना विरेचनः गौरवम, प्रवाहिका

3) कोष्ठः 3

कोष्ठ	दोष	मात्रा	
i) क्रूर	वात कफ	तीक्ष्ण	दुर्विरेच्य
ii) मृदु	पित्त	मृदु	दुग्धपान से विरेचन.
iii) मध्य	समदोष	मध्य	साधारण द्रव्य से विरेचन.

4) दोष निकलने का क्रमः

i) वमन - प्रसेकौषधकफापित्तानिलाः ii) विरेचन - मूत्रपुरीषपित्तौषधकफा

5) द्रव्यकार्य पंचमहाभूत से (स्वभाव)प्रकृत्यः सर सुक्ष्म तीक्ष्ण उष्मविकाशी गुण से शोधन औषधि कार्य करती हैं (च. गुण + महाभूत माना है)

यात्यधो दोषमादाय पच्यमानं **विरेचनम।**

गुणोत्कर्षाद व्रजत्यूर्ध्वम् अपक्वं **वमनं** पुनः।।

6) श्रेष्ठ औषध - प्रातः काल पीने पर आहार - पाचन काल में पाक को प्राप्त और दोषों को निकालती है।

7) राजा के योग्य विरेचनः दृष्टफलं (जीसका गुण ज्ञात हो) हृद्य, अल्पमात्रं, महागुणं.

34) वमनविरेचनव्यापद चिकित्सित

1) 15 प्रकार के वमन विरेचन व्यापदः (4 अलग वर्णन)

i) सावशेषौधत्वं, ii) जीर्णोषधत्वं, iii) हीनदोषापहृतत्वं, iv) वातशूलं,

i) वमन के अधोगमन में चि.: स्नेहन कर पुनः तीक्ष्णतर औ. से वमन.

ii) विरेचन के उर्ध्वगमन में चिः Opp. of above:. फिर भी विरेचन न होने पर (घृत, राब युक्त अवलेह से विरेचन)

iii) सावशेष औषध आल्पौषधः i) उष्ण जल पान और वमनः

iv) जीर्णोषधत्व (क्रुरकोष्ठ में अल्पौषधं, अल्पगुण)

चिकित्सा - अधिक मात्रा में औषध दें.

v) हीनदोषापहृत (अस्निग्धास्विन्नाल्पगुण):औ. अल्प दोष नष्ट करती है

चिकित्सा - स्नेहस्वेद कराकर दृढतर (तीक्ष्ण) विरेचन दें.

vi) वातशूल (अस्निग्धास्विन्नल्पगुणः में रुक्ष औषध उपयोग से)

चिकित्साः i) अभ्यंग, ii) धान्यस्वेद, iii) मधुयष्टि अनुवासन बस्ति

2) अयोग व्यापदः i) दुर्वान्त में महौषध से निर्हरण.

ii)अप्रवृत्त दोष में 10रात्र बाद स्नेह व स्वेदन कर शोधन करें.

iii) दुर्विरेच्यम में - आस्थापन और पुनः सस्नेह विरेचन.

वगधारण करनेवाले (स्त्री, राजा के समीपवाले, व्यापारी, वेदपाठी) इनमें **वात प्रबल** हो जाता है.

3) विरेचन अतियोग मेंः i) बस्ति

(दृढ न्यग्रोधादि कषाय, इक्षुरस, घृत, शोणित) जीवादान चि.रक्तबस्ति,

ii) शोणितष्ठीवन मैं रक्तपित्त & रक्तातीसार वत् क्रिया,

iii) न्यग्रोधादि क्वाथ For पान, भोजन.

4) जीवशोणित और रक्तपित्त परिक्षाः

i) जीवशोणित का दाग वस्त्र से नही निकलता.

ii) जीवशोणित मिश्रीत अन्न कुत्ता खा लेता है.

5) वमन-विरेचन व्यापद में Difference:

i) विरेचने गुदपरिकर्तिका तद् वमने कण्ठक्षणनं

ii) अधः परिस्त्रवणं स उर्ध्वभागे श्लेष्मप्रसेकः

iii) अधः प्रवाहिका सा तूर्ध्व शुष्कोद्गारा

35) नेत्रबस्तिप्रमाणप्रविभाग चिकित्सित

1) बस्तिः बस्तिः नानाविध द्रव्यसंयोगाद् दोषाणां संशोधन संशमन संग्रहणानि

करोति, क्षीणशुक्र वाजीकरोति, कृशं बृंह्याति, स्थूलं कर्शयति, चक्षुः प्रीणयति।

शरीरोपचयं वर्णं बलमारोग्यमायुषः।
कुरुते परिवृद्धिं च बस्तिः सम्यगुपासितः।।
बस्तिर्वातेच पित्तेच कफे रक्ते च शस्यते।
संसर्गे सान्निपाते च बस्तिरेव हितः सदा।।

2) बस्तिनेत्र प्रमाणः (चरक सिध्दि देखिए)

अन्य आचार्य - नेत्र के अग्रभाग में विलन्नकलाय के 2 छिद्र.

70 yrs↑ में - 16 yrs. सम (i.e. 10 अंगुल) नेत्र प्रमाण

* 25 upto 70 yrs. - 12 प्रसृत. ↑70 yrs. - 8 प्रसृत.

* मृदुर्बस्तिः प्रयोक्तव्यो विशेषाद बाल वृध्दयोः

व्रणनेत्रम् अष्टांगुलं मुद्गवाहिस्त्रोतः

3) बस्तिभेदः व्दिविधे बस्तिः निरुहिकः स्नैहिकश्च

a) आस्थापन/ निरुह - तस्य विकल्प माधुतैलिक, तस्य पर्याय शब्दो

i) यापनोः ii) युक्तरथः iii) सिध्दबस्तिरितिः

निरुहः दोषनिर्हरणाच्छरिरनीरोहणदा निरुहः।

आस्थापनःवयः स्थापनाद् आयुः स्थापनाव्दा आस्थापनम् माधुतैलिकविधानं च निरुहोपक्रमचिकित्सिते वक्ष्या

b) स्नेहबस्ति विकल्पो ऽनुवासनः पादावकृष्टः (1/4 आस्थापन) से

i) अनुवासन्नपि न दुष्यत्यनुदिवसं वा दीयत इत्युनुवासन.

ii) मात्रा बस्तिः ऽर्धार्धमात्रावकृष्टो ऽपरिहार्यो मात्राबस्तिरिति.

* अनुवास बस्ति मात्राः षट्पली तु भेवेच्छ्रेष्ठा, मध्यमा त्रिपली भवेत।
कनीयस्यध्यर्धपली त्रिधा मात्रा ऽनुवासने।। (डल्हण)

(स्नेहबस्ति - 6 पल, अनुवासन - 3 पल, मात्राबस्ति 1 1/2 पल)

आस्थापन योग्य व अनुवासन निषेधः

उदरी,च प्रमेही च कुष्ठी स्थूलश्च मानवः

4) बस्तिदोषः वैद्यनिमित्त - 44

i) पीडनदोष - 4, ii) बस्तिदोष - 5 (पंच बस्तिदोषाः)

iii) नेत्रप्रणिधानदोष - 6 (षट्प्रणिधानदोषः) iv) शैय्यादोष - 7,

v) नेत्रदोष - 11 (एकादश नेत्रदोषा),

vi) द्रव्यदोष - 11 (एकादश द्रव्यदोषा),

आतुर 15, वैद्यातुर - 8, वैद्य - 9 कुल दोष 76

(1 प्रसृत = 2 पल = 8 तोले, 1 प्रस्थ = 16 पल = 64 तोले.)

36) नेत्रबस्तिव्यापद चिकित्सित

9 व्यापद का वर्णन. **1) विचलित, विवर्तितः** सद्यःक्षत वत क्रिया.

2) अत्युत्क्षिप्त, ऽवसन्नेः पित्तिघ्न क्रिया.

3) तिर्यक, पार्श्ववपीडितेः ऋजु नेत्रं प्रयोग.

4) अतिस्थुल,कर्कशः सद्यःक्षत वत **5) प्रकृष्टः**पित्तघ्न व कर्म पिच्छाबस्ति.

6) जीवादानः पीच्छाबस्ति (जलीय)

पक्षाद विरेको वान्तस्य ततश्चपि निरूहणम।
सद्यो निरूढो ऽनुवास्यः सप्तरात्राद विरेचितः।।

i) वमन के 15 दिन पश्चात विरेचन, 16 वे दिन निरूह.

ii) निरूहण पुरूष में अनुवासन उसी समयः

परंतु विरेचन हो रहा हो तो, 7 दिन बाद अनुवासन.

37) अनुवासनोत्तरबस्ति चिकित्सित

* विरेचन के 7 रात्र पश्चात अनुवासन प्रयोग.

1) अनुवासन बस्ति मात्राः (1/4 निरूह से) - 3 प्रसृत

i) शटादि तैल, ii) चित्रकादि तैल अनुवासनार्थ, iii) भूतिकादि तैल,

iv) मधुकादि तैल, v) मृणालादि तैल, vi) त्रिफलादि तैल,

vi) पाठादि तैल, viii) विडंगादि तैल,

2) दोषभेद से अनुवासन बस्तिः

वात में बिल्व से सिध्द तैल, पित्त - यष्टिमधुसे सिध्द तैल,

कफ - मदनफल से सिध्द तैल.

3) रात्रि में बास्तिप्रयोग से उपद्रवः दोषोत्कलेश आध्मान,गौरवं,ज्वर,उत्पन्न

4) ऋतुनुसार बस्तिकालः शीते वसन्ते च दिवा ग्रीष्मप्रावृटघनात्यये।
स्नेह्यो दिनोन्तेपानोत्कान दोषान् परिजिहीर्षता।।

5) भोजन पश्चात ऽऽर्द्रपाणिनम् (गीले हाथ रहने पर ही)

अनुवासन बस्ति प्रयोग करें।

6) अनुवासन बस्ति पूर्व, (स्नेहयुक्त भोजन देने से), मद,मूर्च्छा उत्पन्न.

(कभी भी 2 प्रकार से स्नेह प्रयोग नहीं करना चाहिये)

7) बस्ति देने के पश्चातः i) उत्तानो वाक्शतं (उत्तान लेटेःः100 गिनती गिनना), ii) ताडयेत तलयोरेनं त्रीस्त्रीन, iii) शय्यां त्रीन वारानुत्क्षिपेत्ततः (शय्या को रोगी सहित तीन बार उठाना चाहिए।)

8) अनुवासन बस्ति संख्या व कर्मः

i) प्रथम स्नेह बस्ति - वस्ति, वंक्षण - स्नेहन

ii) व्दि. स्नेह बस्ति - मूर्धस्यं अनिल. iii) तृ. स्नेह बस्ति - बलवर्ण वृध्दि

iv) च. स्नेह बस्ति - रस का स्नेहन v) पं. स्नेह बस्ति - रक्त का स्नेहन

vi) ष. स्नेह बस्ति - मांस का स्नेहन vii) स. स्नेह बस्ति-मेद का स्नेहन

viii) अ. स्नेह बस्ति - अस्थि ix) न. स्नेह बस्ति - मज्जा

x) 18th - शुक्रदोषहर (शुक्रगतान दोषान व्दिगुणेश)

9) बस्तिरसायन लाभः अष्टादश 18 स्नेह अष्टादश 18 निरुह प्रयोग - कुंजरबल, अश्वसदृश तेज, - ऽमरप्रमः 1000 yrs. आयु प्राप्ती

10) निरुह व स्नेह किसी एक के अधिक सेवन में दोषः

स्नेहाद अग्निवधोत्क्लेशा निरुहात पवनाद्भयम्.

11) स्नेह बस्ति व्यापतः 9 - i) वातावृत, ii) पित्तावृत, iii) कफावृत, iv) अत्याशन व्यापत, v) अशुध्द शरीर व्यापद, vi) शुध्द शरीर व्यापत, vii) अस्विन्नस्य, viii) अल्पभुक्तों, ix) 24 hrs. मै न वापस आनेवाली.

* बस्ति वापस न आय तथा कोई उपद्रव न करें तो उसकी उपेक्षा करनी चाहिए

* स्त्री मै उत्तरबस्ति प्रणिधान - (3/4)

* उत्तरबस्ति प्रमेह छोड़कर अन्य व्याधीयों को नष्ट करता है।

38) निरूहक्रम चिकित्सित

1) निरुहः i) देने का कालः मध्यान्ह प्रततायां,

ii) प्रतिक्षाः 30 मात्रा तक लिटाये रखें,1 मुहुर्त में बस्ति वापस, (2 घड़ी) 1 मुहूर्त (2 घडी) में निरुह न आने पर तीक्ष्ण बस्ति दे।

iii) सुनिरुढ लक्षणः विट्पित्तकफवायवःलाघवं, स्नान किये हुए सुनिरुढ पुरुष को भोजन कराना चाहिए।

* सुनिरुढ मेंः वात में रसैः (मांसरस)

पित्त - क्षीर, कफ - यूष - अथवा सभी में जांगल मांसरस

2) भोजनः भोजन - 3 भाग,आधा/ अल्पः This मात्रा अग्नि,दोषनुसार

3) निरुह में दोषानुसार क्वाथ मात्राः.

स्वस्थे क्वाथस्य चत्वारो भागःस्नेहस्य पंचमाः।
क्रुध्देऽनिले चतुथस्तु षष्ठः पित्ते कफेऽष्टमः।।

* सर्वेषु चाष्टमो भागः कल्कानां

(i.e. तीनों दोष के प्रकोप में कल्क (1/8th भाग)

4) 12 प्रासृत का साधनः सैन्धवस्य अक्ष, मधुनःप्रसृतिद्वयम, स्नेहस्य प्रसृतित्रयम, कल्कस्य प्रसृतिं, कषायं च चतुः प्रसृति, आवापं अन्ते द्विप्रसृतम्,। ज्येष्ठ खलु मात्रायाः प्रमाणमिदमीरितम्। प्रसृतिहापनम्

(i.e. ज्येष्ठ (उत्तम) मात्रा बताई है और उससे कम करना हो तो एक प्रसृति कम करना चाहिए)

5) गडुच्यादि आस्थापनाः सर्वमारुतरोगघ्न वस्ति स्थापनम् उत्तमम्।

6) शोणित रोग में, शर्करेक्षुरसक्षीरघृतयुक्ताः सुशीतलाः।

7) शोधनास्थापन कल्पनाः युक्ताःखजेन मथिता वस्तयःशोधनौःस्मृताः।

8) लेखानास्थापनः उषकादिप्रतीवापा बस्तयो लेखनाः स्मृताः।

9) बृंहणास्थापनः काकोल्यादि

10) वाजीकरास्थापनः चटकाण्डोच्चटाक्वथाः

11) पिच्छावस्तिः, **12) संग्रहणास्थापनः** ग्राही बस्ति.,

13) बन्ध्या को बस्तिः i) शतपाक बला तैल., ii) त्रिवृत स्नेह.

दद्यात् उत्क्लेशनं पूर्व, मध्ये दोषहरं पश्चात् संशमनीयं

14) एरण्डबीजादि उत्क्लेशन बस्ति. **15) दोषहर बस्तिः**

16) शमन बस्तिः, **17) मधुतैलिक बस्तिः** मधुतैल उपयोग,

18) युक्तरथ बस्तिः वचामधुकतैलं च क्वाथः

19) सिध्दबस्तिः यवकोलकुलत्थानां क्वाथो मागधिका.

20) आस्थापन बस्तिः मुस्तादि (यापनानामयं राजा)

21) पादहिन बस्तिः i) मृदुवीर्य बस्ति,ii) एकबस्तिप्रदान से सिध्दी प्राप्त.

(i.e. एक ही बस्ति से सिध्दि प्राप्त होने से श्रेष्ठ है।)

39) आतुरोपद्रवित चिकित्सित

* स्नेहपीतस्य वान्तस्य विरिक्तस्य स्त्रुतासृजः ।
निरुढस्य च कायाग्निर्मन्दो भवति देहिनः।

(i.e. स्नेहनादि का सेवन करनेवाले मै जाठराग्नि मंद होती है)

1) हृतदोष प्रमाणः दोष हरण के लिए 3 प्रमाण -

1 प्रस्थ - निकृष्ट - (1 - 1) बार यवागु, विलपी, अकृत व कृतयुष प्रयोग

1/2 आढक - मध्यम - (2 - 2) बार यवागु, विलपी, अकृत व कृतयुष प्रयोग

आढक - उत्तम - (3 - 3) बार यवागु, विलपी, अकृत व कृतयुष प्रयोग

यवागु, विलेपी, अकृतः कृतायुष प्रयोग.

2) तर्पणः कफपित्ताधिक्यश्, मद्यानित्य, हीनाविशोधति, इनमें पेया से अभिष्यंद उत्पन्न इसलिए तर्पण उपयोग

(सिक्थै रहितो मण्डः पेया सिक्थसमान्विता।
यवागूर्बहुसिक्था स्याद विलेपी विरलद्रवा।।)

मानसविकार में विरिक्तवत चिकित्सा.

3) बलानुसार संसर्जन क्रमः बलवान को - 1 बार, मध्यमबल को - 2 बार, अल्प को - 3 बार, (Others say, मन्दमध्यमोत्तम अग्नी)

4) भोजनक्रमः स्वादुतिक्तौ 1st स्निग्धाम्ललवणान कटुकं,

2nd स्वादुम्लामवणान भूयः, स्वादु तिक्तावतः, स्निग्धरुक्षान

5) केवल स्नेहन, वमन पश्चात 7 रात्र लघु भोजन.

6) परिहार काल-सिरावेध,शोधन - 1 मास,बस्ति- 3 दिन क्रोधादि का परिहार

7) **अपथ्य सेवन सेः** i) मैथुन - आक्षेप, पक्षाघात, अंगप्रग्रह,

ii) उच्चस्वर - हनुमोक्ष, अधीमन्थ, अर्दित, iii) यान - अंगग्रह,

iv) विरुध्दाध्याशन - मृत्यु, घोरमृच्छाति,

v) असात्म्यभोजन - निश्चित बलवर्ण हानि.

8) संदर्भः असात्मवन्तः पशुवद भुञ्जते येऽप्रमाणतः!
रोगानीकस्य ते मूलम **अजीर्णं** प्राप्नुवन्ति हि।।.... (सु.चि. 39/37)

(i.e.अजीर्ण - रोगसमूह का मुलकारण)

40) धूमनस्यकवलग्रहचिकित्सित

48
32
24
16
16.

1) धुमः 5 - i) प्रायोगिक - 48 अंगुल ऐलादि उपयोगः **कुष्ठतगरवर्जः**

ii) स्नैहिक - 32 iii) वैरेचनिक - 24 iv) कासघ्न - 16

v) वामनीय - 16 (छिद्र - कोलास्थि)

2) **धुमवर्तिः** 12 अंगुल, इसपर 8 अंगुल वेष्टन

3) **धुमनेत्रः** कनिष्ठिकापरिणाह, मोटाई - कनिष्ठिका अग्रकलाय मात्र, अग्र भाग - मटर सदृश, मूले ऽगुष्ठ परिणाह,

4) **व्रणनेत्रः** 8 अंगुल लम्बा, कलाय परिमण्डल, कुलत्थवाहिस्त्रोत,
मुखेन तं पिबेत् पूर्वं नासिकाभ्यां ततः पिबेत।
मुखपीतं मुखेनैव वमेत् पीतं च नासया।।

[i.e. धमपान प्रथम मुख से Then नासिका से और नित्य मुख से बाहर निकालें.]

प्रायोगिक, वैरेचनिकः - नासिका व्दारा

स्नैहिकः- मुख, नासिका, कासघ्न, वामनीयः- मुख

5) **धुमपानकालः** 12 मूत्रोच्यारक्षवथुहासितरूषित मैथुनन्तेषु स्नैहिक स्नानच्छर्दनादिवास्वप्नान्तेषु वैरेचनिकः, दन्तप्रक्षालनस्य, स्नानाभोजनशस्त्र कर्मान्तेषु प्रायोगिक

6) धुमपानकाल मर्यादाः i) प्रायोगिकं (3 - 3) उच्छवासानाद,

ii) स्नैहिकं अश्रुप्रवृत्तिः, iii) वैरेचनिकमादोषदर्शनात्,

iv) वमनीय यवागू पिलाकर (उपयोग करें),

v) ग्रासन्तरेषु कासघ्न, व्रणधूम में उपयोग शरावसंपुट.

7) **नस्यः** औषधमौषधासिध्दो वा स्नेहो नासिकाभ्यां दीयत इति नस्यम्।

प्रकारः 2 शिरोविरेचन, स्नेहन

तद्यथा - नस्यं, शिरोविरेचन, प्रतिमश, अवपीड, प्रधमन.

तेषु नस्यं प्रधानं शिरोविरेचनं च;

[नस्यर्विकल्पः प्रतिमर्शः] शिरोविरेचनविकल्पोऽवपीड प्रधमन च,

ततो नस्यशब्दःपंचधा नियमित।

8) स्नैहिक वैरेचनिक नस्य कालः

अभुक्तवतो न्रकाल (भोजन के समय बिना खाये)

पूवान्हेश्लेमरोगोणां,मध्यान्हेपित्त रोगोणां, अपरान्हे वात रोगोणां,

(i.e.दोष प्रकापक काल में नस्य)

9) स्नैहिक नस्य प्रमाणः

प्रथमा - (प्रदेशिनी के 2 पर्वों से निकला द्रव - 1 बुंद) 8 बुंद

व्दि. - शुक्तिप्रमाण (32 बुंद), तृ. - पाणिशुक्ति (64 बुंद)

10) शिरोविरेक नस्य मात्राः 4 बिंदु, 6 बिंदु, 8 बिंदु

शिरोविरे अतियोगः मस्तुलुगागमो, वात वृध्दि इंन्द्रियभ्रमो शिरशुन्यता

नस्य क प्रयोगः 1, 2, 7 अथवा 21 दिन के अन्तर पर.

अवपीडनस्य योग्य पुरूषः सपष्ट.

* प्रधमन नस्य प्रयोगः कृमि, विष.

11) नस्य व्यापद - 2 प्रकारः (उत्क्लेश, क्षय) दोष.

* दोषोत्क्लेशास क्षयाच्चैव विज्ञेयास्ता यथाक्रमम।

12) नस्य व्यापद चिकित्साः (शमन, शोधन, बृंहण)

दोषोत्क्लेशनिमित्तास्तु जयेत् शमन शोधनैः। क्षयनिमित्तस्सु बृहणं

13) प्रतिमर्श नस्य कालः 14 (15 - वा.)

14) प्रतिमर्श मात्राः छींक आने पर भी मुख में स्नेह आ जाय.

15) दोष विशेष में नस्य में स्नेहः

कफ वात - तैल, वात - वसा, पित्त - घृत, वात पित्त - मज्जा ,

16) कवलः चतुर्विधः कवलः स्नेही प्रसादी शोधिरोपणै।

सुखं संचार्यते या तु मात्रा स कवलः स्मृतः ।
असंचार्या तु या मात्रा गण्डूष स प्रकीर्तितः ।।

(मुख में रखकर संचार करने योग्य - कवल)

(कवल - गण्डुष भेदः 4 (स्निग्ध, शमन, शोधन, रोपण) वाग्भट)

17) गण्डुष धारण कालः दोषपरिपूर्णकपोलत्वं (कण्ठ दोष से पूर्ण होने तक)

नासास्त्रोतोनयन परिप्लवश्च (नासा और नेत्र जल से भरने तक)

18) मुखरोग में प्रतिसारणः कल्को रसक्रिया *क्षौद्रा* चूर्ण चेति चतुर्विधम्।

b) प्रतिसारण में पश्चात कर्मः अंगुल्यग्र से प्रतिसारण (दोषानुसार)

(डल्हण, रजस्वाला नस्य निषेध, वाग्भट - रजस्वाला स्वेदन निषेध,

काश्यप - रजस्वाला नस्य व वमन निषेध.)

सुश्रुत कल्पस्थान

1) अन्नपानरक्षाकल्प

संदर्भ: विष (चरक - चिकित्सा 23, व संज्ञा - विषगरवैरोधिक प्रशमन)

सुश्रुत - कल्प (पूर्ण)

अ. हृ. उ. 35, 36, 37, 38 + (अ. हृ. सू.7 - विषयुक्त अन्न)

अ. सं. उ. 47, हारित - तृतीय स्थान - 56th

भा. प्र. चिकित्सा - 67, शारंगधर - यत्र तत्र.

वासवराजीय - 21 और 23 प्रकरण.

काश्यप - सर्व विष प्रतिपादक 1 अध्याय विष चिकित्सा.

(विषकन्या उल्लेख - सुश्रुत, वर्णन - वाग्भट)

1) चित्त (मन): अनित्य अश्ववत (घोडे सदृश, सदैव चंचल)

2) पाकशाला में नियुक्ति योग्य वैद्य: (महानस) कुलीन धार्मिक स्निग्ध, जितेंद्रिय क्षमावन्त शुचि शीलदयान्वितम।

पाकशाला: में वैद्य के अधीन रहने योग्य: महानासिक वोढार (पिष्टी पीसने वाले) सौपोदननिक पौपिका (दाल - चावल, रोटी बनाने वाले)

3) विषमिश्रित अन्न लक्षण: i) विनश्याति माक्षिका,

ii) अन्नेत भृशं चटचटायते, iii) मयुरकण्ठ प्रतिमो जायते.

iv) तिक्ष्ण धूम, v) चिराच्योपशम्यति.

4) विषमिश्रित अन्न सेवन से:

चकोरस्याक्षिवैराग्य, म्रियन्ते जीवजीवका, कोकिल स्वरवैकृत्य, क्रौंच्यस्तु मदमूच्छाति, हष्येन्मयूर उद्विगन, क्रोशतः शुकसारिके, हंस: क्ष्वेडति, भृगराजस्तु कूजति, विष्ठा मुंच्याति मर्कट, पृषतो विसृजत्यश्रुं

5) विष प्रभाव: i) बाप्प से: हृत्पीडा, भ्रान्तनेत्र, शिरोदुःखं.

ii) पाणी प्राप्त: नखशातं, पाणि दाह,

iii) भोजन: अष्टीलावत्तो जिव्हा भवन्ती अरसावेदिनी श्लेष्मा चास्यात,

iv) आमाशयगत: मूर्च्छा, छर्दि, अतिसार, आध्मान, दाहवेपथू इन्द्रियानां वैकृत्यं चिकित्सा - आशु वमन,

v) पक्वाशयगत: दाह, मूर्च्छा, अतिसार, तृष्णा,इन्द्रियवैकृतम .चिकित्सा - विरेचन.

6) सविष द्रव द्रव्य लक्षण:

राज्य: फेनबुदबुदजन्म, छायाश्चात्र न दृश्यन्ते

दृश्यन्ते यदि वा पुन: भवन्ति यमलाश्छिद्रास्तन्व्यो वा विकृता स्तथा.

7) सविष शाक: विरसानि, विगन्धानि, गन्धवर्णरसैर्हिना

8) सविष दातौन: जिव्हादन्तौष्ठमांसानां श्वयथु-चिकित्सा सक्षौद्रा: प्रतिसारणम

9) सविष अभ्यंग: चिकित्सा गोमुत्र पान.

10) सविष आलेप: पद्मिनीकण्टक, प्रख्यै: , मुखं श्यावं

11) सविष पुष्प: वारिपूर्ण लोचने, शिरोदु खं.

12) अंजन: अश्रुपदेहो दाह वेदना दृष्टिविभ्रम: आन्ध्यम. चिकित्सा सद्योघृतपेय

13) महासुगन्धिमगद: पान, आलेप, नस्य, अंजन, सभी विष के लिए उपयोगी.

14) द्रव्य: मूषिका, अजरुहा को हाथ में बांधे.

15) कल्प: अजेय घृत, अमृत घृत

16) वमनार्थ प्रयोग: पिप्पली, मधुक, क्षौद्र, शर्करा, इक्षुरस,

[वाग्भट: विषयुक्त द्रव द्रव्य: राजी - दधि, उषोदक, मध, जल - कृष्णवर्ण. कांजी - काला, तैल - रक्त, मंड - नील-पित.

रसधातु - नील, दुग्ध - ताम्रा, दधि - कृष्णा, तक्र - श्यावपीत, घृत - सलील, मस्तु - कपोल सदृश, तुषोदक, मध, जल - कृष्ण, मधु - हरित, तैल - अरुण]

* अफु, भंगा, गुंजा, तम्बाकू - निद्रा से बढता है।

* कुचला-जागरण से बढता है। * बचनाग, धत्तुर - शीतोपचार से बढता है।

* भल्लातक, सोमल - उष्णोपचार से बढता है। * मांजी - मद्य,खट्टे पदार्थ से बढता है।

2) स्थावरविषविज्ञानीय

स्थावरं जंगमं चैव दिविधं विषमुच्यते ।

दशाधिष्ठानमाद्यं तु द्वितीय पोडशाश्रमयम ।।

1) विषवर्गिकरण: i) चरक - स्थावर, जांगम

ii) वाग्भट: विष: कृत्रिम विष (गरविष), अकृत्रिम विष (स्थावर जांगम)

iii) वृद्धकाश्यप: विष: स्थावर, जांगम संयोगज (गर, कृत्रिम)

iv) रस तन्त्र: 2 (विष, उपविष)

2) स्थावर विष अधिष्ठान: 10 - मूल पत्रं फलं पुष्प त्वक क्षीर सार एव च निर्यासो धातवश्चैव कन्दश्च दशमः स्मृतः ।।

विषय	प्रकार	अधिष्ठान	गुण
धातु	2	फेनाश्म, हरताल	हृदयपीडा,मर्च्छा
क्षीर	3	स्नुही,कुमुदघ्नी.	फेनागम, विडभेद
पत्र	5	करम्भ, महाकरम्भ	जृंभा, अंगोदवेष्टन
पुष्प	5	करम्भ, महाकरम्भ	वमन
त्वक		करघाट, करम्भ,	पारूष्य,शिरोरूक
सार	7	नन्दन,नाराचक,	आस्यदौर्गन्ध्य,
निर्यास		अन्त्रपाचक.	कफस्त्राव.
मूल विष	8	गुंजा, करघाट	उद्वेष्टन, प्रलाप,मोह
फल	12	करम्भ, महाकरम्भ	दाह,अन्नद्वेष मुष्कशोफ
कन्द	13	वत्सनाभ,सर्षप, मुस्ता,	
(कूल स्थावर विष - 55)		श्रृंगी, मूलक, महाविष	अतितीक्ष्ण हैं

स्थावर विष के 10 अधिष्ठान में से, कन्दविष - महाविष - (रसशास्त्र में) शेष (मूलादि) - उपविष (शारंगधर,आयुर्वेद प्रकाश, रसेन्द्रसारसंग्रह) (स्थावर विष चरक-21)

विष वर्गिकरण

- दाहक (Corrosive)
- क्षोभक (Irritant)
- वातनाडी प्रभावक (Neurotics)

दाहक (Corrosive)

- तीव्र अम्ल (Strong acids)
  - अनैन्द्रिक (Inorganic)
    1) गन्धकाम्ल H_2SO_4
    2) लवणाम्ल HCL
    3) शोरकाम्ल HNO_3
  - ऐन्द्रिक (Organic)
    1) Oxalic acid
    2) Carbolic acid
- क्षार (Alkalies)
  1) दाहक सोडा
  2) दोहक पोटाश
  3) अमोनिया

क्षोभक (Irritant)

- (खनिज) निरीन्द्रिय)
  - धातवीय
  - अधातवीय
- ऐन्दिक
  - वनस्पतिक (Vegetable)
  - जांगम (Animal)
- यांत्रिक
  1) माणिचूर्ण
  2) कांचचूर्ण

वातनाडी प्रभावक(Neurotics)

- मस्तिष्कप्रभावक
- हृदयप्रभावक
- परिसरिया नाडी प्रभावक
- सुषुम्नाप्रभावक
- फुफ्फुसप्रभावक

मस्तिष्कप्रभावक

निद्राकर	मादक	प्रलापक
1) Opium	1) Alcohol	1) धत्तुर
2) Morphine	2) Ether	2) Belladona
	3) Chloroform	3) भंगा.
		4) खुरासानी अजवाइन

सुषुम्ना प्रभावक: कुपीलु (कुचला), Gelcinium

हृदय प्रभावक: वत्सनाभ, तम्बाकु, हृत्पत्री, करवीर, HCN Acid.

फुफ्फुस प्रभावक: So_2, CO_2, CO, H_2S

परिसरिया नाडी प्रभावक: Conium, Curare

3) विषसंख्या: 5 (रसार्णव ; रसेन्द्रचुडामाणि; रसरत्नाकर; रससार रसरत्नसमुच्चय, राजनिघण्टु) सक्तुक , कालकूट, श्रृंगी, हारिद्र,वत्सनाभ. (श्रेष्ठ सद्य: उपलब्ध - वत्सनाभ.)

4) उपविष: (रसार्णव - 5, र. र. स., यो. र., भा. प्र. शारंगधर 7,) रसतरंगिणी - 11,(रसोपानिषद - 40) i) स्नुहीक्षीर, ii) अर्क, iii) करवीर, iv) लांगली, v) धत्तुर, vi) विषतिन्दुक, vii) अहिफेन, viii) गुंजा, ix) रेचक, x) भल्लातक, xi) विजया.

4) कन्दविष प्रकार: मुस्तक: 2, वत्सनाभ - 4, सर्षप - 6, शेष -1

कन्दविष		लक्षण
i) वत्सनाभ	-	ग्रीवास्तम्भ, पीतमलमूत्रता
ii) सर्षप	-	ग्रंथीउत्पत्ति
iii) श्रृंगी	-	अंगसाद, दाह, उदरवृद्धि
iv) मूलक	-	हिक्का
v) महाविष	-	हृदये ग्रंथी शुलोदग्म

5) परिणामानुसार वर्गीकरण:

A) तत्काल मृत्यु: i) KCN, ii) HCN, iii) CO, iv) CO2, v) NH3, vi) Oxalic.

B) हृदयवसाद: i) तीव्र अम्ल, ii) क्षार, iii) वत्सनाभ, iv) फेनाश्म, v) तमालपत्र, vi) नीलांजन, vii) Antipyrin

C) मूर्च्छा:

i) अहिफेन, ii) मद्य, iii) क्लोरोफार्म, iv) Chloral Hydrate, v) कर्पूर.

D) पेशी आक्षेप: i) कुचला, ii) संखिया (फेनाश्म), iii) निलांजन

E) मुख का पीत: Anti ferin.

F) प्रलाप: i) धत्तुर, ii) Belladona, iii) भांग, iv) मद्य, v) कर्पूर, vi) खुरासानी अजवाइन.

G) पक्षाघात: i) वत्सनाभ, ii) फेनाश्म, iii) नाग,

H) Dilatation of pupils: i) धतूरा, ii) खुरासानी अजवाइन (प्रथम अवस्था), iii) अहिफेन (अंतिम अवस्था), iv) वत्सनाभ, v) Alcohol, vi) Chloroform.

I) Constriction of pupils: i) अहिफेन, ii) carbonic acid, iii) Chloral Hydrate,, iv) सोमल. v) OPP

J) त्वचा की शुष्कता:

i) धतूरा, ii) Belladona, iii) खुरासानी अजवाइन

K) त्वचा की आद्रता: i) अहिफेन,ii) वत्सनाभ, iii) मद्य, iv) नीलाञ्जन, v) तम्बाकू, vi) किसी भी विष के कारण हृदयवसाद की अवस्था.

L) मुख श्वेत होना:

i) Carbonic Acid, ii) रसकर्पूर, iii) दाहक अम्ल तथा क्षार.

M) वमन: i) सांखियां (रक्तमिश्रित कपिल वर्ण वमन, ii) नीलांजन (श्वेत वर्ण का वमन,) iii) Digitalis, iv) वत्सनाभ, v) Phosphorus, vi) HNO_3 (पीत वमन).

उग्र वीर्य वाले (13) कन्द विष इनके 10 गुण.

6) विष गुण:10 - चरक अनिर्देश्य, सुश्रुत अपाकी.

वाग्भट: 11 (विषमपाकी +अव्यक्तरस), शारंगधर: 8

विष गुण	प्रभाव (चरक)	प्रभाव (सुश्रुत)
लघु	दुरुपक्रम	दुश्चिकित्स्य
रुक्ष	वात प्रकोप	वायू प्रकोप
आशु	शीघ्र प्राणनाश	आशु तद्ध हन्ति
तीक्ष्ण	मर्मघ्न	मतिमोह मर्मबन्धछिन्न
विकासी	प्राणघ्न	दोष धातू मल नष्ट
सूक्ष्म	रक्त प्रकोप	अवयवों में शीघ्र प्रवेश
उष्ण	पित्त प्रकोप	रक्तसह पित्त प्रकोप
विशद	असक्तगति दोषम	अतिरिच्यते
व्यवायी	आशु व्याप्नोतिदेह	संपूर्ण शरिर में फैलता है
अनिर्देश्यरस(च.)	कफ प्रकोप	-------
अपाकि सुश्रुत	-	दुर्हरत्व, चिरक्लेश

* वेगांतर चिकित्सा: शीतोपचार, विषघ्नघृत, मधु मिश्रित यवागु.

धातु के मध्य में जो 7 कलाएँ कही गई है, उस (1-1) कला के अतिक्रमण करने पर (1 - 1) वेग का परिगणन किया जाता है.

7) विषवेग: 7 (चरक 8)

वेग	लक्षण (चरक)(च.चि.23)	लक्षण (सुश्रुत)	चिकित्सा (चरक)(च.चि.23)	चिकित्सा (सुश्रुत)
प्रथम	रसप्रदोष, वमथु, तृणमोहदन्तहर्ष प्रसेक	मूर्च्छा,श्वास, स्तब्धजिव्हा	त्वक् - दाहकर्म, रक्तस्त्रावण, सद्य पित में वमन	वमन,शीतल जल परिषेक, अगद पान मधुसर्पिसह
द्वितीय	असृक प्रदोष,तमक,मूर्च्छा,अंगचिमचिमायन	वेपथु, हृदवेदना, गलपीडा	विरेचन व हृदय रक्षण	वमन पश्चात विरेचन
तृतीय	पिशिता दुष्ट, मण्डल कण्डू श्वयथु कोठ	तालुशोष, आमाशयशुल	क्षारागद, शोफ हर, लेखन	अगद पान, नस्य, अंजन.
चर्तुथ	वातादिना,दाह, मूर्च्छा, अंगशुल	हिक्का,शिरोगौरव,पक्वामाशयतोद	गोमय, सकपित्थ, मधु	स्नेहमिश्रित अगद
पंचम	तमप्रवेश, नीलादीनां दर्शनं	पर्वभेद, कफप्रसेक, सर्वदोषप्रकोप	काकण्ड शिरीषांभ्याम स्वरस आश्योतन, नस्य	यष्टिमधु क्वाथ में अगद + मधु
षष्ठमं	हिक्का	अतिसार, प्रज्ञाप्रनाश	संज्ञास्थापन	अतिसार चि.+अवपीडन नस्य
सतमं	स्कंद भंग्र	श्वासावरोध	सर्पदंश में अगद पान	काकपद उपादान+अवपीडन नस्य
अष्टम	मृत्यू	स्कंध पृष्ठ कटी भग्न.		

a) **दूषीविष:**

b) **व्याख्या:** यत स्थावरं जंगमकृत्रिमं वा देहादशेषं यदनिर्गत तत।
जीर्णे विषघ्नौषधिभिर्हतं वा दावाग्निवाताताप शोषितं वा ।।
स्वभावतो वा गुणविप्रहीनं विषं ही दूषीविषता मुपैति ।
दीर्घाल्पभावान्न निपातयेत्तत कफावृतं वर्षगणानुबंधि ।।

b) **प्रभाव दुषीविष:** भिन्नपुरीषवर्णो, विगन्धवैरस्यमुख, वमन गदगद वाविषण्णो, आमाशयस्थ कफवातरोगी, पक्वाशयस्थे अनिलपित्तरोगी,

c) **पूर्वरुप:** निद्रा गुरुत्व च विजृम्भणं च, विश्लेष हर्षावथवा अंगमर्द

d) **कार्य:** पादकरास्यशोफं, दकोदरं छर्दे अतिसारम,उन्माद

e) **निरूक्ति:** दूषितं देश काल अन्न दिवास्वप्नै अभीक्ष्णश:
यस्माद दूष्यते धातूँस्तस्माद दूषीविष स्मृतम ।।

f) **डल्हण:** देश आनूप प्रभूतानिलशीतवर्ष काल शीतानिलदुर्दिनादी, अन्न सुरातिलकुलत्थानि, अन्नस्योपलक्षणत्वाद व्यवायव्यायाम क्रोधादी

[**दूषीविष:** (चरक) दूषीविषं तु शोणितदुष्टयारु किटिभ कोठ लिंगम च । वामेक दोषं सन्दूष्य हरत्यसूनेवम ।।
चिकित्सा - सिराकर्म, पंचविद्यम (पंचकर्म)]

h) अजेय घृत, दूषीविषारी अगद, g) दूषीविष साध्यासाध्यता - (सुश्रुत) साध्य - सद्यो विष, याप्य - संवत्सर, असाध्य - क्षीण, अहितसेवि में

[**वाग्भट: दोषप्रकोप:** तीक्ष्ण, उष्ण - पित्तरक्त प्रकोप, रुक्ष - वात, विशद - असक्तवेगपृसरति, सुक्ष्म, व्यवायी - दोषधातुमलादि (संपूर्ण शरीरावयव में प्रवेश), विकासी - मर्मछेद, लाघव - दुर्निहर, अव्यक्तरस - कफ प्रकोप. विषमपाकी]

3) जांगम विषविज्ञानीय

1) **जांगम विष: 16 अधिष्ठान:** दृष्टि निःश्वास दंष्ट्रा नख मूत्र पुरीष शुक्र लालार्तवमुखसंदंश विशार्धित तुण्डास्थि पित्तशूकशवानित
(विशर्धित - पायुकृत: कुन्सित शब्द:, तुण्डास्थि को गुदास्थि. अ. सं.)

2) **जंगम विष अधिष्ठान:**
i) भौमास्तु दंष्ट्राविषा:, ii) **मूषिका शुक्रविषा:,**
iii) लूता - लाला मूत्र पुरीषमुखसन्दंश नखशुक्र, आर्तव विषा:
(अधिष्ठान 7, वाग्भट 8) iv) वृश्चिकश्याल (आर) विषा:,
v) माक्षिका, कणभ, जलायुका - मुखसन्दंश विषा:
vi) शतपदी, शूक - तुण्ड विषा,
vii) कीटसर्प के मृतदेह - शव विष, viii) दृष्टि निःश्वास - दिव्यसर्प,
ix) पित्त विष - शकुलीमत्स्य, रक्तराजी, वरटीमत्स्य.

3) **विष दूषित जल:** मण्डुक मत्स्य म्रियते. विहंगा मताश्च सानूपचरा भ्रमान्ति (अनुपचर जीव पक्षि मतवाले होकर घूमते है।)

4) **विष दूषित भूमि:चिकित्सा:**
अनन्ता को एलादि गण के साथ सुरा मे पीस कर परिषेक करे ।

5) **विषोत्पत्ति:** कैटभ नामक दैत्य, ब्रह्मा के मुख से क्रोधस्वरूप.

6) विषे यस्माद गुणा सर्वे तीक्ष्ण प्रायेण सन्ति ही ।
विष सर्वेमतो ज्ञेय सर्वदोषप्रकोपणम । 3/25

7) शुक्रवत सर्वसर्पाणां विषं सर्वशरीरगम।
क्रूध्दान.. बडिशवदंष्ट्रास्तासु सृज्जति चागतम । 3/26
(सर्प में विष शुक्र की तरह शरिर में व्याप्त और क्रोध से बडिश दंत में आकर रुकता है और इच्छानुसार विषत्याग.)

8) सभी विषों में - शीतल परिषेक, कीट विष में – स्वेद न प्रतिषिध्यते. (क्योकी - कीट विष मन्द नात्युष्ण बहू वात कफ)

9) सविषमांसभक्षण - प्रहार और दंश स्थान छोडकर 1 मुहुर्त के अन्दर उस मृत प्राणी का मांस काटकर निकाल लें.
दंशस्थान में विष - 100 मात्रा तक स्थित...(वा.उ. 36/8)

10) **चिकित्सा निषेध:** मर्म स्थान, अश्वत्थ (पीपल), देवायतन, श्मशान, चतुष्पथ, भरणी मघा नक्षत्र में. (वाग्भट - मध्यान्ह)

11) **दर्विकार का विष:**
आशु घाति, सभी विष उष्ण काल में - द्विगुणी घातक

12) **विषरोग पिडित में असाध्यता के लक्षण:** शस्त्र क्षते न रक्तमेति, शीतजल स्पर्श से भी न रोमहर्ष, हन्वो स्थिरत्वं हीनस्वरं.

4) सर्पदष्टविषविज्ञानीय:

सुश्रुत ने धन्वन्तरी को 4 प्रश्न पूच्छे.

1) **असंख्य सर्प:** वासुकि श्रेष्ठा.

2) **सर्प - संख्या:** 80, प्रकार - 5
i) दर्वीकार - 26 फणिन, शीघ्रगामिन :
ii)मण्डली-22अफण,मण्डल,विविधौश्चित्रा पृथवो मन्दगामिन ज्वलनार्कसम्प्रभ
iii) राजीमान - 10 बिंदू एवं रख, स्निग्धा विविध वर्ण (स्थूल) भिस्तिर्यगूर्ध्व राजी चित्रीत.
iv) निर्विष - 12 दुन्दुभिगोरादय:
संकीर्णजात 5) वैकरंज: 3 - 3 प्रकार (कुल - 73)
+7 वैकरजोदभवा सप्त चित्रा मण्डलिराजिला (मण्डली 4 , राजीमान 3) (कुल - 80)

3) **सर्पदंश हेतु:** छु जाने, स्वभाव, क्रुद्ध, भोजन इच्छित, भीमदर्शन.

4) **सर्पदंश प्रकार:** सुश्रुत 3 -
i) सर्पित - (1 - 2) दंत चिन्ह,निरन्तर रक्तस्त्राव.
ii) रदित - रोहित नील पीत श्वेत रेषा - अल्पविष
iii) निर्विष - अशोफ, अल्पदुष्टरक्त, 1 किंवा ज्यादा चिन्ह
(वाग्भट 5 - i) तुण्डाहत - लाल परिक्लेद मात्रं
ii) व्यालीढ (1/2) चिन्ह, रक्तस्त्राव नहीं,
iii) व्यालुप्त - 2 दंष्ट्रा सरक्त iv) दंष्ट्रक - 3, मांसछेदन, रक्तस्त्राव,
v) दंष्ट्रानिपिडित - 4 चिन्ह मांसछेदन, रक्तस्त्राव.,
तुण्डाहत, व्यालीढ - साध्य, दंष्ट्रानिपिडित - असाध्य.)
सर्पांगाभिहत (सु.) - शंकाविष (चरक)
(नपुंसक सर्प: उभयलक्षण, मन्दविषा, अक्रोधा)

5) **वर्णभेद:** 4

सर्प	दोष	काल	वर्णन
i) ब्राह्मण सर्प	त्रिदोष	पूर्वान्ह में	मुक्ता, चांदीवर्ण,कपिल सुगन्ध, सुवर्ण
ii) क्षत्रिय सर्प	वात	मध्यान्ह में	सूर्यचन्द्राकृती, भृशकोपना
iii) वैश्य सर्प	पित्त	अपरान्ह	पारावताभं व्रजवत
iv) शूद्र सर्प	कफ	सूर्यास्त पश्चात	महिष द्विपिवर्ण,परुष त्वक

6) **पून: सर्पभेद:** 3

सर्प	दोष	विष	ऋतु	अवस्था
i) दर्वीकर	वात	कटू रुक्ष	वर्षा	तरूण
ii) मण्डली	पित्त	अम्लरस उष्णवीर्य	शीतकाल	वृध्द
iii) राजीमान	कफ	मधुर शीतवीर्य	ग्रीष्म	मध्य

क्रमश: वय - तरुण - मध्य - वृद्ध (वा.)
विचरण - दिन में - शेषषूक्ता - पश्चिमें याम (रात्रि के अन्तीम प्रहर में)

7) **सर्पों में अल्पविषता हेतु:**
नकुलाकुलिता, बाला,वारिविप्रहता (जल के वेग से व्यथित) कृशा, वृद्धा

8) दर्वीकर: 26 - दर्भपुष्पो - दर्वीकर और राजीमान दोनों में. आशिविष, गेवधुक

मण्डली: गोनस **राजीमान:** गोधुमक, सर्षपक.

निर्विष: 12 -गलगोली, अजगर, दिव्यक, शूकपत्र, वर्षाहिक, पुष्पशकली, ज्योतीरथ, क्षीरिकापुष्पक,अहिपताक, अन्धाहिको, गौराहिको, वृक्षेशय

वैकरंज: i) माकुली (कृष्णसर्प + गोनस),पित्तृवद विषोत्कर्ष

ii) पोटगल (राजिमान+गोनस) मातृवद विषोत्कर्ष

iii) स्निधराजे (कृष्णसर्प + राजिमान) मातृवद विषोत्कर्ष

9) सर्पदंश सामान्य लक्षण: विष तीक्ष्ण तलवार,बिजली, अग्नि के तुल्य शीघ्र ही व्यापक होनेवाला है।

मुहुर्त (क्षण भर) की उपेक्षा करने से रोगी को मार देता है.

दर्वीकर - त्वकनयन नखदशन वदनमूत्र पुरीषदंशकृष्णत्वं स्त्रो तोऽवरोधस्तास्ताश्चवात वेदना.

मण्डली: त्वगादीनां पीतत्वं, शोणितगमनउर्ध्वमधश्च,मांसानमवशातनं.

राजीमान: शुक्लत्वं त्वगादीनां,उच्चवासानिरोध,तमः प्रवेश.

10) भौम सर्पों का लिंगभेद: 3

i) पुरुष - नेत्र, मुख, जिव्हा, शिर बडा हो.

ii) स्त्री - छोटा - नेत्र, मुख, जिव्हा, शिर.

iii) नपुसंक दोनों के लक्षणों से युक्त, मन्दविष, कभी क्रूद्ध न होनेवाला

सर्पभेद (आधुनिक): सर्प - सविष (विषयुक्त),

a) Colubrine:- i) नागराज (King Cobra),

ii) नाग (Cobra), iii) राजीमान(Krait)

b) Viperine: - i) गोनस (Russell viper), ii) फुस्सा (Echis),

11) सर्पदष्ट लक्षण:

i) पुरुष - उर्ध्व को देखता है।

ii) स्त्री - नीचे देखना, ललाट पर सिरा दिखती है।,

iii) नपुसंक - तिर्यक पार्श्व

iv) गभिर्णी - पाण्डुमुख ध्मातश्च (शोथयुक्त),

v) सूतिका - कुक्षिशूल, सरुधिर मेह, उपजिव्हिका,

vi) ग्रासर्थि - अन्नाकांक्षा,

vii) वृद्ध -चिरान्मन्दा वेगा, viii) बालक - आशु मृदवश्च,

ix) निर्विष, x) अन्ध - अन्धा हो जाता है।

xi) अजगर - ग्रसनाद, शरीरप्राणहरो, न विषात

xii) प्राणहर - शस्त्र/वज्राहत (बिजली से मारे) भाँति भूमि पर,सो जाता है

12) विषवेग लक्षण:

वेग	दर्वीकर	मण्डली	राजीमान
1. रक्त -	पिपीलिकापरिसर्प कृष्णत्व	पीलापन	रोमहर्ष, पाण्डूता
2. मांस	शोथ, ग्रंथि	परिदाह	जाड्य शिरशोफ
3. मेद	शिरोगौरव दृष्टीविकार	दर्वीकरवत	स्वेद घ्राणक्षिस्त्राव
4. कोष्ठ	कफप्रधान दोष की दुष्टि, संधिविश्लेष	ज्वर	शिरौगारव, मन्यास्तम्भ
5. अस्थि	प्राणमग्निच दुष्यति पर्वभेद	परिदाह	वाकसंग शीतज्वर
6. मज्जा	ग्रहणी दुष्यति, हत्पीडा	दर्वीकर वत	दर्वीकर वत
7. शुक्र	अतिस्वेद,श्वासनिरोध व्यान प्रकोप ,चेष्टाविघात	दर्वीकर वत	दर्वीकर वत

13) चिकित्सा विष वेगानुसार: (सु.क.5)

दर्वीकर	मण्डली	राजीमान
1. रक्तमोक्षण	रक्तमोक्षण	रक्तमोक्षण, अगद
2. मधु, घृत अगदपान	मधु घृत अगदपान पश्चात यवागू	वमन, अगदपान
3. विषनाशक नस्य,अंजन	शोधन, यवागु	दर्वीकर वत
4. वमन, यवागु, पान	दर्वीकर वत	दर्वीकर वत
5. शीतल उपचार, विरेचन, यवागु	दर्वीकर वत	दर्वीकर वत
6. शीतल उपचार, विरेचन, यवागु	काकोल्यादी मधुरगण/ अगदपान	तीक्ष्ण अंजन, नस्य
7. काकपद,तीक्ष्ण(अंजन,नस्य)	अगद, अवपीड नस्य	अवपीड

धात्वन्तरेषु या: सप्त कला: संपरिकीर्तिता: (सर्पविष के 7 वेगों होने में कारण)

14) पशु में विषवेग:4

चरक	सुश्रुत
i) थकान, भ्रम	शूनांग, दुखि
ii) वेपते (कम्पन)	लालस्त्राव, हत्पीडा
iii) शून्य,मन्दाहार	शिरोदुख, कण्ठग्रीवा भज्यते
iv) श्वासेन म्रियते	वेपते,दन्तान खादन, मृत्यु

15) पक्षि मे विषवेग: 3

चरक	सुश्रुत
i) ध्यायाति (चिन्तित)	ध्यायति मोहग्रस्त
ii) प्रभ्राम्याति (चक्कर काटना)	विव्हल
iii) स्त्रस्तांग (शिथिलता) पंचत्व मृत्यु	मृत्यू

मार्जारनकुलादीनां विषं नातिप्रवर्तते ।

(बिल्ली, नेवले आदि प्राणियों में सांप मे विष का कोई प्रभाव नहीं होता.)

(विष - सर्वदोषप्रकोपणम, सर्प के विषधारी दंत - लम्बे, तीक्ष्ण, वक्र)

5) सर्पदष्टविषचिकित्सित

1) सर्पदंश मे अरिष्ठा बन्धन (मंत्र पठन करते हुए)

4 अंगुल उपर, (प्लोत, चर्म, अन्तर्वल्क, मृदु वस्तु)

नातिगाढश्लथो (वृद्धवाग्भट)

(सर्पदंश के ऊपर 4, 8, 12 अंगुल दूरी पर 3 बंध बांधे)

2) जहाँ बंध नही बांध सकते वहा, आचूषण छेद दाह.

मण्डली सर्प में दाह निषेध क्योकी पित्ताधिक्य.

3) आचूषण:- मुख को वस्त्रों से भर के चूषण, उसी सांप को तुरन्त काट ले, मिट्टी के ठेले को काट ले ।

4) मंत्र ग्रहण विधि - मिताहार शुचि, जप, होम.

5) विष पूरे शरीर में - विस्त्रावण शाखाग्र ललाट प्रदेश में.

विस्त्रावण - चिकित्सा परम क्रिया सर्पदष्ट में.

6) **दंश स्थान पर:** i) प्रच्छान, ii) प्रलेप, iii) परिषेचन (चन्दनोशीर)

7) सर्पदंश में क्षीर, क्षौद्र, घृत, कृष्णवल्मीकमृत्तिका,कोविदार, शिरीषा, कर्कट - सेवन

8) सर्पदंश में तैल कौलत्थ मद्य सौवीरक का निषेध वमनार्थ.

गर्भिर्णी बाल वृद्धानां सिराव्यधनवर्जितम ।

9) रक्तावसेचन व अंजन:

i) अजा अवि - नर तुल्य, ii) गवाश्वे – द्विगुण,

iii) माहिष,उष्ट्रे - त्रिगुण, iv) नागानां (हाथी) चतुः गुण

10) सर्वपक्षि में शितल द्रव्य परिषेक प्रदेह,

11) **मात्रा:** विष चिकित्सा में अंजनादि मात्रा

i) अंजन - माष (1 माशा), ii) नस्य - द्वि गुण,

iii) पान - चतुःगुण, iv) वमन - अष्ट गुण.

12) वातपित्त विषातुर मे बस्ति, विरेचन

मृष्टसंज्ञ में प्रधमन - तीक्ष्ण शिरोविरेचन.

अरिष्ट बंध खोलकर प्रच्छान, दहन.

13) विष निकाले जाने पश्चात वात में स्नेहादि, पित्त कषायस्नेहबस्ति, कफ आरग्वधाद्येन स क्षौद्रेण प्रयोग करे ।

14) नष्टसंज्ञ वत चिकित्सा-वृक्षप्रपात (झरने)विषम पतितं(स्थान से गिरे), जलतम्भसि, उद्बद्धं (फांसी) इनकी नष्टसंज्ञ वत चिकित्सा करे।...संदर्भ

15) सभी विषों मे महागद - महागदो नाम महाप्रभाव

a) **अजित अगदस्थावरजंगमाना,** b) **तार्क्ष्य अगद,**

c) ऋषम सर्प इससे लिप्त नगाडे आदि बजाने से विष नष्ट होता है।

d) **संजीवन अगद** - जीवयतीह मर्त्यान (मृततुल्य मनुष्य को भी जीवनदान),

e) **द्राक्षादि अगद** - मण्डिल विषाणी.

एक सर गण प्रयोग सर्पविष चिकित्सा में.

6) दुन्दुभिस्वनीय कल्प

1) **क्षारागद:** सर्वविषघ्न (तक्षक सर्प)

इससे दुन्दुभि, पताका, तोरण पर लेप करें

इसके श्रवण, दर्शन, स्पर्श से प्राणी विष मुक्त होता है ।

2) **कल्याणक सर्पि:** ग्रह, अपस्मार, पाण्डु, गर, मन्दाग्नि, बन्ध्या

3) **अमृत सर्पि:** विषसंशमनं परम। संजीवयेन्मृतम,

4) **महासुगन्धिनामा अगद** - 85 द्रव्य (औषधि) -

इसे राजा हाथ में सदैव धारण करें.

स्नानोपरान्त लेप करे इससे प्रजा परिजनों में प्रिय तथा शत्रुओं के बीच भी तेजस्वी रहता है।

5) विषातुर में उष्ण उपचार निषेध.किट विष में शीत निषेध.

6) **वर्ज्य:-** नवधान्यादी गण वर्ज्य.

7) **विगत विष लक्षणे:**प्रसन्नदोषं प्रकृतिस्थधातुमन्नाभिकांक्ष सममूत्रजिव्हम।
प्रसन्नवर्णोन्द्रियचित्तचेष्टं वैद्यो ऽवेगच्छेदविषं मनुष्यम ।।

7) मूषिक कल्प

1) **मूषक - विष** - शुक्रविष, संख्या: 18

चूहों के शुक्र, नख, दन्तादी से अंग का रक्त दूषित होता है।

2)**मूषिक विष चिकित्सा:**

i) दाध, ii) विस्त्रावण, iii) प्रच्छित, iv) प्रलेप

3) **मूषिक विष में वमनार्थ:** जालिनी, शुक्राख्य, अंकोठ.

4)मूषिकाणां विषं प्रायः कुप्यत्यभ्रेष्वर्निर्हतम ।

शोधन कर दूषीविषवत चिकित्सा:

5)मूषक	लक्षण	चिकित्सा
1) लालन	लालास्त्राव, हिक्का छर्दि	समाक्षिक,तण्डुलीयक्कल्क लेहन
2) पुत्रक	अंगसाद, पाण्डुवर्ण, ग्रंथि	समाक्षिक,शिरिषेंगुदीकल्क लेहन
3) कृष्ण	असृकछर्दि, दुर्दिने	किंशुक (पलाश) भस्म को शिरिषफल कुष्ठसह
4) हंसिर	अन्नद्वेष, जृम्भा, रोमहर्ष	आरग्वधादि क्वाथ सेवन
5) चिक्किर	शिरोदुख, शोथ, हिक्का.	बृहत्य (बडी कटेरी) क्षार
6) छुच्छुन्दर	ग्रीवास्तम्भ, विसूचिका	चव्य हरितकी आदि मधुसह
7) अलस	ग्रीवास्तम्भ, उर्ध्ववायु, रुजा, ज्वर	महागद (मधुसर्पि) लेहन
8) कषायदशन	निद्रा, हृच्छोष, कार्श्य	शिरीषदि चूर्ण मधुसह
9) कुलिंग	दंशमण्डले रेखा	सह(मुदग+ माष पर्णि) मधु सह
10) अजित	अंगकृष्णत्व हृदग्रह	पालिन्दी (त्रिवृत्त) स्नुहीक्षीर में
11) चपल	छर्दी, मूर्च्छा, तृष्णा	भद्रकाष्ठाजटादि लेहन
12) कपिल	व्रणकोथ, ज्वर, ग्रन्थ्युद्गम	श्वेता+श्वेतपुनर्नवा
13) कोकिल	उग्रग्रंथि दाह, दारुण	वर्षाभ(पुनर्नवा), निलीनी क्वाथ
14) अरुण	वात ↑ - वातव्याधी	ग्रंथि मण्डल कर्णिका
15) महाकृष्ण	पित्त ↑ - प्रकोप	ग्रंथि मण्डल कर्णिका
16) महाश्वेत	कफ ↑ - प्रकोप	ग्रंथि मण्डल कर्णिका
17) कपिल	रक्त ^ - प्रकोप	ग्रंथि मण्डल कर्णिका
18) कपोत	सन्निपातज + रक्त	ग्रंथि मण्डल कर्णिका

अरूणादी मूषकदंश चिकित्सा: काकादनी (श्वेत गुंजा) मकोय) (काकमाची) स्वरस, सिरामोक्षण, संशोधन.

6) जलसंत्रास / अलर्क विष:

श्व, श्रृगालादि: चरक - त्रिदोष, सुश्रुत - वातकफ

* दष्ट लक्षण: सुप्तता, दंशे कृष्णं अतिस्त्रवत्यसृक्

* Incubation Period - (30 - 40) दिन,

कभी - कभी 3 मास के बाद लक्षण उत्पन्न।

* **जलसंत्रास असाध्य लक्षण:**

i) जल देखकर, या जल स्पर्श से डर जाता है।

ii) प्रसुप्तोऽथोत्थितो वाऽपि स्वस्थस्त्रस्तो न सिध्यति ।

(सोकर उठे हुए रोगी को यदि जलसंत्रास हो, स्वस्थ अवस्था में ही जलत्रास हो, तो वह भी असाध्य ।)

चिकित्सा जलत्रास: i) विस्त्रावण, ii) अगद लेप, iii) शरपुंखा (1कर्ष), धत्तुर (1/2 कर्ष) उपक्रम. विकार शान्त होने पश्चात - तीक्ष्ण संशोधन.

i) जिस मनुष्य में विष स्वयं कुपित हो जाता है वह नहीं बचता।

ii) विष स्वयं कुपित हो इसके पहले ही वैद्य को उसे प्रकुपित कर देना चाहिये।

* कुत्ता काटने पश्चात:

यदि 10 दिन के भीतर उस कुत्ते की मृत्यु नहीं होती तो वह पागल, विषाक्त नहीं है जानकर उस मनुष्य की प्रतिषेधक चिकित्सा भी बन्द कर देनी चाहिए।

* उन्मत्त श्व आदि के नख, दंत से हुए क्षत का विमर्दन कर उस स्थान कोष्ण तैल से सिंचन करें। यह व्रण वात प्रकोप करता है।

8) कीट कल्प

1) कीट उत्पत्ति: सर्पाणां शुक्रविण्मूत्रशवपूत्यण्ड संभव: ।...(सुश्रुत)

2) प्रकृति: वाय्वग्न्यम्बु प्रकृतय: कीट: । परिणामत:सर्वदोष प्रकृती.

3) सुघोरा: चतुर्विधा: a) वायव्य कीट 18 वात, b) आग्नेय कीट 24 पित्त, c) सौम्य कीट 13 कफ, d) सन्निपातिक कीट 12 त्रिदोष.

त्रिदोष किट - i) (अग्नि सदृश दग्ध वत दंशस्थान)

लाल, काला, पीला, श्वेत फोडा होता है। वेदना तीव्र.

ii) तीक्ष्णविष कीट लक्षण:

छर्दि,अतिसार,तृष्णा, दाह, मूर्च्छा, वेपथु, शीतं दारूणं.

iii) मन्दविष कीट लक्षण: प्रसेक, पीडका, कोठ, कण्डू.

((दूषीविषा: प्राणहर इति संक्षेपतो मता: ।.....(च.चि.23)

चरक: 2 - i) दूषीविष कीट, ii) प्राणहर कीट))

4) गरविष लक्षण: योगैनानाविधैरेषां चूर्णानि गरमादिशेत् ।

(कीटों के विविध प्रकार के योगों से बने चूर्ण - गरविष.)

परं संयोगजं चान्यद गरसंज्ञ गदप्रदम् ।

* दूषीविष सदृश लेप करने पर भी इनसे गरविष उत्पन्न ।

(कालान्तविपाकीत्वान्न तदाशु हरत्यसून ।।...(च.चि.23))

5) कणभ: 4 - i) त्रिकण्ठ, ii) करिणी, iii) हस्तिकक्ष, iv) अपराजित;

लक्षण: श्वयथु, अंगमर्द, गरूगात्र, दंशकृष्ण; चिकित्सा: कुष्ठादी अगद.

6) गोधेरक: 5 -

i) प्रतिसूर्य, ii) पिंगाभास, iii) बहुवर्ण, iv) निरूपम, v) गोधेरक

लक्षण: शोफ, दाह, रूजा, (Above + ज्वर, ग्रंथि - असाध्य)

चिकित्सा: भृंगराज स्वरस + सर्पदंश वत्.

7) मशक: 5 - i) सामुद्र:, ii) परिमण्डल, iii) हस्तिमशक, iv) कृष्ण, v) पार्वतीय (प्राणहर) लक्षण: तीव्रकंडु, दंशशोफ.

चिकित्सा: कृष्णवल्मी मृत्तीका+ गोमुत्र

8) गलगोलिका: 6 - i) श्वेता, ii) कृष्णा, iii) रक्तराजी, iv) रक्तमण्डला, v) सर्वश्वेता, vi) सर्षपिका(प्राणहर)

लक्षण: दाह, शोफ, क्लेद, हृदयपीडा, अतिसार; चिकित्सा: रंजन्यादि अगद.

9) पिपीलिका: 6 - i) स्थूलशीर्षा, ii) संवाहिका, iii) ब्राह्मणिका, iv) अंगुलिका, v) कपिलिका, vi) चित्रवर्णा.

लक्षण: श्वयथु, अग्निस्पर्शवद्दाह, शोफ... चि. कृष्ण वल्मीक मृत्तिका+गोमुत्र

10) मक्षिका: 6 - i) कान्तिरिका, ii) कृष्णा, iii) पिंगला, iv) मधूलिका, v) कषायी (प्राणहर), v) स्थालिका (असाध्य).

लक्षण: कण्डु, शोफ, दाह, रूजा, श्यामवर्ण, पिडका...

चिकित्सा: कृष्ण वल्मीक मृत्तिका+गोमुत्र

11) शतपदी: 8 - i) परूषा, ii) कृष्णा, iii) चित्रा, iv) कपिला, v) पीतिका, vi) रक्ता, vii) श्वेता (असाध्य), viii) अग्निप्रभा (असाध्ये).

लक्षण: शोफ, वेदना, हृदयदाह; चिकित्सा: कुंकुमादि अगद.

12) मण्डुक: 8 - i) कृष्ण, ii) सार, iii) कुहक, iv) हरित, v) रक्त, vi) यववर्णाभ, vii) भृकुटी (असाध्य), vii) कोटिक (असाध्य).

चिकित्सा: मेष श्रृंगादि अगद.

(असाध्य कीट: i) गोधेरक, ii) स्थलिका - मक्षिका, iii) श्वेता, iv) अग्निप्रभा - शतपदी, v) भृकुटी, vi) कोटिक = मण्डूक)

13) अहिण्डुका: लक्षण: तोद, दाह, कण्डु, श्वयथु, मोह.

चिकित्सा: शिरिषादी अगद.

14) विश्वम्भरा:

लक्षण: सर्षपाकार पिडका, सरूजा, शीतज्वर. चिकित्सा: धवादी अगद.

15) कण्डूमका:

लक्षण: पीतांग छर्दि अतिसारज्वरादि मृत्यू चिकित्सा: रात्रौ शीत क्रिया.

16) शूकवृन्ता: लक्षण: कण्डूकोठ, प्रवर्धन्ते शूकं (डंक)

चिकित्सा: कृष्ण वल्मीक मृत्तिका – भृंगराज स्वरस लेप.

17) कष्टसाध्य दंश: नावसन्नं न चोत्सन्नम् अतिसंरम्भवेदनम् ।

(न बहोत दबा हुआ) (न बहोत उत्सेधीन) (वेदना& शोथयुक्त+रक्तवर्ण)

18) किटदष्ट सामान्य चिकित्सा: स्वेद,आलेप,सेक (उष्ण रूप में)+विषघ्न उपचार नख खरोचं से शोफ में भृंगराज स्वरस.प्रतिसूर्यक दंश में सर्पदंश वत् क्रम.

19) वृश्चिक विष प्रकार: 3

		संख्या	उदर	पर्व
i) मन्द	गोशकृत्कोथजा	12	श्वेत	बहु
ii) मध्य	काष्ठा इष्टिकाद्भवा:	03	रक्तपित्तकपिल	त्रि
iii) महा	सर्पकोथोभ्दवा	15	श्याम,लोहित,नील	1,द्वे, पूंछ पर

मध्य: 3 - i) रक्तवर्ण, ii) पीतवर्ण, iii) कपिलवर्ण.

* दंश: a) मन्द, b) मध्य,

c) महा; लक्षण: कम्प, गात्रस्तम्भ, जिव्हाशोफ, उग्रमूर्च्छा, सर्पविषवेग;

चिकित्सा: चक्रतैल परिसेचन, सर्पदष्टवत् + स्वेदन, चूर्ण, प्रच्छान, प्रतिसारण - रजनी, सैंधव, व्योष, शिरिष फल, पुष्प.

20) लुता विष प्रकार - a) साध्यासाध्यतानुसार: 2 -

i) कृच्छ्रसाध्य: 8, ii) असाध्य: 8

b) वीर्यानुसार: 3 - i) उग्र - 7 दिन में मृत्यु, ii) मध्य -7 से अधिक (वाग्भट) 10 दिन में मृत्यु, iii) मन्द - 15 दिन में मृत्यु.

21) विष अधिष्ठान: सुश्रुत: 7

(दंष्ट्रा, लाला, मूत्र, पुरीष, रज,इंद्रिया (शुक्र), नख)

वाग्भट: 8 (नख के जगह श्वास, आर्तव Extra)

22) लुताविष: लूताविषं घोरतमं दुर्विज्ञेयतमं च तत् ।

दुचिकित्स्यतमं चपि भिषग्भिर्मन्द बुध्दिभि: ।।....(सुश्रुत)

ज्वर दाहोऽतिसारश्च गदा: स्युश्च त्रिदोषजा: ।

23) लुता विष 7 दिनों का लक्षण:

प्रथम दिन - लक्षण: इषत्सकण्डुं, चल, कोठ, अव्यक्तवर्ण.

द्वितीय दिन - लक्षण: ...

तृतीय दिन - लक्षण: रू...

पंचम दिन - लक्षण: प्र...

षठ दिन - लक्षण: विप्र...

सप्त दिन - लक्षण: मृ...

24) लुता विष चि...

i) सामान्य चिकित्सा: ...

ii) साध्य लुता चिकित्...

iii) असाध्य चिकित्सा: ...

* लुता दंश – दद्रु कु...

वाग्भट: लुता ये नाभी ...

25) लुताविष में 1...

...त्यांजनाभ्यंग पानधूमं...

द्रव्य	
वत्सनाभ(हृदय प्रभावि विष)	
अर्क (क्षोभक संद्रिय विष)	
स्नूही (क्षोभक संद्रिय विष)	
लांगली(क्षोभक संद्रिय विष)	
करवीर (हृदय प्रभावि विष)	
गुंजा (क्षोभक संद्रिय विष)	
धतूर (मस्तिष्क प्रभावि प्रलापक)	
अहिफेन (मस्तिष्क प्रभावि निद्राकर)	
कपिलू (आक्षपजनन सुषुम्ना प्रभावक विष)	
भंगा (मस्तिष्क प्रभावी प्रलापक)	
जयपाल(क्षोभक संद्रिय विष	
कलातक (क्षोभक संद्रिय विष)	
रुमाखू (हृदय प्रभावी)	

द्वितीय दिन - लक्षण: अन्तेषुशूनं, निम्नमध्यं, प्रव्यक्तरूप.

तृतीय दिन - लक्षण: रूप स्पष्ट, चतुर्थ दिन - लक्षण: कोप,

पंचम दिन - लक्षण: प्रकोप,

षठ दिन - लक्षण: विप्रसृतं मर्मप्रदेशा आवृणोति,

सप्त दिन - लक्षण: मृत्यु.

24) लुता विष चिकित्सा:

i) सामान्य चिकित्सा: श्लेष्मातक त्वचम पान, आलेप, अक्षीव, पिप्पली.

ii) साध्य लुता चिकित्सा: वृध्दिपत्र से दंश स्थान उध्दरेत (निकाल दें)

iii) असाध्य चिकित्सा: दाह, छेदन वर्ज्य (प्रत्याख्येय चिकित्सा)

* लुता दंश – दद्रु कुष्ठ वत लक्षण ....(वाग्भट)

वाग्भट: लुता ये नाभी के उपर और कीट ये नाभी के उपर और नीचे दंश.

25) लुताविष में 10 उपक्रम:

स्थाजनाभ्यंग पानधूमं ऽवपीडं कलवग्रहं। संशोधनं उभयत: सिरामोक्षणम्।।

Note: दहन,प्रच्छान, लेप Not mentioned above, it is for मूषक चिकित्सा. कुल किट संख्या - 167

[वाग्भट Extra: लुता उत्पत्ति– दुष्टान्न से विस्फोट होकर.

अ.सं.: 28 - i) अग्निम् -7, ii) सौम्य - 7, iii) वायव्य - 7, iv) उपपादिक - 7

वाग्भट

i) लुता ये नाभी के उपर और कीट ये नाभी के उपर और नीचे दंश करते है।

ii) लुता विष 21 दिन में पूर्ण शांत होती है।

iii) विष में गोघृत प्रयोग: तैल से विष वृध्दि।

iv) (लुता, कीट) विष नाशक अगद:

1) पद्मक अगद, 2) चम्पक अगद, 3) मन्दर अगद.]

Numericals: कणभ - 4 मशक, गोधेरेक - 5

माक्षिका , पिप्पलीका, गलगोलीका - 6 मण्डूक, शतपदी - 8 .

द्रव्य	औषधी मात्रा	घातक मात्रा	घातक काल (Hours)	प्रतिविष
वत्सनाभ(हृदय प्रभावि विष)	1/8 रत्ती	कृष्ण 100 - 200 mg श्वेत 200 - 500 gm	1 से 5 Hrs.	टंकण
अर्क (क्षोभक सेंद्रिय विष)	क्षीर 1/4 - 3/4 gm मुलक 1/2 - 1 gm	अनिश्चित मुलत्वक 3 - 6 gm	12 Hrs.	दुग्ध, घृत, पलाश
स्नूही (क्षोभक सेंद्रिय विष)	क्षीर 125 - 250 gm	अनिश्चित	अनिश्चित	————
लांगली(क्षोभक सेंद्रिय विष)	250 - 500 mg	> 600 gm	अनिश्चित	————
करवीर (हृदय प्रभावि विष)	30 - 125 mg	अनिश्चित (15 gm मृत्यू)	24 Hrs.	घृत, Inj Atropine
गुंजा (क्षोभक सेंद्रिय विष)	बीज पूर्ण 60-180 mg मूल पत्र 1 - 2 gm	अनिश्चित	24 Hrs.	चौलाई
धत्तूर (मस्तिष्क प्रभावि प्रलापक)	50 - 100 mg	100 - 125 mg	24 Hrs.	(घृत/दुग्ध) वत्सनाभ,Neostigmine
अहिफेन (मस्तिष्क प्रभावि निद्राकर)	अफीम 30-125 mg	2 gm अफीम	6-12 Hrs.	अरिष्ठ, हिंगू, आमलकी, एरण्ड, कपासि बिज इ.
कूपिलू (आक्षपजनन सुषुम्ना प्रभावक विष)	बीजमज्जा 60-250 mg	2 बीज चूर्ण	2-3 Hrs.	अफिम, धत्तूर, कर्पुर,भंगा तम्बाकू
भंगा (मस्तिष्क प्रभावी प्रलापक)	भांग 25 - 50 mg गांजा 60 - 125 mg चरस 30 - 60 mg	अनिश्चित अनिश्चित अनिश्चित	> 12 hrs	कूपिलू सत्व
जयपाल(क्षोभक सेंद्रिय विष	बीज 25 - 50 mg	3 से 4 बीज 4 से 5 बूंद तैल	6-12 Hrs.	गोदुग्ध, घृत, दधी
भल्लातक (क्षोभक सेंद्रिय विष)	कल्क 3/6 gm तैल 10-20 /2 -बिंदू 1gm	10 gm अनिश्चित	12-24 Hrs.	धनीया स्वरस
उन्मत्त (हृदय प्रभावी)	--	15 - 30 mg	5 - 6 Hrs.	Inj Atropin, Magnesium Sulphate

सुश्रुत - उत्तरतंत्र

A) शालाक्य: (26 अध्याय)

1) औपद्रविक, 2) संधिगतरोग, 3) वर्त्मगतरोग, 4) शुक्लगतरोग, 5) कृष्णगतरोग, 6) सर्वगतरोग, 7) दृष्टिगतरोग, 8) चिकित्सित प्रविभाग,9) वाताभिष्यद प्रतिषेध, 10) पित्ताभिष्यंद प्रतिषेध, 11) श्लेष्माभिष्यद प्रतिषेध,12)रक्ताभिष्यद प्रतिषेध,13)लेख्यरोग प्रतिषेध,14) भेद्यरोगप्रतिषेध,15) छेद्यरोगप्रतिषेध 16) पक्ष्मकोप प्रतिषेध,17)दृष्टीगतरोगप्रतिषेध,18)क्रियाकल्प,19)नयनाभिघात प्रतिषेध, 20) कणगतरोग, 21) कणगतरोग प्रतिषेध, 22) नासागतरोग, 23) नासागतरोग प्रतिषेध, 24) प्रतिश्याय प्रतिषेध 25) शिरोरोगविज्ञानीय, 26) शिरोरोग प्रतिषेध.

B) कौमारभृत्य: (12 अध्याय) 27) नवग्रहकृतिविज्ञानीय, 28) स्कंदग्रह प्रतिषेध, 29) स्कंदापस्मारप्रतिषेध, 30) शकुनि प्रतिषेध 31) रेवतीप्रतिषेध, 32) पूतनाप्रतिषेध,33) अंधपूतनाप्रतिषेध, 34)शीतपूतनाप्रतिषेध, 35) मुखमंडिका प्रतिषेध 36) नैगमेष प्रतिषेध, 37) ग्रहोत्पत्ती, 38) योनिव्यापत प्रतिषेध

C) काय चिकित्सा: (21 अध्याय) 39) ज्वरप्रतिषेध, 40) अतिसार प्रतिषेध 41) शोष प्रतिषेध, 42) गुल्मप्रतिषेध, 43) हृद्रोगप्रतिषेध, 44) पाण्डुरोग प्रतिषेध, 45) रक्तपित्त प्रतिषेध, 46) मूर्च्छा प्रतिषेध, 47) पानात्ययप्रतिषेध, 48) तष्णाप्रतिषेध, 49) छर्दि प्रतिषेध, 50) हिक्का प्रतिषेध, 51) श्वासप्रतिषेध, 52) कासप्रतिषेध, 53) स्वरभेदप्रतिषेध, 54) कृमिरोगप्रतिषेध, 55) उदावर्त प्रतिषेध, 56) विसूचिका प्रतिषेध, 57) अरोचकप्रतिषेध, 58) मुत्राघातप्रतिषेध, 59) मूत्रकृच्छ्रप्रतिषेध.

D) भूतविद्या: (3 अध्याय) 60) अमानुषोपसर्ग, 61) अपस्मार प्रतिषेध, 62) उन्माद प्रतिषेध.

E) तंत्रभूषण: (4 अध्याय) 63) रसभेदविकल्प, 64) स्वस्थवत्त, 65) तंत्रयुक्ति, 66) दोषभेदविकल्प.

विदेह देश के निमि:

* शालाक्य तंत्र - निमितंत्र /विदेह तंत्र
* शालाक्य तंत्र के आदिप्रणेता - निमी.

1) औपद्रविक अध्याय

उपद्रवभूत रोगों की चिकित्सा का वर्णन

उपद्रव के विचारार्थ एवं चिकित्सार्थ इस तंत्र की रचना

उत्तरतंत्र - सबसे श्रेष्ठ, नेत्र विद्या पंडित - शालाकी

(शालाक्य शास्त्र ज्ञाता - शालाकी डल्हण.)

सु. उ/पहले 26 अध्याय - नेत्र, कर्ण, नासा, शिरोरोग

सु. नि 16, चि. 22 - मुखरोग

(औपसर्गिक रोग:

भा.प्र. कंडूकुष्ठोपदंश, भूतोन्मादव्रणज्वरा

औरभ्र: त्वगाक्षिरोगापस्मार, राजयक्ष्मा मसूरिका

डल्हण: श्वासकासप्रतिश्याया:,त्वागिद्रियगतेन ज्वरमसूरिकादय)

विद्याद द्वयांगुलबाहुल्यं स्वागुष्ठोदरसम्मितम

द्वयंगुलं सर्वत सार्ध भिषगनयनबुदबुदम ।।...(2.5 अंगुल)

* सुवृत्त गोस्तनाकार सर्वभूतगुणोद्भवम।
* पलं भूवोऽग्नितो रक्तं वातात कृष्ण सितं जलात।

आकाशाद अश्रुमागाश्च जायन्ते नेत्रबुदबुदे ॥

2 अंगुल - A - P Diameter., भिषग नयन - 2.5 अंगुल.

मण्डल - 5, पटल - 6, संधि - 6...(वा. मण्डल - 4)

* 4 पटल का बाहुल्य, दृष्टी के 1/5 होता है।
* कृष्णमण्डल - 1/3 नेत्रायाम. * दृष्टि व्यास - 2.5 - 6 mm.
* दृष्टी - 1/7 of कृष्ण, - 1/9 of तारका, 1/21 of नेत्रायाम

कनीनक संधि - (कनीनिक नहीं)

दोनों वर्त्मो के मिलने से बनता है। ..... पर्याय - नेत्रान्त कोन

अपांग संधि - नेत्रबाहय कोण

* 4 पटल अक्षिगोलक में - तेजोजलाश्रित मांस,मेद, अस्थाश्रित
* अक्षिगोलकगत पटल मोटाई - 1/5 दृष्टी i.e. - 1/42 अंगुल
* वर्त्मकोष में शुकपूर्ण आभा

नेत्र-महाभूतसंबध:

(अ. सं. शुक्लभाग-कफ प्रसाद भाग से, कृष्णभाग-रक्त प्रसाद भाग से,दृष्टीमंडल कफ व रक्त प्रसाद भाग से शुक्लभाग पितृज, कृष्णभाग मातृज, दृष्टीमंडल-मातृज+ पितृज, नेत्रेंद्रिय-आत्मज)

(संक्षेपत: क्रियायोगो निदानपरिवर्जनम।.....सु.उ.1/25)

आचार्य	संख्या
चरक	4/96
चक्रपाणी, कराल	96
सुश्रुत, विदेह	76
वाग्भट, शारंगधर	94
मा.नि, भा. प्र., यो. र.	78
सात्यकी	80

	सवगत	वर्त्म	शुक्ल	कृष्ण	दृष्टी	संधि	बाहय	Total
सु.	17	21	11	4	12	9	2	76
वा.	16	24	13	5	27	9	-	94

सर्वगत:17 - अभिष्यंद - 4, अधिमंथ - 4, हताधिमंथ, वातपर्यय, अन्यतोवात, सशोफपाक, अशोफपाक, शुष्काक्षिपाक, अम्लाध्युषित, सिरोत्पात, सिराहर्ष, (अक्षिपाकात्यय - वा.),

वर्त्मगत:21 - उत्संगिनी, कुंभिका,पोथकी, शुष्कार्श, शोणितार्श, लगन, अंजननामिका, निमेष, पक्ष्मकोप, वर्त्मशर्करा, वर्त्मबुंद, वर्त्मकर्दम, वर्त्मावबंधक, अर्शोवर्त्म, बहलवर्त्म, श्याववर्त्म, बीसवर्त्म, क्लिष्टवर्त्म,क्लिन्नवर्त्म, अक्लिन्नवर्त्म, वाताहतवर्त्म, (वा.- कृच्छ्रोन्मिल,कुकुणक, उत्क्लिष्ट वर्त्म - 4,अलजी, पक्ष्मशात) (यो.र., भा.प्र.- कुंचन)

शुक्ल:11 - प्रस्तारिअर्म, शुक्लअर्म, लोहितअर्म, अधिमांसअर्म, स्नायवअर्म, शुक्तिका, अर्जून, पिष्टक, सिराजाल, सिराजपिडिका, बलासग्रथित.

दुष्टिगत: 12 - प्रथम पटलगतदोष, द्वितीयपटलगतदोष, ततीय पटलगतदोष, तिमिर - 6, काच - 6, चतुर्थपटलगतदोष, लिंगनाश 6, पित्तविदग्धदृष्टि, कफविदग्धदृष्टि, धूमदर्शि, ऱ्हस्वजाडय, नकुलांध्य, गंभिरीका

(वा.- दोषांध, उष्णविदग्ध, अम्लविदग्ध, औपसर्गिक लिंगनाश)

संधिगत:9 - पूयालस, उपनाह, स्त्राव 4 (वातज नहीं), पर्वणी, अलजी, कृमिग्रंथि.

कृष्णगत:4 - सव्रण शुक्र/शुक्ल, अव्रण शुक्र/शुक्ल, अक्षिपाकात्यय, अजकाजात (वा.-सिराशुक्ल,तीव्रवेदना)

[1) वर्त्मगत रोग: - सुश्रुतोक्त 21 में से वाग्भट ने 16 Same बताये. वर्त्मशर्करा को - वर्त्मसिकता, पक्ष्मकोप को - पक्ष्मोपरोध कहा। क्लिष्ट वर्त्म के 4 भेद -पित्त, कफ, रक्त, उत्क्लिष्ट वर्णन किये. कृच्छोन्मिल कुक्कुणक, अलजी, पक्ष्मशात अलग व्याधि वर्णन किये.

शुष्कार्श,वर्त्मावबंधक, f
(भा. प्र. यो. र कुंचन
2) शुक्लगत - सिरोत्प
3) कृष्णगत (वाग्भट) -
अव्रण शुक्र / शुक्ल को
अक्षिपाकत्यय सर्वगत
4) दृष्टीगत - सुश्रुत -
तथा 6 प्रकार के तिमी
वाग्भट - पित्त विदग्ध
6 तिमीर, 6 काच, 6
संसर्गज + Extra औप

सुश्रुत	
धूमदर्शी	-
ऱ्हस्वजाड्य	-
नकुलांध	-
गंभिरिका	-
कफविदग्ध दृष्टी	-
अम्लविदग्ध व उष्णवि	

5) संधिगत - Same
6) सर्वगत रोग - वाग्भ
अक्षिपाकात्यय नयी व्या
सु. उ. 8 (छेद्य: 11-
सिराजाल, सिराजपि
छेद्य: 5 - लगन, उप
लेख्य: 9 - उत्संगिनी
बहल वर्त्म, बध्द वर्त्म
भेद्य: 15 - हताधिमं
सभी सर्वगत + पूयाल
अशस्त्रकृत: 12 -
कफविदग्धदृष्टि, कि
पिष्टक, बलासग्रथित
याप्य: 7 - 6 काच +
असाध्य:17-15 दोष

दो

सभी काच याप्य,

	साध्य
वातज:10 -	शुष्क
साध्य: 5	अन्य
याप्य: 1	वातप
असाध्य: 4)	अभि
पित्तज: 10 -	अम्ल
साध्य: 6	धूमद
याप्य: 2	पित्तज
असाध्य: 2)	(परि
कफज: 13 -	शुक्ल
साध्य: 11	कृमि
याप्य: 1	क्लि

शुष्कार्श,वर्त्मावबंधक, क्लिन्नवर्त्म,अक्लिन्नवर्त्म,शोणितार्श वर्णन नही किये (भा. प्र. यो. र कुंचन व्याधि Extra वर्णन किये.)

2) शुक्लगत - सिरोत्पात व सिराहर्ष इनका समावेश किया।

3) कृष्णगत (वाग्भट) - सव्रण शुक्र / शुक्ल को / क्षतशुक्र कहा ।

अव्रण शुक्र / शुक्ल को - शुध्दशुक्र कहा ।

अक्षिपाकत्यय सर्वगत रोग में वर्णन. शिराशुक्ल व तीव्रवेदना नये वर्णन.

4) दृष्टीगत - सुश्रुत - सनिमित्त लिंगनाश व अनिनित्त लिंगनाश तथा 6 प्रकार के तिमीर को संख्या संप्राप्ति में नही लिया.

वाग्भट - पित्त विदग्ध दृष्टी - Same

6 तिमीर, 6 काच, 6 लिंगनाश – वात, पित्त, कफ, रक्त, त्रिदोषज संसर्गज + Extra औपसर्गिक लिंगनाश वर्णन

सुश्रुत		वाग्भट
धूमदर्शी	-	धुमर
ह्रस्वजाड्य	-	ह्रस्वदृष्टी
नकुलांध	-	दोषांध
गंभिरिका	-	गंभीर दृष्टी
कफविदग्ध दृष्टी	-	वर्णित नही

अम्लविदग्ध व उष्णविदग्ध - नये वर्णन किये।

5) संधिगत - Same वर्णन.

6) सर्वगत रोग - वाग्भट - सिरोत्पात व सिराहर्ष शुक्लगत रोग में, अक्षिपाकात्यय नयी व्याधि वर्णन.]

सु. उ. 8 (छेद्य: 11- 5 अर्म, शुष्कार्श, अर्शोवर्त्म, वर्त्मार्बुद, सिराजाल, सिराजपिडका,पर्वणी.६

भेद्य: 5 - लगन, उपनाह, अंजननामिका, बीसवर्त्म, कृमिग्रंथी.

लेख्य: 9 - उत्संगिनी, पोथकी, कुंभिका, वर्त्मशर्करा, श्याव वर्त्म, बहल वर्त्म, बध्द वर्त्म,क्लिष्ट वर्त्म,वर्त्मकर्दम.

वेध्य: 15 - हताधिमंथ, शुष्काक्षिपाक, अम्लध्युषित छोड़कर, सभी सर्वगत + पूयालस.

अशस्त्रकृत: 12 - शुष्काक्षिपाक, अम्लध्युषित,पित्तविदग्धदृष्टि, कफविदग्धदृष्टि, क्लिन्नवर्त्म, अक्लिन्नवर्त्म, शुक्तिका, अर्जुन, पिष्टक, बलासग्रथित, अव्रणशुक्र, धुमदर्शि.

याप्य: 7 - 6 काच + पक्ष्मकोप.

असाध्य:17-15 दोष दुष्टि के अनुसार,सनिमित्त,अनिमित्त लिंगनाश.)

दोष दुष्टि – साध्यासाध्यत्व

सभी काच याप्य, सभी स्त्राव असाध्य.

	साध्य	असाध्य
वातज:10 - (साध्य: 5 याप्य: 1 असाध्य: 4)	शुष्काक्षिपाक, अन्यतोवात, वातपर्याय, वातज अभिष्यंद, अधिमंथ	गंभिरीका, हताधिमंथ निमेष, वातहतवर्त्म.
पित्तज: 10 - (साध्य: 6 याप्य: 2 असाध्य: 2)	अम्लाधुषित,शुक्तिका, धूमदर्शि, पित्तविदग्धदृष्टि, पित्तज अभिष्यंद,अधिमंथ (परिम्लायी, नील (पित्त) काच–याप्य)	हस्वजाड्य, पित्तस्त्राव
कफज: 13 - (साध्य: 11 याप्य: 1 असाध्य: 1)	शुक्लार्म, लगन,पोथकी, कृमिग्रंथी,बलासग्रथित, क्लिन्नवर्त्म,पिष्टक,उपनाह, कफ–अभिष्यंद,विदग्धदृष्टि	अजकाजात, सव्रणशुक्र, शोणितार्श, रक्तजस्त्राव
रक्तज: 16 - (साध्य: 11 याप्य: 1 असाध्य: 4)	अर्जुन,क्लिष्टवर्त्म,सिराजाल, सिरोत्पात,सिराहर्ष,अंजननामिका, अव्रणशुक्र,पर्वणी,लोहितार्म, (रक्तज अभिष्यंद अधिमंथ)	
त्रिदोष: 25 - (साध्य: 19 याप्य: 2 असाध्य: 4)	शेष व्याधी (सन्निपातिक काच,पक्ष्मकोप - याप्य)	अलजी, अक्षिपाकात्यय, नकुलांध्य, पूयस्त्राव

2) संधिगतरोग

संधिगतरोग- कृमीग्रंथी - वर्त्म व शुक्ल संधी,
अलजी, पर्वणी - शुक्ल व कृष्ण संधि,
उपनाह - कृष्ण व दृष्टि संधि,
पुयालस, स्त्राव - कनिनकसंधि,
नेत्रस्त्राव - नेत्रनाडी By some आचार्य.

3) वर्त्मगतरोग

1) उत्संगिनी: अभ्यंतरमुखी बाहयोत्संग
2) कुंभिका: आध्यमापयांति भिन्ना(फटने के बाद पुन:फुल जाती है।)
3) पोथकी: रक्तसर्षपसान्निभा.
चिन्ह - जलस्त्राव, प्रकाशासहयता, वेदना.
4) वर्त्मशर्करा: सूक्ष्मधना पिडका.
5) अर्शोवर्त्म: एर्वारुबीज वत् (ककडी बीज) मन्दवेदना
6) शुष्कार्श: दीर्घो अंकुर, दारूण
7) अंजननामिका: ताम्रा पिडका
8) बहलवर्त्म: सवर्ण समान आकृती (त्वचा वत वर्ण)
9) वर्त्मावबंध: नेत्र पूर्णरूप से बंद नहीं होता। (न समं छादयेद्)
10) क्लिष्टवर्त्म: अकस्मात भवेत रक्तं
11)वर्त्मकर्दम: क्लिष्टवर्त्म + पित्त प्रकोप वर्त्म - क्लिन्नता होती है।
12) क्लिन्नवर्त्म: अरूजं बाहयत: शुनं अन्तं क्लिन्न स्त्रवयतपि
13) वर्त्मार्बुद: विषम ग्रंथि
14) शोणितार्श: छिन्नाछिना विवर्ध्दन्ते (काटने पर फिर बढता है)
15) लगन: अपाक कोल प्रमाण
16) पक्ष्मकोप: तीक्ष्णाग्र खराणि, उद्धृतैरूदधतै: शांति:
(पक्ष्म के बाल निकाल देने से शांति)
17) अक्लिन्नवर्त्म: धौतानी–धौतानी संबध्यन्ते पुन:पुन: ।

वाताहतवर्त्म:
Paralysis of 7th cranial nerve supply orbicularis palpebrum.
गंभिरीका: Paralysis of 6th cranial nerve.
निमेष: Affect of 3rd cranial nerve - Levator palpebral.
विदेह ने अक्लिन्नवर्त्म को पिल्ल कहा।
वा. कुकुणक आदि 18 रोगों को पिल्ल कहा है।

4) शुक्लगतरोग

(लोहित अर्म = क्षतज अर्म)
अर्म: 1) प्रस्तारि - तनु, रूधीरप्रभं सनीलम्.
2) शुक्ल - मृदु, चिरेण वर्ध्दते 3) लोहित - पद्माभ
4) अधिमांस - यकृत्प्रकाश 5) स्नाय्व - खरं, पाण्डुवर्ण, पिशितमुपैति.
6) अर्जुन: शशरूधिरोपम बिंदु, वेदनारहित.
7) शुक्तिका: पिशित निभा 8) पिष्टक: सलिल निभ, शुक्लपिष्ट
9) सिराजाल: कठिन सिरो महान सरक्त
10) सिराजपीडिका: सिरावत्ता

11) बलासग्रथित: कांस्याभा (कास्य वत श्वेत) अम्बुबिंदु

5) कृष्णगतरोग

1) सव्रणशुक्र: निमग्नरूप (गहराई में मुश्किल से दिखता है) सूई से विध् हुये वत, उष्णस्त्राव.
(वा. नुसार सव्रण शुक्र को क्षतशुक्र)
पित्तदोष के प्रथम पटल में छेदन करने पर कृच्छ्रसाध्य
द्वि.पटल में भेदन, छेदन करने पर याप्य
त. पटल में भेदन, छेदन करने पर असाध्य
त. पटलगत क्षतशुक्र, अव्रण शुक्र असाध्य

2) अव्रण शुक्र: अभिष्यंद के कारण कृष्णभाग में सफेदी No Pain, स्त्राव, द्वि. तृ. पटल वाले - कृच्छसाध्य

3) अक्षिपाकात्य: पूरा कृष्णमण्डल श्वेत, तीव्ररूजा
हेत - अक्षिकोप (अभिष्यंद के उपद्रवस्वरूप भी उत्पन्न)

4) अजकाजात: अजापूरीष प्रतिमा, रूजा
(तिंत्तिर पक्ष्मवर्ण वाला सव्रण शुक्र - असाध्य)

6) सर्वगतरोग

सर्वनेत्ररोग कारण अभिष्यंद

1) **वातन अभिष्यंद:** शिशिराश्रुता शिरोभिताप
2) **पित्तज अभिष्यंद:** शीतल पदार्थ की इच्छा,शिशिराभिनंदा उष्णाश्रुता
3) **कफज अभिष्यंद:** उष्ण पदार्थ की इच्छा (उष्णाभिनंदा)
मुहु:(बार-बार स्त्राव)
4) **रक्तज अभिष्यंद:** ताम्राश्रुता

अधिमंथ: उत्पाटय (नेत्र निकालने वत पीडा)
शिरसोऽर्ध्द वेदना; मथने वत.

1) **वातज अधिमंथ:** उत्पाटय, मथ्यते, शिरसोऽर्ध्द वेदना.
2) **पित्तज अधिमंथ:** यकृत्पिण्डोपमं रक्तराजिचितं स्त्रावि
3) **कफज अधिमंथ:**
पांशू पूर्ण (धूलियुक्त) कष्ट से दिखाई देता है,नासाध्मान.
4) **रक्तज अधिमंथ:** बंधूजीव (जपापुष्प) वत लालवर्ण, स्पर्श से पीडा, नेत्र से रक्तवर्णस्त्राव,
कृष्णभाग- रक्त में ढूबे हुये रिठे समान दिखता है ।

अधिमंथ दृष्टीनाशकाल:

प्रकार	सुश्रुत	वाग्भट
वातज अधिमंथ	6 दिन	5 दिन
पित्तज अधिमंथ	सद्य	सद्य
कफज अधिमंथ	7 दिन	7 दिन
रक्तज अधिमंथ	5 दिन	3 दिन

सशोफपाक: पक्वोदुम्बर सन्निभ.
मुहु उष्ण शीताम्बुस्त्राव (बार बार शीत उष्ण स्त्राव)
हताधीमंथ: नेत्रगोलक बाहर आया सा प्रतीत (Exopthalmas)
(अन्त: सिरा प्रकोप) (विदेह ने शोष)
वातपर्याय: वात कभी पक्ष्म में कभी नेत्र में संचरण कर वेदना
अन्यतोवात: कही और का वात भ्रू , नेत्र में पीड़ा.
कर्ण शिरादी का वात से नेत्र, भ्रू में पिडा.
अम्लाध्युषित: हेतु अम्ल पदार्थ (अम्लेन भुक्तेन)(लोहित शोफ)
सिराहर्ष: हेतु सिरोत्पात की उपेक्षा, किसी भी पदार्थ को देखने में असमर्थ

7) दृष्टीगतरोग

दृष्टीवर्णन: मसूरदलमात्रन्तु पंचभूत प्रसादजाम।
खद्योतविस्फुलिंगाभिमिध्दां तेजोभिरव्ययै:।....शीतसात्म्या
प्रथम पटलगत दोष:
अव्यक्त रूपाणि (सर्व वस्तू अस्पष्ट) - तेजोजलाश्रित.
द्वितीय पटलगत दोष: मिथ्या पदार्थ दिखते है
दूर की वस्तू पास व vice versa दिखना, सूची पाषम न पश्यति।(सूची छिद्र न दिखना) मांसाश्रित(वा तिमिर (2 पटल में)
तृतीय पटलगत दोष: उपर की वस्तु देख सकता है। एवं not नीचे को, कर्ण, नासा, नेत्र रहने पर भी नही है ऐसा लगना।
दोष अधोभाग संचित होनेपर पास का नही दिखता
दोष मध्य संचित होनेपर एक का दो दिखता है। तिमिर (3 पटल)... मेदोश्रित (वा. कांच)
चर्तुथ पटलगत दोष: दष्टि का Total अवरूध्द (लिंगनाश देखने की शक्ती नाश).... अस्थ्याश्रित.
वात तिमिर: (मलिन) रक्तवर्ण दिखना.
पित्त तिमिर: शिखि (मोर पंख) वत् दिखना,
कफ तिमिर: संपूर्ण पदार्थ जल में डूबे हुये दिखना
रक्त तिमिर: हरित, श्याव, कृष्ण, धूम दिखना
सन्निपातिक तिमिर: एक वस्तु 2 से अधिक दिखना: हीन अधिक दिखना, ज्योती पश्याति
परिम्लायी काच हेतु - रक्ततेजसा (In अश्मरी उत्पति पित्ततेजसा)
लिंगनाश: दोषानुसार दृष्टीवर्ण – वात – अरूण,
पित्त – पीत (परिम्लायी/नील काच),
कफ –सित (श्वेत), पांडुर कास्यवर्ण वर्ण प्रवाल, पद्म पत्राभ,
रक्त – (लाल) रक्त,
सन्निपातिक – विचित्र.
तिमिर - परिम्लायी में राग /रंजन न हुआ हो.
काच- परिम्लायी में रोग/ रंजन प्राप्त हो .
लिंगनाश - अल्प दष्टिनाश (डल्हन)
श्लेष्मज लिंगनाश छोडकर Other लिंगनाश असाध्य .
पित्त विदग्धदष्टी: दिवांध एवं रात में दिखता है।
कफ विदग्धदृष्टी: नक्तांध (रक्तांध)
ऱ्हस्वजाड्य: दिन में कठिण से दिखता है एवं वस्तु ऱ्हस्व आकार में दिखना. (असाध्य) विदेह इसे नक्तांध्य का ही भेद मानते है।
नकुलान्ध्य: दिन में विचित्र दिखना (एवं रात में न दिखना)
गंभीरिका: दष्टिविरूप – नेत्रगोलक भीतर धस जाना।
अनिमित्तज लिंगनाश: दष्टि - वैदूर्यवर्ण, विमल.

8) चिकित्सित प्रविभागविज्ञानीय

नेत्ररोगासाध्यासाध्यत्व As before छेद्य, भेद्यादि .....

9) वाताभिष्यन्दप्रतिषेध

आमावस्था में लंघन प्रशस्त माना है।
पंचरात्री तक लंघन से नेत्ररोग, कुक्षिरोग, प्रतिश्याय, व्रण, ज्वर नष्ट होते है।
(अक्षिकुक्षिमया रोगा: प्रतिश्यासव्रणज्वरा।
पंचैत पंचरात्रेण रोगा नश्यंति लंघना ॥ (यो.र.))
नेत्ररोग की आमावस्था के पाचन हेतु 6 कर्म प्रशस्त, (स्वेद, प्रलेप, तिक्तान्न, धूम, लंघन, पाचन) ---(विदेह)
वात अभिष्यंद चिकित्सा: भोजन पश्चात घतपान, अर्दोदक, दुग्ध, सेक, आश्चोतन व गुटिकांजन.
अन्यतोवात - मारूतपर्यय:
भोजन पूर्व घतपान एवं पश्चात दुग्धपान
शुष्काक्षिपाक: स्तन्योदक, अंजन, घतपान,
नस्य तैलेन (अणूतैल) उत्पन्नमात्रे तरूणे नेत्ररोगे बिडालक।

10) पित्ताभिष्यंद

पित्त अभिष्यंद चिकित्सा: पित्त विसर्प वत.
अजा क्षीर, क्षीर सर्पि For नस्य in (3-3) day, मुस्ताद्यअंजन.
अम्लाध्युषित एवं शुक्तिका: सिरामोक्ष वर्ज्य
अम्लाध्युषित:पुराण घत पान,त्रिफला घत पान,तिल्वक घत पान,
वैडूर्याद्यजंन.धूमदर्शी में रक्तपित्त वत चिकित्सा एवं विसर्प वत चिकित्सा:

11) श्लेष्माभिष्यंद

सामान्य चिकित्सा: सिरामोक्ष, धूम, सेक, प्रलेप, कवल,
(3 - 3) दिन पर तिक्त घत पान, अंजनवर्ति.
विशेष चिकित्सा: नावन एवं संसर्जन क्रम.

12) रक्ताभिष्यंद प्रतिषेध

(रक्त - अधिमंथ, अभिष्यंद, सिरोत्पात, सिराहर्ष)
चारों में एक ही प्रकार की चिकित्सा - कौम्भ सर्पि
सिरामोक्षण, विरेचन,नस्य,प्रलेप में शतधौतघृत, आश्च्योतन वर्ति
घतस्य महती मात्र चार्ति नियच्छति।
(घत अधिक मात्रा पान से भी वेदना नष्ट)
अर्जुन चिकित्सा: पित्त अभिष्यंद वत
अंजकानात चिकित्सा: पार्श्व में सूई से वेधन कर विस्त्रावण,
(गोमांस + गोघत) भर दे, बहोत बार लेखन If remains
सर्पशलाका से दहन.

13) लेख्यरोगप्रतिषेध

सामान्य चिकित्सा: स्नेहन, वमन, विरेचन, स्वेदन, प्रच्छान,
लेखन by मण्डलाग्र, 3 दिन बाद नेत्र का स्वेदन
[वाग्भट 2nd day परिषेचन (by नेत्र पट्ट खोल के), 4th day नस्य
5th day आँखे खोले]

14) भेद्यरोगप्रतिषेद्य

निसग्रंथि: निराशय होने तक.
अंजननामिका: उष्ण दीपशिखा अंजन उपयोग.

15) छेद्यरोगप्रतिषेध

अर्म छेदन: 3/4 भाग... (गलशुंडिका में 1/3 छेदन)
बडिश यंत्र से पकडें एवं (मण्डलाग्र से छेदन)
हीन छेदन से पुन: वध्दि एवं अधिक से रक्तस्त्राव
शुक्र वत चिकित्सा.
शेष अर्म चिकित्सा: लेखन
सिराजाल: लेखन - मण्डलाग्र एवं Hold by - बडिशयंत्र
पर्वणी: स्वेदन,
छेदन 1/2 भाग एवं अधिक काटने पर अश्रुनाडी होने का भय
शुष्कार्श: प्रथम – स्वेदन, बाद में छेदन – मण्डलाग्र
पथ्य पालन For I मास
[गलशुण्डिका में 1/3 छेदन, पर्वणी में 1/2, अर्म 3/4]
(शंखांजन - अर्मापिडका, सिराजाल)

16) पक्ष्मकोपप्रतिषेध

सुश्रुत–पक्ष्मकोप: याप्य–यवकार तिर्यक छेद भ्रू एवं पक्ष्म के बिच में.
सुई के बाल से सिवन
वाग्भट – पक्ष्मकोप: यव आकार तिर्यक छेदन, 1 मुंग का अंतर
रखकर सिवन, पाचवे दिन स्टीच निकाले.
उपपक्ष्ममाला चिकित्सा: बडिश से ग्रहण.
प्रतिसारण By पथ्या or तुवरक
4 प्रकार की चिकित्सा of पक्ष्मकोप:
शस्त्र, क्षार, अग्नि, भेषज.

17) दृष्टिगतरोग प्रतिषध

पित्तविदग्धदृष्टि: No शस्त्रक्षत (सिरावेध), कुब्जकाद्यांजन,
काश्मर्याद्यांजन, स्त्रोतांजन.
कफ विदग्धदष्टि: हरेणुद्यांजन,
नक्तांध्य: यकृद्यांजन.
राग प्राप्त तिमिर में सिरामोक्ष निषिध्द.
वातज तिमिर: पंचांगुल (एरण्ड) तैल
चिकित्सा सभी तिमिर में - पुराण सर्पि (+ आयास लोह पात्र वा)
त्रिफला घत (लोहपात्र में)
प्रत्यंजन: अंजन लगाने के पश्चात प्रयुक्त होने वाली वस्तू.
पित्तज तिमिर: रसांजन, सौवीरांजन,कनकाकरोध्दभव (तुत्थ)
साध्यासाध्यता: तिमिर साध्य - प्रथम पटल, अरागि,
कृच्छसाध्य - द्वि. पटल याप्य - त. पटलगत.
लिंगनाश में शस्त्रकर्म-
i) कृष्ण का अपांग से 2 भाग छोडे ii) वेधन By यववका शलाका
iii) वेधन पश्चात Water drop, शब्द सुनाई देता है।
iv) सिंचन By नारिस्तन्य v) शेष दोष निर्हरणार्थ - लेखन
vi) (3 - 3) दिन पर पटट् खोले 8 वे दिन स्वेदन
vii) 10 days पथ्यपालन (लघ्वन्न)
प्रशस्त लिंगनाश वेधनी शलाका - 8 अंगुल

प्रशस्त शलाका	दुष्टशलाका दोष: 6
1) अष्टांगुल -L	कर्कश - शूल
2) अंगुष्ठपर्व - B	खरा - दोषपरिप्लुतम
3) वक्त्रमुकुलाकृति	स्थुलाग्रा - व्रण विशाल
4) ताम्र, लोह, शातकुंभी (सुवर्ण)	तीक्ष्ण -अनेक क्षत
	विषमा - जलस्त्रावन्तु
	अस्थिर - क्रियासंग

लिंगनाश में जब 2 दोष (P एवं R) का संबंध होता है - परिम्लायी काच
परिम्लायी काच + राग नहीं - तिमिर
परिम्लायी काच + राग - काच
काच आगे बढकर दष्टिनष्ट - लिंगनाश. (पर्याय दोषावस्थान सु.)
अंजन Collection:
दीपाशिखा से उत्पन्न अंजन - अंजननामिका

वैडूर्यांजन -	शुक्तिका
जाती पुष्पांजन -	सशोफपाक
कासीसादि अंजन -	पुयालस
क्षारांजन -	बलासग्रथित, सव्रणशुक्र
लेख्यांजन -	अर्म, अव्रणशुक्र, अर्जुन
शंखांजन -	अर्म, सिराजाल, सिराजपिडका
यकृदांजन -	नक्तांध्य
रसांजन -	पित्त तिमिर

(R.R.S. अंजन प्रकार - 5.
स्वस्थवृत्त में प्रसादनं अंजन का प्रयोग करें)

18) क्रियाकल्प

तर्पण पुटपाकश्च सेक आश्च्योतनांजने। (सु. 5)
(पिण्डी, बिडालक Extra by (शारंगधर) (7)
1) तर्पण काल:

तर्पण	मात्रा
वात	1000
पित्त	800 (अ.सं.पित्त 600)

कफ	600
स्वस्थ	500 (अ.सं.स्वस्थ कफ 500)
वर्त्मगत रोग में	100
संधीगत	300
शुक्लगत	500
कृष्णगत	700
दृष्टीगत	800/1000
सर्वगत	1000 (अ.सं.अधिमंथ 1000)

तर्पण काल अंतराल अवधी:

दोष	जेज्जट(सुश्रुत सम्मत)	वाग्भट	डल्हण(विदेह)
वात	1 दिन	नित्य	नित्य
पित्त	3 दिन	1 दिन	1 दिन के बाद
कफ	5 दिन	2 दिन	3 दिन के बाद
स्वस्थ	--	2 दिन	2 दिन के बाद

2) पुटपाक: जीस अवस्था में तर्पण उसी अवस्था में पुटपाक.
नेत्र में दोष प्रशांत होने के बाद प्रयोग.
प्रकार 3 – i) लेखन – जांगल यकृन्मांस व लेखन द्रव्य.
ii) स्नेहन– स्नेह मांसवसा मज्जा मेद, मधुर औषधी.
ii) रोपण – स्तन्य, जांगल, मधु, घृत, तिक्त द्रव्य.
धारण काल:

पूटपाक	धारण मात्रा	अवधी	रोग
लेखन	100	1 दिन	श्लेष्मिकरोग
स्नेहन	200	2 दिन	पित्तजरोग
रोपण	300	3 दिन	वातजरोग

रोपण छोड के शेष पुटपाक में तर्पणोक्त धूमपान करे।

पुटपाक विधी:
2 बिल्व wt. के 2 श्लक्ष्ण मांसपिण्ड.
द्रव्य बिल्व मात्रा, द्रव 1 कुडव.
पुटपाक रस: कनीनके निषेच्य
रक्त,पित्त – शीत, वात,कफ – कौष्ण.
यन्त्रणा तु क्रियाकालाद द्विगुण कालमिष्यते।
(जितने दिन तक चि उससे 2 गुण समय पथ्यकाल)
पुटपाक व तर्पण: पूर्वकर्म – उष्णांबू स्वेद, पश्चात कर्म – धूम.
3) आश्चोतन: न अतिप्रबल रोग में यथा दोषानुसार
आश्चोतन व सेक: 3 प्रकार – पुटपाक समान
आश्चोतन– i) लेखन – 7/8 बिंदू
ii) स्नेहन – 10 बिंदू
iii) रोपन – 12 बिंदू
4) सेक (परिषेक) धारण काल – पुटपाक से द्विगुण.

i) लेखन	200	(योगरत्नाकर 300)
ii) स्नेहन	400	(योगरत्नाकर 600)
iii) रोपन	600	(योगरत्नाकर 400)

सेक व आश्चोतन काल –
i) पूर्वाह्न – कफजन्य विकार ii) अपराह्न – वातजन्य विकार
iii) मध्याह्न – रक्तपित्तजन्य विकार iv) रूजाकाल.
योगायोग – तर्पण समान.
बलवान रोग सेक से नष्ट.
(शारंगधर आश्च्योतन Not in रात्रि)
आश्च्योतन 2 अंगुल अंतर से:
परिषेक 4 अंगुल अंतर से:

शिरोबस्ति: धारण काल - 10 Times of तर्पण,
वातजशिरोरोग में 10000 मात्रा
(शिरोगत वात में स्नेहेधारण काल-1000 मात्रा सु.चि.4 & चक्रपाणी)
पित्तजशिरोरोग में 8000 मात्रा कफजशिरोरोग में 6000 मात्रा
शिरोबस्ति धारण- भोजन पश्चात सुश्रुत.
भोजन पूर्व -- शारंगधर., यो. र.
16 अंगुल चर्मपट्ट (उंचाई), स्नेह बाल के उपर 2 अंगुल धारण करे।
परमकाल 1 सप्ताह.
5) अंजन प्रकार: 3 (लेखन, रोपन, प्रसादन)
i) लेखन – मधुर व्यतिरिक्त 5 रस, रस के अनुसार 5 भेद
ii) रोपन – सस्नेह, कषाय तिक्त.
iii) प्रसादन – मधुर, स्नेह, सम्पन्न.(उपयोग स्वस्थ के लिए)

लेखन अंजन	कफ	प्रात:
रोपन अंजन	वात	सायं
प्रसादन अंजन	पित्त	रात्री

स्वरूप भेद से अंजन 3– गुटीका, रस क्रिया, चूर्ण
(यथापूर्व बलवान)
[अ.सं.प्रकार - 2 - तिक्ष्ण अंजन (मात्रा 1 वेल्ल)
मृदु अंजन (मात्रा 2 वेल्ल)
प्रकार - 4 - लेखन, स्नेहन, रोपन, प्रसादन.
प्रकार - 6 - रस के अनुसार.]
(रस रत्न समुच्चय के अनुसार अजंन 5 प्रकार)

अंजन	गुटिका व रस क्रिया मात्रा	(वाग्भट)	शलाका चूर्ण सु.
लेखन	1 हरेणु	1 वावडिंग	ताम्र 2 शलाका
रोपन	2 हरेणु	2 वावडिंग	लोह 3 शलाका
प्रसादन	1 1/2 हरेणु	2 वावडिंग	सुवर्ण 4 शलाका

(वाग्भट – कषाय, अम्ल, कटु), (शारंगधर– क्षार, अम्ल, तीक्ष्ण)
अंजन शलाका: (8 अंगुल) वक्त्र मुकुलाकार
कलाय (मटर) - मोटाई

अंजन	पात्र में प्रयोग
मधुरांजन	सुवर्ण पात्र में प्रयोग
अम्ल	रजत
लवण	मेषश्रृंगी
कटु	ताम्र
तिक्त	वैडूर्य
कषाय	आयस (पात्र में रखिए)

(सु- श्रेष्ठ चूर्णांजन) (स्त्रोतोंजन - श्रेष्ठ सुश्रुत, वाग्भट)
आश्च्योतन प्रथम क्रियाकल्प... वाग्भट
बिडालक: पलकों के बाल छोडकर लेप (वाग्भट का अवदान है।)
[पिण्डीका: पोटली की सहायता से (शारंगधर का अवदान है।)
अभिष्यंद में उपयोग.]
यो. र.: अंजन शलाका By सीसा, अंजन प्रथम दाहिने आक्षि में
अ.स.: शलाका का अभाव,रोपन की अपेक्षा रूजा रहने पर अंजनार्थ अंगुली का उपयोग करें
(चरक चिकित्सा 26 - क्रियाकल्प - 3 बिडालक, अंजन, आश्चोतन)

19) नयनाभिघातप्रतिषेध

सद्य क्षत नयनाभिघात चिकित्सा: पित्त/रक्त अभिष्यंद वत
प्रथम पटल में उत्पन्नक्षत साध्य.
प्र + द्वि पटल में उत्पन्नक्षत.कृच्छ्र च्युत, हतदक - याप्य
अंतप्रविष्ट नयन चिकित्सा: लंघन, थंडे पानी से अवसेचन

कुकूणक: बालको
दोष – त्रिदोष, लक्ष
चिकित्सा: जलौका
वमन (दूध पीलाक
क्षीरान्नाद अवस्था
अन्नाद अवस्था वा
20) कर्णगतरो
चरक – 4, सु.,म
वाग्भट - 25
कर्णरोगहेतु:
जलक्रिडा ----
कर्णरोग बालक:
भ्रामयते शिरो (जो
(वा. कर्णशुल - 5
कर्णपाली के रोग
कर्णक्ष्वेड, कर्णस्त्रा
अर्श, अर्बुद, शोफ

कर्णपालीरोग
1) परिपोट
2) उत्पात
3) उन्मंथ
4) दु:खवर्धन
5) परिलेही
6) कुर्चलेही
7) कर्णपिपली
8) विदारिका
9) पालीशोष
10) तांत्रिका

कर्णप्रतिनाह: (Ru
Acute obstructio

व्याधी
1) कर्णशूल
3) कर्णक्ष्वेड
4) कर्णबाधिर्य
6) कर्णपाक
7) कर्णस्त्राव
8) पुतिकर्ण
9) कमिकर्ण
10) कर्णकंडू
11) कर्णगूथ
12) कर्णप्रतिनाह
13) कर्णविद्रधि
14) कर्णार्श
अर्श
15) कर्णार्बुद 7 (
16) कर्णशोफ

कुकूणक: बालको के नेत्र वर्त्म प्रदेश में होनेवाला व्याधी.
दोष – त्रिदोष, लक्षण – सूर्यप्रभा न सहते.
चिकित्सा: जलौका से रक्तमोक्षण, प्रतिसारण (त्रिकटु चूर्ण मध)
वमन (दूध पीलाकर)
क्षीरान्नाद अवस्था वालों को वचा चूर्ण + दूध व जल से वमन ।
अन्नाद अवस्था वालों को मदनफलचुर्ण से वमन करायें ।

20) कर्णगतरोगविज्ञानीय, 21) कर्णरोगप्रतिषेध

चरक – 4, सु.,मा.नि; भा.प्र.,यो.र. - 28
वाग्भट - 25 शारंगधर – 18

कर्णरोगहेतु:
जलक्रिडा ----
कर्णरोग बालक: (स्पर्शति कर्णो, ------- काश्यप)
भ्रामयते शिरो (जोर से सिर हिलाता है।)
(वा. कर्णशुल - 5 दोषानुसार
कर्णपाली के रोग भी इसी में वा No separate वर्णन
कर्णक्ष्वेड, कर्णस्त्राव, कर्णगूथ का No separate वर्णन
अर्श, अर्बुद, शोफ के भेद Not mentioned.)

कर्णपालीरोग	दोष	
1) परिपोट	वात	सुकुमारता के कारण बहोत दिन वर्धन
2) उत्पात	पित्त रक्त	भारी आभुषण
3) उन्मंथ	कफ वात	बलपूर्वक वर्धन से
4) दु:खवर्धन	त्रिदोषज	
5) परिलेही	KR कृमि	कर्णशुष्कली को नष्ट करने वाला
6) कुर्चलेही	वात	संगर्भावस्था
7) कर्णपिपली	मिथ्याद्या विहार	
8) विदारिका	त्रिदोषज	
9) पालीशोष	वात	
10) तांत्रिका	वात	

कर्णप्रतिनाह: (Rupture of tympanic membrane).....सुश्रुत
(Acute obstruction of Eustachian tube).....वाग्भट

कर्णनाद की उपेक्षा पर: उच्चैश्रति, कृच्छ्रश्रति, बाधीर्य
कर्णनाद: पर्याय, भंगारक्रौंचनाद, मण्डूककाकयो, तंत्रीमदंगशब्द
कर्णकंडू की उपेक्षा पर कर्णगुथक, उसकी उपेक्षा से कर्णप्रतिनाह
पूतिकर्ण उसकी उपेक्षा से कमिकर्ण.

कर्णरोग सामान्य चिकित्सा:
सामान्य कर्णरोगेषु घतपान रसायनम ।....सु.
नाडी स्वेद, रात्री में घतपान पश्चात मंदोष्ण दुग्ध पान.
बलातैल शतपाक,दीपिकातैल - सद्य वेदना में
(बृ.पंचमल,18 अं. लम्बाई),
Dose of कर्णपूरण in each ear is 6 drops.
अष्टमूत्रपुरण:
इंगुदीसर्षपस्नेह कफ कर्णशूल
बिल्वादि तैल For कर्णबाधिर्य
(यो. र. कटु (सर्षप) तैल For कर्णशूल,कर्णनाद,कर्णबाधिर्य,कर्णक्ष्वेड.
कर्णपूरण:कर्णरोग 100 मात्रा, कण्ठरोग 500 मात्रा,शिरोरोग 1000 मात्रा,) प्रियंग्वादि तैल.

मर्म	लक्षण	प्रकार	स्थान	
1) ककाटिका सिर हिलता है		संधिमर्म	---	
2) फणा	वैकल्यकर	सिरा	नासा	
3) अपांग	अंधता	सिरा	भ्रू के बाहर	
4) आवर्त	अंधता	संधि	भ्रू के अंदर की ओर	
5) उत्क्षेप	---	स्नायु	भ्रूपुच्छ के शख मर्म के उपर	
6) शंख	मत्यु सद्य	अस्थि	कर्णशिर मध्य	
7) स्थपनी	---	सिरा	---	
8) सीमन्त	उन्माद,चित्तभ्रंश	संधि	---	
9) श्रृगाटक		मत्यु	---	---
10) अधिपति		मत्यु	संधि	सिर का भवरा

व्याधी	दोष	अधिष्ठान (Ear)	लक्षण	चिकित्सा
1) कर्णशूल	वात	Ext. Middle	भेरी मदंग शब्द (वा. अनेक नाद)	सामान्य चिकित्सा
3) कर्णक्ष्वेड	वातपित्त	Int. ear	सु नस्य पश्चात शोतसेवन से वेणुघोष	सर्पिउत्तरभक्ति,सर्षपतैल
4) कर्णबाधिर्य	वातकफ	Ex., M. Int.	---	बिल्व तैल कर्णपुरण
6) कर्णपाक	पित्त	Mid.	---	पित्त विसर्प वत वा दुष्ट वण वत
7) कर्णस्त्राव	---	Mid.	3 हेतु शिरोऽभिघात,जल क्रिडा,विद्रधी	प्रियंग्वादी तैल,(पंचक्षीरी क्वाथ पुरण)
8) पुतिकर्ण	कफपित्त	Mid .	अवेदनो वा सवेदनो	स्त्रीस्तन्य + रसांजन + मधु से पूरण
9) कमिकर्ण	सन्निपातिक	Ext.	निमि - सन्निपातिक	धूपन गुग्गुलादि, पूरण- सर्षपतैल गोमूत्र + हरताल
10) कर्णकंडू	वातकफ	Ext.	---	नाडीस्वेद, मूर्धविरेचन
11) कर्णगूथ	कफपित्त	Ext.	पित्तते जसा	स्वेदनं
12) कर्णप्रतिनाह	सन्निपातिक	Mid.	कर्णगुथ मुख से बाहर शिरसोऽभिताप, शिरसोऽर्दभेदक	स्नेह स्वेद शिरोविरेचन
13) कर्णाविद्रधि	2 भेद	Ext.	---	विद्रधी वत
14) कर्णार्श	4 भेद VPKS अर्श वत	Ext.	---	
15) कर्णार्बुद	7 (5 + मांसज, मेदोज)	Ext. Mid.	In शल्य; अर्बुद - 6	अर्बुद वत
16) कर्णशोफ	4 भेद	Ext. Mid. Int.	---	शोफ वत

22) नासागतरोगविज्ञानीय, 23) नासागतरोगप्रतिषेध, 24) प्रतिश्यायप्रतिषेध

चरक - 4 → 17/13, सुश्रुत - 31,
वाग्भट, शारंगधर - 18,
मा. नि; भा. प्र; यो.र. 34
च.सु.वा.शा., अपीनस यो.र.भा.प्र., पीनस
प्रतिश्याय: प्रतिश्यायस्ततो घोरो जायते देहकर्षण: ।
चरक - 4, सुश्रुत - 5, रसरत्नसमुच्चय - 5, एवं षष्ठ - मल संचयजन्य.
योगरत्नाकर – अस्थिगत प्रतिश्याय वर्णन.
सद्योजनक हेतू: नारीप्रसंग, शिरसोअभितापः, मूत्रपूरीष वेगधारण
पूर्वरूप: शिरगुरूत्वं, अंगमर्द, रोमांच.
i) वातज प्रतिश्याय: अवरूध्द नासा, तनुस्त्राव.
ii) पित्तज प्रतिश्याय: पाण्डूस्त्राव, सं धूम.
iii) कफज प्रतिश्याय: शिर, गल, औष्ठ, तालू – कण्डू, शूनाक्षिकुट.
iv) त्रिदोषज प्रतिश्याय: अचानक शांत व अचानक प्रकोप
v) रक्तज प्रतिश्याय: कृमिज शिरोरोग वतलक्षणे, गंधज्ञान नष्ट.
* दुष्ट प्रतिश्याय: नासा कभी क्लेदित, कभी शुष्क, मुहुरानह्यते चापि मुहुर्विव्रियते तथा (कभी खुली कभी बंद) गंधज्ञान नष्ट, कृच्छ्रसाध्य.
प्रतिश्याय चिकित्सा न करने पर दुष्टपीनस उत्पन्न होता है।
प्रतिश्याय उपद्रव: बाधीर्य आन्ध्यं अघ्राणं घोरांश्च नयनामयान कास अग्निसाद शोफाश्च वध्दा कुर्वाति पीनस: ।
(पक्व प्रतिश्याय मे विजया सेवन), व्योषादी वटी प्रयोग.
नव प्रतिश्याय छोडकर शेष सभी प्रतिश्याय में घतपान कराये।
प्रतिश्याय में सर्वप्रथम लंघन., वात प्रतिश्याय दशक्षीरघत: स्नेहपान क्रम पंचलवण सिध्द एवं विदारीगन्धादि गणसिध्द (प्रथम गण) घृतपान., यो.र. प्रतिश्याय पंचरात्री साध्य व्याधी.
वाग्भट ने चौथे दिन नस्य प्रयोग बतलाया है ।

व्याधी	दोष	लक्षण	चिकित्सा
1) अपीनस	वातकफ (विदेह PK)	कभी शुष्क कभी क्लेदीत, गंधज्ञान नष्ट, प्रतिश्याय समान ल.	सर्वेषु सर्वकाल-मरिच; गूड,दधी, षडबिंदु घृत, नासाधावन, व्याघ्री तैल
2) पूतिनस्य	पित्तकफरक्त	दुर्गंधित वायु प्रतिमुखनासिकाभ्या बाहर।	अवपीड नस्य नीत्य सेवन, व्याघ्री तैल
3) नासापाक	पित्त	अरूंषि + अभ्यंतर व्रण उत्पन्न	क्षीरवृक्ष कषाय परिषेक.
4) रक्तपित्त	(V.P.K.S)	चतुर्विध, द्विप्रभवं (यकृत,प्लीहा) द्विमार्ग	
5) पूयशोणित	पित्तरक्त	विद्रधी उपेक्षा से रक्तमिश्रित पूयस्त्राव नासा द्वारा	पूयरक्त चि नाडी व्रण वत
6) क्षवथु/भशक्षव	वात	दोषज क्षवथु घ्राणश्रित मर्म श्रगाटक आगंतुज तरूणास्थिमर्म शोफ,सूर्य को देखना	प्रधमन नस्य
7) भ्रंशथु	पित्तकफ	द्रवीभूत कफ नासाद्वारा बाहर।	---
8) दीप्त	पित्त	धूए सदश वायु निकलना, अभ्यंतर वर्ण प्राकृत वाग्भट स्पर्शासहत्व, रक्तदुष्टी	शीत चिकित्सा, पित्त शामक
9) नासानाह (DNS)	वातकफ	श्वासोश्वास पूर्णत: अवरोध	नासानाह *स्नेहपानं* प्रधान, बलातैल
10) नासाशोष	पित्तवात द्वारा कफशुष्क	कच्छ्रता श्वसन (शा. नासा के अंदर की त्वचा का विदारण) (वा. शुक पूर्णाभ नासात्वं)	नासाशोष क्षीरसर्पि प्रधान, अणु तैल, नस्य
11) नासाशोफ	4	---	---
12) नासार्श	4	---	नासार्श में चक्रदत्त ने शिखरी तैल, गृहधूम तैल
13) नासार्बुद, (शल्य,अर्बुद - 6)	7	---	---
14) नासास्त्राव	कफ	सलिल प्रकाशं; विशेषत: रात्रि में स्त्राव	अवपीडन नस्य - तीक्ष्ण (अजा मांस) सेवन
15) प्रतिश्याय	5	---	---

25) शिरोरोगविज्ञानीय, 26) शिरोरोगप्रतिषेध

चरक - 5, सुश्रुत: माधव, विदेह - 11,
(वाग्भट - 10 (शिरोगत), 9 (कपालगत)
(वा.) उपशीर्षक, पीडका, अबद, विद्रधी, अरूंषिका, दारूणक, इंद्रलुप्त, खलित, पलित)
डल्हन शीर्षक व्याधी वर्णन.
माधवकार सर्व एव शिरोरोग सान्निपात समुत्थिता.।
गदनिग्रहकार ने एक विशिष्ट द्वद्वंज सूर्यावर्त का वर्णन किया है।
द्विदोषज– वातपित्त.
षड्बिंदु: (चक्रदत्त) भावना - अजादुग्ध, द्रव्य - भगराज
6 बूंद प्रत्येक नासापुट में डालने पर शिरो विकार नष्ट
धत्तूरतैल: (भै.र.) धत्तूर कल्क + कटुतैल, For अभ्यंग पूरण- शिरोरोग, कर्णरोग
गुंजातैल: (भै.र.)
हिमांशुतैल: (भै.र)
पथ्याषडंगक्वाथ शीर्षशूल: (शारंगधर)
यो.र. शिरोबस्ती, भोजन पूर्व प्रयोग.
एकबार पश्चात (5, 6, 7) के अंतर पुन: बस्तिकर्म करे
बलातैल, शिरशूलादि वज्र रस अनुपान - छाग दुग्ध
शिरोविरेचन अपवाद - क्षयज, कृमिज शिरोरोग.

व्याधी	दोष	लक्षण	चिकित्सा
1) वात शिरोरोग	वात	रात मे वेदना वृध्दी	दुग्ध, घत, तैल
2) पित्त शिरोरोग	पित्त	रात में वेदनाक्षय	आस्थापन, स्नेहबस्ती
3) कफ शिरोरोग	कफ	शून (अक्षिकूट, मुख पर शोथ)	---
4) त्रिदोषज शिरोरोग	त्रिदोषज	---	पुराणसर्पि
5) रक्त शिरोरोग	रक्त	स्पर्शासहत्व	---
6) क्षयज शिरोरोग	शोषजन्य वात	वेदना, वसाबलासक्षतसम्भवना	बृंहण विधी, क्षयजकास के घृत
7) कृमिज शिरोरोग	कृमि	नासा से जल (+ रक्त + पूय)	रक्त के नस्य से कृमि मूर्च्छित, मूर्ध्दविरेचन; अवपीड नस्य
8) सूर्यावर्त (भास्करावर्त कष्टतम)		RV(च.) S (सु.)	अक्षिभ्रु में सूर्योदय से वेदना शुरूवात
9) सर्पि उत्तरभक्ति, रक्तमोक्षण, नस्य			
	PV (वा.)	कभी शीत कभी उष्ण चि. से लाभ.	
10) अनंतवात	S (च.) S (सु.)	घाटा (ग्रीवा के पीछे) वेदना, नेत्ररोग, गण्डपार्श्व में कंप, हनुग्रह.	सूर्यावर्त चि; रक्तमोक्षण
11) अर्धावभेदक (विदेहVK)	KPR (सु.)	विदेह (3,5.15.30) दिन में वेग	शिरोबस्ति, अग्निकर्म, अवपीडनस्य.
	V or VK(च.)	(10/15) दिन मेअचानक आक्रमण (मा.नि 1 मास)	
	S or (SR)	नयनं वाथ श्रोत्र वा अतिवध्दे विनाशयते.	
12) शंखक	(PVKR)	3 दिन में मारक, 1000 वैद्य से भी असाध्य, उपस्थित मत्युसदश	क्षीरसर्पि नस्य पान (मक्खन) + जांगल रस, 3 दिन पश्चात प्रत्याख्येय व विसर्प वत चिकित्सा.

27) नवग्रहाकृतिविज्ञानीय

चरक - अपरिसंख्येय, सुश्रुत - 9, हारित 8

वाग्भट - 12 (स्त्री 7; पु. - 5) भा. प्र. 9, यो. र. 12

ग्रहहेतु: चरक - कुमारस्य वित्रासनार्थ

वाग्भट - हिंसा, अरति, अर्चना (पूजा)

ग्रह Cannot be seen = 2 reason ऐश्वर्य, विश्वरूप

वा. बालग्रह आक्रमक काल - जन्म से 16 वर्ष तक, भूतावेष -16 yrs.

बाल ग्रह चिकित्सा: पुराण घुत, सर्षप तैल.

(कार्तिक के रक्षणार्थ ग्रह का उत्पात, सर्वग्रह में स्कंदग्रह उग्र)

28) स्कन्द ग्रह प्रतिषेध

29) स्कन्दापस्मार - विशाख

30) शकुनि ग्रह प्रतिषेध

31) रेवती ग्रह प्रतिषेध -लम्बा,कराला,विनता,बहुपुत्रिका,शुष्कनामा

32) पूतना ग्रह प्रतिषेध - दुर्दर्शना, दुर्गन्धा, कराला, मेघकालका, भिन्नगाराश्रया.

33) अन्धपूतना ग्रह प्रतिषेध - कराला पिंगला

34) शीतपूतना ग्रह प्रतिषेध -

35) मुखमण्डिका ग्रह प्रतिषेध -

36) नैगमेष ग्रह प्रतिषेध - विशाख

37) ग्रहोत्पत्ती ग्रह प्रतिषेध - सु. = 9, वा. = 12

(6 स्त्री शरीरधारी, 3 पुरूष शरीरधारी)

i) स्कन्द: रूधिर गंध, हत एक पक्ष्म नेत्र

वाग्भट- एक नयन स्त्रावी, हतैक: पक्ष स्तब्धांडग: सस्वेदो नतकन्धर:

वैकल्य, मरणं वा भवेत ध्रुवम्।

गायत्री मंत्र, दशमुल क्वाथ

(एक नेत्र गात्रस्य स्त्राव: स्थन्दकम्पनम् (यो.र.))

ii) स्कंदापस्मार: (विशाखा) पूयरक्त गन्ध

बालक कभी संज्ञारहित कभी युक्त, हस्तभ्रु पादनर्तनम

चिकित्सा कफहर, सुरसादिगण

iii) शकुनि: विहंग-गंधी, सर्व शरीर स्फोट. संधिस्थानी पुन:स्फोट

वाग्भट – मुख-गुद में पाक.

38) योनिव्यापत् प्रतिषेध –

(चरक चिकित्सा 30 देखिए)

हेतु: प्रवृद्धलिंग पुरूष याऽत्यर्थमुपसेवते।
रूक्षदुर्बलबाला या तस्या वायु: प्रकुप्याति।।
वातज: सफेनिलमुदावर्ता रज: कृच्छ्रेण मुश्चति।
वन्ध्यां नष्टार्तवां विद्याद्विप्लुतां नित्यवेदनाम्।
परिप्लुतायां भवति ग्राम्यधर्मे रूजा भृशम्।।
पित्तज: सदाहं प्रक्षरत्यस्रं यस्यां सा लोहितक्षरा।
सवातमुद्रिरेद्बीज वामिनी रजसा युतम्।।
प्रस्रंसिनी स्यन्दते तु क्षोभिता दु:प्रसूश्च या।
स्थितं स्थितं हन्ति गर्भं पुत्रघ्नी रक्तसंस्रवात्।।
कफज: अत्यानन्दा न सन्तोषं ग्राम्यधर्मेण गच्छति।
कर्णिन्यां योनौ श्लेष्मासृग्भ्यां प्रजायते।।
मैथुनेऽचरणा पूर्वं पुरूषादतिरिच्यते।
बहुशश्चातिचरणादन्या बीजं न विन्दति।।
सन्निपातिक: अनार्तवस्तना षण्डी खरस्पर्शा च मैथुने।
अतिकायगृहीतायास्तरूण्या: फलिनी भवेत्।।
विवृताऽतिमहायोनि: सूचीवक्त्राऽतिसंवृता।
सन्निपातीक योनीरोग असाध्य.

39) ज्वर प्रतिषेध

सर्वविकारजम राजा, शंभुकोधोद्भव, रुद्रकोपग्नीसंभूत, सर्वभूत प्रतापन जन्मादौ निधनै चैव। रोगराट्, रागसधात

व्रण के उपद्रव कृच्छसाध्य.....संदर्भ

देवता व मनुष्य को ही ज्वर सहन होता है।

ज्वर सामान्य लक्षण स्वेदाविरोध

वातज्वर - गात्र स्तम्भ. पित्त ज्वर - स्वेद जायते.

कफ ज्वर - नात्युष्णगात्रता. त्रिदोषज ज्वर - जिव्हा कृष्णता.

ज्वर विशेष पूर्वरूप -

वात - जृंभा, पित्त नयनदाह कफ- न अन्नभिनन्दन.

ज्वर कारण - विष औषधी पुष्पगंध, नक्षत्र पीडया, स्तन्यावतरण

विविध सन्निपातिक ज्वर:

अभिन्यास -निद्रा, हतौजस –निद्रा + क्षीण,

सन्यास - निद्रा + क्षीण + गात्र (शैथिल्य)

ओजोनिरोधज सन्निपात - वातपित्त अधिक्य ओजविस्त्रंस

कफपित्त ज्वर में मुहुर्दाह मुहु:शीत

सन्निपात ज्वर (च. का) - 13 प्रकार

त्रिदोषज ज्वर मोक्ष - वध मर्यादा (7.10.12) दिन ज्वर शांत/ मृत्यु.

प्रलेपकज्वर - शोषिणां, प्राणनाशम दुश्चिकित्स्यतम्.

ज्वर	अधिष्ठान	आश्रय	वर्णन
सतत	रस,रक्त	आमाशय	1 दिन में 2 बार वेग
अन्येद्युष्क	मांस	उर	2 रे दिन ज्वर आता है।
त्राख्य	मेद	कंठ	3 रे दिन ज्वर आता है।
चतुर्थ	अस्थिमज्जा	शिर	4 थे दिन ज्वर आता है।
प्रलेपक	--	संधि	प्रतिदिन (राजयक्ष्मा)

दाहशीतपूर्वक ज्वर - कष्टसाध्य, कफ वात

निरंतर ज्वर - अभिघात व चेतना से उत्पन्न होते है।

(वा. - विषमज्वर - जिस ज्वर का आरम्भ क्रिया व काल विषम)

(खरनाद – संतत को छोडकर शेष ज्वर को विषमज्वर माना है।)

विषमज्वरागमन काल - 6 पूर्वान्ह,मध्यान्ह,अपरान्ह,प्रदोष, अर्धरात्री, प्रत्यूष

यह ज्वर शरीर में कायमस्वरूप रहता है।

ओषधिगंधज - ज्वर - मूर्च्छा शीरे/रूक्, वमथु,

मांसगत ज्वर- सृष्टमुत्र पुरीषता

मेदोगत ज्वर - असाहिष्णुता

मज्जागत ज्वर – महाश्वास

असाध्य ज्वर हतप्रभेद्रिय तीक्ष्णवेग

ज्वर ठीक होने पश्चात रोगी को पुनर्जन्म हुआ सा प्रतित होता है।

रूप व पूर्वरूप वह्निधूम वत लगना

अभिघातज्वर में उष्ण विवर्जीत

उपवास मर्यादा-दोष स्तिमित होने तक.

लंघन निषेध (वातज, क्षयज, मानस) ज्वर

ज्वरी मनुष्य को शीतल जल पीलाने से ज्वर की वध्दि होती है।

दोषज ज्वर	कषाय
वात	पंचमूली
पित्त	मुस्तकटुकेन्द्रयव
कफ	पिप्पल्यादी

ज्वर में औषध दान काल; 7 रात्र (सु.) 10 (अन्य)

उपक्रम For ज्वर by सुश्रुत.

उपक्रम	ज्वर
वमन	कफ ज्वर
विरेचन	पित्त ज्वर
निरूह	वात ज्वर + उदावर्तज
अनुवासन	कटिपृष्ठ दाह but दीप्ताग्नि
मूर्धाविरेचन	शिरोगौरव

(चरक ने उर्ध्वग रक्तपित्त व ज्वर में यवागु निषेध.)

यवागुनिषेध: कफपित्त ज्वर में, ग्रिष्म ऋतु, मद्यनित्या.

दुग्धनिषेध: तरूण ज्वर (Also नवधान्य निषेध)

प्रयोग जीर्णज्वर पित्तवात ज्वर

निदान परिर्वजन For ज्वर

प्रतिदिन प्रात: काल रसोन स्वरस + घत पीना चाहिए।

1) वर्धमान पिप्पली प्रयोग, 2) पटोलादि घत, 3) कल्याणक घत

4) महाकल्याणक- सर्वज्वरान हन्ति महाकल्याणकं, जिवेत 100 वर्ष

5) पंचगव्य घत पान से विषमज्वर नाशन,

6) पंच अजा, 7) पंच महिष, 8) घत उष्ट्रम,

9) अजेय घत For विषमज्वर विषमज्वरे त्रासन चि. वेग आने पर,

10) शतधौत घृत अभ्यंग For दाहशमनार्थ,

11) प्रल्हादकतैल - दाहशमनार्थ, 12) लाक्षादि तैल,

13) क्षीरो वक्षादि तैल, 14) जीवनीय घृत नस्य.

वात ज्वर में तैल छोडकर शेष स्नेह Use for अनुवासन बस्ति।

12 रात्र पश्चात घत प्रयोग For सर्वज्वर.

ज्वर मुक्त लक्षण: लघुत्वशिरस: स्वेदो मुखम अपाण्ड पाकिच।

क्षवथुश्च अन्नकांक्षा च ज्वरमुक्तस्य लक्षणम् ॥ (सु.)

(नक्षत्र भेद से ज्वर की साध्यसाध्यता By हारित

वर्षा मे वात ज्वर कष्ट साध्य, हारित व वा. नक्षत्र भेद से ज्वर की साध्य साध्यता वर्णन. (काल, यम, नियति, मत्यु))

40) अतिसार प्रतिषेध

भेद - 6 (4 + शोकज, आमज), पूर्वरूप विट्संग

कफ अतिसार: मलत्याग के बाद पुन:मलत्याग की शंका

सन्निपातिक अतिसार: कृच्छ्रसाध्य, But असाध्य बाल वृध्द

शोकज: रक्तप्रवत्ति, दुश्चिकित्स्य.

आमज: अनेक वर्ण मल कृच्छता से अनेक बार निकलने वाला

अतिसार चिकित्सा क्रम: तत्रादौ लंघन कार्यमतिसारेषु देहिनाम।
ततः पाचन संयुक्तो रवाग्वादिक्रमो हित।

शूलाध्यमान युक्तअतिसार में वमन लंघन,

आमातिसार में आमपाचनार्थ - महाऔषध, प्रतिविष, मुस्त व 20 योग

आमतिसारे पंच योग, पितातिसार नाशक 6 योग .

यथा ऽमतं तथा क्षीरम अतीसारेषु पूजितम।

सर्व अतिसारो में दूग्ध श्रेष्ठ हैं।

रक्ततिसार में क्षीरीवक्ष के पत्र + घत मधु शर्करा

पिच्छाबस्ती, बालबिल्व प्रयोग .

प्रवाहिका पर्याय:- भोज - विस्त्रंसी,

पाराशर - अन्तग्रंथी, अन्नग्रंथी

हारित - निश्चारक, निस्सारक.

दोष समवाय में चिकित्सा:

समवाये तु दोषाणां पूर्व पित्तमुपाचरेत.

ज्वरे अतिसारेच सर्वत्रान्यत्र मारूतम.

(ज्वर, अतिसार में पित प्रथम अन्यत्र वात चिकित्सा.)

भेद - 4 वात पित्त कफ रक्त चिकित्सा – पिच्छिलबस्त्य.

यवागु गुण: तष्णा, लघु, दीपनी, बस्तिशोधनी, ज्वरे, अतिसारे

व्याधी - 3 कर्मभेद से: कर्मज, दोषज, कर्मदोषज.

ग्रहणी परिचय: ग्रहण्या बलमाग्निहि

षष्ठीपित्तधरा नाम या कला परिकीर्तिता।

पक्वामाशयमध्यस्था ग्रहणी सा प्रकिर्तिता। सु.उ.40/169)

सर्वथा दीपनं सर्व ग्रहणी रोगिणं हितम। (सुश्रुत)

41) शोष प्रतिषेध

अनेक रोगानुगतो बहुरोगपुरोगम
दुर्विज्ञेयो दुर्निवार शोषो व्याधिर्महाबल: । (सु)
अनेकरोगानुगतो बहुरोगोपुरोगम ।
राजयक्ष्मा क्षय: शोषो रोगराट इतिचस्मृत: ॥ ....(अ.सं)
सु शोष व क्षय अलग-अलग वर्णन.
इत्युच्यन्ते ।
संशोषणाद रसादीनां शोष इत्यभीधीयते ।
शोष + 1 प्रकार (सान्निपातिक)---(सु.) Also = 7 (सु.)
व्यवाय, शोक, वृध्दावस्था, व्यायाम, अध्व, उपवास, व्रण, उर:क्षत.
श्वास कास शोणितदर्शनम ।
स्वरभेदश्च जायत॥
(सुश्रुत मूल में षडलक्षज
11 लक्षण व प्रक्षेप रूप में त्रिलक्षण लिखे है।)
ज्वरकास आसृकामय - असाध्य लक्षण.
क्षय में राजयक्ष्मा ल. नही रहता, सिर्फ धातुक्षय होता है।
चिकित्सा a) सब कुछ of अजा to use
1 मास तक सेवन (सु), 6 मास तक सेवन (अ.सं.)
b) 4 योग उपयोग: i) रसोन, ii) नागबला, iii) मागधि,
iv) जतुन (शिलाजतु)
[क्षय - 5 (शारंगधर) चरक ने मरुस्थल को क्षयनाशक माना है
यक्ष्मी के लिए उत्तर दिशा की वायु प्रशस्त है।]
[Common: 1) रसोनकल्क- विषमज्वर 2) रसोनतैल - वातरोग
3) रसोन पिण्डो वातरोगे श्रेष्ठ: (भै.र.)
4) रसोनादिक्वाथ - आमवाते
5) रसोनाद्य घृत -गुल्मग्रहणीश्वासकासक्षय (भै.र.)
6) रसोनक्षीर - क्षय, कास, श्वास, कफ विकार
7) रसोन सुरा - कृमी, कुष्ठ, क्षयानिलघ्नी. (भै.र.)
8) रसेन स्वरस - ज्वर (सु)]

42) गुल्मप्रतिषेध

रक्तगुल्म चि. पैत्तिक गुल्म समान, उत्तरबस्ति.
वात गुल्म में अनुवासन by आनूपौदक, षडंगघृत, हिंग्वाद्यघृत.
पित्त गुल्म में एकशफ वसा + घृत.
कफ गुल्म में जांगल मज्जा.
त्रिदोषज गुल्म में हिंग्वादि चूर्ण + षट्पल घृत
दाधिक घत - गुल्म, प्लीहशूलजित
गुल्मरोगी - दुर्विरेच्य इसलिए स्नेहन - स्वेदन पश्चात शोधन.
गुल्म प्रमुख उपद्रव - शुल इसका वर्णन इसी अध्याय में.
आमज शूल लक्षण - कफ शूलवत
शूल: शंकुस्फोटनवत्तस्य यस्मात् तीव्राश्च वेदना:।
निराहार में तीव्रशूल, भोजन पश्चात् कफ शूल होता है
पार्श्वशूल में कफवात चिकित्सा - पुष्करमुल
कुक्षिशूल - वात
हृदशूल - कफ पित्त से आवत्त, चि. हृदरोग वत्
अविपाक शूल चिकित्सा:
वमनं लंघनं स्वेद: पाचनं फलवर्तय:।
क्षाराश्चुर्णानि गुटिका: शस्यन्ते शूलनाशन:॥
गुल्मावस्था क्रिया: कार्यायथावत् सर्वशूलिनाम् ।
(सर्व प्रकार के शूल रोगों में उनके कारण, दोष रूग्ण प्रकृति तथा देश काल सभी का विचार करके चिकित्सा करे ।)

43) हृद्रोग

प्रकार 4 - सन्निपातिक नहीं.
वात हृद्रोग चि. वमन
पित्त हृद्रोग चि. पित्त ज्वर चि. में बताये कषाय का पान
कफ चि. बला तैल बस्ति
कृमिज चि. मांसरस 3 दिन व 4th दिन विरेचन

44) पाण्डुरोग प्रतिषेध

प्रकार - 4 - वात पित्त कफ त्रिदोषज (अन्य मत से 5)
हेतु - विदूष्य रक्तं, पूर्वरूप - अक्षिकूट शोथ
(च.वा. ने हृदयस्पन्दन को विशेष महत्व दिया है)
पर्याय पाण्डु - 6 - कामला (पाण्डु वदनं), पानकि, पाण्डुरोग
कुम्भाह्वयो, लाघरक, अलसाख्य.
(हाराणचंद्र: कामला: कामशब्दोऽयं साधारणशब्दविशेषात स्वल्पे भक्ताद्यभिल्प प्रवर्तते, तं लातीतो कामला ।
अपानकी: दुष्टत्वेन कुत्सितो ऽपातोऽपानक: सोऽस्यास्तीति अपानको
कुम्भाह्वय: कुम्भकामलाख्योऽपानकि पाण्डूरोस्त्वत्र कुम्भाह्वय उच्यते।
कुम्भकामला: कालान्तरात खरीभूता कृच्छ्रात्स्यात्कुंभकामला।
लाघरक: पुनर्ज्वरादिभिर्लाघवं करोति, सत्यपि सामर्थे इच्छा: जनयतीत्यलसाख्योअपानकि पाण्डुरोगस्त्वत्र लाघरक उच्यते।)
हारीत ने भी कामला तथा हलीमक को पाण्डु का एक रूप मानकर
पाण्डु - 8 प्रकार
हलीमक - महाव्याधो.....(च.)
डल्हण - पाण्डुरोग के बाद कामला उत्पन्न व स्वतंत्र भी उत्पन्न.
वाग्भट - पाण्डुरोग के अंदर व स्वतंत्र भी उत्पन्न.
वाग्भट -हलीमक को लोढर
कामला उपेक्षा → कुम्भकामला उपेक्षा → अलसाख्य उपेक्षा → हलीमक
हरेच्च दोषान् बहुशोऽल्पमात्राञ्
पथ्य: (गुड, अरिष्ट,मुत्रासव,क्षारकृत)
शोफ में वर्णित कल्प पाण्डू में उपयोगी है ।
असाध्य पाण्डु लक्षण:- अन्तेषु शुन परिहीनमध्य.
म्लान तथाशष्न्तेषु च मध्यशूनम

45) रक्तपित्तप्रतिषेध

संख्या - 7 (Also डल्हण - 7) असाध्य ल. - पक्वजम्बूफल
पूर्वरूप - सदनं शीतकामित्वं कण्ठधूमायनं वामि:।
लोहगंधिश्च नि:श्वासो भवत्यास्मिन भविष्यति॥
रक्तपित्त में संग्रहण निषेध:-
नादो संग्राहयमुद्रिक्तं यद् असृग् बलिनोश्ष्श्नत:।
तत् पाण्डु ग्रहणी कुष्ठ प्लीहा गुल्म ज्वरावहम्॥
चिकित्सा:- अक्षीणबलमांसाग्ने: कर्त्तव्यम् अपतर्पणम.
अपतर्पण में उपयोग प्रथम पेया.
अवपीडन नस्य, अजा यकृत कच्चा दिलायें
उत्तर बस्ति मार्ग - मूत्रगत रक्तपित्त.

46) मूर्च्छाप्रतिषेध

1) मोहो मूर्च्छेति तां प्राहु: षड्विधा Also
(मोह पर्याय मूर्च्छा) नर: पतति काष्ठवत
वाग्भट - 4, चरक - 4
2) मूर्च्छा के लक्षण प्रधानत: अपस्मार के समान
3) संन्यास लक्षण: प्रभूतदोष तमसोऽतिरेका, इससे मूर्च्छा व नैव विबुध्यते (व्यक्ति को संज्ञा का बोध नही)
चिकित्सा - i) पुराण घत, ii) ज्वरघ्नो कषाय

47) पानात्यप्रतिषेध

1) मद्य गुण: i) औष्णात शीतोपचारं, ii) तैक्ष्ण्यात् - मनोगतिम्
iii) सौक्ष्म्यात विशत् अवयवान, iv) वैशद्यात् कफशुक्रनुत,
v) रौक्ष्याद् मारूतं कोपयेत्, vi) हर्षदंच - व्यवायित्वात
vii) विकाशित्वाद विसर्पति.

2) मद्य मात्रा: प्रात: काल - 2 पल

मध्यान्ह - 4 पल, प्रदोष (रात्री) - 8 पल

3) मद अवस्था: 3 - पूर्व - पूर्वे वीर्यरतिप्रीति हर्षभाष्ययदि वर्द्धनम्

मध्य - प्रलापो मध्यमे मोहो युक्तायुक्तक्रिया: तथा

पश्चिम - विसंज्ञ: पश्चिमें शेते नष्टकर्म क्रियागुण

(माधवकर - मद - 4 अवस्था)

4) अविधि मद्यपान से: 4 व्याधी

i) पानात्यय - वात, पित्त, कफ, त्रिदोष (प्रकार - 4)

चि. कूष्माण्ड स्वरस प्रयोग

ii) परमद - तष्णा, रूजा – शिर, संधि.

iii) पानाजीर्ण - पित्तप्रकोपक चि. वमन, मद्यपान

iv) पानविभ्रम - द्वेष उत्पन्न, चि. पानक.

"पंचेंद्रियार्थविषया मदुपानयोगा ।
सुखाश्च मनस: सततं निषेव्या:।" सु. उ. 47/43,

दाह चिकित्सा:

i) रक्तज दाह में लंघन चिकित्सा शाखाश्रीत रोहिणी सिरा का वेद्य,

ii) पित्तज दाह में - पित्त ज्वर सम:चिकित्सा

iii) रक्तपूर्ण कोष्ठजन्यदाह - सद्योव्रण वत चिकित्सा

48) तष्णाप्रतिषेध

प्रकार:

चरक - 5, वाग्भट - 6 परंतु वर्णन 7, सुश्रुत – प्रकार - 6

वात तष्णा: शीतजल पान से तृष्णा वृध्दि

कफ तृष्णा: अधिक जल पान की इच्छा

क्षतज तृष्णा: निरंतर जल पान, रात्र व दिन में कष्ट से व्यतित.

चिकित्सा: क्षयज तृष्णा के अतिरिक्त सभी में वमन.

स्नेहपानजन्य तष्णा में अर्धजलमिश्रित मद्य

तष्णा से उत्पन्न तष्णा में (शर्करा, इक्षुरस) शीतल जल.

श्रमादिजन्य तष्णा में मांसरस, गुडोदक.

49) छर्दिप्रतिषेध

1) सम्प्राप्ति: दोषानुदीरयन् वृध्दान् उदानो व्यान संगत:।
उर्ध्वम आगच्छति भशं विरूध्दाहारसेवनात्॥

2) पुर्वरूप: प्रसेको हृदयोत्क्लेशो भक्तस्य अनभिनन्दनम् ।

चिकित्सा: पित्त छर्दि - तिल्वक सर्पि

कफ छर्दि - दशांग योग.

सामान्य चिकित्सा: लघंन, कफ पित्त हर

वमीषु बहुदोषासु छर्दन हितमुच्यते

After शोधन Follow संसर्जन क्रम

ज्वरघ्न कषाय प्रयोग

वात, पित्त, कफ, त्रिदोष

छर्दि में गुडूची हिम + मधु मक्षिका शकृतप्रयोग:

छर्दि में मक्षिकाशकृत प्रयोग

पिबेत पयोऽनितप्तच्च निर्वाप्य गहगोधिकाम

सामान्य चि. पिप्पली माक्षिक मुहुर्मुहु

50) हिक्का प्रतिषेध

यमला हिक्का - कुप्यन्ति शिरोग्रीवम

चि. प्राणायाम, उद्वेजन, त्रासन, सुचितोद, अवपीड.

51) श्वासप्रतिषेध

महाव्याधी श्वास एको विशेषत:।

वासाघत, षट्पलघृत वातव्याधि प्रकरण,गो पुरीष रस.

दुर्निवार रोग - श्वास,कास, विलंबिका

52) कास प्रतिषेध

1) चि. न करने पर राजयक्ष्मा उत्पन्न.

2) वध्दावस्था में जो कास - याप्य.

योग: i) आमलक चूर्ण, ii) गुडोदक, iii) कल्याणकगुड,
iv) अगस्त्यवलेह, v) शतावरी नागबला घृत.

53) स्वरभेद प्रतिषेध

1. सुश्रुत - 6 (वात, पित्त, कफ, त्रिदोष , क्षतज, क्षयज)

2. मेदोजन्य स्वरभेद - अन्तर्गल

चिकित्सा कफ स्वरभेद वत

वात स्वरभेद में - सर्पिउत्तर भक्त और गुडादन

54) कृमिरोग

1) संख्या:(पु. र. क.) चरक - 5,6,7, सुश्रुत - 7,7,6

पुरीषज	रक्तज	कफज
अजवा	केशाद	दर्भपुष्पा
विजवा	रोमाद	महापुष्पा
किप्य	नखाद	प्रलुन
चिप्य	दन्ताद	चिपिट
गण्डूपद	किक्किश	पिपीलिका
चुरू	कुष्ठज	दारूण
द्विमुख	परिसर्प	

उत्पत्ति: i) कफ से उत्पन्न होनेवाले आमाशय में.

ii) रक्त से उत्पन्न होनेवाले धमनी में.

iii) पुरीषज से उत्पन्न होनेवाले पक्वाशय में.

आभ्यंतरकिमी सा. लक्षण:

ज्वरो विवर्णता शुलं हृद्रोग: सदनं भ्रम।
भक्तद्वेषो ऽतिसारश्च संजातकृमिलक्षण:॥

किमी सा. चिकित्सा:

सुरसादिगण से स्नेहन

पुरीषज, कफज - दश्य

रक्तज - अदश्य

रोमों को खाने वाले कृमि चि. इंद्रलुप्त वत

55) उदावर्त्त प्रतिषेध

(च - 6, सु - 13, वा. -14)

56) विसूचिका प्रतिषेध

आमाजीर्ण - विसूचिका - कफ

विष्टब्ध - अलसक - वात

विदग्ध पित्त - विलम्बिका - (कफवात)

विसूचिका चिकित्सा: i) पाष्र्यो दहन, ii) तीक्ष्ण वमन,

iii) लंघन, iv) पाचन, v) विरेचन

क्षारागद, विंड लवण, कल्याणक लवण.प्रयोग

आनाह: प्रकार - 2: i) आम, ii) पुरीषज

57) अरोचक प्रतिषेध

सु - 5, चिकित्सा - वमन - चिकित्सा आश्वासन

अरोचक पर्याय - चित्ताविपर्यय, भक्तोपघात.

58) मुत्राघात

चरक - 8 /13 (मुत्ररोग सिध्दिस्थान),

सुश्रुत -12 मा. नि. 13, दोषानुसार 3

सुश्रुत - चरक के

i) बस्तिकुण्डल, विड्विघात. वर्णन नहीं

ii) मूत्रकृच्छ्र के जगह मूत्रशुक्र

iii) मुत्रौसाद को मूत्रोकसाद कहा और इसके 2 प्रकार (पित्तज), (कफज) वर्णन किये।

वातकुंडलिका लक्षण: सरुज: शनै:शनै:, सुदारूणम

वातवस्ति: कृच्छ्रप्रसाधन:

उष्णवात: मूत्रं हरिद्रम सरक्तं

मूत्रातीत: हेतू - मूत्रवेगधारण

मूत्रौकसाद: रोचना चूर्ण सन्निभ (पित्त), शंखचूर्ण सन्निभ (कफ)

मूत्रजठर: स्त्रोतो निरोधनम्

मूत्रोत्संग: विगुणानिलजो सरुज व निरुज

मूत्रग्रंथि: अभ्यंतर बस्तिमुखे, वत्तोऽल्प, स्थिर वेदनावान

मूत्रशुक्रं: भस्मोदक प्रतीकाशं

सामान्य -

i) अश्मरी, मूत्रोदावर्त वत चिकित्सा

ii) गधे, घोडे का पुरीष स्वरस मात्रा - 1 कुडव स्वरस

iii) ताम्रचुडवसा तैल For उत्तरबस्ति iv) क्षोद्रादि घत,

v) लाघत: महाबलाघत -

vi) 20 प्रकार योनि व्यापद.

vii) वंध्या को पूत्रप्राप्ति.

59) मूत्रकृच्छ्र प्रतिषेध

चरक, सुश्रुत - 8, वाग्भट - 4 मत्रोपघात - 12 सुश्रुत

(अश्मरी,शर्करा एवं अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्र, शर्कराजन्य मूत्रकृच्छ्र उत्पत्ती लक्षण की दृष्टी से समान है।)

शर्करा - हत्पीडा वेपथु: शुलं कुक्षौ वन्हि: सुदुर्बल:।

60) अमानुषोपसर्ग प्रतिषेध

ग्रह - असंख्य ग्रह के अधिपति - 8

i) देव - पूर्णिमा में आक्रमण, ii) शत्रु (दैत्य) दिन रात्र में,

iii) गन्धर्व - अष्टमि, iv) यक्ष - प्रतिपदा,

v) पितर - अमावस्या के दिन आक्रमण करते है,

vi) भुजंग - पंचमी, vii) राक्षस - अर्धरात्री vii) पिशाच - चतूर्दशी.

चिकित्सा.- गायत्री मंत्र जप.

पित, नाग ग्रह - नदि किनार बलि, गंधर्व ग्रह - गोशाला में बलि

असुर - चौराहा में बली.

पिशाच ग्रह छोडकर ग्रहों में प्रतिकुल (अपवित्र) का उपयोग न करें

61) अपस्मार प्रतिषेध

चिकित्सा: 1) पुराण सर्पि - पान, अभ्यंग,

2) स्कन्दग्रह, देवग्रह में जो चि. उपाय.

सिध्दार्थक घत, पंचगव्य घत.

भारंग्यादि सुरा - जातगन्धा, जातरसां

62) उन्माद

सु - 6 विषज Extra

मदसंज्ञा आचार्य ने इसे मद की प्रथमावस्था को कहा है।

कफज उन्माद लक्षण: रात में उन्माद अधिक

विषज उन्माद लक्षण: हतबलेन्द्रियप्रभा:

चिकित्सा: 1) तीक्ष्ण शोधन, 2) अवपीड नस्य

उन्माद में आहार - युवागु, तर्पण.

महाकल्याणक घृत, फलघत.

मद्यपान जन्य मदरोग में - मदु शोधन

शान्तदोषं विशुध्दंच स्नेहबस्तिभिराचरेत्।

(जिस रोगी के दोष शांत हो गये हो, उसका शोधन कर स्नेहबस्ति प्रयोग करे।)

63) रसभेदविकल्प

नागार्जुन ने अम्ल लवण दोनों रसों को जल व अग्नि का अधिकता वाला माना है।

64) स्वस्थवत्तम

(चरक सुत्र देखिए)

अत उर्ध्व द्वादशाशनप्रविचारान् वक्ष्याम:

12 - आशन प्रविचार

(भोजन के 12 प्रकार के प्रविभाग / शीतोष्ण स्निग्ध रूक्ष....)

औषधकाल - 10, अ.ह. 10, अ.सं. 11

65) तंत्रयुक्ति

(पदार्थ विज्ञान देखिए)

66) दोषभेदविकल्पनाम

पुरुष प्राणादि संख्या वर्णन

i) पुरुष - 16 कला, ii) प्राण - 11, ii) रोग - 1120, iv) द्रव्य - 573

भिषक् कर्ता, करणं रसा, दोषा:तु कारणं, कार्य आरोग्य.

If the path is beautiful let us not ask where it leads,But if the desitination is beautiful let us not ask how the path is.

****

अष्टांग संग्रह

वाग्भट - 4 -

1) वृध्द वाग्भट - प्रथम वाग्भट - अ.सं.कर्ता इ.स. 550

2) लघु वाग्भट - द्वितीय वाग्भट - अ.हृ. कर्ता 7th शतक

3) मध्य वाग्भट - संहिताकार वाग्भट (11-12) शतक

4) रस वाग्भट - रसरत्नसमुच्चय वर्णन 13th शतक

* अ. सं. - वृध्द वाग्भट

पिता - सिंहगुप्त, गुरू - अवलोकित, जन्मस्थान - सिंधु, सम्भवत: - बौध्द.

सूत्रस्थान: 3 - 11 - स्वस्थवृत्त वर्णन., 12 -18 - द्रव्यगुण.,

19 - 20 - दोष धातु मल विज्ञान., 21- 22 - रोग विज्ञान.,

23 - 40 - पंचकर्म चिकित्सा वर्णन.

शारीरस्थान: 1 - 7 - शारीर विज्ञान, 8 - 12 - अरिष्ट.

निदानस्थान: रोगनिदान., चिकित्सास्थान: 1 – 24 काय चिकित्सा.

कल्पस्थान: 1 -7 - पंचकर्म कल्प., 8 - परिभाषा

उत्तरस्थान: 1 - 6 - कौमारभृत्य., 7 - 8 - भूतविद्या., 9 -10 - मानस रोग.,

11 - 28 - शालाक्य., 29 - 35 - शल्य., 36 - 37 - क्षुद्र रोग.,

38 - 39 - गुह्य रोग., 40 - 48 - अगदतंत्र., 49 - रसायन., 50 - वाजीकरण.

वैशिष्ट्य:- अ. सं. की रचना गद्य & पद्यात्मक है, तथा सुश्रुत से अधिक साम्य.

- कफ 5 प्रकार - सर्व प्रथम वर्णन. (वा.)

- धातुवृध्दि के लक्षण का सामंजस्य दोष लक्षण के साथ स्थापीत कीया;

i) रसौवृध्दि - कफ विकार, ii) रक्तवृध्दि – पित्त विकार.

- इसका कारण धातु में स्थित विशेष दोषों की उपस्थिती.

i) अस्थि - वायु. ii) रक्त, स्वेद - पित्त. Others - कफ.

धात्वग्नि की मन्दता और तीक्ष्णता धातु के क्षय - वृध्दी में कारणभूत।

सुश्रुतोक्त पंचपंचमुल के व्यतिरिक्त 2 अधिक मध्यम, जीवन पंचमुल वर्णन.

कूल – 7 पंचमुल वर्णन.

गण के प्रकरण में त्रिजात, चतुर्जात, पंचकोल वर्णन.

सम अग्नि रहने पर a) औषध पाचन काल – (2 याम) 6 hrs.

b) आहार पाचन काल (4 याम) 12 hrs.

रोग परिक्षा साधन – 4 i) आप्तोपदेश. ii) प्रत्यक्ष. iii) प्रश्न. iv) अनुमान.

ऋतु संधि - 14 दिन, वैशिष्ट्यपूर्ण उल्लेख.

मास, राशि, स्वरूप इनके आधार पर ऋतुलक्षण वर्णन.

विष चिकित्सा को दंष्ट्रा चिकित्सा कहा (अ.सं.) और (अ.हृ.)

विषयुक्त अन्न परिक्षा विस्तारसे वर्णन, मायुरी - महामायुरी विद्या वर्णन.

पाण्डु व्यतिरिक्त स्वतंत्ररूप से कामला उत्पन्न हो सकती है।

गुह्य रोग - 2 अध्याय वर्णन. उर्ध्वगुद रोग वर्णन (सम्राट अशोक को हुआ था.)

रक्तपित्त सम्बन्धि महत्वपूर्ण उल्लेख:

'पित्तम् रक्तस्य विकृतै: तथा प्रभवत्य असृजा: । स्थानात् प्लिहीतो यकृतौ: तथा ।।'

- सर्व रोग का मुल कारण वेगविधारण, मन्दाग्नि.

a) रोगा: सर्वेऽपि जायन्ते वेगोदिरण धारणै:। (अ.सं.सू.5/25) (अ.हृ.4/22)

b) रोगा: सर्वेऽपि मन्देग्नौ सुतराम् उदराणि तु। (अ.सं.नि.12/3) (अ.हृ.नि.12)

- विषों का चिकित्सकीय उपयोग – सर्वप्रथम. (हरताल और धत्तुर विष वर्णन.)

- ज्वर में 'हरिद्रक ज्वर' नया वर्णन. Also 'प्रलापक ज्वर'

- भस्मक रोग - सर्वप्रथम वर्णन. भस्मक शब्द - डल्हण

- पिप्पल्यादि गण: अ.हृ. से अलग वर्णन.

- दन्तोत्पाटन वर्णन.

- महापद्म, पर्वानुप्लव, इ. शिशु रोग वर्णन. (मा. नि. ने शिशु विसर्प)

- तंत्रयुक्ती - 36.

- सर्वार्थ सिध्द अंजन वर्णन.

- मद्य वर्ग में द्राक्षासव सर्व प्रथम वर्णन.

- हिंगु बोष्कान देश का श्रेष्ठ.

- गुग्गुल अतिसेवन से क्लैब्य उत्पन्न.....(वा. सर्वप्रथम वर्णन).

- विरेचनार्थ कम्पिल्लक त्वक् उल्लेख,शिवागुटिका (रसायन अ.में) सर्वप्रथम उल्लेख

- रसायन अध्याय में पारद का आभ्यंतर प्रयोग वर्णन.

- वाजीकरण पादलेप योग वर्णन.

- रक्त - दोष और दुष्य दोनों (अ.सं.)

- तम - कषाय, कटु. ज्योत्स्ना - मधुर, शीतल (2 द्रव्य अधिक वर्णन.)

टिका: i) शशिलेखा इन्दु 13th शतक

ii) तत्व बोध शिवदास सेन 15th शतक

हिंदी टिका: i) अत्रिदेव गुप्त - विद्यालंकार (भिषग्रत्न)

ii) गोवर्धन शर्मा - लालचंद्र वैद्य (अपुर्ण)

- अग्र द्रव्य में नये द्रव्यों का समावेश: i) वासा - रक्तपित्त,

ii) कण्टकारी - कास, iii) लाजा - छर्दि,

iv) नागबला - क्षय - क्षतघ्न, v) लाक्षा - सद्य क्षतघ्ना,

vi) हरिद्रा - प्रमेह, vii) एरण्ड तैल - वर्ध्म, गुल्म, शूल, वातविकार.,

viii) अयोरज(लोहभस्म) - पाण्डु, ix) रसोन - गुल्म, वातविकार,

x) त्रिफला - तिमिर, xi) शुष्कार्श - चित्रक/भल्लातक,

xii) रक्तार्श - कुटज, xiii) गुग्गुल - मेदोरोग, वातविकार.

1) आयुष्कामीयमध्याय

1) अष्टांग संग्रह विशेषता: अस्थानविस्ताराक्षेपपुनरूक्तादिवर्जित:। (अ.सं.सू.1/5)

2) अष्टांग आयुर्वेद: कायबालग्रहोर्ध्वाङ्ग शल्यदंष्ट्रा जरावृषान। (अ.सं.सू.1/10)

3) दोष - 3

- 5 पित्त व 5 कफ प्रकार वर्णन

दोष स्थान -	वय, अहोरात्र, परिणमन काल
वात आधे (नाभी अधो)	अंत्य
पित्त मध्य (नाभी)	मध्य
कफ उर्ध्व (नाभी उर्ध्व)	आदी

4) अग्नि प्रकार - विषम (वात), तिक्ष्ण (पित्त), मन्द (कफ), सम प्राकृत

Same in अ. हृ.

5) कोष्ठ प्रकार - क्रुर, मृदु, मध्य,

6) प्रकृति - शुक्रार्तवस्थैर्जन्मादौ विषेणेव विषक्रिमे:। (अ.सं.सू. 1/20)

प्रकार - हीन, मध्यम, उत्तम श्रेष्ठ - समधातु, निन्द - द्विदोषज

Total प्रकृती.. (7) (सभी में निन्दीत - वातपित्तज)

7) दोष संसर्ग - द्वि दोषज क्षय/प्रकोप - 6

सन्निपातज - त्रिदोषज क्षय/प्रकोप - 10

8) धातु - 7 (दुष्य, मल - 3)

9) रस - 6 : मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, उषण, कषाय

10) द्रव्य - 3 : शमनं - गिलोय, कोपन - यवक, कोदो, स्वस्थहित - जौ, गेहुं

11) वीर्य - 2 : शीत, उष्ण

12) विपाक:3 : मधुर- मधुर व लवण रस, अम्ल - अम्ल,कटु - तिक्त, कटु, कषाय

13) गुण: i) गुर्वादी गुण - 20,

ii) महागुण - 3,

ii) 3 गुण पृथक - इंद्रियार्थ, व्यवायी, विकासी.

गुर्वादी गुण 20; महागुण 3: सत्व,रज,तम;

अन्य गुण 3: इन्द्रियार्थ (शब्दादी), व्यवायी, विकासी.

14) रोग प्रकार: i) निज, ii) आगन्तु

15) अधिष्ठान: i) शरीर, ii) मन 16) रोगी परिक्षा: दर्शन, स्पर्शन,प्रश्नै.

17) रोग परिक्षा: निदान, प्राग्रूप, रूप, उपशय, संप्राप्ती.

18) देश: i) भुमि - जांगल, आनुप, साधारण., ii) देह

19) भेषज काल: 2) i) क्षण, मुहुर्तादी नुसार, ii) व्याधी अवस्था नुसार

20) औषध भेद: i) शोधन, ii) शमन

2) शिष्योपनयनीयध्याय

1) उत्तम भिषक - 4 लक्षण Also राज वैद्य.

2) शस्त्र, शास्त्र और जल में गुण और दोष पात्र के अनुसार बदलते है।

3) चिकित्सा के 16 अंग:पाद - 4 वैद्य, द्रव्य, उपस्थाता, रोगी, प्रत्येक पाद के 4 गुण इस प्रकार चिकित्सा के 16 अंग.

वैद्य	द्रव्य	उपस्थाता	रोगी
दक्ष	बहुकल्प	अनुरक्त	आढ्य
तीर्थत्तिशास्त्रार्थ	बहुगुण	शुचि	भिषगवश्य
दृष्टकर्मा	संपन्न	दक्ष	ज्ञापक
शुचि	योग्य	बुध्दिमान	सत्ववान

4) रोग भेद: 1) साध्य 2) असाध्य

सुखसाध्य	कृच्छ्र साध्य	याप्य	अनुपक्रम
i) सर्वौषधक्षम	i) शस्त्रादीसाध्य	i) आयुशेष	(प्रत्याख्येय:)
ii) जितात्मा पुरुष	ii) दोषसंकर	होने के कारण	i) भ्रम, मोह,
iii) मर्म छोडके		पथ्याहार से कुछ	अरति उत्पन्न
iii) अल्प, हेतु,		समय के लिए	ii) दृष्ट अरिष्ट
पुर्वरूप, रूप		शान्त	iii) अक्ष
उपद्रव वाला			इंद्रिय नाश
iv) अतुल्य (असमान)			
दुष्य देश, ऋतु व			
प्रकृति वाला			
v) चतुष्पाद युक्त			
vi) ग्रहानुकुल			
vii) एक दोषज			
viii) एक मार्ग व्याधी			

5) अध्ययन न करने के काल: i) आकालविघुत्सनिह्न - अकाली, विद्युत, मेघगर्जना., ii) भूकम्प, iii) राहु दर्शन -सुर्य / चंद्र ग्रहण, iv) पौर्णिमा, अमावस्या,v) गुरू के अनुपस्थिती में पठन ना करे, vi) पद अलग - अलग करके, vii) अति अल्प, अति जोर सें आवाज करके., vii) अतिमन्द.

6) गुरू की सेवा: i) हितान्यवेष आचार्य - गुरू से हिन वेष धारण करे। ii) पर्युपासीत राजवत् - गुरू की राजा के मानी सेवा करे। iii) गुरू के पश्चात सोंये और गुरू के पहले उठे। iv) गुरू का नाम आदर, सम्मान के साथ ले। v) गुरू की किसी बुरी आदत का उपहास न करे।

अध्याय 1 + 2	संख्या	अध्याय 1+ 2	संख्या
आयुर्वेद अंग	- 8	विर्य	- 2
दोष संख्या	- 3	विपाक	- 3
कोष्ठ प्रकार	- 3	गुर्वादी	- 20
अग्नि प्रकार	- 4	मन के गुण	- 2
प्रकृति संख्या	- 3	रोगी परिक्षा साधन	- 3
वात के गुण	- 6	रोग परिक्षा साधन	- 3
पित्त व कफ के गुण	- 7	देश प्रकार	- 2
धातु	- 7	भुमि देश प्रकार	- 3
मल	- 3	काल देश प्रकार	- 2
रस	- 6	औषध प्रकार	- 2
द्रव्य प्रकार	- 3	चिकित्सापाद	- 4

7) भिषक गुण: (अ. सं. सु. 2/8, 9)

i) अभेद्य, (वादविवाद मे जितनेवाला), ii) अनुध्दत (गम्भीर, प्रसिध्द) iii) स्तब्ध (सोचकर कार्य करनेवाला), iv) सुश्रुत (सत्यवादी) v) प्रियदर्शन, vi) बहुश्रुत (प्रसिध्द) vii) कालावेधी viii) ज्ञातग्रन्थ ix) अर्थशास्त्रवित x) दयावान xi) गुरू की आज्ञा में चिकित्सा करनेवाला।

8) राजयोग्य चिकित्सक:

i) हेतु, ii) लिंग, iii) प्रशमन, iv) रोगानाम् अपुनर्भव

5) रोगानुत्पादनीयमध्यायं

1) रोगा सर्वेऽपि जायन्ते वेगोदीरणधारणै: ।... (अ. सं. सू. 5/26)

2) दोषा कदाचित कुप्यन्ति जिता लंघनपाचनै: ।
ये तु संशोधनै: शुध्दा न तेषां पुनरूद्भव: ।। ..... (अ.सं.सू. 5/36)

3) आगन्तुज कारण: भूत, विष, वायु, अग्नि, दंत, काम, क्रोध, भय आदि मानसिक कारणों से.

4) शोधन काल: i) शीतकाल में संचित दोष - वसन्त में
ii) ग्रीष्मकाल में संचित दोष - वर्षा में
iii) वर्षाकाल मे संचित दोष - शरद में

6) द्रवद्रव्यविज्ञानीयमध्यायं

1) जलवर्ग:

* अश्विन मास के सिवाय सामुद्रीक जल नहीं पीना चाहिए।
* दिव्य जल - खोत, धौत, शिलापृष्ठ से बहता हुआ, वस्त्रादिसे छाणा, स्वर्ण या मिट्टी के पात्र में स्थित और अविकृत जल पिये. इसके अभाव में भुमिजल पिये.
* भुमिजल गुणो में आन्तरिक्ष जल समान है।
* देश भेद से जल के गुण: श्वेत मिट्टी में - कषाय रस; काली मिट्टी में - मधुर; पाण्डुर मिट्टी में - तिक्त; निली मिट्टी में - कषाय - मधुर; ऊषर मिट्टी में - लवण; कपिल मिट्टी में - ईषत्क्षार; मिश्र मिट्टी में - मिश्र.
* जिस भूमि में जलीय तत्व अधिकता - मधुर; पार्थिव तत्व अधिकता - लवण - अम्ल; तेज तत्व अधिकता - तिक्त - कटु; वायुतत्व अधिकता - कषाय; आकाश तत्व अधिकता - अव्यक्त.
* जल के प्रकार: i) कौप, ii) सारस, iii) ताडाग, iv) षाण्डय, v) प्रस्त्रवण, vi) औद्भिद्, vii) वापी, viii) नदी.
* हिमालय और मलयाचल से निकला जल पथ्य है।
* स्थिर पानी की नदियों का जल कृमि, श्लीपद, हृदयरोग, कण्ठरोग और शिरोरोग उत्पन्न करती है।
* प्राच्य, अवन्ती, अपरान्त में उत्पन्न नदि जल - अर्शरोग;
महेन्द पर्वत से उत्पन्न जल - उदर, श्लीपद;
सह्याद्री, विन्ध्याचल जल - कुष्ठ, पाण्डु, शिरोरोग
पारियात्र पर्वत जल - त्रिदोषनाशक, बल, वृषता.
समुद्र से उत्पन्न नदीजल - त्रिदोष कारक
पर्णीमूल,विसग्रन्थि,मुक्ता,कतक,शैवाल,वस्त्र,गोमेदक मणि से जल शुध्द होता है।
* पाटला, करवीर आदि के फुलोसे दुर्गंध नाश।
* सब जल - मधुर विपाक
* आमाजीर्ण और विष्टब्धाजीर्ण में प्यास न होने पर भी कोष्ण जल पिलाये।
*स्वस्थ मनुष्यको ग्रीष्म और शरद ऋतु को छोडकर अन्य ऋतु में जल अल्प पीना चाहिए।

* भोजन के शुरूवात में - अग्निमांद्य, कृशता;
भोजन के अंत में - स्थुलता, कफ वृध्दी;
भोजन के मध्य में - समता धातु
* वर्षा ऋतुका आन्तरिक्ष जल - पथ्यकर;
नदी का जल - अपथ्यकर है।

2) क्षीरवर्ग - 8 प्रकार

i) गोदुग्ध: जीवनीय, रसायन, क्षतक्षीण के लिये हितकरी, मेध्य, वर्ण, स्तन्यवर्धक, सर श्रम, भ्रम, मद, अलक्ष्मी, श्वास कास तृष्णा,भूख,जीर्णज्वर, मूत्रकृच्छ्र रक्तपित्त नष्ट कर।

ii) महिष दुग्ध - तीक्ष्णाग्नी, अनिद्रानाशक शीत वीर्य

iii) अजा दुग्ध - लघु, शोष, ज्वर, श्वास, रक्तपित्त अतिसारनाशक

iv) ऊंटनी दुग्ध - रूक्ष, उष्ण, लवण, लघु, अग्निवर्धक वात, कफ, आनाह, कृमि, शोफ, अर्शनाशक.

v) स्त्री दुग्ध - वात,पित्त रक्त,अभिघात जन्य,अक्षिरोगो का तर्पण, आश्च्योतन,नस्य

vi)अवि दुग्ध-अहृदय,उष्ण, वातरोगानाशक, हिक्का, श्वास, पित्त,कफ उत्पादक।

vii) हस्ति दुग्ध - स्थिरताकारक।

viii) गधा, घोडी (एकशफ) दुग्ध - उष्ण, लघु, शाखास्थित वातघ्न अम्ल, लवण रस, स्तम्भता कारक.

* स्त्री का कच्चा दुग्ध - हितकारी धारोष्ण दुग्ध - अमृत के समान।

3) मधु वर्ग - प्रकार - भ्रामर, पौत्तिक, क्षौद्र, माक्षिक.
- क्षौद्र + माक्षिक - पथ्य रूपमें प्रयोग

4) मुत्र वर्ग - गाय, बकरी, भेड, भैसं - स्त्री
हाथी, घोडा, उंट और गधा - पुरूष

	जल	क्षीर	इक्षु	मधु	मद्य	मुत्र
श्रेष्ठ -	अन्तरिक्ष	गो	शर्करा	माक्षिक	नव	गो
कनिष्ठ -	दूषित	भेड	फाणितराब	भ्रामर	पुरातन	-

7) अन्नस्वरूपविज्ञानीयमध्यायं

1) श्रेष्ठ - कनिष्ठ: * **शुक धान्य** - रक्तशाली - श्रेष्ठ, यवशाली - कनिष्ठ
ब्रीहीधान्य में - षष्ठीशाली श्रेष्ठ
शिम्बी धान्य - मुग - श्रेष्ठ, माष - कनिष्ठ
तिल में - कृष्ण तील - श्रेष्ठ, रक्त तील - कनिष्ठ

2) रस - मांस से निर्माण होता है। खल - फलो से, यूष - शिम्बी धान्य से, काम्बलिक - मूली, तिल कल्क, अनार से

3) सत्तु सेवन निषेध: i) जल वर्ज्य ii) दिन में दो बार सेवन
iii) रात में iv) केवल सत्तु, v) दातो से चबाके, vi) अधिक मात्रा में

4) अजा और अवी का उल्लेख मांसवर्ग में नहीं क्योंकी ये जांगल –और आनूप दोनों देशो में मिलते है।

5) मांसवर्ग = 8 (जांगल) - i) मृग वर्ग - 19 जाती, ii) विष्किर - 21,
iii) प्रतुद - 34,
(साधारण) - iv) बिलेशय - 16. v) प्रसह -
(आनुप) - vi) महामृग - vii) जलचर - viii) मत्स्य -
* जांगल मांस - सभी में श्रेष्ठ (कषाय मधूर) शीतवीर्य
* रोहित मत्स्य - श्रेष्ठ, चिलचिम - कनिष्ठ
श्रेष्ठ अ.सं.सु. 7/ 106 -107 (सु. सु. 46 अध्याय देखीए।)

गुरू	लघु
1) पुरूषां में नाभी उर्ध्व	चतुष्पाद में स्त्रि का
2) स्त्री में नाभी अध:	
3) गर्भिणि का	

* उत्तरोत्तर गुरू - सक्थि, कटी, पृष्ठ, उरू, स्कंध, शिरप्रदेश.
* पक्वाशय से आमाशय गुरू.
* उत्तरोत्तर गुरू - वृषण - मेढ्र - वृक्क - यकृत्त - गुदा

6) शाक वर्ग - जीवन्ती - श्रेष्ठ, सर्षप - कनिष्ठ
उत्तरोत्तर गुरू: पूष्प - पत्र - फल - नाल - कदशाक

7) फल वर्ग - द्राक्षा श्रेष्ठ, लकूच - कनिष्ठ, कच्चा बिल्व - ग्राह्य

8) छर्दि, हृदरोग, गुल्मरोग में - वमन निषिद्ध, अर्श और कुष्ठ में - बस्ति निषिद्ध होने पर भी चिकित्सा विधेय है।

8) अन्नरक्षाविधिमध्याय

1) विषमिश्रीत: i) मांस रस में - नीला राजी ii) दुग्ध में - ताम्र
iii) मद्य में - काली iv) दधि में - श्याव (दही), v) तक्र में - नीलपित्त
vi) मस्तु - कपोत vii) धान्याम्ल - कृष्ण viii) द्रव औषधी - कपिल
ix) घृत - सलिल (जल) x) मधु (क्षौद्र) - हरित xi) तैल - अरूण, वसागंधी

2) विषयुक्त अन्न में इन्द्रवर्ण ज्वाला और कुणपगंधी धुम निर्माण होता है।

3) विषयुक्त आहार की गरम बाष्प मयुरकण्ठ सदृश होती है।

4) विष परमौषध - जीवन नाम अगद. सर्वार्थसिध्द अंजन - विष चिकित्सा

5) ताम्र भस्म - मधूसह – हृदयशोधन. **6)** विषकन्या - वर्णन

9) विरूध्दान्न विज्ञानीयमध्याय

1) कास्य पात्रमें 10 रात्री तक रखा घृत नहीं खाना चाहिये।

2) मधु+घृत or मधु+घृत +वसा or मधु +घृत +वसा+तैल+जल संयोग विरूद्ध है।

3) सामान्य नियम: i) शीत वीर्य +उष्ण वीर्य द्रव्य ii) शीत स्पर्श + उष्ण स्पर्श;
iii) नया + पुराना; iv) आम + पक्व पदार्थ एक साथ नहीं खाने चाहिये।

4) विरूद्ध व्याखा: उत्क्लेशदोषान्न हरेदद्रव्य यत्तत्समासत:।
विरूध्द तध्दि धातूनां प्रत्यनीकतया स्थितम।।.. (अ.सं.सू. 9/25)

5) प्रकार: i) असदृश गुण विरूध्द – दूध + कूलत्थी
ii) सदृश गुण विरूध्द - दुध + कटहल
iii) असदृश + सदृश गुण विरूध्द - दुध + मछली.
iv) संस्कार गुण - गरम किया दधी v) मात्रा गुण - मधु + घृत in समान मात्रा
vi) देश गुण - ऊषर भूमि मे रखा जल vii) काल गुण - रात्री में सत्तु
viii) संयोग गुण - पानी फिर सत्तु खाना फिरसे पानी पिना
ix) स्वभाव गुण - यवक अकेले खाना
* विरूध्द आहार जनित रोगों की सामान्य चिकित्सा।
i) जल्दी शोधन करे।
ii) विरूध्दान्न भोजन विपरीत गुण के द्रव्य से रोग शमन

6) पादांशीक क्रम: पादांशेन त्यजेत्सात्म्यमहितं हितमाचरेत्।
एकान्तर ततश्चोर्ध्वं द्वन्तरं त्र्यन्तरं तथा।।... (अ.सं.सू.9/34)

7) विरूध्दान्नजनित व्याधी:(अष्टांग संग्रह)-विस्फोट,शोफ,मद, विद्रधी, गुल्म, यक्ष्मा,तेज,बल, स्मृती, मती,इंद्रिय,चित्त नांश ज्वर, रक्तपित्त, अंष्टौमहागद, मृत्यु
अष्टांग हृदय - गरविष सम

8) त्रयोपस्तंभ वर्णन: अ. सं.	अ. हृदय
1) आहार	1) आहार
2) स्वप्न	2) शयन
3) अब्रह्मचर्य	3) अब्रह्मचर्य

9) निद्रा : संसार के उत्पत्ति काल में उत्पन्न, तम ही जिसका कारण है, तमका ही विकाररूप, तम गुण की अधिकता से उत्पन्न होने वाली निद्रा : प्राय: करके रात्री में उत्पन्न होती है।

निद्रा के 7 प्रकार: i) कालस्वभाव - शरिर धार, ii) व्याधी विशेष,
iii) चित्त (मन) दु:ख से iv) शरीर (मन) दु:ख से,

vi) कफ के द्वारा संज्ञावह स्त्रोतों के रूक जाने से, vi) आगन्तुज कारण से,
vii) तमगुण की अधिकता से पाप्मा,(2,3,4,6,) व्याधी के कारण उत्पन्न होती है।

10) मैथुन मात्रा: जिस संभोग से मन और शरीर में स्थिरता उत्पन्न हो उतना ही।

i) वसन्त और शरद् में - 2 दीन के अन्तर से.

ii) वसन्त अन्त में और ग्रीष्म में - 15 दिन के अन्तर से.

iii) हेमन्त और शिशिर में - इच्छानुसार

* उत्तान अवस्था में पुरूष ने मैथुन करने से एवम् शुक्र वेग धारण करने से - वृध्दि, प्रमेह, शर्करा, अश्मरी ये व्याधियाँ होती है।

(मुर्धपर आघात से तिमिर व्याधी होता है।)

* पुरूष ने 16 के पूर्व और 70 वर्षो के बाद स्त्री संभोग नही करना चाहिए।

11) जनपदोध्वंस वर्णन - अं.सं. सु : 9/94

हेतु: i) वातादिना विकृती, ii) विकृताद् ग्रहचारत:, iii) भौमन्तरिक्ष दिव्येभ्य उत्पातेभ्य: इनमें विकृती इस जन्म के कर्म और पूर्व जन्म कृत कर्म से होती है।

12) दैव - पुर्व जन्म में किये कर्म, पौरूष - इस जन्म में किये कर्म

13) मृत्यु प्रकार - 2) i) काल ii) अकाल

* वेदवादी 101 मृत्यु मानते है।

एक - काल मृत्यु, अन्य - 100 - अकाल मृत्यु

14) बौध्द – 4 प्रकार की मृत्यु मानते है।

i) आयु क्षय से, ii) कर्मोंके क्षय से,
iii) दोनों के क्षय से, iv) उपच्छेद कर्म द्वारा

10) अन्नपानविधि

1)सप्ताहार कल्पना: स्वभाव,संयोग, संस्कार, मात्रा, देश, काल, उपयोगव्यवस्था.

2) जीर्णाहार लक्षण: (चरक में वर्णित नहीं।)

i) स्वस्थानस्थेषु दोषेषु, ii) वातानुलोम्यात, iii) सृष्टेषु मूत्रपुरीष वेगेषु
iv) विशुध्देषु उद्गार हृदय स्त्रोतोमुखेषु विशद, v) लघुनि शरीरे,
vi) अग्रावुदीर्णे जाताया, vii) बुभुक्षायाम्, vii) अभ्यहृतमन्नम प्रदुषय दोषान्,
ix) आयु, बल, वर्ण अभिवर्धयति केवलमयमेव कालो भोजनस्य।

3) सात्म्य: Ref. तत्र सात्म्य नाम सहात्मना भवत्यतस्तदौचित्यादुपशेत इत्येके। (अ. सं. सू. (10/27) * प्रकार: 3

प्रवर	मध्य	अवर
(सर्वरस सात्म्य)	(1 से ज्यादा पर 6 रस नही)	(एकरस सात्म्य)

4) समनशन - पथ्यापथ्यमेकत्र भुक्तं। अध्यशन - भुक्तस्यो परि भुक्तम्।
अमात्राशन - पुन: पृथगेवोपदेक्ष्यते। विषमाशन - अप्राप्तीकालं तु भुक्तं।
अ.हृ. - केवलं बहु चाल्प वा भुक्त तु विषमाशन्।

5) पय: सुशीत ताम्रमये - शीतल जल को ताम्रपात्र में दे।

6) भोजन क्रम - अग्नि सात्म्य अनुसार

i) 1st - द्रव या शुष्क भोजन खाये।
ii) गुरू, मधुर, स्निग्ध भोजन प्रथम खाये।
iii) अम्ल और लवण बीच में।
iv) रूक्ष, द्रव्य और अति रस युक्त द्रव्य खाये (युष)।
* मदाग्निवाले पुरूष उष्ण तरल पदार्थ प्रथम खाये।

7) अनुपान - सबसे श्रेष्ठ जल है।

* शीत जल - शरद्, ग्रीष्म ऋतु, मांस रस - शोष, अम्ल रस - वातज व्याधी शर्करोदक - पित्तज व्याधी, सक्षौद्र त्रिफलोदक - कफज, अक्षि और गल रोग.

अनुपान निषेध: i) उर्ध्वजत्रुगत व्याधी, श्वास, कास, हिक्का, स्वरभेद
ii) कफ प्रसेक, उर: क्षत व्याधी, iii) गाणे या बोलने में लगे व्यक्ति
iv) प्रक्लिन्न देहे, प्रमेह., v) व्रण रोगी, उदर,

8) अन्नसेवन प्रमाण:

i) कुक्षि 2 भाग - अन्न, ii) कुक्षि 1 भाग - द्रव,
iii) कुक्षि 1 भाग - वायु आदी का आश्रय.

11) मात्राशितीय

1) मात्रा पुनरग्निबलाहारद्रव्यपेक्षिनी। अ. सं.सु. 11/4

2) मात्रा प्रकार:

i) अग्निबल अपेक्षा रखनेखाली. ii) आहार द्रव्य अपेक्षा रखनेवाली.

* गुरू द्रव्य 3 रे भागकी तृप्ती तक अथवा 1/2 भागकी तृप्ती तक खाये।
* लघु द्रव्य भी तृप्ती तक नही खाना चाहिए।

3) अतिमात्रम् पुन्ह: सर्वदोषप्रकोपनमाहु:।। 11/12

4) आमविष - विरूदधाशन, अध्यशन, अजीर्णाशन, इससे निर्माण होनेवाला आमदोष आमविष के समान है।

* आमदोष अत्यंत असाध्य है।

क्योंकी वह आशुकारी और चिकित्सा में विरूध्द है।

आम चिकित्सा: i) लंघनम् अल्पदोषानाम्।,
ii) लंघन पाचनाभ्यांमध्य दोषा:।
iii) बहुदोषानाम् पुनदौषावसेचनमेव कार्यम्।

5) अजीर्ण - प्रकार: 3

i) आमाजीर्ण - कफ - लंघन (चिकित्सा),
ii) विष्टब्धाजीर्ण - वात - लंघन (चिकित्सा)
iii)विदग्धाजीर्ण - पित्त - वमन (चिकित्सा)

* रसशेषाजीर्ण - अन्न के जीर्ण होनेपर निर्मित रस के कारण होता है।
* अग्नी समान होने पर उचीत भोजन का 4 याम में और उचित औषध का 2 में परिपाक होता है।

12) विविधौषधविज्ञानीय।

* इस अध्याय में 7 पंचमुल वर्णन, 2 महत्वपूर्ण

1) मध्यमपंचमूल: बला, पुनर्नवा, एरण्ड,मुद्गपर्णी, माषपर्णी; अल्पपित्तकर, कफवातनाशक, लघु

2) जीवनीयपंचमूल - अभीरू (शतावरी), वीरा (काकोली), जीवन्ती, जीवक, ऋषभक, चक्षुष्य, पित्तवातनाशक वृष्य.

17) द्रव्यादिविज्ञानीयम

1) आदि शब्द से रस, वीर्य, विपाक गृहीत करे।

2) द्रव्य - पांचभौतिक; अधिष्ठान - पृथ्वी; योनी - उदक

3) अनुरस:- अनुरसस्तु रसेनाभिभूतत्वादव्यक्तो व्यक्तों वा किंचितदन्ते।

4) रस कर्म: - i) छेदन, ii) उपशमन.

5) कटु, अम्ल, लवण - उत्तरोत्तर उष्णवीर्य।

* तिक्त, कषाय, मधुर - उत्तरोत्तर शीतवीर्य।
* तिक्त, कटु, कषाय - रूक्षा, बध्द विष्मूत्रमारूता:।

लवण, अम्ल, मधुर - सिग्धा: सृष्टविष्मूत्रमारूता:।

6) लवण, कषाय, मधुर - गुरू अम्ल, कटु, तिक्त - लघु

7) वीर्य - A) द्विविध वीर्य - उष्ण - शीत
B) अष्टविध वीर्य - i) गुरू x ii) लघु, iii) स्निग्ध x iv) रूक्ष,
v) तीक्ष्ण x vi) मन्द vii) शीत x viii) उष्ण.

8) विपाक: 3 - मधुर - मधुर + लवण रस का, अम्ल - अम्ल का, कटु - कटु, तिक्त, कषाय रस का

9) किचिंद्रसेन कुरूते कर्म वीर्येण चापरम्।
द्रव्य गुणेन पाकेन प्रभावेणैव किंचित।।... अ.सं.सू. 17/22

* If समान बल of रसादी Then रस को विपाक पराजित करता है।

रस & विपाक को वीर्य पराजित करता है।

रस, विपाक, वीर्य को प्रभाव पराजित करता है।

10) प्रभाव को अचिन्त्य कहा है।

18) रस भेदीयध्यायं

✻ रस - आप्य है।

1) ✻ रस स्कंध		श्रेष्ठ द्रव्य
1) मधुर	-	घृत
2) अम्ल	-	आमलकी
3) लवण	-	सैंधव
4) तिक्त	-	पटोल
5) कटू	-	शुण्ठी
6) कषाय	-	हरितकी

2) देश		रस
1) आनुप	-	मधुर
2) जांगल	-	कटु
3) आनुप साधारण	-	अम्ल + लवण
4) जांगल साधारण	-	तिक्त + कषाय

✻ मधुरादि 6 रसों का संयोग - 57 + 6 रस - 63

19) दोषादिविज्ञानीयमध्याय

1) मलवृद्धि चि. - अतिसार जैसे करे।, ✻ मूत्र वृद्धि चि. - प्रमेह जैसे करे।

✻ मूत्र क्षय चि. - मूत्रकृच्छ् जैसे करे।

2) दोषों की कोष्ठ से धातु के तरफ गति: i) व्यायाम,

ii) उष्ण, तीक्ष्ण (जठराग्नि तिक्ष्णता), iii) अहिताचरण,

iv) स्वभाव से ही वायु के शीघ्रगामी होने कारण.

3) धातु से कोष्ठ की तरफ गति: i) वृध्दि, ii) अभिष्यंदन, iii) पाक,

iv) स्त्रोतोमुख विशोधन, v) कोष्ठ वायोश्चनिग्रहात्.

4) चिकित्सा i) If स्थानिक दोष less बलवान than आगन्तु दोष,

then 1st चिकित्सा of आगन्तु & vice versa.

ii) If both बलवान then 1st चिकित्सा स्थानिक दोष.

20) दोषभेदीयमध्यायं

1) दोष महाभूत: वायु - वायु + आकाश महाभूत,

पित्त - अग्नि + आकाश महाभूत कफ - जल + पृथ्वी

2) वायु - पक्वाशय विशेष स्थान है।, पित्त - नाभी विशेष स्थान है।

कफ - उर विशेष विशेष स्थान। वायू कर्म - उदान - स्त्रोतो प्रीणन,

प्राण - स्त्रोतो विशोधन, समान - स्त्रोतो विचारी।

3) दोषो की वृध्दी: i) चय, ii) प्रकोप इस प्रकार से होती है।

i) वायु गुण + उष्ण गुण - संचय ii) पित्त गुण + शीत गुण - संचय

वायु गुण + शीत गुण - प्रकोप, पित्त गुण + उष्ण गुण - प्रकोप

iii) कफ गुण + शीत गुण - संचय

कफ गुण + उष्ण गुण - प्रकोप

21) दोषोपक्रमणीयमध्यायं

1) दोषोपक्रम

✻ वातस्योपक्रम - स्त्री संपर्क वर्ज्य हेमन्त ऋतुचर्या लवण,अम्ल,मधुर रस सेवन.

✻ पित्तस्योपक्रम - दिवास्वाप वर्ज्य ग्रीष्म ऋतुचर्या तिक्त,मधुर,कषाय.

✻ कफस्योपक्रम - सुख वर्ज्य वसन्त ऋतुचर्या कटु, तिक्त, कषाय.

2) वातज पित्तज विकार - ग्रीष्म;

कफ वातज विकार - वसंत;

कफ पित्तज विकार - शरद;

दोष	संचय	प्रकोप	प्रशम
वात	ग्रीष्म	वर्षा	शरद
पित्त	वर्षा	शरद	हेमन्त
कफ	शिशिर	वसन्त	ग्रीष्म

✻ चय एव जयेद्दोष.....। .... अ.सं.सु. 21/15

4) आम लक्षण: उष्मणो ऽल्पबलत्वेन धातुमाधमपाचितम्।

दुष्टमामाशयगतं रसमांम प्रचक्षते॥ ..... अ.सं.सू. 22/37

5) चिकित्सा:

आम मिश्रित दोष रसादि धातुओ में लीन हो तो No शोधन at all

इसमे पाचन, दिपन, स्नेहन, स्वेदनादि से निकट मार्ग से शोधन करे।

If दोष in आमाशय - Then by वमन, पक्वाशय - Then by विरेचन,

शिर - Then by नस्य से निकाले।

22) रोगभेदीमध्यायं

1) रोग 7 प्रकार के: i) सहज - पितृज, मातृज,

ii) गर्भज - दौहृद विमानज, अन्नरस जन्य, iii) जातज - संतर्पण, अपतर्पण,

iv) पीडाज - शारीरिक, मानसिक v) कालज - व्यापन्नज, असंरक्षणजन्य,

vi) प्रभावज - शापज, पिशाचदि vii) स्वभावज - काल, अकाल.

2) यह 7 प्रकार फिर दो प्रकार के: i) प्रत्युत्पन्न कर्मज, ii) पूर्व कर्मज.

Also explain पराकृत कर्मज व्याधी।

3) दोषो के अनुसार 7 प्रकार: वातज, पित्तज, कफज, वातज पित्तज,

कफज पित्तज, वातज कफज, सन्निपातज

✻ Again 3 प्रकार: i) मृदु ii) मध्य iii) अधिमात्र

✻ Again 2 प्रकार: i) निज ii) आगन्तुज

4) असंख्येत्वाच्च दोषलिङ्गै ऐव रोगानुक्रम च विभजेत्॥... अ.सं.सू. 22/9

5) दोषा एवं हि सर्व रोगैक्कारणम्।..... अ.सं.सू. 22/10

6) रोग के कारण: i) असात्म्येद्रियार्थसंयोग, ii) प्रज्ञापराध, iii) परिणाम.

7) रोग मार्ग: i) बाह्य - शाखा, ii) मध्य - हृदय, बस्ति, मर्म, अस्थि, सन्धि,

स्नायु सिरा कंडरा, iii) आभ्यन्तर - महास्त्रौत.

8) रोग Again 2 Type: i) स्वतंत्र, ii) परतंत्र

- a) पुरोगामी (पुर्वरूप), b) अनुगामी (उपद्रव)

23) भेषजावचारणीयमध्यायं

1) औषध प्रकार: i) संशोधन - बलवान और सौम्य ,

ii) संशमन - बलवान,मध्य,सौम्य.

✻ प्रावृट (वर्षा ऋतु का प्रारंभिक काल) नातिउष्णशीत होता है।

2) शोधन काल: i) वसन्त - फाल्गुन & चैत्र,

ii) शरद - कार्तिक & मार्गशिष iii) प्रावृट - आषाढ & श्रावण.

✻ शीत काल में संचित कफ को चैत्र में

✻ उष्ण काल में संचित वायु को श्रावण में

✻ वर्षा काल में संचित पित्त को कार्तिक में शोधन करे।

3) भेषज काल: 11 i) अभक्त काल - कफज रोग में, रसायन

ii) प्राभक्त काल (खाने के पुर्व) - अपान वायु विकृति

iii)मध्यमभक्त काल (भोजन के मध्य)-समान वायु,उदरगत व्याधी,पित्तज व्याधी

iv) अधोभक्त काल (भोजन के तुरत बाद) - व्यान वायु विकृती,प्रात: काल

भोजन के बाद, उदान वायु सायं भोजन के बाद.

v) सभक्त काल (भोजन में मिलाकर) - बालक में सर्वांग शरीर व्याधी,अरूचि में

vi) अन्तरभक्त काल (दो भोजन के बीच में) - व्यान वायु

vii) सामुद्ग (औषध - भोजन - औषध) - उर्ध्व & अधो काय में आश्रीत दोष,

हिक्का, कम्प आक्षेप.,

viii) मुहुमुर्हु (प्रा

ix) सग्रास (ग्रास

x) ग्रासांतर (दो

xi) रात्री - उर्ध्व

4) त्रिमासान्तर

1) चिकित्सा:

2) द्विविध उप

सन्तर्पण (

बृंहण स्नेहन

शोधन: निरूह,

शमन: पाचन,

3) न बृह्येल्लङ्घन

(Don't give बृंह

1) सर्वोत्तम स्नेह

1) सर्पि - मज्जा

2) सर्पि - मज्जा

3) घृत - तैल -

2) प्रावृट - तैल।

माधवे (वसन्ते) -

3) आत्ययिक अ

4) स्नेह विचारणा

मधुरादी भेद से

& अच्छ स्नेह स

5) स्नेह मात्रा ह्र

6) ह्रस्व - 2 याम

7) शोधन के लि

प्रयोग उत्तम मात्रा

8) शमन के लिए

लगने पर खाना न

9) दोषों के लिए

कफ - क्षार, त्रिव

10) अच्छ स्नेहप

11) शमन स्नेहपा

12) मृदु कोष्ठ - 3

मध्य-(4/5/6) सम

स्नेहपान कराये.

1) अग्नि स्वेद - 4

मेद धातु कफ &

1) दोषहरणमूर्ध्वभा

विरेचनाख्यमुभय व

कफ में - कटु – त

पित्त में - मधुर, वात

viii) मुहुर्मुहु (प्रतिक्षण) - हिक्का, कास, श्वास, तृष्णा, वमन, विषजन्य व्याधी.,
ix) सग्रास (ग्रास के साथ) - प्राण वायु, वाजीकरण.
x) ग्रासांतर (दो ग्रास के मध्य में) - प्राण वायु, हृद्रोग में.
xi) रात्री - उर्ध्वजत्रुगत व्याधी
4) त्रिमासान्तरि तान्मलान्। - मलों का हर 3 मास में शोधन करें।

24) द्विविधोपक्रमणीयमध्याय

1) चिकित्सा: संतर्पण - बृंहण - पृथ्वी + जल
अपतर्पण - लङ्घन - अग्नि + वायु + आकाश

2) द्विविध उपक्रम

सन्तर्पण (बृंहण)			अपतर्पण (लङ्घन)		
बृंहण	स्नेहन	स्तंभन	लंघन	रूक्षण	स्वेदन

शोधन: निरूह, वमन, विरेचन, नस्य, रक्तमोक्षण.
शमन: पाचन, दिपन, क्षुत, तृट, व्यायाम, आतप, मारूत.
3) न बृह्येल्लङ्घनीयान् बृंह्यांस्य, मृदु लङ्घयेत्।
(Don't give बृंहण to लंघन योग्य, But give मृदु लंघन to बृंहण योग्य.)

25) स्नेहविधिमध्याय

1) सर्वोत्तम स्नेह: i) सर्पि, ii) मज्जा, iii) वसा, iv) तैल.
1) सर्पि - मज्जा - वसा - तैल - पित्तघ्नता यथापूर्व.
2) सर्पि - मज्जा - वसा - तैल - वातकफघ्ना उत्तरोत्तर.
3) घृत - तैल - वसा - मज्जा - गुरूता उत्तरोत्तर.
2) प्रावृट - तैल (श्रावण मास); वर्षान्ते (शरदे) - सर्पि;
माधवे (वसन्ते) - वसा + मज्जा
3) आत्ययिक अवस्थामें, शीत काल में तैल प्रयोग करे.
4) स्नेह विचारणा - 64
मधुरादी भेद से - 63
& अच्छ स्नेह सर्वश्रेष्ठ - 01
64
5) स्नेह मात्रा ह्रसीयसी - कोष्ठज्ञान के लिए
6) ह्रस्व - 2 याम में जीर्ण, मध्य - 4 याम में जीर्ण, उत्तम - 8 याम में जीर्ण.
7) शोधन के लिए स्नेह प्रयोग - पहले दिन का अन्न जीर्ण होने पर अच्छ प्रयोग उत्तम मात्रा में करे।
8) शमन के लिए स्नेह प्रयोग - पहले दिन का अन्न जीर्ण होकर भूख लाने पर खाना न खाते हुए मध्यम मात्रा में स्नेह पिये।
9) दोषों के लिए स्नेह प्रयोग - वात - सलवणं सर्पि, पित्त - केवल सर्पि, कफ - क्षार, त्रिकटुकान्वित सर्पि.
10) अच्छ स्नेहपान के बाद उष्णोदक पिये।
11) शमन स्नेहपान में विरेचन के अनुसार उपचार करे।
12) मृदु कोष्ठ - 3 दिन (कम से कम) क्रुर कोष्ठ - 7 दिन (ज्यादा से ज्यादा) मध्य-(4/5/6) सम्यक् स्नेहपान लक्षण जबतक नही दिखते तब तक अच्छ स्नेहपान कराये.

26) स्वेदविधिमध्यायं

1) अग्नि स्वेद - 4 2) 10 अनाग्नेय स्वेद:
भेद धातु कफ & वात से आवृत्त होने पर अनाग्नेय स्वेद.

27) वमन विरेचन विधिमध्यायं

1) दोषहरणमूर्ध्वभाग वमनाख्यमधोभाग
विरेचनाख्यमुभय वा मल विरेचनाद्विरेचनमुच्यते। ... अ.सं.सू. 27/3
कफ में - कटु – तीक्ष्ण द्रव्य से वमन करे।
पित्त में - मधुर, वात में - (वात से मिले कफ में) - अम्ल और ईषत् स्नेहवाले द्रव्यो से।

2) वमन वेग -	विरेचन वेग	वमनप्रमाण	विरेचनप्रमाण
उत्तम - 8	उत्तम - 30	2 प्रस्थ	4स्थ
मध्यम - 6	मध्यम - 20	1 प्रस्थ	2स्थ
हिन - 4	हिन - 10	1/2 प्रस्थ	1स्थ

3) विरेचन: पित्त में - कषाय - मधुर द्रव्यों से, कफ में - मूत्र, कटु, और उष्ण और वायु में - स्निग्ध, उष्ण, लवण से.
4) वमन में क्रमश: प्रवृत्त होते है।
स्वेद - प्रसेक - औषध - कफ - पित्त वायु
* विरेचन में: वायु - मुत्र - मल - पित्त - कफ - वायु
5) विरेचन पश्चात क्रम Same as वमन Except धुमपान।

28) बस्तिविधिमध्यायं

1) वात प्रधान व्याधी में बस्ति।
2) प्रकार - i) आस्थापन - वय का स्थापन, ii) अनुवासन, iii) उत्तर बस्ति
- अनुवासन - का एक प्रकार मात्रा बस्ति.
मात्रा बस्ति - इसमें स्नेह की ह्रस्व मात्रा होती है। 2 याम में जीर्ण, अनुवासन & मात्रा बस्ति अजीर्ण में ना दे। प्रतिदिन दे सकते है ये दोनों बस्ति.
उत्तर बस्ति - स्नेह बस्ति। मुत्र या योनी मार्ग से दि जाती है।
3) वमन के 15 दिन बाद विरेचन। विरेचन के 15 दिन बाद निरूह।
निरूह के तुरन्त बाद अनुवासन। विरेचन के 7 दिन बाद अनुवासन।

29) नस्यविधिमध्यायं

1) पर्याय - नावन, नस्त:
2) प्रकार: 3 i) विरेचन - कफज रोग, ii) बृंहण - वातज रोग,
iii) शमन - रक्त - पित्तज रोग.
3) मात्रा भेद के अनुसार: i) मर्ष ii) प्रतिमर्ष
A) i) उत्तम मात्रा - 10 बिंदु, ii) मध्यम मात्रा - 8 बिंदु, iii) हिन मात्रा - 6 बिंदु
B) By क्वाथ Then, i) उत्तम मात्रा - 8 बिंदु,
ii) मध्यम मात्रा - 6 बिंदु, iii) हिन मात्रा - 4 बिंदु
4) नस्य काल: वातज रोग में - अपराह्न में, पित्तज रोग में - मध्याह्न में, कफज रोग में - पूर्वाह्न में
In स्वस्थ व्यक्ति - शीत काल(हेमंत & शिशिर) मध्यान्ह
शरद & वसंत - पूर्वान्ह, ग्रीष्म - अपरान्ह, वर्षा - सुर्यदर्शन के वक्त
5) बस्ती के बाद मर्श नस्य दे।
6) In नस्य अयोग - वातज विकार, नस्य अतियोग - कफज विकार
7) प्रतिमर्श नस्य के 15 काल है।
प्रमाण - प्रमाण प्रतिमर्शश्च बिन्दुद्वित्तयमिष्यते।...अ. सं. सू. 23/20
(2 बिन्दु /1 बिन्दु)
8) प्रतिमर्श & बस्ति इनका प्रयोग जन्मकाल से कभी भी कर सकते हैं।
9) 5 साल से कम बालक को कवल ना दे।
10) 10 साल से कम बालक और 70 साल से वृध्द व्यक्ति को शोधन ना दे।
11) 7 साल से कम और 80 साल से अधिक व्यक्ति को नस्य ना दे।
12) 18 साल से कम व्यक्ति को धूम प्रयोग ना दे।

30) धूमपानविधिमध्यायं

1) उर्ध्वजत्रुगत कफवातज रोगो में धूमपान दे।
2) धूम के भेद: i) शमन / प्रायोगिक / मध्यम,
ii) बृंहण / स्नेहन / मृदु, iii) शोधन / विरेचन / तीक्ष्ण
और 1) कासघ्न, 2) वामक, 3) व्रणधूपण
3) प्रायोगिक धूमपान - 8 काल
i) निशा, ii) मूत्र त्यागपर, iii) मलत्यागपर, iv) दन्तधावन, v) स्वेदन पश्चात,

vi) नस्य पश्चात, vii) भोजन पश्चात, viii) शस्त्रकर्म पश्चात.

4) बृंहण के - 11 काल.

i) क्षुत, ii) व्यवाय, iii) हसित,iv) चिरासित, v) जृम्भित, vi) मूत्र, vii) शकृत्, viii) दन्तधावन, ix) तर्पण, x) पूत्वाक, xi) शस्त्र क्रिया - पश्चात.

5) विरेचन के - 5 काल.

i) नस्य, ii) अंजन, iii) वमन, iv) स्नान, v) दिवास्वाप.

6) धूमनेत्र यह बस्ति नेत्र बने द्रव्यों से बनाये।

7) वामक धूमपान लेने से प्रथम अनतिघन कृशरा खाये।

8) वातज व्याधी - बृंहण धूमपान / मृदु

9) कफ जन्य व्याधी - संशोधन / तीक्ष्ण धूमपान

10) विरेचन और बस्ति पश्चात धूमपान निषेध।

* (31 से 40 अध्याय वर्णन in सुश्रुत Notes)

शारीरस्थान

1) पुत्रकामीय:

1) दुषित शुक्र - ..... अ.सं. शा. 1/24

वात - कफ - ग्रन्थिभूत वातश्लेष्मभ्याम्।

पित्त - कफ - पूतिपूयनिभं पित्तश्लेष्मभ्याम्।

वात - पित्त - क्षीण वातपित्ताभ्याम्।

तदुक्त ससाधनं प्राक्।

2) ऋतु काल - अ. सं. शा. 1/40

ऋतुस्तु दृष्टार्तवो द्वादशरात्र भवति।

4) गर्भव्यापदशारीर

* अक्रियायां ध्रुव मरणाम्। तथोदराश्मरीप्रभृतीनपि।। अ. सं. शा. 4/37

5) अंग विभागशारीर

1) कोष्ठांग: तेषु प्रतिबद्धधानि कोष्ठाङ्गानि हृदय कृत्प्लीहा फुफ्फुसोन्दुक वृक्कान्त्रादीनी ।। ..... अ. सं. शां. 5/47

2) एषामाघानि सप्त पुनर्महामर्मसंगानि। अ.सं.शां. 5/60

महामर्म: मूर्धा, जिव्हाबन्धन, कण्ठ, हृदय, नाभि, बस्ति.

7) मर्म विभाग

* **मर्मोका सामान्य लक्षण:**

पुनर्मला पीडीते रूजोत्यत्तिर्विषम च स्पन्दनम्।। अ.सं.शां. 7/26

12) दुतादिविज्ञानीय

* वातव्याधीरपस्मारी कुष्ठ रक्त्युदरी क्षयी।

गुल्मी मेही च तान् क्षीणन्विकारेऽल्पेऽपि वर्जयेत्।। अ.सं.शां. 12/35

निदानस्थान

10) प्रमेह निदान

*त्रयाणमपि दोषाणा श्लेष्मा प्रमेहेषु प्राय: प्राक्-प्रकोपमापघते श्लेष्माधिष्ठनत्वान्मु त्रस्य तदवृध्देच मेद एव तेन प्रथम दुष्यतेऽत्यन्त सहागत्वात् तदनन्तर क्लेदादय:।। अ. सं. नि. 10 / 6

14) कुष्ठ निदान

* कालेनोपेक्षित यस्मात्सर्वे कुष्णाति तद वपू:।। अ. सं. नि. 14/6

चिकित्सास्थान

1) ज्वर चिकित्सा

* तिक्त: पित्ते विशेषेण प्रयोज्य: कटुक: कफे।

पित्तश्लेष्महरत्वेऽपि कषाय स न शस्यते।। अ. सं. चि. 1/46

2) जीर्णज्वर चिकित्सा

* देहधात्वबलत्वेन ज्वरो जीर्णोऽनुवर्तत। अ. सं. चि. 2/3

10) अर्शचिकित्सा

* सप्तरात्रत्सप्तरात्रोदेकैकमुपक्रमेत्। अ. सं. चि. 10/5

सात दिन के अन्तर से एक – एक अर्श की चिकित्सा करे।

उत्तरस्थान

2) बालामय प्रतिषेध

1) विसर्पस्तु शिशो: प्राणनाशनो बस्तिशीर्षज ।।

पद्मवर्णो महापद्महनामा दोषत्रयोद्भव: ।

शाखाभ्यां हृदयं याति हृदयाद्वा गुद व्रजेत्।। अ. सं. उ. 2/45

2) जब वायु बच्चो के दोनो हाथोसे प्रारंभ होकर शिर, पीढ, मुष्क और पैरो में क्रमश: जाकर पीडा करता है तब इस अवस्था को पर्वानुप्लव कहते है।..... अ. सं. उ. 2/62.

अष्टांग हृदय

वाग्भट → सिंहगुप्त → प्रथम वाग्भट → सिंहगुप्त → द्वितीय वाग्भट

वैशिष्ट्य: रचना - पद्यात्मक Only और चरक से साम्य.

- अ.हृ. - लघु वाग्भट/स्वल्प वाग्भट/वाग्भट द्वितीय.

पिता - सिंह गुप्त..काल - 7 शतक.

प्रमुख रचना -

i) अष्टांग हृदय, ii) अष्टांग अवतार, iii) अष्टांग निघण्टू.

- आयुर्वेद का सारसमुच्चय ग्रंथ. - अ. सं. का सारग्राही संक्षिप्त संस्करण.
- अ. सं. लेखक नामनिर्देश (निदान और उत्तर) स्थान के अंत में.
- द. भारत की सबसे लोकप्रिय संहिता: अ. हृदय नाम वाहट.

(वाहट नाम से प्रसिध्द)

- आचार्य:19 – द्रव्यगुण मौलिक सिध्दांत के क्षेत्र में अ.हृ. की मौलिक देन.

(भैषज्य मौलिकता - चरक,)

- विपाक लक्षण सर्वप्रथम वर्णन.
- धातु & मल एक विशिष्ट कर्म निर्धारण,

अ. हृदय - रक्त - दुष्य.

- भेषज कल्प अध्याय में औषध मात्रा वर्णन.
- षड्विध मर्म में धमनीमर्म Extra वर्णन.
- स्वेद प्रकार: 4
- सद्य स्नेह द्रव्य - 7 वर्णन.

(अ.सं. - सद्य स्नेह वर्णन परंतु संख्या वर्णन नहीं.)

- दशविध पाप वर्णन,
- हंसोदक सेवन - शरद ऋतु (चरक: Not in संग्रह)
- ऋतु संधि - 14 दिन और नियम अपालन से असात्म्यज रोग
- अजीर्ण - 3 (आम - वात, विष्टब्ध - वात, विदग्ध - पित्त)
- रस संयोग - 57, रस कल्पना - 63
- श्रेष्ठ बृंहण - मांस भक्षण.
- सर्व यंत्र में - कंकमुख यंत्र प्रधान
- अंधमूषा सर्वप्रथम वर्णन.
- विष्कम्भ नामक 2 मूढगर्भ वर्णन
- वाजिकरण में उच्चटा प्रयोग वर्णन.
- केदारिकुल्यान्याय समर्थक,
- तिमिर रोग में गन्धक युक्त, पारद युक्त अंजन, विशेष
- हरितक वर्ग में - अद्रिका, गुंजनक वर्णन.
- संस्कृत वाङ्मय कालीन एकमेव ग्रंथ.
- पाशुवत योग वर्णन.

अन्य द्रव्य उत्तरस्थ

1) हरितकी - वातकफज

2) दाडिमाष्टक चूर्ण - ः

3) मण्डूर वटक - पाण्डु

अष्टांग संग्रह

1) सभी ग्रंथो का सार

2) रात्रिचर्या वर्णन in दि

3) तैल वर्ग में - 24 तेल

4) मूत्र के गुणों को पृथ

5) (वल्ली & कंटक) पंच

6) भोजनार्थ विविध पात्र

7) आहारपरिणामकर भ

8) जेंताक स्वेद वर्णन.

9) संतर्पण - अपतर्पण

10) बिडालक & अंजन

11) शल्य त्रिविध गति.

12) विवाह योग्य वय -

13) प्रजोत्पादन वय -

14) अष्टम् मास में प्रस

i) शिशुमृत्यु ii) गर्

15) 6 त्वचा वर्णन

16) नपुंसक प्रकार वर्ण

17) कोष्ठांग में क्लोम,

18) रसरक्तादि No अंज

19) शरीर प्रमाण - 84

20) वृध्दावस्था - ↑60

21) अष्टबिंदात्मक ओज

22) कुमाराधार वर्णित

23) त्रयोपस्तम्भ - आह

(च. आहार स्वप्न

24) भेषज काल - 11

25) महाकषाय वर्णन

26) अस्थान विस्तार र

अष्टांग हृदय टिका:

1) सर्वांगसुंदर - अरूण

2) आयुर्वेद रसायन (

(पर्याय - चतुवर्गचिन्ता

3) शशिलेखा - इंदू -

4) शिवदिपीका (अंति

5) वाग्भटखण्डनमण्ड

6) पदार्थ चंद्रिका - चं

7) अष्टांगहृदयोद्धोत

8) मनोज चिन्तामणि

9) अ. हृ. टीका - रा

10) अष्टागहृदयदिपिक

11) वाक्यप्रदीपिका -

12) विज्ञेयार्थ प्रकाशि

13) हृदयबोधिका - द

अग्र द्रव्य उत्तरस्थान 40: वाजिकरण अध्याय: –

i) हरितकी - वातकफज विकार, ii) सूरण पुटपाक - अर्श,

iii) दाडिमाष्टक चूर्ण - अतिसार, iv) आमलकी - हरिद्रा – प्रमेह,

v) मण्डूर वटक - पाण्डु, vi) मूस्ता - पर्पटक - ज्वर, vii) अयस्कृती - उदर.etc.

अष्टांग संग्रह	अष्टांग हृदय
1) सभी ग्रंथो का सार ग्रंथ	सभी ग्रंथो का सारतर
2) रात्रिचर्या वर्णन in दिनचर्या अध्याय	रात्रिचर्या वर्णन अन्नरक्षा अ.
3) तैल वर्ग में - 24 तेल वर्णन	6 तेल
4) मूत्र के गुणों को पृथक वर्णन	Only नाम (No वर्णन.)
5) (वल्ली & कंटक) पंचमुल वर्णन	- No वर्णन.
6) भोजनार्थ विविध पात्रों का उल्लेख	- No वर्णन.
7) आहारपरिणामकर भाव वर्णन.	- No वर्णन.
8) जैंताक स्वेद वर्णन.	- No वर्णन.
9) संतर्पण - अपतर्पण द्रव्यो की सूची है।	Only अपतर्पण द्रव्य
10) बिडालक & अंजन पात्र वर्णित	- No वर्णन.
11) शल्य त्रिविध गति.	पंचविध गति.
12) विवाह योग्य वय - पु.-21, स्त्रि. - 12	- No वर्णन.
13) प्रजोत्पादन वय - पु. - 25; स्त्रि. - 16	पु. - 20; स्त्रि. - 16
14) अष्टम् मास में प्रसव होनेपर; i) शिशुमृत्यु ii) गर्भिणी ग्लानि.	Both की मृत्यु.
15) 6 त्वचा वर्णन	7 त्वचा वर्णन.
16) नपुंसक प्रकार वर्णन	- No वर्णन.
17) कोष्ठांग में क्लोम, नाभी, डिंब, बस्ति No समावेश	- इनका समावेश
18) रसरक्तादि No अंजलि प्रमाण	अंजलि प्रमाण वर्णन.
19) शरीर प्रमाण - 84 अंगुल	$3^1/_2$ हस्त.
20) वृध्दावस्था - ↑60 yrs.	↑ 70 yrs.
21) अष्टबिंदात्मक ओज वर्णन	- No
22) कुमाराधार वर्णित	- No
23) त्रयोपस्तम्भ - आहार स्वप्न अब्रह्मचर्य (च. आहार स्वप्न ब्रह्मचर्य)	आहार शयन अब्रह्मचर्य
24) भेषज काल - 11	10
25) महाकषाय वर्णन	- No
26) अस्थान विस्तार संक्षेप पुनर्वृत्तादी वर्जित.	नतिसंक्षेप विस्तारण.

अष्टांग हृदय टिका: (सबसे अधिक टिका) 44

1) सर्वांगसुंदर - अरूणदत्त - 13 वे शतक

2) आयुर्वेद रसायन (Incomplet) अपूर्ण (On सुत्र, कल्प, सिध्दि) (पर्याय - चतुवर्गचिन्तामणी) हेमाद्री (नागपूर) - 13 वे शतक

3) शशिलेखा - इंदू - 13 वे शतक

4) शिवदिपीका (अंतिम संस्कृत टीका) - प. शिवशर्मा - 20 वे शतक

5) वाग्भटखण्डनमण्डन - भट्टनरहरी

6) पदार्थ चंद्रिका - चंद्रनन्दन

7) अष्टांगहृदयोद्धोत - आशाधर

8) मनोज चिन्तामणि - वैद्यतोडरमल्लकान्ह

9) अ. हृ. टीका - रामनाथ

10) अंष्टागहृदयदिपिका - हाटकाड.ग

11) वाक्यप्रदीपिका - परमेश्वर

12) विज्ञेयार्थ प्रकाशिका - पंडित विश्वेश्वर

13) हृदयबोधिका - दासपंडित

14) ललीता - शंकर

15) वाग्भटार्थकौमुदी - श्रीकृष्णसेमालिक

16) संकेतमंजिरी - दामोदर

17) प्रदीपाख्या - यशोदानंद सरस्वती

18) सारोध्दार - भट्टश्री वर्धमान

19) अल्पबुध्दीप्रबोधन - श्रीकण्ठ

20) आयुर्वेद टिका - बोपदेव कृत

21) तत्वबोध - शिवदास सेन

22) जेज्जट - अष्टांगहृदय टिका

23) हिंदी टीका:

निर्मला विद्योतिनी - ब्रह्मानंद त्रिपाठी, अत्रिदेव गुप्त, विद्यालंकार

अष्टांगहृदयम्

सूत्रस्थानम्

प्रथमोऽध्याय:। आयुष्कामीय.

रागादीरोगान् सततानुषक्तान्, अशेषकायप्रसृतानशेषान्।
औत्सुक्यमोहाऽरतिदाञ्जघान, योऽपूर्ववैधाय नमोऽस्तु तस्मै।।

अथात आयुष्कामीयमध्यायं, व्याख्यास्याम:। इति ह स्माहुरात्रेयादयो, महर्षय:।।

आयु:कामयमानेन, धर्मार्थसुखसाधनम्। आयुर्वेदोपदेशेषु, विधेय: परमादर:।।

आयुर्वेदोत्पत्तिक्रम: ब्रह्मा स्मृत्वाऽऽयुषो वेदं, प्रजापतिमजिग्रहत्।
सोऽश्विनौ तौ सहस्राक्षं, सोऽत्रिपुत्रादिकान्मुनीन्।।
तेऽग्निवेशादिकांस्ते, तु पृथक् तन्त्राणि तेनिरे।
तेभ्योऽतिविप्रकीर्णेभ्य,: प्राय: सारतरोचय:।।

क्रियतेऽष्टाङ्गहृदयं, नातिसंक्षेपविस्तरम्।
कायबालग्रहोर्ध्वाङ्ग, शल्यदंष्ट्राजरावृषान्।।
अष्टावङ्गानि, तस्याहुचिकित्सा येषु संश्रिता।
वायु: पित्तं कफश्चेति, त्रयो दोषा: समासत:।।
विकृताऽविकृता देहं, घ्नन्ति ते वर्तयन्ति च।
ते व्यापिनोऽपि, हृन्नाभ्योरधोमध्योर्ध्वसंश्रया:।।
वयोऽहो-रात्रि-भुक्तानां, तेऽन्त-मध्याऽऽदिगा: क्रमात् ।
तैर्भवेद्विषमस्तीक्ष्णो, मन्दश्चाग्नि: समै: सम:।।
कोष्ठ: क्रूरो मृदुर्मध्यो, मध्य: स्यात्तै: समैरपि।
शुक्रार्तवस्थैर्जन्मादौ, विषेणेव विषक्रिमे:।।
तेश्च तिस्र: प्रकृतयो, हीनमध्योत्तमा: पृथक्।
समधातु: समस्तासु श्रेष्ठा, निन्द्या व्दिदोषजा:।।
तत्र रुक्षो लघु: शीत:, खर: सूक्ष्मश्चलोऽनिल:।
पित्तं सस्नेहतीक्ष्णोष्णं , लघु विस्त्रं सरं द्रवम्।।
स्निग्ध: शीतो गुरुर्मन्द:, श्लक्ष्णो मृत्स्न: स्थिर: कफ।
संसर्ग: सन्निपातश्च, तद्व्दि-त्रि-क्षयकोपत:।।
रसाऽसृड् मांसदोऽस्थि, मज्ज-शुक्राणि धातव:।
सप्त दुष्या, मला-मूत्रशकृत्स्वेदादयोऽपि च।।
वृध्दि: समानै: सर्वेषां, विपरीतैर्विपर्यय:।
रसा: स्वाव्दम्ललवन, तिक्तोपणकषायका:।।
षड्, द्रव्यमाश्रितास्ते च-यथापूर्व बलावहा:।
तत्राऽऽद्या मारुतं घ्नन्ति, त्रयस्तिक्तादय: कफम्।।
कषायतिक्तमधुरा:, पित्तमन्ये तु कुर्वते।
शमनं कोपनं स्वस्थहितं, द्रव्यमिति त्रिधा।।
उष्णशीतगुणोष्कर्षात, तत्र वीर्य व्दिधा स्मृतम्।
त्रिधा विपाको द्रव्यस्य, स्वाव्दम्लकटुकात्मक:।।

गुरु-मन्द-हिम-स्निग्ध-, श्लक्ष्ण-सान्द्र-मृदु-स्थिराः।
गुणाः ससूक्ष्म-,विशदा विंशतिः सविपर्ययाः।।
कालार्थकर्मणां योगो, हीन-मिथ्याऽतिमात्रकः।
रोगस्तुदोषवैषम्य, दोषसाम्यम अरोगता।
निज आगन्तु विभागेन, तत्र रोगा द्विधा स्मृतम ।
तेषां कायमनो भेदाद, अधिष्ठानमपि द्विधा ।।
रजतमच मनसो, द्वौ च दोषा वृदाहृतो।
दर्शनं स्पर्शनं प्रश्नै, परिक्षेत च रोगिणाम।।
रोग निदान प्रागरूप, लक्षण उपशयातिभी।
भूमी देह प्रभेदेन, देशमाहु इह द्विधा ।।
जागलं वात भुयिष्ठम, आनुपं तु कफोल्बणम्।।
साधारणं सममलं त्रिधा, भुदेशमाधिशेत् ।।
क्षणाधि व्याधि अवस्थाच, कालो भेषज योग कृत।
शोधनं शमनं चैती समासाद औषधं द्विधा ।।
शरीरजानां दोषाणाम्, क्रमेण परमौषधम् ।
बस्ति विरेको वमनं, तथा तैलं घृत मधू ।।
धी धैर्यात्मादि विज्ञानं, मनोदोषोषधं परम्
भिषक द्रव्याणुपस्थाता, रोगी पादचतुष्टम् ।।
चिकित्सितस्य निर्दिष्ट प्रत्येकं तच्चतुगुणम ।
दक्षस्तीर्थात्तशास्त्रार्थो, दृष्टकर्मा शुर्चि भिषक्।
बहुकल्पं बहुगुणं, संपन्नं योग्यमौषधम्।।
अनुरक्तः शुचिर्दक्षो , बुध्दिमान् परिचारकः।
आढ्यो रोगी भिषग्वश्यो, ज्ञापकः सत्ववानपि।।
साध्योऽसाध्य इति व्याधिर्द्विधा, तौ तु पुनर्द्विधा।
सुसाध्यः कृच्छसाध्यश्च, याप्यो यश्चानुपक्रमः।।
सर्वोषधक्षमे देहे यूनः पुंसो जितात्मनः।
अमर्मगोऽल्पहेत्वग्ररूपरूपोऽनुपद्रवः ।।
अतुल्यदूष्यदेशर्तुप्रकृतिः पादसम्पदि ।
ग्रहेष्वनुगुणेष्वेकदोषमार्गो नवः सुखः ।।
शस्त्रादिसाधनः कृच्छः संकरे च ततो गदः।
शेषत्वादायुषो याप्यः पथ्याभ्यासाद्विपर्यये।।
अनुपक्रम एव स्यात्स्थितोऽत्यन्तविपर्यये।
औत्सुक्यमोहारतिकृद् दृष्टरिष्टोऽक्षनाशन।।

एकादशोऽध्यायः

अथातो दोषादिविज्ञानीयमध्यायं व्याख्यास्यामः।।
इति ह स्माहुरात्रेयादयो महर्षयः।।
दोषधातुमला मूलं, सदा देहस्य तं चलः।
उत्साहोच्छवासनिश्वास-चेष्टावेगप्रवर्तनैः।।
सम्यग्गत्या च धातूनामक्षाणां पाटवेन च।
अनुगृहात्यअविकृतः,पित्तं पक्त्यूष्मदर्शनैः।।
क्षुत्तृड्रुचिप्रभामेधा,-धीशौर्यतनुमार्दवैः।
श्लेष्मा स्थिरत्वस्निग्धत्व,-सन्धिबन्धक्षमादिभिः।।
प्रीणनं जीवनं लेपः, स्नेहो धारणपूरणे।
गर्भोत्पादश्च धातूनां श्रेष्ठं, कर्म क्रमात्स्मृतम्।।
अवष्टम्भः पुरीषस्य, मूत्रस्य क्लेदवाहनम्।
स्वेदस्य क्लेदविधृतिः, वृष्दस्तु कुरुतेऽनिलः।।
कार्श्यकार्ष्ण्योष्णकामत्व,-कम्पाऽऽनाहशकृद्ग्रहान्।
बलनिद्रेन्द्रियभ्रंश,-प्रलापभ्रमदीनताः।।
पीतविण्मूत्रनेत्रत्वक , क्षुतृड्दाहाऽल्पनिद्रताः।
पित्तम्, श्लेष्माऽग्निसदन-प्रसेकालस्यगौरवम्।।
श्वैत्यशैत्यश्लथाङ्गत्वं, श्वासकासातिनिद्रताः।
रसोऽपि श्लेष्मवत्, रक्तं विसर्पप्लीहविद्रधीन्।।
कुष्ठवातास्त्रपित्तास्त्र,-गुल्मोपकुशकामलाः।
व्यङ्गाग्निनाशसम्मोह,-रक्तत्वङ्.नेत्रमूत्रताः।।
मांसं गण्डार्बुदग्रन्थि, गण्डोरुदरवृध्दिताः।।
कण्ठादिष्वधिमांस च, तव्दन्मेदस्तथा श्रमम्।।
अल्पेऽपि चेष्टिते श्वासं, स्फिकस्तनोदरलम्बनम्।
अस्थ्यध्यस्थ्यधिदन्तांश्च, मज्जा नेत्राङ्गगौरवम्।।
पर्वसु स्थूलमूलानि, कुर्यात्कृच्छ्राण्यरुंषि चं।
अतिस्त्रीकामतां वृध्दं, शुक्रं शुक्राश्मरीमपि।।
कुक्षावाध्मानमाटोपं, गौरवं वेदनं शकृत्।
मत्रं तु बस्तिनिस्तोदं, कृतेऽप्यकृतसंज्ञताम्।।
स्वेदोऽतिस्वेददौर्गन्ध्यकण्डूः, एवं च लक्षयेत्।
दूषिकादीनपि मलान्, बाहुल्यगुरुतादिभिः।।
लिंग क्षीणेऽनिलेऽगयस्य सादोऽल्पं भाषितेहितम्।
संज्ञामोहस्तथा, श्लेष्यवृध्दुयक्तामयसम्भवः।।
पित्ते मन्दोऽनलः शीतं प्रभाहानिः, कफे भ्रमः।
श्लेष्माशयानां शून्यत्वं, हृद्द्रवः श्लथसन्धिता।।
रसे रौक्ष्यं श्रम, शोषो ग्लानिः शब्दाऽसहिष्णुता।
रक्तेऽम्लशिशिरप्रीति,शिराशैथिल्य रुक्षताः ।।
मांसेऽक्षग्लानिगण्ड, स्फिक्शुष्कतासन्धिवेदनाः ।
मेदसि स्वपनं कटयाः, प्लीह्नो वृध्दिः कृशाङ्गता।।
अस्थ्न्यस्थितोदः, सदनं दन्तकेशनखादिषु।
अस्थ्नां मज्जनि सौषिर्यं, भ्रमस्तिमिरदर्शनम्।।
शुक्रे चिरात् प्रसिंच्येत, शुक्रं शोणितमेव वा।
तोदोऽत्यर्थं वृषणयोर्मेढ्र, धूमायतीव च।।
पुरीषे वायुरन्त्राणि, सशब्दो वेष्टयन्निव।
कुक्षौ भ्रमति यात्यूर्ध्वं, हृत्पार्श्वे पीडयन भृशम्।।
मूत्रेऽल्पं मत्रयेत्कृच्छ्राव्दिवर्णं सास्त्रमेव वा।
स्वेदे रोमच्युतिः स्तब्धरोमता, स्फुटनं त्वचः।।

व्दादशोऽध्यायः

अथातो दोषभेदीयाध्यायं, व्याख्यास्याम।
इति ह स्याहुरात्रेयादयो महर्षयः।
पव्काशय-कटी-सक्थि,-श्रोत्राऽस्थिस्पर्शनेन्द्रियम्।
स्थानं वातस्य तत्रापि, पक्वाधानं विशेषतः।।
नाभिरामाशयः स्वेदो, लसीका रुधिरं रसः।
दृक् स्पर्शणं च पित्तस्य, नाभिरत्र विशेषतः।।
उरःकण्ठशिरः क्लोम, पर्वाण्यामाशयो रसः।
मेदो घ्राणं व जिह्वा च, कफस्य सुतरामुरः।।
प्राणादिभेदात्पञ्चत्मा वायुः, प्राणोऽत्र मूर्धगः।
उरःकण्ठचरो, बुध्दि-हृदयेन्द्रिमचित्तधृक् ।।
ष्ठीवनक्षवथूउद्गार,-निःश्वासान्नप्रवेशकृत्।
उरःस्थानमुदानस्य, नासानाभिगलांश्चरेत।।
वाप्रवृत्तिप्रयत्नोर्जा,-बलवर्णस्मृतिक्रियः।
व्यानो हृदि स्थितः, कृत्स्नदेहचारी महाजवः।।
गत्पक्षेपणोत्क्षेप,-निमेषोन्मेषणादिकाः।

प्राय: सर्वा: क्रियास्तस्मिन्, प्रतिबध्दा: शरीरिणाम्।।
समानोऽग्निसमीपस्थ:, कोष्ठे चरति सर्वत:।
अन्नं गृह्णाति पचति, विवेचयंति मुञ्चति।।
अपानोऽपानग:, श्रोणि-बस्तिमेढ्रोरुगोचर:।
शुक्रार्तवशकृन्मूत्र, - गर्भनिष्क्रमणक्रिय:।।
पित्तं पञ्चात्मकम् तत्र, पक्वमाशयमध्यगम्।
पञ्चभूतात्मकत्वेऽपि, यत्तैजसगुणोदयात्।।
त्यक्तद्रवत्वं पाकादि, - कर्मणाऽनलशब्दितम्।
पचत्यन्नं विभजते, सारकिट्टौ पृथक् तथा।।
तत्रस्थमेव पित्तानां, शेषाणामप्यनुग्रहम्।
करोति बलदानेन, पाचकं नाम तत्स्मृतम्।।
आमाशयाश्रयं पित्तं, रञ्जकं रसरञ्जनात्।
बुद्धिमेधाभिमानाद्यै, अभिप्रेतार्थसाधनात्।।
साधकं हृद्गत पित्तं, रुपालोचनत: स्मृतम्।
दृक्स्थालोचकं, त्वक्स्थं भ्राजकं भ्राजनात्वच:।।
श्लेष्मा तु पञ्चधा, उर:स्थ: स त्रिकस्य स्ववीर्यत:।
हृदयस्यान्नवीर्याच्च, तत्स्थ एवाम्बुकर्मणा।।
कफ धाम्नां च शेषाणां, यत्करोत्यवलम्बनम्।
अतोऽवलम्बक: श्लेष्मा, यस्त्वामाशयसंस्थित:।।
क्लेदक: सोऽन्नसंघात क्लेदनात, रसबोधनात्।
बोधको रसनास्थायी, शिर:संस्थोऽक्षतर्पणात्।।
तर्पक:, सन्धिसंश्लेषाच्छ्लेषक: सन्धिषु स्थित:।
इति प्रायेण दोषाणां, स्थानान्यविकृतात्मनाम्।।

सुत्रस्थान

2) दीनचर्या

1) रसांजन - प्रयोगविधी -
चक्षुस्तेजोमयं तस्य विशेषात् श्लेष्मतो भयम्।
योजयेदसप्तरात्रेऽस्मात् स्त्रावणार्थ रसांजनम्।। .... अ. हृ. सुत्र 2/5
2) सुख का साधन धर्म -
सुखार्था: सर्वभूतानी मता: सर्वा: प्रवृत्तय:।
सुखं च न विना धर्मात्तस्माध्दर्मपरो भवेत्।।..... अ. हृ. सुत्र 2/20
3) उबटन के गुण -
उद्वर्तनं कफहरं मेदस: प्रविलायनम्।
स्थिरीकरणमंगानां त्वक्प्रसादकरं परम्।।... अ. हृ. सुत्र 2/15
4) 10 पापकर्म त्याग - मन से अ. हृ. सुत्र 2/22
हिंसा, स्तेय, अन्यथाकाम, पिशुनता, परूषवाक्य,
अनृत, सभिन्नआलाप,
व्यापाद, अभिध्या, दृग्विपर्यय.

3) ऋतुचर्या

1) ऋतू - रस संबध:
शीते वर्षासु चाद्यांस्त्रीन् वसन्तेऽत्यन रसानभजेत्।। 3/55
स्वादुं निदाघे शरदि स्वादुतिक्त कषायकान्।
शरद्वसन्तयो रूक्षं,शीतं धर्मघनान्तयो:।।
अन्नपानं समासेन विपरीतमतोऽन्यदां। 3/56

4) रोगानुत्पादीय

1) वेगों को न रोकने का निर्देश -
वेगान्न धारयेद्वातविण्मुत्रक्षवतृटक्षुधाम्।
निद्राकासश्रमश्वासजृम्भाश्रृच्छदिरेतसाम्।। 4/1
2) रोगासर्वेऽपि जायन्ते वेगोदीरणधारणै:।। 4/23
3) संशोधन कर्म प्रशंसा:
दोषा: कदाचित्कुप्यन्ति जिता लङ:नपाचनै:।
ये तु संशोधनै: शुध्दा न तेषां पुनरूध्दव:।। 4/26

5) द्रव द्रव्य विज्ञाणीय

* उत्तम-अधम विचार: गव्ये क्षीरघृते श्रेष्ठ निर्दिन्ते आविसम्भवे।। 5/42
* पुराने घी के प्रयोग: मदापस्मारमूर्च्छायशिर: कर्णाक्षियोनिजान्।
पुराणं जयति व्याधीन् व्रण शोधन रोपणम्।। 5/40
* तेल गुण: कृशानां बृंहणायालं स्थूलानां कर्शनाय च।
बध्दविट्क कृमिघ्नं च संस्कारात्सर्वरोगजित्।। 5/56

6) अन्नस्वरूपविज्ञानीयाध्याय: ।

1) माष का वर्णन: माष: स्निग्धो वातश्लेष्ममलपित्तकर: सर:।। 6/21
गुरूष्णोऽनिलहा स्वादु: शुक्रवृध्दि विरेकृत्।
2) माष एवं यवक वर्णन: माषोऽत्र सर्वेष्वरो, यवक: शुकजेसु च। 6/24
3) कृतान्नवर्ग: मण्डपेया विलेपीनामोदनस्य च लाघवम्।
यथापुर्व शिवस्तत्र मण्डो वातानुलोमन:।। 6/27
4) पेया का वर्णन: मलानुलोमनी पथ्या पेया दीपनपाचनी।
5) विलेपी का वर्णन: विलेपी ग्राहिणी हृद्या तृष्णाघ्नी दीपनी हिता।।
व्रणाक्षिरोगसंशुध्ददुर्बलस्नेहपायिनाम्।
6) कुलथी का युष: वातानुलोमी कौलत्थो गुल्मतूनीप्रतूनिजित्।। 6/33
7) सत्तु का वर्णन: नोदकान्तरितान्न द्विन निशायां न केवलान्।
न भुक्त्वा न द्विजैश्छित्वा सत्तुनघान्न वा बहुन्।। 6/39
8) मांस - 8 प्रकार
मृग, विष्कीर, प्रतूद - जांगल
महामृग, जलचर, मत्स्य - आनूप
बिलेशय, प्रसह - साधारण
9) बकरी-भेड का वर्णन: योनिष्वजावी व्यामिश्रगोचरत्वादनिश्चिते।। 6/54
10) मांसो का वर्णन: गुरूष्णस्निग्धमधुरा वर्गाश्चातो यथोत्तरम्।
मुत्रशुक्रकृतो बल्या वातघ्ना: कफपित्तला:।। 6/61
11) मत्स्य मांस: मत्स्या: परं कफकरा: चिलिचीमस्त्रिदोषकृत्।।
12) विशिष्ट अवयवों के मांस: पुंस्त्रियो पुर्वश्चार्धे गुरूणी गर्भिणी गुरू:।
लघुर्योषिच्च तुष्णात्सु विहङोजु पुन: पुमान्।। 6/69
शोणित प्रभृतीना च धातुनामुत्तरोन्तरम्।
मांसादगरीयो वृषणेमेढ्रवृक्क्यकृहृदम्।। 6/71
शिर: स्कन्धोरूपृष्ठस्य कट्या: सक्थनोश्च गौरवम्।
तथाऽऽमपक्वाशयोर्यथापूर्व विनिर्दिशेत्।। 6/70
13) राजक्षव का वर्णन: राजक्षव : परम्। ग्रहण्यर्शोविकारघ्न: । 6/73
14) जीवन्ती का शाक: चक्षुष्या सर्वदोषघ्नी जीवन्ती मुधुरा हिमा। 6/86
15) फलवर्ग - द्राक्षा फलोत्तमा।
16) आम्र वर्णन: वातपित्तास्त्रकृध्द्वालं बध्दास्थि कफपित्तकृत्।।
गुर्वास्त्रं वातजित्पक्वं स्वादुम्लं कफशुक्रकृत्।। 6/128
17) भिलावा का वर्णन: भल्लातकस्य त्वङ:मांस बृंहणं स्वादु शीतलम्।
तदस्याग्निसमं मेध्यं कफवातहरं परम्।। 6/134
18) सेंधानमक के गुण: सैन्धवं तत्र सस्वादु वृष्यं हृदयं त्रिदोषनुत्।
लघ्वनुष्णं वृक्ष: पथ्यमविदाहन्निदीपनम्।। 6/144

7) अथातोऽन्नरक्षाध्यायं ।

1) विषदाता के लक्षण: विषद: श्यावशुष्कास्यो विलक्षो वीक्षते दिश:।
स्वेदवेपथुमांस्त्रस्तो भीत: स्खलति जृम्भते।। 7/12

2) तीन उपस्तम्भ: आहारशयनाब्रम्हचर्यैर्युक्त्या प्रयोजिते:। 7/52

3) निद्रा के गुण - दोष: रात्रौ जागरणं रूक्षं, स्निग्ध प्रस्वपनं दिवा।
अरूक्षमनभिष्यन्दि त्वासीनप्रचलायितम्।। 7/55

4) दिन में न सोने का निर्देश:बहुमेद कफ: स्वप्यु: स्नेहनित्याश्च नाहनि।
विषार्त: कण्ठरोगी च नैव जातु निशास्वपि।। 7/60

8) मात्राशितीयमध्यायं।

1) मात्रा में गुरू - लघु विचार - गुरूणामर्धसौहित्यं लघुनां नातितृप्तता।
मात्राप्रमाणं निर्दिष्टं सुखं यावदद्वजीर्यति।। 8/2

2) आमदोष वर्णन: आमदोषं महाघोरं वर्जयेद्विषसंज्ञकम्।
विषरूपाशुकारित्वाद्विरूध्दोपक्रमत्वत:।। 8/14
तत्राल्पे लघंन पथ्यं, मध्ये लंड:नपाचनाम्।
प्रभुते शोधनं, तध्दि मुलादुन्मलयेन्मलान्।। 8/21

3) चिकित्सा सुत्र: लघंन कार्यमामे तु, विष्टब्धे स्वेदनं भृशम्।
विदग्धे वमनं, यध्दा यथावस्थं हितं भवेत्।। 8/27

4) विलम्बिका लक्षण: गरीयसो भवेल्लीनादामादेव विलम्बिका।

5) अनुपान निषेध: नोर्ध्वजत्रुगदश्वासकासोर: क्षतपीनसे।
गीतभाष्यप्रसङ्गे च स्वरभेद व तध्दितम ।। 8/53

9) द्रव्यादिविज्ञानीयाध्याय:।

1) रस - वीर्य - विपाक - प्रभाव-रसैरसो तुल्यफलस्तत्र द्रव्यं शुभाशुभम्।
किंचिद्रसेन करूते कर्म पाकेन चापरम्।। 9/22
गुणान्तरेण वीर्येण प्रभावेणैव किंचिन।।

2) विपाक का वर्णन: जाठरेणाग्निना योगादयदुदेति रसान्तरम्।
रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृत:।। 9/20

13) दोषोपक्रमणीय।

1) वातदोष चिकित्सा: वातस्योपक्रम: स्नेह: स्वेद: संशोधनं मृदु।
स्वाद्वम्ललवणोष्णानि भोज्यान्यभ्यड:मर्दनम्।। 13/1
वेष्टनं त्रासनं सेको मद्यं पौष्टिकगौडिकम्।
स्निग्धोष्णा बस्तयो बस्तिनियम: सुखशीलता।। 13/2
दीपनै: पाचनै: सिध्दा: स्नेहाश्चानेकयोनय:।
विशेषान्मेद्यपिशितरसतैलानुवासनम्।। 13/3

2) साम - निराम दोषों का वर्णन -स्त्रोतोरोध बलभ्रंश गौरवनिलमूढता:।।
आलस्यापक्तिनिष्ठीवमलसङ्कारूचिक्लमा:।
लिंड: मलांना सामानां, निरामाणां विपर्यय:।। 13/24

3) आम का वर्णन - उष्मणोऽल्पबलत्वेन धातूमाद्यमपाचितम्।
दृष्टमामाशयगतं रसमामं प्रचक्षते।। 13/25

4) औषध सेवन काल - 10 युंज्यादनन्नमन्नादौ मध्येऽन्ते कवलान्तरे।
ग्रासे ग्रासे मुहु: सान्नं सामुद्रं निशि चौषधम्।। 13/37

14) द्विविधोपक्रमणीयामध्याय:।

1) स्नेहन आदि का वर्णन - स्नेहनं रूक्षणं कर्म स्वेदनं स्तम्भनं च यत्।
भूतानां तदपि द्वैध्याद्द्वितयं नातिवर्तते।। 14/3

2) शोधन कर्म - 5:
निरूहो वमनं कायशिरोरेको ऽस्त्रविस्त्रुति।। 14/5

3) स्थुलता & कृशता चिकित्सा:
कार्श्यमेव वरं स्थौल्यान्न ही स्थौल्यस्य भेषजम।
गुरू चातर्पणं स्थुले विपरीतं हितं कृशे।
यवगोधूममुभयोस्तदयोग्याहितकल्पनम्।। 14/36
यव व गोधुम कृश व स्थूल के लिए हितकर है।

19) बस्तिविधिमध्याय:।

1) निरूहण अयोग्य - कुष्ठ रोगी, मधुमेह मासान् सप्त च गर्भिणी।

2)बस्ति नेत्र की मोटाई: स्वादगुष्ठेनं समं मुले स्थौल्येनाग्रे कनिष्ठ्या।। 19/12

3) मात्राबस्ति का वर्णन: -ह्रस्वया स्नेहपानास्य मात्राया योजित: सम:।।19/67

20) नस्यविधिरध्याय:।

1) नस्य का वर्णन: नासा हि शिरसो द्वारं तेन तद्याप्य हन्ति तान्।। 20/1
नस्य 3 – विरेचन, बृंहण, शमन

2) अवस्था का वर्णन: नस्य अवस्था 7 वर्ष to 80 yrs.
- धूमपान 18 years के बाद
- कवल After 5 years -
शोधन प्रयोग 10 years to 70 yrs.

22) गण्डूषादिविधिरध्याय:।

1) रोगानुसार गण्डुष प्रयोग - दन्तहर्ष दन्तचाले मूखरोग च वातिके।
सुखोष्णंमथवा शीतं तिलकल्कोदकं हितम्।। 22/5
गण्डुषधारणे नित्यं तैलं मांसरसोऽथवा।। 22/12

2) शस्त्र संख्या - 26

3) जोंको का प्रयोग - जलौकसस्तु सुखिनां रक्तस्त्रावाय योजयेत्।।

28) शल्याहरणविधिरध्याय:।

1) शल्य की गतियां - 5 वक्रर्जुतिर्यगूर्ध्वाध: शल्यानां पंचधा गति:।

2) अयस्कान्तेन निष्कर्णं विवृत्तास्थमृजुस्थितम्।। 28/34

30) क्षारग्निकर्म विधिरध्याय:।

1) सम्यकदग्ध के लक्षण -
पक्वजम्बवसितं सन्नं सम्यग्दग्धं विपर्यये।। 30/34

2) क्षार का शमनकर्म -
विशेषादत्र सेकोऽम्लैर्लेपो मधु घृतं तिला:।
वातपित्तहरा चेष्टा सर्वे व शिशिरा क्रिया।। 30/38

3) मांसरोगों मे अग्निकर्म - अर्शोभगन्दरग्रन्थिनाडीदुष्टव्रणादिषु।
मांसदाहो मधुस्नेहजाम्बवौष्ठगुडादिभि:।। 30/42

4) स्नेहदग्ध चिकित्सा - स्नेहदग्धे भृशतरं रूक्षं तत्र तु योजयेत्।। 30/52

शरीरस्थान

1) गर्भावक्रान्तिशारीरं।

1) दोषज रज - वीर्य:
रक्तेन कुणपं, श्लेष्मवाताभ्यां ग्रन्थिसन्निभम्।
पूयाभं रक्तपित्ताभ्यां, क्षीणं मारूतपित्तव:।। 1/11

2) उत्तम गर्भ का वर्णन -
पूर्णषोडशवर्षा स्त्री पूर्णविंशेन सङ्गता।
शुध्दे गर्भाशये मार्गो रक्ते शुक्रेऽनिले हृदि।। 1/8

3) गर्भ पर दोषों का प्रभाव -
वतालैश्च भवेध्दर्भ: कुब्जान्धजडवामन:।
पित्तलै: खलति: पिंगो: श्वित्री पाण्डू: कफात्मभि।। 1/48

4) गर्भ नाभी का संबन्ध / गर्भ पोषण
गर्भस्य नाभौ मातुश्च हृदि नाडि निबध्यते।
यया स पुष्टिमाप्नोति केदार इव कुल्या।। 1/56

5) मांसभोजन निषेध - (प्रसव के बाद 12 दिन)
द्वादशाहेऽनतिक्रान्ते पिशितं नोपयोजयेत्।। 1/99

30) अंग विभाग शारीर

1) कोष्ठांगो का वर्णन -

कोष्ठाङ्गानि स्थितान्येषु हृदयं क्लोम फुप्फुसम्।

यकृत्प्लीहोन्डुकं वृक्कौ नाभिडीम्भास्तबस्तय:।। 3/12

2) भगवान पुनर्वसु आत्रेय के अनुसार अस्थि संधियों की कुल संख्या 2000 है।

3) मज्जा आदि का परिमाण: मज्जमेदोवसामुत्र पित्त श्लेष्मशकृन्त्यसृक।

रसो जलं च देहेऽस्मिन्नेकेकाञ्जलिवर्ध्दितम्।। 3/80

5) विकृतिविज्ञानीयशारीराध्याय:।

* विविध रोगों के रिष्ट: वातव्याधिरपस्मारी कुष्ठी रक्त्युदरी क्षयी।

गुल्मी मेही च तान् क्षीणान् विकारोऽल्पेऽपि वर्जयेत्।। 5/101

* मांसक्षय एव शारीरीक एवं मानसिक बल का क्षय होनेवाला रोगी त्रिमास (45 दिन) के उपर जीवित नही रह सकता।

[सिर्फ वाग्भट या वाग्भटका महत्वपूर्ण विषय यंहा पर दिया है, शेष वाग्भट शारिर के लिए चरक शारिर और सुश्रुत शारिर देखिए।]

निदान स्थान

1) सर्वरोग निदान व्याख्यास्याम:।

* रोग पर्याय: रोग: पाप्मा ज्वरो व्याधिर्विकारो दु:खमामय:।

यक्ष्मातङ्कगदाबाधा: शब्दा: पर्यायवाचिन:।। 1/1

दोष प्रकोप	काल
वात -	ग्रीष्म ऋतु, अहोरात्र, भुक्तान्त
पित्त -	शरद ऋतु, मध्यान्ह, अर्धरात्री, पच्यमान काल
कफ -	वसन्त ऋतु, पुर्वान्ह, पूर्वरात्र, भुक्तमात्र

2) ज्वर निदान

सान्निपातज्वर लक्षण – दिन में महनिद्रा, रात्री में जागरण, महास्वेद इसी को अभिन्यास अथवा हतौजस कहते है।

3) रक्तपित्तकास निदान

कास - उपद्रव - श्वास, क्षय, छर्दी, स्वरभेद

4) श्वासहिध्मानिदानाध्याय:।

यमला हिक्का के लक्षण:यमला वेगिनी हिध्मा परिणामवती च सा।। 4/25

7) अर्श निदान

नाभी अर्श - गणडुपद सदृश, मृदू, पिच्छिल.

नर्मकिल - दोषदूष्टी - व्यान वायु + कफ.

स्थिर, खर एवं किलोपम अर्श की त्वक में उत्पत्ती.

8) अतीसारग्रहणीदोषनिदानाध्याय:।

* महारोग - 8 वातव्याधिश्मरीकुष्ठमेहोदरभगन्दरा:।

अर्शांसि ग्रहणीत्यष्टौ महारोगा: सुदुस्तरा:।। 8/30

9) वातरक्त निदानाध्याय

प्राण, आदि 5 वायू के परस्पर आवरण 20 होते है।

वायू के आवरण 22 होते है। (कूल आवरण 42)

प्राण पर जीवन और उदान वायुपर बल आश्रित रहता है।

आवरण 1 वर्ष के बाद कष्टसाध्य या असाध्य होते है।

12) उदरनिदानाध्याय:।

* उदररोग का निदान - रोगा: सर्वेऽपि मन्देऽग्नासुतरामुदराणि तु।

अजीर्णान्मलिनैश्चान्नैर्जायन्ते मलसंचयात्।। 12/1

14) कुष्ठश्वित्रकृमिनिदान।

* कालेनोपेक्षितं यस्मात्सर्व कुष्णाति तद्वपु:।

16) वातशोणितनिदानाध्याय:।

विषय का उपसंहार - विशेषाज्जीवितं प्राण उदानो बलमुच्यते।

स्यात्तयो: पीडनाध्दनिरायुषश्च बलस्य च ।। 16/56

[सिर्फ वाग्भट या महत्वपूर्ण विषय यहापर दिया है, शेष वाग्भट निदान के लिए चरक निदान और सुश्रुत निदान देखिए।]

चिकित्सास्थान

4) श्वास - हिध्मा चिकित्साध्याय:।

घृतपानविधि - निर्देश - अर्धाशेन पिबेदसर्पि: क्षारेण पटुनाऽथवा।

धान्वतरं वृषघृत दधिकं हपुषादि वा ।। 4/55

8) अर्शचिकित्साध्याय:।

1) अर्शनाशक तीन योग:

शुष्केष्क भल्लातक्रमग्युमुक्तं भैषज्यमार्द्रेक तु वत्सकत्वक।

सर्वेषु सर्वर्तुषु कालशेयमर्श:सु बल्यं च मलापहं च।। 8/162

2) रोगों का परस्पर संबंध: (निदानार्थकर रोग)

अर्शोऽतिसार ग्रहणी विकारा: प्रायेण चान्योननिदानभूता:।

सन्नेऽनले सन्ति न सन्ति दीप्ते रक्षेदतस्तेषु विशेषतोऽग्निम्।। 8/64

10) ग्रहणी चिकित्साध्याय:।

1) ग्रहणीचिकित्सा सुत्र - ग्रहणीमाश्रित दोषमजीर्णवदुपाचरेत्।

अतीसारोक्तविधिना तस्यामं च विपायेत्।। 10/1

2) कठिन मल चिकित्सा: पुरीषं यश्च कृच्छेण कठिनत्वाद्विमुंचति।

स घृतं लवणैयुक्तं नरोऽन्नावगाह पिबेत्।। 10/71

3) ग्रहणी में जब उदावर्त के लक्षण हों तब निरूह बस्ति तथा स्नेहबस्ति का प्रयोग करना चाहिए।

4) वातादी दोष तथा मल की वृद्धी होने पर वमन तथा विरेचन करना चाहिए।

5) ग्रहणीरोग से मुक्त होने पर घृतपान करना चाहिए।

11) मुत्राघातचिकित्साध्याय:।

1) अश्मरी चिकित्सा: अश्मरी दारूणो व्याधिरन्तकप्रतिमो मत:।

तरूणो भेषजै: साध्य: प्रवृध्दश्छेदमर्हति।। 11/16

20) श्वित्रकृमिचिकित्साध्याय:।

2) शिरोगत कृमि चिकित्सा: शिरोरोगनिषेधोक्तमाचरेन्मूर्धगेष्वनु।

उद्रिक्ततिक्तकटुकमल्पस्नेहं च भोजनम्।। 20/24

22) वातशोणित चिकित्साध्याय:।

औषध पयार्य: (चरक से अलग) भिषग्जित, भेषज, शस्त.

[सिर्फ वाग्भट या महत्वपूर्ण विषय यहापर दिया है, शेष वाग्भट चिकित्सा के लिए चरक चिकित्सा और सुश्रुत चिकित्सा देखिए।]

उत्तरस्थान

1) बालोपचारणीय.

मातृदुग्धाभाव में चर्या:–

प्रथम दिन – अनन्ता मधुसर्पि प्राशन

2nd & 3rd Day लक्ष्मणा सिध्द सर्पि

मातृ दुग्ध अभाव में धात्री दुग्ध, अजादुग्ध, गोदुग्ध.

योग – ब्राह्मी घृत, अष्टांग घृत, सारस्वत घृत

2) बालामय प्रतिषेधाध्याय:

शिशु पीडा परिक्षा:

शिशु जिस अंग को बार – बार स्पर्श करे अथवा

जिस अंग को छूने न दे वहा ऊसे पीडा हो रही है ऐसा जानना चहिए।

व्याधि निदान	लक्षण से
शिरोरूजा -	अक्षिनिमीलन
हृदव्यथा -	जिव्हा औष्ठ दशन, श्वास, मुष्ठि निपीडन
उदर वेदना -	कोष्ठ विबंध, वमथू, स्तनदंश, आन्त्रकुजन, आध्मान, पृष्ठनमन, जढरोन्नमन,
बस्ति व गुदमार्ग में - वेदना.	विण्मुत्रसंग त्रास, इधर उधर देखना.

क्षीरालसक, बालशोष, तालुकण्टक,तालुपात, अहिपूतना,दन्तोदभेदजन्य रोग वर्णन.

वृध्द काश्यप निर्मित संमगा घृत दन्तोदभेदजन्य रोग के लिए वर्णित.

रंजन्यादी चूर्ण - रजनी, दारु, सरल, गजपिप्पली,कण्टकारी, बृहती, पृश्निपर्णी शताव्हा. बालस्य सर्वरोगषु पुजित:।

दन्तोदभेदजन्य रोग - नैगमेष पूजा.

3) बालग्रह प्रतिषेध अध्याय

बाल ग्रह काल जन्म से 16 साल तक

भूतोन्माद व भूतावेश 11 साल के बाद

अ. ह. उ. 4, 5, 6

भूतोन्माद भेद - गन्धर्व, उरग, यक्ष, ब्रह्म, राक्षस, पिशाच, प्रेत, कूष्माण्डक, औकिरण, वेताल,पित्तृ,ऋषि, गुरू, वृध्द, सिध्द.

21) मुखरोग

1) गण्ड - 1 रोग गण्डालजी.

2) रक्तज ओष्ठरोग: रक्तोपसृष्टौ रूधिरं स्त्रवत: शोणितप्रभौ।
खर्जुरसदृशं चात्र क्षीणे रक्तेऽर्बुदं भवेत्।। 21/8

3) वातकफज ओष्ठ रोग: जलबुध्दुदवद्वातकफादोष्ठे जलार्बुदम्।। 21/10

4) वातज रोहिणी: कण्ठास्यशोषकृध्दातात् सा हनुश्रोत्ररूक्करी।। 21/42

5) तालुपाक रोग: पित्तेन पाक : पाकाख्य: पुयास्त्रावी महारूज:। 21/40

28) भगन्दरप्रतिषेधाध्याय: ।

1) पिटिका एवं भगन्दर में भेद:

अपक्वं पिटिकामाहु: पाकप्राप्तं भगन्दरम्।। 28/6

2) कफज भगन्दर पिटिका:

स्थिरा स्निग्धा महामूला पाण्डू: कण्डूमती कफात्।

3) कफपित्तज भगन्दर - अर्शोभगन्दर

वातकफज भगन्दर - ऋजु

वातपित्तज भगन्दर - परिक्षेपी

35) विषप्रतिषेधाध्याय

विषसंकट - विष - उग्र विष

काल - ग्रिष्म व वर्षा

प्रकृती - पित्त

दोष - वात, पित्त

दूष्य - रक्त

इन सब के मिलने से विषसंकट होता है ।

40) वाजीकरण अध्याय

1) 52 श्रेष्ठ वर्णन.

* सर्वेषु रोगेषु शिलाध्यं च।, (सभी रोगो में शिलाजीत उपयुक्त है।)

ज्वर - मुस्ता, पर्पटक

तृष्णा - मृदभृष्टलोष्टोदभव जल

छर्दी - लाजा

बस्ति विकार - गिरिज (शिलाजीत)

मेदोऽ निल - गुग्गुल

रक्तपित्त - वासा

अतिसार - कूटज

अर्श - भल्लातक

गर - हेम (सुवर्ण)

स्थूल - तार्क्ष्य (रसांजन)

कृमी - विडंग

शोष - सुरा,छाग पय:, मांस.

वातरक्त - गुडूची

ग्रहणी - मथित (तक्र)

कूष्ठ - खदीर सार

सर्वरोग - शिलह्य (शिलाजतू)

उन्माद - पुराण घृत

शोफ - मद्य

अपस्मार - ब्राह्मी

निद्रानाश - क्षीर

प्रतिश्याय - रसाला

कार्श्य - मांस

उरूस्तंभ - स्वेद

वातरोग - लशुन, तैल,बस्ति.

श्रम - सुरा, स्नान

दु:ख सहन व स्थिरता - व्यायाम

मुत्रकृच्छ - गोक्षूर

कास - कण्टकारी

व्रण - त्रिफला गुग्गुल

पित्तरोग - विरेचन, घृतपान

कफरोग - वमन, मधु

अर्दित - नवनीत खण्ड

उदर - औष्टू मुत्र

शिरोरोग - नस्य

प्लीहा रोग - पिप्पली

पाण्डू - अयो (लोह भस्म)

वात व कफज रोग - हरितकी

प्रमेह - धात्रीं, निशा (हरिद्रा)

विष - शुकतरू (शिरिष)

वृध्दत्व - दूग्ध + घृत

नेत्ररोग - त्रिफला, नस्य,अंजन, तर्पण.

उरक्षत(सन्धान) - कृमिजा(लाख)

मुखरोग - नस्य, कवल, गण्डूष.

स्कंधांस बाहुरूजा - गुडमंजर्य, खपुर नस्य

पार्श्वशूल - पुष्करमुल वय स्थापन - धात्री

आमविद्रधी - रक्तमोक्षण, जलौका, अलाबू

मूर्च्छा - शीताम्बु, मारूत छाया

मन्दाग्नी - सम शुक्तर्द्रिकमात्रा.

शारंगधर संहिता

वैशिष्ट्य: * योग प्रधान संहिता, * मध्यकाल की एकमात्र संहिता,
*दामोदर सुनु (पुत्र) शारंगधर द्वारा रचित,
* गुरू= राघवदेव. (दामोदर के पिता) * काल = 13 शतक
* रचना:

खण्ड	अध्याय	वर्णन
पूर्व	7	परिभाषा नाडी
मध्यम	12	भैषज्यकल्पना
उत्तर	13	पंचकर्म
3 खण्ड	32 अध्याय	2600 श्लोक

1) नाडी परिक्षा - सर्व प्रथम वर्णन.(इसे प्रात: काल में अभुक्त अवस्थे में करें)
2) अहिफेन - सर्व प्रथम वर्णन.(अहिफेन -शुक्र स्तंभ, पुरीष स्तंभन, वातनाशक)
3) शुक्रस्तंभक कर्म का सर्व प्रथम उल्लेख.
4) उदानवायु आधार (फुफ्फुस परिचय, श्वसन क्रिया स्पष्ट वर्णन.)
5) भंगा प्रथम प्रयोग, 6) दीपन -पाचन इ. कर्म की स्पष्ट परिभाषा eg. सहित.
7) पाचनक्रिया & मूत्रनिर्माण प्रक्रिया स्पष्ट वर्णन.
8) द्रव्यगुण विचार नही परंतु कल्पनानुसार चिकित्सा.
9) दोष, धातु, मल निरूक्ती बताई है।
10) रक्त दोष माना है. (रक्त नानात्मज 10 व्याधी वर्णन)
11) 20 कृमी के अतिरिक्त (21st स्नायु कृमी) अधिक वर्णन.
12) राशीनुसार ऋतुभेद, 13) आसव - अरिष्ट में भेद वर्णन.
14) पाचक पित्त प्रमाण - तिल प्रमाण, 15) उत्तरबस्ति प्रमेह में निषेध,
16) उपद्रवस्वरूप विषाक्तजन्य रोग विस्तार से वर्णन.
17) धातुशोधन, मारण, रसनिर्माण, प्रक्रिया वर्णन.
18) पंचकर्म - धारास्वेद, शिरोबस्ति, मूर्धतैल विशेष उल्लेख.
19) धातु - ग्रह संबंध, 20) ऋतु - ग्रह संबंध,
21) अत्यधिक रक्तस्त्राव से आक्षेप, तिमिर, पक्षाघात.
22) सोमरोग, निद्रा - 1,
23) स्त्रिदोष, श्लीपद = 3 क्षीरालसक- 3 प्रकार
24) आमवात - 4, 25) धातु - 7,
26) वातरक्त, गर्भदोष, दृष्टिरोग, विषगुण - 8
27) बालरोग - 22, पुट - 30,
* क्षुद्ररोग –60, कुल कषाय कल्पनाये – 74
28) कवल प्रयोग - 5 वर्ष पश्चात, नस्य - 8, विरेचन - 16,
स्त्रिसंग - 20 वर्ष पश्चात, 29) शा.- रक्तवृध्दि सिराणं पुरणं,
30) भाव ऱ्हास: बाल्यं वृध्दि छवि मेधा त्वक् दृष्टी शुक्रं विक्रमो।
बुध्दि कर्मेन्द्रियं चेतो, जीवितं दशतो ऱ्हसेत ।।
i) (1 - 10) वर्ष - बाल्य, ii) (11 - 20) वर्ष - वृध्दि,
iii) (21 - 30) वर्ष - छवि, iv) (31 - 40) वर्ष - मेधा,
v) (41 - 50) वर्ष - त्वचा, vi) (51 - 60) वर्ष - दृष्टी,
vii) (61 - 70) वर्ष - शुक्र, vii) (71 - 80) वर्ष - विक्रम,
ix) (81 - 90) वर्ष - बुध्दि, x) (91 - 100) वर्ष - कर्मेन्द्रिय,
xi) (101 -110) वर्ष - चैतन्य, xii) (111-120) वर्ष - जीवन.
*जयपाल अंजन प्रयोग वर्णन. * जरतपित्त शूल = शा. & शोढल में वर्णन.
* अनुभव सिध्द योग: हृत्शूल - शृंगभस्म, गृध्रसी - शेफाली,
गण्डमाला - कांचनार, मेदोदोष - बृहत् पंचमूल, (श्लीपद - शाखोटक),
रक्तार्श - अपामार्ग (अपामार्ग), अर्श - निम्ब, प्रदर - तण्डुलीय,
परिणामशूल - विष्णुकान्ता, व्रण - निम्ब दल कल्क.
* भैषज्य कल्पना:
i) उत्कृष्ट ग्रंथ = शा. संहिता.
a) (पवन रजोगुणमय: पित्त सत्वगुणोत्तरम् कफ तमोगुणाधिक:।)....(शा.पू. 5)
ii) पित्तं पंगु कफो पंगु पंगवो मलधातव:।
वायुनायत्र नियन्ते तत्र गच्छन्ति मेघवत्।। ..... (शा.)
iii) रसायनं च तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम्।

1) विषम ज्वर क्वाथ:
संतत ज्वर - मुस्तादि क्वाथ, सतत ज्वर - पटोलादि क्वाथ,
तृतीय ज्वर-गुडूच्यादि क्वाथ, चतुर्थक ज्वर - देवदार्व्यादि क्वाथ (प्रसृति दोष)
2) कामला - फलत्रिकादि क्वांथ 3) पक्वातिसार - लघु गंगाधर चूर्ण,
4) प्रवाहिका - बृहत् गंगाधर चूर्ण, 5) जलोदर - बिंदुघृत,
6) वन्ध्यत्व - फलघृत, 7) सर्वज्वर - अगुर्वादि तैल,
8) प्रसुता (सुतिका) - बला तैल, 9) वातविकार - बलातैल,
10) वाजीकरण - माषादि मोदक
* अणुतैल - नस्य (वसन्त, वर्षा (प्रावृट), शरद में)
*यमदंष्टाकाल 16 दिन / हेमंत अष्टककाल – कार्तिक, मार्गशीर्ष.
शारंगधर संहिता टिका:

1.	दिपीका	-	आढमल्ल	- 14 वे शतक
2.	गूढार्थदिपिका	-	काशीराम वैद्य	- 16 वे शतक
3.	प्रकाश व्याख्या	-	बोपदेव	- 13 वे शतक
4.	आयुर्वेददिपिका	-	रूद्रभट्ट	- 17 वे शतक

प्रथम खण्ड : 1) परिभाषा, 2) भैषज्याख्यान,
3) नाडी परिक्षादि विधिस्ततो (दूत व स्वप्ने), 4) दीपन पाचन,
5) कलादिख्यान, 6) आहारादि गति, 7) रोग गणना.

1) परिभाषा

मंगलाचरण - भगवान शिव को नमस्कार.
1) प्रमाण - परमाणु से शुरूवात.
30 परमाणु - 1 वंशी (त्रसरेणु) पर्याय. (प्रमाण भैजष्य कल्पना में देखे)
2) योग परिभाषा: योग के प्रथम औषधी पर योग का नाम.
* सर्व औषधी में नयी औषधी की योजना करें ; But
i) विडंग, ii) पिप्पली, iii) घृत, iv) गुड, v) मधु, vi) धान्य
ये 6 पदार्थ पुराने लें. (सु. - Except धान्य Other 5)
* आर्द्र द्रव्य शुष्क द्रव्य की अपेक्षा 2 Times लें, But
अश्वगंधा, शतावरी, शतपुष्पा, कुटज, कुष्माण्ड, वासा, गुडुची, समप्रमाण में
* अनुक्त कालादि योजना: i) काल - प्रभात काल,
ii) उपयुक्तांग - जटा (मूल), iii) भाग - समभाग, iv) पात्र - मृतपात्र,
v) द्रव - जल, vi) तैल - तिल vii) घृत - गोघृत viii) लवण–सैंधव
वनस्पति द्रव्य वैसे ही रखने पर 1 वर्ष पश्चात हिनवीर्य.

औषधी		हिनवीर्यता.
a) चूर्ण	-	2 मास
b) गुटिका, अवलेह	-	1 वर्ष
c) घृत, तैल	-	(1 वर्ष - 4 मास) (4 मास)
d) लघुपाक औषधी	-	1 वर्ष
e) आसव, धातुभस्म, रसायने	-	जीतने पुराने उतने उपयोगी

वनस्पति संग्रह: वसन्त - वमन, विरेचन औषधी संग्रह. शरद - Others all.
* न्यग्रोधादि - त्वचा ग्राह्य, बीजकादि - सार ग्राह्य, तालीसादि - पत्र ग्राह्य,
त्रिफला - फल ग्राह्य, धातक्यादि - पुष्प ग्राह्य, स्नुह्यदि - क्षीर ग्राह्य.

2) भैषज्याख्यान

1) औषध सेवन काल: चरक; सुश्रुत; अ.हृ - 10, अ.सं. - 11, शा. 5
i) किंचित सूर्योदये ii) दिवा भोजन, iii) सायं भोजन, iv) मुहुर्मुहु, v) निशि.
1) प्रथम काल: किंचित सूर्योदये: विरेचन, वमनार्थ
(आहरेत् लेखनार्थ चरक - भैषज्य प्रभाते अनअन्न)
2) द्वितीय काल:
i) विगुण अपाने - भोजनाग्रे, ii) अरूचि,
iii) समान वायू विगुण व अग्निमांद्य - भोजन मध्यमें,
iv) व्यान प्रकोप - भोजनान्ते,
v) हिक्का - आक्षेक - कंप - भोजनपूर्व + भोजन पश्चात
3) तृतीय काल: सायं भोजने समयी
i) उदान प्रकोप (ग्रास - ग्रासान्तरे), ii) प्राण प्रकोप.
4) चतुर्थ काल: मुहुर्मुहु - छर्दि, हिक्का, श्वास.
5) पंचम काल: निशि - उर्ध्वजत्रु विकारेशु लेखने बृंहण पाचनं शमनं

2) पंच अवस्था: रस, गुण, वीर्य, विपाक, शक्ति.
(* इसका ज्ञान क्रमश: होता है।)
3) रस: 6. मधुरोऽम्ल: पटु श्चैव कटुतिक्तकषायका:।
* प्रभाव को शक्ति कहा है।
ग्रंथोक्त -धात्री- लकुच गुण समान: परंतु धात्री प्रभाव से त्रिदोषघ्न & लकुच नहीं.
- सहदेवीमुल सिर पर बांधने से ज्वरनाश (अंग प्रभाव)
4) ऋतु राशी संबंध: (चरक तस्याशितीय में देखे)
5) यमदंष्ट्रा काल:16,कार्तिक के आखरी 8 दिन+ मार्गशीर्ष के पहले 8 दिन

3) नाडी परिक्षा

* करस्यांगुष्ठमूले या धमनी जीवसाक्षिणी।
वात प्रकोप नाडी - जलौका & सर्प गति.
पित्त प्रकोप नाडी - कलिंग, काक, मण्डूक गति.
कफप्रकोप नाडी - हंस, पारावत गति.
त्रिदोषज प्रकोप नाडी - लावा, तितिर, वर्तिक पक्षि.
द्विदोष प्रकोप - कदाचित् मन्द कदाचित् वेगवाहिनी.
प्राणनाशिनी प्रकोप - स्थान विच्युता & स्थित्वा स्थित्वा चलती.
निश्चित प्राणनाशक - अतितीक्ष्ण & शीत.
* ज्वर प्रकोप में - उष्ण, वेगवान.
- काम क्रोधाद वेगवहा क्षीणा चिन्ता भय प्लुता ।
मन्दाग्रे क्षीण धातोश्च नाडी मन्दतरा भवेत्॥
रक्त प्रकोप नाडी - कोष्ण, गुरू आमदोष में गरियसी
दिप्ताग्नी - लघू व वेगवान स्वस्थ - स्थिर व बलवान
क्षुधित - चपल तृप्त में स्थिर
* स्वप्न शुभाशुभ वर्णन.

4) दिपन पाचन

1) दीपन: पचेद् न आमं वहनिकृच्च दीपनं तद्यथा मिशि:।
2) पाचन: पचत्यामं न वह्नि च कुर्यात् तद्धि पाचनम्।
नागकेशर विद्यात् चित्रो दीपन पाचन:॥
3) संशमन: न शोधयति न द्वेष्टि समान् दोषांस्तथोध्दतान्।
समीकरोति विषमांशमनं तद्यथाऽमृता॥ (गुडुची.)
4) अनुलोमन: कृत्वा पाकं मलाना यद् भित्त्वा बन्धमधो नयेत्।
तच्च अनुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी॥
5) स्त्रंसन: पक्तव्यं यद् अपक्त्वैव श्लिष्टं कोष्ठे मलादिकम्।
नयत्यध: स्त्रंसनं तद्यथा स्यात्कृतमालक:॥(आरग्वध)
6) भेदन: मलादिम् अबध्द यद् बध्द वा पिण्डितं मलै:।
भित्त्वा अध: पातयति तद् भेदनं कुटकी यथा॥
7) रेचन: विपक्व यद् अपक्वं वा मलादि द्रवता नयेत्।
रेचयत्यपि तज्ज्ञेयं रेचनं त्रिवृतां यथा॥(निशोत्तर)
8) वमन: अपक्व पित्तश्लेष्माणौ बलादूर्ध्वे नयेत् तुयत्।
वमनं तद्धि विज्ञेयं मदनस्य फलं यथा॥
9) संशोधन: स्थानाद् बहिर्नयेद् उर्ध्वमधो वा मलसंचयम्।
देहसंशोधन तत्स्याद् देवदालीफल यथा॥
10) छेदन: श्लिष्टान् कफदिकान् दोषान् मूलयति यद् बलान्।
छेदनं तद् यवक्षारा मरिचानि शिलाजतु॥
11) लेखन: धातून्मलान् वा देहस्य विशोष्यो लेखयेच्च यत्।
लेखनं तद् यथा क्षौद्रं नीरमुष्णं वचा यवा:॥
12) ग्राही: दीपनं पाचनं यत् स्याद् उष्णत्वाद् द्रवशोषकम्।
ग्राहि तद् यथा शुण्ठि जीरकं गजपिप्पली॥
13) स्तम्भन: रौक्ष्याच्छैत्यात् कषायत्वात लघुपाकाच्च यद् भवेत्।
वातकृत्स्तम्भनं तत् स्याद् यथा वत्सक टुण्टुकौ॥
14) रसायन : रसायनं च तज्ज्ञेयं यज् जराव्याधिनाशनम्।
यथा ऽमृता रुदन्ती च गुग्गुलुश्च हरीतकी॥
15) वाजीकरण : यस्माद् द्रव्याद् भवेत् स्त्रीषु हर्षो वाजीकरं च तत्।
यथा नागबलाद्या: स्युर्बीजं च कपिकच्छुजम्॥
16) शुक्र वृध्दिकर: तस्माच्छुक्रस्य वृध्दि: स्यात् शुक्रलं च तदुच्यते।
यथा अश्वगंधा मुसली शर्करा च शतावरी॥
17) शुक्र जनक व प्रवर्तक:दुग्धं माषाश्च भल्लातक फल मज्जा आमलानि।
प्रर्वतकानि कथ्यन्ते जनकानि च रेतस:॥
18) शुक्र: प्रवर्तनी स्त्री, शुक्रस्य, रेचनं बृहती फलम्।
जातीफलं स्तम्भकं च शोषिणी च हरीतकी॥
19) सुक्ष्म औषध: देहस्य सुक्ष्म छिद्रेषु विशेत् तत् सुक्ष्ममुच्यते।
तद्यथा सैन्धवं क्षौद्रं निम्बस्तैलं रुबूकभवम्॥
20) व्यवायी: पूर्वे व्याप्याखिलं कायं तत्: पाकं च गच्छति।
व्यवायि तद्यथा भंगा फेनं च अहि समुद्भवम्॥
21) विकाशि: संधिबन्धास्तु शिथिलान्यत् करोति विकाशि तत्।
विश्लेष्य ओजश्चधातुभ्यो यथा क्रमुक कोद्रवा:॥
22) मदकारी: बुध्दि लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारि तदुच्यते।
तमोगुण प्रधानं च यथा मद्य सुरादिकम्॥
23) विष गुण: व्यवायि च विकाशि स्यात् सुक्ष्मं छेदि मदावहम्।
आग्नेयं जीवितहर योगवाहि स्मृतं विषम्॥
24) प्रमाथी औषध: निजवीर्येण यद् द्रव्यं स्त्रोतोभ्यो दोष संचयम्।
निरस्यति प्रमाथी स्यात तद्यथा मरिचं वचा॥
25) अभिष्यन्दी: पैच्छिल्याद् गौरवाद् द्रव्यं रुध्वा: रसवहा: शिरा:।
धत्ते यद् गौरवं तत् स्याद् अभिष्यन्दि यथा दधि॥

Common: क्षौद्र - सुक्ष्म; लेखन, वचा - प्रमाथी ; लेखन
मरिच - प्रमाथी, छेदन अमृता - रसायन, संशमन
हरितकी - रसायन, शुक्र शोषण, अनुलोमन.

5) शारीर:

कलासप्त आशया: सप्त धातव: सप्त तन्मला:।
सप्त उपधातवा: सप्त त्वच: सप्त प्रकिर्तीता:॥
रंध्रे - पुरूष - 10, स्त्री - 13, कला - As सु. &
श्लेष्मधराकला स्थान - यकृत प्लीहा
आशय; उर: श्लेष्माशय. उसके अधो - आमाशय.
- उर्ध्व अग्न्याशयो नाभे वाम भागे व्यवस्थित:।
नाभी के उपर
Lt. Side अग्नि का स्थान & उसके उपर तिल है उसे क्लोम संज्ञा.(अग्न्याशय)
- अग्नि के अधोभाग में पक्वाशय.
* जीवरक्ताशय - उरं:

धातु	उपधातु	मल
1) रस	स्तन्य	जिव्हा नेत्र कपोलानां जलं
2) रक्त	रज	रंजक पित्त.
3) मांस	मांस	कर्ण मल.
4) मेद	स्वेद	जिव्हा दंत कक्षा मेढ्र इनका मल
5) अस्थि	दंत	नख.
6) मज्जा	केश	नेत्रमल.
7) शुक्र	ओज	पिटीका(तारूण्य)– मुखस्निग्धता

सप्त त्वचा: 1) अवभासिनी - सिध्म, 2) लोहिता - तिलकालक,
3) श्वेता - चर्मदल, 4) ताम्रा - किलास, श्वित्र., 5) वेदिनी - सर्वकुष्ठ,
6) रोहिणी - ग्रन्थीगण्डापची., 7) स्थुला - विद्रधी इ. 2 व्रीहो.
3 दोष में वायु बलवान है।,
* वात गुण - रजोगुणमय:,
* पित्त गुण - सत्वगुणोत्तरम्,
* कफगुण–तमो गुणाधिक.
पाचक पित्त - तिल प्रमाण, मूर्धा में स्थित कफ - स्नेहक,
कण्ठ - में स्थित कफ - रसन
* मर्म - जीवाधार. * पेशी - बल & अवष्टम्भन.
* रक्तवाही शिरामुलं - प्लीहा.
* तिल (क्लोम) जलवाहि शिरामुलं तृष्णाच्छादनक तिलम्।

* वृक्क - जठरस्य मेद पोषण * शिरा धमन्यो नाभिस्था:
* आयु - शरीर & प्राण संयोग.,
* पंचत्व (मरण) - शरीर & प्राण वियोग.
* अहंकार - 10 इंद्रिये + मन.
सत्व - 5 ज्ञानेंद्रिय (श्रोत्र, त्वक् जिव्हा, घ्राण, नासा)
रज - 5 कर्मेंद्रिय (वाणी, हस्त, पाद, उपस्थ, गुद)
प्रकृति पर्याय - प्रधान प्रकृति, शक्ती, नित्या, अविकृती.
प्रकृति - शिव आश्रय पुरूष - देही.

6) आहार

1)वलीत्रय (गुद): प्रवाहिणी (अंदर),संवर्जनी (मध्य),ग्राहिणी (बाह्य)
* रसस्तु हृदयं याति समान मरुत प्रेरित:।
(समान वायु के प्रेरणा से रस हृदय में) (other आचार्य = व्यान)
2) रक्त: स्निग्ध गुरू चलं स्वादु विदग्ध पित्तवद् भवेत। संदर्भ
3) गर्भ: कामान् मैथून संयोगे शुध्द शोणित शुक्रज:।
गर्भ: संजायते नार्या: संजातो बाल उच्यते॥
अधिक रज - कन्या, शुक्राधिक - पुत्र, समत्व - नपुंसक
* गर्भ पुत्र / कन्या होना - परमेश्वर इच्छानुसार.
4) बालकऔषधी:मात्रा:
चूर्ण / कल्क: 1 मास - 1 रत्ती : प्रती मास 1 रत्ती बढाना.
12 मास - 12 रत्ती - 1 माष, प्रती वर्ष 1 माष बढाना.
16 वर्ष - 16 माष
16 से 70 वर्ष - 16 माष उसके बाद प्रति वर्ष 1 माष कम करना।
कषाय मात्रा - 4 Times of चूर्ण/कल्क:
16 से 70 वर्ष - 16 माष प्रौढ़ मात्रा
4 वर्ष बालक 4/16 - 1/4 मात्रा of प्रौढ़ मात्रा
8 वर्ष बालक of 8/16 -1/2 मात्रा of प्रौढ़ मात्रा
12 वर्ष बालक 12/16 - 3/4 मात्रा of प्रौढ़ मात्रा
जन्म से – अंजन, लेप, स्नान, अभ्यंग, वमन, प्रतिमर्श
5 yr. पश्चात् – कवल., 8 yr. पश्चात् – नस्य.,
16 yr.पश्चात् – विरेचन., 20 yr. पश्चात् – मैथून.,
* बाल्यं वृध्दि छवि मेधा त्वक् दृष्टी शुक्रं विक्रमो।
बुध्दि: कर्मेंद्रिय चेतो जीवितं दशतो ऱ्हसेत॥
प्रकृ ति: a) वात प्रकृति : स्वप्न आकाशचारि.
b) पित्त प्रकृति : स्वप्न ज्योतिष (नक्षत्र) द्रष्टा अग्नि आदि.
c) कफप्रकृति : स्वप्ने जलाशय. ग्लानि - ओजक्षयाद दु:खद.
मूत्र (छिंक) उद्गार : उदान कोप - उर्ध्वगमन.

7) रोग गणना:

1

(गण्डमाला, गलगण्ड, अपची - प्रत्येक (1 - 1)
सोम -1 प्रकार., (मेदोरोग -1) (निद्रा - 1) अण्डवृध्दि - 1, उरोग्रह - 1
(उदर्द – कफ पित्त - 1, शितपित्त - वात पित्त - 1)

2

कोष्ठ भेद - 2 1) छिन्नांत्रक, 2) निसृतांत्रक

3

कर्मकील - 3 (वात, पित्त, कफ)
अजीर्ण - 3 (विष्टब्धाजीर्ण, विदग्ध, आम), विषाजीर्ण – रस से उत्पन्न.
अलसक - 3 (वात, पित्त, कफ), विसूचिका - 3 (वात, पित्त, कफ),
विषरोग - 3 (स्थावर, जांगम, कृत्रीम), अम्लपित्त - 3
(वात, कफ, वातकफ)
क्षीरालसक – 3 (वात, पित्त, कफ).

4

मद - 4 (पूग, भंगा, अक्ष (बेहज), कोद्रव),
मूर्च्छा - 4 (वात, पित्त, कफ त्रिदोषज)
प्रवाहिका - 4 (वात, पित्त, कफ, रक्त),
जठराग्नि - 4(वात,- विषम, पित्त,- तीक्ष्ण, कफ, - मन्द, वात पित्त - भस्माग्नि,
आमवात - 4 (वात, पित्त, कफ, त्रिदोषज),
मदात्ययरोग - 4 (वात, पित्त, कफ त्रिदोषज)
(परमद, पानाजीर्ण, पानविभ्रम, पानात्यय)

5

संग्रहणी - 5 (वात, पित्त, कफ, त्रिदोषज आमज)
(क्षयरोग - 5 (वात, पित्त, कफ उर:क्षत, क्षयज)
(इसमे ही श्रमज राजयक्ष्मा कहा है)

6

(शोष - 6) 1) व्रण से उत्पन्न (रक्त), 2) अध्वश्रमण (मांस),
3) व्यायामजन्य (मेद), 4) वार्धक्यजन्य (अस्थि), 5) शोक (मज्जा),
6) अतिस्त्रिप्रसंग (शुक्र).
स्वरभेद - 6 (वात पित्त कफ त्रिदोषज, मेद, क्षयज)
तृष्णा - 6 (वात पित्त कफ त्रिदोषज, उपर्सगज, क्षयज)
उन्माद - 6 (वात पित्त कफ त्रिदोषज, विषज, दु:खी मन से)
अर्बुद - 6 (वात पित्त कफ रक्त मांस मेद)
विद्रधी - 6 (वात पित्त कफ त्रिदोषज रक्त क्षतज)

7

अतिसार - 7 (वात, पित्त, कफ, त्रिदोषज, शोक, आम, भय)
छर्दि - 7 (वात पित्त कफ त्रिदोषज कृमि, घृणया, स्त्रीणां गर्भाधानस्य)
मदरोग - 7 (वात, पित्त, कफ, त्रिदोषज, रक्तमद, मद्यमद, विषमद.)
दाह - 7,वृध्दि - 7 (वात, पित्त, कफ, त्रिदोषज, मेद, मूत्र, आंत्र) उपविष - 7

8

गर्भज-8 (उपविष्टक,नागोदर,मक्कल,मुढगर्भ, विष्टम्भ, गुढगर्भ, जरायुदोष, गर्भपात)
(No लीनगर्भ)
परिणामशुल - 8, गुल्म - 8
(वात, पित्त, कफ, त्रिदोषज, वातपित्त,पित्तकफ, वातकफ,)
वातरक्त - 8 (वात, पित्त, कफ, त्रिदोषज, वातपित्त,पित्तकफ, वातकफ,)
आगंतुजव्रण - 8 i) अवकृत, ii) विलंबित, iii) छिन्न, iv) भिन्न,
v) विदलीत, vi) घृष्ट, vii) विध्द, vii) निपातीत.
सर्वाक्षिरोग 8 - वातविपर्यय अन्यतोवात, पाकात्यय, शुष्काक्षीपाक, शोफ,
अध्यूषित, हताधिमंथ, अल्पशोथ.
रक्तरोग - 10 : i) रक्तमण्डल, ii) रक्तनेत्रता, iii) रक्तमूत्रता, vi) रक्तष्ठीवन,
v) रक्तपिटीका, vi) गौरव, vii) उष्णता, vii) पूतिगन्धता, x) पीडा, xi) पाक.
कृमी - 21 Extra स्नायु - कफरक्त, (बालरोग - 22)
(स्नायुकरोग - वृन्धमाधव) ज्वर - 25 (क्षुद्ररोग - 60) मुखरोग - 74

1) स्वरस

मध्यम खण्ड:
व्याख्या: अहतात् तद् क्षणात् कृष्टात् द्रव्यात क्षुण्णात्समुध्दरेत्।
वस्त्रनिष्पीडितो य: रस: स स्वरस उच्यते॥
अन्य 2 पध्दत: 1) 1 कुडव द्रव्य + 2 (भाग जल) - 1 अहोरात्र भिगाये रखें.
2) शुष्क द्रव्य + 8 (जल) - 1/4 शेष रखना.
मात्रा: 1/2 पल - 2 तोला.
प्रक्षेप मात्रा: मधुश्वेतागुडक्षारत्रजीरकं लवणं तथा।
घृतं तैल च चूर्णादीन् कोलमात्रान् रसे क्षिपेत्॥
1) अमृता स्वरस - सर्व प्रमेह, 2) वासा स्वरस - रक्तपित्त,

3) त्रिफला रस - कामला,

तण्डुलोदक: प्रदररोग (यवकुट तण्डुल) : (जल), 1:8 (चरक - 1:6)

पुटपाक: 1) कुटज पुटपाक - सर्वातिसार, 2) दाडिम्ब पुटपाक - सर्वातिसार.

2) क्वाथ

* पानीय षोडशगुण क्षुण्णे द्रव्यपले क्षिपेत्।

मृत्पात्रे क्वाथयेत् ग्राह्य अष्टमांशावशेषितम्।।

पर्याय : श्रृत, क्वाथ, कषाय, निर्व्यूह: मात्रा : 2 पल

प्रक्षेप मात्रा	शर्करा	मधु
वात दोष में	1/4	1/16
पित्त दोष में	1/8	1/8
कफ दोष में	1/16	1/4

b) जीरकं गुग्गुलुं क्षारं लवणं च शिलाजतु।

हिंगु त्रिकटुकं चैव क्वाथे शाणोन्मितम् क्षिपेत्।।

क्षीरं घृतं तैलं मूत्रं चान्यद् द्रवं तथा।

कल्क चूर्णादिकं क्वाथे निक्षिपेत्कर्षसम्मितम्।।

घनद्रव्य - जीरक, त्रिकटु, आदि 2 माशा तक

द्रवद्रव्य - घृत, तैल, कल्क, आदि 1 कर्ष (1 तोला)

प्रमथ्या: प्रमथ्या प्रोच्यते द्रव्यपलात्कल्कीकृतात् श्रृतात्।

तोयेऽष्ट गुणिते तस्या: पानमाहु: पलं द्वयम्।।

द्रव्य 1: जल 8, - शेष 2 पल रखे। मात्रा 2 पल

1) मुस्तादि प्रमथ्या - रक्तातिसार

यूष: कल्क द्रव्यपलं शुंठी पिप्पली चार्ध कर्षिकी।

वारिप्रस्थेन विपचेत् स द्रव्यो यूष उच्यते।।

मात्रा: 1/2 कर्ष आहार द्रव्य 1: जल 14 - पेयापेक्षा घन

1) सप्तमुष्टिक यूष - सन्निपातज्वर, आमवात हर.

पानक: उशीरादि पानक - पिपासा ज्वर

उष्णोदक: अष्टमेन् अंशशेषेण चतुर्थेन् अर्धकेन् वा।

अथवा क्वथनेनैव सिध्दमुष्णोदकं वदेत्।।

जल - 1/8 or 1/4 or 1/2 or फक्त क्वथन:

गुण: श्लेष्म आमवात मेदोघ्नं बस्तिशोधन दीपनम्।

कास श्वास ज्वरहरं पीतं उष्णोदकं निशी।।

क्षीरपाक: आमजशूलनाशक द्रव्य: 1, दूध: 8 जल : 32 दुग्ध अवशेष

1) पंचमूलीक्षीरपाक - सर्वजीर्णज्वर, 2) त्रिकंटकादि पाक - कफजज्वर.

यवागु: द्रव्य: 1 जल 6 - 1/2 भाग शेष.

पर्याय: यवागू, ग्राहीणी, बल्या, तर्पणी, वातनाशिनी, कृशरा, घना.

विलेपी:आहार द्रव्य: 1 जल 4- बृहंणी तर्पणी हृद्या मधुरा पित्तनाशिनी घनासिक्था.

पेया: आहार द्रव्य: 1 जल 14 - स्वल्प सिक्था पेया लघुतरा ज्ञेया ग्राहिणी

धातुपूष्टिदा यूषो बल्यस्तत: कण्ठयो लघुपाक: कफापह:

मण्ड: आहार द्रव्य: 1 जल 14 - सिक्थरहित

(शुंठी, सैंधव (1-1 माशा) संयुक्त: दीपन पाचन पर:।)

भक्त/भात: जल का प्रमाण 5 गुणा

आहार द्रव्य: 4 जल 14 → मण्डरहित भाग (लघु, मधुरो)

i) अष्टगुण मण्ड, ii) वाट्यमण्ड - कफपित्तहर कंठ्य रक्तपित्त प्रसादन.

iii) लाजमण्ड - कफपित्तहर ग्राही पिपासा ज्वर.

प्रमथ्या	यूष	पानक	(मांसरस;विलेपी वेशवार)
1:8	1:64..1/2	1:64 ...1/2	1:4
उष्णोदक	मण्ड	क्षीरपाक	यवागु
1/8 or 1/4 or 1/2	1:14	1: 8 :32	1:6
भात	पेया	क्षीरपाक यादवजी त्रिकमजी	
1 : 5	1:14	1: 15 :15	

औषध सिध्द कल्पना 1: 64 & षडंगपानीय

औषध सिध्द पानीय: 1: 64 (शारंगधर, भै.र.)

उदा. कांबलीक - तक्राम्ल द्वारा सिध्द यूष.

3) फाण्ट:

क्षुण्ण द्रव्यपले सम्यक् जलमुष्णं विनिक्षिपेत्।

मृत्पात्रे कुडवोन्मात्रं ततस्तु स्त्रावयेत्पटात्।।

स स्याच्चूर्णद्रव; फाण्टस्तन्मानं द्विपलोन्मितम्।

मधुश्वेता गुडादींश्च क्वाथवत् तत्र निक्षिपेत्।।

- मृदुवीर्य औषधी 4 तोला + 16 (उष्ण जल) लें

मध्यमवीर्य औषधी 2 तोला + 16 (उष्ण जल) लें

तीक्ष्णवीर्य औषधी 1 तोला + 16 (उष्ण जल) लें

मात्रा - 2 पल, प्रक्षेप द्रव्य - क्वाथ वत.

मंथ: मंथोऽपि फाण्ट भेद:....(शा.), मंथ - हिम का भेद....(Other आचार्य)

* जले चतुष्पले शीते क्षुण्णं द्रव्यपलं क्षिपेत्।

मृत्पात्रे मन्थयेत् सम्यक् तस्माच्च द्विपलं पिबेत्।।

मात्रा - 2 पल.

4) हिम:

क्षुण्णं द्रव्यपल सम्यक् षड्भि:निरपलै: प्लुतम्।

नि:शोषितं हिम सस्यात् तथा शीतकषायक:।।

मात्रा: 2 पल., पर्याय: शीत कषायक

(च. - 6 (उष्ण जल) ; मात्रा - 1 पल ; पर्याय - शीत)

1) आम्रादि हिम - रक्तपित्त, 2) मरिच्यादि हिम - तृष्णादि, छर्दि.

3) अमृता हिम - जीर्ण ज्वर, 4) वासा हिम - कास, रक्तपित्त

5) धान्यक हिम - अंतर्दाह, तृष्णा, 6) सारिवा हिम - रक्तपित्त

5) कल्क:

द्रव्यमार्द्रं शिलापिष्टं शुष्कं वा सजल भवेत्।

प्रक्षेपावाप कल्कास्ते तन्मान कर्ष संमितम्।।

मात्रा : 1 कर्ष (1 तोला)

प्रक्षेप मात्रा: कल्के मधु घृतं तैलं देयं द्विगुणमात्रया।

सिता गुडौ समं दद्याद् द्रवा देयाश्च चतुर्गुणा:।।

पर्याय: कल्क, प्रक्षेप, आवाप.

1) निम्बकल्क - व्रण शोधन रोपण, 2) महानिम्बकल्क - गृध्रसी

3) रसोन कल्क - वातरोग, विषमरोग 4) पिप्पल्यादि कल्क - उरूस्तम्भ

5) विष्णुकान्ता - परिणामशुल. 6) अपामार्ग कल्क - रक्तार्श

7) नवनीत कल्क - रक्तार्श 8) तण्डुलीय कल्क - रक्तप्रदर

9) अंकोल कल्क - विष 10) मसूर कल्क - सग्रंहणी.

6) चूर्ण:

अत्यन्तशुष्कं यद् द्रव्यं सुपिष्टं वस्त्रगालितम्।

तत् स्याद् चूर्णं रज: क्षोद: तन्मात्रा कर्ष संमिता।।

पर्याय: रज, क्षोद:, मात्रा: 1 कर्ष (तोला)

प्रक्षेप मात्रा: i) गुड - समान मात्रा. हिंग - न उत्क्लेद मात्रा में

ii) शर्करा - द्विगुण मात्रा. (मध, घृत तैल) - द्विगुण मात्रा.

iii) द्रवद्रव्य - चतुर्गुण मात्रा. iv) भावना - चूर्ण उसमें भिगने तक.

1) सुदर्शन चूर्ण - सर्वज्वर, अनुपान - शीताम्बु.

2) यवक्षारादि चूर्ण - शिशू कास.

3) शुण्ठ्यादि चूर्ण - आमातिसार.

4) लघु गंगाधर चूर्ण - सर्व अतिसार (ग्राही)

5) बृहत् गंगाधर चूर्ण - सर्व अतिसार (वेगविबंधकर)

6) कपित्थाष्टक चूर्ण - ग्रहणी

7) दाडिमाष्टक चूर्ण - ग्रहणी (शर्करा: दाडिम - 4: 1)

8) नारायण चूर्ण - उदर

अनुपान: अजीर्ण - उष्णाम्बु, आध्मान - सुरा,गुल्म - बदर क्वाथ, विट्संग - दधि मस्तू, परिकर्तिका - वृक्ष्माल क्वाथ, उदर - उष्ट्री दुग्ध, तक्र (गायका)

9) तालीसादि चूर्ण - अरूचि.,10) सितोपलादि चूर्ण - श्वास कास क्षय.

1) पर्याय: वटक, व

*शर्करा or गुड का

* गुग्गुल or मध चू

2) मात्रा: 1 कर्ष 1

2) मरिच्यादि गुटिका

4) व्योषादि गुटिका

5) संजीवनी वटि -

सर्पदंश 3 - 3 वटी,

घटक द्रव्य कुल 10

वत्सनाभ. (मात्रा -

7) चंद्रप्रभा गुटिका

8) कांकायन गुटिका

9) योगराज गुग्गुल -

अनुपान : i) रास्नां

iii) आरग्वधादिक्वाथ

v) गोमूत्र - पाण्डू, vi

viii) त्रिफलाक्वाथ -

xi) निंम्बक्वाथ - कु

10) त्रिफला गुग्गुल

* शर्करा & द्रव -

i) च्यवन प्राशावलेह

iii) कुष्माण्डावलेह -

iv) अगस्त्यहरितकी

v) कुटजावलेह - अ

अवलेह पाक भेद: 2

i) तंतुपाक (जलअ

ii) बिन्दुपाक (जल

* लेह → अवलेह

मात्रा - 1 पल, स्नेह

i) मृदु - ईषत् सरस

ii) मध्य - कल्क नि

iii) खर - ईषत् कठि

* इसके पश्चात् द

1) क्षीरघृत - प्लीहा

3) कामदेवघृत - स

5) मसूरघृत - सर्व

7) महातिक्तकघृत -

9) बिंदुघृत: (बिंदु

सेवन उतने विरेचन

10) जात्यादिघृत -

12) लाक्षा तैल -

13) नारायण (अग्नि

14) प्रसारणी तैल -

15) माषादि तैल -

16) शतावरी तैल -

17) कासीसादि तैल

19) अर्क तैल - प

21) त्रिफला तैल -

23) यष्टिमधु तैल -

25) निलीकादि तैल

7) गुटीका:

1) पर्याय: वटक, वटी, वटिका, मोदक, पिंडी, वर्ति, गुड
*शर्करा or गुड का पाक + चूर्ण मिलाकर गोलियाँ.
* गुग्गुल or मध चूर्ण के समभाग. * मोदक के लिए द्रव पदार्थ 2 Time ले.
2) मात्रा: 1 कर्ष 1) बहुशाल गुड - अर्श, मुख्य घटक सुरण
2) मरिच्यादि गुटिका - सर्व कास. 3) व्याघ्रीजीरकादि गुटिका - उर्ध्ववातादि,
4) व्योषादि गुटिका - आमपीनसादि.
5) संजीवनी वटि - अजीर्ण व गुल्म 1 - 1 वटी, अतिसार 2 - 2 वटी,
सर्पदंश 3 - 3 वटी, सन्निपात 4 - 4 वटी,
घटक द्रव्य कुल 10 - विडंग,नागर,कृष्णा, त्रिफला, वचा, गुडूची, भल्लातक, वत्सनाभ. (मात्रा - 1 गुंजा)
7) चंद्रप्रभा गुटिका - प्रमेहादि - प्रमुख घटक शिलाजीत
8) कांकायन गुटिका - गुल्म,
9) योगराज गुग्गुल - वातरोगादिक त्रिदोषघ्न रसायनं.
अनुपान : i) रास्नादिक्वाथ - वातरोग, ii) काकोल्यादिक्वाथ - पित्तरोग,
iii) आरग्वधादिक्वाथ - कफरोग, iv) दारूहरिद्राक्वाथ - प्रमेह
v) गोमूत्र - पाण्डु, vi) पिप्पलीक्वाथ-शोथ, शूल, vii) पाटलाक्वाथ-मूषक विष,
viii) त्रिफलाक्वाथ - नेत्ररोग, ix) पुनर्नवाक्वाथ - उदर, x) मधुउदक-मेदोरोग,
xi) निम्बक्वाथ - कुष्ठ, xii) छिन्नक्वाथ - वातरक्त (गुडूची).
10) त्रिफला गुग्गुल - भगंदर, 11) गोक्षुरादि गुग्गुल - (प्रमेहादि).

8) अवलेह:

* शर्करा & द्रव - 4 Times, गुड - 2 Times, मात्रा - 1 पल
i) च्यवन प्राशावलेह - क्षय इ., ii) कंटकार्यावलेह - हिक्काश्वास,
iii) कुष्माण्डावलेह - वातरक्तादि (बालवृध्दं),
iv) अगस्त्यहरितकी - क्षयादि(कास,श्वास, ज्वर, हिक्का) (मात्रा - 2 हरितकी),
v) कुटजावलेह - अर्शादि, vi) आर्द्रकुटजावलेह - सर्व अतिसार.
अवलेह पाक भेद: 2

i) तंतुपाक (जलअधिक)	i) प्रवाहि	a) फाणित
ii) बिन्दुपाक (जल कम)	ii) अर्धप्रवाहि	b) लेह
	iii) घन	c) घन.

* लेह → अवलेह → प्राश - अधिकाधिक घन

9) स्नेह: कल्पना

मात्रा - 1 पल, स्नेहपाक प्रकार - 3
i) मृदु - ईषत् सरस & कल्क. नस्य,
ii) मध्य - कल्क निरस कोमल. सर्व कर्मसु,
iii) खर - ईषत् कठिन कल्क. अभ्यंग,
* इसके पश्चात्: दग्धपाक - दाह & निष्प्रयोजक.
आमपाक - निवीर्य, अग्निमांद्यकर, गुरू.
1) क्षीरघृत - प्लीहादि, 2) चांगेरीघृत - ग्रहणी, अर्श,
3) कामदेवघृत - रक्तपित्तादि, 4) पानीयकल्याण - अपस्मारादि,
5) मसूरघृत - सर्व अतिसार, 6) अमृताघृत - वातरक्त,
7) महातिक्तकघृत - वातरक्त, कुष्ठ. 8) कासीसादिघृत - कुष्ठादि.
9) बिंदुघृत: (बिंदु मात्रा में दें, 1 पल घातक मात्रा) उदरादि - जितने बिंदु का सेवन उतने विरेचन वेग आते है। - नाभीपर लेप करने से भी विरेचन,
10) जात्यादिघृत - व्रण - तुत्थ का योग 11) लघु फलघृत - योनीरोग,
12) लाक्षा तैल - विषम ज्वर (अभ्यंग)
13) नारायण (अग्निमंथ) तैल - वात, नावन, अभ्यंग, पान, बस्ति.
14) प्रसारणी तैल - वात कफ विकार विषमज्वर.
15) माषादि तैल - सर्ववात विकार,
16) शतावरी तैल - वृष्य, योनीशूल, शूल वातविकार,
17) कासीसादि तैल - अर्श, 18) पिण्ड तैल - वातरक्त,
19) अर्क तैल - पामा, कच्छु, विचर्चिका, 20) मरिच्यादि तैल - कुष्ठादि,
21) त्रिफला तैल - व्रण (अरूंषी), 22) निंबबीज तैल - पलित रोग,
23) यष्टिमधु तैल - केश्य लाने हेतु (नस्य), 24) करंजादि तैल - इंद्रलुप्त,
25) निलीकादि तैल - पलित व दारूणादि रोग, 26) भृंगराज तैल - पलितादि,
27) हिंग्वादि तैल - कर्णशूल (Bo कर्णपूरण),
28) बिल्वादि तैल - कर्ण बाधीर्य (Bo कर्णपूरण),
29) क्षार तैल - कर्णराग & मुखरोग (Bo कर्णपूरण),
30) व्याघ्री तैल - पूतिनासा (नस्य), 31) कृष्ण तैल - क्षवथु (नस्य),
32) वज्र तैल - सर्वकुष्ठ, 33) करवीरादि तैल - लोमशातन.

10) सन्धान (आसव, अरिष्ट):

* आसव - अरिष्ट भेद...(शा. वैशिष्ट)
* यद पक्वौषधा अम्बुयां सिध्द मद्यं स आसव:।
अरिष्ट: क्वाथ सिध्द: स्यात् तयोर्मान पलोन्मितम्।।
(स्वरस - आसव) (क्वाथ - अरिष्ट)
मात्रा -1 पल
सीधु: i) शीतरस - मधुर द्रव्य बिना पकाए सन्धान कर मद्य निर्माण.
ii) पक्वरस - पकाकर सन्धान.....
सुरा: यव, शालि, जौ, गेहूँ, etc धान्य को सन्धान कर निर्मित मद्य.
Layers - 4 - i) प्रसन्ना, ii) कादम्बरी, iii) जगल, iv) मेदक.
इसका सार निकाल कर जो शेष रह जाय उसे (सुराबीज, किण्व, वक्कस)
(नीरा) वारूणी: ताड & खर्जुर से निर्मित मद्य.
मध्वासव - महुए के पुष्प से निर्मित मद्य., मद्य - पंचरसात्मक.
शुक्त: (मद्य अधिक समय बीतने पर अम्ल रस प्रधान ग्रहण करता है + स्नेह, लवण)
चुक्र: मद्य - अम्ल प्रधान - अम्ल पदार्थ,
कोहल - ज, गेहुँ, सत्तु से निर्मित मद्य
i) कच्चे यव संधान - तुषाम्बु (छिलके सहित यव)
ii) निष्तुष यव पक्व संधान - सौवीर
* कुल्माष धान्यमंडादि संधित कांजिक विदु:।
* सण्डाकी - मूलक(मूली), सर्षप का सन्धान कर निर्मित.
आसव: 1) पिप्पल्यासव - क्षयादि, 2) लोहासव - पांडुरोगादि,
3) उशीरासव - रक्तपित्तादि.
अरिष्ट: 1) कुटजारिष्ट - सर्वज्वर, 2) विडंगारिष्ट - विध्रध्यादि.
3) देवदार्वादि अ.- प्रमेहादि, 4) खदिरारिष्ट - कुष्ठादिपर,
5) द्राक्षारिष्ट - उर: क्षतादिकास 6) रोहितारिष्ट - अर्शादि
7) बब्बूलारिष्ट - क्षयादि, 8) दशमूलारिष्ट - क्षयप्रमेहादि.

11) धातू शुध्दि:

सप्तधातु	शोधन	उपधात
1) स्वर्ण -		1) माक्षिक
2) तार -	तेल, तक्र, कांजी, गोमूत्र, कुलत्थ(3 - 3) मे बार बुझायें	2) तुत्थक
3) आर -		3) अभ्रक
4) ताम्र -		4) नीलांजन
5) नाग -	तेल, किंवा अर्क दुग्ध में 3 - 3 बार	5) शिला
6) वंग -		6) आलक
7) तीक्ष्णक -		7) रसक

12) रसकल्पना:

पारद नाम: रसेंद्र, पारद, सूत, सूतकरस, मुकूंद, हरंज.
1) ज्वरांकुशरस - वातपित्त ज्वर (सर्वज्वर), 2) लोकनाथ रस -क्षयादि,
3) लघु लोकनाथरस - राजयक्ष्मा (1 मण्डल सेवन से राजयक्ष्मा नष्ट)
(1 मण्डल - 42 days) मात्रा - 1 माष मधु Or नवनीत - यामे यामे
(प्रहर - प्रहर) से) - क्षय. 4) आनंदभैरव रस - अतिसार,
5) लघुसूचिका भरण रस - सन्निपात & सर्पदंश,
6) जल चुडामणि रस - सन्निपात, 7) पंचवक्त्र रस - सन्निपात,
8) उन्मत रस - सन्निपात, 9) अंजन रस - सन्निपात,
10) त्रिविक्रम रस - अश्मरी (1 मास सेवन), 11) महातालेश्वर रस - सर्वकुष्ठ,
12) उदयादिव्य रस - कुष्ठ, 13) सर्वेश्वर रस - कुष्ठ,
14) स्वर्णक्षीर रस - सुप्त कुष्ठ, 15) नाराच रस - उदावर्त,
16) इच्छाभेदी रस - रेचन, विष्टम्भ, आध्मान, 17) सूर्यावर्त रस - श्वास,
18) (हंसपोटली रस - ग्रहणी) (पथ्य - तक्र),

19) वर्जकपाट रस - ग्रहणी, 20) विद्याधर रस - गुल्म, प्लीहा,
21) (त्रिनेत्र रस - पक्षीशूलादि), 22) गजकेसरी रस - शूल,
23) अग्नितुण्डीवटी - मंदाग्नि, (सर्व अजीर्ण - ग्रंथोक्त),
24) मंथानं भैरव - कफरोग, 25) कंदर्प सुंदर रस - वाजीकरण.
उत्तर खण्ड: 1) स्नेहपान, 2) स्वेद, 3) वमन, 4) विरेचन, 5) स्नेहबस्ति, 6) निरूह, 7) उत्तरबस्ति, 8) नस्य, 9) धूमपान, 10) गण्डूषादि (कवल), 11) लेप विधी, 12) शोषित विस्त्रुती, 13) नेत्र कर्म प्रकार.

उत्तरखण्ड

1) स्नेहपान

* 7 रात्र पश्चात स्नेह सात्म्य.
1) स्नेहमात्रा: दिप्ताग्नि - 1 पल, मध्यम - 3 कर्ष, मंद - 2 कर्ष.
आचार्य (मात्रा): अहोरात्र - महती, दिनार्ध - अल्प, एकदिन - मध्यम
* घृत, तैल, वसा, मज्जा क्रमश: 3, 4, 5, 6 दिन दें।
- सुखोष्ण यवागु सद्य स्नेहन कारिणी.

2) स्वेद

4 प्रकार: ताप उष्म प्राय श्लेष्म, उपनाह - वातघ्न, द्रव - पित्तसंसर्ग
मृदुस्वेद 3 - हृदय, मुष्क, दृष्टी
* द्रवस्वेद - धारा नाभी के उपर 6 अंगुल क्वाथ आने तक करें।

3) वमनविधि

वामक	षाय द्रव्य प्रमाण	कल्क, चूर्ण अवलेह मात्रा.
कनिष्ठ	3 प्रस्थ	1 पल
मध्यम	6 प्रस्थ	2 पल
श्रेष्ठ	9 प्रस्थ	3 पल

* वमने च विरेकेच तथा शोणितमोक्षणे।
साध्र्दत्रयोदशपले प्रस्थं आहू मनिक्षिण:।।
1 प्रस्थ - 131/2 पल

4) विरेचन:

* विरेचन कषाय मात्रा:

विरेचन	कषाय	कल्कचूर्ण अवलेह मात्रा.
कनिष्ठ	1/2 पल	1 कर्ष - मधघृत सह
मध्य	1 पल	2 कर्ष - आयु, रोगानुसार
श्रेष्ठ	2 पल	(1 पल)

* दोषपरत्व: वात आधिक्य - निशोत्तर, सैंधव, सुंठी;
पित्त आधिक्य - त्रिवृत्त चूर्ण, द्राक्षा क्वाथ;
कफ आधिक्य - त्रिफला क्वाथ, गोमूत्र, व्योष.
* अभया मोदक - रसायन (विरेचन)

5) बस्तिविधि

* भेद: a) अनुवासन, b) निरूह.
1) अनुवासन मात्रा: कनिष्ठ -1 1/2 पल., मध्यम - 3 पल.,उत्तम - 6 पल.
2) शताव्हा - सैंधव - इनका चूर्ण अनुवासन बस्ति हेतु;
हिन मात्रा - 2 माष, मध्यम मात्रा - 4 माष, उत्तम मात्रा - 6 माष.
3) बस्तिकाल- बस्ति पीडन काल-30 मात्रा
4) बस्तिव्यापद - 76 As सु.

6) निरूहबस्ति

1) मात्रा: हिन - 3 कुडव, मध्यम - 1 प्रस्थ, उत्तम - 1. 25 प्रस्थ.
1 मुहूर्त - प्रतिक्षा करें।
प्रथम - दोष उत्क्लेशन बस्ति, मध्य- दोषहर बस्ति, अन्त - स्रंशमन बस्ति

7) उत्तरबस्ति

1) उत्तरबस्ति हेतु स्नेहमात्रा:
i) 25 yrs. से कम - 2 कर्ष, ii) 25 yrs. से ज्यादा - 1 पल.
* मेढ्र - 6 अंगुल * बालानां शिश्न - 1 अंगुल
2) स्त्रिया - योनीमार्ग - स्नेहप्रमाण - 2 पल.,
मूत्र मार्ग - स्नेहप्रमाण - 1 पल.
बाला - मुत्र मार्ग - स्नेहप्रमाण - 2 कर्ष.
3) फलवर्ति - स्वअंगुष्ठ मोठाई

8) नस्यविधी

1) प्रकार - 2 - a) रेचन - कर्षण - प्रधमन, अवपीड
b) स्नेहन - बृंहण - मर्श, प्रतिमर्श
2) नस्य मै: तीक्ष्ण औषध - 1 शाण, हिंग - 1 यव, सैंधव - 1 माष, क्षीर - 8 शाण, पानी - 3 कर्ष, मधुर द्रव्य - 1 कर्ष.
3) मर्श मात्रा: (8 बिंदु - 1 शाण)
(For 1 nostril) हिन - 1 शाण, मध्य - 4 शाण, श्रेष्ठ - 8 शाण.

9) धूमपान

1) धूम - 6 प्रकार - शमन, बृंहण, रेचन, कासघ्न, वामन, व्रणधूपन
2) धूमपान काल - (12 - 80 yrs.)
2) धूमवर्ती:तीक्ष्ण - 24 अंगुल, मृदु - 32 अंगुल, शमन - 40 अंगुल, कासघ्न - 16 अंगुल, वमनीय - 10 अंगुल, व्रणधूपन - 10 अंगुल.
- कलाय मंडल, स्थूल कुलित्थ आगम रंध्र.

10) गण्डुष कवल

1) प्रकार: गडूष - 4 प्रकार - द्रव द्रव्ये चूर्ण - 1 कोल
कवल - 4 प्रकार - कल्क - 1 कर्ष
2) गण्डुष: 5 वर्ष पश्चात्, स्नेह गण्डुष - वात रोग, शमन गण्डुंष -पित्त रोग, मधु गण्डुष - मुखव्रण, दाह, तृष्णा.
दुग्ध - घृत गण्डुष - विष, क्षार, अग्नि, दग्ध.
तेल - सैंधव गण्डुष - दंतचाल हेतु.,
कांजी का गण्डुष - मुखशोष वैरस्य, सैंधव, त्रिकटु, आर्द्रक - कफ
त्रिफला मधु गण्डुष - कफ, असृकपित्त (पित्त रक्त)
जिस औषध से गण्डुस उसीसे कवल & प्रतिसारण.
3) प्रतिसारण: 3: i) कल्क, ii) अवलेह, iii) चूर्ण

11) लेप

1) मुखालेप - 3 प्रकार: i) दोषघ्न - 1/4 अंगुल,
ii) विषघ्न - 1/3 अंगुल, iii) वर्ण्य - 1/2 अंगुल
2) दाहशमनार्थ लेप - बिभीतक फलमज्जा लेप.
3) दशांग लेप - विसर्प, विष, स्फोट.....,
4) प्रलेप - शीत, तनु व निर्विष.,
प्रदेह - आर्द्र, घन, उष्ण, कफ वात हर, निषेध
i) Not to use in रात्री. ii) Not to use in शुष्क होने तक,
5) व्रण शोफ उपक्रम - 7 - i) शोथहर लेप, ii) रक्तावसेचन, iii) उपनाह, iv) पाटन, v) शोधन, vi) रोपण, vii) वर्णकर,
6) शिरोबस्ति - 12 अंगुल उंचा टोप.
∴ (1000 मात्रा) - धारण काल. (बिना भोजन दें)
7) कर्णपूरण: 100, 500, 1000 मात्रा - धारण काल.
* स्वरस, रस इ.कर्णपूरण - भोजन पूर्व
* घृत, तैल इ. कर्णपूरण - सायंकाल: (भास्करेऽस्ते)
* दीपिका तैल - कर्णशुल. * शंबुक तैल - कर्णनाडी.
* पंचकषाय चूर्ण + कपित्थ रस + मध - **कर्णस्त्राव**
* पंचकषाय वृक्ष (तिदुंक, अभया, लोध्र, समंगा, आमलकी)

12) शोणितमोक्षणविधि

रक्त प्रमाण: 1/4 प्रस्थ, 1/2 प्रस्थ, 1 प्रस्थ. क्षीणरक्त: वातस्य उर्ध्वगामीता
सर्पविष में चि. - जयपाल युक्त अंजन + मनुष्य लाला सह.

13) नेत्रोपचार

1) आश्चोतन - रात्री निषिध्द - सर्व आश्चोतन मात्रा - 100 वाक्
2) पिंडीका: पिंडी कवलिका प्रोक्ता बध्यते पट्ट वस्त्रकै: ।
नेत्राभिष्यंद योग्या सा व्रणष्वपि निबधते ।।
- कफअभिष्यंद & अधिमंथ में स्नेहन स्वेदन पूर्व तीक्ष्ण शिरोविरेचन दें।
* अधिमंथ शांत न हो रहा हो तो (भ्रुवोस्तु) भ्रुकुटी स्थान पर दहन.
3) बिडालक: * बिडालको बहिर्लेपो नेत्र पक्ष्म विवर्जित:।
तस्य मात्रा परिज्ञेया मुखलेप विधानवत्।।
* चंद्रोदय वर्ति - अंजन (हरेणुमात्रा).

भैषज्य रत्नावली

1) इस ग्रंथ मे कुल 110 प्रकरण वर्णित है जिसमे अनुभूतयोग व परिशिष्टम् नामक अध्यायों को समावेश है।

ताण्डव रोग चिकित्सा प्रकरण:

2) इस ग्रंथ में ताण्डव रोग का वर्णन किया है।

3) इस ग्रंथ में बहुतसी रोगों की चिकित्सा संबंधी चक्रदत्त, रसेन्द्रसार - संग्रह, भावप्रकाश व शारंगधर इ. ग्रंथोक्त योगों का भी वर्णन किया है।

शोधन - मारण प्रकरण:

4) शोधन मारण प्रकरण में गन्धक के 4 प्रकारों का वर्णन दिया है।

i) लाल - स्वर्ण संस्कारार्थ ii) पिला - रसायन कर्मार्थ

iii) सफेद - व्रणादिपर लेपनार्थ iv) काला - सर्व कार्यो को करने में उत्तम.

आयुर्वेदावतरणम् प्रकरण:

5) व्याधी के उत्पत्ति भेद से पापज व कर्मज 2 प्रकार बताए गये है।

मिश्रवर्ग प्रकरण:

6) आसुरी, मानुषी व दैवी भेद से 3 प्रकारकी चिकित्साका वर्णन किया है।

मिश्रवर्ग प्रकरणम् : 7) निन्दनीय वैद्य का वर्णन निम्न शब्दों में किया है।

कुचैल: कर्कश स्तब्ध: कुग्रामी स्वयमागत:।
पत्र्व वैद्या न पूज्यन्ते धन्वतरिसमा अषि।। भै.र.

परिभाषा प्रकरण: 8) परिभाषा प्रकरण में मात्रा बताई गई है।

6 गौर सर्षप	- 1 यव,	3 यव - 1 गुन्जा /1 रत्ती
10 रत्ती	- 1 मासा / 1 हेम / 1 धान्यक	
4 मासा	- 1 शाण	2 शाण - 1 कोल

ज्वर चिकित्सा प्रकरण: 9) एकाहिक ज्वर में आहूति, मन्त्रधारण, मन्त्रप्रेक्षणम्, धूपादी कर्म करने को कहा गया है।,

10) पित्तज्वर में चन्द्रकला रस तथा कफज्वर में पर्पटी रस का वर्णन किया है।

अतिसार चिकित्सा प्रकरण: 11) भै. र. में अतिसार के वातिक, पैतिक, श्लैष्मिक, सन्निपातिक, शोकज व आमातिसार ये छ: प्रकार वर्णन किये है।

12) अतिसार की चिकित्सा करते समय आमलक्यादि प्रलेप, जातिफलप्रलेप और आम्रवल्कलकल्पलेप नाभी प्रदेश में लगाने का वर्णन है।

अग्निमान्द्याचिकित्सा: 13) महुआ, बेल, खिरनी, फप्लसा, खजूर और कैथ के फलो को खाने से होनेवाले अजीर्ण में नीम का बीज खाने का वर्णन है।

क्रिमीरोग चिकित्सा प्रकरण: 14) प्रत्यहं कटुकं तिक्तं भोजनं कफनाशनम्।
कृमीनां नाशनं रूच्यमग्निसन्दीपनं परम्।।

इस प्रकार क्रिमीरोग में भोजन व्यवस्था करने के बारे में वर्णन किया है।

राजयक्ष्माचिकित्सा प्रकरण: 15) राजयक्ष्मा चिकित्सा करते वक्त रसायन द्रव्य का प्रयोग तथा मल का रक्षण करने का वर्णन दिया है।

हिक्काश्वास चिकित्सा प्रकरण : 16) हिक्काश्वास व्याधी की चिकित्सा करते समय, श्वासकुठार, और कनकासव इन कल्पो का उपयोग बताया है।

वृध्दिरोग चिकित्सा प्रकरण :

17) आन्त्रवृध्दि में कुण्ठल बंधनी को सदैव कमर पर बांधने कर निर्देश दिया है।,

18) त्वक्, पत्र, फल, मूल व पुष्प को पत्र्वांग संज्ञा दी है।

परिभाषा प्रकरण:

19) अजली प्रमाण को ही कुडव, अर्धशरावक और अष्मान ये पर्याय दिये गये है।,

20) परिभाषा प्रकरण में ही अभाव द्रव्यों का भी सविस्तर वर्णन किया है।

i) जीवक के अभाव में - बहमन लाल
ii) ऋषभक - बहमन श्वेत
iii) मेदा - सालव श्रेष्ठ
iv) महामेदा - शकाकुल मिश्री
v) काकोली - काली मूसली
vi) क्षीरकाकोली - श्वेत मूसली
vii) ऋध्दि - चिडिया कन्द
viii) वृध्दि - सालव पंजा

21) भै. र. में स्नेह तथा क्वाथ की उत्तम मात्रा - 1 पल, मध्यम मात्रा - 3 तोला, हीन मात्रा - 2 तोला मानी है।

22) प्रक्षेप द्रव्य की मात्रा क्वाथ के द्रव्य के 1/4 भाग तथा स्नेह सिध्द करने के लिए क्वाथ के बराबर लेने को कहा है।

ज्वर चिकित्सा प्रकरण: 23) ज्वर का वर्णन करते समय ग्रंथकार ने 7 दिनतक - तरूणज्वर, 12 दिनतक - मध्यावस्था, 12 वे दिनके बाद - पुराणावस्था का वर्णन किया है।

24) भै. र. में अभिन्यास ज्वर, जिव्हकस्य ज्वर, सन्धिकज्वर, रूग्दाहस्यज्वर, चिकित्सा का वर्णन किया है।

25) भूतज्वर चिकित्सा में सहदेवी जड को फल पर बांधने का विधान है।

स्वरभेद चिकित्सा प्रकरण:

26) वातज - लवणयुक्त मन्दोष्ण कड्वा तैल, पित्तज - मधुयुक्त घृत, कफज - त्रिकटू + क्षार सह शहद का कवल धारण करना चाहिए।

अरोचक चिकित्सा प्रकरण:

27) वातज अरूचि में - बस्ति, पित्तज अरूचि में विरेचन, कफजन्य अरूचि में हृद्य, रूचिकारक व मनको प्रसन्न करनेवाली द्रव्यो का सेवन कराना चाहिए।

तृष्णा चिकित्सा प्रकरण: 28) क्षयजतृष्णा छोडकर सभी प्रकार की तृष्णा में वमन कर्म करने से शान्ती मिलती है।

उन्माद चिकित्सा प्रकरण:

29) चतुर्भुजरस का प्रयोग उन्माद चिकित्सा में किया जाता है।

अपस्मार चिकित्सा प्रकरण: 30) पुष्य नक्षत्र में निकाले हुए कुत्ते के पित्त का दोनों नेत्रों में अज्जन करने से अपस्मार रोग नष्ट होता है।

वातव्याधी चिकित्सा प्रकरण:

31) सद्योजात कुब्ज रोग को नष्ट करने के लिए वातनाशक स्नेहो का अभ्यंग, दशमूल क्वाथ, अन्य स्नेह, मांसरस आदी का पान करने का वर्णन किया है।

वातरक्त चिकित्सा प्रकरण: 32) वातरक्त चिकित्सा करते समय रूद्रतैल, महारूद्रतैल, विषतिन्दुकतैल का प्रयोग वर्णन किया है।

आमवात चिकित्सा प्रकरण: 33)लङ्घन स्वेदनं तिक्तं दीपनानि कटूनि च।
विरेचन स्नेहपानं बस्तयश्चाममारूते।।
सैन्धवाद्येनानुवास्य क्षारबस्ति: प्रशस्यते।।

34) आनुपदेश के पशु पक्षीयों का मांस आमवात पीडित के लिए हितकर है।

वातव्याधी चिकित्सा प्रकरण :

35) मटर के यूष के साथ यवादी धान्यो का सत्तू बनाकर खिलाने से चिरकाल से उत्पन्न परिणामशूल भी नष्ट हो जाता है।

उदावर्तानाह चिकित्सा प्रकरण :

36) इच्छाभेदी रस का शीतल जल के साथ प्रयोग करने से रेचन होता है। अधिक दस्तो को रोकने के लिए मन्दोष्ण जल पीना चाहिए।

गुल्म चिकित्सा प्रकरण:

37) वातनाशक दशमूलादि द्रव्यों के व्दारा सिध्द की हुई पेया, कुलत्थयुष, जंगली पशु पक्षीयों का मांसरस तथा बृहत्यश्वमूलादि सिध्द खडयूष ये सब गुल्म रोगियों के लिए हितकर है।

38) वातिक गुल्म की चिकित्सा करते समय कफ प्रकोप या वृध्दि हो जाय तो श्लेष्मनाशक चूर्ण, क्षार, अरिष्ट आदि का पित्तप्रकोप या वृध्दि हो जाए तो रक्तमोक्षण कराना चाहिए।

अश्मरी चिकित्सा प्रकरण :

39) वाताश्मरी के पूर्वरूप में रोगी को स्नेहपान कराना चाहिए।

भग्नरोग चिकित्सा प्रकरण: 40) मांस, मांसरस, घृत, दुग्ध, मटर की दाल का यूष तथा अन्य बलवर्धक अन्नपान भग्नरोग में पथ्य है।

स्खालित्यरोग चिकित्सा प्रकरण:

41) स्वकर्म से निवृत्ति को ही स्खालित्य रोग की श्रेष्ठ औषध कहा है।

शीर्षाम्बु चिकित्सा प्रकरण : 42) शीर्षाम्बु रोग का वर्णन करते हुए इसमें रेचन, मूत्रल व रक्तदोष शोधक चिकित्सा का निर्देश किया है।

शुकदोष चिकित्सा प्रकरण :

43) सर्व प्रकारके शूक दोषो में पित्तनाशक चिकित्सा करनी चाहिए।

44) माणिक्य रस वातरक्त, शितपित्त, गंभीर हिक्का, सभी प्रकार के ज्वर, वातरोग, पाण्डु, कण्डु, कामला को नष्ट करती है।

कुष्ठ चिकित्सा प्रकरण:

45) कुष्ठ व्याधी कि चिकित्सा में षड्बिन्दुतैल का प्रयोग किया जाता है।

46) खदिरारिष्ट का प्रयोग भैषज्य रत्नावली में कुष्ठ प्रकरण संबंधी आया है।

नेत्ररोग चिकित्सा प्रकरण: 47) तिमिर चिकित्सा करते समय पैतिक तिमिर रोग में त्रिफला चुर्ण को घृत के साथ,वातिक में तिलतैल के साथ तथा श्लौष्मिक में शहद के साथ सेवन करना हितकर है।

48) अर्धनारिश्वररस के नस्य से सभी प्रकार के श्लेष्मप्रधान शिरोरोग नष्ट होते है।

शिरोरोग चिकित्सा प्रकरण:

49) अपामार्गतैल के नस्य प्रयोग से क्रिमिज शिरोरोग नष्ट होते है।

50) सुतिका रोगो के निवारण करने के लिए सौभाग्यशुण्ठी कल्प का उपयोग होता है।

बालरोग चिकित्सा प्रकरण :

51) मयूरशिखा की जड को मन्त्रोच्चारण पूर्वक बच्चे के जघन पर तथा ग्रीवा में बांधने पर अहिण्डिका / अहितुण्डिका / बालशोष रोग नष्ट हो जाता है।

विशिष्ट रोगधिकार:

52) विशिष्ट रोगाधिकार नामक अध्यायों मे कुछ विशिष्ट व्याधीयोंका वर्णन आया है। यथा - स्मरोन्माद, गदोद्वेग, तत्वोन्माद, चलवात, ताण्डवरोग, स्नायुरोग, स्खालित्य, खन्जनिका, उरस्तोय एवं बहुमूत्र.

स्मरोन्माद चिकित्सा प्रकरण : 53) स्मरोन्माद में काम्य स्त्री अथवा पुरूष का परस्पर संयोग करा देना ही प्रधान औषधी है।

गदोद्वेग चिकित्सा प्रकरण: 54) अपदार्थगद (गद्वोद्ग) में आश्वासनयुक्त वचन कहना, स्नेह प्रदर्शन करना, हर्ष दिलाना, संतर्पन कराना और अच्छेसे सेवा करना यही लाभकर चिकित्सा बतलाई है।

तत्वोन्माद चिकित्सा प्रकरण :

55) तत्वोन्माद में स्नायु स्थिरकर तथा वातानुलोमन चिकित्सा करने का निर्देश है।

अचलवात चिकित्सा प्रकरण: 56) अचलवात की चिकित्सा करते समय चित्त की प्रसन्नता बनी रहना यही परम चिकित्सा है।

ताण्डवरोग चिकित्सा प्रकरण :

57) कृमि, तथा रजोरोध ये भी ताण्डव रोग उत्पत्ति में हेतु बताकर बृंहण, विरेचक तथा अग्निबलवर्धक आहार विहारही सर्वोत्तम चिकित्सा है।

स्नायुरोग चिकित्सा प्रकरण : 58) स्नायुशूल की चिकित्सा में पाचकाअग्नि वर्धक, बलवृध्दिकर, वातानुलोमक द्रव्यो का प्रयोग करना चाहिए।

खन्जनिका चिकित्सा प्रकरण: 59) खनजनि नामक दाल का अत्यधिक सेवन करना ही खन्जनिका नामक रोग की उत्पत्ति का कारण है।

उरस्तोय चिकित्सा प्रकरण : 60) उरस्तोय रोग की चिकित्सा में श्लेष्मानिर्हरण करनेवाली औषधी का प्रयोग तथा मूत्रप्रवर्तक औषधी का प्रयोग करना चाहिए।

वृक्करोग चिकित्सा प्रकरण : 61) मसूरिका, विसूचिका, आमवात, पुराणज्वर में वृक्करोग उपद्रवस्वरूप निर्माण होता है।

मस्तिष्कवेपन चिकित्सा प्रकरण : 62) मस्तिष्कपर विशेष चोट लगने के वजह से जो रोग उत्पन्न होता है उसको मस्तिष्कवेपन चिकित्सा कहते है।

मस्तिष्कचयापचय चिकित्सा प्रकरण :

63)मस्तिष्कचयापचय चिकित्सा वर्णन करते समय रसायन औषधी का प्रयोग तथा अपस्माराधिकारोक्त पचगव्य घृत का शहद अनुपान के साथ प्रयोग लाभदायक है।

अशुघातरोग चिकित्सा प्रकरण : 64) ग्रीष्मकालीन सूर्यो की अत्यन्त तीव्र किरणों के कारण अंशुघात नामक व्याधी का निर्माण बताया है।

अष्ठाधाररोग चिकित्सा प्रकरण:

65) मैथुन तथा शीतल पदार्थो का अत्यन्त सेवन, अभिघात, विषभक्षण, कुपथ्य भोजनादि कारणों से स्त्रीयों में निर्माण होनेवाले अष्ठाधार रोग में बलकारक तथा वातानुलोमक अन्नपान का सेवन करना चाहिए।

अपमुहूर्षु चिकित्सा प्रकरण :

66) प्राण त्यागने की इच्छा रखने वाले व्यक्ती को अपमुमूर्षु कहते है।

परिशिष्टम्: 67) भै. र. में परिशिष्टम् नामक अध्याय में पित्तज एवं कफज रोगों की चिकित्सा दी है।

अनुभूतयोग:

68) अनुभूत योग प्रकरण में ग्रंथाकार के अनुभूत योगों का वर्णन दिया है।

भैषज्य रत्नावली के कुछ प्रमुख योग:

1) ज्वर - षडंगपानीय, ज्वरमुरारि रस, ज्वरकेशरी रस, मृतसजीवन त्रिपुरारि रस

2) ज्वरातिसार - कनकसुन्दरो रस, कनकप्रभा वटी, आनंन्द भैरव रस

3) अतिसार - कुटजलेह, कुटजाष्टक बालबिल्वादिखड, चिन्तामणि रस, आनन्दभैरव रस, अहिफेन्नसंव.

4) ग्रहणी - कल्याणकगुड, अग्निकुमार रस, दुग्धवटी, तक्रारिष्ट

5) अर्श - प्राणदा गुटिका, कुटजरसक्रियां, दशमूलगुड, दन्त्यरिष्ट,अभयारिष्ट

6) अग्निमाद्य - चित्रकादि गुटिका, अंजन गुटिका, सैन्धवादि चूर्ण, भास्करलवण, जातिफलादीवटी, पंचामृतवटी.

7) क्रिमिरोग चि.- पारसीकयवानिचूर्ण, लाक्षादिवटी, विडंगलौह, कीटारी रस

8) पाण्डूरोग चिकित्सा -

नवायसलौह, वज्रवटकमण्डूर, योगराज, आमलक्यवलेह पर्पटाद्यरिष्ट

9) राजयक्ष्मा - एलादिचूर्णम, सितोपलादिलेह, वासघृत, च्यवनप्राश

10) कास -

व्याघ्रीहरीतकी, अगस्त्यहरीतकी, लक्ष्मीविलासरस, कंठकार्यवलेह, वासावलेह.

11) हिक्काश्वास - मयूरपिच्छाभस्म, श्रृड यादिचूर्ण, विजयवटी, श्वासकुठार रस, श्वासकासचिन्तामणो, कनकासव.

12) स्वरभेद - निदिग्धिकावलेह, व्याघ्रीघृत, सारस्वतघृत,

13) छर्दि - भृष्टामुदगकषाय

14) तृष्णा - लाजोदक

15) मूर्च्छा - अश्वगन्धाद्यरिष्ट

16) मदात्यय - अष्टांगलवण

17) उन्माद - उन्मादपर्पटी रस, चतुर्भुज रस, उन्मादगजकेशरीरस, महाकल्याणकघृत, महापैशाचिकघृत.

18) अपस्मार - ब्राम्हीघृत, पंचगव्यघृत, पलड्कषाद्य तैल

19) वातव्याधी - वातगजांकुश, षडधरण योग, नारायण तैल

20) आमवात - आमवातारिवटी, वातारि गुग्गुलु

21) शूल, तिमिर - सप्तामृत लौह

22) शोथ - क्षारादिगुडिका, पंचामृत रस, क्षीरवटी, शोथारि रस, शोथारि लौहम्, पुनर्नवाद्यरिष्ट.

23) उदावर्त - नाराचरस

24) हृद्रोग - प्रभाकरवटी

25) अश्मरी - वरूण शिग्रु क्वाथ

26) मेदोरोग - नवकगुग्गुल

27) गलगण्ड - कांचनार गुग्गुल

28) भगन्दर - नवकार्षिक गुग्गुल

29) अम्लपित्त - अविपत्तिकरचूर्ण अम्लपित्तान्तक लौह

30) शिरोरोग - षडबिन्दू तैल

31) रजोरोध - रज:प्रवर्तनी वटी

32) फिरंग - सप्तशालि वटी

33) अग्निमान्द्य, शूल - कुबेराक्षादि वटी

34) मृदुविरेचन - षट्सकार चूर्ण,

35) नेत्राभिष्यन्द - नेत्रबिन्दू,

र्यों की अत्यन्त
बताया है।

, विषभक्षण, कुपथ्य
ग में बलकारक तथा

र्षु कहते है।
तज एवं कफज

वर्णन दिया है।

ाजीवन त्रिपुरारि रस
न्द भैरव रस
चेन्तामणि रस,

ारिष्ट
न्त्यरिष्ट,अभयारिष्ट
चूर्ण, भास्करलवण,

ालौह, कीटारी रस

टाद्यरिष्ट
यवनप्राश

वलेह, वासावलेह.
टी, श्वासकुठार

ाजोदक
अष्टांगलवण
शरीरस,

ल

रस, शोथारि

ज:प्रवर्तनी वटी
कुबेराक्षादि वटी
- नेत्रबिन्दू.

योगरत्नाकर

1) काल - (17 - 18) शतक
2) लेखक - नहीं, (मयूर पादभिक्षु / नयनशेखर / नारायणशेखर)
3) सर्वप्रथम वर्णन - तम्बाकु, 4) रसकर्पुर - फिरंगव्रण / चन्द्रक व्रण में,
5) पथ्यापथ्य विस्तार से वर्णन, 6) भीमसेनी कपुर उपयोग नेत्ररोग में,
7) हुक्का - धूमयंत्रप्रकाशक वर्णन, 8) अस्थिगत प्रतिश्याय - असाध्य,
9) विषमज्वर को - मधुर, मंथक ज्वर कहा (Typhoid)
10) पूतिप्रमेह – Gonorrhoea,
11) स्नायूक, सोमरोग, स्पर्शवात, शीतवात, शीतल, उत्फुल्लिका व्याधी वर्णन,
12) संध्याकाल में 5 कर्म वर्ज्य.

1) नाडी परिक्षा

रोगक्रान्त शरीरस्य स्थानान्यष्टौ निरीक्षयेत्।
नाडीं मुत्रं मलं जिव्हा शब्दं स्पर्श दृगाकृति।।
सर्वेषामेव रोगाणां निदानं कुपिता मला:।
तत्प्रकोपस्य तु प्रोक्त विविध अहितसेवनम्।।

1) नाडी परिक्षा: दक्षिण हस्त से रूग्ण के दक्षिण हस्त की नाडी स्पर्श करें।
स्त्री (वधु) - Left hand & Left पाद, पुरूष - Right hand
परिक्षण समय: 1) प्रात: काल में, अंगुष्ठमुलपदि पश्चिम भाग में 1 प्रहर नाडी परिक्षा, 2) 3 बार नाडी परिक्षण
नाडी से होनेवाला ज्ञान: वातपित्त कफ द्वन्द्व त्रितयं सन्निपातिकम्।
साध्यासाध्यविवेकं च सर्व नाडी प्रकाशयेत्।।
नाडी पर्याय: स्नायु नाडी ततो हंसी धमनी धरणी धरा।
तन्तुकी जीवन ज्ञाना शब्दा: पर्याय वाचका।।
नाडी परिक्षण निषेध: i) सोकर उठे हुये में, ii) स्नेह अवगाहिन:, iii) सद्यस्नात, iv) क्षुत्तृषा आर्तस्य, v) भुक्त.
नाडी में देवता स्थिती: वात - ब्रह्मा, अग्र - वातवह, पित्त - शंकर, मध्य - पित्त वातवह, कफ - विष्णु, अन्त - कफ वातवह
गती: वात - सर्प, जलौका, पित्त - काक, लावक, मण्डूक.,
कफ - राजहंस, पारावत, मयूर, कपोत, कुक्कुट
वातपित्त - मुहू:सर्पगति मुहू: भेकगति (सर्पमण्डूक)
पित्तकफ - सर्प हंसगति, वातकफ - हरिहंसगति
सन्निपात - काष्ठकुट्टो यथा काष्ठं कुट्टते चातिवेगत:।
स्थित्वा तथा सन्निपाते भवेद् ध्रुवम्।।
नाडी गति डमरू वत रहने पर 1 दिन में मृत्यु.
स्थिर नाडी - विद्युत गती - 1 दिन आयुष्य.
शीघ्र नाडी, मलयुक्त व शीत - 2 रे दिन मृत्यु.
* सन्निपातिक नाडी - कष्टसाध्य, असाध्य.
* आरोग्य सदा - हंसगा, गज गामीनी, मुखप्रशस्त.

2) मूत्र परिक्षा :

परिक्षणार्थ मूत्र: a) रात्रि के अंतिम पद्य का, b) 4 घडि शेष रहने पर का., c) मूत्र की मध्य धारा लें.
वात - पांडु वर्ण मूत्र, पित्त - रक्तवर्ण, कफ - सफेन,
सन्निपातज - कृष्ण वर्ण,
द्वन्द्वज - मिश्रीत
तैलबिंदू परिक्षा: (नागार्जुननुसार)
i) साध्य - तैल मूत्र पर शीघ्र फैले, ii) कष्टसाध्य - न फैले, iii) असाध्य - तल में बैठे.
* अजीर्ण - तण्डूलोदक वत,
* नवज्वर - धुम्रवर्ण बहुमूत्र.
* जीर्णज्वर - रक्तसदृश व पीत.

* तैलबिंदू दिशा:

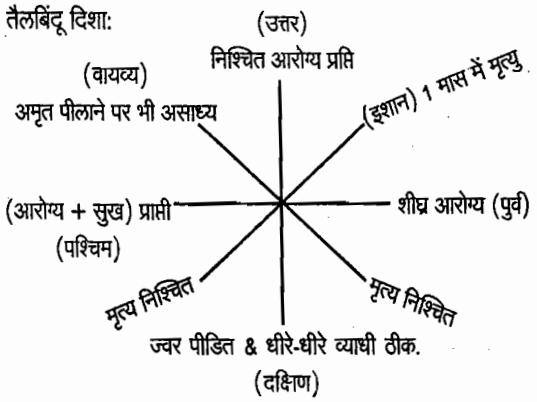

* तैलबिंदू: वात - सर्पाकार, पित्त - छत्राकार, कफ - मुक्ताकार

3) मल परिक्षा

* वात - दृढ और शुष्क मल, पित्त - पीत, कफ - श्वेत.
वातपित्त - बध्द, सुत्रुटीतं पीतश्याम, पित्तकफ - पीतश्वेत, सान्द्र, पिच्छिल.
वातकफ - कपिश वर्ण, त्रिदोष - श्याम त्रुटित पीताभ बध्द श्वेत.
* दोषक्षीण - कपिल व गुटीका युक्त, * जलोदर - मल श्वेत व अत्यंत दुर्गन्धयुक्त.
* मृत्यु - अतिउष्ण., * अजीर्ण - ऽपक्व मल., * मंदाग्नि - द्रवीकृतम्.
* असाध्य - दुर्गन्ध, चंद्रिकायुक्त.

4) शब्द परिक्षा

* वात - प्रकोप - उभाभ्यंरहित (न गुरू, न स्फुटित)
पित्त - प्रकोप - स्फुटवक्ता, कफ - प्रकोप - गुरू स्वर.

5) स्पर्श परिक्षा

* वातरोग - शीतल, पित्तरोग - उष्ण, कफरोग - शरीर आर्द्र.

6) रूप परिक्षा

वात प्रकृति	पित्त प्रकृति	कफ प्रकृति
1) दोषात्मक (दोषवाले)	1) स्वंय: अग्नि से उत्पन्न	1) सौम्य (सोम)
2) स्फुटित धूसर केश गात्र	2) तृष्णा;बुभुक्षा अधिक	2) संधि अस्थि मांस–गुरू, स्निग्ध, श्लिष्ट
3) शीतद्वेष	3) अल्परोम	3) बुध्दि, सात्विक, सत्यप्रतिज्ञा करनेवाला

7) दृक् परिक्षा

वात प्रकोप	पित्त प्रकोप	कफ प्रकोप
1) रूक्ष, धूम्र, रौद्र, चंचल आन्तरजलत्यपि	1) दिप द्वेषी सन्ताप पीत	1) जलार्द्र (जलपूर्ण) स्निग्धमन्द, ज्योतिहिन.

एक नेत्र छोटा और 1 नेत्र बडा रहने पर - 3 दिन में मृत्यु.

8) ऽऽस्य परिक्षा

* मुख - वातप्रकोप - मधुर स्वाद, पित्त वातप्रकोप - कटु,
सन्निपातज - सर्वलिंग, अजीर्ण - घृतपूर्ण, अग्निमांद्य - कषाय स्वाद.

9) जिव्हा परिक्षा

* वात प्रकोप - जिव्हा, शीतल, खर, स्पर्श, स्फुटित,
पित्त प्रकोप - रक्ता, श्याम., कफ प्रकोप - शुभ्र, अतिपिच्छिल.

10) कालज्ञानम्

सूर्यदर्शि - 1 मास, चन्द्रदर्शि - 2 मास, वर्षादर्शि - 3 मास,
अभ्रदर्शि - 6 मास मे मृत्यु.

ज्वर चिकित्सा

* ज्वरादौ लंघन शस्तं ज्वरमध्ये तु पाचनम्।
ज्वरान्ते रेचनं प्रोक्तं एतत् ज्वर चिकित्सतम्।।
* प्रागरूपेषु ज्वरादौ वा बलं यत्नेन पालयेत्।
बल अधिष्ठानं आरोग्य आरोग्यार्थ: क्रियाक्रम:।।

* ज्वर पाक काल - वात - 7 रात्रि, पित्त - 10 रात्रि, कफ - 12 रात्रि
* तरूण मध्य पुराण ज्वर - a) तरूण - पहले 7 दिन,
b) मध्य - 12 दिन, c) पुराण - उसके पश्चात.
* वृध्दवाग्भट - प्राय: सभी ज्वरों में 7 वे दिन कषाय दें 7 दिन तक लंघन कराये.
* वाग्भट - 10 दिन लंघन कराये.
* औषधकाल - मृदुज्वर, लघुदेह, चलायमान मल.
* रात्रि में उष्ण जल पीने से अजीर्ण नष्ट होता है।
42 मासा = 18 बध्द, 1 पल = 12 बध्द और 6 गुंजा.
* सन्निपातज्वर चिकित्सा:
सन्निपातज्वरे पूर्व कुर्याद आमकफापहम्।
पश्चाद् श्लेष्माणि संक्षीणे शमयेत् पित्त मारूतौ ॥
* धातुगतज्वर चिकित्सा: रक्तस्थे - रक्तमोक्षणम् (शेष चरक समान)
* विषम ज्वर चिकित्सा: प्रकार: 2 - i) शीतपूर्वक ज्वर, ii) दाहपूर्वक ज्वर
1) वर्धमान पिप्पली योग, 2) सितोपलादि चूर्ण,
3) अश्वगंधादि तैल, 4) चन्दनबला लाक्षादि तैल,
5) नारायण ज्वराकुश रस - तरूण ज्वर - (सन्निपातिक ज्वर)
* अतिसार में - शतभागश्रृतं जलम् सर्वातिसार नाशक
* कफज ग्रहणी - चित्रकादि गुटिका
* तक्रनिषेध - उरक्षत, उष्णकाल, दुर्बल, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, रक्तपित्त
* तक्रहरितकी - 3 कंस तक्र + 60 हरितकी.
* अर्श: 1) कांकायन गुटिका, 2) बाहुशालगुड.

अग्निमांद्य.

* चिकित्सा सूत्र: समस्य रक्षणं कार्य विषमे वातनिग्रह:।
तीक्ष्ण पित्त प्रतिकारो मन्दे श्लेष्मविशोधनम् ॥
सममग्निं भिषग रक्षेद अन्नपानै: नृणां हितै:।
मन्द संवर्धयेदग्निं कटुतिक्तकषायकै: ॥
तीक्ष्णग्निं दधिक्षीर पायसै: समतां नयेत्।
स्नेहाम्ल लवणाद्यैश्य विषमाग्निम् उपचारेत् ॥

अजीर्ण

* प्रकार: 6 -
* चिकित्सा - तत्रामे वमनं कार्य विदग्ध लंघन हितम्।
विष्टब्धे स्वेदन शस्तं रसशेषेशयीतच ॥
1) अमृतहरितकी.

विसूचिका

विसुच्यामति वृध्दायां पार्ष्णीदाह प्रशस्यते।

पाण्डु

चिकित्सा - साध्यं च पाण्डवामयिमं समीक्ष्य स्निग्ध घृतेन उर्ध्व अधश्च शुध्दम्।
सम्पादयेत् क्षौद्रघृतप्रगाढै: हरितकी लोह रज: प्रयोग: ॥
* रक्तपित्त में - एलादि गुटिका.

तृष्णा

1) वटप्ररोहादि वटी - योग शतक, 2) रूगादी वटी - वैद्यजीवन.

वातव्याधी

1) शीतवात - हिमगात्र, रोमांच, कम्प, शिरोऽक्षिवेदना, आलस्य.
2) स्पर्शवात - अंगतोद, दाह, स्पर्श अभाव, मण्डल.
3) अर्दित चिकित्सा:
नवनीतेन संयुक्ता खादेन्माषेण्डरी नर:। दुर्वारमर्दित हन्ति सप्तरात्रान्न संशया: ॥

वातरक्त

रक्तमोक्षण वातशोणितिनो रक्तं स्निग्धन्ध बहुशोहरेत्।
अल्पाल्पं रक्षतावायुं यथादोष यथा बलम् ॥
सर्वात्रआसृक्स्त्रृति: सूचिजलौकाश्रृंगऽयलाबुभि:।
शतधौत घृताभ्यंगे मेषी दुग्धावसेचनम् ॥
बस्ति- रूक्षैवा मृदुभि: शस्तमसकृद बस्तिकर्मच।
न हि बस्तिसमं किंचिद् वातरक्त चिकित्सितम् ॥
उरूस्तंभ - तस्मादत्रसदा कार्य स्वेद लंघन रूक्षणम्।
आममेव कफाधिक्यान्मारूतं परिरक्षता ॥
आमवात चिकित्सा: लंघनं स्वेदन तिक्तदीपनानि कटूनि च।
विरेचन स्नेहपानं बस्तश्च आम मारूते ॥
रूक्ष:स्वेदो विधातव्यो वालुकापोटलैस्तथा।
उपनाहश्च कर्तव्यास्त ऽपि स्नेहविवर्जिता ॥
1) सिंहनाद गुग्गुल, 2) महारसोन पिण्ड
शुल चिकित्सा - वमनं लंघनं स्वेद: पाचनं फलवर्तय:।
क्षारश्रूर्णश्च गुटिका:शस्यन्ते शूलशान्तये ॥
परिणामशुल चिकित्सा: लंघनं प्रथमं कुर्याद् वमनं च विरेचनम्।
बस्तिकर्म परं चात्र पक्तिशूलोपशान्तये ॥
1) शतावरी मण्डुर, 2) लोह गुग्गुल,
3) विडंगादि मोदक, 4) एरण्डादि भस्म योग.
उदावर्त: प्रकार: 13, चिंचाक्षारादि शंखवटि - गुल्म.
शोथ: 1) गोमुत्र मण्डुर, 2) कंसहरितकी, 3) दशमुल हरितकी,
4) पुनर्नवासव, 5) वासासव - सर्वशोफ.
गंडमाला चिकित्सा: 1) मुंडी प्रलेप, 2) जयपाल पत्रवटि
उपदंश - बालहरितकी योग.
अम्लपित्त चिकित्सा 1) द्राक्षादि गुटिका,
2) नारिकेल खण्ड पाक, 3) सुतशेखर रस - (सारसंग्रह)
सोमरोग - कदलीकंद. *मुखरोग - जात्यादि तैल - दन्तनाडी.
गलरोग चिकित्सा: यवाग्रजदिवटी.
खदिरादि गुटिका - जिव्हा, दन्तवदन गलतालु रोग.
कर्णपूरण विधी - 1) बिल्व तैल - बाधीर्य.
2) दिपीका तैल - कर्णरोग, 3) शतावरी तैल - कर्णपाली वर्धन.
नासारोग: 1) चित्रक हरितकी,
2) हिंग्वादि तैल - नासिकाद्वारा पान - नासारोग.
3) षड्बिंदू तैल - सर्वशिरोरोग.
नेत्ररोग पंच रात्री लंघन से साध्य व्याधी:
अक्षिकुक्षीभवारोगा: प्रतिश्यायव्रणज्वरा:।
पंचैत पंचरात्रेण रोगा नश्यन्ति लंघनात् ॥
1) त्रिफला चूर्ण, 2) नेत्ररोगो में भीमसेनी कर्पुर
स्त्रीरोगाधिकार 1) सोमरोग - सोम, अतिसार, जलक्षय, मुत्रातिसार,
2) फलघृत - गर्भधारण.
सुतिका रोग:
1) प्रतापलंकेश्वर रस - प्रसुतिवात - (आर्द्रकस्वरस) सुतिकाज्वर (सन्निपात)
बालरोगाधिकार: 1) भद्र मुस्तादि क्वाथ - सर्वज्वर.
रसायन: 1) त्रिफला रसायन, 2) ऋतु हरितकी,
3) वर्धमान भल्लातक योग, 4) लोह गुग्गुल, 5) गन्धक रसायन.

रोगानुसार औषध अनुपान

1) पांडु - किट्टमथ (मण्डूर), 2) क्षय - गिरिजतू (शिलाजतू),
3) श्वास - भार्ग्यौषध (ब्रह्मदंडी सुंठ),
4) मेहे - त्वामलरात्रिके (आमलकी व हल्दी),
5) अर्दितवात - माषेण्डरी, 6) मेद - क्षौद्र अम्बु (मंथ व जल),
7) प्रदर - तिरीटक (लोध्र), 8) व्रण - नव गुग्गुल,
9) शोक - मद्य, 10) अम्लपित्त - द्राक्षा.

हारीत संहिता

पर्यायी नाम- वैद्यक सर्वस्व

कलियुगी मनूष्य अल्पायू व मंदबूध्दी, इसलिए 5 अलग-अलग संहिता

स्थान	नाम	अध्याय
प्रथम	अन्नपान	23
2	अरिष्ट	9
3	चिकित्सा	58
4	कल्प	6
5	सुत्र	5
6	शरिर	1
7	परिशिष्ट	1
		कुल 103

प्रथमस्थान :

अध्याय 1: मंङ्ग्लाचरणम् . शिव को नमस्कार

5 अलग – अलग संहिता

अध्याय 2: चिकित्सासंग्रह, चिकित्सा - 8 भेद

शल्य शालाक्यकायाश्च तथा बालचिकित्सितम्।

अगदं विषतन्त्रंच भूतविद्या रसायनम्।

वाजिकरणमेवेति चिकित्सा चाष्ट धा स्मता।

वैद्यक मै सबसे बडा ग्रंथ.

कायचिकित्सा: कषायचुर्णगूटिका पाचनां शोधनानिच।

कोष्ठामयानां शमनीक्रिया कायचिकित्सितम्।

अगद: गुदामयं बस्तिरूजं शमन बस्तिरूहकम्।

आस्थापन अनुवासन्तु अगदं नाम एव च।

बाल: गर्भोत्पत्तीपिक्रमवितानं सुतिकोपक्रमस्तथा

बालानां रोग शमन क्रिया बालचिकित्सतम्।

उपांग: छिन्नं भिन्नं तथा भग्नं क्षतं पिच्चितमेवच।

तेषां दग्धप्रतिकार: प्रोक्तश्च उपाङ संज्ञक:॥

3. वैद्यशिक्षा विधानम्: द्विविध उपक्रम – शमन, कोपण

द्विविध वैद्य i. रोगोपचारज्ञ (रोगों की चिकित्सा जाननेवाला)

ii. रोगापचारज्ञ (रोगों का दुष्परिणाम जाननेवाला)

चिकित्सा न करनेपर साध्य रोग याप्य हो जाते है और याप्य - असाध्य। अच्छि चिकित्सा करनेपर कष्टसाध्य रोग याप्य और याप्य रोग साध्य होते है। पचेत्प्रथमाहारं दोषानाहारसंक्षये।

दोषक्षयेऽनलो धातून् प्राणान् धातुक्षये सति।

(जाठराग्निसे पाचन क्रम)

साम अवस्था में पाचन, निराम अवस्थामें पथ्य

4.देशकालबलाबलम्, 5. वयोज्ञानं-वयश्चतुर्विधं-उत्तम,अधम मध्यम,हिन, और बाल, युवा, वध्द, मध्यम ये भी 4 अवस्था है। बालक और स्त्री को मध्यम संज्ञा बतायी है।

वर्ष	अवस्था
16 तक	बाल्य
25 तक	युवा
70 तक	मध्यम
70 आगे	वृध्द

स्थुल, अतिलम्बा, कठीन पुरूष,बहद उदर स्त्री को उत्तमबताया।

वर्ष	अवस्था
0 - 12	बाला
13 - 19	मुग्धा
20 - 28	प्रौढा
29- 41	प्रगल्भा
24- 37	स्त्री उत्तम आयु

पूर्व दिशा की वायू वातप्रकोपक व बलकारक

दक्षिण दिशा की वायू को मलयानिल संज्ञा है।

कार्तिक-मार्गशीर्ष और माघ आषाढ में हि ऋतूसंधि मानी है।

हेमंत ऋतू में वायू सविष माना है।

जनपदोध्वंस में गाय को तिलक, मनुष्य को यक्ष्मा, हाथियो को पावक, अश्व को वेध नामक रोग होता है।

सन्निपातीक रोग का कारण - काल व रस विपरित आहार-विहार

6. रस-गुण-दोष: 6 रस बताये लवण की जगह क्षार बताया

दोष	प्रकोपक रस	शामक रस
वात	क्षार,कषाय	कटु अम्ल
पित्त	कटू, अम्ल	मधूर, तिक्त
कफ	मधुर, तिक्त	कटू, कषाय

क्षार रस शूलनाशक बताया।

7.जलवर्ग: गंगाजल परिक्षा व गुण वर्णन।

स्वातीजल - ऋतू शरद, नक्षत्र स्वाती, गुण - पित्तज ज्वर नाशक सदा पथ्य, अमृत,भूमिपंचविध - कृष्ण, रक्त, सित, पित, निल

हंसोदक का वर्णन अंशुदक नाम से

भोजन के पच जानेपर या बुभुक्षा में जल पिना मन्दाग्नीकारक है।

8.दुग्धवर्ग: स्तन्यउत्पत्ती विस्तारसे वर्णन

स्तन्य-अमतं सर्वभूतानां जीवनं बलकृन्मतम्।

स्त्री ओर गाय के वर्ण के अनुसार दुग्ध के गुणधर्म बताये।

वर्ण	स्त्रीदुग्ध	गोदुग्ध गुण से संयुक्त
कृष्ण	वातघ्न, वृष्य	रक्तपित्त
श्वेत	कफकारक	कफ
पित्त	पीतशामक,श्रेष्ठ	कफवात
रक्त	वातकारक	वात

सद्य प्रसूताया दूग्ध कफकारक और शिशु को निषेध बताया.

स्त्री दुग्ध को संजीवन बताया. ऋतू के अनुसार दधि गुण वर्णित है।

प्रकारानुरूप दुग्ध फेन के गुणधर्म वर्णित है।

9. मुत्रवर्ग: 1. मुत्रों का वर्णन।

अप्रसुताया मुत्र घन व प्रसूताका लघू और दोनों का पाक वीर्यसमान बताया. वन्ध्य बैल का मुत्र लघूत्तर बताया.

मुत्र	श्रेष्ठ
अजा,अवि	पान
आविक, माहिष,अश्व	तैलपाक
गजमुत्र	प्रलेप-कण्डू,दद्रु, विसर्प
कारभ	तैलपाक व नस्य

10. इक्षूवर्ग: इक्षू - रसायनोत्तमं बल्यं रोगनिवारणं उत्तमम्।

11. कांजीकवर्ग:सन्धानं शीतलं स्वादु महातिसारनाशनम्।

12. मण्डवर्ग- धान्यमण्ड पित्तहरं श्रमघ्नश्चाश्मरीहरम्।

वातलं रक्तशमनं ग्राही संदीपनं वरम्।

13. यूषवर्ग: हरितकी यूष -ज्वरहर व कृमीघ्न बताया

14. तेल वसा वर्ग, 15. धान्यवर्ग-शाली के 18 भेद

श्यामाक, कोद्रव, कण्डू,मर्कटी, कपिकच्छू ये क्षुद्र धान्य है।

16. शाकवर्ग: शाक 4 प्रकार - पत्र,पुष्प,फल तथा कन्द

17. फलवर्ग:,18 मधुवर्ग: मधु के 3 प्रकार i. भ्रामर- वृक्ष पर होता है। ii. सारघ- तण के गुच्छ में, iii.क्षोद्र-वक्ष के छिद्र में होता है।

19. मद्यवर्ग: गौडी, माधवी, पैष्टी, निर्यास - चतूर्विध मद्य

20- 22 मांसवर्ग, 23, अन्नपानवर्ग: कर्कटी (काकडी) को छोडकर सभी फलों को भोजन के आदि में खाना चाहिये।

द्वितीयस्थान

1. रोग-विज्ञान: पूर्व पाप के फलस्वरूप -13 प्रकार के रोग होते है। यथा पाण्डू, कुष्ठ, राजयक्ष्मा, अतिसार, प्रमेह, मुत्ररोग, अश्मरी, मुत्रकृच्छ्र, शूल, श्वास, कास, शोथ, व्रण आदी.

*उपरोग -ज्वर, अजीर्ण, वमन, भ्रम, मोह, अग्निमांद्य, यकृत, प्लीहा, अर्श, शोष अभिशापजन्य -व्रणशूल, शिर: शूल, उधर्वगशूल, रक्तपित्त.

* कर्मविपाक- ब्रम्हाघात से पाण्डू, गौघात से कुष्ठ, मनूष्य घातसे अतिसार, स्वामीके स्त्री से संभोग - प्रमेह, गुरुपत्नी संभोग - मुत्ररोग, अश्मरी, स्वकूलजात प्रसगाच्च -भगंदर.

* रोग के बलाबल का विचार करके धन का षोडशांश दान करे। कूष्ठ के लिए 1/69 भाग का दान करे. प्रमेह,श्वास,कास,भगंदर में स्वर्ण दान करे, ज्वर – शिवपूजा, शिवस्त्रोत और मन्दाग्नी में होम, गुल्म में कन्यादान आदी.

2 स्वप्नाध्याय:, 3. स्वास्थ्यअरिष्टम्, 4. व्याधिअरिष्टम्, 5. पंन्चेद्रियविकार, 6. नक्षत्रज्ञानवर्णन - नक्षत्रानुसार व्याधि साध्यासाध्यत्व वर्णन, 7. होमविधि, 8. दूतपरिक्षा, 9. शकून वर्णन

ततीय स्थान

1. औषध परिज्ञान विज्ञान:

महाघारतर व्याधि - ज्वर, क्षय, यक्ष्मा, कुष्ठ,गुल्म, अर्श,शर्करा, मेह,उन्माद,अपस्मार, भगंदर.

दोष	पचन काल (दिन)	दोष	पचनकाल (दिन)
वात	7	वात पित्त	9
पित्त	3	कफ वात	10
कफ	1 ½	कफ पित्त	5
सप्तधातू	7	त्रिदोष	12

आठवे दिन ज्वर निराम होता है।

लंघन - सर्वेषु दोषसामेषु पाचनं लघन स्मतम् ।

प्रकार 3: लंघन, मध्यलंघन,अतिलंघन

पुन: 6 प्रकार - अनशन,वमन,विरेचन,रक्तमोक्षन,तप्ततायपान, स्वेदन.

दोष लंघन मर्यादा दिन में

वात- 6 इस काल में दोष रोग छोड देते है या मार देते है।

पित्त- 3 या विषमज्वर उत्पन्न करते है।

कफ - 7, (त्रिदोष) - 10, सन्निपातीक -15

बाल्यावस्थामें रक्तप्रधान दोष, तदन्तर कफ व पित्त दोष, 16 वर्ष के बाद त्रिदोषज रोग होते है, 25 वर्ष के बाद सन्निपातीक रोग होते है।

क्वाथ के 7 प्रकार - पाचन, शमन,दीपन,क्लेदन, शोषण, संतर्पण, शोधन रात्री के प्रथम प्रहर को भूतबेला, द्वितीयको निशी, तृतीयको निशिथ कहते है।

2. ज्वर चिकित्सा: मनुष्य ही ज्वर को सहण कर सकते है। किंतू पशु आदि मर जाते है।

ज्वर संप्राप्ती में मलाशयस्थ जठराग्नी विकृती मानी है।

ज्वर में पथ्य-रात्री सुखोष्ण जलसेवन, अंगमर्दन।

* धातूगत ज्वर को विषमज्वर कहा और उसके 4 भेद बताये।

* बेला ज्वर स्थान रस, एकाहिक ज्वर - रक्त, ततीयक-मांस, चतूर्थिक अस्थि.

* वर्णानुसार 4 प्रकारके ज्वर - ब्राम्हण ज्वर - रौद्र संज्ञा, क्षत्रिय ज्वर - महेंद्र , वैश्य - ज्वरेश्वर, क्षुद्र - कालरूप।

3. अतिसार चि.: ज्वरातिसार वर्णन और उसमें लंघन निषेध ग्रहणी रोग एक दोष के कारण नही होता.

4. गुल्मचिकित्सा गुल्म 5 प्रकार

कुक्षी में गुल्म - अष्ठिला संज्ञा, मध्य में गुल्म- प्लीहा, हृदय में गुल्म -यकृत, बस्ति में 'चण्डविवध्दक', नाभी में गुल्म को ग्रंथी नाम दिया. योग- क्षारामत

5. कृमी- बाहय व अभ्यन्तर दोन भेद

बाहय कृमी 7 प्रकार, अभ्यंतर कृमी 6 प्रकार

6.अग्नि - वात, कफ की अधिकता से मदाग्नी होता है। यवानी खांड

7. **शूल**-10 प्रकार, एक एव कुबेराक्ष: सर्वशूलापहारक:।

शुल उपद्रव -10

8. **पाण्डू** - पाण्डू भेद - 5 मृद भक्षण को रूक्षण कहा।

कामला, कुम्भकामला, हलीमक की गणना पाण्डू में की और कूल पाण्डू भेद 8 माने। योग - अमत वटक

9. क्षयचि:- भेद-10. योग-चव्यनप्राश, अगस्ती हरितकी, बला क्वाथ, पिप्पली वर्धमान, शिलाजतू, पाराशर घत, (राजयक्ष्मा-अमतप्राशघत,तालकाम्रातक)

राजयक्ष्मा- आयुष्यमर्यादा-4 मासतक, अति बलवान 6 मास तक, अत्यंत उत्तम कोटी चिकित्सा करने पर अधिकाधिक 1000 दिन (Maximum)

10. रक्तपित्त प्रकोप-भेद 4, उपद्रव-18

योग-तालीस चूर्ण, कूष्माण्ड अवलेह

जब तक वासा है, तब तक रक्तपित्त रोगी के जीवन की आशा है। रक्तपित्त, क्षय,कास, का रोगी क्यों दु:ख पाता है।

11. अर्श प्रकार- 6 V.P.K.R.S. सहज

इसी को ही गुदरूजा 6 प्रकार कहे है। अर्श उपद्रव 12

योग-कल्याणनमक,कांकायन गुटीका, भल्लातक के योग

12. कास - भेद 8 (वातकफज भेद नही माना है।)

V.P.K.R.VP.PK सन्निपातीक, क्षयज वात के विना श्वास, कफ के विना कास,रक्त के बिना पित्त, पित्त के बिना क्षय नही होता.

छर्दी- अजीर्ण से उत्पन्न छर्दी 2 प्रकारकी मानी है। स्निग्ध और रूक्ष – छर्दी भेद V.P.K.S

13. तष्णा और तालू शोष: तष्णा 8 भेद V.P.K. क्षतज, क्षयज, अजीर्णजन्य, रूक्षान्नजन्य,ज्वरोत्पन्न

14. मुर्च्छा भेद- 6 V.P.K.R अभिघातज, मदात्ययज, विषज अलग-अलग बारह नाडी पाचों इंद्रियो में लगी हुई है। इस प्रकार 60 नाडीया होती हैं ।, **15. निद्रा-**

16. मदात्यय-सभी प्रकारके मदात्यय में वमन और दुग्धपान बताया., **17. दाह, 18. अपस्मार, 19. उन्माद**

20. वातव्याधी चि.वातज रोग भेद - 84 स., **21. आमवात भेद** -4

22. गध्रसी - 23 वातरक्त 24. अम्लपित्त 25. शोफ- पूर्ननवादी क्वाथ, **26. गुल्म, 27. जलोदर** - अक्रियायां ध्रुवो मत्यू: क्रियायां संशयो भवेत्।, **28. प्रमेह**-तक्र,घत व खटीका प्रमेह नवीन प्रकार वर्णन प्रमेह भेद -13, **29. मुत्रकच्छ्र चि., 30 मुत्ररोध चि**

31. अश्मरी- 3 प्रकार की अश्मरी बालकाल में हो जाती है।

32. वषण चि- अण्डवध्दि 4 भेद V.P.K.R.S

इसमें पित्तज व सन्निपातिक असाध्य है। वाम अण्डवध्दी में दक्षिण कर्ण में रक्तमोक्षण & Vice-versa

33. विसर्प: 7 प्रकार, **34. उपसर्ग-** वातरक्त से उत्पन्न 4 प्रकारके दोष - क्षुद्रक, आंतक, घोर, मसुरिका., **35. व्रण चि-**व्रण भेद -7 योग- जात्यादि घत, **36. श्लीपद-भेद** 4, **37. अर्बुद-**, 38. लूता व गण्डमाला - लूता भेद 7, 39. **कुष्ठ-कूष्ठ भेद**-18

गोजिव्हक,हस्तिबल,कण,लौहित बहुव्रण नये कुष्ठ प्रकार वर्णन
40. शालाक्य-शिरोरोग चि. योग-षडबिंदू तैल, बिंदूत्रय तैल, कुंकूमादी घृत, 41. भ्रुदोष चि. सर्वप्रथम सिरावेध
42. नासारोग- 43. इंद्रलुप्त चि. 44. कर्णरोग चि
45. नेत्ररोग चि. 46. मुखरोग चि. 47. वाजीकरण
48. वन्ध्यारोग - वन्ध्या 6 प्रकार
49. गर्भोपचार विधि - 50. चलित गर्भ चि. 51. गर्भोपद्रवा चि-गर्भोपद्रव 8.-शोषो हलास छर्दीश्च शोफो ज्वरस्तथा अरूचि:। अतिसारो विवर्णत्वमष्टो गर्भस्य उपद्रव:।
52. दोषानुसार मूढगर्भ प्रकार वर्णन 4- V,P,K रक्तपित्तज
53. सूतिका रोग 54- बालरोग - उत्फुल्लिका रोग वर्णन चि.दोषानुसार रक्तमोक्षण व उदरावर बिन्दूवत अग्निकर्म
55. भूतविद्या -ग्रह 10 प्रकार, 56. विषतंत्र-स्थावर व जांगल प्रत्येकी 8 प्रकार के विष बताये., 57. भिन्न चि., 58. अग्निदग्ध-4 प्रकार - ईषद्,मध्य, अति,सम्यक दग्ध.

चतूर्थस्थान

1. तूलामानविधि- हरितकी । कर्ष,लसून कल्क तथा गुग्गुल का प्रमाण 1 पल है।
2. तैलपाक विधी तैलपाक 4 भेद, खर,चिक्कण,मध्य, विशाषी
3. निरूहबस्ति, 4. स्वेदन विधी - स्वेद सात प्रकार का होता है। लोह,बाष्प,अग्नि,घटी,जल,फल,वालुका
5. रक्तमोक्षण- 4 भेद- सिरावेध,तुम्बी,श्रग,जलौका
6. जलौका-भेद 4 -इंद्रायुधा,रोहिणी,कालिका,धूम्रा

पंचम स्थान-कल्पस्थान

1. हरितकी कल्प-हरितकी भेद 7
2. त्रिफला - हरितकी 1 भाग, बिभितक 2 भाग,आमलकी 3 भाग
3. हरितकी कल्प, 4. रसोन कल्प, 5. गुग्गुल कल्प-गुग्गुल-सात दिन पर्यंत प्रथम, 14 दिन तक मध्यम, और 21 दिन परम मात्रा. 1 वर्ष तक गुग्गुल सेवन करने पर स्थावर व जांगम विष की हानी शरिरपर नही होती.।

षष्ठ शरीरस्थान

1. गर्भशरिर- शरीर अवस्था 4 बाल, वृध्द, प्रगल्भ, स्थविर,
* रज:काल-7 दिन का माना है।

गर्भविकास दिन	स्वरूप	दिन	स्वरूप
1 दिन	बुद्बूद	3 1/2 मास	शिर सारवद
10 दिन	शोणित	4 मास	लोमसंभव
15 दिन	घनस्वरूप	पंचम मास	सुजीव
20 दिन	मांसपिण्ड	षष्ठे	प्रस्फुरण प्रारंभ
25 दिन	प्रभावी	अष्टम मास	अग्नियोग
1 मास	पंचत्व प्रकट	नवममास	चेष्टा
50 दिन	अंकुरस्पष्ट	दशममास	प्रसव काल
3 मास	हस्तपादप्रवर्धन		

वायू - हस्तपाद शिर को बनाता है।, पृथ्वी-त्वचा,मांस,बाल,रोम अस्थि, जल-रस, रक्त, लाला, मुत्र शुक्र, तेज-तम, क्रोध ,मोह, आकाश-मन, बुध्दी, निद्रा ,आलस्य, वायु - कर्ण, स्पर्श, उच्छवास गमनागमन, स्वेद, वात रक्त से त्वचा उत्पन्न, वीर्य तथा कफ से मेद, अस्थि व रक्त से -रस, रस रक्त कफाने - उरू भाग, कफ रक्त से प्लीहा, पेशीयाँ बनती है। हृदय-पित्त का स्थान, यकृत-वात व रक्त का स्थान है।, पंचतत्व में आकाश प्रधान, पंचतत्वात्मक शरीर में आकाश शून्यात्मक है।

भेलसंहिता

भेल - गांधार निवासी, 7 वे शतक
3 पाण्डूलिपीयोंका उल्लेख, संहिता तंजावर में प्राप्त हुई ।
ऋषीपरिषद में सर्वप्रथम उपस्थित संहिता।रचना- चरक संहिता जैसी
सुत्रस्थान: 1 ते 3 अनुपलब्ध
4. कूष्ठचिकित्सा, 5. अत्याशितीयं - धर्म, सत्य, अहिंसा- अन्न पर आश्रित, 6. न वेगान्धारणीय- पित्त व कफको भी अधारणीय वेगों में गिना है। और उनके धारण से त्वग्दोष, ज्वर, गात्र शोफ बताया, शामत्य उत्सादनात् क्लम्:।
नख, बाल, छेदन 3 महिने के अंतराल से
7. इंन्द्रियोपक्रमणीय -
ऋतू के अनुसार मैथून क्रमश: दिन अन्तराल में

हेमन्त	वर्षा	शरद	ग्रिष्म	शिशिर	वसंत
5	9	10	15	7	15

8. मात्राशितीय- अभुक्तवत में आमलक, भुक्ता हरितकी, भक्तस्य परिणामें विभितक, 9. चतूष्पादभिषज्जीतीयं - भेषज, प्रतिश्रावि, आतुर, वैद्य, चतुष्पाद में भेषज को प्रथम स्थान और वैद्य को अन्तीम स्थान दिया परिचारक को प्रतिश्रावी कहा।
10. आमप्रदोषीयं, 11. समशयन परिघनीयं
गर्भव्याप्ती विकार - नर का स्वर स्त्री के जैसा, स्त्री का स्वर पुरूष जैसा। आमगर्भ च्यूती, विरूध्द आहार का निषेध बताया.
12. आत्रेयखण्डकाप्यीय, 13. जनपदविभक्तीय- जनपदोध्वंस को जनमार शब्द से वर्णन, बतालिका नामक पिडका वर्णन.
स्थान- कक्षा, उरूमूल, पाणी, पाद तल, कण्ठ, श्रोत्र, बस्ति, हृदय
14. चिकित्साप्राभतीयं - ऋतूविशेषण द्रव्य विशेषसेवन विधि:

वर्षा	शरद	ग्रिष्म	शिशिर	वसंत
मधू	घत	क्षीर	वारूणी व मण्डक	मार्द्विक

15. तिस्त्रेषणीय अध्याय- क्रमश: प्राणैषणा, धनैषणा, धर्मेषणा:
16. वातकलाकलीय,17. दशप्राणायतनीय
उष्मा,स्वेद,शकृद,मुत्र, वात,पित्त, कफ, स्त्रियों में स्तन्य, पुरूषों में शुक्र,शोणित, इन 10 में प्राणों को विशेष स्थिती है।
18. अन्नरक्षीय 16 प्रकारके विषाक्तता का वर्णन किया
19. विधिशोणीतीया- वारूणी मद्य को रक्तदूषक माना
मद्यदोष - अचक्षूष्य,अपौरूष्य, उपहन्तिबलं, अनायुष्य
20. अर्थेदशमहामूलीय: रक्त (रस)संवहन का विशद वर्णन किया। हृदय में प्राण की स्थिती, हृदय स्वरूप- पुण्डरीकस्य संस्थानं कुंभिकाया फलस्य च।
आप को महारस एवं अन्न को महौषध कहा।
अभ्यांतर मल-स्वेद, मुत्र, फेन, अस्त्र
बाहय मल- अवश्याय हिमाम्बू
21. रोग अधिष्ठान- पित्त कफ रोग - आमाशय, वात - पक्वाशय
22. स्वेदाध्याय- स्वेद, 8 भेद - संकर प्रस्तर, सेक, नाडी,द्रोणी, जल,उदकोष्ठं, कुटि। अस्वेद्या- पिपासु, गर्भिणी, कुक्षिरोग, सर्व पित्तज रोग, 23. गाढपुरिषीय, 24. ऋतूविभागीय- दोषभेदेनोपक्रम
वाते तु बृहणं कुर्यात्पित्ते तु परिशोधनम्।
कफ प्रच्छर्दन साधु सन्निपाते विरेचनम्। (भ. सु. 25/6)
वातज रोग 2 सर्वांगरोगिण-, एकांगरोगिण
25. अष्टोदरीय - खालीत्यपालीत्य 5 प्रकार
अर्बुद-5, मुखरोग-5, भगंदर-5,ग्रंथि 5 V.P.K.S सिराग्रंथि
उपदंश, पिपासा, रोहिणीका, अर्म, अलजी- 4 प्रकार, विद्रधी 3 प्रकार

कुष्ठरोग 2 प्रकार - क्षारी व उपक्षारी
नेत्र मेंअर्म 7 प्रकार के अन्य जगह 4 प्रकार माने है।
27. अन्नपान विधी:-

द्रव्य	गुण	द्रव्य	गुण
लवण	स्यन्दन	पिप्याक	ग्लानो
माष	बहुमल उत्पादक	तक्र	क्षपण
दधि	श्लीपदकारक		
तैल	त्वकप्रसादन एवं स्नेहन	मुलक	कफकारक
हरेणु मसुर	वातकोपक	लशुन	V↓PK↑

सभी तिक्त द्रव्य अवृष्य है अपवाद कूलक
सभी पौष्टिक द्रव्य अवृष्य है अपवाद यव व गोधूम
सभी दुग्ध अभिष्यन्दी है विशेष से गोदुग्ध सभी लवण क्षार दिपनीय

निदान

1 शोष - रतिमुलं शरीरं हि शरीरस्य रति: फलम्। भें नि 1 / 14
3. गुल्म नि, 4. कास, 5. कूष्ठ पुण्डरिक फटने से ऋषजिव्ह फटने से काकणक, 6. प्रमेह 2 भेद प्रकृती व प्रभव भेद से. भस्ममेह वर्णन
7. उन्माद 8 अपस्मार

विमानस्थान

1. रसविमान - जिवयन्ति परं वर्षा हेमंन्त पाययत्यपि ।
ग्रिष्म: पचति चाप्येनं परिणाम इवापर।
भृशं औष्णात्कटू ग्रीष्म: सर्वधातु विशोषण:। धैर्य स्थैर्य करं शीत
रोगप्रकृतिविनिश्चय - 5 व्याधितरूपिय 6 ऋतूविमान 7

शारीरस्थान

2. मनोऽवतिष्ठते. 3. असमानगोत्रिय
4. पुरूषविचय 5 प्रकारके पित्त- आलोचक, राजक, भ्राजक, साधक, पाचक, आलोचक नाम वर्षा शीत आतप प्रवृध्द 2 भेद चक्षुवैशेषिक व बूध्दीवैशेषिक, क्रमश:
आत्ममनसोस्सन्निकर्षज्ञानम् भ्रुमध्ये व श्रङाटकस्थी में रहते है।
नाभीमण्डल में सोममण्डल, सोममण्डल में सूर्यमण्डल,और सूर्यमण्डल के मध्य में हुताशन (अग्नि) का स्थान माना।
जाठराग्नी प्रमाण - स्थूलकाय - यवमात्र, -हस्वकाय - त्रुटिमात्र
क्रिमी किटपंतगेषु -वायुमात्र.
कायचिकित्सक:

यस्तं चिकित्सेत्सीदन्तं व्याधिना चपि देहिनाम्।
आयुर्वेदाभियोगेन स वै कायचिकित्सक:। भे. शा. 4/17

दश अन्त गुहा और दश बर्हिगुहा मानी है
गर्भ में प्रथम अंग उत्पत्ती - नाभी- खडकाप्य का मत,
हृदय - पाराशर का मत और चक्षू काश्यप का माना,
शेष - चरक के जैसे. गर्भपोषण - केदार कुल्या न्याय.
गर्भस्थिती - शौनक - उर्ध्वशिर, भरद्वाज - अवाकशिरा
आत्रेय - तिर्यक, सात मानस प्रकृतीयों को दिव्य काय व सात शरीर प्रकृतीयों का मनुष्य काय कहा।
6. खुडड्ीका गर्भावक्रांती,
7. शरीरसंख्या शरीर - अस्थी संख्या - 360
कोष्ठांग - 15, प्रत्यंग- 56, शुक्र व मस्तिष्क्य । अंजली
पुरूषअध्यात्म देवता - 16

इंद्रियस्थान

चिकित्यास्थान

1. एकादश सर्पिष्कं - एकादशधा ज्वर चिकीत्सा
11 प्रकार की चिकीत्सा - सिध्द स्वेद, कषाय, लेह, पाचन, चूर्ण, प्रदेह, सेक, वटीका, मोदक, पय:, सर्पि.
2. विषमज्वर चि.: योग- पंचगव्यघत, महापंचगव्य घत, वषघत, नागरादी घतम्, महापद्मक तैल, महापैशचिक घत.
3. रक्तपित्त, 4. यक्ष्मा - बाल रूग्ण - पंचकर्म चि. बताई है।
रसायनी सर्पि, सर्पिगुडा, मोदक, अश्वत्थमूलादी मोदक, पिप्पली, 4 वर्धमान (5-5) सुकूमारतैल, शतपाकमधुक तैल, क्षयोन्मर्दनकल्क, 5. गुल्म चि. क्षारागद 6. कूष्ठ चि- अनुवासन निषेध, उष्ट्रक्षीर, 7. प्रमेह चि. 8. उन्माद चि. - मन का स्थान शिर व ताल्वन्तरगतं बताया है।, 9. अपस्मार चि. - शणबीजादी चूर्ण
10. अतिसार चि- विषूची, विलंम्बिका,अलस व्याधीयों का वर्णन योग - शिवावर्ती for - विषूची चिकित्सा.
11. ग्रहणी - 12. मुत्रकृच्छ्र चि. 13. उदर चि. योग- सुवर्णसमक चूर्णम् भल्लातक् योग, 14. उरूस्तंभ चि., 15. विसपवात शोणित
16. अर्श चि. - प्राणदा वटक, महानिम्बादी तैल, 17. श्वयथू चि. - अयोरजीयम, 18. उदावर्त चि., 19. हृद्रोग चि-हिंगुपंचमम्, वल्लभक घतम्, 20. कास चि., 21. शिरोरोग चि.- शिरकम्प, मूर्धश्वयथू वर्णन, 22. अजीर्ण चि., 23. निद्रा चि.,
24. वातव्याधिचिकित्सा - गध्रसी में - बला तैल, मूलक तैल, सहचर तैल, 25. प्लोहाहलीमक चि. V.P.K.S भेद
26. अपतन्त्रक चि. - शुकनासा घृत, अर्दित वर्णन
27. व्रण चि.- 28. पान्यात्यय चि.
कल्पस्थानम् - मदन कल्प - मदन भेद 3
कृष्ण, श्वेत, कृष्णश्वेत, फलानान्वेत सर्वेषा मदनं सर्वशोधनम्।
3. इक्ष्वाकु - 4. धार्मगव 5. कूटज,
6. चतुरंगुल खण्डामलकम् पाण्डू आदि
7. दन्तीफल 8. शंखिनी 9. श्यामात्रिवृत.

सिध्दिस्थान

2. शिरोविरेचन सिध्दी
नस्य 4 प्रकार - अवपोड, अनुवासन, धूम, प्रधमन
4. वमनविरेचन व्यापद 10
बस्तिमात्रा सिध्दी, उपकल्पसिध्दी - बस्तिनिवत्ती काल 100 मात्रा हर 4 मास के बाद 1 बस्ति कोर्स लेने पर सर्व रोगोंपर विजय प्राप्त होता है।
फलमात्रा सिध्दी - बस्ति के लिए मदन फल श्रेष्ठ
दशव्यापद - आस्थापन अनुवासनासिध्दी
रासायनिक बस्ति - श्रेष्ठ: नराणाममतोपमम्।
क्रिडाबस्ति - रेताबलकर: श्रेष्ठ:।

****

Every successful person has painful story,
Every painful story has a successful ending.
Means, Accept the pain And
Get ready for successful futures.

काश्यपसंहिता

वैशिष्ट्य:

※ मुलनाम (पर्यायी नाम) वृध्दजीवकीय तंत्र

उपदेष्टा आचार्य	मरिच कश्यप	6 शतक
ग्रंथरचियता	वृध्दजीवक	6 शतक
प्रतिसंस्कर्ता	वात्स्य	6 - 7 शतक
आधनिक संपादक	हेमराज शर्मा (नेपाल के राजगुरु)	

※ मुल उपलब्ध ताडपत्र ग्रंथ

ताडपत्र किताब आकृति - 21½ X 21½

प्रारंभ पृष्ठ - 29, अंतिम पृष्ठ - 264, प्रत्येक पृष्ठ - 6 Line

काश्यपसंहिता स्थान नाम और अध्याय संख्या चरक संहिता सदृश.

Only 9th खिलस्थान Extra (80 अध्याय) इसमें से 25 उपलब्ध

कल्पस्थान यह सिध्दीस्थान के बाद है।

खिलस्थान By वात्स्य

ऋचिक पुत्र जीवक का स्थान कनखल [Age 5 Yrs.]

अनायास Preserved काश्यपसंहिता.

इसी Preserved काश्यपसंहिता का वात्स्य से ने प्रतिसंस्करण किया।

संस्कृत उपोदघात- सत्यपाल - हिंदु अनुवाद कौमारभृत्य आद्यतंत्र

अम्लपित्त सर्वप्रथम वर्णन - चि. देशान्तर गमन

2

व्याधी 2 प्रकार - निज और आगन्तुज,

3

त्रिस्थुण प्रकृती - वात सदातुरी, आर्थिक दृष्टीसे बालक के 3 प्रकार,

त्रिसमा गुटिका - हरितकी, शुंठ,गुड समप्रमाण, मद्यातिप्रवृत्ती से 3 व्याधी,

त्रिचक्रफक्करथ वर्णन (Tricycle)

दंताद्भव अवस्था, सत्वभेद, महामर्म, धुप, जातिहारिणी प्रकार,

प्रत्येकी 3 प्रकार: (साध्य -10, याप्य -16, असाध्य: 8 Total: 34)

4

4th मास दन्तनिषीक्त; दंतउत्पत्ती प्रकार 4

4th मास हस्तस्वेद, अजीर्ण, उरोघात, शोथ.... प्रत्येकी 4 भेद

5

हृदय 5 कोश (पंचकोश), पांचभौतिक तैल = पंचगुण तैल

लसुन पंचरसात्मक:, ऋतु 5

6

पटकल्पाध्याय नेत्ररोग में 6 द्रव्य वर्णन

पटकोश देह वर्णन:	6 प्रकार Of सुतिका ज्वर
6 वर्ष पश्चात पट स्वेद:	6 मास सुतिका काल

6 ऋतु में ऋतुचर्या वर्णित (वर्षा के जगह प्रावृट् ऋतु)

6/7 मास - कर्णवेध उल्लेख

7

सप्तविध कषाय कल्पना वर्णन: अभिषव Extra

चूर्ण और कल्क Separate

8

i) अष्टविध स्वेद वर्णन हस्त और प्रदेह New , संकर - स्थानस्वेद

ii) मूत्रकृच्छ 8 स्वप्नज और द्वंदज मुत्रकृच्छ वर्णन

iii) चरकोक्त प्रमेह पिडका वत 8 बालपिडका वर्णन अरुंषिका Extra

iv) गर्भपात रोकने हेतु 8th मास में वरण बंध

9

9 सार वर्णन (ओज Extra), 9 बस्तिदोष

स्वप्नभेद: 10

11 दिन का संसर्जन क्रम वर्णित, 13 कोष्ठांग,

14 कण्डरा, 16 वर्ष स्त्री पुरुष पक्वावस्था,

18 कुष्ठ (9 साध्य (विषज New) & 9 असाध्य (श्वित्र कुष्ठ वर्णन),

20 स्नह प्रविचारणा, 40 कुल धुप वर्णन,

42 कुर्च, 50 सामान्यज व्याधी (चरक - 48)

64 सुतिकारोग, 87 प्रत्यंग

(तालु मुलवाही - 200 धमन्या, हृदय मुल सिरा - 700,

मस्तिष्क मुल स्नायु - 900), 381 संधि,

यूष द्रव्यभेद से - 25, यूष - रसाश्रय से - 50,

यूष दोषभेद से - 75

काश्यप संहिता मुख्यतः चरक & सुश्रुत विचार उपलब्ध

काश्यप संहिता प्रथम अध्याय - लेहाध्याय

आहार को महाभैषज्य कहा है। अतुरालय का- अरिष्टागार शब्द

औषध & भेषज में भेद वर्णन,

औषध - युक्तिव्यपाश्रय, भेषज - दैवव्यपाश्रय

आयुर्वेद की उत्पत्ति अथर्ववेद से होने पर भी पंचमवेद माना है।

अष्टांग में अगद और विषतंत्र वर्णन....(वाजिकरण वर्णन नहीं)

संहिता कल्पअध्याय - आयुर्वेद अवतरण और प्रतिसंस्करण, संहिता

विषय वस्तु वर्णन (का.सं.कल्पाध्याय)

शोधन काल में शुल रहनेपर हस्त स्वेद

नाभी और रोमकुप - सूक्ष्म स्त्रोतस

सात्वीक में प्रजापत्य सत्व और राजस में याक्ष्य सत्व New वर्णन.

※※ मज्जा वात का स्थान और बाहु कफ का स्थान.

दोष विशेष स्थान - वात - पक्वाशय, पित्त - आमाशय, कफ - हृदय

नवायास लोह - शाथ

राजयक्ष्मा - वर्धमान पिप्पली और रसोन कल्प प्रयोग

एकल द्रव्यकल्प - रसोन कल्प, कटु तैल कल्प , शतपुष्पा, शतावरी,

अध्याय वैशिष्ट्य - रेवती कल्प अध्याय सांस्कृतिक अध्ययन

प्लीहा, हलीमक, शुल चिकित्सा Separate अध्याय,

वैशिष्ट्यपूर्ण अध्याय: i) लेहाध्याय, ii) दन्तजन्मिक,

iii) वेदनाध्याय, iv) जातहारिणी, v) धुमकल्प इ. वैशिष्ट्यपूर्ण

अध्याय. सु. अ. 27 रोगाध्याय - रोगसंख्या परिषद.

उपोध्दात्

प्रत्येक शास्त्र के 4 अनुबंध - अधिकारी, विषय, संबंध, प्रयोजन

चरणव्युहकार ने कहा,

'व्यास और स्कंद के मत से आयुर्वेद को ऋग्वेद का उपवेद बताया है।'

काश्यप और चरक संहिता. में केवल सिध्दी एवं कल्पस्थान के

पूर्वापार का ही भेद है।

काश्यप संहिता और चरक संहिता में समान अध्याय नाम -

1) स्नहाध्याय 2) स्वेदाध्याय 3) उपकल्पनीयध्याय

4) चिकित्सासंपादीयायध्याय (च. - चिकित्साप्रभृतीयाध्याय)

5) रोगाध्याय (च. -महारोगाध्याय)

यथाविष यथा शस्त्र यथाऽग्निरशानिर्यथा.

तथा औषधमविज्ञात विज्ञातममृतोपमम॥ ..... (च. सू. का.खि.)

वात नानात्मज - 80 , पित्त - 40, कफ - 20 चरक समान

यत्स्य गोमयचुर्णाभ चुर्ण मुर्धानिजायते ।

संस्नह भ्रश्यते चैव मासान्ते तस्य जीवीतम ॥ .....Same श्लोक

रोग और उपद्रव की पृथक् - पृथक् चि. सिध्दांत न मानकर दोनों की

एकसाथ चिकित्सा सम्प्राती दी.
- अत्यंत छोटे बालक में अश्मरी निर्हरण & तीव्र औषधी निषेध.
- चतुर्थिकादि ज्वर में उसी दिन ज्वर (तृतीयक) होने का कारण वर्णन.
- कल्पस्थान - रसोन कल्प अध्याय. रसोनोत्पाति अमृत के उदगार से.

सुत्रस्थान

1) लेहाध्याय

का.सं. वृध्दजीवकीय तंत्र (29 - 264) Page उपलब्ध

✻ In south India प्रतिदिन व्यवहार में आनेवाले लेहन को उरमरुंद कहते है।

- In गार्भिणी स्त्री अन्नपान से उत्पन्न रस - 3 कार्य :

i) माता के शरीर पोषणार्थ ii) गर्भ पोषण iii) स्तन पुष्टी

प्रकृती: त्रीस्थुण / प्रकृती (मुख्यरुप से 3 प्रकार)

i) वात स्थुणा - सदा ऽऽतुरा ii) पित्त स्थुणा, iii) कफ स्थुणा

समस्थुणा प्रकृती - स्वस्थ व्यक्ति,

सुश्रुत और काश्यप. - 7 प्रकार प्रकृती - i) एकदोषज - 3,

ii) द्वि दोषज - 3 (सु.सू.21 में त्रिस्तंभ - त्रिस्थुण) iii) सम दोषज -1

काश्यप संहिता - बालक भेषज मात्रा

मात्रा - नवजात (विंडगफलवत भार) मधु, सर्पि

जैसे शिशु वृध्दी वैसे - वैसे औषधी वृध्दि

प्रति मास Add 1 विडंग, But आमलकी से अधिक औषधी मात्रा न बढायें।

Max मात्रा - आमलकमात्रा (1/2 कर्ष)

(सुश्रुत क्षीराद - अंगुली के 2 पर्व पर आये उतनी मात्रा,

क्षीरान्नाद - कोलास्थि, अन्नाद - कोल)

Now a days:

Young's formula - Age in yrs. / Age + 12 x adult dose

i.e. If age - 2 yrs. then - 2/2+12 - 1/7 x adult dose

Also, Cowling & Dilling formula is used.

लेहनार्ह: अक्षीरा जननी येषामल्प क्षीराऽपि वा भवेत्।

दुष्टक्षीरा प्रसुता धात्रीवायस्य तादृश: ।।

भृश व्याधिपिडीत दुष्प्रजाता का पूत्र,वात - पित्त प्रधानता (कफ रहित), अग्निदीप्त, कृश अंग, 3 - 3 मलत्याग नहीं करता, स्तनपान से अतृप्त और रोदन प्रवृत्ती,महाशना अल्पमूत्र पुरीषाश्व, बाल निरामय होकर भी तनु मृदु और कृश अंग,बहुविण्मूत्र,स्वल्प और दृढगात्रक.

लेहन वर्ज्य: मंदाग्नि, निद्रालु, कल्याणमातृक, सर्वरसाशिन्या, उर्ध्वजत्रुरोग, आमरोग, ज्वर, अतिसार, कामला, शाथ पाण्डु, हृदरोग, श्वास, कास, गुदबस्तीगत आमय, आनाह, गण्डविसर्प, अलसक, प्रतिदिन, भोजनपश्चात, दुर्दिन, पुरावाते,अतिमात्रा में लेहन न करें, असात्म्य गुरुस्तन्य उपसेविता.

सुवर्ण प्राशन संस्कार: स्वर्ण घिस के + मधु + घृत(असमान मात्रा)

मेधाग्निबलवर्धक आयुष मंगल पुण्यं वृष्यं वर्ण्य ग्रहापहम।।

1 मास में मधायुक्त और चाटण स व्याधीमुक्त, 6 मास में श्रृतधर

सुवर्णप्राशन तथा लेहन - जन्मपश्चात (3 - 4) दिन दें .

मेधावर्धक - (कल्याणकघृत, पंचगव्यघृत, ब्राम्हीघृत) लेहनार्थ

(कल्याणकघृत/अष्टविशंती घृत - A / C चरक चिकित्सा)

(पानीयकल्याण घृत - A / C तन्त्रांतर, मात्रा - 1/4 तोला)

वर्णन 8 याग - अभयघृत - लेहन ..(का. सं.) Also in (अ. हृ. उ.1)

ब्राम्ही, सरसों, कुष्ठ, सैंधव, सारिवा, वचा, पिप्पली.

संवर्धन घृत - व्याधीरहित शीघ्र (शीघ्र व्याधीरहित करता है)

संस्पत्याशु गच्छति पंगू मूक अश्रुतिजड र्यज्यन्ति चाशु कर्माभिः।

(खदिरादी द्रव्य Present)

19) क्षीरोत्पाति अध्याय:

✻ ग्रहदुषीत दुग्ध लक्षण:

दुग्ध रस	ग्रह
मधुर, कटु	- पुतना
कटु, तिक्त	- शकुनी
सान्निपात	- स्कंद, षष्ठीग्रह
शेष दुग्ध (Other all)	- संसृष्टदोषजा

✻ दुषीत दुग्ध प्रभाव :

मधुर रस	- बहुविण्मूत्रता
कषाय	- मल - मूत्र - ग्रह
तैलवर्ण	- बालक बलवान
घृतवर्ण	- (एश्वर्ययुक्त) महाधना
धुम्रवर्ण	- यशस्वी
शुध्द दुग्ध	- सर्वगुणोदितः

"तस्मात संशोधनपरा नित्यं धात्री प्रशस्यते।।"

दुषीत स्तन्य शोधन,कषायपान,वमन,विरेचन,पथ्य,भोजन,वाजीकरण, औषधी स्नेहपान, (मात्रा - 8 तोला)

उत्तम क्षीरशोधक:

धातकी पुष्प, एला, मंजिष्ठा, मरिच, जम्बुत्वक, मधुकचूर्ण.

कफ दुषीत दुग्ध में - कषायपान + मधु

वात, पित्त दुषीत दुग्ध में - कषायपान + घृत

क्षीरवर्धक उपाय: लवण, सिधुरहित मद्य,(सीधु छोडकर all other मद्य), सिध्दार्थक वर्जित शाक (सिध्दार्थक छोडकर All Other) वराह, माहिष छोडकर अन्य पशु मांसरस, लसुन, पलाण्डु.

शुध्द क्षीर लक्षण:

"अव्याहतबलायुररोगो वर्धते सुखम्।

शिशुधात्र्यो अनापत्तिः शुध्दक्षीरस्य लक्षणम्।।"

वज्र - तृण, कीट, तुष, शुक, मक्षिकांग, लोष्ट, केश, अस्थि.

- जिसने वज्र आदी सेवन कीया हो, उसे पीतवज्रा कहते है।

स्तनकिलक - वज्र पान से होता है.

स्तनकीलक: i) वायु से शीघ्र वर्धन, ii) पित्त से शीघ्र पाक, iii) कफ से चीर क्लेशयति.

चिकित्सा: "**घृतपानं** प्रथमतः शस्यते स्तनकीलके।"

20) दन्तजन्मिक अध्याय: कुल दंन्त - 32

सकृज्जात- (8) स्वरुददन्ता द्विज - (24)

✻ जीतने मास में दंत का निषेचन उतने - Day's में उद्भिद होते है।

जीतने Days में दंत आते है उतने - Yr. में गीरते है

राजदन्त - Central incisors (बीच के 2) - पवित्रौ, खण्डित होने पर श्राध्द करने अयोग्य

वस्त - Lateral incisors

दंष्ट्रा - Canine / Eye teeth, शिवणकिलक

हानव्य - Bicuspids / Molars चर्वण दन्त

राजदन्त के पार्श्व में दोनों तरफ वस्त, वस्त के पार्श्व में दोनो तरफ दंष्ट्रा, शेष सभी हानव्य (20), 20 +12 - 32

A/C to Modern:

Infacy or milk teeth or Childhood or Pri - dentition complet upto 2½ Yrs.

Sec. dentition complet upto (16-20)yrs.

दन्तोदभव अवस्था: 3 -

i) निषिक्त ii) मुर्तिमान iii) उद्भेदन

दुग्ध दंत
1) Lowe
2) Upper
3) Lower
4) Canin
5) 2nd Mo
Complete
Permane
1) 1st Mol
2) Cent. I
3) Lat. In
4) 1st Bic
5) 2nd Bic
6) Canine
7) 2nd Mol
8) 3rd Mol
तत्र कुमारी
दशाना मृदु
प्रकृष्ठकालम
घनत्वाच्च
स्त्रियों में दन्
प्रति मास दं
निषीक्त दन्
पंचम मास -
सप्तम मास -
आगे आए हुए
4 मास पश्चात
तत्र शान्त्यर्थ
अनाहिताग्नि
यज्ञ से करे।
दन्तोत्पत्ति:4
ii) संवृत्त - आ
iii) विवृत -
iv) दन्तसंपत्
स्निग्धता श्लक्ष
दन्त उत्पत्ती
ज्वर, वमन,
"दन्तोद भेदे
स्वयमेवोपशा
दन्तोद्भव का
1) बालक का
(पानी से शेष
2) To avoid
दन्तसम्पत:
दन्त: पूर्णता स
निर्मलता निरा
दन्तबन्धनानां
बृहद्घनास्थिर
Common: स
✻ दन्त उत्पत्ति
(दन्तोदभेद क
विशेषन तु तन्
कुकुणक पोथ

दुग्ध दंत उत्पत्ति क्रम: Primary Teeth

1) Lower central Inci.	- 5 - 10 month
2) Upper Lat. & central Inci.	- 8 - 10 month
3) Lower Lat.& 1st Molar	- 12 - 14 month
4) Canine	- 16 - 22 month
5) 2nd Molar	- 24 - 30 month

Complete upto 2½ yrs.

Permanent teeth:

1) 1st Molar	-	5 - 7 yrs.
2) Cent. Incisor	-	6 - 8 yrs.
3) Lat. Incisor	-	7 - 9 yrs.
4) 1st Bicuspid	-	9 - 11 yrs
5) 2nd Bicuspid	-	10 - 12 yrs.
6) Canines	-	11 - 14 yrs.
7) 2nd Molar	-	11 - 14 yrs.
8) 3rd Molar (Wisdom teeth)		16 - 21 yrs. or later

तत्र कुमारीनाम आशुतरम अल्प बाधाकर च दन्तजन्म सुषिरत्वाद दशाना मृदुस्वभावाच॥

प्रकृष्ठकालमाबाधा बहुल तु कुमाराणाम आचक्षते,

घनत्वाच्च दशाना स्थिर स्वभावाच्च।

स्त्रियों में दन्तजन्म पुरूषों से जल्दी होते है। - दन्त सुषिर, मृदु.

प्रति मास दंत लक्षण: चतुर्थादिषु मासेषु दन्ता निषीष्यन्ते।

निषीक्त दन्त: चतुर्थ मास - दुर्बल, शीघ्रपतन, आमयबहुलास्य

पंचम मास - स्पंदन, हर्ष, षष्ठम मास - वैवर्ण्ययुक्त, प्रतिप, मलिण, घुणद

सप्तम मास - द्विपुटक, रुक्ष, विषम, रेखायुक्त (राजीमन्त) खण्ड, आगे आए हुए (उन्नताश्च), **अष्ठम मास - सर्वगुण संपन्न**, शेष - अप्रशस्त

4 मास पश्चात दन्त निषेचन, दन्तविकृती - शान्ति हेतुर्थ मारुती यज्ञ तत्र शान्त्यर्थ मारुतिमिष्टी निर्वपेत। (इष्टी - यज्ञ)

अनाहिताग्नि पुरुष के स्थालीपाक प्रजापत्य इष्टी (यज्ञ) i.e. मारुती यज्ञ से करे। अन्य अवयव विकृत होने पर भी यही उपक्रम.

दन्तोत्पत्ति:4 प्रकार: i) सामुद्ग - क्षयावस्था, सदा दन्तपतन

ii) संवृत्त - अधन्य, मलिष्ठ (मलिन)

iii) विवृत - नीत्य लालास्त्राव, ओष्ठ से दन्तपूर्ण (ढक) नही पाते

iv) दन्तसंपत् - आशुवैवर्ण्य आसन्नक्षाधं पूर्णता समता घनता शुक्लता स्निग्धता श्लक्ष्णता निर्मलता निरामता किंचीत् उत्तरोन्ततता.

दन्त उत्पत्ती प्रमुख उपद्रव 6:

ज्वर, वमन, अतिसार, कास, आक्षेप,पामा

"दन्तोद भेदेषु रोगषु बालमति यन्त्रयेत।

स्वयमेवोपशाम्यन्ति जातदन्तस्य ये गदाः।"

दन्तोद्भव काल में:

1) बालक का भोजन - 1/4th कराय

(पानी से शेष भोजन की मात्रा पूर्ण करें।)

2) To avoid constipation - मुग्धरस.

दन्तसम्पत:

दन्त: पूर्णता समता घनता शुक्लता स्निग्धता श्लक्ष्णता।

निर्मलता निरामयता किंचीत उत्तर उन्नतता॥

दन्तबन्धनानां च समता रक्तता स्निग्धता।

बृहद्घनास्थिर मुलता चेति दन्तसंपद उच्यते॥ शेष अप्रशस्त दन्त.

Common: समता, स्निग्धता.

✻ दन्त उत्पत्ति में **शोणित** (रक्त) कारणभूत है।

(दन्तोदभेद कालीन व्याधि - दन्तोदभेदश्च सर्वरोग आयतनम विशेषन तु तन्मुला ज्वरशिरोभिताप तृष्णा भ्रम, अभिष्यंदक कुकुणक पोथकी वमथु कास श्वास अतिसार विसर्प। वाग्भट)

21) चुडाकरणीय: पालीवर्धन और कर्णवेधविधी

कर्णपाली वृध्दी - कर्णपाली वृध्दि योग .....(सु.सू.16)

कर्णवेध: i) उद्देश 2 - a) ग्रहबाधा से रक्षा b) आभुषण

ii) काल - 6th or 7th Month वाग्भट 6/7/8 Month

डल्हण - 6th or 7th Month (From भाद्रपद Not from birth so माघ Or फाल्गुन मास शिशिर As No व्रणपाक)

iii) स्थान: कर्णपाली के मध्यभाग में दैवकृती छिद्र पर.

iv) उपद्रव 3: रक्तस्त्राव, वेदना, ज्वर Also 2 आमछद, कुवद

(चुडाकर्म/चुडाकरण : केशच्छेदन/मुण्डन:

जन्म से - मृत्यु तक किये जानेवाला, वैदीक संस्कार में - 8th संस्कार (in 3rd yr. - आश्वलायन गुह्यसुत्र, In 1st yr.- पारस्कर गुह्यसुत्र))

22) स्नेहाध्याय: स्नेह योनी: 2

विकल्प - 4 (घृत, मज्जा, वसा, तैल), (च.सू.13, स्नेह योनी: 2)

स्थावर	जांगम
तैल	घृत, वसा, मज्जा

घृत तैल वसा मज्जा पूर्व : पूर्वी वरोऽन्ते (नये) भ्य:।

मुख्यं घृतेषु गव्यं संस्कारात सर्व सात्माच्य॥

Seq. घृत, तैल, वसा, मज्जा पूर्व पूर्व श्रेष्ठ

गोघृत श्रेष्ठ Only in काश्यप घृत श्रेष्ठ In चरक

(चरक - सर्पिस्तैल वसा, मज्जा सर्वस्नेहोत्तमा मताः।

एभ्यश्चैवोत्तमाः सर्पि संस्कार स्यानुवर्तनात॥

अ.हृ. माधुर्यादविदाहित्वात्वन्माद्येव च शीलनात्॥

घृत श्रेष्ठता Due to 3 Reason 1) मधुर 2) अविदाही 3) जन्मसात्म्य)

घृत गुण : i) पित्त, वात, शमन ii) कफ संचिती नहीं होती

iii) बल,अग्नि, मेधा, वर्धक iv) शुक्र, योनि शोधन (च.तैलगुण)

तैल गुण : i) उष्ण ii) कफवातघ्न iii) स्वरवर्णकर

iv) तनुस्थिरिकरण v) भग्नच्युतसंधान vi) धातुव्रणशोधन

मज्जा & वसा सामान्य गुण: i) वृष्य ii) वातघ्न - विशेषाद iii) बल्य सात्म्याना प्रजाबलायु स्थिरिकरण

✻ प्रतिदिन तिल तैल और घृत प्रयोग

✻ स्त्रंसन रसायन स्नेह - एरण्ड और शंखिनी.

	स्नेह सेवन काल:	अनुपान
मज्जा, वसा	- वसंत	मण्ड
तैल	- प्रावृट्	यूष
घृत	- शरद / सभी ऋतु में	उष्णोदक

(सुश्रुत सर्वस्नह अनुपान उष्णोदक Except भल्लातक तैल, तुवरक तैल - शितलजल.)

उष्णोदक अनुपान निषेध: दुग्ध, दधी, मधू युक्त द्रव्य सेवन पश्चात, पित्तप्रकोप, रक्तस्त्राव, गर्भच्युति, गर्भदाह.

स्नेह प्रविचारणा: (काश्यप - 20, चरक - 24)

अच्छस्नह	चरक	काश्यप	सुश्रुत
मात्रा	3	3	5
6 hr	ह्रस्व	(As	1,2,3,4,8
12 hr	मध्यम	च.)	
24 hr	महान		प्रहर में जीर्ण

स्नेहाजीर्ण चि.: केवलमुष्णोदक पिबेत।

अतिस्नह परिणाम :

i) सर्पि - मूर्च्छा, ii) तैल - विदाह,

iii) वसा - हृल्लास iv) मज्जा - गौरव

✻ तीव्रकुष्ठ में तैलपान निषेध, स्नहन - मद्यपी, मदात्यय - निषेध स्नेहपान से वृध्दी हुई व्याधी असाध्य

मृदुकोष्ठी व्यक्ती में ग्रहणी में पित्ताधिक्य रहता है।(विरेचन To be done)

23) स्वेदाध्याय: च. सू. 24, सू. सू.14

अतिस्वेद चि. विसर्पवत

(चरक - ग्रिष्मचर्या - मधुर, स्निग्ध, शीतलविधी Except मद्यपान सुखपूर्वक रेचनार्थ,मुख में कर्पूरचूर्ण, खाण्डयुक्त आम्लफल or मनुका)

स्वेदन प्रकार: 8 चरक: 2 - (13, 10)सुश्रुत: 4 वाग्भट 4

हस्तस्वेदः प्रदेहश्च नाडी प्रस्तर संकराः।
उपनाहो ऽवगाहश्च परिषेकस्तथा ऽष्टम् ॥

New हस्तस्वेद - जातस्य चतुरो मासान (4th Month)

वर्णन - प्रदेह - उर्ध्वजत्रुगत, छाती (उर), अभिष्यंद से उत्पन्न शोथ

संकर or (पिण्डस्वद) - त्रिकठोर -

i) सिकता - बालु, ii) पांशु - धुल, iii) पाषाण - पत्थर

इनसे स्थानिक (विशेष स्थान) स्वेदन, (संकर स्वेद - स्थान स्वेद) का.

24) उकल्पनीय: स्नेहन स्वेदन पश्चात - संशोधन (चरक समान) संसर्जन क्रम.

संसर्जन क्रम : (11 दिन) (चरक 12 भोजनकाल - 7 दिन)

संसर्जन क्रम उपद्रव: "ज्वरामकामलापाण्डुकर्णकुष्ठ गलामयाः।
हिक्कातिसारश्वयथुकासाद्या व्यभिचार ॥"

सम्यक जीर्ण लक्षण: कांक्षा बुभुक्षा वैशद्यं लघुता स्थिरता सुखम।
स्वस्थवृत्तानुवृत्तीश्च सम्यग्जीर्णान्नलक्षणम॥

अजीर्ण (4 प्रकार)	लक्षण	चिकित्सा
आमाजीर्ण	यथाभुक्त	उध्दहरण (वमन, लंघन)
विदग्धाजीर्ण	धुमोद्गार	दिवास्वाप प्रावृत्त
श्लेष्माजीर्ण	गुरुत्व	स्वेदन
रसशेषाजीर्ण	हृदद्रव	परिशोष (लंघन)

सुश्रुत - विदग्धाजीर्ण - वमन, रसशेषाजीर्ण - दिवास्वाप

25) वेदनाध्याय:

कश्यप को दारुवाह द्वारा प्रेरित वृध्दजीवक ने वेदना संबंधि उपदेश देने हेतु प्रेरित किया।

शिरःशुल: भृश शिर : स्पंदयति निमिलयाति चक्षुषी।
अवकुजत्थर तिमान स्वप्नश्च शिरोरुजि ॥

कर्णवेदना: कर्णी स्पृशती हस्ताभ्या शिरो भ्रमयते भृशम।
अरत्यरोचका स्वप्नैर्णानियात कर्णवेदना ॥

मुखरोग: लालास्वणमत्यर्थ स्तनद्वेषारतिव्यथा।
पीतमुध्दिरति क्षीर नासाश्वासी मुखामये ॥

कण्ठवेदना: पीतमुध्दिरति स्तन्य, पिष्टाम्भिश्लेष्म सेवनम।
ईषज्वरो रुचिग्लानिः कण्ठवेदनयाऽर्दिते ॥

आधिजिव्हारोग: लालास्त्रवोऽरुचिग्लानीः कपोलो श्वयथुर्व्यथा॥
मुखस्य विवृतंत्व च जानीयाद् अधिजिव्हकम॥

ग्रहरोग: ज्वरारुचिमुखस्त्रवा निष्टनेच्च गलग्रहे।

कण्ठशोथ: कण्डु(ण्ठे) के श्वयथुः कण्ठे ज्वरारुचिशिरोरुजः ॥

ज्वर: मुहुर्ममतअगानि जृम्भते कासते मुहुः।
धात्रीमालीयतेऽकस्मात स्तनं(न्यं) नात्यभिनन्दति
प्रस्त्रावोष्णत्ववैवर्ण्य ललाटस्यानितप्ताता।

अरुचि: पादयोः शैत्यं ज्वरे स्युः पुर्ववेदनाः॥

अतिसार: देहवैवर्ण्यम अरतिमुखग्लानिः अनिद्रता।
वातकर्मनिवृत्तीश्चेत्यतीसाराग्रवेदनाः॥

उदरशुल: स्तनं व्युदस्यते रौती चेत्वनाश्चावभज्यते।
उदरस्तब्धता शैत्य मुखस्वेदश्च शुलिन ॥

छर्दिरोग: अनिमित्तम अभीक्ष्णं च यस्याद्वार (उद्गार): प्रवर्तते।
निद्राजृम्भापरितस्य छर्दिस्तस्यापजायते ॥

श्वास: निष्टनव्युरसाऽत्युष्ण श्वासस्तस्योपजायते।

हिक्का: अकस्मान्मारुतोद्वारः कृशे हिक्का प्रवर्तते॥

तृष्णा: स्तनं पिबती चात्यर्थ न च तृषी(ष्य) ति रोदिती।
शुष्कौष्ठतालुस्तोपेप्सु दुर्बलस्तृष्णयाऽर्दित ॥

आनाह: विशालस्तब्धनयनः पर्वभेदारतिक्लमि।
संरुद्धमुत्रानिलविट् शिशुरानाहवेदनी॥

अपस्मार: अकस्मादट्टसनम् अपस्माराया कल्पते।
प्रलापारति वैचित्यद् उन्मादे चोपलक्षयेत्॥

मूत्रकृच्छ्र: रोमहर्षी ऽगहर्षश्च मुत्रकाले च वेदना।
मुत्रकृच्छ्रे दशत्योष्ठों बस्ति स्पृशति पाणिना॥

प्रमेह: गौरव बध्दता जाड्यम अकस्मान, मूत्रनिर्गमः।
प्रमेहे माक्षिकाका (का) न्तं मुत्र श्वेत घन तथा ॥

अर्श: बध्दपक्वपुरीषत्व सरक्त वा कृशात्मन :।
गुद निष्पीडन कण्डु तोदं चार्शासि लक्षयेत॥

अश्मरी: सशर्करातिमुत्रत्वं मुत्रकाले च वेदना।
प्रतत रोदिति क्षामस्तं ब्रुयादअश्मरीगदम ॥

विसर्प: रक्तमण्डलकोत्पत्तितृष्णा दाही ज्वरोऽरति।
स्वादुशीतोपशायित्व विसर्पस्याग्रवेदना॥

विसुचिका: दह्यन्तेऽगांनी सुच्यते भज्यन्ते निष्टनत्याति।
विसुचिकाया बलाना हवी शुल च वर्धते॥

अलसक: शिरो न धारयति यो भिद्यते जृम्भते मुहुः।
स्तन पिबती नात्यर्थ गथित छर्दयत्यापि॥
विषाद आध्मानारुचि भिर्विद्यालसकं शिशोः।
विसुचिकालसकायो दुर्जाने लक्षणोषधे॥

चक्षुरोग: दृष्टीव्याकुलता तोदशोथ शुलाश्रुरब्तताः।
सुप्तस्य चोपलिप्यन्ते चक्षुषी चक्षुरामये ॥

शुष्ककण्डु: घर्णव्यंगानि शयने रोदितीच्छति मर्दनम।
शुष्ककण्डूवऽदित विद्याततश्चार्द्रा प्रवर्तते॥

आर्द्रकण्डु: सुखायते मृदयमान मृद्यमान च शुयते।
शुनं स्त्रवती सस्योढ मार्द्राया शुलदाहवता॥

पाण्डु: नाभ्या समन्तत: शोथः श्वेताक्षिनखवक्रता।
पाण्डुरोगोऽग्नि सादश्च श्वयथुश्चाक्षिकुट्यो ॥

कामला: पीतचक्षुर्नखमुखविण्मुत्र कामलाऽर्दित।
उभयत्र निरुत्साहो नष्टाग्निरुधीरस्पृह॥

मदात्यय: मूर्च्छाप्रजागरच्छर्दी धात्रीद्वेषारतिभ्रमैः।
वित्रासोहेगतृष्णाभि विदयाद्वाले मदात्ययम॥

पीनसरोग और उरोघात:

मुहुमखोनोच्छुसिती पीत्वा पीत्वा स्तन तुयः।
स्त्रवतो नासिके चास्य ललाटं चाभितप्यते॥
स्त्रोतोस्याभिष्ण स्पृशति पीनसे क्षौती कासते।
उरोघातो तथैव स्यानिष्टनत्पुरसाऽधिकम्।

तालुकंटक: सिर को स्थिर रखने में असमर्थ।

About (32) Vyadi are mentioned.

स्वस्थवृत्तपरो बालन शेते तु यदा निशी।
रक्तबिन्दुचितांगश्च विद्यात जन्तुकादितम॥

26) चिकित्सासंपदीय:

वैद्यगुण, भेषज गुण, आतुर गुण, परिचारक गुण

चतुष्पादतद्यथा: भिषक, भेषजम्, आतुर, परिचारक:

(आतुर श्रेष्ठ By हारित)

27) रोगाध्याय: रोग संख्या परिषद

ऋषी	रोग संख्या	प्रकार
प्रमति भार्गव	1	रुक 1 वेदना
वायोर्विद	2	निज, आगंतु
कांकायन	3	साध्य, याप्य, असाध्य
कृष्णभारद्वाज	4	वात,पित्त, कफ,आगंतु
राजर्षी दारुवाह	5	4 + त्रिदोष
दारुवाह (षम्दय)	6	(षडरसयुक्तान्नपान से)
हिरण्याक्ष	7	एकदोष, द्वंद्वज, सान्निपात
वैदेह	8	7 + आगंतु
वृध्दजीवक	असंख्य	------
काश्यप	2	वस्तुतः निज आगन्तु

✻ अधिष्ठानद्वयं तेषां शरीरं मन एव च।

रोग अधिष्ठान: 2 i) शरीर ii) मन

रोग:

निज– वातादि त्रिदोष विषमावस्था

आगंतु–अभिचाराकर्म, बन्धाधिदेवता, नखदन्ताग्निपानीयवध शाप

चिकित्सा प्रयोजन:

भेषज: i) शरीर और आयु वृध्दि, ii) विकार शांती

दोष	विशेष स्थान	चरक	स्थान
वात	पक्वाशय	पक्वाशय	अधोनाभि, अस्थि मज्जा
पित्त	आमाशय	नाभी	आमाशय, स्वेद, रक्त, लासिका
कफ	हृदय	उर	मेद,शिर,उर,ग्रीवा संधि,बाहू

रोग चिकित्सा:

तस्मादागंतुरोगानामिष्यते निजवत क्रिया।
निजाना पुर्वरुपाणी दृष्टा संशोधन हितम॥
(निज रोग के पूर्वरुप में संशोधन)

ओज:

हृदी श्लेष्ममानुपाश्लिष्टमाश्यावं रक्तपित्तकम।
तद् ओजो, वर्धते जन्तुस्तृदवृध्दो क्षीयते क्षय॥

(चक्रपाणि - ओज: 2 प्रकार

i) पर	अष्टबिंद्वात्मक	हृदयाश्रयी
ii) अपर	अंजलि 1/2	धमन्याश्रयी

(ओज वृध्दि साधन - मधुर, स्निग्ध, शीत, लघु)

(कफविकार में पंचकर्म चिकित्सा.)

दोष	श्रेष्ठ चिकित्सा
वात	अनुवासन
पित्त	विरेचन
कफ	वमन

बालक चिकित्सा: नैवातिसंशोधन रक्तमोक्षणे।

28) लक्षणाध्याय: शुरुवात में 5 प्रश्न पुछे है।

✻ यथा वक्त्र तथा वृत्त यथा चक्षुस्तथा मनः।
यथा स्वरस्तथा सारो यथा रुप तथा गुणः।

जिसतरह: चेहरा- वृत्त (भाव), चक्षु - मन, स्वर - सार, रुप - गुण

सत्व:

त्रिविध सत्वमुदिष्ट कल्याणक्रोध मोहजम।
श्रेष्ठम अध्यायमत्त्व च तेषाम् प्रोक्त यथाक्रमम॥

सत्त्व भेद - कल्याण, क्रोध, मोह

सत्व: 18 –

कल्याण से (श्रेष्ठ) सात्विक (8)	क्रोध से (मध्य) राजस (7)	मोह से (हिन) तामस (3)
ब्राह्मसत्व श्रेष्ठ	आसुरसत्व	पाशव
प्रजापत्य	राक्षस	मत्स्य
आर्षसत्व	पैशाच	वानस्पत्य
ऐंद्र	सार्प	
याम्य	याक्ष	
वारुण	भुत	
कौबेर	शाकुन	
गान्धर्व.		

सत्वं प्रकाशकं विद्धि राजश्चपि प्रवर्तकम्।
तमो नियामक प्रोक्तमन्योन्यामिथुनप्रियम॥ (परस्पर प्रीय)

सत्व - प्रकाशक, राजस - प्रवर्तक, तामस - नियामक

धात्री:

समानसत्वा बालानां तस्माद्धात्री प्रशस्यते।
उद्वेगवित्रासकरी विपरीत न शस्यते॥
बालक के लिए समान सत्व धात्री प्रशस्त॥

सार: 9

त्वकसृकमांसमेदोडस्थि मज्जा शुक्राणी धातव:।
ओजः सत्वच सर्वच तत्सारं निबोध मे॥

(ओज सार Extra)

✻ बालक के लिये सार - 6

[योनीआकृती	परिणाम
शकटाआकृती	अपत्यलाभ
पीन (स्थूल/मांसल)	सौभाग्य
लम्बी	अपत्यवध
मण्डला	व्यभिचार
उत्क्षिप्ता	अनपत्यता
सुचिमखी	दुर्भाग्य
अतिविवृत्त, संवृत्त, शुष्क,	क्लेश
लम्बी, विषम एवं विलिंग	
मध्य निबिडा	कन्या प्रजननाय
उन्नतरमणीय मांसल	पुत्रजन्म
व्यजनयुक्त	धन्य
अतिलोम युक्त	वैधव्यकर
व्यजनहिन	अयश
पिप्लुयुक्त व वसावाली	व्यभिचार एंव प्रव्रज्या
लोमराजी आकृती	परिणाम
दोनो ओर से मध्यमे जानेवाली	प्रशस्त
अत्यंत स्थूल	वैधव्य
अतिस्थूल, घनेलोम	षौश्चल्य
नीचे के और जानेवाले	दुर्भाग्य
नाभी को अतिवृत करनेवाली	मध्य श्रैणी]

विमानस्थान

2. शिष्योपक्रमणीय

शिष्य का उपनयन:

उत्तरायण काल में प्रशस्त दिन 1 अश्विनी,
रोहिणी, उत्तरा या अन्य किसी नक्षत्र में करें।

शिष्य गुण: शांती, दक्ष दक्षिण्यमानुकृत्य, शौच कुले जन्म
धर्म सत्याहिंसाम कल्याणज्ञान विज्ञान,
स्थितिविनिवेशः पाटवः यथोक्तकरित्वं ब्रह्मचर्यम
अनुत्सेको लोभेर्ष्याविवर्जानामिती अतोऽन्यथा दोषैः सः वर्ज्य।

युगमात्रावलोकी: चार हस्त (युग) दुर तक देखने वाला(सिर झुका हुआ)

विगृह्य संभाषा प्रयोगः

शिष्योपक्रमणीय अध्याय अष्टांग में अगद और विषतंत्र वर्णन,
वाजीकरण उल्लेख नहीं।

अष्टांग में कौमारभृत्य श्रेष्ठ - आद्यतंत्र.

अष्टांग - कौमार, काय, शल्य, शाला - कौमार, काय, शल्य
शालाक्य, विष,भूत, अगद रसायन

आयुर्वेद का आधार अथर्ववेद.

अंग का शरीर धर्म है।

शिक्षा, कल्प,सुत्र, निरुक्त, वृत्त, छन्द, यज्ञसंस्तर तथा ज्ञानराशि
के विशेषज्ञ भी वेदना होने पर आयुर्वेद के शरण में आते है।

आयुर्वेद-पंचमवेद माना और आयुर्वेद की उत्पत्ति अथर्ववेद स मानी।

दोष	देव आश्रय
वात	मारुत और आकाश
पित्त	अग्नि और आदित्य
कफ	सोम और वरुण

शारीरस्थान

प्रथम अध्याय - नाम नही

5 - ऋतु: तस्मात पच्चैव खलु ऋतुवोऽपि।
रसार्थमेधा षट्त्वं रसविमाने प्रोक्तम ॥

ऋतु: 5, **काल: 2**

i) शुभकाल - उत्सर्पिणी - 3 प्रकार (देवयुग,आदीयुग,कृतयुग)
ii) अशुभ - अवर्पिणी (अवसर्पिणी) - 3 प्रकार (त्रेता, द्वापर, कली)

कृतयुग: नारायण नाम संहनन (शारिरीक), सप्त रात्र गर्भनिवास,
न च स्तन्यवृत्ती, उत्कृष्ट आयु पालितोपर्धम, कृतयुग विशालता 1 योजन

त्रेतायुग: अर्धनारायण नाम संहनन, एक आस्थिवाण शरिर, 8 मास
गर्भनिवास, स्तन्य पर/दुग्धपर जीवित

द्वापर युग: कौशिक संहनन, आयु उत्कृष्ट पलितोपमम

कलियुग: प्रज्ञप्ती पिशीत संहनन,

5 कोश हृदय	उत्कृष्ट आयु 100 वर्ष
6 त्वचा	107 - मर्म, 3 महामर्म
7 धातु	360 - अस्थि
10 प्राणायतन	381 - संधि
14 कण्डरा	400 - मांसपेशी
42 कुर्च	700 - सिरा

10 मास गर्भ निवास,

मन लक्षण: ज्ञान का युगपत भाव/अभाव

गुण: 2 - i) एकत्व ii) अणुत्व

5 द्रव्य - पंचमहाभूत + दिशा + आत्मा + मन + काल
मन + पंचेद्रिय (6) से

विप्रकृष्ट (3)	सन्निकृष्ट कार्य (3)
1) मन	1) घ्राण
2) चक्षु	2) रसना
3) श्रोत	3) त्वचा

युग	संहनन शरिर	गर्भवासकाल	शिरःकपालसंख्या उत्कृष्ट आयु
कृत	नारायण	7 दिन	पालितोपमार्ध
त्रेता	अर्धनारायण	8 मास	1/4 पालितोपमम
द्वापर	कौशिक	-	1/8 पालितोपमम
कली	प्रज्ञाप्तीपिशीत	10 मास	28 वर्ण

असमानगोत्रीय अध्याय:
(च. शा. 2 : अतुल्य गोत्रीय शारीर.)

प्रथम 2 मास: शुक्र → अस्थि व मांस → गर्भस्थ बालक के → स्नायु

3 मास:

तृतीय मासि युगपान्निवर्तन्ते यथाक्रमम।
प्रस्पन्दते चेतयाति वेदनाश्चावबुध्दयते ॥

काश्यप	चरक	सुश्रुत
गर्भ स्पंदन	हृदय विकसित	पंच पिण्ड निर्माण
चेतना & वेदना	स्पंदन	
मन को सुख	दौहृद	
दुख का ज्ञान	सुख, दुख ज्ञान	

4 मास:

सुक्ष्मं प्रव्यक्त करण स्तृतीये तु मनोऽधिकः।
चतुर्थे स्थिरता याति गर्भः कुक्षौ निरामयः॥
गर्भ गर्भाशय में स्थिर (उपद्रवरहित)

5 वां मास:

गुरुगात्रत्वमाधिक गर्भिण्यास्तत्र जायते।
मांसशोणितवृध्दिस्तु पंचमे मासि जीवक॥
गार्भिणी पंचम मासि तस्मात कार्श्येन युज्यते।
मांस और शोणित अधिक वृध्दि गर्भिणी
कृश गर्भ स्पन्दन अधिक

6 वां मास: बलवर्णाजसां वृध्दिः पष्ठे मातुःश्रमोऽधिका
(बलवर्ण,ओज वृध्दि,अधिक श्रम)

7 वां मास: सर्वधात्वऽगसंपुर्णी वातपित्तकफान्वितः।
सप्तमें मासितस्माश्च नित्यबलान्ताऽत्र गार्भिर्णी॥

शरीर संपूर्ण अंगयुक्त तथा त्रिदोषयुक्त क्लान्ति अनुभव (गर्भिणी)

8 वां मास:अष्टमे गर्भिणीगर्भावाददाते परस्परम।
ओजो रसवहायुक्ते पुर्णत्वाच्छलयत्यापि॥
तस्मात्तत्र मुहुर्लाना मुहुर्दृष्ट्यच गर्भिणी।
अत्यर्थ चाप्नुते तस्मान मासे गण्यतेऽष्टम ॥

ओज परस्पर आदान प्रदान, गर्भिणी मुहुम्लाना मुहुर्दृष्टय
(ग्लानियुक्त और हर्षयुक्त)

9 वां मास:नवमाहदिषु मासेषु जन्म चास्य यथाक्रमम।
पुर्वदैवकृत कर्म गर्भावास सुखासुखम॥
जातः स्मरति तावच्यं यावनैयति जिविकम।
पूर्वजन्म के सुख : दुःख भुलकर गर्भ के बाहर
निकलने पर नया जन्म प्रारंभ
(सु. शा.3 - गर्भनिवास - 280 दिन)
3 मास - स्पंदन, चेतना, वेदना, मनोऽधिक
9 मास - पुर्वजीवन भुलकर नया जीवन प्रारंभ

गर्भावक्रांतीशारिर अध्याय:

मातृज: रक्त, मांस, नाभी, हृदय, यकृत, प्लीहा, वृक्क, बस्ती, पुरीधारण (मलाशय), आमाशय, उत्तरगुद, अधरगुद (Rectum) क्षुद्रान्त्र, स्थुलान्त्र, क्लोम. (चरक- Extra त्वचा, वपा(मेद) वपावहन)

पितृज: केश,रोम,श्मश्रू,मुछ,नख,दंत,अस्थि,सिरा,स्नायु,धमनी,शुक्र.

आत्मज: आयु, आत्मज्ञान, मन, इंद्रिय, प्राण....

सात्म्यज: आरोग्य उत्थान, (उन्नती), सन्तोष, इन्द्रिय प्रसन्नता, स्वर, वर्ण, बीज, उत्तम, मेधा, हर्ष.

रसज: रस सेवन से उत्पन्न होनेवाला भाव शरीरवृध्दि प्राण बन्ध वृत्ती, पुष्टी, उत्साह.

गर्भ के शोणित से उत्पन्न: हृदय → यकृत → प्लीहा → फुफ्फुस Generating each next.

आशय - कृमि आशय (Extra),

माता से - मांस, शोणित, अंश गर्भ में

पिता से- शुक्र, मज्जा, अस्थि, अंश गर्भ में बनते है।

देह में 6 कोश होते हैं।

शरीरविचयशारीर

प्रथम 3 महामर्म: मुर्धा, हृदय, बस्ती

साग्रे शतसहस्त्रे द्वे बहिरन्तश्च कुपकाः।

पुरुष: 2 लाख बाह्य और आभ्यंतरिक छिद्र, 1/4 कम in स्त्री.

स्त्री: स्वभावानुसार संख्या चतुर्थांश कम होती है।

विश्वकर्मा(परमात्मा)इनके स्वभावानुसार वृध्दि / ऱ्हास हो सकता है।

कोष्ठांग -13 (चरक -15 पुरीषाधार अधिक उत्तरगुद और अधरगुद)

प्रत्यंग - 87 (चरक - 56)

जातीसूत्रीयशारीराध्याय

स्त्री पुरुष पक्वावस्था -16 साल

रजोदर्शन के:

प्रथम दिन गर्भाधान - वातगर्भ, विफल, वातपुष्पवत

द्वि. दिन गर्भाधान - गर्भपात

तृ. दिन गर्भाधान - सुतिकागृह में मृत्यु, जीवित Not दीर्घायु,हिनांग

ऋतुकाल: ब्राह्मणी -12 दिन, क्षत्रीय -11 दिन,वैश्य -10 दिन, शुद्र - 9 दिन, ऋतुकाल छोडकर (12 रात्रि समय) छोडकर Other अकाल.

गर्भ उत्पत्ति: i) ऋतु ii) क्षेत्र iii) अम्बु iv) बीज

अकाल में गर्भधारणा Then गर्भ - हिनगुणयुक्त, दुर्बल, अस्थिर, अदृढ, पतला, भंगुर,

मैथुन: पूत्रोत्पत्ति: युग्म दिनी (सम) 4,6,8,10,12

कन्यात्पत्ति: अयुग्म दिनी (विषम) 5,7,9,11

पुत्रप्राप्ती: ऋत्विक पुत्रीय इष्टी (यज्ञ)

दक्षिणेन पार्श्वेन स्त्रिंय शाययीत। वामार्श्वेन पुमानुर्ध्वात्तेरणोशयीत।।

स्त्री - दक्षिण, पुरुष - वाम

पुत्रजन्म: तन्त्री(गुडुची) रस समान वर्ण,अल्प, पिच्छिल यानी स्त्राव

कन्याजन्म: किंशुक्रोदक (पलाशनक पुष्प) समान यानी स्त्राव,

व्यायाम, चंक्रमण, कष्टात्मक कर्म वर्ज्य (चरक और काश्यप)

चिरप्रसव चिकित्सा: i) वचा, लांगली, कुष्ठ, करंज, छोटी, इलायची, चित्रक सुक्ष्म चूर्ण: सुंघणे ii) भोजपत्र, सरल धूप दें.

इंद्रियस्थान

औषधभेषजेन्द्रियाध्याय

इन्द्र (जिवात्मा) का ज्ञापक लिंग (लक्षण) दिया है। 50 नाम

चिकित्सा: 2 प्रकार - भेद वैशिष्टय, चिकित्सा

औषध(युक्तीवपाश्रय)	भेषज (दैव्यवपाश्रय)
दीपन, पाचन, द्रव्य	होम, तप, दान, शांतीकर्म, बली

यस्य गोमयचुर्णाभ चुर्णमुर्धनि जायते।

संस्नेह भ्रश्यते चैव मासान्त तस्य जिवीतम।।

(मनुष्य के शिर पर गोबर चूर्ण सदृश स्निग्ध चुर्ण होकर स्वयं विलीन होता है। 1 मास अवशिष्ट जीवन।)

15 दिन अवशिष्ट - स्नान /अनुलेपन पश्चात अन्य अंग गीले रहने पर सर्वप्रथम कुक्षि सुखती है।

अन्तिम रात्र: दीर्घकेश स्तननखी विरागकुसुमाम्बराम।

स्वप्ने दृष्टा स्त्रियं कृष्णा कालरात्री निवेदयेत।।

ग्रहबाधा से माता में उत्पन्न स्वप्न.

स्वप्न प्रकार:10 i) प्रार्थित,ii) कल्पित, iii) दृष्ट, iv) अनुभूत,v) श्रृत, vi) भावित,vii)अत्यंत छोटे,viii) लम्बे,ix) दिन में आनेवाले,x) दोषज

फलवान : i) अदृष्ट, ii) अश्रुत, iii) अनुक्त, iv) अकल्पित, v) अभाषित vi) कार्यमात्र.

(स्वप्न प्रकार अरुणदत्त: 7 (व चरक) -i) दृष्ट, ii) श्रृत, iii) अनुभूत, iv) प्रार्थित,v) कल्पित,(फलप्रद स्वप्न: 2-) vi) भाविक, vii) दोषज.)

चिकित्सास्थान

ज्वरचिकित्सा - तत्वदर्शी ज्वर प्रकार, सूत्रस्थान: 2 - निदानस्थान: 8

गर्भिणीचिकित्साध्याय:

परिकर्तिका - मधुर द्रव्य सिध्द दुध + शर्करा मधु, तिल तैल, यष्टिमधु, फणित.

प्रवाहिका - काश्मर्य (गम्भारी) वृक्ष, त्वक्, त्रिवृत्त (श्यामा), मुल, जड, यवागु दधी मण्ड.

शोथरोग - वर्षाभ (पुनर्नवा) मुल क्वाथ + देवदारु चूर्ण + मरोड फली + मधु सेवन.

कामला रोग - पिप्पली/अकोठ जड + वाजी लीद् रस + माहिष दधो

हृदय रोग - मातुलुंग रस + सैंधव श्रेष्ठ औषध.

दुष्पजातचिकित्सा:

If कष्टपूर्वक प्रसव Then give स्नेहन, स्वेदन और अग्निदीपक यवागु.

✻ सुतिका रोग निदान - दिवास्वप्ननाजिर्णादयशनादपि।

दुष्प्रजाता: 35 रोगों के नाम दीये है।, (त्रिवृत्त) त्रैवृत योग वर्णन

बालग्रहचिकित्साध्याय: (ग्रह संख्या: 9)

i) स्कंद, ii) स्कन्दापस्मार, iii) शकुनी, iv) रेवती, v) पुतना, vi) अन्धपुतना, vii) शीतपुतना, viii) मुखमण्डिका, x) नैगमेष.

✻(रावणकृत बालतंत्र - विस्तारित वर्णन)

(सुश्रुत - ग्रह पिडित काल - Between जन्म - 12 साल बालक)

i) नन्दा: प्रथम दिन, प्रथम मास, 1 वर्ष ग्रह बाधित, क्रमश: शेष ii) सुनन्दा, iii) पुतना, iv) मुखमण्डिका,v) कटपुतना,vi) शकुनिका, vii)शुष्करेवती,viii) अर्थका,x) स्वास्तिकामातृका,xi) निऋतुमातृका, xi) कार्मुका मातुका, xii) रेवती - दुर्धष / देवताद्वार पुजीत

रेवती पर्याय नाम: 20 पर्याय

कार्तिकेय पर्यायी नाम - गुह, स्कंद

स्कंद के 3 भाई 5 वा नंदिकेश्वर और रेवती 6 वी भगिनी

षण्मुखी - रेवती पुजा दिन - षष्ठी (सुतिकाषष्ठी)

रेवती चिकित्सा: अश्वगंधा + अजश्रृंगी + द्वयान्नतमुल + द्वयपुनर्नवां

क्षुद्रा + सहा + विदारीकन्द (कषाय परिषेचन), पुष्टीकर्म

पुतना उत्पत्ती: स्कंद ने (कार्तिक ने) दुदंभी राक्षस, कौच मामा,3 विशाल पर्वत, विनाश → कार्तीकेय का वर्णनाश - वर्णप्राप्ती - के लिए कार्तीकेय शुध्दी - पुतना उत्पत्ती

पुतना पर्यायी नाम: 5 - पुतना, कौञ्जी, वैश्वदेवी, मलजा, पावनी.

✻ अन्धपूतना चिकित्सा - आक्षिरोग चिकित्सा

✻ शीतपूतना चिकित्सा - शीतकारका चिकित्सा,

मुखमण्डिका/मुखर्चिका

चंद्रमा धारण: 7 जन (सिरपर), नन्दी, रेवती, कार्ती केय, शंकर

चिकित्सा: खुड्डाक पंचमुल सि. घृत (खुड्डाक पंचमुल - स्वल्प पंचमुल)

प्लीहाहलीमकचिकित्साध्याय: हलीमक लक्षण: अग्नि, बल, जठराग्नि क्षीण मूर्च्छा, तृष्णा, भ्रम, तन्द्रा, विषाद, अरुची, गौरव.

पौत्तिक हलिमक चिकित्सा: i) गिलोय स्वरस + माहिष घृत / दुग्ध ii) आवला स्वरस +त्रिवृत्त चूर्ण - विरेचन, दुर्बल-गुडहरितकी नित्य सेवन

वात हलिमक चिकित्सा:

i) कल्याणकारक बलातैल, ii) कुमारकल्याण घृत,

iii) पाण्डु/शोथ/कामला समान चिकित्सा, iv) अगस्त्य हरितकी सेवन

उदावर्तचिकिसाध्याय: उदावर्त: 6 प्रकार - (वात, पुरीष, मूत्र, शुक्र, छर्दि,शवथु), चरक-6 प्रकार Of उदावर्त As काश्यप,(सुश्रुत:13 प्रकार)

उदावर्त पूर्वरुप: 5 -i) शूल ii) मूर्च्छा iii) दाह iv) आनाह v) आध्मान

चिकित्सा: नाराचक चूर्ण: उपयोग आनाह, शुल, गुल्म, भगन्दर, अर्श. In उदावर्त-उष्ण तथा लवण युक्त निरुह/आस्थापन

राजयक्ष्माचिकित्सा अध्याय: पिप्पली वर्णन:

कफाधिके तु सक्षौद्र सघृतं पवनाधिके।

पित्तोतरे शर्करया सेवमानः सुखी भवेत॥

पिप्पलीक्षार चिकित्सा: 20 पिप्पली + 1/2 आढक जल - 1/4 शेष (छाग क्षीर) - सिध्द दुग्ध वात आधिक्य-सिध्द दुग्ध + घृत;

पित्त आधिक्य-सिध्द दुग्ध +शर्करा,

कफ आधिक्य - सिध्द दुग्ध + मधु

वधर्मान पिप्पली: 12 साल जीर्ण व्याधी - दुग्ध + पिप्पली, शुरूवात 5 पिप्पली से 28 दिन तक हर दिन 5 पिप्पली, बाद में हर दिन 5 पिप्पली से कम करें। सेवन काल में अन्नत्याग.

पिप्पली वर्धमान तु वातश्लेष्मोत्तरे हितम।

सर्वत्र पिप्पलीक्षीर हितं कालादिदर्शनात ॥

(पिप्पली क्षीर - कालादिकानुसार सर्वत्र हितकर

पिप्पली वर्धमान योग: वात आधिक्य कफआधिक्य श्रेष्ठ)

नागबला चूण (शरद ऋतु छोडकर लाया हुआ) - 1 कर्ष मात्रा

1 मास सेवन - उपद्रवयुक्त शोष नष्ट, 6 मास सेवन - श्रृतधर और रोगमुक्त 1 वर्ष -10 वर्ष वत जवान.

अजा: रसायन - क्षय रोग में श्रेष्ठ, अजा पुरीष से - उदवर्तन अजा मुत्र - परिचेषन.

✻ महाभयारिष्ट – श्लैष्मिक रोग नष्ट, इंद्राणी घृत - राजयक्ष्मा, बन्धा, नपुंसक, वृध्द पुरुष, कामशक्ति (रसोन Main content) द्राक्षा घृत:, पीलु घृत - इंद्राणी घृतवत, राजयक्ष्मा - रुद्रपूजा

गुल्मचिकित्सा:

गुल्मस्थान: 5 - i) कुक्षी ii) हृदय iii) द्वयपार्श्व iv) बस्ति

अधिष्ठान = आमाशय

वात गुल्म चिकित्सा:दशांग घृत, षटपल घृत, शैशुक घृत (शिशुसर्पी)

वर्ज्य: अतिबृंहण, अतिरुक्षण, अतिसंशोधन

कुष्ठ चिकित्सा:

कपाल कुष्ठ - वात , औंदुम्बर कुष्ठ - पित्त, मण्डल कुष्ठ - कफ, ऋष्य जिव्ह - वात पित्त, पौण्डरिक - पित्त कफ, सिध्म - पित्तकफ (चरक - कफ वात), काकणक - त्रिदोषज(रक्तवात)

कुष्ठ प्रकार

साध्य (9)	असाध्य (9)
1) सिध्म	1) पौण्डरीक
2) विचार्चिका	2) श्वित्र ✻
3) पामा	3) ऋष्यजिव्ह
4) दद्रु	4) शतारुक
5) किटीभ	5) औदुम्बर
6) कपाल	6) काकणक
7) मण्डल	7) चर्मदल
8) स्थुलारुक्ष	8) एककुष्ठ
9) विषज (नया)	9) विपादीक

सिध्म कुष्ठ-धूली समान प्रतित,धियांकददू /वाराणपुष्पी के पुष्पवत (च.महा, सु - क्षुद्र, काश्यप - साध्य कुष्ठ)

सिध्म प्रकार: 2 - सिध्म - सुखसाध्य, पुष्पीका - कष्टसाध्य

दद्रु कुष्ठ: 2 - सित - साध्य (A/c च. क्षुद्रकुष्ठ, A/c सु. - महाकुष्ठ) असित - असाध्य

महारुष्क / स्थुलारुष्क - Not by चरक Only by सु. और का.

श्वित्रकुष्ठ - Not by चरक. (किलास - त्वचा, रक्त, मांस, अधिष्ठान त्वचा प्रकट)(किलास Only त्वचा अधिष्ठान By काश्यप)

(किलास - प्रकार 3: दारुण - मांस आश्रय, चारुण - रक्त आश्रय, श्वित्र - मेद आश्रय.)

वात कुष्ठ चिकित्सा: मण्डरहित अच्छघृतपान

पित्त, श्लैष्मीक - तिक्त घृत, वमन, विरेचन, आस्थापन

श्वित्र चिकित्सा- वमन, विरेचन, संशोधन सवर्णकर लेप, कुष्ठनाशक प्रयोग

मुत्रकृच्छ्रचिकित्सा: मुत्रकृच्छ्रनिदानः बस्ति दुषयती तदाश्रयाः।

8 प्रकार:

प्रमेह	मूत्रकृच्छ्र
1) चिरात कुप्यन्ति	1) सद्य कुप्यति (दोष)
2) दाह Not	2) मेहन दाह
3) देर से ठीक	3) शीघ्र ठीक
	4) पित्त प्रधानता
	5) वात स्थान आश्रय

चिकित्सा: विपरीत औषध, विपरीत अन्नपान, स्निग्ध or मृदु शोधन

अश्मरी/शर्करा लक्षण: i) नित्य वेदना, ii) मुत्र शर्करासह, iii) शल्यवान अश्मरी की बस्ति में वृध्दी होती है।

अश्मरीः क्षीयते क्षीणमाणस्य पुष्यमाणस्य पुष्यति।

द्विव्रणीय चिकित्सा:

व्रणोपक्रम: 8

1) संशमन	5) कल्पप्रणिधान
2) बन्धन	6) शोधन
3) उत्कीन्न	7) रोपण
4) प्रक्षालन	8) सवर्णीकरण आदी
शोधन	- उपयोग क्षौद्र तथा रसक्रिया
निर्वापण	- सत्तु घृत के साथ
सवर्णीकरण	- मंजिष्ठा, मनः शिला मधु के साथ
लोमोत्पादन	- Same as च. & सु.

✻ बालपिडीका: 8
कफअधिक्य: शराविका, कच्छपिका, जालिनी, सर्षपिका.
पित्त अधिक्य: अलजी, विद्रधी
वात अधिक्य: विनता
त्रिदोषज अधिक्य: अरुंषिका
(प्रमेह पिडका 10 सु. 7+ पुत्रिणी, मसुरीका, विदारीका)
चिकित्सा: 1) स्नेहन विरेचन पश्चात व्रणोपक्रम
अरकिलीका (चर्मकिल) → मेद पूर्णत्वचानद्धा जनयत्यरकिलीका।
चिकित्सा:दहन, शस्त्रकर्म, क्षारकर्म, (Other ग्रंथ में चर्मकिल वत वर्णन)
एरावत सदृश दुस्सह हाथी की निर्मिती.
✻ i) सभी उपग्रहों का अधिपति।, ii) पंचमी को पुजा करें।,
iii) शाख और विशाखा ग्रह पर उत्पत्ति.
✻ चतुर्दष्टो महागज वर्णन:
प्रतिश्याय चिकित्सा
प्रतिश्याय प्रकार: i) वात , ii) पित्त , ii) कफ, iv) त्रिदोषज -
a) बलाग्निवर्णशमन, b) वातकफाधिक्य
प्रतिश्याय मुक्त व्यक्ति, गुडहरितकी और धूमपान सेवन
जीर्ण प्रतिश्यायः i) सर्पिपान ii) पुराना षटपल, पंचगव्य, कल्याणक, अभयाघृत iii) सदा लवण+ घृत - यवान्न iv)मरिच युक्त पिप्पली क्वाथ
मरिचानि मुखे नित्यं धारयेदापरिक्षयम।
सैन्धवोष्णोदको पेत्तां पिबेच्छुण्ठी विमुच्यते।।
✻ रोग नष्ट होने तक
a) मुख में सदा मरिच धारण, b) सेंधानमक/उष्णजल + सुंठ
उरोघात चिकित्सा: उरोघात चतुर्विधम
इसमें शीतज्वर, प्रतिश्याय, कण्ठ शुकैरीवावृत्त उत्पन्न होता है।
त्रिदोषज उरोघात - पित्त+कफ आधिक्य
शोफ चिकित्सा:
श्वयथु प्रकार: 4 (वात, पित्त, कफ आगन्तु), दारुण रोग है,
चिकित्सा: गण्डीराद्यारिष्ट - गुडार्द्रक प्रयोग, पुनर्नवासव - शिलाजतु प्रयोग, फलात्रिकाद्यरिष्ट - कंसहरितकी.
कृमि चिकित्सा:
✻ विडंगघृत शर्करासह - कृमिनाशक (चरक -20 प्रकार)
✻ अत्युष्ण कटुतेल तु गुदे दत्वा ससैन्धनम।
स्वेदयेद् गुदमगुल्या तथाऽशु लभते सुखम।।
कोष्ण कुट तैल + सैं धव Apply on गुद & Then स्वेदन by अंगुलि
मदात्ययचिकित्सा:
मद्यप्रवृत्तौ रोगस्तु प्रोच्यते त्रिविधोनृणाम।
पानात्ययो विभ्रमश्च पानापक्रम एवच।।
प्रवृत्ती: 3 प्रकार i) पानात्यय ii) विभ्रम (पानविभ्रम) i) पानापक्रम
पानात्ययः पूर्व का मद्य जीर्ण होन के पहले पुनः मद्यपान So पानात्यय उत्पन्न
पानविभ्रमः विभ्रान्त मद्य सेवन से
पानापक्रमः सदा मद्यपान करनेवाले को मद्य न मिलने पर
मदात्ययः आमदोष से उत्पन्न So सर्वप्रथम लंघन हितकर (A/c च Seq.= कफ, पित्त, वात चि.)
✻ वातश्लैष्मीक व्याधी में मद्य (अमृत वत)
मदात्यय चिकित्सा: दिवास्वाप, मार्गगमन, मण्ड, यवागु, युष सेवन, परिश्रम व्यायाम, मैथुन, शोक, अग्नि, आतप सेवन
✻ पानात्यय में उपोदिका और अवक्षीरी प्रयोग
फक्कचिकित्सा:
बालःसंवत्सरा(पन्न) पादाभ्यां यो न गच्छति।
स फक्क इति विज्ञेयस्तस्य बाल्यामि लक्षणम।।
Not able to walk still after 1 yrs.
फक्क रोग: 3 - i) क्षीरज, ii) गर्भज, iii) व्याधीजन्य
i) क्षीरज फक्क हेतू - धात्री दुग्ध श्लैष्मिक Known as फक्क दुग्धा सेवन स → बहुव्याधि आक्रान्त → कार्श्य → **फक्क क्षीरज**
ii) गर्भजफक्क - क्षियते म्रियते वापि स फक्कोग्रपिडितः।
iii) व्याधीजन्यः निज आंगतु ज्वराधि व्याधी, अनाथ बालक, सशुष्कस्फिक..... सशुष्क गात्र, अस्थि पिंजर.
श्वसिनी ताम्यति अतिविण्मुत्र दुर्गंध, मलीन, क्रोधी, फक्क कामयति।
चिकित्सा: कल्याणकघृत, षटपलघृत, अमृतघृत स 7 दिन **स्नेहन**
8th दिन शोधन By - त्रिवृत्त क्षीर Then बृंहण By (ब्राह्मीघृत)
ब्राह्मीघृत सेवन शुद्र न करें।
राजतैल प्रयोग - अभ्यंग के लिए
त्रिचक्रं फक्करथकं प्रासः शिल्पीक निर्मितम।
विद्यात्तेन शनकैर्गृहीतो गतिमभ्यसेत।
फक्क रथ (Tricycle), पांगुलगाडा प्रयोग
[वागिंद्रीय - अर्धेन शब्द वदति, गुह्यात्यर्धेन त पुनः।।
(वांगिद्रिय- हस्त समान 2भाग:1) वदन(बोलना,) 2) ग्रहण (सुनना)
वाग्मुल हि स्मृतं श्रोत्र वागभ्रंशे भ्रश्यते हि तत।
श्रोत्र वांगमुल में स्थित So वाणी नष्ट, Then श्रवण शक्ति नष्ट ।।]
धात्रीचिकित्सा: सुखं दुखं हि बालांना धात्री मुलमसंशयम।
अग्नि:4 प्रकार

वात प्रधान	पित्त प्रधान	कफप्रधान
विषमाग्नि	तिक्ष्णाग्नि	मन्दाग्नि
पथ्यसेवन	बृंहण	दीपन

तिक्ष्णस्य बृंहण नित्यं मन्दाग्ने दीपनं क्रिया।
पथ्याशनं तु सततं विषमाग्ने सुखावहम।
✻ कल्याणक और षटपल घृत
प्रजाविनाशन हेतू क्षार Or क्षारप्रधान औषधी वर्ज्य धात्री को .
मेदस्विनी धात्री में - सिराकर्म करें.
कृश + नष्टपुष्पा (आर्तवनष्ट) में बृंहण करायें.
बलातैल वर्णनः वातव्याधी
Also रास्नातैल, सहचर तैल, श्योनाक तेल, कपित्थ तेल, मीन तेल, वातव्याधी में प्रयोग (बलातैल वत)
दुष्कर कार्य करनेवाल, और सुखी एवं दु:खी होते है।
1) भिषक 2) धात्री 3) बालक
(धात्री चिकित्सा: कौमाभृत्य वैद्य नित्य दु:खी होकर साधारण चिकित्सा करते समय गर्भा सहित गर्भिणी व पुत्रा सहित धात्री इनके लिए अत्यंत दुष्कर कार्य करता है।)

सिध्दिस्थान:

1) राजपुत्रीया:
✻ परिषद For बस्ति Start आयु

आचार्य	बस्ति Start आयु
गार्ग्य	- जन्म से बस्ती दें
माठर	- 1 मास पश्चात
आत्रेय पुनर्वसु	- 4 मास अवस्था (अनुवासन)
other	- 1 साल पश्चात
पाराशर	- 3 साल पश्चात
भेल	- 6 साल पश्चात

महर्षिकश्यप - अधःस्तनोऽन्न भोक्ता
बस्ति - एक दिन छोडकर (एक के बाद एक) देना चाहिए।
बस्ति गुणःवर्णतेजोबलकरमायुष्य शुक्रवर्धनम ।
योनी प्रसादन धन्य वन्ध्यानामापि पुत्रदम।।
बस्ती कर्म (कृतं) काले बालानाममृतोपमम ।।

2) त्रिलक्षणा: वमन - विरेचन - आस्थापन - अनुवासन - शिरोविरेचन
i) दुर्योग ii) अतियोग iii) सम्यक
नस्य: a) बृंहण - वात प्रधान रोग - मधुरौषधी सिध्द स्नेह
b) कर्षण - कफ प्रधान रोग- रुक्ष कटु औषधि सिध्द स्नेह
सम्यक निरुढ - शुध्दस्फटिकसंकाश यदा श्लेष्म विरिच्यते।
विना मूत्रपुरीषे।

3.वमनविरेचनीया:

वमन योग:

कौत्स्य मतानुसार	चरक चरक		वाग्भट
	वेग	प्रमाण	प्रमाण
कनिष्ठ = 2/3 वेग	4	1 प्रस्थ	1/2 प्रस्थ
मध्य = 4/5 वेग	6	1½ प्रस्थ	1 प्रस्थ
उत्तम = 6/7 वेग	8	2 प्रस्थ	2 प्रस्थ

वमन के 15 दिन बाद विरेचन

काश्यप कौत्समत	विरेचन	प्रमाण	वेग
	हिन	1 प्रस्थ	2
	मध्यम	2 प्रस्थ	3
	उत्तम	3 प्रस्थ	4

पित्तान्तम वमनं कफान्तम विरेचनम।
✻ हस्तस्वेद - शोधनकाल में शुल रहने पर, 4 मास तक.
✻ पटस्वेद 6 वर्ष के पश्चात बालक को
वात शमन- गंधर्व तैल.

4. नस्तकर्मीया:
✻ शोधनं पुरनं चैव द्विविध नस्यमुच्यते।
✻ कुमार तैल (पुराण घृत/तैल) नस्य, पान, अभ्यंग
✻ क्षीरपावस्थाः कटु तैल, सैंधवयुक्त घृत (नस्यार्थ)

5. क्रियासिध्दी:
✻ बस्ति नेत्र दोष : अतिदिर्घमति स्थुल जर्जर स्फुटित तनु।
कुटीलं ...॥ 1) अतिदीर्घ 2) अतिस्थुल 3) जीर्ण (जर्जर) 4) स्फुटीत
5) तनु, 6) कुटील (वक्र)(च. - 8, सु. -11)
बस्तीदोष: 9 अतिह्रस्व खर :स्थुलस्तनुदीर्घ चिरस्थिता।
छिद्री महानुपहतो वाजितो बस्तया नव॥
(च. - 8, सु. - 5), बस्तिदाता दोष:10

6. बस्तिकर्मीया: बस्तिअयोग, अतियोग
आनाह - 6,7,5 गुदवर्ती संख्या:

7. पंचकर्मिय:
वमनादि अर्ह अनार्ह वर्णन, विरेचन नहीं - रेवती ग्रह दूष्टी में
✻ बस्ती स्नेहः आस्थापन - 3 गुना
बस्ति के 3 गुना स्नेह निरुह में उपयोग करें।
कफ, संतर्पण व्याधी - लंघन और अपतर्पण, वातरोग - बृंहण

8. मंगलसिध्दी: शुभ आचरण: बालक - आम, पक्व स्नेहबस्ती
नित्य अनुवासन, निरुह → गोमुत्र + मध, सैं धव
1) बस्ती कर्मार्थ शैशु को स्नेह
2) सभी वात विकार में अर्ध तैलीक निरुह बस्ती.
3) सभी दोषो में कत्तृणादिक निरुह बस्ती.

कल्पस्थान:

4.धुपकल्पाध्याय
प्रतिधुप सर्वरोगेषुशस्यते।
1) कुमारधुप,
2) माहेश्वर धुप - घृत + गुग्गुल + बिल्व + देवदारु + जव + सरल, देवदारू - ग्रहरोग,
3) आग्नेय धुप - गौबाल घृत क साथ जलाएं
4) दशांग धुप - विशेषतःग्रहरोग
5) मोह धुप -
6) वारुण धुप - शकुन्नी पुण्डरीक रेवती और कफ रोग in ग्रीष्म
7) चतुरंगुल धुप - घृत वसा, मज्जा लाक्ष्य, लेप के साथ दोषक्षति
8) नंदक धुप -
9) कण धुप - ग्रहापट्ट
10) श्रीधुप - Useful ऐश्वर्य इच्छा
11) शिशुक धुप - धुप, अनुधुप, प्रतिधुप Use
12) ब्राह्म धुप - Useful वर्ण ब्राह्मणपादि
13) अरिष्ट धुप - क्षणात रोगमुक्त (शीघ्ररोगमुक्त)
14) गणधुप - भुतरोग (भुतरोग)
15) स्वस्तिक धुप - घृत + शल्लकी + चमेली + शिरिष + सरल के साथ + देवदार
16) ग्रहनष्ट करनेवाली: 5 धुप वर्णन कि है।
17) गुग्गुलादि + दशांग धुप - ग्रह धुप, यह धुप - नष्ट नही होती
18) अव्यर्थ फल रहनेवाले - 40 धुप
चिकित्सा सिध्दी करनेवाले होते है।

✻ धुप प्रकार:
i) धुप ii) अनुधुप ii) प्रतिधुप
धुप उपयोग - प्रजाहित, धुप देवता - अग्नि,
आश्रय योनि - स्थावर जांगम
उत्पत्ति कारण - स्थावर जांगम

5. रसोनकल्पाध्याय: प्लीहावृध्दि सर्षप
✻ रसोनोपत्ति अमृत सेः (द्विज (ब्राह्मणार्थ) निषेध)
1) रसोन: स्वादु तिक्त कटु क्रमश बलवान

Part	रस	भा.प्र.	रस
बीज	कटु	बीज	मधुर
पुष्पनाल	तिक्त, लवण	नलाग्र	लवण
पत्र	कषाय	मुल	कटु
विपाक	मधुर	पत्र	तिक्त
		पुष्पनाल	कषाय

जाठराग्नि, बल क्षीण न होने पर, सभी रोगों में रसोन,
पौष और माघ - उपयोग,(नावनीतक (ग्रंथ में) - चैत्र, वैशाख उपयोग)
मात्रा: लघु - 4 पल, मध्यम - 6 पल, उत्तम - 8 -10 पल
बध्दबीज (शुष्क) - कनिष्ठ - 50, मध्यम - 60, उत्तम -100
सेवन- 2,3,5,8,10 दिन
✻ रसोन सेवन उपद्रव
1) During सेवन शीतल उपचार त्याग, If Not
शीतल उपचार और स्नेहसेवन - से जलोदर
2) स्नेह, अण्डे - पाण्डु और शोफ
3) दुषित मद्य, मत्स्य, गोदुग्ध - ज्वर, कुष्ठ, क्षय
4) रुक्ष Person उष्ण काल - पित्त रोग
5) Others - शुल, अतिसार, श्वास
रसोन प्रकारः 1) गिरीज (पहाडी) अमृतसमान,
2) क्षेत्रज (देसी) गिरीज के अभाव में उपयोग
सुतिका, गर्भिणी, शिशु, लसून निषेध
गंधसर्पीः भोजन, स्थानिक प्रयोग - श्रेष्ठ, श्वित्र, नाडीव्रण, कृमी
गंधमह घृत - सर्वदोषघ्न रसायन,

6. कटुतैलकल्पाध्याय:
कटुतैल (सरसो तेल) - Best for प्लीहावृध्दी
प्लीहोदरी का कल्याण घृत,षटपल घृत से स्नेहन कर के तेलपान कराये. मात्राः ह्रस्व - 4 पल, मध्यम - 6 पल, उत्तम -12 पल
पथ्य सेवन.
कटू तैल क मात्रा सात्म्य व भाजन अनुसार 5 प्रयोग है।.
कर्णिकारीय तैल वर्णन,
वाम पार्श्व शयन → प्लीहोदर नाशक है।

7. इटकल्पाध्याय: Explanation of 6 औषधी.
In अक्षिरोग After 6 days आश्च्योतन.
औषधि कल्प (6) : आश्च्योतन से उपयोग
i) चक्षुष्या - शरद ... हेमन्त उपयोग, ii) पुष्पक - अपरान्ह
iii) माता (हिरडा), iv) रोचना (गोरोचन), v) रसांजन, vi) कतक (निर्मला बिज),
जन्म पश्चात 4, 5, 6 मास पश्चात - उपरोक्त औषधी स्त्री दुग्ध के साथ नेत्र में डालें।
नेत्रपुरण → कांस्य बर्तन + दुग्ध + मधु + शंखनाभी के साथ स्वर्णधिरकर आखों का पुरण करने से संपूर्ण अक्षिरोग नाश.
✻ पात्रभौतिक तेल
पंचेंद्रियशक्ति वर्धन (पंचेंद्रियवर्धनाम)
8. शतपुष्पाशतावरीकल्पाध्याय:
मधुरा बृहणी बल्या पुष्टीवर्ण। प्रवर्धनी ऋतुप्रवर्तनी धन्या योनी मूत्रविशोधनी उष्णा वातप्रशमनी मंगल्या पापनाशनी पुत्रप्रदा वीर्यकरी शतपुष्पा निर्दर्शिता।
दोष शोधन प्रावृट, शरद, वसंत में करके शतपुष्पा सेवन करे.
100 पल सेवन = यथेष्ट पुत्रप्राप्ती
1, 1/2 पल मात्रा
✻ शतपुष्पा और शतावरी स्त्रिरोग के लिए रसायन एवं औषधी है।
बुद्धिमान मनुष्य 1 मास 1 कर्ष (=1 तोले) मधु+ घृत सेवन से शतवर्ष
✻ शतपुष्पा अनुपान: अग्निवृध्दी हेतु - मधु, रुपार्थी - क्षीरसर्पिषा, बल - तेल, प्लीहा - कटुतैल, कामला पाण्डुशोथ - गवीक्षीर मूत्र, गुल्म - एरण्डतेल, कुष्ठ - खदिरक्वाथ/शुष्कवीरमत्स्य दसा/मांसरस/पीणमांसरस/मृद्गमण्ड
9. रेवतीकल्पाध्याय:
(राक्षस सेना की दीर्घजीवी यह आसुर कन्या देवोंपर संहार करती है। इसे मारने हेतु स्कंद रेवती को भेजता है।)
जातीहारिणी वर्णन - कथा
रेवती नाम - जातिहारीणी, पिलीपिच्छिका, रौद्री और वारुणी
प्रकार 3 - 1) साध्य -10, 2) याप्य -16, 3) असाध्य - 3

लोकभेद: 3 प्रकार	स्त्रीप्रवेश: 4
(लौकिक प्रकार)	i) स्त्रियावर्ग (ब्राह्मणादि 4 वर्ण)
i) दैवी	ii) वर्णान्तरा (वर्णसंकर)
ii) मानुषी	iii) लिंगीनी
iii) तिरश्चिना	iv) कारुकी

✻ तैरश्चिन: 5 प्रकार - सज्जनाना आक्रान्त
i) शकुनी, ii) चतुष्पदी, iii) सर्पा, iv) मत्सी, v) वनस्पती.
✻ वरुण बध : गर्भपात भय नहीं : 8 मास
नक्षत्र - रोहिणी, दिशा - दक्षिण - उत्तर, विद्या - मातंगी
10. भोजनकल्पाध्याय:
दुग्ध सर्वश्रेष्ठ.
मण्ड प्रयोग: प्रसुता कामला जलोदर पित्तज रोग.
निषध: कफप्रकृति ज्वर में
इक्षुरस : स्वास्थ्य प्राप्ती हेतु - वात, पित्त - प्रकृति - भोजन पूर्व, कफ - भोजन पश्चात, संसृष्ट - भोजन मध्य
✻✻ धान्वरिक (धनुस्तम्भ) रोग में दुग्ध श्रेष्ठ औषध.
विशेषकल्पाध्याय: सान्निपातिक ज्वर (13 च. -13)
चिकित्सा: सान्निपातिक ज्वर- प्रथम कफ की चिकित्सा – लंघन।
लंघन - 3, 5, 10 दिन
निषध - वमन और, मधुप्रयोग नहीं.
तीक्ष्णोपचार - नस्य, कटुतैल, अंजन, कवल - मातुलुंग + लवण + लम्बा. अंश - सैंधव + त्रिकटु + अद्रक रस- मुखधारण
त्रिदोषनाशक पानीय:
वात प्रधान - गोदुग्ध, गुड खांड, मधुमिश्रित
पित्त प्रधान - शर्करा मधु, मुनक्का, शर्करा - पेया
कफ प्रधान - दीपनीय जल, मुंग, अंड, अर्द्रक, मरिच, सौर्वचल, सैंधव
संहिताकल्पाध्याय: संहिता विषय वस्तु वर्णन - स्थान: 8, अध्याय: 120 सूत्र - 30, निदान - 8, विमान - 8 शारीर (आत्मानिश्चयस्थान) - 8, इन्द्रिय -12, चिकित्सा - 30, सिध्दी - 12, कल्प -12, खिल - 60, कुल अध्याय - 200
[1) रुचिक पुत्र - जीवक, 2) जीवक का स्थान - कनखल, 3) बालजीवक वय - 5 साल, 4) लोककल्याण हेतु इस तन्त्र का कलियुग में अनायस नाम के यक्ष ने धारण किया, वातस्व में इसी का वात्स ने प्रतिसंस्करण किया।]

खिलस्थान:

1) विषमज्वरनिर्देशिय: संतत ज्वर वर्णन नहीं
राजमुल क्वाथ - चतुर्थक ज्वर
✻ पुजा - निलकंठ वृषध्वज
संतत - आग्नेय, अनेद्यक/ द्वितीयक - वायव्य (पश्चिमोत्तर), तृतीयक - वैश्वदेव, चतुर्थक - इशान (पुर्वोत्तर) होता है।
चिकित्सा: दोषोत्क्लेश - पाचन, दोष - शमन, शोधन
2) विशेष निर्देशाध्याय:
✻ सामज्वर 8 दिन में निराम होता है।
ज्वर : प्रथम कफ चिकित्सा बाद में पित्त की
✻ शिर तम स्त्रोतोरोध - तेज उर्ध्व, शिरसताप - सोमधातुक्षय
चिकित्सा: ज्वर से अतिसंतप्त में प्रथम उष्ण क्रिया बाद में शीत
3) भैषज्योपक्रमणीय: आबाधकरणं व्याधीर्भेषजं सुखकारणम्।
व्याधी - रोग कारण, स्वास्थ्य - औषध कारण
रोग प्रकार: 1) निज, 2) आगतु,
चिकित्सा: 1) शारीरिक व्याधी: i) काल व्यपाश्रय, ii) युक्ति व्यपाश्रय, iii) दैव व्यपाश्रय
2) मानसिक व्याधी: i) धृती, ii) वीर्य, iii) स्मृती, iv) ज्ञान, v) विज्ञान
त्रिविध रोग लक्षण: i) साध्य ii) याप्य iii) असाध्य
✻ औषधी - ओस = रस (रस धारण करनेवाला)
ओसो नाम रस: सोऽस्यां धीयते यत्त तद औषधि।
औषध भेद (सप्तविध कल्पना) (संशोधन: 7)
1) चुर्ण - ग्रहणी, आम, व्रण, अंजन, 2) शीतकषायका-अंतरिक्ष जल + शीत द्रव्य - पित्तज विकर में उपयोगी,
3) स्वरस - निष्पीडन, 4) अभिषव - (मद्य) रात्रभर भिगाकर नविन,
5) फांट - आंतरिक्ष जल - शेष द्रव्य, 6) कल्क - पिसकर,
7) क्वाथ - Decoction.
औषधी काल: 10 - i) पूर्वभक्त, ii) मध्यमभक्त, iii) भक्तान्त, iv) सामुदग, v) मुहुर्मुहु, vi) संभक्त, vii) भक्तमध्या, viii) सग्रास (वाजीकरणार्थ), ix) ग्रासान्तर, x) अभक्त.
12 वर्ष तक के उम्र में एकान्त रुप से औषध का निरंतर प्रयोग न करें।
अवस्था वय: i) गर्भ, ii) बाल, iii) कुमार
पून: i) यौवन, ii) मध्य, iii) वृध्द
गर्भ - गर्भाधान से जन्म तक
बाल - क्षीरप Upto 1 yr/ पिबती वा पय:,
कौमार - अन्नाद 1 साल से 16 साल
युवा - 16 साल से 34 साल यौवन
मध्यम - 34 साल से 70 साल मध्य
वृध्द - 70 साल से मृत्यू पर्यंत
मात्रा-100 वर्ष के उपर क्षीरान्नाद अवस्थावत (क्षीरान्नाद 1 to2 yrs)

घृत मात्रा:

1) जातमात्रस्य - कोलास्थि /Small बेर गुठली
2) (5 से 10) दिन → कोलास्थि/ बेर की गुठली
3) (11 से 20) दिन - कोलार्ध /1/2 बेर
4) 1 माह - 1 कोल / 1 बेर
5) 2 माह - 1 कोल से ज्यादा
6) 3 माह - 2 कोल
7) 4 माह - शुष्कामलक
8) 5/6 माह - आद्रामलक
9) 7/8 माह - आद्रामलक से ज्यादा

नवजात विडंग फलप्रमाण मात्रा

✻ 8 मास तक बालक को औषधी - औषधी के 1/4 घृतासह दें। &
8 मास बाद जलपिष्ट भेषज दें।

	चूर्ण मात्रा	कल्क
दीपनीय	अग्रपर्वसमान	1 कर्ष
जीवनीय	2 x (अग्रपर्वसमान)	2 कर्ष
वमन/विरेचन	1/2 x (अग्रपर्वसमान)	1/2 कर्ष

क्वाथ: दोषघ्न - (शर्करा+मधु) 2 प्रसृत
वामक/विरेचक - 1 प्रसृत
जीवन संशमन - 2 प्रसृत
कुंभसर्पि /वर्णन

4. युषनिर्देशीय अध्याय

✻ आहार को महाभैषज्य कहा है।
आहार: 1 प्रकार- आहरण सामान्यद्,
2 प्रकार- शीत और उष्ण, 3 प्रकार - दोषानुसार (वात, पित्त, कफ),
4 प्रकार - भक्ष्यभेषज्य नुसार (आशित, पीत, खादीत, लीढ),
5 प्रकार - पंचमहाभुतानुसार, 6 प्रकार - 6 रसानुसार,
12 प्रकार - प्रकृत विचारणानुसार
24 प्रकार - कालादि के भेदानुसार,
आहार-पर - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, आश्रित
मनुष्य का स्वास्थ्य और चिकित्सा आश्रित
युष:
वात शमन By - स्निग्ध , उष्ण गुण से
पित्त शमन By - स्निग्ध, कषाय रस से
कफ शमन By - इषत् उष्ण, संस्कार से
✻ तण्डुल व्यतिरिक्त अन्य पदार्थासह सिद्धि करने पर युष संज्ञा
✻ तण्डुलसह सिध्द करने पर यवागु कहते हैं।
✻ द्रव्यभेद से युष - 25
✻ युष प्रकार: 2 - 1) कषायमधुर - 25, 2) कषायाम्ल - 25
(50 रस भेद स), ✻ युष योनी - द्रव,
✻ पुनः त्रिविध: 1) कृत, 2) अकृत,
3) कृताकृत, Again त्रिविध - (शीत, उष्ण, मिश्र, वीर्य के कारण से पाचन, कर्षण, बृंहण यह 3 प्रकार)

दोष भेद से युष - 75 वात - 25
यापनादि भेद से - 75 पित्त - 25
कफ - 25

रसाश्रय से (युष) = 50 कषाय मधुर = 25
कषाय अम्ल = 25

युष पर्याय- क्वाथ, निर्यूह, आदान, कषाय, गर्भ, कल्क, आवाप, पाक, संस्कार

✻ अधिकार- फलयुष - जीर्ण अतिसार, पत्र युष - वातातिसार,
वल्क युष - अतिसार, मूल युष - सर्वरोग, मुलक युष - सर्वरोग
✻ सुप और रसक - (3 - 3) प्रकार के
21 यवागु वर्णन: यवागु 20/15/10 भाग जल, पेया - 20 भाग जल
यवागु - जो हाथ से ग्रहण करने योग्य Known as यवागु
यवागु दोष: 7

घनाविशीर्णा शीताच चावक्षीण तण्डुला।
पिच्छिला विशदा उच्छदा यवागवा दोषसंग्रह ॥

5) भोज्योपक्रमणीय: ✻ कालदिचतुर्विंशति विविधमाहारमान।
(आहारविकल्प - 24) कालानुसार आहार - 24
✻ व्युष्टाजीर्ण (4 प्रकार)
प्रमात (प्रमा) कालीन अजीर्ण।
विरुध्दान्न - 1) दुध + मांस, 2) गुड + मुला
प्रमृताशन - क्षुधा और तृष्णा कम, अग्नि शांत होनेपर भोजन,
6) रसदोषविभागीय:
1) ज्वरविस्तार के अनुसार और दोषभेद के अनुसार - 62 कल्पना
a) क्षीण - पृथक दोष - 3, द्वयज - 9, सान्निपातीक -13 कुल = 25
b) वृध्दी - 25, c) क्षीण अधिक सम - 12
कुल = 62 (25 + 25 +12)
2) रसभेद = 63 (6 + 15 + 20 + 15 + 6 +1)
3) संयुक्त रस = 57 (15 + 20 + 15 + 6 +1)
4) 7 धातु और 3 मलानुसार विकल्प = 4160
5) योग विभाग गतिकर्मानुसार सान्निपात के 9000 विकल्प
6) रसी के विकल्प 3,073
(द्विक - 165, त्रिक - 620, चतुष्क - 1065, पंचक- 906,
षष्ठक - 311, सयवत रस के 6)
7) संशुध्दीविशेषणीय:
5 ऋतु: काश्यप - ऋतुचर्या 6 ऋतु में प्रावृट के जगह वर्षा
(अन्यआचार्य प्रावृट के जगह शिशिर:: सू.)
स्नेहन (3 दिन) वमन औषध Before वमन कफ वर्धक भोजन,
(4 दिन) विरेचन औषध द्रव्य - द्रव, स्निग्ध, उष्ण, विशद
संसर्जन क्रम - 3 पेया कृत - अकृत युष - मांसरस,
हिन बल - 1 पेया, मध्यम - 2 पेया, श्रेष्ठ - 3 पेया

	वमन		विरेचन		
	कषाय मात्र	वेग	कषाय मात्र	वेग	मल
हिन	2 अंजलि	4	1 अंजलि	10	2 प्रस्थ
मध्यम	3 अंजलि	6	1 1/2 अंजलि	15	3 प्रस्थ
उत्तम	4 अंजलि	8	2 अंजलि	30	4 प्रस्थ

8) बस्तिविशेषणीय:
बस्ति - वात पर नास्ति चिकित्सा सुखावहा।
✻ कर्म - शरिर बल वध्द, वात 30
✻ काल - मध्यम बल, वात पित्त वायुसमवेत पित्तसंसर्ग 15
✻ योग - दुर्बल बल, वात कफ संसर्ग वायु वृध्दि 08
✻ बस्तिपश्चात सेवन:
वात रोग - मांसरस, पित्त रोग- क्षीर, कफ रोग - युष
✻ ऋतु कल्प:
4 Start स्नेह व, 4 Mid आस्थापन, 4 End स्नेह बस्ति
✻ तीक्ष्ण बस्ति 100 मात्रा से अधिक शरीर में नहीं रहती.
✻ मात्रा बस्ति - हीन: 1 - मध्य: 1 1/2, उत्तम: 2 पल
✻ अपरिपक्व (दुध न पीनेवाला) बालकार्थ 1/2 पल
✻ बस्ति - स्नेह प्रमाण के 3 गुना निरुह मात्रा
स्नेह प्रमाण या बस्ती निरुहण विविध गुण स्तर
वयानुसार स्नेह मात्रा: 3 वर्ष तक - 3 कर्ष, 4 वर्ष तक - 1 पल,
8 वर्ष तक - 2 पल, 12 वर्ष तक - 4 पल, 16 वर्ष तक - 8 पल

9. रक्तगुल्मविनिश्चय:

7 आशय: मल, मूत्र, कृमी, पक्व, आम, कफ वायू, स्त्रि - 8 गर्भाशय,

* गुल्म - निरंतर स्पन्दन, ग्रह - नैगमेष

* Before 10 मास - रक्तगुल्म याप्य,

चिकित्सा स्नेहन - सिरा वेधन- संशमन

10. अंतर्वलीचिकित्सित: गर्भिणी पर्याय - अंतर्वली

1) ज्वर -1 दिन उपवास - (लवण, स्नेह रहित, पेया केवल यवागु)
(चतुर्थ मास पश्चात औ. प्रयोग करे.)

2) अभ्यंग निषीध्द - गर्भ Becomes dead
नस्य निषीध्द - गर्भिणी मृत्यु

3) श्लेष्म ज्वर - रास्ना क्वाथ + मध, अतिसार - कल्याणकावलेह
प्रवाहिका - परिकर्तिका, पार्श्वग्रह - मुखपाक, आक्षेपक - अपतानक
छर्दि, कामला - हृदशुल, श्वास,- कास, मुत्रग्रह चिकित्सा वर्णन है।

गुल्म - 4 था मास चिकित्सा In वात पित्त कफ गुल्म

गर्भिणी - त्रिवृत्त मणि धारण - कटी - रक्षोघ्न प्रसव पश्चात शिरपर धारण

11. सुतिकोपक्रमणीय:

* दुष्ट प्रजाता - 64 रोग

1) बलातैल - उष्ण पुरण

2) 3/5 दिन - मण्डसेवन

3) स्नेह जीर्ण - 3 दिन पिप्पली सुंठ, सिध्दयवागु

देश - जांगल, आनुप, साधारण

सुतिका ने - स्त्री बालक - घृतपान 5/7 दिन
पुरुष बालक - तैल पान

दीपनीय द्रव्य, यवागु सेवन

सुतिकाज्वर - 6 प्रकार (वात,पित्त, कफ,त्रिदोषज, स्तन्यात्थ, ग्रहज)

ज्वर बल ↑- शीत, उपवास, व्यायाम, परिश्रम, अहित भोजन,वर्ज्य

कफ & पित्त ज्वर - 5th दिन संशमन औषधी

* मंगल्यक घृत - विषमज्वर

गर्भिणी चिकित्सा: 1) चतूर्थ मास - एरण्ड पत्र दूधासह - वातरोगमें

2) 5 वा मांस - अम्ल, लवण द्रवयुक्त आस्थापन बस्ति, मधुर द्रव्य से अनुवासन ब.

3) 6 वां मांस - ग्रंथि पिडका, शोथ, रोहिणी, रोगानुसार, चि.

4) 7 वां मांस - क्षार, अग्नि व शस्त्रकर्म.

12) जातकर्मोत्तर: रक्षा, होम, मंगल

1 मास - स्वस्तिवाचन, होम, सुर्यदर्शन, चंद्रदर्शन (रात्री में)

4 था मांस - स्नान,अलंकार,वस्त्र,मंदिर प्रवेश, ग्रहनिष्क्रमण

6 वां मांस - उपवेशन

6 वां मांस - फलप्राशन

10 वां मांस - अन्नप्राशन (सु. - 6 मास अन्नप्राशन)

13) कुकुणकचिकित्सा:

कफ रक्त - काश्यप -दुष्टस्तन्योत्पन्नजन्य व्याधी

वा. -दंतोद्भव जन्य व्याधी

हेतु: माता अम्ल लवण सेवन

कुकुणक लक्षण - ललाट, अक्षिकुट, नासा, परिमर्दन

प्रकाश न सहते, अश्रुस्त्राव, वर्त्मशोथ

Photo phobia - नयन व्याधी श्लेष्म लोहित संभवा

चिकित्सा - धात्री को वमन और पाचन औषधी दे।

कल्प: कोकीला गुटिका, लोहितिका गुटिका, कल्याणिका रसक्रिया (सर्वरोगरसक्रिया)

14. विसर्पचिकित्सित: रक्त मांस : विदग्ध

व्याधीराशी विष विषोपम : (रुद्रस्याभिततेजसा)

विसर्प - 7 प्रकार (वात, पित्त, कफ, द्वंद्वज, 5)

वात विसर्प - घृत, पुराण, प्रपुराण कुंभसर्पि

मसुरिका, पामा, विस्फोट कक्षा - As above as (विसर्प)

15. चर्मदलचिकित्सित:

कुलप्रवृत्ती व्याधी (Hereditary) वात प्रधान :

प्रकार 4 - वात पित्त कफ त्रिदोषज,

त्रिदोषज लक्षण: अतिसारे (Red black) असाध्य

इसी को उत्पात रोग कहा है। इस रोगपर कभी विश्वास न करें।

* (न विश्वास्यः कथश्चनः) (बार बार चि. करने पर शांत नही होता)

16. अम्लपित्त:

1st वर्णन By काश्यप, उत्पत्ति - आमाशय,

दोष - कफ & पित्त आश्रय, Types - वात, पित्त, कफ

* Common in आनुप देश, अम्लपित्त को शुक्तम कहा है।

* अक्षिणबलमांस्य वमनं संप्रकल्पयेत्।

17. शोथचिकित्सित:

प्रकार: 4 - वात, पित्त, कफ त्रिदोषज,

न्हास		वृध्दी
पुर्वान्ह(कृष्ण)	वात	शाम (सायंकाल)
अपरान्ह	पित्त	मध्यान्ह
मध्यान्ह(पांडुवर्ण)	कफ	पूर्वान्ह

आगतुज शोथः अरुण

असाध्य - Male -Starts leg- Mouth, Female - Starts mouth - leg

* Main हेतु -वायु

* आश्रय - त्वक् , रक्त, मांस, मेद,

कल्प - कटुकबिंदु अवलेह (भल्लातक) (त्रिकर्ष) - सुंठ +अतसि + नागरमोथा (श्लोक में त्रिकर्म शब्द),

नवायस लोह शोथ में।

18. शुलचिकित्सित:

प्रकार: 4 (कफ, वात, कफ, त्रिदोषज)

* चुर्ण बस्ति * फलतेल * दशांग घृत

19. अष्टज्वर:

प्रकार वात, पित्त, कफ : वात पित्त, पित्त कफ, वात कफ, त्रिदोषज

1) पंचमुष्टीक युष - शोथ में Also वर्णित, 2) लाक्षादि तैल - खण्डित

21. मधुविशेषणीय:

यदि मधु उष्ण पदार्थ के साथ - मृत्यु

22. क्षीरगुणविशेष:

अंतरीक्ष जल - अव्यक्त

25. देशसात्म्य:

भगवान काशिराज महामुनी उत्तर देते है।

पूर्व दिशा के देश कुमारवर्तनी, कटीवर्ष महाराष्ट्र ऋषभद्वीप, etc.

पूर्व Direction देश का वर्णन:

रोग	-	प्लीहा, गलगण्ड
भोजन	-	शाली, मत्स्य, गुड
आहार	-	मधुर
लोक प्रकृती	-	वात कफ

((कश्यप विषः विष - स्थावर, जांगम,
संयोगज- 1) गर, 2) कृत्रिम))

आयुर्वेद इतिहास

आचार्य / ग्रंथ	शतक
1) सुश्रुत, मिलिंद पन्हो, चरक	- 2 रे
2) कौटिल्य अर्थ शास्त्र	- 3
3) दृढबल	- 4
4) भदन्त नागार्जुन,	- 5
5) काश्यप, वराहमिहिर, अ.सं., भट्टार हरिशचंद्र	- 6
6) पाणिनी, स्वामीकुमार, अ.हृ., मा.नि.	- 7 (वर्तमान भेल संहिता)
7) नागार्जुन	- 8
8) कल्याणकारक, सिध्दसारसंहिता वृध्द माधव, योग शतक	- 9
9) चंद्रट, गयदास, नरदत्त	- 10
10) चक्रपाणी	- 11
11) डल्हण, वंगसेन	- 12
12) शारंगधर, अरूणदत्त, हेमाद्रि, आढमल्ल.	- 13
13) रसेंद्रचिंतामणि (ढुण्ढुकनाथ)	- 15
14) भाव प्रकाश, टोडरानन्द	- 16
15) योगतरंगिनी	- 17
16) शिवदास सेन	- 17
17) भै. र.	- 18
18) आयुर्वेद विज्ञान	- 19
19) हाराणचंद्र	- 20

आयुर्वेदावतरण

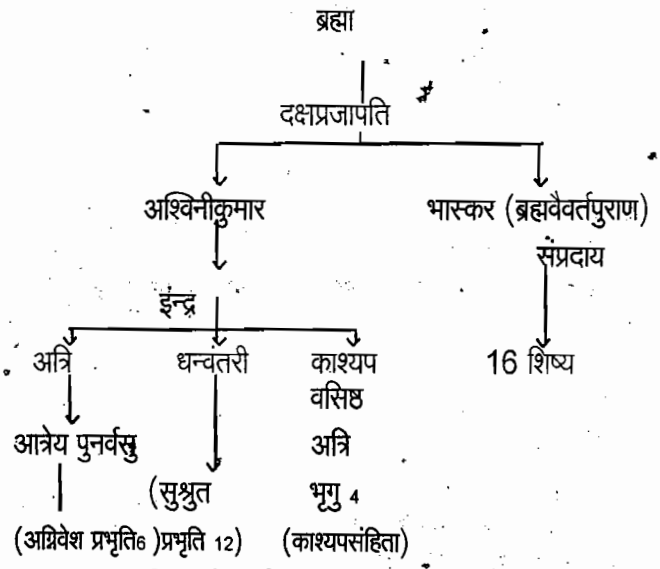

1) दक्षप्रजापती - पंचम वेद सूत्र, पिता - ब्रह्मा
(दक्ष, प्रजापती, काश्यप प्रजापती, माता - आदिशक्ति प्रच्योतक्ष)

2) अश्विनीकुमार-माता - सरण्यु,पिता- विवस्वान,दिव्य वैद्य (महाभारत)
हरितकी कल्प ..... (भा.प्र.) by अश्विनीकुमार
नकुल-अश्वविद्या,सहदेव-गोविद्या(दोनो अंश (अवतार) of अश्विनी कुमार)

3) इन्द्र (देवेन्द्र, मेषवृषण)- बलभीत संहिता, माता- आदिती / बाहुदंती
पिता - काश्यप प्रजापती

4) धन्वन्तरी - धन्वन्तरी इ.स.पू. 1500-1200 भिमरथ केतूमान काशीराज दिवोदास धन्वन्तरी

5) भास्कर - सुर्य, अग्नि, आदित्य,दिनकर
सूर्य - विष, पाण्डु, हृद्रोगनाशक

भास्कर संप्रदाय के 16 शिष्य:-

आचार्य	कृतियाँ	आचार्य	कृतियाँ
1. अश्विनिकुमार	- चिकित्सासारतन्त्र	2. यम	- ज्ञानार्णव
3. धन्वन्तरि	- चिकित्सातत्वविज्ञान	4. दिवोदास	- चिकित्सा दर्पण
5. काशिराज	- चिकित्साकौमुदी	6. अगस्त्य	- वैधनिर्णय
7. च्यवन	- जीवादान	8. जनक	- वैद्य संदेहभंजन
9. जाबाल	- तन्त्रसार	10. जाजलि	- वेदांगसार
11. कवध	- सर्वधर	12. नकुल	- वैद्यक सर्वस्व
13. सहदेव	- व्याधीसिन्धुविमर्दन	14. बुध	- सर्वसार
15. पैल	- निदान		

प्राग्वैदिक, वैदिक, प्रागैतिहासिक, ऐतिहासिक काल:-

सृष्टी उत्पत्ती में कारणीभुत घटक 6 (वैदयकशास्त्र)..... सु.
आदितत्त्व = ब्रह्म (माया) ....: (वेदान्त)
इत्युक्त कारण कार्य ..... (च.सू. 1) अन्नात पुरुष .... (तैतरीय उपनिषद)
20000 वर्षपूर्व 1st आदिवानव निर्मिती

1] प्राग्वैदिक काल - इ.स.पू. (20,000 - 10,000)
a) आदिमानव - इ.स.पू. (20,000 - 14,000) कल्पवृक्ष वर्णन
b) निसर्ग वैद्यक - इ.स.पू. (14,000-10,000)
a) आद्य वैद्यक b) आर्य वैद्यक
पाणगेंडा - अपने पैर की सिरा काटकर रक्तमोक्षण होने देता है।
सुतार (इबिस) पक्षी - अपनी चोंच गुदा में डालकर मल निकालता है
12 - 10 हजार वर्षपूर्व - हिंदू संस्कृती का उदय

2] वैदिक काल (इ.स.पू. 10,000 - 3,000)

3] प्रागैतिहासिक काल (इ.स.पू. 3,000 -1,200) -
100 अश्वमेघ यज्ञ पूर्ण करने पर इन्द्रपद.
i) मन्त्र संप्रदाय - ब्रह्मा, आचमन (जल)
ii) तन्त्र संप्रदाय - रुद्र (शिव, आदिनाथ भोले) - भिषक्, भिषकृतम, वेदांत, प्रथम भिषक्, जलाष.
रसवैद्य रुद्र को आदिनाथ - प्रथम आचार्य मानते है।

4] ऐतिहासिक काल - इ.स.पू. 1200 - 600
1) ऋग्वेद - छंदबध्द, पद्यात्मक शब्द - ऋचा, ऋचासे तयार अध्या - सुप्त,*10 मण्डयुक्त (पाणिनी इ.स.पू. 7 - 8 शतक - अष्टाध्यायी)
2) यजुर्वेद - a) शुक्ल यजुर्वेद - औषधी वनस्पती और रोगनाशक
b) कृष्ण यजुर्वेद - यज्ञकुंड
3) सामवेद - लयबध्द (गायन), तंतुवाद्य, चर्मवाद्य वर्णन
4) अथर्ववेद - आध्यात्मिक, अधिदैविक, अधिभौतिक शास्त्र

वेदांग6-
1) शिक्षा 2) कल्प 3) व्याकरण 4) छन्द 5) निरुक्ती 6) ज्योतीष

वैदिक वाङ्.मय-4 खंड -संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद, वेदांग

वेद	शाखा	ब्राह्मण/संहिता	उपनिषद	कल्पसूत्र	औषधी	आरण्यके
ऋग्वेद (ऋक्)	2 (शाकल, बाष्कल)	2 (ऐतरेय) कौषीतकी)	1 (ऐतरेय)	4	237 (67)	2 (बाष्कल, कौषीतकी)
यजुर्वेद (यजुष्)	6	3 (तैतिरीय, शतपथ, मैत्रायणी)	4	7	81(80)	2 (बृहदारण्यक, महानारायण)
सामवेद	3 (कौथुम, राणयनीय, जैमिनीय)	8	2 (छांदोग्य, केन)	5	-	-
अथर्ववेद (आयुर्वेद)	9 (उपलब्ध=२) शौनक, पैपल्याद	1 (गोपथब्राह्मण)	3 (मांडुक्य, मंडुक, प्रश्न	5	289 129 ब्राह्मण ग्रंथ 31- उपनिषद	-

उनकी उच्चारणपध्दती को (स्वर) संज्ञा और इसके 3 प्रकार -
उदात्त, अनुदात्त, स्वरित

वेद की संहिता -4-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

बौध्द उदयकाल इ.स.पु. 6 शतक, वेदनिर्मिती काल इ.स.पु. 12 शतक

वैदिक वाङ्.मय काल - इ.स.पू. 1200-600

लोकमान्य तिलक - कृत्तिका नक्षत्र के अनुसार शतपथ ब्राह्मणकाल इ.स.पू. 2000

वेदो में आयुर्वेद:-

आयुर्वेद उपकरण है और आयुष्य उपकार्य है।

वेद में 12 व्याधी और 3 हेतु का वर्णन (विष, क्रिमी, त्रिदोष)

ऋग्वेद में आयुर्वेद:-

1) रुद्र और वरुण का भिषक्, भिषकतम ऐसा वर्णन
2) इंद्र - वैद्यकशास्त्र का देवता
3) माता - औषधी
4) 67 वनस्पती औषधी उल्लेख
5) सोम = औषधी का राजा
6) जल यह औषध, अमृत Said : 1st मन्त्र वरुण स्तुती का
7) कृमीनाश हेतु सूर्य की प्रार्थना
8) 2 वायु वर्णन - i) प्राण = शरीर को बल प्राप्त
ii) अपान = शरीरसे पाप (दोष, रोग) बाहर निकालता है
9) हृदयरोग हेतु सूर्य किरण चिकित्सा.
10) त्रिदोष का स्पष्ट उल्लेख for this त्रिधातु word used.
11) पिप्पली का V रोगोंमे उपयोग
12) भिषकार्थ = रक्षोवहा और अभिवचानन शब्दप्रयोग

ऋग्वेद में अश्विनीकुमार का चिकित्सा कर्म:-

1) रजाश्वाला को दृष्टीदान।
2) प्रमती के पती का नंपुसक्य दूर किया।
3) च्यवन मुनी को तारुण्य प्राप्त ।
4) श्यनस कवी को उदरपाटन करके बाहर निकाला ।
5) विमद ऋषीकी पत्नी को गौरवर्ण प्राप्त ।
6) दीर्घतमा का दौर्बल्य, अंधत्व दूर ।
7) खेल राजा की संबंधिनी विशाला को 1 पैर अयस् (लोहा/तांबा) का लगाया।
8) पूषन मुनीका दंत जोडा (अत्रि के अग्निदग्ध चर्म का संधान, दधीची का शिर काटकर-मेष का शिर,सोमराजा का राजयक्ष्मा ठीक किया।

कायचिकित्सा- श्राव राजा की कुष्ठ चि.,यम (दर्भ) ऋषी का मदात्यय दूर, जुहू (ऋषी) के संतान को उत्तम बलप्राप्ती - बाल, ब्रह्मा का भगंदर, वरुण का जलोदर, इंद्र का नेत्ररोग और भुजस्तभ, कुबेर का मदात्यय (पानात्यय)

यजुर्वेदमें आयुर्वेद:-

कफ = वरुणशब्द, वायु = वायव्य, कृष्ण (वैशम्पायन) = 4 संहिता 11 शस्त्र, 40 अध्याय Like ब्राह्मणग्रन्थ

सामवेद में आयुर्वेद:- त्रिधातु = त्रिदोष (in अथर्ववेद)

अथर्ववेद में आयुर्वेद:-

1) वातजा for वात
मायु / शुष्म for पित्त
बलास / अभ्र for कफ
2) औषधीराजा = सोम
वृक्षों की रानी = तलाशा
3) सप्त सिन्धवा for सप्तधातु
सिन्धवा for उपधातु
4) ब्रीही और यव = अबलास
भूतचिकित्सा वर्णन
5) तक्मा for ज्वर
6) 289 वनस्पती नाम
7) कृमी = रक्ष, रक्षांसि, निश्चर, कृमी
कृमी नाशार्थ - सुर्य, अग्नि, इन्द्रप्रार्थना
8) अपची में शलाकासे वेधन, विद्रधीमें शैलाका से भेदन
9) संधानकर्म Said for रोग.

For वनस्पती- पिता = अतरीक्ष, माता = पृथ्वी, मूल = समुद्र
नेत्ररोगमें अंजन, मणि प्रयोग, अजनार्थ मधु प्रयोग
रोग निर्माण करनेवाले (राक्षस)-3 प्रकार के - क्रव्याद्, रक्तपायी, मनोहर
20 काण्ड.अग्नि, सूर्य = रक्षोघ्न, अथर्ववेद - भुतविद्या का प्रमुख ग्रंथ
रोग प्रकार - 2 a) शपथ्य = शापादिनिमित्त b) वरुण = आहार निमित्त
अथर्ववेद = ब्रह्मवेद, भृग्वंगिरस, अर्थवगिरस (पर्याय)
औषधी में - औषधी और रुद्र निवास
ज्वर - 25 भेद, 40 नाम - (तक्मा) विषमज्वर कें
आयुर्वेद अथर्ववेद का उपांग ..... सु.
आयुर्वेद ऋग्वेद का उपांग ..... व्यास
(याज्ञवल्कस्मृती और शुक्रनीति चरणव्यूह)
आयुर्वेद - पंचमवेद - ब्रध्यवैवर्त पुराण और काश्यप

उपनिषद और पौराणिक साहित्य

उपनिषद - गुरु के पास बैठकर प्राप्त किया ज्ञान
उपनिषद - वेदान्त Total 27 उपनिषद उल्लेख in वेदवाङ्.मय
भूताग्नि - ईश्वर,परिणाम, शिवा- सौम्य in उपनिषद,
(आत्रेय - सौम्य in चरक)

छांदोग्य उपनिषद - i) शरीर के संबंधमे तेजोबन्न
(तेज = पित्त, आप = कफ, अन्न = प्राण = वात)
ii) पाचित अन्न का 3 भागमें विभाजन a) स्थुल for पुरीष उत्पत्ति
b) मध्यम धातु उत्पत्ति - लोहिता c) अणु - मन निर्मिती
iii) ब्रह्मचतुष्पाद गायत्री चतुष्पाद वर्णन
iv) त्रयोधर्मस्कन्ध वर्णन

ब्रह्मारण्यक उपनिषद -
i) हिता नामक नाडी हृदयसे निकलती है।
ii) सुषुप्तिकाल में आत्मा हृदयके दहर नामक आकाशमें विश्राम करता है।
iii) मधुविद्या वर्णन iv) त्रिविध एषणा (पुत्र, वित्त, लोक एषणा)
v) मोक्ष - विपाक, विरज (in चरक ब्रह्म also)

प्रश्नोपनिषद - i) पुरुष - आत्मा और इसके 16 लक्षण
ii) चरक - आत्मलिंग = 16 (as above); षोडशकला भेषज (अ.स.)

व्याकरण शास्त्र का परिचय
पाणिनी - शब्दानुसासित / अष्टाध्यायी 8 अध्याय, 32 पाद, 3155 सुत्र
कात्यायन - वार्तिक
पतंजली - महाभाष्य
Above 3 (सूत्र, वार्तिक, महाभाष्य) Combinely known as पाणिनी व्याकरण शास्त्र
व्याकरण त्रिमुनी - सुत्रकार पाणिनी, वार्तिक कार कात्यायन, भाष्यकार पतंजली
i) कौमुदी - आचार्य श्रीरामचंद्र
ii) वैयाकरण सिध्दान्त कौमुदी - भट्टोजी दीक्षित
iii) मध्यसिध्दान्त कौमुदी - वरदराज
iv) पाणिनीयम - कुल 85 सूत्र
1) पाणिनी (आहिक, दाक्षीपूत्र, शालंकी, शालांतुरीय)
इ.स.पू. 7-8 शतक, पिता = शलु / शलंक, माता = दाक्षी
2) कात्यायन - वार्तिक इ.स.पू 350 पिता - कत
3) पतंजली- माता गोणिका (शेषावतार / फणामृत) इ.स.पू. 150

पौराणिक वैद्यक:-

रामायण	महाभारत
i) 1 व्यक्ति को लेकर	i) अनेक व्यक्ति.
ii) वाल्मिकी - ग्रंथरचियता	ii) व्यास पश्चात् अनेक लेखक.
iii) धर्मनिष्ठता,भक्तिमार्ग,इ.संस्कार वर्णन.	iii) कर्मप्रधान संस्कार
iv) काव्य स्वरूप	iv) गद्य पद्यात्मक (by व्यास), पद्यात्मक (कालीदास)
v) इ.स. पूर्व 7 शतक	v)इ.स.पूर्व7शतक(धन्वंतरी निघण्टु)

हारितसंहिता - 'वैद्यकसर्वस्व'- नकुल (इ.स.पू. 1500-1000)
जल 4 प्रकार (पापोदक, रोगोदक, अंशुदक, आरोग्योदक)
क्षयज कास - मधुयष्टी, कास - तुलसी, कुष्ठ - रसेंद्र (बाह्यलेपनार्थ)
सूत्रस्थान on 5th Position, i) अन्नपान - 23 ii) अरिष्ट - 9
ii) चिकित्सा- 58 iv) कल्प- 6 v) सूत्र-5
vi) शारीर-1 vii) परिशिष्ट-1

Total अध्याय 103
लवण ही जगह-क्षार रस वर्णन
वर्णानुसार 4 प्रकार का ज्वर वर्णन
गोवर्ण से दुग्ध गुणधर्म वर्णन
स्त्री वर्णानुसार दुग्ध वर्णन
प्रमेह में तक्रमेह, घृतमेह, खटिकामेह.
आमयुक्त रोग में लंघन, आमरहित रोगमें पथ्यपालन
शूल और क्षय - 6 प्रकार
वन्ध्या : 6 प्रकार

उत्फुल्लिका रोग वर्णन

काश्यपसंहिता
(काश्यपसंहिता नोटस् देखिए)

वंगसेन संहिता-
i) ऋतुनुसार जलपान ii) पंचकोल को आरोग्यपंचक कहा। iii) अन्नद्रव
शुल-दुश्चिकित्स्य महागद iv) आमवातादि में-दिव्य रसायन।

संहिता प्रवर्तक आचार्य :1)अग्निवेश (इ.स.पू. 1500-1000)
2) भेल - i) महानील घृत (कुष्ठरोगमें) ii) धान्वन्तरघृत - प्रमेह में
iii) तिक्तक घृत iv) सहचर तैल v) भेली यवागु
3) निमि - i) शालाक्य मुख्यत: ii) शालाक्यतन्त्र पर आद्यतन्त्र
a) निमि - निमितंत्र (आद्यप्रवर्तक /जनक) b) कांकायन - कांकायनतंत्र
c) गार्ग्य d) गालव

प्रतिसंस्कर्ता आचार्य

प्रतिसंस्कर्ता	काल	सूत्ररूप ग्रंथ	प्रतिसंस्कृत ग्रंथ
1) चरक	इ.स.पूर्व 2 शतक	अग्निवेशतंत्र	चरक संहिता
2) दृढबल(संपूरणकर्ता)	इ.स.पूर्व 4 शतक	चरक संहिता	चरक संहिता
3) सुश्रुत	इ.स.पूर्व (2)शतक	सौश्रुत तंत्र	सुश्रुत संहिता
4) नागार्जुन	इ.स.पूर्व 5 शतक	सुश्रुत संहिता	सुश्रुत संहिता
5) चंद्रट(पाठशुध्दिकर्ता)	इ.स.पूर्व 10 शतक	सुश्रुत संहिता	सुश्रुत संहिता
6) काशीराज	इ.स.पूर्व (6-5)शतक	वृध्दजीवकीय तंत्र	वृध्दजीवकीय तंत्र
7) वात्स्य	इ.स.पूर्व 7 शतक	वृध्दजीवकीय तंत्र	काश्यपसंहिता

अश्वघोष ने बुध्दचरित्र और सौदरानंद ग्रन्थ लिखा.
महाभाष्यमे उत्कन्दक और नडवलोदक व्याधी का उल्लेख
1) चरक - विशुध्दके पुत्र
2) दृढबल - संपुरणकर्ता चरक संहिता का
3) नागार्जुन : इ.स. 4-5 शतक
i) ग्रह और नक्षत्र प्रभावसे जनपदोध्वंस उत्पत्ति
ii) विषकन्या उल्लेख iii) विशाखा - रुग्णालय iv) अयस्कृति वर्ण
v) धातुपाकार्थ मुषा वर्णन
4) चन्द्रट : i) उपसर्ग - उपद्रव ii) शोणित चतुर्थे दोषे
5) वात्स्य:(प्रतिसंस्कर्ता और संपुरणकर्ता) of काश्यपसंहिता
संग्रहकाल: संग्रहकर्ता आचार्य - संग्रहग्रन्थ
अंष्टाग संग्रह:
i) चरक का कल्पस्थान और सिध्दिस्थान in कल्पस्थान of (अ. सं.)

ii) उत्तरस्थान में 8 अंग
* वैशिष्ट्य: बाल, ग्रह,
iii) कृतान्न में - धारिव
iv) समाग्री में - a) अ
b) ३
v) धात्वग्नि मंदता से ध
vi) रोग परीक्षा 4 साध
vii) हारिद्रक ज्वर new
ix) गुह्यरोग = 2 अध्य
xi) विष चिकित्सार्थ उप
xiii) पादलेप योग in वा
* रक्तपित्त = वासा, !
* **अष्टाग हृदय:**
i) रक्त को दुष्य कहा,
'जाठरेणाग्निना योगाद
स्याना परिणामान्ते स
iv) हरितक वर्ग में आर्द्र
v) वातरक्त - गुडूचि.
प्रमेह - हरिद्रा आमलर्व
बस्तिरोग - शिलाजीत
vi) तिमिर में गंधक युक्त
* (वराहमिहीर) -
i) ज्योतिष शास्त्री,
ii) क्षेम वृक्ष से दंतधाव
ii) अर्जुन वृक्ष से दंतध
iv) वृष्य द्रव्य चक्षुष्य
v) हिरा - प्राप्तीस्थान
धारण (वर्णानुसार) - ३
क्षत्रिय - रक्त, पीत.,
व्याख्या वाङ्.मय
टीकाकार परिचय
1) भट्टारहरिश्चंद्र
तन्त्रयुक्ती 4 extra
राजा-साहसांक (य
हुमता नुसार (खर
2) स्वामीकुमार/स्व

मध्यकाल 9-15
1) **जेज्जट** - 8/9 श
उदटने जेज्जट टीक
(10 शतक)
गयदास -10 व
न्यायचन्द्रिका/(
जा - गौडाधिपती
चन्द्रनन्दन - अ
डल्हण - सु. ि
ता - भरतपाल,
अरुणदत्त - अ.
ता - मृगांगकदत्त

ii) उत्तरस्थान में 8 अंग वर्णन:

* वैशिष्ट्य: बाल, ग्रह, भूतविद्या, उर्ध्वांग, शल्य, विष, रसायन, वाजीकरण.

iii) कृतान्न में – धारिका, इण्डरिका etc. new कल्प.

iv) सामग्री में – a) आहार पचन काल – 12 hrs. (4 याम.)
b) औषध पचन काल – 6 hrs. (2 याम.)

v) धात्वग्नि मंदता से धातुवृध्दि & vice rersa.

vi) रोग परीक्षा 4 साधन (आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान, प्रश्न)

vii) हारिद्रक ज्वर new वर्णन.viii) कामला – पाण्डुरोग के बिना भी हो सकता है।

ix) गुह्यरोग = 2 अध्याय में वर्णन. x) बालरोग = 12 संख्या.

xi) विष चिकित्सार्थ उपयोग. (e.g. हरताल, धत्तुर). xii) शिव गुटिका.

xiii) पादलेप योग in वाजीकरण. xiv) 26 शस्त्र माहिती.

* रक्तपित्त = वासा, प्रमेह = हरिद्रा, मेदोरोग – गुग्गुल.

* अष्टाग हृदय:

i) रक्त को दुष्य कहा, ii) षड्विध मर्म उल्लेख. (धमनि मर्म extra), iii) विपाक.

"जाठरेणाग्निना योगाद यदुदेति रसान्तरम्।
रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृत॥"

iv) हरितक वर्ग में आर्द्रक का अंतरभाव.

v) वातरक्त – गुडूचि. ज्वर – मुस्ता, पर्पट
प्रमेह – हरिद्रा आमलकी उदररोग – अयस्कृती
बस्तिरोग – शिलाजीत पाण्डु – मण्डुर वटक.

vi) तिमिर में गंधक युक्त और पारद युक्त अंजन उल्लेख.

* (वराहमिहीर) – बृहत्संहिता (इ.स. 6 शतक)

i) ज्योतिष शास्त्री,

ii) क्षेम वृक्ष से दंतधावन करने पर उत्तम भार्या (पत्नी) मिलती है.

iii) अर्जुन वृक्ष से दंतधावन करने पर उत्तम मित्र मिलता है.

iv) वृष्य द्रव्य चक्षुष्य * वृषत्व और नेत्र में संबंध. (शुक्र और नेत्र में संबंध)

v) हिरा – प्राप्तीस्थान – वेला नदि के किनारे, छत्तिसगढ, सोपारा.

धारण (वर्णानुसार) – ब्राह्मण – श्वेत हिरा.

क्षत्रिय – रक्त, पीत., वैश्य – शिरिषाभ, क्षुद्र – कृष्ण.

व्याख्या वाङ्.मय / टीका

टीकाकार परिचय – प्राचीन काल (6-8 शतक)

1) भट्टारहरिश्चंद्र – इ.स.6 शतक चरक– चरकन्यास
तन्त्रयुक्ती 4 extra वर्णन (व्युत्क्रान्ताभिधान, हेतु, परिक्षा,व्याकरण)
राजा–साहसांक (यशोधर्मन) सूर्यपुजक
हृदुमता नुसार (खरनाद संहिता) का प्रतिसंस्कार

2) स्वामीकुमार/स्वामीदास – 7 वा शतक चरक – चरकपंजिका
भट्टारहरिश्चंद्र टीका सुधार

मध्यकाल 9-15 शती:–

1) जेज्जट – 8/9 शती – बृहत्त्रयी टीकाकर – निरंतरपदव्याख्या –चरक
चंदटने जेज्जट टीका के आधारपर सुश्रुत संहिता की पाठशुध्दी की (10 शतक)

2) गयदास –10 वी शती
न्यायचन्द्रिका/(पंजिका/बृहत्पंजिका) निदानस्थानपर
राजा – गौडाधिपती महिपाल

3) चन्द्रनन्दन – अ.हृ. पदार्थचन्द्रिका

4) डल्हण – सु. निबंधसंग्रह, शतक -12.
पिता – भरतपाल, राजा – सहपाल

5) अरुणदत्त – अ.हृ. : सर्वांगसुंदर, 13 शतक,
पिता – मृगांगकदत्त, निवास वंगदेश

6) इन्दु – अ.सं. शशिलेखा 1250 (13 शतक)

7) हेमाद्री– अ.हृ. आयुर्वेद रसायन (सूत्र, कल्प, सिध्दी) पर उपलब्ध
वामन – वासुदेव – कामदेव (पिता) हेमाद्री.
चतुर्वर्गचिंतामणी, कालनिर्णय लिखा

8) शिवदास सेन 14 – शतक – चरक पर तत्वप्रदीपिका,
माता – भैरवी, पिता–अनंतसेन
अ.सं. तत्वबोध – तत्त्वचंदिका on चक्रदत्त
तत्त्वबोधव्याख्या अ.हृ. पर

आधुनिक काल (16 शतक से लेकर)

1) गंगाधर राय (19 शतक) चरकपर जल्पकल्पतरु
other ग्रंथ – आयुर्वेद संग्रह भैषज्य रामायण, मृत्युंजयसांहिता, परिभाषा भास्करोदय, नाडी परीक्षा–जन्म 1799, मृत्यु 1855

2) हाराणचंद्र – सु.–सुश्रुतार्थ संदीपन . 20 शतक, गुरु – गंगाधर राय
मृत्यु 1935.

लघुत्रयी :

1) माधव निदान: माधवकर * 7 शतक. (7 - 8) शतक. (रूग्विनिश्चय)
i) आयुर्वेद प्रकाश – माधव उपाध्याय, ii) रससिध्द – माधव भट्ट,
iii) माधव चिकित्सित – वैद्यराज माधव,
iv) पर्याय रत्नमाला – भिषक माधव – 9 शतक
v) रोग विनिश्चय – नरसिंह.
* माधव निधान में ब्रध्न रोग का निदान not वर्णन, but
पर्याय रत्नमाला में ब्रध्न रोग निदान & चिकित्सा both mentioned.
* (मधुकोष टिका) = 1) विजय रक्षित–अश्मरी तक. 2) श्रीकंठदत्त उससे आगे (आंतक दर्पण) – वाचस्पति, * (कुल अध्याय – 69)
* पूर्वार्ध–32 अध्याय (अश्मरी तक) * उत्तरार्ध –37 अध्याय (प्रमेह से विष रोग)
* अम्लपित्त स्वतंत्र अध्याय और दोष भेद से,
3 प्रकार (वातानुबंध, कफानुबंध, वातकफानुबंध)
* आमवात 1th वर्णन. * वातव्याधी में आवरण not mentioned.
* उरूस्तंभ, वातरक्त Seperate अध्याय.
* श्लीपद में कफ प्रधान (च.– श्लीपद in श्वयथु: सु. वृध्दि और उपदंश)
* 85 मुख्य रोग वर्णन,

टिका:
1.मधुकोष – विजयरक्षीत अश्मरीपर्यंत लिखी उसके आगे श्रीकण्ठदत्त –12वे शतक
2.आंतकदर्पण (अंतोलीदर्पण)– वाचस्पती– 14 वे शतक
3.रोगविनिश्चयविवरण (पर्याय–सिध्दांन्त चिंतामणी,अंतिम संस्कृतटीका)
नरसिंह कविराज – 17 वे शतक
4 सुबोधनी – वासुदेव
5.माधवनिदान टिप्पणी – भावमिश्र
6.रूग्णविनिर्णय टिका – भवानी सहाय्यकृत
7.वैद्य मनोरमा – रामकृष्णकृत
8.मधुश्रुषा –नरेन्द्रनाथशास्त्री

हिंदी टीका

1. शारदाव्याख्या – शारदाचरणसेन
2. विकोसिनी व्याख्या – दीनानाथ शर्माशास्त्री
3. विद्योतनी व्याख्या – सुदर्शन शास्त्री
4. विमला मधुधारा – ब्रम्हानंद त्रिपाठी
5. सर्वांगसुंदरी – लालचंद्र वैद्य

2) शारंगधर: (शारंगधर संहिता देखिए)
3) भा.प्र. (भा.प्र. नोटस देखिए)

4) गोविंददास: भैषज्य रत्नावली- 18 शतक,
क्लोमरोग, अंशुघात etc.
5) वसवराज: वसवराजीयम- (16 - 17) शतक. पिता - कोटटरू वसवराज
गुरू - रामदेशिक. प्राप्त पदवी - वैद्यजनाशिरोभूषण. कविता चातुरीधुरीण
* शंखद्राव पाठ 1st उल्लेख * अहिफेन औषधि प्रयोग
* पुष्पावरोध का निदान और चिकित्सा वर्णन.

महाभारतमें आयुर्वेद:-

मदराचल पर्वत + वासकी सर्प for समुद्रमन्थन, धन्वंतरी = 6th रत्न
आयुर्वेद में इन्हें अब्जधन्वंतरी संज्ञा, दानवगुरु = शुक्राचार्य,
देव गुरु = ब्रहस्पती

स्मृतिग्रन्थ:-

1)मनुस्मृति - i) सद्वृत्ताचरण नियम, ii) वनस्पती, वानस्पत्य, ओषधी विभाजन (वृक्ष... सु.)

2)विष्णुस्मृति - i) अयोग्य काष्ठ = शाल्मली, पारिभद्र, चिंच, अर्क
ii) वास्तु related नियम, आहार, ऋतुचर्या related नियम

3)बौध्दायन स्मृति - स्वेद का महत्त्वपूर्ण उल्लेख

4)याज्ञवल्क स्मृति - (तिसरी शती, इसमे चरक का प्रभाव) जैसे
i) अस्थिसख्या 360 ii) मासानुमासिक वृध्दी, गर्भवती आहार.
* नितिशास्त्र - कामन्दक स्वामिनी
* बाणभट्ट - हर्षचरित्र - कादंबरीकार

इ.स.6 शतक - गुप्तकाल - रसशास्त्र प्रौढीचा काल
- लोहवेध, देहवेध

कौटीलियअर्थशास्त्र-चाणक्य
(विष्णुगुप्त,मल्लनाग,वात्स्यायन, पक्षिलस्वामी)
चिकित्सक को 2 हजार पण वेतन. तन्त्रयुक्ति 32
-महान दैवी आपत्ती-8
-महाकच्छ की पुजा
-स्मशान में गायका दुध निकाले
-पर्व के दिन नागपुजा

अकस्मात मृत लक्षण
a) गला दबाने पर - i) मल-मूत्र विसर्जन हो ii) हात-पैर सुजे
iii) आंखे खुली iv) गले पर निशान v) आमाशय, वातसे परिपुर्ण
b) सुलीपर चढाने पर- i) आंखे धंस जाती है ii) नाभी फुलकर नीचे
c) पानीमें डुबनेपर- i) गुदव्दार बन्द ii) कटी हुयी जीभ iii) फुला हुआ पेट
d) विषसे - हात, पैर, दाँत, नख काले.
कुष्ठहर योग: प्रियंगु, नक्तमाल चुर्ण क्षयरोगहर-कुष्ठ, लोध्र
शिरोरोग - कट्फल, द्रवंती, विडंग
औषधी मात्रा - i) मनुष्य- अक्ष, ii) गो, बैल, अश्व- 2 अक्ष
iii) हाथी, उंट- 4 अक्ष
मद्य के 5 प्रकार- मेदक, प्रसन्ना, आसव, अरिष्ट, मैरेय
कालायस (लोह) ताम्र: वृत्त (पोलाद), कस (कासे)
प्रवाल - 2 (आलकंदक, वैवर्णिक)
युक्तोदक - स्वच्छ पीने का पानी

अन्य साहित्य और आयुर्वेद:-

1] जैन साहित्य - 15 महापुरुष - कुलकर (मनु)
63 महापुरुष शलाका पुरुष, गणनीय पुरुष
i) बलभद्र-9 ii) वासुदेव-9 iii) प्रतिवासुदेव-9 iv) चक्रवर्ती-12
v) तीर्थंकार-24, 1st ऋषभदेव,-24th -वर्धमान महावीर

ऋषभदेव :-
लौकिक षट्कर्म - असि, मसि, कृषी, शिल्प, वाणिज्य, विद्या
धार्मिक षट्कर्म (देवपूजनादि) पुरुषके लिए -72 कला (व्यवसाय)
स्त्री के लिए -64 कला (व्यवसाय). पूत्र भरत चक्रवर्ती
उग्रादित्याचार्य - कल्याणकारक i) 7 तत्त्व माने हैं (जैन)

श्रमण(जैन)साहित्यमें आयुर्वेद:-
रोग 16 प्रकार : रोगोत्पत्ती में 9 कारण।
उवा, लिख के काटने पे क्षयरोग और खाने के साथ जाने पे जलोदर
पुरीषरोधमे मरण और मूत्ररोध से दृष्टीहानी, उर्ध्ववायु रोध से कुष्ठरोग
वैद्य - प्राणाचार्य, विद्वान - दृष्टीपाठी
धन्वन्तरी प्रणित शास्त्र पढे हुए को महावैद्य
चिकित्सा के 4 पाद (वैद्य, रुग्ण, औषधी, प्रतिचर्या)
कुत्ता काटने पर व्याघ्र चर्म पर सुलाते हैं।
गंभीर व्रण में हंसतैल, कल्याणक घृत, तिक्तक घृत
कदर चिकित्सा - शस्त्रकर्म

2] बौध्द साहित्य:-
i) हर्षचरित्र - बाणभट्ट की कादंबरी ii) कौटिल्य अर्थशास्त्र-चाणक्य
iii) अ.सं. - वाग्भट, iv) बृहद्संहिता-वराहमिहिर
v) अ.हृ. - सिंहगुप्त सुनू वाग्भट
जीवक - बौध्दकालीन शल्य चिकित्सक
(कौमारभृच्च i) गुरु- आत्रेय मुनी कुमार मृत, कौमारभृच्च)

बौध्द साहित्यमें आयुर्वेद
1] त्रिपीटक : बौध्द का मुल धर्मग्रन्थ
इस में (सुत्त पीटक, अधिधम्मपीटक, महत्त्वपूर्ण विनयपीटक)
सदवृत्त नियम. गौतम बुध्द ने जेन्ताक स्वेद वर्णन.
रक्तमोक्षणार्थ श्रृंग प्रयोग
4 प्रकारके स्वेद (महा, संभार, कुंभ, जेंताक)
पाण्डु- गोमूत्र हरितकी, मांसवृध्दीपर लवण प्रयोग
राजा बिंबीसार का भगन्दर - एक ही औषधी लेपसे ठीक
व्यापारनी का शिरोरोग - घृतनस्य

2) बावर मॅन्यु स्क्रीप्ट-
7 हस्तलिखित-3 ग्रंथ आयुर्वेद संबधसे
राजयक्ष्मा, गण्डमाला में लसुनकल्प
अग्निवेश तन्त्र की 29 औषधी और भेलसंहिता की 15 औषधी
मांतगी, महामायुरी विद्या (also in (अ.सं.))

3) कुलालवदान - उर्ध्वगुद - हेतु - कृमी - चि. पलाण्डु
(मुखमार्ग से मलप्रवृत्ती)

सम्राट अशोक क
दिया ।
4) मिलंद पन्हो
प्राचीन विद्या
1) काशी विद्य
1918 में काश
(इ.स.पू. 16
2) तक्षशीला वि
i) प्रधान आ
शिक्षण
iii) चाणक्य,
3) नालंदा विद्या
(फहियान) स
मागध (व्दिर्त
आयुर्वेद व तंत्र
आक्रमण-By मह
4) विक्रमशीला
बगाल-भागलपु
आक्रमण-By मह
संहिता ग्रन्थ
1) चरकसंहिता f
2) सुश्रुतसंहिता f
3) अष्टांगसंग्रह fo
4) अष्टांगहृदय fo
प्रथम संहिता - ?
संहिताकालीन
a) आयुर्वेद ग्रन्थ
i) चरक संहिता
ii) सुश्रुत संहिता
iii) भेल संहिता
iv) हारित संहिता
चरक संहिता
i) सूत्रस्थान - ?
संग्रहार्थ
ii) निदानस्थान: i
ii
iii) विमानस्थान -
धातुवैषम्य निवृ
iv) शारीरस्थान- श
i) पुरुष
ii) जाति

दिया।

4) मिलंद पन्हो.

प्राचीन विद्यापीठः-

1) **काशी विद्यापीठ** (इ.स.पु.1500-1000)

1918 में काशी हिंदु विश्व विद्यापीठ की स्थापना

(इ.स.पू. 16-19 शतक) काशी संस्कृत विद्यापीठ

2) **तक्षशीला विद्यापीठ** (इ.स.पू. 1000?)

i) प्रधान आचार्य आत्रेय मुनी ii) जीवक को कपाल भेदनादि का शिक्षण

iii) चाणक्य, पाणिनी का शिक्षण

3) **नालंदा विद्यापीठ** (इ.स.पू. 4 शतक)

(फहियान) स्थापना- कुमारगुप्त प्रथम (5 शतक)

मागध (व्दितीय चंद्रगुप्त का पुत्र)

आयुर्वेद व तंत्र विद्या (रसविद्या)का उच्चशिक्षण.

आक्रमण-By महम्मद इब्र बख्तियार खिलजी

4) **विक्रमशीला विद्यापीठ** (9 शतक) स्थापना धर्मपाल

बंगाल-भागलपूर में बौध्द विहार में स्थापना

आक्रमण-By महम्मद इब्र बख्तियार खिलजी

संहिता ग्रन्थ

1) चरकसंहिता for इतिहास-(चरकसंहिता नोटस देखिए)

2) सुश्रुतसंहिता for इतिहास-(सुश्रुत संहिता नोटस देखिए)

3) अष्टांगसंग्रह for इतिहास-(अष्टांगसंग्रह नोटस देखिए)

4) अष्टांगहृदय for इतिहास-(अष्टांगहृदय नोटस देखिए)

प्रथम संहिता - ब्रह्म संहिता 1000 अध्याय, 1 Lakh shloka

संहिताकालीन आयुर्वेद ग्रन्थः-

a) आयुर्वेद ग्रन्थ	b) उपदेष्टा आचार्य	c) संहिता प्रवर्तक आचार्य
i) चरक संहिता	भरव्दाज	अग्निवेशादी शिष्य
ii) सुश्रुत संहिता	पुनर्वसु आत्रेय	सुश्रुतादि शिष्य
iii) भेल संहिता	काशीराज दिवोदास	निमि शिष्य
iv) हारित संहिता	काश्यप	वृध्दजीवक

चरक संहिता -

1) सूत्रस्थान - या सुमनसा सूत्र संग्रहार्थ विधीयते।

संग्रहार्थ तथाऽर्थानामृषिणां कृतः।। (च.सू.1/2 चक्रमपणि)

2) निदानस्थानः i) धातुवैषम्य ज्ञानार्थ निदानस्थानम्।... गंगाधर टीका

ii) हेतु लिंगाभिधायकं निदानस्थानमुच्यते।

3) विमानस्थान - विशेषेण मीयते ज्ञायते दोषभेषजादि अनेन इति विमानम्।

धातुवैषम्य निवृत्ती धातुसाम्यरक्षणार्थ विमानस्थानम्। (गंगाधर राय)

4) शारीरस्थान- शरीर कारणोत्पत्ती स्थितिवृध्दी आदिविशेषेः प्रतिपादयितुं

i) पुरुषस्य लोकसम्मित त्वम

ii) जाति शब्देन जन्म-कारणमुच्यते....(चक्रपाणी)

5) इंद्रियस्थान : नियतमरणख्यापकं लिंगमरिष्टम। ....(चक्र.)

6) सिध्दिस्थान - सिध्देरभिद्यायकं स्थानं सिध्दिस्थानम्।

(सिध्दि- वमनादि के असम्यक् योग, व्यापद)

त्रिधातु (त्रिदोष त्रिगुण)

सुश्रुतसंहिता -

25 तत्व, अनागतबाधा (ग्रहादि)

मिश्रक रोगाध्यायमें कर्णपालीगत रोग वर्णन.

शवविच्छेदन योग्य होनेपर (15 days / महिना) बाद पानीसे निकालते है।

उत्तरतन्त्रमें उपद्रव की चिकित्सा

वातव्याधी घृतद्रोणी और तेलद्रोणी उपयोग

लाघरक रोग वर्णन.

भेडसंहिता (भेल)

i) रचना: As चरक 120 अध्याय

ii) आलोचक पित्त-2 प्रकार (चक्षुवशेषिक, बुध्दिवशेषिक)

iii) जनपदोध्वंस - जनमार

iv) वातालिका ज्वरमें शरीरपर पिटिकाऐ उत्पत्ती

v) 7 पराप्रकृती- उत्पन्न by (अव्यक्त, महान, 5 महाभुत)

7 अपराप्रकृती - उत्पन्न by (स्वभाव, काल, 5 महाभुत)

vi) भोजनपूर्व - आमलकी, भोजनपश्यात हरितकी, भोजन जीर्णपश्यात् - बिभीतकी (चरक - भोजनपूर्वे व्दिबिभितके, भूक्त मधुसर्पिभ्य चत्वारामलके, जीर्णे तु अभया)

9 साध्य और 9 असाध्य कुष्ठ

दोष, धातु, मल - ओजस्थान except वात

ऋतुनुसार मैथुन - शिर-7 days मे, वर्षा- 9 days में, वसंत 15 days में, शरद - 10 days में, ग्रीष्म- 30 days में, हेमंत- 5 d ays में.]

परहित संहिता - आंध्रप्रदेश 15 वे शतक

टोडरानंद - आयुर्वेद सौख्य - टोडरमलकृत 16 वे शतक

विश्वकोषात्मक ग्रंथ.

आयुर्वेद विज्ञान - कविराज विनोदलाल सेन गुप्त.19 वे शतक

हंसराज निदान - वैद्य हंसराज पद्य में रोग निदान 17 वे शतक

अंजन निदान - अग्निवेश.

सिध्दान्त निदान - गणनाथ सेन - 20 वे शतक

प्रत्यक्ष शरिराम - गणनाथ सेन

रसशास्त्रः

पारद - शिववीर्य

सुतेन्द्र वीर्यप्रद - अंधक

गंधक - पार्वती रज

प्राणोरसेंद्रस्य - माक्षिक

अभ्रक - पार्वती शुक्र, पारद का नैवेद्य

अयस् (लोहधातु) चिकित्सा प्रयोग

मूषा - उपयोग - पार्थिव पदार्थ द्रावणार्थ, रसविध्द सुवर्ण - अष्टादश संस्कार युक्त

लोहवेधसंस्कार पारद + ताम्रधातु पातालसे मारण -सुवर्ण (लोहवेध)

लोहवेध - 18 संस्कार, प्रयोजन - देहवेधसे मोक्षप्राप्ती

देहवेध 8 संस्कार प्रयोजन - देहवेधसे मोक्षप्राप्ती

विकास: i) ऋग्वेद - हिरे से आभुषण ii) अथर्ववेद शिसे कृमिनाशक लोहितायस (ताम्र), श्यामायस (लोह) iii) महाभारत - पारद और दरद देश उल्लेख

iv) अग्निपुराण - धातुमारण v) विष्णुधर्मोत्तर पुराण - अभ्रकद्रुती

vi) च.- भौमद्रव्य गण अयस्कृती

vii) सुश्रुत - a) उषकादि, त्रप्वादि गण

b) पारद का बाह्य प्रयोग c) मुषा-for धातु चुर्णार्थ प्रयोग

viii) अ.सं. a) अंधमुषा b) 2 लोह (कृष्ण, तीक्ष्ण) c) स्थालीपाक, आदित्यपाक d) पारद अभ्यन्तर प्रयोग

xi) बृहत्संहिता- a) पारद लोह वाजीकरणार्थ

1) रसेंद्रमंगल/ (कक्षपुट) (मागधी भाषा)	नागार्जुन	8 शतक	सबसे प्राचीन
2) रसहृदयतंत्र	भगवद्गोविंदाचार्य	10 शतक	21अवबोध प्रकरण.
3) रसार्णव	भैरवानंद योगी	10 शतक	लोक प्रिय. पटल
4) गोरक्षसंहिता	गोरखनाथ	12 शतक	खेचरी गुटीका,पटल बुभुक्षित पारद वर्णन
5) रसेंद्रचुडामणि	आचार्य सोमदेव	12 शतक	मुख्य आधार ग्रंथ.
6) रस प्रकाश सुधाकर	यशोधर भट्ट	12 शतक	रसकर्पूर, सौराष्ट्री
7) रसरत्नसमुच्चय	वाग्भट	13 शतक	रसशाला,रसलिंग पुजा (अध्याय)
8) रसरत्नाकर	नित्यानाथ	13 शतक	खण्ड
9) रसेंद्रचिंतामणी	आचार्य ढुण्ढुकनाथ	13 शतक	-
10) रसेंश्वरदर्शन	माधवाचार्य	14 शतक	पारदद्वारा मोक्षप्राप्ती
11) रसेंद्रसारसंग्रह	आचार्य कृष्ण गोपाल भट्ट	16 शतक	-
12) रसप्रदीप	प्राणनाथ सेन	16 शतक	-
13) रस कामधेनु	आ. चूडामणि मिश्र	17 शतक	
14) योगतरंगिणी	त्रिमल्ल भट्ट	17 शतक	तरंग
15) आयुर्वेद प्रकाश	माधवाचार्य	18 शतक	रसोफस,धातु उपधातु
16) रसतरंगिणी	सदानंद शर्मा	20 शतक	-
17) रसमित्र	त्र्यंबकनाथ शर्मा	20 शतक	-
18) पारदविज्ञानीयम्	वासुदेव द्विवेदी	20 शतक	-
19) रसामृतम्	यादवजी त्रिकमजी	20 शतक	-
20) भारतीय रसशास्त्र	वामन गणेश देसाई	20 शतक	उत्कृष्ट ग्रंथ.

सिध्द भैषज्यमणि माला - गुच्छ, रसकौमुदी - अधिकार, रसचिंतामणि - स्तावक, आनंदकंद - उल्हास

रससिध्द नागार्जुन के योग

1) कनकसुंदर रस - अतिसार 2) आयोग्यवर्धिनी वातरक्त

3) नागार्जुनाभ्र हृद्रोग 4) खगेश्वर रस - कुष्ठ

5) लघुसिध्दाभ्र रस - ग्रहणी

मनुष्येत्तर आयुर्वेद:-

नकुल- अश्वचिकित्सक, सहदेव - गव्यचिकित्सक

अश्वशास्त्र नकुल अश्ववैद्यक- जयदत्त विरचित - शालिहोत्र भोजविरचित

हस्तायुर्वेद पालकाप्य (जनक - निलकंठ) गजदर्पण - हेमाद्रि

आयुर्वेद का सार्वभौमत्व

नाम	काल	संशोधक	चिकित्सा शास्त्र
1) सुमेर (4000 - 5000)	इ.स.पूर्व	Leonatd wule in 1929	देवव्यपाश्रय चि. पर आधारित बारू नामक पुरोहित अरिष्ट विज्ञान (स्वप्न) मंत्र-तंत्र चिकित्सक - अशिपु औषधि चिकित्सक - असु
2) बाबुल	इ.स. पूर्व (3000 - 2000)	* बाबुल का बाद में नाम बॅबिलोनिया * हम्मुराबी वंश के राजा * आराध्य देवता मर्दुक	* रोग का कारण. i) अपवित्र पुरुष से बोलना. ii) भूत पिशाच iii) दैवी कोप * औषधी देवता = चंद्र. * पानार्थ कोष्ण जल.
3) असुर	इ.स. पूर्व (1500 - 1200)	* देश -असेरियन * शल्य - शालाक्य संबंधी * Thomson 660	प्राय: मंत्रतंत्रादि दैवव्यपाश्रय. * युक्तिव्यपाश्रय * अ.सं. वत अग्रय वर्णन; उदा. तीव्र उदरशुल - ज्येष्ठमध अश्मरी - सोरा उर : शूल - स्वेदन अतिसार - अफू
4) मिश्र	इ.स. पूर्व (4000 - 3000) का प्रयोग.	* New- Egypt. * लिखने हेतु विशेष घास से निर्मित पेपर से बने हुए.	* नाडी और हृदय परिक्षा * लिंगचर्म निर्हरण शस्त्रकर्म सर्व शरीर पेतु(रसवाहक नाडी) * Pyramids का देश. * Nile नदी. * बस्तिकर्म पक्षी के आधार पर
5) चिनी	ख्रिस्त पूर्व (3000)	* सम्राट-Shen Nang. ने Pentsao ग्रंथ लिखा * Accunlase = 388 (सूचिदग्ध स्थान)	* पंचपंच (महाभूतत्व) मूलतत्व * नाडी परीक्षणार्थ-11 स्थान * 1000 औषधी. * शंकुदग्ध चि.
	ख्रिस्त पूर्व (2650)	* Hwang T	रक्तप्रवाह वर्तुळाकार & वह भी नही रूकता.
	इ.स. पूर्व (1744)	* Kien Lung	- चिनी वैद्य का सोनेरी आदर्श 40 खंड.
6) फारस बुर्जुया-श्रेष्ठ फारसी चिकित्सक	इ.स. पूर्व 6 शतक	* Now = Iran. * राजा = Cyrus * 10,000 वनस्पति	* earlier = Persia * 3 चिकित्सक: i) शस्त्र चि. ii) औषध चिकित्सा iii) मांत्रिकी चिकित्सा
7) अरबी	इ.स. पूर्व 6 शतक		* प्रसिध्द चिकित्सक, i)Ibn Rabban - ul - Tabari ii) Geber- Abu Musa Jabbar भूतायो कोलीतचा (willo- the wisp) शोध इन्होने लगाया iii) Rhazes - सर्वोतम वैद्य (अरबी विद्या) देवी और गोदे पर ग्रंथ
सुश्रुत - सस्त्रद (त)			iv) Ali Abbas
चरक - सरक/शरक			v) Ijhak Judieus - 10
त्रिफला - इतरीफला			vi) Avicenna - Canon
चाणक्य - शानक			
* अ. सं. - अरबी भाषांतर अष्टांकर			
8) रोमन	ख्रिस्तपूर्व	* एटरूस्कन काला	प्रसिध्द चिकित्सक: (वैद्यराज)

(150)

i) Asclepedis = Prince of Physician

* Hippocrates= (460 - 650) इ.स.

ii) Diosoridis,

iii) Soranus = Gynae

नवजात बालक को प्रथम दो दिन मध एवं उष्णोदक।

Rickets प्रथम वर्णन.

iv) Aretaeus - 2 शतक

मधुमेह को Diabetes कहा.

9) ग्रीस इ.स.पूर्व (3000 - 2000)

* विद्वान = Pythagoras; Principle of Hormony

Plato, Hippocrates, Alexander (सिंकदर)

10) तिबेटी

ग्युदसी-तिबेटी ग्रंथ, संस्कृत भाषा का चतुस्तंत्र इस ग्रंथ का भाषांतर है.

i) Thaliand कुमारभट्ट को थायलंड वैद्य का जनक

ii) कंबोज (ब्रह्मदेश) नाट देवताके कोपसे रोगनिर्माण

iii) श्रीलंका सुवर्णव्दिप (मलेशिया), रत्नव्दीप (श्रीलंका)

व्दि. पराक्रमाबाहु- योगार्णव

* **Hippocrates:-** इ.स.पू. 460-450

पिता-Herodicus , गुरु-Heroclids, अधुनिक वैद्यक का पिता / जनक. 4 दोष माना (वात, पित्त, जल (कफ), रक्त)

पित्तदोष (Pituila Bile) Cause for दंतशोथ और दंतवेष्टन

Ampidoclis चतुर्भुतवाद सिध्दान्त (अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी)

Democratis संपुर्ण शरीर made by परमाणु (अणुवाद)

Hiroclits जग की प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशिल है।

Hiroclitsun -उपरोक्त के लिए cause अग्नि कल्याण सर्प विष चिकित्सा

Alexander पिता Phillips सिंकदर, गुरु - अरस्तु

Cesamu indicum- तील.

अल्कमियन - सिरा और धमनी में फर्क बताया Aristatle पिता Philip, गुरुप्लेटो

Herophilies आधुनिक Anatomy का जनक

अ. सं. सर्वरोग में कारण मंदाग्नि (च.) दोष

* **अशोक के शिलालेख:** अशोक इ.स. (273-232)

अतत्त्व - भेषजविद्या और धर्मप्रसारार्थ प्रकार 3 1) लघु 2) बृहत् - 14 बृहत. शिलालेख (चतुर्दश शिलालेख)

2) स्तम्भ चरक- i) जनपदोध्वंसको राजा का अधर्म कारणीभुत (च.वि.3)

3) ज्वरनिर्मिती शंकरकोप शांती विष्णु प्रार्थना

चिकित्साग्रन्थ:-

1) **वृन्दकृत सिध्दयोग** (वृंदसंग्रह) 9 वी शती - वृन्दमाधव

Ist described i) स्नयुक रोग ii) पारसिक यवानी

2) **चिकित्साकलिका**- तिसटाचार्य i) अर्श - कांकायन वटी

3) **ग्रहणी** - भुनिंबादि चूर्ण iii) श्वित्र नीलघृत .

4) **चक्रदत्त** - चक्रसंग्रह: चिकित्सासंग्रह - काल- 11वे शतक

i) हृदोग - मृगभंग ii) परिणामशुल शंखभस्म iii) ज्वर, गृध्रसी- शेफालीपत्रस्वरस iv) मुखरोग - सहकार गुडिका

चकदत्त पे रत्नप्रभा टिका निश्चलकर

4) वंगसेन 12 वे शतक- चिकित्सासारसंग्रह-Ist वर्णन

i) सोमरोग ii) उदररोग में शंखद्राव iii) राजयक्ष्मा जातिफलादि चूर्ण (भंगा used in it Ist) iv) स्नायुक- तन्तुक

5) योगतरंगिणी - त्रिमल्लभट्ट-17 वे शतक- फिरंग में शंखिया का सर्वप्रथम प्रयोग योगतरंगिणी-81 तंरग चिकित्सा ग्रंथ

बृहद योगतरंगिणी- 148 तंरग

6) योगरत्नाकर No लेखक Typhoid मंथर ज्वर, फिरंग-चंदक व्रण-रसकर्पुर. तमाखू 1st वर्णन. नेत्ररोंगी - भीमसेनी कपूर.All आयुर्वेद except शारीर और शल्य. उत्फुल्लिका वर्णन.

7) भैषज्यरत्नावली- गोविंददाससेन

8) चिकित्सादश - पं राजेश्वरदत्त शास्त्री

9) चिकित्साप्रदीप - भास्कर गोविंद गोखले

10) चिकित्सतत्ता प्रदिपिका - महावीर प्रसाद

11) चिकित्सामंजिरी - रघुनाथ मनोहर

12) योगरत्नसमुच्चय - (चंद्रटकृत त्रिसट पुत्र)

योगसंग्रह

1) नावनीतक - सिध्दसंकर्ष Ist वर्णन रसोन

2) योगरत्नसमुच्चय- चंद्रट-10 अधिकार में वर्णन

3) राजमार्तंड- राजा भोज

4) गदनिग्रह - सोढल-2 खण्ड i) प्रयोग ii) चिकित्सा

Ist described i) स्नायु at गण्डप्रदेश ii) अर्ककल्पना

5) शतश्लोकी- बोपदेव-स्वयंलिखित व्याख्या- चन्द्रकला

6) वैद्यामृत- मोरेश्वर

7) योगचिंतामणी/सारसंग्रह-जैनहर्षकीर्ति

8) वैद्यविनोद- शंकरभट्ट

9) सिध्दभेषजमणिमाला/भैषज्यमणिमाला-कृष्णराम भट्ट

10) सिध्दयोगसंग्रह- आचार्य यादवजी

वैद्यककाव्य

1) वैद्यजीव- लौलिम्बराज

2) सिध्दभैषज्यमंजुषा- जयदेवशास्त्रीकृत

3) वृत्तमाणिक्यमाला- त्रिमल्लभट्ट

युनानी वैद्यक

1) हिकमतप्रकाश और हिकमतप्रदीप - महादेव रचित

द्रव्यगुण

Ist निघण्टू- अष्टांग निघण्टू, निघण्टु

Ist described in गदनिग्रह i) आकारकरभ ii) अहिफेन iii) कर्पुरत्रय (पक्व, अपक्व, चिनक) iv) अर्ककल्पना v) जातीफल च.सु. वा., मुखशुध्दी गदनिग्रह - जातीफलादि चूर्ण vi) कुमार्यासव आभ्यंतर use (कुमारी- Ist वर्णन in अष्टांग निघंटू)

1) विषतिंदुक/कुचला-सोढल निघण्टू, कारस्कर- रा.नि., तिंदुक- धन्वन्तरी
2) केशर- अ.हृ. काश्मीरज then ध.नि.
3) तांबुल- धन्वन्तरी - बहुला, भै.र.- पर्णखंडेश्वर रस in ज्वर
4) तुवरक not in च but in सुश्रुत, आयुर्वेदविज्ञत- कुष्ठवैरी
5) धत्तुर not in च, सुश्रुत- 2 प्रयोग- i) बाह्य धत्तुरबीज- नाडीव्रण ii) आभ्यन्तर अलर्कविष
6) यष्टीमधु - क्लीतक due to आयत i) स्थलज ii) जलज
7) महानिंब- प्राचीन- अरलु, आधुनिक- श्योनाक
8) मायाफल- योनिशैथिल्यहर by राजमार्तंड
9) मेहंदी- अंगरागार्थ by सु., डल्हण मदयन्तिका - मेहंदी

केंद्रिय समिती/कमिटी

1) भोर -1945- अध्यक्ष डॉ. भोर
-देशी चिकित्सा पध्दती-सर्व निर्णय प्रान्तीय सरकार लें

2) चोपडा -1946 अध्यक्ष डॉ. रामनाथ चोपडा, सचिव- डॉ. व्दारकानाथ सभा के अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीपती- मद्रास के स्वास्थ्य मंत्री।
मिश्रवैद्यक पध्दती का एक ही पाठ्यक्रम।
आयुर्वेद और पाश्चात्य वैद्य का समन्वय कर एक दुसरे की कमी भरना।
आयुर्वेद का संशोधन विभाग हो।

3) पंडित - 1949 - अध्यक्ष डॉ. सी.जी. पंडित
ॲलोपॅथिक स्नातकों को आयुर्वेदिक/ युनानी शास्त्र स्नातकोत्तर अभ्यासक्रम में सिखाना नही। आयु प्रवेश योग्यता इंटर सायन्स।
आयु शिक्षणकाल 5 वर्षे

4) दवे - 1955 दयाशंकर त्रिकमजी दवे
वैद्यकीय शिक्षका का एक बोर्ड और faculty राज्यानुसार
भारतभर एक ही पाठ्यक्रम प्रवेशयोग्यता। interscience group और संस्कृत अनिवार्य। खेडेगांव में 3 महिने internship,
1 विद्यार्थी 5 रुग्ण इतने रुग्णशय्या हो।
शिक्षण $5^1/_2$ वर्ष। आयुर्वेदीय पदवी Graduate श्रेणी की
संपुर्णानन्द कमिटी 1958 आयुर्वेद प्रधानपाठ्यक्रम

5) उडुप - 1958 अध्यक्ष के एन उडुप
शुध्द आयुर्वेद अभ्यासक्रम सुरु रख.बनारस, पुणे, त्रिवेंद्रम यहां स्नातकोत्तर शिक्षणकैंद्र खुलवाऐं। आयुर्वेद फार्मसी का कोर्स सुरु करें।
रुग्णालय में आयुर्वेदिक वार्ड हो। चतुर्मुखी संशोधन पध्दती।

6) मुदलियार - 1959 अध्यक्ष डॉ. मुदलियार
आयुर्वेद के लिए Central coucil .
राज्यमें आयु. का स्नातकोत्तर अभ्यासक्रम सुरु करें।

7) व्यास - 1962 - डॉ. मोहनलाल व्यास
शुध्द आयु का अभ्यासक्रम तयार किया।

महाराष्ट्र राज्य Integrated Medical Association स्थापना 26/11/1961
(CCIM act G.O. - 1971) (CCIM/IMCC act - 1970)

* आयुर्वेद पत्र - पत्रिका

पत्रिका	प्रसिध्दिवर्ष	संपादक	प्रसिध्दिस्थान
1) आर्यभिषक	1889	पं.शंकर दाजीशास्त्री पदे	अहमदनगर (मराठी)
2) भिषकृ विलास	1893	-	Solapur (Marathi)
3) आरोग्यसुधानिधी	1901	पं. श्री. नारायण शर्मा	Kolkatta (Hindi)
4) सद्वैद्य कौस्तुभ	1905	प.शंकर दाजीशास्त्री पदे	अहमदनगर (हिंदी)
5) सुधानिधी	1907	पं. वैद्यनाथ शर्मा	Prayag(Hindi)
6) धन्वन्तरी	1924	वैद्य बाकेलाल गुप्त	Aligarh.
7) आयुर्वेद	1952	पं. गोवर्धन शर्मा छांगणी	Nagpur
8) स्वास्थ्य	1953	पं. ब्रह्मानंद त्रिपाठी	Kaleda (Ajmer)
9) सचित्र आयुर्वेद	1948	-	Kolkatta (बैद्यनाथ)
10) आयुर्वेद विकास	1952	-	Kolkatta(Dabur)
11) वैद्य सम्मेलन पत्रिका	1928	-	Delhi
12) आरोग्यदर्पण	-	वैद्य गोपीनाथ गुप्त	अहमदनगर (उंझा Pha.)
13) नागार्जुन	1957	श्री.लक्ष्मीकांत पाण्डेय	Kolkatta (English)
14) Journal of Nima	1956	-	Mysore
15) Jou. of Ayurveda Delhi.		1946	कविराज आशुतोष मुजुमदार
16) आयुवैद्य	-	वैद्य गणेशशास्त्री जोशी	Pune.
17) आयुर्वेद	-	वैद्य आप्पाशास्त्री साठे (घरगुती औषधे)	Mumbai.

* चरकाचार्य - कविराज धर्मदास वैद्य
* महानोपाध्याय उपाधि - द्वारकानाथ सेन/गणनाथ सेन
* सर्व प्रथम वैद्यरत्न - कवि. द्वारकानाथ सेन.
* कविराज - गंगाधार राय.
* पद्मभूषण - सत्यनारायण शास्त्री / शिवशर्मा
* पद्मश्री - K. N. उडुप्पा.

पुष्पफल, बृहतफल, तूलफल - अर्क
वल्लीफलं = कूष्माण्ड

* प्रयोजन
(वाक्ययोज
प्रबोधन प्रव
* संख्या:
iii) सुश्रुत -
* चरक औ
1) प्रयोजन,
* भट्टारहरि
1) हेतु
2) व्याकरण
3) परिप्रश्न
4) व्युत्क्रान्त
1) अधिकरण
यमर्थमधिकृ
मुख्य विषय
* अरुणदत्त
i) शास्त्राधिक
* मीमांसक
i) विषय ii)
2) योग: (जि
3) हेत्वर्थ:(उ
यदन्यदुक्तमन
यथा मृत्पिण्ड
तथा माषदुग्ध
कहा हुआ वा
उदा. जल से
माष, दुग्ध से
उदा चरक - र
4) पदार्थ: यो
पदस्य पदयो:प
अपरिमितश्च प
वेदोत्पत्ति अध
5) उद्देश: (सं
समासवचनं उ
उद्देशोनाम संक
6) निर्देश: उद
विस्तरवचनं
निर्देशो नाम स
7) उपदेश: (इ
एवमित्युपदेश।
ऐसा करना चा
उदा. स्नेहमग्रे
8) अपदेश: (इ
अनेन कारणेन
कार्य के प्रति व
अपदेशो नाम र
उदा. वाताज्ञलं
दुष्यपरिहार्यत्व

तंत्रयुक्ति

✻ **प्रयोजन:** 1) वाक्ययोजन, 2) अर्थयोजन
(वाक्ययोजनामर्थ योजनाश्च)..... (सु.उ.65)
प्रबोधन प्रकाशार्थास्तथा तन्त्रैस्य युक्तयः ।.....(च.सि.12)

✻ **संख्या:** i) कौटिल्य अर्थशास्त्र - 32, ii) चरक, वाग्भट(अ.सं.) - 36
iii) सुश्रुत - 32, iv) भट्टारहरिश्चंद्र - 40, v) भाव प्रकाश - 42

✻ चरक और अ. सं. ने सुश्रुत से 4 अधिक तन्त्रंयुक्ति वर्णन.
1) प्रयोजन, 2) प्रत्युत्सार, 3) उध्दार, 4) संभव.

✻ भट्टारहरिश्चंद्र द्वारा 4 तंत्रयुक्ति अधिक वर्णन.
1) हेतु – प्रत्यक्षादि मे समावेश
2) व्याकरण – व्याख्यान मे समावेश
3) परिप्रश्न – उद्देश मे समावेश
4) व्युत्क्रान्तभिधान – निर्देश मे समावेश

1) अधिकरण: (जिस अर्थ को लेकर कहा जाये)
यमर्थमधिकृत उच्यते तदाधिकरणं रसं दोषं वा। (सुश्रुत)
मुख्य विषय को लेकर दुसरे विषय कहते है।

✻ अरुणदत्त ने 5 प्रकार
i) शास्त्राधिकरण ii) स्थानाधिकरण iii) अध्याय iv) प्रकरण v) वाक्य

✻ मीमांसक – 5 अंग - अधिकरण
i) विषय ii) विशय iii) पूर्वपक्ष / उत्तरपक्ष iv) निर्णय v) सिध्दांत

2) योग: (जिससे वाक्य जोडा जाता है) येन वाक्यं युज्यते स योगः।

3) हेत्वर्थ:(अन्ये के लिए कही हुई जो बात दूसरे अर्थ को सिध्द करें)
यदन्यदुक्तमन्यार्थसाधकं भवति स हेत्वर्थः। (सुश्रुत)
यथा मृत्पिण्डोउद्भि प्रक्लिद्यते तथा
तथा माषदुग्ध प्रभृतिभिर्व्रणः प्रक्लिद्यत इति।।... सुश्रुत
कहा हुआ वाक्य अन्य अर्थ का साधक....
उदा. जल से मिट्टी का पिण्ड क्लेदयुक्त, वसही
माष, दुग्ध सेवन से व्रण क्लेदयुक्त
उदा चरक - यदन्तत्रभिहितं अन्यत्र उपपद्यते (च.सू.11)

4) पदार्थ: योऽर्थोऽभिहितः सूत्रे पदे वा स पदार्थः ।... सुश्रुत
पदस्य पदयोःपदानां वाऽर्थः पदार्थः
अपरिमितश्च पदार्थःशक्त पदम।.. (सु.)
वेदोत्पत्ति अध्याय व्याख्यास्यामः उदा.आयुर्वेदोत्पत्ति अध्याय

5) उद्देश: (संक्षेप में कहना) उदा. सूत्र
समासवचनं उद्देशः। यथा शल्यमिति।... (सु.)
उद्देशोनाम संक्षेपभिधानं....(चक्रपाणि) (संक्षेप में कहा हुआ)

6) निर्देश: उदा. संहिता
विस्तरवचनं निर्देशः। यथा शारीरमागन्तुकंचेति।....(सु)
निर्देशो नाम संख्येयोकतसे विवरणम।.....(चक्रपाणि)

7) उपदेश: (इस प्रकार से करें) कत
एवमित्युपदेश। न जागृयाद रात्रौ दिवास्वप्नंच वर्जयेत।...(सु.)
ऐसा करना चाहिए, उपदेशो नामाप्तानुशासनम।.....(चक्र)
उदा. स्नेहमग्रे प्रयुंजीत ततः स्वेदमन्तन्तरम

8) अपदेश: (इस कारण से ऐसा होता है)
अनेन कारणेन इति अपदेशः मधुरः श्लेष्माणमभिवर्धयति....(सु.)
कार्य के प्रति कारण का कहा जाना
अपदेशो नाम यत्प्रतिज्ञानार्थसाधनाय हेतुर्वचनमं।..... (चक्र)
उदा. वाताञ्जलं जलाद्देश देशान्कालः स्वभावतः। विद्यात दुष्यपरिहार्यत्वात।

9) अपवर्ग: exceptions (सब में व्याप्त होकर फिर अपकर्षण करना)
अभिव्यापनपकर्षणम अपवर्गः।.....(सु.)
विषोपसृष्टा अन्यत्र कीटविषाद इति।
उदा. विष में स्वेद निषेध except कीटविष
अपबर्गो नाम साकल्येनोद्दिष्टस्ये एकदेशापकर्षणं। (चक्र)
उदा. बासी अन्न अखाद्य except मांसहरित शुष्कशाकफल.

10) प्रदेश: (प्रकृता नुसार वैसा ही अन्य कार्य सिध्द करना)
प्रकृतस्यातिक्रान्तेन साधनं प्रदेशः।.....(सु.)
प्रकृत (present) विषय स्पष्ट करने हेतु अतीत (past) विषय का (आधार) उदा. देवदत्त का शल्य इस उपाय से निकाला.
यज्ञदत्त का भी शल्य इसी उपाय से निकलेगा.
प्रदेशो नाम यद् बहुत्वात अर्थस्य कात्स्न्यन....(चक्र)
अभिधातुम अशक्यम एकदेशेंन अभिधीयते।
उदा. अनुपानम एकदेशोऽयमुक्त प्रायोपयोगिकः।....(चक्र)

11) अतिदेश: (प्रकृत में न आयी हुई वस्तु को सिध्द करना)
प्रकृतस्थानागतस्य साधनं अतिदेशः।....(सु.)
प्रकृत लक्षणों के आधार पर अनागत का साधन.
उदा. वायु उर्ध्व से उदावर्त.
अतिदेशो नाम यतकिंचिदेव प्रकाश्यार्थम अनुक्तार्थसाधनायैव। (चक्र)
(वर्तमानस्थिती पर भविष्य की स्थिती का अंदाजा)

12) वाक्यशेष: (जिस अनुक्त पद सै वाक्य समाप्त किया जाए)
येन पदेनानुक्तेन वाक्य समाप्येत स वाक्यशेषः। ....(सु.)
पद के कहे बिना ही वाक्य समाप्त हो जाता है।
उदा. शिरःपाणि पाद .... कहने पर पुरुष ग्रहण बिना पुरुष का बोध
वाक्यशेषो नाम यल्लाघवार्थमाचार्येण वाक्येषु पदमकृतं गम्यमानतया पूर्यते।...(चक्र) उदा. जांगलजैः रसैः इत्यत्र मांसशब्दः पूर्यते

13) अर्थापत्ति: (जो न कहा हुआ भी अर्थ से प्रतिपादित होता है)
यद कीर्तितमर्थाद आपद्यते साऽर्थापत्तिः।...(सु.)
उदा. रात में दही नहीं खाना चाहिए.

14) विपर्यय: यत्राभिहितं तस्य प्रतिलोम्यं विपर्ययः।...(सु.)
जो कहा जाय उससे विरुध्द विषय का वर्णन
विपर्ययो नाम अपकृष्टात प्रतिपोदाहरणं।...(चक्र)

15) प्रसंग: (पूर्व कथित विषय को बार - बार कहना)
प्रकरणान्तरेण समापन प्रसंग:
प्रसंगो नाम पूर्वाभिहितस्यार्थस्य प्रकरण अगतत्वादिनां पुनरभिधानम (चक्र) पूर्वी वर्णन कीया प्रसंग पुनःवर्णन करना.

16) एकान्त: (निश्चय पूर्वक वचन)
सर्वत्र यद अवधारणेनोच्यते स एकान्तः।.....(सु.)
उदा. त्रिवृत्त विरचयति, मदनफल वामयति
एकान्ता नाम यद अवधारणेनोच्यते।.(चक्र) उदा. निज शारीर दोषोत्थ:

17) अनेकान्त: (कहिं ऐसा, कहीं दूसरा ऐसा होना)
क्वचित तथा क्वचिदन्येथेतिः यःसोऽअनेकान्त।.....(सु.)
उदा. कुछ आचार्य (वीर्य, द्रव्य, गुण, विपाक) से प्रधान
अनेकान्तानाम अन्यतर पक्ष अनवधारणम।....(चक्र)
किसी एक सिध्दातं पर स्थिर न होना

18) अनुमत: (दूसरे मत को स्वीकार करना)परमत अप्रतिषिध्दम अनुमतम.....(सु.)
अनुमतं नाम एकीयमतस्य अनिवारणेन अनुमननं....(चक्र)
उदा. 7 रस .....अन्यआचार्य

19) पूर्वपक्ष: आक्षेप पूर्वक प्रश्नः पूर्वपक्ष।.....(सु.)
पूर्वपक्षो नाम प्रतिज्ञातार्थसन्दूषकं वाक्यम्।.....(चक्र)
उदा. वातज प्रमेह असाध्य क्यों हैं।
20) निर्णय: विषय का विचार कर उनकी व्यवस्था करना
पूर्वपक्षस्योत्तरं निर्णयः।.....(सु.)
(पूर्वप्रश्न खंडन + उत्तर प्रश्न व्यवस्थापन)
निर्णयो नाम विचारितस्यार्थस्य व्यवस्थापनं। ....(चक्र)
21) विधान: (प्रकरण के अनुसार कहना)
प्रकरणानुपूर्व्याऽभिहितं विधानम।.....(सु.)
प्रकरण के (उत्पत्ति - क्रम) से कहा गया वचन
विधान नाम सूत्रकारश्च विधाय वर्णयति। उदा.रसादि धातु क्रमशःवर्णन
22) अनागतावेक्षण: (इस प्रकार से (आगे) कहेंगे)
वक्ष्यतित्यनागतावेक्षणम ।.....(सु.)
भविष्य में आनेवाले विषय का वर्णन
अनागतावेक्षण नाम यद अनागतं विधि प्रमाणिकृत्यअर्थसधना.(चक्र)
23) अतीतावेक्षण: (जो पहले कहा हो)
यद पूर्वमुक्तं तदतिक्रान्तावेक्षणम् ।....(सु.)
जो विषय पहले कहा हो उसका स्मरण (उल्लेख)
अतीतावेक्षणं नाम यद अतीतमोवोच्यते।.... (चक्र)
24) संशय: उभयहेतुदर्शनम संशयः।....(सु.)
दोनों प्रकार के हेतुओं का दिखाई देना
उदा. तलहृदयाभिघात - प्राणहर, पाणिपादछेदन अप्राणहर
संशयोनाम विशेषाकांक्षा निर्धारितोभयविषयज्ञान।...(चक्र)
उदा. स्वभाव, ईश्वर, काल....अनेक मत विश्वोत्पत्ति हेतु कहना.
25) व्याख्यान: (अतिरिक्त विषय का कहना)
तन्त्रेऽतिशयोपवर्णनं व्याख्यानं।...(सु.)
व्याख्यान नाम यत सर्वबुध्दंचविषय व्यक्रियते।.....(चक्र)
सर्वसामान्य हेतु किसी विषय का विस्तृत वर्णन.
26) स्वसंज्ञा: (अन्य शास्त्रो के समान न होना, लोक प्रसिध्द उदा.)
अन्यशास्त्र असामान्य स्वसंज्ञा।....(सु.) उदा. मिथुन - मधु + घृत
स्वसंज्ञा नाम तन्त्रकारै : व्यवहारार्थ संज्ञा क्रियते।....(चक्र)
ग्रंथ से अलग संज्ञा.
27) निर्वचन: निश्चितं वचनं निर्वचनम् ।.....(सु.)
(एकान्त निश्चय पूर्वक वचन)
उदा. इसमें आयु है। अथवा इससे आयु की प्राप्ती होती है
निर्वचन नाम पण्डितबुध्दिगम्यो दृष्टान्तः।....(चक्र)
28) निदर्शन: (दृष्टान्त देकर स्पष्ट करना)
दृष्टान्तव्यक्तिनिदर्शनम।.....(सु.)
निदर्शनं नाम मूर्खविदुषां बुध्दिसाम्यविषयो दृष्टान्तः।...(चक्र)
उदा. अज्ञात औषध विष के समान घातक है।
29) नियोग: (यही करना चाहिए)
इदमेव कर्तव्यमिति नियोगः।....(सु.) उदा. पथ्य भोजन ही करना
नियोग नाम अवश्यानुष्ठेयतथा विधानं।....(चक्र)
ऐसा ही करना चाहिए।
30) समुच्चय: (यह भी है और यह भी)
इदम चेंदचेति समुच्चयः।.....(सु.)
उदा. वमन, विरेचन, आस्थापन, अनु, शिरो, कर्म है।
समुच्चयो नाम यदिदं चेदं चेति कृत्वा विधीयते।....(चक्र)
31) विकल्प: ये/वो (यह अथवा वो) इदं वेदं इति विकल्पः।...(सु.)
विकल्पः पाक्षिकाभिधान।....(चक्र)

32) उह्य: (जो न कहा हो उसे बुध्दि से जानना)
यद अनिर्दिष्ट वृध्दा अवगम्यते तद उह्यम।...(सु.)
उह्य नाम यदनिबध्दं ग्रन्थे प्रज्ञया तर्क्यत्वेनोपदिश्यते।
ग्रंथ में न बताई विषय का स्वतः तर्क से समझना....(चक्र)
33) प्रयोजन: (कार्य आरंभ की संकल्पना करना)
प्रयोजन नाम यदर्थ कामयमानः प्रवर्तते।....(चक्र)
जिस अर्थ की उद्देश्य से किसी कार्य में प्रवृत्त हुआ जाता है।
34) प्रत्युत्सार:(तर्क एवं उपपत्ति द्वारा दुजे के विचार का खण्डन करना)
प्रत्युतसारो नाम उपपत्त्या परमतनिवारणम ।....(चक्र)
कारण देकर परमत खण्डन.
35) उध्दार: (दुजे का विचार खण्डन करके स्वमत रखना)
उध्दारो नाम पर पक्षदूषणं कृत्वा स्वपक्षोध्दरणम्।....(चक्र)
परपक्ष को दूषण दिखाकर स्वमत समाधान करना.
36) **सम्भव:** (जिसके द्वारा उत्पन्न)
संभवोनाम यद्यस्मिन्नुपपद्यते स तस्य सम्भवः।...(चक्र)

प्राचीन दर्शन

✻ सर्वदर्शन समुच्चय...
इसमें साख्य और योग दोनों को एक ही दर्शन की मान्यता।
आस्तिक दर्शन:
1) सांख्य: i) प्रकृति - पुरुष दोनों विरुध्द, भिन्न धर्मवाले
ii) प्रकृति - पुरुष:
अविवेकी – विवेकी
विषयरुप – अविषयरुप
सामान्य – असामान्य
iii) त्रिगुण के 4 वृत्ति: a)अन्योन्यभिभव, b) अन्योन्याश्रय,
c) अन्योन्याजनन, d) अन्योन्यामिथुन.
iv) प्रकृति – पुरुष संयोग कारण: 2
a) अंध(प्रकृति) पंगु (पुरुष) न्याय, b) वत्सविवृध्दि
v) प्रकृति अचेतन और पुरुष अप्रसवधर्मी:
सत्कार्यवाद - 5
असदकरणात् उपादानग्रहणात सर्व संभवाभावात्।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम।। (सां.का.)
परिणामवाद - कारणस्त्यव्यक्तं प्रवर्तते त्रिगुणतः समुदायाच्य।
परिणामतः सलिलवत् प्रति–प्रति गुणाश्रय विशेषता।। (सां.का.)
2) योग: योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः
i) प्रमुख आसन -10, कुंभक: 2 प्रकार
ii) सप्रज्ञा समाधि से अप्रज्ञा समाधि के तरफ जाने में 4 विघ्न,
(लय, विक्षेप, निद्रा, रसास्वाद)
3) **वैशेषिक:** i) मुख्य विचार - प्रमेय
ii) 2 परमाणु = व्दयुणुक; 3 द्वयणुकः= 6 परमाणु +1 त्र्युणुक
iii) वैशेषिक: उद्देश – तत्वज्ञान, आत्मा अनेक है।
प्रमुख टिकाकार – प्रशस्तपद, टिका – प्रशस्तपाद भाष्य
प्रशस्त पाद भाष्य पर टिका– व्योम शिवाचार्य – व्योमवति,
उदयनाचार्य – किरणावली,श्रीधराचार्य – न्यायकंदली.
(पीलूपाक= Chemial changes)
4) न्याय: (तर्कशास्त्र/अनुमान शास्त्र/पंचावयवन्याय शास्त्र/
परार्थानुमान शास्त्र) i) उद्दश: यथार्थ ज्ञान की उत्पत्ति.
शब्दादि प्रमाण की परीक्षा हेतु. (पिठरपाक = physical changes)
ii) व्याख्या: प्रमाणैरर्थपरिक्षण न्याय। ...(न्या. वात्स्यायन भा)

दर्शन	दर्शनकार	पर्याय नाम	प्रमाण	पदार्थ/तत्व	वाद	गुण	इतर
1) सांख्य	कपिल सांख्य	षष्टीतंत्र, कालिका, सांख्य कारिका	(3) प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द	25 परिणाम वाद	सत्कार्यवाद,	3 (सत्व,रज तम)	5 तन्मात्रा, अंध पंगु न्याय, सृष्टी उत्पत्ती तत्व 25 तत्व आस्तिक होकर मी इश्वर नही मानते।
2) योग	पंतजलि	पांतजल योगसुत्र, सेश्वर सांख्य,	(3) प्रत्यक्ष, अनुमान शब्द	26 इश्वर	परिणाम वाद	–	योगसुत्र – 195 सुत्रे, 4 पाद. अष्टांग योग, मुख्य 10 आसन.
3) वैशेषिक टिका दशपदार्थी	कणाद (उलूक)	औलुक्यदर्शन (भाष्य–प्रशस्तपाद)	(2) प्रत्यक्ष अनुमान	6 पदार्थ 26 तत्व उत्तरवैशेषिक 7 पदार्थ	आरंभवाद, परमाणुवाद पीलूपाक कार्यकारणद्रव्यवाद	कणाद–17 प्रशस्तपाद 24	द्रव्य, गुण, कर्मादी षटपदार्थ उपलब्ध, सुत्र संख्या 354 प्रमुख टिकाकार – प्रशस्तपाद
4) न्याय (न्यायवैशेषिक) तर्कसंग्रह	गौतम अक्षपाद	आन्विक्षिकी तर्क विद्या वादविद्या	(4) प्रत्यक्ष, अनुमान शब्द, उपमान	पूराणन्याय 16- तत्व/पदार्थ नवन्याय-7पदार्थ	आरंभवाद/ असत्कार्यवाद पिठरपाकवाद कार्यकारणवाद	24	प्रमाण – प्रमेय उल्लेख, 12 प्रमेय वर्णन.
5) मीमांसा (द्वादशलक्षणी)	जैमिनी शरभस्वामी प्रभाकर	पूर्व मिमांसा कर्म मिमांसा	5 – उपरोक्त 4+ अर्थापत्ती	रामानुचार्य–3 कुमारिल भट्ट–5 प्रभाकर - 8	नियतिवाद कर्मविपाकवाद	--	धर्म जिज्ञासा प्रथम अधिकरण व उसके 5 अवयव.
6) वेदांत (ब्रम्हसुत्र)	व्यास	उत्तर मिमांसा ज्ञान मिमांसा	6 - उपरोक्त-5 + अनुपलब्धि	--	आध्यात्मवाद एकत्ववाद विवर्तवाद	--	रज्जूसर्पन्याय, ब्रह्मं सत्यं जगण्मिथ्या व्यपदेशक्तू भूतानुगुण प्रवेश प्रक्रिया.
1) चार्वाक बार्हस्पत्य	चार्वाक	लोकायत	1 (प्रत्यक्ष)	--	स्वभाववाद बुध्दी प्रमाण्यवाद जडवाद(भौतिकवाद)	-- --	सृष्टीउत्पत्ती–4 घटकांद्वारे पृथ्वी, जल, तेज, वायु (आकाश नहीं)
2) जैन	जैन	आरहत दर्शन	2 (प्रत्यक्ष, अनुमान)	9	स्यादवाद/एकान्तवाद/-- निरिश्वरवाद/मोक्षमार्ग/ पूद्गलवाद/अनेकान्तवाद		7 तत्व + पाप, पूण्य – 9 पदार्थ
3) बौध्द त्रीपीटक (कुलालावदान)	गौतम बुध्द	अरहत	2(प्रत्यक्ष, अनुमान)		क्षणभंगुरवाद (संघातवाद संतानवाद)	--	4 सम्प्रदाय 4 द्रव्य–जीव, पूदगल, आकाश, काल. प्रतिल समुत्पाद.

योऽक्षपादमृषि न्यायः प्रत्यक्षपाद वदता वरमं....(वात्सायन न्या.सुत्र)
अक्षपादप्रणितो हि विततो न्यायपादा (न्यायमंजीरी सुत्र)

5) मिमांसा: सिर्फ तर्क के आधार पर आत्म तत्व का साक्षात्कार नहीं हो सकता, पूर्वामिमांसा -आयुर्वेद कर्मकाण्ड का अभ्यास किया.

6) उत्तरमिमांसा/वेदांत: वेदान्त और वेद विचार का सार प्रस्तान्तत्रयी से स्पष्ट किया. उत्तर ज्ञानकाण्ड का अभ्यास (प्रस्तान्तत्रयी - उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, भगवदगिता)

नास्तिक दर्शन:

1) बौध्द: सिर्फ ज्ञान आवश्यक नहीं आचार शुध्दी भी आवश्यक है।
i) द्वादश निदान, प्रतित्यसमुत्पाद -भवचक्र कैसे हमेशा घुमते रहते है।
ii) चतुर्विध आर्य सिध्द:

2) जैन: सत्य का समग्र रुप से विवेचन, अनेकान्तवाद सिध्दांत से हेतू प्राप्त करें.
i) मोक्ष के 3 साधन (रत्नत्रय)
a) अविधी ज्ञान b) मनःपर्यायज्ञान c) केवलज्ञान
ii) सप्तभंगी न्याय:, ii) रत्नत्रय वर्णन – (सम्यकदर्शन, सम्यकज्ञान (5 प्रकार), सम्यकचरित्र (5 महाव्रत))

(सांख्य– अंधपंगुन्याय - प्रकृति और पुरुष, रज्जूसर्पन्याय - वदात)

पंचीकरण (अन्योन्य प्रवेश प्रक्रिया): 1) चरक - प्रधान: महाभूत का 1/2 भाग, अन्य- महाभूत का प्रत्येक 1/8 भाग.
2) सुश्रुत - परस्परानुप्रवेश, परस्परानुग्रह, परस्परानुसंसर्ग

द्रव्य आश्रय (संयोग, विभाग, कारण) कर्म
कर्म: आश्रय गुणरहित (संयोग, विभाग, कारण)...तर्क
चरक: i) संयोग विभाग, ii) द्रव्याश्रित,
iii) कर्तव्यसक्रिया, iv) कर्म न अन्यद अपेक्षित.
द्रव्य: सर्वदा त्रिकालाबाधित.
✻ समवाय पदार्थ - नित्य, अपृथकत्व
समवाय के प्रकार नहीं क्योंकि नित्य
अभाव - वैशषिक वर्णन नही
चरक - स्वतंत्र अस्तित्व नही, सर्व सच्चासच्च
अस्तित्वरहित - अभाव - संसर्गाभाव, अन्योन्याभाव
संसर्गाभाव - प्राग्भाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव.

पदार्थ

✻ पदस्य पदयो पदानां वा अर्थाः पदार्थः। (सुश्रुत)
पदार्थ - पद +अर्थ, पद - वस्तू का ज्ञान होने का साधन
निरुक्ति - पदयते गम्यन्ते ऐन अर्थाःस पदार्थः।
1) पदस्य अर्थः पदार्थः।.....न्यायवैशेषिक.
2) अभिधेयत्व पदार्थ सामान्यलक्षमणम।.....तर्कदीपिका
3) प्रमिती विषयाः पदार्थाः।.....सप्तपदार्थि
4) पदप्रतिपादो अर्थ पदार्थः।.....तात्पर्यटीका

5) यः अर्थः अभिहित सूत्रे पदे वा सः पदार्थः।.....(सुश्रुत)
6) अपरिमिताश्च पदार्थाः। सुश्रुत.....* शक्तं पदम..।..सुश्रुत
* सुप्ति अन्त पदम।.....(व्याकरणकार)
* मायावादी वेदान्त: 2 (चित, अचित)
* रामानुजाचार्य, निम्बडाचार्य: 3 (चित, अचित,ईश्वर)
* कुमारीलभट्ट: 5
* मिमांसा - प्रभाकर: 8
न्याय वैशेषिक दर्शन ने (7) पदार्थ बताए, इन्हें शास्त्रीय पध्दती से सिध्द करने हेतु जिस पदार्थ का उपयोग होता है वह प्रमाण पदार्थ है। 7 प्रकार से मानव को ज्ञान होता है।
* पदार्थ 3 लक्षण:
i) अस्तित्व, ii) ज्ञेत्व, iii) अभिज्ञेत्व.... (प्रशस्तपादभाष्य)
* नवन्याय (व तर्कसंग्रह): 7 पदार्थ - i) द्रव्य, ii) गुण, iii) कर्म, iv) सामान्य, v) विशेष, vi) समवाय, vii) अभाव.
* पुराणन्याय:16 पदार्थ -
* चरक: 2 पदार्थ- i) सत्, ii) असत् - अभाव पदार्थ
* जैन दर्शन: 7 पदार्थ.... (अन्यजगह) 9 पदार्थ
* उद्दश... तर्कसंग्रह का - द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष समवाया ऽभावाःसप्त पदार्थाः।.....(तर्कसंग्रह)
* पद + अर्थ का तादात्म्य. संबंध व्याकरणकार
* शब्द + अर्थ का सांकेतरुप संबंध न्यायायिक

द्रव्य

* क्रियागुणवत समवायी कारणं इति द्रव्यं लक्षणम्।.....वैशेषिक
* यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायि यत्तद् द्रव्यम्।....चरक
* द्रव्यंलक्षणं तु क्रियागुणवत समवायी कारणं इति।.....सुश्रुत
नित्य / कारण द्रव्य - (9), अनित्य / कार्यद्रव्य- असंख्य
* कारण द्रव्य: मूर्त/परमाणु रूप द्रव्य 5, अमूर्त 4
अनित्य/कार्यद्रव्य: असंख्य, 2 प्रकार – सेंद्रिय (चेतन), निरिंद्रिय (अचेतन)
* पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशः कालदिगात्ममनांसि नवैवः।...(तर्कसंग्रह)
* खादिन्यात्मा मनःकालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहा।.....(चरक)
* चरक – आकाश से द्रव्य गणना की है।
मूर्त द्रव्य:
1) विशिष्ट आकार व चलनात्मक गुण रहनेवाला द्रव्य मूर्त द्रव्य है। उदा. पृथ्वी, जल, तेज, वायु, मन
अमुर्त द्रव्य: * सर्वव्यापी व विभु है। उदा. आकाश, काल,दिशा,आत्मा.
* कार्यद्रव्य: कारण द्रव्यों के परमाणु संयोग से उत्पन्न और अनित्य
* वैशेषिक – (3 प्रकार)
i) शरीरसंज्ञक, ii) इंद्रिय संज्ञक, iii) विषय संज्ञक.....(तर्कसंग्रह)
* सेंद्रिय चेतनम द्रव्यम् निरिंद्रियम अचेतनम्।
(वैशेषिक दर्शन महाभूत में 1 ही महाभूत का आधिक्य)
(प्रत्येक ज्ञानेंद्रिय एक ही महाभुत के अंश से बने है।)

महाभुत उत्पत्ति

1) सांख्य: प्रकृति-पुरुष संयोग-महत-अंहकार (चरक शारीर देखिए)
2) वैशेषिक: पृथ्वी, जल, तेज, वायू
परमाणू, 2 परमाणू = द्वयुणुक, 6 परमाणू =1 त्र्युणुक
* इस क्रम से महाभूत की उत्पत्ति
* आकाश महाभूत में परमाणु नहीं,
वह विभु, व्यापी के और नित्य द्रव्य है.
3) आयुर्वेद: महाभूतानि खं वायुः अग्निः आप क्षितीस्तथा।
शब्द स्पर्श रुप रस गंधश्च तद् गुणाः।
तेषामेकगुणः पूर्वो गुणवृध्दि परे परे।
पूर्वपूर्व गुणश्चैव क्रमशो गुणिषु स्मृतः॥ (च.शा.1)
4) **वेदांत:** जिस प्रकार का महाभूत हो उसकी तन्मात्रा -1/2 भाग और अन्य 4 तन्मात्रा प्रत्येकी 1/8 भाग इनके संयोग से प्रत्येक महाभूत उत्पन्न.

महाभूत	चरक	भा.प्र.	काश्यप	सुश्रुत	गुण
पृथ्वी	खर	गुरू	स्थैर्य	तम	14
आप	द्रव	स्निग्ध	द्रव	सत्व+तम	14
तेज	उष्ण	तीक्ष्ण	उष्ण	सत्व+रज	11
वायु	चल	रूक्ष	चल	रज	9
आकाश	अप्रतिघात	लघु	अप्रतिघात	सत्व	6

गुण:(प्रशस्तपादाक्त गुण)
* वायो नव एकादश तजसो गुणाः जलक्षितीःप्राणभृतां चतुर्दशा
दिककालयो पंच षडैवाम्भरै, महेश्वरे अष्टौ मनसः तथैव चा..(माहेश्वर सूत्र)
5 – दिशा काल: (संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग) - संख्यादि 5 गुण
6 – आकाश - उपरोक्त संख्यादि 5 + शब्द
8 – परमात्मा (महेश्वर) - (संख्यादि 5 + बुध्दि, इच्छा, प्रयत्न)
मन (संख्यादि 5 + परत्व, अपरत्व, संस्कार)
9 – वायु - (संख्यादि 5 + परत्व, अपरत्व, संस्कार + स्पर्श)
11 – तेज (9 + रुप, द्रवत्व)
14 – जल, पृथ्वी (। + गुरुत्व,रस, (पृथ्वी - गंध और जल- स्नेह))
आत्मा (प्राणभृता)-(संख्यादि 5 + संस्कार+(बुध्दि+सुख...प्रयत्न) + धर्म + अधर्म.

तर्कसंग्रह कूछमहत्वपूर्ण बिंदू :-
पृथ्वी: शरीरमंस्मदादीनाम्
जल: शीतस्पर्शवत्य आपः, शरीरं वरूणलोके
तेज: उष्ण स्पर्शवत् तेजः, शरीरमादित्यलोके
वायु: रूपरहितस्पर्शवान् वायु, शरीरमं वायुलोके
उपरोक्त महाभूत – प्रकार 2 – नित्य, अनित्य,
पुन: त्रिविध – शरीर, इंद्रिय, विषय भेदात.
आकाश: शब्दागुणमाकाशम्, तच्चैकं विभु नित्यं च.
काल: अतीतादिव्यवहार हेतु काल: सच्चैकं विभु नित्यं च.
दिशा: प्राच्यादिव्यवहार हेतु: दिक् सच्चैकं विभु नित्यं च.
आत्मा: ज्ञानाऽधिकरणमात्मा 2 प्रकार – जिवात्मा, परमात्मा., तत्रेश्वर सर्वज्ञ: जीवस्तु प्रतिशरीर भिन्ने विभु नित्यश्च.
मन: सुखाद्युपलब्धि साधनमिंद्रिय मन:।
प्रत्येक आत्मा में नियत होने से अनन्त परमाणु रूप और नित्य है।

पृथ्वी

* तद्यापा शरः आसीत् तत समहन्यत सा पृथ्वी अभवत्।
(जल का फेस कठीन होकर उससे पृथ्वी उत्पत्ति) (बृ. उपनिषद)
* अद्भ्यः पृथिवी।....(तैतरीय उपनिषद)
उत्पत्ति:
1) सांख्य : गंध तंमात्रा से पृथ्वी महाभुत उत्पत्ति
2) वैशेषिक: i) पृथ्वी उत्पत्ति परमाणु से
ii) पृथ्वी महाभूत का तेजमहाभूत से संबंध आने पर उसका रस, गंध, स्पर्श इन गुणों में बदलाव होता है। (पाकजोत्पात्ति)

3) आयुर्वेदः गंधतन्मात्रा 1/2 भाग+शेष तन्मात्रा प्रत्येकी 1/8 भाग
✻ पृथ्वी मर नामक जल की घनीभूत अवस्था है.
✻ तमोबहुला पृथ्वी।.....सुश्रुत
✻ अद्भ्यो गंधगुणा पृथ्वी।.....मनुस्मृती
✻ रुप रस गंध स्पर्शवती पृथ्वी।.....वैशेषिक
✻ शब्द गुण आकाश के अलावा किसी अन्य द्रव्य में नहीं रहता।.....(वैशषिक)
✻ शब्द गुण यह भूतांतर प्रवेशकृत इस स्वरुप से आकाश के साथ अन्य 4 महाभूत में भी होता है। (सांख्य, वेदान्त, आयुर्वेद)

प्रशस्त पादोक्त गुण:14

1. रुप - 7 (शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश, चित्र),
2. रस - 6,(जिव्हा (रसज्ञान) अग्र भागी – मधुर लवण, दानों पार्श्व – अम्ल, जिव्हा मुल - तिक्त, मध्यभाग - कटु)
3. गंध - विशेष गुण पृथ्वी महाभुत,4. स्पर्श-अनुष्णशीत
5. संख्या -1 नित्य, 6. परिमाण - परमाणु = अणु परिमाण, कार्यरुप पृथ्वी - महत परिमाण, 7. पृथकत्व, 8. संयोग,9. विभाग,
10. परत्व - जांगल देश पर,11. अपरत्व -आनुप देश अपर,
12. गुरुत्व - आद्यपतनस्य असमवायी कारणं गुरुत्वम।... (वैशषिक),
13. द्रवत्व - पाकज और नैमित्तिक द्रवत्व,14. संस्कार - तेज का पृथ्वी द्रव्यपर संस्कार होकर पाकजोत्पत्ति होती है।

जल

✻ जलत्व इस द्रव्य से समवाय संबंध रहने से द्रव्य को जल संज्ञा
✻ सत्वतमोबहुला आपः।.....(सुश्रुत)
✻ रुप रस स्पर्शवती आपो द्रव स्निग्धा। (वैशेषिक)
✻ सांसिध्दिक द्रवत्व। .....(मुक्तावली)
✻ वर्ण - शुक्ल, रस - मधुर, स्पर्श - शीतल

प्रशस्तपादोक्त गुण: 14

1. रुप - अभास्वर शुक्ल, 2. रस - मधुर रस वैशेषिक, 3.स्नेह,
4. स्पर्श - शीत एवं स्पर्शवत्यापः। ....(करिकावली), 5. संख्या,
6. परिमाण - परमाणुरुप जल - अणु/जलमहाभूत-विभू परिमाण
7. पृथकत्व, 8. संयोग, 9. विभाग,10. परत्व – दिव्य जल श्रेष्ठ, शरद ऋतु का हंसोदक श्रेष्ठ,11. अपरत्व,12. गुरुत्व - द्रवत्वं स्यंदकर्म कारणम्। आद्यस्यंदनस्य असमवायि कारणम् द्रवत्वम,
13. द्रवत्व - सांसिध्दिक द्रवत्व - अपवाद उंचपर्वत - नै. द्रवत्व, ध्रुवप्रदेश - नित्य घनत्व.
14. संस्कार गुरुत्व गुण से 'वेग' यह संस्कार उत्पन्न.

✻ **जल की अवस्था: 4**

1) अम्भ - आकाश - जल की सुक्ष्म अवस्था 'अमृतजल',
2) मरिच - आकाश और पृथ्वी के बिच में - आग्नेय - सोम,
3) मर - पृथ्वी पर स्थित जल, 4) आप - भूतल (धरती) के निचे

तेज

✻ तेजत्वभिसंबंधात तेजः। ✻ तेजोरुपस्पर्शवत.... (वै. दर्शन)
✻ अंधकार का नाश करनेवाले तेज की उत्पत्ति वायु महाभूत से हुई
✻ सत्वरजोबहुलोऽग्नि.... (सुश्रुत)
✻ वायोरग्नि.... (तैतरिय उपनिषद)
✻ रुप तन्मात्रा से उत्पत्ति (सांख्य)
✻ विषय: 4 - 1) भौमतेज – लकडी, उर्ध्वगति स्वभाव
2) दिव्य तेज – सूर्य (विद्युत),
(जलद्रव्य जिस तेजनिर्मिती का इंधन है, वह दिव्य तेज है)
3) औदर्य तेज – जाठराग्नि 4) आकरज तेज – सुवर्ण, रजत, ताम्र.
✻ आयुर्वेदानुसार सुवर्ण, रजत, ताम्र – पार्थिव है .....
✻ स्पर्श- उष्ण,(रुप-शुक्लभास्वरं),(नैमित्तिक द्रवत्व)..(मुक्तावली)

प्रशस्तपादोक्त गुण:11

1. रुप - शुक्ल भास्वर ....(तर्कसंग्रह), 2. स्पर्श - उष्ण,
3. संख्या, 4. परिमाण - अणु, महत, मध्यम, 5. पृथकत्व,
6. संयोग, 7. विभाग, 8. परत्व, 9. अपरत्व, 10. द्रवत्व - नैमित्तिक द्रवत्व आकरज तेज म,11. संस्कार
✻ आयुर्वेद - रस - अम्ल, लवण, मुख्यतः कटु, कर्म - दहन, पाचन, दारण, प्रभा, वर्णकर, प्रकाशन,

वायु

✻ रुपरहित स्पर्शवानः वायुः।.....तर्कसंग्रह
✻ रजोबहुलो वायुः।.....सुश्रुत
उत्पत्ति: 1. आकाशात वायु।..... तै. उपनिषद
2. स्पर्श तन्मात्रा से ।..... सांख्य
3. स्पर्श तन्मात्रा 1/2 + 1/8.....वेदान्त
4. परमाणु से।.....वैशेषिक
✻ बाह्सृष्टि का वायु: 3 कार्य से सिध्दता
1) स्पर्श, शब्द, धृति, कम्प,
2) आकाश में बादल की हलचल व धारण, 3) तिर्यक गति.

प्रशस्तपादोक्त गुण: 9

1. स्पर्श - अपाकज अनुष्णशीत स्पर्श, 2. संख्या -1 परमाणु में नित्य, 3. परिमाण, 4. पृथकत्व - एक पृथकत्व, 5. संयोग,6. विभाग,
7. परत्व - ग्रीष्म ऋतु में नैऋत्यदिशा से आनेवाला वायु - श्रेष्ठ,
8. अपरत्व - पूर्व दिशा से - कनिष्ठ,9. संस्कार - वेग
✻ वायु महाभूत का रस - कषायप्रधान, तिक्त अनुरस.... सुश्रुत
✻ अव्यक्तो व्यक्त कर्मा च रुक्षः शीतो लघु खरः। ..(सुश्रुत)
[स्पर्श: 3 प्रकार - 1) शीत – आप, 2) उष्णतेजसि, 3) अनुष्णशीतः पृथ्वीवाय्वोः]

आकाश

✻ शब्दगुणकम् आकाशम्। तच्चैक विभु नित्यं च
✻ आत्मा से आकाश उत्पत्ति।.....(तै. उपनिषद)
✻ शब्द तन्मात्रा से उत्पत्ति।.....सांख्य
✻ आकाश महाभूत के परमाणू नहीं, वह अनंत, अनादि, विभु, एक, नित्य है।.....वैशेषिक ✻ सत्वबहुलम आकाशम।.....सुश्रुत

प्रशस्तपादोक्त गुण – 6

1. शब्द - सिर्फ आकाश में (तर्कसंग्रह), 2. संख्या,3. परिमाण- विभू / परम् महत परिमाण,4. पृथकत्व, 5. संयोग, 6. विभाग.
✻ निष्क्रमणम् प्रवेशनम इति आकाशस्य लिंगम.... (वैशेषिक द.)
✻ विचितरंगन्याय स आकाश में उत्पन्न होने वाला शब्द अपने को समजता है।.....(प्रशस्तपाद)
शब्दोत्पत्ति: समवायि कारण - आकाश
असमवायि कारण - कंठ, तालु, स्थान आकाश संयोग
निमित्त कारण - वायु आघात
✻ कदम्बमुकुलन्याय/कदम्बगोलक न्याय से शब्दोत्पत्ति वा शब्द प्रसारण होता है।
✻ शब्द लक्षण: 2 - वर्णलक्षणात्मक - अ,आ.ई,
ध्वनि - वाद्यं से निर्मित

✻ कारणदृष्ट्या शब्द प्रकार - 3
1.संयोगज - नगाडे पर दंड का आघात
2. विभागज - बांबु की लकडी बनाते समय
3. शब्दज - उच्चारित शब्द
✻ शब्दवाहन में किसी माध्यम की आवश्यकता
1) प्रकाश वेग-1,86,000 mile/sec.
2) हवा में शब्द वेग-332 m./sec.
3) जल में शब्द वेग -1498 m./sec.
4) घन पदार्थ में शब्द वेग - हवा x 11
✻ पाणिनीनुसार वर्णोत्पत्ति स्थान: 8 -i) कण्ठ, ii) तालु, iii) मूर्धा, iv) दन्त, v) ओष्ठ, vi) नासिका, vii) उर, viii) शिर.
शब्द - अक्षरब्रह्म , परमनाद, शब्द ब्रह्म
मूलाधर - पराणी + बीजांकुरा वद नाद उत्पत्ति
स्वाधिष्ठान मणिपुर - पश्यान्ति वाणी
हृत्प्रदेश - अनाहत चक्र - मध्यमा वाणी
कण्ठतालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ - संघर्ष - वर्णसमुह = वैखरी

काल

✻ अतितादि, व्यवहारहेतु कालः। सचेको विभु नित्यंच ।..(तर्कसंग्रह)
✻ अपरास्मिन अपरं युगपत चिरं क्षिप्र इति काल लिंगानि।....(वै.द.)
✻ काल परापर व्यक्तिकर यौगपद्य चिर क्षिप्र प्रत्यय लिंगम्।
✻ कालः पुनः परिणाम उच्यते..(चरक)
✻ कला न लीयत इति कालः। ✻ संकलयति भूतानाम।
✻ एक, अनादि, विभु, नित्य, अनंत
✻ सभी कार्यो की उत्पत्ति स्थिती विनाश में काल - निमित्त कारण
✻ सांख्य - (काल) यह स्वतंत्र द्रव्य नहीं है।
काल प्रकार: 2 - क्षणादिक, आवस्थिक काल.
प्रशस्तपादोक्त गुण: 5
1. संख्या- एकत्व, 2. परिमाण - महत परिमाण,
3. पृथकत्व - एकपृथकत्व, 4. संयोग, 5.विभाग
✻ वैशेषिकानुसार क्रियोत्पात्तिकाल/क्षण यह काल का लघु परिणाम है
क्षण = क्रियोत्पात्तिकाल

2 क्षण =1 लव	15 अहरात्र =1 पक्ष
2 लव =1 निमेष	2 पक्ष = 1 मास
15 निमेष =1 काष्ठा	2 मास = 1 ऋतू
30 काष्ठा =1 मुहूर्त	3 ऋतू = 1 अयन
60 विपल =1 पल	2 अयन = 1 वर्ष (मानुषीय)
60 पल =1 घटका	
4 प्रहर =1 अहोरात्र	
100 वर्ष = 1 शताब्दि	

43 लाख 1,000 वर्ष =1 युग)... (5 वर्ष= 1 युग) .... सुश्रुत)
4 युग =1 चौकडी,1 हजार चौकडी =1 ब्रह्मदिन.
ब्रह्मदेव की 100 वर्ष पूर्ण होने के बाद सृष्टीप्रलय होता है।
ब्रह्मदेव -1 दिवस =14 मनु, 1 मनु = 71 युग
सध्य में वैव्रस्वत के 7 वे मनु में से 8 वा युग शुरू है।

दिशा

✻ प्राच्यादि व्यवहारहेतु दिका सचेका विभु नित्यश्चा ...(तर्कसंग्रह)
कूल दिशा -10, मुख्य दिशा - 4
पूर्व - सूर्य उगता है, पश्चिम - सूर्य डुबता है, उत्तर - ध्रुव तारा दिखने वाली., दक्षिण - अगस्ती तारा दिखणे वाली.
1. पूर्व - कौबेर, 2. पश्चिम - वारुणी,3. उत्तर - माहेंद्र (इंद्र),
4. दक्षिण - याम्या (यम),5. आग्नेय, 6. नैऋत्य,7. वायव्य,
8. ऐशानी, 9. उर्ध्व दिशा - ब्रह्म,10. अध - नाग.
प्रशस्तपादोक्त गुण: 5 - 1. संख्या - एक, 2. परिमाण - विभु महत,
3. पृथकत्व - एक पृथकत्व, 4. संयोग, 5. विभाग.
✻ नैऋत्य दिशा से आनेवाली वायु - सुखकारक है
✻ उत्तर दिशा से आनेवाली वायु - शीत, धूल युक्त
✻ पूर्व दिशा की और बहनेवाली नदियों का पानी - गुरु
✻ पश्चिम दिशा की और बहनेवाली नदियों का पानी - निर्मल, पथ्यकर

आत्मा

✻ ज्ञानाधिकरणम आत्मा।.....(तर्कसंग्रह)
स द्विविध - जीवात्मा, परमात्मा
तत्र ईश्वर सर्वज्ञ परमात्मा एक एव
जीवस्तु प्रतिशरीरः भिन्नो विभु नित्यश्च।
✻ सांख्य - आत्मा के जगह **पुरुष** शब्द प्रयोग करते है।
जीवात्मा गुण:14 - 1) बुध्दि, 2) सुख, 3) दुःख, 4) इच्छा,5) द्वेष, 6) प्रयत्न, 7) धर्म, 8) अधर्म, 9) संस्कार,10) संख्या- एक , 11) परिमाण - विभु,12) पृथकत्व - एक पृथकत्व,13) संयोग, 14) विभाग.
✻ पहले 8 सविकार आत्मा/ राशिपुरुष के गुण है
षोडश कला /कर्म पुरुष - (16 गुण) और भाव 56...(चरक, सुश्रुत)
✻ आत्मा शरीर में रहने की लक्षणे...(च.शा.)
प्राणापानौ निमेषाद्या...22 गुण
पुरुष पंचक - (विष्णु पुराण में वर्णन)
1) धृत्यात्मा 2) इंद्रियात्मा 3) प्रधानात्मा 4) जीवात्मा 5) परमात्मा
✻ निर्विकारः परस्वात्मा सत्वभूत गुणेंद्रियः।
चैतन्ये कारणं नित्यो द्रष्टा पश्यति हि क्रिया।....(च.सू.1)
✻ सचेतन शरीर का जीव /चैतन्य - क्षेत्रज्ञ
इसके अतिरिक्त सर्व सृष्टि /शरीर - क्षेत्र
✻ क्षेत्रज्ञ को चरक ने अव्यक्त कहा है।
जीवात्मा का पुनर्जन्म और उसकी परलोकता,
4 प्रमाण से सिध्द होती है (आप्त, प्रत्यक्ष, अनुमान, युक्ति)
✻ जागृती, सुषुप्ती, स्वप्न इन तीनों अवस्था में आत्मा ज्ञान लेते रहती है। तुर्या और उन्मनी ये 2 अवस्था योग मार्ग से अनुभव की जा सकती है।
(तुर्या - साक्षीरुप से ज्ञान ग्रहण, उन्मनी - तन्मयरुप से ज्ञान ग्रहण)
✻ परमात्मा को ब्रह्म शब्द....(च.शा.6)
✻ जीवपुरुष का वर्णन सूक्ष्म शरिरयुक्त आत्मा....(च.शा.2)
अतिवाहिक शरीरयुक्त आत्मा..... (चक्रपाणि)
(अतिवाहिक शरीर -सूक्ष्म शरीर -लिंग शरीर -लिंग देह-स्पृक शरीर)
✻ सुक्ष्म शरीर – (पृथ्वी, जल, तेज, वायु) के तन्मात्रा + मन + अहंकार + आत्मा +11 इंद्रिय),18 तत्व - सांख्य,
17 तत्व - आयुर्वेद + सांख्य सूत्रकार.
✻ ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः।.....(वेदान्त दर्शन)

मन

✻ मन - संसार चक्र की नाभि ।.....योग वसिष्ठ
✻ हृदय - मन का पर्याय।.....अमरसिंह
✻ मनज्ञाने बोधे
उत्पत्ति: ✻ वैकारिक अहंकार से तैजस अहंकार की सहायता से मन की उत्पत्ति....सांख्य,

✻ परमाणु स्वरुप नित्य द्रव्य....वैशेषिक ✻ मन नित्य है।. ..आयुर्वेद
अंतःकरण - मन + बुध्दि + अहंकार - अंतःकरण = 3
✻ मन + चित्त + बुध्दि + अहंकार - अंतःकरण चतुष्ट्य... (योग)
✻ मन+चित्त+बुध्दि+अहंकार+आत्मा - अंतःकरण पंचक..(वेदांत)
✻ मनसस्तु चिन्त्यमर्थः। ....(च.सू.8)
✻ सुखादि उपलब्धि साधनं इंद्रियं मनः।तच्च प्रतिआत्मानियत्वात अनन्तं परमाणुरुपं नित्यं च।
चेतनाधिष्ठान - हृदय .....(च.,सु.)
✻ अणुत्व व एकत्व मन के 2 गुण ....(चरक)
✻ सत्व- गुण, रज, तम - दोष
✻ सत्व, रज, तम = महागुण...(अष्टांगसंग्रह)

प्रशस्तपादोक्त गुण: 8

1) संख्या 2) परिमाण 3) पृथकत्व 4) संयोग 5) विभाग 6) परत्व 7) अपरत्व, 8) संस्कार - भावना यह आत्मा पर होनेवाला संस्कार (वैशेषिक)
✻ भावमिश्र नुसार मन प्रकार: 3 (सात्विक, राजस, तामस)
✻ धी, धृति, स्मृति = मन की शक्ति
✻ **मन के कर्म:4**
1) इंद्रियाभिग्रह - इंद्रियाधिष्ठान मनसःकर्म।....(चक्र)
2) इंद्रिय निग्रह - (अनिष्ट विषय से स्वत का नियमन करना)
3) ऊह -आलोचनं ज्ञान निर्विकल्पकम्। (जैसा है वैसा)
4) विचार – (हित अहित विषय)
✻ **मन के विषय: 5**... चक्रपाणि
1) चिन्त्य - करना/न करना, 2) विचार्य - होने वाला /न होनेवाला
3) उहयं - संभावना, 4) ध्येय - ध्येय भावना ज्ञानविषय
5) संकल्प - गुणवान या दोषवान.
✻ मन का अन्नमयत्व - छांदोग्य उपनिषिद में वर्णित
✻ मणिपूर चक्र =अहंकार का प्रमुख स्थान है। .... (योगशास्त्र)

मन का स्थान	ग्रंथ
हृदय -	चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता
शिर व तालु के मध्य-	भेलसंहिता
वक्षस्थ हृदय-	अ.हृ., अ.सं.

गुण

✻ समवायी तु निश्चष्ट कारणं गुणः।.... चरक
✻ द्रव्याश्रय, अगुणवान, संयोगविभागषु अकारणम् अनपेक्ष इति गुणलक्षणम।.....(वैशेषिक)
✻ अथः द्रव्याश्रिताज्ञेया निर्गुणाः निष्क्रिया गुणाः।.....(कारिकावली)
✻ विश्वलक्षणा गुणा।....(रसवैशेषिक)
गुण सिर्फ द्रव्य से समवाय संबंध से रहते है।
रुपादिनां गुणांना सर्वेषा गुणत्वाभिसम्बन्धो द्रव्याश्रित निर्गुणत्वं निष्क्रियत्वं...(प्रशस्तपाद)

गुण संख्या:
सांख्य - 3 (सत्व, रज, तम), वैशेषिक - 17
प्रशस्तपद, न्यायदर्शन, तर्कसंग्रह - 24
आयुर्वेद - 41, योगिंद्रनाथ सेन - 42 (मन के विषय- extra गुण)
✻ चक्रपाणि: 3 प्रकार गुण
सार्थ (वैशेषिक), आत्मगुण
सामान्य - गुर्वादि (शारीर), परादि
✻ युक्ति और अभ्यास आयुर्वेद के वैशिष्ट्यपूर्ण गुण
✻ भावना - आत्मा पर हानवाला संस्कार - वैशेषिक दर्शन
✻ भावना - द्रव्य पर होनेवाला संस्कार - आयुर्वेद
✻ वैशेषिकोक्त गुण: 17 कणाद
1) रुप,2) रस, 3) गंध,4) स्पर्श, 5) संख्या, 6) परिमाण, 7) पृथकत्व, 8) संयोग, 9) विभाग, 10) परत्व, 11) अपरत्व,12) बुध्दि, 13) सुख, 14) दुःख, 15) इच्छा, 16) द्वेष, 17) प्रयत्न.
24 प्रशस्तपाद, तर्कसंग्रह न्यायशास्त्र: उपरोक्त 17 + 1) गुरुत्व, 2) द्रवत्व, 3) स्नेह, 4) संस्कार, 5) धर्म, 6) अधर्म, 7) शब्द.
✻ आयुर्वेद -41 गुण
सार्थ - 5 -वैशेषिक /विशेष गुण,
बुध्दिः प्रयत्न – 6 = आत्मगुण/ आध्यात्मिक गुण. परादी – 10

गुर्वादि: 20 (हेमाद्रि)

गुरु	– बृंहण	x	लघु	– लंघन
मन्द	– शमन	x	तीक्ष्ण	– शोधन
हिम	– स्तम्भन	x	उष्ण	– स्वेदन
स्निग्ध	– क्लेदन	x	रुक्ष	– शोषण
श्लक्ष्ण	– रोपण	x	खर	– लेखन
सान्द्र	– प्रसादन	x	द्रव	–विंलोडन/स्यंदन
मृदु	– श्लथन	x	कठिन	–दृढीकरण
स्थिरा	– धारण	x	चल	– प्रेरण
सूक्ष्म	– विवरण	x	स्थुल	– संवरण
विशद	– क्षालन	x	पिच्छिल	– लेपन

✻ संयोग – अप्राप्ति पूर्वक प्राप्ति, ✻ विभाग – प्राप्ति पूर्वक अप्राप्ति

गुण: (तर्कसंग्रह)

1) शब्द – श्रोत्र ग्राह्यो गुण: शब्दः, **2) स्पर्श** – त्वगिन्द्रीय ग्राह्यो गुण. स्पर्शः, **3) गंध** – घ्राण ग्राह्यो गुणो गंधः, **4) रस** – रसनाग्राह्यो गुणो रसः, **5) रूप** – चक्षुः मात्र ग्राह्यो गुणो रूपम् 7 प्रकार (शुक्ल, पीत, नील, रक्त, हरित, कपिश, चित्र) अपांकज नित्य – भास्वर शुक्लं तेजसी, अभास्वर शुक्ले जले, पाकज अनित्य – पृथ्वी.
6-7) परत्वापरत्व: परऽपरव्यवहार साधारण कारणे परवात्वाऽपरत्वे।
8) संख्या: संख्या स्याद् गणितम्।,
प्रकार – 2 नित्य – (एकत्वादी), अनित्य
9) परिणाम – परिणामं पूनर्मानम्।
10) पृथकत्व – पृथकव्यवहार असाधारण कारण.
11) संयोग – संयुक्त व्यवहार हेतु संयोग:
12) विभाग – संयोगनाशको गुणो विभाग:
9 - द्रव्य पे आश्रीत – संख्या, परिणाम, पृथकत्व, संयोग, विभाग
गंध –पृथ्वी पर आश्रीत,रस – पृथ्वी,जल. रूप – पृथ्वी,जल, तेज.
स्पर्श – पृथ्वी जल, तेज, वायु. परत्वापरत्व– पृथ्वी, जल, तेज, वायु, मन.
13) संस्कार: ✻ संस्कारा ही गुणात्तर धानमा.... (च.वि.1)
✻ प्रकार: 3 - i) वेग - पृथ्वी, जल, तेज, वायु... मन (मुर्त द्रव्य)
ii) भावना - अनुभवजन्या स्मृतिहेतुभावना आत्मामात्रवृत्ती
ii) स्थितिस्थापक .....(तर्क)
14) अभ्यास: शीलनं सततक्रिया
15) युक्ति: युक्तिश्च योजना या तु युज्यते। ....(चरक)
✻ मात्राकालाश्रया युक्ति सिध्दिर्युक्ती प्रतिष्ठिता। ....(चरक)
16) गुरुत्व: ✻ आद्यपतना ऽसमवायिकारण, गुरुत्वमा.... (तर्क)
✻ पृथ्वीजल वृत्ति.
17) द्रवत्व: ✻ आद्यस्यंदनस्य असमवायिकारण द्रवत्वमा... (तर्क)

✻ पृथ्वीजलतेज मात्रवृत्तिः ✻ प्रकार: 2
1) सांसिध्दिक जल। (स्वाभाविक), 2) नैमित्तिक पृथ्वी तेजसो।
18) स्नेह: ✻ चूर्णादिपिण्डीभावहेतुर्गुणः स्नेहः।
(जल द्रव्य) ✻ जल मात्रवृत्ति **19) बुध्दि:** अध्यवसाय
✻ बुध्दि तु उहापाहज्ञानम्।.....(चक्रपाणि)
✻ सर्वव्यवहारहेतुर्ज्ञान बुध्दिः।...(तर्कसंग्रह, तत्वदीपिका)
✻ प्रकार: 2 - a) स्मृति, b) अनुभव
स्मृति: संस्कार मात्र जन्यं ज्ञानं स्मृति:।
अनुभव: तदभिन्न अनुभव:। 2 प्रकार - यथार्थ (4), अयथार्थ (3).
यथार्थ (4) - प्रत्यक्ष, अनुमिती, उपमिती, शब्द.
अयथार्थ (3) - संशय, विपर्यय (मिथ्याज्ञानं), तर्क.
✻ बुध्दि प्रकार: 6 (संज्ञाभेद से) - 1) शब्द बुध्दि, 2) स्पर्श बुध्दि, 3) रुप बुध्दि, 4) रस बुध्दि, 5) गंध बुध्दि, 6) मनो बुध्दि.
✻ बुध्दि गुण: 8 (सांख्य) - सात्विक: 4 + तामस 4.
सात्विक (4) - धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य (8)
ऐश्वर्य (8) - 1) अणिमा,2) महिमा,3) गरिमा,4) लाहिमा,5) प्राप्ति, 6) प्राकाम्य, 7) शशित्वम, 8) वशित्वम.
तामस (4)- 1) अधर्म, 2) अज्ञान, 3) अवैराग्य, 4) अनैश्वर्य.
✻ इच्छाजन्य गुण प्रशस्ती, ✻ द्वेष जन्य गुण निवृत्ती
✻ जीवनादृष्टजन्यो गुणो जीवनयोगीः।
20) सुख: अनुग्रहणलक्षणं सुखं। धर्मजन्य अनुकूल वेदनीय गुण सुखम।
21) दुःख: उपघात लक्षणं दुःखम।
अधर्मजन्य प्रतिकूलवेदनीय गुणःदुःखम।
22) इच्छा: ✻ आत्मा और मन के संयोग से सुख प्राप्ती हेतु इच्छा गुण की निर्मिती, ✻ निर्माण करने की इच्छा - चिकिर्षा
✻ नाश करने की इच्छा - जिहिर्षा इच्छा काम। तर्क
23) द्वेष: प्रज्वलनात्मको द्वेषः।...(प्रशस्तपाद) क्रोधो व्देष। तर्क
24) प्रयत्न: पदार्थ के प्राप्तिहेतु कर्म करनेमें उत्पन्न हुई प्रेरणा-प्रयत्न कृती प्रयत्न। तर्क
✻ धर्म- अधर्म
विहितकर्मजन्यगुणो धर्मः।.....(तर्क)
निषिध्दकर्मजन्यगुणो अधर्मः.....(तर्क)
✻ गुण - समवायि कारण और गुर्वादि गुण- शारीर गुण..(गंगाधर रॉय)

कर्म

✻ क्रियालक्षण कर्म - (रस वैशेषिक)
✻ यतकुर्वन्ति तद् कर्म - (चरक सू.26)
✻ कर्माकरण्योसंयोग क्रिया....(चरक)
✻ संयोगेच विभाग च कारणम् द्रव्यमाश्रितम।
कर्तव्यस्य क्रिया कर्म नान्यद अपेक्षते॥....चरक
✻ प्रयत्नादि कर्म चेष्टितम उच्यते।...चरक
✻ एकद्रव्य अगुणं संयोग विभागषु अनपेक्ष कारणम इति कर्मलक्षणम्॥...(वैशेषिक दर्शन)
✻ प्रकार - लौकिक, अलौकिक (आध्यात्मिक)
लौकिक - उत्क्षेपणादि: 5, सत्प्रत्ययादि: 3

कर्म - 5 (प्रशस्त पाद)	कर्म - 3 (प्रशस्त पाद)
1) उर्ध्वदेशसंयोगहेतुः उत्क्षेपणम। उदा. वमन	1) सत्प्रत्यय - ज्ञानपूर्वक कर्म
2) अधोदेशसंयोगहेतुःअपक्षेपणम। उदा. विरेचन	2) असतप्रत्यय- ज्ञानपूर्वक नहीं।
3) शरीरसन्निकृष्टसंयोग हेतुःआकुंचनम।	3) अप्रत्यय- अचेतन द्रव्य में होनेवाली हलचल,
4) शरीरविप्रकृष्ट संयोग हेतुःप्रसारणम।	
5) अन्य सर्व गमनं उदा भ्रमन, रेचन,स्पन्द.	

सामान्य

✻ नित्यम ऐकम अनेकाऽनुगतं सामान्यम।
✻ सामान्य प्रकार:

1) द्विविध - 2	i) पर सत्ता (तर्क)....(वैशेषिक)
	ii) अपरं द्रव्यत्वादि
2) चक्रपाणि -2	i) एकवृत्ति उदा. स्वप्न से कफवृध्दि
	ii) उभयवृत्ति उदा. मांस - मांसवर्धक
3) भट्टारहरिश्चंद्र - 3	i) अत्यंत सामान्य - द्रव्य गुणकर्म
	ii) मध्य सामान्य - एकत्व
	iii) एकदेश सामान्य - सदृश्यता
4) चक्रपाणि - 3	i) द्रव्यसामान्य - समवायिकरण
	ii) गुणसामान्य - असमवायिकरण
	iii) कर्मसामान्य - निमित्त करण

विशेष

✻ नित्यद्रव्यवृत्तयो व्यावर्तका, विशेषाः।
✻ सामान्य और विशेष ये दोनों पदार्थ बुध्दिसापेक्ष है।
सामान्य - विशेष सिध्दांत

द्रव्यसामान्य -	मांस भक्षणात मांस, रक्तक्षय में रक्त देना
गुणसामान्य -	गेंहू, उडद दाल से मांसवृध्दि, दूध से ओजवृध्दि
कर्म सामान्य -	दीवास्वाप से कफवृध्दि
द्रव्य विशेष -	गुवेधुक सेवन से मांसह्रास (क्षय) क्षारप्रयोग - धातुक्षय
गुणविशेष -	वातवृध्दिपर तैल
कर्मविशेष -	स्थूल व्यक्ति में धावन कर्म,श्रमजन्य क्षीणता में आस्यासुख, निद्रा

✻ सामान्य - यह द्रव्य, गुण, कर्म तिनो पदार्थपर रहता है, विशेष सिर्फ द्रव्य में रहता है।
(शरीर में चयापचय प्रक्रिया का संबंध वैशेषिक के पाकजोत्पत्ति और सांख्य के परिणामवाद से है।)
(सामान्य, विशेष -विस्तार से दाड के लिए - च. सु 1- दखिए

समवाय

✻ नित्यसम्बन्ध : समवायः।
✻ प्रकार: 2 - नित्य संबंध (समवाय - पदार्थ में)
अनित्य संबंध (संयोग - द्रव्य में)
✻ समवायों ऽपृथकभावो भूम्यादिना गुणैर्मतः।
स नित्यो यत्र ही द्रव्य अनियतो गुणः॥

अभाव

✻ यह 7 वा पदार्थ माना है। उत्तरकालीन नैयायिक
✻ आयुर्वेद अभाव पदार्थ नहीं मानता है।
✻ अनुपलब्धि अभावः।..... (आचार्य निरंजनदेव)
✻ प्रकार: 2 - संसर्गाभाव, अन्योन्याभाव
संसर्गाभाव: 1) प्राग्भावः अनादि साऽन्तःप्राग्भव, उत्पत्तेःपूर्व कार्यस्य
2) प्रध्वंसाभाव: सादिरनन्तःप्रध्वंसः, उत्पत्त्यनन्तंर कार्यस्य
3) अत्यन्ताभाव: तिनो काल में रहनेवाला, कालमर्यादा नहीं, तलवे पर बाल नहीं.

अन्योन्याभाव: वात में कफ का अभाव, इस शय्या पर रुग्ण नहीं.

कारण

✻ कारणं नाम तद् यत करोति स एवं हेतु स एवं कर्ता (च.वि.)
✻ कार्य नियतपूर्ववृत्तिः कारणम।.....(तर्कसंग्रह)
✻ कार्योत्पादकत्वं कारणम.....(सप्तपदार्थी)
✻ प्रकार: 3 - 1) समवाय कारण:
यत्समवेतम कार्यमुत्पद्यते तत समवायी कारणम।
उदा. तन्त्व : पटस्य, पटस्य स्वगतरुपादेः।
2) असमवायि कारण: उदा. तन्तु संयोग पटस्य।
3) निमित्त कारण: उदा. तुरीवेमादिक पटस्य।
✻ द्रव्य - कार्य का समवायी कारण.
✻ गुण - कार्य का असमवायी कारण.
✻ प्रकुपित दोष, विकृत धातु व स्त्रोतसे - व्याधि के समवायि कारण
दोष दुष्यसम्मुर्च्छना - असमवायि कारण.
✻ ध्योतक कारण - शब्द के अर्थ से तात्पर्य ग्रहण करणे का उपयुक्त कारण।

कार्य

✻ कार्य प्राग्भाव प्रतियोगी।
✻ कार्य क उत्पत्ति पूर्व कार्य का अस्तित्व मान्य नहीं।(न्यायवैशेषिक)
✻ प्रकार: 2 - सांख्य, वेदान्त.
1) समवायि (उपादान कारण), 2) निमित्त कारण
प्रकार: 3 - (कारिकावली)

प्रत्यक्ष

✻ इंद्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नज्ञान अव्यपदेश अव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्ष।.....(न्यायदर्शन)
✻ प्रतिविषय अध्यवसायो दृष्टम प्रत्यक्षमः। (सा.का)
✻ इंद्रियार्थ सन्निकर्षजन्य ज्ञान प्रत्यक्षम।....(तर्कसंग्रह)
✻ प्रकार: 2 -1) सविकल्प - सप्रकारकं ज्ञान सविकल्पकम।
उदा. यथे द किंचिद् (यह कुछ है)
2) निर्विकल्प - निष्प्रकारकं ज्ञानं निर्विकल्पम।
उदा. डित्थोऽयम्, ब्राह्मणोऽयम, श्योमोऽयमिति.
✻ सन्निकर्ष भेद: 6
प्रत्यक्षज्ञान हेतुरिंद्रियार्थसन्निकर्ष षडविधः।
1) संयोग सन्निकर्ष, 2) संयुक्त समवाय, 3) संयुक्त समवेत समवाय
4) समवाय, 5) समवेत समवाय, 6) विशेषविशेष्यभाव
उदा. भूतले घटाऽभावस्य.
✻ सदोष लक्षण: 3 प्रकार (अव्याप्ती, अतिव्याप्ती, असंभव)
✻तर्क उद्दश: 3 - 1) उद्दश, 2) लक्षण, 3) परिक्षा – श्रेष्ठ
अविज्ञान तत्वेऽर्थे कारणापपत्ति तस्ततत्वज्ञानार्थमूहस्तर्कः।.(न्यायसूत्र)

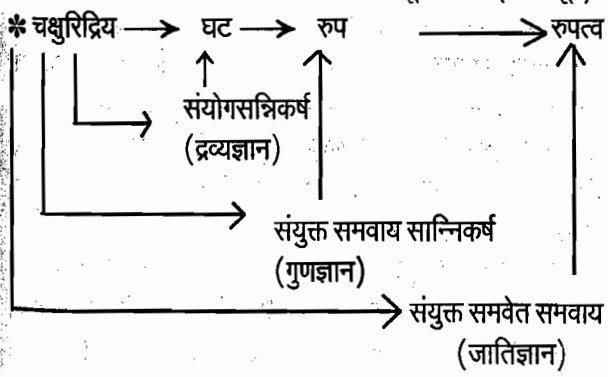

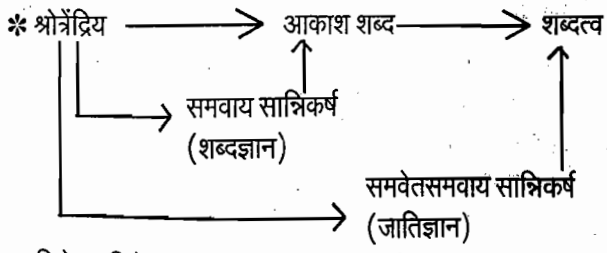

✻ विशेषण विशेषभाव सान्निकर्ष (अभाव ज्ञान)

सविकल्प:

लौकिक सविकल्प	**अलौकिक**
6 प्रकार	3 प्रकार
(शब्दादि + मन) प्रत्यक्ष	1) सामान्य लक्षण प्रत्यासक्ति
	2) ज्ञान लक्षण प्रत्यासक्ति
	3) योगज लक्षण प्रत्यासक्ति (युक्त, युगजान)

अनुमानः अनुमिति करणमनुमानम।
✻ परामर्शजन्य ज्ञानम अनुमिति।
✻ परामर्शः व्याप्ति विशिष्ट पक्ष धर्मताज्ञान परामर्श।
उदा. वह्निव्याप्यधूमवानयं पर्वत इति ज्ञान परामर्श
✻ व्याप्ती: 3 प्रकार - यत्र यत्र धूमस्तत्र तत्रा ऽग्निः।
इति साहचर्योनियमों व्याप्तिः॥
✻ पक्षधर्मता: व्याप्यस्य पर्वतादिवृत्तीत्वं पक्षधर्मता।
✻ प्रकार: 2 -1) स्वार्थम, 2) पराऽर्थम – (पंचावयव)
✻ प्रतिज्ञाहेतु उदाहरणोपनय - निगमनानि पंचाऽवयवाः।
1) पर्वतोवह्निमानिति प्रतिज्ञा (- पर्वत अग्निवाला है)
2) धूमवत्त्वादिति हेतूः (- धूमवाला होने से)
3) यो यो धूमवान स सवह्निमानित्युदाहरणम - महानस
4) तथा चा ऽ यामित्युपनय -(वैसे ही यह पर्वत धूमवाला है)
5) तस्मात तथेति (निगमनम)-
इस कारण से वैसा यह पर्वत वह्निवाला है।
हेतु / त्रिविध लिंगम– व्याप्ति के आहर पर
1) अन्वयव्यतिरेकि - वन्हौ साध्यधूमवत्वम, 2) केवलाऽन्वयि- घटाऽभिधेयः प्रमेयत्वात,अन्वय मात्रव्याप्ति केवला केवलाऽन्वयि.
3) केवल व्यतिरेकि – व्यतिरेकमात्र व्याप्ति कंमं केवल व्यतिरेकि.
✻ **पक्षः** सन्दिग्ध साध्यवान पक्षः। उदा. धूमवत्वे हेतौ पर्वत
✻ **सपक्षः** निश्चितसाध्यवान सपक्षः। उदा. तत्रैव महानसम
✻ **विपक्षः**निश्चितसाध्यऽभाववान विपक्षः। उदा. महाह्रदः (सरोवर)

उपमान: (सादृश्यता)

संज्ञा - संज्ञिसम्बन्धत्वज्ञानम उपमितिः (उपमान) उदा. गोसदृशो गवय
✻ प्रसिध्दी साधर्म्यात साध्य साधनमुपमानमा।....(न्याय दर्शन)
✻ औपम्यं नाम तद अन्येनान्यस्य सादृश्यमधिकृता प्रकाशन.(च.वि.)
उदा. यथा दण्डन दण्डकस्य, धनुषाः धनुस्तम्भकस्य।
प्रकार: 3 - 1) सादृश्यधर्माविशिष्ट - गाय जैसी वनगाय
2) असाधारण धर्माविशिष्ट – नाक पर सिंग हो ता गेंडा
3) वैधर्म्यविशिष्ट – घोडे से अलग पृष्ठ पर जो उंचाई रहती है, वा उंट।

शब्द /आप्तोपदेश

(सु.ने.आप्तोपदेश को आगम कहा है)
✻ आप्तवाक्य शब्द ✻ शक्त पदम ✻ आप्तस्तु यथार्थवक्ता।
✻ वाक्य पदसमुहःयथा गामानयेति।...(तर्कसंग्रह)

✻ वाक्यं पद्मसमुह:

✻ वाक्य द्विविध: 1) वैदिक - वैदिकमीश्वरोक्तत्वात्सर्वमेव प्रमाणम।

2) लौकिक - लौकिक त्वाप्तोक्तं प्रमाणम।

✻ शब्दः वाक्यार्थज्ञान शाब्दज्ञानम। तत्करणम तु शब्दः।

वाक्यार्थज्ञान हेतु: 3 - आकांक्षा, योग्यता, सान्निधिश्च वाक्याऽर्थज्ञाने हेतुः। (चरक ऐतिह्य का समावेश आप्तोपदेश में)

शास्त्रलक्षण चरक:18 (तन्त्रगुण 18 चरक)

✻ चरकोक्त शब्द लक्षण और भेद, ✻ शब्द नाम वर्णसमाम्नायः।

✻ स चतुर्विध - दृष्टार्थ, अदृष्टार्थ, सत्य, अनृत

✻ **हेत्वाभास** -हेतु का निरुपण करके हेत्वाभास का निरुपण करते है। हेतू वत आभासयान्ति इति हेत्वाभास।...(असिध्द हेतु)

✻ प्रकार: 5 (चरक -3)

i) सव्यभिचार - सव्यभिचाराऽनैकान्तिकः(त्रिविध - साधारण, असाधारण, संहारि), ii) विरुध्द, iii) सत्प्रतिपक्ष, iv) असिध्द, v) बाधित.

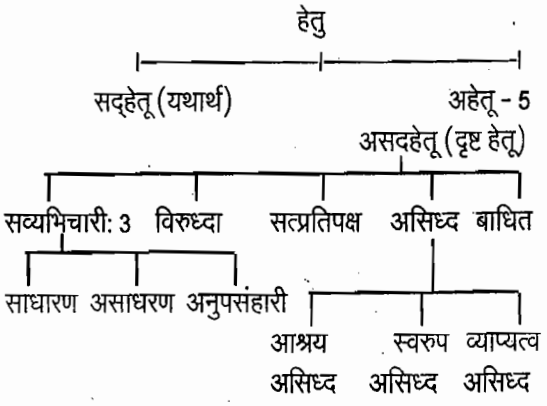

(च.वि.8 - अहेतू: 3 - प्रकरणसम, संशयसम, वर्ण्यसम.)

✻ सर्वदर्शनसंग्रह - माध्वाचार्य 16 दर्शन वर्णन, इसमें 9 प्रमुख

✻ **प्रमाण संख्या:**

1. चार्वाक	- प्रत्यक्ष
2. बौध्द,जैन, वैशेषिक	- 1 + अनुमान
3. सांख्य,योग,रामानुज	- 2 + शब्द
4. चरक	- आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष,अनुमान, युक्ति
4. सुश्रुत	- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द
5. प्रभाकर	- 4 + अर्थापत्ति
6. भट्ट मीमांसक, वेदान्त	- 5 + अनुपलब्धि
8. पौराणिक/चक्रपाणि	- 6 + ऐतिहय , सम्भव
9. तांत्रिक(9/10)	- 8 + चेष्टा, परिशेष
11. काव्यशास्त्र	- 10 + प्रतिभा

✻ प्रकृति - पुरुष संयोग - पंग्वधु न्याय

✻ सांख्य ने 25 तत्व वर्णन और उसके 4 भाग

1 मूलप्रकृति - अविकृति- अव्यक्त

7 प्रकृति - विकृति - महत, अहंकार पंचतन्मात्रा

16 विकृति (विकार) - इंद्रिय + पंचमहाभूत

1 न प्रकृति न विकृति - पुरुष

✻ सत्व, रज, तम, इनका अन्योन्यश्रयत्व। (सांख्यदर्शन)

1. अन्योन्याभिभव, 2. अन्योन्याभिभव आश्रय,3. अन्योन्याभिभव जनन, 4. अन्योन्याभिभव मिथुन, 5. अन्योन्याभिभव वृत्ति.

✻ त्रिविध सत्व (चरक)

सात्विक	- कल्याणांश (शुध्द, अदोष)
राजस	- रोषांक (सदोष)
तामस	- मोहांश

✻ सांख्य त्रिगुण

प्रीति	- सुखोन्माद
अप्रिति	- दुःखोन्माद
विषाद	- मोह

✻ सा.कारिका सत्वं (लघु) प्रकाशकं - प्रकाश

उपष्टभक (चल) रजः - प्रवृत्ति

(गुरु) आवरणकमेव तमः - नियम

✻ पुनर्जन्म सिध्दी चतुर्विध प्रमाण

आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान, युक्ति

✻ मोहेच्छाद्वेषकर्ममूला प्रवृत्तिः।....(च.शा.5)

✻ पुरुषो राशिसंज्ञस्तु मोहेच्छाद्वेषकर्मजः। (च.शा.1)

पदार्थ: 16 , प्रमेय -12 , तर्क - 11, निग्रहस्थान - 22, छल - 3

प्रवृत्ति: 20- 1) कायिक - 6, 2) वाचिक - 8, 3) मानसिक - 6

तर्क - 5 प्रकार, कल्पना - 7 (अरुणदत्त), तंत्रदोष -14 (चक्रपाणि) -15 (अरुणदत्त), तंत्रगुण -15, 18 - (चरक), तच्छिल्य -17, अर्थाश्रय - 20 (21 तंत्रयुक्तिकार उपधालोप extra), वाक्यदोष - 5 (चरक), (न्युन, अधिक, अनर्थक, अपार्धक, विरुध्द)

✻ शब्दवृत्ति - 4 (वाक्यार्थ बोधक वृत्ति)

(अभिधा, लक्षणा (3), व्यंजना (2), तात्पर्याख्या)

✻ **वाक्यार्थ ज्ञान हेतू :** 3 (तर्कसंग्रह) 1) आकांक्षा, 2) योग्यता, 3) सन्निधि, 4 (सिध्दांत मुक्तावली + तात्पर्य)

1)आकांशा - एक पद का अर्थ दुसरे पद के अपेक्षा से पता लगता है। रूग्ण शय्यापे सो गया।

2) योग्यता - अर्थाऽ बाधो योग्यता (वाक्य में अर्थ बताने की पात्रता) थंडे पानी से जल गया। 3) सन्निधि - पदाना अवेलखेनम्बेन उच्चारण सान्निधि। (2 पद उच्चारण में अधिक समय न लगाना)

✻ **पदार्थ संख्या:** ✻ मायावादि वेदान्त: 2 (चित्त, अचित्त)

✻ रामानुजाचार्य: 3 (2 + ईश्वर) ✻ माधव सम्प्रदाय: 8 पदार्थ

✻ **शक्तिग्रह: 8** (संकेतग्रहनुपाय - 8 है)

✻ पदमें ज्ञान देने का धर्म - शक्ती

✻ शक्ती का प्रत्यक्ष ज्ञान होना - शक्तिग्रह

1) व्याकरण - व्युत्पत्ति, 2) उपमान, 3) कोष - शब्दकोश और निघण्टु में शब्द का अर्थ दिया होता है। 4) आप्तवाक्य - उदा. धोती - पहनने का वस्त्र, 5) व्यवहार - आप्तों का वाक्य सुनकर वैसे कार्य करना, 6) वाक्यशेष - एक पद के अनेक अर्थ होते है, तब संबंधित अर्थ ले।, 7) निवृत्ति/विवरण - समानार्थि शब्द कहना, 8) सिध्द पदसानिध्य - समझ में आए हुए पद के अर्थसंदर्भ से न समझ में आए हुए पद का अर्थ समझना, उदा. उस कटोरी का अवलेह मधुर है।

✻ शक्ति आश्रय: मीमांसक - शक्ति जातीपर रहती है

पतंजली - शक्ति आकृतीपर रहती है, नैयायिक-शक्ति व्यक्तिपर रहती है

तर्कसंग्रह + मुक्तावली - जातिविशिष्ट व्यक्तिपर है।

✻ निग्रहस्थान-निग्रहस्थान नाम पराजयप्राप्ति,न्याय: 22,चरक:12

प्रमाणज्ञान के फल: 1) न्याय, वैशेषिक - यथार्थ ज्ञान प्राप्ती 2) वेदान्त - आत्मज्ञान प्राप्ती, 3) सांख्य- मोक्ष प्राप्ती, 4) आयुर्वेद -रोगज्ञान.

✻ **प्रलय (नाश):** न्याय: 2 (खण्ड, महाप्रलय), कर्मपुराण - 4, विष्णुपुराण: 2 (ब्रह्मा- 1 दिन, ब्रह्म - 100 वर्ष)

✻ **सृष्टिउत्पत्ति:** सुश्रुत - 25 तत्व (अव्यक्त से)

सांख्य - 25 तत्व (प्रकृति ....अव्यक्त), योग- 26 तत्व (ईश्वर..)

वेदान्त - 1 (ब्रह्म = एकमेव सत्य), वैशेषिक - समवायि - परमाणु असमवायि - ईश्वर,चार्वाक - 4 (except आकाश,अन्य महाभूत), जैन - अनन्त, उपनिषद - आकाश महाभूत सर्वप्रथम उत्पन्न, पूर्वमिमांसा - नियति.

द्रव्यगुण

परिभाषाः द्रव्याणां गुणकर्माणि प्रयोगा विविधास्तथा।
सर्वशो यत्र वर्ण्यन्ते शास्त्रं द्रव्यगुणं हि तत्।।....(आचार्य प्रियवत शर्मा)
चिकित्सा चतुष्पाद में वैद्य कर्ता और द्रव्य करण है ।
निघण्टुना विना वैद्यो विव्दान व्याकरणा विना।
अभ्यासेन च धानुष्कस्त्रयो हास्यस्य भाजनम्।।....(राज निघण्टू)
* राजनिघण्टू ने अष्टांग आयुर्वेद में द्रव्यगुण को प्रथम स्थान दिया।
1) द्रव्यगुण, 2) निदान, 3) कायचिकित्सा, 4) शल्य, 5) शालाक्य, 6) भूतविद्या, 7) अगदतंत्र, 8) कौमार भृत्य.
द्रव्यगुणविज्ञानः (2) - पदार्थ विज्ञान, द्रव्यविज्ञान.
द्रव्यविज्ञानः (3) - नामरुप विज्ञान, योगविज्ञान, संयोगविज्ञान.
योगविज्ञानः (2) - गुणकर्मविज्ञान, प्रयोगविज्ञान.

पदार्थः
द्रव्यगुणविज्ञान के मूल पदार्थ - 7
1) द्रव्यः यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायि यत। तद् द्रव्यम ...(च.सु.1)
2) गुणः समवायि तु निश्चेष्टः कारण गुणः। ..... (च.सु.1)
3) रसः रस्यते आस्वाद्यते इति रसः।....(चक्रपाणी)
4) विपाकः जाठरेणाग्निना योगाद्यदुदेति रसान्तरम्।
रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृताः।।...(वा.सु. 9)
"विशिष्टः पाकः विपाकः।
स च द्रव्याणां रसान्तरेसत्वेन परिणतिः।".....(गंगाधर)
5) वीर्यः वीर्य तु क्रियते येन या क्रिया । (च.सु. 26)
(Potency, Dynamic Property, Active Principle)
6) प्रभावःरसादिसाम्ये यत्कर्म विशिष्टं तद् प्रभावजम्।(वा. सू.9,अ.सं.सू17)
(Specific Property)
7) कर्मः संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमाश्रितम् ।
(Action)कर्तव्यस्य क्रिया कर्म कर्म नान्यद अपेक्षते।।....(च.सु.1)

भावप्रकाशः - 5 पदार्थ
द्रव्य रसो गुण वीर्य विपाकः शक्तिरेव च।
पदार्था पंच तिष्ठन्ति स्वं स्वं कर्म कुर्वन्ति च।। (भावप्रकाश,पूर्वखण्ड)

द्रव्यः
i) यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायि यद् तद् द्रव्यम।..(च. सू. 1)
ii) क्रियागुणवत् समवायि कारणं द्रव्यम।.....(स. सू. 40)
iii) द्रव्यमाश्रयलक्षणम पंचानाम।...(रसवैशोषिक)
iv) रसादिनां पंचानां भूतानां यदाश्रयभूतं तद् द्रव्यम।.....(भा. प्र.)
सर्वं द्रव्यं पांचभातिकमास्मिन् अर्थे।.....(च. सू. 26)
कारणः 3 प्रकार - i) समवायी - (उपादान) द्रव्यभूत (Material Cause), ii) असमवायी - अद्रव्यभूत,गुर्णकर्मरुप, iii) निमित्त-पृथक सत्ता रख कर कार्य की उत्पत्ति में सहाय्यक कारण. (Efficient /Auxillary Cause)
* 5 घटकों (गुण, रस, वीर्य, विपाक, कर्म) का आश्रयभूत
पदार्थ = द्रव्य.....(रसवैशेषिक)
द्रव्यगुणशास्त्र में कारण द्रव्यों का उपयोग नहीं होता,
केवल कार्यद्रव्यों का अभ्यास कीया जाता है ।
* **भूत 3 अवस्थाः** भूत, महाभूत, दृश्यभूत.
भूत - परमाणु अवस्था के वायु जल पृथ्वी (तन्मात्रा)
i) नित्य,महाप्रलय में भी रहनेवाले और इनसे सभी कार्य द्रव्य की उत्पत्ति
ii) इस अवस्था में शब्द, स्पर्शादि गुण अव्यक्त अवस्था में ।
iii) सांख्यदर्शन - तन्मात्रा
iv) वैशेषिक दर्शन - परमाणु में आकर्षण - व्दयणुक तक
* महाभूत (स्थूलभूत) - त्रसरेणू से आगे
* दृश्यभूत - पाचों महाभूत पुनः परस्पर में मिलते है।
i) अन्योन्यानुप्रवेश By आयुर्वेद, ii) पंचीकरण by वेदान्त.
* वेदान्त - नोज महाभूत 1/2 भागः शेष 1/8 भाग For each महाभूत
* परमाणुः पृथ्वी - गुरुत्व, जल - Electron Proton आकर्षण, तेज - विद्युतशक्ति, वायु - गती, आकाश - अणु के भीतर का अंतर
i) अनेनोपदेशेन नानौषधिभूतं जगति किंचिद् द्रव्यमुपलभ्यते।...चरक
ii) अनेने निदर्शनेन नानौषधिभूत जगति किंचिद् द्रव्यमस्ति।...सुश्रुत
iii) जगत्येवमनौषधम्। न किंचिद् विद्यते द्रव्यं वशान्नार्थायोगया ।..(वा.सू.9)
पाको नास्ति विना वीर्याद् वीर्यं नास्ति विना रसात।
रसो नास्ति विना द्रव्याद् द्रव्यं श्रेष्ठतमः स्मृतम।।....सुश्रुत
द्रव्यप्राधान्यः चरक - 4 (बहुत्व, योगत्व, अनेकविध कल्पना, संपत्)
सुश्रुतः 9 : i) व्यवस्थितत्व, ii) नित्यत्व, iii) स्वजात्यावस्थान, iv) पंचेंद्रियग्रहण, v) आश्रयित्व, vi) आरम्भसामर्थ्य, vii) शास्त्रप्रामाण्य, vii) क्रमापेक्षित्वात्, ix) एकदेशसाध्यत्व.
नागार्जुन - 3 Extra
i) तरतमयोग अनुपलब्धि, ii) विकल्पसामर्थ्य, iii) प्रतिघात सामर्थ्य.
* द्रव्य प्रधानं इति रसादी भावा तदाश्रयाः।...(सुश्रुत)

द्रव्यों का नामकरण एवं पर्यायः
* वैदिककाल में आख्यानों के आधार पर वनस्पतियों के नाम।
उदा - अश्वत्थ - जिसमें अश्वरुप में अग्नि स्थित।
पशुपक्षी - संबंधानुसार सर्पगंधा, वाराहो, नकुलो, हंसपदी.
सोम - यह सेवन कर्म में उपयोगी होने के कारण.
ऊर्ज - ओजवर्धन .. उर्जयन्ती
स्वरुपबोधक - अजश्रृंगी, उत्तानपर्णी.
गुणबोधक - अश्वगंधा, तीक्ष्णगंधा, औक्षगंधि, सुगंधितेजन
उद्‌भवस्थानबोधक - स्वादु, शीतिका, वर्षाभू
राजनिघण्टु -7 आधारों पर औषधियों के नाम.
i) रुढि - आटरूषक, गुडुची, टुण्टुक, कंटकटेरी.
ii) प्रभाव - क्रिमिघ्न, हयमार, निद्राषि
iii) देश्योक्ति - मागधी, वैदेही, कालिंग, कैरात, रामठ (हिंग)
iv) लाञ्छन - राजीफल, चित्रपर्णी, चित्रतण्डुल,पंचराजफल (पटोल)
v) उपमा - शालपर्णी, मेषश्रृंगी, अजकर्ण, पंचागुल, सिंहास्य (गोजिव्हा)
vi) वीर्य - ऊषण, कटुका, मधुक, शीतज (बला)
vii) इतराहय - शक्रह्वा, काकाह्वा, अनलनाम (चित्रक)
1) स्वरुपबोधकः अणु, न्यग्रोध, पुर्ननवा, प्रसारिणी, जटामांसी, आदि
2) अवयवबोधकः i) पत्र - त्रिपर्णी, पृश्निपर्णी, दीर्घवृन्त.
ii) पुष्प - शतपुष्पा, नागपुष्पा, शतदल, सुवर्णक, (आरग्वध)
iii) फल - मेषश्रृंगी, आवर्तनी, पृथुशिम्ब, श्रीफल(बिल्ब)
iv) बीज - इन्द्रयव, कृष्णबीज, कुम्भबीज (रिठा)
v) काण्ड - काण्डीर, कालस्कन्ध, चक्रांगी.
vi) मूल - शतमूली,दन्ती,शुक्लकन्दा, षड्ग्रन्था, बहुपाद
vii) क्षीर - पयस्या, स्वर्णक्षीरी, viii) ग्रन्थि - षड्ग्रन्था, ग्रन्थिपर्णी
ix) कण्टक - गोक्षुर, तीक्ष्णकण्टक, x) सार - बहुसार
xi) वल्कल - वल्कद्रुम, xii) रोम - कपिरोमफला.
3) गुणबोधकः i) शब्द - गुंजा, ii) स्पर्श - दुःस्पर्शा, खरमंजरी, iii) रूप - कांता, पीतसार, पीता (हरिद्रा), iv) रस - मधुरसा, तिक्ता, कटुका, अलवणा, v) गन्ध - गन्धप्रियंगु, अश्वगंधा, vi) अन्यगुण - तीक्ष्ण, vii) वीर्य - उष्ण (मरिच)
4) कर्मबोधकः वातारि, रेचन, वामक, मेध्या, कृमिघ्न
5) उद्‌भवबोधकः i) देश - मागधी, कलिंग, चीनाक, धन्वयास

ii) पुष्पकाल - वासन्त, प्रावृषेण्य, ग्रष्मिकी, iii) योनि - कृमिजा, मृगनाभि, iv) रोहण - काण्डरुहा, पर्णबीज, v) अधिष्ठान - जलज, वाप्य

6) उपयोगबोधकः यज्ञार्ह, रथद्रुम.

7) आख्यानबोधकः अमृतसंभवा, इन्द्रवृक्ष, अश्वत्थ.

8) प्रशस्तिबोधकः भद्रदारु, मंगल्या.

9) इतिहास प्रसिध्दीः बोधिद्रुम,

10) लोकोपयोगः यज्ञिय (खदिर), कार्पास, स्पन्दन, धनुर्द्रुम, अग्निमंथ

द्रव्य वर्गीकरणः

*** अथर्ववेद में औषधी के वर्णनः**

i) आथर्वणी, ii) आंगिरसी, iii) दैवी, iv) मनुष्यजा.

1) कार्यकारणभेद सेः 2 कारणद्रव्य, कार्यद्रव्य

i) कारणद्रव्यः 9 - "खादिन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहः।"(चरक)

"पृथ्वीव्यप्तेजोवाय्वाकाश कालदिगात्ममनांसि नवैव।"...(तर्कसंग्रह)

ii) कार्यद्रव्य - असंख्य (पंचमहाभूत से उत्पन्न)

2) चेतनाभेदः 2 प्रकार - चेतन (Animate), अचेतन (Inanimate)

चेतन - जीवजन्तु, वृक्ष, अचेतन - स्वर्णादि धातु व अन्य पार्थिव द्रव्य

"सेन्द्रिय चेतनं द्रव्यं निरिन्द्रियम् अचेतनम् ।"

चेतन - साशन, अचेतन - अनशन - वैदिक वागमय.

अन्तःश्चतन (औद्भिद्, स्थावर, द्रव्य)

चेतन द्रव्ये - बहिरन्तश्चेतन (जांगमद्रव्य)

औद्भिद् द्रव्यो में चेतनास्थिती के उदा.

a) सुर्यमुखी - सूर्यानुसार घुमता है

b) लवली - मेघगर्जन से फल लगते है

c) बीजपूर - श्रृंगालादि जंतू के वसागंध से फलोत्पत्ति

d) आम्र - मद्यपरिषेक से फल लगत है।....(चक्रपाणी)

e) लज्जालू - हस्तस्पर्श से संकोच

निष्पत्ति/भौतिक संघठन भेद से - 5 प्रकार

महाभूत	इंद्रियार्थ	विपाक	रस	गुण
आकाशीय	शब्द	लघु	अव्यक्त	मृदु,लघु,सुक्ष्म,श्लक्ष्ण शब्द,व्यवायो,विविक्त
वायव्य	स्पर्श	लघु	कषाय इषत्तिक्त	लघु,शीत,रुक्ष,खर,विशद, सूक्ष्म स्पर्श, विकासी
तैजस	रुप	लघु	कटु,ईषद अम्ललवण	उष्ण,तीक्ष्ण,सूक्ष्म,लघू, रुक्ष,विशद,रुप,खर,
आप्य	रस	गुरु	मधुर,ईषद कषायाम्ललवण	द्रव, स्निग्ध, शीत, मंद मृदु, पिच्छिल, रस, सर
पार्थिव	गंध	गुरु	मधुर,कषाय	गुरु, खर, कठिन, मंद स्थिर, विशद,सान्द्र,स्थूल

Common: मृदु - आकाश, जल शीत - वायु, जल.

विशद - वायु, तेज, पृथ्वी सूक्ष्म - आकाश, तेज रुक्ष - वायु, तेज.

लघु - आकाश, वायु, तेज मन्द - जल, पृथ्वी

3) योनिभेद सः 3 प्रकार (द्रव्य):

i) जांगम/जान्तव्य द्रव्य - Animal Product

ii) औद्भिद/वानस्पितक द्रव्य- Plant Product

iii) पार्थिव/भौमद्रव्य - Mineral

a) जांगम द्रव्य - 4 प्रकार -

i) उद्भिज - बीरबहुटि, मण्डुक,

ii) स्वेदज - कृमि, कीट, पिपिलीका,

iii) अण्डज - पक्षी, सर्प,

iv) जरायुज - मनुष्य, पशु.

b) औद्भिद् द्रव्यः 4 प्रकारः

i) वनस्पती - फलैः वनस्पती - वट, उदुम्बर, प्लक्ष

ii) वानस्पत्य - पुष्पै वानस्पत्य फलैरपि - मैशी, आम्र, जम्बु

iii) वीरुध्द - प्रतानः वीरूध्द - लता, गुल्म, प्रसारणी, कुश

iv) औषधि - आषधयः फलपाकान्ता गोधुम, दुर्वा

c) भौम द्रव्यः 2 प्रकारः

i) खनिज - प्राकृतावस्था मे भूमि से निकलने वाले उदा. लौह, अभ्रक

ii) कृत्रिम - उदा. लवण, क्षार

4) प्रयोगभेद से - 2

a) औषध द्रव्य - वीर्यप्रधान -

मृदुवीर्य (उदा. आमलक,गुडुची) - 1 पल

मध्यवीर्य (उदा. बिल्व अग्नीमंथ) 1/2 पल

तीक्ष्णवीर्य (उदा. शुण्ठि) 1 कर्ष

b) आहार द्रव्य - रसप्रधान - 4 पल (सामान्यतः मात्रा)

5) रसभेद से - 6 प्रकार (सु.सू.43)

मधुर स्कन्ध कटुस्कन्ध,

अम्ल स्कन्ध तिक्तस्कन्ध,

लवण स्कन्ध कषायस्कन्ध

सुश्रुत - मधुरवर्ग - काकोल्यादि, शालिषष्टिक, जीवनीय द्रव्ये मोरट

कटु - पिप्पल्यादि, सुरसादि, सालसारादि

तिक्तवर्ग - आरग्वधादि, गुडूच्यादी.

कषायः अम्बष्ठादि, प्रियंग्वादि, राध्रादि, सालसारादि, त्रिफला प्रायशः

6) विपाक भेद से - 3 (चरक, वाग्भट), 2 (सुश्रुत) (गुरू, लघु)

i) मधुर विपाक - मधुर, अम्ल रसात्मक द्रव्ये.

अपवाद - शुण्ठी, पिप्पली, हरितकी, आमलकी, दाडिम, पटोल, गुडुची.

ii) अम्ल - विपाक अम्ल रसात्मक द्रव्ये

अपवाद - व्रीही, कुलत्थ

iii) कटु - कटु, तिक्त, कषाय रसात्मक द्रव्ये

अपवाद - तैल सौवर्चल.

7) विर्यभेद सेः 2 (शीत, उष्ण) /

8 (गुरू, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष; मृदु, तीक्ष्ण)

8) दोषकर्मभेद सेः 3

a) शमनं कोपन स्वस्थहिंत द्रव्यमिति त्रिधा।....(वा. सू.1,अ.सं.सू1)

b) दोष प्रशमन, धातुप्रदुषण, स्वस्थवृत्तौ.

शमन, कोपन द्रव्ये दोषानुसार पुनः (3-3) प्रकार के

* वात संशमन में विदारीगंधदि + (लघु + बृहत) पंचमूल (आद्यपंचमुल)

* पित्त संशमन म - अंजनादि, सारिवादि, काकोल्यादि, उत्पलादि, न्यगोधादि + तृणपंचमुल

* कफ संशमन में - पिप्पल्यादि, बृहत्यादि, मुष्ककादि, सुरसादि, आरग्वधादि + (वल्ली, कण्टक) पंचमुल

दोषघ्न रसः मधुराम्ललवणा वातघ्ना, मधुरतिक्तकषाया पित्तघ्ना, कटुतिक्तकषाय, श्लेष्मघ्ना.

दोषघ्न विपाकः i) गुरूपाकी - वात पित्त घ्न, ii) लघु पाकी - कफ घ्न

दोषघ्न विर्यः उष्णस्निग्धौ वातघ्न, शीतमृदुपिच्छिला पित्तघ्न, तीक्ष्णरुक्षविशद कफघ्न....(सु. सू. 41)

स्वस्थहित द्रव्यः.....(च. सू. 25)

लोहितशाली,मुदग, अन्तरीक्ष, सैन्धव,जीवन्ती, ऐणेय, लावा, गोधा, रोहित, गोघृत, तिलतैल, वराहवसा., गोदुग्ध, चुलुकीवसा, पाकहंसवसा, कुक्कुटवसा अजमेदस, आर्द्रक, मृद्वोका, शर्करा., (रसायन, वाजीकरण) गण

9) द्रव्य वर्गीकरण: a) चरक 12 - वर्ग

i) शूक - शालि, यव, गोधुम, ii) शमी - मुद्ग, माष, कुलत्थ

iii) मांस - योनिभेद से 8 प्रकार (प्रसह, भूशय, आनूप, जलेचर, स्थलज जांगलाचर, विष्कीर, प्रतुद), iv) शाक - वास्तुक, उपोदिका, तण्डुलीयक,

v) फल - मृद्विका, परूषक, नारिकेल, vi) हरित - आर्द्रक, निम्बु, मूला,

vii) मद्य - आसव, अरिष्ट, सुरा, viii) जल - दिव्य, भौमादि,

ix)गोरस-गव्य,महिषादि, दुध, घृत, दधि, x) इक्षु - इक्षुरस, गुड, शर्करा,

xi) कृतान्न - मण्ड, पेया, विलेपी, xii) आहारयोनि - तैल, लवण, हिंगु.

b) सुश्रुत - द्रव द्रव्य - 10 वर्ग, अन्न द्रव्य - 13 वर्ग

i) द्रव्य द्रव्य - जल, क्षीर दधि, तक्र, घृत, इक्षु, तैल, मद्य, मूत्र, मधू

ii) अन्न द्रव्य - शालि, कुधान्य, मुद्गादि, मांस, शाक, फल, कृतान्न, पुष्प, कन्द, क्षार, लवण, भक्ष्य, अनुपान.

मांसवर्ग: 6 - जलेशय, आनुप, ग्राम्य, एकशफ, जांगल

10) औद्भिद द्रव्यों का आधुनिक रचनात्मक वर्गीकरण.

A) उद्भवभेद से: 4 प्रकार -

i) स्थलज (Terrestrial) - हरीतकी, बीभितक,

ii) जलज (Aquatic) - कमल, जलकुंभी

ii) वृक्षरुह (Epiphytic) - वृक्षपर चढते हैं पर उनपर निर्भर नहीं उदा. जीवन्ती, गुडुचादि,

iv) वृक्षादन (Parasitic) - दूसरे वृक्षो को रस से पोषण प्राप्त. उदा.वन्दाक

B) आयुभेद से: 3 प्रकार- i) एकवर्षायु (Annuals) - गहु, यव

ii) द्विवर्षायु (Biannial) - सलगम, गाजर, सूरण; इख.

ii) बहुवर्षायु (Perennials) - नीम, वट, आम्र, तुलसी, तरूणी, बला.

C) आकृती भेद से: 4 प्रकार - a) वृक्ष (Tree) - 3 प्रकार; (15 F to100 Feet.) काण्ड दृढ, शाखा उपर की (Tree) & 20 Meter

i) महावृक्ष (Tall tree) - 50 Feet. उदा. देवदारू, चीड, सरल. (13-30 Meter),

ii) वृक्ष (Medium tree) - 40 - 50 ft उदा.आम्र, जामुन (3 - 13 Meter),

iii) वृक्षक (Small tree) - (15 - 20) ft. उदा. पपीता, करज, एरण्ड,

b) गुल्म - एक ही मुल से अनेक काण्ड निकलना Shrub उदा. धातकी, करवीर (गुल्माः एकमुलाः संघातजाताः शरेक्षुप्रभूतयः)

गुल्मक - छोटे गुल्म (Under Shrub) उदा. दन्ती, अर्क

c) क्षुप - ((2-3) ft. to (5 - 6) ft.): मुल छोटाः शाखायें कोमल (Herb) उदा. चक्रमर्द,

क्षुपक - (2-3) ft. (ह्रस्वशाखाधिके क्षुपः) (Under shrub) उदा. चणक, धान्यक, मेथिका,

d) लता - आधार लेकर बढते है: (Undershrub) 4 प्रकार:

1) प्रसर - काण्ड से शाखा निकलकर भुमिपर थोडी दुरतक फैली, (Prostate) उदा. कंटकारी,

2) वल्ली - आधारभूत वृक्ष को चारों ओर से लपेटकर आगे. (Twining Plants) - 2 प्रकार

i) वामावर्तिनी वल्ली - उत्पलकर्णी, अमृतस्रवा

ii) दक्षिणावर्तिनी वल्ली - गुडूची, विदारी.

3) आरोहिणी - बिना लपेटे उपर चढती है। (Climbing Plant)

i) मूलारोहिणी (Root Climbers) - पान (नागवल्ली)

ii) सूत्रा रोहिणी (Trendril Climbers)- कटु, कुष्माण्ड,कारवेल्लक.

iii) बडिशा रोहिणी (Hook Climbers)- वेत (वेतस,वेत्र)

iv) पत्रा रोहिणी (Leaf Climbers) - कलिहारी

4) प्रतानिनी (Lianes/Creepers) - वृक्ष के शिखरपर अमर्यादित रुप से फैलती है। उदा. माधवी, मालझन, दुर्वा

11) औद्भिद द्रव्योंका वर्गीकरण By आधुनिक विज्ञान

(17 शतक के अंत मे)

Division - विभाग, Subdivision - उपविभाग, Class - श्रेणी,

Sub Class - उपश्रेणी, Order - गण, Family - कुल,

Genus - प्रजाति, Species - जाति.

उपकुल वंश उपवंश:

12) आधुनिक उद्भव से - 7 प्रकार

i) Terrestrial, ii) Aquatic - (जलज), iii) Hydrophyte (तृणपंचमुल)

iv) Xerophyte (मरूभूमिज) - अर्क, स्नुही, वात, खर्जुर

v) Epiphytes (वृक्षरुह) वनस्पती को आधार लेकर बढते है, पर पोषण स्वयं करते है I, vi) Parasites (वृक्षादन),vii) Saprophyte (मृतोपजीवी)

13) अन्य वर्गीकरण:

चरक - कर्मानुसार द्रव्य वर्गीकरण

सुश्रुत - मुख्य द्रव्य आधारपर द्रव्य वर्गीकरण

च. सू. षडविरेचनशताश्रितीयमें 50महाकषाय और 500 कषाय (As 50x10)

i) हृद्य महाकषाय में अर्जुन नहीं (उदर्दप्रशमन)

ii) अर्शोघ्न महाकषाय में भल्लातक, सुरण, नागकेशर नहीं

iii) ज्वरहर महाकषाय में मुस्ता, पर्पट नहीं

iv) वर्ण्य महाकषाय में हरिद्रा नहीं v) आस्थापन महाकषाय में पाटला नहीं

*** शिरोविरेचन आश्रय भेद से 7 प्रकार**

(मूल, पत्र, फल, पुष्प, त्वक, कन्द, निर्यास)

शिरोविरेचनार्थ रस - 4 मधुर अम्ल नहीं (लवण,कटु,तिक्त,कषाय)

*** दन्तधावनार्थ द्रव्य** - (अर्क, असन, करंज, करवीर, कंकुम, मालती)

अग्र्य द्रव्य: च. सू. 25 ---- etc. - 152 - च., 155 - अ. सं.

आसव योनि: 9 कुल आसव - 84 - मूल - 11, सार - 20, शर्करा - 1 पत्र - 2, काण्ड - 4, फल - 26. धान्य - 6, पुष्प - 10, त्वक् - 4.

सुश्रुत - i) लवणवर्ग, क्षारवर्ग मौलिक देन धातुवर्ग, रत्नवर्ग

ii) त्रिफला, त्रिकटु, दशमुल, पंचमुलादि का सर्वप्रथम उल्लेख

त्रप्वादि वर्ग - वंग, नाग, ताम्र, रजत, लोह, मण्डुर

अष्टांग संग्रह (6 शतक)

1) द्रवद्रव्य - 6 वर्ग ... (द्रवद्रव्याविज्ञानीय अ. 9)

अन्नद्रव्य - 6 वर्ग ... (रसवीर्यविपाकप्रभाववर्णन)

2) मिश्रक गण में त्रिजात, चतुर्जात, पंचकोल, मध्यमपंचमूल, जीवनीयपंचमूल इन विशिष्ट गणों का उल्लेख.

3) विविधौषधविज्ञानीय अ.में लवण,क्षार,धातु रत्न वर्गो का पृथक वर्णन.

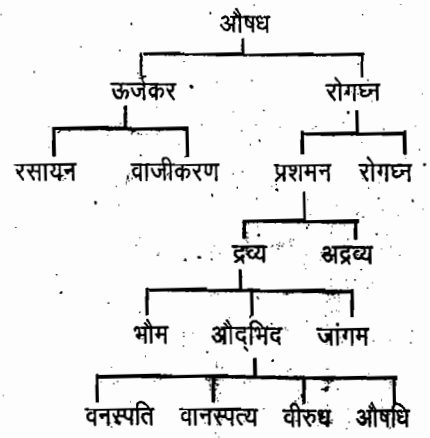

अ. सं. इक्षुवर्ग में मद्यवर्ग समावेश,

(वा. - प्रथम पारदका चि. में. उपयोग)

अष्टांग हृदय (7 शतक)

1) मूत्र वर्णन - मद्यवर्ग के अंतर्गत,

2) औषधवर्ग, लवण, क्षार, हरितकी, पिप्पलीः 5 पंचमूल (लघु,बृहत,मध्यम,जीवन,तृण),मिश्रक गण

* ऋग्वेद पुरूष सूक्ता में विश्व के सभी पदार्थों को 2 प्रकारः में विभाजित किया है । a) साशन, b) अनशन.

14) मिश्रक गण - पारिभाषिक गण

[सु.सू. 36 मिश्रकाध्याय परंतु मिश्रकगण वर्णन सु.सू.38]

1) बृहत्पंचमूलः बिल्व, अग्निमंथ, श्योनाक, काश्मर्य, पाटला.

कफ वातघ्न, लघ्वग्निदीपन, मधुरानुरस + तिक्त....(सु. वा.)

भा. प्र. कषाय रस Extra. श्वासकासघ्न, उष्ण.

2) लघुपंचमूलः शालपर्णी, पृश्निपर्णी, बृहती, कंटकारी, गोक्षुर

कषाय तिक्त मधुर, वातघ्न, पित्तशमन, बृहंण, बलवर्धन

वा - सर्वदोषजित

राजनिघण्टु - लघुपंचमुल को पंचगण कहा

भा. प्र. Extra लघु, नात्युष्ण, ग्राही, ज्वरश्वासाश्मरीप्रणुत.

(काश्यप खुड्डाक पंचमुल = स्वल्प)

दशमुलः (लघु + बृहत) पंचमूल

श्वासहर, कफ पित्त वात पह, आमपाचन, सर्वज्वरनाशक

भा. प्र. त्रिदोषघ्न, कासशिरोरुजा, तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्व अरुचिहर

3) कंटकपंचमुलः करमर्द त्रिकंटक सैरेयक शतावरी गृध्रनखी

4) वल्लीपंचमुलः विदारी सारिवा रजनी गुडूची अजश्रृंगी

रक्त, पित्त हर, सर्वमेहहर, त्रिशोथनाशक, शुक्रदोषनाशन

5) तृणपंचमुलः i) कुश, काश, नल, दर्भ, काण्डेक्षु (सु.),

ii) कुश, काश, शर, दर्भ, इक्षु,

iii) शालि, काश, शर, दर्भ, इक्षु.....(वा.) रक्त, पित्त,मूत्रदोष.

अं. सं. Extra - 2

((वाग्भट) 7 में से कंटक और वल्ली उल्लेख नहीं।)

6) मध्यम पंचमुलः बला पुनर्नवा, एरण्ड पर्णाद्वय (शूर्पद्वय)

कफ, वातघ्न नातिपित्तकर

7) जीवनीय पंचमुलः अभिरू वीरा जीवन्ती जीवक ऋषभक

चक्षुष्य, वृष्य, पित्तनिलापहम्.

8) पंचशूरणः अत्यम्लपर्णी, काण्डीर, मालाकन्द, व्दिशूरणैः (ग्राम्य,वन्य)

यकृतविकार, अर्श

(* वल्लीफल में श्रेष्ठ कुष्माण्ड..(च. सु., राजनिघण्टु))

9) त्रिकण्टकः बृहती, कंटकारी, धन्वयास

10) त्रिवल्कलः पूतीक, तिल्वक (विरेचक), कृष्णगंधा

(परिसर्प, शोथ, अर्श, दद्रु) Local Application

11) पंचवल्कल / पंचक्षीरीवृक्षः न्यग्रोध, उदुम्बर, अश्वत्थ, पारीष, प्लक्ष

राजनिघण्टु - पारीष के जगह वेतस

कषाय, शीतवीर्य, वर्ण्य, योनिरोग, व्रणनाशक, स्तंभन

12) क्षीरत्रयः रवि (अर्क), वट, स्नुही..... (र.त.)

रसशास्त्र में मारणार्थ उपयुक्त.

अश्मन्तक क्षीर - वमनार्थ, स्नुही क्षीर - विरेचनार्थ

अर्क क्षीर - वमन एवं विरेचन (च.सू.1)

* त्रिवल्कल + क्षीरत्रय - षट्शोधन वृक्ष By चरक

13) पंचपल्लवः आम्र, जम्बु, कपित्थ, बीजपूरक,बिल्व...(रा. नि.)

उपयोग - गन्धकर्म (वैद्यकपरिभाषाप्रदीप)

14) आद्यपुष्पः चन्दन, कुंकुम, वारि (ह्रीबेर) रा. नि.

15) त्रिफलाः पर्याय - श्रेष्ठ, फलत्रिक, वरा, उत्तम

रसायनवरा (वाग्भट.), कफ, रक्त जीत.

हरितकी, आमलक, बिभीतक.....(सु.सु.38)

पथ्याबीभितधात्रीणां फलैः।....(भा. प्र.)

1 हरितकी (2 कर्ष), 2 बिभोतक (2 कर्ष), 4 आमलक (2 कर्ष)...(शा.)

कफपित्तघ्नी, मेहकुष्ठहरा,सर,।

चक्षुष्या, दीपनी, रुच्या, **विषमज्वरनाशीनी**।। (भा. प्र.)

त्रिफला - कषायरसप्रधान, अनुष्णवीर्य, मधुरविपाक,

हरितकी - **वात** ↓, आमलक - **पित्त**↓, बिभोतक - **कफ**↓

महती त्रिफलाः हरितकी, बीभितक,आमलकी (2 कर्ष,1 कर्ष, 1/2 कर्ष)

16) स्वल्प त्रिफलाः काश्मर्य, खर्जुर, परूषक (फालसा)

17) मधुर त्रिफलाः काश्मर्य, खर्जुर, द्राक्षा .... (मधुरादिफलत्रयम्...रा.नि.)

18) सुगंधि त्रिफलाः

जातिफल,पुगफल,लवंगकलिकाफल... (सुरभी **त्रिफला**...रा. नि.)

19) मधुरत्रयः शर्करा, मधू, घृत, (गुड, मधू, घृत....र. त. / र. र. स.)

20) चतुर्बीजः मेथीका, चन्द्रशूर, कालाजाजी, यवानि. (भा. प्र.)

वात नाशक - चतुर्बीज चूर्ण के नित्य सेवन से

अजीर्ण, शूल, आध्मान, पार्श्वशूल, कटिव्यथा.

21) ककारष्टक गणः कलिंग, कारवेल्लक, कदली, काकमाची, कुसुम्भ, कर्कोटी, कूष्माण्ड, कर्कटी

(पारद (रस) सेवन काल में ककाराष्टक गण का सेवन न करें)

*** पारद जारणार्थ, मारणार्थ - 4 वर्ग.**

रक्तवर्गः मंजिष्ठा, कुंकुम, लाक्षा, खदिर, असन..... (रसार्णव) दाडिम, पलाश, लाक्षा, बंधुक, हरिद्रा, कुसुम, मंजिष्ठा ..... (रा. नि.)

शुक्लवर्गः सूधा, कूर्म, शंख, शुक्ती, वराटिका..... (रसार्णव)

* कुर्म (कच्छपपृष्ठ) के जगह खटिक.....(रा. नि.)

पीतवर्गः कुसुम, किंशुक, हरिद्रा, पतंग, मदयन्तिका...(रसार्णव)

* किंशुक, कर्णिकार, हरिद्रव्दय.....(र. र. स.)

कृष्णवर्गः कदली, कारवेल्लक, त्रिफला, निलिका, नल, पंक, कासीस, बालाम्र... (रस चूडामणि) * पित एवं कृष्ण वर्ग पारद रंजनार्थ.

श्वेतपुष्प (र. र. स.) - तगर, कुटज, गुंजा, जीवन्ती, श्वेतकमल, विदारीकंद, कन्दपुष्प., लोहमलनाशक गण - कापाली, ध्वंसी, कंगु

*** देवकर्दम** - चंदन, अंगरू, कर्पूर, केशर.

यक्षकर्दम - कर्पुर अगुरु, कस्तुरी, कंकोल, यक्षधुप.

22) मधुरवर्ग / जीवनीय गण (भा. प्र.): अष्टवर्ग, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, जीवन्ती, मधुक, रक्त, पित्त नाशक.

23) त्रिकटूः शुण्ठि, मरिच, पिप्पली..... (सु.)4KU:K↓

विश्वोपकुल्यामरिच ..... (भा. प्र.), त्र्यूषण, व्योष, कटुत्रिक पयार्य

श्वासकासघ्न, त्वग्दोषनाशक, गुल्ममेहकफस्थौल्याश्लीपदनाशक.

चतुरूषण - (त्र्युषण + पिप्पलीमुल)

24) कटुचतुजातः एला, त्वक्, पत्र, मरिच ..... (भा. प्र.)

(चतुर्जात - त्वकेला पत्रकेशरै ः।)

25) पंचकोलः (वंगसेन आरोग्यपंचक कहा)

पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक,नागर., रुक्ष,तीक्ष्ण,पाचन,दीपन, श्रेष्ठ

4 KU, पित्त कोपनम; कफ, वात, गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्न .... (भा. प्र.)

26) षडूषणः पंचकोल + मरिच, प्रभाव से विषघ्न,

(पंचकोल - स्निग्ध, षडूषण - रुक्ष)

27) पंचतिक्तः (गुडुची, निम्बमुलत्वक, वासा, कंटकारी,पटोलपत्र)...(र.त.)

28) अम्लपंचकः अम्लवेतस, जंबीर, मातुलुंग, नारंग, निम्बुक,

फलपंचाम्ल, अम्लपंचफल.....(र. त.) or

i) कोल,दाडिम, वृक्षाम्ल, चुल्लकी, अम्लवेतस .... (रा.नि.:R.R.S. - चुल्लिका)

ii) जंबीर, अ

(व्दितीयफल

29) अम्लवर्ग

निम्बुक गुणव

30) लवणः

3 लवण - र

4 लवण - सैं

5 लवण - सैं

(आचार्य याद

क्योंकि वह म

31) त्रिजातक

रुक्ष, तीक्ष्ण,

चतुर्जातकः

उपरोक्त दोनों -

त्वकेला पत्रके

32) पंचसुगंधि

सर्वगंधः चतुज

33) त्रिसमा /

34) त्रिकार्षिव

35) चातुर्भद्रः

36) बालचतु

37) त्रिमदः

38) क्षारव्दयः

39) क्षारत्रयः

40) क्षारपंचक

41) क्षारषष्टक

42) क्षाराष्टकः

43) क्षारदशक

इक्षु, अपामार्ग,

* क्षारवर्ग को

सर्व क्षारगण अ

44) महापंचविष

विषवर्गः श्रृंगिक

45) उपविषः (

*अर्कक्षीरं स्नुहि

46) त्रिशर्करा:

(त्रिसिता/सिता

त्रिवर्गत्रितय - ि

47) पंचसारः

विषमज्वर, क्षतक्ष

48) पंचांमृतः

49) पंचसिध्दौष

तैलकन्द, सुधाक

50) क्षीराष्टकः

माहिषंच यत।,

51) मूत्रपंचकः

52) मुत्राष्टकः

53) पित्तपंचकः

पित्तगणः वराह

रोहितमत्स्य,माज

ii) जंबीर, अम्लवेतस, नारंग, तिन्तिडीक, बीजपूर..
(द्वितीयफलम्लपंचक रा.नि.)

29) अम्लवर्गः चणकाम्ल और अम्लवेतस श्रेष्ठ....(RRS) धातुमन्दतानाशक निम्बुक गुणवत्तमम् है। (र.त.),(अन्य मत – अम्लवेतस/अम्लिका श्रेष्ठ है।)

30) लवणः 1 लवण - सैंधव, **2 लवण** - सैंधव + सौवर्चल,
3 लवण - सैंधव + सौवर्चल + वीड,
4 लवण - सैंधव + सौवर्चल + वीड + सामुद्र,
5 लवण - सैंधव + सौवर्चल + वीड + सामुद्र + गड सांभार
(आचार्य यादवजी ने विड लवण को नवसागर कहा है। क्योंकि वह मल - मूत्र से बनाता है ।)

31) त्रिजातक / त्रिसुगंधि / त्रिवर्णक : (त्वक्, एला, पत्र..सु.)
रुक्ष, तीक्ष्ण, लघु; उष्णवीर्य,
चतुर्जातकः उपरोक्त + नागकेशर दीपन, वर्ण्य विषघ्न
उपरोक्त दोनों – कफ,वात ↓, पित्त↑, (पित्त प्रकोपक वाग्भट)
त्वकेला पत्रकेशर है : मुखदुर्गन्धीनाशक....(भा. प्र.)

32) पंचसुगंधिकःकर्पुर, कंकोल, लवंग, पूग, जातिफल, गुणधर्म- मनोहर
सर्वगंधः चतुर्जात, कर्पूर, कंकोल, अगुरू, लवंग, शिलारस.. (9 द्रव्ये)

33) त्रिसमा / संमत्रितयः हरितकी, शुण्ठी, गुड

34) त्रिकार्षिकः नागर, अतिविषा, मुस्ता.

35) चातुर्भद्रः त्रिकार्षिक + गुडुची. (भै. र.)

36) बालचतुर्भद्रः अतिविषा, मुस्ता, पिप्पली, कर्कटश्रृंगी

37) त्रिमदः विडंग, मुस्ता, चित्रक.

38) क्षारव्दयः सज्जीक्षार, यवक्षार.....(भा.)

39) क्षारत्रयः सज्जीक्षार, यवक्षार, टंकण....(रा. नि.)

40) क्षारपंचकः यव, मुष्कक, सर्ज, पलाश, तिल....(भा.)

41) क्षारषष्टकः धव, अपामार्ग, कुटज, लांगली, तिल, मुष्कक...(रा.नि.)

42) क्षाराष्टकः पलाश,वज्री,शिखरी,चिंचा,अर्क,तिलनाल+ क्षारव्दय...(भा.)

43) क्षारदशकः शिग्रु, मूलक, पलाश, चुक्रिका, चित्रक, आर्द्रक, निम्ब, इक्षु, अपामार्ग,कदली.
* क्षारवर्ग को रसार्णव ने मलनाशक कहा है।
सर्व क्षारगण अग्नितुल्य व गुल्मशूलहर है ।

44) महापंचविषः (भा.प्र.,रा.नि.) श्रृंगिक,कालकूट,मुस्तक,वत्सनाभ,सक्तुक
विषवर्गः श्रृंगिक, कालकूट, वत्सनाभ, कृत्रिमविष, पित्तविष (RRS)

45) उपविषः (रा.नि. 7):भा. प्र. यो.र. शांरगधर -7 (रसतरंगिणी 11)
*अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं ....सप्तोपविषजातय।।....(रा.नि.)

46) त्रिशर्कराः
(त्रिसिता/सितात्रय/सितात्रिक) गुड, मधु, हिम (सिता)इनसे उत्पन्न
त्रिवर्गत्रितय - त्रिफला + त्रिकटु + त्रिजात - वाग्भट

47) पंचसारः श्रृतपयः, शर्करा, पिप्पली, मधू, घृत ... (सु.उ. 39)
विषमज्वर, क्षतक्षीण, क्षय,श्वास, हृद्रोग. (मधुरत्रय + श्रृतपय पिप्पली)

48) पंचामृतः गुडुची, गोक्षुर, मुशली, मुण्डी, शतावरी.... (रा. नि.)

49) पंचसिध्दौषधिकः
तैलकन्द, सुधाकन्द, क्रोडकन्द, रुदन्ती, सर्पनेत्र....(रा.नि.)

50) क्षीराष्टकः नागीनां वडवायाःकारभ, अविक्षीरं अजाक्षीरं गोक्षीरं माहिषंच यत।, उष्ट्रीनामथ नागीनां वडवायाःस्त्रियास्तथा। (च.सू.)

51) मूत्रपंचकः गो, अजा, मेषी, महिष, गर्दभ.... (रा. नि.)

52) मुत्राष्टकः अवि, अजा, गाय, भैंस, हस्ति, उष्ट्र, अश्व, खर

53) पित्तपंचकःमत्स्य, गोपित्त, अश्व, मनुष्य, मयूर...(रसार्णव)
पित्तगणः वराह महिष, क्रोडमत्स्य, छाग,शिखाण्डिन (मयूर) कृष्णसर्प, रोहितमत्स्य,मार्जार.

विडवर्गः पारावत(कपोत),चाष,शिखि (मोर),कुक्कुट,गृध्र,सर्वलोह शुध्दि
* योनि साधर्म्यानुसार वर्गिकरणः

54) पंचगव्यः गो (दुग्ध, दही, घी, मूत्र, गोबर). (र.त.)
पंचाजः उपरोक्त द्रव्य परंतु बकरी के (RRS)
पंचमाहिषः उपरोक्त द्रव्य परंतु महिष (RRS)

55) पंचामृतः गो (दुग्ध, दहि, घृत), मधू, शर्करा.
रसकर्म, प्रसाधकर्म, भौम गण.

56) त्रिलोहः सुवर्ण, रजत, ताम्र

57) पंचलोहः उपरोक्त + वंग, नाग....(रा. नि.)
ग्रहांगपंचलोहकः सुवर्ण, रजत, ताम्र, वंग, कृष्णायस.

58) षड्लोहकः सुवर्ण, रजत, ताम्र, त्रपु, सीसक, आयस.....

59) अष्टलोहः पंचलोह + (कान्त, मुण्ड, तीक्ष्ण) लोह... (रा. नि.)

60) सप्तधातुः स्वर्ण, रजत, ताम्र, वंग, यशद, सीस, लोह...(भा. प्र.)
ये धातु गिरिसंभव है ।

61)सप्तोपधातुः
स्वर्णमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक, तुत्थ, कांस्य, रिति, सिंदुर, शिलाजतु.

62) त्रिगंधकः गंधक, हरताल, मनःशिला.

63) अंजनत्रितयः कालाजन, पुष्पांजन रसाज्जन...(रा. नि.)

64) पंचमृत्तिकाः इष्टिकाचूर्ण, भस्म, वल्मीकमृत्तिका, गैरिक, लवण.
लवणवर्ग, क्षारवर्ग - भौम + औद्भिद.

65) चातुर्भद्रमः किराततिक्त, मुस्ता, गुडूची, विश्वभेषजम् (भा. प्र.)
वात कफ ज्वर हर.

66) जिरकत्रितयः भा. प्र. जीरक, कृष्णजीरक, कारवी.

67) उपरत्नः 10 (रत्न - 9) वैक्रान्त, सूर्यक्रान्त, स्फटिक,चन्द्रकान्त, राजावर्त, फिरोजा, अकीक, तृणकान्त, नागाश्म, यशद.

68) अष्टवर्ग (भा. प्र.).....8 द्रव्यः.

अष्टवर्ग	प्रतिनिधी द्रव्य	कर्म
जीवक - ऋषभक	विदारीकन्द	रक्तपित्तहर
मेदा - महामेदा	शतावरी	भग्नसंधानकारक
काकोली-क्षीरकाकोली	अश्वगंधा	वाजीकर
ऋध्दि - वृध्दि	वाराहीकंद	तृष्णादाह प्रशमन
		ज्वरघ्न/क्षयघ्न

69) सर्वौषधीगण (रा. नि.): कुष्ठ,जटामांसी, हरिद्रा, वचा, शैलेय, चन्दन, कर्पूर, मुस्ता, गुरा.
सुगंधामलक - सर्वौषधिगण + आमलक त्वचा.

70) शोधनीय गणः काँच, टंकण, क्षिप्र, शुक्ति

71) शोधनत्रितयः काँच, सुहागा, सौवीरांजन.,

72) द्रावक गणः गुंजा, मधु, गुड, सर्पि, सुहागा, गुग्गुल.
मित्र पंचकः उपरोक्त Except गुड

73) हिंगत्रय - हिंगु, नाडीहिंगु, हिंगुपुत्री (ग. नि)

74) त्रिकार्षिक – पटोलपत्र, मधूर, भद्ररोहिणी (कूटकी)

75) पंचकार्षिक – त्रिकार्षीक + नागरमोथा + हरितकी

76) सप्तकार्षिक – पंचकार्षिक + निम्बपत्र + उशीर

77) नवकार्षिक – सप्तकार्षिक + सप्तपर्ण त्वक् + आरग्वधफल
सभी कार्षिक ज्वर के लिए उपयोगी है।

78) पंचातिक्तगण – यो.र., वृ.नि.र. बालरोग – विसर्प, कूष्ठ.
बिल्व, पटोल, क्षुद्रा, गुडूची, वासा.

79) पंचतिक्त क्वाथ – वंगसेन, वृ.नि.र. – ज्वर.
क्षुद्रा, पूष्करमूल, चिरायता, गुडूची, शूण्ठी

80) पंचपल्लव - भा.प्र., यो.र. मुखरोग,
पटोल, निम्ब, जम्बू, आम्र,मालती
81) पंचभद्र - भा.प्र. ज्वर (VP).
गुडूची, पर्पट, मुस्ता, किराततिक्त, शूण्ठी
82) पंचमूष्टीक यूष - भा.प्र., यो.र.- ज्वर
यव, कोल, कूलत्थ, मूद्ग, मूलक
83) पंचकषाय - वृन्दमाधव, वंगसेन.
तिन्दुक, अभया, लोध्र, मंजिष्ठा, आमलकी
84) पंचसम चूर्ण - यो.र. आमवात.
हरितकी, शूण्ठी, पिप्पली, कालानमक, त्रिवृत्त.
85) पंचाग्नि चूर्ण - वृ.नि.र.-
अम्लवेतस, अर्जूनत्वक, स्नूही, मूर्वा, सुरणकंद.
86) पंचनिम्ब चूर्ण - मूल, पत्र, फल पूष्प, त्वक - शारंगधर - कूष्ठ
87) पंचमुत्र - अजा, गो, सुरागाय, खर, उष्ट्र (ग.नि.)
88) पंचसकार - शूण्ठी, सौंफ, सनाय, सैधानमक, हरितकी
89) समशर्कर चूण-लवंग, जायफल,पिप्पली,शुण्ठी,कालीमिर्च,शर्करा.
90)कूष्माण्डदिगण:अमूर्च्छित पारद से उत्पन्न विकारों को शान्त करता है।
91) कृमि नाशक द्रव्य:
श्लीपदकृमि - शाखोटक, स्नायु कृमि - शिग्रु, निगुण्डी
अंकुश कृमि - यवानीसत्व, भल्लातक तैल,
स्फीत कृमि - कम्पिल्लक, पुग, दाडिमत्वक
तन्तु कृमि - एलुआ, चिरायता,नीम, तिक्तद्रव्य
गण्डूपद कृमि - चौहार, पलाशबीज, विडंग, पारिभद्र, इन्द्रयव.

गुण

* निर्गुणासु गुणा स्मृता।....(सु. सू. 40/12)
गुण आमंत्रणे धातु
आकृष्यन्ते जना यस्माद द्रव्य प्रति बलादिव।...(आचार्य प्रियवत शर्मा)
समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः।....(चरक)
गुणाः गुणाश्रया नोक्ता ।....(च.सू.)
अथ द्रव्याश्रिताः श्रेयाः निगुणा निष्क्रिया गुणाः।...(कारिकावली)
द्रव्यं गुणकर्माश्रयः गुणस्तु गुणकर्मानाश्रयः इति द्रव्यतो भेदः। ....(यो.र)
द्रव्याश्रय अगुणवान संयोग विभागेष्व अकारणम.
अनपेक्ष इति गुणलक्षणम्। ....(वै.द.)
विश्वलक्षणा गुणाः।.....(रस वैशेषिक/सू.168)
गुणानामेवमेकलक्षणावरोधो नास्ति।...(भा. प्र.)
चरक टिकाकार कविराज गंगाधर राय गुण को समवायी कारण मानते है।
चक्रपाणी गुण (3 प्रकार) - A) सामान्यः
i) गुर्वादि - शारीरगुण (गंगाधर राय), (चिकित्सीय गुण By च.)
ii) परादि - चिकित्सा के उपायभूत गुण
B) वैशेषिकः
C) आत्मगुण (आध्यात्मिक गुण) - 6
आधिभौतिक गुण - सामान्य - 30, वैशेषिक - 5 = 35
सार्था गुर्वादयो बुध्दिःप्रयत्नान्ता परादयः। गुणा प्राक्ता।..(च.सु.1/45)
* गुरुर्मन्द हिमस्निग्ध श्लक्ष्ण सान्द्रमृदुस्थिराः।
गुणाः ससूक्ष्म विशदः विंशति स विपर्ययः।। (वा.सू.1)
(सु.) Speciality - व्यवायी,विकासी, सुगंध,दुर्गंध,आशुकारी, कर्कश
Not Mentioned खर, स्थिर, कठिन.
भाव प्रकाश Speciality शुष्क.
चक्रपाणी आध्यात्मिक गुण को आत्म गुण कहते है।

गुण (कुल 41)

- **आध्यात्मिक 6**
  1) बुध्दि
  2) सुख
  3) दुःख
  4) इच्छा
  5) व्देष
  6) प्रयत्न
- **आधिभौतिक 35**
  - **सामान्य 30**
    - **गुर्वादि 20**
      1) गुरु x लघु
      2) मंद x तिक्ष्ण
      3) हिम x उष्ण
      4) स्निग्ध x रुक्ष
      5) श्लक्ष्ण x खर
      6) सान्द्र x द्रव
      7) मृदु x कठिन
      8) स्थिर x सर
      9) सूक्ष्म x स्थूल
      10) विशद x पिच्छिल
    - **परादि 10**
      1) परत्व
      2) अपरत्व
      3) युक्ति
      4) संख्या
      5) संयोग
      6) विभाग
      7) पृथकत्व
      8) परिमाण
      9) संस्कार
      10) अभ्यास
  - **(सार्थ) विशिष्ट 5**
    1) शब्द
    2) स्पर्श
    3) रुप
    4) रस
    5) गंध

योगिन्द्रनाथ सेनः अध्यात्मिक गुण - 7 (Extra मन के विषय)
कुल गुण 42
नागार्जुनः कर्मण्यगुण (विशिष्ट सामर्थ्य सम्पन्न) - 10
कर्मजगुणः शीत, उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष, विशद, पिच्छिल, गुरु, लघु,मृदु,तीक्ष्ण.
सुश्रुतः द्रव, सान्द्र, आशुकारी, सूक्ष्म, श्लक्ष्ण, कर्कश
(च. - मंद - तीक्ष्ण, मृद - कठिण, श्लक्ष्ण - खर),
सुगंध, दुर्गंध (Not by च.), सर मंद (च. - स्थिर - सर)
कणाद - 17 गुण (शब्द नही),
प्रशस्तपाद - 24 गुण (शब्द),
न्यायदर्शन - 24 गुण (रुप रस गंध स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुध्दि, सुख, दुख, इच्छा, व्देष, प्रयत्न गरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म,शब्द)
* नियंतसंख्यावादि - गुर्वादि गुण संख्या 20
* अनियत संख्यावादि - 20 से अधिक
व्यवायी - सर (हेमचन्द्र मत द्रव)
विकासी - तीक्ष्ण (हेमचन्द्र मत खर)
गुण समावेशः सुगंध - मन्द में समावेश,
दुर्गंध, विस्त्र - तिक्ष्ण में
आशुकारि - चल में
प्रसन्न - स्थूल में
शुचि, विमल का विशद में समावेश होता है।
* परादि गुणों का वर्णन (च.सू. 26)
विशिष्ट गुण - 5 (शब्द स्पर्श रुप रस गंध)
अर्थाः शब्दादयो ज्ञेया गोचराःविषया गुणाः। (च.शा.1)
गुण - Pharmacological Action (डॉ. घाणेकर)
1) परत्व, 2) अपरत्व.
परत्वं प्रधानत्वं, अपरत्वं अप्रधानत्वं....(चक्रपाणी)

पर-सन्निकृष्ट, अ
परत्वं सान्निकृष्टत
विपरीत अपरत्वं
देश कालवयोमा
आदि i. e. प्रकृति
पर
देश- मरु देश
काल - विसर्ग क
वय- तरुण वय
शरीर-शरीर का
विपाक -मधुर
वीर्य -शीत
रस- मधुर
3) युक्तिः युक्ति
मात्राकालाश्रया
या कल्पना यौ
सिध्दी - युक्तिप
4) संख्याः
संख्या स्यात् ग
संख्या Also - र
5) संयोगः संय
यो
समवाय
a) नित्य
b) द्रव्य के गु
से रहनेवाल
संयोग प्रकारः
चरकः व्दंव्दक
सक्रिय सहभा
वैशेषिक दर्शन
नये विव्दानानु
* (हरिद्रा + चू
6) विभाग प्र
विभागस्तु विभ
प्राप्ति पूर्विका
विभाग -अनित
i) एककर्मज,
परंतु वैशेषिक -
उदा. शाखा से
7) पृथकत्वः
प्रकार - 3 i)
ii) वैलक्षण्य -
ii) विरुपता -
(पृथकत्व - पं
8) परिमाणः
परिमाणं पुनम
परिमितिव्यवह
परिमाणं भवेन
* परिमाण -
* अमरकोश

पर-सन्निकृष्ट, अपर - विप्रकृष्ट....(वैशेषिकदर्शन)
परत्वं सान्निकृष्टत्वम् उपयोगितायामसन्नत्वम्।
विपरीत अपरत्वंम्।....(योगिन्द्रनाथ)
देश कालवयोमान पाकवीर्य रसादिषु परापरत्व।..(च. सू. 26)
आदि i. e. प्रकृति, बल.....(चक्रपाणि)

पर	अपर
देश- मरु देश	आनूप देश
काल - विसर्ग काल	आदान काल
वय- तरुण वय	Except तरुण Others
शरीर-शरीर का प्राकृतमान	अतिस्थुल और अतिकृश
विपाक -मधुर	अम्ल, कटु
वीर्य -शीत	उष्ण
रस- मधुर	अन्य

3) युक्तिः युक्तिश्च योजना या तु युज्यते।....(चरक)
मात्राकालाश्रया युक्ति।.....(चरक)
या कल्पना यौगिकी भवति सा तु युक्तिरुच्यतें...(चक्रपाणि)
सिध्दी - युक्तिपर अवलंबित.
4) संख्याः
संख्या स्याद् गणितम्।....(च.) उदा. 8 ज्वर, 50 महाकषाय,
संख्या Also - संप्राप्ती प्रकार.
5) संयोगः संयोग पुनः व्दयोर्बहुना वा द्रव्याणां संहतिभावः।...(च.वि.1)
योग सह संयोग उच्यते।.....(च.सू.1)

समवाय	**संयोग**
a) नित्य	a) अनित्य
b) द्रव्य के गुणकर्म से रहनेवाला संबध	b) एक द्रव्य का दुसरे द्रव्य से रहनेवाला संबध

संयोग प्रकारः चरक - 3, वैशेषिक दर्शन - 3
चरकः व्दंव्दकर्मज – 2 द्रव्य संयोग, सर्वकर्मज - 2 से अधिक द्रव्य सक्रिय सहभाग, एककर्मज - उदा. एकदोषज विकार.
वैशेषिक दर्शनः अन्यतरकर्मज, उभयकर्मज, संयोगज
नये विव्दानानुसार संयोग प्रकारः भौतिक, रासायनिक.
* (हरिद्रा + चूना- लोहितवर्ण i. e. विकृतिविषमसमवाय(See च.वि.1))
6) विभाग प्रकारः 3
विभागस्तु विभक्ति स्याद वियोगो भागशा ग्रहः ।
प्राप्ति पूर्विका अप्राप्ति विभागः।....(योगिन्द्रनाथ)
विभाग -अनित्य और प्रकार - 3 -
i) एककर्मज, ii) व्दंव्दकर्मज, iii)सर्वकर्मज.
परंतु वैशेषिक - सर्वकर्मज के जगह विभागज.
उदा. शाखा से पत्र अलग होना Also means वृक्ष से पत्र अलग होना.
7) पृथकत्वः पृथकत्व स्यादसंयोगो वैलक्षण्य अनेकता।....(च.)
प्रकार - 3 i) असंयोग - मरु प्रभाव चंदन और हिमप्रभव सोम.
ii) वैलक्षण्य - हरितकी और आमलकी का अलग पन.
iii) विरुपता - एक ही जाति के भेद. उदा. हरितकी के 7 भेद.
(पृथकत्व - पंचमी विभक्ति, अन्योन्याभाव - पंचमी विभक्तिं नहि.)
8) परिमाणः
परिमाणं पुनर्मानम्।.....(च.सू.26)
परिमितिव्यवहारकारणं परिमाणं,मानं प्रस्थाढकादि।.(योगिन्द्रनाथसेन)
परिमाणं भवेन्मानव्यवहारस्य कारणम्।....(कारिकावली)
* परिमाण - 4 प्रकार (अणु, दीर्घ,महत,ह्रस्व).....(कारिकावली)
* अमरकोश मान प्रकार - 3 (पौतव, द्रुवय, पाय्य)

परिमाण
- दैर्घ्यमान
  - नित्य
  - अनित्य
- गुरुत्वमान
  - नित्य
  - अनित्य
  - संख्याजन्य
  - परिमाणजन्य
  - प्रचयजन्य

9) संस्कारः संस्कारः कारणं मतम्।.....(च.सू.26)
संस्कारो हि गुणान्तराधानम् उच्यते।....(च.वि.1)
कारणं हि स्वाभाविकानां द्रव्यानामाभिसंस्कारः।.....(च.वि.1)
*** प्रकार - 3 .....(वैशेषिक)**
a) वेग - मूर्त द्रव्यों में गती का प्रवाह, b) स्थितिस्थापकत्व,
c) भावना - वैशेषिक ने भावना यह आत्मा पर का संस्कार माना है।
10) अभ्यासः भावाभ्यसनं अभ्यासः शीलनं सततक्रिया।..(च.सू.26)
अभ्यास पर्याय - शीलन, सतत क्रिया.
(गुर्वादि गुण वर्णन हेमाद्री अनुसार पदार्थ विज्ञान नोट्स में देखिए।)
i) **वायु** - खर, सर, (विकासी - ना.)
ii) **तेज** - उष्ण, तीक्ष्ण (र. वै.)
ii) **जल** - शीत, स्निग्ध, पिच्छिल, श्लक्ष्ण, सान्द्र, द्रव...(सुश्रुत)
iv) **पृथ्वी** - स्थूल, कठिण, स्थिर...(सु.),
जल + पृथ्वी - गुरु,मन्द (वैशेषिक)...(सु.)
आकाश + जल -मृदु (नागार्जुन)
आकाश + वायु + तेज – व्यवायी, लघु (ना.) सुक्ष्म
वायु + तेज + पृथ्वी - रुक्ष, (शुष्क – ना.)
आकाश + वायु + तेज + पृथ्वी - विशद
सादोपलेपबलकृत गुरु तर्पण बृंहणम।
लघुस्तद विपरीत स्याद् लेखनो रोपनस्तथा।।
ह्लादनं स्तम्भनः शीतो मूर्च्छातृटस्वेददाहजित।....(भा.प्र.)
उष्ण स्तदविपरीत स्यात पाचनस्य विशेषतः।।
स्नेहोमार्दवकृत्स्निग्धो बलवर्णकरस्तथा।
रुक्षस्तदविपरीत स्यात विशेषात् स्तम्भनः खरः।।
मन्दो यात्राकरः स्मृतः।....(चिरकारी)
दाहपाककरस्तीक्ष्ण स्त्रावणः मृदुरन्यथा सरोऽनुलोमनःप्रोक्त।
पिच्छिलो जीवनो बल्यः संधान श्लेष्मलो गुरुः।
विशदो विपरीतोः ऽस्मात क्लेदाचूषण रोपणः।।
सुक्ष्मस्तु साक्ष्म्यात सूक्ष्मेषु स्त्रोतसु अनुसर स्मृतः।
सान्द्र स्थूलः स्याद बन्धनकारकः।....(All above ref by (सु.सू.)
*** कर्कशो विशदो यथाः श्लक्ष्ण पिच्छिलवत ज्ञेय।... (सु.)**
श्लक्ष्ण -नागार्जुन - तैज, सु. - जल, च. - आकाश
चिरकारित्वं मन्दत्वं.....(आ. द.)
दाहनाशकत्वं शीतत्व.....(आ. द.) और (अरूणदत्त)
शिथिलावयवत्यं मृदुत्वं.....(अरूणदत्त)
खर - वायु + पृथ्वी...(च.), वायु + तेज...(सु.),वायु...(नागार्जुन)
महाभूतो के विशिष्ट गुणः

	चरक	भा. प्र.	सु. (रक्त पांचभौतिक संगठन)
आकाश –	अप्रतिघात	लघु	आकाश - लघुता
वायु –	चल (स्थैर्य)	रुक्ष	वायु - स्पंन्दन
तेज –	उष्ण	तीक्ष्ण	तेज - राग
जल –	द्रव	स्निग्ध	जल - द्रवता
पृथ्वी –	खर	गुरु	पृथ्वी - विस्त्रता

स्थैर्य By काश्यप Other same

1) लघु - शीघ्रपाकी, लघु पथ्यं परं.....(भा. प्र.)

2) गुरु - पुष्टि, चिरपाकी. .....(भा. प्र.)

3) स्निग्ध - वृष्य, बलावहम् .....(भा. प्र.)

4) रुक्ष - समीरणकरं परंकफहरं मतम्.....(भा. प्र.)

5) तीक्ष्ण - पित्तकरं प्रायो लेखन कफ वातघ्न

6) द्रव - क्लेदकरो व्यापी।

7) आशु - आशुकरोदेहे (धावयत्यंमसितैलवत)।

8) स्थिर - स्थिरो वातमलस्तभी।

9) सर - सरस्तेषां (वातमलानाम) प्रवर्तकः।

10) विशद - क्लेदच्छेदकाख्यातो विशदो व्रणरोपणः।

11) पिच्छिल – तन्तुलबल्यो सन्धान श्लेष्मलो गुरु।

12) श्लक्ष्ण - स्नेह विनाऽपि स्यात् कठिणोऽपि चिक्कणः।

13) स्थुल - स्थौल्य करो देहे स्त्रोतसामवरोधकृत।

14) सुक्ष्म - देहस्य सूक्ष्माच्छिद्रेषु विशेद्यत् सूक्ष्ममुच्यते ।

* द्रवत्वं स्यंदनकर्मकारणम।.....(प्रशस्तपादभाष्य)

* गुरुत्वं जलभूम्योपतनकारणम्।।....(प्रशस्तपादभाष्य)

गुरु	- वात ↓कफ ↑	x	लघु	- वात ↑कफ ↓
शीत	- पित्त↓वात कफ ↑	x	उष्ण	-पित्त ↑ वात कफ ↓
स्निग्ध	- वात ↓कफ ↑	x	रुक्ष	- वात ↑कफ ↓
मन्द	- पित्त↓कफ ↑	x	तीक्ष्ण	- पित्त↑कफ ↓

वात वर्धक – विशद, खर, सूक्ष्म,कठिण

कफ वर्धक – मृदु, पिच्छिल, श्लक्ष्ण, स्थूल, स्थिर, सान्द्र, द्रव

द्रवत्वः 2 प्रकारः a) नैमित्तिक द्रवत्व - तेज एवं पृथ्वी

b) सांसिध्दिक द्रवत्व - जल

संस्कार (त्रिविध) - वेग, भावना, स्थितीस्थापक (प्रथमपाद)

व्यवायि गुण - पहले संपूर्ण शरीर में व्याप्त होने के पश्चात उसका पाक होता है। उदा. भंगा, अहिफेन.....(शारंगधर)

विकासी गुण - धातुबन्ध मोक्ष.....(सु.)

संधिबंध शिथिल, विश्लेष Of ओज एवं धातु..(शा.) उदा. क्रमुक,कोद्रव.

* सुगन्धी गुण सुखानुबन्धी, सूक्ष्म, सुगंधी, रोचन, मृदु.

* दुर्गन्धी गुण हृल्लास - अरुचिकारक.

आशुकारि - आशुत्वाद धावति अंभसि तैलवत।

गुणप्रधान्यवादः (सु. -10 Pts.) i) रसानुग्रह ii) रसाभिभव, iii) विपाककारणत्व गरुविपाक - शीतस्निग्धगुरुपिच्छिल, लघुविपाक - लघुरुक्षविशदतीक्ष्ण, iv) संख्याबाहुल्य, v) प्रयोगबाहुल्य(बहुधोपयोगात), vi) कर्म बाहुल्य (अनेकर्मत्वात्), vii) विषय बाहुल्य (महाविषयत्वात्), vii) उपदेशात्, ix) अपदेशात (व्यवहार), x)अनुमानात्.

रसः

तत्र रस गतौ धातु अहरहर्गच्छती इती अतो रसः।...(सु.सू.14)

तस्मात् रसाः प्रधानां रसेषु गुणसंज्ञा।...(सु.सू.14)

रसनार्थो रसः।....(च.सू.1)

रस्यते आस्वाद्यते इति रसः।

रसनेन्द्रियग्राह्य योऽर्थ स रसः।

रसस्तु रसनाग्राह्यो मधुरादि अनेकधा।

रसनात सर्वधातूनां रसेन्द्र इति किर्तितः।....(RRS)

रस - द्रव्याश्रित

रस - च. 6...(स्वादु - अम्ल - लवण - कटु - तिक्त - कषाय)

अ. हृ. 6... (स्वादु - अम्ल - लवण - तिक्त - उषण-कषाय)

यथापूर्व बलवान्.

आयुर्वेद में "रस" शब्द 4 अर्थोसे प्रयुक्त.

धातु, पारद, कल्पना (स्वरस), इन्द्रियार्थ.

अ. सं.: रसौं के स्वादलक्षणसे "एकत्व", अपरिसंख्येयत्व

रस - 6, Cause 3 - गुणसामान्य, कर्मसामान्य, जातीसामान्य

नागार्जुनः (रस - 6) कारण - 2 – प्रत्यक्ष प्रमाण, आप्तोपदेश

सूत्रकारप्रामाण्यात्, आस्वादात्।

रसों की भौतिक निष्पत्ति का निर्धारण अनुमान से।

(ते निर्धायंते ऽनुमानम्)

आधुनिकः रस संख्या - 4 –

(Sweet - मधूर, Sour - अम्ल, Salt - लवण, Bitter - तिक्त, Astringents - कषाय, Volatile Oil & Pungent - कटु)

रस 1 धातु में 3015 कला रुकता है,

शुक्र निर्माणार्थ 1मास (सु.सू.)

(शारंगधर)		(अ.ह.सू.10)
धरा अम्बु	← मधुर	→ क्ष्मा अम्भो
क्ष्मा अनल	← अम्ल	→ अग्नि क्ष्मा
जल ज्वलन	← लवण	→ अम्बु तेज
आकाश मारुत	← कटु	→ ख वायु
वाय्वाग्नि	← तिक्त	→ अग्नि अनिल
क्ष्माऽनिले	← कषाय	→ गोऽनिले

रसों के समवायि कारणः जल - मुख्यरुप से योनी है।

पृथ्वी - अमुख्यरुप से अधिष्ठान है।

रसभिव्यक्ति एवं वैशिष्ट्य के कारण - (आकाश + वायु + तेज)

विशेष कारण For अभिव्यक्ती (चक्र. - निमित्तकरण)

ऋतुनुसार रसोत्पत्तिः शिशीर - तिक्त, वसंत - कषाय, ग्रीष्म - कटु, वर्षा - अम्ल, शरद - लवण, हेमंत – मधुर.

ऋतु में महाभूताधिक्य वर्णन इन्दु टिका.

रस	अनुरस
i) व्यक्त	i) अव्यक्त / ईषद् व्यक्त
ii) शुष्कावस्था में स्थायी	ii) शुष्कावस्था में अस्थायी
iii) आदि में प्रतिति	iii) अन्त में प्रतिती.

अन्तरिक्ष जल - प्रकृतीशीत, अव्यक्तरस...(च.; सु.)

रसज्ञान - प्रत्यक्ष से - रस का सामान्य ज्ञान,

अनुमान से - रस का विशिष्ट ज्ञान,

आप्तोपदेश - रस का प्रायोगिक ज्ञान (नागार्जुन)

महाभूतों का दोषोंपर परिणामः

दोष	शामक	प्रकोपक
वात	तेल जल, पृथ्वी	आकाश वायु
पित्त	वायु, जल पृथ्वी	तेज
वात	आकाश वायु तेज	जल पृथ्वी.....(सु.सू.41)

रसवैशेषिक भाष्यकार ने आप्तवचन के त्रविध्य स्पष्ट किए है।

अनुमेयार्थ, श्रध्देयार्थ, प्रत्यक्षार्थ.

वायु + तेज प्रधान रस उर्ध्वज, लघु.... (चरक)

जल + पृथ्वी - अधोगामी.....(चरक)

विरेचन द्रव्य - जल + पृथ्वी प्रधान, गुरू....(चरक)

वमन द्रव्य - वायु + तेज प्रधान, लघु.....(चरक)

संशमन - आकाश गुणभूयिष्ठ, संग्राहिक - वायु गुणभूयिष्ठ

दीपन - तेज गुणभूयिष्ठ,

लेखन - वायु + तेज.; बृंहण - जल + पृथ्वी....(सु.सू.41)

रस का रुपान्तर निम्न कारणों सेः

i) संयोगतः - चुने के संयोग से चिंच मधुर होता है ।

ii) अग्नेपाकात - चिंच एवं जांभूळ अग्निपाक से मधुर होते है।

iii) भावना - तिल-कषायमधुरतिक्त,यष्टिमधु क्वाथ से मधुर।

iv) देश -
v) काल - कदलीफल-कषाय परंतु कालप्रभाव से मधुर
vi) परिणाम - दुध - मधुर, दही - अम्ल.
vii) उपसर्ग - इक्षु को कृमि लगने पर - अम्ल तिक्त होना.
viii) विक्रिया - तालफल को आग में पकाकर भूमिपर पटकने से तिक्त
ix) पात्रस्थिती - कांस्य पात्र में दही कटु होता है ।
x) अन्यत्थात्वगमन - भात - मधुर, कुछ देर में अम्ल.
xi) आतप - तुम्बरुफल - कषाय, शुष्कावस्था में - मधुर.

द्विविध रसः सुश्रुतः सौम्य – मधुर-तिक्त-कषाय, आग्नेय – अम्ल-लवण-कट
नागार्जुनः सौम्य – पित्मूर्च्छा शमन अविदाही,आग्नेय–पित्तवर्धक मूर्च्छालक विदाहि
मधुर अम्ल लवण - स्निग्ध, गुरु. कटु तिक्त कषाय - रुक्ष, लघु
(बध्दमलकारक - तिक्तकटुकषाय, सृष्टविण्मूत्रवात - लवणाम्लमधुर वाग्भट)

रस	प्रधान	मध्यम	अवर
गुरु	मधुर	कषाय	लवण
लघु	तिक्त	कटु	अम्ल
शीत	मधुर	कषाय	तिक्त
उष्ण	लवण	अम्ल	कटु
स्निग्ध	मधुर	अम्ल	लवण
रुक्ष	कषाय	कटु	तिक्त

Note : सु. - अम्ल मध्य गुरु, कषाय उत्तम लघु
कुछ आचार्य लवण अवर लघु मानतें है।

स्निग्ध शीतो गुरुश्च मधुर, लघु उष्ण स्निग्धश्च अम्ल,
नात्यार्थगुरु स्निग्ध उष्णश्च लवण, लघु उष्ण रुक्षश्च कटु
रुक्षः शीतो लघुश्च तिक्त, रुक्षः शीतो ऽलघुश्च कषाय

अपवादः
i) आमलकी – अम्ल रस परंतु शीत वीर्य
ii) सैंधव – लवण रस परंतु उष्ण नहिं
iii) पिप्पली और रसोन – कटु रस परंतु स्निग्ध एवं गुरु
iv) अर्क, अगुरु, गुडुची – तिक्त रस परंतु उष्ण
v) हरीतकी – कषाय रस परंतु अनुलोमन
vi) बृहत्पंचमूल – कषाय - तिक्त रस परंतु उष्ण
vii) औदक और अनुपमांस – मधुर रस परंतु उष्ण

	शामक रस	कोपक रस
वात	मधुर अम्ल लवण	कटु तिक्त कषाय
पित्त	मधुर तिक्त कषाय	अम्ल लवण कटु
कफ	कटु तिक्त कषाय	मधुर अम्ल लवण

अपवादः
i) मधुर - मध,मिश्रि,जंगलमांस,पुराणशालि,यव,गोधूम,मूंग,कफ शामक
ii) अम्ल - दाडिम, आवला - पित्त शामक,
iii) लवण - सैंधव - चक्षुष्य
iv) कटु - शुण्ठि, पिप्पली, रसोन - वृष्य है, वातवर्धक नही
v) तिक्त - वेताग्र, गुडुची, पटोल, वृष्य है, वातवर्धक नही
vi) कषाय -शीत, स्तम्भन परंतु हरितकी - अनुलोमक

रसों का दोषोंपर प्रयोगक्रमः (काश्यपः अ. सं.)

	आदि	मध्य	अन्त
वात	लवण	अम्ल	मधुर
पित्त	तिक्त	मधुर	कषाय
कफ	कटु	तिक्त	कषाय

आहार में रसों का सेवन क्रम.....(सु.)
पूर्व - मधुररस सेवन, मध्य - अम्ल लवण रस सेवन
पश्चात् - शेष रस (i. e. कटु तिक्त कषाय)

भोजन में पथ्यः भोजनाग्रे सदा पथ्य लवणाद्रक भक्षण
(i. e. अग्निसंदीपन, रुच्य, जिव्हाकंठविशोधन),
(भा. प्र.) अगर पहले लवण, अम्ल,कटु, उष्ण रस सेवन से विदाह उत्पन्न हुआ हो, बाद में विदाह शमनार्थ मधुर रस सेवन करें।
वायु - समान योनि कषाय रस
कफ - समान योनि मधुर रस, अन्ययोनि - कटुरस
पित्त - समान योनि कटु रस.... (सु.)
रस भेदः रसों के संयोग से - 57
रसा के विकल्प से - 63 (कल्पना)
तर + तम भेद से - असंख्य
धातुमलदोषानुसार रसभेद - असंख्य
रस भेद – 63: 1) (1-1) भेद से: 6. 2) (2 - 2) भेद से:15, 3) (3 - 3) भेद से: 20, 4) (4 - 4) भेद से:15, 5) (5 - 5) भेद से: 6, 6) 6 रस भेद से: 1
कालप्रभावः 1) बालाम्र - कषाय, तरुण आम्र - अम्ल, पक्व आम्र - मधुर
2) औषधी हेमन्त ऋतु में - मधुर, वर्षा ऋतु में - अम्ल.
(रस वर्णन चरक सुत्र 26 में देखिए।)

विपाकः

1st defined by वाग्भट.
जाठरेनाग्निना योगाद्यदुदेति रसान्तरम्।
रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः।।...(वा.सू.9)
रसानां परिणामान्ते जरणनिष्ठकाले यद।
रसान्तर रसविशेषा उदेति उत्पद्यते स विपाकः।। (अरूणदत्त)
विशिष्टः जरणनिष्ठाकाले रसविशेषस्य पाकः प्रादुर्भावः विपाकः।
अवस्थापाकापेक्षयाः विशिष्ट पाकः **विपाकः**।....(शिवदाससेन)
परिणामलक्षणो विपाकः।.... (नागार्जुन)
पाक पचनं द्रव्याणां स्वरुपरस्याः परावृत्ति।
सा च स्वरुपान्तरत्वेन रसान्तरत्वेन च परिणतिः,
तस्य विशेषो विपाकः।... (गंगाधर)
आहारपाकः 2 i) अवस्थापाक (i. e. प्रपाक) ii) विपाक (i. e. निष्ठापाक).
अवस्थापाकः i) मधुरावस्थापाक में फेनरुप से कफोत्पत्ति (आमाशय).
ii) अम्लावस्थापक पच्यमानापूर्वि, अच्छपित्तोत्पत्ति.(ग्रहणी)
iii) कटु - शोष्यमान वन्हि, परिपिण्डित पक्व वायु उत्पत्ति.(पक्वाशय)

अवस्थापक	निष्ठापाक
i) आवस्थिक परिणाम	अंतिम परिणाम
ii) मूलभूत दोष की उत्पत्ति	धातुरुप
iii) प्रत्यक्षगम्य	अनुमानगम्य
चक्रपाणिः कफपित्तवृध्दि	मलरुप से उत्पत्ति

द्रव्य पाचन क्रम में प्रथम जाठराग्नि भूताग्निः धात्वग्नि
विपाकः कर्मनिष्ठया.....(च.)
विपाकदोषः जल में कौनसा दोष रहने पर जल देरी से पचेगा (चिराद्विपच्यते) अथवा विष्टंभ उत्पन्न करने के पश्चात पचेगा । .... (सु. सू. 44)
गुरु - पृथ्वी, जल, लघु - तेज, वायु, आकाश....(सु.सू.40)
रसप्रधानं आहारद्रव्यम्। वीर्य प्रधान औषधद्रव्यम् ।।...(चक्रपाणि)
विपाक रसमल - विवेक के समकालीन माना जाता है।..(चक्रपाणि)
उपधातु रस में गुणस्वरुप में विपाक की उपस्थिती।..(गंगाधर राय)
भूताग्नि एवं धात्वाग्नि का अधिष्ठान - यकृत
विपाकवादः व्दिविध, पंचविध, षड्विध...सुश्रुत
i) व्दिविध विपाकवाद....(सु.)
ii) त्रिविध विपाकवाद....(च.; वा.; पराशर)
iii) पंचविध विपाकवाद....(सु.)

iv) षड्विध विपाकवाद -यथारसविपाकवाद, अनियतविपाकवाद - (बलवान रस अबल रस को वशिभूत करता है।)...(शिवदास सेन, र. वै. इत्येके) (गंगाधर राय, शारंगधर) - विपाक (मधुर, अम्ल, कटु)

पंचभूतात्मके देहे आहारः पांचभौतिकः।

विपक्वः पंचधा सम्यक् स्वान् गुणानभिवर्धयेत।।....(सु.सु.46)

इत्यनेन पंचधा पाको अभिहतः।....(चक्रपाणी)

इत्यनेन पंचधा ऽपि विपाक....(शिवदाससेन)

i) मधुरविपाक - (मधुर, लवण) रस, अम्ल विपाक - अम्ल,

कटु विपाक - कटु, तिक्त, कषाय....(च.सू.26), वाग्भट

ii) अम्लविपाक - अम्ल रस, कटु विपाक - कटु

मधुर विपाक - शेष 4 रस...पराशर

iii) दोष 3 ∴ विपाक 3..... (योगिन्द्रनाथसेन)

त्रिविधविपाक वाद का आधार - त्रिदोषवाद

व्दिविध विपाकवाद का आधार - पंचमहाभूतवाद

गुरू विपाक - चिरकालिक विपाक

लघु विपाक - अचिरकालिक विपाक.....(नागार्जुन)

आमलकी प्रभाव से त्रिदोषघ्न, शुण्ठि मधुरविपाक से वृष्य

हिंगु उष्णविर्य से वातशमन, रक्तार्कपुष्प (मधुर,तिक्त) रस से रक्तपित्तशामक

1) व्दिविध विपाकः..... (सु.; नागार्जुन)

पृथ्वी, जल – गुरू → मधुर विपाक

तेज, वायु, आकाश - लघु → कटु विपाक...(सु.)

भुतविपाकवाद/गुणविपाकवाद.....(सु.)

गुणाः विपाकयोः कारणम्।..... (नागार्जुन)

i. e. गुरू - गुरू, शीत, स्निग्ध, पिच्छिल,

लघु - लघु, तीक्ष्ण,रुक्ष, विशद

यथारसविपाकवाद खण्डन...(अ.स.)

रस - प्रत्यक्षगम्य, विपाक - अनुमानगम्य

नागार्जुन -रस एवं विपाक इनके लक्षण भिन्न-भिन्न है।

2) अनियत विपाकवादः अनियमन/अनवस्था का कोई स्थान नही।

3) पंचविध विपाकवादः व्दिविध के स्वरुप।

4) त्रिविध विपाकवादः खण्डनः.... by... (सु.; नागार्जुन)

विदग्ध पित्त - अम्ल रस, विदग्ध कफ - लवण रस

खण्डन के लिए – 1) नागार्जुन - 3 a) काल चिरकालिक द्रव्य (गुरु): अचिरकालिक (लघु) द्रव्य, b) गुण, c) रस

2) सु: - 2 a) आगम, b) पंचमहाभूत गुण, अम्ल विपाक न मानने में यही कारण

अम्ल विपाक को गुरू....(योगिन्द्रनाथ सेन,शिवदास सेन,चक्रपाणि दत्त)

अम्ल विपाक को कटु....(हाराणचंद्र)

अम्ल विपाक को लघु...(गंगाधर राय, प्रियवत शर्मा, यादवजीत्रिकमजी)

गुरु - कफ↑, वात,पित्त↓ - सृष्टविण्मूत्र,

लघु -वात पित्त↑, कफ↓ - बध्दविण्मूत्र...(सुश्रुत)

चरकः

मधुर विपाकः	स्निग्ध, गुरु	कफवर्धक	शुक्रल सृष्टविण्मूत्र
अम्ल विपाकः	स्निग्ध, लघु	पित्तवर्धक	शुक्रनाशक सृष्टविण्मूत्र
कटु विपाकः	रुक्ष, लघु	वातवर्धक	शुक्रनाशक बध्दविण्मूत्र

रसेरसौ तुल्यफलः।...(अ.सं.सू.), (रस एवं विपाक के कर्म Same है)

मधुर रस का मधुर विपाक उत्तम.

लवण रस का मधुर विपाक अवर.

कटु रस का कटु विपाक मध्यम

तिक्त रस का कटु विपाक अवर

कषाय रस का कटु विपाक उत्तम

विपाक उपलब्धिः विपाकः कर्मनिष्ठ्या।...(च.सू.26)

कार्येन अनुमीयते।...(चक्रपाणि)

रस एवं विपाक भेदः

	रस	विपाक
लक्षण	रसेंद्रिय ग्राह्यगुण	विपाकःकर्मनिष्ठया
काल	प्रथम प्रचिती अवस्थापाक	विपाक अन्त में
कर्माधिष्ठान	शारीर एवं मानस कर्म	शारीर कर्म
कर्म	स्थानिक	सार्वदैहिक
उपलब्धि	रसे निपात द्रव्यानां	विपाकः कर्मनिष्ठ्या

विपाक प्राधान्यः i) दोषशमनवर्धन, ii) धातु निर्माणक्रम, iii) आहार व औषध द्रव्य गुण-दोष के लिए विपाक की अपेक्षा रखते है।

सम्यक् मिथ्याविपाकानि गुणं दोषं व जनयति।....(सु.सू.40)

सम्यक् विपाकानि गुणः,मिथ्याविपाकानि दोषं जनयति।....(चक्रपाणि)

[सैंधव सामुद्र विड सौवर्चल रोमक औदभिद. i) यथोत्तर उष्ण, वातव्ज पित्तकफकर, ii) यथापूर्व स्निग्ध, स्वादु, सृष्टमूत्र पुरीष]

वीर्य

"वीर्यशब्द From वीर विक्रान्त" धातु से.

"वीरयते विक्रान्तः कर्मसामर्थो भवति अनेन इति वीर्यम।"

"येन् कुर्वन्ति तद् वीर्यम्।".... (च.सू.26) (सु.सू.41)

"विर्य तु क्रियते येन या क्रिया।".....(च.सू.26)

गुणविर्यवादः शक्तिमात्रवीर्यवाद.... (च.) एवं चक्रपाणि.

पारिभाषिक वीर्यवाद...(सु.; वा.)

शक्तिमात्रवीर्यवाद - शास्त्रीय

(गुणवीर्यवाद) पारिभाषिक वीर्यवाद - लौकिक (वृध्दवाग्भट)

कर्मवीर्यवादः कर्मलक्षण वीर्यम्।.....(नागार्जुन), (भावमिश्र, निमी)

द्रव्यवीर्यवादः शिवदाससेन चक्रपाणी-3 मृदू, मध्य, तीक्ष्ण

सु. प्रभाव का अंतर्भाव वीर्य में

(संख्याः असंख्य - चरक), बहुविधवीर्यवाद - इन्दु

अष्टविधवीर्य - गुरू, शीत, स्निग्ध, मृदु, लघु, उष्ण, रुक्ष, तीक्ष्ण.

उष्णशीतोगुणोत्कर्षात तत्र वीर्य द्विधा स्मृतम्।...(वा.सू.1, अंसं.सू.1)

वाग्भट – द्विविधविर्यवाद बताया एवं अष्टविधवीर्यवाद माना है।

20 गुणों में से 8 गुणों की ही वीर्यसंज्ञा क्योंकि 6 कारण..(वा.सू.)

i) समग्रगुणसारता, ii) शक्त्युत्कर्ष, iii) व्यवहारमुख्यता, iv) बहुलता, v) उपयोगिता, vi) प्रबलता.

महाभूताधिक्य वीर्य संबंधः

तीक्ष्ण, उष्ण - तेज	शीत, पिच्छिल - जल
स्निग्ध - जल पृथ्वी	मृदु - जल, आकाश
रुक्ष - वायु	विशद - वायु, पृथ्वी

दोषघ्नताः

उष्णस्निग्धौ – वात↓	(गरु विपाक - वात पित्त↓)
शीतममृदु पिच्छिल – पित्त↓	(लघु विपाक - कफ↓)
तीक्ष्णरुक्ष विशद – कफ↓	
मृदुशीतोष्ण - स्पर्शग्राह्य,	स्निग्ध, रुक्षो - चक्षुषो,
पिच्छिल, विशद - चक्षु + स्पर्श,ग्राह्य	तीक्ष्णो मुखे दुःखोत्पादनात्।
पलाण्डु, मूलक - स्निग्ध वीर्य,	कपित्थ, क्षौद्र - रुक्ष वीर्य
पिप्पली, आमलक, सैंधव - मृदुशीतवीर्य	

निमि 15 वीर्यः 1) अधोभागहर - जल +, पृथ्वी (J+P)

2) उध्वभागहर - तेज + वायु (TV) 3) उभयतो - PTV.

4) सांग्राहिक - PV 5) संशमन - VJP 6) दीपन - PT.

7) जीवनीय - PJ 8) प्राणघ्न - VT 9) मादन - VT,

10) शीतीकरण - J 11) शोधकर (कफ) - PJ 12) शोथघ्न - AV.
13) पाचन - T 14) दारण - कटुरस VT 15) रोपण - VJP.
चक्रपाणि - (मृद, मध्य, तीक्ष्ण) वीर्य

रस	विपाक	वीर्य
मधुर	मधुर	शीत
अम्ल	अम्ल	उष्ण
कटु	कटु	उष्ण
लवण	मधुर	उष्ण
तिक्त, कषाय	कटु	शीत

शीतः प्रल्हादन, विष्यंदन, स्थिरीकरण, प्रसादन कफ, वात ↑ पित्त ↓ क्लेदन, जीवन, स्तम्भन, बल्य, गुरू, वृष्य
उष्णः दहन, पाचन, मूर्च्छन, स्वेदन, वमन, कफ, वात ↑ पित्त विरेचन, विलयन, भ्रम, तृष्णा, ग्लानिजनन, लघु अवृष्य (द्रव्यगुणसंग्रह)
स्निग्धः स्नेहन, बृहण, संतर्पण, वाजीकरण, वयः स्थापन. वात↑
रुक्षः संग्रहण, पीडन, विरुक्षण, उपरोपण. कफ↓वात↑
गुरूः उपलेप, बृहण, संश्लेषण, वाजीकरण, पूरण, वात↓
लघुः लेखन, क्लेदाचूषण, विरुक्षण, उपरोहण कफ↓
मृदुः रक्तमांसप्रसादन, सुस्पर्शन. पित्त↓
तीक्ष्णः संग्रहाचूषण, अवदारण, स्त्रावण. कफ↓
शीतवीर्य - रक्तपित्तप्रसादन....(अ.सं.सू.17)
मधुर रस - मधुर विपाक Then वीर्य -शीत
अम्ल, कटुरस - अम्ल कटु विपाक Then वीर्य - उष्ण

वीर्य अपवादः

	रस	विर्य
आनुपमांस	मधुर	उष्ण
सैंधव	लवण	मृदुशीत (नोष्ण)
आमलक	अम्ल	मृदुशीत (नोष्ण)
धातकी	कषाय	शीत
हरितकी	कषाय	उष्ण
बृहत पंचमुल	कषायतिक्त	उष्ण
अर्क, अगुरु, गुडुची	तिक्त	उष्ण

वीर्य प्राधान्यः..... (नागार्जुन - 4): i) वीर्यप्राधान्यात द्रव्याणाम्
ii) कर्मकरणात्, iii) तुल्यरसगुणेषु विशेषात, iv) आगमाच्च
वीर्य प्राधान्यः.....(सु.) Due to तव्दशेन औषधिकर्मनिष्पत्ति

द्रव्य	रस	वीर्य
कुलत्थ	कषाय	उष्ण
पलाण्डु	कटु	स्निग्ध
इक्षु	मधुर	शीत
पिप्पली	कटु	मृदशीत
काकमाची (मकोय)	तिक्त	उष्ण
मत्स्य	मधुर	उष्ण
कपित्थ	अम्ल	रुक्ष
क्षौद्र (मध)	मधुर	रुक्ष
मुलक	कटु	स्निग्ध

गुडुचीः तिक्त रस से पित्तकफहर, उष्ण वीर्य से वातहर, मधुर विपाक से वृष्य, प्रभाव से वातरक्त शामक.

प्रभाव

प्रभवति सामर्थ्य विशिष्टं भवति द्रव्यमनेन इति प्रभावः।
रसवीर्य विपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते।
विशेषकर्मणा चैव प्रभावस्तस्य स स्मृतः।। (च.सू.26)
रसादिसाम्ये यत् कर्म विशिष्टं तत् प्रभावजम्।....(वा.सू.9) (अ.सं.सू.17)
सर्वातिशायी द्रव्यस्वभावः **प्रभावः**।...(अ.सं.सू. 17)
रसवीर्यविपाकादिगुणातिशयवानलम।
द्रव्यस्वभावो निर्दिष्टः यः प्रभावः स कीर्तितः।।....(अरुणदत्त)
प्रभाव को कर्म गंगाधर राय.

चरकोक्त प्रभाव उदाहरणः
i) दन्ती एवं चित्रक 4 KU But दन्ती विरेचक Cause प्रभाव,
ii) विष - विषघ्न, iii) मणि धारणजन्य कर्म,
iv) उर्ध्व एवं अनुलोमिक (वमन एवं विरेचन) कर्म,
v) तिल एवं मदनफल Both मधुर कषाय तिक्त स्निग्ध पिच्छिल but मदनफल is वामक,
vi) मधुयष्टि एवं द्राक्षा both मधुर एवं शीत but द्राक्षा प्रभाव is विरेचक
vii) दूध एवं घृत both मधुर शीत परंतु only घृत is दीपन प्रभाव
viii) रसोन कटुरस, कटुविपाक, स्निग्धगुरुवीर्य रहकर भी - कफवात शामक, ix) आमलकी, रक्तशालि - त्रिदोषहर
x) यवक - त्रिदोषप्रकोपक, xi) शिरिष - विषघ्न प्रभाव,
xii) अगददर्शन - विषहर प्रभाव, xiii) निद्रा - विषवर्धन प्रभाव,
xiv) वाजीकरणानि - शीघ्र शुक्रोत्पत्ति प्रभाव,
xv) शंखपुष्पी आदि मेध्य रसायन के प्रभाव पुंसवन, आयुष्य, रक्षोघ्न , शल्यकर्षण कर्म.

आधुनिक दृष्टिनुसार प्रभावः
1) Pharmacological औषधिय - दन्ती - रेचन
2) Toxico Logical अगदीय - शिरिष - विषघ्न
3) Bacteriological रक्षोघ्न - गुग्गुल, जटामांसी - भूतघ्न
4) Psychological मानस - वशीकरण
5) Physical भौतिक - चुम्बक से शल्याकर्षण.
प्रभावजन्य कर्म-Empirical Action, वीर्यजन्य कर्म-Rational Action
शक्ति - चिन्त्य, अचिन्त्य - प्रभाव
अमीमांस्यानि अचिन्त्यानि प्रसिध्दानि स्वभावतः।...(सु.सू.40)
समान प्रत्यारब्ध व विचित्र प्रत्यारब्ध द्रव्य(Introduced by also अरुणदत्त, वा.):
1) गोधूम - मधुर गुरू – वातहर (समान प्रत्यारब्ध)
यव - मधुर गुरू – कफहर (विचित्र प्रत्यारब्ध)
2) दुग्ध - मधुर गुरू- शीतवीर्य (स.)
मत्स - मधुर गुरू - उष्णवीर्य (वि.)
3) शूकर मांस - मधुर गुरू - मधुरविपाक (स.)
सिंह मांस - मधुर गुरू - कटुविपाक (वि.)
4) घृत - शीतवीर्य - दीपन (वि.)
वसा - उष्ण वीर्य - अग्निसादन (वि.)
मुदग - कटुविपाक – पित्त शामक (वि.)
माष - मधुरविपाक - पित्त वर्धक (वि.)
फाणित - गुरुस्निग्धउष्ण - वात कर (वि.)
दधि, पारावत - गुरू- दीपन, (वि.)
कपित्थ, दाडिम - अम्लरस - ग्राही (वि.)
धात्री समानप्रत्ययारब्ध - सर
धातकी पुष्प - कषायरस शीतवीर्य - ग्राही (स.)
हरीतकी - कषायरस उष्ण - रेचन (वि.)

प्रभाव प्राधान्यः 7.....(नागार्जुन - 6)
i) अचिन्त्यता, ii) दैवप्रतिघात, iii) विषप्रतीघात,
iv) कर्मवैशिष्ट्ये, v) अद्‌भुत कर्म,
vi) आगम, v) तुल्यरसगुणेषु विशेषात्।

*** गुणप्राधान्य 10**

i) रसाभिमव ii) रसानुग्रह iii) उपदेश iv) अपदेश v) अनुमान
vi) विपाक्त कारणत्व vii) संख्याबाहुल्य viii) प्रयोगबाहुल्य (बाहुधोपयोगात)
ix) कर्म (अनेककर्मत्वात्) x)विषय (महाविषयत्वात्)

रसप्रधान 11

i) अधिकार
ii) उपदेश
iii) अनुमान
iv) आगम (र.वै.)ऋचिस्पन सु.
v) उपसंहार
vi) व्यापत्तानिमित्त
vii) अपदेश
viii) अनेकविषयत्व
ix) प्रवृत्तिनिमित्त
x) आशुकारित्व
xi) गुणव्यपदेश (गुणविषयत्व)

विपाकप्राधान्य 4

i) दोष प्रशमनवर्धन
ii) धातूपदेहात्
iii) शास्त्रप्रामाण्य
iv) आहार एवं औषध द्रव्य गुण दोष के लिए विपाक की अपेक्षा रखते है ।

वीर्यप्राधान्य 4

i) वीर्यप्राधान्यात द्रव्यानाम
ii) कर्मकरणात्
iii) तुल्यरसगुणेषु विशेषात्
iv) आगमाच्चं

Common: उपदेश, अपदेश, अनुमान - रस एवं गुण
आगम - वीर्य, प्रभाव, रस,
तुल्यरसगुणेषु विशेषत - वीर्य, प्रभाव शास्त्रप्रामाण्य – द्रव्य, विपाक.

द्रव्य कर्म :प्लीहासंकोचक - रोहितक प्लीहघ्न प्रभाव,
प्लीह शत्रु - शरपुंखा
प्लीहावृध्दि में उपयोगी - झाबुक, हपुषा – प्लीहहंत्री.
मादक + वेदनास्थापन - पारसिक यवानी; **गर्भकर** - पूत्रजीवक,
गर्भपातन - लांगली, निद्राजनन - सर्पगंधा, **कुष्ठघ्न** - खदिर,
श्वित्रकुष्ठघ्न - बाकुची; विरेचन - दती, **मृदुविरेचन** - द्राक्षा,
रेचन - कंकुष्ठ; **गर्भाशयवेदनाशामक** - अशोक.
त्रिदोषघ्नः गुग्गुल - भूर्जपत्र, हरितकी, सुनिषण्णक.
मेध्यः i) ज्यातिष्मति, ii) कुष्माण्ड, iii) मण्डूकपर्णी, iv) ऐन्द्री,
v) ब्राम्ही, vi) वचा, vii) उस्तखुदुस.
कृमिघ्नः i) विंडग, ii) पलाश, iii) तुलसी, iv) चौहार, v) इंगुदी,
vi) अफसंतीन, vii) बर्बरी, viii) आखुकर्णी.
अश्मरिघ्नःi) कुलत्थ, ii) पाषाणभेद, iii) गोरक्षगंजा,iv) वरूण -अश्मरिभेदन
वमनः i) मदनफल, ii) शणपुष्पी, iii) हिज्जल, iv) अरिष्टक
उभयतोभागहरः i) धामार्गव, ii) कुटुतुम्बी (कृतवेधन), कोशातकी
अशोघ्नः i) महानिम्ब, ii) सूरण
विषघ्नः i) अंकोल, ii) रास्ना, ii) श्लेष्मान्तक, iv) शिरिष, v) कतक,
vi) चक्षुष्या, vii) छिलहिन पातालगारुडी.
मादकः i) अहिफेन, ii) भंगा, iii) सूची, iv) ताम्रपर्ण, v) धत्तुर.
हृद्यः अर्जुन,कर्पुर,हृत्पत्री,वनपलाण्डू,ताम्बूल,करवीर,पीतकरवीर,तरुणी.
श्वासहरः शटी, कर्चुर, पुष्करमूल, भारंगी, दुग्धिका, सोम.
छेदनः बीमतक, वासा, तालिश, लवंग, त्वक्, यष्टीमधु, गोजिव्हा, रुमी मस्तगी, बोल, उषक, लोबान, बनपाँ, खूबकला,तोदरी,खत्मी,जूफा,सिल्हक.
कण्ठयः मलयवचा, हसपदी., **हृदयोत्तेजकः** कॉफी., **श्लेष्मपूतिहरः** सरल, तैलपर्ण., **रक्ताभारशामकः** रुद्राक्ष., **गण्डमालानाशनः**कांचनार,काण्डीर
कासहरः पिंप्पली, कंटकारी, बृहती, कासमर्द, कर्कटशृंगी, अगस्त्य.
शोथहरः अग्निमंथ, पाटला, गंभारी, मानकन्द, हिंस्त्रा, शाखोटक, अधःपुष्पी
मदकारीः अहिफेन,भंगा., **आक्षपजननः** कुपीलु, **केश्यः** नारिकेल, तिल, भृंगराज, नीलिनी., **संज्ञास्थापनः** वचा, जटामांसी, चोरक.,
आक्षेपशमनः भुर्जपत्र, ऊदसलीब., **विदाहीः** राजीका, तिलपर्णी.,
चक्षुष्यः ममीरा, पियाराँग, चक्षुष्या, कतक., **स्नेहोपगः** द्राक्षा, श्लेष्मातक.,
वदनास्थापनः रास्ना, कदम्ब, पद्मक, वेतस, जलवेतस, पारसिक यवानी, गुग्गुल, एरण्ड, गन्धप्रसारिणी, तगर, निर्गुण्डी, पलाण्डु, रसोन, देवदार, मेदाकस, मुचुकन्द, गोरक्ष.**कर्ण्यः** सुदर्शन, परिभद्र., **वर्ण्यः** कुंकुम, केतक.,
नस्यः क्षवक.,**कण्डुघ्नः** करंज, कोशाम्र, जयन्ती, सर्षप, निम्ब, अरण्यबीज.
रस्यः मेषशृंगी., **स्वेदजननः** वत्सनाभ., **स्वेदोपगः** शोभांजन.,
उददप्रशमनः प्रियाल, तिन्दुक., **कुष्ठघ्नः** खदिर, हरिद्रा, वनहरिद्रा, आम्रगंधीहरिद्रा, भल्लातक, आरग्वध, तुवरक, बाकुची, जाती, मदयन्तिका, काकोदुम्बर, सैरेयक, चक्रमर्द, यूथिपर्णी., **रोचनः** वृक्षाम्ल, आम्लवेतस, दाडिम, मातुलुंग, जम्बीर, चांगेरी, तिन्तिडक.,
दीपनः हिंगु, अतिविषा, कलम्बक, चित्रक, मरिच, जीरक, कृष्णजीरक.
मृदुविरेचनः फल्गु, अतसी, अश्वगोल., **सुखविरेचनः** स्वर्णपत्री, त्रिवृत्त, कृष्णबीज, स्वर्णक्षीरी., **पाचनः** मुस्तक, एरण्डकर्कटी., **वमनः** मदनफल, ईक्ष्वाकु, धामार्गव, कृतवेधन, अरिष्टक, ताम्रपर्ण., **तीक्ष्णविरेचनः** दन्ती, द्रवन्ती, स्नुही, अर्क, इंद्रवारुणी, कंकुष्ठ, कटुका, अम्लपर्णी, कुमारी.
पुरीषजननः माष., **लालाप्रसेकजनन** - लंका,
मुखवैशद्यकर - लताकस्तुरी, **दन्तशोधन** - तेजोवती, **दन्तदाढर्यकर** - बकुल, तृप्तिघ्न - शुण्ठि, चव्य., **वातानुलोमनः** पूतिद्य, मरुबक, दमनक, शतपुष्पा, मिश्रेया, नाडीहिंगु., **संशोधनः** (उभयतोभागमध्ये), देवदाली.,
तृष्णानिग्रहणः यवास, धन्वयास, पर्पट, धान्यक., **विष्टंभीः** पनस,लकुच.,
ग्राहीः बिल्व, जातीफल, पर्णयवानी., **कृमिघ्नः** विडंग, पलाश, चौहार, इंगुदी, तुलसी, अफस्तीन, कीटमारी, कम्पिलक, भाण्डीर, आखुपर्णी
प्लीहघ्नः रोहितक, शरपुंखा, झाबुक., **गर्भरोधकः** जपा.,
गर्भाशयसंकोचनः ईश्वरी, कालाजाजी, कार्पास, लांगली, केबुक, हरमल, सिताब., **शुक्रजननः** मुशली, तालमुली, शतावरी, मखान्न, कोकिलास, मुंजातक, कपिकच्छु, उटंगण., **उपशोषणः** कुटज, अरलु, श्योनाक.,
स्तम्भनः धातकी, बब्बुल, आवर्त्तनि, शमी, मायाफल, मयूरशिखा, आकाशवल्ली, धन्वन, आवर्त्तकी; **अर्शोघ्नः** महानिम्ब, करीर, सूरण, सुनिषण्णक., **शुक्रशोधनः** कुष्ठ, कट्फल., **आर्तवजननः** वंश, शण.,
शुक्रस्तम्भनः आकारकरभ., **आर्तवसंग्रहणीयः** लोध्र, अशोक, पत्रांग
पुरीषविरजनीयः शल्लकी, शाल्मली., **यकृतः** दारुहरिद्रा, काकमाची, अपामार्ग, भूनिम्ब, दुग्धफेनी, कासनी, पारिजात., **प्रजास्थापनः** दूर्वा, कमल, कुमुद, कशेरुक, श्रृंगाटक, पुत्रजीवक., **स्तन्यजननः** नल,रोहिष.,
स्तन्यसंग्रहणीयः मल्लिका., **स्तन्यशाधनः** पाठा., **शूलप्रशमनः** यवानी, अजमोदा, चन्द्रशूर, धत्तूर., **मूत्रविरेचनीयः** पुनर्नवा, गोक्षुर, कुश, काश, शर, ईक्षु, भूम्याम्लकी, कंकोल, हपुषा, अननस, बन्दाक, त्रपुष.,
मूत्रसंग्रहणीयः जम्बू, आम्र, वट, उदुम्बर, अश्वत्थ, प्लक्ष, शाल, सर्ज, धव, तिनिश, अश्मंतक, विकंकत, कुपीतन (पारीष).,
विषमज्वरघ्नः सप्तपर्ण, कण्टकीकरंज, द्रोणीपुष्पी, तुलसी, कुनयन.,
बल्यः बला, अतिबाला, महाबला, राजबला, विदारी, वाराही, तवक्षीर.,
दाहप्रशमनः उत्पल, चन्दन, रक्तचंदन, एला, चम्पक, शैवाल, शैलेय.,
जीवनीयः जीवन्ती, मुद्गपर्णी, माषपर्णी.,,
अश्मरीभेदनः पाषाणभेद, वरूण, कुलत्थ, वीरतरु, गोरक्षगंजा.,
सन्धानीयः लज्जालु., **ज्वरघ्नः** सहदेवी, किरातिक्त, हरिद्रु, त्रायमाण, पटोल, मूर्वा, काष्ठदारू., **शीतप्रशमनः** अगुरू, बृहद्एला, समुद्रनारिकेल.,
रसायनः हरितकी, आमलकी, गुडुची, अश्वगंध, वृध्दंदारु, नागबला, नागदमन, उपरिष, गुंजा., **मधुमेहहरः** बीजक, कारवेल्लक, सप्तचक्रा, बिम्बी., **कोथप्रशमनः** अश्वकर्ण., **व्रणशोधनः** गांगेरुकी.,
विषघ्नः शिरिष, निर्विषा, छिलाहिण्ट,अंकोल., **रक्तप्रसादः** सारीवा, मंजिष्ठा, चोपचिनी, मुण्डी, सुरंजान, शिंशपा., **अंगमर्दप्रशमनः** शालीपर्णी, पृश्निपर्णी, मेथिका.,**व्रणरोपणः** मांसरोहिणी., **रक्तस्तम्भनः** प्रियंगु, नागकेशर, सुरपुन्नाग,

पुन्नाग, पर्णबी
अस्थिसंधानः
वाकेरी., ले
सदंपुष्पा,वनत्र

1) गुग्गुल -
2) जयपाल -
3) धत्तुर -
4) अहिफेन -
5) कुपीलु - गं
6) वत्सनाभ -
(प्रतिदिन गोमू
7) भंगा - (वि
8) गुंजा - गो
9) स्नुहीक्षीर
10) रक्तचित्र
11) हिंग - स
12) हिंगुल -
13) भल्लातव
उष्णजल से ध
15) धातु - तै
7 बार प्रत्येक
स्वरस 2 प्रहर
18) पारद - चू
Common:-
गोदुग्ध - गुग्गु
गोमूत्र - वत्सन
द्रव्य अशुध्दिः
i) भौतिक Phy
ii) रासायनिक
iii) सहज Nat
शोधन कर्म विइ
द्रव्यसंरक्षण 2
1) शुष्क विधी
2) आर्द्र विधी
शीशी के आच्छ
प्रशस्त भूमी -
चरक पौतवमान
सुश्रुत पौतवमान
शारंगधर पौतव
शारंगधर कलिं
द्रव्यसंग्रहकाल व
ग्रीष्मे मूलानि
हेमन्ते साराणि,
सु.सू. 37 प्रावृट
क्षीर सार फलान
और मधुस्निग्ध र
राज निघण्टुः
शरद - पंचांग,
द्रव्य संग्रहार्थ न

पुन्नाग, पर्णबीज, आयापान, झण्डू, शाक, रक्तनिर्यास, कुकुन्दर, जलकुम्भी., **अस्थिसंधानः** अस्थिश्रृंखला., **बृंहणः** खर्जुर,मधूक, छत्रक, **शोषहरः** रुदन्ती, वाकेरी., **लेखन (कर्शन):** चिरबिल्व,हैमवती.,**रक्तार्बुदनाशनः** सदंपुष्पा,वनत्रपुष्पी., **कर्कटार्बुदनाशनः** तिलपर्णी, दारुसिता, वनपलाण्डू.

द्रव्य शोधन

1) गुग्गुल - गोदुग्ध 1 प्रहर. उष्णता, तीक्ष्णता कम होती है.
2) जयपाल - गोदुग्ध 1 प्रहर, 3 बार स्वेदन.
3) धत्तुर - गोदुग्ध 1 प्रहर + उष्णजल से धोलें.
4) अहिफेन - आर्द्रक स्वरस 21 भावना.
5) कुपीलु - गोदुग्ध 1 प्रहर स्वेदन then छिलके निकालकर घत में भून लें.
6) वत्सनाभ - गोमूत्र में डुबाकर तीक्ष्ण धूप मे रखें 3 दिन तक (प्रतिदिन गोमूत्र To Be Changed) then गोदुग्ध, अजादुग्ध में स्वेद.,
7) भंगा - (विजया) गोघृत में भून लें.
8) गुंजा - गोदुग्ध/कांजी (1 से 2) प्रहर तक बीजचूर्ण का स्वेदन.
9) स्नुहीक्षीर - 2 पल स्नुहीक्षीर + 2 तोले इमलीस्वरस, धूप में रखें
10) रक्तचित्रक - चूर्णोदक में डुबाकर धूप में रखें।
11) हिंग - समभाग घृत में भून ल। (उष्णता, विदाह कम)
12) हिंगुल - निंबु स्वरस 7 भावना
13) भल्लातक - ईष्टीकाचूर्ण में 7 दिन रखें; पश्चात बाहर निकाल उष्णजल से धोलें, 14) रत्न - जयन्तीपत्रस्वरस, 1 प्रहर स्वेदन.
15) धातु - तैल - तक्रे - गवामूत्रे - कांजी - कुलत्थक्वाथ (गौरीपाषाण) 7 बार प्रत्येक में बुझायें (35).16) शंखविष (गौरीपाषाण) - कारवेल्लक स्वरस 2 प्रहर स्वेदन 17) गंधक - गोघृत में भून कर + गोदुग्ध
18) पारद - चूने सह 3 दिन मर्दन, रसोनकल्क (1 भाग) + सैंधव (1/2 भाग)

Common:-

गोदुग्ध - गुग्गुल, गुंजा, करवीर, जयपाल, धत्तुर., गोघृत - हिंगु, भंगा, गोमूत्र - वत्सनाभः गोदुग्ध & गोघृत - कुपीलु, गंधक.

द्रव्य अशुध्दिः 3 Types

i) भौतिक Physical - मलदोष
ii) रासायनिक Chemical - वन्हिदोष विशेषतः पार्थिव द्रव्य
iii) सहज Natural - विष दोष स्वभावतः हानिकर उदा. विष

शोधन कर्म विज्ञेय द्रव्यदोषनिवारणम्।.... (प्रि. शर्मा)

द्रव्यसंरक्षण 2 विधिः

1) शुष्क विधी (Dry Preservation).
2) आर्द्र विधी (Wet Preservation). Formalin (5 -10) %

शीशी के आच्छादित पात्र में रखते है।

प्रशस्त भूमी - साधारण/जांगल देश - चरक, (धन्व - साधारण वाग्भट)
चरक पौतवमान 6 वंशी (ध्वंशी) से शुरूवात,
सुश्रुत पौतवमान 12 धान्यमाष से शुरूवात,
शारंगधर पौतवमान 30 परमाणु से शुरूवात,
शारंगधर कलिंगमान 12 गौरसर्षप से शुरूवात.

द्रव्यसंग्रहकाल कालः च.क.1 शाखापलाशम् अचिरप्ररुढं वर्षावसन्तयोग्राह्यम् ग्रीष्मे मूलानि शिशिरे वा शीर्ण प्ररुढपर्णानां, शरदि त्वक कन्दक्षीराणि, हेमन्ते साराणि, यथ् ऋतु पुष्पफलमिति.
सु.सू. 37 प्रावृट वर्षाशरद हेमन्त वसन्त ग्रीष्मेषु, यथासंख्य, मूल पत्र त्वक् क्षीर सार फलान्याद, तत् तु न सम्यक् और अग्निय औषध आग्नेय ऋतु में और मधुस्निग्ध सौम्य i. e. (विर्यानुसार)

राज निघण्टुः वसन्त - पुष्प, ग्रीष्म - शाखा अचिरपत्र (निदाघ)
शरद - पंचांग, हेमन्त - कंद, शिशिर - मुल.

द्रव्य संग्रहार्थ नक्षत्र - पुष्य, अश्विनी, मृगशिरा

द्रव्य संग्रह - पूर्व/उत्तर दिशा में मुख करके
उत्तर दिशा के स्वामी (दिक्पाल) - चंद्र
पूर्व दिशा के स्वामी - सूर्य
चंद्र औषधीय और पुष्य + मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी.
अश्विनी नक्षत्र का स्वामी मृगशिरा
उत्तर दिशा की औषधि श्रेष्ठ क्योंकी - i) हिमालय पर्वत, ii) दिक्पाल चंद्र

स्कंध :-

अम्लस्कंध - रजत, तक्र., लवणस्कंध - शिस, क्षार, त्रपु.,
कटुस्कंध - पित्त, मुत्र, क्षार, अरूषकर, कुठेराधा.
तिक्तस्कंध - महत्पंचमुल,कास्य,लोह.,
कषायस्कंध - मुक्ता, प्रवाल, अंजन, गैरिक, पथ्याः अक्ष,शिरिष, खादिर.
वा. पटुरस को **लवण** रस, कश्यप ने पटुरस को मधुर कहा.
आमलकी त्रिदोषघ्नता....(सु.सू.46)
वात – अम्ल, पित्त – मधुर, शीत, कफ – रुक्ष, कषाय
गुडुचीः वात रोग - घृत, पित्तरोग – शर्करा, कफरोग - मधु
विबंध - गुड, उग्रवातरक्त - रुबुतैल (एरण्ड तैल साथ में),
आमवात - शुण्ठि.

निघण्टु

*** निघण्टु पर्याय** - निघण्ट, भाष्य, निघण्टन.
*** प्राधान्य से वनस्पती के मुख्य नाम और पर्याय**
By अष्टांग निघण्टु,पर्यायरत्नमाला,अभिधान रत्नमाला,निघण्टु शेष, माधवद्रव्य गुण
* आयुर्वेदीय निघण्टु शुरुवात
1) अष्टांग निघण्टु से - वाहटाचार्य.
2) पर्यायरत्नमाला - माधवकर 8 शतक
(8 शतक) **1) अष्टांग निघंण्टुः** (अष्टांग हृदय निघंटु)
वाहटाचार्य - a) प्राचीनतम निघंटु, b) आयुर्वेदीय निघंटु की शुरूवात.
(8 शतक) **2) पर्यायरत्नमालाः**माधवकर
(9 शतक) **3) सिध्दसार निघंटु/सारोत्तर निघंटुः** दुर्गगुप्तात्मज रविगुप्त, प्राचीन निघंटु.(10 शतक) **4) धन्वंतरी निघंटु/ द्रव्यावली/ गुणावलीः**
1) कर्ता - माहेंन्द्र भौगिक, निवास - ठाणेश्वरवासी
2) द्रव्यों के 7 वर्ग & 700 से अधिक द्रव्य वर्णन
(गुडुच्यादि, etc.), 3) Aso known as द्रव्यावली/गुणावलिः
i) गुडुच्यादि - उर्ध्व -अधोदोषहरण,रसायन,गुडुची, मदनपाल,दन्ती.
ii) शतपुष्पादि - दीपन, बल्य, मुखविशोधन शतपुष्पा, वचा, एला.
iii) चन्दनादि - गन्ध द्रव्य, श्रीमंता योगिनामर्ह.
iv) करवीरादि - नानाव्याधिप्रशमन, नानौषधसंग्रह, तुलसी, नकुलवर्ग
v) आम्रादि - फल, पुष्प, वल्कलयुक्त वृक्ष, हर्षण,गन्धसौरभ.
vi) सुवर्णादि → धातु, शुकधान्य, शमीधान्य,तैल, क्षार, मध, मांसवर्ग
vii) मिश्रकादि → त्रिफलादि गण.
अहिफेन,जयपाल,भांग,अग्निजार वर्णन,पारद,गुणधर्म detail में वर्णन.
(11 शतक) **5) इंदुनिघंटु** / चन्द्रनिघंटु /चन्द्रनंदन नि./ निमिनिघंटु / हटमेखनिघंटुः कर्ता - क्षीरस्वामी,
(11 शतक) **6) द्रव्यगुणसंग्रहः**शिवकोष - शिवदत्त मिश्र, पिता - चतुर्भुज, शण, कलाय, मसूर, मुद्ग - 2 प्रकार :
श्यामाक, द्राक्षा, दाडिम, गोधूम - 3 प्रकार, लवणः 8 प्रकार .
(12 शतक) **7) निघंटु शेषः/** अभिधान चिंतामणि, कर्ता - हेमचंन्द्र.
a) पर्यायशैलीपर आधारित, b) 6 काण्ड.
(12 शतक) **8) शोढल निघंटुः** (गुणसंग्रह/नामसंग्रह/नामगुणसंग्रह)
कर्ता - शोढल i) कुल – 27 वर्ग/अध्याय, ii) अर्क कल्पना,
iii) पाठा, खदिर कर्पुर - 2 प्रकार, चंदन - 8 प्रकार.

(1250) **9) माधव द्रव्यगुणः** माधवकवि i) भावस्वभाववाद, ii) 29 वर्ग

(1309) **10) सिंध्दमंत्र नि.:** वातघ्नत्वादिनिर्णय, कर्ता - केशव, पिता - महादेव, पूत्र - बोपदेव, प्रकाश व्याख्याः बोपदेव ने सिध्द मंत्र पर टिका.

11) हृदयदीपक नि.: बोपदेव, a) 8 वर्ग -

i) शतश्लोकी चन्द्रकला व्याख्या, ii) सिध्दमंत्र नि. पर प्रकाशव्याख्या, iii) शारंगधर पर गुढार्थदीपिका.

(14 शतक) **12)आयुर्वेदमहोदधिः** सुषेण वैद्यक, टिका = आरोग्यचिन्तामणि By दामोदर, a) ऋतुहरीतकी सदृश मातुलुंग सेवन विधान.

(1375) **13) मदनपाल नि.: (14 शतक)**

मदनपाल - यह दिल्ली के उत्तर की ओर काष्टा नगर के राजा थे। Also known as मदनविनोद; इ.स.1375; कुल - 13 वर्ग

i) अभयादि वर्ग; ii) शुण्ठ्यादि वर्ग, iii) कर्पूरादि वर्ग, iv) सुवणादि वर्ग, v) वटादि वर्ग, vi) फलादि वर्ग, vii) शाक वर्ग, viii) पानीयादि वर्ग, ix) इक्षुकादि वर्ग , x) धान्यगुण वर्ग, xi) धान्यकृतान्नादि वर्ग, xii) मिश्रक वर्ग (मिश्र वर्ग इसमें 1 भी द्रव्य का उल्लेख नही, दिनचर्या ऋतूचर्या वर्णन है)

प्रथम वर्णन: i) भंगा, ii) अहिफेन, iii) पारिसक यवानी.

(15 शतक) **14) राजनिघंटु/निघंटुराज/अभिधान चूडामणिः**

कर्ता - नरहरी पंडित, पिता - ईश्वरसूरि

कुल वर्ग - 23 - Max no of drugs

1) गुडुच्यादि	9) आम्रादि	17) अनुपादि
2) शताहवादि	10) चन्दनादि	18) भूम्यादि
3) पर्पटादि	11) सुवर्णादि	19) मनुलादि
4) पिप्पल्यादि	12) पानीयादि	20) सिंहादि
5) मूलकादि	13) क्षीरादि	21) रोगादि
6) शाल्मल्यादि	14) शाल्यादि	22) सत्वादि
7) प्रभद्रादि	15) मांसादि	23) एकार्थादि
8) करवीरादि	16) मिश्रकादि	

महाभूतानुसार द्रव्य वर्णन, रा.नि. द्रव्य नामभेद (वर्गीकरण) 7 आधार पर धन्वन्तरि निघण्टु का आधार लिया है।

रा. नि. में श्वेत, रक्त के अलावा पीत करवीर का विशेष उल्लेख है।

रा. नि. - कारस्कर,मायाकन्द,रुदन्ती,कुर्लिजन,झण्डु,उत्तम प्रकार से वर्णन.

(15 शतक) **15) कैयदेव नि.:** पथ्यापथ्यविबोधक कर्ता - कैयदेव.

द्रव्य वर्ग - 9 - 1) औषधि 2) धातु, 3) धान्य, 4) द्रव 5) पक्वान्न, 6) मांस, 7) विहार, 8) मिश्रक, 9) नानार्थवर्ग-पर्यायी नाम.

a) इस निघण्टुपर राघवभद्र की पदार्थदर्श नाम की व्याख्या है, जो इ. स. 1493 में लिखी गई।, b) लाहोर के मेहेरचंद इनमें से सिर्फ औषधिवर्ग यह पहिला भाग संपादित कर प्रकाशित किया है।,

(15 शतक)**16) नामरत्नाकरः** कैयदेव, a) 8 वर्ग (1551)

17) क्षेमकुतूहलः क्षेमशर्मा a) स्वस्थवृत्त, विषतंत्र दृष्टि से,उपयुक्त ग्रंथ. b) 12 अध्याय (16 शतक)

18) भावमिश्र निघंटुः सर्वश्रेष्ठ वर्गीकरणः By भावमिश्रः कुल 23 वर्ग-

1) हरितक्यादि फल और कंद प्रयोज्यांग,

2) कर्पुरादि, 3) गुडुच्यादि, 4) पुष्पवर्ग, 5) फलवर्ग, 6) वटादिवर्ग, 7) धातु, 8) धान्य, 9) शाक,10) वारि, 11) दुग्ध, 12) दधि, 13) तक्र, 14)नवनीत, 15)घृत, 16) मूत्र, 17) तैल, 18) मधु,19) इक्षु, 20) सन्धान, 21) मांस,

22) अभाववर्ग, 23) अनेकार्थ वर्ग मे मिश्रक वर्ग, यशद वर्णन, सैंधव वर्णन in हरितक्यादि वर्ग, यशद का सप्तधातु मे वर्णन,

टिकाकार i) विश्वनाथव्दिवेदी ii) कृष्णचंद्र चुनेकर, iii) शिवशर्मा.

(17 शतक) **19) वैद्यवसंतः** लोलिम्बराज,

a) 7 वर्ग, b) अश्वबल का वर्णन पत्रशाक में. कुल – श्लोक 57

(17 शतक) **20) द्रव्यगुणशतश्लोकि/द्रव्यगुणशतकः** त्रिमल्ल भट्ट अन्य रचना योगतरंगिणी; बृहत योगतरंगिणी

द्रव्यगुणशतश्लोकी पर टिका - By कृष्णदत्तमिश्र (द्रव्यदीपिका)

17 शतक **21) द्रव्यदिपीकाः** कृष्णदत्त मिश्र, पूत्र शिवदत्त मिश्र, a) टिका on द्रव्यगुणशतश्लोकी.

(1677) - **22) शिवकोषः**शिवदत्त मिश्र, शिवप्रकाश, ऋतुनुसार वनस्पती के नाम.

(18 शतक) **23) राजवल्लभ नि.:** राजवल्लभ, प्रतिसंस्कर्ता - नारायणदास a) 6 वर्ग (परिच्छेद).(1773)

24) हिकमतप्रकाशः महादेव, a) 3 खण्ड (19 शतक - 1867)

25) निघंटु रत्नाकरः विष्णु वासुदेव गोडबोले,

a) ज्योतिषशास्त्र अनुसार व्याधी किस कारण से.

(19 शतक) **26) निघंटु संग्रहः**रघुनाथजी इंद्रजी/कृतोभट्ट (19 शतक -1896)

27) शालिग्राम निघंटुः गोडबोले - ज्योतिश शात्र दृष्टम व्याधिकारण मिमांसा. Last निघण्टु Considered: बृहत निघण्टु रत्न पर आधारित. U. P. मुरादाबाद से वैद्य शालिग्राम; पूर्वाध 23 वर्ग + उत्तरार्ध 2 वग. (अनूपादि + मित्र वर्ग)

* वनस्पती व रुग्ण जन्म नक्षत्र संबंध

(1909-13)

28) वनौषधी गुणादर्शः शंकरदाजी शास्त्री पदे(1914)

29) निघंट शिरोमणिः जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल,a)स्वमूत्र-शिवाम्ब (20 शतक)

30) प्रिय निघंटुः प्रियवतशमा

a) पीलु तैल = किंक तैल, खाटवण तैल. अंतिम निघंटु.

यावदजी त्रिकमजी आचार्यः अन्य ग्रंथः

1) आयुर्वेद व्याधिविज्ञान, 2) रसामृतम,

3) द्रव्यगुणविज्ञान 4) सिध्दयोगसंग्रह.

(20 शतक)

31) निघंटु आदर्शः बापालाल वैद्य a) 73 वर्ग

32) वनौषधि चन्द्रोदयः चंद्रराज भंडारी 10 भाग

33) वनौषधि दर्शनः कविराज विराज चरण गुप्त

34) वनौषधि दर्शिकाः ठाकुर बलवंतसिंह.

35) अभिनव निघंटुः दत्ताराम चौबे, सचित्र वनस्पति वर्णन

36) आयुर्वेदीय औषधि विज्ञानः पुरूषोत्तम हिर्लेकर

37) आयुर्वेदीय औषधि संशोधनः पु. वि. धामणकर

38) आयुर्वेदीय औषधि गुणधर्म शास्त्रः गंगाधर शास्त्री गुणे

39) आयुर्वेद चिंतामणिः बलदेवप्रसाद मिश्र

40) Indian Medical Plant: किर्तीकर.

41) Indian Materia Medica- Nadkarni

निघण्टू वर्गः-1) राजवल्लभ निघण्टु	- 6 वर्ग
2) वैद्यावतंस और धन्वन्तरी निघण्टु	- 7 वर्ग
3) हृदय दीपक निघण्टु	- 8 वर्ग
4) कैयदेव निघण्टु	- 9 वर्ग
5) प्रियनिघण्टु	- 12 वर्ग
6) मदनपाल	- 13 वर्ग
7) द्रव्यगुण संग्रह	- 15 वर्ग
8) राजनिघण्टु और भा. प्र. निघण्टु	- 23 वर्ग
9) शालीग्राम	- 25 वर्ग
10) शोढल	- 27 वर्ग
11) माधव द्रव्यगुण (भावस्वभाववाद)	- 29 वर्ग
12) निघण्टु आदर्श	- 73 वर्ग

निघण्टु संग्रह (1748) by रघुनाथजी - इन्द्रुती/कृतोभट्ट

पयार्यरत्नमाला, द्रव्यगुणरत्नमाला-माधवकर

गुणरत्नमाला-भावमिश्र.

*****

पुष्प
श्वेत पुष्प –
अर्क, इंद्रवार
रक्त पुष्प –
सदापुष्पा –
विषपुष्पक –
वास पुष्पा –
फलेपुष्पा –
निलपुष्पी –
पत्र
सूक्ष्मपत्र – ब
सुरभिपत्रा –
पद्मपत्र – पु
बालपत्र – ख
जीर्णपत्र – लं
बृहत्पत्र – लो
दीर्घपत्र – कु
दीर्घपत्रिका –
क्षुद्रपत्री – वच
धात्रीपत्र – ता
पत्राढय – तात
मातुलपुत्रक –
अक्ष
मेषलोचन – च
अक्ष – बिभीत
महिषाक्ष – गुग
गवाक्षी – इंद्रवा
कुबेराक्ष – लत
कुबेराक्षी – पात
भुजंगाक्षी – सप
पुष्प
स्थिरपुष्प – बृ
चिरपुष्प – बकु
पीतपुष्प – कूष
रक्तपुष्प – शाल
रक्तपुष्पक – पत
मल्लिकापुष्प – दु
शोणपुष्पक – क
ताम्रपुष्प – कांच
ताम्रपुष्पी – धात
बहुपुष्पी – धात
धातुपुष्पी – धात
लोहितपुष्पक –
हेमपुष्प – अशोक
पिण्डपुष्प – अश
मधुपुष्प, गंधपुष्प
मृदुपुष्प – शिरिष

द्रव्यगुण भाग - 2

पुष्प

श्वेत पुष्प - करविर (2 प्रकार), अर्क, इंद्रवारुणी
रक्त पुष्प - करविर, अर्क
सदापुष्पा - अर्क
विषपुष्पक - मदनफल
वास पुष्पा - चंद्रशूर
फलेपुष्पा - द्रोणपुष्पी
निलपुष्पी - निर्गुण्डी - Also श्वेतपुष्पी

पत्र

सूक्ष्मपत्र - बब्बुल
सुरभिपत्रा - जम्बु
पद्मपत्र - पुष्करमुल
बालपत्र - खदिर
जीर्णपत्र - लोध्र
बृहत्पत्र - लोध्र
दीर्घपत्र - कुपिलु
दीर्घपत्रिका - पुनर्नवा
क्षुद्रपत्री - वचा
धात्रीपत्र - तालीसपत्र
पत्राढय - तालीसपत्र
मातुलपुत्रक - धत्तुर

अक्ष

मेषलोचन - चक्रमर्द
अक्ष - बिभीतक
महिषाक्ष - गुग्गुल
गवाक्षी - इंद्रवारुणी
कुबेराक्ष - लताकरंज
कुबेराक्षी - पाटला
भुजंगाक्षी - सर्पगंधा

पुष्प

स्थिरपुष्प - बकुल
चिरपुष्प - बकुल
पीतपुष्प - कूष्माण्ड
रक्तपुष्प - शाल्मली
रक्तपुष्पक - पलाश
मल्लिकापुष्प - कुटज
शोणपुष्पक - कांचनार
ताम्रपुष्प - कांचनार
ताम्रपुष्पी - धातकी, पाटला
बहुपुष्पी - धातकी, पाटला
धातुपुष्पी - धातकी, पाटला
लोहितपुष्पक - दाडिम
हेमपुष्प - अशोक
पिण्डपुष्प - अशोक
मधुपुष्प, गंधपुष्प - अशोक
भृंदपुष्प - शिरिष

द्रुम

कलिद्रुम - बिभीतक
चणद्रुम - गोक्षुर
पीतद्रुम - दारुहरिद्रा
पाण्डुरद्रुम - कुटज
मुनीद्रुम - अगस्ती
नृपद्रुम - आरग्वध

पर्णि

मधुपर्णिका - गंभारी
मधुपर्णी - गुडूची
चित्रपर्णी - पृश्निपर्णी
त्रिपर्णी - शालीपर्णी
भद्रपर्णी - गंधप्रसारिणी
सिंहपर्णी - वासा
पर्णिका - चंदन

अच्छीपर्णी - अग्निमंथ
श्रीपर्ण - अग्निमंथ
श्रीपर्णी - काश्मरी, गणिकारिका,
कटफल

वृक्ष

महावृक्ष - स्नुही
ब्रह्मवृक्ष - पलाश
इन्द्रवृक्ष - कुटज
राजवृक्ष - आरग्वध
नीलिवृक्ष - शरपुंखा
क्षीरवृक्ष - औदुम्बर
वीरवृक्ष - अर्जुन, भल्लातक

कुष्ठ

कुष्ठवैरी - तुवरक
कुष्ठघ्न - खदिर
कुष्ठघ्नी - बाकुची
कुष्ठाहा - पटोल
कुष्ठभेद - पुष्करमुल
कुष्ठगंधिनी - अश्वगंधा
वक्रा - कर्कटश्रृंगी
चक्री - चक्रमर्द
चक्रांगी - कुटकी
गुडूची - चक्रलक्षणिका

कृमि

कृमिज - अगरु
कृमिघ्न - विडंग
कृमिघ्नी - हरिद्रा
कृमिवृक्षो - औदुम्बर

फल

अक्षफल - बिभीतक
महाफला - जम्बु, इंद्रवारुणी
बृहत्फल - कूष्माण्ड
दीर्घफल - आरग्वध
राजीफल - पटोल
पाण्डुफल - पटोल
अमृतफल - पटोल
श्रीफल - आमलकी, बिल्व
धात्रीफल - आमलकी
तिष्यफल - आमलकी
यवफल - कुटज
शुक्लफल - अर्क
एरण्डफला - दन्ती
जन्तुफल - उदुम्बर
सदाफल, जघनेफला - औदुम्बर

कर्ण

वराहकर्णी - अश्वगंधा
अश्वकर्ण - शाल
अजकर्ण - शाल
अविध्दकर्णी - पाठा

पलंकष - गुग्गुल
पलंकषा - गोक्षुर, लाक्षा

प्लीहघ्न - रोहितक
प्लीहशत्रु - शरपुंखा
प्लीहन्त्री - हपुषा
प्लीहाघाती -पिप्पली
इक्षुगंधा - विदारीकन्द
इक्षुगंधिका - गोक्षुर
अतिवल्लभा - पाटला
घुणवल्लभा - अतिविषा
घुणप्रिया - दन्ती
विष्णुप्रिया - तुलसी
शेफाली - पारिजात
शेफालिका - निर्गुण्डी
वातारि - एरण्ड
वातारि - बिल्व
वातघ्नी - अग्निमंथ

बीज

दन्तीबीज - जयपाल
श्वेत मरिच - शिग्रु बीज
हरेणु - निर्गुण्डी बीज
दन्तबीज - दाडिम

भैषज्य

बालभैषज्या - रसांजन
शिशुभैषज्या - अतिविषा
अक्षिभैषज्य - लोध्र
श्वित्रभैषज्य - काकोदुम्बर

महौषध - शुण्ठी, रसोन, वत्सनाभ, मण्डुकपर्णी
कटम्भरा - कटुका, श्योनाक
सिंही - बृहती, वासा
नट - श्योनाक, अशोक, हरताल, मदन
विषमूष्टीक - महानिम्ब, विषतिन्दुक
अरिष्ट - निम्ब, रसोन, मद्य
अम्बष्ठा - पाठा, चांगेरी, माचिका, यूथिका
अमृता - गुडूची, हरितकी, धात्री
ऋष्यप्रोक्ता - अतिबला, महाशतावरी, कपिकच्छु
लता - सारिवा, प्रियंगु, ज्योतिष्मती
विशल्या - लांगली, गुडूची, लघूदन्ती
सोमवल्ली - बाकूची, गुडूची, ब्राह्मी; सोमराजी-बाकूचीबीज, अरण्यजीरक
दुःस्पर्श - जवासा, कपिकच्छु, कण्टकारी
कालमेषी - मंजिष्ठा, बाकूची, श्यामात्रिवृत्त
लांगली - कलिहारी, नारिकेल, जलपिप्पली
मंजिष्ठा - मण्डूकपर्णी वस्त्ररंजिनी, विकसा, रक्तांगी, रक्तयष्टिका
श्योनाक - मण्डूकपर्ण

द्रव्य निर्यासः-

शाल्मली - मोचरस
साल - राल (सर्जरस)
सरल - गन्धबिरोजा (श्रीवेष्टक)
शल्लकी - कुन्दरु
धान्यक - कुस्तुम्बरु
वंश - वंशलोचन
तेजोह्वा (फल) - तुम्बरु

विश्वा - शुण्ठि, अतिविषा
शिवप्रिय - हरितकी, धत्तुर
विजया - हरितकी, भंगा
जया - हरितकी, अग्निमंथ
वृष्या - आमलकी, कपिकच्छु
कुनटी - धान्यक, मनःशिला
क्ष्वेड - कोशातकी, वत्सनाभ
गोलोमी - श्वेतदूर्वा, वचा

	श्यामा – सारिवा, प्रियंगु
यज्ञांग – उदुम्बर	उत्तमा – त्रिफला, गंभारी
यज्ञीय – पलाश (खदिर –यज्ञिक)	उग्रगंधा–वचा,यवानी, तिलपर्णी
यज्ञभूषण – कुश	उग्रगंध – रसोन
द्राविड – कर्चुर	कणा – पिप्पली, जीरक
द्राविडी – एला	बाल्हीक – कुंकुम, हिंगू
वेल्ल – विडंग	पारावतपदी – ज्येतिष्मती, काकजंघा
वेल्लज – मरिच	श्रृंगी – कर्कटश्रृंगी, अतिविषा
	यवनेष्ट – रसोन, पलाण्डु
अग्निमुख – भल्लातक	गुहा – शालपर्णी पृश्निपर्णी
अग्निमुखी – लांगली	सूर्यपर्णी – मुद्गपर्णी, माषपर्णी
	दिप्यक – यवानी, अजमोदा
कूल्या – जीरक	वैधमुख – कर्चुर
उपकुल्या – पिप्पली	वेधमुख्य – कस्तुरी
कृष्णवृन्ता – माषपर्णी, गम्भारी, पाटला	अजकर्ण – शाल
मर्कटी – कपिकच्छु, अपामार्ग, करंजी	वृष – वासा
छत्रा – धान्यक, शतपुष्पा	वृषा – दंती
तृणध्वज – वंश, केतकी	वृष्या – आमलकी
तृणराज – नारिकेल –(सदाफल, स्कंधफल)	
तृणशून्य – वंश	मौलश्री – बकुल (चिरपुष्प)
तरुष्का – पारसिकयवानी	श्रृंगाटक – पानीयफल
संहिता – वंशलोचन	कोशाम्र – कृमिवृक्ष
भिषक माता – वासा	डिकामाली – नाडीहिंगु
(भिषक्प्रिया – गुडूची)	अम्बुवासिनी – पाटला
कट्वंग – अरलु	वाजीदन्त – वासा
अतिरसा – रास्ना, शतावरी	एलापर्णि – रास्ना
काण्डरुहा – कुटकी	श्रीफली – निलिनी
छिन्नरुहा – गुडूची	श्रीफला – लवंग
दु:स्पर्श – यवासा	तिलपर्णि – (पीतपुष्पा, उग्रगन्धा)
दु:स्पर्शा – कंटकारी	विषमच्छद – सप्तपर्ण
कुटन्नट – श्योनाक	कर्कशच्छद – पटोल
वितुन्नक – धान्यक	अग्नि – चित्रक
तीक्ष्णतण्डुला – पिप्पली	अग्निमुख – भल्लातक (अग्निक)
चित्रतण्डुल – विडंग	अग्निशिखा, अग्निमुखी – लांगली

बब्बूल – युग्मकंट, मालाफल, सूक्ष्मपत्र.

काकोदुम्बर – जघनेफला,मूलकर्कटी

लज्जालु – शमीपत्रा, समंगा,नमस्कारी, रक्तपादी

Family wise Latin names:-

1) वासा कूल Acanthaceae

वासा	– Adhatoda vasica
इक्षुरक (कोकीलाक्ष)	– Astercantha Longifolia
यूथीपर्णी	– Rhinacanthus Nasuta
कालमेघ – (भूनिंब)	– Andrographis panniculata
सैरेयक (पीत)	– Barleria prionitis
(श्वेत/रक्त)	– Barleria cristata
(नील)	– Barleria strigosa
उटंगन	– Blepharis edulis

2) Apocynaceae कुटज कूल

कुटज (श्वेत)	– Holarrhena antidysentrica
(कृष्ण)	– Wrightia tinctoria and w. tomentosa
सप्तपर्ण	– Alstonia Scholaris
करवीर (श्वेतरक्त)	– Nerium indicum
सर्पगन्धा	– Rauwolfia serpentina
करमर्द	– Carissa carandus
पीत करवीर	– Thevatia nerifolia.

3)Asclepiadacae अर्क कूल

अर्क	– Calotropis procera
सारिवा (श्वेत)	– Hemidesmus indicus
जीवन्ती	– Leptadaenia reticulata
मूर्वा	– Marsdenia tenacissima
मेषश्रृंगी (गुडमार)	– Gymnema sylvestre

4) Araceae सुरण कूल

सूरण	– Amorphophallus campanulatus
जलकुम्भी	– Pistia stratiotes
मानकन्द	– Alocasia indica
वचा	– Acorus calamus

5) Anacardiacae आम्र कूल

आम्र	– Mangifera indica
भल्लातक	– Semicarpus anacardium
कर्कटश्रृंगी	– Pistacia integerrima
प्रियाल (चिरौंजी)	– Buchanania lanzan
तिन्तिडीक	– Rhus parvifora
रुमा मस्तगी	– Pistacia lentiscus.

6) Annonaceae सीताफल कूल

सीताफल	– Annona squmosa
काष्ठदारु	– Polyalthia longifolia

7) Amaranthaceae अपामार्ग कूल

अपामार्ग	– Achyranthus aspera
पाषाणभेद	– Aerva lanata

8) Amarylidaceae तालमुली कूल

तालमुली	– Curculigo orchioides
सुदर्शन	– Crinum latifolium.

9) Alengiaceae अंकोल कूल

अंकोल	– Alangium Lamarki

10) Berberidaceae दारुहरिद्रा कूल

दारुहरिद्रा	– Berberis aristata
गिरीपर्पट (वनत्रपुषी)	– Podophylum hexandrum

11) Bignoniaceae श्योनाक कूल

श्योनाक	– Oroxylum indicum
पाटला	– Steveosparmum suveolens
रोहीतक	– Tecomella undulata
अरलु	–Ailanthus excelsa (Simaroubaceae)

12) Burseraceae गुग्गुल / शल्लकी कूल

गुग्गुल	– Comiphera mukul
शल्लकी	– Boswelia serrata
बोल	– Commiphora myrha

13) Boraginaceae श्लेष्मातक कूल

श्लेष्मातक	– Cordia dichotoma

14) Bombacaceae शाल्मली

शाल्मली	– Salmalia mulbarica

15) Capparidaceae वरुण

वरुण – Crataeva nurvala

तैलपर्णी (अजगन्धा) – Gynandropis gynendra

16) Compositae भृंगराज (Asteraceae)

भृंगराज – Eclipta alba

सहदेवी – Vernonia cinerca

कुष्ठ – Sausurea lappa

पुष्करमुल – Inula racemosa

रास्ना – Pluchea Lanceolata

आकारकरभ – Anacyclus pyrethrum

17) Cucurbitaceae कोशातकी

कोशातकी – Luffa acutangula

धामार्गव – Luffa cylindrica

जीमूतक – Luffa echinata

इन्द्रवारुणी – Citrullus colocynthis

पटोल – Trichosanthes diocia

कूष्मांण्ड – Benincasa hispida

बिम्बी (कुन्दरु) – Coccinia indica

कारवेल्लक – Momordica charantia

त्रपुष – Cucumis sativus

इक्ष्वाकु – Longineria siceraria

18) Cruciferae सर्षप

सर्षप (श्वेत) – Brassica alba

राजिका – Brassica juncea

चन्द्रशूर – Lepidum sativum

19) Combretaceae हरीतकी

हरितकी – Terminalia chebula

बिभीतक – Terminalia belerica

अर्जुन – Terminalia arjuna

धव – Anogeissus latifolia

20) Comiferae

देवदार – Cedrus deodara

तालीशपत्र – Abies webiana

21) Cannabinaceae

भंगा – Cannabis sativa

22) Convolvulaceae त्रिवृत्त

त्रिवृत्त – Operculina terpethum

शंखपुष्पी – Convolvulus pluricaulis

वृध्ददारु – Argyreia speciosa

23) Cyperaceae मुस्तक

मुस्तक – Cyperus rotundus

कशेरुक – Scirpus grossus

24) Caprifoliaceae तिल्वक– Symploccus racemosis

25) Dipterocarpaceae शाल

शाल – Shorea robusta

सर्ज – Vateria indica

अश्वकर्ण – Dipterocarpus turbinatus

26) Dioscoraceae वाराही

वाराहकन्द – Discorea bulbifera

27) Ebenaceae तिन्दुक

तिन्दुक – Diospyros peregrina

28) Eyeclriaceae सोम

29) Euphorbiaceae एरण्ड

एरण्ड – Ricinus communis

स्नुही – Euphorbia nerifolia

दुग्धिका – Euphorbia thymifolia

आमलकी – Emblica officinalis

भूम्यामलकी – Phyllanthus urinaria

पुत्रजीवक – Putranjiva roxburghii

कम्पिल्लक – Mallotus Phillippinensis

दन्ती – Baliospermum montanum

जयपाल – Croton tiglium

नागदन्ती – Croton oblongifolius

30) Flacourtiaceae तुवरक

तुवरक – Hydnocarpus Laurifolia

विकंतक – Flacourtia ramontchi.

31) Fumariaceae पर्पट

पर्पट – Fumaria vaillantii

32) Graminae यव कूल

यव – Hordeum vulgare

इक्षु – Saccharum officinarum

वंश – Bambusa bambos

दूर्वा – Cynodon dachtylon

कुश – Desmostachya bipinnata

उशीर – Vetiveria Zizanioides

शालि – Oryza sativa

गोधूम – Triticum aestivum

33) Guttiferae नागकेशर कूल

नागकेशर – Mesua ferrea

पुन्नाग – Calophyllum inophylum

अम्लवेतस – Garcinia pedunculata

तमाल (कंकुष्ठ) – Garcinia morella

34) Gentinaceae भूनिंब कूल

किराततिक्त – Swertia chirayita

त्रायमाण – Gentia kurrae

35) Iridaceae केशर कूल

कुंकुम (केशर) – Crocus sativus

36) Leguminosae शिम्बी कूल

1) उपकुल – Papilonatae अपराजिता

अपराजिता – Clitoria Kleio

पलाश – Butea monosperma

यष्टीमधु – Glycyrrhiza glabra

गुञ्जा – Abrus precatorius

नीलिनी – Indigofera tinctoria

जयन्ती – Sesbania sesban

शालपर्णी – Desmodium gangeticum

पृश्निपर्णी – Uraria picta

यवासा – Alhagi camelorum

रक्तचन्दन – Pterocarpus santalinus

बीजक – Pterocarpus marsupium

करंज – Pongamia pinnata
कपिकच्छु – Mucuna prurita
पारिभद्र – Erythrina indica
शरपुंखा – Tephrosia purpurea
बाकुची – Psoralia corylifolia
मुद्गपर्णी – Phaseolus trilobus
माष – Phaseolus mungo
शिंशपा – Dalbergia sisoo
विदारीकन्द – Pueraria tuberosa
कुलत्थ – Dolichos biflorus

2) Caesalpinioideae पूतिकरंज उपकूल
लताकरंज – Caesalpinia crista
कांचनार – Bauhinia variegata
अशोक – Saraca asoca
आरग्वध – Cassia fistula
चक्रमर्द – Cassia tora
कासमर्द – Cassia occidentalis
आवर्तकी – Cassia auriculata
स्वर्णपत्री – Cassia angustifolia
चक्षुष्या – Cassia absus
अम्लिका – Tamarindus indica

3) Mimosoideae बब्बूल उपकूल
बब्बूल – Acacia arabica
खदिर – Acacia catechu
इरिमेद / विट्खदिर – Acacia fernesiana
शिरिष – Albizzia lebbeck
लज्जालु – Mimosa pudica
वीरतरु – Dichrostachys cinerea

37) Labiatae तुलसी कूल
तुलसी – Ocimum sanctum
पुदीना – Mentha spicata
पर्णयवानी – Coeleus amboinicus
द्रोणपुष्पी – Leucas cephalotus
जूफा – Hyssopus officinalis

38) Longaniaceae कारस्कर
कुपीलु – Strychnus nuxvomica
कतक – Strychnus Potatorum

39) Lauraceae कर्पूर
कर्पूर – Cinnamomum camphora
दालचीनी (त्वक) – Cinnamomum zeylanica
तेजपत्र – Cinamomum tamala

40) Liliaceae रसोन
रसोन – Allium sativum
पलाण्डु – Allium cepa
कुमारी – Aloe vera
वनपलाण्डु – Urginea indica
लांगली – Gloriosa superba
चोपचीनी – Smilax glabra
शतावरी – Asparagus racemosus
मुसली – Asparagus adscendus.
सुरंजान – Colchium luteum

41) Linaceae अतसी
अतसी – Linum usitatissimum

42) Lytharaceae मदयन्तिका
मदयन्तिका – Lawsonia inermis

43) Parmeliaccae शैलेय
शैलेय – Parleria perlata

44) Malvaceae कार्पास
कार्पास – Gossypium herbacium
लताकस्तूरी – Hibiscus abelmoschus
खत्मी – Althaea officinalis
पारीष – Thespesia pupulnea
बला – Sida cordifolia
अतिबला – Abutilon indicum
जपा – Hibiscus rosa-sinensis

45) Meliaceae निम्ब कूल
निम्ब – Azadirachta indica
महानिम्ब – Melia Azederach
मांसरोहिणी – Soymida febrifuga

46) Menispermaceae गुडूची कूल
गुडूची – Tinospora cordifolia
पाठा – Cissampelos pareira
पातालगरुडी – Cocculus hirsutus

47) Myrtaceae लवंग कूल
लवंग – Syzygium aromaticum
जम्बू – Syzygium cumini
तेलपर्णी – Eucalyptus globulus

48) Lecythidaceae हिज्जल
हिज्जल – Barringtonia acutangula

49) Myricaceae कट्फल
कट्फल – Myrica esculinta

50) Magnoliaceae चम्पक
चंपक – Michelia champaca

51) Moringaceae
शिग्रु – Morinaga oleifera

52) Moraceae वट कूल
वट – Ficus bengalensis
अश्वत्थ – Ficus religiosa
प्लक्ष – Ficus lacor
उदुम्बर – Ficus glomerata
काकोदुम्बर – Ficus hispida
पिलखन/अश्मंतक – Ficus rumphii
तूद – Morus alba
पनस – Artocarpus integra
वेतस – Salvix caprea
शाखोटक – Streblus asper

53) Myrsinaceae – विडंग
विडंग – Embelia ribes

54) Myrystinaceae जातीफल

जातीफल – Myristica fragrans

55) Nyctaginaceae

पुनर्नवा – Boerhavia diffusa

56) Nymphaceae कमल

कमल – Nelumbo nucifera

कुमुद (उत्पल) – Nymphoea stellata

57) Papaveraceae अहिफेन

अहिफेन – Papaver somniferum

सत्यानाशी – Argemone maxicana

58) Punicaceae दाडिम

दाडीम – Punica granatum

59) Piumbaginaceae चित्रक

चित्रक – Plumbago zeylanica

60) Piperaceae पिप्पली

पिप्पली – Piper longum

मरीच – Piper nigrum

कंकोल – Piper cubeba

चव्य – Piper retrofractum

ताम्बुल – Piper betle

61) Pinaceae देवदारु कूल

देवदारु – Cedrus deodara

सरल – Pinus roxburghii

तालीश – Abies webiana

62) Palmae नारिकेल

नारिकेल – Cocos nucifera

63) Ranunculaceae वत्सनाभ

वत्सनाभ – Aconitum ferox

अतिविषा – Aconitum heterophylum

ममीरा – Coptis teeta

ममीरी – Thalicturum foliolosum

निर्विषा – Delphinium dunudata

64) Rutaceae निम्बुक

बीजपूर – Citrus medica

निम्बुक – Citrus acida

बिल्व – Aegle marmelos

तेजोहवा – Xanthoxylam aromaticum

65) Rubiaceae मंजिष्ठा कूल

मंजिष्ठा – Rubia cordifolia

मदनफल – Randia dumetorim / spinosa

नाडीहिंगु – Gardenia gummifera

कदम्ब – Anthocephalus indicus

गन्धप्रसारणी – Paederia foetida

हरिद्रु – Adina cordifolia

66) Rosaceae तरुणी

तरुणी – Rosa centifolia

पदमक – Prunus Cerasoides

67) Solanaceae कण्टकारी कूल

कण्टकारी – Solanum surratense

बृहती – Solanum indicum

काकमाची – Solanum nigrum

अश्वगंधा – Withania somnifera

धत्तुर (श्वेत) – Datura metel

पारसीक यवानी – Hyoscyamus niger

सूची – Atropa belladona

लंका (कटुवीरा) – Capsicum annum

तम्बाकू – Nicotiana tobaccum

68) Scrophuloriaceae कटुका

कुटकी – Picorrhiza kurroa

हृत्पत्री – Digitalis purpurea

ब्राह्मी – Bacopa monnieri

69) Symplocaceae लोध्र

लोध्र – Symplocas racemosa

70) Sapotaceae मधूक

मधूक – Madhuca indica

बकुल – Minusops elengi

71) Sapindaceae अरिष्टक

अरिष्टक – Sapindus trifoliatus

72) Sterculiaceae पिशाचकार्पास

पिशाचकार्पास (उलटकम्बल) – Abroma angusta

आवर्तनी – Heticteres isora

मुचकुन्द – Pterospermum Suberifolium

73) Salvadoraceae पीलु

पिलु – Salvodora persica

74) Saxifragaceae पाषाणभेद

पाषाणभेद – Bergenia ligulata

75) Santalaceae चन्दन

चन्दन – Santaluns album

76) Tiliaceae परुषक

परुषक – Grewia asiatica

धन्वन – Grewia tiliaefolia

नागबला – Grewia hirsuta

77) Thymelaeceae अगुरु

अगुरु – Aquilaria agallocha

78) Umbelliferae मण्डुकपर्णी शतपुष्पा

मण्डुकपर्णी – Centella asiatica

हिंगु – Ferula narthex

मिश्रेया – Foeniculum vulagare

शतपुष्पा – Anethum sowa

जीरक – Cuminum cyminum

कृष्णजीरक – Carum bulbacostanum

यवानी – Trachyspermum ammi

अजमोदा – Carum Roxburghianum

धान्यक – Coriandrum sativum

गर्जर – Daucus carota

79) Ulmaceae चिरबिल्व

चिरबिल्व – Haloptelia iategrifolia

80) Valerianaceae मांसी

जटामांसी – Nordostachys jatamansi

तगर – Valeriana wallichii

81) Verbenaceae निर्गुण्डी

निर्गुण्डी – Vitex negundo
अग्निमन्थ – Premna mucronata
भारंगी – Clerodendrum serratum
गंभारी – Gmelina arborea
भाण्डीर – Clerodendrum infortunatum
प्रियंगु – Callicarpa macrophylla

82) Vitaceae द्राक्षा
द्राक्षा – Vitis vinifera
अस्थिश्रृंखला – Cissus quadrangularis
(अस्थिसंहारक)

83) Zygophyllaceae गोक्षुर
लघु गोक्षुर – Tribulus terrestris
वृहत गोक्षुर – Padalium murex (Pedaliaceae family)

84) Zingiberacea हरिद्रा (आर्द्रक)
हरिद्रा – Curcuma longa
आर्द्रक – Zingiber officinale
ऐला (छोटी) – Elettaria cardamomum
वनहरिद्रा – Curcuma aromatica
आम्रगंधी हरिद्रा – Curcuma amada

85) Oleaceae पारिजात कूल
पारिजात – Nyctanthes arbortristis

द्रव्य		ENGLISH NAMES
Wood		
1) अगरु	–	Aloe wood
2) काष्ठ अगरु	–	Engle wood
3) चंदन	–	Sandle wood
4) रक्तचंदन	–	Red sandle wood
5) नागकेशर	–	Iron wood tree
6) शिंशपा	–	Black / rose wood / sisso
7) पत्रांग	–	Sappon wood
8) पारिस / भेंड	–	Heart wood/ Portia tree/Tulip tree
9) मांसरोहिणी	–	Indian red wood
Berry		
1) अश्वगंधा	–	Winter berry
2) आमलकी	–	Indian goose berry / (Embelic myrobalan)
3) करवीर	–	Indian oleander Rose berry
4) दारुहरिद्रा	–	Indian berberry
5) कट्फल	–	Box mayrtle or Bay berry
6) जंबु	–	Black berry
7) पदमकाष्ठ	–	Baired cherry
NUT		
1) कुपीलु	–	Poison nut / Nux vomica
2) जातीफल	–	Nut-meg tree
3) वासा	–	Malabar nut
4) अक्षोटक / अक्रोड	–	Wall nut
5) अरिष्टक	–	South Indian Soap nut tree
6) कतक	–	Clearing nut
7) कशेरुक/शृंगाटक	–	Water chest nut
8) मायफल	–	Magic nut / Gall oak
9) भल्लातक	–	Marking nut
10) मदनफल	–	Emetic nut
11) नारीकेल	–	Coconut pam
12) मखान्न	–	Fox nut
ROOT		
1) कुष्ठ	–	Costus root
2) यष्टिमधू	–	Liquorice root
3) तवक्षीरी	–	Indian arrow root
4) चोपचीनी	–	China root
5) पातालगारुडी	–	Parrot root (Velvet leaf tree)
6) ममीरा	–	Golden thread root
7) जटामासी	–	Nordus root/spike nord
8) गुंजा	–	Indian liquorice root
9) हेमवती (वचा)	–	Oris root
INDIAN		
1) करंज	–	Indian beech
2) कुमारी	–	Indian Aloe
3) गुग्गुल	–	Indian Bedellium (gum guggle)
4) चांगेरी	–	Indian sorrel
5) जटामांसी	–	Indian nord (Nordus root)
6) निंब	–	Margosa tree Indian liloc
7) निर्गुंडी	–	Indian private
8) अतिबला	–	Indian mallow
9) भंगा	–	Indian hemp
10) मंजिष्ठा	–	Indian madder
11) सारिवाव्दय	–	Indian sarsaparilla Country sarsaparilla
12) वनपलांडु	–	Indian squill
13) तमाल / कंकुष्ठ	–	Indian gambose tree
14) बीजक	–	Indian kino tree
15) ईश्वरी	–	Indian birth tree
16) तगर	–	Indian velerion Rhizome
17) श्योनाक	–	Indian trumpeth flower
18) गुंजा	–	Indian liquorice root
19) पनस	–	Indian Toctree
20) परिभद्र	–	Indian correl tree
21) पितमूला	–	Indian Rhubarb
22) बदर	–	Indian plury (jujube)
23) मोह	–	Indian butter tree
24) मधूक	–	Mahawa tree
25) मार्कडिका	–	Indian senna
26) इक्ष्वाकु	–	Bitter gaurd
27) ऐन्द्री		
28) राजिका		
29) अम्लप		
30) तिलपण		
31) शल्लकी		
32) विदारी		
COLOUR		
1) कुष्मांड		
2) कृष्णजीरक		
3) तालीसपत्र		
4) बाकुची		
5) मरिच		
6) शरपुंखा		
7) स्वर्णक्षीरी		
8) कटुवीरा		
9) त्रायमाण		
10) चित्रक		
11) कण्टकारी		
12) चम्पक		
TREE		
1) तेजोहवा		
2) लोध्र		
3) शाल / सा		
4) परिभद्र		
5) पारिजातक		
6) वृक्षाम्ल		
7) वट		
8) शमी		
9) तमालपत्र		
10) अशोक		
11) तिन्तिडक		
12) तिन्दुक		
13) प्लक्ष		
14) पीलु		
15) बदर		
16) बब्बुल		
17) बीजपुरक		
18) भोजपत्र		
19) कपिकच्छू		
20) खदिर		
21) ज्योतिष्मति		
22) शाल्मली		
23) भूर्जपत्र		

27) ऐन्द्री - Indian pennywort
28) राजिका - Indian mustard
29) अम्लपर्णी - Indian Rhubarb
30) तिलपर्णी - Dog mustard
31) शल्लकी - Indian Olibanum
32) विदारी - Indian kudju.

COLOUR

1) कुष्मांड - White pumpkin
2) कृष्णजीरक - Black cumin, Black caraway
3) तालीसपत्र - Silver fur
4) बाकुची - Purple fleabane
5) मरिच - Black pepper
6) शरपुंखा - Wild indigo / Purple tephrosia
7) स्वर्णक्षीरी - Yellow thristle (Prickly maxican poppy)
8) कटुवीरा - Red chilles
9) त्रायमाण - Gold thread/Indian gentian
10) चित्रक - White lead wart
11) कण्टकारी - Yellow - berried/Night Shade/Wild egg plant
12) चम्पक - Golden champa

TREE

1) तेजोहवा - Toothache tree
2) लोध्र - Lodh bark tree
3) शाल / सर्ज - Sal tree
4) परिभद्र - Coral tree
5) पारिजातक - Tree of sarrow
6) वृक्षाम्ल - Kokaum butter tree
7) वट - Banyan tree
8) शमी - Sponge tree
9) तमालपत्र - Leaf of cinamom tree
10) अशोक - Ashoka tree
11) तिन्तिडक - Tarmarind tree / sumak
12) तिन्दुक - Gaub tree (Embryopteris)
13) प्लक्ष - Wave leaved fig. tree
14) पीलु - Tooth brsh tree
15) बदर - Jujube, Indian pump tree
16) बब्बुल - Acesia tree
17) बीजपुरक - Citron tree
18) भोजपत्र - Jacqueman tree, Birch tree
19) कपिकच्छू - Cowhage tree
20) खदिर - Catechu tree,cutch tree
21) ज्योतिष्मति - Staff tree
22) शाल्मली - Silk cotton tree
23) भूर्जपत्र - Jacquemon tree / Brich tree
24) कलम्बक - Tree turmenic / False culamba
25) कंपिल्लक - Kamala tree
26) महानिंब - Beed tree
27) वृक्षाम्ल - Kokam butter tree
28) मधूक - Indian butter tree

PLANT

1) गंधप्रसारणी - Chineese flower plant
2) लज्जालु - Sensitive plant / Humble plant.
3) शिग्रु - Drum stick plant, Horse raddish tree
4) कंटकारी - Wild egg plant
5) यवासा - Arabian or persion manna plant
6) लताकरंज - Fever plant
7) एरण्ड - Castor (oil) plant
8) चक्रमर्द - Rigworm plant.

GRASS

1) उशीर - Khaskhus grass
2) काश - Thatch grass
3) दुर्वा - Conch grass
4) रोहिष - Lemon grass (Ginger grass sweet rush)
5) मुस्तक - Nut grass

स्वरुप

1) अपराजिता - Winged leaved clitoria
2) अपामार्ग - Chaff flower tree
3) आर्द्रक - Dry / fresh ginger
4) आरग्वध - Drum stick (purging cassia)
5) उदुंबर - Cluster fig, Country fig
6) एलाव्दय - Malabar cardamonum Greater cardamonum.
7) गोक्षुर - Small caltrops
8) धत्तुर - Thorn apple
9) अननस - Pine apple
10) पटोल - Serpent guard
11) पाठा - Velwat leaf
12) पिप्पली - Long pepper
13) कंकोल - Stailed pepper
14) पुनर्नवा - Spreading Hogweed
15) बला - Country mallow
16) वरुण - 3 leaved caper
17) शतावरी - Wild asparagus
18) वृध्ददारु - Elephant creeper
19) शैलेया - Stone flower
20) आवर्तनी - Strepto carpus
21) आवर्तकी - Toness cassia

22) आम्रगंधी हरिद्रा - Mongo ginger
23) कमल - Sacred lotus
24) कुमुद - Water lilly
25) सरल - Long leaved pine / chirpine
26) अश्वगोलक - Spongal seed
27) केतकी - Screw pine
28) मुदगपर्णी - Coiled bean
29) यवासा - Camel thorn / persion mana plant.
30) काळीर - Celery leaved crow foot
31) धन्वयास - Khorason thorn
32) चव्य - Java long peppar
33) धार्मागव - Smooth luffa, Sponge gourd
34) कृतवेधन - Ridged gourd / Ribbed luffa
35) माष - Kidney bean
36) मिश्रेया - Fennel
37) शतपुष्पी - Dill
38) लकुच - Monkey Jac
39) द्रवन्ती - Purging croton
40) देवदाली - Bristly luffa
41) चंद्रशुर - Garden cress
42) भूनिंब - Kalmegh
43) लागली - Malabar glory, Malabar lily
44) कुलत्थ - Horse gram
45) झंडु - Aztel/African marigold
46) अस्थिशृंखला - Edible stummed wine
47) फल्गु - Common fig.
48) पातालगारुडी - Valvet leaf tree

HEMP

1) भंगा - Indian Hemp
2) शणपुष्पी - Flax Hemp
3) मुर्वा / मोरवेल - Bow string hemp
4) शण - Sunn hemp

WART

1) चित्रक - Lead wart
2) कीटमारी - Worth wart
3) नाकशिंकणी - Seer wart

FLOWER

1) शैलेय - Stone flower
2) अपामार्ग - Chaff flower

PINE

1) केतकी (केवडा) - Screw pine
2) सरल - Long leaved pine chirpine

BANE (विष)

1) कटुका / कूटकी - Hellebane
2) पारसीकयवानी - Henbane
3) श्लेष्मांतक - Flea bane

JASMIN

1) पारिजातक - Night Jasmin, Tree of sarrow
2) युथिका - Jasmin
3) जाती - Spanish Jasmine
Common Jasmine
4) मल्लीक - Arebian Jasmine

PLUM (फलयुक्त)

1) विकंकत - Mauritius plum,Glovern's plum
2) श्लेष्मांतक - Sepistan plum sebstan

COTTON

1) शाल्मली - Silk cotton
2) पिशाचकार्पास - Derils cotton

DATE

1) खर्जुर - Date
2) अम्लीका - Ripe date of India

WEED

1) कुंभिका - Tropical duck weed
2) शैवाल - Duckweed Vallisnaria

SEED

1) चौहार - Worm seed
2) बाकुची - Psoralea seed
3) लताकस्तुरी - Musk seed, Ambrette seed, Musk mallow
4) जीरक - Cumin seed
5) अतसी - Leenseed, flax
6) कृष्णबीज - Pharbitis seed

GAURD

1) पटोल - Serpent gaurd, pointed gaurd
2) कुष्मांड - White gaurd melon
3) ईक्ष्वांकु - Bitter gaurd
4) धामार्गव - Smooth laffa, Sponge gourd
5) कृतवेधन - Ridged gourd / Ridged luff
6) जिमुतक/देवदाली - Bristly luffa

BEAN

1) माष - Kidney bean
2) मुद्गपर्णी - Coiled bean
3) दुग्धपर्णी - Wild bean

PEPPER

1) मरिच - Black pepper
2) पिपली - Long pepper
3) कंकोल - Stail pepper
4) चव्य - Java long pepper

OTHER

1) अर्क - Madal
2) अर्जुन - Arjuna
3) अश्वत्थ - Sacred fig, peepal
4) अहिफेन - Opium
5) कर्पुर - Camphor
6) कांचनार - Mountain ebony
7) किराततिक्त - Chiretta
8) कुटज - Kurchi
9) त्रिवृत्त - Turpeth/Indian Jalap
10) तुलसी - Holy Basil / Saored Basil
11) त्वक् - Cinnamon
12) दाडिम - Pomegranate
13) देवदार - Deodar
14) धातकी - Downy grislea / Fire flame bush
15) बिल्व - Bengal quine/ Bael
16) धान्यक - Coriander
17) यवानी - King's cumin
18) वचा - Sweet flag
19) वत्सनाभ - Monk's hood, Aconite
20) हरिद्रा - Turmeric
21) हरितकी - Myrobalan or Chebulic Myrobalan
22) हिंगु - Asafoetida
23) आकारकरम - Pellitory
24) अम्लिका - Ripe date of India
25) अमरवल्ली - Dodder
26) स्नुही - Common milk Hedge
27) सुरणा - Telangu Potato ferra
28) सोम - Ephedra
29) हरमल - Syrian Rue
30) हंसराज - Maiden Hair
31) हिज्जल - Hijjal
32) हृत्पत्री - Digitalis
33) रक्तनिर्यास - Dragan's blood
34) वनप्सिका - Wild/Sweet violet
35) वंश - Common Pricky bamboo
36) बदाम - Almond
37) शटी - Long Redoary
38) श्लेष्मांतक - Sepistan plum, Sebestan
39) सप्तचक्रा - Wild
40) सिल्हक - Liquid amber or liquid storax
41) कट्फल - Box myrtal
42) कासनी - Indire
43) रसोन - Garlic
44) लकुच - Monkey Jac
45) काकमाची - Garden night shed
46) कुलत्थ - Horse gram
47) कंकुभ - Saffron
48) कुंभिका - Tropical duck seed
49) केबुक - Cabbage
50) कोशाम्र - Gylon oak
51) कोशातकी - Ribd fuffa
52) खुबकला - Hedge Mustard
53) गाजर - Carrot
54) छत्रक - Mushroom, (Touch wook)
55) जयपाल - Croton
56) तरुणी - Rose
57) तील - Seaseam
58) तैलपर्णी - Eucaliptus (Jasmanian Blue-gum eucalyptus)
59) द्राक्षा - Grape
60) धामार्गव - Wash sponge
61) देवनल - Reed
62) डिकेमाली - Dikemali Ressin
63) पत्राम्ल - Conutry Sorrel / Goose foot
64) पर्णयवानी - Country Borej (Bedge)
65) तालीश - Himalayan Silver fur
66) पलांडू - Onion (Bulb onion)
67) पाषाणभेद - Iris sp
68) पून्नाग - Alecazandrium lourel (Finne oil tree)
69) पुदीना - Spearmint, Gorden mint
70) बकुल - Mimusops
71) बंदाक - Parasite or Loranthus coriaceus
72) बिंबी - Large flowered bryonia
73) मद्यन्तिका - Henna, Samphire
74) महाभरिवसा - Greater Gaulangal
75) माणकंद - Aloksia (Giant taro)
76) मुलक - Garden radlish
77) वेतस - Goat willow
78) रसोन - Garlic
79) नीलीनी - Indigo
80) कोशाम्र - Ceylon oak
81) तांबुल - Betel
82) कॉफी - Arabian coffee
83) बिभितक - Belliric Myrobalan
84) हरितकी - Chebulic myrobalan
85) लवंग - Clove
86) कासमर्द - Negro coffee

37) कर्चुर - Zedory
38) मातुलुंग - Citron
39) कलम्बक - Tree Turmeric (False calamba)
90) एरण्डकर्कटी - Pappay, Papaw
91) ताम्रपर्ण - Tobacco
92) स्वर्णक्षीरी - Maxican Poppy
93) दुग्धपर्णी - Wild bean
94) इंद्रवारुणी - Colocynth, Bitter apple
95) नल - Gread reed
96) कंकोल - Cubeb
97) त्रपुष - Curcumber
98) सिल्हक - Liquid amber, Liquid storac, Rose mallose.

प्राणीज द्रव्ये -

1) कस्तुरी - Musk
2) गोरोचन - Gall stone
3) प्रवाल - Coral
4) शंख - Counch
5) शुक्ती - Mother of pearl
6) खटिका (पूती) - $CaCO_3$
7) मृगशृंग - Stag horn
8) अग्निजार - Ambergris

त्रिफला -

1) हरितकी - Chebulic myrobalan
2) बिभितक - Belleric myrobalan
3) आमलकी - Embic myrobalan (Indian goose berry)

1) निंब - Indian liloc / Margosa tree
2) महानिंब - Persian liloc / Bead tree
3) भूनिंब - Kalmegh

Chemical Constituents:

1] हरितकी - फल में tanin (20.6 to 32.5%).Tanin में chebulagic acid, chebulinic Acid, corilagin प्रमुख है।

2] बिभित्तक - Tanin - 21.4%, B-sitosterol, chebulic Acid, Mannital, glucose etc.

3] आमलकी - Vit C अधिक मात्रा में (फल के कल्क 720 mg और स्वरस में 921 mg प्रति 100 gm) पाया जाता है।
Calcium, Galic acid, tanic acid, Albumin, cellolose etc.

4] आद्रर्क - Oil of ginger में zingiberene और Zingiberol तत्व होते है।
शूण्ठी - कटू तत्वो में Gingerol, Shogaol तथा Zingerone प्रमुख है।

5] पिप्पली - Piperine, piplartine, sesamin, piplasterol

6] मरिच - Piperine, Piperidine, Piprettine, Charicine. (Vit A 1500 IU/100 gm)

7] चव्य - मरिचसम रासायनिक संघटन

8] भंगा - Cannabinol, tetrahydrocannabinol, Cannabidiolic acid.

9] चित्रक - Plumbagin

10] यवानी Ajowan oil इस oil में Thymol तथा Carvacrol होता है।

11] जीरक - Cumaldehyde (20 - 40%)

12] धान्यक- सुगंधित तैल-मुख्य घटक Coriandrol (45-70%)

13] चन्द्रशुर Cress oil, Glucotropaeolin

14] हिंगु Asaresinotannol, Disulphide, Disulphide के कारण हिंग की विशिष्ट गंध आती है।

15] वचा -उडनशील तैल में प्रधानता Asaryl Aldehyde होता है। A - Asarone and B - A sarone, Acroine, Eugenol, Caffeine

16] विडंग - Embelin, Christembine

17] यष्टीमधु Glycyrrnizin मुलेठी का पिलापन isoliquiritin के कारण है।

18] आरग्वध - Ainthaquinone

19] कुटुका - Picrorhizin, Kutkin

20] किराततिक्त - Mangiferin, Gentianine

21] मदनफल - Saponin, Randia oil

22] रास्ना - Kwarsitin, Aijoremnetin, Pluchin

23] जोतिष्मती - तैल - Black oil - oleum Nigfum

24] कूष्ठ - Resinoid, Saussurine

25] पूष्कर मूल - Inulin, Alantolactone

26] कटफल - Myricitrin

27] भारंगी - Fenolic glycoside and saponin

28] पाषाण भेद - Tannic acid, Galic acid, metarbin

29] धातकी - Tanin, Lawsone

30] मंजिष्ठा - Purpuin, Manjistin

31] हरिद्रा - Curcumin, Vit A

32] दारुहरिद्रा - Berberine

33] चक्रमर्द - Rhein, aloe-emodin & Chrysophanol

34] बाकूची - Bakuchiol, Psoralen, Isopsoralen, Psoralidin, Isopsoralidin, Corylifolin.

35] अतिविषा - Atisine, Heteratisine, Hetisin

36] रसोन - Allyl propyl sulphide 6%, Diallyl disulphide 6%

37] पलाण्डू - Ca, Fe, Vit A, B, C, Ally propyl disulphide

38] चन्दन - Santalol

38] तगर - Valrianic Acid

40] लवंग तैल- Clove bud Oil -Ujenol, ujenol Acitate Caryophyll ene.

41] नागकेशर - बीज मे Mesuol, Mesuone

42] गुडूची - Berberine, Giloin

43] बिल्व - Marmelosin, Aegelin, Aegelinin

44] गंभारी - Benzoic Acid, Buteyric Acid, Tartaric Acid

45] बृहती - Solanine, Solanidine, Solasouine

46] कण्टकारी - Diosgenin, Solasonine

47] गोक्षूर - क्षुपमे Harman व बीज में Harmine

48] जिवन्ती - Steroil

49] एरण्ड - R
50] निम्ब - N
51] परिजात -
52] शोभांजन M
53] कूटज -
54] करंज तैल (
मूलत्वक में K
Pongamin व
55] कपिकच्छू -
बीज - Nicotin
56] बला - Ep
57] अतिबला -
58] कार्पास बीज
59] अश्वगंधा-C
60] पाठा - Pe
61] त्रिवृत्त - Tu
62] शंखपुंखा - P
63] पूनर्नवा -
64] कुमारी - A
65] सारीवा -
B- amyr
66] भृंगराज - P
67] कमल - P
68] अशोक -
69] बर्बरी -
Camphor का
70] अर्जून - A
71] खदीर - C
72] रोहितक -
73] बब्बूल -
होता है।
74] पलाश -
75] आम्र - t
butter, फल i
76] जम्बू -
77] दाडीम -
78] मण्डूकपर्
Vallerine.
79] सर्पगंधा
Serpentini
80] तेजोव
Xanthopla
81] कूष्माण्ड
82] अहिफेन
Thebaine,

49] एरण्ड - Ricin, Ricinine

50] निम्ब - Nimbin, Nimbinin, Nimbidin, Nimbosterol

51] परिजात - Nyctanthine

52] शोभांजन Moringine, Antibiotic तत्व Pterygospermin(मूल में)

53] कूटज - Conessin

54] करंज तैल (Pongamia oil) में Karanijin जतूघ्न व Pongamol, मूलत्वक में Kanugin, emethoxy Kanugin तत्व, पूष्प में Pongamin व Quercitin

55] कपिकच्छू - Mucanain, Serotonin रोम में

बीज - Nicotin, Prurinin, Prurinidine

56] बला - Ephedrin बीज में Steroid

57] अतिबला - As paragin

58] कार्पास बीज - Vit A, B, C, D, E Gossypol

59] अश्वगंधा-Cuseohygrine,anahygrine,Tropine, anaferine

60] पाठा - Pelosine or Beberine

61] त्रिवृत्त - Turpethin

62] शंखपुष्पी - Rutin, Rutenoid

63] पूनर्नवा - Punarnavine

64] कुमारी - Aloin

65] सारीवा - P. Methoxy Salicylic Aldehyde, B Sitoserol, B- amyrins, Lupeool, Tetracylic triterpene alochols.

66] भृंगराज - Ecliptine, Wedelolactone

67] कमल - Neuciferin, Romerin, Nornuciferin

68] अशोक - Haematoxylin

69] बर्बरी - सुगंधित तैल बाद में स्फटिकाकार होता है, उसे Basil Camphor कहते है।

70] अर्जून - Arjunetin, Fridelin

71] खदीर - Catechin, Catechu tannic acid

72] रोहितक - Teconin

73] बब्बूल - काण्ड का निर्यास बब्बूलगोंद उसमें Galactoarabon होता है।

74] पलाश - त्वक् Kinotannic Acid, बीज - Palasonin

75] आम्र - त्वक् - Mangiferin, बीजमज्जा सत्वपातनव्दारा, Mango butter, फल में Vit A and Vit C अधिक मात्रा में

76] जम्बू - रंजक द्रव्य - Cyanidin diglycosides, Jamboline

77] दाडीम - त्वक् - Pelletierine, Iso Pelletierine

78] मण्डूकपर्णी - Hydrocotyline, C_{22}, H_{32}, O_8 N, Asiaticoside; Vallerine.

79] सर्पगंधा - Reserpin, Deseripin, Reserpinin, Serpentin, Serpentinin etc.

80] तेजोवती - Berberine, Dictamnine, Magnofluorine, Xanthoplanine, skimmianine

81] कूष्माण्ड - Cacurbitine

82] अहिफेन - **Primary alkaloides** Morphine 5-20%, Codeine, Thebaine, Narcotine, etc

Secondary: Apomorphine, Apocodeine, Desoxycodeine, etc

Inert : Opionin, Meconin, Meconoidin.

Acids - Lactic acid and Meconic acid

पर्याय नाम:

1 - हरितकी- विजया, वयस्था, पथ्या, कायस्था, हेमवती, चेतकी, श्रेयसी, जीवन्ती, रोहिणी, शिवा, शिवप्रिय, शितशिव भेद -7 (भा. प्र.)

प्रकार	प्रयोग	उत्पत्तिस्थान	लक्षण	अन्य
1.विजया	सर्वरोगहर	विन्ध्य	अलाबुवृत्ता	रसायन,श्रेष्ठ
2.रोहिणी	व्रणरोहण	सर्वत्र	वत्ता	
3.पूतना	प्रलेप	सिंधू	सुक्ष्म	
4.अमता	शोधन	चंपा	मांसल	
5.अभया	नेत्ररोगहर	चंपा	पंचरेखा	3 प्रकार (निघण्टू आदर्श)
6.जिवन्ती	सर्वरोगहर	सौराष्ट्र	स्वर्णवर्णिनी	
7.चेतकी	रेचक	हिमाचल	त्रिरेखा	

(चूर्ण के लिए उत्तम 2 भेद-श्वेत-6 अंगुल कृष्ण - 1 अंगुल)

हरितकी 4 प्रकारसे विरेचन करती है। स्वाद, गन्ध, स्पर्श, दष्टय

चेतकी की छाया निचे जाने से उसी समय विरेचन होता है।

ऋतू	रासायनिक प्रयोग	पंचरसा
अलवणा		
हेमंत	शुण्ठी	मज्जा-मधूर
वर्षा	सैंधव	तंतू अम्ल
शरद	शर्करा	
ग्रिष्म	गुड	फलत्वक्-कटू
शिशिर	पिप्पली	वृन्त -तिक्त
वसंत	मधू	बीज - कषाय

1. चर्विता वर्ध्दयत्यग्नि, पेषिता मलशोधिनी।
स्विन्ना संग्रहणी पथ्या भष्टा प्रोक्ता त्रिदोषनुत्।
लवणेनं कफं हन्ति पित्तं हन्ती सशर्करा।
घतेन वातजान् रोगान्सर्व रोगान गुडान्विता।
बाल हरितकी- मदू विरेचक है।

2. बिभितक - कर्षफल, कलिद्रुम, कलियुगालय, अक्ष, भूतावास, वासन्त. बिभितक व धात्री मज्जा - तट, छर्दी, कफवात हर, लघु, कषायो, मदकृच्च

3. आमलकी-अमृता-धात्री, वष्या, जातीफल रस, अमतफल, धात्रीफल श्रीफल,तिष्यफल, शिव - रक्तपित्त प्रमेहध्न परं वष्यं रसायनम्।, हरितकीसमं धात्रीफलं वीर्य विपर्यय (मदूवीर्य - मात्रा । पल) वयस्थापन

4. आर्द्रक -शुण्ठी, नागर, महौषध, कटूभद्रा, विश्व, विश्वा, विश्वभेषज, उषण, श्रगबेर, शुण्ठी-वष्यकर्म-विपाकानुसार भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रक भक्षणम्। ग्रीष्म व शरद में आर्द्रक सेवन निषेध. शुण्ठी-कटू मधूर उष्ण आर्द्रक - कटू कटू उष्ण

5. दूर्वा - प्रज्ञास्थापन

6. रुद्राक्ष - भूतनाशन

7. मेषशृंगी - मधुनाशनी

8. गुडूची - भिषकप्रिया

9. सर्षप - कटूस्नेह, तन्तुभ

10. हिंस्रा - गृध्रनखी, कन्थारी
11. गज्जपिप्पली - कपीवल्ली
12. चोपचिनी - व्दिपान्तर वचा
13. कतक - पयप्रसादी, चक्षुष्य
14. कोशाम्र - क्षुद्राम, लाक्षावृक्ष
15. तुवरक - कटूकपित्थ, कूष्ठवैरी
16. द्रवन्ती - जयपाळ, दन्तीबीज
17. सिल्हक - तुरुष्क, कपितैल
18. जलपिप्पली - महाराष्ट्री पर्याय
19. कर्चूर - द्राविड (दक्षिण भारत)
20. द्राक्षा- गोस्तनी, मृव्दिका,
21. कपित्थ- दधिफल, दन्तशठ,
22. कार्पास- तुण्डकेरो, सुमुद्रान्ता
23. बीजक - असन, क्रिमयसार, पीतशाल
24. अगस्त्य - मुनिद्रुम, वंगसेन, बक्रपूष्प
25. पारिभद्र - कण्टकी पलाश, रक्तपूष्प
26. श्लेष्मान्तक - बहुबार, उद्दालक, शेलु
27. धत्तूर - उन्मत, कनक, मातुल, शिवप्रिय
28. सर्पगन्धा- धवलविटप, चन्द्रमार
29. कुपीलु- तिन्दुक, जलद, दीर्घपत्रक,
30. पलाण्डु- यवनेष्ट, दुर्गन्ध, मूखदुषक
31. जयपाल-दन्तिबीज, तिन्तिडीफलम्।
32. शरपुंखा- प्लीहशस्त्र,नीलीवृक्षाकृती,
33. काकजंघा,पारावतपदी, दासी, काका,
34. मुसली - तालमुली भेद - श्वेत व कृष्ण,
35. ब्राम्ही- ऐन्द्री, कपोतभंगा, सोमवल्ली,
36. महाशतावरी - सहस्त्रवीर्या, महोदरी, उडंगकटिका
37. दाडीम- करक,दन्तबीज, लोहितपूष्पक
38. पारसिकयवानी- तरूष्का, मदकारिणी.
39. शंखपूष्पी - माङ्गल्यकुसुम, क्षीरपुष्पी.
40. कुमारी- गहकन्या,कन्या,घतकुमारिका
41. ममीरा - हल्दी, बच्छनाग, Golden thread root
42. चक्षुष्या - अरण्यकुलत्थिका (बीज संख्या 5 होती है)
43. उदुम्बर- जंतुफल, यज्ञांङ्ग, हैमदुग्धक
44. जिवन्ती - मधुस्त्रवा, पयस्विनी, शाकश्रेष्ठा
45. धान्यक - छत्रा, कुस्तुम्बरू, वितुन्नक, कूनटी.
46. कर्चुर - वेधमुख्य, द्राविड, कल्पक, शटी
47. तालीसपत्र - धात्रीपत्र, पत्राढय, शुकोदर,
48. मिश्रैया - मधूत्र, मधुरिका, मिशी, शालेय, शालीन
49. पनस - कण्टकीफल, अंतिबृहत्फल, आमाशयफल
50. अश्वत्य- बोधिदु,पिप्पल,चलपत्र, गजाशन,
51. पारिष- कपीतन, गर्दभाण्ड, पार्श्वपिप्पल,
52. पारिष- कपीतन, पार्श्वपिप्पल, गर्दभाण्ड.
53. अर्जुन-ककुभ,नदीसर्ज, इन्द्रदु, वीरवक्ष, धवल
54. वंश-तृणध्वज, यवफल, शतपर्वा, वेणू, त्वकसार,
55. रोहितक-दाडीमपूष्पक, दाडीमच्छद, प्लीहघ्न.
56. मुस्ता - वारिद, नागरमोथा, घन, कुरवींद, भद्रमुस्ता, गुंद्रा.
57. गन्धबिरोजा-श्रीवास, सरलस्त्राव, श्रीवेष्टक,
58. कुष्ठ- रोगहृय, वाप्यं, परिभव्यं उत्पल, काश्मिर
59. भृंगराज- मार्कव, अंगारक,केशरंजन,केशराज,
60. जम्बु-महा-फलेन्द्रा, नंदी,महाफला,सुरभिपत्रा
61. त्रिवत्त - त्रिभण्डी, त्रिपुटा, सरला, रेचनी, सुबहा,
62. दन्ती - एरण्डफला, शीघ्रा, प्रत्येकश्रेणी, उदूम्बरपर्णी निकुम्भ
63. काण्डीर - काण्डकटुक, नासासंवेदन, तोयवल्ली, सुकाण्डक
64. बब्बूल-किक्किरात, सपीतक, आभाषटपद्मोहिनी
65. नीलिनी - नीली, रंजनी, तूत्था, ग्रामीणा, नीलपूष्पा, शमदी
66. नागकेशर -चाम्पेय, कान्चाहृदय, केशर, नागपुष्प
67. बदर- 3 भेद- सौविर, कोल, कर्कन्धु क्रमशः छोटे
68. पारिजात- परिभद्र, निम्बतरू, मन्दार, शेफालिका.
69. चव्य-चव्य, चविका, उषण, चव्यंविशेषाद गुदजापहम्।
70. कांचमार- गण्डारी, शोणपूष्पक, युग्मपत्रक, कुण्डली,
71. धत्तूर - उन्मत, देवता, तुरी, शिवप्रिया,मातूल,मदन,
72. अपराजिता-विष्णुक्रान्ता भेद 2. श्वेतपूष्पा नीलपूष्पा
73. कर्पूर- घनसार, चंद्रसंज्ञ, हिमाव्ह 2 भेद - पक्व, अपक्व
74. धातकी - धातूपूष्पी, ताम्रपूष्पी, बहुपूष्पी, वन्हीज्वाला
75. शतपूष्पा - छत्रा, शालेय, शालीन, मिश्रैया, मधुरा, मिसी,
76. मलयवचा -कुलंजन, सुगंधा, स्थूलग्रंथी (भा.प्र. महाभरी वचा)
77. अश्वगोल - इंसबगोल - अर्श्वकर्णबीज, शीतबीज, ईश्वर गोल
78. निम्ब- हिंगुनिर्यास, पिचूर्मद, तिक्तक, अरिष्ट, पारिभद्र,
79. अशोक - हेमपूष्प, ताम्रपल्लव, पिण्डपूष्प, नट, गन्धपुष्प
80. निर्गुण्डी - सिंधुवार, श्वेतपूष्प, शेफाली, नीलपूष्पी, सुबहा
81. पलाश- किंशुकपर्ण, यज्ञिय,क्षारश्रेष्ठ, ब्रम्हवक्ष,वातशोध
82.कटफल- सोमवल्क, कुम्भीका, महावल्कल,श्रीपर्णीका, भद्रा,
83. हिंगु - सहस्त्रवेधि, जतुक, बाल्हीक, रामठ (संग्रह वसंत में)
84. पिप्पलीमूल - ग्रंथिक उषण,चटकाशिर (Root of P. longum)
85. सारीवा-भेद -श्वेत,कृष्ण सारीवा, उत्पलसारीवा,गोपवल्ली
86.कर्कटश्रगी- श्रगो, अजश्रगी, कर्कटाख्या,कुलीरविषाणीका, वक्रा
87.पुष्करमूल-पद्मपत्र, काश्मीर,कुष्ठभेद विशेषत पार्श्वशूलनत
88. चक्रमर्द -दद्रुघ्न, प्रपुन्नाट, मैक्षलोचन, पद्माट, एडगज,चक्री
89. मदनफल -छर्दन, पिण्डी, नट, मरूबक, विषपूष्पक, शल्यक,
90. प्रियंगु - विष्वक्सेन, आंगनप्रिया, गुन्द्रा, लता, महिलाऽहृया
91. भुम्यालकी- तामलकी, अजरा,भूधात्री, बहुपत्रा,बहुफला, बहुवीर्य,
92. मण्डुकपर्णी- माण्डूकी,ब्राम्ही, सरस्वती, महौषधी,दिव्या, त्वाष्ट्री,
93. वट-रक्तफल, श्रंगी, न्यग्रोध, वैश्रवणी, यमप्रिय, बहुपाद, वनस्पती,
94. अजमोदा- खराश्वा, मायूरो, दिप्यक, ब्रम्हकुशा, कारवी, लाचमस्तका,
95. चन्द्रशुर - चन्द्रीका, चर्महन्त्री, पशुमेहनकारिका, वासपुष्पा, भद्रा, इंदूकरद्वारा वर्णित.
96. वचा - उग्रगंधा, षडग्रन्था, गोलोमो, मंडल्यम, क्षुद्रपत्री, शतपर्विका, प्रायः घोडवचा नामसे पहचानते है।
97.विंडग -वेल्ल, तण्डूल, चित्रतण्डुल, कृमिघ्न,जन्तुनाशन, अमोघा,
98. यष्टीमधु - क्लीतक, मधुक (महाकषाय में सबसे अधिक बार उल्लेख),
99. भारंगी- कज्जी,पद्मा, ब्राम्हणयष्टिका, ब्राम्हण्यङ्खर्ल्ली, खरशाक,
100. पाषाणभेद- अश्मघ्न, गिरिभिद, भिन्नयोजिनी, बस्ति

शोधक, भेदन,
101.आरग्वध-
स्वर्णभूषण, दि
102कटुका-ति
कटुरोहिणी,मत
103. किराततिं
रामसेनक, ज्व
भेद - तिक्त व
104. रास्ना- र
ऐलापर्णी, (सु
105. ज्योतिष्म
पिततैला, काव
ज्योतिष्मती तै
106. मंजिष्ठा
योजनवल्ली,
107. हरिद्रा-
योषितप्रिया,
108. दारूहरि
कंटकटेरी, पी
रसांजन नेत्रयो
109. बाकूची-
पुतिपली, काव
110. अतिविष
भंगुरा, घुणवल्
111. रसोन-
- बीज-मधूर,
112. भंगा- म
शाखा-भांग,
113. अहिफेन
त्वक्-पोश्त, हि
114. कस्तूरी-
नैपाल, काश्मी
मध्यम कनिष्ठ
115. चंदन-
चंद्रद्युति, उक
चूर्ण स्नेहासवा
कषायलेपये:
116. पतंग-
सर्वेषा चन्दनां
117.तगर- न
तगर-कालानु
118. गुग्गुल
महिषाक्ष, पल
महानील, कु
लिए श्रेष्ठ
119. कुमुद व
विशेषणे मनू
स नवो बहणो
अपथ्य- अम्ल

शोधक, भेदन,
101.आरग्वध-आरवेत,व्याधिघात,कृतमाल, सुवर्णक,स्वर्णाङ्ग , स्वर्णभूषण, दिर्घफल,ग्रीष्मसुंदरी
102कटुका-तिक्ता,कट्वी,कृष्णभेदा,कटम्भरा,काण्डरूहा,रोहिणी कटुरोहिणी,मत्सशकला,शतपर्वा,अशोका,चक्रांगी कटूकी),
103. किराततिक्त - कटुतिक्त, किरातक, नैपाल, भूनिम्ब, रामसेनक, ज्वरान्तक, कल्प- सुदर्शन चूर्ण
भेद - तिक्त व अर्धतिक्त,
104. रास्ना- रसा ,सुरसा, रसना, रस्या, यूक्तरसा, सुबहा, ऐलापर्णी, (सुगंधा) श्रैयसी,
105. ज्योतिष्मती - कगुंनी, ककुन्दनी, पारावत पदी, पिप्या, पिततैला, काकण्डकी, कंगूनीका, कटविका, वंगा, लता, ज्योतिष्मती तैल- Beri beri में उपयोगी है।
106. मंजिष्ठा - विकसा, समङ्गा, कालमेषिका, मण्डूकपर्णी, योजनवल्ली, रसायनी, गण्डीरी, वस्त्ररंजिनी, रक्तांगा,
107. हरिद्रा- कांचनी, निशाऽख्या, वरवर्णिनी, कृमिघ्नी, योषितप्रिया, हट्टविलासनी, गौरी
108. दारूहरिद्रा-दार्वी, पचम्पचा, कालीयक, हरिद्रू, पीतदारू, कंटकटेरी, पीतक., दार्वीक्वाथ समं क्षिरं पादं पक्त्या यदा घनम्। रसांजन नेत्रयो परम हितम्। रसांजन पर्याय- तार्क्ष्यशैलं, रसगर्भ।
109. बाकूची- अवल्गुज, शशिलेखा, सोमराजी, सोमवल्ली, पुतिपली, कालमेषि कूष्ठघ्नी,
110. अतिविषा-विषा, प्रतिविषा, उपविषा, श्रगी, शुक्लकंदा, भंगुरा, घुणवल्लभा, विश्वा, शिशुभैषज्या, काश्मिरा
111. रसोन- उग्रगंध,महौषध,अरिष्ट,यवनेष्ट,म्लेच्छकन्द रसोन - बीज-मधूर, नलाग्र-लवण, मुल-कटू, पत्र-तिक्त, नाल -कषाय.
112. भंगा- मातुलानी, मादिनी, जया, विजया शाखा-भांग, पूष्पमंजिरी- स्त्रीजातीगांजा, निर्यास-चरस
113. अहिफेन- अफिम, आफूक,खसफलक्षीर, फल-डोडा, त्वक्-पोश्त, निर्यास अफिम, बीज-खशखश
114. कस्तूरी- मगमद, वेधमूख्या वर्णभेद - 3 प्रकार, कामरूप, नैपाल, काश्मीर क्रमश: उत्तम
मध्यम कनिष्ट,
115. चंदन- श्रीखंड, भद्रश्री,तैलपर्णिक, गन्धसार, मलयज, चंद्रद्युति।, उक्ते चंदन शब्दे तु गृहयते रक्तचन्दनम्।
चूर्ण स्नेहासवा लेहा: साध्या: धवलचन्दनै:।
कषायलेपये:। प्रायो युज्यते रक्तचंदनम्।
116. पतंग- कुचंदन, विशेषाद् दाहनाशनम्।,
सर्वेषा चन्दनांना मलयजस्य श्रेष्ठं
117.तगर- नत, वक, कुटिल, नहूष,2 भेद,
तगर-कालानुसार्य,कूटिल 2. पिण्डतगर - दण्डहस्ती, बर्हिण,
118. गुग्गुल - देवधूप, जटायू, कौशिक, पूर, कुम्भ, उलुखल, महिषाक्ष, पलंकष. संग्रह-ग्रिष्म ऋतूत, 5 भेद - महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म, हिरण्य, महिषाक्ष व महानील - हत्ती के लिए श्रेष्ठ
119. कुमुद व पद्म - स्वस्थ व आरोग्यकर परम्।
विशेषणे मनूष्याणां कनक: परिकीर्तित:।
स नवो बहणो वष्य, पुराणस्त्वतिलेखन:।
अपथ्य- अम्ल, तीक्ष्ण, अजीर्णद्रव्य, व्यवाय, श्रम,मद्य,आतप, क्रोध
120. कष्टकारी - दु:स्पर्शा, क्षुद्रा,व्याघ्रो,निदिग्धका, धावनी, बहती
121. लवंग- ग्रहणीहर, चंनदपुष्पक, वारीज, कुसुम, श्रीसंज्ञ, श्रीप्रसूनक,
122. बहदएला - त्रिपूरा
एला - तत्था, द्राविडी, त्रुटी, सुक्ष्मा, उपकुंचिका
123. गुडूची - मधुपर्णी, अमता, कुण्डलीनी, छिन्ना, छिनारूहा, वत्सादनी, जिवन्ती, तन्त्रिका, सोमवल्ली, चक्रलक्षणिका, विशल्या, वयस्था, रसायनी, चंद्रहासा, देवनिर्मिता
124.बिल्व-शाडिल्य,शैलूष,मालूर,श्रीफल,ग्रंथिल,गन्धगर्भ, कंटकी,सदाफल,महाकपित्थ,बिल्वमज्जा-बिल्वपेशिकाबिल्वकर्कटी.
125. गंभारी- भद्रपर्णी, श्रीपर्णी, मधूपर्णिका काश्मर्य, काश्मरी, काश्मीरी, पतिरोहिणी, कृष्णवन्ता,मधुरसा, महाकुसुमिका
126. पाटला- अमोघा, मधूदूत, फलेरूहा, कृष्णवन्ता,कुबेराक्षी, कालस्थाली, अलिवल्लभा, ताम्रपूष्पी, कुंभीपुष्पी, अम्बूवासिनी
127. अग्निमन्थ - जय,जया, जयन्ती, श्रोपर्णी, तर्कारी, नादयी,कुबेराक्ष, वातघ्नी, बैजयन्तिका, गणिकारीका,
128. श्योनाक (सोनपाठा) अरलू - शोषण, नट, कटवंग, टुण्टुक, मण्डुकपर्ण, पत्रोर्ण, शुकनास, कुन्नट, पृथुशीम्ब, कटम्भर,
129. शालपर्णी - स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, पत्रोर्ण, दिर्घपत्रा, दिर्घांगी, गुहा, विदारिगन्धा, अंशुमती,
130. पश्निपर्णी- पथक्पर्णी, चित्रपर्णी, अहिपर्णी, सिंहपूच्छी, कलशी, धावनी, गुहा, श्रृगालविन्ना.
131. बहती- वार्ताकी, क्षुद्रभण्टाकी, महती, कुली, हिंगुली, राष्ट्रीका, सिंही, महोष्ट्री, दष्प्रधर्षिणी
132. गोक्षूर- क्षुरक, त्रिकण्टक, स्वादुकण्टक, गोकण्टक, वनश्रङाट, पलंकषा, श्वदंष्ट्रा, इक्षूगधीका
133. एरण्ड - चित्र, पंचागुल, गन्धर्वहस्तक, वर्धमान,वातारी, तरूण, रक्त एरण्ड- उरूबक, व्याघ्रपुच्छ, व्यडम्बक, वतारि, चंचू उतानपत्रक,
134.करवीर-श्वेतपूष्प,शतकुम्भक,अश्वमारक,
भेद 2. श्वेत, रक्त,
135. वासा- भिषक्माता, सिंहीका, सिंहास्य, वाजीदन्ता, आटरूषक वष, ताम्र, सिंहपर्ण
136. महानिम्ब-विषमुष्टीक, केशमुष्टी, निम्बक, रम्यक, द्रेक. ताम्रपुष्प, अश्मन्तक, स्वल्पकेशरी, कर्बुदार, चमरिक.
137. शोभांजन- शिग्रु,तीक्ष्णगधंक, अक्षीव, मोचक
भेद 3 श्याम,श्वेत,रक्त. (शोभांजन बीज को श्वैतमरिच कहते है)
138. कुटज-वत्सक, गिरिमल्लीका, शक्रशाखी, मल्लिकापूष्प, इंद्र,यवफल,वृक्षक,पाण्डुरद्रुम,
139.करंज-गुच्छपुष्पक, स्निग्ध पत्रक भेद 2. कप्टककरंज - नक्तमाल, चिरबिल्व घतकरंज - पूतिक, सोमवल्क
140. श्वेत गुंजा - उचटा, कृष्णला, रक्त गुंजा - काकणन्ती, रक्तीका, काकदनी,
141. कपिकच्छु - आत्मगुप्ता, स्वयंगुप्ता, मर्कटी, शुकशिम्बी, कण्डुरा, लांगली, दुंस्पर्शा,प्रावृषायणी
142. बलाचतुष्टय - i. बला - वाटया, वाटयालिका, खरयष्टिका ii. महाबला - पीतपूष्पा, सहदेवी,
iii. अतिबला - ऋष्यप्रोक्ता, कंकतिका,
iv. नागबला - गांगेरूकी, झषा, -हस्वगवेधुका, गोरक्षतण्डूल,
v. राजबला- गन्धप्रसारणी, सारणी, भद्रपर्णी, कटम्भरा,

143. **नीलदुर्वा** - अनन्ता, भार्गवी, शतपर्विका, सहस्त्रवीर्या, श्वेतदूर्वा - गोलोमी, शतवीर्या

144.**वाराहिकन्द**-पश्चिम देश में गष्टीसंज्ञा,वराह इव लोभवान वरदा

145. **विदारीकन्द** - स्वादुकन्दा, सिता, इक्षुगन्धाक्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्वीनी, गजवाजीप्रिया, कंदपलाश, भूमिकुष्मांड.

146. **शतावरी** - शतपदी, शतवीर्या, बहुसुता, अतिरसा, वरि, पिवरी, नारायणी, महाशतावरी - शतमुली, सहस्त्रवीर्या, हेतुः, ऋष्यप्रोक्ता उर्ध्वकण्टीका,

147. **अश्वगंधा**- हयाहया, वराहकणी,कूष्ठगंधिनी, वाजी, बलदा, वरदा, आस्कंद,

148. **पाठा**- अम्बष्ठा, पापचेलिका, एकाष्ठीला, रसा, वरतिक्तिका, अविध्दकर्णी, पिलूफला

149. **लघुदन्ती** - विशल्या,उदम्बरपर्णी, एरण्डफला, घ्रुणप्रिया, निकुम्भ, मुकुलक, दन्ती भेद 2. लघुदन्ती व द्रवन्ती ॥ बहदन्ती व द्रवन्ती ,

150. **अपामार्ग** - मयुरक, मर्कटी, खरमंजिरी, अर्धशल्य, दुर्ग्रहा, शिखरी, किणीही, प्रत्येकपुष्प,

151.**कोकीलाक्ष** - (तामलखाना)-काकेक्षु,क्षुरक, काण्डेक्षु, इक्षुगन्धा, इक्षुवालीका,

152. **पुर्ननवा**- क्षुद्रवर्षाभु, वर्धकेतू, शोथघ्नी, दिर्घपत्रीका, भेद - 2 श्वेत, रक्त

153. **कमल**- पद्म, नलीन, अरविंद, महोत्पल, सहस्त्रपत्र, शतपत्र, बिसप्रसून, राजीव, पुष्कर, अम्भोरूह, कुशेक्षय, पंकेरूह, तामरस, सारस. भेद 3 श्वेत-पुण्डरीक, रक्त, कोकनद,नील-इन्दीवर

154. **सैरेयक** 4 भेद 1. श्वेत-सहचर कटसारीका, 2.पीत-कुरण्टक, झिंटी. 3. नील-वाण,दासी, आर्तगल, 4. रक्त - कुरबक

155. **तुलसी**- भेद 2 शुक्ल, कृष्ण; सुरसा, सुलभा,ग्राम्या,गौरी, बहुमंजिरी, अपेतराक्षसी, भुतघ्नी, देवदुन्दुभिः,

156. **काकोदुम्बरीका**- फल्गु, मलयु, जघनेफला, श्वित्रभैषज, मुलकर्कटी.

157. **शिरिष**- भण्डी, भण्डीर, कपीतन, शुकपूष्प, शुकप्रिय, शुकतरु,

158. **खदीर**-रक्तसार,गायत्री,यज्ञिय,दन्तधावन, कण्टकी, बालपत्र, बहुशल्य,

159. **अरिष्टक**- (रिठा)- मांगल्य,अर्थसाधन,गर्भपातन, फेनील, रक्तबीज, रक्तपुष्पक, समिव्दर,

160. **आम्र**- चुत,रसाल, सहकार, अतिसौरभ, कामाङ्ग, मधुदूत, माकन्द, पिकवल्लभ, भेद - आमआम्र (बाल) कषायाम्ल, वातपित्तकृत् शुष्क आम्र- भेदनं, कफवातजित पक्वं- पित्तलं, वन्ही श्लेष्म,शुक्र विवर्धनम्।

161. **नारिकेल**- लांगली, कुर्चशीर्षक,तुङ्ग,तणराज,सदाफल, दक्षिणात्यक, स्कंदफल.

162. **भल्लातक**- अरूष्कर, अग्निक, भल्ली, वोरवक्ष, शोफकृत अग्निमुखी,

162. **वत्सनाभ**- विष, गरल, श्वेड, यत्पार्श्व न तरो वध्दि वत्सनाभःस भाषिते।
सिन्दुवारसदक्पत्रो वत्सनाम्याकृति स्तथा।

164. **पिप्पली** - कृष्णा, उष्णा, कणा, उपकुल्या, कोला, चपला, तीक्ष्णतण्डूला, मागधी, वैदेही, शौण्डी, भेद 4. राजनिघण्टू
आर्द्र - कफप्रकोपक, पित्तशामक
शुष्का - पित्तप्रकोप, पिप्पली मधूसंयुक्ता मेदकफ विनाशनी।
गुडापिप्पली- जीर्णज्वर, अग्निमांद्य.
कफाधिके तु सक्षौद्रं, सघतं पवनाधिके। पित्तोत्तरे सशर्कराया सेवमानः सुखी भवेत॥ का.स .

165. **मरिच** - वेल्लज,कृष्ण, उषण, धर्मपतन, सुवत्त. कफवातजित, पित्तकर, आर्द्र - श्लेष्मप्रसेक, पित्तलम्.

166. **गजपिप्पली** - चव्य के फल का नाम गजपिप्पली है। पर्याय - कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रैयसी, वशिर

167. **चित्रक** - अनलनामा,पाठी, व्याल, उषण, नत्यकुंडल भेद - 3 श्वेत, रक्त, नील

168. **यवानी** - अजवायन, अजमोदिका, उग्रगंधा, ब्रम्हदर्भा, दिप्या, दिप्यका, यवसाह्वा,

169. **जिरक** - जरण, अजाजी, दीर्घजीरक, कृष्ण, सुगंध, उद्गार शोधन, भेद - 3 - शुक्ल, कृष्ण, कालाजाजी.

170. **धन्वयास** - अनन्ता, दुरालभा, दुस्पर्शा, समुद्रान्ता, गान्धारी (अफगाणिस्तान में विशेषकर पायी जाती है।)

उपयुक्तांग - पंचाग - शालपर्णी (विदारीगंधा) (राजनिघण्टू - गेंदे के फूल का सर्वप्रथम वर्णन महाभूत के अनुसार भूमी वर्णन.)

अष्टवर्ग प्रतिनिधी - भा.प्र.

मेदा,जीवक काकोली ऋध्दी द्व द्वे अपि चासती।
वरीविदार्य अश्वगंधा वाराहीश्च क्रमात क्षिपेत् ॥

स्वरूप के अनुसार वर्णनः

क्षुप

अहिफेन,तगर,वत्सनाभ, भगराज,चक्रमर्द, यवास, पर्पट, आर्द्रक,धान्यक, चित्रक, जिरक, मुस्तक, अर्क, अश्वगोल, अकारकरभ, कूष्ठ, कोकिलाक्ष, धत्तूर, गोक्षूर, सुरण, अपामार्ग, भूनीम्ब, अश्वगंधा, अजमोदा, अतिविषा, भंगा, वचा,रास्ना,वासा,जूफा, लंका, बला, एला, बहदएला, सर्पगंधा, मिश्रैया, पूनर्नवा, कटुका, शरपुंखा, ऐन्द्री, शटी, शुण्ठी,दन्ती, चांगेरी, अतसी, कुमारी, मुशली, यवानी, भारंगी, बहती, मण्डुकपर्णी, शंखपूष्पी, कण्टकारी, लताकस्तुरी, पर्णयवानी, आवर्तकी, भ्म्यामलकी, द्रोणपूष्पी, जटामांसी, मद्गपर्णी, माषपर्णी, हिंगू, यष्टीमधू, चंद्रशुर, पाषाणभेद, कमल, तुलसी.

लता

कूष्माण्ड, चव्य, मरिच, इक्ष्वाकू, धामागव, कतवेधन, त्रिवृत्त, पटोल, पाठा, मूर्वा, गुंजा,सारीवा, मंजिष्ठा, गुडूची, लांगली, वाराही, विदारी, जिवन्ती, पिप्पली, जोतिष्मती, देवदाली, शतावरी, माषपर्णी, कपिकच्छू

वृक्ष

अर्जून, अग्निमंथ,कर्पूर, कांचनार, कंकूष्ठ, कूटज, कटफल, श्योनाक पत्रांग, पलाश, तालीशपत्र, तैलपर्ण, लवंग, लोध्र, जातीफल, मायाफल, पाटला, स्नुही, द्रवन्ती, गंभारी, नाडी हिंगु, हारितकी , बिभीतक, आमलकी, मदनफल, चंदन, अशोक, रोहितक,

गुल्म

गुग्गुल (वक्ष), एरण्ड, करवीर, विडंग, शाखोटक, अतिबला, दारूहरिद्रा, निर्गुण्डी, धातकी, आवर्तनी, प्रियंगू , सैरयक.

उपयुक्तांगः-

पंचागः-

मण्डुकपर्णी, ब्राम्ही, शंखपुष्पी, गोरक्ष(बीजतैल), भृंगराज, निलिनी जयन्ति, सैरेयक (Mainly पत्रक), अधःपुष्पी(मुल),काण्डीर, बनकशा,जूफा, कंटकारी, अगस्त्य, दुग्धिका, हसंपदी,पंत्रांग (यासशर्करा), धन्वयास, पर्पट,धान्यक (फल), काकमाची (फल), चांगेरी, मरुबक, दमनक,मयुरशिखा, आकाशवल्ली,चौहार (सत्व), आखुपर्णी, निषण्णक, कालमेघ, दूर्वा, कमल(पुष्प बीज, मुल), सिताब (पत्र), गोक्षुर(मुल, बीज), पूनर्नवा(मुल, बीज), भूम्यामलकी, बन्दाक, कारवेल्लक (फलत्वक्), किराततिक्त, नाहि, द्रोणपुष्पी (Specially पत्र),शैवाल, शैलेय,मुद्गपर्णी (मुल), माषपर्णी(मुल), लज्जालु(मुल),आयापान, जलकुंभी,मुण्डी,छत्रक,शालपर्णी, मेथिका (बीज), सदपुष्पा(मूल, पत्र)

मुल - जटामांसि, सर्पगंधा, तगर, ममीरा,वत्सनाभ, उशीर,अधःपुष्पी, यष्टिमधू, पुष्कर मुल, भारंगी,अतिविषा (कंद), स्वर्णक्षीरी, कुष्ठ, आकारकरभ, उलटकम्बल, कुश, काश, शर, पाषाणभेद, वीरतरु, गोरक्षमज्जा, सप्तचक्रा, सहदेवी, त्रायमाण,मूर्वा, जीवन्ती, अश्वगंधा, वृध्ददारु, नागबला, नागदमन, निर्विषा, सारिवा, मंजिष्ठा, हेमवती, पृश्निपर्णी, वाकेरी, वनत्रपुष(मुलसत्व),

मुलत्वक्- चित्रक, श्योनाक, त्रिवृत्त, करीर, अकोल

मुल- भौमिक कांड- वचा, कटूका, आम्लपर्णी, दुग्धफेनी,

त्वक् - भूर्जपत्र,अर्जुन, अरलु, धन्वन, रोहितक, कट्फल, लोध्र, वरुण,प्लक्ष, कपीतन (पारीष), हरिद्रु,कुष्ठदारु,सप्तपर्ण,कुनयन (सत्व),चिरबिल्व,मांसरोहिणी

पत्र- रास्ना,हत्पत्री,तांबुल,तालीस, ताम्रपर्ण,कोरफड, पर्णयवानि,भाण्डीर,पटोल, पर्णबीज.

फल- द्राक्षा, भल्लातक, बिभीतक, लंका,अम्लवेतस, मातुलुंग,तिन्तिडक, मरिच, मदनफल, अरिष्टक, माष (बीज),लकूच,फल्गु,देवदाली,यवानी, अजमोदा, विडंग,मखान्न,कंकोल,हपुषा, अननस,पूग (पूगखंड),हरितकी, आमलकी,रुदन्ती

बीज- चक्षुष्या,कतक, क्षवक, भृंगराज, अरण्यजीरक, खुबकला, तोदरी, लताकस्तुरी, जीरक, कृष्णजीरक, अतिबला, कृष्णबीज,चंद्रशुर, उटंगण, शृंगाटक (फलमज्जा), कालाजाजी, हरमल, कुलत्थ,कण्टकी करंज, एला, बृहद्एला

बीजतैल- ज्योतिष्मति, कुष्मांड, गोरक्ष, तिल, राजिका, सर्षप,

बीजमज्जा - कुचला

फलनिर्यास - अहिफेन (खसखस/पोश्तदाना)

पुष्प - मुचुकुंद, तरुणी,

लवंग - (पुष्पकलिका), बनफशा (पंचाग),धातकी, जपा, प्रियंगु

कंदचूर्ण- तवक्षीर

कंद - हरिद्रा, वनहरिद्रा,आम्रगंधिहरिद्रा,वनपलांडू, शटी,कर्चूर,मलयवचा,शुंठी, मुस्तक, सुरण, मुशली, सुरंज्जान, शतावरी, मुज्जातक, कशेरुक, लांगली विदारी, वाराही, चोपचिनी

निर्यासः- गुग्गुल, कर्पुर (सत्व),

रूमी - मस्तगी, बोल, उषक,लोबान, सिल्हक, हिंगु, नाडीहिंगु,कंकुष्ठ

त्वक् और फल - कदंब, श्लष्मांतक, तेजोवती, शमी,विकंकत

त्वक् और पुष्प- वेतस, कांचनार,चम्पक

त्वक् और बीजमज्जा -पद्मक, प्रियाल

त्वक् और पत्र - परिभद्र -

त्वक् और निर्यास-शल्लकी (कुंदरु),शाल (राल), सर्ज (काण्डसार)

त्वक् और बीज - कुटज

मुलत्वक् और बीज- शोभांजन

मुलत्वक् और मूल - करवीर

मुलत्वक् और पत्र - अग्निमंथ

त्वकतैल और पत्र - त्वक्

पत्र और मुल- सूची, गंधप्रसारणी, मेषशृंगी, हिंस्रा, शणपुष्पी, कीटमारी, ईश्वरी, बिम्बि, छिलहिण्ट, रक्तनिर्यास

पत्र और कंद - सुदर्शन

पत्र और तैल - पूतिहा

पत्र और त्वक् - पारिजात

पत्र और फल - स्वर्णपत्री

पत्र और पुष्प - खत्मी, झण्डु

मुल और पुष्प- केतक

बीज और पत्र - चक्रमर्द, कॉफी, पूत्रजीवक, राण

बीज और बीजतैल - बाकुचि, द्रवन्ती

फल और बीज - जातिफल

बीज और कंद - पलांडू

मुल और फल - गंभारी, पिप्पली, बृहती, इंद्रवारुणी, गोक्षुर

फल और तैल - शतपुष्पा

कांडसार और तैल - अगरु, देवदारु, चंदन

कंद और तैल -रसोन

त्वक, पत्र और बीज - करंज

त्वक, पुष्प और बीज- पुन्नाग,जतुद्रुम

बीज, तैल और पुष्प- अतसी, मधूक

पत्र, मुल और पुष्प- जाती, वासा

पत्र, मुल और बीज -निर्गुडी, तिलपर्णी,यूथिपर्णी,कासमर्द,दन्ती,बर्बरी, कासनी, तुलसी, गुंजा

पत्र, पुष्प और बीज - पारसिक यवानी, मदयन्तिका,धत्तुर

पत्र, पुष्प और फल - धामार्गव

पत्र, मूल और फल - इक्ष्वाकु

पत्र, निर्यास और तैल - तेलपर्ण

फल, फलत्वक् और मूलत्वक्-दाडीम

काष्ठ, निर्यास और तैल -सरल

त्वक्, पुष्प और फल -बकुल

त्वक्, फल और निर्यास- बबुल

त्वक्, फल और पत्र -जम्बीर,पनस

त्वक्, मुल और बीज-शाखोटक

मुलत्वक्, फल और तैल -वृक्षाम्ल

पुष्प, बीज और मूल - खत्मी, उत्पल

कंद, कांड और पत्र - मानकंद

त्वक्, फल और क्षीर -उदुम्बर, अश्मन्तक

मुलत्वक्, फल और क्षीर- काकोदुम्बर

मुल, काण्ड और फल - दारुहरिद्रा

मुल, तैल और फल - मिश्रेया

मुल, त्वक् और फल -आवर्तणी

मुल, त्वक् और फलास्थि -महानिंब

मुल, बीज और रोम-कपिकच्छू

मुल, और पंचागक्षार-शरपुंखा

मुल, पंचागक्षार और बीज-कोकीलाक्ष

फल, पत्र, क्षीर और बीज-एरण्डकर्कटी

फल, पत्र, मुलत्वक् और बीज -पिलू

फल, त्वक्, बीज और बीजतैल -तिन्दुक,इंगुदी (पत्र)

मुल, काण्ड, पत्र और क्षीर -स्नुही
मुल, पुष्प, फल और निर्यास -शाल्मली
फल, मुल, त्वक् और पत्र -हिज्जल, बिल्व
मुल, पत्र, बीज और तैल -एरंड
मुलत्वक्, पुष्प, पत्र और क्षीर -अर्क
मुल, पुष्प, बीज और पत्र -तुलसी
फल, फलास्थि, त्वक् और पत्र -जम्बु
त्वक्, फल, शुंग और क्षीर -अश्वत्थ
त्वक, बीज, पत्र और पुष्प -शिरीष
पत्र, सार, त्वक् और मूल -शिशिंपा
पुष्प, पत्र, त्वक् और तैल - निंब
पुष्प, फल, तैल, मूल और क्षार -नारिकेल
पुष्प, पत्र, बीज, क्षार और मुलत्वक्- पाटला
त्वक्, तैल, बीज, मुल, और फल -पलाश
मुल, तंडुल, पत्र और पंचाग -अपामार्ग
मुल, पत्र, पत्रांकुर, फल और वंशलीपन-वंश
मुल, पत्र, मॉई (कीटाव्दारे ग्रंथी) और शर्करा - झाबुक

Speciality उपयुक्तांग

कीटगृह (Gall)	-	मायफल
पत्रांग	-	सार
फलरज	-	कम्पीलुक
पुकेंशर	-	नागकेशर
सार	-	शाक
कंक्कूम	-	केशर (कुक्षिभाग)
शृंगाकर कोष	-	कर्कटश्रृंगी
फलनिर्यास	-	अहिफेन
प्ररोह	-	वट
बीजमज्जा	-	आम्र
तंडुल	-	अपामार्ग
पंत्राकुर	-	वंश
मॉई	-	झाबुक
शुंग	-	अश्मंतक
फलास्थि	-	जंबु
कपिकच्छु	-	रोम
शरपुंखा, कोकीलाक्ष	-	पंचागक्षार
फलमज्जा	-	आरग्वध.

प्रकार 1

1] गुडूची - पध्मगुडूची / कन्दगुडूची (Tinospora sinensis)
2] महानिम्ब - 1 प्रजाती Melia composita
3] शतावरी - महाशतावरी (बडी प्रजाती) Aspargus Sermentosa
4] पाठा - प्रजाती राजपाठा Cyclea arnotii
5] शरपुंखा - प्रजाती Tephrosia Buch, T. Candida श्वेतपूष्प
6] शिरिष - श्वेत शिरिष - Albizia procera
7] अरिष्टक - प्रजाती Sapindus mukorossi
(Soap Nut tree of North India)
8] अतिविषा भेद प्रतिविषा (A. palmatum)

प्रकार 2

1] दन्तीव्दय - दन्ती द्रवन्ती
2] सर्जयुग्म (राजनिघण्टू) सर्ज व शाल
3] बलाव्दय - बला - अतिबला
4] <u>श्वेत और रक्त भेद होनेवाले</u>
एरण्ड, पलाण्डू, गुंजा, करवीर, शोभांजन, सर्षप, पाटला, चित्रक, अर्क अपामार्ग, हरमल, पूनर्नवा, चन्दन, रोहितक,
5] **श्वेत व कृष्ण भेद** - सारीवा, तूलसी, मुसली, धत्तूर, वत्सनाभ.
(कृष्ण मूसली - तालमूली Curculigo orchioides)
6] श्वेत व नील भेद - निर्गुण्डी श्वेतपूष्प (सिंधुवार) व नीलपूष्प, कण्टकारी (श्वेतपूष्प व नीलपूष्प), कमल - श्वेत (पूण्डरिक), नील - इन्दीवर, दुर्वा (श्वेत व नील)
7] मरिच - कालीमिर्च, श्वेतमरिच (पके फल छिलका रहित)
8] रक्त शोभांजन - मधूर शिगु, श्वेतशोभांजन - कटू शिगु
मधूर शिगु (Moringa concanensis)
मातुलुंग - मधुर व अम्ल
9] कूष्ठ, बिम्बी, मानकन्द - मधूर, कटू
10] कृतवेधन, धामार्गव - मधूर, तिक्त
11] किराततिक्त - तिक्त व अर्थतिक्त (मिठा चिरायता)
12] कर्पूर - पक्व व अपक्व (भा.प्र.)
13] हरिद्रा (भा.प्र.) 1. वनहरिद्रा (जंगली) 2. कर्पुर हरिद्रा (आमहल्दी)
14] गोक्षूर - लघू, बृहत (बृहत - Pedalium murex)
15] कशेरुक - लघू, राज कशेरुक (भा.प्र.)
(लघु कशेरुक - छोटा/ चिच्चोडक)
16] तगर - तगर, पिण्डतगर
17] खर्जुर - खर्जुर, पिण्डखर्जूर
18] केतकी - केतकी, वर्णकेतकी (भा.प्र.)
19] एला - स्थुलएला, सुक्ष्मएला
20] सुरसा - सुरसा, श्वेत सुरसा (सुश्रुत)
21] पियंगू - पियंगू, गंधप्रियगू (भा.प्र.)
गंधप्रियंगू (Prunus mahaleb) Rosaceae family
22] एरण्ड - वर्षायु, बहुवर्षायू
23] जिवन्ती - जिवन्ती, स्वर्णजिवन्ती (L. Pyrotechnica)
24] अग्निमंथ - अग्निमंथ, तर्कारी (Clerodendrum Phlomidis)
25] कुटज - पूंकुटज, स्त्रीकुटज (Wrightia tomentosa)
26] खदीर - 1. कदर - श्वेत खदीर, सोमवल्क Acacia suma
2. इरिमेद - विटखदीर - Acacia famisiana
(इसमे Cassia perfume नामक सुंगधी द्रव्य होता है।)
27] स्नूही - अल्प कंटक, बहूकंटक
28] डल्हण - गृध्रनखी = बृहदहिंस्त्रा और व्याघ्रनखी को अल्पहिंस्त्रा कहा
(व्याघ्रनखी Capparis horrida)
29] अतसी - देशभेदसे -1. उत्तरी (Gangetic type)
2. दक्षिणी (Peninsular type)
30] जातीफल - पूर्व भारतीय, पश्चिम भारतीय
31] हपूषा - अश्वत्थफल, बृहतफल (प्रथम फल)
32] त्रपूष - ग्रीष्मजात (छोटेफल), वर्षाजात (मोठे फल)
33] कारवेल्लक - उद्‌भव कालानुसार जेठूआ व षरमादिया
34] यष्टीमधू - स्थलज व जलज (मधुलिका)

35] त्रिवृत्त - श्याम
36] जाती - श्वेत
37] आमलकी -
38] हिंगू- हिरा (

1] कांचनार - श्वेत
2] बलात्रय - बला
3] भृंगराज - श्वेत,
4] सुरंजान - श्वेत,
(श्वेत - मधूर, पीत
5] तोदरी - श्वेत,
6] तिल - श्वेत, र
7] बदर - बेर, कुव
8] कर्पूर - भारतीय
9] मुस्ता - भद्रमुस्त
10] खरपूष्पा - भा.
11] बब्लूल 3 - ते
12] जम्बू - राज ज
(एक अन्यप्रज
13] हरितकी - अव
14] दाडिम - मधुर
15] कदम्ब - धारा
16] अम्लपर्णी - ि
17] जायफल (पूर्वभ
जायफल
18] खर्जूरात्रितय (भ
19] कर्पूर -वर्णभेदसे
20] कुंकुम भेद -1.
2. बाल्ही
3. काश्मी
21] कुमारी I.P. में
aloes
22] वत्सनाभ - कृष
23] हिंगु - लेप, पि
24] जीरक - शुक्ल,

1] बलाचतूष्टय - ब
2] सैरयक - श्वेत, र
3] कुलत्थ - श्वेत, र
4] करवीर - श्वेत, र
5] अगस्त - श्वेत, र
6] पिप्पली - पिप्पल
7] अगरू i. कृष्णगुरू
8] अहिफेन भेद - श
जारण, मारण, धार
अहिफेन-देश भेद
9] हरिद्रा - हरिद्रा, द
10] वचा - वचा (घे
महाभरी वचा (कुलंज

35] त्रिवृत्त - श्याम व अरुण

36] जाती - श्वेतजाती व स्वर्णजाती

37] आमलकी - ग्राम्य व वन्य

38] हिंगू- हिरा (सुगंधित, शूभ, स्फटीक), हिंगडा - दुर्गन्धीत, कृष्ण

प्रकार 3

1] कांचनार - श्वेत, पीत, रक्त

2] बलात्रय - बला, अतिबला, नागबला

3] भृंगराज - श्वेत, पीत, नील (रा.नि.)

4] सुरंजान - श्वेत, पीत, कृष्ण

(श्वेत - मधूर, पीत्त- तिक्त, कृष्ण- विषाक्त)

5] तोदरी - श्वेत, पित, रक्त

6] तिल - श्वेत, रक्त, कृष्ण

7] बदर - बेर, कुवल, कर्कन्धू

8] कर्पूर - भारतीय, चिनी, भिमसेनी

9] मुस्ता - भद्रमुस्ता, नागरमुस्ता, जलमुस्ता (कैवर्त्तमुस्तक)

10] खरपूष्पा - भा.प्र. 3 - अर्जक, कूटेरक, वटपत्र

11] बब्लूल 3 - तेलीया, रामकाढा, कोडीया

12] जम्बू - राज जम्बू, भूमिजम्बू, क्षुद्रजम्बू (कठजामून)

(एक अन्यप्रजाती - गुलाब जामून Syzygium jambos)

13] हरितकी - अवस्था भेदसे बाल, पीत हरितकी, पक्व हरितकी

14] दाडिम - मधुर, अम्ल, मधुराम्ल

15] कदम्ब - धाराकदम्ब, धूलीकदम्ब, भूमीकदम्ब

16] अम्लपर्णी - चिनी, भारतीय, रुसी

17] जायफल (पूर्वभारत में 3 भेद) बांदा जायफल (उत्तम), सियाव, पेनांग जायफल

18] खर्जूरात्रितय (भा.प्र.) खर्जूर, पिण्डखर्जूर, गोस्तनी खर्जूर

19] कर्पूर -वर्णभेदसे - रिहायी (रक्तश्वेत), कौसुरी (श्वेत), मौति (मृत्तीका)

20] कुंकुम भेद -1. पारसिक - पाण्डूवर्ण, मधुगन्धी

2. बाल्हीक - पाण्डूवर्ण, केवडा सदृशगंध

3. काश्मीर - रक्ताम, कमलसमान गन्ध - उत्तरोत्तर श्रेष्ठ है।

21] कुमारी I.P. में Curaccao Aloes, Socotrine aloes, Caps aloes

22] वत्सनाभ - कृष्ण, कपिश, पाण्डू उत्तरोत्तर श्रेष्ठ

23] हिंगु - लेप, पिण्ड, कण (शुध्दतम)

24] जीरक - शुक्ल, कृष्ण, कालाजाजी.

प्रकार 4

1] बलाचतूष्टय - बला, अतिबला, नागबला, महाबला

2] सरयक - श्वेत, रक्त, पित, नील

3] कुलत्थ - श्वेत, रक्त, चित्र, कृष्ण चक्रपणी

4] करवीर - श्वेत, रक्त, पित, कृष्ण (रा.नि.)

5] अगस्त - श्वेत, रक्त, पित, नील (रा.नि.)

6] पिप्पली - पिप्पली, गजपिप्पली, सैहली, वनपिप्पली (रा.नि.)

7] अगारू i. कृष्णगुरू ii. काष्ठागुरु (पीत) iii. दाहागुरु iv. मंगल्यागुरु (श्रेष्ठ)

8] अहिफेन भेद - श्वेत, पित, कृष्ण और चित्र क्रमशः

जारण, मारण, धारण व सारण (धारण रसायन (नि.र.))

9] अहिफेन-देश भेद से - भारतीय, यूरोपीय, तूर्की, पारसी

10] हरिद्रा - हरिद्रा, दारुहरिद्रा, वन हरिद्रा, आम्रगंधिहरिद्रा

11] वचा - वचा (घोडवचा), पारसिक वचा (बालवचा), महाभरी वचा (कुलंजन), व्दिपान्तर वचा (चोपचिनी)

11] आर्द्रक - देशभेदसे - जमायकन, भारतीय, अफ्रीकी, चिनी.

प्रकार 5

1] गुग्गुल - महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पध्मक, कनक

2] खर्जूर (रा.नि.) खर्जुरी, पिण्डखर्जूरी, राजखर्जूरी, मधुखर्जूरी, भूखर्जूरी

3] अश्वगंधा - देश भेद से 5 प्रकार

हरितकी 7 भेद भा.प्र.

कैयदेव निघण्टू बृहती 11 प्रकार

राज निघण्टू - कर्पुर वर्णानुसार 15 प्रकार

उत्पत्तीस्थान:

हिमालय - जटामांसी, चोरक, कदम्ब, पध्मक, वेतस, अम्लवेतस, पारसिक यवानी, गन्धप्रसारणी, देवदारू, भूर्जपत्र, पियाराँगा, चक्षूष्या, वत्सनाभ, सुचि, (कंरज + द.भारत), अरण्यजीरक, खादीर, गम्भारी, तालीश, बनफ्शा, शटी, कर्चुर, पूष्करमूल, भारंगी, सोम, पर्पट, तेजोवती, मातुलुंग, अतिविषा, शणपूष्पी, लकूच, कटुका, अम्लपर्णी, चौहार, महानिम्ब, दारुहरिद्रा, मुशली, अशोक, नल, हपूषा, पाषाण भेद, शाल, तिनिश, विकंकत, किराततिक्त, त्रायमाण, मूर्वा, सप्तपर्ण, द्रोणपूष्पी, शैलेय, अगुरु, बृहदेला, वाराही, निर्विषा, प्रियंगू, शिंशपा, सुरजौन, हैमवती, शालपर्णी, पृश्नीपर्णी, वनत्रपूषी.

समस्त भारत - मण्डुकपर्णी, ऐन्द्री, शंखपूष्पी, जोतिष्मती, कूष्माण्ड, सर्पगंधा, एरण्ड, निर्गुण्डी, पलाण्डु, रसोन, मेदासक, गोरक्ष, पारिभद्र, क्षवक, शोभांजन, तिल, भृंगराज, निम्ब, सर्षप, हरिद्रा, भल्लातक, आरग्वध, बाकूची, जाती, मदयन्तिका, काकोदुम्बर, चक्रमर्द, यूथीपर्णी, तिन्दुक, करवीर, तरुणी, हिंस्त्रा, अधःपूष्पी, कांचनार, बिभितक, वासा, कण्टकारी, बृहती, कासमर्द, अगस्त्य, दुग्धिका, लंका, धान्य क बकुल, दाडीम, जम्बीर, चित्रक, जीरक, पपीता, मदनफल, इक्ष्वाकू, धार्मागव, कृतवेधन, माष, पूतिहा, मरुबक, मिश्रैया, शतपूष्पा, त्रिवृत्त, स्वर्णक्षीरी, अर्क, इन्द्रवारुणी, कुमारी, बिल्व, पर्णयवानी, कूटज, धातकी, बब्बूल, आवर्तनी, शाल्मली, यवानी, अजमोदा, चन्दशूर, धत्तूर, पलाश, तूलसी, कम्पीलक, सुरण, काकमाची, अपामार्ग, भूनिम्ब, पारिजात, शरपुंखा, शतावरी, कपिकच्छू, दूर्वा, कमल, कशेरुक, श्रृंगाटक, पुत्रजीवक, जपा, लांगली, वंश, शण, मल्लिका, पाठा, पूर्ननवा, गोक्षूर, कुश, काश, शर, भूम्यामलकी, त्रपूष, वरुण, कूलत्थ/ जम्बू, आम्र, वट, उदूम्बर, अश्वत्थ, प्लक्ष, धव, कारवेल्लक, बिम्बी, सहदेवी, काष्टदारु, नाही, कण्टकीकंरज, बला, विदारी, मूद्गपर्णी, माषपर्णी, लज्जालु, हरितकी, आमलकी, गुडूची, वृध्ददारु, गुंजा, शिरिष, सारीवा, मंजिष्ठा, मुण्डी, खर्जूर, मधूक, चिरबिल्व, मेथिका, सदपूष्पा.

आसाम - ममीरा, चव्य, अम्लवेतस, चोपचिनी

काश्मीर-उदसलीब,हृत्पत्री, गोजिव्हा, खत्मी, जूफा, सरल, हिंगू, अफसन्तीन

विशेषत: उत्तरप्रदेश,बिहार बंगाल - अहिफेन, राजीका, अर्जून, ताम्बूल, रुद्राक्ष, पाटला, अतसी, दन्ती, देवदाली,

बेंगलोर से आसामतक - भंगा

विशेषसे मैसूर - कंकोल, एला,वचा

पंजाब, राजस्थान, गुजरात - रास्ना, अश्वगोल, गुग्गुल

सिंध, राजस्थान, खानदेश, मैसूर - कूपिलू

मद्रास, कोकण, उडीसा - कर्पूर

देहरादून, महाराष्ट्र, मैसूर - जम्बू, आवर्तकी

महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश - शल्लकी, रोहितक, कार्पास, रोहिष, अश्गंधा

पंजाब - उंटगण, कटफल,

बंगाल, आसाम - कंकूष्ठ

बंगालतथा बर्मा - कतक

कोकण - मेषशृंगी, तुवरक

दक्षिणभारत, बंगाल, राजस्थान - उशीर

विशेषत: कैरल - लंवग, नारिकेल

जम्मू काश्मीर - कुंकुम, यष्टीमधु, कूष्ठ

उडीसा - केतक.

मैसुर + तामीलनाड - चन्दन.

दक्षिण भारत - जयन्ती, कॉफी, त्वक्, अरिष्टक, फल्गू, सनाय द्रवती, स्नूही, जातीफल, कीटमारी, ईश्वरी, पत्रांग, बीजक, जीवन्ती.

उत्तर भारत - अग्निमंथ, विडंग, झाबूक, लोध्र.

पश्चिम भारत - कर्कटशृंगी, धन्वन, कालाजाजी, अश्मन्तक, जीवन्ती.

पर्वतीयप्रदेश में नाडीहिंगू.

नैपाळ, हिमालय, द.भारत - मुस्ता.

भारतके उष्ण प्रदेश में - तिलपर्णी, श्लेष्मान्तक, सैरेयक, काण्डीर, पिप्पली, लताकस्तूरी, चांगेरी, ताम्रपर्ण, पनस, भाण्डीर, कुमुद, इक्षु, नागबला, अस्थिशृंखला.

भारतके शीत प्रदेश म - हंसपदी.

विशेषत: आर्द्र क्षेत्र में - कोशाम्र, मुस्तक, मयूरशिखा, आखूकर्णी, सूनिषण्णक, कोकीलाक्ष.

विशेषत शुष्क पदेश में - प्रियाल, शाखोटक, यवास, श्योनाक, गांगेरुकी, अंकोल, मांसरोहीणी

उष्ण व आर्द्र प्रदेश में - शूण्ठी - रुदन्ती, पारिष.

समुद्रतट वर्ती प्रदेश - सप्तचक्रा, पटोल, पूग, बागदमन, सुरपुन्नाग

Out of India – लोबान, सिल्हक, अकारकरभ (अरब),उषक.

अफगाणिस्तन - धन्वयास.

दोषघ्नता

1] वातशामक - पलाण्डू, गुग्गुल, कपिकच्छू

2] पित्तशामक - आर्द्रपिप्पली (शुष्क - पित्तकोपक)

3] कफशामक - बिभितक

4] वातपित्तशामक - यष्टीमधू, आरग्वध, गोक्षूर, जिवन्ती, बला, कार्पासबीज, वंशलोचन, विदारीकन्द, मुशली, शतावरी, कोकीलाक्ष, नारिकेल, द्राक्षा।

5] पित्तकफ शामक - कटूका,धातकी,मंजिष्ठा हरिद्रा द्वय, किराततिक्त, महानिम्ब,कांचनार, कूटज, वंश, दन्ती, कुमारी, भूम्यालकी, कमल, अशोक,वट, दूम्बर, काकोदूम्बर, पारिष,अर्जून, रोहितक, बब्बूल, पलाशपूष्प,आम्र, जम्बू, मण्डूकपर्णी, जयपाल, चंदन, लंवग, नागकेशर, अरलु, निम्ब.

6] कफवातशामक –शुण्ठी, आर्द्रक, मरिच, चव्य,चित्रक, जिरक, यवानी, अजमोदा, चन्दशूर, हिंगू, वचा, विडंग, मदनफल, रास्ना, जोतिष्मती, कूष्ठ, पूष्करमूल, कर्कटशृंगी, कटफल, भारंगी, चक्रमर्द, बाकूची,रसोन,भंगा, तगर,बिल्व,अग्निमंथ,श्योनाक, बृहती, कंटकारी, एरण्ड, पारिजात, शिग्रु, निर्गुण्डी, कंरज, अश्वगंधा, शरपुंखा, अपामार्ग, भृंगराज, सैरेयक, तूलसी, पलाश, सर्पगंधा, भंगा,अहिफेन, अर्क, स्नूही, लांगली, करवीर, गुंजा, धत्तूर, कूपिलू, भल्लातक

7] त्रिदोषहर - हरितकी, आमलकी, धान्यक, पाषाणभेद, अतिविषा, कर्पूर, प्रियंगू, गुडूची, गंभारी, पाटला, शालपर्णी, वाराहीकन्द, पाठा, पूर्ननवा, सारीवा, शंखपूष्पी, अरिष्टक, शिरिष, दाडीम.

8] पित्तवर्धक - शुष्क पिप्पली, चव्य, चित्रक, हिंगू, वंश, यव

9] वातपित्तवर्धक - कार्पासमूलत्वक

10] कफपित्त संशोधन - त्रिवृत्त.

द्रव्यगुण विशेष:

वाराहीकन्द - अरोहिणी वामावर्त लता

राजनिघण्टू - कण्टपूंखा वर्णन

कुमारी - क्षुप के मध्यसे पूष्पध्वज निकलता है।

फल - कोष्ठ स्फोटी (Loculicidal) होते है।

पत्र को काटने पीत वर्णी रस को कुमारीसार, सहासार, कलासार कहते है। यकृदवत कुमारी सार (Hepatic Aloes), काचवत कुमारीसार (Glassy aloes).

कमल -

बीज:- पद्मबीज, कमलाक्ष, भौमिक काण्ड:- बिस, पध्मकर्कटी, कमलकन्द:- शालूक, करहाटक, कमलनाल - मृणाल, कमलबीज कोश - कर्णिका वराटक, बीजकोश, नवपल्लव:- संवर्तिका, पंचाग - पद्मिनी, कमलिनी. कमल योग - अरविंदासव.

तुलसी -

इसके उडनशील तेल में Anti tubercular शक्ती Streptomycine की अपेक्षा दशमांश व Isonizide से चतूर्थांश है।

***अश्वत्थ** - हिंदू में धार्मिक महत्व, बौध्दीक प्रतिकवृक्ष.

***पलाश** - त्वक निर्यास Butea Gum Bengal kino कहते है।

***नारिकेल फल:** 3 अवस्था i) बाल ii) मध्यम iii) पक्व

बाल - केवल जल, मध्य - जल कम, गिरीमृदू दुग्धवत

पक्व - मज्जा कठोर, स्वादरहित

* **दाडीम** - स्फीत कृमी (Tape worm) नाशक है।

* **सर्पगंधा** - पागलपन की जडी

* **मुचकुन्द** - योग - हिमांशु तैल

* **अहिफेन** - शोधन - आर्द्रक स्वरस 21 भावना

अफिम संग्रह माघ व फाल्गून:

* **वत्सनाभ** : पत्र - सिन्दुवार सदृश, बछडे की नाभी समान आकृती, इसके आस पास पोंधे नही होते है।

वत्सनाभ (र.र.स.): कन्द गोस्तनाकार, पंच अंगुली तक, वर्ण पाण्डूर, 3 मासतक नियमित सेवन करने से कूष्ठ नष्ट होता है। एक वर्ष तक प्रयोग से सर्व रोगहर.

वत्सनाभ सेवन - गिष्म व वसन्तऋतू.वत्सनाभ प्रतिविष - टंकण

* शाखोटक - श्लीपद में उपयोगी है।

* एरण्डकर्कटी - पपीया - Papain तत्व Ph पर कार्य है।

* ताम्रपर्ण - तम्बाकू ADH Harmone की मात्रा बढा देता है।

* शुष्क बिल्वमज्जा को - बेलसोंढ / बेलगिरी कहते है।

* जातीफल के बीज कवच को जातीपत्री कहते है।

जातीफल बीज (जायफल) और कोष को जावित्री कहते है।

* **मायफल** – इसकी शाखाओंमें Adleria gallae tinctoriae O

नामक किडा अंडे देता है और स्वरससे वेष्टीत होता है।
फलवत होता है इसलीए मायाफल/मैजिक नट कहते है।
मायाफल उपयुक्तांग - किटगृह (Gall)
* पंत्राग - कूचन्दन (राजनिघण्टू व धन्वन्तरी निघण्टू)
* भा.प्र. इक्षु - 13 भेद वर्णन
* I.P. के अनुसार चिरायत्ता में,
तिक्तघटक 1.3% से कम नही होना चाहिए।
* अतिबला बीज को बीजबन्द कहते है।
* आमलकी tannin Rich; Dry आमलकी vit 'c' अधिक
* शुण्ठी का वृष्य कर्म विपाक के अनुसार होता है।
* कपिकच्छू Is recently proved useful in kampavata (Parkinson's disease)
* मकरध्वज को रक्त कार्पास की भावना देते है।
* गांगेरुकी - नागबला के फल को कहते है।
* करंजाद्य घृत - विद्रधी
* गुडूची - तिक्तरससे कफपित्तहर, उष्णवीर्यसे वातहर, मधुर विपाकसे पित्तहर, प्रभावसे वातरक्त शामक
* दारुहरिद्रा त्वक संग्रह शरद ऋतू में करते है।
* कस्तूरी, मधू व गोरोचन - जांगम द्रव्य है।
(लताकस्तूरी वानस्पतीक द्रव्य है।)
* रास्ना - संदीग्धद्रव्य है।
* पुराण गुग्गुल - 5 yrs. पूराणा होना चाहिए।
* आढमल्ल के अनुसार वीरतरु - उशीर है।
* भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रक भक्षणम्। भा.प्र.
* लंका Diptheria and Adenoids में लेप और गलरोगमें फाण्ट का कवल करते है।
* **एरण्डकर्कटी**(पपीया)क्षीर - गलरोग, कण्ठरोहिणी (Diptheria) जिव्हाव्रण में उपायेगी है।
चर्मरोग, ग्रंथी, अर्बुद एवमं वृश्चिक दंश पर लेपार्थ उपयोगी है।
एरण्डकर्कटी पत्र में कार्पेन तत्व की क्रिया Digitalis समान.
* **झाबूक** - झाऊ - इसके पत्र और शाखापर किडे के व्दारा उसके चारो और गन्थि बन जाती है।
उसे बडीमाई (Tamarix gall) कहते है।
* तगर - नाडी संस्थान पर कार्य है।
* पेशी - कषायाम्ल
* हृद्य - अर्जून, हृत्पत्री, ताम्बूल, गर्जर, आम्र दाडीम आदी.
* वत्सनाभ Inflammatory Fever मे उपयोगी है।
रक्तार्क को अर्क कहते है। श्वेतार्क - राजार्क, अलर्क व मदार
* राजनिघण्टू पीत करवीर वर्णन
* श्वेतपूष्प पाटला- घण्टापाटला,काष्ठपाटला व मूष्कक कहते है।
* कृष्ण धत्तूर Dhatura Stramonium
* सर्जनिर्यास - चन्द्रस या श्वेत डामर कहते है।
* श्वेतसुरसा Ocimum Canum फणिज्जक। रामतुलसी Ocimum Gratissimum, वर्वरी Ocimum Basilicum.
* कृष्णसारीवा - जम्बूपत्र सारीवा कहते है।
* राजनिघण्टू नील पूर्ननवा उल्लेख
* रक्त अपामार्ग Achyranthes Bidentata
* वंशलोचन पर्याय - तवशीरी, तुगाक्षीरी
* बिभितक - रसासृङ्मांस मेदोजान दोषान् हन्ति बिभितकम्। च सु-27
* अजमोदा - T. Strictocarpum wolff से बहूत समानता रखता है।
* यष्टीमधू - अपमिश्रण एवं प्रतिनिधीद्रव्य Glycyrrhiza uralensis.
* कटुका - अपमिश्रण एवं प्रतिनिधीद्रव्य Gentiana Kurro (त्रायमाण) और Picrorhiza Scrophulariaeflora.
* किरात तिक्त - अपमिश्रण S. Ciliata, S. Paniculata, S. Lawii, S. alata, S. Angustifolia, Andrographis panniculata, Rubia cordifolia. I.P. नुसार तिक्त घटक 1.3% से कम नही होना चाहिए
* कर्कटशृंगी - पत्रोंवर करिविशेष व्दारा श्रृंगाकार कोष (Gall) निर्मिती. कर्कटशृंगी - उपयुक्तांग कोष (Gall)
* भारंगी - अपमिश्रण Picrasma quaissioides & Gardenia turgida
* धातकी पूष्प लाल रंग रंगाने के काम आता है।
* दारुहरिद्रा - अपमिश्रण - कलम्बक (Coscinium fenestratum)
* अतिविषा - विशेषत: बालरोगमें उपयोगी
* राजनिघण्टू - महाकंद रसोन को गृज्जन कहा है।
(गृज्जन - Allium ascalonium)
* नागकेशर प्रयोजांग्य - पूंकेशर
* गंभारी मुल - उष्ण वीर्य, गंभारी बीज - शित वीर्य
अरलू वीर्य शीत, श्योनाक वीर्य उष्ण
* अरलू - पर्याय - कटवंग, दिर्घवृन्त, महानिम्ब, पूतिवृक्ष, घोडकंरज
* राजनिघण्टू में निल शिग्रु उल्लेख
* निर्गुण्डी के बीज को रेणूका या हरेणूका कहते है।
* कूटज संग्रह - शरद ऋतू
* करजव्दय - नक्तमाल व पूतिक.
* क्षीरविदारी -क्षरिवल्ली व पयरिवनी
Ipomoea digitala -family- convolvulaceae
* स्नूही- त्रिधार, सप्तधार, छिमीया.
* भावप्रकाश सुलेमानी खर्जुर उल्लेख
* प्रियंगू-स्त्री के पर्यायवाची शब्द ममीरा मिश्मी तीता नाम से प्रसिध्द है।
* चविका के फल गजपिप्पली कहते है ।
(चविका Piper chaba Hunter)
* शिगु बीज को श्वेतमरिच कहते है ।
* श्वेत बडे पलाण्डू को क्षीरपलाण्डु कहते है ।

प्रभाव:

1) **गर्भकर** - पूत्रजीवक
2) **गर्भपातन** - लांगली
3) **रेचन** - कंकूष्ठ
4) **रक्तार्बुदनाशक** - सदापूष्पी
5) **निद्राजनन** - सर्पगंधा
6) **गण्डमालानाशन** - कांचनार
7) **भूतघ्न** - जटामांसी
8) **गर्भाशयसंकोचक** - केबूक
9) **चक्षूष्य** - कतक,चक्षूष्या
10) **अर्शोघ्न** - सुरण, महानिम्ब
11) **कूष्ठघ्न** - खदीर
12) **प्लीहघ्न** - शंरपुखा, रोहितक

13) वमन - हिज्जल, अरिष्टक,शणपूष्पी,

14) हृद्य - अर्जुन, हृत्पत्री, तरुणी, कॉफी

15) उभयतोभागहर - धामार्गव, कृतवेधन

16) वेदनास्थापन - कदम्ब, पद्मक, वेतस

17) मादक + वेदनास्थापन - पारसिकयवानी,

18) विषघ्न - श्लेष्मान्तक, रास्ना, शिरिष अंकोल,

19) मादक - अहिफेन, भंगा, सुचि, ताम्रपर्ण, धत्तूर

20) त्रिदोषहर - हरितकी, गुग्गुल, भूर्जपत्र, सुनिषण्णक,

21) अश्मरी भेदन - वरुण, पाषाणभेद, गोरक्षगुंजा, कूलत्थ

22) कृमिघ्न - विडंग, चौहार, इंगुदी, तूलसी, अफसन्तीन, आखूकर्णी

23) मेध्य - जोतिषमती, वचा, शंखपूष्पी, कूष्माण्ड, मण्डूकपर्णी, ब्राह्मी, ऐन्द्री, उस्तुखूदूस

योग:

1] भंगा - मदनानन्दमोदक
2] अर्क - अर्कलवण, अर्केश्वर
3] लांगली - कासीसादी तैल
4] पुत्रजीवक - पूष्पधन्वारस
5] जटामांसी - रक्षोघ्न घृत
6] चौरक - महापैशाचिक घृत
7] मुचकुन्द - हिमांशु तैल
8] मायाफल - वज्रदंतमंजन
9] अन्नामय - अर्गटवटी
10] सारीवा - चंद्रकला रस
11] सिल्हक - पंचगुण तैल
12] इंद्रवारुणी - नारायण चूर्ण
13] चक्रमर्द - दद्रुघ्नीवटी
14] तुलसी - त्रिभूवनकिर्ती
15] पाठा - षडधरणयोग
16] आम्र - पूष्यानुग चूर्ण
17] उशीर - षडंगपानीय
18] व्याघ्री हरितकी - कण्टकारी
19] जयन्ती - जया वटी
20] चक्रमर्द - दद्रुघ्नी वटी
21] कर्पूर - अमृतबिंदू
22] कम्पीलक - क्रिमीघातनी वटीका
23] लंवग - अविपत्तीकर चूर्ण
24] त्वक - सितोपलादी चूर्ण
25] बृहती - दशमूलारीष्ट
26] कर्कटशृंगी - बालचर्तूभद्रा
27] लंका - विषमज्वरघ्नवटी
28] बब्बूल - लवंगादीवटी
29] यवास - यासशर्करा
30] हिंग - रजःप्रवर्तनी वटी
31] अतिविषा - बालचर्तूभद्र
32] षडंगपाणीय - मुस्ता
33] कटुका - आरोग्यवर्धिनी
34] कुमारी - रजप्रवर्तनीवटी
35] तरुणी - गुलकन्द
36] किराततिक्त - महासुदर्शन चूर्ण
37] महानिम्ब - अर्शोघ्नीवटी
38] शतावरी - नारायण तैल, विष्णूतैल
39] कमल - अरविंदासव
40] कण्टकीकंरज - विषमज्वरघ्नीवटी
41] बिल्व - सुतशेखर, गंगाधर चूर्ण
42] माष - बलादी पाचन
43] वंश - सितोपलादी, तालीशादीचूर्ण
44] स्वर्णपत्री - षटसकार, यष्टयादी चूर्ण
45] यष्टीमधु - सप्तामृत लोह, दशांग लेप
46] आमलकी - चव्यनप्राश, ब्राह्मरसायन
47] भल्लातक - तिलारुष्कर योग, संजिवनी वटी
48] बिभीतक - तालीसादी चूर्ण, लंवगादी वटी
49] धत्तूर - उन्मादगजांकुश, सुतशेखर, कनकासव
50] धत्तूर - उन्मादगजांकूश, सुतशेखर, कनकासव
51] जयपाल - इच्छाभेदी, जलोदरारी, ज्वरमुरारीरस
52] कपिकच्छू - वानरीगूटीका,
53] षडबिंदू तैल - भृंगराज सुतशेखर भावना, गंधक रसायन
54] चन्द्रशूर - चर्तूबीज चूर्ण, चन्द्रशूर Mentioned by इन्दूकर
55] अहिफेन - निद्रोदयवटी, कर्पुररस, महावातराज रस, दूध्वटी आकारकर भादी वटी।
56] कूपिलू-अग्नितुण्डी, विषमूष्टी, नवजीवन, लक्ष्मीविलास, किमिमृदगर, एकांगवीर
57] गुडूची - संशमनी वटी, कामदूधा, चंद्रकला, त्रयोगदशांग गुग्गुल, गंधक रसायन
58] वचा - सारस्वत चूर्ण, मेध्यरसायन, चंद्रप्रभा, सजिवनी, उन्मादगजकेसरी, स्मृतीसागर
59] शुण्ठी - पंचसमचूर्ण, समशर्करचूर्ण, त्रिभूवनकिर्ती, महामृत्यूंजय रस, खर्पर रसायन, गंधक रसायन
60] वन्सनाभ - मृत्यूजंय रस, हिंगुलेश्वर रस, आनन्दभैरव रस, ज्वरमुरारी रस, पंचवक्त्र रस, सौभाग्यवटी, रामबाण, कफकेतु।

रस - विपाक - वीर्यः

मधुर - मधुर - उष्ण

वत्सनाभ, अस्थिश्रृंखला, पूर्वनवा (TM), रुमीमस्तीगी (Kh), सुदर्शन (T), कपिकच्छू (T), एरण्ड (Kh), तिल (KhT)

मधुर - मधुर - शीत

द्राक्षा, विदारी, कूष्माण्ड, बला, आरग्वध, नारीकेल, श्लेष्मान्तक, प्रियाल, रुद्राक्ष, **यष्टीमधु**, मानकन्द, मातुलुंग, फल्गु, अश्वगोल, इक्षु, शाल्मली, मूशली, कोकीलाक्ष, गोक्षूर, अनानस, मिश्रेया (KT), पुत्रजीवक (K), गोजीव्हा (T), शतावरी (T), सारीवा(T), त्रपुस, जीवन्ती, मूद्गपर्णी, माषपर्णी (T), शालपर्णी (T), श्रृंगाटक (Kh), वंश (Kh), उत्पल (KT), मधूक (Kh), कतक (TKh), यवास (TKh).

मधुर - कटू - उष्ण - अतसी, श्योनाक

मधुर - कटू - मधुर, ईषत, उष्ण - पलाण्डू

दाडीम मधुर - मधुर - अनूष्ण,मधुर - अम्ल - अनूष्ण.

लकूच - मधुर - अम्ल - उष्ण

अम्ल - अम्ल - उष्ण -

वृक्षाम्ल, अम्लवेतस, मातुलुंग, जम्बीर, चांगेरी, तिन्तिडीक

अम्ल - कटू - उष्ण - कोशाम्र

अम्ल - अम्ल - शीत

अम्ल - मधुर - शीत - आमलकी, लवण

कटू - कटू - उष्ण

जीरक, कृष्णजीरक, दन्ती, द्रवन्ती, स्नूही, राजीका, चक्रमर्द, लंका, आर्द्रक, चव्य, तिलपर्णी, मलयवचा, हिंगु, चित्रक, मरिच, ज्योतिष्मति (T), वचा (T), निर्गुण्डी (T), पारिभद्र (T), शोभांजन (T), भृंगराज (T), कुंकुम (T), सर्षप (T), जयन्ती (T), तुवरक (T)

बाकूची (T), वनपलाण्डु (T), तगर (KKh), ताम्बुल (T), करवीर (T), गृध्रनखी (T), काण्डीर (T), तेजोवती (T), एरण्डकर्कटी (T), शतपूष्पा (T), नाडीहिंगु (T), अर्क (T), कंकूष्ठ (T), देवदाली (T), पर्णयवानी (T), यवानी (T), शटी (TKh), अजमोदा (T), चन्द्रशुर (T), त्वक (T), सरल (TM), तैलपर्णी (TM), बोल (KKh), स्वर्णपत्री (TMKh), रसोन (अम्लवर्ज 5), लांगली (T), कंकोल (T), हपूषा (T), तुलसी (T), अपामार्ग (T), कालाजाजी (T), विडंग (Kh), सुरण (Kh), पलाश, अगरु, बृहदएला, अश्वकर्ण, निर्विषा, हेमवती, वाराही.

कटू - कटू - शीत -

कुमारी, रोहितक (TKh)

कार्पास - (मुलत्वक) कटू - कटू - ईषत उष्ण

बीज - मधूर - मधूर - ईषतउष्ण,

कटु - मधुर - उष्ण - भल्लातक (TKh), शुण्ठी, वृध्ददारु (TKh),

कटू - मधुर - अनूष्णशीत – पिप्पली

कटू - मधुर - शीत - एला (M)

तिक्त कटू - उष्ण

ऐन्द्रीं, भंगा, सर्पगंधा, रास्ना, गन्धप्रसारणी, देवदारू, ममीरा, नीलीनी, धार्मागव, कृतवेधन, भाण्डीर, बिम्बी, इन्द्रवारुणी, अहिफन (Kh), जाती (Kh), तालीश (M), सुचि (K), पारासिकयवानी (K), गुग्गुलू (K), कूपिलू (K), हरिद्रा (K), उषक (K), जूफा (K), कण्टकारी (K), बृहती (K), पूष्करमुल (K), त्रिवृत्त, भांरगी (K), अतिविषा (K), अरिष्टक (K), ताम्रपर्ण (K), पाटला (Kh), शाखोटक (Kh), अम्लपर्णी (K), पीलु (M), करंज (KKh), अग्निमंथ (KKhM), गंभारी (KhM), केतक (MK), सैरेयक (M), कासमर्द (M), अफसन्तीन, भूनिम्ब, पारिजात, पाठा, किराततिक्त, त्रायमाण, पटोल, नाही, चोपचीनी, जातीफल (K), धत्तूर (K), चौहार (K), आखूकर्णी (K), दारुहरिद्रा (K), मल्लिका (K), कालवेल्लक (K), काष्ठदारु (K), मुण्डि (K), सुरंजान (K), कूष्ठ (KM), मंजिष्ठा (KhM), शरपुंखा (Kh), वरुण (Kh), विरतरु (Kh), मूर्वा (Kh), सप्तपर्ण (Kh), कण्टकीकरंज (Kh), गुंजा (Kh), चिरबिल्व (Kh), महानिम्ब (KKh), अंकोल (KKh).

तिक्त - कटू - शीत

कूटज, अरलू, केबूक, प्रियंगू, झण्डू, अगस्त्य, पर्पट, कटूका, इक्षवाकू, स्वर्णक्षीरी, रक्तचन्दन (M), चन्दन (M), उशीर (M), निम्ब (Kh), चक्षूष्या (Kh), कदम्ब (Kh), जटामांसी (KhM), खदीर (Kh), मदयन्तिका (Kh), काकोदुम्बर (Kh), कर्पूर (kM), वासा (Kh), लंवग (K), लताकस्तुरी (KM), मुस्ता (KKh), चम्पक (KKh)

तिक्त - मधूर - उष्ण:

गुडूची (Kh), अश्वगंधा (KM)

तिक्त - मधुर - शीत

मण्डूकपर्णी (Kh), शंखपूष्पी, तगरी (KhM), भूम्यामलकी

काकमाची - तिक्त - कटू - अनूष्ण

कषाय - कटू - उष्ण

नागकेशर (T) (ईषत), रुदन्ती (T), शल्लकी (TM), कटफल (TK), सदापूष्पा (T), मेषशृंगी (T), कर्कटशृंगी (T), बिल्व (T), गोरक्ष (TK), मदनफल (MTK), मुचुकुन्द (KT) – ईषतउष्ण.

कषाय - कटू - शीत -

तिन्दुक, कांचनार, धातकी, बब्बूल, अर्जून, आवर्तनी, मायाफल, मोचरस, लोध्र, बकूल (K), आम्रत्वक, जम्बू (MA), पदमक (T), आवर्तकी (T), जपा (T), अशोक (T), सुनिषण्णक (M), पत्रांग (TM), पाषाणभेद (T), वट, उदम्बर, अश्वत्थ (M), प्लक्ष, अश्मन्तक, पारिश, बीजक (T), गांगेरुकी (M), लज्जालू (T).

कषाय - मधूर - उष्ण

बिभितक, हरितकी (5), धन्वयास (TMK), धान्यक

कषाय - मधुर - शीत

हंसपदी, दूर्वा (M), कमल (MT)

कषाय - अम्ल - उष्ण - कूलत्थ

कषाय - कटू - ईषद उष्ण - शिरिष (TM)

मात्रा

1/4- 1 ग्रॅम: वचा, कूष्ठ.

1/2 -1 ग्रॅम: अर्क, स्नूहि, मरिच, पिप्पली, कूटकी, जायफल, अकारकरभ.,

1-2 ग्रॅम - जोतिष्मति, लवंग, शुण्ठी, चित्रक

1- 3 ग्रॅम - खदीर, हरिद्रा, बाकूची, कर्कटश्रगी, पूष्करमूल, धान्यक, अतिविषा. त्रिवत्त, दन्ती, देवदाली, धातकी, शल्लकी, अजमोदा, तुलसी, कम्पील्लक, पाढा, पूर्ननवा, एला, बहदएला, नागकेशर, मजिष्ठा.

2- 4 ग्रॅम - जटामांसी, गुग्गुल, निम्ब, सर्षप, तालीश.

3- 6 ग्रॅम- अर्जून, रूद्राक्ष, कांचनार, बिभितक, यष्टीमधू, कप्टकारी, जिरक, मुस्तक, बिल्व, कुटज, श्योनाक, पलाश, सुरण, मुशली, शतावरी, कपिकच्छू, अशोक, गोक्षुर, पाषाणभेद, जम्बू, चन्दन, बला, अतिबला, हरितकी, आमलकी, गुडूची, शिरिष.

5-10 ग्रॅम - विडंग

5-15 बूंद ज्योतिष्मति तैल. द्रवन्तीतैल - 1/2 - 1 बूंद

एरण्ड तैल - 4-16 मिली, निम्बतैल 5-10 बूंद भल्लातक तैल 10-20 बुंद, तैलपर्ण तैल, लवंग तैल 1-3 बूंद - धान्यक

* सर्पगन्धा- रक्तभार कम करने के लिए 1-2 ग्रॅम

निद्राजनन और उन्माद में 3-6 ग्रॅम

रसोनकल्क 3-6 ग्रॅम तैल 1-2 बूंद

आरग्वध फलमज्जा 5-10 ग्रॅम विरेचनार्थ 10-20 ग्रॅम

अर्जूनक्षोरपाक 5-10 ग्रॅम

वासा पत्र- पूष्प स्वरस 10 ते 20 मिली

बहती, कप्टकारी क्वाथ 40-50 मिली वरूण क्वाथ 50 - 100 मिली

तुलसी, आर्द्रक स्वरस 5 ते 10 मिली कुमारी पत्र स्वरस 10 ते 20 मिली

मदनफल 3- 6 ग्रॅम वमनार्थ 1 ते 2 ग्रॅम अन्यकर्म

द्रवन्ती - 25 ते 50 मिलीग्रॅम धत्तुर 50 - 100 मिली

अर्क, स्नुही क्षीर 125 - 250 मिली कंकूष्ठ 50-125 मिली

गुंजा बीज चूर्ण 60 ते 180 मिली.

रसशास्त्र

रसशास्त्र इतिहास:-

रूद्र को प्रथम भिषक माना है। शिव आद्य उपदेष्टा.

84 सिध्दों का उल्लेख, 4 प्रधान आचार – कौलाचार श्रेष्ठ

प्रथम नाथ – आदि नाथ, प्रथम सिध्द –सरभ...(नालन्दा के मुख अधिष्ठाता)

द्वितीय सिध्द – नागार्जुन...(रसायनविद्या परम ज्ञाता)

प्रथम नागार्जुन – रसायन विद्या, इ.स. पूर्व 100 वर्ष, राजा शालवाहन के मित्र

द्वितीय नागार्जुन – 8 वे शतक

9 नाथ, 16 सिध्द, 14 आचार्य.

सुश्रुत: पारद बाह्य प्रयोगार्थ, फेनाश्म सर्व प्रथम उल्लेख.

वाग्भट: धातु का भस्म, आदित्य (भानु) पाक, अन्धमुषा सर्वप्रथम प्रयोग

बृहत्संहिता - वराहमिहिर कृत - (5 शतक) शुक्रवर्धक योग.

व्याडी (9th शताब्दी), अल्बरूनी (11th शताब्दी)

कौटिल्य में: i) स्वर्ण को विकृत करने हेतु हिंगुल रगडने का विधान.

ii) आभूषण निर्माण मै 3 प्रकार के कारीगर: (a) क्षेपण (b) गुण (c) क्षुद्रक

सर्वोत्कृष्ट पिटवाँ लोहा का 7.84 घनत्व

लोह स्तम्भ में मैगंनीज का अभाव महत्वपूर्ण.

कौटिल्य अर्थशास्त्र - धातुशोधन, धातुमार्दवकर

गुप्तकालिन विष्णु - धर्मोत्तर पुराण → अभ्रकद्रुति वर्णन

मार्कण्डेय पुराण → "रस"चिकीत्सार्थ प्रयोग

शुक्र: (a) पर्याय - विन्दु, वज्र, (b) इसकी क्रिया - वज्रौली

c) फल - उर्ध्वरेता, (d) अधोगती - कालाग्नि, (f) उर्ध्व - कालाग्निरूध्द.

रसशास्त्र विकास: प्रारंभिक काल → (5-8) शतक
मध्यकाल → (9-12) शतक
प्रौढकाल → (13-15) शतक
आधुनिक → 16 शतक से आगे.

शिव वीर्य - पारद

पार्वती शुक्र - अभ्रक = गौरी तेज, सुतेंद्रबंधि

पार्वती रज - गन्धक, सुतजित, सुतेंद्रवीर्यप्रद

पारद: मूर्छित - व्याधी हर, मृत - जीवन (अमर)

बध्द - खेचरतां (आकाश में उडने योग्य) (मोक्षदायक)

सायणमाधवाचार्य - रसेश्वरदर्शनकार 14 शतक

माधवाचार्य - सर्वदर्शनसंग्रह

(a)18 संस्कार (b)16 वा संस्कार क्रामण - धातु परिवर्तन

रसोपनिषद - पारद - नित्य, अचिन्त्यशक्ति युक्त, अक्षय वीर्यवान, आत्मास्वरूप है।

रसविद्या: 1) धातुवाद, 2) देहवाद, 3) रोगवाद (चिकित्सावाद)

नागार्जुन ने वज्रयान, महायान, शुन्यवाद की स्थापना

अतिगहन लौहशास्त्र निर्माता (रसेंद्रचिंतामणी)

रसशास्त्र: 1) भगवान आशुतोष शिव के व्दारा उपदिष्ट

2) मुख्य स्तम्भ पारद, *of* भारतीय रसशास्त्र

ग्रंथ	लेखक	काल
योगरत्नमाला	सिध्द नागार्जुन	-
	प्रथम रसशाला वर्णन	
रसार्णव	(लेखक नहीं) भैरवानन्द योगी प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ	
रसहृदयतन्त्र	भगवद्गोविन्दपादाचार्य	10 शताब्दी
गोरक्षसंहिता	गोरखनाथ	12 शताब्दी
रसेन्द्रचुडामणि	सोमदेव	12 शताब्दी
रसप्रकाश सुधाकर	यशोधर भट्ट	12 शताब्दी

ग्रंथ	लेखक	काल
रसरत्नसमुच्चय	वाग्भट (उत्कृष्ट ग्रंथ)	13 शताब्दी
टिका :	a) डि. ए. कुलकर्णी - विज्ञानबोधीनी	
	b) हजारीलाल - दीपीका	
रसरत्नाकर	नित्यनाथ	13 शताब्दी
आनन्दकन्द	मन्थान भैरव (9 सिध्द वर्णन)	
रसाध्याय	कंकाल योगी (दर्प,मत्त,in पारद दोष)	13
	1st time	
रसोपनिषद	(कृष्ण गोपाल हिंदी टीका)	1959
रसपध्दति	बिन्दु	13 शताब्दी
	(शार्दल विक्रीडित ने पूर्ण किया)	
शारंगधर संहिता	शारंगधर मिश्र	13 शताब्दी
	(आढमल्ल संस्कृत टीका)/ काशीराम-गूढार्थ दि.	
रसेश्वरदर्शन(सिध्दान्त)	सायणमाधवाचार्य	14 शताब्दी
रसचिन्तामणि	अनन्तदेव सूरी	15 शताब्दी
रसेन्द्रचिन्तामणि	ढुण्ढूकनाथ	15 शताब्दी
रसमंजरी	शालिनाथ	15 शताब्दी
लोहसर्वस्वम	सुरेश्वर	15 शताब्दी
रससार	गोविन्दाचार्य	
रसेन्द्रसारसंग्रह	कृष्णगोपालभट्ट	16 शताब्दी
भावप्रकाश	भावमिश्र(चोपचीनी *for* फिरंग)	16 शताब्दी
रसप्रदीप	प्राणनाथ	16 शताब्दी
रसकौमुदी	ज्ञानचन्द्र शर्मा	16 शताब्दी
वसवराजीयम	वसवराज	
	सत्युग में - चरक प्रधान	
	त्रेतायुग - रसार्णव	
	व्दापरयुग - सिध्दविद्या	
	कलियुग - वसव प्रधान	
रसकामधेनु	चुडामणि मिश्र	17 शताब्दी
योगतरंगिणी	त्रिमल्लभट्ट	17 शताब्दी
बृहतयोगतरंगिणी	(148 तरंग & चिकित्सा प्रधान)	
आयुर्वेदप्रकाश	माधव उपाध्याय	18 शताब्दी
योगरत्नाकर	- -	18 शताब्दी
भैषज्यरत्नावली	गोविन्द दास सेन	19 शताब्दी
बृहत्रसराजसुन्दर	पं. दत्तराम चौबे	19 शताब्दी
रसतरंगिणी (81तरंग)	सदानंन्द शर्मा	
	(वर्धमान पर्पटी *told*)	20 शताब्दी
रसजलनिधि	भूदेव मुखर्जी (English व्याख्या)	20 शताब्दी
हिस्ट्री ऑफ हिन्दू केमिस्ट्री	सर *P.C. Roy*	1904
रसयोगसागर	हरिप्रपन्न शर्मा	1927-30
सिध्दयोग संग्रह और रसामृत	यादवजी त्रिकमजी	1943-59
रसायनसार	श्यामसुन्दराचार्य वैश्य	1914
रसराजमहोदधि	भगत भगवानदास	1923
रसेन्द्र पुराण	रामप्रसाद शर्मा	1916
भारतीय रसशास्त्र (मराठी)	वामन गणेश देसाई	
आयुर्वेदीक खनिज विज्ञान	प्रतप सिंह	
रसेन्द्र सम्भव	विश्वनाथ व्दिवेदी	20 शताब्दी
भस्म विज्ञान	हरिशरणानन्द	

भारतीय रसशास्त्र	बापालाल शाह	1950
रसेन्द्र सम्प्रदाय	हजारी लाल सुकुल	1955
रसचिकित्सा	प्रभाकर चट्टोपाध्याय	1956
शुल्बशास्त्रम्	हरिशंकर शर्मा	1958
पारद संहिता	निरंजन गुप्त	20 शताब्दी
रसशास्त्र प्रवेशिका	बद्रीनारायण शास्त्री	1961
रसशास्त्र	अत्रिदेव विद्यालंकार	
रत्नधातु विज्ञान	बद्रीनारायण शास्त्री	1964
रसेन्द्र विज्ञान	रामादर्श सिंह	1965
रसमित्र	त्र्यम्बकनाथ शर्मा	1965
पारदविज्ञानीय	वासुदेव मुलशंकर द्विवेदी	1969
अभिनव रसशास्त्र	सोमदेव शर्मा सारस्वत	1970
रत्नविज्ञान	राधाकृष्ण पाराशर	1972
सचित्र रसशास्त्र	वंसरीलाल साहनी	1975
प्रारम्भिक रसशास्त्र	सिध्दिनन्दन मिश्र	1977
भारतीय रसशास्त्र	विश्वनाथ द्विवेदी	1978
सिध्दभैषज्य मणिमाला	कृष्णराम भट्ट	
इंडियन मटेरिया मेडिका	के. एम. नाडकर्णी	
रसराजलक्ष्मी	विष्णुदेव, सर्वज्ञभट्ट	
भारतभैषज्य रत्नाकर	एम. सी. शहा	

I.E.Emerick is working on सिध्दरस.

(रसशास्त्र शिवशास्त्र है।)

ब्रह्मा - उत्पत्ति, विष्णु - पोषण, महेश - संहार

नाथ - 7 (ह.प्र.) **सिध्द** - 3 (वर्णनानुसार) (i) सिध्द (ii) महासिध्द (iii) नाथसिध्द.

4(वर्णानुसार) - (i) देवसिध्द, (ii) मुनिसिध्द, (iii)दैत्यसिध्द, (iv)मानसिध्द.

अभ्रग्रासो हि सूतस्य नैवेद्य परिकीर्तितम्।

पारद प्राण - माक्षिक, नैवेद्य - अभ्रक

रसशाला निर्माणर्थ *8* दिशाओ में रखने हेतु.

महारसः (1) रसकं विमला ताप्यं चपला तुत्थम्अंजनम्।
हिंगुलं सस्यकंचैवख्याता एते महारसा।। (आ. प्र.)

उपरसः (2) गन्धतालककासीस शिलाकंकुष्ठ भूषणम्।
राजावर्तो गैरिकश्च ख्याताउपरसा अमी।। (आ. प्र.)

अष्टलोहपूजाः

उत्तर
तीक्ष्ण,मुण्डलोह

पश्चिम ←→ **पूर्व**
कांतलोह, वंग — स्वर्ण,रजत

दक्षिण
ताम्र,नाग

रसशाला निर्माण : पुर्व उत्तर मुखी

हेतु - पारद के लोहवेध देहवेध

कालिनी : 1) पारद के बंधन रसायन प्रयोग में अत्युत्तम,
2) कालिनी - शक्ति स्वरूपा, 3)कृष्णपक्ष में ऋतुमती हो.

कालिनी के अभाव में, *3* सप्ताह तक 1 कर्ष शु.गन्धक घृत सह प्रतिदिन भक्षण - *4* व्दार वाला.

रसशाला केः a) ऊपर रसेश्वर ध्वज फहराना, b) मुख्यव्दार पर शिव, पार्वती प्रतिमा.

***कक्ष** **उत्तर**
(उदीची)
(धातुवेधकर्म, औषध भण्डार)

वायव्य कोण (शोषण) — **इशान कोण** (तयार वस्तु संग्रहण)

पश्चिम (प्रतीची) क्षालनकर्म (धोना), कालिनी निवास, आचार्य निवास — **प्राची (पुर्व)** रसलिंग स्थापना, रसभैरव

नैऋत्य कोण. (शस्त्रकर्म, सेवक) — **दक्षिण** (अवाची) (पाषाण कर्म) — **आग्नेय कोण** (अग्निकर्म)

रसलिंग निर्माणः शु. स्वर्णपत्र - 3 भाग, शु. पारद - 9 भाग
निम्बु स्वरस - 32 भाग *(R.R.S)*

रसलिंग दर्शन से *1000* ब्रह्महत्यायें, *1lakh* गोहत्यायें नष्ट व स्पर्शन - सद्यः मोक्ष प्राप्त.

पंचविध पारद पुजा -महापातक नाशिनी 1) ध्यान 2) स्पर्श 3)दान 4)सेवन 5)पूजन

रसेश्वर भगवानः 3 आँखे, *5* मुख, *18* हाथ

वर्ण - शुभ्र (कर्पूर गौरं), कण्ठ - नीला

रसेश्वरी (शिवजी की गोद में,) *1* मुख, अक्षमाला 4 हाथ (*Rt.* रूद्राक्ष माला और अंकुश)

रसलिंग के पूर्व - नन्दी, पश्चिम- भृंगी, उत्तर-महाकाल,दक्षिण - कुलीर.

विड - पारद जारणार्थ अत्युपयोगी, कांजी - रसकर्म में.

रसविद्या किसे & क्यों?

i) ब्राह्मण *for* - दीक्षा धर्म, ii) राजा, वैश्य *for* - राज्य, धन वृध्दि, iii) शुद्र *for* - सेवा.

परिभाषा

निगुढानुक्तलेशोक्तसन्दिग्धार्थप्रदीपिका।
सुनिश्चितार्थ विबुधैः परिभाषा निगद्यते।। र. त.

अविकसित भावों को स्पष्ट और निश्चित अर्थ परिभाषा प्रकरण सोमदेव आचार्य द्वारा वर्णित है।

पंचलवणः सैंधव सौर्वचल, विड, सामुद्र, रोमक

षड्लवणः उपरोक्त + चुल्लिका लवण (नवसागर)

क्षारद्वयः [सज्जी ; यव]

क्षारत्रयः उपरोक्त + सौभाग्य (टंकण)

क्षारपंचकः मुष्क, यव, किंशुक, सर्ज्जि, तिल

क्षाराष्टकः सुधा, पलाश, अपामार्ग, चिंचा अर्क, तिलनाल, सर्ज्जि, यव

अम्लवर्गः अम्लवेतस,जम्बीर,मातुलंग,चणकाम्ल,नारंग,तिन्तिडीक,चांगेरी

अम्लपंचकः अम्लवेतस, जम्बीर, लुंग, नारंग, निम्बुकैः

पंचामृतः गो (दुग्ध, दही, घृत), मधु, शर्करा

पंचगव्यः गो (दुग्ध, दही, घृत) गोमुत्र, गोमय

मधुत्रयः गुड, मधु, घृत.

मित्रपंचकः आज्यं, गुंजा, सौभाग्य, क्षौद्र, गुग्गुलु.

द्रावकगणः गुंजा, मधु, गुडः, सर्पि, सौभाग्यं, गुग्गुलु.

कज्जलीःशु. पारद + शु.गन्धक मर्दन (निर्द्रव) (पारद की प्रथम मुर्च्छना.)

धातु को कज्जली में मिलाने की परम्परा नहीं,*but.*

i) मकरध्वज में - पारद + स्वर्ण, ii) स्वर्णवंग (*NO* स्वर्ण) - पारद + वंग

रसपंकः पारद + स्वर्णादिधातु *or* गन्धक + औषधि स्वरस - मर्दन सद्रव
रसपिष्टीः पारद + गन्धक + दुग्धादि द्रव - मर्दन.
नवनीतपिष्टीः पारद - *12* तोला (सुर्य्यांश) धुप में मर्दन.
गंधक - 1 तोला (निष्क)
क्षीरत्रयः अर्क, वट, स्नुही *(र. त.)*
त्रिगधंक - गंधक, हरताल, मनःशिला.
अंजनत्रितय - कालांजन, पुष्पांजन, रसांजन.
भावनाः धात्वादी किसी भी औषध चूर्ण को द्रव पदार्थ के साथ खरल में मर्दन करके सुखाना. भै.र.
द्रव मान - जितने में चूर्ण द्रव में गीली होकर लुगदी होजाये.
आवापः धातु, उपधातु, खनिजादि को मूषा में तीव्राग्नि में पिघलाकर उसपर द्रव्य का चूर्ण छोडना. द्रुते द्रव्ये (अवाप/प्रतिवाप/आच्छादन)
ढालनः धातु को मुषा में तिव्राग्नि मे धमन कर पिघलाकर द्रव (दुध, स्वरसादि) मे डाल देना. (द्रुत द्रवस्य)
निर्वाप (निषेक, स्नपन) धातु, उपधातु, रसोपरसादि को अग्नि पर तपाकर द्रव द्रव्य में बुझाना. (तप्तप्सु...)
शोधनः मल (दोष) को नष्ट करने हेतु गुणवृध्दि.
पारद - दोष प्रकार - *3. total* दोष *-12*
i) नैसर्गिक - त्रिफलादि द्रव में मर्दन., ii) यौगिक-उर्ध्वअधः तिर्यक पातन. iii) औपाधिक - संस्कार.(२ प्रकार गंधक अशुध्दि-शिलाचूर्ण,मल्ल)(आ.प्र)
गन्धक शोधन *3* **उद्देश्यः** i) जो विष घृत में *soluble* वह नष्ट.
ii) दुग्ध- तीक्ष्णतां, मृदुता में कमी., iii) वस्त्र से छानकर अपद्रव्य रहित.
मृतलोहः धातुभस्म अंगुलि की सुक्ष्म रेखा में घुस जाय पोछने पर भी न रह जाय., परिक्षा भस्म को मूषा में चांदी, घृत मधु तिव्राग्नि धमन. चांदी के मान एंवम गुण में परिवर्तन न होना.
पंचमृत्तिकाः इष्टिका, गैरिक, लवण, भस्म, वल्मीकमृत्तीका
शुध्दावर्तः अग्नि प्रज्वलित होकर श्वेत वर्ण के प्रकाश के साथ चमकने लगे। सभी धातु को पीघलाती है। सत्वनिर्गम काले
द्रुतिलक्षणः औषधि संयोग तीव्रधमन से स्वर्णादि द्रवीभूत होकर द्रवावस्था में रह जाय. (द्रवाकार)
***5* लक्षण of द्रुतिः** i) पात्र में न लगना - निर्लेपत्वं, ii) द्रवरूप - द्रुतत्वं, iii) चमकदार - तेजत्वं, vi) मुल पदार्थ से हल्का - लघुता, v) पारद से पृथक् - असंयोग.
अमृतीकरणः अभ्रक, ताम्र, स्वर्णमाक्षिक
धातुओं की भस्म में शेष दोष को दूर करने हेतु जो संस्कार करते है।
धातुसत्व लक्षणः द्रावकगण मित्रपंचक औषधियाँ खनिज मिलाकर मूषा में रखे. सत्वपातनार्थ कोष्ठीयन्त्र में दृढ धमन- पिघलने पर उलट दें- जो सार भाग लोह मिले उसे ही सत्व कहें।
भस्म परिक्षाः **1) वारितर** -मृत तरति यत तोय,
(वारितर व उन्नम परिक्षा *for all* भस्म)
2) रेखापूर्ण - अंगुष्ठतर्जनीस्पृष्टं यत् तद् रेखान्तरे मृत लोह
3) अपुनर्भव - मित्र पंचक (गुडगुंजासुखस्पर्शमध्वाज्य) + धातु भस्म धमन - *No* विकृति भस्म से मूल धातु पृथक नही होता.
4) उन्नम - तैरते भस्म पर अन्न डालने पर वह भी हंसवत तैरता है।
5) निरुत्थ - धातु भस्म + चांदी (मूषा) धमन (चांदी के साथ न चिपकना)
6) अवामि - विशेषतः ताम्र & स्वर्णमाक्षिक (जीभ पर चुरचुर) भस्म जीभ पर रखने पर हृल्लास, थुकथुकी न हो.
7) अम्ल - ताम्र, स्वर्णमाक्षिक, तुत्थ.
उपर्यूक्त भस्म खट्टे द्रव पदार्थ (खट्टा दधी मे डालना)
भस्म अपक्व हुवा तो तुत्थवत (नीला) रंग हो जायेगा।

8) निर्धुम - अपक्व भस्म अग्नि पर रखने से धुँआ निकलता है।
9) निःस्वादु - भस्म *are tasteless*
10) निश्चंद्र - *for* अभ्रक, स्वर्ण, रजतमाक्षिक *etc*
सेवित चन्द्र संयुक्तं मेहं मन्दानलं चरेत। (सचन्द्र भस्म सेवन नहीं करना चाहिए)
11) लघुता - धातु भस्में मर्दन अग्निसंयोग से हल्की मृदु, आशुकारी, सूक्ष्म होती है ।
12) सूक्ष्म, 13) श्लक्ष्ण, 14) वर्ण्य
अपूर्नभव व निरुत्थ-धातू के लिए विशेष परीक्षा
विड्वर्गः (पारावत, चाष, कपोत, कपालि, गृध्र, कुक्कुट*)* इनका सम्मिलित विड् (विट्)
कांचनादि ग्रसन तीव्रबुभुक्षा कर (i.e. पारद जारणार्थ)

यंत्र

प्रकारः 20 यंत्र – रसतरंगिणी, 30 - रसेंद्रचूड़ामणी
32 यंत्र – *R.R.S.*, 41 यंत्र– आ.प्र.,आनंदकंद,
45 यंत्र–पारद संहिता
स्वेदादिकर्मनिर्मातुं वार्तिकेन्द्रैः प्रयत्नतः।
यन्त्र्यते पारदो यस्मात्तस्माद यन्त्रमिति स्मृतम।।*(R.R.S.)*
1) दोलायन्त्रः स्वेदन, इसमें पोट्टली हाँडी के तल से 2 अंगुल उपर हाँडी में 3 भाग कांजी आदि द्रव./पुरीतो (अर्धोदकस्य- 1/2)
2) डमरूयन्त्रः रसबंधन, उर्ध्वपातन of पारद और संखिया का, पारद के भस्मार्थ, हिंगुलोत्थ पारद प्राप्त.
3) पालिकायन्त्रः गंधकजारण, पर्पटीनिर्माण, कपर्दभस्मार्थ, पालिका +1 हस्त लम्बी लोह शलाका कपर्दभस्मार्थ उपयोग.
4) स्थालीयन्त्रः स्विन्नार्थ सत्वपातनार्थ, स्थाल्यां हण्डिकायां पाकःइति स्थालीपाकः। उपयोग - धातु मृदु व मल, विषांश को नष्ट.
5) स्वेदनीयंत्रः स्वेदन, गंधक शोधन. आधा भाग जल से भरे. भाप से द्रव्य का स्वेदन होता है.
6) वालुकायंत्रः गन्धक जारण, रस मूर्च्छना, कुपीपक्व रस निर्माण मिट्टी -*1* अंगुल मोटाई. वस्त्र - *7* बार लेप.
7) पुटयंत्रः भस्म निर्माण (धातु मारण), औषध मिश्रित पारद - मर्दन - वन्योपल की अग्नि.
8) विद्याधरयंत्रः गंधक जारण, हिंगुल से पारद निष्कासन, 4 मुखी चुल्हा.
9) पातनायंत्रः, उर्ध्वपातनः हिंगुल से पारद प्राप्त
अधःपातनः यौगिक दोष निर्हरण, **तिर्यकः** यौगिक (नागवंग दोष) नष्ट
10) भूधरयंत्रः गन्धक जारण (अन्तर्धुम)
11) पातालयंत्रः गन्धक तैल,भल्लातक तैल आदी वनस्पतीज द्रव्यों का तैल निकालने हेतु
12) खल्व यंत्रः 3
i) अर्धचंद्राकृति पारद (शोधन, जारणा, मूर्च्छन)
ii) वर्तुल, iii) तप्त पारद मूर्च्छन, स्वेदन *with* क्षाराम्ल से.
13) तुला यंत्रः जारणा (पारद,हरताल,मनःशिलादी)
14) उदुखल यंत्रः माक्षिक, विमलादि का चूर्ण.
15) कच्छप यंत्रः पारद में विड जारण; गर्भद्रुति होकर सभी सत्वों का जारण.
16) हंसपाक यंत्रः विड पाक हेतु.
17) सोमानल यंत्रः अभ्रक जारण अथवा अभ्रक सत्व जारण *in* पारद.
18) नलिका यंत्रः गन्धक जारण.
19) बलभी यंत्रः उत्थापन संस्कार हेतु स्वेदन.
20) गर्भ यंत्रः पारद भस्म, सोमनाथी ताम्र भस्म निर्माणार्थ.
21) दीपिका यंत्रः पारद अधः पातन.
22) पिठर यंत्रः पुतिलोह शोधन (नाग, वंग)
23) कन्दुक यंत्रः तैल निष्कर्षण
Common: पारद जारणार्थः (भूधर, कच्छप, पालिका) यंत्र

मूषा

मूषा निर्माण में पीली मिट्टिश्रेष्ठ है.

पर्यायः मूषा, क्रौंचिका, कुमुदी, करहाटिका, पाचनी, वन्हि मित्रा

मुष्णाति दोषान्मूषेयान् सा मूषेति निगद्यते । *(R.R.S.)*

संख्याः *17* मूषा...*(R.R.S.)*

सामान्य मूषा - मृतिका *4* भाग

दग्धतुष, शण, शिखि,हयलादृना (घोडे की लिद) *1* भाग *each*

1) वज्रमूषाः सत्वपातनार्थ, मण्डुर (लोह किट्ट) - 1/2 भाग.

2) पक्वमूषाः पोट्टली आदि पाचनार्थ.

3) गोस्तनीमूषाः सत्वद्रावणार्थ & ऊसे शुध्द करने हेतु.

4) वृन्ताकमूषाः खर्परादी सत्वपातन & मृदु करण.

5) वज्रद्रावणी मूषाः वज्र (अभ्रक) द्रावण.

निर्माणः गार, भूनाग (केचुए) की मिट्टी + माहिषदुग्ध, अग्निसहत्व - *4* प्रहर

6) योगमूषाः विड का अंतः,बाह्यलेप; पारद - अधिक गुणवान होता है.

7) विडमूषाः शरीर लोहयोग निर्माणार्थ

8) वरमुषाः । याम तक अग्नि सहन करती है।

9) गारमुषाः 2 याम तक अग्नि सहन करता है। धातु ढालनार्थ उपयोगी

10) मण्डूकमूषाः *6x 6 x6* अंगुल

11) मूसलमूषाः चक्रिबध्द पारद निर्माणार्थ, *8* अंगुल

12) महामूषाः अभ्रक, लोह भस्म पुट देने हेतु.

मूषाबन्धन पर्याय - बन्धन,संधिलेपन,अन्ध्रण,रन्ध्रण,संश्लिष्ट,संधिबंधन.

मदनमुद्रा - कूपी मुख बन्धनार्थ, पारद जारण, मारण (*5* द्रव्य उपयोग.)

हठमुद्रा - चुम्बकं, लोहचूर्ण काच (पारदहानि *stops*)

कोष्ठी

भेद *4 (RRS)*

खनिज सत्वपातनार्थ & शुध्दी.

Types	*Size*	*Use*
1) अंगार कोष्ठीः	नृपहस्त *30x 15x15* अंगुल	कठिन द्रव्य सत्वपातन, धातु द्रवीकरण
2) पाताल कोष्ठीः	वितस्तिविस्तृत *1*बित्त (*12* अंगुल) + *1* वर्तुल छिद्र	मृदु द्रव्य सत्वपातन.
3) गार कोष्ठीः	12 अंगुल *deep* + *9* अंगुलचौड़ी *(12x 10x10)*	मिश्र लोह शोधनार्थ सृष्टलोह विनाशिनी
4) मूषा कोष्ठी :	*12x 4*	मृदु द्रव्य शोधनार्थ

चुल्लिका पर्याय - अंगारधनिका, अंगारशकटी,हसनी, हसन्ती, हसन्तीका

वंकनाल में 2 नली; बडी -*1* अरत्नी लम्बी, छोटी - पंचांगुल लम्बी *(R.R.S.)*

अग्निप्रकार - *6* .....(अर्कप्रकाश)

1) धूम अग्नि 4) मध्यम अग्नि

2) मन्द अग्नि 5) खर अग्नि

3) दीप अग्नि 6) भट अग्नि

कोष्ठीः सत्वादिपातनार्थ्यर्था द्रव्यढालनसाधिका।

वन्हिसंधानिका या तु कोष्ठिकां सा निगद्यते।।

पुट

1) **संख्याः** *10 (R.R.S.)*, 30 (शारंगधर)

2) **व्याख्याः** रसादिद्रव्य पाकानां प्रमाण ज्ञापनं पुटम् ।

नेष्टो न्यूनाधिकः पाकः सुपाकं हितमौषधम ।। *(R.R.S.)*

(द्रव्यों के पाक का सत्यता का ज्ञान कराने वाला)

3) **प्रयोजनः** a) भस्में निर्दोष & गुणज्ञ, b) भस्म में विशेष गुणोदय होना.

4) **पुटफल** - अपुनर्भव, गुणाधिक्य, रेखापूर्णत्व.

Types	*Size*	वन्योपल	*Use*
महापुट	2 हाथ x 2 हाथ x 2 हाथ(*91cm.*)	*1500*	अभ्रक,लोह,भस्मार्थ
गजपुट	राजहस्त (*30* अंगुल) *57 x57*cm	*1000*	अभ्रक,लोह,ताम्र,माक्षिक, विमल,शंख,शुक्ती, गोदंती,मृगशृंग,प्रवाल, भस्मार्थ
वराहपुट (क्रोड)	अरत्नि (*22* अंगुल) 42 cm	*500*	शंख,शुक्ति, गोंदंति,शृंग,वराटिका, भस्मार्थ
कुक्कुटपुट	*2*वितस्ति (*i.e.1*हाथ) 46 cm	*100*	स्वर्ण, रजत,नाग, वंग, मुक्ता, *etc* भस्म.
कपोतपुट	स्वल्प/मृदु/लघू –	*8*	पारद(भस्म,जारण) हरताल
गोबरपुट/लघू–		गोमय चूर्ण (*2* माणिका)	पारद भस्म.
भाण्डपुट/कुम्भपुट–		तूष	पारदभस्म,गंधक जारण,पारद.
बालुकापुट	*4* अंगुल*x 4 x4*	—	हरताल, सोमल भस्म,गन्धक जारण
भूधरपुट	*2* अंगुल	6	पारद भस्म,पारदजारण, सोमल पाकार्थ
लावकपुट	–	*1*कर्ष *or* *4* कर्ष तुष	मृदु द्रव्य पाक.
बंधपुट	—	–	पारद भस्म.

सामान्यतः भस्मार्थ - *7* पुट देते है ।

पारद भस्मार्थ पुट - (कपोत, गोबर, भूधर, लावक, मांड) पुट.

पारद भस्म निर्माण में *8* वन्योपल मात्रा (मृदुपुट)

उत्पल पर्याय :- 8 पिष्टक, छगन, छाण, उत्पल, उपल, गिरिण्डोपल, साठी, वराठी

पारद *(Quick Silver)*

1) **भेद - 5 (क्षेत्रानुसार)**

i) रस - रसनात् सर्वधातूनां रस इत्याभिधीयते..*(R.R.S.)* **(रक्तवर्ण)**

उपयोग- रोग निवारणार्थ

ii) रसेन्द्र – रसोपरसराजत्वाद रसेन्द्र इति कीर्तितः।*(R.R.S.)*

(श्याव) रुक्षी ऽतिचंचला उपयोग- सर्वश्रेष्ठ

iii) सूत - देहलोहमयीं सिध्दिसूते सूतस्ततः स्मृत। *(R.R.S.)*

(इर्षतपीत) रूक्षांगदोष युक्तश्च सूतकः

उपयोग- देहसिध्दी

iv) पारद - रोगपंकब्धिमग्नानां पारदानाच्च पारदः। *(R.R.S.)*

(श्वेतवर्णा) चंचला उपयोग- रोग नाशक

v) मिश्रक - सर्वधातुगतं तेजो मिश्रितं यत्र तिष्ठति । *(R.R.S.)*

मिश्रवर्णी मयुर पत्रिकाभासं मिश्रकं .....*(R.R.S.)*

उपयोग- सब का सार है

2) त्रिसुतः सुत + पारद + मिश्रक

मयुरचन्द्रिकाच्छायः - मिश्रक पारद

मयुर कण्ठसच्छायं - सस्यक

मयुर कण्ठसदृशप्मान्यो - वैक्रान्त

मयुरकण्ठसदृशं - ताम्र शिलाजीत

भा. प्र. *4* प्रकार.वर्णानुसारः (श्वेत, पीत, रक्त, कृष्ण)

3) खनिजः

1) हिंगुल - *Cinnebar (HgS) 70-85%* (सर्वोत्कृष्ट खनिज)

a) हंसपाद हिंगुल - जपाकुसुम संकाशम्
b) दरद हिंगुल - *Hepatic cinnebar*
c) चर्मार हिंगुल-कृष्णरुप *Meta cinnebar*,गिरिसिन्दुर *Bric ore (HgS) 68%*
d) प्रवालाभ हिंगुल - *Coral ore* (श्वेतरेखः)
देत्येन्द्र रस *Steel ore* पारद *75%* (अधिकतम)
2) *Cinnebar (HgS) 68%,*
Meta cinnebar (HgS) 68%
रसपुष्प *Calomel (Hg2Cl2)* - हिरकद्युतिसंकाश
Living stonite (2Sb2S3HgS)
Montroydite (HgO)

4) पारद दोष = 12

2	:	रसप्रकाश सुधाकर, रसकामधेनु
3	:	*(R.R.S.)*
8	:	*(R.T.)*
20	:	(आयुर्वेद प्रकाश) *also 12* = महादोष

नैसर्गिक दोष = *3*
i) विष - मरण (मृत्यु) त्रिफला *(R.T.)* - चित्रक *(R.R.S.)*
ii) वन्हि – सन्ताप चित्रक *(R.T.)* - त्रिफला *(R.R.S.)*
iii) मल -मूर्च्छा आरग्वधफलमज्जा (R. T.)

यौगीक दोष : *2* (आयुर्वेद प्रकाश)
i) नागज - जड़ता + आध्मान - घुमोष्टिकाहट्टविलासिनी, उन-4 द्रव्य
ii) वंगज - कुष्ठआध्मान - इंद्रवारुणी, अंकोल, निशोत्थ (हरिद्रा)-3 द्रव्य

औपाधिक दोषः *7* (सप्तकंचुक)
*पर्पटी पाटनी भेदी द्रावी मलकारी तथा ।
अन्धकारी तथा ध्वांक्षी विज्ञेयाः सप्तकंचुकः ।। *(R.R.S.)*
i) भूमिज - (पर्पटी) - कुष्ठ - शरीरसुखना
ii) गिरिज - (पाटनी) - जाड्य - दोषं गिरोस्त्र्यूषणमाशु हन्यात।
iii) वारिज - (भेदी) - वातसंघात - मलभेद
iv) & v) नागज - *a)* द्रावी-देह धातू को द्रवत्व *b)* मलकारी - दोषाढ्य
vi) & vii) वंगज - अंधकारी ध्वांक्षी - अंधत्व व स्वराघात
असह्याग्नि - मोह, मूर्च्छा - त्रिकण्टको वहन्यसहत्त्वदोषम्।
चापल्य - चांचल्य - कृष्णधत्तुर बीज, गिरी-त्रिकटु-चूर्ण
मददोष - उन्मत्तता

5) पारद शोधनः सामान्य शोधन - व्याधिहरणार्थ.
विशेष शोधन - रसायनार्थ.

	दोष	R.T.
i) सामान्य शोधन :	नाग	- व्रण
a) शु. पारद - *1* भाग	वंग	- कुष्ठ
निस्तुषरसोन - *1* भाग *3* दिन मर्दन	अग्नि	- ताप
सैन्धव - *12* भाग	मल	- जाड्य
b) *5% Nitric Acid* में *24 Hrs.*	चापल्य	- बीजनाश
रखें	गरल	- मृत्यू
	गिरि	- स्फोट
	असह्याग्नि	- मोह

6) पारद स्वरुपः (ग्राह्य स्वरुप)
अन्तः नीलो, मध्यान्हसूर्यप्रतिमप्रकाश, बहिरुज्वलो, हीरकद्युतिसंकाश

Melting pt. - 35.87 °C	*Boiling pt. - 357 °C.*
Freezing pt -36°C	परमाणुबंध क्षमता - *2*
परमाणु क्रमांक - *80*	परमाणु भार - *200.6*
अपेक्षित घनत्व - *12.59*	विशिष्ट गुरुत्व - *13.60*

7) पारद संस्कारः *8 (RT):* *18 (RRS;* रसार्णव)
19 (आ. प्र. रसरत्नाकर; आनंदकंद)
(आ.प्र. (माधव) ने *19* वा अनुवासन संस्कार)
पारद संस्कारः18
शोधन-संस्कार भेदः शोधनं दोषहरणं, सस्कारश्च बलतेजसोऽभिवर्धनम्।
1) स्वेदनं *2)* मर्दनं *3)* मूर्च्छन *4)* उत्थापनं *5)* पातन *6)* बोधनं *7)* नियमन *8)* दीपनं *9)* गगनभक्षण *10)*चारण *11)* गर्भद्रुती *12)* बाहयद्रुती *13)* जारणा *14)* पारदरंजन *15)* सारण *16)* संक्रामण *17)* वेधकर्म *18)* शरीरयोग (र.र.स.) *19)* अनुवासन (आ.प्र.)
* *1, 4, 7, 8* - दोलायंत्र में स्वेदन.
* *2,3* - तप्तखल्व में.
* *5* - उर्ध्व *OR* अधः पातन यंत्र में
रोधन (बोधन) - कांचकूपी में द्रव स्थापनार्थ. (सृष्टयम्बुज)
प्रथम *5* संस्कार - पारद शुध्दि
शेष *3* संस्कार - पारद में बुभुक्षा उत्पन्न
देहसिध्दि के लिए - *8* संस्कार.
लोहसिध्दि के लिए - *18* संस्कार
* **पारद** मृत - जीवन, अमर, मूर्च्छित - व्याधिहर,
बध्द - मोक्षप्राप्ति. संदर्भ - रसार्णव.
* उर्ध्वपतन - *Sublimation*
* तिर्यकपातन - *Distillation* (हिंगुलोत्थ से पारद)- 3 दिवस
* अधःपातन - *Type Of Sublimation*
1. स्वेदन - मलशैथिल्यकारकम, (द्रव्य– क्षार अम्ल)
2. मर्दन - बर्हिमलनाशन, रसोपयोगी प्रभावकारी
3. मूर्च्छन - नष्टपिष्टत्वकारकं मूर्च्छनम, त्रिदोषविनाशन
(द्रव्य : कुमारीस्वरस, त्रिफला, चित्रक, *etc)*
4. उत्थापन - मूर्च्छाव्यापत्तीनाशनम् स्वरुपपादनम्
5. पातन उर्ध्व - औपाधिक दोष नष्ट; नाग वंग परित्यज्य.
अधः - नाग वंग, रसायन योग्यामवं (त्रिफला)
तिर्यक - कर्मकारी भवत ध्रुवम, यौगिक दोषनिवारण
6. बोधन (रोधन) - वीर्य प्राप्योती, षंढत्व निवारणार्थ .
7. नियमन - चापल्य निवृत्तये. वीर्योत्कर्ष, वान्हिमित्रत्व प्राप्त
8. दीपन - ग्रासार्थी जायते सूत, दीपनं, वीर्य तेजवृध्दि
* पारद को *5* संस्कार के बाद षंढत्व प्राप्त.
(पारद तिर्यकपातन से स्वाभाविक, यौगिक, कंचुक दोषों से रहित)

8)* पारद गतियाँः *5
i) जल - प्रक्षालित जल को अग्निपर सुखाकर, ii) हंस,
iii) मल - iv) धूम, v) जीव - अदृश्य, (रोकना *difficult)*
* पारद के अष्ट संस्कार बाद 'अष्टमांशावशिष्यते' ***due to above*** गतियाँ
9) जारणः पारद अपने अंदर अभ्रक, गन्धकादि द्रव्यों को बिना गालन, पातनादि क्रिया के जीर्ण करले, तथा इससे पारद की मात्रा, स्वरूप में कोई परिवर्तन न हो।
दीपन पश्चात् *4* संस्कार (*i. e.* गगनभक्षण, चारण, गर्भद्रुति,बाह्यद्रुति) के बाद जारण संस्कार
भेदः i) भूचरीजारणा, ii) खेचरी जारणा (रत्नों की जारणा)

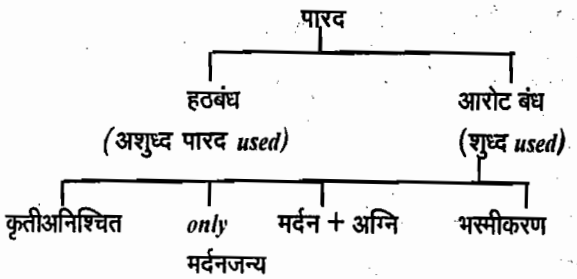

कृतीअनिश्चितः a) महाबंध, b) अग्निबंध, c) खोटबंध.

only मर्दनजन्यः 1) क्रियाहीन (धातु अशुध्द), 2) पिष्टिका, 3) क्षारबंध (शंखादि भस्म), 4) जलबंध (शिलातोय सह), 5) कज्जली बंध (गंधक)

मर्दन + अग्नि : 1) पोट बंध - पर्पटी, 2) आभास बंध - धातु + वनस्पती, मर्दन - पुटपाक, 3) कल्क बंध - (पारद स्वेदनादि क्रिया पंकवत्)

भस्मीकरणः 1) अरोट - एकबार भस्म,

2) निर्जीव - अभ्रक-गंधकजारण, 3) सजीव - अग्निक्षमत्व न होना *i. e.* (उड़जाता है), 4) सबीज - अभ्रक, रजत, ताम्र *6 Times* गंधक, *5)* श्रृंखला - रत्नमारीत + वनस्पती मारित, 6) बालक -सम अभ्रक, 7) कुमार -व्दि अभ्रक, 8) तरुण - *4* अभ्रक, 9) वृध्द - *6* अभ्रक, 10) मूर्ति - वनस्पती, 11) सुसंस्कृत वनस्पती + धातु,

12) निर्बीज - सुवर्णजारण + गंधक

10) मूर्च्छनाः मूर्च्छित्वा हरति रुजम।..... (रसहृदयतन्त्र)

रोगनाशक शक्ति उत्पन्न, देहसिध्दि

मूर्च्छना भेद

सगन्धमूर्च्छना	निर्गंधमूर्च्छना	साग्निमूर्च्छना	अनाग्निमूर्च्छना
	मुग्धरस	रससिंदुर	कज्जली
कज्जली	रसपुष्प *(Hg_2Cl_2)*	मकरध्वज	मुग्धरस
रससिंदुर	रसकर्पुर *($HgCl_2$)*	मल्लसिंदुर	
मकरध्वज		तालसिंदुर	
मल्लसिंदर		शिला सिंदुर	
तालसिंदर		समीरपन्नग	
शिलासिंदुर		रसपर्पटी	
समीरपन्नग		रसपुष्प	
रसपर्पटी		रसकर्पुर	
आरोग्यवर्धनी			

अंतर्धूममुर्च्छना	बहिर्धूममूर्च्छना	निर्धूममूर्च्छना
समीरपन्नग	रसकर्पुर	
सर्वांग सुंदर	रससिंदुर	
	मल्लसिंदुर	

सगन्धमूर्च्छनाः *5* प्रकार

i) गन्धपिष्टी, ii) गन्धबध्द, iii) गन्धजीर्ण, iv) रसगन्धकज्जली v) धातुपिष्टी- मकरध्वज, सुवर्णसिंदुर, स्वर्णवंग, सर्वधातुपिष्टी

* हिंगुलोत्थ पारद प्राप्त *by;*

1) उर्ध्वपातन यंत्र से पातन,

2) कन्दुक/डमरू से उर्ध्वपात कर.

मूर्च्छित पारद औषध वर्गिकरण

कूपीपक्वरसायन	खरलीयरसायन	पर्पटीरसायन	पोट्टलीरसायन
रससिंदुर	कज्जली	पर्पटीनाम	पोट्टली नाम के
मकरध्वज	वसन्तमालती	के कल्प	कल्प
मल्लसिंदुर	वसन्तकुसुमार		
ताल सिंदुर	रसराजरस		
शिला सिंदुर	योगेन्द्ररस		
समीरपन्नग	कृष्णचतुर्मुख रस		
रसकर्पुर	मृत्युंजय रस		
रसपुष्प	रत्नागिरी रस		
स्वर्णवंग	आरोग्यवर्धनीरस		
रसमाणिक्य	त्रिभुवनकीर्ति रस		
	कर्पुररस		

मूर्च्छना	मूर्च्छन	जारणा
1) रोग शान्त्यर्थ	दोष हरणार्थ	धातुवाद में उपयोगी
2) पारद सेवन योग्य बनाना	नाग वंगादि दोष को मूर्छित	इस रूप में सेवन में अनुपयोगी
3) निश्चित रूप से रोग शान्त	पारद स्वरूप नष्ट	रोग नष्ट नही होते.

11) पर्पटी

* पलाश बीज को पर्पट संज्ञा है।

* पर्पटी प्रयोग *for 40 days* (*1* चक्र/मण्डल)

पर्पटी वर्णन *1st by* चक्रपाणिदत्त - *11* शतक *4* पर्पटी वर्णन.

पर्पटी पाकः 3 प्रकार (र.तं.)

i) मृदुपाक - कृष्ण, बिना चमक, उपयोग योग्य मयुरचंद्रिकाभ.

ii) मध्यपाक - कृष्ण, चमकदार, सर्वोत्तम, तैलाभ.

iii) खरपाक - दबाने पर चूर्ण, निरूपयोगी रक्तवर्ण (अरुणवर्ण) रूद्रपर्पटी खरपाकी उपयोग करें ।

1) **रसपर्पटी** - पारद + गंधक *(1:1)* - ग्रहणी (भै. र.)

(*2 - 8* गुंजा) महौषध *for* ग्रहणी *with* केवल दुग्धाहार

2) **लोह पर्पटी** - *P–G–*कांतलोह *(1:1:1)* संग्रहणी (भै. र.)

(PGK = 1:1:1) (1-2 गुंजा) *(P =* पारद *G =* गंधक *)*

3) **ताम्रपर्पटी** - *P+G–*ताम्र +वत्सनाभ *(3:3:3:1) with* पिप्पली+मधु *(PGTV = 3:3:3:1)* - कास (यो.र.)

(कुष्ठांत पर्पटी) *(1-2)* गुंजा *(R.R.S.) with* बाकुची चुर्ण - कुष्ठ

4) **स्वर्ण पर्पटी** - *P+G–* स्वर्ण *(4:4:1)* संग्रहणी (भै. र.)

1 रत्ती *with* शहद *or* भूना जीरा.

5) **पंचामृतपर्पटी** - G+P+कांतलौह+वज्राभ्रकभस्म+ताम्र *(8:4:2:1:1 2)* संग्रहणी (भै. र.)

(GPLAT = 8:4:2:1:1 2) 2 रत्ती *with* शहद

6) **विजय पर्पटी** - *G–P–*रौप्य स्वर्ण वैदूर्य मुक्ता *4:2:1:1 2:1 4:1 4)* संग्रहणी (भै. र.) *2* रत्ती *with* शहद

7) **गगन पर्पटी** - *G+P –* अभ्रक *(2:1:1)* संग्रहणी

(1-3) रत्ती - (सिध्दयोगसंग्रह)

8) **बोल पर्पटी** - *G–P –* बोलचूर्ण *(1:1:2)*

(3-6) रत्ती - रक्तपित्त (यो.र.)

9) **श्वेत पर्पटी** - सूर्यक्षार + स्फटिक+ नौसादर *(16:2:1)*/गंधक+सोरा (क्षार पर्पटी) - *(5-10)* रत्ती - मूत्रकृच्छ (सिध्दयोगसंग्रह)

10) **मुग्धरस** - *P+* खटिका *(1: 2)* - फिरंग - *(0.5-2.5)* रत्ती

11) **रससिंदुर** - *G+P (1:1)* + नौसादर रसायन - *(1-2)* रत्ती - (रसयोगसागर) रससिंदूर -पारदः गंधक 6:1

12) **मकरध्वज** - *G–P* + स्वर्ण *(16:8:1)* रसायन वाजीकरण (चंद्रोदय रस) *(0.5-2)* रत्ती भावना: रक्तकार्पासपुष्प (रसेंद्रसारसंग्रह) कुमारी स्वरस

13) **सिध्दमकरध्वज** - *G+P* + स्वर्ण *(16:8:4)* भावना -नागवेल्ली पत्र

14) **रसपुष्प** *(Calomel)* - पारद + कासीस + सैंधव *(1:1:1)* *(PKS= 1:1:1)* - *(0.5-2.5)* रत्ती

फिरंग में = *1 4* रत्ती; हिक्का में = *1 2* रत्ती; विरेचनार्थ = *2.5* रत्ती

15) **रसकर्पुर** - *P+* टंकण + मधु + लाक्षा + ऊन *(1:1:1:1:1)*

+ गंधकाम्ल - सैंधव *(1:11 2:1)* $\frac{1}{64}$ - $\frac{1}{32}$ रत्ती (र. त.)

6) **सुवर्ण वंग** - *P+G* + वंग + नौसादर + सुर्यक्षार *(1:1:1:1:1/8)*

(1-2) रत्ती - शुक्रल, उपदंश *etc* सुवर्ण (०)

7) **समीरपन्नगरस** - *P+G* + मनःशिला+हरताल+ गौरी पाषाण *(1:1:1:1)*

(1 2-2) रत्ती - भावनाः तुलसीपत्र स्वरस - सन्निपातज्वर

18) **मणीपर्पटी**	:	नासारोग
19) **सर्वेश्वर पर्पटी**	:	विद्रधी
20) **भैरवनाथ पंचामृत पर्पटी**	:	तृष्णा

21) **सप्तामृत पर्पटीः** (P+G+ नाग + वंग +कान्तलोह +वज्राभ्रक +ताम्र)

a) *NO PG* - (मल्ल, क्षार/श्वेत) पर्पटी

b) *NO P* - (अभ्रक, शीतल) पर्पटी

c) *NO G* - (श्वेत, भल्लातक) पर्पटी

कंठस्थ	:	रसकर्पूर, मल्लसिंदुर, रससिंदुर, मकरध्वज
तलस्थ	:	समिरपन्नग, स्वर्णवंग
उभयस्थ	:	चंद्रोदय रस (सिध्द मंकरध्वज),माणिक्यरस

पारद बंध *25* ..... ***(R. R. S.)*** अन्य आचार्य *26*

बंध - येन येन हि चांचल्यं दुर्ग्रहत्वंच नश्यति ।

रसराजस्य सम्प्राक्तो बन्धनार्थो हि वातिकैः ।। ..... *(R. R. S.)*

1. हठबन्ध - शुध्दिविवर्जितः से मृत्यु ***or*** व्याधी.

2. आरोट - क्षेत्रिकरण श्रेष्ठः, शनैर्व्याधिनाशनः सुशोधीत

3. आमास - स्वाभावताम, गुणवैकृते.ः धातुमुलादयैः पुटीतो

4. क्रियाहिन - विक्रियां यात्यपथ्यतः असंशोधीत लोहादयैः

5. पिष्टिका - तीव्रतापे मर्दन; दीपन पाचनकृत्

6. क्षार - शंखशुक्तिवराटाद्यै; शूलनाशन, दीप्तिपुष्टि. नवनीत रुपा

7. खोट - ध्मातो ध्मातः क्षयं; शीघ्रं सर्वगदापह

8. पोट - मोचापत्रके बालाद्याखिलरोगनुत

9. कल्क - स्वेदाद्यैः पंकत्व; योगोक्तफलदायक

10. कज्जली - रस गंधोत्था, सुश्लक्ष्णा, निद्रवो.

11. सजीव -भस्म वन्ही संयोग से उड़ जाए; न करोति जराव्याधि विनाशन.

Useless बंध.

12. निर्जीव - जीर्ण अभ्रक, गन्धक का जारण; रोगान्विनिहन्ति सद्यः

13. निर्बीज - पादांशसुवर्णजीर्ण; सकलामयघ्नः

14. सबीज - षड्गुणागन्धकेन; विपुलप्रभावः अभ्रकसत्व

15. श्रृंखलाबन्ध - देहलोहविधायकः हतःसुतो

16. द्रुति - निहन्ति दुस्साध्यरोगान.

17. बालक - समाभ्रजीर्णः; रसायनो भाविगदापहश्च.

18. कुमार - त्रिःसप्तरात्रैः पापरोगसंघात; व्दिगुणाभ्र

19. तरूण - चतुर्गुणव्योमकृत; सप्तरात्रात वीर्यबलप्रदाता.

20. वृध्द - अभ्रक षड्गुणो जीर्णः; देहे च लोहे शिवादृते.

21. मूर्ति - दिव्यमूलिकाभिश्च; निरौपम्यफलप्रदः अग्निसहो

22. जल - शिलातोय; जरारोगमृत्यूघ्नः

23. अग्नि - गुटिकाकृति; जरारोगमृत्युघ्नः अग्निबध्दो खेचरत्वात.

24. सुसंस्कृत, *25.* महाबन्ध

26. जलूकाबन्धः *P* – स्वर्ण *(1:1/2) orP*– नाग *(1:1/4)* तप्तखल में मर्दन

प्रकार : 3 (वा.)

जलुकाकार -	बाला	- 8 अंगुल लम्बा	- 16 वर्ष तक
वलयाकार -	युवती	- 10 अंगुल लम्बा	- 32 वर्ष तक
गुटीकाकार -	प्रगल्भा	- 12 अंगुल लम्बा	- 50 वर्ष तक

* पारद सेवन काल में ककराष्टक गण वर्ज्य है ।

(कुष्माण्ड,ककडी,कलिंग,कारवेल्लक,कुसुम्भ,कर्कोट,कदली,काकमाची)

क्षेत्रीकरण - पंचकर्मसे शुध्दि पश्चात् रससेवन

* अशुध्द पारद सेवन से रसाजीर्ण *may lead to* मृत्यु

रसभस्म सेवन में महान दोष - *21* दिन में व्यक्ति कामान्ध होता है.

* रसभस्म सेवन से *21* दिन मे मृत्यू होती है ।

1) नीलम - नीलाश्म,

2) राजावर्त - नीलाश्मा

3) गंधक, वंग - पूतिगंध

4) शिलाजतु, गैरिक- गैरेय

5) रसांजन, हिंगुल-रसोद्भव

6) स्फटिक - शिवप्रिय, शिखिप्रिय — शिवरत्न = स्फटिक

7) वज्र - भार्गवप्रीय, भृगुप्रिय. — शिवप्रीतीकर = चंद्रकांत

8) मौक्तिक - शशिप्रिय

9) माणिक्य - रविप्रिय

10) रजत - चंद्रलोह

11) ताम्र - सूर्यलोह/भानु, लोहीतायस

12) लौह - शस्त्रलौह

13) नीलांजन - लोहमार्दवकर

14) हिंगुल - लोहघ्न

15) मंडूर - लोहमल, लौहभव, लोहच्छिष्ट

16) गैरिक - लोहधातु

17) विंग - शुक्रलोह, शक्रलोह

18) पित्तल - कपिलोह

19) कांस्य - दिप्तलोह/ वन्हीलोह

20) वर्तलोह - पंचलोह

21) हरताल - लौहमृत

22) माणिक्य - रविरत्न

23) मौक्तिक - शशिरत्न

24) प्रवाल - भौमरत्न

25) तार्क्ष्य - बुधरत्न

26) पुष्पराग - गुरूरत्न

27) गोमेद - राहुरत्न

28) वैक्रांत - शोभामणि

29) प्रवाल - अंगारमणि, लतामणि

30) तार्क्ष्य - गरूडमणि, हरीन्मणि

31) पेरोजक - हरीन्मणि, हरिताश्मा

32) व्योमाश्म - हरिन्मणि, हरिताश्म

33) पुष्पराग - पीतमणि, मंजुमणि

34) गोमेद - तपोमणि

35) चंद्रकांत - चंद्रमणि

36) स्फटिक - स्वच्छमणि, अंबुमणि

37) राजावर्त - आवर्तमणि

* विद्रुम - लतामणि

38) नीलम, तृणकांत - तृणग्राहि

39) वज्र - कुलीश

40) वैक्रांत - क्षुद्रकुलिश

41) सस्यक - ताम्रगर्भ

42) माक्षिक - ताम्रगंधायास

43) खर्पर - ताम्ररंजक

44) यशद,रसक - त

45) हिंगुल - रंजन

46) वंग - रंगक

47) कंकुष्ठ - रंगदा

48) कांक्षी - रंगदा,

49) नाग - कुरंग

50) वैडुर्य - विदूररत

51) सूर्यकांत- रविरत

52) नीलम - शनीरत

53) स्फटिक - शिव

* पारद *No React*

* पारद का अयसक

* पारद & रसक -

* कासीस निर्माण -

* सस्यक - भूनाग

भूनाग सत्व से **cu** प्रा

* ताम्रगर्भ - सस्यक

नयननौषध - पुष्पका

नेत्ररोगारि - रसक

ताम्ररंजक - रसक

* रससिंदुर + वैक्रांत

* सस्यक - कुष्ठ,

वज्र	- अभ्रक,
अम्बर	- अभ्रक,
गिरीज	- अभ्रक,
व्योम	- अभ्रक,
शैल	- चपल,

बिडालक - हरताल

बिडालाक्ष - वैडुर्य

वंगारि - हरताल

श्रृंगारि - माणिक्य

नेत्र रोगारि - रसक,

कुष्ठारि, पामारि, शु

शुल्ब - ताम्र

पक्व बिम्बफलच्छायं

पक्व जम्बु फलच्छायं

गंगाम्बुसम्भूतं

गंगातोयबिंदुच्छवि

अभ्रक वैक्रान्त माक्षिव

दपलो रसकश्चेति इ

माक्षिको विमलश्चैव

सस्यकं चपलं शैलं

महारस *8 (RRS),*

रसहृदयतंत्र - अ

गो. सं. - कांतलोह

) अभ्रक (बहुपत्र, प्र

प्रकार 5 (भुगर्भश

) *Paragonite H.*

44) यशद,रसक - ताम्ररंजक
45) हिंगुल - रंजन
46) वंग - रंगक
47) कंकुष्ठ - रंगदायक
48) कांक्षी - रंगदा, रगदृढ, रंगदात्री, दृढरंगद
49) नाग - कुरंग
50) वैडुर्य - विदूररत्न, केतूरत्न
51) सूर्यकांत- रविरत्न
52) नीलम - शनीरत्न
53) स्फटिक.- शिवरत्न

* पारद *No React with Fe & Platinum Metal*
* पारद का अयसक - हिंगुल *& vice versa*
* पारद & रसक - श्रेष्ठसिध्दरस.
* कासीस निर्माण - i) रौप्य माक्षिक, ii) *Action of H_2SO_4* विमल-प्रभाव से
* सस्यक - भूनाग सत्व - वज्रद्रावण

भूनाग सत्व से **cu** प्राप्ती
* ताम्रगर्भ - सस्यक

नयननौषध - पुष्पकासीस
नेत्ररोगारि - रसक
ताम्ररंजक - रसक
* रससिंदुर + वैक्रांत अभ्रकसत्व - *all* पाप नाश
* सस्यक - कुष्ठ, उपदंश, फिरंग

वज्र - अभ्रक, हीरा	ख - अभ्रक
अम्बर - अभ्रक, वन्हीजार	खग - कासीस
गिरीज - अभ्रक, शिलाजतु, गैरिक	रेचक- कंकुष्ठ
व्योम - अभ्रक, शिलाजतु	रेचन - कंपिल्लक
शैल - चपल, शिलाजतु	
	रीतिज - पुष्पांजन
विडालक - हरताल	रीतिका - पित्तल
विडालाक्ष - वैडुर्य	रीतिहेतु - खर्परसक
वरारि - हरताल	मंगल्य - गिरीसिंदुर
भृगारि - माणिक्य	मांगल्य - सुवर्ण
नेत्र रोगारि - रसक, यशद	
कुष्ठारि, पामारि, शुल्बारि - गंधक	
शुल्ब - ताम्र	

पत्र बिम्बफलच्छायं - प्रवाल
पत्र जम्बु फलच्छायं - कांतलोह भस्म
गाम्बुसम्भूतं - नीलगंधि माणिक्य
गगातोयबिंदुच्छवि - स्फटिक

महारसः

अभ्रक वैक्रान्त माक्षिक विमलाद्रिज सस्यकम्।
चपलो रसकश्चेति ज्ञात्वा ऽष्टौ संग्रहेद्रसान ।।...(र. र. स.)
माक्षिको विमलश्चैव रसो वैक्रान्तमेव च ।
सस्यकं चपलं शैलं सप्त एव महारसः ।।....(रसोपनिषद्)
* महारस *8 (RRS), 7* (रसोपनिषद्), (हिंगुल - महारस) रसार्णव
* रसहृदयतंत्र - अभ्रक & चपल *absent* & कांतलोह,हिंगुल *present*
* गो. सं. - कांतलोह, & चपल *absent* & अभ्रक, हिंगुल *present*

1) **अभ्रक** (बहुपत्र, प्रज्ञाबोध)
* **प्रकार 5 (भुगर्भशास्त्र):** *i) Muscovite $H_2KAL_3(SiO_4)_3$*. मुल्यवान
ii) Paragonite $H_2NaAl_3(SiO_4)_3$
iii) Biotite - Black श्रेष्ठ - कृष्णाभ्रक
iv) Phlogopite - Amber Mica
v) Lepodolite $KLi[Al(OHF)_2]AL(SiO_4)_3$

प्रकार *2 (Modern)*
i) Ferrmagnesium Mica (Fe+mg)
ii) Alkaline Mica (Na+K)

16 **प्रकार वर्णभेदानुसार**

* **अभ्रकदोष** *4 - i)* पार्श्वपीडा, *ii)* पांडुरोग, *iii)* शोथ, *iv)* कुष्ठ
* अभ्रक भस्म - *red* (इष्टीकाभवर्ण) *but,*

अमृतीकरण बाद - *black* मंजिष्ठाक्वाथ, भावना, (लोहीतीकरण)
अभ्रक शोधनः *i)* कांजिक /गोमूत्र/ त्रिफलाक्वाथ/विशेषतः गोदुग्ध
धान्याभ्रक : अभ्रक + धान्य *(1:1 4)*
चूर्णाभ्र + शालि - *1* पाद - *for 3* दिन बहिक्वाथ

* परिक्षा :	* पुट (मारण)
i) दन्ताग्रेकचकचाभावः	अभ्रक - *10* गजपुट
ii) निश्चंद्रत्व	वैक्रांत - *8* गजपुट
* अशुध्दसेवन से मेहं, मन्दानलं.	विमल
सचंद्र, अभ्रक सेवन से प्रमेह	माक्षिक - *5* वराहपुट
	शिलाजतु - *8* कपोत
* *5* संस्कार *of* अभ्रक (आनंदकंद)	सस्यक - *8* कुक्कुट

i) शोधन, *ii)* धान्याभ्रक करण, *iii)* मारण (लोहीतकरण)
iv) अमृतीकरण -अभ्रक + गोघृत - कुमारीस्वरस भावना
v) सत्वपातन
* उपयोग: i) रसायनार्थ *(100-1000)* पुट ii) रोगनिवारणार्थ *(10-100)* पुट
* कोडरमा की अभ्रक खान विश्व प्रसिध्द है।
* वैक्रांत - महारस + उपरत्न
* शिलाजतु *no* मारण & सत्वपातन
* कर्पूर शिलाजतु - *used of KNO_3* भावना *of* एलातोय *for* शोधन

अभ्रकः i) 1st उल्लेख - कौटिल्य अर्थशास्त्र
ii) 1st चिकित्सीय उपयोग कासीसादि तैल (अर्श) अ.हृ.

2) वैक्रांतः i) प्राप्ती - विन्ध दक्षिणभाग

ii) प्रकार	घनत्व	काठिन्य
Tourmaline	3	7.7
Flourspar	2.5	6.7

iii) वैक्रांतरसायन - पारदभस्म + नील वैक्रांतभस्म + अभ्रकसत्व
(1:1:1 with मधु + घृत - 21 दिन मर्दन) असाध्य रोग नष्ट (all पाप नाश)

3) माक्षिकः i) 1st Ref - चरक, ii) देहलोहकरोपरम
iii) परिक्षा - दंताग्रकेचकाभाव, iv) अशुध्द सेवन -निर्बलता,कुष्ठ,गंडमाला
v) माधवे मासि दृश्यते.

4) विमलः

5) शिलाजतुः i) प्रकारः 6 (सु.,वा.) - नाग, वंग extra: also
2 (रसार्णव) पातित, अपातित, ii) अशुध्द सेवन - विबंध.
शिलाजतुः प्रकारः 2 - सूर्यतापो - सर्वोत्तम, अग्नितापो
प्रकारः 3 a. - हेमगर्भ शिलाजतु-जपापुष्प वर्ण, परिक्षा, b. तारगर्भ - पांडू वर्ण c. ताम्रगर्भ - नील वर्ण परीक्षा - i) अग्निपर धुँआ निकलता है
ii) लिंगाकार फुलता है, iii) H_2O में insoluble

6) सस्यकः Natural सस्यक * रसक प्रकार Calomine-$ZnCO_3$
तुत्थ - Artificial * Smith stone
* पाषाणाभ - ZnS
* खर्पर सत्वपातन से रसक प्राप्त. * रसक सत्व - खर

Chemical Name	पर्याय	प्रकार	ग्राह्यग्राह्य	गुणधर्म	शोधन	मारण	सत्वपातन	मात्रा	कल्प
Symbol		(4)		100	कांजी,	अभ्रक	धान्याभ्रक	120-240	i)बृहत्वातचिंतामणि
अभ्रक	अनंतपत्र, ख	i) पिनाक -	श्वेत कृष्णवज्र	पुटी	त्रिफला	+गुड+	A-टंकन	mg	ii) चंद्रकलारस
Mica	अन्तरिक्ष, घन	(मलसंग, मृत्यु)		अभ्रक,	विशेषतः	एरंडपत्र	(1 4) -		iii) वसंतकुसुमाकर
Biotite	अभ्र, बहुपत्र,	ii) नाग - पीत		अमृतसम	गोदुग्ध	वटपत्र (3 पुट)	नुसलीस्वरस		iv) महालक्ष्मी विलासरस
Musscovite	अम्बर, व्योम	(मंडलकुष्ठ)		VPK घ्न	7 भावना	सिंदुराभ वर्ण	(3 भावना)	10 पुटी =	v) नागार्जुनाभ्ररस
Paragonite	आकाश	iii) मण्डुक -		प्रमेह,	गजपुट	(इष्टिकाचूर्ण)	विद्याधर यंत्र	120-240 mg	
Phogopite	वज्र	रक्त (अश्मरी)		पांडु,		गजपुट		or (1-2 रत्ती)	
Lapidolite		iv) वज्र - कृष्ण		कृमीग्रंथी				100 पुटी =	
		श्रेष्ठ (वर्णभेद 16)						60-120 mg (1/2-1 रत्ती)	
		(देहसिध्दी						1000 पुटी =	
		लोहसिध्दी)						15-60 mg	
								(1/4-1/2) रत्ती	
वैक्रांत									
Blood Of Mahisasura	कुवज्र,	(8) वर्णानुसार				(वैक्रांत+गंधक)		अंधमूषा (5-10) mg	
	चुर्णवज्रक,	(RRS.रसेंद्र चुडामणी)		कृष्ण-देहसिध्दि		i)रत्नप्रभावटी			
				VPK घ्न		+ निंबु स्वरस	with	(1 24-1 11) रत्ती	ii)वसंतकुसुमाकर
Rock	क्षुद्रकुलिश,	श्वेत, पीत		बल्य	दोलायंत्र	8 गजपुट	सत्वपातनद्रव्य	रूद्रांशप्रमितं	iii)सुचिकाभरणरस
Crystal/	जीर्णवज्रक	रक्त, कृष्ण		दिपन	कुलत्थ		इंद्रगोपवर्ण		
Flour Spar/		नील		विषघ्नो	तीन दिन		(रसार्णव)		
							श्वेतवर्ण= R.R.S.		
Tourmaline		परावत	मिश्रितवर्ण -	रसराजस्य					
$KAl_3O_3 6SiO_2$		श्याम	श्रेष्ठ						
		कर्बुर							
		रसार्णव = 7							
माक्षिक					निर्वाप				
Copper pyrite	सोनामुखी,	(2) (R.R.S.)	सुवर्ण	16KU	त्रिफला	माक्षिक- गंधक	M- 1 4	60-120 mg.	i) गर्भचिंतामणिरस
Iron pyrite	रूपमुखी,		श्रेष्ठ	लघु	क्वाथor	+ निंबु स्वरस	टंकण +नीबु		ii)चंद्रप्रभावटी
(20% ताम्र)	तापीज	i) सुवर्णमाक्षिक		PK घ्न	केला		स्वरस)		
	धातुमाक्षिक,	chelko p. or		योगवाही,	का	5 वराह पूट मूषा			
	ताप्य,	copper p.		रसायन	कंद in	सिंदूराभ वर्ण or			
	मधुधातु,	$(Cu_2SFe_2S_3)$		जीर्णज्वर	दोलयंत्र,	स्वर्णगैरिकसम			
	तार	ii) रौप्य माक्षिक		अपस्मार	भृंगराज				
		(रजत)		नेत्र्य					
		(Fe_2S_3)							
		3) कास्य माक्षिक							
		औषधी श्रेष्ठ							
विमल									
Iron Pyrite	no पर्याय	(3)	कास्य	45KU	वासा	विमल - गंधक +	(V टंकण or	60-120 mg.	i) क्षयकेसरी
Fe_2S_3	cubic	i) कांस्य -औषधी		VP घ्न,	स्वरस	लकुच स्वरस	मेषश्रृंगी		ii) रसेंद्रचुडामणि रस
1st वर्णन by	sulphide	श्रेष्ठ		वृष्य	3 भावना	10 गजपुट	लकुच भावना)		iii) नवरत्नराज
रसार्णव	of iron.	ii) रौप्य		रसाजन		लाल वर्ण भस्म	6 प्रस्थ कोयला मूषा		मृगांक रस
AS_2S_3		iii) सुवर्ण -					सत्व रूप मे Fe		
FeS_2							निकलता है		वर्ण = चंद्रार्कसंकाश
(D. A. Kulkarni)									

महारस	घनत्व	काठिन्य	सत्व	दोषनिवारण	भस्म मारण पश्चात
	s.g.	Hardness		(निर्विष)	
अभ्रक	3	2-3	-	उमाफल	सिंदुराभ
वैक्रांत	3-3.2 /2-5	6-7/ 7.7	इंद्रगोपसम	-	-
माक्षिक	5	6	गुंजाबीज सम	कुलत्थ & दाडिमक्वाथ	सिंदुराभ
विमल	5.2	6.2	चंद्रार्क संकाश	मेषश्रृंगी चुर्ण	रक्त
शिलाजतु	-	-	-	मरिच + घृत	-
सस्यक	-	-	इंद्रगोप संकाश	-	-
चपल	9.7	2-2.5	-	-	-
रसक	-	-	वंगाभ	गोमूत्रपान 1 सप्ताह	

(1 = मधुर 2 = अम्ल 3 = लवण 4 = कटू 5 = तिक्त 6 = कषाय M मधुर (विपाक) 5 शित, U = उष्ण वीर्य)

Chemical Name	पर्याय	प्रकार	ग्राह्यग्राह्य	गुणधर्म	शोधन	मारण	सत्वपातन	मात्रा	कल्प
शिलाजतु Black Bitumen Mineral Pitch L.N. Asphaltum Punjabinum	अतिथी, शिलाह्य अश्मसार, शैल, गिरिज, शैलेय, आद्रिज, शैलोद्भव	(2) i)कर्पुर गंधी KNO_3 ii) गोमूत्र गंधी Black Bitumen also (4) - (च; RRS) i) सुवर्ण ii) रजत iii) ताम्र iv) लोह - रसायन में श्रेष्ठ (सु. वा. = 6 नाग, वंग अधिक वर्णन) * गो मुत्र गंधी रोग दूर करने में श्रेष्ठ.	ससत्व & सुवर्ण कृष्णवर्ण श्रेष्ठ	54KU कफघ्न	with क्षाराम्ल/ गोमुत्र/ गोदुग्ध/ भृंगराज/ स्वरस	मनशिला- (M) हरताल (H) Shilajatu (S+MH+ गंधक) मातुलुंग स्व. (कपोतपुट)	Shilajatu *with* द्रावकवर्ग	(1-3-7सप्ताह) च. नुसार पर -1 पल मध्य - 1/2 पल अवर - 1 कर्ष *also* 250mg - 1 gm.	i) आरोग्यवर्धिनी ii) चंद्रप्रभावटी iii) ताप्यादिवटी iv) सर्व मेहान्तकरस v) शिवागुटिका
सस्यक Copper Sulphate BlueVitriol गरुडवमन जमकर निर्मित Peacock Ore $CuSO_4 .5H_2O$	तूतीया, वितुन्नक अमृतासंग, शिखिग्रीव, ताम्रगर्भ, तुत्थ	(2) i) सहज ii) कृत्रिम (2) i) कालिका ii) रक्त - श्रेष्ठ	कृत्रिम	विषघ्न, वामक त्रिदोषघ्न, KU अशुध्द सेवनसे वमन & भ्रम	withनिंबु स्वरस 3 भावना स्नेहवर्ग 7 भावना	सस्यक +टंकण + गंधक लकुच भावना 3 पुट कुक्कुटपूट	S +1/4 टंकण निंबु स्व. 3 पुट कुक्कुटपूट ताम्रवर्ण (इंद्रगोप)	15-30 m g	i) महाज्वरांकुशरस. ii) महामृत्युंजयरस iii) जात्यादि तैल
चपल Bismuth ore (Bi) D.A.K. ईश्वर के नासारंध्रका मल (रसकामधेनु) * माक्षिक के खान उत्पन्न Selenium (R. T.)	शैल	(4) RRS i) गौर ii) श्वेत i & ii रसबंधन iii) अरूण iv) कृष्ण (6) रसकामधेनु सुवर्ण, रजत, ताम्र, नाग, वंग, तीक्ष्ण	स्फटिक 6 कोन	5MU लेखन स्निग्ध, देहलोहकर	with+ जंबीर कर्कोट + आद्रक ↓ 7 भावना	नहीं	---	---	---
रसक Zinc Carbonate/ Calamine/ Zinc Ore / Smith Sonite	खर्पर, जस्त ताम्ररंजक यशद कारक नेत्ररोंगारि रीतिकृत	(2) RRS *i)* दर्दुर- सत्वपातनार्थ ii) कारवेल्लक - औषधी (3) i) पाषाणाम- ZnCo3 कनिष्ठ ii) गुडाम - ZnS मध्यम iii) मृत्तिका - ZnO श्रेष्ठ			*R*– बिजौरा निंबु ↓ 7 भावना	सैंधव/ गंधक ↓ मर्दन in बालुकायंत्र 1 दिन	(हरितकी शिलाजतु, भूनाग हल्दी, टंकण, लाक्षा) each 1/4 ↓ अंधमूषा मे ध्मापन वृंताकमूषा	60-250 m g	i) लक्ष्मीविलास रस ii) वसंतमालती रस iii) महाज्वरांकुशरस iv) प्रदरान्तक रस

उपरसः

उपरस	Chemical name	पर्याय	प्रकार	ग्राह्यग्राह्य	गुणधर्म	शोधन	मारण	सत्वपातन	मात्रा	कल्प
1) गंधक	Symbol Sulpher (s) कृष्ण - जरामृत्यूहर रक्त - धातुवाद पीत -रसायन श्वेत - श्रेष्ठ खटिका (लोहमारण) रक्त-शुकतुण्डाख्य पीत-आमलसार, शुकपिच्छाभ	सुतेद्रवीर्य कीटघ्न,गौरीपुष्प कुष्ठारी, नवनीत पामारि, दैत्येंद्र पूतिगंध, लेलीतक बलि, शुकपुच्छ सुगंध, शुल्बारी	(4) वर्ण (रसेंद्र) श्वेत,पित, रक्त,कृष्ण (3)(RRS रसार्णव) (2) modern i) sulphide ii) sulphate	श्वेत	i)धातुवाद ii)रेसाद iii)Allo-tropism	गोघृत, गोदुग्ध 3 बार/ भृंगराज स्वरस 7 बार.	नही	नही	(1-8) रत्ती गंधक रसायन (1/2-1) तोला	रससिंदुर मकरध्वज समीरपनग स्वर्णराजवंगेश्वर
2)गैरिक	Ochre(Fe_2O_3) Fe-70%	गिरिज गिरिमृत्तिका रक्तधातु लोहधातु	(2) (R.R.S.) i) पाषाण ii) स्वर्ण-श्रेष्ठ (3) (आ.प्र. रसार्णव-3 i) पाषाण ii) सामान्य iii) स्वर्ण i) रक्त ii) केवल iii) हेम	स्वर्ण	16KS पित्तघ्न विषघ्न श्वित्रघ्न बल्य	गोघृत मे भर्जन / गादुग्ध में भावना 7	नही	क्षाराम्ल स्वित्र	(2-4) रत्ती	कामदुग्धा लघुसुतशेखर, पुष्यानुग चूर्ण इरिमेदादि तैल जात्यादि तैल
3) कासीस	Ferrous sulphate ($FeSO_4$ $7H_2O$) Green vitrol	अयोगन्धाश्मभूत खग खेचर पांशुक	(2) i) बालु कासीस Green ii) पुष्प कासीस Yellow (3) (रसार्णव) श्वेत, कृष्ण, पीत, (4) आप्र रक्त	पुष्प कासीस औषधी श्रेष्ठ	केशरंजक रजःप्रवर्तक नेत्र्य, श्वित्रकुष्ठ	भृंगराज स्वरस दोलयंत्र/ स्त्रीरज	स्नुहीपत्र 7 भावना लघुपुट	क्षार अम्ल (लोह सत्व रूप में प्राप्त)	(1/2-2)रत्ति शहद के साथ	शंखद्राव रजःप्रवर्तनवटी कासीसादी तैल बृ.चिंतामणीरस श्वित्रारिरस
4) कांक्षी	Potash alum $K_2SO_4Al_2(SO_4)_3$ $24H_2O$ पारदाजारीणी H_2O निकालन के पश्चात 45 % remaining	स्फटीक, सौराष्ट्री फिटकरी दृढरंगा शुभ्रा	(2) (RRS) = ग्राह्य फटकी- पित फुल्लिका-श्रेष्ठ (2) (रसार्णव) कृष्ण (चुर्ण) सित (खण्ड)	श्वेत, गुरुजड	65211 योनी-धावन श्वित्र U. B.- उपदंश, नेत्र-विकार, केश्य	अग्नी पर फुला दें/ कांजी में 3 दिन	नही लघुपट	क्षार अम्ल Al सत्व स्वरुप में (गोपित्त 100 भावना)	(2-4) रत्ती	शंखद्राव एलादिमंथ चतुः सुधारस गरुडांजन श्वेतपर्पटी

उपरस

गंन्धाश्मगैरिकासीस कांक्षीतालशिलांजनम् ।

कंकुष्ठं चेत्युपरसाश्चाष्टौ पारदकर्मणि।....(R.R.S.)

आ. प्र. - 19, रसेंद्रसंग्रह - 20

गंधकः i) मणिमाकृति गंधक श्रेष्ठ

ii) Gypsum ($CaSO_4$) - गरम झरने के पास

iii) प्रकार (modern): Crystaline, Amorphus.

* Iron pyrite FeS_2
Copper Pyrite $Cu_2SFe_3S_3$
Galena PbS
Zinc Blande ZnS
Orpiment As_2S_3
Realgar As_2S_2

* Gypsum $CaSO_4 2H_2O$
Heavy spar $BaSO_4$
Salestone Sr So_4
Kiesrite Mg SO_4H_2O
Glouber Salt $Na_{26}O_4 10H_2O$

iv) गंधक द्रुती - नागवेली रस (गंधक के 1/6 त्रिकटु) अरत्नीमात्रा वस्त्र

v) गंधक रसायन - गोदुग्ध (3 भावना)

vi) वासुकी से निर्माण Possible

गैरिकः i) स्वर्ण गैरिक (Kidney Iron Ore)

सामान्य गैरिक (Haemotite) Fe_2O_3

पाषाण गैरिक (Haemotite) Fe_2O_3

हरतालः i) गोदंती हरताल Selenite (आ. प्र.)

मनःशिला - हरताल सम परंतु रक्त. आ. प्र. - a) स्त्रोत b) सौवीरांजन

कृत्रिमः पुष्पांजन, रसांजन.

सौवीरांजन	स्त्रोतोऽञ्जन	नीलांजन	पुष्पांजन	रसांजन
Stybnite Sb_2S_3	Antimany Sulphide Sb_2S_3	Lead Sulphide PbS (Galena)	Zinc Oxide ZnO	Extract Of Indian Berbries HgO
पर्याय कृष्णांजन सुवीरक	कपोतांजन यामुनेय	लोहमार्दवकारक वारिसम्भ्य सुवर्णघ्न शुक्रभूमिज	कुसुमांजन कौस्तुभ रीतिज रीतिपुष्पक	अग्निसार दार्वीक्वाथभव बालमैषज्य कृतक, तार्क्ष्यशैल
उपयोग सौदर्यवर्धन नेत्रविकार	सौदर्यवर्धन नेत्रविकार	सौदर्यवर्धन	नेत्रविकार	नेत्रविकार
शोधन त्रिफला क्वाथ	त्रिफला क्वाथ	जंबीर रस	-	दारुहरिद्रा क्वाथ +अजादुग्ध

अंजनः All अंजन सामान्य शोधन - भृंगराज भावना.

All अंजन सत्वपातन - *as* मनःशिला

रसांजन - सूर्यावर्तादियोग,रसांजन - Yellow Oxide Of Mercury by (Dr. Vaman Desai & D. A. Kulkarni)

उपरसः

उपरस	Chemical name	पर्याय	प्रकार	ग्राह्यग्राह्य	गुणधर्म	शोधन	मारण	सत्वपातन	मात्रा	कल्प
हरताल As_2S_3	Yellow arsenic Orpiment (Arsenic trisuphids)	खर्जुर, वंगारि चित्रगंध, बिडालक, नटभूषण, शैलूषभूषण, नटमण्डनक, वंशपत्र, पिंजर.	(2) (RSS, रसार्णव) i) पिण्डताल स्त्रीपुष्पहर ii)पत्रताल-श्रेष्ठ (तबकी King's Yellow)		46 KU VK घ्न, P प्रकोप नही, निर्धुमत्व	कुष्माण्ड स्वरस दोलयंत्र तील क्षारजल चूर्णोदक	पलाशमूल क्वाथ 3 भावना with माहिषमूत्र पुट भस्मयंत्र	आक दुग्ध+ तिलतैल बालुकायंत्र 7 प्रहर (श्वेत वर्ण)	(1/4-/1/2) रत्ति	1) रसमाणिक्य 2) समीरपन्नाग 3) नित्यानंद रस
मनःशिला As_2S_2	Realgar (Red arsenic)	कुनटी, रसगन्धक नागजिव्हीका, रसनेत्रिका नेपालिका, रोगाशिला मनोगुप्ता मनोज्ञा	(3) (RSS) i)खण्डाख्य - श्रेष्ठ ii)कणवीरका iii)श्यामांगी उत्तम -ग्राह्य (वा. श्यामा श्रेष्ठ)		45 KU VK घ्न लेखन दिपन वर्ण्य, रसायन TB श्वासकासहर	अगस्ती पत्र स्वरस 7 भावना श्रृंगबेररस जयंन्ती स्वरस	नही	(मण्डूर, गुड, घृत, गुग्गुल	(1/24-1/12) रत्ती	समीरपन्नग श्वासकुठार क्षयकेसरी
कंकुष्ठ (संदिग्ध) सु.कंकुष्ठ (डल्हण) अन्य आचार्य कुंकुष्ठ	(तमाल वृक्ष) Gambose tree Garcinia morella का निर्यास कांचनक्षीरी, निर्यास, हाथी का पुरीष, अश्वका नाभीनाल, मृद्दारशृंग) रेवंदचीनीसत्व	तीक्ष्णदुग्धिका, रंगदायक, हाथी बिष्ठा रेचक अश्वनाल विरंग स्वर्णक्षीरीनिर्यास हेमवती	(2) रेणुक नलिका - श्रेष्ठ	नलीकाग्राह्य	54. गुरू स्निग्ध रेचक	शुण्ठि क्वाथ 3 भावना	-	- (Already सत्वरूप)	1 यव- 1 रत्ति	1) मृत्संजिवनी रस 2) उदावर्तहर घृत 3) धन्वंतरी घृत 4) धन्वंतरी रस

उपरस	Sp. Gr.	Hardness	प्रतिविष	Mt. Pt.	Bl. Pt.
गंधक	2.06	1.5-2.5	गोदुग्ध & गोघृत	115°C	444°C
मैरिक	-	-	-	-	-
कासीस	1.8-1.9	2.0	-	-	-
कांक्षी	2.6	3.5-4	-	92°C	-
हरताल	3.5	1.5-2.0	-	-	-
मनःशिला	3.5	1.5-2.0	(गोदुग्ध+मधु) 3 days	-	-
अंजन	-	-	-	-	-
कुंकुष्ठ	-	-	(बब्बुल + मुली)- क्वाथ + जीरा + टंकण		-

*in wilsons disease- गंधक उपयोगी deposited Cu - निकल जाता है।

* हरताल सत्व - सोमल (Arsenic Oxide)

*पिण्डहरताल स्त्री पुष्पहर * टंकण - स्त्री पुष्प जनन

(कांक्षी - लोपात्ताम्रं चरेदियम्।) *(गंधक तैल - गलित कुष्ठ नाश

गंधक Persent in रसोन, मुलक (मुली), पलांडु

योग - भावना द्रव्य:

1) समीरपन्नग रस - तुलसी स्वरस
2) आरोग्यवर्धीनी वटी - निम्ब स्व. (निम्बपत्र by नागार्जुन)
3) संजीवनी वटी - गोमूत्र
4) स्मृतीसागर रस - ज्योतिष्मती तैल
5) त्रिभूवनकिर्तिरस - निंब, वासा, धत्तुर, तुलसी
6) नित्यानंद रस - त्रिफला स्वरस
7) सुतशेखर रस - भृंगराज स्वरस.
8) वसंतमालती रस - निंबु
9) लक्ष्मीविलास रस - नागवेल्ली पत्र स्वरस, भृंगराज
10) महालक्ष्मीविलास रस - मधु को भावना
11) मृत्यूंजय भावना - आर्द्रक स्वरस
12) सौभाग्य वटी - भृंगराज,वासा, निर्गुण्डी
13) बिल्वादी वटी - अजामुत्र (क्षीर)
14) लघुसुतशेखर - नागवेलीपत्र स्वरस
15) रज: प्रवर्तनी वटी - घृत कुमारी स्वरस
16) मर्मगूटी - अर्जुनत्वक (प्रभाकर वटी)
17) उन्माद केसरी, स्मृती सागर - वचा
18) रससिंदूर - जम्बीर स्वरस
19) लिला विलास रस - त्रिफला क्वाथ- 25 भावना
20) चंद्रोदयवर्ति - अजा दुग्ध

साधारण रसः

साधारणरस	Chemical name	पर्याय	प्रकार	ग्राह्यग्राह्य	गुणधर्म	शोधन	मारण	सत्वपातनं	मात्रा	कल्प
1) कंपिल्लक फलरज उपयुक्तांग	Kamila Mollotus Phillippinosis	कर्कश, रेचन, चन्द्र, रोचन, रक्तचूर्णक, रक्तांग.	नही	-	विरेचक P घ्न चर्मरोग विरेचनार्थ मात्रा = (2-6) माशा,	जल पर धिरे धिरे डाले छान ले	नही	-	Adult (1-3)gm 1 माशा बच्चों में (4-6) रत्ति	1) कृमिघातिनीवटी
2) गौरिपाषाण As_2O_3	Arsenium Oxide Vitrous Arsenic * I st by सु.	मूषक आखुपाषाण, दारुमूष, शंखविष, शंखमुष, संम्बल, रसबंधकर सोमल व्रिकट, व्यक्तदेह मल्लक, फेनाश्म	(3) (RRS) i) पिताभ ii) शंखाभ iii)स्फटिकाभ (2) (R.T.) (श्वेत, रक्त)	स्फटिकाभ ग्राह्य	पारद- बंधन विर्वर्धन त्रिदोषघ्न फिरंग, संधिवात	करेला मे भरकर दोलायंत्र में	नही (लाजवंती, कल्क, स्नुही अर्करस)	As हरताल शुभ्र वर्ण	(1-4)mg सामान्य मात्रा शुध्द सोमल घातक मात्रा 120 mg (1 रत्ती)	1) पंचसूत 2) मल्लसिंदुर 3) समिरपन्नग
3)नवसादर NH_4Cl_3	Amonium Chloride	इष्टीकालवण चुल्लिकालवण किट्टसार नरसार नृसार	(2) (रसकामधेनु) i)चुल्लिकालवण ii)योगांबरी	योगांबरी ग्राह्य	त्रिदोषघ्न पारद- जारनार्थ सर्वोत्तम लोहद्रावण usedfor सुवर्ण शोधन	पाणि में घोलकर (त्रिगुण जल) डमरू यंत्र	नही	-	(2-8) रत्ति	1) शंखद्रव 2) रससिंदुर 3) वृश्चिकदंशहर लेप 4) क्षार पर्पटी
4)कपर्द वराटिका $CaCo_3$	*Covries* Calcium Carbonate	चर, चराचर, वराट, वराटक, बालक्रिडनक	(3) (R.T) i) धूसर- 3/4 निष्क ii) श्वेत- 1 निष्क iii) पीत - 1.5 निष्क श्रेष्ठ & ग्राही (2) RRS i) वराटिका ii) वराट (चराचर)	पीत (1.5) निष्क	4 रस, V घ्न, परिणान- शूल, ग्रहणी, कर्णस्त्राव. पारूजारणा, बालग्रह- शांती	कांजी (दोलयंत्र)	करिषाग्नि गजपूट	-	2 (रात्ति)	1) पंचामृत पर्पटी 2) प्रवाल पंचामृत रस 3) लवंगादि वाटि 4) लोकनाथ रस 5) प्रदरांतक लोह 6) हेमगर्भ पोट्टलीरस

साधारण रसः

कम्पिलश्चापरो गौरीपाषाणो नवसादरः।
कपर्दो वह्निजारश्च गिरिसिन्दुर हिंगुलौ ।।
मद्दार श्रृंगमित्यष्टौ साधारणरसाः स्मृताः । (R.S.S.)

1) कंपिल्लकः * इष्टिकाचूर्ण, सौराष्ट्र देशे
2) गौरीपाषाणः 1st वर्णन सुश्रुत
3) नवसादरः वृक्ष - करीरपीलू. Antidote Of वत्सनाभ.
शिरःशुल & guine worm - 1 माशा
4) कपर्दिकःउष्ण वीर्य, 5) वह्निजारः
6) गिरिसिंदुर: Montrydite- (D.A.Kulkarni) (पारद का एक खनीज), व्यवहार में गिरिसिंदुर (*Lead Oxide = Pb_3O_4* धातुयौगिक)
7) हिंगुलः अशुध्द सेवन से क्लम, भ्रम, मोह, प्रमेह.
म्लेच्छः 1) हिंगुल पर्याय, 2) ताम्र प्रकार

साधारण रस सामान्य शोधन...(R.R.S.)

आर्द्रक, निंबु, मातुलुंग

1st Mentioned; 1) सोमल - सुश्रुत
2) माक्षिक - चरक 3) विमल, अग्निजार - रसार्णव
4) अभ्रक - कौटिल्य अर्थशास्त्र
(But T/t Used By वाग्भट कासीसादि तैल (अर्श))
* मुद्ददारशृंग - कौटिल्य अर्थशास्त्र
* दुग्धपाषाण, गोदंती - (R.T.)
* वन्हिजार तुन्दरोग (मेदोरोग) नाशक
* Arsenic: 1) Yellow arsenic - As_2S_3 हरताल
2) Red arsenic - As_2S_2 मनःशिला
3) White arsenic - $As_2 0_3$ सोमल

साधारण रसः

साधारणरस	Chemical name	पर्याय	प्रकार	ग्राह्यग्राह्य	गुणधर्म	शोधन	मारण	सत्वपातन	मात्रा	कल्प
अंबर (Placenta of Whale) अग्निनक्र जरायु	Amber	आग्निजार सिंधुप्लव अर्णबोध्दव, सिंधुफला जरायु वडवाग्निमल	-	-	घुनर्वात त्रिदोषघ्न सुगंध- उत्तेजक कस्तुरीसम पारद- जारणा तुन्दरोग (मेदरोग- नाशक)	-	-	-	(1/4-1) रत्ति	1) बृ.वातचिंतामणिरस 2) वडवानलरस 3) धात्री रसायन 4) याकूती
गिरीसिंदुर HgO	Red Oxide Of Mercury स्वभावज (कृत्रिम = Pb_3O_4)	महिला भाल भूषण, गणेश भुषण, भालसौभाग्य, मंगल्य, नागगर्भ,			45U रसबंध नकारक देहलो- हकर	-	-	-	-	1) सिंदुर मलहर 2) पाददारि मलहर
हिंगुल HgS (संहिता म वर्णन नही)	*Cinnebar*	दरद, शुकतुण्ड, म्लेच्छ, हंसपाद, रसगर्भ, सिंगरफ, रसोदभव, कपिशिर्षक, लोहघ्न,	(2) (वाग्भट यशोधर) हंसपाद i) शुकतुण्ड ii) हंसपाद- जपापुष्पवत श्रेष्ठ (3)चर्मार भी)		सर्व- दोषघ्न रसायन वृष्य प्रमेह कुष्ठ ज्वर आमवात	आर्द्रक स्वरस 7 भावना (निंबु *or* लकुच भेड दूग्ध) 1 भावना	In कंद & फल पुटपाक 100 पुट	अधःपातन (सत्व पारद)	(1/2-2) गुंजा = अनुपान नागवेली पत्र	1) त्रिभुवनकिर्तीरस 2) आनंदभैरव 3) ज्वरमुरारि 4) वसंतमालती 5) कस्तुरी भैरव रस
मृदारशृंग *PbO*	Lithrage Pb-monoxide Massicot	बोदारश्रृंग मुर्दार शंख	(2) - i) पीतवर्ण- सदल ii) पाण्डु- निर्दल कृत्रिम	Only for बाह्यप्रयोग, केशरंजन, व्रणरोपन, रसबंधनश्रेय, फिरंग,उपदंश व्रणपर		(आर्द्रक/मातुलुंग)	-	नाग धातु (सत्व = सीसधातु Lead)	-	-

ग्राह्याग्राह्यत्व :

1) पारद - अन्तः सुनीलो बहिरुज्वलो मध्यान्ह सुर्यप्रतिमप्रकाश
अग्राह्य -धूम्रः पाण्डुरश्च चित्रों न योज्यो रसकर्मसिध्दयं। भै.र.

2) अभ्रक - स्निग्धं पृथुदलं वर्णसंयुक्तम भारतोऽधिकम।
सुखिनिमौच्य पत्रंच तदभ्रं श्रेष्टमिरितं।।

वज्राभ्रक - अष्टास्राण्यफलकः षट्कोणम् अतिभासरम।

3) वैक्रांत - अष्टअस्त्रचाष्ट्यफलकः षट्कोणे मसृणा गुरू।
शुध्द मिश्रित वर्णेश्च युक्तो वैक्रांन्त उच्यते।।

4) माक्षिक - स्वर्णवर्णसदृशं नववर्ण समन्वितण निष्कोणं गुरुता।
ईषत नीलहानि स्फुटम्

5) विमल - वर्तुलः कोणसंयुक्तः स्निग्धश्च फलकान्वितः।

6) शिलाजीत - जत्वाभं, गुग्गुलकाभाससतिक्तको लवणान्वितः।
गौमुत्र गंधयः सर्वः सर्वकर्मसु योजते।।

7) सस्यक - तव्दान्तं हि घनीभूतं संजातं सस्यकं खलु।
मयूरकण्ठसच्छायं भाराढ्यमति शस्यते।।

8) रसक - सदला दर्द्रुरः प्रोक्तो निर्दलः कारवेल्लकः।

9) गंधक - शूकपिच्छसमछायो नवनीत आज्यसमप्रभ ।
मसृणः कठिनः स्निग्धं श्रेष्ठो गंधक उच्यते।।

10) गैरिक - अत्यंतशोणित स्निग्धं मसृणं स्वर्णगैरिकम्।
पाषाणगैरिकं प्रोक्तं कठिनं ताम्रवर्णकम् ।।

11) स्फटिका - फटकी - ईषत्पीत गुरू स्निग्धवर्ण. पुत्लिका - श्वेत लघु स्निग्धवर्ण

12) पत्रतालक - स्वर्णवर्ण गुरू स्निग्धं तनुपत्रंच भासुरम।
तत् पत्रतालकं प्रोक्तं बहुपत्र रसायनम्।।

13) मनःशीला - श्यामा रक्ता सगौरा भाराढ्या श्यामिका
तेजस्विनी निगारा ताम्राभां कणवीरका,
अतिरक्तांगी चूर्णिभूता सभारा खण्डपूर्विका

14) कंकुष्ठ - पीतप्रभं गुरूस्निग्धम - नलिका
श्यामपीतं लघु व्यक्तसत्वं नेष्टं रेणुकम।

15) कंपिल्लक - इष्टिकाचूर्ण संकाशश्चंद्रिकाढयो अतिरेचनः।
सौराष्ट्रदेशे चौत्पन्नः।

16) वराटिका (कर्पद) - पीताभ - ग्रांथिपृष्ठः दीर्घवत्तः।

17) हिंगुल - जपाकुसुम संकाश श्वेतरेखा प्रवालाभ ।

18) स्वर्ण - दाहे रक्तं सितंछेदे निकषे कुंकुमप्रभम् ।
गुरू स्निग्धं मृदुस्वच्छं निर्दलं रक्तपीतकम् ।
हेम षोडषवर्णाऽऽस्यं शस्यते देहलोहऽयो ।।

19) रजत - दाहे छेदेसितं, चंद्रवत्स्वच्छं शंखाभं।

20) ताम्र - सुस्निग्धं मृदुलं शोणं घनाघातक्षमम्.।

21) नाग - द्रुतद्रावं महाभारं छेदे कृष्णसमुज्जवलम्। पुतिगंध बहिकृष्णम्।

22) वंग - द्रुतद्रांव सगौरवं, निःशब्द खुरकम् ।

23) यशद - द्रुतद्रावं महाभार यशदं । छेदे समुज्जवलं स्निग्धं मृदुलं निर्मलं ।।

24) पीतल - गुर्वी मृव्दी चं पीताभा सारांगी ताडनक्षमा।

25) कांस्य - तीक्ष्णशब्दं, षोढा।

26) माणिक्य - कुशेशेयदलच्छायं वृत्तायतं।
27) मुक्ता - **हृदि** रश्मिवन्निर्मल । तोयप्रभं वृत्तं **मौक्तिकं नवधा शुभम्**
28) **प्रवाल :** पक्वबिम्बफलच्छायं वृत्तायतमवक्रकम । **प्रवालं सप्तधा** शुभम्।
29) तार्क्ष्य - हरिव्दर्ण..स्फुरद्रश्चिचय शुभम।
मसृणं भासुरं तार्क्ष्य **गात्रं सप्तगुणं** मतम् ।।
30) पुष्पराग - कर्णिकार प्रसूनाभं मसृणं शुभमष्टधा।
31) वज्र - अम्बुद एन्द्रधनुर्वारितमं पुंवज्रमुच्यते ।
32) नीलम - श्वेत्य गर्मित नीलाभा **लघु** तज् जलनीलकम्।
कार्षण्य गर्मित नीलाभं **सभारा** शक्रनीलकम् ।
33) गोमेद - मधुबिन्दुसमच्छायं गोमूत्राज्यसमप्रभम् । हेमरक्तं गुरूस्वच्छं।
34) वैदूर्य - वैदूर्य गुरूस्निग्ध विडालेक्षणसमप्रभम् ।
*** द्रवः समच्छायं :** i) सस्यकः मयुरकण्ठसच्छायं तव्दान्त
ii) गंधकः शुकपिच्छसमच्छायो iii) हिंगुलः जपाकुसुमसंकाश
iv) कंपिल्लकः संकाशशंचंद्रिकाढयो, v) माणिक्यः कुशेशेयदलच्छायं
vi) प्रवालः पक्व बिम्बफलच्दायंसप्तधा, vii) गोमेद मधुबिंदुसमच्छायं
*** द्रव आभंः प्रभः** 1) शिलाजतुः जत्वाभं, गुग्गुलाभास, मृत्स्नाच्छं.
2) गंधकः आज्यसमप्रभः नवनीत., 3) हिंगुलः प्रवालाभ श्वेतरेखा,
4) कंकुष्ठः पीतप्रभं गुरूस्निग्धम (नालिक) श्र ष ठ
5) कपर्दः पीताभ ग्रंथिपृष्ठ दीर्घवृत्तः 6) स्वर्णः कुंकुमप्रभम षोडषवर्णाऽऽस्यं।
7) मुक्ताः तायप्रभं रश्मिवन्निर्मलं नवधा शुभम् 8) तार्क्ष्यः स्फुरद्रश्मिचयं सप्तगुणं
9) पुष्परागः प्रसुनाभं अष्टधाशुभम् 10) गोमेदः गोमूत्राज्यंसमप्रभं
वर्णः 1) स्वर्णवर्णः माक्षिक, पत्रतालक, 2) **स्वर्णः** षोडषवर्णाऽऽस्यं
3) **माक्षिकः** नववर्णसमान्वितम् 4) **स्फटिकः** (फटकी)-ईषत्पीत
गुरू स्निग्ध, (फुल्लिका) - श्वेत लघु,
5) **मनःशिलाः** श्यामा रक्ता सगौरा भाराढ्या, तेजस्वीनी निगारा
कणवीरकाः अतिरक्तांगी खण्डपूर्विका.
6) **कंपिल्लकः** इष्टिकाचूर्ण संकाशशचंद्रिकाढ्यो, सौराष्ट्र देशोत्पन्नेः
7) **स्वर्णः** निकषे, 8) **रजत :** चंद्रवत्स्वच्छं शंखाभ
9) **ताम्रः** शोणं घनाद्यातक्षममं (घन आघातसमम्)
10) **वज्रः** अम्बुदेन्द्रधनुर्वारितम् पुंवज्रमुच्यते।
11) **नीलमः** कार्षण्य गर्मित नीलाभं समारं शक्रनीलकम्
कोणः षटकोणो - वैक्रांत, चपल, वज्र,
निषकोण - माक्षिक, कोणसंयुत - विमल,
उज्ज्वलः i) पारद - बर्हिरूज्वलो,
ii) यशद - छेदे समुज्ज्वलं, iii) नाग - कृष्ण समुज्जवलं

धातु

धातु Chemical name symbol	पर्याय	प्रकार	गुणधर्म	शोधन	मारण	मात्रा	कल्प
1) सुवण Gold/Aurum Au Calverite Sylverite	अग्निवीर्य, तपनीय कलधौत, भास्वर कल्याण, मनोहर चामीकर, मांगल्य जाम्बुनद, रूक्म, लोहवर	(5) *i)* प्राकृत *ii)* सहज *iii)* अग्निसंभव *-16* वर्ण *iv)* खनिज *-14* वर्ण *v)* रसविध्द	*1 st :* चरक विषघ्न पुंसवन, वयस्थापन, *IMS*	(सामान्य शोधन : *7* भावना *each* तैल तक्र गोमुत्र कांजी कुलत्थ) कांचनार पत्र स्वरस	हिंगुल, निंबुरस (*14* पुट) (भस्म परिक्षा) वारितर, निश्चंद्र Au – Hg *M–S+N*	*1 15-1 ~.5* रती भस्म मात्रा *1* यव कपोतपुट कुक्कुट पुट आनंद कंद	*1)* कस्तुरी भैरव रस *2)* वसंतमालती *3)* मकरध्वज
2) रजत Silver Ag Argentinum	चन्द्रलोह, शुभ्र तार, सौध दुवर्णक, महाशुभ	*(3)* *i)* कृत्रिम *ii)* खनिज *iii)* सहज - श्रेष्ठ	*62 MS* गर्भाशय विशोधन	(सा. शो.) अस्तपत्र स्वरस *3* बार	मुनीतरो स्वरस कज्जली -10 पुट कुमारी स्वरस हिंगुळ-सु.मा. निंबु स्वरस	*(1 4-1)* रती	जयमंगल, विजयपर्पटी
3) ताम्र *Copper Cu cuprum*	त्र्यंबक,शुल्व नेपालीय, सूर्यलोह रवीप्रीय, सूर्यांग लोहितायास	*(2) (RRS)* *i)* म्लेच्छ परिणाम *ii)* नेपाल 2 (रसार्णव) (रक्त, कृष्ण)	*56M* निंबु शुल अर्श, स्थौल्य	सैंधव *& 3* बार कांजी गोमूत्र	*PG–* निंबु सूरणकंद	*(1/8-1)* रत्ती	आरोग्यवर्धीनी, हृदयार्णवरस, लक्ष्मीविलास, चंद्रामृत, नित्यानंद,
4) नाग *Lead* Pb *plumbanum Cerrusite Auglesite*	कुरंग, भुजंग कुवंग, भोगेष्ट कृष्णवासि, सीस सिंदूरकारक	(2) *i)* समल/सबल *ii)* कुमार	प्रमेह- त्रिकोल + मधु कुष्ठ- गुडूची + मधु	निर्गुंडी मूल स्वरस. *7* बार	*PG–* अश्वत्थचूर्ण + निंबु *60* पुट त्रिफला क्वाथ जारण	*(1/4-1)* रत्ती	सूचिकाभरणरस त्रैलोक्यचिंतामणी
5) वंग *Tin* Sn *stannum Cassitorite*	कुटील, रंग कुरूप्य, शुक्रलोह त्रपु, त्रपुष पुतिगंध	(2) *i)* मिश्रक ओजोमेहनाशक, *ii)* खुरक - श्रेष्ठ	मधुमेहनाशक, निर्गंडी + चक्षुष्य, वांतीहर	पिठर यंत्र चुर्णोदक र. र.स.	पीपलत्वक चूर्ण (अश्वत्थ) कुक्कुटपूट जारण	(1-2) रत्ती	लक्ष्मी विलासरस नित्यानंदरस योगेश्वररस सुवर्ण वंग

धातु	Chemical name symbol	पर्याय	प्रकार	गुणधर्म	शोधन	मारण	मात्रा	कल्प
6) लोह	Iron	अयस, तीक्ष्णक (3)			कांजी त्रिफला	मारक गण = 22 द्रव्य 10-50 पुट : वाजीकरण	(1-2) रत्ती	नवायस प्रदरांतक लोह
Fe	Ferrum	अयास, शस्त्रक कालायस	i) मुण्डः 3	पाण्डु	गोमूत्र 7 बार/ शशासृक	10-100 पुट : रोगनाशन 100-1000 पुट : रसायन (रसेंद्रसार संग्रह)	जंम्बुफल सदृश्य	सप्तामृत मृत्युंजय चंद्रप्रभावटी
कांतलोह पात्रवर्णन र. र. स.			ii) तीक्ष्णः 6					
			iii) कांतः 5			अपथ्य - कुष्माण्ड,तील, माष, राजीका, मद्या , अम्ल, मसुर		
7) जस्त यशद Zn	Zinc Zincum	खर्पराज, रीतिहेतु खर्परसत्व, ताम्ररंजक, नेत्ररोगारि,	(2) i)श्यवक- अग्राह्य ii) जशद- ग्राह्य	सर्पविष, नेत्ररोग अल्पमात्रा, प्रमेह,पाण्डु	निर्गुंडीरस पिठरयंत्र/ गोदुग्ध (21)भावना	अपमार्ग पंचाग निंबु जारण	1-2 रत्ती 120-250 mg	त्रिवंग भस्म शिलाजत्वादि वटी
8) पित्तल Cu+Zn 2:1	Brass	आर, रिती आरकूट, रितीका, कपिलौह, क्षुद्रसुवर्ण.	काकतुंडी रीतिका (2)	4 रस उष्णवियंद्रव कृमि, कृष्ठ उदर, पांडु	निर्गुंडी + हरिद्रा/ गोमूत्र	G + अर्कक्षीर ताम्रवत्	(1-2-1) रत्ती	स्वर्णसिंदूररस रत्नप्रभावटी मेघानाद रस
9)कांस्य Cu+ Sn 8:2 (5:1)	Bronze White copper (Beal metal)	कंसक, सौराष्ट्रिक, घोषक, ताम्रत्रपुज. दीप्तक, दीप्तलोह, वह्निलोहक.	(2) तैलिककांस्य पुष्प कांस्य श्रेष्ठ (6 लक्षण)	Expect घृत गोमुत्र All द्रव्य can be kept in कांस्यपात्र		हिंगुल + निंबु अर्कक्षीर मर्दन	(1-2-1) रत्ती	मकरध्वज वटी वातविध्वंस रस लक्ष्मी विलासरस

धातु

1) निरूक्तिः धातुलौहे लुह् इति मतः सोऽपिकर्षार्थवाची.।.(R.R.S)

2) वर्गीकरणः 6 - रसार्णव, गोरक्षसंहिता, वेद.

7 - शां, भा. मिश्र; रसोपनिषद, R. T., आ प्र.

8 - संहिता, रससार, मनुस्मृतीकार

9 - R.R.S. रसेंद्रचूडमणि, रसहृदयतंत्र, रसपध्दतो

12 - आनंदकार (मंथान भैरव)

i) सारलोह -2	ii) शुध्दलोह - 4	iii) त्रिवंग -3
सुवर्ण	सुवर्ण	नाग
रज़त	रजत	वंग
	ताम्र	यशद
	कांतलोह	
iv) मिश्रलोह - 3	**v) सत्वलोह - 5**	**vi) पूतिलोह - 2**
पित्तल	ताम्र	नाग
कांस्य	तीक्ष्णलोह	वंग
वर्तलोह	कांत लोह	
	अभ्रकसत्व, पित्तल	

3) *धातु उत्पत्तिः* देवता अंश से.... (रसकामधेनु) चूडामणि मिश्र

i) सुवर्ण - अग्नि + रस विज्ञान से,

ii) रजत - चंद्रमा + परमेश्वर (शिव)

iii) ताम्र - सूर्य + कार्तिक वीर्य iv) नाग - वासुकी

v) वंग - इंद्रवीर्य vi) लोह - यमराज, कालमूर्ति

4) संदर्भ : i) धातु - भस्मवर्ण (यो. र)

ii) धातु - का अग्नि पर पीघलने पर क्षीणता (याज्ञवल्क संहिता)

iii) धातु - ग्रह संबंध (शा. सं.) iv) धातु - वर्ण (स्वाभाविक)(रसोपनिषद)

v) धातु - ज्वाला परिक्षा (रसार्णव) vi) धातु - लोह ..... (शा. सं.)

vii) धातु - देवता .... (रसकामधेनु)

(शा. स.) नवग्रह	धातु	मात्रा	(रसोपनिषद) स्वाभावीकवर्ण	(रसार्णव) ज्वाला परिक्षा	(याज्ञवल्क्य) धातुक्षय	(यो. र.) भस्मवर्ण
सुर्यग्रह	ताम्र	2	रक्त	नील ज्वाला	5 %	कृष्ण
चंद्रग्रह	रजत	3	श्वेत	श्वेत	2 %	कृष्ण
मंगल (भौम)	पित्तल	2	पीत	-	-	-
बुध (राशिज)	नाग	2	कृष्ण	धूम्रवर्ण	8 %	कपोत (पारावत)
गुरू (जीव)	स्वर्ण	1	पीत	पीत	No Loss	गैरिक & चंपक पुष्प
शुक्र (भार्गव)	वंग	2	श्वेत	कपोताभ	8 %	शुभ्र(श्वेत)
शनि (सुर्यपूत्र)	तीक्ष्णलोह	-	कृष्ण	कृष्ण	-	जम्बुफल
राहु (सैंहिक्य)	कांस्य	2	श्वेत	-	-	धूसर
केतु	कांतलोह	-	-	लोह कपिल	लोह -10 %	जम्बुफल

6) ज्वाला परिक्षाः i) शिलाजतु - धूसर वर्ण, ii) हिरा - मिश्रित, iii) अभ्रसत्व - पांडू.

7) धातुभस्म प्रकार : i) उत्तम - मारण By पारद

ii) मध्यम - भस्म - By वानस्पतिक ii) कनिष्ठ - गंधकादि Drugs से धातु भस्म,4) निकृष्ट (दुर्गुणप्रद) - By अरिलोह (क्षार)

8) अरिलोह : * गंधक - हरताल, मनःशिला, सोमल

* कलमीसोरा - टंकण, कांक्षी, तेजाब. (गंधक - शुल्बारि, हरताल - वंगारि)

9) धातुमारण .... (आं. कं) i) सुवर्ण - नाग ii) रजत - माक्षिक

iii) ताम्र - गंधक iv) नाग - मनःशिला v) वंग - हरताल vi) लोह (3) - हिंगुल & स्त्रिदुग्ध vii) अभ्रकसत्व - हिंगुल & स्त्रिदुग्ध

vii) उपलोह - गंधक ix) पारद - हीरा

* सर्वधातु मारण - माक्षिक

10) धातुभस्मार्थ अग्निप्रमाण :

i) सुवर्ण & रजत - कुक्कुट, ii) ताम्र - काष्ठादि iii) नाग & व ंग -कुक्कुट

iv) लोह - गजपुट v) अभ्रक - महापुट

11) धातुभस्म रंग (यो. र.)

i) स्वर्ण भस्म - गैरिक चंपक पुष्प ii) रजत & ताम्र - कृष्ण वर्ण

iii) नाग - पारावत कपोत iv) वंग - शुभ्र (श्वेत) v) तीक्ष्णलोह - जम्बुफल

vi) कांस्य - धूसर vii) अभ्रक - इष्टिका चूर्ण viii) मंडुर - रक्तचंदन

ix) रसक - रक्त x) कासीस - रक्त xi) सुवर्ण माक्षिक - रक्त

12) संज्ञा : i) पंचलोह - सुवर्ण,रजत,ताम्र,नाग,वंग,

ii) षडलोह - पंचलोह+लोह, iii) सप्तधातु - षड्लोह + यशद

iv) अष्टलोह - पंचलोह+(कांत, तीक्ष्ण,मण्डुर)

13):

धातु	*Sp.gr.*	*Hard*	*Mt. Pt.*	*Bt. Pt.*	*At. Wt.*	अशुध्द सेवन पर *Tt*
			°C			
1)सुवर्ण	*19.32*		*1063*	*2530°C*	*196.97*	-
2)रजत	*10.5*	*2.53*	*960*	*1955°C*	*107.88*	-
3)ताम्र	*9.94*		*1084*	*2310°C*	*63.54*	भुनिविधी + सिता
4)नाग	*11.37*	*1.5*	*327*	*1525°C*	*207.21*	सुवर्ण 1/8 रत्ति हरितकी चूर्ण
5)वंग	*7.29*	*6.7*	*232*	*270.2°C*	*118.70*	मेषश्रृंगी + मिश्री 5 days
6)लोह	*7.86*		*1533*	*3000°C*	*55.84*	——
7)यशद	*6.9*		*419*	*910°C*	*65.38*	बलामुल + हरितकी + मिश्री
8)पित्तल						-

14) दोष:

लोहदोष 7: (भा.प्र.आ.प्र.) गुरूता, दृढता, उत्क्लेद, दाहकारिता, ग्लानि, अश्मदोष, दुर्गंधता.

ताम्रदोष 8: भ्रम, मूर्च्छा, क्लेदन, वमन, विदाह, अरूचि,चित्तसंताप, स्वेद.

धातु	वनस्पतीज/प्राणीजद्रव्य (रसार्णव)
सुवर्ण	सुधा, आर्द्रक
रजत	स्नुही
ताम्र, पित्तल	अजा & अर्क क्षीर
वंग	पलाश
लोह	नारीदुग्ध, त्रिफला, पुनर्नवा, निलोत्पल

1) सुवर्ण:

i) **खनिज** Native Gold - Au, Calaverite - Au te_2, Sylvenite - Au Ag Te_2

ii) **Is Insoluble Except Aquaregia** (अम्लराज)

iii) सुवर्णभस्म सेवनकाल में अपथ्य **बिल्वसेवन**

2) रजत: i) खनिज Argentite Silverglance- Ag_2S

Pyragyrite Ruby Silver - 3 Ag_2 S Sb_2 S_3 ,

Cerargyrite or Horn Silver - Agcl., Silvenite (Ag Au) Te_2

ii) Removal Of O_2 From Ag Spitting Of Silver

iii) रजतधारण - शंकरप्रसन्न, चंद्रग्रहबाधानाशक

3) ताम्र : i) अमृतीकरण ताम्रभस्म – पंचामृत, निंबुरस – **सुरणकंद**

ii) **भस्म परिक्षा :** अवामि, ***अम्लपरिक्षा*** * शास्त्रोक्त मात्रा - 4 रत्ती

4) नाग: खनिज - Galena - PbS - Sulphide, Cerrusite - $PbCO_3$ - carbonate, Anglesite - $PbSO_4$ - Sulphate, Matlockite - PbCIF - Chloride, Lead Oxide - PbO - Oxide

*** मिश्रधातु**

Solder - Pb+Sn (1:1), Type Metal - Pb+Sb+Sn

Pewter - Pb + Sn (2:8), Wood Metal - Pb+Bi+Sn+Cd

5) वंग : खनिज, Tinstone *Cassiterite - SnO_2

6) लोह : i) खनिज - 5 Oxide, Hydroxide,Carbonate Sulphide

ii) लोहभेद - 3 iii) Never भस्म by मुंडलोह

1) मुण्ड - 3	**2) तीक्ष्ण - 6**	**3) कांत - 5**
i) मृदु - श्रेष्ठ	i) खर	i) भ्रामक
ii) कुण्ड	ii) सार	i) चुंबक
ii) कुडार	iii) हन्नाल	iii) कर्षक
	iv) तारावट्ट	iv) द्रावक
	v) **वाजीर**	v) **रोमकांत**
	vi) काललोह	

* लोहभस्म Always use with मकरध्वज, रससिंदुर, अभ्रकभस्म.

7) मण्डूर: रक्तचंदन वर्ण (मंडूर निर्माण में बिमीतक लकडी का उपयोग)

i) पर्याय - किटट, लोहमल, ii) भेद - 3 (मुंड, तीक्ष्ण, कांत) मंडूर

* 60 वर्ष - विषयुक्त, 100 वर्ष - सर्वश्रेष्ठ

iii) शोधन - गोमूत्र + त्रिफला (21 बार), iv) मारण - कुमारी स्व. गजपूट

8) यशद: i) सर्वप्रथम वर्णन - आढमल्ल (शा. स)..... (14th cent.)

ii) **खनिज:** Sulphide = Zinc Blande ZnS

Carbonate: i) Calamine $ZnCO_3$, ii) Smith Sonite $ZnCO_3$

Oxide i) Zincite ZnO , ii) Franklinite $ZnOFe2O_3$,

iii) Wilenite $ZnOSiO_2H_2O$, iv) Henimorlite $ZnSiO_3$

* Ratio of तीक्ष्ण लोह & ताम्र in वर्तलोह - 1:1

9) वर्तलोह: (Bronze)

i) काल - 15th Century ii) पर्याय - पंचरस / लोह, भर्त

iii) Formation - ताम्र + नाग + वंग + पित्तल + कांस्य

iv) शोधन - अश्वमूत्र 7 भावना

v) मारण - with हरताल अर्कक्षीर, 5 गजपूट (5 कुंभपूट)

vi) मात्रा - 120 mg (रत्ती)

Brass (पित्तल) - Cu+Zn (2:1),

Bronze (कांस्य) - Cu+Sn (8:2)

Al Bronze - Cu+Al (1:9),

Bell Metal - Cu+Sn (5:1) (वर्त)

* Rose Metal - (BTL) - Bi +Sn+Pb (2:1:1),

Type Metal - (ATL) Sb+Sn+Pb

*Brittania Metal - Zn +Sn+Sb, Dutch Metal - Cu+Zn

* Monel Metal Cu+ Ni.

German Silver Cu +Zn +Ni 3:1:1 (Ag is Absent)

चंद्रार्क - चंद्र + अर्क Ag + Cu (16:12)

Gunmetal Cu+Sn (92-8)

उपधातु - 7 (भा. प्र; यो. र.; आ. प्र.) - शा. सं. -7

शा. सं. 7: महारस 4 - अभ्रक, माक्षिक, सस्यक, रसक.

उपरस 3 - मनशिला, हरताल, नीलाजंन.

भावप्रकाश, यो.र. आ.प्र. 7 - महारस 4 - सुवर्णमाक्षिक, रजत माक्षिक, शिलाजतु, सस्यक., साधारण रस - गिरीसिंदुर, मिश्रलोह - पित्तल, कांस्य.

* मुण्डलोह – द्रुतद्रावं, * सर्वेषामेव लोहानां बलवान वग उच्यते।
*पारदबंध हेतु *used* मणिः 6 *विद्रुम & मौक्तिक :कालप्रभाव से वृध्द होते है

***मुक्ता, प्रवाळ** *a) No* प्रभाव *of* वायु-जल-काल *b)*मृदुरत्न *& all are* कठिन
* मोती भस्म - श्वेत मसृण * प्रवाल भस्म - श्वेत सूक्ष्मचूर्ण

रत्न (र. र. स.)

रत्न	*Name*	रा.सं.	ग्रह	*sp.gra.*	*Hardness*	शोधन	मारण	*Speciallty*	मात्रा	रसोपनिषद (7)
माणिक्य	*Ruby*	Al_2O_3	सूर्य	*4*	*9*	आम्लवर्ग	*GHAI* लकुच (स्व.8 भावना)	Chromic Oxide (Red)	1/8-1/4 रत्ति	माणिक्य - लोहितास
मुक्ता	*Pearl*	$CaCo_3$	चंद्र	*2.65-2.89*	*3.5*	जयंती स्व.	गुलाबजल 3कुक्कुटपुट		1/4-1 रत्ति	मुक्ता - अंजनमूलक
प्रवाल	*Coral*	$CaCo_3$	मंगल	*2.60-2.70*	*3.5*	क्षारवर्ग	कुमारी स्वरस 3 गजपुट		1/2-2 रत्ति	-
तार्क्ष्य (पन्ना) (पाचु)	*Emrald*	$Be_3Al_2(SiO_3)_6$	बुध	*2.71*	*7.5*	गोदुग्ध	*As* माणिक्य	Chromic Oxide (Green)	1/4-1 रत्ति	-
पुष्पराज	*Topaz*	*Al* (FOH) SiO_4	गुरू	*3.6*	*8*	कांजी/ कुलत्थ	*As* माणिक्य		1/4-1 रत्ति	-
हिरक	Diamond	*C*	शुक्र	*3.6*	*10*	तण्डुलीय धौलाई/ कुलत्थ	*GAI* + निंबु *14* गजपुट		1/32-1/16 रत्ति	हिरक अमृताश्म
नीलम	*Sapphire*	Al_2O_3	शनि	*4*	*9*	नीलीनी	*As* माणिक्य	Titanic Oxide (Green)	1/8-1/2 रत्ति	नीलम - श्याम
गोमेद	*Zircon*	$ZrSiO_4$	राहु	*4.65-4.71*	*7.5*	गोरोचन	*As* माणिक्य		1/4-1 रत्ति	गोमेद - गोमेद
वैडूर्य	*Cats eye*	$BeOAl_2O_3$	केतु	*3.5-3.8*	*8.5*	त्रिफळाक्वाथ	*As* माणिक्य		1/8-1 रत्ति	वैडर्य - ज्योतिरस वैक्रांत - कूर्प

टंकण दोष - *2*(वमन,भ्रम), लोहदोष - *7*, ताम्र दोष - *8*, मुक्ता दोष -10

रत्नगुण	रत्नदोष	वज्रदोष	गोमेद
5	5	हिरा 5	5
1) दुर्लभ	ग्रास	मल	मल
2) कठोर	त्रास	यव	त्रास
3) सुंदर	बिंदु	बिंदु	बिंदु
4) टिका	रेखा	रेखा	रेखा
5) आकर्षक	जलगर्भता	काकपद	काकपदू

ठोस द्रव्य खटिकाः सबसे मृदु
*कठिन द्रव्य हिराः सबसे कठिन
* *Graphite*: सबसे मृदु
रत्न संख्या –

Colour : *Chromic Oxide* से माणिक्य और तार्क्ष्य
Titanic Oxide से निलम
रत्न वर्गीकरणः सामान्य के लिये - सामान्य मध्यम,
धनिक के लिये - धारणार्थ * भस्मार्थ, पिष्टार्थ के लिये - अधम
हीरा जातीः *i*) श्वेत विप्रो रसायनो प्रोक्त सर्वासिध्दिप्रदायक्त
ii) रक्त क्षत्रियो व्याधिविध्वंसी ज़रामृत्युहर परम
iii) पीत वैश्यो धनप्रदः दाढर्यकृत
iv) कृष्ण शुद्रो व्याधीनाशः वयः स्तम्भं
पुरुषः अष्टास्त्राष्टफलकं षटकोणमातिभासूरम
अम्बूदेन्द्रधनुःवारितरं पुंवज्रमूचाते ।।
स्त्रीः चिपिटाकारं स्त्रीवज्रं वर्तुलायतम।
नपुंः वर्तुलं कुष्ठकोणग्रं किंचिद गुरु नपुंसकम।

रत्न:

रत्न	Chemical Name	पर्याय	प्रकार	ग्राह्य-ग्राह्य	गुणधर्म	शोधन	मारण	सत्वपातन	मात्रा	कल्प
1) माणिक्य Al_2O_3 सुर्य D-4 H-9	Ruby	कुरुविंद, शोणरत्न पदमराग, श्रृंगारी, रत्नराट, सौगांधिक, रविप्रिय, रविरत्न,	(2) RRS i) नीलगंधि ii) पद्मराग	पद्मराग स्निग्न = ग्राह्य, अग्राह्य = 8 लक्षण	दिपन, वृष्य, भूतादिबाधा धारण = श्रावण	निंबु कांजीक	GMH+ लकुच 8 पूट	गुलाबी पिष्टी गुलाब जल	(1 8-1 4) 15-30mg	1) ब्राम्हीवटी 2) जवाहरमोहरा
2) मुक्ता $CaCo_3$ (योनी =8) चंद्र	Pearl Calcium Carbonate D-2.65, H-3.5	अम्भसार शंशिरत्न शौक्तिकेया	(2) i) प्राकृतिक ii) कृत्रिम	ग्राह्य 9 ल.	क्षय, वृष्य, आपुष्य दंतोद्भव ज्वरघ्न	सामान्य जयंती स्वरस	गोदुग्ध 3 लघुपूट	श्वेत पिष्टी गुलाबजल	(1 4-1)	1) वसंतमालती 2) त्रैलोक्यचिंतामणि
3) प्रवाल $CaCo_3$ मंगल	Coral Calcium Carbonate D-2.6, H-3.5	अब्धिजन्तु अम्भेधिपल्लव भौमरत्न विद्रुम	(2) (आकृती) i) प्रवालमूल ii) प्रवालशाखा (4) (वर्णानुसार) (श्वेत, धूस्र्य, कृष्ण, रक्त)	पक्वबिंम्ब- फलच्छाय वृत्तायंत- मवक्षाम	त्रिदोष- शमन, नेत्ररोग, रात्रिस्वेद- हर	(क्षार)	गोदुग्ध गजपुट	गुलाबजल	(1 2-2) रत्ति	1) कस्तुरी भैरव 2) त्रैलोक्यचिंतामणि
4) तार्क्ष्य मरकत $Be_3Al_2SiO_6$ (पन्ना) (पाचू) बुध	Emerald D-2.7, H-7.5	अश्मगर्भज रोहिणेय सौपर्ण हरिन्मर्णि	no. 7 गुण Aquamine प्राप्ती = द. अफ्रिका Carbonate (4) श्वेतादी		सर्पविष- प्रभाव↓, ओजो, पांडु, शोथ	गोदुग्ध दोलयंत्र	As माणिक्य	गुलाबजल	(1 4-1) रत्ति	1) जवाहरमोहरावटी
5) पुष्पराग $Al(F,OH)_2SiO_5$ दैत्यचर्म से उत्पन्न 1st by बृहत्संहिता (वराह मिहिर) गुरु Not in Ayurved	Topaz	गुरूरत्न पाचु पीतरत्न पीताश्मा D-3.6, H-8	No		बुध्दि- वर्धक मनोरोग T t. विषनाश, छर्दि	कुलत्थ कांजी	As माणिक्य	गुलाबजल	(1 4-1) रत्ती	1) मणिपर्पटी 2) नवरत्नराजमृगांक
6) हिरा दधिची ऋषी की अस्थि शुक्र D-3.6 H-10	Diamond	अभेद्य रत्नदृढ पवि भार्गव भृगुप्रिय वज्र	(3) i) नपुंसक ii) नारी iii) नर		ब्रा-श्वेत क्ष-रक्त वै-पीत्त क्षु-कृष्ण	कुलत्थ दोलायंत्र	GM + रससिंदुर 14गजपूट	-	(1/32- 1/16) रत्ती	1) पंचामृत रस 2) महालक्ष्मीविलास 3) त्रैलोक्यचिंतामणि
7) निलम शनी Al_2O_3 D-4, H-9	Blue sapphire	इंद्रनील महानील तृणग्राही शनिरत्न नीलरत्न नीलाश्मा महानील	(2) i) जलनीलम ii) इंद्रनील श्रेष्ठ		विषमज्वर कूष्ठ	नीलीस्वरसदोलायंत्र	As माणिक्य 8 पुट	गुलाबअर्क	(1/8-1/2)	1) पंचामृत रस 2) महालक्ष्मीविलास 3) त्रैलोक्यचिंतामणि
8) गोमेद राहू	Zircon Cinnamon Stone $ZrSiO_4$ D-4.6, H-7.5	तमोमणि पिंगस्फटिक राहुरत्न स्वर्भानु	नहीं	मधुबिंदु समच्छाय, गोमूत्राज्य समप्रभम, हेमरक्त	अणु- धर्मिता, मेध्य, बल्य	गोरोचन	As माणिक्य 8 पुट	गुलाबजल	(1/4-1)	1) नवरत्नराजमृंगाक 2) रत्नभागोत्तर
9) वैडूर्य केतू	Cats Eye Al_2O_3 D-3.5, H-8.5	केतुरत्न, वायज, प्रावृष्य, बिडालाक्ष	(2) i) बिडालाक्ष i) Alexa- ndrite		ग्रहबाधा शांती मलभेदक संतोनोत्पत्ति	त्रिफलाक्वाथ	As माणिक्य 8 पुट	गुलाबअर्क	(1/8-1)	1) चूर्णांजन 2) इंद्रोक्तरसायन 3) नवरत्नराजमृणिक 4) रत्नभागोत्तर

D= Specific gravity, H= Hardness

उपरत्न:

उपरत्न	Chemical name	पर्याय	प्रकार	ग्राह्यग्राह्य	गुणधर्म	शोधन	मारण	सत्वपातन	मात्रा
1) सूर्यकांत खनिज $Na_2O\,Al_2O_{36}SiO_2 + Cao$	Sun stone Oligo cless	अग्निगर्भ, रविकांत तपनमणि, सूर्यकांत दीप्तोपल	—	—	उद्गार अग्नि	—	G + मनःशिला 7 गजपूट	—	60-120 mg
2)चंद्रकांत $KAlSi_3O_3$	Moon stone	शशिमाणि शीताश्मा	—	—	उद्गार अमृत जल त्रांसदोषराहित		H + मनःशिला कुमारी स्व. गजपूट		60-120 mg
3)राजावर्त $Na_4\,(S_3Al)Al_2\,(SiO4)3$	Lapis Lazuli Altra marine	नीलाश्मा आवर्तमणि	(2) चूर्ण गोल	---	निंबू स्वरस गोमुत्र यवक्षार	शिरीषपुष्प दोलायंत्र	G + निंबू 8 गजपूट		250-600 mg
4)स्फटिक SiO2	Rock crystal Pebal / Quartz	अमलमाणि,सितोपल धौताशिला, शिवप्रिय, शिवरत्न,	—	—		शिरीषपुष्प दोलायंत्र (राजावर्तवत्)	G + निंबू 8 गजपूट		60-120 mg
5)पेरोजक $H_5\,[Al(OH)_2]_6Cu(OH)PO_4$	Turquaise	विषारार्ति हरिताश्मा हरिन्माणि	(2) भस्मांग हरित	---		शिरीषपुष्प दोलायंत्र (राजावर्तवत्)	G + निंबू 8 गजपूट	नीलवर्ण ताम्र	60-120 mg
6) व्योमाश्म संगेयशव 5 गुण	Jade	यशबाशिला हरिन्माणि हरिताश्म	(2) वृक्काज-Nephrite प्रहरिज-Jadite	-----		अर्जुनत्वक 21 बार	कुमारी स्वरस 10 गजपुट		2 - 4 रत्ती
7) पालंक SiO2 पाचू के जगह used	Onyx (Green गोमेद)		(3) कृष्णवर्ण पीतवर्ण धुम्रवर्ण	----					
8) रुधिर इंद्रगोप Trigonal	Carnelian किडा वत	---- ----							
9) पुत्रिका Mg,Fe,Si Rhombic	Penidol -. Crosolite; Olivine	हरितमणी, घृतमणि विषमलंबाक्ष	— —		(रशमोकस्त्र से घसने पर चमक)				
10) सुगंधिक रसमित्र	Spinel								
11) तृणकांत $C_4\,H_{64}O_4$	Amber Plant fossil -.	तृणकांतमणि तृणग्राहि कहरूबा				आवश्यकता नही			2-4रत्ती

मुक्ता: दोष 10, योनी 8 टंकणदोष 2 (वमन, भ्रम)

Animal origin: वहिजार, मुक्ता, प्रवाल, शंख, शुक्ति, मृगश्रृंग, कंकुष्ठ, कपर्दिक, समुद्रफेन, नवसागर

उपरत्न:

संख्या: 4 - बृ योगतरंगिणी, 6 - R.T.
9 - आनंदकंद 13 - CCIM 15 - आ.प्र.

उपरत्न: राजावर्त तृणकांत स्फटिक कौशेयश्म व्योमाश्म
चंद्र सुगंधिक पैराजक बदराश्म
वैक्रांत पालक सूर्यकांत रुधिरपुत्रिका

स्फटिक वर्ग: गोमेद, पन्ना, वैदूर्य, पुष्पराज, चंद्रकांत, सूर्यकांत.

उपरत्न	शोधन	मारण	मात्रा
सूर्यकांत		G + मनःशिला 7 गजपूट	60-20 mg
चंद्रकांत		H + कुमारी गजपूट	60-120 mg
व्योमाश्म	अर्जुनत्वक or गुलाब	कुमारी 10 गजपूट	250-500 mg
राजावर्त	शिरीषपुष्प	G + निंबु 8 गजपूट	250-500 mg
स्फटिक	शिरीषपुष्प	G + निंबु	60-120 mg
पेरोजक	शिरीषपुष्प	G + निंबु	60-120 mg
तृणकांत	–	–	250-500 mg
शंख	निंबू	कुमारी स्व, गजपूट	
शुक्ति	निंबू	कुमारी स्व,	
गोदंती	निंबू 1/2 hr स्वेदन.		

टंकण तीव्राग्नि पर पाक.

शंख Brother of लक्ष्मी, शुक्लवर्ग (रसार्णव), वहिशय वर्ग (च)

क्षारवर्ग: टंकण: मूढगर्भप्रवर्तक

पर्याय: द्रावक, रंगक्षार, लोहशेधन,रसक्षार, सितसार, सौभाग्य,क्षारराज,स्वर्णशोधन,रसांजन, श्वेतक्षार

भेद: श्वेत. नीलकंठ - श्रेष्ठ, मात्रा (120-250mg)

टंकणदोषअशुध्द सेवन से वमन, भ्रम.

यवक्षार: Mix.of potassium 3 - 10 रत्ती

सज्जीक्षार: (Na_2CO_3) Mix.of potassium salt 3 - 12 रत्ती

1) In स्वर्णवंग - स्वर्ण 0 %, 2) In शिलाजतु - Fe = 2-5%

3) Inमाक्षिक - Cu = 30-35%

4) In स्वर्णभस्म - Au = 96.07%

5) In हिंगुल - Hg = 86.2% - S = 13.8%

(बोजावर्त - M.P., शुध्दावर्त - सत्व)

सुधावर्ग

सुधावर्ग	Chemical name	पर्याय	प्रकार	गुणधर्म	शोधन	मारण	मात्रा	Other
1) शंख $CaCo_3$ चरकसुत्र 27 वारिशयवर्ग	Conch shell Brother of लक्ष्मी	त्रिरेख महानाद समुद्रज हरिप्रय	(2) i) वामावर्त use भस्म ii) दक्षिणावर्त - प्रशस्त दैवी	शीत ग्राही तारुण्यपिटिका पक्वतिसार आम्लपित्त	अम्लकांजी or जयंती 1 याम स्वेदन	2 गजपूट कुमारी	2-4 रत्ति 250 mg	
2) शुक्ति $CaCo_3$	Oyster	मुक्ताप्रसू, मुक्तामाता मौक्तिकमंदिर अब्धिभण्डूकी	(2) i) मुक्ताशुक्ति ii) जलशुक्ति	मुक्ता - 5 रस श्वास हृद्रोग दीपन मूत्रशर्करा	जयंती स्वरस/अम्लद्रव्य	कुमारी 3 गजपुट	2-4 रत्ति 250 mg	
3) दुग्धपाषाण $MgSiO_3$ 1स्वर्णन by R.T.	Talc/ soft stone	क्षीरी, दुग्धा वज्राभ सौध	-	ज्वरघ्न हृद्रोग व्रणस्त्राव रक्तातिसारा	उल्लेख नहीं	-	1/2 - 4 रत्ती	
4) गोदन्ती $CaSo_4 2H_2o$ 1स्वर्णन =R.T.	Salenite gypsum	गोदंत	(4) कणरूप तालाकृती पिंण्डकृती कौशेयकृती	रक्तपित्त शीतगुण जीर्णज्वर रक्तातिसार	निंबु स्वरस स्वेदन/कोष्ण जल धावन (या. त्रि.)	कुमारी गजपुट	1-3 रत्ति 120-360 mg शिरशूल निवारण (रसामृत)	
5) मृगश्रृंग $Ca_3(Po_4)_2$ Hart's horn	Deer horn	एणश्रृंग श्वेतांजन विषाण हरिणश्रृंग		हृदयशुल पार्श्वशूल श्वास कास	अम्लद्रव्य स्वेदन 3 घंटे	अर्कक्षीर 3 गजपूट कृष्णभस्म- मषि (सुश्रुत) श्वेतभस्म- कुमारी स्वरस	1 मासा (1gm)	ग्राहय-मारयुक्त अनेक श्रृंगयुक्त
6) चुना चुनकली - निवली -	Quick lime cao Ca(oH)2	चूर्ण सुधा शिलाक्षार	- -	कृमी अम्लपित्त अतिसार	-	-	-	5ml निवली चुर्णादक = 50 mg 250mg 3 प्रहर
7) खटिका $CaCo_3$ गंधभेदरुप उल्लेख = R.R.S.	Chalk pipe clay घवालय	वर्णिक लेखनी शुक्लधातु	(2) i) खटी ii) गौरखटी	51 रस नेत्ररोग hardness=1 स्वेदस्त्राव हरिणी	स्वच्छ जल	उल्लेख नही	-	कल्प मुग्धरस (chalk + पारद)
8) समुद्रफेन $CaCo_3$ white	Cattle for bone Cuttle fish - sepia तपकीरी	फेन सिंधुज फेनक लाछांजन अब्धिकफ पयोधिन	(2) (उत्पनिनुसार) i) सामुद्रज - cuttle fish - sepia ii) प्राणिज	शीत,लेखन चक्षुष्य कर्णस्त्राव रुचिकर	निंबु	-	-	with मृदारशृंग – मध with खंडशर्करा –अंजन
9) कौषेय $MgSiO_3$	No calcium नरम, मृदु, पत्थर	(सिकता वर्ग)		प्रमेह प्रदर अपस्मार	-	-	2 गुंजा 1) 250 mg 2) In अपस्मार 1 मासा	
10) बदराश्म (हजरुल यहुद) No smell & tasteless सुपारी like green (Silicate of lime)		अश्मभिद, दगडीबोर unani हजरत्बेर		मूत्रल मूत्रश्मरी मुत्रावरोध लेप on पेट	Hot H_2o मुली स्वरस	पिष्टी with गुलाबजल or केलाकंद 7 days	4-8 गुंजा 500mg - 1 gm	रसामृतमे प्रथम उल्लेख

भैषज्य कल्पना

अथर्ववेद – सोम सर्वश्रेष्ठ औषधी. तलाशा–वृक्षों की रानी. चंद्र – औषध अधिपति.

* शतपत ब्राह्मण – सोम के अभाव में आदाय वनस्पती.

ताण्डव ब्राह्मण– सोम के अभाव में पूतिक वनस्पती & इसके अभाव में अर्जुन.

भैषज्य कल्पना: चरक: 1st,व्यवस्थित & वैज्ञानिक वर्णन.

शारंगधर – विस्तार पूर्वक वर्णन.

भैषज्य कल्पना आधारभूत ग्रंथ.

चक्रपाणि –

i) 65 प्रमुख रोगों की चिकित्सा वर्णन.

ii) सर्व प्रथम ग्रंथ में पारद की पर्पटी कल्पना का उल्लेख.

* शारंगधर – भैषज्य कल्पना आधार स्तंभ

क्वाथ – निर्यास क्वाथ:। कण्ठ कषतीति कषाय:।

* कषाय–रसभेद,अंगराग,लेप,सुगन्धी, लोहित , सुरभी, निर्यास (विश्वकोशकार)

* काश्यप – कण्ठस्य कषणात् प्रायो रोगाणां वाऽपि कर्षणात्।
कषाय शब्द: प्राधान्याद सर्वयोगेषु कल्पते।।

* हारित – जिव्हां कण्ठ ग्रसति इति कषाय:।

* चक्रपाणि – कषायाणां यथोक्तद्रव्याणां कल्पनमुपयोगार्थं संस्करणं कषाय कल्पनम्।

कल्पना	सवीर्यतावधि
1) स्वरस कर्णपूरण, स्वरस कवलग्रह, नस्य	तुरंत,
2) फाण्ट, उपनाह, मण्ड	गरम रहने तक.
3) बस्ति	सद्य:निर्मित.
4) स्वरस, हिम	(4 - 6) hrs.
5)अन्न,स्वरस, आश्च्योतन,उदक, कल्क,क्वाथ	1 दिन
क्षीरपाक,खड, गण्डुष –स्वरस , क्वाथ ,गोदुग्ध,	1 दिन
गोमूत्र, तक्र, दधि, कुर्चिका, पानक, पेया,	1 दिन
मांसरस, यवागू, यूष (उष्ण), लेप, विलेपी.	1 दिन
6) घृतपाक, सक्तु, क्षारसूत्र, धुम्रपान, अम्लसंधान.	4 - 6 मास
7) अंजन, मंजन, चूर्ण, वटी, तैलपाक, अवलेह, घनसत्व,	1 वर्ष तक
धूपन, शर्करा, अर्क, रसक्रिया, लवणयोग, क्षार, गुग्गुलपाक.	1 वर्ष तक
8)भस्म, मषी,पर्पटी, पोट्टली,आसव,अरिष्ट, रसासन.	जीतने पुराने, उतने गुणकारी:

* – सुरक्षित औषधि 1 वर्ष पश्चात् गुणहिन & निवीर्य होती है।.... (शा.)

मान

चरक – 2 कलिंग, मागध – श्रेष्ठ

शा. सं. – मान प्रारंभ – परमाणु

प्राचीन – 3 i) पौतव मान - Weight - Solid पदार्थ

(कोषकार) ii) द्रुवय मान – Capacity – द्रव

iii) पाय्य मान – Length – लम्बाई.

माष – हेम, धान्यक, टंक – शाण, निष्क, धरण.

अक्ष – कर्ष, किंचित्पाणि, करमध्य, कवलग्रह, पाणितल, पाणिमाणिका, पिचु, सुवर्ण, उंदुबर, तिंदुक, हंसपद, बिडालपदक, षोडशिका, तोला.

बिल्व – पल, आम्र, मुष्टि, चतुर्थिका, प्रकुंच, षोडशी.

कुडव – अंजलि, अर्धशराव, अष्टमान. प्रसृत आढक – भाजन, कंसपात्र.

राशी – द्रोण, कलश, उन्मन, उन्मान, बल्वण, घट, अर्णव (सागर).

गोणी – द्रोणी, वट. कोल– क्षुद्रक, वटक, द्रंक्षण. शुक्ति – अष्टमिका, अर्धपल.

मानिका – शराव, अष्टपल. शुर्प = कुंभ वंशी – त्रसरेणु.

* कुडव – लोह, मृद्, वृक्ष, वेणू, भांड. इनसे निर्मित.

height x depth x breadth = 4x4x4 अंगुल.

1 कुडव धान्य जिसमें समाये। इसे ही कुडव पात्र कहते है।

पौतव मान:

चरक	शारंगधर
6 ध्वंशी = 1 मरिची = 1/30 परमाणु	30 परमाणू = 1वंशी
6 मरिची = 1 रक्तसर्षप	6 वंशी = 1 मरिची
8 सर्षप = 1 तण्डुल	6 मरिची = 1 राजीका
2 तण्डुल = 1 धान्यमाष	3 राजीका = 1 सर्षप
2 धान्यमाष = 1 यव = 1/2 रत्ति (62 mg)	8 सर्षप = 1 यव.
2 यव = 1 अण्डिका = 2 रत्ति (250mg)	4 यव = 1 गुंजा (रत्ति)
2 अण्डिका = 1 माषक = 8 रत्ति (1gm)	6 रत्ति = 1 माषक
2 माषक = 1 शाण = 24 रत्ति (3 gm)	4 माषक = 1 शाण
2 शाण = 1 कोल = 48 रत्ति (6 gm)	2 शाण = 1 कोल
2 कोल = 1 कर्ष = 96 रत्ति (1 तोला)	2 कोल = 1 कर्ष
2 कर्ष = 1 शुक्ति	2 कर्ष = 1 शुक्ती
2 शुक्ति = 1 पल	2 शुक्ती = 1 पल
2 पल = 1 प्रसृत	2 पल = 1 प्रसुत
2 प्रसृत = 1 कुडव = 187gm	2 प्रसृती = 1 कुडव
2 कुडव = 1 मानिका	2 कुडव = 1 मानिका (शराव)
4 प्रस्थ = 1 आढक = 2.98kg	2 शराव = 1 प्रस्थ
4 आढक = 1 द्रोण = 11.946kg	4 प्रस्थ = 1 आढक
2 द्रोण = 1 शूर्प = 23.89kg	4 आढक = 1 द्रोण
2 शुर्प = 1 खारी	2 द्रोण = 1शुर्प
2 शुर्प = 1 वाह	2000 पल = 1 भार
10 पल = 1 तुला = 400 तोले = 4.67kg	100 पल = 1 तुला= 400 तोले
1 शेर = 80 तोला = 930gm	– 5 शेर = 4.670kg
	* 2000 पल =1 भार

माष टंक अक्ष बिल्वानि कुडव: प्रस्थं आढकम्।
राशी: गौणि खारि केति यथोत्तरचतुर्गुणा:।। ..... (शा. सं. पूर्व 1)

4 माष = 1 टंक (शाण)	4 शाण – 1 अक्ष (कर्ष)
4 अक्ष = 1 बिल्व (पल)	4 बिल्व – 1 कुडव (अंजलि)
4 कुडव = 1 प्रस्थ	4 प्रस्थ – 1 आढक (भोजनपात्र)
4 आढक = 1 राशी (द्रोण)	4 राशी – 1 गोणी
4 द्रोणी = 1 खारी.	

* कलिंग मान:–

12 गौरसर्षप = 1 यव	2 यव = 1 रत्ति (गुंजा)
3 गुंजा =1 वल्ल	8 गुंजा = 1 माष (7 गुंजा=1)
4 माष = 1 शाण (निष्क – टंक)	6 माष = 1 गद्याण.
10 माष = 1 कर्ष	4 कर्ष = 1 पल
4 पल = 1 कुडव.	

1) प्रस्थ से तुला मान तक द्रव्य उतना ही ग्रहण करना चाहिए।

2) द्रव & आर्द्र अवस्था में रहने पर जितना निर्देश कीया है, उसके 2 गुना ले। (शुष्क नहीं).

* चरक – 8 रत्ति = 1 माशा & 3 माशा = 1 शाण.

सुश्रुत, शारंगधर – 6 रत्ति = 1 माशा & 4 माशा = 1 शाण.

* चरक = 12 माशा = 1 कर्ष.

सुश्रुत; शारंगधर – 16 माशा = 1 कर्ष.

* च. सु. शा. – शाण, कोल, कर्ष एकही प्रमाण.

द्रुवय मान : 1 बिंदु – तर्जनी अंगुली 2 पर्व द्रव पदार्थ में डुबाने पश्चात जितनी द्रव्य की मात्रा गिरती है।

8 बिंदु = 1 शाण., 32 बिंदु = 1 शुक्ति., 64 बिंदु = 1 पाणिशुक्ति = सुश्रुत

शारंगधर – द्रव पदार्थ मान – कुडव में बताया है।

पाय्य मान :1 अंगुली = 8 यव सूईद्वारा एकत्रित बने इतनी लंबी = 3/4 inch
12 अंगुली = 1 वितस्ति = 9 inch.
22 अंगुली = 1 अरत्नि =16 1/2 inch.
24 अंगुली = 1 हस्त = 18 inch.
4 हस्त = 1 व्याम, व्यास = 72 inch.
* आर्द्र द्रव्य शुष्क की अपेक्षा द्विगुणा दें.
अपवाद- हमेशा ताजा, उतनी ही मात्रा में.
गुडुची, कुटज, वासा, कुष्माण्ड, शतावरी, अश्वगंधा, शतपुष्पा, सहचर, प्रसारणी.
भै. र. - इसके अतिरिक्त, निंब पटोल केतकी, बला, नागबला, केन्दीवरी, वर्षाभू, पूतिगंधा, मांस, सहितास्ता, हिंगु, आर्द्रक.
* हमेशा आर्द्र ग्रहण करें - कुटज, गुडुची, वासा, कुष्माण्ड, शतपत्री, वास्तुक.

अध्याय 4 परिभाषा :

त्रिफला: पथ्या बिभीतक धात्रीना फलै: स्यान्त्रिफला समै:।
फलत्रिक च त्रिफला सा वरा प्रकिर्तिता।।..... (भा.प्र.)
(बीज अनुपयोगी - फलत्वक् ले)
- एका हरितकी योज्या द्वौ च योज्यो बिभीतकौ।
चत्वार्यामलकान्येवं त्रिफलैषा प्रकिर्तिता।। ..... (शारंगधर)
त्रिकटु: पिप्पली मरिचं शुण्ठी त्रिभिश्त्र्युषणम् उच्यते । ..... (शा. सं.)
त्रिमद: (मुस्त चित्र विडंगच) त्रिमद : समुदाहृत:।..... (भै.र.)
(विडंग, मुस्ता, चित्रक समभाग)
मधुरत्रय: घृतं गुडो माक्षिकश्च विज्ञेयं मधुरत्रयम्।..... (र.र.स.)
त्रिजातक/त्रिसुगंधी:त्वक् एला पत्रकै स्तुल्यै स्त्रिसुगंधि त्रिजातकम्।(भा. प्र.)
चातुर्जात: (त्वकेलापत्रकेशरै:) त्रिजात + नागकेशर.
चतुरूषण: शुण्ठी, पिप्पली, मरिच, पिप्पलीमूल ।
त्र्युषण सकणामुलं कथित चतुरूषणम्।।
व्योषस्त्येव गुणा: प्रोक्ता आधकाश्चतुरूषणो।। ....(भा. प्र.)
पारद जारणार्थे विड्.....(R.R.S.)
क्षार अम्लै च गन्धाद्यै मुत्रैस्य पटू भिस्तथा।
रसग्रासस्य जीर्णार्थं तद्विडं परिकीर्तितम्।। ..... (R.R.S.)
* कज्जली पारद की प्रथम मूर्च्छना.
स्नेहवर्ग: सर्पि, तैल, वसा, मज्जा उपयोग -पान, अभ्यंग, नस्य, बस्ति.
तैलवर्ग: कुसुम्भ, मालकांगणी, करंज, तिल, सर्षप.
सर्वगन्धम्: चातुर्जात, कर्पुर, कंकोल, अगरू, शिलारस, लवंग.
* धन्वन्तरी भाग:औषधी का कुछ भाग वैद्य को दें। वैद्य के स्वास्थ्य हेतू.
1) सिध्द रसौषधीका 1/2 भाग., 2) घृत, तैल & अवलेह का 8th भाग.
3) सभी लोह चूर्ण, & वटी इनका 7th भाग.
* रूद्र भाग: दुकानदार वैद्य को कुल द्रव्य का 11 भाग (11%) रूपयों में देता है, is known as रूद्रभाग.
द्रव्यसंग्रह - प्रशस्त भूमी. मिट्टी - काली, लाल, पाण्डूवर्ण.
संग्रह: 1) फल - बिल्व छोडकर सभी पक्व फल ग्रहण करें.
2) शाक - मूला छोडकर अन्य शाक शुष्क न खाये.
3) शुष्क - हरितकी, द्राक्षा

कल्पना
- औषध
  - कषाय,स्नेह,सन्धान,अन्य
- आहार
  - (यूष, यवागू)

कषाय कल्पना:-
च., वा. - 5 (स्वरस, कल्क, क्वाथ, हिम, फाण्ट), सु. = 6 (5 + क्षीर), काश्यप - 7 क्षीर के जगह चूर्ण & अभिषव (मद्य) नविन कल्पना वर्णन चरक - मुख्य कल्पना 5 - कुल- 128 सुश्रुत- 6- कुल -129 ,अ सं - 88 अ.हृ. -76, शांगधर - मुख्य कल्पना 5, कुल-74 ,भैषज्यरत्नावलि-98 / 100
* पंचविध कषाय कल्पना :
तेषां यथापूर्व बलाधिक्यम् अत:कषाय कल्पना व्याधि आतुर बलापेक्षिणी।
वीर्य स्वरूपानुसार कल्पना:
i) पार्थिवांश - चूर्ण.,
ii) वीर्य पार्थिव & जलीय रहने पर - कल्क.,
iii) वीर्य जलीयांश - स्वरस or क्वाथ.,
iv) कटु सुगंधित द्रव्य वीर्य वायवीय & तेजस रहने पर क्वाथ न करें.
(चूर्ण, कल्क, हिम, फाण्ट or अर्क etc कल्पना करें.)
क्षीरपाक: i) अर्जुन क्वाथ अरूचिकर होने से तथा.
ii) रसोन & भल्लातक इनकी तीक्ष्णता कम करने हेतु क्षीरपाक करते है।
- कषाय कल्पना गुणान्तरधान हेतु की जाती है। ..... (चक्रपाणी)

1) स्वरस कल्पना

पर्याय - विनय, किट्ट, विष्ट, अम्बु, नीर.
- other method : शुष्क द्रव्यचूर्ण कर समभाग or 2 times जल में दिनभर भिगाकर, सबेरे मसलकर छान लें। (चरक)
1) 1 कुडव चुर्णित द्रव्य + 2 times पानी = 1 अहोरात्र भिगाये। (शा.सं.)
2) शुष्क द्रव्य + 8 times पानी = 1/4th रखें। (शा.सं.)
पुटपाक स्वरस :
निम्ब, वासापत्र व बिल्वपत्र.
द्रव्य पत्र + कल्क -वटपत्र, काश्मरीपत्र, जम्बुपत्रादि वेष्टन- आटे का 1 अंगुल लेप.
- चिकनी मिट्टी - 2 अंगुल मोटा लेप - सुखाकर लाल होने तक पुट दें।
* मात्रा : स्वरस गुरूत्वाच पलमर्धं प्रयोजयेत्।
निशोषित चाग्नि सिध्द पलमात्रं रसं पिबेत्।..... (शा. सं.)
मात्रा - 1/2 पल - 2 तोला.
- अग्निसिध्द i.e क्वाथ & पुटपाक द्वारा प्राप्त स्वरस मात्रा 1 पल i.e. 4 तोला.
* प्रक्षेप : मधु श्वेता गुड क्षारान जीरक लवणं तथा।
घृत तैलं च चूर्णादिकं कोलमात्र रसे क्षिपेत्।। ..... (शा.) OR
पलमात्रो रसो ग्राह्यो: कर्षमात्रं मधु क्षिपेत्। ..... (शा. मध्यम)
1) आर्द्रक स्वरस. पुराण गुड मिश्रीत + अजाक्षीर सह सर्व शोथहर
2) तुलसीपत्र स्वरस., 3) वासा पूटपाक स्वरस.
4) दाडीम पुटपाक स्वरस. अतिसार, अन्य पध्दती से ब्राह्मी स्वरस निकालते है। (शुष्क ब्राह्मी 12 times जल etc.) अहोरात्र.

2) कल्क :

- द्रव्यं आर्द्र शिलापिष्टं शुष्कं वा सजलं भवेत्।
प्रक्षेप आवाप कल्कास्ते तन्मानं कर्षसम्मितम्।। ..... (शा. सं.)
* - य:पिण्डो रस पिष्टानां कल्क:स परिकिर्तित:।..... (च.सू.4)
- कल्को दृषदि पेषित:। ..... (चक्रपाणि)
- उपलदशनादि पिष्टस्तु कल्क:। ..... (अ.सं.क)
मात्रा: 1 कर्ष (1 तोला) ..... (शा.)
प्रक्षेप: कल्के मधु घृतं तैलं देयं द्विगुण मात्रया।
सिता गुडो समौ दद्यात् द्रवा: देयात्चतुर्गणा:।।
1) निम्ब कल्क : लेपान निम्बदलै: कल्को व्रणशोधन रोपण।
भक्षणाच्छर्दि कुष्ठानि पित्त श्लेष्मकृमीज्जयेत्।। ..... (शा. मध्यम)
* महानिम्ब कल्क - गृध्रसि.
2)रसोन कल्क: शुध्द कल्को रसोनस्य तिल तैलेन मिश्रीत:।
वातारोगान् जयेत् तीव्रान विषमज्वर नाशन:।। .. (शा.)
* कल्कांतर्गत चूर्ण कल्पना:
अत्यंत शुष्क यद् द्रव्यं सुपिष्टं वस्त्रगालितम्।
तस्माद् चूर्ण रज: क्षोद: तन्मात्रा कर्ष संमिता ।। शारंगधर

मात्रा: 1 कर्ष (1 कोल – पाठभेदानुसार)
(1 कर्ष ..... शारंगधर)
प्रक्षेप : 1) गुड = समभाग, 2) शर्करा = द्विगुण,
3) चूर्ण – चाटने के लिए मधु or घृत द्विगुण.
4) द्रव – द्रव्यसह मिलाकर पिने हेतु 4 गुना. (दुग्ध आदि)
हिंग – अनुत्क्लेद मात्रा में मिलाये.
चूर्ण – (रसशास्त्रानुसार चालनी – 3 प्रकार)
* दोषानुसार अनुपान : चूर्ण, अवलेह, गुटिका, कल्क इनका,
V रोग में – 3 पल., P रोग में – 2 पल., K रोग में –1 पल.
* भावना द्रव्य:
द्रवेण यावता सम्यक् चूर्ण सर्व प्लुतं भवेत्।
(संपूर्ण चूर्ण जितने द्रव में भिगे उतनी मात्रा में भावना द्रव्य का प्रयोग करें।)
1) सितोपलादि चूर्ण : T- त्वक (दालचिनी), E– इलायची, P– पिप्पली, V– वंशलोचन (तुगाक्षीरी), C– सिता.
* TEPVC - 1,2,4,8,16 माशा – (1-4) माशा ; मधु or घृत सह.
श्वास, कास, क्षय, सुप्तजिव्हा, अरोचक, मन्दाग्नि, पार्श्वशुल, हस्तपादांस दाहषुज्वरे, उर्ध्वग रक्तपित्त. (भै. र.) (राजयक्ष्मा)
2)तालीसादि चूर्ण:तालीसपत्र मरिच नागर पिप्पली शुभा वंशलोचन1-1भाग बढाये. त्वक्–एला – अर्ध भाग. शर्करा पिप्पली के 8 गुना.
मात्रा: (1-4) माशा; मधु or घृत सह.
श्वास, कास, अरूचि, दीपन, पाचन, पाण्डु, ग्रहणी, प्लीह, शोष, ज्वर, हृद्रोग, छर्दि, अतिसार, शूलरोग, मूढवात, अनुलोमक.
3) हिंग्वाष्टक चूर्ण:
त्रिकटु अजमोदा सैन्धवं जीरकेद्वे – समभाग लें, शु. हिंग –1/8th माशा.
मात्रा: (1 - 4) माशा ; घी, तक्र, जल, मन्दाग्नि, वातरोग..... (भै. र.)
4) भास्कर लवण चूर्ण: सैधंव, सौर्वचल,सामुद्र ,विड ;पिप्पली,पिप्पली मुल, धान्यक.
मात्रा: (2 - 4) माशा वातकफरोग & विशेषत: प्रमेह पाण्डु
* दाडिमाष्टक चूर्ण – शर्करा:दाडिम – 4 : 1
* कपित्थाष्टक चूर्ण–

3) क्वाथ :

पर्याय: श्रृत, क्वाथ, कषाय, निर्युह.....(शा.)
पानीयं षोडश गुणं क्षुण्णे द्रव्यपले क्षिपेत्।
मृत्पात्रे क्वाथयेद् ग्राह्य अष्टमांशावशेषितम्।। (1:16:1/8)
जल प्रमाण: 1) मृदु द्रव्यार्थ 4 गुना जल.,
2) मध्यम द्रव्यार्थ 8 गुना जल., 3) कठिन द्रव्यार्थ 16 गुना जल.
* मृदु द्रव्य 4 तोला से कम होने पर – 16 गुना जल.
(5 - 16) तोला द्रव्य रहने पर- 8गुना जल.,16 तोला द्रव्य रहने पर- 4 गुना जल.
मात्रा: 1 पल (4 तोला).....(च.) i.e शास्त्रानुसार.
2 पल (8 तोला ..... शारंगधर)
प्रक्षेप: द्रव, कल्क, चूर्ण – 1 कर्ष, other = 1 शाण
1) पुनर्नवाष्टक क्वाथ – सर्वांग शोथ, उदर, कास.
2) महारास्नादि क्वाथ – वातरोग.
1) प्रमथ्या: प्रमथ्या प्रोच्यते द्रव्यपलात कल्कीकृतात् श्रृतात।
तोयेऽष्ट गुणिते तस्या: पानमाहु: पलद्वयम्।।..... (शा. मध्य)
द्रव्य 4 तोला: 8 गुना (32 तोला) जल –1/4 शेष
प्रमथ्या मध्यदोषाणां दद्याद दीपन् पाचनीम्।..... (च./चि.)
* प्रमथ्या – दीपन, पाचन कषाय..... (चक्रपाणि)
* अतिसार में दीपन पाचनार्थ मुस्तादि प्रमथ्या also for रक्तातिसार..... (शारंगधर)
2) लाक्षारस:षडगुणेनाम्भसा लाक्षां दोलायन्त्रे विपाचयेत्।
त्रिसप्तधा परिस्त्राव्या लाक्षारसमिमं विदु:।।..... (शा.)
– 1 पल लाक्षा – 6 गुना जल – 1/4 तक. 21 बार छान लें।
– लाक्षा + 4 गुना जल – 1/4 शेष (भै. र.)
– लाक्षा + 16 गुना जल – 1/4 शेष (यो. र.)

3) मांसरस: 1) घन् मांसरस – 8 पल मांस – 1 प्रस्थ जल.
2) मध्यम् मांसरस – 6 पल मांस – 1 प्रस्थ जल.
3) तनु मांसरस – 1 पल मांस – 1 प्रस्थ जल.
* मांसरस प्रकार – 2 कृतमांस रस, अकृतमांस रस.
4) वेशवार:
(1:4) अस्थि निकालकर मांस खण्ड 4 गुना जल में मध्यमाग्नि पर पाचन.
– पिप्पली, शुण्ठी, मरिच, गुड, सर्पि मिलाये.
गुण : वेसवारो–गुरू: स्निग्धो बल्यो वातरूजापह:।
5) क्षीरपाक: द्रव्य:क्षीर: जल – 1 : 15 : 15 (यादवजी त्रिकमजी) (सु)
– क्षीरमष्टगुणं द्रव्यात्क्षीरान्नीरं चतुर्गुणम्।
क्षीरावशेष तत्शीतं शूलं आमोद्भव जयेत्।।..... (शा. सं.)
– 1(द्रव्य): 8 (गोदुग्ध): 32 (जल)
* अम्ल, लवण, कषाय – रस छोडकर other all द्रव्य का उपयोग क्षीरपाक विधी से कर सकते है। (reason = दुध नष्ट होता है)
6) उष्णोदक:
जल – 1/8 or 1/4 or पूर्व उबाला हुआ। गुण = बस्तिशोधक
* औषध सिध्द पानीय (1 : 64) 1 कर्ष द्रव्य – 1 प्रस्थ जल.
7) यवागु: औषध सिध्द जल से यवागू.
8) पेया: – 4 प्रकार (सु.) i) मण्ड – चावल विरहित पेय (पेज),
ii) पेया – अल्प सिक्थ & द्रव्य (शीतासहित पेज),
iii) यवागू – सिक्थ अधिक than मण्ड.,
iv) विलेपी – सिक्थ प्रमाण पेया से अधिक. (विरल द्रवा)
– पेया यवागु का पर्याय ..... (डल्हण)
– द्रवाधिका स्वल्पसिक्था .....(शा.) पेया लघुतरा ज्ञेया ग्राहिणी धातू पूष्टिदा।
– तृष्णा ग्लानि दौर्बल्य कुक्षिरोग ज्वरापहा।
स्वेदाग्नि जननी पेया वात वर्चोऽनुलोमनी।।..... (च.सु.)
* सिक्थविरहित मण्ड: पेया सिक्थ समन्वित:।
यवागु बहु सिक्था स्यात् विलेपी विरलद्रवा।। ..... (सु. सू.)
* डल्हण जल प्रमाण :
1) अन्न – भात – 5 गुना (चावल से 5 times जल) (शां. 3. 5 गुणा जल)
2) यवागु – 6 गुना, 3) मण्ड – 14 गुना, 4) विलेपी – 4 गुना.
(अन्न – विलेपी – मण्ड – यवागु 5,4,14,6 लागू।)
यवागु स्त्रिविधा प्रोक्ता मण्ड पेया विलेपी. * आम्रादी यवागु = ग्रहणी.
– 1 व्यक्ति 1 समय जितना भात खाता है उसके 1/4 मण्ड, पेया, विलेपी or यवागु दें।
* मण्ड = पाचन, दीपन..... शांरगधर
– मण्डस्तु दीपयत्यग्नि वात चाप्यनुलोमयेत्।
दीपनत्वा लघुत्वाच्च मण्ड स्यात् प्राणधारण:।।
9) वाट्यमण्ड: – निस्तुषयव – कफपित्तनाशक, रक्तपित्तनाशक, कण्ठ के लिए रूचिकर, हितकर.
10) लाजमण्ड : * लाजैर्वा तण्डुलसृष्टै लाजमण्ड प्रकीर्तित:।..... (शा. सं.)
गुण:– लाजामण्डो विशुध्दाना पथ्य, पाचन, दीपन:।
वातानुलोमन हृद्य पिप्पली नागरायुत:।।..... (सु.)
कफपित्तनाशक ग्राही, पिपासा, ज्वरनाशक..... (शा.)
11) विलेपी: विलेपी विरलद्रवा .... (सु.),
विलेपी तु चर्तुगुणे।.....(डल्हण)
– विलेपी तर्पणी हद्या ग्राहिणी बलवर्धनी।
पथ्या स्वादुरसा लघ्वी दीपनी से तृषापहा।। ..... (सु.)
– तर्पणी बृंहणी हृद्या मधुरा पित्तनाशिनी।..... (शा.)
* यवागु: षडगुणे पचेत ..... (डल्हण)
यवागु बहुसिक्था स्यात्..... (सु.)
चावल 10 or 15 or 20 गुना जल ..... (काश्यप)
यवागु – 7 दोष ..... (जीवक)
घना विशीर्णा शीता च न चावक्षीणतण्डूला।
पिच्छिल विशद अहृद्य यवागु दोष संग्रह:।। ..... (का.)
यवागु: षडगुणजले सिध्दा स्यात्कृशरा घना।

तण्डुलै मृद्गमाषैश्च तिलैर्वा साधिता हिता ।। ..... (शा.)
ग्राहिणी बल्या तर्पणी वातनाशिनी।।..... गुण यवागु
12) भक्त: (भात): पर्याय = ओदन
तण्डुल: जल, ∴ 4 : 14 – जले चतुर्दशमुणे तण्डुलानां चतुष्पलम्।
विपचेत्स्त्रावयेन्मण्ड स भक्तो मधुरो लघु:।। ..... (शा.)
13) अन्न: 5 गुना जल (अन्न पंच गुणे साध्ये)
अन्न – भात पर्याय..... (भावमिश्र)
भक्त,अन्न,अन्ध,कुर, ओदन, मिरक्षा, दीरिवी, भिस्सा.
14) कृशरा (खिचडी): कफपित्तकरी बल्या कृशरा ऽ निलनाशिनी।
–तिल तण्डुल माष इनसे कृशरा बनाते हैं उसे त्रिशरा कहते है।
15) मिश्र कल्पना: द्रव्यै बहुविधै द्रव्यैस्तथा चान्नै: अतण्डुलै:।
यूष इति उच्यते सिध्दो यवागुस्तण्डुलै:सह।। ..... (काश्यप)
16) यूष: * प्रकार = 25 ..... (काश्यप), 50 = रसाश्रयानुसार,
75– दोषभेदानुसार. – यूष – द्रव योनय..... (वृध्दजीवक)
1) कषाय मधुर, 2) कषायाम्ल.
* प्रक्षेप द्रव्य = 1/8 भाग.
* प्रकार = 3 i) कृत यूष..... (काश्यप), ii) अकृत यूष, iii) कृताकृत
यूष.– 2 i) अकृत – अस्नेह लवण ....(सु.) ii) कृतयूष = लवण स्नेह कटूकै: संयुक्त.

4) हिम: (शित)

क्षुण्ण द्रव्य पल सम्यक् षड्भिनीर पलै: प्लुतम्।
निशोषितं हिम: स स्याद् तथा शीत कषायक:।।
पयार्य– निशापर्युषित
तन्मान फाण्टवज्ज्ञेयं सर्व त्रैवेष निश्चय:। .....(शा. सं.)
मात्रा– 2 पल
प्रक्षेप द्रव्य – क्वाथ वत्.....(यादवजी)
6 गुना (उष्ण जल), 12 hrs तक भिगाये ....(च.)
मात्रा– 1 पल
1) धान्यक हिम: अंतर्दाह, तृष्णा, स्त्रोतोविशोधन.
2) सारिवादी हिम: रक्तपित्त,विकार, 3) आम्रादी हिम: रक्तपित्त,
4) मरिच्यादि हिम: तृष्णा, छर्दि, 5) अमृतादि हिम: जीर्णज्वर, रक्तपित्त.
– हिम कल्पना में मन्थ, तक्र, तण्डुलोदक, पानक, शार्कर, षडंगपानीय, etc.
1) मन्थ: * मन्थो ऽपि (फाण्ट) भेद: स्यात्।.....(शा.)
but फाण्ट उष्ण: मन्थ शीत होता है। ∴ मन्थ हिम में.....(other आचार्य)
* मन्थ सत्तुप्रधान कल्पना..(च. ; सु.)
औषध चूर्ण: जल – मन्थन (शा.) (1:4) मात्रा = २ पल –
त्र्यूषणं त्रिफला क्षौद्र क्रिमीघ्न अजमोदक:।.. (च.) (1:1) माशा
मन्थोऽयं सक्तवस्तैल हितो लोहोदका प्लुत:।। .... (च.सू.)
प्रकार – सन्तर्पण मन्थ, अपतर्पण मन्थ.
i) खर्जुरादि मन्थ = सर्व मद्यविकारनुत्.
2) तक्र : घोल मथित तक्र, उदश्वित, छच्छिका (भा. प्र.)
दोषानुसार – वात रोग – तक्र ससैन्धव
पित्त रोग – तक्र सशर्करा
कफ रोग – तक्र = त्रिकटु, यवक्षार
3) तण्डुलोदक: 1 : 8 काण्डित तण्डुलपलं जले ऽष्ट गुणिते क्षिपेत्।
भावयित्वा जलं ग्राह्यं देयं सर्वत्र कर्मस्तु।। .... (शा.)
* उपयोग–संग्राहक औषधी के अनुपानार्थ.
4) षडंगपानीय: मुस्त पर्पटक उशीर चन्दनोदीच्यनागरै:।
श्रृतशीतं जलं दद्यात पिपासा ज्वरशान्तये।। (च.चि.)
5) पानक : फलमम्लं अनम्लं वा शीताम्बु परिमर्दितम्।
सितामरिच संयुक्त पूतं स्यात् पानकं वरम।। . (यादवजी)
i) चन्दनपानक, ii) चिंचापानक.
6) शार्कर (शर्बत) : हिमे फाण्टे श्रृते ऽर्के वा शर्करा द्विगुणा क्षिपेत्।
मन्दे ऽग्नौ साधितं पूतं परातत्व् शार्करं स्मृतम्।।..... (यादवजी)
– हिम, फांण्ट, क्वाथ or अर्क इसमें 2 times
सक्कर Mix कर मंदाग्निपर पाचन शार्कर बनाये।
i) वनप्सा शार्कर, ii) परूषक शार्कर.

5) फाण्ट:

क्षुण्णे द्रव्यपले सम्यग्जलमुष्णं विनीक्षिपेत्।
मृत्पात्रे कुडवोन्मानं ततस्तु स्त्रावयेत्पटात्।।
तस्य पर्याय चूर्ण द्रव: फाण्ट स्तन्मानं द्विपलोन्मिताम्।
सितामधुगुडादीश्च क्वाथवत् तत्र निक्षिपेत्।। ..... (शा.)
मात्रा – 2 पल .... (∴ 1 पल द्रव्य में 4 गुना उष्णजल), 1 पल..... (च.)
i) पंचकोल फाण्ट, ii) सुदर्शन फाण्ट : मुख्य द्रव्य = चिरायता for ज्वर.
* **रसक्रिया – अवलेह:** मध्यम मात्रा = 1कर्ष (यादवजी)
क्वाथादिनां पून: पाकात् घनत्वं सा रसक्रिया।
सो ऽवलेहस्य लेह:स्यात् तन्मात्रा स्यात् पलोन्मिता।।
स्नेहपाक कल्पना: (भै. र. ज्वर)
स्नेह साधन – सामान्य क्रम –
स्नेह मूर्च्छन → क्वाथ → दुग्ध से पाक → कल्क से पाक →
गंध द्रव्यो से पाक → मदाग्नी पर निर्जल करे।
* स्नेहपाक प्रमाण 5 या अधिक द्रव्य से स्नेहपाक करना हो तो , तो सभी प्रत्येक द्रव्य स्नेह के सम प्रमाण में होना चाहिए।
स्नेह सिधि लक्षण:
वर्तिवत स्नेह कल्क: स्याद ऽ यदागुंल्यां विमर्दित:।
शब्द हिनोअग्निनिक्षित: स्नेह: सिधि भवेतदा ।।
यदा फेनोदगम स्तैले फेनशान्तिश्च सर्पिषि।
गंधवर्ण रसोत्पत्ती: स्नेह सिधि स्तदा भवेत ।। शा.म.

स्नेहपाकार्थ द्रव्य	स्नेहपाक सिधि के लिए काल
1) धान व मांस रस	1 दिन
2) दुग्ध से	2 रात्र
3) स्वरस से	3 रात्र
4) दधी,तक्र गोमुत्रादी से	5 रात्री
5) मुल और लता से	12 रात्री

स्नेहपाकार्थ द्रव्य	कल्क की मात्रा
1) जल से स्नेहपाक	$^1/_4$
2) क्वाथ से स्नेहपाक	$^1/_6$
3) स्वरस से स्नेहपाक	$^1/_8$

केवल कल्क से स्नेहपाक के लिए कल्क से स्नेह $^1/_4$ प्रमाण में और 4 गुणा जल लेना चाहिए।
दुग्ध,दधी, मांसरस से स्नेहपाक में कल्क $^1/_8$ और जल 4 गुणा लेना चाहिए।
पूष्प कल्क स्नेहपाक के लिए मांसरस से स्नेह $^1/_8$ और जल 4 गुणा लेना चाहिए।
सिध्दि लक्षण: सुपक्वे तन्तुमत्वं स्यादवलेहोप्सु मज्जति।
स्थिरत्वं पिडिते मुद्रा गन्धवर्ण रसोदभव ।। (शा. सं)
तनुमत्वं – सरणं न च।.... (यादवजी)
मात्रा– 1 पल, मध्यम मात्रा = 1कर्ष (यादवजी)
– रसक्रिया फाणिताकृती: काकवी इति लोके।..... (डल्हण)
* प्रकार –2 : i) रसांजन = दारूहरिद्रा क्वाथ., (अजा दुग्ध)
ii) एलुआ = काल बोल.
* फाणित कल्पना : इक्षुरस पाक (= इक्षुविकार) ∴ घन.
* अवलेह – सक्कर मात्रा –चूर्ण के 4 गुना, गुडसह पाक – गुड के 2 गुना,

स्वरस, क्वाथ, चूर्ण के 2 गुना.

* अवलेह पाक – 1) तंतूपाक 2) बिंदुपाक.

* मात्रा – 1 पल – प्रवर मात्रा (1 कर्ष = मध्यम मात्रा..... यादवजी)

e.g 1) कुष्माण्डावलेह – रक्तपित्त, 2) व्याघ्री हरितकी – सर्व कास.

* **वटी कल्पना:**

(शा. म.) चूर्ण से सक्कर 4 times, गुड 2 times, गुग्गुल, मध – समभाग.

(only, मोदक में द्रव्य 2 times लें.)

– 1 बार में max 1 कर्ष मात्रा का मोदक खायें।

1) **संजीवनी वटी:**(घटक = 11)

अजीर्ण व गुल्म, 1 वटी विसूचिका, 2 वटी

सर्पदंश, 3 वटी सन्निपात ज्वर 4 वटी

a) भावना = गोमूत्र. b) अनुपान = आर्द्रक स्व., मधु.

2) चंद्रप्रभा वटी – प्रमेह (भै.र.)

3) शंखवटी – भावना – निम्बुस्वरस, अजीर्ण (अनुपान – उष्णोदक)

4) रसोनवटी – विसूचिका..... (वैद्यजीवन)

5) आरोग्यवर्धिनी – भावना (निम्बपत्र), कुष्ठरोग (RRS) (अनु = मध)

6) चित्रकादि वटी – ग्रहणी.. चक्रदत्त ; आमघ्न, अग्निमांद्य

7) लवंगादि वटी – कास... (वैद्यजीवन)

8) व्योषादि वटी – पीनस, प्रतिश्याय.

9) एलादी वटी – रक्तपित्त. (भै.र.) (चरक – क्षतक्षीण)

10) **योगराज गुग्गुल** – आमवात...(चक्रदत्त;शा.) (योगराज– पाण्डू– चरक)

इसे ही महायोगराज गुग्गुल/योगराज गु. रसायन by (भै. र.)

* **वर्ती कल्पना :**

1) चंद्रोदय वर्ती – नेत्ररोग .... (शा.) 2) फलवर्ती – उदावर्त .. (भै.र.)

* सौभाग्य शुण्ठि पाक – सुतिका.... (भै. र.)

* मुसली पाक – वाजीकर ..... (भारत भैषज्य रत्नाकर)

* हरिद्रा खण्ड – उदर्द शीतपित्ते (भै. र.)

* नारिकेल खण्ड पाक – शूल (भै. र.)

* अर्क लवण – यकृत प्लीहा उदर मलभेदन.

* **मषी कल्पना:**

कृष्णस्य सर्पस्य मसी सुदग्धा।..... (सु./चि.)

कृष्णत्व मसी..... (शुक्लत्व क्षार)

1) हस्तीदन्त मसी = 1/4 तोला = हस्तिदन्त मसी

1/4 तोला = रसांजन मसी, + गोमूत्र = इन्द्रलुप्त लेप रोमपूर्ववत्

* Black ash - महाभूत = तेज + वायु (पृ. & जल = नाश.)

2) मयुरपिच्छा मषी + पिप्पली चूर्ण समभाग.

..... for हिक्का, श्वास, छर्दि..... (यो. र.)

3) त्रिफला मषी – मंजन, उपदंश, व्रण (बाह्य लेप–शा.सं.)

* **अयस्कृती:**

– धातु पर संस्कार कर शरीर सात्म्य पदार्थ में रूपांतर।

* तीक्ष्ण लोह – 4 अंगुल दीर्घ पत्र.

–तिलवत् breadth(तिलोत्सेध तनुनि) तीव्राग्नि–लाल:त्रिफला क्वाथ,लवण में

a) शोधन: इंगुदीक्षार & किंशुकक्षार में गोमूत्र मिलाकर क्रमश: 20 बार डुबाए;

b) उपयोग– 1वर्ष पश्चात ..(च.), तुरंत पश्चात ....(सु.)

* **क्षार–विशेषकर मलनाशन में...** (रसार्णव)

* प्रमाण–द्रव्य : जल 1 : 6 ....(सु.), 1 : 4 .... (शा.), 1 : 8 ... (रसतरंगिणी)

1) अपामार्ग क्षार– श्वास. 2) स्नुही क्षार – सर्व उदर.

3) यवक्षार– लघु स्निग्ध, दीपन, पाचन.

4) क्षार सूत्र– सर्व प्रथम उल्लेख ..... (चक्रदत्त)

स्नेहपाक: स्नेह साधनार्थ क्वाथ.

मृदु द्रव्य – 4 गुना जल – क्वाथ, मध्यम द्रव्य – 8 गुना जल – क्वाथ,

कठीन द्रव्य – 8 गुना जल – क्वाथ,

अधिक कठीन द्रव्य – 16 गुना जल – क्वाथ.

* अरिष्ट आसव की अपेक्षा अधिक गुणवान.

* शा. – भेद of आसव, अरिष्ट 1st time.

स्वरस * आसव:

* यद् न पक्व औषधाम्बुभ्यां सिध्दं मद्यं स आसव: ।..... (शा.)

क्वाथ * अरिष्ट:

* अरिष्ट : क्वाथ सिध्द: स्यात् तयोर्मानं पलोन्मितम् ।..... (शा.)

(च. –84 आसव.) द्रव–1 द्रोण, गुड –तुला, क्षौद्र–1/2 गुड, प्रक्षेप – 1/10 गुड.

* **सीधु:** इक्षु रससे उत्पन्न.

प्रकार = 2 - 1) अपक्व रस सिधू, 2) पक्व रस सिधू,

* कोहल: यव सक्त कृत कोहल – पर्याय = मधूलक.

* कांजी: कूल्माष धान्यमण्डादि सन्धितं कांजिकं विदु: ।..... (शा.)

* सण्डाकी: सण्डाकी संधिता ज्ञेया मुलकै: सर्षपादिभि: । ..... (शा.)

1) द्राक्षारिष्ट– उर:क्षत, कास

2) दशमुलारिष्ट– (1 - 2) तोला परमवाजीकर. वातव्यधि

3) पार्थाह्यरिष्ट/अर्जुनारिष्ट– हृद्रोग....(भै. र.)

4) अशोकारिष्ट–स्त्रीरोग, प्रदर.

5) कुमारी आसव– उदर..... 6) विडंगरिष्ट– कृमी

* मात्रा– (1 - 2) तोला of (आसव, अरिष्ट)

30 ml (समान जल मिलाकर भोजन पश्चात्)

7) चन्दनासव – शुक्रमेह (भै. र.), सर्व प्रमेह.

रागषाडव: सर्वप्रथम वर्णन by (सु.)

राग & षाडव separeted by.....(डल्हण)

षाडव पुन: मधुराम्ललवण संयोगजा नानाविधा: । ..... (सु.सू.)

* सौवीरक = निष्तुष द्रव्य. तुषोदक = सतुष द्रव्य.

* तैल मूर्च्छन– गंध दोष नष्ट

स्नेहपाक कल्पना रस से सिध्द पाक काल 2 रात्री.

* घृत मूर्च्छन = आम दोष नष्ट

* **खड – काम्बलिक**

प्रथम गुण वर्णन by (सु.), दोनों युष विशेष (डल्हण)

* खड : 1) सतक्रशमीधान्य, 2) सतक्रशाक.

* काम्बलिक : दधिमस्त्वम्लसिध्दस्तु यूष: काम्बलिका स्मृत: ।

* मलहर.....(यो. र.) औवधी द्रव्य: उपादान द्रव्य–1:25

1) गन्धकाद्य मलहर – पामा, दद्रु, etc चर्मरोग.

2) सर्जरस मलहर – व्रण, अग्निदग्ध.

* शतधौत घृत, सहस्त्रधौत घृत– दाह, वेदना विस्फोट

मैरेयक, (सुरासव) – (1 भाग आसव + 1 भाग सुरा अन्न) – तीव्र मद्य

* **लवण:** 8 ..... (अ.हृ.), 6 ..... (RRS)

– लवणकल्प अनुपान – उष्णजल, नारिकेल, दधिमस्तु.

* **वनस्पति द्रव्य + लवण समभाग → मर्दन → (गजपुष्ट) → पुन:मर्दन → लवणकल्प**

* **अयस्कृती:** सन्धान प्रक्रिया मिश्रण पात्र

* शीत काल में 1 महिना, * उष्ण काल में 15 दिन रखते है।

* सारस्वतारिष्ट में मिश्रण स्वर्णपात्र में रखते है।

* **क्षार कल्पना:** i) खनिज क्षार, ii) सज्जिकक्षार Na_2CO_3,

iii) सौवर्चल क्षार KNO_3, iv) टंकण,

v) औद्भिद/वानस्पितज– तिल, चिंचा, अपामार्गक्षार,

vi) प्राणिज क्षार – नवसादर NH_4Cl.

– 1 वनस्पति द्रव्य से क्षार निर्माण करना शांरगधर स. में वर्णित.

* प्रमाण– 1 : 6 (सु.), 1 : 4 (शा.), 1 : 8 (RRS)

खर्जुरादि घृत – राजयक्ष्मा,

सौभाग्य वटी भावना – भृंगराज स्वरस, नृपतिवल्लभ रस – ग्रहणी

चव्य – अर्श. शिम्बी धान्य – यूष, शुक धान्य – यवागु,

गुड + शुण्ठी – V हर, गुड + हरितकी – P हर,

गुड + जल – K हर.

कायचिकित्सा

काय पदनिरुक्ती:1)चीयते अस्मिन अस्थादिकमिति काय।(रघुवीर कोष)

2) कायस्य नाम अन्तरग्न। च.सु.30/28 चक्रपाणी टिका

3) कायोजाठराग्नी: अंगुलिपिहितो कर्णयुगुले धूक् इति।

शब्दश्रवणात तात्स्थ्याद् वा कायशब्देन अग्निरुच्यते।।

च.सु.30/25-26(शिवदास सेन टिका)

4) काय चित्तप्रकृति: । सु. शा. 4/88

5) चीयते प्रशस्त दोषधातूमलै इति काय:। अ.हृ. 1/5 अरुणदत्त टिका

काय पर्याय- कलेवर (अमरकोश), गात्र (शब्दस्तोम महानिधि), शरीर (सुश्रुत),वर्ष्म, संहनन, मूर्ति, देह, तनू, विग्रह.

चिकित्सा: -

1) धातूसाम्यार्थ प्रवृत्ती: चिकित्सा। च.सु.9

2) त्रिविध चिकित्सा - च.सु. 11(दैवव्यपाश्रय, युक्तीव्यपाश्रय, सत्वावजय)

3) स्वभावोपरमचिकित्सा- च.सु.16

4) धातूसाम्य क्रिया- च.सु.17 (धातूसाम्यकार्य-चिकित्सा च.वि. 8)

5)विशुध्द चिकित्सा और(हेतू,उद्भव,अधिष्ठानानुसार चिकित्सा)च.नि.8

6) परमभेषज रुप पंचकर्म चिकित्सा- च.वि.3

7) कारण पूनभैषजं चिकित्सा- च.वि.8

8) नैष्ठीकी चिकित्सा- च.शा.1

परिभाषा -

1) काय:सकलं शरीरं किंवा कायति शब्दं करोति इति कायो जाठराग्नि

च.सु. 30/28 शिवदाससेन टिका

2) जाठर: प्राणिनामग्नि: काय इतिभिधीयते।

च.सु. 30/28 (शिवदाससेनव्दारा उदधृत भोज-वचन)

3) कायोऽत्रग्नि: उच्यते....अथवा कायो देह। सु.सु. 1/7 डल्हण टिका.

4) सप्तैते सात्त्विका: काया: षडेते राजसा: काया, इत्येते त्रिविधा काया: प्रोक्ता वे तामसास्तथा। सु.शा. 4/81

5) अत्र कायशब्देन दोषधातूमलसंघात उच्यते। सु.उ. 39/2 डल्हण

6) अन्ये कायशब्देन कायग्नि वदन्ति, अपरे दुष्टकाय: काय:....।

सु.उ. 39/2 डल्हण टिका

7) कायचिकित्सा इति कायस्य अन्तरग्नेचिकिसा। गंगाधर

-कायप्रकृती,चित्तप्रकृती,सत्वप्रकृती,महाप्रकृती-एक दुसरे के पर्याय है।

-कायभेद-3 सात्वीक, राजस,तामस.

चिकित्सा-

1) चिकित्सा रुकप्रतिक्रिया रुज: प्रतिक्रिया निरसनम्। (अमरकोष)

2) चिकित्सा रोग निदान प्रतिकारे। (वैघकशब्दसिंदू)

3) या क्रिया व्याधिहारीणी सा चिकित्सा निगद्यते। भा.प्र.

4) चिकित्सा तत्प्रतिकार:। राजनिघटू

चिकित्सा भेद- एकविध- निदान परिवर्जन

व्दिविध 1) शीत-उष्ण, 2) संतर्पण (बृंहण)- अपतर्पण (लंघन),

3) अपतर्पण भेद- संशोधन-शमन, 4) संशमनभेद- बाहय व अभ्यन्तर,

5) उर्जस्कर व रोगनूत, 6) रसायन-वाजीकरण

7) द्रव्यभूत - अद्रव्यभूत 8) रोगप्रशमन व अपूर्नभव

त्रिविध - 1) दैवव्यपाश्रय, यूक्तीव्यपाश्रय, सत्वावजय

2) अन्तपरिमार्जन, बहि: परिमार्जन, शस्त्रप्रणिधान

3) आसूरी, मानूषी, दैवी. 4) लंघन, लंघन पाचन, दोषावसेचन.

5) अपकर्षण, प्रकृतिविघात, निदान परिवर्जन.

6) भौम, औदभिद, जांगम.

7) हेतूविपरित, व्याधिविपरित, उभयविपरित.

चतूर्विध चिकित्सा -

1) संशोधन, संशमन, आहार, आचार (सुश्रुत)

2) वनस्पति, वानस्पत्य, वीरुध, औषध

3) वृध्द दोषों का ऱ्हास, क्षीण का वर्धन, प्रकूपित दोषों का प्रशमन, सम का पालन (सुश्रुत)

4)अथर्वीनी, अंगिरसी, दैवी, मानुषी (अथर्ववेद)

पंचविध- वमन, विरेचन, बस्ति, नस्य, रक्तमोक्षण.

षडविध- लंघन, बृंहण, रुक्षण, स्नेहन, स्वेदन, स्तंभन.

सप्तविध- पाचन, दिपण, क्षुधा, तृष्णा, वायु, धूप, व्यायाम्.

दशविध- वमन विरेचन निरुह नस्य पिपासा मारुत आतप पाचन उपवास व्यायाम

अष्टादश-उपशयात्मक चिकित्सा के18 भेद.

व्याधिक्षमत्व- व्याख्या- व्याधिक्षमत्वं नाम व्याधिबलविरोधित्वं व्याध्युत्पादप्रतिबंध कत्वमिति। चक्रपाणी

भेद- a) स्वाभाविक b) युक्तीकृत / अभ्यासज

a) स्वाभाविक- i) जाती स्वभाविक ii) कूल स्वभाविक iii) व्यक्ति स्वभाविक

b) अभ्यासज-i) सक्रिय(सहजऔर कृत्रिम),ii) निष्क्रिय-(सहज और कृत्रिम)

a) स्वाभाविक (Natural)-अनुवंशिकता से मातृज और पित्तृज और बीजभाव उत्तम रहनेपर निर्मित धातू, धातू प्रत्यनिकद्रव्य को विरोध करते है। व्याधि उत्पत्ती नही होती।

यह जाती, कूल और व्यक्ती विशिष्टतापर आधारित है।

i) जाती स्वभाविक- आंत्रज्वर (Typhoid), विसुचिका (कॉलरा) को मानव से अन्य जाती व्याधिक्षम है। मूषक घटसर्प को, श्वान और अश्व राजयक्ष्मा को व्याधिक्षम है।

ii) कूलस्वाविक- नेपाली लोग राजयक्ष्मा को अनुकूल है, तो ज्यू को उत्तम व्याधिक्षमत्व है।

iii) व्यक्ती स्वभाविक : धातूबल उत्तम रहनेवाले व्यक्ती में व्यक्ती स्वभाविक व्याधिक्षमत्व होता है।

b) यूक्तीकृत-अभ्यासज व्याधिक्षमत्व:

सक्रिय व्याधिक्षमत्व-विशिष्ट देहधातूमें धातूप्रत्यनिक द्रव्य को विरोध करनेवाली द्रव्य(Antibiotics)निर्माण कर व्याधिक्षमत्व प्राप्त कियाजाता है।

i) सहज सक्रिय- मसूरिका (Small pox), व Tuberculosis जीवाणू को अल्प मात्रा में नैसर्गिक रूप मे शरीरमें प्रवेश हो के उत्पन्न व्याधिक्षमत्व

ii) कृत्रिम सक्रिय-Vaccines अथवा Toxoids शरीरमें प्रवेश कर उत्पादित व्याधिक्षमत्व.

निष्क्रीय व्याधिक्षमत्व:

i)सहज निष्क्रीय- गर्भ में गर्भ नाभीनाडी सें माता के देह धातू में विरोधी द्रव्ये गर्भ में पविष्ट होते है और जन्म के बाद स्तन्य मे सें भी प्रविष्ट होती है।

ii) कृत्रिम निष्क्रीय - विरोधी द्रव्य की प्राणीयों के शरीर में निर्मिती कर उनका (रसधातू) मानव के शरीर में प्रविष्ट करना. यह कृत्रिम निष्क्रि व्याधिक्षमत्व है।

आम:

1) अविपक्वमसंयु सदनं सर्वगात्र

2) जठरानल दौ स आमसंज्ञक

3) आहारस्य रस समूलं सर्वरोग

4) आमाशयस्थ: आद्यं आहार

5) उष्मणोल्पबल दूष्टं आमाशय

6) तथान्नमपि तेनै

7) आमं अन्नरसं

आम उत्पत्ती हेतु

साम-निराम दो

साम वायू -

निराम वायू -

सामपित्त -

निरामपित्त -

सामकफ -

निरामकफ -

सामधातू -

सामम्ल -

सामव्याधि -

दोषप्र

चिकित्सा -

1) शान्तिरामा त्रिविधं त्रि तत्राल्पे ल प्रभूते शोध

2) सर्वदेह प्रवि लीनान धा आश्रयस्थि

आम:

1) अविपक्वमसंयुक्त दुर्गन्धं बहुपिच्छिलम्।
सदनं सर्वगात्राणां आम इति अभिधीयते।। मा.नि.

2) जठरानल दौर्बल्यादविपक्वस्तु यो रस:।
स आमसंज्ञको देहे सवरोग प्रकोपक:।।

3) आहारस्य रस: शेषो यो न पक्वोऽग्नि लाघवात्
समूलं सर्वरोगाणां आम इति अभिधियते।। मा.नि.25

4) आमाशयस्थ: कायग्ने दौर्बल्याद्विपाचित:।
आद्यं आहारधातुर्य: स आम इति किर्तित:। मा.नि. टिका

5) उष्मणोल्पबलत्वेन धातुमांद्यमपाचितम्।
दुष्टं आमाशयगतं रसं आमं प्रचक्षते।। अ.हृ. सु 13

6) तथान्नमपि तेनैव (अग्निना) पक्वममृततां याति अपक्वंच विषताम्।
अ.सं.शा. 6

7) आमं अन्नरसं केचित तु केचित मलसंचयम्। मा.नि. 25

आम उत्पत्ती हेतू: विरुध्द अध्यशन अजीर्ण शीलीनो विषलक्षणम्।
आमदोषं महाघोरं वर्जयेत् विषसंज्ञकम्।। अ.हृ.सु.8

साम-निराम दोष:

साम वायू - वायु सामो विबंन्धाग्निसादस्तन्द्रा आन्त्रकुजनै:।
वेदना शोथनिस्तोद: क्रमशो अंगानि पिडयेत।।
विचरेत युगपत चापि गृहणाति कुपितो भृशम्।
स्नेहाद्येवृध्दिमाप्नोति सुर्यमेघोदये निशि।। मा.नि.

निराम वायू - निरामो विशदो रुक्षो निर्विबन्धोऽल्पवेदन:।
विपरीतगुणैं: शान्ति स्निग्धेर्याति विशेषत:।।मा.नि.

सामपित्त - दुर्गंध हरितं श्यावं पितं अम्लं स्थिरं गुरु।
अम्लिका कंठहृद्दाहकरं सामं विनिर्दिशयेत्।।मा.नि.

निरामपित्त - आताम्रं पितमत्युष्ण रसे कटुकमस्थिरम्।
पक्वं विगन्धं विज्ञयं रुचिपक्तृबलप्रदम्।।मा.नि.

सामकफ - आविल तन्तुल स्त्यान: कण्ठदेशे अवतिष्ठते।
सामो बलासो दुर्गन्ध: क्षुद् उद्गार विद्यातकृत।।मा.नि.

निरामकफ - फेनवान पिण्डित: पाण्डुर्नि:सारोगन्ध एवच।
पक्व स एव विज्ञेय: छेदवान् वक्त्रशुध्दिकृत्।।मा.नि.

सामधातू - स्त्रोतोरोध बलभ्रंश गौरवनिलमूढता।
आलस्य अपक्तिनिष्ठिव मलसंग अरुचि क्लम।अ.हृ.स 13

सामशूल - संसृष्टमेभिदौषेस्तु न्यस्तमप्स्ववसीदति।
पुरिषं भृशदुर्गन्धिं पिच्छिलं चामसंज्ञकम्।सु.उ.40

सामव्याधि - क्षुन्नाशो हृदयाशुध्दि: तन्द्राजठरगौरवै:।
दोषप्रवृत्तिर्नो यत्र व्याधिम् आमान्वितं वदेत।।वंगसेन 22

चिकित्सा -

1) शान्तिरामविकाराणां भवती त्वपतर्पणात्।
त्रिविधं त्रिविधे दोषे त्समीक्ष्य प्रयोजयेत ।।
तत्राल्पे लघंन पथ्यं मध्ये लंघनपाचनम्।
प्रभूते शोधनं तध्दि मूलादुन्मुलयेन्मलान।। (अ.हृ.सु.8/20-21)

2) सर्वदेह प्रविसृतान सामान दोषान न निर्हरेत्।
लीनान धातूष्वनुक्लिष्टान फलादामाद्रसादिव।।
आश्रयस्यहि नाशाय ते स्युदुर्निहरेत्वत:। (अ.हृ.सु.12/28)

3) पाचनैदिपनै: स्नेहैस्तान्स्वेदैश्च परिष्कृतान।
शोधयेत शोधनै: काले यथासन्नं यथाबलम्।।अ.हृ.सु.13/29)

निसर्गोपचार :

निसर्गोपचार चिकित्सा के प्रमुख प्रवर्तक श्री प्रिसनिट्ज (ऑस्ट्रेलिया), जे स्क्राथ, फादर क्नाइव, लूई कुने, एडोल्प जस्ट.

प्राकृतिक चिकित्सा का सर्वप्रथम प्रयोग प्रिसनिटज ने1829 में किया । इनका मत है की शरीर के अन्दर रोगप्रतिरोधक क्षमता को प्रदिप्त कर देने से अन्दरका विष बाहर निकल जाता है। निसर्गोपचार चिकित्सा पध्दती में शोधन प्रक्रिया मूख्यत: 4 माध्यम से कि जाती चाहिए।

1) गुदमार्ग 2) मुत्रमार्ग 3) श्वासमार्ग 4) त्वकमार्ग

एडोल्फ जस्ट-Return to Nature (प्रकृती की ओर) पुस्तक प्रसिध्द है।

एडोल्फ जस्ट - मृत्तिका चिकित्सापर विशेष कार्य

आर्नाल्ड खिली ने वायू चिकित्सा पर विशेष बल दिया।

लूई कूने ने जल चिकित्सा पर भर दिया और स्नान के 3 प्रकार बताये

1) भापस्नान 2) कटीस्नान 3) मेहस्नान

निसर्गोपचार चिकित्सा पध्दती के प्रमुख तत्व :

1) जल चिकित्सा 2) बाष्पचिकित्सा 3) मृत्तिकोपचार) आतपोपचार 5) वायूसेवन 6) अभ्यंग 7) उपवास एवं विश्रमण 8) योगाभ्यास

जल चिकित्सा:सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण तत्व जल चिकित्सा को मूलप्राकृतिक चिकित्सा कहते है।

मर्दन के भेद : 1) स्निग्ध/आर्द्र 2) रुक्ष/शुष्क

पून:भेद- 1) उद्वर्तन 2) रगडना(Rubbing) 3) गुंथन (Strocking) 4) थपथपाना(Tapping)5) मुक्की लगाना (Beating) 6) कम्पन(Vibrating)

सिध्दचिकित्सा पध्दती :

जिस प्रकार आयुर्वेद में ब्रह्म संप्रदाय है,उसी प्रकार सिध्द में रुद्र संप्रदाय है।सिध्द -गोरखनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, नागार्जून आदी (रसवैद्यक=सिध्दवैद्यक)

प्रयोजन - देहसिध्दी और लोहसिध्दी

किमियागिरी- ग्रंथो में जो आश्चर्यजनक ठंग से धातूपरिवर्तन विधीयॉ वर्णित हे उसे किमयागिरी कहते है।

सिध्द चिकित्सा एव तमिल भाषा के आदिम आचार्य अगस्त्य ऋषी है।

तत्व: 1) विशेषत: धातू एवं खनिजों का प्रयोग

2) 96 तत्वों से युक्त पुरुष मानते है।

3) त्रिदोष, पंचमहाभूत एवं सप्तधातू सिध्दान्त को स्वीकार किया गया।

4)संसार के 5 तत्व कठोर,द्रव,बाष्प,अग्नि तथा ईथर प्रत्येक द्रव्य में विद्यमान.

5) शिव को द्रव्य (Matter) एवं शक्ति को ऊर्जा (Energy) मानकर इन्ही का सृष्टीकर्ता माना।

6) सप्तम धातू शुक्र के स्थान पर स्त्री रज: माना।

7) औषधद्रव्यों मेंलवण,पाषाण,धातू,रस,उपरस,गन्धक,इनकाअधिक उपयोग।

8) रत्न एवं उपरत्न का अधिकतर प्रयोग।

9)निदान के लिए अष्टविध परिक्षा का उपयोग ।

10) सिध्दचिकित्सा- 4 शाखा

i) बालवहातम (Paediatrics),

ii) नजनूद (Toxicology)

iii) नयनविद्या (Ophthalmology)

iv) कायकल्प(Rejuvenvation)

ूनानी चिकित्सा:

ईपोक्रेटीज एवं होमर यूनानी चिकित्सा के प्रमुख थे।

ूनानी ने चतूर्भूतवाद स्विकार किया। वात, पित्त,कफ व रक्त- 4 दोष ानते है। मनूष्य का शरीर 7 प्रमुख तत्व से बना है।

) चार प्रमुख घटकद्रव्ये- पृथ्वी, आप, तेज, वायू

!) प्रकृती- 4. प्रधान गुण- उष्ण, रुक्ष, शीत, स्निग्ध

३) दोष a) खून (रक्त) उष्ण, स्निग्ध, b) सफ्रा (पित्त) उष्ण,रुक्ष,

:) बलगम (कफ): स्निग्ध, शीत, d) सौदा (वात), शीत व रुक्ष.

४) अवयव- महत्वपूर्ण और कम महत्वपूर्ण विभाजन

5) आत्मा 6) शक्ती- यकृत, मेंदू, हृदय, 7) कार्यतत्वे

होमियोपॅथी:

होमियो = समान, पॅथोज = अनुभव

होमियोपॅथी का मुल सिध्दन्त- समान से समान का शमन करना है।

इस चिकित्सा के प्रवर्तक डॉ. हैनिमन है।

आयुवेद का उपशय सिध्दात और होमियोपॅथी का मुलभूत सिध्दान्त समान है। शरीर में जिसकी अधिकता से रोग होता है, उसीकी कम मात्रा करके देने से रोग नष्ट हो जाता है।

रसवहस्त्रोतस

ज्वर: मा.नि. आमाशयाश्रीत व्याधि, रसानुग

हारित- दूष्य में रक्त का समावेश

काश्यप- ज्वर प्रकार साम और विषम, उपद्रव 10

सुश्रुत - गम्भीर ज्वर (वातपित्त), प्रलेपक ज्वर-राजयक्ष्मा,

अभिन्यास ज्वर-हतौजस. अपप्रजाताजन्य स्त्री ज्वर वर्णन- सुश्रुत

अ.सं.- वातबलासक ज्वर-वातकफ

माधवकर- विषजन्यज्वर/ औषधी गन्धज ज्वर

काश्यप- ऐषाप ज्वर

यो.र. - मन्थक ज्वर (आंत्रीक ज्वर)

निराम अवस्था चरक, काश्यप 8th दिन

चिकित्सा: ज्वर में लंघन, वमन- औषध सिध्द मण्ड, बाद में यवागू - ज्वर वेग मन्द होनेतक या 6 दिन देना चाहिए। 7th day लघू अन्नपान, 8thDay पाचन, शमनीय कषाय, 10th Day जांगल मांसरस-अम्ल अनम्लयूष

योगरत्नाकर- ज्वराद्यो लंघनम्, कर्यात ज्वरमध्ये तु पाचनम।

ज्वरान्ते रेचन प्रोक्तं एतत ज्वर चिकित्सितम्।।

न दद्यात तत्र भेषजं। भेषजं हि आमदोषस्य भूयो ज्वलयति ज्वरम्।।मा.नि.

ज्वर अरुणदत्त एंव विजयरक्षित व्दारा वर्णित-विभिन्य प्राणीयों में ज्वरनाम:

अश्व- अभिपातन, अभितापक, अजा-प्रलाप, माहिष-हारिद्र, हस्ति-पाकल, उष्ट्र - अलस, गो - गोकर्ण, इर्श्वर;

पक्षी -अभिघात, मकर; श्व-अलर्क, सर्प-अक्षिक, हरिण-मृग, मत्स्य-इंद्रमद.

ज्वर प्रत्यात्म्य लिंग- स्वेदावरोध: संताप: सर्वांगग्रहण तथा।मा.नि.

दोषपाक- दोषप्रकृतिवैकृत्यं लघुता ज्वरदाहयो:।

इंद्रियाणां च वैमल्य दोषाणां पाकलक्षणम्।। मा.नि.

धातूपाक- निद्रानाशो हृदीस्तंभो विष्टम्भो गौरवारुचि।

अरतिर्बलहानिश्च धातूनां पाकलक्षणम्।। मा.नि.

यो. र. -हृन्नाभ्योरतिवेदना अतिसरंण तीव्रो ज्वरस्तृद क्लम्।

श्वासाधिक्यम् अरोचक: अरति इति स्यांद धातूपाकाकृति।।

ज्वरमोक्ष- दाह: स्वेदोभ्रमस्तृष्णा कंप विड्भेदसंज्ञिता।

कूजनं चास्य वैगंध्यमाकृति ज्वर मोक्षणे।। मा.नि.

2 भेद- दारुण मोक्ष, अदारुण मोक्ष

ज्वरमुक्ती- स्वेदो लघुत्व, शिरस:कण्डू पाको मुखस्य च।

क्षवथूस्चान्नलिप्सा च ज्वरमुक्तस्य लक्षणम्।। मा.नि.

सन्निपातीकज्वर भेद:

1) भा.प.13 प्रकार: शीतांग, तन्द्री, प्रलापी, रक्तष्ठीवी, भुग्नेत्र, अभिन्यास, जिव्हक, संधिक, अंतक, रुग्दाह, चित्तविभ्रम,कर्णग्रह व कण्ठग्रह. इसके अतिरिक्त अन्यप्रकार भी वर्णित है। यथा-कुंभीपाक,पोणुर्नाय, अंतर्दाह, दंडपात, एणिदाह,हारिद्रक, अजघोष्ट, भूतहास, यंत्रापीड, संन्यास, संशोषी.

2) योगरत्नाकर- भा.प्र. समान तन्द्री को तन्द्रीक, प्रामापी को प्रलापक, कर्णग्रह को कर्णक, कण्ठगृह को कूब्जकण्ठ कहा।

3) भालुकीतंत्र 1)विस्फुरक2) आशुकारी3) कम्फण4) विभू5) फल्गू6) मकरी 7) वैदारिक8) कर्कोटक9) संमोहन10) याम्य11)क्रकच12)पाकल13) कूटपाकल.

4) वंगसेन- बभ्रू, आशुकारी, शीघ्रकारी, कंपन, वैदारिक, कर्कोटक, संमोहक , याम्य, क्रकच, पाकल, कूटपाकल, अभिन्यास.

i) आंत्रिक ज्वर: पर्याय मन्थरज्वर (Typhoid fever)

हेतू Salmonella typhi टिकाकार के अनुसार संतत ज्वर का विशिष्ट भेद है। उपद्रव छिद्रोदर ।

ii) श्वसनक ज्वर: व्यंजक हेतू (Diplococci pneumonie)प्रकार- खंडीय (Lobar pneumonia) व प्राणालिक (Broncho pnemonia) खंडीय के साधारण, उत्कामक,केंद्रिक, बृहत और फुफुसावरण प्रदाह ऐसे 5 भेद है।

iii) आक्षेपक ज्वर (Cerebro spinal Fever) or Meningits

iv) पिडकाजन्य-ज्वर-

1) मसुरिका (Small pox)

हेतू Variola Virus चरक में वर्णन नही, सुश्रुत नेक्षुद्ररोग में वर्णन किया। मा.नि. ने दूष्टरक्तेन संगत: कहा। भा.प्र. ने कहा-न मंत्र औषधं तस्य पापरोगस्य विद्यते।

भेद (5) V, P, K, R, S. Also बृहन्मसूरिका व लघुमसुरिका

मसुरिका दारुण तीव्रसंक्रामक व्याधि, बाह्य व अंभन्तर मार्ग में हो सकता है। पिडका आकार- मसूर, मूद्ग, माष, कोल, दोषदूष्टी-पित्तरक्त. मा.नि.

3-4 Days - Papular stage गात्र व वदन-पिटीका उत्पत्ती

6-7 Day - Vesicular stage द्रवसंचिती, Pustular stage पूयोत्पत्ती.

8-9 Day - पिटीका स्त्राव, बाद में शुष्क (in 3rd week)

धातूगत अवस्था-

1)त्वक्गत- तोय बुदबुद संकाश, 2) रक्तगत- लोहीताकार, 3) मांसगत- कठिन स्निग्ध चिरपाकी, 4) मेदोगत- मण्डलाकार, सवेदना, 5) अस्थिगत- क्षुद्र, गात्रसम, चिपिट पिडका 6) मज्जागत- भृशसंमोहवेदनाऽरतिसंयुता 7) शुक्रगत- पक्काभा:पिडका सुक्ष्म, अत्यर्थ वेदना, मृत्यु.

साध्यासाध्यत्व- त्वक्गत, रक्तगत, पित्तज, कफज, कफपित्तज-साध्य, मांसगत, वातज, वातपित्त व वातकफज- कष्टसाध्य, मेद, अस्थि-मज्जागत और सन्निपातीक-असाध्य.

उदर्क- विरुपता, अंधत्व, इंद्रियघात

चिकित्सा: मसुरिकायां कूष्ठोक्ता प्रलेपादी क्रिया हिता।

पित्तश

सभी मसूरिका

2) **रोमांतिका**

रोमकूपोन्नतिसम

कासारोचकसंयु

चिकित्सा- मस

3) **शितला** (C

सौम्य, बर्हिवेगी

शितला नामक

भेद-7

i) बृहती- प्रथम

तृतीय सप्ताह-

iv) सर्षपिका-पि

v) राजीका - तृ

vi) हाय - बृहत

धातूगतज्वर अ

2) पितज्वर-हा

3) कृष्णमेहज्वर

4) मूषिकादंशज्व

5) पृषज्वर- (T

6) पाताल पृष

Dermacenta

विषमज्वर के

1) मलेरिया ज्व

2) श्लैपदीक ज्व

3) प्रतोत्थज्वर/

4) कालाआजार

गणनाथ सेन के

वैशिष्टय - Doul

औपद्रविक ज्व

जीर्णज्वर त्रिसा

प्ली

कामला- वाभ

पानकी- बहिरं

(सुश्रुत अपानर्क

कामला चिकित

तत:

रक्तपित्त- दोष

सामान्य लक्षण

पूर्वरुप: सदनं श

लोहगां

साध्यासाध्यत्व

और शिशिर में

पित्तश्लेष्म विसर्पोक्ता क्रिया चात्र प्रशस्यते।। वंगसेन

सभी मसूरिका में शोधन (वमन) अपवाद पित्तज व रक्तज मसूरिका.

2) **रोमांतिका :** (Measels)

रोमकूपोन्नतिसमा रागिण्य कफपित्तजा:।

कासारोचकसंयुक्ता रोमान्त्यो ज्वरपूर्विका:।। मा.नि.

चिकित्सा- मसुरिकावत्

3) **शितला** (Chiken pox or Varicella)

सौम्य, बर्हिवेगी, सहजसाध्य व्याधि

शितला नामक ग्रहबाधासे उत्पन्न.

भेद-7

i) बृहती- प्रथम सप्ताह पिडका उत्पत्ती, व्दितीय सप्ताह- स्राव, पाक, तृतीय सप्ताह- नाश ii) कोद्रव-लघू iii) पाणीसहा-सप्ताह में शुष्क

iv) सर्षपिका-पितवर्णी व श्वेतसर्षपसम

v) राजीका - दु:खकोद्रव - रक्तसर्षप सम

vi) हाय - बृहत व आरक्तवर्णी vii) चर्मजा - कृष्णवर्णी - पिडका समुह

धातूगतज्वर अन्यप्रकार :- 1) दंडकज्वर -(Dengue fever)

2) पितज्वर-हारिद्रक ज्वर (Yellow fever)

3) कृष्णमेहज्वर (Black water fever)

4) मूषिकादंशज्वर-(Rat Bite fever) (Spirocheta morsus)

5) पृषज्वर- (Thyphus fever) (Rickettisa)

6) पाताल पृषज्वर-(Rocky Moutan fever) or Spoted fever Dermacentaenus (Rickettisa)

विषमज्वर के अन्यभेद:

1) मलेरिया ज्वर

2) श्लैपदीक ज्वर

3) प्रतोत्थज्वर/ग्रहोत्थज्वर (काश्यप)

4) कालाआजार - शोध - लिशमन व डोनोव्हॅन,

गणनाथ सेन के नुसार सतत ज्वर का भेद,

वैशिष्ट्य - Double rise of termperature .

औपद्रविक ज्वर-सर्वेषु जीर्णेषु रोगेषु ग्रहण्यादौ विशेषत:।

दोषत्रये प्रकुपिते स्यादौपद्रविको ज्वर:।। सि.नि.

जीर्णज्वर त्रिसप्ताह व्यतीते तु ज्वरो यस्तनुतां गता:।

प्लीहोऽग्निसादं कुरुते स जीर्णज्वरमुच्यते।। मा.नि.

रक्तवहस्त्रोतस:

कामला- वाग्भट स्वतंत्र भी उत्पत्ती हो सकती है।

पानकी- बहिरंतश्च पीतता, नेत्रपाण्डूता- वंगसेन

(सुश्रुत अपानकी कहते है।)

कामला चिकित्सा- रेचनं कामलार्तस्य स्निग्धस्यादौप्रयोजयेत।

तत: प्रशमनो कार्या क्रिया वैधेन जानता।। वंगसेन

कफपित्त- दोष-पित्त,(रंजक पित्त)- दूष्य रक्त

सामान्य लक्षण वर्णित नही.

विरूप: सदनं शीतकाभित्वं कण्ठधूमायनं वमी:।

लोहगांधिश्च नि:श्वासो भवति अस्मिन भविष्यति।। मा.नि.

साध्यासाध्यत्व मा.नि. एकदोषानुग, नव, उपद्रवरहित, सुखकाले हेमंत और शिशिर में उत्पन्न - साध्य, व्दिदोषज- याप्य, त्रिदोषज, मदाग्नी और अतिवेगवान, क्षीणेदह में असाध्य.

चिकित्सा- यच्च पित्तज्वरे प्रोक्तं बहिरंतश्च भेषजम्।

रक्तपित्ते हितं तच्च क्षतक्षीणे हितं च यत्।। यो.र.

अर्श: चिकित्सा-

स्नेह स्वेदादयो वाते पित्ते स्यु: रेचनादय:।

कफवान्त्यादयोऽर्शसुमिश्रे मिश्रा प्रतिक्रिया:।।

पित्तवद्रक्तजे कार्य: प्रतिकारोऽर्शसि ध्रुवत:।। यो.र.

वातरक्त:

पादयोर्मुलमास्थाय कदाचिद हस्तयोरपि।

आखोविषमिव क्रुध्दं तद्देहमुपसर्पति।। मा.नि.

साध्यासाध्यत्व- नव और एकदोषानुगं- साध्य, याप्य-व्दिदोषज, त्रिदोषज और उपद्रवयुक्त असाध्य.

चिकित्सा:- रुक्षैर्वा मृदूभि: शस्तमसकृदबस्तिकर्मच।

नहि बस्तिसमं किंचित वातरक्ते प्रशस्यते।। यो.र.

दाह-दह्यते इति दाह:। शा.सं.

प्रकार- 7- पित्तज, रक्तज, तृष्णानिरोधज, मद्यज, रक्तपूर्ण कोष्ठज, धातूक्षयज, मर्माभिघातज.

जेज्जट व्दारा वर्णित क्षतजदाह का मधुकोष टिका में उल्लेख.

साध्यासाध्यत्व- रक्तपूर्णकोष्ठज, धातूक्षयज, मर्मामिघातज ये असाध्य है। अन्य कष्टसाध्य.

चिकित्सा:- दाहे अतिशिशिरं तोयं क्रिया कार्या सुशीतला। यो.र.

शीतवातजलस्पर्श: शीतान्युपवनानि च।

पीतज्वरहरं यच्चदाहे तत्कार्याभीष्यते। वंगसेन

कोठ-उत्कोठ :-

असम्यक वमन-कोठ उत्पत्ती

कोठ पून, पून: उत्पत्ती- उत्कोठ

सामान्यचिकित्सा:-

अभ्यंग कटुतैलेन स्वेदश्चोष्णेन वारिणा।

तथाऽऽशु वमनं कार्य पटोलारिष्टवासकै:।।

विसर्प :- सर्वतो विसर्पणात् विसर्प:। मा.नि.

मा.नि.8- वातज,पित्तज,कफज, वातपित्त, कफपित्त, कफवातज सन्निपातीक व क्षतज.

वात, पित्त, कफ विसर्प में वात पित्त कफ ज्वर समान लक्षणे.

क्षतज विसर्प- कूलत्थसदृश, वर्ण श्याव शोणित.

साध्यासाध्यत्व:- वातज, पित्तज, कफज साध्य, ग्रंथी, कदर्म व आग्नेय में मर्मविकृती और उपद्रवरहित रहने पर कष्टसाध्य.

सन्निपातीक व क्षतज असाध्य.

पित्तजविसर्प में शरीर अंजनवत कृष्ण रहने पर असाध्य.

चिकित्सा :-पूर्वमेव विसर्पेषु कुर्याल्लंघनरूक्षणै:।

विरेक वमन आलेप सेचनासृग्विमोक्षणै:।।

उपचारेद् यथा दोषं विसर्पानविदाहिभि:।। यो.र.

कूष्ठ:-

त्वच:कुर्वन्ती वैवर्ण्य दुष्ट: कुष्ठमुशन्ति तत्।

कालेनोपेक्षितं यमात्सर्व कृष्णाति तद्वपू।।अ.सं.नि.14

कृष्णाति इति कूष्ठम्। मा.नि.

साध्यासाध्यत्व मा.नि.पंचकर्मगुणातीत कूष्ठ असाध्य

श्वित्र: पर्याय - किलास, वारुण, दारुण
कूष्ठैकसंभव श्वित्रं किलासं वारुणं भवेत्।
निर्दिष्टम् अपरिस्त्रावी त्रिधातूदभवसंक्षयम्।।मा.नि.
प्रकार 3 वातज, पित्तज, कफज
वातद्रुक्षारुण पित्तात्ताम्र कमलपत्रवत्।
सदाह विध्वंसि कफाचछवेतं घनं गुरु।।मा.नि.
साध्यसाध्यत्व:अशुक्लरोमऽबहुल,असंश्लिष्ट,नव,अनग्नि दग्ध श्वित्र- साध्य.
गुहय, पाणीतल, औष्ठ प्रदेश का श्वित्र-असाध्य.
चिकित्सा:-श्वित्रिणी हृतदोषस्य हृतरक्तस्य वा सकृत।
खदीरांबुयवान्नानां तृप्तस्य मलयूरस:।।यो.र.

शीतपित्त :-
शीतमारुतसंस्पर्शात्प्रदूष्टौ कफमारुतो।
पित्तेन सह संभूय बहिरन्ताविसर्पत:।। मा.नि.
रुप- वरटीदष्टसंस्थान: शोथ: संजायते बहि:।
उदर्द:- सकण्डू तोद बहुलछर्दीज्वर विदाहवान
शितपित्त -विपरित लक्षणे.
वाताधिक्य शितपित्तम, उदर्दस्तु कफाधिक:।

मांसवह स्त्रोतस:
मांसगत वात: विरेचन व निरुह प्रमुख चिकित्सा.
गलगंड:- निबध्द: श्वययुर्थस्य मुष्कवल्लम्बते गले।
महान्वा यदी वा ऱ्हस्वो गलगडं तमादिशेत्।।मा.नि.
प्रकार- वातज, कफज व मेदोज 3 भेद.
मेदोज गलगण्ड: पाण्डूवर्ण, अनिष्टगन्ध, प्रलम्बते अलाबूवत,
देहानुरुपक्षयवृध्दी, गदगदवाक लक्षण.
साध्यासाध्यत्व : श्वासकृच्छ्रता, सर्वगात्रशैथिल्य,
स्वरभेद और 1 वर्ष पुराना गलगण्ड असाध्य है।
मेदोजगलगण्ड चिकित्सा उरुमूल सिराव्यध
वातजगलगण्ड - नाडीस्वेद, जलौका
कफज गलगण्ड - रुक्षस्वेद, उपनाह

गण्डमाला:-
चरक, मा.नि., यो.र. वर्णन.
सुश्रुत वर्णन नही, परंतु अपची व्याधि वर्णित
वाग्भटने गण्डमाला का पर्याय अपची बताया.
मा.नि. अपची को गण्डमाला की अवस्था माना ।
कर्कन्धुकोल आमलक प्रमार्णे: कक्षांस मन्या गल वंक्षणेषु।
मेदकफाभ्यां चिरमन्दपाकै: स्याद गण्डमाला बहुभिश्च गण्डै:।।मा.नि.
वाग्भट- वातार्क आमलक आकृती.

अपची:-
ते गन्थय: केचिदवाप्तपाका: स्रवन्ति नश्यन्ति भवन्तिचान्ये।
कालानुबन्धं चिरमादधाति सैवापचीति प्रवदन्ति तज्ज्ञा।। मा.नि.
सुश्रुत-अपची- आमलकास्थिमात्र, मत्स्यांडजालप्रतिमा, वर्षगणानुबंधि गण्डमाला साध्य परंतु ज्वर, पीनस, पार्श्वशूल, कास और छर्दी युक्त रहने पर असाध्य.

ग्रंन्थि: वातदयो मांसमसृक प्रदूष्टा: संदूष्य मेदश्चतथा सिराश्च।
वृत्तोन्नतं विग्रथितं च शोथं कुर्वन्त्यतो ग्रन्थि:ऽति प्रदिष्ट:।। मा.नि.
ग्रंथी- सुश्रुत-5 वातज, पित्तज, कफज, मेदोज, सिराज
चरक -6- उपरोक्त+मांसज
वाग्भट-9-उपरोक्त 7 + रक्तज, अस्थिज, व्रणग्रंथी.
1)वातज ग्रंथी-मा.नि.-कृष्ण वर्ण, मृदू या बस्ति इव आतत स्पर्श स्त्राव शुध्दरक्त
सुश्रुत-कर्कश स्पर्श व चलग्रंथी, भा.प्र. ने प्रभश्यंते कहा।
2) पित्तजग्रंथी- वर्ण-रक्त वा पीत, स्त्राव- उष्णरक्तस्त्राव
3) कफज ग्रंथी- वर्ण-त्वक् वर्ण, पाषाणवत संहननोपपन्न, स्त्राव-शुक्ल, घन, पूयस्त्राव.
4) मेदोजग्रंथी-वर्ण श्याव व पाण्डू, मृदू व चल, शरिरवृध्दीक्षंय वृध्दीहानि:, स्त्राव-पिण्याकसर्पिप्रतिमं.
5) सिराजग्रंथी - वृत्त व उन्नत ग्रंथी
पिडायुक्त व चल - कृच्छ्रसाध्य,
पिडारहित व अचल - असाध्य
6) मांसज ग्रंथि - स्निग्ध, महत, कठीण, सिराजालयुक्त अन्य लक्षणे कफ ग्रंथीवत.
7) रक्तजग्रंथि - स्वापयुक्त और अन्य पित्तजग्रंथीवत लक्षणे.
8) अस्थिग्रंथि- अस्थिंकी विषम वृध्दीसे उत्पन्न.
9) व्रणग्रंथि - व्रणउपद्रवात्मक उत्पत्ती, दाह व कण्डू लक्षणे.
साध्यासाध्यत्व:- दोषज, रक्तज व मेदोज साध्य,
मांस व अस्थिग्रंथी-कृच्छ्रसाध्य, व्रण, सिराजग्रंथी-असाध्य.
चिकित्सा-ग्रंथि-आमावस्था-व्रणशोथसम क्रिया
वातजग्रंथी- सिरावेध
मेदोजग्रंथी- तिलकल्क दहन

अर्बुद:- गात्रप्रदेशे क्वचिदेव दोषा: संमूर्छिता मांसमसृक प्रदूष्य।
वृत्तंस्थिरं मन्दरुजं महान्तंम अनल्पमूलं चिरवृध्दयपाकम्।।
कुर्वन्ति मांसोच्छ्र यमत्यगाधं तदर्बुदं शास्त्रविदो वदन्ती।।मा.नि.
प्रकार - सुश्रुत-6- वातज, पित्तज, रक्तज, मांसज व मेदोज
क्षुद्ररोग में शर्कराबुद वर्णन.
वातज, पित्तज, कफज और मेदोज अर्बुद लक्षणे ग्रंथिवत.
रक्तज अर्बुद - आशुवृध्दी, निरंतर रक्तस्त्राव.
मांसार्बुद- अवेदन, स्निग्ध, त्वकवर्ण, अपाकी, अश्मवत, स्थिर.
शर्कराबुद- स्त्राव मधुसर्पिसन्निभम्।, दुर्गन्ध व क्लेदयुक्त स्त्राव,
अध्यर्बुद - अर्बुद पे अर्बुद.
व्दिरर्बुद- एकही स्थान में नजदिक दो अर्बुद.
साध्यासाध्यत्व- वातज, कफज, मेदोज, शर्कराबुद-साध्य.
मांसार्बुद व रक्तार्बुद असाध्य.
चिकित्सा: वातज अर्बुद- स्वेद, रक्तमोक्षण (श्रृंग)
पित्तज अर्बुद- मृदू, द्रव या उपनाह स्वेद, विरेचन
कफज अर्बुद- वमन, विरेचन, रक्तमोक्षण
मेदोज अर्बुद- प्रच्छानकर्म, शस्त्रकर्म
शर्कराबुद चिकित्सा मेदोज अर्बुदवत

श्लीपद :-
शिलावत पदं श्लीपदम्। मधुकोष
शनै: शनै: घनं शोफं श्लीपदं तत प्रचक्षते। अ. ह. उ.

भेद-3 सुश्रुत-
शोथ उत्पत्ती
वातज श्लिपद
पित्तज श्लिपद
कफज- स्निग
श्लिपद स्थान
साध्यासाध्यत्व
व्यक्ती को हुअ
चिकित्सा: लं
प्राय
वातज श्लिपद
पित्तज श्लिपद
पित्तज अर्बुद
कफज श्लिपद
श्लिपद- नित
शाखोटक- व

प्रमेह:
प्रकर्षेण प्रभूतं
प्रमेह:।
भेद-हारित-
पूर्वरुपे:- दन्त
दाहचिक्कणता
सामान्य लक्ष
प्रमे
कि
चिकित्सा- व
प्रमेह पिडका
स्थान-संधि,
सुश्रुत सम व
असाध्य पिड
शिर, पृष्ठ, म
स्थौल्य:(मे
मधु
मेद
पूर्वरुप- उदर
रुप- अशक्त
का
क्लैब्य: भा.
1) मानसिक
आगन्तु 6) श
साध्यासाध्यत
वा कष्टसाध्य
फिरंग- प्रथ
भेद- 3 - व

भेद-3 सुश्रुत-वातज, पित्तज, कफज

प्राथ उत्पत्ती वंक्षणसे शुरुवात

वातज श्लिपद- अनिमित्त रुजा, बहूशो ज्वर

पित्तज श्लिपद- दाहज्वरयुक्त, मृदू

कफज- स्निग्धवर्ण, श्वेत, पाण्डू, गुरु, स्थिर

श्लिपद स्थान- हस्त, कर्ण, नेत्र, औष्ठ, नासा, मेढ्र

साध्यासाध्यत्व- वल्मीकवत, कण्टकयुक्त, 1 वर्ष पुराने, महत, कफप्रकृती व्यक्ती को हुआ, सर्वदोष लिंगयुक्त,कण्डू और कफबहूल श्लीपद असाध्य.

चिकित्सा: लंघन आलेप स्वेद रेचनै: रक्तमोक्षणै:।
प्राय: श्लेष्महरै: उष्णै: श्लीपद समुपचारेत्।। वंगसेन

वातज श्लिपद चिकित्सा: सिरावेध-गुल्फोपरी 4 अंगुल.

पित्तज श्लिपद चिकित्सा: सिरोवध गुल्फऽध 4 अंगुल.

पित्तज अर्बुद व विसर्पसम चिकित्सा.

कफज श्लिपद- अंगुष्ठमूल प्रसिध्द सिरावेध.

श्लिपद- नित्यानंद रस

प्राखोटक- व्याधिप्रतिनिक द्रव्य.

मेदोवह स्त्रोतस:

प्रमेह:

प्रकर्षेण प्रभूतं प्रचूरं वारंवारं वा मेहति,मूत्रत्यागं करोति,यस्मिन् रोगे स प्रमेह:।

भेद-हारित-7 जल, रुधिर, पूय, लवण, तक्र, कटिक, शुक्र.

पूर्वरुपे:- दन्तादिना मलाढ्यत्वं प्राग्रुपं पाणीपादयो:।
दाहचिक्कणता देहे तृट् स्वादास्यं च जायते।।मा.नि.

सामान्य लक्षण- प्रभूत आविल मुत्रता
प्रमेह भेद- मुत्रवर्ण भेद के अनुसार
किचिच्यापअधिकं मुत्र

चिकित्सा- वातज प्रमेह-असनादी अयस्कृती

प्रमेह पिडका:-

स्थान-संधि, मर्म व मांसल प्रदेश, प्रमेह पिडका मा.नि.

सुश्रुत सम वर्णन.

असाध्य पिडकास्थान: अ.सं.= गुद, हस्ततल, स्तन, पदसंधि, हृदय, शिर, पृष्ठ, मर्म.

स्थौल्य:(मेदोरोग)-
मधुरोऽन्नरस: प्राय: स्नेहान्मेद: प्रवर्धयेत्।
मेदसा आवृत्तमार्गत्वात् पूष्यन्त्यन्ये न धातवा।। मा.नि.

पूर्वरुप- उदरवृध्दी- मा.नि.

रुप- अशक्त: सर्वकर्मसु. मा.नि.
कार्श्यमेव वरं स्थौल्यात न हि स्थौलस्य भेषजम। वाग्भट

क्लैब्य: भा.प्र.व्दारा वर्णीत भेद-7
1) मानसिक क्लैब्य 2) दोषज 3) शुक्रक्षयज 4) व्याधिज 5) आघातज/आगान्तु 6) शुक्रनिरोधज 7) सहजक्लैब्य

साध्यासाध्यत्व: मानसिक, दोषज, शुक्रक्षयज, शुक्रनिरोधज क्लैब्य साध्य व कष्टसाध्य, शेष असाध्य.

फिरंग- प्रथम वर्णन भा.प्र. आगन्तु व्याधि, औपसर्गिक व्याधि

भेद- 3 - बाहय, अभ्यन्तर, बाहयाभ्यन्तर

1) बाहय फिरंग- पिटिका उत्पत्ती, सुखसाध्य
2) अभ्यन्तर- आश्रय-सर्वसंधि, आमवातवत लक्षणे कष्टसाध्य
3) बाह्याभ्यन्तर- त्वक् विस्फोट, कूष्ठलक्षणे, वंक्षणग्रंथी, असाध्य पाक व पूयोत्पत्ती

उपद्रव- कार्श्य, बलक्षय, नासाभंग, अग्निमाद्य, अस्थिशोष, अस्थिवक्रता

चिकित्सा- चोपचिनी, सोमल-व्याधिप्रत्यनिक औषध.

उपदंश- 5 भेद मा.नि.- वातज, पितज, कफज, रकतज व सन्निपातीक

साध्यासाध्यत्व:वातज,पित्तज,कफज-साध्य,रक्तज-याप्य,त्रिदोषज असाध्य.

अस्थिवह स्त्रोतस:

संधिगतवात: हन्ति सन्धिगत: संधिन शूलाटोपो करोतिच।मा.नि.

भेद : धातूक्षयजन्य (निरुपस्तंभित), स्त्रोतारोधजन्य (उपस्तंभित)

चिकित्सा- कुर्यात संधिगते वाते दाहस्वेदोपनाहनम्। यो.र.

कोष्टूकशीर्ष: वातशोणितज

चिकित्सा: 1) त्रिफला, गुडूची, क्वाथ + गुग्गुलु.
2) एरण्ड तैल + गोदुग्ध अथवा वृध्ददारु + गोदुग्ध.
3) तित्तर मांसरस + गुग्गुल.

उपरोक्त चिकित्सा असफल होनेपर वातरक्तमें वर्णित रक्तमोक्षण करें।

आमवात:

हेतू-अव्यायाम और मंदाग्नी रहनेपर स्निग्ध व विरुध्द आहार युगपत्कुपितावन्त त्रिकसंधिप्रवशकौ।
स्तब्धं च कुरुतो गात्रम्आमवात: स उच्यते।।मा.नि.

रुप- अंगमर्द ऽरुचितृष्णा आलस्यं गौरवं ज्वर:।
अपाक: शूनतांऽगानाम आमवातस्य लक्षणम्।।मा.नि (शा.4).

भेद- केवल वातज, पित्तानुबंधी, कफानुबंधि मा.नि.

साध्यासाध्यत्व- एकदोषज-साध्य, व्दिदोषज-याप्य, त्रिदोषज, सर्वशरीरव्यापि, शोथयुक्त आमवात, पुराण और उपद्रवयुक्त कष्टसाध्य.

चिकित्सा: लंघनं स्वेदनं तिक्तदीपनानि कटूनिच।
विरेचनं स्नेहपानं बस्तयश्च आममारुते।।
रुक्ष स्वेदो विधातव्यो वालुका पोटलैस्तथा।
उपनाहश्च कर्तव्यास्तेऽपि स्नेहविवर्जिता।। यो.र.
आमवातगजेंद्रस्य शरीरवनचारिण:।
एकमेवाग्रणीहन्ति एरंडस्नेहकेसरी।। यो.र.

शुण्ठी व गुडूची उत्तम औषधी
सैन्धवादै अनुवासश्च क्षारबस्ति प्रशस्यते।।
वैतरण बस्ति-चक्रदत्त

मज्जावहस्त्रोतस:

वातव्याधि: आक्षेपक- धमनीगत वातप्रकोप मा.नि.
मुर्हमुहु आक्षेपणाद आक्षेपक इति स्मृत:। मा.नि.
आक्षेपक अवस्था भेद सें 2 प्रकार अपतंत्रक व अपतानक
अपतंत्रक- कपोत इव कुजेच्च निसंज्ञ सोऽपतंत्रक। चरक
कुछ आचार्य के अनुसार अपतानक 4 भेद:
1) दण्डापतानक 2) अभ्यंतरायाम् 3) बर्हिरायाम् 4) आघातज
बर्हिरायाम- असाध्य मा.नि.
सुश्रुत आक्षेपक भेद- 4 कफानुबंधी, पित्तानुबंधि, केवल वातज, अभिघात
व्रणायाम वर्णन- वाग्भट-लक्षण-आपात मस्तक आक्षेप.
अतिपाण्डू युक्त व्रणायाम-असाध्य-वाग्भट.

आक्षेपक साध्यासाध्यत्व- गर्भनिमित्तज, शोणितअतिस्त्रावजन्य, मर्माभिघातज अपतानक (आक्षेपक) असाध्य.
मूर्च्छित और उपद्रवयुक्त धनूस्तंभ 10 दिन के बाद असाध्य.
चिकित्सा- आक्षेपक: सिरावेध, वातहरीक्रिया, तीक्ष्ण प्रधमन, स्त्रोतोविशोधन पश्यात सर्पिपान। नि.र.
अर्दित- केवल मुखवक्रता-मा.नि. भेद- वातज, पित्तज, कफज। यो.र.
साध्यासाध्यत्व- 3 वर्ष के बाद अर्दित असाध्य.
चिकित्सा- माषेन्डरी नवनीत के साथ-7 दिनतक
पक्षाघात- 3 भेद- पित्तानुबंधि, कफानुबधि व केवल वातज.
साध्यासाध्यत्व-पित्तानुबंधि, कफानुबंधि-कष्टसाध्य, केवल वातज- कृच्छ्रतम।
हनुग्रह- लक्षण- विवृत्तास्य अथवा संवृत्तास्य, कृच्छ्र चर्वण-भाषण
सिराग्रह- प्रकूपित वायु रक्तगत हो के मुर्धसिरा में वेदना उत्पत्ती असाध्य. मा.नि.
अवबाहुक- रक्तमोक्षण निषेध
मन्यास्तंभ- रुक्षस्वेद तथा नस्य मन्यास्तम्भे प्रयोजयेत्।
विश्वाची- बाहो कर्मक्षयकरी। मा.नि.
खंज- कटीस्थित वायू सक्थिस्थित कण्डरा कों आक्षेपित करता है। यही व्याधि उभय सक्थि में होता है, तो ऊसे पंगु कहते है।
कलायखंज: विद्यान्मुक्त संधि प्रबंधकान। मा.नि.
पाददाह- (वातज नामात्मज व्याधि) पित्तरक्तावृत्तवात
पादहष - कफावृत्तवात
खल्ली- गृध्रसी + विश्वाची
तूनी - वेदना मलाशय / मुत्राशय से शुरुवात होके गुद/ उपस्थ तक संचारित होती है। चिकित्सा- मुत्राश्मरीवत.
प्रतितूनी- तुनी के विपरित वेदना. चिकित्सा- मुत्राश्मरीवत्।
आध्मान- स आटोप व तीव्ररुजा
प्रत्याध्मान- आमाशयोत्थितम्, विमुक्तपार्श्वहृदय
कम्पवात- पर्याय वेपथू मा.नि.
उर्ध्ववात- उद्गार बाहुल्य. चिकित्सा- आध्मानवत.
आवृत्त वात- मा.नि.10
स्नायूक-मा.नि. कृमीजनित व्याधि. भेद-8, वातज, पित्तज,कफज, रक्तज, वातपित्तज, पित्तकफज, वातकफज, त्रिदोषज.
चिकित्सा - विसर्पसम

प्राणवह स्त्रोतस:

हिक्का: चिकित्सा
स्वेदनं वमनं नस्य धूमपान विरेचनम्।
निद्रा स्निग्धानि चान्नानि मृदूनि लवणानिच।। यो.र.
श्वास:
श्वासत्वं वेगवदूर्ध्ववातत्वम्। (मधुकोष)
श्वासस्तु भस्त्रिकाध्मान समवातोर्ध्वगामिता।। मा.नि.
चिकित्सा-विरेचन:-
स सैंधव फलाम्लं वा कोष्णं दद्याद्विरेचनम्।। वा.चि.4/7
अन्नानि पानानि च भेषजानि।
श्लेष्मानिलघ्नानि च पथ्यवर्ग।। (नि.र.)
कास:- हारीत भेद-8 (वातकफज कास वर्णन नही)
राजयक्ष्मा-पर्याय-क्षय, शोष, रोगराट
पार्श्वशूल- 2 भेद- शुष्क(Dry Plurisy), सजल (Plurisy with effusion)
स्वरभेद-साध्यासाध्यत्व मा.नि.क्षीण,वृध्द, कृश,चिरकालीन, सहज उत्पन्न, मेदोज व सन्निपातीक स्वरभेद असाध्य
उरोग्रह-कफमारुतो (वंगसेन)
चिकित्सा - आत्राऽऽशु स्वेदनं युक्त्या वमनं रक्तमोक्षणम।
तीक्ष्णैर्निरुहणैश्चैकं क्रमात लंघनमाचरेत्।। यो.र.

अन्नवहस्त्रोतस व पुरिषवह स्त्रोतस :

अरोचक: चिकित्सा
बहिरन्तमृजा चित्तनिर्वाणं हृद्यमौषधम्।
व्दौ कालो दन्तपवनं भक्षयेन्मुख धावनें:।
कषायै क्षालयेदास्यं धूमं प्रायोगिक पिबेत। अ.हृ.नि 5/47-48
बस्ति समीरणो, पित्ते विरेको, वमनं कफे। नि.रत्नाकर
अतिसार- वंगसेन व्दव्दज अतिसार भेद वर्णन.
पूर्वरुप: हृन्नाभिपायूदरकुक्षि तोद गात्रावसादानिल संनिरोधा:।
विटसंगाध्मानमथाविपाको भविष्यतस्तस्य पुर:सराणि।। मा.नि.
वाग्भट-वातज अतिसार- दग्धगुडाभ्यासम मलप्रवृत्ती, प्रवाहण.
शोकातिसार- गुंजावर्ण रक्त गुदाव्दारे प्रवृत्ती
आमावस्था- संसृष्टमेभिर्दोषीस्तु व्यस्तमप्स्वसीदति।
पुरिषं भृषदुर्गन्धि पिच्छिलं चामसंज्ञितम्।। मा.नि.
पक्वावस्था-विपरित
अतिसार मुक्ती लक्षण :
यस्योच्चारं विना मुत्रं सम्यग्वायुश्च गच्छति।
दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्य स्थितस्तश्चोदुरामय:।। मा.नि.
उपद्रव- (10) मा.नि. शोथ, शूलं, ज्वर, तृष्णा, श्वास, कास, अरोचक, छर्दी, मूर्च्छा, हिक्का
चिकित्सा- प्राणदा प्राणदा दोषे विबध्दे संप्रवर्तिनी। अ.हृ. चि. (हरितकी को प्राणदा कहा है।)
प्रवाहिका-चरक-कफज अतिसार में समावेश,
सुश्रुत - स्वंतत्र वर्णन, वाग्भट- बिबीशी नाम से वर्णन.
पर्याय- विस्त्रंसी, निश्चारिका, निर्वाहिका, निस्तानिका,अंतर्ग्रंथी.
प्रकार (4) सुश्रुत-V, P, K, R
उपद्रव- पाण्डू, गुल्म, गुदभ्रंश
उदर्क- गुदभ्रंश, कुक्षीशूल, अग्निमांद्य
चिकित्सा- पक्वाशये स तैले तु बिंबिशी नावतिष्ठते। वा.चि.9/46
ग्रहणी-
पूर्वरुप-आनध्दादेरता छर्दी: कर्णक्ष्वेडीऽन्त्रकूजनम्।वा.नि. 8/19
सामान्य लक्षणे-
दोषवर्णेनखेस्तव्दिण्मुत्रनयनाननै।
हृत्पाण्ड्दरगुल्मार्श: प्लीहाशंकीच मानव:।मा.नि.
संग्रहणी- मा.नि. सशब्द मन्दवेदनम्।
पक्षान्मासाददशाहाव्दा नित्यं वाऽप्यथ मुंचति।
दिवा प्रकोपो भवति रात्रो शांति व्रजेच्य या।
दूविज्ञेया दूश्चिकित्सा चिरकालानुबन्धिनि।।
सा भवेदामवातेन संग्रह ग्रहणी मता।। मा.नि.

घटीयंत्र ग्रहणी-
स्वपत: पार्श्वयो:
तं वदन्ति घटीयंत्र
भेद- राज, क्षतज
चिकित्सा - ग्रह
अतीसारोक्तविधी
विसुचिका- वा
सुश्
उपद्रव - 5 मा.नि
चिकित्सा- उर्ध्व
अलसक- प्रयाग
आमाशयेऽलसीभ
अलसक इति दो
अजीर्णमामं विष्ट
विसुच्यलसकौ त
प्रकार - अलस
वातज.
आमविष- विष
विलंबिका:-
दृष्टं तु भुक्तं कफ
विलम्बिकां ता
मधुकोषकार- ३
विलम्बीका में
साध्यासाध्यत्व- ३
चिकित्सा- वि
अलसक, दण्डा
छर्दी-भेद 5 मा
शूल-मा.नि.8
अन्य-प्रकार -
सुश्रुत - कुक्षिश
वातजशूल-वर्षा
सुश्रुतने वातज श
बस्तिशूलऔर
पित्तज- नाभीप्र
कफजशूल- सु
वातपित्तजशुल-
पित्तकफशूल-
वातकफज- हृ
सन्निपातीक -
आमज- स्थान
साध्यासाध्यत्व-
उपद्रवयुक्त व
चिकित्सा:- व
क्ष
पित्तजशूल-

h effusion)
लीन, सहज
नि 5/47-48
नाकर
संनिरोधा:
णि।। मा.नि
ाहण.
स, अरोचक
. चि.
र्णन.
ंतर्ग्रंथी.
चे.9/46
8/19

घटीयंत्र ग्रहणी- मा.नि.
स्वपत: पार्श्वयो: शूलं गलज्जलघटीध्वनी।
तं वदन्ति घटीयंत्रम साध्यं ग्रहणीगदम।।मा.नि.
भेद- राज, क्षतज, क्षयज, निर्मोक ग्रहणी (गणनाथ सेन)
चिकित्सा - ग्रहणीमाश्रीतं दोषंअजीणवद् उपचारेत।
अतीसारोक्तविधीनां तस्यामं च विपाचरेत।अ.हृ.चि 10/1
विसुचिका- वाग्भट-V, P, K;
सुश्रुत-V, P, K एवं उर्ध्वग व अधोग
उपद्रव - 5 मा.नि.-निद्रानाश, अरति, कंप, मुत्राघात, मूर्च्छा
चिकित्सा- उर्ध्वग के लिए विरेचन और अधोग के लिए वमन।
अलसक- प्रयाति नोर्ध्वं नाधस्तादाहारो न विपच्यते।
आमाशयेऽलसीभूतस्तेन सोऽलसक: स्मृत:।।मा.नि. मधुकोष
अलसक इति दोषास्थिरत्व निमित्तसंज्ञा। मधुकोष
अजीर्णमामं विष्टब्धं विदग्धं च यदीरितम्।
विसुच्यलसकौ तस्माद् भवेच्यापि विलम्बिका।। मा.नि.
प्रकार - अलसक, दंडालसक, व आमविष-चरक
वातज, पित्तज, कफज- शारंगधर
आमविष- विषरुपाशुकारित्वाद्विरुध्दोपक्रमत्वात:। (अ.हृ.सु. 8/13)
विलंबिका:-
दृष्ट तु भुक्तं कफमारुताभ्यां प्रवर्तते नोर्ध्वमधस्य यस्य।
विलम्बिकां ता भृश दुश्चिकित्सामाचक्षते शास्त्रविद: पुराणा:।मा.नि.
मधुकोषकार- अलसक में तीव्र उदरशूल, विलम्बीका में नही.
विलम्बीका में अलसक से ज्यादा चिरकारित्व.
साध्यासाध्यत्व- अलसक-कष्टसाध्य, दंडालसक, आमविष व विलम्बीका असाध्य.
चिकित्सा- विसुचिका-स्तंभन,
अलसक, दण्डालसक और विलम्बीका-वमन
उर्दी-भेद 5 मा.नि. V, P, K, S. बीभत्सदर्शनजन्य (व्दिष्टार्थजा)
शूल-मा.नि.8 भेदV,P, K, S,VP, PK, KV,आमज. हारित 8 (सुश्रुत4)
अन्य-प्रकार - परिणामशूल, अन्नद्रवशूल
सुश्रुत - कुक्षिशूल, अन्नदोषशूल
वातजशूल-वर्षाऋतूमें,शीतकाली बढता है,मुर्हुमुर्हु उपशमन और प्रकोपी।
सुश्रुतने वातज शूल में हत्शूल, पार्श्वशूल, कुक्षीशूल, पृष्ठशूल, त्रिकशूल, बस्तिशूलऔर शिरशूल का समावेश किया है।
पित्तज- नाभीप्रदेश में होनेवाला और शरद ऋतू में बढनेवाला.
कफजशूल- सुर्योदये, शिशिर और वंसत ऋतूमें बढनेवाला.
वातपित्तजशुल- बस्ति व नाभीप्रदेशमें दाह ज्वरमुक्त, तीव्रशूल.
पित्तकफशूल- कूक्षी, हृदय व नाभीप्रदेश में होनेवाला,
वातकफज- हृदय, पार्श्व व पृष्ठशूल.
सन्निपातीक - अत्यंत कष्टप्रद असाध्य व्याधि, विषवज्रकल्प संज्ञा
आमज- स्थान आमाशय
साध्यासाध्यत्व- एकदोषज-साध्य, व्दव्दज याप्य,
उपद्रवयुक्त व सन्निपातीक असाध्य है।
चिकित्सा:- वमनं लंघनं स्वेद पाचनं फलवर्तय:।
क्षारचूर्णाश्च गूटिका:शस्यन्ते शूलशान्तये।। योगरत्नाकर.
पित्तजशूल- वमन, प्रथम पटोल इक्षूरससे, पश्चात विरेचन.

वातकफजशूल- क्षार प्रयोग.
आमजशूल- आमशूले क्रियाकार्या कफशूलविनाशिनी।
शेषमामहरं सर्वयद् यद् अग्निवर्धनम्। योगरत्नाकर
परिणामशूल:- भूक्ते जीर्यति यच्छूलं तदेवं परिणामजम्। मा.नि.
रुप:- भुक्तेमात्रेऽथवा वान्ते जीर्णेऽन्ने च प्रशाम्यति।
षष्टीक व्रीहि शालीनामोदनेन विवर्धते।।
तत्परिणामजं शूलं दुविज्ञैयं महागदम्।। मा.नि.
पर्याय-पक्तीशूल
बस्तिश्च हित:शूले परिणाम समुदभव। चक्रदत्त.
सामान्य चिकित्सा-
लंघनं प्रथमं कुर्यात वमनं च विरेचनम।
बस्तिकर्म परं चात्र पक्तिशूलोपशान्तये।। योगरत्नाकर
विशेष चिकित्सा:
वातजं स्नेहयोगेन पित्तजं रेचनादिना।
कफजं वमनाद्यैश्च पक्तिशुलमुपचारेत।।
व्दव्दजं स्नेहयोगेन तत्त्रियोगेन सर्वजम्।। यो.र.
अन्नद्रवशूल:-
जीर्णेजीर्यत्यजीर्णे वा यच्छूलमुपजायते।
पथ्यापथ्यप्रयोगेण भोजनाभोजनेन च।।
न शमं याति नियमात्सोऽन्नद्रव उदाहृत:।। मा.नि.
चिकित्सा:-
पित्तान्तम् वमनम कृत्वा कफान्तम् विरेचनम्। चक्रदत्त
अम्लपित्त:
चरक, सुश्रुत, वाग्भट स्वतंत्र व्याधि वर्णन नही.
काश्यप, माधव निदान, भा.प्र. योगरत्नाकर स्वतंत्र व्याधि वर्णन.
अम्लगुणोद्रिक्त पित्तं अम्लपित्तं। मा.नि.
भेद 2 - उर्ध्वंग, अधोग.
3 - वातानुबंधि, कफानुबंधि, वातकफानुबंधि.
हेतू-काश्यप-आनूपदेश
सामान्य लक्षणे:- अविपाकक्लम उत्क्लेश तिक्ताम्लोद्गार गौरवे:।
हृत्कण्ठ दाहरुचिभिश्चाम्लपित्तं वदेद्भिषक्।।मा.नि.
उर्ध्वग अम्लपित्त लक्षणे:-
वान्तं हरितपीतकनील कृष्ण आरक्त रक्ताभ अतीव चाम्लम्।
मांसोदकाभं त्वतिपिच्छिलाच्छं श्लेष्मानुजातं विविधं रसेन।।
भुक्तेविदग्धे त्वयथाऽप्यभुक्ते करोति तिक्ताम्लवमिं कदाचित्।।
अधोग अम्लपित्त लक्षण:
तृटदाहमूर्च्छा भ्रम मोहकारि प्रत्यात्यधो वा विविधप्रकारम्।
हृल्लासकोठ अनलसाद हर्ष स्वेदांगपीतत्वंकरं कदाचित्।।मा.नि.
साध्यासाध्यत्व-नव-यत्नसाध्य, चिरोत्थित- याप्य
चिकित्सा -पूर्व तु वमने कार्य पश्चान्मृदू विरेचनम्।
कृत वांन्तिविरेकस्य सुस्निग्धस्यानुवासनम्।
आस्थापन चिरोत्थंऽस्मिन्देयं दोषाधपेक्षया।।
दोषसंसर्गजे कार्यं औषध आहारकल्पनम्।।
उर्ध्वदेहस्थिते वान्त्याऽप्यथ:स्थं रेचने हरेत्।।
पाचनं तिक्त बहलं पथ्य च परिकल्पयेत्। यो.र.

आनाह-

आमं शकृव्दा निचितं क्रमेण भूयो विबध्दं विगुणनिलेन्।
प्रवर्तमानं न यथास्वमेनं विकारम् आनाहम् उदाहरणन्ती।।

1) आमानाह 2) पुरिषानाह

चिकित्सा- आस्थापनं मारुतजे स्निग्धस्विन्ने विशेषत:।
पुरिषजे तु कर्तव्यो विधिरानाहकोदित:। यो.र.

उदावर्त:-

उदभूतेन वेगविधारणेनाऽऽवृतस्य
वायोर्वर्तनम् इति उदावर्त निरुक्ति:। मा.नि.

प्रकार 13 मा.नि.

चिकित्सा- तं तैलशीतज्वरनाशक्तं स्वेर्दर्यभोक्तै: प्रविलीनदोषम्।
उपचारेत वर्ती निरुह बस्ति स्नेहविरेकै अनुलोमाद्यै:।। नि.र.

अग्निमांद्य- चिकित्सा- कफेवृध्देजीते पित्ते मारुतेच अनलसमा।

गुल्म- चरक, मा.नि. 5, वाग्भट, शारंगधर 8

सामान्य लक्षण:- अरुचि कृच्छ्र विण्मुंत्रवाततऽन्त्रविकूजनम्।
आनाहश्च उर्ध्ववातत्वं सर्वगुल्मेषु लक्षयेत।। मा.नि.

सन्निपातीक गुल्म (निचय):

महारुज दाहपरितमश्मवद् घनोन्नतं शिघ्रविदाहीदारुणम्।
मन: शरीराग्निबलापहरिणं त्रिदोषजं गुल्मअसाध्यं आदिशेत्।। मा.नि.

रक्तजगुल्म:

नवप्रसूताऽहितभोजनो या या चामगर्भं विसृजे दृतौ वा।
वायुर्हि तस्या: परिगृह्य रक्तं करोति गुल्मं सरुजं सदाहम्।
पैतस्यलिंगेन समान लिंग विशेषणं चाप्यपरं निबोध। मा.नि.

साध्यासाधत्व- क्रमश:बढनेवाला गुल्म, महावास्तुपरिग्रह, सिराजालयुत, कूर्म इव उत्थित, उपद्रवयुक्त, हृन्नाभि हस्तपाद शोथ युक्त रहनेपर असाध्य

चिकित्सा:-

लघनं दीपनं स्निग्धमुष्णं वातानुलोमन्।
बृहणं च भवेदन्न तध्दित सर्वगुल्मिनाम्।। यो.र.

मुखपाक/सर्वसर -

सुश्रुत-3 परंतु वर्णित (4) रक्तज की गणना नही. V, P, K, R
मा.नि.3 -V, P, K वाग्भट- 5- V, P, K, R, S

चिकित्सा- कुठेरादी गण द्रव्य उपयोग

कृमी: सहज, वैकारिक

सहंज- जन्मसे ही उत्पत्ती, शरीर को सहाय्यक
वैकारिक पून: बाह्य अभ्यन्तर भेद
इन्हीके उत्पत्तीभेद से 4 प्रकार बाह्य (मलज), कफज, रक्तज, पुरिषज
बाह्यकृमीहेतू- मलोद्भवा, तिलप्रमाणासंस्थानवर्णा:
नाम-यूका, लीक्षा- बहूपादयुक्त और सुक्ष्म होती है।
कोठ पिडका, कण्डू आदी लक्षणे उत्पत्ति करती है।
हेतू-पुरिषज-माषपिष्टाम्ललवण गुडशाकै:
कफज-मांसमत्स्यगुडक्षीरदधि शुक्त
रक्तज- विरुध्द, अजीर्ण अशन, शाक

सामान्य लक्षणे- ज्वरो विर्वणता शूलं हृद्रोग: सदनं भ्रम:।
भक्तव्देषोऽतिसारश्च संजातक्रिमिलक्षणम्।। मा.नि.

हारित- कफज कृमी 2 प्रकार- सुचिकृमी व धान्यांकुरकृमी
सुचिकृमी- उदरमें सुचिवत पिडा, सरक्त छर्दी एवं सरक्त मलप्रवृत्ती, यकृतभक्षण आदी लक्षणे.
धान्यांकुर कृमी- शरीर में विभिन्न विद्रधी उत्पन्न
साध्यासाध्यत्व- बाह्यकृमी-सुखसाध्य
रक्तज, चिरकारी, तीव्रशूल उत्पन्न करनेवाले- सुक्ष्म, आंन्त्राद कृमी- कष्टसाध्य.
हृद्रोग उत्पन्न करनेवाले कृमी- असाध्य.

उदकवह स्त्रोतस:- (अतिसार, प्रवाहिका)

तृष्णा -

पित्तं सवातं कूपितं नराणां तालू प्रपन्नं जनयेत पिपासां। यो.र.

उपद्रव 7 :- यो.र.
साध्यासाध्यतव(दोषज)सुखसाध्य
उपसर्गज कष्टसाध्य, घोरउपद्रवयुक्त असाध्य

सामान्यचिकित्सा- वातपित्तघ्न उपचार, बाह्य अभ्यन्तर शीतक्रिया,
शमन शोधन उपचार-

तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति।
त्स्मात्सर्वास्ववस्थासु न क्वचिव्दारि वार्यते।। यो.र.

शोथ:-

उत्सेधं संहतं शोफं तमाहु: निचयादत:। मा.नि.

मा.नि.-निज शोथ के एकदोषज, व्दव्दज और सन्निपातज भेद वर्णन और आंगतुंज के अभिघातज और विषज भेद वर्णन किये है।
अ.हृ. पृथू, उन्नत और ग्रथित त्रिविध शोथ वर्णन.
रसे सर्वानुगा: शोफा: सर्वदेहानुगा: रसा:। हारित

काश्यप - दूष्य-त्वक, मांस, मेद
आंगन्तुशोथ- स्याद विसर्पवान।
भृशोष्मा लोहिताभास: प्रायश: पित्तलक्षण:।। मा.नि.

उपद्रव-7 चरक, सुश्रुत 9 - हिक्का कास Extra

चिकित्सा 1) स्वेदाभ्यंगात्समीरघ्नान् लेपमेकांगगे पुन:। अ.हृ.चि
2) यथादोषं यशासन्नं शुध्दीं रक्तावसेचनम्।
कुर्वीत मिश्रदोषे तु दोषोद्रेकबलातक्रियाम्।। अ.हृ.चि. 17/37

उदर- भेद 8 -V, P, K, S प्लीह बध्द क्षत उदक
यकृतोदर,प्लीहोदर, यकृददाल्यूदर, यकृतप्लीहोदर सभी एक ही प्रकार में समाविष्ट
दकोदर को जलोदर, छिद्रोदर को क्षतउदर या स्त्रावी उदर कहते है।

प्लीह यकृतोदर:

मंदज्वराग्नि कफपित्तलिंगै: उपद्रुत: क्षीणबलोऽति पाण्डु:। मा.नि.
चिकित्सा- उदराणां मलाठयत्वात बहुशो शोधन हितम्। यो.र.

वातोदर:- एरण्डतैलं दशमुलमिश्रं गोमुत्रयुक्तं त्रिफला रसो वा।
निहन्ती वातोदरशोथशूलं, क्वाथ: समुत्रो दशमूलजश्च।। भा.प्र.

मुत्रवह स्त्रोतस:

मुत्राघात:- मा.नि. 13 प्रकार
1) वातकुंडलिका- सुदारुण व्याधि 2) अष्ठिला- मुत्रमार्गरोधिनिम्।
3) वातबस्ति- कृच्छ्रप्रसादन व्याधि
4) मुत्रातीत- चिरं धारयते मुत्रं त्वरया न प्रवर्तते।
5) मुत्रजठर- अधोबस्तिनिरोधनम्। 6) मुत्रोत्संग- विगुण अनिलजो व्या
7) मुत्रक्षय - बस्तिस्थवात पित्त प्रकोप

8) मुत्रग्रंथी- अ
9) मुत्रशुक्र-मुत्र
10) उष्णवात-
11) मुत्रसाद-रो
13) बस्तिकुण्ड

चिकित्सा-
स्नेहस्वेदोपपन्नस
दद्यादुत्तरबस्तिंच

मुत्रकृच्छ्र:-
मुत्रेकृच्छ्रे कृच्छ्र
मुत्राघाते तु वि
अभिघातज मुत्र
सरक्त अल्प मुत्र
मुत्राश्मरी- प्रका
अश्मरी- कफ
हेतू- तत्र असं
हारित
पूर्वरुप - बस्ति
सामान्य लक्षण-
वातज अश्मरी-
पित्तज- वर्ण, र
कफज - वर्ण
उन्माद- उन्माद
मानसोन्माद- म
विषजउन्माद- र
साध्यासाध्यत्व
अपस्मार पूर्वरुप-
चरक संहिता:
चरक चिकित्स
1) मार्ग- उभय
बाह्य- कूष्ठ, क्ष
घात, वातर
2) स्त्रोतोदूष्टी - र
व्याधि संग.
3) स्थान-प्रमेह-
उन्माद,अपस्मार,
4) अधिष्ठान:ज्वर
6) उत्पत्ती-कूष्ठ,
पुवंशिक व्या
पुवंशिक व्याधि
प्रकृतिभव कहा है
कूष्ठ, अर्श.

8) मुत्रग्रंथी- अन्तबस्तिमुख प्रदेशी, वृत्त, स्थिर, अल्प, अश्मरी सम ग्रंथी

9) मुत्रशुक्र-मुत्रप्रवृतीपूर्व और पश्चात शुक्रप्रवृत्ती,भस्मोदकप्रतिकाश मुत्र.

10) उष्णवात- मुत्र-हरिद्र, सरक्त या केवल रक्त

11) मुत्रसाद-रोचनशंखचूर्णवर्ण मुत्रप्रवृत्ती 12) विडविद्यात-मुत्रप्रवृत्ती मलयुक्त

13) बस्तिकुण्डल- बिन्दुं बिन्दुं स्त्रवत्यपि, घोरं शस्त्रविषोपमग

चिकित्सा-

स्नेहस्वेदोपपन्नस्य हितं स्नेह विरेचनम्।

दद्यादुत्तरबस्तिंच मुत्राघाते सवेदने।। यो.र.

मुत्रकृच्छ्र:-

मुत्रकृच्छ्रे कृच्छ्रत्वमतिशयितम् इषदविबंध।,

मुत्राघाते तु विबंधो बलवान कृच्छ्रन्वमल्पमिती। मा.नि.टिका

अभिघातज मुत्रकृच्छ्र:/ रक्तज मुत्रकृच्छ्र:-

सरक्त अल्प मुत्रप्रवृत्ती, अन्य लक्षण वातज मुत्रकृच्छ्र सम

मुत्राश्मरी- प्रकार 4 वातज, पित्तज, कफज, शुक्रज

अश्मरी- कफप्रधान व्याधि

हेतु- तत्र असंशोधनशीलस्याथ्यकारिण:। सुश्रुत

हारित- मातापिता बीजदोष

पूर्वरुप - बस्तिसगन्धत्व मुत्र

सामान्य लक्षण- मुत्रप्रवृत्ती स्वच्छ या गोमेद वर्णी

वातज अश्मरी- वर्ण श्यावअरुण, कण्टक युक्त

पित्तज- वर्ण, रक्त, पित, असित, भल्लातकास्थिसम

कफज - वर्ण मधुरवर्णी / सित, श्लक्ष्ण, महती

उन्माद- उन्माद प्रथम अवस्था को मद कहा है।

मानसोन्माद- मा.नि. विसंज्ञो, गायत्यप्यो, हसति, रोदतिचापि मूढ

विषजउन्माद- रक्तअक्ष, हतबलइंद्रियभा, सुदीन, श्याव आनन,

साध्यासाध्यत्व 13 वर्ष के बाद उन्माद असाध्य.

अपस्मार पूर्वरुप-हृत्कम्प:शून्यता, स्वेदो ध्यानं, मूर्च्छा, प्रमूढता, निद्रानाश.

चरक संहिता:

चरक चिकित्सा व्याधि: (चिकित्सास्थान के व्याधि से संबंधित)

1) **मार्ग**- उभय (बाह्य अभ्यन्तर) विसर्प, शोथ, गुल्म, अर्श, विद्रधी, बाह्य- कूष्ठ, क्षतक्षीण, मध्यममार्ग- प्रमेह, राजयक्ष्मा, उन्माद-अपस्मार अभिघात, वातरक्त, शेष-अंभ्यन्तर मार्ग.

2) **स्रोतोदूष्टी** - रक्तपित्त-संग, अतिप्रवृत्ती, पाण्डू व कामला-विमार्गागमन, व्याधि संग.

3) **स्थान**-प्रमेह- मेदोवह स्त्रोतस, ग्रहणी- अन्तकोष्ठ, उन्माद,अपस्मार, पाण्डू -हृदय, शेष व्याधि-आमाशय, पक्षाघात-मस्तिष्क

4) **अधिष्ठान**:ज्वर-शरीर मानस,उन्माद अपस्मार-मानस,शेष व्याधि:शरीर

5) **उत्पत्ती**-कूष्ठ, प्रमेह, अर्श, आदिबललप्रवृत्त, शेष-दोषबलप्रवृत्त.

आनुवंशिक व्याधि :आध्यात्मिक व्याधीयों में आदीबलप्रवृत्त व्याधीको आनुवंशिक व्याधि कहते है। चरक ने कूलज, वाग्भटने सहज व भेलने प्रकृतिभव कहा है। दोष युक्त शुक्र व आर्तव से उत्पन्न होनेवाले व्याधि. उदा. कूष्ठ, अर्श, प्रमेह, श्वेतकूष्ठ, अपस्मार इ.

Hereditary :

1) Metabolic Diseases : Diabetes insipidus, phenyl ketonuria : Hepatolenticular degeneration.

2) Blood Diseases : Haemoplilia, pernicious Aaenemia, Sickle cell Aaenemia.

3) Eye Diseases : Retinitis pigmentosa, Aniridia, Hereditary optic atrophy, Hereditary cataract.

4) Neuromuscular Disorder : Progressive muscular atrophy, pseudohypertrophic musclar dystrophy.

5) Mental Disease - Huntington's chorea.

उष्णताजन्य विकार:

1) आतपज्वर (Heat Hyperpyreixa) लक्षण संन्यास उत्पत्ती

चिकित्सा Rectal temperature 102^0 होने तक बर्फसंवाहन करे ।

2) उष्माघात (Sun stroke, Heat stroke)

रुप Rectal temp > 106^0F, Internal body temp -112 to 113^0F

3) उष्मविनाश (Heat exhaustion)/आतपजन्य श्रम

4) आतप उद्वेष्टन (Heat cramps) (Fluid-electrolyte imbalance)

5) उष्मामूर्च्छा (Heat syncope) (No fluid electrolyte imbalance)

6) उष्मापिटीका (Prickly Heat)

7) सौर गजचर्म (Solar keratosis)

8) आतपशोथ (Heat oedema)

शितताजन्य विकार :-

1) शीतांगसन्निपात (Hypothermia) Temp below 30^0C

2) बर्फदंश (Cold Injury) Blisters formation, dehydration

Medical problem of High Altitude :

Low atmospheric pressure, low partial pressure of oxygen, low humidity.

1) A.M.S. (Acute Mountainous sickness) Height 12000 feet

2) C.M.S.- Chronc Moutainous sickness (Hight above14000 feet)

Decompression Sickness :

(जल के निचे(भूगर्भमे) जाने से होने वाले विकार)लक्षणे-श्वसन. कष्टता, कर्णबाधीर्य

Barotrauma, Pulmonary oedema,G.I. Problems etc.

Treatement- Recompression therapy.

व्याधिक्षमत्व विकृतिजन्य विकार : (Auto Immune Disease)

1) S.L.E. (Systemic lupus Erythematosus)

2) R. A. (Rheumatoid arthritis)

3) Mysthenia Gravis

4) Hashimoto's Thyroiditis

5) Addison's disease

6) Scleroderma

7) Pernicious Anaemia

8) Active chronic Hepatitis

9) Idiopathic thrombocytopenic purpura.

कायचिकित्सा योग

कषाय

1] अभयादी क्वाथ (भै.र.) क्लोम
2] अमृतादी हिम (वृ.नि.र.) ज्वर
3] अमृताष्टक (भा.प्र.भै.र.) ज्वर
4] आम्रादी हिम (शा.सं.) रक्तपित्त
5] आम्रादी यवागू (शा.सं.) ग्रहणी
6] उत्पलषष्टक क्वाथ (भा.प्र.) ज्वरातिसार
7] एलादीक्वाथ (यो.र.) अश्मरी
8] कंटकार्यादी क्वाथ (भा.प्र.) ज्वर
9] किरातिक्तादी क्वाथ (भा.प्र.) ज्वर
10] खरीरादी कषाय (ग.नि.) प्रमेह
11] खदीरादेक (यो.र.) कूष्ठ
12] खर्जुरादी मन्थ (शारंगधर) मद्याविकार
13] गुडूची स्वरस (वंगसेन) प्रमेह
14] गुडूच्यादी क्वाथ (भा.प्र.छर्दी) भै.र. ज्वर
15] गोकंटकादी क्वाथ (यो.र.) अतिसार
16] गोजिव्हादी क्वाथ (वृ.नि.र.) सन्निपात
17] गोपालकर्कटी योगा (यो.र.) अश्मरी
18] चतूषष्ठीक्वाथ (यो.र.) ज्वर
19] चातुर्भद्रम (भा.प्र.) ज्वर
20] तुलसीपत्र स्वरस (शारंगधर) विषमज्वर
21] त्रिफलाक्वाथ (यो.र.) नेत्ररोग
22] दशमूलक्वाथ (वं.से.) सुतिका (वातरोग)
23] दशमूलम् - ज्वर
24] दंशागक्वाथ (भै.र.) अम्लपित्त
25] दाडीम पूटपाक (भै.र., यो.र.) अतिसार
26] देवदार्व्यादी क्वाथ (भा.प्र., यो.र.) सुतिका
27] धान्यपंचक (भै.र., भा.प्र.) अतिसार
28] पंचतिक्तक्वाथ (वंगसेन) ज्वर
29] पंचपल्लव क्वाथ (यो.र.,भा.प्र.) मुखरोग
30] पंचभद्रक और पंचमूष्टिक - ज्वर
31] पूनर्नवाष्टक (भै.र.) शोथ, (यो.र.) उदर
32] बिल्वादी क्वाथ अतिसार
33] भूनिम्बादी क्वाथ (ज्वर)
34] मंजिष्ठादीक्वाथ-कुष्ट/वातरक्त/त्वग्दोष
35] महामंजीष्टादि क्वाथ - कूष्ठ
36] महारास्नादी क्वाथ (यो.र.) वातव्याधि
37] मुस्तादी प्रमथ्या - शारंगधर - रक्तातीसार
38] रास्नादीक्वाथ (वृ.नि.र.) आमवात (यो.र.) सन्निपात (वृ.मा.) वातव्याधी
39] रास्नापंचक / सप्तक (भै.र.) आमवात
40] वरूणादी क्वाथ (भै.र.) अश्मरी
41] वर्धमान पिप्पली (भै.र.) प्लिहा
42] षंडगक्वाथ (भै.र.) शिरोरोग

चूर्ण

1] अविपत्तीकर चूर्ण (भै.र., वं.से.) अम्लपित्त
2] अजमोदादी चूर्ण - शारंगधर - अतिसार (वृ.नि.र) शूल
3] असनादी योग (भा.प्र.) प्रमेह
4] आनन्दयोग (भै.र.) अश्मरी
5] एलादी चूर्ण (यो.र.) छर्दी/क्षय
6] ककुभ चूर्ण (यो.र.) कास
7] ककुभ्याद्य चूर्ण (यो.र.) हृद्रोग
8] कपित्थाष्टक चूर्ण (चक्रदत्त) ग्रहणी
9] कल्याणक चूर्ण (यो.र.) अपस्मार
10] कालक चूर्ण - (चरक) मुखरोग
11] केतकी क्षार योग (यो.र.) गुल्म
12] खर्जूरादी चूर्ण (यो.र.) दाह
13] गंगाधर चूर्ण (भा.प्र. अतिसार) (भै.र. ग्रहणी)
14] बृहदगंगाधर चूर्ण (भै.र.) ग्रहणी
15] वृध्दगंगाधरचूर्ण (भा.प्र.) अतिसार
16] गुडहरितकी (ग.नि.व.से) अर्श
17] गोमुत्रमण्डूर (यो.र.) शोथ
18] गोमुत्र हरितकी (वृ.नि.र.) पाण्डू
19] गोरोचनादीचूर्ण (यो.र.) नेत्ररोग
20] घृतभर्जित हरितकी (वं.से.) अर्श
21] चतू:सम चूर्णम् (भै.र.) शूल
22] चित्रक हरितकी (यो.र., भै.र.) नासारोग
23] ज्वालामुख चूर्ण (वृ.नि.र.) संग्रहणी
24] जातीफलादी चूर्ण (भै.र.) संग्रहणी
25] तालीसादी चूर्ण (यो.र. ज्वर) शारंगधर कास
26] त्रिलवण (यो.र.) शूल
27] त्र्यूषणादी चूर्ण (यो.र.) अरोचक
28] दशनसंस्कार चूर्ण (भै.र.) मुखरोग
29] दाडीमाष्टक चूर्ण (यो.र.) भै.र. ग्रहणी
30] निरुत्तरचूर्ण (यो.र.) उदावर्त
31] नारसिंह चूर्ण (भै.र.) वाजीकरण
32] नाराच चूर्ण (भै.र., यो.र.) उदावर्त
33] नारायण चूर्ण (यो.र.) उदर
34] पंचकोल चूर्ण (शा.सं., भै.र.) ज्वर भा.प्र., यो.र. आमवात
35] पंचनिम्ब चूर्ण (ग.नि.) कूष्ठ
36] पंचमूल चूर्ण (वंगसेन) आमवात
37] पंचलवण (वंगसेन) ग्रहणी
38] पंचवल्कल (भा.प्र.) मसुरिका
39]पंचसकारचूर्ण (सि. भै .म.) मलावरोध
40] पंचसम चूर्ण (यो.र.) आमवात
41] पंचामृत चूर्ण (र.र.) अजीर्ण
42] पिप्पल्यादी चूर्ण (यो.र., भा.प्र.) बालरोग
43] पितक चूर्ण (मुखरोग) (चरक. भै.र.)
44] पूष्यानुग चूर्ण
45] भर्जितहरितकी
46] भास्कर लवण
47] मरिच्यादी चू
48] योगराजचूर्ण
49] लघुगंगाधर च
50] लंवागादी चू
51] लाईचूर्ण (भै.
52] वडवानल चू
53] वैश्वानर चूर्ण
54] शतावर्यादीचू
55] शर्करासमं चू
56] षडधरण योग
57] सप्तसमायोग
58] समशर्कर चूर्ण
59] सितोपलादी
60] हरितक्यादी च
61] हिंगुपंचक चू
62] हिंग्वाष्टक चू

1] अमृतहरितकी
2] आमलक्यवलेह
3] कटंकारी अव
4] कल्याणाकावल
5] कूटजावलेह (
6] कुशावलेह (भै
7] कूष्माण्डावलेह
8] खण्डकूष्माण्ड
9] खण्डपिप्पल्यव
10] चव्यनप्राशाव
11] त्रिफलापाक
12] दशमुल गुड
13] दशमुलहरित
14] दाडीमावलेह
15] पिप्पली खण
16] प्रसारणीलेह
17] बाहुशालगुड
18] भल्लातक गुड
19] मधुपक्वहरित
20] मधुहरितकी
21] वासावलेह (
22] वसिष्ठहरितक
23] व्याघ्रीहरितक
24] शुंठीखण्ड (
25] सौभाग्यसुंठी

44] पूष्यानुग चूर्णम् (भै.र.) स्त्रीरोग चरक योनी रोग
45] भर्जितहरितकी योग (वृ.नि.र.) ग्रहणी
46] भास्कर लवण - अजीर्ण, अग्निमांद्य
47] मरिच्यादी चूर्ण (भै.र.) अर्श / ग्रहणी
48] योगराजचूर्ण (वृ.नि.र.) स्नायुक
49] लघुगंगाधर चूर्ण (यो.र.) अतिसार
50] लंवागादी चूर्ण (भै.र., यो.र.) राजयक्ष्मा
51] लाईचूर्ण (भै.र.) संग्रहणी
52] वडवानल चूर्ण (शारंगधर) अजीर्ण
53] वैश्वानर चूर्ण (भै.र.) आमवात
54] शतावर्यादीचूर्ण - रसायन / वाजीकरण
55] शर्करासमं चूर्ण (यो.र.) हिक्काश्वास
56] षडधरण योग (भा.प्र.) वातव्याधि (सुश्रुत आमाशयगत वात)
57] सप्तसमायोग (वृ.मा.) कूष्ठ
58] समशर्कर चूर्ण (भै.र., यो.र.) अर्श
59] सितोपलादी चूर्ण (भा.प्र.) ज्वर, (भै.र.) यक्ष्मा
60] हरितक्यादी चूर्ण अम्लपित्त, शूल
61] हिंगुपंचक चूर्ण (वं.से.) हृद्रोग
62] हिंग्वाष्टक चूर्ण (भै.र., यो.र.) अग्निमांद्य

अवलेह

1] अमृतहरितकी (यो.र.) अजीर्ण
2] आमलक्यवलेह (यो.र.) पांडू
3] कटंकारी अवलेह (यो.र., वं.से.) कास
4] कल्याणाकावलेह (यो.र.) ग्रहणी
5] कूटजावलेह (यो.र.) अतिसार
6] कुशावलेह (भै.र.) प्रमेह
7] कूष्माण्डावलेह (शारंगधर) रक्तपित्त
8] खण्डकूष्माण्डक अवलेह (वृ.यो.त.) अम्लपित्त
9] खण्डपिप्पल्यवलेह (यो.र.) क्षय
10] चव्यनप्राशावलेह (चरक) रसायन
11] त्रिफलापाक क्लैब्य
12] दशमुल गुड (भै.र.) ग्रहणी
13] दशमुलहरितकी (यो.र.) शोथ
14] दाडीमावलेह (यो.र.) अतिसार
15] पिप्पली खण्ड (भै.र.) अम्लपित्त
16] प्रसारणीलेह (भा.प्र.) आमवात
17] बाहुशालगुड अर्श / ग्रहणी
18] भल्लातक गुड-अर्श
19] मधुपक्वहरितकी (बृ.नि.र.) ग्रहणी, भा.प्र. वाजीकर
20] मधुहरितकी (वंगसेन) रसायन
21] वासावलेह (भै.र.) रक्तपित्त / यक्ष्मा (यो.र.) क्षय
22] वसिष्ठहरितकी अवलेह (वंगसेन) कास
23] व्याघ्रीहरितकी (भृगूहरितकी) कास
24] शुंठीखण्ड (भै.र.) अम्लपित्त
25] सौभाग्यसुंठीपाक (यो.र., भा.प्र.) सुतिका
26] हरितकीखण्ड (भै.र.) शूल

घृत

1] अष्टमंगल घृत (भै.र.) मेध्य
2] अमृता घृत त्वक रोग
3] कण्टकारी घृत (भै.र.) बालरोग
4] कदल्याद्यं घृत (भै.र., यो.र.) सोमरोग
5] करंजाद्य घृत (भा.प्र.) उपदेश
6] कामदेव घृत (वंगसेन) रक्तपित्त
7] कुंकुमाद्य घृत (चक्रदत्त) शिरोरोग
8] कूलात्थाद्य घृत (भै.र.) अश्मरी
9] गुग्गुलुपंचतिक्त घृत (र.र.) कूष्ठ
10] गुडुची (भा.प्र.) वातरक्त
11] चांगेरीघृत (भै.र.) अतिसार/, ग्रहणी
12] चित्रक घृत (भै.र.) प्लीहा, (यो.र.- यकृतरोग)
13] चित्रकादीघृत (चरक) शोथ
14] जात्यादीघृत (यो.र.,भै.र.) व्रणरोपक
15] जिवन्त्यादीघृत (यो.र.) यक्ष्मा
16] तृणपंचमुलादी घृत (भा.प्र.) अश्मरी
17] त्रायमाणाद्यं घृत (भै.र.) गुल्म
18] त्रिफला घृत - शारंगधर - नेत्ररोग
19] त्रिफलादी घृत - नेत्र, स्त्रीरोग (भै.र., कृमी)
20] दूर्वादी घृत (भै.र., यो.र.) रक्तपित्त
21] धात्रीघृत (भै.र.) सोमरोग
22] धात्रीघृत गुग्गुलु (र.र.) श्लीपद
23] धान्वन्तर घृत (सुश्रुत भा.प्र.) प्रमेह
24] नारायण घृत (भै.र, यो.र.) अम्लपित्त
25] पंचपलं घृत (भै.र.) गुल्म
26] पाराशर घृत (वृ.नि.र.) क्षय
27] फल घृत योनी रोग (भा.प्र.)
28] बलाघृत (भा.प्र.) वातरक्त
29] ब्रह्मघृत (वंगसेन) उदर
30] ब्राह्मीघृत (यो.र., भा.प्र.) अपस्मार
31] मसुरादीघृत (शारंगधर) अतिसार, वंगसेन - ग्रहणी
34] महाकल्याणक घृत - उन्माद
35] महाखदीर घृत - कूष्ठ
36] महातिक्तक घृत (चरक, यो.र., शा.सं.) कूष्ठ
37] महात्रिफला घृत - नेत्ररोग
38] महादाडीमाघ घृत (भै.र.) प्रमेह
39] महानील घृत - कूष्ठ
40] महावज्रक घृत - कूष्ठ
41] महाबिंदू घृत (भै.र.) उदर
42] रोहितक्र घृत (भै.र., यो.र.) प्लीहारोग
43] वासाघृत (भै.र.) उदर
44] शतावरी घृत -रसायन /वाजीकरणा अम्लपित्त /स्त्रीरोग/मुत्रकृच्छ्र / रक्तपित्त

45] शीतकल्याणाक घृत (यो.र., भै.र.) स्त्रीरोग
46] शुण्ठीघृत - आमवात
47] षडगघृत (वं.से.) अतिसार
48] षडंगबिन्दू घृतम (वं.से.) शिरोरोग
49] सुकुमार घृत (भा.प्र.) मुत्रकृच्छ्र
50] पूषादी घृत - गुल्म

तैल

1] अपामार्ग क्षार तैल (भै.र.) कर्णरोग
2] अणुतैल (सु.) वातरोग
3] अर्कपत्ररस तैल (वृ.नि.र.) पामा, कच्छू
4] अश्वगन्धा तैल (च.द्र.) वातव्याधि
5] अश्वगन्धादी तैल (यो.र.) ज्वर
6] अगरूघूम तैल (भा.प्र.) उपदंश
7] उन्मत्ततैलम् (भै.र.) कूष्ठं
8] इरिमेदादी तैल - मुखरोग
9] एरण्ड तैल योग - वातव्याधि
10] एरण्डतैल हरितकी (भा.प्र.) आमवात
11] कटभी तैल (यो.र.) अपस्मार
12] कनक तैल (भै.र.) शिरोरोग
13] करविराद्यं तैल (भै.र.) नासारोग (यो.र.) भगन्दर
14] कासीसादी तैल (शारंगधर) अर्श
15] कुकुंमाद्य तैल (यो.र., भै.र.) क्षुद्ररोग
16] कूब्जप्रसारणी तैल (भै.र.) वातव्याधि
17] कुमारी तैल (भा.प्र.) शिरोरोग
18] कूष्ठ तैल (भा.प्र.) कर्णरोग
19] कृष्णाद्य तैल - नेत्ररोग
20] गंधक तैल (यो.र.) कर्णरोग
21] गन्धतैल (भा.प्र., भै.र.) भग्न
22] गन्धर्व हस्त तैल (भै.र.) वृध्दी
23] गुदूच्यादितैल (चरक) वातरक्त
24] चन्दनबलालाक्षादी तैल (यो.र.) ज्वर
25] चन्दनाद्य तैल (चरक - ज्वर) यो.र. राजयक्ष्मा (भै.र. कास)
26] जात्यादी तैल (यो.र, भा.प्र.) व्रण, मुखरोग
27] ज्योतिष्मति तैल (यो.र., उदर) मेध्य/ कूष्ठ
28] तप्तराज तैल (भै.र.) शिरोरोग
29] त्रिफलादी तैल (भा.प्र., भै.र.) मेदोवृध्दी
30] दशमूल तैल (भै.र.) शिरोरोग
31] दिपीका तैल (यो.र., भै.र.) कर्णरोग
32] नारायण तैल (भै.र., शा.सं., भा.प्र.) वातव्याधि
33] महानारायण तैल (भै.र.) वातरोग
34] निम्ब तैल (वृ.नि.र.) क्षुद्ररोग
35] निर्गुण्डी तैल (भै.र.) कर्णरोग, गण्डमाला, नाडीव्रण
36] पिण्डतैल - वातरक्त (चरक, यो.र., भा.प्र.)
37] पद्मक तैल-वातरक्त
38] प्रसारणी तैल (भा.प्र.) वातव्याधि
39] बला तैल - वातव्याधि
40] बिल्वतैल - भै.र. अतिसार / गृहणी / क्षुद्ररोग
41] भल्लातक तैल - नाडीव्रण
42] भृंगराज तैल - शिरोरोग / नेत्ररोग / क्षुद्ररोग
43] मंजिष्ठादी तैल / क्षुद्ररोग / कूष्ठ
44] मरिच्याद्य तैल (शा.सं., भै.र.) कूष्ठ
45] महाकनक तैल (भै.र.) शिरोरोग
46] महामाष तैल (च.द., वं.से.) वातव्याधि
47] महासुगन्ध तैल (यो.र.) मेदोरोग / वाजीकर
48] यष्टयादी तैल (यो.र.) मुखरोग
49] यष्टीमधु तैल (शारंगधर) क्षुद्ररोग
50] रुद्रतैल (भै.र.) शिरोरोग / वातरोग
51] लक्ष्मी विलास तैल (यो.र.) क्षय
52] लाक्षादीतैल (भै.र.) बालरोग
53] वज्रक तैल - कूष्ठ
54] विषगर्भ/ महाविषगर्भमे (यो.र.) वातव्याधि
55] विष्णुतैल (भै.र.) वातव्याधि
56] विष्यंदन तैल (भै.र.)
57] बृहत्कासीसादी तैल (भा.प्र., भै.र.) अर्श
58] शतावरी तैल - वातव्याधि
59] श्रीगोपाल तैल (भै.र.) वाजीकर
60] षटकट्ववर तैल (भै.र.) ज्वर
61] षडगुणतक्र तैल - ज्वर (भा.प्र.)
62] षडबिंदू तैल (भा.प्र.) शिरोरोग
63] सहचर तैल - वातव्याधि
64] सिध्दार्थक तैल - वातव्याधि
65] सैन्धवादी तैल - वातव्याधी
66] सोमराजी तैल - कूष्ठ
67] स्यंदन तैल - भंगदर
68] हरिद्रादी तैल (यो.र., भा.प्र.) मुखरोग
69] क्षार तैल (शा.स.) कर्णरोग

आसव अरिष्टः

1] अमृतारिष्ट (आ.सं.) ज्वर
2] अरविंदासव (आ.सु, भै.र.) बालरोग
3] अहिफेनासव (भै.र.) अतिसार
4] उशीरासव (भै.र.) रक्तपित्त.
5] एलाद्यअरिष्ट (भै.र.) वीसर्प
6] कनकारिष्ट (चरक) अर्श
7] कनकासव (भै.र.) हिक्का
8] कर्पुरासव (भै.र.) विसूचिका
9] कूटजारिष्ट (भै.र.) अतिसार
10] कुमार्यासव (यो.र.) गुल्म
11] खदिरारिष्ट (ग.नि.) कूष्ठ
12] खदिरासव - महाकूष्ठ (ग.नि.)
13] खर्जूरासव (यो.र.) क्षय
14] गुग्गुल्यास
15] चन्दनासव
16] जिरकाद्या
17] पार्थाधारि
18] पिप्पल्यरि
19] पूनर्नवा अ
20] मध्वासव
21] मध्वरिष्ठ
22] रसोन पिण
23] लक्ष्मणारि
24] लोहासव
25] लोहारिष्ट (
26] वासकासव
27] विडंगारिष्ट
28] शर्करासव
29] सारस्वतारि
30] सारीवाद्यार

1] अयोरजादिले
2] अर्कादीलेप
3] कुमार्यादिलेप
4] गृहधूमादी ले
5] दशांगलेप (
6] पारदादी मल
7] मधुच्छिष्टयाद
8] महाराष्ट्रयादी

1] अश्वगंधादी
2] दशांग धूप -
3] माहेश्वर धूप

1] घृतादी धूम (

1] कंरज बीज व
2] कृष्णांजनम् (
3] कस्तुरिकाद्यंज

1] जल नस्य- (
2] दशमुलादी न
3] देवदाली फल
4] पलाण्डू नस्य
5] लक्ष्मणा मुल
6] लाक्षादी नस्य

14] गुग्गुल्यासव (ग.नि.) उदर
15] चन्दनासव (भै.र.) प्रमेह
16] जिरकाद्यारिष्ट (भै.र.) सूतिका
17] पार्थाधारिष्ट (भै.र.) हृद्रोग
18] पिप्पल्यरिष्ट (यो.र.) क्षय
19] पूनर्नवा अरिष्ट - शोथ
20] मध्वासव - ग्रहणी / कूष्ठ
21] मध्वरिष्ठ - ग्रहणी
22] रसोन पिण्ड रसोनासव (च.द्र.) आमवात
23] लक्ष्मणारिष्ट (भै.र.) स्त्रीरोग
24] लोहासव (सुश्रुत) पाण्डू
25] लोहारिष्ट (सुश्रुत) मेदोरोग
26] वासकासव (यो.र.) शोथ
27] विडंगारिष्ट (बिडंगासव) भै.र., यो.र. व्रणशोथ
28] शर्करासव (यो.र.) अर्श
29] सारस्वतारिष्ट मानसरोग
30] सारीवाद्यासव - भै.र. प्रमेह

लेप

1] अयोरजादिलेप (वृ.नि.र.) पलित
2] अर्कादीलेप (यो.र.) अर्श
3] कुमार्यादिलेप (शारंगधर) नेत्ररोग
4] गृहधूमादी लेप (भा.प्र.) वातरक्त
5] दशांगलेप (शारंगधर यो.र.) विसर्प
6] पारदादी मलहरम् - यो.र. व्रणशोथ
7] मधुच्छिष्टयाद्य घृतम- यो.र. अग्निदग्ध
8] महाराष्ट्रयादी लेप : (र.चि.) वाजीकर

धूप

1] अश्वगंधादी धूप - अर्श
2] दशांग धूप - विषरोग
3] माहेश्वर धूप (र.र.स.) ग्रहदोष

धुम

1] घृतादी धूम (भा.प्र. योर) नासारोग

अंजन

1] कंरज बीज वर्ती - नेत्रपूष्प
2] कृष्णांजनम् (भा.प्र.) उन्माद
3] कस्तुरिकाद्यंजनम् (यो.र.) ज्वर

नस्य

1] जल नस्य- (वंगसेन) रसायन
2] दशमुलादी नस्य- (वंगसेन) शिरोरोग
3] देवदाली फल स्वरस नस्य- कामला
4] पलाण्डू नस्य - नासागत रक्तपित्त (हा.सं.)
5] लक्ष्मणा मुलयोग - वन्ध्या
6] लाक्षादी नस्य - रक्तपित्त

गूटीका

1] अंकोट वटक (भा.प्र.) अतिसार
2] अजमोदादी वटी (भै.र.) आमवात
3] अजाज्यादिगूटीका (वृ.नि.र.) अर्श
4] आदीत्य गूटीका (वै.जी.) शूल/अग्निमांद्य
5] आरोग्य वर्धिनी गूटीका (र.र.स.) कूष्ठ
6] इन्दूवटी (भै.र.) प्रमेह
7] इन्द्रवटी (रसकामधेनू) प्रमेह
8] एलादी गूटीका (चक्रदत्त) रक्तपित्त
9] कनकावती वटी (रसरत्नाकर) अर्श
10] कल्पलतावटी (भै.र.) ग्रहणी
11] कांकायन वटी (भै.र.) अर्श, (चक्रदत्त) गुल्म
12] कुमारीवटी (भै.र.) स्नायुरोग
13] कुलिकादीवटीका (भै.र.) विष
14] खदीरादी गूटीका (यो.र.) मुखरोग
15] गुडूची मोदक (भा.प्र.) ज्वर
16] गोरक्षवटी (यो.र.) स्वरभेद
17] चतूसमागूटीका (यो.र., भै.र.) अतिसार
18] चन्द्रप्रभावटी (शा.सं.,भै.र.) प्रमेह
19] चिंचाक्षारादी शंखवटी (यो.र.) गुल्म
20] चित्रकादीगूटीका (च, यो.र. भै.र.) ग्रहणी
21] चन्द्रकलावटी (यो.र.) प्रमेह
22] चन्द्रामृतवटी (भै.र.) यक्ष्मा
23] जयावटी (र.र.स., कूष्ठ) (र.चं.) ज्वर
24] जैपालवटी (भा.प्र.) ज्वर
25] जतूघ्नीवटी (भै.र.) कूष्ठ (कृमीघ्न)
26] टंकणादी वटी (भै.र.) अग्निमांद्य
27] तक्रवटी (भै.र.) ग्रहणी
28] तालीसादी गूटीका (भै.र.) कास
29] त्रिकंटकाद्यो मोदक (भा.प्र.) प्रमेह
30] त्रिकण्टकाद्यो मोदक (भै.र.) वाजीकर
31] त्रिफलादी गूटीका (यो.र.) कूष्ठ
32] त्रिवृत्तादी गूटीका (भै.र.) उदावर्त
33] दुग्धवटी (भै.र.) शोथ
34] धनंजयवटी (यो.र.) कास
35] नागार्जुनवटी (पंचागकृतावटी)द्रदुकूष्ठ.विद्रावणारस (र.र.स.) कूष्ठ
36] पंचाननवटी (भै.र.) अम्लपित्त
37] पानीयभक्तवटी - रसायन
38] प्रभाकरवटी (भै.र.) हृद्रोग
39] ब्रह्मवटी - ज्वर / उदर / अपस्मार
40] मरिच्यादी गूटीका (यो.र., भै.र.) कास
41] मानकादी गूटीका (भै.र.) पिल्हारोग
42] महाराजवटी (भै.र.) ज्वर (यो.र.) वाजीकर
43] योगराजगूटीका (चरक) पाण्डु
44] रक्तबोलगूटी (यो.र.) सुतिका

45] रजःप्रवर्तिनीवटी (भै.र.) स्त्रीरोग
46] रत्नप्रभावटीका (भै.र.) स्त्रीरोग
47] लवंगादी गूटीका (भै.र.) श्वास
48] लाक्षादी वटी (र.चं.) कृमी
49] लांगली गूटीका (भा.प्र.) वातरक्त
50] लीला विलासरस (र.चं.) कूष्ठ
51] वज्रगूटी (भै.र.) कूष्ठ
52] वैघनाथवटी (भै.र.) ज्वर
53] शंकर वटी (भै.र.) हृद्रोग
54] शिवागूटीका (वं.से) पाण्डु, राजयक्ष्मा
55] शशिलेखावटी (यो.र.) कूष्ठ
56] सहकारवटी (भै.र.) मुखरोग
57] सारीवादिवटी (भै.र.) कर्णरोग
58] संजिवनी वटी (शा.सं., यो.र.) अजीर्ण
59] सप्तशाली वटी (भा.प्र.) उपदंश
60] सर्वरोगान्तक वटी (र.र.स.) अजीर्ण
61] सुर्यप्रभागूटीका (यो.र.) क्षय
62] क्षुधावती गूटीका (भै.र.) अम्लपित्त

रस

1] अगस्तिसुतराज (यो.र.) ग्रहणी
2] अग्निमुख लोह (भै.र.) अर्श
3] अचिंत्य शक्तीरस (भै.र.) ज्वर
4] अभ्रकहरितकी (र.सु.) अर्श
5] अर्धनारीनटेश्वर (र.सुं.) ज्वर/सन्निपात
6] अश्वकंचुकीरस (र.सं.) श्वास/उदर
7] अष्टमूर्तिरस (वृ.नि.र.) ज्वर
8] अष्टांगरस (र.चं.) अर्श
9] अष्टावकूरस (भै.र.) रसायन
10] आदित्य रस (वृ.नि.र.) अजीर्ण
11] आनन्दभैरवोरस (भै.र.) अतिसार / ज्वर
12] आनन्दोदय रस (भै.र.) पाण्डू
13] इच्छाभेदीरस (रसकामधेन्) (भै.र.) उदर
14] इन्दूशेखरो रस (भै.र.) स्त्रीरोग
15] उन्मतभैरव रस (यो.र.) कास
16] एकांगवीररस (वृ.नि.र.) वातव्याधि
17] कज्जली (र.र.सुं.) ज्वर
18] कनकसुन्दरोरस (र.रा.सं.) यक्ष्मा
19] कन्दर्परस (भै.र.) औपसर्गिक मेह
20] कफकेतूरस (भै.र.) ज्वर
21] कमला विलासरस (र.र.सं.) रसायन
22] कर्पूर रस (भै.र.) अतिसार
23] कल्पतरू रस (भा.प्र.) ज्वर
24] कल्याण सुन्दरी रोग (भै.र.) हृद्रोग
25] कुमुदेश्वरो रस (यो.र.) राजयक्ष्मा
26] कांस्यापिष्टिका रस (र.र.सं.) पाण्डू
27] क्रव्याद रस (यो.र.) अजीर्ण
28] गगन सुंदर रस (भै.र.) ज्वरातिसार
29] चतुर्भुज रस (र.च.) मानस विकार
30] चतुर्मुखो रस (र.च.) मुखरोग
31] चतुर्मुख चिन्तामणी (भै.र.) वातव्याधि
32] चतुमूर्ती (यो.र.) ग्रहणी
33] चंद्रकला (र.र.सं., यो.र.) दाह
34] चंद्रकान्त रस (रसकामधेनू) कूष्ठ
35] चिन्तामणिरस (भै.र.) ज्वर
36] चंद्रोदय रस (भै.र., यो.र.) वाजीकर
37] जयमंगल रस (भै.र.) ज्वर
38] डामरेश्वराभ्रम (भै.र.) हिक्का
39] तक्र मण्डूर (भै.र.) शोथ
40] ताम्रपर्पटी (यो.र.) कास
41] तारकेश्वरोरस (भै.र.) मुत्रकृच्छ्र, प्रमेह
42] त्रिनेत्र रस (भा.प्र.) ज्वर
43] त्रिभूवन किर्ती (यो.र.) ज्वर
44] त्रिमूर्ति रस (यो.र.) मेदोरोग
45] त्रिविकृती रस (यो.र.) अश्मरी
46] त्रैलोक्य चिंतामणि (यो.र.) राजयक्ष्मा
47] त्रैलोक्यडम्बररस (यो.र.) ज्वर
48] दन्तोंदभेदान्तक रस (भै.र.) बालरोग
49] धन्वन्तरी रस (र.र.सं.) कूष्ठ
50] नवायस चूर्ण - पाण्डू
51] नित्यानंद रस (भै.र.) श्लीपद
52] नित्योदित्य रस (भै.र.) अर्श
53] नृपतिवल्लभरस (भै.र.) ग्रहणी
54] पंचबाणो रस (यो.र.) वाजीकर
55] पंचसायक - वाजीकर
56] पंचसारो / पंचाननरस (भै.र.) हृद्रोग / प्रमेह / ज्वर
57] पंचामृत पर्पटी (भै.र.) ग्रहणी
58] पंचामृत रस (रसायन, सर्वरोग)
59] पार्वती रस (र.र.सं.) मुखरोग
60] पाशुपती रस (यो.र.) अजीर्ण
61] पूष्पधन्वारस (यो.र., भै.र.) रसायनवाजीकर
62] प्रताप लंकेश्वर रस (सुतिका ज्वर)
63] प्राणत्राण रस / प्राणनाय रस - यक्ष्मा
64] प्राणेश्वरोरस - ज्वर
65] ब्रह्मरस (र.सा.सुं.) कूष्ठ
66] बोलबध्द रस = रक्तार्श / कास
67] भैरव रस (भै.र.) उपदंश
68] मकरध्वज रस (भै.र.) वाजीकर
69] मदेभसिंह रस (यो.र.) गुल्म, पाण्डू
70] महातालकेश्वर रस (भै.र.) कूष्ठ
71] महामृत्यूंजय रस (र.रा.सु.) ज्वर

72] महालक्ष
73] रसमाणी
74] मृतसंजी
75] मृत्युंजय
76] रक्तरस
77] रक्तसुतश
78] रत्नागिरि
79] रसपर्पटी
80] रसराजर
81] रसेंद्रचुड
82] राजमृगां
83] रामबाण
84] लक्ष्मीना
85] लक्ष्मीवि
86] लोकनाथ
87] वंगेश्वरर
88] वडवानल
89] वसन्तकु
90] विजयपर्प
91] विद्याधर
92] बृहत्वात
93] शंखचूर्ण
94] शंखद्राव
95] शंखवटी
96] शतावरी
97] सप्तामृत
98] समीर प
99] सुचिकाभ
100] सुतशेख
101] स्मृतीस
102] हरिद्राख
103] ज्ञानोदय

1] एरण्डपाक
2] एलादीमंथ
3] कूटज पूट
4] चित्रकतक्र
5] नारिकेलल
6] नारिकेलख
7] पंचजीरकप
8] बस्तमुत्रयो
9] भैरवरसाय
10] महाद्रावव
11] शंकर स्वे
12] स्वर्णपर्पट

72] महालक्ष्मीविलासरस (भै.र.) शिरारोग
73] रसमाणीक्य (भै.र.) कूष्ठ
74] मृतसंजीवन रस (ज्वर, सीनीपात)
75] मृत्युंजय रस (र.र.सं.) ज्वर (यो.र.) क्षय
76] रक्तरस (र.प्र.सु.) वाजीकर
77] रक्तसुतशेखर (र.चं.) कफरोग
78] रत्नागिरी रस (भै.र.) ज्वर
79] रसपर्पटी (यो.र.) ग्रहणी / राजयक्ष्मा
80] रसराजरस (यो.र.) क्षय, भै.र वातव्याधि
81] रसेद्रचुडामणि (र.र.स.) वाजीकर
82] राजमृगांकरस (भै.र.) यक्ष्मा
83] रामबाणरस (भै.र.) अग्निमांद्य
84] लक्ष्मीनारायण (भै.र.) स्त्रीरोग
85] लक्ष्मीविलास (भै.र.) रसायन
86] लोकनाथरस - अतिसार, क्षय, रसायन
87] वंगेश्वररस (यो.र., भै.र.) प्रमेह
88] वडवानलरस - अजीर्ण
89] वसन्तकुसुमाकर रस (यो.र., भै.र.) यक्ष्मा
90] विजयपर्पटी (भै.र.) ग्रहणी
91] विद्याधररस (भै.र.) ज्वर
92] बृहत्वात चिंतामणि रस (भै.र.) वातव्याधि
93] शंखचूर्णम्स्य - शूल
94] शंखद्रावक (भै.र.) उदर
95] शंखवटी - अजीर्ण/अग्निमाद्य
96] शतावरी मण्डूर (भै.र.) शूल
97] समामृत लौह - नेत्ररोग
98] समीर पन्नग रस - वातव्याधि
99] सुचिकाभरण रस - ज्वर
100] सुतशेखर रस (यो.र.) अम्लपित्त
101] स्मृतीसागर रस (यो.र.) अपसमार
102] हरिद्राखण्ड (भै.र.) शीतपित्त
103] ज्ञानोदय रस (वृ.नि.र.) ज्वर

मिश्र

1] एरण्डपाक (यो.र.) वातव्याधि
2] एलादीमंथ (चक्रदत्त) राजयक्ष्मा
3] कूटज पूटपाक (भै.र.) ग्रहणी
4] चित्रकतक्र (यो.र.) अर्श
5] नारिकेललवण (भै.र., यो.र.) शूल
6] नारिकेलखण्डपाक (भा.प्र.) अम्लपित्त
7] पंचजरिकपाक (यो.र., भा.प्र.) सुतिका
8] बस्तमुत्रयोग - कर्णरोग
9] भैरवरसायन - अपस्मार
10] महाद्रावक (भै.र.) उदर
11] शंकर स्वेद (भै.र.) आमवात
12] स्वर्णपर्पटी (भै.र., भै.र.) गृहणी

गुग्गुल

1] अमृतादी गुग्गुल (भै.र.) स्थौल्य / कूष्ठ
2] आदित्यपाक गुग्गुल (वा.से.) संन्धिअस्थिमज्जागतवात
3] आभा गुग्गुल (चक्रदत्त) भग्न
4] एक विंशतो गुग्गुलु - त्वक्दोष
5] कांचनार गुग्गुलु (वृ.नि.र.) गण्डमाला
6] कैशोर गुग्गुलु (भै.र.) वातरक्त
7] गुग्गुल वटक (भा.प्र., यो.र.) व्रण
8] गुग्गुल वटी (भा.प्र.) वातरक्त
9] गुडूच्यादी गुग्गुलु (यो.र.) वातव्याधि
10] गोक्षूरादी गुग्गुलु (शा.सं.) प्रमेह
11] त्रयोदशांगगुग्गुलु (भै.र., भा.प्र.) वातव्याधि
12] त्रिफला गुग्गुलु (भा.प्र.) वातरक्त, शारंगधर- भंगदर
13] त्र्युषणादी गुग्गुलु (भा.प्र.) मेदोरोग
14] दंशाग गुग्गुलु (भा.प्र.) मेदोरोग
15] नवक गुग्गुलु (यो.र., भै.र.) मेदोरोग
16] नवकषाय गुग्गुलु (च.द्र.) विसर्प
17] नवकार्षिक गुग्गुलु (भै.र., यो.र.) भगन्दर
18] निम्बादी गुग्गुलु (व.नि.र.) शिरोरोग
19] पंचतिक्त घृतगुग्गुलु (भै.र.) कूष्ठ
20] पथ्यादी गुग्गुलु (भा.प्र.) वातव्याधि
21] पुनर्नवा गुग्गुलु (भै.र., भा.प्र.) वातरक्त / शोथ
22] महिषाख्यो गुग्गुलु (वृ.नि.र.) वातरक्त
23] योगराज गुग्गुलु (भै.र., मो.र., र.र.स.) आमवात
24] महायोगराज गुग्गुलु (शा.सं.) वातव्याधि
25] रास्नादी गुग्गुलु (यो.र.) वातव्याधि
26] लाक्षा गुग्गुलु (यो.र.) भग्न
27] लोह गुग्गुलु (यो.र.) भग्न
28] वातारी गुग्गुलु (भै.र.) आमवात
29] व्योषादी गुग्गुलु (र.र.) स्थौल्य
30] शतावरी गुग्गुलु (र.र.स.) वातव्याधि
31] शिवा गुग्गुलु (र.र.सु.) आमवात
32] षड्ंग गुग्गुलु (र.र.स.) वातव्याधि
33] षड्ंग गुग्गुलु - नेत्ररोग
34] षडशिती गुग्गुलु (यो.र.) वातव्याधि
35] षडूषण गुग्गुलु - मेदोवृध्दी
36] सप्तविंशतिको गुग्गुलु - भगन्दर, व्रण (यो.र.), शूल (वृ.नि.र.)
37] सप्तांग गुग्गुलु - नाडीव्रण
38] समशर्करा गुग्गुलु (भा.प्र.)
39] सिंहनाद गुग्गुलु - आमवात
40] स्वायम्भुवो गुग्गुलु - कुष्ठ
41] बृहदस्वायम्भुवो गुग्गुलु - वातरक्त
42] स्वांयभुवो गुग्गुलु वटी - वातव्याधि
43] हरितक्यादी गुग्गुलु - आमवात
44] क्षतशुक्रहर गुग्गुलु - नेत्ररोग

AYUSH PATENTS:

1) AYUSH -64 Antimalarial
2) 777 Oil - Psoriasis
3) BAL RASAYAN - Immunity & Strengthening of Children.
4) AYUSH GUTTI - For Cough & cold.
5) AYUSH 56 - Anti Epileptic
6) AYUSH 55 - Lipid lowering Agent
7) AYUSH 57 - Shwitra
8) AYUSH A. C. 4 - Contraceptive
9) AYUSH 8 - Memory Tonic
10) AYUSH 82 - Anti Diabetic
11) Pushkar - Guggulu - I. H. D.

पंचकर्म

चरक – वमन, विरेचन, आस्थापन, अनुवासन, शिरोविरेचन,
सुश्रुत– वमन, विरेचन, बस्ति, नस्य, रक्तमोक्षणन
अ. ह. सु. निरूहो, वमनं, कायशिरोरेको, अस्त्रविस्त्रुति : ॥
सुश्रुत – पूर्वकर्म – पाचन, स्नेहन, स्वेदन
प्रधानकर्म – वमन, विरेचन, बस्ति, नस्य, शिरामोक्ष
पश्चात – पेया, विलेपी, (संसर्जन), रसायन, शमन,
पंचकर्म :- In sequence – Total Number of Days.
1) उत्तम शुध्दी :- स्नेहन 7 दिन ; 8th day स्वेदन; 9th day –वनम ;
7 दिन संसर्जन; फिर 5 दिन स्नेहन और 3 दिन विश्राम
(क्योंकी वमन के बाद 15th day विरेचन) –Total days (24);
उसके बाद 7 दिन संसर्जन क्रम;
8th day भोजन ; 9th day अनुवासन Total days (33)33 + 29 Days कर्म
बस्ति (निरूह अनुवासन) Total Days (62) 62 + 60 Days (बस्ति परिहार काल)Total days (122) 122 + 7 days (नस्य) Total days 129
चरकोक्त पंचकर्म Complete.
स्नेहपान रहित रक्तमोक्षण – 130 days
स्नेहपान युक्त रक्तमोक्षण – 129+7+1 days – 138 days दिन
2) मध्यम शुद्धी के लिए – 85 days
3) अवरशुध्दी के लिए – 57 days
वमन योग मात्रा – चरक द्रव्य के अनुसार अलगअलग
(उदा. मदनफल – अर्न्तमुख मूष्टी).
सुश्रुत – व्याधिबल, अग्निबल व रोगीबल मध्यम होनेपर क्वाथ मात्रा – 1 अंजली; चूर्ण बिडालपदक; कल्क – 1 अक्ष.
(डल्हण – क्वाथ = श्रूतशीत व फाण्ट (स्वरस नही)

भा. प्र. व. शारंगधर – क्वाथ	कल्क /अवलेह /चूर्ण
उत्तम – 9 प्रस्थ	उत्तम –3 पल
मध्यम – 6 प्रस्थ	मध्यम – 2 पल
हिन – 3 प्रस्थ	हिन – 1 पल

चरक – अभ्यंग व स्वेद – 3 दिन – स्नेहपान के आखरी दिन ;
विश्रामदिन और वमन के दिन प्रातः
अ.ह . – सम्यक वमन के बाद धूमपान वर्ज्य.

विरेचन :- चरक प्रस्कंदन पर्याय
निरूह बस्ति का विरेचन संज्ञा में अंतर्भाव नही।
चरक – लवण विरेचक। अतिस्निग्ध को रूक्ष विरेचन देना चाहिए।
सुश्रुत – गुद्दाह और मेद्दाह रहनेपर भी विरेचन कर सकते हैं।
विरेचन के पूर्व वमन करना आवश्यक है। वमन के बिना विरेचन करने पर श्लेष्मा ग्रहणी को आच्छादीत करके गौरव और प्रवाहिका उत्पन्न करता है।
अ.ह . – स्वयं वमन या विरेचन होता हो तो उस समय वो कर्म करना जरूरी नही सिर्फ भेदणीय भोजन दे के शुध्दी करना चाहिए। मंदाग्नी, क्रुरकोष्ठी को क्षार, लवण, घृत से अग्निप्रदिप्त कर बाद में विरेचन करना चाहिए।
मृदू मात्रा – दुर्बल, शोधित, अल्पदोष, अपरिज्ञात कोष्ठ, कृश

शारंगधर –	क्वाथ	चूर्ण
उत्तम	2 पल	4 कर्ष
मध्यम	1 पल	2 कर्ष
हिन	1/2 पल	1 कर्ष

अ.ह:विरेचन वेग अप्रवर्तन में उष्णजल प्रयोग; हस्ततल और कोष्ठ प्रदेश में स्वेदन
विरेचन औषधी जीर्ण होने पर और हृतदोष लक्षण न मिलनेपर उसी दिन भोजन दे के अगले दिन विरेचन करवाये. अगले दिन भी विरेचन न होने पर 10 दिन बाद फिर स्नेहन स्वेदन करके विरेचन करना चाहीए.।
चरक – विरेचन के बाद 9th day अनुवासन बादमें निरुह बस्ति।
सुश्रुत–विरेचन के बाद 7 दिन बाद निरुह
(भद्र शौनक शोधन के 1 मास बाद अनुवासन)
विरेचन के बाद अन्य कोई कर्म नही करना हो तो , उस व्याधी की शमन चिकीत्सा 7th day से Start करनी चाहीए।
बस्ति : – बस्तिकर्म Ibis नाम के पक्षीसे सिखा.
चरक ने बस्ति शब्द निरुह के लिए लिखा है
अधिष्ठान भेद स – (4) भेद – पक्वाशय , गर्भाशय , मुत्राशय , व्रणगत
द्रव्य भेद से – निरुह – (क्वाथप्रधान) ; अनुवासन (स्नेहप्रधान)
सुश्रुत – निरूह पर्याय – यापन, सिध्दबस्ति और युक्तरक्त बस्ति
माधुतैलिक बस्ति – निरूह का विकल्प ; मात्रा निरूह के पादहिन; (9 प्रसृत) मधु व तैल प्रधान द्रव्य.
(निरूहबस्ति परम प्रमाण – 12 प्रसृत)
निरूह 1/4 प्रमाण में स्नेहबस्ति (6 पल)
स्नेह 1/2 प्रमाण में अनुवासन (3 पल)
अनुवासन के 1/2 प्रमाण में मात्राबस्ति (1½ पल)
सुश्रुत – कार्मुकता के आधारपर शोधन, लेखन, स्नेहन, बृंहणआदी बस्ति वर्णित,
शारंगधर – वाग्भट व्यतिरिक्त लेखन, बृंहण, पिच्छिल, दिपन बस्ति वर्णित.
शारंगधर व भा. प्र. मात्रा :- निरूह बस्ति

उत्तम –	1 1/4 प्रस्थ
मध्यम –	1 प्रस्थ
हिन –	1 कुडव

हारित – कृष्ण पक्ष में बस्ति देनी चाहिए।
सुश्रुत – भोजनोत्तर निरूह देने से छर्दी व विसुचिका उत्पन्न होती है।
आस्थापन बस्ति पूर्वकर्म अनुवासन बस्ति
रूक्ष शरीर में निरूह के लिए पहले 2/3 अनुवासन बस्ति देनी चाहिए.
विरेचन के बाद 7th day निरूह और 9th day अनुवासन.

विरेचक के बाद
अनुवासन और
उत्तरबस्ति स्नेहम
उत्तर बस्ति द्रव्य
2)सुश्रुत – (स
1 प्रसृत 3)
क्वाथ– पुरुष –
नस्य–दोषानुसार
a) वातप्रकोप–व
c) वात–पित्त–
(चरक सिध्दी 9
रक्तमोक्षण –
अनुशस्त्राविस्त्राव
निर्विषजलौका –
सविषजलौका –
जलौका रक्त निर्ह
सविषजलौका
सिरावेध– डल्हण
(यह मात्रा 2 ि
शृंग– 7 अंगुल
अलाबू– मधूर व
8अंगुल परिणाह ,
शृंग– सुश्रुत –वा
वाग्भट – वात पि
जलौका – सुश्रुत
वाग्भट– पित्त दूष
अलाबु (सुश्रुत)
प्रच्छान – सुश्रु
सिरावेध – सुश्रुत
घटीयंत्र – वाग्भ
वाग्भट:– निरुहो
वमनं
पंचकर्म–अयोग
नित्यकर्मपर–भेल
भेल–स्नेहन से
स्वेदन से दोष मृदू
सुश्रुत– मदाग्नी
चरके शोधन क
सु. 21/8: व
आमाशय समुत्थ
वाते तु बृंहणं कू
कफे प्रच्छर्दनं स
अ.ह. –हसीयसी
वासेन– कनिष्ठ

विरेचक के बाद

अनुवासन और 15th day निरूह।

उत्तरबस्ति स्नेहमात्रा – 1) 1/2 पल (सुश्रुत – 1 पल)

उत्तर बस्ति द्रव्यमात्रा – 1) चरक 1/2 पल

2) सुश्रुत – (स्वहस्त)

1 प्रसृत 3) वाग्भट – 1शुक्ती. गर्भाशय शोधनार्थ – दुगुणी.

क्वाथ- पुरुष –1 प्रसृत , स्त्रीया –2 प्रसृत , कन्या –1 प्रसृत .

नस्य-दोषानुसार प्रतिमर्शनस्य में स्नेह प्रयोग.

a) वातप्रकोप-वसा. b) पित्तप्रकोप-घृत.

c) वात-पित्त- मज्जा. d) वात- कफ -तैल .

(चरक सिध्दी 9 अध्याय देखिए)

रक्तमोक्षण – शस्त्रविस्त्रावण – 2 प्रच्छान, सिरावेध

अनुशस्त्राविस्त्रावण – 4 – श्रृंग , जलौका , अलाबू , घटीयंत्र.

निर्विषजलौका – Hirudo Medicinails.

सविषजलौका – Hirudo Detrimental .

जलौका रक्त निर्हरण मात्रा–2To15 cc: सिरावेध में –1 प्रस्थ(13 1/2पल)

सविषजलौका दंश – महागद उपयोग पान , लेप ,नस्य .

सिरावेध- डल्हण – उत्तम –1 प्रस्थ, मध्यम 1/2 प्रस्थ , हिन 1 कुडव (यह मात्रा 2 दिन के रक्तस्त्राव की समझनी चाहीए)

श्रृंग – 7 अंगुल लंबाई, अग्राछिद्र मूदग वाही.

अलाबू- मधूर व तिक्त(रक्त मोक्षणार्थ तिक्त उपयोगी)श्रैष्ठ अलाबू- 8अंगुल परिणाह ,4 अंगुल नलिका युक्त .

श्रृंग- सुश्रुत –वातदूष्टी, त्वकदूष्टी, अवगातढम रक्त,सुकुमार

वाग्भट – वात पित्त दूष्टी , त्वकगत दूष्टी

जलौका – सुश्रुत – पित्तदूष्टी , अवगाढ ग्रंथितरक्त , पर सुकुमारे.

वाग्भट– पित्त दूष्टी और ग्रंथित रक्त.

अलाबु (सुश्रुत) कफ दूष्टी , त्वकरक्त अवगाढ तर , सुकुमार.

प्रच्छान – सुश्रुत – उत्तानरक्त , वाग्भट – पिण्डीतरक्त.

सिरावेध – सुश्रुत – वाग्भट – सर्व शरीगत दोष .

घटीयंत्र – वाग्भट – वात कफ दूष्टी

वाग्भट:– निरुहो वमनं कायशिरोरेकोऽस्त्रविस्त्रुतिः।।
वमनं रेचनं नस्यं निरुहश्चानुवासनम्।
Also शां.उ.अ.8/63, भा.प्र,वंगसेन

पंचकर्म-अयोग्य रोगी- वातआतपसे शुष्क, अध्वयान से शुष्क, नित्यकर्मपर-भेल संहिता

भेल-स्नेहन से विकृत स्थान मे रस की वृध्दी होकर दोष क्लिन्न होते है। स्वेदन से दोष मृदू होते है।स्नेहन स्वेदन से सर्वांग और कोष्ठ मृदू होता है।

सुश्रुत- मदाग्नी और क्रुरकोष्ठ व्यक्ती को क्षार लवण से प्रथम अग्निदिप्त करके शोधन करना चाहिए।

अ.सु. 21/8: वातज रोग पक्वाशय समुत्थ और पित्त व कफज रोग आमाशय समुत्थ होते है।

वात तु बृंहणं कूर्यात्पित्ते तु परिशोधनम्।
कफे प्रच्छर्दनं साधु सन्निपाते विरेचनम्।। भे.सं.सु. 25/6

अ.हृ. ऱ्हसीयसी मात्रा 3 घण्टे में जीर्ण होनेवाली

वंगसेन- कनिष्ठ मात्रा 3 कर्ष और 1 सप्ताह सेवनीय

मध्यम मात्रा- 3 पल और 3 दिन सेवनीय

उत्तम मात्रा- 6 पल और 1 दिन सेवनीय.

काश्यप- ऱ्हस्व मात्रा को कनियसी कहा।

भा.प्र.:मन्दाग्नीमे 2 तोले,मध्यमाग्नी में 3 तोले और प्रदिप्ताग्नीमें 1पल.

काश्यप-तीव्र कूष्ठ में तेलपान निषेध.

स्वेद- हारित स्वेद 7 प्रकार - लोष्टस्वेद, बाष्पस्वेद, अग्निज्वाला स्वेद, घटीस्वेद, जलस्वेद, फलस्वेद, बालुकास्वेद.

भेल 8 - संकर, प्रस्तर,परिषेक,नाडी,द्रोणी,जल,उदकोष्ठ(उदक स्वेद) कूटीस्वेद

वंगसेन 8 मांस,उडद व तील,बालुका,कुंभी,पिण्ड,इष्टिका,प्रस्तर,संकर

सुश्रुत - संशमनीय व संशोधनांगभूत स्वेद

चक्रदत्त व भा.प्र.- महा, मध्य व हिन स्वेद

भा.प्र. अवगाह स्वेद 1 मुहूर्त स. 4 मुहूर्त तक।

स्नेह अवगाह अन्तराल 1 दिन/2 दिन होना चाहिए/निश्चित आरोग्यप्राप्ती होने तक करे।

चरक अश्मघनस्वेद = वाग्भट घनाश्म स्वेद

चक्रदत्त ने उष्म के स्थानपर बाष्प स्वेद का उल्लेख किया है।

उष्मस्वेद 8 प्रकार: पिण्ड, संस्तर, नाडी, घनाश्म, कूम्भी, कूप, कूटी, जेन्ताक श्चति।अ.सं.सु.26/7

अनग्निस्वेद- वात कफ व मेदसे आवृत्त रहनेपर अनग्निस्वेद करना चाहिए।

अ.सं.मे वायु के पित्त से मिले रहने पर अग्नि रहित उपनाह का प्रयोग वर्णित है।

*स्वेदन समयी हृदयोत्क्लेश निवारण उपचार: मुख में कर्पूरचूर्ण धारण, खण्डय अम्लफल, शर्करायुक्त मनुक्का मुखमें धारण .... **काश्यप.**

*स्वेदन अतियोग वाग्भट स्तंभन चिकित्सा

* **शोधन-**

भेल-आमाशयाश्रीत व्याधी योंको वमन,पक्वाशयश्रीत व्याधीयोको विरेचन.

अ.सं. : वमन-श्लेष्मा स्वस्थान में बढनेपर, उसमें पित्त मिला होनेपर, और कफस्थान में वात/पित्त आनेपर भी वमन करायें।

विरेचन- केवल पित्त में,पित्त के स्थानपर कफ आनेपर या कफपित्त के साथ मिलनेपर और कफ के स्थान पित्त अतिशय मात्रे में पहुँचनें पर विरचेन कराये।

*अ.हृ.सु. 18/2 : कफज रोग, कफपित्त संसर्ग वमन

पित्तजरोग, पित्तकफ, पित्तवात- रोगों में विरेचन

अ.हृ. कषायमधूर द्रव्ये पित्तजन्य विकारमें विरेचनार्थ, श्लैष्मीक विकारोंमें कटू द्रव्यसे निर्मित भेषज प्रयोग वमनार्थ और वातजन्य विकारोंमे स्निग्ध, उष्ण और लवण द्रव्यों से विरेचन देना चाहिए।

*आचार्य भेल: संशोधनायोगतियोग:

वमन औषध सेवन पश्चात वमन न होने पर पून: तीक्ष्ण औषध देना चाहिए। तीक्ष्ण औषध से भी वमन न हो तो आस्थापन बस्ति देनी चाहिए। विरेचन अयोग में अनुवासन बस्ति देनी चाहिए। वमन अतिप्रवृत्ती में विरेचन प्रयोग करना है। विरेचन की अतिप्रवृत्ती में वमन करना चाहिए। वमन के अतियोग में आस्थापन बस्ति प्रयोग। वमन और विरेचन दोनों के अतियोग में स्तम्भन औषधी देनी चाहिए।

वमनद्रव्य दोष	वमनद्रव्य(अ.सं.)	वमन द्रव्य (अ.हृ.)	शारंगधर
1.कफ	कटूतीक्ष्ण	कटूतीक्ष्ण उष्ण	पिप्पली, मदनफल
2.पित्त सृष्टकफ	मधुर	मधुर और शीत	निम्ब पटोल, वासा
3. वातसंसृष्ट कफ	अम्ल, अल्प स्नेह युक्त	अम्ल,लवण, स्निग्ध	मदनफल+ दूध

चक्रदत्त- मधु के साथ ताम्रभस्म प्रयोग-छर्दी एव गरविषनाशक है।

भेल- स्नेह विरेचन समशीतोष्ण काल में करना चाहिए।

*** विरेचन द्रव्य मात्रा- वंगसेन.**

व्यक्ति	मात्रा	उष्णोदक	चूर्ण	स्नेह-पिचू
मृदू कोष्ठ	1 कर्ष	4 तोले	$^1/_2$ कर्ष	$^1/_2$-1 पल
मध्यकोष्ठ	$^1/_2$ पल	8 तोले	1 कर्ष	$^1/_2$-1 पल
क्रुरकोष्ठ	1 पल	12 तोले	2 कर्ष	$^1/_2$-1 पल

वमन मात्रा: भेल

रूग्ण	मात्रा	(क्वाथ)
1) तरुण अवस्था, बलवान, विष, कूष्ठ, श्वासरोग	उत्तम	9 पल
2) मध्यम बल, मध्यम आयु	मध्यम	4 पल
3) अल्प अवस्था, अल्पबल	अल्प	3 पल

जो व्यक्ती जीवन में प्रथम बार संशोधन ले रहा हो, उसे क्रमशः अल्प, मध्यम व उत्तम मात्रा 1, 2, 3 पल बताई है।

विरेचन भा.प्र.:-

पित्ताधिक्य- त्रिवृत्तचूर्ण + मनुक्काक्वाथ/गोमुत्र

कफाधिक्य- त्रिकटूचूर्ण+त्रिफलाक्वाथ/ गोमुत्र

सामान्यवस्था- सैंधव,शूण्ठीचूर्ण - कांजीसह

चक्रदत्त- वातप्रकृतिमें - स्निग्ध, उष्ण, लवण युक्त विरेचन औषध

पित्तप्रकृतिमे- कषाय मधूर औषध

कफप्रकृति में कटू औषध

बस्तिभिर्दियते यस्मात्तस्माद बस्तिरितिस्मृत:। बंगसेन, भा.प्र.,शा.सं.उ.4

बस्तिना दीयते बस्तिं वा पूर्वमेत्यतो बस्ति:। अ.सं.सु.

बस्तिभेद- उत्क्लेशन शुध्दिकरं दोषाणां शमनं क्रमात।

त्रिधैव कल्पयेद बस्तिइतिऽन्येऽपि प्रचक्षते।।अ.सं.सु. 25/43

अ.हृ.सु.-16/50

कर्मबस्ति- आचार्य भेल-24 बस्ति संख्या

यापनबस्ति:- शारंगधर भा.प्र. वंगसेन

क्षौद्राज्यक्षीर तैलानां प्रसृतं प्रसृतं भवेत्।

हपुषा सैन्धवाक्षांशो बस्ति: स्याद्दिपण:पर:।।

आमवात, उदावर्त-<u>सिध्दबस्ति</u> वंगसेन

गोमुत्र 8 पल, गुड 4 तोले, अम्लक 4 तोला, शताव्हा सैंधव 1 - 1 तोला, 4 तोला तिल तैल.

पिच्छाबस्ति-डल्हण-32 पल, शारंगधर, वंगसेन व भावभिश्र-12 पल

<u>आस्थापन बस्ति</u>:-निरूक्ती: वय: स्थापनादायु: स्थापनाव्दा आस्थापनम्। सु.चि.35/18

तद्वय:स्थापनाद्दोषस्थापनाद वा आस्थापनम इति उच्यते।अ.सं.सु.28/6

आस्थाप्येद्वयो देहं तस्मादास्थापन: स्मृत:। वंगसेन

निरुह- सदोष निर्हरणाच्छरीर निरोहणाद् वा निरुह:। सु.चि. 35/18

शरिररोहणाद्दोष निर्हरणादचिन्त्यवीर्य प्रभावतया यास्मिन ऱ्हासम्भवानि रुह इति। निरुहो दोषहरणाद्रोहणादथवा तनो:। वंगसेन

निरुह द्रव्य-चक्रदत्त-लवण1 तोला,मदनफल1नगचूर्ण,वातज में गुड के साथ, पित्तज में मिश्री और कफज में सरसो आदि मिलाकर प्रयोग करे। भेल-पित्त में शीत निरुह और कफ व वात में उष्णनिरुह बस्तिप्रयोग करे।

काश्यप बस्ति	परिणाम
1) अतितीक्ष्ण बस्ति	जीवादान उपद्रव
2) अतिमन्द बस्ति	न दोषहर, दूषयत्य शरीर।
3) अतिरुक्ष बस्ति	अतिमात्रा में शरीरकर्षन
4) अतिस्निग्ध बस्ति	शरीरगौरव और अग्निमांद्य

अनुवासन निरुक्ती- य: स्नेहैर्दीयते स स्यादनुवासन नामक:।

शा.सं. 3, भा.प्र., वंगसेन

उत्तरबस्ति- उत्कृष्टावयवे दानादबस्तिरुतर संज्ञिता। वंगसेन

निरुहाद उत्तरो यस्मात्तस्मादुत्तर संज्ञक:।। भा.प्र.

<u>फलवति</u>:- घृताभ्यक्ते गुदे क्षेप्या श्लक्ष्णा स्वांगुष्ठसन्निभा।

मलप्रवर्तनी वर्ति: फलवर्तिश्च सा स्मृता।। शा.सं.,भा.प्र.,वंगसेन

<u>अ.सं.व.अ.हृ.</u> उत्तरबस्ति नेत्र प्रमाण 10 अंगुल लम्बाई, छिद्रमुद्गवाह स्त्रियों मे उत्तरबस्ति नलिका कनिष्ठिका अंगुली समान स्थूल एंव 10 अंगुल लम्बी चाहिए। मुत्रकृच्छ्र विकार एव बालको में 1 अंगुल नलीका बनानी चाहिए।

बालरोग

वृध्दजीवक कृत काश्यपसंहिता या वृध्दजीवकतन्त्र

कल्याण वैद्य– बालतंत्र

रावण – कूमारतंत्र, यामानी भूषणकृत – कूमारतंत्र

रघुवीरप्रसाद द्विवेदी – कौमारभृत्य,

आचार्य रमानाथ द्विवेदी– कुमारतंत्र, समुच्चय बालरोग चिकित्सा

राधानाथ कृत– अभिनव कौमारभृत्य

तत्काल एव जातमात्रः (इन्दू)।

बालक– स जातो बाल उच्यते।

नवजात परिचर्याः–

जातकर्म संस्कार –अथास्य जातकर्म प्राजापत्येन विधिना कुर्यात। वाग्भट

स्नेहन– प्रतिदिन कर्ण में तैल का पिचू (वाग्भट)

बच्चे को क्षौम वस्त्र समुह पर पूर्व की ओर सिर करके लिटाये. (वाग्भट)

रक्षाकर्म– दश दिन शांती कर्म करे – वाग्भट.

नन्दी, ब्राह्मी, जीवक, ऋषभक, आदी औषधीयाँ बच्चे के गले, दोंनो हस्त और सिरपर बांधणी चाहिए।

इससे आयु, मेधा, स्मृती स्वास्थ्य वृध्दी होती है.

षष्ठी रात्री या दिन में बालक की विशेष रूपसे रक्षा करनी चाहिए।

प्रसूता स्नान– 10 या 12th दिन.

संस्कार– प्रमुख – 16

1.गर्भाधान, 2. पुसंवन,

3.सीमन्तोनयन :–

गर्भस्थापन के बाद 4th (or 6/8) मास में, शुक्ल पक्ष में किया जाता है।

गर्भिणी का मन प्रसव काल तक प्रसन्न रहे. बालक की बौध्दिक शक्ती की वृध्दीके लिए करते है।

4.जातकर्म, 5. नामकरणः– अ. ह. जन्म के सौवे दिन के बाद, या 1 वर्ष के बाद, प्रायः11 वें दिन किया जाता है। दो नाम– नाक्षत्रिक व अभिप्रायीक पुत्र –सम अक्षर संख्या , पुत्री– विषम.

सूर्यदर्शन एवं चन्द्रदर्शन – काश्यप 1st Month

6.निष्कमण संस्कार –चौथे महिने में बालक को पहिली बार घर से बाहर मंदीर में ले जाते है. बाह्य सृष्टी परिचय के लिए.

7.उपवेशन संस्कार – बालक को सहारे के साथ बिठाना। प्राय : 5th मास में (अ सं), काश्यप 6th मास

8.अन्नप्राशन– सुश्रुत, वाग्भट 6 मास

(काश्यप – 6 मास – फलप्राशन, 10 मांस – अन्नप्राशन.)

कर्णवेधन – 6,7,8 मास वाग्भट, सुश्रुत 6,7 मास

चूडाकर्म – शिशिर ऋतु में करने का विधान

केतु – रक्षा आभूषण निमित्त,

कर्णवेधन पूर्व परिषेक–वात कांजी+कोष्णजल,पित्त–दुग्ध +शीतजल

कफ– सुरामण्ड + उष्णजल

पूर्व दक्षिण कुमारस्य, वामं कुमार्यः तत, पिचूवर्ती प्रवेशयेत्।

कर्णपाली 3 शिरा–वेध–कालीका–ज्वर, शोथ,दाह, वेदना,

मंजरिका– ज्वर, वेदना, ग्रंथी

रोहितीका – मन्यास्तंभ, अपतानक, शिरोग्रह, कर्णशुल.

चिकित्सा– सम्यक वेधन के बाद आम तैल परिषेक.

तिसरे दिन मोठा तागा डालते हुए तिल तैल का परिषेक करें

10.चुडाकर्म/मुण्डन–3/5वर्ष में

11.विदारंम्भ संस्कार– जब बालक पढने योग्य होता है।

गुरूकुल–पवित्र,एवं शांत वातावरण में रहकर पच्चीस वर्ष तक विद्याध्ययन करना चाहिए।

12) सीमावर्तन संस्कार 25 वर्ष के बाद 13) विवाह संस्कार

14) वानस्पत्य संस्कार 15) संन्यास 16) अन्त्येष्टी

1 वर्ष बालक की दीप, आतप, अग्नि से रक्षा करे। अ.सं उ.1

बालक, स्नान– एलादी गण/ जिवनीय गण औषधी,

स्तन्य – स्तन्य उत्पत्ती 3/4 दिन

बालक – प्रथम दिन– अनन्ता मिश्रीत मधू व घृत (असमान मात्रा)

व्दितीय व तृतीय– लक्ष्मणा सिध्द घृत व मधू

चौथे दिन –प्रातःव मध्यन्ह– घृत व मधु असमान मात्रा में चटाकार,

बाद में स्तनपान

क्षीरं सद्यःप्रसुतायाः पीयुषम इति/संज्ञितम्।(प्रथम 3 दिन का स्त्राव)

डल्हण – मोरट कहा। हारितने पियुष/मोरट का बालक को निषेध बताया। क्योंकी गुरू और कफकर है।

स्तन्यः–

स्तन्य	शुध्द	वात	पित्त	कफ
1.आकृती	स्वच्छ, तनु व तंतुरहित	अधिक तनु, रूक्ष	–गाढ पिच्छिल,	तन्तुयुक्त
2.वर्ण	शंखवत	श्याव/आरूण ताम्र,	निल, पित,कृष्ण	अधिक श्वेत
3.गंध	–	अव्यक्त	रक्त /शवगंधी	घृत,तैल,वसा, मज्जासम
4.रस	मधुर	कषाय	तिक्त	धुर
5.अनुरस	कषाय	कषाय	तिक्त अम्लकटू	लवण
6.स्पर्श	शीत	अनुष्णशीत	उष्ण	अतिशित
7.जल म	Completely mix	Floting	Yellow lines	Stay at bottom

दूष्टस्तन्यजन्यव्याधि :–

वातदूष्टस्तन्यजन्यरोग – क्षाम स्वर, कृशांग

पित्तदूष्टस्तन्यजन्यरोग – तृष्णा, कामला, अतिसार.

कफदूष्टस्तन्यजन्यरोग – निद्रान्वित, जडः, शूनवक्रअक्ष, छर्दी

(चि. बालक तीक्ष्ण वमन, मृदू वमन, धात्री)

त्रिदोषदूष्टस्तन्यजन्यरोग – क्षीरालस/ क्षीरालसक.

अ.सं ताम्र वर्ण स्तन्य हृदय का उदवेष्टन करता है।

अम्ल /अनुरसात्मक स्तन्य अम्लपित्त उत्पन्न करता है।

कटू अनुरस स्तन्य– वमन, अतिसार, कास, श्वास.

अत्याधिक उष्ण स्तन्य– अनामक, दाह, ज्वर, विरेचन.

लवणनुरस– विसर्प, कोठ, कण्डू.

तन्तूमत स्तन्य–दौर्बल्य, श्वास, कास.

गुरु स्तन्य–सदन,प्रतिश्याय, सिघाणक, क्षीरालसक

सुश्रुत – अभिघातज स्तन्य दूष्टी वर्णन.

अ.ह.व माधव– द्वद्वज स्तन्य दूष्टी वर्णन.

शांरगधर – क्षतज स्तन्य दूष्टी केवल उल्लेख

हारित (5)

घनक्षीर– आध्मान, निरोध, श्वास, कास,उत्फुल कूक्षी

अल्पदोष – कृश,दिन,श्वास, अतिसार

उष्णक्षीर – ज्वर, शोष, अल्पत्व, ज्वरातिसार.

क्षार दोष– चक्षू ,रोग, कण्डू, क्षत, श्लेष्मास्त्राव,नासिका व मुखक्लेदयुक्त.

अम्लक्षीर –

मातृस्तन्य के अभाव में धात्री दुग्ध
धात्री दुग्ध अभाव में अजा अथवा गोदुग्ध अथवा
लघुपंचमूल अथवा शालीपर्णी सिध्द दुग्ध
गोदुग्ध 10 गुण युक्त होता है .

दुग्ध	आर्द्रता	Protein	Fat	Carbohydrate	Calorie
पीयूष	87	2.7	2.9	5.3	58
मानूषीदुग्ध	87.1	1.1	4.5	6.8	75
गोदुग्ध	87.2	3.5	3.7.	4.9	66

(भेल –स्तन्य का प्राणायतन में समावेश)

क्षीरान्नाद व अन्नाद अवस्थाः–

प्रीणनो मोदकः– प्रियालमज्जमधुकमधुलाजसितोपलै ॥
अपस्तन्यस्य संयोज्य : प्रीणनो मोदकः शिशो :॥

धात्री– संख्या (2)अ. सं.

बालक आहार–जन्म से 1 वर्ष तक 100–120 Calories/kg/Body wt/day
परिपक्वास्था में 40 Cal./kg / day.

बालक– Required Calories – 15% from protein, 35% from Fat, 50% from Carbohydrates.

प्रतिदिन आवश्यकता – Vit A 1500 unit (750mcq in Adult).
400 unit vit – D.

दुग्धप्रतिदिन – Age in days x 10x 7 gm.

कुमारागार – निर्वातं च प्रवातंच वृध्दस्त्रीवैद्यसेवितम् ।

कुमाराधार – अभियुक्तः सदाचारो नतिस्थूलो न लोलूपः।
कुमाराधार कर्तव्य स्तत्राद्यो बालचित्त वित ॥

क्रिडाभूमी – समानतल, निशस्त्र, उपल (काटें), शर्करा (पत्थर) रहित.

कि टाणूरहीत करने के लिए –
वेल्ल, उष्ण, कणा सिध्द जल अथवा निम्ब उदक परिषेक

क्रिडानक – संदर्भ च. शा 8/63.
अ.सं – खिलौनों लाख के होने चाहिए।
संदर्भ – काश्यप खिल्लस्थान – जात कर्मोत्तराध्याय

1) **क्षीरालस/क्षीरालसक –**
अ.सं – त्रिदोष दोषदूष्टी और एकही प्रकार
शारंगधर 3 प्रकार – वात, पित्त, कफ.
लक्षण – सलिलोपम, अच्छं, विच्छिन्न, आम, दुर्गन्धित
नानावर्ण वेदनं फेनिलम अतिसार्यते।
पीत श्वेत मुत्रता, भ्रम, अंगविक्षेप, आन्त्र कूजन, घ्राण अक्षि, मुख पाक.
हेतू – धात्री त्रिदोष दूष्ट स्तन्य सेवन
चिकित्सा – तत्र धात्री बालं च पूर्व एव आशु वामयेत। अ.सं.उ 2/18
कोष्ठ – शोधन के बाद शमन चिकित्सा.

2) **पारिगर्भिक** – अहिण्डिका पर्याय.
बालार्क रस – कृमी, अजीर्ण चिकित्सा.

3)**छर्दी** – द्विवार्ताकी फलरसं (कण्टकारी, बृहती) पंचकोलहच लेहयेता भै. र.

4)**फिरंग** – भा.प्र. 3 प्रकार (गंधरोग– भा. प्र.)
i) बाह्य – तत्र बाह्य फिरंग स्याद विस्फोटसदृशोऽल्परूप।
स्फूटिता व्रणवद वेद्य सुखसाध्योऽपि स स्मृतः ॥
ii) अभ्यन्तर – सान्धिष्वाभ्यान्तरः स स्याद आमवात् इव व्यथाम् ।
शोथश्च जनयेद एषः कष्टसाध्यो बुधै स्मृतः॥
iii) बाह्य अभ्यान्तर – उभय लक्षण युक्त
उपद्रव –कार्श्य, बलक्षय, नासाभंग, अग्निमांद्य, अस्थिशोष, अस्थिवक्रता.
Syphillis – Treponema palladium.
बीजदोषज फिरंग अवस्था – 3.

4)**राजयक्ष्मा** – अनेक रोगानुगतो बहुरोग पुरोगम ।
राजयक्ष्मा क्षयःशोषो रोगराट इतिस्मृतः । अ. सं.
देह औषध क्षयकृतेः क्षयस्तत्संम्भवाच्च सः।
रसादी शोषणाच् शोषो रोगराट् तेषु राजनात् ॥ अ. सं.नि.

5)**बालशोष** हेतू : 3) i) दिवा स्वाप ii) शीतल जल सेवन iii) कफ दूष्टस्तन्यसेवन
लक्षणः अत्यहः स्वप्न शीताम्बूश्लैष्मिकस्तन्य सेविनः।
शिशो कफेन रूध्देषु स्त्रोतः सु रसवाहिषु।
अरोचकः प्रतिश्यायो ज्वरः कासश्च जायते॥
कुमारः शूष्यति ततः स्निग्धशुक्लमुखेक्षणः । अ.हृ.उ.
बालशोष – कंफद्वारा रसवह स्त्रोतस अवरोध (शारंगधर – गात्रशोष)
चिकित्सा – स्त्रोतोशोधन, धातूपोषण,
बालक यक्ष्मा को ही सुखण्डी/बालशोष संज्ञा है।

6.बालपक्षाघात-
(Majority- cases originated from polio virus 1.
It has 4 types Abortive, silent, paralytic & non paralytic.)
बालपक्षाघात चि.– स्वाद्वम्ललवणैः स्निग्धैः आहारे वातरोगिणः ।
अभ्यंगस्नेह बस्त्याद्यै : सर्वानिवोपपादयेत् ॥ भै. र.

7.जडता, बधिर, मुक, मिन्मिण गद्गद, वाक खंज, कूब्ज, वामन, हिनांग, अधिकांग– वातज जन्मजात व्याधि है ।

8.सदन्त जन्म – कफज जन्मजात व्याधि है।

9.अजगल्लिकाः– कफवात, नीरूज, मूँग के आकार की ग्रंथी
चिकित्सा– जलौकाद्वारा रक्तमोक्षण
भै.र. नव कण्टकारी से वेधन, यवक्षार, शुक्तीसौराष्टी कल्क लेप

10.अहिण्डिका या अहितुण्डिका :–
(उल्लेख चक्रदत्त द्वारा, बालशोष का अन्य नाम)
चि. मयुरशिखामूल बालक के गले में या कटी में बांधना।

11.पर्वानुप्लव – शिरः पृष्ठं ततो मुष्कौ ततः पादौच यो रूजेत ।
हस्ताभ्यामुत्थितो वायूःस पर्वानुप्लवः स्मृतः ॥ अ.सं. उ.
चिकित्सा – वातव्याधि समान

12.महापद्मक – मा. नि. शिशु विसर्प, प्राणनाशक व्याधी है । त्रिदोषज,
प्रकार 2 – i) शिर्षज– शंख से हृदयतक
ii) बस्तिज – हृदयसे गुद तक
शारंगधर ने शिर्षज विसर्प को उपशीर्षक कहा है ।

13.रोदन–बालरोदन चिकित्सा–पिप्पली व त्रिफला,मधु और घृत से चाटन(दौर्बल्य, दन्तघात,दन्तशब्द इनका उल्लेख शारंगधर बालरोग में है ।)

14.जलशिर्षः–(Hydrocephalus)
मस्तिष्कावरण मे C.S.F. के अत्याधिक बढ जाने कारण, सिर ,शेष शरिर के अनुपात से बडा होता है।
प्रकार 2 – i) Congenital- Primary-
ii) Acquined-Secondary-(Brain tumor, Meningitis)
लक्षण– Mentally Retarded, Convulsions, Blindness etc.
Acquired Hydrocephalus आक्रमण काल–2 वर्ष के बाद
चिकित्सा– शस्त्रक्रिया – (Bypass)/(Shunt)

15.मस्तुलुंगक्षयः–/तालुपात/तालुनमन
मस्तुलुंग क्षयाद्यस्य वायुःताल्वस्थि नामयेत।
सु.शा.बालक तृष्णा और दैन्ययुक्त होता है.(दोष–वात)

चिकित्सा :– बा
16.पांगुल्यः– प्र
आक्षिप्त करता
पंगु होता है। चि.
चिकित्सा – विरे
भा.प्र. पंगु– जन्म
17.खण्डोष्ठः–(
18.खण्डतालु
पित्तासह वायुप्रक
खण्डोष्ठ और खण
चिकित्सा –शस्त्र
19.तालुकंट –
20.नाभी रोग–
चिकित्सा –लोध्र
चरक नाभी रोग
1)उत्तुण्डिता –
2)पिण्डालिका –
3)विनामिका –
4)विजृम्भिका –
(वृध्दवाग्भट उत्तु
चिकित्सा–चरक–
वातपित्तशामक अं
21.नाभीतुण्डी–
मारुतघ्नै : प्रशमरे
नाभी शोथ–यो.र.
उन्नत नाभी–(अ
अनुन्नत नाभी (अ
22.आक्षेपक :–
उत्पन्न करता है।
23.उल्मक /अ
श्लेष्मा रस,प्राणव
लक्षण–आक्षेपक
चिकित्सा :–
1) प्रातःकाल मे
2) बिल्वादी घृतप
3) बालक को स्न
24.गुदपाक –
चिकित्सा –भै.र. -
विशेष रुपसे रसांज
25.गुदभ्रंश–सु
रुक्ष,दुर्बल व्यक्ती -
चिकित्सा – स्वेदन
आत्रविवर्जित मूश
26.अहिपुतना–(
पर्याय– अ.सं. –पु
लक्षण– कण्डू,स्वा
चिकित्सा धात्री क्ष
लेप कण्डू अधिक

चिकित्सा :- बालवर्ती; मधुरादी गण सिद्ध घृत पान व अंभ्यग

16.पांगुल्यः- प्रकुपित वायू कटी मे रहकर एक पैर की कण्डराको आक्षिप्त करता है। तब मनुष्य खंज हो जाता है। जब दोनो पैर आक्षिप्त होते है तब पंगु होता है। चि. खंज/ पंगु

चिकित्सा – विरेकास्थापन स्वेद गुग्गुलु स्नेह बस्ति भिः।

भा.प्र. पंगु- जन्मबलप्रवृत्त व्याधि है।

17.खण्डोष्ठः-(वात)तत्र खण्डोष्ठा इत्युक्तो वातेनोष्ठो द्विधाकृतः। अ.सं.उ.

18.खण्डतालु :- (वात+पित्त)

पित्तासह वायुप्रकोप, तालुशोष,विदारण श्वास

खण्डोष्ठ और खण्डतालु

चिकित्सा –शरत्रकर्म-2/3 साल के बाद

19.तालुकंट - (कफ)

20.नाभी रोग- नाभीपाक-(चरक व वाग्भट)

चिकित्सा –लोध्रादी चुर्ण अवचुर्णन व सिदधतैल अंभ्यग

चरक नाभी रोग (4) असम्यक नाडी कल्पनजन्य

1)उत्तुण्डिता – नाभी लंम्बाई व चोडा मे बडी होती है।

2)पिण्डालिका –नाभी पिण्ड आकार (परिमण्डल)व कठीण होती है।

3)विनामिका – मध्यनिम्ना

4)विजृम्भिका –मुर्हमुर्ह घटना या बढना और उपर या निचे होना।

(वृध्दवाग्भट उत्तुण्डिता व पिण्डलिका को उन्नत व विनामिका को अनुन्नत कहा है।)

चिकित्सा-चरक-गुरूता और लघुता का विचार कर अविदाही, वातपित्तशामक अंभ्यग,उत्सादन,पारिषेक व घृतसेवन

21.नाभीतुण्डी- वातेनआध्यापितां नाभिं सरुजा तुण्डि संज्ञिताम् ।
मारुतघ्नै : प्रशमयेत स्नेहस्वेदोपनाहनैः।। अ.सं..

नाभी शोथ-यो.र. नाभी व्रण-अ.सं.

उन्नत नाभी-(अ.सं.) छागशकृत दग्ध ,अवचूर्णन

अनुन्नत नाभी (अ.सं).अश्वगंधा ,अंजन यष्टीमधू आदी चुर्णलेप

22.आक्षेपक :-कुपित वायु शरिर की धमनियो में प्रवेश कर बार –बार आक्षेप उत्पन्न करता है।

23.उल्मक /अम्बूपुर्ण/सहज(अ-सं.)गर्भोदक वमन न होने के कारण कण्ठस्थ श्लेष्मा रस,प्राणवह स्त्रोतस का आवरण करता है।

लक्षण-आक्षेपक श्वास,कास,छर्दी,ज्वर,मूष्टीबन्ध

चिकित्सा :-

1) प्रातःकाल मे स्तनपान के बीच में स्त्रोतोशोधनार्थ छागमुत्र पान

2) बिल्वादी घृतपान

3) बालक को स्नान और अंभ्यग निषेध

24.गुदपाक - भा. प्र.

चिकित्सा –भै.र. –पित्तघ्न चिकित्सा

विशेष रुपसे रसांजन-पान व अभ्यंग

25.गुदभ्रंश-सुश्रुत

रुक्ष,दुर्बल व्यक्ती - अत्याधिक प्रवाहन व अतिसार

चिकित्सा – स्वेदन, चांगेरी घृत, गोफनाबंध,बृहतपंचमूल व आत्रविवर्जित मूशक का तैल पान व अभ्यंग के लिए।

26.अहिपुतना-(दुष्टस्तन्यपान जन्य व्याधि,क्षुद्ररोग)

पर्याय- अ.सं. – पुष्ठारू,गुदकुट्ट,अनामक,मातृकादोष,रक्तक्रफोद्भव

लक्षण- कण्डू,स्त्राव,स्फोट,तीव्ररूजा,पीडका

चिकित्सा धात्री क्षीरशोधन; श्वेतचंदन मधु व रसांजन सह व्रण पर लेप कण्डू अधिक रहनेपर जलौकावचरण

27.पश्चादरूज - भै. र

गुदस्थानी जलौका उदर सन्निभ शोथ ; परमदारूण रोग.

चन्दन,सारीवाद्वय व शंखपूष्पी –लेप व अवलेह चाटण

28. सान्निरुदगुद- चिकित्सा निरुध्दप्रकश सम

29.विस्फोटः-अग्निदग्धनिभा : स्फोटाःसज्वराःपित्तरक्ततः।
क्वचित सर्वत्र वा देहे स्मृता विस्फोटका इति। सु.नि.

प्रकार मा.नि. V,P,K,R,VP,PK,VK,त्रिदोषज (8वर्णित)(काश्यप 5)

वातपित्तज विस्फोट- गुंज व विद्रुम समान रक्तवर्णवाले

साध्यसाध्यत्व -एकदोषज-साध्य,व्दिदोष-कृच्छ्साध्य,

चिकित्सा – रक्त व पित्त नाशक

30.राजीका :- घर्म स्वेदपरितेऽगे पिटका सरुजो घनाः।
राजीकावर्ण संस्थानप्रमाणा राजिकाह्या ।।अ.सं.उ.

चिकित्सा- सशोधन

लेप -अपाशर्करा,मुर्वा,कण्टशर्करा क्षीर पिष्ट करके लेप

31.परिदग्ध छविः- चिकित्सा-मूर्वादी कल्क लेप

32.अकाल दन्त/ सदन्तजात –

काश्यप चि - मारुतियज्ञ

अ.हृ. नैगमेषंच पुजेत।

33.कूरण्ड-भै.र. मुष्क शोथ ,पित्तदोष

चिकित्सा- कासीस लवण मिश्रीत एरण्ड तैलपान, गोमुत्र सिध्द हरितकी

34.जन्म जात (5) व्याधि जतुमणि,मषक,तिलकालक,न्यच्छ,लांछन

35.चर्मदल- उत्पातम पर्याय व्यान वायू +कफ

प्रकार (4) V,P,K,S क्षीरप व क्षीरान्नाद अवस्था में होता है।

36.बालक शुष्क कास –

धात्रीस्तन्यशोधन .

भै.र. – बालरोगान्तक,चन्दशेखर यो.र. तालीसादी चुर्ण,

शारंगधर-कण्टकार्यावलेह

37.श्वास-भै.र. –बालरस,मकरध्वज

वृ.मा. अष्टंगावलेह

38.प्रतिश्याय – चरक-अणुतैल,व्याघ्रीतैल-चक्रदत्त

39.कुक्कुणक-सुश्रुत- दूष्टस्तनपान जन्य, वाग्भंट –दन्तोद्भव जन्य

नेत्रवर्त्मशोथ,सुर्यप्रभां न सहते। ललाट अक्षिकूटनासामर्दननेत्रस्त्राव

चिकित्सा- धात्री वमन ,दापवाचन,स्तनदोहन,आश्चोतन,लेप,अंजन व परिषेक.

40. शीर्षम्बू रोग- भै.र.

41. नाभीकुण्डल- र. र. स.

बालग्रह: चरक - बालग्रह वर्णन नही.

सुश्रुत - 9, वाग्भट - 12 पुरुष शरिरधरी 5, स्त्री शरिरधरी -7

भा.प्र 9, यो.र. - 12 हारित -8

ग्रहबाधा कारण -3 - हिसा रति,आंकाक्षा

अ. सं दुःसाध्यो रतिकामेन पिडीतः।

ग्रहबाधा काल वर्ष 12 पर्यत

वाग्भट पुरुष शरिरधरी 5 - स्कन्द,विशाख मेषास्य,श्वग्रह पितृ

स्त्री शरिरधरी -7 - शकूनी, पूतना, शीत पूतना, अहीपूतना, मूखमण्डिका, रेवती,शुष्क रेवती.

काश्यप रेवती प्रधान ग्रह.

ग्रहबाधा पूर्वरूप - प्रततं रोदनं ज्वर :।

(विस्तृत वर्णन सुश्रुत उत्तरतंत्र देखिए)

स्वस्थवृत्त

योग

धर्मार्थ काम मोक्षाणामारोग्य मूलमूत्तमम् ।।... च.सु. 1/15

आरोग्य:धर्म, अर्थ,कर्म,मोक्ष प्राप्त होना परंतु मोक्ष प्राप्ती योग से प्राप्त होती है।

योग उत्पती= योग शास्त्र के आद्यप्रणेते/जनक: श्री आदिनाथ (शिवसहित पार्वती.)

आद्यप्रवर्तक :- कपिलमुनी (हिरण्यगर्भ).

योग शास्त्र के मौलिक सिध्दांत :संत ज्ञानेश्वरव्दारा ज्ञानेश्वरीमें वर्णन किये है।

* गौतम बुध्दं - अष्टांग मार्ग

1) योग्य दृष्टी, 2) योग्य संकल्प, 3) योग्य वाचा, 4) योग्य कर्म, 5) योग्य जीवन 6) योग्य प्रयत्न, 7) योग्य स्मृती, 8) योग्य समाधी.

* बुध्द संप्रदायमें 'महायान संप्रदाय' का उल्लेख, उसका उद्देश शांती प्राप्ती, योग 6 अवस्था में वर्णन.

1) दान, 2) शील, 3) शान्ति, 4) वीर्य, 5) ध्यान, 6) प्रज्ञा.

योग शब्द की निरूक्ती=युज्ञ या शब्दापासून

* अमरकोष योग शब्द पर्याय.

संयोग, ध्यान, युक्ति, संगती, आनंद, मोक्ष

1) पतंजली योग दर्शन - योगश्चित्तवृत्तिनिरोध: । पा.यो.सु. 1/2

2) कठोपनिषद :- तां योगमिती मन्यत्ते स्थिराभिन्द्रियधारणम् ।

3) कैवल्योपनिषद :- श्रध्दा भक्ति ध्यान योगदेवहि ।।

4) मनुस्मृति :- इंद्रीयान वशं करूते ।।

5) भगवद्गीता : a) समत्वं योग उच्यते ।।

b) दु:ख संयोग वियोग संज्ञितम ।।

c) योग: कर्मसु कौशलम् ।।

6) अदित्य पुराण :- योगात सन्जायते ज्ञानं योगमच्येकचित्तता ।।

7) नास्ति योगात परमं बलमू । घे. सं.

चित्त वृत्ति:- 5 प्रमाण विपर्यय विकल्प निद्रा स्मृतय: ।। पा.यो.द. 1/6

1) प्रमाण:- प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम.

2) विपर्यय:- मिथ्या ज्ञान.

3) विकल्प :- वस्तुका शब्दाद्वारे ज्ञान परंतु वस्तु अस्तित्व नही।

4) निद्रा :- किसी भी वस्तुका ध्यान नही रहता.

5) स्मृति :- अनुभूत विषयका पुन्हा पुन्हा ज्ञान होना.

पातंजली योग चित्त की पाच अवस्था -

1) क्षिप्त 2) मूढ 3) विक्षिप्त 4) एकाग्र 5) निरूध्द.

अष्टांग योग :- पातंजली

1) यम 2) नियम 3) आसन 4) प्राणायाम

5) प्रत्याहार 6) धारणा 7) ध्यान 8) समाधी.

सप्तांग योग = घेरंड ऋषी

1) षट्क्रिया - देहशुध्दी के लिए. 2) आसन - शरीरदृढते के लिए.

3) मुद्रा - स्थैर्या के लिए. 4) प्रत्याहार - धैर्य प्राप्ती के लिए.

5) प्राणायाम - लाघव प्राप्ती के लिए. 6) ध्यान - प्रत्यक्षात्मन् प्राप्ती के लिए.

7) समाधि - निर्लिप्तते के लिए.

पातंजली:

1) बहिरंग-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार इनका समूह

2) अंतरंग - ध्यान, धारणा, समाधि. इनको संयम कहते है।

योग मार्ग: 9 -

1) राजयोग :- रजसो रेतसो योगाद्राजयोग इति स्मृत: । शिखोपनिषद

2) हठयोग :- गुहयसमाज इस ग्रंथमें प्रथम उल्लेख

- हठयोग में षट्क्रिया का वर्णन.

- हठयोग प्रदिपिका - 13 वे शतक.

हकार	ठकार
i) पिंगला नाडी	इडा नाडी
ii) सुर्य प्रभाव	चंद्र प्रभाव
iii) दक्षिण नासा	वाम नासा
iv) पुल्लिंगी	स्त्री लिंग
v) श्वसन, पचन, रक्ताभिसरण, उत्तेजक	विचार, स्मृती व चिंतन

3) भक्तियोग 4) कर्मयोग 5) ज्ञान योग 6) मंत्र योग

7) लययोग 8) नादयोग 9) जपयोग.

* योगदर्शनानुसार - हठयोग, राजयोग, लययोग, मंत्रजपयोग, कर्मयोगाचे प्रकार.

ॐ ओंकार प्रमुख मंत्र. आ - सृष्टीचा आरंभ. ऊ - हृदयस्य संरक्षक तत्व. म् - संहार निदर्शक तत्व.

* योग मोक्षका पथप्रदर्शक है - चरकानुसार

* आयुर्वेद व योग अष्टांग युक्त है।

* जागतिक आरोग्य संघटना के नुसार 1948 आरोग्य व्यक्तिकी शारिरीक, मानसिक, सामाजिक निकोपावस्था परंतु 1978 नुसार उसमें आध्यात्मिक स्थिती का अंतर्भाव किया.

* अष्ट अलौकिक शक्ति (अष्टऐश्वर्य - अष्टसिद्धी) चरक.

* योगिक ग्रंथ में 23 प्रकार की सिध्दी है,उनमें से अष्ट निम्न लिखीत है ।

1) अणिमा - अणुवत वा अतिसुक्ष्मरूप होना.,

2) माहिमा - बुध्दाकार किंवा विशाल रूप,

3) गरिमा - गुरूत्व व जडत्व प्राप्त, 4) लघिमा - लघुत्व प्राप्त,

5) प्राप्ती - वाकसिद्धी, 6) प्राकाम्य - पराकाया प्रवेश,

7) ईशित्व - दुसरे को स्व के आधिन करना.

8) वशित्व - दुसरों को वश करना.

* नैष्ठिकी चिकित्सा - उपधा विरहित चिकित्सा.

हन्तीयुक्त चिकित्सा तु नैष्ठिकी या विनोपधाम् ।। च. शा. 1/94

* त्रितापहरण : सर्वांगीण आरोग्य प्राप्ती.

(त्रिताप- आध्यात्मीक, आधिभौतिक, आधिदैवीक)

* हठयोग प्रदीपीकाकार: हठयोग-(मठयोग, कर्मठयोग)-तापनाशक योग

* योग के लिये आयु 10 वर्ष से वृद्धावस्था तक.

अष्टांग योग:

यम: देहेन्द्रियेषु वैराग्यं यम इति उच्यते बुधै:।। (त्रिशिखब्राह्मणोपनिषद)

यम:(5)- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह.

अहिंसा- अहिंसा प्रतिष्ठाया तत्संनिधौ वैरत्याग:। (पा.यो.सु.)

सत्य- सत प्रतिष्ठाया क्रियाफलश्रयत्वम। (पा.यो.सु.)

अस्तेय- अस्तेय प्रतिष्ठाया सर्व रत्नोप स्थानम ।। (पा.यो.सु.)

ब्रह्मचर्य- ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठाया वीर्यलाभ:। (पा.यो.सु.)

अपरिग्रह- अपरिग्रह स्थैर्य जन्मकथंता संबोध:।। (पा.यो.सु.)

यम संख्या - 5 (पा.यो.सु.), ह. प्र.10 भगवतगिता (12)

ह.प्र.10-अहिंसा,सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य,क्षमा धृती,दया, आर्जव, मिताहार, शौच.

नियम- अनुरक्ती परे तत्वे सतत नियम स्मृता:। (त्रिशिखब्राह्मणोपनिषद.)

नियम -5 (पा.यो.सु.) शौच- शौचत्स्वांगजुगुप्सा परैरसंसर्ग ।। (पा.यो.सु.)

संतोष- संतोषदनुत्तम सुखलाभ :। (पा.यो.सु.)

तप- कायेन्द्रियसिध्दी शुध्दी क्षयात्तपस:।। (पा.यो.सु.)

स्वाध्याय- स्वाध्यायदिष्टदेवता संप्रयोग । (पा.यो.सु.)

प्रणवादी प्रवित्राणांजपो मोक्ष शास्त्राध्ययनं वा ।।

ईश्वरप्रणिधान-

ईश्वरप्रणिधान सर्वक्रियायाणां परमगुरावर्पणं तत्फलसन्यासो वा ।। पा.यो.सु.

समाधि सिध्दी ईश्वरप्रणिधानात ।

क्रियायोग- तप,स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान इनको क्रियायोग कहते है ।

III) आसन: -

- आसन हठ

Def. आसन

आसन - 1)

भगवान शंकर

वात नाशक

2) पदमासन :-

3) सिध्दासन :

4) वज्रासन :-

5) पवनमुक्तास

6) मत्स्यासन :

पित्त नाशक

2) भुजंगासन

3) धनुरासन -

4) मत्स्येन्द्रास

5) सिंहासन -

6) मयुरासन -

7) कुक्कुटासन

9) वीरासन, 1

कफ नाशक

2) हलासन -

3) पश्चिमोत्तास

4) शिर्षासन -

धातुरक्षणात्मक

IV) प्राणायाम

प्राणायामो वायु

तस्मिन्सति श्वा

* प्राणायाम मा

1) अवर प्राणाय

2) मध्यम प्राणा

3) प्रवर प्राणाय

प्राणयाम (कुंभ

1) सुर्यभेदन (र

- वात दोष नाश

2) उज्जायी प्राण

3) शीतली - सं

4)सीत्कारी - ि

5)भस्त्रिका-कफ

6)भ्रामरी - त्रिद

8)प्लाविनी - ल

* घेरंड संहिता

पातंजल योग द

केवलस्तंभवृत्ती,

विष्णु पुराण-(2)

कुंभक भेद- अं

कुंभक भेद (2)-

नाडी शुध्दी प्राण

कायस्य कृशता

यथेष्ट भारणं वा

नादाभिव्यक्तिरारो

III) आसन: – आसन अष्टांग में तीसरा (3) अंग.

– आसन हठ्योगप्रदीपिकानुसार प्रथम (1) अंग.

Def. आसन – स्थिर सुखमासनम्।। पा.यो.सु. 2/24

आसन – 1) ध्यानात्मक 2) शरीर संवर्धनात्मक 3) विश्रान्तीकर

भगवान शंकर – 84 लक्ष आसन प्रमुख 88 आसने.

वात नाशक आसन: 1) स्वस्तिकासन :– मानसिक स्थैर्य प्राप्त होना.

2) पदमासन :– गर्भशयस्थ स्नायु बलवान, सर्वव्याधिनाशक

3) सिध्दासन :– नाडी शोधन, योग सिद्धी प्राप्त होना.श्रेष्ठ आसन

4) वज्रासन :– भोजनोत्तर कर सकते हैं।

5) पवनमुक्तासन :– उदरस्थ मेद कम होता है।

6) मत्स्यासन :– स्थौल्यनाशक, फुफ्फुस विकार में उपयुक्त.

पित्त नाशक आसन:1)शलासन–स्थौल्यनाशक,बध्दकोष्ठता दूर होती है।

2) भुजंगासन – स्थौल्यनाशक, गर्भाशयस्य रोगनाशक.,

3) धनुरासन – उर: विस्तृत.,

4) मत्स्येन्द्रासन – नाडीशुद्धी, व्याधी समुह नष्ट होता है।,

5) सिंहासन – श्वासदुर्गंधनाशक,अर्दितनाशक,गलग्रंथीचे कार्य सुधारता है।

6) मयुरासन – मधुमेह व्याधी प्रतिबंधक, वातानुलोमन, सर्पविष आदी.

7) कुक्कुटासन – चक्षुष्य., 8) कुर्मासन – मलावष्टंभ नष्ट होता है।

9) वीरासन, 10) भद्रासन – सर्वव्याधीनाशक, अपानवायु शुद्धी, बुद्धीवर्धन.

कफ नाशक आसन: 1) सर्वांगासन – दृष्टी तीक्ष्ण,शिर्षासन के सभी लाभ.

2) हलासन – आमउत्पत्ती नही होती.

3) पश्चिमोत्तासन – उंची बढती है, उदरस्य सभी अवयव स्वरूप.

4) शिर्षासन – धी,धृति,स्मृति,बुध्दी, ज्ञानेंद्रीय व कर्मेंद्रीय कार्य वृध्दी.

धातुरक्षणात्मक आसन – शवासन.

IV) प्राणायाम – प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य। पा.यो.द. 2/34

प्राणायामो वायुर्निरोध :। डल्हण सु. सु. 50/16

तस्मिन्सति श्वासप्रश्वासयो गर्तिविच्छेद: प्राणायाम: (प्रा.यो.सु.)

* प्राणायाम मात्रा :

1) अवर प्राणायाम – पुरक 12 मात्रा, कुंभक 48 मात्रा, रेचक 24 मात्रा.

2) मध्यम प्राणायाम –पुरक 16 मात्रा, कुंभक 64 मात्रा, रेचक 32 मात्रा.

3) प्रवर प्राणायाम – पुरक 20 मात्रा, कुंभक 80 मात्रा, रेचक 40 मात्रा.

प्राणयाम (कुंभक) भेद - 8 ह. प्र.

1) सुर्यभेदन (सूर्यभेदि) प्राणायाम:

– वात दोष नाशक – कपाल शोधन – कफविकार, स्थौल्य, नाशक

2) उज्जायी प्राणायाम – कंठगत कफ विकार नाशक – लावण्यता

3) शीतली – सीत्कारी – पित्त हर.

4)सीत्कारी – पित्त प्रकृत्तीके मनुष्य को नित्य प्रयोग करना चाहिए।

5)भस्त्रिका–कफ प्रधान व्याधि व मेदविकार नष्ट मधुमेह व्याधिमें सर्वोत्तम प्राणायाम

6)भ्रामरी – त्रिदोषघ्न, 7) मूर्च्छा – चित्त एकाग्र होना.

8)प्लाविनी – लाघवता निर्माण होना.

* घेरंड संहितानुसार – प्राणायाम भेद: 2 - 1) सगर्भ 2) निगर्भ

पातंजल योग दर्शन– प्राणायाम (4) बाहयवृत्ती, अंभ्यन्तरवृत्ती,

केवलस्तंभवृत्ती, स्तंभवृत्तीसहित.

विष्णु पुराण–(2) सबीज, निर्बीज प्राणायाम.

कुंभक भेद– अंतकुंभक व बहि:कुंभक

कुंभक भेद (2)- कुंभक सहित व केवल..... ह. प्र.

नाडी शुध्दी प्राणायाम लक्षण–यदा तु नाडीशुध्दी स्यातथा चिन्हानी बाहयत:।

कायस्य कृशता कांतिस्तदा जायेतं निश्चितम ।।

यथेष्ट भारणं वायोरनलस्य प्रदीपनम ।

नादाभिव्यक्तिरारोग्यं जायते नाडी शोधनात।। ह.प्र.

पुरक:कुंभक: रेचक प्रमाण–1:4:2 - त्रिशिखब्राह्मणोपनिषद व याज्ञवल्क

6:8:8 - गोरक्षसंहिता.

यौगिक शुद्धिक्रिया – षट्क्रिया

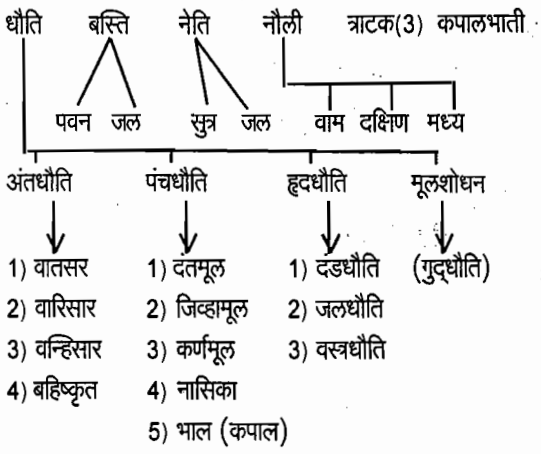

षटक्रिया:– मेद:श्लेष्माधिक:पूर्व षटकर्माणि समाचरेत। ह. प्र.

षटकर्मणा शोधनं च आसनेन भवेद दृढम ।

मुद्रया स्थिरता चैव प्रत्याहारेण धीरता ।।

प्राणयामाल्लाघवं च ध्यानात्प्रत्यक्षमात्मानि ।

समाधिनां निर्लिप्तं च मुक्ति रेव न संशय:।। घे.र.

त्राटक भेद (3) बाह्य त्राटक, मध्यत्राटक, अंभ्यन्तरत्राटक .

धौतिलाभ–कास,श्वास,प्लीहा विकार,कुष्ठ व्याधि शमन,पित्तविकार शांती, दिप्ताग्नी.

बस्ति लाभ– वात, पित्त, कफ गुल्म, प्लीहा उदर, कामला व्याधि शमन

इंद्रिये अंत:करण, व धातू प्रसाद, कांति वृध्दी,अग्निप्रदिप्ती.

नेति लाभ– उर्ध्वजत्रुगत विकार.

नौली– दिप्ताग्नी, पाचनक्रियावृध्दी, आंनदकारि.

त्राटक– नेत्ररोग नाशक, दृष्टी तीव्र और इच्छाशक्ती प्राप्त होती है ।

निषेध– नेत्राभिष्यंद.

कपालभाती– स्थौल्यनाशक, पाचन शक्ती वर्धक, सुषुम्ना व मस्तिष्क शुध्दी, बूध्दीवर्धक है। कफवात शोधन.

बंध –(3) 1) मूलबंध :– वीर्यस्तंभन, अर्शव्याधिचे निर्हरण, रक्तशुद्धी

2) जालंधर बंध :– उर्ध्वजत्रुगत व्याधीनष्ट, इंद्रीयों को बल्य

3) उड्डीयान बंध :– अम्लपित्त, अजीर्ण नाशक.

V)प्रत्याहार-स्वविषयासंप्रयोग चित्तस्वरूपानुकार इवोन्द्रियाणां प्रत्याहार:।। पा.यो.सु.

लाभ– तत: परमा वश्यतेन्द्रियाणाम।।

VI) धारणा – देशबन्धश्चित्तस्थ धारणा। पा. यो. सु. 3/1

VII)ध्यान – तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्। पा. यो. सु. 3/2

ध्यान के प्रकार: 1) अधिभौतिक, 2) अधिदैविक,

3) आध्यात्मिक– षट्क्रिया का ध्यान 4) नादानुसंधान – निराकार

– याज्ञवल्क्य संहिताकेनुसार ध्यानके 2 प्रकार.

i) सगुण ध्यान – 5 प्रकार ii) निर्गुण ध्यान:

घेरंड संहिता ध्यान प्रकार –i) स्थुल ध्यान,ii) ज्योति ध्यान, iii) सुक्ष्म ध्यान.

VIII)समाधि– तदेवार्थ मात्रनिर्भासंस्वरूप शून्यमिव समाधि।। पा.यो.सु. 3/3

– पांतजली समाधि प्रकार: 1) संप्रज्ञात 2) असंप्रज्ञात

1) संप्रज्ञात – पुन: 4 प्रकार सवितर्क, सविचार, सानंद, सस्मित,

2) असंप्रज्ञात – विराम प्रत्ययाभ्यासपुर्व: संस्कारशेषोऽन्य:।। पा.यो.सु. 1/18

संप्रज्ञात – 4 प्रकार

1) सवितर्क :– आलबंन – देवता प्रतिमा या मूर्ति पे चित्त एकाग्र करना।

2) सविचार :– आलबंन – पंचतन्मात्रा, 3) सानंद :– आलबंन – इंद्रिय

4) सस्मित :– आलबंन – अहंकार या अस्मिता.

इस समाधि से आत्मसाक्षातकार होता है।

योग सिध्दीकर भाव –(6)
उत्साह साहसाद धैर्यात्तत्वज्ञानाच्च निश्चयात।
जनसंग परित्यागात्षऽभियोग: प्रसिध्दयति।। ह. प्र.
योग असिध्दीकर भाव (6)
अत्याहार प्रयासश्च प्रजल्पो नियमग्रह ।
जनसंगश्च लौल्यं च षडभियोगो विनश्यति।। ह. प्र .
योगमें प्रमुख नाड्या व षट्चक्रे – नाडी रचना – पदम्
– नाडी – मज्जाधातू संबंध – प्राणवहन कार्य.
* नाडी संख्या – 1) शिवसंहिता – 3 $^1/_2$ लाख
2) प्रश्नोपनिषद, दर्शनोपनिषद = 72,000
प्रश्नोपनिषद – 1) नाभीस्थान में मुलकंद से 72,000 नाड्या उत्पत्ती.
2) कुंडलिनी शक्ति सर्पाकार उपर दस, निचे दस और तिर्यक
दो–दो नाड्या (10+10+2+2) Total - 24 मुख्य
3) इसमें 10 नाड्या प्राणवाहक प्रधान है।
i) इडा नाडी – इडा, चंद्रा, गंगा left side देवता – विष्णु
त्रिवेणी = इडा, पिंगला, सुषुम्ना संगम.
ii) पिंगला नाडी – पिंगला, यमुना, सुर्य Right side देवता – ब्रम्हा
iii) सुषुम्ना नाडी – शांभवी, ब्रम्हरंध्र, महापथ, मध्यमार्ग, सरस्वती.
(योगवल्लभा – शिवसंहिता) देवता – शिव.
iv) गांधारी – वाम नेत्रसे वाम पाद अंगुष्ठ तक.
v) हस्तिजिव्हा – दक्षिण नेत्रसे दक्षिण पाद अंगुष्ठ तक.
vi) पुषा नाडी – दक्षिण कर्णमें vii) यशस्विनी – वाम कर्णमें
viii) अलंबुशा – मुखमें ix) कुहु – लिंगमें
x) शंखिनी – गुहस्थान में (मुलस्थानमें)
षटचक्रे: 1) मुलाधार – ध्वजाधो गुदोर्ध्वदेशो – रक्तपदम अधोमुख,
2) स्वाधिष्ठान – ध्वजमुले – अरूणपदम्,
3) मणिपूर – नाभिमुल स्वाधिष्ठानौर्ध्व – नीलकमल.
4) अनाहत – हृदय – कदम्बपुष्प,
5) विशुध्द – कंठ प्रदेश – धुम.
6) आज्ञा – भ्रुमध्यानुपूर्व्या अवस्थितम् – Purple blue.
* सहस्त्राधार चक्र – रत्न – पाचु (Emerald), स्थान – मस्तिष्क,
दल – सहस्त्र, तत्वबीज – विसर्ग, देवता – परब्रम्ह,
योगीक शक्ती – मनोवह नाडी, अधिष्ठान – भ्रुमध्य, रंग – हरा.
* लंघन शुरू रहने पर जलबस्ती लेने का महत्व निसर्गोपचार में विशेष है।
for वात शमन.
* ठंडे पानी का त्वचा से संपर्क होने पर प्रथम संकोच फीर विस्तार होता है।
& अंबर पीयूष (O_2) का Supply बढता है।
* मृत्तिका उपचार – पित्त प्रधान व्याधीमें उपयुक्त
अग्निमांद्य – पेट पर लेप, प्रवाहिका, उदरशूल – नाभी के पास लेप.
मर्दन भेद –
a) स्निग्ध, रूक्ष, आर्द्र, शुष्क,
b) उद्वर्तन, उत्सादन. आयुर्वेद,
c) विधी के अनुसार भेद – 5.
i) रगड्ना (Rubbing) ii) गुंथन (stroking), iii) थपथपाना (Tapping)
iv) मुक्की (Beating) v) कम्पन (Vibrating)
* आयुर्वेदानुसार मर्दन प्रकार – 2 i) उत्सादन ii) उद्घर्षण
मुद्रा :– हस्त और पैर के अंगुलियों की विविध रचना मतलब मुद्रा।
– मुद्रा प्रकार – 1) प्राणायमिक मुद्रा – 8 प्रकार की
2) अप्राणायमिक मुद्रा
– पंचसंजीवनी मुद्रा – पाच प्रकार (प्राण,अपान,उदान, समान, व्यान)
– प्राणमुद्रा – व्याधिक्षमत्व बढता है।
आकाश तत्व चिकित्सा – 8 प्रकार से
i) उपवास, ii) ब्रम्हचर्य, iii) सदाचार, iv) मानसिक अनुशासन और संतुलन, v) विश्राम और शिथिलीकरण, vi) प्रसन्नता, vii) मनोरंजन, , viii) गाढनिद्रा वा योगनिद्रा.
उपवास – 10 प्रकार.

* निसर्गोपचार

उगम – जर्मनी. * Princenits (विन्सेंज प्रिंसनिट्स) – 1840
* पॅरासेल्सस (जर्मन शास्त्रज्ञ) – निसर्गोपचार का जनक.
– जर्मनी में निसर्गोपचार का शिक्षण लेकर वैद्यकीय व्यवसाय, करने वाले की हाईल प्रॅक्टिशनर कहते है।
= International Federation of हाईल प्रक्टिशरर्स
अध्यक्ष – प्रा. स्प्रिट (Ger.), उपाध्यक्ष – बर्नहार्ड मिल्को (Aus.)
सचिव – सुभाष जोशी
1) आयारीडॉलॉजी – जनक – व्हेन पेक्सली & फेल्के.
2) फायटो थेरपी – मेडीसिनल टी.
3) ओझोनथेरपी – ई. पेअर (जर्मनी) प. जर्मनी के इफेजाइम गाव में ओझोन थेरपी के लिए डॉ. फीबान इनका कारखाना है।
4) Accupuncture (चीन) 2 तत्वे – यान,(+ ve) यिन.(negative)
5) वेटमेथड – i) रूडयिगर ग्लोबेल – इस चि. के तज्ञ है।
ii) 1st गरम पानी से स्नान then तैल लगायें।
iii) बाऊएशाई यंत्र से छिद्र बनाए।
6) Ear Accupuncture - France के स्मिथ ये तज्ञ है।
7) शिरोप्रॉक्सी – Dr. Joseph Gurg
8) फुट झोन Reflex – श्री. फिटजेटाल & इंगोहास (German's)
* चुंबकशक्ती मापने का Unit - गॉस (Garge)
* क्वाईप चि. पध्दती – Sebstion knipp 1882
- Movement - therapy, - Nutritional - therapy
- Phyto therapy - Mental lysine heath education
- Hydrotherapy
i) उष्ण हवा + पानी की सहायता से शरीर में स्वेद उत्पन्न करना – Sauna bath.
ii) फिनलं ने जग को यह देन दी है।
iii) भाप प्रमाण 15% से अधिक न बढायें।
iv) सौना bath के लिए 2 hrs. लगते है ।
* पीली मिट्टी – अग्निविकार, उदररोग, मधुमेह.
श्वेत मिट्टी – मस्तिष्क, यकृत रोग
कृष्ण मिट्टी – त्वक्रोग, विषनाशक
लाल मिट्टी – उदरशूल, आमवात, पक्षवध.
* यकृत प्लीहा वृध्दि में – यकृत – प्लीहा प्रदेशी पर पट्टी बांधते है।
* Adoly Just – लेखक of प्रकृतिक जीवन की और.
* हृदयोग प्रदिपिका पर – ज्योत्स्ना टिका.
लेखक – स्वात्माराम, टिकाकार – उपनिषद ब्रम्हयोगी.
तमो गुणी व्यक्ति – हृदयोगाचरण., रजो गुणी व्यक्ति – राजयोग.
सत्व गुणी व्यक्ति – ज्ञानयोग.,
* कपिलमुनी (हिरण्यगर्भ संज्ञा) – योग के आद्यप्रवर्तक.
* पतंजली – योगशास्त्र (As दर्शन).
* Kala Azar संक्रमण – Sand fly व्दारा
1) 1st पंचवर्षिक योजना – 1951 started, 36 करोड लोकसंख्या.

2) कामगार विमा योजना – 1948 स्थापना
– कामगार राज्य विमा महामंडल
अध्यक्ष – कामगार मंत्री (मजदूर मंत्री) उपाध्यक्ष – स्वास्थ मंत्री.
3) शालेय आरोग्य सेवा – 1909 में भारत मे शुरू.
4) Factory Act. - 1948
पशुपालन, कत्तलखाने, चर्मोदयोग, विटचुना भट्टी – इनपर नियंत्रण.
कत्तलखाने में पशुओं को ट्रेचिना & Actinococus जंतु का फैलाव रोकने हेतु।
– कुत्ते, बिल्ली, चुहों का प्रवेश न होने दै।
5) इष्टिका– चुना तैयार करनेवाली भट्टीयाँ –
Releases CO_2, CO, SO_2, H_2S वायु.
6) Infuenza की साथ जग में – 1918 & 1957 में आयी थी।
7) भारत में Anophelin जातीके 40 प्रकार के दंश पाये जाते है।
– इसमें विषमज्वर संक्रमण (7-8) जाती करती है।
Anthracosis - कोयला (coat),
Silicosis - वालु (स्वर्णादी के खान)
Asbestosis - Asbestis, Siderosis - लोहकण
Bassinosis - कार्पास के तंतु, Begasosis -इक्षु का भुसा
Tobacosis - तम्बाकु जन्य
Coal gas contents - 60% CO.
Motar gas contents - 30% CO.

संक्रामक व्याधि प्रतिबंध व नियंत्रण:

विज्ञप्ती – (Notification)
गाँव मे कोई भी व्यक्ति संक्रमण रोग से ग्रस्त होने पर उसकी सुचना आरोग्य शाखा के अधिकारी को देना।
पृथक्करण (Isolation) –
2 प्रकार – Private – घर में जो रूग्ण है उसे अलग कमरे मे रखें।
Hospital – रूग्णालय में रूग्ण को पृथक रखें।
* संपर्कविरोध (Qurantine) –
संक्रमक रोग इतस्त्र न फैले इसलिए लगाया गया बंधन.
i) Inward (आगम) ii) outward (निर्गम)
iii) International (आंतराष्ट्रीय) vi) Schoolatic (शालेय)
v) Domestic (गृह्य)
* चालीसा – 40 दिन गॉव के बाहर विशिष्ट स्थान पर रखना.
* अवेक्षण – (Surveillance)
–रोग पीडीत व्यक्ति से जिनका संपर्क आता है। उनपर हमेशा ध्यान रखें।
– Also called as अवेक्षण पध्दती.
* विसंक्रमण – (Disinfectant)
– संक्रामक रोग के जीवाणु का नाश करना.
* प्रकार – 3
a) नैसर्गीक – सुर्यकीरण
e.g आंत्रिक ज्वर Salmonella typhi 1/2 hrs मे जंतु मरते है।
b) रासायनिक – चुना, रसकर्पुर, Mercury, Iodin, H_2SO_4.
c) भौतिक– Heat & Radiation

आहार पोषण

आहार भेद:
च. = चार प्रकार : – 1) पान, 2) आशित, 3) भक्ष्य, 4) लेह्य
सु. = 1) भक्ष्य, 2) भोज्य, 3) लेह्य, 4) पान
भाव प्र. = (6)
1) चूष्य, 2) पेय, 3) लेह्य, 4) भोज्य, 5) भक्ष्य, 6) चव्य

आहार घटक :–
Protion daily requirement - 1gm/1kg/body wt.
Fat - 45 to 60 gm (Adult).
Carbohydrate - 400 to 500 gm. day for adult
Vit A = 600 mcg, Vit D - 2.5 mcg (Adult), Vit C = 5 mg.
Vit B = 1 to 2 mg. B_2 = 1 to 2.3 mg. B_3 = 12 to 20 mg.
B_6 = 2 mg. B_{12} = 1 microgram.
अन्नभेसल प्रतिबंधक कायदा – 1954.
जिवनसत्व अ अभावी व्याधी विरूध्द – 1970.
सदोष आहार से रक्तक्षय = चतुर्थ पंचवर्षिक
Iodine अभाव = 1962.
पोषण विषयक विशेष = 1970.
बालवाडी पोषण 1970.
एकात्मीक बाल विकास – 1975
Mid day meal - 1961

वायू:–
हर दिन मनुष्य – 1.2 kg घन आहार, 1.8 kg द्रव आहार, 14 kg air सेवन करता है। पूर्व वायु = मधूर लवण, गुरू, स्निग्ध, रक्तपित्त कारक, कफ ।
पश्चिम वायु = रूक्ष, कफ मेद। प्राणनाशक बल नाशक
उत्तर वायु = स्निग्ध मुदु 6, शीत बलवर्धक
दक्षिण वायु = मधुर, लघु, 6,
वायु शुध्दी प्रकार – नैसर्गिक – कृत्रिम,
1) नैसर्गिक – सुर्य, पाऊस, वनस्पती, वारे,
हर मनुष्य हर घंटे के लिए शुध्द हवा मात्रा = 3000 फुट
निवास स्थान में प्रवेश निकास व्यवस्था.
1) बर्हिप्रवेश, 2) अंतप्रवेश.
2) अंतप्रवेश – Inlets ,outets.
Inlets - i)Tobins tube, ii) एलीसन्स ब्रिक्स.
iii) ल्युव्हर्स ventilater. iv) सेर्रीग हॅम व्हाल्व, v) हिकबर्डस् प्रवेशद्वार
निकास व्यवस्था – मेकी लेन्ज ventilater.

प्रविजन – प्राकृत,	कृत्रिम –
i)वायु	i) Exhaust ventilation
ii) तापमान	ii) Plenum ventilation
ii) Diffuslon	iii) Balanfed ventilation
	iv) Air condintioning

जल प्रकार :– प्रमुख = २ प्रकार
1) दिव्य / अंतरिक्ष / आकाशीय जल, 2) भौम जल
1) दिव्य – 4 प्रकार – 1) धार 2) कार 3) हेम 4) तौषार
वर्षा (दिव्य) जल प्रकार – 1) गांग 2) सामुद्र.

ऋतू नुसार जल गूण :–
1) शिशिर ऋतू का जल – लघु कफ वात नाशक.
वसंत – कषाय, मधुर रूक्ष.
ग्रीष्म – अन अभिष्यंदि,
वर्षा – गुरू, मधुर, अभिष्यंदी (वर्षा जल उत्तम है)
शरद – लघु, अनभिष्यंदि,
हेमंत – गुरू, स्निग्ध शीत, बल्य , वृष्य
वाग्भट – भौम जल आठ प्रकार –
i) कौप, ii) सारस, iii) ताडाग, iv) चौप्ड्य, v) प्रस्त्रवन,
vi) औद्भिद, vii) वापी, viii) नदी.

जल कठिण्य नाश करणे के लिए उपाय.

A) Temporary	B) Permanent
1) Boiling	1) Sodium carbonate
2) क्लॉक विधी (Addition of lime)	2) Permutit
3) सोडीयम कार्बोनेट	
4) परम्युटिट विधी	

जल के भेद :

1) नैसर्गिक–	कृत्रिम
अ) जल प्रवाह	1) यांत्रिक
ब) सुर्यकीरण	2) भौतिक
क) शेवाल	3) रसायनिक
ड) मासे, कासव,आदी प्राणी .	
इ) गुरूत्वाकर्षण, अवसादन	

आयुर्वेदानुसार

सुश्रुत = 1) मार्जन – सुर्य, उबालना, लोखंडी गोला.

२) प्रसादन = कतक, गोमेद, विसग्रंथी, शेवाळ, वस्त्र, मुक्ता, मणि.

अष्टांग सं = 1) परिस्त्रावन, 2) निर्वापन, 3) प्रसादन, 4) दुर्गंध नाश.

कृत्रिम -

1) यांत्रिक – i) Filtration - slow sand filter, rapid sand filter.

ii) घरगुती.

यांत्रिक – 1) Solw, 2) Rapid Sand filter –

i) स्कंदन (Coagulation) ii) जलद मिश्रण iii) उर्णन (Flocculation)

iv) अवसादन (Sedimentation) v) निस्पदन – Filtration

रसायनिक :–

1) तुरटी 2) Potassium permanganet 3) Bleaching Powder

4) चुना 5) Iodine 6) Copper sulphate 7) Chlorine

2) घरगुती – A) उर्ध्वपातन B) उबालणा C) गालणा (Fillration)

Filters:- i) Pasteur chamberland Filter

ii) Berkfeld filter

iii) Ketadyn Filter

प्रकाश:– 1) सुर्य किरण – 1) दृश्य वर्णपट (Visible spectrum)

(colours) VIBGYOR 2) अदृश्य वर्णपट– Cosmic, गॅमा, x ray, UV,

अपद्रव्य निवारण –

1) भस्मीकरणं (Incination) 2) Dumping 3) खत (Composting)

According to WHO -

1) चर (Trench) 2) उतार (Ramp) 3) खत

मलमूत्र एकत्रीकरण Removal, disposal :-

1) संचयन (Conser vancy) 2) जलवाहक (Water Carriage system)

1) संचयन – A) Sanitary शौचालय.

B) स्थायी –

1) Bore hol (भूमिगत), 2) कुपाकर (Pit Latrin) or (Dugwell),

3) जल सील (Water seal) 4) सेप्टीक (Septic) 5) जल शौचालय,

6) सुलभ शौचालय, 7) Chemical

शौचालय

अस्थायी – 1) उथल चर 2) खोल चर

जलवाहन पध्दति = Combine, Separate

Disposal - Aerobic, Anaerobic

WHO व्दारा 1953 में कामगारों के सामान्य आरोग्य रक्षण स्थापीत किया।

शालेय आरोग्य :

1) आरोग्य शिक्षण (Health edcation), 2) आरोग्यदायी सेवा

a) प्रोत्साहनात्मक, b) प्रतिबंधात्मक c) उपचारात्मक d) पुनर्वसनात्मक.

संक्रमण मार्ग :

A) प्रत्यक्ष	B) अप्रत्यक्ष
1) बिन्दुत्क्षेपोपसर्ग (Droplet)	a) वाहना द्वारे
2) संसर्गित मृत्तिका	b) किटक द्वारे
3) त्वचा श्लेष्म कला	c) वायु
4) गर्भाद्वारे	d) निर्जीव वस्तु

संक्रामक व्याधी निदान

1) त्वरीत 2) विज्ञाप्ती 3) पृथककरण 4) संपर्कविरोध 5) अटेक्षण

6) व्याधी के प्रसारण को प्रतिबंध 7) आरोग्य शिक्षण 8) विसंक्रमण.

विसंक्रमण प्रकार : 1) सघ 2) अंतिम 3) Sterilization

4) गंधन. (Fumigation) 5) डिसइन्फेस्टेशन 6) डिलाऊजिंग.

विसक्रमण 3 प्रकार :–

1) Natural 2) Physical - day heat, moist heat, Radiation

3) Chemical 1) Solid - चुना, Bleaching, $KMNO_4$

2) द्रव – Formaline, फिनाईल, Cresal, Lysol, Dettol.

षटचक्र

चक्र	तत्वबिज	दल	महाभूत	वायु	वर्ण	देवता	अक्षर	यौगीक शक्ती	स्थान	रत्न
1) मुलाधार (लं.)		4	पृथ्वी (उष्ण)	अपान +प्राण	रक्ताभ	गणेश	व,ष,श,स.	डाकीनी	गुद (Pelvic Plezxus)	प्रवाल
2) स्वाधिष्ठान (वं)		6	जल	समान+अपानप्राण	अरूणाभ	ब्रम्हा	ब,भ,म,य,र,ल.	राकीनी	लिंग (भग) (HypogastricPlezxus)	मोती
3) मणीपूर (रं)		10	तेज	प्राण+समान	नील	विष्णु	त,थ,द,ध,न,ड, य,ठ,व,ण,प,फ.	लाकीनी	नाभी (Solar Plezxus)	माणिक
4) अनाहत (यं)		12	वायु	प्राण+उदान +व्यान	सुवर्ण/ शुक्ल	शंकर	क,च,ख,ग,ड,च, छ,ज,स,त्र,ट,ढ.	काकीनी	हृदय (Cardiac Plezxus)	हिरा
5) विशुध्द (हं)		16	आकाश	प्राण+उदान	चंद्रवत धुसर	रूद्र	अ to अं:, ऋ, लृ.	शाकीनी	कंठ (Laryngo Phyryngal Plezxus)	नीलम
6) आज्ञा (ओम)		2	वायु	प्राण+व्यान	रक्ताभ	रूद्र	ह,क्ष.	हाकीनी	भ्रुमध्य (Medullary Plezxus)	पुष्कराज
सहस्त्रार (विसर्ग)	1000		-	-	हरित	परब्रह्म	अं to क्ष	मनोवह नाडी	मस्तिष्क	पाचू

व्यवहार आयुर्वेद

न्याय वैद्यक & विषतन्त्र – श्री अत्रिदेव विद्यालंकार

आयुर्वेदिय हितोपदेश – रणजीतराय देसाई

Medical juriprudence : चिकित्सा कर्म & चिकित्सा व्यवसाय वैधानिक पक्ष.

* 1822 – कलकत्ता – प्रथम चिकित्सा विद्यालय which is converted into चिकित्सा महाविद्यालय in 1835.
* 1860 – Indian Penal code,
* न्यायालय: प्रकार: 1) दिवानी Civil
  2) फौजदारी/दण्ड न्यायालय or अर्थ न्यायालय
* फौजदारी – 4 प्रकार: 1) सर्वोच्च suprim court
  2) उच्च High court
  3) सत्र Session (जिल्हा न्यायालय)
  4) दंडाधिकारी Magistrate

पद	कारावास/कैद	अर्थदंड/जुर्माना
(Chief judicial Magistrate)		
1) मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी or मुख्य महानगर दंडाधिकारी	7 yrs.	किसी भी सीमा तक
2) प्रथम वर्गीय स्थायिक दंडाधिकारी	3 yrs.	5000 Rs.
3) महानगर दंडाधिकारी/ द्वितीय वर्गीय	1 yrs.	1000 Rs.

* आजीवन कारावास 20 yrs. सजा

Types: 2 - 1) सामान्य 2) सश्रम

Coroner... only at Calcutta & Mumbai (Presently Not)

* दंड/शिक्षा देने का अधिकार नहीं।
* Statement – आकस्मिक, गुढ, उग्र, रहस्यमयी, परिस्थीती में होने वाली मृत्यु के कारणों की वैधानिक तपासणी.

साक्षी भेद – 3) Type of witness:1) सामान्य 2) विशेषज्ञ 3) प्रतिकुल

साक्ष्य भेद – 2) Medical evidences :

1) मौखीक साक्ष्य (Oral evidence)	2) दस्तावेजी साक्ष्य (Documentory evidence)
Dying declaration	**Dying Depasition**
(मृत्युकालीन घोषणा)	(मृत्युकालीन अभीसाक्ष्य)
1) किसी की भी उपस्थीती	1)दंडाधिकारी उपस्थिती आवश्यक
2) रोगी जिवित रहने पर महत्त्व समाप्त	2) जीवीत रहने पर भी महत्त्व
3) शपथ/सत्यनिस प्रतिज्ञान अनावश्यक	3) आवश्यक

Indentification:

* Ossification center start to devepe at 8 wks of fetus.
* Hair:1)तांबा गलानेवाले कारखाने में काम करनेवाले के केश हरी आभायुक्त 2) नील के खेतो में काम – नीलाभ, 3) cobalt कारखाने – नील.

केश की रंजकता का पता लगाने के लिए कपाल का भी निरीक्षण आवश्यक.

धारा:

IPC 53 A: पुरूष की शारीरिक परीक्षा

IPC 174: जांच पडताल से संबंधित

IPC 178: सम्मन की अवहेलना करने पर लागू।

IPC 179: शपथ लेने से इन्कार करने पर लागू।

IPC 193: शपथ भंग,

IPC 202: वैद्यने फौजदारी गुन्हे की जानकारी पुलिस को न देना।

IPC 248: बेपर्वा होकर विष का उपयोग करने के लिये शिक्षा।

IPC 299, 304 A, 324, 326, 328: – विषद्रव्य को कीसी भी मार्ग से शरीर में प्रविष्ट करने पर शिक्षा।

IPC 302: शिशु वध (मानव वध के समान) हेतु.

IPC 304 A: गैर जिम्मेदाराना चिकित्सा करने पर लागु

IPC 304 B: Dowry Death,

IPC 309: आत्महत्या का प्रयत्न

IPC 312: स्त्री की सहमति से गर्भपात,

IPC 313: स्त्री की बिना सहमति गर्भपात

IPC 314: गर्भपात करते समय गर्भिणी की मृत्यु होने पर

IPC 315: गर्भ का जीवित पैदा होने से रोकने, गर्भ में ही मार दे या जन्मते ही मारने के उद्देश्य से गर्भपात करवाने पर।

IPC 316: गर्भस्थ शिशु के जीवनक्षम हो जाने पर उसका गर्भपात कराते समय गर्भिणी की मृत्यु होने पर (मानव वध का अपराधी मानकर)

IPC 318: मृत बालक गुप्तपणे विल्हेवाट लगाना।

IPC 319: Hurt,

IPC 320: Defines Grievous Injury **IPC 371:** जिवत बालक डाल देना।

IPC 375: बलात्कार की परिभाषा, **IPC 376:** बलात्कार हेतू सजा

IPC 376: या **497** - अगम्यागमन, **IPC 377:** अप्राकृतिक यौन अपराध में

IPC 354: शील भंग, **IPC 497:** जारकर्म/परस्त्रीगमन.

IPC 511: बलात्कार की कोशिश

विष पर्याय –

श्वेड, गर, गरल, गद, मूगरा, कलाकुल, कालकल्प.

* विष के संचय के प्रमुख स्थान – यकृत & वृक्क

may be accumlated in – त्वचा & वसा

* विषपान पश्चात व्यक्ती को निद्रा न आनेपर विष कार्य गती मन्द होती है।
* वर्षाऋतु में विष सर्वाधिक प्रभावी होता है।

अगस्त्य तारे का उगम होनेपर विष प्रभाव कम होता है।

गर्भ 210 दिन पूर्ण होने पश्चात गर्भपात – शिशुहत्या श्रेणी

* विसुचिका, मसुरीका, जलसंत्रास,death due to infection ,Kidney, Liver disease, Heat Stroke, Tetanus, मद्यविष परीणाम, अपतानक, शुषुम्नाशिर्ष में रक्तस्त्राव इ. में शरीर का तापमान प्रथम कम होकर 2 घंटे तक बढता है।

मरणोत्तर रंजन: **Cadveric Lividing / PM Staining**

Starts in 1 hr. & remain upto 4 -12 hr.

* After death 4 घंटे से रक्त जमता है।

1) प्राणवरोध से मृत्यु – दाग– निल, जम्बूवर्ण.

2) CO, HCN – Cherry red

3) KCL, Biaromate, nitrobenze, Aniline – (Brown)

4) Phosphorus – Blackish brown.

5) Morphine – Black

6) H_2S – Blue.

विसुचिका, ग्रंथिज्वर, मुत्राघात, प्राणावरोध में त्वचा के निचे अधिरक्तता होकर दाग गिरते है, ओर वह मृत्यु पश्चात रहते है।

उष्ण हवामान – Starts in 3 - 6 hr. complete within 2 - 3 hr.

शित – Starts in 3 - 6 hr. complete within 2 - 3 days.

Cadveric spasm / Instantaneous rigor: मरणोत्तर शीघ्र संकोच. मृत्युपूर्व संकोच होनेपर मृत्यु पश्चात relaxation न होकर स्नायु वैसेही संकोचावस्था में रहते है।

Secondary relaxation : यह Stimulation को response नहीं देते.

It is due to मायोसिन Decompostition.

कोथप्रक्रिया /**Putrification / Decomposition :-**

* It starts after rigor mortis.
* परंतु उष्ण हवा होनेपर यह क्रिया उसके पूर्व शुरू होती है।

a) Colour Change - Hot - 6 - 12 hrs.
Cold - 1 - 3 days. colour changes is green colour.

b) शैथील्य/श्यावत्व/द्रवीभवन : यह अवस्था 5 - 10 दिन में शुरू होती है।

c) Externally - हरा Colour. Internally - Blackish.

d) Putrification Process completed within 3 - 7 days.

स्त्रीयों में – गर्भाशय, पुरूषों में – अष्ठीला ...(सबसे आखरी Putrification)

* Start from - स्वरयंत्र & श्वासनलिका.

* तापमान – Putrification start at 50° F

अनुकुल तापमान – 70 - 110° F

* 120°F उपर ओर 32°F. के निचे कोथप्रक्रीया नहीं होती।

Summer में 24 hr. कुजता है। Winter में 7 - 8 days.

* तरूण/मध्य – जल्दी कोथ, बाल वृध्दं – देर से

नवप्रसूत स्त्री, मेदस्वी शरीर का प्रेत जल्दी कुजता है।

अपघात, शरीर जर–जर होनेपर मृत्यु, कुचला, Chloroform, Arsenic - देर से कुजता है। मद्यपान – जल्दी।

Mummification: शरीर के उतको एवं अन्तरांगो के निर्जलीभवन पर निर्भर है।

– आर्द्रतारहीत उच्च श्रेणी ताप & वायु – आदर्श परिस्थिती.

Arsenic & Antimony जीर्ण विषाकतता में भी शीघ्र Mummification होता है।

– ओष्ठ, नासा का अग्रभाग & हाथ पैर अंगुलीया first mummy.

– शव निस्तेज, मुरझाया, हुआ & श्यामवर्णी नजर आता है।

– साधारणत: गंधहीन होता है।

– खुले में फेले या रखे गये नवजात शिशु का शव शीघ्र mummy होता है।

– क्रिया पूर्ण होने में 3 - 4 महिने – 1 yrs. लगता है।

Saponification: - 5 - 15 days, (Mummification - 3 - 12 month)

* प्रमस्तिष्क मेरू – 15 hr. में Lactic acid सान्द्रता 15mg से बढकर 200mg% में & Amino acid सान्द्रता 1mg से बढकर 12 mg% तक हाती है।

फांसी 3 प्रकार:1) Complete,2) Incomplete-death with in 5-10 min 3)Typical - प्रलम्बन बिंदु ग्रीवा न होकर अनुकपाल का मध्य बिंदु होता है।

* Position of noose (गाठ) –

अगर गाठ वलयाकार उपस्थि पर होती है – Death few seconds

अगर गाठ कण्ठ,स्वरयंत्र,कण्ठास्थि पर हो तो Death in - 1 to 2 min

न्यायीक फांसी में 2nd & 3rd ग्रीवा कशेरूका टूटती है।

* Judicial hanging - श्वसनावरोध–1-2min

हृदयावरोध – After 15 - 20 min.

* **Cause of death:**

1) Asphyxia - In hanging death is mostly due is asphyxia,

2) Excessive Cerebral congestion / apoplexy -

3) Vasovagal shock - vagus nerve/ corotid sinus दबाव पडने पर।

4) Dislocation of vertebra - 2nd & 3rd cervical vertebra उनका सीधा दबाव सुषुम्नाशीर्ष (Medulla Oblagata) पर पडता है।

Post mortem – जहा पर गाठ रहती है उस पर विशेष रूप से "V" के आकार का अन्तर्गत चिन्ह अंकित हो जाता है।

Drawning - death in 10 - 20 min

पुर्णजलमग्नता होने के बाद सामान्यतया 4 - 8 min. में मृत्यु हो जाती है।

* लिचींग– हत्याजन्य फासी.

* विषस्वरूप = वायु स्वरूप तीव्र परिणाम, घनरूप सबसे कम परिणाम, स्निग्ध पदार्थ खाने पश्चात विष प्रभाव कम होता है।

* यकृत यह अवयव विष नष्ट करने का महत्वपुर्ण कार्य करता है।

विषद्रव्ये		अगद
फॉस्फरस	–	कॉपर सल्फेट
ॲलिडस	–	Mgo. Cao
Oxalic acid	–	चुन्याची निवली
Lead (नाग)	–	Sulphates of alkali
Iodine	–	Starch
Barbiturate, cyanide	–	पोटॅशियम परमॅगनेट
Anidopyrin, Antipyrin		
Pilocarpin	–	Atropine
Strichnine	–	Chloroform
OPP poisoning	–	Atropine

मांसमज्जागतसंधीपर कार्य करता है।...PAM

मद्य विषाक्तता चिकित्सा: Vit B_6 देने पर रसरक्त गत Alcohol को पाचन के लिये मदत होती है।

मरणोत्तर = Fatty liver & Haemorrhagic pancreas मिलता है।

दुषीविष = आमाशय मे जानेपर = Only कफरोग

पक्वाशयगत = वात पित्त रोग

संपूर्ण शरीर में = नेत्र व शरीर पर के लोम गिरते है।

विष – (9 र. त.) i) हालाहल ii) कालकूट ii) श्रृंगक iv) प्रदीपन v) सौराष्ट्रीक vi) ब्रम्हपूत्र vii) हारिद्रक viii) सक्तुक ix) वत्सनाभ.

वत्सनाभ – रसक्रिया व रसायन प्रयोग में सर्वोत्कृष्ट.

* कबुतर पे – अफू & खुरासनी ओवा No effect.

खरगोश – बेलाडोना & स्ट्रेमोनियम No effect.

Universal antidote: 2: 1: 1- Charcol, Magnesium chloride,Tanic acid .

विष उपद्रव– च. 4 - 1) मद 2) मुर्च्छा 3) विषाद 4) हृदयद्रव

अ. सं. –16 : 1) ज्वर 2) कास 3) वमन 4) श्वास 5) हिक्का 6) तृष्णा 7) अतिसार 8) मलावरोध 9) आनाह 10) बस्तीपीडा 11) शिर: शुल 12) शोथ 13) पुतिदंशत्व 14) रक्तस्त्राव 15) विषवात 16) मुर्च्छा.

Antidotes : यांत्रीक – रासायनिक – क्रियाविरूध्द.

रासायनिक:1) अम्लीय पदार्थ – क्षारीय पदार्थ

2) खनिजाम्ल – Magnesium carbonate.

3) Oxalic acid – Lime चुना

4) नाग – Sodium sulphate

5) रसकर्पुर – Albumine

6) दाहक क्षारीयविष – निम्बु/सिरका

क्रियाविरूध्द:

1) Atropine – Morphine / Pilocarpine

2) Strychnine – Bromides, Cloral hydrate

3) Digitalis – वत्सनाभ

4) Chloroform – Amyl nitrite

5) Datura – Pilocarpine

6) Morphine – Naloxone

7) Barbiturates – Picrotoxin

8) Acids – Milk

9) Phosphorous – Copper sultale

10) Arsenic – Ferric chloride

11) Copper sulfate – Pot. ferro cynide.

12) Aconite – Atropine

13) Arsenic, Gold, Mercury, Copper – Dimercaprol (BAL)

14) Lead – EDTA.

शारीर क्रिया

1) त्रिदोष वर्गीकरण -

i) धातूरुप (प्रसाद रुप) - साम्यावस्था - प्राकृत

ii) दोषरुप (मलरुप) - विषम , विकार उत्पत्ती कर

पुनः 2 भेद - i) प्राकृत (प्रकृती आरंभक) - शुक्रशोणितसे प्राप्त सप्तविध प्रकृति निर्माण करनेवाले

ii) विकृत - आहारसंभवज (जन्मोत्तर आहारद्वारा पोषीत रोगजनन के लिए हेतू. रसमल - कफः रक्तमल पित्तः अन्नमल- वात))

दोष (आश्रयी)	आश्रय
वात -	अस्थि
पित्त -	रक्त, स्वेद
कफ -	रस, मांस , मेद , मज्जा, शुक्र, मुत्र, पुरिष.

दोष विकृतिप्रकार - दोषवृध्दी व दोषक्षय - द्रव्यतः, गुणतःकर्मतः

दोष	कफ	पित्त	वात
अवस्था	बाल्यावस्था	मध्यमावस्था	वृध्दावस्था
दिन	6Am to 10 Am	10Am to 2 pm	2 pm to 6 pm
रात्र	6pm to 10 pm	10pm to 2Am	2 Am to 6 Am
भोजन	भोजन के बाद 1 1/2 hr.	भोजनके बादस से 3 hrs. तक	भोजनके बाद 3 से 4 hrs. तक

1) Cheif / Peptic / Zymogen cells: Secrete enzymes of gastric juice

2) Oxyntic / Pariental cells - Secrete H C L

3) Mucosa / Neck cells - Secrete mucus.

लसिका- शरीरन्तर्गत पिच्छलो द्रव -(चरक)

परारस्य जलस्य पिच्छिलो भाग - च .सु. 20/8

सुश्रुतत्वगन्तरे व्रणगतम उदक तत लसिका शब्द लभते । च. शा. 7

अस्य मल कफः- लसिका चा अं. सं.

लसिगाढ पूय लसिका । अं. सं.

लसिगित उदकम्।

लसाश्रयो जलप्राप्यो रसमलः। (अ.हृ. सु .12 /3)

रसाय - रस - सौम्य धातू , घन धातू ,मूलधातू ,परधातू ,धातूसार ,आहार रसाद, आहारतेज, अग्निसंभव, षड्सासव,असृककर ,रसात्मक ओज, आत्रैय रक्त: रसोदभव, तेजोभव, आग्नेय, असकृ, अस्त्र, शोणित, जीवशोणित,लोहित, रक्तम्, क्षतज, प्राणद ,आग्नेय, वशिष्ठ, मांसकारी

मांस - पिशितं, तरसं , मांस, पलल, क्रव्य .

मेद - गोद, गौतम, मांसज, मांसतेज,वपा ,वसा , मस्तुलिंग मस्तिष्क,अस्थिकृत.

अस्थि - मेदोज, मेदस्तेजः कीकस, कूल्य , देहधारक, मज्जकृत , भारद्वाज

मज्जा - विमज्जन,अस्थिस्नेह ,अस्थिसंभव ,शुक्रकर ,सार , कौशिक, विश्वमित्र. मज्जसमुद्भव, आनन्दप्रभव , अक्षय, निर्मल, शुक्ल, किट्टसविवर्जित,

शुक्र पुसत्व , धातुसार , धातुस्नेह, तेज, पौरूषम्, रेतस, वीर्यम्,

ओज बल, धारी, महत, सर्वधातू सार, सार, स्थिरांश, स्नेह, प्रसाद, रस, शोणितम , श्लेष्मा , दिप्ती, कांती.

तरक - रस, प्राकृत श्लेष्मा

शुक्र - परम तेज

शुक्रसार

शुक्रमल

भावप्रकाश

लेखक - भावमिश्र,16 शतक, **पिता** - लटकनमिश्र

ग्रंथ - भावप्रकाश - 3 खण्ड - पूर्वखण्ड, मध्यमखण्ड, उत्तरखण्ड

टिका- 1) सर्वनिघण्टूसर्वस्व - राधाकृष्णकृत

2) श्री रणवीरसिंह देवावलोकन सदवैद्य सिध्दान्त - रत्नाकरजयदेवकृत

3) दत्ताराम चौबे 4) लालचंद्र वैद्य - भावप्रकाश निघण्टूपर

हिंदी टीका -

i) पं.शिवशर्मा-शिवप्रकाशिका ii) विश्वनाथ व्दिवेदी iii) कृष्णचन्द्र चूणेकर

रचना- A) पूर्वखण्ड i) प्रथम भाग - आयुर्वेदावतरण, सृष्टीप्रकरण, गर्भप्रकरण, बालप्रकरण, दिन व ऋतुचर्या, मिश्रप्रकरण

b) व्दितीयभाग - मांसवर्गादि मानपरिभाषा, भेषजविधान, धात्वादि - शौधनमारण विधि, स्नेहपानविधि, पंचकर्मविधि,धूमपानादि विधि और रोगपरीक्षा वर्णन.

B) मध्यमखण्ड - 4 भाग

i) ज्वर से संग्रहणी ii) अर्श से वातरक्त

iii) शूल से भग्न iv) नाडीव्रण से बालरोग तक

C) उत्तरखण्ड - वाजीकरण, रसायन.

मौलिक सिध्दान्त-

1) सभी पंचमहाभुतोंके नाम 'व'अक्षरसे वियत, वायु,वन्हि, वारि, वसुंधरा

2) यकृत का स्पष्ट वर्णन 3) केदारकुल्या न्याय

4) अष्टबिंव्दात्मक और अग्निसोमिय व्दिरुपात्मक ओज

5) जीवन की स्थिती शुक्र, रक्त, पुरीषमें विशेषतासे

6) आठ मांगलिक द्रव्य 7) फिरंग का प्रथम वर्णन

8) फिरंग में सर्वप्रथम रसकर्पुर और चोपचिनी प्रयोग

9) रोगी परीक्षा में 8 स्थान की परीक्षा (नेत्र, मूत्र, नाडी, जिव्हा...)

10) सोमरोग, मूत्ररोग, शय्यामूत्र in separate अध्याय

11) अम्लपित्तवत श्लेष्मपित्त वर्णन

12) वातव्याधि की तरह पित्त व कफ व्याधियोंका स्वतंत्र वर्णन.

13) स्वस्थपुरुष के 14 लक्षण 14) गर्भरोधक योगवर्णन

15) वर्ण के अनुसार 4 भुमी

(ब्राह्मण - श्वेतभूमि, क्षत्रिय - रक्त, वैश्य - पीत, क्षुद्र - कृष्ण)

16) आर्तव - अष्टम धातु - रक्तधातुसे उत्पत्ती.

द्रव्य गुण में contribution - पारसिक यवानी, व्दिपान्तर वचा, भंगा, अहिफेन, पुदीना, दारुसिता, मार्कण्डिका, आदि वर्णन.

* चतुर्बीज, * धान्यपंचक, * चविकाफल = गजपिप्पली,

* सप्तजातिहरितकी, * अष्टवर्ग अभावद्रव्य वर्णन

कर्पुर, पुष्कर मुल, कस्तुरी के प्रकारोंका प्रथम उल्लेख

तगर - 2 प्रकार - i) तगर ii) पिण्डतगर

कर्पुर - 2 प्रकार - i) पक्व ii) अपक्व

कस्तुरी - 3 प्रकार - i) कामरुपी ii) नेपाली iii) काश्मिरी

करंज - 3 प्रकार - i) नक्तमाल ii) पूतिकरंज iii) कारंजी

कुङ् कुम - 3 प्रकार i) काश्मिरी (श्रेष्ठ) ii) बाल्हींक iii) पारसिक

अश्मंतक - कांचनार

पूर्वखण्ड भाग - 1 ऋतुः षोडषरात्रयः

स्त्रियों में नाडी वीर्यपात होनेपर फल

1) समीरणा - निष्फल 2) चान्द्रमासी - कन्यागर्भ 3) गौरी - पुत्रगर्भ

रजस्वलाः Ist day - चाण्डाली IInd day - ब्रहमघातिनी IIIrd day- रजकी

गर्भः संजायते नार्याः स जातो (जन्म के बाद) **बाल** उच्यते।

गुदवलीत्रय - प्रवाहिणी, उत्सर्जिनी, संवरणी

षड्विध आहार - भोज्यं भक्ष्यं चर्व्य लेह्यं चूष्यं पेयं

स्थुल कायशरीर में अग्निप्रमाण - यवमात्रा

ह्रस्वकाय में - तिलमात्र

कृमीकिटपतंगेष - केशप्रमाण

नाभर्वितस्तिमात्रम् च कंठदेशात षडंगुल्यम्।

उरः तद्विजानीयात् शेषं तु हृदयं मतम्।।

उरोरक्ताशय स्तस्मादधः श्लेष्माशयः स्मृतः।।

आमाशयस्त तदंधस्तदेधो दहनाशयः।

(रक्ताशय - हृदय, श्लेष्माशय - फुफ्फुसव्दय, दहनाशय - अग्न्याशय)

सुतिकापरिचर्या - 4 मास तक

स्तन्यप्रादुर्भाव - 3/4th night

अन्नप्राशन - 6/8th month

नासालोम उत्पाटनसे – दृष्टिदौर्बल्य

दिनचर्या में आदर्शावलोकन (mirror) -

मांगल्य, कांतीकर, पौष्टीक, बल्य, आयुष्य, पापलक्ष्मी विनाशन

कर्णपुरण - i) रसादीसे - भोजनात् प्राक् शस्यते

ii) तैलादीसे - भास्करे अस्तमुपागते

* शरीरे जायते नित्यं वाञ्च्छा नृणां चतुर्विधा।

बुभुक्षा च पिपासा च सुषुप्सा च रतिस्पृहा।।

भोजनपात्र 1) हेमपात्र- दोषहृत, दृष्टीप्रद

2) रौप्य - पित्तहृत,कफ वात कृत, चक्षुष्य

3) कांस्य - बुध्दीप्रद, रुच्य, रक्तपित्त प्रसाद

4) पित्तल - वात कृत, रुक्षमुष्णम् कृमीकफप्रणुत

5,6) लोह, काचपात्र -सिध्दि कारक, शोथ, पाण्डु, बल्य, उत्तम कामलाहर

7) शिला / मृत्पात्र - श्री निवारणम् (अलक्ष्मीकर)

8) दारुद्भवे - रुचिदं, श्लेष्माकारी

9) पत्रमयपात्र - रुच्य, दीपन, विषपापनुत

भोजनपुर्व Avoid मोचफल, कर्कटी

भोजन के बांद Avoid - बिसमृणाल, शालुक, कन्दइक्षु

खाने पर फिरसे खानेकी इच्छा करानेवाला भोजन - स्वादुभोजन

संध्या समय में वार्जित पंचकम - आहार, निद्रा, मैथुन, पाठन, अध्व

स्त्री वय विभाजन-

16 yrs - बाला - ग्रीष्म शरद में मैथुनार्थ.

32 yrs - युवा - शीतकाल में मैथुनार्थ.

50 yrs - प्रौढा - वर्षा - वसन्तमे मैथुनार्थ.

> 50 yrs वृध्दा

नित्य बाला सेवन - बलवर्धन

नित्य युवास्त्री सेवन - शक्ती क्षय

नित्य प्रौढा सेवन - वृध्दता प्राप्ती

सुर्योदयः - 8 प्रसृत जलपान– रोगमुक्ती,100 वर्षे आयु.

चिकित्सा के 7 अंग - रोगी,दूत,भिषक,दीर्घाय, द्रव्य,सुसेवक,सदौषध.

द्रव्य (अभाव में) - प्रतिनिधी द्रव्यः

चित्रक - दन्तीमुल / अपामार्गक्षार

धन्वयास - दुरालभा

तगर - कुष्ठ

मुर्वा - जिड्गिनी त्वक

अहिंस्त्रा - मानकन्द

लक्ष्मणा - नीलकंठशिखा (मयुर शिखा)

बकुल - उत्पल

नीलोत्पल - कुमुद

जातीपुष्प - लवंग

अर्कक्षीर - अर्कपत्ररस

पुष्करमुल - कुष्ठ

लांगली - स्थौणेयक

चविका / गजपिप्ली - पिप्पलीमुल

सोमराजी - प्रपुन्नाट फल (चक्र मर्द)

दारुनिशा - निशा

रसांजन - दारूहरिद्रा

तालीसपत्र - स्वर्णताली

भारंगी - तालीस - कंटकारीजटा

रुचकलवण - पांशु

मधुयष्टी - धातकी

अम्लवेतस - चुक्र

द्राक्षा - काश्मरी फल

द्राक्षा, काश्मरी फल - बन्धूक कुसुम

नख - लवंगकुसुम

कस्तुरी - कंकोल

कंकोल - जातीपुष्प

कर्पुर - सुगंधिमुस्तक/ग्रंथिपर्ण

कुड्.कुम - कुसुम्भ कुसुम

श्रीखण्ड (श्वेतचंदन) - कर्पुर

श्वेतचंदन, कर्पुर - रक्तचंदन

रक्तचंदन - नव उशीर

अतिविषा - मुस्ता

आमलकी - हरितकी

नागकेशर - चद्रमकेशर

मेदा जीवक काकोली ऋध्दी व्दंव्देऽपि वाऽसति।

वरी विदार्थश्वगन्धा वाराहीश्च क्रमात् क्षिपेत्।।

वाराहकंद - चर्म

भल्लातक - रक्तच

इक्षु - नल

सुवर्ण - स्वर्णमाक्षि

माक्षिक - स्वर्णमा

सुवर्णभस्म - रौप

कान्तभस्म - तीक्ष

मौक्तिक - मुक्ताश्

मधु - जीर्णगुड

मत्स्याण्डीका -

सिता - खण्डशर्व

क्षीर - मुद्ग / म

ग्रंथिकोटरसंयुक्त

कुल वर्ग Ist part

1) हरितक्यादि

4) पुष्पवर्ग

7) धातूपधातू रस

8) धान्यवर्ग

IInd Part

1) मांस वर्ग

4) दुग्धवर्ग

7) नवनीतवर्ग

10) सन्धानवर्ग

13) अनेकार्थ नाम

जीवनीय गण - 12

अष्टवर्ग + जीवन्ती

पूर्वखण्ड भाग 2

1) नस्य - मृदुपाक

घी, तैल,गुड पुराण

आसव तथा अरिष्ट

बिना पकाए हुए इ

शीतरस सीधु और

विशेष को पक्करस

शालिषष्टिकादि अ

मद्यन्तु सीधुमैरेयमि

कादबरी वारुणी च

पेय यन्मादकं लोकै

मधु शीत लघु स्वा

मधु, शर्करा, गुड,

मानपरिभाषा - माग

तथा कालिंगमान व

परिपक्वान्नसन्धानात्

सुराके उपर का पत

दारुहरिद्रा - चर्मकारकंद

रक्तलोतक - रक्तचंदन, चित्रक

नल

स्वर्णमाक्षिक

स्वर्णगैरिक

सेवक,सदोष

रौप्यभस्म - कांतभस्म

तीक्ष्णलोहभस्म

मुक्ताशुक्ति

जीर्णगुड

सितशर्करा

खण्डशर्करा

मुद्ग / मसुर रस:

गोक्षीरकोटरसंयुक्तं चंदन श्रेष्ठमुच्यते।

वर्ग I st part

1) हरीतक्यादि 2) कर्पुरादी 3) गुडूच्यादि

4) पुष्पवर्ग 5) वटादि 6) फलवर्ग

7) धातूपधातू रसोपरस रत्नोपरत्न विषोपविषवर्ग

8) धान्यवर्ग 9) शाकवर्ग

II Part

1) मांस वर्ग 2) कृतान्नवर्ग 3) वारिवर्ग

4) दुग्धवर्ग 5) दधिवर्ग 6) तक्रवर्ण

7) नवनीतवर्ग 8) मुत्रवर्ग 9) जैलवर्ग

10) सन्धानवर्ग 11) मधुवर्ग 12) ईक्षुवर्ग

13) अनेकार्थ नामवर्ग ..... मानपरिषादि

जीवनीय गण - 12 द्रव्ये

ऋषभ + जीवन्ती + यष्टीमधु + मुद्गपर्णी + माषपर्णी

पूर्वखण्ड भाग 2 त्रिविध स्नेहपाक-

1) नस्य - मृदुपाक 2) सभी कार्य - मध्यम 3) अभ्यङ्ग - खरपाक

घी, तैल,गुड पुराण होने से विशेष गुणकारी होते हैं।

आसव तथा अरिष्ट की मात्रा 1 पल (4 तोला) होती है।

पकाए हुए इक्षुरसादि मधुर द्रव पदार्थ से बने हुए मद्यविशेष को शीतरस सीधु और पकाए हुए इक्षुरसादि मधुर द्रव पदार्थ से बने हुए मद्य विशेष को पक्करस सीधु कहते हैं।

शालिषष्टिकादि अन्न का सन्धान करने से प्राप्त मद्यविशेष - सुरा

सीधुर्मैरेयमिरा च मदिरा सुरा।

मधुरी वारुणी च हात्यपि बल वल्लभा।

यन्मादकं लोकैस्तन्मद्यमधीयते।। मद्याचे पर्याय

शीत लघु स्वादु रुक्ष ग्राहि विलेखनम्।।

शर्करा, गुड, 1 साल पुराना - पुराण

मागधपरिभाषा - मागधमान का कर्ष / 1 तोला (12 माशे) के बराबर

कालिंगमान की 1 कर्ष (10 माशे) 1 रुपये भर का होता है।

धान्यकान्नसन्धानात् समुत्पन्नां सुरां जगुः।

सुराके उपर का पतला द्रव - समुत्पन्नां सुरां जगुः।

सुराके उपर का पतला द्रव - सुरामण्ड / प्रसन्ना।

घन - कादम्बरी, इसके नीचे का भाग - जगल, जगलसे घन - मेदक

हृत्सार नीचे का भाग - सुराबीज / किण्व

धातूनां शोधन मारणविधि:

शुध्द सुवर्ण सेवन से - बलवीर्यहरण, रोगकर, असौख्यकर, मरणम्

अशुध्द तार सेवन से - ताप, विबन्ध, वीर्यबलक्षय, देहपुष्टीहरण

अशुध्दताम्र लक्षण - कृष्णं रुक्षं अतिस्वच्छं श्वेनं चापि घनासहम्।

लोह नागयुतं.....

धातू - सुवर्ण, रजत, ताम्र, वंग, जशद, नाग, लोह

उपधातू - सुवर्णमाक्षिक,ताम्राक्षिक, तुत्थ, कांस्य ,रीति, सिंदूर, शिलाजीत

उपरस - हिंगुल, गन्धक, अभ्रक, हरताल, मनाशिला, खर्परादि अशुध्द

हरताल वात कफ कर मेहकाक तापस्फोटे अंग संकुचित करनेवाला, आयुनाशक है ।

रत्न: अशुध्द वज्ररत्नदोष कुष्ठ, पार्श्वव्यथा, पाण्डुत्व; पंगुलत्व

विषोपविष - वत्सनाभ - विष प्राणहर प्रोक्त व्यवायी च विकाशी च।

आग्नेयं वातकफहद्योगवाहि मदावहम्।।

उपविष - अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लांगली करवीरक:।

गुंजाहिफेनो धत्तूर: सप्तोपविष जातय:।।

16 मास के अंदर तक का पकाया हुआ तेल उत्तरोत्तर अधिक गुणकारी होता है, बाद में नही (घृत 12 मासतक)

स्नेहपान विधी - दीप्त अग्निवाले पुरुषो के लिए स्नेहपान मात्रा 1 पल, मध्यमाग्नि - 3 कर्ष, हीनाग्नि 2 कर्ष

पंचकर्म - वमन, विरेचन, अनुवासन, निरुह, नस्य -

वमन के लिए क्वाथ पिलाने की जेष्ठा मात्रा 9 प्रस्थ, मध्यमात्रा 6 प्रस्थ, कनिष्ठा 3 प्रस्थ होती है। वमन उपयुक्त कल्क-चुर्ण-अवलेह की उत्तममात्रा 3 पल, मध्यम 2 पल, कनीय 1 पल.

बस्ति देने के लिए जो स्नेह हो उसमें सौंफ तथा सैन्धव का चूर्ण डालना चाहिए और उसकी मात्रा 6 माशेकी उत्तर, 4 माशेकी मध्यम, 2 माशेकी हीन समझना चाहिए।

निरुहबस्ति की सव्वाप्रस्थ मात्रा श्रेष्ठ, 1 प्रस्थ मात्रा मध्यम, 3 कुडव की मात्रा निकृष्ट समझनी चाहिए।

प्रतिमर्ष नस्य के 14 समय बताए हैं।

धूमपान - 6 प्रकार - शमन, बृंहण, रेचन, कासघ्न, वामन, व्रणधूपन

गण्डुषकवल - गण्डुष - 4 भेद - स्नेहन, शमन, शोधन, रोपण

गण्डुष के लिए द्रवपदार्थ में डालने के लिए चूर्णमात्रा 1 कोल (3 माशा) तथा कवल लेना हो तो उसमें कल्क की मात्रा 1 कर्ष होनी चाहिए।

स्वेद 4 - ताप, उष्म, उपनाह, द्रवस्वेद

मूर्धतेल 4 - अभ्यंग, परिषेक, पिचु, बस्ति

लेपके 4 नाम - आलेप, लेप, लेपन, लिप्तक

लेपके 2 भेद - आलेप, प्रदेह, 3 भेद - दोषघ्न, वर्ण्य, विषघ्न

शोणितास्त्रावण - रोगानुसार प्रस्थ / प्रस्थार्थ / प्रस्थार्धार्ध रक्त मात्रा 16 ते 70 वर्ष में करे।

नेत्रकल्प 7 - सेक आश्च्योतन पिण्डि विडाल तर्पण पुटपाक अंजन

मध्यखण्ड

Ist Part **ज्वराधिकार** : अंतर्गत आम लक्षण, साम - निराम वात - पित्त और कफ लक्षणोंका संदर्भ

त्रयोदश सन्निपात - 1) विस्फारक (वातोल्वण) 2) आशुकारी (पित्तोल्बण) 3) कम्पन (कफोल्बण) 4) बभ्र (वात पित्त) 5) शीघ्रकारी (वात कफ) 6) भल्लु (वात पित्त) 7) फूटपालक (सर्वदोषोल्बण) 8) संमोहक 9) पाकल 10) याम्य 11) क्रकच 12) कर्फटक 13) वैदारिक

नहि जीवति अहोरात्रम् - शीघ्रकारी, शीर्णदन्तश्च मृत्युश्च - याम्य

मन्यास्तम्भेन मृत्यु:- क्रकच, त्रिरात्रातपरमेतस्य व्यर्थमौषधकल्पनम-वैदारिक

again different 13 सन्निपातिक ज्वरप्रकार-शीतांग, तंद्रिकादि

धातुपाक लक्षण:-

निद्रानाशो हृदि स्तम्भो विष्टम्भ गौरवारुची।
अरतिर्बलहानिश्च धातुनां पाकलक्षणम्।।
स बाहयमानो हृदि नाभिदेशे गात्रेषु वा पाक रुजान्वितेषु।
पीडाज्वरार्तोडड्.गुलिभिश्च गच्छेत....।
नाभेरुर्ध्व हृदोऽधस्तात्पीडिते चेद् व्यथा भवेत।।

मलपाक लक्षण- दोषप्रकृतिवैकृत्यं लघुता ज्वरदेहयो:।
इन्द्रियाणाश्चवैमल्यं मलानां पाकलक्षणभ्।।

सन्निपात मोक्ष / वध काल -7, 14, 9, 11 दिवस

वालुकास्वेद वर्णन वात कफ जवरमें।

दुर्जल जनित ज्वर चिकित्सा. का वर्णन

IInd Part जठराग्नि विकाराऽधिकार -

भस्मक,अजीर्ण (4), विसूचिका, अलसक, विलम्बिका

श्लेष्मपित्त लक्षण- तमो मुर्च्छारुचिश्च्छर्दिरालस्यं च शिरोरुजा।
प्रसेको मुखमाधुर्य श्लेष्मपित्तस्य लक्षणम्।।

क्षयरोगाधिकार -

यक्ष्मा Means वैद्यो व्याधिमता यस्मात् व्याधेर्यन्तेन यक्ष्यते।।

वातव्याधि अधिकार - जृंभा, प्रलाप, रसाज्ञान, त्वकशून्यता, मुहूर्मुत्र मुत्रनिग्रह आदि लक्षण और चिकित्सा वर्णन,

रसोनकल्क - वातरोग और सभी ज्वर में.

वातव्याधि कि तरह पित्त और श्लेष्म व्याधियोंका निदान और व्याधीयों का अलग अधिकारोंमें वर्णन

IIIrd Part- प्लीहा - यकृत अधिकार

IVth Part -

लिंगार्श - अधिकार - अंकुरैरिव संजातैरुपर्युपरि संस्थितै:।
क्रमेण जायते वर्तिस्ताम्रचुडशिखोपमा, कोशस्याभ्यंतरे .....।
त्रिदोषज और दुश्चिकित्स्य

फिरंग रोगाधिकार - फिरंग - गंधरोग - आगन्तुजा

फिरंगसज्ञकं रोगं रस: कर्पूरसंज्ञक:।

मसूरिका अधिकार - वात पित्त कफ त्रिदोषज रक्त, सप्तधातुगत अवस्था का वर्णन

हेतु - दुषित पवन, उदक

पूर्वरुप - ज्वर: कण्डूगात्रभंगोऽरतिर्भ्रम:।
त्वचि शोथ: सर्ववर्ण्यो नेत्ररोग तथैव च ।

1) वात कठिन, चिरपाकी,

2) पित्त सन्ध्यस्थिपर्व भेद कास कंप अरति भ्रम, तालु ओष्ठ जिव्हा शोष

3) त्रिदोषजनिला, चिपिट - विस्तिर्ण मध्यनिम्न महारुजा पूतिस्त्राव चिरपाकी

तोयबुद्बुद्सन्निभा - त्वकृगत मसूरिका

मण्डलाकारा मृदंवा मृदव: किंचित उन्नता - घोरज्वरपरिता स्थुला स्निग्ध सवेदना - संमोह अरति संताप - मेदोगत मसूरिका

भ्रमरेणेव विध्दानि कुर्वति अस्थिनी सर्वत: अस्थि - मज्जागत मसूरिका

उन्मादसमन्विता - जीवन न तु दृश्चते - शुक्रगत मसूरिका

चर्मसंस्थित पिडका - दुश्चिकित्स्या

रोमांत्या:- कफ पित्त, कास - अरोचकसंयुक्ता, With Fever

साध्य - त्वक, रक्तगत, पित्त, कफ , कफ पित्त

कष्टसाध्य - वातज वात पित्त, वात कफ

असाध्य - लोहजालसम / , अतसीफलसन्निभा

शीतला अधिकार (मसूरिका भेद:)

- मसूरिका + शीतलादेवी - 7 प्रकार - शीतलास्तोत्र

11 शिरोरोग, 78 नेत्ररोग (2 Extra than सुश्रुत पक्ष्मगत)

(पक्ष्मकोप not in वत्मर्गत)

4 नेत्रगतपटल, वर्त्मगत Newly added कुंचन

जन्तुग्रंथी - क्रिमीग्रंथी (संधिगत), 34 नासारोग, 28 कर्णरोग, मुखरोग 67, दन्तमुलगत 16, कण्ठगत 18, (दन्तविद्रधी, अधिजिव्हा)

आमयुक्त नेत्र के लक्षण - उदीर्णवेदनं नेत्रे रोगोद्रेकसमन्वितम्।
घर्षनिस्तोद शूलाश्रुयुक्तमामान्वितं विदु:।।

निराम नेत्र लक्षण - मन्दवेदनता कण्डुसंरम्भाश्रुप्रशान्तता।
प्रसन्नवर्णता चाक्ष्णोर्निरामेक्षणलक्षणम्।।

शुध्दार्तव लक्षण - मासिन्निष्पिच्छदाहार्ति पंचरात्रानुबन्धि च।
नैवातिबहु नात्यल्पमार्तव शुध्दमादिशेत्।।

भावप्रकाश उत्तरखण्ड

वाजीकरण - पहले वर्णित फिर रसायनाधिकार

वाजीकरणाधिकार - सप्तबिध क्लैब्य, क्लीब: स्यात् सुरताशक्त: तद्भाव क्लैब्य उच्यते।

1) मानस	2) पित्तज	3) शुक्रक्षयजन्य
4) मेढरोगजन्य	5) शिराच्छेदजन्य	6) शुक्रस्तम्भनजन्य

7) सहज क्लैब्य.

16 - 70 वर्षोतक वाजीकरण सेवन करने योग्य वय

रसायनाधिकार - यज्जराव्याधिदिध्वंसि वय:स्नम्भकरं तथा।
चक्षुष्यं बृंहण वृष्यं भेषजं तद्रसायनम् ।।

ALL THE BEST

SECTION II - MODERN ANATOMY

Osteology: (अस्थिविज्ञान)
Bones: The total number of bones- 206
Vertebrae - 33(कशेरूका)
Ribs - 24 (पर्शूका)
Sternum - 1 (उरोस्थि)
Skull Bones - 22
Bones of upper limb - 64
Bones of lower limb - 62
Vertebral column/spine - (length 28 Inch in male)
(24 Inch in female)
Vertebrae- 33

Types	Number	Spinal Nerves 31 pairs
Cervical (ग्रीवा)	7	8
Thoracic (वक्षिय)	12	12
Lumbar (कटि)	5	5
Sacral (त्रिक)	5	5
Coccygeal (अनुत्रिक)	4	1

5 sacral and 4 coccygeal are immovable vertebrae. (स्थिर /अयथार्थ कशेरूका)
Cervical vertebrae :- Body(गात्र) small
Typical vertebrae(सर्व साधारण ग्रीवा कशेरूका) :-
3rd , 4th , 5th , 6th
Atypical vertebrae (विशिष्ट ग्रीवा कशेरूका) - 1st , 2nd , 7th
Typical vertebrae:- Foramina transversaria present on transverse process. (अनुप्रस्थ रंध्रे)
Spine(कंटकप्रवर्धन) Small and bifid.
Attachement- Ligamentum Nuchae. (मन्याबंध)
Atypical cervical vertebrae:-
First cervical vertebrae - Atlas (चुडावलय/शीर्षधर)
i) No spine (कंटकप्रवर्धन)
ii) No body (गात्र)
Second cervical vertebrae - Axis(अक्षक)
Odontoid process is present on body
(दृढ दंडाकृती प्रवर्धन)
Disc prolapse is common in C_5 - C_7 & lower lumber region
Seventh cervical vertebrae:
Vertebra prominence - (प्रमुख कशेरूका)
Spine is palpebal, not bifid end in tubercle (गुलीका)
Thoracic Vertebra (वक्षिय कशेरूका)
Typical vertebra - 2nd to 8th
i) Costal facets present on lateral Surface of body. (पर्शुकीय संधानक पृष्ठे)
ii) Body is heart shaped.
Atypical vertebrae: **First vertebra –**
i) Body is not heart shaped but as like cervical vertebrae.
ii) Spine is long, straight and horizontal.
iii) Superior-vertebral notch are well marked as in cervical vertebrae.
Ninth thoracic vertebra:- Inferior costal facet (अधो पर्शुकीय संधानक पृष्ठ):- Absent
Tenth thoracic vertebra:-
Single complete superior costal facet.
Eleventh thoracic vertebra -
Small transverse process and it has no articular facet.
Lumbar vertebrae:- (कटी कशेरूका)
Body - Large (Largest body in all vertebrae)
Triangular vertebral foramen (कशेरूका रंध्र)
In the vertebral foramen of First lumbar vertebrae conus medullaris (सुषुम्नामूलीका) while in 2nd to 5th cauda equina (तुरूंगपुच्छ) is present.
Fifth lumbar vertebra :
Spine is short and round at the end.
Ribs (पर्शुका)- 24 (12 pairs)
First seventh ribs are connected through their cartilage to sternum are called true ribs (vertebrosternal).
Remaining 5 are false ribs, out of which 8, 9, 10 are vertebra chondral, while 11 & 12 floating ribs (vertebral)
Typical ribs - 3rd to 9th
Atypical ribs - 1st, 2nd , 10th , 11th , 12th
The length of 2nd rib is twice that of first.
10th rib - Shorter and only single facet on the head.
11 and 12th - They have pointed ends.
The neck and tubercle are absent.
Maximum length - 7th rib
Maximum Oblique: (तिर्यक) - 9th rib
Paracentesis thoracis is usually done in 6th intercostals space.
Skull Bones:- 22
Bones of calvaria (करोटी घुमट) or Brain case (मस्तिष्क पेटी)- 8 - Parital (पार्श्वकपालास्थि) & Temporal (पार्श्वकपालास्थि) - Paired.
Frontal, (ललाटास्थि) Occipital (पश्चकपालास्थि), Sphenoid (जतुकास्थि), Ethmoid (झर्झरास्थि), Unpaired (1 Each)
Facial skeleton - 14
Maxilla, (उर्ध्वहन्वास्थि) Zygomatic (गंडास्थि), Nasal (नासास्थि), Lacrimal(अश्रुअस्थि), Inferior Nasal Conchai (अधोनासाशुक्तिकास्थि), Palatine (तालवास्थि) - Paired (2 Each)
Vomer (सिरीकास्थि/हलास्थि) & Mandible (अधोहन्वास्थि) - Unpaired (1 Each)
Joints (संधि विज्ञान) (Mainly 3 types)
i) Synarthroses(अचल), ii) Amphiarthroses (अल्पचल) iii) Diarthroses(बहुचल)
i)Synarthroses – a) Sutures (तुन्नसेवनी), b) Gamphosis (दशनोलुखल) and c) Synchondroses (उपास्थि संधी)
ii)Amphiarthroses - a) Symphysis(सामुद्ग), b) Plane (प्रतर) and c) Syndesmosis(तंतूसंधी)
iii)Diarthroses- a) Ball and socket (उदुखल) b) Condyloid (खल्लकोर) c) Saddle (परस्परकोर) d)Trochoid(चक्रकोर) e) Gingymus / Hinge (सदंशकोर)
Examples of joint :
Plane - Tibiofibular joint
Ellipsoid - Wrist joint(मणिबंध)

Hinge - Elbow (कुर्पर), Ankle (गुल्फ), Interphalangeal joint, Knee(जानु)

Saddle - Calcanio cuboid joint, First carpometacarpal joint, in between malleus and Incus.

Condyloid- Metacarpo phalangeal joint, Temporomandibular joint.

Ball and socket –

Hip (वंक्षण), Shoulder (अंससंधि) Talocalcanio navicular joint, Joint between incus and stapes.

Foramens - Structures passing through them

A) **Norma Verticalis -Parital foramen** (पार्श्व रंध्र) - Transmit an emissary vein from sup. Sagital sinus.

B)**Norma Occipitalis-Mastoid foramen** (कर्णमूल रंध्र) Transmit an emissary vein (उदरगत शिरा) and meningeal branch of occipital artery (पश्चकपाल धमनी की आवरणानुगा शाखा)

C) Norma Frontalis

1) Supra and Infra orbital foramen transmit supra and infraorbital nerve and vessels.

2) Zygomatico facial foramen(गन्डानन रंध्र) - Transmits zygomatic nerve, facial branch of maxillary nerve.

3) Mental foramen (चिबुक रंध्र):- Transmit mental nerve and vessels.

D) Norma Lateralis:-

1) **Tympanomastoid fissure** (कर्णमुल विदर)-Transmits the auricular branch of vagus nerve (प्राणदा चेतनी)

2) **Mastoid foramen** (कर्णमुल रंध्र) - Transmits an emissary vein and meningeal branch (आवरणानुगा शाखा) of occipital artery (पश्चकपाल धमनी)

E) Norma Basalis:-

1) Greater Palatine Foramen (बृहत तालुरंध्रे) - transmits anterior palatine nerve (पुर्व तालिय चेतनी)

2) Lesser Palatine Foramen (लघु तालु रंध्र):- Transmits middle and posterior palatine nerve (मध्य व पश्च तालू चेतन्या)

3) Foramena Ovale (अंडाकार रंध्र) :- Transmits mandibular and lesser petrosal nerve (अधोहनु व लघु अश्म चेतन्या), Accessory meningeal artery(सहाय्यक मस्तिष्कावरण धमनी)

4) Foramen Spinosum (कंटक रंध्र):- Transmits, middle meningeal artery(मध्य मस्तिष्कावरण धमनी) , meningeal branch of mandibular nerve (अधोहनु चेतनी की मस्तिष्कावरण शाखा)

5) Foramen Lacerum:- Transmits meningeal branch of ascending pharyngeal artery (आरोही ग्रसनीका धमनी की मस्तीष्कावरण शाखा)

6) Foramen Magnum (महाविवर):- Transmits lower part of medulla (सुषुम्ना शीर्ष), meninges (मस्तिष्कावरण) spinal accessory nerve and membrane tenctoria. (ग्रीवा पृष्ठीका चेतनी)

7) Jugular Foramen (ग्रीवा रंध्र) :- Transmits 9th, 10th, 11th cranial nerve (शीर्षणी चेतन्या) , Internal jugular vein (अनुमन्या शिरा), meningeal branch of occipital artery (पश्चकपाल धमनी) and Ascending pharyngeal artery (अन्नद्वारिणी उर्ध्वगा धमनी), and Inferior petrosal sinus. (अधोअश्म सिराकुल्या)

8) Stylomastoid Foramen (शिफा कर्णमुल रंध्र/शरकर्णमुल रंध्र)- Transmits facial nerve (वक्त्र चेतनी) & post. Auricular artery (पश्चिम कर्णिकी धमनी).

9) Foramen Rotundum (वर्तुळ रंध्र): - Transmits maxillary nerve (उर्ध्वहनू चेतनी)

10) Foramen of Monro:- Opening of lateral ventricle to 3rd ventricle.

11) Foramen of Magendie:- It is median aperture in the roof of 4th ventricle.

12) Foramen of Luschka:- Opening of lateral recesses of 4th ventricle.

13) Epiploic Foramen:- (Foramen of Winslow) It is communication between greater and lesser sacs of peritoneal cavity.

14) Foramen of Scarpa - Incisor foramen in mouth

15) Foramen of Langer-

A foramen in the axillary fascia.

Hyoid Bone (कण्ठास्थि) :- It is 'U' shaped bone, does not articulate any other bone.

Position- At midline of the neck between chin and thyroid cartilage.

Parts - Body, greater cornua and lesser cornua.

Applied :- Fracture of hyoid bone strongly indicate throttling or strangulation.

Clavicle (अक्षकास्थि) :- It ossifies in membrane and subcutaneous throughout. It is long bone that lies horizontally. Ossification starts first in scapula but clavicle is ossify first. In female it is called as beauty bone. Shaft is convex forwards in its medial ⅔ and concave forward in its lateral ⅓.

Lat ⅓ of shaft:- i) Anterior border (पूर्व धारा) gives origin (उगम) to deltoid (अंसच्छदा)

ii) Post border gives insertion to trapezius (पृष्ठच्छदा)

Medial ⅔ of shaft:- i) Ant surface gives origin to pectoralis major (उरच्छदा गुर्वी बृहती)

ii) Subclavius (अक्षकाधरा) is inserted into and subclavius groove. Nutrient foramen transmit branch of suprascapular artery. As commonly fractured due to falling outstretched hand.

Common site - Junction between two curvature.

Treatment - '8' shaped bandage.

Scapula (अंसफलक/स्कंदास्थि):

Scapula has 2 surface, 3 borders, 3 angles & 3 process (2 S & 3 BAP)

2 Surface - 1) Costal Surface(पर्शुकीय/पुर्व पृष्ठ)
2) Dorsal Surface(पश्चिम पृष्ठ)

3 Angle- i) Superior (उर्ध्वकोन) -Covered by trapezius.
ii) Inferior (अधकोन) - Covered by lattisimus dorsi
iii) Lateral (पार्श्वकोन) - Bears Glenoid Cavity.

3 Process - i) Spinus process (अंसप्राचीरक)
ii) Acromian process (अंसकूट)
iii) Coracoid Process (अंसतुण्ड)

Attachment :- Sub scapularis (अंसान्तरिका पेशी) arise

from medial ⅔ of subscapular fossa.
ii) Serratus anterior (अस्त्रिरा अग्रीमा पेशी) is inserted along the medial border of costal surface.
iii) Supraspinatus (अंसपृष्ठीका उत्तरा) arise from medial ⅔ of supraspinous fossa.
iv) Pectoralis minor (उरच्छदा लाघवी) is inserted on medial border of superior surface of coracoid process.
v) Infraspinatus (अंसपृष्ठीका अधरा) from infraspinatus fossa.
vi) Deltoid (अंसच्छदा)- Arises from lower border of spine and lateral border of acromian
vii) Trapezius (पृष्ठच्छदा)is inserted into upper border of spine.
viii) Coracobrachialis arises from medial part of tip of coracoid process.
ix) Teres minor (लघु असंधारिका पेशी) - Arise from ⅔ of dorsal surface of lateral border.
x)Teres major (बृहत अंसधारिका) - Arise from lower ⅓ of dorsal surface of lateral border.
Ossification centre- 1 primary and 7 secondary.
Applied:- i) Paralysis of serratus anterior causes winging of scapula.
ii) If in the development, medial border is concave, then it is called scaphoid (नौकाभ अंसफलाकास्थि)

Humerus (प्रगण्डास्थि/बाहुनलक) :

The line separating head from rest of upper end called anatomical neck (शारीर ग्रीवा).
The line separating upper end of humerus and shaft is called surgical neck (शल्य ग्रीवा).
Lessar tubercle (लघुपिण्डक) - Elevation on the ant aspect of upper end gives insertion to subscapularis (अंसान्तरिका)
Greater Tubercle (महापिण्डक) - Lateral part of upper end gives insertion to supraspinatus, infraspinatus and teres minor. Inter tubercular sulcus-insertion of latissimus dorsi (कटीपार्श्वच्छदा)
Shaft: Medial lip of intertubercular sulcus
i) Insertion of teres major.
ii) Lat lip of intertubercular sulcus - Pectoralis major.
iii) In the middle of ant border, deltoid tuberosity gives insertion to deltoid.
iv) On lateral border, supra - condylar ridge- gives origin to brachioradialis and extensor carpi radialis.
v) Brachialis (कर्पुरद्धारिका) Arises from lower halves of anteromedial and ant. Lateral surface.
vi) Coracobrachialis (काकोष्ठीका) - is inserted into trough area on the medial border.
Lower End:
1) Capitulum (कदली/मुण्डक) -Rounded projection which articulates with the head of radius.
2) Trochlea (डमरूक/चक्रक) -is pully shaped surface articulates with trochlear notch of ulna.
Three Fossa -1) Coronoid Fossa (चंचूप्रवर्धान स्वात)
2) Radial fossa (बहिप्रकोष्ठीय स्वात)
3) Olecranon fossa (कूर्पर स्वात)

Liable to Injury - Axillary nerve at surgical neck, Radial nerve at radial groove and ulnar nerve behind medial epicondyle.
Applied - Supracondylar fracture common in young age.Fall on outstretched hand, this fracture may cause injury to median nerve, which may lead to Volkman's ischamic contracture and myositis ossificans.
The head of humerus commonly dislocate inferiorly.
Flexor carpi radialis (मणिबंध संकोचनी बहिस्था), Palmaris longus (करतल प्रसारणी/उत्तान करतलगा), Flexor carpi ulnaris (मणिबंध संकोचनी अंतस्था) and Humeral head of flexor digitorum superficialis arise from common flexor origin i.e. medial epicondyle of humerus.
Extensor carpi radialis longus(मणिबंध प्रसारणि बहिस्था दिर्घा), Extensor digitorum (अंगुली प्रसारणी साधारणी), extensor digiti minimi (कनिष्ठा प्रसारणी)Ext. carpiradials brevis (मणिबंध प्रसारणी बहिस्था दकहस्वा) takes origin from the tip of lateral epicondyle of humerus i.e. common extensor origin. Paralysis of extensor muscles of forearm produce wrist drop.

Radius - (बहि:प्रकोष्ठास्थि)

The head and neck are free from capsular attachment & can rotate freely within the socket. Quadrate ligament is attached to medial part of neck. Nutrient artery of radius is a branch of anterior interosseus artery.
Applied Anatomy:-
1) Radius is commonly fractures about 2 cm above its lower end. (Colle's fracture) caused due to fall on outstretched hand. Common complication of colles fractures malunion.
2) Smith's fracture/ Burton's fracture: Reverse of colle's fracture produced by fall on dorsum of palmar flexed hand.
3) Simian/Ape hand- Median nerve palsy.

Ulna (अंत:प्रकोष्ठास्थि):- (लम्बाई संपूर्ण शरीर के 1/6):-

It is stabilizing bone of forearm.
The upper end presents olecranon (कूर्पर), coronoid process (चंचू प्रवर्धन), trochlear(डमरूक) and radial notch (बहिप्रकोष्ठीय स्वात).
1) Olecranon process- Sup. Surface- Insertion of Tricep (त्रिशिरस्का) -Post. Surface- insertion of Aconeus (कूर्परपृष्ठिका).
2) Coronoid process-Ant-surface- Insertion of brachialis (कूर्पर द्वारिका) on tubercle (गुलीका) -Flexor digitorum superficial (अंगुली संकोचिनी मध्यपर्विका) - origin, Margin of tubercle (गुलीका धारा) - origin to - pronator teres (करविवर्तनी दिर्घा)
- Flexor pollicis longus (अंगुष्ठ संकोचिनी दिर्घा)
Shaft- Ant. Border-Flexor digitorium profundus (अंगुली संकोचिनी अग्रपर्विका)
Applied Anatomy:
1) Fracture of olecranon is common.
2) Madelung's deformity is dorsal subluxation of lower end of ulna.

Carpel Bone:- (करकुर्चास्थि)

8 - Carpel bones arranged in two rows.

The proximal row contains (lateral to medial)
i) Scaphoid (नौकाभ/नौनिभ) - Boat shaped.
ii)Lunate (अर्धचंद्राभ)
iii) Triquetral (उपलक/त्रिकोणिका)
iv) Pisiform (वर्तुलक)
Distal row contains
i) Trapezium (पर्य्याणक/समलंबक) - Crest
ii) Trapezoid (कूटक/समलंबाभ) - Shoe shaped.
iii) Capitate(मध्यकुटक/पृथूका)-Largest carpel bone.
iv) Hamate (फणधर/अंकुशास्थि) - Hook shaped.
Applied Anatomy:-
1) Fracture of scaphoid is quite common.
2) Pisiform ossifies lastly. 3) Carpel tunnel syndrome - Compression of median nerve.
4) Osteochondritis of lunate called as Kienbocks disease.
Meta carpel – 5
Phalanges:- 14 in each h &, 3 for each finger & 2 for thumb. Fracture of Base of 1st metacarpal is called Bennett's fracture Frog hand- deep palmar abscess Gardeners hand- callosity.
Hip Bone (नितम्बास्थि/श्रोणिफलकास्थि/कटीकपाल/जघनकपाल/बृहत अस्थिफलक):-
The two hip bones form the pelvic girdle (श्रोणिचक्र). The bony pelvis is formed by two hip bones with sacrum and coccyx.
Symphysis pubis (भगसंधानक), - Obturator foramen (श्रोणिगवाक्ष)-Ilium (जंघनकपाल) (2/5) of Acetabulum)
Ilium -It has 2 ends. Upper end called iliac crest (जघनशिखा), lower end (वंक्षणउदूखलांश) , 3 borders & 3 surfaces. The highest point of iliac crest lies at the level of interval between spines of vertebrae L_3 & L_4. The ant end of iliac crest is called ant. Sup. Iliac spine (पूर्वउर्ध्वजंघनकूट) (ASIS) gives attachment to upper end of inguinal ligament (वंक्षण बंध) & origin to sartorius. (दिर्घाथामा). Ant. inf. Iliac spine gives origin to straight head of rectus femoris (उरूदण्डिका) and lower half gives ilio femoral lig. (जघन और्वी बंध). Post. Border gives attachment to fibres of sacrotuborus ligament & origin to few fibres of piriformis muscle (शुण्डिका). Border ends at ilio-pubic eminence (श्रोणिफलक कंकताभ उत्सेध), which gives insertion to psoas minor. (कटिलंबिनी हस्वा)
1) Gluteal surface:- The area behind the post. Gluteal line gives origin to gluteus maximus (नितम्ब पिण्डिका गरिष्ठा). Gluteus medius (नितम्ब पिण्डका मध्यमा) arise from the ant. & post. Gluteal line. Gluteus minimus (नितम्ब पिण्डिका लघिष्ठा) arise from the area between ant. and inf. Gluteal line.
Iliac Fossa (श्रोणिपक्षिणी) - Gives origin to iliacus. Pelvic surface gives origin to upper half of obturator internus. (श्रोणि गवाक्षिणी अंतस्था)
Attachment on iliac crest: 1) Outer lip
a) Fascia lata b) Origin to tensor fascia lata (उरू कंचूका कर्षणी) in front of tubercle.
c) **Insertion to external oblique** (उदरच्छदा आदिमा)
d) Origin to latissimus dorsi (कटीपार्श्वच्छदा)
2) Inner lip: a) Origin to transverse abdominis (उदरच्छदा चरमा) in its ant ⅔ b) Quadratus lumborum (उदरच्छदा मध्यमा) in post ⅓. Intermediate area of iliac crest gives origin to internal oblique (उदरच्छदा मध्यमा). Dorsal segment- Origin to gluteus maximus &erector spinae. (कंटक उत्थापनी) Dislocation of sacroiliac joint causes persitant backache.
Pubis:-
1) Body (गात्र) - Pubic crest, pubic tubercle, & 3 surfaces 2) Superior ramus (उत्तर श्रृंग)
3) Inferior ramus (अधरशृंग)
i) Pubic tubercle gives attachment to medial end of inguinal lig & to ascending loop of cremaster muscle. In male tubercle is crossed by spermatic cord.
ii) Pubic crest gives origin to rectus abdominis (उदरदण्डिका) and pyrimidalis. (बस्तिचुडिका)
a) Ant. Pubic lig medially. b) Origin to adductor longus (उरू संव्यूहनी दिर्घा),gracilis (तनुका), adductor brev is (उरू संव्यूहनी-हस्वा), obturator externus (गवाक्षिणी बहिस्था).
Post. Surface of body provides :
a) Attachment to lumboprostatic ligament, (भगपौरूष बंध)
b) Origin to levator ani (पायुधारिणी) , obturator internus. (श्रोणी गवाक्षिणी अंतस्था) c) Pectineal line provides - origin to pectinous muscle (कंकतिका)
insertion to psoas minor (कटी लंबीनी -हस्वा).
Obturator foramen transmits obturator vassel & nerve
Ischium:- (आसनस्थि / कुंकुदरास्थि):-
Parts:- Body (गात्र) and Ramus (कूट)
1)Ischial spine provides a) Attachment to sacrospinus ligament., origin to coccygeus (अनुत्रिकिनी) and levator ani (पायुधारिणी) 2) Lesser sciatic notch
a) Occupied by tendon of obturator internus b) origin to sup gamelli (यमलाउत्तरा), Inf. Gamelli (यमलाअधरा)
3) Femoral surface :- Origin to obturator externus, quadratus femoris. (उरू चतूरस्त्रा)
Ischial tuberosity:-
Superiolateral area:- Semimembranus (कलाकल्पा)
Inferomedial area - Semitendanous (कण्डराकल्पा), bicep (long head) (द्विशिरस्का और्वी).
Conjoined (Ischio-pubic Rami) - outer surface origin to i) obturator externus ii) Adductor brevis. (उरू संवहनी लाघवा) iii) Gracilis (उर्वन्तपट्टिका), Adductor magnus. Inner surface- origin to obturator internus, Sphincter urethrae (मुत्रद्वारसंकोचिनी), Deep transverse Perinei.
Applied- Dislocation- Commonly posteriorly- complication Avascular necrosis- fracture of neck complication- nonunion.
Ileofemoral ligament/Ligament of big claw:
It is strongest ligament of body, also known as 'Y' ligament. Post. dislocation of Hip is more common. Pelvis contains two hip bones, sacrum and coccyx.

It has 4 joints. Shape- In male heart shape and in female transversly oval.
True pelvis- Lesser pelvis. False pelvis- Greater pelvis, pelvis insert angle is 50-60^0.

Femur (उर्वस्थि)

The femur is longest & strongest bone of the body.
Parts- upper end, shaft and lower end. Upper end
a) Head- A roughened pit just below centre called fovea (Fossa capitis femoris) (शिरोबील).
Ligamentum teres connents head to acetabulum.
Blood supply- 1) Medial epiphyseal artery, branch of obturator artery. 2) Medial circumflex femoral artery.
Neck- Neckshaft angle is 125^0 in Adults.
The angle of femoral torsion is about 15^0
Shaft- In middle ⅓ . Linea aspera (रूक्ष रेखा)
Attachment:- 1) Fovea of head provides attachment to round ligament or ligamentun teres.
2) Greater trochanter (महाशिखरक):- Insertion of pyriformis (शुण्डिका) at apex, gluteus minimus (नितम्ब पिण्डिका लाघवी), obturator internus (श्रोणि गवाक्षिणी अंतस्था), & two gamelli (यमलापेशी) rochantric fossa (शिखरक खात) : Insertion of obturator externus. (श्रोणि गवाक्षिणी बहिस्था)
3) Lesser trochanter (लघुशिखरक):- Insertion of psoas major (कटीलंबिनी दिर्घा) and iliacus. (श्रोणि पक्षिणी)
4) Intertrochantric line (शिखान्तरिक रेखा) - Ileofe - moral ligament (श्रोणि और्वी बंधु). Origin to vastus lateralis (उरू प्रसारणी बहिस्था) and vastus medialis. (उरू प्रसारणी अंतस्था)
5) Quadrate tubercle receives insertion of quadratus femoris. (उरू चतूरस्त्रा)
Shaft: 1) Origin of gastrocnemius (जंघापिण्डिका गुर्वी) to popliteal surface.
2) Vastus intermedius (उरू प्रसारणी मध्यस्था) ¾ of ant. and lat. Surface.
3) Origin to vastus lateralis (उरू प्रसारणी बहिस्था)
4) Vastus medialis (उरू प्रसारणी अंतस्था) arises from lower part of intertrochentric Line, spiral line, linea aspera and supracondylar line.
5) Gluteal tuberosity- Insertion of gluteus maximus.
6) Medial lip of linea aspera- Insertion of adductor longus (उरू संव्यूहनी दिर्घा) 7) Adductor brevis (उरू संव्यूहनी लाघवी) inserted into line extending from lesser tronchantor to the upper part of linea aspera.
8) Adductor magnus (उरू संव्यूहनी गरिष्ठा) is inserted into medial margin of gluteal tuberosity.
9) Plantaris (जंघापिण्डीका तृतीया) originate from lower end of lateral supracondylar line.
10) Adductor tubercle receives insertion of hamstring part of adductor magnus.
Applied:- 1) Ossification centre present in lower end of femur in child indicates that child was viable.
2) Below 16 years- Spiral fracture of shaft
3) 14 to 40 years- Buket handle tear of medial maleolus.
4) 40 to 60 years- Potts fracture
5) Above 60 years:- Fracture of neck of Femur.
Strongest muscle of body is quadriceps femoris (चतूशिरस्का और्वी)

Patella (जान्वस्थि) : (सबसे बडी चणकास्थि/कण्डरास्थि) प्रकार कपालास्थि Patella is largest sesamoid bone in the body developed in the tendon of quadriceps femoris.
Attachments:- Sup. border provides insertion to rectus femoris in front and vastus intermedialis behind. Lat border - Vastus lateralis, med-border- Vastus medialis
Post- surface- Ligamentum patellae.
Applied : 1) Tendancy to dislocated outward.
2) Removal of patella does not interfere with function of knee joints
3) Fracture of patella is differentiated from Bipartite or in partite patella.

Tibia:- (अंत: जंघास्थि)

Parts :- 1) Upper end- Med. Condyle, lat- condyle, Tuberosity. 2) Shaft-Borders-Ant. 'S' shaped, Med. & interosseus. Surfaces- Lat, med & post.
3) Lower end - largest nutrient artery in the body which is a branch of tibial artery.
1) Attachment on medial condyle:- Insertion of semimembranous (कलाकल्पा) 2) Lat. Condyle:- Iliotibial tract attached on ant surface.
3) Tibial tuberosity - Ligamentum patellae.
4) Shaft:- i) Tibialis anterior (जंघापुरोगा) arises from ⅔ of ant. Surface ii) The upper part- of medial surface receives insertion of sartorius (दिर्घायामा), gracialis (उर्वन्तपट्टीका) & semitendinous (कण्डराकल्पा) & total collateral ligament. iii) Popliteus (जानुपृष्ठिका) - Unlocking muscle- is inserted on post. Surface above the soleal line., Flexor digitorum profundus (पादांगुली संकोचिनी दिर्घा) originate below soleal line, & lat-area gives origin to tibialis posterior. (जंघापश्चिमा)
Applied- 1) Upper end is one of the commonest site for acute osteomyelitis.
2) Commonly fractured at the junction of upper ⅔ & lower ⅓ of the shaft as blood supply is poor or tear of nutrient artery
3) It is useful bone for bone grafting.
4) Bumper fracture- Fracture of lat. Condyle.

Fibula (बहिर्जंघास्थि) :

Lateral and smaller bone of leg.
Parts- upper end, shaft, lower end
Attachment:- 1) Medial surface:- origin to i) Ext. digitorum longus. ii) Ext. hallucis longus. iii) Peroneus tertius.
2) Lat. surface- Origin to i) Peroneus longus ii) Peroneus brevis
3) Post surface origin to :- i) Tibialis posterior ii) Soleus-It is also called peripheral heart or second heart of body. iii) Flexor hallucis longus
4) Head of fibula- Insertion of bicep femoris.
Applied:- The fibula violates law of ossification because the secondary centre which appears first and

does not fuse last. (Upper epiphysis fuse last because this is growing end of bone)

Applied:- 1) Upper and lower end are subcutaneous and palpable

2) Common peroneal nerve rolled against neck of fibula.

3) 1st stage of pott's fracture lower end of fibula spirally fractured.

4) Ideal spare bone for bone graft.

Tarsus : (पादकुर्चास्थि)

Tarsus is made up of 7 tarsal bones arranged in two rows 1) Proximal - Talus above calcaneous below.

2) Distal row- From medial to lateral - Medial cuneiform, Intermediate cuneiform, lateral cuneiform and cuboid. Navicular bone is inter posed both talus and three cuneiform bones.

1) Talus (गुल्फास्थि/कुर्चशिर) - i) Second largest tarsal, ii) The neck body angle is 130^0 to 140^0 in infants & 150^0 in adults iii) Post. tubercle is separate & it is called as trigonum.

iv) Devoid of muscular attachments.

2) Calcaneus/Calcaneum (पार्ष्णिकास्थि) - Largest tarsal bone. 3) Navicular bone (नौनिम)- Boat shaped, spring ligament is present. Oesteochondritis of this called as Kohler's disease. 4) Cuboid (घनास्थि)

5) Cuneiform (कोणकास्थि)- Wedge shaped. Medial (अभिमध्य), Intermediated (मध्य), lat (पार्श्व)

Metatarsals- 5 in number and numbered from medial to lateral there are 14 phalanges in each foot 2 for great toe and 3 for each finger.

Joints:- Norma verticalis- Sutures- 1) Coronal suture (अग्रसीवनी) 2) Saggital sutures (अग्रपश्च सिवनी)

3) Lamboidal suture (पश्चकपात सिवनी) - Between occipital and parital bone.

Points- From ant. to post. - Bregma (ब्रह्मबिंदू), centrally vertex (शिरोबिंदू). Oblion (शिखाबिंदू) and lambda (शिवबिंदू) Foramen - Parital foramen (पार्श्वरंध्र)

Norma Occipitalis: Sutures

1) Occipito mastoid suture (पश्चकपालकर्णमुल सिवनी)

2) Parito occipital suture. Point- Inion (पश्चकपाल बिंदू), Foramen: Mastoid foramen

Norma Frontalis: Points 1) Glabella (भ्रुमध्य उत्सेध)

2) Nasion (नासामुल बिंदू)

3) Mental point/ganthion (चिबुक बिंदू) (in mandible)

Foramen- 1) Intraorbital foramen (अक्षनेत्रगुहारंध्र)

2) Mental foramen (चिबुक रंध्र)

Norma Lateralis 1) Mastoid process (कर्णमुल रंध्र)

2) Styloid process (शिफाप्रवर्धन)

Point- Pterion (पक्षक बिंदू) Exernal acoustic meatus (बहिश्रवण विवर बिंदू)

Norma Basalis - Foramen

1) Incisive foramen (कृन्तक रंध्र)

2)Greater and Lesser palletine foramen(बृहत व लघु तालु रंध्र)

Ant. Cranial Fossa:- (अग्रकरोटी खात)

Applied:- It's fracture may cause bleeding & discharge of CSF through the nose, It may also cause a condition called 'Black eye', which is produced by seepage of blood into the eyelid.

Middle Cranial Fossa (मध्यकपाल खात)

Discharge of CSF & bleeding through the ear.

Common site of fracture in the skull.

Post. Cranial Fossa- (पश्चकपाल खात)

Largest and deepest cranial fossa.

Its fracture causes bruising on mastoid region - Battle's sign

Mandible:- (अधोहन्वास्थि)

Largest and strongest bone of the face. Facial bone commonly fractured nasal bone and mandible.

Mandible is second bone to ossify in the body.

Shoulder Joint:- (अंससंधि)

Abduction at the shoulder joint through 180^0

Humerus & scapula move in the ratio of 2:1 throughout abduction.

Applied:-1) Arm is abducted by 45 -90^0

2) Shoulder tip pain- Irritation of the diaphragm from any surrounding pathology causes refered pain in the shoulder.

3) Frozen shoulder:- Two layers and synovial membrane becomes adherent to each other.

4) Continuous pain through out the abduction indicates some kind of arthritis.

Elbow Joint:- (कुर्पर संधि)

Carring angle:- 170^0 i) Distension of the elbow joint by an effusion occurs posteriorly.

Aspiration-posteriorly.

ii) Dislocation Posteriorly

iii) Tennis Elbow - Abrupt pronation- may lead to pain and tenderness over lateral epicondyle.

iv) Miners (or student's) elbow is characterized by effustion into bursa over the subcutaneous post. Surface of the olecranon process.

v) Optimum position - It is flexed at right angle 90^0

Wrist Joint (मणिबंधसंधि) Applied:

1) Commonly involved in Rheumatoid arthritis

2) The back of wrist is common site for ganglion

3) Aspiration- posteriorly.

Hip Joint:-

Perthes Disease or pseudocoxalgia - The rounded shape and head is destroyed.

Knee Joint (जानूसंधि)

परिहृदबंध (coronary ligament) Miniscus (नवचंद्रक), cruciate ligaments(स्वस्तिक बंध) are present

Unlocking of knee by popliteus & locking by quadriceps femoris. (चतुशिरस्का और्वी)

13 bursae (स्नेहपूटी) around the knee joint.

Applied:- i)The inflammation of bursae due to synovial herniation called as Baker's cyst.

ii) Oesteoarthritis is occur commonly.

Ankle joint (गुल्फसंधि) - / Talocrural Joint कूर्चशिर जंघिका संधि / गुल्फास्थि जंघिका संधि

Ligaments- 1) Deltoid lig (त्रिकोणिक बंध)

Applied- Sprain commonly occurs.

Miscellaneous:- Metatarsals, metacarpels & phalanges are commonest site of multiple chondromatosis. (Ollier's disease)
Gaint cell tumour commonest site- Lower end of femur, upper end of tibia and fibula
Oesteoarthrosis- Commonest site Hip (In India knee)
Ankylosing spondylitis - Sacroiliac joint.
Pseudo gout and contraversial joint - knee
Pagets disease - Pelvis. Compression or crush fracture seen in calcaneum and vertebrae.
Krukenberg Amputation - Forearm amputation plus bones split for fork action.
Anvils test - For spine lesions
Von Rosebs or Barlows sign - In congenital dislocation of Hip.
Sizzle test - For fat embolism
Cluttons joints- Painless, symmetrical serous, synvitis in congenital syphilis.
Charcoat's Joints:- (Neuropathic Joints) – Osteoarthritis in denervated joint.
Rieter's syndrome –
Commonest inflammatory arthritis in young man.

Myology (पेशीविज्ञान)

Facial Expression	Muscles producing them
1.Smiling and laughing	Zygomaticus major (बृहत सृक्क उत्कर्षिका)
2.Contempt	Zygomaticus minor (लघु सृक्क उत्कर्षिका)
3.Sadness	Levator labii superioris (उर्ध्वओष्ठ उन्नमनिका), Levator anguli oris (सृक्क उन्नमनिका)
4. Frowning	Corrugator supercilii (भ्रुसंकोचनी), procerus (भ्रुसंनमनी) and Depressor anguli oris (सृक्क अवनमनिका)
5. Anger	Dilator naris (नासा विस्फारणी) and Depressor septii (नासापुट अवनमनी)
6.Horror,Terror & Flight	Platysma (गलपार्श्वच्छदा)
7. Surprise	Frontalis
8. Doubt	Mastication (अधर उन्नमनिका)
9.Grinding	Risorious (सृक्क अपकर्षणी / प्रहासिनी)

Muscles of Mastication (चर्वण के पेशी) :
i) Temporalis (शंखच्छदा) ii) Masseter (चर्वणिका)
iii) Lateral pterygoid (पार्श्व पक्षाभिका)
iv) Medial pterygoid (अभिमध्य पक्षाभिका)
Latissimus dorsi (कटीपार्श्वच्छदा)-Climbing muscle
Sartorius (दिर्घायामा)-Longest muscle of the body.
Serratus anterior (अस्त्राअग्रीमा) - Boxer's muscle

Triangles of Neck (ग्रीवा के त्रिकोण)
Boundaries : 1) Ant. By median plane (ग्रीवामध्य रेषा)
2) Post-By sternocleido mastoid (उर:कर्णमूलीका)
3) Sup. By Base of Mandible (अधोहन्वास्थि)
Applied :- 1) Common ant. Midline swelling
2) Enlarged sub mental lymph node
3) Sublingnal dermoid. 4) Goitre 5) Larynx.

Sub division of ant. Triangle of Neck
1) **Sub mental triangle** (चिबुकधरीयत्रिकोण)-On either side by anterior belly of diagastric, below by hyoid, mylohyoid membrane forms floor.
2) **Submandibular triangle/Diagnostic triangle** – Mandible Two bellies of diagastric membrane. Contains submandibular gland
3) **Carotid triangle** (मातृका त्रिकोण) - Superior belly of omohyoid membrane, ant border of sternocleidomastoid; post belly of diagastric (contains carotid bifurcation)
4)**Muscular triangle**(पेशी त्रिकोण) - Ant. central line of neck,post.Inf. line, sternocleidomastoid ant border.

Post. Triangle of Neck (ग्रीवा पश्चिम त्रिकोण) :
i) **Occipital triangle** (पश्चकपाल त्रिकोण) Ant. Sternocleido mastoid ii)Post. Trapezius (पृष्ठच्छदा) and belly of omohyoid (अंसकण्ठिकेचे अधोउदर)

Muscles of Thorax (वक्षीय पेशी) Direction of fibres :-
1) External Intercostal muscle (पर्शुकान्तरिका बहिस्था) Runs downward forward and medially.
2) Internal intercostals muscle (पर्शुकान्तरिका अन्तस्था) runs downward, backward and laterally.
3)Transverse thorasis/Sternocostalis (उर:त्रिकोणिका) - Parallel to internal intercostals muscle
Applied:- Irritation of intercostal nerve causes severe pain which is refered to front of chest or abdomen known as root pain / girdle pain.

Diaphragm (महाप्राचीरक / मध्यच्छद)
Longest width muscle
A) Anterio lat muscle of Abdomen
1) Oblique Externus Abdominis (उदरच्छदा आदीमा)
2) Oblique Internus Abdominis (उदरच्छदा मध्यमा)
3) Transverse abdominis (उदरच्छदा चरमा)
4) Rectus abdominis (उदर दण्डिका)
5) Pyramidalis (बस्तिचुडिका)
6) Creamaster (फलकोषकर्षणी)
B) Post. - Muscles of Abdomen
1) Quadratus Lumborum (कटी चतूरस्त्रा)
2) Psoas major (कटिलंबिणी दिर्घा)
3) Psoas minor (कटिलंबिणी -ह्रस्वा)
4) Iliacus (श्रोणिपक्षिणी)

Femoral Triangle - Boundaries :
Laterally medial border of sartorius, medially lateral border of adductor longus. Base is formed by inguinal ligament/poupart lig.
Content - 1) Femoral artery and its branches
2) Femoral vein and its tributaries
3) The femoral sheath,
4) Nerves - Femoral branch of genitofemoral, pectineus

Femoral sheath (और्वीकोष) -3 compartment
1) Lat/arterial compartment contains femoral Artery.
2) Intermediate/Veinous compartment contains femoral vein
3) Medial/Lymphatic compartment is known as

femoral canal. Femoral hernia is more common in female. Femoral canal is wider than male.
When gluteus maximus paralysed, patient can not stand up from sitting posture without support. When gluteus medius & minimus are paralysed patient cannot walk normally. He ways on paralysed side, known as lurching gait, when bilateral it is called waddling gait.
Petits lumbar triangle - Space above the hip bone between the external oblique muscle, latissimus dorsi, and inferior oblique muscle.
Vesical - Trigone of Bladder.
Macemen's Triangle or suprameatal triangle:
Used as guiden in mastoid operations.
Lessers Triangle –
It is bounded below by anterior & post. bellies of diagastric muscle & above by hypogastric nerve
Einthovetis Triangle Imaginary equilateral triangle with the heart at its center formed by lines representing the 3 standard limb leads of ECG.
Ward's triangle- Triangle of canellows bone in the head of femur is known as ward's triangle.
Sherran's triangle - formed by lines joining umbilicus, right ant- superior iliac spine & symphysis pubis. It is site of pain in Acute appendicitis.
Auscultation triangle:- It is formed by lower border of Trapezius, medial border of Scapula & Latissimius dorsi.

Arterial system

Aorta:(महाधमनी) **A) Ascending Aorta:-**
(आरोहिमहाधमनी) Branches: Rt coronary arteries (दक्षिण हार्दीकी धमनी)Lt coronary arteries (वाम हार्दीकी धमनी)
B) Arch of Aorta - (तोरणी महाधमनी)
i) Brachiocephalic Artery (काण्डमूला धमनी)
ii) Left common carotid (वाम महामातृका धमनी)
iii) Left subclavian artery (वाम अक्षकाधरा धमनी)
1)Brachiocephalic artery:-
Innominate artery (काण्डमूलाधमनी)
Branch - Rt. Common carotid artery (दक्षिण महामातृका धमनी) Rt. Sub clavian artery. (दक्षिण अक्षकाधरा धमनी)
2) Common Carotid :- i) External carotid artery
ii) internal carotid artery and Lt sub clavian artery.
1) External carotid artery - 8 branches- a) ant.
i) Sup. thyroid (उर्ध्वअवटुका धमनी)
ii) Lingual artery (अनुजिह्वीका धमनी)
iii) Facial artery (मौखिकी धमनी)
b) Post- occipital (कपालमूलीधमनी), Post auricular (पश्चिमकर्णिका धमनी)
c) Medial- Ascending pharyngeal (अन्नव्दारिणी उर्ध्वगा)
d) Terminal -Maxillary (अंतर्हानव्या), Sup. Temporal (अनुशंखा उत्ताना धमनी)
Internal carotid artery : In neck region no branch.
3) Lt. Subclavian artery :- (अक्षकाधरा धमनी)
Branches(5) 1) Vertebral artery (कशेरूका/मस्तिष्क मातृका) 2) Internal thoracic artery
3) Thyrocervical trunk (अवटुग्रैव/गलग्रैवेयकी) - branch - Suprascapular artery.
4) Costo cervical trunk (ग्रैवपर्शुकी) 5) Dorsal scapular.
Axillary artery (कक्षाधरा धमनी) Artery is continuation of subclavian artery. Branches : 6
In first part- Sub.Thoracic artery (उर्ध्वव्रक्षीय धमनी), in 2nd part- Acrominothoracic artery (अंसोरस्का धमनी) lat thoracic artery (दिर्घोरस्का धमनी), In 3 part- Subscapular Artery (अंसकपालीनी धमनी) Ant and post. circumflex humeral artery (पूर्व व पश्चिम प्रगण्ड वेष्टनिका)
Brachial artery (बाहवी / प्रगंड धमनी) is continuation of axillary arteries Branches- Profunda brachial artery, (गंभीरप्रगंडीका धमनी) Inf. Ulnar colateral artery, (अधोअंतप्रकोष्ठीकासमपार्श्व धमनी) Radial (बहिप्रकोष्ठीका) & ulnar artery (अंतप्रकोष्ठीका धमनी)
C) Descending Aorta:- Branches in thoracic region- Subcostal artery (पर्शुकानुगाधमनी), Superior phrenic artery (महाप्राचीरा धमनी), Posterior intercostal arteries (पश्चिम पर्शुकान्तरिका धमन्या)
D) Abdominal Aorta (औदरीय महाधमनी) :- Largest artery -It starts from 12th thoracic vertebrae (body) - to 4th lumbar vertebra. body divides into 2 common illiac arteries.
Abdominal Aorta:- **1) Ventral branches:-** (पूर्वशाखा)
i) Coeliac trunk (अर्धोदरी धमनी) -3 - (artery of foregut)
ii) Superior mesenteric artery (उत्तराआंत्रीकी) -5- (Artery of midgut)
iii) Inf. Mesentric artery (अधराआंत्रीकी धमनी) - 3 – (Artery of hindgut) iv) Spleenic artery.
Coeliac trunk:- Branches
1) Common Hepatic artery (यकृतीक धमनी)
2) Spleenic artery (प्लैहीक धमनी)
3) Lt gastric artery (आमाशय क्रोडीका वामा)
Sup mesenteric artery - Branches
1) Inf-pancreatico deuodenal artery.
2) Ileocolic artery. 3) Rt colic artery.
4) Middle colic artery 5) Jejunals ileal branches.
Inf. Mesentric artery- Branches - Lt. colic artery, sigmoid artery and sup. Rectal artery.
2) Lateral branches of Abdominal Aorta:
i) Inf. Phrenic artery (महाप्राचीरगा धमनी)
ii) Middle supra renal artery (मध्यअधिवृक्कीय धमनी)
iii)Testicular or ovarian artery (अधिवृषणीका, अनुबीजक्रोशिका)
iv) Rt and Lt renal (वृक्कीय) artery.
3) Dorsal branches of Abdominal aorta -
i) Lumbar artery (अनुकटीका)
ii) Median sacral artery (त्रिकमध्यगा)
4)Terminal branches of Abdominal Aorta-
Common iliac arteries - (अधिश्रोणीका साधारणी धमनी). Branches Rt and Lt illiac artery.
Illiac Artery - Branches- Ext. and Internal iliac arteries.
Interal illiac artery: (अधिश्रोणिका अभ्यन्तरी धमनी)
Branches of Ant. Division in male (6) and in female (7) sup and inf. Vesical, inf gluteal, obturator, Middle

rectal and vaginal and uterine artery extra. In post. Division 3Branches, Iliolumbar, Lateral sacral, sup gluteal.

Femoral artery (और्वीधमनी)- Continuation of ext. illiac artery - Superficial branches - (3) Sup. External pudendal artery (उत्तानबहिरोपस्थिकी धमनी)

Sup. Hypogastric artery(उत्तान औदरिकी धमनी) Sup. Circumflex iliac artery(उत्तान जंघनिका वेष्टीनी धमनी) Deep- branches (3) Profunda femoris (गंभिरउरूका धमनी) Deep ext. pudendal (गंभीर बहिरोपस्थिकी धमनी) Muscular branches (पेशीगा शाखा) Popliteal artery (जानुपृष्टीका धमनी) - Continuation of femoral artery - branches (2) Ant and post. Tibial artery (पुरो व पश्च जंघिका धमनी) Dorsalis pedis artery (पादपृष्ठीका धमनी) - Continuation of Ant. Tibial artery. Post tibial artery, terminates into medial and lat. plantar artery (अभिमध्य व पार्श्व पादतल धमनी).

Circle of willis :- It is formed by two anterior cerebral artery (i.e. branches of internal carotid), Posterior cerebral artery (branch of basilar artery) & posterior communicating artery (Again branch of internal carotid artery)

Superficial palmar arch is formed mainly by ulnar artery. Deep palmar arch formed by anastomosis of terminal part of radial artery with deep palmar branch of ulnar artery.

Venous system

Veins of heart:-

All cardiac veins are provided with valves at their orifices except the oblique vein of Lt. atrium.

Coronary sinus :- It drains maximum venous blood from the substance of heart to left atrium.

Veins of Neck :-

Internal jugular vein (अनुमन्या / आभ्यंन्तर ग्रीवा शिरा), External jugular vein (अधिमन्या/ बाह्य ग्रीवा शिरा)

Rt and Lt brachiocephalic vein (द.व वाम गलमूलिका शिरा): It is formed by Rt and Lt subclavian vein, Rt & Lt internal jugular vein behind the sternal end of clavicle respectively.

Portal Vein - length 8cm - Formed by union of sup. Mesenteric and Spleenic vein

Normal portal pressure - 5 - 15 mm of Hg.

Above 40 mm of Hg it's portal hypertension

Pulmonary Veins (फुफ्फुसीय सिरा)- 4 :They carries oxygenated blood from the lungs to the lt. atrium of heart.

Superior Venacava (उर्ध्वमहाशिरा):- It is formed by the union of Rt and Lt brachiocephalic veins behind the Rt costal cartilage, near to the sternum.

Inf. Venacava (अधोमहाशिरा) - It is <u>largest</u> vein of the body. It is formed opposite to 5th lumbar vertebra slightly right to median plane by union of two common iliac veins.

<u>Right testicular vein or ovarian vein drains into IVC.</u>

Great/Long Saphenous vein (दिर्घोत्ताना शिरा):- Useful for coronary bypass surgery. It is the <u>longest</u> vein in the body. It terminates in the femoral vein at groin, which is used for IV infusion in infant.

Ligaments:-

1) Ligamentum teres of obliterated lt. umbilical vein.
2) Cooper's Ligament- Fascial ext. of lacular ligament.
3) Broad lig.- Supporting lig. of uterus.
4) Wristberg lig.- post. menisco femoral lig.
5) **Lacunar lig.- Medial sharp margin of femoral ring.**
6) Lig. Flavum- Connects the vertebrae.
7) Schlemm's lig.- Two lig. Bands of the capsule of the shoulder joints.
8) Thomsotis lig.- Thickened lower part of transversalis fascia.
9) Brodie's lig.- Transverse humeral ligament.

Fasciae:

1) Buck's fascia - Fascia of penis
2) Fascia colli- Deep fascia of Neck
3) Fascia cribrosa- Fascia covering fossa ovalis in femoral canal
4) Fascia colles- Fascia scarpa below external ring.
5) Fascia carpa - Superficial fatty fascia between umbilicus and pubis.
6) Fascia scarpa - Deep membranous fascia between umbilicus and pubis.
7) Denonvillier's fascia - Prostato peritoneal Fascia.

Lines:

1) Arcuate line- Marks the lower limit of rectus abdominis.
2) Burton's blue line-On gums, in lead poisoning.
3) Dentate line - Between the columnar epithelium of rectum pectinate &stratified epithellium of anal canal.
4) Hilton line - Blueish Pink line of anal canal at the junction of internal and external sphincters.
5) Hamptons line- Produced in barium meal study in benign peptic ulcerations.
6) B line of kerley - In x-ray chest, horizontal line seen in mitral stenosis.
7) Mee's line- Seen in chronic Arsenic poisoning

Spots:-

1) Bruch fields spots - Mottled spots on Iris in mongolism (Downs syndrome)
2) Roth's spot seen in infective carditis.
3) Mongolion spots- Seen in children-dark blusih spot. Not related to mongolism.
4) Café an lait spots-Found in neuro fibromatosis
5) De- Morgans spots- Senile Haemangiomas.

Pouch:-

1) <u>Dougla's pouch</u> - Rectouterine pouch.
2) <u>Hartman's pouch</u> - Pouch of gall bladder.
3) <u>Rathke's pouch</u> - Pituitory diverticulum.
4) <u>Morrison's pouch</u> - Hepatorenal pouch.

Ring-

1) Cabots ring- Nuclear remnants in erythrocytes
2)Vossius ring-Injury to eye,ring formed in lens as opacity.
3) Bandie's ring- Pathological retraction ring of uterus.
4) Fleischer's ring- Seen in keratoconus
5) Keyser- Fleischer ring- Seen in wilsons disease

Membrane:
Bowman's membrane - Anterior layer of cornea
Descemet's membrane - Post. layer of cornea
Zinris membrane - Ant. mem. of Iris
Bruch's membrane - Basal mem of choroids.

Ducts:
1) Bartholian duct- Sublingual duct.
2) Duct of Bellini- Collecting tubules of kidney.
3) Mullerian duct- Paramesonephric duct.
4) Wolffian duct- Mesonephric duct.
5) Gartners duct- Remnants of mesonephric duct.
6) Duct of wirsung- Pancreatic duct.
7) Duct of santorini- Accessory Pancreatic duct.
8) Whartons duct- Submandibular gland duct.
9) Duct of Bivinus- Sublingual gland duct.
10)Luschka's duct- Tubular structure in wall of the gall bladder.

Glands:
1) Brunners gland- Present in duodenum
2) Bartholin gland - Greater vestibular gland present to labia majora.
3) Cowpers gland- Bulbourethral gland
4) Krause's glands- Accessory lacrimal glands, about 42 in upper and 68 in lower fornix.
5)Skene glands-Para urethral glands in penile urethra.
6) Littre glands - Urethral glands in penile urethra
7)Tarsal glands/Meibomian glands- Sebaceous glands
8) Zeis's gland- Large sebaceous glands.
9) Moll's gland- Modified sweat gland.

Nervous system (चेतनी संस्था)

It mainly divided in two system i) CNS ii) PNS

Central nervous system (केंद्रिय चेतनी संस्था)-
It contains Brain and spinal cord (सुषुम्नाकाण्ड).

Peripheral nervous system (परिसरीय चेतनी संस्था) -
It contains cranial and spinal nerves. Visceral nervous System which include symphathetic and parasymphathetic nervous system.

Brain		
Fore brain (Prosencephalon) (अग्रमस्तिष्क)	Mid brain (Mesencephalon) (मध्यमस्तिष्क)	Hind brain (Rhomben cephalon) (पश्चिममस्तिष्क)

Fore brain	
Cerebral hemisphere (Telencephalon) (बृहन्मस्तिष्क)	Thalamus (Diencephalon) (आज्ञाकन्द)

Mid brain		
Crura cerebri	Tegmentum	Tectum

Hind brain	
Pons (उष्णीष्क) Cerebellum (धर्मीलक) (Metencephalon)	Medulla oblongata (सुषुम्ना काण्ड) (Meyelen cephalon)

Neurone - Longest cell of the body.
Brainstem-Pons+ Medulla oblongata+ Mid brain.

Brain: wt 1300 - 1400 gm
Ganglions :- Ciliary ganglion- On the opthalmic nerve
Otic ganglion-On mandibular nerve
Spiral ganglion - Cochlea
Geniculate ganglion - On fascial nerve
Langley's or submaxillary ganglion-On lingual nerve.
Spheno palatine ganglion- On maxillary nerve.
Gasserian or senitunar ganglion- Fifth cranial nerve.

Areas of brain :- (Total 47)
1,2,3 - Secondary somatic and basal area.
4- Primary motor area.
6 - Premotor area.
3, 1, 2 Post central gyrus- Sensory area
4, 6 Pre central gyrus - Motor area
1- (pri) Visual area or striate area
17 - Visual area
22- Sec. auditory area
41,42-Pri. auditory area
44- Broca's Area (Motor speech Area)

Nucleus :-
Supra optic nucleus (Drinking centre)-Control ADH Secretion Reticular activating system - Brain stem.
Red nucleus and substantia nigra - Mid brain.
Ambigyous and cuneatus nucleus - Medulla.
Ventromedial nucleus - Feeding centre
Medial part of ventromedial nucleus (VMN) - Satiety centre.
Vomiting centre- Chemoreceptor trigger zone.(CTZ)
Medial geniculate body-Transmits auditory radiation
Lateral geniculate body- Transmits optic radiation
Mammilary body - Below the floor of 3rd ventricle and behind the optic chiasma.
Tactile touch receptor - Meissner's corpuscles .
Cold (Temp) receptor - Bulbous corpuscles
Heat (Temp) receptor - Pacinian corpuscles.
Pressure-Pacinian corpuscles/Golgi Mazzoni body

Spinal cord:- Length 45cm, weight 30gm.
Connection - Above, 4th ventricle & below filum terminale. Filum terminale-Non nervous thread like structure. Lower end at L_1 vertebra in adult & L_3 in children.

C. S. F.:- It is formed by choroid plexuses of laterally 3rd and 4th ventricle and absorbed in arachnoid space. Formation is 480 ml/day.
Total quantity is 150 ml. C.S.F. pressure 150 mm of water.(H_2O). Lumbar puncture is done usually in between L_3 and L_4

Cranial nerves:- (12)

			Origin
1	Olfactory (घ्राणचेतनी)	Sensory - (सांवेदनीक)	Fore brain
2	Optic (दृष्टीचेतनी)	Sensory	Fore brain
3	Occulomotor (नेत्रचेष्टीनी)	Motor (संचालक)	Mid brain
4	Trochlear (कटाक्षीणी) Smallest and thin nerve	Motor	Mid brain
5	Trig Path Larg crani		
6	Abd (नेत्र		
7	Fasc		
8	Audi ulo ((श्रुती		
9	Glos (कण्ठ		
10	Vagu Long		
11	Spin (ग्रीवा		
12	Hypo (जिह्व		

Nerve inv
1) In T.B.
2) Herpesz
3) Polio -
4) Mening
Nerves:-
2) Laboure
3) Long tho
Bell's palsy
4) Arnol
branch of
5) Vidian
6) Jacobso
glossophar
Deformiti
Claw hand
Wrist drop
Foot drop-
Branches
1) Trigemi
Ophthalmi
Mandibula
2) Termina
Temporal,
nerve. Sup
(ग्रीवाणुगाचेत
Root value
1) Lesser o
2) Great au
3) Transver
4) Supracla
Branches o
1) Ulnar ne
2) Axillary
3) Radial n
Branches o
1) Femoral

5	Trigeminal/ Pathetic (त्रिधारा) Largest and thick cranial nerve	Mixed	Pons
6	Abducent (नेत्रपार्श्विकी)	Motor	Pons
7	Fascial (वक्त्रचेतनी)	Mixed	Pons
8	Auditory / Vestibulo Cochlear (श्रुतीचेतनी)	Sensory	Pons
9	Glossopharyngeal (कण्ठरासनी)	Mixed	Medulla oblongata
10	Vagus (प्राणदा) Longest C.N.	Mixed	Medulla oblongata
11	Spinal Accessory (ग्रीवा पृष्ठीका)	Motor	Medulla oblongata
12	Hypoglossal (जिव्हातलगा)	Motor	Medulla oblongata

Nerve involvement :

1) In T.B. syphilis - Occulomotar
2) Herpeszoster- Trigeminal
3) Polio - Abducent
4) Meningitis - Auditory.

Nerves:- 1) Musician Nerve- Ulnar nerve
2) Labourer Nerve- Median nerve
3) Long thoracic nerve of Bell - Nerve to serratus anterior. Bell's palsy (C.M.N.) paralysis of facial nerve
4) Arnold's Nerve/Aldermans Nerve- Auricular branch of vagus.
5) Vidian Nerve - Nerve of pterigoid canal.
6) Jacobson's Nerve- Tympanic branch of glossopharyngeal nerve.

Deformities associated with paralysis of nerve.

Claw hand - Ulnar nerve palsy
Wrist drop - Radial nerve palsy/Saturday night palsy.
Foot drop- Common peroneal nerve palsy.

Branches of cranial nerves:-

1) Trigeminal nerve - (3) Branches - Ophthalmic (चाक्षुषी), Maxillary (उर्ध्वहानव्य), Mandibular (अधोहानव्य)
2) Terminal branches of facial nerve:- Temporal, Zygomatic, Buccal, Mandibular, Cervical nerve. Superficial branches of cervical plexus (ग्रीवाणुगाचेतनी प्रवेणी).

Root value:

1) Lesser occipital nerve (कपालमूलीकातन्वी)(C_2)
2) Great auricular nerve (बृहदकर्णमूलिनी) ($C_{2,3}$)
3) Transverse cutaneous nerve (उत्तानग्रीवीका) ($C_{2,3}$)
4) Supraclavicular nerve (उर्ध्वजत्रुका) ($C_{3,4}$)

Branches of brachial plexus (कक्षाणुगा चेतनी प्रवेणी):-

1) Ulnar nerve (अंतबाहुका चेतनी) ($C_{7,8}T_1$)
2) Axillary nerve (कक्षाधरा) ($C_{5,6}$)
3) Radial nerve (बहिर्बाहुकाचेतनी) ($C_{5,6,7,8}T_1$)

Branches of Lumbar plexus (कटी चेतनी प्रवेणी)

1) Femoral nerve (ऊर्वीचेतनी) - Largest branch - $L_{2,3}$ dorsal division
2) Obturator nerve (वंक्षणिका चेतनी) - $L_{2,3,4}$ ventral division

Branch of sacral plexus (त्रिकचेतनी प्रवेणी)

1) Sciatic nerve (गृध्रसीचेतनी) - Thickest nerve $L_{4,5}$ $S_{1,2}$
2) Pudendal nerve $S_{2,3,4}$

Sleeping Foot - Compression of sciatic nerve against femur.Symphathetic outflow-T_{1-12} and $L_{1,2,3}$ (Thoraco - lumbar). Para symphathetic outflow - $C_{3,7,9,10}$ & $S_{2,3,4}$ (cranio -sacral)

Valves:-

1) Valve of Ball - Transverse valve in anal canal.
2) Valve of Gerlach - Base of Appendix.
3) Valve of Houston - Rectum
4) Spiral valve of Heister - In cystic duct.
5) Valve of winking - In the duodenum.

Endocrine gland :-

Ductless gland (निःस्त्रोत ग्रंथी)
1) Pituitary gland (पियूषग्रंथी/पोषणकग्रंथी)
2) Thyroid gland (अवटूकाग्रंथी)
3) Parathyroid (उपअवटूका)
4) Carotid body (मातृकाग्रंथी)
5) Thymus (बालग्रंथी)
6) Adrenal/ Suprarenal gl and (अधिवृक्कग्रंथी)

Pituitary gland:- It is surrounded by diaphragma sellae (चक्रवृत्तीका). Weight - 500mg.
Ant. lobe- (Adenohypophysis)
Post.- lobe (Neurohypophysis)

Adenohypophysis:- (6) harmones
1) Growth harmone - Hypersecretion causes gigantism in child & Acromegaly in Adult. Hyposecretion results in dwarfism in child &Pituitary myxoedema in Adult.
2) In male -FSH- Spermatogenesis,
3) LH-ICSH-Testosterone secreted by Leydig cells
4) Prolactin - Initiation of milk secretion
5) Thyroid stimulating harmone (TSH)
6) Adrenocorticotrophic harmone (ACTH)- Stimulates secretion of adrenal cortex.

Neuro hypophysis:-
1) ADH- Antidiuretic harmone or vasopressin
2) Oxytocin-/Pitressin-Function-Contraction of uterus
Lack of ADH - Results in diabetic insipidus

Thyroid gland (अवटुकाग्रंथी/ग्रैवेयकग्रंथी)
Size - 5 cm x 2.5 x 2.5, weight - 25 gm.
It maintains BMR.Follicular cells secrect-T_3 and T_4. 'c cells' or parafollicular cells secret -Calcitonin.
Hypothyroidism - Cretinism in child & Myxoedema in adult. Hyperthyroidism -Exopthalmic goitere.

Parathyroid gland (उपअवटूकाग्रंथी):-
2 pairs number, weight - 50 mg
Hypoparathyroidism - result in tetany.
Hyperparathyroidism - results in osteoporosis.

Thymus gland:- Weight 10-15 gm at birth, 30-40 gm at puberty, 10gm - After mid adult life.

Adrenal gland :- Height 50 mm, breadth 30 mm and thickness 10 mm, weight - 5gm.

From medulla - Secretion
1) Adrenalin/Epinephrine- Hyposecrection causes hypotension. Hypersecrection causes hypertension.
2) Noradrenalin/Nor epinephrine-Actual sympathetic transmitter.
From cortex 1) Aldosterone - i.e. mineralocorticoids - Act on mineral and water metabolism and protection against stress. Hyposecretion - Addison's disease. Hypersecretion- Cushing's syndrome, oedema.
2) Cortisol/Cortisone, i.e.corticosteroids-Controls the carbohydrate, protein and fat metabolism.
3) Androgen, Estrogen i.e. sex steroids-Action on sex organ and sec. sexual character.

Important muscle and nerve supply.
1) Deltoid - Axillary nerve
2) Bicep brachii - Musculocutaneous nerve.
3) Tricep- Radial nerve
4)Trapezius -Spinal part of Accessory nerve
5) Teres major-Lower subscapular nerve.
6) Teres minor - Axillary nerve
7) Pectoralis major & minor- Med and lat, pectoral nerve.
8) Latissimus dorsi- Thoracodorsal nerve.
9) Eye Muscle i) Lateral Rectus - Abduscent nerve
ii) Superior oblique-Trochlear nerve.
iii) Sup. Rectus, inf. Rectus, middle rectus, inf. Oblique - Oculomotor nerve.
10) Stapedius, stylohyoid, platysma and post. Belly of digastric - Facial nerve.
11) Quadriceps femoris and sartorius - Femoral nerve.
12) Quadratus nerve to quadratus femoris
13) Gluteus medius and minimus-Sup.Gluteal Nerve
14) Gluteus maximus-Inf. Gluteal Nerve.
15) Popliteus, Plantaris, Soleus, Gastrocnemius – Tibial nerve.
16) All muscle of ant. Compartment of leg- Deep peroneal nerve.

Salivary glands:-
Parotid, sub lingual, and sub mandibular gland. Parotid gland is largest salivary gland weighing about 15 gm. Parotid duct opens on inner surface of cheek opposite to upper second molar teeth.

Xiphoid process:- Costal margine 7,8,9,10th costal cartilage find at level of T_9.

Peritoneum (औदार्यमहाकला):-
Greater omentum (बृहतवपा/मेदोधरा कला)- It hangs from greater curvature of stomach, known as policemen of abdomen.

Stomach:- Length - 10 Inch.
Mean capacity- 30 ml at birth ,1000 ml at puberty, 1500 -2000 ml in adult.
Two parts 1) cardiac- Fundus and body. fundus also called gastric pacemaker 2) Pyloric- Pylantrum, pylcanal - Distal part called duodenal pacemaker.
Shape - Empty - 'J' shaped, Distended- Piriform shaped. Parital/oxyntic cells secrets -HCl. G cells – secrets - Gastrin. Chief cells secrets- Pepsinogen.

Stomach bed : 7 Contents-Diaphragm, Lt kidney, Lt suprarenal gland, Pancreas, Transverse mesocolon, Splenic flexure of colon, and Splenic artery.

Intestine:- Small intestine - 6 meters long.
Duodenum - 10 inch/25cm
1st part - 2 inch - Commonest site for peptic ulcer
2nd part-3 inch- Opening of hepato pancreatic duct.
3rd part - 4 inch. 4th part- 1 inch.
Jejunum - Brunner's glands.
Crypts of lieberkuhn- jejunum and ileum.
Payers patches- ileum.
Small intestine- commonest site of intestinal worms.

Large intestine: 1.5 meters length Caecum - 6cm, Appendix- 2-20cm (Avarage 9cm) Diameter 5mm, Meckel's diverticulum-2 inches.
Ascending colon - 5 inch, Descending 10 inch
Sigmoid - 15 inch, Transverse colon - 20 inch
Rectum - 5 inch-'S'shaped-last part of large intestine.

Caecum:- Supplied by caecal branch of ileocolic artery. Anal canal - 3.8 cm long.
Inf.Part of Anal canal divide into 3 parts - upper and middle part 15mm while lower part 8mm.
Above the pectinate line supplied by sup rectal artery and autonomic nerve & below by inf rectal artery & somatic nerve.
Common position of piles -3,7, & 11^0 clock Internal piles- Above pectinate line- pain less. External piles- Below pectinate line- Pain full External piles do not bleed on straining of stool.
Goodsall's rule - To locate internal opening in case of complete fistula.

Liver (यकृत):- Wt- 1600 gm in male, 1300gm in female It is largest gland in the body. ½ th of weight in foetus, 1/40th weight in Adult.
5 surfaces and 2 lobe. Rt lobe is larger and contains caudate and quadrate lobe. Liver receives 20% blood supply from hepatic artery and 80% from portal vein.

Thymol turbidity test -
Done for Hepatocellular damage.

Gall bladder (पित्ताशय):- Length 7-10 cm, 3cm- broad. Capacity 30-50ml, pea shaped. Bile duct is formed by the union of cystic duct & common hepatic duct.

Bile duct- Length - 8cm, Diameter- 6mm. Cystic duct is branch of Rt hepatic artery

Spleen:- 1 inch thick, 3 inch broad, 5 inch long and 7 ounce in (210 gm) weight, and related to 9 to 11 ribs. Wedge shaped organ Splenic infraction - Kehr's sign Splenic puncture - 8th/9th intercostal space in midaxillary line.

Pancreas (अग्न्याशय):-
Length 15-20cm, breadth 3cm, thickness 2cm. weight -90 gm. Lumen of pancreatic duct 3mm. Related to lumbar 1 to 2 vertebrae.

Kidney (वृक्क):-It is retro peritoneal organ. Position -T_{12} to L_3 - Length - 11cm, breadth - 6cm and thickness 3cm . Weight - 150gm in male and

135gm in female. 2BPS- 2 border, 2 polls, 2surfaces.
Rt. Kidney is slightly lower than left.
Left kidney is little narrower and longer than right.
Hilum of kidney - contains- From ant to post - Renal vein, renal artery, pelvis.
Ureter (गविनी): 10 Inch long, Diameter 5 mm
Urinary bladder (बस्ति/मुत्राशय) - Apex - upward, Base downward.
Mean capacity in adult is 220ml (120 -320 ml)
Urge to micturation > 220ml.
Filling upto 500ml may be tolerated, beyond this becomes painfull.
Arterial supply- Sup and inf. Vesical arteries. In female urovesical ligament is present in place of puboprostatic ligament. Ligament of bladder-5 true and 4 false. Shape-Empty-tetrahedral, full- oval
Prostate (पौरूषग्रंथी):- 3cm long, 4cm breadth, Thickness 2cm Weight - 8gm. Apex downwoards & base upward i.e. opposite to urinary bladder.
Position- In lesser pelvis below the neck of urinary bladder. It is a accessory gland of male reproduction system, which adds to the bulk of seminal fluid.
Lobes (5)- Lat (2) Rt and Lt, Ant, post, median.
Ant. Lobe - No possibility of adenoma.
Post. Lobe- site of primary carcinoma, never the adenoma.
Median lobe- common site of adenoma
Lat. Lobe - site of adenoma in old age. Inner smaller zone is site of benign hypertrophy. (BPH).
Outer larger zone, is site of carcinoma.
Urethra (मुत्र प्रणाली):-In male 18-20 cm
i) Prostatic part 3cm , ii)Membranous part 1.5- 2cm
iii) Spongy part - 15cm. In female 4cm.
Breast : Modified sweat gland. Position 2nd to 6th rib.
Development in 4th week of intrauterine life.
75% lymph of Breast is drains into Axillary lymph node. Pseudo orange appearance of breast due to obstruction of superficial lymph vessels of breast.
Nipple is pierced by 15-20 lactoferrous duct, montogomery tubercle on areola.
Ovary (डिंब्बग्रंथी/बीजकोष)- 3cm long, 1.5 cm broad and 1cm thick. Almond shape. Ovary is smooth before puberty and horizontal in multipara. Ovarian artery is direct branching of abdominal aorta.
Ovum - Largest cell in the body.
Fallopian tube/ Uterine tube (बीजवाहिनी) :- Length 10 cm
Situated in free upper margin of broad ligament of uterus.
Parts - Infundibulum, Ampulla, Isthmus, Fertilization takes place in Ampulla.
Fallopian valve is also called Ileocaecal valve.
Uterus / Womb (गर्भाशय)
Length 3 inch, breadth 2 inch and thickness 1 inch
Weight 30-40 gm. Isthmus - upper ⅓ of cervix.
Angle of Anteflexion (गर्भाशयकपूर्व संकोच)- 125^0 Angle of antiversion (गर्भाशयकी पूरोनती) - 90^0
Mesentry – 15cm Ligaments of uterus (7) peritoneal lig (4) Fibro muscular (3) supplied by uterine artery & partial by ovarian artery. Cervix - 2.5 cm in length. In fetal life cervix is larger than the body. In pregnancy growth of uterus due to hypertrophy & hyperplasia.
Vagina (योनी/अपत्यपथ):-In erect posture, it is directed upward and backward with a slight forward convexity makes an angle of about 45^0 with uterus. In supine position makes an angle 75^0 with horizontal plane.
Length -Ant. vaginal wall 8 cm & that of post. 10 cm.
No gland in vaginal mucosa. Upper ⅔ of vagina from uterus is pain insensitive & lower ⅓ is pain sensitive.
Vaginal Fluid - Acidic because of fermentation of glycogen in vaginal cell due to doderlein bacilli.
Scrotum:- 5 layers. 1) Skin 2) Dartos muscle 3) Ext. spermatic fascia 4) Cremastric fascia 5) Int. spermatic fascia.
Testis (वृषणग्रंथी/अंडग्रंथी):- Oval shaped.
1 ½ inch in length, breadth - 1 inch, thickness ¾ .
Weight - Each of 10-15gm.
Testis is covered by 3 coats, Tunica vaginalis, Tunica albuginia and Tunica vasculosa.
In hydrocele fluid accumulates in processes vaginalis.
Testicular artery is branch of Abdominal aorta.
Epidydimis act as reservoir of spermatozoa.
Deep artery of penis- helicine artery and carpora cavernosa. Dorsal artery of penis - Glans penis.
Vas deference - Length - 18 inch
Sternum- Sternal angle/angle of Louis. 7 inch length.
parts upper - Manubrium, middle - body, lower – xiphoid process.
Bone marrow examination by the manubrial puncture.
Lungs : Root of Lung 5, 6, 7 thoracic vertebrae.
weight - Lt - 575 gm, Rt Lung - 625 gm. Lobes-Lt – 2 lobes & 8 bronchopulmonary segment. Rt- 3 lobes & 10 bronchopulmonary segment (Independent respiratory unit) Lingula of lt lung corresponds to middle lobe of Rt. Lung.
Trachea bifurcate at the level of T_4.
Trachea :4-6 Inch. Long Respiratory bronchioles are called pulmonary unit. Epicardium is supplied by Autonomic nerves & is not pain sensitive. Pericardial effusion is done by puncturing at the 5th and 6th intercostal space just below the apex beat.
Oesophagous : 10 Inch long (Thoracic 8½ Inch, Abdominal 1½ Inch) 4 constriction.
It pierces diaphragm at level of T_{10}.
Thoracic duct : 18 Inch long.
It is longest lymphatic vessel in the body.
Heart - (हृदय)- Position - Middle mediastinum
Lies ⅓ in Rt. and ⅔ in Lt side of median plane.
Weight - 300 gm in male, 250 gm in female.
Length and width - 12 and 9 cm.
Atrioventricular sulcus - Coronary sulcus.
Apex beat - 5th Intercostal space. Apex of heart is Lt ventricle-supplied Lt coronary artery.
S.A. node (Horse shoe shaped) - Pace maker of heart.
IVC pierces the diaphragm at T_8 Aortic opening at the level of T_{12}.

PHYSIOLOGY

BLOOD:

Color- Arterial blood - Scarlet red
Venous blood- Purple red.

Volume - 4.5 - 5 litres.

pH- 7.4 (7.3 - 7.5) ; Slightly alkaline.

Specific gravity- 1.052 - 1.060

Formation of Blood -

Starts from 3rd week of intra uterine life.

1) Intravascular erythropoesis / Mesolithic phase - 3rd week to 3rd month of intrauterine life- RBCS forms in mesoderm of the yolk sac.

2) Hepatic phase- 3rd month to 5th month - RBC forms in liver and spleen.

3) Myeloid phase- 5th month to onwards- RBC forms in Red Bone Marrow

4) Post natal erythropoesis-In red bone marrow. After the age of 20 yrs, red blood cells are produced from flat bones like cranial bones, sternum, ribs, vertebrae, scapula, pelvic bones & upper ends of the long bones (Humerus and Femur)

Blood group-

Landsteiner's law regarding blood group :-

Blood group	Agglutinogen (Antigen) Present on cell membrane of R.B.C.	Agglutinin (Antibody) Present in the plasma
A	A	Anti B (β)
B	B	Anti A (α)
AB	A and B	---
O	---	Anti A and anti B

During blood transfusion, agglutinogen of the doner and agglutinin of the recipient are given importance. R.B.C. are suitable for transfusion for 3 weeks after collections. After transfusion in body, RBC becomes active after 3 days. Stored blood for transfusion, platelets live for 3 days.

Donor's blood group (Agglutinogen)	Recipient's blood group (Agglutinin)			
	A (Anti B)	B (Anti A)	AB (-)	O(Anti A, Anti B)
A (A)	±	-	±	-
B (B)	-	±	±	-
AB (A,B)	-	-	+	-
O (-)	+	+	±	+

Blood Group 0^{+ve} - Universal donor

Blood Group AB+ve - Universal recipient

Commonest Blood Group - O

Blood Group "O" is more prone to Duodenal ulcer, haemolytic tendency.

Blood Group A - More prone to carcinoma of stomach, carcinoma cervix and thrombosis.

For an AB individual if AB blood group is not available, A is better than B. In mismatched blood transfusion, only the donor's erythrocytes are not harmed. There is no naturally occurring antibody against Rh antigen.

Haemolysis and Anaemia due to Rh incompatibility in the foetalis is known as Erythroblastosis foetilis. It is also called haemolytic disease of new born(HDN) or Icterus gravis neonatorum. It is prevented by Giving antibody mediated immunosuppression. It is cured by exchange. Tranfussion through umbilicus.

Blood clotting / coagulation factors - 13

Clotting Factor	Name
Factor I	Fibrinogen
Factor II	Prothrombin
Factor III	Tissue thromboplastin
Factor IV	Calcium
Factor V	Proaccelerin/ Labile factor
Factor VI	Presence has not been proved
Factor VII	Serum prothrombin conversion accelerator (SPCA) / Proconvertin stable factor
Factor VIII	Antihaemophilic factor (AHF) / Antihaemophilic globulin (AHG)/ Anti haemophilic factor – A
Factor IX	Christmas factor / Antihemophilic factor - B / Plasma thromboplastin component (PTC)
Factor X	Stuart factor / Stuart power factor
Factor XI	Plasma thromboplasstin antecedent (PTA) / Antihaemopohilic factor C
Factor XII	Hageman factor/ glass contact factor
Factor XIII	Fibrin stabilizing factor
Pre- kallikrein	Fletcher factor
HMW kininogen platelets	Fitzerald to for; HMWK.

Conversion factors of Prothrombin to thrombin

(1) X (X activated)
(2) V (V activated)
(3) Phospholipids from platelets
(4) Calcium

Factors opposing coagulation- Anticoagulants:

Heparin, Heparan, Dicoumoral, warfarin, EDTA, Oxalate compounds, Antithrombin - III rd protein C.

Factor causing lysis of existing clot- Plasmin or fibrinolysin. Plasmin is formed from plasminogen. Lysosomal enzymes, plasminogen activator & thrombin convert plasminogen into plasmin.

Opposing platelet aggregation factor – Endoperoxidase and prostacyclines.

Coagulation factors produced in liver I, II, V,VII, IX, X.

Vit K is required for formation of II, VII, IX, X factors.

Factor VIII deficiency causes - Haemophilia A (Classical haemophilia)

Factor IX deficiency - Haemophilia B occurs

Factor XI deficiency - Haempohilia C occurs

Vascular haemophilia / Von willbran's disease – Psuedohaemophilia

Blood gas Analysis -

Gas	Inspired	Alveolar	Mixed venous	Arterial blood
O_2	158	100	40	95
CO_2	0.3	40	46	40

Character	Arterial blood	Mixed venous blood
O_2 tension	95 mm Hg	40 mm Hg
O_2 content	19 ml / 100 ml	14 ml / 100 ml
%Saturation of Hb	95 %	75%

Oxygen capacity - 20 ml / 100 ml

% saturation of Hb-Oxygen content/ oxygen x 100 capacity

Blood flow to different organs (ml/min)

1) Adrenal gland	25 ml/min
2) Thyroid gland	50 ml/min
3) Bronchi	100 ml/min
4) Other tissues	175 ml/min
5) Heart	200 ml/min
6) Bone	250 ml/min
7) Skin (cold weather)	300 ml/min
8) Brain	700 ml/min
9) Muscle (inactive state)	750 ml/min
10) Kidney	1100 ml/min
11) Liver	1350 ml/min
Total	5000 ml/min

Heart sounds:

1) First heart sound-

Long, soft & low pitched; resembles the spoken word 'LUBB'. It is produced due to closure of tricuspid & bicuspid (mitral) valves. Produced during ventriculars systole and earlier part of ejection period.

Audible in the clinical mitral area

i.e. left 5th intercostal space.

Duration of sound - 0.10-0.17 sec Coincides with peak of 'R' wave in ECG Splits in bundle branch block.

In long P.R. interval, it is faint In mitral incompetence, it is replaced by murmur More intense in left ventricular hypertrophy.

2) Second heart sound

Short,sharp and high pitched; sound like spoken word 'DUBB'.

Produced due to simultaneous closure of both the semilunar valves.

Produced during the onset of vertriculer diastole Best heard on the clinical pulmon ary area

i.e. left 2nd intercostals space near sternum.

Duration of sound - 0.10 - 0. 14sec.

Coincides with 'T' wave. Sometimes, it may procede 'T' wave or may commence after the submit of 'T' wave. More intense in systemic hypertension and it is called 'Metallic heart sound'.

In aortic incompetence, it is replaced by murmur.

3) Third heart sound

Mild sound & can be heard only by using a microphone. It is heard with stethoscope.

In children & athletes.

Produced during rapid filling period of cardiac cycle.

Short, low pitched sound.

Duration - 0.07 - 0.10 sec.

Produced due to vibrations set up in ventricular wall, when blood rushes into ventricles during rapid filling stage. Appears both 'T' and 'P' waves of ECG.

4) Fourth heart sound

Short and low pitched sound.

Duration- 0.02-0.04 sec.

Produced during atrial systole when vibrations are set up in actual musculature & in flaps of atrio ventricular valves. Coincides with interval between the end of P wave & onset of Q wave. It is an "Inaudible sound" it is studied only by graphical recording i.e. by phonocardio-graphy.

Considered as the "Physiologic atrial sound".

Triple heart sound/ Galloping rhythm:

When intensity of 3rd or 4th heart sound increases, it could be heard along with 1st & 2nd heart rounds. Sounds produced are like galloping of horse. eg. Myocardial infarction, sever hypertension.

Cardiac murmurs :- Types -3

Systolic murmurs	Diastolic	Continuous
1- Incompetence of AV valves	1- Stenosis of AV valves.	1-Patent ductus arteriosus
2- Stenosis of SL valves	2-Incompetence of SL valves	
3-Anaemia		
4- Septal defect		
5- Coarctation of aorta		

Rate of impulse generation-

SA node - 75/min.

A.V. node - 60/min.

AV junctional tissue - 50/min

Bundle of His - 30/ min

SA node generates impulse regularly at interval of about 0.8 sec.

Pacemaker of heart - SA node

Alternate pacemakers - AV node,

Bundle of His and arborization network.

Cardiac muscles cannot be tetanised due to long refractory period.

When tachycardia occurs, time of cardiac cycle is shortened at the cost of diastole but systole is little affected.

Cardiac cycle:-

Time of cardiac cycle = 0.8sec

Atrial systole = 0.1 sec.

Atrial Diastole = 0.7 sec.

Venticular systole =

Isometric contraction = 0.05 sec

Rapid ejection = 0.10 Sec.

Reduced ejection = 0.15 sec

0.3 sec

Ventricular diastole -

Protodiastolic phase	= 0.04 sec
Isometric relaxation	= 0.16 sec
1st Rapid filling phase	= 0.10 sec
Diastasis	= 0.20 sec
Last Rapid filling phase	= 0.10 sec
	0.5 sec

Stroke volume - Amount of blood pumped out by each ventricle each beat = 70 ml

Minute volume/ Cardiac output (c.o.)
= Stroke volume x Heart rate
= 5 lit/ per ventricle/ min

Cardiac index = C.O. per square meter of body surface Area = 2.8 ± 0.3 lit /sq.m./ min
= 3.1/lit/sqm/min

Stroke volume index = Stroke vol/ surface area of body = 40 ml/sq.m.

Pulse rate:- In foetus - 150 -180 / min
At birth - 130 - 140/ min
At 10 years of age - 90 / min
After puberty - 72/ min

Abnormal pulse -

1) Pulsus Deficit- Pulse rate is less than heart rate, due to reduced stroke volume, pulse becomes weak and disappear before reaching peripheral arteries. eg. Atrial fibrillation

2) Pulsus paradoxus- The pulse becomes very strong & very weak alternately in relation to that of respiratory cycle. eg.Cardiac temponade, deep breathing.

3) Water hammer/ Collapsing pulse- Pulse exhibits rapid, forceful upstroke & equally rapid downstroke, Aortic regurgitation, patent ductus arteriosus etc.

4) Thready/ Weak pulse- Pulse rate is fast but volume is low and is hardly felt at arteries.

5) Arrhythmic pulse is found in atrial fibrillation, extrasystole heart block.

Velocity of pulse - In young adult - 5 meter /sec
In old age - 7 meter / sec.
Velocity of Blood - 0.25 meter/sec.

Blood Pressure :

1) Systolic B.P. (SBP) - Maximum Presure exerted in the arteries during systole of heart. - 120 mm Hg Range -110-140 mm Hg

2) Diastolic BP (DBP) - Minimum pressure during Diastole of heart - 80 mm Hg Range - 60-80 mm Hg

3) Pulse Pressure = SBP - DBP = 40 mm Hg

4) Mean arterial pressure - DBP + 1/3 pulse pressure - 93 mm Hg

B. P.a/c to age-Systolic BP - In newborn - 40 mm Hg
After 15 days - 70 mm Hg
After 1 Month - 90 mm Hg

Normal B.P. At puberty - 120/80 mm Hg
At 50 years - 140/85 mm Hg
At 70 years - 160/90 mm Hg
At 80 years - 180/95 mm Hg

Lung Volumes - 4

1) Tidal volume = T.V = 500 ml = 0.5 lit Volume of air inhaled or exhaled with each normal breath
2) Inspiratory Reserve Volume (IRV) = 3000 ml = 3 lit (= 2 - 3 lit)
3) Expiratory Reserve Volume (ERV) = 1100 ml = 1.1 lit
4) Residual Volume (RV) = 1200 ml = 1.2 lit.

Lung capacities - 4

1) Inspiratory capacity (IC) = T.V + I.R.V.
= 0.5 + 3 = 3.5 lit

2) Functional Residual capacity (FRC)
= ERV + RV
= 1100 + 1200 = 2300 ml = 2.3 lit
Vital capacity = T.V. + IRV + ERV
= 500 + 3000 + 1100 = 4600 ml - 4.6 lit

3) Total lung capacity = TV+IRV+ERV+RV
= 500 +3000 + 1100 +1200
= 5800 ml = 5.8 lit = 6 lit

Nerve Transmitters :

1) Acetyl choline (Ach) - Released by some neuromuscular and neuroglandular functions at synapses between certain brain and spinal cord cells, Ach leads to excitation. Blockage of Ach receptors in sketetal muscles leads to myasthenia gravis.

2) Seratonin (5 HT)- It leads to excitation and may be involved in inducing sleep, sensory perception temperature regulation and control of mood.

3) Nor- epinephrine (NE)- Concentrated in locus semilunaris of brain stem.
Nor epinephrine probably causes excitation.

4) Glutamic acid and Aspartic acid-
Causes excitation of brain.

5) GABA - Causes inhibition of brain.

6) Glycine- Inhibition of spinal cord.

7) Dopamine (DA)- Concentrated in substantia nigra. Causes inhibition.
Decreased levels of dopamine associated with parkinson's disease.
Excess of dopamine in schizophrenia.

Upper Motor Neuron :-
There is loss of voluntary muscle power.
Tone of muscle increases (in case of spastic paralysis)
Tendon jerk is exaggerated. Babinski sign is +ve
Muscle atrophy is not seen.
Electrophysiology is normal.

Lower Motor neuron :-
Loss of voluntary muscle power.
Loss of tone of muscle (Flaccid paralysis)
Tendon jerk is not present.
Babinski sign is negative.
There is marked muscle wasting.
In electrophysiology, loss of conduction is seen.

PH values :
1) Gastric secretion - 1-3.5
2) Saliva - 6 - 7
3) Semen - 7.2 - 8
4) Synovial fluid - 7.32 - 7.64
5) C.S.F. - 7.34 - 7.46
6) Intestinal secretion - 7.5 - 8
7) Bile - 7.8
8) Pancreatic secretion - 8 - 8.3

Normal values :
1) R.B.C. (erythrocytes) Count
Male - 4.5-5.5 million/ mm^3
Female - 4 - 4.5 million/ mm^3
2) WBC count (TLC) - 4000 - 11,000 / mm^3
3) DLC-(A)Granulocytes-
Neutrophils - 50-60 %
Eosinophils - 2 - 4 %,
Basophils - 0 - 1%
B) Agranulocytes - Monocytes - 2 - 6 %
Lymphocytes - 20 - 30 %
5)Haemoglobin - In pregnancy - 10.5 gm%
At birth - 25 gm %,
Adult male - 15 gm %
Adult female - 14.5 gm %,
Average - 14-16 gm%
Glycosylated Hb - 3.8 - 6.4 %
6) Platelets / Thrombocytes - 2.5 lakhs / mm^3
(2-4 lakhs)
7) PCV / Haematocrit value - Males - 40 - 45%
Females - 38 - 42 %
8) Mean corpuscular volume (MCV) - 90 cubic microns (8 -90 cu P)
9) Mean corpuscular Haemoglobin (MCH) - 30 picogram (2-32 pg)
10)Mean corpuscular haemoglobin concentration (MCHC) - 30% (30 - 38%)
11) Bleeding Time (B.T.) - 3 - 6 min
12) Clotting Time (C.T.) - 3 - 8 min
13) Prothrombin Time - 12 sec (11.1 - 13.1 sec)
14) ESR-Males - 3- 7 mm in one hour
(By westergren's method).
Female - 5-9 mm in one hr.
15) Blood sugar level - Fasting - (70 - 110) 80-90 mg / dl (mg %)
(After meal) Post prandial (pp)-120-140 mg/dl,
Random - 140 - 160 mg/dl
16) Plasma glucose - Fasting - 75 - 115 mg/dl
P.P. - < 125 mg/dl. If plasma glucose > 125 mg/dl, then it is diabetes mellitus.
17) Average plasma volume-4.5-5ml/kg body wt.
18) Plasma proteins :-
Total proteins - 7.3 gm% (6.4 - 8.3gm)
Serum albumin - 4 gm% (3.5 - 5.5)
Serum globulin - 2.3 gm% (2-3.5gm%)
Fibrinogen - 0.3 gm%
19) Blood urea - 15 - 40 mg %
20) Serum uric acid - 2.5- 7 mg %
21) Sr.creatinine - 0.5 - 1.5 mg%
22) Sr.Sodium - 135-150 meq / L
23) Sr. Potassium - 3.5 - 5.5 meq / L
24) Sr.Chlorides - 98 - 110 meq/L
25) Sr. Calcium - 7 - 11 mg/dl
26) Sr. Cholesterol - 150 - 250 mg/dl
LDL - < 100 mg/dl,
HDL - 40 - 60 mg/dl
Sr. Triglyceride - 50 - 150 mg/dl
27) Sr. Magnesium - 2-3 mg/dl
28) Sr. Iron - 50 - 150 mg/dl
29) Sr. Amylase - 60 - 180 U/Liter
30) Sr. Alkaline phosphate - 30 - 120 U/Liter
31) Serum LDH - 100 - 190 U/Liter
32) Bilirubin level - Total - 0.5 - 1.5 mg %
Direct - 0.1 - 0.3 mg%.
Indirect - 0.2- 0.7 mg %
Adult - 0.5 - 1.5 mg%.
New born - 0.4 -4 mg %.
After 3 days - 1 - 10 mg%.
33) Ketone bodies - 0 - 1.5 mg / 100 ml
34) SGPT/ALT - 0 - 40 Karmen units/ dl
35) SGOT/ AST - 0 - 35 Karmen units/ dl
36) Glomerular filtration rate (GFR) of urine – 180 lit/day or 125 ml/min
37) Urea clearance -Standard - 40 - 60 ml/min
Maseimal - 60 - 100 ml /min
38) Creatinine clearance-Male - 110-150 ml/min
Female - 105 - 132 ml/min
39) TSH - < 10 U/ ml (0.4-4.7 μ u/ml)
T_3 - 70 - 190 μg/ dl.
T_4 - 4.5 - 11.5 μg/dl
40) Rheumatoid Factor (R A factor) - < 20 IU/ml

Life span- RBC - 1) 120 days.
2) Platelets - 10 days (8-11 days).
3) Neutrophils - 2-5days
4) Eosinophils - 1-15 days
5) Monocytes - 2-5 days
6) Lymphocytes 1/2 - 1 day

Urine - Specific gravity - 1002 - 1035.
PH - 6, Acidic.
Quantity - 1 - 1.5 lit/day

CSF :- Clear, Colourless
Quantity - 150 ml (100 - 200 ml)
Rate of formation - 0.3 ml/min
Sp. Gravity - 1005.
Reaction - Alkaline
Pressure exerted by CSF - In lateral recumbent Position- 10- 18 cm of H_2O
In sitting position - 30 cm of H_2O
CSF contains Lymphocytes - 5/cu. mm
Glucose - 40 - 100 mg/ dl
Proteins - 15-45 mg/dl
Chlorides - 600 - 700 mg/ dl

Semen :- Sp. Gravity - 1028
Volume - 2-6 ml/ejaculation
Reaction - Alkaline. PH - 7.5
Spermatocrit - 10%.
Sperm - 100-150 million/ml of semen.
Male sterility occures when count < 20 million/ml.
Rate of motility in female - 3 mm/min.
Sperm reach to fallopian tubes in about 30 - 60 min after intercourse.
Bile : Volume - 800 - 1200 ml/day
Reaction - Alkaline. PH - 8- 8.6
Sp. Gravity - 1.010 - 1.011.

Difference between Haemolytic and obstructive jaundice

Features	Haemolytic J.	Obstructive J.
Sr. Bilirubin level	Very high with more unconjugated bilirubin	Very high with more of conjugated bilirubin
Urobilinogen in urine	Excess	Absent
Bile pigments and salts in urine	Absent	Present
Van den- Bergh's reaction	Indirect - +ve	Direct- - ve
Liver functions	Normal	Exaggerated
Haemorrhagic tendency	Absent	Present due to lack of vit K

Important Points :-
1) Best absorbed sugar - Galactose
2) Animal starch - Glycogen
3) Tissues rich in glycogen - Liver muscle
4) Inulin is used for glomerular filtration Rate (G.F.R.) measurement.
5) Strongest acid in the body - Heparin
6) Hyaluronidase - Present in testes and spleen.
7) Definitely essential fatty acid - Linoleic acid
8) Storage form of lipids - triglycerides.
9) Sulpholipids are abundant in Brain
10) Proteins contain 16 % of N_2 - 0.16 gm N
11) Simplest amino acid – Glycine Simplest protein- Protamine & it is antidote for Heparin
12) Cholesterol detection and quantitative estimation Can be done by a) Leilberman- Burchard reaction. b) Zimmerman reaction. c) Salkowrki reaction.
13) Histamine is formed from histidine
14) Haemoglobin is rich in Histidine
15) Aminoacid excreted in urine - Histidine in pregnancy
16) Protein which is not an antigen - Gelatin
17) Dopa, Dopamin, thyroxin, epinephrine, nor-epinephrine, melanin- are synthesized by acid- tyrosine.
18) Resynthesis of ATP in muscle by breakdown of creatinine phosphate is by Lohman's reaction.
19) Inhibin hormone created by ovary, testes. It suppresses FSH release by pituitary.
20) **Erythropoietin**:- a) Secreted by juxta glomerular cells of juxta glomerular apparatus of kidney.
b) Acts on bone marrow.
c) Stimulates R.B.C. Production
21) **Heparin** : a) Secreted by mast cells
b) Role in mastocytosis syndrome
c) Cause defects of coagulation
22) Histamine - Secreted by mast cells
23) **Renin :**
a) Secreted from juxta glomerular cells & other cells of juxta glomerular apparatus from ischaemic kidney.
b) Formation of angiotensin
24) Urea cycle also called as - Kreb's /Hansiet's cycle / Ornithine cycle.
Glycolysis also called - EMP pathway
25) x- chromosome can be seen in buccal smear
26) Barr body is genetically inactive
27) Colchicine can stop cell division
28) Philodelfia chromosome - Translocation of long arm of 22nd chromosome on 9th chromosome.
29) Fuel of spermatozoa-Fructose/Citrate of semen
30) Functions of limbic system - Rage, panic, emotions, sexual behaviour.
31) In foetus, testis begin to form at 7th week, and ovaries - 9th week.
32) Semen contain buffers and the buffer maintains the vaginal PH to about 7 upto 10 hrs.
33) In polycythemia vera - RBC, leucocytes, platelets count increases
34) In Aplastic anaemia-Platelets maximum affected In pernicious anaemia- Platelets remain normal.
35) In uraemia - Burr cells } are seen in
In cirrhosis- Spur cells } blood smear
36) Iron consumed per day - 10 -20 mg by an average individual.
37) R.B.C. are destroyed in - Spleen, liver, bone marrow.
38) Myeloid tissues are Red bone marrow.
39) Lymphoid tissues are lymph node,thymus, spleen.
40) Human body contains 22 aminoacids and 24 minerals.
41) Kupffer's cells are found in the liver.
42) Energy from - 1 gm protein - 4 kcal.
1 gm carbohydrates - 4 kcal. 1 gm Fat - 9 kcal.
43) According to marey's law; Heart rate α $^1/_{B.P.}$
44) But in exercise, heart rate and B.P. Increases
45) In pregnancy, heart rate decreases.
46) Ratio both myeloid: erythroid tissues - 3:1
47) Ratio between fat cells: blood cells - 1:1
48) Serum - Plasma - Fibrin
49) Resting membrane potential - 65 mv to - 95 mv (-70 mv)
50) Vomiting centre,Sneezing, coughing, swallowing centre, Respiratory centre - In medulla, Hunger, thirst, temperature centre-Hypothalamus
51) Contents of limbic system - limbic lobe, amygdala, hippocampal formation, hypothalamus and part of thalamus.
52) Gastric juice volume- 2-3 lit in 24 hrs
Gastric juice pH - 1.6 - 1.8

Inclusion I
1) Negri bo
2) Warthin'
3) Babes er
4) Counsiln
5) Lewis bc
6) L.D. bod
7) Donovan
Disease
1) Plague
2) Gonorrhc
3) Chancroi
4) Brucellos
5) Bacterial
6) Chaga's d
7) Carrion's
8) Bacterial
9) Dengue
10) Syphilis
11) Kala-aza
12) Filariasis
13) Rabies
14) Viral enc
15) Rat-bite f

Diagnostic T
1) Benedict T
2) Dick test
3) Esbachs te
4) Gmelins te
5) Fouchet's t
6) Florance te
7) Montoux te
8) Mitsuda tes
9) Rose water
10) Rober's te
11) Hays test
12) Winslow t
13) Widal test
14) Shilling te
15) Macewon'
16) Morgui's t
17) Reinsh's te
18) Rose Benga
19) String test
Most common
In Male - Ca oi
In - Children -
Ca breast is an
throughout the
commonest site
Staph. aureus.

PATHOLOGY

Inclusion Body :-	Seen in
1) Negri bodies	Rabies
2) Warthin's finkeldy bodies	Mealses
3) Babes ernest granules	Diptheria
4) Counsilman bodies	Yellow fever
5) Lewis bodies	Parkinsonism
6) L.D. bodies	Kala-azar
7) Donovan bodies	Granuloma inguinale

Disease	Etiologic agent
1) Plague	Yersinia pestes
2) Gonorrhoea	Neisseria gonorrheae
3) Chancroid	Haemophilus ducreyi
4) Brucellosis	Brucella melitensis B.abortus, B.Canis, B.Suis
5) Bacterial endocarditis	Streptococcus viridans Staphylococcus aureus
6) Chaga's disease	Trypanosoma cruzi
7) Carrion's disease	Bartonella baciliformis
8) Bacterial meningitis	E. coli, H. influenzae, Neisseriae meningitiis
9) Dengue	Toga virus
10) Syphilis	Treponema pallidum
11) Kala-azar	Leishmania maxicana
12) Filariasis	Wuchereia bancrofti
13) Rabies	Rabies virus (Arbovirus)
14) Viral encephalitis	Arthropod-bone virus
15) Rat-bite fever	Spirillum minus, steptobacillus moniliformis

Diagnostic Tests :-

1) Benedict Test -Quantitative test for urine albumin	
2) Dick test	Scarlet fever
3) Esbachs test	For urine albumin
4) Gmelins test	Bile pigments
5) Fouchet's test	Bile pigments
6) Florance test	To detect seminal stains
7) Montoux test	Tuberculosis
8) Mitsuda test	Hansan's disease
9) Rose water test	Rhematoid arthritis
10) Rober's test	For ketone bodies
11) Hays test	Bile salts.
12) Winslow test	To detect breathing
13) Widal test	Enteric fever
14) Shilling test	Vit B12 deficiency
15) Macewon's test	For Alcohol poisoning
16) Morgui's test	For Opium poisoning
17) Reinsh's test	For Arsenic poisoning
18) Rose Bengal card test	Brucellosis
19) String test	Cholera

Most commonly occurring pathologies malignancies.
In Male - Ca oral cavity. Infemale Ca cervix.
In - Children - Acute leukaemias.
Ca breast is among the commonest of human cancers throughout the world. Upper & outer quadrant is the commonest site of ca Breast. Common organism Staph. aureus.

PHARMACOLOGY

Detailed study of drugs, particularly their actions on living animals, organs or tissues.

Pharmacognosy: Science of identification of drugs

Pharmacy - Science of identification, selection, preservation, standardization, compounding and dispensing of medicinal substances.

Pharmacodynamics -The quantitative study of the biological and therapeutic effects of drugs. (What the drug does to the body)

Pharmacokinetics -The study of absorption, distribution, metabolism, and excretion of drugs and their relationship to pharmacologic response. (What the body does to the drug)

Therapeutics - (To care for) A branch of medicine concerned with care of disease or relief of symptoms and includes drug treatment

Drug (Drogue - dry herb) - A drug is any substance/ product that is used to modify or explore physiolgical systems or pathological states for benefit of the recipient.

Chemotherapy - Concerned with the effect of drugs upon microorganisms & parasites, living & multiplying in a living organism.

Pharmacopoeia - An official code containing a selected list of the established drugs and medicine preparations with discriptions of their physical properties and tests for their identity, purity potency e.g. Indian pharmacopoeia (IP), British pharmacopoeia (B.P.) etc.

Bioavailability - The amount or percentage of drug that is absorbed from given dosage form and reaches the systemic circulation following non-vascular administration. When the drug is given I.V., the bioavailability is 100% .

Biotransformation-Chemical change in the basic structure of a drug molecule inside the body.

Affinity-Ability of a drug to get bound to a receptor.

Intrinsic activity/Drug efficacy –
Ability of a drug to elecit a pharmacological response after its interaction with the receptor.

Agonist : A drug which initiates a pharmacological action after combining with receptors.
It has high affinity and high intrinsic activity.

Antagonist - Drugs which bind to the receptor but are not capable of eliciting pharmacological response, produce receptor blockade. They have some affinity but its intrinsic activity is poor.

Agonist antagonist-The drugs which act as agonist on one receptor and antagonist on another receptor.

Synergisms-When the action of a drug is increased or facilitated by another, it is called synergism.
It is of 2 types. a) Additive effect - effect of 2 drugs are in same direction and simply add up.
eg. Effect of A + B - effect of A + effect of B
(b) Supra additive effect - effect of combination is greater than the individual effect of the components.
eg. Effect of A + B > effect of A + Effect of B .

Median lethal dose/LD_{50} : The dose (Mg/kg) which would be expected to kill one half of unlimited population of same species or strain.

Median effective does/ED_{50} :- The dose (mg/kg) which produces a desired response in 50% of test population.

Therapeutic index - Approximate assessment of the safety of the drug.

Therapeutic Index (TI) - $\frac{LD_{50}}{ED_{50}}$

Drug action : Initial combination of the drug with its receptor resulting in conformational change in receptor.

Drug effect : Ultimate change in biological function brought about as a result of drug action.

Drug potency :
Amount of drug needed to produce certain effect.

Dose : Appropriate amount of a drug needed to produce a certain degree of response in a patient. It may vary according to the expected type of response.

Cumulation : Any drug cumulates in the body when rate of administration is greater than rate of elimination eg. It adds to the side effects to the drug

Drug tolerance : When an unusually large dose of a drug is required to elicit an effect ordinarily produced by the normal therapeutic dose of the drug.

2 types - 1) True tolerance
2) Apparent or pseudotolerance

Drug excretion :-

1) Through urine and faeces: Ampicillin, Erythromycin, Oral contraceptive pills, Rifampin, Tetracycline.
2) Through intestine: Purgatives, Laxatives, Heavy metals.
3) Through lungs : Volatile general anaesthetics, Paraldehyde, Alcohol.
4) Skin: Arsenic , Mercury
5) Bile: Novobiocin, Erythromycin, Phenolphthalein
6) Saliva & sweat: Heavy metal Lithium, Potassium iodide, Rifampin
7) Through milk: Almost all drugs are excreted in milk. Alkaline drug are excreted in milk. Morphine, Diazepam, Sulphonamides, Nifedipine, Anti histamines, Metronidazole, Metoclopramide etc.

Effect of food on drug absorption :-

1)Food aids the absorption of Chloroquine, Carbamazepine Spironolactone Riboflavine, Lithium carbonate.
2) Food hinders absorption of-Ampicillin, Aspirin, Captr opril, Digoxin, INH, Penicillin G, RifampicinTetracycline.

Plasma half life/Biological half life (t 1/2) :-
Time taken for the plasma concentration of a drug to be reduced to half of its original value. 4-5 (t ½) are required for complete drug elimination.
eg. Aspirin - 4 hrs. Digoxin - 24-48 hrs.
Digitoxin - 5-7 days, Doxycycline - 20 hrs.
Penicillin - 30 min.

Adverse Drug Reaction (ADR) :- Any response to a drug that is noxious & unintended & that occurs at doses used in man for prophylaxis, diagnosis or therapy.

Side effects-Pharmacological effects produced with therapeutic dose ofthe drug.
eg. Dryness of mouth with atropine.

Toxic effect - These are seen usually when a drug is administered repeatedly and/or in large doses. eg. Barbiturates given for sedation can produce coma if given in excess quantity.

Drug intolerance - Inability of an individual to tolerate a drug.

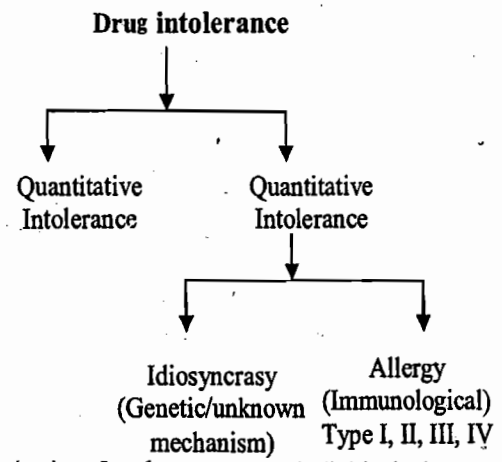

A) Quantitative Intolerance: An individual shows a hyper response to the therapeutic or even smaller doses of the drug eg. Vomiting with a single dose of salicylates.

B) Qualitative Intolerance :

i) Idiosyncrasy-This is due to other than immune mechanism. Abnormal reactions to the drug are precipitated some times because of genetically determined total absence or reduced activity of some enzyme in the body of the recipient eg. Drugs like Primaquine, Sulfonamides produce haemolysis in G6PD deficient persons.

In some cases cause is known, then it should be considered genetically determined until proved otherwise eg. Chloramphenicol induced aplastic anemia.

ii) Allergic reactions (Hypersensitivity) :

These may be mild or sever like anaphylaxis and have immunological base. They occur in individuals who have been sensitized following the prior administration of some drug. "When an individual has been sensitized to an antigen (allergen), further contact with that antigen can sometimes bad to tissue damaging reactions called hypersensitivity or allergic reactions."

Antidotes for emergency treatment of certain poisonings :-

Poison	Antidote
1) Paracetamol	N- acetylcysteine
2) Atropine and other cholinergic antagonists	Physostigmine
3) Carbon monoxide	Oxygen
4) Cyanide - Amylnitrite followed by sodium nitrite then sodium Thiosulfate	
5) Methyl alcohol and Ethyl alcohol	Ethylene glycol 4- Methyl pyrazole
6) Nitrites	Methylene blue
7) Opioids	Naloxone
8) Benzodiazepines	Flumazenil
9) Organophosphate	- Atropine, Pralidoxime compounds.

Anti Microbial Agnets (AMA)/ Antibiotics:-

1) Antibiotics mainly effective against gram +ve bacteria: Penicillins, lincomycin, Vancomycin Novobiocin, Macrolides (Erythromycin).

2) Antibiotics mainly effective against gram -ve bacteria: Streptomycin, Neomycin, other Aminoglycosides etc.

3) Antibiotics effective against both gram +ve and gram -ve bacteria : Ampicillin, Amoxycillin, Cephalosporins, Rifampicins, Neomycin etc.

4) Antibiotics effective against gram +ve and -Ve bacteria rickettsia & Chlamydia: Tetracyclines & Chloramphenicol.

5)Antibiotics effective against acid fast bacillus, (M.tuberculosis):
Streptomycin, Kanamycin, Vincomycin, Rifampicin.

6) Antibiotics effective against fungi:
Nystatin, Griseofulvin, Amphotericin.B.

7) Antibiotics effective against protozoa:
Tetracyclines, Paromomycin, Funagillin etc.

8) Antimalignancy antibiotics:
Actinomycin D, Mitomycin, Azaserine etc.

9) Antihelminthic: Albendazole, Mebendazole, Carbamazine, Niclosamide.

10) Bactericidal drug: Kills the bacteria eg. Penicillin, Streptomycin, Gentamycin, Vancomycin, Rifampicin, Ciprofloxacin, Co-trimoxazole. Cephalosporin's,.

11) Bacteriostatic drug stops the bacterial growth but does not kill eg. Tetracycline, Sulfonamide, Chloramphenicol, Erythromycin, Ethambutol.

12) Broad spectrum –
Chloramphenicol, Ciprofloxacin, Tetracycline.

13) Narrow spectrum: Penicillin, Streptomycin, etc.

Mechanism of action of Antibiotics/AMA:-

a) Interference with cell wall synthesis-
Penicillin,Cephalosporin,Vancomycin, Cycloserine

b) Inhibition of protein synthesis - Amino glycosides, Tetracycline's, Chloramphe-nicol, Erythromycin.

c) Cause misreading of M-RNA code -
Streptomycin, Gentamycin.

d) Interference with DNA function -
Refampicin, Norfloxacin

e) Interference with DNA synthesis -
Acyclovir, Pyrimethamine, Ethambutol.

f) Interference with intermediatary metabolism - Pyrimethamine, Ethambutol.

Sulfonamides: Adverse reactions:-
1) Stevens Johnson syndrome. 2) Kernicterus,
3)Thrombocytopenia causing petechiae,hematuria,& epitaxis
4) In G6 PD deficient patient, intravacuslar haemolysis.

Co-Trimoxazole :-
It is combination of trimethoprim & sulfamethoxazole in ratio of 1:5 preparation.
Adverse reactions:-
Thrombocytopenia, Aplastic anaemia.

Quinolones :-
Nalidixic acid - Dose - 500 mg. TDS/QID

Fluoroquinolones:
Norfloxacin, Ciprofloxacin, Ofloxacin, Pefloxacin, Lomefloxacin, Levofloxacin, Sparfloxacin.

Penicillins:- Penicillin is the first antibiotic to be used clinically. It was first obtained from the fungus penicillium notatum, but the present sources is P. chrysogenum.

Repository preparations:-
1) Procaine penicillin -
Dose : 6,00,000-12,00,000 units daily by IM/ inj.
2) Benzathine pencillin (Penidure) -
Dose - 6 lac - 24 lac units IM inj
Adverse reactions:- Anaphylaxis, thrombophlebitis of vein of administration, skin rashes, serum sickness, heamaturia, haemolytic anaemia.
Jarisch-Herxhemier reaction-seen in syphilis patient.

Macrolides :- 1) Erythromycin - Dose 250-500 mg 6 hrly. Adverse reaction - Cholestatic hepatitis and jaundice are common with erythromycin estolate.
2) Roxithromycin - Dose 150 mg BD or 300 mg OD take before meals.
3) Azithromycin - 10 to 15 mg/kg
4) Clarithromycin - 500 mg BD

Aminoglycosides :- All are ototoxic and nephrotoxic

For system use :-
1) Streptomycin - Dose 0.5-1gm OD, IM
Adverse reactions - Lymphadenopathy, exfoliative dermatitis, damage to 8th nerve. It is least nephrotoxic
2) Gentamycin –Dose 2-5 mg/kg/day in divided doses IM/IV
3) Tobramycin - Dose 3-5 mg/kg/day in 3-4 divided doses - IV/IM
4) Amikacin - Dose 15 Mg/Kg/day in 2 divided doses - IV/IM
5) Netilmycin 6) Kanamycin.

Cephalosporins :-

Ist generation		**Dose**	
Oral			
1) Cephalexin	250 mg	1gm	6-8 hrly
2) Cefadroxil	500 mg	1gm	12 hrly
Parenteral			
1) Cefazolin	500 mg	1gm IM/IV	6-8 hrly
IInd generation			
Oral			
1) Cefaclor	250 mg - 500 mg 8 hrly		
2) Cefuroxime axetil- 250-500 mg 12 hrly.			
Parenteral			
1) Cefamandole	500mg-2gm IM/IV 4-8 hrly		
2) Cefoxitin	1-2 gm IM/IV 6-8 hrly.		
3) Cefuroxime	750 mg -1.5 gm IM/IV 8 hrly		
IIIrd generation			
Oral			
1) Cefixime	200-400 mg/ day		
2) Cepodoxime	200-400 mg 12 hrly		
Parenteral			
1) Cefotaxime	1-2 gm IM/IV 8 hrly		
2) Ceftriaxone	1-2 gm IM/IV 12-24 hrly.		
3) Cefaperazone	1-2 gm IM/IV 8-12 hrly.		

4) Ceftazidime 1-2 gm IM/IV 8-12 hrly.
5) Ceftizoxime 1-2 gm IM/IV 8-12 hrly.

IVth generation

Cefepime 2 gm IV 12 hrly

Tetracycline's :-

1) Oral :- Tetracycline HCL, Oxytetracycline HCL
Dose :- Adults 1-2gm /day.
Children 15-25 mg/kg body wt daily.
2) Parenteral :- Oxytetracycline IM dose - 100 mg 8 hrly.
Tetracycline IV does - 1-2 gm 12 hrly in 2 divided doses

Chloramphenicol :-

1) Chloramphenicol
Dose : Adult : 1-3 gm daily children 25-50 mg/kg.
Adv. Reactions: Bone marrow toxicity-Aplastic anaemia; grey baby syndrome, allergy, peripheral neuritis.

Antifungal drugs :

A) Used topically : 1) Nystatin 2) Hamycin
B) Antibiotics : 1) Griseofulvin - 500 mg daily
2) Amphotericin B - 50-100 mg (QID)
Adverse reactions - Nephrotoxicity, anaemia, acute hepatic failure with jaundice
C)Antimetabolite:-1)Flucytosine-100-200 mg/kg/day in 4 divided doses
D) Imidazoles :1) Clotrimazole - 100mg tab, 1% cream 2) Miconazole - 2-4% cream.
3) Ketoconozole - 200-400 mg OD Adv. reactions - Gynaecomastia, loss of libido, loss of axillary and pubic hairs, oligospermia
E) Triazoles :- 1) Fluconazole - 150 mg OD- oral.
2) Itraconazole - 100-200 mg OD Adv. reaction - Hypokalaemia

Antiviral : 1) Idoxuridine - 0.5% drops or ointment 1-2 hrly.
2) Acyclovir - Dose Tab - 200-400 mg.
3) Amantadine - 100 mg OD/BD

Anti amoebic drugs :- 1) Metronidazole - Dose : 600-800 mg oraly TDS Adv. Reactions : Metallic taste in mouth, antabuse like reactions on alcohol consumption.
2) Tinidazole - 600-800 mg TDS X 5 days or 2 gm OD X 3 days .
3) Secnidazole - 2gm OD.
4) Emetine - 3-60 mg daily by SC or deep IM inj.
Adv. Reactions: Tachycardia, precordial pain, hypotension, myocarditis, pericarditis. C/I- Cardiac or renal damage, pregnancy, old people, young children.
5) Dehydroementine - 1mg/kg IM X 6-10 days.
Metronidazole contraindicated in neurological disease, in 1st trimester of pregnancy.
6) Diloxamide furoate 500 mg TDS X 5-10 days
7) Chloroquine, Tetrayclines, Paromomycin.

Antihelminthics :-

1) Mebendazole 100 mg BD for 3 days.
2) Albendazole 400 mg single dose
3)Thiabendazole, Pyrantel, Piperazine, Praziquantel, Niclosamide, Diethyl carbamazine (DEC), Hetrazan

Worm	Drug of choice	Alternative drug
Tapeworm	Praziquantel	Niclosamide
Roundworm	Albendazol /Mebendazole	Pyrantel
Hook worm	Albendazol /Mebendazole	Pyrantel
Whipworm	Mebendazol	Albendazole
Threadworm	Ivermectin	Thiabendazole

Drug of choice in filariasis is DEC Mebendazole contraindicated in pregnancy.
Piprazine, Niclosamide - Safe in pregnancy
Purgatives should be given 1-2 hrs after taking niclosmide

Antimalarial drugs

1) Quinine sulfate- Drug of choice in cerebral malaria and effective in P. falciparum malaria.
Dose 300 - 600 mg orally
A/d- Cinchonism (Ringing in ear's nausea, vomiting, headache, Hypoglycaemia, black water fever.)
2) Chloroquine - Other uses of Chloroquine – extraintestinal Amoebiasis, Rheumatoid arthritis, Giardiasis, Lapra reactions, SLE , Photogenic reaction
3) Primaquine - 15 mg daily for 14 days
4) Mefloquine -750 mg single dose orally. Mefloquine should be awakened in 1st trimester, Primaquine after large doses causes cyanosis, methaemoglobinemia, leucopenia, in G6PD deficient patient haemolysis occurs.

Anti - Leprotic drugs:

Dapsone, Rifampicin, Clofazimine, Ethionamide, Ofloxacin, Minocyclsine Clarithromycin
Dapsone dose 100mg daily
Adv. reaction: Haemolytic anaemia, hematuria methaemoglobinaemia contraindicated in G6 PD deficiency

Anti - Tubercular drugs :-

a) First line drugs - These have high anti tubercular efficacy and low toxicity used routinely,
i) Rifampicine (R) ii) Isoniazid / INH (H)
iii) Pyrazinamide (Z) iv) Ethambutol (E)
v) Streptomycin (s) vi) Thiacetazone (T)
b) Second line reserved drugs : Low anti tubercular efficacy and high toxicity. Ethionamide, Cycloserine, Clofazimine, PAS, Capreomycin, Kanamycine, Amikacin, Ciprofloxalin, Ofloxacin, Azithromycin, Clarithromycin.

Drugs	Daily dosage (Adults) wt < 50 kg	Daily dosage (Adults) Wt > 50 kg	Adverse reactions
1) INH	-	300 mg	Hapatitis, peripheral neuritis, pyridoxines deficiency,
2) Rifampicin	450 mg	600 mg	Acute hepatic and renal failure. Shock, flu like syndrome.
3) Pyrazinamide			
4) Ethambutol			
5) Streptomycine			

Rifampicin :
Rifampicin
faeces , sali
Rifampicin i
Rifampicin,
Increased se
arthritis due
Anti- Cance
Mechlortham
methotrexate,
Etopside, Tan
Adverse rea
Loss of hair (
impaired wou
inhibition in c
Antithyroid
1) Potassium
3) Propyl - Th
4) Methaimaz
(Neomercazo
daily, mainte
Insulin :- Pa
of about 200
about 50 unit
0.8 U/kg /1da
Adv. Reacti
itching, redn
lipodystrophy
Oral Hypogl
A) Sulfonylu
1 Chorpropar
2. Isobutamic
3.Glipizide -5
/ BD 5. Glycl
B) Meglitinid
C) Biguanide
1.Metformin
2. Phenformi
acidosis
Drugs for go
1. Acute - Co
methacin), C
Alopurinol , I
Aspirin and o
salts , Chlor
sulfasalazine
Hypolipidem
of lipoprotein i
Pravastatin, Flu
Colestipol, Prol
Fenofibrate, Fis

3) Pyrazinamide	1000 mg	1500 mg	Hepatotoxicity .
4) Ethambutol	1200 mg	1600 mg	Retrobulbar optic neuritis
5) Streptomycine	0.75 gm	1gm	Deafness, loss of vestibular. and renal function

Rifampicin should be taken on empty stomach.
Rifampicin causes orange red discoloured urine, faeces , saliva , sputum , tears and sweat of patient.
Rifampicin induce hepatic microsomal enzymes.
Rifampicin, INH , Pyrazinamide : hepatotoxic drugs.
Increased serum uric acid level, precipitation of gouty arthritis due to pyrazinamide.

Anti- Cancerous drugs:-
Mechlorthamine, Melphalan, Chlorambucil ,Busulfan methotrexate, Vinblastine, Vincristine Vindesin taxol, Etopside, Tamoxifen Flutamide, Rituximab, Interferons
Adverse reaction : Bone marrow suppression , Loss of hair (alopecia) Damage to GI mucosa & ulceration impaired wound healing, damage to gonads, growth inhibition in children, teratogenicity.

Antithyroide drugs :-
1) Potassium perchlorate and thicynate 2) Iodides
3) Propyl - Thiouracil - dose 300-600 mg
4) Methaimazole - dose –5- 20 mg Cabimazole (Neomercazole) - dose 30 60mg daily, maintenance dose 5-20 mg daily

Insulin :- Pancreas of a normal man contains a total of about 200 unit (8mg) of insulin. Pancreas secretes about 50 units of insulin in 24 hrs Dose ; IDDM - 0.4-0.8 U/kg /1day NIDDM : 0.2 - 1.6 U/kg /day.
Adv. Reaction- Hypoglycaemia, allergy – local itching, redness, swelling & pain at inj site, urticaria, lipodystrophy , presbyopia, peripheral neuropathy, obesity.

Oral Hypoglycaemic Drugs
A) Sulfonylureas :-
1 Chorpropamide - dose 100 / 250 mg OD
2. Isobutamide -500 mg, 1gm BD/ TDS
3.Glipizide -5mg OD/ BD 4. Glibenclamide -5mg OD / BD 5. Glyclazide -80 mg OD/ BD
B) Meglitinides :- Repaglinide , Nateglimide
C) Biguanides :-
1.Metformin -500 mg- 850 mg OD/BD
2. Phenformin - Not used as it produces lactic acidosis

Drugs for gouty arthritis ;
1. Acute - Colchicines , NSAID (Ibuprofen , indo methacin), Corticosterioids 2. Chronic – Probenecid Alopurinol , Drugs for Rheumatoid arthritis (RA) Aspirin and other NSAID , Glucocorticoids, Gold salts , Chloroquins D- penicillamine methotrixate, sulfasalazine etc .

Hypolipidemic agent : The drugs which lower the level of lipoprotein in blood. They are - Liyostatin, Simvastatin, Pravastatin, Fluvastatin, Chloestryramine, resin, Colestipol, Probucol, Gugulipid, Clofibrate, Gemfibrozil, Fenofibrate, Fish oil, Nicotinic acid

Antiemetic drugs - Antidopaminergic : Chlorpromazine, Prochlorperazine (neuroleptic) Metoclopromide , Domperidone
Antihistaminic : Cyclizine, Meclizine, Promethazine, Dimenphydrinate
1) Anticholinergic : Dicyclomine
2)Anti5HT 3: Ondansetron - 8mg BD/ TDS orally, granisetron
3) Prokinetic drugs : A) Metoclopromide (Perinorm) dose 10 mg TDS oral in adults 0.25 - 0.5 mg / kg in children.
Adv. reaction : Drowsiness, muscle dystonia, diarrhoea, lassitude, gynacomastia, galactorrhoea, extrapyramidal reactions, malignant neuroleptic syndrome
B) Domperidone (Domstal)-10-40mgTDS orally
C) Cisapride -30 -40 mg TDS

Antispasmodic drugs : Used for pain in abd
Hyoscine - Tab Buscopan 10mg,
Inj. Buscopan 20 mg / ml
Dicyclomine - Tab . cyclopam 10 mg ,
Inj. Cyclopam 10 mg/ml

Bitters : The drugs which reflexly promote gastric secretion (improve appetite)

Carminatives :
The drugs which promote expulsion of gasses from GIT eg. Ginger, Sodium bicarbonate, Oil pippermint

Anti diarrhoeal agent :
1.Anti secretory agents : Sulfasalazine, Mesalzine, Atropine, Bismuth subcarbonate, Bismuth subsalicylate
2. Anti motility agents - Codein, Diphenoxylate, Loperamide,Diphenoxylate 5mg + 0.25 mg Atropine (lomotil) TDS /QID is used in diarrhea. It is contraindicated in children as it may cause paralytic ileus and even death.
Loperamide - Dose 4mg followed by 2mg is contraindicated in children below 4 years and in acute infective diarrhoea. It may cause paralytic ileus & death in children. Others : lactobacillus preparation, Berberene.

Drugs for peptic ulcer :
1) Neutralization of gastric acid (antacid)
a) Systemic : sodium bicarbonate, sodium citrate
b) Non - systemic : aluminium hydroxide gel Magnesium trisilicate, Magnesium hydroxiode, Magnesium oxide, Calcium carbonate
2) Gastric acid secretion inhibitors : H_2 receptor antagonists:Cimatidine, Ranitidine, Famotidine, Roxatidine
3) Proton pump inhibitor : Omeprazole,Lansoprazole,Pantoprazole, Rabeprazole
4) Ulcer protective drugs : Sucralfate, Bismuth salts, Colloidal bismuth subcitrate, Bismuth subsalicylate.
5) Ulcer healing : Carbenoxolone, Sodium liquorice
6) Anti. H. pylori Amoxicilins, Tetracycline, Clarithromycin, Metronidazole Tinidazole.

Doses Cimetidine - 400 mg BD or 800 mg at bed time
Ranitidine - 150 mg BD or 300 mg at bed time
Famotidine - 20 mg BD or 40 mg at bed time
Roxatidine - 75 mg BD or 150 mg at bed time
Omeprazole - 20 mg OD on 40 mg BD

Laxative :- Causes elimination of soft formed stool without gripping and without much loss of water.
1) Stimulant / Irritant laxatives : Cascara sagrda, Senna, Castor oil, Phenolphthalein, Milk of magnesium,
2) Osmotic laxatives : Magnesium sulfate, Magnesium citrate, Milk of magnesia, Lactullose.
3) Bulk laxatives : Methylcellulose, Agar Agar, Plantago seeds, Bran
4) Emolliant laxatives :
Liquid paraffin, Dioctyl sodium sulfosuccinate.
Purgatives : Causes passage of more fluid stools

Diuretics

i) Weak diuretics
a) Osmotic diuretics : Sodium and potassium salt
b) Xanthine derivatives : Aminophylline
c) Carbonic anhydrase inhibitor : Acetazolamide
d) Acidifying salt : Ammonium chloride arginine hydrochloride
ii) Moderately effective - a) Osmotic diuretics : Mannitol, Isosorbide, Sucrose, Glycerol
b) Thiazide diuretics : Chlorothalidone, Chloroxazone, Lopamide
iii) Very effective / high ceiling / loop diuretics
Furosamide, Mefruside, Bumetamide, Ethacrynic acid
iv) Potassium sparing diuretics - Triamterene, Amiloride, Spironolactone (aldosterone antagonists)
Dose : Furosemide - Tab, lasix 40 mg , Inj lasix 20 mg / 2ml. Dose - 20 - 80 mg daily. Spironolactone – 100 - 200 mg daily
Site of action :
1. Thiazide diuretics - Distal convoluted tubules
2. High ceiling diuretics- Thick ascending limb of Henle's loop.
3. Potassium sparing diuretics - Late distal tubule and collecting ducts. In renal failure - only high ceiling diuretics are effective. In cardiac oedema - Thiazide diuretics should be given. In cirrhotic and nephrotic oedema, K+ sparing diuretics should be given. Antidiuretics hormone (Vasopressin, Benzothiadiazines, Chlorpropamide Carbamazepine)
Antiplatelet drugs :-
Aspirin, Ticlopidine, Clopidogrel, Dipyridamole.
Coagulants :- Vit K (K_1,K_2, K_3,) Fibrinogen, Antihaemophilic factor, Tissue extract, Ethamsylate, Anti - coagulants; In vivo- Heparine, Dicumoral, Warfarin. Invitro - Heparin, EDTA , Sodium citrate, Sodium oxalate, Potassium
Oxalate thrombolytic agents :-
Streptokinase, Urokinase, Alteplase, Reteplase
Antifibrinolytics - Epsilon amino - Caproic acid (EACA) Tranexamic acid (TA).
Haemostatic agents :-
1) Local agents : Thrombin, Thromboplastin, Fibrin, gelfoam oxidised cellulose
2) Transfusional agent : Fibrinogen, Plasma or blood antihaemophilic globulin
3) Won transfusional : Vit K, EACA, Tranexamic acid, Ethamsylate, Vit C rutin, Russel Viper and copper head snake venoms
Sclerosing agents ;- Causes irritation, inflammation, Coagulation and ultimately fibrosis. They are sodium tetradecyl sulfate. Sodium morrhuate, Ethanolamine oleate, 5% phenol in almond oil
Daily dietary iron requirements :
1) Children : 8 - 18 mg ,
2) Adult men : 10 - 15 mg
3) Menstruating women : 15 - 20 mg ,
4) Pregnant and lactating women - 20 - 25 mg
One ml of blood contains 0.5 mg of Iron
Iron loss due to menstruation - 0.3 - o.6 mg / day
Total daily iron excretion - 0.5 - 1mg
Iron is stored in the form of ferritin and haemosiderin in bone marrow , liver, spleen, reticulo endothelial cells. Average daily diet contains 10- 20-mg of iron its absorption occurs all over the intestine but majority in upper part
Cheapest source of iron is ferrous sulfate.
Constipation and gastric distress - main adverse effect of oral iron . Parenteral iron preparation
Iron dextran (inferon) - IM/IV. Iron - sorbitol - citric acid complex and Iron - carbohydrate complex – IM route It is given by Z technique to avoid leakage and skin staining
Iron given in liquid form may combine with sulfide ions in mouth forming black iron sulfide causing blackning of teeth
Iron poisoning : Common in children and infants due to intake of 10- 20- tablets at a time. Dose of 1gm or more of ferrous sulfate are toxic to children
Antiarrhythmic drugs : Quinidine procainamide

Disopyramide, Lignocaine, Phenytoin, Propranolol, Sotalol, Adenosine, Digitalis
Antianginal drugs : 1) Nitrates : Glyceryl trinitrate / Nitroglycerine (NTG) Isosorbide dinitrate, Isosobride mononitrate 2) β-blockers : Atenolol, Metoprolol, Propanolol 3) Ca^+ channel blockers : Amlodipine, Felodipine, Verapamil, Diltiazam, Nifedepin
4) K^+ channel activators : Nicarandil, Pinacidil Dose Nitroglycerine : 0.3- 0.6 mg sublingually 2.5-5 mg orally Isosorbide dinitrate : 2.5 - 10 mg sublingually Sorbitrate 10 - 40 mg orally Drugs use in terminal attack of Angina are NTG, Isosorbide dinitrate
Antihypertensive drugs
1) Centrally acting drugs : Clonidine methyldopa
2) α adrenergic blockers : Prazocin , Phentolamine
3) β Adrenergic blockers : Atenolol , Propranolol, Metoprolol 4) α and β blocker:Labetalol
5) Arteriolor -Vasodilators : CCB, Hydralazine
6) Arteriolar - venular vasodilators : Sodium nitroprusside
7) Ca^+ channel blockers : Nifedipine Amlodipine, Nicardipine, Verapamil, Diltiazam
8) Angiotensin converting enzyme (ACE) Inhibitors

Captopril, Enalapril, Ramipril, Lisinopril.
9) Angiotensin II receptor antagonist : Losartan
10) Diuretics : Furosemide , Sporonolactone Thiazides
11) Potassium channel activators :
Diazoxide, Minoxidil, Pinacidil Nicorandil

Doses : 1) Atenolol - 25 -100 mg , OD daily
2) Metoprolol - 100 -200 mg , 12 hrly
3) Propranolol - 80- 240 mg, 6-12 hrly
4) Labetalol - 200- 600 mg , 12 hrly
5) Nifedipine - 5- 20 mg , 6- 8 hrly
6) Amlodipine - 2.5 - 10 mg OD
7) Verapamil -- 40 - 120 mg TDS
8) Diltiazam - 60 - 120 mg TDS
9) Captopril - 12.5 - 50 mg BD
10) Enalapril - 2.5 - 20 mg OD
11) Ramipril - 1.25 - 25 mg OD
12) Lisinopril - 5- 40 mg OD
13) Losartan - 50 mg OD

Cardiac glycosides :
Compounds having cardiotonic action i.e. they increase the myocardial force of contraction and cardiac output in a hypodynamic heart without increasing oxygen demand

Source
1) Digitalis purpurea- Digitoxin , Gitosin , Gitalin
2) Digitalis lamata-Digitoxin , Gitoxin , Digoxin

Dose : Tab digoxin (lanoxin) -0.25 mg , 3 tab stat Followed by 1 tab OD as maintenance dose All glycosides are irritant and cause pain on IM injection.
Drugs causing hypertension. Glucocorticoides, adrenergic agents, alcohol, Bromocriptine, oral contraceptives, lithium, Dimercaprol, Ergot alkaloids, MAO inhibitors
1) Drugs which induce cough - ACE inhibitors like captopril , Beta blockers , Indol iodides.
2) Levodopa inhaled corticosteroids ether and disodium chromoglycate.

Antitussives : 1) Pharyngeal demulcent :
Lozenges Lincitus cough drops glycerine Liquorice
2) Expectorants (mucokinetics) :
a) Direct stimulants : Oil of eucalyptus , alcohol and cedar wood oil
b) Reflex expectorants :
Ammonium chloride Ammonium bicabonate
c) Mucolytics : Bromhexine , Acetyl cystine
d) Directly & reflexly acting:Potassium iodide, Ambroxol
3) Central cough suppressants : Opioids :
Codeine,Noscapine , Dextromethorphan
Non - opioids : Caramiphene, piperzethate
Antihistaminics : Diphenhydramine, Chlorocyclizine
4) Peripherally acting compounds : Benzonatate

Doses Bromhexine : 8- 16 mg TDS
Codeine :10 - 15 mg , 6 hrly
Noscapine :15- 30 mg TDS / QID

Drugs for Bronchial Asthama
A) Bronchodilators 1) Symphathomimetics : Adrenaline, Ephedrine,Isoprenaline,Orciprenalin,Salbutamol,Terbutalin
2)Methylxanthines:
Theophylline, Aminophylline, Hydroxy ethyl
3) Anticholinergics: Ipratropium bromide, Atropine
B) Mast cell stabilizers - Sodium cromoglycate, nedocromil, ketotifen
C) Corticosteroids – 1)Systemic : Hydrocortisone, Prednisolone, Dexamethasone, Betamethasone
2) Inhalational:
Beclomethasone, Budesonide,Fluticasone.

Doses - Salbutamol (Asthalin) Orally: 2-4 mg , 8 hrly metered dose inhalation: 100 micrograms per puff SC / IM: 0.5 mg, 4 hrly. IV - 0.25 mg slowly.
Theophylline:15 mg / kg / day orally
(IV, IM - contra indicated)
Aminophylline: 250 - 500 mg orally
(IM- contraindicated)
5 mg / kg - IV- slowly
Prednisolone - 20- 40 mg / day
Beclomethasone - 100 microgram TDS / QID
Budesonide - 200 - 400 mcg BD / QID

Histamine - It is present in storage granules of mast cells Tissues rich in histamine are skin gastric & intestinal mucosa, lungs, liver, placenta. Non mast cell histamine are present in brain epidermis & growing regions also present in biological fluids, platelets, leucocytes. Basophils and venom of bees and wasps . it is synthesized from histidine

Histamine receptors : types 3
H_1 receptors - Related to antiallergic property
H_2 receptors - Related to gastric acid secretion
H_3 receptors - Mostly non specific
Triple response : Intradermal injection of histamine produces characteristic effect called triple response
1) Flush - Red spot at the site of injection
2) Flare - Flush followed by development of a bright flare extending 1-5 cm beyond flush
3) Wheal - Development of localised oedema

Anti histaminic drugs
1) Potent and sedative - Diphenhydramine, Promethazine, Dimehydrinate
2) Potent less sedative - Chlorpheniramine, Chlorcyclizine triplenmine
3) Less potent less sedative – Pheniramine, mepyramine, phenindamine
4) Non sedative - Loratadine, Terfenadine, Cetrizine, Acrivastine, Astemizole,

Doses
Diphenhydramine (Benadryl) - 25 - 50 mg oral
Promethazine (Phenergan) - 12.5 - 25 mg oral
Promethazine chlorotheophyllinate (Avomine) - 25 -70 mg oral
Pheniramine maleate (Avil) - 25 - 75 mg oral
Chlopheniramin maleate (Aeet) - 4-20 mg oral
Cinnarizine (Stugeron) - 25 oral
Cetrizine (Setzine) 10 mg OD oral
Loratidine - 10 mg OD oral

<u>Adrenergic / symphathomimetic drugs</u>
1) Drugs used for raising blood pressure
Noradrenaline, Metarminol Phenylepinephrine

2)Cardiac stimulants :
Dopamine,Dobutamine, Isoprenaline
3) Central stimulants :
Amphetamine, Dextroamphetamine
4) Smooth muscle relxants: Salbutamol, Adrenaline, Isoxsuprine, Isoprenaline
5) Local vasoconstrictor:
Adrenaline , Naphazoline, Phynylephrine
6) Used in allergic reaction : Adrenaline, Ephedrine
7) Used for Appetite suppersant (anorectic):
Tenfluramine, Phenteramine
Dose : Adrenaline : 0.2 - 0.5 ml , SC / IM
Noradrenaline : 2-4 microgram / min IV
Isoprenaline : 5- 10 mg sublingually, 2mg / ml
Dopamine : 0.2 - 1 mg / min

Antiadrenergic Drugs

v Adrenergic bocking drugs -Non selective - Ergotamine, Ergotoxine, Dihy- droergotoxine, Dihydroergotoxine Selective- .
i) v 1 blocker - Prazosin, Terazosin, Doxazosin, Indoramin
ii) v 2 blocker – Yohimbine E - Adrenergic blocking drugs
a) Cardioselective E_1 Blockers Atenolol , Metoprolol, Esmolol, Acebutolol
b) Non selective ($E_1 + E_2$) – Propranolol, Pindolol, Oxprenolol, Sotalol, Nodolol, Timolol.
c) With additional v blocking property – Labetalol, Caruvedilol

Cholinergic / Parasympathomimetic Drugs

1) Choline Esters : Acetylcholine , Methacholine, Carbachol, Bethanechol.
2) Cholinomimetic Alkaloids:
Pilocarpine Muscarine, Arecholine
3) Cholinesterase Inhibitors : Physostingmine Neostigmine, Organophosphorous Compounds

Anticholinergic Drugs

1) Belladona Alkaloids - Atropine , Hyoscine
2) Semisynthetic Derivatives - Homatropine, Atropine, Methonitrate, Hyoscine, Memthyl Bromide etc.
3) Synthetic Compounds
A) Mydriatic : Cyclopentolate, Tropicamide
B)Antisecretory - Antispasmodics : Propantheline, Oxyphenonium, Clindium, Dicyclomine, Pirenzepine
C) Antiparkinsonism :
Benghexol Procylidine, Benztropine etc.

Skeletal muscle Relaxants

Centrally Acting Drugs - Mephenesin Chlorzocaxone, Chlormezanone, Methocarbamol, Diazepam, Baclofen, Tizanidine
Peripherally Acting Drugs A- Tubocurarine Succinyl Choline Decamethonium Doxaurim, Dantrolene, Sodium Quinine
Sedative-Reduces Excitement, Calms The Patient Without Inducing Sleep
Hypnotic-Produces Sleep Resembling Natural Sleep .
Classification of Sedative - Hypnotics
1) Barbiturates -
A)Long Acting-Phenobarbitone, Mephoborbitone
B) Short Acting - Secobarbitone, Hexobarbitone
C) Intermediate Acting - Amylobarbitone, Butobarbitone Pentobarbitone
D) Ultra Short Acting-Thiopentone, Methohexitone
2) Benzodiazepines : A) Hypnotic - Diazepam , Flurazepam, Triazolam, Midazolam
B) Anticonvulsant- Diazepam, Lorazepam, Alprazolam, Oxazepam.
C) Newer Hypnotics - Zopiclone , Zolpidem
Miscellaneous - Chloralhydrate , Paraldehyde
Doses: Phenobarbitone : as sedative : 15 mg TDS/ QID As hypnotic : 60 - 100 mg
Diazepam : 5mg TDS orally, 10 mg IV

Anti epileptic Drugs - Phenobarbitone, Primidone Phenytoin , Ethotion , Carbamazepine, Ethosuximide, Valproic Acid, Vigalatrin, Gabapentin Diazepam, Lamotrigine, Clonazipam, Acetazolamide. Doses
phenytion : 100 mg BD
(Eption , Epsolin) children : 5- 8 mg / kg / day
Carbamazepine : 200 - 400 mg TDS ,
children15- 30 mg / kg / day
Choice of antiseizure drugs:
Generalised tonic clonic seizure : Carbamazepine
Simple partial seizure : Carbamazepine , Valproate, Phenytion
Absence seizure: Valproate
(petit mal epilepsy) : Ethosuximide
4) Febrile seizure : Diazepam (rectal)
5) Status epilepticus : Diazepam , Clonazepam
Myoclonic, Atonic : Valproate

Antidepressants: Meclobemide, Phenalzine, Tofenacin, Imipramine

Opioid Analgesics Natural : Morphine, Codeine
Semisynthetic : Diacetylmorphine (heroin), Apomorphine
Synthetic : Pethidine, Fentanyl, Tramadol, Methadone,Pantazocine,Buprenorphine, Dextro-propoxyphene
Doses : Morphine : 10-15 mg oral
10-15 mg SC/ IM 2-6 mg IV
Codeine : 10- 30 mg orally TDS / QID
Pethidine : 25 - 100 mg orally , IM , SC
Tramadol : 50- 100 mg orally 3-4 hrly
Dextropropoxyphene : 60- 120 mg orally

Opioid Antagonists :
1) Pure antagonists : Naloxone, Nalmefene
2) Partial agonist of Nalorphine type : Nalorphine, levallorphan , cyclazocine
3) Partial agonist of morphine type : Propiram, Profadol
4) Contraindication of morphine :
5) Infants and elderly person, Head injury, Bronchial Asthma, Respiratory Insufficiency, Hypotension, Hypovolumia, Hypothyroidism undiagnosed acute abdominal pain

Acute morphine poisoning: Lethal dose of morphine in non addicts is about 250 mg
Symptoms : Respiratory depression, Pinpoint pupils, cyanosis, Hypotension, hypothermia, shock and coma convulsions in infants, death. Antidote : Naloxone.
Non- opioid analgesics A) Non selective cox inhibitor (conventional NSAID'S)
1) Salicylates : Aspirin, Diflunisal
2) Pyrazolone derivatives : Phenylbutazone, Oxyphenbutazone
3) Indol derivatives : Indomethacin,
4) Propionic acid derivatives : Ibuprofen, Ketoprofen, Naproxen
5) Anthranilic acid derivative : Mephenamic acid
6) Aryl acetic acid derivative : Diclofenac
7) Oxicam derivative : Piroxicam
8) Pyrrolo pyrrole derivative : Ketorolac
B) Selective cox - 2 inhibitors
Nimesulide, Meloxicam, Calecoxib, Rofecoxib
C) Analgesic - antipyretic with poor anti inflammatory action para - Aminophenol derivative : Paracetamol (Acetaminophen) Pyrazolone derivatives : metamizol
Doses :
Aspirin : Analgesic , Antipyretic : 0.3 - 0.6 gm, 6-8hrly Anti inflammatory :4-6 gm/day after food
Ibuprofen : 400 - 600 mg TDS
Ketoprofen : 50- 100 mg BD/ TDS
Naproxen : 250 - 500 mg BD
Mephenamic acid : 500 mg BD / TDS
Diclofenac sodium : 50 mg BD
Piroxicam : 10- 20 mg BD
Nimesulide : 100 mg BD
Paracetamol : 250 -500 mg TDS
Contraindications of Aspirin
Hyperacidity. Peptic ulcer, bleeding tendency pregnancy, chronic liver disease, Diabetics, Bronchial asthma, children suffering from chicken pox or influenza
Acute Salicylate intoxication : More common in children . Total dose in adults : 15 - 30 gm and low in children
Symptoms: Vomiting,dehydration, electrolyte imbalance, acidotic breathing, hyper / hypo glycaemia, petechial haemorrhages, delirium, hyperpyrexia, convulsions, coma, death.
Acute Paracetamol poisoning If dose is > 10 gm in adult and > 150 mg / kg in children Manifestation : Nausea, vomiting, abdominal pain, liver tenderness, hepatic necrosis, hypoglycaemia, coma, jaundice, fulminating hepatic failure and death
Treatment : N- acetylcystine 50 mg / kg , IV
General Anaesthetics A) Inhalational -
1) Volatile Liquid- Chloroform, Diethyl Ether, Ethyl Chloride, Halothane 2) Gases - Nitrous Oxide, Cyclopropane . B) Intravenous
1) Inducing Agents - Thiopentone Sodium, Methohexitone,Sodium Propofol
2) Slower acting durgs : Benzodiazepines – Diazepam, Lorazepam, Midazolam,

Local anesthetics : A) Injectable
1) Short acting : Procaine, Chloroprocaine
2) Intermediate acting : Lignocaine (lidocaine)
3) Long acting : Tetracaine, Bupivacaine, Dibucaine (Cinchocaine)
Surface anaesthetic - Cocaine, Lignocaine
Doses Procaine : safe max dose (inj) : 700 mg
Concentration used 1-2 %
Bupivacaine : 150 mg , 0.25 - 0.5 %
Dibucaine : 50 mg , 0.25 - 0.5 %
Spinal anaesthetics :-

Drug	Concentration(%)	Total dose (mg)
Lignocaine	1.5-5	25-100
Tetracaine	0.25-05	5-15
Dibucaine	0.25-0.5	2.5-10
Bupivacaine	0.5-0.75	10-25

Metal Chelating agents :-

Drug	**Used against**
Dimercaprol (BAL)	Arsenic, Copper, Mercury, Gold, Antimony, Bismuth, Thallium
EDTA	Lead
Succimer	Lead,Arsenic,Mercury
Penicillamine	Copper, Mercury, Lead, Wilson's disease

Desferrioxamine, DTPA , Iron (Parenteral),
Prodrug : It is an inactive chemical derivative that after administration undergoes biotrans-formation to the pharmacologically active drug.

Prodrug	Active form
Levodopa	Dopamine
Enalapril	Enalaprilat
Prednisone	Prednisolone
Bacampicillin	Ampicillin
α Methyl dopa	α-Methyl norepinephrine

Active drug	Active Metabolite
Phenancetin	Paracetamol
Digitoxin	Digoxin
Codeine	Morphine

Drugs which should not be given together. :-
1) Antihelminthics (except piperazine) with a purgative
2) Antitubercular drug with vitamins (except is oniazid with pyridoxine)
3) Analgesic, Anti inflammatory drugs with vitamins
4) Antihistaminics with Anti diarrhoeals
5) Atropine with Analgesics
6) Bronchodilators with centrally acting Antitussive or with Antihistaminic.
7) Iron with Arsenic and strychnine.
8) Sedative, hypnotics with Analgesic & Antipyretics
9) Tetracycline with vit C.
Drugs which should not be given orally :-
1) Insulin, Penicillin- Destroyed by digestive juices.
2) Hydrocortisone, Lidocaine, Morphine, Nitro-glycerine, Testosterone- destroyed in liver.
3) Streptomycin - Not absorbed orally.

Tissue Storage of drugs :-

1) Acetazolamide, Chlorpromazine, Isoniazid Brain
2) Atropine, Ephedrine - Iris
3) Chloroquine - Retina
4) Digoxin, Emetine- Skeletal muscle, Heart
5) Digoxin, Emetine, Chloroquine - Kidney
6) Digoxin, Emetine, Chloroquine, Tetracycline Liver
7) DDT, Ether, Phenoxybenzamine : Adipose tissues
8) Iodine - Thyroid
9) Tetracycline and Heavy metals-Bone & Teeth.

Drugs with low safety margin -

Digoxin, Theophylline, Anticonvulsant drugs, Antiarrythmic drugs etc.

Important Points :-

1) Aminophylline, Diazepam, Ergotamine, Indomethacin. Can be given by rectal route.
2) A course of Emetine should not be repeated within 6 weeks.
3) Prolonged use of chloroquine causes Retinal damage
4) Phenothiazine in children causes Dystonia.
5) Choice of IV fluid in cholera - Ringers lactate. (RL)
6) IV fluid resembling plasma - Ringers lactate.
7) Domperidon can be given with levodopa and Bromocriptin but Metoclopramide should not be given with levodopa and Bromocriptin.
8) Viagra (sildenafil) is an v - adrenergic blocker.
9) Chenodiol, Ursodiol are the drugs which dissolve the gall stones.
10) **Orphan drugs** - Drugs meant for the diagnosis, prevention or treatment of rare disease. They are not easily available because, their manufacture is not commercially viable. eg: Some anticancer & Antiviral drugs, Pentamidine, Hydrochlorothiazide, Chlorpropamide, Reserpine, Iodoquinol.

PREVENTIVE AND SOCIAL MEDICINE

Health Definition-(by WHO in 1984) :

Health is a state of complete physical, mental, and social well being & not merely an absence of disease.

Vaccine :

Vaccine is an immunological substance defined to produce specific protection against a given disease.

Vaccine	Live	Killed	Both
Bacterial	BCG	Cholera	Plague
Viral	OPV (Sabin)	IPV (Salk)	Typhoid
Viral	Measles,	Pertusis	Influenza
Viral	Mumps,	Rabies	
Viral	Rubella,	Hep B	
Rickettsial	Epityphus	KFD	
Viral	Yellow fever	Encephalitis Japanese	

Both : PTI (Plague, Typhoid, Influenza)

Live : (BCG, OPV, MMR, Epityphus, Yellow Fever)

Sr. No.	Feature	Attenuated Vaccine	Killed Vaccine
1	Vaccine dose	Low	High
2	Antibody persistence	Long	Short
3	Booster needed	Infrequently	Frequently
4	Revaccination	Possible	None
5	Latency	Possible	None
6	Oncogenesity	?	None

Milestones in Vaccinationss :-

1798 : Small pox vaccine
1885 : Rabies vaccine
1892 : Cholera vaccine
1913 : Toxin / antitoxin
1921 : BCG
1923 : Diphtheria toxoid
1923 : Pertusis vaccine
1927 : Tetanus toxoid
1937 : Influenza vaccine
1937 : Yellow fever vaccines
1949 : Mumps vaccine
1954 : Salk polio vaccine
1957 : Sabin live oral polio vaccine
1960 : Measles vaccine
1962 : Rubella vaccine
1968 : Type 'C' meningococcus vaccine
1971 : Type 'A' meningococcus vaccine
1976 : Hepatitis 'B' Vaccine
1974 : Small pox eradication in world.
1977 : Small pox eradication in India.

Polyvalent Vaccines :- Prepared from 2 or more strains of the same species.

Autogenous Vaccine:- When the organism in the vaccine is obtained from the same patient.

BCG,Yellow fever, measles: Freezed dried vaccine.

IgG : 85% of total serum immunoglobulins. Transported across the placenta.

IgM : Indicative of recent infection. Half Life period is 10 days.

IgA - 15% : Found in large quantities in body Secretion. Half life period is 6-8 days.

IgD :- 0.3 to 40 mg / 100 ml. Half life : 2-8 days.

IgE :- 10-130 mcg/100 ml. Major antibody responsible for immediate allergic anaphylactic reaction.

Half life : 2 - 3 days.

Periods of Isolation recommended :-

Chiken Pox : 6 days after onset of rash.

Measles : From the onset of catarrhal stage, through 3 rd day of rash

Cholera: 3 days after tetracycline started

Diphtheria: Until 48 hrs. of antibiotics.

Shigellosis and Salmonellosis: Until 3 consecutive negative stool culture.

Hep-A: 3 Week
Influenza: 3 days after onset.
Polio: 2 weeks adults, 6 weeks pediatrics
T.B. : Until 3 Weeks of effective chemotherapy
Herpes Zoster: 6 days after onset of rash
Mumps: Until Swelling Subside
Pertusis: 4 weeks.
Meningococcal menigitis and streptococcal pharyngitis : Until the 1st 6 hr of effective antibiotic therapy are completed.

National Immunisation schedule.

a) For Infant :
At birth : BCG, OPV '0' dose
6 week : DPT-1,OPV(BCG if not given at birth)
10 week: DPT-2 and OPV-2 :
14 week: DPT-3 and OPV-3
At 9 month: Measles
b) (16-24) month: DPT and OPV
c) (5-6) year: DT
d) (10 & 16) year: TT
e) For pregnant women :-
Early in pregnancy: T.T.-1 or Booster
1 Month after: T. T. -1 or T. T. - 2

Indications for Chemoprophylaxis :-

Disease	Chemoprophylaxis
Cholera:	Tetracycline or Furazolidone
Conjuctivitis bacterial:	Erythromycine ophthalmic ointment
Influenza:	Amantadine
Meningeal Meningitis:	Sulphadiazine
Plague:	Tetracycline
Diphtheria:	Erythromycine

1. Small pox (Variola) :-
Acute infectious disease caused by Variola virus.
8 May 1980WHO declared that global eradication of small pox had been achieved.
I.P. about 12 days.

2. Chicken Pox (Varicella):-
Highly infectious disease caused by varicella zoster.
Characterised by vesicular rash that may be accompanied by fever and malaise.
Agent factors:
V-Z virus, also called "Human alpha herpes virus 3
Source of infection: Case of Chicken pox.
Infectivity period: 1-2 day before appearance of rash and 4 - 5 days thereafter. Secondary attack rate- 90%
Host factor: Age under 10 year.
Transmission: By droplet infection & droplet nuclei
Incubation period: (14-16) days.
Clinical features :
1) Pre-eruptive phase 2) Eruptive phase
Control: No specific T/t for chicken pox only isolation for 6 days, after onset of rash.
Prevention: Vaccine.

3. Measles (Rubeola) (Red spots) :-
Def: An highly infectious disease of childhood caused by a specific virus of group myxoviruses.
C/F: Fever & catarrhal Symptoms of URTI followed by typical rash.
Agent: RNA para myxovirus
Source of infection: Case
Period of Communicability: 4 to 5 days after appearance of rash.
Host factor: Between 6 month to 3 years of age
Incubation period: Avg. 7 days
C/F: A. Pre eruptive phase: Koplik's Spot
B.Eruptive: Maculo papular rash begins behind the ears and spreads rapidly
C. Post Eruptive : Child loses wt. & remain weak.

Complication :(SSPE)-
(Subacute Sclerosing Pan Encephalitis)
Prevention: Vaccination
Control: Isolation.

(Vaccine Chart - See Page No. 68)

4) Rubella (German measles) :-
Is an acute childhood infection usually mild or short duration (3 day) and accompanied by low grade fever, lymphadenopathy & maculo papular ash.
Agent: RNA virus of toga virus family.
Transmission: Droplet infection & droplet nuclei.
Incubation period: 2 to 3 weeks. Avg. 18 days.
Prevention: Vaccine

5) Mumps : An acute infectious disease caused by specific virus which has a prediliction for grandular & nervous tissue. Recognised by non suppurative enlargement & tenderness of one or both the parotid glands.
Agent: Myxovirus parotiditis (RNA virus)
Host factor: Age (5-15) yrs.
Incubation: (2 to 3) wks usually 18 days
Transmission: Droplet infection
Prevention: Vaccine.
Treatment: Isolation

6) Influenza : Is an acute respiration tract infection by influenza virus of which there are 3 serotypes A,B, and C. Pandemic were caused by influenza A
C/f : Sudden onset of chills, malaise, fever, muscular pain and cough.
Agent: Influenza virus of family (orthomyxon- viridae) serotype A.B,C,)
Period of infectivity : Virus present in nasopharynx from (1 to 2) days before and (1 to 2) days after onset of symptoms
Incubation period : (18 to 72) hrs.
Prevention: Vaccine, Changing Antigenic property thus vaccine not effective.
Antiviral drugs: Amantadine, Rimantadine

7) Diphtheria :-
Is an acute infectious disease caused by toxigenic strain of corneybacterium diphtheriae.
Types: 3. 1. Anterior nasal 2. Faucial 3. Laryngeal.
C/F: Formation of grayish or yellowish membrane commonly over the tonsils, pharynx & larynx with well defined edges & can not be wiped away .

a) Marked congestion, local tissue distruction or oedema.
b) Enlargement of regional lymph nodes
c) Sign and symptoms of toxaemia.
Agent: Corneybacterium diphtheriae, 3 types grains, mitis, and intermedius.
Incubation period: (2 to 6) days.
Test done : Schick test
a) The presence of antitoxine
b) The state of hypersensitivity to diptheria.
c) Negative reaction : No reaction on any hand
d) Positive : Red flush of (10-50) mm diameter within (24-36) hr.
e) Pseudo : Red flush develops equally on both arms (less than positive.)
f) Combined : Control arm shows pseudo positive & test arm true positive reaction.
Isolation: 14 days
Treatment: Peniciline , Erythromycine

8) Whooping cough (Pertusis) :

Acute infectious disease usually of young children caused by 'B' pertusis.
Chinese call it, "Hundred days cough."
Agent:- **B pertusis :**
Age: Commonly below 5 yr. adult may be affected.
Sex: More in female than male.
Incubation period : (7 to 14 days)
Vaccine: DPT.

9) Meningococcal Meningitis.

Agent: N. meningitis
C/F: Begins with intense headache,vomitting, neck stiffness and progress of coma with few hrs.
Serotypes: A.B.C.D.X.Y,29E, W135
Route of entry: Nasopharynx
Source of infection: Droplet infection
T/t: Antibiotics - Penicillin.
Prophylaxis: Sulphadiazine

10) Tuberculosis :

Agent: **Mycobacterium tuberculi**
(Disease Also affect animals,is known as Bovine tuberculosis)
Tuberculin test: Test was discovered by Von Pirquet in 1907. A positive reaction to the test is generally accepted as evidence of past or present infection.
3 main test :
i. Mantoux intradermal test
ii. Heaf test
iii. Tine Multiple Puncture tests.
Tuberculin (Antigen) :
2 Types 1) Old tuberculin (OT)
2) Purified protein derivative (PPD)
1 TU: 0.01 ml of OT or 0.00002 mg PPD
WHO: PPD-RT 23 with Tween 80
Montoux test : Carried out by injecting intradermally on the flexor surface of forearm.
1TU of PPD in 0.1 ml.
Result read after 2 days. Induration exceeding 10 mm + ve, less then 6 mm - ve
Incubation period : (3 to 6) weeks :
a. Persistent cough of about (3 or 4) wks. Duration
b. Continuous fever c) Chest pain d) Haemoptysis.
Drugs:
a) Bactericidal drugs
1. Rifampicin : (10-12) mg/kg body wt.
Daily dose : (450-600) mg Intermittent -900 mg.
2. INH : (4-5) mg/kg of body wt.
3. Streptomycin: (0.75 to 1)gm single inj
4. Pyrazinamide: 30 mg/kg of body wt.
(1.5-2gm).(cross B.B.B)
b) Bacteriostatic:
1. Ethambutol: 15 mg/kg body wt. 2 to 3 dose
2. Thioacetazone: 2 mg/kg body wt.
Long course regimen :-
Daily regimen: INH 300 mg. Thioacetazone 150 mg or PAS or Ethambutol for 18 months.
Weekly or intermittent,
Streptomycin: 1gm or 0.75gm
INH : 600 or 700 mg
Pyridoxine: 10 mg.
(Tuberculosis chart) - See Page No. 67

11) Intestinal infections : Poliomyelitis: Is an acute viral infection caused by an RNA virus.
Agent: Polio virus
Serotype: 1,2,3
Paralytic polio due to: type1
Reservoir of infection: Man.
Infective material:
Virus found in oropharygeal material.
Route of Infection: a) Faeco-oral
b) Droplet infection
Period of : (7 to 10) before and
Communicability after onset of disease.
Host factor: Age (6 m to 3 yr.) usually
Ratio: 3:1 (male to female)
Incubation period (7 to 14 days)

	IPV (Salk type)		OPV (Sabin)
1	Killed formalized Virus	1	Live attenuated virus
2	Given S/C or IM	2	Given orally
3	Induced circulating antibody or no local intestinal immunity	3	Immunity is both humoral & intestinal (Antibodies Quickly)
4	Prevent Paralysis but does not prevent reinfection	4	Both prevent
5	Not useful in controlling epidemics	5	Can be effective in controlling epidemics.
6	Difficult to manufacture	6	Easy to manufacture
7	Costly	7	Cheap
8	Does not requires stringent condition during storage and transportation	8	To be stored and transported at sub zero (unless stabilized)

12) Viral hepatitis :
Infection of liver by A, B, C, D, E, G.
Hepatitis A : Known as Infective hepatitis or Epidemic jaundice : Fever, Chills, headache, fatigue, generalized weakness and aches and pains followed by anorexia, nausea vomiting, dark urine and jaundice.
Incubation period, (15 to 45)days:-
Agent HAV, (Type 72) of the picornaviridae family.
Period of infection:
2 weeks before and 1 Week after onset of jaundice.
Hepatitis B : Known as serum hepatitis, An acute systemic infective with major pathology in liver.
Agent: Was discovered by Blumberg in 1963 HBV is a complex, 42 mm double shelled DNA virus, originally known as Dane particle.
3 distinct antigen :
1. Surface antigen (Australia Antigen) HB_s Ag
2. Core antigen (HB_c Ag)
3. Envelop antigen (HB_e Ag.)
Age: (20-40) yr.
Transmission:
1. Parentral 2. Perinatal
3. Sexual transmission 4. Other route
Incubation period: (45 to 180) days.
Hepatitis C (Water born)
Parenterally transmitted non A and non B Hepatitis.
Hepatitis E:
Enterically transmitted hepatitis, Non A, non B.
Delta Hepatitis /D hepatitis.
Same as HBP, Hepatitis G.

13) Cholera : Cholera is acute diarrhoeal disease. Caused by V. cholerae 01 (Classical or EI TOR or common) Charecterised by sudden onset of profuse, effortless watery diarrhoea followed by vomitting, rapid dehydration, muscular cramps & suppression of urine. New strain of cholera 0139 emerged in India in 1992.
Cholera is epidemic & endemic disease :
Agent factor : Vibrio cholerae 0 group 1 or vibrio cholerae 01.
Within a group 1 two biotypes 1. Classical
2. EI TOR
Cholera is now mostly caused by EI TOR which are further divided into 3 serotype.
1. Inaba 2. Ogawa common in India 3. Hikojima
Ogawa type of EI TOR is common in India.
a) V. Cholerae killed within 30 min by heating at 56^0 c and few seconds by boiling.
b) Period of Communicability :- Infectious period of (7-10) days. Convulsent Carrier (2-3) weeks.
Incubation period : Few hrs, upto 5 days
Commonly (1-2) day
Pathogenesis : Increased permeability of intestinal epithelial cells, increased peristalsis.
Composition of ORS - Bicarbonate :-
Sodium chloride (NaCl) - 3.5 gm.
Sodium bicarbonate ($NaHCo_3$) 2.5 gm.
Potassium Chloride (KCl) - 1.5 gm.
Glucose dextrose - 20 gm.
Water -1 lit
ORS citrate - WHO
Trisodium citrate - 2.9 gm.(rest as above)

Sr. No.	Antibiotics	Children	Adult
1	Doxycycline once	-	300 mg
2	Tetracycline Qid for 3 day	12.5 mg/kg.	500 mg
3	Trimethoprim (TMP)	5 mg/kg	160 mg
4	Sulphamethoxazole BD for 3 day	25 mg/kg	800 mg
5	Furazolidine qid for 3 day	1.25 mg/kg.	100 mg

Chemoprophylaxis : Tetracycline is choice of drug.
14) Typhoid fever : Systemic infection mainly by S. typhie found only in man.
C/F : Typical continous fever for (3 to 4)weeks relative bradycardia with involvement of lymphoid tissue.
Enteric fever include typhoid & paratyphoid fever : Agent: S. typhi is major cause of Enteric fever S. para A & S. para B.
S. typhi has 3 main antigen O,H & Vi.
Incubation period : (10-14) days usually.
C/F: Malaise, headache, cough, sore throat, Step Ladder Pattern Fever. "Pea soup" Diarrhea, Leukopenia, Blood, Urine, Stool, Culture is positive for salmonella, Splenomegaly, abd. Distension, Tenderness.
Diagnosis : BASU
B : Blood culture in 1st week
A : Aglutination in 2nd week (widal test)
S : Stool culture in 3rd week
U : Urine culture in 4th week.
T/t. Chloramphenicol 500 mg : (50 mg/kg) 4 hrly while febrile. 6 hrly for 14 days.
Vaccine : 1. Monovalent 2. Bivalent
3. T.A.B. Vaccine
15) Malaria : Is a protozoal disease caused by infection with parasites of genus plasmodium and transmitted to man by certain species of infected female Anopheles mosquito.
Agent :- P. Vivax, in India 70% (common)
P. Falciparum; P. malariae, P. ovale.
Period of Communicability :- As long as mature, viable gametophytes exist in the circulating blood in sufficient density to infect vector mosquitos
Incubation Period: Not less than 10 days
T/t : Day 1Tab. Chloroquine 600 mg / adult dose
Tab. Primaquine 0.75 mg /kg. 45 mg adult dose.
Day 2 - Tab Chloroquine 600 mg adult dose.
Days 3 - Tab Chloroquine 300 mg.
Chloroquine resistant P. falciparum.
Artether - 150 mg daily IM (for 3days for adult)

Tab.Sufadene/Sulfadoxine 1.25 mg/kg body wt. , 25 mg / kg wt. (single dose)
1. Injectable :- Form of artemisinin derivatives
2. Quinine inj. 10 mg/kg body wt. IV 8 hrly with 5 % Dextrose.

16) Rabies :

Def : Hydrophobia is an acute highly fatal viral disease of central nervous system caused by Lyssovirus type 1 (encephalitis).

Agent: Lyssovirus type 1: Bullet shaped neurotropic RNA containing virus.

Family: Rhabdoviridae : The virus recovered for naturally occuring case of rabies is called street virus.

Incubation period, (3-8) weeks., (20-60) days

T/t : 1. Isolation in room
2. Sedation, Morphin (30 - 45) mg

Intramuscular schedules- injection on deltoid. 6 doses. 1 ml each on (0,3,7,14 and 28) days and booster on 90th day.

A/c to WHO : 5 doses (0.5 or 1 ml) IM in deltoid. 2-1-1 schedule .0, 3, 7, 14, 28 (5 vial, 5 visit)

17) Yellow fever : Caused by arbo virus

Causative agent :

Flavivirus fibricus. Classified as a group B arbovirus.

18) Leprosy : (Hansen's disease) : Is a chronic infectious disease. Caused by Mycobacterium.

C/F : i. Hypopigmented patches. ii. Partial or total loss of cutaneous sensation in affected areas.
iii. Presence of acid fast bacilli in the skin or nasal smears. iv. Presence of thickened nerves.

Source of infection: Case

Incubation period: 3 to 5 yr or more

Indian classification	**Diagnosis**
1. Intermediate type	Clinical
2. Tuberculoid type	Bacteriological exam
3. Borderline type	Foot -pad culture
4. Lepromatous	Histamine test.
5. Pure neurotic type.	

WHO recommended :Multibacillery leprosy :

For adult (MDT)

* Rifampicin 600 mg once monthly given under supervision.
* Dapsone 100 mg daily self admnistered.
* Clofazimine 300mg once monthly supervised 50mg daily self administered.

Paucibacillary leprosy :

Rafampicin 600 mg once a month for 6 month
Dapsone 100 mg daily for 6 months

Health programme In India:

April 1953-National malaria control programme (NMCP) Launched in India.
1958 - National Malaria Eradication programme (NMEP) Annual incidence of malaria cases 50,000 in 1961, 6.4 million in 1976.
April 1977 - Modified Plan.
1978-Implementation of malaria control in the context of primary health care strategy.
1999 Government of India drop the term NMEP to National Antimalaria programme.
30 Sept. 1997 - Enhanced Malaria control project with world bank support has been launched.

National Leprosy Eradication Programme :-

1955-National Leprosy control prog. has been in operation
1980-Govt. of India declared its resolve to eradicate leprosy by the yr. 2000.
1983- Control programe was redesignated National leprosy eradication programe. Aim to reduce can load 1 or less than it 10,000 population.

National Control Programme

1952 - National family planning programme launched.
1953-National family welfare programme
1956- Central Health education bureau was established.
1966 - Separate dept. for family planning was established.
1962 - National tuberculosis programe control has in operation. District tuberculosis programme (DTP) is backbone of NTP.
1976 National programe for control of Blindness.
1992- Govt. of India, WHO and world bank together reviwed the NTP. Revised National Tuberculosis control prog. (RNTCP).

National AIDS control Programme (NACP)

1987 - NACP was launched.
1992 - NACO by ministry of health and family welfare
Sept. 1992 - Govt. of India Launched HIV/AIDS control program.
April 2002 - Govt. of India approved the National AIDS prevention & control policy.
National AIDS helpline (1097) phone no.

Health planning of India

1919 -Indian Red cross Society Health for all by 2000
1946 -Bhore Committee
1962 - Mudaliar Committee
1963 -Chandak Committee
1965-Mukherji Committee
1966-Mukherji Committee
1967-Jungalwalla Committee
1973-Kartar Singh Committee
1975 -Shrivastava Committee
1977 - Rural Health Scheme
1981 - Health for all by 2000 A.D.
Childern Day : 14 Nov.
Universal Children Day 3 Aug.
Aug. 1974 - National policy for children.
1969 -Central birth and death Registration Act.
2005- Eradicate Polio and yaws
2005 - Eliminate Leprosy
2005 - Increase Stale sector health spending from (5.5 to 7%) at the budget.
2007 - Achieve zero level growth of HIV & AIDS.
2010 - Eliminate Kalaazar
2010 - Reduce mortality by 50% on account of TB, malaria & other vector and water born disease.
2010- Reduce Prevalance of blindness to 0.5 %
2010 - Reduce IMR to 30/100 & MMR to

100/Lakh.
2010 - Increase utilization of public health facilities from current level of < 20% to 75%.
2010-Increase Health expenditure by Govt. of GDP from the existing 0.9% to 2.0%
2010 - Increase Share of central grants to constitute at least 25% of total health spending.
2015- Eliminate lymphatic filariasis.

Antenatal Visits : Once a month during 1st - 7 month. twice a month for next month i.e. 8th month and thereafter once a week if everythimg is normal.

Minimum 3 Visits : 1st at 20 weeks. 2nd at 32 weeks. 3rd at 36 weeks. (Average - (3-6) Visit)

Tetanus :
(16-20) Weeks 1st dose. (20-24) weeks 2nd dose Interval should be one month. 2nd dose before 1 month of delivery.

Miscellaneous : 1) Poor man meat is pulses.
2) Complete food is milk.
3) Safest animal food is egg.
4) Increase in high density lipoprotein is useful.
5) Tetanus toxoid acts on post horn cells.
6) Risus sardonicus associated with tetanus.
7) Polio and measles - 6 Month to 3 yrs.

Forensic Medicine and Toxicology

Forensic means courts of law.
IPC - Indian Penal Code
CrPC - Criminal Procedure Code
IEA - Indian Evidence Act.
Medical jurisprudence- Knowledge of law in relation to be practice of medicine.

Subponena / Summons : It is document compelling attendance of witness, on a specified day and at a specified time, in a court of law under penalty.

Conduct Money:
In civil cases, a fee is tendered to coner the expensies to attend the court when the summons is served.

Oath : Before giving evidence, a witness is required to swear by Almigty God.

Solemn affirmation :
If a witness is an atheist, he makes a solemn aiffirmation in the same terms, instead of swearing by God.

Dying declaration:
This is statement, verbal or written, made by a person, since decreased narrating the cause of his condition or the circumstances leading to his impending death.

Dying deposition : It is statement as oath made by a dying person to a magistrate in the presence of the accused and his lawyer who has opportiunity of cross examining him. Legally carries more weight than a dying declaration.

In case of death in lock up, the inquest is held by a magistrate.

Leading question: It is one that suggests its own answer. It is allowed in cross examination.

Hostile witness :
It is one who purposely makes statements contrary to facts or to what he has already said in a lower court or in the same court on a previous occasion.

Stalled / Expert witness :
Hand writing expert, finger print expert, Ballistic expert, chemical examiner, medical personnel etc. Post mortem lividity or post mortem staining or Hypostasis. Pugilistic Attitude or Boxing attitude or fencing posture.

Ossification:
The areas which are X-rayed to determine the age of person are - 1) Wrist and hand in children. 2) Elbow, shoulder, pelvis and knee in a adults. 3) Skull, Vertebrae and sternum in old peoples. The union of epiphyses in cartilaginous bones takes place earlier in the female by about 2 yrs. then in male except sutures.

1) At birth: Lower end femur shows centre of ossification (O.C.) will be present in tallus and callcaneum and may be in cuboid, upper end of tibia and head of humerus.
2) 1½ - 2 yrs:
   Ant. Fontanelles and also metopic sutures closes.
3) End of 2 yrs: Condylar portions of occipital bone fuse which the squama.
4) Bet 2 to 6 yrs The no. of carpel bones presents on x-ray represents approximate age in years.
5) At 4 yrs Male & 6 yrs in female: A centre of ossification appear in medial epicondyle of humerus.
6) About 6 yrs: Condylar portion of occipital bone and fuse with the basi-occiput.
7) At 7 - 8 yrs: The rami of pubis and ischium unites sacral vertebrae are separated by cartilage.
8) 8 - 10 yrs: Olecranon
9) 10 - 12 yrs: Pisiform ossifies (lastly carpel)
10) 13 - 14 yrs: Lateral epicondyle of the humerus unites with trochlea and capitulum.
11) 15 - 16 yrs: Calcanium joins the bones. Coracoid process unite with scapula olecranon unite with ulna metacarpals unite within their shafts.
12) 16 - 18 yrs: All epiphyses at elbow, head of femur, and lower end of tibia join the resp. shaft
13) 18 - 20 yrs : All epiphyses at wrist, knee, crest of ilium, lateral end of clavicle should be united. Acromian process unite with scapula.

14) After 20 yrs:
Articular facets of ribs should be united.
15) 22 yrs Inner epiphysis of clavicle fuse.
16) 18- 22 yrs: Basi occiput unite with basi sphenoid.
17) 23 yrs: Sacral vertebrae united with one another from below upwards. 25 yrs All epiphyses united. Union of epiphysis of long bones with their respect shafts.

Region	Girls (yrs)	Boys (yrs)
Elbow	13 - 14	15 - 17
Wrist	16 - 17	18 - 19
Shoulder	17 - 18	19 - 20.

Xiphoid process unites with body of the sternum about 40 yrs. of age. manubrium unites with body at 60 years. Rate of Increasing Wt - 0.5 kg / month for 1st year.

Criminal responsibility:

82 IPC Child under age of 7 yrs is incapable of committing an offence.
83 IPC Child above 7 yrs or below 12 yrs in India is presummed to be capable of committing an offence.
87 IPC - A person under 18 yrs of age cannot give valid consent.
89 IPC - Child under 12 yrs can not give valid consent.
369 IPC - Kidnapping
375 IPC - Rape : sexual intercourse by a man with a girl 15 yrs of age even if she is his wife, or any other girl. Under 16 yrs of age even with her consent constitutes the offence of rape.

Employment : 18 yrs of age
25 yrs senior responsible post
Govt. Retire by 58 yrs.

Identification :

Race : a) Complexion : The skin is dark in Negroes, brown in Indians and fair in Europeans.
b) Hair : Chinese and Japanese - Black, thick, short and curely; Indians - Black, long and fine, Europeans - Fair, light brown, reddish. c) Eyes - Europeans- Blue/grey iris,Indian-Dark or Brown Iris

Sex a) Nuclear sexing : Useful in doubltfull cases
i) Barr Body : A small plano convex mass of chromatin present close to the nuclear membrane in buccal smear. It shows percentage of Barr body from 20 to 80 in female (Chromatin positive) and 0 to 4 in male (Chromatin negative).
ii) Davidson body : Female also shows thick drumstick like projection on the polymorph nucleus i.e. Davidoson body in about 6% of cells.
b) Intersex state : Male and female character e.g. gonads, physical form and sexual behaviour co-exist in same individual.
c) Concealed sex : Criminals attempted for conceal their sex by change of dress or other methods to avoid detection.

Character	Europeans	Blacks	Mongols
Cephalic Index	75 - 79.9	70 - 74.9	>80
Height Index	71	72	75
Nasal Index	46	55	50
Radio humeral Index	Below 75	Above 80	-
Tibio femoral Index	Below 83	Above 83	-
Palate	Triangular	Rectangular	Rounded or Horse shoe shaped
Nasal opening	Narrow	Broad	Rounded
Orbits	Triangular	Square	Rounded

Personal Identification:

1) Anthropometry (Bertillon system)
a) Descriptive data. b) Bodily marks
c) Bodily measurements only in adults
2) Finger prints (Galton system) (Also known as Dactylography) 4 types
a) Arches- 6.7% b) Loops - 67%
c) Whorls - 25% d) Composit/compound - 1%.
3) Poroscopy - Or Locard's method Examining the Pores. 4) Foot prints - Congenital malformation.

Krogman - Degree of Accuracy in sexing Adult skeleton : Long bones alone - 80%;
skull alone - 90%; Pelvis alone 95%;
Pelvis and skull 98%; Entire skeleton 100%.

Age Determination :

The upper and lower surfaces of the bodies of the vertebra bear radial markings which one pronounced at about age of 10 yrs. At age 30 yrs. They begin to fade and disappear
At Age - 40 Yrs - Copping of bones occurs, Osteophytic out growths seen.
40 - 50 yrs - Autrophic changes in disc found.

Stature : In complete skeleton - Stature is determined by the length of skeleton plus 2.5 cms for thickness of Soft parts.
In incomplete skeletons : The stature of individual is equal to length from the tip of middle finger to the tip of opposite middle fingure when arms are full extended.

Stature is twice the length from vertex or heel to the top of symphysis pubis. The height can be

ascertained from one arm by multiplying its length by two and adding 30 cms for the two clavicles and 4 cms for sternum. Humerus represents 20%, tibia 22%, femur 27% and spinal column 35% of the stature. (Pearson's formula).

CAPMI: Computer Assisted Postmortem Identification

Medicolegal Autopsy : Special type of scientific examination of dead body carried out under the laws of state. Authorisation for a medicolegal autopsy is given by the coroner, police or magnistrate. When dead body sent for autopsy, it is always accompanied by a dead body challan an inquest report or panchanama and the information Report.

Authorisation : Given by coroner of Bombay.

Dead body challan in requisition submitted by investigating police officer to medical officer while handing over the body for performing an autopsy.

An Inquest report or panchanama is a report in which the available history of case of circumstances under which the body was found or recovered are also recorded. Opinion of witneses of the police officer regarding indication of suspected font play.

Material	**Quantity**
1) Stomach -	Whole
2) Stomach contents -	300 ml if less whole
3) Small intestine	100 cm in adults,200 cm in children & whole in infants
4) Small intestine contents	100 ml if less whole
5) Liver	Portion containing 500gm or 5 cm thick slice of liver in adults gall bladder and its whole contents in children & infants.
6) Spleen	Half in adult and whole in children
7) Kidney's	Half in each kidney in adults and both kidneys in children.
8) Urine	100 - 200 ml if less whole
9) Blood	5 - 10 ml preferably more.

Nature of poison :	**Material to be preserved**
1) Alcohol	About 100 ml blood from a peripheral vein and as much as CSF can be withdrawn.
2) Barbiturates	One half of brain
3) CO and Coal gas	About 100 ml blood from heart, one half of brain.
4) Chloroform	About 100 ml blood from heart, one half of brain.
5) Corrosive poison	Skin at least 2.5 cms square from the affected area and similar portion from opposite area as control.
6) Heavy metals (Arsenic, antimony etc.)	About 10 cms of shaft of long bone. About 5 gms plucked scale hair, all finger or toe nails, skin of back of wedge of quadriceps muscle before opening the abd.
7) Hydrocynic acid & cyanides	About 100 ml blood from heart & one half of brain.
8) Inhalation or solvent poison	Tie of trachea, collect sample of bronchial air, collect entire air, whole lung.

9) Injected poison- Skin, subcutaneous tissue, & muscle forming the injection track, bone, deep similar material from opposite area as control.

10) Nux vomica or strychnine	Spinal cord, heart one half of brain.
11) Opium	One half of brain & gall bladder.
12) Pesticides	Fatty tissue from abd wall or perinephric region. myoneural junction if possible.

Special circumstances	**Material to be presented**
1) Criminal abortion	Vagina, Uterus, FT, ovaries
2) Decomposed bodies	Insect eggs, maggots, pupa, & 520 gms of muscle.
3) Emblamed bodies	Embalmed fluid, bone marrow.
4) Exhamed bodies	Soil sample,any fluid found in the coffin
5) Extensive trauma in individuals	Vitreous fluid from drunken estimation of alcohol.
6) Firearm injuries	Skin around the entrance or exit of wound.
7) Rabies (Hydrophobia)	Brain for Negri bodies

Taking tissue parts for testing :

1) Blood - At least 5 to 10 ml
2) CSF - As much as with drawn
3) Bone - About 200 gms
4) Bone marrow - req. quantity is obtained from femur or sternum.
5) Hair - 10 gms 6) Maggots - 7) Muscle - quadriceps 8) Nails - All 9) Skin - 2.5 cm square piece 10) urine 10 ml.

In case of poisoning

1) Vomit - 300 ml. 2) Stomach wash - 500 ml
3) Blood & urine - As previous

Prevention of dispatch of viscera:

Glass Bottle 1 - Stomach and stomach contents small intestine, small intestine contents .

Bottle 2 - Pieces of liver, spleen and kidney.

Bottle 3 - Urine.

1) In all cases of poisoning including carbolic acid but exclusive of other acid, saturated solution of common salt should be used.
2) In cases where poisoning by acid is suspected except carbolic acid rectified spirit should be used.
3) Preservation of blood for grouping in an equal quantity of 5% w/u solution of sodium citrate in water containing 0.25% v/v formalin.
4) Urine is preserved by adding equal quantity to saturated slop of common salt or rectified spirit.

5) 10% formalin is used as preservative for tissues meant for histo pathological examinations. The prostate and non-pregnant uterus resists putrefaction for a long period. The height can be ascertained from one arm by multiplying its length by two and adding 30 cm for clavicle & about 4 cm for the sternum. Bones are foul smelling and humid in recent cases (about 1 - 3 months). The time required for putrefaction of bone varies from 3 to 10 yrs.

Medicolegal Aspects of Death

Forensic thanatology - Study of death and

2 stages -i) Somatic, systemic or clinical.

ii) Cellular or molecular

Death - It is due to complete & irreversible cessation of vital function of the brain, heart of lungs.

Pupils dilates with Atropin, Constricts with physostigmine. Cellular death is acompanied by cooling and changes in eye lash and muscle etc.

Molecular death is generally complete wthin 3-4 hrs of somatic death.

Viability - Liver within 15 mins.

Kidney - 45 min and Heart within 1 hrs taken out.

Coma - Failure of brain.

Syncope - This is due to failure of heart resulting in anaemia of brain.

Asphyxia - This is death from failure of function of the lungs.

Early signs : Cooling of body (Algor mortis)

The temp of dead body is recorded by chemical thermometer (thanotometer) 25 cm long with a range from 0-50 Centigrade and graduated in degrees. It is inserted about 8-10 cms in rectum, vagina and a abdomen for 2-3 min.

N-Body temp in Rectum 37.2^{0}C and Axilla 37^{0}C

Average heat loss roughly 0.5 - 0.7^{0}C per hour and the body attains environmental temp at 16 - 20 hrs.

$$\text{Time in hrs since death} = \frac{\text{Normal body temp (37.2)} - \text{Rectal temp of body}}{\text{Average rate of fall of temp } 0.6^0\text{C}}$$

Caloricity : In certain condition after death - temp increases first. 1) Sunstroke 2) Tetanus and strychnine poisoning 3) Acute bacterial or viral infection 4) Intense asphyxial condition. This phenomenon is known as postmortems caloricity.

1) Children and adults cools rapidly.

2) Womens cools less rapidly than men because of fat.

Surroundings : A body cools more quickly in water than on land because of loss of heat by conduction.

Cornea : Glistening appearance is lost. cornea becoms dry, cloudy, opaque. Corneal reflex is lost. eyeball flaried sickles into orbit. As the pupils usually dilate at the time of death, later becomes constricted through development of rigor mortis.

Cadaveric spasm : Condition characterized by stiffening of the muscle immediately after death without being preceded by a stage of primary relaxation.

Postmortom lividity : Changes in muscles.

Late signs - After 24 hrs :

Putrefaction : The micro-organisms responsible for putrefaction clostridium welchii.

The condition owing to its mosaic appearance or arborescent pattern is known as marbling, seen in 36 - 48 hours. Putrefactive blisters (blebs or bullae) appear under the skin about 36 - 48 hours. A study of insects that infests a dead body is known as forensic entomology. In 3 to 7 days teeth may become loose in their sockets and may fall.

Body is skeletonised in 1 to 3 months

Early putrefaction : 1) Larynx & trachea. 2) Brain of infants. 3) Stomach. 4) Intestines. 5) Spleen. 6) Omentum and mesentry. 7) Liver. 8) Adult brain.

Late putrefaction : 9) Heart 10) Lungs 11) Kidney 12) Bladder 13) esophagus 14) Pancreas 15)Diaphragm 16)Blood vessels 17) Prostate, Testis 18) Non gravid Uterus and Ovaries.

Order of appearance of colour changes in the body

Decomposition in water	Decomposition in air
Face and neck	Abdomen
Thorax	Chest
Shoulder	Face
Arms	Legs
Abdomen	Shoulder
Legs	Arms.

Floatation occurs in about 24 hours in summer and 2-3 days in winter. Ideal temp for putrefaction is 37^{0}C

Adipocere / saponification : The fatty tissues of the body may get hydrolysed into fatty acids, a change known as **Adipocere** formation.

Time - 12 months for whole body

Mummification : Charactrised by dehydration or desiccation of body tissues and viscera after death.

Mummification is commonly seen in infants :

Time required to mummification 3 month to a year.

A body may be mummified artificially for the purpose of preservation by a process known or embalming.

Time since death	Condition of body
1) Less than 1 hr	Body warm
2) 3 hours	Patchy postmortem lividity.
3) 6 - 8 hrs	Lividity fully developed and fixed.
4) 12 hrs	Rigor present all over. Green patch showing over the caecum.

5) 24 - 36 hrs Rigor receding/absent.Green discolouration over whole abdomen and spreading to chest. Abd distended with gases. Ova of flies seen.
6) 48 hrs Trunk bloated. face discolored and swollen. Blisters present. Moving maggots seen
7) 72 hrs Whole body grossly swollen & disfigured.Hair & nails loose. Tissues soft and discoloured.
8) One wk Soft viscera putrefied
9) 2 wks Only more resistant viscera distinguishable. Soft tissues lastly gone.
10) 1 to 3 months Body skeletenised.

Tardieu spots : Petechial haemorrhages sign develop when obstruction to breathing is maintained for about 30 sec. Does not occure in drawoning.

Common cause of death by hanging is compression of the cervical vasculature & not asphyxia by airway obstruction.

Hanging: Death occurs within 5-8 min.

Lynching : A condition where several persons acting jointly overpower on individual and hang him by means of a rope to free or some similar object.

Strangulation : As a form of voilent asphyxia caused by constricting the neck by some means, the constricting force being other than the weight of the body. Means used may be ligature, hand, elbow, some hand object such as stick.

Cause of death : Where a ligature is used death usually results from asphyxia and compression of cervical vasculature.

Mugging : Strangulation is effected by compressing the victims neck against the forearm. It is known as mugging.

Garroting : When a victim is attacked from the back without warning and strangled by grasping his throat or throwing a ligature over the neck and tightening it quickly. It is known as garroting.

Throttling : A form of strangulation effected by hand and is therefore often referred to as manual strangulation. Homicidal throttling is common form of murder.

Suffocation : Form of asphyxia caused by mechanical obstruction to the passage of air into respiratory tract

1) Smothering 2) Choking - Solid objects
3) Traumatic asphyxia.

1) Smothering: Form of asphyxia caused by mechanical obstruction of ext. air passages viz.Nose and mouth by hand, cloth, plastic bag or etc.

2) Choking - Solid objects : Café coronary is a condition accidental choking where a bolus of food, produce a complete obstruction of larynx.

Bansdola : is homicidal compression of chest by means of a bamboos.

Drowning : Immersion form of asphyxial death is which the acess of air to the lungs is prevented by submission of the body in water or fluid medium. In fresh water cause is ventricular defibrillation.

Fatal period : 5 min complete immersion. The presence of weeds, mud, sand etc. in the tightly clenched hand is indicative of death from drowning. Fine froth at the mouth and nostrils.

FATAL PERIOD

Not Fixed

1) Antihistaminics - upto 1 gm
2) CO - 50-70% saturation of blood
3) CO_2 - Above 30% concentration in blood
4) Ergot - Uncertain, 5) Ether - 30 ml orally; more than 0.15% in blood, 6) Lead - Absorbed lead 0.5 gm, Tetraethyl lead 3-4 drops Lead carbonate 4 gm , Lead Acetate 20 gm. 7) Nicotine-Nicotine 1 gm/kg, 15-30 gm crude tobacco. 8) Ricinus communis - 6 mg of Ricin, 10 Seeds 9) Salicylates - 30 gm
10) Tranquilisors - 10 gm

Few minutes

1) H_2S 0.2% in Air

Few Hours

1) Cobra venom- 15 gm 2) Conium - 1 cm of plant

Few minutes to Few days

1) Benzene 10 - 15 ml.

Few Minutes to few Hrs

1) Aspirin - 5-10 gm

Few days

1) Viper venom - 40 gm 2) Crait venom - 6 mg

10 minutes

1) KCN - 200 mg cyanides 2) Pottasium permagnate- 10 gm, 3) NaCN - 200 mg 4) Chloroform - 30 ml by mouth Above 0.04% in blood

1 - 2 Hrs

1) Cocaine - 1 gm 2) Curare - 30-60 mg
3) Nux vomica - Powedered 2 gms, Strychnine - 15-30 mg
4) Oxalic Acid - 15-20 gm 5) Endrin - 6 gm

2 - 3 Hrs

1) Arsenic oxide - 180 mg

3 - 4 Hrs

1) Carbolic acid (Phenol) - 20 drops of pure Phenol

6 Hrs

1) Croton tinglium - 4 seeds or 20 drops of oil
2) D.D.T. - 20 gm3) O.P. Poision - 1 gm of Tikzo

6 - 12 Hrs

Bromide - Above 50 mg % in blood, Opium - 2 gm.

12 Hrs

1) Barium - 1 gm 2) Calolropis - Uncertain 3) Charas - 2 gm/kg of body wt, Ganja - 8 gm/kg of body wt Bhanga - 10 gm/kg of body wt.4) Chloral hydrate - 5 gm 5) Morphine - 200 mg 6) H_2SO_4 (Sulphuric Acid) 10-15 ml 7) Paraldehyde - 60-90 ml

12 - 24 Hrs

1) Semicarpus Anacardia-10 gm 2) Nitric acid (HNO_3) -10 ml. 3) Alcohol - Above 0.35 mg% (Concentration in Blood 150-180 ml of Absolute Alcohol)

24 Hrs

1) Ammonia - 30 ml of 25% Concentration 2) Antimony - 750 mg of tartar 3) Catharides - 1.5 gm of powder, 10 mg Active principle 4) Caustic pothash and Soda - 5 gm 5) Colocynth - 1- 2 gm 6) Dhatura - 60 mg alkaloid for Adult , 4 mg for children 7) Digitalis - Digitalin-15-30 mg, Digitoxin - 4 mg Digitalis - 2-3 gms 8) HCL - 15-25 ml 9) Hyoscyamus - 125 mg of hyoscyamine,15-30 mg hyoscine 10) Iodine - 2 gm of iodine ,10 ml tincture 11) Oleander - Nerium odorum 15 gms, Yellow oleander 8-10 seeds 12) Phosphrus - 120 mg 13) Zinc - 15 gm of $ZnSO_4$, 400 mg of ZnCl 14) Zinc Phosphide 5 gms 15) Aconite - 1 gm of Root,250 mg extract,1.5 ml tincture, 4 mg toxoid

24 - 48 Hrs

1) Atropa Belladona-125mg 2) Barbiturates long Acting 3 gm

40 Hrs

1) Pethidine - 2 gm

48 Hrs

1) Chlorine - Uncertain 2) Acetic Acid - 60 ml

24 - 72 Hrs

1) Ethyline glycol --100 ml

72 Hrs

1) Mercury - Corrosive sublimate 1-2 gms 2) $CaSO_4$ - 30 gms 3) CCl_4 - 2 - 4 ml in Adult 1 ml in Chidren

Upto 5 days

1) Paracetamol - 10 gm 2) methyl alcohol - 15 ml Causes blindness, 60 - 240 ml 3) Abnus precatorius – 1 - 2 seed 4) Amphetamine - 120 - 200 mg 5) Antidepressant - 1 - 2 gm

2 days to 2 week

Thalium - 1 gm

Barbiturates

Uses : Sedatives, hypnotics, IV as anaesthetics, psychiatric disorders, epilepsy, strychuine poisoning.

Classification in 4 groups :

1) Long Acting : Effect from 1 to 8 - 12 hrs Barbitone, Barbitone sodium, **Phenobarbitone,** methyl phenobarbitone, Fatal Dose - 3 - 4 gms.

2) Intermediate Action - Effect from 1/2 to 4 - 8 hrs. Allobarbitone, Amylobarbitone, Aprobarbitone Butobarbitone, pentobarbitone. Fatal Dose- 2 - 3 gms

3) Short Acting - Effect form 1/4 - 24 hrs Cyclobarbitone, hexobarbitone, Quinal Barbitone, Quinal with Amylobarbitone, Fatal Dose - 1- 2 gms

4) Ultra Short Acting : For Anaesthesia Thiopentone Sodium, Methohexobarbitone, Fatal dose 1 gm.

Lethal Blood Levels:**Long Acting-**10 mg per 100 ml, Inter mediate Acting - 7 mg/100 ml,
Short Acting - 3 mg/100 ml.

BURN : Types- 3 - Epidermal, Dermoepidrmal, Deep. 1) Epidermal : Affected part is Red, Blisters formed, Very painful burn, singeing of hair is present and pin prick sensation present Repair complete without scar formation.

2) Dermo - epidermal : Whole thickness of skin is destroyed; Affected area dry white leathery, coagulation necrosis. Associated with considerable pain and shock. Necrosed tissue separates within a week leaving an ulcer with scar formation.

3) Deep - Gross destruction of skin, subcutaneous tissue, muscle and bone. Nerve ending destroyed, painless burn.

Degree Of Burns : 1) First - Partial loss of skin thickness; self healing. 2) Seeond : Full thickness of skin lost; Require skin grafting. 3) Third : Deep Burn, loss of function

Rule of Nine : Head, Each Arm, front of each leg, Back of each leg - 9% for each; Front of trunk / Back of trunk - 18% each, For perineum - 1%.

In children, the estimation of burnt surface carried out by the use of Lund and Browder chart.

Burn more than 15% in adult and 10% in child, loss of circulaing blood volume must be replaced or irreversible shock may occured.

Pugilistic attitude in burn is seen in both Ante and post mortern burns .

Burn In
Centre B
for each
for each
about 45
Death : I
in over 5
Mental D
Mental F
Stomach
1.5 m in
filter fun
and roun
Antidote
BAL (Br
EDTA (I
(calcium
EDTA a
N-penici
desferrio
BAL - 3
EDTA -
glucose s
Contrain
Penicilla
gm/day c
Posion
1) Miner
caustic a
2) Oxalic
3) Carbo
(phenol)
4) Phosp
garlic an
5) Iodine
and with
6) Arseni
then bile
7) Mercu
masses o

Burn Index : It was devised by brook Army Medical Centre Burn unit of U.S. Army : 1/2 points is given for each 1% area in 2nd degree and 1 point is given for each 1% area in 3rd degree. According to B.I. At. about 45 points, the mortality rate is 50%.

Death : Death from shock occures within 1 to 2 days in over 50% cases.

Mental Deficiency Act. 1927

Mental Health Act. 1987.

Stomach tube / Ryle's tube : Flexible Rubber tube 1.5 m in lenth and 12.7 mm in external diameter. A filter funnel provided at upper end. Lower end blunt and rounded tube is marked at 50 cm from lower end.

Antidote : Chelting Agents :

BAL (British anti lewisite) OR Dimercaprol

EDTA (Ethylene diamine tetra acetate) and versenate (calcium dlethyl tetra acetate) for Arsenic;

EDTA and Versenate for lead and murcury;

N-penicillamine for mercury lead and copper and desferrioxamine - B (D.F.M.) for iron.

BAL - 3 gm/kg, in severe liver damge

EDTA - 1 gm twice daily in Slow IV in isotonic glucose saline 5 days.

Contraindication : Renal Damage.

Penicillamine - (Cuprimine) 30 mg/kg body wt. 2 gm/day orally in divided doses.

Posion	Vomit
1) Mineral Acids and caustic alkalis	Shreddy blood stained Acidic/Alkaline dpend upon poision
2) Oxalic Acid	Black in colour,coffee ground due to altered blood.
3) Carbolic acid (phenol)	Vomiting may not takes place due to anaesthetic Action on stomach.
4) Phosphrus	Darkened by blood, smells of garlic and is luminous in the dark.
5) Iodine	Dark, yellow, brown or blue and with peculiar small of iodine.
6) Arsenic	Initially stomach content, then bile & finally mucus mixed with altered blood.
7) Mercury	Vomit contains long stringy masses of white mucus, mixed with blood.
8) Copper	Vomitted matter is Green or blue.
9) Zinc	Vomiting is severe
10) Colocynth (Bitterapple)	Yellow Vomiting
11) Cantharides (Spanish fly)	Blood stained material
13) Powdered glass	Blood Stained.

Brown discolouration mucosa of the stomach and brown urine is seen in poisoning due to Nitric acid. Greenish Urine is seen in carbolic acid poisoning.

Vitriolage : Throwing of any corrosive poison on a person with malicious intent. Demulcents are contraindicated in phosphorous poisoning. Liver undergoes necrobiosis in phosphorous poisoning. Phossy Jaw seen in chronic phosphrous poisoning.

Metallic poisoning :

Arsenic poisoning : Ideal homicidal Agent

Chronic Arsenic poisoning is known as slow poison.

Four stage :

1) Stage of nutritional and gastorintestinal disturbance

2) Stage of catarrghal changes

3) Stage of skin Rashes - Patchy brown pigmentation of skin called 'rain drop' type pigmentation. white Bands known as Mee's lines crossing the nails of the finger and toes may be noticed. 4) Stage of Nervous Disturbance.

Mercury poisoning : Chronic poisoning :

Mercuria lentis : Discolouration of the capsule of the lens of the eye due to deposition of mercury. Tremor is known as the "hatter's shake"

Erethism : Charactrised by Shyness irritability tremours, loss of memory and insominia.

Lead : Acute : Same as Arsenic or mercury posioning except that diarrhoea is replaced by cosntipation and stool is blacknened and offensive.

Chronic poisoning : Anamia with punctate Basophilia. Porphyrins 500 micrograms per day excreted in urine.

Lead line : Bluish Black line on the gums at the junction with the teeth. Lead encephalopathy.

Diagnosis : More than 200 punctate basophilia cells per cmm and presence of 0.25 mg of lead per liter of urine.

Copper : Chronic : Wilson's disease, Bronzed diabetes may occur. Thallium : Transverse lines on the finger nails known as Mee's line are also seen. Zinc - Chronic poisoning closely allied with those of lead and copper.

Mechanical Injuries :

Injury is defined as any harm whatever illegally caused to any person in body, mind, repretation or property.

1) Abrasions (scratches, grazes, imprint or pressure marks) 2) Bruises (contusions) 3) Lacerations (splits, tears) 4) Incised wounds (cuts) 5) Stab wounds (punctures) 6) Firearm injuries

Abrasions : An abrasion is a superficial injury involving only superior layer of skin.

Classification : 1) Scratches : Linear injury produced by a sharp object, such as pin, thorn or finger nail.

2) Graze : An injury which is produced where a broad surface of skin slides or scrapes against rough surface also called Bush burn 3) An imprint / pressure or contact : Injury as a result of direct impact, or pressure or contact with some object.

Age : 1) Bright red colour scab in 12 - 24 hrs. 2) Scab - reddish brown 2 - 3 days. 3) Scab falls off -4 - 7 days 4) Healing is complete - about 10 days.

Bruises (Contusions) : Infiltration of blood into tissues, following the rupture of vessels, usually capillaries, as a result of the application of blunt force e.g. stick, stone or fist.

Types- 1) Intradermal 2) Subcutaneous 3) Deep

4) Vascular : Greater the post vascularity 8 hrs injured part the greater is bruising and viceversa. A fresh bruise red at first, red to blue in a day (oxygenated Hb), bluish black to brown (haemosiderin) in 2 to 4 days. Green (haemotidin) in 5-7 days and yellow (bilirubin) 7-10 days, yellow to normal colour in 14-15 days.

Hesitation cuts : Incisions are made by a person intending to commit suicide by a cutting instrument.

Laceration :

1) Split laceration (due to blunt perpendicular impact)
2) Stretch laceration (tangential impact)
3) Avulsion (horizontal impact)
4) Tears (Irregularly directed impact)

Concealed punctured wounds : Puncture by pins and needles which are difficult to see.

Fabricated injuries : Fictitious injuries or forced wounds / Self inflicted. Injuries produced by a person on his own body or caused by another acting in agreement with him.

Injury : Simple, Grievous, Dangerous injury :

Simple Injury : It is one which is neither extensive nor serious and which would heal rapidly without leaving any permanent deformity or disfinguration.

Grievous injury : It is extensive or serious not healing rapidly, which leaves permanent deformity or disfinguration. Section 320 IPC define following injury as grievous. (a) Emasluation b) Permanent privation of the sight of either eye or hearing of either ear c) Privation of any member (Part, organ, limb or joint) d) Destruction or permanent impairing of power of any member or joint e) Permanent disfiguration of head or face f) Fracture or dislocation of bone or tooth g) Any hurt which causes severly body pain or unable to do daily routine.

Dangerous injury : Type of grievous injury e.g. Gun shot wounds, compound fracture of skull, trauma to large or important blood vessels, rupture of some internal organ (spleen etc)

A pinch Arsenic trioxide can kill as many as five person.

Ink remover solution oxalic acid.

Legislation regarding Insanity (Mental illness)

1) Mc Naghten Rule 2) Darhan Rule

3) Currens Rule

Multification formula for estimation of starture in Indian devised by Indian scientist :

Bone	Male	Female
Humerus	5.30	4.97
Radius	6.90	6.43
Ulna	6.30	5.93
Femur	3.70	3.57
Tibia	4.48	4.18
Fibula	4.48	4.35

$$\text{Multification factor} = \frac{\text{Avarage height of body}}{\text{Ava. length of long bone (asked)}}$$

Character	Human Hair	Animal Hair
1) Cuticle	Scales are small	Large
2) Medulla	Narrow	Broad
3) Cortex	Thick	Thin
4) Medullary index	< 0.3	> 0.5
5) Pigment	Periphery of cortex	Uniform, Peripheral, Central

Widmark's formula for to estimate Alcohol a - cpr

Where c - Concentration of alcohol in blood (gm/kg)

p - Weight of personin kg

r - is constant 0.68 in men and 0.5 in women

Month	Foetus length	Foetus weight
1 Month	1 cm	2.5 gm
2 Month	4 cm	15 gm
3 Month	9 cm	80 gms
4 Month	16 cm	200 gms
5 Month	25 cm	400 gms
6 Month	30 cm	900 gms
7 Month	35 cm	1.5 kg
8 Month	40 cm	2 kg
9 Month	45-50 cm	2.5 to 3 kg

Hess Rule :

Age in month in 1st 5 Months - $\sqrt{Length\ of\ foetus\ (cm)}$

MEDICINE

Signs:

1) Babinski's sign - In lesions of pyramidal system all deep or tendon reflexes are exaggerated.

2) Brudzinski's sign i) In meningitis, flexion of neck usually causes flexion of hip and knee.

ii) In meningitis, on passive flexion of one lower limb, the contralateral limb shows a similar movement.

3) Erb's sign:- i) Increased electric irritability of motor nerves in tetany. ii) Dullness in percussion over manubrium sterni in Acromegaly

4) Goodell's sign:- Softening of cervix and vagina seen in pregnancy.

5) Hegar's sign:- Softening of lower uterine segment indicative of pregnancy.

6) Kernig's sign:-

Inability to completely extend the leg when sitting or lying with the thigh flexed upon the abdomen.

7) Mcmuray's sign:- Occurance of cartilage click on manipulation of knee, seen in menisceal injury.

8) Kehr's sign:- Pain is reffered to left shoulder due to irritation of left half of diaphragm by splenic blood; seen in splenic injury.

9) Murphy's sign:- Pain on deep inspiration when an inflamed gall bladder is palpated by pressing with fingers under the ribcase +ve in acute cholecystitis

Syndrome :-

1) Horner's syndrome :- A condition marked by contracted pupils, ptosis, enopthalmos and dry cool face on affected side produced by paralysis of sympathetic nerve.

2) Stroke Adam's syndrome- Bradycardia with loss of consciousness caused by decreased blood flow to the brain. It is caused by partial or complete heart block.

3) Carpel - Tunnel syndrome - Pain and burning or tingling paraesthesia in finger and hand due to compression of median nerve in carpel tunnel.

4) Crigler- Najjar syndrome - Autosomal recessive form of non-hemolytic jaundice due to absence of enzyme glucuronide transferase, marked by unconjugated bilirubinaemia with kernicterus.

5) Grey baby syndrome -

Due to chloramphenicol in neonates, ashen grey cyanosis, weakens and hypotension are seen.

6) Irritable bowel syndrome -

Chronic non inflammatory disease with a psycho physiologic basis marked by pain, diarrhoea etc.

7) Nephrotic syndrome - Massive oedema, proteinuria, hypoalbuminaemia

8) Plummer - Wilson syndrome - Dysphasia with glossitis, hypochromic anaemia, spleenomegaly and atrophy of mouth, pharynx & upper part of.oesophagus.

9) Raye's syndrome –

Fatal encephalopathy of childhood, fatty infiltration of liver, hepatomegaly, seizures.

10) Steven - Johnson syndrome- Fatal form of erythematic multiform presenting with a flee like prodromal with mucocutaneous lesions.

11) Wolff - Parkinson - White syndrome -

The association of paroxyimal tachycardia and pre-excitation ECG shows short PR interval and wide QRS complex with an early delta wave.

12) Zolinger - Ellison syndrome - Peptic ulcer, extreme gastric hyperacidity, benign or malignents gastrin-secreting islet's cell tumours of pancreas.

Drug of choice :-

1) Anaphylaxis	Adrenaline (S/c)
2) Anthrax	Penicillin
3) Perianal abscess	Penicillin
4) Erysipeloid	Penicillin
5) Asthmatic attack	Adrenaline
6) Beriberi	Thiamine chloride
7) H influenza meningitis	Chloramphenicol + Ampicillin
8) Typhoid	Chloramphenicol
9) Klebsiella pneumonia	Chloramphenicol, Meziocillin, Cephatoxime
10) H. Influenza pneumonia	Ampicillin
11) Diphtheria carriers	Erythromycin
12) Plague	Streptomycin
13) Toxoplasmoses	Pyrimethamine
14) Giardiasis	Tinidazole
15) Chaga's disease	Nefurtimox
16) Trigeminal neuralgia	Carbamazapine
17) Hyperpyrexia	Dandralone (IV)
18) Status epilepticus	Diazepam
19) Status asthmaticus	Aminophyllin
20 Chancroid	Sulfadimidine
21) Meningococcal carrier	Rifampicin stat and prophylaxis

22) Septicaemia from pyelonephritis Gentamycin
23) Shock Dopamine (IV drip)
24) Cerebral malaria Quinine
25) Herpes simplex Acyclovir
26) Angina Glyceryl trinitrate
28) Rheumatoid arthritis Gold salts, D-penicillamine
29) Complete heart block Isoprenaline
30) Hypoparathyroidism Califerol
31) Cushing's disease Pituitary X-ray irradiation in child
32) Aplastic anaemia Bone marrow transplantation
33) Intestinal amoebiasis Metronidazole
34) Morphine poisoning Nalaxone
35) Parkinsonism Levodopa
36) Eclampsia Magnesium sulfate
37) Inflammatory bowel syndrome - Sulfasalazine
38) Congestive cardiac failure Digoxin
39) Supra ventricular tachycardia Verapamil
40) Ventricular tachycardia Lignocaine
41) Megaloblastic anaemia Vit B12
42) Extraintestinal amoebiasis Chloroquine
43) Botulism Guanidine HCL
44) Kawasaki disease High doses of Aspirin
45) Motion sickness Scopolamine (Hyoscin) (of short duration)
46) Myasthenia gravis Neostigmine
47) Nocturnal enuresis Imipramine
48) Paget's disease Calcitonin, Mithramycin, Etidronate disodium
49) Gout -Acute attack - Colchicin
50) Gout-chronic cases - Allopurinol Prophylaxis
51) Urinary analgesic - Phenozopyridine
52) Phenobarbiton and Barbitone -Haemodialysis long acting poisoning
53) Antibiotics for which organisms do not develop resistance- Chloramphenicol, Cloxacillin and Oxacillins, Rifampicin, Erythromycin etc.
54) Taenia saginata Praziquentel
55) Taenia solium Niclosamide
56) Carcinoma prostate Honvan

Commonest/first or most imp signs and symptoms:

1) Brucellosis - Sweating
2) Cardinal symptom of myocardial infarction - Chest Pain
3) Cohn's syndrome Weakness
4) Carcinoma oesophagus- Progressive dysphagia
5) Crohn's disease a) Acute - like appendicitis b) Chronic - Pain
6) Chronic dacryocystitis Epiphora
7) Biliary cirrhosis Pruritus
8) Appendicitis First - pain,next- vomiting, last fever (Murphy's triad)
9) Anaemia Pallor
10) Acute myocarditis Tachycardia
11) Achalasia Intermittent dysphagia
12) Intestinal obstruction Pain first (In standing X-ray, Air fluids level)
13) Intussusception Pain
14) Urticaria Itching
15) Ulcerative colitis Diarrhoea
16) Tetanus Trismus first
17) T.B. kidneys Increased frequency
18) T.B. peritonitis Pain in abdomen in 90% patient
19) Scleroderma Raynaud's phenomenon
20) Pathognomonic sign Swollen spongy gums of scurvy (Scurvy buds)
21) Pathognomonic sign Of osteomalacia Looser's Zone
22) Most imp sign in fracture/ Dislocation of dorsal lumbar vertabra - Gap palpable between spines.
23) Most valuable sign for Wernick's encephalopathy - Bilaterally Symmetrical opthalmoplegia.
24) Vesical calculus- Frequency of micturation (earliest symptom)
25) Renal calculus Intermittent dull ache in loin.

Tests :-

1) Dick test-Scarlet fever
2) ERCP-Choice of obstructive jaundice
3) ITO test-Chancroid (ito cells vit A storage cells in liver)
4) Fairloy's test-Schistosomiasis
5) First investigation for peptic ulcer Gastrointestinal series with Barium or Gastro Grafin
6) Kveim test - Sarcoidosis
7) Gordon's biological test -Hodgkin's disease
8) Guthries test - for phenylketonuria
9) Hess test - Capillary fragility test
10) Quickenstedt's test- spinal cord compression
11) Schick test, Elek's test-Diptheria
12) Schillings test-B12 deficiency
13) Schiler's test-Carcinoma cervix
14) Barium swallow Dysphagia, pharyngeal pouch.
15) Screening test of choice - Testosterone levels for virilized women in serum
16)Rothera test / Gerhardt test - For ketone bodies in urine
17) Acquired syphilis - VDRL, FTA, TPHA tests
18) Late congenital syphilis - Flouroscent Treponemal antibody test.
19) Mitsuda test - Hansen's disease
Dharmendra test - (Leprosy)
20) Best hormonal assay-Free thyroxine levels for thyroid
21) 8 hr. I.V. cortisol test- Most specific and reliable diagnostic test for addison's disease.
22) Most specific enzyme for detecting myocardial infarction - CPK - MB
(Creatinine phosphokinase-Myocardial Bundle)

23) Investigation before surgery on spina Bifida- Myelography
24) Activeness of acromegaly can be assessed with degree of sweating

Complications :-

1) Diphtheria: Myocarditis, toxic neuritis
2) Chronic glomerulonephritis: Myocardial infarction, infection
3) Commonest drug induced cuetaneous lesion : Toxic erythema
4) Hypothyroidism : Hypothermia, cardiac complication
5) Leprosy : Intercurrent P.T. Amyloidosis
6) Mumps: Children Meningoencephalitis Adult - Orchitis
7) Tetanus - Airway obstruction, Anoxia
8) Thalassaemia - Hemochromatosis of liver and heart, is the Cause of death.

Pseudo nomenclature :-

1) Pseudocyesis Abdominal distention, Mimicking pregnancy.
2) Pseudohaemophillia Von willebrand's disease
3) Pseudofractures
Osteo-malacia (Loosers zones)

Common causative organisms

1) Peritonitis, U.T.I. - E. coli
2) Meningitis in less than 2 months - E coli, streptococci B-haemolyticus.
3) Meningitis 2 months to 12 yrs - H.Influenza
4) Meningitis after 12 yrs- Meningococcus.
5) Arthritis - Infants - H. influenza Adult – Streptoocci or staphylococci
6) Spread by auto infection - Tapeworm & Enterobiosis
7) Protozoa transmitted through mothers milk – Toxoplasma
8) Acne - Corynebacterium acne
9) Commonest STD - Non - gonococcal urethritis
10) Endemic syphilis - Treponema pallidum
11) Commonest infective disease - common cold
12) The only helminth causing consistent fever – Trichinosis
13) Commonest Fungus infecting
a) Ear - Aspergills niger
b) Nose ,lung - Aspergills niger
c) Larynx - Blastomycosis
d) Mouth - Candida
e) Pharynx - Monilla
14) The only pathogenic yeast-Cryptococcus

Miscellaneous -

1) Commonest heart diseases in child - Rheumatic heart disease (RHD)
2) Commonest congenital heart disease – ventricular septal defect (VSD)
3) Commonest congenital heart disease causing – hypertension in neonates- coartaction of aorta.
4) Patent Ductus arteriosus (PDA) connect left pulmonary artery to aorta
5) Double rise of temperature in a day is characteristic of kala azar
6) Scarlet fever - Causative organism- Streptococci
7) Metal fume fever- Zinc poisoning
8) Saddle back fever-Break bone fever, Dengue
9) 3 day fever - Sandfly fever
10) 5 day fever - Trench fever
11) Dish face is seen in congenital syphilis
12) Frog face in nasopharyngeal carcinoma
13) Hypocratic facies in peritonitis
14) Commonest cyanotic congenital heart disease –
15) tetralogy of fallot.
16) Frog hand - Deep palmar abscess.

ECG

Definition: "It is study of graphical representation of electrical activity of heart.
The ECG machine is called as Electrocardiograph while the recording is called as electrocardiogram"
Discovery by Einthoven
Thus in ECG indication of waves are
i) P wave - Atrial depolarization
ii) QRS - Ventricular depolarization
iii) T - Ventricular repolarisation

ECG Paper : X - Axis shows times and Y axis indicates voltage. Speed of paper movement - 25 mm/sec means every small Square (1mm) - 0.04 sec.
Y axis every small division (1mm) shows 0.1 mv voltage

Leads :-

By using two different electrodes we can get about 12 leads - 3 standard limb leads , 3 Unipolar augmented leads, 6 Unipolar chest leads
a) I^{st} - Both atria (RA to LA.)
b) IInd - Rt. Ventricle (RA to LL)
c) IIIrd - It. Ventricle (LL to LA)
d) aV_R - Rt. Ventricle (RA)
e) aV_L - It. ventricle (LA)
f) aV_F - Inferior surface of heart (LL)

Chest leads :- In this exploring electrode is chest electrode which kept on surface of chest at different places while the other limb electrodes are neutralize by passing there charges through CTW (central termination of Wilson) containing resistance 5000 : by placing chest electrodes mainly at 6 places we can get 6 chest leads.
V_1 - Rt 4th intercostals space near sternum
V_2 - Lt. 4th intercostals space near sternum
V_3 - in bet V_2 & V_4
V_4 - Lt 5th intercostals space in mid clavicular line (intrio medial to Lt nipple)
V_5 - Lt 5th intercostals space in Ant. axillary line
V_6 - Lt 5th intercostals space in mid axillary line
P - wave - Atrial depolarization
PQ segment - period in bet^n Atrial & interventricular septum depolarization i.e. it delay of heart beat impulse through AV' node
Q - interventricular septum depolarization but in V_1 & V_2 Rt. Ventricular depolarization
S - Rt. Ventricular depolorisation but in V_1 V_2 Lt. Ventricular depolarization
T - Ventricular repolarisation
Normal periods of ECG wave

Periods - 'P' wave 0.12 sec
PQ segment - 0.04sec
QRS Complex - 0.08-0.12 sec
QT Segment - 0.42 sec
PR interval - 0.12 - 0.2 sec

Abnormal ECG :

1) Delayed conductivity at atrio ventricular node - PR interval lengthened.
2) Atrial hypertrophy - P wave have greater Amplitude and time.
3) Bundle Branch Block - QRS complex takes more time.
4) Myocardial ischemia - Depression of ST Segment.
5) Elevation (In Acute) and depression (in chronic stage) of ST segment - Myocardial infarction. Presence of Q wave indicate old M.I. where it should be normally absent. Inversion of T wave
6) Bundle Branch Block - QRS Complex is more than 0.11 sec
7) AV Block-PR interval is more than 0.2 sec.

Wolf - Parkinson White syndrome - When there is additional connection to the normal AV Junction tissue connection, between the Atria and Ventricle (this connection is called "Bundle of Kent") - Short PR interval and Broader QRS complex and presence of δ wave.

Hyperkalemia - Tall T wave

Heart Block

AV Block - Delayed/Absence of conductivity between atria and vertricle

1st degree - Prolonged PR interval

2nd degree - Dropped beats (Some impulses fails to reach the ventricle)

3rd degree or complete Heart Block - No impulses from Atria reaches the ventricles.

SURGERY

Some important Terms :-

1) Otomy - means to cut
2) Ectomy - means to remove
3) Plasty means to change in shape or size
4) Pexy means to change position
5) Paxy means to crush
6) Oscopy - means to look into
7) Ostomy - to create an opening
8) Graphy or Gram means image
9) Raphy means to sew together

Ileostomy - Formed from any part of mid or distal small Bowel.

Colostomy - Formed from any part of large bowel

Gastrostomy - Connection between anterior stomach and anterior abdominal wall. (for stomach drainage or direct feeding).

Jejunostomy - Connection between proximal Jejunum & anterior abdominal wall (for direct feeding)

Suture materials :-

Material	Natural fibre	Synthetic fibre
Non absorbable	Silver wire	Poly Propylene
Monofilament	Steel wire	Nylon
Non absorbable Braided Poly Filament	Silk	Ethilon

Synthetic fibre :- 1) Absorbable Monofilament - Monocryl & PDS
2) Absorbable braided polyfilament - Vicryl & Dexon.

Tumours :-

Origin (Tissue) Type of Tumour

1) Epithelium- Benign - Papilloma, Adinoma
Malignant - Adenocarcinoma & Squamous cell carninoma

2) Connective Tissue Benign - Lipoma (Fat), Leiomyoma (smooth Tissue muscle), Fibroma (fibrous tissue) chondroma (cortilage) osteoma (bone), Rhabdomyoma (striated muscle).
Malingnant :- Fibrosarcoma, osteosarcoma etc.

3) Neural Tissue - Astrolytoma, medulloblastoma, Neurilmmoma, neuroma etc.

4) Haemopoietic - The leukemias, Hodgkin's disease, multiple myloma, lymphosarcoma, reticulosarcoma.

5) Mixed origin - Fibroadenoma, Nephroblastoma, teratoma,Choriocarcinoma.

TNM Classification is used for staging & Grading of Tumour.

Gall Bladder stones - 3 types i) Pure chotesterol ii) Pure pigment iii) Mixed - mostly common.

Murphy's sign is positive in Acute cholecysitis

Gray Turner's sign (left Flank ecchymosis) & Culen's sign (periumbilical ecchymosis) is present in Acute Pancreatitis.

Glasgow Imrie criteria is used to assess the severity in Acute pancreatitis.

Haematuria :- 1) Urinanary tract infection (UTI) - Commonest cause 2) Renal stone 3) Malignancy 4) Post cystoscopy or post catheterization 5) Glomerulonephritis.

Rectal Bleeding :- Bright red Blood on the surface of stool after defecation - 1)Haemorrhoids, 2) Acute Anal fissure 3) Distal proctitis 4) Rectal prolapsed.

Darker Red Blood with clots mixed with stool. 1) Rectal tumour 2) proctocolitis 3) Diverticular Disease.

Dark red Blood mixed into stool - 1)Colonic tumour 2) Colitis 3) Angiodysplasia 4) NSAID Induced ulceration.

Muscle Power :- Grading-

Grade 0 - No movement (Complete Paralysis)
Grade 1 - Flicker of contraction only.
Grade 2 - Movement in horizontal plane when gravity is excluded.
Grade 3 - Movement Against gravity but not against examiners resistance.

Grade 4 - Movement Against gravity also against examinares resistance.
Grade 5 - Normal muscle power

Reflexes Grading :- 0 - Absent,
1- Hypoactive
2- Normal,
2- Hyperactive
4- Clonus

Bone tumours:-

1) Osteoma- Painless hard lump.
2) Osteoid osteoma- painful lump, commonly occurs in femur or tibia.
3) Chondroma- lobulated mass of cartilage.
4) Fibroma- X-ray shows an oval gap in the cortex of the metaphysis of a long bone.
5) Osteo Sarcoma- Highly malignant tumour on X-ray, sun ray spicules due to new bone formation along the periosteal blood vessels.
6) Osteo clastoma (giant cell tumour) - Affects the end of a long bones. On palpation- egg shell crackling sound. X-ray- Sope bubble appearence
7) Fibrosarcoma-
Tumour contains spindle shaped fibroblasts.
8) Synovial sarcoma- extremely malignant
9) Multiple myeloma- Arises from the plasma cells of the bone marrow. Bence-Jones proteins are seen in urine in 50% of cases.
10) Eving's Tumour- Arises from the reticulum cells, of medullary cavity of the diaphysis of long bones. On x-ray, onion like appearance.

Main Tumours:-

1) Brown tumour:- In Hyperparathyroidism.
2) Cherry tumour- Juvenile, polyps of colon (or in kidney)
3) Bunn shaped tumour- Solid carcinoma of bladder.
4) Berry tumour/Potato tumour / - Carotid body tumour. Hutchinsons tumour.
5) Desmoid tumour- Fibroma arrising from deeper parts of rectus sheath.
6) Giant cell tumour- Osteoclastoma
7) Grawitz's tumour- Hypernephroma in adults
8) Krukenberg tumour- Atypical secondaries of ovaries (medulla of ovary involves first)
9) Pancoast tumor- Bronchogenic carcinoma at the apex of lung.
10) Phantom tumor- In lungs. Collection of fluid in horizontal tissue of lung appears as coan lesion in x-ray.
11) Pott's pufty tumour- In osteomyelitis of cranial bones.
12) Pregnency tumour- Hypertrophied gum in pregnancy.
13) Rosberry tumour - Umbilical adenoma/ Enteroteratoma
14) Universal tumour/ Ubiquitous tumour - lipoma
15) Wilm's tumour- Nephroblastona (children) (in kidney)

Ulcer	Edge
Tuberculous ulcer	Undermined edge
Gammatus ulcer/ Deep trophic ulcer	Punched out edge
Healed Gammatic/venous ulcer	Sloping edge
Rodent ulcer	Raised, pearly white beaded edge
Squamous cell carcinoma /ulcerated adenocarcinoma	Rolled out, everted edge
Mortarell's ulcer seen	In Hypertensive patient
Morzollin's ulcer	Malignant ulcer on the scar of burn
Barret's ulcer-	In oesophagus
Bottle neck shaped ulcer	Intestinal amoebiasis
Bazin's ulcers	Indolent ulcers over the calves of adolescent female
Flasked shaped ulcer	Amoebiasis
Hot ulcer	In A-V fistula
Snail track ulcer on mucosa	Syphilis
Trophic ulcers	Are neurogenic ulcers

Peripheral nerve lesions:

1) Crutch palsy- Injury of radial nerve in axilla by fracture dislocation of upper end of humerus
2) Erb's palsy- Upper brachial plexus lesion. Injury of C_5 and C_6 nerve roots. "Policeman taking a tip" like position of the limb
3) Klumpke's paralysis- Lower brachial plexus lesion C_8 and T_1 nerve roots affected.
4) Winging scapula- Injury of long thoracic nerve of bell- $C_{5,6,7}$ nerve roots affected.
5) Dupuytren's contracture- Thickness and contracture of palmar aponeurosis.
Usually ring finger affected common in male.

Renal Stones:-

Oxalate (vata)	Urate (pitta)	Phosphate (kapha)	Cystine
Formed in- Acid urine	Acidic urine	Alkaline urine	Acidic urine
Shape-Mulberry (envelope crystals)	Faceted	Stage horn	Hexagonal crystals
Number-Single	Multiple	Single	Multiple
Heamaturia-early	---	Late	----
Radio-opaque-yes	Radio luscent	Yes, due to big size	Yes, due to sulphur

Gall Stones:	Cholesterol	Pigment	Mixed
Frequency	6-8%	12%	80%,commonest
Number	Single	Multiple	Multiple
Shape	round	Coral/mulberry	Faceted, laminited
Formed in	Stasis bladder	Gall bladder/bile duct	In infection

Cholesterol is main component of gall stones. cholesterol stones are lighter than water
Ratio of Bile acids: Cholesterol - 25: 1
This ratio is necessary to maintain cholesterol in liquid form. When the ratio drops down to 13:1 cholesterol get precipited.
Pigment stones commonly occur due to haemolysis.
Common site where stones occur and tend to stay for a long time - Hartmann's pouch
(narrow angulated distal portion of neck of gall bladder)

Various Tests:-

1) Bald wing's test-+ve in retrocaecal appendicitis
2) Barlow's test - For congential dislocation of hip.
3) Burger's tests - +ve in thromboangitis obliterans

i.e. Buerger's disease.
4) Cold and warm water test - For Raynaud's disease.
5) Compression test - Done in fractured rib
6) Cope's psoas test - +ve in retrocaecal appendix
7) Cope's obturator interrous test - +ve in pelvic appendix
8) Fegan's test - Done for varicose veins
9) Perthe's test - Varicose veins
10) Schwartz test- Varicose veins.
11) Gornall's test- To elicit inguinal hernia in child
12) Ring occlusion test - To differentiate an indirect hernia from direct hernia
13) Kocher's test - Done in thyroid enlargement. If pressure on trachea is suspected slight push on lateral lobes will produce stridor

Operations:

1 Albee's operation- For ankylosis of hip
2 Babcock's operation- Technique of eradication of varicose veins by extripation of saphenous vein.
3) Bessini's operation- Plastic repair of inguinal hernia.
4) Billroth's I operation- Partial resection of stomach with anastomosis to the duodenum
5) Billroth's II operation- Partial resection of stomach with anastomosis to the jejunum
6)Browne operation-Urethroplasty for hypospadiasis
7) Cald well luc operation - Radial maxillary sinusotomy
8) Cattles's operation - For incisional hernia (hernial sac not opened)
9) Keel operation - For incisional hernia (hernial sac is opened)
10) Mesh closure- In incisional hernia
11) Mc Burney's operation - Radical surgery for cure of inguinal hernia
12) Mc evedy operation - For femoral hernia (best in strangulated hernia)
13) Lotheissenis's operation- Femoral hernia (through inguinal canal)
14) Lockwood's operation- Femoral hernia (below inguinal canal)
15) Nissen's fundoplication- Hiatus hernia
16) Mayo's operation - Umbilical hernia (transverse elliptical incision around umbelicus)
17) Ramsted operation - Pyloromyotomy
18) Treyer's operation - Supra pubic enucleation of hypertrophied prostate.
19) Hartmann's operation - Resection of diseased portion of colon, with proximal end of colon brought out as colostomy the distal stump or rectum being closed by suture.
20) Kraske's operation - Removal of coccyx and part of the sacrum for access to a rectal carcinoma.
21) Lorng's operation - For congenital dislocation of hip.
22) Lord's operation. - For big sized hydrocele
23) Joboulay's method- For medium sized hydrocele
24) Lord's procedure- For maximal anal dilatation
25) Macewan's operation - Supracondylar section of femur for genu valgum.
26) Mc gill's operation - Suprapubic transvesical prostatectomy
27) Partsh operation - Marsupialization of dental cyst.
28) Ramsted's operation - For congenital pyloric stenosis
29) Trendelenburg's operation - For varicose veins and pulmonary embolectomy
30) Palomo operation For varicocele
31) Rovsing's operation - For polycystic kidney
32) Torkildsen's operation - Ventriculo cisternostomy

Common in females

1) Ca gall bladder and bile ducts,
2) Gall stones
3) Meningiomas of spinal cord.
4) Raynaud's phenomenon
5) Hourglass contracture stomach
6) Ulcerative colits
7) Congenital cystic kidney
8) S.L.E.
9) Takayasu disease etc.

Common in males :-

1) Ca. stomach
2) Symptomatic Meckel's diverticulum
3) Pilonidal sinus
4) Buergers disease
5) Congenital hypertrophic pyloric stenosis
6) Horse shoe kidney
7) Aplastic anaemia
8) Quinsy (Peritonsillar abscess)
9) Prolapse disc etc.

Appendix

Total 6 position of Appendix -

Commonest position is Retro caecal i.e. 12^0 clock position
Copes psoas test- Positive in retrocaecal appendix.
Obturator test- Positive in pelvic appendicitis
Appendicular artery is a branch of ileocolic artery.
Interval appendicectomy- 3 months after acute attack.
Rovsing's sign - Pressure in left iliac fossa causes pain in Right iliac fossa
Cooper's sign- Tenderness is best elicited in left lateral position
Obstructive appendicitis- gangrene occurs in 12-18hrs.

Synonyms- (Alternate names)

1) Sebaceous cyst- Wen
2) Basal cell carcinoma - Rodent ulcer
3) Buerger's disease- Thromboangitis obliterans
4) Bed sores- Decubitus ulcers
5) Hurler's syndrome- Gargoylism
6) Ataxia telangiectasia- Houis barr syndrome
7) Takayasu disease- Pulse less disease
8) Kawasaki disease- Mucocutaneous lymph node syndrome
9) Osteogenesis imperfecta- Brittle tones
10) Osteopetrosis-Marble bones (Albers- Schonberg disease)
11) Melorheostosis-Candle bones (Lari's disease)
12) Osteopoikilosis - Spotted bones.

Lining Epithelium:-

1) Stratified squamous epithelium- Vagina, tonsils, vocal cords, mouth, pharynx except nasopharynx,

2) Ciliated columnar epithelium- Uterus, Larynx
3) Columnar epithelium- Cervix
4) Serous epithelium with peritoneum- Ovary

Different signs:-

1) Bale sign- Collapsed spine on x-ray in intrauterine death
2) Boas sign- Hyperasthesia below 9th rib posteriorly on right side in cholecystitis
3) Blumbergs sign- Rebound tenderness
4) Battle's sign - In posterior cranial fossa fracture behind foramena magnum, ecchymosis appear at tip of mastoid 3-4 days
5) A) Cullen's sign- Blue line around umbilicus
B) Grey turner sign- Ecchymosis in loin seen in Intraperitoneal haemorrhage & acute haemorrhagic pancreatitis
6) Mathe's sign- Normally in erect posture, kidney is at lower level than in lying down posture. No change seen in perinephric abscess.
7) Marion's sign - Seen in Benign prostatic enlargement
8) Miliar's ear sign- In erysipelas, vesicles extend into ear. In cellulitis, they do not.
9) Flag sign- Seen in kwashiorkor
10) Kernig sign, Brudinskis sign- In Meningitis
11) Sunset sign- In hydrocephalus
12)Macewen's sign-Cracked pot resonance in hydrocephalus.
13) Tripod sign- In poliomyelitis

Incisions

1. Long, grid iron, Rutherford morison- Appendix
2. Pfannemstiel- Uterus
3. Collar incision- Thyroidectomy
4. Sistrunk incision- Parotid
5. Mc evedy incision - Femoral hernia
6. Kocher's incision- Gall bladder surgery sub costal

Hernias

Feature	Direct	Indirect hernia
1- Etiology	Weakness of posterior wall of inguinal canal	Preformed sac
2- Precipitating factor	Chronic bronchitis, BPH urethral stricture	Congenital defect, malformation of inguinal canal
3- Side	Bilateral	Unilateral
4- On standing	Pops out	Does not pop out
5- Direction of sac	It comes through the hesselbach's triangle	It comes through the deep ring
6- Relation of Sac to the cord	Sac is posterior to the cord	Sac is anterolateral to the cord.
7- Neck of sac	Neck lies medial to the inf epigastric artery	Lateral to inf. Epigastric artery
8- Deep Ring occlusion test	+ve swelling is seen	swelling not seen
9- Finger invagination test	Impulse felt at pulp of finger	Impulse felt at tip of finger
10- Complications	Not common as neck is wide	Common as neck is narrow

1) Littre's hernia - Meckel's diverticulum is the content
2) Richter's hernia- Partial circumference of bowel is the content (usually complicates femoral hernia)
3) Cystitis- A few drops of blood stained urine or blood stained debris at end of micturition.
4) Vesical calculus-Few drops of bright red blood at end of micturition.
5) Vesical neoplasm - Painless, Profuse, paroxysmal haematuria for a long period.

Commonest site of lesions-

1) Dermoid cyst- External angle of eye.
2) Dercum's disease- Trunk
3) Kaposi's sarcoma - Limbs
4) Malaria- Covered areas.
5) Non-Hodgkins' Lymphoma - Stomach
6) Polyp in puetz - Jegher's syndrome – Always jejunum is involved
7) Crohn's disease - Starts at or near ileocecal valve
8) Commonest type of intussuception-Ileocaecal
9) Intussuscepteion with gangrene- Ileocaecal
10) Dilatataion of gut in chaga's disease – Oesophagus and colon

Important points:

1) After operation, intestinal motility returns after 16 hrs.
2) In obstructive appendicitis, gangrene occurs in 12-18 hrs.
3) Embolectomy is to be done within 10 hrs.
4) In haemorrhage, physiologically fluid loss is replaced immediately.
5) Primary suture of wound within 6 hrs.
6) In head injury prophylactic anticonvulsant are given for 6 weeks.
7) Meningitis after head injury develops in 3-5 days.
8) Extradural haemorrhage usually present before 18 hrs after injury.
9) In osteomyelitis, x- ray signs seen in 2-3 weeks.
10) Meniscles injury heals in 6 weeks.
11) Post streptococcal Rheumatic fever 2-3 weeks after sore throat.
12) Dresser's syndrome- Few weeks or months after myocardial infarction, recovers in few days.
13) Rose- Waller test in rheumatoid arthritis + ve after 18 months.
14) Reiter's disease 1-3 weeks after sexual intercourse or dysentery.
15) Thread worm (enterobious) develops in small intestine, lives in large intestine.
16) Whip worm lives in caecum, lower ilieum, colon, appendix.
17) Pain that keeps the patient awake- Reflux oesophagitis and carcinoma pancreas.

18) Pain that awakes patient around 2 am - Duodenal ulcer.
19) Pain that awakes patient at early morning appendicitis.
20) Diarrhoea proceding pain in abdomen is seen in crohns disease.
21) Leucocytes count is normal in tuberculosis of abdomen.
22) Site of fracture in cushing syndrome- Vertebra.
23) Commonest site of carcinoid tumour- Appendix
24) Voracious appetite with loss of wt. is seen in
i) Thyrotoxicosis ii) Diabetes mellitus
iii) cystic fibrosis iv) Pheochromocytoma
v) Congenital hypertrophic pyloric stenosis.
25) Putty or cement kidney - Case of T.B. kidney
26) Tennis elbow - Tendinitis at lateral epicondyle of humerus.
27) Golfer's elbow - Tendinitis at medial epicondyle of humerus.
28) Student's or Miner's elbow- Olecranon bursitis.

PEDIATRICS

Growth and Development: Growth- increase in size or mass of tissue (multiplication) Development:- Specifies maturation of function. It is reported to maturation of myelination of nervous system. Growth follows sigma shaped curve. Order of human being is cephalocaudal and distal to proximal.
Turner syndrome - xo (45 chromosome)
Klinefelter syndrome- xxy (47 chromosome)
Patau's syndrome- Trisomy of chromosome 13
Edward's syndrome- Trisomy of chromosome 18
Down syndrome- Trisomy of chromosome 21
Prenatal Period: Ovum - 0 to 14 days, Embryo - 14 days to 9 weeks, Fetus 9 weeks to birth
Perinatal period - 28 weeks of gestation to 7 days after birth.
Postnatal Period- Newborn - 28 days after birth
Infancy - 1st year, Toddler - 1 to 3 year, Preschool 3 to 6 year, School age- 6 to 10 (girl) 6 to 12 (boys).

Age(yrs)	0	½ yr	1 yr	2 yr	4 ½yr
Weight (kg)	3	6	9	12	–
Height (cm)	50	–	75	90	100
Head circumference	35	–	45	48	
Chest circumference	32	–	45		

Chest circumference is 3 cm less than head circumference at birth. The circumference of head and chest are almost equal at the age of 1 year. Crown rump length is always less than head circumference during 1st year of life. If the head circumference exceeds 1 cm in 2 weeks during first 3 month hydrocephalus should be suspected Adult height is double the height of girl at age 1 ½ years, or height of boy at 1 years. The Denver Development screening Test (DDST) assesses the child's development in Four segments.

Gross motor :-

Age (Month)	Milestones
3 m	Neck holding
5 m	Sitting with support
8 m	Sitting without support
9 m	Standing with support
10 m	Walking with support
11 m	Crawling (creeping)
12 m	Standing without support
13 m	Walking without support
18 m	Running
24 m	Walking upstairs.
36 m	Riding tricycle.

Fine motor:-
4 m:- Grabs a rattle or ring when placed in hand.
5m:- Reaches out an object and hold it by both hands.
7m:- Holding object with crude grasp from palm (Palmer grasp)
9m:- Holding small object like a pellet between index finger and thumb (Pincer grasp)
Language:-

Age (Month)	Milestones
1 m	Turns head to the sound
3 m	Cooing
6 m	Monosyllabus ma, ba.
9 m	Bisyllabus mama, baba
12 m	2 words with meaning
18 m	10 words with meaning
24 m	Simple sentence
36 m	Telling a story.

Personal and Social:-

Age (Month)	Milestones
2 m	Social smile
3 m	Recognizing mother.
6 m	Smiles at mirror image.
9 m	waves bye bye
12 m	Plays a simple ball game.
36 m	Knows a gender.

Failure to thrive- Infants rate of weight gain is sluggish, +ve length of the child may or may not be affected.
Eneuresis:- Treatment- Imipramine 25 to 50 mg orally at night for 2 months.
Desmopresin- Nasal spray at night for 4 months
TICS- or Habit spasm defined as sudden involuntary repeatative meaningless movements of striated muscle, usually face and neck.
Dyslexia is used to describe loss of reading skills.
Nutrition:- 1 gm of carbohydrate or 1 gm of protein provides 4 kcal or 16.7 k cal.
1 gm of fat release 9 kcal.
Pregnant women requires additional 285 kcal daily throughout pregnancy. Protein- Adult requirement- 0.759/ kg body wt/ day. Total fat intake should provide not more than 30% of daily energy intake.

Term inf
Calcium-
Deficienc
Magnesiu
Adult- 20
PEM:- P
Gomez's

Normal
I grade
II grade
III grade

Indian A

Normal
I grade
II grade
III grade
IV grade

Wellcome
Children
for age wi
Those w
undernutri
Those wei
Those wei
kwashiork
Mclaren C
Dwarf : C
Short : F
Normal :
Clinical M
Kwashiork
Marasmus
subcutaneo
stunting or
Kwashiork
1) Markedl
2) Psychom
3) Oedema

Marasmus
1- Energy de greater throu deficiency.
2- It is chron
3- Infancy 6-
4- Muscle wa severe
5- No oedem
6- Voracious
7-No liver en
8 - Hairs dry
9- Skin dry
10- Alert, irri
11- Monkey f
12 - Quantati

Term infants - Calcium 400 to 600 mg / day Adult Calcium- 800 mg/day
Deficiency may lead to tetany, rickets, osteoporosis.
Magnesium - Infant - 40 mg/day
Adult- 200-300 mg/day.

PEM:- Protein Energy Malnutrition:-

Gomez's international Classification:-

Normal	Weight more than 90% of expected for that age
I grade	76 - 90%
II grade	61 - 75%
III grade	≤ 60%

Indian Academy of pediatrics (IAP)

Normal	Weight more than 80% of expected for that age
I grade	71 - 80%
II grade	61 - 70%
III grade	51 - 60%
IV grade	≤ 50%

Wellcome Trust Classification:-

Children weighing 60-80% of their expected weight for age with oedema are classified as kwashiorkor.
Those weighing 60-80% without oedema are undernutrition.
Those weighing < 60% without cedema are marasmic
Those weighing < 60% with oedema are marasmic kwashiorkor.

Mclaren Classification :- Degree of stunting
Dwarf : Children < 80% height expected for age.
Short : Height between 80 to 93%
Normal : 93% height

Clinical Manifestation of Marasmus and Kwashiorkor.

Marasmus:- Gross wasting of muscle and subcutaneous tissue, resulting in emaciation, marked stunting or no oedema.

Kwashiorker : 3 Essential feature
1) Markedly retarded growth
2) Psychomotor changes and
3) Oedema on dependant part.

Marasmus	Kwashiorker.
1- Energy deficiency greater through protein deficiency.	Protein (Albumin) deficiency through energy deficiency.
2- It is chronic	It might be acute infection.
3- Infancy 6-12 m	1,2,3 years.
4- Muscle wasting is severe	Muscle wasting not severe
5- No oedema	Oedema on dependant part
6- Voracious apettite	Not
7-No liver enlargement	Liver enlargement (fatty infillration)
8 - Hairs dry	Hypopigmented easily pluckable hairs (pleck's sign)
9- Skin dry	Dermatosis pigmentosa
10- Alert, irritable	Not interested in surroundings
11- Monkey face	Moon face
12 - Quantative	Qualitative
13- Less prone to infection	More prone to infection.

Witchs milk appears on 3rd day, disappears in 3 weeks. Posterior fontanelle closes at the age of 4 months. Anterior fontanelle closes at age of 9-18 months. Neonatal tetanus occurs within 5-15 days. Usually around 8th day. So it is called 8th day disease.

Vitamins:

Water soluble vitamins - B and C.
Fat soluble vitamins - A,D,E,K.

Vitamin - A :- (Retinol) :- Anti infective vitamin present only in animal tissue, stored in liver.

Deficiency: 1) Xerophthalmia- primary sign - conjunctival xerosis, Bitot's spot at sclero-corneal junction, corneal xerosis, corneal ulceration, keratomalacia. Sec. Sign. - Night blindness.
Every infant should be administered one dose of 1 Lakh unit of vit A along with measles vaccine at 9 month followed by 4 more doses of 2 lakh IU each at 18, 24,30 and 36 months.

Daily requirement :- Infant 300-400 µg Children 400 - 600 mg, Adolesence 750 µg. Adult:- 800 µg
Mango and Papaya - Rich in vit- A

Vit B Complex : 1. Thiamine (B_1) :

Deficiency : 1) a) Dry Beriberi - Irritability, fatigue, emotional disturbance, headache, polyneuritis.
b) Wet Beriberi - Palpitation, tachycardia, dyspnoea.
c) Infantile Beriberi - Seen in breast feed infants of thiamine deficient mother.
2) Wernicks- Korsakoff syndrome - characterised by opthalmoplegia, nystagmus, ataxia.
3) Leigh's disease - Sub acute necrotizing encephalopathy.

Requirement:- Children-0.4 mg/ 1000 kcal consumed. Adult - 1 mg. Main source - Cereals.

2) Riboflavin (B_2) : 1) Red crystaline substance.
Deficiency- GNDS - General nonfatal deficiency syndrome. 2) Glossitis, cheilosis, dysbacea Synthesized by plant and micro-organisms and not by mammals.
Req. 0.6mg/ 1600 kcal consumed, Adult - 2mg.

3) Niacin (B_3) : Pellagra preventing factor
Deficiency - 3D - Diarrhoea, Dementia, Dermatitis.
Req. 6.6mg/ 1000 kcal consumed, Adult - 20 mg.

4) Pyridoxine - (B_6)
Deficiency :- Seizures, Peripheral neuropathy.
Hyperchromic microcytic anaemia.
Req. 0.5 to 1.0 mg/day for children. Adult - 2 mg

5) Cyano cobalamine - (B_{12})
It plays role in nucleic acid metabolism and protein synthesis. It is absorbed in the lower part of ileum. It's malabsorption occurs in blind loop syndrome, tropical sprue, chron's disease and intestinal tuberculosis
Req- 0.2 - 1 mg in children, Adult :- 1 mg
Deficiency:- Pernicious Anaemia
Macrocytic normochromic Anaemia

6) Folic acid:- (pteroyl/ glutamic acid)
Deficiency - Megaloblastic anaemia and diarrhoea

tropical sprue.
Req. 100 µg in children - Adult- 200 µg
7) Pantothenic acid - Antidermatitis factor
Deficiency - Burning feet syndrome
Req. 3 - 4 gm/day
8) Carnitine - Deficiency - myopathy, organic aciduria
9) Choline - Deficiency - Fatty degeneration of liver
Req. 250 mg/day.
10) Biotin (vit. H) - Defi- Rett's syndrome
Req. 150 mg/day.
Vitamin C :- (Ascorbic Acid) White crystalline sub.
Deficiency:- Barlow's disease, Scurvy, delayed wound healing, Bones assumes a ground glass appearance. Petichiae over the skin, conjunctival haemorrhages.
Req. -30 mg in children Adult 50 mg.
Vitamin D :- It does not cross the placenta. Cholecalciferol is converted into 25 hydroxy cholecalciferol (25 $(OH)D_3$) in liver.
Deficiency:- In child - Rickets (Knock knee, coax vera and pot belly) In adult - Osteomalacia.
Req. 200 IU for infant.
Adult 400 IU Causes absorption of Ca and P
1IU unit of vit D - 0.025 Micrograms of calciferol.
Vitamin E :-
Tocoferol - Antisterility vitamine, Anti oxidant vitamine.
Deficiency - Cholestatic disease.
Req. 15-25 IU/day. Useful in peripheral disease and intermittent claudication mainly, Anaemia in newborn and neurological disorder.
Vit K :- It is co-factor of the enzyme that catalyze one step in the formation and prothrombin.
Req. 1 mg for New born.
Deficiency - Coagulation defects Causes haemolysis and neonatal jaundice
Dicoumarol - Anti vitamin of vit k
Anaemia- 6 m - 6 yr - below 11g/dl
Older children - below 12g/dl
Severe anaemia - below 5g/dl
Mod- anaemia - 5 to 10g/dl
Physiological anaemia
1) Diminished red cell production because of low erythropoietin level in early infancy.
2) Increase in the blood volume in rapidly growing infant.
3) A shortend survival red cell.
The normal infant has 250-300 mg of iron at birth.
Req- 0.5 mg of iron/day.
When the Hb is below 4 g/dl only packed cell should be used.
Sickle cell anaemia : It occures as a result and deletion of B globin gene on chromosome 11.
160ml/kg blood is used for one exchange transfusion.

Newborn Infants

First 4 weeks of extrauterine life.
LBW - Less than 2.5 kg birth weight irrespective of Period of gestation. (Low birth weight). Nearly 1/3 of infants born in India pre LBW. Most important cause of neonatal death is bacterial sepsis, presenting as septicemia or pneumonia
VLBW - < 1.5kg birth weight irrespective of estational age. **Neonate** - <28day, **Early** < 7 days, **Late neonate** 7 to < 28 day Infant-upto 2 yrs. Child-upto 12 yrs. Adolescence-upto 2 yrs.
Still birth:- A fetal death at a gestastional age of 20 weeks or more or weighing more than 500 gm is designated as still birth or still born.
Term Baby:- Neonate born between 37 to 42 weeks irrespective of weight.
Preterm - Born before 37 weeks irrespective of weight.
Post term - Born at 42 weeks or more irrespective of weight.
Perinatal period- 22nd weeks of gestation to 7 day after birth. Post neonatal period - Period of infancy from 28 days to 365 days of life.
Suction:- Catheter size - 10 Fr. Negative pressure 80mm of Hg.
Oxygen Flow Rate should be 5 lit / min.
Bag and Mask Ventilation:-
Indication - After tactile stimulation -
Infant is apnoeic or gasping and H.R. < 100/ min
Contraindication - Diaphragmatic Hernia.
Chest compression -
Indication - If After 15 to 30 sec of PPV with 100% oxygen the H.R. <60/min or between 60 to 80 and not increasing.
2 technique: i) Thumb technique
ii) Two finger techniques .
In one minute 90 chest compressions and 30 PPVS are administered a total of 120 events.
Endotracheal Intubation (ET)
Indication - Prolong PPV required, for tracheal suction, Diaphragmatic hernia.

Tube Size (Inner diameter mm)	Weight (Kg)	Gestational age (week)
2.5	1	< 28
3	1-2	28-34
3.5	2-3	34-38
4	>3	> 38

Straight blade laryngoscope size 'o' for preterm, 1 for term baby.
Neck is short in case of Klippel - Feil syndrome.
Webbing of neck is present in Turners syndrome.
Urethra opening on under surface of penis is called Hypospadias and opens on dorsal surface called Epispadias.
Cryptorchidism:- Undescended testes.
An infant usually passess meconium within 24 hrs and urine in 48 hrs.
Apgars Score:

Introduced by American Anaesthelogist. It is quantative method of assessing infants respiration circulation and neurological status.

Score	0	1	2
Respiratory effort	None	Slow, irregular	Good, crying
Heart Rate	Absent	< 100	> 100
Colour of body	Blue or pale	(body pink extrimities blue)	Pink
Muscle tone	Flaccid	Some flexion	Active
Reflex	No response	Grimace	Cough or sneezes .

Normal Apgar Score is 8-10

The upper segment to lower segment ratio is being 1.7 and 1.9 to 1. Normal newborn spend 80% of time in sleeping.

Heart Rate - 120- 140 / min

Respiratory Rate - 35-40/ min

Blood pressure - 80/40 mm of Hg

First stool is meconium

First breast secretion is colostrums.

Reflexes:

Sucking, Rooting. These reflexes are strong and well synchronized with swallowing at 34 wks. Grasp reflex disappear by the age of 12 weeks.Crossed extension reflex appear at 32 weeks. Moro's reflex disappear after 12 weeks.

Parachute reflex - Extension of arms, hands and fingers. Tonic neck reflex - Head to side - Arm of leg extend to same side and flexed of opposite side. Reflex prominent between 2 to 4 weeks. Persistance beyond the age of 6 to 9 months or a constant tonic neck posture are abnormal and indicate spastic cerebral palsy.

Prolactin reflex (milk secretion reflex),

Oxytocin reflex (milk ejection reflex)

Cord should normaly fall of in 5 to 10 days.

Cephalohaematoma :-

Appear soft and Flatulent with well defined outline.

Caput succedanum :- Oedema of scalp soft, pits on pressure but not flatulant and does not have well defined margine.

Breast milk :- Carbohydrate- High concentration.

Protein - Low concentration, Fats - rich in polysaturated Fatty acids containing omega 2 + omega 6.

Contains - Ig A, Macrophages, lymphocytes, lactoferin, lysozyme, bifidus factor, and interferon.

1) Colostrum - Milk secreted during first 3 days contain more antibodies, cells and vit A, D, E, K

2) Transitional milk- following 2 weeks. Less immunoglobin and protein content, More fat and sugar.

3) Mature milk follows transitional milk. Thin and watery.

4) Preterm milk - More protein, sodium, iron, immunoglobulins and calories.

5) Fore milk - At start of feed.

6) Hind milk - At end of feed.

Normal temp in Newborn - 36.5^{0}c to 37.5^{0}c

Incubator-

Birth weight in kg	Set temp (0^{0}c)
< 1	36
1 to 1.5	36.8
1.5 to 2.0	36.6
2.0 to 2.5	36.4
> 2.5	36.2

Human milk is first choice of enteral feed for all low birth weight babies in an amount of 180 ml per day.

Energy intake - 130 cal/kg/day.

Protein - 2.25 g cal/kg/day.

Formula feed - 2gm of protein. 4 gm of Fat 10 -12 gm of carbohydrate. 70-80 kcal for LBW

Neonatal jaundice:- 1 gm of Hb yields 35 mg of bilirubin. The normal newborn produce 8.5 ± 2.3 mg bilirubin/kg/day, which is more than double the bilirubin production 3.6 mg/kg/day of adult.

A bilirubin level of more than 5 mg/dl manifests as clinical jaundice or icterus in neonates (Adult 2 mg/dl) Severity of jaundice is assessed by Krammer's rule. Face, part of trunk above umbilicus - < 12 mg/dl Palm and soles are yellow bilirubin 15 mg/dl.

Physiological jaundice:- Most neonates develops visible jaundice due to elevation of unconjugated bilirubin concentration during their first week. Peak level occurs on 4th day.

Breast Feeding jaundice:-

Exclusive breast feed, jaundice occur in 2nd week, bilirubin over 20 mg/dl.

Pathological jaundice:-

1) Clinical jaundice appearing in first 24 hrs.

2) Increase in level of total bilirubin by more than 0.5 mg/dl / hour. Or 5mg/dl/24hrs.

3) Total bilirubin > 15 mg/dl

4) Direct bilirubin > 2.0 mg/dl

Congenital Non haemolytic Jaundice or Criggler Najjar Syndrome:-

Bilirubin 30 mg/dl results to kernicterus and death. Bilirubin absorbs light maximally in the blue range (420 - 500 nm), Distance 45cm.

Indian childhood cirrhosis:- 6 months to 4 years. Treatment -D. Penicillamine.

Simple febrile convulsion:-

6 month to 5 years, occure within 24 hrs, with fever. Fits lasts for 10 min, usually single and generalized. Treatment - Antipyretic, hydrotherapy, Diazepam, phenobarbitone.

Hookworm sucks 0.03 to 0.15 ml of blood per day and main cause of anaemia.

Diarrhoea:- Passage of liquid or watery stool more than 3 times a day.
Peristant diarrhoea- Lasts for 14 days or more.
Dysentry- Presence of blood, pus in stool, Abdominal cramps and fever.
Oral Rehydration:- **House made** - Sugar 40 gm, salt (Nacl) 4 gm. Water
ORS Ingredients:-

Ingredients	Quantity(gm)	Concentration in mol / l
Sodium chloride	3.5	Sodium 90
Trisodium citrate dihydrate	2.9	Citrate 10
Pottassium chloride	1.5	Pottassium 20
Glucose	20	Glucose 111
Water	1 lit	Choride 80

Nada's criteria for diagnosis of (Congenital heart disease)
1 or 2 major criteria and two minor criteria required in presence of essential criteria to diagnose acute Rheumatic fever

Major criteria	Minor Criteria
1- Carditis	a) Clinical 1)Fever 2)Arthalgia 3)Previous Rh fever RHD
2-Arthritis	b) Lab - 1) Leucocytosis
3- Sub cutaneous nodules	2) Increased ESR, CRP
4- Chorea	3) Prolong PR interval in ECG
5- Erythema marginatum	

Essential criteria:-
1) Increased anti streptolysin 'o' titer.
2) Positive throat culture
3) Recent Scarlet fever

Importants Points :
1) Heat liable vit C and folic acid
2) Hypervitaminosis cause of Vit A and Vit D
3) Heat stable vit and light sensitive-Vit K and B_2
4) Vitamin required for electro transport Vit K and B_2
5) Vit stored in liver A, D, B_{12} , K, Folate
6) Vitamin present only in animal food B_{12} & D
7) Vit synthesized in Guts B_2, B_{12}, and vit K
8) First discovered vitamin are Vit A and Vit B
9) Adrenal cortex has large store of Vit C and E
10) Absorption of iron enhanced by Vit C
11) Both retinoids and carotenoids have anticancer activity
12) Iron is absorbed from duodenum (I D)
13) Retinol component of visual pigment Rhodopsin.
14) Retinol acts like a steroid harmone and is involved in reproduction function by taking part in the control of the expression of certain gene.
15) Ergocalciferol (D_2) is formed in plant. Cholecalciferol (D_3) is formed in exposed skin.
16) Minimum 5 min exposure to sunlight/day prevent Vit D deficiency.
17) Orchiplexy for undescended testes 2 years.
18) Cleft lip operated at 3 months of age.
19) Cleft palate operated at 1 ½ - 2 yrs
20) Vit A Richest source is cod liver oil.
21) Vit A supplementation needed in measles.
22) For surgical wound healing of pt. on steroids

Antivitamins
1) Thiamine - Pyrithiamine
2) Pyridoxine - INH
3) Riboflavine - Dichloro riboflavine acid
4) Folic acid - Aminopterin
5) Vit K - Dicoumarol

Common:
6 months to 3 yrs. : Measles, Polio
6 months to 4 yrs. : Indian childhood cirrhosis
6 months to 5 yrs. : Simple febrile convulsion

GYNAECOLOGY AND OBSTETRICS

Pregnancy:
Duration :- 9 calendar month and 7days, 10 lunar month 280 days or 40 weeks, calculated from first day of last menstruation period.
Diagnosis of pregnancy:
First trimester (1st 12 week)
1) Amenorrhea
2) Morning sickness :- Appear following missed period and lasts upto 3 month
3) Frequency of micturition - 8-12 wks of pregnancy.
4) Jacquemier's or chadvick's sign :-
It is the dusky hue of the vestibule and anterior vaginal wall at 8th week of pregnancy
5) Vaginal sign :-
There is increased pulsation - felt through the lateral fornices at 8th week called Osiander's sign
6)Goodell's sign-Cervix becomes soft as early as 6th week.
7) Piskacek's sign - Asymmetrical enlargement of the uterus, if there is lateral implantation. One half is more firm than the other half.
8) Hegar's sign :-
It can be demonstrated between 6-10 weeks.
a) Upper part of the body of the uterus is enlarged by the growing fetus.
b) Lower part of the body is empty and extremely soft
c) The cervix is comparatively firm.
9) Palmer's sign:- Regular and rhythmic uterine contraction can be elicited as early as 4-8 weeks.

Second trimester:- (13-28 weeks)

1) Quickening:- (feeling of life) denotes the perception of active fetal movements by the woman. It is usually felt about the 18th week. It is useful to calculate the expected date of delivery.

2) Chloasma:- Pigmentation over forehead and check may appear at about 24th week.

3) Linea nigra - Linear pigmented zone extending From symphysis pubis to ensiform cartilage may be visible as early as 28th week.

4) Striae:-

5) The height of uterus is midway between the symphysis pubic and umbilicus at 16th week, at the level of umbilicus at 24th week, and the junction of lower third of upper 2/3 of the distance between the umbilicus of ensiform cartilage at 28th week.

6) Braxton - Hicks contractions - They are irregular, infrequent, spasmodic and painless contracaion without any effect on dilatation of the cervix.

7) External ballottement:- Elicited in 20th week. Best elicited in breech presentation.

8) F.H.S. - Fetal heart sound:- Can be detected between 18-20 weeks - Rate 140-160/ min

9) Internal ballottement:-

It can be elicited between 16-28th week.

Third Trimester (29-40 weeks)

1) Enlargement of abdomen

2) Lightening - About 38th week

3) Fundal height - At the junction of upper and middle third at 32 weeks, upto level of ensiform cartilage at 36th week and it comes down to 32 weeks level at 40th week because of the engagement of presentating part.

If the head is floating, it is of 32 weeks pregnancy and if the head is engaged, it is of 40th weeks pregnancy.

Lie:- Commenest lie - Longitudinal (99.50%)

Presentation - Cephalic (96.5%), Breech 3%

Presenting part - Vertex (96%)

Vertex occupying the left anterior quadrant of the pelvis is the commonest one and is called left occipito anterior (L.O.A.)

Nullipara:- One who has never completed a pregnancy to the stage of viability.

Nulligravida: - One who not now and never has been pregnant

Primipara- Who has one viable child.

Primigravida- Pregnant for the first time.

Multigravida - Who has previously been pregnant

Multipara - Who has delivered two or more child

Parturient - Is a women in labour.

Puerpora - Is a women who has just given birth

EDD - Calculation - According to Naegele's formula (1812):- By adding 9 calendar months and 7 days to the first day of the last normal period.

Vaccination in pregnancy:- Live virus vaccines (rubella, measles, mumps, varicella, , yellow fever) are contraindicated Rabies, Hepatitis A and B, toxoids can be given.

Tetanus:- It protects mother and also neonates. In unprotected women 0.5 ml tetanus toxoid is given intra muscularly at 6 weeks interval for 2 such, doses First one to be given between 16-24 weeks. Women who are administered the parts a booster dose of 0.5 ml IM is given in last trimester.

Normal Labour:

True labour pains:-

Painful uterine contraction at regular interval, show, progressive effacement of dilatation of the cervix.

Show:- Expulsion of cervical mucus plug, mixed with blood.

There may be frequency of micturation or constipation due to mechanical factor - Pressure by the engaged presenting part. It is a welcome sign, as it rules out cephalopelvic disproportion and other conditions preventing the head form entering the pelvic inlet.

Stages of Labour:-

First stage or cervical stage:- It starts from onset of true labour pain and ends with full dilatation of the cervix. Duration 12 hrs in primigravidae and 6 hours in multiparae.

Second Stage:- It starts from full dilation of cervix and ends with expulsion of foetus. Average duration is 2 hours in primigravide and 30 minutes in multi parae.

Third stage:- It begins after expulsion of fetus and ends with expulsion of placenta and membrane.

Average duration - 15 min in both primigravida and multi parae.

Fourth stage:- It is the stage of observation for at least one hour after expulsion of the product of conception.

Puerperium:-It is the period following child birth during which the body tissues, specially the pelvic organs revert back approximately to the pre-pregnant state both anatomically and physiologically. The woman is termed as puerpera.

Duration :- From expulsion of placenta to 6 weeks. Similar changes occur following abortion but takes a shorter period.

Uterus- measurement 20 x 12 x 7.5 (L x B x T), weight 1000 gm.

At the end of 6th week - Normal size of weight 60gm during puerperium, the number of muscle fibers is not decreased but there is substantial reduction of the myometrial cell size. Regeneration of epithelium is completed by 10th day and the entire endometrium is restored by the day 16, except at the placental site where it takes about 6 weeks.

Lochia:- It is vaginal discharge for the first fortnight during puerperium.

1) Lochia rubra (Red) - 1-4 days.

2) Lochia serosa (yellowish/pink /pale brownish) 5-9 days.

3) Lochia alba (pale white) 10-15 days.

Content- Rubra- blood, decidua, vernix caseosa, lanugo and meconium.
Serosa- Less RBC's but more leucocyte, mucus and microorganisms
Alba- Decidual cells, leucocyte, mucus, cholestrin crystals, epithelial cells and micro-organism
Puerperal pyrexia:- A rise of temp reaching 100.4^0 F or more or seperate occasion at 24 hrs apart (excluding 1st 24 hrs) within 10 days following delivery is called puerperal pyrexia.
Puerperal sepsis:- An infection of genital tract which occurs as a complication of delivery.
Placenta : Develops from 2 sources. The principal component is fetal which develops from the chorion frondosum and materal component consists of deciduas basalis. Interestitial implantation is completed on 11th day.
Anterio-capillary venous system in the mesenchymal core of each villus is completed on 21st day.Placenta formation begins at 6th week and is completed by 12th week.
Diameter - 15-20 cm
Weight - 500 gm the proportion of wt. of baby, being rougly 1:6 at term. Thickness of about 2.5 cm at its centre.Foetal blood flow through the placenta 400 ml per min.
Umbilical cord has 2 arteries and 1 vein.
Neither parathormone nor calcitonin crosses the placenta.
Amniotic fluid:-
The amnion has got neither blood nor nerve supply nor any lymphatic system.
The fetus swallows about 200-500 ml of liquor every day at term.
The water in the amniotic fluid is completely changed and replaced in every 3 hours.

Weeks	Volume Quantity in ml
12	50
20	400
36-38	1000
At term	600-800

Placenta Previa:- When the placenta is implanted partially or completely over the lower uterine segment. It is called as placenta previa. 4 types.
Symptoms:- Vaginal bleeding, sudden onset, painless apparently causeless and recurrent. Blood colour - Bright red.
Placenta Abruptio: (or Accidental haemorrhage, Ablatio placentae, Premature separation of placenta.) It is one of the form of antepartum haemorrhage where the bleeding occur due to premature separation of normally situated placenta. Painful often attributed to pre-eclampsia or trauma. Blood colour - Dark coloured.
Placenta Acreta:- Placenta is directly attached anchored to the myometrium.
Abortion:- Abortion is the expulsion or extraction from its mother of an embryo or fetus weighing 500 gm or less when it is not capable of independant survival (WHO)
Miscarriage is word synonymous with spontaneous abortion.
Threatened abortion: Abortion has started but has not progressed to a state from which recovery is impossible.
Inevitable abortion:- Abortion where the changes have progressed to a state from where continuation of pregnancy is impossible.
Complete Abortion:- When the products of conception are expelled an mass.
Incomplete abortion:- When entire products are not expelled.
Missed Abortion:- Silent miscarriage or early fetal demise. When fetus is dead and retained inside the uterus for a variable period.
Septic abortion:- Abortion associated with clinical evidence of infection.
Recurrent miscarriage:- A sequence of three or more consecutive spontaneous abortion before 20 weeks.
Pre-eclampsia:-
It is multi system disorder of unknown etiology characterised by development of hypertension to the extent of 140-190 mm of Hg or more with proteinuria after the 20th week in a previously normotensive and non-proteinuric patient.
Eclampsia:- When pre-eclampsia complicated with convulsion and or coma is called eclampsia.
PIH - Pregnancy Induced Hypertension:-
Hypertension that develops as a direct result of the gravid state it includes a) Gestational hypertension b) Pre-eclampsia c) Eclampsia
Pregnancy is contraindicated for 3 years after operation for breast carcinoma.
Menorrhagia - (Hypermenorrhoea)
Cyclic bleeding at normal interval, the bleeding is either excessive in amount (780 ml) or duration or both.
Poly menorrhoea :- (Epimenorrhoea)
It is as cyclic bleeding, where the cycle is reduced to an arbitary limit of 21 days or less and remain constant at that frequency. If the frequent cycle is associated with excessive for prolonged bleeding is called as epimenorrhoea.
Metrorrhagia-
Irregular acyclic bleeding from uterus. The term is applied when the bleeding is so irregular and excessive that the periods cannot identified at all.
Sec. Amenorrhoea
When there is absence of period for 6 months or more following menstruation. It may be physiological Concealed or true sec. amenorrhoea. Physiological During puberty, During preg and following menopause.

DUB:- Dysfunctional Uterine Bleeding:-

A state of abnormal uterine bleeding without any clinically detectable organic pelvic pathology.

Leucorrhoea:- The term leucorrhoea should be restricted to those condition when the normal vaginal secretion is increased in amount.

One excess leucocyte present in vaginal secretion.

Contraception : Temporary:- 1) Barrier Method:- Mechanical, chemical and combined

Natural contraception, IUCD's, steroidal contraception. Permanent - Male Vasectomy, Female-Tubal occlusion.

Mechanical: Male condom: Made up of latex sheath, Nirodh, protection against STD.

Female condom:- It is pouch made up of ployurethane which lines vagina and also ext. genitalia. 15 cm in length with one flexible ployurethane ring at each end.

Diaphragm:- **5 - 10cm :** The distance between tip of middle finger placed in post. Fornix and the point over the finger below symphysis pubis gives approximate diameter of the diaphragm. Introduced 3 hours before intercourse and is kept for 6 hours after the last coital act.

Chemical:- Cream/ Jelly - 5 min prior to intercourse. Vaginal contraceptive sponge (Today) 1 gm of nonoxynol - 9 as a spermicide.

Removed after 6 hours after intercourse.

Natural contraception: First unsafe day is obtained by subtracting 20 days from the length of shortest cycle and last unsafe day by deducting 10 days from the largest cycle.

Time for Huhaer's test or sin's test - 2 hours after and within 16 hours of intercourse.

Myemectomy after caesarian - After 6 month

Device	Surface area of fine cu wire wounded	Copper	Rate of cu lost
Cu T200 B	215 sq. mm	124 mg	50 mg/day
Cu T 200	200 sq. mm	120 mg	Remove after 3 years
Cu T 380 A	380 sq. mm	176 mg + 66.5 mg	Replacement After 10 year
Multi load cu 250	-	-	60-100-mcg/day

Operations :- Duhrssen's operation - Vaginal fixation to the uterus.

Fothergill's opreration- For uterine prolapse by fixation of cardinal ligament (cervix excision)

Manchester opreration- For uterine prolapse (cervix excision).

Haultion's Dobbins opreration. - For everted uterus (through abdomen)

Wortheir's opreration- Abdominal hysterectomy

Trachelorraphy - Suturing of uterine cervix

Madlener's opreration - Sterilization by crushing and ligating middle portion of fallopian tube.

ENT

Tongue: Middle fibrous septum divides tongue into R and L halves, Each half contain 4 intrinsic and 4 extrinsic muscles.

All muscles are supplied by hypoglossal nerve except palatoglossus (accessory nerve).

Papillae of Tongue:-

1) Fungiform- on the margin and tip
2) Filiform-smallest most numerous.
3) Vallate papillae-Larger in size.

Nose - Development - From - Forntonasal process which grows between the primitive forebrain & the stomodaeum. Anatomy - External Nose - A shape pyramid.

Blood Supply - Facial & ophthalmic arteries & veins

Lymphatic drainage - Pre auricular & sub mandibular lymph nodes.

Nasal cavity - 4 parts - Vestibule, Atrium, olfactory & Respiratory region.

Boundaries - 4 - i) Floor - Palatine process of maxilla, Horizontal process of palentine bone ii) Roof is formed by Nasal & frontal bone, cribriform plate, & body of sphenoid. iii) Medial wall - Nasal septum iv) Lateral wall - Maximal, Nasal bone, ethmoid, palantine bone.

Features - Nasal turbinates (conchae) - 3

i)Superior turbinate - Smallest turbinate,

ii) Middle turbinate iii) Inferior turbinate.

Means 3 passage under 3 turbinates.

1) Superior meatus - It is smallest and has opening of the post. Ethmoidal sinus.

2) Middle Meatus - It has Bulla ethmoidalis, Hiatus semulunaris, infundibulum. Openings of frontal, Maxillary, Ant. Ethmoidal and middle ethmoidal sinuses.

3) Inferior meatus is largest meatus and nasolacrimal duct opens in it. Spheno- ethmoidal recess- opening of sphenoidal sinus.

Blood supply - Branches of external and internal Carotid artery.

Little's Area. / Kiessel bach's plexus - Common site of epitaxis. Anostomose of 4 arteries 1) Ant ethmoidal artery 2) Sphenopalatine artery 3) Greater palatine artery 4) Sup. Labial artery

DNS - Deviated Nasal septum -

Commonest cause - Growing Rate of septum is greater than face.

Deviation may be 'C' shaped or 'S' shaped.

Signs & symptons - Nose block, Headache, Recurrent cold, Expitaxis, anosmia etc. Hypertrophy of turbinates.

Management - Required if persistant or recurrent - symptoms produced. Operative SMR (submucous resection of the nasal septum) or Septoplasty.

Rhinitis : Inflammation of nasal mucous membrane.

I) Infective - A) Acute i) Non specific - The common cold. ii) Specific - Diphtheria

B) Chronic a) Non specific - i) Simple chronic rhinitis ii) Hypertrophic rhinitis iii) Atrophic rhinitis iv) Rhinitis sicca v) Rhinitis caseosa v) Malignant granuloma. b) Specific - i) Rhinosporidiosis ii) Rhinoscleroma iii) Syphillis, Leprosy, T. B. etc.

II) Non infective A) Allergic - seasonal, perennial

B) Vasomotor

1) Common cold - (Coryza) Virus - Rhinovirus, influenza, or adenovirus c/f - 4 stages - Ischaemic stage, Hyperaemic stage, stage of sec. infection & stage of Resolution. Management - Antibiotics, Antihistaminics, Analgesics, & decongestants

2) Nasal Diphtheria - Erythromycin & penicillin.

3) Atrophic rhinitis - Ozaena - Chronic inflammatory disease charactrised by progressive atrophy of mucus membrane & turbinates & associated with foul smell. Management-Nasal drops, Alkaline douche, Antibiotics & Vasodiators Surgery - Young's operation.

4) Rhinitis sicca - Charactrised by drying & crusting in the ant 1/3 of nasal cavity.

5) Rhinitis caseosa - Caseous material collects in the nose & maxillary sinus. There is inflammation & granulations.

6) Malignant granuloma - 1) Stewarts granuloma- It is localized progressive ulceration of the tissue of the nose, sinus & pharynx. Treatment - Radiotherapy. 2) Wegener's granulomatosis is a necrotizing granuloma affecting the nose, lungs & kidney. Rx -Cytotoxic drugs & steroids

7) Rhinosporidiosis - It is the infestation of nose by a spore bearing fungs. Rx - Surgical Excision.

8) Rhinoscleroma - It is chronic infection of the nose chractrised by sclerosis and stenosis of the nasal passage. Causative organism - Kelbsiella rhinoscleromatis. Treatment - Antibiotics and surgery

9) Allergic Rhinitis - Charactrised by spasmodic attacks of severe sneezing of rhinorrhoea. It is reaction to certain allergen. Types 2- Seasonal & Perennial. Diagnosis - Test RAST - (Radio allego sorbent test) is a new sensitive in vitro test for the assay of reaginic (IGE) autibodies specific for particular antigens. Treatments - Allergen avoidance, Antihistaminic & steroids.

10) Vasomotor rhinitis - Condition similar to allergic rhinitis but allergen is not cause. Imbalance of autonomic nervous system is considered cause.

11) Nasal polyp - It is prolapsed pedunculated part of the oedematous mucosa of the nose or paranasal sinus. Types 2 - Antrochoanal and ethmoidal. Ethmoidal polyps are usually allergic origin & bilateral. Treatment - Antrochoanal polyp - a) conservatives - Antibiotic b) Surgical - Polypectomy, Caldwell luc operation, sinoscopy. Ethimoidal polyp - a) Conservatives - Antibiotics, steroids & decongestants b) Surgical - polypectomy, ethmoidectomy, sinoscopy.

12) Myiasis - It is an infestation of nose by maggots.

13) Rhinolith - It is a concertion in the nose formed around a foreign body, blood, or inspissated pus.

14) Disorders of olfaction –

1) Anosmia - Loss of sense of smell

2) Hyposmia - Reduced sense of smell

3) Cacosmia - Perception of foul smell due to an intrinsic cause

4) Parosmia - Perverted sense of smell, where a person get non exsistants foul smell.

15) Rhinolalia - It is change in the total quantity of voice due to nasal or nasopharyngeal problems. 2 Types - 1) Rhinolalia clausa - voice becomes flat

2) Rhinolalia - Aperta - Nasal twang caused by continuous escape of air through the nose.

16) Epistaxis Bleeding from nose - Congenital- Multiple telangiectases (Osler's disease)

17) Sinusitis - Acute / chronic

Maxillary sinuses are the most frequency affected. Pain at maxillary region. It is aggravated on bending down, coughing and sneezing.

Nasal septum:- It osteocartilagenous

Anterio inf. Area of nose is called little's area/ Kiesselbach's area - Common site of nasal bleeding which is supplied by anterior ethmoidal nerve.

Pharynx - It extends from base of the skull to the sixth cervical vertebra. The lower end is called cricopharynx. Size & shape - 10 cm long. Funnel shaped. Structure - Waldeyers ring in the submucosa - It is sub epithelial collection of lymphoid tissue scattered in pharynx.

The **waldeyers ring** consists Nasopharyngeal tonsil, Tubal tonsil, Palatine tonsils (The tonsil), Lingual tonsils, lateral pharyngeal bands, pharyngeal nodules. Nerve Supply - Nine, Tenth & eleventh cranial nerves. Applied - Kilian's dehiscence is a potential gap between the two parts of the inferior constrictor muscle, namely the oblique thyropharyngeus & the transverse cricopharyngeus. Retropharyngeal space also known as Gillette's space.

Surgeon's graveyard - The floor of the mouth tounsillolingual sulcus, vallecula & pyriform fossa. Of the larygopharynx described as surgeon's graveyard, as malignancy in this areas are easily missed.

Tonsillitis - Acute / chronic

Tonsillectomy - Indications - commonest - Chronic tonsillitis with recurrent acute attacks. (More than 4 attacks per year)

Contrandications - i) Acute tonsillitis or upper's respiratory tract infection ii) Below 5 yr. of age iii) Pregency and DM.
Methods - i) Dissection method ii) Guillotine method iii) Electro cautery iv) Cryosurgery v) LASER.
Adenoids - When hypertrophid nasopharyngeal tonsil starts producing symptoms, the condition is referred to as adenoids.
Treatment - Antibiotics, decongestants. Surgical - Adenoidectomy - Contraindication - Cleft palate.
Quinsy - (Peritonsillar abscess) - It is collection of pus outside the tonsillar capsule. Usually unilateral.
Types - Ant. Post, lingual, tonsillar,
Treatment - I & D
Larynx : Place - In the midline of the neck at the level of 3rd to 6th cervical vertebrae lying in front of laryngopharynx. 44mm in male 36 mm in female. It contains 9 ring cartilage, 3 unpaired, 3 paired. All muscles of larynx are supplied by Recurrent laryngeal nerve except cricothyroid.
Weakness of phonation- Damage to ext-laryngeal nerve.
Loss of phonation- Damage to recurrent laryngeal nerve. 3 Unpaired cartilage
1) Epiglotis - Leaf shaped fibroelastic cartilage
2) Thyroid cartilage - Largest cartilage of larynx
3) Cricoids cartilage - shape like signet ring.
3 Paired cartilage - 1) Ary lenoid cartilages are largest, shape like pyaramid.
2) Corniculate cartilages
3) Cuneiform cartilage.
Cavity of Larynx- 3 parts - Vestibule, Ventricle, Subglottic space. Blood Supply - Sup , inf and Cricothyroid artery.
Indirect Laryngoscopy - Inverted mirror image seen. OPD procedure, Good for diagnosis.
Direct Laryngoscopy - Direct visualization, O.T. procedure, useful for diagnosis, biopsy & surgical procedure.
1) Laryngitis :- Acute non specific laryngitis is commonest cause of temporary hoarseness.
Chronic Laryngitis is a fairly common condition which is caused by chronic irritation of vocal cords.
2) Laryngeal Hyperkeratosis :- (Leucoplakia) - White patches develops on vocal cord. It is considered as premalignant lesion.
3) Adductor palsy - Functional aphonia - A patient suddenly voice or the voice is reduced to whisper but there is no hoarseness. (A hoarse voice is rough and unpleasant)
4) Stridor - It is noise during respiration produced due to obstruction to the passage of air into or out from the lower respiratory tract.
5) Tamours of Larynx -
T.N.M. classification of ca Larynx -
T- Tumour Extent, N - Regional lymphnodes, M - Distant metastasis.
It divides tumours into 4 stages according to the extent of growth & the secondaries.

Stage I T_1 N_o M_o
Stage II T_2 N_o M_o
Stage III T_3 N_o M_o T_{123} N_1 M_o
Stage IV T_4 N_o M_o Any T N_2N_3 M_o
Any T Any N M_1
Laryngotomy is incising the Larynx through the cricothyroid membrane in an emergency.
Tracheostomy: It is a surgical opening made in the ant. wall of the trachea. Life saving procedure.
Tracheostomy is usually performed at the level of 2,3,& 4th tracheal ring.
Types :-
Low Tracheostomy - Performed below isthmus.
Mid tracheostomy - At the level of isthmus.
High tracheostomy - Above isthrnus of thyroid gland.
Contraindications of tracheostomy - Bleeding disorder, General Debility. Diabetes & HTN.
Oesophageous :-
1) Dysphagia - Difficulty in swallowing.
2) Odynophagia - Painful swallowing.
3) Paterson - Brown Kelly syndrome or Plummer Vinson syndrome - typically affect females around 40 yrs of age, who having hypochronic microcytic anaemia. They have angular stomatitis, glossitis, koionychia, splenomegaly and chronic cricopharyngeal dysphagia.
4) Dysphagia lusoria - Vascular anomalies in the chest may press on oesophagous causes dysphagia.
5) Achalasia Cardia - (Cardiospasm) - This is a condition charactrised by failure of relaxation of the lower oesophageal sphincter for the passage of food.
Treatment - Heller's opration - Cardiomyotomy.
Stomatitis:- Aphthous stomatitis - It is recueernt ulcerative stomatitis.
Behcet's syndrome - It is charactrised by oropharyngal and genital ulceration with conjunctivitis. Rx - Steroids
Pemphigus - It is charactrised by bullons lesion without erythema which rupture leaving a raw surface.
Leukoplakia :- Leukoplakia is a white patch on the tongue as oral mucosa. It is premalignt lesion.
Erythroplakia :- Ery throplakia is a red patch on the mucosal surface It is premalignant condition.
Epulis - Swelling on gums.
Trismus - Inability to open the mouth.
Lugwig's Angina :- It is an infection of the sub mandibular space with cellulithis of occasionally abscess formation.

Ranula :- It is retension cyst in the floor of the mouth arising from mucous sublingual glands.

EAR- Main arteries of middle ear are ant. Tympanic branch of the maxillary artery. 3 Bones

i) Malleus ii) Incus

iii) Stepes. Membranous labyrinth closed cavity filled with endolymph It also has 3 parts.

1) Spiral duct of cochlea- organ of hearing

2) Utricle and saccule - organ of static balance.

3) Semicircular ducts - organ of kinetic balance.

Important Points :

1] External Auditory canal, Malleus and Incus develop from the first branchial area.

2] External Auditory canal / External Acoustic

Outer 1/3rd	Inner 2/3rd part
Cartilagenous	Bony
Contains hair follicles and secreting wax.	Locks sebaceous and Ceruminous glands

4] Tympanic membrane / Ear drum / Drum head :

a) Layers - 3 b) Parts - 2 - 1) Pars tensa 2) Pars flaccida (Attic, Shropnell's membrane)

c) Shape - Oval d) Surfaces - Lateral surface - concave. Medial surface - Convex.

5] Eardrum is placed obliquely at an angle of 55^0 with floor at the inner end of ext. auditory canal.

6] Common site of perforation of tympanic membrane is Pars Tensa.

7] Mobility of Eardrum is tested by Siegle's peumatic speculum.

8] Ear drum increases the force of sound 18 times.

9] Eustachian tube - 3.75 cm - 36 mm long in adults - Outer 1/3rd is Bony
- Inner 2/3rd is Cartilagenous.

10] Canal of Huguier is for chorda tympani nerve.

11] Malleus (Hammer) is largest ossicle measuring 8 mm in length.

12] Incus is also called Anvil.

13] Stapes (Stirrup) is smallest ossicle measuring 3.5 mm in length. It consists of a head, neck, foot plate and anterior and posterior crura.

14] Mastoid Antrum is largest Gir cell in the mastoid bone.

15] Bony labyrinth contains Perilymph.

16] Membranous labyrinth lies suspended in perilymph of long labryrinth.

17] Membranous labyrinth contains Endolymph.

18] Membranous semicircular canals of ear are placed at an angle of 90^0 to each other.

19] Semicircular canals respond to the angular acceleration and caloric stimulation.

20] Utricle and Saccule lie in the vestibule of bony labyrinth.

21] Cochlear duct lies in Bony cochlea and is coiled for 2.5 turns around the central bony mediolus.

22] The end organ in the cochlea is Organ of Corti and gets stimulated by sound.

23] Auditory centre for hearing is situated in Superior temporal gyrus of cerebrum.

24] Appreciation of sound occurs in transverse temporal gyrus.

25] Balancing act of body is done by Vestibular system.

26] Tympanic membrane retraction is suggestive of Eustachian tube blockage.

27] Valsalva Manocuvre is done for testing the patency of Eustachian tube.

28] Audible range of frequency is a 20 - 20,000 cycles/sec.

29] Usually a tuning fork of frequency 512 cycles/sec is used for test.

30] Rinne test compares AC and BC of same ear.

31] Rinne test : a) +ve - when AC > BC - Indicates normal hearing or sensori - neural deafness. b) -ve - when BC > AC - Indicates conductive deafness.

c) Equivocal - when AC - BC - very mild

32] Weber's test compares BC of the two ears useful.

33] Lateralisation of sound occurs if difference between BC of two ears is more than 5dB.

34]Absolute Bone conduction (ABC) Test/Modified Schwabach test compares the ABC of patient with that of examiner.

35] Functional tests of the Vestibule are caloric test, Fistula test, Rotation test, Romberg's test, Position test.

36] Absolute Bone conduction is diminished in sensori - neural deafness.

37] Furuncle in ear is staphylococcal infection.

38] Otomycosis is caused by Aspergillus niger.

39] Myringitis is infection of the external surface of ear drum similar to otitis externa.

40] Wax softening agents - Oil, Hydrogen peroxide, Sodium bicarbonate, Paradichlo-robenzine.

41] Method of removing ear wax is Syringing.

42] Meatal stenosis - narrowing of the external auditory canal.

43] Cartwheel appearance is seen in Catarrhal stage of Acute Suppurative otitis media (A.S.O.M)

44] Light house sign seen in Stage of Suppuration of A.S.O.M.

45] The eardrum perforates at the stage of suppuration of A.S.O.M.

46] Myringotomy (Incision of eardrum) is done in stage of Exudation.

47] Common site of Myringotomy is Antero - inferior quadrant.

48] Common complication of A.S.O.M. is Mastoiditis.

49] Comm
Otitis
50] Comm
in chil
51] Comm
C.S.O
52] Multip
granu
media
53] Contra
- Dan
Eus
54] In Tyn
0.5 cm
55] Comm
tympa
56] Bioma
Tymp
Plasti
57] Inlay a
Tymp
58] Non-m
ear is
59] Compl
may b
60] Condu
Otoscl
61] Referr
facial,
62] Otorrh
Otomy
labyri
63] Causes
Menie
Enceo
64] Ototox
Kanan
65] Presby
which
66] Menie
67] Menie
Tinnit
68] Audito
69] Schull
mastoi
70] Water'
maxill
71] Caldw
ethmo
72] Larges
73] Rudim
74] Comm
75] Consta
Foren
Aftern
Retro

49] Common complication of chronic suppurative Otitis media (C.S.O.M.) is conductive deafness.
50] Commonest cause of suppurative otitis media in children is Pneumococcus.
51] Commonest site of brain abscess due to C.S.O.M. is temporal lobe.
52] Multiple tympanic perforations, pale granulations are seen in Tuberculosis Otitis media.
53] Contraindications of Tympanoplasty
- Dangerous perforation, Wet perforation, Eustachian tube dysfunction.
54] In Tympanoplasty, Postaural incision is made 0.5 cm behind retro auricular sulcus.
55] Commonly used autograft for ear drum in tympanoplasty is Temporalis fascia.
56] Biomaterials used for ossicular grafting in Tympanoplasty are ceramics, Gold, Teflon, Plastics.
57] Inlay and Onlay techniques are used in Tympanoplasty.
58] Non-malignant bone destroying disease of the ear is Cholesteatoma.
59] Complication of Mastoidectomy operation may be Facial nerve palsy.
60] Conductive deafness is associated with Otosclerosis.
61] Referred pain in ear is due to trigeminal, facial, glossopharyngeal, Vagus nerve.
62] Otorrhoea is due to - Furunculosis, Otomycosis, Myringitis, Suppurative labyrinthitis, A.S.O.M., C.S.O.M.
63] Causes of sudden Sensori neural deafness are. Meniere's disease, Ototoxicity, Meningitis, Enceophalitis.
64] Ototoxic drugs - Streptomycin, Neomycin, Kanamycin, Quinine, Frusemide.
65] Presbyacusis - Sensorineural type of deafness which occurs due to aging.
66] Meniere's disease is disease of Labyrinth.
67] Meniere's disease - DTV, - Deafness, Tinnitus, Vertigo.
68] Auditory area - Area no 41.
69] Schuller's view is used for examining the mastoid bone.
70] Water's view is used for examining the maxillary sinus.
71] Caldwell's view demonstrates the frontal and ethmoidal sinuses.
72] Largest paranasal sinus - Maxillary sinus.
73] Rudimentary sinus at Birth - Frontal.
74] Commonest sinusitis - Maxillary.
75] Constant headache is in-Anterior ethmoiditis.
Forenoon headache - Frontal sinusitis
Afternoon headache - Maxillary sinusitis
Retro ocular headache - Sphenoidal sinusitis.
76] Common cause of DNS-Unilateral nasal obstruction.
77] S.M.R. operation (submucous Resection) is done for D.N.S.
78] Septal replacement is done with Aschforceps.
79] Nasal bone replacement is done with Walsham's forceps.

OPTHALMOLOGY

Anatomy of Eye :
Eye ball Dimensions:
Anterio Posterior Diameter - 24 mm.
Vertical Diameter 23 mm. Circumferane-75 mm
Volume - 6.5 c. c. Wt - 7 gm
Compartments of eye ball - 2:
1)Anterior compartment - Anterior chamber - Cornea to Iris depth 2.5 mm, volume 0.25 mm (Aqueous), Posterior Chamber Iris to Lens - Volume 0.06 mm.,
2) Post - Compartment - Vitreous, retina, optic disc, choroid, pars plana.
Cornea :- Vertical diameter - 11 mm, Horizontal - 12 mm; Posterior - 11.5 mm; Radius of curvature 7.8 mm, Thickness 0.52 mm.
Sclera - Lamina cribrosa - Thinnest sieve like sclera through which fibres of optic nerve passes.
Thickness - Post. Pole - 1 mm, Equator - 0.5 mm, Insertion of IOM 0.3 mm
Lens - Weight 135mg at 0 - 9 yrs, 175 mg at 20-30 yrs, 235 - 275 mg at 60-90 yrs. Radius - Ant 11 mm, post - 6 mm, Lens capsule thinnest at post pole.
Iris and ciliary body :- Iris is thinnest at its roots Ant. Limiting membrane most condensed part of stroma. The colour of iris depends upon the amount of pigment. In this layer cillary process 70 -80 in number. White finger like projections from the pars flicata, part of ciliary body.
Vitreous - volume 4 cc
Retina - Dimensions - Optic disc - 1.5 mm, Macula lutea 5.5 mm, Fovea centralis 1.5 mm, Thickness of Retina 0.5mm, Optic disc Blind 6 Spot.
Rods & Cones Sensory end organ of vision.
The nourishment of macula lutea - entirely on choroid
Optic nerve - Fibres of optic nerve once cut do not regenerate because they are not covered by neurilemma. Length 45 - 50 mm. Diameter - 1.5 mm (Optic disc) 3-4 mm (Intraorbital)
Nerve supply of Extra Ocular Muscle - EOM
Sup. Med, Inf. Rectus & Inf. Oblique 3rd Cranial nerve.
Sup. Oblique - 4th cranial nerve
Lat. Rectus - 6th cranial nerve
Nasolacrimal duct - Diameter 45 mm
Opens in inferior meatus of nose.
Valve of Hasner is present near its lower end.
Orbit - Volume - 30cc.
Eye ball occupies 1/5th of volume
Cornea & lens - Avascular structures

Development of ocular structures

Surface ectoderm	Mesoderm	Neuroectoderm
Crystalline lens	Sclera	Retina (All layers)
Eyelashes	Choroid	Ciliary body epithelium
Conjunctiva and corneal Epithelium	Iris stroma	Sphincter and Dilator pupillae
Epithelium of Meibomian, Moll's, Zeis's, Lacrimal and accessory lacrimal glands	Corneal stroma, Descemet's membrane and endothelium	Nerve fibres of optic nerve

Eyelids develop from both Ectoderm and Mesoderm

Glands of eyelids	Type	Situation/place
Meibomian's glands	Modified sebaceous glands	Tarsal plate
Glands of zeis	Sebaceous gland	Lid margin and open into hair follicles of eye lashes
Glands of moll	Modified sweat glands	Between the cilia of lid margin.

Lacrimal fluid :

Slightly alkaline, contains water, small quantities of proteins, lipids, sodium Chloride, sugar, urea and immunoglobulins namely IgA, IgG, IgM, and Lysozyme. Average normal secretion - 0.5 - 2.2 ml

Acessory lacrimal glands - Glands of Krause and Wolffing.

Lacrimal sac. - 13 mm long and 5 - 6 mm wide

Naso lacrimal duct - 15 mm long (15 - 18 mm long)

Conjunctiva- Epithelium - Marginal conjunctiva 5 layered, Tarsal conjunctiva 2 layered.

Fornix and bulbar conjunctiva 3 layered,

Limbal conjunctiva - 5 layered.

Made up of 2 layers : i) Outer Epithelial

ii) Inner substantia propria comprising of

a) Superficial Adenoid layer

b) Deep fibrous layer.

Cornea : Transparent, avascular membrane. It forms anterior 1/6th part of the outer coat of eyeball. It is made up of 5 layers.

1) Epithelial cell layer - (Outermost) stratified squamous 2) Bowman's membrane

3) Substantia propria or stroma- 90% of total thickness 4) Descemet's membrane- Regenerable

5) Endothelial cell layer - (Innermost layer)Active.

- Epithelial cell layer gets replaced within 7 days if damaged.
- Bowman's membrane does not regenerate, if damaged and thus results in corneal opacity.
- The dioptric power of cornea - + 43 to + 45 D.
- Horizontal diameter of cornea - 12 mm, vertical diameter - 11 mm.

Sclera : Opaque, porcelain white inelastic coat. It forms posterior 5/6th part of the outer coat. It is externally covered by Tenon's capsule throughout its length and conjunctiva only on anterior aspect.

Limbus : Transitory zone between cornea on one hand and conjunctiva and sclera on other hand, which is about 1 mm wide.

Surgical limbus : 2 mm wide portion divided into i) Anterior limbal border

ii) Midlimbal line iii) Posterior limbal border

Incision in the Midlimbal line is the safest entry for any intraocular surgery.

Iris : It is brown, black or bluish diaphragm 12 mm in diameter present in between cornea and lens. There is aperture in the centre of iris called 'Pupil'.

Ora serrata - Junction of posterior limit of ciliary body with anterior limit of choroid and retina.

Choroid : Posteror continuation of ciliary Body.

Retina : Made up of 10 layers

Optic disc (Optic nerve head) :

1.5 mm circular, pink coloured disc containing nerve fibre layer only. In optic disc, Rods and cones are absent, so it is not stimulated by light rays and hence called, as "Blind spot". In optic disc, there is network of elastic connective tissue fibre's called as "Lamina cribrosa". In the centre of optic disc, there is a slight depression called as "Physiological cup or excavation".

Optic nerve : Is 5 cm long extending from lamina cribrosa up to optic chiasma.

Macula : 3 mm to temporal side of optic disc, a depression is seen called "fovea centralis". Here only 'cones' are present and other layers of retina are absent. It is the most sensitive part of retina and is surrounded by small area called "Macula lutea or Yellow spot". There are no blood vessels at Macula and is nourished from chorio - capillaries.

Lens : Consists of Globulin, salt and water. It is avascular and gets nourishment from aqueous humour. In foetal life, Hyaloid artery supplies blood to the embryonic lens which gets atrophied after birth. It's diameter - 9 - 9.5 mm, thickness - 4 - 4.5 mm.

Refractive power of lens

- In non-accomodative - + 19.5 D
- In accommodative state - +22 D.

- In Foetus - Lens is nearly spherical and softer
  In Adults - Biconvex and firmer
  In old age - Size increase, assumes yellow grey tinge, becomes tougher and less transparent.
- Anterior capsule of lens is thicker than post capsule.

Aqueous humour :

Slightly
anterior a
In anterio
In posteri
Rate of fl

Vitreous
It is ava
mass pre
between
containing
leukocyte
membrane
ciliary bo
humour -
Intrinsic
1) Ciliary
respons
2) Sphinct
for pup
3) Dilator
pupilla
Extrinsic
Responsi
1) Superio
2) Inferior
3) Medial
4) Lateral
5) Superio
6) Inferior
Nerve sup
A) Sensor
nerve i.e.
B) Motor
1) 3rd cran
Superior
inferior
sphincter
2) 4th Cra
3) 6th Cra
4) 7th Cra
C) Auton
1) Cervica
ciliary
2) Parasyr
Lacrima
Instrume
1) Gonios
chamb
2) Slit lam
layers,
3) Transill
transpu
4) Perimet
5) Ophtha
6) Retinos

Slightly alkaline, clear, watery fluid present in anterior and posterior chambers.
In anterior chamber - About 0.25 cc
In posterior chamber - About 0.06 cc
Rate of flow of aqueous humour - 1 - 8 cu mm

Vitreous humour :
It is avascular, transparent, colourless, gelatinous mass present in posterior segment i.e. the space between the lens and retina. It is an inert gel containing fine protein micellae, wandering leukocytes and fluid. Externally covered by hyaloid membrane. It is avascular and gets nourished from ciliary body, retina and choroids. Volume of vitreous humour - 4 ml.

Intrinsic / Intraocular muscles :
1) Ciliary muscles present in ciliary body - responsible for act of accomodation.
2) Sphincter pupillae present in iris - responsible for pupillary movements.
3) Dilator pupillae present in iris - responsible for pupillary movements.

Extrinsic / Extraocular muscles :
Responsible for ocular motility
1) Superior rectus- 7.7 mm
2) Inferior rectus 6.6mm
3) Medial rectus- 5.5mm
4) Lateral rectus 6.9 mm
5) Superior oblique - Longest EOM.
6) Inferior oblique- Short EOM

Nerve supply to the eyes :
A) Sensory nerve : Ophthalmic division of 5th cranial nerve i.e. Trigeminal supplies all ocular structures.
B) Motor nerves : [LR6 (SO4)3 REST]
1) 3rd cranial nerve i.e. Oculomotor :
Superior rectus, Inferior rectus, Medial, Rectus, inferior oblique, Levator palpabrae superioris, sphincter pupillae, Ciliary muscle.
2) 4th Cranial nerve (Trochlear) : Superior oblique
3) 6th Cranial nerve (Abducens) : Lateral rectus
4) 7th Cranial nerve (Facial) : Orbicularis oculi
C) Autonomic nerves :
1) Cervical sympathetic nerves - Dilator pupillae, ciliary body, Muller's muscle, Lacrimal gland
2) Parasympathetic nerves - Sphincter pupilae, Lacrimal gland, ciliary body.

Instruments used in ophthalmology :
1) Gonioscope -To measure the angle of Anterior chamber
2) Slit lamp - Minute examination of corneal layers, aqueous humour, iris and lens.
3) Transillumination - Transscleral and transpupillary examination of the eyeball.
4) Perimeter - To measure the field of vision.
5) Ophthalmoscope - To visualize Retina.
6) Retinoscope-To detect Refractive errors of eye
7) Tonometer - To measure ocular pressure (Normal intra ocular pressure-14-21 mm Hg)
8) Ishihara's chart - For colour vision.
9) Snellen's chart - For visual acuity
10) Jegger's chart - For Presbyopia
11) Keratometer - To measure curvature of cornea.

Contact lens : Used in
1) Bullous kerato pathy
2) Recurrent corneal ulceration
3) As a vehicle for drug delivery.
- Soft lens made up of HEMA (Hydroxyethyl methacrylate)
- Hard lens made up of PMMA (Polymethyl methacrylate)
- IOL made up of PMMA.

Field of vision :
Upwards - 50^0 - 60^0 Nasal side - 60^0
Downwards - 75^0 Temporal side - 100^0

Fundus appearance :
1) Long term use of chloroquine - Bull's eye Retinopathy
2) Phenothiazine causes-Pigmentary Retinopathy
3) Niernan - Pick disease - Cherry red spot
4) Retinitis pigmentosa - Tessellated or Tigroid fundus: Bone corpuscles like lesions.

Ophthalmoscopy :

Character	Indirect	Direct
Image	Real, inverted	Virtual, erect
Magnification	5 times	15 times
Visibility	Upto ora serrata	Upto equator

Comparative name of disease :
1) Dacryocystitis - (पूयालस)
2) Trachoma - (पोथकी)
3) Ophthalmia neonatorum - (कुकूणक)
4) Stye - (अंजननामिका)
5) Chalazion - (उत्संगिनी)
6) Trichiasis or entropion - (पक्ष्मकोप/उपपक्ष्ममाला)
7) Lagophthalmos - (वातहत वर्त्म)
8) Pterygium - (अर्म)
9) Subconjunctival haemorrhage - (अर्जुन)
10) Chemosis - (बलासग्रथित)
11) Pinguecula - (पिष्टक)
12) Corneal ulcer - (सव्रण शुक्र/क्षतशुक्र)
13) Corneal opacity - (अव्रण शुक्र/शुध्दशुक्र)
14) Iris prolapse - (अजकाजात)
15) Conjunctivitis - (अभिष्यंद)
16) Glaucoma - (अधिमंथ)
17) Cataract - (लिंगनाश)
18) Night blindness - (ह्रस्वजाड्य/दोषांध/नकुलांध्य / कफविदग्धदृष्टी/उष्णविदग्धदृष्टी)
19) Day blindness - (पित्तविदग्धदृष्टी)
20) Xerosis, Bitot's spot - (शुक्तिका)

Sandhigata Rogas:

1. Dacryocystitis- Acute/chronic - Inflammation of lacrimal sac. Types - i) Congenital - New born infant - Due to closure of NLD.
ii) Acquired - Acute or chronic (common) Treatment - a) Repeated lacrimal syringing
b) Antibiotics
c) Surgery - Dacryocystectomy or Dacryocysto - rhinostomy.

2. Epiphora - (Watering of eye) - Primary hyperlacrimation occurs due to direct stimulation of lacrimal gland. Reflex hyperlacrimation results from stimulation of sensory branches of 5th nerve, due to irritation of cornea and conjunctiva.

3. Blepharitis - Inflammation of eye lid, 2 Types - i. Squamous - Associated with seborrhoea of scalp.
ii. Ulcerative - Yellow crusts, due to staphylococcal infection, Bleed easily on removing crusts.
Treatment - Antibiotics - eye drop, ointment, hot compresses, oral - Erythromycin or Tetracycline.

Vartmagata Rogas -

1. Chalaziron / Tarsal or Meibomian cyst: It is chronic non infective granulomatus inflammation of meibomian gland.
Treatment - i) If small self resolution by hot compresion, tropical antibiotic eye drops & oral NSAIDS ii) Incision & curettage iii) Diathermy

2. Stye/ External Hardeolum - It is suppurative inflammation of gland of zeis & lash Follicle due to staphalococus infection. It is more common in DM & chronic Blepharitis.

3. Trachoma - Previously known as Egyption opthalmia. It is chronic kerato conjunctivitis, affecting superficial epithelium of conjuctivea & cornea. It is still one of the leading cause of preventable blindness in the world.
Cause - Chlamydia trachomatis.
Inculation period - 5- 21 days. Signs - Follicle look like boiled sago grains & commonly seen on upper tarsal conjunctiva, fornix & plica semilunaris. Presence of leber cells. Linear scar present in the sulcus sabtarsalis called Arlt's line.
Corneal sign - Herberts Follicles Corneal ulcer & opacity. Mc callan classify trachoma in different stages.

Suklagata Rogas -

1. Pterigium -(Arma)- It is degeneration with hyperplasia of the subconjunctival tissue in the from of vascularised granulation tissue.
Causes - Exposure to U. V. rays or Sunlight.
Parts - Head, Neck, Body.
Deposition of iron seen sometimes in corneal epithelium antirior to advancing head is called stocker's line. Recurrence after surgery - 30 - 50% Mc Ruynold's Operation - To reduce recurrence, transplantation in lower fornix.

2. Xerophthamia or Xerosis - It is degenerative condition charactrised by dry lusterless condition of conjunctva.

3. - Episcleritis – Scleritis (Siraj Pidica)
Episcleritis is benign recurrent inflammation of epi sclera involving the overlying Tenon's capsule but not underlying Sclera.
Types - 2- Diffuse & nodular. In nodular episcleritis a pink or purple flat nodule surrounded by congestion is usually situated 2 -3 mm away from limbus.
Scleritis - Chronic inflammation of Sclera proper. About 0.5% patients with seropositive Rheumatoid arthritis develop scleritis.

Krushnagata Rogas -

Ulcerative keratitis (Savarna sukla)- - Corneal ulcer may be defined as discontinuation in normal epithelial surface of cornea associated with necrosis of surrounding corneal tissue

2. Staphylomas (Ajakajat) - - It refers to a localized bulging of weak & thin outer tunic of eye ball.

Sarvagata Roga

1) Conjunctivities (Abhishyanda) - - Inflammation of conjunctiva charactrised by redness of eye and conjunctival discharge. Types - Acute & chronic

2. - Glauloma (Adhimantha) - Glaucoma is not a single disease but a group of disorder characterized by progressive optic neuropathy resulting in a characteristic appearance of the optic disc & a specific pattern of irreversible, visual field defeaet that associated frequency but not invariably with raised intraocular pressure (IOA)
Classification -A. Congential & development glaucoma
i) Primary congenital - Without anomalies
ii) Developmental - With anomalies
B. Primay Adult glaucoma -
i)Primary open angle glaucoma (PDAG) ii) Primary angle closure glaucoma (PACG)
iii) Primary mixed mechanism glaucoma
C. Secondary glaucoma -

3. Buphthalmos - Bull like eye - Prior to age of 3yrs, eye ball enlarge due to retention of aqeous humour or hydrophthalmos (Type A)
Normal range of IOP - 14 - 21 mm of Hg by schiotz tonometer.
Vogt's triad - May be seen in patients with any type of post congestive glaucoma - charactrised by -
i) Glaucom Flecker
(Anterior subscapular lenticular opacity)
ii) Pathes of iris atrophy iii) Slightly dilated non reacting pupil.

Drusthigata Rogas- Cataract - The crystalline lens is transparent structure. It is transparency may be distributed due to degenerative process leading to opacification of lens fibres. Development of an opacity in lens is known as cataract.

A) Etiol
developm
ii) Acquir
c) compli
f) Radiati
iduced ii)
h) Dermat
B. Morph
2. Subsac
4. Supram
1) Blue d
is station
involving
second de
2) Senile
Types - (
cupuli forr
3) Total
hereditary
4) Diabeti
opacities'
5) Galacto
6) Sunflo
error of co
7) Catract
(Oculo - ce
Mangemen
within a fe
ii) Correcti
with post.
Acquired -
(SICS)
ii) Extra c
post chamb
iii) Intra Ca
iv) Phacoer
ECCE
v) Introcula
correction o
Commonly
Calculation
P - A x 2.5
A - specific
mm & K - a
Zonular or
congenital
method for
senile catar
Cryoextracti
technique in
Cataract :
1) Common
2) Diminish
cataract.
3) Rosette ca
4) Vision in

A) Etiological Classification - i) Congential & developmental cataract
ii) Acquired cataract - a) Senile b) Traumatic c) complicated d) Metabolic e) Electrical f) Radiational g) Toxic cataract e. g. i) Corticosteroid induced ii) Miotic induced iii) Copper & iron induced h) Dermatogenic cataract
B. Morphological - 1. Capsular - Anterior, posterior 2. Subsacpsular - Ant. & post 3. Cortical 4. Supranuclear 5. Nuclear 6. Polar - Ant & post.
1) Blue dot cataract (Cataract - punctata - cerulea) It is stationary rounded bluish punctuate opacities involving adult nucleus or deep corterx. Develops in second decade of life. Does not involve vision
2) Senile cataract - Most common form of cataract Types - Cuneiform cataract - 70% most common, cupuli form cataract - 5 %, Nuclear cataract 25%.
3) Total Catract - Unilateral or bilateral. Due to hereditary or associated with rubella.
4) Diabetic cataract is charactrised by 'snow flake opacities'
5) Galactosaemic cataract - Oil droplet cataract.
6) Sunflower cataract may associated with inborn error of copper metabolism (Wilson's disease)
7) Catract may be seen in the lowe's (Oculo - cerebral renal) syndrome.
Mangement - Congential - i) Surgical treatment - within a few weeks of birth.
ii) Correction of paediatric aphakia above two years with post. chamber introccular lens implantation
Acquired - i) Manual small incision cataract surgey (SICS)
ii) Extra capsular cataract extraction (ECCE) with post chamber IOL is the treatment of choice.
iii) Intra Capsular cataract extraction (ICCE)
iv) Phacoemulsification is an advanced technique of ECCE
v) Introcular lens implantation is the best method for correction of aphakia .
Commonly used IOL is Kelman multiflex lens.
Calculation of IOL power is done by SRK formula.
P - A x 2.5 - 0.9 k, where P - IOL power in diopters. A - specific constant ; L - Axial length of eye ball in mm & K - average keratometric reading.
Zonular or lamellar cataract to the component congenital cataract causing visual impairment. Best method for deciding immaturity of maturity and senile cataract is distant direct ophthalmoscopy. Cryoextraction is the safest method for intrascapsular technique in intumescent cataract.

Cataract :

1) Commonest cause of blindness in India is cataract.
2) Diminished vision in day light seen in central cataract.
3) Rosette cataract is caused by injury.
4) Vision in day light is poor in cupuliform cataract i.e. posterior subcapsular cataract.
5) Vision better in day light but reduced in dim light in cuneiform cataract (Cortical).
6) Most common site for concussion cataract is post cortex.
7) Continuous use of systemic steroids may lead to cataract.
8) Oil drop cataract seen in Galactosemia.
9) Earlier change seen in senile cataract is lamellar separation.
10) After cataract surgery, without lens implantation +10 D glass is prescribed.
11) Congential / developmental cataract - Lamellar or zonular, coronary, central / axial, blue dot cataract, sutural cataract, floriform cataract.
12) Acquired cataract- Cortical/Cuneiform, Nuclear, posterior subcapsular / cupuliform cataract.
13) In coronary cataract - Club shaped opacity.
14) In Blue dot cataract-Tiny bluish white opaque spots scattered all over the lens.
15) In sutural cataract - Tiny opaque spots are situated in Y sutures of lens.
16) Coralliform cataract - Opacities in central area of lens.
17) Floriform cataract - Opacities like petals.
18) Commonest type of cataract in children is Lamellar.
19) Immature cataract - Diagnostic criteria is - Greyish appearance of lens, presence of Iris shadow, finger count vision.
20) Endocrine cataract is - Diabetic cataract, parathyroid cataract, cataract in cretinism.
21) Infrared rays cause heat cataract.
22) U. V. rays produce senile cataract.

Myopia / Short - sightedness :

1] Parallel light rays are focused infront of retina when eyeball is at rest, without accommodation.
2] Increased antero posterior diameter of eyeball.
3] Increased curvature of cornea or lens.
4] Refractive index of the cortex or nucleus of lens varies than the normal - Index myopia.
5] Anterior dislocation of lens causes myopia.
6] Treatment: Myopia must never be over corrected. Biconcave lenses in form of spectacles, are prescribed.

Hypermetropia / Long - sightedness :

1) When eyeball at rest, without accomodation, parallel light rays are focused behind retina.
2) Shortening of length of eyeball.
3) Curvature of cornea or lens- Decreased, flattened.
4) Decrease in refractive index of lens as whole cause index hypermetropia.
5) Posterior dislocation of lens causes

hypermetropia.
6) Aphakic eyes are hypermetropic.
7) Hypermetropic eyes are predisposed to convergent squint and glaucoma.
8) Treatment - Biconvex lens.

Astigmatism :
1) In this, there is difference in degree of refraction in different meridians so that, each will focus parallel light rays at different points.
2) Astigmatism may accompany Myopia or hypermetropia.
3) Most commonly due to abnormality in curvature of cornea.
4) Treatment - Cylindrical lens
- For Irregular astigmatism-Contact lens.

Anisometropia :
1) There is difference in the status of two eyes.
2) Significant of difference is > 2.5 D.

Emmetropia: When eyelall is at rest, without accommodation focus parallel light ray's exactly on macula.

Miscellaneous:
1) Epiphora - Watering of the eyes due to obstruction in the outflow of lacrimal fluid.
2) Lacrimation- Excessive secretion of lacrimal fluid.
3) Complication of Dacrocystectomy - Life long epiphora.
4) Stye / External hordeolum - Suppurative inflammation of gland of zeis and follicles of eyelash.
5) Chalazion- Chronic granulomatous inflammation of Meibomian gland.
6) Internal hordeolum - Suppurative inflammation of Meibomian gland due to staphylococcus.
7) Trachoma is caused by Chlamydia trachomatis, a bedsonia group of organism.
8) Herberts follicles are seen in trachoma.
9) Trachomatous pannus seen in trachoma.
10) Ophthalmia neonatorum - is purulent conjunctivitis occurring during the first 3 weeks of life of a new born baby. It appears mostly on 2nd or 3rd day after birth.
11) Ophthalmia neonatorum is due to Gonococcus, staphylococcus, Pneumococcus.
12) Ophthalmia neonatorum is prevented by 1% silver nitrate.
13] Trichiasis - Misdirection of eye lashes but the lid margin remain in normal position.
14] Entropion - Inward rotation of lidmargin along with eyelashes.
15] Ectropion - Outward rotation of lidmargin.
16] Distichiasis - An extra row of misdirected eyelashes near opening of meibomian glands.
17] Lagophthalmos - Incomplete closure of palpebral aperture when an attempt to close the eyelids is made.
18] Tarsorrhaphy - Surgical joining of two lids to each other.
19] Blepharospasm - Spasm of orbicularis ocule muscle and the patient closes the eyelids tightly.
20] Ptosis - Drooping of upper eyelid.
21] Congential ptosis due to deficient development of Levator palpebrae superioris.
22] Acquired ptosis due to 3rd nerve palsy, senile muscular weakness, heaviness, of upper lid due to tumour, trachoma, oedema, hypertrophy.
23] Probe test is +ve in Pseudopterygium and -ve in pterygium.
24] Mc Reynold's operation is done for pterygium.
25] Chemosis - Oedema of conjunctiva.
26] Staphyloma - Bulging of eyeball along with uveal tissue.
27] Keratitis - Inflammation of cornea.
28] Purulent corneal ulcers - Hypopyon ulcer, Mycotic ulcer, Marginal ulcer.
29] Non-purulent corneal ulcers-Dendritic ulcer, Neurotic ulcer, Lagophthalmic ulcer.
30] Nutrition of cornea is from - Perilimbal plexus of blood vessels, Aqueous humour, oxygen from air.
31] Causes of corneal oedema - Increased IOP, Acute iritis, Endothelial dystrophy of cornea.
32] Treatment of corneal hypopyon ulcer - Atropine 1%, Antibiotic drops, Analgesic.
33] Medicine for corneal ulcer is Atropine.....?
34] Mycotic ulcer is due to fungal infection.
35] Dendritic ulcer is due to Herpes simplex virus.
36] Virus of Herpes zoster ophthalmicus spreads mainly along 1st division of Vth nerve (Trigeminal nerve)
37] Corneal opacity - Loss of transparency of corneal due to any inflammation, ulceration or trauma.
38] Types of corneal opacity - Nebula, Macula, Leucoma.
39] Nebula - Very faint, cloud like opacity which can be detected by oblique illumination only.
40] Macula - Slightly more dense and grey coloured spot.
41] Leucoma - Very dense white coloured scar.
42] Anterior uveitis - Inflammation of Iris and ciliary body or tridocyclitis.
43] Posterior uveitis / choroiditis - Inflammation of choroids.
44] Intense panophthalmitis - Intense purulent inflammation of all structures of eye ball.

45] Endophthalmitis - Acute inflammation in the posterior segment of eyeball especially choroids, retina and vitreous.

46] Tests done in glaucoma - Water drinking test, Dark room lest, and Priscol test.

47] Buphthalmos - Enlarged eyeball Increased IOP, cupping of optic disc, linear opacity of cornea.

48] Closed angle glaucoma - Blurring of vision Narrow angle of AC, Positive provocative tests.

49] Ocular hypotension seen in Phthisis bulbi, Retinal detachment, Choroidal detachment.

50] Deep Anterior chamber in - Aphakia, Buphthalmos Keratoconus, High myopia.

51] Shallow anterior chamber in - closed angle glaucoma, Adherent leucoma, Iris bombe, High hypermetropia, bandage.

52] Iris bombe - Bulging of iris.

53] Phthisis bulbi - Shrinkage of eyeball due to marked hypotony.

54] Proptosis / Exophthalmos - Forward bulging of eyeball

55] Total ophthalmoplegia - All the extrinsic and intrinsic muscles along with levator palpebrae superioris of one or both the eyes are paralysed.

56] Pathological cupping of optic disc is seen in glaucoma.

57] Aphakia - Absence of lens.

58] Aphakia is treated by +10D lens for distant vision.

59] Pseudophakia - ICCE / ECCE with IOL.

60] Nyctalopia - Night Blindness.

61] Hemeralopia - Day blindness.

62] Amblyopia - Partial loss of vision.

63] Diplopia - When an object appears double.

64] Squint / Strabismus - When one eye deviates from the fixation point.

65] Mydriatic and cycloplegic agents - produce dilation of pupil associated with some paresis or paralysis of accommodation (cycloplegia) e.g. Atropine, Homatropine, Cyclopintolate, Tropicamide, Adrenaline, Phenylephrine, Cocaine hydrochloride.

66] Miotics produce constriction of pupil eg. Pilocarpine, Eserine (Physostigmine), Ergotamine, Priscol.

67] Blindness (WHO) - Inability to count fingers In day light at a distance of 3 meters or visual acuity of less than 3/ 60 (Snellen).

68] National programme for control of Blindness was launched in 1976.

69] The irregularities in the corneal curvature is detected by using Placibo's disc.

70] Papilloedema - Oedema of optic disc.

71] Blepharitis - Chronic inflammatory condition of lid margins.

72] Visual centre - Area no. 17.

73] Epiphora occurs in chronic Dacryocystitis.

74] Lacrimal abscess and lacrimal fistula occurs in Acute Dacryocystitis.

75] (Lagophthalmos) - due to defect in VIIth nerve i.e. facial nerve.

76] Intraocular pressure increases in Glaucoma.

77] Severe itching can be seen in Blepharitis.

78] Presbyopia occurs in old age.

79] A new born is invariably Hypermetropic.

80] Cylindrical lens is used to correct Astigmatism.

81] Nystagmus - Rapid oscillatory movements of eye.

82] Hypertensive retinopathy - Flame shaped haemorrhages.

83] In Diabetes mellitus - Salt and pepper appearance of fundus.

84] Bell's palsy is upper motor palsy of 7th nerve.

85] Blindness is common in Diabetics.

86] LASER - Light Amplification by stimulated Emission of Radiation.

87] Laser is useful in - Diabetic Retinopathy, central serous retinopathy, Hypertensive retinopathy.

88] Senile Arcus is due to deposition of Lipid.

89] Refractive index of :
Air - 1, Aqueous and vitreous - 1.33
Cornea - 1.37 Lens - 1.42

90] Intraocular lens is indicated in - Diabetic retinopathy.Unilateral cataract, High myopia.

91] Presbyopia is caused due to change in Amplitude of accommodation.

92] Blindness in Leprosy is commonly due to Lagophthalmos.

93] Swimming pool conjunctivitis caused by Chlamydia.

94] Optic neuritis seen in Multiple sclerosis, Meningitis, Periarteritis nodosa.

95] Drug used to check refraction in infants is 2% Atropine drops.

96] Marginal ring ulcers of cornea occurs in infection with Brucella.

97] In Astigmatism, after refraction, the light rays come to focus - Some infront of retina, some behind the retina and some at retina.

98] 3rd nerve paralysis - Ptosis, cycloplegia, fixed dilated pupil (not in convergent squint).

99] Night blindness present in vit A deficiency Retinitis pigmentosa, Quinine toxicity (not in Nuclear cataract).

100] Commonest organism causing corneal ulcer is strepto pneumoniae.

101] Sudden unilateral disease invisition occurs in central retinal artery thrombosis.

102] Fovea centralis contains cones only.

103] Distance between cornea and retina-24 mm.
104] Lacrimal nerve is branch of ophthalmic nerve.
105] Nerve supply of lower lid is maxillary.
106] Bowman's membrane in cornea.
107] Bowman's capsule in Kidney.
108] Corneal epithelium is squamous.
109] Canal of schlemn is a channel between AC and PC.
110] In presbyopia, lens used are Bifocal, Toric, Tinted.
111] Emmetropia is not refractive error.
112] Most common mode, of infection for ophthalmia neonatorum - during birth.
113] Radius of curvature of anterior surface of cornea - 3.6 mm.
114] Radius of curvature of post surface cornea - 6.8 mm.
115] Radius of curvature of out surface lens - 10 mm.
116] Radius of curvature of post surface of lens - 6 mm
117] Staining of cornea is done by 2% fluroscein.
118] Thickness of middle or central part of cornea - 0.5 mm.
119] Diameter of central zone of cornea - 4 mm.
120] Total absence of the reaction of pupil to light is called as Argyl Robertson Pupil.
121] Argyl Robertson Pupil - Small pupil, No dilatation with, atopine.
122] Adies pupil - Dilated tonic pupil, Dilated with atropine.
123] In sleep, Pupil is constricted.
124] Tears are produced after 1st week of life.
125] Total dioptric power of normal eye +58 to +60D.
126] Total dioptric power of cornea - +42 to +43D.
127] Visual pathway - Optic nerve, optic chiamsa, Lateral geniculate body.
128] Length of Superior rectus muscle - 8 mm.
129] Length of Lateral rectus - 7 mm.
130] Angular conjunctivitis caused by Moraxella.
131] Surgical treatment of myopia is Radial keratotomy.
132] Fixation of eyeball is with superior rectus stich.
133] No. of Meibomian glands in each eyelid - 20 - 30.
134] Muller's muscle innervated by symphathetic chain.
135] The pigment present in Rods is Rhodopsin which is essential for night vision.
136] The pigments present in cones are erythrolabe, Chlorolabe, and Cyanolabe - essential for colour vision specially Red, green and Blue.
137] Scotopic vision - Rods are more sensitive and get stimulated by very low intensity, or dim light in the night and this vision is called "Scotopic vision".
138] Photopic vision - The bright light in the day stimulate the cones and this vision is called "Photopic vision".
139] Visual Acuity - The greatest ability to differentiate between the shapes of the objects.
140] The normal colour vision is called Trichromatic.
141] Colour blindness is called "Dichromatism".
142] Protanopes - Red blindness Deutanopes - Green blindness. Fritanopes - Blue blindness. Protanamalous - Partial red blindness.
143] Frontalis muscle is responsible for eye movements.
144] Oculomotor nerve is needed for movements of eyeball.
145] Neurotic layer of eye is termed as retina.
146] Vascular layer of eye is choroids.
147] Vascular coat of eye consists of Iris, ciliary body and choroids.
148] Iris + ciliary body are combindly called - Anterior uvea.
149] Choroid - Posterior uvea.
150] Fibrous coat of eye - Sclera, cornea.
151] Nervous coat - Retina, optic nerve.
152] Orbital cavity is formed by 8 bones.
153] Eyeball is suspended in the orbital cavity by Tennon's capsule.
154] Superior oblique is also called copying muscle.
155] Development of cataract, vit deficiency associated is-vit B2(Riboflovin),vit.C,vit D.
156] Chemosis occurs in Bulbar conjunctiva.
157] Normal cup disc ratio is 1:0.3.
158] Madarosis - Absence of cilia.
159] In Hypermetropia-Optic disc is slightly smaller.In Myopia - optic disc is larger.
160] Total Refraction power of eye - +60 D Cornea - +45 D, Lens - +15D
161] Keratic precipitates or KP bodies are seen in Anterior uveitis / Iridocyclitis.
162] LASIK is most advanced myopic refraction surgery.
163] Commonest intraocular tumour of childhood is Retinoblastoma.
164] Silver wire reflex and Copper wire reflex is seen in Hypertensive retinopathy.

Types of Wo

Point
1) Production
2) Site
3) Shape
4) Margins
5) Dimension
6) Hair and bl Vessels -
7) Haemorrha
8) Surroundin
9) Foreign bo

Tuberculo

Category	T
Cat. - I	N S
	S sp v
	S p
Cat.- II	S +
	S +
	S + d
Cat. III	S -v il
	E n

2 (HRZE)3 -

Types of Wound

Point	Laceration	Incised wound	Stab wound
1) Production	Blunt objects	Objects with sharp cutting edge	More or less pointed objects
2) Site	Usually over bony prominence	Any where	Anywhere usually chest or abd
3) Shape	Usually irregular	Linear or spindle Shaped	Depends on the weapon.
4) Margins	Irregular	Clean cut and everted	According to nature of weapon Inverted at entry.
5) Dimension	Variable	Longer than deep but often, gaping	Depth greater than length and breadth
6) Hair and blood Vessels -	Crushed	Crushed, clean cut	Variable
7) Haemorrhage	Not profused	Usually profuse	Varies
8) Surrounding	Bruising usually pesent	Bruising not present	Varies
9) Foreign bodies	Present	Non free	May or may not present

Tuberculosis Chart

Category	Type of Patient	Regimen	Pre T/t sputum	Test at Month	If result is	Then
Cat. - I	New sputum Smear + ve	2 $(HRZE)_3$	+	2	-	Start continue phase sputum after (4-6) month
					+	Continue intensive phase for 1 month
	Seriously ill sputum Smear - ve	4 $(HR)_3$	-	2	-	Start continuation phase test after 6 month
	Seriously ill extra pulmonary				+	Continue intensive phase for 1 month sputum at 3,4 and 7 month
Cat.- II	Sputum smear +ve relapse	2 $(HRZE)_3$	+	3	.-	Start continuation phase, then sputum (5 to 6) month
	Sputum smear +ve failure	1 $(HRZE)_3$			+	Continue intensive phase for 1 month, then sputum 4,6,9 month
	Sputum smear +veT/t after default	5 $(HRE)_3$				
Cat. III	Sputum Smear -ve not seriously ill	2 $(HRZ)_3$	-	2	-	Same as above
	Extra pulmonary not seriously ill	4 $(HR)_3$			+	Register the pt. & begin cat. II T/t.

2 (HRZE)3 - 2 = Month of T/t
3 = no. of doses/ week

H = Isoniazid - 600 mg
E = Ethambutol - 1200 mg
R = Rifampicin - 450 mg
S = Streptomycin - 750mg
Z = Pyrazinamide -1500 mg.

Vaccine Chart

Disease	Dose	Route	Immunity
Cholera	0.5ml (2 dose)	S/C	6 days after inoculation
Plague	(2 dose)	S/C or IM	5-7 days after lasts for 6 month
Typhoid fever	0.5 ml (2 dose)	S/C	10-21 days
Influenza	1.0 ml (2 dose)		Last for 3 to 6 month
Yellow fever	0.5 ml	S/C	(10-12) day expands upto 10 year.

FMT : In Identification

MALE

1) Skeleton comparatively bigger and stouter, weight approx 4.5 kg
2) Skull - Bigger heavier and more rugged
3) Cranial Capacity almost 10% more
4) Fronto nasal Angulation distinct
5) Frontal sinus more developed
6) Thorax : Thoracic cage longer and narrower
7) Ribs are less pronounded curvature and are less oblique
8) Mandible : Spmphysis menti (Chin) square
9) Mandilde - Angle region - everted
10) Spinal coloumn - Lumbar lordosis less marked
11) Mean breath of 1st cervical vertebra 83 mm
12) Pelvis : Inlet - Deep and Narrow
13) Ilium - Less expanded
14) A.S.I.S. - Not widely separated
15) Greater sciatic notch narrow deep and less than 90^0
16) Ischial tuberosities Inverted
17) Obturator foramina - Ovoid
18) Suprapubic Arch 'V' shaped narrow, angle < 70^0 and hence less distance between ischia
19) Femur : The head of femur is larger and articular surface forms more than 2/3 of sphere.
20) Neck of femar forms an obtuse angle with the shaft
21) Vertical diameter of femoral head - > 47 mm
22) Bicondylar width > 78 mm
23) Sacrum Index (SI) - 116
24) Ischio - pubic Index (IPI) - 73 - 94
25) Humerus - Vertical diameter of humeral head is > 45.5 mm.

FEMALE

1) Skeleton Comparatively smaller and slender, weight approx 3.00 kg
2) Smaller, lighter and less rugged
3) Cranial capacity almost 10% less
4) Fronto nasal angulation not well marked
5) It is less developed
6) It is shortor and wider
7) Ribs are more pronounced curvature and more oblique
8) Symphysis menti (Chin) pointed or Rounded
9) Angle region - not everted
10) Lumber lordosis more marked
11) Mean breath of 1st cervical vertebra 72 mm
12) Inlet - Shallow and wide
13) Ilium - More expanded
14) A.S.I.S. widely separated
15) It is wide, shallow almost 90^0 or more
16) Ischial tuberosities everted
17) It is triangular
18) It is wide and U shaped, angle > 90^0 and hence more distance between Ischia.
19) It is smaller and articular surface forms less than 2/3 of sphere
20) Femur - Neck shaft angle - 90^0
21) Vertical diameter of femoral head < 45.
22) Bicondylar width < 74 mm
23) S.I. - 112
24) IPI - 91 - 115
25) It is less than 41.5 mm

Pathology

Test/Factor	Increase in	Decrease in
1) Aspartate amino transferase (0-35UL)	Myocardial infarction, liver diseases, severe Burn	Beriberi, uncontrolled DM,
2) Sr Bilirubin	Conjugated - Liver dysfunction or gall stone Unconjugated - Excessive hemolysis of RBC	-
3) Sr. Blood Urea Nitrogen	Kidney disease, Urinary tract obstruction, shock, DM, BUM, MI, dehydration	Liver failure, Malnutrition, Overhydration, pregenancy.
4) Cholesterol	Hypercholesterolemia, Uncontrolled DM, Hypothyrodism, HTN, Artierosclerosis, Nephrosis	Liver disease Hyperthyrodism, Fat, Malabsoption, pernicious or Hemolytic anaemia, Severve infection
5) Sr. creatinine	Muscular dystrophy, Muscle damage, electric shock, Chronic Alcoholism	-
6) Creatine kinase (Sr. CPK)	Myocardial infarction (MI), Muscular dystrophy, Hypothyroidism, Pulmonary Oedema.	-
7) Sr. Creatinine	Impaired renal function, Giantism, Acromegaly	Muscular dystrophy, Myasthenia gravis.
8) BSL	Diabetes mellitus , Acute stress, Hyperthyrodism, Chronic liver disease, Cushing's disease	Addison's disease, Hypothyroidisum, Hyperinsulinism
9) Hb %	Polycythemia, CHF, Chronic Obstructive pulmonary disease, High Altitude.	Anaemia, Severe haemorrhage, Cancer, Hodgkins, VitB_{12} def, SLE, Kidney disease.
10) Sr. Iron	Liver disease, Haemolytic Aaenemia, Iron poisoning	Iron deficiency Anaemia or. Blood loss, pregnancy, Heavy Menstruation.
11) Platelet	Cancer, Trauma, Leukemia, cirrhosis.	Anaemia, Allergic condition, Haemorrhide.
12) Sr. Protein	Dehydration, shock, Cr.Infection.	Liver disease, Haemorrhage, Diarrhoea, Malabsorption, cr. renal failure, severe burns.
13) RBCS	Lung, Liver & kidney disease, polycythemia, dehydration, high altitude, some cancer, severe burn	Thalacemia, sickle cell anemia haemorrhage, Anaemia, IBS, Tumour, Addisons disease, Cancer, Overhydration.
14) WBCS	Acute infection, Trauma, Malignant disease, Cardiovascular disease, Inflammation, Rheumatiod, Arthritis, Tuberculosis	Diabetes mellitus, Anaemia, Chemotherapy, Reaction to Medicine, Aplastic Anaemia, Viral infection, Malaria, AIDS, Cushing syndrome, Spleenomegaly.
15) PCV (Haematocrit)	Same as RBC	Same as RBC.
16) MCV & MCH	B_{12} & folate deficiency	Iron deficiency & Thalacemia.
17) MCHC	Hereditary, Spherocytosis	Iron deficiency Anaemia & Thalasemia .
18) RDW- Red cell distribution width	Pernicious Anemia	-
19) ESR	Infection, Inflammation, Kidney failure, Anemia, pregnancy & old age, Drugs Oral contraceptives, dextran, Methyldopa penicillanine, Theophylline, Vit-A	Polycythemia, Extreme leucocytosis, Protein abnormalties Drugs - Aspirine & Quinine.
20) pH of Urine	Alkaline - Kidney disease, some UTI, and Asthama	Acidic- Emphysema, Uncontrolled diabetes, Alcoholism, Dehydration.

Section - III MCQ

चरक संहिता

01. 'आहार स्वप्न ब्रम्हचर्य' ये ..... है।
a. त्रिसूत्र b. त्रिस्कन्ध c. त्रिउपस्तंभ d. All

02. मूलप्रवृत्तियाँ कितनी है। (च.सु.11/3 विमर्श)
a. 10 b. 12 c. 14 d. 16

03. प्रत्यक्ष ज्ञानबाधक हेतू कौनसा है।
a. अतिसन्निकर्षात b. करणदौर्बल्यात् c. अभिभवात d. All

04. शिष्टा विबुद्धास्ते तेषां वाक्यमसंशयम्, सत्यं वदन्ति ते कस्मादसत्यं नीरजास्तमा, किसका लक्षण है।
a. वैद्य b. मूर्खवैद्य c. आप्त d. विपक्षी

05. 'रक्तादयत्वक' कौनसे रोगमार्ग में समाविष्ट है।
a. शाखा b. मर्मस्थिसंधि c. कोष्ठ d. a & b

06. 'विसर्पश्वयथुगुल्मार्शोविद्रधि' आदी व्याधी कोनसे रोगमार्ग में होती है।
a. शाखा b. मर्मस्थिसंधि c. कोष्ठ d. a & b

07. 'वैद्यभाण्डौषधैः पुस्तैः पल्लवैखलोकनैः ... ।' ये किसके लक्षण है।
a. छद्मचर वैद्य b. सिद्धसाधित वैद्य
c. वैदय गुणयुक्त वैद्य d. अभेषज

08. 'कोष्ठ' का पर्याय कौनसा है।
a. महास्त्रोतः b. शरीरमध्य c. आमपक्वाशय d. All

09. तिस्त्रैषणा मे 'पुत्रैषणा' किसने माना है।।
a. उपनिषद b. आयुर्वेद c. भेल d. हारित

10. मंथ मन्थन मन्थान संयोगाद अग्निसंभव, ये कौनसा प्रमाण है।
a. आप्तोपदेश b. प्रत्यक्ष c. अनुमान d. युक्ती

11. चरक विमान स्थान में अध्यायों की संख्या है ?
a. 8 b. 10 c. 12 d. 30

12. विमान स्थान का उपदेश दोष आदि के मान के ज्ञान के लिए किया गया है - उपरोक्त कथन है।
a. सत्य b. असत्य c. a & b d. None

13. रसों के सम्यक प्रयोग से होता है।
a. दोष प्रकोपण b. विकार प्रभाव
c. शरीर यापन d. सभी

14. रसानां परस्परेणासंसृष्टानां है।
a. 6 b. 57 c. 62 d. 63

15. विकृति विषमसमवेत का उदाहरण है।
a. सन्निपातज रोग b. द्वन्द्वज रोग
c. वातिक d. सभी

16. विपाक प्रभाव का अन्तर्भाव किया गया है।
a. रसप्रभाव में b. द्रव्य प्रभाव में
c. दोष प्रभाव में d. विकार प्रभाव में

17. तैल, घृत, मधु क्रमशः वात, पित्त, कफ को शान्त करते है।
a. रसप्रभाव में b. द्रव्य प्रभाव में
c. दोष प्रभाव में d. विकार प्रभाव में

18. रसविमानाध्याय में कितने द्रव्यों की अधिक मात्रा सेवन वर्ज्य है।
a. 1 b. 3 c. 5 d. 6

19. रसविमानध्याय में सात्म्य के भेद बताये है।
a. 2 b. 3 c. 7 d. b & c

20. सर्वतश्च ग्रहः .....
a. सर्वग्रह b. परिग्रह c. असर्वग्रह d. अपरिग्रह

21. रसायन एवं वाजीकरण के कुलयोग है।
a. 63,40 b. 36,50
c. 63,50 d. 50,63

22. कूटी प्रावेशिक रसायन संबंधित असत्य है।
a. त्रिगर्भासुक्ष्मलोचनाम् b. दिशिपूर्वोत्तर
c. त्रिगर्भाअलोचनाम् d. स्त्रीविवर्जिताम्

23. हरितकी के संबंध में गलत है।
a. वयसः स्थापनी पराम् b. सर्वरोगप्रशमनी
c. आयुष्यां पैष्टिकी धन्यां d. None

24. ज्ञात्वा गतरसा किसके संदर्भ में कहा है।
a. ब्राह्म्यरसायन b. द्वितीय ब्राह्म्यरसायन
c. चव्यनप्राश d. आमलक रसायन

25. अस्य प्रयोगाद वर्षशतमजरमायुस्तिष्ठतीती समानपूर्वेण किसके संदर्भ में है।
a. अपर आमलक अवलेह b. आमलक चूर्ण
c. आमलक अवलेह d. सभी

26. नागबला का संग्रह किस ऋतू में करते है।
a. हेमन्त b. शिशिर c. ग्रीष्म d. शरद

27. अपत्यकर क्षीर संदर्भ - वाजीकरण पाद?
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

28. पूष्टीबल प्रदा: के लिए ------ वाजीकरण पाद वर्णित है।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

29. अनेनाश्व इवार्दीर्णो बली लिंग समर्पयेत।
a. बृंहणी गुटिका b. वाजीकरण पिण्डरस
c. Both d. None

30. वृष्य पूपलिका योग वाजीकरण के कौनसे पाद में वर्णित है।
a. 2 b. 3 c. 4 d. सभी

31. 'वातकलाकलीय' अध्याय में वात के गुण किसने वर्णन किये ?
a. कुमारशिरा भारद्वाज b. कांकायन
c. कुश d. बडिश धामार्गव

32. प्राकृत वायु का कर्म कौनसा है।
a. वायुस्तन्त्रयन्त्रधरः b. प्रकृति शब्दस्पर्शयो
c. दोषसंशोषण d. All

33. आकम्पनं च भूमेः आधमनम्बुदानां, शिखरीशिखरावमभन आदी क्या है।
a. प्राकृत शरीर वायु कर्म b. विकृत शरीर वायु कर्म
c. प्राकृत लोक वायू कर्म d. विकृत लोक वायु कर्म

34. पित्त के बारे में किसने वर्णन किया है।
a. कांकायन b. काप्य c. मरिच d. कुश

35. शरीर मे 'स्निग्धगुरूमृदुश्लक्ष्णपिच्छिलघनकराणि' ये गुण किसके है।
a. वातप्रशमनानि b. वातप्रकोपनानि
c. कफप्रशमनानि d. कफप्रकोपनानि

36. वातकलाकलीय अध्याय में वायु के कितने गुण बताये है।
a. 7 b. 5 c. 6 d. 88

37. ..... एव शरीरे श्लेष्मान्तर्गतः कुपिताकुपित शुभाशुभानि करोती।
a. स्नेह b. ओज c. सोम d. Nine

38. वृषताक्लिबतां ज्ञानमज्ञानं बुर्ध्दि मोहमित्येवमादिनी किसके कर्म है।
a. वायू b. पित्त c. कफ d. ओज

39. प्रकृतिविकृतीवर्णो शौर्य भय क्रोधं हर्ष मोहं किसके अंतर्गत है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. All

40. सर्वेषां तैलजातानां ..... तैल विशेष्यते।
a. तिल b. एरंड c. वातनाशक d. a & c

41. जिसके अश्रित ओक सात्म्य होता है, उसे कहते है ?
a. उपयोक्ता b. उपयोगसंस्था
c. आहार विधिविधान d. सभी

42. अति मात्रा में आहार लेने से भ्रम किस दोष के प्रकोप से होता है?
a. कफ b. पित्त c. वात d. a & c

43. आमदोष के प्रकार है?
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

44. सलवण उष्ण जल से वमन द्वारा सर्व प्रथम चि. करते है।
a. अलसक b. दण्डालसक c. विसूचिका d. सभी

45. आमविष होता है ।
a. परमअसाध्य b. आशुकारी
c. विरूध्दोपक्रमवाला d. All

46. आमदोष की चिकित्सा करते है ?
a. संतर्पण से b. अपतर्पण से
c. बृंहण से d. स्नेहन से

47. आमदोष से विमुक्त व्यक्ति की चिकित्सा करते है ।
a. अभ्यंग से c. स्नेहपान से
b. आस्थापन, अनुवासन बस्ति से d. सभी से

48. आशित, खादित, पीत, लीढ़ उपरोक्त चारों प्रकार के आहार का पाचन कहाँ होता है ।
a. आमाशय b. ग्रहणी c. उण्डूक d. पक्वाशय

49. आचार्य भेल ने जनपदोध्वंस को कहा है ।
a. मरक b. जनमार c. जनपदोध्वंस d. All

50. जनपदोध्वंस के भाव सामान्य है ।
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

51. निष्प्रत्याणिकः कुरूते तस्मान्ज्ञेयः सु दुःसह।
a. सन्तत b. सतत c. अन्येद्युष्क d. तृतीयक ज्वर

52. वात पित्त प्रधान से होनेवाला तृतीयक ज्वर---- उत्पन्न करता है।
a. त्रिकग्रह b. पृष्ठ ग्रह c. शिरःशूल d. सभी

53. गात्रविक्षेप लक्षण ---- ज्वर का है।
a. मांस, अस्थिधातूगत b. मांस,मेदधातू गत
c. रक्त, मांसगत d. अस्थिमज्जागत

54. नवज्वर में निषेध है।
a. कषाय b. व्यायाम c. दिवास्वप्न d. सभी

55. तृष्णा लगने पर उष्ण जल प्रयोग ------ ज्वर में बताया।
a. वात पित्त b. वात कफ c. पित्त कफ d. त्रिदोष

56. यवागू निषेध है।
a. मदात्यय b. मद्यनित्य c. ग्रीष्मऋतूमें d. सभी

57. किराततिक्तादी क्वाथ उपयोगी है।
a. सन्तत b. सतत
c. अन्येद्युष्क d. तृतीयक

58. पित्तप्रधान ज्वर में वमनार्थ द्रव्य
a. मदनफलपिप्पली b. मदनफल, कलिंगक
c. मदनफल, मधुक d. सभी

59. ------ स्थानानुपूर्व्यां वा सन्निपातज्वरं जयेत्।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोष

60. उपवास चिकित्सा किस धातूगत ज्वर में बतायी है।
a. रस,रक्त b. रस, मांस c. रक्त, मांस d. रक्त, मेद

61. ..... तैल अग्र्य तु विरेचने
a. तिल b. एरंड c. a & b d. None

62. त्वच्यमुष्णं स्थिरकरं योनिविशोधन किसके गुण है ।
a. घृत b. वसा c. तैल d. मज्जा

63. 'बल्या शरीरेन्द्रियचेतसाम् पुनर्नवकारी' ये किस स्नेहमात्रा के गुण है ।
a. प्रधानस्नेहमात्रा b. मध्यम c. ऱ्हस्व d. a & c

64. स्नेहपान अयोग्य कौन है ।
a. जिनको विरेचन देना है b. जिनको नस्य देना है
c. जिनको बस्ति देनी है d. b & c

65. स्नेहपान के बाद क्या करना चाहिये ?
a. उष्णोदकोपचारी b. ब्रह्मचारी
c. क्षपाशय d. All

66. स्नेह विचारणा सेवन योग्य कौन है ।
a. स्नेहव्देषिः b. स्नेहनित्या c. मद्यनित्य d. All

67. ..... स्नेहने न प्रयोजयेत ?
a. कुष्ठी b. शोथी c. प्रमेही d. All

68. विद्धभग्नहत भ्रष्टयोनि कर्णशिरोरूजि, किसके गुण है ।
a. मज्जा b. तैल c. वसा d. घृत

69. वसामज्जा सेवन के बाद अनुपान क्या है ।
a. यूष b. मंड c. सूप d. यवागू

70. मध्यम स्वेद कहाँ दिया जाता है ।
a. वृषण b. वंक्षण c. हृदय d. दृष्टि

71. जनपदोध्वंस का सर्वाधिक अप्रधान कारण है।
a. वायु b. जल c. देश d. काल

72. किसका मूल कारण अधर्म है।
a. सभी रोगों का b. वातादि के वैगुण्य का
c. जनपदोध्वंस का d. सुख का

73. निम्न में अधर्म मूल है।
a. युद्ध में मृत्यु b. भूतादि आक्रमण
c. शाप d. All.

74. परिग्रह से उत्पत्ति होती है ।
a. आलस्य b. संचय c. लोभ d. श्रम

75. एक युग के ऱ्हास से अधर्म के कितने पाद का क्षय होता है ।
a. एक पाद b. दो पाद c. तीन पाद d. चार पाद

76. एक युग के कितने भाग समाप्त होने पर मनुष्य की आयु 1 वर्ष कम हो जाती है ।
a. 1 भाग b. 1/10 भाग c. 1/100 भाग d. 1/1000 भाग

77. प्राणियों की आयु का बलाबल आधारीत होता है।
a. दैवपर b. पुरूषार्थ पर
c. Both d. None

78. युक्ति की अपेक्षा करता है।
a. प्राणियों की आयु b. अनुमान प्रमाण
c. Both d. None

79. उष्ण जल करता है।
a. वातानुलोमन b. कफशोषण
c. तृष्णा शमन d. All

80. किस देश में स्वल्प रोग होते है।
a. साधारण b. आनूप c. जांगल d. None

81. उर्ध्वगे----पूर्व---- पूर्वमधोगते ।।
a. मण्ड, पेया b. तर्पण, पेया c. तर्पण, विलेपी d. मण्ड, विलेपी

82. गुल्म चिकित्सा में वायू को प्रकोप होने से कब रोकना चाहिए।
a. प्रारंभ में b. मध्य में c. अन्त में d. सभी

83. तैलपंच
a. प्रस
84. सिध्म
a. पृष्ठ
85. कनकबि
a. सुवा
86. महाखदि
a. पान
87. खदिराद
a. च. ि
88. यवानी
a. 50
89. कुर्यात
a. तीक्ष्ण
90. पुराण घृ
a. अम्ल
91. षोडश अ
a. कुटी
92. निरग्नि स्वे
a. आ
93. आमाशय
a. रूक्ष
b. स्निग्ध
94. व्याधौ शी
a. महा
95. स्वेद अयो
a. काम
96. वस्त्रान्तरितै
a. पिंड
97. वमनौषधि
a. सुखो
98. वमनौषधि
a. 1 मु
99. सम्यक विरे
a. नस्य
100. फेनिलरक्त
a. वमन अ
101. युक्ति का
a. प्रत्यक्ष
102. "न हि ज्ञान
a. जनपदो
c. रोगानी
103. प्रमाणों के
a. प्रत्यक्ष,
c. आप्तो
104. बल की परी
a. अग्नि से
105. गूढलिंगव्या
a. उपशया
c. सुख दु

83. तैलपंचक में नही है।
a. प्रसन्ना b. गोमूत्र c. आरनाल d. गोदुग्ध

84. सिध्म कुष्ठ का प्राय: स्थान है। चरक
a. पृष्ठ b. उर c. शिर d. हस्त

85. कनकबिन्द्वरिष्टम् मुख्य घटक है।
a. सुवर्ण b. धत्तूर c. खदीर d. आमलकी

86. महाखदिर घृत का प्रयोग होता है।
a. पान b. अभ्यंग c. Both d. बस्ति

87. खदिरारिष्टं वर्णित है।
a. च. चि. 7 b. च. चि. 8 c. च. चि. 23 d. च. चि. 26

88. यवानी षाडव में मरिच संख्या....।
a. 50 b. 100 c. 150 d. 200

89. कुर्यात आवृत्त मार्गे तु सस्नेह----शोधनम्। च. चि. 9/25
a. तीक्ष्ण b. मृदू c. अल्प d. मध्य

90. पुराण घृत का रस होता है।
a. अम्लतिक्त b. कटूतिक्त c. कषायतिक्त d. कटूकषाय

91. षोडश अरत्नि अनेकावातायनो से युक्त कुटागार कौनसे स्वेद में वर्णित है।
a. कुटीस्वेद b. जेन्ताक c. कुप d. a & b

92. निरग्नि स्वेद कौनसा है।
a. आहव b. उपनाह c. तृष्णा d. a & b

93. आमाशयगत वात में कौनसा स्वेद देते है।
a. रूक्ष c. प्रथमरूक्ष बाद मे स्निग्ध
b. स्निग्ध d. प्रथमस्निग्ध बाद मे रूक्ष

94. व्याधौ शीते शरीरे च महाबले कौनसा स्वेद देना चाहिये।
a. महानस्वेद b. मध्यमस्वेद c. हीनस्वेद d. जेन्ताकस्वेद

95. स्वेद अयोग्य व्याधि कौनसी है।
a. कामला b. उदर c. तिमिर d. All

96. वस्त्रान्तरितैरवस्त्रान्तरितैर्वा पिण्डैर्यथोक्तैपस्वेदनं ..... इति विद्यात्।
a. पिंडस्वेद b. तापस्वेद c. संकरस्वेद d. प्रस्तरस्वेद

97. वमनौषधि किस व्यक्ती को देनी चाहिये।
a. सुखोषित b. शिर:स्नात c. अनुलिप्तगात्र d. All

98. वमनौषधि पानके पश्चात कितनी देर तक प्रतिक्षा करे।
a. 1 मुहूर्त b. 2 मुहूर्त c. 1 प्रहर d. 3 मुहूर्त

99. सम्यक विरीक्तस्य चैवं वमनोक्तेन ..... वर्जेन विधी कारयेत्।
a. नस्य b. गंडूष c. धूमपान d. None

100. फेनिलरक्तचन्द्रिकोपगमन' ये किसके लक्षण है।
a. वमन अयोग b. वमन अतियोग c. विरेचन अयोग d. विरेचन अतियोग

101. युक्ति का अन्तर्भाव होता है में।
a. प्रत्यक्ष b. अनुमान c. आप्तोदेश d. All

102. "न हि ज्ञानावयवेन कृत्स्तेज्ञेये ज्ञानुमुत्पद्यते" सन्दर्भ आया है।
a. जनपदोध्वंसनीय विमान b. त्रिविधरोगविशेष विज्ञानीय विमान
c. रोगानीक विमान d. रोगभिषज्जितीय विमान

103. प्रमाणों के द्वारा ज्ञानउत्पत्ति क्रम है।
a. प्रत्यक्ष, अनुमान, आप्तोपदेश b. अनुमान, आप्तोदेश, प्रत्यक्ष
c. आप्तोपदेश, प्रत्यक्ष, अनुमान d. कोई भी

104. बल की परीक्षा करते है।
a. अग्नि से b. जरणशक्ति से c. हर्ष से d. व्यायामशक्ति से

105. गूढलिंगव्याधि की परीक्षा करते है।
a. उपशयानुपशय से b. अरिष्ट से
c. सुख दु:ख से d. प्रश्न से

106. मेधा की परीक्षा करते है।
a. स्मरण से b. ग्रहण से c. नामग्रहण से d. लौल्य से

107. ज्ञान सम्पन्न वैद्य के लिए कितने प्रकार की परीक्षा होती है।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

108. न हि भिन्नेकेदारसेतौ पल्वलाप्रसेकोऽस्ति है।
a. लंघन b. लंघन पाचन c. दोषावसेचन d. अपतर्पण

109. अतिशुष्कअन्नसेवन से कौन से स्रोतस दुष्ट होते है।
a. प्राणवह b. उदकवह c. अन्नवह d. रसवह

110. भुक्त्वां च स्वपतां दिवा कौन से स्रोतोदुष्टि के हेतु है।
a. शुक्रवह b. मेदवह c. रसवह d. मांसवह

111. उन्माद की चिकित्सा अपस्मार समान करनी चाहिए क्यो की दोनों में साम्य है।
a. हेतू दूष्य b. दोष दूष्य c. हेतू लक्षणे d. संप्राप्ति

112. शतावरी घृत अधिकार।
a. च. चि. 4 b. च. चि. 2 c. च. चि. 40 d. च. चि. 26

113. मन्दैऽग्नो वर्धते-दिप्तोऽग्ने प्रशाम्यति---।
a. अतिसार b. ग्रहणी c. उदर d. गुल्म

114. बीज दोष के कारण असाध्य है।
a. जात प्रमेह b. मधुमेह c. Both d. None

115. हिक्काश्वास कि चिकित्सा समान करनी चाहिए क्योकी दोनों में साम्य है।
a. हेतू, स्थान, मूल b. हेतू, पूर्वरूप, रूप
c. हेतू, लक्षण d. रूप, उद्भवस्थान

116. पित्त वृध्दी में चाटकर खाना और वात वृध्दी में पान किसके संदर्भ में है।
a. श्वदंष्ट्रादी घृत b. अमृतप्राश घृतम्
c. धात्रीफलाद्य घृत d. द्वितीय सर्पिगुडा

117. क्षतक्षीण में पथ्य किस व्याधि समान बताया है।
a. राजयक्ष्मा b. कास c. रक्तपित्त d. सभी

118. पित्तवात से उत्पन्न शोथ में चिकित्सा
a. निरूह b. विरेचन c. तिक्त घृत d. गोमुत्र को दूध के साथ

119. विरूध्द भैषज्य विधि विर्वज्य: कहा है।
a. त्रिदोषज ज्वर b. कुष्ठ चि. c. त्रिदोष अपस्मार d. त्रिदोषज उन्माद

120. ग्रंथी और अर्बुद कि चिकित्सा एक हि है क्योंकी---- साम्य है।
a. स्थान, हेतू b. दोष, दूष्ये c. आकृती d. सभी

121. वमनौषधि सेवनपश्चात तस्य तदा जानीयात् - लोमहर्षेण ..... ।
a. दोषं प्रविलयनमापद्यमानं b. स्थानेभ्यं प्रचलित
c. कुक्षिमागतम d. None

122. संशोधन से क्या लाभ होते है।
a. सम्यक् आयुषा युज्यते b. मलापहं c. रोगहरं d. All

123. सम्यकविरीक्त लक्षण कौनसा है।
a. दौर्बल्य b. लाघव c. ग्लानि d. All

124. ..... ये विरेचन अयोग का लक्षण नही है।
a. ष्ठीवनं b. हृदयाशुद्धि c. श्लेष्मपित्तोक्लेश d. वेगप्रवर्तनम्

125. उर्ध्वगा वातरोगा:, वाग्ग्रह ये ..... अतियोग के लक्षण है।
a. विरेचन b. वमन c. शिरोविरेचन d. शिरोबस्ती

126. दोषा: कदाचित् कुप्यन्ति जिता ..... ।
a. लंघनै b. संशोधनै c. पाचनै d. a & c

127. ..... ये संशोधन का फल है।
a. विशुद्धकोष्ठ b. कायाग्निऽभिवर्धन
c. व्याधयञ्चोपशाम्यन्ति d. उपरोक्त सभी

128. संशोधन अतियोग में ..... पान करे।
a. सर्पी b. वसा c. मज्जा d. कांजी

129. जायन्ते हेतुवैषम्याद्विषमा देहधातवः ।
हेतुसाम्यात् समास्तेषा ..... सदा ।
a. स्वभाववाद b. स्वभावोपरमः
c. सांख्यवाद. d. परमाणुवाद

130. चरकाचार्यांनी ..... अध्याय में स्वभापोपरम वाद का वर्णन किया है।
a. उपकल्पनीय b. चिकित्साप्राभृतीय
c. कियन्तःशिरसीय d. त्रिशोथीय

131. आचार्य चरक ने स्रोतोविमान में कुल कितने स्रोतसों का वर्णन किया है ।
a. 11 b. 12 c. 13 d. 14

132. हृदयं मूलं महास्रोतश्च मूल है।
a. प्राणवह स्रोत b. रसवह स्रोत
c. Both d. शोणितवह स्रोत

133. अस्वेदनमतिस्वेदनं है ।
a. स्वेदवहस्रोतो दुष्टिलक्षण b. कुष्ठ का पूर्वरूप
c. Both d. मेदोवहस्रोत दुष्टि लक्षण

134. अतिप्रवृत्ति सङ्गो वा सिराणां ग्रन्थोऽपि वा ..... है ।
a. स्रोतो दुष्टि के सामान्य हेतु b. स्रोतो दुष्टि के लक्षण
c. स्रोतो का स्वरूप d. स्रोतो की चिकित्सा

135. अन्नवह स्रोतस की चिकित्सा है।
a. तृष्णा की चिकित्सा b. अतिसार चिकित्सा
c. आमदोष चिकित्सा d. लंघन

136. ज्वर चिकीत्सा किस स्त्रोतो दुष्टि मे करते है।
a. मेदोवह b. स्वेदवह c. रसवह d. सभी

137. सिरा, धमनी, नाडी, स्थान आशय पर्याय है ।
a. आशय के b. स्रोतस के
c. Both d. None

138. स्रोतस दुष्टि होने पर किसकी पुष्टि करते है ?
a. धातुओं की b. धातु व मलों की
c. स्रोतस की d. दोष, धातु व मल सभी की

139. निमित्त भेद से रोगानीक है ।
a. साध्य / असाध्य b. मृदु / दारूण
c. शरीर / मन d. स्वधातुवैषम्य/आगन्तुज

140. सर्वोपचारसह अग्नि है ।
a. तीक्ष्ण b. मन्द c. सम d. विषम

141. नाना वर्ण राजी सिरा सन्ततं लक्षण है ।
a. सन्निपातोदर b. जलोदर c. Both d. None

142. प्लीहोदर में तक्र का अनुपान है ।
a. सैन्धव b. वचा, शुण्ठी c. मधु, तैल d. सभी

143. नारायण चुर्ण का अनुपान अर्श रोग में... है ?
a. प्रसन्ना b. दाडीमाम्ब c. दधिमण्ड d. सुरा

144. व्याधि जिनमें तिनों दोष Involve रहते है ?
a. अर्श b. शोथ c. प्रमेह d. सभी

145. कनकारीष्ट का प्रमुख घटक है ?
a. सुवर्ण b. धत्तूर c. खदिर d. आमलकी

146. अष्टौविंशती घृत रोगाधिकार?
a. उदर b. कुष्ठ c. उन्माद d. अपस्मार

147. किस व्याधि की चिकित्सा में व्यत्यासात कर्म बताया है।
a. अर्श b. क्षयजकास c. सन्निपातीक ग्रहणी d. सभी

148. जीर्ण जीर्यति चाध्मानं भुक्ते स्वास्थमुपैति च।
a. संग्रहणी b. परिणाम शूल c. अन्नद्रव शूल d. वातज ग्रहणी

149. कृष्णात्रेय वर्णित योग है।
a. फलारिष्ट b. नागराद्य चूर्ण c. नवायस चूर्ण d. सभी

150. चन्दनाद्य घृत रोगाधिकार
a. वातज ग्रहणी b. पित्तज ग्रहणी c. कफज ग्रहणी d. त्रिदोष ग्रहणी

151. याभिःक्रियाभिजायन्ते शरीरे धातवः समाः ।
a. विद्या b. साम्यावस्था c. चिकित्सा d. इनमें नही

152. दोषों के कुल विकल्प है ?
a. 61 b. 62 c. 63 d. 64

153. मधुमेह पिडिका की संख्या है ।
a. 10 b. 7 c. 6 d. 8

154. ..... ये प्रमेह पिडका चरकोक्त है ।
a. शराविका b. कच्छपिका c. जालिनी d. All true

155. पिडका नातिमहती क्षिप्रपाका महारूजा किसका लक्षण है ।
a. शराविका b. अलजी c. सर्षपी d. कच्छपिका

156. अन्तविद्रधि के स्थान ..... है ।
a. 10 b. 9 c. 8 d. 11

157. श्वासः यह किस स्थानगत विद्रधि का लक्षण है ।
a. व्याधि b. यकृत c. क्लोम d. कुक्षि

158. ..... स्थान में होनेवाले और पक्व विद्रधि असाध्य है ।
a. हृदय b. नाभि c. बस्ती d. All

159. ..... दुष्ट पुरूष में बिना प्रमेह के भी पिडका उत्पन्न होती है ।
a. मांस b. रक्त c. मेद d. रस

160. प्राकृत कफ को कहते है ।
a. बल b. मल c. a & b d. None

161. शारीरिक, मानसिक दोषों के कुपित होने के कितने कारण है -
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

162. सर्वरोगविशेषज्ञः सर्वकार्य विशेषवित् सर्वभेषज तत्वज्ञों ..... गुण है
a. प्राणाभिसर वैद्य b. राजवैद्य c. कुवैद्य d. All

163. कृमिप्रकरण में गणों की संख्या है ।
a. 3 b. 4 c. 7 d. 20

164. व्याधित रूपीयविमान में रोगी मनुष्यों के प्रकार है ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

165. कृमियों की कुल संख्या है ।
a. 3 b. 4 c. 7 d. 20

166. मृजावर्जन निदान किस प्रकार के कृमियों का है।
a. पुरीषज b. श्लेष्मज
c. शोणितज d. मलज

167. कुष्ठ के समान निदान किसप्रकार के कृमियों का है।
a. पुरीषज b. श्लेष्मज c. शोणितज d. मलज

168. शोणितज कृमियों का स्थान है।
a. रक्तवह धमनियां b. रक्तवह सिरा
c. रक्तवह स्रोतस d. All

169. ताम्रवर्ण के कृमि होते है।
a. पुरीषज b. श्लेष्मज c. शोणितज d. मलज

170. निम्न में रक्तज कृमि नहीं है ।
a. अन्नाद b. केशाद c. लोमाद d. जन्तुमाता

171. आवस्थिकी क्रिया वर्णित है।
a. अतिसार में d. ग्रहणी में c. वातरक्त में d. सभी

172. कोलवद गुटिका प्रमाण बताया है।
a. पूर्ननवा मण्डुर b. योगराज c. मण्डुरवटक d. सभी

173. Match the following ?

1. उर्ध्वश्वास	a. उच्छ्रिताक्षो
2. छिन्नश्वास	b. विभ्रान्त लोचन
3. महाश्वास	c. विप्लुताक्ष
4. तमकश्वास	d. विभ्रान्ताक्ष

a. dcba b. bcda c. cbda d. dbca

174. कासीने छर्दन दद्यात। संदर्भ है।
a. च.चि. 18 b. च.चि. 17 c. च. चि. 8 d. च.चि. 3

175. पारावत इव कूजन लक्षण है।
a. क्षयज कास b. क्षतज कास
c. त्रिदोषज कास d. जरा कास

176. कफज अतिसार में सर्वप्रथम हितकर है।
a. लंघन, दिपन b. लंघन, पाचन
c. लंघन, स्नेहन d. दिपन, पाचन

177. सभी छर्दी में लंघन करना है,अपवाद
a. वात b. पित्त c. कफ d. सभी

178. निदान परिवर्जन चिकित्सा कही है।
a. हिक्काश्वास b. गुल्म c. रक्तपित्त d. सभी

179. वातज कास में कफ का अनुबंध होने पर चिकित्सा।
a. वातनाशक b. कफनाशक
c. पित्तनाशक d. सभी

180. कास भैषज्य संग्रह में नही है।
a. धुमपान b. पानक c. सर्पिगुड d. None

181. शोथ के प्रकार है।
a. 4 b. 3 c. 6 d. 5

182. शोथ के उपद्रव कितने है ?
a. 6 b. 7 c. 5 d. 8

183. दोष गतियाँ है।
a. 3 b. 4 c. 6 d. 5

184. यदुत्तमाङ्गमङ्गनां ..... तदभिधीयते।
a. हृदय b. शिर: c. नाभि: d. बस्ति

185. दोषों के क्षय प्रकार है।
a. 25 b. 18 c. 7 d. 26

186. दोषों के सन्निपात है।
a. 14 b. 9 c. 10 d. 13

187. दोषा: ..... स्व लिंग दर्शयन्ति यथाबलम्।
a. वृद्धा b. प्रवृद्धा: c. क्षीणा: d. समा:

188. क्लैब्यं लक्षण ..... क्षय का है।
a. रस b. वात c. शुक्र d. रक्त

189. पिपासा ..... क्षय का लक्षण है।
a. रस b. रक्त c. मल d. मूत्र

190. मलायनानि शून्य, लघु, विशुष्क होना ..... के लक्षण है।
a. मलवृद्धि b. मलसंक्षय c. मलदुष्टी d. a & b

191. पक्वाशय स्थान है। (कृमी)
a. मलज b. पुरीषज c. श्लेष्मज d. शोणितज

192. पुरीषज कृमियों का प्रभाव है।
a. पुरीषभेद b. कार्श्य c. लोमहर्ष d. All

193. कृमि चि. में मदनफलपिप्पली कषाय की मात्रा देते है।
a. अर्धाञ्जलि b. एक अञ्जलि
c. अन्तर्नखमुष्टि d. All

194. कृमि चिकित्सा में सर्वप्रथम कौन सी चिकित्सा करते है।
a. निदान परिवर्जन b. अपकर्षण
c. प्रकृति विघात d. All

195. प्रकृति विघात कराते है ?
a. कटुतिक्त कषाय द्रव्य b. क्षार द्रव्य
c. उष्ण द्रव्य d. All

196. महागुद कृमि है ?
a. पुरीषज b. रक्तज c. श्लेष्मज d. मलज

197. बहुपादाश्च कृमि है ?
a. पुरीषज b. रक्तज c. श्लेष्मज d. मलज

198. शास्त्र परीक्षा करने के पश्चात परीक्षा करते है ?
a. शास्त्रज्ञान के साधनो की b. आचार्य की
c. वैद्य की d. औषध की

199. कुशल वैद्य बनने के उपाय है ?
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

200. ज्ञानभियोगसंहर्ष भवति है ?
a. अध्ययन b. अध्यापन c. तद्विद्यसंभाषा d. ll

201. ग्रंथि विसर्प दोष दूष्टी।
a. वात पित्त b. वात कफ c. पित्त कफ d. त्रिदोष

202. रक्तपित्तोत्तर दृष्टवा---- वीसर्पमादित:। च.चि. 21/118
a. ग्रंथि b. कर्दम c. आग्नेय d. सभी

203. आचार्य चरक ने प्रलेप की मोटाई बताई है।
a. त्रिभाग अंगुष्ट b. आर्द्र माहिषचर्मवत c. a & b d. None

204. किस व्याधी में जल का निषेध या अल्पपान और उष्ण जलपान बताया
a. नवज्वर b. गलरोग c. पीनस d. सभी

205. जलपान निषेध बताया है।
a. हिक्का b. श्वास c. अतिसार d. घृतपित

206. किस ऋतु में विष की वृध्दी होती है।
a. वर्षा b. शरद c. a & b d. हेमन्त

207. विष दुरूपक्रम है किस गुण के कारण
a. सूक्ष्म b. विकासी c. व्यवायी d. लघू

208. उचिंटींग का विष कौनसे दोष को प्रकूपित करता है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोष

209. मुहू: स्मृति मुहू मोह लक्षण है।
a. प्रथम मद b. मध्यम मद
c. तृतीय मद d. प्रथम व उत्तम मद संधिकाल

210. मदात्यय में दोषो की चिकित्सा करने का क्रम ?
a. कफपित्तवात b. कफवातपित्त
c. पित्तकफवात d. पित्तवातकफ

211. अभिधेय प्रयोजन संबंध अधिकारी है।
a. अनुबन्धचतुष्टय b. अर्थचतुष्टय c. आयुचतुष्टय d. हेतु चतुष्टय

212. चरक सूत्रस्थान में चतुष्कों की संख्या है।
a. 4 b. 6 c. 7 d. 8

213. चतुर्विध पुरुषार्थ का मूल है।
a. ओज b. आरोग्य c. आयु d. सभी

214. त्रिसूत्र है।
a. हेतु, दोष, द्रव्य b. दोष प्रशमन, धातु प्रदुषण, स्वस्थ्य हितकारी
c. हेतु, लिंग, औषध d. गुरू, शिष्य, एकीय सूत्र

215. अनन्तपार शब्द किसके लिए आया है।
a. भारद्वाज b. इन्द्र c. अग्निवेश d. आयुर्वेद

216. आत्रेय पुनर्वसु के शिष्यों की संख्या है ।
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

217. शरीर, इन्द्रिय, मन, आत्मा के संयोग को कहते है ।
a. धारि b. जीवित c. अनुबन्ध d. All

218. तुल्यार्थता हि सामान्य उदाहरण है ।
a. द्रव्य सामान्य b. गुण सामान्य c. कर्म सामान्य d. All

219. सुख का आश्रय है ।
a. शरीर b. मन c. Both d. इन्द्रिय

220. कर्मज रोगो की चि. प्राय: की जाती है ।
a. दैवव्यपाश्रय b. युक्तिव्यपाश्रय
c. दोषज चिकित्सा d. दोषकर्मज चिकित्सा

221. ''श्रुतं विज्ञानं धारणं प्रतिभानं वचनशक्तिरिति'' उपरोक्त गुण होते है
a. शास्त्र के b. आचार्य के c. वैद्य के d. जल्पक के

222. ज्ञानवती परिषद के भेद होते है ?
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

223. सर्वतन्त्र, प्रतितन्त्र, अधिकरण, अभ्युपगम प्रकार है ।
a. शब्द b. समय c. विरूद्ध d. सिद्धान्त

224. व्यवसायो नाम .....
a. संशय b. परीक्षा c. निश्चय d. अर्थप्राप्ति

225. समय के प्रकार होते है ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

226. मोक्षशास्त्रिक समय का उदाहरण है ।
a. अहिंसा b. वध c. चतुष्पाद d. None

227. अहेतु के प्रकार होते है ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

228. उपालम्भोनाम .....।
a. दोषवचनस्य परिहरणं b. हेतोर्दोषवचनं
c. प्रतिज्ञा हानि d. वाक्यदोषयुक्तं

229. पराजय को प्राप्त करता है ।
a. अभ्यनुज्ञा b. हेत्वन्तर c. निग्रहस्थान d. प्रतिज्ञाहानि

230. पुनरूक्त के प्रकार है ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

231. मदात्यय में वर्णित चिकित्सा से मदात्यय शांत न हो रहा हो, तो प्रयोग करना चाहिए।
a. मद्य का b. इक्षूरस का c. क्षीर का d. शीतजलपान का

232. चरक के अनुसार व्रण अधिष्ठान नही है।
a. स्नायु b. मर्म c. मेद d. संधी

233. चरक के अनुसार एरण्ड तैल की उदावर्त मे अधिकतम मात्रा है।
a. 1 कर्ष b. 2 पल c. 4 पल d. 5पल

234. प्रधान स्थौजसश्चैव हृदयं स्थानमुच्यते। Ref.
a. च. चि. 26 b. च. सु. 30 c. च. चि. 30 d. च. चि. 24

235. वायो स्थानानुपुर्व्या किसकी चिकित्सा है।
a. त्रिदोषज हृद्रोग b. त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र
c. त्रिदोषज अतिसार d.सभी

236. कृच्छ्रतम् हि कृच्छ्रम लक्षण किस मूत्रकृच्छ्र का है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज

237. सिरावेध किस स्वरभेद में निषेध है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज

238. उरूस्तंभ में स्नेहन करने से पाद में होता है।
a. सदन b. कृच्छ्राद उध्दरण c. सुप्ती d. सभी

239. नाभी स्थान है। (वाय)
a. उदान का b. अपान का c. Both d. प्राण का

240. ------ सोऽनुपक्रम्य:।
a. हनुस्तंभ b. मन्यास्तंभ c. आक्षेप d. None

241. रस का आधार द्रव्य है ।
a. आकाश वायु अग्नि b. जल पृथ्वी c. जल अग्नि d. पृथ्वी अग्नि

242. औद्भिद द्रव्यों के प्रकार है ।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

243. शोधनार्थ वृक्षों की संख्या है ।
a. 3 b. 6 c. 16 d. 19

244. धामार्गव है ।
a. फलिनी द्रव्य, वमन आस्थापन में प्रयुक्त होनेवाला
b. मूलिनी, वमन में प्रयुक्त होनेवाला.
c. फलिनी, विरेचन में प्रयुक्त होनेवाला.
d. मूलिनी, विरेचन में प्रयुक्त होनेवाला.

245. चतुर्विध स्नेहो का प्रयोग करते है ।
a. पान अभ्यंग b. बस्ति c. नस्य d. All

246. मूत्र का अनुरस होता है ।
a. कटु b. लवण c. मधुर d. कषाय

247. कुष्ठव्रणविषापहम मूत्र होता है ।
a. उँट b. गधा c. हाथी d. घोडा

248. पूतीक का प्रयोज्यांग है ।
a. मूल b. पत्र c. क्षीर d. त्वक

249. सर्वश्रेष्ठ आस्थापन द्रव्य है ।
a. अपामार्ग b. त्रिवृत्तमूल c. पाटला d. मदनफल

250. आस्थापन बस्ति कें द्रव्यों का प्रयोग कर सकते है ।
a. उदावर्त में b. विबन्ध में
c. सिर्फ आस्थाप्य में d. All

251. जो वाक्य दोष से युक्त हो उसे कहते है ।
a. अनुयोज्य b. अननुयोज्य c. अनुयोग d. प्रत्यनुयोग

252. दशविध परीक्षा है ।
a. आतुर परीक्षा b. प्रकृति परीक्षा
c. विकृति परीक्षा d. सार परीक्षा

253. निम्न में सार नही है ।
a. त्वकसार b.. रससार c. शुक्रसार d. सत्वसार

254. करण है ।
a. भेषज b. वैद्य c. अनुबन्ध d. देश

255. दशविध परीक्ष्य भाव में कार्ययोनि है ?
a. धातुवैषम्य b. उपाय c. आरोग्यता d. दोषवैषम्य

256. दशविध परीक्ष्यभाव में ..... प्रतिकर्मसमारम्भ है।
a. कार्य b. कार्यफल c. प्रवृत्ति d. उपाय

257. निम्न में भिषक के गुण है ।
a. पर्यवदाश्रुतता b. परिदृष्ट कर्मता
c. सर्वेन्द्रियोपयन्त्रता d. All

258. आश्रय भेद से औषध के प्रकार है ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

259. स्थूलदीर्घवृत्त सन्धयश्च लक्षण है ।
a. मांससार b. अस्थिसार c. सन्धिसार d. मज्जासार

260. ''महोत्साहा:'' लक्षण है ।
a. अस्थिसार b. सन्धिसार c. सत्वसार d. a + c

261. विसुचिका लक्षण है। ------ कूपीत वात का
a. कोष्ठाश्रीत b. आमाशयाश्रीत c. पक्वाशयाश्रीत d. गुदगत
262. अर्श----- कूपित वात से होता है।
a. गुदाश्रित b. कोष्ठाश्रीत c. पक्वाशयाश्रीत d. सभी
263. पिण्ड तैल का प्रयोग वातरक्त में करते है।
a. पानार्थ b. अभ्यंग के लिए c. बस्ति के लिए d. सभी
264. वातरक्त में श्रेष्ठ चिकित्सा है।
a. रक्तमोक्षण b. विरेचन c. बस्ति d. नस्य
265. योनीना सेकाभ्यंग पिचूक्रिया: चिकित्सा है।
a. वातजयोनीरोग b. पित्तजयोनीरोग c. a & b d. None
266. पूष्यानुगचूर्ण का अनुपान है।
a. मधू b. सर्पि c. a & b d. None
267. काश्मर्य कूटज क्वाथ सिध्द उत्तर बस्ति उपयोगी है।
a. रक्तयोगी b. अरजस्का c. पुत्रघ्नी d. सभी
268. व्रणवत चिकित्सा किस क्लैब्य की बताई है।
a. ध्वजभंग b. बीजोपघात c. जराजन्य d. क्षयज
269. कौनसे क्षीरदोष से बालक में हृद्रोग उत्पन्न होता है।
a. स्निग्धता b. रूक्षता c. गौरव d. विवर्णता
270. दक्षिण देशवासी को ---- सात्म्य है।
a. क्षीर b. मन्थ c. मत्स्य d. पेया
271. आचार्य चक्रपाणि के अनुसार तीक्ष्णवीर्य द्रव्यों की मात्रा है?
a. 1 पल b. ½ पल c. 1 कर्ष d. None
272. किससे साधित यवागु विषघ्नी होती है।
a. शिरीष b. बाकुची c. अतिविषा d. All
273. क्रिमीघ्नी यवागू सिद्ध की जाती है।
a. फाणित से b. गोमूत्र से c. तक्र से d. तक्रपिण्याक से
274. यवागुओं की संख्या है।
a. 32 b. 28 c. 26 d. 19
275. शूल नाशक यवागू होती है।
a. पंचकोलसाधित b. पंचमूलसाधित
c. दशमूलसाधित d. All
276. पलाश निर्दाह रस का वर्णन किस लेप में आया है।
a. आरग्वधादि b. हरिद्रादि
c. रसांजनादि d. मन:शिलादि
277. कोलादि लेप प्रयुक्त होता है।
a. उदरशूल में b. वातविकार में
c. कुष्ठ रोग में d. वातरक्त में
278. तक्रयुक्त यवक्षार तथा यवचूर्ण का लेप प्रयुक्त होता है ?
a. उदरशूल में b. वातरोग में c. वातरक्त में d. All
279. विषघ्न लेप है।
a. शिरीष b. बाकुची
c. शिरीष + बाकुची d. शिरीष + निर्गुण्डी
280. मधुशेषयुक्तं का तात्पर्य है।
a. मधु b. सर्पि
c. मोम d. मधुर वर्ग की औषधियां
281. आचार्य चरक के अनुसार शरीर की लम्बाई होती है।
a. 2½ हाथ b. 84 अंगुल
c. 120 अंगुल d. All
282. बलभेद से सत्व के प्रकार है।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
283. चरक में आयुप्रमाण के ज्ञान का वर्णन किया गया है।
a. विमान b. शारीर c. इन्द्रिय d. All
284. दशविध परीक्षा का प्रयोजन है।
a. प्रतिकर्मसमारम्भ b. प्रतिपत्तिज्ञान
c. क्रियासमायोग: d. All
285. अवरबल के रोगी में औषध देते है।
a. मृदु b. मध्य c. तिक्ष्ण d. Any one
286. आस्थापन स्कन्ध की संख्या है।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 6
287. तामलकी एवं बृहती है।
a. मधुरस्कन्ध में b. अम्लस्कन्ध में
c. तिक्त स्कन्ध में d. कषाय स्कन्ध में
288. मधुरस्कन्ध के द्रव्य किस प्रकार के रोगो को कुपित करेंगे।
a. वातज b. पित्तज c. कफज d. वातपित्तज
289. स्थावर स्नेह के प्रकार है।
a. तैल / अतैल b. वसा / मज्जा c. सर्पि d.
290. शिरोविरेचनं .....
a. त्रिविधं b. चुतुर्विधं c. षडविधं d. सप्तविधं
291. केवल वात प्रकोप से होनेवाला पक्षाघात ?
a. साध्य b. असाध्य c. कृच्छ्रसाध्य d. None
292. अमृताद्य तैल वर्णित है।
a. च. चि. 28 b. च. चि. 29 c. Both d. च. चि. 27
293. अष्टकटवर तैल का रोगाधिकार।
a. मदात्यय b. उरूस्तंभ c. वातव्याधि d. वातरक्त
294. मध्वरिष्ट रोगाधिकार।
a. प्रमेह b. कुष्ठ c. ग्रहणी d. अर्श
295. मुक्तादी चूर्ण रोगाधिकार।
a. प्रमेह b. कुष्ठ c. उदर d. हिक्काश्वास
296. बीजकारिष्ट रोगाधिकार।
a. अर्श b. शोथ c. पाण्डू d. ग्रहणी
297. रोहितक घृत का अधिकार।
a. गुल्म b. योनीव्यापद c. उदर d. ग्रहणी
298. सिध्दार्थक घृत का अधिकार।
a. कुष्ठ b. गुल्म c. उन्माद d. अपस्मार
299. अष्टांग लवण का प्रयोग किस मदात्यय में वर्णित है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज
300. कुल विरेचयोगों की संख्या है।
a. 245 b. 355 c. 600 d. All
301. विरेचन द्रव्यों के आश्रय है।
a. 4 b. 6 c. 7 d. 8
302. निम्न में से पंचकषाय योनि नही है।
a. मधुर कषाय b. अम्ल कषाय
c. लवण कषाय d. तिक्त कषाय
303. कषाय कल्पना होती है।
a. पंचकषायोनि बलापेक्षिणी b. व्याधिबलापेक्षिणी
c. आतुरबलापेक्षिणी d. Both b + c
304. स्वरस की मात्रा है।
a. 2 तोला b. 4 तोला c. 6 तोला d. 8 तोला
305. दीपन द्रव्यों में किस महाभूत की प्रधानता होती है।
a. वायु b. अग्नि c. Both d. वायु + आकाश

306. हृद्य महाकषाय में कौनसा द्रव्य नही पाया जाता है ।
a. कुवल b. बदर c. दाडिम d. अर्जुन
307. स्तन्यजनन महाकषाय में कौनसा द्रव्य नही पाया जाता है ।
a. वीरण b. शालि c. षष्ठिक d. शतावरी
308. कमल के 7 भेदो का वर्णन किस महाकषाय में है ।
a. मूत्रसंग्रहणीय b. मूत्रविरेंजनीय c. मूत्र विरेचनीय d. All
309. प्रथम महाकषाय है ।
a. जीवनीय b. बृंहणीय c. बल्य d. वय:स्थापन
310. चरक इन्द्रियस्थान में प्रकृति की संख्या है ।
a. 1 b. 3 c. 4 d. 6
311. निम्न में विकृती नही है ।
a. प्रत्यात्मनियता b. लक्षणनिमित्ता
c. लक्ष्यनिमित्ता d. निमित्तानुरूपा
312. निम्न में प्राकृत वर्ण नही है ।
a. श्याम b. श्याव c. श्यामावदात d. अवदात
313. हृदयपर कांटेदार लता पूर्वरूपीय अरिष्ट है ।
a. गुल्म का b. कुष्ठ का c. प्रमेह का d. उन्माद का
314. स्वप्न में चाण्डालो के साथ स्नेहपान अरिष्ट लक्षण है ।
a. गुल्म का b. कुष्ठ c. प्रमेह d. रक्तपित्त
315. स्वप्न के भेद है ।
a. 3 b. 4 c. 5 d. 7
316. गन्ध के आश्रित अरिष्टों को कहते है ।
a. परिमर्शनीय b. पुष्पित c. पूर्वरूपीय d. गोमयचूर्णीय
317. प्रभा के भेद है ।
a. 3 b. 5 c. 6 d. 7
318. वैडूर्यमणि के समान छाया है ।
a. तामसी b. वायवी c. अम्भसी d. पार्थिवी
319. अशुभ छाया है ।
a. नाभसी b. वायवी c. आग्नेयी d. अम्भसी
320. स्वस्थवृत्त के अनुसार प्रतिदिन सेवन योग्य महाकषाय है ।
a. शूलप्रशमनीय b. श्रमहर c. वेदनास्थापन d. शोणितस्थापन
321. आचार्य चरक के अनुसार गुरू आहार द्रव्यों से कुक्षि को भरना चाहिए
a. ½ भाग b. 1/3 भाग c. 1/4 भाग d. a & b
322. बलवर्णसुखायुषा किसके सम्बन्ध में आया है ।
a. लघुआहार के गुण b. मात्रा पूर्वक भोजन से लाभ
c. a & b d. b + रक्त के सम्बन्ध में
323. लगातार प्रयोग किये जानेवाले आहार द्रव्य है ।
a. षष्ठिक/शालि b. मुद्ग c. यव d. All
324. दृष्टि प्रसादन में कौन से कर्म लाभकारी होते है ।
a. वातहर b. पित्तहर c. श्लेष्महर d. All
325. नेत्रों से जल निकालने के लिए अंजन का प्रयोग करते है ।
a. रात्रि में b. दिन में c. मध्यान्ह में d. प्रात:काल में
326. निर्माण भेद से अंजन के प्रकार होते है ।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
327. धूमवर्ति की मोटाई होती है ।
a. कनिष्ठिका संमिता b. मध्यमा संमिता
c. अंगुष्ठ संमिता d. All
328. धूमपान से विशेष रूप से कौनसी व्याधियां नही होती है ।
a. वातपित्तजन्य b. वातकफजन्य
c. पित्तकफजन्य d. त्रिदोषजन्य
329. रसांजन का प्रयोग करते है ।
a. प्रतिदिन b. 3 - 5 दिनपर c. 5 - 8 दिनपर d. 1 पक्ष में
330. निम्न में केवल आचार्य चरक के द्वारा बताया गया महागद है
a. कुष्ठ b. उदररोग c. वातव्याधि d. गुल्म
331. मस्तक पर धमनियों का सुन्दर जाल, अरिष्ट है ।
a. 1 वर्ष का b. 6 मास का c. 3 पक्ष का d. 1 मास का
332. शंखक रोग में प्राणनाश होता है ।
a. 1 दिन b. 3 दिन c. 1 सप्ताह d. 3 सप्ताह
333. जिस व्यक्ति का वीर्य, मूत्र, पुरीष जल में डूब जाये, यह अरिष्ट है ।
a. 1 सप्ताह b. 1 मास c. 3 मास d. 6 मास
334. महागदों की संख्या है ।
a. 4 b. 6 c. 8 d. 12
335. इंद्र अंतरात्मा तस्य लिंगम ।
a. अरिष्टम b. रिष्टम c. इंद्रियम d. चिकित्सम
336. रस का ज्ञान होता है ।
a. प्रत्यक्ष से b. अनुमान से c. आप्तोपदेश d. युक्ति से
337. त्रय: प्रकृति: यस्य दोषा: .....।
a. सुरसभिलक्षिता b. दुसाभिलक्षिता
c. कृच्छ्राभिलक्षिता d. कष्टाभिलक्षिता
338. किस आचार्य ने "लेपज्वरोतप्तस्य" का अर्थ प्रलेपक ज्वर माना है।
a. गंगाधर b. चक्रपाणि c. चरक d. a + b
339. जिस पुरूष का स्नान कर चन्दन लगाने के बाद सबसे पहले उर का भाग सूखता हो तथा अन्य भाग गीला ही रहता है, अरिष्ट है ।
a. सद्योमरणीय b. 15 दिन का
c. 1 मास का d. 3 मास का
340. "जीर्यतश्चयोतमांऽगेषु जरा न लभते बलम" किसके संदर्भ में आया है ।
a. सम्यक धूमपान से लाभ b. सौवीरांजन से लाभ
c. धूमनेत्र से पान में लाभ d. नस्य से लाभ
341. वैरेचनिक धूमपान एकदिन में पीना चाहिए ?
a. 1 बार b. 2 बार c. 3 या 4 बार d. None
342. धूमपान के अयोग्य है ।
a. विरेचन / बस्ति के बाद b. रक्तपित्त / विष से पिडित
c. आमदोष / रात्रिजागरण के बाद d. All
343. चरंक के अनुसार दातौन करना चाहिए ।
a. एक काल b. दो काल c. त्रिकाल d. चतु:काल
344. चरक के अनुसार दातौन किस रस की होनी चाहिए ।
a. कटु b. तिक्त c. कषाय d. All
345. "हन्वोर्बलं स्वरबलं वदनोपचय: पर:" होता है ।
a. गण्डूष से b. कवल से c. कर्णपूरण से d. तैलाभ्यंग से
346. गृध्रसी रोग नही होता है ।
a. स्नेहाभ्यंग से b. पादाभ्यंग से
c. शिर पर तैल रखने से d. पादत्रधारण से
347. गुप्त्यावरणशंकरम है ।
a. क्षौरकर्म से लाभ b. पादत्र धारण से लाभ
c. छत्रधारण से d. रत्नधारन से
348. "नगरी नगरस्येव रथस्येव रथी यथा ..... सन्दर्भ आया है ।
a. च. सू. 1 b. च. सू. 5 c. च. सू. 8 d. भगवद्गीता में
349. सौम्यकाल है ।
a. आदान, दक्षिणायन b. विसर्ग, उत्तरायण
c. आदान, उत्तरायण d. विसर्ग, दक्षिणायन

350. कौनसा त्रिवृत्त मूल श्रेष्ठ है ।
a. श्याम b. श्याव c. अरूण d. पीत
351. त्रिवृत्त प्रकोपक है ।
a. वात b. पित्त c. कफ d. All
352. कौन से द्रव्य का सभी ऋतू में उपयोगी योग बताया है ।
a. क्ष्वेड b. अवघातक c. कूटरणा d. अक्षिपीडक
353. चतुरगुंल का पर्यायी नाम है ।
a. प्रग्रह b. कोशातकी c. चर्मसाहा d. बृहत्पत्र
354. द्राक्षारसयुक्त आरग्वधफलमज्जा योग कितने साल के बालकों को देना चाहिए ।
a. 4 -12 b. 10 - 14 c. 4 - 12 d. निषेध है
355. गर विष में प्रयोग किया जाता है ।
a. बहुफेनरसा b. निकुंभ c. न्यग्रोध d. Both b & c
356. ..... कल्पेऽस्मिन् प्रोक्ता: षोडशकाक्षय: ।
a. सप्तला, शंखिनी b. तिल्वक c. दन्ती, द्रवन्ती d. कृतवेधन
357. 1 कंस = ... प्रस्थ ।
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8
358. पूप के द्वारा 16 योग किसके बताये है ।
a. पिण्डीतक b. पिण्डफला c. राजकोशातकी d.कर्कोटकी
359. वमन में कफ विलयनच्छेदार्थ प्रयोग करते है ।
a. मधु + घृत b. घृत + सैंधव
c. सैंधव + तिल तैल d. मधु + सैंधव
360. वमनादि कर्म कराने चाहिए ।
a. शिशिर ऋतु b. वसन्त ऋतु
c. शरद ऋतु d. हेमन्त ऋतु
361. साधारण रूप से सभी नियमों का पालन करना चाहिए ।
a. शिशिर b. वसन्त c. ग्रीष्म d. वर्षा
362. किस ऋतु में वातादि दोषो से अग्निबल और भी क्षीण हो जाता है ।
a. वसन्त b. ग्रीष्म c. वर्षा d. शरद
363. किस ऋतु में खाने-पीने की सभी चीजों में मधु मिलाना चाहिए ।
a. वसन्त b. ग्रीष्म c. वर्षा d. शरद
364. चरक ने किन वेगों के धारण करने से उदावर्त होना माना है ।
a. मूत्र/पुरीष b. वात/शुक्र c. छर्दि/क्षवथु d. All
365. त्रिविध बस्तिकर्म किस वेगधारण की चिकित्सा है ।
a. मूत्र b. पुरीष c. वात d. नि:श्वास
366. हृदरोग किस वेगधारण से होता है ।
a. पिपासा, शुक्रवेग b. बाष्प, श्रमजन्य नि:श्वास
c. मूत्र, पुरीष वेग d. All
367. बाधिर्य किस वेग धारण से होता है ।
a. वात b. बाष्प c. पिपासा d. निद्रा
368. हिक्का तुल्य औषध किस वेगधारण की चि. है ।
a. वमन b. क्षवथु c. उद्गार d. बाष्प
369. "विनाम आक्षेप संकोच सुप्ति कम्प प्रवेपन" किस वेगधारण का लक्षण है ।
a. क्षवथु b. उद्गार c. निद्रा d. जृम्भा
370. "श्रमक्लम: क्षयस्तृष्णा रक्तपित्त प्राताम:" है ।
a. व्यायाम के लक्षण b. व्यायाम से लाभ
c. अधिक व्यायाम से हानि d. None
371. मलायतनों की संख्या है । (अधोभाग)
a. 2 b. 5 c. 7 d. 12
372. अतीन्द्रिय है ।
a. मन b. आत्मा c. शरीर d. इन्द्रिया
373. चिन्त्य, विचार्य, उह्य, ध्येय, संकल्प आदि है - मन के
a. पर्याय b. विषय c. गुण d. लक्षण
374. क्षणिक एवं निश्चात्मिका किसके भेद है ।
a. पंचज्ञानेन्द्रिय b. पंचेन्द्रिय द्रव्य
c. पंचेन्द्रियार्थ d. पंचेन्द्रियबुद्धि
375. किसका उपयुक्तांग फल पूष्प है ।
a. देवताडक b. लम्बा c. कोष्ठफला d. गिरिमल्लिका
376. वमन विरेचन करनेवाले द्रव्य ..... होते है ।
a. शीत व मृदु b. उष्ण व तीक्ष्ण
c. उष्ण व मृदु d. शीत व तीक्ष्ण
377. धामार्गव विषनाशक योग में तुम्बरू के साथ है ।
a. वत्सक b. रास्ना c. वचा d. धान्यक
378. स्त्री-पुरूष भेद किसके है ।
a. शक्र b. शम्पाक c. श्वसन d. क्ष्वेड
379. कृतवेधनका पर्यायी नाम है ।
a. कर्कोटकी b. कोठफला c. कोशातकी d. कूटरणा
380. कूटज रक्तपित्त व ..... दोष का नाश करता है ।
a. कफ b. कफवात c. वात d. त्रिदोष
381. धामार्गव पर्यायी नाम है ।
a. बृहत्फला b. फल c. कोठफला d. मृदुंगफल
382. अनपायित्वात कहा है ।
a. श्यामात्रिवृत्त b. कृतमाल c. लोध्र d. पिण्डफला
383. तिल्वक का पर्यायी नाम है ।
a. तिरीटक b. त्रिभण्डी
c. निश्त्रिंशपत्रक d. तिक्तला
384. महावृक्ष के कितने योग वर्णन किये है ।
a. 39 b. 45 c. 16 d. None
385. शंखिनी उपयुक्तांग है ।
a. मूल b. फल c. बीज d. पत्र
386. जीमूतक की मात्रा है ।
a. अर्न्तनखमुष्टि b. 1 कर्ष c. 1 शुक्ति d. 1 पल
387. श्रेष्ठ विरेचक है ।
a. सुवहा b. आरग्वध c. लोध्र d. गुडा
388. द्रवन्ती का पर्यायी नाम है ।
a. निकुम्भ b. मुशिकाह्या c. मुकुलक d. चर्मसाहा
389. विरेचन के कितने योग वर्णन किये है ।
a. 355 b. 255 c. 245 d. 345
390. शुभ और अशुभ कर्मो की प्रवृत्ति एवं निवृत्ति में कारण है ।
a. आध्यात्म द्रव्य b. आध्यात्म गुण
c. a & b d. None
391. आचार्य चरक के अनुसार केशश्मश्रुलोमनखादि का कर्तन कितने दिन पर करना चाहिए.।
a. 5-5 दिन पर b. एक पक्ष c. द्वि पक्ष d. त्रिपक्ष
392. किस आहार पदार्थ का भक्षण सम्पूर्ण रूप में करना चाहिए।
a. दधि / मधु b. नमक / सत्तू c. घृत d. All
393. अलक्ष्मी दोष होता है ।
a. रात्रि में दही खाने से b. घी के साथ दही खाने से
c. बिना शर्करा के दही खाने से d. बिना मूंग के दही खाने से

394. संस्कार तथा अभ्यास है ।
a. आध्यात्मिक गुण b. गुर्वादि गुण
c. विशिष्ट गुण d. परादि गुण
395. चिकित्सा की परिभाषा वर्णित है ।
a. च. सू. 9 b. च. सू. 11 c. च. सू. 16 d. a + c
396. चिकित्सा चतुष्पाद के कुल गुणों की संख्या है ।
a. 1 b. 4 c. 8 d. 16
397. दक्षता गुण है ।
a. वैद्य, परिचारक b. औषध, रोगी
c. वैद्य, औषध d. औषध, परिचारक
398. अभीरूत्वं गुण है ।
a. वैद्य b. रोगी c. औषध d. परिचारक
399. चिकित्सा चतुष्पाद: मे प्रधान है ।
a. वैद्य b. रोगी c. औषध d. परिचारक
400. वैद्य की वृत्तियां है ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 6
401. च.सू. का कौनसा अध्याय "आत्रेय मैत्रेयमति मतिद्वैविध्य निश्चय:" के नाम से जाना जाता है ।
a. च. सू. 8 b. च. सू. 9 c. च. सू. 10 d. च. सू. 12
402. साध्य रोगों के भेद होते है ।
a. 1 b. 3 c. 4 d. All
403. "गम्भीर बहुधातुस्यं मर्मसन्धिसमाश्रितम्" लक्षण है ।
a. सुखसाध्य रोगों का b. कृच्छ्रसाध्य रोगों का
c. याप्य रोगों का d. प्रत्याख्येय रोगों का
404. "क्रियापथमतिक्रान्त सर्वमार्गानुसारिणम्" ..... लक्षण है ।
a. सुखसाध्य रोगों का b. कृच्छ्रसाध्य रोगों का
c. याप्य रोगों का d. प्रत्याख्येय रोगों का
405. मधु अनूपान है ।
a. वात विकृती में b. पित्त विकृति में
c. कफ विकृति में d. b & c
406. फल संग्रह करते है ।
a. पूष्प b. अश्विनी c. मृगशिरा d. All
407. कल्याणक गुड कौनसे अध्याय में वर्णित है ।
a. च.क. 5 b. च.क. 6 c. च.क. 7 d. च.क. 8
408. सुधा संग्रह कितने वर्ष पुराना लेना चाहिए ।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 2 या 3
409. कल्पस्थानका मान ..... द्रव्य के लिये है।
a. आर्द्र b. शुष्क c. Both d. None
410. कौनसा मान श्रेष्ठ है ।
a. कलिंग b. मागध c. पाय्य d. द्रुवय
411. अभ्यंग के लिए कौनसा स्नेहपाक उपयोगी है ।
a. मृदु b. मध्य c. खर d. All
412. कल्पस्थान का मान किस व्यक्ती के लिए वर्णित है ।
a. मध्य बल b. मध्यकोष्ठ c. मध्य वय d. All
413. दुर्बल, शोधित, अल्पदोष में औषध देनी चाहिये ।
a. मृदू b. मध्य c. तीक्ष्ण d. None
414. 39 योग किसके वर्णन किये है ।
a. वेणी b. क्ष्वेड c. तिक्तला d. Both a & c
415. ..... सुधा श्रेष्ठ है ।
a. अल्पकण्टक b. बहुकण्टक c. त्रिधारी d. Both b & c
416. कल्पस्थान में कल्प (योग) कितने द्रव्यों पर आधारित है?
a. 16 b. 14 c. 15 d. 12
417. वत्सक के बीज को कहते है ।
a. इन्द्रयव b. कलिंगक c. Both d. None
418. आनुप देश में दोषाधिक्य ।
a. वातपित्त b. पित्तकफ c. Both d. त्रिदोष
419. कफप्रसेक ग्रंथीज्वर उदर में प्रयोग करते है ।
a. श्यामात्रिवृत्त b. मृद्वीकाफल c. स्नुक d. फल
420. सुधा संग्रह किस ऋतू में करते है ।
a. वर्षा b. शरद c. शिशिर d. हेमंत
421. स्थिर कठिन मनुष्य?
a. जांगल b. आनूप c. साधारण d. Both b & c
422. किस द्रव्य का वर्धमान योग बताया है ।
a. तुम्बी b. गरागरी c. महाजालीनी d. गिरिमल्लिका
423. ..... के जल से 3 योग वर्णन है ।
a. वृक्षक b. कोशातकी c. राजकोशातकी d. करहाट
424. सार का संग्रह करते है ।
a. शिशिर b. ग्रीष्म c. हेमंत d. शरद
425. विरेचन सम्यक योग में दोषों का निर्गमन क्रम
a. मल, पित्त, कफ,वायू b. पित्त कफ मल वायू
c. मल, वायू पित्त, कफ d. मल पित्त वायू कफ
426. लघुत्व उर्जो अग्नि न आमयत्वम् किसके सम्यक योग में है
a. वमन b. विरेचन c. बस्ति d. शिरोविरेचन
427. वातजन्य रोग में कितने बस्ति का प्रयोग है ।
a. 7 b. 9 c. 5 d. 10
428. वमन अर्ह है ।
a. उदावर्त b. विष c. उर्ध्वग रक्तपित्त d. मूत्राघात
429. शिरोविरेचन अर्ह है ।
a. मूर्च्छित b. मन्यास्तंभ c. नूतन प्रतिश्याय d. अजीर्ण
430. मुक्तनाल व्यक्ती को विरेचन देने से होता है ।
a. मलावष्टम्भ b. मलमूत्रसंग
c. अत्याधिक मलप्रवृत्ति d. गुदस्थानी व्रणोत्पत्ती
431. बाल व वृद्ध है । च. सि. 2 के अनुसार
a. वमन अर्ह b. वमन अनर्ह
c. विरेचन अनर्ह d. Both b & c
432. 14 वर्ष के बालक को बस्ति नेत्र लम्बाई
a. 8 अंगुल b. 9 अंगुल c. 10 अंगुल d. 11 अंगुल
433. शौनक आचार्य के अनुसार आस्थापन बस्ति श्रेष्ठ द्रव्य
a. कटुतुम्बी b. धार्मागव c. कृतवेधन d. जीमूतक
434. कितनी निरूह बस्तियां क्रम से वात पित्त कफ का शमन करती है -
a. 3, 2, 1, b. 1, 2, 3 c. 1, 3, 5 d. 5, 3, 1
435. शस्त्रक्षार अग्निक्रिया के द्वारा चिकित्सा रोग होते है ।
a. सुखसाध्य b. कृच्छ्रसाध्य
c. याप्य d. प्रत्याख्येय
436. मन से त्वचा का संबंध होता है ।
a. समवाय b. असमवाय c. असम्यक d. All
437. ह्रस्वकाय व्यक्ति में अग्निमात्रा होती है ।
a. यवमात्र b. तिलमात्र c. बलमात्र d. All
438. प्रवर्तकचेष्टामुच्चवचानां किस वायु का कर्म है ।
a. प्राण b. उदान c. व्यान d. समान

439. तिस्रैषणीय अध्याय में कितने प्रकार के त्रिको का वर्णन है।
a. 7 b. 8 c. 9 d. 11

440. कषायास्यता है।
a.. वातज नानात्मज b. पित्तज नानात्मज
c. कफज नानात्मज d. All

441. वातज नानात्मज व्याधि है।
a. तम:प्रवेश b. बाधिर्य c. गलगण्ड d. All

442. यस्तु रोगम्विज्ञाय कर्माण्यारभवे ..... है।
a. यदृच्छासिद्धि b. राजवैद्य
c. सिद्धसाधितवैद्य d. All

443. त्रिदोष साम्यावस्था में होनेपर
a. शरीर की वृद्धि b. बल वर्ण वृद्धि
c. प्रसन्नता d. All

444. स्वेदाबाध: संबंधित है ?
a. अतिस्थूल b. अतिकृश c. A & B d. None

445. अतिकृश की चिकित्सा है ?
a. लघु सतर्पण b. लघु, अपतर्पण
c. गुरू, अपतर्पण d. गुरू, संतर्पण

446. आरोग्य बलवर्ण पुष्टि श्रीमान शतायु का वर्णन निद्रा के संदर्भ में दिया है।
a. चरक सूत्र 21 b. सु. शा. 4
c. अ. हृ. सू. 7 d. All

447. निम्न में दिवास्वप्नजन्य विकार है।
a. गुरूगात्रता, हलीमक b. अर्धावभेदक, तंद्रा
c. स्रोतावरोध, अग्निमांद्य d. All

448. दिवास्वप्न से दोष प्रकुपित ?
a. कफ b. पित्त c. वात d. A + B

449. ..... विष्यन्दमार्दव क्लेद कारकम है।
a. स्नेहन b. बृंहण c. स्तंभन d. None

450. स्वस्थ व्यक्ती के लिए निरूह बस्ति में कितने भाग स्नेह लेना चाहिए।
a. 1/8 b. 1/6 c. 1/4 d. 1/5

451. 14 वर्ष के व्यक्ती को निरूह मात्रा (प्रसृत)
a. 9 b. 10 c. 11 d. 12

452. निरूह के बाद अनुवासन वातज रोगो में ..... सिद्ध से देना चाहिए।
a. बिल्व तैल b. जीवनीय गण c. मदनफल d. All

453. स्नेहबस्ति व्यापद संख्या।
a. 8 b. 4 c. 6 d. 10

454. उदावर्त नाशक चि. किस स्नेह बस्ति व्यापद की है।
a. मलावृत्त b. अन्नावृत्त c. अभुक्त d. कफावृत्त

455. न चैव गुदकण्ठाभ्यां दद्यात्स्नेहममन्तरम्। क्योंकि अग्नी और---- दूषित होता है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. All

456. बस्तिनेत्र कितने अंगुल होता है।
a. 6 b. 8 c. 12 d. 12

457. दुर्बल वातभग्नेच ..... सदा मत:।
a. शिरोबस्ति: b. निरूहबस्ति c. मात्राबस्ति d. विरेचन

458. तपस्य मधू है।
a. प्रावृट् b. ग्रीष्म c. बसंत d. शरद

459. संशोधन योग्यं ऋतू ?
a. प्रावृट् शरद बसन्त b. वर्षा शरद हेमंत
c. शिशिर वसंत ग्रीष्म d. शरद हेमंत शिशिर

460. वमन विरेचन अयोग्य है ?
a. कास b. कुष्ठ c. मुत्राघात d. अजीर्ण

461. बस्ति दाता दोष है ?
a. 6 b. 8 c. 10 d. 12

462. अतियोग से होनेवाला व्यापद है ?
a. परिकर्तिका b. जीवादान c. विभ्रंश d. All

463. वमन पूर्व आहार है ?
a. कफवर्धक b. पित्तवर्धक
c. वातवर्धक d. त्रिदोषवर्धक

464. पंचकर्म चि. बतायी है।
a. वमन अयोग b. विरेचन अयोग
c. वमन अतियोग d. विरेचन अतियोग

465. आचार्य वाग्भट ने लंघन के प्रकार माने है।
a. 10 b. 12 c. A & B d. None

466. विशद गुण है।
a. लंघन b. बृंहण c. स्नेहन d. स्तंभन

467. बृंहणीय ऋतु है।
a. शिशिर b. ग्रीष्म c. हेमन्त d. All

468. उरूस्तंभ है।
a. स्तंभनीय रोग b. रूक्षणीय रोग
c. लंघनीय रोग d. All

469. निम्न में संतर्पणीय विकार है।
a. कण्डु, पाण्डु b. पार्श्वशुल, अरोचक
c. तन्द्रा, क्लैब्य d. a & c

470. चक्रपाणि ने अभयाप्राश से ग्रहण किया है।
a. च्यवनप्राश b. अगस्त्य हरीतकी
c. व्याघ्री हरीतकी d. All

471. आचार्य चरक ने संतर्पणीय अध्याय में संतर्पण के प्रकार माने है।
a. 3 b. 2 c. 4 d. None

472. रक्त में अरूणता किस महाभूत के कारण होती है।
a. पृथ्वी b. जल c. तेज d. आकाश

473. शुद्ध रक्त का वर्णन आचार्य सुश्रुत ने किया है।
a. सूत्र स्थान 14 b. सूत्र स्थान 15
c. सूत्र स्थान 16 d. None

474. उपकुश है।
a. वातज व्याधि b. पित्तज व्याधि
c. कफज व्याधि d. रक्तज व्याधि

475. वातदुष्टि रक्त का गुण ?
a. अरूणाभ b. लोहगंधि
c. मत्सगंधी d. a & b

476. जो व्याधि शीत, उष्ण, स्निग्ध आदि औषध से चिकित्सा न करने पर ठीक नही होती वह व्याधि है ?
a. रक्तज व्याधि b. कफज व्याधि
c. वातज व्याधि d. असाध्य व्याधि

477. आचार्य सु.ने. रक्तनिर्हरण के पश्चात कौन से रस का आहार लेने को कहा है।
a. मधुर b. अम्ल c. रक्तवर्धक d. a & c

478. चरक ने मद, मूर्च्छा, सन्यास की संम्प्राप्ति की वर्णन.... किया है।
a. सूत्रस्थान b. चिकित्सा स्थान
c. कल्प स्थान d. विमान स्थान

479. मदरोग के प्रकार है ।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
480. व्यक्ति मदिरा पिये हुये दिखता है ।
a. वातज मद b. पित्तज मद c. कफज मद d. None
481. शीघ्रे च प्रतिबुध्यते तम: प्रवेशश्च होता है ।
a. वातजमूर्च्छा b. पित्तज मूर्च्छा
c. कफज मूर्च्छा d. All
482. सर्वाकृति ..... अपस्मार इवगत: ।
a. वातज मूर्च्छा b. पित्तज मूर्च्छा
c. कफज मूर्च्छा d. सन्निपातज मूर्च्छा
483. सद्यो फल क्रिया निर्दिष्टे संदर्भित है ?
a. मूर्च्छा b. अपस्मार c. सन्यास d. All
484. स्वभाव वाद दिया ?
a. शरलोमा b. कौशिक c. भारद्वाज d. कांकायन
485. अर्थभेद से आहार है ।
a. 2 b. 3 c. 4 d. None
486. ..... स्थावर जातानां श्रेष्ठं।
a. तिल तैल b. कुसुम्भ स्नेह c. वराहवसा d. All
487. निकृष्ट कंद है ।
a. आर्द्रक b. आलू c. लकुच d. b & c
488. ..... कर्शनीयानाम् है ।
a. त्रिवृत्त b. अविक्षीर c. गवेधुक d. All
489. वृष्यसर्वदोषहराणा है ।
a. मुस्तक b. पुश्निपर्णी c. विदारीगंधा d. दुरालभा
490. ग्रहणी दोषशोषार्शोघ्नां है ।
a. क्रव्यमांस प्रयोग b. क्षीरघृतप्रयोग c. अम्लवेतस d. All
491. ..... अमृतानां ?
a. गुडूचि b. आयुर्वेद c. आचार्य d. None
492. व्याधिकराणां ..... ?
a. अतियोग b. मिथ्यायोग c. हीनयोग d. All
493. कफशोणित विबंध प्रशमनं है ।
a. अमृता b. बिल्व c. अतिविषा d. None
494. जीवादान व्यापद चिकित्सा है ।
a. रक्तबस्ति b. शीत बस्ति c. पिच्छाबस्ति d. All
495. वमन विरेचन व्यापद संख्या है ।
a. 6 b. 8 c. 10 d. 12
496. निरूह बस्ति व्यापद है ।
a. प्रवाहिका b. स्तंभ c. गुदभ्रंश d. विभ्रम
497. हृत्प्राप्ती चिकित्सा में ..... स्कंध द्रव्य उपयुक्त है ।
a. लवण b. कटू c. कषाय d. तिक्त
498. वातघ्न व बलवर्णकृत ..... प्रासृतीक बस्ति है ।
a. पंच b. अष्ट c. नव d. All
499. च.सि. 8 में अतिसार प्रकार है ।
a. 13 b. 23 c. 36 d. None
500. त्रिमर्म में समावेश नही है ।
a. गुद b. शिर c. बस्ति d. हृदय
501. नाभ्यां अरा इव प्रतिष्ठितानि ।
a. शिर b. हृदय c. बस्ति d. गुद
502. मुत्रदोष है ।
a. 8 b. 12 c. 13 d. 11
503. उत्तरबस्ति नेत्रप्रमाण है ।
a. 8 अंगुल b. 10 अंगुल c. 12 अंगुल d. 14 अंगुल
504. स्त्रीयों में मुत्रमार्ग में कितने अंगुल नेत्र प्रविष्ठ करना चाहिए ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
505. शंखक कितने दिन बाद असाध्य होता है ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
506. सर्पि: ओत्तर भक्तीकम् चिकित्सा बताई है ।
a. अनन्तवात b. सुर्यावर्त c. अर्धावभेदक d. शंखक
507. नावन नस्य प्रकार है ।
a. स्नेहन-शोधन b. शोधन-स्तंभन
c. स्नेहन-विरेचन d. स्नेहन -शमन
508. किस रोग की वृद्धि से नयन श्रोत्रेंद्रिय नष्ट होते है ।
a. शंखक b. अर्धावभेदक c. सुर्यावर्त d. अनन्तवात
509. ..... सुखपरिणामकराणा है ।
a. गुरूभोजन b. अनशन c. एकाशन d. All
510. ..... कुष्ठघ्नानां है ।
a. विडंग b. निम्ब c. खदिर d. All
511. चक्षुष्य, वृष्य, केश्य, कण्ठ, वर्ण्य है ।
a. मधुक b. क्षीरघृताभ्यास
c. कालभोजन d. लामज्जक
512. मनोवाद दिया ?
a. वार्योविद b. भद्रकाप्य c. कांकायन d. None
513. चक्रपाणि ने घृत तेल की सामान्य मात्रा बतायी है ।
a. 1 पल b. ½ पल c. 2 पल d. All
514. ..... औषधीनां है ।
a. आयुर्वेद b. विज्ञान c. सोम d. b & c
515. पत्रासव की संख्या है ।
a. 06 b. 04 c. 02 d. 01
516. ..... नियतंतन्न लक्षयेत है ।
a. पथ्य b. अपथ्य c. a & b d. None
517. आसव की योनियां है ।
a. 6 b. 7 c. 9 d. 10
518. आचार्य वाग्भट ने रसोन का प्रयोग ?
a. अर्दितनाशक b. वातनाशक
c. मुखरोग d. All
519. दीपन, पाचन, गुदशोफ अर्श शूलनाशक है ।
a. चित्रक मूल b. तक्र c. a & b d. आमलक
520. आचार्य चक्रपाणि ने विष की मात्रा रसायन के लिए बतायी है ।
a. तिल b. यव c. a & b d. None
521. समन्वयात्मक सिद्धान्त दिया ?
a. भगवान धन्वतरी b. महर्षि आत्रेय
c. महर्षि काश्यप d. None
522. रस का क्षार प्रकार माना है ।
a. वार्योविद b. हिरण्याक्ष c. निमि d. धामार्गव
523. मार्दव कर्म है ।
a. पृथ्वी b. आप्य c. आकाश d. b & c
524. पांच रस वाले रस भेद ।
a. 6 b. 15 c. 20 d. 1
525. नस्त: स्नेहाङगुली दद्यात । किसके संदर्भ में है ।
a. नावन b. अवपीड c. ध्मापन d. प्रतिमर्श

526. बृंहण बस्ति निषेध है ।
a. मेदस्वी b. कुष्ठ c. प्रमेह d. All
527. च.सि. 10 में कूल बस्तियां वर्णित है ।
a. 27 b. 37 c. 47 d. 210
528. सदा आतुर है ।
a. 1 b. 2 c. 4 d. 8
529. हृद्रोग सें श्रैष्ठ द्रव्य है ।
a. मदन b. इक्ष्वाकू c. कूटज d. कृतवेधन
530. महादोषकर भाव है ।
a. 4 b. 6 c. 8 d. 10
531. अतिआसन करने से शरीर के कौनसे भाग में व्याधि होते है ।
a. अधो b. मध्य c. उर्ध्व d. सर्व देह में
532. चरक के अनुसार तंत्रयुक्ती है ।
a. 32 b. 36 c. 40 d. None
533. रथ क्षोभ और अतिचक्रमण से शरीर के कौनसे भाग में व्याधि होती है -
a. उर्ध्व b. अध c. मध्य d. सर्व देह में
534. चरक संहिता में कितने श्लोक है ।
a.11,000 b.11,000 c. 12,000 d.13,000
535. दृढबल द्वारा लिखे हुए अध्याय संख्या ।
a. 24 b. 31 c. 41 d. 12
536. चरक संहिता के तन्त्रकर्ता।
a. चरक b. पूनर्वसुआत्रेय c. दृढबल d. अग्निवेश
537. चरक संस्कृत चरकसंहिता का कितना भाग अनुपलब्ध था ।
a. 1/4 b. ½ c. 1/3 d. 1/5
538. चरक संहिता में अध्याय संख्या है ।
a. 100 b. 120 c. 115 d. 160
539. विस्तारवचनं ..... ।
a. उद्देश b. निर्देश c. प्रदेश d. अतिदेश
540. यत सांधयन्ति तत् ..... ?
a. अधिकरण b. फल c. काल d. None
541. पांचरसों में श्रेष्ठ है ।
a. हरीतकी, रसोन b. एरण्ड तिल
c. घृत, मधु d. None
542. लघु द्रव्यों का श्रेष्ठत्वं क्रम है ।
a. कटु, तिक्त, अम्ल b. तिक्त, कटु, अम्ल
c. लवण, अम्ल, कटु d. कषाय, कटु, तिक्त
543. क्षीणक्षत संधान षटपदपिप्पलीकानां प्रिय: रस है ।
a. लवण b. कटु c. तिक्त d. मधुर
544. उर:कण्ठविदाह लक्षण वाग्भटजी ने किस रस में बताया है ।
a. मधुर b. अम्ल c. कटु d. तिक्त
545. सर्वरसप्रत्यनीकभूत कफ विषयन्दयति है ।
a. लवण b. कटु c. तिक्त d. None
546. जिह्वास्तंभ कण्ठबंध संधानकर रस है ।
a. मधुर b. कषाय c. तिक्त d. कटु
547. अष्टविधवीर्य षडविध विपाक वाद दिया ?
a. सुश्रुत b. योगरत्नाकर c. चरक d. a & b
548. 'विशेष: कर्मणां चैव' संबंधित है ।
a. गुण b. रस c. प्रभाव d. All
549. दुग्ध + मछली है ।
a. कालविरूद्ध b. वीर्य विरूद्ध c. मात्रा विरूद्ध d. All
550. मदिरा स्तनवर्धक है ।
a. रस से b. विपाक से c. वीर्य से d. प्रभाव से
551. ..... ग्लपयति ?
a. पिण्याक b. सुरा c. फाणित d. दधि
552. इक्षु वर्ग प्रारम्भ हुआ है ।
a. गोदुग्ध b. शर्करा c. मधु d. None
553. शूक धान्य एवं कुलत्थक का विपाक है ।
a. लवण, अम्ल b. अम्ल कटु c. मधुर, अम्ल d. None
554. निम्न में से कोन सा मांस शुक्रवर्धक एवं बलवर्धक है ।
a. मयूर, हंस b. हंस, कुक्कूट c. a & b d. सभी गलत
555. आक्षेप पूर्वक प्रश्न: ..... ।
a. विधान b. अपवर्ग c. पूर्वपक्ष d. संशय
556. दृष्टान्तवचनं ..... ।
a. निर्वचन b. विकल्प c. निदर्शन d. उद्धार
557. च.सि. 1 अग्निवेश ने कितने प्रश्न पूछे ।
a. 8 b. 10 c. 12 d. 21
558. कितने दिन के बाद स्नेह सात्म्य होता है ।
a. 3 b. 5 c. 7 d. 6
559. स्नेहोऽनिलं हन्ति मृदूकरोति देहं ..... विनिहन्ती सङगम ।
a. दोषाणां b. मलानां c. धातूनां d. स्त्रोतसां
560. मृदूकोष्ठ के लिए स्नेहन कितने दिन करना चाहिए ।
a. 3 b. 5 c. 7 d. 8
561. विरेचनार्ह व्यक्ति में ..... देना चाहिए ।
a. ग्राम मांसरस b. जांगल मांसरस
c. आनूप मांसरस d. Both a & c
562. प्रधान शुद्धि में अन्नकाल है।
a. 1 b. 3 c. 5 d. 7
563. वमन मध्य शुद्धीमें कितने प्रस्थ मल निकलता है ।
a. 1 b. 1½ c. 2 d. 4
564. विरेचन प्रधान शुद्ध में वेगों की संख्या है ।
a. 10 b. 20 c. 30 d. 40
565. वमन होता है ।
a. वातान्त b. पित्तान्त c. कफान्त d. All
566. वमन के अवर शुद्धी में ..... पल मल निकलता है।
a. 14 पल b. 13½ पल c. 16 पल d. 20 पल
567. वमन के हिन योग में लक्षण है ।
a. उदर्द b. पिडका c. कोठ d. All
568. उन्माद, हिक्का है ।
a. वमन अतियोग में b. विरेचन अतियोग में
c. वमन अयोग d. विरेचन अयोग
569. चरकोक्त पंचकर्म में समाविष्ट नही है ।
a. वमन b. आस्थापन c. अनुवासन d. रक्तमोक्षण
570. ..... लघवोऽग्निविवर्धना सन्निपातप्रशमना: मांस है ।
a. गो b. लावा c. गोधा d. कपोत
571. आचार्य चक्रपाणि ने भल्लातक का कौनसा भाग स्फोटकारक बताया है ।
a. फलमज्जा b. बीज c. मूल d. None
572. पश्चिम समुद्र में गिरने वाली नदियों का जल ?
a. पथ्यकारक b. गुरू c. निर्मलकारक d. a & c
573. हिक्का एवं श्वास उत्पादक दुग्ध है ।
a. अवि b. छाग c. उष्ट्र d. None

574. मधु का प्रकार छात्र किस आचार्य ने माना है।
a. चरक b. सुश्रुत c. a & b d. None

575. आचार्य वाग्भट ने भोजन पश्चात अनुपान निम्न में निषेध माना है।
a. श्वास, कास b. उर:क्षत स्वरभेद
c. a & b d. None

576. प्रमेह के पूर्वरूप प्रकट होते है।
a. रसप्रदोषज विकार b. रक्तप्रदोषज विकार
c. मेदप्रदोषज विकार d. All

577. निम्न को सुमेलित करे ?
a. तंद्रा 1. रक्तप्रदोषज
b. मुखपाक 2. मज्जा प्रदोषज
c. खल्ली 3. रस प्रदोषज
d. भ्रम 4. स्नायुप्रदोषज
a. 1, 2, 3, 4 b. 3, 1, 4, 2 c. 2, 3, 4, 1 d. 3, 2, 1, 4

578. नाभि उर्ध्व विद्रधि पक्व होने पर उसका स्त्राव ..... से होता है।
a. मुख b. गुद c. a & b d. None

579. व्यायामादूष्मणस्तैक्ष्ण्याद्धित ..... है।
a. दोषो का कोष्ठसे शाखा में गमन c. a & b
b. दोष का शाखा से कोष्ठ में गमन d. None

580. वाग्शिद्धि: क्षमाधैर्यमाश्रयन्ति गुण है।
a. राजवैद्य b. परीक्षक विद्वान के
c. प्राणभिसरवैद्य d. उपरोक्त में नही

581. आचार्य वाग्भट (लघु) ने प्राणायतन बताये है।
a. रसना बंधन, गुद b. नाभि, हृदय
c. शिरोबंधन, रक्त d. All

582. गोपानसीनामागारकर्णिकेवार्प्यचिन्तकै: संबंधित है।
a. हृदय b. सिर c. महाभूत d. आत्मा

583. आचार्य चरक ने भूतविद्या को किस स्थान पर रखा है।
a. 4 b. 5 c. 6 d. 8

584. ..... बृंहणानाम् ?
a. वीर्य b. विद्या c. ब्रम्हचर्य d. तत्वज्ञान

585. निरूहबस्ति के बाद विरेचन कब देना चाहिए।
a. 1 दिन के बाद b. 1 दिन बाद
c. 3 दिन बाद d. 7 दिन बाद

586. सर्वगदापहश्च, शिशुवृद्धांना निरत्यय: शुक्रबलप्रद किसके गुण है।
a. अनुवासन बस्ति b. निरूह बस्ति
c. लेखन बस्ति d. पिच्छा बस्ति

587. विकर्तिका है।
a. निरूह अयोग b. अनुवासन अतियोग
c. निरूह अतियोग d. Both a & b

588. स्नेह बस्ति प्रत्यागमन काल
a. 1 याम b. 2 याम c. 3 याम d. 4 याम

589. मानिकी, वैगिकी, आन्तीकी, लैंगिकी में श्रैष्ठ है।
a. मानिकी b. वैगिकी c. आन्तीकी d. लैंगिकी

590. कर्म बस्तियों में अनुवासन बस्ति संख्या
a. 30 b. 8 c. 12 d. 18

591. काल बस्ति में बस्ति संख्या (वा.)
a. 8 b. 17 c. कर्मांध d. All

592. निरूह अतियोग कौनसे दोषों का क्षय होता है।
a. कफ b. पित्त c. रक्त d. All

593. योग बस्ति में निरूह संख्या
a. 8 b. 5 c. 3 d. 2

594. वातरोग में पथ्य
a. मांसरस b. दूध c. यूष d. All

595. निरूह बस्ति में कषाय कितना भाग होता है।
a. 1 b. 3 c. 5 d. 6

596. कफज विकृति में दी जानेवाली निरूहबस्ति में स्नेह का प्रमाण
a. 1/2 b. 1/4 c. 1/6 d. 1/8

597. विरेचन के लिए योग्य ऋतू
a. प्रावृट् b. शरद c. ग्रीष्म d. वसंत

598. नस्य कर्म कितने है।
a. 1 b. 2 c. 4 d. 5

599. तीक्ष्ण प्रधमन चिकित्सा है।
a. तन्द्रा b. अपतानक c. अपतंत्रक d. All

600. आचार्य चरक ने अकाल मृत्यु का वर्णन किया है।
a. च. वि. अ. 2 b. च. वि. अ. 3
c. च. शा. अ. 6 d. b & c

601. आयुर्वेद में पुरूष के प्रकार ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

602. प्रकृति है ?
a. त्रिगुणात्मक b. त्रिगुणातीत c. अव्यक्त d. a & c

603. शुक्र तथा शोणित का अवबंध होता है ?
a. सद्योगृहीत b. व्यक्तगर्भा
c. आसन्न प्रसवा d. गृहीत गर्भा

604. ऋतुमती के लक्षण वर्णित है ? (चरक)
a. शा. 3 b. शा. 4 c. शा. 10 d. शा. 5

605. रसजभाव की संख्या ?
a. 20 b. 10 c. 6 d. 18

606. स्वर तथा वर्ण है ?
a. आत्मज b. सात्मज c. a & b d. None

607. मज्जा तथा मस्तिष्क का प्रमाण
a. ½ अंजलि, ½ अंजलि b. ½अंजलि, 1 अंजलि
c. 1 अंजलि, ½ अंजलि d. None

608. कतिधापुरूषीय शारीर अध्याय का वर्णन है ?
a. च.शा. 1 b. सु.शा. 1 c. वा. शा. 1 d. सभी

609. आचार्य चरक ने शारीर प्रथम अध्याय में पुरूष के आश्रित कितने प्रश्नों का वर्णन किया है ?
a. 8 b. 16 c. 23 d. 36

610. आत्मा के लक्षण है ?
a. वशी, निष्क्रिय b. स्वतंत्र, सर्वग c. क्षेत्रज्ञ, साक्षी d. सभी

611. मतिमता वर: है ?
a. पुनर्वसु b. अग्निवेश c. चरक d. दृढबल

612. चतुर्विंशति पुरूष है ?
a. कर्मपुरूष b. चिकित्स्य पुरूष c. राशि पुरूष d. सभी

613. पुरूष संज्ञक: कहा गया है ?
a. एक धातुज b. षडधातुज c. चतुर्विंशतिधातुज d. सभी

614. मन के गुण है ?
a. 1 b. 2 c. 3 d. 8

615. मन का विषय नही है ?
a. उह्य b. विचार c. ध्येय d. अणुत्व

616. आयु
a.

617. साक्ष
a.

618. प्रज्ञा
a. f
c. ध

619. विषम
a. उ

620. मन
a. ध

621. स्वाभ
a. दै

622. सभी
a. यो

623. अणि
a. गु

624. स्मृति
a. 1

625. रजस्त
a. यो

626. सत्य
a. यो
c. चतु

627. ज्ञानाधि
a. मन

628. चतुष्पा
a. शुक्र

629. शुक्र में
a. पृथ्व

630. चरक ने
a. 2

631. वातिक
a. वायु

632. निष्ठीवि
a. सद्य

633. चरक ने
a. 2

634. विश्वकम
a. वायु

635. ग्रीष्म में
a. अभ्र

636. नरोहिता
a. चरक

637. वसा एवं
a. मातृज

638. धमनी भ
a. मातृज

639. तृप्ति, पुष्टि
a. सात्म

616. आयुर्वेद के सिध्दान्त से इंन्द्रियां होती है ?
a. अहंकारिक b. भौतिक c. दोनों d. None

617. साक्षी माना जाता है ?
a. आत्मा b. मन c. इन्द्रिया d. सभी

618. प्रज्ञापराध है ?
a. विषमज्ञान b. विषम प्रवृत्ति
c. धी धृति स्मृति विभ्रंश d. सभी

619. विषमाभिनिवेशो यो नित्यानित्ये हिताहिते.....लक्षण है ?
a. अतत्वाभिनिवेश b. प्रज्ञापराध c. बुध्दीविभ्रंश d. None

620. मन को नियमित करनेवाली है ?
a. धी b. धृति c. स्मृति d. सभी

621. स्वाभाविक रोगो की चिकित्सा होती है ?
a. दैवव्यपाश्रय b. युक्तिव्यपाश्रय c. सत्वावजय d. निष्प्रतिक्रिय

622. सभी वेदनाओं का नाश होता है ?
a. योग से b. मोक्ष से c. Both d. सत्कर्म से

623. अणिमा,महिमा, लघिमा..... इत्यादी आठ प्रकार की सिध्दिया है ?
a. गुणप्रधान b. ब्रह्मप्रधान c. क्षुद्रसिध्दी d. मोक्ष प्रधान

624. स्मृति के कारण है ?
a. 1 b. 2 c. 4 d. 8

625. रजस्तमोऽभावात बलवत्कर्मसंक्षयाद..... है।
a. योग b. मोक्ष c. Both d. सत्याबुध्दि

626. सत्य कथन है ?
a. योगो मोक्ष प्रवर्तक:– चरक b. योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:– चरक
c. चतुर्विशंति को हयष राशि:पुरुष– चरक d. a & b

627. ज्ञानाधिकरण.....
a. मन b. आत्मा c. इन्द्रिया d. सभी

628. चतुष्पात्प्रभवं च षड्भ्यो..... है ?
a. शुक्र b. रज c. आत्मा d. शरीर

629. शुक्र में कौन सा महाभूत नहीं पाया जाता है ?
a. पृथ्वी b.अग्नि c. वायु d. आकाश

630. चरक ने नपुंसक के प्रकार बताये है ?
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

631. वातिक षंढ में दोष है ?
a. वायु b. वायु, अग्नि c. वायु, कफ d. वायु, आकाश

632. निष्ठीविका गौरवं अङ्गसाद..... लक्षण है ?
a. सद्योगृहीत गर्भा b. व्यक्त गर्भा c. प्रजायिनी d. रक्तज गुल्म

633. चरक ने कर्म के अनुसार कितने प्रकार की गर्भ विकृती बतायी है ?
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

634. विश्वकर्मा पर्याय है ?
a. वायु का b. आत्मा का c. मन का d. वायु एवं आत्मा का

635. ग्रीष्म में संचित दोषों का निर्हरण करते है ?
a. अभ्रकाल में b. घनात्यय में c. तुषारकाल d. सभी

636. नरोहिताहार विहार सेवी समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्त: Ref. है ?
a. चरक सुत्र b. चरक शारीर c. वाग्भट सुत्र d. वाग्भट शारीर

637. वसा एवं वपावहन भाव है ?
a. मातृज b. पितृज c. रसज d. सात्म्यज

638. धमनी भाव है ?
a. मातृज b. पितृज c. रसज d. आत्मज

639. तृप्ति, पुष्टि, उत्साह भाव है ?
a. सात्म्यज b. सत्वज c. आत्मज d. रसज

640. जो इन्द्रियों का अभिग्राहक है, उसे कहते है ?
a. मन b. आत्मा c. गर्भशरीर d. None

641. विवेक, भाव है ?
a. आकाशात्मक b. वायव्यात्मक c. अग्न्यात्मक d. पृथिव्यात्मक

642. चरक ने दौहृद काल माना है ?
a. 2nc Month b. 3rd Month
c. 4th Month d. 1 1/2- 5 Month तक

643. चरक ने गर्भिणी कार्श्यमापद्यते विशेषत कहा है –
a. चतुर्थे मास b. पंचमेमास c. षष्ठेमास d. सप्तमेमास

644. योनि भेद से शरीर का प्रकार होता है।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

645. गर्भ के शुभ भावो की संख्या है।
a. 3 b. 5 c. 8 d. 11

646. चरकमतानुसार रोष अंश की प्रधानतायुक्त सत्व भेद की संख्या है।
a. 5 b. 6 c. 7 d. 8

647. लोकगत भाव द्वापर का पुरूषगत भाव है।
a. ज्योति b. यौवन c. स्थाविर d. मरण

648. निवृत्ति का कारण है ।
a. उपरम b. विश्राम c. मोक्ष d. सभी

649. प्रवृत्ति का कारण है।
a. मोह जन्य कर्म b. इच्छा जन्य कर्म
c. द्वेष जन्य कर्म d. सभी

650. सत्या बुध्दि का पर्याय नही है।
a. अध्यय b. मेधा c. प्रज्ञा d. मति

651. तत्र शरीरं नामचेतनाधिष्ठान भूतं..... समयोगवाहि Ref. है।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. शारंगधर

652. चरक ने शरीर धातु गुणों का वर्णन किया है।
a. पुरुष विचय b. शरीर विचय c. शरीर संख्या d. जातिसूत्रीय

653. यह भाव जो शरीर वृध्दिकर तथा बलवृध्दिकर दोनो है।
a. आहार सौष्ठव b. आहार संपच्च
c. स्वभावसंसिध्दी d. युवावस्था

654. आहार परिणामकर भावों में किस भाव का कर्म मार्दव है।
a. वायु b. क्लेद c. स्नेह d. सभी

655. चरक के अनुसार गर्भ की गर्भाशय में स्थिती है।
a. पृष्ठाभिमुख b. उर्ध्वशिरा c. संकुच्याङ्गा d. सभी

656. गर्भ की परमायु होती है।
a. 6 माह b. 9 माह c. 1 वर्ष d. 100 वर्ष

657. दद्रु, कुष्ठ संभव अधिष्ठान त्वचा है।
a. द्वितीया b. तृतीया c. चतुर्थी d. षष्ठी

658. चेतना का अधिष्ठान है।
a. हृदय b. मस्तिष्क c. पत्र्चेन्द्रिय अधिष्ठान d. सभी

659. प्राणायतन कोष्ठांग एवं प्रत्यंगो की संख्या (चरक नुसार) क्रमश: है।
a. 10,13,56 b. 10,20,63
c. 56,10,15 d. 10,15,56

660. चरकमतानुसार मर्मो की संख्या है।
a. 7 b. 100 c. 107 d. वर्णन नहीं

661. रस धातु का प्रमाण है।
a. 7 अंजलि b. 9 अंजलि c. 4 अंजलि d. 2 अंजलि

662. आर्तव का प्रमाण है।
a. 10 अंजलि b. 9 अंजलि c. 4 अंजलि d. 2 अंजलि

663. गर्भाधान हेतु स्त्री को सेवन कराते है।
a. तेल माष b. मधुरौषध संस्कृत घृत क्षीर
c. मधुरौषध संस्कृत घृत तैल d. क्षीर, माष

664. पुत्रेष्टि यज्ञ का वर्णन किया है।
a. चरक, सुश्रुत b. चरक, वाग्भट
c. चरक, काश्यप d. चरक,शांरगधर

665. चरक के अनुसार गौर वर्ण में कारण है।
a. जल b. तेज c. आकाश d. a+b+c

666. चरक ने पुंसवन हेतु प्रयोग नहीं बताया है।
a. जीवक b. ऋषभक c. सहदेवा d. सहचर

667. चरकमतानुसार पुंसवन का काल है।
a. प्राग्व्यक्तीभावात् b. गर्भधारण के बाद 5 माह तक
c. Both d. गर्भधारण से पूर्व

668. गर्भावस्था में अम्लरस का अधिक सेवन करने से उत्पन्न सन्तान को होता है।
a. रक्तपित्त b. अम्लपित्त c. खालित्य d. पालित्य

669. यस्या पुर्नगर्भ: प्रसुप्तो न स्पन्दते लक्षण है।
a. उपविष्टक b. नागोदर c. लीन गर्भ d. None

670. किक्किस का व्याधिकाल है।
a. 4 माह b. 7 माह c. 9 माह d. 3 माह

671. गर्भिणी को प्रथम मास में देते है।
a. अनुपसंस्कृत क्षीर b. संस्कृत क्षीर
a. मधुरौषधसिध्द क्षीर d. मधुरौषधसिध्द क्षीर सर्पि

672. चरक ने नाभिनालछेदन कहा है।
a. 2 अंगुल b. 4 अंगुल c. 8 अंगुल d. नही कहा है

673. चक्रपाणी के अनुसार बालक का नामकरण करना चाहिए।
a. 4th day b. 10th day c. 12th day d. b+c

Charak Numericals

सुत्रस्थान

01. चरकनुसार धुमवर्तीकी लंबाई कितनी होनी चाहिए ?
a. 10 अंगुल b. 12 अंगुल c. 8 अंगुल d. 16 अंगुल

02. वाग्भटनुसार इर्षिका (सींक) की लंबाई कितनी होती है ?
a. 10 अंगुल b. 12 अंगुल c. 8 अंगुल d. 16 अंगुल

03. प्रायोगीक धुमपान के चरकनुसार कितने काल होते है ?
a. 6 काल b. 8 काल c. 10 काल d. 12 काल

04. विरेचनीक धुमपान दिन में कितनी समय किया जाय ?
a. 2 बार b. 1 बार c. 3 बार d. None

05. प्रायोगीक धुमपान के लिए धुमनेत्र की लंबाई (चरक)
a. 24 अं. b. 32 अं. c. 36 अं. d. 40 अं.

06. कारण द्रव्यो की संख्या ?
a. 6 b. 8 c. 9 d. 10

07. आध्यात्मीक गुण संख्या ?
a. 4 b. 5 c. 6 d. 7

08. आयुर्वेदोक्त गुण संख्या ?
a. 41 b. 46 c. 43 d. 45

09. मुलीनी द्रव्य संख्या ?
a. 16 b. 17 c. 18 d. 19

10. फलीनी द्रव्य संख्या ।
a. 16 b. 17 c. 18 d. 19

11. अपामार्गतण्डुलीय अध्याय में यवागु संख्या ?
a. 32 b. 34 c. 26 d. 28

12. आरग्वधीय अध्याय में चूर्ण प्रदेह संख्या ?
a. 32 b. 34 c. 26 d. 28

13. महाकषाय संख्या (चरक नुसार) ?
a. 50 b. 500 c. 45 d. 450

14. विरेचन द्रव्य के आश्रय ?
a. 6 b. 600 c. 66 d. None of these

15. कषाय की योनियाँ ?
a. 5 b. 6 c. 8 d. 9

16. अधारणीय वेगो की संख्या ? (चरक)
a. 13 b. 14 c. Both A & B d. None

17. चरकनुसार पादांशिक क्रम सेवन काल ?
a. 5 दिन b. 6 दिन c. 7 दिन d. 14 दिन

18. चक्रपाणी नुसार पादांशीक क्रम सेवन काल ?
a. 5 दिन b. 6 दिन c. 7 दिन d. 14 दिन

19. इन्द्रीयोपक्रमणीय अध्यायोमे इंद्रीय संख्या ?
a. 5 b. 6 c. 11 d. None

20. सद्वृत्तार्तगंत क्षौरकर्म कितने दिन के अंतर में करने को कहा है।
a. 5 days b. 10 days c. 15 days d. 1 day

21. च.सु. 8 में मन के हेतु कितने कहे है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 2

22. उत्तम वैद्य के गुण ?
a. 4 b. 5 c. 6 d. 8

23. शुभ गुण संख्या ?
a. 4 b. 5 c. 6 d. 8

24. वैद्य की वृत्ती कितनी है ?
a. 4 b. 5 c. 6 d. 8

25. प्रत्यक्ष ज्ञान बाधा कारक कारण ?
a. 6 b. 8 c. 10 d. 4

26. सुश्रुत नुसार सृष्टी उत्पत्ती कारण संख्या ?
a. 4 b. 5 c. 6 d. None

27. तिस्त्रैषणीय अध्याय में कितने त्रिको का वर्णन है ?
a. 5 b. 6 c. 7 d. 8

28. वातकलाकलीय अध्याय में वात संम्बधी कितने प्रश्न पुछे ?
a. 6 b. 8 c. 10 d. 18

29. वातकलाकलीय अध्याय में वात के कितने गुण है ?
a. 6 b. 8 c. 10 d. 12

30. स्नेह की कितनी योनीयाँ होती है ?
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

31. स्नेह भेद ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. None

32. स्नेह की प्रविचारणाएँ कितनी ?
a. 24 b. 64 c. A & B d. None

33. स्नेह की मात्राएँ कितनी ? (चरक)
a. 2 b. 3 c. 4 d. None

34. स्नेह की मात्राएँ कितनी ? (सुश्रुत)
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6

35. स्नेह प्रकर्ष काल ?
a. 3 रात्र b. 5 रात्र c. 7 रात्र d. Both A & C

36. स्नेह स
a. 3
37. वमन
a. 1
38. विरेचन
a. 1
39. पाक भे
a. 2
40. अग्निस्वे
a. 11
41. सुश्रुतानु
a. 2
42. काश्यप
a. 2
43. नाडीस्वे
a. 1
44. नलीका
a. व्य
c. व्य
45. नाडीस्वे
a. व्य
c. व्य
46. जेन्ताक
a. 16
c. 16
47. निरग्नि स
a. 8
48. स्वेदाध्य
a. 2
49. भेल के
a. 2
50. संसर्जन
a. 5
51. संसर्जन
a. 8
52. विरेचनाथ
a. 1
53. वमन क
a. 3
54. वमन क
a. प्रथम
c. तृतीय
55. विरेचन
a. 1 अ
56. शिरोरोगों
a. 3
57. हृदय रो
a. 5

36. स्नेह सात्म्य सिमा ?

a. 3 दिन b. 5 दिन c. 7 दिन d. 9 दिन

37. वमन के लिए स्नेहप्रयोग के बाद विश्राम काल ?

a. 1 दिन b. 2 दिन c. 3 दिन d. None

38. विरेचन के लिए स्नेहप्रयोग के बाद विश्राम काल ?

a. 1 दिन b. 2 दिन c. 3 दिन d. None

39. पाक भेद से स्नेह प्रकार ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

40. अग्निस्वेद के प्रकार ?

a. 11 b. 12 c. 13 d. 14

41. सुश्रुतानुसार साग्नि स्वेद भेद ?

a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

42. काश्यप नुसार स्वेद प्रकार ?

a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

43. नाडीस्वेदन नलीका लंबाई ?

a. 1 व्याम b. 1/2 व्याम c. Both A & B d. None

44. नलीका अग्रभाग प्रमाण ?

a. व्यामअर्धभाग b. व्यामचर्तुभाग

c. व्यामाष्टभाग d. व्यामअष्टमांशभाग

45. नाडीस्वेदन नलीका मुलभाग प्रमाण ?

a. व्यामअर्धमाग b. व्यामचर्तुभाग

c. व्यामषष्टभाग d.व्यामअष्टमांशभाग

46. जेन्ताक स्वेद विधी में कुटागार की लंबाई, चौडाई और उचाई ?

a. 16,14,16 अरत्नी b. 16,16,18 अरत्नी

c. 16,15,16 अरत्नी d. 16,16,16 अरत्नी

47. निरग्नि स्वेद भेद ?

a. 8 b. 9 c. 10 d. 13

48. स्वेदाध्याय में स्वेद के कितने द्वंद्व वर्णन किये है ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 6

49. भेल के नुसार अवगाह स्वेद काल ?

a. 2 मुहुर्त b. 3 मुहुर्त c. 4 मुहुर्त d. 5 मुहुर्त

50. संसर्जन काल अवधी ?

a. 5 दिन b. 6 दिन c. 7 दिन d. 8 दिन

51. संसर्जन क्रम बोधक अन्नकाल प्रधान शुध्दी में ?

a. 8 अन्नकाल b. 10 अन्नकाल c. 12 अन्नकाल d. 14 अन्नकाल

52. विरेचनार्थ त्रिवृत्त कल्क मात्रा प्रमाण ?

a. 1 अक्ष b. 2 अक्ष c. 3 अक्ष d. 4 अक्ष

53. वमन कर्म की प्रधान शुध्दि में संसर्जन क्रम कितने दिन कराना चाहिए?

a. 3 b. 5 c. 7 d. 12

54. वमन कर्म की जघन्य शुध्दि में सामान्य भोजन कब से कराना चाहिए ?

a. प्रथम दिन सायंकाल b. द्वितीय दिन सायंकाल

c. तृतीय दिन प्रात:काल d. तृतीय दिन सायंकाल

55. विरेचन कर्म में त्रिवृत्त चुर्ण की मात्रा कितनी है ?

a. 1 अक्ष b. 1 कर्ष c. 12 gm d. All.

56. शिरोरोगों की संख्या कितनी है ?

a. 3 b. 5 c. 7 d. 4

57. हृदय रोगों की संख्या

a. 5 b. 7 c. 3 d. 13

58. वात, पित्त और कफ, द्वंद्वज, सन्निपातिक के क्षय, स्थान और वृध्दि के विकल्प भेद से होने वाले रोगो की संख्या.

a. 62 b. 63 c. 64 d. 67

59. क्षय के प्रकार

a. 13 b. 18 c. 21 d. 17

60. मधुमेह पिडकाओं की संख्या

a. 5 b. 7 c. 3 d. 8

61. दोषों की गतियों की संख्या

a. 3 b. 9 c. 6 d. 13

62. दोषों के संसर्ग में भेद संख्या

a. 9 b. 7 c. 13 d. 6

63. यथा वृध्दैस्तथा क्षीणैर्दोषे: स्यु.....।

a. अष्टविशति b. पंचविशति c. विशति d. None

64. दोषो के सन्निपात योग में संख्या

a. 9 b. 6 c. 3 d. 13

65. विद्रधि के कितने प्रकार (चरक)

a. 4 b. 3 c. 2 d. 1

66. अंतविद्रधि के स्थान (चरक)

a. 3 b. 4 c. 1 d. None

67. दोष भेद से शोथ के प्रकार

a. 13 b. 3 c. 7 d. 6

68. शोथ के उपद्रव (चरक)

a. 1 b. 3 c. 5 d. 7

69. च.सु. 18 में स्थानीय शोथप्रकार रोग कितने वर्णन किए गए है ?

a. 21 b. 19 c. 6 d. 7

70. साध्य के भेद

a. 2 b. 4 c. 6 d.None

71. असाध्य के भेद।

a. 1 b. 2 c. 6 d. None

72. रोग परिक्षणीय विषय ।

a. 4 b. 3 c. a&b d. None

73. उदररोग की संख्या/प्रकार ।

a. 3 b. 5 c. 8 d. 7

74. कास रोग के प्रकार ।

a. 13 b. 8 c. 7 d. 11

75. दुग्ध के दोष ।

a. 11 b. 7 c. 8 d. 3

76. वीर्य के दोष ।

a. 7 b. 8 c. 4 d. 6

77. कुष्ठ के प्रकार ।

a. 7 b. 11 c. अपरिसंख्येय d. All

78. पिडकाओ की संख्या ।

a. 7 b. 8 c. 13 d. 15

79. विसर्प की संख्या ।

a. 8 b. 7 c. 5 d. 6

80. अतिसार के प्रकार ।

a. 6 b. 7 c. 3 d. 4

81. उदावर्त के प्रकार ।

a. 3 b. 4 c. 7 d. 6

82. गुल्म के प्रकार ।
a. 3 b. 4 c. 5 d. 7

83. प्लीहा के दोष ।
a. 3 b. 5 c. 7 d. 9

84. मुत्राघात के प्रकार ।
a. 5 b. 3 c. 7 d. 13

85. श्वास रोग के प्रकार ।
a. 3 b. 5 c. 6 d. 7

86. हिक्का रोग के प्रकार ।
a. 5 b. 3 c. 7 d. 4

87. तृष्णा रोग के प्रकार ।
a. 5 b. 7 c. 6 d. 3

88. शोथ के प्रकार ।
a. 5 b. 6 c. 7 d. 4

89. अरोचक के प्रकार ।
a. 3 b. 5 c. 4 d. 7

90. शिरोरोग के प्रकार ।
a. 5 b. 4 c. 13 d. 7

91. हृदयरोग के प्रकार ।
a. 4 b. 3 c. 7 d. 5

92. पाण्डुरोग के प्रकार ।
a. 4 b. 5 c. 3 d. 6

93. उन्माद रोग के प्रकार ।
a. 4 b. 5 c. 3 d. 6

94. अपस्मार रोग के प्रकार ।
a. 5 b. 3 c. 4 d. 7

95. व्रण के प्रकार ।
a. 4 b. 3 c. 7 d. 5

96. प्रतिशयाय के प्रकार ।
a. 5 b. 4 c. 7 d. 6

97. कर्णरोग के प्रकार ।
a. 3 b. 7 c. 4 d. 2

98. मुखरोग के प्रकार ।
a. 4 b. 5 c. 6 d. 3

99. ग्रहणी रोग के प्रकार ।
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6

100. मद के प्रकार ।
a. 3 b. 4 c. 2 d. 1

101. मूर्च्छा के प्रकार ।
a. 4 b. 6 c. 5 d. 3

102. छर्दि रोग के प्रकार ।
a. 3 b. 6 c. 4 d. 2

103. नपुंसकता के प्रकार ।
a. 6 b. 1 c. 2 d. 4

104. किलास के प्रकार ।
a. 7 b. 2 c. 3 d. 4

105. रक्तपित्त के प्रकार ।
a. 3 b. 7 c. 4 d. 1

106. ज्वर के प्रकार ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

107. अक्षिरोग के प्रकार ।
a. 2 b. 4 c. 6 d. 5

108. आयाम के प्रकार ।
a. 5 b. 3 c. 2 d. 7

109. गृध्रसी के प्रकार ।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

110. कामला के प्रकार ।
a. 5 b. 4 c. 2 d. 8

111. आमज रोग के प्रकार ।
a. 5 b. 2 c. 7 d. 8

112. वातरक्त के प्रकार ।
a. 8 b. 1 c. 4 d. 2

113. अर्श के प्रकार ।
a. 5 b. 2 c. 1 d. 8

114. उरूस्तम्भ के प्रकार ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

115. महागद के प्रकार ।
a. 4 b. 8 c. 1 d. 7

116. संन्यास के प्रकार ।
a. 7 b. 1 c. 2 d. 3

117. कृमीरोग के प्रकार ।
a. 20 b. 40 c. 10 d. 8

118. प्रमेह के प्रकार ।
a. 10 b. 20 c. 30 d. 40

119. योनिरोग के प्रकार ।
a. 4 b. 20 c. 10 d. 8

120. अष्टोदरीय अध्याय में कितने रोगधिकरण है ?
a. 46 b. 47 c. 48 d. 49

121. रोगो के मूल कारण ।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 8

122. वातरोग नानात्मज प्रकार ।
a. 20 b. 40 c. 60 d. 80

123. पित्तरोग नानात्मज प्रकार ।
a. 20 b. 40 c. 60 d. 80

124. कफरोग नानात्मज प्रकार ।
a. 20 b. 40 c. 60 d. 80

125. निन्दित पुरूष के प्रकार ।
a. 6 b. 7 c. 8 d. 9

126. निद्रा के प्रकार ।
a. 1 b. 2 c. 4 d. 6

127. चिकित्सा के प्रकार ।
a. 4 b. 6 c. 2 d. 8

128. लंघन के प्रकार ।
a. 10 b. 8 c. 6 d. 5

129. पानीय कल्याणघृत कितने औषधीयों से बनता है ?
a. 32 b. 28 c. 21 d. 18

130. उत्पत्ती भेद से आहार कितने योनीवाला होता है ।
a. 03 b. 01 c. 02 d. 04

131. आहार कितने प्रभाव वाला होता है ।
a. 04 b. 03 c. 02 d. 01

132. उपयो
a. 03

133. आहा
a. 03

134. आसव
a. 08

135. आचा
a. 150

136. आसव
a. 84

137. धान्या
a. 03

138. फलास
a. 20

139. पुष्पास
a. 09

140. काण्डा
a. 04

141. कौशिक
a. 01

142. पत्रासव
a. 01

143. मूलासव
a. 10

144. शर्करास
a. 02

145. भद्रकाप
a. 02

146. शाकुन्त
a. 04

147. मौद्गल
a. 01

148. त्वगासव
a. 01

149. कुमारशि
a. 05

150. वार्योवि
a. 04

151. वैदेह नि
a. 06

152. धामार्गव
a. 09

153. पुनर्वसु
a. 05

154. कांकाय
a. 05

155. द्रव्य,देश
a. 60

156. दो रसों
a. 20

132. उपयोग दृष्टी से आहार कितने प्रकार का होता है।
a. 03 b. 04 c. 05 d. 06

133. आहार कितने प्रकार के स्वाद वाला होता है ?
a. 03 b. 06 c. 01 d. None

134. आसव योनियाँ संख्या ?
a. 08 b. 09 c. 10 d. None

135. आचार्य चरकानुसार अग्रण्य संख्या ?
a. 150 b. 152 c. 125 d. 155

136. आसव कितने प्रकार के है ?
a. 84 b. 80 c. 48 d. 85

137. धान्यासव के प्रकार ?
a. 03 b. 06 c. 05 d. 09

138. फलासव के प्रकार ?
a. 20 b. 26 c. 09 d. 08

139. पुष्पासव के प्रकार ?
a. 09 b. 08 c. 10 d. None

140. काण्डासव के प्रकार ?
a. 04 b. 03 c. 02 d. 01

141.कौशिक हिरण्याक्ष ने रस प्रकार बताए है ?
a. 01 b. 03 c. 02 d. 04

142. पत्रासव के प्रकार ?
a. 01 b. 03 c. 02 d. 04

143. मूलासव के प्रकार ?
a. 10 b. 11 c. 09 d. 08

144. शर्करासव के प्रकार ?
a. 02 b. 01 c. 04 d. None

145. भद्रकाप्य ने रस प्रकार बताए है ?
a. 02 b. 03 c. 01 d. 04

146. शाकुन्तेय ब्राम्हण ने रस प्रकार बताए है ?
a. 04 b. 03 c. 02 d. 01

147. मौद्गल्य पूर्णाक्ष ने रस प्रकार बताए है ?
a. 01 b. 03 c. 04 d. 02

148. त्वगासव के प्रकार ?
a. 01 b. 02 c. 03 d. 04

149. कुमारशिरा भारव्दाज ने रस प्रकार बताए है ?
a. 05 b. 04 c. 02 d. 01

150. वार्योविद राजर्षी ने रस प्रकार बताए है ?
a. 04 b. 03 c. 06 d. 02

151. वैदेह निमि ने रस प्रकार बताए है ?
a. 06 b. 07 c. 08 d. 04

152. धामार्गव बडिश ने रस प्रकार बताए है ?
a. 09 b. 05 c. 08 d. 04

153. पुनर्वसु आत्रेय ने रस प्रकार बताए है ?
a. 05 b. 06 c. 01 d. none

154. कांकायन ने रस प्रकार बताए है ?
a. 05 b. 01 c. 03 d. असंख्य

155.द्रव्य,देश और काल के प्रभाव से रसो के विकल्प वाले कितने भेद होते है।
a. 60 b. 64 c. 46 d. 65

156. दो रसों के कितने संयोग बनते है ?
a. 20 b. 06 c. 15 d. 05

157. तीन रसों से कितने संयोग बनते है ?
a. 15 b. 20 c. 06 d. 05

158. चार रसों से कितने संयोग बनते है ?
a. 15 b. 20 c. 05 d. None

159. पॉच रसों के कितने संयोग बनते है ?
a. 15 b. 20 c. 06 d. 05

160. आहार द्रव्यों के कितने वर्ग होते है ?
a. 10 b. 08 c. 12 d. 11

161. मांस की कितने प्रकार की योनी कही गई है ?
a. 08 b. 10 c. 06 d. 05

162. गोदुग्ध में कितने गुण होते है ?
a. 08 b. 10 c. 06 d. 05

163. कितने स्थानों में प्राण स्थित होते है ?
a. 05 b. 06 c. 10 d. 11

164. आयुर्वेद शास्त्र के कितने अंङ्ग है ?
a. 08 b. 06 c. 10 d. 05

165. सुत्रस्थान् की अध्याय संख्या कितनी है ?
a. 07 b. 08 c. 30 d. 28

166. निदान स्थान की अध्याय संख्या कितनी है ?
a. 08 b. 12 c. 28 d. 30

167. विमानस्थान की अध्याय संख्या ?
a. 12 b. 28 c. 08 d. 30

168. शरीरस्थान की अध्याय संख्या ?
a. 08 b. 28 c. 12 d. 30

169. इन्द्रिय स्थान की अध्याय संख्या ?
a. 08 b. 30 c. 12 d. 28

निदानस्थान

1. चक्रपाणी नुसार उपशय प्रकार कितने ?
a. 14 b. 2 c. 16 d. 18

2. सम्प्राप्ती भेद कितने ? (चरक)
a. 5 b. 6 c. 7 d. 8

3. वाग्भटनुसार सम्प्राप्ती भेद ?
a. 5 b. 6 c. 7 d. 8

4. ज्वर प्रकार ?
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

5. ज्वर के कारण कितने ?
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

6. आगन्तुकं ज्वर प्रकार कितने ?
a. 4 b. 6 c. 3 d. 5

7. रक्तपित्त के मार्ग ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. None

8. गुल्म प्रकार कितने है ?
a. 5 b. 8 c. 3 d. a & b

9. प्रमेह के भेद ?
a. 3 b. 10 c. 18 d. 20

10. प्रमेह दुष्य संख्या ?
a. 5 b. 10 c. 15 d. 20

11. कफज प्रमेह संख्या ?
a. 5 b. 10 c. 4 d. 4

12. वातज प्रमेह संख्या ?
a. 4 b. 6 c. 10 d. 20

13. कुष्ठ कारक द्रव्य संख्या ?
a. 3 b. 5 c. 7 d. 9

14. कुष्ठ व्याधीगत दुष्य संख्या ?
a. 2 b. 4 c. 6 d. 7

15. कुष्ठ भेद कितने होते है?
a. 7 b. 18 c. अपरिसंख्येय d. All

16. राजयक्ष्मा उत्पत्ती कारण कितने ?
a. 4 b. 2 c. 6 d. 8

17. उन्माद प्रकार कितने है ?
a. 10 b. 4 c. 5 d. 3

18. भुतोन्माद के प्रकार ?
a. 8 b. 6 c. 10 d. 12

19. भुतोन्माद प्रयोज्य कारण कितने ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6

20. अपस्मार के प्रकार ?
a. 5 b. 4 c. 3 d. 6

विमानस्थान

1. रसों की संख्या कितनी होती है ?
a. 3 b. 4 c. 1 d. 6

2. वात/पित्त/कफ जनक रसों की संख्या कितनी है ?
a. 6 b. 1 c. 3 d. None

3. वात/पित्त/कफ शामक रसों की संख्या कितनी है ?
a. 3 b. 1 c. 6 d. None

4. सात्म्य के कितने प्रकार होते है ?
a. 3 b. 2 c. 6 d. All

5. रसानुसार सात्म्य कितने प्रकार का होता है ?
a. 3 b. 2 c. 7 d. None

6. आहार विधि विशेषायतन के कारण कितने होते है ?
a. 2 a. 6 c. 4 d. 8

7. काल कितने प्रकार का होता है ?
a. 4 b. 3 c. 2 d. 1

8. आहार विधी कितने प्रकार ।
a. 8 b. 10 c. 6 d. None

9. कुक्षि के कितने विभाग किए गए है ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. All

10. अमात्रावत आहार कितने प्रकार का होता है ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. None

11. आमदोष कितने प्रकार
a. 2 b. 3 c. 4 d. 6

12. जनपदोध्वंस सामान्य भाव कितने.
a. 2 b. 4 c. 6 d. असंख्येय

13. सतयुग कितने दिव्य वर्षों का होता है ?
a. 700 b. 4800 c. 3600 d. 2400

14. त्रेतायुग कितने दिव्य वर्षों का होता है ?
a. 3600 b. 300 c. 1200 d. 2400

15. व्दापरयुग कितने दिव्य वर्षों का होता है ?
a. 1200 b. 200 c. 2400 d. 3600

16. सत्युग में मनुष्य की आयु.
a. 400 b. 300 c. 200 d. 100

17. व्दापर युग में मनुष्य की आयु.
a. 400 b. 300 c. 200 d. 100

18. त्रेतायुग में मनुष्य की आयु.
a. 400 b. 300 c. 200 d. 100

19. कलीयुग कितने दिव्य वर्षों का होता है ?
a. 1200 b. 2400 c. 3600 d. 4800

20. कलीयुग में मनुष्य की आयु.
a. 60 b. 100 c. 80 d. 120

21. अपतर्पण के प्रकार.
a. 3 b. 10 c. 7 d. 6

22. देश के प्रकार
a. 3 b. 2 c. Both d. None

23. रोग ज्ञान के साधन कितने.
a. 3 b. 4 c. Both d. None

24. अंतर्मुख स्त्रोतों के कितने प्रकार है ?
a. 7 b. 10 c. 13 d. 14

25. स्त्रोतों के कितने प्रकार है ?
a. 2 b. 7 c. 13 d. 10

26. बहिर्मुख स्त्रोतों की संख्या पुरूषो में कितनी होती है ?
a. 9 b. 12 c. 7 d. सभी

27. बहिर्मुख स्त्रोतों की संख्या स्त्रियों में कितनी.
a. 9 b. 12 c. 3 d. 13

28. रोगानीक रोग समुह की संख्या कितनी है ?
a. 5 b. 10 c. 12 d. 8

29. प्रभाव भेद से रोग के प्रकार
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

30. बल भेद से रोग के प्रकार
a. 2 b. 1 c. 3 d. 4

31. अधिष्ठान भेद से रोग के प्रकार
a. 4 b. 3 c. 2 d. 1

32. निमित्त भेद से रोग के प्रकार
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

33. आशय भेद से रोग के प्रकार
a. 3 b. 4 c. 1 d. 2

34. कृमि के प्रकार –
a. 07 b. 06 c. 20 d. None

35. स्त्रज (शोणीत) कृमी प्रकार –
a. 05 b. 06 c. 07 d. 02

36. पुरीषज कृमी प्रकार ?
a. 05 b. 06 c. 07 d. 02

37. कफज कृमी प्रकार ?
a. 05 b. 06 c. 07 d. 02

38. तद्वीद्य संम्भाषा के भेद कितने होते है ?
a. 3 b. 2 c. Both a&b d. None

39. प्रतिपक्षी वि
a. 2

40. परिषद के
a. 2

41. वादमार्गज्ञान
a. 11

42. सिध्दांत के
a. 2

43. छल के प्रक
a. 2

44. वाक्य दोष
a. 2

45. अहेतु के वि
a. 2

46. निग्रहस्थान
a. 2

47. देश भेद कि
a. 2

48. च.वि.अ. 8
a. 10

49. देश के भेद
a. 1

1. धातुभेद से
a. 3

2. पुरूष को
a. 3

3. मन के गुण
a. 1

4. मन के विष
a. 2

5. मन के कर्म
a. 7

6. इंद्रियों की
a. 5

7. कर्मेंद्रियो कि
a. 3

8. ज्ञानेंद्रियों कि
a. 7

9. उभयेंद्रिय वि
a. 0

10. विकार की
a. 16

11. कितने तत्वे
a. 25

12. असात्म्येंद्रि
a. 1

39. प्रतिपक्षी कितने होते है ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

40. परिषद के कितने प्रकार है ।

a. 2 b. 3 c. 4 d. None

41. वादमार्गज्ञानार्थ पद संख्या ?

a. 11 b. 22 c. 44 d. 88

42. सिध्दांत के प्रकार ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

43. छल के प्रकार ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

44. वाक्य दोष के भेद ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

45. अहेतु के कितने प्रकार (च. वि. 8) में बताये है ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

46. निग्रहस्थान कितने प्रकार के होते है ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

47. देश भेद कितने ? (च. वि. अ. 8)

a. 2 b. 3 c. 4 d. None

48. च.वि.अ. 8 में कितने स्कंधो का वर्णन आया है ?

a. 10 b. 8 c. 6 d. 16

49. देश के भेद कितने होते है ? (च.क.अ. 1)

a. 1 b. 3 c. 4 d. None

चरक शारीरस्थान

1. धातुभेद से पुरूष कितने प्रकार का होता है ?

a. 3 b. 6 c. 1 d. 25

2. पुरूष को कितने तत्वात्मक माना गया है?

a. 3 b. 6 c. 24 d. 25

3. मन के गुण कितने है ?

a. 1 b. 2 c. 7 d. 5

4. मन के विषय कितने है ?

a. 2 b. 3 c. 5 d. 7

5. मन के कर्म कितने है ?

a. 7 b. 4 c. 3 d. 1

6. इंद्रियों की संख्या ?

a. 5 b. 1 c. 10 d. 11

7. कर्मेंद्रियो की संख्या ?

a. 3 b. 5 c. 7 d. 1

8. ज्ञानेंद्रियों की संख्या ?

a. 7 b. 5 c. 3 d. 1

9. उभयेंद्रिय की संख्या ?

a. 0 b. 1 c. 5 d. 11

10. विकार की संख्या ?

a. 16 b. 5 c. 11 d. 16

11. कितने तत्वो से मिलकर क्षेत्र बनता है ?

a. 25 b. 24 c. 23 d. 10

12. असात्म्येंद्रियार्थ संयोग के कारण कितने है ?

a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

13. दुःख के कारण कितने है ?

a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

14. चित्त की वृत्तियों को कितने श्रेनियो में बांटा गया है ?

a. 4 b. 3 c. 5 d. 2

15. योगियों की सिध्दीया कितनी है ?

a. दशविध b. एकादशविध c. अष्टविध d. अष्टादशविध

16. लौकिक स्मृतिजनक कितने कारण होते है ?

a. 8 b. 16 c. 24 d. 10

17. सभी प्राणियो के गर्भशरीरो के निर्माण के लिए कितने प्रकार के महाभुत कारणीभुत होते है ?

a. 5 b. 16 c. 10 d. None

18. गर्भ निर्माणक भाव कितने होते है ?

a. 2 b. 5 c. 6 d. 7

19. मातृज भाव कितने है ?

a. 20 b. 10 c. 22 d. 8

20. पितृज भाव कितने है ?

a. 20 b. 10 c. 22 d. 8

21. आत्मज भाव कितने है ?

a. 20 b. 10 c. 22 d. 8

22. सात्म्यज भाव कितने है ?

a. 10 b. 8 c. 6 d. 18

23. रसज भाव कितने है ?

a. 8 b. 10 c. 6 d. 18

24. सत्वज भाव कितने है ?

a. 10 b. 8 c. 6 d. 18

25. प्राणिज योनियाँ कितने प्रकार की होती है ?

a. 2 b. 4 c. 7 d. 5

26. गर्भ कितने तत्वो से बनता है ?

a. 24 b. 1 c. 6 d. 5

27. दौहृद स्थिती गर्भिणी में कौनसे मास मे उत्पन्न होती है ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

28. शारीर दोषों की संख्या ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

29. मानस दोषों की संख्या ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 7

30. मानसिक प्रकृति कितने प्रकार की होती है ?

a. 2 b. 3 c. 5 d. 7

31. सात्विक प्रकृति कितने प्रकार की होती है ?

a. 7 b. 6 c. 3 d. All

32. राजस प्रकृति कितने प्रकार की होती है ?

a. 7 b. 6 c. 3 d. 4

33. तामस प्रकृति कितने प्रकार की होती है ?

a. 7 b. 6 c. 3 d. 5

34. लोक भाव की संख्या कितनी बताई है ?

a. 2 b. 10 c. 12 d. 24

35. लोक/षड्धातु पुरूष की कितनी दशाए होती है ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

36. दुःखो की प्रवृत्ति के कारण कितने है ?

a. 5 b. 4 c. 7 d. 8

37. संक्षेप में दु:ख की प्रवृत्ती से कितने विकार उत्पन्न होते है ?
a. 4 b. 6 c. 8 d. 10

38. मोक्ष के कितने पर्याय बताए गए है ?
a. 4 b. 6 c. 8 d. 10

39. सर्व शरीर वृध्दीकर भाव कितने है ?
a. 4 b. 13 c. 8 d. 6

40. बलवृध्दिकर भाव कितने है ?
a. 6 b. 13 c. 10 d. 8

41. प्रशस्त आहार परिणामकर भाव
a. 12 b. 5 c. 6 d. 10

42. संक्षेप में शरीर की धातुए कितने प्रकार की होती है ?
a. 2 b. 5 c. 7 d. 10

43. त्वचाएँ कितनी होती है ?
a. 5 b. 7 c. 6 d. 3

44. शरीर को कितने अंगो में विभागा गया है ?
a. 2 b. 6 c. 7 d. 5

45. अस्थियों की संख्या कितनी है ?
a. 206 b. 306 c. 360 d. 510

46. दन्त की संख्या ?
a. 28 b. 20 c. 24 d. 32

47. दंतोलुखल की संख्या ?
a. 20 b. 24 c. 28 d. 32

48. पाणिपादांगुली अस्थि संख्या ?
a. 8 b. 16 c. 32 d. 60

49. पाणिपाद शलाकाओ की संख्या ?
a. 5 b. 20 c. 15 d. 10

50. पाणिपाद शलाका अधिष्ठान ?
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

51. पार्ष्णि संख्या ?
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

52. गुल्फ की संख्या ?
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

53. अरत्नि संख्या ?
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

54. तालु अस्थि संख्या ?
a. 8 b. 2 c. 4 d. 6

55. पृष्ठगत अस्थि संख्या ?
a. 15 b. 45 c. 14 d. 24

56. ग्रीवास्थि संख्या ?
a. 15 b. 45 c. 14 d. 24

57. उरोऽस्थि संख्या ?
a. 14 b. 24 c. 25 d. 37

58. पशुर्कास्थालक (Rib socket) संख्या ?
a. 14 b. 26 c. 24 d. 48

59. पशुर्कास्थालकार्बुद संख्या ?
a. 24 b. 12 c. 36 d. 48

60. नासिकागण्डकुटललाट संख्या ? (प्रत्येकी)
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

61. शिर: कपालास्थि संख्या ?
a. 8 b. 6 c. 4 d. 2

62. प्राणायतनों की संख्या ?
a. 4 b. 6 c. 8 d. 10

63. कोष्ठांगों की संख्या ?
a. 10 b. 15 c. 21 d. 25

64. शरीर के छह अंगो में कितने प्रत्यंग जुडे है ?
a. 52 b. 56 c. 50 d. 60

65. शरीर के बडे छिद्र कितने है ?
a. 7 b. 19 c. 12 d. 9

66. शिर भाग में कितने छिद्र होते है ?
a. 9 b. 17 c. 7 d. 10

67. सृक्किणी की संख्या ?
a. 4 b. 2 c. 6 d. 8

68. सिराओं की संख्या ?
a. 100 b. 300 c. 500 d. 700

69. धमनीओं की संख्या ?
a. 100 b. 200 c. 300 d. 400

70. पेशीओं की संख्या ?
a. 700 b. 400 c. 500 d. 1000

71. मर्मों की संख्या ?
a. 7 b. 107 c. 207 d. 300

72. संधीयों की संख्या ?
a. 700 b. 200 c. 500 d. 300

73.सिराओं एवं धमनीयों के अतिसुक्ष्म विभाग होने पर उनके मुखाग्र की संख्या।
a. 29,956 b. 29,659 c. 29,965 d. 29,569

74. उदक की मात्रा कितने अंजलि प्रमाण है ?
a. 8 b. 9 c. 10 d. 12

75. रस प्रमाण ?
a. 8 अंजलि b. 9 अंजलि c. 10 अंजलि d. 6 अंजलि

76. रक्त प्रमाण – अंजलि.
a. 8 b. 6 c. 4 d. 2

77. पुरीष प्रमाण – अंजलि.
a. 6 b. 4 c. 7 d. 8

78. कफ प्रमाण – अंजलि.
a. 8 b. 2 c. 4 d. 6

79. पित्त प्रमाण – अंजलि.
a. 8 b. 5 c. 7 d. 4

80. मुत्र प्रमाण – अंजलि.
a. 4 b. 3 c. 2 d. 1

81. वसा प्रमाण – अंजलि.
a. 2 b. 3 c. 1 d. 4

82. मेद प्रमाण – अंजलि.
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

83. मज्जा प्रमाण – अंजलि.
a. 2 b. 1 c. 3 d. 4

84. मस्तिष्क प्रमाण – अंजलि.
a. 1 b. 1/2 c. 2 d. 11/2

85. शुक्र प्रमाण – अंजलि.
a. 1/2 b. 1 1/2 c. 7 d. 1

86. अपर ओज प्रमाण
a. 8 बिंदु b. 1/2 अंजलि c. 1 अंजलि d. 11/2 अंजलि

87. शरीर
a. 18

88. शरीर
a. 15

89. शरीर
a. 15

90. शरीर
a. 5

91. शरीर
a. 18

92. शरीर
a. 2

93. नाभी
a. 1

94. नामक
a. 8th

95. जातक
a. 7th

1. च. इं.
a. 4

2. च. इं.
a. 2

3. स्वप्न
a. 5

4. मनुष्य
a. 2

5. छाया
a. 4

6. रूपभे
a. 4

1. भेषज
a. 03

2. अभेष
a. 04

3. रसाय
a. 02

4. हरित
a. 06

5. भल्लात
a. 8

6. 'अभ
a. 37

7. मेध्य
a. 04

87. शरीर में पृथ्वी महाभुतात्मक अंश

a. 18 b. 15 c. 5 d. 11

88. शरीर में आप्य महाभुतात्मक अंश

a. 15 b. 5 c. 18 d. 11

89. शरीर में अग्नि महाभुतात्मक अंश

a. 15 b. 18 c. 5 d. 11

90. शरीर में वायु महाभुतात्मक अंश

a. 5 b. 18 c. 15 d. 11

91. शरीर में आकाश महाभुतात्मक अंश

a. 18 b. 5 c. 15 d. 11

92. शरीर में आत्मज अंश

a. 2 b. 5 c. 11 d. 18

93. नाभी नाडी बंधनो की संख्या

a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

94. नामकरण संस्कार कौन से दिन किया जाता है ?

a. 8th day b. 12th day c. 10th day d. 21st day

95. जातकर्म संस्कार कब कराना चाहिए ?

a. 7th day b. 1st day c. 1 मास बाद d. 1 मास 7 दिन बाद

इन्द्रियस्थान

1. च. इं. 1 में प्रकृति भेद कितने बताये है ?

a. 4 b. 5 c. 6 d. 7

2. च. इं. 1 में विकृति भेद कितने बताये है ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

3. स्वप्न के भेद (चरक) ?

a. 5 b. 6 c. 7 d. 8

4. मनुष्य शरीर प्रमाण के प्रकार ?

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

5. छाया के भेद

a. 4 b. 5 c. 6 d. 7

6. रूपभेद से प्रभा के भेद

a. 4 b. 5 c. 6 d. 7

चिकित्सास्थान

1. भेषज के भेद ? (च. चि.)

a. 03 b. 04 c. 02 d. 01

2. अभेषज के भेद ? (च. चि.)

a. 04 b. 02 c. 03 d. 01

3. रसायन के प्रकार ? (च.चि.)

a. 02 b. 03 c. 01 d. 04

4. हरितकी में कितने रस होते है ?

a. 06 b. 04 c. 05 d. 01

5. भल्लातक के योग ?

a. 8 b. 06 c. 10 d. 9

6. 'अभयामलकीय' अध्याय में सिद्ध रसायनों के कितने योग वर्णित है ?

a. 37 b. 6 c. 16 d. 04

7. मेध्य रसायन कितने है ?

a. 04 b. 02 c. 03 d. 06

8. 'करप्रचितीय' अध्याय में रसायनों के कितने योग वर्णित है ?

a. 37 b. 6 c. 16 d. 04

9. 'आयुर्वेदसमुत्थानीय' अध्याय में रसायनों के कितने योग वर्णित है ?

a. 06 b. 37 c. 16 d. 04

10. 'प्राणकामिय' अध्याय में रसायनों के कितने योग वर्णित है ?

a. 37 b. 6 c. 16 d. 04

11. 'संयोगशरमूलीय्' वाजीकरण पाद में कितने योग वर्णित है ?

a. 8 b. 15 c. 16 d. 12

12. 'आसिक्तक्षीरिय्' वाजीकरण पाद में कितने योग वर्णित है ?

a. 8 b. 15 c. 16 d. 12

13. 'माषपर्णभृतिय' वाजीकरण पाद में कितने योग वर्णित है ?

a. 8 b. 15 c. 12 d. 10

14. शुक्र प्रवृत्ती के कितने कारण है ?

a. 8 b. 10 c. 4 d. 06

15. 'पुमान्जात बलादिक' वाजीकरण पाद में कितने योग वर्णित है ?

a. 15 b. 8 c. 12 d. 10

16. संतत ज्वर के आश्रय कितने है ?

a. 10 b. 12 c. 08 d. 1

17. तृतिय ज्वर के भेद कितने है ?

a. 04 b. 02 c. 03 d. 08

18. चतुर्थक ज्वर के भेद कितने है ?

a. 04 b. 12 c. 02 d. 08

19. सन्निपात ज्वर भेद ?

a. 12 b. 13 c. 08 d. 04

20. आगंतुज ज्वर के भेद ?

a. 04 b. 12 c. 08 d. 03

21. वातज प्रमेह के प्रकार ?

a. 06 b. 10 c. 04 d. 02

22. पित्तज प्रमेह के प्रकार ?

a. 06 b. 04 c. 10 d. 02

23. कफज प्रमेह के प्रकार ?

a. 04 b. 10 c. 06 d. 02

24. भल्लातकासव में भल्लातक की मात्रा ?

a. 4 पल b. 3 पल c. 2 पल d. 1 पल

25. चरक नुसार प्रमेह पिडका की संख्या ?

a. 6 b. 07 c. 10 d. 08

26. कुष्ठ व्याधी में दुष्य की संख्या ?

a. 06 b. 08 c. 03 d. 07

27. च.चि. 7/13 में कितने कुष्ठ का वर्णन किया है ?

a. 18 b. 10 c. 7 d. 11

28. यक्ष्मा के मुख्य कारण ?

a. 4 b. 03 c. 02 d. 1

29. भूतोन्माद के भेद ?

a. 04 b. 03 c. 8 d. 5

30. ग्रहावेश के प्रकार

a. 08 b. 04 c. 03 d. 02

31. अपस्मार में वेग का काल ?

a. 12-12 दिन b. 15-15 दिन c. 1-1 मास d. All of these

32. तृतियसर्पी गुड की सामान्य मात्रा ?

a. 1 तोला b. 3 तोला c. 2 तोला d. 1 तोला

33. शोथ के वातादि भेद ?
a. 02 b. 3 c. 04 d. None

34. जालकगर्दभ का वर्णन कौनसे अध्याय में आया है ? (च.चि.)
a. 11 b. 12 c. 30 d. 24

35. उदररोग की संख्या ?
a. 8 a. 7 a. 05 a. 04

36. प्रथमफलारिष्ट में हरितकी प्रमाण ?
a. 1 प्रस्थ b. 02 प्रस्थ c. 03 प्रस्थ d. 2 $^1/_2$ प्रस्थ

37. कुटजादि रस क्रिया में कुटजत्वक प्रमाण ?
a. 200 पल b. 80 पल c. 100 पल d. 125 पल

38. अग्नि के प्रकार ?
a. 4 b. 03 c. 02 d. 6

39. ग्रहणी के प्रकार ?
a. 03 b. 08 c. 4 d. 05

40. क्षारगुटिका में सुधाकाण्ड की मात्रा ?
a. 03 पल b. 4 पल c. 2 पल d. 1 पल

41. विष के वेग कितने होते है ?
a. 8 b. 10 c. 9 d. 24

42. विष के गुण कितने होते है ?
a. 24 b. 10 c. 9 d. 8

43. विष चिकित्सा उपक्रम कितने है ?
a. 10 b. 24 c. 8 d. 9

44. विष के कौनसे वेग में रक्त की विकृती होती है ?
a. 3 b. 1 c. 2 d. 7

45. विष के कौनसे वेग में मांस की विकृती होती है ?
a. 07 b. 03 c. 02 d. 8

46. विष के कौनसे वेग में दृष्टीमंडल दुषित होते है ?
a. 5 b. 4 c. 3 d. 7

47. विष के कौनसे वेग में हिक्का रोग उत्पन्न होता है ?
a. 5 b. 6 c. 04 d. 7

48. विष के कौनसे वेग में मृत्यु होती है ?
a. 6 b. 7 c. 8 d. 4

49. चतुष्पाद प्राणियों में स्थावर तथा जंगम विष के कितने वेग आते है ?
a. 4 b. 8 c. 03 d. 02

50. पक्षियों में कितने वेग आते है ?
a. 04 b. 8 c. 02 d. 03

51. जंगम विष में दंश स्थान से कितने अंगुल उपर बन्धन करना चहिए है।
a. 3 अंगुल b. 2 अंगुल c. 4 अंगुल d. 1अंगुल

52. सर्पो के प्रमुख कितने भेद है ?
a. 03 b. 02 c. 04 d. 05

53. मद्य के कितने गुण होते है ?
a. 8 b. 10 c. 02 d. 04

54. दृष्ट व्रण कितने प्रकार के होते है ?
a. 8 b. 12 c. 2 d. 03

55. व्रण के कितने स्थान होते है ?
a. 14 b. 16 c. 24 d. 8

56. व्रण के कितने गन्ध होते है ?
a. 8 b. 14 c. 16 d. 36

57. व्रण के कितने प्रकार के स्त्राव होते है।
a. 14 b. 16 c. 8 d. 24

58. व्रण के कितने प्रकार के उपद्रव होते है ?
a. 14 b. 16 c. 8 d. 24

59. व्रण में कितने दोष होते है ?
a. 8 b. 16 c. 14 d. 24

60. व्रण की कितनी प्रकार की सिध्द चिकित्सा है ?
a. 24 b. 36 c. 16 d. 14

61. नानात्व भेद से व्रण के प्रकार ?
a. 24 b. 34 c. 20 d. 16

62. प्रधान मर्म कितने है ?
a. 3 b. 7 c. 107 d. 05

63. वातज नानात्मज व्याधी संख्या ?
a. 40 b. 80 c. 20 d. 60

64. वायु के कितने आवरण है ?
a. 40 b. 30 c. 20 d. 80

65. योनिव्यापद की संख्या ?
a. 20 b. 30 c. 10 d. None

66. शुक्र के कितने दोष होते है ?
a. 10 b. 8 c. 4 d. 20

67. नपुंसकता भेद ?
a. 10 b. 8 c. 4 d. 2

68. योनिव्यापद कितने प्रकार के होते है ?
a. 8 b. 10 c. 20 d. 04

69. प्रदर के कितने भेद है ?
a. 03 b. 02 c. 05 d. 04

कल्पस्थान

1. देश के भेद कितने होते है ? (च.क.अ.1)
a. 2 b. 3 c. d. None

2. मदन फल संग्रह विधी में मदनफल को धान्य राशि में कितने दिन रखा जाता है।
a. 4 दिन b. 6 दिन c. 8 दिन d. 10 दिन

3. मदनफल सिध्द उत्कारिका के योग ?
a. 10 b. 18 c. 20 d. 1

4. मदनफल सिध्द कषाय योग ?
a. 8 b. 9 c. 10 d. 16

5. मदनफल सिध्द शष्कुली और पुपयोग कितने ?
a. 8 b. 10 c. 16 d. 20

6. वमनकारक योग संख्या ?
a. 355 b. 255 c. 155 d. 245

7. मदनफल योग ?
a. 133 b. 123 c. 163 d. None

8. जिमुतक योग संग्रह ?
a. 36 b. 12 c. 39 d. 60

9. देवताडक की मात्रा ?
a. 1 तोला b. 3 तोला c. 1 शुक्ती d. 2 शुक्ती

10. इक्ष्वाकु के कितने योग ?
a. 60 b. 45 c. 48 d. 39

11. धामार्गव योग संख्या ?
a. 60 b. 45 c. 48 d. 39

12. कुटज योग संख्या ?

a. 16 b. 18 c. 12 d. 20

13. कृतवेधन योग संख्या ?

a. 45 b. 48 c. 60 d. 18

14. श्यामा त्रिवृतकल्पाध्याय में त्रिवृत्त के योगो की संख्या ?

a. 133 b. 245 c. 110 d. 60

15. लोध्रचुर्ण की विरेचनार्थ मात्रा ?

a. 1 पाणितल b. 1 पाणीशुक्ती c. 1 शुक्ती d. अंतर्नखमुष्टी

16. लोध्र की कल्प संख्या ?

a. 12 b. 16 c. 20 d. None

17. स्नुही के भेद ?

a. 3 b. 2 c. 4 d. 5

18. कल्पस्थान में कितने द्रव्यो का आश्रय लेकर 600 वमन तथा विरेचन योग बताये है।

a. 12 b. 14 c. 15 d. 16

19. 1 मरिची मान याने कितने ध्वंशी ?

a. 1 ध्वंशी b. 4 ध्वंशी c. 2 ध्वंशी d. 6 ध्वंशी

20. स्नेहपाक के प्रकार (च. क. 12)

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

सिध्दीस्थान

1. कर्मबस्ति में कितने बस्ति का समुह रहता है?

a. 30 b. 15 c. 16 d. 08

2. योगबस्ति में कितने बस्ती का समुह रहता है?

a. 30 b. 15 c. 16 d. 08

3. कफजनित विकार में बस्ति प्रयोग संख्या ? (च. सि. 1)

a. 5 or 7 b. 1 or 3 c. 9 or 11 d. None

4. पित्तजनित विकार में बस्ति प्रयोग संख्या ?

a. 5 or 7 b. 1 or 3 c. 9 or 11 d. None

5. वातजनित विकार में बस्ति प्रयोग संख्या ?

a. 5 or 7 b. 1 or 3 c. 9 or 11 d. None

6. बारह वर्ष के व्यक्ति के लिए बस्ति नेत्र की लम्बाई ?

a. 6 अंगुल b. 8 अंगुल c. 12 अंगुल d. None

7. बिस वर्ष के व्यक्ति के लिए बस्तिनेत्र की लम्बाई ?

a. 6 अंगुल b. 8 अंगुल c. 12 अंगुल d. None

8. पांच वर्ष के बालक के लिए निरूह मात्रा ?

a. 2 प्रसुत b. 2 1/2 प्रसृत c. 3 प्रसृत d. 3 1/2 प्रसृत

9. 69 वर्ष के व्यक्ति के लिए निरूह मात्रा ?

a. 10 प्रसृत b. 11 प्रसृत c. 12 प्रसृत d. 9 प्रसृत

10. कफजनित विकार में निरूह बस्ति प्रयोग संख्या ? (च. सि. 3)

a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

11. स्नेहबस्ति की कितनी व्यापत्तियाँ है ?

a. 4 b. 6 c. 12 d. 10

12. बस्तिनेत्र दोष कितने है ?

a. 6 b. 8 c. 10 d. 12

13. कितने बस्तिकर्म वर्ज्य है? (बस्ति के दोष)

a. 6 b. 8 c. 10 d. 12

14. बस्ति प्रणेता के दोष कितने है ?

a. 6 b. 8 c. 10 d. 12

15. संशोधन कर्म में अयोग – अतियोग के कितने व्यापद् है?

a. 6 b. 8 c. 10 d. 12

16. निरूह बस्ति की कितनी व्यापत्तीयाँ है ?

a. 6 b. 8 c. 10 d. 12

17. च.सि. 8 में अतिसार के कितने भेद बताये है ?

a. 13 b. 12 c. 36 d. 26

18. च.सि. 9 में मुत्र के दोष कितने बताये है ?

a. 08 b. 10 c. 13 d. 12

19. उत्तर बस्ति में नेत्र की लम्बाई ?

a. 8 अंगुल b. 10 अंगुल c. 12 अंगुल d. 14 अंगुल

20. सुश्रुतानुसार उत्तर बस्ति में नेत्र की लम्बाई ?

a. 8 अंगुल b. 10 अंगुल c. 12 अंगुल d. 14 अंगुल

21. चरकानुसार स्त्रियों के लिए पुष्पनेत्र की लम्बाई ?

a. 8 अंगुल b. 10 अंगुल c. 12 अंगुल d. 14 अंगुल

22. अपत्यमार्ग में बस्तिनेत्र कितना प्रविष्ट कराना चाहिए ?

a. 2 अंगुल b. 3 अंगुल c. 4 अंगुल d. None

23. स्त्रियो के मुत्रमार्ग में बस्तिनेत्र कितना प्रविष्ट कराना चाहिए ?

a. 1 अंगुल b. 2 अंगुल c. 3 अंगुल d. 4 अंगुल

24. बाला के मुत्रमार्ग में बस्तिनेत्र कितना प्रविष्ट कराना चाहिए ?

a. 1 अंगुल b. 2 अंगुल c. 3 अंगुल d. 4 अंगुल

25. नस्यकर्म के भेद ?

a. 3 b. 4 c. 5 d. 2

26. बस्ति सिध्दिरध्याय: में कुल मिलाकर कितने बस्तियों का वर्णन है ?

a. 30 b. 34 c. 37 d. 26

27. भेड के लिए निरूह बस्ति द्रव की मात्रा ?

a. 1 प्रस्थ b. 2 प्रस्थ c. 3 प्रस्थ d. 2 आढक

28. उंष्ट्र के लिए निरूह बस्ति द्रव मात्रा ?

a. 1 आढक b. 2 आढक c. 4 आढक d. None

सुश्रुत संहिता

01. सुश्रुत संहिता में बालरोग का स्थान है ?
a. 5th b. 6th c. 1st d. 2nd

02. आचार्य सुश्रुत ने व्याधियों के प्रकार बताये है ?
a. 4 b. 6 c. 7 d. 8

03. धनु शल्यं तस्यांतमिर्यति गच्छीति धन्वन्तरि किस स्थान में है ?
a. निदानस्थान b. सूत्रस्थान
c. चिकीत्सा स्थान d. उत्तरस्थान

04. आचार्य सु. ने आयुर्वेद का अधिष्ठान बताया है ?
a. पंचमहाभूत b. आत्मा
c. पंचमहाभूत + आत्मा d. None

05. आचार्य सु. ने वानस्पत्य की जगह लिया है ?
a. वनस्पती b. विरूद्ध c. औषध d. वृक्ष

06. गुरू शिष्य परम्परा का वर्णन है ?
a. सूत्रस्थान b. निदानस्थान
c. चिकित्सा स्थान d. उत्तरस्थान

07. व्याधि के आश्रय है ?
a. मन b. शरीर c. a & b d. None

08. आचार्य सु. ने कितने प्रकार के शिष्यों का वर्णन किया है ?
a. 4 b. 3 c. 5 d. None

09. ब्रह्म स्थापना करते है ?
a. पूर्व b. पश्चिम c. उत्तर d. दक्षिण

10. विभिन्न अध्यायों की निरूक्ति सूत्रस्थान में बतायी गई है ?
a. अध्याय - 4 b. अध्याय - 3 c. अध्याय - 5 d. None

11. कालखण्ड से तात्पर्य ?
a. यकृत b. प्लीहा c. आमाशय d. ग्रहणी

12. शुक्र का गुण तैल क्षौद्र बताया है?
a. चरक b. सुश्रुत c. शारंगधर d. सभी

13. पूतिपूय आर्तवदोष में दोष प्रधानता ?
a. वात पित्त b. वात कफ c. पित्त कफ d. None

14. पंचपिण्डक उत्पत्ति..... मास ।
a. 3rd b. 6th c. 5th d. 4th

15. पाणिपाद की गर्भ में सर्वप्रथम उत्पत्ति कही है।
a. शौनक b. कृतवीर्या c. धन्वन्तरि d. मार्कण्डेय

16. मेद स्नेह + पीत्त उष्मा + वायु से निर्मित ?
a. वृषण b. सिरा c. स्नायु d. b+c

17. गर्भोत्पत्ति मे बीज है?
a. ऋतुकाल b. गर्भाशय c. आहार रस d. शुक्र शोणित

18. गर्भ वृद्धि के हेतु है? (सुश्रुत)
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

19. घृतपिण्डो यथैव आग्नेय आश्रित: संबंधित है?
a. स्त्रीशुक्र b. पुरूषशुक्र c. a & b d. None

20. तेज+ जल+ आकाश से आचार्य सुश्रुत ने किस वर्ण की उत्पत्ती कही है ?
a. गौर b. कृष्ण
c. कृष्ण श्याम d. गौर श्याम

21. आचार्य चरक ने विष चिकित्सा का वर्णन किया है ?
a. चरक चि. 23 b. चरक चि. 25
c. चरक चि. 27 d. All

22. अष्टांग हृदय ने विष चिकित्सा का वर्णन किया है ?
a. A.H. उत्तरस्थान 40-48 b. A.H. उत्तरस्थान 35-38
c. a & b d. None

23. विष के पर्याय है ?
a. क्ष्वेड, गर b. गरल, गद c. काल, कल्क d.

24. 'रूक्षं उष्णं तथा तीक्ष्णं सूक्ष्म आशु व्यवायी च' बताया है ?
a. चकर संहिता b. सुश्रुत संहिता c. अष्टांग हृदय d.

25. सुश्रुत ने विष के गुण बताये है ?
a. 8 b. 10 c. 11 d. All

26. विष के अव्यक्त गुण का वर्णन किया है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. शारंगधर d. वाग्भट

27. जांगम विष की संख्या है ?
a. 10 b. 16 c. 8 d. 15

28. फल विष की संख्या है ?
a. 8 b. 5 c. 12 d. 3

29. गुंजा है ?
a. मुलविष b. पत्र विष c. फल विष d. All

30. त्वक, सार, निर्यास विष की संख्या है ?
a. 7 b. 3 c. 12 d. 2

31. व्रण में मधुघृत का प्रयोग करते है। सु.चि. 1/4
a. सन्धानार्थ b. क्षतोष्मण: प्रसृतस्योपशमार्थ
c. पित्तवत शीत क्रिया अवचारण विधी विशेष: d. सभी

32. कुपित दोषों का प्रसार-भेद संक्षेप में--- प्रकार का होता है।
a. 2 b. 6 c. 8 d. 15

33. शुध्द व्रण के लक्षण वर्णित है।
a. सु.सु. 23/18 b. सु.चि.1/7 c. च.चि. 25/86 d. सभी

34. गयदास, कौनसा व्रण उपक्रम नही मानते है।
a. लोमापहरण b. पाचन c. भेदन d. दारण

35. निम्न में प्रतिसारण का प्रकार नही है।
a. कल्क b. स्वरस c. चूर्ण d. क्षौद्र

36. नतिच्छिन्न नतिभिन्न किसके संदर्भ में कहा है।
a. छिन्न व्रण b. भिन्न व्रण c. क्षतव्रण d. विद्य व्रण

37. उत्सन्न मृदुमांसानां व्रणानां----। सु. चि. 1/83
a. उत्सादनम b. अवसादनम c. मृदुकर्म d. प्रतिसारणम।

38. अध: काये विशेषेण तत्र----विधीयते। सु.चि. 109
a. विरेचन b. बस्ति c. बन्ध d. यन्त्र

39. व्रण के मुल कारण कितने है।
a. 4 b. 5 c. 6 d. 8

40. कपालभग्न में यदी मस्तुलुंग स्त्राव न होता हो तो, कितने दिन घृत पिलाना चाहिए
a. 7 b. 8 c. 10 d. 12

41. शालाक्य तंत्र को कहते है।
a. निमितंत्र b. शलाका तंत्र c. विदेह तंत्र d. a & b

42. नेत्र गोलक का आकार होता है।
a. गोलाकार b. अण्डाकार c. गोस्तनाकार d. सभी

43. नेत्र मे पृथ्वी महाभूत से निर्मित भाग है ।
a. मांस b. रक्त c. कृष्ण d. सित

44. 4 पटलकी स्थूलता (बाहुल्य) अंगुल होती है।
a. 1/42 b. 1/5 c. 1/9 d. 1/7

45. नेत्र में मण्डल की संख्या ?
a. 8 b. 5 c. 6 d. 7

46. तेज जलाश्रीत पटल है।
a. प्रथम b. द्वितीय c. तृतीय d. both a & b
47. दृष्टी, नेत्र बूदबूद आयाम के --- भाग है।
a. 1/3 b. 1/7 c. 1/21 d. 1/9
48. नेत्र भागेषु रोगा : -----।
a. सुखसाध्य b. परमदारूण
c. कष्टसाध्य d. याप्य
49. निम्न मे से कौनसी व्याधि सुश्रुत द्वारा वर्णित नही है।
a. पक्ष्मकोप b. पक्ष्मशात c. अलजी d. अजकाजात
50. वाग्भट ने सर्वगत नेत्ररोगों की संख्या बतायी है।
a. 17 b. 18 c. 16 d. 21
51. तंत्रभूषण अध्याय है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6
52. अनुशस्त्रों में श्रेष्ठ है (चरक)?
a. जलौका b. क्षार c. रक्तस्त्रावण d. All
53. सर्वप्रथम भगंदर में क्षार कर्म बताया है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. चक्रपाणी d. All
54. रस होता है ?
a. सौम्य b. आग्नेय c. सौम्य + आग्नेय d. All
55. आचार्य सु. ने वात के 5 भेद किस स्थान में बताये है ?
a. उत्तरस्थान b. निदानस्थान c. सूत्रस्थान d. All
56. ओज का स्थान सम्पूर्ण शरीर बताया है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. शारंगधर
57. सुश्रुत सुत्रस्थान मे तस्करवृत्ति का वर्णन आया है ?
a. अध्याय - 2 b. अध्याय - 3
c. अध्याय - 4 d. अध्याय - 5
58. परिकर्मी है ?
a. चिकित्सक b. चिकित्सक के सहायक
c. आवश्यक सामग्री d. All
59. पाटन कर्म का वर्णन किया है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. All
60. वाग्भट ने शस्त्र कर्म बताये है ?
a. 10 b. 11 c. 12 d. 13
61. स्वगुदे अब्रह्मचर्य नपुंसक प्रकार
a. आसेक्य b. सौगंधिक c. कुम्भीक d. षण्ढ
62. प्रजाउत्पादन समर्थ नपुंसक प्रकार
a. आसेक्य b. सौगंधिक c. षण्ढ d. a + b
63. आचार्य सुश्रुत ने प्रत्यांग कहे है?
a. 56 b. 61 c. 87 d. None
64. मज्ञा तथा मस्तिष्क का प्रमाण
a. 1/2 अंजलि, 1/2 अंजलि b. 1/2 अंजलि, 1 अंजलि
c. 1 अंजलि, 1/2 अंजलि d. None
65. श्लीपद तथा गण्डमाला स्थान है ?
a. लोहिता b. ताम्रा c. रोहिणी d. श्वेता
66. श्लेष्मधराकला को शारंगधर ने कहा है ?
a. मांसधरा b. यकृतधरा c. आंत्रधरा d. अग्निधरा
67. वंक्षण में संघात की संख्या?
a. 2 b. 1 c. 4 d. 8
68. मेढ्र में कुर्च संख्या ?
a. 1 b. 2 c. 4 d. 6
69. आमाशय में स्नायु प्रकार ?
a. प्रतानवती b. वृत्त c. पृथु d. शुषिर
70. कोष्ठगत वेध्य सिराओ की संख्या ?
a. 104 b. 384 c. 114 d. 164
71. चरक ने स्थावर विष की संख्या बतायी है ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
72. पीतविण्मूत्रता मिलती है ?
a. सर्पष विष b. वत्सनाभ c. भल्लातक d.
73. स्थावर विष की गति है ?
a. ऊर्ध्वगति b. अधोगति c. a & b d. None
74. जिह्वा में भारीपन होता है ?
a. मूलविष b. कंदविष c. क्षीरविष d. All
75. वर्षगणानुबंधी रहता है ?
a. दूषीविष b. गरविष c. क्षिरविष d. None
76. आचार्य सु. ने विष के गुण आशुकारी से बताया है ?
a. शीघ्रव्याप्त b. शीघ्रप्राणहर c. a & b d. None
77. विष के प्रथम वेग में दूषित होता है ?
a. रस, रक्त b. मांस, मेद c. रस d. None
78. आचार्य चरक ने मूर्च्छा बतायी है ?
a. द्वितीय वेग b. चतुर्थ वेग c. प्रथम वेग d. a & b
79. विष के आमाशय गत होने पर ?
a. तीव्र वेदना b. श्वास c. हिक्का d. None
80. तालुशोष मिलता है ?
a. प्रथम वेग b. द्वितीय वेग c. तृतीय वेग d.
81. कपाटशयन भग्न हितकर होता है।
a. उरू b. श्रोणी c. पृष्ठवंश d. सभी
82. शिरोविरेक स्नेहस्यप्रमाण बिंदू में ? (सु. चि. 40 / 36)
a. 4 b. 6 c. 8 d. सभी
83. स्नैहिक नस्य का पित्त रोगीयों के लिए काल.
a. पूर्वान्ह b. मध्यान्ह c. अपरान्ह d. a & b
84. सुश्रुत नस्य प्रमुख प्रकार.
a. शिरोविरेचन, स्नेहन b. शिरोविरेचन, शोधन
c. स्नेहन, शोधन d. शिरोविरेचन, बृंहण
85. स्नैहिक धूमपान करना चाहिए ।
a. मुख से b. नासा से c. Both d. None
86. रोगानीकस्य ते मूलं ---- प्राप्नुवन्ति हि। सु.चि. 39/37
a. अग्निमांद्य b. अजीर्ण c. वेगसंधारणम् d. आहार
87. रक्तमोक्षण और शोधन के बाद क्रोध आदी परिहार, कब तक करना चाहिए। सु.चि. 39/22
a. 1 मास b. 3 मास c. बलवान होने तक d. a & b
88. माधुतैलिक बस्ति के संदर्भ में गलत है।
a. मृदुत्वात b. पादहिनत्वाद c. एकबस्तिप्रदानाच्च d. None
89. सिध्द बस्ति में किसका क्वाथ प्रयोग करते है। सु.चि.38/105
a. कुलत्थ b. कोल c. यव d. सभी
90. माधुतैलीक बस्ति में क्वाथ प्रयोग करते है।
a. दशमुल b. एरंडमुल c. त्रिफला d. सभी
91. नेत्ररोग मे पित्तज रोगों की संख्या
a. 10 b. 13 c. 16 d. 25
92. कृमीग्रंथी व्याधि अधिष्ठान है।
a. शुक्ल कृष्ण संधी b. पक्ष्मवर्त्म संधी c. वर्त्मशुक्ल संधी d. b & c

93. - हस्वजाड्य का अधिष्ठान है।
a. वर्त्मगत b. संधिगत c. दृष्टीगत d. सर्वगत
94. एर्वारूबीज प्रतिमा पिडका मन्दवेदना :
a. शूष्कार्श b. अर्शोवत्म c. बहलवर्त्म d. वर्त्मकर्दम
95. व्याधि जिसमे बहुपिडका होती है।
a. पोथकी b. बहलवर्त्म c. वर्त्मशर्करा d. सभी
96. संक्षेपत: क्रियायोगो निदानपरिवर्जनम।
a. सु.उ. 2/10 b. सु.नि. 2/10
c. सु.उ. 1/25 d. सु.उ. 22/20
97. निमेष व्याधि अधिष्ठान
a. दृष्टिगत b. संधिगत c. वर्त्मगत d. सर्वगत
98. छिन्नाश्छिन्ना विविर्ध्दन्ते ।
a. प्रस्तारी अम b. लोहितार्म c. शुक्लार्म d. शोणिताश
99. शशरूधिरोपमस्तु बिन्दु : ----
a. शुक्तीका b. अर्जुन c. पिष्टक d. बलासग्रथित
100. पूयालस चिकित्सा है।
a. छेद्य b. भेद्य c. लेख्य d. व्यध्य
101. 'तत्रायतो विशाल: समसु विभक्तो निराश्रय' है ?
a. व्रण के गुण b. व्रण के कर्म
c. व्रण के प्रकार d. All
102. असम्मोहश्च है ?
a. व्रण के गुण b. वैद्य के गुण
c. शल्य शास्त्रज्ञ के गुण d. All
103. वंक्षण में छेदन का प्रकार है ?
a. चंद्राकार b. ऋजु c. अर्धचन्द्राकार d. तिर्यक
104. मुखरोग में शस्त्रकर्म करते है ?
a. भोजन के पूर्व b. भोजन के पश्चात
c. आधे भोजन के बाद d. खाली पेट
105. गुदा में छेदन है ?
a. चंद्रमंडल b. अर्धचन्द्राकार c. तिर्यक d. ऋजु
106. तीसरे दिन व्रण पर पट्टी करते है ?
a. हेमन्त b. शिशिर c. वसंत d. All
107. शोणित वर्णनीयम अध्याय है?
a. चरक b. सुश्रुत c. भा.प्र. d. मा.नि.
108. वात का प्रकोप होता है ?
a. दिन का पूर्वान्ह b. मध्याह्न c. अपरान्ह d. All
109. दक्षिण दिशा की वायु चलती है ?
a. प्रावृट ऋतु में b. वसंत ऋतु में c. शरद ऋतु में d. All
110. संचित दोषों का निर्हरण करते है ?
a. वर्षा b. हेमन्त c. ग्रीष्म d. All
111. कोष्ठगत पेशियों की संख्या ?
a. 34 b. 66 c. 20 d. None
112. कशेरूका में अस्थि का प्रकार ?
a. कपालास्थि b. तरूणास्थि c. वलयास्थि d. None
113. शिरावेधन न करे ?
a. वमित b. विरिक्त c. अनुवासित d. सभी
114. अस्थि पर भेदन हेतु यंत्र ?
a. यव शस्त्र b. अर्धयव c. कुठारिका d. सभी
115. वाग्भट ने मध्य शरीर में अस्थि संख्या ?
a. 120 b. 140 c. 100 d. सभी
116. मेढ्र के मध्य सिरा का वेधन ?
a. परिवर्तिका b. प्रवाहिका c. शुक रोग d. a & c
117. पाद दाह तथा चिप्प में शिरावेधन ?
a. क्षिप्र मर्म से 2 अंगुल ऊपर b. गुल्फ से 4 अंगुल ऊपर
c. इन्द्रवस्ति से 2 अंगुल नीचे d. None
118. गुदा में संधि का प्रकार?
a. कोर b. उलुखल c. सामुद्ग d. प्रवर
119. दुष्वेध के प्रकार ?
a. 5 b. 15 c. 20 d. 10
120. जल का वहन करनेवाली धमनियों की संख्या...
a. 3 b. 4 c. 2 d. 5
121. वमन एवं विरेचन कर्म करते है ?
a. प्रथम वेग b. द्वितीय वेग c. तृतीय वेग d.
122. क्षारागद का प्रयोग विष चि. में करते है ?
a. प्रथम b. द्वितीय c. तृतीय d. All
123. हिक्का मिलती है ? (चरक)
a. प्रथम वेग b. चतुर्थ वेग c. षष्टम वेग d. None
124. स्कंद भग्न मिलता है ?
a. प्रथम वेग b. षष्टम वेग c. सप्तम वेग d. ll
125. शिरीष पत्र स्वरस का प्रयोग करते है ?
a. प्रथम वेग b. द्वितीय वेग c. षष्टम वेग d. पंचम वेग
126. विष के किस वैग मे मृत्यु होती है ? (Su..
a. सप्तम वेग b. षष्टम वेग c. पंचम वेग d.
127. लूता विष का अधिष्ठान है ?
a. लालास्राव b. पुरीष c. मूत्र d. All
128. दिव्य सर्प विष का अधिष्ठान है ?
a. दृष्टि b. निश्वास c. a & b d. All
129. वाग्भट ने विष के प्रकार बताये है ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
130. सर्प में विष ग्रंथि की संख्या है ?
a. 2 Pair b. 3 Pair c. 1 Pair d. All
131. द्वादशप्रसृत प्रमाण बस्ति में मधु का प्रमाण प्रसृत में है।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
132. निरूह बस्ति देने के बाद---काल तक उपेक्षा करनी चाहिए। (पीडनकालादउपेक्षा) सु. चि. 38/5
a. 100 मात्रा b. 30 मात्रा c. 1 मुहूर्त d. 50 मात्रा
133. उत्तरबस्ति प्रयोग हितकर नही है।
a. मुत्राघात b. दुष्ट शुक्र c. मुत्रदोष d. प्रमेह
134. पुरूष में उत्तरबस्ति नेत्र कितने अंगुल प्रविष्ट करते है।
a. 6 b. 8 c. 10 d. 12
135. बस्तिनेत्र स्त्रीयों के अपत्य मार्ग में कितने अंगुल प्रविष्ट करना चाहिए।
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8
136. पुरूष सहस्त्रवर्ष की आयु से युक्त होने के लिए कितनी अनुवासन और निरूह बस्ति लेनी चाहिए। सु.चि. 37/75
a. 18,9 b. 18,18 c. 9,36 d. 12,18
137. स्नेह बस्ति के अधिक प्रयोग से होता है।
a. अग्निनाश b. उत्क्लेश c. Both d. वातप्रकोप
138. स्नेह बस्ति की मात्रा निरूह से है।
a. 1/2 b. 1/4 c. 2/3 d. 1/3

139. मूर्धस्थ अनिलं जयत किस बस्ति के बारे में कहा है।
a. 1st b. 2nd c. 3rd d. 6th
140. सुश्रुत संहिता पर संस्कृत टिका संख्या.
a. 13 b. 17 c. 19 d. 11
141. वाग्भट के अनुसार अलजी है।
a. वर्त्मगत b. संधिगत c. दृष्टीगत d. a & b
142. वातहत वर्त्म है।
a. Parlysis of VII cranial nerve
b. Paralysis of III cranial nerve
c. Cyst of Zeis gland d. None
143. अभिष्यंद से उत्पन्न होता है।
a. अव्रणशुक्ल b. अक्षिपाकात्यय c. Both d. None
144. शिशिराश्रुता लक्षण है।
a. वाताभिष्यंद b. पित्ताभिष्यंद c. रक्ताभिष्यंद d. कफाभिष्यंद
145. शिरसोर्ध्वच लक्षण है।
a. अधिमंथ सामान्य लक्षण b. वाताधिमंथ
c. पित्ताधिमंथ d. Both a & b
146. बन्धुजीव प्रतिकाशं ताम्यति स्पर्शनाक्षमम्।---- अधिमंथ है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त
147. सद्य दृष्टिनाश कौनसे अधिमंथ मे होता है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त
148. अन्यतोवात में वेदना होती है।
a. कर्ण में b. हनु में c. भ्रू म d. सभी
149. पक्वोदुम्बरसन्निभः लक्षण है।
a. पित्ताभिष्यंद b. पित्तज अधिमंथ c. सशोफपाक d. अशोफपाक
150. दृष्टीगत रोगों की संख्या, वाग्भट के मत स
a. 12 b. 16 c. 27 d. 17
151. विसर्गकाल की ऋतुयें है ?
a. वर्षा b. शरद c. हेमन्त d. All
152. सर्वदोष प्रकोपक काल है ?
a. शरद ऋतू b. वर्षा ऋतू का संध्याकाल c. ग्रीष्म d. All
153. प्रधान यंत्र है ?
a. हस्त b. कंकमुख यंत्र c. संदश यंत्र d. All
154. आकृति भेद से यंत्र है ?
a. 3 b. 4 c. 6 d. 7
155. स्वस्तिक यंत्र है ?
a. 24 प्रकार, 18 अंगुल b. 2 प्रकार, 16 अंगुल
c. 20 अंगुल d. 28 अंगुल
156. 'त्वक मांससिरा स्नायुगत शल्योदरणार्थ' है ?
a. स्वस्तिक यंत्र b. संदश यंत्र c. ताल यंत्र d. नाडी यंत्र
157. सर्पमुखाकार यंत्र प्रकार है ?
a. स्वस्तिक यंत्र b. संदश यंत्र c. ताल यंत्र d. नाडी यंत्र
158. रोगदर्शनार्थ कौन से यंत्र का प्रयोग करते है ?
a. स्वस्तिक यंत्र b. सदंश यंत्र c. ताल यंत्र d. नाडी यंत्र
159. व्रणयंत्र की लंबाई है ?
a. 4 अंगुल b. 5 अंगुल c. 6 अंगुल d. All
160. अलाबू का परिमाण है ?
a. 12 x 12 b. 10 x 12 c. 18 x 10 d. None
161. फुफ्फुस को कोष्ठांग माना है?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. b & c
162. अष्टांग हृदय में कोष्ठांग है।
a. 10 b. 11 c. 8 d. 15
163. संधि मर्म की संख्या?
a. 23 b. 20 c. 9 d. 10
164. वायु + आग्नेय मर्म है ?
a. सद्य: प्राणहर b. वैकल्यकर c. रूजाकर d. None
165. पक्षाघात होता है किस पर आघात से ?
a. लोहिताक्ष b. जानु c. विटप d. गुल्फ
166. वातपूर्ण कोष्ठता किस पर आघात से मिलती है।
a. स्तनमूल b. स्तन रोहित a. अपलाप d. अपस्तंभ
167. श्रृंगाटक मर्म संख्या.?
a. 4 b. 1 c. 2 d. 8
168. बस्ति मर्म है ?
a. सद्योःप्राणहर b. कालान्तर प्राणहर
c. विशल्यघ्न d. सभी
169. कालान्तर प्राणहर मर्म है।
a. श्रृंगाटक b. उत्क्षेप c. बृहती d. कुर्चशिर
170. लोहिताक्ष मर्म है ?
a. मांस मर्म b. सिरा मर्म c. स्नाटु मर्म d. सभी
171. सुश्रुत के अनुसार रस से शुक्र निर्माण कितने समय में होता है।
a. 1 दिन b. 1 सप्ताह c. 1 माह d. 1 ऋतु
172. गर्भ की उत्पत्ति के हेतु है ?
a. शुक्र एव आर्तव c. माता का हितकर आहार विहार
b. आत्मा गर्भाशय तथा ऋतुकाल की सम्पत्ति d. सभी
173. तीसरे मास में पंच पिण्डको की उत्पत्ति मानी है।
a. चरक b. चरक, सुश्रुत c. चरक, वाग्भट d. सुश्रुत, वाग्भट
174. प्रसव के लिए अगण्य मास
a. 8th b. 9th c. 10th d. 11&12th
175. कुल सर्पोंकी संख्या है ?
a. 40 b. 60 c. 80 d. None
176. कुल विषज सर्पों की संख्या है ?
a. 12 b. 68 c. 80 d. None
177. राजीमान सर्पों की संख्या है ?
a. 26 b. 22 c. 10 d. 3
178. आकृती भेद से सर्पों की संख्या है ? (चरक)
a. 4 b. 5 c. 3 d. 6
179. राजीमान, वैकरंज से उत्पन्न सर्प है ?
a. दिव्यंलंक b. रौद्रपुष्प c. वाजीचित्रक d.
180. नाना वर्ण की बिंदु दिखनेवाला सर्प है ?
a. दर्वीकर b. मण्डली c. राजिमान d. None
181. अम्लरस युक्त विष है ?
a. दर्वीकर b. मंडली c. राजिमान d. None
182. तरूणावस्था में घातक विष है ?
a. दर्वीकर b. मंडली c. राजिमान d. None
183. सर्वाधिक गंभीर दंश है ?
a. सर्पित b. रदित c. निर्विष d. None
184. वाग्भट्ट ने सर्प दंश के प्रकार बताये है ?
a. 3 b. 5 c. 7 d. None
185. सुश्रुत संहिता में कुल रोगो की संख्या
a. 1120 b. 920 c. 537 d. 937

186. सुश्रुत के अनुसार उर्ध्वजत्रुगत रोगो की संख्या है।
a. 231 b. 213 c. 312 d. 132
187. सुश्रुत संहिता में वर्णित औषधी द्रव्य संख्या है।
a. 537 b. 2920 c. 937 d. 1120
188. स्थान्यामाग्निपक्वानां मुत्रस्य रूधिरस्य च।
हृदुण्डुक: फुप्फुसस्च कोष्ठ इति अभिधीयते।। Ref.
a. सु.चि. 27 b. सु.सु.15 c. सु.सु. 21 d. सु.चि. 2
189. विरेचन के कितने दिन बाद निरूह बस्ति देनी चाहिए।
a. 15 b. 6 c. 7 d. 8
190. घृतपानं हितं नस्यं प्रशाखास्व-----। सु.चि. 3/54
a. विरेचनमं b. स्वेदनं c. अनुवासनं d. निरूहणम।
191. गन्धतैल रोगाधिकार सुश्रुत.
a. वातव्याधि b. प्रमेह c. कुष्ठ d. भग्न
192. आमाशयगत वात में षडधरण योग प्रयोग कितने दिन तक करना चाहिए।
a. 6 b. 7 c. 10 d. 15
193. सर्वाङ्ग में वायु की चिकित्सा है।
a. बस्ति b. विरेचन c. रक्तमोक्षण d. नस्य
194. वातरक्त की शुरूवात कहा से होती है। सु. चि. 5/4
a. पाद b. शिर c. हस्त d. None
195. सुचिपाशं न पश्यति --- पटलगत दोष लक्षण है।
a. प्रथम b. द्वितीय c. तृतीय d. चतुर्थ
196. रूणध्दि सर्वतो दृष्टी ----- स उच्चते।
a. तिमीर b. लिंगनाश c. निलिका काच d. None
197. किस व्याधिमें दोषक्षय होनेपर रोगी को स्वयं दिखाई देता है।
a. कफज लिंगनाश b. त्रिदोषज तिमीर
c. गंभीरीका d. परिम्लायी
198. निम्न में अशस्त्रकृत है।
a. क्लीन्नवर्त्म b. बहलवर्त्म c. बध्दवत्म d. क्लिष्टवत्म
199. निम्न में असाध्य है।
a. शूष्कार्श b. शोणिताश c. वर्त्मार्श d. वर्त्मार्बुद
200. भेद्य नेत्र रोगों की संख्या
a. 09 b. 11 c. 5 d. 15
201. अंजननामिका है।
a. छेद्य b. भेद्य c. व्यध्य d. लेख्य
202. छेद्य है।
a. उपनाह b. पोथकी c. पर्वणी d. बहलवत्म
203. अव्रणशुक्र कि चिकित्सा है।
a. छेद्य b. भेद्य c. व्यध्य d. अशस्त्रकृत
204. उत्क्लीष्ट वर्त्म प्रकार नही है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोष
205. गण्डुपदमुखी शलाका का कर्म है ?
a. एषण b. व्यूहन c. आहरण d. All
206. उपयंत्र की संख्या है ?
a. 29 b. 25 c. 14 d. 17
207. यंत्रों के कर्म है ? वाग्भट
a. 24 b. 16 c. 15 d. 20
208. शस्त्र दोष है ?
a. 6 b. 8 c. 9 d. 10
209. क्षार है ?
a. उपयंत्र b. अनुशस्त्र c. a & b d. None
210. भय है ?
a. उपयंत्र b. यंत्र c. अनुशस्त्र d. All
211. वाग्भट ने शस्त्रों की संख्या बतायी है ?
a. 10 b. 20 c. 6 d. 26
212. लेखन कर्म के लिये शस्त्र?
a. करपत्र b. मण्डलाग्र c. a & b d. None
213. वृद्धिपत्र के द्वारा ?
a. छेदन b. भेदन c. वेधन d. a & b
214. लेखन में धारा होती है ?
a. अर्ध कैशिकी b. मसूरवत c. अर्धमसूरवत d. कैशिकी
215. वाग्भट ने सर्वाधिक गंभीर दंश माना है ?
a. तुण्डाहत b. व्यालुप्त c. दृष्टा निष्पीडित d.
216. रोगी पार्श्व में देखता है ?
a. पुरूष सर्पदंश b. स्त्री सर्पदंश c. नपुंसक सर्पदंश d.
217. पक्षियों में सर्पदंश के वेग है ?
a. 7 b. 4 c. 2 d. 3
218. पर्वभेद एवं हिक्का मिलता है जबकि सर्प विष आश्रित हो ?
a. रक्त b. मांस c. अस्थि d. मज्जा
219. 24 उपक्रम बताये है ?
a. वृश्चिकदंश b. सर्पदंश c. लूतादंश d.
220. विष की योनि है ?
a. तेज b. सोम c. वरूण d. आकाश
221. तीक्ष्ण अंजन कौन से विष वेग में देते है ?
a. प्रथम b. सप्तम c. पंचम d. षष्ठ
222. Neurotoxic विष है ?
a. Cobra b. Viper c. Krait d. All
223. Fatal dose of Viper Snake ?
a.15 mg b.40 mg c.6 mg d.None
224. महासुगंधी अगद में drug है ?
a. 70 b. 10 c. 85 d. 100
225. निम्न में किस में वर्धमान पिप्पली प्रयोग करते है।
a. वातशोणित, विषमज्वर b. कास, श्वास
c. अग्निसाद, हृद्रोग d. सभी
226. व्रण गात्रविचूर्णने व्रणयतीति व्रण:। Ref.
a. सु. सु. 21 b. सु. चि. 2 c. सु. चि. 25 d. सु. चि.1
227. पक्षाघात में अणुतैल का प्रयोग करते है।
a. बस्ति में b. नस्य के लिए c. अभ्यंगार्थ d. मास्तिष्क्य में
228. अपतन्त्रक में---- नाशक चिकित्सा करते है।
a. वात पित्त b. वात कफ c. पित्त कफ d. वात पित्त कफ
229. पक्षाघात का चिकित्सा समय
a. 1/2 मास b. 1/2 वर्ष c. 3/4 मास d. 5/6 मास
230. सिरावेध निषेध है।
a. वातकण्टक b. बाधीर्य c. अवबाहुक d. खंज
231. मेद से आवृत वायू चिकित्सा किसके समान होती है। सु. चि. 5/30
a. वातव्याधी b. उरूस्तंभ c. आभ्यन्तर विद्रधी d. शोथ
232. गुग्गुल यथायोग्य द्रव्य और अनुपान के साथ सेवन करने पर कितने समय में प्रमेह का नाश होता है। सु. चि. 5 / 43 - 44
a. 1 मास b. 1 वर्ष c. 6 मास d. 3 वर्ष
233. तनुमुलान्युच्छ्रितानी क्लेदवन्ती अर्श में चिकित्सा करते है।
a. औषध b. अग्निकर्म c. क्षार कर्म d. शस्त्रकर्म

234. बहुअर्श में प्रथम किस भाग के अर्श की चिकित्सा करते है।
a. वाम b. दक्षिण c. पृष्ठज d. None

235. पंचरात्री तक लंघन करने से साध्य होते है।
a. नेत्ररोग b. उदर c. ज्वर d. सभी

236. उपरिभक्तस्य सर्पिपानं प्रशस्यते। किस अभिष्यंदकी चिकित्सा ह
a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त

237. किसकी चिकित्सा में अणुतैल नस्य बताया है। सु.उ. 9/22
a. अन्यतोवात b. वातपर्याय
c. शुष्काक्षीपाक d. अम्लध्युषित

238. श्लेष्माभिष्यंद व श्लेष्माधिमंथ में विशेष से करना चाहिए।
a. नावन b. यथाशास्त्र संसर्जन विधि c. रक्तमोक्षण d. a + b

239. क्षारांजन का उपयोग है।
a. सिराजाल, सिराजपिडका b. बलासग्रथित, सव्रणशुक्र
c. अर्जुन, अव्रणशुक्र d. शुक्तिका

240. पर्वणी में अग्रभाग के कितने भाग को काटते है। सु-उ 15/24
a. 1/3 b. 1/2 c. 1/4 d. None

241. नेत्ररोगी शस्त्रकर्मकेबाद कितनेमास तकआहार विहार पालन करना चाहिए
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

242. चतूर्विध चिकित्सा करते है। सु .उ 16 / 16
a. पक्ष्मशात b. पक्ष्मपरोध c. उत्संगिणी d. लगण

243. पंचागुल तैल का प्रयोग कौनसे तिमीर में करते है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त

244. ----- एवं संयम्य हितं दृष्टिप्रसादनम।
a. सप्तमं b. अष्टम c. पंचम d. दशाहं

245. अस्थि छेदन हेतु ?
a. क्षार पायना b. उदक पायना c. तैल पायना d. All

246. मृदुधातु छेदन के लिये ?
a. क्षार पायना b. उदक पायना c. तैल पायना d. All

247. वाग्भट ने अनुशस्त्र बताये है ?
a. 12 b. 13 c. 17 d. 19

248. शस्त्र व्यापद है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6

249. छेदन के लिये उपर्युक्त स्थान है ?
a. पुष्पफल b. बस्ति c. कालिंदक d. a & b

250. शुष्क अलाबू पर करते है ?
a. छेदन b. एषण c. लेखन d. आहरण

251. मोम पर कर्म करते है ?
a. छेदन b. भेदन c. विस्त्रावण d. All

252. षडविध परीक्षा बतायी है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. All

253. किसमें साध्य व्याधियां दुश्चिकित्स्य है ?
a. वेदपाठी b. राजा c. स्त्री d. All

254. विशाखानुप्रवेश अध्याय है ?(सुश्रुत संहिता)
a. सूत्रस्थान b. निदान स्थान c. शरिर स्थान d. उत्तरतंत्र

255. विषाक्त अन्न के सेवन से बंदर पर प्रभाव ?
a. चंचल b. कूंदन c. मलत्याग d. None

256. विष के हृदय में व्याप्त होनेपर
a. अजयघृत b. क्षारागद c. महागद d. None

257. तीव्र विषवाले वृश्चिक है ?
a. 3 b. 12 c. 15 d. 30

258. धूम्रवर्ण वाले वृश्चिक है ?
a. उग्रविष b. तिव्र विष c. मध्यम विष d. ll

259. हृदय घ्राण रसोपहत मांसपतीति वेदना लक्षण है ?
a. सर्पविष b. वृश्चिक विष c. कीट विष d.

260. दुर्विमेघं विष है ?
a. सर्प विष b. लूता विष c. अलर्क विष d. 1

261. त्रिदोषज लूता के प्रकार है ?
a. 7 b. 10 c. 15 d. 8

262. वाग्भट ने लूता विष के अधिष्ठान बताये है ?
a. 7 b. 8 c. 9 d. 10

263. 10 दिन में मृत्यु?
a. मंदविष लूता b. मध्यम विष लूता
c. उग्रविषलूता d. None

264. दशविध चिकित्सा करते है ?
a. अलर्क विष b. सर्पविष c. लूता विष d. None

265. निर्गत व दोषपूर्ण अर्श में चिकित्सा करते है।
a. विनायन्त्र से b. लेप c. क्षार अग्नि d. सभी

266. रक्तज अर्श की चिकित्सा है। सु.चि. 6/16
a. विनायन्त्र से b. लेप c. अनुवासन d. संशमन

267. सभी प्रकार के कूष्ठनाशक द्रव्य है।
a. खदिर, वृक्षक b. खदिर, अरूष्कर
c. खदिर, बीजक d. अरूष्कर, वृक्षक

268. अश्मरी समुल नाश करने के लिए स्नेहादी चिकित्सा करनी चाहिए।
a. पूर्वरूप में b. रूप में c. उपद्रवस्था में d. None

269. ---आद्य उपक्रम: एष सर्व शोफानां सामान्य: प्रधानतम। 1/11
a. आलेप b. अपतर्पण c. लंघन d. लेप

270. कल्याणक लवण रोगाधिकार.
a. भग्न b. उदर c. उन्माद d. वातव्याधि

271. अश्मरी में वीरतर्वादी गण का सेवन किस प्रकार से करना चाहिए।
a. घृत b. कषाय c. क्षीर d. सभी

272. चन्द्रार्ध व चन्द्रचक्र छेदन किस भगन्दर में करते है।
a. शतपोनक b. शम्बूकावर्त c. परिस्त्रावी d. परिक्षेपी

273.भगन्दर में शस्त्रकर्मोत्तर वेदना शमन के लिए किस तैल का परिषेक करते है।
a. स्यंदन तैल b. पिण्ड तैल c. अणुतैल d. गन्ध तैल

274. उर्ध्वजत्रुगत विकार नाशक है।
a. नील घृत b. महानील घृत c. तिक्तक घृत d. महातिक्तक घृत

275. तिमिर रोग में राग प्राप्त होने पर क्या वर्ज्य है।
a. सिरामोक्ष b. जलौकावचरण c. दोनो d. None

276. सुश्रुता नुसार नयन बुदबुद बाहुल्य कितना है।
a. 2 अंगुल b. 2.5 अंगुल c. 3 अंगुल d. 3.5 अंगुल

277. सभी तिमीर रोगो में कौनसे पात्र में रखा घृत उपयुक्त है।
a. सुवर्ण b. लोह c. रजत d. ताम्र

278. प्रशस्त लिंगनाश शलाका की लम्बाई कितने अंगुल है।
a. 6 b. 8 c. 10 d. 4

279. Maximum तर्पण काल है।
a. 1 दिन b. 5 दिन c. 3 दिन d. 7 दिन

280. किस पुटपाक में तर्पणोक्त धूमपान नही करते है। सु-उ 18/27
a. लेखन b. स्नेहन c. रोपन d. All

281. यन्त्रणां तु क्रियाकालाद ---- गुणं कालं इष्यतें / सु-उ 18/27
a. एक b. द्वि c. त्रि d. चर्तु:

282. तर्पण और पुटपाक के मिथ्याचरणजन्य व्याधीमें चिकित्सा करते है।
a. अंजन b. आश्चोतन c. स्वेदन d. सभी
283. स्नेहन आश्चोतन की मात्रा है।
a. 7- 8 बिंद् b. 10 बिंदू c. 12 बिंदू d. 16 बिंद्
284. आश्चोतन कितने अंगुल उपर से करना चाहिए ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
285. क्षार का कार्य है ?
a. छेदन b. भेदन c. लेखन d. All
286. क्षार है ?
a. दुष्टव्रण शोधक b. शुद्ध व्रण रोपक
c. क्लिन्न व्रण शोषक d. All
287. क्षार में प्रधान है ?
a. कटुरस, शीतवीर्य b. कटु रस, उष्ण वीर्य
c. लवण रस, उष्ण वीर्य d. All
288. प्रतिसारणीय क्षार का प्रयोग करते है ?
a. भगन्दर, चर्मकील b. अर्श, विष
c. रोहिणी, व्यंग d. a & c
289. प्रतिसारणीय के भेद है ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
290. मध्यम पानीय क्षार की मात्रा है ?
a. 3 तोला b. 3 कर्ष c. ½ पल d. a & b
291. तीक्ष्ण क्षार का निर्माण करते है ?
a. दंती b. चित्रक c. लांगली d. All
292. क्षार का भेद अति तनु बताया है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None
293. वातज दोष में क्षार कर्म से पूर्व करते है ?
a. लेखन b. पाचन c. घर्षण d. All
294. 'विष अग्नि शस्त्र अर्शानि मृत्यु कल्प' है ?
a. अग्निकर्म b. क्षारकर्म c. जलौका कर्म d. All
295. कीट के प्रकार है ?
a. 67 b. 18 c. 24 d. 13
296. गोधेरक के प्रकार है ?
a. 4 b. 5 c. 6 d. 7
297. असाध्य मण्डूक है ?
a. भृकुटि b. कौटिक c. a & b d. None
298. मूषक, शतपदी के प्रकार है ?
a. 18, 8 b. 8, 18 c. 8, 8 d. All
299. मूषक विष में प्रकुपित होता है ?
a. रस b. रक्त c. मेद d. मज्जा
300. Negri body पायी जाती है ?
a. अलर्क विष b. लूता विष c. सर्प विष d. All
301. आचार्य सुश्रुत ने सर्षप के भेद बताये है ?
a. 4 b. 2 c. 5 d. 6
302. Lead का Antidote है ?
a. BAL b. EDTA c. Digitalis d. Milk
303. न्यायाधीश के प्रकार है ?
a. 2 b. 4 c. 3 d. 5
304. पित्तज रोहिणी मारक काल है। दिन मे
a. 3 b. 6 c. 5 d. सद्य
305. उभयत: संशोधन करना चाहिए। सु.चि. 9/6
a. कुष्ठ पूर्वरूप b. कुष्ठ रूपावस्था
c. पंचम धातूगत अवस्था d. कुष्ठ उपद्रवस्था
306. महाकुष्ठ चिकित्सा में सालसारादी, न्यग्रोधादी व आरग्वधादी गणों का प्रयोग वर्णित है।
a. सुरा b. अरिष्ट c. लेह d. सभी
307. त्रिवृत्तादी अयस्कृती का विशेष विधान ---- रोगीयो के लिए है।
a. कुष्ठ b. प्रमेह c. राजयक्ष्मा d. सभी
308. परिसरण शील है।
a. स्थुल प्रमेही b. सहज प्रमेही
c. अपथ्य निमित्तज प्रमेही d. सभी
309. प्रमेह पिडका में उभयत: शोधन किस अवस्था में करना चाहिए।
a. पूर्वरूप b. प्रमेह अभिव्यक्ती c.शोफ d. विदाह अवस्था में
310. मधुमेही है।
a. दुविरेच्य b. अस्वेद्य c. Both d. None
311. शिलाजतु भेद सुश्रुत.
a. 4 b. 6 c. 8 d. 12
312. 1 वर्ष तक पथ्य पालन करना चाहिए।
a. वातव्याधि, कुष्ठ b. अर्श, भंगदर
c. अश्मरी, भंगदर d. कुष्ठ, प्रमेह
313. यव कल्प का प्रयोग वर्णित है।
a. वातव्याधि, कुष्ठ b. अर्श, भंगदर
c. अश्मरी, भंगदर d. कुष्ठ, प्रमेह
314. उदर में जल विस्त्रावण कितने दिन बाद करते है।
a. 3 b. 5 c. 12 d. सभी
315. योगरत्नाकर के अनुसार शिरोबस्ति कब करनी चाहिए।
a. भोजनपूव b. भोजन के बाद
c. Both a & b d. None
316. गुटिका व रसक्रिया प्रसादन अंजन की मात्रा।
a. 1 हरेण् b. 1 ½ हरेणू c. 2 हरेणू d. 2 1/2 हरेणू
317. तीक्ष्ण रसक्रिया अंजन कि मात्रा है।
a. 1 वेल्ल b. 2 वेल्ल c. 3 वेल्ल d. 4 वेल्ल
318. शारंगधर नुसार सर्व अक्षीगत रोगो में समाविष्ट नही है।
a. हताधिमंथ b. पाकात्यय
c. अन्यतोवात d. शिरोत्पात
319. नेत्र रोगो की संख्या 96 बताई है।
a. चरक b. चक्रपाणी c. कराल d. सभी
320. उपनाह है।
a. पित्तज साध्य b. पित्तज असाध्य
c. कफज साध्य d. कफज असाध्य
321. सीराजपिडका है।
a. रक्तज साध्य b. रक्तज असाध्य
c. सन्निपातीक साध्य d. सन्निपातीक असाध्य
322. पक्ष्मकोप है।
a. रक्तज साध्य b. सन्निपातीक साध्य
c. सन्निपातीक याप्य d. सन्निपातीक असाध्य
323. गंभिरिका है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त
324. निमेष है।
a. साध्य b. याप्य c. असाध्य d. कृच्छ्रसाध्य

325. अग्नि कर्म
a. मधुर अ
c. लघु आ
326. गर्भ की वृ
a. रस
327. 'जाम्बवोष्ठ
a. त्वक रो
328. गुड का प्र
a. त्वक रो
329. आचार्य का
a. 2
330. कृष्णोन्नत
a. त्वक द
331. अग्निकर्म वे
a. 4
332. स्वस्तिक है
a. यंत्र का
c. a & b
333. प्लुष्ट को वा
a. दुर्दग्ध
334. दुर्दग्ध की
a. अग्निक
335. NERI स्थि
a. मुंबई
336. झूठी गवाही
a. IPC 19
337. IPC 369
a. अपहर
338. MTP बना
a. 1970
339. अश्लील हर
a. IPC 37
340. Death के
a. 3 b.
341. Cornea जि
a. 15 min
342. Finger Pri
a. Dactyl
c. Thama
343. Cardiac p
a. Aconit
c. Tobacc
344. Road Pois
a. धतूरा
345. उदर में जांग
a. विरेचनार्थ
346. स्वभावत मूढ
a. 4
347. कौन से विद्र
a. रक्तज विद्र
c. आगन्तुज

325. अग्नि कर्म से पूर्व आहार लेते है ?
a. मधुर आहार b.पिच्छिल आहार
c. लघु आहार d. शीत आहार

326. गर्भ की वृद्धि होती है
a. रस b. व्यान वायु c. a & b d. None

327. 'जाम्बवोष्ठ' का प्रयोग -------- में दहन के लिए करते है।
a. त्वक रोग b. मांसगत रोग c. सिरागत रोग d. ग्रंथि रोग

328. गुड का प्रयोग ------- में दहन के लिए करते है।
a. त्वक रोग b. सिरा, स्नायुगत रोग c. मांसगत रोग d. All

329. आचार्य काश्यप ने अग्निकर्म के प्रकार बताये है ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

330. कृष्णोन्नत व्रणत: स्त्राव सन्निरोधश्च है ?
a. त्वक दग्ध b. सिरास्नायु दग्ध c. मांसदग्ध d. None

331. अग्निकर्म के प्रकार वाग्भट के मत से ?
a. 4 b. 7 c. 9 d. 10

332. स्वस्तिक है ?
a. यंत्र का प्रकार b. अग्निकर्म का प्रकार
c. a & b d. None

333. प्लुष्ट को वाग्भट ने कहा है ?
a. दुर्दग्ध b. वलय c. स्वस्तिक d. तुत्थ

334. दुर्दग्ध की चि. है ?
a. अग्निकर्म b. उष्ण चि. c. शीतल क्रिया d. None

335. NERI स्थित है ?
a. मुंबई b. कलकत्ता c. दिल्ली d. नागपुर

336. झूठी गवाही देना ?
a. IPC 191 b. IPC 192 c. IPC 177 d. IPC 193

337. IPC 369 आती है ?
a. अपहरण b. झूठी गवाही c. शिशुवध d. All

338. MTP बना ?
a. 1970 b. 1971 c. 1982 d. 1990

339. अश्लील हरकते करना ?
a. IPC 375 b. IPC 354 c. IPC 377 d. None

340. Death के प्रकार है ?
a. 3 b. 4 c. 2 d. 5

341. Cornea जिंदा रहती है ?
a. 15 min. b. 45 min. c. 1 hrs. d. 24 hrs.

342. Finger Print का अध्ययन ?
a. Dactylography b. Demography
c. Thamatology d. None

343. Cardiac poison है ?
a. Aconite b. Digitalis
c. Tobacco d. All

344. Road Poison है ?
a. धतूरा b. वत्सनाभ c. भल्लातक d. All

345. उदर में जांगल मांसरस का प्रयोग करते है।
a. विरेचनार्थ b. पानार्थ c. आहार विधि क्रियार्थ d. सभी

346. स्वभावत मूढगर्भ में संग कितने प्रकार का है। सु.चि. 15/4
a. 4 b. 3 c. 8 d. 15

347. कौन से विद्रधी की चिकित्सा पित्तज विद्रधी की तरह करनी चाहिए।
a. रक्तज विद्रधी b. सन्निपातीक विद्रधी
c. आगन्तुज विद्रधी d. Both A & C

348. स्तनविद्रधी में उपनाह निषेध है।
a. अपक्व b. पच्यमान c. पक्व d. सभी

349. Match the Following, व्याधि और पक्व अवस्था में चिकित्सा

1. प्रमेह पिडका	a. छेदन
2. भंगदर पिडका	b. विदारण
3. ग्रंथी	c. व्रणवत
4. पित्तज वृध्दी	d. भेदन

a. adcb b. cbda c. cabd d. dbca

350. गाढ बन्ध और यव भोजन, किस गलगण्ड की चिकित्सा है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. मेदोज

351. पित्तज श्लीपद में किसके समान चिकित्सा करनी चाहिए।
a. पित्त नाशक b. पित्तज विसर्प c. पित्तज अर्बुद d. सभी

352. अनुशयी में किस विद्रधी की तरह चिकित्सा करनी चाहिए।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज

353. उत्कृत्य दग्ध्वा---- जयेत कदर संज्ञकम।
a. क्षारेण b. स्नेहेन. c. अग्निना d. सभी

354. मिश्रक चिकित्सा अध्याय में वर्णन है।
a. मिश्रक गणों का b. स्वस्थवृत्त का c. रसायन का d.None

355. निम्न में असाध्य है।
a. अशोवर्त्म् b. शुष्कार्श c. श्याववर्त्म् d. शोणितार्श

356. कृमिग्रंथी है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज

357. अर्म में छेदन
a. 3/4 b. 1/3 c. 2/3 d. None

358. क्षीरान्नाद बालकोमे कुकूणक चिकित्सा में वमन के लिए, कौनसा चुर्ण दुग्ध मे मिलाकर देने का विधान है। सु.उ. 21/12
a. मधुसैंधव b. वचा c. अपामार्ग d. मदनफल

359. वाग्भट के अनुसार कर्णरोगो की संख्या
a. 28 b. 18 c. 25 d. 31

360. ------ यह कर्णार्बुद का भेद नही है।
a. वातज b. पित्तज c. सन्निपातीक d. उपरोक्त में नही

361. अवश्याय जलक्रिडा सामान्य हेतु है।
a. नेत्ररोग का b. प्रतिश्याय का c. नासारोग का d. कर्ण रोग का

362. कर्णविद्रधी का प्रकार है।
a. दोषविद्रधी b. क्षतविद्रधी c. Both d. प्रकार वर्णित नही है।

363. किस व्याधि में मुख से मल बाहर आता है।
a. कृमी कर्ण b. कर्णस्राव c. कर्णप्रतिनाह d. पूतीकर्ण

364. Shape of external auditory canal is
a. P b. Q c. S d. T

365. मांस अवलंबनम् गात्र विश्लेषण है ?
a. प्लुष्ट b. दुर्दग्ध c. सम्यक d. अतिदग्ध

366. पित्त विद्रधि वत चि. करते है ?
a. प्लुष्ट b. दुर्दध c. सम्यक d. अतिदग्ध

367. आहरण कर्म करते है ?
a. मूढगर्भ b. अश्मरी c. शर्करा d. All

368. सभी अग्निदग्धों में श्रेष्ठ है ?
a. घृत b. तैल c. वसा d. मज्जा

369. धूमोपहत का चि. क्रम है ?
a. वमन, कवल, शिरोविरेचन b. कवल, वमन, शिरोविरेचन
c. शिरोविरेचन, कवल, वमन d. None

370. पत्रदान की क्रिया करते है ?
a. प्लुष्ट b. दुर्दग्ध c. सम्यक d. अतिदग्ध
371. प्रमाद दग्ध कहा है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. All
372. कफज, रक्तदोष निकालने में श्रेष्ठ है ?
a. श्रृंग b. जलौका c. अलाबू d. None
373. कुल जलौका की संख्या है ?
a. 6 b. 12 c. 18 d. 20
374. 18 अंगुल लंबी जलौका है ?
a. कपिला b. मुषिक c. पुण्डरीकमुखी d. सावरिका
375. विषसेवनोपरांत लक्षण है ?
a. विक्षेप b. रोमशातन c.ओष्ठ नीला पड़ना d. All
376. चिकित्सा करते समय रोगी मर जाये तब ?
a. IPC 366A b. IPC 201 c. IPC 193 d. None
377. पुण्डरीक सर्प है ?
a. दर्वीकर b. मण्डली c. राजिमान d. a & b
378. दिव्यक सर्प है ?
a. दर्वीकर b. मण्डली c. राजिमान d. None
379. शतकुली है ?
a. वातज कीट b. पित्तज कीट c. कफज कीट d. All
380. लूता विषनाशक अगद में है ?
a. शुक्ती b. वराटिका c. कम्पिल्लक d. None
381. धतूरा है ?
a. Mycotics b. Mydriatics c. a & b d. None
382. मद्य प्रयुक्त होता है ?
a. अनिद्रा b. अतिनिद्रा c. a & b d. None
383. कोन Placental barrier को cross करता है ?
a. Atropine b. Hg
c. Organo phosphorous d. None
384. नेत्रबुदबुद का आयाम है ?
a. 2½ अंगुल b. 2 अंगुल c. 1½ अंगुल d. None
385. वाजीकरण के लिए पूजित है।
a. सभी मांस b. सभी दूध c. काकोल्यादी गण d. सभी
386. द्वितीय विडंग तण्डूल योग के सेवन से कितने वर्ष आयु प्राप्त होती है।
a. 100 b. 1000 c. 800 d. None
387. ब्राम्ही स्वरस रसायन 21 दिन सेवन करने से कितने वर्ष आयु प्राप्त होती है।
a. 100 b. 1000 c. 10,000 d. None
388. हेमवती वचा रसायन कितने दिन सेवन करनेपर मनुष्य स्मृतीमान होता है।
a. 12 b. 24 c. 36 d. 48
389. बुध्दी मेधावर्धक गण में नही है।
a. तद्विद् आचार्य सेवा b. ब्रम्हचर्य, अहिंसा
c. परतंन्त्रावलोकनम् d. सतत अध्ययन
390. सभी प्रकार के सोम में---- पत्ते होते है।
a. 10 b. 24 c. 15 d. 30
391. प्रमादी मनुष्य में किस कारण रसायन का फल प्राप्त नही होता।
a. अज्ञान b. अनआरम्भता c. अस्थिर चित्तता d. अधर्म
392. सोम औषधी का प्राप्ती स्थान.
a. हिमालय b. मलयपर्वत c. अर्बुदगिरी d. सह्याद्री
393. स्नेह की वृष्य और बृंहण मात्रा कितने प्रहर में पचनेवाली है।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
394. ----- निर्हर्तव्या।
a. क्षीणा b. वृध्दा c. कुपिता d. समा
395. वैद्यातुरनिमित्त वमन विरेचन व्यापद है ।
a. 15 b. 10 c. 14 d. 52
396. स्नेहादी कर्म में -----कर्म श्रेष्ठ है। सुश्रुत
a. वमन b. विरेचन c. बस्ति d. रक्तमोक्षण
397. सामान्य कर्णरोगेषु ------- रसायनम्।
a. नावन b. सर्पिपानं c. तैलपान d. कर्णपुरणं
398. ---- में पंचक्षिरी क्वाथ का पूरण बताया।
a. कर्णगुथक b. कर्णस्राव c. पूतिकर्ण d. कृमीकण
399. शिरोरोगो में कर्णपुरणकी मात्रा
a. 100 b. 300 c. 500 d. 1000
400. बिल्वादी तैल उपयोगी है।
a. कर्णशूल b. कर्णक्ष्वेड c. कर्णबाधीर्य d. कर्णपाक
401. वाग्भट नुसार नासागत रोगों की संख्या
a. 31 b. 34 c. 17 d. 18
402. अपीनस दोषदूष्टी
a. वात कफ b. वात-पित c. पित्त कफ d. त्रिदोष
403. वाग्भटनुसार तालुगत रोगों की संख्या है।
a. 9 b. 8 c. 11 d. 17
404. कौनसे शिरोरोगमे स्पर्शासहत्व लक्षण होता है?
a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त
405. रात्रौ विशेषेण स्रवति।
a. नासापरिस्राव b. पुयशोणित c.पुतिनासा d.नासागत रक्तपित्त
406. दिपीका तैल निर्माण में बृहतंपचमूल काण्ड कितना अंगुल लेते है।
a. 10 b. 8 c. 16 d. 18
407. कर्बुरा है ?
a. सविष जलौका b. निर्विष जलौका c. a & b d. None
408. इन्द्रमद रोग को वाग्भट ने कहा है ?
a. रक्तमत्ता b. रक्तदुर्गन्धता c. रक्तहीनता d.
409. जलौका हटाने के लिये उपायोगी लवण है ?
a. सौवर्चल b. सैंधव c. विड d. रोमक
410. रक्त में राग किस महाभूत के कारण है ?
a. पृथ्वी b. जल c. अग्नि d. All
411. स्वरूप भेद से आहार है ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
412. रस प्रत्येक धातु में रहता है ?
a. 3015 कला b. 3020 कला c. 30 दिन d. None
413. रक्तविस्त्रावण के अयोग्य है ?
a. पाण्डू b. अर्श c. उदररोग d. I
414. रक्त स्तंभन के उपाय है ?
a. संधान b. स्कंदन c. पाचन d. All
415. 'तेजोरसानां सर्वेषां मनुष्याणां' कहा है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. डल्हण
416. चिरस्त्रावी रक्त स्त्राव कौन से दोष से पीडित माना जाता है ?
a. वातज b. पित्तज c. कफज d. None
417. Retina की layer है ?
a. 3 b. 5 c. 10 d. 15
418. नेत्र का अश्रुमार्ग बनाता है ?
a. पृथ्वी b. अग्नि c. जल d. आकाश

419. नेत्र व
a. E
c. a
420. वाग्भ
a.
421. अचक्ष
a. ने
c.
422. भावप्र
a. 7
423. पित्तज
a. 6
424. असाध
a. 5
425. गंभीरि
a. स
426. लगणं
a.कप
427. सुर्याव
a. र
c. त्रि
428. किस व
a. सु
429. नासान
a. क्ष
430. दन्त वै
a. क
431. अच्छ
a. वात
432. 1000
a. सु
433. विशेष
a. सु
434. षडबिंदु
a. च
435. निम्न में
a. शी
436. दन्तचा
a. दन
437. मांसल
a. यद
438. स्वयोनि
a. चर
439. स्वस्थ
a. सु
c. सु.
440. ग्लानि
a. विर
441. मोह हो
a. विर

419. नेत्र की उत्पत्ति होती है ?
a. Ectodermal b. Endodermal
c. a & b d. None

420. वाग्भट ने नेत्रमण्डल बताये है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6

421. अचक्षुष्यैः है ?
a. नेत्र के लिये हितकर b. नेत्र के लिये अहितकर
c. a & b d. None

422. भावप्रकाश ने नेत्ररोग बताये है ?
a. 76 b. 94 c. 04 d. 78

423. पित्तज असाध्य नेत्र रोगों की संख्या ?
a. 6 b. 1 c. 2 d. 10

424. असाध्य नेत्र रोगों की संख्या है ?
a. 52 b. 17 c. 7 d. None

425. गंभीरिका है ?
a. साध्य b. याप्य c. असाध्य d. None

426. लगण है ?
a.कफज साध्य b.वातज साध्य c.रक्तज साध्य d. All

427. सुर्यावर्त दोषदूष्टी (चरक)
a. रक्त + वात b. पित्त + वात
c. त्रिदोषज d. कफ + वात

428. किस व्याधी की वृध्दी होने पर दृष्टी व श्रवण शक्ती नष्ट होती है।
a. सुर्यावर्त b. अनंतवात c. अर्धावभेदक d. शंखक

429. नासानाहे ----- प्रधानं।
a. क्षीरसपि b. स्नेहपानं c. सर्पिपान d. पयःपानं

430. दन्त वैदर्भ है।
a. कफ रक्तज b. त्रिदोषज c. वातज d. अभिघातज

431. अच्छ सर्पिपानं किस शिरोरोग की चिकित्सा है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोष

432. 1000 वैद्यौ व्दारा अचिकित्स्य रोग है।
a. सुर्यावर्त b. अनंतवात c. अर्धावभेदक d. शंखक

433. विशेषतः सिरावेध किस व्याधी में करते है।
a. सुर्यावर्त b. अनंतवात c. अर्धावभेदक d. शंखक

434. षडबिंदू तैल अवदान है।
a. चक्रदत्त b. योगरत्नाकर c. भा.प्र. d. None

435. निम्न में रक्तस्त्राव नही होता है।
a. शीताद b. परिदर c. उपकुश d. दन्तपूप्पूटक

436. दन्तचाल लक्षण नही होता है।
a. दन्तवेष्टक b. दन्तपुपूटक c. वैदर्भ d. उपकुश

437. मांसल प्रदेश में सिरावेधन करते है ?
a. यवमात्रा b. अर्धयव c. a & b d. None

438. स्वयोनिवर्धन चि. का वर्णन है ?
a. चरक चिकित्सा b. सुश्रुत c. सुश्रुत उत्तरतंत्र d. None

439. स्वस्थ पुरूष की परिभाषा मिलती है ?
a. सुश्रुत सूत्रस्थान b. सु. उत्तर स्थान
c. सु. निदानस्थान d. None

440. ग्लानि एवं तंद्रा है ? (ओज संदर्भ में)
a. विस्त्रंसन b. क्षय c. व्यापद d. All

441. मोह होता है ? (ओज संदर्भ में)
a. विस्त्रंसन b. क्षय c. व्यापद d. All

442. पूरण कर्म करनेवाली वायु ?
a. व्यान वायु b. उदान वायु c. प्राणवायु d. अपान वायु

443. स्नेहो स्वेदो दृढतम् गुण है ?
a. रस b. मांस c. अस्थि d. मेद

444. संधिशैथिल्यं लक्षण है ?
a. कफक्षय b. रसक्षय c. अस्थि d. a & c

445. शब्द असहिष्णुता लक्षण है ?
a. रसक्षय b. मांसक्षय c. रक्त क्षय d.

446. कटिशून्यता प्लीहावृद्धी मानी है ?
a. अष्टांग संग्रह b. अष्टांग हृदय
c. चरक संहिता d. सुश्रुत संहिता

447. संधिगत नेत्र रोगों की संख्या है ?
a. 24 b. 9 c. 21 d. 12

448. आचार्य सु. ने कर्णरोगों का वर्णन किया है ?
a. 1-19 b. 20-21 c. 22-24 d. 25-26

449. पर्वणी है ?
a. संधिगत रोग b. वर्त्मगत रोग c. कृष्णगत रोग d. All

450. ताम्र वर्ण का स्राव होता है ?
a. पूयालस b. पर्वणी c. उपनाह d. None

451. सफेद स्त्राव होता है ?
a. कफ b. पित्त c. रक्तज d. सन्निपातज

452. निमेष है ?
a. संधिगत b. वर्त्मगत c. दृष्टिगत d. All

453. 'सकण्डू पिच्छिल कोल प्रमाणः' है ?
a. उत्संगिनी b. लगण c. पोथकी d. All

454. 'श्वेत सर्षप आभा' है ?
a. पोथकी b. कुम्भिका c. शुष्कार्श d. All

455. एर्वारू बीज प्रतिमा है ?
a. पोथकी b. अर्शोवर्त्म
c. अंजननामिका d. वर्त्मबंध

456. Paralysis of 7th cranial nerve है ?
a. श्याव वर्त्म b. वातहतवर्त्म
c. निमेष d. बिसवर्त्म

457. मांसतान व्याधि है।
a. दन्तमुलगत b. दन्तगत c. तालूगत d. कण्ठगत

458. बलास दोष दुष्टी
a. कफ b.कफ रक्त c. पित्त रक्त d. कफ वात

459. शारंगधर ने मेदोज रोहिणी किसके स्थानपर वर्णन किया
a.वात रोहिणी b.पित्त रोहिणी
c. कफ रोहिणी d. रक्त रोहिणी

460. अध्रुष व्याधि दोष दुष्टी
a. कफ b. रक्त c. कफ रक्त d. कफ वात

461. कण्ठशुण्डिका है।
a. कण्ठगत b. जिव्हागत c. दन्तगत d. तालूगत

462. निम्न में असाध्य है।
a. कण्ठशालूक b. अधिजिव्हा c. एकवृन्द d. वृन्द

463. निम्न में असाध्य है।
a. दन्तभंजनक b. श्यावदन्त c. दालन d.सभी

464. मांससंघात अधिष्ठान
a. तालूमूल b. तालू c. तालूमध्य d. ताल्वान्तस्था

465. महान्नजलावरोधी है।
a. गिलायु b. वलय c. गलौघ d. शतघ्नी
466. कण्ठ शुण्डिका में छेदन करते है।
a. 1/2 b. 1/3 c. 1/4 d.2/3
467. अस्थि सौषिर्य लक्षण है ?
a. रसक्षय b. मज्जा क्षय c. शुक्रक्षय d. All
468. धी धृति स्मृति का कार्य करनेवाली वायु ?
a. प्राणवायु b. व्यानवायु c. उदानवायु d. All
469. स्त्रोतोशोधन करनेवाली वायु
a. प्राणवायु b. व्यानवायु c. उदानवायु d. All
470. आर्तव एवं जल का वहन करनेवाली वायु ?
a. प्राणवायु b. व्यानवायु c. समानवायु d. अपानवायु
471. शारंगधर ने उदान वायु का स्थान कहा है ?
a. उरः b. कण्ठ c. फुफ्फुस d. नाभि
472. रक्त का निर्माण करनेवाला पित्त है ?
a. पाचक पित्त b. रंजक पित्त c. साधक पित्त d. All
473. तर्पक कफ का स्थान है ?
a. उरः b. जिव्हा c. शिर d. संधि
474. स्वप्न में जलाशय दर्शन किस प्रवृत्ति पुरूष के लक्षण है ?
a. वातज b. कफज c. पित्तज d. द्वंदज
475. मज्जा का प्रमाण है ?(वाग्भट)
a. 9 अंजलि b. ½ अंजलि c. 2 अंजलि d. 1 अंजलि
476. क्लेदत्वं ..... का गुण है ?
a. पुरिष b. मूत्र c. स्वेद d. All
477. वर्त्म के अंदर वालों की उत्पत्ति है ?
a. निमेष b. अर्बुद c. पक्ष्मकोप d. None
478. अर्म के प्रकार है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6
479. 'रूधिर प्रभं सनीलम्' है ?
a. प्रस्तारि अर्म b. शुक्लार्म c. लोहितार्म d. स्नायुअर्म
480. पिसे हुये चावल की पिष्टि के सदृश है ?
a. शुक्तिका b. अर्जुन c. पिष्टक d. None
481. कास्याभो सितेअम्बु है ?
a. अर्म b. सिराजाल c. सिरापिडिका d. बलासग्रथित
482. नेत्रप्रवाल के सदृश दिखता है ?
a. सव्रण शुक्ल b. अव्रण शुक्ल c. अजकाजात d. None
483. अजापुरीष प्रतिमा है ?
a. अव्रणशुक्ल b.अजकाजात c.सव्रण शुक्ल d. None
484. सर्वगतरोग में पाक के प्रकार है ?
a. 4 b. 5 c. 3 d. 5
485. नेत्र में कीडे रंगते प्रतीत होते है ?
a.वातज अभिष्यंद b.पित्तज अभिष्यंद c.कफज अभिष्यंद d. All
486. कृष्णभाग दबा हुआ, शुक्ल भाग उठा प्रतीत होता है ?
a. वातज अधिमंथ b. पित्तज अधिमंथ
c. कफज अधिमंथ d. None
487. पाटन, छेदन, मर्दन करने पर भी बढता है।
a. गलार्बुद b. उर्ध्वगुद c. कफार्बुद d. पुतिवक्त्रता
488. पंचलवण सिध्द घृतपान चिकित्सा
a.वातज प्रतिश्याय b.पित्तज प्रतिश्याय
c.कफज प्रतिश्याय d.सभी
489. वाग्भटने मुखरोग के अधिष्ठान बताये है।
a. 7 b. 8 c. 9 d. 10
490. कीटिकाइव सर्पन्ती मन्यते लक्षण कौनसे प्रतिश्याय में है। वाग्भट
a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त
491. प्रतिश्याय के उपद्रव है। a. 5 b. 6 c. 7 d. 8
492. दुष्टप्रतिश्याय जन्य वर्णित रोगोंकी संख्या है। च.चि. 26/107-109
a. 6 b. 8 c. 10 d. 12
493. सभी प्रकार के प्रतिश्याय में सर्पिपान करने का विधान है, अपवाद
a. जीर्ण प्रतिश्याय b. नव प्रतिश्याय
c. दुष्टप्रतिश्याय d. वातज प्रतिश्याय
494. हिमांशू तैल का प्रयोग किस शिरोरोग में करते है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. सभी
495. पीतविड्मूत्रता की चि. है ?
a. वातवृद्धि b. पुरीषवृद्धि c. पित्तवृद्धि d. कफवृद्धि
496. ओज की गंध है ?
a. लाजासमान b. घृत समान c. मधु समान d. None
497. अतिस्थौल्य की चि. है ?
a. शिलाजतु, गुग्गुल b. गौमूत्र
c. रसांजन, लोहभस्म d. All
498. 'रस निमिन्तेव स्थौल्यं कार्श्य च' आया है ?
a. चरक संहिता b. सुश्रुत संहिता
c. अष्टांग हृदय d. All
499. भृंगराज यंत्र है ?
a. स्वस्तिक यंत्र b. संदंश यंत्र c. ताल यंत्र d. None
500. अर्बुद में पाक नही होता ?
a. वात से b. पित्त से c. कफ से d. ll
501. बालिका में कर्ण वेधन करते है ?
a. दक्षिण b. वाम c. a & b d. None
502. कर्ण की सिरायें है ?
a. कालिका b. मर्मरिका c. लोहितिका d. All
503. मन्यास्तंभ ..... पर वेध करने से होता है ?
a. कालिका b. मर्मरिका c. लोहितिका d. All
504. कर्ण संधान की विधियों में असाध्य है ?
a. 10 b. 15 c. 5 d. 11
505. नेत्र में रक्त में डूबे रीठे के समान दिखता है ?
a. वातज अधिमंथ b. पित्तज अधिमंथ
c. कफज अधिमंथ d. रक्तज अधिमंथ
506. वातज अधिमंथ साध्य है ?
a. 6 दिन b. 1 दिन c. 7 दिन d. None
507. वातज अधिमंथ की उपेक्षा से ?
a. अन्यतोवात b. हताधिमंथ c.सिरोत्पात d. None
508. नेत्र की सिरायें ताम्रवर्ण होती है ?
a. अन्यतोवात b. सिराहर्ष c.सिरोत्पात d. None
509. दृष्टिगत रोग के प्रकार है ?
a. 10 b. 12 c. 15 d. 16
510. लिंगनाश के उपद्रव है ?
a. 5 b. 7 c. 6 d. 8
511. ऊपर का दिखता है, नीचे का नही दिखता है ?
a. प्रथम पटलगत तिमिर b. द्वितीय पटलगत तिमिर
c. तृतीय पटलगत तिमिर d. None

512. वातज लिंगनाश में मण्डल दिखता है ?
a. अरूण b. नीला c. श्वेत d. रक्तज
513. दिन में दिखता है, रात्रि में नही ?
a. पित्त विदग्ध दुष्टी b. कफ विदग्ध दुष्टी
c. a & b d. None
514. 6th cranial nerve की विकृति है ?
a. नकुलांध्य b. गंभीरिका c. धूमदर्शी d. All
515. परिपोट रोग होता है ?
a. कर्ण में b. नासा में c. मुख में d. कण्ठ में
516. कर्ण वेधन करते है ?
a. सूची b. आराशस्त्र c. a & b d. None
517. क्षत विद्रधि का निर्माण होता है ?
a. आमावस्था b. पच्चमानावस्था c. पक्वावस्था d. All
518. शरीरपर चीटियों के रेंगने की अनुभूती होती है ?
a. आमावस्था b. पच्यमानावस्था c. पक्वावस्था d. All
519. तस्करवृत्ति शब्द आया है for ?
a. वैद्य b. परिचारक c. रोगी d. None
520. व्रणशोफ के उपक्रम है ?
a. 6 b. 7 c. 8 d. 9
521. वाग्भट ने शोफ के प्रकार बताये है ?
a. 4 b. 3 c. 6 d. 9
522. मर्मस्थलों पर लगाते है ?
a. आलेप b. प्रदेह c. कल्क d. None
523. 'यस्य क्षतेषु उपयुज्यते' है ?
a. आलेप b. प्रदेह c. कल्क d. None
524. अष्टांग संग्रह ने प्रलेप को माना है ?
a. वात शामक b. पित्त शामक
c. कफ शामक d. a & c
525. नेत्र व्याधियों में लेखन के प्रकार है ?
a. 5 b. 11 c. 9 d. 15
526. लगण है ?
a. लेखन b. भेदन c. छेदन d. वेधन
527. अन्यतोवात है ?
a. छेदन b. भेदन c. वेधन d. लेखन
528. वेधन व्याधियां है ?
a. 5 b. 15 c. 11 d. 9
529. अर्जुन है ?
a. औषध साध्य b. कृच्छ्रसाध्य c. असाध्य d. None
530. तृतीय पटलगत तिमिर है ?
a. साध्य b. कृच्छ्रसाध्य c. असाध्य d. None
531. स्वस्थ नेत्रों में तर्पण देते है ?
a.500 मात्रा b.800 मात्रा c.600 मात्रा d. All
532. तर्पण के अतियोग से ?
a. तिमिर b. कण्डू c. a & b d. None
533. वातज रोगों में पुटपाक का समय है ?
a. 1 दिन b. 2 दिन c. 3 दिन d. All
534. वाग्भट ने प्रथम क्रियाकल्प माना है ?
a. तिमिर b. अंजन c. आश्चोतन d. All
535. आलेप में कफज व्याधियों में स्नेह की मात्रा ?
a. ½ b. 1/6 c. 1/8 d. None
536. आलेप का प्रयोग करते है ?
a. अनुलोम b. प्रतिलोम c. a & b d. None
537. त्रिभाग अंगुष्ठानां है ?
a. आलेप b. कल्क c. प्रदेह d. All
538. व्रणबंधन के प्रकार है ?
a. 13 b. 14 c. 15 d. 16
539. वंक्षण में बंधन बांधते है ?
a. मृदुबंध b. समबंध c. गाढबंध d. All
540. अंगुष्ठ अंगुली मेढ्र अग्रेषु है ?
a. कोश b. स्वस्तिक c. प्रतोली d. स्थगिका
541. जत्रु के ऊपर बंध बांधते है ?
a. कोश b. पंचांगी c. स्वस्तिक d. स्थगिका
542. बस्ति पर बंध बांधते है ?
a. कोश b. वितान c. गोफणा d. खटवा
543. बाहुभग्न को सहारा देने के लिये बंध ?
a. कोश b. स्थगिका c. उत्संग d. All
544. बंधन निषेध है ?
a. अग्निदग्ध व्रण b. कुष्ठ c. मधुमेहपीडिका d. ll
545. अंजन निषेध ?
a. श्रम b. क्लम c. उदावर्त d. All
546. वाग्भट का अवदान है ?
a. शिरोबस्ति b. विडालक c. पिण्डी d. None
547. 'शुक्लभागौ द्वौ कृष्णान्नमुक्तवा' संदर्भित है ?
a. वातज लिंगनाश b. पित्तज लिंगनाश
c. कफज लिंगनाश d. All
548. अवश्याय जल क्रिडा कण्डूलनैर्मरक्त है ?
a. कर्णरोग हेतु b. नेत्ररोग हेतु
c. नासारोग हेतु d. None
549. वातज कर्ण रोगों की संख्या है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 7
550. शारंगधर ने कर्ण रोग बताये है ?
a. 28 b. 25 c. 4 d. 18
551. वाग्भट ने कर्णशूल के प्रकार बताये है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6
552. बाधिर्य है ?
a. वात b. वात कफ c. a & b d. None
553. कर्णनाद होता है ?
a. VI th cranial nerve विकृति
b. VIII th cranial nerve विकृति
c. IX th cranial nerve विकृति d. None
554. कर्णपाक की चि. करते है ?
a. पित्तज विद्रधिवत b. पित्तज विसर्पवत
c. a & b d. None
555. वेदनाशामक कार्य करता है ?
a. परिषेचन b. बृहत्पंचमूल c. a & b d. None
556. काण्डभग्न के प्रकार है ?
a. 6 b. 12 c. 9 d. None
557. षडधरण योग का प्रयोग करते है ?
a. आमाशयगत वात b. पक्वाशयगतवात
c. उदरगतवात d. All

558. 'अल्पशोफो वेदना सातत्यं' है ?
a. उत्पिष्ट b. विश्लिष्ट c.विवर्दित d. अवक्षिप्त
559. रोगी को शयन नही करना चाहिये ?
a. पूर्व b. पश्चिम c. उत्तर d. दक्षिण
560. व्रणितोपासनीय अध्याय में वेद वर्णित है ?
a. 1 b. 3 c. 4 d. 1
561. रात्रिजागरण करने से व्रण में ?
a. सूजन b. वेदना c. मृत्यु d. लालिमा
562. शहद + उष्ण अनुपान ?
a. संयोग से अहितकर b. कर्म विरूद्ध
c. मान विरूद्ध d. All
563. कांस्य पात्र में रखा घृत है ?
a. संयोग से अहितकर b. कर्म विरूद्ध
c. मान विरूद्ध d. None
564. मधुर + कषाय रस का संयोग ?
a. वीर्य विरूद्ध b. विपाक विरूद्ध c. रसविरूद्ध d. a, b, c
565. बिल्व तैल देते है ?
a. कर्णशुल b. कर्णपाक c. बाधिर्य d. All
566. आचार्य सु. ने शिरोरोग बताये है ?
a. 5 b. 9 c. 10 d. 11
567. स्पर्शासहत्वं मिलता है ?
a.वातज शिरोरोग b. पित्तज शिरोरोग c. रक्तज शिरोरोग d. All
568.'शीतेनशांति लभते कदाचित' संबंधित है ?
a. सूर्यावर्त b. अनंतवात c. शंखक d. None
569. अनंतवात है ?
a. द्विदोषज b. त्रिदोषज c. a & b d. None
570. सूर्यावर्त में नस्य देते है ?
a. विरेचन b. शोधन c. बृंहण d. All
571. नासा में धमनी संख्या है ?
a. 2 b. 3 c. 24 d. None
572. सु. ने नासागत रोग बताये है ?
a. 18 b. 34 c. 31 d. None
573. नासार्श के प्रकार है ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
574. पूतिनस्य में दोष प्रधान है ?
a. पित्तज b. वातज c. कफज d. All
575. बल वर्धक वायु है ?
a. पूर्व b. पश्चिम c. उत्तर d. दक्षिण
576. व्रण की निरूक्ति मिलती है ?
a. व्रणप्रश्नीय b. व्रणितोपासनीय c. हिताहितीय d. All
577. कफ विदग्धावस्था में रहता है..... रस युक्त ?
a. मधुर b. अम्ल c. कटु d. लवण
578. पीतावभासता मिलती है ?
a. संचय b. प्रकोप c. प्रशमन d. All
579. दोष द्रव्य सम्मूर्च्छना मिलती है ?
a. संचय b. प्रकोप c. प्रसर d. स्थानावस्था
580. आधी रात्री में प्रकुपित होनेवाला दोष ?
a. वात b. पित्त c. कफ d. a, b, c
581. व्रण वस्तुये है ?
a. 6 b. 7 c. 8 d. 9
582. आचार्य सु. ने व्रण वस्तु नही बतायी है ?
a. मांस b. मेद c. संधि d. त्वक
583. दोष की प्रधानता के आधारपर व्रण है ?
a. 5 b. 7 c. 6 d. 9
584. चरक ने व्रण गंध बतायी है ?
a. 12 b. 8 c. 14 d. 24
585. Complication of पीनस ?
a. बाधिर्य b. अंधत्वम् c. a & b d. None
586. 'घ्राणे भृंश दाह समन्विते' है ?
a. नासापाक b. दीप्त c. पीनस d. All
587. प्रतिश्याय का निदान है ?
a. नारी प्रसंग b. धूलीरज c. वेगावरोध d.
588. कृशो अति पाण्डू है ?
a.वातज प्रतिश्याय b. पित्तज प्रतिश्याय c.कफज प्रतिश्याय d.
589. व्योषादि वटी देते है ?
a. पीनस b. पूतिनासा c. नासार्बुद d. None
590. पुटक रोग का वर्णन किया है ?
a. सुश्रुत b. वाग्भट c. चरक d. All
591. उपद्रवयुक्त प्रतिश्याय में सर्वप्रथम
a. पाचन b. दीपन c. लंघन d. None
592. वाग्भट ने मुखरोग माने है ?
a. 65 b. 67 c. 75 d. 74
593. जिव्हागत रोग है ?
a. 8 b. 15 c. 5 d. 17
594. सु. ने मुखरोगों के स्थान बताये है ?
a. 4 b. 8 c. 7 d. None
595. सुश्रुत ने व्रण के उपद्रव बताये है ?
a. 16 b. 24 c. 36 d. 5
596. तिल तेल के समान गंध मिलती है ?
a. वात b. पित्त c. पित्त + कफ d. रक्त
597. मक्खन सदृश स्त्राव निकलता है ?
a. वातज व्रण b. पित्तज व्रण c. कफज व्रण d. सन्निपातजव्रण
598. मर्म पर आघात होने पर स्त्राव
a. पीतवण b. लसदार पूय c. शुक्तिधौतघृत d. नही आता
599. व्रण के कृष्ण कर्म हेतु ?
a. हरीतकी b. भल्लातक c. वत्सनाभ d. आमलकी
600. अण्डकोश के व्रण है ?
a. सुखसाध्य b. कृच्छ्रसाध्य c. याप्य d. अनुक्रम्य
601. निरूद्ध प्रकाश का व्रण है ?
a. सुखसाध्य b. कृच्छ्रसाध्य c. याप्य d. All
602. कपोत वर्ण प्रतिमा है ?
a. शुद्ध व्रण b. सम्यक व्रण c. रोपणशील व्रण d. अशुद्ध व्रण
603. 'त्रिभिदोर्षेअनाक्रांत' है ?
a. शुद्ध व्रण b. सम्यक व्रण c. रोपणशील व्रण d. अशुद्ध व्रण
604. गलगण्ड में दोष ?
a. रक्त b. मांस c. मेद d. a & c
605. सर्वगत रोग है ?
a. 8 b. 3 c. 17 d. 11
606. परिदर है ?
a. ओष्ठगत b. दंतमूलगत c. दंतगत d. जिव्हागत

607. कपा
a.
608. शतद
a.
609. गलौ
a.
610. कच्छ
a.
611. सर्षपा
a. व
c. क
612. शीता
a. क
613. अधिम
a. क
614. भेदन व
a. श
615. मधुमेह
a. अ
616. स्वभाव
a. क
617. इन्द्रलुप
a. रस
618. मर्मस्थ
a. रो
619. उपदंश
a. छे
620. मर्मस्थ
a. वृत
c. धनु
621. सीवन वे
a. 3
622. शल्य क
a. 3
623. अनुलोम
a. ऊ
624. अयस्का
a. अव
b. अन
625. 'उष्ण स्प
a. दाल
626. भंजनक
a. वात
627. 'शाल्मल
a. वात
c. अल
628. वनकार्पा
a. गल
629. कच्छप में
a. वात

607. कपालिका है ?
a. ओष्ठगत b. दंतमूलगत c. दंतगत d. All
608. शतघ्नी है ?
a. ओष्ठगत b. कण्ठगत c. सर्वसर d. All
609. गलौघ है ?
a. ओष्ठगत b. कण्ठगत c. सर्वसर d. All
610. कच्छप है ?
a. ओष्ठगत b. कण्ठगत c. तालुगत d. None
611. सर्षपाकृति पीडाकाभि: है ?
a. वातज ओष्ठरोग b. पित्तज ओष्ठरोग
c. कफज ओष्ठरोग d. All
612. शीताद रोग में है ?
a. कफ रक्त b. रक्त c. पित्त, कफ, रक्त d. वातज
613. अधिमांस में दोष प्रधान है ?
a. कफ b. वात c. रक्त d. त्रिदोषज
614. भेदन करते है ?
a. शीताद b. दंतपुप्पुट c. शौषिर d. None
615. मधुमेह है ?
a. आदिबल b. जन्मबल c. देवबल d. कालबल
616. स्वभावबलप्रवृत है ?
a. कालज b. अकालज c. a & b d. None
617. इन्द्रलुप्त व्याधि है ?
a. रसज b. रक्तज c. मांसज d. मेदज
618. मर्मस्थल पर कौनसी सूची का प्रयोग करते है ?
a. रोहिणी b. ग्रंथी c. अर्श d. All
619. उपदंश की चिकित्सा है ?
a. छेदन b. भेदन c. लेखन d. आहरण
620. मर्मस्थल पर कौनसी सूची का प्रयोग करते है ?
a. वृत्तांगुल द्वयम b. त्रयागुंल त्रय
c. धनुर्वक्रा d. All
621. सीवन के प्रकार है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6
622. शल्य की गतियां है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6
623. अनुलोम गति होती है ?
a. ऊर्ध्व b. ऋजु c. अर्वाचीन d. None
624. अयस्कांत है ?
a. अवबद्ध शल्य को निकालने के लिये c. a & b
b. अनवबद्ध शल्य को निकालने के लिए d. None.
625. 'उष्ण स्पर्श सहयता' मिलती है ?
a. दालन b. भंजनक c. दंतहर्ष d. कपालिका
626. भंजनक है ?
a. वात b. कफवात c. रक्त पित्त, कफ, d. All
627. 'शाल्मली कण्टकाभै:' है ?
a. वातज कण्टक b. पित्तज कण्टक
c. अलास d. कफज कण्टक
628. वनकार्पासवत शोथ मिलता है ?
a. गलशुण्डी b. तुण्डीकेरी c. कच्छप d. तालुपाक
629. कच्छप में दोष प्रधान है ?
a. वात b. पित्त c. कफ d. All
630. गलशुण्डी है ? (चरक)
a. कफ रक्त b. रक्त c. कफ d. All
631. रोहिणी की चिकित्सा है ?
a. लेखन b. भेदन c. वलय d. None
632. मेदोज रोहीणी का वर्णन किया ?
a. चरक b. शारंगधर c. सुश्रुत d. None
633. माधवनिदान में कण्ठगत रोग बताये है ?
a. 17 b. 19 c. 18 d. 20
634. 'कोलस्थि मात्र कफ संभवो' है ?
a. रोहिणी b. कण्ठशालूक c. अधिजिव्हा d. All
635. बंदर के साथ मैत्री
a. ज्वर b. उन्माद c. राजयक्ष्मा d.अतिसार
636. श्रेष्ठता क्रम है ?
a. द्रव्य > रस > वीर्य b. रस > द्रव्य > वीर्य
c. वीर्य > द्रव्य > रस d. All
637. महागद है ?
a. 7 b. 8 c. 9 d. 10
638. सुश्रुत के मत से चतुष्पाद क्रम है ?
a. भिषक, रोगी, द्रव्य, परीचारक b. भिषक, द्रव्य, रोगी,परीचारक
c. रोगी, भिषक, द्रव्य,परीचारक d. None
639. आचार्य सु. ने आयु बतायी है ?
a. 100 वर्ष b. 101 वर्ष c. 120 वर्ष d. All
640. व्याधि परीक्षा के प्रकार है ?
a. साध्य b. याप्य c. प्रत्याख्येय d.
641. यौवनावस्था में आयु है ?
a. 16-20 वर्ष b. 20-30 वर्ष
c. 30-40 वर्ष d. 40-70 वर्ष
642. जांगल देश में रोग ?
a. वातकफज b. वातपित्तज c. a & b d. None
643. व्रण शोधन हेतु गण ?
a. आरग्वधादि b. जीवनीय c. दुर्वादि d. 1
644. आकाशीय गुण बहुल भूमि से ग्रहण करते है ?
a. शोधक द्रव्य b. शमन द्रव्य c. a & b d. None
645. गलविद्रधि है ?
a. कफ b. पित्त c. त्रिदोषज d. None
646. वाग्भट ने गलगण्ड का वर्णन किया है ?
a.तालुगत रोग b. कण्ठगत रोग में c.दंतरोग d. None
647. कफज रोहिणी का मारक काल है ?
a. 7 days b. 4 days c.3 days d. None
648. उपशुष्क का वर्णन किया है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None
649. उर्ध्वजत्रुगत रोगो में औषधकाल बताया है ?
a. निशा b. प्राग्भक्त c. अभक्त d. All
650. Ptosis मिलता है विकृति से ?
a. Levator muscle विकृती c. a & b
b. Sternocleido mastoid muscle विकृती d. None
651. चक्षुष्य एवं त्रिदोषानुत है ?
a. सैंधव b. सौवर्चल c. रोमक d. विड
652. मषक के प्रकार है ?
a. 6 b. 5 c. 9 d. 8

653. CH_3 का Antidote है ?
a. Glucagon b. Atropine
c. C_2H_5OH d. None

654. विषचिकित्सा में अंजन की मात्रा है ?
a. 1 माशा b. 2 माशा c. 4 माशा d. All

655. आभ्यंतर व्रिदधिनाशक गण ?
a. विदरीगंधादि b. वरूणादि
c. त्रिफलादि d. अर्कादि

656. बृंहणीय गण है ?
a. विदारीगंधादि b. वरूणादि
c. काकोल्यादि d. अर्कादि

657. सर्वज्वर नाशक है ?
a. रूद्रादि गण b. मुष्कादि गण
c. एलादिगण d. गुडुच्यादि गण

658. क्वाथ की मात्रा है ?
a. 1 अंजली b. 4 पल c. a & b d. None

659. यत्र कुर्वन्ति तत्र ?
a. काल b. वीर्य c. उपाय d. अधिकरण

660. वातशामक महाभूत ?
a. वारिज, पृथ्वी, अग्नि b. पृथ्वी, वायु, जल
c. आकाश, अग्नि, वायु d. None

661. पित्त की योनि है ?
a. कषाय b. कटु c. मधुर d. All

662. जल के दोष ?
a. 7 b. 6 c. 8 d. 9

663. तक्र कुर्चिका है ?
a. दही + दुध b. तक्र + दुध
c. फटे दूध का घना भाग d. All

664. बहेडे की सुरा है ?
a. मधुलिका b. मत्स्यपिण्डका c. आकक्षिकी d. None

665. पुराना मधु है ?
a. बृंहण b. लेखन c. a & b d. None

666. चक्षुष्य मधु है ?
a. दाल b. पौत्तिक c. आर्ध्य d. माक्षिक

667. तिक्त रस में श्रेष्ठ ?
a. पिप्पली b. पटोल c. बैगन d. b & c

668. चौपायों में श्रेष्ठ मांस है ?
a. नर का b. मादी का c. a & b d. None

669. 'अचिन्त्यवीर्यो दोषाणां नेता रोग समूह राट' किसके लिए आया है ?
a. धन्वन्तरी b. सुश्रुत c. आत्रेय d. वायु

670. पवनोत्तम है ?
a. प्राणवायु b. उदानवायु
c. व्यानवायु d. समानवायु

671. वाग्भट ने व्यानवायु का स्थान माना है ?
a. सर्वदेह b. शिर c. हृदय d. नाभि

672. शुक्रदोष व प्रमेह किन वायुओं के प्रकोप से होते है ?
a. प्राण, अपान b. उदान, समान
c. व्यान, अपान d. उदान, व्यान

673. त्रिकवेदना होती है – किस वायु के कुपित होने से ?
a. व्यान b. अपान c. आमाशयगत d. त्वचागत

674. मुर्च्छादाह भ्रमक्लम आदि लक्षण किसवायु के पित्त से संयुक्त होने पर होते है ?
a. प्राण b. उदान c. व्यान d. अपान

675. सु. नि. के किस अध्याय में वातरक्त का वर्णन है ?
a. 1 b. 6 c. 9 d. 13

676. 1 वर्ष पुराना वातरक्त होता है ?
a. सुखसाध्य b. कृच्छ्रसाध्य c. याप्य d. प्रत्याख्येय

677. आक्षेपक रोग के प्रकार होते है ?
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

678. कोष्ठुक शीर्ष में दोष होता है ?
a. वात पित्त b. वात कफ c. वात रक्त d.

679. सुश्रुतानुसार अर्श के प्रकार है ?
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

680. गुदा की लम्बाई होती है ?
a. अर्धपंचागुल b. अर्धचतुरांगुल
c. अर्धत्रयांगुल d. अर्धद्वयांगुल

681. गुदवलियों का रंग होता है ?
a. अवितालुनिभं b. खरतालुनिभं c. गजतालुनिभं d. अजतालुनिभं

682. अर्श का पूर्वरूप है ?
a. गुदपरिकर्तनवतपीड़ा b. पाण्डु c. ग्रहणी d.

683. न्यग्रोध प्ररोह विद्रुम कारूणन्तिका फलसदृश लक्षण किस अर्श के है ?
a. वात b. कफ c. रक्त d. सहज

684. अर्श के स्थान है ?
a. गुद/मेढ्र b. योनि/कर्ण c. नाभि d.

685. अश्मरी का अधिष्ठान है ?
a. वात b. पित्त c. कफ d. शुक्र

686. बस्तिगन्धत्वं मूत्रं पूर्वरूप है ?
a. तूनी/प्रतीतूनी b. अर्श c. अश्मरी d. भगन्दर

687. भल्लातकस्थि प्रतिम / मधुवर्ण होती है ?
a. वाताश्मरी b. पित्ताश्मरी c. कफाश्मरी d. शुक्राश्मरी

688. प्राणायतनमुत्तमम् है ?
a. ओज b. बस्ति c. हृदय d. a + b

689. निम्न में से सुश्रुतानुसार भगन्दर का भेद नही है ?
a. शतपोतक b. उष्ट्रग्रीव c. परिक्षेपी d. उन्मार्गी

690. शम्बूकावर्त भगन्दर में दोष है ?
a. वात b. पित्त c. कफ d. सन्निपात

691. अरूणकुष्ठ में दोष है ?
a. वात b. पित्त c. कफ d. सन्निपात

692. किलास के प्रकार है ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 6

693. याप्य कुष्ठ है ?
a. रक्तधातुज b. मांसधातुज c. मेदधातुज d. अस्थिधातुज

694. निम्न में औपसर्गिक रोग है ?
a. कुष्ठ/ज्वर b. शोष c. नेत्राभिष्यन्द d.

695. विषमक्रियत्वात प्रमेह है ?
a. वात b. पित्त c. कफ d. All

696. सुश्रुतानुसार प्रमेह पिडिकाओं की संख्या है ?
a. 7 b. 9 c. 10 d. 11

697. नाभि के उपर शोथ होता है ?
a. बध्दगुदोदर b. सन्निपातोदर c. परिस्त्राव्योदर d. दकोदर

698. शल्यनिदान है ?
a. बध्दगुदोदर b. सन्निपातोदर c. परिस्राव्योदर d. दकोदर
699. मूढगर्भ की गतियां एवं प्रकार है क्रमशः -
a. 4, 6 b. 4, 8 c. 8, 6 d. 8, 4
700. कायसंगी होता है ?
a. कील b. प्रतिखुर c. बिजक d. परिघ
701. गर्भास्पन्दनं आवीनां प्रनाशः श्याव पाण्डुता ..... लक्षण है ?
a. गर्भस्त्राव b. गर्भपात c. असाध्यमूढगर्भ d. अर्न्तमृतगर्भ
702. भोज ने गर्भस्त्राव की अवधि मानी है ?
a. 3 मास b. 4 मास c. 5 मास d. 6 मास
703. व्रिदधि के प्रकार है ?
a. 2 b. 4 c. 5 d. 6
704. पक्वोदुम्बर संकाशः किस विद्रधि के लक्षण है ?
a. वात b. पित्त c. कफ d. सन्निपातज
705. सुश्रुत एवं चरक के अनुसार वृक्क विद्रधि के लक्षण है क्रमश
a. उच्छवासावरोध, पार्श्वसंकोच b. पार्श्वसंकोच, पृष्ठकटिग्रह
c. पृष्ठकटिग्रह, उच्छवासावरोध d. उच्छवासावरोध, पार्श्वसंकोच
706. कुलत्थ सदृश कौनसा विसर्प होता है ।
a. वात b. पित्त c. कफ d. 5
707. पिण्याक सर्पिः प्रतिम स्त्राव होता है - किस ग्रन्थि से ?
a. पित्त b. कफ c. मेदज् d. सिराज
708. देहअनुरूप क्षयवृद्धि किस गलगण्ड में होती है ?
a. वात b. पित्त c. कफ d. मेदज
709. वृद्धीरोग के प्रकार होते है ?
a. 3 b. 5 c. 6 d. 7
710. श्लीपद के प्रकार होते है ?
a. 1 b. 2 c. 3 d. 7
711. क्षुद्ररोगों की संख्या है - (सुश्रुत)
a. 60 b. 44 c . 43 d. 36
712. 'शाल्मली कण्टक प्रख्या' होता है ?
a. मषक b. तिलकालक c. जतुमणि d. मुखदूषिका
713. शूकदोषों की संख्या है ?
a. 9 b. 18 c. 36 d. 44
714. भग्न के भेद है ?
a. 2 b. 6 c. 12 d. 18
715. कपालास्थि -
a. नम्यते b. भज्यन्ते c. विभिद्यन्ते d. स्फुटन्ति
716. वा. ने मुखरोगों की संख्या मानी है ?
a. 64 b. 65 c. 74 d. 75
717. दन्तमूलगत रोग है ?
a. परिदर b. कपालिका c. उपजिव्हका d. अधुष
718. मेदोज रोहिणी माना है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. शारंगधर
719. महान्नजलावरोधी है ?
a. शतघ्नी b. गिलायु c. गलौघ d. स्वरघ्न
720. सुश्रुत ने मुखरोगो का वर्णन किया है ?
a. उत्तरतंत्र b. सूत्रस्थान c. निदान स्थान d. चिकित्सा स्थान
721. सर्षपिका नामक शूकरोग है ?
a. गौरसर्षप तुल्य b. कृष्णसर्षप तुल्य
c. शूक जिव्हाभ d. None
722. '..... पृथुतां गतम्अल्पशोफं' भग्नप्रकार है ?
a. पिच्चित b. कर्कटक c. अश्वकर्ण d. None
723. 'न सिध्यति अर्दित बाद ..... वर्ष वेपनंस्य च'
a. द्वि b. एक c. त्रि d. चर्तुः
724. मूकमिन्मिन व्याधि में दोष दृष्टि है ?
a. वात b. कफ वात c. पित्त d. त्रिदोष
725. कफज अर्श का आकार होता है ?
a. गोस्तनाकार b. मासंधावनप्रकाश c. a & b d. None

अंष्टाग संग्रह व अंष्टाग हृदय

01. उदावर्त रोग किस वेग धारण से होता है ।
a. मूत्र b. पुरीष c. अधोवात d. सभी
02. रोगा : सर्वेऽपि जायन्ते वेगोदीरण धारणैः ।
a. अ. सं. सु 5/25 b. अ.हृ.सु. 4/22
c. च. सु. 16/204 d. a +b
03. वातानुलोमी गुल्मतुनी प्रतुनिजित । अ.हृ.सु. 6/33
a. माष b. मूग c. कुलत्थ d. ओदन
04. वाग्भट सुत्रस्थान के अनुसार वयस्थापन में श्रेष्ठ है ।
a. हरितकी b. घृत c. आमलकी d. सभी
05. मन्थ पिने वाले को कौनसा रोग नही होता है अ.सं.सु. 7/55
a. प्रमेह b. क्षय c. कुष्ठ d. All
06. उदमन्थ किस ऋतू में निषिध्द नही है । अ.सं.सु. 7/244
a. शरद b. ग्रीष्म c. वर्षा d. प्रावृट्
07. अ. हृ. के. अनुसार त्रय उपस्तंभ है ।
a. आहार, स्वप्न, अब्रह्मचर्य b. आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य
c. आहार, शयन, अब्रह्मचर्य d. आहार, स्वप्न, ब्रह्मचर्य
08. मज्जा धातू का कर्म है ।
a.पोषण b.धारण c..प्रीणनं d. पुरण
09. मन्दाग्नि लक्षण है ।
a.पित्तक्षय b. रक्तवृध्दी c. कफवृध्दी d.. सभी
10. सन्धि वेदना लक्षण है ।
a. वात वृध्दी b. अस्थिक्षय c. Both d. मांसक्षय
11. अतिनिद्रा लक्षण है ।
a. कफ वृध्दी b. पित्तक्षय c. रसवृध्दी d. a & c
12. उरः कण्ठ चरो है ।
a. उदान b. व्यान c. प्राण d. समान
13. त्यक्तद्रवत्व किसके बारे में कहा है ।
a. साधक पित्त b. आलोचक पित्त
c.पाचक पित्त d. अवलंबक कफ
14. कौनसा पित्त, अन्य प्रकार के पित्त को बल दान करता है ?
a. साधक पित्त b. आलोचक पित्त
c. पाचक पित्त d.. रंजक पित्त
15. कफप्रकार जो दुसरे कफस्थानों की सहायता करता है ।
a. क्लेदक कफ b. तर्पक कफ
c. अवलंबक कफ d. श्लेषक कफ
16. निःश्वास किसका कार्य है ।
a. उदान b. व्यान c. प्राण d. समान
17. दोषाः कदाचित कूप्यन्ति जिता लंघ्न पाचनैः ।
a. अ. हृ. सु. 4/26 b. अ. सं. सु. 5/36
c. च. सु. 16/20 d. All

18. भोजन के मध्य में जल पिने से मनुष्य होता है।
a. कृश b. स्थूल c. Both d. None
19. शाखावातहर है।
a. अजादुग्ध b. अविदुग्ध c. गोदुग्ध d. एकशफ
20. किसके सेवन से विष का प्रभाव नही होता है।
a. स्वर्ण b. रजत c. ताम्र d. नाग
21. विसुचिका मे अग्निकर्म करते है।
a. पायू b. जंघा c. पाष्णि d. All
22. कृश पुरूषो मे पुष्टर्थ
a. मधु b. सुरा c. मांसरस d. All
23. 11 औषध सेवन काल बताये है।
a. अ.सं. b. अ.हृ. c. चरक d. सुश्रुत
24. क्रुर कोष्ठी के लिए स्नेहपान
a. 7 दिन b. 3 दिन c. 5 दिन d. None
25. आमाशयगत वात में स्वेदन
a. रूक्षस्निग्ध b. स्निग्धरूक्ष c. Both d. None
26. पित्त से उत्पन्न विदग्धाजीर्ण में चिकित्सा है ।
a. स्वेदन b. विरेचन c. लंघन d. वमन
27. स्नेह प्रविचारणा है।
a. 74 b. 64 c. 56 d. 66
28. वाग्भट स्वेद प्रकार
a. 13 b. 8 c. 6 d. 4
29. वमन के हिन शुध्दी मे मानिकी प्रमाण अ.हृ.सु. 18/32
a. 1 प्रस्थ b. 2 प्रस्थ c. 4 प्रस्थ d. 1/2 प्रस्थ
30. 1 वर्ष से कम बच्चे के लिए नेत्रप्रमाण अंगुल में
a. 5 b. 6 c. 7 d. 8
31. वातनाशक गण है।
a. वीरतर्वादी b. विदार्यादी c. Both d. None
32. स्त्रियों में अर्श यंत्र की मोटाई है। अंगुल में
a. 4 b. 5 c. 6 d. 7
33. कालबस्ति संख्या (वाग्भट)
a. 10 b. 16 c. 15 d. 8
34. अशुध्द शोणित वण
a. कुसुम्भ पूष्प b. जपापूष्प c. गुलाब पूष्प d. None
35. नस्य के प्रकार (वाग्भट)
a. 5 b. 3 c. 4 d. 6
36. पक्वजम्बूसितं लक्षण है।
a. क्षार दग्ध b. सम्यक दग्ध c. अतिदग्ध d. दुर्दग्ध
37. वाग्भट नुसार गण्डूष भेद है। a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
38. मात्राबस्ति में स्नेह की मात्रा
a. उत्तम b. ऱ्हस्व c. मध्यम d. None
39. अश्मरी शर्करा मुत्रकृच्छ हर है।
a. वरूणादी b. असनादी c. उषकादी d. वीरतर्वादी
40. धूमनेत्र लम्बाई क्रमश तीक्ष्ण स्नेह और मध्य धूमपान के लिए अंगुल में
a. 24, 32,36 b. 24,32,40
c. 24,32,38 d. 16,24,32
41. असंचार्यो मुखे
a. गण्डूष b. कवल c. Both d. None
42. अंजनशलाका लम्बाई अंगुल में
a. 6 b. 8 c. 10 d. 12
43. वाग्भट के नुसार संदश यंत्र के भेद
a. 2 b. 3 c. 4 d. 6
44. वाग्भट शस्त्रकर्म है।
a. 8 b. 6 c. 10 d. 13
45. उन्माद में सिरावेध करते है।
a. उर b. अपांग c. ललाट d. All
46. वाग्भट के नुसार बन्ध भेद है।
a. 14 b. 15 c. 16 d. 13
47. सर्व शस्त्रानुशस्त्राणां ---- श्रेष्ठ है। अ.हृ.सु. 30/1
a. जलौका b. क्षार c. अग्निकम d. Both a & b
48. क्षार के गुण है।
a. 8 b. 10 c. 12 d. 9
49. Chalazion संबंधित है।
a. पोथकी b. अंजननामीका c. उत्संगिणी d. कुंभिका
50. तिक्तस्कंध में श्रेष्ठ है।
a. गुडूची b. किराततिक्त c. पटोल d. महौषध
51. वात उपक्रम में स्त्रीसंपर्कवर्जित---- ऋतूचर्या सेवन करना चाहिए।
a. शिशिर b. हेमन्त c. वसन्त d. वर्षा
52. -- मास अन्तर से मल का शोधन करना चाहिए। अ.सं.सु. 23/30
a. 4 b. 2 c. 3 d. 6
53. ---- गुणालाभे क्रियामन्यां प्रयोजयेत्। अ.सं.सु.23/32
a. सप्ताहेन b. दशाहेन c. द्वादशाहेन d. पंचद्शाहेन
54. अ.सं. कासघ्न व वामक धूमनेत्र लम्बाई अंगुल में
a. 8 b. 10 c. 6 d. 16
55. लघू गुण है। a. वात b. पित्त c. कफ d. a+b
56. ब्राम्ह मुहूर्त दिन का कौनसा मुहूर्त होता है।
a. प्रथम b. 11th c. 26th d. अन्तीम
57. हंसोदक वर्णन नही है।
a. चरक b. अ. सं. c. अ.हृ. d. None
58. वर्षा ऋतू में जलपान a. दिव्यं b. कोपं c. श्रुत d.
59. 2 दिन के अन्तर से वसन्त और शरद में मैथुन बताया है।
a. अ.सं. b. अ.हृ. c. Both d. None
60. तन्द्रा कितने दिन तक साध्य है। अ.सं.सु. 9/59
a. 1 1/2 b. 2 1/2 c. 3 1/2 d. 4
61. उत्तान होकर मैथून करने से कौनसी व्याधी होती है।
a. वृध्दी b. प्रमेह c. अश्मरी d. All
62. अकाले बहु चाल्पं वा भुक्तं तु ----
a. समशन b. अध्यशन c. अमात्राशन d. विषमाशन
63. तम:----- । अ.सं. सु. 12/100
a. मधुरशीतल b. मधुर उष्णम्
c. कषाय कटूकं d. तिक्त लवणम्
64. वाग्भट के अनुसार कुष्माण्डक रसायन का अधिकार है।
a. श्वास हिक्का b. कास c. अतिसार d. राजयक्ष्मा
65. कल्याणक क्षार रोगाधिकार (वाग्भट)
a. अर्श b. अतिसार c. ग्रहणी d. सभी
66. ग्रहणी रोग की चिकित्सा कौनसी व्याधी समान करनी चाहिए।
a. अजीर्ण b. अतिसार c. अर्श d. सभी
67. वाग्भट के अनुसारे आवृत्त वात का वर्णन किस अध्याय में किया है।
a. वातशोणित b. वातव्याधि
c. श्वित्रकृमी चिकित्सा d. विसर्प चिकित्सा

68. वाग्भट नुसार औषध का पर्याय नही है।
a. हित b. शस्त c. भिषग्जितम् d. None
69. तालीसादी वटक का रोगाधिकार (वाग्भट.
a. अर्श b. कास c. ग्रहणी d. श्वास हिक्का
70. सप्तसमा गुटीका रोगाधिकार। वाग्भट
a. कुष्ठ b. विसर्प c. श्वित्रकृमी d. उदर
71. दशमुल हरितकी किस अध्याय में वर्णीत है।
a. कास b. श्वास हिक्का c. अर्श d. श्वयथु
72. व्याधि मुक्त हो जानेपर अग्निमंद हो गयी तो चिकित्सा।
a. आसव अरिष्ट b. घृतपान c. यवागू d. संशोधन
73. दुर्बल अग्नि को प्रदिप्त करने के लिए सर्वश्रेष्ठ है।
a. लवण b. क्षीर c. मधू d. स्नेह
74. अपराजीत खल रोगाधिकार। वाग्भट
a. अर्श b. अतिसार c. ग्रहणी d. सभी
75. वसिष्ठ हरितकी रसायन में हरितकी संख्या
a. 100 b. 1000 c. 1100 d. 3000
76. निःशुण्ठी षडंगोदक पानीय का प्रयोग हितकर है। वाग्भट
a. उर्ध्वंग रक्तपित्त b. अधोग रक्तपित्त c. तिर्यक d. None
77. वाग्भटने कौनसी व्याधी की चिकित्सा करते समय बीचबीच में कोष्ठ शुध्दी करने को कहा है।
a. अर्श b. ग्रहणी c. भगंदर d. उन्माद
78. वर्धमान गुडार्द्रक योग वर्णित है। वाग्भट
a. अर्श b. कास c. श्वासहिध्मा d. श्वयथू
79. नित्यानंद रस का अधिकार है।
a. अश्मरी b. अर्श c. श्लीपद d. भंगदर
80. खरादी शकृत योग वर्णित है।
a. उन्माद b. अपस्मार c. हिक्काश्वास d. कुष्ठ
81. मुखरोगों में श्रेष्ठ है।
a. कालक चूर्ण b. पीत्तक चूर्ण c. पाठादी चूर्ण d. मृद्वीकादी चूर्ण
82. खदीरादी गुटीका हितकर है।
a. गलरोग में b. मुख रोग में a. दन्तरोग में d. सभी
83. क्षीरबस्ति चिकित्सा वर्णित है।
a. पित्तज गुल्म b. पित्तज उदर c. पित्तावृत्त वात d. सभी
84. प्रतिद्वंद्वी चिकित्सा वर्णित है।
a. रक्तपित्त की b. उन्माद की
c.हिक्काश्वास की d. पाण्डूकामला की
85. कौनसे योग का अनुपान मधुसर्पि है।
a. सितोपलादी चूर्ण b. मुक्ताद्य चूर्ण c. नवायस d. सभी
86. निम्न में वेदना रहित व्याधि है।
a. अजगल्लिका b. जतूमणि c. निरूध्दप्रकश d. सभी
87. त्र्यूषणाद्य घृत वर्णित है।
a. वातज ग्रहणी b. वातज गुल्म c. वातज कास d. सभी
88. गुल्म और विदधी में साम्य है ।
a. हेतू b. दोष c. लिंग d. सभी
89. तिक्ताम्लोद्गार लक्षण है।
a. पित्तज हृद्रोग में b. पित्तज ग्रहणी में c. पित्तज गुल्म में d. सभी
90. Drug of choice in CCF
a. Morphine b. Aspirine c. Digitalis d. Nefidepin
91. अपुर्व वैद्य किसे कहा है।
a. पुनवर्सु आत्रेय b. इंद्र c. ब्रह्म d. अश्विनी कुमार
92. वाग्भट ने शल्यतंत्र को कौनसे स्थान पर रखा है।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
93. देश के भेद है।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
94. कोष्ठ के भेद है।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
95. शुचि गुण है।
a.वैद्य का b. रोगी का c. परिचारक d. both a & c
96. दन्तपवन लंम्बाई है।
a.10 अंगुल b.8 अंगुल c.12 अंगुल d. 6 अंगुल
97. नेत्र में कफ निर्हरण के लिए कौनसे दिन रसांजन का प्रयोग करना चाहिए। अ.हृ. सु. 2
a. 5 वे दिन b. 8 वे दिन c. 7 वे दिन d. a + b
98. पापकर्म है।
a. 6 b. 8 c. 10 d. 12
99. विसर्गकाल की ऋतू नही है।
a. हेमंत b. शिशिर c. शरद d. वषा
100. नित्य प्रयोजित अंजन है।
a. सौविरांजन b. स्त्रोतोंजन c. रसांजन d. पूष्पाजंन
101. उव्दर्तनं ----- हरं मेदस : प्रविलायनम्।
a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त
102. मधुर अम्ल लवण रस का सेवन किस ऋतू में करते है। अ.हृ. सू. 3/55
a. हेमंत b. वषा c. शिशिर d. सभी

आयुर्वेद का इतिहास एवं पदार्थविज्ञान

1. आयुर्वेद के आधारभूत सिद्धान्त लिये गये है ?
a. सांख्य दर्शन b. न्याय दर्शन c. योग दर्शन d. All
2. ब्रह्म संहिता में श्लोक एवं अध्याय है ?
a. 1 लाख श्लोक, 100 अध्याय
b. 1000 श्लोक, 1000 अध्याय
c. 1 लाख श्लोक, 1000 अध्याय
d. उपरोक्त कोई नही
3. बाल्हीक भिषक है ?
a. कांकायन b. हिरण्याक्ष c. वेदव्यास d. रावण
4. चिकित्सा कौमुदी के लेखक है ?
a. धन्वन्तरी b. काशीराज c. दिवोदास d. सहदेव
5. सूत्ररूप में निबद्ध ग्रंथ है ?
a. संहिता b. तंत्र c. a & b d. None
6. आत्रेय के शिष्य नही है ?
a. करवीर्य b. हारीत c. औरभ d. a & c
7. अथर्ववेद में औषध संख्या है ?
a. 67 b. 82 c. 289 d. None
8. चरक संहिता के प्रतिसंस्कर्ता है ?
a. दृढबल b. चरक c. अग्निवेश d. All
9. चरक संहिता में कुल श्लोक है ?
a. 12000 b. 9595 c. 1600 d. 1952
10. आचार्य दृढबल का काल है ?
a. 200 ई.पूर्व b.1000 ई.पूर्व c.4 शती गुप्तकाल d. All

11. चरक संहिता पर प्रथम टीका है ?
a. चरक पंजिका b. आयुर्वेद दीपिका
c. जल्पकल्पतरू d. चरक न्यास
12. चरक तत्व प्रदीपिका के लेखक ?
a. चक्रपाणि b. शिवदास सेन c. गयदास d. स्वामिकुमार
13. योगिन्द्रनाथ सेन का काल है ?
a.6 शती b. 16 वी शती c. 20 वी शती d.19 वी शती
14. चरक संहिता पर टिकाये है ?
a. 41 b. 42 c. 44 d. 46
15. चरक संहिता का अंग्रेजी अनुवाद किया ?
a. डॉ. प्राणजीवन मेहता b. कविराज अविनाशचंद्र
c. प. ज्वाला प्रसाद d. गंगाधर राय
16. आयुर्वेद को शाश्वत कहा है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. माधव
17. सुश्रुत संहिता के आद्य उपदेष्टा है ?
a. वृद्ध सुश्रुत b. धन्वन्तरी c. सुश्रुत d. नागार्जुन
18. वर्तमान में सु. संहिता का काल है ?
a. 8 शती b. 9 वी शती c. 10 वी शती d. 11 वी शती
19. आचार्य सुश्रूत के अनुसार रसायन का वर्णन किया है ?
a.सूत्र स्थान b.निदान स्थान c.चिकित्सा स्थान d. All
20. निबंध संग्रह के लेखक है ?
a. गयदास b. डल्हण c. भास्कर d. ब्रह्मदेव
21. सुश्रुतार्थ संदीपन के लेखक है ?
a. गयदास b. हाराणचन्द्र c. माधव d. डल्हण
22. सुश्रुत संहिता के निदान स्थान पर टीका है ?
a. न्यायचंद्रिका b. निबंध संग्रह
c. भानुमती d. उपरोक्त कोई नही
23. उपांगहृदय के लेखक है ?
a. सुश्रुत b. नागार्जुन c. डल्हण d. औरभ
24. उदरपाटन द्वारा गर्भ निष्कासन का वर्णन सर्वप्रथम किया है ?
a. आचार्य चरक b. आचार्य वाग्भट
c. आचार्य सुश्रुत d. None
25. शवविच्छेदन का वर्णन नही है ?
a. कौटिल्य अर्थशास्त्र b. सुश्रुत संहिता
c. अष्टांग हृदय d. अष्टांग संग्रह
26. विषकन्या का प्रथम वर्णन किया है ?
a. आचार्य चरक b. आचार्य वाग्भट
c. आचार्य सुश्रुत d. माधव
27. अष्टांग संग्रह मे रसायन का वर्णन है ?
a. सूत्र स्थान b. निदान c. उत्तर स्थान d. चिकित्सा
28. शिवा गुटिका का प्रयोग किया है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None
29. ऊर्ध्वगुद रोग का वर्णन किया है ?
a. चरक संहिता b.सुश्रुत संहिता c.अष्टांग संग्रह d. All
30. अष्टांग संग्रह में वायु के आवरण है ?
a. 21 b. 22 c. 23 d. 13
31. अर्शरोग में श्रेष्ठ है ?
a. आमलकी b. लाक्षा c. भल्लातक d. कंटकारी
32. अष्टांग हृदय के लेखक है ?
a. वृद्धवाग्भट b. लघु वाग्भट c. चरक d. All
33. पदार्थ चंद्रिका के लेखक है ?
a. हेमाद्रि b. चन्द्रनंदन c. इन्दु d. अरूणदत्त
34. सर्वाधिक 44 टीकायें लिखी गयी ?
a. चरक संहिता b. सुश्रुत संहिता c. अष्टांग हृदय d. अष्टांगसंग्रह
35. अष्टांग हृदय का जर्मन अनुवाद किया गया ?
a. 1952 b. 1941 c. 1963 d. 1965
36. गूढार्थ संदीपन के लेखक है ?
a. अरूणदत्त b. हेमाद्रि c. चन्द्रनंदन d. इन्दु
37. अष्टांग हृदय में वर्णित आचार्य है ?
a. 20 b. 18 c. 19 d. 68
38. काश्यप संहिता के तंत्रकर्ता है ?
a. काश्यप b. जीवक c. वात्स्य d. None
39. आहार को महाभैष्यज्य कहा है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. काश्यप
40. पंचहृदय तथा षटकोश शरीर का वर्णन किया है ?
a. चरक b. काश्यप c. सुश्रुत d. वाग्भट
41. काश्यपसंहिता की वस्तु योजना मिलती है ?
a. सूत्र b. कल्प c. निदान d. खिलस्थान
42. आलोचक पित्त के भेद का वर्णन किया है ?
a. चरक b. वाग्भट c. भेल d. काश्यप
43. भेल का काल है ?
a. 2000 ई. पूर्व b. 1000 ई. पूर्व
c. 500 ई. पूर्व d. None
44. वातालिका का वर्णन किया है ?
a. भेल b. चरक c. सुश्रुत d. वाग्भट
45. त्रिसमा गुटिका का वर्णन किया है ?
a. काश्यप b. चरक c. वाग्भट d. सुश्रुत
46. सुश्रुत पर प्रथम टीका लिखी ?
a. डल्हण b. जेज्जट c. चक्रपाणि d. माधव
47. चरक प्रदीपीका के लेखक है ?
a. गंगाधर राय b. हाराण चंद्र
c. ज्योतिष चंद्र सरस्वती d. All
48. चंद्रिकाकार है ?
a. गयदास b. डल्हण c. भास्कर d. जेज्जट
49. शिवप्रदीपिका लिखी गयी है ?
a.चरक संहिता b. सु. संहिता c. भेल संहिता d.अष्टांग हृदय
50. अम्लपित्त का प्रथम वर्णन किया है
a. सु. b. का. c. मा.नि. d. भा. प्र.
51. वैद्य सर्वस्व है ?
a. हारीत संहिता b. सुश्रुत संहिता
c. योगरत्नाकर d. माधवनिदान
52. भैषज्य कल्पना का वर्णन हारीत संहिता में है ?
a. सुत्रस्थान b. कल्प स्थान c. अरिष्ट स्थान d. अन्नपान स्थान
53. किस संहिता में ज्वरों का उल्लेख वर्णानुसार हुआ है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. हारीत d. अष्टांग हृदय
54. हारीत ने पाण्डु के प्रकार बताये है ?
a. 6 b. 7 c. 8 d. 5
55. रोग विनिश्चय है ?
a. चरक संहिता b. योगरत्नाकर
c. भावप्रकाश d. माधवनिदान

56. आतंक द
a.वाचस्प
57. शूल का र
a. भाव
c. माध
58. सर्वांगसुंद
a. चरक
c. माध
59. शारंगधर र
a.7 वी श
60. कषायकल
a. पूर्वख
61. श्वास प्रश्व
a. माधव
c. भावप्र
62. आयुर्वेद दी
a. बोपदे
63. आचार्य शा
a. 6
64. मध्यकाल
a. भावप्र
65. नाडी परीक्ष
a.योगरत्ना
66. भावप्रकाश
a. 4
67. भावप्रकाश
a.14 वी श
68. आर्तव को
a. चरक सं
c. भावप्रक
69. स्वर्णक्षीरी के
a. माधवनि
c. शारंगध
70. यशद् धातु व
a. शारंगधर
71. गर्भनिरोधक
a. भावप्रक
72. संग्रहकाल है
a. आदिका
73. चिकित्सा का
a. चन्द्रनंद
74. चरक चतुरान
a. गयदास
75. लघुपंजिका वे
a. डल्हण
c. विजयरक्षि
76. आयुर्वेद रसाय
a. हेमाद्रि
77. इन्दुमती किस
a. अष्टांग सं

56. आतंक दर्पण के लेखक है ?
a.वाचस्पति मिश्र b.श्रीकण्ठ दत्त c.विजय रक्षित d. None
57. शूल का स्वतंत्र वर्णन किया है ?
a. भावप्रकाश b. शारंगधर संहिता
c. माधवनिदान d. अष्टांग हृदय
58. सर्वांगसुंदरी टीका लिखी ?
a. चरकसंहिता b. सुश्रुत संहिता
c. माधव निदान d. अष्टांग संग्रह
59. शारंगधर संहिता का काल है ?
a.7 वी शती b.13 वी शती c.16 वी शती d. 18 वी शती
60. कषायकल्पना का वर्णन है (शारंगधर)
a. पूर्वखण्ड b. मध्यम खंड c. उत्तर खंड d. None
61. श्वास प्रश्वास क्रिया का वर्णन किया है ?
a. माधवनिदान b. शारंगधर संहिता
c. भावप्रकाश d. अष्टांगहृदय
62. आयुर्वेद दीपिका के लेखक है ?
a. बोपदेव b. आढ्मल्ल c. काशीराम d. रूद्रभट्ट
63. आचार्य शारंगधर ने गर्भदोष बताये है ?
a. 6 b. 7 c. 8 d. 9
64. मध्यकाल की एक संहिता ?
a. भावप्रकाश b. माधव निदान c. शारंगधर संहिता d. All
65. नाडी परीक्षा का सर्वप्रथम वर्णन किया है ?
a.योगरत्नाकर b.माधव निदान c. शारंगधर संहिता d. सु. संहिता
66. भावप्रकाश कितने खण्डों में विभक्त है ?
a. 4 b. 3 c. 5 d. 6
67. भावप्रकाश का काल है ?
a.14 वी शती b. 5 वी शती c. 17 वी शती d. 16 वी शती
68. आर्तव को अष्टम धातु माना है ?
a. चरक संहिता b. शारंगधर संहिता
c. भावप्रकाश d. माधवनिदान
69. स्वर्णक्षीरी के मूल को चोक कहा है ?
a. माधवनिदान b. भावप्रकाश
c. शारंगधर संहिता d. None
70. यशद् धातु का वर्णन किया है ?
a. शारंगधर b. माधवनिदान c. योगरत्नाकर d. None
71. गर्भनिरोधक योग का वर्णन ?
a. भावप्रकाश b. माधवनिदान c. वंगसेन d. None
72. संग्रहकाल है ?
a. आदिकाल b. मध्यकाल c. आधुनिक काल d. All
73. चिकित्सा कलिका पर व्याख्या की ?
a. चन्द्रनंदन b. गयदास c. चन्द्रट d. जेज्जट
74. चरक चतुरानन है ?
a. गयदास b. नरदत्त c. चक्रपाणि d. चंद्रट
75. लघुपंजिका के लेखक है ?
a. डल्हण b. भास्कर
c. विजयरक्षित d. अरूणदत्त
76. आयुर्वेद रसायन के लेखक है ?
a. हेमाद्रि b. भास्कर c. इंदु d. विजयरक्षित
77. इन्दुमती किस पर लिखी गयी है ?
a. अष्टांग संग्रह b. अष्टांग हृदय c. चरक संहिता d. All
78. अष्टांग हृदयाघात के लेखक है ?
a. बोपदेव b. आशाधर c. भास्कर d. गदाधर
79. योगचिंतामणि के लेखक है ?
a. जैनहर्षकीर्ति सूरी b. लोलिम्बराज
c. काशीराम वैद्य d. गंगाधर
80. चरकप्रदीपिका के लेखक है ?
a.हाराणचंद्र b. योगिन्द्रनाथ सेन c. ज्योतिषचन्द्र सरस्वती d.None
81. अंजननिदान के लेखक है ?
a.माधवकर b. हंसराज वैद्य c. अग्निवेश d. गणनाथ सेन
82. चक्रदत्त ने आमवात में दिया ?
a. सिंहनाद गुग्गुल b.कांकायन गुटिका c. रसोन d.
83. आचार्य चक्रदत्त ने मसूरिका में दिया ?
a. रसपर्पटी b. कज्जली c.लोकनाथ रस d. ताम्रभस्म
84. सोमरोग का सर्वप्रथम वर्णन किया ?
a. वंगसेन b. योगरत्नाकर c. योगतरंगिणी d. चक्रदत्त
85. दूतों के प्रश्नों की संख्या के आधार पर रोग की साध्यासाध्यता बतायी है ?
a. वंगसेन b. योगरत्नाकर
c. भैषज्य रत्नावली d. योगिन्द्रनाथ सेन
86. भिषक कर्म सिद्धी के लेखक है ?
a. काशीराम b. रघुनाथ शास्त्री
c. रमानाथ द्विवेदी d. उपेन्द्रनाथ
87. स्नायुक रोग को गण्डस्थ कहा है ?
a. राजाभोज b. सोढल c. बसवराज d. शंकर
88. सिद्धयोग संग्रह के लेखक है ?
a. यादवजी b. कालिदास c. शंकर d. योगिन्द्रनाथ सेन
89. रस चिंतामणि के लेखक है ?
a. यादवजी b. लोलिम्बराज c. ढुंढुकनाथ d. सोमदेव
90. सबसे प्रथम निघण्टु है ?
a. अष्टांग निघण्टु b. पर्यायरत्नमाला
c. धन्वन्तरि निघण्टु d. मदनपाल निघण्टु
91. मदनपाल निघण्टु ने वर्ग बताये है ?
a. 12 b. 13 c. 14 d. 15
92. धन्वन्तरि निघण्टु के लेखक है ?
a.रविगुप्त b.शल्य चिकित्सा c.महेन्द्र भौगिक d. चक्रपाणि
93. पीत करवीर का वर्णन सर्वप्रथम है ?
a. भावप्रकाश b. राजनिघण्टु
c. निघण्टु रत्नाकर d. धन्वन्तरि निघण्टु
94. खरनाद संहिता संबंधित है ?
a.कायचिकित्सा b. शल्य चिकित्सा c.कौमारभृत्य d. रसायनतंत्र
95. कृष्णात्रेय तंत्र संबंधित है ?
a. शल्यचिकित्सा b. शालाक्य चिकित्सा
c. काय चिकित्सा d. अगदतंत्र
96. अश्वचिकित्सा के लेखक है ?
a. जयदत्त b. भोज c. हेमाद्रि d. दीपंकर
97. कुचुमार तंत्र संबंधित है ?
a. काय चि. b. रसायन c. वाजीकरण d. कौमारभृत्य
98. गजायुर्वेद के प्रवर्तक आचार्य है ?
a. पालकाप्य b. बृहस्पति c. नीलकंठ d. भोज
99. अखिल भारतीय वैद्य सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन हुआ ?
a. नासिक b. मुम्बई c. नागपूर d. पुणे

100. समन्वयात्मक शिक्षा मूल सिद्धान्त दिया ?
a.भोर कमेटी b.चोपडा कमेटी c.दवे कमेटी d. व्यास कमेटी
101. उडुपकमेटी की स्थापना ?
a. 1945 b. 1946 c. 1958 d. 1963
102. महामहोपध्याय है ?
a. द्वारकानाथ सेन b.विजयरत्न सेन c.गणनाथ सेन d. All
103. पद्मभूषण से सम्मानित वैद्य है ?
a. सत्यनारायण शास्त्री b. शिवशर्मा c. a & b d. None
104. Health Survey and development commetee है ?
a. भोर कमेटी b. चोपडा कमेटी c. दवे कमेटी d. None
105. आयुर्वेद को षोडषांग कहा है ?
a. भास्कर b. पं.जगन्नाथ प्रसाद
c. शिवशर्मा d. प्रियव्रत शर्मा
106. मधुमेह पर प्रकाशित जनरल है ?
a.Ayus 84 b. Ayus 82 c. Ayus 55 d. Ayus 57
107. चरक क्लब की स्थापना हुयी ?
a. न्यूयॉर्क b. लंडन c. सियोल d. रोम
108. महाराष्ट्र में आयुर्वेद को एलोपॅथी के समकक्ष दर्जा मिला ?
a. 1985 b. 1981 c. 1984 d. 1999
109. Indian Medicine Central Council Act बना ?
a. 1971 b. 1970 c. 1969 d. 1959
110. ऋग्वेद में मण्डल है ?
a. 10 b. 5 c. 11 d. 16
111. अश्विनी कुमारों को देवता ओं का चिकित्सक कहा है ?
a. वेदो में b. पुराणों में c. आयुर्वेद d. All
112. रत्नप्रभा के लेखक ?
a. शिवशर्मा b. निश्चलकर c. गंगाधर राय d. कणाद
113. एकतत्ववाद दिया
a. वेदान्त b. सांख्य c. वैशेषिक d. मिमांसा
114. आस्तिक दर्शन है ?
a. न्याय, जैन b. सांख्य, योग c. योग, बौद्ध d. All
115. षडदर्शन समुच्चय के लेखक है ?
a. गोरखनाथ b. माधव c. हरिभद्र सूरी d. ईश्वरकृपा
116. वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक है ?
a. गौतम b. कपिल c. कणाद d. जैमिनी
117. परमाणुवाद/असत्कार्यवाद दिया ?
a. न्याय b. वैशेषिक c. योग d. a & b
118. कर्तव्यमीमांसा है ?
a. न्याय b. योग c. मिसांसा d. वेदांत
119. प्रमाणैरर्थ परीक्षणम् बताया है ?
a. वैशेषिक b. न्याय c. योग d. वेदांत
120. देहात्मवाद दिया ?
a. चार्वाक b. जैन c. बौद्ध d. All
121. जैन दर्शन में प्रमाण बताये है ?
a. 3 b. 2 c. 4 d. 5
122. कल्याणकारकम् के लेखक है ?
a.हंसराज b. उग्रदित्याचार्य
c. गंगाधर d. भट्टार हरिश्चंद्र
123. न्यायदर्शन के गुणों का वर्णन किया ?
a. 24 b. 17 c. 41 d. 42
124. न्याय सूत्र के भाष्यकार है ?
a. कात्यायन b. गौतम c. अरस्तु d. पंतजलि
125. न्यायकन्दली टीका लिखी
a. न्याय b. सांख्य c. वैशेषिक d. सांख्य
126. प्राचीनतम दर्शन है ?
a. न्याय b. सांख्य c. वैशेषिक d. योग
127. चित्तवृत्तियाँ है ?
a. 4 b. 3 c. 6 d. 5
128. अंतरंग योग में आते है ?
a. ध्यान b. धारणा c. समाधि d. All
129. योग सिद्धियां है ?
a. 23 b. 10 c. 8 d. 5
130. पदार्थ के लक्षण है ?
a. सत्ता b. ज्ञेयत्व c. अभिधेयत्व d. All
131. न्यायदर्शन ने पदार्थ माने है ?
a. 25 b. 26 c. 16 d. 7
132. प्रभाकर ने पदार्थ बताये है ?
a. 8 b. 5 c. 16 d. 3
133. अभाव प्रकार है ?
a. 3 b. 2 c. 4 d. 5
134. व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात उसका अभाव ?
a. प्राग्भाव b. प्रध्वंसाभाव c. अत्यंन्ताभाव d. सभी
135. गाय घोडा नही है ?
a.संसर्गाभाव b.अन्योन्याभाव
c. अत्यंन्ताभाव d. सभी
136. तन्मात्रा के आधारपर पंचमहाभूत की विस्तृत विवेचना ?
a. न्याय b. सांख्य c. योग d. वेदांत
137. अंधे के कंधे पर लंगडा सवार रहता है ?
a.षडगवंध न्याय b. पंग्वध न्याय c. a & b d. None
138. द्रव्यसंग्रह है ?
a. 5 b. 6 c. 9 d. 10
139. नित्य है ?
a. पृथ्वी b. जल c. आकाश d. वायु
140. योनिभेद से द्रव्य के प्रकार ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6
141. सर्वतंत्र सिद्धान्त है ?
a. कार्यकारण वाद b. पंचमहाभूतवाद
c. स्वभावोपरमवाद d. None
142. अग्नि का सत्वादि गुण है ?
a. सत्व b. सत्व + तम c. सत्व + रज d. तम
143. वायु के गुण है ?
a. 6 b. 7 c. 9 d. 11
144. शूरता भाव है ?
a. तेज b. पृथ्वी c. जल d. आकाश
145. जल की अवस्थायें है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6
146. लघु उच्चारण में लगा समय है ?
a. काष्ठा b. मात्रा c. निमेष d. b & c
147. दिशा के गुण है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6

148. आचार्य चरक ने आत्मा के गुण बताये है ?
a. 22 b. 16 c. 5 d. None
149. ऊहय है ?
a.मन के गुण b.मन का विषय c.मन का कर्म d. b and c
150. मन का अधिष्ठान है ?
a. सिर b. हृदय c. इन्द्रिय d. All
151. 'समवायी तु निश्चेष्टकारण' है ?
a. द्रव्य b. गुण c. कर्म d. विपाक
152. बुद्धि है ?
a. आध्यात्मिक गुण b. वैशेषिक गुण c. गुर्वादि गुण
d. परादि गुण
153. संस्कार है ?
a. गुर्वादि गुण b. परादि गुण
c. वैशेषिक गुण d. आध्यात्मिक गुण
154. संयोग है ? a. 4 b. 3 c. 6 d. 5
155. उत्क्षेपण है ?
a.आध्यात्मिक कर्म b.लौकिक कर्म c.अलौकिक कर्म d. None
156. 'तुल्यार्थता' है ?
a. सामान्य b. विशेष c. समवाय d. None
157. 'पृथकत्व' है ?
a. सामान्य b. विशेष c. समवाय d. None
158. यथार्थ अनुभव है ?
a. प्रमा b. अप्रमा c. प्रमेय d. प्रमाता
159. रस्सी को सांप समझना है ?
a. प्रमा b. अप्रमा c. प्रमाता d. प्रमेय
160. अनुभवजन्य ज्ञानं
a. स्मृति b. बुद्धि c. अनुभूति d. None
161. अध्यवसायो हि ?
a. स्मृति b. बुद्धि c. अनुभूति d. None
162. ऐतिह्य प्रमाण माना है ?
a. मिमांसा b. पौराणिक c. सांख्य d. योग
163. सत तथा असत की परीक्षा हेतु प्रमाण बताये है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6
164. बीज से उत्पन्न होनेवाले फल का ज्ञान ?
a. वर्तमान कालिक b. भूतकालिक
c. भविष्यकालीन d. All
165. तर्कसंग्रह ने अनुमान बनाये है ?
a. स्वार्थानुमान b. परार्थानुमान c. a & b d. None
166. अहेतु के प्रकार है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6
167. आप्तपुरूष के उपदेश हैं ?
a. आप्तोपदेश b. शब्द c. ऐतिह्य d. All
168. शब्द के भेद है ?
a. 3 b. 5 c. 4 d. 6
169. व्यञ्जना के प्रकार है ?
a. 3 b. 4 c. 2 d. 5
170. बुद्धि पश्यति या भावात् है ?
a. प्रत्यक्ष b. अनुमान c. आप्तोपदेश d. युक्ति
171. जिसके संयोग से कार्य होता है ?
a. समवायीकारण b. असमवायीकारण c. निमित्तकारण d. All
172. रस्सी को सांप समझना है ?
a. सांख्यमत b. विवर्तवाद c. न्यायमत d. बौद्धमत
173. साम्यवैषम्य सिद्धान्त माना है ?
a. न्याय b. सांख्य c. वेदांत d. None
174. पीलूपाक है ?
a. Physical change b. Chemical change
c. Physical & Chemical d. None
175. न प्रकृति न विकृति है ?
a. 3 b. 4 c. 10 d. 1
176. आचार्य भावप्रकाश ने तंत्रयुक्ति बतायी है ?
a. 32 b. 36 c. 42 d. 40
177. नियोग तंत्रयुक्ति का वर्णन किया है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. All
178. भट्टार हरिश्चंद्र ने तंत्रयुक्ति बतायी है ?
a. परिप्रश्न b. व्याकरण c. हेतु d. All
179. शास्त्रों के गूढ अर्थो को प्रकट करने के लिये ?
a. तंत्रदोष b. कल्पना c. ताच्छील्य d. All
180. चरक ने तंत्रदोष (वाक्यदोष. बताये है ?
a. 5 b. 14 c. 15 d. None
181. अर्थाश्रय है ?
a. 17 b. 21 c. 15 d. 7
182. पंचभूतथ्योरी पर बृहत्रयी अवार्ड मिला ?
a. डॉ. गोपाल b. डॉ.एच.एन. राव c. डॉ. भगत d. None
183. व्यवसायो नाम ..... ?
a. अर्थप्राप्ति b. व्याधि c. निश्चय d. परीक्षा
184. संक्षेप में कहना है ?
a. उद्देश b. निर्देश c. उपदेश d. अपदेश
185. निश्चित वचन कहना ?
a. निर्वचन b. संशय c. नियोग d. विकल्प
186. छल के प्रकार है ?
a. 4 b. 3 c. 2 d. 1
187. शक्ति ग्रह साधन है ?
a. 6 b. 7 c. 8 d. 9
188. मीमांसादर्शन के भाष्यकर्ता है ?
a. सरभस्वामी b. कुमारिल भट्ट c. कपिल d. चक्रपाणि
189. मन के पर्याय है ?
a. बुद्धि b. सत्य c. अहंकार d. all
190. आयुर्वेद में चेतना पुरूष कहां है ?
a.एक धातुज b.षडधातुज c. चतुर्विशंति पुरूष d. II
191. अहंकार है ?
a. पदार्थ b. द्रव्य c. गुण d. All
192. आहारशक्ति देखते है ?
a. अभ्यहवरण b. जरण c. a & b d. None
193. सूर्यमंडल से उपरीभाग में स्थित जल है ?
a. अंभ b. मरिची c. मर d. अप
194. आयुर्वेद को पंचम वेद बताया है ?
a.चरक संहिता b.सुश्रुत संहिता c.काश्यप संहिता d.None
195. बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन पटना को स्थापित किया ?
a. रामदयाल जोशी b. रामनारायण शर्मा
c. जे. सी. घोष d. None

196. Fundamental Principle of Ayurveda के लेखक है ?
a. प्रियव्रत शर्मा b. रामहर्ष सिंह
c. शिवचरण ध्यानी d. सी. द्वारकानाथ

197. राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय कहां पर है ?
a. जयपूर b. जोधपूर c. अजमेर d. None

198. आरोग्यवर्धिनी वटी को बताया ?
a. आनंदकंद b. रस हृदय तंत्र c. चरकसंहिता
d. रसरत्न समुच्चय

199. आयुर्वेद रहस्य दीपिका के लेखक है ?
a. अंबिकादत्त शास्त्री b. भास्कर गोविंद घाणेकर
c. नागार्जुन d. None

200. आचार्य चरक ने मधु को कहा है ?
a. गुरू b. लघु c. a & b d. None

201. महामयूरी विद्या का वर्णन किया है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None

202. पंचमूल वर्ग में कंटक तथा वल्ली पंचमूल का वर्णन नही किया है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None

203. काश्यप ने नवायस लोह का वर्णन किया है ?
a. शोथ b. प्रमेह पीडिका c. पाण्डु d. None

204. वैद्य को चतुष्पाद में अंतिम माना है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. भेल d. None

205. क्षार को रस माना है ?
a. चरक b. हारीत c. सुश्रुत d. वाग्भट

206. अगत्स्य संहिता का प्रतिसंस्कार किया है ?
a. वंगसेन b. योगरत्नाकर c. योगतरंगिणी d. None

207. अनुपान तरंगिणी के लेखक है ?
a. रघुनाथ द्विवेदी b.विश्राम c.जगन्नाथ शुक्ल d. None

208. अश्वचिकित्सा के प्रवर्तक आचार्य है ?
a. शालिहोत्र b. नकुल c. जयदत्त d. None

209. अल्माआटा घोषणा पत्र आया ?
a. 1971 b. 1974 c. 1978 d. 1980

****

द्रव्यगुण

1. विपाक वाद सुश्रुतने माना है।
a. पंचविध b. षडविध c. द्विविध d. सभी

2. हरीतकी ..... श्रेष्ठम् ।
a. पथ्यानाम् b. वातकफे c. a + b d. None

3. सिद्धयुपाया: चिकित्सायाम्।
a. चतुष्पाद b. गुर्वादी गुण c. परादी गुण d. All

4. निम्न मे बाकुची का पर्याय नही है।
a. शशिलेखा b. कालमेषी c. पुतिफली d. मेषलोचनी

5. वामक द्रव्य हिंगुनिर्यास की family है।
a. Leguminaceae b. Oleacae
c. Rubiacae d. Meliacae

6. ..... फलोत्तमा ।
a. शिवा b. धात्री c. अमृता d. द्राक्षा

7. ..... सुधा श्रेष्ठ है।
a. अल्पकण्टक b. बहुकण्टक c. Both d. एकवर्षीय

8. श्वसन फल का संग्रह ..... मुहुर्त पर करते है।
a. गोरज b. मैत्र c. a + b d. None

9. करम्भ, महाकरम्भ ..... विष है।
a. पत्र b. फल c. पूष्प d. All

10. चित्रक मूलं तु सर्वत्रैव प्रयोजयेत् ।
a. श्वेत b. रक्त c. नील d. All

11. ऋतु हरीतकी जैसा मातुलुंगविधान ..... ने बताया है।
a. भा.प्र. b. मदनविनोद
c. सुषेणवैद्यक d. माधवद्रवगुण

12. तुवरक का सर्वप्रथम उल्लेख ..... मे है।
a. सुश्रुत b. चरक c. वाग्भट d. भा.प्र.

13. स्नुहीक्षीर विशेषत: ..... ऋतु में ग्रहण करना चाहीए।
a. शरद b. ग्रीष्म c. शिशिर d. वसन्त

14. मदनपुष्प की ग्रंथोक्त मात्रा
a. अन्तर्नखमुष्टि b. वेल्ल c. प्रकूञ्च d. माष

15. सर्वेषां विरेचनानां तीक्ष्णतम
a. बृहत्पत्र b. मुकूलक c. कुटरणा d. निश्त्रिंशपत्रक

16. माक्षिक प्रवरं तेषा विशेषात ..... गुरू ।
a. पैत्तिक b. भ्रामर c. क्षौद्र d. None

17. बिल्व का ..... नाम कालदर्शक है।
a. श्रीफल b. शाण्डील्य c. सदाफल d. शैलूष

18. शक्तिमात्र वीर्यवाद किसने बताया ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None

19. यस्य विवरणे शक्ती स ..... ।
a. खर b. सुक्ष्म: c. रूक्ष d. मन्द:

20. मुत्रविरेचनीय द्रव्य प्राय: ..... रसकी होती है।
a. मधुर b. कटू c. अम्ल d. कषाय

21. शुण्ठी का रस कटू व विपाक ..... है।
a. मधुर b. कटू c. अम्ल d. कषाय

22. पथ्यापथ्यविबोधक पर्यायी नाम
a. भा.प्र. निघण्टू b. निघण्टू रत्नाकर c. शालीग्राम d. कैयदेव

23. आशुकारी गुण .....ने वर्णन किया है ।
a. सुश्रुत b. वाग्भट c. चरक d. नागार्जुन

24. आहारद्रव्य ..... प्रधान होती है।
a. रस b. वीर्य c. विपाक d. कर्म

25. नक्तमाल पर्यायी नाम .....
a. आरग्वध b. करंज c. भल्लातक d. एरण्ड

26. गुडूची का वृष्य कार्य कैसे होता है?
a. रस से b. विपाक से c. वीर्य से d. प्रभाव से

27. कुमारी का वीर्य
a. उष्ण b. शीत c. अनुष्ण d. None

28. यस्य विवरणे शक्ती स .....
a. व्यवायी b. विकासी c. सुक्ष्म d. तीक्ष्ण

29. धन्वन्तरी निघण्टू पर्यायी नाम
a. गुडूच्यादी b. द्रव्यावली c. a + b d. पथ्यापथ्यविबोधक

30. दोष प्रभावपर आधारीत निघण्टू
a. धन्वन्तरी b. राज c. शोढल d. सिद्धमंत्र

31. निघण्टू आदर्श कर्ता
a. दत्ताराम चौबे b. बापालाल वैद्य
c. यादवजी त्रिकमजी d. विष्णू गोडबोले

32. आयुर्वेद ने कुल गुण माने है।
a. 6 b. 10 c. 41 d. 20
33. भल्लातक में ..... रसवर्जित पंचरस रहते है ।
a. मधुर b. अम्ल c. लवण d. कषाय
34. शारंगधरानुसार प्रमाथी द्रव्य
a. मरिच b. वचा c. a + b d. None
35. विश्लेष्य ओजश्च धातूभ्यो.....।
a. व्यवायी b. विकासी c. मदकारी d. प्रमाथी
36. शुक्ररेचक है ?
a. स्त्री b. कपिकच्छू c. जातीफल d. बृहतीफल
37. शारंगधर के अनुसार रसायन है ।
a. अमृता b. रूदन्ती c. गुग्गुल d. All
38. वल्ली पंचमूल में समाविष्ट नही ।
a. सारीवा b. रजनी c. शतावरी d. अजशृंगी
39. राजनिघण्टू ने पंचगण को कहा है।
a.बृहतपंचमूल b.लघुपंचमूल c.कण्टकपंचमूल d. मध्यमपंचमूल
40. उद्दालक ..... कराणां श्रेष्ठम् ।
a. कृशता b. रूक्षता c. पुरिषजनानां d. कफपित्त
41. ..... निसंशय कराणाम् श्रेष्ठ ।
a. वैद्यसमूह b. दृष्टकर्मता c. विज्ञान d. a + b
42. Find out wrong one
a. शिरिष-विषघ्न b. अर्जुन - हृद्य
c. लताकरंज-विषमज्वरघ्न d. खदीर-कण्डूघ्न
43. ..... परं कफकरः ।
a. मत्स्य b. मांस c. सुरा d. क्षीर
44. हरितकी वातज रोगों में किस के साथ देनी चाहिए।
a. लवण b. शर्करा c. घृत d. तैल
45. ग्रीष्म ऋतू में हरितकी के साथ देते है ।
a. गुड b. शुण्ठी c. मधु d. पिप्पली
46. लसून पत्र में कौनसा रस होता है ।
a. मधूर b. तिक्त c. लवण d. अम्ल
47. अहिफेन फल को कहते है ।
a. पोश्त b. डोडा c. खशखश d. अफीम
48. बलात्रय मे समावेश नही ।
a. बला b. अतिबला c. नागबला d. महाबला
49. शारंगधर के अनुसार वमन विरेचन छोडकर अन्य कर्मो के लिए द्रव्य कब संग्रह करनी चाहिये ।
a. शिशिर b. ग्रीष्म c. शरद d. हेमंत
50. आभ्यन्तर विद्रधी नाशक गण ।
a. वरूणादी b. वीरतर्वादी c. सुरसादी d. न्यग्रोधादी
51. अतिबला स्वरूप
a. गुल्म b. क्षुप c. वृक्ष d. लता
52. रक्तभार शामक द्रव्य है ।
a. आम b. लकूच c. रूद्राक्ष d. करमर्द
53. हरिद्रा स्वरूप
a. गुल्म b. क्षुप c. वृक्ष d. लता
54. गायत्री पर्याय है
a. खदीर b. हरिद्रा c. बिल्व d. भृंगराज
55. द्रव्य का उपयुक्तांग अनुक्त होगा तो क्या ग्रहण करे।
a. मूल b. पत्र c. फल d. पूष्प
56. स्नूही क्षीर शोधन
a. गोदुग्ध b. गोमूत्र c. आर्द्रक स्वरस d. चिंचापत्रस्वरस
57. त्रिदोषघ्न द्रव्य है ।
a. मुण्डी b. ब्राम्ही c. निर्विषा d. All
58. अष्टांग संग्रह में कौनसा गण विशिष्ट है ।
a. वत्सकादी b. पद्मकादी c. अम्बष्ठादी d. काकोल्यादी
59. तिक्त रस की उत्पत्ती किस ऋतू में होती है ।
a. वसंत b. शरद c. शिशिर d. वर्षा
60. संशमन द्रव्यों मे महाभूत प्राधान्य ।
a. आकाश b. वायू + आकाश
c. तेज + आकाश d. पृथ्वी + आप
61. विशेष मेध्य है ।
a. ब्राम्ही b. शंखपूष्पी c. गुडूची d. All
62. हरीतकी की कौनसी जाती नेत्ररोगहर है ?
a. अभया b. जीवन्ती c. अमृता d. चेतकी
63. वानरी गूटीका किसका योग है ?
a. एरण्ड b. शतावरी c. कपिकच्छू d. बला
64. दद्रुघ्नवटी योग है।
a. चक्रमर्द का b. खदीर का
c. कुपीलू का d. गोरोचन का
65. सुश्रुत में द्रवद्रव्य के कितने वर्ग है ।
a. 6 b. 10 c. 12 d. 8
66. सुश्रुत के सालसारादी गण को अ. हृदय में कौनसा गण कहा है ।
a. विदार्यादी b. असनादी c. पद्मकादी d. वीरतर्वादी
67. Which गण contain metals ?
a. उषकादी b. असनादी c. त्रप्वादी d. श्यामादी
68. बहुवीर्यवाद के प्रणेता है ।
a. चरक b. चक्रपाणी c. नागार्जुन d. इन्दु
69. हरीतकी, शुण्ठी, गुड है।
a. त्रिमद b. त्रिसमा c. त्रिगुडा d. त्रिकार्षिक
70. त्रिकार्षिक + गुडूची है।
a. चर्तुभद्र b. चर्तुबीज c. चतुर्जात d. चर्तुषण
71. वायु + आकाश महाभूत वाला रस है ।
a. लवण b. कटु c. तिक्त d. कषाय
72. स्निग्ध गुणों में अवर रस है
a. मधुर b. तिक्त c. अम्ल d. लवण
73. न्यग्रोध उदूम्बर अश्वत्थ पारीष प्लक्ष है ।
a. पंचपल्लव b. पंचक्षीरी वृक्ष
c. पंचवल्कल d. a & b Both
74. काश्मरी, खर्जुर, द्राक्षा हैं।
a. स्वल्प त्रिफला b. मधुर त्रिफला
c. महती त्रिफला d. सुरभि त्रिफला
75. कालमेघ का कुल है ।
a. Acanthaceae b. Andrographaceae
c. Agavaceae d. Alongaceae
76. कासमर्द ह Cassia -
a. Absus b. Auriculata
c. Occidentalis d. Angustifolia
77. Combritaceae family का सदस्य नही हैं ।
a. हरीतकी b. बिभीतकी c. आमलकी d. अर्जुन

78. Grewia hirsuta है।
a. अतिबला b. महाबला c. राजबला d. नागबला
79. चित्रक है।
a. Piper nigrum b. Piper longum
c. Piper cubeba d. Plumbago zeylanica
80. Zingiberaceae family का सदस्य है।
a. आर्द्रक b. एला c. हरिद्रा d. All
81. विष पर्याय है।
a. अतिविषा b. प्रतिविषा c. वत्सनाभ d. All
82. देवधूप है।
a. साल b. धूपवृक्ष c. पलंकष d. All
83. बहुवीर्य है।
a. हरीतकी b. बिभीतकी c. आमलकी d. All
84. मधुस्नुही है।
a. द्वीपान्तरवचा b. जीवन्ती c. स्नुही d. वचा
85. शतपुष्पा है।
a. Indian dill fruit b. Indian hemp
c. Indian mallow d. Indian beech
86. Kokam butter tree है।
a. यष्टिमधु b. परिजात c. वृक्षाम्ल d. कुमुद
87. Sweet flag है।
a. वासा b. गोलोमी c. निर्गुण्डी d. गुग्गुल
88. गुग्गुल के भेद है।
a. 3 b. 4 c. 5 d. 7
89. श्वेत तथा रक्त भेद है।
a. चित्रक b. एरण्ड c. पुर्ननवा d. All
90. आहार द्रव्यों की सामान्य सेवन मात्रा है।
a. 1 पल b. 2 पल c. 4 पल d. 8 पल
91. नागकेशर का प्रधान कर्म है।
a. रक्तप्रसादन b. रक्तरंजक c. रक्तस्तम्भन d. रक्तकणवर्धक
92. पटोलपत्र का रस एवं विपाक है।
a. तिक्त, मधुर b. कटु, मधुर
c. तिक्त कटु d. कटु कटु
93. कट्फल का प्रयोज्यांग है।
a. मूल b. पत्र c. त्वक d. फल
94. हरीतकी का प्रयोग सभी रोगो में करते है।
a. घृत के साथ b. शर्करा के साथ
c. लवण के साथ d. गुड के साथ
95. चिन्त्य एवं अचिन्त्य वीर्य बताये है।
a. चक्रपाणि b. शिवदाससेन c. इन्द्र d. शार्ङ्गधर
96. अग्निमंथ का प्रयोज्यांग है।
a. मूल b. मूलत्वक c. त्वक d. फल
97. संहिता पर्याय है।
a. शतपुष्पा b. वंशलोचन c. यज्ञिय d. स्नुही
98. भा.प्र.के अनुसार उत्तम कर्पूर है।
a. पक्व b. अपक्व c. Both d. None
99. शारंगधर के अनुसार शक्ति है।
a. वीर्य b. विपाक c. प्रभाव d. कर्म
100. अहिफेन was 1st introduced by
a. भा.प्र. b. शारंगधर c.मदनपाल निघण्टु d. राज निघण्टु
101. अपामार्ग है।
a.फलपिप्पली b.कपिपिप्पली c.गजपिप्पली d. वनपिप्पली
102. गन्धसार है।
a. कर्पूर b. लवंग c. चन्दन d. जातीफल
103. यज्ञिय नाम का आधार है।
a. रूढि b. देशोक्ति c. प्रभाव d. लोकोपयोग
104. दारूहरिद्रा को कालीयक कहा है।
a. भा.प्र. b. शारंगधर c. राजनिघण्टु d. धन्वन्तरी निघण्टु
105. जारण मारण धारण प्रकार है -
a. कुलत्थ b. गुग्गुलू c. अहिफेन d. करवीर
106. भा.प्र. के अनुसार श्रेष्ठ कस्तुरी है।
a. काश्मीरा b. कामरूप c. पारसिक d. None
107. भा. प्र. के अनुसार श्रेष्ठ कुंकुम है।
a. काश्मीरा b. बाहलीक c. पारसिक d. None
108. किस plant के चारों तरफ अन्य plants विकसित नहीं होते है ?
a. अहिफेन b. विषतिन्दुक c. विषपुष्पक d. वत्सनाभ
109. यस्यं द्रव्यस्य लेपने शक्तिः स।
a. रोपणः b. खर c. पिच्छिलः d. विशदः
110. द्रव्यगुणसूत्रम के अनुसार द्रव्यगुण के पदार्थ है।
a. 3 b. 5 c. 6 d. 7
111. आचार्य प्रियवतशर्मा के अनुसार द्रव्यगुण के पदार्थ है।
a. 3 b. 5 c. 6 d. 7
112. Gmelina arborea है।
a. खरपत्रा b. दर्वीपत्रा c. खरशाक d. II
113. यव के वात कोपक होने का कारण है।
a. लेखन कर्म b. रूक्ष गुण c. शीत गुण d. All
114. Picrocin is found in
a. Withania somnifera b. Thevitia nerifolia
c. Crocus sativus d. Renunculus scleratus
115. भूतनाशक है।
a. रूद्राक्ष b. भल्लातक c. Both d. None
116. अमृतबिन्दु योग है।
a. अमृता b. कर्पूर का c. वत्सनाभ का d. All
117. द्रव्यों का नामकरण-रूढ़ी, प्रभाव, देशोक्ति, लांच्छन, उपमा, वीर्य, इतराहय के आधारपर बताया है।
a.धन्वन्तरी निघण्टु b.मदनपाल निघण्टु
c. भा.प्र. निघण्टु d. राजनिघण्टु
118. चरक ने आहार द्रव्यों को कितने भागों में बांटा है।
a. 2 b. 10 c. 12 d. 13
119. पथ्यापथ्य विबोधक किसनिघण्टु का नाम है।
a. प्रिय निघण्टु b. कैयदेव निघण्टु
c. राज निघण्टु d. धन्वन्तरी निघण्टु
120. अकरकरा का सर्वप्रथम वर्णन किया है।
a. भा.प्र. b. शारंगधर
c. शालिग्राम निघण्टु d. कैयदेव निघण्टु
121. शारंगधर के अनुसार कुटकी है।
a. अनुलोमन b. संसन c. भेदन d. रेचन
122. Latest निघण्टु है।
a. प्रियनिघण्टु b. शालिग्राम निघण्टु
c. अष्टांग निघण्टु d. द्रव्यगुण शतक

123. विहारवर्ग तथा नानार्थ वर्ग मौलिक देन है ।
a. अष्टांग निघण्टु b. मदनपाल निघण्टु
c. सिद्धसार निघण्टु d. कैयदेव निघण्टु

124. वैदिक वाङ्मय में औषधियों के प्रकार है ।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 6

125. Fruit without flower है ।
a. वनस्पति b. वानस्पत्य c. औषधि d. विरूध

126. Toothache tree है ।
a. पीलु b. तेजोवती c. जीवन्ती d. बकुल

127. Curcuma amada है ।
a. हरिद्रा b. वनहरिद्रा c. दारूहरिद्रा d. आम्रगन्धिहरिद्रा

128. भूनिम्ब है ।
a. Azadirachta indica b. Melia azadirecta
c. Andrographis paniculata d. Melia composite

129. Uraria picta है ।
a. शालपर्णी b. पृश्निपर्णी c. मुद्गपर्णी d. माषपर्णी

130. Allangium Salvifolium है ।
a. अंकोल b. कंकोल c. अंकलोऽय d. आकोट

131. Alstonia Scholaris है ।
a. सप्तचक्रा b. सप्तपर्ण c. सप्तशिरा d. All

132. कण्टकारी है ।
a. व्याघ्रनखी b. व्याघ्रपुच्छ c. व्याघ्री d. None

133. हरिद्रा एवं दारूहरिद्रा है ।
a. अंशुमतीद्वय b. करवीरद्वय c. करंजद्वय d. निशाद्वय

134. स्वर्णपत्री / सनाय है - Cassia
a. Auriculata b. Occidentalis
c. Aungustifolia d. Fistula

135. गुञ्जा का प्रतिविष है ।
a. कर्पूर b. टंकण c. चौलाई d. अफीम

136. कृतवेधन है - Luffa
a. Echinata b. Acutangula
c. Cylindrica d. Graveolans

137. अतिविषा है ।
a. घुणवल्लभा b. घुणप्रिया c. घुसृण d. All

138. उदूम्बर है ।
a. याज्ञिक b. यज्ञिय c. यज्ञांग d. यज्ञभूषण

139. ज्योतिष्मती स्वरूप
a. लता b. गुल्म c. क्षुप d. वृक्ष

140. शंखपुष्पी प्रयोज्य अंग
a. पुष्प b. फल c. पत्र d. पंचांग

141. गुग्गुल प्रयोज्य अंग
a. पत्र b. कांड c. फल d. निर्यास

142. सर्पगंधा मात्रा रक्तभार कम करने हेतु
a. 4-5 gm b. 5-6 gm c. 1-2 gm d. 3-4 gm

143. यष्टीमधु प्रयोज्य अंग
a. मूल b. पत्र c. पुष्प d. काण्ड

144. दोषकर्म भेद से द्रव्य प्रकार है।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

145. अश्वगंधा नाम ..... है ।
a.गुणबोधक b. कर्मबोधक c.अवयवबोधक d.स्वरूप बोधक

146. तैलवर्ग व मधुवर्ग नये किसने बताये है ।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None

147. गुडूची है ।
a. वामावर्तिनी b. दक्षिणावर्तिनी
c. मुलारोहिणी d. पत्रारोहिणी

148. मुत्रविरेचनीय गण में नही है ।
a. गोक्षुर b. पाषाणभेद c. इक्षू d. कुश

149. वर्ण्य गण मे नही है।
a. हरिद्रा b. चन्दन c. मंजिष्ठा d. सारीवा

150. शमीधान्य में अहिततम है ।
a. यव b. माष c. कुलत्थ d. सर्षप

151. चरक के अनुसार श्रेष्ठ फल
a. आमलकी b. लकूच c. आम्र d. मृद्वीका

152. ज्वरहर महाकषाय में नही है।
a. मुस्ता b. पाठा c. सारीवा d. मंजिष्ठा

153. कफपित्तजननानां श्रेष्ठ
a. शष्कुली b. अविक्षीर c. माष d. All

154. वृष्यसर्वदोषहराणां श्रेष्ठ
a. पृश्नीपर्णी b. शालिपर्णी c. मुद्गपर्णी d. माषपर्णी

155. आक्षेपजनन द्रव्य है।
a. धत्तूर b. अहिफेन c. कुपीलु d. सुचि

156. तारका विस्फारक द्रव्य
a. अहिफेन b. धत्तूर c. कुपीलु d. तम्बाकू

157. शुक्रस्तभन द्रव्य है ।
a. मद्य b. भंगा c. मान d. अकारकरभ

158. श्लीपद कृमी नाशक द्रव्य
a. निर्गुण्डी b. इन्द्रयव c. शाखोटक d. बर्बरी

159. पंचामृत में समाविष्ट नही है ।
a. गुडूची b. सारीवा c. शतावरी d. मुण्डी

160. उष्णजल, शर्करा, पिप्पली मधुसर्पि इनको कहते है ।
a. मित्रपंत्रक b. पंचसार c. पंचसिद्धौषधिक d. All

161. औषधवर्ग किसकी मौलिक देन है ।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. All

162. आत्मिक गुण है ।
a. 5 b. 6 c. 10 d. 20

163. मृदुगुण में महाभूताधिक्य
a. पृथ्वी b. पृथ्वी + आप
c. आप + आकाश d. आप + वायू

164. देशकाल वयो मान पाक वीर्य रसादिषु
a. सामान्य b. परापरत्व c. विशेष d. समवाय

165. संख्या बाहुल्य, प्रयोग बाहुल्य, विषय बाहुल्य किसके प्राधान्य में है
a. द्रव्य b. गुण c. कर्म d. रस

166. ..... निपाते द्रव्याणां ।
a. वीर्यो b. विपाको c. रसो d. गुणो

167. अर्क तिक्त रसात्मक और ..... है ।
a. शीत b. उष्ण c. अनुष्ण d. None

168. अवृष्य रस है ।
a. कटु b. तिक्त c. कषाय d. All

169. द्विकरस भेद कितने है ।
a. 15 b. 20 c. 12 d. 25

170. अवस्थापाकापेक्षया विशिष्ट: पाक: ..... ।
a. अवस्थापाक b. विपाक c. प्रपाक d. None
171. स्नुही संग्रह किस ऋतू में
a. शिशिर b. शरद c. ग्रीष्म d. वर्षा
172. लवण व दुग्ध है ।
a. रसविरोध b. वीर्यविरोध c. विपाकविरोध d. None
173. वातव्याधि में अनुपान
a. घृत b. तैल c. रसोन d. a & b
174. मृदू-शीत, उष्ण-वीर्य ..... है ।
a. चक्षुग्राहय b. स्पर्शग्राहय c. Both d. None
175. शिग्रुबीज को कहते है ।
a. रक्तमरीच b. श्वेतमरीच c. हरेणू d. जायफल
176. पलंकष है ।
a. गुग्गुल b. गोक्षुर c. पाटला d. अगरू
177. यदा कुर्वन्ति स .....
a. उपाय b. फलम् c. काल d. विर्यम्
178. लाक्षा गुग्गुल उपयोग
a. अस्थिभंग b. अस्थिच्यूति c. अस्थिरूजा d. All
179. शल्लकी निर्यास
a. मोचरस b. कुन्दरू c. चंद्रस d. डिकामाली
180. रक्तचित्रक शोधन द्रव्य
a. अम्लीका स्वरस b. कांजी c. चूर्णोदक d. गोदुग्ध
181. शाल्मली पूष्प का वर्ण होता है ।
a. रक्त b. पीत c. श्वेत d. नील
182. कृष्णीकरण कार्य करता है
a. गुग्गुल b. शालपर्णी c. विभितक d. श्योनाक
183. मंजिष्ठा पर्याय है
a. तोयवल्ली b. अमृतवल्ली c. योजनवल्ली d. All
184. क्षारश्रैष्ठ पर्याय है
a. अपामार्ग b. टंकण c. पलाश d. यवक्षार
185. संशमन महाभूताधिक्य
a. पृथ्वी b. पृथ्वी + आप c. आकाश d. वायू
186. किसका फल शुष्क लेना चाहिए
a. हरितकी b. द्राक्षा c. Both d. बिल्व
187. सुश्रुत ने मधु के भेद बताये
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8
188. बार्बेरीन पाया जाता है
a. ममीरा b. गुडूची c. स्वर्णक्षीरी d. All
189. पेशीपर विशिष्ट कार्यकारी द्रव्य
a. तिक्ताम्ल b. कषायाम्ल c. लवणाम्ल d. मधुराम्ल
190. Family of रक्तचंदन
a. Leguminosae b. Santalaceae
c. Labiatae d. Compositate
191. Ficus Hispida is latin name of -
a. उदुम्बर b. अश्मन्तक c. काकोदुम्बर d. प्लक्ष
192. Helicters isora name
a. आर्वतकी b. आवर्तनि c. मुचुकुन्द d. शृंगाटक
193. भल्लातक संग्रह कौनसे ऋतू में करते है
a. शिशिर b. ग्रीष्म c. वसन्त d. वर्षा
194. अष्टांग संग्रह के अनुसार अग्र द्रव्य संख्या
a. 152 b. 52 c. 155 d. 86
195. ..... कर्मनिष्ठ्या
a. रस b. वीर्य c. विपाक d. प्रभाव
196. समवायी तु निचेष्ट कारणं गुण: ।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. भा.प्र.
197. विकल्प सामर्थ्य द्रव्यप्राधान्य किसने बताया ?
a. सुश्रुत b. चरक c. चक्रपाणी d. नागार्जुन
198. पाको नास्ति विना .....
a. वीर्यात b. रसात c. विपाकात d. प्रभावात्
199. पिप्पली को मागधी नाम किस आधारपर दिया है।
a. रूढी b. देशोक्ती c. लांच्छन d. इतर
200. ..... फलपाकान्ता ।
a. औषधी b. वनस्पति c. विरूद्ध d. वानस्पत्य
201. सुश्रुत ने वानस्पत्य के लिए बताया है।
a. गुल्म b. क्षुप c. वृक्ष d. लता
202. मध्य वीर्य द्रव्य की मात्रा
a. 1 कर्ष b. ½ पल c. 1 पल d. 2 पल
203. शर वनस्पती ..... स्कंध मे है।
a. मधूर b. अम्ल c. लवण d. कटू
204. रजत का समावेश.....स्कंध मे है।
a. मधुर b. अम्ल c. लवण d. कटू
205. निम्न मे से द्रव्य कटू रस कर्मापवाद है।
a. लसून b. पिप्पली c. शुण्ठी d. All
206. तिक्त स्कंध का श्रेष्ठ द्रव्य है।
a. गुडूची b. पटोल c. निम्ब d. चंदन
207. 'पुस्त्वं उपहन्ती' किसके अतियोग का लक्षण है ।
a. लवण b. कटू c. कषाय d. All
208. अविदाही रस है।
a. कषाय b. मधूर c. अम्ल d. लवण
209. सर्वरस प्रत्यनिक भूत
a. मधूर b. अम्ल c. लवण d. तिक्त
210. यथा कुर्वन्ति स ..... ।
a. कर्म b. काल c. वीर्य d. उपाय
211. गुरू-लघु इत्यादी रस किसने माने
a. भद्रकाप्य b. कांकायन c. निमि d. वार्योविद
212. कषाय रस पांचभौतिक संघटन
a. वायू + पृथ्वी b. पृथ्वी + आप
c. पृथ्वी + तेज d. तेज + वायू
213. शित गुणांमध्ये श्रेष्ठ रस
a. कषाय b. मधूर c. अम्ल d. तिक्त
214. वातज व्याधि में रसोपयोग क्रम
a. मधूर, अम्ल, लवण b. मधूर, लवण, अम्ल
c. लवण, अम्ल, मधूर d. None
215. पाराशर मूनिनुसार तिक्त रस का विपाक
a. कटू b. अम्ल c. मधूर d. All
216. कषाय रस का कटू विपाक कैसा होता है ।
a. कनिष्ठ b. उत्तम c. मध्यम d. All
217. पिच्छिल और विशद को वीर्य किसने माना है ।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. नागार्जुन

218. निम्न में से कौनसा जांगम द्रव्य नही है ।
a. कस्तूरी b. मधु c. लता कस्तुरी d. गोरोचन

219. ..... प्रधानं औषध द्रव्यम् ।
a. रस b. वीर्य c. विपाक d. प्रभाव

220. दीपन पाचन द्रव्य है ।
a. शतपुष्पा b. नागकेशर c. चित्रक d. All

221. पक्तव्यं यद् अपक्तैव 'श्लिष्टं कोष्ठे' मलादिकम् । नयति अध:
a. रेचन b. भेदन c. संग्रन d. अनुलोमन

222. लेखन द्रव्य है ।
a. क्षौद्र b. उष्णजल c. यव d. All

223. मेदा-महामेदा प्रतिनिधी द्रव्य.
a. शतावरी b. अश्वगंधा c. विदारीकंद d. वाराही कंद

224. विषद्वय है ।
a. विषा-अतिविषा b. विषा-निर्विषा
c. निर्विषा-वत्सनाभ d. None

225. चरक के अनुसार सार संग्रह काल ?
a. शरद b. हेमंत c. वर्षा d. शिशिर

226. सांग्रहिक रक्तपित्त प्रशमनांना
a. अनन्ता b. उत्पलकुमुदक
c. Both d. None

227. Physiological and biochemical effect of drug?
a. Pharmacodynamics b. Pharmacokinetics
c. Pharmaco therapeutics d. All

228. A drug that reaches the systematic circculation in unchanged form called ?
a. Absorption b. Bioavailability
c. Biotransformation d. None

229. One drug decrease the action of another called
a. Omeprazol b. Antagonist
c. Synergism d. None

230. Clinical features of general Anaesthesia ?
a. Muscles relaxation b. Loss of sensation
c. Abolition of reflexes d. All

231. The drug causes more fluid evacuation called
a. Laxative b. Purgative
c. Carminatives d. None

232. Cardiac stimulent ?
a. Ephedrine b. Dobutamine
c. Adrenaline d. All

233. Which drug is not absorbed orally ?
a. Rifampicine b. Pyrazinamide
c. Streptomycin d. None

234. Paramino phenal derivative hi ?
a. Acetaminophen b. Diclofenac
c. Piroxicam d. None

235. Morphine is C.I. in
a. Poisoning b. Head injury
c. Myocardical Infarction d. All

236. Ca^+ channel blocker hi ?
a. Nifedipine b. Captoprill
c. Sodium nitroprusside d. None

237. Dose of Isoniazid ?
a. 10-20 mg/kg b. 15-25 mg/kg
c. 15-20 mg/kg d. None

238. Gynacomestia is S. E. of
a. Norfloxacin b. Metaclopramide
c. a & b d. None

239. Proton pump inhibitor drug ?
a. Omeprazole b. Ranitidine
c. Pentaprazole d. a & c

240. Supra venticular Tachycardia में drug ?
a. Adrenaline b. Verapamil
c. Glyceryl Trinitrate d. All

241. Drug of choice of filaria ?
a. Diethyl carbamazine b. Metronidazole
c. Chloroquine d. All

242. Willson disease में देते है ?
a. BAL b. Penicillamine c. a & b d. None

243. MDT में है ?
a. Rifampin b. Dapsone c. Clofazinmine d. All

244. Isoniazide से होता है ?
a. Pyridoxin def. b. GIT disturbance
c. Renal Problem d. All

******

रसशास्त्र एवं भैषज्यकल्पना

1. रसरत्नाकर के लेखक है ?
a. नागार्जुन b. सोमदेव c. बिंदु d. शालिनाथ

2. पारद द्वारा मोक्ष प्राप्ति वर्णन है ?
a. रसेश्वर दर्शन b. रसपद्धति c. रसमंजरी d. All

3. रसराज लक्ष्मी के लेखक ?
a. नित्यनाथ b. विष्णुदेव c. शालिनाथ d. प्राणनाथ

4. स्तवक नाम से अध्याय है ?
a. रसार्णव b. गोरक्षसंहिता c. योगतरंगिणी d. रस चिंतामणी

5. क्षार पंचक में नही है ?
a. मुस्तक b. पलाश c. तिल d. अपामार्ग

6. पंचामृत का प्रयोग होता है ?
a. अमृतीकरण b. लोहितीकरण c. a & b d. None

7. मित्रपंचक में है ?
a. गुग्गुल b. घृत c. गुंजा d. All

8. आनंदकंद ने यंत्रों की संख्या मानी है ?
a. 32 b. 41 c. 30 d. 20

9. गंधक जारणार्थ यंत्र है ?
a. इष्टिका यंत्र b. कच्छप यंत्र c. बालूका यंत्र d. All

10. अर्क के निकालने के लिये यंत्र ?
a. पाताल यंत्र b. हंसपाक यंत्र c. आकाशपातन यंत्र d. All

11. पाषाण कर्म करने की दिशा ?
a. दक्षिण b. पश्चिम c. उत्तर d. पूर्व

12. कालिनी निवास ?
a. पूर्व b. वायव्य c. नैऋत्य d. None

13. अवामि भस्म की परीक्षा ?
a. जिव्हा पर रखने पर वमन b. अम्ल द्रव्य डालने पर तुत्थ जैसा
c. चमक न हो d. पानी सतह पर तैरे

14. किसी धातु को अग्नि पर तप्त कर बुझाना है ?
a. निर्वाप b. आवाप c. स्नपन d. a & c

15. महापुट प्रमाण है ?
a. 91 cm b. द्विहस्तप्रमाण c. a & b d. None

16. गजपुट में उपलो की संख्या. ?
a. 750, 250 b. 250, 750
c. 1000, 500 d. 500, 1000
17. पारद भस्म निर्माण के लिये पुट ?
a. कपोत पुट b. मृदुपुट c. a & b d. गजपुट
18. करहाटिका पर्याय है ?
a. पुट b. मूषा c. क्रोंचिका c. a & c
19. धातु के ढालनार्थ मूषा ?
a. महामूषा b. गारमूषा c. अन्धमूषा d. योगमूषा
20. सत्वपातनार्थ मूषा ?
a. वज्रमूषा b. वृन्ताक मूषा c. गोस्तनी मूषा c. a & b
21. कोष्ठी के प्रकार है ?
a. 2 b. 4 c. 5 d. 3
22. वटी का धन्वन्तरि भाग ?
a. ½ b. 1/8 c. 1/7 d. All
23. पंचलोह में नहीं है ?
a. ताम्र b. नाग c. वंग d. लोह
24. पारद पानी से ?
a. 13½ गुना भारी b. बराबर c. 2 गुना भारी d. None
25. पारद का नैवेद्य है ?
a. माक्षिक b. अभ्रक c. गंधक d. मन:शिला
26. पारद के प्रकार है ?
a. 2 b. 5 c. 6 d. 9
27. बद्ध पारद ?
a. रोगनाशक b. जीवनदायक
c. आकाश में उडने योग्य d. All
28. पारद के विशिष्ट शोधन में रसतरंगिनी ने विष का शोधन किया है ?
a. त्रिफला b. चित्रक
c. a & b d. आरग्वध फल मज्जा
29. पारद के गुणान्तर ध्यान हेतु संस्कार है ?
a. मर्दन b. उत्थापन c. बोधन d. स्वेदन
30. पारद का उन्नीसवा संस्कार है ?
a. गगन भक्षण b. जारणा c. भक्षण d. अनुवासन
31. "नष्टपिष्टत्वं कारक" ?
a. स्वदेन b. मर्दन c. मूर्च्छन d. पातन
32. पारद की बुभुक्षा वृद्धि करने वाला संस्कार ?
a. बोधन b. नियामन c. दीपन d. All
33. पंचगुण जारित गंधक ?
a. क्षयनाश b. सर्वरोगहर c. सर्वकुष्ठनाश d. जडतानाशक
34. निम्न में संगन्ध, साग्नि मूर्च्छना है ?
a. रसपर्पटी b. कज्जली c. रसपुष्प d. a & c
35. कर्पूर रस है ?
a. पर्पटी रसायन b. कूपीपक्व रसायन
c. पोट्टली रसायन d. खरलीय रसायन
36. मुग्ध रस में खटिका एवं पारद की मात्रा ?
a. 1 : 2 b. 2 : 1 c. 1 : 1 d. All
37. पर्पटी का तैलाभ वर्ण पाक है ?
a. मृदुपाक b. मध्यपाक c. खरपाक d. All
38. विजय पर्पटी में पारद की मात्रा ?
a. 4 भाग b. 2 भाग c. ½ भाग d. 1/4 भाग
39. बोलपर्पटी का रोगधिकार ?
a. संग्रहणी b. रक्तपित्त c. मूत्रकृच्छ d. कास
40. क्षार पर्पटी में स्फटिका ?
a. 3 भाग b. 1 भाग c. 4 भाग d. 2 भाग
41. समीर पन्नग रस है ?
a. गलस्थ b. तलस्थ c. उभयस्थ d. None
42. रससिंदूर निर्माण में पारद व गंधक की मात्रा ?
a. 2 : 1 b. 6 : 1 c. 1 : 6 d. 1 : 2
43. समीरपन्नग रस में मन:शिला की मात्रा ?
a. 1 भाग b. 2 भाग c. 3 भाग d. 4 भाग
44. निम्न में तीव्र रेचक है ?
a. रससिंदूर b. मकरध्वज c. रसकर्पूर d. रसपुष्प
45. पारद के बंधों की संख्या है ?
a. 26 b. 27 c. 3 d. 25
46. दीपन पाचन हेतु बंध है ?
a. मूर्तिबंध b. द्रुतिबंध c. पिष्टिबंध d. क्षारबंध
47. वलयाकार बंध की लंबाई है।
a. 8 अंगुल b. 12 अंगुल c. 10 अंगुल d. None
48. रसशक्तियाँ है ?
a. 5 b. 7 c. 6 d. 9
49. जपाकुसुम संकाश: है ?
a. Cinnebar b. Coralline c. Calomel d. None
50. दिव्य रस पर्याय है ?
a. गंधक b. अभ्रक c. स्वर्ण d. None
51. अभ्रक के पर्याय है ?
a. अन्नतक, वज्र b. बहुपत्र, अनंतपत्र
c. a & b d. None
52. अधजला हीरा है ?
a. अभ्रक b. पारद c. वैक्रान्त d. शिलाजतु
53. खेचर का सूत्र है ?
a. $FeSO_4.5H_2O$ b. $CuSO_4.7H_2O$
c. $CaSO_4.2H_2O$ d. $FeSO_4.7H_2O$
54. चित्रगंध है ?
a. अभ्रक b. गंधक c. हरताल d. मन:शिला
55. रीतीपुष्पक है ?
a. मन:शिला b. पुष्पांजन c. कम्पिल्लक d. कपर्द
56. शुकतुण्ड है ?
a. हिंगुल b. गंधक c. हरताल d. मन:शिला
57. लोहितायस है ?
a. स्वर्ण b. रजत c. ताम्र d. लोह
58. निम्न को सुमेलित करे ?

a. स्वर्ण	1. द्रविण
b. रजत	2. लतामणि
c. प्रवाल	3. दुर्वर्णक
d. यशद	4. नेत्ररोगारि

a. 1,2,3,4 b. 1,3,2,4 c. 4,3,2,1 d. 1,4,2,3
59. स्वर्णमित्र है ?
a. क्षारराज b. सौभाग्य c. टंकण d. All
60. रसग्रंथो में शिलाजतु के प्रकार ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

61. औषधकार्यो के लिये श्रेष्ठ रसक
a. दर्दुर b. कारवेल्लक c. गुडाभ d. All
62. जरामृत्यु नाशनार्थ गंधक है ?
a. रक्त b. पीत c. श्वेत d. कृष्ण
63. पूर्व: पूर्वौ गुणै: श्रेष्ठ: है ?
a. कंकुष्ठ b. संखिया c. अंजन d. हरताल
64. रसतरंगिणी ने कपर्द के प्रकार ?
a. 2 b. 5 c. 6 d. 3
65. कर्षक है ?
a. मुण्डलोह b. तीक्ष्णलोह c. कांतलोह d. None
66. कौनसा रसक श्रेष्ठ है ?
a. मृतिकाभ b. गुडाभ c. पाषाणाभ d. All
67. कौनसा हिंगुल श्रेष्ठ है ?
a. चर्मार b. हंसपाद c. a & b d. None
68. "सुखनिर्मोच पत्रम्" ग्राहय है ?
a. गंधक b. पारद c. अभ्रक d. विमल
69. मयूरकण्ठाभां है ?
a. अभ्रक b. वैक्रान्त c. सस्यक d. नीलम
70. "द्रुतद्रावम् महाभारम् छेदेकृष्ण समुज्ज्वलम्" है ?
a. अभ्रक b. नाग c. वंग d. यशद
71. निर्दल रक्तपीतकम् है ?
a. हिंगुल b. स्वर्ण c. गंधक d. पीतल
72. भृगराज स्वरस द्वारा शोधन ?
a. शिलाजतु b. माक्षिक c. अंजन d. All
73. नरमूत्र के साथ शोधन
a. रसक b. गंधक c. माक्षिक d. हिंगुल
74. चूर्णोदक द्वारा शोधन ?
a. नाग b. कंकुष्ठ c. गौरीपाषाण d. All
75. कांजी द्वारा शोधन ?
a. अभ्रक b. कपर्दिका c. पुखराज d. All
76. "ध्मातं पतित चाभ्रकम्" है ?
a. पिनाक b. नाग c. मण्डूक d. वज्र
77. अभ्रक सत्व पातन से प्राप्त
a. Mg b. Fe c. Cu d. Zn
78. अभ्रक के विशिष्ट योग है ?
a. गगन पर्पटी b. विजय पर्पटी
c. आरोग्यवर्धिनी d. All
79. माक्षिक को पंचवर्ण स्वर्णवत कहा है ?
a. आयुर्वेद प्रकाश b. रसप्रकाश सुधाकर
c. रसरत्न समुच्चय d. All
80. गौरी का शुक्र है ?
a. अभ्रक b. वैक्रान्त c. गंधक d. पारद
81. माक्षिक का antidote है ?
a. उमाफल b. कुलत्थ क्वाथ c. गौमूत्र d. All
82. रज:प्रवर्तनी वटी विशिष्ट योग है ?
a. गौरिक b. हरताल c. कासीस d. अंजन
83. "घृष्टं तु गैरिच्छायम्" है ?
a. स्त्रोतांजन b. गैरिक c. मन:शिला d. रसांजन
84. संखिया की सामान्य मात्रा
a. 1 यव b. 1 रत्ती c. 1/120 - 1/30 स्त्री d. All
85. व्हेल मछली के आंत्र भाग है ?
a. अग्नीजार b. अम्बर c. a & b d. None
86. मृर्दाश्रुंग है ?
a. PbO b. FeO c. Fe_2O_3 d. $CaCO_3$
87. लोकनाथ रस विशिष्ट योग है ?
a. कर्पद b. नवसादर c. हिंगुल d. None
88. केतु की प्रतिनिधी धातु है ?
a. तीक्ष्णलोह b. कांत लोह c. वंग d. नाग
89. धातुओं का स्वाभाविक वर्ण वर्णित किया है ?
a. योगरत्नाकर b. रसार्णव c. रसोपनिषद d. भावप्रकाश
90. वंग की ज्वाला वर्ण है ?
a. श्वेत b. नील c. कपोताभ d. धुम्र
91. कृष्णवर्ण की भस्म प्राप्त होती है ?
a. ताम्र b. रजत c. स्वर्ण d. a & b
92. रजत का M.P. है ?
a. 1065° c b. 960° c c. 1057°c d. 1020°c
93. अशुद्ध रजत भस्म ग्रहण करने से ?
a. मलबद्धता b. अष्ठ महारोग c. प्रमेह d. गुल्म
94. कांस्य है ?
a. Cu + Zn b. Cu + Sn c. Cu + AL d. Pb + Sn
95. ताम्र का मारक द्रव्य है ?
a. नाग b. माक्षिक c. गंधक d. मन:शिला
96. इन्द्र के शुक्र से उत्पन्न धातु ?
a. स्वर्ण b. रजत c. वंग d. नाग
97. ताम्र के दोष है ?
a. 5 b. 6 c. 7 d. 8
98. गोमेद की काठिन्यता है ?
a. 9 b. 7.5 c. 10 d. 8.5
99. $CaCO_3$ पाया जाता है ?
a. नीलम b. मुक्ता c. प्रवाल d. a & c
100. नीलम का नीला रंग रहता है ?
a. क्रोमियम ऑक्साइड b. टाइटेनिक ऑक्साइड
c. फेरिक आक्साइड d. None
101. षडरस युक्त भस्म है ?
a. पारद b. वैक्रान्त c. हीरा d. All
102. सर्वाधिक अणुधर्मिता का गुण पाया जाता है ?
a. अभ्रक b. वैदूर्य c. गोमेद d. हीरा
103. आयुर्वेद प्रकाश में उपरत्नों की संख्या. ?
a. 4 b. 6 c. 9 d. 15
104. खटिका का काठिन्य है ?
a. 2 b. 3 c. 1 d. 1.5
105. लूतविषनाशक अगद में प्रयोग ?
a. गोदंती b. शुक्ति c. खटिका d. शंख
106. H_3BO_3 है ?
a. Borex b. Boric acid
c. Calimanite d. All
107. नागपाषाण है ?
a. दुग्धपाषाण b. कौशेयाश्म c. बदराश्म d. जहरमोहरा
108. वृश्चिक विषहर प्रलेप में प्रायोजित ?
a. अहिफेन b. जयपाल c. अर्कक्षीर d. भल्लातक

109. रस तरंगिणी ने विष संख्या ?
a. 5 b. 18 c. 1 d. 3
110. शशक रक्त द्वारा शोधन ?
a. स्वर्ण b. ताम्र c. रजत d. लोह
111. तृणग्राहि है ?
a. नीलम b. तृणकांत c. पीतल d. ताम्र
112. रक्तांग है ?
a. प्रवाल b. कम्पिल्लक c. a & b d. None
113. दशन संस्कार चूर्ण का घटक ?
a. गोदंती b. हरताल c. खटिका d. None
114. Cyanide Process करते है ?
a. स्वर्ण b. रजत c. ताम्र d. लोह
115. बालभैषज्य है ?
a. सौवीरांजन b. रसांजन c. पुष्पांजन d. स्रोतांजन
116. संग्रहणी में प्रयुक्त पर्पटी नही है ?
a. रसपर्पटी b. लोहपर्पटी c. ताम्रपर्पटी d. पंचामृत पर्पटी
117. वितुन्नक है ?
a. सस्यक b. शिलाजतु c. गंधक d. वैक्रान्त
118. AS_2S_2 है ?
a. हरताल b. मन:शिला c. गैरिक d. All
119. गौदुग्ध द्वारा शोधन ?
a. अभ्रक b. शिलाजतु c. गैरिक d. All
120. वंग पाया जाता है ?
a. चन्द्रप्रभा वटी b. आरोग्यवर्धिनी c. योगेन्द्ररस d. None
121. चरक ने त्वक, कंद, क्षीर को ग्रहण करने को कहा है ?
a. शरद b. हेमन्त c. ग्रीष्म d. वसंत
122. राजनिघण्टुकार ने पंचांग ग्रहण करने को कहा है ?
a. हेमंत b. ग्रीष्म c. शरद d. वसंत
123. भैषज्य कल्पना का उत्कृष्ट ग्रंथ है ?
a.चरक संहिता b.शारंगधर संहिता c.अष्टांग हृदय d. All
124. यदि तैल न दिया गया हो तो किसका प्रयोग करते है ?
a. गोघृत b. तिल तैल c. सर्षप तैल d. All
125. अवलेह की सवीर्यता अवधि है ?
a. 2 माह b. 4 माह c. 1 वर्ष d. None
126. औषध कार्यो में श्रेष्ठ सर्षप ?
a. रक्त सर्षप b. श्वेत सर्षप c. पीत सर्षप d. All
127. पिचु पर्याय है ?
a. माषक b. कर्ष c. कुडव d. द्रोणि
128. विल्व पर्याय है ?
a. पल b. कुडव c. शाण d. All
129. 3 गुंजा की मात्रा ?
a. 1 यव b. 1 शाण c. 1 वल्ल d. 1 पल
130. 4 कुडव की मात्रा है ?
a. 1 प्रस्थ b. 1 अक्ष c. 1 विल्व d. None
131. चरक ने एक निष्क की मात्रा बतायी है ?
a. 4 माशा b. 3 माशा c. 5 सेर d. None
132. 12 अंगुल प्रमाण है ?
a. 1 अरत्नि b. 1 हस्त c. व्योम d. वितस्ति
133. शुष्क द्रव्यों की अपेक्षा आर्द्र द्रव्यों की मात्रा ?
a. 2 गुना b. 3 गुना c. 4 गुना d. 8 गुना
134. चूर्ण की सामान्य मात्रा ?
a. 1 कर्ष b. 1 तौला c. a & b d. None
135. घृतकी सामान्य मात्रा ?
a. 1 कर्ष b. 1 पल c. 2 पल d. ½ पल
136. प्रमथ्या की सामान्य मात्रा ?
a. 2 पल b. 4 तौला c. 8 तौला d. a & c
137. आचार्य सु. ने कषाय कल्पना मानी है ?
a. 5 b. 6 c. 7 d. None
138. चूर्ण का वर्णन कषाय कल्पना में किया है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. काश्यप d. None
139. प्रक्षेप पर्याय है ?
a. चूर्ण b. कल्क c. क्वाथ d. हिम
140. रसक्रिया पर्याय है ?
a. चूर्ण b. घन c. अवलेह d. शुष्ककल्क
141. यंत्र निष्पिडात द्रव्यात रस ..... उच्यते ।
a. स्वरस b. कल्क c. प्रमथ्या d. मंथ
142. यादवजी त्रिकमजी मतानुसार क्षीरपाक ?
a. 1 : 8 : 32 b. 1 : 15 : 15
c. 1 : 1 : 8 d. All
143. फाण्ट में द्रव्य मात्रा ?
a. 4 गुना b. 6 गुना
c. 8 गुना d. 32 गुना
144. आसव अरिष्ट में प्रक्षेप द्रव्य रहता है ?
a. ½ b. 1/10 c. 1 तुला d. 1 द्रोण
145. कल्क में मधु, घृत तैल इत्यादि की मात्रा ?
a. समभाग b. 4 गुना c. 2 गुना d. All
146. वातज व्याधि में चूर्ण में चीनी की मात्रा ?
a. 1/8 b. 1/6 c. 1/4 d. None
147. यूष में शुण्ठी कल्क की मात्रा ?
a. ½ कर्ष b. 1 तौला c. 1 शाण d. All
148. मल धातु रोकनेवाली है ?
a. विलेपी b. पेया c. मण्ड d. यवागु
149. अष्टगुण मण्ड का वर्णन किया ?
a. भावप्रकाश b. चरक c. सुश्रुत d. शारंगधर
150. भक्त में डल्हण ने कितने गुना जल बताया है ?
a. 14 गुना b. 5 गुना c. 8 गुना d. All
151. लाजामण्ड में जल की मात्रा ?
a. 14 गुना b. 6 गुना c. 5 गुना d. All
152. संस्कार भेद से यूष प्रकार ?
a. 75 b. 2 c. 25 d. 50
153. इक्षु रस से उत्पन्न मद्य है ?
a. वारूणी b. सीधु c. सुरा d. None
154. तुषोदक है ?
a. छिलके रहित b.छिलके सहित c. a & b d. None
155. गंध वर्ण रसोद्भव लक्षण है ?
a. तैलपाक b. आसव c. अवलेह d. All
156. शारंगधर ने स्नेह के प्रकार बताये है ?
a. 4 b. 3 c. 5 d. None
157. सूतशेखर रस में द्रव्य संख्या ?
a. 6 b. 8 c. 17 d. 9

158. वत्सनाभ विष पाया जाता है ?
a.अश्वकचुंकी रस b. मृत्युंजय रस
c.आनंदभैरव रस d. All

159. कुमार कल्याण रस का भावना द्रव्य है ?
a. घृत कुमारी b. मृत्युंजय रस c. कर्पूर रस d. All

160. निंबु स्वरस भावना द्रव्य है ?
a. आनंद भैरव b. गुल्म कुठार c. इच्छाभेदी d. All

161. श्वास कुठार रस का भावना द्रव्य ?
a. अजादुग्ध b. नागवेलपत्र c. स्नूहीक्षिर d. All

162. वृद्धवात चिंतामणि में द्रव्यों की संख्या?
a. 18 b. 7 c. 10 d. 5

163. आरोग्यवर्धनी में घटक द्रव्यों की संख्या ?
a. 12 b. 10 c. 14 d. 1

164. स्वर्ण के योग है ?
a. बृहत वात चिंतामणि b. श्वास चिंतामणि
c. कुमार कल्याण रस d. All

165. संजीवनी वटी का भावना द्रव्य ?
a. गौमूत्र b. निम्बपत्र c. नीबूरस d. None

166. चंद्रोदय वर्ति का भावना द्रव्य ?
a. अजादुग्ध b. अजामूत्र c. गौमुत्र d. All

167. रज उपधातु है ? (शारंगधर)
a. रस b. रक्त c. मांस d. मेद

168. संजीवनी वटी की मात्रा ?
a. 1 कर्ष b. 1 रत्ती c. a & b d. None

169. क्षीर को ग्रहण करते है ?
a. प्रौढावस्था c. a & b
b. आहार जीर्ण होनेपर d. None

170. द्रुवय मान संबंधित है ?
a. Weight b. Length c. Volume d. All

171. 1 पल की मात्रा है ?
a. 2 तौला b. 8 तौला c. 4 तौला d. All

172. पुरानी सुरा का प्रयोग करते है ? योग करते है ?
a. स्वरस b. कल्क c. क्वाथ d. फाण्ट

174. अतिसार में दीपन पाचनार्थ प्रयोग करते है ?
a. प्रमथ्या b. लाक्षा रस c. मण्ड d. तण्डुलोदक

175. चूर्णोदक में जल की मात्रा ?
a. 2 गुना b. 5 गुना c. 10 गुना d. None

176. अस्थिरहित मांस है ?
a. वेशवार b. भक्त c. पेया d. None

177. सिक्थ रहित है ? a. यवागू b. पेया c. मण्ड d. All

178. शारंगधर ने दिपन के लिये श्रेष्ठ कहा है ?
a. चित्रक b. शतपुष्पा c. नागकेशर d. All

179. जलौका सर्प योगितम नाडी गती है ?
a. वात b. पित्त c. कफ d. All

180. शारंगधर ने बालावस्था बतायी है ?
a. 20 वर्ष b. 15 वर्ष c. 10 वर्ष d. All

181. शारंगधर ने पंचकर्म का वर्णन किया है ?
a. पूर्वखण्ड b. मध्यम खण्ड c. उत्तर खण्ड d. All

182. सुरा के प्रकार है ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

183. सुदर्शन चूर्ण का अनुपान ?
a. उष्ण जल b. उष्ण दुग्ध c. शीतल जल d. All

184. शारंगधर ने अर्श भगन्दर में गुग्गुल प्रयोग किया है ?
a. त्रिफला गुग्गुल b. योगराज गुग्गुल c. सिंहनाद गुग्गुल d. All

185. खर्जुर से उत्पन्न मद्य है ?
a. प्रसन्ना b. वारूणी c. सीधु d. All

186. भस्म की निश्चन्द्र परीक्षा करते है ?
a. अभ्रक b. स्वर्ण c. माक्षिक d. All

187. शारंगधर ने अस्थियों की संख्या बतायी है ?
a. 260 b. 206 c. 300 d. 360

188. शारंगधर ने रसायन में श्रेष्ठ कहा है ?
a. अमृता b. गुग्गुल c. हरीतकी d. All

189. शारंगधर ने नेत्र रोगों की संख्या मानी है ?
a. 76 b. 64 c. 94 d. None

190. शारंगधर ने गुल्म में प्रयोग की है ?
a. कांकायन वटी b. व्योषादिवटी
c. बाहुशाल गुड d. All

191. फेनशांति लक्षण है ?
a. तैलपाक b. घृतपाक c. a & b d. None

192. प्रमाथी द्रव्य है ? a. मरिच b. वचा c. दधि d. a & b

193. अपान वैगुण्य में औषध काल ?
a. सभक्त b. अभक्त c. प्राग्भक्त d. मध्यभक्त

194. अ. सं. ने औषध सेवन काल माने है ?
a. 5 b. 10 c. 11 d. None

195. गुरूग्रह की धातु है ?
a. स्वर्ण b. रजत c. ताम्र d. लोह

196. कुमार भेद है ?
a. नाग b. वंग c. यशद d. हिंगुल

197. राजतरंगिणी के लेखक है ?
a. यशोधरभट्ट b. T. N. शर्मा c. कल्हण d. None

198. मुक्तां की योनियां है ?
a. 5 b. 6 c. 7 d. 8

199. गोदंती का सूत्र है ?
a. $CaSO_4.2H_2O$ b. $2CaSO_4.H_2O$
c. $MgSO_4.2H_2O$ d. $CaCO_3$

200. नवनीत पर्याय है ?
a. अभ्रक b. वैक्रान्त c. गंधक d. स्वर्ण

201. जर्मन सिल्वर का सूत्र है ?
a. Cu + Zn b. Cu + Ni
c. Cu + Zn + Ni d. All

202. गोरक्ष संहिता में धातुओं की संख्या ?
a. 7 b. 9 c. 6 d. 12

203. शर्करा पानक निर्माण में शर्करा की मात्रा ?
a. 5 गुना b. 2 गुना c. 6 गुना d. All

204. पिण्डी एवं विडालक का वर्णन प्राप्त होता है ?
a. शारंगधर संहिता b. भाव प्रकाश
c. अष्टांग संग्रह d. All

205. सूर्य ग्रह की प्रतिनिधी धातु एवं रत्न है ?
a. स्वर्ण, माणिक्य b. रजत, माणिक्य
c. स्वर्ण, पुखराज d. ताम्र, माणिक्य

माधव निदान

सम्प्राप्ती

1. "समवेतानां पुनर्दोषाणामंशांशबल.... ऽस्मिन अर्थे।"
   a. प्राधान्य b. विकल्प c. काल d. बल
2. ---- तरतमाभ्यामुपलभ्यते तत्र व्दयोस्तरस्त्रिशु तम इति..।
   a. प्राधान्य b. विकल्प c. काल d. बल
3. वाग्भट और चरक ने कौनसा अतिसार का प्रकार वर्णन नही किया है।
   a. पित्तज b. शोकज c. आमज d. सन्निपातज
4. पित्तकृन्ति यदाऽत्यर्थं द्रव्याण्यश्नाति पैत्तिके। तदांघजायतेऽभीक्ष्णं... उल्बणं:।।
   a. वातातिसार b. पित्तातीसार c. रक्तातिसार d. कफातिसार
5. माधवनिदाननुसार अर्श की संख्या...
   a. 6 b. 5 c. 7 d. 10
6. रक्तार्श प्रकार अलग से वर्णन नही किया।
   a. चरक b. सुश्रुत c. माधवनिदान d. अष्टांग संग्रह
7. पाण्डु रोग के प्रकार.. (सुश्रुत)
   a. 5 b. 6 c. 4 d. 3
8. पाण्डू रोग मे दुष्य (माधवनिदान) ....
   a. रस b. रक्त c. मांस d. मेद
9. हरितानुसार पाण्डू के प्रकार....
   a. 7 b. 4 c. 8 d. 5
10. उर्ध्वग रक्तपित्त मे अनुबंध रहता है।
    a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोष
11. राजयक्ष्मा व्याधी मे मुख्यत: ... स्त्रोतस का अवरोध होता है।
    a. रसवह b. रक्तवह c. अन्नवह d. जलवह
12. प्राणोदानानुगत: प्रदुष्ट: स भिन्न कांस्यस्वनतुल्यदोष निरेती वक्त्रासहस्त्रा सदोषो मनिषिभि:..... इति प्रदिष्टा।
    a. हिक्का b. श्वास c. कास d. सभी
13. क्षुद्रश्वास में इस दोष की अधिकता रहती है....?
    a. वात b. कफ c. पित्त d. इसमें से नहीं
14. स्वरभेद की संख्या माधवनिदानानुसार.....
    a. 6 b. 7 c. 3 d. 4
15. तृष्णा कौनसे स्त्रोतस का व्याधी है...?
    a. स्वेदवह b. जलवह c. अन्नवह d. रसवह
16. तृष्णा में दोषाधिक्य है।
    a. वात b. पित्त c. a + b d. इसमें से नहीं.
17. मुर्च्छा कौनसे स्त्रोतस का व्याधी है...?
    a. मनोवह b. संज्ञावह c. रसवह d. अन्नवह
18. तमोगुण युक्त पित्त से.....उत्पन्न होती है...।
    a. मुच्छा b. भ्रम c. तंद्रा d. निद्रा
19. तमोगुणयुक्त वात और पित्त से...।
    a. मुच्छा b. भ्रम c. तंद्रा d. निद्रा
20. तमोगुणयुक्त श्लेष्मा से...।
    a. निद्रा b. तंद्रा c. मुर्च्छा d. भ्रम
21. सुश्रुत एवं माधवनिदानानुसार दाह के प्रकार...।
    a. 7 b. 8 c. 9 d. 10
22. आमवात कौनसे स्त्रोतस का व्याधी है।
    a. अन्नवह b. रसवह c. a + b d. इनमें से नहीं.
23. परिणाम शुल में किस दोष का आधिक्य रहता है।
    a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोष
24. चरक ने धातुगत रक्तज गुल्म का समावेश इस गुल्म में किया है।
    a. वातज b. पित्तज c. कफज d. रक्तज
25. हृद्रोग कौनसे स्त्रोतस का व्याधी है..?
    a. रक्तवह b. रसवह c. प्राणवह d. अन्नवह
26. शोथ में किस दोष का आधिक्य रहता है..?
    a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोष
27. माधवनिदान ने गलगण्ड का कौनसा प्रकार नहीं बताया है..?
    a. वात b. पित्त c. कफ d. मेद
28. सन्निपातज भगंदर को..... कहते है।
    a. उन्मागि b. उष्ट्रग्रीव c. शम्बूकावर्त d. शतपोनक
29. शीतपित्त में कौनसे दोष का आधिक्य रहता है..?
    a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज
30. उदर्क में कौनसे दोष का आधिक्य रहता है..?
    a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज

पूर्वरूप

1. "भोज्यनामवरोधश्च" पूर्वरूप है।
   a. श्वास b. हिक्का c. कास d. छर्दि
2. "कुक्षेराटोप" पूर्वरूप है। a. अतिसार b. अश c. हिक्का d. b & c
3. ग्रहणीदोष पाण्डवर्तेरांशड्का चोदरस्य च। पूर्वरूप है।
   a. ग्रहणी b. अश c. पाण्डू d. उदर
4. "हृत्पिडा जृम्भणं ग्लानि...।" पूर्वरूप है।
   a. ज्वर b. हृद्रोग c. मुच्छा d. None of these
5. "हृल्लासोद्गारशोथौ" पूर्वरूप है।
   a. उदर b. हिक्का c. छदि d. a & c
6. "अव्यक्त लक्षणं" पूर्वरूप है।
   a. वातव्याधी b. उर:क्षत c. अपस्मार d. a & b
7. "बस्तगन्धत्वं" पूर्वरूप है।
   a. अश b. अश्मरी c. मूत्रकृच्छ्र d. मुत्राघात
8. "रोमहर्षोऽरूचिच्छर्दिर्जड्घो र्वो" सदनं तथा।
   a. छदि b. उरूस्तंभ c. ज्वर d. अतिसार
9. सिरायामोऽड्ग गौरवम् हे पूर्वरूप है।
   a. वातरक्त b. उरूस्तंभ c. शोथ d. उदर
10. "रोमहर्षोऽरूचिस्तम:" पूर्वरूप है।
    a. छदि b. उरूस्तंभ c. ज्वर d. अतिसार
11. "विटसंड्ग" पूर्वरूप है।
    a. अश b. गुल्म c. आमवात d. अतिसार
12. "तृष्णाऽऽलस्यं बलक्षय:" पूर्वरूप है।
    a. ज्वर b. अतिसार c. तृष्णा d. ग्रहणी
13. "विण्मुत्रपीतत्वमथा विपाको" पूर्वरूप कौनसे व्याधी के है।
    a. कामला b. पाण्डू c. मूत्राघात d. प्रमेह
14. "लोहगन्धिश्च निश्वासो" पूर्वरूप कौनसे व्याधी के है।
    a. पाण्ड् b. कामला c. रक्तपित्त d. a & b
15. "दोषोऽन्नपाने" पूर्वरूप कौनसे व्याधी के है।
    a. अम्लपित्त b. अरोचक c. छदि d. अग्निमांद्य
16. हत्कम्प : शुन्यता स्वेदो ध्यानं मुर्च्छा प्रमुढता। पूर्वरूप है।
    a. हृद्रोग b. मुच्छा c. अपस्मार d. a & b
17. सन्धि शैथिल्यमालस्यं सदनं पिऽलोग्दम:। पूर्वरूप है..?
    a. आमवात b. वातरक्त c. सन्धिवात d. a & c
18. "अप्रहर्षश्च शितं" पूर्वरूप है.? a. उदर b. हृद्रोग c. ज्वर d. a & b
19. "शुक्लेक्षणो भवति मांसपरोरिरंसु:" पूर्वरूप है..?
    a. पाण्डू b. अपस्मार c. राजयक्ष्मा d. उन्माद
20. "दाहश्चिक्कणता देहे" पूर्वरूप है..?
    a. ज्वर b. मुत्राघात c. अश्मरी d. प्रमेह

21. ''निमित्तेऽल्पेऽतिकोपनम्'' पूर्वरूप है..?
a. विषम ज्वर b. कुष्ठ c. वातरक्त d. None of these

22. ''रोमहर्षोऽसृज:''-पूर्वरूप है..?
a. वातरक्त b. शोथ c. कुष्ठ d. पाण्डू

23. ''व्रणानामधिकं शूलं शीघ्रोत्पत्तिश्चिरस्थिति:।'' पूर्वरूप है..?
a. शोथ b. कुष्ठ c. अश्मरी d. व्रणशोथ

24. ''जानुजंङ्गोरूकव्य सहस्तापादांङ्ग सन्धिशु'' पूर्वरूप है..?
a. सन्धिवात b. वातव्याधी c. आमवात d. वातरक्त

25. ''निद्राऽतिध्यानं स्तिमितता ज्वर:''। पूर्वरूप है..?
a. प्रमेह b. उरूस्तंभ c. मूर्च्छा d. None of these

26. ''कुक्षेराटोप'' पूर्वरूप है..?
a. अतिसार b. हिक्का c. कास d. None

27. ''वैरस्यं'' पूर्वरूप है..?
a. अपस्मार b. ज्वर c. उन्माद d. None of these

28. ''जृम्भाऽ गमर्दो'' पूर्वरूप है..?
a. छर्दि b. ज्वर c. वातरक्त d.a & b

29. ''आध्मानतथाविपाको'' पूर्वरूप है..?
a. अग्निमांद्य b. उदर c. अतिसार d. a & c

30. ''कण्ठधुमायनं वमी'' पूर्वरूप है..?
a. कास b. श्वास c. रक्तपित्त d. राजयक्ष्मा

हेतु

1. नया अन्न, नया वर्षाजल तथा गुड। शर्करायुक्त पदार्थ सेवन से होता है।
a. कुष्ठ b. रक्तपित्त c. प्रमेह d. ज्वर

2. आस्यासुखं स्वप्नसुखं ग्राम्यौदकानुपरसा: पयासि----व्याधिका हेतू है।
a. रक्तपित्त b. ग्रहणी c. अर्श d. प्रमेह

3. प्रमेह उपेक्षा से संधी, मर्मस्थानी, तथा मांसलभागी होती है।
a. पिडिका b. मस्से c. अर्श d. प्रमेह पिडीका

4. मेदो द्वारा स्त्रोतोरोध हो जानेसे धातु का ठिक से पोषण न होकर रोग संभवता है।
a. मांसल रोग b. अर्श c. मेदोरोग d. प्रमेह

5. मंदाग्नी, अजीर्ण तथा मलीन अन्न सेवन से होता है।
a. ग्रहणी b. उदर c. अजीर्ण d. कुष्ठ

6. रोगा: सर्वेऽपि मंदोग्नौ.. a. कुष्ठ b. पाण्डू c. यक्ष्मा d. उदर

7. स्वेद, जलवाही, स्त्रोतोरोध, प्राणऽपान, जाठराग्नी विकृत... में होती है
a. पाण्डू b. अर्श c. हृद्रोग d. उदर

8. मिट्टी, शाकसेवन, मर्मोपघात, गर्भपात, गर्भस्त्राव तथा वमनादी पंचकर्मोका ठिक से उपयोग न करने से.....
a. शोथ b. पाण्डू c. शुल d. अम्लपित्त

9. छेदनादी, भेदनादी, अभिघात से समुद्री वायु, भिलावा/शुक्रस्पर्श...शोथ होता है।
a. अभिशापज b.अभिघातज शोथ c.अभिचारज d. None

10. विषजन्य शोथ..... शोथ प्रकार है।
a. नीज b. आगंतुज c. नीज- आगंतुज d. none

11. विषवृक्ष स्पर्श या विषैले जंतुओ के शरीरस्पर्श या उनकी विष्ठा, शुक्र का शरीर संपर्क होने से..... होता है।
a. अभिघातज b. अभिचारज c. विषजशोथ d. अभिशापज

12. वातप्रकोपक भोजन, शीतल जल स्नान, वेगविधारण या वेगप्रेरण तथा क्षोभक कारणो से.....
a. आंत्रवृध्दी b. उदरवृध्दी c. अंधालजी d. वृध्दी

13. आयोडीन की कमी से..... होता है।
a. गंडमाला b. गलगंड c. गलजशोथ d. गलजवृध्दी

14. Thyroxine & Insulin दोनो की action एक दुसरों से.. होती है।
a. विपरीतार्थकारी b. विपरीत c. Both d. none

15. कोषावृत्त द्रवपुर्ण एवं सीमीत गाँठ को..... कहते है।
a. ग्रंथी b. शोथ c. वृध्दी d. none

16. श्लीपद का प्रधान उत्पादन कारण..... है।
a. Filaria Bancrofti b. Egypticap's
c. Aedes egypty d. Mosquito (Chiken gunia)

17. परीसरीय रक्त में (Peripheral Smear) ----कृमी नही रहते।
a. Malarial Fever b. Enteric Fever
c. Filaria d. Dengue Fever

18. Filaria का प्रधान कारण..... है।
a. Mosquito b. Culex fatigans
c. Falciparum d. B. ducrey

19. .....के कृमी को (nocturnal) रात्रीचर कहते है।
a. Malaria b. Filaria c. Dengue d. Enteric Fever

20. आघातादी क्षत निर्मिती उपरान्त अपथ्य सेवन से...उत्पन्न होती है।
a. शोथ b. आगंतुज व्रण c. आगंतुज शोथ d.आगंतुज विद्रधी:

21. व्रणस्य पुर्वरूपत्वेनोत्पन्न शोथ:
a. शोथ b. व्रण: c. व्रणशोथ: d. विद्रधी:

22. व्रणपूर्व शोथ: a. शोथ b. व्रणशोथ: c. विद्रधी d. All

23. विद्रधी फुटने से बनने वाले घाव को..... कहते है।
a. व्रण b. शोथ c. घाव d. तील

24. आगंतुज व्रण छोडके जो शोथ नियम से व्रणपुर्व निर्माण होते है उसे
a. आगंतुज शोथ b. निज शोथ c. व्रण d. व्रण शोथ

25. आघात, पतन, पीडन, स्नायु और पेशी दुर्बलता से होता है।
a. अस्थिभग्न b. भग्न c. संधीविश्लेष d. भंजन

26. पुयपुर्वा तथा अशोधीत व्रण से..... हो सकता है।
a. नीज व्रण b. आगंतुज व्रण c. नाडी व्रण d. विद्रधी

27. मैथुनाधिक्य, हस्तमर्दन, दुष्टयोनी संसर्ग से होता है।
a. उपदंश b. फिरंग c. संसर्ग d. All

28. The causative organism for soft chancre
a. Culex fatigans b. B. of ducrey
c. B. bancrofti d. B. denovonii

29. शुक्ररोगोत्पत्ती..... से होती है।
a. वैध्य वृद्धी b. अवैध्य वृध्दी c. अवैध्यलिंग वृध्दी d.

30. माता, पिता, आचार्य का तिरस्कार एवं नीच (कुकर्म) से..... व्याधी उत्पन्न होता है।
a. प्रमेह b. वातरक्त c. रक्तपित्त d. कुष्ठ

31. मृतीकाजनीत पदार्थ, अतिखट्टा, माषादी या लवण पदार्थ सेवन से..... उत्पत्ती होती है।
a. पाण्डू b. अवरोधजन्य पाण्डू c. मृदभक्षणजन्य पाण्डू d. कुष्ठ

32. The causative organism for leprosy is
a. M. lepray b. M. tuberculli c. Bacillus d. Both A&C

33. ठंडी हवा, स्पर्श से/वात-कफ प्रकोप से
a. रक्तपित्त b. शीतपित्त c. उदर्द d. पामा

34. According to modern urticaria causes as an...
a. Food Poisoning b. Allergic condition
c. Consumption of unstable protein d. Both A & C

35. अम्लपित्त..... पित्त से उत्पन्न होता है।
a. आम b. विदग्ध c. विष्टब्ध d. सभी

36. चिरकालीन प्रमेह, प्रकुपित वात, विषमाग्नी तथा सीलनयुक्त स्थान निवास.....का हेतू है ।
a. कुष्ठ b. पामा c. दद्रु d. विसर्प

37. According to modem aspect causative organism for visarp
a. Staphylococcus Erysipelatis c. Both
b. Streptococcal Erysipelatis d. None

38. लवण, रूक्षान्न सेवन तथा स्वभाव विपरीत पदार्थ सेवन से.....
a. विस्फोट b. विसर्प c. कुष्ठ d. यह सब

39.शनैश्वरादी क्रुर ग्रह प्रकोप से दुषित दोष रक्तसह मिलकर उत्पत्ती करते है।
a. शराविका b. कच्छपिका c. मसुरीका d. अलजी

40. क्रोध, शोक, श्रमादि से उत्पन्न उष्णता और प्रकुपित पित्त से
a. खलीत रोग b. पलित रोग c. इंद्रलुप्त d. यह सभी

41. शुभाशुभ सुचक उन्नत/पीडारहित मंडल को
a. जतुमणी b. जाड्य c. काकणक d. मंडल कुष्ठ

42. मर्दनात् पीडनाद्वाऽति तथैवाऽप्यभिघात.....
a. परीकर्तिका b. परीवर्तीका c. परिकर्त d. प्रत्यावर्तीनी

43. संकुचित योनीमुख संग जोशपुर्ण मैथुनकर्म से...
a. अवपाटिका b. परीवर्तीका c. परीकर्तिका d. यह सभी

44. युवानपिडिका नाम..... दिया है।
a. माधव b. भावप्रकाश c. मधुकोषकार d. अष्टांगहृदय

45. Causative organism for Acne vulgaris
a. Acne Bascillus b. Acne Vulgaris
c. Acne Varicella d. Harpez Simplex

46. मुखरोग: प्राय ..... हेतु सेवन होता है।
a. पित्तवर्धक b. त्रिदोषात्मक c. वातवर्धक d. कफवर्धक

47. नासिका से रक्तमिश्रित पूय..... लगने पर आता है।
a. मतिष्कावरण पर b. मतिष्काकलापर
c. मतिष्कपर d. मतिष्क के पिछले हिस्से पर

48. श्वयथु व्याधी ..... मर्म क्षोभ से होती है।
a. क्षिप्र b. फणा c. श्रृंगाटक d. b & c

49. भाप/धुपसेवन से..... व्याधी होता है
a. कफवर्धक b. प्रतिश्याय c. डांग्या d. नेत्रलालीमां

50. ऋतुविपर्यय, स्वप्नविपर्यय, वेगविधारण, अतिमद्यपान से.... संभवत है।
a. कर्णरोग b. जिव्हारोग c. गलरोग d. नेत्ररोग

51. देवगंधर्वादी,महासर्प,सुर्यसम तेजस्वी वस्तु दर्शन से होनेवाला लिंगनाश होता है।
a. सनिमित्तज b. अनिमित्तज c. निमित्तज d. इनमे से नही

52. नेत्र को नील रक्तता... रस सेवन से आती है।
a. मधुर b. अम्ल c. लवण d. सभी

53. अतिचंक्रमण, अतिशोक, कर्षणसे तथा भारवहन से उत्पन्न होता है।
a. सृगोक्त b. असृगदर c. उदावर्त d. कफजयोनी व्यापद

54. मिथ्याचारेण ता: स्त्रीणां....हेतु है।
a. योनीपीडण b. योनीवंक्षण c. योनीव्यापद d. सभी

55. मिथ्योपचारात संकलेशा द्विषभाजीर्णभोजनात् हेतु है।
a. योनीव्यापद b. सुतिकारोग c. Both d. None

56. दुर्गंधीत स्थान पे निवास तथा व्याधीग्रस्त व्यक्ती के मलादि संपर्क से दुषित भक्ष्य और पेय सेवन से....
a. मलेरीया b. फालेरीया c. Dengue d. मंथरकज्वर

57. माधवनिदानान्वये मंथरक ज्वर को ही कहते है।
a. आंत्रिक ज्वर b. शीतज्वर c. विषमज्वर d. कालज्वर

58. प्रसवपुर्व अशुद्धता, अपक्व अन्न सेवन से विषमाशन से....
a. सुतिकारोग b. प्रसवपूर्व व्याधी c. मृतगर्भा d. इनमे से नही

59. साधारणत: ग्रीष्म तथा वर्षा, शरद, ऋतु में ज्वर मिलता है।
a. भंजनक b. मंथरक c. दोनो d. दोनों नहीं

60. आधुनिकान्वये मंथरक ज्वर का कारण है।
a. Bascillus egyptian b. Bascillus Typhosis
c. B. Ducrey d. None of these

61.घनी बस्ति तथा धुली-धुम में रहनेवाले व्यक्ती को जीवाणुसंसर्ग द्वारा ज्वर होता है।
a. विषमज्वर b. कालज्वर c. अभिशापज ज्वर d. आक्षेपक ज्वर

62. नियम से एक सप्ताह यह ज्वर रहता है।
a. अस्थिभंजन b. दंडकज्वर c. दंडालसक ज्वर d. None

63. अस्थिभंजन ज्वर को ही कहते है।
a. दंडकज्वर b. विषमज्वर c. कालाज्वर d. शीतज्वर

64. सप्ताह/अस्थिभंजन/दंडकज्वर को आधुनिकान्वये कहते है।
a. Dengue b. Enteric c. Malaria d. None

65. बकरी के मल-मुत्रादी संसर्ग से/रोगीनी बकरी के दुध सेवन से
a. डेंगु ज्वर b. माल्टाज्वर c. दंडक ज्वर d. कालज्वर

66. आनुप देशवासियो को और पृथ्वी की धुप से होनेवाला ज्वर
a. माल्टाज्वर b. कालज्वर c. डेंगु ज्वर d. All

67. Causative organism for kala jwar
a. B. Duckrey b. Fal. malariae
c. Culex masquito d. Leissmania donovania

68. Spreads or Leishmanis donovania is due to
a. Phlebotomus Argentipes c. Fal. malariae
b. Leishmania donovania d. B. Duckrey

69. ग्रहणी आदी व्याधी में सन्निपातिक (त्रिदोष) उपद्रवरूप ज्वर संभवता है।
a.आक्षेपक ज्वर b.औपद्रविक ज्वर c.सन्निपातिक ज्वर d. विषमज्वर

70. चुहों के कारण फैलनेवाला ज्वर किटाणुओंसे होता है।
a. श्लेष्मिक ज्वर b. कालज्वर c. ग्रंथीकज्वर d. सन्निपातिक ज्वर

71. खंडीत और प्राणालीक यह दो भेद है।
a. श्वसनक b. आक्षेपक c. ग्रंथीक d. All

72. गुरू पदार्थ सेवन तथा घावादी लगने से संभवता है।
a. तालुरोग b. क्लोमरोग c. जीव्हारोग d. कंठरोग

73. निरंतर मलीन पदार्थ सेवन, वेगविधारण तथा रजोगुण मोह से आत्मा आवृत्त होकर.....व्याधीउत्पत्ती होती है।
a. अतत्त्वाभिनिवेश b. उन्माद c. अपस्मार d. All

74. अतत्त्वाभिनिवेश को ही..... कहते है ।
a. महागद b. महारोग c. महापिशाच d. व्यंग

75. रक्तक्षय,अजीर्ण,उद्वेग,कुटूंबीयो का निष्ठूर व्यवहार इन कारणों से होता
a. अपस्मार b. उन्माद c. योषाऽपस्मार d. None

76. अतिरसोपयोग, अतिमधुसेवन से.....पक्षाघात होता है।
a. रक्तहेतुज b. रसहेतुज c. मांसज d. None

77. अशुध्द शिसा सेवन तथा शिसादी चियकर्म करने से...
a. चलवात b. नागहेतुपक्षाघात c. अर्धांगवात d. शीतज्वर

78. अतिभय, धातुक्षीणता, सत्वक्षय से..... रोग संभवता है।
a. चलवात b. अर्धांगवात c. उर्ध्वांगवात d. अचलवात

79. स्त्रियों को किशोरावस्था तथा पुरूषोकीं वृद्धावस्था में होनेवाला रोग है।
a. खालित्य b. पालित्य c. इंद्रलुप्त d. तांडवरोग

80. मत्स्यमासादिक, रसन लोलुपता, अमित भोजन सेवन से...उत्पन्न होताहै।
a. मधुमेह b. अलालमेह c. सिकतामेह d. लसिकामेह

81. हंसमास, तथा गर्भिणी द्वारा क्षार, अम्लरहित मधुर तथा ओजस्कर पदार्थ सेवन से होता है।
a. मधुमेह b. ओजोमेह c. लसिकामेह d. शुक्रमेह

Modern MCQ

01. Physiological and biochemical effect of drug?
a. Pharmacodynamics b. Pharmacokinetics
c. Pharmacotherapeutics d. All

02. A drug that reaches the systematic circulation in unchanged form called ?
a. Absorption b. Bioavailability
c. Biotransformation d. None

03. One drug decrease the action of another called
a. Omeprazol b. Antagonist
c. Synergism d. None

04. Clinical features of general Anaesthesia ?
a. Muscles relaxation b. Loss of sensation
c. Abolition of reflexes d. All

05. The drug causas more fluid evacuation called
a. Laxative b. Purgative c. Carminatives d. None

06. Cardiac stimulent ?
a. Ephedrine b. Dobutamine c. Adrenaline d. All

07. Which drug is not absorbed orally ?
a. Rifampicine b. Pyrazinamide
c. Streptomycin d. None

08. Paramino phenal derivative is ?
a. Acetaminophen b. Diclofenac
c. Piroxicam d. None

09. Morphine is C.I.in------
a. Poisoning b. Head injury
c. Myocardical Infarction d. All

10. Ca+ channel blocker is?
a. Nifedipine b. Captoprill
c. Sodium nitroprusside d. None

11. Dose of Isoniazid ?
a. 10-20 mg/kg b. 15-25 mg/kg
c. 15-20 mg/kg d. None

12. Gynacomestia is S. E. of
a. Norfloxacin b. Metaclopramide
c. a and b d. None

13. Proton pump inhbitor drug ?
a. Omeprazole b. Ranitidine
c. Pentaprazole d. a and c

14.Supra ventricular Tachycardia choice of drug?
a. Adrenaline b. Verapamil
c. Glyceryl Trinitrate d. All

15. Drug of choice of filaria ?
a. Diethyl carbamazine b. Metronidazole
c. Chloroquine d. All

16. Willson disease choice of drug?
a. BAL b. Penicillamine c. a& b d. None

17. MDT ?
a. Rifampicin b. Dapsone
c. Clofazinamine d. All

18. Isoniazid causes?
a. Pyridoxin def. b. GIT disturbance
c. Renal Problem d. All

19. Tracheostomy is indicated in
a. Laryngeal oedema c. G.B. Syndrome
b. Upper respiratory obstruction d. All true

20. ------- drug is ototoxic.
a. Kanamycin b. Streptomycin
c. Quinine d. All true

21. Convulsions is characteristic feature of.
a. Eclampsia b. Pre eclampsia
c. Placenta preavia d.All true

22. ------ is incorrect in case of Sjogren's sysndrome.
a. Mostly in post menopausal women
b. Called as kerato conjunctivitis sicca
c. Dry tongue and horse voice are seen
d. All correct

23. ------ is Vit. A.
a. Thiamine b. Retinol
c. Ascorbic acid d. Calciferol

24. Parts of brain destruction most likely result in a deficit of memory for recent events
a. Cingulate gyrus c. Parietal lobe
b. Anterior-medial region of temporal lobe d. NOT

25. Bromhexine is ?
a. Bronchodilator b. Antitussive
c. Mucolytic d. NOT

26. Bruner's glands are present in
a. Duodenum b. Stomach
c. Small intestine d. Large intestine

27. ----- Bone forms base of skull.
a. Sphenoid b. Ethmoid c. Temporal d. Nasal

28. ------ is an end artery.
a. Renal artery b. Cerebral artery
c. Coronary artery d. All true

29. ------- is angle of anteflexion of uterus.
a. 90 degrees b. 110 degrees
c. 120 degrees d. 140 degrees

30. Normal CSF pressure is
a. 10-50 mm b. 50-100 mm c. 50-150 mm d. 100-200 mm

31. Number of lobes in liver are
a. One b. Two c. Three d. Four

32. Chorea occurs in
a. Rheumatoid Arthritis b. Parkinsonism
c. Cerebral tumor d. All true.

33. ------ is gram negative organism

a. Pneumococci b. Gonococci c. Staphylococci d. Streptococci

34. ------ is linked with cell mediated immunity

a. T-lymphocyte b. B-lymphocyte

c. Complimentary system d. None

35. ____ is normal blood urea level :

a. 15 - 40 mg / 100 ml b. 30 - 40 mg / 100 ml

c. 20 - 30 mg / 100 ml d. None

36. ____ is commonest among long bone fractures

a. Clavicle b. Femur c. Humerus d. Radius

37. ____8 year old boy suffering from Diabetes insipidus is due to defect in

a. Pituitary b. Pancreas c. Kidney d. Hypothalamus

38. Sunset sign (Kernicterus) is found in-------disease

a. Encephalitis b. Meningitis

c. Hydronephrosis d. Hydrocephalus

39. Acetylcholine is secreted at

a. Neural junctions b. Arterial anastomoses

c. Joints d. Tendons

40. ____ are infectious diseases except

a. Mumps b. Diphtheria c. Beriberi d. Measles

41. Addison's disease is due to

a. Adreno cortical deficiency c. Hypothyroidism

b. Adreno cortical excess d. Hyperthyroidism

42. Aldehyde test is positive in

a. Bronchectasis b. Kala azar

c. Tuberculosis d. Myeloid leukaemia

43. Anti diuretic hormone is secreted from

a. Posterior pituitary gland b. Ant pituitary

c. Adrenal Gland d. Pancrease

44. Anti-malarial drug developed by CCRAS is

a. Ayush 86 b. Ayush 56 c. Ayush 64 d. Ayush 46

45. Anti Vit. of Vit. 'K'

a. Aminopterin b. Isoriboflavin

c. Dicoumarol d. 3 pyridine sulphate

46. ____ is a 'killed vaccine' :

a. Tetanus b. Measles c. Pertusis d. Typhoid

47. Aplastic anaemia is caused by

a. Tetracycline b. Chloramphenicol

c. Aspirin d. None

48. Appetite is controlled by

a. Choline Acetyl transferase

b. Melatonin c. Serotonin d. Saponin

49. Area 41' in brain is

a. Visual area b. Auditory area

c. Sensory area d. Motor area

50. Aspirin was first discovered in year

a. 1899 b. 1889 c. 1890 d. 1980

51. Austin flint murmur is observed in

a. Aortic regurgitation b. C.H.F.

c. Mitral stenosis d.All true

52. Length of spinal cord is

a. 45 cm b. 55 cm c. 60 cm d. 65 cm

53. Average weight of placenta at full term

a. 250 - 500 gm b. 350 - 500 gm

c. 450 - 500 gm d. None

54. Average wt. of Spinal cord is .... gm

a. 45 b. 35 c. 50 d. 55

55. Bile salts are derived from

a. Bilirubin b. Proteins c. Fatty acids d. Cholesterol

56. Azotomic diabetes means

a. Albuminurea b. Uremia c. Proteinemia d. None

57. Bartholin's gland present in

a. Labia minora b. Labia majora

c. Bulbous part of urethra d. NOT

58. BCG vaccination is useful is

a. SLE b. Cholera c. Typhoid d. None

59. Biliary stones are commonly seen at

a. Ampulla b. Bladder

c. Common bile duct d. None

60. Bilirubin is produced from

a. Heam part of Haemoglobin c. Leucocytes

b. Globin part of Haemogllobin d. All true

61. Blood coagulation factors produced in Liver

a. Factor I, II b. Factor V and VI

c. Factor IX and X d. All true

62. A.S.O. titre is positive in :

a. Rheumatic fever b. Myocardial infection

c. CCF d. All true

63. Digitalis is indicated in

a. Malaria b. Leprosy

c. CHF d. Mitral stenosis

64. Vit K deficiency leads to

a. Scurvy b. Haemorrhage

c. Thrombosis d. Pellagra

65. Smallest bone in body is

a. Malleus b. Incus c. Stapes d. Clavicle

66. Complete absence of Eosinophils seen in

a. Hay fever b. Typhoid fever

c. Bronchial asthma d. Tropical eosinophilia

67. Smallest muscles in human body is

a. Dortus b. Stapedeus c. Detrussor d. Deltoid

68. Bone which ossify lastly in body is

a. Clavicle b. Ilium c. Femur d. Sternum

69. Burns caused by liquids or by steam are known as

a. Frost bite b. Necrosis c. Gangrenous d. Scalds

70. CSF,

a. C

c. M

71. Cafe

a. C

c. N

72. TMT

a. Bı

c. Cl

73. Comr

a. O

c. Ce

74. Positi

secret

a. GI

75. Carpe

a. Br

c. Me

76. Adver

a. Ga

77. AIDS i

a. Inf

78. ____ i

a. Fro

c. Ris

79. Chad w

a. Firs

80. Westen

a. AID

81. Wrist d

a. Rad

c. Axil

82. During

a. Lun

83. Cherry-

post-m

a. O_2

84. Chloroq

a. Amo

c. Extr

85. Dual blo

a. Live

86. Clubbin

a. Rena

c. Live

87. Cobra ve

a. Hear

c. Cardi

70. CSF, is secreted from
a. Choroid plexus b. Auerbachs plexus
c. Meissnars plexus d. Not

71. Cafe - an lait patches are present in
a. Cerebral haemorrhage b. Meningitis
c. Neuro Fibromatosis d. Not

72. TMT is diagnostic Aid for
a. Brain tumour b. Ischaemic heart disease
c. Cholecystitis d. Neuropathy

73. Commonest site of Ectopic pregnancy
a. Ovary b. Ampulla of tube
c. Cervix d. Omentum

74. Positive Gravindex test in Pregnant woman is due to secretion of
a. G.H. b. L.H. c. H.C.G. d. All true

75. Carpel tunnel syndrome is due to
a. Brachial Nerve injury b. Radial nerve injury
c. Median nerve injury d. Femoral nerve injury

76. Adverse effect of chloromycetin
a. Gastritis b. Fever c. Aplastic anaemia d. Pneumonia

77. AIDS is a disease
a. Infectious b. Genetic c. Non-infectious d. None

78. ____ is known as 'muscle of laughter' :
a. Frontalis b. Triangularis
c. Risorius d. Buccinators

79. Chad wick's sign is elicited during trimester of pregnancy
a. First b. Second c. Third d. All true

80. Western Blot method is used as confirmative for
a. AIDS b. Hepatitis B c. Syphilis d. Gonorrhoea

81. Wrist drop is due to
a. Radial nerve palsy b. Median nerve palsy
c. Axillary nerve palsy d. NOT

82. During exercise, blood flow is not reduced for
a. Lungs b. Heart c. Kidney d. Brain

83. Cherry-red colouration of skin is observed on post-mortem in case of- poisoning,
a. O_2 b. CO_2 c. CO d. SO_2

84. Chloroquine is useful in
a. Amoebiasis b. Malaria
c. Extra intestinal amoebiasis d. b and c

85. Dual blood supply is seen in case of
a. Liver b. Pancreas c. Scrotum d. Duodenum

86. Clubbing of fingers occur in
a. Renal abscess b. Chronic lung abscess
c. Liver abscess d . None

87. Cobra venom is a potential-toxin
a. Heamolytic b. Neurotoxic
c. Cardiovascular d. None

88. Collapsing pulse is present in
a. Aortic Regurgitation b. Aortic Stenosis
c. Mitral Stenosis d. Mitral regurgitation

89. Colpo haematoma denotes blood in
a. Bladder b. Vagina c. Uterus d. NOT

90. Delta wave present in EEG indicates
a. Vata b. Pitta c. Kapha d. All true

91. T-wave on ECG represents
a. Atrial depolarization b. Ventricular depolarization
c. Ventricular repolarization d. Atrial repolarization

92. Commonest among abscess
a. Collersted's abscess b. Pyaemic abscess
c. Perianal abscess d. All true

93. Copis obturator test is positive in
a. Recto caecal Appendicitis b. Pelvic Appendicitis
c. Acute peritonitis d. Perforated peptic ulcer

94. Crawling and creeping of baby strats from
a. 6-8 month b. 10-11 month c. 4-6 month d. 8-10 month

95. Largest autonomous plexus is
a. Lumbar b. Sacral c. Solar d. Coeliac

96. Antidote for opium poisoning is
a. Atropine b. Adrenaline c. Digoxin d. Nalorphine

97. Dactylography means study of
a. Hand-writing b. Foot-Prints
c. Speech d. Finger-Prints

98. Veins which carry pure blood are
a. Pulmonary veins b. Portal vein
c. Cerebral vessels d. All true

99. Vernix caseosa formation begins during month of pregnancy
a. Third b. Fifth c. Seventh d. Ninth

100. Dapson and rifampicin 'interaction' is
a. Rifampicin decreases blood Dapsone level
b. Rifampicin increases blood Dapsone level
c. Both d. None

101. Deficiency of B_{12} leads to
a. Stomatitis b. Beri-beri
c. Night blindness d. Neuritis

102. In first trimester weight of foetus is
a. 0.5 kg b. 1.5 kg c. 3 kg d. None

103. Disease which is recently eradicated in India through mass vaccination is
a. Poliomyelities b. Hepatitis B
c. AIDS d. T.B.

104. Diseases transmitted through sand flies is
a. Scarlet fever b. Leishmaniasis
c. Yellow fever d. Trench fever

105. Dried fruits of Emblica officinalis are rich in
a. Vit. B_{12} b. Vit. C c. Tanins d. Saponine

106. Drug induces ovulation is
a. Clomiphen citrate b. Alkaline citrate
c. Vitamin C d. All true

107. Drug of choice in treatment of Status epilepticus
a. Diazepam b. Ethosuximide
c. Trimethedone d. Chlorpromazine

108. Drug of choice in Acute anaphylactic shock is
a. Diphenhydramine b. Cortisone
c. Epinephrine d. Isoproterenol

109. Drug of choice in Ascariasis
a. Metronidazole b. Mebendazole
c. Tinidazole d. All true

110. Duct of Wirsung is
a. Pancreatic duct b. Accessory pancreatic duct
c. Duct of Parotid gland d. Duct of sublingual gland

111. Amygloid body is subdivided into :
a. One part b. Two parts c. Three parts d. Four parts

112. Complication of sinusitis is
a. Meningitis b. Brain abscess
c. Osteomylitis d. All true

113. Duration of death after swallowing potassium cyanide is
a. Immediate b. 30 sec to 3 min
c. 3-5 min d. 10-20 sec

114. Dysphagia for Liquids but not for solids is seen in
a. Vit B_{12} deficiency b. Plummer-Wilson syndrome
c. Carcinoma of esophagus d. Cardio spasm

115. Exaggerated tendon reflexes are seen in
a. Upper motar Neuron lesion c. Both
b. Lower motar Neuron lesion d. NOT

116. Example for fixed reticulo-endothelial cells are
a. Spleen b. Bone marrow c. a + b d. Liver

117. Fallopian tubes are derived from
a. Muller's duct b. Woolfian duct
c. Guttur's duct d. NOT

118. Coronary artery is branch of
a. Aortic arch b. Carotid artery
c. Descending aorta d. Ascending aorta

119. Drug of choice in CCF
a. Morphine b. Aspirine c. Digitalis d. Nefidepine

120. Hemophilia 'B' is due to deficiency of
a. Factor VIII b. Factor IX c. Factor X d. Factor VII

121. Fat, fertile, forty & female is more prone to
a. IHD b. DM c. Cholecystitis d. Cirrhosis of liver

122. Cerebral blood flow per 100 gm of tissue per minute is
a. 10-15 ml b. 100-150 ml c. 200-250 ml d. 300-400 m

123. Folic acid is used in management of
a. Anaemia b. Sprue c. a + b d. Scurvy

124. E.S.R. is decreased in
a. Tuberculosis b. Rheumatoid arthritis
c. Polyerytheamea vera d. Bronchial asthma

125. Foot drop is due to involvement of nerve
a. Common peroneal b. Tibial
c. Femoral d. Poplitial

126. Helper cells are
a. B-lymphocytes b. T-lymphocytes
c. Platelets d. None

127. Foramina of Monro is
a. Opening of lateral ventricles into 3rd ventricle
b. Opening of 3rd ventricle into 4th ventricle
c. a + b d. NOT

128. Ramsted's operation is done in case of
a. Congenital pyloric stenosis c. ASD
b. Patent ductus arteriosus d. VSD

129. Criglar-Nazzar syndrome is-disorder
a. Heamolytic b. Autosomal c. Both d. Hepatic

130. Cruciate ligament presents in
a. Ankle joint b. Knee joint
c. Shoulder joint d. Elbow joint

131. Gall stones may be differentiated clinically from Gall tumour with help of
a. Good Sall's Rule b. Murphy sign
c. Courvisor's law d. Babinski's sign

132. Good sall's Rule is used in case of
a. Heamorrhoids b. Fistula-in-ano
c. Congenital hernia d. Peptic ulcer

133. Gray baby syndrome occurs due to side effects of
a. Tetra cycline b. Chloramphenicol
c. Sulfonamides d. None

134. Green coloured urine is seen in case of poisoning
a. Carbolic acid b. Nitric acid
c. Sulphuric acid d. None

135. Haemoptysis present in
a. Portal hypertension b. Mitral Stenosis
c. Pulmonary Tuberculosis d. All true

136. HCL is secreted by
a. Zymogen cells b. Chief cells
c. Parietal cells d. Peptic cells

137. HDL cholesterol is useful in
a. CAD b. Removing Atherosclerosis
c. Hypertension d. Renal disease

138. Hormone which acts exactly opposite to insulin is
a. Somatostatin b. Glucagon
c. Growth hormone d. HCl

139. How many ossification centers are there for scapula
a. 4 b. 8 c. 6 d. 2

140. Hutchinson's teeth are seen in
a. Syphillis b. Leprosy
c. Congenital Syphillis d. Pyorrhoea

141. Modern aphrodisiac agent invented in 1998 in
a. Sildenafril b. Analapril
c. Morphine ASA d. Not

142. Ultra sonography is advised to detect
a. Multiple pregnancy c. Sex of foetus
b. Intra uterine growth retardation d. All true

143. Haemophilia factor in blood is -------- factor
a. 2nd b. 4th c. 8th d. 10th

144. Universal Antidote is
a. 2 parts charcoal + 1 part MgO + 1 Part Tannic acid
b. 1 parts charcoal + 1 part MgO + 1 Part Tannic acid
c. 2 parts charcoal + 1 Part Tannic acid d. None

145. Hyline disease is
a. Infectious b. Non-infectious
c. Ideopathic d. Genetic

146. Hyperventilation is seen in
a. Anxiety b. Metabolic acidosis
c. Asthma d. None

147. In Cushing's disease one of following will not present
a. Moon face b. Hypotension
c. Plethora d. Hirsutism

148. Suspensory ligament is present in
a. Liver b. Uterus c . Eye d. Kidney

149. In Liver, Caudate lobe is situated on
a. Posterior surface b. Inferior Surface
c. Anterior surface d. Not

150. Gordon's biological test is positive in
a. Sarcoidosis b. Hodgkin's disease
c. Lymphogranuloma Venereum d. Not

151. Blood cholesterol levels are raised in
a. Tuberculosis b. Hodgkin's disease
c. Anaemia d. None

152. In TLC normal range for Basophils is
a. 0-1% b. 1-2 % c. 5-10% d. 3-5 %

153. INH dose in adults is
a. 3 mg/day b. 500-600 mg/day
c. 800 mg/day d. 200-300 mg/day

154. Junction of sclera and cornea is known as
a. Medial canthus b. Limbus c. Puncti d. None

155. Length of child will be double of that at birth at age of
a. 1 year b. 2 years c. 3 years d. 4 years

156. Measles vaccine should be given in
a. 9th month b. 6th month
c.15th month d. 10th month

157. Moro's reflex is present upto age
a. 28-32 weeks b. 24-30 weeks c. 20-28 weeks d. 40-12 weeks

158. Morrison's pouch is known as
a. Recto vesicle b. Rectouterine
c. Vesicovaginal d. Hepatorenal

159. ____ is not an intrinsic factor
a. 7th b. 9th c. 12th d. 8th

160. Phossy jaw' is indicative of- poisoning
a. Iodine b. Potassium c. Llead d. Phosphorous

161. ____ is shortest branch of abdominal aorta
a. Rt. Renal artery b. Lt. renal artery
c. Carotid artery d. External iliac artery

162. ___is useful in mercury poisoning
a. Silajit b. Karpura c. Hingula d. Abhraka

163. Number of ribs that articulate with sternum
a. 7 pairs b. 5 pairs c. 10 pairs d. 12 pairs

164. Most common cause of leucorrhea is
a. Endometritis b. Myometritis
c. Salpingitis d. Cervicitis

165. Stensen's duct is a duct of
a. Pancreas b. Parotid gland
c. Submandibular gland d. Sublingual gland

166. MTP Act was introduced in year,
a. 1951 b. 1961 c. 1971 d. 1974

167. Neutrophilia is seen in
a. Acute UTI b. Malaria
c. Typhoid d. Pneumonia

168. New vaccine included in WHO immunization schedule world wide is
a. HIV b. HCV c. HBV d. AIDS

169. ___ is largest sesamoid bone :
a. Scapula b. Hip bone c. Pisiform d. Patella

170. ____ organ is reservoir of blood :
a. Heart b. Liver c. Spleen d. Kidney

171. No error of Refraction is known as
a. Astigmatism b. Emmetropia
c. Aphakia d. Myopia

172. Hegar's sign is elicited in-------- time of pregnancy ?
a. 6-10 weeks b. 8-12 weeks
c. 12-18 weeks d. 18-24 weeks

173. Ophthalmic nerve is branch of
a. Facial nerve b. Trigeminal nerve
c. Trochleard. Occulomotor nerve

174. Schilling test is used to investigate absorption of
a. Vit C b. Vit B_6 c.Vit E d. Vit. B_{12}

175. Serum amylase increased in
a. Hepatitis b. Pancreatitis
c. a + b d. Obstructive Jaundice

176. pH of Pancreatic juice is
a. 7.0 -7.3 b. 8.3 - 8.9 c. 8.0 - 8.3 d. 7.3 - 7.9

177. Oxytocin challenge test is useful in
a. Foetal death b. Foetal distress
c. Multiple pregnancy d. Not

178. PAD sign is elicited in carcinoma of
a. Breast b. Pancreas c. Gastrium d. Liver

179. Painless and sudden bleeding per vaginum in a pregnant lady indicates
a. APH b. PPH
c. Threatened abortion d. Placenta previa

180. Periodical headache is characteristic feature of Acute .... sinusitis
a. Ethmoidal b. Sphenoidal c. Frontal d. Maxillary

181. Nux-vomica is a poison
a. Spinal b. Corrosive
c. Respiratory d. All true

182. Plain x-ray abdomen is done for diagnosis of
a. Acute obstruction b. Appendicitis
c. Cancer abdomen d. None

183. Positive trendelenburg test is seen in
a. Varicosity of veins b. Deep vein thrombosis
c. Burgers disease d. Not

184. Total no. of bones in human body
a. 210 b. 206 c. 204 d. 200

185. Pott's disease is characterized by
a. Cold abscess b. Deformity in spine
c. Pain and tenderness d. All true

186. Total no. of bones in human body
a. 210 b. 206 c. 204 d. 200

187. Largest cranial nerve
a. Trigeminal b. Vagus c. Abducent d. Optic

188. Pregnancy anemia's diagnosed if Hb level is below
a. 10 gms b. 11 gms c. 9 gms d. 12 gms

189. Primary Health care deals with
a. Prevention of communicable diseases
b. Nutritional disorders
c. Vaccination d. All true

190. Weight of male heart is
a. 240-280 gm b. 280-320 gm
c. 320-360 gm d. None

191. Pain receptor is
a. Beta-recepter b. 5-HT
c. Histamine d. Adrenaline

192. Weight of placenta is about
a. 50-750 gms b. 750-900 gms
c. 450-500 gms d. 600-800 gms

193. P-wave in ECG denotes
a. Atrial depolarization b. Ventricular depolarization
c. Ventricular repolarization d. Atrial repolarization

194. Railway spine means
a. Concussion of brain b. Concussion of spinal cord
c. Contusion of brain d. Contusion of spinal cord

195. Refractive Index of cornea is
a. 1.27 b. 1.37 c. 1.47 d. 1.17

196. Time taken for completion of one cardiac cycle
a. 8 Seconds b. 8 Minutes
c. 0.8 Seconds d. 0.08 Seconds

197. Relative monocytosis is seen in
a. Typhoid b. Kala azar
c. Acute Monocytic Leukaemia d. All true

198. Renal Calculus may be found due to
a. Hypothyroidism b. Hyperparathyroidism
c. Hyperthyroidism d. Hypoparathyroidism

199. Renin causes
a. Hypotension b. Hypertension
c. Hyperthyroidism d. All

200. Turner's syndrome is
a. XO chromosome b. XXY chromosome
c. XXY chromosome d. XXY (Dawn's Syndrome)

201. Right common iliac artery is terminal branch of
a. Ascending aorta b. Abdominal aorta
c. Gluteal artery d. None

202. Risus sardonicus is seen with- poisoning
a. Cannabis b. Abrus c. Strychnus d. Opium

203. Sago spleen is seen in
a. Focal amygloidosis of spleen c. Kala-azar
b. Acute amyeloidosis lukaemia d. Not

204. SGOT and SGPT are raised in
a. Obstructive jaundice b. Hemolytic jaundice
c. Infective hepatitis d. Not

205. Sheehan's syndrome occurs in
a. Anterior pituitary deficiency c. Both
b. Posterior pituitary deficiency d. None

206. Silver ring in eye is seen in
a. Diabetes b. HTN
c. Vitamin -A deficiency d. None

207. Site of absorption of Vit B_{12}
a. Stomach b. Ileum c. Duodenum d. All true

208. Viper venom is potentially
a. Nneurotoxic b. Haemolytic c. Delirient d. All true

209. ST elevation and T-wave inversion on ECG will be present in
a. Myocardial infarction b. Endocarditis
c. Mitral stenosis d. None

210. Sterile pyuria is seen in
a. Acute Glomerulo Nephritis b. Renal Tuberculosis
c. Acute Renal failure d. Polycystic kidney

211. Supra scapular artery is branch of
a. Axillary artery b. Mandibular artery
c. Brachial artery d. External carotid artery

212. Painful haematuria is present in
a. TB Nephritis b. Renal stone
c. Nephritis d. Nephrotic syndrome

213. Synergistic drug to penicillin is
a. Probencid b. Streptomycin
c. Amikacin d. Cephalosporin

214. Rape is mentioned under which section of IPC
a. 276 b. 246 c. 376 d. 346

215. Origin of Brachialis
a. Femur b. Scapula c. Radius d. Humerus

216. Blue lines on gum indicates poisoning of
a. Mercury b. Lead c. Copper d. Arsenic

217. Heberden's nodes are seen in
a. Gout b. Rheumatoid arthritis
c. Osteoarthritis d. Systemic lupus Erythematosus

218. Systemic Lupus Erythematosus is
a. Heriditory disease b. Autoimmune disease
c. Congenital disease d. Infectious disease

219. Test used for comparing degree of deafness in two ears
a. Snellen's test b. Schwabach's test
c. Rinne's test d. Weber's test

220. Commonest organism of U.T.I.
a. Pseudomonas auriginosa b. Staphylococus aureus
c. Eschiritia coli d. Streptococcus

221. Touch on bleeding is characteristic feature of
a. Vaginitis b. Cervisitis
c. Cervical cancer d. Uterine cancer

222. Trans-illumination test is positive in
a. Hydrocele b. Hernia
c. Varicocele d. Syphilis

223. Founder of modern toxicology is
a. Orfila b. Fortunato Fedel
c. Pauls Zoeclias d. Rabbis

224. Frequent bleeding site of nose
a. Littles area b. Nasal septum
c. Middle turbinate d. Not

225. Treatment advised in perforation of acute Duodenal ulcer
a. Antacids b. H_2 blockers
c. Immediate surgery d. H_1 blockers

226. Trendelenburg's Sign will be elicited
a. Burger's disease b. Raynaud's disease
c. Thrombophtrisis d. Phlebothrombosis

227. Treponem pallidum will cause
a. Chachroids b. Syphilis
c. Lymphogranuloma d. None

228. Trismus and Risus sardonicus are main signs in
a. Rabies b. Tetanus
c. Small pox d. Herpes zoster

229. Troisier's sign is found in
a. Cancer of liver b. Cancer of stomach
c. Pancreatic cyst d. None

230. Tubular breathing is seen in
a. Pneumothorax b. Empyema
c. Pleural effusion d. Consolidation

231. Tubular respiration is heard in
a. TB b. Asthma c. Pneumonia d. Bronchitis

232. Cauliflower appearance is characteristic of Carcinoma,
a. Giant cell b. Squamous cell
c. a + b d. None

233. Type of antibody is increased in asthma
a. Ig-G b. Ig-M c. Ig-E d. Ig-A

234. Rule of Nine is applicable to
a. Fractures b. Burns c. Dislocations d. Wounds

235. Saddle shaped nose is seen in
a. Nasal polyp b. Sinusitis c. Syphilis d. Diphtheria

236. Head and Chest circumference will be equal during-age
a. 12 Months b. 14 Months c. 18 Months d. 20 Months

237. Heat Stable and light sensitive Vitamines are
a. Vit.K and Vit.D b. Vit.D and Riboflavin
c. Vit.K and Riboflavin
d. Pyridoxin and Pantothenic acid

238. Treatment of carrier state of H.Influenzae.
a. Erythromycin b. Rifampicin
c. Cotrimoxazole d. Not

239. Type of anaesthesia produced by Katamine
a. Regional b. Narcotic c. Dissociative d. Not

240. Albuminuria is seen in case of ... poison
a. Cobra b. Viper c. Krait d. All true

241. Type of edge seen in Rodent ulcer
a. Punched out edge b. Sloping edge
c. Rolled out edge
d. Raised and pearly white beaded edge

242. Usual complication of Rifampicin is
a. Hepatitis b. Anaemia c. Bronchitis d. Diarrhoea

243. Vaccine who's effect is debated and withdrawn by some of developed countries in recent years
a. Polio b. B. C. G. c. Measles d. AIDS vaccine

244. Vein which divides like an artery is
a. Pulmonary vein b. Portal vein
c. Coronary vein d. Renal vein

245. Epiphora is seen in
a. Acute Dacrocystitis b. Chronic Dacrocystitis
c. Blephritis d. Trachoma

246. Commenest tumour-occurs during childhood is
a. Rabdosarco myoma b. Haemangioma
c. Lymphoma d. Nephroma

247. Common cause for Epistaxis in old aged people
a. Hypertension b. Leukaemia
c. Diabetcs Mellitus d. Not
248. Vitamin deficiency which leads to infertility
a. Vit. E b. ViL D c. Vit. C d. Vit. B
249. Weight of Low birth baby is less than
a. 3000 grams b. 3200 grams c. 2700 grams d. 2500 grams
250. Uterine suffle is elicited during
a. 10th week b. 16th week c. 20th week d. 24th week
251. Ewings sarcoma is usually occurs in
a. Children below 10 years b. Adults after 40 years
c. Females after Menopause d. Lactating woman
252. Tricuspid valve is presented in between
a. Rt atrium and Rt ventricle
b. Lt atrium and Lt ventricle
c. Lt atrium and Rt ventricle
d. Rt atrium and Lt ventricle
253. Amniotic fluid is :
a. Isotonic b. Hypertonic
c. Hypotonic d. NOT
254. Root value of phrenic nerve.
a. $C_2C_3C_4$ b. $C_1C_2C_3$ c. $C_3C_4C_5$ d. $C_4C_5C_6$
255. Knee jerk reflex tests.
a. L1 L2 L3 b. L2 L4 L3 c. L3 L4 L5 d. L4 L5 L1
256. Lymph from the tonsils drain into the
a. Jugulo omohyoid node b. Jugulo digastrics node
c. Submental node d. Upper deep cervical node
257. Internal carotid artery at the bifurcation from the common carotid is.
a. Lateral to the external carotid
b. Medial to external carotid
c. Post to external carotid d. Upper deep cervical node
258. Structures passing through the lesser sciatic foramen are all except
a. Obturator internus tendon b. Pudendal nerve
c. Internal pudendal vessels d. Superior gluteal nerve
259. The esophageal opening in diaphragm is at the level of
a. T 10 b. T 9 c. T 8 d. T 11
260. The percentage of sensory fibres in a pure motor nerve is
a. 0 % b. 10 % c. 20 % d. 40 %
261. The thoracic duct crosses from the right to the left at the level of
a. T 12 vertelcra b. T 6 Vertebra
c. T 4 Vertebra d. T 2 Vertebra
262. Auerbachs plexus is present in the
a. Colon b. Esophagus c. Stomach d. All
263. which organ has no endarterial supply.
a. Liver b. Spleen c. Kidney d. Lung
264. Fracture of the surgical neck of humerus results in
a. Loss of sensation in dorsal forearm
b. Flat shoulders c. Wrist drop d. None
265. Double barr body in seen in .....syndrome
a. Turners b. Klinefelters c. XXX d. Downs
266. The keystone of the longitudinal arch of the foot is
a. Calcaneum b. Cuboid c. Talus d. Navicular
267. The largest ganglion in the neck is
a. Superior ganglion b. Middle ganglion
c. Stellate ganglion d. Second thoracic ganglion
268. Commonest type of inversion of testes is
a. Superior b. Anterior c. Lateral d. Loop
269. Carcinoma prostate commonly occurs in the .....lobe
a. Anterior b. Posterior c. Lateral d. Middle
270. Most commonly used donor nerve in nerve grafting is
a. Medial popliteal b. Posterior interosseus
c. Great auricular d. Sural
271. Porters tip deformity is seen in
a. Klumpke's paralysis b. Radial nerve injury
c. Ulnar nerve injury d. Erbs paralysis
272. The term eye of the hand applies to ....nerve
a. Median b. Radial c. Ulnar d. Axillary
273. Haversian system is seen in
a. Cortical bone b. Cancellous bone c. Teeth d. Nail
274. Which artery is found in the adductor canal
a. Profunda femoris b. Femoral
c. Obturator d. Popliteal
275. The kidney has.... lobes
a. 11 b. 9 c. 7 d. 5
276. Structures related to the lesser omentum are
a. Hepatic artery b. Hepatic vein c. Portal vein d. All
277. The rectus sheath contains all of the following except
a. Pyramidalis muscle b. Genitofemoral nerve
c. Inferior epigastric d. Superior epigastric vessels
278. The left ureter is related to all except
a. Quatratus lumborum muscle b. Singmoid mesocolon
c. Gonadal vessels d. Internal iliac artery
279. malleus and incus are derived from
a. First arch b. Second arch
c. Third arch d. Fourth arch
280. The following provide maximum support to uterus
a. Broad ligament b. Mackenrodt's ligament
c. Round ligament d. Vascico uterine fold
281. Artery present in the anatomical snuff box is
a. Radial b. Ulnar c. Interosseus d. None
282. Broca's area is localized in
a. Superior temporal gyrus b. Parietal lobe
c. Interior frontal lobe d. Angular gyrus

283. Wh
dia
a. I
d.
284. The
a. I
c.
285. Goo
a. S
286. Duo
a. F
287. Ner
a. F
c. M
288. Sinu
a. K
289. All th
a. P
c. A
290. Anti
a. D
c. P
291. Whi
ventricle
a. A
c. Fa
292. Whi
a. O
c. S
293. Liga
a. S
c. K
294. Form
a. 6
295. The
a. Fi
c. L
296. The t
a. N
b. H
297. The
a. IVC
298. Epith
a. C
c. C
299. Of the
a. Ri
c. Ri

283. Which of the following structures do not pierce the diaphragm
a. IVC b. Aorta c. Esophagus
d. Greater splanchnic nerve

284. The venous draiage of liver into IVC is through
a. Portal Vein b. Hepatic Veins
c. Azygous vein d. Superior mesenteric vein

285. Good collateral circulation occurs in
a. Skin b. Muscle c. Fascia d. Bone

286. Duodenum is developed from
a. Foregut b. Midgut c. Foregut & midgut d. Hindgut

287. Nerve not related to humerus is
a. Redial b. Axillary
c. Medain d. Musculocutaneous

288. Sinuses are not seen in
a. Kidney b. Spleen c. Endocrine gland d. Liver

289. All the following arteries supply medulla obiongata except
a. Posterior inferior cerebellar artery b. Spinal artery
c. Anterior inferior cerebellar artery d. Vertebral artery

290. Antiperistalsis is seen in
a. Distal colon b. Jejunum
c. Proximal colon d. Ileum

291. Which nucleus is not found in the floor of the fourth ventricle
a. Abducens Nerve b. Dorsal vegal nuclei
c. Facial Nerve d. Hypoglossal Nerve

292. Which of the following is formed at birth?
a. Otic capsule b. Pinna
c. Secondary areola d. Mastoid process

293. Ligament of bigelow is present in
a. Shoulder joint b. Ankal joint
c. Knee joint d. Hip joint

294. Formation of primary ovary in female fetus takes place by
a. 6th week b. 8th week c. 10th week d. 13th week

295. The contents of the sacral canal are all excepts
a. Filum terminale b. Dura
c. L 4 L 5 nerve roots d. Vertebral venous plexus

296. The true statements regarding appendix is
a. No mesentry c. Arises from midgut
b. Has tenia coli d. Supplied by middle colic artery

297. The vein of galen drains into
a. IVC b. Straight sinus c. Superior sagittal sinus d. SVC

298. Epithelial lining of bartholins duct is
a. Columnar b. Transitional
c. Cuboidal d. Squamous

299. Of the following umbilical blood vessel which disappears first?
a. Right umbilical vein b. Left umbilical vein
c. Right umbilical artery d. Left umbilical artery

300. When testicular veins are ligated the testes are drained by
a. Cremasteric vein b. Dorsal vein of penis
c. Vesical plexus d. None of the above

301. Nucleus in brain common to IX, X & XI cranial nerves
a. Nucleus solitarius b. Nucleus ambigous
c. Dentate nucleus d. Red nucleus

302. Uterus develops from
a. Mullerian duct b. Wolfian duct c. Both d. None

303. Main action of quadrates femoris is
a. Extension b. Flexion
c. Lateral rotation d. Medial rotation

304. Hofbauer cells are seen in
a. Liver b. Placenta c. Stomach d. Kidney

305. Dentate nucleus is a part of
a. Midbrain b. Pons c. Medulla d. Cerebellum

306. Automatic bladder is seen in lesions of
a. Higher centers b. Filum terminale
c. Dorsal cord d. Sacral plexus

307. The nerve responsible for the fine movements of the hand is.
a. Redial Nerve b. Median Nerve
c. Posterior interosseous Nerve d. Unar Nerve

308. The pancreatic bed does not include
a. Left kidney b. Splenic artery
c. Left renal vein d. Left crus of diaphragm

309. Os trigonum is which type of epiphysis
a. Aberrant b. Pressure c. Atavistic d. Traction

310. Highest intercostal space used for liver biopsy is
a. 6th b. 7th c. 8th d. 9th

311. Due to bony support the most stable position of the ankle joint is
a. Inversion b. Plantar flexion
c. Eversion d. Dorsiflexion

312. Fascia of gerota is.
a. True capsule b. Renal fascia
c. Fatty capsule d. Thoraco lumbar

313. Toynbees muscle is.
a. Stapedius b. Tensor tympani
c. Scalenus minimus d. Levator ani

314. Sacral canal's volume is.
a. 5-10 cc b. 15-25 cc
c. 10-15 cc d. 25-35 cc

315. Thoracic duct is also called
a. Hensen's duct b. Bernard's duct
c. Pecquet duct d. Hoffman's duct

316. The retina is an out growth of the
a. Mesencephalon b. Diencephalon
c. Telencephalon d. Pons

317. The central canal of the spinal cord is central in region of
a. Cervical b. Thoracic c. Lumbar d. Sacral

318. The coronary sulcus is occupied by the .... Sinus
a. Pulmonary b. Coronary c. Aortic d. Oblique

319. Parasympathetic division innervates
a. Dilator pupillae b. Erector pilorum
c. Muller's muscle d. Detrusor

320. Buck's fascia is related to
a. Ischiorectal fascia b. Thigh c. Neck d. Penis

321. The board ligament of uterus has running in it
a. Uterine vessels b. Uterine tube
c. Ovarian ligament d. All

322. Choroid fissure of the eye permits the entry of
a. Choroid plexus b. Ciliary arteries
c. Central artery of the retina d. Hyaloids artery

323. Length of a mature human spermatozoon is
a. 50-60 microns b. 10-40 microns
c. 100-200 microns d. 300-500 microns

324. Brunners glands are seen in
a. Jejunum b. Duodenum c. Ileum d. Appendix

325. Hassals corpuscles are seen in
a. Thymus b. Spleen c. Lymph node d. Appendix

326. Cranio facial angle is
a. 100^0 b. 120^0 c. 130^0 d. 140^0

327. Scrotum is analogous to
a. Labia minora b. Labis majora c. Uterus d. Vagina

328. Bochdalek hernia of diaphragm pass through
a. Central tendon b. Esophageal hiatus
c. Postero lateral space d. Retro sternal space

329. Waldeyers lymphatic chain is formed by all except
a. Palatine tonsils b. Pharyngeal tonsils
c. Tubal tonsils d. Post auricular nodes

330. Epophoron is a remnant of
a. Wolffian duct b. Mullerian duct
c. Gubernacuium d. None

331. Alderman's nerve is a branch of
a. Superior cervical ganglion b. Inferior cervical ganglion
c. Auricular branch of vagus nerve d. None

332. Brunner's glands are located in the
a. Duodenum b. Jeiunum c. Ileum d. All

333. Space of disse is in.
a. Spleen b. Lyphnode c. Liver d. None

334. IV infusion is avoided in.
a. Long saphenous vein b. Cephalic vein
c. Ext jugular vein d. Int jugular vein

335. Weight of the body is supported in sitting posture by
a. Ischial tuberocity b. Ramus of ischium
c. Body of ischium d. Pubis

336. Safety muscle of the tongue is.
a. Hyoglossus b. Genoiglossus
c. Palatoglossus d. Styloglossus

337. All have no lymphatics except.
a. Brain b. Internal ear
c. Dermis d. Eye

338. Complete sulcus is.
a. Calcarine sulcus b. Central sulcus
c. Temporal sulcus d. Frontal sulcus

339. Halocrine secretion is seen in ..... gland
a. Salivary b. Mammary
c. Sebaceous glands d. Gastric

340. The commonest cartilage to ossify is.
a. Hyaline b. Elastic c. Fibrous d. Fibroelastic

341. Stellate cells of Von kuffer are seen in the sinusoids of which of the following organs ?
a. Spleen b. Bone marrow
c. Liver d. Adrenal

342. Trendelenburg's sign is positive with weakness / paralysis
a. Gluteus maximus b. Gluteus medius & minimus
c. Adductor longus d. Horn strings

343. Intestinal epithelium is rich in which of the following?
a. T-cells b. B-cells c. Plasma cells d. Macrophages

344. Bone not present at birth
a. Malleus b. Incus c. Stapes d. Petrous Temporal

345. Gitter cells are
a. Microglia b. Modified macrophages
c. Astrocytes d. Neutrophils

346. Trigeminal nerve has how many nuclei in CNS?
a. Three b. Four c. Five d. Six

347. Portal circulation is seen in which of the following endocrine gland
a. Pineal gland b. Hypophysis cerebri
c. Pancreas d. Ovary

348. Which secretion contributes to the maximum amount of potassium
a. Gastric b. Pancreatic c. Salivary d. Biliary

349. Cyanosis is seen if the concentration of methaemoglobin is more than
a. 1.5 G% b. 2.0 G% c. 3.0 G% d. 4.0 G%

350. Highest concentration of vitamin C in the body is found in the
a. Liver b. Kidney c. Adrenal cortex d. Spleen

351. Maximum production of HCG occurs during
a. First trimester b. Second trimester
c. Third trimester d. Implantation

352. The viability of the spermatozoa within the female genital tract is upto....hrs
a. 6 b. 12 c. 24 d. 48

353. EEG
.....
a. Jacks
354. The e
a. B
355. In ad
a. H
c. H
356. Auto
a. M
357. Pain
a. S
c. Hi
358. A per
brea
a. D
b. C
c. D
d. M
359. Medi
a. He
360. Heart
a. N
c. M
361. Head'
a. J re
c. Pl
362. Best s
a. Pr
363. Cart w
a. Le
364. Broca
a. Sp
c. Po
365. In wol
conn
a. Bu
c. A.
366. Chemi
chiefl
a. Na
367. The Alv
600 ml, d
a. 2.5
c. 6.7
368. Upto
autore
a. 65 mm of

353. EEG with spike and dome pattern is characteristic of .....epilepsy
a. Jacksonian b. Grandmal c. Petitimal d. Temporal lobe

354. The excretion of estrogens and progesterones are through
a. Bile b. Sweat c. Urine d. Faeces

355. In addisons disease the following is seen
a. Hyper kalemia b. Hypernatremia
c. Hyperglycemia d. High blood pressure

356. Auto regulation is seen in
a. Muscles b. Kidney c. Brain d. All

357. Pain producing substance is
a. Serotonin b. Substance P
c. Histamine d. Acetyl choline

358. A person ascends to 12000 feet develops acute breathlessness this is due to
a. Decreased pulmonary blood flow
b. Carbon dioxide washout
c. Decreased hypoxic stimulation of respiration
d. Mechanical interference of thorax

359. Medial geniculate body is concerned with
a. Hearing b. Vision c. Smell d. Taste

360. Heart is most sensitive to
a. Nor Epinephrine b. Epinephrine
c. Metanephrine d. Estrogen

361. Head's reflex is due to stimulation of
a. J receptors b. Irritant receptors of lungs
c. Pleural stretch receptors d. Diaphragmatic nerves

362. Best stimuli for secretion is.
a. Protein b. Acid c. Fat d. Bile

363. Cart wheel appearance of nucleus is seen in
a. Leydig cell b. Sperms c. Sertolli cells d. Spermatid

364. Broca's area is present in
a. Sperior temporal Gyrus b. Precentral gyrus
c. Post central gyrus d. Inferior frontal gyrus

365. In wolff Parkinson white syndrome there exists a connection between atria and
a. Bundle of His b. Ventricles
c. A.V. node d. Purkinjee fibres

366. Chemical gradient across cell membrane is maintained chiefly by
a. Na+ b. Ca++ c. K+ d. Cl^-

367. The Alveolar ventilation in an individual with tidal volume 600 ml, dead space 150 ml and respiratory rate of 15/ minute is
a. 2.5 Lit/Min b. 4.0 Lit/Min
c. 6.75 Lit/Min d. 9 Lit/Min

368. Upto what systolic pressure is the brain capable of autoregulation
a. 65 mm of Hg b. 55 mm of Hg c. 45 mm of Hg d. 75 mm Hg

369. CSF in comparison to blood contains all except
a. Lower Calcium b. Lower Chloride
c. Lower Sodium d. Lower cells

370. Iron is stored in the body in the following except
a. R.E. system b. Spleen
c. Gall bladder d. Bone marrow

371. The electroencephalographic (EEG) curves are called
a. ABCDE Curves b. Berger's Rhythm
c. Meurogenic Rhythm d. REM

372. If a lady presents with a very regular 29 days menstrual cycle ovulation should Occur on day
a. 14 b. 15 c. 17 d. 19

373. The basis for koratkow's sounds is due to
a. AV valve closure b. Aortic valve closure
c. Arterial expansion d. Arterial turbulence

374. Following are local hormones except
a. Insulin b. Heparin c. Bradykinin d. Acetyl choline

375. The most important substance controlling alveolar ventilation
a. O_2 b. CO_2 c. H_2O d. None of the above

376. The diffusing capacity for carbon dioxide compared to that for oxygen is
a. 20 times b. 10 times c. 5 times d. 2 times

377. The intrapleural pressure at the end of deep inspiration is
a. -4 mm Hg b. +4 mm Hg c. -18 mm Hg d. +18 mm Hg

378. Macrophages are the mature from of
a. Neutrophils b. Eosinophils
c. Basophils d. Monocytes

379. Maximum absorption of bile occurs at
a. Jejunum b. Duodenum c. Ileum d. Colon

380. The medium with highest refractive index in the eye is
a. Cornea b. Nucleus of the lens
c. Cortex of the lens d. Aqueous humor

381. The normal non-fasting blood ketone level is
a. 0.1-0.5 mg% b. 0.5-2 mg% c. 2-10 mg% d. 100-500 mg%

382. Resting nerve membrance is more permeable to K than to Na
a. 1 - 5 times b. 20 - 50 times
c. 50 - 100 times d. 200 - 500 times

383. For each 1^0 F rice of temperature cerebral blood flow falls by
a. 1% b. 2% c. 4% d. 7%

384. Oxygen dissociation curve is
a. Bell shaped b. S - Shaped
c. Normal curve type d. Delta shaped

385. Velocity of blood is ....
a. Same as of ECF
b. 10 times of urine
c. 5-6 times more that of water
d. 5-6 times less that of water

386. Weber Fechner law deals with
a.Frequency discrimination b. Receptive field organization
c. Intensity discrimination d. Two point discrimination

387. Addis test is used for
a. Urinary sugar b. Urinary sediment
c. Blood lactate d. Serum magnesium

388. In a normal adult 24 hour production of CO_2 is about
a. 150 L b. 280 L c. 330 L d. 410 L

389.(A) Cardiac index in a normal person is
a. 2.1 b. 3.2 c. 4.6 d. 5.9

389. (B) Deficiency of which vitamin is not known in newborns
a. C b. D c. E d. K

390. In parkinsonism tremor is.
a. 6 to 8 per second b. 2 per second
c. 2-4 per second d. Uncountable

391. Blood brain barrier is maximum permeable to
a. Na+ b. K c. Chloride d. CO_2

392. Normal resting membrane potential is
a. 50 to 60 mv b. -80 to -90 mv
c. -100 to -110 mv d. -30 to -50 mv

393. Fastest conducting tissue in human heart
a. AV node b. SA node
c. Bundle of His d. Purkinje fibres

394. In Brown Sequard syndrome sensation, that is lost at the same side of lesion is
a. Pain b. Touch c. Temperature d. Proprioception

395. Wallenberg degeneration is seen in
a. Proximal cut end of nerve with cell body
b. Distal cut end of nerve without cell body
c. Both the free ends of the cut nerve d. All are true

396. Vitamin used for inhibiting lactation:
a. B_2 b. B_3 c. B_6 d. B_{12}

397. Anti tuberculous drug which crosses the blood brain barrier
a. Streptomycin b. Ethambutol c. INH d. Pyrazinamide

398. B- Blockers are contra indicated in
a. Hypertension b. Congestive cardiac failure
c. Anxiety states d. Hyperthyroidism

399. Drug of choice in multiple myeloma is
a. Mechlorienthamine b. Vincristine
c. Vinblastine d. Melphalan

400. Drug fever is associated with all except
a. INH b. Dapasone c. Chloramphenicol d. Streptomycin

401. Busulfan toxicity dose not include
a. Hyperpigmentation b. Toxic carditis
c. Hyperuricemia d. Pulmonary fibrosis

402. All are true of minoxidil except:
a. Increased potassium permeability
b. Calcium channel blocker
c. Useful in hypertension d. Increases hair synthesis

403. Fanconil's anemia I caused by
a. Cephalosporins b. Chloramphenicol
c. Decreased pseudocholonesterase
d. Old and degraded tetracycline

404. Drug of choice in Acute myocardial infarction is
a. Morphine b. I.V. heparin
c. Nitroglycerine d. Streptokinase

405. Treatment of choice in wegner's granulamatosis is
a. Cyclophosphamide b. Cycloserine
c. Streoids d. Radiotherapy

406. Which of the following is the longest acting newer anti histaminic:
a. Mequitazine d. Loratidine
c. Astemizole d. Terfenadine

407. Drug of choice for ventricular tachycardia is:
a. Pethidine b. Digoxin c. Propranolol d. Xylocaine

408. Master's test is employed evaluate clinically,
a. Antihypertensive drugs b. Anti-anginal drugs
c. Anti-diabetic drugs d. Anti-epileptic drugs

409. Drug of choice in status epilepticus is
a. Diazepam b. Phenobarbitone
c. Phenytoin sodium d. Carbamazapine

410. Safest drug in pregnancy is
a. INH b. Rifampicin c. Ethambutol d. Streptomycin

411. Stress increases all hormones level except
a. ACTH b. Noradrenalin c. Insulin d. Cloplatinum

412. Which antihypertensives is contraindicated in pregnancy
a. Methy dopa b. Beta-Blockers
c. Alpha and Beta Blockers d. ACE inhibitors

413. Gluco coriticoids are contraindicated in all except
a. Organ transplant b. Peptic ulcers
c. Hypertension d. Diabetes Mellitus

414. First symptom of digoxin overdoses is
a. GIT disturbance b. U-wave on ECG
c. Ectopic on ECG d. Fainting spells

415. A Patient on trefenadine for allergy developed arrythymia on starting treatment for upper respiratory infection. The antibiotic used could be
a. Erythromycin b. Amoxycillin
d. Co-trimozozole d. Cephalexin

416. Which antibiotic causes Torsade-de-pointes?
a. Erythromycin b. Griseofulvin
c. Ciprofloxacin d. Amoxicilin

417. Antimalarial of choice in a pregnant woman (I trimester) who is chloroquine resistant is
a. Quinine b. Proguanil
c. Dapsone & Pyrimethamine d. Mefloquine

418. Mc callums Patch is seen in the:
a. Right atrium, b. Left atrium c. Left vemtricled. Right ventricle

419. Type
a. Lol
c. Sc

420. Kimn
a. Dia
c. Ma

421. Good
a. Ne
b. Al
d. Pu

422. Comn
a. Sto

423. Reed
a. Inf
c. My

424. Lines
a. Pos
c. Em

425. Mc ca
a. Rhe
c. Rhe

426. Most
a. Ka
c. Le

427. The m
a. Com
c. Anti

428. Lepra
a. Neu
c. His

429. Ormo
a. Intr
c. Retr

430. In Has
a. Thy
c. Thy

431. Reye's
liver a
a. Mod
b. Hyp
d. Hyp

432. Broke
a. Supe
c. Hair

433. The S
a. Pos
b. Lein
d. Glo

419. Type of caricinoma of breast occurring bilaterally:
a. Lobular carcinoma b. Infiltrating intraductal
c. Scirrhous carcinoma d. Colloid carcinoma

420. Kimmelstiel-wilson disease is diangnostic of:
a. Diabetic glomerulosclerosis b. Hyertension benign
c. Malignant hypertension d. Amyloidisis

421. Good pasture's syndrome is characterised by:
a. Necrotising hemorrhagic insterstitial pneumonitis,
b. Alveolities, c. Patchy consolidation
d. Pulmonary Oedema

422. Commonest carcinoma in elderly Male is:
a. Stomach b. Lung c. Esophagus d. Prostate

423. Reed strenberg cells are seen in :
a. Infectious mononucleosis b. Hodgkins lymphatics,
c. Mycisis fungoides d. All of the above

424. Lines of Zahn occur in :
a. Postmortem clot b. Infact
c. Embolus d. Coralline thrombus

425. Mc callums patch is seen in
a. Rheumatoid arthritis b. SLE
c. Rheumatic fever d. Polyarthritis nodosa

426. Most common malignancy in AIDS
a. Kaposi Sarcoma b. B cell lymphoma
c. Leukemias d. Brukitts Lymphoma

427. The most diagnostic test for SLE is:
a. Complement fixation test b. Antibodies against ANA cell
c. Antibodies against DNA d. Antibodies against nucleus

428. Lepra cell are:
a. Neutrophils b. Lymphocytes
c. Histiocytes d. Plasma cells

429. Ormond's disease is:
a. Intra-abdominal b. Retroperitoneal fibrosis
c. Retroperitoneal Carcinomatosis d. Retractile mesenteritis

430. In Hashimoto's disease, serum antibodies are mainly against:
a. Thyroid follicles b. Thyroxine
c. Thyroglobulins d. Lodine

431. Reye's syndrome is characterized by encephalitis, fatty liver and following biochemical changes except:
a. Moderate elevation of SGOT and SGPT
b. Hypoglycemia c. Hypoglycorrhachia
d. Hyperuricemia

432. Broke's tumor is a tumor of:
a. Superficial dermal vesels b. Sweat glands
c. Hair follicles d. Sebaceous glands

433. The Sucque-Hoyer canal in related to:
a. Post-Mastectomy lymphangio sarcoma
b. Leirmyouss sutis c. Active junctional nerves
d. Glomus turnor

434. With repeated pregnancies, a syphilitic mother improves in her past performances this known as:
a. Colie's law b. Diday or Kassowitz's law
c. Hutchison's law d. None of the above

435. Hess Test is done to assess:
a. Bleeding time b. Capillary fragility
c. Clotting time d. Prothrombin time

436. Potter's syndrome is characterized by all of the following except:
a. Duplicaton of renal pelvis b. Hypoplasia or cystic disease
c. Pulmonary hypoplasia d. External ear deformities

437. Chediak Higashi syndrome is due to:
a. Defective chemotaxis b. Defective phagocytosis
c. Both of the above d. None of the above

438. Sturge waber's syndrome is not associated with
a. Seizures b. Hemiatrophy of cerebral cortex
c. Gyriform calcification in brain d. Empty sella.

439. Commonest site of metastases is
a. Lung b. Brain c. Liver d. Kidney

440. The most sensitive test for SLE:
a. Anti ds DNA b. ANA
c. Anti histone d. Vomplement CV levels

441. Touton Giant cells are seen in
a. Cat scatch disease b. Sarcoidosis
c. Xanthomas d. Neurofibroma

442. In Alzimer's disease characteristic lesion seen in
a. Congenital heart disease b. Nucleus of Meynert
c. Basal ganglia d. Periventricle

443. Homer wright rossetes are seen common in
a. Neuroblastoma b. Medulloblastoma
c. Retinoblastoma d. Wilms tumour

444. Russel bodies are seen
a. Plasma cells b. Myeloma cells
c. Neutrophils d. Lymphocytes

445. Tamm-Horsefall protein is produced in
a. Kidney b. Liver
c. Plasma cells d. None

446. Reid's index is used in diagnosis of
a. Choronic bronchitis b. Bronchiectasis
c. Bronchial asthma d. Pneumonia

447. Commonest site of hypertensive bleed is in the
a. Putamen b. Thalamus
c. Frontal lobe d. Pons

448. A 55 year old woman on anti-tuberculosis therapy developed anaemia of the microcytic hyperchromic variety not responding to ron preparations. The treatment choice is
a. Blood transfusion b. Vitamin C
c. Packed cells transfusion d. Pyridoxine

449. A patient presents with features of subacute bacterial endocardities, 4 blood cultures results are negative, next investigation of choice is
a. ECG b. Chest X-ray
c.Echocardiography d. Repeat blood culture

450. Commonest cause of sudden death is
a. Ventricular fibrillation b. Cerebrovascular accident
c. Ventricular asystole d. Acute renal failure

451. Commonest type of cardiomyopathy in India is
a. Dilated cardiomyopathy
b. Hypertrophic cardiomyopathy
c. Restrictive type d. All are equally

452. Commonest type of congenital heart disease is
a. ASD b. VSD c. TOF d. PDA

453. What is called the widow's artery
a. Superior mesenteric artery
b. Uterine artery
c. Internal mammary artery
d. Left anterior descending coronary artery

454. Myocardial Isoenzyme of CK which is specific for myocardial infarction is
a. CK-BB b. CK-MB c. CK-MM d. All

455. Most of the deaths after a myocardial infarction are seen within the first
a. 1 hr. b. 6 hr. c. 12 hr. d. 24 hr.

456. Which of the following is not a feature of felty's syndrome
a. Splenomegaly b. Rheumatoid arthritis
c. Anemia d. Lymphadenopathy

457. Pickwickian syndrome consist of
a. Hypercapnia b. Obesity
c. Somnolence d. All

458. Pyrexia pinpoint ppupils and unconsciousness is characteristic of
a. Brian stem lesion b. Cerebellar lesion
c. Thalamic lesions d. Internal capsule lesions

459. Ipsilateral 3rd nerve palsy with contra lateral hemiplegia is known as
a. Millard gobbler syndrome b. Webers syndrome
c. Fovile syndrome d. Benedicts syndrome

460. Bence Jones proteins in the urine is characteristics of
a. Multiple myeloma b. Acute glomerulonephritis
c. Nephrotic syndrome dChronic glomeulonephritis

461. Dresslers syndrome is due to
a. Virus b. Bacteria
c. Fungus d. Auto immune reaction

462. Austin flint murmur is usually mistaken for the murmur of
a. Mitral regurgitation b. Mitral stenosis
c. Tricuspid stenosis d. Pulmonary regurgitation

463. Lasegue's sign is seen in
a. Nerve root pressure b. Intracranial lesions
c. Myasthenia gravis d. Transaction of spinal cord

464. Fanconi's syndrome is inherited as
a. X-linked recessive b. Y-linked
c. Autosomal recessive d. Autosomal dominant

465. Romana's sign is seen in infestation with
a. Toxoplasma b. Trypanosoma crizi
c. Loa Loa d. Wucherreria

466. Conn's syndrome is characterised by all except
a. Polyuria b. Polydypsia
c. Weakness d. Anasarca

467. HLA B 27 is seen in
a. Reiters syndrome b. Psoriasis
c. Ankylosing spondylitis d. All

468. Curschmann's spirals in sputum is seen in
a. Tuberculosis cavity b. Asthma
c. Cbronchitis d. Bronchiectasis

469. In kartagenerrs syndrome all are seen except
a. Cystic fibrosis b. Dextrocardia
c. Sinusitis d. Absence of cilia

470. Swan ganz catheter measures
a. Right atrial flow b. Pulmonary capillary resistance
c. Left ventricular pressure d. CVP

471. Wilson disease is characterised by all except
a. Spasticity b. Sensory impairment
c. Rigidity d. Chorea

472. Herpes zoster occurs after an attack of
a. Measles b. Chicken pox c. Small pox d. Rubella

473. Which arthritic deformity can be corrected temporarily by manipulation manually
a. Jaccound's Arthritis b. Bechet's arthritis
c. Palindromic arthritis d. Reiters arthritis

474. Commonest opportunistic infection in AIDS is
a. Tuberculosis b. Cryptococcosis
c. Aspergillosis d. Candidiasis

475. Which vaccine is not useful in a patient with AIDS
a. OPV b. DPT c. BCG d. Measles

476. The disease which is associated with increased age of father is
a. Down's syndrome b. Marfan's disease
c. Phenyl-kentonuria d. Albinism

477. Kluver-Bucy syndrome is characterized by all except
a. Korsal off amnesia b. Apathy and placidity
c. Decreased sexual activity d. Sham rage

478. Most common site for carcinoma stomach is
a. Prepyloric b. Body of stomach
c. Fundus d. Lesser curvature

479. Com
a. Fe
480. Com
a. Fer
481. Com
a. Ter
482. Com
a. Lo
c. Up
483. Treat
a. Ca
c. Ra
484.Sardo
a. Ra
485. Lung
a. An
c. Pc
486. Most
a. Mi
c. Pul
487. The l
a. De
c. Up
d. Up
488.Com
a. Sr
c. E.
489. The t
a. Ad
490. Patie
a past
a. Br
c. Ac
491. Sjor
a. Pa
c. Pa
492. A 40
ston
a. Ob
c. Cl
493. Vinc
a. Ph
494. Bud
a. Int
c. Su
495. Zoll
a. N
c. Al

479. Commonest type of hernia is
a. Femoral b. Inguinal c. Ventral d. Epigastric
480. Commonest type of hernia in a female is
a. Femoral b. Inguinal c. Ventral d. Epigastric
481. Commonest site of brain abscess
a. Temporal b. Frontal c. Parietal d. Occipital
482. Commonest site for carcinoma of the breast
a. Lower inner quadrant b. Nipple
c. Upper inner quadrant d. Upper outer quadrant
483. Treatment in Hashimoto's disease is
a. Carbimazole b. Thyroxine
c. Radio lodine d. Subtotal thyroidectomy
484.Sardonic grin is associated with
a. Rabies b. Tetanus c. Bell's palsy d. Hemiplegia
485. Lung abscess secondary to aspiration is most often seen in
a. Anterior upper lobe b. Posterior upper lobe
c. Posterior lower lobe d. Apical lower lobe
486. Most common cause of hemoptysis is
a. Mitral stenosis b. Bronchiectasis
c. Pulmonary TB d.Bromchogenic carcinoma
487. The best site for intramuscular injection is
a. Deltoid b. Anterolateral part of thigh
c. Upper outer segment of buttacks
d. Upper inner segment of buttocks
488.Commonest cause of cellulitis is
a. Srtaphylococcus b. Strepotcoccus
c. E. Coli d. Hemophilus
489. The term universal tumor refers to
a. Adenoma b. Papilloma c. Fibroma d. Lipoma
490. Patient presents with high fever. Signs of raised ICT and a past history of chronic otitis media. Likely diagnosis is.
a. Brain abscess b. Pyogenic meningitis
c. Acute subarachnoid hemorrhage d.None
491. Sjorgen's syndrome refers to disease of
a. Parotid glands b. Thyroid disease
c. Parathyroid glands d. Multiple endocrine neoplasia
492. A 40 year old lady is found to have a symptomatic galls stones. The treatment of choice is
a. Observation b. Cholecystostomy
c. Cholecystectomy d. Fat free diet
493. Vincent's angina affects
a. Pharynx b. Heart c. Gums d. Larynx
494. Bud chiarri syndrome is due to thrombosis of
a. Intra renal IVC b. Renal part of IVC
c. Superior mesenteric vein thrombosis d. Hepatic veins
495. Zollinger Ellison syndrome is caused by
a. Non beta cells b. Beta cells
c. Alpha cells d. Non Alpha, Non beta cells
496. Which of the following are features of Horner's syndrome
a. Ptosis b. Miosis c. Anhydrosis d.All
497. Thumb printing sign is seen in
a. Ulcerative colitis b. Ischemic colitis
c. Crohn's disease d. Toxic Megacolon
498. Commonest renal stone is
a. Phosphate b. Oxalate c. Uric acid d. Cystenine
499. Most common type of carcinoma breast
a. Pagets b. Lobular c. Comedo d. Ductal
500. Adson's test is positive in
a. Cervical rib b. Cervical spondylosis
c. Cervical fracture d. Cervical dislocation
501. Which drug is used for Achalasia cardia
a. Nifedipine b. Propranolol c. Atenolol d. Beethnecol
502. Fournier's gangrene occurs in the
a. Toes b. Scrotum c.Fingers d. Muscles
503. Coffee bean sign is ususally seen in
a. Volvulus b. Pyloric obsruction
c. Intussusception d. Intestinal obstruction
504. Heller's operation is done in
a. Achalasia cardia b. Pyloric stenosis
c. Hirschsprug's disease d. Crohn's disease
505. Best methods for diagnosis of deep vein thrombosis is
a. Doppler examination b. Plethysmography
c. Contrast phlebography d. I 131 fibrinogen studies
506. Most common cause of generalied peritonitis in a 40 year old adult male is
a. Enteri perforation b. Ruptured liver abscess
c. Duodenal Ulcer perforation d. Perforated Ca Stomach
507. Most common benign tumor of the stomach is
a. Adenoma b. Lipoma c. Haematoma d. Leiomyoma
508. The treatment of choice in fistula in ano
a. Anal dilatation b. Fissurotomy
c. Fistulectomy d. Fistulotomy
509. The marker of hepatitis - B in the window period is
a. HBsAg b. Anti HBs Ag c. Anti HBC d. HBc Ag
510. Witzelsucht syndrome (i.e."Pathological Joking") is seen in
a. Frontal lobe tumours b. Parietal lobe tomours
c. Temporal lobe tumors d. IV ventricular tumour
511. Sterile needle test helps in defferentiating
a. Healing process b. Depth of burns
c. Degenerative process d. Infection
512. Winter botto's sign is typically seen in
a. Muconium Peritonitis c. American Trypanosomiasis
b. Kala Azar d. African trypanosomiasis
513. Van buchem's syndrome is characterized by all except
a. Overgrowth b. Distortion of mandible
c. Facial palsy d. Increased Acidphosphatase

514. Nezelof's syndrome is recurrent episodes of
a. Appendicitis b. Cholecystitis
c. Intestinal obstruction d. Pneumonia

515. A female patient complains of perumbilical pain & nausea particularly after taking food is
a. Meckel's diverticulum b. Peptic ulcer syndrome
c. Lactose intolerance d. None

516. Trench fever is caused by
a. R. Quintana b. R. Prowazake c. R. akari d. R. typhi

517. The most important indicator of the health and socio economical status of a community is
a. Neonatal mortality rate b. Maternal mortality
c. Infant mortality rate d. Total mortality rate

518. Which vaccine need not be given to boys
a. Mumps b. German measles
c. Measles d. Small pox

519. The vitamin that is destroyed when milk is exposed to light
a A b. B 2 c. B 6 d. B12

520. The MTP act was passed in
a. 1949 b. 1962 c. 1971 d. 1974

521. The ESI act came into being in
a. 1948 b. 1952 c. 1962 d. 1975

522. A child is brought to the PHC with scabies which of the following is not advised
a. Parenteral antibiotics b. Treat other members of family
c. Child given bath and 3 applications of Benzy Benzoate
d. Bed lines to be boiled

523. Highest Biological value is for.
a. Eggs b. Milk c. Soyabean d. Meat

524. Aedes is vector for all except
a. Dengue b. Yellow fever
c. Japanese B encephalitis d. Hemorrhagic fever

525. National health policy was formulated in
a. 1985 b. 1982 c. 1976 d. 1972

526. Mala–N contains
a. Ethinyl estradiol 30 mcg b. Norgesterol 50 mcg
c. Ethinyl estradiol 50 mcg d. Progesterone 10 mg

527. At PHC level a woman who complains of spotting following IUCD insertion should be advised.
a. Removal of IUCD b. Iron Supplements and observation
c. Antibiotics and observation d. Analgesics and observation

528. Normal iron requirement per day in pregnancy
a.1.5 mg b. 1.8 mg c.2.8 mg d. 3.5 mg

529. In India death is to be registered within-------- days
a. 3 b. 7 c. 14 d. 11

530. Red Cross was founded by
a. Hippocrates b. Henry durant
c. Galen d. Madam Curie

531. Primary health care is a concept by
a. UNICEF and accepted by all countries
b. WHO and accepted by India
c. India and accepted by all countries
d. World health bodies & accepted by common wealth countries

532. Which of the following type of polio is commonest
a. Inappaernt b. Abortive c. Nonparatytic d. Paralytic

533. Commonest STD in India is
a. Syphilis b. Gonorrthoea c. AIDS d. Herpes

534. I.C.D.S. scheme was started in the year
a. 1965 b.1970 c. 1975 d. 1985

535. A positive mantoux test indicates that the child
a. Is suffering from active TB
b. Has had BCG vaccination recently
c. Has had tuberculosis infection d. All

536. One of the following is biologically complete
a. Groundnut b. Wheat c. Soyabean d. Milk

537. The disease which is known as father of public health is
a. Small pox b. Rabies c. Plague d. Cholera

538. Strawberry tongue following by respbery tongue is characteristic of
a. Mumps b. Measles c. Scarlet fever d. Small pox

539. Milk is deficient in
a. Ca b. Vit A c. Vit D d. Fe

540. Alma ata conference was held in
a. 1978 b. 1956 c. 1977 d. 1948

541. Hardy – weinberg Law related to
a. Societal bonds b. Demography
c. Epidemiology d. Population genetics

542. World No tobacco day is.
a. May 31st b. April 5th c. December 11th d. November 14th

543. No smoking day is observed on
a. 7th April b. 31st May c. 23rd May d. Jan 21st

544. AIDS was first detected in India in the year
a. 1975 b. 1981 c. 1986 d. 1991

545. UNICEF provides all services except.
a. Immunization b. Child nutrition
c. Family planning d. Child education

546. Cancer control programme was launched in
a. 1976 b. 1986 c. 1970 d. 1992

547. The concept of social medicine was first introduced by
a. Neumann and virchow b. Robert Grotjahn
c. Jhon ryle d. Rene sand

548. The term Social medicine was first introduced by
a. John snow b. David morley c. Jules Guerin d. C.E.A. winslow

549. Anti D Immunoglobulin must be given to a mother of o negative group with a baby of o positive within
a. At birth b. 4 hours c. 24 hours d. 72 hours

550. Classical cesarian section is indicated in a patient with
a. Previous cesarian section b. Placenta previa
c. Carcinoma cervix d. Shoulder presentation

551. Carcinoma cervix is caused by
a. Herpes simplex type I b. Papova virus
c. Ebstein barr virus d. Adeno virus

552. The best methods to confirm the diagnosis of carcinoma cervix
a. Physical examination b. Pap smear
c. Cervical biopsy d. Curettage

553. Patient of gravid 4 and 37 weeks pregnancy has bleeding PV of 2 hours and a tender uretus, next step in the management is
a. Sedation and blood transfusion b. Cesarian section
c. PV examination in the theatre with ARMd. Observation

554. Best investigation to identify tubal patency is
a. Hysterosalpingogram b. Rubin's test
c. Laparoscopy & chromatubation d. Laparotomy

555. Implantation bleeding is called
a. Hartman's sign b. Arias Stella's sign
c. Hoffman's sign d. Reinz's sign

556. The commonest presenting complaint in a gynaecology dept is
a. Bleeding PV b. Leaukorrhoea
c. Prolapse uterus d. Mass abdomen

557. Treatment of Asherman's syndrome is
a. D + C b. D + C with IUCD insertion
c. Hysterectomy d.None

558. Eclampsia is differentiated from pre- eclampsia by
a. Proteinuria b. Convulsions
c. Hypertension d. Retinal hemoeehage

559. The earliest symptom of cervical cancer is
a. Dyspareunia b. Bleeding PV c. Pain d. Leukorrhoea

560. MTP is legal in pregnancy upto ...weeks
a. 10 b. 16 c. 20 d. 28

561. Abortions in the first trimester is mostly due to
a. Incompetent cervix b. Defective genes
c. Tuberculosis d. Trauma

562. Abortions in the second trimester is mostly due to
a. Incompetent cervix b. Defective genes
c. Tuberculosis d. Trauma

563. Peg Cells are seen in.
a. Vagina b. Vulva c. Ovary d. Tubes

564. The treatment of 23 year old mother of one child with carcinoma in situ of the cervix is.
a. Total hysterectomy b. Cone biopsy and follow up
c. Radiation d. Weetheim's hysterectomy

565. The treatment of choice in a 56 year old woman with endometrial cancer is
a. Irradiation b. Wertheim's hystrectomy
c. Pan hysterectomy d. Irradiation and later panhystrectomy

566. Immediately following delivery the height of the uterus corresponds to.....weeks
a. 33 b. 20 c. 25 d. 12

567. Episiotomy is best done-
a. Medially b. Laterally c. Mediolaterally d.J shaped

568. A patient with 10 weeks of pregnancy has an ovarian cyst.a 6×4 inches. The treatment of choice is
a. Removal of cyst at 14 weeks
b. Terminate pregnancy and cyst removal
c. Cesarian section at terms and removal of cyst
d. Removal at puerperium

569. A primi comes in second state of labour with ROP presentation. The management is
a. Immediate cesarian section b. Forceps application
c. Watchful expectancy d. Internal podalic version

570. Study of fetal parts in first trimester with least radiation hazard
a. X-ray abdomen b. Pelvimetry c. C T scan d. Ultrasound

571. A 35 year old lady with 3 children and had undergone tubal ligation shows a positive pap smear next line of management is
a. Irradiation c. Hystero salphingo oophorectomy
b. Hystrectomy d. Colposcopy and cervical biopsy

572. The drug of choice for sheehan's syndrome is
a. Gonadotrophin b. Cortisone c. Thyroxine d. Prolactin

573. Copper T acts by
a. Causing aseptic endometrits
b. Increasing cervical mucus
c. Inhibiting tubal motility d. Inhibiting ovulation

574. Which is more common in primigravida than multigravida
a. PPH b. Placenta Previa
c. Malpresentation d. Hyperemesis

575. ABO incompatibility usually occurs when the mother's blood group is
a. A b. B c. AB d. O

576. Treatment of a single large fibroid in a 45 years old female is
a. Hysterectomy b. Myomectomy
c. Observe till menopause d. Oral pills

577. Bishop scoring is based on all except
a. Dilatation of cervix b. Effacement of cervix
c. Uterine contraction d. Station of head

578. A 65 year old with bleeding P/V On examination senile vaginitis. Patient requires immediate
a. Cytology and colposcopy
b. Oestrogen therapy and colposcopy
c. Cytology & fractional curettage d. Fractional curettage

579. A multipara with 34 weeks pregnancy, tachycardia fever hepatosplenomegaly pallor has
a. Malaria b. Iron deficiency anaemia
c. Physiological anaemia d. Megaloblastic anaemia

580. Normal pH of cervix is about
a. 2 b. 3 c. 6 d. 11

581. Recaanalisation of tubectomy is best done after tubectomy by
a. Laparoscopic electrocoagulation
b. Chemical Sterilisation
c. Laparoscopic sialastic ring d. Fimbriectomy

582. DIC is seen in
a. Retained placenta b. Abruption
c. Intra uterine death of foetus d. All

583. Breast feeding should be started in normal delivery
a. Soon after delivery b. After 2 hrs
c. After 6 hrs d. After 4 hrs

584. A 2 year old is child has a weight of 6.4 kg and has vitamin A deficiency. What is the grade of malnutrition in this Child?
a. First degree b. Second degree
c. Third degree d. Fourth degree

585. The feature of of petit mal epilepsy of EEG is
a. Spike and dome b. Continuous stunted spikes
c. Waves at the rate of 10/sec d. Continuous tall spikes

586. A 8 month old child will be able to de which of the following
a. Sitting stably b. Stand without support
c. Says mama-baba d. All

587. In a 4 year old child with ASOM the infecting organism is likely to be a. Pneumococcus b. H Influenza
c. Streptococcus d. Staphylococcus

588. Bacterial meningitis in 9 month old child is commonly caused by
a. H influenza b. M. tuberculosis
c. Pneumococus d. Streptococus

589. Celiac disease is due to sensitivity to
a. Milk b. Maize c. Wheat d. Meat

590. From which of the following the highest percentage of iron is absorbed?
a. Spinach b. Soyabean c. Mutton d. Egg

591. Which of the following acts can a one year old child perform?
a. Sits down from standing position b. Drinks from cup
c. Speaks one or two words with meaning
d. Rings bell purposefully

592. Delayed speech in a 5 year old child with normal motor and adaptive development is most likely due to
a. Mental retardation b. Cerebral palsy
c. Kernicturus d. Deafness

593. A 5 year old child is assessed to have developmental age of year. His developmental quotient would be
a. 100 b. 80 c. 60 d. 20

594. Lowe's syndrome is characterised by the following except
a. Hypophosphatamic reickets b. Undescended testes
c. Defect in the CNS and eyes d. Aminoaciduria

595. All are characteristics of fallot except
a. Infundibular stenosis b. VSD
c. Overriding aorta d. Left ventricular hypertrophy

596. A 3 year old child is seen with coma, weakness, salivation & one sided constricted pupil. The most probable diagnosis is
a. Tetanus b. Organophosphorus poisoning
c. Phenobarbitone poisoning d. Electrolyte imbalance

597. A 4 day old child has jaundice and serum bilirubin of 8 mg/dl treatment of choice in
a. Exchange transfusion b. Phototherapy
c. Observation d. Investing for liver faction

598. The number of fontanelles present in a new bron child is
a. 1 b. 2 c. 4 d. 6

599. A child with IQ 50 to 70 is graded in
a. Mild mental retardation b. Moderate mental retardation
c. Moderately intelligent d. Severe mental retardation

600. A child takes self decisions at the age of -------years
a. 3 b. 5 c. 7 d. 9

601. Most common cause of convulsion on the first day of life in a newborn is
a. Anoxiab. Head injury c. Hypoglycemia d. Hypocalcemia

602. Neonatal jaundice persisting 2 weeks after birth is not seen in.
a. Galactossemia b. Rh Incompatibility
c. Hypothyroidism d. Breast milk jaundice

603. The normal calorie requirement for a 5 year old child is
a. 800 calories b. 1000 calories
c. 1500 calories d. 2000 calories

604. How many digits can a five year old child remember
a. 4 b. 5 c. 8 d. 10

605. A child can copy a circle first at ------- year of age
a. 2 b. One & half c. 4 d. 3

606. The composition of breast milk per 100 ml
a. 67 calories, 3.5 protein, 3.5g fat and 4.5g carbohydrate
b. 67 calories, 1.2g protein, 4g fat and 4.5g carohydrate
c. 67 calories, 1.2g protein, 4g fat and 7g carohydrate
d. 100 calories, 3.5g protein, 4g fat and 7g carbohydrate

607. Cephalohematoma usually disappears within
a. 3-5 months b. 2-5 weeks c. 3 -5 weeks d. 5-7 weeks

608. Normal reflex patterns at birth may include
a. Grasp rflex b. Moro's reflex
c. Seeking or rooting reflex d. All of the above

609. Which of following would be considered normal in 4 yr child?
a. Tics b. Hyper excitability
c. Anxiety d. Hyper kinesis

610. Most common cause of respiratory distress after birth in first 24 hours is
a. Neonatal sepsis b. Meconium aspiration
c. Bacterial pneumonia d. Air embolism

611. Whic
a. D
c. C
612. Jaun
com
a. E
c. Se
613. 10 ye
enla
a. Ei
c. H
614. The
a. 30
615. 2 yrs
tract
a. D
b. Ul
616. 4 yea
a. Pa
c. Di
617. Most
a. Re
c. Pr
618. Arbo
a. El
619. Amyl
a. C
620. Foam
a. Put
621. Com
a. P
622. If a b
mort
a. F
d. Per
623. What
a. Ph
624. Beve
a. B
b. N
c. Ex
d. de
625. Grea
a. Fi
c. R
626. Acro
a. Hg
627. Luci

611. Which among the following is not expected in a 3 year old child
a. Draw a circle b. Talk in sentence
c. Climb down stairs d. Hop 5 steps

612. Jaundice in a new born at birth or before 24 hours is commonly due to
a. Erthroblastosis b. Biliary atresia
c. Sepsis d. Rh Incompatibility

613. 10 years old child with 10 days continuos fever with soft enlarged spleen diagnosis is
a. Enteric fever b. Malaria
c. Hodgkins disease d. Meningitis

614. The concentration of potassium in microgram in ORS is
a. 30 mcq b. 20 mcq c. 90 mcq d. 60 mcq

615. 2 yrs female has been successfully treated for urinary tract infection next step in management is
a. Do nothing c. Ultrasound + DMSA scan.
b. Ultrasound d. 6 monthly culture sensitivity.

616. 4 year old male child has febrile seizures. Best prophylaxis is
a. Paracetamol Q 6 hourly b. Paracetamol & Diazepam
c. Diazepam d. Phenobarbitone

617. Most common cause of death in children < 5 yrs age
a. Respiratory infection b. Diarrhoea
c. Prematurity d. Accidents

618. Arborescent marking are seen in burns due to :
a. Electricity b. Phosphorus c. Lighting d.UV rays

619. Amyl Nitrite is used as an antidote in ——— poisoning.
a. CO2 b. CO c. Cyanide d.Nitric acid

620. Foamy liver is seen in
a. Putrefaction b. Drowning c. Mummification d.Adipocere

621. Complication of Kerosene poisoning
a. Pneumonia b. Vomiting c. Hemoptysis d.Diarrhoea

622. If a body is left undisturbed for how long does post mortem staining persists
a. Few hours, b. Few days c. Few months
d. Persists till it merges with discolouration of putrefaction

623. What poising retards putrefaction?
a. Phosphorus b. Arsenic c. Mercury d. Lead

624. Bevelling of the skull is seen in the
a. Board end of the entry point in bullet injury
b. Narrow end of the entry point in bullet injury
c. Exit point of bullet
d. depressed fracture of the skull

625. Grease color is seen with ——— wounds
a. Fire arm entry b. Fire arm exit
c. Road traffic accident d.Hanging

626. Acrodynia is seen in ——— Poisoning
a. Hg b. PB c. Zn d. As

627. Lucid interval is seen in
a. Insanity b. Malignant disease
c. Electrical shock d. Syphilis

628. Spaldings sign is seen with —— foetus
a. Live born b. Dead born c. Still born d. All

629. Florence test detects
a. Bilirubin b. Urine c. Semen d. Blood

630. Macerated foetus indicates
a. Dead born b. Still born c. Live born d. IUGR

631. Where does a lacerated wound appear like a incised wound?
a. Abdomen b. Thorax c. Hand d. Forehead

632. Gutter fracture result from :
a. Injury with a large round object b. Bullet injuries
c. Automobile accident d. Falling from a height

633. The Power of Amnesty for capital punishment is vested with
a.The President b.Supreme Court
c. High Court d. The Governor

634. Optic atrophy can be caused by ——— poisoning.
a. Phosphorus b. Ethyl alcohol c. Methyl alcohol d. Lead

635. McNaughten Rule is concerned with :
a. Criminal responsibility b. Litigation c. Rape d. Suicide

636. The rate of cooling down of dead bodies in tropical climate is
a. 0.2° C/hr b. 0.5°C/hr c. 1.0° C/hr d. 1.5°C/hr

637. Pugilistic attitude is due to
a. Burns c. Flexor group contracture
b. Vitiolage d. Extensor group contracture

638. Blood clots after—— of death
a. ½ hrs b. 45 minutes c. ¼ hrs d. 1 – ½ hrs

639. Causes of methaemoglobinemia are all except
a. Nitrites b. Phennacetin c. Sulfonamides d. Phenytoin

640. More than 5% carboxyhemoglobin is indicative of
a. Ante morten burns b. Drowing
c. HCN poisoning d. Sulffocation

641. Berberio's test is done for
a. Blood b.Urine c. Saliva d. Semen

642. Petechial hemorrhages in drowing is seen in
a. Subpleural tissues of lung c.Bronchioles
b. Sunmucosa of trachea d. Alveoli

643. Medicolegal autopsy requires the permission of
a. Police b. Magistrate c. Relatives d. All

644. Best method for identification of a person is by
a. Scars b. Blood group c. DNA analysis d. Finger prints

645. All are tests for seminal stains except
a.Takayama test b. Barberio's test
c. Florence test d. Acid phosphatase test

646. The following is also known as "knock out drops" or "Micky Finn"
a. Chloroform b. Methyl alcohol
c. Chloral hydrate d. Ethylene glycol

647. Dowry death is included in the following section of the Indian penal code .
a. 304 A b. 304 B c. 320 d. 498 A

648. Presenile dementia is defined as that which occurs below the age of —— years.
a. 50 b. 55 c. 60 d. 65

649. The temperature of the body rises up for the first two hours after death. The probable condition include following except
a. Sun stroke b. Frost bite c. Septicemia d. Tetanus

650. Postmortem staining can occur in some cases before death in
a. Children b. Old persons c. Cholera d. All

651. Rigor mortis first starts in
a.Upper eyelids b. Lower eyelids
c. Lower limbs d. Fingers

652. "Cardiac polyp" is a term used for postmortem
a. Fibrinous clots in heart b. Aneurysm
c. Infarcts in heart d. Pale patches in heart

653. Which of the following is considered as an "ideal infanticidal poison".
a.Cannabis b. Cocaine c. Opium d. Alcohol

654. Which of the following is also known as 'kasoomba or madak' or chandu
a. Dhatura b. Cannabis c. Opium d. Calotropis

655. The treatment of choice in dicoumarol poisoning is
a.Heparin b. Aminocaproic acid c. Vitamin K d. Vitamin C

656. Pond Fracture is seen commonly in
a. Person who are over 50 years of age
b. Young adults c. Children d. Women

657. The most common death by suicide is by
a. Phenobarbitone b. Insecticide
c. Hanging d. Suicidal cut throat

658. Indian Lunacy Act was passed in
a. 1804 b. 1881 c. 1916 d. 1921

659. Narcotic Drugs and psychotropic substances act was passed in the year
a. 1981 b. 1983 c. 1985 d. 1986

660. Maximum congestion is seen in
a. Choking b. Hanging c. Strangulation d. Drowning

661. Criminal negligence is punishable under
a. 306 IPC b. 376 IPC c. 304 A IPC d. 304 B IPC

662. Opium poisoning produces ——— type of respiratioin
a. Rapid & shallow b. Rapid & deep
c. Shallow d. Diaphagmatic

663. Post mortem caloricity is seen with
a. Strychnine poisoning b. Lead poisoning
c. Mercury poisoning d.Phosphorus poisoning

664. 'Liquid gold' with reference of to urine is presence of
a. Cocaine b. Haroin c. Heavy metals d. Phosphorus

665. Run amok Homicide delusion is characteristic of
a.Cannabis b. Cocaine c. Dhatura d. Alcohol poisoning

666. Haemodialysis is done in all except ——— poisoning
a. Barbiturates b. Salicylates c. Kerosene d. Alcohol

667. Perjury is
a. Wilful utterance of falsehood b. Gravious injury
c. Contributory negligence d. Criminal negligence

668. Putrefaction starts in
a. Liver b. Lung c. Brain d. Heart

669. Alternate contraction & dilatation of pupil is seen in ---- poisoning
a. Aconite b. Cyanide c. Hemlock d. Organo phosphate

670. Cheiloscopy is the study of
a. Foot prints b. Palatal prints c. Finger prints d. Lip prints

671. Corpus delicti means
a. Essence of crime b. Non decomposed body
c. Identification of dead person d. Decomposed body

672. Hypostasis lasts for
a. Hours b. Days c. Weeks d. Months

673. Paultaf's hemorrhage occurs in which injury?
a. Strangulation b. Hanging c. Drowning d. Burns

674. Conduct money is paid to expert witness with summons from
a. Civil court b. Criminal court
c. High Court d. Sub Magistrate

675. Multiplying factor for estimating stature from humerus is (males)
a. 10 – 12 b. 5 – 6 c. 7- 9 d. 9 – 10

676. At the following blood carbon monoxide concentration the clinical picture will simulate alcoholic intoxication
a. 10% b. 70% c. 30% d. 50

677. Flase vesication differs from true vesication except
a. Produced afterdeath
b. Vesicles contain gas and no fluid
c. NO inflammatory or respiratory zone present
d. None of the above

678. Multiplying factor of estimating stature from femur (males) is
a. 3.6 – 3.8 b. 4.1 – 4.8 c. 4.9 – 5.6 d. 5.8 – 6.2

679. Amyl nitrite is an antidote for poisoning with
a. H_2SO_4 b. Ammonia c. HCN d. Carbon monoxide

680. Human hair differs from animal hair by that
a. Cuticle has scales b. Medulla is thick
c. Medulla is broad than cortex
d. Pigment is central

681. Pearson's formula is used for
a. Cephalic index b. Stature c. Race d. Age

682. In low concentration of carbon monoxide (4%) the commonest symptom is
a. Nausea b. Headache
c. Muscular weakness d. Ringing in ears

683. Th
a.
684. A c
a.
685. Cri
a.
686. The
by
a.
c.
687. Cr
a. I
c. I
688. Sta
a. F
b. I
c. I
689. Wh
a. A
b.T
c. I
690. Wi
a.
691. Pu
a. S
c. I

1. गयदा
a.
2. अष्टा
a. भ
3. लता
a. च
4. चरक
a. द
c.
5. शिवा
a. य
c.
6. योगर
a. ई
7. व्याक
a. न
8. यथा
a. ब
c. ब

683. The fatal dose of absolute alcohol in an adult is
a. 30 ml b. 60 ml c. 90 ml d. 150 ml

684. A civil wrong is known as
a. Mutatis mutandis b. Pari passu c. Tort d. Ultra wires

685. Criminal negligence is punisiable under
a. 306 IPC b. 376 IPC c. 304 A IPC d. 304–B IPC

686. The type of paraphilia where sexual excitement is obtained by wearing clothes of opposite sex is
a. Tribadism b. Voyeurism
c. Transvestite d. Exhibitionism

687. Crocodile skin appearance is seen in
a. High vilotage burns b. Electric shock
c. Drowning d. Mummifications

688. Statutory Rape is
a. Rape of an insane woman
b. Rape of another persons wife
c. Rape in police custody d. Rape of under 15yr.

689. What is suspended Animation?
a. Animal is suspended in air
b.The subject is alive but shows no signs of life
c. Hibernation d. Deep sleep

690. Widmark foumula is used for which poisoning
a. Alcohol b. Mercury c. Cyanide d. Lead

691. Puppe's rule is related to
a. Sequence of bullets b. Enzyme assay in blisters
c. Related to age estimation d. Sex determination

MODEL Question Paper -I

1. गयदास ने सुश्रुत संहिता के कौनसे स्थानपर न्यायचंद्रिका व्याख्या लिखी ?
a. सुत्र b. निदान c. शारीर d. All

2. अष्टविध स्वेद किसकी देन है ?
a. भा.प्र. b. योग रत्नाकर c. काश्यपसंहिता d. शारंगधर

3. लता कस्तुरी का सर्वप्रथम उल्लेख किया है ?
a. चरकसंहिता b. सुश्रुतसंहिता c. अष्टांगसंग्रह d. अष्टांगहृदय

4. चरक संहिता में अष्टांग का वर्णन आया है ?
a. दीर्घजीवितीय b. मात्राशितीय
c. अर्थेदशमहामुलीय d. आत्रेयभद्रकापीय

5. शिवागुटीका वर्णित है ?
a. योगरत्नाकर b. चक्रदत्त
c. भैषज्य रत्नावली d. अष्टांगसंग्रह

6. योगरत्न समुच्चय का काल--- शतक
a. 8 b. 9 c. 10 d. 11

7. व्याकरण मंजूषा के लेखक है ?
a. नरहरी भट्ट b. श्रीकण्ठ दत्त c. नागेश भट्ट d. अरूणदत्त

8. यथापूर्व बलाधिक्यम् संबंध में है ।
a. कषाययोनी b. चतुर्विध आहार
c. कषाय कल्पना d. None

9. बालरोग वर्णन अष्टांगसंग्रह में किया है ।
a. सुत्रस्थान b. कल्प स्थान c. चिकित्सा स्थान d. उत्तर

10. माधव निदान के अनुसार हेतु कितने प्रकार के है ।
a. 10 b. 14 c. 6 d. 4

11. दोष धातू मला मुलं सदा देहस्य । संदर्भ
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. शारंगधर

12. आत्रेयनुसार संधीयों की संख्या
a. 210 b. 200 c. 260 d. 2000

13. नाभी और हृदय के बीच का अंतर
a. 8 अंगुल b. 10 अंगुल c. 12 अंगुल d. 14 अगुल

14. वाग्भट के मत से शरीर की लम्बाई है ।
a. 3½ हस्त b. 84 अंगुल
c. 120 अंगुल d. 4½ हस्त

15. कौनसी कशेरूका को कण्टक प्रवर्धन नही होता है ।
a. चुडावलय b. अक्षक c. शीर्षधर d. Both a & c

16. हृदयाकार गात्र होती है ।
a.कटीकशेरूका b.वक्षीय कशेरूका
c. ग्रीवा कशेरूका d. Both a & c

17. कौनसे कटी कशेरूका रध्र में सुषुम्नामूलिका रहती है ।
a. प्रथम b. द्वितीय c. तृतीय d. चतुर्थ

18. द्वितीय पर्शुका की लम्बाई प्रथम पर्शुका से होती है?
a. अर्ध b. सम c. दुगणी d. None

19. Common facial bone for fracture ?
a. Nasal bone b. Zygomatic bone
c. Maxilla d. Frontal bone

20. Jugular foramen transmits ..... cranial nerves ?
a. 9th b. 10th c. 11th d. All

21. उरच्छदा लाघवी का निवेश होता है ।
a. असांप्रदायिक b. असंतुण्ड c. अंसकुट d. All

22. सबसे बडी करकुर्चास्थि है ।
a. मध्यकूटक b. नौकाभ c. पर्य्याणक d. फणधर

23. नितम्बस्थि के Inner surface पर सबपेशी का उद्गम है अपवाद
a. श्रोणी गवाक्षिणी अंतस्था b. कटिलंबीनी ह्रस्वा
c. पायुधारिणी d. उरूदण्डिका

24. नेत्र और क्लोम में कौनसी संधि होती है ?
a. मण्डल b. वायसतुण्ड c. सामुद्ग d. शंखावर्त

25. शिर व ग्रीवा मे स्नायूकी संख्या
a. 83 b. 70 c. 63 d. 164

26. Muscle for Horror, terror & fright.
a. बृहत, सृष्क उत्कर्षिका b. उर्ध्व औष्ठ उन्नमणिका
c. गलपार्श्वच्छदा d. सृक्कअवनमनिका

27. मरण कौनसे स्रोतस दुष्ट का लक्षण है ।
a. उदकवह b. अन्नवह c. रसवह d. All

28. 'तालूशोष' लक्षण कौनसे स्रोतस दुष्ट का है ।
a. उदकवह b. अन्नवह c. मुत्रवह d. मेदोवह

29. Total no. of Mula Dhamanya is 24, which are further divided into
a. 40 b. 64 c. 175 d. None

30. Peripheral heart of body is
a. पादागुष्ठ प्रसारणी दीर्घा b. पादागुष्ठ संकोचिनी दीर्घा
c. Both a & b d. जंघापिण्डका लाघवी

31. चरक के अनुसार पंचम त्वक..... व्याधिका अधिष्ठान है।
a. द्रदू कुष्ठ b. अलजी विद्रधी c. सिध्म किलास d. कुष्ठ विसर्प

32. कौनसे त्वक स्तर में त्वक वर्ण depend रहता है।
a. लोहिता b. ताम्रा c. श्वेता d. अवभासिनी

33. Who 1st defines वात पित्त कफ ?
a. सुश्रुत b. वाग्भट c. अरूण दत्त d. हेमाद्री

34. प्रकृति पुरूष है।
a. अनादी b. नित्य c. अनंत d. All

35. सुश्रुत मत से सृष्टी उत्पत्ती कारण है।
a. 4 b. 6 c. 7 d. 10

36. रसात स्तन्यो, ततों रक्त आसृज कण्डरा सिरा:।
a. च. सु. 1 b. च. सु. 26 c. च. सु. 6 d. च. चि.15

37. शक्तीयुक्त द्रव्य है।
a. दोष b. धातू c. मल d. All

38. विष का छेदी गुण किसने बताया ?
a. चरक b. सुश्रुत c. भा. प्र. d. शारंगधर

39. वायू का विशद गुण किसने बताया
a. चरक b. सुश्रुत c. भा. प्र. d. शारंगधर

40. वाक्पुरूष गात्रस्फुरण, गाढवर्चस लक्षण है।
a. वातवृद्धी b. वातक्षय c. पित्त वृद्धी d. पित्तक्षय

41. निश्वास और उद्गार किसके कार्य है।
a. उदान b. प्राण c. व्यान d. समान

42. स्वेद दोषाम्बूवाहिनी स्रोतांसि समाधिष्ठित किसका स्थान है।
a. उदान b. प्राण c. व्यान d. समान

43. अ. हृ. के अनुसार रंजक पित्त का स्थान है।
a. हृदय b. यकृत c. प्लीहा d. आमाशय

44. कफ विदग्धावस्था
a. अम्ल b. लवण c. कटू d. कषाय

45. काश्यप के अनुसार कफ का विशेष स्थान है।
a. आमाशय b. उर c. हृदय d. नाभी

46. अर्न्तदाह और तृष्णा लक्षण है।
a. पित्तवृद्धी b. वातवृद्धी c. कफक्षय d. पित्तक्षय

47. Tidal volume h| है।
a. 150 ml b. 500 ml c. 250 ml d. 1200 ml

48. सुकुमार अवदातगात्रा किस प्रकृती का लक्षण है।
a. वात & पित्त b. पित्त & कफ
c. Only पित्त d. Only कफ

49. गम्भीर बुद्धि लक्षण किस प्रकृती का है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. Both b & c

50. बहुवात श्लेष्मा कौनसे कोष्ठ के बारे में कहा है।
a. मृदु b. मध्य c. क्रूर d. सम

51. शारंगधर के अनुसार मज्जा की उपधातू है।
a. दन्त b. स्वेद c. केश d. वसा

52. तृतीय कला का नाम
a. मांसधरा b. श्लेष्मधरा c. पित्तधरा d. मेदोधरा

53. शारंगधर के अनुसार रस से रक्त निर्माण होता है।
a. यकृत प्लीहा में b. हृदय में
c. आमाशय में d. क्लोम में

54. कफ शोणित मांसानां सारो .....
a. जिव्हा b. हृदय c. वृषण d. वृक्क

55. भारद्वाज किस धातू का पर्यायी नाम है।
a. रस b. रक्त c. अस्थि d. मज्जा

56. संधीवेदना लक्षण है।
a. मांसक्षय b. अस्थिक्षय c. अस्थिवृद्धी d. मज्जाक्षय

57. दुर्बलो दुश्च्छायो दुर्मन: लक्षण है।
a. ओजक्षय b. ओजविस्रंस c. ओजव्यापत d. None

58. हेतूस्तू सुख दु:खाय योगो दिष्ट .....।
a. द्विविध b. त्रिविध c. चर्तुविध d. पंचविध

59. धातू होते है।
a. प्रसादवत b. किट्टवत c. Both d. None

60. कौनसा अस्तिक दर्शन ईश्वर को नही मानता ?
a. सांख्य b. योग c. न्यायदर्शन d. उत्तरमिमांसा

61. वैशेषिक दर्शन के अनुसार गुण की संख्या
a. 12 b. 24 c. 36 d. 41

62. न्यायदर्शन के अनुसार प्रमेय संख्या
a. 6 b. 12 c. 24 d. 16

63. भा. प्र. के अनुसार रूक्ष गुण है।
a. वायू का b. पृथ्वी का c. तेज का d. आकाश का

64. प्रशस्तपाद के अनुसार वायू के गुण है ?
a. 6 b. 7 c. 8 d. 9

65. श्रोत्रेंद्रिय का शब्द से सन्निकर्ष है ?
a. समवाय सन्निकर्ष b. संयुक्त समवाय सन्निकर्ष
c. समवेत समवाय सन्निकर्ष d. संयुक्त समवेत समवाय सन्निकर्ष

66. गर्भ से मैथून का अनुमान है।
a. पूर्ववत b. सामान्यतो दृष्ट c. शेषवत् d. None

67. संदिग्ध साध्यवान .....
a. विपक्ष b. सपक्ष c. पक्ष d. व्याप्ती

68. .....आप्त अनुशासनं।
a. उपदेश b. अपदेश c. प्रदेश d. अतिदेश

69. अथर्ववेद की उपलब्ध शाखा है।
a. शौनक b. शाखल c. बाष्कल d. आश्वालायन

70. मायु कहा है।
a. वात को b. पित्त को c. कफ को d. रक्त को

71. अ. सं. शारीर स्थान अध्याय संख्या
a. 6 b. 8 c. 10 d. 12

72. अ. हृ. में सुत्रसंख्या है।
a. 7445 b. 7444 c. 7446 d. 7447

73. प्रतिपाद्य विषय सुचि वर्णन किया है।
a. सु. सु. 1 b. सु. उ. 1 c. सु. उ. 66 d. None

74. हारित संहिता में सूत्रस्थान है।
a. प्रथम b. द्वितीय c. चतुर्थ d. पंचम

75. निम्न में से कौनसा अध्याय दृढबल ने नही लिखा है ?
a. द्विव्रणीय चि. b. त्रिमर्मीय चि. c. वातव्याधि चि. d. वातरक्त चि.

76. रक्त को दूष
a. अष्टांग
77. हंसोदक का
a. अष्टांग
78. अष्टांग हृदय
a. सुत्रस्था
c. कल्पस्थ
79. अष्टांग हृदय
a. गिरीजतु
80. मज्जा वात
a. हारीत
c. काश्यप
81. द्विपान्तर वच
a. भावप्रक
82. योगशतक क
a. 9 वे श
83. B.A.M.S.
a. दवे कमि
c. उडुप की
84. 3 प्रकार के
a. मिश्र संस
c. चिनी संस
85. सुतिकागार
a. चरक
86. The foun
a. Pune
87. देशकाल वयं
a. सामान्य
88. गुदामयं बस्ति
a. उपांग
89. 6 रस में लव
a. भेल संहि
c. हंसराज
90. गर्भ में पंचत
a. 1 मास
91. पंचकोल को
a. वैद्यक र
c. भेल सं
92. शंखपूष्पी उ
a. पूष्प
93. 4 methox
a. अर्जुन
94. भैषज सेवन
a. अष्टांग
95. Indian Lil
a. सारीवा
96. किस देश वे
a. बाल्हीक

76. रक्त को दूष्य व दोष..... ने कहा।
a. अष्टांग संग्रह b. अष्टांग हृदय c. शारंगधर d. None

77. हंसोदक का वर्णन नही किया है।
a. अष्टांग हृदय b. अष्टांग संग्रह c. चरक d. b & c

78. अष्टांग हृदय में अग्रय द्रव्य वर्णित है।
a. सुत्रस्थान b. चिकित्सा स्थान
c. कल्पस्थान d. उत्तरस्थान

79. अष्टांग हृदय के अनुसार सर्वेषु रोगेषु .....
a. गिरीजतु b. हरितकी c. आमलकी d. शिलाह्य

80. मज्जा वात का स्थान बताया ?
a. हारीत b. भेल संहिता
c. काश्यंप संहिता d. भावप्रकाश

81. द्विपान्तर वचा सर्वप्रथम वर्णन
a. भावप्रकाश b. शारंगधर c. सुश्रुत d. वाग्भट

82. योगशतक का काल
a. 9 वे शतक b.10 वे शतक c.11वे शतक d. 12 वे शतक

83. B.A.M.S. में प्रवेश योग्यता इन्टर विज्ञान द्वारा की गई?
a. दवे कमिटी b. पंडीत कमिटी
c. उडुप कमिटी d. व्यास कमिटी

84. 3 प्रकार के चिकित्सक का उल्लेख
a. मिश्र संस्कृती b. फारस संस्कृती
c. चिनी संस्कृती d. अरबी संस्कृती

85. सुतिकागार बताया है।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. All

86. The foundation for Panchbhuta researches situated at
a. Pune b. Sangli c. Mumbai d. Nagpur

87. देशकाल वयोमानवीर्यरसादिषु ..... ।
a. सामान्यत्व b. विशेषत्व c. परापरत्व d. नित्यत्व

88. गुदामयं बस्तिरूजं शमनं बस्तिरूहकम् (हारीत)।
a. उपांग b. कायचिकित्सा c. रसायन d. अगद

89. 6 रस में लवण की जगह क्षार वर्णन किया
a. भेल संहिता b. हारीत संहिता
c. हंसराज संहिता d. वंगसेन संहिता

90. गर्भ में पंचतत्व प्रकट होते है ?
a. 1 मास b. 3 मास c. 5 मास d. 6 मास

91. पंचकोल को आरोग्य पंचक कहा है।
a. वैद्यक सर्वस्व b. चिकित्सा सार संग्रह
c. भेल संहिता d. वंगसेन संहिता

92. शंखपूष्पी उपयुक्तांग
a. पूष्प b. फल c. पंचाग d. निर्यास

93. 4 methoxy benzoldehyde is present in
a. अर्जुन b. सारीवा c. गुडूची d. मंजिष्ठा

94. भैषज सेवनकाल में रात्री का वर्णन किया ?
a. अष्टांग संग्रह b. शारंगधर c. अष्टांगहृदय d. All

95. Indian Lilae is English name of
a. सारीवा b. आमलकी c. मंजिष्ठा d. निम्ब

96. किस देश के लोक दूध के साथ लवण खाते है।
a. बाल्हीक b. सौराष्ट्र c. सौवीर d. All

97. धन्वतरी निघण्टू वर्ग संख्या
a. 7 b. 22 c. 23 d. 24

98. हरितकी की जातीयों में श्रेष्ठ है।
a. रोहिणी b. अमृता c. विजया d. जिवन्ती

99. मत्स्य शकला का Latin name है।
a. Holerrhena antidysentrica b. Swertia Chirayita
c. Picrorhiza Kurroa d. Saraca Ashoka

100. व्याधिघात पर्यायी नाम है।
a. तुलसी b. आरग्वध c. हरिद्रा d. भल्लातक

Model Question Paper II

1. "स्वस्थानाद् बस्तिरूद्वृत्तः स्थुलस्तिष्ठति गर्भवत्"। (च.)
यह लक्षण ----- मुत्राघात मे है।
a. मुत्रजठर b. मुत्रातीत c. वातकुंडलिका d. बस्तीकुंडल

2. 1. गंभीरा हिक्का → a. उरः स्त्रोत्र.
2. महती हिक्का → b. नाभी पक्वाशय
3. व्यपेता हिक्का → c. मर्म.
4. अन्नजा हिक्का → d. जत्रुमुल
a. c - b - d - a b. d - c - a - b
c. b - c - d - a d. a - b - c - d

3. सात्ययिक तन्त्र संबधीत है.
a. वाजीकरण तंत्र b. अगदतंत्र
c. शल्यतंत्र d. शालाक्यतंत्र

4. गजायुर्वेद प्रवर्तक -----
a. पालकाप्य b. बृहस्पती c. सहदेव d. शालीहोत्र

5. "प्रकृतस्यातिक्रान्तेन साधन" ----- (सु. उ. 65)
a. अतिदेश b. प्रदेश c. उपदेश d. None

6. संशय & अर्थापत्ती -----
a. तंत्रयुक्ती b. वादमार्गपद c. Both a+b d. None

7. ------ मषक प्राणहर है.
a. सर्षपिका b. भृकुटी c. कोटिक d. None

8. मन्यते कृष्णमात्मानं गौरो, गौरो च कालकः (अ. हृ. उ. 35)
a. दुषीविष b. संयोगजविष
c.गरविष d.कणभ दंशविष

9. "बुध्दी-मोह"—इस दोषका कुपीत-अकुपीत कर्म है. (च.सु.12)
a. वात b. पित्त c. कफ d. b & c

10. अ. हृदयपर पं. शिवशर्मा की हिंदी टिका –
a. विज्ञेयार्थ प्रदिपीका b. शिवप्रदिपीका
c. वाक्य प्रदिपीका d. अष्टांग हृदय दिपीका

11. माधुतैलीक बस्ती की जगह गौडतैलिक बस्ती का उल्लेख By –
a. योगशतक b. राजमार्तंड
c. कल्याणकारक d. चिकित्साकलिका

12. निश्चित साध्यवान -----
a. पक्ष b. सपक्ष c. विपक्ष d. पक्षता

13. अग्निदग्धवत तीव्र पीडा -----
a. उच्चिटिंग दंश b. पिपीलीका दंश
c. गलगोलिका d. माक्षीका

14. A/c चरक, शुक्रवह स्त्रोतस मुल ----
a. स्तनौ वृषणौ b. बस्ती, वंक्षण
c. वृषण, शेफ d. वृषण, मेढ्र

15. "आवस्थिको -------- अपेक्षते"।
a. ऋतुसात्म्यम् b. आतुरबलम्
c. विकारम् d. व्याधीआतुरबलम्

16. ऋषीनाम आस्थापनार्थ द्रव्य
1. शौनक → a. कुटज
2. बडीश → b. इक्ष्वाकू
3. वामक (काशीराज. → c. जीमुतक
4. गौतम → d. धामार्गव
a. c-b-d-a b. d-a-c-b c. d-b-a-c d. c-a-b-d

17. कर्मबाहुल्य – प्रयोगबाहुल्य संबंधीत है ----
a. गुणप्राधान्यवाद b. रसप्राधान्यवाद
c. द्रव्यप्राधान्यवाद d. वीर्य प्राधान्यवाद

18. पंचसार मे नही.
a. मधु b. गुड c. शर्करा d. पिप्पली

19. A/c शारंगधर – प्रतिसारण भेद –
a. 4 b. 3 c. 5 d. 2

20. दर्व्याकृति शलाका प्रयोग --- (A/c सुश्रुत)
a. अंजनार्थ b. अग्निकर्मार्थ c. क्षारकर्मार्थ d. None

21. A/c वाग्भट, आन्त्रवृद्धी प्रयुक्त बंध ---
a. मण्डल b. विबंध c. स्थगिका d. स्वस्तिक

22. A/c शारंगधर 4 वर्षके बालक को क्वाथ मात्रा --
a. 4 माशा b. 2 माशा c. 8 माशा d. None

23. 22 अंगुल ---
a. 1 वितस्ती b. 1 अरत्नी c. 1 हस्त d. 1 राजहस्त

24. मध्यम मांसरस निर्माणार्थ जल प्रमाण ----
a. 2 प्रस्थ b. 1 प्रस्थ c. 3 प्रस्थ d. 4 प्रस्थ

25. दर्शन वाद
1. न्याय/वैशेषिक → a. विर्वतवाद
2. भिक्षुसुत्र/वेदांत → b. परमाणुवाद
3. आन्विक्षीकी दर्शन/न्याय→ c. सप्तभंगीन्यायवाद
4. आर्हत दर्शन/जैन → d. पिठरपाकवाद
a. a-d-b-c b. b-c-d-a
c. b-a-d-c d. c-a-d-b

26. मुषिकाह्वा पर्याय ---
a. दंती b. सप्तला c. शंखिनी d. द्रवन्ती

27. "विपक्व यदपक्व वा मलादि द्रवता नयेत्।"
a. भेदन b. स्त्रंसन c. अनुलोमन d. रेचन

28. A/c काश्यप यवागुदोष ----
a. 8 b. 7 c. 5 d. 6

29. "रसासृडः मांस मेदोजान् दोषान् हन्ति --- (च)
a. आमलकी b. हरितकी c. बिभीतक d. रसोन

30. स्वरस से स्नेह सिध्द करने के लिए. पाक ..... रात तक रखे
a. 5 रात b. 2 रात c. 3 रात d. 5/3 रात

31. "----- लघुतरा ज्ञेया ग्राहीणी धातुपुष्टीदा"।
a. यवागु b. मंड c. पेया d. विलेपी

32. संतानिका & जलविरहीत ----
a. घोल b. मथित c. छच्छिका d. उद्श्वित

33. पुटपाकसे निर्मित स्वरसमे, प्रक्षेप द्रव्यार्थ मधुमात्रा ---
a. 1 कर्ष b. 1 कोल c. 9 द्रक्षण d. Both b & c

34. नल्वण पर्याय ----
a. द्रोण b. आढक c. शुर्प d. गोणी

35. पुरूष ---
a. अमध्यस्थधर्मी b. मध्यस्थधर्मी c. प्रसवधर्मी d. अचेतन

36. गुणनिमित्ता ----
a. कल्पना b. ताच्छिल्य c. तंत्रगुण d. तंत्रदोष

37. राजनिंघटुनुसार मुल ---- ऋतु में ग्रहण करे.
a. हेमंत b. प्रावृद् c. वर्षा d. शिशिर

38. "अपक्वपित्तश्लेष्मणौ बलादुर्ध्व नयेत् तु यत्।"--- कर्म.
a. छेदन b. उभयतोभागहर c. वमन d. रेचन

39. यव एवं गेहु के सत्तुसे निर्मित संधानद्रव्य --
a. मैरेय b. सुरा c. सिधु d. कोहल

40. चुर्ण मे, प्रक्षेप द्रव्यार्थ शर्करा प्रमाण ----
a. चुर्ण के दुप्पट b. चुर्ण के समप्रमाण
c. चुर्ण के 4 पट d. None

41. चक्रीबद्ध पारद निर्माणार्थ मुषा ----
a. योग मुषा b. मण्डुकमुष
c. मुसलाख्य मुषा d. रौप्यमुषा

42. हरताल सोमल भस्म निर्माणार्थ यंत्र ---
a. आकाश पातन यंत्र b. भुधरयंत्र
c. नाभीयंत्र d. विद्याधर यंत्र

43. विडवर्ग उपयोग ---
a. मारणार्थ b. शोधनार्थ c. द्रावणार्थ d. जारणार्थ

44. मृदुद्रव्य शोधनार्थ कोष्ठी ---
a. पाताल कोष्ठी b. गारकोष्ठी c. मुषाकोष्ठी d. None

45. SP Gravity of नाग is
a. 7.28 b. 9.7 c. 11.4 d. 10.5

46. गोमेद दोष नही -----
a. बिन्दु b. काकपद c. रेखा d. यव

47. हरताल सत्व वर्ण --
a. इंद्रगोपाभ b. श्वेतवर्णी c. धुसर d. पांडुरवर्णी

48. ----- मधु प्रकार चक्षुष्य है। (सु.)
a. छात्र b. माक्षीक c. औद्दालक d. आर्ध्य

49. आवर्तकी ---- Latin Name
a. Cassia Auriculata b. Helicterous Isora
c. Disopyrous prigrina d. Lepidium Iberis

50. चुर्णरूप – गोलरूप – भेद ---
a. पेरोजक b. राजावर्त c. सुर्यकान्त d. चन्द्रकान्त

51. नेत्ररोगारि पर्याय ---
a. यशद b. कासीस c. रसक d. मनःशिला

52. रसबंधनन्मुत्कृष्ट ---
a. गिरीसिंदुर b. गौरीपाषाण c. मृद्दारशृंग d. None

53. सोल्जर मेटल ----
a. Sn + Pb b. Sn + Zn + Sb c. Cu + Ni d. Cu + Zn

54. पुष्पांजन रासायनिक सुत्र ---
a. Pbs b. Zno c. Sb_2S_3 d. Zns

55. शल्यकर्म हेतु अनुमती के लिए आयु ---
a. 10 वर्षे b. 12 वर्षे c. 14 वर्षे d. 16 वर्षे

56. "भिषकसहस्त्रैरिप दुनिवारणम्।" ---
a. अर्धावभेदक b. सुर्यावर्त विपर्यय c. अनंतवात d. शंखक

57. "कंडु" लक्षण in ---- शिरोरोग
a. वातज b. कफज c. पित्तज d. कृमीज

58. "हरि अर्जुन लोमवत"।
a.अपीनस b.प्रतिश्याय उपद्रव
c. प्रतिश्याय पुर्वरूप d. दुष्टप्रतिश्याय

59. उन्मथ ---
a. वात कफ b. पित्त कफ
c. वात पित्त कफ d. कफपित्तरक्त

60. वाग्भटने कर्णरोग नही माना.
a. कर्णक्ष्वेड b. कर्णबाधिर्य c. कर्णगुथ d. Both a+c

61. "दशनाना विनाशिनी"
a. दन्तशर्करा b. श्यावदन्त c. दन्तकपालिका d. None

62. अधुष दोष दुष्टी –
a. रक्त b. कफ रक्त c. वात रक्त d. पित्तरक्त

63. व्यक्ती पहचान के लिये (Personal identification) Manubrium Midsternum अनुपात in male
a. 46.2 b. 50.4 c. 60.2 d. 54.3

64. रक्तचित्रक शोधन ---
a. अम्लिका स्वरस b. उष्णोदक c. चुर्णोदक d. None

65. अ. सं. कारने विविध गणादी अध्यायमे --- महाकषाय वर्णन.
a. 26 b. 45 c. 33 d. None

66. ब्राम्हणयष्टिका पर्याय ---
a. गंभारी b. खदीर c. पलाश b. भारंगी

67. Sponge gourd _____ Eng. Name
a. पटोल b. इक्ष्वाकू c. धामार्गव d. जीमुतक

68. A/c अ. सं. of अंजनार्थ, मेषश्रृंग --- पात्र प्रयोग
a. कटु b. तिक्त c. कषाय d. लवण

69. A/c वा, अंजनशलाका लांबी ---
a. 8 अं b. 6 अं c. 10 अं d. 12 अं

70. पुटपाकमे, पथ्यसेवन – क्रियाकाल जितने दीन होता हे उसके----दिन
a. दुप्पट b. तिप्पट c. चौपट d. None

71. दुष्ट शलाका प्रयोग दोष ---
a. 6 b. 7 c. 8 d. 4

72. A/c सु. तृतीय पटलाश्रीत तिमीर
a. साध्य b. याप्य c. असाध्य d. None

73. "पाण्डु सतोदमास्त्रावं श्वेतस्त्रवंत वा कफम्।" --- योनी. व्यापद
a. कफज योनीव्यापद b. उपप्लुता
c. सन्निपातज d. महायोनी

74. पित्तलाया नृसवासे क्षवथुद्गार धारणात – हेतु.
a. उपप्लुता b. परिप्लुता c. शुष्का d. अन्तर्मुखी

75. नंदा योनी व्यापद वर्णन By
a. शारंगधर b. डल्हण c. भाप्र d. हारित

76. गुडुच्यादी तैल ---
a. वात योनी व्यापद b. पित्त योनी व्यापद
c. कफ योनी व्यापद d. उपप्लुता

77. भग --- संधीप्रकार
a. मंडल b. तुन्नसेवनी c. सामुद्ग d. प्रतर

78. Linum Usitassimum ----------
a. अतसी b. नल c. जुफा d. अश्वगो

79. निर्गुंडी द्रव्य का प्रतिनिधीक द्रव्य ---
a. शालपर्णी b. तुलसी c. अग्निमंथ d. पाटला

80. मदनफल वमनार्थ मात्रा ---
a. 2 - 3 gm b. 3 - 5 gm c. 3 - 6 gm d. 6 - 10 gm

81. अलस ---
a. क्षुद्ररोग b. जिव्हागत c. Both a+b d. None

82. उपकुश ---
a. पित्तकफ b. कफरक्त c. पित्तरक्त d. सन्निपात

83. जंतुउत्पत्ती in ---
a. मेदोज ओष्ठरोग b. मांसज ओष्ठरोग
c. अभिघातज d. सन्निपातज ओष्ठरोग

84. स्तनरोग --- दोषदुष्टी
a. मांसमेदरक्त b. कफमांसरक्त c. रक्तमांस d. कफमांस

85. अपरासंग उपद्रव ---
a. आध्मान b. आटोप c. मलसंग d. आन्त्रकूजन

86. युषमे शुंठी पिप्पली का प्रक्षेप द्रव्य प्रमाण---
a. 1/6 b. 1/8 c. 1/4 d. 1/16

87. "श्याव" वर्णीय रक्तदुष्टी ---
a. वातज b. पित्तज c. कफज d. रक्तज

88. अभ्यंतर दिर्घएकपाली मे --- कर्णसंधान विधी
a. गण्डकर्ण b. आसंगीम
c. अर्धकपाटसंधीक d. वल्लुरक

89. अलाबू --- तक रक्तमोक्षण करते है।
a.10 अंगुल b.12 अंगुल c.18 अंगुल d.16 अंगुल

90. "विचित्रपुष्पाकृती चित्रा" ---
a. शंकूमुखी b. सामुद्रिका c. सावरिका d. अलगर्दा

91. वातदुष्ट स्थानपर --- करके क्षार प्रतिसारण करे
a. घर्षण b. प्रच्छान c. लेखन d. दहन

92. बालवृद्ध सुकूमार व्यक्तीके लिए विस्त्रावणार्थ प्रयोग ---
a. अन्तर्मुख b. शरारिमुख c. कूशपत्र d. None

93. विस्त्रावणार्थ शस्त्र पकडे ---
a. वृन्ताग्रे b. वृन्तफल प्रदेशी
c. मुलभागी d. वृन्तफलमध्यभागी

94. ध्वाक्ष:नाशिनी पर्याय ---
a. हपुषा b. इंगुदी c. धव d. निर्विषा

95. A/c वा – क्षार बुद्बुद कोपम शोफ ---
a. कृमीग्रंथी b. पुयालस c. उपनाह d. बद्धवर्त्म

96. एर्वारूबीज जैसे पिडका ---
a. बीसवर्त्म b. अर्शोवर्त्म c. शुष्कार्श d. शोणीतार्श

97. A/c हारित, पिंगल गर्भवर्ण ---
a. पित्तरक्त b. कफरक्त c. वातरक्त d. केवल रक्त

98. ''अंकूशवदनानि'' सदृश्य शलाकायंत्र प्रयोग ---
a. क्षार औषधी प्राणिधानार्थ b. व्युहण
c. अंजनार्थ d. अग्निकर्माथ

99. A/c वा. यंत्रकर्म ---
a. 15 b. 18 c. 16 d. 12

100. कालिन्दक --- प्रयोग in योग्याविधी.
a. विस्त्रावण b. परिकर्तन
c. विस्त्रावण-एषण d. परिसेचणार्थ

Model Question Paper III

01. उपजिव्हा ---
a. लेखन b. भेदन c. छेदन d. None

02. A/c वाभट ग्रंथीभेद -
a. 9 b. 8 c. 5 d. 6

03. कूपितानां हि दोषाणां शरीरे परिधावताम् ---
a. सु.सु.24 b. सु.सु.21 c. सु. सु. 25 d. सु. सु. 18

04. नेत्राभिष्यंद --- प्रदोषज व्याधी
a. रस b. रक्त c. मज्जा d. मेद

05. ''वैद्यवाक्यस्थो'' गुण ---
a. परिचारक b. रोगी c. वैद्य d. औषध

06. दृष्टीनयनान्तर ---
a. 2अंगुल b. 4 अंगुल c. 6 अंगुल d. 8 अंगुल

07. अर्मछेदन कनीनक के पास कुल अर्मदिर्घता का ..... भाग शेष रखकर करे।
a. 1/3 b. 1/4 c. 1/5 d. 1/21

08. एक पटल बाहुल्य/स्थूलता दृष्टी के ..... होती है ।
a. 1/9 b. 1/7 c. 1/5 d. 1/2

09. अच्छिद्रगात्र गुढास्थिसंधी --- सार लक्षण.
a. मांस b. मेद c. अस्थी d. मज्जा

10. शर्करानाशन परम् ---
a. मुष्ककादी b. उषकादी c. त्रप्वादी d. शामादी

11. 'गात्रसदनं' ---
a. ओजो व्यापद b. मांसक्षय c. ओज विस्त्रंस d. शुक्रक्षय

12. शीत अपनयन प्रलेपनानां ---
a. कुष्ठ, तगर b. रास्ना,अगरू c. कुष्ठ,अगरू d. तगर,अगरू

13. प्रभाव भेद से - आहार भेद -
a. 3 b. 2 c. 4 d. 1

14. मत्स्यवसा में कनिष्ठ ---
a. रोहितवसा b. चुलुकीवसा c. चिलचिमवसा d. कुम्भीरवसा

15. दृष्टीगत व्याधी --- वाग्भट
a. 16 b. 27 c. 25 d. 19

16. शुष्क अक्षिपाक की चिकित्सा है ।
a. लेख्य b. वेध्य c. अशस्त्रकृत d. असाध्य

17. सालसारादी सिद्ध घृत प्रयोग --- शुक्रदुष्टि.
a. मुत्रपुरीष गंधी b. पुतीपुय c. कूणपगंधी d. None

18. अ. सं. ओज ----
a. शुक्रसार b. शुक्रमल c. Both a+b d. जीवशोणीत

19. शांरगधर - अस्थी मल ---
a. केश b. दन्त c. संधी d. नेत्रमल

20. मेधावी --- प्रकृती लक्षण.
a. वात b. पित्त c. कफ d. सम

21. ''व्रणोती यस्माद् रूढेऽपि व्रणवस्तु न नश्यति ।''
a. सु. चि. 1 b. सु. चि. 2 c. सु.सु. 21 d. सु.सु. 18

22. क्षारकर्मार्थ श्रेष्ठ मुत्र ---
a. उष्ट्र b. हस्ती, उष्ट्र c. घोडी d. माहिष

23. श्रेष्ठ चक्षुष्य वायु ---
a. पुर्व b. पश्चिम c. उत्तर d. दक्षिण

24. एकान्त हितकर ---
a. मधु b. घृत c. Both a + b d. क्षार

25. प्लीहावृद्धी ---
a. रक्तवृद्धी b. रक्तक्षय c. मेदक्षय d. a & c

26. अतिरोदन हेतु --- प्रकोप
a. प्राणवायु b. उदानवायु
c. व्यानवायु d. समानवायु

27. वाग्भट - तृष्णा व्याधी - दुष्टी
a. प्राणवायु b. उदान c. समान d. अपान

28. काश्यप मध्यमावस्था ---in yrs.
a. 30 - 60 b. 37 - 60 c. 34 - 70 d. 34 - 65

29. चरक तगर --- में वर्णन.
a. कटुस्कंध b. तिक्तस्कंध c. कषायस्कंध d. मधुरस्कंध

30. ''मलाक्तदर्शतुल्य'' ---
a. सिराजाल b. शुक्तिका
c. बहलवर्त्म d. वातहतवर्त्म

31. शांरगधर - संधीगत तर्पण मात्रा ---
a. 600 b. 500 c. 300 d. 200

32. वैडुर्यांजन प्रयोग ---
a. शुक्तीका b. पुयालस c. अंजननामीका d. None

33. मृतसंतान को जन्मदेनेवाली बंध्या ---
a. आदीबंध्या b. त्रिदोषज बंध्या
c. वातबंध्या d. रक्तबंध्या

34. वाग्भट - स्त्रीश्रोणी अस्थी संख्या -
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6

35. Palmar grasp reflex disappear's at age of
a. 5 - 7 m b. 6 m c. 10 m d. 11/2 month

36. ''प्रतिपाश्च दंत'' ---
a. 7 मास b. 6 मास c. 5 मास d. 4 मास

37. चतुर्विध राजयक्ष्मा मे जृंभा लक्षण ---- राजयक्ष्मा का है।
a. वेगविधारणजन्य b. साहसज
c. विषमाशन d. क्षयज

38. प्रयोग शमयेद् व्याधी योऽण्यमुदिरयेत... ।
a. च.नि.8 b. च.चि. 10 c. च.नि. 4 d. च.नि.6

39. सौहितस्य च सहत्वम् ।...पुर्वरूप
a. गुल्म b. उदर c. अर्श d. ग्रहणी

40. दाह भेद ---
a. 6 b. 7 c. 8 d. 4

41. शीताम्बु पानादवृद्धीश्च ---तृष्णा लक्षण.
a. वात b. पित्त c.सन्निपातज d. आमज

42. काकतुल्यगंध ---
a. रेवती b. शीतपुतना c. पुतना d. अंधपुतना

43. वाग्भट – विष्कंभ ---
a. कृच्छ्रसाध्य b. असाध्य
c. शस्त्रसाध्य d. यत्नेन साध्य

44. असाध्य जातहारिणी ---
a. 11 b. 8 c. 16 d. None

45. पृश्नीपर्णी बलाशिग्रु ... । सुश्रुत – गर्भस्त्रावहर योग-- मास का
a. तृतीय b. चतुर्थ c. षष्टी d. पंचम

46. "मागधी रसायन" प्रयोग --- शुक्रदोष में करते है ।
a. वातज b. पित्तज c. सन्नि d. कफज

47. क्षताच्च नखदंताधै --- हेतु.
a. योनीसंवरण b. योनीकंद c. रक्तप्रदर d. योन्यार्श

48. काश्यप धुपभेद ---
a. 3 b. 4 c. 5 d. 40

49. नाभीकुंडल व्याधी वर्णन By ---
a. यो. र. b. काश्यप c. र.र.समुच्चय d. भै.र.

50. स्निन्ध शुक्ल मुखेक्षण :---
a. बालशोष b. क्षीरालसक
c. व्याधीजन्यफक्क d. None

51. दंताघात व्याधी वर्णन By ---
a. शारंगधर b. र.र.समुच्च c. सुश्रुत d. वाग्भट

52. विनम्मते च मध्ये ।
a. पितृग्रह b. श्वग्रह c. नैगमेष d. स्कंदापस्मार

53. ततो व्दव्दांनाभिघात: ।
a. आसन b. प्राणायाम c. समाधी d. प्रत्याहार

54. गोरक्षासन में पुरक:कूंभक:रेचक –
a. 6 : 2 : 6 b. 2 : 6 : 2 c. 2 : 2 : 6 d. None

55. सर्व व्याधी विनाशनम् --- आसन
a. पद्मासन b. सिध्दा
c. Both a+b d. सिंहासन

56. Diptheria incubation period in days.
a. 2 - 6 b. 2 - 5 c. 1 - 5 d. 15

57. खंजता लक्षण ---मर्मविद्ध लक्षण.
a. जानु b. गुल्फ c. विटप d. None

58. परिपक्व धातु --- संज्ञा
a. मलभुत शरीरधातु b. प्रसादभूत शरीरधातु
c. पक्वशरीरधातु d. None

59. धात्री व्देषऽरतिभ्रमै..... । (का)
a. ज्वर b. मदात्यय c. आमदोष d. पीनस

60. संसक्तता.....
a. कल्पना b. ताच्छिल्य c. तंत्रयुक्ती d. तंत्रदोष

61. निश्चलकर काल .....शतक
a. 13 b. 14 c. 16 d. 17

62. शंख ---मर्म है ।
a. मांसमर्म b. स्नायु c. अस्थी d. संधी

63. अग्निरोहीणी स्थान ---मर्म है ।
a. कक्षा b. बाहुपार्श्व, अंस, कक्षा
c. वंक्षण, कक्षा d. ग्रीवाबाहु, कक्षा

64. विवृत्ता --- क्षुद्ररोग.
a. पित्त b. कफ c. कफ रक्त d. पित्त रक्त

65. "ज्वलनेनेव दह्यते"
a. मांसविद्रधी b. रक्तविद्रधी
c. अस्थीविद्रधी d. मज्जागतविद्रधी

66. कर्कश पृथुस्थिर अर्श--- चि.
a. भेषज b. क्षार c. अग्नि d. शस्त्र

67. अष्ठीला /प्रति अष्ठीला --- प्रयोग (सु.)
a. हिरूत्तर हिंगु चुर्ण b. हिंग्वादी चुर्ण
c. षडधरण योग d. त्रिसमहिंगु चुर्ण

68. पादहर्ष ---
a. वात b. पित्त c. कफ d. सन्नि

69. मरिच्यादी चूर्ण रोगाधिकार ----ग्रहणी .
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज

70. ग्रहणी बलवर्धनम् ।---क्षार.
a. दुरालभादी b. भुनिंबादी c. भल्लातक d. हरिद्रादी

71. पुनर्नवादि अरिष्ट ---
a. पाण्डु b. शोथ c. उदर d. कामला

72. Flask shaped ulcer __
a. Syphilis b. Amoebiasis
c. Wilson disease d. SLE

73. Sleeping sickness ____ Vector.
a. Glossina b. Sand fly
c. Both a+b d. Aedes

74. Antidote of coccaine ___
a. Nalouone b. Dimercaprol
c. Amyl Nitrate d. Sodium ferrocyanide

75. अफिम घातक मात्रा ---
a. 200 gm b. 15 gm c. 40 gm d. 100 gm

76. उत्तम शास्त्र लक्षण ---
a. 20 b. 18 c. 21 d. 16

77. शब्द गुण है, क्योकी वह आखोसे दिखता है..... हेत्वाभास
a.स्वरूप असिद्ध b.आश्रय असिद्ध
c.व्यावत्व असिद्ध d.अनुपसंहारी

78. मुर्तगुण संख्या ---
a. 8 b. 10 c. 5 d. 6

79. "विद्युत"--- तेज प्रकार
a. भौम b. दिव्य c. औदर्य d. आकारज

80. वैद्यकशब्द सिन्धु --- लेखक.
a. विनोदलाल सेनगुप्त b. विष्णुगुप्त
c. उमेशचन्द्रगुप्त d. उपेन्द्रनाथ दास

81. मैथुनअसहिष्णुत्वं --- स्त्रोतोविद्ध लक्षण.
a. आर्तववह b. शुक्रवह c. रसवह d. None

82. वामहस्तमे वातवह सिरा ---
a. 50 b. 25 c. 100 d. 400

83. कालीयक ---
a. यकृत b. अग्न्याशय c. क्लोम d. उण्डुक

84. वृक्क उत्पत्ती ---
a. रक्तमेद कफ b. रक्तमांसकफ
c. रक्तमेद d. रक्तकफमांसमेद

85. सुश्रुत - वीर्य --- भाव है।
a. सात्म्यज b. पितृज c. आत्मज d. रसज

86. अक्षिपक्ष्माणि चाप्यस्या: समीलयन्ते विशेषत: । --- लक्षण.
a. सद्योगृहीत गर्भिणी b. गर्भिणी
c. ऋतुमती d. प्रसुतास्त्री

87. जल चिकित्सक जनक ---
a. विन्सेट प्रिसनीज b. लुईकूहने
c. ॲडॉल्फजस्ट d. ग्रेग पाके

88. निर्बीज समाधी प्राप्त उपाय....
a. 3 b. 4 c. 6 d. 8

89. Vit c मात्रा ---
a. 500 mg/day b. 600 mg/day
c. 400 - 1000 IU/ day d. 75 mg/day

90. For milk sterilization Milk boils on 63° For 30 min. in method.
a. Holter method b. Flash method
c. Permutit process d. None

91. Daily requirement of Calcium.
a. 1.5 gm b. 2.5 gm c. 1 gm d. 0.5 gm

92. आमातिसाराणां नादौ संग्रहणम् । ---
a. सु.उ.40 b. सु.उ.41 c. सु.उ.43 d. सु.उ.46

93. हृद्रोग व्यक्ती को वमन देने से ---
a. हृद्योपरोध b. हृद्याघात
c. हृद्योपसरण d. मृत्यु

94. ग्रहश्च विण्मुत्र समीरणानाम् असम्यक्.....
a. आस्थापन अयोग b. अनुवासन अयोग
c. विरेचन अयोग d. विरेचन सम्यक योग

95. 4th Coagulating factor.
a. Tissue thromboplastin b. PTA
c. Fibrin d. Calcium

96. Doxycycline -- + 1/2. Life Period is
a. 12 hr. b. 24 hr c. 7 day d. 20 hr.

97. अनारोग्य कराणा --- श्रेष्ठ.
a. वेगसंधारण b. आयास
c. परदारभिगमन d. None

98. क्रिमीन हिनस्ती --- रस.
a. कटु b. तिक्त c. कषाय d. लवण

99. "महाशया" --- प्रमेहपिडका.
a. कच्छपिका b. सर्षपिका
c. जालिनी d. विनता

100. पृष्ठ कटीग्रह (चरक) --- विद्रधी लक्षण.
a. वंक्षण b. वृक्क c. कूक्षी d. नाभी

*****

Model Question Paper IV

1. चरक के नुसार कौमारभृत्य का अष्टांगों में स्थान है।
a. चतुर्थ b. पंच c. षष्ठ d. सप्तम

2. हेतू साध्ययो: अविनाभाव संबंध.
a. व्याप्ती b. परामर्श c. पक्षधर्मता d. अनुमान

3. राजनिघण्टू मे वर्ग संख्या ---
a. 93 b. 15 c. 23 d. 27

4. हेत्वाभास प्रकार नही है।
a. असत्प्रतिपक्षत्व b. विरूध्द c. बाधित d. असिध्द

5. चक्रपाणि के नुसार तन्त्रदोष संख्या ---
a. 12 b. 13 c. 14 d. 15

6. पंच महाभूतों के नाम 'व' अक्षरोसे दिये है।
a. शारंगधर b. भावप्रकाश c. माधव d. हारित

7. पृथक् व्यवहार असाधारण कारण....
a. पृथक्त्वं b. विशेष c. समवाय d. अभाव

8. भट्टारहरिचन्द्रोक्त चरक व सुश्रुत से अलग वर्णित तन्त्रयुक्ती...
a. उध्दार b. व्याकरण c. प्रत्युत्सार d. All

9. पंडित कमिटी की स्थापना....
a. 1949 b. 1955 c. 1956 d. 1946

10. षोडशांग हृदयम् के लेखक -
a. पं. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल b. हरिभद्र सुरी
c. यादवजी d. प्रियवत शर्मा

11. Dangerous drug act.
a. 1968 b. 1978 c. 1930 d. 1940

12. अष्टांग संग्रह केनुसार छेदनार्थ शस्त्र धारा
a. मासूरी b. अर्धमासूरी c. कैशिकी d. अर्धकैशिकी

13. अष्टांग हृदय के नुसार स्तनमूल मर्म का प्रमाण.
a. 1/2 अंगुल b. 1 अंगुल
c. 2 अंगुल d. स्वपाणितल प्रमाण

14. गुद मर्म के संबधी गलत विधान
a. सद्यप्राणहर मर्म है b. मांसमर्म है
c. लघ्वान्त्र प्रतिबध्द d. None

15. शिर:स्थित स्नायू व संधिप्रकार अनुक्रमे...
a. तुन्नसेवनी, वृत्त b. तुन्नसेवनी, पृथु
c. पृथु, तुन्नसेवनी d. वृत्त, सामुद्ग

16. गयी के नुसार मांसरज्जु संख्या...
a. 4 b. 6 c. 8 d. 10

17. 'पाशव' प्रकार है.
a. राजस काय b. तामस काय c. सत्वज काय d.

18. 'न्यच्छ' व्याधी का अधीष्ठान....त्वचा.
a. प्रथम b. द्वितीय c. चतुर्थ d. तृतीय

19. "सौम्यं शुक्रम् आर्तवमाग्नेयम् ।"
a. चरक b. सुश्रुत c. चक्रपाणी d. डल्हण

20. 'उन्मथ' व्याधी में दोष.
a. वात पित्त b. पित्त कफ c. वात कफ d. रक्त कफ

21. वाग्भट व शारंगधरानुसार नेत्ररोग संख्या...
a. 94, 94 b. 94, 78 c. 78, 94 d. 78, 78

22. वाग्भट के नुसार वातज अधिमंथ मारक काल.
a. 3 दिन b. 5 दिन c. 7 दिन d. 6 दिन

23. VIth cranial nerve involvement in
a. निमेष b. वातहतवर्त्म c. गंभीरिका दृष्टि d. Ptosis

24. सिराजपिडका व्याधी की चिकित्सा है ।
a. छेद्य b. भेद्य c. लेखन d. वेधन

25. वाग्भटानुसार नकुलान्ध्य साध्यासाध्यता.
a. साध्य b. कष्टसाध्य c. याप्य d. असाध्य

26. कफज व्याधी में आश्चोतन .... काल मे दे।
a. पूर्वान्ह b. मध्यान्ह c. अपरान्ह d. निशि

27. ''गंधान न वेत्ति च'' यह लक्षण मिलता है।
a. दुष्टप्रतिश्याय b. अपीनस
c. रक्तज प्रतिश्याय d. a & c

28. शंखकर्णा अक्षिरोगेषू यथोक्तं---- (च.चि.26)
a. पीनसविधी b. अपीनसविधी c. प्रतिश्यायविधि d. रक्तमोक्षणम्

29. 'कण्ठशालूक' मुखरोग मे दोष.
a. वात b. पित्त c. कफ d. वात पित्त कफ

30. Nerve supply to inferior oblique muscle.
a. 3rd C.N. b. 4th C.N. c. 6th C.N. d. 8th C.N.

31. ''शीतेन शान्ति लभते कदाचित् उष्णेन जन्तु सुखमाप्नुयात् ।''
a. अर्धावभेदक b. सूर्यावर्त c. शंखक d. अनन्तवात

32. अवेदनो वा सवेदनो घनं स्त्रवेत्----
a. कर्णस्त्राव b. कृमिकर्ण c. पूतिकर्ण d. पूतिनासा

33. असाध्य कर्णपालिबंधन है।
a. व्यायोजीम b. वल्लीकर्ण
c. कपालिका d. अर्धकपाटसंधिक

34. नासारोग सामान्य हेतू वर्णन.
a. शारंगधर b. भावप्रकाश c. योगरत्नाकर d. सुश्रुत

35. 'बदरास्थिनिभ' शोथ
a. तालुपुप्पुट b. दन्तपुप्पुट c. उपकुश d. a & b

36. प्रायोगिक धूमपान मे एलादि वर्ग के द्रव्य ले।
a. कुष्ठ b. तगर c. both d. None

37. विधिवैद्यक के लेखक --
a. हरिभद्र सूरि b. रमानाथ द्विवेदी
c. प्रियवत शर्मा d. कृष्ण रामभट्ट

38. रसेन्द्रसारसंग्रह ग्रंथ के लेखक--
a. यशोधरभट्ट b. रामकृष्णभट्ट
c. रमानाथ द्विवेदी d. सायनाचार्य

39. ''श्लेष्मपित्तानिलसंप्रकोप'' लक्षण
a. वमन अयोग b. वमन अतियोग
c. विरेचन अयोग d. विरेचन अतियोग

40. ''यस्य क्रमेण गच्छति सम्यकविठपित्तकफवायवः ।''- लक्षण
a. सम्यक वमन b. सम्यक विरेचन
c. सम्यक अनुवासन d. सम्यक निरूह

41. अभ्यंगाद्वारा स्नेह मेद मे जाने का काल.
a. 400 मात्रा b. 500 मात्रा c. 600 मात्रा d. 700 मात्रा

42. मर्श नस्य प्रधान मात्रा (वाग्भट)
a. 4 बिंदू b. 6 बिंदू c. 8 बिंदू d. 10 बिंदू

43. शारंगधरानुसार नस्यार्थ पाक.
a. मृदु b. मध्यम c. खर d. दग्ध

44. वातपित्तज विकारमे नस्यार्थ स्नेह उपयुक्त है।
a. घृत b. तैल c. वसा d. मज्जा

45. सुश्रुतानुसार तृतीय स्नेहबस्ति का कार्य... है ।
a. शिरस्थ वातशमन b. बलवर्ण जनन
c. मांसधातू स्नेहन d. वंक्षणबस्ति स्नेहन

46. सुश्रुतानुसार दुर्निवारणीय रोग है ।
a. कास b. श्वास c. विलम्बिका d. All

47. वमन रोग में वमनार्थ प्रवाहण करे ।
a. व्याधीविपरीत विहार b. व्याधिविपरीतार्थकारी विहार
c. हेतूव्याधिविपरितार्थकारि विहार d. हेतूव्याधिविपरीत विहार

48. अपतंत्रक व्याधी मे निषेध है।
a. अपतर्पण b. अनुवासन c. आस्थापन d.

49. दन्तधावन पर्याय
a. खदिर b. पीलू c. बब्बुल d. निम्ब

50. स्तन्यसंग्रहणीय द्रव्य है।
a. पाठा b. मल्लिका c. नल d. रोहिष

51. हरितकी त्वचा का रस.
a. कटु b. तिक्त c. कषाय d. अम्ल

52. आमलकी वात शामक है।
a. अम्ल रस से b. मधुर रस से
c. अम्लकषाय रस से d. लवण रस से

53. गुडुची .... साथ सेवन करने से वातशामक है।
a. घृत b. तैल c. गुड d. शर्करा & मधू

54. ''कृत्वा पाकं मलानां यद् भित्वा बंधम् अधो नयेत् ।''
a. अनुलोमन b. स्त्रंसन c. रेचन d. भेदन

55. रामसेनक पर्याय है।
a. किराततिक्त b. हिंगू c. बर्बरी d. All

56. गुग्गुल पित्तशामक कार्य.
a. माधुर्यात् b. कषायत्वात् c. तिक्तत्वात् d.

57. श्रेष्ठ चन्दन का स्वाद (रस)
a. मधुर b. तिक्त c. कषाय d. लवण

58. मरिच द्रव्य का कार्य है।
a. प्रमाथि + छेदन b. प्रमाथि+लेखन
c. प्रमाथि + लेखन d. ग्राही

59. Eosinophilia युक्त तमकश्वास में उपयुक्त.
a. भारंगी b. कण्टकारी c. शटी d. बृहती

60. यह वृक्ष प्राय 600 साल तक होता है।
a. अगरू b. तगर c. साग d. देवदार

61. सर्षप का प्रकार अनुक्त होने पर यह सर्षप ले ।
a. पीतसर्षप b. रक्तसर्षप
c. श्वेतसर्षप d. निलसर्षप

62. वराह मांस सेवन पश्चात उष्णजल सेवन.
a. अवस्थाविरूध्द b. उपचारविरूध
c. क्रमविरूध d. परिहारविरूध्द

63. सुश्रुतानुसार 'सार' संग्रह काल.
a. प्रावृट b. शरद c. वसन्त d. हेमन्त

64. ''धनु + ग्रह'' राशी ----- ऋतु से संबंधीत है।
a. प्रावृट b. वर्षा c. शरद d. हेमन्त

65. 'रास्ना' द्रव्यका प्रभाव है।
a. वातशमन b. त्रिदोषहर c. विषघ्न d. कृमिघ्न

66. प्रभावोऽचिन्त्य उच्यते।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. शारंगधर

67. पिच्छील व विशद वीर्य.
a. स्पर्शग्राह्य b. चक्षुग्राह्य
c. Both d. मुखे दुःखोत्पादनत्वात्

68. ------- रस का कटु विपाक मध्यम है।
a. कटु b. तिक्त c. कषाय d. अम्ल

69. सर्वशरीर अवयव मृदु कारक रस
a. अम्ल b. लवण c. तिक्त d. मधुर

70. ------ सदा पथ्यं लवणार्द्रक भक्षणम्
a. भोजनाग्रे b. भोजनमध्य c. भोजनान्ते d.None

71. लघु, उष्ण व रूक्ष रस.
a. लवण b. कटु c. तिक्त d. कषाय

72. अष्टांगसंग्रह में अन्नद्रव्य वर्ग है।
a. 5 b. 6 c. 7 d. 13

73. जीवक, ऋषभक प्रतिनिधी द्रव्य
a. अश्वगंधा b. शतावरी
c. वाराहीकंद d. विदारीकंद

74. चरकानुसार पुष्पासव संख्या...
a. 11 b. 10 c. 20 d. 26

75. भावप्रकाश नुसार उपविष संख्या...
a. 7 b. 9 c. 11 d. 13

76. सुश्रुतानुसार लघुपंचमूल दोषघ्नता.
a. वात कफ b. पित्त कफ c. वात पित्त d. वात पित्त कफ

77. गुंजा नाम है।
a. स्वरूपबोधक b. अवयवबोधक
c. गुणबोधक d. कर्मबोधक

78. वृध्दादारूक द्रव्य कुल.
a. नागबला कुल b. शिम्बी कुल
c. त्रिवृत्त कुल d. शाल्मली कुल

79. Adiantum Mulatum का Latin name है।
a. इंगुदी b. हंसपदी c. सहदेवी d. पर्णबीज

80. पारद की अदृश्य गति है।
a. धूम गती b. हंस गती c. जीव गती d. जल गती

81. संश्लिष्ट है।
a. मूषाबंधन पर्याय b. संधिभग्न प्रकार
c. Both d. मूषापर्याय

82. नागवंगज दोषोसे उत्पन्न लक्षण (कंचुकीदोष)
a. कुष्ठ b. जाड्य c. वातसंघात d. दोषांद्य

83. अयोगन्धाश्मसम्भूत पर्याय है।
a. यशद b. लोह c. कासीस d. सस्यक

84. अग्निजार शोधनार्थ उपयुक्त (R.R.S)
a. त्रिफलाक्वाथ b. गोदुग्ध
c. भृंगराज स्वरस d. None

85. Montry-dite means
a. कज्जली b. हिंगुल c. रससिन्दूर d. गिरिसिन्दूर

86. पूतिलोह (R.R.S)
a. नाग b. नाग+वंग c. नाग + वंग + पितल
d. नाग+वांग+पितल+कांस्य

87. प्रवाहिका पर्याय है।
a. निश्लारिका, निर्वाहिका b. निस्तानिका,क्षतग्रंथी
c. विस्त्रंसी, बिंबिशी d. All

88. प्रतिश्याय व्याधी अवस्था
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

89. प्रशस्तपादभाष्य पर उदयनाचार्य की टिका.
a. व्योमवती b. न्यायकंदली c. किरणावली d.

90. अभिनव शारीर के लेखक---- है।
a. गणनाथ सेन b. प्रियवत शर्मा
c. दामोदर शर्मा d. विद्याधर शुक्ल

91. पुटपाक विधीसे स्वरस निकाले।
a. वासा b. आर्द्रक c. गुडुची d. रास्ना

92. गलगण्ड, अपची व्याधी ------- रोगमार्ग में होते है।
a. बाह्य b. मध्यम c. आभ्यंतर d. अस्थिगत

93. वायू व अग्निधारण कर्म है।
a. पुरीष b. मूत्र c. स्वेद d. आर्तव

94. मूढसंज्ञता लक्षण मिलता है।
a. कफक्षय b. पित्तक्षय c. वातक्षय d. वातवृध्दि

95. दोषधातुमलानां तु परिमाणं न विद्यते।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. All

96. दुर्बलाग्नि से स्त्रोतस दुष्टी होती है।
a. अन्नवह b. मूत्रवह c. पुरीषवह d. स्वेदवह

97. पादांगुष्ठ जैसे पिडका-भगंदर प्रकार
a. शम्बूकावर्त b. ऋजु c. परिक्षेपी d. अर्शोभगंदर

98. मण्डलाग्र शस्त्र उपयोग.
a. छेदन, लेखन b. छेदन, भेदन
c. लेखन, भेदन d. छेदन,भेदन, लेखन

99. Silicosis is associated with
a. Lungs b. Liver c. Heart d. Kidney

100. Foramen ovale passes_____nerve.
a. Opthalmic b. Mandibular
c. Maxillary d. Accessory

Model Question Paper V

01. ----- हितं तैलं सार्षपश्चैव पूरणम्।
a. कर्णनादे b. कर्णक्ष्वेड
c. नासानाहे d. नासाशोषे

02. 'मलप्रवृत्ती उत्क्लेश' लक्षण मिलता है।
a.आमज्वर b. पच्यमान ज्वर
c. निराम ज्वर d. अन्तर्वेगीज्वर

03. क्लम-साद-भ्रम-शोष यह इस रोग का उपद्रव है।
a. गुल्म b. हृद्रोग c. पाण्डु d. मूत्रकृच्छ्र

04. माधवनिदान मे उदावर्त प्रकार...है ।
a. 12 b. 13 c. 6 d. 4

05. विरूध्दाशन व अजीर्णाशन हेतू है ।
a. पुरीषज कृमि b. रक्तजकृमि
c. कफजकृमि d. बाह्यकृमि

06. व्रणशोथ का चतुर्थ उपक्रम.
a. उपनाह b. शोधन c. पाटण d. रोपन

07. कर्णव्यधनार्थ शस्त्र उपयुक्त है।
a. सूची b. आरा c. Both d. कूर्च

08. गुदपाके तु बालानां------ कारयेत् क्रिया.
a. पित्तघ्नी b. रक्तघ्नी c. रसांजनेन् d. त्रिदोषघ्नी

09. स्तब्धगुरूगात्रता वातशोफ ग्लानिस्तन्द्रा निद्रा.
a. ओजक्षय b. ओजविस्त्रंस c. ओजव्यापद d.वातक्षय

10. विजृम्भिका---- संबंधीत है
a. कर्णरोग b. नाभिरोग c. शोथ d. b & c

11. माधवनिदान मे मद की अवस्था
a. 2 b. 3 c. 4 d. 6

12. मुद्गवर्णा जलौका.
a. कपिला b. पुण्डरीकमुखी c. सामुद्रिका d. A &B

13. आधुनिक के नुसार दग्ध अवस्था.
a.4 b. 5 c.6 d.3

14. सुश्रुतानुसार नखशस्त्र लांबी
a. 6 अंगुल b. 8 अंगुल
c. 10 अंगुल d. प्रदेशिनी अंगुली अग्रपर्वा

15. वाग्भटानुसार 1 वर्ष बालक को निरूह मात्रा
a. 2 तोला b. 3 तोला c. 4 तोला d. 8 तोला

16. अष्टांगसंग्रहानुसार क्षारगुण व क्षारदोष संख्या अनुक्रमे है।
a. 9,10 b. 8,9 c. 10,10 d. 10,9

17. गर्भनाभीनाडी मे ---- होती है।
a. 2 सिरा, 1 धमनी b.2 धमनी, 1 सिरा
c. 3 धमनी d. 2 सिरा, 2 धमनी

18. "नान्ये वाधयस्तथा दारूणा बहूपद्रवा दुश्चिकित्साच्य यथाऽयम्।"
a. ज्वर b. कुष्ठ c. मूढगर्भ d. राजयक्ष्मा

19. आभ्यंतर फिरंग साध्यासाध्यता.
a. साध्य b. कष्टसाध्य c. याप्य d. असाध्य

20. वाग्भटानुसार दन्तोद्भेदजन्य रोग.
a. 10 b. 12 c. 14 d. 8

21. हारितनुसार गर्भिणी को 7 वे मास में दिया जाता है।
a. मधुर दधि b. घृतपूरक c. घृतखण्ड d. पायस

22. गर्भिणी को पृथकपर्ण्यादि सिध्द घृत देते है।
a. 5th Month b. 6th Month c. 8th Month d. None

23. हारित नुसार शामवर्णी गर्भोत्पत्ती का कारण.
a. वात b. कफ c. कफ रक्त d. All

24. धात्री स्तन्य शोधन करते है।
a. चर्मदल b. अहिपूतना c. उपशीर्षक d. All

25. गर्भिणी को क्षीरयवागू देने से पैंगुल्य व अन्धता आती है।
a. भरद्वाज b. भद्रकाप्य
c. कृष्णात्रेय d. भिक्षु आत्रेय

26. "प्रेतरूपा पुरूष।"
a. उदर b. सन्यास
c. मूर्च्छा d. मदात्यय अंतिम अवस्था

27. आधिभौतिक गुण संख्या...
a. 10 b. 20 c. 30 d. 35

28. अम्लिका, पिपासा, परिदाहयुक्त पित्त संबंधीत अवस्था.
a. संचय b. प्रकोप c. प्रसर d. b & c

29. स्थानसंश्रयावस्था के दोष अस्थिगत होने से .... होते है।
a. विद्रधी b. अनुशयी c. a + b d. प्रतिश्याय

30. "पार्श्वस्य एकस्य शीतत्वं उष्णत्वं अपरस्य च।" ग्रहबाधा.
a. पूतना b. शीतपूतना c. अंधपूतना d. नैगमेषग्रह

31. "अस्नात:स्नातरूपश्च स्नातश्च अस्नातदर्शन:।" बालरोग.
a. अतिकिलक b. चर्मदल c. आमदोष d. जतुमणि

32. शारंगधर नुसार 17 वर्ष के व्यक्ती के लिए औषधी मात्रा.
a. 15 माशा b. 16 माशा c. 17 माशा d. 18 माशा

33. कूर्च संख्या (सुश्रुत)
a. 2 b. 4 c. 6 d. 42

34. काश्यपानुसार दन्तोद्भेद समयी भोजन मात्रा.
a. 1/3 b. 1/8 c. 1/4 d. 1/2

35. काश्यपानुसार रसोन विपाक
a. मधुर b. कटु c. अम्ल d. वर्णित नही

36. महानील गुटिका रोगाधिकार.
a. शुध्द शुक्र b. क्षतशुक्र
c. सिराशुक्र d. अक्षिपाकात्यय जन्यशुक्र

37. चरक ने तक्रारिष्ट प्रयोग बताया है।
a. अतिस्निग्ध स्तन्य चि. b. दुर्गन्धित स्तन्य चि.
c. अतिपिच्छील स्तन्य चि. d. गुरूस्तन्य चि.

38. श्वेतपिच्छिलवाहिनी A/c अष्टांग हृदय – योनिव्यापद.
a. परिप्लुता b. उपप्लुता c. कफज d. सन्निपातिक

39. सुश्रुतानुसार असाध्य योनिव्यापद.
a. सूचीवक्रा b. प्रस्त्रंसिनी c. वन्ध्या d.अतिचरणा

40. अपत्याणा मूलं नार्य: परं नृणाम्।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. डल्हण

41. उष्णवीर्य हिमस्पर्श:।
a. मधुर रस b. अम्लरस c. लवणरस d.कटूरस

42. वामिनी योनिव्यापद सुश्रुतानुसार दोष.
a. वात b. पित्त c. कफ d. वात पित्त कफ

43. कुमारशिरा भरद्वाज नुसार रस संख्या.
a. 1 b. 5 c. असंख्य d. 4

44. पंचामृत मे द्रव्य नही a. गुडुची
b. गोक्षुर c. सारिवा d. शतावरी

45. छिन्नश्वास मे दोष.
a. वात b. कफ c. वात कफ d. पित्त कफ

46. सिराव्यध योग्य आयू.
a. 12-60 वर्षे b. 16-60 वर्षे
c. 16-70 वर्षे d. 12-70 वर्षे

47. चरक नुसार अलसक कुष्ठमे दोष
a. वात पित्त b. पित्त कफ c. वात कफ d. पित्त

48. अगस्त्य हरितकी मात्रा (चरक)
a.1 हरितकी b. 2 हरितकी c. 3 हरितकी d. 4 हरितकी

49. चरक के नुसार ताम्र शिलाजतु रस.
a. कटु b. तिक्त c. कटु तिक्त d. लवण तिक्त

50. प्राणवायू दुष्टि में औषध सेवन काल.
a. सग्रास b. प्राग्भक्त
c. प्रात: पश्चातभक्त d. सायंपश्चातभक्त

51. चित्त क्लेश है।
a. अहिंसा b. अभिनिवेष c. Both d. तप

52. चरक के नुसार अनागत गर्भ चिकित्सा.
a. धान्यकुट्टन b. दारूणकर्म c. जृंभा d. All

53. भगन्दर मे दूष्य.
a. रक्त , मांस b. रक्त, मेद c. मांस, मेद d. रक्त, मांस,मेद

54. इंद्रियो को अहंकारिक माना है।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. वैशेषिक

55. Daily requirement of protein.
a. 1 mg / kg / day b. 5 mg / kg / day
c. 1 gm / kg / day d. 5 gm / kg / day

56. PH of saliva is
a. 3 - 4 b. 4 - 5 c. 5 - 6 d. 6 - 7

57. Winging of scapula is due to paralysis of
a. Supraspinatus b. Subscapularis
c. Boxer muscle d. Brachialis

58. चरक के नुसार वायू महाभूत का मुख्य गुण
a. रूक्ष b. लघु c. चल d. खर

59. मिश्रक वर्ग वर्णन.
a. राजनिघण्टू b. राजवल्लभनिघण्टू
c. प्रियनिघण्टू d. भावप्रकाशनिघण्टू

60. तुण्डीकेरी आकार का अर्श.
a. वातज b. पित्तज c. कफज d. रक्तज

61. "जाम्बवास्थिनिभ" शुकदोष.
a. ग्रथित b. कुम्भिका c. पुष्करिका d. मृदित

62. निरूज (वेदना नही)
a.मषक, व्यंग b. न्यच्छ, तिलकालक
c. अजगल्लीका d. All

63. शर्करार्बुद मे दोष.
a. वात, रक्त, मेद b. कफ, रक्त, वात
c. कफ, वात, मेद d. रक्त, कफ, मेद

64. अपची मे सिरावेध स्थान,इन्द्रबस्ति मर्म के ----
a. 2 अंगुल उपर b. 2 अंगुल नीचे
c. 4 अंगुल उपर d. 4 अंगुल नीचे

65. तिर्यगयोनि, अयोनी, दुष्टयोनी स्त्री के साथ मैथुन करने से
a. फिरंग b. उपदंश
c. बलक्षय d. शीघ्र शुक्राश्मरी उत्पत्ती

66. सुश्रुत के नुसार असाध्य मुखरोग संख्या...
a. 15 b. 17 c. 19 d. 21

67. इन्द्रियार्थेषू अस्मप्राप्तिलक्षण.
a. निद्रा b. तन्द्रा c. सद्यप्राणहर मर्माघात d. b & c

68. पिण्डब्रह्माण्डन्याय सम्बंधित है
a.फारसी संस्कृती b. यूनान संस्कृती
c. रोम संस्कृती d. अरब संस्कृती

69. 'अग्निनाश' लक्षण मिलता है।
a. रसक्षय b. रक्तक्षय c. रक्तवृध्दि d. रसवृध्दि

70. महास्फिक् लक्षण मिलता है।
a. रक्तसार b. मेदसार c. मज्जासार d. शुक्रसार

71. मेद धातू का पर्याय है।
a. गौतम b. कौशिक c. विश्वामित्र d. वशिष्ठ

72. मध्यमा वाणी उत्पत्ति का स्थान.
a. कुक्षि b. उर: c. कण्ठ d. नाभि

73. ---- संहिता में उपधातूका वर्णन नही है।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. भावप्रकाश

74. वायू कुपित होने से पीनस लक्षण निर्माण होता है।
a. प्राणवायू b. उदानवायू
c. Both a+b d. व्यानवायू

75. एक दिन में श्वसन संख्या..
a. 19600 b. 18600 c. 20600 d. 21600

76. 1. एकनेत्रशोफ a. पूतना
2. एकनयनस्त्राव b. शुष्करेवती
3. स्वपति सुखं दिवा न रात्रो c. नैगमेष
4. केशशात d. स्कन्द
a.c,a,d,b b. b,d,c,a c. c,d,a,b d.c,d,b,a

77. 1. मज्जा a. सात्म्यज
2. चिन्ता b. आत्म्यज
3. आयु c. मातृज
4. अलौल्य d. रसज
a.b,c,d,a b.c,b,d,a c.c,b,a,d d. d,a,b,c

78. अष्टांगसंग्रह के नुसार स्त्री – पुरूष– विवाह वय.
a. 25x12 वर्षे b. 21x12 वर्षे
c. 21x16 वर्षे d. 25x16 वर्षे

79. वृष्य है। a. पादप्रक्षालन b.पादाभ्यंग c.दंडधारण d.

80. सुश्रुत के नुसार 16 वर्ष के लिऐ आस्थापन द्रव्य प्रमाण.
a. 2 प्रसृत b. 4 प्रसृत c. 6 प्रसृत d. 8 प्रसृत

81. "नात कष्टतरी रोगो यथा---- सम्प्रकिर्तितम्।"
a. ज्वर b. कुष्ठ c. मूढगर्भ d. यक्ष्मा

82. डॉ. कुलकर्णी के नुसार वराह पुट के लिए उपल संख्या...
a. 50 - 60 b. 100 c. 150 d. 1000

83. निर्गंध व निराग्नि मूर्च्छना of पारद.
a. मुग्धरस b. सप्तशाली वटी
c. Both a +b d. मलसिन्दूर

84. स्वर्ण व रजत मारणार्थ पुट दे ।
a. वराहपुट b. गजपुट c. कुक्कुटपुट d. महापुट

85. पारद का अपेक्षित घनत्व --
a. 12.59 b. 13.6 c. 35.87 d. 1.36

86. मृत्युंजय रस है।
a. कूपीपक्व रसायन b. खरलीय रसायन
c.पर्पटी रसायन d. पोट्टली रसायन

87. ''प्रतापसिंह ने'' दैत्येन्द्र रस कहा है।
a. Coralline ore b. Still ore c. Liver ore d. Brickore

88. मंगोलीयन वंशमे शिर:कपालास्थि अनुपात (cephalic index)
a. 70-70.4 b. 75 - 80 c. 80-85 d. 86 - 91

89. 'स्याद्वाद' दर्शनसे संबंधीत है।
a. बौध्द b. जैन c. वेदान्त d. पूर्वमिमांसा

90. पुरूष व स्त्री व्याख्या.
a.IPC10 b.IPC 44 c. IPC 53 d. IPC 319

91. उदरशूल, आमवात व पक्षाघात उपयुक्त मिटटी प्रकार (लेपार्थ)
a. पीत b. श्वेत c. काली d. लाल

92. 'प्राकृतिक जीवन की ओर' पुस्तक के लेखक है।
a.एडॉल्फ जस्ट b. व्हेन पॅक्सली
c. प्रिंसनिट्झ d. रमानाथद्विवेदि

93. आसन कफनाशक है।
a. वज्रासन b. कुक्कुटासन c. सर्वांगासन d. पद्मासन

94. हठयोगप्रदीपीका के नुसार उज्जायी प्राणायाम् दोषघ्नता.
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोष

95. हिरण्यगर्भ संज्ञा किस को दि है।
a. पतंजली b. कपिलमूनी c. जैमिनी d. वात्स्यायन

96. भारतमे पहिली पंचवार्षिक योजना कब शुरू हुई ।
a. 1948 b. 1949 c. 1950 d. 1951

97. वाग्भट के नुसार रसांजन प्रयोग करे
a. 5 दिनमे 1 बार b. 7 दिनमे 1 बार
c. 5-8 दिनमे 1 बार d. None

98. आहारविधिविशेषायतने संख्या...
a. 5 b. 6 c. 7 d. 8

99. सुश्रुत के नुसार तिक्त रस .... मे श्रेष्ठ है।
a. पटोल b. वार्ताक c. Both a + b d. शर्करा

100. सुश्रुत के नुसार आनूप मांसवर्ग संख्या...
a. 3 b. 5 c. 8 d. 16

*****

Model Question Paper VI

1. क्रमेणापचिता दोषां: क्रमेणोपचिता गुण: ।
a. च. सु. 5 b. च. सु. 6 c. च. सु. 7 d. च. सु. 8

2. अध्यात्म्य द्रव्य गुण संग्रह में समावेश नही है ।
a. मन b. मन के कर्म c. मन के अर्थ d. बूद्धी

3. द्विदोषज व्याधि होती है । चरक सु. 11/17
a. कृच्छ्रसाध्य b. याप्य
c. प्रत्याख्येय d. both a & b

4. पदार्थ के प्रकार है ।
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

5. स्वेद द्वन्द्व नही है ।
a. सग्नि - निरग्नि b. रूक्ष-स्निग्ध
c. एकांग - सर्वांग d. ताप-उष्म

6. हृदयोपसरणमग्डग्रहो है । चरक सु. 15/13
a. वमन योग अतियोग निमित्त उपद्रव c. वमन व्यापद
b. वमनअतियोग लक्षण d. a + c

7. चय, प्रकोप, प्रशम दोष की गती है । चरक सु. 17/15
a. कालकृत b. प्राकृत c. वैकृत d. a + b

8. क्षिप्रोत्थानप्रशमो भवति ।
a. वातजशोथ b. कफजशोथ c. पित्तज शोथ d. a + c

9. वातपित्त कफ द्वेष आयास: ।
a. छर्दी b. तृष्णा c. शोष d. None

10. निम्नमें वातज नानात्मज व्याधि नही है ।
a. तम b. उरूस्तंभ c. तिमिर d. None

11. उर्ध्ववात का उल्लेख किया है ।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None

12. स्वभाववाद दिया ।
a. हिरण्याक्ष b. वार्योविद c. भारद्वाज d. भद्रकाप्य

13. ..... रोगवर्धनानां श्रेष्ठं
a. अयथाबलं आरम्भ b. शोक c. विषाद d. दौर्मनस्य

14. वायू + पृथ्वी
a. मधुर b. कषाय c. लवण d. कटू

15. अतस्त्रिविद्या व्याधय: प्रादुर्भव:
a. वायव्याश्च सौम्या: आग्नेया: b. सौम्या: आग्नेया: वायव्यश्च
c. आग्नेया: सौम्या: वायव्याश्च d. None

16. ज्वर के कारण है ।
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

17. शोषस्यायतनानि है ।
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

18. ..... पूनर्मनोबुद्धी संज्ञाज्ञान स्मृति भक्ती शील चेष्टा चाराविभ्रम विद्यात् ।
a. अपस्मार b. उन्माद c. अतत्वाभिनिवेष d. मदात्यय

19. अधिक मात्रा में सेवन नही करना चाहिए ।
a. पिप्पली b. लवण c. क्षार d. All

20. मात्रापूर्वक और पथ्य आहार भी किसके कारण जीर्ण नही होता.
a. प्रजागरण b. दु:खशय्या c. चिन्ता d. All

21. दोष प्रमाण विशेष ..... विशेषेण
a. उपशय-अनुपशय b. अपचार c. काल d. अरिष्टदर्शन

22. ..... वाहिनी दूष्यन्ति विरूद्धानां च सेवनात ।
a. रस b. रक्त c. मांस d. मज्जा

23. ..... नाम निश्चय।
a. प्रतिज्ञा b. उपालम्भ c. जिज्ञासा d. व्यवसायो

24. दु:ख का कारण है ।
a. धी विभ्रंश b. स्मृति विभ्रंश c. धृति विभ्रंश d. All

25. शारंगधरानुसार वमन व विरेचन औषधी कौनसी ऋतूमे संग्रहित करनी चाहिए
a. शरद b. वसंत c. ग्रीष्म d. वर्षा

26. लेखन बृंहण तथा पाचन शमन के लिए औषधी कब देनी चाहिए ।
a. किंचित सुर्योदये b. दिवाभोजन समयी
c. सायं भोजन समयी d. निशी

27. यमदंष्ट्रा काल कितने दिन का होता है ।
a. 10 b. 12 c. 14 d. 16

28. निम्नमें से कौनसा द्रव्य सुक्ष्म है । (शारंगधर)
a. अश्वगंधा b. कपिकच्छू c. एरण्ड d. वचा

29. स्थुला त्वक् की मोटाई है ।
a. 1/18 b. 1/16 c. 1/5 d. None

30. जलवाही शिरामूलं तृष्णाजनक
a. प्लीहा b. यकृत c. वृषण d. क्लोम
31. शारंगधरानुसार 2 साल के बालक को औषधी मात्रा
a. 1 माशा b. 2 माशा c. 3 माशा d. 4 माशा
32. शारंगधरानुसार बाल रोग कितने प्रकार है।
a. 11 b. 22 c. 33 d. 44
33. शारंगधर नुसार मन्थ किस का भेद है।
a. हिम का b. फाण्ट का c. क्वाथ का d. स्वरस का
34. योगराज गुग्गुल का मुषक विष में अनुपान है।
a. पाटला क्वाथ b. दारूहरिद्रा क्वाथ
c. गोमुत्र d. पिप्पली क्वाथ
35. शतावरी व सैधव चूर्ण की स्नेह बस्ति के लिए हीनमात्रा
a. 1 माशा b. 2 माशा c. 3 माशा d. 4 माशा
36. शारंगधरानुसार धुम के प्रकार है।
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6
37. अस्थिगत प्रतिश्याय असाध्य किसने बताया ?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. योगरत्नाकर
38. नाडी का पर्याय है।
a. धमनी b. धरा c. धरणी d. All
39. पित्त विकृती में तैलबिंदू का आकार
a. सर्पाकार b. छत्राकार c. मुक्ताकार d. None
40. 1 पल = ... बद्ध और ..... गुंजा.
a. 6, 12 b. 12, 6 c. 6,3 d. 3, 6
41. योगरत्नाकर के मत से रक्तगत ज्वरमें चिकित्सा
a. रसशुद्धी b. रक्तमोक्षण c. विरेचन d. लेप संशमन
42. योगरत्नाकर के अनुसार क्षय का अनुपान
a. गिरिजतू b. सुवर्ण c. मांसरस d. महिष्य
43. चरक के अनुसार पित्त का गुण
a. अम्ल b. कटू c. both d. कषाय
44. निरंतर सेवनीय आहार द्रव्य है।
a. हरितकी b. बिभितक c. आमलक d. All
45. ईतेः प्रशमनं
a. पादत्राण धारण b. छत्र धारण
c. दण्डधारण d. रत्नआभूषण धारण
46. उपशेते यदौचित्याद सात्म्यं तद् उच्यते।
a. देश b. रोग c. ओक d. ऋतू
47. भग्न में कौनसा रस अपथ्य है।
a. अम्ल b. लवण c. कटू d. All
48. पक्षाघात की चिकित्सा करनी चाहिए
a. 1 ते 2 मास b. 1 ते 2 वर्ष c. 3 ते 4 मास d. 6 ते 8 मास
49. अर्शयंत्र का परिणाह स्त्रीयों में।
a. 4 अंगुल b. 5 अंगुल c. 6 अंगुल d. 8 अंगुल
50. मुढगर्भ मे निषेध है।
a. मण्डलाग्र b. वृद्धीपत्र c. अंगुली शस्त्र d. शंकुयंत्र
51. स्थाननाम आकृतीवीर्य भेद से सोम के प्रकार है।
a. 15 b. 18 c. 20 d. 24
52. सुश्रुत मत से सबसे प्रथम विरेचन में बाहर निकलता है।
a. पुरिष b. पित्त c. मुत्र d. औषध
53. स्नैहिक धूम
a. मुख से b. घ्राण से c. Both d. None
54. प्रतिसारण का प्रकार नही है।
a. क्षौद्र b. कल्क c. रसक्रिया d.None
55. पर्वणी का स्थान
a. वर्त्मशुक्ल संधि b. शुक्लकृष्ण संधि
c. कनिनक संधि d. अंपाग संधि
56. कृमीग्रंथी है।
a. छेद्य b. भेद्य c. लेख्य d. व्यध्य
57. उपनाह है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज
58. ऱ्हस्वजाडय है।
a. वातज असाध्य b. पित्तज असाध्य
c. कफज असाध्य d. कफज साध्य
59. शुक्लगत रोग में तर्पण धारण काल (मात्रा)
a. 100 b. 300 c. 500 d. 1000
60. सामान्यं कर्णरोगेषु ..... रसायनम्।
a. कर्णपुरणं b. नस्यं c. घृतपानं d. बस्ति
61. सुर्यावर्त दोषदूष्टी (चरक)
a. रक्त + वात b. पित्त + वात
c. त्रिदोषज d. पित्त + रक्त
62. सवात उद्गिरेद बीजं।
a. प्रस्त्रंसिनी b. पुत्रघ्नी c. वामिनी d. लोहितक्षरा
63. रसोन कल्क वर्णित है।
a. वातरोग b. विषमज्वर c. आमवात d. श्वास
64. सुश्रुत के अनुसार क्रमशः पुरिषज, रक्तज और कफज कृमी संख्या
a. 7, 7, 6 b. 7, 8, 6 c. 6, 7, 8 d. 8, 7, 6
65. अपरिमिताश्च पदार्थ :
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. शारंगधर
66. मूर्च्छा के प्रकार (सुश्रुत)
a. 4 b. 6 c. 8 d. 7
67. उत्पाटन, कुट्टन, मन्थन को शस्त्रकर्म में समाविष्ट किया
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. All
68. इष-उर्ज है।
a. वर्षा b. शरद c. हेमन्त d. ग्रीष्म
69. दिन के पूर्व भाग में ..... ऋतू के लक्षण होते है।
a. वसन्त b. ग्रीष्म c. वर्षा d. शिशिर
70. नाडीयंत्र की संख्या
a. 02 b. 20 c. 28 d. 12
71. एषण है।
a. शस्त्रकर्म b. यंत्रकर्म c. both d. None
72. एषणी की लम्बाई है।
a. 6 अंगुल b. 8 अंगुल
c. 10 अंगुल d. 2 या 3 अंगुल
73. क्षार का निर्माण कोनसी ऋतू में करना चाहिए।
a. ग्रीष्म b. शरद c. वर्षा d. वसन्त
74. अष्टांग संग्रह मे दग्ध (अग्निकर्म) के प्रकार बताये है।
a. 4 b. 5 c. 6 d. 7

75. त्वचा
a. गु
76. जलौक
a. य
77. कांजी
a. वा
78. क्षीरबा
a. अ
79. कौनसी
a. लो
80. निम्न मे
a. गण
81. नेत्र के
a. पंच
82. व्रण की
a. 4
83. कालकृ
a. का
c. स्व
84. षडीद्रिय
a. कदू
85. कलुषित
a. शैव
86. सबसे गु
a. पूष्प
87. प्रमेह कि
a. व्या
c. समा
88. सिर्फ वात
a. सुख
89. कफाश्मर
a. भल्ल
c. मधूव
90. वातावरो
a. गुद
91. असाध्य
a. शोणि
c. त्वक
92. अधिजिव्
a. जिव्ह
93. अंहकार व
a. ब्रम्हा
94. नितम्बास
a. वलय
95. अधिपती
a. मांस
96. अष्टांग संग्र
a. 2

75. त्वचा के दग्ध में प्रयुक्त उपकरण
a. गुड़ b. हस्तिदन्त c. जाम्बवौष्ठ d. शलाका
76. जलौका के क्षेत्र है।
a. यवन b. पाण्डेय c. सह्य d. All
77. कांजी के समान वर्ण किस दोष से दूषित रक्त में मिलता है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज
78. क्षीरबस्ति चिकित्सा बतायी है।
a. आर्तवक्षय b. स्तन्यक्षय c. गर्भक्षय d. स्वेदक्षय
79. कौनसी सिरापर वेधन होने से वेदना, ज्वर, ग्रन्थि उत्पन्न होते है।
a. लोहितीका b. मर्मरीका c. कालीका d. All
80. निम्न मे से असाध्य कर्णसंधान है।
a. गण्डकर्ण b. व्यायोजिम c. हिनकर्ण d. वल्लुरक
81. नेत्र के लिए कौनसा बन्ध बताया है।
a. पंचागी b. चीन c. खट्वा d. मण्डल
82. व्रण की आकृतीया है।
a. 4 b. 8 c. 16 d. 12
83. कालकृत और अकालकृत व्याधि किस के भेद है।
a. कालबलप्रवृत b. दैवबलप्रवृत्त
c. स्वभावबल प्रवृत्त d. जन्मबलप्रवृत
84. षडीद्रिंय प्रसादन कौनसे रस का गुण है।
a. कदू b. तिक्त c. कषाय d. मधुर
85. कलुषित द्रव्य को शुद्ध करने के लिए बताया है।
a. शैवालमुल b. वस्त्र c. बिस ग्रंथी d. All
86. सबसे गुरू है
a. पूष्प b. पत्र c. फल d. नाल
87. प्रमेह किसके प्रकोप से उत्पन्न होता है।
a. व्यान अपान b. व्यान समान
c. समान अपान d. प्राण समान
88. सिर्फ वातप्रकोप से हुआ पक्षाघात है।
a. सुखसाध्य b. कृच्छ्रसाध्य c. याप्य d. असाध्य
89. कफाश्मरी होता है।
a. भल्लातक के समान b. कदम्बपूष्प के समान
c. मधूकफूल के समान d. None
90. वातावरोध लक्षण कौनसे स्थान मे विद्रधी का है।
a. गुद b. कुक्षी c. नाभी d. स्त्रोत
91. असाध्य शुकदोष है।
a. शोणितार्बुद b. विद्रधी
c. त्वकपाक d. अवमन्थ
92. अधिजिव्हा है।
a. जिव्हागत b. तालुगत c. कण्ठगत d. सर्वसर
93. अंहकार की देवता है।
a. ब्रम्हा b. ईश्वर c. इन्द्र d. विष्णु
94. नितम्बास्थि.... अस्थि का प्रकार है।
a. वलय b. तरूण c. कपाल d. नलक
95. अधिपती मर्म है।
a. मांस b. सिरा c. स्नायू d. संधि
96. अष्टांग संग्रह में पिच्चित व्रण के प्रकार बताये है।
a. 2 b. 4 c. 5 d. 8
97. निम्न मे से किस अग्नि को ग्रहणी दोष कहते है।
a. मन्द b. विषम c. तीक्ष्ण d. All
98. नवायस चूर्ण अनुपान
a. मधु b. गोमुत्र c. सर्पि d. A+C
99. सव्योष तक्र
a. प्लीहोदर b. जलोदर c. कफोदर d. वातोदर
100. रक्तार्श में वात का अनुबंध होने पर चिकित्सा
a. रूक्ष शीत b. स्निग्ध शीत c. रूक्ष उष्ण d. स्निग्ध उष्ण

Model Question Paper VII

01. हिक्का पीतेच भुक्ते च शमं याति।
a. क्षुद्रा b. अन्नजा c. व्यपेता d. गंभीरा
02. कण्टकारी घृत का वर्णन किस कास की चिकित्सा में आया है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. a+c
03. समत्रिदोषज अतिसार में सबसे पहले चिकित्सा करनी चाहिए।
a. वात b. पित्त c. कफ d. None
04. अतिप्रवृत छर्दी में कौनसे कर्म के अतियोग जैसी चि. करनी चाहिए।
a. वमन b. विरेचन c. बस्ति d. नस्य
05. निम्न में से किसव्याधि में जलपान हितकर नही है या अल्प लेना चाहिए।
a. हिक्का b. श्वास c. तृष्णा d. अतिसार
06. षष्टयांग कहा है।
a. गन्धहस्तिनामाऽगद b. क्षारागद
c. मृतसंजिवन अगद d. महागन्धहस्तिनामागद
07. निम्न में से किसका स्थान हृदय बताया है।
a. रस b. वातादीमार्ग c. प्रधान ओज d. All
08. व्रण गन्ध नही है।
a. सर्पि b. वसा c. तैल d. मज्जा
09. कृच्छ्रतमं हि कृच्छ्रम्। किस मुत्रकृच्छ के बारेमें कहा है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज
10. जब वात, पित्त और कफसे आवृत्त होगा तब प्रथम किसकी चि. करनी चाहिए।
a. कफ b. पित्त c. वात d. None
11. रूग्दाह शूल तोद रहने पर किससे रक्तमोक्षण करना चाहिए।
a. जलौका b. श्रृंग c. तुम्बी d. प्रच्छान
12. अक्तां लवण तैलेन साश्म प्रस्तर संकरै।
a. च चि. 1 b. च चि. 18 c. च चि. 30 d. च चि. 26
13. पिण्डफला के योग वर्णित है।
a. 133 b. 45 c. 60 d. 39
14. स्त्रीपुरूष भेद वर्णन किया है।
a. शक्रो b. वेणी c. कोशातकी d. शम्पाक
15. दूषीविष और मधुमेहमें योग वर्णित है।
a. नन्द b. सुवहा c. बहुफेनरसा d. क्ष्वेड
16. सुनिरूढ लिंग नही है।
a. अग्नि वृद्धी b. आशय लाघव
c. इन्द्रीय प्रसाद d. रोग शांन्ती
17. 14 वर्ष रोगी के लिए बस्ति नेत्र लम्बाई
a. 8 अगुंल b. 9 अगुंल c. 10 अगुंल d. 7 अगुंल

18. स्नेहबस्ति के व्यापद है ।
a. 8 b. 10 c. 12 d. 6
19. उदररोग नाशक सर्वश्रेष्ठ द्रव्य है ।
a. सुधा b. त्रिभण्डी c. कृतवेधन d. एरण्ड
20. सर्वआमय शान्ती के लिए किसका समयोग होना चाहिए
a. अर्थ b. काल c. ज्ञान d. All
21. पितृज अवयव है ।
a. सिरा b. स्नायू c. धमनी d. All
22. चेतना गर्भ का ..... धातू है ।
a. 1th b. 5th c. 6th d. धातू नही है
23. शरिरवृद्धीकर भाव नही है ।
a. यौवन b. कालयोग c. अविघात d. स्वभावसंसिद्धि
24. कृष्णरक्तानी स्थूलमुलानि किस त्वचा के संदर्भ में है ।
a. 1th b. 6th c. 4th d. 5th
25. समसर्वधातूप्राय: ..... वर्णकर: ।
a. अवदात b. श्याम c. कृष्ण d. गौर
26. सुतिकागार में सबसे पहले प्रवेश ?
a. ब्राम्हण b. गो c. अग्नि d. जल
27. क्रिडानक होने चाहिए ।
a. विचित्राणि b. घोषवन्तय c. अगुरूणि d. All
28. निम्न मे से निष्फल स्वप्न नही है ।
a. दोषज b. कल्पित c. पार्थित d. अनुभुत
29. प्रभा कितनी प्रकार है ।
a. 5 b. 7 c. 9 d. 11
30. आमलक घृत का प्रयोग कितने वर्ष करने से मनूष्य 100 वर्ष युवावस्था में रहता है ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
31. वृष्य पूपलिका का वर्णन वाजीकरण के कोनसे पाद में आया है ।
a. 2 b. 3 c. 4 d. All
32. अ. सं. के अनुसार चतुर्थक ज्वरनाशक क्वाथ में कौनसा द्रव्य नही है ।
a. क्षौद्र b. धात्री c. अभया d. मुस्ता
33. जीर्ण ज्वराणां सर्वेषां ..... प्रशमन परम् । च.चि. 3
a. घृतपान b. पय c. वसा d. मज्जा
34. गुरू: कठिन संस्थानो गुढमांसान्तराश्रय: । किस गुल्म के लक्षण है ।
a. अपक्व b. सन्निपातीक c. रक्तज d. कफज
35. प्रमेह में पथ्य मांस
a. विष्कीर b. जांगल c. प्रतुद d. All
36. यवानीषाडव रोगाधिकार
a. क्षतक्षीण b. कास c. गुल्म d. राजयक्ष्मा
37. विगत उन्माद लक्षण है ।
a. बूद्धी प्रसन्नता b. आत्मा प्रसन्नता
c. मन प्रसन्नता d. All
38. कौन से अपस्मार में प्राय: रसायन चिकित्सा कि जाती है ।
a. वातज b. कफज c. सन्निपातज d. None
39. क्षतक्षीण में किस व्याधि के समान पथ्य पालन करना चाहिए ।
a. यक्ष्मा b. कास c. रक्तपित्त d. All
40. त्रिफलाद्यरिष्ट रोगाधिकार
a. अर्श b. पाण्डू c. श्वयथू d. उदर
41. कामक्रोधात् वेगवहा: यह शांरगधर सूत्र ..... परिप्रेक्ष्य में है ।
a. धमनी b. शिरा c. नाडी d. All true
42. उन्मार्गी भगन्दर ..... है ।
a. वातिक b. पित्तज c. कफज d. आगन्तुज
43. उपनिषद काल
a. 500 BC b. 500 - 1000 BC
c. 1000 - 1500 BC d. 1000 - 2000 BC
44. त्रयोदश बस्तिरोगों का वर्णन चरकसंहिता के ....अध्याय में किया गया है ।
a. चिकित्सा 26 b. सिद्धि 9 c. निदान 4 d. विमान 7
45. 'अन्नद्रव्यरूचिकराणाम्' ..... है ।
a. मधुररस b. अम्लरस c. लवणरस d. कटुरस
46. 'अश्म' ..... है ।
a. यन्त्र b. शस्त्र c. उपयन्त्र d. उपशस्त्र
47. 'मयूरचंन्द्रिकाच्छाय:' पारद के ..... भेद के सन्दर्भ में कहा गया है ।
a. रस b. रसेन्द्र c. सूत d. मिश्रक
48. 'धमनीभि: श्रिता: दोष: हृदयं पीडयन्ति हि' ..... के सन्दर्भ में है ।
a. उन्माद b. योषापस्मार c. अतत्वाभिनिवेश d. अपस्मार
49. 'योग' ..... का प्रवर्तक है ।
a. धर्म b. अर्थ c. काम d. मोक्ष
50. औषधी योग में ताम्र नही है ।
a. मयूरपिच्छ भस्म b. पुनर्नवामण्डूर
c. आरोग्यवर्धिनी वटी d. हृदयार्णव रस
51.—— मास में पैदा हुआ शिशु प्राय: जीवित नहीं रहता है ।
a. सप्तम b. अष्टम c. नवम d. दशम
52. ने इन्द्रियों को भौतिक माना है ।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. All true
53. --------प्रकार के अभ्रक सेवन से अशमरी उत्पन्न होती है ।
a. पिन्याकाभ्रक b. मण्डूकाभ्रक c. नागाभ्रक d. वज्राभ्रक
54. रत्न की भस्म के लिए गजपुट का प्रयोग करते है ।
a. मुक्ता b. प्रवाल c. पन्ना d. All true
55. व्याधि के लक्षण नहीं होते है ।
a. रक्तपित्त b. वातरक्त c. उन्माद d. राजयक्ष्मा
56. ..... योग्य है ।
a. विशेष सर्वभावानां सर्वदा वृद्धिकारणम्
b. सर्वदा सर्वभावानां सामान्य वृद्धिकारणम्
c. सर्वदा सर्वभावानां विशेष वृद्धिकारणम् d. Not
57. ..... का मल नही होता है ।
a. मेद b. मज्जा c. अस्थि d. शुक्र
58. ..... में गंधक प्रचुरता से पाया जाता है ।
a. निम्ब b. सर्पगन्धा c. एरण्ड d. बला
59. ..... में पूर्व कर्म नहीं किया जाता है ।
a. नैत्रशल्यकर्म b. नासाशल्यकर्म
c. आपातकालीन शल्यकर्म d. दन्तशल्यकर्म में
60. आहारपरिणामकर भाव ..... है ।
a. काल b. ऊष्मा c. क्लेद d. All true
61. आम्रगंधिहरिद्रा का वानस्पतिक नाम ..... है ।
a. Curcuma longa b.Curcuma aromaticum
c. Curcuma amada d. कोई नही

62. आमय
a. अ
63. ओज
a. म
64. आरोग
a. ज
65. आर्तव
a. यो
66. अभ्रक
a. 4
67. अहेतु
a. 2
68. अहित
a. जी
69. लूतासं
a. 6
70. अरिष्ट
a. खा
71. अरिष्टस
a.तमो
c. रात्रि
72. अजादु
a. गुरु
73. अर्जुन
a. सं
74. अम्लपि
a.बाल्य
75 अनुभ
a. प्रत्य
76. अर्थापत्ति
a. प्रभ
77. अथर्ववे
a. गोप
78. असाध्य
a. शार
79. अश्मरी
a. बस्त
c. वात
80. अतत्वा
a. उन्म
c. शिरे
81. अष्टांगहृ
a. आयु
c. वात
82. अष्टाध्या
a. पतंज
83. B.A.L.
a. वत्स

62. आमय पर्याय ..... है।
a. आमरस b. आमलकी c. व्याधि d. सम्प्राप्ति का
63. ओज के विरूद्ध गुणधर्मी ..... है।
a. मद्य b. विष c. दोनों d. दुग्ध
64. आरोग्यवर्धिनी का रोगाधिकार ..... है।
a. ज्वर b. पाण्डु c. कुष्ठ d. श्लीपद
65. आर्तव को अष्टम धातु ..... कहा है।
a. योगरत्नाकर b. भावामिश्र c. शारंगधर d. चरक ने
66. अभ्रक के कुल भेद .....है।
a. 4 b. 8 c. 16 d. 20
67. अहेतु के भेद ..... है।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
68. अहित शाक ..... है।
a. जीवन्ती b. पुनर्नवा c. सर्षप d. All true
69. लूतासंख्या है।
a. 6 b. 8 c. 16 d. None
70. अरिष्ट पर्याय ..... है।
a. खदिर b. निम्ब c. बाकुची d. हिंगु का
71. अरिष्टसूचक निद्रा ..... है।
a.तमोभवा b.श्लेष्मसमुद्भवा
c. रात्रिस्वभावजा d. All true
72. अजादुग्ध ..... है।
a. गुरू b. लघु c. गुरूतर d. तीक्ष्ण
73. अर्जुन रोग है।
a. संधिगत b. शुक्लगत c. दृष्टिगत d. सर्वगत
74. अम्लपित्त अधिकतर ..... वय में होता है।
a.बाल्यावस्था b.मध्यावस्था c.वृद्धावस्था d. शैशवावस्था
75 अनुभवजन्य ज्ञान कहलाता ..... है।
a. प्रत्यक्ष b. अनुमान c. बुद्धि d. स्मृति
76. अर्थापत्ति प्रमाण माना .....है।
a. प्रभाकरमीमांसक b. न्याय c. वैशेषिक d. सांख्य ने
77. अथर्ववेद का ब्राम्हण ..... है।
a. गोपथ b. ब्रह्मवेद c. दैवदर्श d. शतपथ
78. असाध्य व्रण होते ..... है।
a. शाखागत b. मांसगत c. मर्मगत d. अस्थिगत
79. अश्मरी का पूर्वरूप ..... है।
a. बस्तगन्धित्व b. मूत्रप्रतिघात
c. वातमूत्र पुरीषरोध d. All true
80. अतत्वाभिनिवेश का वर्णन ..... है।
a. उन्माद के साथ b. अपस्मार के साथ
c. शिरोरोग के साथ d. पृथक् अध्याय में
81. अष्टांगहृदय के प्रथम अध्याय का नाम ..... है।
a. आयुर्वेदावतरण b. आयुष्कामीय
c. वातव्याधि d. उपरोक्त में कोई नही
82. अष्टाध्यायी के रचयिता
a. पतंजलि b. पाणिनि c. बाणभट्ट d. कालिदास
83. B.A.L. ..... का प्रतिविष है।
a. वत्सनाभ b. कुचला c. फेनाश्म d. बेलाडोना का
84. बोलपर्पटी का वर्णन किया ..... है।
a. योगरत्नाकर b. यादवजी त्रिकमजी आचार्य
c. गोविन्ददास सेन d. भगवद्गोविन्दपाद ने
85. भद्रमुस्तादि क्वाथ का सेवन बच्चों में ..... रोग में किया जाता ह।
a. ज्वर b. ग्रहावेश c. शूल d. All
86. भगन्दर को महागद माना ..... है।
a. चरक b. काश्यप c. निमि d. सुश्रुत ने
87. बीजदोषज व्याधि ..... है।
a. अरजस्का b. अतिचरणा c. कर्णिनी d. सूचीमुखी
88. भल्लातक फल ..... है।
a. बृंहण b. लंघन c. एरण्ड मूल d. शतावरी
89. बैठे हुए सोना ..... है।
a. अभिष्यन्दी b. अनभिष्यन्दी c. रूक्ष d. स्निग्ध
90. बृहत पंचमूल वातशामक है इसके.....
a. तिक्त कषाय रस के कारण b. प्रभाव के कारण
c. उष्ण वीर्य के कारण d. विपाक के कारण
91. भुजस्तम्भ व्याधि .....हुई।
a. इन्द्र को b. नृप को c. नारद मुनि को d. भारद्वाज को
92. भय क्रोध और हर्ष का कारण ..... है।
a.साधक पित्त b. रंजक पित्त c. तर्पक कफ d. श्लेषक कफ
93. Biotite का वर्ण ..... है।
a. रक्त b. श्वेत c. कृष्ण d. नील
94. ब्राह्मी का योग ..... है।
a. शंखपुष्पीपानक b. सारस्वतारिष्ट
c. अमृतारिष्ट d. All true
95. चन्द्रभागी ..... है।
a. पुनर्वसु b. चरक c. सुश्रुत d. काश्यप
96. चन्दनबलालाक्षादि तैल का रोगाधिकार (योगरत्नाकर.
a. ज्वर b. कास c. श्वास d. वातव्याधि
97. चरक के अनुसार दु:ख का कारण ..... है।
a. अकर्मण्यता b. विरूद्धाहार c. उपधा d. All true
98. चरक के अनुसार महास्त्रोतस ..... स्त्रोतस का मूल है।
a. प्राणवह स्रोतस b. रक्तवह स्रोतस
c. रसवह स्रोतस d. अन्नवह स्रोतस
99. चरक के अनुसार प्रथम दो महाकषाय ..... है।
a. जीवनीय और बृंहणीय b. जीवनीय और हृद्य
c. जीवनीय और बल्य d. बृंहणीय और बल्य
100.चरक ने तामलकी को ..... स्कन्ध में रखा है।
a. मधुर b. तिक्त c. कटु d. कषाय

Model Question Paper VIII

01. मंडली सर्पदंशमे --- अगद (अ.हृ.उ. 36)
a. नाकूल्यादी b. हिमवान c. मेघनाद d. बिल्वाद्यागद
02. विषमिश्रीत अन्न - भृंगराजस्तु ---
a. स्वरवैकृत्य b. कूजति c. उद्विग्न क्रोशत d. मदविकृत
03. शुक्ती धौतवत स्राव --- स्थित व्रण.
a. अस्थी b. संधी c. मांस d. मेद

04. कॅसिटेराईट --- का खनीज है।
a. नाग b. वंग c. रजत d. यशद

05. संशमनीय कल्कमात्रा - कर्ष.
a. 2 b. 1 c. 1/2 d. 3

06. Shaking palsy in ---- विषाक्तता.
a. पारद b. Zn c. नाग d. O.P.P. poisioning

07. पुतीभवन प्रक्रिया प्रारभ होने के बाद सर्वप्रथम रंगपरिवर्तन Start From.
a. Groin region b. Illiac Fossa
c. Scapular region d. Gluteal region

08. "स्राव" लक्षण - due to बस्तीदोष ---
a. स्थुल b. छिन्न c. जालीक d. क्लिन्न

09. A/c वा. - वमन विरेचन व्यापद् ---
a. 10 b. 12 c. 15 d. None

10. स्राव ---
a. वमन विरेचन व्यापद् b. निरूह बस्ती व्यापद्
c. अनुवासन बस्ती व्यापद् d. None

11. सदातुर व्यक्तीस अनुवासन By.
a. निकूंभ तैल b. बलातैल c. त्रिवृत्ततैल d. अमृतातैल

12. संस्पर्शअसहोच्यते --- लक्षण.
a. चर्मकूष्ठ b. द्रदु c. शतारू d. चर्मदल

13. दाह लक्षण --- गतज्वर.
a. रस b. रक्त c. मांस d. मेद

14. A/c वा. तृतीयक ज्वर अधिष्ठान ---
a. रक्त b. मांसवह नाडी c. मेदोवह नाडी d. अस्थी

15. गुडुची आमलक मुस्ता --- विषमज्वर नाशक.
a. तृतीयक b. चतुर्थक c. सतत d. द्वितीयक

16. भल्लातक क्षीर रसायनमे - भल्लातक प्रयोग शुरुवात.
a. 8 भल्लातक b. 1 भल्लातक
c. 10 भल्लातक d. 5 भल्लातक

17. वर्धमान पिंप्पली रसायन मात्रा --- पिप्पली (चरक.
a. 6 b. 7 c. 7/5 d. 5

18. वाजीकरण तृतीय पाद योग ---
a. 12 b. 15 c. 8 d. None

19. वनस्पतिका गुरू भाग (For 'शाक')
a. फल b. पुष्प c. कन्द d. नाल

20. अर्धरात्रीसमयी ऋतु जैसे लक्षण मिलते है।
a. वर्षा b. शरद c. हेमन्त d. ग्रीष्म

21. स्त्रीयोमे श्रोणिगवाक्ष का आकार
a.Ovoid b.Triangular c.Hexagonal d. Patepalloid

22. Strechnine fatal dose.
a. 2-3 mg b. 6-10 mg c. 15-30 mg d. 4- gm

23. I[st] molar appears at (Permenant teeth.)
a. 6 - 7 year b. 5-6 year c. 4 - 5 year d. 3-4 year of age

24. जीवीत बालक छोड देना
a. IPC 318 b. IPC 371 c. IPC 369 d. IPC 320

25. Revolver से निकली गोली की गती
a. 600 - 800 feet / sec. b. 1000 feet /sec.
c. 1200 feet/sec. d. 100 - 200 feet /sec.

26. Scar associated with stab wound.
a. Linear b. Wide c. Elliptical d. Irregular

27. सोमल विष बाधा के लक्षण कितनी अवस्थां मे दिखते है।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

28. Lead acetate मारक मात्रा.
a. 5 drops b. 10 drops c. 15 drops d. 20 drops

29. Antidote of lead is.
a. HCl +trepsin b. EDTA
c. Atropine d. Ferrocynate

30. भंगा वृक्ष के स्त्री जाती के क्षुप का फुलोरा
a. भांग b. गांजा c. चरस d. हाशिश

31. HCl +Pepsin is antidote of.
a. भांग b. भल्लातक c. गुंज्जा d. करवीर

32. दर्वीकर सर्पका विष.
a. वात प्रकोपक b. पित्त प्रकोपक
c. कफ प्रकोपक d. त्रिदोष प्रकोपक

33. लूतात्पत्ति इस ऋषी के स्वेदबिंदूसे हुई
a. विश्व मित्र b. वशिष्ठ c. मैत्रेय b. गौतम

34. कुंकुमादि अगद का अधिकार इस विष बाधा में है।
a. गलगोलिका b. शतपदी
c. विश्वंभराविष d. त्रिकण्टक

35. कोष्ठ-इष्टिका से उत्पन्न कीट.....
a. मन्दविष b. मध्यविष c. तीक्ष्णविष d. All

36. गर्भिणी सर्पीणीद्वारा दंश होने पर लक्षण
a. सरक्तमूत्रता b. पाण्डुमुखता
c. उपजिव्हिका d. अन्धत्व

37. माहिष द्विपी वर्णी सर्प.
a.ब्राह्मण b. क्षत्रीय c. वैश्य d. क्षुद्र

38. हृत्पीडा, मूर्च्छा व तीव्रदाह.
a. क्षीरविष b. धातूविष c. कन्दविष d. फलविष

39. बिडालपदक पर्याय
a. कर्ष b. कोल c. पल d. बिल्व

40. प्रमथ्या मे का जल प्रमाण.
a. 32 पट b. 8 पट c. 16 पट d. समानमात्रामे

41. तैलपाक सिध्दि लक्षण.
a. तन्तुमत्व b. फेनशान्ति c. फेनोद्गम d. वर्तिनिर्माण

42. विषघ्न लेप मात्रा.
a. 1/2 अंगुल b. 1/3 अंगुल c. 1/4 अंगुल d. 1/5 अंगुल

43. वारूणी मद्य निर्माणार्थ उपयुक्त.
a. द्राक्षा b. खर्जुर c. माक्षिक d. इक्षुरस

44. कल्क वातज व्याधीमे देने के लिए अनुपान
a. 3 पल b. 2 पल c. 1 पल d. 4 पल

45. आहार को महाभैषज्य किसने कहा।
a. चरक b. सुश्रुत c. वृध्दजीवक d. वाग्भट

46. अपत्यकारि षष्टिकादि गुटिका वर्णन.
a. वाजीकरण I[st] पाद b. IInd c. IIIrd d. IVth

47. शिलाजतु रसायन वर्णन. (रसायन अध्याय)
a. I[st] पाद b. IInd पाद c. IIIrd पाद d. IVth पाद

48. स्नुहीक्ष
a. गु
49. कायस
a. उ
50. अमृता
a. व
c. Bc
51. चरक
a. एण
52. द्राक्षास
a. आ
53. "कौशि
a. षड
c. प्रज
54. "समा
a. कु
c. धा
55. शोणित
a. कु
56. परिहार
a.पतंज
c. अ
57. शशिलेख
a. इन्द्
58. शारंगध
a. दी
c. आ
59. मधुकोष
a. 10
c. 12
60. अष्टांग
a. 16
61. चरकसं
a. कवि
c. भास
62. चरस प्रा
a. अहि
63. चक्षुष्य ए
a. साम
64. CO_2 नि
a. तैल
c. आस
65. दाडिम पु
a. अति
66. दर्दुर....
a. अभ्र
67. दीपिका
a. कर्ण

48. स्नुहीक्षीर घृत रोगाधिकार (चरक)
a. गुल्म b. उदर c. प्रमेह d. वातव्याधी
49. कायस्थादि वर्ति रोगाधिकार.
a. उन्माद b. अपस्मार c. राजयक्ष्मा d. ग्रहणी
50. अमृताद्य तैल रोगाधिकार.
a. वातव्याधी b. वातशोणित
c. Both d. विषचिकित्सा
51. चरक के नुसार पक्षी मांस मे श्रेष्ठ मासं.
a. एण b. गोमांस c. लावा d. काणकपोत
52. द्राक्षासव ----
a. आचिनोति b. दीपयन्ति c. अवधमति d. प्रीणयति
53. "कौशिक" आचार्य वाद वर्णन किया ।
a. षडधातुवाद b. मातृपितृवाद
c. प्रजापतिवाद d. रसवाद
54. "समानगुणाभ्यासे हि धातूनां वृध्दीकारणमिति".
a. कुश साकृत्यायन b. कुमारशिरा भरद्वाज
c. धामार्गव d. वायोर्विद
55. शोणितपित्तानियोगप्रशमनानां---- श्रेष्ठ.
a. कुटजत्वक् b. काश्मर्यफल c. गन्धप्रियंगू d. अनन्ता
56. परिहारवर्तिका टिका के लेखक...
a.पतंजली b. क्षीरस्वामिदत्त
c. आषाढवर्मा d. स्वामिकुमार
57. शशिलेखा टीका के लेखक....
a. इन्दू b. अरूणदत्त c. हेमाद्रि b. चन्द्रनन्दन
58. शारंगधर संहिता पर रूद्रभट्टकृत टिका है ।
a. दीपिका b. गूढार्थदीपिका
c. आयुर्वेद दीपिका d. जीवनप्रभा
59. मधुकोष टीकाकार का काल.
a. 10 वे शतक b. 11 वे शतक
c. 12 वे शतक d. 9 वे शतकं
60. अष्टांग संग्रह चिकित्सास्थानमे अध्याय.
a. 16 b. 20 c. 24 d. 22
61. चरकसंहिता के प्रथम अंग्रेजी अनुवादक है ।
a. कविराज उमेशचन्द्र b. अविनाश चन्द्र
c. भास्कर गोविन्द घाणेकर d. रामप्रसाद शर्मा
62. चरस प्राप्त ..... से होता है ।
a. अहिफेन b. हिंगु c. धत्तुर d. भंगा
63. चक्षुष्य एवं त्रिदोषनुत् ..... लवण है ।
a. सामुद्र b. सौवर्चल c. बिड d. सैन्धव
64. CO_2 निकलती है ।
a. तैल पाक b. पर्पटी निर्माण
c. आसव निर्माण d. क्वाथ निर्माण में
65. दाडिम पुटपाक स्वरस का प्रयोग ..... में होता है ।
a. अतिसार b. ज्वर c. प्रमेह d. रक्तपित्त
66. दर्दुर ..... का भेद है ।
a. अभ्रक b. हिंगुल c. खर्पर d. विमल का
67. दीपिका तैल का अधिकार ..... है ।
a. कर्ण रोग b. नासा रोग c. शिरोरोग d. मुख रोग
68. दुष्टपीनस ..... है ।
a. सुखसाध्य b. कृच्छ्रसाध्य c. याप्य d. अनुपक्रम्य
69. श्रीपर्णी पर्याय ..... है ।
a. बिल्व b. अग्निमंथ c. गम्भारी d. शालपर्णी का
70. एक एव .....
a. आमवात b. वातरक्त c. उरूस्तम्भ d. All true
71. एकांगवीर रस का मुख्य घटक .... है ।
a. कुपीलु b. वत्सनाभ c. एरण्ड d. निर्गुण्डी
72. ग्रहणी ..... है ।
a. पक्वाशय और आमाशय मध्य स्थित b. अग्नि का स्थान
c. पित्तधरा कला का आश्रय d. All true
73. गोक्षुर का नामकरण ..... है ।
a. स्वरूपबोधक b. अवयवबोधक c. गुणबोधक d. कर्मबोधक
74. गर्भज भावों की संख्या
a. 4 b. 5 c. 6 d. 7
75. हीरक द्युति कहलाता ..... है ।
a. रसपुष्प b. रसकर्पूर c. वैक्रान्त d. सोमल
76. हपुषा घृत का रोगाधिकार..... है ।
a. उदर b. गुल्म c. रक्तपित्त d. आमवात
77. हरीतकी का पर्याय नही है ।
a. अभया b. पथ्या c. पूतना d. अम्बष्ठा
78. त्रिगन्ध में ..... आता है ।
a. हरताल b. माक्षिक c. सस्यक d. All true
79. त्रिसुगंधि ..... है ।
a. त्रिफला b. त्रिजात c. त्रिकटु d. त्रिमद
80. बिल्व ..... है ।
a. वातपित्तहर b. पित्तकफहर c. वातकफहर d. त्रिदोषनुत
81. इन दो व्याधि की सम्प्राति समान ..... है ।
a.कास-श्वास b.कास हिक्का c. हिक्का श्वास d. ज्वर-अतिसार
82. नित्य, चेतन, शुद्ध आदि लक्षण ..... के है ।
a. प्रकृति b. पुरूष c. आत्मा d. None
83 निद्रा को पापिणी ..... ने कहा है ।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. डल्हण
84. आगन्तुक ..... है ।
a. दुष्ट व्रण b. ग्रन्थि c. धूमोपहत d. None
85. स्त्रियों में आंत्र की लम्बाई ..... व्याम
a. 2 b. 3 c. 3½ d. 4
86 शिग्रु बीज ..... है ।
a. रक्त मरिच b. कृष्ण मरिच c. श्वेत मरिच d. पीत मरिच
87. सिंही पर्याय ..... का है ।
a. वासा b. बृहती c. कण्टकारी d. हिज्जल
88. शिरोबस्ति ..... में लाभप्रद है ।
a. प्रतिश्याय b. अर्दित c. कास d. बाधिर्य
89. स्फिक ग्रीवा एवं उदर शुष्कता ..... में मिलती है ।
a. मेदोधातु क्षय b. मांसधातु क्षय
c. रसधातु क्षय d. शुक्रधातु क्षय
90. तिक्तास्यता का कारण ..... है ।
a. वात कोप b. पित्त कोप c. रसधातु क्षय d. None

91. विश्वाची व्याधि ..... है।
a. वातिक b. कफज c. वात कफज d. सन्निपातीक
92. विश्वेश्वर रस का रोगाधिकार
a. वातरक्त b. वातरोग c. दोनों d. आमवात
93. विषतिन्दुक ..... है।
a. वत्सनाभ b. कुपीलु c. प्रियाल d. मदनफल
94. जल का अंजलि प्रमाण
a. 7 b. 9 c. 11 d. 5
95. जल में विलेय ..... है।
a. क्वाथ b. आसव और अरिष्ट c. अवलेह d. तैल
96. ज्वरे तुल्यर्तुदोषत्वं प्रमेहे तुल्यदूष्यता रक्तगुल्मे पुराणत्वं ..... स्य लक्षणम्
a. कृच्छ्रसाध्य b. सुखसाध्य c. असाध्य d. सभी असत्य
97. कांक्षी के फटकी और फुल्लिका भेद ..... ने माने है।
a. रसरत्नसमुच्चयकार b. रसार्णवकार
c. माधवकार d. None
98. शस्त्रदोष करपत्र का गुण है।
a. अतिस्थूल b. वक्र c. खरधार d. अति दीर्घ
99. काश्यपसंहिता में अतुल्यगोत्रीयाध्याय में ..... वर्णित है।
a. संस्कार b. बालग्रह
c. मासानुमासिक विकास d. शिशु आहार
100. कफावृत पक्वाशयगत वात की चिकित्सा ..... है।
a. वमन b. विरेचन c. बस्ति d. स्वेदन

****

Model Question Paper IX

1. रक्तपित्त प्रसादकृत..... होता है।
a. प्रलेप b. आलेप c. प्रदेह d. इसमें से नही
2. माहेश्वर सुत्र संख्या.
a. 14 b. 15 c. 16 d. 12
3. -------- वातमलस्तंभी । भा.प्र.
a. शीत b. कठीण c. स्थिर d. गुरु
4. धम्मील्क और बृहन्मस्तिष्क का वजन प्रमाण प्रौढ में 1:8 तो शिशु में ।
a. 1:20 b. 1:2 c. 1:10 d. 1:150
5. दोषपाक और धातूपाक लक्षण वर्णन किये है।
a. सुश्रुत b. अ. सं. c. मा. नि. d. भा. प्र.
6. Punctured wound connected with cavities is.
a. विद्ध b. भिन्न c. छिन्न d. both a +b
7. पादांगूष्ठ प्रमाण पिडका --- भंगदर
a. शंबुकावर्त b. अर्शोभगंदर c. ऋजु d. None
8. निम्न में अयोगजन्य व्यापद ?
a. स्तंभ b. जीवादान c. गुदभ्रंश d. परिकर्तिका
9. Lateral curvature of spine is___
a. Scoliosis b. Lordosis
c. Kyphosis d. Sarcoidosis
10. Which of the following disease is 'X' linked chromosomal diseae?
a. Haemophilia A b. Haemophilia B
c. Both d. None
11. जलौकावचरण-----शिरोरोग में करे?
a. अरूंषिका b. उपशीर्षक c. शंखक d. दारूणक
12. राजयक्ष्मा की चिकित्सा..... में करते है ?
a. दिप्त b. नासाशोष c. दृष्टपीनस d. अपीनस
13. रसेंद्रचूडामणि ग्रंथ लेखक
a. यशोधर भट्ट b. भिक्षु गोविंदपादाचार्य
c. आचार्य सोमदेव d. नित्यनाथ
14. रसशाला में पाषाणकर्म---- दिशा.
a. पूर्व b. पश्चिम c. उत्तर d. दक्षिण
15. पिधानयुक्त मूषा---
a. वृंताक b. वज्रद्रावणी c. गोस्तनी d. वज्र
16. रस पूष्प----
a. पारद + गंधक + सैंधव b. पारद + कासीस + सैंधव
c. पारद + गंधक + कासीस d. पारद + सैंधव
17. उलाण---- कुल में है?
a. वासा b. कटूका c. अर्जुन d. यव
18. मखान्न Latine Name
a. Pistia stratiotus b. Baleria prionitis
c. Soymida febrifuga d. None
19. प्रियंगु उपयुक्तांग----
a. पुष्प b. पत्र c. मुल d. None
20. Wave leaved figure tree is the english name of
a. निर्गुण्डी b. तमाल c. प्लक्ष d. None
21. त्रिवृत्त------ है ?
a. वर्षायु b. बहुवषायु c.Both d. None
22. फलिनी योनीव्यापद दोष दुष्टी (A/c to सु.)
a. वात b. कफ c. रक्त d.त्रिदोष
23. मुक्ताद्य चूर्ण प्रमाण
a. कर्ष b. पल c. पाणितल d. पाणिपृष्ठ
24. हारित अनुसार जल प्रकार.
a. 2 b. 12 c. 4 d. 6
25. कृमिदंत व्याधी
a. छेदय b. आहरण c. विस्त्राव्य d. भेद्य
26. --- तू पादजंघो करमूलावमोटनी।
a. प्रतितूनी b. विश्वाची c. खल्ली d. तूनी
27. मूत्रातिप्रवृत्ती व आध्मान लक्षण।
a. अष्ठिला b. वाताष्ठिला c. मूत्रावृत्त वात d. मुत्रातीत
28. अप्राकृतिक मैथुन हेतु धारा।
a. 375 b. 376 c. 377 d. 302
29. वाग्भट अनुसार स्त्री श्रोणी अस्थि संख्या.
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6
30. अविपत्तिकर चूर्ण में मिश्री प्रमाण.
a. 10 भाग b. 20 भाग c. 46 भाग d. 66 भाग
31. प्रस्कंदन पर्याय....
a. वमन b. विरेचन
c. बस्ति d. शिरो विरेचन
32. कर्णक्ष्वेड दोषाधिक्य...
a. वात पित्त b. वात कफ c. पित्त कफ d. त्रिदोष

33. उपशीर्षक मे शोथ
a. सरूज b. अरूज c. समानवर्णी d. 2 + 3
34. भग्न प्रकार
a. 12 b. 6 c. 3 d. None
35. संदंश यंत्र प्रमाण..... अंगुल
a. 16 b. 8 c. 17 d. यथाआवश्यक
36. कनकारिष्ट रोगाधिकार
a. अर्श b. प्रमेह c. अम्लपित्त d. यक्ष्मा
37. न्याय के नुसार पदार्थ...
a. 12 b. 14 c. 16 d. None
38. सुश्रुत के नुसार पांडू भेद.
a. 3 b. 5 c. 6 d. None
39. कंस हरितकी योग स्वरूप है।
a. क्वाथ b. चूर्ण c. कल्क d. अवलेह
40. चरक के नुसार रात्री वर्जित
a. नस्य b. धूमपान c. अंजन d. All
41. Festinating gait found in
a. Alzhimer b. Syphilis
c. Parkinsonisum d. None
42. Length of 2nd month foetus in____ cm
a. 2 b. 4 c. 6 d. 10
43. विनष्ट संधितो य:--------।
a. तक्र b. शुक्त c. चूक्र d. मद्य
44. सुश्रुत के नुसार ग्रंथि भेद.
a. 9 b. 6 c. 5 d. 4
45. आर्तव मात्रा
a. 50 ml b. 35 ml c. 100 ml d. 150 ml
46. शीतपित्त में दोषाधिक्य
a. वात b. पित्त c. कफ d. वात कफ
47. परिसर्प में दोषाधिक्य
a. पित्त b. कफ c. वात कफ d. None
48. मेदोज रोहिणी का वर्णन किया है।
a. सुश्रुत b. चरक c. शा.सं. d. अ. हृदय
49. Molar teeth in ayurveda
a. राजदन्त b. हानव्य c. दंष्ट्रा d. बस्त
50. धातू भस्म परिक्षण By
a. X- ray differection b. TLC
c. By inverted Furnace d. By muffle furnace
51. B/s to spinal cord -
a. Reticular b. Abdominal aorta
c. Brachial artery d. None
52. Sarcoptes cause -
a. Leucoderma b. Scabies
c. Erysepalas d. Ring worm
53. तम द्रव्य Said by
a. प्रभाकर मीमांसक b. आयुर्वेद c. न्यायदर्शन d. जैनदर्शन
54. स्नान भेद
a. 5 b. 2 c. 7 d. 4
55. प्रथम कमेटी व काल.
a. उडूप 1948 b. भोर 1946
c. भोर 1945 d. व्यास 1947
56. कर्चूर उपयुक्तांग
a. मुल b. त्वक c. कंद d. None
57. त्रिकपृष्ठासन---
a. Lithotomy b. Sims position
c. Fowler position d. None
58. चरक पार्श्वशुल in
a. क्षतज कास b. क्षयज कास c. राजयक्ष्मा d. b + c
59. हारित – कास प्रकार
a. 5 b. 6 c. 7 d. 8
60. विप्लूता योनीव्यापद Told by
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None
61. वाग्भटानुसार 16 वर्ष वय मे बस्ति नेत्र प्रमाण अंगुल.
a. 8 b. 16 c. 12 d. None
62. सुश्रुतानुसार आवरण
a. 22 b. 10 c. 20 d. 13
63. वाग्भट के नुसार सीमंत
a. 14 b. 7 c. 18 d. 19
64. सेक–धारण काल पूटपाकपेक्षा--- गूणा है ।
a. 4 b. 2 c. 3 d. 6
65. RRS अनुसार उपविष.
a. 9 b. 7 c. 11 d. 10
66. रसतंरगिणी नुसार उपविष.
a. 9 b. 7 c. 11 d. 10
67. Diptheria incubation period
a. 7-14 days b. 2-3 days c. 2-5 days d. 7days
68. अशस्त्रकृत रोग संख्या
a. 17 b. 12 c. 15 d. 19
69. मण्डलाग्र यंत्र से कर्म -------
a. छेदन लेखन b. छेदन भेदन c. विस्त्रावण d. Only छेदन
70. जीवात्मा गुण
a. 8 b. 10 c. 12 d. 14
71. मन गुण
a. 10 b. 8 c. 2 d. 14
72. शब्द वहन in Air
a. 360 m/s b. 332m/s c. 1498m/s d. Not
73. मध्य–वृश्चिक संख्या
a. 15 b. 12 c. 3 d. Not
74. उत्तरबस्ति मात्रा – चरक के अनुसार
a. 1 प्रसृत b. 1/2 पल c. 1 पल d. 1 / 2 प्रसृत
75. स्वरभेद (मेदोज) Told by
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. शा.सं.
76. गुरुता क्रम में सबसे अधिक गुरू.
a. पूष्प b. पत्र c. नाल d. कंद
77. शल्यगती सुश्रुत अनुसार, वाग्भट (अ.सं.)
a. 5,3 b. 3,5 c. 5,5 d. 3,3

78. शिरोरोग लक्षण in कंद विष of
a. सर्षप b. पालक c. वैराटक d. मुलक

79. ---- अतिरिच्येत्।
a. उष्ण b. तीक्ष्ण c. अविपाकी d. विशद

80. श्वास is सामान्य लक्षण of --- विष
a. स्थावर b. जांगम c. Both d. None

81. गुरुजिव्हता is लक्षण of --- विष
a. धातु b. कंद c. क्षीर d. पूष्प

82. Dioptric power of cornea is
a. + 58 - 60D b. + 60 - 70 D c. + 42 - 43D d. Not

83. उर: प्रदेशी मर्म संख्या
a. 26 b. 14 c. 12 d. 20

84. स्थपनी मर्म
a. मांस b. सिरा c. स्नायु d. संधि

85. National immunization day
a. 9 march b. 16 march c. 24 March d. 21may

86. रक्तादी धातुक्षयजन्य पक्षाघात
a. असाध्य b. कृच्छ्रसाध्य c. साध्य d. याप्य

87. बस्तिदाता दोष By सु.
a. 4 b. 5 c. 6 d. 11

88. पंचप्रासृतिक बस्ति में क्षीर मात्रा --- भाग
a. 1 b. 3 c. 2 d. 1/2

89. सु. मतानुसार निवातशयन--
a. पथ्य b. अपथ्य c. एकान्तहितकर d. परमरोगकर

90. व्रणित को वर्ज्य----
a. नूतन धान्य b. दही दुग्ध
c. माष तिल d. All

91. व्रणित को इस द्रव्य का धूपन देने का उपदेश सु. ने किया है।
a. सर्षप b. सर्पिलवण c. अरिष्ट d. All

92. सुश्रुत के नुसार--- Not to be सेवन with दुग्ध
a. जंबु b. करीर c. वल्लीफल d. All

93. ---- दिशा का वायु चक्षुष्य है।
a. पूर्व b. पश्चिम c. उत्तर d. दक्षिण

94. ---- रोग कुलज है।
a. श्वित्र b. कुष्ठ c. अर्श d. All

95. इंद्रायुधा जलौका----
a. सविष b. निर्विष c. Both d. None

96. अधिजिव्हा + उपजिव्हिका चिकित्सा---
a. लेखन b. छेदन c. भेदन d. विस्त्रावण

97. सर्वशरीर व्याप्त is ओज said by
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. डल्हण

98. ओज शुक्र का मल है said by
a. चरक b. सुश्रुत c. अ.सं. d. अ. हृदय

99. सुश्रुत के नुसार असाध्य शुकदोष----
a. 4 b. 2 c. 5 d. 3

100. बलवृद्धीकर भाव है।
a. 4 b. 12 c. 13 d. 8

Model Question Paper X

01. खल्ली रोग में निर्दिष्ट चिकित्सा – कर्म
a. उपनाह b. सिरावेध c. नस्य d. बस्तिकर्म

02. सर्पि---- पातव्यम्।
a. प्रावृट् b. शरदि c. माधवे d. वसंते

03. ---- विरेको वान्तस्य ततश्चापि निरूहणम्।
a. सप्ताहात b. पक्षाद् c. द्विपक्षाद् d. मासाद

04. चरक के अनुसार अनास्थाप्य रोगी
a. हृद्रोगी b. गुल्म c. अजीर्ण d. भगंदर

05. अश्रूस्त्राव pH ---।
a. 7.5 b. 7.9 c. 6.5 d. 8.2

06. सामान्यत: अपरा : गर्भ अनुपात –
a. 1:8 b. 1:6 c. 1:4 d. 1:10

07. मोचा पर्याय है।
a. मोचरस b. कदली c. अग्निमंथ d. गंभारी

08. Xantheline Alkaloid is extracted from
a. इंद्रवारूणी b. अहिफेन c. हरिद्रा d. भंगा

09. उष्ठोदर मे सिरादाह कर्म---- में वर्णित है।
a. जलोदर b. वातोदर c. प्लीहोदर d. सन्निपातोदर

10. गर्भाच्छिद्र आश्रित पेशी संख्या ----
a. 3 b. 4 c. 2 d. 5

11. Length of pelvic colon __ cm
a. 20 b. 30 c. 40 d. 50

12. स्नायुसिरारोम नख वर्ण त्वचाम--- मास लक्षण
a. 4th b. 5th c. 6th d. 7th

13. शरारी मुख – अंग संख्या है।
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

14. सुश्रुत अस्थिसंधि प्रकार है।
a. 6 b. 8 c. 5 d. 12

15. काश्यप के नुसार हृदय--- कोष
a. 1 b. 2 c. 4 d. 5

16. स्वेद is मल of
a. मांस b. रक्त c. पित्त d. मेद

17. 3 प्रधान मर्म है।
a. शिर, हृदय, बस्ति b. हृदय, बस्ति, नाभि
c. Both d. None

18. सद्योव्रण भेद है।
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

19. वाग्भट के नुसार पिच्चित व्रण--- भेद है।
a. 2 b. 4 c. 5 d. 8

20. सुश्रुत के अनुसार मद्य गुण –
a. 10 b. 8 c. 6 d. 12

21. संभव तंत्रयुक्ति Said by-
a. सुश्रुत b. चरक c. वाग्भट d. Both a + b

22. स्थौल्य कारण is मेद --- A/c to
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None

23. संसर्गज
a. 2

24. वाग्भट
a. रस

25. अजमो
a. शूल

26. R.I. o
a. 1.3

27. Psue
a. Me
c. Pa

28. स्मृतिर
a. निंब

29. चरक
a. 8

30. Imipr
a. IBS

31. Aspir
a. 19

32. वात क
a. आ

33. अहिपू
a. वात

34. S.A r
a. Ep
c. En

35. Main
a. WI
c. So

36. At 1y
a. 12

37. भिषगव
a. गण
c. A.I

38. Card
a. C.
c. I.H

39. राजनि
a. 16

40. भल्लात
a. सं
c. त्रि

41. कपाट
a. जा

42. वरूणा
a. मू

43. सुश्रुत
a. सु.

23. संसर्गज अर्श भेद है।
a. 2 b. 6 c. 4 d. None

24. वाग्भट के नुसार द्रव्य योनी---
a. रस b. अन्न c. पृथ्वी d. जल

25. अजमोदा is --- द्रव्य A/c भा. प्र.
a. शूलघ्न b. दीपन c. Both d. हृद्य

26. R.I. of cornea is
a. 1.33 b. 1.406 c. 1.37 d. None

27. Psuedo diabetes related with
a. Metabolism b. Gastritis
c. Pancretitis d. All

28. स्मृतिसागर रस का भावना द्रव्य है।
a. निंब b. वचा c. ज्योतीष्मती d. b + c

29. चरक के नुसार मूत्राघात के भेद है।
a. 8 b. 13 c. Both d. None

30. Imipramine is used in --------
a. IBS b. Leprosy c. AIDS d. TB

31. Aspirin खोज -
a. 1952 b. 1889 c. 1899 d. 1999

32. वात का संचयस्थल
a. आमाशय b. पच्यमानाशय c. पक्वाशय d. All

33. अहिपूतना मे दोष संबंध---
a. वात रक्त b. कफ रक्त c. वात पित्त d. कफ

34. S.A node is found in
a. Epicardial b. Sub-epicardial
c. Endocardial d. Endo-myocardial

35. Main soure of vit E is
a. Wheat germ oil b. Sunflower oil
c. Soyabean d. All

36. At 1yr.- Head circumferance is--------
a. 12 इंच b. 16 इंच c. 18 इंच d. 20 इंच

37. भिषगकर्म सिद्धि लेखक---
a. गणनाथ सेन b. रमानाथ त्रिवेदी
c. A.N. Sharma d. घाणेकर

38. Cardiac Cathetarization
a. C.C.F b. Valvular disease
c. I.H.D d. Myocarditis

39. राजनिघंटू काल---
a. 16th b. 17th c. 15th d. 20th

40. भल्लातक योग ---
a. संजीवनी वटी b.श्वास कुठार
c. त्रिभुवनकिर्ती d. ग्रहणी कपाट

41. कपाटशयन विधि --------- भग्न में वर्णित है।
a. जानु b. श्रोणी c. कपाल d. All

42. वरूणादि घृत ---
a. मूत्राघात b. K अश्मरी c. शोथ d. प्रमेह

43. सुश्रुत संहितामे स्वस्थवृत्त वर्णन
a. सु.सु. b. सु.उ. c. सु.चि d. All

44. असाध्य भगंदर ---
a. शतपोनक b. उष्ट्रग्रीव c. परिस्त्रावी d. शंबुकावर्त

45. Tysons glands are found in
a. Vulva b. Instestine c. Penis d. Stomach

46. Human RBC's are
a. Circular b. Non-nucleated
c. Biconcave d. Disuss

47. नाराच रस रोगाधिकार ---
a. जलोदर b. श्लीपद c. अतिसार d. मूत्ररोग

48. असंमोहश्च वैद्यस्य--- शष्यते। (सु.सु. 5/10)
a. निराश्रय b. कर्मणि c. Both d. None

49. रसस्तु हृदय याति समानमरूते प्रेरितः।
a. भेल b. भा.प्र. c. सुश्रुत d. शा.सं.

50. प्रथम ग्रैव कशेरूका--- है।
a. दंतचुडा b. महाकण्टकिनी c. चूडिका d. चुडावलय

51. चरकोक्त अर्शोघ्न महाकषाय में नही--- है।
a. कुटज b. बिल्व c. चित्रक d. भल्लातक

52. निम्न में कौनसी औषध सुरसादिगण में समाविष्ट नही है।
a. अर्जक b. चव्य c. कासमर्द d. सभी समाविष्ट

53. चरक संहिता रसविमान में वर्णीत पिप्पली दीर्घकाल सेवन न करे क्योंकि
a. योगवाहिनी b. आपातभद्रा c. गुरूप्रक्लेदित्वा d. All

54. गौराद्य घृत रोगाधिकार
a. मूखरोग b. विसर्प c. विद्रधि d. All

55. बालक गर्भ में - वायु शुक्रशय को नष्ट करके उत्पत्ति
a. द्विरेता b. पवंनेद्रिय c. संस्कारवाही षण्ढ d. वातीकषंढ

56. उरू प्रमाण -
a. स्वगुंली से 12 अंगुल b. स्वगुंली से 22 अंगुल
c. स्वगुंली से 18 अंगुल d. स्वगुंली से 26 अंगुल

57. वाग्भट - सद्योव्रण के कितने प्रकार है।
a. 4 b. 6 c. 8 d. 10

58. लसीकया रक्तलेशेन वा युत्म सप्लोष छेदनात् स्त्रवेत्। वाग्भट
a. घृष्टव्रण b. पिच्छिन्न व्रण c. अवकृत्तव्रण d. पातित व्रण

59. नख अनुशस्त्र प्रयोग कर्म.....
a. छेदन b. आहरण c. भेदन d. All

60. चरक के नुसार आगंतुज उन्माद मुख्य कारण---
a. विषमाशन b. असात्म्येन्द्रियार्थ प्रयोग
c. प्रज्ञापराध d. All

61. वाग्भट के नुसार कौन से नाडीव्रण में रात्रि समय अधिक स्त्राव होता है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. सन्निपातज

62. निम्नलिखित में याप्य व्रण है।
a. अवपाटिका b. सन्निरूद्धगुद c. निरूद्धप्रकश d. All

63. वाग्भट के नुसार विष सर्वप्रथम कौनसे धातु को दूषित करता है ?
a. रस b. रक्त c. मांस d. मेद

64. आयुर्वेद पर्याय---है।
a. ज्ञान b. आयतन c. समुत्थान d. All

65. गौधेरक सर्प लक्षण ---
a. चतूष्पाद युक्त b. अनेकपाद युक्त
c. मण्डली + गोधा उत्पन्न d. राजिल दंशसम

66. लाजा है....
a. दाहप्रशमन b. शोणितास्थापन c. छर्दिनिग्रहण d. All

67. जातीप्रवाल है....
a. कुष्ठघ्न b. विषघ्न c. कण्डूघ्न d. क्रिमिघ्न

68. त्रिवृत्त का विपाक....है ।
a. मधूर b. अम्ल c. कटू d. गुरू

69. संवाहन चिकित्सा में वर्णित है।
a. निद्रावेगधारण b. शोकज अतिसार
c. आंगतुज उन्माद d. All

70. ऋतूविभागज + वयकृत भेद -------- के है ।
a. सहजबल b. युक्तिकृतबल c. कालजबल d. स्वभावबल

71. चरक के नुसार अणूतैल नस्यमात्रा
a. 1 कर्ष b. 1/2 पल c. 12 बिंदु d. 24 बिंदु

72. वात नेत्ररोग में तर्पण काल है ।
a. 1000 b. 8000 c. 6000 d. 500

73. सुश्रुत के नुसार कर्णशुल---है ।
a. सुखसाध्य b. याप्य c. कृच्छ्रसाध्य d. दूराचर

74. कर्णक्ष्वेड दोषाधिक्य---
a. वात b. पित्त c. वात कफ d. वात पित्त

75. कामला व्याधीमे विरेचन वर्णित है ।
a. तीक्ष्ण b. स्निग्ध + मृदु c. मृदु d. None

76. पथ्याघृत (च. पाण्डू रोगाधिकार) हरितकी संख्या
a. 50 b. 100 c. 200 d. 300

77. वायूमधील O_2 मात्रा
a. 0.03% b. 30% c. 21% d. None

78. B cell secretes hormone
a. Glucagon b. Insulin c. Both d. Secretin

79. मृदु पर्पटीपाक वर्ण------है।
a. रक्त b. श्वेत c. तैलाभ d. None

80. माणिक्य रत्न काठिण्य है।
a. 5 b. 7.7 c. 6.2 d. 9

81. Ventricular systole --------- sec.
a. 0.5 b. 0.7 c. 0.1 d. 0.3

82. योनीव्यापद A/c च.सु.वा.
a. 20,24,26 b. 20,22,21
c. 20,20,20 d. 20,21,21

83. दंत is उपधातू of
a. अस्थि b. मज्जा c. शुक्र d. मेद

84. कोष्ठाश्रित सिरा संख्या है।
a. 164 b. 400 c. 230 d. 136

85. सात्मज भाव ---है।
a. 6 b. 18 c. 8 d. 10

86. काश्यप के अनुसार कोष्ठांग है।
a. 12 b. 8 c. 13 d. 11

87. व्रणदोष है।
a. 16 b. 14 c. 20 d. 24

88. उदावर्त A/c to वाग्भट
a. 6 b. 13 c. 14 d. None

89. अलजी--- व्याधी है।
a. वात b. पित्त c. अशस्त्रकृत d. None

90. 3 अंगुल प्रमाण मर्म है।
a. गुल्फ b. मणिबंध c. स्तनमुल d. जानु

91. नाडी स्वेदार्थ नलिका लंबाई --है।
a. 1/2 व्याम b. 2 व्याम c. 1 व्याम d. 1/4 व्याम

92. धात्र्यारिष्ट - आमलकी संख्या है।
a. 100 b. 2000 c. 1000 d. None

93. शोकज अतिसार चिकित्सा ---- है।
a. आश्वासन b. हर्षण c. उपशोषण d. स्तंभन

94. शुक्तपाक is the लक्षण of--- ग्रहणी
a. पित्त b. कफ c. वात d. सन्निपातिक

95. भौम सर्प संख्या
a. 60 b. 70 c. 80 d. 90

96. कीट भेद है।
a. 3 b. 2 c. 4 d. None

97. तीक्ष्ण मूण्ड लोह is iron
a. Cast b. Steel c. Wrought d. None

98. राजवल्लभ अनुसार --- वर्ग
a. 8 b. 6 c. 7 d. 9

99. pH of CSF is
a. 7.32 b. 7.5 c. 7.34 d. 7.8

100. सक्थिसाद--- विद्रधी लक्षण है।
a. नाभी b. वृक्क c. वंक्षण d. None

Model Question Paper XI

1. विस्मारण चिकित्सा निर्देश है ?
a. हिक्का b. श्वास c. कास d. All

2. सिद्धार्थक तैल निर्देश है ?
a. अपरापतन b. कुष्ठ c. अपस्मार d. उन्माद

3. नागार्जुनाभ्र रस का विशेष रूप से निर्देश है ?
a. हृद्रोग b. राजयक्ष्मा c. क्षतक्षीण d. All

4. पुचरूष पुष्पीत हो जाने पर कितने दीन का अरीष्ट है ?
a. 1 वर्ष b. 6 मास c. 2 मास d. 15 दिन

5. श्लेष्मणा रूद्धमार्ग तु पित्तं कफ हरै जयेत चिकित्सा सूत्र है ?
a. शाखाश्रित कामला b. कोष्ठाश्रीत कामला
c. पाण्डु d. All

6. सर्पिश्च चावपिडकम् किस वेगावरोध की चिकित्सा है ?
a. मूत्रवेग b. पुरीषवेग c. शुक्रवेग d. क्षवथु

7. रसक्रिया किस कल्पना पर्याय है ?
a. अवलेह b. चूर्ण c. क्वाथ d. वटी

8. अन्तेषु शूनं परिहीनमध्य किस व्याधीका संदर्भ है ?
a. असाध्यज पाण्डू b. कामला
c. शोफ d. राजयक्ष्मा

9. Episiotomy is done in.....
a. 1st stage of labour b. 2nd stage of labour
c. 3rd stage of labour d. a+b

10. Layer s of cornea are
a. 5 b. 6 c. 10 d. 4

11. हतौजस शब्द प्रयोग आया है ?
a. सन्निपातिक ज्वर हेतु b. सन्निपातिक पाण्डु
c. a+b d. हलीमक

12. एक कुष्ठ की तुलना ---- से करते है ?
a. Psoriasis b. Herpes
c. Leucoderma d. None

13. पुरूषं पुरूषं विक्ष्य किसके संदर्भ में है ?
a. चिकित्सक b. रूग्ण c. परीचारक d. आप्त

14. दोष निर्हरण ऋतु
a. प्रावृट b. शरद c. वंसत d. All

15. मूल प्रवृत्तीयाँ है ? (च.सु. 11/3 विमर्श)
a. 14 b. 12 c. 18 d. 8

16. खण्डन न करना कहलाता है ?
a. अनुमत b. विधान c. पुर्वपक्ष d. संशय

17. ऋतु व्यापत्तीयाँ है ?
a. 10 b. 14 c. 18 d. 24

18. कुमारिका है ?
a. कौमारभृत्य में वर्णित एक रोग b. नेत्रगोलक में बना वस्तु का प्रतिबिम्ब
c. उपरोक्त दोनों d. 16 से 25 साल के बीच की आयु वाली स्त्री

19. प्रकृतिस्थ दोषों का स्वस्थान से हटना कहलाता है ?
a. विमार्गगमन b. दोषच्युति c. आशयापकर्ष d.All

20. वमन की प्रधान शुद्धी में अन्नकाल संख्या ?
a. 12 b. 8 c. 4 d. 6

21. गर्भाशय में शुक्रशोणीत के पचने पर उत्पत्ती होती है ?
a. गर्भ b. त्वचा c. कला d. आशय

22. निमेष का काल ?
a.19/60 sec b.21/60 sec c.29/60 sec d. 19/60 sec

23. अंगभंग किस वेग को धारण करने से होता है
a. मूत्रवेग b. जृंभावेग c. क्षवथु वेग d. शुक्र वेग

24. वृष्य एवं त्रिदोषनाशक है ?
a. विदारीगन्धा b. विदारीकंद c. पृश्नीपर्णी d. एरण्ड

25. सर्वश्रेष्ठ वातकर है ?
a. जम्बु b. रास्ना c. बिल्व d. यव

26. कार्श्यमेव वर स्थौल्याद न हि स्थुलस्य भेषजम् किसने कहा है।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. शारंगधर

27. विव्दानों के बीच जो संक्षेप रूप में वक्तव्य दिया जाता है उसे कहते है ?
a. सन्मान b. व्यास c. सिध्दांत d. प्रतिज्ञा

28. दिशा में गुणों की संख्या ? (कारिकावली)
a. 5 b. 7 c. 8 d. 11

29. पिपासा सद्यो मरण चं...? किस स्त्रोतोविद्ध लक्षण है ?
a. प्राणवह b. उदकवह c. अन्नवह d. रसवह

30. क्रम परीणाम पाक या सर्वात्मना परिणाम पाक है ?
a. क्षीरदधीन्याय b. खलेकपोतन्याय
c. केदारी कुल्यान्याय d. एककाल धातु पोषणन्याय

31. त्वकदौर्गध्य लक्षण है ?
a. स्वेदवृद्धी b. मज्जावृद्धी c. मांसवृद्धी d. रक्तवृध्दी

32. वत्सनाभ विष का प्रतिविष है ?
a. टंकण b. कर्पुर c. तमाल d. धत्तुर

33. गरागरी पर्याय है ?
a. दुग्धिका का b. देवदाली का c. दाडीम का d. देवदारू का

34. तुम्बरु का प्रधान कर्म ?
a. मुखवैशद्यकर b. लालाप्रसेकजनन
c. लालाप्रसेकशमन d. दीपन

35. Monk's hood है ?
a. वत्सनाभ b. शुण्ठी c. जटामांसी d. वासा

36. चरक दशेमानि में क्षीर काकोली प्रयोग कितने बार आया है ?
a. 4 बार b. 5 बार c. 6 बार d. 9 बार

37. वसंत ऋतु में संग्रह करना चाहिए ? (चरक)
a. मूल b. नुतनशाखा पत्र c. Both d. None

38. महादोष महागद किसके संदर्भ है ?
a. विष b. मद्य c. महाहिक्का d. अतत्वाभिनिवेश

39. धूमवर्ति निर्माण में प्रयोग नही करना चाहिए ?
a. Valeriana Velchi b. Saseurea lappa
c. both d. Taxus Vacata

40. आक्षेप कीस वेगधारण से उत्पन्न होता है ?
a. क्षवथु b. क्षुधा c. छर्दि d. जृम्भा

41. प्राणियों का प्राण कहा गया है ?
a. ओज b. शुक्र c. रक्त d. वात

42. अष्टौनिन्दित अध्याय ..... में है ?
a. रोगचतुष्क b. योजना चतुष्क
c. कल्पना चतुष्क d. None

43. प्रतिश्याय प्रकार र.र.स.नुसार ?
a. 6 b. 7 c. 8 d. 10

44. क्षार को रस माना है ?
a. बडीश धामार्गव b. निमी c. both d. कांकायन

45. दशविध परीक्षा विषय में जिस प्रयोजन के लिए किया जाता हैउसे कहते है ?
a. कार्य b. कार्यफल c. कार्ययोनी d. अनुबंध

46. चतुष्पाद को किस समय के अंतर्गत माना है ?
a. आयुर्वेदीक b. याक्षीक c. मोक्षशास्त्रीय d. All

47. जल्पक गुण कितने होते है ?
a. 5 b. 6 c. 8 d. 10

48. आयुनाशन कारणो में श्रेष्ठ है ?
a. अकाल भोजन b. विषनाशन
c. रजस्वलागमन d. परस्त्रीगमन

49. अनुषङगीनां रोग है ?
a. प्रमेह b. राजयक्ष्मा c. कुष्ठ d. ज्वर

50. कृशताकारक है ?
a. विषमाशन b. प्रमीताशन c. दौमर्नस्य d. विरूद्धवीर्याशन

51. आभ्यंतर रोगमार्ग के व्याधी (कोष्ठ) है ?
a. 10 b. 12 c. 14 d. 15

52. उष्ट्रमूत्र ------ रस प्रधान है ?
a. लवण b. तिक्त c. क्षार d. कषाय

53. श्रेष्ठ इंन्द्रिय होती है ?
a. चक्षूरेंद्रीय b.स्पर्शनेंद्रिय c. Both d. None

54. शुक्र में महाभूत है ?
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

55. रक्तज कृमीयों का निदान है ?
a. कुष्ठ b. वातरक्त c. रक्तपित्त d. All

56. आचार्य वाग्भट ने कुक्षी के भाग बताये है ?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 2

57. चरक ने क्षीर सर्पि सेवन किस मांस मे बतलाया है ? (गर्भीणी)
a. 4 मास b. 2 मास c. 5 मास d. 6 मास

58. कर्णवेधन संस्कार किस मास में करते है ?
a. 5 - 6 मास b. 6 -7 मास c. 9 -10 मास d. 5 yr.

59. चरक संहीता में कियन्त: शिरसीय अध्याय है ?
a. च.सु. 14 b. च.सु. 17 c. च.वि. 5 d. च.शा. 4

60. हरितकी वृंत में रस होता है ?
a. तिक्त b. मधुर c. कटू d. कषाय

61. आचार्य भेल नुसार आमलकी प्रयोग करना चाहिए ?
a. भोजन जीर्ण b. भोजन पूर्व c. भोजन पश्चात d. All

62. निलादीनाम तमसोदर्शन किस वेग में होता है ?
a. द्वितीय b. तृतीय c. पंचम d. सप्तम वेग

63. अनंतवात दोषदूष्टी है (चरक) ?
a. वात / वात कफ b. वातपित्त कफ
c. कफ पित्त रक्त d. वात पित्त रक्त

64. पित्तल मे Cu:Zn अनुपात है ?
a. 2:1 b. 4:1 c. 1:1 d. 1:3

65. आरकुट पर्याय है ?
a. यशद b. ताम्र c. पीतल d. कांस्य

66. गोदन्ती रासायनिक सुत्र ?
a. $CaSO_4\ 2H_2O$ b. $2\ CaSO_4\ H_2O$
c. $CaCO_3$ d. a + b

67. Blood supply for erection of penis is from
a. Hellicine artery b. Renal artery
c. Brachial artery d. Femoral artery

68. Filariasis वाहक है ?
a. Anaphelous female b.Culex fatigance
c. Ades Egypti d. All

69. ---- पुराणत्वं सुखसाध्यत्व लक्षण ?
a. ज्वर b. रक्तगुल्म c. प्रमेह d. राजयक्ष्मा

70. सूरा कल्पना का समावेश ------- में होता है ?
a. मद्य कल्पना b. शुक्त c. अवलेह d. अर्क

71. Leucopenia is found in ?
a. Viral fever b. Malarial fever
c. Typhoid d. Pneumonia

72. Which vaccine is contraindicated during pregnancy ?
a. Hepatitis B b. Cholera c. MMR d. Typhoid

73. Oxygen cylender का रंग होता है ?
a. Yellow b. Black c. White d. b+c

74. पालकाप्य संहीता ..... पर लिखी गई है ?
a. गजायुर्वेद b. अश्वायुर्वेद
c. वृक्षायुर्वेद d. गवायुर्वेद

75. Pulmonary artery Pressure in mm of Hg.
a. 40/10 b. 120/60 c. 20/10 a. None

76. कैयदेव नुसार निलांजन च्छद है ?
a. नीलकमल b. जम्बु c. आम्र d. खदीर

77. धारा 193 संबंध है ?
a. आत्महत्या b. परहत्या c. शपथभंग d. None

78. सुप्तता जायते दंशे कृष्णनं कटि स्त्रावत्येसत्रिक... लक्षण है ?
a. दर्वीकर दंश b. मण्डली दंश
c. राजीमान दंश d. अलर्क विष

79. तृणशोषक सर्प है ?
a. दर्वीकार b. मण्डलिन c. राजीमान d. निर्विष

80. अपाक शूनताऽगानाम..... लक्षण है ?
a. वातरक्त b. आमवात c. उरूस्तंभ d. आक्षेपक

81. पक्व जम्बुफल सदृश्य किस भस्म का वर्ण होता है ?
a. लोह b. स्वर्ण c. हीरक d. नाग

82. कुलत्थ का निषेध है ?
a. अश्मरी b. अम्लपित्त c. वातव्याधी d. All

83. चरक के नुसार किस पर दूषी विष का प्रभाव नहीं पडता है ?
a. तक्रपात्रे b. हेमपात्रे c. मद्यपात्रे d. ताम्रपात्रे

84. विनष्ट संधीनो यह कहा गया है ?
a. तक्र हेतु b. शुक्त हेतु c. चुक्र हेतु d. मद्य हेतु

85. यशद का प्रथमत: नामत: वर्णन मिलता है ?
a. मदनपाल निघण्टु b. र.र.स. c. आनन्दकन्द d. सुश्रुत

86. 9 'D' are found in
a. Alcohol Poisoning b. Aconite Poisoning
c. Opium Poisoning d. Dhatura Poisoning

87. Entry of glucose in muscles is caused by
a. Insulin b. Glucagon
c. Adrenaline d. Cortisol

88. Cherry red lung are found in -
a. CO poisoning b. Datura poisoning
c. Lead poisoning d. All

89. All or none theory is applicable for
a. Cardiac muscles b. Lung muscles
c. Kalf muscles d. Eye muscles

90. करविर प्रतिविष.
a. आमलकी b. हरितकी c. भल्लातक d. None

91. Kehr's sign is related with
a. Pancreatic rupture b. Liver rupture
c. Stomach rupture d. None

92. What will be the expected cause of black stool
a. Upper G.I. Bleeding b. Lower G.I. Bleeding
c. Cirrhosis of Liver d. All

93. कुपिपक्व रसायन का प्रथमत: वर्णन ?
a. रसार्णव b. रस प्रकाश सुधाकर
c. र.र.स. d. रसतरंगिनी

94. सिद्धे रसे करिष्यामि निद्ररिद्रमयं जगत्... किसका कथन है ?
a. व्याडि b. रसनागार्जुन c. भगवान शिव d. वाग्भट

95. Pilonidal sinus is found in
a. Child b. Young person
c. Old age d. Hairy person

96. --- म विद्यात सर्व दोषक प्रकोपणम्।
a. प्रज्ञापराध b. क्रोध c. अधर्म d. All

97. S.A. Node is found in
a. Epicardial b. Sub-epicardial
c. Endocardial d. Endomyocardial

98. पुनर्नवा कुल है ?
a. Nuctagyanacae b. Bombacaceae
c. Valerianaceae d. Zygophyllaceae

99. स्थूल वल्कल है ?
a. भूर्ज b. लोध्र c. ताड d. वरूण

100. अलस है ?
a. मुख रोग b. क्षुद्र रोग c. दोनो d. नेत्ररोग

*****

Model Question Paper XII

1. शिष्ट है ?
a. आप्त b. शिष्य c. गुरू d. None

2. अर्श अधीष्ठान है ? (च.)
a. गुदवली b. मेदोमांसत्वक c. नासा d. अपत्यपथ

3. शरीरविचय ज्ञान का प्रयोजन ?
a. शरीरोपकार्थ b. स्मरणार्थ c. मोक्षार्थ d. All

4. संसर्जन क्रम की आवश्यकता नहीं है ।
a. वमन b. विरेचन c. बस्ति d. रक्तमोक्षण

5. पाषाणसूप्त कठीण कुष्ठ की चिकित्सा ?
a. क्षार b. रक्तमोक्षण c. अग्नि d. अगद

6. Hutchinson's teeth is seen in
a. Congenital syphilis b. Fallots tetralogy
c. Raynaulds disease d. Cushing syndrome

7. श्रीमददर्शनलोचन: लक्षण है ?
a. क्षयज कास b. क्षतज कास c. शोष d. क्षतक्षीण

8. एड़गजबीज प्रतिनिधी द्रव्य
a. तुलसी b. धत्तुर c. गुंजा d. सोमराजी

9. दन्तीमूल + मायाफल किस संयोग विरूद्ध का उदा है ?
a. मान b. गुण c. कर्म d. All

10. Plantago ovata = ?
a. कंकोल b. अश्वगोल c. एरण्डकर्कटी d. पीतमूला

11. गल्लिर = ?
a. उन्मय b. दु:खवर्धन c. परीपोट d. कुचीकर्णक

12. सोमरोग दोषप्राधान्य ?
a. वात b. पित्त c. कफ वात d. त्रिदोष

13. Normal Portal vein Pressure in mm of Hg?
a. 8-10 b. 15-20 c. 20-30 d. 30-40

14. महानिम्ब मूलकल्क प्रयोग ?
a. गृध्रसी b. वातव्याधी c. वातकंटक d. All

15. Peptic ulcer.... में अधीक होता है ?
a. पुरूष b. स्त्री c. बाल d. अनिश्चीत

16. सप्तदशकुष्ठ घाती..... प्रयोग ?
a. लेलीतक b. आरोग्यवर्धीनी c. मंजीष्ठा d. एडगज

17. सारयुक्त व्यक्ति की प्रकृति.
a. वात b. कफ c. पित्त d. सम

18. छर्दी स्त्रोतोदुष्टी प्रकार ?
a. अतिप्रवृत्ती b. संग c. सिराग्रंथी d. विमार्गगमन

19. पाण्डू – अनुपान (शां. सं.)
a. विडंग b. पूनर्नवा c. लाजामण्ड d. तक्र

20. बहुविध: पुरूष = किसका मत है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. सांख्य d. None

21. 'प्रश्न सहस्त्रविधान' ग्रंथ संदर्भ है ?
a. चरक संहिता b. सुश्रुत संहिता c. अ.हृ. d. अ. सं.

22. रससंकेत कलिका लेखक ?
a. गोविंददास b. व्याडी c. नागार्जुन d. कायस्थ चामुण्ड

23. Gravitz tumor is relataed with -
a. Kidney b. Liver c. Lungs d. None

24. स्नेहनं न हितं मतम् किस व्याधी संदर्भ ?
a. आमवात b. प्रमेह c. मेदोरोग d. विसर्प

25. आगन्तु उन्माद असाध्य है ?
a. हिंसाकामी b. रतिकामी c. अर्चनाकामी d. All

26. सौम्या: भाव: पय: सर्पि ..... उपक्रम For
a. वात b. पित्त c. ज्वर d. शरद ऋतुचर्या

27. Element of medical juriprudences के लेखक ?
a. डॉ. कॉरेनर b. डॉ. पार c. डॉ. मोदी d. डॉ. नेक्सन्स

28. Paralysis can cause due to..... poisoning
a. Aconite b. Lead c. Snake d. All

29. Medical Antidote of strichnine is
a. Chloroform b. Atropine c. Caffein d. None

30. चर्मव्हिद्धा मासन्दी प्रयोग करते है ?
a. शिरोबस्ति b. सुतिकास्नेहन c. पट्टबंधन d. मूढग भनिर्हरण

31. उत्फुल्लिका रोग हारीतोक्त चिकित्सा ?
a. वमन b. विरेचन c. अग्निकर्म d. रक्तमोक्षण

32. स्तन्याभावे पय:.....। वाग्भट
a. गव्य b. छाग c. माहीषं d. धात्रीम्

33. धात्री संख्या .....
a. 2 b. 3 c. 1 d. यथावश्यक

34. महापद्मक में दोषाधीक्य ?
a. वात b. पित्त c. T d. V/S

35. माक्षीक का रासायनीक सुत्र है ।
a. $CuFe_2O_3$ b. $CuFeS_2$ c. CuFeS d. $CuFe_2S_3$

36. आर्तव – धातु मल ?
a. काश्यप b. भेल c. भा. प्र. d. शारंगधर

37. Positive gravindex test is due to secretion of
a. HCG b. FH c. LH d. Progesteron

38. भेल के नुसार प्राणो की स्थिती कही है ?
a. शिर b. हृदय c. नाभी d. All

39. हारित ने स्त्री की आयु कही है (सर्वोत्तम)
a. बाला b. मुग्धा c. प्रौढा d. प्रगल्भा

40. नवकार्षीक गुग्गुलु का रोगाधिकार ?
a. गलगण्ड b. भगंदर c. ग्रहणी d. अजीर्ण

41. हारीत ने हरितकी की उत्पत्ती कही है ?
a. इन्द्र b. ब्रह्मा c. गरूड d. All

42. रक्तनानात्मज विकार (शा. सं.) ?
a. 10 b. 20 c. 30 d. 40

43. Kuffer cells are found in ?
a. Liver b. Kidney c. Pancreas d. Stomach

44. Roth's Spot ?
a. Typhoid b. Endocarditis c. Malaria d. None

45. हंसपोट्टली रस प्रयोग (शा. सं.)
a. ग्रहणी b. श्वित्र c. अश्मरी d. अग्निमांद्य

46. कल्क में चिनी मात्रा ?
a. समभाग b. 2 गुना c. 4 गुना d. All

47. आरोग्यवर्धीनी वटी भावना द्रव्य ?
a. दाडीम स्वरस b. निम्बपत्र स्वरस
c. मातुलुंग स्वरस d. निम्बु स्वरस

48. स्वरस सामान्य मात्रा ?
a. 1/2 पल b. 2 पल c. 4 पल d. None

49. मैरेयक है ?
a. सूरा + आसव b. अरिष्ट + सूरा c. a+b d. None

50. सितोपलादी चूर्ण अधीकार (च.)
a. क्षत:क्षीण b. राजयक्ष्मा c. a+b d. रक्तपित्त

51. सिरा कार्य संधीबंधन कारीणी ? किस आचार्य का मत है ?
a. चरक b. सुश्रुत c. शा. सं. d. नागार्जुन

52. Schillers test for ?
a. Ca- cervix b. B_{12} Deficiency
c. Diphtheria d. All

53. सर्वांगसुंदरी के लेखक ?
a. लालचंद्र वैद्य b. सुदर्शन शास्त्री
c. ब्रह्मानंद त्रिपाठी d. All

54. अभयघृत काश्यपानुसार प्रयोग किया जाता है ?
a. लेहन b. पंगुता c. मूढता d. ग्रहबाधा

55. जीर्ण जीर्यति आध्मान भुक्तै स्वास्थमुपैति ?
a. वात ग्रहणी b. पित्त ग्रहणी
c. अन्नद्रवशूल d. a+b

56. हरित शीर्ण लोमा लक्षण है ?
a. पांण्डू b. कामला c. a+b d. None

57. शिरोबस्ति अवदान है ?
a. चरक b. शारंगधर c. वाग्भट d. सुश्रुत

58. एषाण ज्वर आचार्य ने बताया है ?
a. चरक b. हारीत c. काश्यप d. भेल

59. वात कीट संख्या है ?
a. 67 b. 18 c. 24 d. 13

60. लुता विष चिकित्सा उपक्रम ?
a. 10 b. 20 c. 40 d. None

61. वातकलाकलीय अध्याय में ------ आचार्योने भाग लिया ?
a. 8 b. 9 c. 10 d. 12

62. 8 रस बताये है ?
a. धामार्गव b. निमी c. कांकायन d. All

63. मनोवाद बताया है ?
a. वार्योविद b. शरलोमा c. आत्रेय d. None

64. लोध्र विरेचन योग ?
a. 12 b. 16 c. 110 d. 48

65. फलमात्रा सिद्धी अध्याय में आचार्य शौनक ने श्रेष्ठ बताया है ?
a. जीमुतक b. धामार्गव c. कृतवेधन d. a + c

66. फलासव संख्या ?
a. 26 b. 11 c. 16 d. 2

67. धमनीमर्म बताया है ?
a. वाग्भट b. सुश्रुत c. चरक d. a +b

68. मूर्च्छा... ?
a. पित्त + तम b. कफ + तम c. वातकफतम d. None

69. भिषक सहस्त्रैऽपि दुर्निवारं किस व्याधी संबंधीत है ?
a. शंखक b. सुर्यावर्त c. चर्मदल d. रोहीणी

70. जल का अंजली प्रमाण ?
a. 10 अजंली b. 2 अजंली c. यथावश्यक d. None

71. डल्हण अपर ओज प्रमाण माना है ?
a. 2 अजंली b. 1 प्रसृत c. 1/2 अजंली d. 1 अजंली

72. प्रथम वयसि.... भग्न संधानकाल है ?
a. 1 मास b. 2 मास c. 3 मास d. a + c

73. चक्रयोग (सु.) निर्दीष्ट है ?
a. विद्रधी b. भग्न c. व्रणशोफ d. भगंदर

74. छेदय नेत्र रोग ?
a. उत्संगिनी b. बिसवर्त्म c. अर्म d. कुंभिका

75. कफज नेत्र रोग संख्या ?
a. 10 b. 13 c. 16 d. 25

76. सकण्डु पिच्छिल कोल प्रमाण... ?
a. उत्संगिनी b. कुंभिका c. लगन d. अर्शोवर्त्म

77. The cell which are found out side the cerebrum are known as....
a. Basket cell b. Sickle cell
c. Glomerular cell d. All of these

78. अगस्त्य हरितकी मात्रा निर्दीष्ट है ?
a. 1 हरीतकी b. 2 हरितकी
c. 3 हरितकी d. All

79. प्राणोपरोधीनी हिक्का है ?
a. अन्नजा b. गम्भीरा c. महा d. व्यपेता

80. जीवक – ऋषभक – प्रतिनिधी द्रव्य है ? (भा.प्र.)
a. अश्वगंधा b. शतावरी
c. विदारीकंद d. वाराहीकंद

81. मंजीष्ठा 81. मंजीष्ठा राग बंधीनी है ?
a. तुवरी b. अभ्रक c. हरताल d. कासीस

82. निर्मुक्ता शेष वैकृतापहम किस के संदर्भ में है ?
a. वज्राभ्रक b. पिनाकभ्रक c. मण्डूकाभ्रक d. None

83. निष्क
a. म
84. संतर्प
a. मू
85. Sour
a. Eg
86. अश्मर
a. Do
c. Lur
87. शिलाज
a. 1/2
88. निम्न
a. धात्र
89. चव्यघृत
a. रूद्ध
c. गुदभ
90. वातिके
a. पाण्डु
91. वैकृतापह
a. व्रण
c. शुध्द
92. शार्गेष्ट वि
a. देवदा
93. शुण्ठी दा
a. अतिर
c. ज्वर
94. रवितांडव
a. भगदंर
95. Commo
a. Ant. V
b. Post.
c. Ant. V
d. Post.
96. Gold sa
a. Ankyl
c. Rheu
97. Cushing
a. Hypo
c. Hypo
98. Most co
a. Strept
c. Rotavi
99. Most poi
a. Cyanic
c. Chloric
100. कफज ना
a. मृतसर्पव
c. मण्डूकव

83. निष्कोण गुरू घृष्टम् करेच कालीमा... ? किसके संदर्भ में है ?
a. माक्षीक b. सुवर्ण c. रजत d. वज्र

84. संतर्पणौत्थ व्याधी है ?
a. मूत्रकृच्छ b. अरोचक c. a+c d. None

85. Source of highest absorbable protein ?
a. Egg b. Soyabean c. Fish d. Meat

86. अश्मरी में पथ्य होगा ?
a. Dollichos Lublub b. Sida cordifolia
c. Luffa achenata d. Sarca indica

87. शिलाजतु मध्यम मात्रा है ?
a. 1/2 पल b. 1 पल c. 2 पल d. 1 कर्ष

88. निम्न में से दत्त रसायन है ?
a. धात्री b. हरीतकी c. तिल d. बिभीतक

89. चव्यघृत देते है ?
a. रूद्धान्त्र में b. परीस्त्राब्युदर
c. गुदभ्रंश d. अतिसार

90. वातिके स्नेहभुयीष्ट, पैतिके तिक्तशीतलम् किसके संदर्भ में है ?
a. पाण्डु b. कुष्ठ c. उन्माद d. श्वास

91. वैकृतापहम् का अर्थ होता है ?
a. व्रण वस्तु की चिकित्सा b. व्रण वस्तु निदान
c. शुध्द व्रण d. विकृत व्रण

92. शार्गेष्ट किसका पर्याय है ?
a. देवदारू b. लोध्र c. काकजंघा d. दन्ती

93. शुण्ठी दाडीम चतुसमक चूर्ण रोगाधिकार है ?
a. अतिसार b. ज्वरातिसार
c. ज्वर d. प्रवाहिका

94. रवितांडव रस रोगाधीकार ?
a. भगदंर b. अर्श c. अश्मरी d. All

95. Commonest site of duodenal ulcer is
a. Ant. Wall of 1st Part of duodenum
b. Post. Wall of 1st Part of duodenum
c. Ant. Wall of 2nd Part of duodenum
d. Post. Wall of 2nd Part of duodenum

96. Gold salt should be prescribed in
a. Ankylosing spondilitis b. Osteo arthritis
c. Rheumatoid arthritis d. None

97. Cushing syndrome is charactrized except
a. Hypo glycemia b. Hypo kalaemia
c. Hypo phosphataemia d. All

98. Most common cause of diarrhoea in infants is
a. Streptococus b. Pneumococus
c. Rotavirus d. Staphylococus

99. Most poisonous Hg compounds are
a. Cyanide b. Chromate
c. Chloride d. Oxide

100. कफज नाडी गती है ?
a. मृतसर्पवत b. नागराजवत
c. मण्डूकवत d. कुलींगवत

Model Question Paper XIII

1. चरक संहिता विमान स्थान मे दन्दशुक एक लक्षण किस प्रकृति की व्यक्ति का बताया गया है ?
a. वातप्रकृती b. पित्तप्रकृती c. कफप्रकृती d. संसर्गजप्रकृती

2. सुश्रुत के नुसार कुष्ठ व प्रमेह नाशक श्रेष्ठ है ?
a. तुवरक b. खदिर c. हरिद्रा d. सभी

3. सुश्रुत के नुसार वृध्द दोषो का करना चाहिए ?
a. निर्हरण b. प्रशमन c. वृध्दि d. सभी

4. दन्ती-हरितकी रोगाधिकार है ?
a. शोथ b. कफज ग्रहणी c. कफज गुल्म d. प्रमेह

5. वाग्भट के नुसार दन्तमुलगत रोग ?
a. 15 b. 13 c. 17 d. 16

6. भाव प्रकाश के नुसार गर्भस्त्राव होता है ?
a. 5 माह तक b. 3 माह तक c. 4 माह तक d. None

7. अक्षीव पिप्पली किस विष कि चिकित्सा है ?
a. मुषकविष b. सर्पदंश c. लूताविष d. किटविष

8. जीवसाक्षिणी कहा गया है ?
a. धमनी को b. शिरा को c. वायु को d. हृदय को

9. मूत्र मानुष च विषापहम् यह श्लोक है ?
a. चरक का b. सुश्रुत का c. वाग्भट का d. b +c

10. हारित संहिता मे अध्याय व स्थान है ?
a. 103 & 8 b. 103 & 7 c. 103 & 6 d. 103 & 5

11. गृहधूम तैल रोगाधिकार है ?
a. विषमज्वर b. बालरोग c. नासार्श d. केशरन्जनार्थ

12. जातं-जातं जल स्त्राव्यं कहा गया है ?
a. जलोदर b. छिद्रोदर c. प्लीहोदर d. बध्दगुदोदर

13. भस्मक रोग में दोषों की स्थिती है ?
a. वात पित्त प्रकोप b. पित्त प्रकोप c. कफ क्षय d. a + c

14. फेनयुक्त रक्त के साथ वात निकलता है ?
a. धमनीगत शल्य में b. सिरागत शल्य में
c. मर्मगत शल्य में d. सभी

15. शर्करासव है ?
a. 1 b. 4 c. 2 d. 6

16. जिज्ञासा नाम....।
a. निश्चय b. पराजयप्राप्ती c. परीक्षा d. हेतुर्दोषवचन

17. सर्वव्याधिहरपय: किसके क्षीर को कहते है ?
a. अजाक्षीर b. गोक्षीर c. माहिषक्षीर d. भेडक्षीर

18. अमृतीकरण करने से होता है ?
a. गुण वृध्दि, वर्ण वृध्दि b. गुण हानि, वर्ण हानि
c. गुण वृध्दि, वर्ण हानी d. दोनों की हानि

19. कौष्ठुकशिर्ष में दोष होते है ?
a. त्रिदोष b. वातपित्त c. वात, रक्त d. पित्त, रक्त

20. किस ग्रंथ के अध्यायों का नाम अधिकार है ?
a. रसचिन्तामणि b. आनदकन्द
c. सिध्दभेषजमणिमाला d. रसकौमुदी

21. शारंगधर संहिता के नुसार गुल्म के भेद है ?
a. 5 b. 7 c. 8 d. 9

22. सर्षपिका प्रमेह पिडीका होती है ?
a. गौरसर्षपवत b. रक्तसर्षपवत c. सर्षपवत d. मसूरदलसदृश
23. स्वरस में प्रक्षेप द्रव्य मात्रा होती है ?
a. 1 कोल b. 1कर्ष c. 1/2 कोल d. 1/2 कर्ष
24. कनक बिंदुअरिष्ट का रोगाधिकार एव मुख्य घटक है ?
a. अर्श- धत्तुर b. कुष्ठ – धत्तुर
c. कुष्ठ – खदिर d. अर्श –भल्लातक
25. शिलाजतु का कौनसा भेद रसायनार्थ उत्तम है ?
a. लौह b. रजत c. स्वर्ण d. ताम्र
26. सिंघाणक प्रतिम:म् स्त्राव किसका होता है ?
a. सिरा स्थित व्रण b. मांस स्थित व्रण
c. स्नायु स्थित व्रण d. कोष्ठ स्थित व्रण
27. सुश्रुतानुसार विचर्चिका है ?
a. क्षुद्रकुष्ठ – पित्तज b. क्षुद्रकुष्ठ – कफज
c. महाकुष्ठ – पित्तज d. महाकुष्ठ – कफज
28. सम्यक दग्ध का लक्षण है ?
a. कपोतवर्ण b. तालफलवर्ण c. कृष्णवर्ण d. None
29. Dysparunia है ?
a. परिप्लुता b. उपप्लुता c. विप्लुता d. अचरणा
30. अर्बुद मे पाक होता है ?
a. 9 माह बाद b. 10 माह बाद c. 7 माह बाद d. None
31. रस: प्रसादो मधुर: पक्वा हार निमित्तज है ?
a. रस b. ओज c. शुक्र d. स्तन्य
32. पीन प्रसन्नवदना क्लिन्नात्यामुखव्दिजाम् लक्षण है ?
a. ऋतुमती का b. व्यक्तगर्भा c. रजोनिवृत्ति का d. सद्योगृहितागर्भा
33. स्त्री का द्रोणीभूत उंदर लक्षण है ?
a. नपुंसक b. कन्या c. युग्म d. पुत्र
34. अन्धता किस स्त्रोतोविध्द का लक्षण है ?
a. प्राणवह b. रक्तवह c. उदकवह d. अन्नवह
35. मत्स्यवत परिवर्त्तन्ते किसके लिए कहा गया है ?
a. मर्म b. नाडी c. आशय d. शिरा
36. भद्रमुस्तादी क्वाथ रोगाधिकार है ?
a. ज्वर b. सूतिका अतिसार c. अस्थिभग्न d. वातरोग
37. द्रुत द्रावं सगौरवम् है ? (ग्राह्याग्राह्यत्व)
a. वैक्रान्त b. वंग c. नाग d. यशद
38. उपचयकर है ?
a. लंघन b. बृंहण c. संचय d. प्रकोप
39. वृश्चिक विषसमान पिडा होती है ?
a. पच्यमान शोफ मे b. आमवात मे c. आमशोफ मे d. a+b
40. उदक्या क्या है ?
a. बंध्या स्त्री b. गर्भिणी स्त्री c. रजस्वला स्त्री d. सभी
41. उदावर्त मे प्रवाहण है ?
a. हेतुविपरीत विहार b. उभयविपरीत विहार
c. व्याधी विपरीतार्थ d. व्याधी विपरीत विहार
42. प्राण का स्थान हृदय माना है ?
a. काश्यप b. हारित c. भेल d. वाग्भट
43. ईषतपितवर्ण होता है ?
a. रस का b. रसेद्र का c. मिश्र का d. सूत
44. भग्न व योनिभ्रंश नाशक है ?
a. तैल b. घृत c. वसा d. मज्जा
45. शिर में सेवनी संख्या है ?
a. 5 b. 7 c. 6 d. 2
46. अर्धचंद्राकार छेदन किसमे करते है ?
a. ऋजु भगंदर b. शतपोनक c. परिस्त्रावी d. परिक्षेपी
47. अविपाकी विषगुण माना है ?
a. सुश्रुत b. चरक c. शारंगधर d. वाग्भट
48. पृथ्वी महाभूत के गुण है ? (कारिकावली)
a. 11 b. 9 c. 14 d. 5
49. तरूणावस्था मे विषयुक्त सर्प है ?
a. मण्डली b. दर्वीकार c. राजिमान d. वैकरंज
50. ग्राम्यधर्मरूजा भृशम्....
a. विप्लुता b. अत्यानंदा c. उदावर्ता d. परिप्लुता
51. अनुमिती क्या है ?
a. प्रमा b. प्रमेय c. प्रमाण d. प्रमाता
52. Blood Supply of Tonsil
a.Superior labial b.Inferior labial
c.Facial d. Palatine
53. त्रिफलाद्य घृत प्रयोग करते है ?
a. मुखरोग b. उदावर्त c. नेत्ररोग d. मलावरोध
54. षड्विध क्रियाकाल का वर्णन है ?
a. सु.सू. 21 b. सु.सू. 24 c. सु.सू. 46 d. सु.उ. 12
55. साक्षी है ?
a. प्रकृति b. विकृति c. आत्मा d. अहंकार
56. अन्नज अजीर्ण है ।
a. आमाजीर्ण b. विष्टब्धाजीर्ण c. विदग्धाजीर्ण d. सभी
57. खर पाक स्नेह प्रयोग करते है।
a. पानार्थ b. नस्यार्थ c. अभ्यंगार्थ d. सभी
58. मुढगर्भ मे किस शस्त्र से शस्त्रकर्म करते है ।
a. दन्तशंकु b. मण्डलाग्र c. अर्धशस्त्र d. करपत्र
59. औषध शब्द बना है ।
a. ओष b. ओयस c. ओषो नाम रस: से d. None
60. असाध्य भगन्दर है ।
a. शतपोनक b. उन्मार्गी c. शम्बूकावर्त d. परिस्त्रावी
61. धन्वतरि निघण्टु के लेखक है ।
a. धन्वतरी b. मदनपाल c. नरहरि पंडित d. महेंद्र भौगिक
62. चरक अनुसार मुत्राघात के भेद है।
a. 8 b. 13 c. 16 d. 20
63. शक्ति है। a. रस b. गुण c. वीर्य d. प्रभाव
64. Vit B_{12} absorption होता है।
a. Duodenum b. Ischium c. Ileum d. Fundus
65. रस का ज्ञान होता है।
a. अधिवास b. निपात c. स्पर्शन d. रसन
66. द्रव्यगुण के विभाग है।
a. 8 b. 6 c. 4 d. 10
67. स्मृतिसागर रस में भावना देते है।
a. शंखपुष्पी b. मण्डूकपर्णी c. ब्राम्ही d. जोतिष्मती

68. Water born disease नही है।
a. Cholera b. Hepatitis B c. Wel's disease d. None

69. वाग्भट के नुसार गर्भिणी को बस्ति कब दि जाती है।
a. सप्तम मास b. षष्ठ मास c. अष्टम मास d. नवम मास

70. वत्सनाभ का योग है।
a. आरोग्यवर्धिनी b. सूतशेखर c. चन्द्रोदय d. चंद्रकला

71. भिक्षुगोविंद रचयिता है।
a. रसरत्नसमुच्चय b. रससार c. रस संकेतकलिका d. रस तरंगिनी

72. तालुनमन संबंधित है।
a. फक्क b. अहिपूतना c. मस्तुलुंगक्षय d. कुरंड

73. जातरस लक्षण है।
a. आसव b. शुक्त c. अवलेह d. कषाय

74. नाभी के नीचे उभार होना,गुदा से स्त्राव,अरूचि होना लक्षण मिलता है।
a. जलोदर b. बध्दगुदोदर c. परिस्त्राव्युदर d. यकृदाल्युदर

75. पिच्छाबस्ति प्रयोग करते है।
a. उदर b. ग्रहणी c. रक्तातिसार d. गुल्म

76. कफज शोथ है।
a. Nephrogenic b. Cardiogenic
c. Hepatogenic d. None

77. दंतशंकु से क्या करते है।
a. एषण b. छेदन c. भेदन d. आहरण

78. सुश्रुत के नुसार चेतना का स्थान है।
a. हृदय b. मन c. नाभी d. शिर

79. विशिष्ट शक्ति है।
a. प्रभाव b. वीर्य c. रस d. विपाक

80. Spasmodic dysmenorrhoea किस उम्र में मिलता है।
a. 19-21 yrs. b. 45-50 yrs.
c. 60-70 yrs. d.12-15 yrs.

81. मण्डल कुष्ठ अभ्रक के किस भेद के प्रयोग से होता है।
a. नाग b. वज्र c. पिनाक d. कृष्ण

82. योन्यार्श में प्रयुक्त तैल है।
a. कासिसादि तैल b. जात्यादि तैल
c. शतावरी तैल d. मूषक तैल

83. पारद रूजाहर किस से होता है।
a. मूर्च्छन b. मूर्च्छना c. जारण d. जारणा

84. Kussumal's breathing मिलता है।
a. Acidosis b. Typhoid c. Malaria d. Filariasis

85. निग्रहस्थान किसके लिए आया है।
a. वादमार्ग b. जल्प c. तन्त्रदोष d. छाया

86. Vector of filariasis is
a. Culex b. Aedes c. Anophales d. all

87. पाचनी औषध किसमे देते है।
a. परिणाम शुल b. अम्लपित्त c. अग्निमांद्य d. सभी

88. तापनियंत्रण केंद्र स्थित है।
a. Medulla b. Pons
c. Cerebellum d. Hypothalamus

89. ताम्र सत्व प्राप्त करते है।
a. भूनाग b. नौसादर c. गौरिपाषाण d. इष्टिका

90. गुण के आधार पर विपाक है।
a. 3 b. 2 c. 1 d. 4

91. सुतेन्द्र वीर्यप्रद है।
a. अभ्रक b. पारद c. नाग d. गंधक

92. Atomic wt of रजत is
a. 210 b. 107.88 c. 179 d. 279

93. निर्धूम परिक्षा (भस्म) की जाती है।
a. वंग b. पारद c. नाग d. गंधक

94. आवरण कि चिकित्सा में पहले ..... चिकित्सा करते है।
a. आवृत्त की b. आवरक की c. साथ में दोनो की d. None

95. कर्पूर रस है।
a. कूपीपक्व रसायन b. खरलिय रसायन
c. स्वरस कल्पना d. None

96. स्तन्य का प्रमाण है।
a. 4 अंजली b. 2 अंजली c. 1 अंजली d. 11/2 अंजली

97. 1 वर्ष मे शिशु का भार होता है।
a. 2 गुणा b. 4 गुणा c. 3 गुणा d. 5 गुणा

98. हृन्नाल भेद है।
a. कान्तलौह b. मुण्डलौह c. ताम्र d. तिक्ष्णलौह

99. उपनाह है।
a. वर्त्मगत b. शुक्लगत c. कृष्णगत d. सन्धिगत

100. हारित नुसार बुध्दि के उत्पत्ती मे महाभूत है।
a. आकाश b. वायु c. तेज d. जल

Model Question Paper XIV

1. सर्वदा सर्व भावानां..... वृध्दि कारणं..
a. सामान्य b. विशेष c. समवायं d. गुण

2. विधि शोणितीय अध्याय..... चतुष्क मे है।
a. स्वस्थ b. अन्नपान c. योजना d. रोग

3. राशी पुरूष होता है ?
a. एकधात्वात्मक b. षड्धात्वात्मक
c. चतुर्विंशति तत्वात्मक d. सभी

4. शुभाशुभ प्रवृत्ति निवृत्ती मे हेतु माने गये है ?
a. अध्यात्म द्रव्य b. अध्यात्म गुण
c. द्रव्याश्रित कर्म d. सभी

5. नख रोम विध्वंसन किस कृमी का लक्षण है ?
a. मलज b. पुरीषज c. रक्तज d. कफज

6. दुःख सहिष्णूता लक्षण है ?
a. सम्यक व्यायाम का b. अतिव्यायाम का
c. अव्यवाय d. व्यवाय का

7. पित्तशामक रस है ?
a. मधुर, अम्ल, लवण b. कटु, तिक्त, कषाय
c. कषाय, तिक्त, मधुर d. मधुर, लवण, कषाय

8. शिरोविरेचन द्रव्यो मे श्रेष्ठ है ?
a. प्रत्यकश्रेणी b. प्रत्यकपुष्पा c. श्वेता d. ज्योतिष्मती

9. मधु-सैंधव प्रयोग वमन द्रव्यों के साथ करवाते है ?
a. दोष विलयनार्थ b. दोष छेदनार्थ c. उभयार्थ d. दीपनार्थ

10. औषध निर्माणार्थ किस ऋतु मे मूल का ग्रहण करते है ?
a. शरद b. हेमन्त c. वर्षा d. ग्रीष्म

11. मृदु करोती देह मलांना विनिहन्ति संगम....
a. वमन b. आस्थापन c. स्नेहन d. स्वेदन

12. विसूचिका की चिकित्सा का आद्य उपक्रम है।
a. लंघन b. वमन c. विरेचन d. स्वेदन

13. स्वर – वर्ण गर्भ के किन – किन भावो मे सामान्य है ?
a. आत्मज, सात्मज b. सात्मज, सत्वज
c. आत्मज, सत्वज d. रसज, सात्मज

14. पादाभ्यंग किस की चिकित्सा है।
a. अर्दित वात b. पक्षवध c. गृध्रसी वात d. सभी

15. रक्तधातुगत ज्वर की चिकित्सा है ?
a. वमन, उपवास b. विरेचन, रक्तमोक्षण,
c. विरेचन, उपवास d. None

16. शूल, आटोप, आन्त्रकूजन, दौर्बल्य व नखविवर्णता किस व्याधी के पूर्वरूप विषयक अरिष्ट है ?
a. उदर रोग b. गुल्म c. बहिरायाम d. प्रमेह

17. ----- तु पांदजघोरूकर मूलावमोटनी ?
a. विश्वाची b. पक्षवध c. गृध्रसी d. खल्ली

18. दर्वीकर, मण्डली व राजीमान सर्पो के विषो में क्रमश: दोष प्राधान्य होगा ?
a. वात, पित्त, कफ b. पित्त, कफ, वात
c. कफ, वात, पित्त d. वात, कफ, पित्त

19. ---- वातहराभ्यग्डोव्योगिनां श्रेष्ठ.
a. खदिर b. रास्ना c. कुष्ठ d. आरग्वध

20. चरक के नुसार मेद किन-किन स्त्रोतसों का मूल है ?
a. मेदोवह, अस्थिवह b. अस्थिवह, स्वेदवह
c. मेदोवह, स्वेदवह d. मेदोवह, मज्जावह

21. इक्षु वालिका,दर्भ,कुश,काश आदि द्रव्य किस महाकषाय से संबंधित है।
a. स्तन्य जनन b. स्तन्य शोधन c. शुक्रजनन d. शुक्रशोधन

22. ग्राही द्रव्यसंदर्भ में असत्य कथन है ?
a. उष्णवीर्य प्रधान b. कटुरस प्रधान
c. अग्निमहाभूत प्रधान d. वातवर्धक

23. श्रेष्ठ शिलाजतु है ?
a. स्वर्ण b. रजत c. ताम्र d. लौह

24. किन विकारो में तिक्त रस से सिध्द क्षीर बस्तियाँ दी जाती है ?
a. रसप्रदोषज b. रक्तप्रदोषज
c. मांसप्रदोषज d. अस्थि प्रदोषज

25. सितोपलादि चूर्ण का अनुपान होता है ?
a. मधु b. सर्पि c. मधु, सर्पि d. उष्णजल

26. आन्त्रकुजन संधि स्फुटन व अंगुली पर्वो से स्फुटन किस प्रकार के विषय है?
a.प्रत्यक्ष गम्य b.अनुमान गम्य
c.आप्तोपदेश गम्य d. उपमान गम्य

27. आचार्य चरक के नुसार बृहत शतावरी घृत निर्दिष्ट है ?
a. योनि रोगो में b. शुक्र दोष में c. आर्तव दोष में d. सभी

28. जीमूतक योग संख्या....?
a. 131 b. 20 c. 39 d. 48

29. चरक के नुसार हिक्का किस आभ्यंतर विद्रधी का लक्षण है ?
a. गुद b. नाभि c. यकृत d. उदर

30. शुकपूर्ण गलास्यता किस का पुर्वरूप है ?
a. कास b. छर्दि c. श्वास d. स्वरभेद

31. वातज प्रमेह असाध्य होने का कारण...
a. समक्रियत्वाच्च b. महात्ययत्वाच्च
c. समानगुणभेद स्थानकत्वात् d. सभी

32. सर्व रस प्रत्यनीकभूत रस है ?
a. अम्ल b. लवण c. मधुर d. तिक्त

33. निम्न में से श्रेष्ठ आतुर गुण है ?
a. स्मृती b. अभिरूत्व c. निर्देशकारित्व d. ज्ञापकत्वं च रोगाणां

34. तण्डुलीय मूल का क्षौद्र व तण्डुलाम्बु के साथ प्रयोग निर्दिष्ट है ?
a. अरजस्का योनिव्यापद b. योनिकन्द c. योन्यार्श d. प्रदर में

35. सत्व, भक्ति, शौच, शील, आचार व स्मृती इन परीक्ष्य भावो के परिक्षण का उद्देश्य होता है ?
a. रोगी के बल का ज्ञान करना b. शेष आयु का प्रमाण जानना
c. रोगी के सत्व कि परीक्षा करना d. सभी सत्य है

36. सिरास्नायुसंदशो कुणपगंधी किस विसर्प का लक्षण है ?
a. आग्नेय b. ग्रंथी c. कर्दम d. सन्निपातिक

37. पक्षाघात किस मार्ग की व्याधी है ?
a. बाह्य b. आभ्यंतर c. मध्य d. शाखागत

38. सर्वग्रह, परिग्रह किसके भेद है ?
a. करण b. संयोग c. राशि d. प्रकृति

39. प्रमोह शुन्यता किस हृद्रोग के लक्षण है ?
a. वातिक b. पैतिक c. श्लैष्मीक d. कृमीज

40. त्रासन, दान, हर्षण किस प्रकार की चिकित्सा है ?
a. दैव्यव्यपाश्रय b. सत्वावजय c. द्रव्यभूत d. अद्रव्यभूत

41. शुक्र व स्तन्य दोषों की संख्या होती है ?
a. 8,8 b. 3,8 c. 8,11 d. 5,8

42. ग्रंथित रक्तपित्त की स्थिती में क्या दिया जाना चाहिए ।
a. क्षौद्र + पारावत शकृत b. सर्पि + पारावत शकृत
c. क्षार + पारावत शकृत d. क्षौद्र + अजा शकृत

43. पुरूष के पुष्पीत हो जाने का अभिप्राय होता है ?
a. अरिष्ट युक्त हो जाना b. सौभाग्य की वृध्दि होना
c. रोग उत्पन्न हो जाना d. स्वास्थ की प्राप्ती होना

44. शुष्क विरस मुखता किस तृष्णा का लक्षण है ?
a. वातज b. पित्तज c. क्षयज d. सन्निपातज

45. रूक्ष व उष्ण अन्नपान किस मदात्यय की चिकित्सा है ?
a. वातज b. पित्तज c. कफज d. सन्निपातज

46. विविक्त कर्म किस महाभुत से सम्बन्धित है ?
a. वायु b. अग्नि c. आकाश d. पृथ्वी

47. कौनसा महाभूत शुक्र में नही होता है ?
a. पृथ्वी b. वायु c. अग्नि d. आकाश

48. निम्न में से शोफकारक.
a. दधि b. तक्र c. फाणित d. सभी

49. गरविष की स्थिती में वमनार्थ किसका प्रयोग करते है ?
a. शुध्द स्वर्ण पूर्ण b. अमृत ताम्रचूर्ण
c. मदनफल d. गर्भजल

50. किन-किन स्थितीयो में मूत्र में रक्तप्रवृत्ती होती है ?
a. पित्तज मूत्रकृच्छ्र b. अश्मरी c. रक्तज मूत्रकृच्छ्र d. सभी

51. पिच्छा बस्ति किस स्थिती में नही देते है ?
a. प्रवाहिका b. ज्वर c. गुदभ्रंश d. गुल्म

52. कपोतवर्ण प्रतिम किस व्रण का लक्षण है ?
a. रूह्यमान b. दुष्टव्रण c. सम्यकरूढव्रण d. शुध्दव्रण

53. किस स्थिती में नस्य प्रयोग निषिध्द माना गया है ?
a. नव प्रतिश्याय b. अर्दित c. पक्षाघात d. शिरःशूल

54. धमनी शैथिल्य किस धातुक्षय का लक्षण है ?
a. मांसक्षय b. रक्तक्षय c. वातक्षय d. मेदक्षय

55. अर्श दूष्य है मेदो मांस.....
a. स्नायु b. क्लेद c. त्वक् d. रक्त

56. ------ पुष्टि कराना श्रेष्ठ ?
a. भोजन (यथाकाल) b. सुरा c. स्नान d. निवृत्ति

57. गर्भिणी पंचम मांस लक्षण है ?
a. क्लान्ततमा b. कार्श्य c. गुरूगात्रता d. बलवर्ण हानि

58. Carpel tunnel syndrome is related with which nerve
a. Ulnar N. b. Median N. c. Radial N. d.Brachial N.

59. Xth factor is
a. Hegmen factor b. Stuart factor
c. Christmas d.PTA

60. नील गंगाम्बुसम्भुत किसके लिए कहा गया है ?
a. मुक्ता b. माणिक्य c. नीलम d. पैरोजक

61. हिंगु निर्यास किसका पर्याय है ?
a. हिंगु b. अरिष्टक c. निम्ब d. वचा

62. बालवर्ति निर्देश किसकी चिकित्सा में किया गया है ?
a. शिरोव्रण b. नेत्रव्रण c. गुदव्रण d. मुखव्रण

63. गण्डूष का गुणधर्म होता है ?
a. दन्तदार्ढ्यकर b. आस्यकण्ठ शोषहर
a. दन्तहर्षहर d. सभी

64. शोथ का आद्य उपक्रम माना गया है ?
a. अपतर्पण b. आलेप c. परिषेक d. अभ्यंग

65. गुल्म में कौन सा कर्म निषिध्द बताया गया है ?
a. वमन b. विरेचन c. स्वेदन d. निरूहबस्ति

66. सुश्रुत नुसार कितने दिन के अन्तराल पर कुष्ठ में रक्तमोक्षण करवाना चाहिए।
a. पक्षात b. मांसात c. वर्षार्ध d. संवत्सरात

67. घन संजायते यदि पिण्ड;..... (सु. शा. 3/5)
a. पुमान् b. स्त्री c. नपुंसक d. युग्म

68. Renin is secreted by.
a. Medulla of Kidney
b. Juxtra glomerular apparatus of the cortex of kidney
c. Stomach d. Adenohypophysis

69. किस बस्ति का प्रयोग सभी ऋतूओं में किया जाता है ?
a. मात्राबस्ति b. युक्तरथ बस्ति c. यापना बस्ति d. अनुवासन बस्ति

70. चौदाह वर्ष के बालक हेतु निरूह बस्ति मात्रा
a. 8 प्रसृत b. 9 प्रसृत c. 10 प्रसृत d. 11 प्रसृत

71. सुश्रुत के नुसार व्रण के कितने लक्षण बताए गये है ?
a. षट्लक्षण b. पंचलक्षण c. षष्टी लक्षण d. चर्तुलक्षण

72. विरेचन वमन के कितने दिन पश्चात करना चाहिए ।
a. 7 b. 10 c. 15 d. 30

73. शारंगधर का काल है ?
a. दहावी शती b. ग्यारहवी शती c. तेरहवी शती d. सोलहवी शती

74. अपान वायुविकृती में औषध काल.... (च.चि.30/299)
a. प्राग्भक्त b. मध्यभक्त c. पश्चातभक्त d. सामुद्ग

75. चरकन्यास टिका के टिकाकार है ?
a. जेज्जट b. योगिद्रनाथ सेन c. स्वामी कुमार d. भट्टार हरिशचंद्र

76. सुश्रुत के नुसार मानवशरीर कुर्च संख्या....?
a. 4 b. 6 c. 14 d. 16

77. वातिक विद्रधी लक्षण (सु. नि. 9/7)
a. चित्रोत्थान प्रपाकश्च b. क्षिप्रोत्थान प्रपाकश्च
c. चिरोत्थान प्रपाकश्च d. घाटालो विषमो महान

78. उत्क्षेप व स्थपनी किस प्रकार के मर्म है ?
a. सद्यप्राणहर b. कालान्तर प्राणहर c. विशल्यघ्न d. रूजाकर

79. स्त्रावणार्थ किस अंजन का प्रयोग होता है ?
a. स्त्रोतोंजन b. पुष्पांजन c. रसांजन d. सौवीरांजन

80. Hodgkins disease related with
a. Bones b. Lymph nodes
c. Thyroid gland d. Pineal body

81. किलास के भेद है ?
a. 7 b. 18 c. 3 d. असंख्य

82. नेत्ररोगो में दोष किसके अनुसारी होते है ..... (सु.उ. 9/20)
a. सिरा b. स्त्रोतस c. लसिका d. आशय

83. काश्यपनुसार गर्भिणी के नेत्र किसके समान होने पर गर्भ की मृत्यु सुचक है..... (का. खि. 10/162)
a. बदरोत्थिताकारे b. दुर्वात्थिताकारे
c. मुस्तोत्थिताकारे d. उशीरोत्थिताकारे

84. धत्तुरे का प्रयोग किस विष चिकित्सा में बताया है ?
a. अलर्क b. कुचला c. सर्प d. वृश्चिक

85. आत्म्येंद्रिय मनोऽर्थानां सन्निकर्षात प्रवर्त्तते किस प्रमाण का लक्षण है ?
a. प्रत्यक्ष b. अनुमान c. उपमान d. युक्ती

86. द्रव्यगुण शतक के लेखक है ?
a. शोढल b. त्रिमल्ल भट्ट
c. चक्रपाणीदत्त d. आचार्य प्रियवत शर्मा

87. खल्ली रोग में निर्दिष्ट चिकित्सा कर्म है..... (च.चि. 28/10)
a. उपनाह b. सिरावेध c. नस्य d. बस्तिकर्म

88. सर्पि..... पातव्यम्। (च.सु. 13/1)
a. प्रावृट b. शरदि c. माधवे d. वसन्ते

89. चरक के नुसार अनास्थाप्य है ?
a. हृद्रोगी b. गुल्मी c. अजीर्ण d. भगन्दर

90. मोचा किसका पर्याय है ?
a. मोचरस b. केलेका c. अग्निमंथ a. गंभारि

91. किस व्याधी की चिकित्सा में अंगुष्ठोदर में सिरादाह कर्म करते है ?
a. जलोदर b. वातोदर
c. प्लीहोदर d. सन्निपातोदर

92. एकोमहागद किस व्याधी हेतु कहा गया है ..... (च.सु.19/4)
a. उन्माद b. अपस्मार c. रक्तपित्त d. अतत्वाभिनिवेश

93. रक्तमोक्षण में रक्त निर्हरण परम प्रमाण
a. एक प्रस्थ b. 1/2 प्रस्थ c. एक आढक d. दो आढक

94. प्रमेह पिडका वर्णन (च.सु. 17/105)
a. प्रमेह निदान b. प्रमेह चिकित्सा
c. कियन्त: शिरसीय अध्याय d. अष्टोदरिय अध्याय

95. कितनी पेशिया गर्भच्छिद्र के आश्रित होती है ?
a. 3 b. 4 c. 2 d. 5

96. शीतस्तनुर्विशोषी च..... परिकिर्तीत (शांरगधर उ. 11)
a. आलेप b. प्रलेप c. प्रदेह d. None

97. ..... द्रव्य वातहराणाम् श्रेष्ठ
a. विदारिगंधा b. अतिविषा c. बिल्व d. एरण्डमूल

98. लेहन योग्य शिशु है ?
a. महाशना b. मन्दाग्नि c. ग्रहरोग d. कल्याणमातृक

99. क्षारकर्म अयोग्य स्थिती है?
a. मदाग्नि b. रक्तपित्त c. अन्तविद्रधी d. अर्श

100. किस द्रव्य का लगातार लंब समयतक प्रयोग किया जा सकता है ?
a. यवक b. माष c. यव d. किलाट

*****

Model Question Paper XV

1. Risorius muscle का कार्य –
a. Facial Experssion b. Movement of Tongue
c. Mastication d. Movement of eye & lid

2. रात्रि में शिरोवेदना किस शिरोरोग का लक्षण है ।
a. वातज b. पित्तज c. रक्तज d. क्षयज

3. Brodie's abscess किस में मिलती है।
a. Liver b. Lung c. Brain d. Bone

4. भारतीय बच्चों में सबसे अधिक पाया जानेवाला कौन सा anaemia है.
a. Iron deficiency b. Aplastic
c. Haemolytic d. Haemorrhagic

5. वातरक्त में चिकित्सार्थ प्रयोज्य योग है।
a. कंसहरितकी b. गुडहरितकी
c. चित्रकहरितकी d. अगस्त्यहरीतकी

6. चरक का काल है।
a. 2000 इ. b. 1000 इ. c. 200 इ. d. 1500 इ.

7. Spinal Cord को पोषण प्राप्त होता है।
a. Meningeal coverings b. Spinal Fluid से
c. Both a and b d. None

8. Hyperthyroidism की चिकित्सा में प्रयुक्त औषध..
a. Carbamazepine b. Diethyl carbamazepine
c. Carbimazole d. Colchicine

9. Corneal ulcer में देते है।
a. Atropine b. Dexamethasone
c. Pilocarpine d. Physostigmine

10. षडंग गुग्गुल का अधिकार है।
a. कुक्षिरोग b. कर्णरोग c. शिरोरोग d. नेत्ररोग

11. पंचरात्रि लंघन से ठीक हो जाने वाली व्याधि.
a. प्रतिश्याय b. कुक्षिरोग c. अक्षिरोग d. All

12. नासागत रक्तपित्त का उद्गम स्थल.
a. यकृत्प्लीहा b. हृदय c. तालु d. वृक्क

13. षड्रस युक्त द्रव्य है।
a. रसोन b. आमलकी c. मद्य d. None

14. Worm seed है।
a. पलाश b. अफसन्तीन c. कम्पिल्लक d. चौहार

15. मूषिक विष की चिकित्सा में प्रयुक्त होनेवाले द्रव्य.
a. कण्टकीकरंज b. नागकेशर c. अंकोल d. गुंजा

16. औषध – भेषज में सर्व प्रथम अन्तर (भेद) बताया है।
a. शारंगधर b. भावमिश्र c. काश्यप d. माधवकर

17. घातक malaria का कारण.
a. P. Vivex b. P. Falciparum
c. P. Ovale d. P. Malariae

18. विपाक किसका अवदान है ।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. शांरगधर

19. ARV के आविष्कारक एवं आविष्कार का काल.
a. Louis Pasteur - 1864
b. Willium Herold - 1895
c. Louis Pasteur - 1884
d. Willium Herold - 1875

20. Suprascapular Artery शाखा है।
a. External carotid artery b. Brachial artery
c. Subclavian Artery d. Axillary Artery

21. मूत्र का विशिष्ट गुरूत्व.
a. 1040-1050 b. 1030-1050
c. 1020-1040 d. 1010-1030

22. संज्ञामोह लक्षण है।
a. वातक्षय b. वातवृध्दी c. कफक्षय d. कफवृध्दी

23. कफ विकृतावस्था में होता है।
a. अम्लरस– प्रधान b. लवणरस – प्रधान
c. कटुरस – प्रधान d. तिक्तरस – प्रधान

24. कर्षफल है।
a. हरीतकी b. बिभितक c. आमलकी d. None

25. क्षतक्षीण का पुर्वरूप.
a. रक्तवमन b. वक्ष:शूल c. लोहितास्यगंध d. अव्यक्त लक्षण

26. संधिमुक्त भेद नही है।
a. उत्पिष्ट b. अतिपातित c. अवक्षिप्त d. अतिक्षिप्त

27. शेफालिका पत्र स्वरस का गृध्रसी में उपयोग अवदान----
a. चक्रदत्त b. अरूणदत्त c. सुश्रुत d. भा. प्र.

28. संस्थान पर्याय है।
a. निदान b. रूप c. सम्प्राति d. पूर्वरूप

29. संजीवनी वटी में घटक द्रव्यों कि संख्या...
a. 9 b. 10 c. 12 d. 13

30. धात्रीपत्र पर्याय.
a. आमलकी b. जातीफल c. तालीसपत्र d. दालचीनी

31. कांकायन वटी रोगाधिकार.
a. शूल b. गुल्म c. ज्वर d. शोथ

32. मानव शरीर की Ventral cavities है।
a. Only thorasic Cavities b. Only Abdominal Cavities
c. Peritoneal Cavities d. Thoraco-Abdominal Cavities

33. भौहे
a. C
c. Al
34. अर्ध
a. श
35. सत्का
a. सां
36. चरक
a. वा
c. वा
37. आर्तव
a. अर
38. पुष्यानु
a. मध
39. उत्थान
a. हेतु
40. धमनी
a. चर
41. रत्नराट्
a. मा
42. कौन–र
a. सा
43. हृद्य रस
a. मधुर
44. फेनाश्म
a. AS_2
45. (सुश्रुत)
a. हृदय
46. Coror
a. Ver
c. Up
47. स्त्रियों में
a. 6
48. पुरूष में
a. 200
c. 280
49. सुश्रुत के
a. 8
50. द्रव्यगुण
a. 5
51. निशा है।
a. चमेली
52. नटभूषण.
a. गन्धक
53. अभ्रक के
a. रजत
54. Golgi b
a. Cyto

33. भौहे चलना किस पेशी से सम्बधिंत है।
a. Orbicularsis oculi b. Levator Palpabrae superiaris
c. Alae nasi d. Zygomaticus major

34. अर्ध लांगलक छेदन किस भगन्दर में किया जाता है।
a. शम्बुकावर्त b. उष्ट्रग्रीव c. परिस्त्रावी d. शतपोनक

35. सत्कार्यवाद मत है।
a. सांख्य b. न्याय c. वैशेषिक d. मीमांसक

36. चरक के नुसार मधु है।
a. वात पित्त शामक b. पित्त कफशामक
c. वात कफ शामक d. Only वात शामक

37. आर्तववह स्त्रो. के वेधन से होता है।
a. असृग्दर b. कष्टार्तव c. आर्तवनाश d. ग्रन्थि

38. पुष्यानुग चुर्ण का शास्त्रीय अनुपान.....
a. मध b. माहेन्द्र जल c. तण्डुलोदक d. गोदुग्ध

39. उत्थान पर्याय.....
a. हेतु b. पुर्वरूप c. रूप d. None

40. धमनी मर्म माना है।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. काश्यप

41. रत्नराट् है।
a. माणिक्य b. हिरा c. मुक्ता d. पन्ना

42. कौन-सा द्रव्य मधुररस और मधुरपाक होते हुए भी उष्णवीर्य है।
a. सारिवा b. वत्सनाभ c. आमलकी d. सभी

43. हृद्य रस है।
a. मधुर b. अम्ल c. तिक्त d. कषाय

44. फेनाश्म का रसायनिक सूत्र है।
a. AS_2S_3 b. AS_2S_2 c. AS_2O_3 d. Al_2O_3

45. (सुश्रुत) सिराओं का मुलस्थान.....
a. हृदय b. नाभि c. पक्वाशय d. शिर

46. Coronal Plane शरीर को विभक्त करता है।
a. Ventral-Dorsal Parts b. Only ventral part
c. Upper-Lower Parts d. Only Dorsal part

47. स्त्रियों में आशयों कि संख्या....
a. 6 b. 9 c. 8 d. 10

48. पुरुष में हृदय का भार.
a. 200-240 gm b. 240-280 gm
c. 280-320 gm d. 320-360 gm

49. सुश्रुत कोष्ठांग संख्या.
a. 8 b. 13 c. 12 d. 15

50. द्रव्यगुण पदार्थ संख्या....
a. 5 b. 7 c. 6 d. 8

51. निशा है।
a. चमेली b. सम्हालु c. हलदी d. रातराणी

52. नटभूषण.
a. गन्धक b. मन:शिला c. हरताल d. माक्षिक

53. अभ्रक के सत्वपातन से प्राप्त होता है।
a. रजत b. यशद c. वंग d. लौह

54. Golgi bodies पायी जाती है।
a. Cytoplasm b. Nucleus c. Nucleolus d. Vaculoes

55. किस औषधि योग में ताम्र नही है।
a. मयुरपिच्छा भस्म b. आरोग्यवर्धिनी वटी
c. पुनर्नवा मण्डुर d. हृदयार्णव रस

56. पंचमहाभूत किस प्रकार का सिध्दान्त है।
a. सर्वतंत्र b. प्रतितंत्र c. अधिकरण d. अभ्युपगम

57. कौन-सा नपुंसक शुक्रहीन होता है।
a. आसेक्य b. कुम्भीक c. सौगन्धिक d. षण्ढ

58. किस रोग में लवण वर्ज है।
a. पाण्डु b. हृदरोग c. शोथ d. यकृद्वाल्युदर

59. आविप्रणाश: गर्भास्पदनं श्यावपाण्डुवर्णता शूलम् उच्छ्वासपूतित्वम्। किसका लक्षण है।
a. मुढगर्भ b. अर्न्तमृतगर्भ c. गर्भसंग d. लीन गर्भ

60. गर्भाशय भ्रंश- गुदभ्रंश की चिकित्सा में प्रयुक्त तैल.
a. जात्यादि तैल b. आपमार्ग क्षार तैल
c. मुषक तैल d. अणु तैल

61. तिमिर रोग---
a. वातनानात्मज b. पित्तनानात्मज
c. कफनानात्मज d. None

62. मूर्च्छाऽतिसारो वमथु: पिपासा शूलं भ्रमोद्वेष्टनजृम्भादाहा:। वैवर्ण्यकम्पो हृदये रूजश्च भवन्ति तस्यां शिरसश्च भेद:। किसका लक्षण है।
a. क्रिमि b. उदर c. विसुचिका d. अलसक

63. दुग्धोत्पादक हॉर्मोन.
a. Relaxin b. Progesterone
c. Prolactin d. Estrogen

64. अहिपुतना शिशु के किस भाग का रोग है।
a. कण्ठ b. शंख c. गुद d. वक्ष

65. नारी दुग्ध में गाय के दुग्ध की अपेक्षा कम होता है।
a. Vit B_{12} b. Vit D c. Vit A d. Niacin

66. स्तंम्भन के लिए किस प्रकार के द्रव्य उपयोगी है।
a. उष्णवीर्य - तिक्तरस b. शीतवीर्य - कषायरस
c. शीतवीर्य - मधुररस d. उष्णवीर्य - कषासरस

67. आयुर्वेदीय मतानुसार मुढगर्भ का कारण -
a. आशय विकृति b. गर्भकोषपरासंग
c. अपानदुष्टी d. सभी

68. अस्थिस्फुटन लक्षण है।
a. मज्जाक्षय b. अस्थिक्षय c. मांसक्षय d. शुक्रक्षय

69. अर्श की चिकित्सा में वर्णित है।
a. नित्यानंद रस b. निद्रोदय रस c. नित्योदित रस d. None

70. वातकण्टक का संबंध है।
a. जानु b. गुल्फ c. कुर्पर d. मणिबन्ध

71. भेषज पर्याय - a. शोधन b. लंघन c. शमन d. वमन

72. मन्थकल्पना किस कल्पना के अन्तर्गत वर्णित है।
a. कल्क b. क्वाथ c. हिम d. फाण्ट

73. अग्निकुमार रस का घटक.
a. कुपीलु b. विष c. धतुर d. गुंजा

74. Enarthrosis का उदा. है।
a. Hinge Jt. b. Ball & Socket Jt.
c. Pivot Jt. d. Condyloid Jt.

75. षड्विध शस्त्रकर्म – माने है।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. निमि

76. वरा पर्याय –
a. गर्भाशय b. बीजवाहिनी c. योनि d. मलाशय

77. अच्छस्नेहपान के पश्चात किस प्रकार का जल पीना चाहिए।
a. उष्ण b. शित c. श्रृतशीत d. None

78. स्वस्तिक यन्त्र कौन–सा है।
a. बडिशमुख b. ब्रिहिमुख c. शरारिमुख d. सिंहमुख

79. निम्न में से कौनसी औषधी कृमिगृह के रूप में प्रयुक्त होती है।
a. लाक्षा b. कट्फल c. कर्कट श्रृंगी d. वत्सनाभ

80. गर्भाशय का भार होता है।
a. 40 gm b. 100 gm c. 150 gm d. 200 gm

81. लेख्य नेत्ररोग संख्या –
a. 7 b. 9 c. 11 d. 15

82. Bartholins gland खुलती है।
a. Labia Majora में b. Vesti buke में
a. Labia Minora में d. Clitoris में

83. गर्भकाल होता है।
a. 240 day b. 280 day c. 300 day d. 320 day

84. सुखविरेचक द्रव्यो में श्रेष्ठ है।
a. हरीतकी b. चतुरंगुल c. त्रिवृत्त d. तिल्वक

85. मृत्यू व्याधि है।
a. शारीरिक b. स्वाभाविक c. मानसिक d. सामान्य

86. Squamous, Columner neuroepithelium किसके अंतर्गत आते है।
a. Nervous tissue b. Connective tissue
c. Muscular tissue d. Epithelial tissue

87. आरोग्यवर्धिनी वटी.
a. कुपीपक्व रसायन b. पर्पटी कल्पना c. खरलीय रसायन d. पोट्टली कल्पना

88. त्रिस्कन्ध है।
a. आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य b. हेतु, लिंग, औषध
c. सत्व, आत्मा, शरीर d. दोष, धातु, मल

89. उपकुल्या है।
a. मण्डुकपर्णी b. पिप्पली c. सारिवा d. शंखपुष्पी

90. भैषज्यरत्नावली के लेखक –
a. आचार्य सोमदेव b. भगवद् गोविंदपादाचार्य
c. गोविंददास सेन d. सदानंद शर्मा

91. शरीर में क्षय की क्षतिपुर्ति में कारण है।
a. शर्करा b. विटामिन c. स्नेह d. दुग्ध–द्विदल अन्न

92. भा.प्र. निघण्टु द्रव्यो के कितने वर्ग –
a. 20 b. 21 c. 22 d. 23

93. Red bone marrow, yellow bone marrow से भिन्न है क्योंकि उसमें -
a. अधिक Erythroblasts होते है।
b. अधिक Connective tissue होते है।
c. अधिक Myelocytes होते है। d. अधिक Fat cells होते है।

94. Hyoid bone अवस्थित होती है।
a. Sternum के निचे
b. Laryngeal Prominence के बिलकुल उपर
c. Above Ster num d. Cervical Vertebra के क्षेत्र में

95. अगद को 'विषगरवैरोधिकप्रशमन' शब्द किस ने कहा है।
a. चरक संहिता b. सुश्रुत संहिता c. अष्टांगहृदय d. सभी

96. A man is as old as his.
a. Heart b. Liver c. Kidney d. Arteries

97. Sensory nerves.
a. Vagus b. Optic c. Facial d. All

98. कृष्णमंण्डल का प्रमाण.
a. नेत्र के प्रमाण का 1/2 भाग b. नेत्र के प्रमाण का 1/3 भाग
c. नेत्र के प्रमाण का 1/4 भाग d. नेत्र के प्रमाण का 1/5 भाग

99. फेनाश्म का सर्व प्रथम वर्णन.
a. सुश्रुत b. अष्टांगहृदय c. यो. र. d. शारंगधर

100. भूनाग सत्वपातन से प्राप्त होता है।
a. नाग b. वंग c. ताम्र d. यशद

*****

MODEL PAPER -XVI

01. अष्टांगमें शालाक्य तंत्र का स्थान है। (च.)
a. 2nd b. 3rd c. 4th d. 5th

02. प्रवाळ प्रकार रंग से है।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

03. अभ्रक का पर्याय है।
a. तार्क्ष्य b. वज्र c. पुष्कराज d. माणिक्य

04. Cinomen, Agate, Urenus are the names of
a. गोमेद b. वैडूर्य c. वैक्रांत d. निल

05. रसप्रकाश सुधाकर नुसार निम्न द्रव्य महारस है।
a. चंद्रावर्त b. सुर्यावर्त c. राजावर्त d. वेरोज

06. Corneal opacity में उपयोगी है।
a. शुक्ती b. समुद्रफेन c. शख d. गोदंती

07. Action to Dangerous Drug Act. 1930 Most IMP chapter Regarding Ayurvedic Medicines is
a. 2 A b. 3 A c. 4 A d. 5 A

08. गर्भपाल रस अनुपान है।
a. मध b. शतावरी क्वाथ c. द्राक्षा क्वाथ d. दुग्ध

09. चाविका के फल को कहा जाता है ।
a. पिंप्पली b. गजपिप्पली c. वनपिपल्ली d. सिंहपींपल्ली

10. At what level Aorta ends and descending aorta start
a. 3rd Thoracic vertebra b. 4 T.V
c. 5 T.V. d. 6 T.V.

11. Pia, Arachnoid, Dura matter end respectively at what no. of Lumber, sacral, coccyx vertebra
a. 1, 3, 1 b. 2, 2, 3 c. 1, 2, 3 d. 2, 3, 1

12. Lengths of different parts of Duodenum
i. उर्ध्वभाग (Sup) - 8 - 10 cm
ii. अवरोही (Descending) - 7 - 5 cm
iii. अनुप्रस्थ (Horizontal) 5 cm
iv. आरोही (Ascenting) 2- 5 cm
a. ii, iii, iv, i b. i, ii, iii, iv c. iii, i, ii, iv d. none.

13. Match the pairs

1. बाकुची – x. पुतिकंरज उपकूल
2. खदीर – y. अपराजिता उपकुल
3. अश्मंतक – z. बकुल उपकुल

a. x, y, z b. y, z, x c. z, x, y d. y, x, z

14. स्फिताकार पेशी (Ribon) हे वेशिष्टय है।

a. शेषान्त्रक b. मध्यान्त्रक c. ग्रहणी d. बृहदांत्र

15. Appendicitis Perforation में मृत्यू समय?

a. 3 hr b. 6 hr c. 12 hr d. 15 hr.

16. आशया : अवस्थान प्रदेश :। - Ref

a. सुश्रूत शां. 5 b. वाग्भट c. चरक d. काश्यप

17. उदानोवायोधारं : ..... प्रोच्यते बुधैः। (शां)

a. उर b. हृदय c. फुफ्फुस d. कंठ

18. विषके लघु गुणका प्रभाव सु.व.च नुसार अनुक्रमे है।

a. दुरुपक्रम व दुश्चिकित्स्य b. दुश्चिकित्स्य व दुरुपक्रम
c. Both d. None.

19. ..... तु शोणित किट्ट प्रभवं दक्षिणाश्रिव यकृत समिछे। (शां)

a. उडूक b. पित्ताशय c. आग्नाशय d. तिल

20. Acc^{n} to शारंगधर आमरक्ताशय.

a. हृदय b. हृदयावरण c. फुफ्फुस d. फुफ्फुसावरवण

21. दीर्घोत्ताना सिरा कों कपाठिका होती है। (Sall- sephanoun vein)

a. 0 - 10 b. 10 - 20 c. 20 - 30 d. 30 - 40

22. सुग्रहाणि.....है ।

a. यंत्रगुण b. क्षारगुण c. शस्त्रगुण d. A & C

23. हृद्य गण A/C सु.

a. परूषकादि b. बृहत्यादि c. उत्पलादि d. A-11

24. चुडावलय, दंतचुडा, महाकंठक अनुक्रमे ग्रीवा कशेरुका है।

a. 2, 1, 7 b. 1, 2, 7 c. 2, 1, 6 d. 1, 2, 6

25. Muscles having ligmental end

a. Long head of bicep c. Tricep
b. Short head of bicep d. All

26. नितंबास्थिके बाह्यपृष्ठापर एकमेव पेशी निवेश

a. उदरच्छदा अदिमा b. उ.मध्यमा
c. उरु दंडीका d. दीर्घायामा

27. World Redcross day

a. 5 may b. 6 may c. 7 may d. 8 may

28. Improper smell sensation

a. Anosmia b. parosmia c. Both d. none

29. CCIM first meeting

a. 10 - 15 Jan 1970 b. 21 - 24 Sept 1971
c. 9 - 10 Feb 1975 d. 6 - 12 Mar 1968

30. आयुर्वेद दर्शन लेखक

a. राजकुमार जैन b. रामरक्ष पाठक c. प्रियवत शर्मा d. रणजित देसाइ

31. तिबीया आयु कॉलजे, Feb 13/1921 who Inogurated?

a. M.K. Ghandhi b. Nehru P.
c. Moh. Usman d. Lord willium

32. अथर्ववेद में शपथ्य व वरुण्य प्रकार माने है।

a. दोष b. धातु c. रोग d. चिकित्सा

33. अहिण्डी रोग में मुख्य चिकित्सा है।

a. दीपन b. धात्रीस्तन्यशोधन c. संवर्धन घृत d. All

34. महाराष्ट्र में आयुर्वेदको एलोपॅथी समकक्ष दर्जा प्राप्त हुआ:

a. 1975 b. 1978 c. 1981 d. 1984

35. व्याप्ती का स्मरण ..... प्रमाण के लिए परमावश्यक है।

a. प्रत्यक्ष b. अनुमान c. युक्ती d. आप्तोपदेश

36. सदा सत्य व संशयरहीत उपदेश करनेवाले वाक्य को कहते है।

a. आप्त b. ऐतिहय c. शब्द d. None

37. कोषप्राप्त आंत्रवृध्दि है।

a. साध्य b. कष्टसाध्य c. याप्य d. असाध्य

38. पंचतंत्र के लेखक?

a. Shiv Sharma b. Vishnu Sharma
c. R. Tripathi d. Tymbuk Sharma

39. अष्टांग आयुर्वेदमे निदान का अंतर्भाव किसने किया?

a. माधव b. महेंद्रभौगीक c. नरहरी d. वाहर

40. सिद्धमंत्र और वातघ्नादी निर्णय लेखक

a. केशव b. बोपदेव c. क्षेमशर्मा d. मोरेश्वर

41. ..... प्रथमो धर्मः।

a. सद्वृत्त b. आचार c. दिनचर्या d. मोक्ष

42. शस्त्रकोश लांबी (अं.स.)

a. 9 अंगुल b. 12 अंगुल c. 20 अंगुल d. 21 अंगुल

43. चरक सिद्धीस्थान श्लोक संख्या

a. 400 b. 500 c. 700 d. 800

44. रजोदर्शन प्रथम दिन गर्भस्थापना होने पर.

a. षंढ b. वातगर्भ c. कलल d. मुढगर्भ

45. अर्श की चिकित्सा न करने पर.

a. बद्धगुदोदर b. परिस्त्रावी उदर c. छिद्रोदर d. वातोदर

46. विचर्चिका दोषधिक्य (सु.)

a. कफ b. वात पित्त c. पित्त d. कफ पित्त

47. स्वरुप of एरंड, प्रियंगु,करवीर

a. क्षुप b. गुल्म c. लता d. वृध

48. अभाव द्रव्य of स्वर्ण A/c वंगसेन

a. स्वर्णमाक्षिक b. ताम्र c. लोह d. शैप्पमाक्षिक

49. अ. सं. नुसार मदनफल श्रेष्ठ है।

a. अनुवासन b. आस्थापन c. वमन d. All

50. Berberine is present in

a. गुडूची, दारुहरीद्रा b. सत्यानाशी तेजोह्वा
c. Both d. none

51. निर्गूंडी प्रकार है।

a. श्वेतपुष्प, रक्तपुष्प b. श्वेत, पित
c. श्वेत, नील d. रक्त, पित

52. Indurstrial carcinogen - Target organ, Match the pairs

1. Vryl chloride - x. Skin
2. Benzidine - y. Bladder
3. Benzene - z. Lung
4. Chromium - w. WBC

a. x, z, w, y b. z, y, y, w
c. z, y, w, x d. y, w, z x

53. प्राणायाम पश्चात स्नान कब करना चाहीए?
a. 1 मुहूर्त b. 1 hr c. 2 मुहूर्त d. 1/2 hr

54. International "Fresh water year" - WHO.
a. 2000 b. 2001 c. 2002 d. 2003

55. All have incubation period of 2 - 3 wks except one
a. Mumps b. Measles
c. Rubella d. Chicken pox.

56. Vector of Filariasis is / are
a. Culex b. Aedes c. Monsonoides d. All

57. Defficiency of which vit. causes "cataract formation
a. vit. A b. vit. B c. vit B 2 d. vit B 6

58. Largest Amount of PGs are seen in
a. Lymph b. Blood c. Seminal fluid d. C.S.F.

59. भंगा शोधन
a. गोदुग्ध b. गोघृत c. आर्दक d. निम्ब स्वरस

60. वाग्भट नि 8/42 क्रोधात् ..... च प्रलापो भयशोकजे।
a. मुर्च्छा b. अतिसार c. शिरोरुक d. गदगद

61. हारीत नुसार वातज-पित्तज कफज सतत ज्वरमें मरण दिन में
a. 7, 10, 12 b. 14, 18, 22 c. 3, 5, 7 d. None.

62. प्रततम् ..... वेगेन ज्योतिषाम् इव दर्शनम्। (अ.हृ.)
a. श्वास b. कास c. हिक्का d. All

63. मरणादपि पापात्मा गत: पाततरां दशाम्। (अ.हृ.)
a. सन्यास b. अपस्मार c. मुर्च्छा d. मद

64. असाध्यान्येवमाख्याता: सर्वो रोगा: कुलोद्भवा:। Refn
a. अ.हृ.अर्श निदान b. अ.हृ. प्रमेह निदान
c. अ.हृ कुष्ठ निदान d. None.

65. सामान्य लक्षणं कार्ष्णे धूमस्तमको ज्वर:।
मूर्च्छा शिरोरुग्विष्टम्भ: श्वयथु करपादयो:।। (अ.हृ.)
a. शोथ b. क्षय c. ग्रहणी d. अतिसार

66. दंतान खादति वेपत लक्षण..... अश्मरीका है।
a. कफ b. पित्त c. कफ d. शुक्रज

67. भस्मोदकसम मूत्र प्रवृत्ती है।
a. मुत्रजठर b. वातकुठंलीका c. मुत्रशुक्र d. मुत्रसाद

68. शिलाजतुमें ..... रस नही?
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

69. दोन प्रकार है।
a. मधुमेह b. राजयक्ष्मा c. Both d. None.

70. प्रमेह पिडकेमें, स्थान नही परंतु उसकी अल्पता व अधिकता पर साध्य असाध्यता आधारित है।
a. वसा b. मेद c. कफ d. मांस

71. वाग्भटानुसार वृध्दि प्रकार है।
a. 5 b. 6 c. 7 d. 9

72. सर्व शोफ हे प्राय होते है (वाग्भट)
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज

73. दौग्धिक पुष्पवत कुष्ठ है।
a. सिध्म b. पुंडरीक c. दद्रु d. पामा

74. गृध्रसी वायु ..... गत होने पर
a. मांस b. स्नायु c. अस्थि d. मज्जा

75. नातिद्रवा नातिसांद्रा मंथ इत्याभिधियते।
a. चरक b. सुश्रूत c. भा.प्र. d. शारंगधर

76. भ्रम. मुर्च्छा, रुजा, दाह, पित्त को .... वायु आवृत्त होनेपर
a. प्राण b. समान c. व्यान d. उदान

77. Infertility in 90% of female is due to
a. T.B. tubes b. T.B. uterus
c. Tubes block d. TORCH

78. Length of cervix clitoris respectively
a. 2.5 cm, 3 cm b. 2.5, 2.5
c. 3, 2.5 d. 3, 3

79. तमक श्वास लक्षण..... गत अंत विद्रधी का है । (च)
a. यकृत b. हृदय c. प्लीहा d. नाभि

80. Frequency of Micturation is present in woman in
a. I[st] trimester b. IInd
c. IIIrd d. both a & c

81. Firm Belief of Pregnancy, which is not present is called
a. Pseadocyaesis b. Phanthan, spurious
c. False pregnancy d. All

82. वंध्याप्रकार अनुक्रमे हारीत व माधव
a. 6, 9 b. 9, 6 c. 9, 9 d. 6, 6

83. आम / अपक्व स्तनशोथ पक्व करने के लिए
a. उपनाह b. अभ्यंतर औषधे c. Both d. None

84. चरकनुसार रक्तप्रदर चिकित्सा है।
a. रक्तपित्तवत b. रक्त अतिसारवत c. रक्तअर्शवत d.

85. शारंगधरानुसार 1 मरीची ..... परमाणु
a. 150 b. 180 c. 120 d. 210

86. सघोहरति दोषाणां महान्तमपि संचयम। (चरक)
a. मदनफल b. त्रिवृत्त c. आरग्वध d. स्नुही

87. व्योषादी गुटिका अनुपान (चरक)
a. शीतजल b. उष्णजल c. श्रृतशीत जल d. मधु

88. जलासह 3 योग वर्णन (चरक)
a. श्यामा त्रिवृत्ता b. जिमुतक c. वत्सक d. तिल्वक

89. मुलकादीतैल (चरक चिकित्सा 28) पर्याय
a. बला तैल b. नारायण तैल c. रास्ना तैल d. लाक्षा तैल

90. आक्तं लवणतैलेन अश्म प्रस्तर संकरे:। (चरक)
a. R_x of हिक्का, श्वास b. R_x of योनीव्यापद
c. R_x of कास d. All

91. अल्पमात्रं महावेग बहुदोषहरं सुखम्।
लघुपाक सुखास्वादं प्रीणन व्याधिनाशनम्।।
a. च.सि. 6 b. च.क. 1 c. च.सि. 12 d. च.क. 12

92. गर्भोपद्रव है।(हारित)
a. 3 b. 4 c. 8 d. 9

93. ..... is the relation of different foetal parts to one another
a. Lie b. Attitude c. Denominator d. Position

94. शा.नुसार मुखरोग संख्या है।
a. 64 b. 67 c. 74 d. 75

95. भल्लातकावलेह / सिद्ध दुध ..... योनीव्यापद में उपयोगी है।
a. उपप्लुता b. परिप्लुता c. उदत्वर्ता d. अरजस्का

96. योनी व्याप
a. बीजदे
97. घृष्टेजु सरं
a. परिदर
98. अ. सं. नु
a. वर्धन
99. शारंगधर
a. 17
100. शोफो वे
a. उत्पि
101. स्तनप्रदे
a. साध्
102. आमलव
a. कंठ
103. भा. प्र.
a. 7
104. लोक ल
a. तिल
105. अ.सं.
a. मांस
106. After h
a. 4 -
107. ग्रथित
a.वात
108. हिम त्रि
a. जट
109. नातो अ
a. सुश्रु
110. दतमूलग
a. 16
111. योनिव्या
a. क्का
112. A/c का
a. बुदि
113. वयस्था
a. जी
114. वातशम
a. भरव
115. Meco
a. 14
116. च.सु.
a. 8
117. आधुनि
a. Ca
c. Fa
118. स्वस्थव
a. वय
c. वय

96. योनी व्यापद का कारण नही.
a. बीजदोष b. गर्भदोष c. आर्तवदोष d. none.
97. घृष्टेजु सरंभो जायते महान (सु.)
a. परिदर b. दंतवैदर्भ c. शौषीर d. दंतवेष्ठ
98. अ. सं. नुसार ..... रोग शीतदंत है।
a. वर्धन b. दंतहर्ष c. दालन d. श्यावदंत
99. शारंगधर नुसार कंठगत रोग
a. 17 b. 18 c. 20 d. None
100. शोफो वेदनासातत्यं सन्धि विक्रया च. (सु.नि. 15.
a. उत्पिष्ठ b. विश्लिष्ठ c. अवक्षिप्त d. अतिक्षिप्त
101. स्तनप्रदेश, पृष्ठ प्रदेश, शंखप्रदेश च भग्न
a. साध्य b. याप्य c. असाध्य d. कृच्छ्रसाध्य
102. आमलकास्थि प्रमाणयुक्त ग्रंथी
a. कंठशालुक b. अपची c. गिलायु d. b & c
103. भा. प्र. मसुरिका प्रकार
a. 7 b. 8 c. 4 d. 6
104. लोक लांछनमिति वदति
a. तिलकालक b. न्यच्छ c. व्यंग d. All
105. अ.सं. नुसार ..... ग्रंथी हस्त-पाद छोडके होती है।
a. मांसज b. मेदोज c. रक्तज d. अस्थिज
106. After how many days of delivery, Mature milk is obtained
a. 4 - 5 days b. 15 days c. 30 days d. 45 days
107. ग्रथित रक्तमिश्रीत स्राव ----- नाडीव्रण में होता है।
a.वात b. कफ c. रक्त d. आगंतुज
108. हिम त्रिदोषास्र दाहवीसर्प कुष्ठनुत। भा.प्र.
a. जटामांसी b. कुष्ठ c. पुष्करमुल d. भृंगराज
109. नातो अन्यत् कष्टतममति तथा मूढगर्भ शल्य उध्दरणं ।
a. सुश्रुत b. वाग्भट c. शा.सं. d. हारीत
110. दतमूलगत रोग संख्या (वा)
a. 16 b. 15 c. 14 d. 13
111. योनिव्यापदामें रसोन द्रव्याची प्रयुक्त कल्पना
a. क्वाथ b. स्वरस c. घृत d. तैल
112. A/c काश्यप in 6th month..... development.
a. बुद्धि b. ओज c. हृदय d. भेजा
113. वयस्थापनीय महाकषायामें अष्टवर्गामें द्रव्य है।
a. जीवक b. जीवन्ती c. काकोली d. क्षीरकाकोली
114. वातशमनकारणा वर्णन By
a. भरव्दाज b. धामार्गव c. वायोर्विद d. कांकायन
115. Meconium गर्भावस्था में ..... week में बनता है।
a. 14 b. 16 c. 20 d. 24
116. च.सु. 13 स्नेहाध्यायामें कूल प्रश्न?
a. 8 b. 36 c. 25 d. 23
117. आधुनिकांनुसार शरीरा में ..... प्रमाण ↑ तभि दुंधका प्रमाण ↑
a. Carbohydrate b. Protein
c. Fats d. Vit
118. स्वस्थबालक 24 hr में स्तन्य मात्रा सुत्र
a. वय in days x 10 x 7 gm b. वय in days x 15 x 20 gm
c. वय in days x 20 x 7 gm d. वय in days 12 x 7 m
119. स्तन्य दुष्टी के 5 प्रकार वर्णीत है।
a. शारंगधर b. वंगसेन c. हारीत d. रा.नि.
120. Kwashiorkor was discovered in 1935 by
a. Shon kit b. Williun kuti
c. Cicely willium d. Jorge willium
121. बालकोमें प्रतिदिन vit A आवश्यकता
a. 200 unit b. 1200 unit c. 1500 umit d. 2000 unit
122. प्राणा: प्राणभृतांत्र यत्र श्रिता: सर्वेन्द्रियाणिच।
यदुत्तमांगानां शिरस्तदभिधीदते।।
a. च.चि. 26 b. च.सि. 9 c. च.सू. 17 d. च.सू. 29
123. कृमी दंत की चि. मैं हिंग प्रयोग
a. सुश्रूत b. निमी c. भै.र. d. वाग्भट
124. गर्भपातक नही
a. गुंजामुला b. लांगली c. भल्लातक d पपई
125. T.B. Confirmatory test
a. DLC b. ESK c. X-ray d. Mauntoux test
126. गुणको रस माननेवाले आचार्य कौन?
a. शाकुन्तेय b. निमी c. वार्योविद d. भरव्दाज
127. निर्गूणास्तु गुणा: स्मृता:। Refn
a. चरक b. सुश्रूत c. वाग्भट d. योगिंद्रनाथ सेन
128. अम्लगंध
a. पुतना b. स्कंद c. शीतपुतना d. अंधपुतना
129. चरक नुसार हृद्रोग में औषध सेवन काल
a. सामुद्ग b. सभक्त c. सग्रास d. ग्रासांतर
130. नेत्र का बंधन नही.
a. कंडरा b. सिरा c. स्नायु d. मेद
131. सन्नि हृद्रोग साध्यासाध्यत्व
a. असाध्य b. याप्य c. कष्टसाध्य d. साध्य
132. प्रमेह पिडका उद्भव स्थान नही
a. मांसल प्रदेशी b. मर्मगत c. मेदगत d. संधिगत
133. शोथो नक्तं प्रणश्याति
a. वात शोफ b. पित्त शोफ c. वात पित्त शोफ d. कफ शोफ
134. काकले अवतिष्ठते
a. उपजिव्हिका b. गल गंड c. गलशुंडी d. गलग्रह
135. गुदपाक में रसांजन प्रयोग by
a. आलेपन b. पान c. अभ्यंग d. a and b
136. Indian Institute of Kayachitcitsa is located at
a. Patiala b. Bhuraneshwar c. Varanasi d. Dethi
137. फक्क रोग से पीडित बालक के लिए कितने स्नेहपान
a. 5 days b. 6 days c. 7 days d.8 days
138. Vanden Bergh Test is done in diseases of
a. Pancreas b. Liver c. Diabctes d. Kindey
139. Thermameter discovered by Galilio in Italy in
a. 1493 b. 1593 c. 1693 d. 1793
140. ..... रोगनिदान प्रतिकारी।
a. औषधी b. चिकित्सा c. वैद्य d. रोगी
141. A/c सुश्रूत ब्राम्हणां के लिए सुतिकागार ..... मिट्टीसे बनाये।
a. कृष्ण b. श्वेत c. पीत d. रक्त

142. पार्श्वशुल प्रकार
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

143. खदीरारिष्ठ में % of ethyl alcohol
a. 7 - 8 b. 10 - 12 c. 15 - 20 d. 15 - 20

144. न तद् गर्भाय कल्पते लक्षण.....दोषदुष्टीशुक्र
a. वात b. पित्त c.रक्त d. सन्नि

145. जरायुणां परिवीतं स गर्भाशय उच्चते । Ref ?
a. सु.सं. b. अ.सं. c. अ.ह. d. का.सं.

146. गलगंड रोग में दुष्ये
a. रक्त, मास b. मांस, मेद c. मज्जा, मेद d. रक्त, मांस, मेद

147. भगंदर ..... प्रकार कृमि उत्पत्ती है।
a. परिस्त्रावी b. उष्ट्रग्रीव c. शम्बुकावर्त d. उन्मार्गी

148. ब्राम्हे मुहूर्ते उत्तिष्ठत्स्वस्थो ..... आयुष्यः। (अ.ह. सु. 2/9)
a. धमार्थम् b. रक्षार्थम c. सुखार्थम् d. अर्यार्थम्

149. वाग्भटानुसार रसांजन प्रयोग
a. 5/8 दिन बाद b. 7 दिन बाद
c. हररोज d. None

150. शृंगवेराम्बु, साराम्बु, महवम्बु, जलदाम्बु सेवन काल
a. शिशिर b. वर्ष्म c. वसंत d. शरद

151. सदागति निमित्तज
a. भजनक b. दालन c. श्यावदंत d. दंतवेष्टक

152. अधोवात रोधसे उत्पन्न (अ.ह.)
a. श्रवण हानी b. गंधहानी c. दृष्टी हानी d. रसज्ञान हानी

153. A/c सुश्रूत निद्रा प्रधान कारण
a. तम b. कफ c. स्वभाव d. रोग

154. नाभीके उपर विद्रधी
a. साध्य b. याप्य c. कुच्छ्रसाध्य d. असाध्य

155. वमन-विरेचन अयोग जन्य लक्षणे except
a. अध्माण b. स्राव c. विभ्रंश d. स्तंभ

156. 24 उपक्रमापैकी (विष) अवगाह है?
a. 6 b. 7 c. 8 d. 9

157. ..... पित्तघ्न स्नेह नही
a. वसा b. मज्जा c. तैल d. घृत

158. प्रमेह श्रेष्ठ द्रव्य
a. हरिद्रा b. आमलकी c. शिलाजतू d. a and b

159. 1 gm Haemoylobin gives ..... my of bilirubine
a. 30 b. 32 c. 34 d. 36

160. कालेनापेक्षितं यस्मात् सर्व कुक्ष्णाति वध्दपुः। (कुष्ठ)
a. काश्यप b. चरक c. सश्रुत d. वागभट

161. बालक में नाभीरोग 4 प्रकार
a. भा.प्र. b. हारीत c. काश्मप d. none

162. गुदकंडू लक्षण ..... कृमी में होता है।
a. Round wom b. Hook werm
c. Wipe werm d. Thread worm

163. बालपक्षाघात ..... होता है।
a. Bucteria b. Virus c. Protozoa d. fungii

164. ..... रक्तज कृमीका कारण रसदुष्ट्री माना है।
a. चरक b. वाग्भट c. चक्रपाणी d. अरुणदत्त

165. A/c चरक दशप्राणायतन में समाविष्ट नही.
a. नाभी b. मांस c. जिव्हाबंधन d. All

166. तीव्र रसक्षय में IV fluids
a. NS b. RL c. DNS d. 5% Dextvese

167. Boiling point of silver is
a. 2310°C b. 1955°C c. 1525°C d. 2700°C

168. अभ्रक ज्वालावर्ण
a. कृष्ण वर्ग b. रक्तवर्ण c. धुसर d. ताम्रवर्ण

169. पल means
a. चतुर्थिका b. बिडालपद c. षोडसी d. a & c

170. सर्वतस्य ग्रहः ..... उच्यते
a. सर्वग्रह b. परिग्रह c. Both d. None

171. वर्णप्रसादन कर
a. मात्रावत भोजन b. स्निग्ध भोजन
c. कालभोजन d. वीर्या विरुद्ध

172. चरक नुसार पक्व आहार सर्व आशयतक पंहुचाता है।
a. सिरा b. धपनी c. स्रोतस d. All

173. आंध्य लक्षण
a. अन्नवह स्रो दुष्टी b. प्राणवह विध्द
c. उदकवह विध्द d. अन्नवह विध्द

174. जनपदध्वंस कि चिकित्सा
a. रसायन b. पंचकर्म c. सद्वृत्ताचार d. All

175. अर्थापत्ति व अर्थप्राप्ती अनुक्रमे ..... है।
a. तंत्रयुक्ती व वादमार्गपद b. वादमार्गपद व तंत्रयुक्ती
c. तंत्रयुक्ती व तंत्रयुक्ती d. वादमार्गपद व वादमार्ग पद

176. मुर्खविदुषां बुध्दिसाम्य विषयो स।
a. सिध्दान्त b. दृष्टान्त c. निर्वचन d. निदर्शन

177. सर्व रोगविशेषाणां ..... ज्ञानसंग्रहम्। (च.वि. 4)
a. दशविध b. सप्तविध c. त्रिविध d. व्दिविध

178. अधिक मद्यपानासे दृष्ठ होनेवाला स्रोतस.
a. अन्नवह b. उदकवह c. रसवह d. ll

179. वातज प्रकृतीके पुरुषमें ..... रोग बलवान
a. वात b. पित्त c. कफ d. b & c

180. चरक व वाग्भट नुसार कफज कृमी
a. हृदयचर, हृदयाद d. हृदयाद, हृदयचर
c. Both d. None.

181. चरक विडंग तैल की बस्ती संख्या कृमी चि. में वर्णित
a. 1 - 2 b. 2 - 3 c. 3 - 4 d. 4 - 5.

182. सुश्रूत कुल रोग व द्रव्ये?
a. 1020, 473 b. 1120, 573 c. 1220, 673 d. 920, 373

183. सुश्रूत कायचिकित्सा व्याख्या में निम्नरोग वर्णित है।
a. रक्तपित्त b. क्षतःक्षीण c. छर्दी d. विसर्व

184. काय सकलं शरीरम्।
a. शिवदास सेन b. डल्हण c. वाग्भट d. हाराणचद्र

185. सत्व-रज-तम
a. महागुण b. त्रिगुण c. a & b d. None

186. अ.ह. नुसार शलाका संख्या
a. 28 b. 30 c. 32 d. 34

187. आंत्र, भय, काल, पाक वाग्भटानुसार है।
a. अनुशस्त्र b. अनुयंत्र c. शल्लाहरण उपाय d. All

188. मध्यम स्निग्ध रस
a. मधुर b. अम्ला c. लवण d. कटु

189. पेशी उत्पन्न ..... क्रीया
a. दारण b. पाचन c. पाटन d. रुपांतरण

190. चक्षुष्य है।
a. स्त्री दुग्ध b. हस्तिनी दुग्ध c. माहीष d. आवि

191. नाभेस्तु ..... स्थानं ध्रुवम् स्मृतम् । (सुश्रूत)
a. अग्नि b. पाचन c. ज्योति d. दिव्य

192. आशय के लिए आधार शब्द
a. सुश्रूत b. काश्यप c. चरक d. वाग्भट

193. तमकश्वास साध्यासाध्यता (मा.नि.)
a. साध्य b. कृच्छ्रसाध्य c. याप्य d. असाध्य

194. हिक्का-श्वास-कास S/O .....ज्वर
a. रसगत b. मज्जागत c. रक्तगत d. मेदगत

195. Incidence of Glacoma male : female is
a. 4:1 b. 1:4 c. 3:1 d. 1:3.

196.As per NPCB-WHO serve % of blindness due to cataract
a. 60.75% b. 70.75% c. 80.75% d. None.

197 In Migraine vascular condition in intracranial and extracranial espectively
a. Constriction - Dilatuation
b. Dilatation - Constiction
c. Constrictation - Constriction
d. Dilatation - Dilatation.

198. No. of Rods and Cones in Eye- (In Millions)
a. 125, 7 millions b. 100, 10
c. 75, 5 d. none.

199. First surgery to Utilise endoscope
a. Gynaec b. General c. ENT d. Orthro.

200. n Salicylate poisoning death is due to
a. Heart failure b. Respiratoryfailure
c. Kidney Failure d. None.

201. Disease modifying antirheumatic drugs (DMARD) are / is
a. Gold b. d - penicillamine c. Sulfasalaxine d. All.

202. Bromhexine is
a. Mucolytic b. Mucokinetic c. Both d. none.

203. Only endocrine gland, stores the hormone in body
a. Pituitary b. Thyroid c. Adrenal d. Testes.

204. Following is Radio - active Iodine
a. I^{131} b. I^{123} c. I^{125} d. All

205. Dexamethasone is which type of Glucocorticoid
a. long acting b. Short c. Intermediate d. None.

206. नार्यास्तु मधुरं स्तन्यं कषाय अनुरंस हिमम्।
स्निग्ध स्थैर्यकरं शीतं चक्षुष्य बलवर्धनम्।।
a. चरक b. सुश्रूत c. वाग्भट d. भा.प्र.

207. Clomiphene citrate is
a. Antiestyrogen b. Estrogen agonist
c. both d. none.

208. Calciferol is
a. D_1 b. D_2 c. D_3 d. D_4

209. Polysomnography is study of body during
a. Stress b. Exercise
c. Sleep d.Hypnotise condition

210. Stages of G.A.
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5.

211. Most powerful vasoconstricter is
a. Angiotensin I (AI) b. AII c. A III d. All.

212. Sorbitrate is Isosorbide
a. Mononitrate b. Dinitrate
c. Tri d. Tetra.

213. औत्तरभक्तिक स्नेहपान (च.)
a. अर्श b. V कास c. अपस्मार d. पक्षाघात

214. अष्टमूत्र प्रयोग in
a. नेत्ररोग b. कर्णरोग c. नासारोग d. शिरोरोग

215. Vit B_{12} Containts
a. Nikel b. Jron c. Cobalt d. Zinc.

216. Heparin was discovered by in 1916
a. Howell b. Holt c. McLean d. None.

217. Measles vaccine is
a. Rouvax b. Rimevax c. M-vac d. All.

218. पित्त प्रकृति स्त्री में उत्पन्न होनेवाला योनिव्यापद
a. परिप्लुता b. पित्तला c. रक्तजा d. अरजस्का

219. Sebaceous glands are
a. Apocrine b. Holocrine c. Merocrine d. Ecrrine.

220. Deposition of bile in skin results in
a. Green colour b. Scalling
c. Photosensitivity d. Itching

221. सामान्यत: मूत्र का रस (सु.)
a. तिक्त b. लवण c. कटू d. कटू-तिक्त

222 खनिज used in पंचकर्म
a. लोह b. सैंधव c. ताम्र d. पारद

223 विषघ्न यवागू (चरक)
a. शिरिष सिद्ध b. सुवर्ण सिद्ध
c. सोमराजी सिद्ध d. नरमुत्रसिद्ध

224. वातामशीनां श्रेष्ठ लेप (च.सु.3)
a. मन:शिलादी b. कोलांदि
c. गोक्षुरादी d. वेशवारादी

225. स्नेहल्क से किया जाता है।
a. उद्घर्षण b. उत्सादन c. उद्वर्तन d. अभ्यंग

226. सामान्ये ऽ न्यतपस्य व्याधी चा प्रभाव (चरक सु. 10)
a. सुखसाध्य b. कुच्छ्रसाध्य c. याप्य d. असाध्य

227. स्नहेन पुटपाक दोषघ्नता
a. वात b. पित्त c. कफ d. सन्नि

228. चिकित्साप्राभृतीय – चिकित्सा सामुग्री से परीपूर्ण told by
a. चक्रपाणी b. गंगाधर c. शिवदास सेन d. गयदास
229. रोगमादौ परिक्षेत ततो ऽ नन्तरमौषधम् ।। Ref^n
a. च.सु. 18 b. च.सु. 19 c. च.सु. 20 d. च.सु. 21
230. च. इद्रियस्थान नुसार प्रकृती
a. 3 b. 5 c. 6 d. 7
231. अंतरिक्ष जल के गुण चरक
a. 4 b. 5 c. 6 d. 8
232. योगिंद्रनाथ से ननुसार आध्यात्मिक गुण संख्या
a. 6 b. 7 c. 42 d. 5
233. संधान कल्पना में अनुक्तमें क्षौद्र .... प्रमाण
a. 1 तुला b. 1/2 तुला c. 1/10 तुला d. 1/4 तुला
234. तद्रा चि. (चरक)
a. शोधन b. शमन c. रक्तमोक्षण d. All
235. विजया हरीतकी उत्पत्तीस्थान
a. हिमाचल b. विन्ध्य c. सिन्ध d. प्रतिस्थान
236. ..... नाम आप्तानुशासनम्।
a. अपदेश b. उपदेश c. अतिदेश d. प्रसंग
237. जराव्याधि प्रथमन स्मृती मे धाकरं परम्। (च. चि. 9)
a. लौहादी रसायन b. ब्राम्ह c. ऐंद्र d. मध्य
238. दूषीविष पक्याशयामें जानेपर ..... रोगोत्पत्ती होती है।
a. वात कफ b. वात पित्त c. कफपित्त d. वात
239. पौरुषार्थि वाजीकरण पाद है।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
240. चरक दिनचर्या शुरुवात
a. दंतधावन b. शौचविधी c. अंजन d. ब्राह्म मुहुर्ते उत्तिष्ठे
241. प्रनष्ठबलचेतस ..... हिक्का
a. महाहिक्का b. गंभिरा c. व्यपेता d. अन्नजा
242. सर्वसां लिंगानां लाघनमपाय:। पूर्वरुप है।
a. उरुस्तंभ b. विसर्प c. तृष्णा d. विष
243. A/c सुश्रूत विसर्पामें सर्व क्रियांके लिए उपयोगी गण है।
a. आरग्वधादी b. वरुणादी c. न्यग्रोधादि d. काकोल्यादि
244. निम्नमें ..... अगद राज कहा है।
a. महागंधतस्ती b. महत्सुगंधी c. महागद d. मृतसंजीवन
245. अणुतैल सेचन ..... भंगदरा में
a. शतषोनक b. उष्ट्रग्रीव्ह c. परिस्त्रावी d. आगंतुज
246. हिन शिलाजित A/c सुश्रूत
a. सूवर्ण b. ताम्र c. नाग d. वग
247. सु. सहिता अंतीम अध्याय?
a. रसभेदविकल्प b. दोषभेदविकल्प c. स्वस्थवृत्त d. तंत्रयुक्ती
248. हनुमन्या शिर: कर्णशुलघ्न .....। (सु.चि. 24)
a. कर्णपुरण b. शिरोबस्ती c. शिरोअभ्यंग d. शिरोधाय
249. निर्विष मुषक संख्या?
a. 6 b. 9 c. 18 d. none
250. सर्व सोमादी औषधी प्राप्त होती है..... पर्वतपर
a. हिमालय b. विध्य c. अर्बुदागिरी d. महाद्रि

RECENT PAPERS

UPSC 2010

1. वातिक उन्माद में भय दर्शन किस प्रकार का उपशय है।
a. हेतु विपरीतार्थकारी b. व्याधि विपरीतार्थकारी
c. हेतु विपरीत c. व्याधी विपरीत
2. चरक द्वारा पिंड तैल से अभ्यंग किस रोग में वर्णित है ।
a. वातरक्त b. आमवात c. संधिगतवात d. संधिगत ज्वर
3. योग बस्ति में कितनी अनुवासन बस्ति देते है?
a. 3 b. 5 c. 8 d. 16
4. संसर्गज निदान से कौन–सा एक रोग नहीं होता है ?
a. राजयक्ष्मा b. क्षत क्षीण c. क्षतज कास d. हृद्रोग
5. कुष्ठ में दोष व्याप्ति का निम्नलिखित में से कौन –सा एक सही क्रम है ?
a. त्वक्, रक्त, मांस, लसिका b. त्वक्, लसिका, रक्त, मांस
c. मांस, रक्त, लसिका, त्वक् d. मांस, लसिका, रक्त, त्वक्
6. श्वित्र में निम्नलिखित में से कौन – सा एक उपयोगी है ?
a. बाकुचि b. खदिर c. निम्ब d. सारिवा
7. शूनाक्षिकूट किसका लक्षण है ?
a. शोथ b. उदर रोग c. आमवात d. पाण्डू
8. अरूष्कर का विषालु प्रभाव क्या है ?
a. वमन b. विरेचन c. मूत्रल d. उदर्द
9. सूची – I को सूची – II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:।

सूची – I	सुची – II
a. स्नुही	1. रसायन
b. भल्लातक	2. क्षारकर्म
c. अहिफेन	3. कृमिकुष्ठहर
d. जयपाल	4. मादक

a. 4,3,2,1 b. 2,1,4,3 c. 4,1,2,3 d. 2,3,4,1
10. निम्नलिखित में किस 1के प्रयोग से गन्धक का शोधन किया जा सकता है।
a. निम्ब स्वरस b. चूर्णोदक c. हरिद्रा स्वरस d. भृंगराज स्वरस
11. निम्नलिखित में से कौन–सा एक, केशरंजन गुण से सम्पन्न है ?
a. हरिद्रा b. मंजिष्ठा c. भृंगराज d. वचा
12. मैलोटस फिलीपाईनेन्सिस म्युएल का उपयोगी अंश कौन–सा है ?
a. फल b. फलरज c. पुष्प d. मूल
13. अपामार्ग का वानस्पतिक नाम क्या है ?
a. ऐन्ड्रोग्राफिस पानिकुलेटा b. एबुटिलॉन इन्डिकम (लिन)
c. अकेशिया ल्युकोफ्लोइया (विल्ड) d. अकाइरैन्थीज आसपेरा
14. अकोरस कैलामस का संस्कृत नाम क्या है ?
a. वत्सनाभ b. विडंग c. वचा d. सारिवा
15. अस्थिभग्न में निम्नलिखित में से कौन–सा एक द्रव्य उपयोगी है ?
a. गन्ध तैल b. कासीस तैल c. पिण्ड तैल d. गन्धक द्रुति
16. निम्नलिखित में से कौन–सा एक द्रव्य मेध्य है ?
a. अहिफेन b. वचा c. मण्डूकपर्णी d. सर्पगन्धा
17. अभिष्यन्दि द्रव्य निम्नलिखित में से क्या उत्पन्न करता है ?
a. स्त्रोतोमार्दव b. स्त्रोतोरोध c. दोषशैथिल्य d. दोषविलयन
18. अभ्यन्तर प्रयोग, बस्ति – कर्म और स्नेहनार्थ के लिए निम्नलिखित में से कौन – सा पाक श्रेष्ठ है ?
a. मृदु b. मध्य c. खर d. चिक्कण

19. निम्नलिखित में से कौन – सी एक औषधि संग्रहणीय, दीपनीय और पाचनीय के रूप में सर्वाधिक उपयोगी है ?
a. पिप्पली मूल b. शतपुष्पा c. एरण्डमूल d. मुस्ता

20. अग्निजार का उद्‌गम क्या है ?
a. खनिज b. वानस्पतिक c. जलीय d. उपर्युक्त में से कोई नहीं

21. निम्नलिखित में से कौन–सा एक, पाचन में लघु है ?
a. विलेपी b. पेया c. ओदन d. मण्ड

22. निम्नलिखित में से कौन–सा एक, भूनाग सत्व में अंतर्विष्ट है ?
a. ताम्र b. सीसा c. रजत d. संखिया

23. निम्नलिखित में से किस एक में ताम्र प्रधान घटक द्रव्य है ?
a. गैरिक b. मयूरपिच्छ c. हरताल d. मन:शिला

24. इन्द्रवारूणि का कुल क्या है ?
a. मालवेसी b. कुकुरबिटेसी c. अनोनेसी d. पोएसी

25. लिटिल रोग निम्नलिखित में से किस एक का पर्याय है ?
a. प्रमस्तिष्क अंगघात b. बेल अंगघात
c. अर्दित d. एर्ब अंगघात

26. काश्यप के अनुसार, कुकूणक का क्या कारण है ?
a. वात+रक्त b. पित्त+कफ
c. कफ+रक्त d. त्रिदोष

27. काश्यप के अनुसार शिशु किस उम्र में चलना और बोलना शुरू करता है?
a. 9 माह b. 12 माह c. 15 माह d. 18 माह

28. हारित के अनुसार, कालपूर्व प्रसव निम्नलिखित में से किस एक के कारण होता है ?
a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त

29. मूषक तैल का प्रयोग निम्नलिखित में से किसके लिए किया जाता है ?
a. केवल गुदभ्रंश b. केवल गुदशूल
c. केवल भगन्दर d. उपर्युक्त सभी

30. आचार्य काश्यप ने गर्भिणी के लिए निम्नलिखित में से कौन–से एक शब्द का प्रयोग किया है ?
a. सगर्भा b. गर्भा c. दौहृद d. अन्तर्वर्त्नी

31. चरक के अनुसार, अम्ल रस में महाभूत संयोजन क्या है ?
a. जल+अग्नि b. पृथ्वी+अग्नि c. जल+पृथ्वी d. वायु+अग्नि

32. भञ्जनक रोग का किस व्याधि से संबद्ध है ?
a. अस्थिमज्जागत b. तालुगत c. दन्तगत d. नासागत

33. यथास्व वेदना वर्ण दुष्टं सान्द्रमथाविलम् श्लोक किस व्याधि के सन्दर्भ में कहा गया है ?
a. प्रमेह पूर्वरूप b. अश्मरी पूर्वरूप c. मूत्रक्षय d. मूत्रबस्ति

34. अर्शोभगंदर में कौन–सा/से दोष दुष्टि होता/ते है/है ?
a. वात एवं पित्त b. वात एवं कफ
c. कफ एवं पित्त d. केवल कफ

35. निम्नलिखित में से कौन–सा एक, धमनीगत शल्य का लक्षण है ?
a. स्वकर्म गुणहानि b. आटोप–आनाह
c. सफेन वायुयुक्त रक्त प्रवृति d. उपर्युक्त सभी

36. निम्नलिखित श्लोक को पढिए:।
"बिना पुष्पं तु या नारी यथाकालं प्रणश्यति।
कृशा हीनबला क्रुद्धा साऽपिचोक्ता..... ॥"
निम्नलिखित में से कौन–सा एक शब्द इस श्लोक को पूरा करता है ?
a. मोहिनी b. स्तम्भनी c. विकुटा d. कटम्भरा

37. सूची–I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:।

सूची – I(दोषानुसार आर्तव दुष्टि)	सुची – II(लक्षणानुसार आर्तव दुष्टि)
a. रक्तज	1. क्षीणार्तव
b. कफ वातज	2. कुणपगंधी
c. पित्त कफज	3. ग्रन्थि भूत
d. पित्त वातज	4. पूति पूय निभं

a. 2,4,3,1 b. 2,3,4,1 c. 1,4,3,2 d. 1,3,4,2

38. सूची–I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:।

सूची – I (उपकरण का नाम)	सुची – II (प्रयोग)
a. गन्डूपदमुखी	1. स्त्रोतोगत शल्य निर्हरण
b. मसूरदलमुखी	2. नासार्बुद निर्हरण
c. कोलास्थिदलमात्रमुखी	3. एषण व्यूहन
d. दर्वीकृत खल्वमुखी	4. क्षारौषध प्रणिधान

a. 3,1,2,4 b. 3,2,1,4 c. 4,1,2,3 d. 4,2,1,3

39. निम्नलिखित में से कौन–सा एक, गुल्म, अष्ठीला एवं प्लीहोदर का भी कारक है?
a. वातिक अर्श b. पित्तज ग्रहणी c. कफज अर्श b. सहज अर्श

40. निम्नलिखित में से कौन–सा एक, अबन्ध्यव्रण है ?
a. भग्न व्रण b. गुदपाक c. भगंदर व्रण d. उपर्युक्त सभी

41. निम्नलिखित भग्नों में से कौन–सा भग्न कृच्छ्रसाध्य है ?
a. कपाल भग्न b. कटि भग्न c. कुष्ठ भग्न d. उपर्युक्त सभी

42. सूची–I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:।

सूची – I(धातु)	सुची – II (कार्य)
a. रस	1. लेपन
b. रक्त	2. स्नेहन
c. मांस	3. प्रीणनम्
d. मेद	4. जीवनम्

a. 3,4,1,2 b. 3,1,4,2 c. 2,4,3,1 d. 2,3,1,4

43. सूची–I को सूची–II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:।

सूची – I(शरीर भाव)	सुची – II (संख्या)
a. त्वचा	1. 15 (पंद्रह)
b. प्राणायतन	2. 6 (छ:)
c. कोष्ठांग	3. 10 (दस)
d. महाछिद्र	4. 9 (नौ)

a. 2,1,3,4 b. 1,3,2,4 c. 3,1,4,2 d. 2,3,1,4

44. ग्रहणी रोग में विकृति स्थान क्या है ?
a. चतुर्थ धरा कला b. पंचम धरा कला
c. षष्ठी धरा कला d. उपर्युक्त में से कोई नहीं

45. सुश्रुत के अनुसार, श्रोणी में कितनी अस्थियाँ है ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

46. अश्मनो:संघट्टनं कौन–सा कर्म है ?
a. जात कर्म b. शोधन कर्म c. पूर्व कर्म d. पंच कर्म

47. वमन केंद्र कहाँ होता है ?
a. अंतस्था में b. मस्तिष्क स्तंभ में
c. पोंस में d. अनुमस्तिष्क में

48. एक्रोमिऑन प्रॉसेस निम्नलिखित में से किसका भाग है ?
a. ऊर्विका b. प्रगण्डिका c. स्कैपुला d. करोटि का आधार

49. टोड त्वचा किस विटामिन की हीनता से होती है ?
a. विटामिन A b. विटामिन C c. विटामिन D d. विटामिन B_{12}

50. ओर्वी त्रिभुज में मध्य से पार्श्व की ओर सही अनुक्रम क्या है ?
a. तंत्रिका, धमनी, शिरा b. धमनी, शिरा, तंत्रिका
c. शिरा, तंत्रिका, धमनी d. शिरा, धमनी, तंत्रिका

51. पैत्तिक गलगण्ड का उपचार क्या है ?
a. विरेचन b. रक्तमोक्षण c. विरेचन एवं वस्ति d. स्वेदन

52. आननतंत्रिका किस रूप में जानी जाती है ?
a. षष्ठ कपालीय तंत्रिका b. सातवीं कपालीय तंत्रिका
c. आठवीं कपालीय तंत्रिक d. नौवीं कपालीय तंत्रिका

53. सुश्रुत के अनुसार कटिकपाल में कौन-सी संधिया पाई जाती है ?
a. सामुद्ग b. तुन्न सेवनी
c. सामुद्ग और तुन्नसेवनी दोनों d. तून सेवन

54. सात्विक मद्यपान का वर्णन किसमें मिलता है ?
a. विमान स्थान b. चिकित्सा स्थान c. शारीर स्थान d. कल्प स्थान

55. किस आस्तिक दर्शन ने अभाव को पदार्थ नहीं माना है?
a. सांख्य-दर्शन b. वैशेषिक - दर्शन c. न्याय-दर्शन d. योग-दर्शन

56. अप्रतिघातत्व का विशेषित लक्षण क्या है?
a. वायु b. अग्नि c. आकाश d. उपर्युक्त में से कोई नही

57. उपस्तम्भ क्या है?
a. वात, पित्त, कफ b. सत्व, रज, तम
c. आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य d. उपर्युक्त में से कोई नही

58. किस कारण से कफज प्रमेह साध्य होता है?
a. समक्रियतवात् b. विषमक्रियत्वात्
c. महात्ययत्वात् d. उपर्युक्त में से कोई नही

59. शारंगधर के अनुसार, प्राणवायु का क्या स्थान है?
a. हृदय b. मस्तिष्क c. नाभि d. कंठ

60. दृढबल के अनुसार, तंत्रयुक्ति की संख्या क्या है?
a. 32 b. 40 c. 36 d. असीमित

61. चरक के अनुसार, निम्नलिखित मे से किस एक प्रकार के उन्माद रोग में रोगी असमय में नाचता है, गाता है और हंसता है?
a. वातिक b. पैत्तिक c. कफज d. सन्निपातज

62. श्रृंग, निम्नलिखित में से कौनसे कर्म में उपयोगी है?
a. वमन b. रक्तमोक्षण c. नस्य d. शिरावेध

63. अन्नवह स्रोतों दुष्टि की चिकित्सा के लिए क्या निर्दिष्ट किया गया है?
a. आम दोष की b. छर्दिवत् c. अतिसारवत् d. वमन

64. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के निचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

सूची (रोग)-I	सूची-II (लक्षण)
A. विषम ज्वर	1. मुंहुबद्ध - मुहु:द्रव
B. परिणाम शूल	2. मुक्तानुबन्धी
C. ग्रहणी	3. भुक्तेजीर्यति

कुट :	A	B	C
a.	3	2	1
b.	2	3	1
c.	1	3	2
d.	2	1	3

65. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

सूची (हेतु)-I	सूची-II (व्याधि)
A. मृत्तिका भक्षण	1. हृद्रोग
B. आस्या सुख, स्वप्नसुख	2. पाण्डु
C. क्षत	3. प्रमेह
D. कृमि	4. कास

कुट :	A	B	C	D
a.	2	4	3	1
b.	1	3	4	2
c.	2	3	4	1
d.	1	4	3	1

66. सर्वाधिक प्रभावी ज्वरघ्न द्रव्य कौन से है?
a. निम्ब और मंजिष्ठ b. अभया और पिप्पली
c. लाक्षा और बिल्व d. मुस्ता और पर्पटक

67. संशोधन के बाद, स्थूल प्रमेही में, निम्नलिखित में से कौन-सा कर्म कराना ही चाहिए?
a. लंघन b. पाचन c. कर्षण d. संतर्पण

68. कण्ठ एवं उदर में भारीपन, खट्टा मुख एवं कुक्षि आटोप, ये किस रोग के लक्षण हैं?
a. उदर रोग b. श्वास रोग
c. हिक्का रोग d. उपर्युक्त में से कोई नही.

69. सहभोजनात्.....रोगा संक्रमन्ति नरान्नरम्
उपर्युक्त श्लोक का संदर्भ निम्नलिखित में से किस एक से है?
a. चरक संहिता b. सुश्रुत संहिता
c. वाग्भट d. उपर्युक्त में से कोई नहीं

70. निम्नलिखित में से कौन-सा एक रोग, जिसमें तुल्य ऋतु एवं दोष हो, सुख-साध्य कहा जाता है?
a. श्वास रोग b. गुल्म रोग
c. ज्वर रोग d. उपर्युक्त में से कोई नहीं.

71. सुश्रुत व्दारा वर्णित,स्वेद के निम्नलिखित चार प्रकारों में से किस एक प्रकार में, निर्गुण्डि पत्र पिंडस्वेद सम्मिलित किया गया है?
a. ऊष्म b. उपनाह c. द्रव d. ताप

72. पारावत इवकूजन, निम्नलिखित में से किस एक रोग का लक्षण है?
a. क्षयज कास b. क्षतज कास c. उर:क्षत d. राजयक्ष्मा

73. निम्नलिखित में से कौन-सा रोग, गुद वलि पर आघात से उत्पन्न होता है?
a. गुदभ्रंश b. गुदपाक
c. गुदअर्श d. उपर्युक्त तीनों रोग.

74. कौन-सा स्थान सुश्रुत संहिता में सम्मिलित नाहीं है?
a. शरीर स्थान b. सूत्र स्थान
c. विमान स्थान d. निदान स्थान

75. चरक ने महाकल्याणक घृत को निम्नलिखित में से किस एक रोग मे उल्लिखित किया है?
a. अपस्मार b. उन्माद c. क्षतक्षीण d. श्वयथु

76. लोहित रक्त कणिका का आयुमान कितने दिनों का है?
a. 120 दिन b. 60 दिन c. 30 दिन d. 45 दिन

77. कास, श्वास और हिक्का रोग में श्रेष्ठ औषधि कौन-सी है?
a. अनंतमूल b. पुष्करमूल c. दशमूल d. आरग्वधमूल

78. निम्नलिखित में से किस एक में, दोष के प्रतिमार्ग हरण का उल्लेख आता है?
a. शीतपित्त b. अम्लपित्त c. रक्तपित्त d. बहुपित्त

79. पुरीष संरक्षण का उल्लेख चरक ने निम्नलिखित में से किस व्याधि की चिकित्सा में किया है?
a. कास b. श्वास c. हिक्का d. राजयक्ष्मा

80. तिलपिष्ठानिभा पुरीष, निम्नलिखित व्याधियों में से किस एक का लक्षण है?
a. कुम्भ कामला b. बहुपित्त कामला
c. आमातिसार d. रुध्दपथ कामला

81. गुदपाक रोग में,घृतयोग की निम्नलिखित में से कौन-सी औषधि श्रेष्ठ है?
a. दाडिम घृत b. चांगेरी घृत c. शतधौत घृत d. सुकुमार घृत

82. निम्नलिखित व्याधियों में से किस एक व्याधि में सम्पूर्ण पंचकर्म चिकित्सा का प्रयोग किया जाता है?
a. कुष्ठ b. विसर्प c. किलास d. श्वित्र

83. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

सूची-I (दोष)	सूची-II (रक्तमोक्षण)
A. वात दुष्टि	1. सिरा व्यधन
B. पित्त दुष्टि	2. श्रृंग
C. कफ दुष्टि	3. जलौकावचरण
D. सर्वांगगत दुष्टि	4. अलाबु

कुट :	A	B	C	D
a.	1	3	4	1
b.	1	4	3	2
c.	2	4	3	1
d.	1	3	4	2

84. गुदेन बहु द्रव सरणम् निम्नलिखित व्याधियों में से किस व्याधि का लक्षण है?
a. अतिसार b. ग्रहणी
c. प्रवाहिका d. अधोगत अम्लपित्त

85. चरक के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा एक, अर्श रोग चिकित्सा में सर्वोत्तम औषधि एवं आहार का काम करता है?
a. नवनीत b. क्षीर c. तक्र d. दधि

86. 'यथा विषम् यथा शस्त्र यथा अग्निरशनिर्यथा' निम्नलिखित में से किस एक से सम्बंधित है?
a. सुश्रुत b. चरक c. शारंगधर d. वाग्भट

87. अच्छपेय स्नेह निम्नलिखित में कौन-सी कल्पना है?
a. प्रथम कल्पना b. प्रविचारणा
c. प्रथम कल्पना और प्रविचारणा d. अल्प स्नेहन

88. औषधियाँ, क्षारकर्म, शस्त्रकर्म, और अग्निकर्म निम्नलिखित में से किस एक रोग की चिकित्सा के लिए विहित किए गये हैं?
a. अर्श b. उदर रोग c. शिरो रोग d. नासा रोग

89. दशविध परीक्ष्य का शास्त्रीय निर्देश किस आचार्य ने किया है?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. योगरत्नाकर

90. निम्नलिखित में से किस एक रोग में पिच्छा-बस्ति का विशिष्टत: वर्णन नहीं है?
a. अर्श b. अतिसार c. प्रवाहिका d. ग्रहणी रोग

91. वाग्भट के अनुसार नि:स्फुरे निम्नलिखित में से किस एक का लक्षण है?
a. नागोदर b. उपशुष्क c. उपविष्टक d. लीनगर्भ

92. पिंगल निम्नलिखित में से किस एक का पर्याय है?
a. रेवती b. अहिपूतना c. पूतना d. पितृग्रह

93. यदि विभाजित कर्ण के दोनों प्रालंब मोटे, फैले और समान हों तो किस प्रकार के बन्ध का प्रयोग करते हैं?
a. व्यायोजिम बन्ध b. आहार्य बन्ध c. अर्धकपाट संधिक d. नेमिसन्धानक

94. सुश्रुत ने निम्नलिखित में से किनको कर्णपाली के कफज रोगों के रुप में बताया है?
a. विस्फोट, स्तब्धता, शोक b. दाह, विस्फोट, शोफ, पाक
c. कण्डु, श्वयथु, स्तम्भ d. शोफ, पाक, कण्डु, गुरुत्व

95. प्लीहा रोग के लिए काश्यप ने किसके प्रयोग की सलाह दी है?
a. विषगर्भ तैल b. महानारायण तैल
c. अणु तैल d. कटु तैल

96. वमन एवं विरेचन दोनों किसमें प्रतिदिष्ट हैं?
a. रेवती b. पुण्डरीक c. स्कन्द d. नैग्मेष

97. स्फालित मूत्रत्व निम्नलिखित में से किसका कारक है?
a. रक्त प्रदर b. कर्णिनी योनिरोग c. बंध्यत्व d. योनि अर्श

98. शवगन्ध निम्न में से किसमें पाया जाता है?
a. श्वग्रह b. शकुनी ग्रह c. पितृ ग्रह d. रेवती ग्रह

99. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए :

सूची-I (लक्षण एवं चिह्न)	सूची-II (रोग)
A. कलुषशिरावृतोदरो	1. अतिकृश
B. उदरेग्रंथ्य: शिरा	2. मुखमण्डिक
C. शुष्क स्फिगुदर ग्रीव धमनी जाल संतत:	3. शकुनी ग्रह
D. स्फोटा: सदाहरुक्पाका सन्धिसुस्यु: पुन: पुन:	4. शुष्क रेवती

कुट :	A	B	C	D
a.	3	1	4	2
b.	2	4	1	3
c.	3	4	1	2
d.	2	1	4	3

100. इनमें से कौन-सी एक औषध, रज:प्रवर्तनी वटी का घटक नहीं है?
a. रसांजन b. हिंगु c. टंकण d. घृतकुमारी सार

101. शुष्क रेवती जातहरिणी का आक्रमण किस उम्र में होता है?
a. 14 वर्ष b. 16 वर्ष c. 18 वर्ष d. 20 वर्ष

102. रसकर्पूर का प्रयोग निम्नलिखित में से किस एक में किया जाता है?
a. फिरंग रोग b. असृग्दर c. सोम रोग d. योनि कण्डू

103. वाग्भट के अनुसार अजगल्लिका की चिकित्सा निम्नलिखित में से किसके व्दारा की जाती है?
a. छेदन कर्म b. तुम्बी c. सिरावेध d. जलौका

104. शिशु की हस्तस्वेद चिकित्सा किस आयु में की जाती है?
a. चतुर्थ मास b. छठे मास c. सातवें मास d. नौंवे मास

105. हारीत संहिता के अनुसार, पंचक्षीरदोष कौन-से हैं?
a. घन, उष्ण, अम्ल, अल्प, क्षार b. गुरु, उष्ण, अल्प, मृदु, घन
c. उष्ण,स्निग्ध,दुर्गंधित, अम्ल,क्षार d. दुर्गंधित,उष्ण,अम्ल,मृदु, क्षार

106. तण्डुलीयक मूल को चावल के धोवन के साथ पीसकर मासिक रज:स्राव के बाद लगातार तीन दिन पीने से निम्नलिखित में से क्या होता है?
a. रजोवृध्दि b. गर्भपात c. बंध्या d. रज:क्षय

107. निम्नलिखित में से किस एक के अनुसार सूतिकागार का मुख पूर्व या दक्षिण में होना चाहिए?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. हारीत

108. वर्ति चिकित्सा निम्नलिखित में से किस योनि रोग में की जाती है?
a. वातज योनिव्यापद् b. पित्तज योनिव्यापद्
c. कफज योनिव्यापद् d. रक्तज योनिव्यापद्

109. सामान्य प्रोथ्रॉम्बिन निर्माण के लिए यकृत को किस विटामिन की आवश्यकता होती है?
a. विटामिन A b. विटामिन B c. विटामिन C d. विटामिन K

110. जनन क्षमता के लिए कौन-सा विटामिन आवश्यक है?
a. विटामिन A b. विटामिन C c. विटामिन D d. विटामिन E

111. षड्धरण चूर्ण का प्रयोग किसमें किया जाता है?
a. पक्वाशयगतवात में b. आमाशयगतवात में
c. कोष्ठगतवात में d. नाभिस्थगतवात में

112. अष्टांग-हृदय में उत्तरबस्ति के यंत्र की लंबाई का प्रमाण निम्नलिखित में से कौन-सा बताया गया है?
a. बारह अंगुल b. दस अंगुल c. आठ अंगुल d. पांच अंगुल

113. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, पिल्ल रोग नहीं है?
a. पोथकी b. कुकूणक c. उत्क्लिष्ट d. श्लिष्ट

114. निम्नलिखित में से किस रोग में बाहु का प्रस्पन्दन नहीं होता है?
a. सिराग्रह b. विश्वाची c. अवबाहुक d. खन्ज

115. ताम्रवर्ण की रेखाएं निम्नलिखित में से किस रोग में पाई जाती हैं?
a. सिरोत्पात् b. शुष्काक्षिपाक c. मारुत्पर्यय d. अम्लाध्युषित

116. सुश्रुत के नुसार सम्यक् घृतपाक का क्या लक्षण है?
a. शब्दस्योप में प्राप्ते b. फेनोद्गद
c. मधूच्छिष्टमिव विशद d. उपर्युक्त सभी

117. ग्रन्थिरोग में ब्रणग्रन्थि का वर्णन किसने किया है?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. उपर्युक्त सभी

118. वातकंटक में सिरावेध का कौन-सा स्थान है?
a. उरुमूल b. क्षिप्रमर्म से दो अंगुल ऊपर
c. गुल्फ से चार अंगुल ऊपर d. बायाँ हाथ

119. निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा एक सही सुमेलित नहीं है?
a. मेढ्र अर्श : कूर्च सदृश b. योनि अर्श : छत्राकार
c. नाभि अर्श : गण्डूपद मुख d. कर्णार्श : चुच्चु सदृश

120. चरक के अनुसार, विस्तृत क्षत में कौन-सा शस्त्रकर्म करना चाहिए?
a. प्रच्छान b. छेदन c. लेखन d. सीवन

PGA CET Maharashtra 2009

(स्मृतीपर आधारीत)

1. हारित के अनुसार पाण्डु के भेद है।
a. 8 b. 5 c. 7 d. 10

2. निरूहबस्ति व्यापद संख्या है।
a. 8 b. 10 c. 12 d. 9

3. सुश्रुत के अनुसार रक्तरोधक उपाय है।
a. 4 b. 3 c. 5 d. 6

4. सुश्रुत के अनुसार शिरोरोग.
a. 9 b. 5 c. 11 d. 12

5. सुश्रुत के अनुसार नासारोग.
a. 31 b. 28 c. 33 d. 12

6. सुश्रुत के नुसार रोहिणी प्रकार.
a. 5 b. 4 c. 7 d. 8

7. सुश्रुत के नुसार आन्त्रवृध्दि प्रकार.
a. 8 b. 2 c. 7 d. 5

8. सुश्रुत के नुसार द्रव्यप्रधानता के Pts है।
a. 6 b. 7 c. 8 d. 9

9. प्रभा प्रकार है।
a. 7 b. 6 c. 5 d. 4

10. उर्ध्वजत्रुगत मर्म संख्या.
a. 37 b. 14 c. 23 d. 25

11. Protodiastolic period during cardiac cycles.
a. 0.0 6 sec. b. 0.0 5 sec.
c. 0.0 4 sec. d. 0.0 8 sec.

12. Vital capacity of lung.
a. 4.5 lit. b. 5 lit. c. 4 lit. d. 5.5 lit.

13. उभयहस्तदग्ध.
a. 18% b. 9% c. 36% d. 10%

14. राजनिघण्टुनुसार द्रव्यनामकरण का निकष.
a. 7 b. 8 c. 5 d. 3

15. Height double than at birth in
a. 5 yrs. b. 4 yrs. c. 2 yrs. d. 3 yrs.

16. रोपण आश्चोतन मात्रा.
a. 12 बिंदु b. 10 बिंदु c. 8 बिंदु d. 6 बिंदु

17. योगदर्शनानुसार एक दिन में श्वसन.
a. 21600 बार b. 19600 बार
c. 21500 बार d. 22000 बार

18. विस्तारवचनं--------
a. निर्देश b. उद्देश c. अतिदेश d. प्रयोजन

19. गुदपाक Best चिकित्सा है।
a. रसांजन b. चांगेरी घृत c. चव्य घृत d. b & c

20. पूज्यते अत्र वन्हिदीपनम्.
a. कुकूणक b. फक्क c. पारिगर्भिक d. बालशोष

21. उपशीर्षक में दोष.
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोष

22. यवमध्याकृति अर्श.
a. वात b. पित्त c. कफ d. सन्निपतिक

23. आशयापर्कषगति इस व्याधि में होती है।
a. अम्लपित्त b. शीतपित्त c. बहुपित्तकामला d. तिर्यक रक्तपित्त

24. मुले अंकुशवत् वृत्त वारंगाणि.
a. सदंश यंत्र b. स्वस्तिक यंत्र c. नाडी यंत्र d. उपयंत्र

25. अपान वायू दुष्टी में औषधसेवनकाल
a. भोजनमध्य b. भोजनपश्चात c. रात्री d. भोजनपूर्व

26. कफप्रकोपक काल.
a. भुक्तमात्रे b. जीर्णऽन्ते c. जीर्यत्यन्ने d. All

27. पाचक पद है।
a. योग b.योगरूढ c. रूढ d. योग्य

28. .....नाम निश्चय
a. प्रतिज्ञा b. उपालम्भ c. जिज्ञासा d. व्यवसायो

29. आनाह चक्र.
a. हृदय b. कण्ठ c. नाभि d. गुद

30. सिराव्यध स्नायू छेदनार्थ.
a. तैलपायना b. क्षार c. उदक d. All

31. सबसे लघु कषाय कल्पना.
a. फाण्ट b. स्वरस c. कल्क d. हिम

32. रज: व क्षोद पर्याय.
a. चूर्ण b. कल्क c. स्वरस d. हिम

33. क्षीरपाक प्रमाण
a. 1:4:8 b. 1:8:16 c. 1:8:32 d. 1:4:16

34. तण्डुलोदक जल: तण्डुल.
a. 1:8 b. 8:1 c. 16:1 d. 1:16

35. मुग्धरस बनाते समय खटिका 120 mg लेने पर पारद.
a. 120 mg b. 60 mg c. 30 mg d.150 mg

36. रसरत्नसमुच्च/श्लोक व्याख्या.....***
a. अनुपान b. योगवाही c. कल्पना d. none

37. Ref.हृदयो रस: निस्सरनि तत् एव च सर्वत:।
सिराभिहृदय याति तस्माद् हृत्पृथवा सिरा:॥
a. हारित संहिता b. भेल संहिता c. काश्यपसंहिता d. अष्टांग हृदय

38. पंचावयवी वाक्य में नही.
a.प्रतिज्ञा b. उपनय c. उपदेश d. निगम

39. अप्रतिहनन गुण.
a. आकाश b. वायु c. पृथ्वी d. जल

40. Inactivated vaccine
a. BCG b. Measles c. Yellow fever d.Hep B.

41. क्षारगुण.
a. शुक्ल b. अविष्यंदी c. मृदु d. All

42. Should be retained in frozen compartment.
a. BCG b. Measles c. DPT d. TT

43. स्वस्थ पुरूष के लक्षण.
a. सममांसप्रमाण b. समसंहनन c. दृढेन्द्रिय d. All

44. हरितकी प्रधान रस.
a. कषाय b. अम्ल c. लवण d. मधुर

45. पाण्डु रोगी ने पित्तकर आहार खाने से.
a. बहुपित्तकामला होता है। b. वातज कास होता है
c. रूध्दपथकामला होता है। d. All

46. कृतेऽप्यकृत संज्ञता लक्षण है।
a. कफज अतिसार b. पित्तज अतिसार
c. वातज अतिसार d. सन्निपातिक

47. श्वास व्याधी में मुख्य चिकित्सा है।
a. बृंहण b. शमन c. शोधन d. All

48. प्रवाहतोऽल्प बहुशो मलाक्त
a. प्रवाहिका b. अतिसार c. ग्रहणी d. उदर

49. साम पित्त का रस है।
a. अम्ल b. लवण c. कटु d. All

50. विबन्ध लक्षण मिलता है।
a. सामवायु b. सामपित्त
c. सामकफ d. निराम वायु

51. कफ प्रसर लक्षणे कौनसी हो
a. अरोचक b. अविपाक c. अंगसाद d. All

52. पुटपाक का प्रकार नही है।
a. शोधन b. लेखन c. रोपन d. स्नेहन

53. प्राणवह स्त्रोतस चिकित्सा है।
a. श्वास व्याधी समान b. कास व्याधी समान
c. हिक्का व्याधी समान d. All

54. आगति पर्याय.
a. सम्प्राप्ती b. हेतु c. उपशय d. पूर्वरूप

55. Peripheral Resistance directly (Proportional to)
a. Diastolic pressure b. Systolic
c. Both d. None

56. गुडूची के गुण है।
a. गुरू,स्निग्ध b. लघु,स्निग्ध c. गुरू,रूक्ष d. लघु,रूक्ष

57. लवण द्रव्य का विपाक है।
a. मधुर b. अम्ल c. कटु d. लवण

58. अम्ल रस के गुण है।
a. स्निग्ध b. उष्ण c. लघु d. All

59. त्रिविधविपाक मानते है।
a. अ.सं. b. अ. हृ. c. चरक d. All

60. निश्चलकर टिका on
a. चक्रदत्त b. चरक c. सुश्रुत d. काश्यप

61. गुढार्थदीपीका on
a. शारंगधर b. हारित c. भेल d. मा. नि.

62. वृष्यमांस
a. चटक मांस b. अजामांस c. गोमांस d. None

63. बृहत्शरीर गिरीसारसारं –
a. आमलकघृत b. आमलकावलेह
c. आमलकचूर्ण d. भल्लातक घृत

64. Pulserate increases during inspiration,decreases during expiration
a. P. Alternans b. P. Paradoxus
c. Sinus arrythmia d. None

65. वृश्चिक प्रकार मुख्यत:
a. 03 b. 30 c. 15 d. 12

66. ज्वर में यवागू कितने दिन तक देना चाहिए
a. यावत् ज्वर मृदुभावात् b. 7
c. 6 d. 8

67. दृष्टीमण्डल का वर्ण है।
a. कृष्ण b. श्याव c. वैडूर्यविमलश्यावा d. None

68. दन्तमूलगत रोग है।
a. परिदर b. वैदर्भ c. वर्धन d. All

69. दोषपाक है।
a. सुखसाध्य b. कृच्छ्रसाध्य c. याप्य d. प्रत्याख्येय

70. सहज प्रमेह कारण
a. बीजदोष b. वातज c. पित्तज d. कफज

71. दोषदूष्य समान होने पर कफज प्रमेह है।
a. सुखसाध्य b. कृच्छ्रसाध्य c. याप्य d. प्रत्याख्येय

72. रसगत ज्वर की चिकित्सा है।
a. वमन b. उपवास c. Both d. None

73. पिण्याकसर्पिप्रतिम स्त्राव
a. मेदोजग्रंथि b. पित्तजग्रंथी c. वातज d. कफज

74. वृत्त स्थिर मन्दरूजं महान्तम् अनल्पमूल
a. अर्बुद b. ग्रंथि c. विद्रधी d. व्रणशोफ

75. गुडच्यामलकमुस्ता किस ज्वर की चिकित्सा है।
a. चतुर्थक ज्वर b. तृतीयक c. संतत d. सतत

76. ज्वर में उर्ध्वग रक्तपित्त होने पर प्रथम चिकित्सा है।
a. तर्पण b. पेया c. Both d. None

77. काश्यप के नुसार मण्ड निषेध है ---- में
a. योनिव्यापद b. आर्तवदुष्टी c. सूतिकारोग d. स्तनरोग

78. प्रमेह में कफ का विशेष गुण है।
a. द्रव b. स्निग्ध c. सर d. गुरू

79. प्रमेह में धातुदुष्टी नहीं होती है।
a. अस्थि b. रक्त c. मांस d. मेद

80. सूर्यभेदन किसका प्रकार है।
a. कुंभक b. प्राणायाम c. बंध d. None

81. हठयोगप्रदीपिका के नुसार श्रेष्ठ प्राणायाम है।
a. केवल b. सहित c. उज्जायी d. None

82. पूषा नाडी का स्थान है।
a. द. कर्ण b. नेत्र c. वाम कर्ण d. नासा

83. आज्ञाचक्र की शक्ती है।
a. हाकिनी b. शाकिनी c. आकिनी d. काकिनी

84. ओजच्युति अभिघातजन्य:।
a. ओजविस्त्रंस b. व्यापद c. क्षय d. None

85. चक्रपाणी के नुसार गुल्फस्थित वायू है।
a. ग्रीवाहुण्डम् b. आढ्यवात c. Both d. None

86. दोष शाखा से कोष्ठ में आने के उपाय है।
a. पाक b. व्यायाम c. Both d. None

87. दोष कोष्ठ से शाखा में जाने के कारण है।
a. व्यायाम b. वायू द्रुतत्व c. अहित आहार d. All

88. अष्टांगसंग्रह के नुसार बलेन्द्रियोपघात लक्षण है।
a. वातवृध्दी b. वातक्षय c. पित्तवृध्दी d. पित्तक्षय

89. अष्टांगसंग्रह के नुसार स्वेदासृकस्त्रवण कर्म है।
a. व्यानवायू b. समान c. उदान d. अपान

90. निंब में Antimalarial तत्व है।
a. Nimbidin b. Nimbiol c. Nimbin d. Nimbin Glylon

91. जयपाल में content है।
a. Croton b. Brucin c. Abrin d. None

92. Thorn apple
a. अर्क b. अपामार्ग c. धत्तुर d. कण्टकारी

93. विषतिन्दूक मात्रा है।
a. 1/4 -1 रत्नी b. 1 - 2 रत्नी
c. 1/120 रत्नी d. 1/60 रत्नी

94. IUGR का कारण नहीं है।
a. Smoking b. Alcohol
c. CRF d. Diabetes Mellitus

95. विसूचिका में संजीवनी वटी को मात्रा है।
a. 1 गुंजा b. 2 गुंजा c. 3 गुंजा d. 1/2 गुंजा

96. Hb% estimation.
a. पौतव b. द्रुवय c. पाय्य d. None

97. शारंगधरानुसार रसायन नही है।
a. चक्रलक्षणिका b. हरितकी c. महिषाक्ष d. अमोह

98. भृशोष्णकुणपस्त्राव लक्षण --- योनीव्यापाद का है।
a. पित्त योनिव्यापद b. वात c. कफ d. त्रिदोष

99. यथा कुसुम्भपुष्पेयं पूर्व स्त्रवति पितिका।
तथा ------- विध्दारू दुष्टभगे प्रवर्तते।। .... सु.शा. 3/19
a. स्नायुसु b. धमनीसु c. सिरासु d. None

100. अपांग मर्माघात
a. बधिरता b. अंधता c. Both d. None

101. स्वप्न में उत्पल, कुमुद आना ------ है।
a. पुत्री जन्म सूचक b. पुत्र जन्म सूचक c. Twins d. None

102. प्रवाल शोधन करते है।
a. मूत्रवर्ग b. क्षारवर्ग c. कृतान्नवर्ग d. None

103. धामार्गव व कृतवेधन का प्रभाव है।
a. उभयतोभागहर b. उर्ध्वभागहर c. अधोभागहर d. None

104. मदनफल संग्रह नक्षत्र में करते है।
a. पुष्य b. मृग c. अश्विनी d. स्वाती

105. जेन्ताक स्वेद – ऋतू में वर्णित है।
a. हेमन्त b. शिशिर c. ग्रीष्म d. शरद

106. Flag sign is present in -------
a. Kwashiorkar b. Marasmus
c. Malnutrition d. All

107. फटी हुई, विविधरंगयुक्त तथा आमगंधी मलप्रवृत्ती
a. फक्क b. क्षीरालक्षक c. अतिसार d. गुदपाक

108. Epiploic foramen बनाते हुए भाग नहीं लेता है।
a. यकृत का चतुरस्त्र पिंडक b. ग्रहणी का प्रथम भाग
c. लघुवपा d. अधरा महासिरा

109. Medial arch of leg में भाग लेता है।
a. Talus b. Calcaneum
c. Navicular d. Cuboid

110. Tempolaris Nerve Supply.
a. Mandibular branch of Trigeminal nerve
b. Maxillary branch of Trigeminal nerve
c. Temporal branch of Facial nerve
d. Mandibular branch of Facial nerve

111. Chief muscle of respiration.
a. Thoraco abdominal diaphragm b. Pectoralis Major
c. Pectoralis Minor d. Both b & c

112. स्त्रोतोदुष्टी का हेतु है।
a. दोषगुणसम b. धातुविरोधी आहार c. Both d. None

113. लेख्य रोग A/c सुश्रुत.
a. उत्संगिनी b. अर्म c. शुक्तीका d. पर्वणी

114. Length of cervix
a. 1.5 cm. b. 2.5 cm. c. 3 cm. d. 3.5 cm.

115. Uterus dimension
a. 7 x 5 x 2 cm. b. 8 x 5 x 3 cm. c. 7.5 x 5 x 2.5 cm. d. 8 x 5 x 2.5 cm.

116. Roun
a. Lat
c. Cer

117. Gynac
a. Ova

118. सद्यक्षता
a. रक्त

119. पंचकोल
a. 15-

120. Menst
a. 10

121. सुख –
a. यो.

122. महागद है
a. उन्मा

123. दुश्चिकित
a. उन्मा

124. Siegle
a. कर्ण
c. नेत्र प

125. शंखकेशान
a. उन्माद

126. 1 वर्ष के
a. कृच्छ्र

127. चरक के नु
a. 18 अं

128. कण्ठे षडांगु
a. उर:

129. सुश्रुत के
a. प्लीहा
c. हृदय में

130. चरक के नु
a. च.सू.

131. वंध्यत्व का
a. योनिदो

132. Corpus
a. 8-10
c. 12-14

133. जलोदर में
a. आटीमुख
c. मण्डलाग्र

134. Ovulatior
a. FSH

135. Rule of n
a. Wounc

136. Permissi
a. Police
b. Deputy

116. Round ligament of uterus ends at
a. Labia minora b. Labia majora
c. Cervix d. Vagina

117. Gynacoid pelvis is
a. Oval b. Round c. Irregular d. None

118. सद्यक्षतप्ररोहति काश्यपा के नुसार सार
a. रक्त b. मांस c. त्वचा d. मेद

119. पंचकोल फाण्ट चिकित्सित मात्रा
a. 15-25 ml b. 80 ml c. 40 ml d. 20-40 ml

120. Menstrual cycle blood loss is
a. 10 ml b. 30 ml c. 40 ml d. 50 ml

121. सुख – दुःख ही बलानां दृश्यते लेहनाश्रयम्।
a. यो. र. b. घेरण्ड संहिता c. काश्यप d. चरक

122. महागद है।
a. उन्माद b. अपस्मार c. अतत्वाभिनिवेश d. None

123. दुश्चिकित्साश्च रसायनेन प्रायशो समुपचारेत
a. उन्माद b. अपस्मार c. अतत्वाभिनिवेश d. All

124. Siegles speculum.
a. कर्ण परिक्षण b. नासा परिक्षण
c. नेत्र परिक्षण d. मुख परिक्षण

125. शंखकेशान्तसन्धि सिरावेध
a. उन्माद b. अपस्मार c. राजयक्ष्मा d. मदात्यय

126. 1 वर्ष के बाद अर्श होते है।
a. कृच्छ्रसाध्य b. साध्य c. याप्य d. असाध्य

127. चरक के नुसार पृष्ठोत्सेध प्रमाण
a. 18 अंगुल b. 16 अं. c. 14 अं. d. 20 अं.

128. कण्ठे षडांगुलांनतरनाभेर्वितस्ति
a. उरः b. हृदय c. आमाशय d. फुफ्फुस

129. सुश्रुत के नुसार रस से रक्तनिर्मिती
a. प्लीहा में होती है b. यकृत में होती है
c. हृदय में होती है d. आमाशय में होती है

130. चरक के नुसार स्तन्यदोष वर्णन
a. च.सू. 30 b. च.सू. 19 c. च.चि. 29 d. च.चि.30

131. वंध्यत्व का हेतू है।
a. योनिदोष b. शुक्रासृग् दोष c. मनःसंताप d. All

132. Corpus luteum functional for
a. 8-10 days b. 10-12 days
c. 12-14 days d. 15 days

133. जलोदर में विस्त्रावणार्थ उपयोगी है।
a. आटीमुख b. ब्रीहीमुख यंत्र
c. मण्डलाग्र d. मूत्र विस्त्रावणार्थ यंत्र

134. Ovulation के लिए आवश्यक Hormone
a. FSH b. LH c. Both d. GTH

135. Rule of nine is related with
a. Wound b. Fracture c. Burn d. Gangrene

136. Permission for autopsy
a. Police Officer c. Both
b. Deputy police Officer d. None

137. C.I. In H.T.
a. हिंग्वाष्टक चूर्ण b. शतावरी कल्प
c. अर्जुनक्षीरपाक d. Both b & c

138. हृदयावसादक विष है।
a. वत्सनाभ b. अहिफेन c. गुंजा d. भंगा

139. Hunter syndrome
a. X b. Y c. XY d. YX linked

140. Complete absence of functioning of thyroid hormone
a. Gigantism b. Myxoedema
c. Hypothyroidism d. Dwarfism

141. शारंगधर के नुसार धुम के प्रकार है।
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6

142. वनस्पति विष में आमाशय धावन करें
a. $KMNO_4$ b. Distilled water
c. Hot water d. Soda bicarb

143. क्षार कल्प किस में देते है।
a. वात गुल्म b. पित्त c. कफ d. रक्त

144. हेमघृत अंजन उपयोगी है।
a. सन्निपातिक लिंगनाश b. अभिघातज लिंगनाश
c. उपहत नेत्र d. None

145. मध्यकर्ण अस्थि है।
a. Maleus b. Incus c. Stapes d. All

146. पित्तल.
a. रजत+यशद b. रजत+ताम्र
c. ताम्र+यशद d. नाग+ताम्र

147. जगद विषष्णं तं दृष्ट्वा तेनासौ विषसंज्ञित।
a. च.चि. 23 b. च.चि. 24 c. च. चि. 25 d. च. सू. 30

148. गर्भ का वर्ण है।
a. यावद् वर्ण आहार of गर्भिणी b. माता के समान
c. पिता के समान d. None

149. प्राकृत स्वर है।
a. अनुकीर्ण b. काक c. दीन d. जर्जर

150. जलोदर में चिकित्सा है।
a. दिपनीय तथा कफशामक b. दीपनीय तथा पाचनीय
c. कफशामक d. b + c

151. अनुपान के संदर्भ में सही है।
a. मंदाग्नि में कोष्ण जलपान b. मंदाग्नि में कांजी
c. मंदाग्नि में मद्य अनुपान d. All

152. सर्वधातुक्षयार्तानां देवानाममृत यथा सर्वेषामनुपान क्षीर।
a. उदर b. राजयक्ष्मा c. गुल्म d. ग्रहणी

153. प्लीहावृध्दी में काश्यपोक्त ------ उपयोगी है।
a. कटुतैल b. कटुचूर्ण c. तिलतैल d. a+b

154. श्वास में लीन दोष होने पर चिकित्सा है।
a. वमन b. विरेचन c. धूम d. नस्य

155. वायु + पृथ्वी
a. मधुर b. कषाय c. लवण d. कटु

156. अव्यक्त पूर्वरूप है।
a. उरः क्षत b. वातव्याधी c. Both d. क्षवथु

157. वाग्भट केानुसार आवरण प्रकरण कौनसे प्रकरण में वर्णन किया है ।
a. वातव्याधी में b. वातरक्त c. उरूस्तम्भ d. None

158. नानात्मज विकार है ?
a. कामला b. धमनीप्रतिचय c. संधिगतवात d. All

159. पांगुल्य है।
a. वातव्याधी b. नानात्मजव्याधी c. इंद्रियप्रदोषज d. All

160. सुश्रुतानुसार अश्मरी का प्रकार नहीं है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोष

161. वातज शोथ है।
a. दिवाबली b. रात्रौबली c. महाबली d. a +c

162. No Inflammation.
a. Cold Abscess b. Breast Abscess
c. Inguinal Abscess d. Perineal Abscess

163. Nitric acid मारक समय है।
a. 6-12 hr. b. 12 hr. c. 12-24 hr. d. 48 hr.

164. शोधनार्थ कम से कम पारद मात्रा है।
a. 1 पल b. 2 पल c. 3 पल d. 4 पल

165. Commonest polio type.
a. Inapparent b. Abortive
c. Paralytic d. Non paralytic

166. Toxaemia of pregnancy relates with.
a. Urine albumin b. Hypertension
c. both a+b d. None

167. बहुप्रसव में IInd Stage of labour
a. 1/2 hours b. 2 hours
c. 1 hour d. 4 hours

168. यमगर्भ – बीजेऽन्त --- भिन्नौ।
a. वायूना b. पित्तेन c. श्लेष्मजा d. रक्तेते

169. Neisseria gonorrhoea incubation period.
a. 2 - 5 days b. 3 -7 days
c. 10 days d. 14 days

170. Foreign particle usually present in which intraocular part of eye.
a. Ant. chamber b. Lens
c. Vitrous d. Post. chamber

171. मृत्युत्तर परिक्षण में सर्वप्रथम अवयव परिक्षण कारते है।
a. अन्ननलिका b. आमाशय c. यकृत d. प्लीहा

172. त्वग्दग्ध is not done by
a. क्षौद्र b. शलाका c. पिप्पली d. अजाशकृत

173. इन्द्रियाभिग्रह मन का ----- है।
a. कर्म b. गुण c. विषय d. All

174. षोडशकला related with
a. आत्मा (पुरुष) b. मन c. इन्द्रिय d. All

175. आरगवधीय अध्याय -------- चिकित्सा वर्णित है।
a. बहि परिमार्जन b. अन्त – परिमार्जन c. पंचकर्म d. All

176. विधीरहित दहिसेवन से उत्पन्न -------- है।
a. कामला b. पाण्डू c. उदर d. ग्रहणी

177. मृदुमांसखण्ड पर करे।
a. क्षारकर्म b. अग्निकर्म c. a +c d. शस्त्रकर्म

178. दिवा प्रकोपो भवति रात्रो संशमन भवेत।
a. संग्रहणी b. उदर c. ज्वर d. गुल्म

179. केसर का उपयुक्तांग है।
a. मूल बीज b. पत्र c. Stigma d. मूल

180. मेषंश्रृगी का उपयुक्तांग
a. पत्र b. फल c. पुष्प d. मूल बीज

181. गृध्रसी प्रकार है।
a. वातज व वातकफज b. वात,पित्त,कफ
c. वातज व वातपित्तज d. वात,पित्त,कफ,त्रिदोष

182. आत्मगात्रछेद है।
a. शस्त्रकर्मव्यापद b. यन्त्रदोष
c. शस्त्रदोष d. शस्त्रगुण

183. शोकज अतिसार चिकित्सा है।
a. वात अतिसार समान b. आश्वासन
c. a + b d. पित्तज अतिसार समान

184. रोगों की चिकित्सा आयुर्वेद मे वर्णन नही
a. कालज स्वाभाविक b. अकालज स्वाभाविक
c. मातृज d. रस अपचारकृत

185. राजीव गांधी श्रमिक कल्याण योजना
a. 2001 b. 2002 c. 2003 d. 2004

186. यकृतमांस सेवन in
a. रात्रान्ध्य b. दिवांध c. अर्म d. अर्जुन

187. लेखस्थावृत्त
a. याम्यसत्त्व b. ऐन्द्रसत्व c. मात्स्यसत्व d. ब्रह्मसत्व

188. मनोबुध्दि इन्द्रिय शरीर तुष्टी
a. कार्य b. कार्यफल c. अनुबंध d. कारण

189. शीत वीर्य द्रव्य विशेषत: ---- शक्ती बढाते है।
a. धारण b. पालन c. जीवनीय d. बुध्दी

190. सर्पविष चिकित्सार्थ उपयोगी है।
a. Inj. ASV b. Inj. kethedine
c. Stomach wash d. None

191. उपशीर्षक व्याधी का वर्णन है।
a. हारित b. वंगसेन c. काश्यप d. चक्रदत्त

192. Cellular immunity
a. α - cells b. B - lymphocyte
c. T - cells d. C - cells

193. Bacillus ceren
a. Food poisning b. Diarrhoea
c. P.U.O. d. None

194. महाग्रन्थिक कण्टकैरुपचितं ----- श्लिपद
a. कफ श्लीपद b. वात c. पित्त d. त्रिदोष

195. बालको में Hernia चिकित्सा.
a. Herniotomy b. Hernio rapphy
c. Hernioplasty d. Truss

196. बालको के खिलौने किससे बनाते है। (काश्यप)
a. मिट्टी b. प्लास्टीक c. लाक्षा d. All

197. उण्डूक उत्पत्ती
a. मूत्र b. शोणितमल c. पुरीष d. All
198. मुग्धा का हारित के नुसार वय है।
a. 15 - 20 वर्ष b. 12 - 20 वर्ष
c. 16 - 22 वर्ष d. 16 - 20 वर्ष
199. उत्तम प्रति का लाक्षा प्राप्त होता है।
a. Ficus glomerata b. Ficus infectoria
c. Withania somnifera d. Ficus religiosa
200. शुक्ती को रजत समझना
a. विपर्यय b. तर्क c. संशय d. अनुमान
201. सांख्य दर्शना के नुसार विकार है।
a. 16 b. 1 c. 8 d. 25
202. 10 संख्या है।
a. परादी गुण b. आत्मगुण c. गुर्वादी गुण d. वैशेषिक गुण
203. वातज असाध्य नेत्ररोग है।
a. अर्जुन b. निमेष c. कुकूणक d. श्यावर्त्म
204. यस्य लेपने शक्ति स:------ ।
a. पिच्छिल b. विशद c. स्निग्ध d. द्रव
205. पौगण्डावस्था है।
a. 5 -16 yrs b. 0 - 5 yrs c. 1- 8 yrs d. 1 -10 yrs
206. प्लीहावृध्दी संधीशून्यता लक्षण है।
a. रक्तक्षय b. मेदक्षय c. अस्थिक्षय d. मज्जाक्षय
207. कौन से उन्माद में तीक्ष्ण अंजनादी निषेध है।
a. देव b. गंधर्व c. पितृ d. ऋषि
208. सितं असितं संरम्भ
a. पक्ष्मकोप b. पक्ष्मशात c. सव्रणशुक्र d. अव्रणशुक्र
209. पादांगुष्ठ के समान पिडका है।
a. सन्निपातिक भंगदर b. वातज c. पित्तज d. कफज
210. Calcium is present in
a. संत्रा b. मोसंबी c. सिताफल d. All
211. सामवेद का उपवेद है।
a. गंधर्ववेद b. आयुर्वेद c. यजुर्वेद d. धनुर्वेद
212. उपस्थ गर्भ है ।
a. समिरणा b. चान्द्रमासी c. गौरी d. All
213. A/c यो. र. मांसार्बुद चिकित्सा है।
a. दुष्टव्रणवत् b. विद्रधीवत् c. ग्रंथिवत् d. All
214. कौन से मर्म पर आघात होने से इंद्रियोपघात होता है।
a. सिरामर्म b. मांसमर्म c. स्नायुमर्म d. धमनीमर्म
215. अतिसार मे स्तंभन करने पर उत्पन्न लक्षण है।
a. उपद्रव b. उदर्क c. प्रयोगापरिशुध्दत्व d. अरिष्ट
216. जले सिक्तस्थ ------
a. स्नेहन b. शोधन c. भोजन d. जलपान
217. - ----- प्रत्यंगति।
a. मर्मांसि b. स्त्रोतांसि c. धमनीसु d. स्नायुसि
218. पिडका कृष्णे यस्मित भवेद मृद्गनिभं है।
a. असाध्य सव्रणशुक्र b. साध्य सव्रणशुक्र
c. असाध्य सव्रणशुक्र d. None

PGA CET - Maharashtra 2010

(स्मृतीपर आधारीत)

1. पराचीन भगंदर है।
a. अंतर्मुखी b. बर्हिमुखी c. Both d. None
2. In Preg. Iron daily dose is
a. 100 mg b. 200 mg c. 300 mg d. 400 mg
3. Preg में Calories req. daily –
a. 1500 b. 2000 c. 2500 d. 3000
4. Vit. D dose in children -
a. 100 mg b. 200 mg c. 300 mg d. 400 mg.
5. 6 वर्ष के बालक मे रससिंदूर मात्रा –
a. 2/7 रत्ती b. 1/5 रत्ती c. 1/3 रत्ती d. 2 रत्ती
6. सुश्रुत के नुसार शस्त्रकर्म...
a. 6 b. 8 c. 3 d. 13
7. व्याधीक्षमत्व व्याख्या ?
a. चक्रपाणी b. अरूणदत्त c. डल्हण d. सभी
8. Rape def.^{n}-IPC-
a. 376 b. 375 c. 377 d. 497
9. सद्य:परिस्थिती मे P.M. की Permission ... नही दे सकते है ।
a. Police b. Magistrate c. Coroner d. None
10. राजकोल ..... ?
a. 2 कोल b. 2 कर्ष c. 2 शराव d. 2 प्रस्थ
11. क्वाथ पर्याय ?
a. क्षौद्र b. रज c. निर्युह d. आवाप
12. अरिष्ट निर्माण में अनुक्त मात्रा रहनेपर गुड का प्रमाण
a. 1 प्रस्थ b. 1 तुला c. 1 कोल d. 1 शाण
13. आरोग्यवर्धिनी वटी.... भावना नही।
a. वासा b. तुलसी c. निबू d. निम्ब
14. आरोग्यवर्धिनी वटी मे कुटकी % कितना ?
a. 15% b. 18% c. 50% d. 75%
15. भानूमती टिका।
a. चक्रपाणी – सुत्रस्थान b. चक्रपाणी – निदानस्थान
c. हराणचंद्र – सुत्रस्थान d. हराणचंद्र – निदानस्थान
16. रसायन सार लेखक।
a. श्याम सुंदराचार्य वेश्य b. सोमदेव
c. अनंतदेवसुरी d. ढुण्ढुकनाथ
17. चरक के नुसार एषण है।
a. शस्त्रकर्म b. यंत्रकर्म c. Both d. None
18. बस्तिव्दारा कफ निर्हरण पश्चात देय आहार।
a. क्षीर b. मांसरस c. युष d. यवागू
19. मृदु बस्तिपश्चात देय ।
a. मधु युक्त निरूह b. अनुवासन
c. गोमूत्रयुक्त निरूह d. निरूह
20. यापना बस्ति उपद्रवमे देय।
a. दिपन b. निरूह c. अनुवासन d. सभी
21. निश्चेष्ट है।
a. द्रव्य b. गुण c. रस d. प्रभाव

22. विवेक गुण है।
a. पृथ्वी b. आकाश c. जल d. वायु

23. प्रायोगिक धुमपान काल (चरक).
a. 8 b. 12 c. 14 d. 16

24. मण्ड प्रमाण।
a. 12 b. 14 c. 6 d. 4

25. कालीमा सिर।
a. नासा b. कर्ण c. नेत्र d. जिव्हा

26. घृष्टं करे कालीमा....
a. पारद b. स्वर्णमाक्षिक c. गंधक d. None

27. 7 वर्ष पश्चात उदर शुल मे बालक मे प्रयोग।
a. निरूह b. अनुवासन c. पटस्वेद d. None

28. स्नेह मात्रा – उत्तरबस्ति में (सुश्रुत)
a. 1 पल b. 2 पल c. 1 1/2 पल d. 1/2 पल

29. अगदतंत्र (चरक)
a. विषगर वैरोधिक प्रशमन b. दंष्ट्राचिकित्सा
c. विषचीकीत्सा d. अगदतंत्र

30. पिप्पल्यादी वटी – योनीव्यापदमे.
a. V b. P c. K d. PK

31. अरत्नी मे अस्थि संख्या...
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

32. पाण्डवामय ।
a. अपतर्पण जन्य b. संतर्पण जन्य c. Both d. None

33. उर्ध्वग रक्तपित्त।
a. साध्य b. याप्यं c. कृच्छ्रसाध्य d. असाध्य

34. बालक वृध्दी के निकष।
a. उंची व वजन वृध्दी b. उंची वृध्दी
c. वजन वृध्दी d. मानसिक वृध्दी

35. हृद्रोग, ज्वर रहता है।
a. ध्वंसक b. विक्षय a. Both a. None

36. सुश्रुत में नुसार वमन प्रयोग – हृद्रोग में ।
a. V b. P c. K d. सभी

37. व्रणवस्तु नहीं है।
a. त्वक b. रक्त c. सिरा d.मांस

38. अश्मरी भेद नहीं है।
a. V b. P c. K d. R

39. असाध्य नेत्ररोग है।
a. अलजी b. अक्षिपाक c. पर्वणी d. अंजननामिका

40. अंजननामिका चिकित्सा है ।
a. छेद्य b. भेद्य c. लेख्य d. वेध्य

41. तुण्डीकेरी चिकित्सा है।
a. छेद्य b. भेद्य c. लेख्य d. वेध्य

42. माधव के नुसार नेत्ररोग संख्या है।
a. 76 b. 78 c. 80 d. 94

43. वाग्भट के नुसार दंतरोग संख्या है।
a. 8 b. 11 c. 6 d. 13

44. रसस्तु हृदय याति समान मरूत प्रेरित:।
a. शांरगधर b. अरूणदत्त c. चरक d. सुश्रुत

45. नस्यार्थ पाक प्रयोग।
a. मृदु b. मध्य c. खर d. दग्ध

46. स्नेहपाक में 4 द्रव्य रहने पर द्रव्य का प्रमाण स्नेह के----- गुणा
a. समप्रमाण b. 4 गुणा c. 8 गुणा d. 16 गुणा

47. त्रिफला का गुणधर्म है ।
a. विषमज्वर नाशिनी b. आमातिसार नाशिनी
c. ज्वर नाशिनी d. None

48. स्नेह मुर्च्छना से नष्ट होता है।
a. आम व गंध b. आमत्व व गुरूत्व
c. गंधत्व व पिच्छिलत्व d. पिच्छिलत्व व गुरूत्व

49. यमदंष्ट्रा काल है।
a. कार्तिक के पहले 8 व मार्गशिष के अंतीम 8 दिन
b. कार्तिक के अंतीम 8 व मार्गशिष के पहले 8 दिन
c. अश्विन के पहले 8 व कार्तिक के अंतीम 8 दिन
d. माघ के पहले 8 व फाल्गुन के अंतीम 8 दिन

50. तप तपस्य। a. वसंत b. शरद c. शिशिर d. वर्षा

51. त्रिविध बस्ति चिकित्सा वेगधारण।
a. पुरीष b. मूत्र c. शुक्र d. क्षुधावेग

52. हठयोग प्रदीपिका मे प्रथम स्थान..... है।
a. यम b. नियम c. आसन d. प्रत्याहार

53. अनाहत चक्र स्थान।
a. कंठ b. हृदय c. नाभी d. गुद

54. स्थौल्य के लिए Measurement नही है।
a. BMI b. Panderal rule c. Brocas rule d. Suvillan's rule

55. सत्याबुध्दी वर्णन।
a. पातंजली b. चरक c. सुश्रुत a. वाग्भट

56. WHO divisions (Regional Offices)
a. 8 b. 6 c. 10 d. 4

57. ---- विषाक्तता से दृष्टी व श्रवण विभ्रम होता है।
a. वत्सनाभ b. धत्तुर c. गुंजा d. None

58. मूत्र ----- में पारद मात्रा पारद विषाक्तता दर्शाता है।
a. 0.5 gm b. 500 mg c. 0.5 kg d. 250 mg

59. ताम्रपत्र (तम्बाखु) है।
a. मस्तिष्क प्रभावक b. हृदय प्रभावक c. नाडी प्रभावक d. सभी

60. दर्वीकर सर्पदंष्ट रक्तमोक्षण चिकित्सा उपक्रम है।
a. 1st b. 2nd c. 3rd d. 4th

61. HCl घातक मात्रा ?
a. 15-20 mg b. 1.5 ml c. 2 ml d. 5 ml

62. मुलग्रहण ----- ऋतु मे करे (चरक)
a. शरद b. वर्षा c. शिशिर, ग्रीष्म d. हेमंत

63. हिंगुल का रासायनिक सुत्र ?
a. $HgCl_2$ b. Hg_2S c. HgS d. Hg_2Cl_2

64. शुक्रवह स्त्रोतसमूल (सुश्रुत)
a. वृषणमेढ्र b. स्तनौवृषणौ c. वृषण d. स्तनमेढ्र

65. मूढसंज्ञता लक्षण।
a. कफक्षय b. पित्तक्षय c. रसक्षय d. वातक्षय

66. अपानावृत्त व्यानवायू चिकित्सा।
a. आश्वासन b. व्यायाम c. संग्रहण d. बृंहण

67. परिप्लुता योनीव्यापद हेतू।
a. वातप्रकोपक आहार b. कफप्रकोपक c. पित्तप्रकोपक d. सभी

68. पूर्वरूप संबंधी।
a. स्थानसंश्रय b. प्रसर पश्चात c. 4th क्रियाकाल d. सभी

69. मदात्ययमे मद्य उपशय है।
a. हेतुविपरित b. व्याधीविपरित
c. हेतुव्याधीविपरित d. हेतुव्याधीविपरितार्थकारी अन्न

70. कारणस्थान एक है।
a. हिक्का कास b. हिक्का श्वास
c. श्वास कास d. कासक्षतक्षीण

71. प्लिहाभी वृध्दया जठरं जाठरात्---- एव च। (चरक नि. 8)
a. गुल्म b. शोथ c. उदर d. ज्वर

72. आतुरबल परीक्षा घटक (चरक) a. 8 b. 10 c. 12 d. 3

73. स्तनकीलक प्रथम चिकित्सा।
a. दिपन b. उपनाह c. वमन d. घृतपान

74. वाग्भट उत्तरस्थान अध्याय संख्या (A.H.)
a. 30 b. 40 c. 50 d. 8

75. शुकपूर्णगलास्यता पूर्वरूप।
a. कास b. स्वरभेद c. श्वास d. हिक्का

76. आमाशयोत्थ विकार चिकित्सा उपक्रम।
a. पाचन b. वमन c. अपतर्पण d. सभी

77. मांसधातु प्रदोषज विकार चिकित्सा।
a. उपवास b. रक्तमोक्षण c. वमन d. None

78. वक्त्र वक्र---
a. दालन b. भंजनक c. श्यावदंत d. हनुमोक्ष

79. हनुसंधीमोक्ष बंध।
a. खटवा b. चीन c. गोफणा d. पंचांगी

80. काश्यप के नुसार स्यंदन व हर्षयुक्त दंत उत्पत्ती।
a. 4 मास b. 5 मास c. 6 मास d. 7 मास

81. ---- चक्रतैल परिषेक।
a. निरूध्द प्रकाश b. गुदपाक c. भगंदर d. गुह्यरोग

82. जात्यादी प्रकृती में समावेश नहीं।
a. कुलानुपातीनी b. कालानुपातीनी c. सत्वरजतमयोग d. सभी

83. RL में K^+ % ?
a. 35 meq/L b. 4 meq/L c. 20 meq/L d. 6 meq/L

84. आंत्रकुजन, अंगुलीस्फुटन आदी परिक्षा--- प्रमाणद्वारा करते है।
a. अनुमान b. प्रत्यक्ष c. युक्ती d. आप्तोप्रदेश

85. गर्भिणी को बस्ति --- अवस्था मे देते है।
a. दक्षिण पार्श्व b. उत्ताण c. वामपार्श्व d. न्युब्ज

86. 15 वीर्य वर्णन।
a. चरक b. नागार्जुन c. निमी d. अरूणदत्त

87. 8 बस्ति दोष वर्णन है।
a. सुश्रुत b. चरक c. वाग्भट d. a+c

88. वातल दोष है।
a. नेत्रदोष b. बस्ति c. बस्तिदाता d. None

89. हिक्का लक्षण है।
a. वमन अतियोग b. विरेचन अयोग
c. विरेचन अतियोग d. निरूह अयोग

90. दुष्ट शुक्र शोणितज व्यांधी।
a. आदीबल प्रवृत्त b. जन्मबल प्रवृत्तज
c. संघातबल प्रवृत्त d. दोषबल प्रवृत्त

91. --- वातमलस्तंभी।
a. मंद b. उष्ण c. स्थिर d. तिक्ष्ण

92. वाग्भट के नुसार पुत्रप्राप्ती के लिये वाद वर्णन।
a. परिणाम वाद b. स्वभाव वाद c. कालवाद d. None

93. अक्षिगत पटल संख्या।
a. 5 b. 4 c. 6 d. None

94. सुश्रुत के नुसार श्रोणी प्रमाण
a. 24 अंगुल b. 18 अंगुल c. 16 अंगुल d. 12 अंगुल

95. दो नयन दृष्टी अंतर।
a. 2 अंगुल b. 4 अंगुल c. 8 अंगुल d. 12 अंगुल

96. लालास्त्राव, हृल्लास, कंठवेदना, कपोलशोथ लक्षण है।
a. कंठशोथ b. अधिजिव्हीका c. ज्वर d. कंठवेदना

97. घ्राणाश्रित देवता।
a. भूमी b. जल c. आकाश d. वायू

98. पक्षाघात चिकित्सा मे अणुतैल प्रयोग।
a. नस्य b. अभ्यंग c. बस्ति d. शिरोधारा

99. वाग्भट के नुसार सुतिका परिचर्या मे उपयोगी तैल।
a. बलातैल b. पंचागुल तैल c. Both d. None

100. अल्पसत्व व्यक्ती को होता है।
a. अपस्मार b. उन्माद c. मदात्यय d. अतत्वाभिनिवेश

101. पंचगव्यघृत रोगाधिकार।
a. उन्माद b. अपस्मार c. कामला d. सभी

102. अपत्यकर घृत वर्णन।
a. वाजीकरण 4th पाद b. वाजीकरण 1st पाद
c. योनीव्यापद चिकित्सा d. None

103. योगराज रोगाधिकार।
a. ज्वर b. पाण्डू c. यक्ष्मा d. अपस्मार

104. अगस्त्य हरितकी।
a. श्वास b. कास c. हिक्का d. क्षतक्षीण

105. दारूण गुण वायू वर्णन।
a. सुश्रुत b. चरक c. वाग्भट d. अरूणदत्त

106. सर्पिवर्ण, मधुररस, लाजागंध (चरक)
a. शुक्र b. ओज c. कफ d. None

107. अस्थितोद लक्षण (वाग्भट)
a. मांसक्षय b. अस्थिक्षय c. मज्जाक्षय d. रसक्षय

108. काश्यप दंतउत्पत्ती अवस्था।
a. 3 b. 4 c. 5 d. 8

109. विक्लेदकृत कर्म है।
a. पुरीष b. रस c. मूत्र d. खमल

110. कला उत्पत्ती (वाग्भट)
a. धातु b. स्त्रोतस c. त्वचा d. None

111. (शारंगधर) स्नैहीक कर्णपूरण काल।
a. पूर्वान्ह b. सुर्योदय के पूर्व c. मध्यान्ह d. सुर्यास्त के बाद

112. शूलघ्न महज्जीर्यती लक्षण।
a. V गुल्म b. P गुल्म c. K गुल्म d. सन्निपातज

113. व्यपेता प्रकार है।
a. श्वास b. हिक्का c. कास d. यक्ष्मा

114. कफरक्तमांससार भाग---
a. जिव्हा b. हृदय c. वृक्क d. यकृत

115. संदिग्ध साध्यवान---
a. पक्ष b. सपक्ष c. विपक्ष d. None

116. निग्रहस्थान--
a. विजयप्राप्ती b. पराजयप्राप्ती c. Both d. None

117. अव्यक्त बुध्दी स्मृती विचेष्ट---
a. प्रथम मद्यावस्था b. द्वितीय मद्यावस्था
c. तृतीय मद्यावस्था d. 2nd to 3rd मद्यावस्था

118. जातीफल गुण।
a. लघु तीक्ष्ण b. गुरू रूक्ष c. शीत गुरू d. तीक्ष्ण रूक्ष

119. सुतीका काल (काश्यप)
a. 1 1/2 मास b. 2 मास c. 4 मास d. 6 मास

120. सोमरोग वर्णन।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. भाप्र.

121. सुश्रुत संहिता प्रतिसंस्कर्ता।
a. नागार्जुन b. निमी c. चन्द्रट d. डल्हण

122. मेधा---
a. ग्रहणेन b. नामग्रहणेन c. both d. None

123. परद्रव्यग्रहण।
a. अस्तेय b. अंहिसा c. स्तेय d. नास्तिक

124. फुप्फुस उत्पत्ती काश्यप के नुसार।
a. हृदय b. यकृत c. शोणित d. प्लीहा

125. अपकर्षयती--
a. स्नेह b. काल c. वायु d. स्वभाव

126. उपत्ती अनुपत्ती--
a. चिन्त्य b. विचार्य c. उह्य d. ध्येय

127. (सुश्रुत) अश्रुमार्ग उत्पत्ती।
a. आकाश b. पृथ्वी c. वायु d. जल

128. बस्ति उपक्रम -- व्याधी में श्रेष्ठ है।
a. वातरक्त b. विसर्प c. ज्वर d. पक्षाघात

129. स्त्री श्रोणी प्रमाण = ------
a. पुरूष उर प्रमाण b. पुरूष कटी
c. पुरूष श्रोणी d. पुरूष उर: प्रमाण

130. कृच्छ्रसाध्य व्रण नही।
a. कुष्ठ b. विष c. मधुमेह d. None

131. क्षीरदोष नही। (हारीत)
a. मृदु b. अल्प c. Both d. None

132. द्रवद्रव्य वर्ग (वाग्भट)
a. 10 b. 13 c. 5 d. 6

133. क्षीरपूर्णलोचन।
a. शुक्रसार b. त्वकसार c. मांससार d. मज्जासार

134. पाकात कालातीली जीवती मर्म।
a. सद्यप्राणहर b. कालांतर प्राणहर c. विशल्यघ्न d. रूजाकर मर्म

135. अष्टोदरीय अध्याय मे व्याधी संख्या-----है।
a. 40 b. 48 c. 50 d. असंख्य

136. शुण्ठी विपाक।
a. अम्ल b. मधुर c. कटु d. लवण

137. कुष्ठ विसर्प व्याधी सुश्रुत के नुसार--- त्वचागत है।
a. 1/8 ब्रीहीभाग b. 1/5th ब्रीहीभाग c. 1 ब्रीही d. 2 ब्रीही

138. पित्तज कुष्ठ में रस उपयुक्त है।
a. मधुर b. अम्ल c. कषाय d. तिक्त

139. अकस्माद अट्टहसनम्।
a. उन्माद b. ज्वर c. अपस्मार d. पीनस

140. अशब्द अस्त्रवणम्।
a. उन्माद पूर्वरूप b. अपस्मार पूर्वरूप
c. उन्माद लक्षण d. उन्माद उपद्रव

141. आन्विक्षिकी विद्या।
a. वैशेषिक b. चार्वाक c. न्याय d. जैन

142. पारावतपदी पर्याय।
a. काकजंघा b. ज्योतिष्मती c. ब्राम्ही d. None

143. दक्षिणावर्त।
a. प्रवाल b. शंख c. पैरोजक d. गोमेद

144. धातू द्रव करके द्रव मे बुझाना इसे कहते है।
a. आवाप b. प्रतिवाप c. ढालन d. निर्वाप

145. षंढत्व निवारण संस्कार।
a. मूर्च्छन b. उत्थापन c. बोधन d. दिपन

146. मकरध्वज भावना द्रव्य।
a. रक्तसर्षप कार्पास b. तुलसी स्वरस
c. वासा स्वरस d. ज्योतिष्मती तैल

147. प्रतापलंकेश्वर उपयोग।
a. सुतिकाज्वर b. योनीव्यापद c. उरूस्तम्भ d. None

148. काश्यप के नुसार वात हलीमक मे --- प्रयोग।
a. दन्ती हरितकी b. कंस हरितकी
c. अगस्त्य हरितकी d. गोमूत्र हरितकी

149. व्यायाम आतप मारूत सेवन।
a. बलवान रोगी मध्य बल रोग b. बलवान रोगी अल्प बलरोग
c. बलवान रोगी बलवान रोग d. both a+b

150. विज्ञाता शाशिता योक्ता गुण।
a. वैद्य/चिकित्सक b. परिचारक c. रूग्ण d. औषध

151. --- मन: ।
a. चतुर्थ b. पंचमे c. षष्ठे d. तृतीय

152. प्रा. आ. केंद्र मे प्रत्येकी --लोक संख्या के लिए 1 ASHA नियुक्त करते है।
a. 100 b. 500 c. 1000 d. 1500

153. रसो--- है।
a. अध्यावसाय b. निपात c. कर्मनिष्ठया d. both a+c

154. रसशास्त्राका प्रधान उद्देश।
a. देहसिध्दी b. लोहसिध्दी
c. देहसिध्दी, लोहसिध्दी d.None

155. त्रैकालीक अभाव।
a. प्राग्भाव b. प्रध्वंसाभाव c. अन्योन्याभाव d. अत्यंन्ताभाव

156. शरीर में कफदोष प्रमाण ----- अंजली।
a. 5 अंजली b. 6 अंजली c. 7 अंजली d. 2 अंजली

157.
158.
159.
160.
161.
162.
163.
164.
165.
166.
167.
168.
169.
170.
171.
172.
173.
174.
175.
176.
177.
178.
179.
180.
181.

157. उदावर्त में मंदाग्नि होने पर चिकित्सा।
a. कोष्ण जलपान b. विरेचन
c. निरूह व अनुवासन बस्ति d. अनुवास बस्ति

158. सद्यप्राणहर---- स्त्रोतसविध्द लक्षण।
a. प्राणवह b. उदकवह c. रक्तवह d. रसवह

159. खिलस्थान वैशिष्ट्य है।
a. चरक b. काश्यप c. सुश्रुत d. भेल

160. नेत्र संधीगत तर्पण मात्रा।
a. 100 b. 300 c. 500 d. 1000

161. दंतरोग (वाग्भट) है। a. 8 b. 11 c. 13 d. 6

162. कर्दमक है। a. कुष्ठ b. तृष्णा c. विसर्प d. वातव्याधी

163. वट। a. वनस्पती b. वानस्पत्य c. गुल्म d. औषध

164. चरक – हृदय उत्पत्ती।
a. कांकायन b. कुमारशिरा c. आत्रेय d. गौतम

165. गर्भिणी (श्लोक) – बालक का पोषण – धमनीद्वारा।
a. रक्तवहा b. रसवाही c. अन्नवाही d. None

166. गर्भिणी को--- अवस्था मे प्रवाहण बताना।
a. प्राप्त आवी b. अप्राप्त आवी c. कभी भी d. None

167. दो अर्बुद की एकसाथ उत्पत्ती।
a. अर्बुद b. द्विरर्बुद c. अध्यर्बुद d. सन्निपातज

168. आमाशयगतवात चिकित्सा उपक्रम।
a. स्नेहपूर्व स्वेद b. रूक्षपूर्व स्वेद c. स्वेदन d. सभी

169. स्वेदावरोध संताप सर्वांगग्रहण ज्वरलक्षण उत्पन्न होता है।
a. क्रमशः b. एकसमय c. युगपत d. None

170. संतत ज्वर प्रकार है।
a. विषमज्वर b. सन्निपातज्वर c. ज्वर d. आंगतुज ज्वर

171. पंचलवण घृतपान।
a. V प्रतिश्याय b. K प्रतिश्याय
c. P प्रतिश्याय d. सन्निपातज प्रतिश्याय

172. मातंगलीला संबंधित है।
a. गवायुर्वेद b. गजायुर्वेद c. अश्वायुर्वेद d. सभी

173. उत्तम वैद्य ज्वर मे देता है।
a. शीतजल b. उष्णजल c. श्रृतशीत जल d. सभी

174. स्वेद दोषाम्बुवाहिनी।
a. व्यानवायु b. प्राणवायु c. समानवायु d. उदानवायु

175. उदर (श्लोक) वाग्भट नि.।
a. दोष संचयात b. मल संचयात c. धातू संचयात d. None

176. अल्पक्षुत्तृष्णा सन्ताप--- प्रकृती।
a. वात b. पित्त c. कफ d. पित्त, कफ

177. दवथु पूर्वरूप है। a. शोथ b. उदर c. रक्तपित्ति d. यक्ष्मा

178. तुण्डीकेरी मे शस्त्रकर्म।
a. छेद्य b. भेदन c. लेखन d. विस्त्रावण

179. ज्वरवेग अधिक।
a. आमावस्था b. पच्यमानावस्था
c. ज्वरमोक्षकाल d. None

180. अंगुल्यं पिडीयते--- व्रणावस्था।
a. आम b. पच्यमान c. पक्वावस्था d. None

181. यस्य धारणे। a. स्थिर b. मंद c. कठिण d. उष्ण

182. जलौकावचारण करते है।
a. वातज व्याधी b. पित्तज व्याधी
c. कफज व्याधी d. सन्निपात व्याधी

183. निकेत पर्याय। a. नाडी b. धमनी c. स्त्रोतस d. उदर

184. मध्यम बल पुरूष मे पिप्पली रसायन स्वरूप।
a. कल्क b. क्वाथ c. स्वरस d. फांट

185. लवंग प्रयोज्यांग।
a. पुष्प b. पुष्पकलिका c. कांड d. मूल

186. सीवन कर्म। a. तुन्नसेवनी b. वेल्लीतक c. गोफणिका d. सभी

187. लेखन कर्म। a. नवगुग्गुल b. पुराणगुग्गुल c. कर्षकगुग्गुल d. सभी

188. तुलसी सर्वप्रथम वर्णन।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None

189. गुदमेढ्र स्थानी छेदनकर्म।
a. तिर्यक b. वृत्ताकार c. अर्धवृत्ताकार d. सभी

190. --- आसिनो लभते सौख्यं।
a. श्वास b. कास c. हिक्का d. क्षतक्षीण

191. विरेचन पश्चात निरूह--- दिन के बाद देते है।
a. 3 b. 15 c. 7 d. 1 मास

192. शुक्तिका है। a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज

193. धवलविटप पर्याय। a. लवंग b. मरिच c. सर्पगंधा d. हत्पत्री

194. व्यंजन। a. पूर्वरूप b. निदान c. सम्प्राप्ती d. रूप

195. अपरिमित्ताश्च पदार्थ।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. नागार्जुन

196. क्षीरदधीन्याय।
a. सर्वात्म परिणाम पक्ष b. अंशाश परिणमन
c. पृथक परिणाम पक्ष d. None

197. मंडुक गती नाडी। a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज

198. मधुर त्रिफला।
a. हरितकी, बिभीतक, आमलकी b. खर्जुर, गंभारी, फालसा
c. गंभारी, फालसा, द्राक्षा d. त्वक, एला, तेजपत्र

199. उपवास।
a. द्रव्यभूत चिकित्सा b. अद्रव्यभूत
c. दैवव्यपाश्रय d. Both b+c

200. उषास्त्राव।
a. घृष्ट व्रण b. छिन्न c. भिन्न d. विद्ध व्रण

201. औपसर्गिक रोग।
a. अभिष्यंद b. नेत्राभिष्यंद c. अलजी d. None

202. स्थगिका बंध--- स्थान।
a. मेढ्राग्र b. हनुसंधि c. पृष्ठ d. उदर, शाखा

203. पथ्यापथ्यविबोधक निघण्टु।
a. राजनिघण्टु b. मदनपाल c. कैयदेव d. शालीग्राम नि.

*****

Jamnagar Jaipur 2009

(स्मृतीपर आधारीत.

1. Cause of polyhydramnios in children
a. Agenesis of Kidney b. Hydatiform mole
c. Tracheo - oesophageal fistula
d. Spina bifida

2. Moros reflex present upto
a. 6 b. 8 c. 12 d. 16 weeks
3. Pulse less than 100 then Apgar score is
a. 0 b. 1 c. 2 d. 10
4. Maxillary sinus opens in
a. Internal meatus b. External meatus
c. Middle meatus d. None
5. Kuffer's cells present in
a. Liver b. Spleen
c. Bone marrow d. All
6. Pharmacopial standardization laboratory
a. Kolkata b. Pune
c. Chennai d. Ghaziabad
7. Ramsted operation for
a. Pyloric stenosis b. Peptic ulcer
c. Duodenal ulcer d. Congenital pyloric stenosis
8. Wrist drop
a. Radial nerve injury b. Ulnar nerve injury
c. Brachial nerver injury d. Femoral nerve injury
9. Vital capacity =
a. IC + ERV b. TV + ERV
c. IRV+ERV+TV d. RV+IRV+TV
10. Sertolli cells present in
a. Ovaries b. Uterus
c. Testes d. Prostate gland
11. DSN - 4 for
a. Classification of disease
b. मानस रोग c. Health policy d. WHO
12. Injury to vertebra in judicial hanging
a. C_1-C_2 b. C_2-C_3 c. C_3-C_4 d. C_4-C_5
13. यवागू A/c चरक
a. 28 b. 32 c. 23 d. 26
14. स्नेहबस्तिव्यापद A/c to चरक
a. 6 b. 10 c. 12 d. 8
15. नेत्रपटल A/c सुश्रुत
a. 2 b. 6 c. 4 d. 5
16. Krypts of luberkhein
a. Small intestine b. Large intestine
c. Pancreas d. Liver
17. वीर्य नास्ति विना रसात – Ref.
a. सुश्रुत b. चरक c. वाग्भट d. शारंगधर
18. अनुवासन निषेध है।
a. उदर b. प्रमेह c. कुष्ठ d. स्थूल
19. ज्वर मे कषाय निषेध है।
a. कषाय – कषाय b. तिक्त – कषाय
c. मधुर – कषाय d. अम्ल – कषाय
20. कषाय, निर्यूह पर्याय है।
a. स्वरस b. हिम c. फाण्ट d. केवल क्वाथ
21. वाग्भट स्तन्यप्रमाण
a. 1 अंजली b. 2 अंजली c. 3 अंजली d. 4 अंजली
22. वाग्भट के नुसार प्रथम नेत्रकल्प है।
a. अंजन b. आश्चोतन c. तर्पण d. पुटपाक
23. लगण है।
a. शुक्लगत b. कृष्णगत
c. दृष्टीगत व्याधी d. नेत्रवर्त्मगत व्याधी
24. हंसोदक Not in
a. शिशिर b. हेमन्त c. वर्षा d. All
25. मध्ये मध्यबलं श्रेष्ठ मग्रे – अग्रे =
a. शिशिर b. हेमन्त c. वर्षा d. शरद
26. भवत्यरमावृतं हृदय व्यथा
a. V हृद्रोग b. P हृद्रोग c. K हृद्रोग d. कृमिज
27. चरक के नुसार कण्डु लक्षण है।
a. प्राक्चरणा योनिव्यापद b. अचरणा योनिव्यापद
c. अतिचरणा योनिव्यापद d. उपप्लुता
28. उत्पिष्ट है।
a. भग्न प्रकार b. संधीमुक्त c. both d. None
29. दीप्त है।
a. नासागत रोग b. मुखगत रोग c. नेत्र रोग d. कर्ण रोग
30. कषायमधुर रूक्ष पाण्डु यो मेहेत ।
a. पाण्डु b. कामला c. मधुमेह d. None
31. वातबलासक खुड्डु पर्याय A/c चरक
a. वातशोणित b. रक्तपित्त c. वातव्याधी d. उरूस्तंभ
32. च्छर्दन प्रशस्त है।
a. स्वरभंग b. प्रमेह c. मूत्राघात d. पाण्डू
33. व्याहत है। a. ताच्छिल्य b. कल्पना c. व्याख्या d. None
34. यस्योष्मणा द्रवो धार्तोर्धातो प्रसिच्यते ।
a. वातरक्त सम्प्राप्ती b. रक्तपित्त सम्प्राप्ती
c. अम्लपित्त सम्प्राप्ती d. श्लीपद सम्प्राप्ती
35. शुक्रव्यापद मे सिरावेध
a. जंघा सिरा b. मेढ्रमध्यसिरा c. श्रोणी प्रदेश d. None.
36. यमदंष्ट्राकाल है।
a. कार्तिक last 8 days + मार्गशीर्ष first 8 days
b. अश्विन last 8 days + कार्तिक first 8 days
c. मार्गशीर्ष last 8 days + पौष first 8 days
d. भाद्रपद last 8 days + अश्विन first 8 days
37. स्तन्यदोष चरक है ।
a. 3 b. 5 c. 8 d. 10
38. वैद्यपरिपृच्छ्र विषय है।
a. 4 b. 5 c. 8 d. 10
39. गतरसत्व लक्षण है ।
a. आसव b. स्नेहसिध्दी c. क्वाथसिध्दी d. All
40. बस्तगंधत्व है।
a. अश्मरी पूर्वरूप b. अर्श पूर्वरूप
c. प्रमेह पूर्वरूप d. रक्तपित्त पूर्वरूप
41. श्वित्र मे चिकित्सा है।
a. स्त्रंसन b. अनुलोमन c. विरेचन d. All

42. व्याधितास्य गति
a. वात b. पित्त c. कफ d. None
43. सर्वांग नेत्रगौरव है।
a. मज्जावृध्दी b. मज्जाक्षय c. मेदोवृध्दी d. अस्थिवृध्दी
44. शारंगधरानुसार क्वाथ से स्नेहपाक बनाते हुए कल्क स्नेह के कितने प्रमाण मे लिया जाए?
a. $^1/_4$ b. $^1/_6$ c. $^1/_8$ d. $^1/_{16}$
45. Doesn't contain हिंगुल
a. हिंगुलेश्वर b. आनंदभैरव c. त्रिभुवनकिर्ती d. सुतशेखर
46. ताम्रभस्म गुण है।
a. शोधन b. बृंहण c. शमन d. All
47. निश्चलकर ने किस ग्रंथ पर टिका लिखी ?
a. चक्रपाणी b. चक्रदत्त c. शांरगधर d. भेल
48. कदर है।
a. स्नेहदग्ध b. शलाकादग्ध c. गुडदग्ध d. All
49. अधिमांस है।
a. छेदन b. भेदन c. लेखन d. विस्त्रावण
50. शरारीमुख यंत्र का उपयोग है।
a. छेदन b. भेदन c. लेखन d. विस्त्रावण
51. निश्चयात्मिका है।
a. धी b. धृति c. स्मृति d. None
52. चरक के नुसार गर्भ स्थिरता
a. 3rd month b. 4th month c. 5th month d. 7th month
53. चरक ऋष्यजिव्ह कुष्ठ है।
a. VP दोषप्रधान b. VK c. KP d. VPK
54. सर्वकाल देय बस्ति – चरक
a. यापन बस्ति b. मात्रा बस्ति c. क्षीरबस्ति d. योगबस्ति
55. मर्श नस्य प्रधान मात्रा है ।
a. 6 b. 8 c. 10 d. 12 बिंदू
56. मृगमांसानां अपत्यतमत्वम्
a. महिषमांस b. अजामांस c. गोमांस d. अविमांस
57. उग्रगंधा-पर्याय है ।
a. उशीर b. वचा c. रसोन d. आर्द्रक
58. अपांग मर्म प्रकार है ।
a. वैकल्यकर b. सद्यःप्राणहर c. विशल्यघ्न d. रुजाकर
59. स्थावर विष अधिष्ठान सुश्रुतानुसार
a. 8 b. 10 c. 12 d. 16
60. विष्कंभ Related with
a. गर्भव्यापद b. गर्भोपद्रव c. मृतगर्भ d. None
61. निस्तृतहस्तपादशिरा कायसंगी
a. बीजक b. प्रतिखुर c. परिघ d. कील
62. दृष्टिविभ्रम, बाधीर्य
a. धत्तुर b. वत्सनाभ c. फेनाश्म d. पारद
63. विष की क्रिया नही होती है।
a. मार्जार b. नकुल c. both d. None
64. श्लोक, आश्रयस्थान अनुक्रम से
a. सूत्र व विमानस्थान b. सूत्र व निदानस्थान
c. सूत्र व इंद्रियास्थान d. सूत्र व शारीरस्थान
65. पंचकर्म वर्ज्य व्याधी है।
a. वातरक्त b. प्रमेह c. उरूस्तंभ d. विसर्प
66. सुश्रुतानुसार दूषित जल दोष है।
a. 04 b. 05 c. 06 d. 08
67. Detamine is content of
a. कर्कटश्रृंगी b. पलाश c. पृश्निपर्णी d. सप्तपर्णा
68. स्फोट यह लक्षण कौन से दग्ध मे होता है?
a. सम्यकदग्ध b. प्लुष्ट c. दुर्दग्ध d. अतिदग्ध
69. रोचनिका पर्याय है।
a. कम्पिल्लक b. सारिवा c. चित्रक d. दर्भ
70. Shorea Robusta is the latin Name of
a. वट b. सारिवा c. माष d. शाल
71. मुस्तादि यापन बस्ति A/c to वाग्भट in
a. असृग्दर b. अचरणा c. अतिचरणा d. प्राक्चरणा
72. जलाबाष्पे निधापयेन
a. रसकर्पूर – कूपीपक्व b. हेमगर्भ – पोट्टली
c. विजय पर्पटी d. All
73. Daily requirement of energy in 6th month chidren
a. 100-110 kcal/ kg b. 150 kcal/ kg
c. 120 kcal/ kg d. 200 kcal/ kg

****

Jamnagar - Jaipur 2010
(स्मृती पर आधारीत)

01. चव्यादी घृत रोगाधिकार?
a. गुदभ्रंश b. योनीभ्रंश c. गुदपाक d. परीकर्तिका
02. कफज लेखन साध्य रोग?
a. पोथकी b. उपनाह c. लगण d. All
03. भा. प्र. धान्य प्रकार? a. 26 b. 6 c. 19 d. 24
04. रास्ना घृत रोगाधिकार?
a. हिक्का b. श्वास c. कास d. ज्वर
05. शुक्तिका है.....
a. वातज रोग b. पित्तज रोग c. कफज रोग d. All
06. उदकपात्रे निक्षिपेत एकीभवति .... संबंधित है?
a. शुध्द शुक्र b. शुध्द स्तन्य c. पर ओज d. शुद्ध जल
07. मरीच्यादी तैल निर्माण मे सहाय्यक? (शारंगधर मत)
a. कांजी b. दधिमस्तु c. गोमय रस d. मरीच क्वाथ
08. निर्गुण्डी तैल प्रयोग (यो.र.)
a. आमवात b. वातरक्त c. गण्डमाला d. अर्दित
09. श्रीमद दर्शन लोचन – संबंधित है।
a. क्षतज कास b. क्षयज कास
c. रक्तसार पुरुष d. रससार पुरुष
10. खुलक संधी
a. जानुसंधि b. कुर्परसंधि c. गुल्फ संधि d. मणिबंध संधि
11. कालांतर प्राणहर मर्म है।
a. सौम्य b. आग्नेय c. a + b d. वायव्य
12. श्रेष्ठ शाक है।
a. सर्षप b. जीवन्ती c. Both d. None.

13. रौद्र यंत्र है।
a. वालुका यंत्र b. तुला यंत्र
c. विद्याधर यंत्र d. डमरु यंत्र
14. अभ्रक अमृतीकरण से होता है।
a. गुणवृद्धी b. वर्णहानि c. a + b d. None
15. पय: प्रयोग वर्णित है ।
a. च.चि. 3 b. च.नि. 1 c. च.शा. 2 d. च.चि. 15
16. छर्दी में मुख से पुरीष प्रवृत्ती से उत्पन्न रौक्ष्यं एवं दौर्बल्य में चिकित्सा.
a. अनुवासन b. विरेचन c. निरुह d. चिकित्सा त्याग
17. स्नेहनं कवल कोष्ण
a. वातज मुखपाक b. दन्तहर्ष c. दंतचाल d. कृमीदंत
18. छर्दी में प्रवाहन
a. हेतु विपरीतार्थकारी b. व्याधी विपरीतार्थकारी
c. Both d. हेतुव्याधीविपरींत
19. सप्त धातु शोषण होता हे ..... रस से।
a. तिक्त रस b. कषाय रस c. कटु रस d. a + b
20. चरक मत से भल्लातक योग
a. 8 b. 10 c. 12 d. 20
21. दातौन निषिध्द है। Except
a. मुखश्लेष्मा b. कास c. शिरोरोग d. अजीर्ण
22. पाण्डु दुष्य?
a. रस b. रक्त c. Both d. रस, रक्त, मेद
23. सुमेलित करे है।
a. आसिक्त क्षिरीय i. प्रमेह चिकित्सा
b. पुमानजात बलादिक ii. रसायन अध्याय
c. प्राणकामीय iii. पाण्डू चिकित्सा
d. अभयामलकीय iv. वाजीकरण अध्याय
a. i, ii, iii, iv b. ii, iii, iv, i
c. iv, iv, ii, ii d. iii, iii, ii, iv.
24. Saponin is
a. Alkaloid b. Resin c. Toxin d. None.
25. मुखरोगो में शस्त्रकर्म है।
a. छेदन b. भेदन c. लेखन d. रक्तमोक्षण
26. शुक्रशोणित दुष्टी से उत्पन्न व्याधी
a. जन्मबलप्रवृत्त b. आदीबलप्रवृत्त
c. कालबलप्रवृत्त d. स्वभावबलप्रवृत्त
27. तुण्डीकेरी मे शस्त्रकर्म?
a. भेदन b. छेदन c. लेखन d. रक्तमोक्षण
28. चिकित्सा करते समय चिकित्सक व्दारा रोगी की मृत्यू होने पर है।
a. IPC 309 b. IPC 39 c. IPC 44 d. IPC 420
29. निम्न को सुमेलित करो ।
a. सहज व्याधी i. कालज - अकालज
b. जाताजात ii. मातृज पितृज
c. स्वभावज व्याधी iii. संतर्पण अपतर्पण
a. i, ii, iii b. iii, ii, i c. ii, iii, i d. iii, i, ii
30. In case of measles which one is not true
a. Fever के बाद Rash आना b. Koplick's spot
c. Rash के बाद fever आना d. None.
31. रक्त रक्तेन पित्तकषाय स्वादु तिक्तक:
a. बस्ति b. विरेचन c. वमन d. All
32. नखानां केशवृद्धी ..... व्याधी का पूर्वरुप है।
a. यक्ष्मा b. प्रमेह c. कुष्ठ d. a + b
33. उदावर्ता योनी कि चिकित्सा?
a. क्षार b. अग्नि c. Both d. None.
34. विषोपक्रम चरक के नुसार है।
a. 36 b. 60 c. 24 d. 10
35. Iron poisoining causes damage to which organ
a. Kidney b. Liver c. Heart d. Spleen
36. Test useful in Recurrence of Calculi
a. Sr. Calcium b. Sr. Cystine
c. Sr. Phosphate d. Urine volume
37. स्नायुगत वात चिकित्सा (सु.) =
a. स्नेहन b. उपनाह c. अग्निकर्म d. All
38. हृद पार्श्वशूलं संमुढे छर्दी अंगस्य रुकज्वर तृष्णा किसव्याधी का मृत्यु सूचक लक्षण है।
a. अतिसार b. अर्श c. पाण्डू d. राजयक्ष्मा
39. अंसपीठ - गुदभाग मे संधी
a. उलुखल b. सामुद्ग c. तुन्नसेवनी d. None.
40. भक्तनिमित्तज तृष्णा प्रकार किस आचार्य ने कहा.
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. a + b
41. अर्श में दूष्य है।
a. त्वक, रक्त b. त्वक, मांस
c. त्वक, मेद d. त्वक, मांस, मेद
42. One unit of blood transfusion increases Hb by
a. 0.5 gm% b. 1 gm% c. 2 gm% d. 2.5 gm%
43. व्याधी का एक सिर्फ प्रकार वर्णित है।
a. मदात्यय b. सन्यास c. मूर्च्छा d. None
44. भोजन पश्चात निद्रा लेने से
a. V प्रकोप b. P प्रकोप c. K प्रकोप d. All
45. Which lesion is not seen in Leprosy?
a. Macule b. Papule c. Nodule d. Vesicle
46. क्षीणशुक्र मे दोषदुष्टी a. वात b. पित्त c. वातकफ d. a + b
47. उत्तरोत्तर गुरुता क्रम
a. पुष्प-फल-पत्र-नाल-कन्द
b. पुष्प-पत्र-फल-नाल-कन्द
c. पत्र-पुष्प-फल-नाल-कंद
d. कंद-नाल-फल-पुष्प-पत्र
48. Arrange the Malaria stages as they appear
i. Exoerythrocytic ii. Gametocytic
iii. Erythrocytic iv. Sporogonic
a. i, ii, iv, iii b. ii, iv, i, iii c. iv, iii, ii, i d. None
49. Hair on end appearance on X-ray skull seen in
a. Sickle cell anaemia b. Neck
c. Thalesemia d. Spinal cord compression.
50. मा.नि. नुसार गुल्म स्थान है।
a. 5 b. 6 c. 7 d. 8

51. सुमेलि
a. म
b. य
c. गं
a. i,
52. स्कंध
a. गो
c. को
53. सुश्रुत
a. अ
c. उत्
54. त्रिमर्मी
a. शि
55. आस्था
a. 1 -
56. मस्तिष्क
a. 1 -
57. शोष नि
a. ज्व

01. Which
Vach
a. Ph
02. Which
Vicch
a. Nis
c. Nih
03. What
a. Vric
04. Which
a. Baa
c. Baa
05. What t
a. Tatp
c. Dvai
06. Quadri
which
a. Mec
07. What ty
a. Man
08. Accordi
followi
a. Mah
c. Dash
09. What is
a. Hypo
c. Vagu

51. सुमेलित करे है।

a. महाहिक्का i. प्राणोपरोधिनी

b. यमला हिक्का ii. प्राणांतिकी

c. गंभीरा हिक्का iii. सद्यप्राणहर

a. i, ii, iii b. iii, ii, i c. iii, i, ii d. ii, i, iii

52. स्कंध भग्न में बंध

a. गोफणा बंध b. स्वस्तिक बंध

c. कोश बंध d. दाम बंध

53. सुश्रुत उत्तर तंत्र श्रेष्ठ है क्योकी.

a. अनेक विषय संग्रह b. श्रेष्ठ है इसलिए

c. उत्तर मे वर्णन होने से d. All

54. त्रिमर्मीय में संबंधित मर्म है।

a. शिर b. हृदय c. बस्ति d. All

55. आस्थापन बस्ति संख्या in वातदोष

a. 1 - 3 b. 5 - 7 c. 9 - 11 d. None

56. मस्तिष्क प्रमाण है।

a. 1 अंजली b. $^1/_2$ अंजली c. $1^1/_2$ अंजली d. 2 अंजली

57. शोष निदानार्थकर रोग है।

a. ज्वर b. रक्तपित्त c. राजयक्ष्मा d. All

Shimla 2010

01. Which one of the followings is Shashthi Bahu Vachana Vibhakti of Phala?

a. Phalani b. Phalebhya c. Phalaanamd. Phaleshu.

02. Which one of the followings is correct Sandhi Viccheda of Nissaarah?

a. Nis + Saarah b. Nir + Saarah

c. Nih + Saarah d. Nira + Saarah

03. What type of Sandhi is there in Ishtah?

a. Vriddhi b. Hal c. Guna d. Yan

04. Which one of the following is correct sentence?

a. Baalakah Hasati b. Baalakah Hasatah

c. Baalakah Hasanti d. Baalakah Pathaami

05. What type of Samaasa is in Rogamuktah

a. Tatpurusha b. Dvigu

c. Dvandva d. Karmadharaya

06. Quadriceps muscle is mainly situated in which side of thigh?

a. Medial b. Lateral c. Dorsal d. Ventral.

07. What type of Shringataka Marma is?

a. Mamsa b. Sira c. Sandhi d. Snayu

08. According to Charaka, which one of the following is Mula of Prana – Vaha Srotas?

a. Mahasrotas b. Phuphphusa

c. Dasha Dhamani d. Kantha.

09. What is the name of tenth cranial nerve?

a. Hypoglossal b. Glossopharyngial

c. Vagus d. Abducent.

10. What type of Sandhi is in Prishtha Vansha?

a. Kora b. Ukhala c. Samudga d. Pratara.

11. Sharangdhara has mentioned 'Dheemaan' as a symptom of which Prakriti?

a. Vata b. Pitta c. Kapha d. Sama

12. According to Charaka, which type of Vata is situated in Svedavaha Srotas?

a. Prana b. Udana c. Vyana d. Samana

13. Which one of the following plays an important role in digestion of fat?

a. Bile salt b. Amylase

c. Trypsinogen d. Rennin.

14. According to Charaka, Vamana is produced by which type of Vata?

a. Prana b. Udana c. Samana d. Vyana.

15. How many Saara are described by Charaka?

a. 5 b. 7 c. 8 d. 12.

16. Which one of the following condition is necessary for Anumana Pramana?

a. Apatopadesha b. Pratyaksha Purvam

c. Anumana Shakti d. Anumama Gamya.

17. Which one of the following is NOT included in Ashta Prakriti by Sushruta?

a. Mahat b. Ahamkara

c. Tanmatra d. Mahabhuta.

18. Which of the following statement is false?

a. Padartha is not included in Tantrayukti

b. Padartha is included in Tantrayukti

c. Padartha are six in number

d. Samavaya is one of Padartha.

19. Apratighaata is a specific Linga of Which of the following?

a. Mana b. Atma c. Indriya d. Akasha.

20. How many Guna have been described by Nyaya?

a. 20 b. 24 c. 25 d. 41.

21. How many types of Upakrama have been mentioned by Ashtanga Sangraha?

a. Dvi b. Pancha c. Shad d. Sapta.

22. How many types of Shamana are mentioned by Ashtanga Sangraha?

a. Dvi b. Pancha c. Shad d. Sapta.

23. In which chapter of Ashtanga Sangraha, Murdha Tailam has been described?

a. Snehavidhi b. Svedavidhi

c. Gandushadividhi d. Shiroroga Chikitsam.

24. How many types of Ushma Sveda have been mentioned by Ashtanga Sangraha?

a. 2b. 5 c. 8 d. 10

25. The last chapter of Sutra Sthana of Ashtanga Sangraha deals with Karma?
a. Shashta b. Agni
c. Kshara d. Raktamokshana.

26. Hemadri has written commentary on which of the following Text?
a. Sushruta samhita b. Charaka samhita
c. Ashtanga Hridaya d. Ashtanga Sangraha.

27. In which of the following treatise Ahiphena has been described first time?
a. Sharngadhara Samhita b. Chakradatta
c. Vangasena d. Gadanigraha.

28. What is the name of the act by which CCIM was established?
a. Central Council of Medicine Act
b. Indian Medicine Central Council Act
c. Council of Indian Medicine Act
d. CCIM Act.

29. Who has written Jalpakalpataru Teeka on Charaka Samhita?
a. Gangadhar Ray b. Gana Natha Sen
c. Gadadham d. Ishvarasen.

30. How many unavailable chapters of Charaka Samhita were completed by Dridbala?
a. 12 b. 24 c. 30 d. 41.

31. Who has mentioned the concept of Vichitra Prtyarabdha?
a. Charaka b. Sushruta
c. Ashtanga Hridaya d. Chakrapani.

32. According to Sharngadhara, which one of the following drug has Pramathi action?
a. Madhu b. Maricha c. Madya d. Kodrava.

33. What is the Latin/English name of Indrayava?
a. Hollarrhena antidysenterica b. Indian squill
c. Holy barley d. Indian barley.

34. Which of the following drug has no specific action of Chakshushya?
a. Amalaki b. Haritaki
c. Jivanti d. Mandukaparni.

35. Which one of the following has Madhura Vipaka and Ushna Virya?
a. Shatavari b. Shunthi
c. Maricha d. Jyotishmati.

36. Which one of the followings is not included Madhura – Trayam?
a. Ghee b. Dugdha c. Guda d. Madhu.

37. Lauha – Kitta is used in which type of Musha?
a. Vajra Musha b. Yoga Musha
c. Malla Musha d. Maha Musha.

38. What is the name of a Puta given in a pit of one Aratni of length, breadth and depth?
a. Kukkuta Puta b. Kapota Puta
c. Varaha Puta d. Gaja Puta.

39. Dola Yantra is used for Shodhana of which of the following?
a. Shankha b. Godanti c. Khatika d. Shringa.

40. In Sneha Paka, how much Sneha is taken in proportion to Kalka?
a. 2 times b. 4 times c. 8 times d. 16 times.

41. Who has written definition of Svastha as 'Sama-Doshah Sama-Agnishcha....'?
a. Charaka b. Sushruta c. Vagbhata d. Chakradatta.

42. Which one of the following NOT a symptom of Ardha Vyayama Shakti?
a. Mukhashosha b. Sweat on forehead
c. Increase in Hrid-Spandana
d. Sweat in arm pit.

43. Eating of Hita and Ahita together is known as?
a. Samashana b. Adhyashana
c. Vishamashana d. Viruddhashana.

44. Sanchaya of Vata occurs in which season?
a. Grishma b. Varsha c. Sharad d. Shishira.

45. Which one of the following statement is false?
a. Dadhi should not be taken in night
b. Dadhi should not be taken hot
c. Dadhi should not be taken in Shotha
d. Takra should not be taken in Shotha.

46. Sushruta advises which of the following for the treatment of Pakvashaya Gata Visha?
a. Vamana b. Virechana
c. Anuvasana Basti d. Asthapana Basti.

47. How many Kshira Visha have been mentioned by Sushruta ?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5.

48. Sushruta considers Mandali as most poisonous in which of the following Avastha?
a. Bala b. Taruna c. Vriddha d. Madhya.

49. Which one of the following type of micro-organism causes Rabies?
a. Virus b. Bacteria c. Fungi d. Spirochete.

50. According to Sushruta, which Galagolika is Pranahari?
a. Shveta b. Krishna
c. Raktaraji d. Sarshapika.

51. A patient of Apasmara gets attack of epilepsy after an episode of anxiety. Here anxiety is which type of Hetu?
a. Utpadaka Hetu b. Pradhanika Hetu
c. Vyanjaka Hetu d. Viprakrishta Hetu.

52. In Vatika Unmada, increase in the symptoms occurs in the evening. It indicated which of the following Samprapti?
a. Bala Samprapti b. Kala Samprapti
c. Vidhi Samprapti d.Sankhya Samprapti.

53. Sthana-Sansthana - Ruja Vikalpam is the symptom of which disease?
a. Vatika Grahani b. Vatika Jvara
c. Vatika pandu d. Vatika Gulma.

54. According to Charaka how many types of Kamala are there?
a. 2b. 3 c. 4 d. 5.

55. Udarda is a Nanatmaja Roga of which of the following?
a. Vata b. Pitta c. Kapha d. Rakta.

56. What is the name of first Chatushka of Sutra Sthana of Charaka Samhita?
a. Nirdesha b. Roga c. Bheshaja d. Yojana.

57. Which chapter of Sutra Sthana of Charaka Samhita describes Dina-Cahrya?
a. Matrashitiya b. Tashyashitiya
c. Vegandhaarniya d. Indryopkramaniya.

58. Charaka mentions 'Chatushprakara Samshuddhi' in which of the following context?
a. Panchakarma b. Shodhana
c. Langhana d. Dvi-Vidha Upakram.

59. Which one of the following is NOT included in Niragni Sveda by Charaka?
a. Aahava b. Atapa c. Maruta d. Kshudha.

60. How many Yogas of Madanaphala for Vamana Karma are described by Charaka?
a. 39 b. 60 c. 100 d. 133.

Part – II
(Clinical)

61. Which of following is mentioned as Paryaya of Bheshaja by Charaka?
a. Upashaya b. Sadhana
c. Dravya d. Upakrama.

62. Which of following is a type of Urjashkara as per Charaka?
a. Medhya b. Balya c. Jivaniya d. Vrishya.

63. Prakriti Vighata Chikitsa is more nearer to which of the following?
a. Shodhana b. Shamana
c. Nidana Parivarjana d. Pathya.

64. How many types of Sannipata Jvara are mentioned by Charaka?
a. 5 b. 7 c. 10 d. 13.

65. Which of the following type of Jvara causes Prakopa of all the three Dosha?
a. Kamaja b. Krodhaja
c. Bhutabhishanga d. Bhayaja.

66. Which of the following is generally contraindicated in Gulma?
a. Vamana b. Virechana c. Basti d. Snehan.

67. Which of the following type of Rakta Pitta is relatively sadhya?
a. Urdhavag b. Adhoga
c. Tiryag d. Ubhayaja.

68. Which of the following is NOT a Dushya of Prameha?
a. Oja b. Kleda c. Asthi d. Lasika.

69. Which of the following disease according to Ayurveda is not Sahaja?
a. Prameha b. Kushtha
c. Arsha d. Tamaka Shvasa.

70. According to Charaka in which of the following disease Purvarupa are important for differential diagnosis?
a. Prameha b. Raktapitta
c. Rajayakshma d. Grahani.

71. Charaka has NOT specifically mentioned use of Takra in which diseases?
a. Udara Roga b. Trishna c. Grahani d. Arsha.

72. Lashuna Kshirapaka is specifically indicated in which disease by Charaka?
a. Gulma b. Apasmara
c. Unmada d. Pakshavadha.

73. Milk of camel is specifically indicated in which disease?
a. Arsha b. Udara Roga
c. Grahani Roga d. Rajayakshma.

74. Which of the following is a type of Hikka?
a. Annaja b. Dveshaja
c. Upasargaja d. Vitpeta.

75. Charaka specifically indicated Murdhni Taila in which disease?
a. Pakshavadha b. Unmada
c. Apasmara d. Ardita.

76. How many types of Gridhrasi have been mentioned by Charaka?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5.

77. Matsya-Shakalopama is the symoptom of which of the following?
a. Kitibha b. Charmakushtha
c. Ekakushtha d. Kakanaka.

78. How many types of Shvitra are mentioned by Charaka?
a. 2 b. 3 c. 7 d. 11.

79. Which one of the following is a specific cause of Shosha Roga?
a. Alpashana b. Adhyashana
c. Anashana d. Vishamashana.

80. Charaka has described Kansaharitaki specifically for which diseases?
a. Kshata-Kshina b. Shotha
c. Rajayakshma d. Arsha.

81. 'Ahatam-Adhmata-Driti-Shabda Vad' is a Lakshana of which disease?
a. Vatika Gulam b. Jatodara
c. Vatodara d. Jalodara.

82. Kakodumbara is very useful in the treatment of which of the following?
a. Prameha b. Shvitra
c. Grahani Roga d. Atisara.

83. Rohitaka Ghrita is specificially mentioned for which disease?
a. Plihodara b. Raktapitta c.Shvasa Roga d. Trishna

84. Basti is generally very useful for which disease?
a. Shotha b. Tamaka Shvasa
c. Nava Jvara d. Gulma.

85. What is the choice of treatment for Krisha patient?
a. Laghu Santarpana b. Guru Santarpana
c. Laghu Apatarpana d. Guru Apatarpana.

86. What is done to bring back Dosha from Shakha to Koshtha?
a. Shodhana b. Kshapana c. Vridhya d. Shamana.

87. What Sthana of Sushruta Samhita describes Rasayana?
a. Sutra b. Chikitsa c. Kalpa d. Uttara Tantra.

88. What Sthana of Ashtanga Hridaya describe Vajikarana?
a. Sutra b. Chikitsa c. Kalpa d. Uttara.

89. According to Sushruta, what is Sarvatha Hitam in the treatment of Grahani?
a. Grahi b. Stambhana c. Dipana d. Anulomana.

90. A patient of Kasa spits with blood; which drug you prefer?
a. Vasa b. Shati
c. Kantakari d. Kakdashringi.

91. Kara-Padyo Daha is Purvarupa of which of the following?
a. Kshayaja Kasa b. Rjayakshma
c. Prameha d. Raktapitta.

92. What is a major intracellular cation?
a. Sodium b. Potassium
c. Phosphate d. Magnesium.

93. Which of the following is not a cause of diabetic coma?
a. Hypoglycemia b. Hyperglycemia
c. Acidosis d. Keto-acidosis.

94. Which of the following is found very effective for relieving anxiety, insomnia etc?
a. Abhyanga b. Shrio-Abhyanga
c. Shirodhara d. Pada-Abhyanga.

95. Vagbhata mentions Pliha-Vriddhi in Kshaya of which of the following?
a. Meda b. Mamsa c. Rakta d. Rasa.

96. Charaka has NOT mentioned Vibharamsha of which of the following in Unmada?
a. Bhakti b. Shila c. Achara d. Vihara.

97. Ati-Atma-Bala, Prakrama, Grahana, Dharana, Smriti etc. occur in which disease?
a. Attatvabhinivesha b. Vatika Unmada
c. Agntuja Unmada d. Vatika Apasmara.

98. Which of the following disease has not its Agantuja type?
a. Jvara b. Shotha c. Unmada d. Apasnara.

99. Which one is not included in Dushya of Kushtha by Charaka?
a. Rasa b. Rakta c. Mamsa d. Lasika.

100. Which of the following drug causes Shukra Rechana?
a. Kapikachchhu Bija b. Nagbala Mula
c. Brihati Phala d. Masha.

101. Which of the following drug may be used in premature ejaculation?
a. Bhallatak Phala Majja b. Jatiphala
c. Shatavari d. Ashvagandha.

102. Which of the following drug is both Rasayana and Vajikarana?
a. Kapikachchhu b. Brihati Phala
c. Bhanga d. Ashvagandha.

103. Charaka has mentioned the use of Ati-Katu, Tikshna, Ushna etc for the treatment of which of the following?
a. Kumbha Kamala b.Koshthashrita Kamala
c. Shakhashrita Kamala d. Halimaka.

104. Smriti Vibhramsha does Not occur in which of the following condition?
a. Attatvabhinivesha b. Madatyaya
c. Prjnapradha d. Unmada.

105. Charaka has given name as Antya to which stage of Mada ?
a. 1st b. 2nd c. 3rd d. 4th.

106. Kapha-Kshayartha Vyayama is indicated in the treatment of which of following?
a. Pakshavadha b. Urustambha
c. Kaphaja Shotha d. Jalodara.

107. Bo
tre
a.
108. Wh
a.
c.
109. Wh
a.
c.
110. 'Sv
Vi
a.
b.
d.
111. Wh
a.
112. Wh
Sa
a.
113. Hov
on
a.
114. Acc
Ma
a.
115. In c
the
a.
c.
116. Ruk
Ch
of
a.
117. Whi
acti
a.
c.
118. For
con
a.
c.
119. How
Kal
a. 3
120. Amo
one
a. S
c. S

107. Bodhi-Vriksha Kashaya is indicated for the treatment of which of the following?
a. Vatarakta b. Unmada c. Apasmara d. Gridhrisi.

108. What is the treatment of Udana Vikriti?
a. Adho Yojanam b. Anulomana
c. Urdhva Yojanam d. Tridha Yojanam.

109. What do you mean by 'Nirupastambham'?
a. Shuddha Vata b. Avrita Vata
c. Sama Vata d. Sansargaja Vata.

110. 'Svedanam Sneha Samyuktam.... Virechanam' is a treatment of?
a. Shuddha Vata Gridhrashi
b. Vyanavritta Prana c. Kaphavritta Vata
d. Pakshaghata.

111. What is Anupana for Vasaa according to Charaka?
a. Peya b. Yusha c. Ushna Jala d. Manda.

112. Which one of the following does Sansakarasya Anuvartanam?
a. Ghrita b. Taila c. Vasa d. Majja.

113. How many grams are in one Prasritaki, if one Tola is taken equal to 10 gram?
a. 50 b. 60 c. 80 d. 100.

114. According to Sushruta what is the dose of Matra Basti for an 18 years old person?
a. 24 Tola b. 12 Tola c. 6 Tola d. 3 Tola.

115. In case of Amashaya Gata Vata, which of the following Sveda is indicated?
a. Ruksha b. Ruksha Purva Snighdha
c. Snigdha d. Snigdha Purva Ruksha.

116. Ruksha Sankara Sveda described by Charaka is included in which of the following type of Sveda mentioned by Sushruta?
a. Tapa b. Ushma c. Drava d. Upanaha.

117. Which Mahabhuta are responsible for the action of Virechana?
a. Prithvi only b. Jala only
c. Prithvi and Jala d. Prithvi, Jala and Agni.

118. For Sukha Virechana which of the following condition is ideal?
a. Kapha Vriddhi b. Pitta Vriddhi
c. Pitta Kshaya d. Manda Kapha.

119. How many Asthapana Basti are given in Kala Basti schedule?
a. 3 b. 6 c. 12 d. 16.

120. Amongst the following four therapies, which one is the most potent?
a. Shiro Pichu b. Shiro-Abhyanga
c. Shiro-Dhara d. Shiro Basti.

121. The Ashmari like Bhallataka Asthi occurs in which type of Ashmari?
a. Vata b. Pitta c. Kapha d. Shukra.

122. What is the cause of Unmargi Bhagandar?
a. Vata b. Pitta c. Sannipata d. Agantuja.

123. According to Sushruta, Charma Keela belongs to which of the following?
a. Kshudra Roga b. Prameha Pidika
c. Arsha d. Shuka Roga.

124. Trauma causes Sphutana in which type of Asthi?
a. Taruna b. Kapala c. Nalaka d. Ruchaka.

125. How many types of Kanda Bhagna are described by Sushruta?
a. 2 b. 6 c. 12 d. 15.

126. How many Visarpa has been described by Charaka?
a. 3 b. 5 c. 7 d. 9.

127. Sushruta considers Shalya as the specific type of which of the following?
a. Vidradhi b. Nadi Vrana
c. Antra Vidhradi d. Visarpa.

128. According to Sushruta which Dosha is invariably involved in Shlipada?
a. Vata b. Ptta c. Kapha d. Rakta.

129. How many Kshudra Roga are described bySushruta?
a. 44 b. 36 c. 35 d. 34.

130. Sushruta has described Shashti Upakrama in which Sthana?
a. Sutra b. Sharira c. Chikitsa d. Kalpa.

131. How many Upadravas of Vrana are mentioned by Sushruta?
a. 3 b. 5 c. 7 d. 9.

132. Sushruta advises which type of Bandhana in Bhagna?
a. Sithila b. Gadha
c. Sadharana d. Asadharana.

133. To remove Shalya from Karna, Nasa and Nadi which Yantra is used?
a. Svastika b. Tala c. Nadi d. Shalaka.

134. Which Karma should be practiced on Panasa?
a. Chhedana b. Vedana c. Lekhana d. Aharana.

135. How many types of Kshara are mentioned by Sushruta?
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5.

136. In Pitta Dosha which of the following is used for Raktamokshana?
a. Jalauka b. Shringi c. Alabu d. Siravedha.

137. Which of the following is NOT mentioned for Rudhira – Nivaranam by Sushruta?
a. Pachana b. Sandhana
c. Bandha d. Dahana.

138. To repair Karnapali from where Mamsa is to be taken?
a. Adhara Karna Pradesha
b. Shankha Pradesha c. Ganda Pradesha
d. Karana Parshva Pradesha.

139. What is Shashtha (sixth) Upakrama for Vrana?
a. Upanaha b. Patana c. Shodhana d. Ropana.

140. How many Vrana Vastu have been mentioned by Sushruta?
a. 5 b. 8 c. 11 d. 12.

141. What is Anantavata?
a. Shiro Roga b. Netra Roga
c. Vata Vyadhi d. Nanatmaja Vikara of Pitta.

142. According to Sushruta what is Kapaalikaa?
a. Kapaala Roga b. Netra Roga
c. Danta Gata Roga d. Talu Gata Roga.

143. Ajakaajaata occurs in which part of eye?
a. Shukla Gata b. Krishna Gata
c. Pratama Patala d. Sarvagata.

144. How many Ayatana of Mukharoga are mentioned by Sushruta?
a. 3 b. 5 c. 7 d. 9.

145. 'Gandhan-Na-Veti' is the Lakshana of which Pratishyaya?
a. Vataja b. Pittaja c. Sannipataja d. Raktaja.

146. Which of the following Shiroroga is Not described by Charaka?
a. Suryavrita b. Kshayaja
c. Shankhaka d. Krimija

147. How many Oshtha Roga are mentioned by Sushruta?
a. 3 b. 5 c. 8 d. 9.

148. How many Nasa Gata Roga are mentioned by Sushruta?
a. 17 b. 21 c. 24 d. 31.

149. Sushruta advises which of the following treatment for Dipta?
a. Like Pitta b. Like Kapha
c. Like Rakta d. Like Vata.

150. Sushruta has NOT mentioned the use of drops of Svarasa of which drug for reliving Kaphaja Karna Shula ?
a. Mulaka b. Lashuna
c. Ardhraka d. Krishna Tulasi.

151. How many Karna Roga are described by Sushruta?
a. 21 b. 28 c. 31 d. 41.

152. In Ishad Abhyaahata Nayana what type of Sveda is advised by Sushruta?
a. Asya Bashpa Sveda
b. Hasta Sveda c. Nadi Sveda
d. Ushna Jala Svinna Vastra Sveda.

153. Gambhirika occurs in which part of eye?
a. Vartma b. Shukla c. Drishti d. Sarvagata.

154. How many Netra Roga are mentioned by Sushruta?
a. 73 b. 76 c. 81 d. 86.

155. Anyatovata occurs in which part of the eye?
a. Vartma b. Shukla c. Drishti d. Sarvagata.

156. How many Chhedya Roga are mentioned by Sushruta?
a. 9 b. 11 c. 5 d. 2.

157. In which of the following eye disease Shastra Karma is contraindicated?
a. Lagana b. Pothaki
c. Shushka Akshipaka d. Kumbhika

158. What is the prognosis of Kacha Roga?
a. Sadhya b. Yapya c. Asadhya d. Pratyakheya.

159. How many Vartma Roga are mentioned by Sushruta?
a. 7 b. 11 c. 21 d. 27.

160. What is the measure of Drishti according to Sushruta?
a. 1/7 of Krishna Mandala
b. 1/3 of Krishan Mandala
c. 1/4 of Krishan Mandala
d. 1/2 of Krishan Mandala.

161. Which of the following Dushta Artava is Asadhya?
a. Vata b. Pitta c. Kapha d. Kshina.

162. Sushruta prohibits sexual intercourse to a woman during menses for at least how many days?
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6.

163. In which of the following condition. Shukra is found completely absent?
a. Asekya b. Sugundhi c. Kumbhika d. Shanda.

164. Which of the following is a symptom Sadyo-Garbha?
a. Satnyo Krishna Mukhata b. Chhardi
c. Yoni Sphurana d. Praseka.

165. Which type of Vata is involved in Mudha Garbha?
a. Prana b. Vyana c. Samana d. Apana.

166. Which is not included in four types of Mudhagarbha by Sushruta?
a. Vishkampa b. Pratikhura c. Parigha d. Bijaka

167. If abortion occurs in the fifth month, then what is its name in Ayurveda?
a. Garbha Vichyuti b. Garbha Srava
c. Garbha Paata d. Sthira Garbha Srava.

168. Which Shastra is used to remove Mrita Garbha?
a. Nadi b. Kankamukha
c. Sinhmukha d. Mandalagra.

169. How many Swabhava Gata Sanga of Garbha are mentioned by Sushruta?
a. 2 b. 3 c. 5 d. 8.

170. According to Sushruta how many Tridoshaja Yoni Vyapat are there?
a. 5 b. 7 c. 9 d. 11.

171. According to Sushruta which of following Yoni Vyapat is Pittaja?
a. Phalini b. Bandhya c. Putraghnai d. Atyananda.

172. Ashtanga Hridaya has described Yoni Vyapad in which of the following chapter?
a. Guhyaroga Vijanaiya b. Yonivyapat Vijananiya
c. Yoniroga Vijananiya d. Striroga Vijananiya.

173. According to Ashtanga Hridaya what is Anupana of Pushyanuga Churna?
a. Patha Svarasa b. Ushna Ambu
c. Shita-Ambu d. Tandula-Ambu.

174. Charaka mentions which of the following as Garbha-Upaghatakara Bhava?
a. Laghu b. Shita
c. Ati-Guru d. Adaruna Cheshta

175. According to Charaka Dauhrid generally starts in which month of Pregnancy?
a. 1st b. 2nd c. 3rd d. 6th.

176. According to Charaka what is the name of that Garbha which under develops due to Yoni Srava and remains in uterus for long time?
a. Nagodara b. Upavishtaka
c. Mrita Garbha d. Leena Garbha.

177. Which one is NOT the Lakshana of Upasthita Prasava?
a. Pain around Kati and Prishtha
b. Shleshma Srava in Yoni Mukha
c. Frequent desire for defecation
d. Pain in Grabhashaya Pradesha.

178. What should be the length of Sutikagara according to Sushruta?
a. 4 Hasta b. 6 Hasta c. 8 Hasta d. 10 Hasta.

179. According to Sushruta how many months after delivery the lady become Vigata Sutika?
a. 1 month b. $1^1/_2$ months
c. 2 months d. 3 months.

180. Vadhira, Muka etc child is born due to which of the following reason?
a. Ati Pravahana b. Apravahana
c. AviPravahana d. Akala Pravahana.

181. According to Sushruta when Annadaa age of child starts?
a. Above 2 yrs b. 3 yrs c. 4 yrs d. 5 yrs.

182. What is an ideal marriage age for a male according to sushruta for healthy progeny?
a. 25 yrs b. 21 yrs c. 18 yrs d. 16 yrs.

183. Which Dhatri milk is considered good?
a. Which floats on water b. Which sinks in water
c. Which mix with water d. Which is Phenila.

184. Sushruta advises Anguli-Parva-Vad dose to which age of children?
a. Up to one month c. One year
b. Kshirapa above one month d. Two years.

185. For Guda Paka, Sushruta Prescribes which of the following?
a. Ghrita Lepa b. Madhu – Ghrita Lepa
c. Pancha – Valkala Kvatha Prakshalana
d. Rasanjana Pana – Lepa.

186. For which of the following condition Vataghna Sneha, Sveda & Upanaha are mentioned by Varna in Garbha?
a. Talupata b. Tundinabhi
c. Balatisara d. Bala Jvara.

187. According to Sushruta, Teja combines with dominance of which Mahabhuta to produce Krishna Varna in Garbha?
a. Jala b. Prithvi
c. Prithvi and Akasha d. Jala and Akasha.

188. According to Sushruta at what age Anna-Prashana ceremony should be done? (months)
a. 6 b. 9 c. 10 d. 12.

189. Which statement is true regarding number of Graha mentioned by Vagbhata?
a. 9 Grahab. 4 male and 5 female Graha
c. 11 Graha d. 5 male and 7 female Graha.

190. Sushruta mentions 'Vihangdandhi' as a Lakshana of which Graha?
a. Skanda b. Shakuni c. Putana d. Revati.

191. Sushruta mentions which of the following for treatment of almost all Graha?
a. Parishechana b. Utsadana
c. Basti d. Nasya.

192. According to Sushruta, Mutra Tulya Gandha occurs in which of following Graha?
a. Putana b. Andhaputana
c. Shitaputana d. Mukhamandhika.

193. Vagbhata advises gradually stopping breast milk to a child at what stage?
a. Jata Dashana b. 6 months age
c. 9 months age d. One year age.

194. According to Vagbhata which of the following is false?
a. Infants are always Snigdha
b. Vamana is good for Children
c. Virechana is good for children
d. Prarimarsha should be given in children if Marsha is indicated.

195. Kashyapa gives what name to the teeth which are situated side of Rajadanta?
a. Vasta b. Danshtra c. Hanvya d. Apararajadanta.

196. Kashyapa has contributed which of the following special type of Sveda for infants?
a. Upanaha Sveda b. Prastara Sveda
c. Nadi Sveda d. Hasta Sveda.

197. Deha-Vaivarnaya, Arati, Mukhaglani, Anidra & Vata -Karma-Nivritti are the prodromal symptom of which disease?
a. Jvara b. Atisara c. Aruchi d. Kamala.

198. Animittam-Abhikshna Udgara, Nidra Jrimbha are prodromal symptoms of which disease?
a. Amlapitta b. Jvara c. Chhardi d. Udavarta.

199. In the discussion on the types of diseases by various stages, what was the opinion of Kashayapa regarding the types of diseases?
a. Two types-Nija and Agantuja
b. Three types-Sadhya, Yapya & Asadhya
c. Four types-Agantuja, Vata, Pitta & Kapha
d. Five types-Agantuja, Vata, Pitta, Kapha & Tridoshaja.

200. The symptoms of Kandu, Aruchi, Jvara Shiro-Ruja in a child indicate which disease?
a. Jvara b. Kantha Shvyathu
c. Shrio-Roga d. Aruchi.

PGA CET - महाराष्ट्र 2011

स्मृतीपर आधारित.

1. उपष्टंभक है। a. सत्व b. रज c. तम d. बुद्धी
2. ज्ञान अयोगपद्येन एव a. आकाश b. मन c. बुद्धी d. आत्मा
3. अध्यवसायो a. बुद्धी b. स्मृती c. मन d. इनमें से नही
4. बसवः a. सुख b. दुःख c. इच्छा d. लोभ
5. कफज क्रिमियो की संख्या (चरक) a. 5 b. 6 c. 7 d. 4
6. चुरू क्रिमी है। a. कफज b. रक्तज c. पुरिषज d. इनमें से नही
7. शल्यनिर्हरण के लिए प्रधान यन्त्र है।
a. कंकमुख b. स्वस्तिक c. ताल d. नाडीयंत्र
8. स्वस्तिक यन्त्र कि लंबाई।
a. 18 अंगुल b. 16 अंगुल c. 24 अंगुल d. 12 अंगुल
9. कृष्णा प्रकार है।
a. सविष जलौका b. निर्विष जलोका c. दोनों d. इनमें से नही
10. अलांबु ..... होता है।
a. कटू, रूक्ष b. कटू, स्निग्ध c. तिक्त, स्निग्ध d. तिक्त, गुरू
11. बालको में रक्तमोक्षण करते है।
a. अजगल्लिका b. अहिपुतना c. अहिण्डिका d. विसर्प
12. वाग्भटोक्त द्विविध उपक्रम है।
a. स्नेहन - स्वेदन b. शोधन - शमन
c. लंघन - बृंहण d. स्तंभन - शोधन
13. विचर्चिका है। a. कफज b. वातकफज c. पित्तज d. पित्तकफज
14. उदर्द यह नानात्म विकार है।
a. कफज b. वातज c. रक्तज d. पित्तज
15. कच्छप है। a. कफज b. वातकफज c. पित्तकफज d. वातज
16. दुःख वर्धन है। a. वातज b. पित्तज c. कफज d. त्रिदोषज
17. दैवकृत छिद्रके अलावा कर्णपाली वेधन होनेपर।
a. वातप्रकोप b. रक्तप्रकोप c. पित्तप्रकोप d. त्रिदोषप्रकोप
18. अष्टांगहृदय शारिरस्थान के तृतीय अध्याय का नाम।
a. अंगविभाग b. गर्भव्यापद c. मर्म विभाग d. विकृति विज्ञान
19. सुश्रुत के अनुसार गलरोग a. 17 b. 9 c. 13 d. 8
20. दृष्टी होती है।
a. मुदगाकार b. मसुरदलमात्र c. गोस्तनाकार d. इनमें से नही
21. पाकात्यय है। a. कृष्णगत b. दृष्टीगत c. वर्त्मगत d. शुक्लगत
22. बन्धुजीवप्रतिकाशम लक्षण है।
a. वातज अधिमन्थ b. पित्तज अधिमन्थ
c. कफज अधिमन्थ d. रक्तज अधिमन्थ
23. Halothene is used for - anasthesia.
a. Spinal b. General c. Both d. None
24. In Trichoma, corneal panus is developed in.
a. i^st stage b. ii^nd stage c. iii^rd stage d. iv^th stage
25. Common cause of blindness in India is.
a. Vit A deficiency b. Cataract
c. Trauma d. Diabetes
26. सर्व नयमामयास्तु भवन्ति।
a. आभिष्यंद b. अधिमन्थ c. अन्यतोवात d. वातपर्याय
27. Rhinometry measures
a. Airflow & Resistance b. Nasal pressure
c. Nasal pressure airflow d. None
28. नेत्र में Cones अधिकतम होते है ----- ?
a. अन्धुबिन्धु b. पीतबिन्दु c. दोनो में d. इस में नही।
29. Rods are responsible for vision in.
a. Low intensity of light b. Day light
c. High intensity of light d. None
30. नासागत अवेध्य सिराऐं। a. 6 b. 4 c. 8 d. 2
31. स्वस्थवृत्त का वर्णन सुश्रुतसंहिता में मिलता है।
a. चिकित्सास्थान b. उत्तरतंत्र c. शरीरस्थान d. सुत्रस्थान
32. फणामर्म के संबंध में गलत है।
a. डल्हण 1/2 अंगुल b. सुश्रुत - सिरामर्म
c. Littel's Area d. Sup. Concha
33. शरिर तर्पयन्ति - रसस्थान पुरयन्ति।
a. अधोग धमनी b. उर्ध्व धमनी c. मुलसिरा d. तिर्यक धमनी
34. स्नायुभिश्च प्रतिच्छन्ना सन्ततांश्च जरायुणा।
श्लेष्मणा वेष्टितांश्चापि भागांस्तुतान विदुः
a. कालक b. कला c. जरायु d. स्नायू
35. कपोतवर्णप्रतिमा यस्यान्तः .....वर्जिता.
a. क्लेद b. मेद c. स्वेद d. रक्त
36. श्यावौष्ठः पिडकीसमः।
a. शुध्द व्रण b. रुहयमान व्रण c. रुढ व्रण d. व्रणशोफ
37. दुःख हेतु है। a. उपधा b. प्रज्ञापराध c. दोनो d. इस में नही
38. चतुष्पादगमन से होता है।
a. फिरंग b. उपदंश c. स्नायुक d. इसमें नहीं।
39. कन्या अधिके रक्तेन..... इसका संदर्भ है।
a. च. शा. 2 b. च. शा. 3 c. च. शा. 8 d. च. शा. 1
40. ऋतुस्तु भवति दृष्टातर्वः-----
a. व्दादशरात्रम b. षोडशरात्रम c. दशरात्र d. एकादशरात्र
41. व्यवायी विकाशी गुणों का वर्णन किया है ?
a. सुश्रुत b. चरक c. भावप्रकाश d. None
42. यस्य रोपणे शक्तिः सः .....।
a. श्लक्ष्ण b. मृदु c. सान्द्र d. स्निग्ध
43. आत्मा से संबंधित है ? a. वर्ण b. बल c. एकादशेंद्रिय d. आरोग्य
44. यकृतप्लीहा है? a. मातृज b. पितृज c. रसज d. आत्मज
45. पात्र अनुक्ते
a. सुवर्णपात्र b. मृत्तीका पात्र c. लोहपात्र d. ताम्रपात्र
46. 2 पल अर्जुन क्षीरपाक के लिए अर्जुन चूर्ण की मात्रा
a. 10 gm b. 20gm c. 30gm d. 40gm
47. 30 परमाणु =...
a. 1 गुंजा b. 1 वंशी c. 1 मरिची d. 1 यव
48. किक्विस की उत्पती होती है ..... में।
a. 7 वा मास b. छठा मास c. पॉचवा मास d. चौथा मास
49. गर्भिणी बलवर्णहानी होती है ..... में।
a. छठा मास b. सांतवा c. आठवा d. पॉचवा मास
50. हारीत के अनुसार दौहृदावस्था ..... मास में।
a. तिसरा b. दुसरा c. पहला d. चौथा

51. अष्टांगहृदय के अनुसार गर्भशय की स्थिती रहती है।
a. पित्तपक्वाशय मध्य b. मूत्रपक्वाशय मध्य
c. आमपक्वाशय मध्य d. बस्तिपक्वाशय मध्य

52. चिन्त्यांना चातिचिन्तनात् यह दुष्टी हेतू है।
a. रक्तवह b. मज्जावह c. रसवह d.अन्नवह

53. विरुद्धानांच सवेनात् ----दुष्टी हेतू है
a. अन्नवह b. रसवह c. मज्जावह d. मांसवह

54. संधिशौथिल्य -----में होता है?
a. वातक्षय b. कफवृध्दी c. कफक्षय d. वातवृध्दी

55. सन्धिस्फूटन् -
a. अस्थिक्षय b. मेदक्षय c. मज्जाक्षय d. मांसक्षय

56. अस्थिशुन्यता लक्षण मिलता है?
a. अस्थिक्षय b. मज्जाक्षय c. मांसक्षय d. मेदक्षय

57. सुश्रुत ने अगदतन्त्र को कहा है?
a. अगदतंत्र b. विषगरवैरोधिकप्रशमन c. दंष्ट्रा d. जांगुली

58. वाय्वाग्निधारण यह कार्य है?
a. पुरीष b. मूत्र c. स्वेद d. क्लेद

59. स्त्रोतः प्रीणन धीधृतीस्मृती मनोबोधनादिक्रियः।
a. उदानवायु b. प्राणवायु c. समानवायु d. व्यानवायु

60. महाजव स्थान है।
a. व्यानवायु b. समानवायु c. उदानवायु d. अपानवायु

61. हत्कण्ठेन्द्रिय संशुध्दिः शिरस : लाघवम् - शमः।
a. सम्यक् धूमपान b. सम्यक् वमन
c. सम्यक् शिरोविराचन d. सभी

62. कफास्त्रपित्तक्षयजानिलोत्थ-----यह लक्षण है।
a. सम्यक् वमन b. वमन अयोग
c. विरेचन अतियोग d. विरेचन अयोग

63. दोषगुण अवधारणम्
a. चिन्त्य b. विचार्य c. संकल्प d. ध्येय

64. अनादिसान्त होता है
a. प्राग्भाव b. प्रध्वंसाभाव c. अत्यंताभाव d. अन्योन्याभाव

65. वेदविदया के ---- जनक है।
a. न्यायदर्शन b. चार्वाकदर्शन c. वैशोषिकदर्शन d. योगदर्शन

66. कालार्थकर्मणा योगों हिनमिथ्यातिमात्रकाः का सन्दर्भ है
a. चरक b. सुश्रुत c. अष्टाङ्गसंग्रह d. अष्टाङ्गहृदय

67. विकृताविकृता देहं हन्ति ते वर्तयन्ति च। यह किसके सन्दर्भमें कहा है
a. दोष b. धातु c. मल d. None

68. धत्तुरबीज की मारक मात्रा ---mg
a. 50-100 b. 25-150 c. 100-125 d. 50-75

69. Colle's Fracture is
a. 1inch above Lower end of radius
b. 1 inch below Upper end of radius
c. 1 inch above Upper end of radius d. None

70. सत्त्वगुण का संबंध किससे है। (शारंगधर)
a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त

71. सोमलखार है।
a. Arsenic b. White arsenic
c. Arsenic Oxide d. All

72. ककुभ पर्याय है।
a. कांचनार b. अर्जुन c. कासमर्द d. कोकीलाक्ष

73. मार्कव पर्याय है।
a. शिरीष b. खदिर c. भृंगराज d. बब्बुल

74. श्रृगालविन्ना पर्याय है।
a. पृश्निपर्णी b. शालीपर्णी c. मृद्गपर्णी d. माषपर्णी

75. Occimum sanctum में Eugenol
a. 25% b. 60% c. 70% d.35%

76. Ditamine पाया जाता है।
a. सप्तपर्ण b. दाडिम c. पटोल d. तुलसी

77. वंगभस्म का वर्ण--होता है।
a. श्वेत b. कृष्ण c. पीत d. रक्त

78. रोहिणी रोग की मारक अवधी है।
a. 3 दिन b. 7 दिन c. 5 दिन d. 9 दिन

79. वातातपसहा ये च भाराध्वकर्षिता : - योग्य है।
a. सर्पिपान b. तैलपान c. वसापान d. मज्जापान

80. Which of the following is not -a cause of osteoporosis-
a. Low birth weight b. Smoking
c. Nutrition d. Affrican Race

81. अवपीडयमाने शब्द।
a. सन्धिभग्न b. अस्थिभग्न c. Both d. None

82. मज्जानुगत भग्न होता है।
a. साध्य b. कृच्छसाध्य c. असाध्य d. याप्य

83. पाण्डु व्याधी है।
a. संर्तपणोत्थ b. अपतर्पणोत्थ c. दोनो d. इसमें नही।

84. इनमें से संतर्पणजन्य व्याधी है।
a. पाण्डु b. उन्माद c. कर्णशुल d. सभी

85. वमन अयोग्य है।
a. कुष्ठ b. अपस्मार c. पाण्डू d. गुल्म

86. गुरु च अपतर्पणम्।
a. कार्श्य b. स्थौल्य c. प्रमेह d. हृद्रोग

87. स्थुलमें संचित होता है
a. मांस b. मेद c. वसा d. सभी

88. IPC 302 संबंध।
a. शिशुवध b. शपथभंग
c. आत्महत्या का प्रयत्न d. गर्भपात करते समय गर्भिणी मृत्यू

89. IPC 376
a. बलात्कार की परीभाषा b. बलात्कार हेतू सजा
c. शीलभंग d. बलात्कार की कोशिश

90. वृष्यं वातहराणाम्
a. रास्ना b. विदारीगन्धा c. बला d. एरण्डमूल

91. रक्तकोपन रस है।
a. मधूर b. कटू c. लवण d. कषाय

92) शिथिल मांस ----रस के अतिसेवन से होता है।
a. मधूर b. लवण c. अम्ल d. कटू

93) लघूत्तर रस।
a. अम्ल b. कटू c. तिक्त d. कषाय

94) श्रेष्ठ रक्तप्रसादन है।

a. गुडूची b. मंजिष्ठा c. सारिवा d. तुलसी

95) गण्डमालानाशन प्रभाव है।

a. कांचनार b. भृंगराज c. शिरिष d. कर्कटशृंगी

96) श्लीपद में उपयोगी है।

a. शाखोटक b. शरपुंखा c. कांचनार d. अरिष्टक

97) पुष्यानुग चुर्ण कहा है।

a. सुश्रुत b. चरक c. वाग्भट d. शारंगधर

98) Thalasemia day

a. 19th may b. 8th may c. 14th April d. 1st July.

99) After birth baby has all body swelling. Hepatospleenomegaly & death occured, What will be the diagnosis is a.

a. Thalsimia b. Thalassemia A
c. RH incompatability
d. ABO incompatability (or) Sickle Cell anemia.

100) Incubation period of hepatitis -B

a. 0-45 days b. 45-180 days
c. 180-260days d. None

101) वितर्क, विचार, सानंद, स्मित ये प्रकार है।

a. अप्रज्ञात समाधी b. संप्रज्ञात समाधी
c. धारणा d. ध्यान

102) Reproduction & child health starting at

a. 1994 b. 1997 c. 1991 d. 1993

103) स्नेह पश्यात जलपान होता है

a. उपचार विरुद्ध b. परिहार विरुद्ध
c. संयोग विरुद्ध d. कालविरुद्ध

104) वाग्भट के अनुसार सामुद्रजलसेवन ---में करना चाहिए

a. मार्गशीर्ष b. कार्तिक c. अश्विन d. भाद्रपद

105) कर्णरोग चिकित्सा है।

a. वमन b. विरेचन c. बस्ति d. नस्य

106) मुस्तादी प्रमथ्या उपयोगी है ..... में

a. अतिसार b. रक्तातिसार c. ग्रहणी d. प्रवाहिका

107) दुःप्रसवा योनि है

a. प्रस्त्रंसिनी b. अनुवक्त्रा c. सुचिवक्त्रा d. परिप्लुता

108) निदानार्थकर रोग है

a. अर्श - गुल्म - उदर b. प्रतिश्याय - क्षय- कास
c. अर्श - अतिसार - ग्रहणी d. अर्श- अतिसार-उदर

109) रक्तकलोचन : -।

a. महाश्वास b. छिन्न श्वास c. तमकश्वास d. उर्ध्वश्वास

110) गात्रस्य पातनन्।

a. भिन्न व्रण b. छिन्न व्रण c. घृष्ट व्रण d. पिच्चित व्रण

111) शशरुधिरोपमम् बिन्दु।

a. पिष्टक b. अर्जुन c. सिरापिडका d. शुक्तिका

112) तमक श्वासमें किस तरह का विरेचन देना चाहिए।

a. मृदु b. पित्तहर c. पित्तकफहर d. वातकफहर

113) पानीय क्षार देते है।

a. अर्श b. अग्निमांद्य c. अजीर्ण d. All

114) वातज कूष्ठ में चिकित्सा।

a. घृतपान b. तैलपान c. विरेचन d. वमन

115) मेदाश्रित श्वित्र होता है।

a. ताम्र b. श्वेत c. रक्त d. पीत

116) मुख्यरुपसे धातु अग्निमाद्य..... में होता है।

a. प्रमेह b. राजयक्ष्मा c. मेदोरोग d. सभी

117) प्रमेह के बलाबलानुसार भेद है।

a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

118) स्त्रोतसां सन्निरोधः रक्तादिनां च संक्षयात संबंधित है।

a. क्षतक्षीण b. राजयक्ष्मा c. रक्तपित्त d. पाण्डू

119) पाचनी, वन्हिमित्रा ये पर्याय है।

a. चित्रक b. मुषा c. पुट d. कोष्ठी

120) निर्धूम भस्म होती है

a. अभ्रक b. मनशिला c. हरताल d. गिरीसिन्दुर

121) मृदु अनवस्थितम्

a. वातज शोथ b. पित्तज शोथ
c. कफज शोथ d. त्रिदोषज शोथ

122) जिव्हा का पर्याय है।

a. गोजिव्हा b. हस्तिजिव्हा
c. गर्दभजिव्हा d. None

123) गुंजाविष का प्रतिविष है।

a. HCl+Pepsin b. Corbolic acid
c. Acetic Acid d. Oxalic Acid

124) सुश्रुत ने जलसंत्रास को कहा है।

a. अलर्क विष b. लुता विष c. किट विष d. दूषी विष

125) In embryo RBC are formed in

a. Liver b. Spleen
c. Yolk sac d. Bone Marrow

126) साङ्गमर्द संवेदना

a. रजःक्षय b. असृग्दर c. रजोवृध्दी d. स्तन्यक्षय

127) इनमें सें सेवनी प्रकार नही है

a. तुन्नसेवनी b. गोफणिका c. स्थगिका d. ऋजुग्रंथी

128) शरारीमुख की लंबाई

a. 8 अगुंल b. 9 अगुंल c. 10 अगुंल d. 6 अगुंल

129) तृष्णा, निद्रा, क्षुधा है

a. कालबलप्रवृत्त b. स्वभावबलप्रवृत्त
c. दैवबलप्रवृत्त d. दोषबलप्रवृत्त

130) शोथहस्त पादमुख्ये नाभ्यां गुदे वृषणयोस्तथा..... के उपद्रव है।

a. अर्श b. अतिसार c. उदर d. ग्रहणी

131) आत्मेन्द्रियमनोद्रर्थाणां सन्निकर्षात प्रवर्तते।

a. अनुमान b. प्रत्यक्ष c. युक्ती d. शब्द

132) निम्न में परादि गुण है।

a. सुख b. दुःख c. प्रयत्न d. युक्ती

133) चरकपंजिका के लेखक है।

a. स्वामीदास b. स्वामीकुमार c. जेज्जट d. गयदास

134) रसतरंगिणि के लेखक है।

a. राम शर्मा b. सदानन्द c. सोमदेव d. शिवशर्मा

135) लोहगन्धी निःश्वास यह पुर्वरुप है

a. पाण्डु b. छर्दि c. कास d. रक्तपित्त

136) प्रियनिघन्टु काल .....शतक

a. 16 b. 19 c. 18 d. 20

137) शुकपिच्छसमच्छायो नवनीत आज्यसम् प्रभम्।

a. गन्धक b. गैरिक c. हिंगल d. गोमेद

138) संखिया का (गौरीपाषाण) शोधन में करते है।

a. कारवेल्लक b. कांजी c. आर्द्रकस्वरस d. भृंगराजस्वरस

139) प्रधान व्याधी को कहते है।

a. अनुबन्ध्य b. तदात्व c. स्वतंत्र d. सभी

140) जांगम विष का लक्षण है।

a. मुर्च्छा b. दन्तहर्ष c. तन्द्रा d. ज्वर

141) हिंग शोधन द्रव्य है।

a. गोदुग्ध b. गोघृत c. कांजी d. गोमुत्र

142) नाग के प्रकार

a. समल, बाल b. खुरक, मिश्रक

c. म्लेच्छ, नैपाल d. कृत्रिम, खनिज

143) Ca So4 रासायनिक सूत्र है।

a. मृदारशृङ्ग का b. कपर्द का c. गोदन्ती का d. शंख का

144) आमज अतिसार प्रकार वर्णन ने किया है।

a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None

145) अनिर्देष्य रस यह विष गुण वर्णन किया है।

a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. डल्हण

146) पुयमेय यह प्रमेह का प्रकार है।

a. कफज b. पित्तज c. वातज d. None

147) Urine sugar will found in

a. इक्षु, मधुमेह b. इक्षु, शीतमेह

c. शीत, सिक्तामेह d. इक्षु, सिकतामेह

148) सशोफ अर्दित की चिकित्सा है।

a. वमन b. विरेचन c. बस्ति d. रक्तमोक्षण

149) यथा बलं यथा दोषं सुतिका चिकित्सा वर्णन

a. सुश्रुत b. चरक c. वाग्भट d. सभी

150) अक्षरलेखन संस्कार

a. 1 वर्ष b. 3 वर्ष c. 5 वर्ष d. सभी

151) दीपन चिकित्सा---- में करते है।

a. परिगार्भिक b. फक्क c. जलशीर्षक d. उल्बक

152) संशोधनपरा नित्यं धात्री प्रशस्यते का संन्दर्भ है। का. सं.

a. क्षीरोत्पत्ती b. लेहनाध्याय c. जातीसूत्रीय d. वेदनाध्याय

153) स्फोटैश्च प्रचिततनुः सदाहपाकैर्विज्ञेयो ---

a. शीत पुतना b. शकुनि c. अहिपुतना d. कट्पुतना

154) सुर्यदर्शन संस्कार का काल

a. 1st Month b. 2nd Month

c. 3rd Month d. 4th Month

155) स्तन्यं पिबती नात्यर्थम।

a. अलसक b. मुखरोग c. कन्ठरोग d. सभी

156) स्वस्थं न रोदति।

a. जन्तुदंश b. अलसक c. छर्दी d. मुखरोग

157) सुश्रुतोक्त बस्ति प्रणिधान दोष है।

a. 6 b. 9 c. 7 d. 11

158) Glassopharynygeal Nerve is

a. Motor b. Sensory c. Mixed d. None

159) 13 वर्ष के बालक के लिए बस्तिद्रव की मात्रा ..... प्रसृत

a. 6 b. 7 c. 8 d. 9

160) ध्मापन नस्य के लिए उपयोगी चुर्ण

a. कट्फल b. शिरिष c. पिप्पली d. मरिच

161) एक समय में धुमाभ्यवहरण

a. 9 b. 3 c. 6 d. 12

162) बर्हिकण्ठाभ शिलाजीत

a. सुवर्ण b. रजत c. ताम्र d. लोह

163) Biglow's foramen is present at

a. Bet. greater & lesser sac
b. Bet. greater & lessar foramen
c. Bet. greater & lessar trochanter
d. Bet. greater & lesser tubercle

164) Caller & cuff bandage applied on

a. Fracture of shaft of humerus
b. Shoulder dislocation
c. Fracture of head of femur
d. Clavicular fracture.

165) यवागु के द्रवगुण से होता है।

a. तृष्णानाश b. अनुलोमन c. दिपन d. पाचन

166) रोगनिर्मुलन पश्चात् उत्पन्न अग्निमांदय की चिकित्सा

a. यवागु b. शोधन c. चूर्ण,अरिष्ठादि d. घृतपान

167) कालान्तरात खरीभुता

a. कुम्भकामला b. हलीमक c. कामला d. लाघरक

168) तिलापिष्टनिभं– मल प्रवृत्ती होती है ?

a. कोष्ठाश्रित कामला b. शाखाश्रित कामला

c. कुम्भकामला d. अलस

169) दृष्ट स्वप्न प्रकार

a. 6 b. 5 c. 7 d. 8

170) व्याघ्री हरीतकी रोगाधिकार है ?

a. शोथ b. कास c. वातरक्त d. पाण्डु

171) कषाय रस की पांचभौतिकता है ?

a. पृथ्वी – वायु b. पृथ्वी – जल

c. तेज – आप d. आकाश – पृथ्वी

172) Left testicular vein drains into

a. Lt. renal vein b. Inf mesentric vein
c. Inf vena cava d. Sup mesentric vein

173) Axillary N. supplies

a. Upper part of Deltoid c. Upper shoulder
b. Lower part of Deltoid d. Forearm

174) Greater sciatic Notch is present on..... border of ileum

a. Anterior b. Posterior c. Medial d. None

175) स्तनमुल मर्मविध्द लक्षण

a. रक्तपुर्णकोष्ठता b. कफपुर्णकोष्ठता

c. अतिरक्तस्त्रावण से मृत्यू d. स्तब्धपुर्णकोष्ठता

176) निम्न में से कौनसा कालान्तर प्राणहर मर्म, आघात से सघोप्राणहर हो सकता है।

a. सीमन्त b. क्षिप्र c. अधिपति d. सभी

177) What will be reason for swine flue.
a. आतंकप्राय b. रक्षोभुतसंग c. अनभिज्ञ d. सभी

178) भगन्दर में पथ्यपालन समय है।
a. 4 मास b. 6 मास c. 12 मास d. 16 मास

179) प्रभा है।
a. वर्ण प्रकाशिनी b. वर्णआच्छादिनी
c. वर्णविकर्षयनी d. सभी

180) ऋतुसन्धि होती है।
a. 14 दिन b. 7 दिन c. 2 सप्ताह d. A+C

181) जनपदोध्वंस को मरक कहा है।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. शारंगधर

182) Vit k पाया जाता है।
a. गोदुग्ध b. स्त्रीदुग्ध c. अजादुग्ध d. गर्दभिका दुग्ध

183) Intrensic factor present in
a. Gastic juice b. Pancratic juice
c. Saliva d. None

184) Vit D की मात्रा ..... I.U.
a. 1000 – 5000 b. 400 – 1000
c. 5000 – 10000 d. 1000 – 15000

185) भास्कर संप्रदाय का वर्णन मिलता है।
a. विष्णुपुराण b. ब्रम्हवैवर्तपुराण c. दोनो में d. इसमें नही

186) Calcitonin is secreted by the gland
a. Thyroid b. Parathyroid c. Pituitary d. Adrenal

187) BMR is Regulated by.
a. Thyroid b. Pituitary c. Pancrease d. Adrenal

188) Length of Posterior vaginal wall is
a. 5 cm b. 6 cm c. 7 cm d. 9 cm

189) परिगार्भिक का वर्णन मिलता है।
a. वाग्भट b. चरक c. वृध्दवाग्भट d. सुश्रुत

190) न हि वातादृते ..... किसके संदर्भ मे है।
a. गुदरोग b. योनीरोग c. वातरोग d. वातरक्त

191) Sabin Vaccine is
a. Live attenuated b. Killed
c. Live d. Killed attenuated

192) कम्पिल्लक है। (चरक)
a. वमन b. विरेचन c. शिरोविरेचन d. आस्थापन

193) Calomel का रासायनिक सुत्र है।
a. Hgo b. $Hgcl_2$ c. Hg_2Cl_2 d. Hg_2cl

194) लघुपंचमूल में नही है।
a. बिल्व b. शालीपर्णी c. पृश्निपर्णी d. बृहती

195) षंडगपानीय में है।
a. अनन्तमुल b. मुस्ता c. उशीर d. चंदन

196) शारंगधर के अनुसार मन्थ भेद है।
a. क्वाथ b. हिम c. फाण्ट d. स्वरस

197) वत्सनाभ का आयुर्वेदिक प्रतिविष है।
a. Atropinc b. टंकण c. Pilocarpin d. Naloxone

198) Causative organism of syphyllis is
a. Treponoma pallidum b. Yersinia pestes
c. Wuchereia bancrofti d. Haemophilus Ducreyi

199) इडा पिंगला सुषुम्ना है।
a. त्रिवेणी b. त्रिचक्र c. त्रिशक्ती d. त्रिश्रेणी

200) विशुध्द चक्र का स्थान है।
a. हृदय b. नाभी c. कण्ठ d. गुद

201) Doderline bacillus is
a. Round shape +ve b. Round shape -ve
c. Rod shape +ve d. Rod shape -ve

202) Length of clitoris is
a. 2.5 cm b. 5 cm c. 1.5 cm d. 3 cm.

203) संग और विमार्गगमन पाया जाता है।
a. रक्तपित्त b. अम्लपित्त c. रुध्दपथ कामला d. None.

204) IQ 50 & age 6 years, what will child do
a. Riding tricycle b. Running
c. Waves bye bye d. All

205) Nerve passing anteriorly to Psoas major is
a. Pudendal b. Genitofemoral c. Sacrospinal d. All

206) सप्तकर्म में नही है।
a. उपनाह b. पाटन c. आलेप d. रोपण

207) मधुर द्रव्य का वीर्य प्रायः होता है।
a. शीत b. उष्ण c. अनुष्णशीत d. None

208) वमन विरेचन पश्यात् क्या करना चाहिए। (सर्व प्रथम)
a. आराम b. आहार c. संसर्जन क्रम d. इसमें नही

209) Ureter is not constricted at -
a. Pelvic Brim b. Pre to vesicular Junction
c. While crossing gonadal veins d. Renal pelvis

210) रजःक्षीणता यह लक्षण है।
a. वातज योनिव्यापद b. अरजस्का c. वन्ध्या d. B&C

211) नवज्वरमें वर्ज्य रस
a. मधुर b. कटु c. तिक्त d. कषाय

212) वैतरण बस्ति का रोगाधिकार है।
a. आमवात b. संधिगत वात c. वात रक्त d. उरूस्तंभ

213) Height of uterus upto umbilicus found at
a. 16th week b. 20th week
c. 24th week d. 40th week

214) कफज कास चिकित्सा
a. स्निग्धोष्ण b. स्निग्ध रुक्ष c. उष्ण शित d. रूक्षशीत

215) पित्तस्थान समुदभव व्याधी है।
a. प्रतिश्याय कास b. कास श्वास c. हिक्का श्वास d. सभी

216) Which of the following sign is not seen in dead body -
a. Increase in temp b. Swelling
c. Redness d. All

217) Host defenee in stomach -
a. Mucosa b. Serosa c. Panus d. All

218) चित्तखेद समुद्भवा प्रकार है।.....का (अ. सं.)
a. स्वप्न b. निद्रा c. तृष्णा d. क्षुधा

219) वैष्णवी यह निद्राप्रकार वर्णन किया है।
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. None

220) क्वाथादीना पुनःपाकात घनत्वं सा .....।
a. रसक्रिया b. अवलेह c. दोनों d. इसमें नही।

221) क्लोम की स्थिती है।

a. हृदय के वाम अधः b. हृदय के दक्षिण अधः

c. फुफ्फुस के वाम अधः d. फुफ्फुस के दक्षिण अधः

222) स्तब्धगुरुगात्रता यह लक्षण है।

a. ओजोव्यापद् b. ओजोविस्त्रंस c. ओजक्षय d. ओजोनाश

223) प्राकृत ओज है।

a. बल b. श्लेष्मा c. दोनो d. None

224) अंजननामिका है।

a. छेद्य b. भेद्य c. वेद्य d. लेख्य

225) Varicosity is commonly seen in

a. Superficial veins b. Deep veins

c. Planter veins d. None

226) चरकने रसभस्म सेवन करने के लिए कहा है।

a. राजयक्ष्मा चि.मे b. प्रमेह चि.मे

c. कूष्ठ चि. में d. गुल्म चि. मे

227) काष्ठीभूतो मृतोपमम् लक्षण है।

a. संन्यास b. मद c. मूर्च्छा d. सभी

228) दन्तधावन निषेध है।

a. नासारोग b. शिरोरोग c. कर्णरोग d. All

229) Retrobulbar inj xylocain will not block the nerve

a. Optic b. Trochlear

c. Ciliary & bracheo d. Occulomotor

230) Euphorbia Roylena है।

a. लाक्षा b. सुधा c. एरण्ड d. शिलाजीत

231) कांजी में पाया जाता है।

a. Citric acid b. Alcohol c. Acetic acid d. None

232) Oestrojenic plant is.

a. Asperagus recemasus b. Withania somnifera

c. Uraria picta d. Desmodium giganticum

233) पारद की निर्गन्धि मूर्च्छना है।

a. श्वेतपर्पटी b. रसकर्पुर c. रसपुष्प d. All

234) Liver dullness is Marked in

a. Eritonitis b. Intestinal perforation

c. Ascitis d. None

235) विकार नाश करनेवाला वैद्य

a. रोगाभिसर b. प्राणाभिसर c. रोगानुसारी d. राजवैद्य

236) विकार नाश में कारण

a. कर्ता b. करण c. कार्य d. चतुष्पाद

237) विदयावन्त लक्षण है।

a. पित्तप्रकृती b. वातप्रकृती c. कफप्रकृती d. All

238) उध्दतां मेधा –लक्षण है।

a. मांससार b. मज्जासार c. सत्वसार d. रक्तसार

239) भेद्य नेत्ररोग

a. 11 b. 13 c. 5 d. 9

240) इदम् एव कर्तव्यम् इति। सु.

a. उपदेश b. निर्देश c. नियोग d. समुच्चय

241) Burger's disease is common in

a. Females b. Children c. Males d. All

242) प्रलुन –। सु. उ. 54

a. पित्तज क्रिमी b. रक्तज क्रिमी

c. पुरीषज क्रिमी d. कफज क्रिमी

243) उपधा --च. शा. 1/96

a. क्षुधा b. तृष्णा c. लोभ d. मोह

244) वलय : पलितानि है।

a. मांसप्रदोषज b. रक्तज c. अस्थिप्रदोषज d. रसप्रदोषज

245) मज्जावह स्त्रोतस का मुलस्थान

a. मेद जघन b. वृक्क वपावहन c. अस्थि सन्धि d. मेदसन्धि

246) विष्टब्धाजीर्ण होता है।

a. कफ से b. पित्त से c. वात से d. सभी

247) शास्त्रज्ञानोपाय है।

a. अध्ययन b. अध्यापन c. तव्दिध्दसंभाषा d. सभी

248) नासाप्रदेश में पायी जानी वाली वातवह नाडीयाँ

a. 10 b. 8 c. 3 d. 6

249) बलभ्रंश लक्षण मिलता है। में

a. सामवायु b. सामकफ c. आम d. ओजक्षय

250) Brunner's gland present in

a. Duodenum b. Jejunum c. Ileum d. All

Jamnagar - Jaipur JPGET - 2011.

(स्मृतीपर आधारीत)

1) त्यक्त द्रवत्व - किस पित्त का लक्षण है।

a. साधक b. पाचक c. आलोचक d. भ्राजक

2) निर्वापण है।

a. शल्य निर्हरण उपाय b. व्रणोपक्रम

c. भग्न संधान उपक्रम d. None

3) अतः उर्ध्व कफे मन्दे वातपित्तात्तरे ज्वरे।

परिपक्वेषु दोषेष------ पानं यथामृतम ॥

a. पय b. मधु c. सार्पिपानं d. All

4) सुख विरेचन के लिए दोष अवस्था

a. मन्द कफ b. तीक्ष्ण कफ c. मन्द पित्त d. कफ पित्त प्रकोप

5) क्षीण कफ कुपित पित्त लक्षण है।

a. मृदू कोष्ठ b. मध्य कोष्ठ c. क्रूर कोष्ठ d. None

6) शोथ – हेत्वन्तर रोग

a. उदर b. पाण्डू c. राजयक्ष्मा d. कास

7) अहिफेन का कल्प हैं।

a. मृत संजिवनी सुरा b. महामायूर घृत

c. ज्वराकुंश d. वातकुलान्तकरस्

8) आरोग्य वर्धिनी वटी प्रमाण रसतरंगिणी के अनुसार

a. कोलप्रमाण b. उदूम्बर प्रमाण c. माषप्रमाण d. चणकाकार

9) चरक चंद्रिका टिकाकार

a. गयदास b. जेज्जट c. शिवदाससेन d. भट्टार हरिश्चंद्र

10) सकृजात दंत संख्या

a) 8 b. 20 c. 24 d. 32

11) चरक संहिता में शरीर स्थान का क्रम

a. 6 b. 8 c. 4 d. 5

12) शरीर स्थान का पर्यायी नाम है.

a. रहस्यस्थान b. मानस्थान c. श्लोकस्थान d. आश्रय स्थान

13) वाग्भट के अनुसार उपवेशन व अन्नप्राशन संस्कार काल

a. 4th & 5th month b. 5th & 6th month
c. 6th & 10th month d. None

14) Paranasal sinus opens into

a. Inf meatus b. Sup meatus
c. Middle meatus d. None

15) फलिनी में नही है।

a. आमलकी b. हरितकी c. बिभितक d. A+C

16) वैद्य परिक्षक गुण संख्या

a. 9 b. 8 c. 6 d. 7

17) चरक संहिता में कितनी संभाषा परिषद हुई।

a. 5 b. 6 c. 7 d. 8

18) रक्त पित्तहारी क्रिया किस विकार में करते है ।

a. रक्तज b. कफज c. वातज d. All

19) स्थिर गुण के विरुद्ध गुण

a. चल b. सर c. कठीण d. खर

20) वात आतप अनल

a. पक्ष्मकोप b. पक्ष्मशात c. अभिष्यंद d. कुंचन

21) अनिर्मित रुजा होती है।

a. कृमीदन्त b. दालन c. शीताद d. दंतवेष्टक

22) भुक्ते अन्ने लभते शान्ति जीर्ण मात्रे प्रताम्यति।

a. अत्यग्नि b. मन्दाग्नि c. विषमाग्नी d. None

23) आस्थापन बस्ति अर्हता।

a. जीर्ण b. भुक्ते c. अभुक्ते d. None

24) स्वेद भेद काश्यप के अनुसार

a. 8 b. 20 c. 13 d. 4

25) Chloramphenicol side effect

a. Bone marrow depress b. Irritation
c. Grey baby syndrome d. None

26) Cardio spasm is related with

a. Stomach b. Heart c. Lung d. None

27) Reason of Neuroblastoma.

a. Catacacholamine c. Both
b. Acetylcholin catacholamine d. None

28) तुण्डीकेरी चिकित्सा

a. भेदन b. छेदन c. लेखन d. वेधन

29) कच्छप यंत्र उपयोग

a. रसजारणार्थ b. सत्वपातनार्थ c. रसबंधनार्थ d. None

30) Nigella sativum, Latin Name है।

a. यवानी b. अजमोदा c. अजाजी d. जीरक

31) गुंजा ——— विष है।

a. मुल विष b. फल विष c. पत्र विष d. त्वक विष

32) जीमूतक योग संख्या है।

a. 39 b. 60 c. 48 d. 38

33) सितोपलादीचूर्ण अधिकार।

a. कास b. श्वास c. प्रतिश्याय d. राजयक्ष्मा

34) तथागत दर्शन

a. बौध्द दर्शन b. जैनदर्शन c. चार्वाक d. न्याय दर्शन

35) Health for All 2000 AD

a. 1981 b. 1977 c. 1919 d. 1996

36) e-schedule related with

a. Packing b. Standardization & value
c. Marketing d. None

37) पिप्पली विपाक है

a. मधूर b. अम्ल c. कटू d. None

38) कटिपृष्ठप्रतिसमंतात वेदना, योनीमुखाच्छलेष्मा लक्षण किस अवस्था का है।

a. प्रजायिनि b. आसन्न प्रसवा c. प्रजयनायिषमाना d. None

39) प्रसवसमयी गर्भस्थिती होती है।

a. अवाक शिर b. उर्ध्व शिर c. मध्य शिर d. None

40) प्रतिमर्श नस्य अर्हता

a. तृष्णा b. दृष्ट प्रतिश्याय c. a & b d. None

41) काश्यप के अनुसार कषाय कल्पना नही।

a. स्वरस b. कल्क c. फाण्ट d. अवलेह

42) व्युक्रान्तभिधान तंत्रयुक्ती वर्णन की है।

a. भट्टार हरिश्चंद्र b. चरक c. सुश्रुत d. वाग्भट

43) धमनी शैथिल्य लक्षण है।

a. मांसक्षय b. मेदक्षय c. रक्तक्षय d. रसक्षय

44) सर्वव्यापक इंद्रिय है।

a. चक्षुरेंद्रिय b. रसनेंद्रिय c. स्पर्शनेंद्रिय d. श्रोत्रेंद्रिय

45) अभुक्त अवस्था में शस्त्रकर्म निर्देश किस व्याधी में है ।

a. ग्रंथी b. अर्बुद c. भंगदर d. All

46) चिरक्षीण व्यक्ती के लिए चिकित्सा

a. सघ संतर्पण b. अभ्यास संतर्पण c. अपतर्पण d. None

47) बालक 1 वर्ष के बाद भी नही चलना।

a. पारिगार्भिक b. शोष c. बालगृह d. फक्क रोग

48) वेदना का अधिष्ठान है।

a. मन b. शरीर c. इंद्रिय d. All

49) Medicolegal जॉच करने का अधिकार?

a. Coroner b. Police c. Magistrate d. All

50) गुल्फ ——— मर्म है।

a. संधि b. अस्थि c. सिरा d. स्नायू

51) अंस, नितम्ब का------ अस्थि प्रकार है।

a. कपालास्थी b. वलयास्थि c. नलकास्थी d. रुचकास्थि

52) शारंगधर के अनुसार तण्डुलोदक में जलः तण्डुल प्रमाण

a. 8:1 b. 1:8 c. 1:32 d. 1:6

53) अनुक्त क्षार

a. सज्जीक्षार b. यवक्षार c. तिलनाल क्षार d. चिंचाक्षार

54) लावक पूट पर्याय नाम

a. पल b. तूष c. भाण्ड 4) None

55) फणा मर्म आघात लक्षण –

a. गंधअज्ञान b. रसअज्ञान c. दोनों d. इसमें नही

56) निरग्नी स्वेद है।

a. कूप b. बहूपान c. कर्षु d. भू

57) अलर्क विष है।

a. अर्कविष b. सत्रूविष c. श्रृगालाविष d. कीटविष

58) चंन्द्रप्रभावटी का घटक द्रव्य है।

a. शटी b. हरताल c. मनःशिला d. सभी

59) श्वासकुठार घटक द्रव्य है।

a. मनः शिला b. गंधक c. Both d. None

60) Ramsted operation is indicated for

a. Congenital pyloric stenosis b. Varicocele
c. Polycystic kidney d. Congenital disloction of hip.

61) सर्वदोषज कूष्ठ प्रकार है।

a. मण्डल b. औदुम्बर c. काकण d.सिध्म

62) टंकण, विडग , पिप्पली है

a. गर्भनिरोधक b. गर्भशोधक c. गर्भस्थापक d. गर्भकर

63) Oxytocin Action time

a. 10 min b. 20 min c. 30 min d. 40 min

64) व्रण पट्टी बदलना वंसत हेमन्त और शिशिर ऋतू में

a. 1 दिन बाद b. 2 दिन बाद c. 3 दिन बाद d. 5 दिन बाद

65) प्रधान यंत्र है

a. हस्त b. कंकमुख c. सिंहमुख d.All

66) Lamboid suture is suture between parietal &

a. Occipital b. Frontal c. Temporal d. None

67) Gastric lavage is contraindicated In— poisoning.

a. Carbolic Acid b. Rockel c. Oxalic Acid d. O.P.P.

68) Which the following is incorrect

a. शिशुभैषज्य – अतिविषा b. बालभैषज्य – रसांजन
c. a & b d. None

69) प्रतिमार्ग हरण चिकित्सा किस व्याधी की है

a. अतिसार b. छर्दी c. रक्तपित्त d. कास

70) उपशेते यदौचित्याद------ इति

a. ओकसात्म्य b. देशसात्म्य c. ऋतूसात्म्य d. रोगसात्म्य

71) उण्डुक उत्पती – से है

a. शोणितकिट्ट b. शोणित c. शोणितफ़ेन d. None

72) Match the following pairs

1) Emetic Nut	1) लताकरंज
2) Fever Nut	2) मदनफल
3) Malbar Nut	3) कूपिलू
4) Poison Nut	4) वासा

a. badc b. abcd c. bdac d. bacd

73) विश्व भैषज पर्याय है ?

a. शुण्ठी b. हरिद्रा c. गुडूची d. पिप्पली

74) मेदउपधातू स्नायू, मांस उपधातू–

a. वसा b.आर्तव c. सिरा d. कण्डरा

75) वाग्भट के अनुसार 1 कोल .....।

a. 2 शाण b. 2 बटक c. 1 अर्मण d. 4 माशा

76) Vit A prophylaxis in children is

a. 50,000 Ics b. 1 lach c. 10,000 Ics d. 1.5 lacs

77) स्नैहीक धूमपान ..... बार करना चाहिए।

a. 1 b. 2 c. 5 d. 4

78) Breast cancer commomly found in ---- lobe

a. Rt upper b. Rt upper c. Rt lower d. Rt lower

79) प्रकृत हेतो वाच्ये यद् विकृत हेतु माह।

a. अहेतु b. हेत्वन्तर c. प्रतिज्ञाहानी d. अर्थान्तर

80) आदावन्ते च विसर्गदानयोर्नृणाम्। ----- संदर्भ.

a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. शारंगधर

Kerala Entrance Exam 2011

(स्मृतीपर आधारित)

1. Common man died who can give order of autopsy:
a. Inspector B. Neighbourer
C. Sub. inspector D. Magistrate of first class

2. Man died in the police custody...who can give the order for autopsy:
a. PSI B. Dy. S. P.
C. Megistrate of first class D. Inspector

3. No.Of padarthas said by sushrutha
a. 5 B. 6 C. 7 D. None

4. No. Of vaiseshika karmas
a. 2 B. 4 C. 5 D. 3

5. No. Of padarthas by nyaya darsana
a. 4 B. 5 C. 6 D. 7

6. Jalarbuda is described by.
a. Sushrut B. Vaghbhata
C. Charak D. None

7. Which sarpa is vata predominant:
a. Darveekara B. Mandali
C. Vynthira D. Rajila

8. Karna poorana time with thaila by sargadhara samhitha:
a. After food B. Before food
C. After nature call D. None

9. Karna poorana with swarasa by sargadhara samhitha:
a. After food B. Before food
C. After nature call D. None

10. Assault done by women which IPC:
a. 377 B. 376 C. 302 D. 316

11. Size of opening of mosquito net....
a. Nt. more than 0.0475 inches
B. Nt.more than 0.475"
C. Nt. more than 0.0475mts.
D. Nt more than 0.0475cm

12. Vasa how much anjali
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

13. 1 anjali=.....pala. a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

14. 1 pala=.....thola. a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

15. Madana phala .. Time to take:
a. After food B. Before food
C. After food Digestion D. None

16.What should be taken after food
a. Dadima ,B. Amla C. Both D. None

17. Vishnu sahasranama recitation by charaka:
a. Vishama jwara B. Unmada
C. Athatwabhinivesa D. No ref

18. Swabavo parama vada in which chapter
a. Chikitsa pragbhut B. Upkalpniya
C. Kiyanta Shirashiya D . None

19. Brahmi gritha which context by
a. Charaka B. Shushrut C. Vaghbhat D. A & C

20. Purana gritha for :
a. Unmada B. Athatwabhinivesa
C. Apasmara D. All the above

21. Bhela - Mana stana
a. Hridaya B. Shira C. Talu D. B & C

22. Pithasaya location with respect to amasaya:
a. Up B. Down C. Right D. Left

23. Study of dead body is Called
a. Thanatology B. Thalamology C. Both D. None

24. No.of adharniya vega told by charaka:
a.7 B.8 C.6 D.13
25.Hingwadi choornam indicates by charaka:
a. Jwara B. Gulma
C. Pravahika D. Ajeerna
26. Granthi:
a. Chedana B. Lekhana C. Vedhna D. None
27. Cervix turns blue during pregnancy :
a. Chadwik sign B. Ectopic pregnancy
C. Osiander sign D. None
28. Umbilicus level of fetus:
a. 24th wk B. 28 wk C. 40 wk D. 32 wk
29. Low birth weight baby...less than
a. 2500 gm. B.2000 gm. C. 3000 gm. 3500 gm.
30.Lodhrasava which indication:
a. Prameha B. Pandu.
C. Kamala. D. Raktapitta
31. Mrithbhakshana can lead to:
a. Pandu B. Gulma C. Grahani D. Jwara
32. Arsas use of ballathaka in:
a. Suska B. Ardra C. Both D. None
33. Phakka types. a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
34. Taila for phakka types
a. Raj Taila B. Tila Taila C. Bala Taila D. None
35. Age of marriage for males by susrutha:
a.16 B.21 C.25 D. 27
36. Malam adho nayet:
a. Sramsanm B. Anulomanam
C. Bhedanm D. Rechana
37. Sharat rithu taste which rasa:
a. Madhura B. Lavana C. Tikta D. Amla
38. Karpoora vargeekarana said by:
a. BP B. None C. Madanapala D. A and c
39. Ajakajatha:
a. Krishna mandala B. Netra sandhi
C. Drishti mandala d. None
40. .....Virya of pippali
a. Shita B. Ushna C. Anushana shita D. None
41. Gokshura and punarnava are mutrala but gokshura have special property of .... Shodana:
a. Basthi B. Medra C. Vrishna D. None
42. Hareethaki .....vipaka:
a. Madhura B. Ushna C. Katu D. None
43. Gudoochi ..... Veerya
a. Shita B. Ushna C. Anushana shita D. None
44. Length of small intestine of female .... meter .
a. 3 B. 4 C. 3.1/2 D. 4.1/2
45. Cervix turns blue in which sign of pronunciation a. Malignancy B. Pregnancy
C. Benign Growth D. None
46.Cervix turns softs which rule
a. Goodell's sign B. Hegar's sign
C. Vaginal sign D. Piskaceks sign
47. Ajeerna avastha sometimes sleep is indicated there is the condition where it is particularly indicates:
a. Amajeerna B. Rasasheshajeerna
C. Vidagdhajeerna D. Vishtabdhajeerna
48. Ardhasakthi vyayama identified by loha Gandhi: a. Niswasa B. Grama Pradurbhava
C. Seegra swasa D. Stamba swasa
49. AH Advocates Use of rasanjana to perfect eye in the form of:
a. Anjana B. Lepa C. Upanaha, D. Chooma
50. Padaprakshalana is ....prasadhana by su
a. Maharana B. Vrisya
C. Chakshusya D. Abc
51. Takrapana condition acc.to su:
a. Margavarodam. B. Vayudushti.
C. Agnimadym D. Abc
52. Kumbika pranayama can be:
a. Ujjayi B. Seethkari C. Seethaki D. Abc
53. During intake of food, su advocated dadima phala:
a. Before food B. Along food
C. After food D. In b/w food

(Hyd.) Vijay Wada Entrance (2011)

1. This is considered as tantra dosha
a.Vikalpa b. Viparyaya c. Vidhana d. Vyahaja
2. These are called as trisootra:
a. Satwa, Atma, Sarira b. Prana,dana,paraloka c. Vata,pitha,kapha d. Hetu,linga,aoushada
3. Katuka & lavanatwa are the characteristics features of:
a. Kshara b . Lavana c. Mutra d. Sneha
4. The common lakshna in vaidya and paricharaka :
a. Upacharajnata b. Dakshym
c. Anuragm d. Drishtakarmata
5. In this adyaya chatushka of cha. sa, the description of trayopasthamba is available:
a. Swastha b. Nirdesa
c. Annapana d. Kalpana
6. In which chapter of cha.sa ,is the description of aturalaya?:
a. Sweda vidhi b. Sneha vidhi
c. Upakalpaneeya d. Phalamatra sidhi
7. The author who mentioned dhamani marma:
a. Charaka b. Bhavamisra
c. Sargadhara d. Vagbhata
8. Anubandha is the synonym of :
a. Satwa b. Atma c. Ayu d. Sorority
9. Length of the tongue cleaner acc. To charaka : a. 10 angul b. 8 angul c. 12 angul d. 16 angul
10. Purisha veganirodha causes:
a. Sirasula b. Pindikodweshtana
c. Admana d. All
11 Chakrapani suggested the procedure of ksharasutra in:
a. Arsas b. Bhagandara
c. Nadivrana d. All
12. Dwividha vipaka vada is the contribution of:
a. Cha.Sa b. Su.Sa c.A. S d. A. H
13. No. Of dasaimani groups mentioned in cha.sa: a. 10 b. 37 c. 25 d. 50
14. This is to be known by karmanishta:
a. Veerya b. Rasa c. Vipaka d. Prabhava
15. Vipaka is the end product of:
a. Rasa b. Jimakriya c. Ahara d. Guna
16. Nindya rasa in tharuna jwara acc. To charak:
a. Lavana b. Madhura c. Tikta d. Kashaya
17. No. Of parade gunas:
a.20 b.5 c.10 d.41
18. This the best medo anilahara drug:
a. Kanchanara b. Puga
c. Nirgundi d. Sallaki
19. The panchaboutic components of kashaya rasa:
a. Vayu+prithwi b. Vayu+akasha
c. Vayu+agni d. Vayu+jala
20. Dosha chaya means:
a,. Increase in dosha b. Spread of dosha
c. Swasthane dosha vridhi d. Vata prakopa
21. Diff. types of vatsanabha are first described in:
a. Bha.pra.ni b. Sodalanighantu
c. Su.sa d. Bhela samhitha
22. Karnavedha is first described in:
a. Su.sa b. Ka.sa
c. Hareetha sa d. Bhela samhitha
23.The author who mentioned rithusandhi for the first time:
a. Cha b. Su c. Vag d. Sargadhara
24. In which chapter of su.samhita,the practical training of surgery is described?
a. Dwivraneeya b. Pranasthasalyavijuaniya
c. Yogyasutriya d. Prabhashaniya

25. Ayurveda is termed as panchanma veda by :
a. Kasyapa b. Vagbata c. Ch d. Su
26. Pramana of janu marma:
a.3 angul b. 2 angul c.1 angul d.none
27. The name of chaturthakala:
a. Medoahara b. Sleshmadhara
c. Purishadhara d. Raktadhara
28. Dantha comes under this type of asthi:
a. Taruna b. Ruchaka c. Valaya d. Kapala
29. No. Of sira acc to su:
a.700 b.800 c.600 d.725
30. Sira,after taking the snehm of medas attains kharapaka and produces:
a. Peshi b. Kandara c. Snayu d. Twacha
31. The no. Of sandhis in the koshta:
a. 54 b. 59 c. 58 d. 56
32. The panchendriyatwa of kurchasira marma:
a. Vayu+agneya b. Agneya
c. Soumyagneya d. Vayavya
33. Ayama of purusha acc. To su.
a. 120 angul b. 130 angul c. 140 angul d. 110 angul
34. Number of kurchas in the medra:
a. 1 b. 2 c. 6 d.3
35. Acc. To su phuppusa is formed by :
a. Sonitha b. Sonithaphena
c. Kapha d. Kaphaphena
36. As per structure nabhi marma is considered as :
a. Mansamarma b. Siramarma
c. Snayumarma d. Sandhimarma
37. The no.of satwika manorogas as per su:
a. 12 b. 11 c. 10 d. 14
38. The no. Of raktavahini sira s in yakrit and pliha:
a. 180 b. 195 c. 175 d. 170
39. The result of perfoming siravydhan mamsa sira asthi snayu sandhi marmas:
a. Sopha b. Vaikalya c. Marana d. All
40. The injury to this marma is not fatal:
a. Sadyapranahara b. Vaikalyahara
c. Kalantharapranahara d. All
41. Manjishta belongs to this family:
a. Ramaceae b. Rubiaceae
c. Rutacea d. Anacardaceae
42. No plants survive in the surrounding s of this species:
a. Ahiphena b. Vishatinduka
c. Vatsanabha d. Vishapushpaka
43 Harithaki is give with guda in this season :
a. Sharat b. Sisira c. Vasantha d. Grishma
44. Drug of choice in asthibhagna:
a. Pterocarpus marsupeum b. Saraca indica
c. Cissus quadrangularis d. Tricho desmaindicum
45. The drug of choice in raktapitta:
a. Adathoda vasica b. Fumaria parviflora
c. Pongamia glabra d. Withania somnifera
46.Samhita is the syn of:
a. Vamsalochana b. Parasikayavani
c. Ajamoda d. Satapushpa
47. The useful part of agnimantha:
a. Root b. Rootbark c. Stem d. Stembark
48. This is known as sigruni:
a. Sigrubeeja b. Sigrutwak
c. Sigruswarasa d. Sigruvriksha
49. The useful part of lavanga :
a. Fruit b. Flower c. Twak d. Stem
50. Bramara is the variety of:
a. Japa b. Janthu c. Madhuparni d. Madhu
51. The action of kritamala is: a. Anuloma
b. Rechana c. Sramsana d. Bhedana
52. Berginia lingulata is the latin name of:
a. Patala b. Paravatapadi
c. Pashanabhedi d. Pichumarda
53. This is known as sweet flag in english :
a. Acorus calamus b. Anacyclus pyrethrum
c. Erythrina indica d. Withania somnifera
54. The fruit of chavya is known as:
a. Pippali b. Gajapippali
c. Phalapippali d. Kapipippali
55.Rohini is the variety of this drug :
a. Amalaki b. Lasuna
c. Ahiphena d. Harithaki
56. Mushaka is the synonym of:
a. Harathala b. Kapardika
c. Mridaasringa d. None
57. This is known as redoxide of Hg:
a. Rasasindoora b. Rasakarpoora
c. Rasanjana d. None
58. Ideal part of Hg in the preparation of swarnavanga:
a. 1/2 of tin b. 1/4 of tin
c. 1/8 of tin d. 1/12 of tin
59. Parad attains nashtapishtatwa after this process:
a. Bahyadruti b. Garbhadruti
c. Murchana d. Mardana
60. Hg attains curative property after this samskara:
a. Mardana b. Marana c. Murchana d. Bhodana
61. So2 is releasd during the preparation of:
a. Makaradwaja b. Sidhamakaradwaja
c. Dwiguna balijaritha rasa sindoora d. All
62. Rodhana comes under:
a. Parad dosha b. Parad samskara
c. Rasapujana d. Rasagathi
63. Theraputically useful paka of rasaparpati:
a. Apaka b. Madyama c. Khara d. Dhagdha
64. Time of mukhamudrana during preparation of makaradwaj:
a. After sublimation of medicine
b. After fumes are released
c. On cessation of flames
d. After the gold deposits at the neck of the bottle
65. Parpati is considered as this bandha:
a. Pota b. Arota c. Pottli d. Abhasa
66. The chemical name of rasa sindoora:
a. Red oxide of Hg b. Red sulphide of Hg
c. Black sulphide of Hg d. Yellow oxide of Hg
67. These are the minerals of hg:
a. Realgar orpiment b. Quick silver-german silver
c. Cinnabar-metacinabar d. Calamine-cassiterite
68. The bahirmala of parade are removed by this samskara:
a. Mardana b. Murchana c. Uttapana d. Dipna
69. Istika choorna is used for purification of:
a. Parada b. Ballathaka
c. Parada and ballathaka d. Hingula
70. Rasaka is one of the ingredients of this medicine:
a. Somanatharasa b. Vasanthamalathirasa
c. Pradaranthakarasa d. All
71. Atipravrithi means:
a. Easy flow b. A variety of srotodushti
c. Doshadhikya d. Dushyadhikya
72. Sampraptiis:
a. Mutra pareeksha b. Part of diagnosis
c. Rogipareeksha d. Rogachikitsa
73. Hridroga comes under:
a. Abhyantara roga marga b. Bahya roga marga
c. Madhyama roga marga d. Purisha vaha srotas

74. Nadipareeksha comes under:
a. Sabda pareeksha b. Ashtasthana pareeksha
c. Rakta pareeksha d. Prasna pareeksha
75. Yapya means:
a. Lakshna b. Dosha
c. Treatment gives temporary relief d. Sadhya
76. Samkshipta kriya yogo-:
a. Chikitsa b. Nidanaparivarjanam
c. Vamanam d. Virechanam
77. Kavaigunya leads to :
a. Vedana b. Sotha c. Vyadhiutpati d. Lakshna
78. Hetu means:
a. Dosha b. Mala c. Mutra d. Roga karana
79. Roga pareeksha is done with the help of:
a. Nidana panchaka b. Prayogasala
c. Vaidyasala d. Vidyarthi
80. Purvaroopa manifests at this stage:
a. Avayava b. Stanasamsraya
c. Vyadhi d. Lakshna
81. "Skhalatahsamprathishthanam" is the benefit of:
a. Padarthadharana b. Vastradharana
c. Dandadharana d. Chatradharana
82. The rithu in which vamana etc is performed:
a. Sisira b. Varsha c. Hemantha d. Vasantha
83. This disease is the result of suppressing kshavadu:
a. Manyastamba b. Sirasula c. Ardita d. All
84. Klesa sahishnutha is the result of :
a. Vyayama b. Pranayama
c. Dhanurasana d. Ahara
85. This taila is most useful for nasya:
a. Dhanwantharamtailam b. Anutailam
c. Nirgunditailam d. Bilwa taila
86. Jihwa bhavatyaya vedini–this sign is caused by:
a. Vishayuktavayusevanam
b. Vishayuktaannasevanam
c. Vishayuktajalasevanm d. None
87. This type of visha is considered to have das adhistana:
a. Stavara visha b. Jangama visha
c. Gara visha d. Dushi visha
88. Harithala is considered as this type of visha:
a. Kanda visha b. Dhatuvisha
c. Phalavisha d. Mula visha
89. Sigragamithwa is the features of the serpa:
a. Rajimanta b. Mandali
c. Darvikara d. None
90. This is used to apply on the dundubhi:
a. Maha agada b. Rajagada
c. Kasharagada d. None
91. Kapha should be removed in this month:
a. Sravana b. Asvayuja c. Chaitra d. All
92. The result of chikitsa:
a. Dharma b. Artha c. Maître d. All
93. This is not a syn. Of kaya:
a. Kalevara b. Varshma c. Vigraha d. Oja
94. This is not one of the saptavida shamana:
a. Pachana b. Dipana c. Kshudha d. Stambana
95. This is not the syn of vyadhi:
a. Adhi b. Tama c. Papma d. None
96. Vidbheda is the nanatmajavyadhi of this dosha:
a. Vataja b. Pittaja c. Kaphaja d. None
97. The feature of vishamajwara:
a. Vishamarambha b. Vishamakriya
c. Anushangi d. All
98. This is known as nishpratyanikajwara:
a. Santata b. Satata c. Tritiyaka d. Chaturthaka
99. Susrutha has suggested pranayama in this disease:
a. Swasa b. Hikka c. Kasa d. All
100. Upadamsavat features are seen in the disease:
a. Phiranga b. Dwagabanga c. Sukraroga d. All
101. The rasayana useful in avritavata:
a. Guggulu b. Silajatu c. Chyavanaprasa d. All
102. Sarpi guda is useful in this disease:
a. Urakshata b. Sotha c. Grahani d. All
103. This is considered as sreshta vajikarana:
a. Stri b. Aswagandha c. Ahiphena d. Abhyanga
104. This is part of achara rasayana:
a. Ahimsa b. Gritha c. Kshira d. All
105. This is one of the abheshaja:
a. Bandhana b. Abandhana c. Ahitha d. Apathy
106. Basthi suitable for all times:
a. Asthapana b. Anuvasana c. Yapana d. Kshira
107. The pramana of pushpanetra of uttarabasthi in females acc.to ch: a.10a b.12a c.14a d.16a
108. Ullupta comes under this types of basthi vyapads: a. Netra b. Putaka c. Praneta d. All
109. As per charaka chitrakadi vati is mainly indicated in:
a. Atisara b. Grahani c. Vishoochika d. Visha
110. As per charaka,danthi hareethaki is mainly useful in:
a. Gulma b. Prameha c. Raktapitha d. Unmada
111. The nature of fever in vatabalasaka:
a. Thikshna b. Manda
c. Avisargi d. None
112. This causes cerebral malaria:
a. P. vivax b. P.ovale c. P. placifarum d. P. malaria
113. ASO titre is the specific test for:
a. Rhu.fever b. Rheumatoid arthritis c. Both d. SLE
114. This is the chikitsa sutra of krimiroga:
a. Prakrutisthapana b. Prakrutivighata
c. Krimivighata d. None
115. Kesada is the type of krimi:
a. Raktaja b. Pureeshaja c. Kaphaja d. Bahya
116. No. Of varieties of samdamsa yantra:
a. 3 b.2 c.4 d. None
117.The no. of yantra karmas: a.101 b.12 c.24 d.20
118. The length of tala yantra ..... angula.
a.16 b.14 c.12 d.10
119. Karapatrasastra in modern surgery can be taken as:
a. Knife b. Scalpel c. Saw d. Fingerknife
120. Bagandhara arsoyantra belongs to this catogary:
a. Upayantra b. Sandamsayantra
c. Nadiyantra d. Salakayantra
121. The pramana of eshai yantra:
a. 6a b. 4a c. 8a d. 10a
122. Main use of kutarika sastra:
a. Chedana b. Bedana c. Lekhana d. Vyadhana
123. The no. Of anusastras: a.12 b.13 c.14 d.15
124. No. Of doshaja vruna acc: To ch:
a.14 b.15 c.10 d.20
125. Acc. To this author grahana is a type of sastrakarma: a. Vagbata b. Ch c. Bhavamisra d. Su
126. Dushyodara is another name of:
a. Sannipathodara b. Dakodara
c. Parisravyudara d. Budhagudodara

127. This is not a type of sandhibagna:
a. Utpishta b. Vislishta c. Pichita d. Vivarta
128. No. Of sukra dosha acc. To su:
a. 8 b. 10 c. 11 d. 12
129. The place suitable for siravyadhana in plihodara:
a. Rt. arm b. Lt foot c. Lt.am d. Rt. foot
130. Agnikatrma is contraindicated in :
a. Ustragriva b. Parisravi c. Sataponaka d. None
131. Upakusa is the disease related to:
a. Nasa b. Danta c. Dantamoola d. Talu
132. Kalaka choorna is useful in :
a. Karna roga b.Siroroga c. Mukaroga d. Udararoga
133. Dipta roga is:
a. Karnaroga b. Danthamoolagataroga
c. Netraroga d. Nasaroga
134. This is useful in vataja pratisyaya:
a. Anutaila b. Pathyadithaila
c. Manahsiladithaila d. Bharugyadithaila
135. Pitakachoorna is useful in:
a. Muka roga b. Nasaroga c. Karnaroga d. Siroroga
136. Rapid growth is the chareactristics fetur of cataract:
a. Traumatic b. Senile c. Cortical d. Capsular
137. The part of the eye that is collected in the eye donation:
a. Sclera b. Cornea c. Retina d. Whole eye ball
138. Egg yolk like discharge is seen in:
a. Kumbika b. Anjana namika c.Utsangini d. Lagana
139. The synonym of pindi:
a. Kavalika b. Avagundana c. Putapaka d. Vidalaka
140. Kalakasthi means:
a. Netrabandana b. Netrasandhi
c. Tarunasthi d. Netramala
141. What happens in the uterus during perpurium:
a. Inversion b. Involution
c. Placental expultion d. Foetal expulsion
142. A non pregnant uterus weighs:
a. 50-80 b. 20-40 c. 800-1000 d. 200-300
143. Complication of third stage of labour:
a. Haemorrhage b. Inversion
c. Rupture uterus d. Haemorrhage and inversion
144. Robert's sign means:
a. Neonatalasphysia b. IUD
c. Pregnancy d. A stage of labour
145. The time taken for first and second stage of labour in multigravid:
a. 8hrs b. 10 hrs c. 6 ½ hrs d. 9 ½ hrs
146. Haemorahage in early pregnancy is due to:
a. Abortion b. Polyp c. Ruptured varicose vein d. All
147. This is indicated in the garbhini chardi:
a. Laja b. Bhunimba c. Bilwamajja d. All
148. No.of yoni vyapad acc. To ch.:
a. 24 b. 64 c. 20 d. 8
149. The main symptm of arajaska acc to :
a. Atyartava b. Kashtartava
c. Artavaadarsana d. Artaakshaya
150.The coitus with alow age group girl leads to
a. Acharana b. Athicharana
c. Prakcharana d. Karnini
151. The nomenclature of child should be done on this day after birth: a. 8th b. 10th c. 15th d. 30th
152. Annaprasanakala acc.tokasyapa:.... Month
a. 6th b. 8th c. 10th d.12th
153. The milk of a black cow is: a. Vatarakta
b. Vatasamaka c.Tridoshakar d. Tridoshsamak
154. The time of nishkramana samskara :
a. After 2 months b. After 4 months
c. Immidiately after birth d. After 6 months
155. No. Of dwija ddantas: a.8 b.12 c.16 d.24
156. The time of upavesana samskara:
a.4th b.6th c.8th d.10th
157. The oushadamatra should be given to acc. To sargadhara: for one year child
a.1 ratti b.5 ratti c. 1 masha d. 2 masa
158. The srotas that vitiates in sosharoga:
a. Rasavaha b. Rakthavaha c. Mamsa d. Medo
159. The no. of nabhi rogas acc. To ch:
a.3 b.4 c.5 d.6
160. The type of stanyadushti that leads to kshiralasaka:
a. Vata b. Kaphaja c.VK d. Tridoshaj

MEICAL OFFICER (AYURVEDA) EXAMINATION, 2011

1.निम्न में से कौन–सी कर्मसामान्य की परिभाषा है?
a. सर्वदा सर्वभावानां सामान्यं वृध्दिकारणं b. सामान्यमेकत्वकर्म
c. तुल्यार्थता हि सामान्यं d. नित्यत्वे सति अनेकानुगतं सामान्यं
2. निम्न में से कौनसे कथन सत्य हैं ?
a. आधार और आधेय भाव से आयुतसिध्द जो सम्बन्ध ज्ञान का कारण है वह समवाय है b. समवाय सम्बन्ध नित्य है
c. कभी भी द्रव्यों में गुण निश्चित नहीं रहता d. कभी भी द्रव्यों में अनिश्चित नहीं रहता
a. a, b. d b. a, c, d c. b, c, d d. a, b, d
3. कौनसा एक औद्भिद् द्रव्य समूह है?
a. चर्म,स्नायु, रोचन b. सुधा, मणि, अज्जन
c. सिकता, सुधा, मनःशिला d. त्वक, क्षीर, श्रृंग
4. निम्न में से कौनसा मूत्र 'श्वास' – कास – अर्शनाशक' है?
a. अजा मूत्र b. गो –मूत्र c. महिष मूत्र d. औष्ट्र मूत्र
5. सही मिलान कीजिये तथा नीचे दिए उत्तरों में से सही उत्तर चुनिए :

पञ्चकर्म	पञ्चकर्मार्थ द्रव्यसंग्रह
1. शिरोविरेचन	a. शालपर्णी, पृश्नपर्णी, पुनर्नवा
2. वमन	b. त्रिवृत, त्रिफला, आरग्वध
3. विरेचन	c. पिप्पली, कुटज, एला
4. अस्थापन	d. पिंप्पली, मरिच, विडंग

Answer (उत्तर) :
a. (1)–a., (2)–b., (3)–c., (4)–d.
b. (1)–c., (2)–d., (3)–b., (4)–a.
c. (1)–d., (2)–c., (3)–b., (4)–a.
d. (1)–a., (2)–c., (3)–b., (4)–d.
6. निम्न में से किसका प्रयोग अपस्मार –घ्राणनाशक – प्रमोहक में शिरोविरेचनार्थ किया सकता है ?
a. शिरिषबीज, लशुन, हरिद्रा b. कम्पिल्लक, गवाक्षी, क्षीरीणी
c. शालपर्णी, पृश्नपर्णी, उदकीर्या d. बला, श्वदंष्ट्रा, पुनर्नवा.
7. सही मिलान कीजिए तथा नीचे दिये उत्तरों में से सही उत्तर चुनिए :

द्रव्य	महाकषाय
1. Cyperus rotundus	a. दीपनीय, तृप्तिघ्न, अशोघ्न
2. Plumbago Zeylanica	b. लेखनीय, तृप्तिघ्न, कण्डुघ्न
3. Picrorhiza kurroa	c. लेखनीय, भेदनीय, दीपनीय
4. Zinziber Officinalis	d. लेखनीय, भेदनीय, बल्य

Answer (उत्तर) :

a. (1)–a., (2)–b., (3)–c., (4)–d.
b. (1)–b., (2)–c., (3)–d., (4)–a.
c. (1)–c., (2)–b., (3)–d., (4)–a.
d. (1)–d., (2)–c., (3)–b., (4)–a.

8. निम्न में से किस ज्वर से पीडित व्यक्ति का ज्वर प्रतिदिन बढता ही जाता है एवं असाध्यतम् होता है ?

a. विषम ज्वर b. शापाभिचारज ज्वर
c. सन्तत ज्वर d. सतत ज्वर

9. निम्न में से किस रोग में 'कास' नामक उपद्रव आशुकारी (शीघ्रमारक) होता है?

a. ज्वर b. रक्तपित्त c. राजयक्ष्मा d. क्षतक्षीण

10. " स्निग्धप्रसन्नवक्त्रत्वं श्रीमद्दर्शन नेत्रता " किस रोग का लक्षण है ?

a. कफज शोफ b. मृदभक्षणजन्य पाण्डु
c. जलोदर d. क्षयज कास

11. निम्न में से किस रोग में प्राणवह, उदकवह तथा अन्नवह स्रोतसो की दुष्टि होती है ?

a. राजयक्ष्मा b. जलोदर c. श्वास d. ये सभी

12. Colorectal cancer की staging के लिए किस विधि का प्रयोग किया जाता है ?

a. Duke's classification b. Figo classification
c. Ann arbar classificatio d. TNM classification

13. सही मिलान कीजिये तथा नीचे दिये उत्तरों में से सही उत्तर चुनिये :

	उत्कटार्बुदता	विषाणु
1.	टी– सेल ल्यूकोमिया	a. ईप्सटिन – बार वायरस
2.	सरवाइकल कँसर	b. हिपेटाइटिस – बी वायरस
3.	हिपैटोसेलुलर कारसीनोमा	c. ह्यूमन पैपिलीमा वायरस
4.	बरकिट लिम्फोमा	d. रेट्रोवायरस

Answer (उत्तर) :

a. (1)–a., (2)–b., (3)–c., (4)–d.
b. (1)–d., (2)–c., (3)–b., (4)–a.
c. (1)–c., (2)–b., (3)–d., (4)–a.
d. (1)–d., (2)–c., (3)–a., (4)–b.

14. "क्लैयवाधिर्यतैमिर्यशर्कराश्मीरिपीडितः" किस रोग का लक्षण है?

a. अर्श' b. मूत्रकृच्छ्र c. पाण्डु d. राजयक्ष्मा

15. मूत्राशय का कभी क्षण भर में भर जाना तथा क्षण भर में रिक्त हो जाना किस रोग की कृच्छ साध्यता है?

a. मूत्रकृच्छ्र b. मूत्राघात c. मधुमेह d. अश्मरी

16. 'अलजी' नामक रोग है :

a. प्रमेहपिडिका b. नेत्रसन्धिज रोग c. शूकदोष d. सभी

17. पृथु, उन्नत एवं ग्रथित किस रोग के भेद है.?

a. गलगण्ड b. शोफ c. ग्रन्थि d. वृध्दिरोग

18. प्राय : स्फिक, पाणि तथा कूर्परप्रदेश पर होने वाला कण्डु तथा क्लेदयुक्त कुष्ठ है : a. विपादिका b. शतारू c. मण्डल d. पामा

19. सही मिलान कीजिये तथा नीचे दिये उत्तरों में से सही उत्तर चुनिए :

1. बर्हिरायाम a. अर्दित
2. एकांगरोग b. अपतन्त्रक
3. एकायाम c. धनुस्तम्भ
4. अपतानक d. पक्षवध

a. (1)–c., (2)–(e), (3)–b., (4)–a.
b. (1)–b., (2)–(e), (3)–a., (4)–c.
c. (1)–c., (2)–d., (3)–a., (4)–b.
d. (1)–c., (2)–(e), (3)–b., (4)–a.

20. अत्यन्त पीडायुक्त हो जाने पर किन रोगों को खल्ली कहा जाता है?

a. वातकण्टक एवं गृध्रसी b. गृध्रसी एवं विश्वाची
c. वातकण्टक एवं विश्वाची d. कलायखञ्ज एवं वातकण्टक

21. एक रोगी में लक्षण है–ज्वर, दाह, पिपसा, धूमगन्धी, श्वास। उसका निदान है

a. अम्लपित्त b. विदग्धाजीर्ण c. धूमोपहत d. मदात्यय

22. इन्द्रमद नामक व्याधि होती है :

a. सविष जलौका b. निर्विष जलौका
c. सम्यक रक्तपान की जलौका d. दुर्वान्ता जलौका

23. आमलक्यादि अवलेह का सेवन वर्जित नही है :

a. प्रातः सायं b. प्रातःकाल c. सायंकाल d. रात्रिकाल

24. सुश्रुतानुसार रजोनिवृत्ति आयु है :

a. 40 वर्ष b. 50 वर्ष c. 60 वर्ष d. 70 वर्ष

25. एक रोगी क्षारकर्म के बाद खुजली बताता है, उसका दग्ध होगा :

a. सम्यक दग्ध b. हीन दग्ध c. अति दग्ध d. मध्यम दग्ध

26. कुवैध की उत्पत्ती का प्रमुख कारण है :

a. अशिक्षा b. अनुशासनहीनता c. नृपदो d. गुरूदोष

27. दूसरे दिन व्रणबन्धन खोलने पर होता है :

a. जल्दी व्रणरोहण b. कम वेदना c. गाँठे पडना d. कम स्राव

28. गूढशल्य को निकालने में प्रयुक्त होता है :

a. स्वस्तिक यन्त्र b. नाडी यन्त्र c. सिंहमुख्यादि यन्त्र d. ककमुखादि यन्त्र

29. 'शक्रगोपोज्वलामाही' कथन सम्बन्धित है :

a. शुध्द शुक्र से b. शुध्द रक्त से c. शरद ऋतु से d. प्रावृत ऋतु से

30. कृमिज रोग में वमन चिकित्सा समान होती है :

a. कृमिज पाण्डु b. कृमिज शिरोरोग c. कृमिज पीनस d. कृमिज हृदरोग

31. नव ज्वर में वमन कराने से उत्पन्न होता है :

a. हृद्रोग b. आनाह c. मोह d. ये सभी

32. 'शुक्रायतं बलं पुंसां मलायतं तु जीवनम' राजयक्ष्मा के सन्दर्भमें किसमें वर्णित है?

a. चरक संहिता b. भावप्रकाश c. योगरत्नाकर d. भैषज्य रत्नावली

33. 'पर्याकुला दृष्टिधरता' लक्षण है :

a. अपस्मार का b. उन्माद का c. अपतन्त्रक का d. अपतानक का

34. ज्वर में यवागूनिषिध्द है जब :

a. पित्त बढा हो b. वात बढा हो c. कफ बढा हो d. दोनों A & C

35. चरक द्वारा वर्णित क्षार गुटिका में है :

a. तीन लवण, दो क्षार b. दो लवण, दो क्षार
c. चार लवण, दो क्षार d. दो क्षार, एक लवण

36. नवायस लौह में लौह की मात्रा एवं अनुपान है :

a. 1 भाग लौह, b. 3 भाग लौह, घृत
c. 9 भाग लौह, शहद d. 9 भाग लौह, शहद एवं घृत

37. Bone Mass मापने की श्रेष्ठ तकनीक है :

a. Dual energy X-ray Absorptionmetry
b. Single energy X-ray Absorptionmetry
c. Quantitative computed tomography
d. Ultrasonography

38. एक रोगी में लक्षण है : Tachyeardia, low grade fever, neck vein distension उसका संभावित निदान होगा :

a. Pulmonary thrombeembolism b. Pulmonary infarction c. Pleural effusion d. C.O.P.D.

39. Cor – Pulmonale में होता है :
a. Right ventricle enlargement b. Abnormlity in Lung, thorax
c. Abnormality in pulmonary ventilation d. All of the above
40. Irrtable bowel syndrome में होता है :
a. Predominant Diarrhoea b. Predominant Constipation
c. Predominant Pain d. All of these
41. निम्नलिखित कथनों में सही /गलत बताईये :
(1) भस्मेश्वर रस का प्रयोग प्रमेह में किया जाता है।
(2) इसमें उपले की राख, मरिच एवं वत्सनाभ है।
a. (1) एवं (2) दोनों सही है b. (1) एवं (2) दोनों गलत है
c. (1) सही एवं (2) गलत है d. (1) गलत एवं (2) सही है
42. भल्लातक का संग्रह काल है :
a. ज्येष्ठ, आषाढ b. क्वार, कार्तिक
c. श्रावण, भाद्र d. माघ, फाल्गुन
43. हरीतक्यादि रसायन का अनुपान है ?
a. दुग्ध b. उष्णोदक c. मधु d. तक्र
44. 'बदनांगराग' किसका लक्षण है :
a. पित्तज ज्वर b. पित्तज प्रमेह c. पित्तज गुल्म d. पित्तज अतिसार
45. आमविष कफ से मिलकर रोग उत्पन्न करता है :
a. राजयक्ष्मा b. मूत्ररोग c. आम्लपित्त d. मुखरोग
46. 'वदनस्य कषायता' किसका पूर्वरूप है :
a. कास b. श्वास c. हिक्का d. ग्रहणी
47. निम्नलिखित में सही/गलत बताइये :
1. कण्टकारी घृत का प्रयोग वातज कास में करते है।
2. कण्टकारी घृत में कण्टकारी, गुडुची एवं गोघृत है।
a. 1 सही 2 गलत है b. 1 गलत 2 सही है
c. 1 एवं 2 दोनों सही है d. 1 एवं 2 दोनों गलत है
48. आनाह रोग की चिकित्सा है :
a. वमन b. लंघन c. 1 एवं 2 दोनों सही है d. 1 एवं 2 दोनों गलत है
53. पित्तज कास की किस अवस्था में विरेचन करायेंगे ?
a. जब कफ हीन हो b. जब वात हीन हो
c. जब पित्त हीन हो d. जब कफ – वात हीन हो
54. चरक के अनुसार अभयारिष्ट में है :
a. हरीतकी ½ प्रस्थ, आमलकी 1 प्रस्थ
b. हरीतकी 1 प्रस्थ आमलकी ½ प्रस्थ c. हरीतकी 1½ प्रस्थ
d. हरीतकी 1 प्रस्थ, आमलकी 1 प्रस्थ, विभीतकी 1 प्रस्थ
55. तक्रारिष्ट का प्रयोग किस समय करते हैं ?
a. प्रातः b. मध्याह्न c. सायं d. सभी काल में.
56. एलादि गुटिका में एला, तेजपत्र एवं दालचिनी की मात्रा क्रमशः है :
a. ½ कर्ष, 1 कष, 2 कर्ष b. ½ कर्ष, ½ कर्ष, 1 कर्ष
c. ½ कर्ष, ½ कर्ष, ½ कर्ष d. ½ पल, ½ पल, ½ पल
57. यस्य रोपणे शक्तिः स .....। (हेमाद्रि) :
a. विशद b. पिच्छिलः c. श्लक्ष्ण d. सर
58. गुर्वादि गुण को कर्मण्य गुण किसने माना है ?
a. शिवदास सेन b. नागार्जुन c. चरक d. भावप्रकाश
59. Women's bane किसका नाम है ?
a. धत्तूरा b. वत्सनाभ c. कलिहारी d. भांग
60. Thalidomide का teratogenic effect है :
a. Cleft palate b. Foetal death
c. Phocomelia d. Depressed nose
61. आचार्य चरक ने वर्षा ऋतु में होने वाले ज्वर को कहा है :
a. प्राकृत एवं कृच्छ्रसाध्य b. वैकृत एवं कृच्छ्रसाध्य
c. प्रकृत एवं सुखसाध्य d. वैकृत एवं सुखसाध्य
62. 'मर्मच्छेदो यहिःशैत्यं' लक्षण है :
a. अस्थिधातुगत ज्वर b. मांसधातुगत ज्वर
c. मज्जाधातुगत ज्वर d. इनमें से कोई नही.
63. 'षंडगपानीय' में नही है :
a. मुस्तक b. शुष्ठी c. उशीर d. चिरायता
64. समगर्भ लिग लक्षण है :
a. कफज गुल्म का b. पित्तज गुल्म का
c. रक्तज गुल्म का d. सन्निपातज गुल्म का
65. दन्ती हरीतकी में दन्ती व हरीतकी का प्रमाण हैं :
a. दन्ती 25, हरीतकी 25 b. दन्ती 25, पल, हरीतकी 25 पल
c. हरीतकी 25, दन्ती 25 पल d. दन्ती 25 कर्ष, हरीतकी 25 पल
66. कुष्ठ रोग में दुष्य का क्रम है :
a. रक्त, मांस, त्वक, लसीका b. त्वक, रक्त, मांस, लसीका
c. लसीका, मांस, त्वक, रक्त d. त्वक, मांस, रक्त, लसीका
67. तालीशादि चूर्ण में पिपाली एवं शर्करा अनुपात है :
a. 1 : 4 b. 1 : 8 c. 1 : 16 d. 1 : 32
68. शंख केशान्त संधि पर सिरावेध किया जाता है :
a. उन्माद रोग में b. विषम ज्वर में
c. अपस्मार में d. उपर्युक्त सभी में
69. 'विषमो कुरूते बुध्दि' :
a. उन्माद b. अतत्वाभिनिवेश c. अपस्मार d. कुष्ठ
70. कंस हरीतकी में हरीतकी की मात्रा होती है :
a. 200 b. 100 c. 300 d. 100
71. ' जातं जातं जलं साव्यं .....चिकित्सा सूत्र है।
a. छिद्रोदर b. प्लीहोदर c. जलोदर d. मूत्रकृच्छ्र
72. गुल्म रोग में नारायण चूर्ण का अनुपान है :
a. बेर क्वाथ b. दाडिम स्वरस c. प्रसन्ना d. वृक्षाम्ल
73. पाँचों वायु, पाँचो पित्त, पाँचों कफ विकृत होते है :
a. पाण्डु b. गुल्म c. अर्श d. अश्मरी
74. आहार को आमाशय में ले जाने का कार्य है :
a. प्राणवायु b. उदान वायु c. व्यान वायु d. समान वायु
75. पंचकर्म द्वारा चिकित्सा का निर्देश है :
a. वातज ग्रहणी b. पित्तज ग्रहणी c. कफज ग्रहणी d. त्रिदोषज ग्रहणी
76. 'तमसा वर्धतेऽत्यर्थं' शीतैश्चाशु प्रशाम्याति' सम्बन्धित है :
a. संतमक श्वास b. महाश्वास c. उर्ध्वश्वास d. छिन्न श्वास
77. विसर्प में दूष्य का क्रम है :
a. रक्त, लसीका, त्वक, मांस b. त्वक, रक्त, मांस, लसीका
c. त्वक, रक्त, लसीका, मांस d. इनमें से कोई नहीं
78. 'खदिरारिष्ट' की चिकित्सा है :
a. रक्त धातुगत विष में b. मांस धातुगत विष में
c. मेद धातुगत विष में d. रसगत विष में
79. उरूस्तम्भ की चिकित्सा है :
a. स्नेहयुक्त विरेचन b. वमन
c. क्षपण, शोषण, शमन d. इनमे से कोई नहीं

80. अभयारिष्ट का मुख्य घटक है :

a. हरीतकी b.आमलकी c. विभीतकी d. विडंग.

81. भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारी में " अधिकारपृच्छा लेख" का क्या अर्थ है ? a. पूर्ण रूप से सूचना पाना b. हम आज्ञा देते है c. कार्य करने से रोकना d. किस शक्ति द्वारा

82. भारतवर्ष में किस संवैधानिक सं शोधन के द्वारा शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार का दर्जा दिया गया है ?

a. 86 वाँ b. 91 वाँ c. 93 वाँ d. 80 वाँ

83. "भारत की आकस्मिक निधि" किसके नियन्त्रणाधीन होती है ?

a. संसद b. राष्ट्रपति c. कैबिनेट d. लोक सभा स्पीकर

84. इल बतूता कौन था ?

a. अरब यात्री b. तुर्की यात्री c. मंगोलियन यात्री d. मोरक्को यात्री

85. लिंगराज मन्दिर कहाँ स्थित हैं ?

a. भुवनेश्वर b. लखनउ c. तिरूपति d. वाराणसी

86. "फादर ऑफ जेनेटिक्स" किसे माना जाता है ?

a. पास्तेर b. मेंडल c. जे. वाटसन d. जेनर

87. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में 5 स्थायी सदस्य है। बाकी 10 सदस्य महासभा द्वारा कितने वर्षो के लिए चुने जाते है ?

a. 1 वर्ष b. 2 वर्ष c. 3 वर्ष d. 4 वर्ष

88. "क्योटो समझौता" किस वर्ष अस्तित्व में आया ?

a. 1995 b. 2002 c. 2010 d. 2005

89. "भारत रत्न पुरस्कार" कब शुरू किया गया ?

a. 1954 b. 1947 c. 1950 d. 1958

90. "फाकलैंड युध्द" अर्जेंटीना और ब्रिटेन के मध्य कब हुआ ?

a. 1978 b. 1980 c. 1982 d. 1985

91. मण्डी राज्य के इतिहास में किस व्यक्ति को बलवान योध्दा की संज्ञा दी जाती है ? a. बैरागी राम b. खन्नून c. शोभा राम d. धारी खत्री

92. मण्डी के किस शासक ने पराशर झील के पास पराशर मन्दिर का निर्माण किया था ?

a. कल्याण सेन b. हीरा सेन c.अंजवर सेन d. वाण सेन

93. हाथी धार किस जिले में है ?

a. कुल्लू b. कांगडा c. चम्बा d. सिरमीर

94. निम्नलिखित में से कौनसी उप-तहसील नही है ?

a. रोनहाट b. मोहराधार c. कमराउ d. शिलाई

95. हिमाचल प्रदेश 2001 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या घनत्व कितना था ?

a. 124 b. 85 c. 102 d. 109

96. "शैशूर गोम्पा" कहाँ पर है ?

a. लाहील घाटी b. स्पिति घाटी c. उदयपुर घाटी d. सांगला घाटी

97. 2001 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजातियाँ की कुल जनसंख्या थी?

a. 2, 44, 581 b. 2,09,991 c. 1,60,540 d. 3,03,404

98. हिमाचल प्रदेश को "ग" श्रेणी का दर्जा किस वर्ष मिला ?

a. 1947 b. 1948 c. 1952 d. 1956

99. नूरपूर के राजा जगत सिंह की मृत्यू किस वर्ष हुई ?

a. 1602 b. 1646 c. 1678 d. 1556

100. सारी ठकुराई की स्थापना किसने की थी ?

a. धर्मे सिंह b. पूर्ण चन्द c. मूल चन्द d. कर्म सिंह

B.H.U. VARANASI 2011

1. As per Shusruta Udvahana is function of which prakritstha vata -

a. Pranavaya b. Apanavayu c. Vyanavayu d. Udanavayu

2. The oldest and commonest route of drug administration is

a. Skin b. Rectal c. Oral d. Nasal

3. In yogashastra the coloure of Swadhisthana chakra is considerd as -

a. Red b. Yellow c. Blue d. Orange

4. Kashyapa ghrita is indicated in -

a. Phakka roga b. Balaroga c. Dantaroga d. Netraroga

5. Convulsion during or after anaesthesia may be associated with-

a. Thiopentone b. Ether c. Ketamine d. Diazepam

6. As per Rasa Tarangini compounds of jayapala are contraindicated in -

a. Pravahika b. Baddhagudodara
c. Pregnant lady d. All of the above

7. Ventricular systole time in one cardiac cycle is -

a. 0.1 sec. b. 0.3 sec. c. 0.07 sec. d. 0.5 sec.

8. Which contraceptive pill is safe during lactation.

a. Mini Pill b. Biphasic Pill
c. Triphasic Pill d. All of the above

9. All of the following are pneumatic bones except -

a. Maxilla b. Perital c. Ethmoid d. Mastoid

10. In which disease Charaka has advised to take mixture of milk and urine of cow -

a. Kamala b. Pandu c. Raktapitta d. Vatarakata

11. Synonym of Pudgala is -

a. Purasha b. Prakriti c. Atma d. Mana

12. Which one guna is pittaghna and vatasleshmakara

a. Snigdha b. Shita c. Ruksha d. Manda

13. Which of the following vaccine is given subcutaneously

a. BCG b. Polio c. DPT d. Measles

14. As per Sushruta in curable Artavadushti is -

a. Granthi b. Kshina c. Kunapa d. All of the above

15. As per Sushruta in which of the following disease agnikarma with tail is not indicated -

a. Siragata Vyadhi b. Asthigata Vyadhi
c. Twachagata Vyadhi d. Sandhigata Vyadhi

16. Apakah Shunyata Angnam is symptom of which disease

a. Amavata b. Kustha
c. Vatavyadhi d. Vatarakata

17. Hanugraha, hridnigraha and varchonigraha are symptoms of atiyoga of -

a. Langhana b. Pachana
c. Stambhana d. Rukshana

18. Rasa known for Sarvadhatushosana and Lekhana too is-

a. Madhura b. Lavana c. Tikta d. Kasaya

19. Charaka has mentioned Arjuna in whcih mahakashaya

a. Hridya b. Udarda Prashmana
c. Mutra Sangrahniya d. Shoola Prashmana

20. Which one of the following is saumya guna yukta vaikalyakara snayu marma -
a. Vitapa b. Kshipra c. Kurpara d. Kurchashira
21. Which one is not a type of sagandha parpati -
a. Rasaparpati b. Manduraparpati
c. Mallaparpati d. Rheumatic fever
22. Rose spot are seen in which of the following -
a. Typhus fever b. Typhoid fever
c. Enteric fever d. Rheumantic fever
23. As per vagabhatta rasa present in Tama are -
a. Katu-Tikta b. Madhura - Amla
c. Kashaya.Katu d. Madhura. Tikta
24. The macromolecules which bind and interact with the drug are called.
a. Agonist b. Antagonist c. Receptor d. Ligand
25. " Rasa maruta sambhavah" is said about which shoola -
a. Vastishula b. Shiraha shula
c. Hrichchhula d. Udara shaula
26. All the following are yoga badhaka tatva except-
a. Doubt b. Desires c. Instability d. Enthusiasm
27. According to Sushruta which twacha is the seat of arsha
a. Shweta b. Rohini c. Masadhara d. Tamra
28. As per Kashyapa in paittika diseases for digestion of amapitta which rasa is to be used first -
a. Madhura b. Amila c. Tikta d. Kashaya
29. Which one of the following is not used as General Anaesthetic agent.
a. Ketamine b. Propofol c. Ether d. Bupivacaine
30. As per Charaka dosha predominant in vamini yonivyapada is-
a. Vata - Pitta b. Pitta c. Vata - Kapha d. None of above
31. Surgery is contraindcated in which of the following eye disease - a. Langana b. Anyatovata c. Pishtaka d. Pothaki
32. Flowers of which of the following for shiroviechna is mentioned by Charaka -
a. Nimba b. Shirisha c. Shobhanjana d. Sharshapa
33. Subarachnoid space in an adult extends upto the level of a. L2 b. L1 c. S2 d. S4
34. Gazette on Shelf life has affixed stability of Taila Kalpana for - a. 2 years b. 3 years c. 4 years d. 5 years
35. In case of renal Tuberculosis initial lesion develops in -
a. Renal pelvis b. Renal cortex
c. Renal medulla d. Hele's loop
36. Which one is not a viral infection in pregnancy-
a. Toxoplasmosis b. Rubella
c. Mumps d. Measles
37. The most common type of congenital cataract is -
a. Capsular b. Zonular
c. Coralliform d. Blue dot
38. Charaka has advised which kshara for the treatment of Raktagulma -
a. Narikela kshara b. Palasha kshara
c. Haridra kshara d. Apamarga kshara
39. To Study synonyms of drugs an addition of Nanarthavarga is contribution of -
a. Bhanvantari Nighantu b. Kaideo Nighantu
c. Raja Nighantu d. Madanpala Nighantu
40. Curable Pittaja carbuncles arising in a less medasa person is -a. Vinata b. Alaji c. Vidradhi d. All the above
41. As per Sushrate type of joint in nitamb is-
a. Kore b. Samudga c. Pratara d. Ulukhala
42. According to Charaka elimination of kapha be done in the month of-
a. Chaitra b. Shravana c. Agahana d. Pausha
43. Keratomalacia is seen in which of the following disease
a. Measeles b. Mumps c. Rubella d. Chikenpox
44. Which one belongs to Zingiberaceae family -
a. Tavakshira b. Rasona c. Haimavati d. Surana
45. In children commonest age group for dephtheria is
a. 1-2 years b. 2-5 years c. a. 2-7 years d. 2-9 years
46. Charaka has indicated Vrihatpanchamula with honey in which of the following disease -
a. Pratishyaya b. Shukrashmari
c. Atishaulya d. Pittashmari
47. Trauma to which marma causes loss of fuction and sensation of lower body -
a. Kukundara b. Katikataruna
c. Nitamba d. Parshvasandhi
48. Sputum can be disinfected by all except -
a. Boiling b. Drying c. Burning d. Autoclaving
49. According to Rasa Taragini Bhavana Dravya of Ichchhabhedi rasa is -
a. Milk b. Nimbu Swarasa c. Water d. Eranda Taila
50. Charaka has not mentioned which of the following Mahakshaya -
a. Deepaniya b. Pachaniya c. Kanthya d. Sangyasthapaka
51. As per Charaka Prananubandha is because of which garbhotpadakabhava.
a. Atmajabhava b. Satmyajabhava
c. Rasajabhava d. Satvajabhava
52. The sharpness of the edge of Vriddhipatra shastra is equal to the thikness of - a. Masur dala b. Half of masurdala c. Hair d. Half of the air
53. Amrita is used as shaka as well as ausadhi as found in -
a. Charaka Samhita b. Sushruta Samhita
c. A & B both d. Bhela Samhita
54. Sushruta has indcated Trividastaka yoga for the tresatment of which disease -
a. Vastishoola b. Pandu c. Visha d. All the above
55. Sushruta has indicated Trividastaka yoga for the treatment of whcih disease -
a. 8 angula b. 10 angula c. 12 angula d. 18 angula
56. Which of the following is advised by Charaka for the treatment of Atinidra -
a. Raktamokshana b. Shirovirechana
c. Kayaviredana d. All the above

57. According to Charaka prakrita kapha is -
a. Shukra b. Swasthya c. Oja d. All to the above
58. According to Charaka milk of which of the following is shakhagata vatahara -
a. Ewe b. Goat c. Mared. Cow
59. When silver is melt on fire approximate percentage loss of metal is - a. 2 b. 3.68 c. 4.2 d. 2.5
60. Oral rehydration fluid does not contain -
a. Sodium Chloride b. Calcium Chloride
c. Bicarbonate d. Glucose
61. Fat is maximally absorbed in which of the following
a. Ileum b. Colon c. Stomach d. Jejunum
62. As per Sushruta which of the following dental disease is very difficult to treat -
a. Paridara b. Dantvesta c. Kapalika d. Dantsharkara
63. Kumbhadwaya is synonym of -
a. Visuchika b. Atisara c. Pandu d. Adhmana
64. Matri - Ptrivada is related with-
a. Sharloma b. Kaushika c. Bharadwaja d. Bhadrakapya
65. As per Sushruta manyastambha and severe pain at the back of neck are symptoms of which shiroroga.
a. Shankhaka b. Ardhvabhedaka
c. Anantavata d. Suryavarta
66. In which of the following disease Charaka has advised Langhana through Pachana.
a. Hridroga b. Atisara c. Vibandha d. All the above
67. Recurrent dislocation are common in-
a. Shoulder b. Patella c. Hip joint d. Elbow joint
68. Which kshara is added in preparation of Nilinighrita, mentioned for the treatment of gulma.
a. Sajjikshara b. Yavakshara
c. Palashakshara d. Tilakshara
69. " Chaturvidham dwiprabhavam" is related to which of the following nasal disease -
a. Nasapaka b. Puyarakta c. Raktapitta d. Bhranshathu
70. Trauma to which of the following marma causes humkback type deformity
a. Sira marma b. Snayu marma
c. Asthi marma d. Mansa marma
71. Which one is a complication of vatarakta.
a. Mansakotha b. Vamana c. Kasa d. Atisara
72. Which dosha is responsible for generation of gyana.agyana according to Charaka -
a. Vata b. Pitta c. Kapha d. Ama
73. Drug resistance in tuberculosis is due to -
a. Mutation b. Conjugation
c. Tranduction d. Transformation
74. Which of the following is Stanya Prakopajanya eye disase -
a. Pothaki b. Upanaha c. Krimigranthi d. Kukunaka
75. Charaka has indicated Kalyanakaguda in which of the following disease -
a. Jwara b. Gulma c. Nidranasha d. All the above
76. As per Astangsangraha sanshodhana is contraindicated in which of the following kala -
a. Shita b. Varsha c. Grishma d. All of the above
77. As per Charaka excessive use of which rasa leads to shonita sanghatabheda -
a. Madhur b. Amla c. Katu d. Tikta
78. Accodring to Sushruta shira is made up by the offshoots of which kandara -
a. Uru b. Vaksha c. Ansa d. All of the above
79. Strychons toxifera is natural source of which of the following -
a. Quinine b. Curare c. Nicotine d. Doxacurium
80. Which one is not mentioned in Trantra bhushana chapter of Sushruta samhita -
a. Swasthavritta b. Ritucharya
c. Tantrayuki d. Rasbheda Vikalpa
81. For the treatment of which of the following Charaka had said to protect the heart first-
a. Asrigadara b. Burn c. Heatstroke d. Poison
82. Which one of the following is not Sattavika guna.
a. Dvesha b. Prayatna c. Ichchha d. Sanyoga
83. Which of the following has shortest incubation period.
a. Influenza b. Rubella c. Hepatitis A d. Hepatitis B
84. As per Kashyapa which one is apathya in yoniroga -
a. Manda b. Asava c. Lashuna Swarasa d. Bala taila.
85. According to Sushruta common symptom of an wound is- a. Pain b. Inflammation c. Discharge d. Fowel smell
86. As per Vagbhatta excessive use of which type of Ahara causes Netrabhisyanda -
a. Snigdha b. Drava c. Laghu d. Amla
87. Goodpasture syndrome is associated with -
a. Lower extremities b. Kidney c. Spleen d. Pancreas
88. According to Charaka Streekara bhava which originate after birth is
a. Klaivya b. Asanhanana c. Mardava d. All the above
89. Percentage of copper in a good quality ore of swarnamakshika is approximately -
a. 10-20 b. 20-35 c. 40-60 d. 2-5.
90. Coruloplasmin is produced by-
a. Spileen b. Bone marrow c. Liver d. Brain
91. As per Charka Danti is pugative because of its -
a. Rasa b. Vipaka c. Virya d. Prabhava
92. As per Sushruts in a new born baby umbilical cord be excised at a length of -
a. 4 Fingers b. 3 Fingers c. 6 Fingers d. 8 Fingers
93. In which of the following the eyelid margin rolls outwards -
a. Symblepharon b. Ectropion
c. Entropion d. Ankyloblepheron
94. Palasha bhasma siddhaghrita is indicated in which of the following shukra dushti -
a. Kunapareta b. Granthibhuta c. Putipuya d. Kshinareta
95. Which of the following term is not used for Jeevatma -
a. Saguna Atma b. Sprik Shareer
c. Ativahik Shareer d. Linga Shareer

96. Acc
purposes
a. Vasant
97. In a
has been
a. Charak
c. Garbh
98. Gasti
the follo
a.Sulphu
b.Alcoho
99. As p
dhatusha
a. Rakta
100. Exp
in India ir
a. January
101. As
seateted
a. Gluteal
c. Inside
102. Iron
a.Pandu
103. As pe
comowne
accumula
a.Shita b
104.Tream
a. Toxicol
c. Clinical
105. As pe
a. Kapha
b. Kapha+
106. Acco
ritu is- a.
107. Acco
guna is- a.
108. As pe
symptoms
a. Prasans
c. Mudhag
109. As pe
a. Adhima
110. Comn
a. Congeni
c. Hyperte
111. Eusta
a. Ear
c. Pharynx
112. As pe
medicine t
a. Abhakta
c. Pragbha
113. Accor
a. Manikya

96. According to Raja Nighantu leaves for medicinal purposes be collected in -
a. Vasant b. Grishma c. Varsha d. Sharada
97. In a foetus origin of Pristhavansha during fifth month, has been described in-
a. Charaka Samhita b. Sushruta Samhita
c. Garbhopnishada d.Kashyapa Samhita
98. Gastric lavage is contraindicated in toxicity of which of the following
a.Sulphuric Acid c.Carbolic Acid
b.Alcohol d.Salisylate
99. As per Sushrata spleenomegaly is symptom of which dhatushaya kshya.
a. Rakta b. Rasa c. Mansa d. Meda
100. Expanded Prograamme of Immunization was launched in India in-
a. January 1978 b. March 1985 c. May 1986 d. April 1992
101. As per Sushruta krichchhasadhya wounds are seateted
a. Gluteal region b. Axilla
c. Inside oral cavity d. Scrotum
102. Iron like breath smell is poorvarupa of which disease
a.Pandu b. Rajyakshma c.Raktapitta d. Kasa
103. As per Astanga Sangrahha Tikshnadi guna of pitta comowne with which of the following guna to produce accumulation of pitta
a.Shita b.Ushna c.Ruksha d.Laghu
104. Treament of malignancy with specific drug is known as-
a. Toxicology b. Chemotherapy
c. Clinical Pharmacology d. Pharmacon
105. As per Sushruta the causative dosha of Charmakila is -
a. Kapha c. Vyanavaya
b. Kapha+Vyanavaya d. Pitta+Vyanavaya
106. According to Charaka Rasa predominant in Shishira ritu is- a. Katu b. Amla c. Kashaya d. Tikta
107. According to Charaka Rasa predominant in ruksha guna is- a. Kashaya b. Katu c. Tikta d. Amla
108. As per Sushruta Anaha and Mutrasanga are the symptoms of-
a. Prasansamanagarbha b. Asrigadara
c. Mudhagarbha d. All of the above
109. As per Sushruta all of the eye diseases occure due to-
a. Adhimantha b. Ajakajata c. Abhishyanda d. Timira
110. Commonest heart disease in India is-
a. Congenital b. Rheumatic
c. Hypertensive d. None of the above
111. Eustachian Valve is present in-
a. Ear b. Left ventricle
c. Pharynx d. Inferior venacava
112. As per Vagabhatta to strengthen the lower body parts, medicine to be taken at
a. Abhakta b. Madhyabhakta
c. Pragbhagta d. Samudga
113. According to rase rantna Samucchaya,
a. Manikya b.Mukta c. Pravala d. Vajra
114. As per Charaka which snake bite causes kaphajanya rop-
a.Rajimana b.Darvikara c. Mandali d. None of above
115. As per Sushruta in which ritu drugs become alpaviryayukta -
a. Shishira b. Vasanta c. Sharada d. Versha
116. Charaka las indicated pradhana matra of sneha in which of the following -
a. Vatrakta b. Prameh c. Kushtha d. Mutrakrichhar
117. Charaka has indicated pradhana matra of sneha in which of the following
a. Phenasanghata b. Ruksha c. Vivarna d. Virasa
118 Contatkm of eye ball takes place in which of the following eye disesse-
a. Dhoomdarshi b. Gambheerika
c. Pitta vidagdha drishti d. Kanch1
119. Charaka has advised less water intake in which of the following disease.
a. Atisara b. Pandu c.Gulma d. All
120. Which of the following is absent in DNa.
a.Adenine b.Thymine c.Guanine d.Uracil
121. According Sushruta Alpanidrata is symptom of which of the following -
a. Vatavridhi b. Pittavridhi
c. Kapha vridhi d.Vatakshaya
122. Which one drug is not included in Katu skandha in Charaka Samhita.
a. Pippali b. Chavya c. Sumukha d.Kebuka
123. Generation time of Escherichia coli is -
a. 20 Seconds b. 20 Minutes
c. 20 Houres d. 20 Days
124. Who has described Vyapeta hikka which arises after the digestion of food.
a. Charaka b. Sushruta c. Vagbhata d. Kashyapa
125. Which class of immunoglobins can cross the placenta
a. IgG b. IgM c. IgD d. IgA
126. "Vaikalyam maranam va bhaved dhruvam " is related to- a. Pakshaghata b. Skandagraha c. Phakka roga d. Balashosha
127. According to Sushruta which of the following disease is not Bhedya -
a. Alaji b. Gilayu c. Adh rush a d. Nadivrana
128. 'Mutragata and visangyata' are described as complication of which disease -
a. Mutrakrichha b. Astisara c. Visuchika d. Grahani
129 According to Sushruta Paingalya is one of the features of -
a. Bramhacaya B -Varunakaya
c. Yamyakaya d. Gandharvakaya
130 Writer of the Rasendra Chintamani is -
a. Somadv c. Madhava: b.Yashodhara d.Vishnudeo
131. Which sanskara of Parada is known as mumkhakarana
a. Mardana c.Bodhana b. Utthapana d. Murchhana
132. As per a Charak bite which of the following symptoms of Stabdhalinga.
a. Frog B - Cricket c. Mouse d. House lizard
133. As per Charaka the routine in shishira ritu be followed according to which ritu -
a. Hemanta b. Sharada c. Grishma d. Vasanta
134. Major source of ammonia in the kidney is-
a.Urea b.Aspartate c.Glutamme d.Giutamate
135. In children head and chest circumference

are almost equal by the age of-
a. 6 months b.1 year c. 2 years d. 5 years
136.On X-ray all the following renal calculi can be seen except- a.Calcium oxalate b.Triple phosphate c.Uric acid d.Cysteine stone
137. Which of the following is caused byToga virus - a.Rubella b.Measles c.Mumps d.Lassa fever
138. As per Charaka which of the following pramana proves rebirth-
a.Anumana c.Aptopadesha b.Pratyakha d. All
139. As per Vagbhatta occurance of rasa in Anupa sadharana pradesha is -
a. Madhura.Amla b. Lavana.Amla
c. Madhura.Lavana d. Madhura.Kashaya
140. According to Sushruta number of muscles in Lalata is- a.6 b.8 c.12 d.4
141.Percentage of oxygen in expired air is approximately- a.16.4 b.18.6 c. 13.86 d.19.41
142. As per Rasa Ratna Samucchaya, musha used for kharpara satvapatana is-
a. Pakva Musha b. Vajra Musha
c. Vrintaka Musha d. Yoga Musha
143."Vaidala Varga" is the original contribution of-
a. Agnivesha b. Charaka c.Sushruta d.Kaiyadev
144.As per charaka which property of poison makes the treatment most difficult -
a. Sukshma b. Ushna c. Vyavayi d. Laghu
145. As per Sharangadhara saura rashiTula and Vrischika are related to which ritu-
a. Sharada b. Hemanta c. Versha d. Vasanta
146. According to Charak which one of the following is Not Mulani dravya.
a. Gavakshi b. Bimbi c. Aragvadha d. Ajagandha
147. Which Acharya has described six types of Bandhya.
a. Bhela b. Bhavaprakasha
c.Harita d.Yogaratnakara
148. As per Sushruta "Yathadritih chhubhyate" is feature of
a. Badhagiiaocara b.Dakodara
c. Parisravyudara d. None of above
149. Earliest feature of vitamine A deficiency is-
a. Conjunctiva' xerosis b.Nyctalopia
c.Bitot spot d.Keratomalacia
150. As per Charaka which of the following is pathya, in ashmarijanya mutrakrichha.
a. Date b.Visa c. Kashaya rasa d. None of the above
151.Which single drug can be given to a baby suffering from cough, fever and vomiting-
a. Guduchi b.Shunthi c. Kutaki d. Ativisha
152. In which of the following Lymphatics are found.
a.Brain b. Choroid c. Internal ear d. Dermis
153. According sushruta Dridhatva (Firmness) is prakrita karma of which Dhatu
a. Mansa b. Meda c. Asthi d. Majja
154. Which one drug is not included in Vatasanshamana varga in Susruta Samhita.
a. Bala b. Yava c. Muskaka d.Varuna
155. Visha which causes bad small of mouth, parushya and kapha shrava is - a. Moola Visha b. Phala Visha
c. Pushpa Visha d. Twaka Visha
156. As per Sushruta parshvasankocha is caused by an abscess which is seated over-
a. Vankshana b. Nabhi c.Kukshi d.Vrikka
157. Daily additional requirement of protein in a lactating mother is -
a. 25 gm b. 35 gm c. 15 gm d. 50 gm
158. According to Charaka, dream resulting in good or bad effects is- a. Prarthita b. Anubhuta c. Drista d. Bhavika
159. Charaka has indicated Yapanavasti for the treatment of which type of Impotency-
a.Jarajanya b.Dhwajabhangajanya
c. Bijopaghatajanya d. All of above
160. As per Sushruta which of the following is not a complication of Karnpalisandhana -
a. Utputaka b. Avapatika c. Utpataka d.Jambula
161. Charaka has mentioned Kampavata and vakrata as complication of which disease -
a. Amavata b. Vatarakta c. Sandhivata d. Gridhrasi
162. According to Astangsangraha, the best Raktarsha shamaka drug is.
a. Chitraka b. Bhallataka c. Kutaja d. Mustaka
163. The number of sadyah pranahara marma situated in kantha is - a.5 b.8 c.2 d.6
164. In Sushruta Samhrta which one Ahara dravya is found inKudhanya varga -
a.Uddalaka b. Kaidara c. Sastika d.Ropya
165. According to Rasatantrasara which one is said as Raudraputa.
a. Gajaputa b. Mahaputa c.Varahaputa d.Suryaputa
166. As per Charka in which vegarodhajanya disease ghntapana is indicated after meal -
a. Sternuation b. Eructation c.Thirst d.Hunger
167. Russell's body is found in which of the following-
a.WBC b.RBC c. Mast cell d. Plasma cell
168. Charaka has contraindicated sanshodhana karma in which parameha - a. Kaphaja prameha b. Pittaj Prameha
c. Vataja Prameha d. Udakmeha
169. Hardness of Sphatika is a.3 b.5 c.7 d.4
170. According to Sushruta vatajanya shopha is symptom of which of the following- a. Ojo vyapada b. Oja Kshaya
c. Oja Visransa d. None of the above
171. Which one of the following Ahara. dravya is Kaphamarutaghna.
a. Venuyava b. Masura c. Kulattha d.Masha
172. Recommended daily dose of retinol for an adults is-
a.500 microgram b.750 microgram
c.600 microgram d.650 microgram
173. According to Charaka excessive exercise can cause -
a. Pratamakashwasa b. Vamana
c. Raktapitta d. All the above
174. As per Charka pin prick like pain is found in which heart disease -
a. Vataja b. Pittaja c. Kaphaja d. Krimija
175. In which yoniroga Charaka has indicated uttarvasti of Jivaniya varga sidha taila.
a. Karnini b. Acharana
c.Shushkayoni d. All of the above
176. Who had told about use of Lehana according seasons-
a. Charaka b. Sushruta c. Vagabhatta d. Kashyapa
177. Function of Sharpunkhmukhi yantra is -
a.Probing b. Extraction c. Separation d.Retraction
178. Shushruta has indicated Dhamargava vamaka yoga in which of the following -
a. Garavisha b. Shwasa
c.Gulma d.All of the above
179. According to Sushruta Padmakara disease of palate is-
a.Adhrusha b.Kachhapa
c. Arbuda d. Mansasanghata
180.In which chapter Sharangadhara has described Madhushukta -
a.Sneha Kalpana b. Sandnana Kalpana
c. Swarasa Kalpana d.Amla Kalpana

PGA - CET MAHARASHTRA, 2012

स्मृती पर आधारित

1. भैषज्य रत्नावली के लेखक है।
   A. गोविंदाचार्य B. गोविंदहृदयाचार्य
   C. गोविंद दाससेन D. शिव दाससेन
2. पुंसवन कब करते है। (मास)
   A. 2nd B. 4th C. 7th D. 8th
3. गर्भिणीको अनुवासन किस मास में देते है। (चरक)
   A. 8th B. 7th C. 9th D. 4th
4. प्रसुप्तो न स्पन्दते। किस के संदर्भ में है ?
   A. तीनगर्भ B. नागोदर C. मृतगर्भ D. उपविष्टक
5. निम्न मे से कौन से उम्र के व्यक्ती को शोधन नही दे सकते।
   A. 9 वर्ष B. 12 वर्ष C. 60 वर्ष D. 40 वर्ष
6. मक्कल में दोष दुष्टी...
   A. वात B. पित्त कफ C. रक्त वात D. रक्त पित्त
7. सुश्रुतोक्त कषाय कल्पना है।
   A. 5 B. 6 C. 7 D. 3
8. श्रृत पर्याय नाम है।
   A. हीम का B. फाण्ट का C. स्वरस का D. क्वाथ का
9. तैलमुर्च्छना से तैल का -------दोष जाता है।
   A. आम B. गन्ध C. मल C. All
10. आरोग्यवर्धिनी वटी का भावना द्रव्य------
   A. गोमुत्र B. आर्द्रक स्वरस C. निंबपत्र स्वरस D. All
11. गर्भपोषण किस रसाय से होता है ? (वाग्भट)
   A. उपस्नेहन B. केदारकुल्या C. क्षीरदधि D. खलेकपोत
12. भैषज्य से संबधित है।
   A. पथ्य, संस्थान B. चिकित्सा, व्याधिहर C. आहार D. विहार
13. देहधृक है।
   A. प्राण B. उदान C. व्यान D. समान
14. राज ग्रहणी व निर्मोक ग्रहणी भेद वर्णन किये है।
   A. चक्रपाणी B. डल्हण C. गणनाथ सेन D. मा. नि.
15. दोषप्रकोप विद्वेष कारण का संबंध है ---- से
   A. संचय B. प्रकोप C. प्रशम D. इसमे से नही
16. दोष काल दुष्य तुल्यगुण ना हो तो व्याधी सामान्यतया होती है?
   A. सुखसाध्य B. कष्टसाध्य C. याप्य D. असाध्य
17. प्रमथ्या किस दोष में प्रयोग करते है। (च.चि. 19/49)
   A. मध्यम B. अल्प C. अत्यल्प D. बहुदोष
18. योगराज का रोगाधिकार है। (चरक)
   A. पाण्डु B. ग्रहणी C. राजयक्ष्मा D. अर्श
19. ऋतु विशेषण द्रव्य विशेषण विधी वर्णन किये है।
   A. हारित B. काश्यप C. भेल D. यो. र.
20. वायुना बलिना क्षिप्ता धमनीदेशा संबंधित है।
   A. कामला B. हलीमक C. पाण्डु D. शोथ
21. पानार्थ स्नेहपाक होना चाहिए (च.क. 12/100)
   A. मृदु B. मध्य C. खर D. सभी
22. शुक धान्य से सामान्यतया बनाते है।
   A. मण्ड B. मन्थ C. यूष D. सभी
23. अवलेह मे शक्कर चूर्ण से कितनी गुणा होती है।
   A. 1 B. 3 C. 4 D. समगुण
24. शुक धान्य में पाए जाते है।
   A. Protein B. Carbohydrate C. Fat D. वसा
25. शारंगधर के अनुसार वमन, विरेचन, लंघन का काल है।
   A. तृतीय B. द्वितीय C. चतुर्थ D. प्रथम
26. लवंगादी वटी भावना है।
   A. आर्द्रक स्वरस B. बृहत स्वरस C. गोमुत्र D. निम्ब
27. मृदु द्रव्य से क्वाथ बनाते समय द्रव्य लेना चाहिए।
   A. 4 भाग B. 2 भाग C. 8 भाग D. समभाग
28. विशिष्ट देह का अर्थ क्या हो सकता है।
   A. स्थानच्युत अवयव B. धातु
   C. पतित D. बलीयसा विलोडित
29. Kupffer's cells are fonud in
   A. Liver B. Spleen C. kidney D. Lungs
30. अग्निकर्म नही करते है। (सु. चि. 8/21)
   A. शतपोनक B. उष्ट्रग्रीव C. अंगातुज D. गरिभावी
31. गौ के वर्ण के अनुसार दुध के गुणधर्म वर्णन किये है।
   A. हारित B. काश्यप C. भेल D. भा. प्र.
32. The normal Value of total bilirubin in Adult is
   A. 0.3 to 0.5 B. 0.5 to 2.0 C. 0.5 to 1 D. 0.2 to 0.7
33. आमाशयगत रक्तस्राव में करेंगे ? (सु. चि. 2/52)
   A. वमन B. विरेचन C. वस्ति D. नस्य
34. -------- अर्श में क्षारकर्म करेंगे ? (सु. चि. 6/3)
   A. तनु B. अवगाढ C. कर्कश D. क्लेदी
35. मूत्र वृध्दी-------से Compare कर सकते है।
   A. Hernia B. Prostate C. Hydrocoele D. None
36. दीपिका तैल से है।
   A. लघु पंचमुल B. बृहत पंचमुल C. बिल्वमज्जा D. दशमुल
37. शिरोरोग में कौनसा उपद्रव हो सकता है।
   A. नेत्ररोग B. नासारोग C. कर्णरोग D. All
38. गिलायु शोथ में कर्ण वेदना किस Nerve की वजह से होती है।
   A. 10th B. 9th C. 7th D. 6th
39. दन्तपुप्पुट है।
   A. दंतगत B. दंतमुलगत C. जिव्हागत D. तालुगत
40. कौन से शिरोरोग में वमन, विरेचन, रक्तमोक्षणादि वर्ज्य है।
   A. क्षयज B. वात C. पित्त D. कफ
41. शवपरीक्षण सामान्यतया किस क्रम में करते है ?
   A. उर, उदर, शिर B. शिर, उदर, उर
   C. उदर, उर, शिर D. उदर, शिर, उर
42. Adult मे अधोहनुास्थि के गात्र का शीर्षा से कोन (Angle) है।
   A. 180° B. 90° C. 120° D. 140°
43. शरीरागतुज व्रण प्रकार बताए है।
   A. चरक B. सुश्रुत C. वाग्भट D. All
44. काल मृत्यु का संदर्भ है।
   A. च. वि. 8 B. च.वि. 3 C. च. सु. 30 D. च. शा. 3
45. Rooming in का संबध है।
   A. पिता से B. माता से C. मातपिता से D. None
46. 'New Science of Healing' के लेखक है।
   A. Paraselsus B. Lue Kune C. Adolf just D. None
47. 2008 का अर्भक मृत्यूदर है। (In India)
   A. 30.8 B. 26.2 C. 28.7 D. 23.5
48. Skin में implant किया जानेवाला Contraceptive है।
   A. Norplant B. Copper T C. Both D. None
49. जागतिक अपंग दिन
   A. 15 March B. 9 May C. 15 May D. 20 March

50. मेवानी घाटव का सेगाधिकार है।
A. अर्श B. अश्मरी C. राजयक्ष्मा D. ज्वर
51. E C G में (delta) - Wave indicates
A. MI B. LVF C. RVF D. None
52. Rose Spot is seen in
A. Malaria B. Typhoid C. Measles D. T. B
53. नव ज्वर में लंघन का मतलब हो सकता है।
A. चतुष्प्रकार संशुद्धि B. उपवास C. लघ्वान्न D. गुर्वान्न
54. पिच्छावस्ती निर्देशित है।
A. रक्तज प्रवाहिका B. रक्तातिसार C. ग्रहणी D. All
55. कण्ठशालुक से संबंधित है। Except
A. जन्म से होता है। B. कोलास्थी सम शोफ
C. कफज व्याधी है। D. दुस्साध्य है।
56. पथ्यादी वर्ग में सम्मिलित होता है।
A 1/6 पट B ¼ पट C. 1/8 पट D. None
57. Ototoxic नहीं है।
A. Amino glycoside B. Diuretics
C. Macrolids D. Antispasmodics
58. कामेच्छा कम होती है।
A. हलीमक B. पाण्डु C. कुंभकामला D. पाण्डु
59. मुक्तक ------ प्रवृत्त व्याधि है। (सु. सू. 24/6)
A. आदिबल B. जन्मबल C. जन्मबल D. स्वभावबल
60. Human RBC are
A. Circular B. Non nucleated C. Biconcave D. Discus
61. निद्रानाशे, हृदीस्तम्भ पिण्डमोक्षरूचि। संबंधित है।
A. दोषपाक B. धातुपाक C. सामता D. रामवायु
62. शरीर के साथ क्षयवृद्धी होती है।
A. मेदोजग्रंथी B. सिराजग्रंथी
C. कफजग्रंथी D. वातजग्रंथी
63. मलिनाहार शीलस्य वेगरोधी ------ से संबंधित है। (च. चि. 10/57)
A. उन्माद B. अपस्मार C. आलस्यनिद्रेश D. All
64. श्वासकास वृद्धी संबंधित है।
A. वात वृद्धी B. पित्त वृद्धी C. कफवृद्धी D. All
65. 'सतत रूक्ष' सर्वगत है।
A. रक्तगत वात B. मांसगत वात C. मेदोगत वात D. अस्थिगत वात
66. वाक्यार्थ ज्ञान हेतु है।
A. 4 B. 3 C. 2 D. 6
67. पदानामपि लक्षणोच्चारणम् है।
A. तात्पर्य B. सन्निधी C. लक्षणा D. व्यंजना
68. स्थपनी है।
A. मांसमर्म B. सिरामर्म C. स्नायुमर्म D. संधीमर्म
69. कपाले पवने दुष्टे ------ श्लोक पूरा करो।
A. गर्भस्य B. जातस्य C. बालस्य D. कुमारस्य
70. सिद्धयोग रत्नाकर के अनुसार कांचनार प्रकार है।
A. 2 B. 3 C. 4 D. 1
71. Glucotropaeolin केमीकल Constituents है।
A. चद्रशूर B. करेला C. मेषशृंगी D. चक्रमर्द
72. मन्यास्तंभ किस वेगधारण से होता है। (च. सू. 7)
A. जृंभा B. क्षवथु C. बाष्प D. सभी
73. क्षीर है। डल्हण
A. शुक्रवृध्दीकर B. स्तन्यकर C. Both D. None
74. Massive haemorrhage होगा।
A. Respiratory Acidosis B. Metabolic Acidosis
C. Hypocalaemia D. Hypercalaemia
75. पित्तावृत्त वात में सुश्रुत के अनुसार लक्षण है।
A. दाह B. अंधता C. मूर्छा D. सभी
76. ठीक समय पे रक्तमोक्षण करने से नहीं होता है। (सु. सू. 14)
A. शोफ B. अर्श C. ग्रंथी D. सभी
77. वाग्भट के अनुसार प्रतिसर्प जनई है।
A. उत्क्लिष्ट दोष B. श्रम C. क्षय D. बाल
78. प्रतापी जायते मुक्त है।
A. रोपन B. दीपन C. उत्थापन D. मर्दन
79. अनियत तोद लक्षण है।
A. पित्त क्षय B. वात क्षय C. रक्त क्षय D. All
80. बला तंत्र श्रेष्ठ है चर्यायी (सु. सू. 1/26)
A. आहार चरणात B. स्वास्थ्यरक्षण चरणात
C. चिकित्सा चरणात D. All
81. वृष्य वातहरणा श्रेष्ठ है।
A. शतावरी B. मुण्डी C. रास्ना D. गुग्गुल
82. सुश्रुतार्थ संहोपन के लेखक है।
A. चक्रदत्त B. डल्हण C. हाराणचंद्र D. अरुणदत्त
83. Liver & gall bladder tree किससे अच्छे से दिखेगा
A. X - Ray B. USG C. ERCP D. FNAC
84. वमन अजर्ण है।
A. मूत्राघात B. अतिसार C. विसूचिका D. अपची
85. नक्षत्र के नुसार वनस्पती नाम बताए है।
A. ध. नि. B. प. नि. C. भा. नि. D. शालिग्राम निघण्टु
86. मूत्र करता है।
A. मोरंग B. स्नेहन C. लवण D. शलथन
87. DHF =
A. Dengue Hemorrhagic Fever C. Dengue high fever
B. Dangerous high fever D. Disease help factor
88. महापुरुष लक्षण है।
A. श्याम B. श्यामार्ध C. राजहस्त D. अरत्नि
89. लेखनी जल वति मात्रा है।
A. 1 हरेणु B. 2 हरेणु C. 1½ हरेणु D. 2½ हरेणु
90. बन्ही मित्र पर्याय है ---- का
A. पुर B. मुष C. कोष्ठी D. All
91. Tysons glands are found in
A. Vulva B. Intestine C. Penis D. Stomach
92. अध्यवसाय (व्यापार) ------ का गुण है।
A. बुध्दी B. मन C. आत्मा D. All
93. निम्न मे से सबसे गुरू मांस है।
A. मेद B. वृक्क C. यकृत D. गुद
94. वैरूप्य मरण का संबंधित है।
A. रेवती B. स्कंदापस्मार C. स्कन्द D. पुतना
95. एक नयनस्वामी है।
A. स्कन्द B. पुतना C. रेवती D. शकुनी
96. जीवाणुजन्य नेत्ररोग में Use नहीं करना चाहिए।
A. Anti inflammatory eye drop B. Antibiotic
C. Steroid eye drop D. All
97. सर्वरस प्रत्यनिक रस है। (च. सू. 26)
A. लवण B. अम्ल C. मधुर D. All

98. उष्ण में प्रधान रस है। (च.सु.26)
A. लवण B. अम्ल C. कटू D. All
99. रक्तप्रदर चिकित्सा है। (च.चि.30)
A. रक्तातिसारवत B. रक्तार्शवत C. शोणित पित्तवत D. All
100. कृमी चिकित्सा में सर्वप्रथम करते है । (च. वि.7)
A. निदान परिवर्जन B. अपकर्षण C. बस्ति D. कटू क्षारादि प्रयोग
101. विष संचय के प्रमुख स्थान है ।
A. यकृत B. प्लीहा C. Both D. None
102. शुष्काक्षिपाक से संबंधित है ।
A. वात B. पित्त C. कफ D. रक्त
103. विरूध्द दूष्ट अशुचि भोजन संबंधित है।
A. उन्माद B. अपस्मार C. संन्यास D. अतत्वाभिनिवेश
104. श्यामादि कल्क in योनिव्यापद is for (च.चि.30)
A. वात B. पित्त C. कफ D. त्रिदोषज
105. दिन में कष्टतासे देखता है और सामान्य आकृती से छोटा देखता है ।
A. ऱ्हस्वजाडय B. पित्त विदग्ध दृष्टी
C. कफविदग्ध दृष्टी D. धूमर
106. चिकित्सा के संबंधमे अलग है।
A. कर्णस्राव B. कर्णक्ष्वेड C. पूतीकर्ण D. सभी
107. गंधज्ञान नहि होता है । (सु. उ.22 to 24)
A. रक्तज प्रतिश्याय B. दुष्ट प्रतिश्याय C. अपीनस D. All
108. भेषजशस्त्रक्षारग्नि चिकित्सा है। (सु. उ.16)
A. अक्षिपाक B. हताधिमंथ C. पक्ष्मकोप D. पक्ष्मशात
109. विभेतिऽभीक्ष्णो दुर्बलेंद्रिय----- पाया जाता है ।
A. वातक्षय B. वातवृध्दी C. ओजक्षय D. ओजविस्त्रंस
110. चरक के अनुसार रसक्षय लक्षण है ।
A. हृदय ताम्यति B. हृत्शुल C. शुन्यता D. All
111. प्रमेह में प्रयोजित है । (च. सि.11)
A. इक्ष्वाकु B. कुटज C. धार्मागव D. जीमूतक
112. अपरासंग में चिकित्सा होगी।
A. योनीधूपन B. योनी पिचू C. पीडन D. All
113. Which of following cells secrete HCL ?
A. Cheif cells B. Zymogen cells
C. Neck cells D. Oxyntic cells
114. तिर्यक धमनीया है ।
A. 24 B. 10 C. 4 D. 14
115. सर्ववहा है ।
A. धमनी B. स्त्रोतस C. सिरा D. All
116. नाभ्युरू संबंधित है । (च.चि. 28)
A. अपान B. उदान C. समान D. प्राण
117. मांसधरा है ।
A. प्रथम त्वचा और अन्तीम कला B. अन्तीम त्वचा व प्रथम कला
C. प्रथम त्वचा और प्रथम कला D. अन्तीम त्वचा व अन्तीम कला
118. प्राणवह स्त्रोतस मुलस्थान है ।
A. हृदय, दशधमनी B. फुप्फुस
C. यकृत, प्लीहा D. हृदय और फुप्फुस
119. अतिसार में मसुर देना संबंधित है । (च. नि.1)
A. आहार C. व्याधी विपरीत आहार
B. हेतू D. हेतू विपरीत आहार
120. श्यावांगता पाण्डू रक्तागमन लक्षण है ।
A. रसविध्द B. रक्तविध्द C. मांसविध्द D. अस्थिविध्द
121. लशुनादि घृत रोगाधिकार है । (च. चि.9)
A. उन्माद B. अपस्मार C. विषमज्वर D. All
122. वचाश्रीवेष्टक संबंधित है ।
A. धूपन B. वमन C. विरेचन D. बस्ति
123. शुक्रशोणित गर्भाशयस्थम आत्मप्रकृति विकार समुच्छितम----संबंधित है।
A. शरीर B. गर्भ C. आत्मा D. शारीर
124. दृष्टी संबंधित सहि है। (सु. उ. 7)
A. मसुदलमात्रा B. विस्फुलिंग C. उष्णासहा D. All
125. अकस्मात अट्टहसनम लक्षण है।
A. अरूचि B. उन्माद C. अपस्मार D. All
126. अर्धरात्रे निद्रा लक्षण है।
A. तम B. सत्व C. रज D. व्याधी
127. आंवी को ग्राही कहा है---- ने
A. काश्यप B. चरक C. सुश्रुत D. शारंगधर
128. संज्ञा संज्ञी संबंधित है ।
A. प्रत्यक्ष B. अनुमान C. उपमान D. None
129. मत्स्यशकला है।
A. कुष्ठ B. कटुका C. कुटजा D. काश्मरी
130. सिराशुक्र वर्णन किया है।
A. काश्यप B. चरक C. सुश्रुत D. वाग्भट
131. पत्ररूपीय संबंधित है।
A. पूर्वरूप B. व्याधी C. छाया D. All
132. 'कुमारिका' का संबंधित है (च.इ .7)
A. मुख B. नेत्र C. नासा D. All
133. बालक के स्वरूप लक्षण विस्तारपूर्वक वर्णन है ।
A. शारंगधर B. चरक C. सुश्रुत D. वाग्भट
134. प्रयत्नोर्जा बलवर्ण स्मृती क्रिया ------का कार्य है । अ.हृ.सु 12
A. उदान B. प्राण C. व्यान D. समान
135. हरितकी का रस
A. कषाय B. तिक्त C. द्विरस D. पंचरस
136. शुष्कामलक मात्रा ----बालक में है ।
A. 4th Month B. 5th Month C. जातमात्र में D.None
137. वास्तव में सुश्रुत उत्तरतंत्र है ।
A. निमी का B. नागार्जुन का C. दृढबल का D. सुश्रुत का
138. अन्माद में सुश्रुत के नुसार मात्रा है।
A. कोलास्थी B. कोल C. आमलक D. विडंग
139. वेधन करते है।
A. नाडी B. भगंदर C. सिरा D. None
140. दृष्टी उपघात लक्षण है।
A. फणा B. अपांग C. अधिपती D. श्रृंगाटक
141. जानुसर्माघात लक्षण है।
A. खंजता B. पांगुल्य C. क्रियाघात D. All
142. सुतिकाज्वर में देय है।
A. प्रतापलकेश्वर B. ज्वरांकुश
C. वातगजांकुश D. सौभाग्य शुंठी
143. चरक ने कोष्ठांग नही बताया है। (च. शा.7)
A. वपावहन B. उण्डुक C. पुरीषाधार D. पक्वाशय
144. तालु नामयेत लक्षण है।
A. मस्तुलुंगक्षय B. अपस्मार C. अरोचक D. None
145. वृक्क उत्पन्न होता है।
A. रक्त + मेद B. रक्त + मेदमांस C. रक्त + मांस D. मेद

146. प्रभूत अशन क्लेशसहिष्णवो लक्षण है। (च. वि.8)
A. वात प्रकृती B. पित्त प्रकृती C. कफ प्रकृती D. None
147. -------- ऋतू में विष सर्वाधिक प्रभावी होता है।
A. वर्षा B. शरद C. ग्रिष्म D. वसन्त
148. धत्तूरा का प्रतिविष है।
A. Atropin B. Pilocarpine C. EDTA D. Naloxone
149. कालभोजन आरोग्य कराणाम किसने कहा है। (च. सु. 25)
A. शारंगधर B. चरक C. सुश्रत D. वाग्भट
150. सामान्यत: बालको में पाया जानो वाला व्याधि है।
a. पाषाणगर्दभ b. चिप्प c. कक्षा d. अजगल्लिका
151. कुष्ठ विसर्प -------- त्वक में होता है। (सु. शा. 4)
A. मांसधरा B. वेदिनी C. ताम्रा D. अवभासिनी
152. भ्रम में दोष दूष्य है।
A. रज पित्त वात B. रज वात C. रज पित्त D. वात तम
153. वात रोग में निरूह संख्या है। (च. सि.1)
A. 1 B. 2 C. 4 D.15
154. चरक के हृद्य महाकषाय में नही है। (च. सु.4)
A. अम्लीका B. वृक्षाम्ल C. अम्लवेतस D. मातुलुंग
155. रससिंदुर है।
A. साग्नि सगंध B. निराग्नि सगंध C. साग्नि निर्गंध D. निरग्नि निर्गंध
156. म्लेच्छ नेपाल भेद है।
A. ताम्र B. विमल C. कांस्य D. नाग
157. नटभूषन है।
A. मन: शिला B. अभ्रक C. हरताल D. ताम्र
158. रोग ज्ञानोपाय है।
A. निदानपंचक B. चिकित्सा C. रसायन D. None
159. आम और वात किस ग्रहणी में होते है। (मा. नि.)
A. कफग्रहणी B. वातग्रहणी
C. संग्रहणी D. त्रिदोषजग्रहणी
160. Which of the following is stuart power factor
A. Factor VIII B. Factor IX C. Factor XI D. Factor X
161. मांसलपाली में वेधनार्थ है।
A. सुचि B. आरा C. आटीमुख D. कूर्च
162. कूष्ठ के लिए श्रेष्ठ द्रव्य है। (सु. चि.9)
A. सरल B. तिक्त C. खदिर D. बाकूची
163. सुश्रुत के अनुसार रजो निवृत्ती काल है।
A. 50 वर्ष B. 66 वर्ष C. 40 वर्ष D. 45 वर्ष
164. सुश्रुत- प्रतिमर्ष काल है।
A. 12 B. 8 C. 14 D. 15
165. वाग्भट के अनुसार एलादी गूटीका का अधिकार है।
A. क्षतक्षीण B. श्वास C. कास D. अतिसार
166. बोले हुए वाक्य का विश्लेषण होता है ?
A. Broca's area B. Auditory area
C. Motar area D. Sensory area
167. पर्यावकाशभूयिष्ठ भूमि हैं। (च.क.1)
A. जांगल B. आनुप C. साधारण D. All
168. सुश्रुत ने स्वयोनिवर्धन चिकित्सा बतायी है।
A. रजक्षीण B. रजोवृध्दी C. रजोनिवृत्ती D. रक्तप्रदर
169. सर्वप्रथम कफ की चिकित्सा करेगे ?
A. रूध्दपथ कामला B. बहूपित्त कामला
C. हलीमक D. अपानकी
170. सद्योव्रण की चिकित्सा कब तक करेगे। (सु. चि. 2)
A. सप्ताह B. मास C. 15 दिन D. 10 दिन
171. स्थगिका बंधन करते है।
A. पृष्ठ B. उदर C. अंगुली D. शिरोग्रीव
172. तक्रारिष्ट रोगाधिकार है।
A. ग्रहणी B. अर्श C. पाण्डू D. A+ B
173. जुगुप्सु आहाराचार है।
A. सर्प काय B. ब्राम्ह C. याक्ष D. याम्य
174. आहार परिणामकर भाव है।
A. 4 B. 6 C. 13 D. 12
175. जन्म बलप्रवृत्त के प्रकार है। (सु. सु. 24 / 7)
A. रसज, दौहृदज B. व्यापन्न ऋतू, अव्यापन्न ऋतू
C. कालकृत, अकालकृत D. None
176. इंद्रियोंको अहंकरिक कहा है।
A. सुश्रुत B. चरक C. सांख्य D. वैशेषिक
177. वात का चय प्रकोप प्रशम काल है।
A. शिशिर, वसंत, ग्रिष्म B. वर्षा, शरद, हेमन्त
C. शिशिर, वसंत, वर्षा D. ग्रिष्म, वर्षा, शरद
178. पित्तशामक रस है।
A. कषाय B. तिक्त C. मधूर D. सभी
179. चरककोक्त गुण संख्या है।
A. 24 B. 25 C. 40 D. 41
180. सर्पिपान करते है। (च. सु. 21)
A. शरद B. प्रावृष C. वर्षा D. वसंत
181. स्थौल्य चिकित्सा--------।
A. लधु संतर्पण B. लधु अपतर्पण C. गुरू संतर्पण D. गुरू अपतर्पण
182. निचय गुल्म है।
A. वातज B. पित्तज C. कफज D. सन्निपात
183. योनिकंदाकृती।
A. लकुच B. निकुच C. गण्डुपद D. All
184. व्रण कडाऐ नजदीक सीवन से होगा।
A. रूजा B. शोथ C. अवलुंचन D. लालिमा
185. समस्थिती में रहने वोले दोषो का करेंगे।
A. रक्षण B. परिपालन C. शमन D. शोधन
186. चरक संहिता में आमाशय का संदर्भ।
A. च .वि. 2 B. च .शा 5 C. च . सु. 11 D. च . शा. 6
187. चरक ने अगदतंत्र को कहा है। (च. सु.30)
A. अगदतंत्र B. जागुली
C. विषगर वैरोधिक प्रशमन D. विषतंत्र
188. घृतमधु सम प्रमाण में (च. सु.26)
A. मात्रा विरूध्द B. क्रमविरूध्द C. संयोग विरूध्द D. परिहार विरूध्द
189. मज्जा सारता का लक्षण है।
A. श्रृत वित्त विज्ञान B. मनस्वीता C. शिखर दशन D. All
190. Baqossis is due to
A. Cane fibre B. Coal C. Dust D. None
191. श्रेष्ठ फल है। (वाग्भट)
A. आर्द्रक B. मृद्विका C. आमलक D. आम्र
192. अर्शोभगंदर दोष दूष्टी है।
A. वात B. रक्त पित्त C. पित्त कफ D. कफ वात
193. रोमहर्ष किसज्वर में होता है।
A. वात पित्त B. रक्त पित्त C. पित्त कफ D. कफ वात

194. निष्प्रत
A. संत
195. अवस्थ
A. आ
196. काश्मर
A. रक्त
197. वाग्भट
A. 11
198. समवा
A. 3
199. मुत्राघा
A. मुत्र
200. वैरस्य
A. वात
201. पाषाण
A. वात
202. आमल
A. हरि
203. किस
A. वति
204. R B (
A. Sp
205. चरकोव
A. मुर
206. मित्रपंच
A. वारि
207. प्रवाल
A. बुध
208. सुश्रुतोव
A. त्रि
209. रोगोत्त
A. तैल
210. अरिष्टबं
A. 3
211. चरक -
A. 1
212. रक्त व
A. 5
213. शरीरव्य
A. मांस
214. For कुं
A. ध्यान
215. Memb
A.10
216. योगरत्न
A. रि
217. मलावष्ट
A. कुमा
218. मुलिनी
A. 16
219. अक्षिपुट
A. तिर्य

194. निष्प्रत्यनिक सुदु:सह है। (च.चि.3)

A. संतत B. सतत C. तृतीयक D. चतुर्थक

195. अवस्थापाक है।

A. आहारद्रव्यकृत B. दोषस्थान कृत C. धातुस्थान कृत D. मलस्थान कृत

196. काश्मरी कूटज क्वाथ सिध्द उत्तर बस्ति देगे। (च.चि.30)

A. रक्तजा योनि B. वातज C. सन्निपातज D. None

197. वाग्भट भेषज ग्रहण काल है।

A. 11 B. 4 C. 5 D. 13

198. समवाय के प्रकार होते है।

A. 3 B. 6 C. 2 D. None

199. मुत्राघात में है।

A. मुत्र कृच्छ B. मुत्र संग C. मुत्र उत्पत्ती क्रम D. None

200. वैरस्य फेनरोक्ष्य ---- स्तन्यदोष है। (च.चि.30)

A. वात B. पित्त C. कफ D. सन्निपात

201. पाषाणगर्दभ दोष दूष्टी है।

A. वात पित्त B. कफपित्त C. कफवात D. त्रिदोषज

202. आमलक्यादि गण में नही है।

A. हरितकी B. पिप्पली C. चित्रक D. None

203. किस शूल को विषवज्र कल्प संज्ञा है।

A. वतिक B. पैत्तिक C. कफज D. सन्निपातिक

204. R B C s are destroyed in

A. Spleen B. Liver C. Bone marrow D. All

205. चरकोक्त स्तन्य शोधन व सुश्रुतोक्त वचा दी गण में Common द्रव्य

A. मुस्ता B. पाठा C. गुडुची D. सारिवा

206. मित्रपंचक का Use करते है।

A. वारितर B. अपुर्नभव C. Both D. None

207. प्रवाल रत्न का ग्रह है।

A. बुध B. गुरू C. रवि D. मंगल

208. सुश्रुतोक्त परीक्षा है। (सु.सु.10)

A. त्रिविध B. द्विविध C. षडविध D. अष्टविध

209. रोगोत्तर मंदाग्नि में Use करते है? (च.चि.15)

A. तैल B. घृत C. Both D. मज्जा

210. अरिष्टबंधन कितने अगुंल पे करते है।

A. 3 B. 1 C. 2 D. 4

211. चरक - आत्मा प्रकार है।

A. 1 B. 2 C. 3 D. 4

212. रक्त का प्रमाण अंजली में है।

A. 5 B. 6 C. 8 D. 9

213. शरीरव्यापी कला है।

A. मांसधरा B. रसधरा C. शुक्रधरा D. रक्तधरा

214. For कुंडलिनी जागृती उपयोगी है।

A. ध्यान B. आसन C. प्राणायाम D. मुद्रा

215. Membranous RBC Production in

A. 10 yrs B. > 5 yrs C. >20 yrs D. Pregnancy

216. योगरत्न समुच्चय के लेखक है।

A. रविगुप्त B. चंद्रट C. कलहदास D. तिसटाचार्य

217. मलावष्टंभ में है।

A. कुर्मासन B. वज्रासन C. शीर्षासन D. सिध्दासन

218. मुलिनी संख्या है।

A. 16 B. 6 C. 19 D. 82

219. अक्षिपुट पे छेदन है।

A. तिर्यकच्छेद B. चंद्रमण्डल C. अर्धचंद्र D. स्वस्तिक

220. उपपत्या अनुपपत्या है।

A. चिन्त्यम B. विचार्य C. उह्य D. ध्येयम

221. सर्वापचारसहा अग्नि है।

A. सम B. विषम C. तीक्ष्ण D. मध्यम

222. विकल्प सामर्थ्य ------- में होता है।

A. रस B. वीर्य C. द्रव्य D. विपाक

223. अचल सिराज ग्रंथी होती है। (सु.नि.11)

A. साध्य B. याप्य C. असाध्य D. कृच्छसाध्य

224. नित्य धारण गंडुष है।

A. तैल B. मांसरस C. Both D. जल

225. चरक के अनुसार स्तनपान कबसे करेगे।

A. 1st day B. 2nd day C. 3rd day D. 4th day

226. यन्त्र प्रकार है। (सु.सु.7)

A. 3 B. 6 C. 10 D. 12

227. चरकोक्त छर्दि प्रकार है।

A. 2 B. 3 C. 4 D. 5

228. जुगु चिकित्सा किस रोग में करते है

A. ज्वर B. राजयक्ष्मा C. प्रमेह D. कूष्ठ

229. Inspiratory Reserve Volume is

A. 500 ml B. 1500 ml C. 2000 - 3000 ml D. 4500 ml

230. काश्यपोक्त ओज प्रमाण - in अंजली

A. ½ B. 1 C. 4 D. 6

231. शरीरव्यापी कला

A. मांसधरा B. रसधरा C. शुक्रधरा D. रक्तधरा

232. तृणशून्य पयार्य है। ------ का

A. केतकी B. नारिकेल C. वंश D. None

233. Following drug is newly proved usefal in Parkinsons disease

A. एरण्ड कर्कटी B. कपिकच्छू C. करवीर D. प्रियंगू

234. अ.हृ. ने ओज को कहा है।

A. परमतेज B. शुक्र सार C. शुक्रमल D. धातुस्नेह

235. धातू के स्वाभविक वर्ग किस ग्रंथ में वर्णित है।

A. रसार्णव B. रसकामधेनु

C. रसोपनिषद D. याज्ञवल्क संहिता

236. संजिवनी वटी की विसूचिका में मात्रा

A. 1 - 1 वटी B. 2 - 2 वटी C. 3 - 3 वटी D. 4 - 4 वटी

237. गतिसंग कीस आवृत वात का लक्षण है। सुश्रुत

A. कफावृत्त व्यान B. पित्तावृत अपान C. पत्तावृत व्यान D. पित्तावृत समान

238. Festinating gait found in

A. Alzhimer B. Syphilis C. Parkinsonisum D. None

239. शिलाजीत सेवन में अपथ्य।

A. कुलत्थ B. कपोत C. युष D. मद्य

240. लक्ष्मी विलास तैल रोगाधिकार है। यो. र.

A. क्षय B. प्रतिश्याय

C. वातव्याधि D. शिरोरोग

241. हरितकी का कौनसा भेद रेचन के लिए निर्देशित है।

A. विजया B. अभया C. चेतकी D. जिवन्ती

242.. काश्यप संहिता का प्रतिसंस्कर्ता है।

A. वृ. जीवक B. अनायस C. वात्स्य D. काश्यप

243. Vit K की बालक में मात्रा है।

A. 0 - 5 mg B. 1 mg C. 2 mg D. 0.5 mg

244.विक्लेदकृत है ।
A. मुत्र B. स्वेद C. वसा D. मेद
245.शीतस्पर्श महाभूत है ।
A. आप B. पृथ्वी C. वायु D. आकाश
246. सम्यक दग्ध में लगाते है। (सु.सु.12)
A. मधु B. सर्पि C. मधु सपि D. यष्टीमधु
247. कपोतवर्णा दग्ध है। (सु.सु.12)
A. त्वक B. मांस C. अस्थि D. None
248. स्थिरचिपिटीका ------- व्रण है । (सु.सु.23)
A. रूढ B. रूह्यमान C. शुध्द D. None
249. कर्म बस्ति में अनुवासन की संख्या है। (च.सि.1)
A. 10 B. 8 C. 18 D. 9
250. त्र्युषण है।
A. त्रिकटु B. त्रिलवण C. त्रिगंध D. त्रिमद

Associate CET-2012 (Maharashtra) A.M.A.M.
(स्मृती पर आधारित)

1. सूतिका रोगों की संख्या ---- है ।
a. 50 b. 64 c. 52 d. 74
2. ------ का पिततैला पयार्य है ।
a. लांगली b. सहचर c. ज्योतिष्मती d. लताकरंज
3. वातरक्त में ------ बढता है।
a. ASO Titre b. Serum Urea
c. Serum Creatinine d. Serum Uric Acid
4. शारंगधर संहिता कितने खंडो में विभाजित है।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
5. Injury to the---nerve causes carpel tunnel syndrome
a. Ulnar b. Radial c. Median d. None
6. Respiratory depression is caused by------
a. Atropin b. Aminophylin
c. Both A+B d. Pentazocine
7. Sebacious cyst is a --------
a. Mucous Cyst b. Pilonidal Sinus
c. Retension Cyst d. Distension Cyst
8. Co - lateral Circulation is best formed through --------
a. Muscle b. Fascia c. Skin d. Bones
9. निसर्गोपचार में जल चिकित्सा पर विशेष योगदान है ।
a. एडोल्फ जस्ट b. आर्नाल्ड खिली
c. लूई कूने d. None
10. बाह्यवृत्ति: श्वासा ------। योगदर्शन
a. रेचन: b. पूरक: c. कुम्भक: d. सभी
11. वाग्भट विशिर्ण द्विजबंधन यह लक्षण है ।
a. वर्धन b. महाशौषिर c. परिदर d. दंतवेष्टक
12. यकृत प्लीहा किस स्त्रोतस का मूल स्थान है ।
a. रक्तवह b. रसवह c. प्राणवह d. अन्नवह
13. कौन से दोष का प्रकोप आशयापकर्ष गती में होता है ।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज
14. स्तन्य शोधन द्रव्य है ।
a. पाठा b. शतावरी c. मधर d. हरिद्रा
15. मातृकादोष पयार्य है ।
a. पूतना b. अन्धपूतना c. अहिपूतना d. गन्धपूतना
16. विरेचन श्रेष्ठ औषधी है ।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज
17. रसोन के बीज का रस होता है ।
a. लवण b. कषाय c. मधुर d. तिक्त
18. चिप्प से संबधीत है ।
a. नख b. नासा c. दंतमूल d. ओष्ठ
19. अणुतैल की नस्यार्थ मात्रा
a. 1 कर्ष b. 8 drop c. 1/2 पल d. 6 drop
20. 'Long acting barbiturate है ।
a. Phenobarbitone b. Thiopentone
c. Hexobarbitone d. Amylobarbitone
21. The Spinal cord ends at
a. L_{12} -L_1 b. L_1 -L_2 c. L_2 -L_3 d. L_3 -L_4
22. षटकर्म में प्रधान है ।
a. बस्ति b. नौली c. नेती d. कपालभाती
23. निम्न में जिव्हागत व्याधि है ।
a. बलास b.वलय c. अलास d. सभी
24. व्याधि का पयार्य है । a. संस्थान b. समुत्थाप्न c. आमयd . आम
25. श्रोत्रेंद्रिय से संबधित महाभूत है ।
a. वायू b. जल c. पृथ्वी d. आकाश
26. वातज रोहिणी असाध्य काल in days ?
a. 1 b. 3 c. 4 d. 7
27. नारिकेल लवण रोगाधिकार है ।
a. अर्श b. प्रतिश्याय c. कास d. परिणाम शूल
28. मुत्र निर्मिती वर्णन संदर्भ है । सुश्रुत
a. सुत्र b. उत्तर c. निदान d. चिकित्सा
29. (डल्हण) अस्थिधरा और -- कला एक ही है ।
a. रक्त धरा b. पुरीषधरा c. मांसधरा d. पित्तधरा
30. सुषुम्नाको --- कहा है । (ध्यानबिन्दुपनिषद)
a. ब्रह्मविद्या b. ब्रह्मनाड़ी c. योगवल्लभा d. उपरोक्त सभी
31. शुक्रवह स्त्रोत का मुल स्थान है । सुश्रुत
a. स्तन व वृषण b. स्तन व शेफ c. मेढ व वंक्षण d. वृषण व शेफ
32. गुदकण्डू लक्षण ----कृमी के कारण होता है ।
a. Hook Worm b. Thread Worm
c. Round Worm d. Whip Worm
33. निम्न में रक्तपित्त में श्रेष्ठ है ।
a. वासा b. कूटज c. भल्लातक d. दूर्वा
34. कौन से ऋतू में बल उत्तम रहता है ।
a. वर्षा b. शरद c. हेमंत d. ग्रीष्म
35. कूपिलू का Chemical constitueut है ।
a. Brucin b. Loganin c. Strichuine d. All
36. बालक का वजन कौन से मास में तिनगुणा होता है ।
a. 8 b. 12 c. 6 d. 18
37. चरक के अनुसार कोष्ठांग संख्या
a. 15 b. 9 c. 3 d. 12
38. मांस का आश्रयाश्रयी संबध है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोषज
39. सभी मूढगर्भ भेद है । अपवाद
a. किलक b. परिघ c. बिजक d. उल्बक
40. Placenta expulsion time --------
a. 30 min b. 45 min c. 15 min d. 60 min

41. यकृत को कुल --- पृष्ठ (surface . होते है।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

42. The post gastrectomy dumping syndrome is due to
a. Hypoglycemia b. Serotonin release
c. Sudden Hypoglycemia d. Small Gastric pouch

43. The testes descends up-to ----------in 8th Month of foetal age
a. Scrotum b. Deep Inguinal Ring
c. Inguinal Canal d. Superficial Inguinal Ring

44. अतिमद्यपान यह यकृतदाल्योदर का हेतू है।
a. उभय b. दोष c. सन्निकृष्ट d. व्याधी

45. ------- Muscle is also known as 'Peripheral Heart'
a. Gastrocnemius (जंघापिण्डिका गुर्वी)
b. Soleus (जंघापिण्डिका लघ्वी)
c. Plantaris (जंघापिण्डिका तृतीया)
d. Tibialis Postreior (जंघापश्चिमा)

46. प्रायःकफज विकार में उपयोगी है।
a. पिप्पली b. शूण्ठी c. भल्लातक d. मरिच

47. Baby recaognizes mother at -------- month
a. 2 b. 3 c. 4 d. 6

48. शिर में सेवनी संख्या है।
a. 3 b. 5 c. 8 d. 7

49. हिगुंल का रासायनिक सुत्र है।
a. Hg_2S b. Hg_2S c. HgS d. HgO

50. Vit. E पयार्यनाम है।
a. Niacin b. Thiamine c. Riboflavin d. Tocoferol

51. -------- यह सभी दुःख का हेतू है।
a. उपधा b. धन c. मृत्यू d. व्याधी

52. चरक संहिता 1 से 4 अध्याय -- चतूष्क मे समविष्ट है।
a. रोग b. भेषज c. कल्पना d. स्वास्थ्य

53. Small bowel perforation in tropical countries is due to ----------
a. Typhoid b. Carcinoma
c. Meckels Diverticulum d. Crohn' s Disease

54. मारिन्गिन कौनसे वनस्पती में मिलता है ?
a. मायफल b. ममीरा c. शोभांजन d. कपिकच्छु

55. आमाशयगत वात की चिकित्सा
a. बृंहण b. बस्ति c. स्वेदन d. लंघन

56. स्तनविद्रधि का आरगनिझम --- है।
a. Streptococcus b. Bacteroids
c. Sterile Abscess d. Staph Aureus

57. निम्न में से षंडग पनिय में है।
a. चंदन b. उशीर c. शठी d. तुलसी

58. सम्यक स्निग्ध लक्षण है।
a. वातानुलोमन b. दिप्ताग्नी c. वर्च असंहत d. सभी

59. वातरक्त की श्रेष्ठ चिकित्सा है।
a. वमन b. विरेचन c. बस्ति d. रक्तमोक्षण

60. चरक के अनुसार प्रत्यंग संख्या
a. 15 b. 65 c. 56 d. 46

61. स्नेहपाक कल्पना में औषधी द्रव्य कल्क और द्रव इनका प्रमाण
a. 1:8:32 b. 1:2:4 c. 1:16:32 d. 1:4:16

62. Author of vaidya paribhasha pradeep is ---
a. Gangadhar b. Govindas sena
c. Jagannath Shukla d. Upendranath Das

63. संप्राप्ति भेद। चरक
a. 5 b. 4 c. 3 d. 6

64. रजस्वला स्त्री कों नस्य देने से ऋतुव्यापद होते है यह -- ने बताया है।
a. चरक b. सुश्रुत c. काश्यप d. वाग्भट

65. 'Winging of Scapula' is due to paralysis of ------ muscle
a. Trapezius (पृष्ठच्छदा)
b. Latissimus dorsi (कटिपार्श्वच्छदा)
c. Serratus anterior (अस्त्रा अग्रिमा)
d. Rhomboides (अंसापकर्षिणी)

66. The shape of empty stomach is like
a. Inverted J b. C c. J d. S

67. ताम्र भस्म दोष ?
a. 6 b. 8 c. 9 d. 12

68. आमदोष भेद। चरक
a. 5 b. 4 c. 3 d. 2

69. Glomerular Filteration Rate(GFR) is ---
a. 135 ml/min b. 138 ml/min
c. 110 ml/min d. 125 ml/min

70. चंद्रप्रभा वटी रोगाधिकार
a. प्रमेह b. शोथ c. उदर d. बहूमूत्रता

71. अपत्यपथ में पेशी संख्या है।
a. 4 b. 2 c. 3 d. 10

72. मांसल प्रदेश में सिरावेध प्रमाण है।
a. 1/2 यव b. 1 यव c. 11/2 यव d. 2 यव

73. प्रमेह भेद है।
a. 10 b. 20 c. 40 d. 30

74. पाण्डू के भेद है।
a. 5 b. 4 c. 3 d. 2

75. कृमिज शिरोरोग नस्यार्थ द्रव्य.
a. रक्त b. वसा c. गोघृत d. तील तैल

76. जनपदोध्वंस का ---- बलवान घटक है।
a. काल b. जल c. देश d. वायु

77. --- निर्विष जलौका है।
a. कपिला b. इंद्रायुधा c. कर्बुरा d. अलगर्दा

78. अभेषज प्रकार
a. 2 b. 4 c. 6 d. 8

79. स्नेह विचारणा
a. 12 b. 64 c. 20 d. 24

80. हृदय में --- चक्र होता है।
a. आज्ञा b. अनाहत c. मूलाधार d. मणिपूर

81. हृद्य महाकषाय में नही है।
a. अर्जुन b. बदर c. दाडीम d. मातुलुंग

82. देशबन्ध चित्तस्य ----।
a. ध्यान b. धारणा c. समाधि d. संयम

83. वत्सनाभ का शोधन किस में करते है।
a. तक्र b. कांजी c. गोमूत्र d. त्रिफला क्वाथ

84. निम्न मे से अत्यधिक उपयोग वर्ज्य है। चरक
a. पिप्पली b. क्षार c. लवण d. उपरोक्त सभी
85. महानेत्र यह लक्षण --- सारता का है।
a. रस b. मांस c. मेद d. मज्जा
86. गल्लीर पयार्य है। (सुश्रुत)
a. दुःखवर्धन का b. उत्पात का
c. उन्मन्थ का d. परिपोट का
87. रसरत्नसमुच्चय के लेखक है।
a. चरक b. सुश्रुत c. काश्यप d. रसवाग्भट
88. निम्न में सदंशकोर संधि (Hinge joint) है।
a. जानुसंधी b. कूर्पर संधी
c. अंगुष्ठमूल संधी d. प्रथम एवं द्वितीय ग्रीवा कशेरूका संधी
89. निम्न में से कौनसा व्याधि चरक द्वारा वर्णित नही है।
a. आमवात b.ज्वर c. कुष्ठ d. पाण्डू
90. Eustachian tube connects the tympanic cavity with
a. Larynx b. Nasopharynx
c. Laryngopharynx d. Oropharynx
91. प्रसादन अंजन के लिए ---अंजनशलाका का प्रयोग करते है।
a. कांस्य b. लोह c. ताम्र d. सुवर्ण
92. रसधातू का प्रमाण --- अंजली है।
a. 8 b. 10 c. 11 d. 9
93. शारंगधर के अनुसार पानीय क्षार का स्वरूप है।
a. द्रव b. अवलेह c.चुर्ण d. क्वाथ
94. शिरोधारा --- अंगुल अंतर से करनी चाहिए।
a. 2 b. 4 c. 3 d. 6
95. संध्याकालीन वर्ज्य कर्म है।
a. पठण b. चंक्रमण c. दंतधावन d. नस्य
96. तृतीय क्रियाकाल है।
a. प्रकोप b. प्रशम c. प्रसर d. स्थानसंश्रय
97. काश्यप संहिता का पयार्य नाम है।
a. हिरण्य तंत्र b. वैद्यक सर्वस्व
c. वृध्द काश्यप तंत्र d. वृध्दजीवक तंत्र
98. बहूदोष में चिकित्सा है।
a. लंघन b. लंघनपाचन c. दोषवसेचन d. उपरोक्त सभी
99. उत्संगिनी व्याधीका लक्षण – यह है।
a. अमुखी b. आंतरमुखी c. संकीर्ण मुखी d. बहिर्मुखी
100. भृंगराज है।
a. केश्य b. वर्ण्य c. कण्ठ्य d. मेध्य
101. वात पित्त शामक रस है।
a. तिक्त b. मधुर c. कटू d. कषाय
102. अरिष्ट औषध द्रव्य के ---- से बनाया जाता है।
a. फाण्ट b. हिम c. स्वरस d. क्वाथ
103. वसंत ऋतूमें सुर्यसंताप यह कफ का --- हेतू है।
a. उत्पादक b. व्यंजक c. प्रकोपक d. निज
104. विष प्रकोपक ऋतू है।
a. शरद b. ग्रीष्म c. शिशिर d. वर्षा
105. योनी व्यापद के भेद है।
a. 2 b. 6 c. 4 d. 8
106. अतिनिद्रा a. कफवृध्दी b. कफक्षय c. वातक्षय d. पित्तवृध्दी
107. प्रवर शुध्दी वमन वेगिकी है।
a. 5 b. 15 c. 10 d. 20
108. लोकायत दर्शन के कर्ता है।
a. वर्धमान महावीर b. चार्वाक
c. गौतम बुध्द d. कपिलमुनी
109. 'Wrist drop' is the most outstanding feature of--injury
a. अंतर्बाहुका b. कक्षाधरा c. बहिर्बाहुका d. मध्यबाहुका
110. चरक के अनुसार नाभीरोग संख्या है।
a. 4 b. 6 c. 10 d. 8
111. फल पाकान्ता नष्ट होता है।
a. वनस्पती b. वानस्पत्य c. वीरूध d. औषध
112. ग्रंथी दूष्य है।
a. रक्त b. मांस c. मेद d. उपरोक्त सभी
113. शोणितफेन प्रभव: --- ।
a. फुप्फुस b. हृदय c. यकृत d. प्लीहा
114. बिंदू व रेखा है।
a. गोमेद b. वज्रदोष c. रत्नदोष d. सभी
115. गुडूच्यादी तैल पिचू धारण -- योनी रोगमे करते है।
a. वातज b. पित्तज c. कफज d. त्रिदोषज
116. Choice of Treatment in 2nd degree piles is ---
a. Banding b. Heamorrhoidectomy
c. Cryosurgery d. Sclerotherapy
117. नाभस द्रव्य कर्म है।
a.सौषिर्य b. दाह c. रौक्ष्य d. विष्यंद
118. Common site of Nose bleeding is
a. Little's area b. Kieselbaek's area
c. Both d. None
119. कर्णवेधनसंस्कार काल है।
a. 2nd,3rd Month b. 8th,10th Month
c. 3rd,4th Month d. 6th,7th Month
120. मूर्धतैल के भेदो का वर्णन किया है।
a. चरक b. वाग्भट c. सुश्रुत d. सभी
121. कानून के अनुसार --- उमर से कम खुदकी पत्नी के साथ किया हुआ संभोग बलात्कार माना जाता है।
a. 14 b. 16 c. 15 d. 18
122. मांसमेदस्थित ज्वर चिकित्सा है।
a. विरेचन, उपवास b. वमन, उपवास
c. निरूह, अनुवासन d. सेक, प्रदेह
123. सुखं संचार्यते या मात्रा सा --- स्मृता।
a. लेप b. कवल c. गंडूष d. प्रतिसारण
124. अपूष्पा फलवन्तो है।
a. विरूध b. औषधी c. वनस्पती d. वानस्पत्य
125. श्लेष्महरणां श्रेष्ठ।
a. विरेचनं b. वमनं c. रक्तमोक्षण d. बस्ति
126. हरितकी सेवन निषेध है।
a. अजीर्ण b. वैवर्ण्य c. वैस्वर्य d. स्त्रोतोविबन्ध
127. नेत्रस्थित मंडल, पटल, संधी इनकी संख्या क्रमश:-- है।
a. 5, 5, 6 b. 5, 6, 6 c. 6, 5, 6 d. 6, 6, 6
128. हृत्पार्श्व पीडा --- के लक्षण है।
a. रसक्षय b. रक्त क्षय c. मज्जाक्षय d. पुरिषक्षय
129. आहारद्रव्य ----- प्रधान होते है।
a. गुण b. रस c. वीर्य d. विपाक

130.सुवर्णप्राशन से बालक ------ मास में परममेधावी होता है ।
a. 6 b. 1 c. 2 d. 12
131.स्तन्य का प्रमाण -- अंजली है ।
a. 3 b. 1 c. 2 d. 4
132. -----यह सबसे लंबी मस्तिष्किय नाडी है ।
a. Vagus Nerve b. Facial Nerve
c. Trigeminal Nerve d. Auditory Nerve
133. ज्वर संख्यासंप्राप्ति है ।
a. 2 b. 3 c. 7 d. 8
134. Lead poisoning is mostly of ------- type.
a. Chronic b. Not specific
c. Acute d. Sub-acute
135.प्रायेण सर्व नयनामयास्तु भवन्ति ---- निमित्तमूला:।
a. अभिष्यंद b. पाकात्यय c. अधिमंथ d. तिमिर
136.षटक्रिया काल का वर्णन ---- ने किया है ।
a. चरक b. वाग्भट c. सुश्रुत d. काश्यप
137.सामन्यत:- मार्ग से विषाक्तता अधिक वेग से होती है ।
a.मुख b. त्वचा c. श्वसन d. गुद
138.कफ का गुण है ।
a. तेज b. चल c. कटु d. मृत्स्न
139.सितोपलादि चूर्ण का रोगाधिकार है ।
a. राजयक्ष्मा b. कास c. शोष d. श्वास
140.अस्थि विनष्ट शल्य निर्हरण कर्म है । यंत्र का ?
a. नाडी b. सदंश c. स्वस्तिक d. शलाका
141.स्वरयंत्र में कुल --- तरूणास्थीयो की संख्या है ।
a. 4 b. 6 c. 9 d. 7
142.कृमी ग्रंथी चिकित्सा है ।
a. वेधन b. लेखन c. भेदन d. छेदनं
143.--- निर्विष जलौका है ।
a. कपिला b. इंद्रायुधा c. कर्बुरा d. अलगर्दा
144.क्षणभंगुरवाद किस दर्शन का है ।
a. जैन b. चार्वाक c. बौध्द d. सांख्य
145.अभ्रक के वर्ण अनुसार --- भेद होते है ।
a. 2 b. 16 c. 4 d. 8
146. --- यह व्याधी सहज प्रकारका होता है ।
a. खंडौष्ठ b. मांसज ओष्ठ प्रकोप
c. वातज ओष्ठ प्रकोप d. रक्तार्बुद
147.-- यह अष्टांगहदय का प्रथम अध्याय है ।
a. दिनचर्या b. दीर्घजीवितीय
c. वेदोत्पत्ती d. आयुष्कामीय
148.उर्ध्वग रक्तपित्त हेतू है ।
a. स्निग्ध-उष्ण b. रूक्ष-उष्ण c. स्निग्ध-शीत d. रूक्ष-शीत
149.सर्वग्रहमात्रा और परिग्रहमात्रा यह -- के प्रकार है ।
a. देश b. संयोग c. राशी d. काल
150. मूल का संग्रह कौनसे ऋतु में करते है । चरक
a. वसंत- हेमंत b. वर्षा - हेमंत c. वर्षा - वसंत d. ग्रीष्म - शिशिर
151.रस धातू का कर्म है ।
a. प्रणिन b. जिवन c. लेपन d. धारण
152. Which type of Guggulu is used in treating Human beings?
a. Kanak b. Padam c. Kumuda d. Mahanil
153.गर्भिणी को --- मास में अनुवासन बस्ति का उपदेश दिया है । चरक
a. 2 b. 4 c. 7 d. 9
154.Oesophagus अन्ननलिका की लंबाई --- से.मी.होती है ।
a. 25 b. 15 c. 20 d. 30
155. द्रव्य पाचन पूर्व शरिर में फैलता है उसे कहते है ।
a. व्यवायी b. सूक्ष्म c. प्रमाथी d. विकासी
156.हेमंत ऋतु में ऋतु हरितकी अनुपान -- है ।
a. शर्कर b. गुड c. पिंपली d. शुण्ठी
157.पृथ्वीपर स्थित जला को ------ कहते है ।
a. अम्भ b. मर c. आप d. मरीची
158.आयु का पर्यायी नाम है ।
a. जिवित b. धारी c. Both d. आत्मा
159.शुल्बारी पर्यायी नाम है ।
a. ताम्र b. हरताल c. वंग d. गंधक
160.Muscles responsible for 'Accomodation' are ---
a. Ciliary b. Sphincter papillae
c. Dilator papillae d. Orbicularis Oculi
161.आढ्यरोग पर्याय है ।
a. वातरक्त b. हृद्रोग c. प्रमेह d. स्थौल्य
162.--- यह त्रिरूप राजयक्ष्मा का लक्षण है ।
a. अतिसार b. ज्वर c. अरूचि d. स्वरभेद
163.आयुर्वेदीय संततीनियमन योग वर्णन ।
a. चरक b. सुश्रुत c. काश्यप d. योगरत्नाकर
164.मृदूकर्म का प्रयोग स्थल है ।
a. कठिण एवं अल्प मृदुमांस व्रण b. उत्स्न्न एवं मृदुमांस व्रण
c. मृदुमांस व्रण d. उपरोक्त सभी
165.निम्न मे से किसका शुक्र अधिष्ठान है।
a. शतपदी b. गृहगोधिका c. वृश्चिक d. मूषक
166.जल शीतीकरन का उपाय है।
a. उदकप्रक्षेपण b. अग्निकथन c. फलक d. तप्तलोहनिर्वापण
167.क्षीरप अवस्था का काल है।
a. 0-1 yrs b. 0-2 yrs c. 1-2 yrs d. 1-4 yrs
168.धन्वन्तरी पित्तधराकला का स्थान है।
a. अन्याशय b. आमाशय c. ग्रहणी d. इनमें से नही
169. प्रत्यक्ष ज्ञान के बाधक कारण -- है ।
a. 8 b. 5 c. 6 d. 10
170.भल्लातक के दश योगों में समावेश नही है।
a. पलल b. क्षीर c. नवनीत d.क्षौद्र
171.मिश्रं पथ्यम अपथ्यम च भुक्तं -- मतम । (च. चि.15)
a.विषमाशन b. अनशन c. समशनं d. अध्यशन
172.अष्टांगसंग्रहकार द्वारा वर्णित सुश्रुत से अलग बंध का प्रकार है ।
a.कोश b. दाम c. उत्संगी d. अनुवेल्लीत
173.स्त्रीशुक्र का वर्णन------ इन्होंने किया है ।
a. चरक b. सुश्रुत c. काश्यप d. भावप्रकाश
174.लिंगविनिश्चय के लिए सबसे उपयुक्त होनेवाला अस्थि ---यह है ।
a. Skull b. Pelvis
c. Sternum d. Long Bones
175.प्रभाकर वटी रोगधिकार है ।
a.प्रमेह b. कामला c. उन्माद d. हृद्रोग
176.अफीम अहिफेन का अंग है ।
a. फल b. पर्ण c. मूल d. अपक्क फल निर्यास
177.चरक के अनुसार विशेष मेध्य द्रव्य - है ।
a. गुडूची b. यष्टीमधु c. शंखपुष्पी d. मण्डूकपर्णी

178.कुश, काश,नल,दर्भ,काण्डेक्षु है ।
a. मध्यमपंचमूल b. लघुपंचमूल c. तृणपंचमूल d. कंटकपंचमूल
179.उदर में रहनेवाले तेज को -- तेज कहते है ।
a. आकरज b. दिव्य c. भौम d. औदार्य
180.गुंजा ----- विष है।
a. फल b. बीज c. मुल d. कन्द
181.अणु तैल निर्माण में -- का उपयोग किया जाता है।
a. गोदुग्ध b. अजा दुग्ध c. माहिष दुग्ध d. स्त्री दुग्ध
182.कुपीपक्क रसायन --- यंत्र में तैयार करते है ।
a. पालिकायंत्र b. पातालयंत्र c. वालुकायंत्र d.स्वेदनयंत्र
183.रत्नवर्ग में समविष्ट द्रव्य है।
a. वैडूर्य b. कपर्दिका c.मोरचूद d. गिरीसिंदूर
184.शुकधरा कला का स्थान है ।
a. आमाशय b. पववाशय c. शरीर d. सन्धी
185.छिन्न व्रण --- में अधिक होता है ।
a. लंबाई b. गहराई c.चौडाई d. ऐसा नियम नही
186.आयुर्वेद किसका उपवेद है ।
a. सामवेद b. ऋग्वेद c.यजुवेद d. अथर्ववेद
187.आप महाभूत व महागुण संबध है ।
a. सत्व, तम b. सत्व, रज c. रज, तम d. सत्व, रज, तम
188.सौवीरांजन का प्रयोग कब करना चाहिए ।
a. हप्ते में 1 बार b. दिन में 3 बार c. मास में 1 बार d. हर दिन
189.सुश्रत संहिता की चक्रपाणी टीका का नाम --- है ।
a. मधुकोश b. विद्यातोनी c. पंजीका d. भानुमती
190.निम्न में भस्मपरीक्षा है ।
a. ग्रास b. धान्याभ्रक c. तंतूमत्त्व d. अपुनर्भवत्व
191.----श्रेष्ठ वाजीकर द्रव्य है ।
a. कवचबीज b. पिप्पली c. गुडुचि d. शतावरी
192.शुक्तीका व्याधि दोष दूष्टी है।
a. पित्त b. रक्त c.वात d. कफ
193.नति छिन्न नति भिन्न किसका लक्षण है ।
a. भिन्न व्रण b. क्षत व्रण c. छिन्न व्रण d. सभी
194.विपाको --- ।
a. निपातात b. कर्म निष्ठया
c. अधिवासात d. निपात, अधिवासात च
195.लिंगनाश शस्त्रकर्म में है ।
a. शलाका b. बडिश यंत्र c. व्रीहीमुखशस्त्र d. मंडलाग्र शस्त्र
196.शारंगधर के अनुसार वचा का कर्म है।
a. लेखन b. अभिष्यंदी c. प्रमाथी d. विषघ्न
197.पित्तज विसर्प वत चिकित्सा है।
a. सम्यक दग्ध b. दुर्दग्ध c.अति दग्ध d. सभी
198.अग्नि कर्म योग्य व्याधि है ।
a. अलस b. कंदर c. अरूंषिका d. तिलकालक
199.तां योगिमिती मन्यन्ते स्थिरामिंद्रियधारणम यह व्याख्या किसने की है।
a. पतंजलि b. कठोपनिषद c. गीता d. चरक
200.आध्मान का लक्षण है ।
a. वातवृध्दी b. कफवृध्दी c. वातक्षय d. मुत्रवृध्दी
201.----यह पारद का नैसर्गिक दोष है ।
a. बिंदू b. मल c.धूम d. पर्पटी
202.त्वक उपधातू है ।
a. रस का b. मांस का c. मेद का d.रक्त का
203.कौनसी कामला में तिलपिष्टनिभ मल प्रवृत्ती होती है ।
a. बहुपित्त b. रूध्दपथ c. कुभकामला d. सभी
204.पित्त का विशेष स्थान है । चरक
a. यकृत b. प्लीहा c. नाभी d. आमाशय
205.----यह पारद का नैसर्गिक दोष है ।
a. बिंदू b. मल c.धूम d. पर्पटी
206.आक्षेप यह लक्षण ------ ग्रहबाधेमें पाया जाता है ।
a. पितृग्रह b. पुतनाग्रह c. अन्धपुतनाग्रह d. श्वग्रह
207.श्रेष्ठ कुष्ठघ्न द्रव्य ----- है।
a. मंजिष्ठा b. निंब c.सारीवा d. खदिर
208.जातमात्र परिचर्या में वाग्भट के अनुसार कंठविशोधनार्थ द्रव्य - बताया है।
a. मदनफल b. सैंधव मधु c.सैंधव घृत d. मधु
209.व्रणशोफ की पक्व अवस्था का लक्षण है।
a. त्वक सवर्णता b. वलीप्रादुर्भव c.शितशोफता d. सभी
210.मांसगत दहन उपकरण है।
a. गोदन्त b. शलाका c.हस्तिदन्त d. जाष्वौष्ठ
211. जीर्णज्वर में ------- आहार से उपचार करना चाहिए ।
a. गुरू b. प्रमाथि c. बल्य d. इनमें से नही
212.कृष्णमंडलका वर्ण पक्वजम्बूनिभं कौनसे व्याधि में होता है।
a. अव्रण शुक्ल b. अजकाजात c.अक्षिपाकात्यय d.सव्रण शुक्ल
213. ---धातूविषबाधा के लक्षण विसूचिका जैसे होते है ।
a. Mrecury b. Arsenic c. Lead d. Copper
214.स्थानसंश्रय अवस्था में ------ की उत्पत्ती होती है ।
a. पूर्वरूप b. रूप c. उपशय d. संप्राप्ती
215.वक्त्र नाडी (Facial nerve) की शाखाए होती है ।
a. 6 b. 3 c. 2 d. 5
216.कौन से व्याधि की अग्निदिपण चिकिसा प्रधान है ।
a. पारिगर्भिक b. कार्श्य c. फक्क d. बालशोष
217.पित्त प्रकृती व्यक्तीओं की अग्नी होती है।
a. विषम b. तीक्ष्ण c. मध्य d. मंद
218. प्राकृत प्रसवमें होनेवाला रक्तस्त्राव का प्रमाण--- C.C. होता है ।
a. 100 b. 250 c. 350 d. 300
219. ग्रहरोग संख्या वाग्भट
a. 10 b. 12 c. 8 d.6
220.स्त्री उत्तर बस्ति नेत्र लंबाई अंगुल में
a. 10 b. 15 c. 20 d. 5
221. कुष्ठ व्याधी में दोष दुष्य इनका द्रव्यसंग्रह है ।
a. 2 b. 3 c. 8 d. 7
222.हस्तीदंत मसी का उपयोग है ।
a. छेदन b. व्रणरोपण c. रोमशातन d. रोमसंजनन
223.गतीभेद से रक्तपित्त के भेद है ।
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
224.आर्तव दुष्टी के भेद है । a. 8 b. 5 c. 3 d. 6
225.विरसता स्तन्यदुष्टी -- दोष से है ।
a. वात b. कफ c. पित्त d. त्रिदोषज
226.सुश्रुत उत्तरतंत्र अध्याय संख्या
a. 100 b. 66 c. 86 d. 30
227.पल्स पोलिओ लसी करण कार्यक्रम - इस साल भारत में शुरू हुआ ।
a. 1989 b. 1992 c. 1998 d. 1995
228. Redactor of charak samhita is
a. चरक b. वाग्भट c. इंद्र d. अग्निवेश

229. Atropine sulphate is ---------
a. Miotic b. Mydriatic & cycloplegic
c. Analgesic d. Mydriatic

230. Route of administrasion of BCG vaccine?
a. Intradermal b. Subcute
c. IM d. None

231. आर्तववह स्त्रोतोविध लक्षण है।
a. वंध्यत्व b. आर्तवनाश c. मैथूनासहत्व d. सभी

232. संधीप्रदेश में तीव्र स्पर्शासहत्व रहता है।
a. संधीगत वात b. आमवात c. क्रोष्टुकशिर्ष d. इनमें से नही

233. यह अनूर्जताविरोधी (अन्टीअलर्जिक) औषधी है ।
a. Theophylline b. Azithromycin
c. Phenaramine d. Salbutamol

234. निम्न में सभी अन्तर्वेगी ज्वर लक्षण है। अपवाद
a.अस्वेद b.दोषविनिग्रह c. सन्ध्यस्थिशूल d. मलप्रवृत्ती उत्क्लेश

235. षडधात्वमक पुरूष है।
a. पंचमहाभूत + आत्मा b. चिकित्साधिकृत पुरूष
c. Both d. None

236. अहिफेन का शोधन --- में द्रव्य है ।
a. गोक्षीर b.आर्द्रक स्वरस
c. गोघृत d. भृंगराज स्वरस

237. भेद के साथ होने वाले प्रत्यक्ष ज्ञान को कहते है ।
a.सविकल्पक b.निर्विकल्पक c. प्रकारक d. निप्रकारक

BHU Varanasi 2012

1. "Hikka" is the feature of
A. Guda Vidradhi B. Basti Vidradhi
C. Nabhi Vidradhi D. Pliha Vidradhi

2. Indicate the specific single feature of Guda - Vidradhi mentioned by Sushruta-
A. Arrest of flatus B. Arrest of feces
C. Arrest of urine D. High fever

3. We should protect after raktamokshana
A. Agni B. Vayu C.Rasa D. Dhatu

4. According to Sushruta which of the following is the correct feature of "pralepa"
A. Sheeta Tanu Avishoshi or Vishoshi
B. Ushna Sheeta Bahal & Vishoshi
C. Sheetoshna Picchila & Vishoshi
D.Ushna Sandra & Avishoshi

5. "Yavamadhyani" is the feature of
A. Vataj Arsha B. Pittaj Arsha
C. Shleshmaj Arsha D. Sahaj rsha

6. Twelve sites of the ojas have been described by
A. Bhela B. Harita C. Madhava D. Kashyapa

7. निद्रोपप्लुप्तेन तन्द्रायुक्तेन मनसा विषयग्रहणं is called
A. Turiyavasatha B. Features of vitiaied mana
C. Swapna D. Sushuptawastha

8. शीर्यन्त इव चास्थीनि दुर्बलानि च। प्रततं वातरोगीणि are the features of
A. Majja sara Purusha B. Asthi Kshaya
C. Majja Kshaya D. Meda Kshaya

9. स्निग्धमूत्रस्वेदस्वरं वष्हच्छरीरमायासासहिष्णु are the features of which of the following .
A. Meda Vriddhi B. Medasara Purusha
C. Majja Vriddhi D. Majjasara Purusha

10. परूषा स्फुटितरा म्लाना त्वगुक्षा are the features of which Kshaya.
A. Rasa Kshaya B. Kapha Kshaya
C. Majja Kshaya D. Rakta Kshaya

11. शब्दार्चिजल सन्तानवदणुना विशोषाणानुधावत्येव is described for which of the following.
A. Blood circulation B. Rasa circulation
C. Prana Vayu D. Majja circulation

12. अग्न्याशये भवेत पित्तमग्निरूप तिलोन्मितम पाचकम who has describedthis.
A. Kashyapa B. Sharangadhar
C. Chakrapni D. Jejjata

13. Implantation of the blastocyst in the uterus occurs on about
A. 5th -7th day after ovulation B. Just after ovulation
C. After 3rd day of ovulation D. Just before ovulation

14. Pacinian corpuscles are
A. Touch receptors B. Blood cells
C. Smell Receptors D. All

15. Which one of the following parts of the eye has the greatest concentration of rods
A. Iris B. Optic disc
C. Cilliary body D. Parafoveal Region

16. Which Renal calculi is not radio opaque
A. Uric acid B. Calcium oxalate
C. Tripal Phosphate D. Staghorn calculus

17. Intwisting of pedicle of ovarian cyst sign present in
A. Suker' s disease B. Summer' s disease
C. Trommer's disease D.Vanzetti's disease

18. Football sign is seen in
A. Porcelain GB B. Ascites
C. Pneumoperitoneum D. Portal vein thrombosis

19. Most common benign tumor of the breast in the reproductive years
A. Fibroadenoma B. Cyst
C. Lipoma D. Papilloma

20. Congenital fusion of cervical vertebrae is feature of
A. Klippel - Feil Syndrome B. Sprengel's deformity
C. Kocher's disease D. Lupus arthritis

21. The first successful kidney transplant was performed at Brigham Hospital Boston in the year
A. 1954 B. 1955 C. 1956 D. 1957

22. As per Charak Insects are generated from
A. Mala mutra of Sarpa B. Mala mutra of Godha
C. Mala mutra of Musak D. Mala mutra of Jalauka

23. Which one is symptom of dushi vish
A. Lalasrava B. Swasroga C. Kitibha D. Galagraha

24. Measurement of Manibandha Marma is
A. 2 angula B. 1 angula C. 3 angula D. ½ angula

25. According to Sushruta, Janu Marma Abhighata leads to.
A. Stabdhata B. Khanjata C. Shosa D. Pakshaghata

26. Brunner's glands are present in the submuocosa of the following
A. Stomach B. Duodenum C. Jejunum D. Ileum

27. All of the following are branches of the Vagus nerve in the neck except
A. The pharyngeal C. The left recurrent laryngeal
B. The superior laryngeal D. Cardiac

28. Name of the joint between first metacarpal of thumb & trapezium is
A. Saddle B. Condyloid C. Hinge D. Plane

29. The following nerve is transmitted through foramen of Rotundum
A. Maxillary nerve B. Facial nerve
C. Mandibular nerve D. Hypoglossal nerve

30. Which of the following bone does not take part in the formation of the medial longitudinal arch of the foot
A. Calcaneum B. Cuboid C. Talus D. Navicular

31. "मूर्च्छाऽतिसारो वमथु पिपासा शूलो भ्रमोद्वेष्टनजृम्भदाहा:।
वैवर्ण्यकम्पौ हृदये रुजश्च भवन्ति तस्यां शिरसश्च भेद।।"
This statement of Sushruta is related to-
A. Grahani Roga B. Hridroga
C. Visuchika D. Aamavata

32. "तत्पूर्वरूपं दवथु सिरायामोऽगगौरवम ।"
This statement is related to-
A. Shotha roga B. Daha roga
C. Vatarakta D. Aamavata

33. " जीर्णे जीर्यति चाघ्मानं भुक्ते स्वास्थ्यमुपैति च – "
This statement of Charaka is related to-
A. Parinamashula B. Vatika Grahani
C. Annadravashula D. Vatika shula

34. " तत्र आदिबल प्रवृत्ता ये शुक्रशोणिदोषान्वया कुष्ठार्श: प्रभृतय" In this statement of Sushruta the most appropriate diseases that may be included under the word प्रभृतय according to Dalhana
A. Tamaka Shvasa & Kshaya
B. Tamaka Shvasa & Meha
C. Meha & Kshaya
D. Tamaka Shvasa & Ashmari

35. According to Sushruta Paridaha as a symptom due to pitta manifested in which avastha during shatkriyakala
A. Prakopavastha C. Prakopa & Prasaravastha
B. Sanchayavastha D. Sthanasamshrayavastha

36. Hypotension, DIC and metabolic disturbances constitute the clinical triad of
A. Hypothyroidism B. Diabetes Mellitus
C. Septic Shock D. Pneumonia

37. Black water Fever is an important complication that occurs in the course of Malaria due to
A. Plasmodium malariae B. Plasmodium vivax
C. Plasmodium falciparum D. Plasmodium ovale

38. Which of the following is not a feature of Nephrotic syndrome
A. Hypolipidemia B. Proteinuria more than 3.5 gm/day
C. Lipiduria D. Hypoalbuminemia

39. Erythroblastosis fetalis occurs when
A. Mother is Rh + ve & fetus is Rh - ve
B. Mother is Rh - ve & fetus is Rh - ve
C. Father is Rh - ve & fetus is Rh + ve
D. Mother is Rh - ve & fetus is Rh + ve

40. An increased Reticulocyte count in peripheral Blood smear is a significant indicator towards
A. Iron deficiency anemia C. Hemolytic anemia
B. Folic acid deficiency anemia D. Acute blood loss

41. "Ulnar deviation of the fingers" and "swan-neck" deformity is seen in
A. Gouty Arthritis B. Rheumatoid Arthritis
C. Degenerative Arthritis D. Dupuytren Contracture

42. In obstructive liver disease total cholesterol is"
A. Increasaed B. Decreased
C. Ambiguous D. No relation

43. Total serum bilirubin value is
A. 1.2-2.2mg/dL B. 0.2-1.2mg/dL
C. 0.2-3.2mg/dL D. 0.1-0.8mg/dL

44. Erysipelas a bacterial infection of the upper dermis and superficial lymphatics is due to
A. Beta -Hemolytic streptococci
B. Erysipelothrix rhusiopathiae
C. Salmonella typhimurium D. Sarcoptes scabiei

45. According to acharya dalhana, "sarvanga gata rakta dusti" is to be treated with
A. Jalauka avacharana B. Pittahara chikitsa
C. Siraavyadha D. Prachhana chikitsa

46. According to Acharya Vagbhata in clinical conditions "Lalasrava danta katakatayana" Nasya is to be administered during.
A. Ratri B. Purvahna C. Madhyahna D. Aparahna

47. According to Acharya Susruta number of vaidya nimittaja vasti vyapats is
A. 11 B. 15 C. 44 D. 2

48. In Vamana vega pareeksha number of jaghanya vega is
A. 2 B. 4 C. 6 D. 8

49. Beejopaghataja klaibya is
A. Sukha sadhya B. Asadhya
C. Khruchchra sadhya D. None

50. "Pippali vardhamana Rasayana can be grouped in"
A. Kamya Rasayana B. Naimittika Rasayana
C. Ajasrika Rasayana D. None

51. According to Ayurveda Sara sangraha Muli (Mulaka) Kshara is indicated in
A. Kamala B. Ashmari C. Both D. None

52. Identify the drug used in respiratory disorders
A. Trivanga Bhasma B. Mandura Bhasma
C. Shankha Bhasma D. Shringa Bhasma

53. When used externally avalguja is indicated in
A. Shweta pradara B. Sheetapitta
C. Atisara D. Shwitra

54. Urddhva gata rakta pitta is to de treated with virechana & according to acharya chakrapani it is
A. Vikara anutpattikara chikitsa B. Rasayana chikitsa
C. Vyadhi pratyaneeka chikitsa D. Upadrava chikitsa

55. In dislocation of shoulder joint which type of bandage is applied
A. Kosha bandha B. Swastika bandha
C. Sthagika bandha D. Gophana bandha

56. In reference to Truteeyaka vishama jvara prushta grahi is due to vitiation of
A. Kapha - Pitta B. Vata - Kapha
C. Vata - Pitta D. Tridosha

57. "अभ्यंग कटुतैलेन सेकश्चोश्णेनवारिना " is the 'principle' of treatment of
A. Swetapradara B. Seetapitta
C. Sleepada D. Sthaulya

58. Pradarantaka lauha is indicated in
A. Pandu B. Parinamashula
C. Paanaajeerna D. Prameha

59. "Ghritamandlabho" is the feature of
A. Pitta - shleshmaj vrana B. vata - Pittaj vrana
C. Pitta -shonitaj vrana D. shleshma - shonitaj vrana

60. Optimal treatment for children with end -stage renal disease (ESRD). is
A. Peritoneal dialysis B. Early renal transplantation (RT. from a living related donor (LRD-RT).
C. Use of corticosteroid D. None

61. Which of the following disease has the features like- dysphoea, cough, suppression of Agni, vomiting, giddiness & abdominal distension
A. Agnimandya B. Kaphaja Kasa
C. Phakka D. Parigarbhika

62. वातेनध्मापित & सरुजा are the features of-
A. Nabhishotha B. Nabhivrana
C. Unnata - Nabhi D. Nabhitundi

63. According to Ayurveda, which of the following should be used to remove the Ulba from the body of the newborn child
A. Sarpi and ghrita B. Sarpi and Saindhava Lavana
C. Sarpi Vacha and Saindhava Lavana D. Baladi Taila

64. Which of the following disease is not the indication for the electuaries (लेहन) in infants-
A. Jaundice B. Insomnia C. Oliguria D. Emaciation

65. According to Kashyapa Samhita how much dose of drug should be given with madhu and sarpi in jatamatra [Newly born child]
A. Equal to one Amalaka B. Equal to two Kola
C. Equal to one Vidanga D. Equal to one Kolasthi

66. Which is shelf of Snehakalpa
A. 1 year B. 6 months C. 4 months D. 3 months

67. Therapeutic dose of Sanjivani Vati in Sarpa Damsha (Snake bite) is
A. 1 -1 Vati B. 2-2 Vatis C. 3-3 Vatis D. 4-4 Vatis

68. Property of Rasibhavana is attributed to (रसीभवन)
A. Ghrita B. Dhatu Bhasma
C. Kashthaushadhi D. Sudha varga

69. Which Yantra is used for Swedana of Rasa pottali
A. Dola Yantra B. Garbha Yantra
C. Kacchapa Yantra D. Deki Yantra

70. Which Musha is used for the preparation of Chakra Badbha Rasa
A. Malla Musha B. Musala Musha
C. Vrintaka Musha D. Gara Musha

71. Therapeutic dose of Rasakarpura according to Rasa Tarangini is
A. 1/64-1/32 Ratti B. 1-2 Ratti
C. 1/120-1/80 Ratti D. 1/10-1/20 Ratti

72. As per Rasa Ratna Samucchaya what is the duration of nimb patra Swarasa Bhavana during preparation of Arogyavardhini vati
A. 1 day B. 2 day C. 3 day D. 5 day

73. The incubation period of "Influenza" is
A. 18-60 Hrs B. 18-72 Hrs C. 6 - 60 Hrs D. 6-72 Hrs

74. Which dagdha is treated like pittaj vidradhi
A. Plooshta dagdha B. Durdagdha
C. Samyak dagdha D. Atidagdha

75. The Writter of "Return to Nature" is
A. Lui Kuhne B. John scheel
C. Vinsent Priessnitz D. Adolf just

76. "Father of hydrotherapy" is- (जल चिकित्सा)
A. Vinsent Priessnitz B. Lui Kuhne
C. Adolf just D. Bendict Lui

77. "Dadhi" usually avoided during which season
A. Vasant, Grism, Sharad B. Hemant, Vasant, Sharad
C. Shishirr, Vasant, Grism D. Shishir, Vasant, Varsha

78. If Arsha is rough, firm, thick and hard it is well treated by
A. Bheshaja Krama B. Kshar Krama
C. Shastra Krama D. Agni Krama

79. "Hrid Vyatha" is the symptom found in-
A. Shukra vega nigraha
B. Shukra & Purish vega nigraha
C. Shukra & Pipasa vega nigraha
D. Kshudha & Pipasa vega nigraha

80. Kanguka, Mukundaka pramodaka Kakalka, Churnaka etc. are the types of
A. Shali Rice B. Kudhanya
C. Shasthika Rice D. Vaidala

81. "Madhu Varnam" is the colour of
A. Vataj Ashmari B. Pittaj Ashmari
C. Kaphaj Ashmari D. Shukraj Ashmari

82. Endometriosis of abdominal Visceras, rectovagina Septum, umbilicus and labia majora is causcd due to
A. Retrograde Menstruation B. Vascular theory
C. Coelomic metaplasia D. Lymphatic theory

83. Gigantism is causcd due to
A. Adenoma of eosinophil cells before closer of epiphys is
B. Adenoma of basophil cells before closer of epiphys is
C. Adenoma of eosinophil cells after closer of epiphys is
D. Adenoma ofChromophobe cells before closer of epiphys is

84. Boundl's ring is found during which stage of labour.
A. In early labour B. First stage
C. Second stage D. Third stage

85. Vishkambhaka mudha gabha includes which gatis of mudha garbha described by sushruta.
A. 1st +2nd B. 2nd + 3rd C. 6th +7th D. 7th +8th

86. Descend of foetus in abnormal maternal passage As a cause of murhagarbha is given in which classic.
A. Charak Samhita B. Sushruta Samhita
C. Kashyap Samhita D. Astang Sangraha

87. Which author has not described discharges per vaginum during labour.
A. Charak B. Sushrut C. Kashyap D. Vagbhat

88. How many Mahabhutas from how many sources reach garbha.
A. 5 Mahabhutas from 4 sources
B. 4 Mahabhutas from 4 sources
C. 4 Mahabhutas from 5 sources
D. 5 Mahabhutas & 5 sources

89. According to Astang Hridaya for birth of child with good virya (healthy/ normal/ pure) which components are essential.
A. Uterus passage, rakta, shukra, and hridi.
B. Uterus passage, ambu, rakta, shukra, and hridi.
C. Uterus passage, rakta, shukra, anil and hridi.
D. Uterus, ambu, rutu, bija, anil and hridi.

90. According to Sushruta due to gradual accumulation of "Raja" which booy parts of female are developed gradually.
A. Breast, Uterus, yoni.
B. Breast, Uterus and dimbphal
C. Breast, yoni and menstrual blood
D. Uterus, yoni and menstrual blood

91. Who has described " विसर्पत्यार्तव नार्यास्तथा पुंसां समागमे" In relation to female coital discharges
A. Charaka B. Sushruta C. Bhela D. Harita

92. Two types of amla - panchaka is writtrn in
A. Raja nighantu B. Bhela Samhita
C. Sushruta nighantu D. Paryayaratnamala

93. Who one is high efficacy diuretics drug
A. Triamterene B. Thiazides
C. Spironolactone D. Bumetamide

94. Lithium Salt is -
A. Antipsychotics B. Tricylic Anti depressants
C. Manoamine oxidase inhibitors D. Mood stabilizers

95. Who one of the drugs is inhibition of protein synthesis of bacteria
A. Macrolides B. Sulphonamides
C. Penicillins D. Cephalosporins

96. The study of fate of active substance and its metabolite within the organism is known as
A. Pharmacodynamics B. Pharmacotherapeutics
C. Pharmaco Kinetics D. Clinical Pharmacology

97. The Poison of krisna - sarpa becomes Ashivisha in-
A. Balyawastha B. Tarunawastha
C. Madhyamawastha D. Bridhawatha

98. Vedanadhyay is described in
A. Bhavprakash B. Sushruta samhita
C. Kashyap samhita D. Bhel samhita

99. Kakolyadigana of sushruta is read in ashtanga sangraha as
A. Parusakadigana B. Padmakadigana
C. Guduchyadigana D. Asanadigana

100. Which one not is mentioned in Mutravirechaniya-mahakashaya.
A. Darbha B. Kusha C. Kasha D. Shara

101. In Sutra sthana of charka numbers of Sthapana mahakashayas are.
A. 3 B. 5 C. 7 D. 8

102. According to Dalhana "वायोः प्रकृतिभूतस्य व्यापन्नस्य च लक्षणम । स्थानं कर्म च रोगांश्च वदस्व वदतांवरं ॥" is the example of
A. Pratisamskartisutra B. Ekiyasutra
C. Shishyasutra D. Gurustra

103. Bhakti Shila, Smriti, Tyaga, Buddi, Bala, if these 6 go away from the patient who would be die with in-
A. 4 months B. 6 months C. 8 months D. 10 months

104. The plant named "Namaskari" is included in.
A. Charak samhita
B. Sushruta samhita
C. Only Ashtanga Sangraha
D. Ashtanga -Sangraha+ Ashtanga hridaya

105. To modify the potency of drugs from lower to higher & higher to lower which group is described by charaka.
A. Samyoga, vishlesh, Kala, Sanskar, Yukti
B. Ritu, Desh, Parimana, Desh
C. Samyoga, Para, Parimana, Desh, Kala
D. Vishlesh, Abhyas, Prithktva, yukti, Apara

106. "Tamrayoga" in Grahani-chikitsa is first indicated by.
A. Vrind B. Chakrapani data
C. Sharangdhar D. Bhavmishra

107. In charaka samhita first indication of Pushanuga churna is in
A. Yonidosha B. Rajodosha C. Arsha D. Asrigdara

108. "Gunopavarnan Shastra" Word is used for Dravyaguna by - (गुणोपवर्णन शास्त्र)
A. Dalhan B. Arundatta C. Hemadri D. Gayadas

109. According to Sushruta samhita in foetus probably head appears first is the view of -
A. Shaunaka B. Kritavirya
C. Parasharya D. Markandeya

110. Which one Sanskrit Commentry is on Rasaratna samuchchaya.
A. Tatvapradipika B. Dipika
C. Gudharthdipika D. Prakash

111. According to charaka warm paste of himsra should be used afiter massage in-
A. Vataja - Yonivyapat B. Pittaj- Yonivyapat
C. Kaphaj Yonivyapat D. asrija

112. निदीयते निबध्यते हेत्वादिसम्बद्धो व्याधिरनेन
This etymology of nidan is given by
A. Bhattarharishchandra B. Jejjata
C. Chakrapanidatta D. Gangadhara

113. In Suhruta- samhita Samanga and Yojanavalli Both are included
A. Parushakadi - gana B. Priyangvadi - gana
C. Sarivadi - gana D. Ambasthadi - gana

114. Srotorodha kshaya of raktadidhatus apachaya of Dhatvagnis produce
A. Grahani - roga B. Kshayaja- Kasa
C. Rajayakshma D. Raktapitta

115. Dravya pradhanam guna pradhanam,virya - pradhan am are the example of —
A. Sarvatantra - siddhanta B. Pratitantra - siddhanta
C. Adhikarana-Siddhanta D. Abhyupagama + siddhanta

116. Person has originated from the aggregration of six dhatus is the view of-
A. Bhadrakapya B. Hiranyaksha
C. Kankayana D. Bhikshuratreya

117. "अग्निमुलं बलं पुंसा बलमूलं हि जीवितम" is first said by -
A. Charak B. Sushruta
C. Vrinda D. Chakrapaidatta

118. In Bhaishajyaratnavali which one panchmula is ingredient of sutikadashamula.
A. Laghu- Panchmula B. Brihat- Panchmula
C. Jivan- Panchmula D. Valli- Panchmula

119. Name of "Rajanighantu" is included in his commentary.
A. Chakrapai datta B. Dallhana
C. Indu D. None

120. " यवान्न प्रकृतिस्थ: स्याददोषत: प्राणतस्तथा" is the statement of
A. Charak B. Sushruta C. Both D. None

121. How many dravyas are included in " Sthiradi" of charaka
A. 5 B. 10 C. 11 D. 21

122. Charaka has indicated the use of "yogakshema" in
A. Sahasjanya- Shosha B. Sandharanajanya - Shosha
C. Kashayajanya - Shosha D. Vishamashanjanya - Shosha

123. How many litres of blood are filtered by human kidney in one day.
A. More than 1500 ltr B. More than 1600 ltr
C. More than 1700 ltr D. More than 1800 ltr

124. The name and incubation period of hepatitis B virus is.
A. Entero- virus (2-4 week) B. Flavi - virus (2-26 week)
C. Calci- virus (3-8 week) D. Hepedna- virus (4-20 week)

125. The normal weight of liver in adult body is.
A. 1200 -1400 gm B. 1400 -1600 gm
C. 1600 -1800 gm D. 1000 -1200 gm

126. Paracetramol in over dose causes damage to
A. Liver B. Spleen C. Kidney D. Heart

127. If odour of the body of child is similar to urine then he is seized by this graham
A. Mukhamandika B. Negmesha
C. Andhaputna D. Revati

128. Use of Dipika oil used in
A. Akshi roga B. Karna roga
C. Nasya Karma D. Dantshula

129. Jatipuspanjan is used in which eye disease
A. Ajakajat B. Netrapaka
C. Arjuna D. Savrana shukra

130. The number of snayu in Koshtha is -
A. 230 B. 330 C. 530 D. 600

131. According to Sushruta this is not counted as an Ashaya (viscera)
A. Agnashaya B. Raktashaya
C. Mutrashaya D. Vatashaya

132. According to Sushruta this Tvacha is the seat of fistula abscess and piles
A. Mansdhara Tvacha B. Rohini Tvacha
C. Vedini Tvacha D. Tamra Tvacha

133. Which one is emerge from mala of blood
A. Yakrita B. Pleeha C. Kloma D. Unduka

134. "Paniya kshara" is contraindicated in-
A. Gulma B. Udara Roga C. Ashmari D. Rakta - pitta

135. The mandal, sandhis and patal appear systematically in the eye are -
A. 4,5,5 B. 5,6,6 C. 6,7,7 D. 7,8,8

136. The ghrit processed with chitraka,khas and Hingu Should be used in the treatment of
A. Purish granthi shukra chikitsa
B. Granthibhuta shukra chikitsa
C. Kunapa granthi shukra chikitsa
D. Puyadoshayukta shukra chikitsa

137. Aggravated Kapha and vata produced painful Swelling in throat with dyspnoea . This disease is known as -
A. Valaya B. Balasa C. Vrind D. Fkvrinda

138. When gums get necrosed and patient spits blood frequently this disease is known as -
A. Dantavesht B. Paridar
C. Shaushira D. Mahasaushira

139. Agnikarma is not advised in:
A.Charmkeel B. Bhagandar C. Arbuda D. Atisara

140. What should be applied in samyadagdha.
A. Honey + Ghrit B. Ghrit + Yashtimadhu
C. Yashtimadhu+ Honey D. Ghrit + Amalaka

141. Aloe vera is first time used in.
A. Charaka Samhita B. Shusruta Samhita
C. Astanga Nighantu D. Siddhasar Nighantu

142. The description of sidhadka is found in (सिध्दक)
A. Charaka B. Shusruta C. Vagbhata D. Kashyap

143. The description of dead body dissection is first time found in.
A. Charaka B. Shusruta C. Kashyap D. All

144. Charaka has commenced his phalvarga from
A.Kharjura B. Mridvika C. Phalgu D. Aamratak

145. Inauspicious Shade (chhaya) is
A. Nabhasi B.Vayavi C. Agneyee D. Ambhasi

146. The offspring of the pregnant woman who indulges in quarrels or fight would be
A. Unmatta B. Apasmar C. Prameha D. Jwar

147. The person who is Idle indulged only in food and devoid of entire intelligence should be known as ----in psyche
A. Vanasapatya Satva B. Rakshas Satva
C. Preta Satva D. Shakun Satva

148. How many types of siddhant
A. 2 B. 4 C. 6 D. 8

149. By whom the Utasanga Knot is said
A. Charaka B. Sushruta C. Vagbhat D. Kashyapa

150. According to charaka this Dravya is beneficial for Kasa hichaki (Hiccuph) Shwasa and Arsha
A. Kulathi B. Kakandole C. Shyamaka D. Urada

151. According to Kashyap the mind of the child inside the omb would have the knowledge of sukha & Dukha inwhich - A. 3rd B. 4th C. 5th D. 6th

152. According to Kashyap these Dhatus are made up of shukra in the child inside the womb-
A. Asthi - Mansa B. Rasa - Rakta
C. Mansa- Meda D. Mansa- Rasa

153. Jwara Daha Shoth and vedana are produced due to the penetration in this vein-
A. Kalika B. Marmarika C. Lohitika D. All

154. The patient is incurable when he is bitten by this jalouka-
A. Algarda B. Indrayudha
C. Pundaric Mukhi D. Gochandana

155. Kshar Karma is not recommended in this disease-
A. Raktapitta B. Prameha C. Urahkshat D. All

156. The bandage should be opened on which day in Hemant shishir & vasant and sharad Grishma & varsha Ritu.
A. 3rd and 2nd day B. 2nd and 3rd day
C. 3rd and 4th day D. 4th and 5th day

157. The causes of specific knowledge of Rasa is
A. Akasha + Vayu + Agni B. Prithvi + jal + Agni
C. jal + Vayu + Prithvi D. Akasha + jala + Prithvi

158. How many Dravyas of sushruta is commented by Dalhana
A. 118 B. 218 C. 318 D. 418

159. How many Ganas are Vatahara said by sushruta -
A. 17 B. 11 C. 9 D.12

160. According to whom "The Knowledge of symptom of doshas is done by Rasa"-
A. Charaka B.Sushruta C.Vagbhat D. Kapil

161. Parushya is the vikara of
A. Vataja B. Pattaj C. Kaphaja D. Raktaj

162. Rukshata Vivarnata and Stambha are done by this air-
A. South B. West C. Pravata D. Rrakvata

163. According to Vagbhat the best drug for Gulmna and Vata is-
A. Lashuna B. Guggulu C. Rasna D. Gokharu

164. Sidharthaka Ghrit is used in which disease-
A. Kushtha B. Rajyakshma C. Kamala D. Unmad

165. "Phaltrikadi qwath" is first time used in the treatment of pandu-
A. Ravigupta B. Chakrapani C.Dalhan D. Madanpal

166. The writer of sidhasara Nighantu is-
A. Singh Gupta B. Ravi Gupta
C. Samudra Gupta D. Chandra Gupta

167. गुरु स्निग्ध नेत्रदोषत्रयापहम - is-
A. Sauviranjan B. Nilanjan
C. Rasanjan D. Pushpanjan

168. The word "virya samkranti" was used first time by-
A. Shivdas Sen B. Charapani Dutta
C. Nishchalkara D. Harita

169. Dhvansaka and vikshepaka these two vikaras are present in-
A. Jwara B. Rajyakshma C. Madya D. Vat Rakta

170. Nidranash, Arati, kampa Mutraghat and Behoshi (uncon- sciousness) are the complication of-
A. Atisar B. Grahani C. Visuchika D. Madhumeha

171. The commrntary "Ratnaprabha" is based on -
A. Charaka B. Sushruta
C. Charakadatta D. Ashtang Hriday

172. The name of the writer of "Atank Darpan" is
A. Madhava B. Vijay Rakshita
C. Shrikant Dutta D. Vachashpati Mishra

173. In the "Symposium of Rasa Sankhya" the videha Raj Nimi said that Rasa to be
A. 5 B. 6 C. 7 D. 8

174. According to Charak how many types of Twagasava
A. 4 B. 11 C.10 D. 26

175. "Bhootdhatri" sleep (Nidra) is said to be
A. Manah Sharir Shram Sambhava
B. Ratri Svabhava Prabhava
C. Sleshma samudabhava D. Tamobhava

176. तध्दयभिष्यन्द्यरूक्षं च सूक्ष्ममुष्णं व्यवायि च Is the property of
A. Visha B. Dahi (Curd) C. Lavana D. Taila

177. Manda Vibhransa is the name of -
A. Madhyam Matra of sneha B. Ati Matra of sneha
C. Alpa Matra of sneha D. Uttama Matra of sneha

178. According to Sharangdhar these patients are not fit for anuvasana vasti-
A. Medo roga B. Kustha C. Prameha D. All

179. The combination of Rajoguna Pitta and vayu originate-
A. Murchha B. Bhranti C. Tandra D. Glani

180. All type of Kustha are placed in which skin-
A. Avabhasini B. Lohita C. Shwrta D. Vedani

JAMNAGAR 2012 ENTRANCE TEST
(स्मृती पर आधारित)

1. अगस्ती हरितकी की मात्रा है। (च. चि.18)
a. 1 हरितकी b. 1 कर्ष c. 1 पल d. 2 हरितकी

2. विद्रधि में पाक होता है। (च.सु 17/90)
a. मांस स्नायु त्वक b. मांस शोणित
c. स्नायु त्वक d. त्वक मांस

3. योगराज गुग्गुल का मुषक विष में अनुपान है। शारंगधर
a. शिरिष क्वाथ b. पूनर्नवा क्वाथ c. पाटला क्वाथ d. पिप्पली क्वाथ

4. भद्रमुस्ता का Latin name है।
a. Sylplo Coccus raeemor is c. Crocus sativus
b Cynodon dachtylin d.Cyperus Rotundus

5. 'सुश्रुत सहस्त्रनसन' उपाधी किसको दि है।
a. चक्रपाणि b. डल्हण c. चंद्रट d. हाराणचंद्र

6. 'स्वस्थवृत्त अध्याय' का उल्लेख किस संहिता में मिलता है।
a. चरक b. सुश्रुत c. शारंगधर d. यो. र.

7. O P V Was discovered by
a. Salk b. Sabin c. Both d. None

8. विवाह के 7 वर्ष के अन्दर जलने मृत्यु होने पर पोस्टमार्टम हेतु न्युनतम कितने चिकित्सक अनिवार्य है।
a. 3 b. 4 c. 2 d. 1

9. वत्सनाभ की घातक मात्रा है।
a. 2 - 4 gm b. 4 - 8 gm
c.10 - 12 gm d.16 - 20 gm

10. कौनसी कल्पना एक दिन में पुरी नही करनी चाहिए। शारंगधर
a. हिम b. अवलेह c.क्वाथ d.घृतपाक

11. तिमीर में रक्तमोक्षण करते है। (सु. उ. 17)
a. जलौका b. श्रृंग c. अलाबू d. सिरावेध

12. निम्न में सगन्ध, साग्नि मूर्च्छना है ?
a. रसपर्पटी b. कज्जली c. रसपुष्प d. a & c

13. 'दन्दशूका' (लक्षण) किस प्रकृति का है। (च. वि.8)
a. वात b. कफ c. पित्त d. सभी

14. श्लेष्मान्तक त्वक का प्रयोग किस विष में करते है। (सु.क.8/120)
a. मूषक b. लुता c. कणभ d. वृश्चिक

15. वाग्भट के अनुसार त्रिदोष प्रकोप जल है। (अ. हृ. चि. 30/25)
a. सामुद्र जल b. गांग c. भौम d. नदी जल

16. Melanin is prepared from -------- Amino Acid ?
a.Tyrotine b. Tyrotne c. Both d. None

17. अजकाजात किस प्रकार का नेत्ररोग है।
a. वात b. कफ c. पित्त d. रक्त

18. उग्रतम ग्रह है। (सु.उ.37/22)
a. स्कंन्द b. रेवती c. पूतना d. स्कन्दग्रह

19. असाध्य कुष्ठ है। च. चि.7/20
a. काकणक b. सिध्म c. कापाल d. मण्डल

20. कल्क में मधु, घृत तैल इत्यादि की मात्रा ?
a. समभाग b. 4 गुना c. 2 गुना d. All

21. धातकी का प्रतितिधी द्रव्य है।
a. द्राक्षा b. यष्टीमधु c. कूटज d. खदीर

22. अग्नितुण्डी वटी का प्रमाण है।
a. कोल b. मरीचाभ c. गुंजाभ d. उदुम्बरवत

23. लक्षणं सर्व एतद ------- सर्वेद्रिय गोचर कहा गया है। च. शा 6/49
a. पंचमहाभूत b. प्रकृती c. आत्मा d. मन

24. विपाक का ज्ञान से होता है।
a. निपात b. अधिवास c. कर्मानिष्ठया d. All

25. निरूह के कितने दिन बाद विरेचन करते है। (च. सि. 1/26)
a. 4 b. 5 c. 3 d. 7

26. शोथ का निदानाधिकर रोग है। (च.नि.8/18)
a. उदर b. अर्श c. ज्वर d. क्षतक्षीण

27. आगन्तुज ज्वर है। च. नि. 3/30
a. 3 b. 4 c. 5 d. 6

28. Drug & cosmetic rule related to
a. Labeling & Packing b. Collection
c. Identification d. None

29. धातुओं का स्वाभाविक वर्ण वर्णित किया है ?
a. योगरत्नाकर b. रसार्णव c. रसोपनिषद d. भावप्रकाश

30. उर्ध्वजत्रुगत मर्म संख्या ?
a. 37 b. 44 c. 12 d. 61

31. Nux Vomica किस प्रकार का poison है।
a. सुषुम्ना प्रभावक b. हृदय प्रभावक
c. क्षोभक d. मास्तिष्क प्रभावक

32. शाखागत अस्थियों कि संख्या है। सु. शा. 5/18
a.120 b. 100 c. 60 d.136

33. परम दुर्जयो मिथ्येपचरीतौ कुध्दौ हत आशिविषमिव है। च.चि. 17/9
a. विसर्प b. हिक्का श्वास c. कास d. अतिसार

34. मण्डली सर्प में दोष प्राधान्य है। च.चि. 23/124
a. वात b. पित्त c. कफ d. त्रिदोष

35. सतत ज्वर का अधिष्ठान है। च. चि 3 / 18
a. रस b. रक्त c. मांस d. मेद

36. बीजकं एवं परिघ भेद है। सु. नि. 8/30
a. मृतगर्भ b. आमगर्भ c. मूढगर्भ d. लिनगर्भ

37. ज्वर में घृतपान कराते है। (च.चि. 3/165.)
a. निरोग होने पर b. दोष परिपक्व होने पर
c. मांसगत d. मेदगत

38. रससंख्या 3 किस आचार्य की देन है। च.सु. 26/8
a. मौदगल्य परीक्षि b. शाकुन्तेय c. भद्रकाप्य d. हिरण्याक्ष
39. संजीवनी वटी का भावना द्रव्य ?
a. गौमूत्र b. निम्बपत्र c. नीबूरस d. None
40. बहुद्रव श्लेष्मा किस व्याधी के संदर्भ है। च.नि.4/5
a. प्रमेह b. कूष्ठ c. उदर d. प्रवाहिका
41. चरक के नुसार 43 वर्ष के व्यक्ती हेतु बस्ति नेत्र की लम्बाई -(च.सि.3/7.)
a. 10 अंगुल b. 12 अंगुल c. 15 अंगुल d. 18 अंगुल
42. PH of Semen is -
a. 7.2 b. 7.5 c. 7.8 d. 7.9
43. किस भगन्दर कि चिकित्सा में विवृत व्रण नही करना चाहिए।
a. शतपोनक b. उष्ट्रग्रीव c. परिस्त्रावी d. परिक्षेपी
44. ज्वर की निराम अवस्था होती है। ------- दिन
a. 6th b. 7th c. 8th d.
45. उलुखल संधी का भेद है। सु.शा.5/32
a. कक्षा b. वंक्षण c. दशन d. सभी
46. मेदा-महामेदा का प्रतिनिधी द्रव्य है।
a. शतावरी b. अश्वगंधा c. विदारीकंद d. वाराही कंद
47. कनकासव में कौन नही होता है। (भै.र हिक्काश्वासतीधकार)
a. धत्तूर b. सुवर्ण c. Both d. None
48. स्नेह बस्ति व्यापद कि संख्या। (च. सि. 3/137)
a. 8 b. 6 c. 10 d. 12
49. गृध्रसी में रक्तमोक्षण का स्थान है। सु. शा 8/16
a. जानुसंधी 4 अंगुल उपर b. जानु संधि 4 अंगुल निचे
c. Both d. None
50. प्रस्कन्दन पर्याय है। (च.सु. 26/8)
a. वमन b. विरेचन c. निरूह d. शिरोविरेचन
51. आसंगिम किस का प्रकार है।
a. कर्णसन्धान विधी b. सिवन
c. संधि d. अस्थि
52. अपादोषहरणं चिकित्सा है। (च.चि.13/93)
a. जलोदर b. वातरक्त c. उरूस्तभ d. जलोदर
53. Bromhexin is obtained From
a. Vascine b. Solanin c. Zanthin d. Rubicin
54. अम्लवेतस में किस द्रव्य का मिलावट करते है।
a. चांगेरी b. अश्वगंधा c. विदारीकंद d. रेवन्दचिनी
55. इंद वा इति। तन्त्रयुक्ती है। सु. उ. 65/29
a. समुच्चय b. अधिकरण c. नियोग d. बिकल्प
56. Mastoid Process is a part of -------- Bone
a. Parital b. Frontal c. Temporal d. Occiptal
57. रक्तज नेत्ररोगों की संख्या है। सु. उ. 1/28
a. 10 b. 16 c. 13 d. 25
58. ..... परं कफकरः।
a. मत्स्य b. मांस c. सुरा d. क्षीर
59. चिर कालतक क्लेशोत्पादक दोष होते है।
a. उर्ध्वगत b. अधोगत c. तिर्यगत d. शाखागत
60. वातिक स्तनरोग में प्रयुक्त क्वाथ है।
a. त्रिफला क्वाथ b. पंचक्षीरी क्वाथ
c. महामंजिष्ठादी क्वाथ d. दशमुल क्वाथ
61. काश्यप ने नवायस लोह का वर्णन किया है ?
a. पाण्डु b. प्रमेह पीडिका c. शोथ d. None
62. यदौचित्यात उपशेते -------- सात्म्य है। (च.सु. 6/49)
a. काल b. देश c. ओक d. हिन
63. Senile blindless 2nd leading Cause is
a. Vit A Deficiency b. Catrart c. Glaucoma d. All
64. कुर्पुरगंधी शिलाजतू का शोधन करते है।
a. एलातोय b. चूर्णोदक c. कांजी d. गोदुग्ध
65. 1st IVF किया गया था।
a. UK b. USA c. China d. Japan
66. रस: स्त्रोत:सु रूध्देषु स्वस्थानस्थो विदहयते संप्राप्ति है। च. चि. 8/43
a. राजयक्ष्मा b. ज्वर c. क्षतक्षीण d. शोथ
67. पंचकोल को आरोग्य पंचक कहा है।
a. वैद्यक सर्वस्व b. चिकित्सा सार संग्रह
c. भेल संहिता d. वंगसेन संहिता
68. वातस्यनुजयेत पित्तम व्याधी के संदर्भ में है। च.नि.19/22
a. सन्नि. अतिसार b. छर्दी
c. मदात्यय d. सन्निपातिक ज्वर
69. Medriatic drug होता है।
a. Pupil dialtor b. Pupil constrictor
c. Anaesthetic d. None
70. Festinating gait found in
a. Alzhimer b. Syphilis
c. Parkinsonisum d. None
71. हनुसंधि में विशेष प्रयुक्त बंध है।
a. खटवा b. चीन c. अपांग d. पंचागी
72. सर्वधिक दूष्य होते है। च. नि. 4/7
a. प्रमेह b. कुष्ठ c. ज्वर d. राजयक्ष्मा
73. विरेचन में दोष निर्हरण का क्रम है। च.सि. 1/18
a. पित्त, विट, कफ, अनिल b. कफ, पित्त, विट, अनिल
c. वात, पित्त, कफ, विट d. विट, पित्त, कफ, अनिल
74. अवपिडन नस्य के भेद है। च.सि. 9/88
a. शोधन, स्तम्भन b. शोधन, स्नेहन c. स्नेहन कर्षण
75. रज:कृच्छेण मुंचति किस योनिव्यापद का लक्षण है। च. चि 30/25
a. उपप्लुता b. पित्तज c. कर्णिनी d. उदावर्तीनी
76. Nalagohda technique Used For
a. Pruritis b. Flurosis c. Both d. None
77. वंगसेन के अनुसार स्वेर के भेद है।
a. 4 b. 13 c. 6 d. 8
78. यदन्यदुक्तमन्यार्थ साथकं भवति स -----सु. उ 65/11
a. उद्देश b. निर्देश c. उपदेश d. हेत्वर्थ
79. रोगेषु न बालमतियन्त्रयेत। अ.हृ.उ 2/43.
a. दन्तोदभव b. कृमी c. कुकुणक d. बालशोष
80. ---- प्रशंसन्ति नस्ये पाने च शंखके। सु उ. 26/38
a. क्षीरपान b. सर्पिपान c. क्षीरसर्पि d. स्नेहपान
81. फक्क में उपयोगी घृत है।
a. कल्याणक घृत b. षटपल घृत c. संवर्धन घृत d. ब्राह्मी घृत
82. Nervous tissue is originated From ----------
a. Ectoderm b. Endoderm c. Mesoderm d. None
83. Pubic angle in female is
a. >90° b. < 80° c. < 60° d. < 90°
84. सर्वश्रेष्ठ विरेचन फल है सु.सु.33/2
a. हरीतकी b. त्रिवृत्त c. द्राक्षा d. एरण्ड

85. चर्मकील दोषदूष्टी है। अ. हृ. नि. है सु.सु 33/2
a. व्यान + कफ b. प्राण + कफ
c. उदान + कफ d. समान + कफ
86. विशलघ्न मर्म है। सु. शा. 6/11.
a. विटप b. उत्क्षेप, स्थपनी
c. जानू d. कूर्च, कुर्चशिर
87. अन्वयव्यतिरेक दृष्टान्त रहीत है। तर्कसंग्रह
a. उपसंहरि b. अनुपसंहरि c. Boht d. None
88. महामुल महावेग अग्निवत शिघकारी व्याधी है। च.चि.4/5
a. रक्तापित्त b. गुल्म c. ज्वर d. अतत्वभिनिवेश
89. क्षालन निम्न गुण का लक्षण है। हेमाद्री. अ.हृ.सु. 1/18
a. विशद b. सान्द्र c. स्थिर d. सुक्ष्म
90. No. of Tarsal bone
a. 34 b. 24 c. 14 d. 13
91. स्वस्थ व्यक्ती में सुश्रुत के नुसार दिन में आहार की मात्रा है। सु.उ.65/5।
a. 1 बार b. 2 बार c. 3 बार d. 4 बार
92. निश्चित साध्य अभाववान है। तर्कसंग्रह
a. पक्ष b. सपक्ष c. विपक्ष d. None
93. Subcutaneous fat loss is found in
a. Kwashiorkar b. Marasmus c. Both d. None
94. निम्न में असत्य कथन है। च.सि. 15/18
a. रस, कफ का मल है। b. मांस का मल खमल
c. स्नायु मांस का उपधातू है। d. A + C
95. DOTS का उपयोग किस के चिकित्सा में होता है।
a. ज्वर b. राजयक्ष्मा c. प्रमेह d. क्षतक्षीण
96. कौश्री पर्याय है।
a. पूतना b. रेवती c. श्वग्रह d. शीत पूतना

Demostrator Exam. of RAU - 2012

1. त्रिजात में कौनसा द्रव्य मिलाने से चातूर्जात बनता है।
a. शुण्ठी b. चव्य c. मरिच d. नागकेशर
2. कषाय रस के अतिसेवन से होता है।
a. कम्पन b. कृशता c. पक्षाघात d. अम्लपित्त
3. अग्नितुण्डी वटी का मुख्य घटक क्या है?
a. वत्सनाभ b. कुचला c. अर्क d. रास्ना
4. चन्द्रप्रभा वटी में चन्द्रप्रभा शब्द किस के लिए है।
a. कपुर काचरी b. कर्पुर c. पिपरमेंट d. शिलाजीत
5. बालचार्तुभद्र का मुख्य घटक क्या है।
a. अतिविषा b. अभया c. आमलकी d. अनार
6. बाकुची का प्रतिनिधी द्रव्य क्या है।
a. चक्रमर्द बीज b. हरिद्रा c. मंजिष्ठा d. सारिवा
7. अर्केन्दु कठिना सोढणा नाडी मिलती है।
a. पित्तज ज्वर में b. रसविकार में
c. संग्रहणी में d. रक्तविकार में
8. तैल बिंदू मुत्रपरिक्षा में छत्राकार मिलता है।
a. वात दोष से b. पित्त दोष से
c. कफदोष से d. त्रिदोष से
9. अभ्यंग वर्जित रोग है।
a. पक्षाघात b. मधुमेह c. अग्निमांद्य d. अपतानक
10. बहुद्रव्य श्लेष्मा दोष विशेष किस रोग से सम्बध्द है।
a. श्वास b. स्थौल्य c. प्रमेह d. उदर
11. क्रियापथमतिक्रान्त रोग होते है।
a. सहज b. त्रिदोषज c. प्रत्याख्याय d. याप्य
12. Sr. Creatinine बढता है।
a. वृक्क विकार में b. उदर विकार में
c. मनो विकार में d. मस्तिष्क ज्वर में
13. डेंगू ज्वर का प्रसार होता है।
a. कूतो से b. बन्दर से c. मनूष्य से d. एडिस इजिप्ती से
14. अनार्तव स्तना लक्षण है। योनिरोग
a. फलिनी b. विवृत्ता c. सुचि मुखी d. षण्डी
15. गर्भिणी को अन्तिम मासो में लोह तत्व की अतिरिक्त आवश्यकता होती है।
a. 0.5 - 1 mg b. 1 - 1.5 mg
c. 2 - 3 mg d. 3 - 5 mg
16. नेत्ररोग में मन्दरूजा सुक्ष्मा पिडका होती है।
a. वर्त्म शर्करा b. अंजननामिका c. पोथकी d. कुम्भीका
17. पक्व मोति बिंदू (Matured Catract) में lens का वर्ण होता है।
a. रक्त b. पित्त c. श्वेत d. कृष्ण
18. नेत्रों में आश्चोतन करना चाहिए ?
a. न अति प्रबल रोग में b. प्रबल रोग में
c. मध्यम बल रोग में d. अल्पबल रोग में
19. 'आत्मगुप्तावघर्षश्च हितं तस्याबोधने' चिकित्सा करते है।
a. मद b. मूर्च्छा c. सन्यास d. अपस्मार
20. अर्दित में श्रेष्ठ स्वेदन है।
a. नाडी स्वेद b. जेन्ताक स्वेद c. शुष्क स्वेद d. निरग्नी स्वेद
21. 'प्रतारयेत प्रतिस्त्रोतो नदी शीतजल शिवाम' चिकित्सा सुत्र है।
a. आमवात b. वातरक्त c. मेदोरोग d. अपस्तंभ
22. सुश्रुतानुसार यकृद्दाल्युदर में सिरावेध करे ?
a. द. पाद में b. द. बाहू में
c. वाम मणिबंध में d. पृष्ठभाग में
23. जलोदर में जल निर्हरण हेतु नाडी यन्त्र लगाये ?
a. नाभी के उपर वाम भाग में b. नाभी के उपर दक्षिण भाग में
c. नाभी के निचे वाम भाग में d. नाभी के निचे दक्षिण भाग में
24. ऑस्टेलिया एण्टीजन टेस्ट करते है।
a. Hepatitis A b. Hepatitis B
c. Cirrhosis of Liver d. Typhoid
25. विडाल टेस्ट करते है।
a. मलेरिया जानने हेतू b. फायलेरिया जानने हेतू
c. टायफाइड जानने हेतू d. डिप्थेरिया जानने हेतू
26. Cushing syndrome का कारण है।
a. Hypothyroidism b. Hyperthyroidism
c. Hyperadrenalism d. Hypoadrenalism
27. चरक मतानुसार नस्य किस ऋतू में करना चाहिए।
a. प्रावृट b. हेमन्त c. ग्रीष्म d. शिशिर
28. चरक मतानुसार तरूण ज्वर में कौनसा रस वर्ज्य है।
a. लवण b. मधुर c. तिक्त d. कषाय
29. विश्व भेषज किस का पयार्य है।
a. मरिच b. शुण्ठी c. पिप्पली d. हरितकी
30. गोक्षर किस फेमिली (कूल) से सम्बन्ध है।
a. Solanaeae b. Apocynaceae
c. Asclepiadaceae d. Zygophyllaceae

31. उष्मणोऽल्प बलत्वेन धातुमाद्यमापाचितम किस के सन्दर्भ में कहा गया है।
a. आमातिसार b. आमवात c. आम d. आमज शूल
32. सिराग्रंथी निम्न में से किसका भेद है।
a. ओजक्षय b. स्त्रोतोदुष्टी c. आवरण d. संप्राप्ति
33. दोषों की आधिकतर कल्पना किस सम्प्राप्ति में की जाती है।
a. विधी b. विकल्प c. प्राधान्य d. बल
34. नियत मरण स्थापक लिंग किस के संदर्भ में लिखा है।
a. अरिष्ट b. उपद्रव c. आवरण d. None
35. सुश्रुत संहिता में रजो निवृत्ती की आयु कितनी बताई गयी है।
a. 40 b. 45 c. 50 d. 55
36. क्षीरदोष चिकित्सा में वज्र कणिकम का वर्णन है।
a. भेल संहिता b. हारित संहिता c. यो. र. d. काश्यप संहिता
37. नाल च्छेदन नाभी से कितने अंगुल के अन्तर पर करना चाहिये। (वाग्भट)
a. 4 b. 6 c. 8 d. 2
38. निम्न में से कौन सा शब्द चिकित्सा का पयार्य नही है।
a. प्रतिविष b. प्रतिकार c. साधन d. काल
39. कल्याणक घृत का रोगधिकार है।
a. अपस्मार b. बालग्रह c. उन्माद d. योनी व्यापद
40. क्षारगुटिका की मात्रा है।
a. कोल b. बिल्व प्रमाण c. माष प्रमाण d. अक्ष प्रमाण
41. व्रणशोफ का तृतीय उपक्रम है।
a.पाटन क्रिया b. शोधन c. उपनाह d. वैकृताहम
42. प्रज्ञापराध में दोष प्रकोप होता है।
a. एक b. दो c. तीन d. सर्व दोष प्रकोप
43. चरक मतानुसार सितोपलादी चूर्ण का रोगधिकार है।
a. कास b. श्वास c. हिक्का d. राजयक्ष्मा
44. सम्यक वमन में दोष निर्हरण का क्रम होता है।
a. वात पित्त कफ b. पित्त कफ वात
c. कफ पित्त वात d. निश्चित नही
45. Calcitonin का स्त्राव किस ग्रंथी से होता है।
a. Thyroid b. Parthyroid
c. Adrenal d. Pituitary
46. सुश्रुत संहिता में पेशियों की संख्या कितनी है।
a. 300 b. 400 c. 500 d. 600
47. चरक मतानुसार वैरोधिक आहार के कितने घटक बताये है।
a. 18 b. 12 c. 6 d. 20
48. इंद्रियो में दुर्बलता किस अधारणीय वेग के धारण से होती है।
a. क्षवथू b. वमन c. जृम्भा d. क्षुधा
49. जांगम विष के कितने अधिष्ठान है।
a. 10 b. 12 c. 14 d. 16
50. कालश्च स्वप्ने गौरश्च कालकम यह लक्षाण किसके बताये है।
a. सर्पदंश b. लूतादंश c. गरविष d. दूषीविष
51. पिण्ड तैल का रोगाधिकार है।
a. वातरक्त b. आमवात c. संधिगत वात d. उन्माद
52.षडविध परिक्षा अन्तर्गत पर्चेद्रिय एवं प्रश्न का वर्णन किस आचार्य ने किया।
a. चरक b. सुश्रुत c. हारित d. भेल
53. आबाध निम्न में से किसे कहते है।
a. निदान b. पूर्वरूप c. संप्राप्ति d. व्याधि
54. सुश्रुतानुसार बधिर व मुक किस प्रकार के रोग बताये है।
a. आदि बल प्रवृत्त b. जन्म बल प्रवृत्त
c. दोष बल प्रवृत्त d. दैव बल प्रवृत्त
55. चरक मतानुसार श्रौणियो में अस्थियो की संख्या होती है।
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
56. वयस्क अवस्था में स्थुलान्त्र (Large Intestine)की लम्बाई होती है।
a. 150 - 170 cm b. 100 - 200 cm
c. 200 - 300 cm d. 250 - 300 cm
57. शारीक दोष भेद से प्रकृती कितने प्रकार की मानी गई है।
a. 1 b. 3 c. 6 d. 7
58. सुश्रुतानुसार सिराओं की संख्या है।
a. 700 b. 900 c. 300 d. 500
59. कर्णपृष्ठ के अध: भाग में स्थित मर्म का नाम क्या है।
a. फण b. शंख c. विधुर d. स्थपनी
60. अष्टांग संग्रह के नुसार रंजक पित्त का स्थान है।
a. आमाशय b. यकृत c. प्लीहा d. ग्रहणी
61. शब्दासहत्व किस धातूक्षय का लक्षण है।
a. रस b. रक्त c. मांस d. शुक्र
62. प्रायोगिक धूमपान के कितने काल निर्दिष्ट है।
a. 2 b. 1 c. 6 d. 8
63. शिर: स्त्रवण पादेषु तं विशेषण शीलनेत किस कर्म से सम्बधित है।
a. उदवर्तन b. स्नान c. अभ्यंग d. मर्दन
64. विश्व स्तनपान दिन कब मनाया जाता है।
a. 1 जुलाई b. 1 अगस्त c. 1 सितंबर d. 1 अक्टूबर
65. HIV संक्रमण का Window period कारण कितना माना गाया है।
a.2 -8 सप्ताह b. 2 - 10 सप्ताह
c. 2 - 4 सप्ताह d. 2-6 सप्ताह
66. अष्टांग योग के अन्तर्गत यम कितने माने गये है।
a.2 b. 5 c. 8 d. 10
67. औदभिद द्रव्यो के अन्तर्गत वट, अश्वत्थ एवं उदूम्बर को किस वर्ग में माना गया है ?
a. औषधि b. वनस्पती c. वानस्पत्य d. विरूध्द
68. वमनार्थ औषधि संग्रह किस ऋतू के अन्त में करना चहिए।
a. शरद b. ग्रिष्म c. वसन्त d. शिशिर
69. निम्न में से कौनसा द्रव्य सदैव आर्द्रही ग्रहण करना चाहिए।
a. गुडूची b. पिप्पली c. विडंग d. धान्यक
70. अष्टांग संग्रहानुसार भेषज ग्रहण किये जाने के कितने काल माने गये है।
a. 10 b. 11 c. 3 d. 7
71. श्रृत, क्वाथ, निर्युह किस कल्पना के पयार्य है।
a. स्वरस b. कल्क c. क्वाथ d. हिम
72. किस द्रव्य की विषाक्तता में मारल टीथ (Motle teeth) लक्षण पाया जाता है।
a. फ्लोरिन b. क्लोरीन c. विटामिन्स d. प्रोटिन्स
73. चिकित्सा द्वारा अस्वस्थता, पागलपण एवं मृत्यु संबधी दिया गया असत्य प्रमाण पत्र IPC की किस धारा में दण्डनीय है।
a. 197 b. 179 c. 791 d. 971
74.मृत्यूत्तर काठीण्य(Rigor mortis)शरिर के किस भाग से प्राप्त होता है।
a. वर्त्म से b. वक्ष से
c. अधोभाग से d. उर्ध्व भाग से
75.SLR Straight leg rising परिक्षण किस व्यक्ती के लिए किया जाता है।
a. गृध्रसी b. वातरक्त c. संधिगत वात d. आमवात
76. चरक मतानुसार धमनी प्रतिचय को किस दोष का नानात्मज विकार कहा जाता है।
a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त

77. फुप्फुसावरण शोथ में कौनसी ध्वनी सुनाई देती है।
a.कूजन (Ronchii) b. घर्षण (Friction)
c. संक्षोप (Splashing) d. आर्द्र (Rales)
78. असृग्दर चिकित्सा विधान किस से अनुभव करना चाहिए ?
a. पित्तनुक्षय b. रक्तानुक्षय
c. रक्तपित्तानुक्षय d. वातपित्तानुक्षय
79. गर्भिणी को किस मास में बस्ति दिये जाने का विधान है।
a. 8 वे b. 5 वे c. 6 वे d. 7 वें
80.बालरोग चिकित्सार्थ संमगाधि क्वाथ किस रोग के उपचारणार्थ निर्दिष्ट है।
a. अतिसार b. ज्वर c. वमन d. कास
81. प्रसूता के हृदय, शिर, बस्ति में होने वाले शुल की संज्ञा है।
a. गर्भज शुल b. कटीशूल c. मक्कल शुल d. योनी शूल
82. चरकोक्त पंचगव्य घृत किस रोगधिकार में है ?
a. उन्माद b. अपस्मार c. ज्वर d. शोष
83. किस व्यक्ती में स्वेदन कर्म नही करना चाहिए ?
a. स्वरभेद b. मुत्राघात c. मुत्रकृच्छ d. स्थौल्य
84.पूष्पनेत्र प्रमाणं तु प्रमदाना ---- कितने अंगुष्ठ निर्दिष्ट है।
a. दशांगुल b. चतूरंगुल c. द्वय अंगुल d. त्रयागुंल
85. कोन्डो सारकोमा किस प्रकार के ऊत्तियो का अर्बुद है।
a Epithelial tissue b. Connective tissue
c. Muscular tissue d. Nuclear tissue
86. चरक मतानुसार अधारणीय वेग कितने है।
a. 8 b. 10 c. 13 d. 7
87. बच्चों में एक मास की आयु में देय वैक्सीन कौनसी है।
a. B.C.G b. Triple vaccine
c. Measles d. Polio oral 1st dose
88. पाचन द्रव्य का प्रमुख उदाहरण कौनसा है।
a. चित्रक b. शतपूष्पा c. पिप्पली d. नागकेशर
89. पारद का हिमांक क्या है।
a. 36°C b. 44°C c. 48°C d. 39°C
90. सर्वोत्तम स्नेह किसे कहते है।
a. घृत b. तैल c. वसा d. मज्जा
91. रसक्रिया में कितनी सिता डाली जाती है।
a. चर्तूगुण b. द्विगुण c. षडर्गुण d. त्रिगुण
92. 16 - 25 वर्ष की आयु में दातों की संख्या।
a. 25 b. 32 c. 23 d. 20
93. व्यान वायु का स्थान क्या है।
a. नाभी b. उर c. सर्व शरिर d. कण्ठ
94. गुण सुत्रो की संख्या कितनी है।
a. 20 b. 23 c. 48 d. 46
95. 12 सप्ताह के गर्भ का भार कितना होगा ?
a. 100 gm b. 8 gm c. 16 gm d. 32 gm
96. गर्भ में लिंगोत्पत्ती में परमेश्वर इच्छा का प्रतिपादक कौन है।
a. वाग्भट b. चरक c. शारंगधर d. सुश्रुत
97. विकासमान बालको में शिर की स्वत स्थिरता किस वय में होती है।
a. 4 माह b. 5 माह c. 7 माह d. 3 माह
98. गृध्रसी व्यक्ती में शुल कहा होता है।
a. स्नायु में b. धमनी में c. पेशी में d. नाडी में
99. विन्ध्यवासि योग का चिकित्साधिकार क्या है।
a. ज्वर b. रक्तपित्त c. राजयक्ष्मा d. क्षवथु
100. सभी शल्यो में सामान्य रूप से होने वाली प्रमुख घटना क्या है।
a. रक्तस्त्राव b. व्रण c. लालीमा d. द्रवस्त्राव
101. संसर्जन क्रम का समावेश कहा होता है।
a. पूर्वकर्म b. पश्चात कर्म c. प्रधान कर्म d. हीन कर्म
102. उत्तम वमन कितने वेग निर्दिष्ट है।
a. 8 b. 4 c. 5 d. 7
103. कर्म बस्ति में कितनी बस्ति दी जाती है।
a. 8 b. 16 c. 20 d. 30
104. मानस रोगो में श्रेष्ठ चिकित्सा क्या कही है।
a. शल्य कर्म b. संशमन
c. धी धैर्यात्मादी विज्ञान d. नस्य कर्म
105. स्नेह प्रविचारणा कितनी होती है।
a. 20 b. 24 c. 30 d. 4
106. सस्नेह ईषत स्निग्ध किस दोष के गुणो में निर्दिष्ट है।
a. पित्त b. वात c. कफ d. रक्त
107. सुश्रुत आदि शल्यतन्त्र ऋषीयो द्वारा अस्थियों की संख्या कितनी बताई गयी है।
a. 200 b. 300 c. 360 d. 340
108. बाल्यावस्था में पुष्ट रहकर यौवनारम्भ में धीरे धीरे क्षय को प्राप्त होनेवाली अन्तस्त्रावी ग्रंथी।
a. बाल ग्रैवेयक b. ग्रैवेयक c. परि ग्रैवेयक d. अधिवृक्क
109. कौनसी अन्तस्त्रावी ग्रंथी के अन्तस्थ कोषो की वृध्दी से गलगण्ड रोग होता है।
a. पोषणीका b. पीयुष c. ग्रैवेयक d. चुल्लिका
110. पातंजल अष्टांग योग का आठवां अंग क्या है।
a. ध्यान b. समाधी c. धारण d. प्राणायाम
111. साधारण रस कितने होते है।
a. 8 b. 6 c. 5 d. 7
112. श्लेषक कफका स्थान क्या है।
a. आमाशय b. सन्धीया c. नेत्र d. ग्रहणी कला
113. प्रत्येक डिम्ब ग्रंथी का भार लगभग कितना होता है।
a. 6 gm b. 9 gm c. 30 gm d. 40 gm
114. दन्तोत्पत्ती काल में होने वाली सामान्य व्याधी क्या है।
a. विषम ज्वर b. कामला c. दन्तवेष्ट d. ज्वर
115. कंचुक दोष कितने होते है।
a. 5 b. 7 c. 8 d. 10
116. पुरूषार्थ चतूष्टय का मुल है।
a. यश b. ज्ञान c. विद्या d.आरोग्य
117. शोष के आयतन है।
a. 1 b. 4 c. 6 d. 10
108. स्पर्श वैगुण्य लक्षण है।
a. वात वृध्दी का b. पित्त क्षय का
c. स्वेद क्षय का d. मुत्र वृध्दी का
119. शरद ऋतू में प्रशस्त कर्म है।
a.वमन b. नस्य c. विरेचन d. शिरोधारा
120. शिरोगौरव होता है।
a. मुत्र वेगविधारण से b. तृषा वेगविधारण से
c. पुरिष वेगविधारण से d. निद्रा वेगविधारण से

JODHAPUR 2012
(स्मृती पर आधारित)

1. कन्द में श्रेष्ठ है ?. (चरक)
   a. आलुक b. श्रृंगवेर c. सुरण d. लकुच
2. शमी धान्य में सर्व श्रेष्ठ अपथ्य है ? (च. सु. 25)
   a. मूदग b. तिल c. माष d. यव
3. वमन वर्जित है ? (च. सि. 2)
   a. मेदोरोग b. स्वरोपघात c. विसुचिका d. हृद्रोग
4. योग बस्ति संख्या है ? (च. सि. 1)
   a. 8 b. 11 c. 15 d. 30
5. स्त्री में आन्त्र की लम्बाई होती है ? (सु. शा. 5)
   a. 3½ व्याम b. 4 व्याम c. ½ व्याम d. 3 व्याम
6. Meckel is diverticulum is the content in ------ type of hernia ?
   a. Richter's b. Littre's
   c. Kocher's d. Indiirect hernia
7. मुग्ध रस में पारदःखटीका अनुपात है ?
   a. 2 : 1 b. 1 : 2 c. 2 : 6 d. 1 : 4
8. पित्रेऽत्यल्प बिजत्वाद ?
   a. आसेक्य b. सौगन्धिक c. कुम्भिक d. षण्ड
9. स्नेह प्रविचारणा है ?
   a. 40 b. 14 c. 24 d. 20
10. शारंगधर के अनुसार मज्जा की उपधातू है ?
    a. दंत b. केश c. नख d. सभी
11. अनु पिच्छिल गुरु गुण के कारण स्त्रोतोरोध होता है वह गुण है ?
    a. अभिष्यंदी b. व्यवायी c. विकासी d. श्लक्ष्ण
12. Intra ocular pressure (IOP) होता है ? (mm of Hg)
    a. 10 -21 b. 15 - 25 c. 20 - 30 d. 5 -15
13. Disturbed ectopic pregnancy feature है ?
    a. रक्तस्त्राव b. उदरशुल c. दोनों d. इसमें नही.
14. अष्ठ उत्पल रहनेवाला पूट है ?
    a. लावक b. गोवर c. कपोत d. गजपूट
15. कूष्ठघ्न और कण्डुघ्न है ?
    a. निम्ब b. दारूहरिद्रा c. आरग्वध d. सभी
16. जीवादान नानात्मज विकार है ?
    a. वात b. पित्त c. कफ d. रक्त
17. शरीर में न बढनेवाले अंग है ? (सु.शा. 4)
    a. दृष्टी b. रोमकूप c. केश d. A+B
18. पंचरात्र साध्य लंघन व्याधी है ? (यो.र.)
    a. प्रतिश्याय b. ज्वर c. व्रण d. सभी
19. न्यायीक फांसी में कौनसी ग्रीवा कशेरूका टूटती है ?
    a. 2nd - 3rd b. 3rd - 4th c. 4th - 5th d. 1st - 2nd
20. चलमूर्धता लक्षण कौनसे मर्मघ्न है ? (सु.शा. 6)
    a. विधूर b. कृकाटिका
    c. अपांग d. सिरामातृका
21. वातरक्त जानुमध्य महारूजं लक्षण है ?
    a. सांधिगतवात b. आमवात
    c. कौष्ठूकशिर्ष d. वातरक्त
22. पंचनिम्ब क्या है ?
    a. मुल, पत्र, फल, पूष्प, त्वक
    b. पत्र, फल, मुल, काण्ड, सार
    c. पत्र, पूष्प, निर्यास, काण्ड, फल
    d. मुल, पत्र, फल, बीज, पूष्प
23. मर्म अंश पादेषु पृष्ठ सिर अरिष्ट लक्षण है ?
    a. वातरक्त b. ज्वर c. प्रमेह d. कूष्ठ
24. जिवादान का अर्थ है ?
    a. अशुध्द रक्त निगर्मन c. मृत्यू
    b. शुध्द रक्त निगर्मन d. इसमें नही
25. सम बंध बांधते है ?
    a. नितम्ब b. वंक्षण c. मूष्क d. नेत्र
26. Carpel tunnel Syndrome is due to compression of ------ nerve.
    a. Median b. Radial c. ulnar d. All
27. स्नेहन के कितने दिन बाद वमन कराते है ?
    a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
28. शिशु के शिर की परिघ वक्ष से कितने अधिक होती है ?
    a. 1 Cm b. 2 Cm c. 3 Cm d. 4 Cm
29. Resl Jelly stool pass in
    a. Cholesitis b. Intusception
    c. Panceatitis d. Jaundice
30. वायू के परस्पर आवरण की संख्या है ? (च. चि. 28)
    a. 22 b. 20 c. 40 d. 32
31. काकतुल्य गंध बालग्रह.
    a. पूतना b. अंधपूतना c. शितपूतना d. रेवती
32. अभिष्यंदिनी भोज्यानि गुरुणिच स्त्रोतोदूष्टी हेतू है ? (च. चि.28)
    a. रस b. रक्त c. मांस d. मेद
33. Murpy's triad is
    a. Pain, Diarrhoeq, Fever
    b. Pain, Sweling, Fever
    c. Pain, Diarrhoea, Swelling
    d. Pain, Vomitting, Fever
34. जात मात्र में औषध मात्रा.
    a. आमलक वत b. कोल c. कोलास्थि d. विंडगफल
35. धूमवर्ती प्रमाण चरक अंगुल (च. सु. 5)
    a. 6 b. 8 c. 10 d. 12
36. शुक्लगत नेत्र रोग में तर्पण की मात्रा है ? (सु. उ. 18)
    a. 500 b. 300 c. 800 d. 200
37. चिरकालीन फेनाश्म Poisoning में संग्रह करते है ?
    a. नख b. केश
    c. दिर्घनलिकास्थि d. यकृत
38. ------- स्नेहन लवणं अम्ल युक्तं?
    a. बहू वात b. बहूपित्त c. बहूकफ d. बहूरक्त
39. चरक के अनुसार प्रायोगिक नस्य काल है ? (च. सु. 5)
    a. 6 b. 8 c. 10 d. 12
40. वर्त्मगत रोग है ? (सु. उ. 3)
    a. पोथकी b. कुंभिका c. उत्संगीनी d. सभी

41. वात पूर्ण द्रुती स्पर्श होता है ?
a. जलोदर b. आमवात c. संधिगतवात d. वातरक्त
42. अर्दित सम लक्षण किस ग्रह में होते है ?
a. स्कंदापस्मार b. स्कंद c. मुखमण्डिका d. नैगमेष
43. अतिसारवत चिकितसा कौन से स्थावर वेग मे करते है ?
a. चतूर्थ b. पंचम c. षष्ठ d. सप्तम
44. शीताद है ?
a. दन्तगत b. दन्तमुलगत c. तालुगत d. जिव्हागत
45. 38 सप्ताह में Ammiotic Fluid की मात्रा होती है ?
a. 400 Ml b. 600 Ml c. 200 Ml d. 800/1000 Ml
46. संरूध्दमुत्रानिल विट———लक्षण है ? (काश्यप)
a. उदरशुल b. अलसक c. आनाह d. अर्श
47. कालक चूर्ण देते है ?
a. नासारोग b. कर्णरोग c. शिरोरोग d. मुखरोग
48. नस्य वर्जित है ?
a. पीतस्नेह b. पीनस c. तिमिर d. अर्धावभेदक
49. काच रोग होता है ?
a. साध्य b. याप्य c. कृच्छसाध्य d. असाध्य
50. स्तन्यं व्युदस्तते रौती च लक्षण है ? (काश्यप)
a. मुखरोग b. उदरशुल c. आनाह d. कण्ठवेदना
51. अन्त शोधन के लिए श्रेष्ठ स्नेह है ?
a. अच्छ b. वसा c. मज्जा d. सभी
52. क्रियायोग किसे कहते है ?
a. तप b. साध्याय c. ईश्वरप्रणिधन d. सभी
53. 'वर्धनेनएक दोषस्य क्षषणेनोच्छितस्य वा.' किसकी चि. है ?
a. विषम ज्वर b. सन्निपातिक ज्वर
c. जीर्ण ज्वर d. तरूण ज्वर
54. स्त्रीयों में सुश्रुत के अनुसार कांतीवर्धक होता है ?
a. अंभ्यग b. व्यायाम c. उत्सादन d. स्नान
55. सुश्रुत श्रोणी अस्थिसंख्या है ? (सु. शा 5)
a. 4 b. 3 c. 2 d. 5
56. Drug & cosmetic Act
a. 1945 b. 1955 c. 1952 d. 1957
57. पित्त विद्रधि वत चिकित्सा करते है ? (सु. सु. 12)
a. अतिदग्ध b. सम्यकदग्ध c. दुर्दग्ध d. हिनदग्ध
58. Diabetes disease में gangreen होता है ?
a. Dry b. Moist c. Gas d. A+B
59. क्षार है ? a. अनुशस्त्र b. उपयंत्र c. दोनों d. None
60. नतिछिन्न नतिभिन्न लक्षण है ?
a. छिन्नव्रण b. भिन्न व्रण c. घृष्ट व्रण d. क्षत
61. P E M में है ?
a. Kwashiorkar b. Simple Febrile convul sions
c. Indian Chidhood cirrhosis d. Diarrhoea
62. कर्पुर भेद है ? (भा. प्र.)
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5
63. कषाय रस का पांचभौतिक संघटन है ?
a. वायू + आकाश b. जल + आकाश
c. पृथ्वी + वायू d. वायू + जल
64. सप्त धातू शोषक रस है ?
a. कषाय b. कटू c. तिक्त d. लक्षण
65. मार्दव जनयति आहापरिणाम कारक भाव है ?
a. स्नेह b. क्लेद c. उष्ण d. वायु
66. उदर्द प्रशमन दशेमानी द्रव्य है (च. सु. 4)
a. अर्जुन b. तगर c. कूष्ठ d. सभी
67. स्त्री दुग्ध का अनुरस सुश्रुत के अनुसार है ? (सु. सु. 45)
a. लवण b. कटु c. तिक्त d. कषाय
68. प्रमेह पीडका चिकित्सा पक्व अवस्था में करनी चाहिए ?
a. व्रणवत b. विदारण c. भेदन d. लेप
69. आयुवर्धक है ? (सु. चि. 28)
a. जीर्ण भोजन b. वेगअविधारण
c. साहस वर्ज्य d. सभी
70. तीक्ष्णै आदौ भिषक कुर्यादी चिकित्सा है ?
a. उन्माद b. कामला c. अपस्मार d. उदर
71. श्लेष्म प्रकृती पुरुष के गुरु गुण का लक्षण है ? (च. वि. 8)
a. गुरूत्वात b. साराधिष्ठित c. विज्जलत्वात d. सभी
72. अग्नि दूष्टी होती है ?
a. विषमाशन b. अपचार c. अभोजन d. सभी
73. पुरिषे संरक्षिते किससे संबधित है ?
a. उदर b. क्षतक्षीण c. राजयक्ष्मा d. अतिसार
74. कायसंगी ———— मढगर्भ
a. संकिल b. परिघ c. प्रतिखुर d. बीजक
75. द्रव्य में कर्म किसकी अपेक्षा नही करता ?
a. गुण b. वीर्य c. विपाक d. None
76. चरक के अनुसार सग्नि स्वेद संख्या है ?
a. 12 b. 13 c. 4 d. 8
77. पागलपण की जडी है ?
a. मुचकुन्द b. जटामांसी c. सर्पगन्धा d. एरण्ड कर्कटी
78. कुलीर विषाणीका पयार्य है ?
a. मेषशृंगी b. कर्कटशृंगी c. अपराजीता d. आवर्तकी
79. शिशिर ऋतू में लक्षण ऋतू सम होते है ?
a. शरद b. ग्रीष्म c. हेमन्त d. वर्षा
80. सभी दिशाओं में चलने वाली वायू होती है ?
a. मारक b. विध्वंस c. दोनों d. None
81. ——— ऋतू मे वात प्रधान पुरुष में लंघन कराते है ?
a. वर्षा b. शिशीर c. शरद d. वसन्त
82. सुख दुख, इच्छा व्देष, उन्मेष निमेष लक्षण है ?
a. मन b. आत्मा c. बूध्दी d. सभी के
83. पारद के अग्नि दोष का निवारण होता है ? (रसतरंगिनी)
a. त्रिफला b. चित्रक c. आरग्वध d. त्रिकटू
84. स्त्री उत्तम आयु है ? (हारित)
a. 29 - 41 yrs b. 24 - 37 yrs
c. 25 - 50 yrs d. 16 - 37 yrs
85. Crocus sativus किसक Latin name है ?
a. मुस्तक b. कूकूंम c. नागकेशर d. त्रायमाण
86. रसपूष्प में पारद लवण कसिस अनुपात है ?
a. 1: 1: 1 b. 2: 1: 1 c. 1: 3: 2 d. 1: 2: 3

87. लोह भानुपाक वर्णन वैशिष्टय है?
a. चरक b. सुश्रुत c. वाग्भट d. त्रिदोषज
88. कोष्ठ में सिरा ओं की संख्या है ? (सु. शा 5)
a. 126 b. 36 c. 136 d. 124
89. पारद के चंचलता चपलता का नाश किस संस्कार से होता है ?
a. रोधन b. नियमन c. दिपण d. स्वेदन
90. पंचकर्म चिकित्सा किस व्याधि के त्रिदोषज भेद से निदिष्ट है ?
a. अतिसार b. मदात्यय c. ग्रहणी d. कूष्ठ
91. गर्भ अस्पंदन अनउन्नत कुक्षी लक्षण है ?
a. गुर्भक्षय b. मृतगर्भ c. मूढगर्भ d. गुढगर्भ
92. रक्त लक्षणं गर्भकृच्च है ?
a. गर्भ b. शेणित c. आर्तव d. None
93. त्रिभूवन किर्ती रस भावना द्रव्य है ?
a. तुलसी b. आर्द्रक c. धत्तूर d. सभी
94. अष्टशतारिष्ट रोगाधिकार है ?
a. श्वयथू b. ग्रहणी c. अतिसार d. अर्श
95. गर्भिणी को गुरुगात्रता होती है ?
a. 4th मास b. पंचम मास c. षष्ठ मास d. तृतीय मास
96. कण्डू युक्त स्फोट स्त्राव है ?
a. अहिपूतना b. परिगार्भिक c. अंजगल्लिका d. None
97. लशुनाघ घृत का उपयोग करते है ?
a. पान b. अंभ्यय c. नावन d. सभी
98. हिंगु का संग्रह कौन से ऋतू में करते है ?
a. शिशिर b. वसन्त c. ग्रिष्म d. वर्ष
99. No of Opening in small saphenous vein is
a. 10 - 15 b. 15 - 20 c. 20 - 29 d. 25 - 30

KLE UNIVERSITY BELGAON 2012

1. Shrishti utpatti 24 tatvas are told by ------?
a. Charak b. Sushrut c. Vaghbhata d. Charvak
2. Ahiputana is a disease of which part of body
a. Heart b. Abdomen c. Hasta d. Guda
3. The Main treatment of Ajgallika is
a. Ksharkarma b. Aqnikarma
c. Aushadhi d. Asadhya
4. Total cardiac cycle time is ----- sec
a. 0.6 b. 0.8 c. 0.4 d. 0.2
5. Vit A is also Known as
a. Retinol b. Ascorbic Acid
c. Tocoferol d. All
6. Kadama visarpa adhisthan is
a. Marma b. Aamashaya c. Udar d. All
7. The Bhavana dravya of Tribhuvan Kirti Ras is
a. Surasa b. Adrak c. Hem d. All
8. The total content of sanjivani vati is
a. 8 b. 10 c. 12 d. 14
9. Shodhan dravya of Hartal is
a. Kanji b. Triphala kwath
c. Churnodak d. Takra
10. The synonym of Bilva is
a. Shreephal b. Shreeparni
c. Kulir d. Vishanika
11. Boas sign is Found in
a. Pancreatitis b. Appendicitis
c. Hernia d. Cholecystitis
12. Sr. Amylase is increased in
a. Pancreatitis b. Cholecystitis
c. Gastritis d. Hepatitis
13. One of the symptom of Hyper thyroidism is
a. Weight gain b. Weight loss
c. Swelling d. Loss of hair
14. Which of the Following is Nirvisha Jaloka
a. Krushna b. Algarda c. Savrika d. Karbura
15. The dose of Medicine in chidhood is told by
a. Sushrut b. Sharangdhar
c. Videha d. All
16. Lepa around eye is called as
a. Pindi b. Bidalak c. Tarpan d. Putapak
17. Sitopladi churna is indicaed in
a. Jwara b. Kasa c. Shwasa d. Raj yakshma
18. The type of sweda indicated for Stambha & Sankocha is
a. Avagaha b. Nadi c. Bhu d. Drava
19. Utphulika disease is of vyayu
a. Prana b. Udan c. vyana d. Saman
20. No. of types of Samanya is
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4
21. Useful tail in Bhadhirya is
a. Dipika tail b. Bilwa tail c. Anutail d. Vacha tail
22. The doshdushti of Karna Ksweda is
a. Vata Kapha b. Vata pitta
c. Pittakapha d. Tridoshaja
23. By Which sanskar parada becomes Grasarthi ?
a. Deepan b. Swedan c. Murchhana d. Rodhan
24. Nitya Virechana is told in which disease ?
a. Kamala b. Pakshaghata
c. Tamak shwasa d. Udar
25. Number of Darvikar Sarpa ?
a. 20 b. 24 c. 26 d. 30
26. The author of Raj Nighantu is
a. Narhari Pandit b. Kshem Sharma
c. Kaidev d. Shiva sharma
27. Hrudarnava rasa - The Main Content is
a. Gold b. Tamra c. Silver d. Loha

28. Prabhakar vati is indicated in
a. Prameha b.Hrud roga
c.Yakrit vikar d. Bhagandar

29. The Bhavana dravya of arogyavardhini is
a. Gomutra b. Dhatura
c. Nimba Patra Swarasa d. Tulsi

30. Srava' lakshana found in ----- eye disease
a. Parvani b. Adhimantha
c. Abhishandna d. Lagan

31. The Main treatment of Suryavarta is
a. Jaloka b. Raktamokshan
c. Agni Karma d. Sweda

32. Pitak Churna is indicated in
a. Netra roga b. Shiro roga
c. Nasa roga d. Mukha roga

33. Rigar Mortis appears within --------- hrs
a. 24 hrs b. 36 hrs c. 48 hrs d. None

34. The type of niragni sweda is
a. 6 b. 9 c. 8 d. 10

35. In samyak vaman the quantity of eliminated dravya is --- prastha
a. 1 b. 1 ½ c. 4 d. 2

36. The 'Darun' Guna of vata is menitoned by
a. Charak b. Sushrut
c. Vagbhata d. Sharangdhar

37. The Opposite Guna of shlakshna is --------
a. Katin b. Mrudu c. Laghu d. Guru

38. 'Raktanta Netra' is Feature of---- Prakruti ?
a. Vata b. Pitta c. Kapha d. None

39. In snehapaka - kalka, sneha & dravya Matra is
a. 1: 2: 4 b. 1: 2: 8 c. 1: 4: 8 d. 1: 4: 16

40. 'Plihaghna' is Synonym of
a. Rohitaka b. Hapusa
c. Dhatri d. Sharpunkha

41. Unduk is developed From
a. Shonit kitta b. Shonit Phena
c. Shonit kapha d. Shonit Mamsa

42. The rasa of sama pitta is
a. Lavan b. Tikta c. Katu d. Kashyaya

43. 'The number of Sarpa acording to Vaghbhata
a. 78 b. 75 c. 85 d. 80

44. Darvikar sarpa having ------ dosha Prominant
a. Vata b. Pitta c. Kapha d. All

45. Vihar varga is mentioned in ------ nighantu ?
a. Raj Nighantu b. Priya Nighantu
c. Kaidev d. Asthanga

46. The place of Asagalica is
a. Twak b. Mamsa c. Meda d. All

47. Goats milk as bhavna dravya is given in --- Gutika
a. Pranada b. Bliwadi c. Sanjivani d. Kshara

48. 'Aksamad attahasanam' symptom of which disease ? (Kashyap)
a. Unmad b. Apasmar c. Hikka d. Udarshoola

49. Bhringaraj - The latin Name is
a. Uraria Picta b. Eclipta alba
c. Inula racemosa d. Abrus picatorius

50. The chemical Formula of Hartala is
a. As_2S_2 b. $As\ S_3$ c. As_2S_3 d. None

51. The toxic tose of Gauri pashan is
a. 0.5 Ratti b. 1 Ratti c. 2 Ratti d. 4 Ratti

52. The Name of 6th Kala is
a. Raktadhara b. Purishdhara
c. Mamsa dhara d. Pittadhara

53. Heart rate in newborn is ------ / min
a. 72 b. 90 c. 100 d. 130

54. Nakha is mala of ---------
a. Kesha b. Mamsa c. Asthi d. Meda

55. A/c to Sushrut the type of Bones are
a. 2 b. 3 c. 4 d. 5

56. Dant is included under ---- type of Bone
a. Tarun b. Nalak c. Ruchak d. Valay

57. Which of the Following contine in Growing even after death ?
a. Kesha b. Nakha c. Asthi d. A & B

58. The number of shleshma dhara kala is
a. First b. Fifth c. Fourth d. Sixth

59. The site of alochaka pitta is
a. Aamashaya b. Yakrit c. Netra d. None

60. Sarwanga sushkata occured in
a. Putana b. Revati c. Skandha d. None

61. Stag horn like stone is of ------ type
a. Oxadate b. Urate c. Cystine d. Phosphate

62. Type of arma
a. 3 b. 5 c. 6 d. 10

63. Shasha rudhirop mastu bindu feature of
a. Lagan b. Arjuna c. Shuktika d. Pistak

64. The number of karna bandan vidhi
a. 20 b. 14 c. 16 d. 48

65. The Main treatment of Ardit is
a. Siravedha b. Nasya c. Sweda d. Tarpan

66. The dose of pradhamana nasya is ---- Mucchuti
a. 1 b. 2 c. 3 d. 4

67. The dose of sneha in uttar basti is ---- Pal
a. 4 b. 2 c. ½ d. 1

68. The Lengtn of jivha nirlekhana in angula
a. 10 b. 12 c. 8 d. 6

69. At birth height of baby is------ cm
a. 30 b. 40 c. 50 d. 60
70. The site for vibandha Bandha is
a. Prushtha b. Parshwa c. Udar d. Gala
71. Ni spandhade ----------
a. Upvishtak b. Nagodar c.Lina d. None
72. Nirgachheta Ek shirobhuja is
a. Kila b. Parigha c. Bijak d. Prati Khura
73. Rogadhikar of Abhyaarishtha is
a. Grahani b. Bhagandar c. Arsha d. Gulma
74. shri khanda is synonym of
a. Khadir b. Bijak c.Chandan d. Musta
75. Sukshma tripala is indicated in
a. Arsha b. Skin disease
c.Bhagandhar d. Grudhrasi
76. Fever nut is known as
a. Karaj b. Lata Karaj c. Malati d. Karveer
77. Bhel Samhita
a. 5 A.D b. 6 A.D c. 7 A.D d. 8 A.D
78. Total chapters in Madhav Nidan
a. 50 b. 60 c. 69 d. 84
79. Khilasthanam is feature of samhita
a. Harita b. Bhela c.Kashyap d. Sushrut
80. Commentor of shivdas sen on Charak
a. Charaka Chandrika b. Tatva bodha
c.Dipika d. Tatva Pradipika
81. Authour of Bhaisajya Ratnavali is
a.Govind das sen b. Nagarjun
c.Govind Sharma d. Gannath sen
82. Best among the amlapitta janana.
a. Masha b. Kulatha c.Shshkuli d. All
83. Atop is lakshana of -- vidradhi
a. Yakrut b. Nabhi c.Guda d. Pliha
84. Parishishtha adyaya is feature of ---------- samhita
a. Harita b. Bhela c.Kashyap d. Sharangdhar
85. Worst (nindya) prakruti is
a. Vata b. vatapitta c.Pitta d. Kapha
86. Sanchari vedona is Feature of
a.Sandhigata Vata b. Amvata
c.Vat rakta d. Koshtuka shirsha
87. In khalitya ----- of hiars occures
a. Falling b. Discolouration
c.Both d. None
88. Gochandana is type of jaluka
a. Savisha b. Nirvisha c.Both d. None
89. Useful For Pandu Karma ?
a. Rohini Phala b. Kaphitha
c.Navakapalika d. All
90. Vishakhanbha Mudagarbha is told by
a. Charak b. Sushrut
c.Vaghbhata d. Sharangdhar
91. The number of type trushna is
a. 4 b. 5 c.6 d. 8
92. Ekushtha can be compared with
a. Psoriasis b. Leucodema
c.Eczema d. None
93. Duration of treatment for Pakshaghat is ----- Month
a. 1-2 b. 3 - 4 c.10 - 12 d. 8 - 10
94. ------ Karma nisnthaya ?
a. Rasa b. Virya c.Vipak d.Prabhava
95. Colleclion of Nagbala is done in ---- season
a. Sharad b. Shishira c.Varsha d. Vasant
96. The no. of questions asked by agnivesha in charak sharir chapter 2 ---
a. 32 b. 26 c. 21 d. 36
97. The number of vikruti is ? (Cha. I. 1)
a. 3 b. 7 c.8 d. 9
98. Gold Salt is given in ---- disease ?
a. Hepatitis b. Alcoholism
c. Gout d. Rheumatoid arthritis
99. Type of dushtha sira vyadhya ?
a. 20 b. 40 c.60 d. 98
100. In Adult angle of body and ramus of Mandible is ?
A. 180° B. 90° C. 120° D.140°

KERLA P.G. ENTRANCE 2012

PART - 1

1. Branch of medicine which deals with the application of medical and para medical scientific knowledge to the knowledge of both civic & criminal law in order to aid administration of justice is called
(A) Forensic medicine (B) Medical jurisprudence
(C) Jurisprudence and toxicology (D) A, B
2. The following is considered as "The father of Indian forensic medicine"
(A) Dr. Narayan Reddy (B) Dr. Jaisingh P Modi
(C) Dr. Nagesh Kumar G Rao (D) Dr. C.K.Parikh
3. The highest judicial tribunal for district is called
(A) Sessions Court (B) High Court
(C) Supreme Court (D) Fast track Court
4. The civil court deals with only civil matters and criminal court deals with only with criminal, however both can be dealt in
(A) District Sessions Court (B) Magistrates Court
(C) Supreme Court (D) Executive Magistrates Court

5. Fatal dose of castor is about 8-10 seeds / 1 mg per kg body weight / 6 mg of ricin. 1 treatment schedule would be
(A) Stomach wash (B) Rehydration
(C) Demulcents (D) A, B, C

6. Scorpion sting is diagnosed by one deep punctured wound, treatment advised is
(A) Tourniquet above the level of sting
(B) Local anesthesia
(C) Atropine (D) A,B,C

7. According to Sushruta Samhita, "Garbhapata" occurs in .... month
(A) 5 (B) 6 (C) 8 (D) A,B,C

8. Final process of gradual dissolution and liquefaction of tissues in a cadaver is due to
(A) Gangrene (B) Putrefaction
(C) Necrosis (D) Disintegration

9) Unoathed evidence is not admissible in the court of law except when a person is
(A) Below 7 years of age (B) Below 17 years of age
(C) Below 12 years of age (D) Below 18 years of age

10. A witness who will fully gives false statement after taking oath is considered guilty of .... as per section 191IPC
(A) Crime of perjury (B) False evidence
(C) Misconduct in court (D) Infamous conduct of court

11.Specific indication of "Kankayanaguti" according Sharangadhar Samhita is called the disease
(A) Gulma (B) UdaraShoola (C) Vata Vikara (D) Atisara

12. Among the ingredients in Chandraprabhavati .... is useful in Ashmari according to Sharangadhar Samhita
(A) Danti (B) Kshara
(B) Vidanga (D) Vamshalochana

13.Kaishorguggulu with Vaasaaquatha is useful in .... according to Sharangadhara
(A) Swasa (B) Vrana
(C) Agnimandya (D) Netra Roga

14. Which Rasa is having Dadhi as Patya in Jawara Chikitsa which can be seen from Sharangadhara Samhita
(A) Panchavaktra Rasa (B) Tribuvanakirti
(C) Arogyavardhini Rasa (D) Suchikabharana Rasa

15. Anjana Rasa contains ..... as depicted in Sharangadhara
(A) Jaipala (B) Shankha (C) Vidanga (D) Triphala

16. One of the indication of Vasantakusumakara Rasa is .... according to Sharangadhara
(A) Amla Pitta (B) Grahani (C) Gulma (D) Shirashua

17. Rajamraganka Rasa is specifically indicated in
(A) Madhumeha (B) Kshaya (C) Jawara (D) Hrudroga

18. How much Sita or Sharkara has to be added in the preparation of Avalehya according to Sharangadhara in proportion to the Churna used
(A) 4 times (B) 2 times (C) 6 times (D) 8 times

19. Which metal is used for Niruttha test?
(A) Suvarna (B) Rajata (C) Tamra (D) Loha

20. .... is not included among Mitrapanchaka?
(A) Madhu (B) Tankana (C) Jagri (D) Guggulu

21. Which of the following is used for Anjana in Apasmara according to Charaka Samhita?
(A) Gomutra (B) Avi mutra
(C) Vaji mutra (D) Bast mutra

22. "Nari Vivikta Priyata" is the Lakshana of
(A) VatajaUnmada (B) Pittaja Unmada
(C) Kafaja Unmada (D) Sannipataja Unmada

23."VishamaKurute Buddhim Nityanityo Hitahite" is related to .... disease
(A) Unmada (B) Atatvabhinivesha
(C) A,B (D) Murcha

24.According to Charaka Samhita, Paraspara Pratidwandva Chikitsa is indicated in.... disease
(A) Rakta Pitta (B) Udara (C)Arshas (D) Unmada

25 "Jeeruebalam" is related to . type of Uhmada according to Charaka
(A) Vataja (B) Pitaja (C) Kaphaja (D) Agantuja

26.Which of the following is best in Unmada for Virechana?
(A) Puranaghratha (B) Prapuranaghraiha
(C) Kumbhaghratha (D) Mahaghratha

27. Which of the following is the symptom of "
(A) Prasada Indriya and Indriyartha
(B) Prasada Buddhi Atma and Manas
(C) Dhlatunam Prakriti (D) A, B,C

28."Doshavege Cha Vigate Suptavat Pratibhudhyate" is related to .... according to Charaka
(A) Unmada (B) Apasmara (C) A, B (D) Mada

29. Medhyarasayana is indicated in .... disease
(A) Atatvabhinivesha (B) Unmada
(C) Murcha (D) Mada

30. Unmada is due to .... according to Charaka
(A) Manovibhramsha (B) Buddhivibhramsha
(C) Gnanavibhiamsha (D) A,B,C

31. "Divaabair" is referred as .... in Charaka
(A) Kaphaja Shotha (B) Vataja Sholha
C) Pittaja Shotha (D) Agantwja Shotha

32. "Griddhi SarvaRasanam Manasaha Sadanam' is the symptom seen in
(A) Vataja Gulma (B) Kaphaja Gulma
(C) Vataja Grahani (D) Kaphaja Grahani

33. "Mahavastu Parigraha" is a Lakshana of
(A) Sarshapika (B) Alaji (C) Sharavika (D) Kacchapika

34. "Varaati Dashta Samsthanaha" is said in regards to
(A) Udarda (B) Kitibha
(C) Indravriddha (D) Kotha

35. Number of Trishna according to "Madhava and Sushruta" are
(A) 5 (B) 6 (C) 7 (D) 4

36. Murcha is due to
(A) Pitta and Tamas (B) Rajasa, Pitta and vata
(C) Tamas, Vata and Kapha
(D) Shleshma and Tamas

37. The Dosha involved in Trishna is
(A) Vata (B) Pitta (C) Kapha (D) A,B

38. According to Sushruta "Artava formation" occurs after .... from Rasadhatu
(A) 7 days (B) 4 - 5 days
(C) 1 month (D) 12-14 years

39. Charak identifies .....where Pitta should he in abundance
(A) Pakwashaya (B) Gall bladder
(C) Grahani (D) Amashaya

40. According to Ashtangahridaya, though Agni in normal state, it becomes if influenced by Vata
(A) Vishama (B) Ushna
(C) Teekshana (D) Vriddhi

41. During conception, Doshas play greater role in the formation of Prakrit!, where contributes for ..... according to Ashlangahridaya
(A) Ushna Prakriti (B) Madhyama Prakriti
(C) Uttama Prakriti (D) Rajasika Prakcriti

42. According to Ashtangahridaya, Dooshya is nothing but..... when acted upon by doshas
(A) Rasa (B) Mamsa (C) Rakta (D) A,B,C

43. The Rasas act on Vatapitta etc, Madura Rasa does
(A) Increase Pittavata (B) Decrease Kaphavata
(C) Increase Rasa medha (D) Decrease Vatapitta

44. Sushruta has described visual learning of anatamy in Chapter?
(A) Samkhya Vyakarana (B) Pramana Vyakarana
(C) 5 th Chapter of Sharira Sthana (D) A,B,C

45. "Phalapakanta is... according to Charaka
(A) Vanaspati (B) Vanaspatya
(C) Virudha (D) Aushadha

46. "Marichi" is related to
(A) Prithivi Mahabhuta (B) Akasha Mahabhuta
(C) Ap Mahabhuta (D) Agni Mahabhuta

47. Prithvi Mahabhuta contains ... as seen in Sushruta
(A) Rajoguna (B) Tamoguna
(C) Satvatamoguna (D) Rajhatamoguna

48. Ateetaadi Vyavahara Hetuhu is .... according to Tantra Sangraha
(A) Panchamahabhuta (B) Dik/Disha
(C) Kaala (D) Manaha

49. Prachyaadi Vyayaharhetu is .... according to Tantra Sangraha
(A) Kaala (B) Dik/Disha (C) Atma (D) Manas

50. Yasya Dravyasya Vivarane Ashaktilii is referred to
(A) Sthoola (B) Sukshma
(C) Snigdha (D) Teekshana

51, Dwandwa Karmaja, Ekakarmaja, Sarvakarmaja, is related to
(A) Yukti (B) Parimana
(C) Samyoga (D) Vibhaga

52. The excess intake of food causes discomfort, however, Sushruta advocates Vamanakarma in .... condition
(A) Vidagdha (B) Vishtabda
(C) Amotpatti (D) Vibandha

53. In winter season, an exercise should be done till
(A) Stabdha Shwasha (B) Lohagandhi Shwasa
(C) Poornashakti Shwasa (D) Ghrmapradurbhava

54. Sushruta advocates .... posture should be adopted after the intake of food
(A) Rajavat (B) Bhojanasana
(C) Uttanashayana (D) Lotus

55. Suryavartharasa should be given in two Gunja pramana in ..... according to Sharangadhara
(A) Ardhavabedaka (B) Suryavarta
(C) Shankaka (D) Shwasa

56. In Ashtangahridaya, it is advocated that face / mouth should be covered while
(A) Yawning (B) Laughing
(C) Sneezing (D) A,B,C

57. These should not be grown according to Ashtangahridaya
(A) Shmashru (B) Asthi (C) Danta (D) Anguli

58. Ashtangahridaya advises not to indulge in
(A) Sitting objects of hate (B) Staring small objects
(C) Staring sun (D) A,B,C

59. According to Ashtangahridaya one should avoid
(A) Head low position
(B) Staying below the tree during nights
(C) Places serving alcohol (D) A,B,C

60. One who understands others and tries to please them is .... according to Vagabhatta
(A) Chatura pundit (B) Pararaadhana pundit
(C) Vidwan pundit (D) Dharma guru

61. Ta
(A
(C
62. Va
(A
63. El
(A
(C
64. N
(A)
65. Pra
(A)
(B
66. Kai
(A)
(C)
67. Ka
(A)
(C)
(D)
68. Num
(A)
69. Ksh
(A)
(C)
70. Para
(A)
(C)
71. Parii
(A)
(C)
72. Whei
Rakt
to S
(A)
(C)
73. Foll
kshan
(A)
(C)
74. Vitsha
Lasgl
(A)
(C)
75. Accoi
Peeda,
(A) I
(C) M

61. Taking bath is not advisable to one who has
(A) Netra disease (B) Indigestion
(C) Just consumed food (D) A,B,C

62. Vaadavidya OR Tatvavidya is a synonym of.... Datshan
(A) Nyaya (B) Samkhya (C) Yoga (D) Mimamsa

63. Ekantavaada is proposed by
(A) Vedanta Darshana (B) Samkhya Darshana
(C) Yoga Darshana (D) A and C

64. Number of Padarthas accepted by Yoga Darshana is
(A) 6 (B) 24 (C) 25 (D) 20

65. Pramanas accepted by Charvaka Darshana
(A) Pratyaksha (C) Pratyaksha anumana
(B) Abhaava (D) Pratyaksha, anumana, Shabda

66. Kanada is the pravartaka of.... Darshana
(A) Sankhya (B) Nyaya
(C) Vaisheshika (D) Charvaka

67. Karyakarana Siddantha is mainly proposed by
(A) Nyaya Darshana (B) Sankhya Darshana
(C) Karmakhanda of Mimamsa Darshana
(D) Vedanta Darshana

68. Number of Teerthankaras accordmg to Jaina Darashana
(A) 6 (B) 18 (C) 24 (D) 30

69. Kshanahhangura Vada is proposed by
(A) Jaina Darshana (B) Bouddha Darshana
(C) Charvaka Darshana (D) Vagabhatta Darshana

70. Paramanu Vada is proposed by
(A) Nyaya Durshana (B) Samkhya Darshana
(C) Mimamsa Darshana (D) None of the above

71. Parinama Vada is proposed by
(A) Nyaya Darshana (B) Sankya Darshana
(C) Vedanta Darshana (D) Vaisheshika Darshana

72. When the disease has deep rooted Doshas, Rakta Mokshana is done by using .... according to Sushruta
(A) Siraavyadha (B) Jalauka
(C) Alabu (D) Blood donation camp

73. Following instrument should be used for Raktamo kshana on bony prominence areas according to Sushruta
(A) Kutharika (B) Suchi
(C) Nadi (D) Sharaareemukha

74. Vitshathilya, Adhastat Sneha Darahana, Angaanaam Lasghavam indicates according to Sushruta
(A) Snehaapakthihi (B) Heenasneha
(C) Samyaksneha (D) Atisneha

75. According to Sushruta Sweda are of four types.Sandhi Peeda, Sphota, Raktaprakopa, Trishna etc are caused due to
(A) Heena Sweda (B) Ati Sweda
(C) Madhyama Sweda (D) Pramada

76. Vamana is not indicated in Gulma, Udhara, Krura Koshta, Ajeerna etc, However, in Visha Peedita, Vamana should be done using .... according to Sushruta Samhita.
(A) Madlwka Kwatha (B) Madana Kwatha
(C) Nimba Kwatha (D) Vishaala Kwatba

77. Niruha Basti can be given in ..... time according to Chakradatta
(A) Purvaahna (B) Madhyahna
(C) Sayaahna (D) Ratrou

78. Snehapana is not indicated in .. according to Sushruta
(A) Ajeerna (B) Tarunajwara
(C) Prasoota stree (D) A, B, C

79. Among the Sandhi varieties Vayasatund Sandhi is seen at
(A) Uru (B) Hanu (C) Manibandha (D) Parshni

80. Among the layers of twacha, Granthi, Apachi, occur in ..... layer
(A) Rohini (B) Vedini (C) Shweta (D) Avabhasini

81. Formation of .....occurs due to Kitta part of Shonita according to Sushruta
(A) Aantra (B) Hridaya (C) Unduka (D) Pleeha

82. Total number of bones in the body according to Charaka is
(A) 204 (B) 260 (C) 210 (D) 360

83. .... organ is responsible for the separation of Mala as described by Sushruta
(A) Samaana Vayu (B) Grahani
(C) Unduka (D) Nabhi

84. Dhamanis are innumerable due to the division of..... Dhamanis
(A) Urdhwaga (B) Adhoga
(C) Teeryaga (D) Swabhava

85. Cadaver is decomposed in running water & the study can be started afler .. according to Sushruta
(A) One day (B) One week
(C) One paksha (D) One month

86. Though Rasavasothasanam Hridyam Moolam, according to Sushruta Rasasthana is said to be
(A) Pakwashaya (B) Aamashaya
(C) Hridaya (D) Pupusa

87. Charak in Sutrasthana has described the trees / Vriksha assigned for Shodhana Karma. They are .... in number
(A) 4 (B) 5 (C) 6 (D) 7

88. The following Dravyas can de taken regularly according to Charaka
(A) Mudga (B) Saindhava
(C) Jangalamamsa (B) Saindhava

89. Jentakasweda is indicated in ..... Rutucharya
(A) Sharath (B) Varsha
(C) Vasantha (D) Hemant

90. Ghratamcha Uttarabhaktikam is related to the treatment of ..... according to Charaka
(A) Mutravegadharana (B) Hikkavegadharana
(C) Kshavathuvegadharana (D) Nidra veghadharana

91. Ekapattiaroga is said to be ... according to Charaka
(A) Sukhasadhya (B) Krichhrasadhya
(C) Yyapya (D) Apatrikriya

92. Anupana during the consumption of Majja is
(A) Peya (B) Yooshya (C) Ushnajala (D) Manda

93. The Maatra of Snehapana for Shodhanakarma is
(A) Uthama (B) Madhyama
(C) Hrisvya (D) Heena

94. The general line of treatment for Pratishaaya comprises of
(A) Sarpi Paana (B) Swedana Vamana
(C) Avapeedana Nasya (D) A,B,C

95. Nasa is said to be .... in length according to Charaka
(A) 4 angula (B) 3 angula
(C) 2 angula (D) 5 angula

96. Central line of treatmeni for Jihwaroga comprises of.... according to Yogaratnakara
(A) Raktamokshana (B) Kavala
(C) Guduchi Nimba Pippali Kwatha (D) A,B,C

97. Vagabhata describes cutting and suturing / plastic repair of Khandoushtha advises .... for suturing
(A) Sukshma Sutra (B) Ashmantakavalkala Sutra
(C) Kshouma Sutra (D) Snayu Sutra

98. Yogaratnakara describes Mukha as comprising of.... etc
(A) Dantainoola (B) Gala (C) Jhiwha (D) A,B,C

99. While describing Grahapeedita Lakshana in a patient, Vagabhatta refers to oshtha as
(A) Aasya (B) Dashanacchada
(C) shrikinou (D) Upajihwa

100. Pooyalasaka occurs in of.... etc
(A) Kaneenika (B) Apanga (C) Parvani (D) Drishti

101. Galashundika should be excised. in Sushruta, the Chedana is said to be
(A) Tribhagam (B) Dwibhagam
(C) Sampoormam (D) Chaturbhagam

102. According to Dalhana , Talupupputa, Tundikeri are said to diseases
(A) Chhedhya (B) Lekhya
(C) Vedha (D) Bhedhya

103. Rohini occurs in ..... and may be fatal
(A) Kantha (B) Nakshatra
(C) Feminne (D) Taalu

104. According to sushruta Samhita, Trunapanchamoola contain
(A) Kandekshu (B) Darbha
(C) Kusha (D) A, B, C

105. Bilwa, Trikatu, Paatala, Kaashmary formed the ingredients of.... as seen in Sushruta
(A) Valli Panchamoola (B) Mahat Panchamoola
(C) Laghu Panchamoola (D) Bilwadi Gana

106. Pippali, Shrungabera, Maricha form .... according to Sushruta
(A) Trikatu (B) Deepaka Gana
(C) Pippali Gana (D) Vrishya Gana

107. Aapyadravyas have ..... Guna
(A) Snigda (B) Manda (C) Picchila (D) A,B,C ,

108. Though Rasas are six in number, some scholars increase the number and .... forms the increase
(A) Kshara (B) Avyakta
(C) Swadhu (D) A, B

109. Haridra is one of the ingredient of Ksharasutra according to Bhavaprakasha, the ingredients are
(A) Sutra (B) Snuhi
(C) Apamargakshara (D) A,B,C

110. Madanapala Majjya in the dose of .... should be given in water for Vamana according to Bhavaprakasha
(A) 3 - 6 masha (B) 5 - 10 tola.
(C) 1- 2 karsha (D) 10 ratii

111. Laksha should be always used..... as per Bhavprakasha
(A) Fresh collected (B) Purana
(C) Bhaanda Gata (D) Bharjita

112. Lashuna is said to be equivalent to nector. However .... Rasa is missing as seen from the Bhavaprakasha Nigantu
(A) Lavana (B) Amla
(C) Tikta (D) Katu

113. Among Vituddha Karana Dravyas, These are some among them
(A) Amla Rasa and Ksheera
(B) Ratrodadhi Bhojana
(C) Shukara Mamsa, Ghrita, Sheetalajala (D) A,B,C

114. Lippes loop device for family control is a
(A) Open device (B) Non medicated device
(C) Polythene device (D) A, B, C

115. Haemagglutination inhibition test for pregnancy is positive by formation of a demarcated brown ring at the bottom of the tube. The time required for this is
(A) Instant (B) Within 5 min
(C) 1 hour (D) 2 hours

116. After - delivery Sushruta advises to cut Nabhinala leaving .... angula
(A) 4 (B) 6 (C) 8 (D) 10

117. Quickening is felt in primigravida in .... weeks of pregnancy
(A) 12 (B) 16 (C) 18 (D) 24

118. The occurrence of lactation after delivery may start in .... days according to Sushruta
(A) Instant (B) 3 - 4 days
(C) 4-6 days (D) 0 - 3 days

119. Postpartum hemorrhage is identified when total blood loss amounts to
(A) 250 ml (B) 350 ml (C) 500 ml (D) 700 ml

120. In ancient literature child bearing was precious, however a lady is called Nivritta Prasava if she does not conceive for .... years after delivery.
(A) 4 (B) 6 (C) 8 (D) 12

121. Uterus is felt enlarged and full and firm in upper segment and soft in lower segment and usually seen in 6-10 weeks of pregnancy and this sign is called
(A) Hegar's sign (B) Palmer's sign
(C) Chadwicks sign (D) Ladin's sign

122. Sootika is supposed to be a period of.... after delivery according to Sushruta
(A) 1 month (B) 1 1/2 months
(C) 4 months (D) 6 months

123. Ritukala is said to be upto .....as described-by Sushruta
(A) 0 - 6 days (B) 3 - 8 days
(C) 12-16 days (D) 28 days

124. According to Sushruta menarche starts from.... of age
(A) 12 yrs (B) 13 yrs (C) 16 yrs (D) 18 yrs

125. Rate of respiration per minute in premature infant ranges between 40 - 90, however in first year of life it would be ,
(A) 20-40/min (B) 30-40/min
(C) 15-25/mm (D) 18-24/min

126. Sushruta restricts — in a baby fed on milk even, when the baby is suffering from Vataja jwara
(A) Ghrita (B) Kshira and Jala
(C) Jala (D) No restrictions

127. In Ahiputhana Gudapaka occurs and to check this Sushrula advises the use of.... to reduce Pitta
(A) Sarpi (B) RasanjiLna
(C) Kshiranna (D) Rcchana .

128. Sushruta identified..... where Vata causes painful distension in umbilicus
(A) Nabhinaha (B) Udavartha
(C) Nabhyaavarta (D) Tundi

129. ..... Taila is most indicated while Nabhikartana by Vagahbatta
(A) Jatyadi taila (B) Kumba taila
(C) Pinda taila (D) Kustha taila

130. Supplement of food lobe started for the child from
(A) 4th month (B) 5th month
(C) 6th month (D) 7th month

131. The milk is tested by mixing in water before it should given to child; it would be suitable if
(A) It mixes completely (B) It sinks
(C) Floals (D) Becomes frothy

132. Naming ceremony is celebrated on
(A) 8th day (B) 8th month
(C) 10th day (D) 10 th month

133. To remove Unmada, Grahabadha, Vagabhata advocates ..... Para
(A) Bhootarao Ghrata (B) Mahabhootarao Ghrata
(C) Siddharthaka Ghrata (D) A, B, C

134. Charaka advocates ..... in pain in the perianal area
(A) Chitraka (B) Agrrimantha
(C) Ballataka (D) Kutajatwaka

135. Bleeding / clot in urinary bladder is referred as
(A) Skandashonita (B) Picchilashonita
(C) Syaanashonita (D) Ganashonita

136. Virechana is process of purification, however, it is regulaely advised in
(A) Jalodhara (B) Yakritodhara
(C) Pleodhara (D) Kaphodhara

137. Charaka advocates Hingwashtaka Churna, specially in
(A) Rajayakshma (B) Gulma
(C) Swasha (D) Pravahika

138. In Swishtra, Charaka relies more on
(A) Khadira (B) Malapoorasa
(C) Arogyavardhini (D) Kushta

139. Charaka advises Lodhrasava in
(A) Prameha (B) Pradara
(C) Raktasrava (D) Rakta Atisara

140. Danti and Haritaki combination is advised in by Charaka
(A) Gulma (B) Malabadatha
(C) Ajeerna (D) Kshaya

141. Yavagu is contraindicated in conditions like .... according to Charaka
(A) Pitlakaphadhike (B) Yurdhwaraktapitte
(C) Madaatyaye (D) A,B,C

142. Sushruta contradicts the use of procedures like .... when Tunnasevani sutures are put on scrotum
(A) Snehana, Seka (B) Gopana bhandha
(C) Akshnou Jalaparokshana (D) Padabhanga with Jala

143. Gandha Taila is specially indicated in
(A) Twakroga (B) Bhagna
(C) Kushta (D) Kandu

144. Sushruta advocates ... for the removal of Ashmari in toto during operative procedure
(A) Kankamukha yantra (B) AgryaVaktrayantra
(D) Vyalamukha yantra (D) Simhamukha yantra

145. Standing X-ray is a must to rule out .... in stab injury where gas below diaphragm is seen
(A) Perforation of intestine
(B) Perforation of bladder
(C) Perforation of uterus
(D) Perforation of spleen

146. While doing USG study of abdomen
(A) Urinary bladder should be full
(B) Urinary bladder should be empty
(C) No gas in intestine
(D) Patient should be empty stomach

147. Stapled technique is advocated in
(A) Internal haemorrhoidectomy
(B) Intestinal anestomosis
(C) Doppler guided haemorrhoidectomy
(D) Closure of skin in compound fracture

148. Sushruta encountered complication in surgery on bladder and enumerated incurables
(A) Dwidhabhinnabasti (B) Ekatobhinna
(C) Mutrasrasravivrana (D) A,B,C

149. Sushruta has advised ..... during urinary bladder surgery for removal of ashmari particles e
(A) Bladder wash (B) Second operation
(C) Weight and watch (D) Catheterisation

150. FNAC or fine needle aspiration cytology should not be done in
(A) Thyroid (B) Lump in breast
(C) Testicular tumour (D) Lymph node

PART - 2

1. According to Charaka Kamsaharitaki is specially indicated in
(A) Shwayathu (B) Grahini
(C) Prameha (D) Kustha

2. .... is the disease where Jalapratarana Vyayama is indicated and Panchakarma is contraindicated
(A) Urusthambha (B) Visarpa
(C) Yakshma (D) Kshathaksheena

3. Snehana, Svedana, Virechana are principle treatments of
(A) Jalodhara (B) Pakshaghata
(C) Ardhavabedhaka (D) Pureeshasangha

4. Yogaraja churna is referred for .... disease according to Charaka
(A) Sandhishula (B) Sandhivata
(C) Amavata (D) Pandu

5. In Saptamruta Loha.... may be counted as ingredients for Netra Rogas
(A) Ghrita Madhu (B) Ksheera Madhu
(C) Kshreera Sharkara (D) Ushnajala Jeeraka

6. In.... type of Jwara, Kashayarasa is contraindicated
(A) Navajwara (B) Jeernajwara
(C) Santataka (D) Anyedyushka

7. ....is advocated by Charaka if Astimajjagata Jwara is diagnosed
(A) Langhana (B) Guduchi ghrata
(C) Basti (D) Anandabhairava

8. Extreme painful Gridhrisi is also called
(A) Dandaka (B) Baheerayama
(C) Khalli (D) Prishthagraha

9. Anupana plays major role, consumption of Taila should be followed by .... as Anupana
(A) Yoosha (B) Vilepi
(C) Manda (D) Krishara

10. Sushruta advises never to give .... to a patient suffering from Prameha
(A) Anuvasana Basti (B) Virechana
(C) Teekshana Oushada (D) Ratrou Vyayama

11. Pain in right iliac fossa, vomiting and temperature together form
(A) Murphy's sign (B) Murphy's triad
(C) Murphy's angle (D) Cushing's triad

12. Anemia, haematuria, mass in loin form .... suggestive of renal cell carcinoma
(A) Kehr's triad (B) Renal cell carcinoma triad
(C) Tillaux's triad (D) Virchow's triad

13. Medial border of the triangle is formed by the rectus sheath, superio-lateral border by inferior epigastric artery and inferior border by the inguinal ligament. It is called
(A) Triangle of doom (B) Inguinal triangle
(C) Hesselbach's triangle (D) Femoral triangle

14. The triangle bounded by umbilicus, symphysis pubis and the anterior superior iliac spine is called
(A) Scalene triangle (B) Sherren's triangle
(C) Triangle of marseille (D) Calof s triangle

15. Oxy
(A)
16. Nor
(A)
(C)
17. Hem
Ho
(A)
(C)
18. Lef
(A)
(C)
19. Test
esio
thick
neop
(A)
(C)
20. Sus
con
(A)
(C)
21. Fee
ser
for
(A)
(C)
22. The
em
dis
thr
(A)
(B)
(D)
23. Ethi
as c
(A)
(C)
(D)
24. Mag
istra
(A)
(C)
25. Rad
(A)
(B)
(C)

15. Oxygen saturation in normal individual is above
(A) 90% (B) 95% (C) 97% (D) A,B,C

16. Normal bleeding time is
(A) 2-6 minutes (B) 1-4 minutes
(C) 4-8 minutes (D) 2-10 minutes

17. Hemoglobin in adults ranges from 14 to 16 gms /dl. However, in new born it would be
(A) 12-16 gm/dl (B) 16-19 gm/dl
(C) 08-10 gm/dl . (D) 10-14 gm/dl

18. Left supra clavicular lymph node enlargement is seen
(A) Ca Stomach (B) Ca Testis
(C) Ca Meninges (D) A,B

19. Testicular neoplasm can be differentiated from inflammatory esion of testis where vas deferens becomes considerably thickened due to inflammation and remain normal in neoplasm. This is also called
(A) Testicular sign (B) Vas sign
(C) Tanyol's sign (D) Tap sign

20. Sushruta advocates replacement of the eye if it had come out, however a precaution is given which is
(A) Unbroken eye ball (B) Patent vessels etc
(C) Uninjured eye socket (D) A,B

21. Fees offered to a witness in civil case at the time of serving of summons to cover the travelling expenses for attending court is
(A) Bribe money (B) Conduct money
(C) Below table money (D) Hand warming money

22. The medicine pertains to matters related to employment and includes such other matters as disease and injury at work, compensation for such through insurance companies and so on can be
(A) Social medicine and jurisprudence
(B) Toxicology (C) Subpoena
(D) Examiner in Chief

23. Ethics is science of moral values or principles described as code of conduct and earliest treatise to describe is
(A) Charaka (B) Hippocratic oath
(C) Arthashastra of Kautilya
(D) Declaration of Geneva

24. Magistrate's court presided by the judicial mag istrate deals usually with.... matters
(A) Civil (B) Doctors
(C) Criminal (D) Forum

25. Radiological diagnosis for fetal death is confirmed by
(A) Spalding's sign
(B) Absence of fetal heart sound before 12 weeks
(C) No bone shadows (D) No fetal movements

26. High court is the highest judicial tribunal in the State and usually located in the State Capital. Some of the High Courts not located in the State capital are
(A) Kerala (B) Assam
(C) Uttar Pradesh (D) A,B,C

27. A lawful disinterment of a dead body from grave for medico legal examination is called as
(A) Exhumation (B) Autopsy
(C) Identification of the grave
(D) Digging the body

28. Receiving / giving commission or benefits to professional colleagues, manufacturers, traders etc., commission to one doctor to another for referral or other treatment surgical medical etc., is known as
(A) Dichotomy (B) Fees splitting
(C) Sharing (D) A,B,C

29. Consent taking can be deviated
(A) under section 92 IPC
(B) under section 202 IPC
(C) under section 31 CrPc
(D) above 18 years of age

30. Whenever a female is to be examined, it shall be made only by or under the supervision of a Female Registered Medical Practitioner for an offence under the following section
(A) 53 (2) of CrPc (B) 53 of IPC
(C) 92 (1) of IPC (D) 202 of CrPc

31. Which may not be the ingredient in Triphala Guggulu according to Sharangadhara
(A) Nimba (B) Pippali (C) Triphala (D) Guggulu

32. How much Jala has to be taken along with Churna according to Sharangadhara
(A) 6 times (B) 8 times
(C) 4 times (D) 2 times

33. Which drug has to be used after one year or more duration from procuring according to Sharangadhara
(A) Pippali (B) Trikatu (C) Amalaki (D) Shunthi

34. Twelve Sarashapa equals .... according to Sharangadhara
(A) Gunja (B) Yava (C) Masha (D) Karsha

35. Which should be the minimum quantity required for Parada Shodhana according to Rasatarangini
(A) One Pala (B) Five Pala
(C) Fifty Pala (D) Hundred Pala

36. The dosage of Shuddha Hartala is .... according to Rasatarangini
(A) One Ratti (B) One Masha %
(C) One Tola (D) Half Ratti

37. Pinda Taila has.....side effects according to Rasatarangini
(A) Hridaya (B) Yakrit
(C) Stree Pushpa (D) Vrikkak

38. Which Basma is subjected to Amritikarana according to Rasatarangini
(A) Tamra (B) Suvarna (C) Rajatha (D) Vanga

39. Which disease is caused by impure Manasheela according to Rasatarangini
(A) Mutrakricchra (B) Hridroga
(C) Atisara (D) Madhumeha

40. SwarjikaKshara is prepared out of.... according to Rasatarangini
(A) Sarja (B) Duraalabha
(C) Guggulu (D) Yava

41. According to Charaka Samhita, Mahagada is
(A) Udara (B) VataVyadhi
(C) Atatvabhi Nivesha (D) A,B,C

42. According to Charaka, Balya is extended upto
(A) 18 years (B) 16 years (C) 1-8 years(D) 8-12 years

43. At the age of 1 1/2 months .... vaccine is given
(A) DPT (B) TT (C) BCG (D) MMR

44. According to Ashtanga Sangraha, voluntary retention of urine leads to
(A) Mutrajathara (B) Gavini Visphara
(C) Mutrotsangha (D) Granthi

45. Mutra Ghranthi occurs at.... according to Ashtanga Sanghraha
(A) Mutradwara (B) Mutrashaya
(C) Bastidwara (D) Vrikka

46. According to Charaka Sushruta wara is said to be
(A) Raja (B) Rogadhiipati
(C) Maheshwarakopa (D) A,B,C

47. Durge Ambhasi Yatha Majyat Bhrajanyam Twaraya Budha is related to
(A) Unmada (B) Pittaja Madatyaya
(C) Murcha (D) Sanyasa

48. Keshalumchanam is the line of treatment in
(A) Apasmara (B) Pittaja Murcha
(C) Madathyaya (D) Sanyasa

49. In Unmada, Apasmara, the Snehana Matra should be.... according to Sushruta
(A) Ardhadivase Jeeryathe
(B) Ahani Pani Jeeryathe
(C) Ahoratraat Pari Jeeryathe
(D) Ahani Chaturbage Jeeryathe

50. The symptoms of Sannipathaja Murcha are almost equal to Sannipataja Apasmara, except
(A) Chirat Pratibudhyate (B) Bibhatsa Chesta
(D) Saswedhaha Pratibudhyate (C) A,B

51. In Vishthabdhajeema according to Sushruta.... should be induced
(A) Vamana (B) Virechana
(C) Swedana (D) Langhana

52. Mrudu Sweda is indicated in .... according to Sharangadhara
(A) Drishti (B) Hridaya
(C) Vrishana (D) A,B,C

53. Bathing with hot water below head is said to
(A) Increase strength (B) Decreased strength
(C) Unwholesome for stomach
(D) Unwholesome for heart

54. Vagabhatta advises exercise which
(A) Slims body (B) Increases digestive power
(C) Decreases medas (D) A,B,C

55. Anointation should be avoided in
(A) Ajeerna (B) Incomplete Vamana
(C) Kaphaja disorders (D) A,B,C

56. Consumption of liquor is not advised generally, however if it is compelled it should be taken .... according Ashtangahridaya
(A) With plenty of water (B) In dark place
(C) Quick consumption (D) Secret consumption

57. Vagabhatta advises milk to be taken in night; he also advocates .... consumption in "Shashanka Kirana"
(A) Talisachurna (B) Karpura
(C) Sitophala (D) A,B,C

58. "Adharaneeya Vegas" are many.... Vega Dharana causes "Pindakodweshtana"
(A) Pureesha (B) Mutra
(C) Nidra (D) Kshavatu

59. These should not be disturbed during sleep
(A) Child (B) King
(C) Other's dog (D) A,B,C

60. Abhyanga is advocated regularly, however, it should be done predominantly on
(A) Ears (B) Sole (C) Head (D) A,B,C

61. Number of Siddhantas according to Charaka is
(A) 2 (B) 3 (C) 4 (D) 5

62. Which of the following is related to Vishesha Siddhanta
(A) Viparyaya (B) Tulyartha
(C) Pritaktawakra (D) A,C

63. Tridandas are .... according to Charaka
(A) Vata, Pitta, Kapha
(B) Tridosha, Trimala, Dhatu
(C) Satwa, Atma, Shareera
(D) Indriya, Manas, Ahankara

64. Apratighata is the Guna of.... according to Charaka
(A) Vayumahabhuta (B) Agnimahabhuta
(C) Akashamahabhuta (D) Jalamahabhuta

65. Manas is said to be
(A) Achetana (B) Kriyavan
(C) Chetanavan (D) A,B

66. Vashi is the synonym of.... as said by Charaka
(A) Indriya (B) Atma
(C) Shareera (D) Manas

67. Sweda and Lasika are the place of.... as depicted in Charaka
(A) Vata (B) Pitta (C) Kapha (D) Rakta

68. Kashaya Rasa is having the predominance of.... Mahabhuta
(A) Vayu and Akasha (B) Vayu and Agni
(C) Vayu and Pritvi (D) Vayu and Jala

69. Sasneha is the Guna of
(A) Vata (B) Pitta (C) Kapha (D) A,B,C

70. Panchakarma is done mainly by assessing the.... according to Charaka
(A) Matra (B) Agni (C) Kala (D) A,C

71. Vagabhatta had the knowledge of tube connecting Ghrana and Shrotrapatha which is described in
(A) Phanamarma (B) Stapani marm
(C) Vidhuramarma (D) Shringataka

72. The Pramana of Aasya/mouth according to Charaka Samhita is
(A) 3 Angula (B) 4 Angula
(C) 5 Angula (D) 6 Angula

73. Sarpipana is indicated in Pratishyaya, however this .... condition contradicts according to the statement of Sushruta
(A) Navapratishyaya (B) Jeernapratishyaya
(C) Nasanaha (D) Karnapratinaha

74. Though eye said to be Tejomaya, it has threat from Sleshma, however, the Panchamahabhutas located in are
(A) Rakta-Agni (B) Shweta-Jala
(C) Ashrumarga - Akasha (D) A, B, C

75. Yogaratnakara includes some of these for Netra Chikitsa
(A) Pindi (B) Putapaka
(C) Bidalaka (D) A,B,C

76. Uthsangini, Pothaki, Anjananamika, Shushkarsha etc are said to occur in
(A) Vartma (B) Pakshma
(C) Shukla (D) Drishti

77. Linganasha has .... Upadravas according to Ashtangahridaya
(A) Four (B) Six (C) Eight (D) Eleven

78. Ghrita is said to be good in Timira, however, it should be
(A) Ayasbhandasthita (B) Triphalagritha
(C) Puranagritha (D) A,B,C

79. Kaacha is treated on lines of Trimira, however, this procedure is contraindicated in Ragaprapta Timira
(A) Siramokhsha (B) Anjana
(C) Nasya (D) Vamana

80. Rasanjana is periodically applied to eyes for the sake of
(A) Protection of eye diseases
(B) Prevention of Timira
(C) Prevention of Drishtinasha (D) A,B,C

81. Shatavari Karamarda, Trikantaka, Griddhanakha are .... Dravyas according to Sushruta
(A) Kanda (B) Moola
(C) Kantaka (D) Valli

82. Katu, Amla, Lavana,-Rasas have .... action
(A) Vidhahi (B) Agneya
(C) Kaphaja (D) Vatala

83. Ruksha Sheetha, Guru Guna can be assigned to .... Rasa
(A) Tikta (B) Kashaya (C) Lavana (D) Katu

84. These are among Ashtavarga according to Bhavaprakasha
(A) Meda (B) Jeevaka
(C) Ksheerakakoli (D) A,B,C

85. Laksha is Anushna Veerya, Snigdha, Lagu and is advocated in .... according to Bhavaprakasha
(A) Urakshatha (B) Raktapradara
(C) Kushtha (D) A, B, C

86. Collection of medicinal plants for Vamana Karma should be done in .... Kala according to Sharangadhara
(A) Vasanta Ante (B) Greeshma
(C) Sharath (D) Hemanth Ante

87. Where Moola of a drug has to be used, the collection is advised to be done in.... according to Charaka
(A) Vasantha (B) Greeshma
(C) Sharat (D) Hemanth

88. Haritaki is said to be Shoshini according to Sharangadhara in respect of
(A) Rasa (B) Pureesha (C) Mutra (D) Shukra

89. Bhrishta Haritaki is .... according to Bhavaprakasha
(A) Tridoshahara (B) Shodini
(C) Deepani (D) Grahi

90. Pippali is Deepani, Rechani, Katu and Lagu. However it is .... according to Bhavaprakasha
(A) Vrishya (B) Vidhahi
(C) Grahi (D) Mutrala

91. Anuvasana Basti is advocated for pregnant women in .... month by Charaka
(A) 4th month (B) 7th month
(C) 8th month (D) 9th month

92. The number of Mahagadha as can be seen in Charaka Sutrasthana is
(A) 2 (B) 8 (C) 6 (D) 1

93. Atripti is seen in .... Maharoga as described by Charaka
(A) Vataja (B) Pittaja
(C) Kaphaja (D) Vatapittaja

94. The milk of.... can be substituted if need arises according to Sushruta
(A) Goat (B) Cow (C) Buffalo (D) A & B

95. If birth weight of neonate is .... gms. It is defined as low birth weight
(A) 2000 gms (B) 2500 gms
(C) 3000 gms (D) 1500 gms

96. If a baby is born before .... it is called a preterm baby
(A) 39 weeks (B) 28 weeks
(C) 37 weeks (D) 40 weeks

97. Female child can be procured by copulating on .... days according to Sushruta
(A) Any day (B) Even days
(C) Uneven days (D) Alternate days

98. During labour, the normal presentation of fetus is said to be head presentation. However, this is due to .... as depicted by Sushruta
(A) Prabhava (B) Swabhava
(C) Completion of term (D) Pradesh Abhava

99. "Gambheera Paki Visarpa" is
(A) Agni Visarpa (B) Kardama Visarpa
(C) Granthi Visarpa (D) Kshataja Visarpa

100. In Madaatyaya "Dwamsaka" is due to .... according to Charaka
(A) Vataprakopa (B) Pittaprakopa
(C) Kaphaprakopa (D) Vatapittaprakopa

101. The one eligible for Snehana should avoid according to Sharangadhara Samhita
(A) Vyayama (B) Vega Dharana
(C) Jagarana (D) A,B,C

102. According to Vagbhata Arshas is produced by the Dushana of
(A) Twak (B) Mamsa
(C) Twak, Mamsa (D) Twak, Mamsa, Meda

103. Shotho Gandakshi Kutagaha is the Lakshana of
(A) Vidagdha Aj eerna (B) Vishtabhda Ajeerna
(C) Vilambika (D) Amajeerna

104. Jatrumulat Pradhavita is Lakshana of.... type of Hikka according to Sushruta
(A) Yamala Hikka (B) Kshudra Hikka
(C) Gambhira Hikka (D) Maha Hikka

105. Virasa is the Lakshna of
(A) Vataja Arochaka (B) Pittaka Arochaka
(C) Kaphaja Arochaka (D) Agantuka Arochaka

106. Dosha in Padadaha according to Sushruta is
(A) Pitta (B) Vata
(C) Vata Pitta (D) Vata Pitta Shonita

107. Rakta Mokhana is good to be done in ... according to Sharangadhara
(A) Sharad Rutu (B) Vasanta Rutu
(C) Grishma Rutu (D) Hemanta Rutu

108. FNAC is not done in
(A) Thyroid (B) Lump in breast
(C) Testicular tumour (D) Lymph node

109. Vitamin K is used in
(A) Bleeding disorder (B) Liver disorder
(C) Hypokalemia (D) A,B

110. Arunadatta on Ashtangahridaya Sutra comments Vatasthana as
(A) Urasthana (B) Nabhi Adhosthana
(C) Ura Adhosthana (D) Pupusa

111. The discharges in Twak seen oozing out in Vrana is identiiied as .... according to Charaka
(A) Rasa (B) Lasika
(C) Meda (D) Rakta

112. The quantity of Shonitha measured in Sushruta is
(A) 8 Anjali (B) 10 Anjali
(C) 12Anjali (D) 6 Anjali

113. The role of Panchamahabhuta is strongly established by Charaka, where Mamsa, Charma, Varch etc are
(A) Jaleeya (B) Parthiva
(C) Agneya (D) Vayaveeya

114. Dashapranayatanani comprise of.... according to Charaka
(A) Ojas (B) Mamsa (C) Rakta (D) A,B,C

115. Charaka identifies Jangha, Vankshana, Pani, Pada etc., as Pratyangani and enumerates a total of..., in number
(A) 101 (B) 210 (C) 56 (D) 360

116. While enumerating Snayu, Sira, Dhamani etc., Charaka opines them to be
(A) Tarkya (B) Anirdeshya
(C) Chakshushya (D) A,B

117. According to Sushruta, the discharge in Karna is said to be the Mala of
(A) Mamsa (B) Meda
(C) Majja (D) Rasa

118. The type of Asthi in Karna according to Sushruta is
(A) Taruna (B) Valaya
(C) Nalaka (D) Kapal

119. Dissection of body for knowledge of anatomy has been described by Sushruta in
(A) Shareerasthana 5th Chapter
(B) Sutrasthana 25th Chapter
(C) Chikistsasthana 25th Chapter
(D) Nidhanasthana 15th Chapter

120. Increase of Rasa leads to .... according to Sushruta and Ashtangahridaya
(A) Hridayotklesha (B) Swasha
(C) Kasa (D) A,B,C

121. Pravrattihi Ubhayasyatu is related to
(A) Karyakarana Sidhantha
(B) Panchamahabhuta Sidhanta
(C) Samanya Vishesha Sidhanta
(D) Pancheekama Sidhanta

122. Types of Abhava are ... according to Tantra Sangraha
(A) 2 (B) 3 (C) 4 (D) 1

123. Panchapanchaka concept is a contribution of
(A) Charaka Samhita (B) Sushruta Samhita
(C) Kashyapa Samhita (D) Bhavaprakasha Samhita

124. .... is Sadhyavachana
(A) Hetu (B) Drishtantha
(C) Upanaya (D) Pratignya

125. Moham can be identified by.... according to Charaka
(A) Avignanena (B) Abhidrohena
(C) Vishadena (D) Vyavasayena

126. Drishtarth and Adrishtarth are related to .... Pramana
(A) Pratyaksha (B) Upamana
(C) Anumana (D) Shabdha

127. Tantra Yukti is referred by Charaka in
(A) Sutra Sthana (B) Vimana Sthana
(C) Shareera Sthana (D) Siddhi Sthana

128. Pippali, Lavana, Dadhi, Dadhimastu, Ghritidi Sneha taken together cause .... according to Sushruta ?
(A) Sadyasneha (B) Kalaantarasneha
(C) Paramasneha (D) Paramavrishya

129. Charaka and Sushruta suggest Snehapana in the night when .... Doshas are increased
(A) Vatapitta (B) Grihsmarutu
(C) Kaphavata (D) Vatapitta Kapha

130. Usually Snehapana is advocated in the morning. However, Sushruta advocate! further
(A) Ushanajala Achamana (C) Viharana
(B) Kadhgadharana (D) A,C

131. For Raktamokshana, there are speciiic timings for specific season. However, in , Varsharitu, it should be done in.... according to Sushruta
(A) Morning (B) Afternoon
(C) Evening (D) Night

132. Sushruta advocates non indulgence in anger Vyaya Chankramana etc. after Raktamokshana, Vamana, Virechana for a period of.... to acquire Bala
(A) One Parva (B) One Paksha
(C) One Masa (D) One Sandhikala

133. Chirtaka, Vacha, Bimbi etc are used for Urdhvabhaga Shodhana and .... part is suggested by Sushruta
(A) Moola (B) Phala
(C) Twak (D) Kanda

134. The drugs used for Urdhvabhaga Shodhana should be .... according to Sushruta
(A) Madana (B) Kutaja
(C) Tumbi (D) A,B,C

135. Danthi, Saptala, Indravaruni, Swarnaksheeri are among.....Dravyas accoding to Sushruta
(A) Vamaka (B) Virechana
(C) Vrishya (D) Lohashodhaka

136. Kampillaka is collected in the form of.... as advocated by Sushruta
(A) Twak (B) Ksheera
(C) Palaraja (D) Patra

137. In general, Sushruta advocates Madhyama Paaka of Sneha for
(A) Nasya, Abhyanga (B) Bhojana
(C) Basti (D) Karnapooma

138. Ear has a type of Sandhi which is.... according to Sushruta
(A) Tunnasevani (B) Shankhavarta
(C) Vayasatunda (D) Pratara

139. Sushruta had the knowledge regarding a passage between Karna and Nasa and explained the same while describing
(A) Karnaghoota (B) Jeernapratishayaya
(C) Nasanaha (D) Karnapratinaha

140. The Varna of Ojas is said to be
(A) Madhu (B) Laja (C) Sarpi (D) Taila

Charak Samhita

1	c	66	d	131	c	196	d	261	b	326	b	391	a	456	b	521	b	586	b	651	a
2	c	67	d	132	a	197	d	262	b	327	c	392	d	457	c	522	c	587	d	652	b
3	d	68	c	133	c	198	b	263	d	328	b	393	a	458	c	523	d	588	c	653	c
4	c	69	b	134	b	199	c	264	c	329	c	394	d	459	a	524	a	589	d	654	c
5	a	70	b	135	c	200	c	265	c	330	d	395	d	460	d	525	d	590	d	655	d
6	d	71	a	136	b	201	b	266	d	331	b	396	d	461	c	526	d	591	c	656	d
7	a	72	c	137	b	202	a	267	d	332	b	397	a	462	d	527	b	592	d	657	c
8	d	73	d	138	c	203	a	268	a	333	b	398	b	463	a	528	c	593	c	658	a
9	a	74	c	139	d	204	c	269	c	334	c	399	a	464	b	529	c	594	a	659	a
10	d	75	a	140	a	205	c	270	d	335	b	400	c	465	b	530	c	595	c	660	c
11	a	76	c	141	c	206	a	271	c	336	b	401	c	466	a	531	b	596	d	661	b
12	a	77	c	142	d	207	d	272	b	337	d	402	b	467	b	532	b	597	b	662	c
13	c	78	c	143	b	208	a	273	c	338	a	403	c	468	b	533	d	598	d	663	a
14	a	79	d	144	d	209	b	274	b	339	b	404	d	469	d	534	c	599	c	664	c
15	d	80	c	145	d	210	a	275	a	340	d	405	d	470	b	535	c	600	d	665	d
16	a	81	b	146	c	211	a	276	d	341	c	406	d	471	b	536	d	601	b	666	c
17	b	82	d	147	d	212	c	277	b	342	d	407	c	472	c	537	c	602	d	667	a
18	b	83	d	148	d	213	b	278	a	343	b	408	d	473	a	538	b	603	a	668	a
19	d	84	b	149	d	214	c	279	d	344	d	409	b	474	d	539	b	604	a	669	c
20	b	85	c	150	b	215	d	280	c	345	a	410	b	475	d	540	b	605	c	670	b
21	c	86	c	151	c	216	c	281	b	346	b	411	c	476	a	541	a	606	c	671	a
22	c	87	c	152	b	217	d	282	c	347	c	412	d	477	d	542	b	607	c	672	c
23	d	88	d	153	b	218	c	283	d	348	b	413	a	478	a	543	d	608	a	673	b
24	c	89	b	154	d	219	c	284	b	349	d	414	d	479	c	544	b	609	c		
25	d	90	b	155	c	220	a	285	a	350	c	415	b	480	d	545	a	610	d		
26	b	91	b	156	b	221	d	286	d	351	a	416	c	481	a	546	b	611	a		
27	c	92	d	157	b	222	c	287	a	352	c	417	c	482	d	547	a	612	c		
28	a	93	c	158	d	223	d	288	c	353	a	418	c	483	c	548	c	613	a		
29	c	94	a	159	c	224	c	289	a	354	c	419	d	484	c	549	b	614	b		
30	d	95	d	160	a	225	c	290	d	355	a	420	c	485	d	550	d	615	d		
31	c	96	c	161	c	226	a	291	c	356	c	421	a	486	b	551	a	616	b		
32	d	97	d	162	b	227	c	292	c	357	d	422	a	487	b	552	b	617	a		
33	d	98	a	163	c	228	b	293	b	358	a	423	a	488	c	553	c	618	d		
34	c	99	c	164	b	229	c	294	c	359	d	424	c	489	c	554	c	619	c		
35	a	100	b	165	d	230	b	295	d	360	b	425	a	490	a	555	c	620	b		
36	c	101	b	166	d	231	c	296	c	361	d	426	b	491	b	556	c	621	d		
37	c	102	b	167	c	232	d	297	c	362	c	427	b	492	b	557	c	622	c		
38	c	103	c	168	a	233	d	298	c	363	c	428	b	493	a	558	c	623	b		
39	b	104	d	169	c	234	d	299	c	364	d	429	b	494	d	559	b	624	d		
40	a	105	a	170	a	235	b	300	c	365	a	430	c	495	c	560	a	625	b		
41	a	106	b	171	d	236	d	301	b	366	b	431	d	496	a	561	b	626	d		
42	d	107	b	172	a	237	d	302	c	367	c	432	b	497	a	562	b	627	b		
43	b	108	c	173	a	238	d	303	d	368	c	433	d	498	a	563	b	628	a		
44	a	109	b	174	b	239	c	304	a	369	d	434	b	499	c	564	c	629	d		
45	d	110	d	175	b	240	d	305	a	370	c	435	b	500	a	565	b	630	b		
46	b	111	a	176	b	241	b	306	d	371	a	436	a	501	b	566	b	631	b		
47	d	112	b	177	a	242	c	307	d	372	a	437	b	502	c	567	c	632	a		
48	a	113	d	178	d	243	b	308	b	373	b	438	c	503	b	568	b	633	d		
49	b	114	c	179	b	244	a	309	a	374	d	439	b	504	b	569	d	634	d		
50	b	115	a	180	d	245	d	310	d	375	a	440	a	505	c	570	b	635	a		
51	a	116	c	181	b	246	b	311	a	376	b	441	b	506	b	571	b	636	b		
52	c	117	d	182	b	247	d	312	b	377	d	442	a	507	a	572	d	637	a		
53	a	118	c	183	a	248	d	313	a	378	a	443	d	508	b	573	a	638	b		
54	d	119	d	184	b	249	c	314	c	379	c	444	a	509	c	574	b	639	d		
55	b	120	d	185	a	250	d	315	d	380	a	445	a	510	c	575	c	640	a		
56	d	121	b	186	d	251	a	316	b	381	c	446	b	511	a	576	c	641	a		
57	d	122	d	187	b	252	a	317	d	382	b	447	d	512	d	577	b	642	b		
58	b	123	d	188	c	253	b	318	c	383	a	448	d	513	a	578	a	643	b		
59	c	124	d	189	d	254	a	319	b	384	d	449	a	514	d	579	a	644	d		
60	b	125	b	190	b	255	a	320	b	385	b	450	b	515	c	580	b	645	b		
61	b	126	d	191	b	256	c	321	d	386	c	451	c	516	c	581	d	646	b		
62	c	127	d	192	d	257	d	322	d	387	a	452	a	517	c	582	a	647	c		
63	a	128	a	193	a	258	b	323	d	388	b	453	c	518	b	583	b	648	d		
64	d	129	b	194	b	259	d	324	c	389	c	454	a	519	a	584	b	649	d		
65	d	130	b	195	d	260	d	325	a	390	c	455	a	520	a	585	d	650	a		

Charak Numericals (Sutra)

1	c	66	d	131	c
2	b	67	b	132	b
3	b	68	d	133	b
4	c	69	b	134	b
5	c	70	a	135	b
6	c	71	b	136	a
7	c	72	b	137	b
8	a	73	c	138	b
9	a	74	a	139	c
10	d	75	c	140	a
11	d	76	b	141	d
12	a	77	d	142	c
13	a	78	a	143	b
14	a	79	b	144	b
15	a	80	a	145	c
16	a	81	d	146	c
17	c	82	c	147	b
18	d	83	b	148	d
19	a	84	b	149	a
20	a	85	b	150	c
21	b	86	a	151	b
22	c	87	a	152	c
23	c	88	a	153	b
24	a	89	b	154	d
25	b	90	a	155	b
26	c	91	d	156	c
27	d	92	b	157	b
28	b	93	b	158	a
29	a	94	c	159	c
30	b	95	a	160	c
31	c	96	b	161	a
32	c	97	c	162	c
33	b	98	a	163	c
34	c	99	b	164	a
35	c	100	b	165	c
36	c	101	a	166	a
37	a	102	d	167	c
38	c	103	d	168	a
39	b	104	c	169	c
40	c	105	a		
41	b	106	b		
42	d	107	a		
43	c	108	c		
44	c	109	a		
45	b	110	c		
46	d	111	b		
47	c	112	d		
48	b	113	b		
49	c	114	a		
50	c	115	c		
51	c	116	b		
52	a	117	a		
53	c	118	b		
54	d	119	b		
55	d	120	c		
56	b	121	a		
57	a	122	d		
58	a	123	b		
59	b	124	a		
60	b	125	c		
61	a	126	d		
62	a	127	b		
63	b	128	a		
64	d	129	b		
65	c	130	c		

Nidan

1	d
2	a
3	b
4	a
5	d
6	a
7	a
8	a
9	d
10	b
11	b
12	a

Viman

1	d
2	c
3	a
4	a
5	c
6	d
7	c
8	b
9	b
10	a
11	a
12	b
13	b
14	a
15	c
16	a
17	c
18	b
19	a
20	b
21	a
22	c
23	a
24	c
25	a
26	a
27	b
28	b
29	b
30	a
31	c
32	b
33	d
34	c
35	b
36	a
37	c
38	b
39	b
40	a
41	c
42	c
43	a
44	c
45	b
46	b
47	a
48	c
49	b

Sharir

1	a
2	c
3	a
4	a
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	

Viman		15	c	80	a	42	b	Siddhi	
1	d	16	a	81	b	43	b	1	a
2	c	17	b	82	b	44	c	2	d
3	a	18	c	83	b	45	b	3	b
4	a	19	a	84	b	46	a	4	a
5	c	20	b	85	a	47	b	5	c
6	d	21	c	86	b	48	c	6	b
7	c	22	b	87	a	49	a	7	c
8	b	23	c	88	a	50	d	8	b
9	b	24	d	89	c	51	c	9	c
10	a	25	b	90	d	52	a	10	c
11	a	26	c	91	b	53	b	11	b
12	b	27	b	92	a	54	b	12	b
13	b	28	b	93	b	55	d	13	b
14	a	29	a	94	c	56	a	14	c
15	c	30	b	95	b	57	a	15	c
16	a	31	a	Indriya		58	b	16	d
17	c	32	b	1	c	59	d	17	c
18	b	33	c	2	b	60	b	18	c
19	a	34	d	3	c	61	c	19	c
20	b	35	d	4	b	62	a	20	d
21	a	36	b	5	b	63	b	21	b
22	c	37	c	6	d	64	c	22	c
23	a	38	d	Chikitsa		65	a	23	b
24	c	39	a	1	c	66	b	24	a
25	a	40	b	2	b	67	c	25	c
26	a	41	c	3	a	68	a	26	c
27	b	42	a	4	c	69	d	27	a
28	b	43	c	5	c	Kalp		28	b
29	b	44	b	6	b	1	b		
30	a	45	c	7	a	2	c		
31	c	46	d	8	c	3	c		
32	b	47	d	9	d	4	b		
33	d	48	d	10	a	5	c		
34	c	49	b	11	b	6	a		
35	b	50	d	12	a	7	a		
36	a	51	a	13	b	8	c		
37	c	52	b	14	a	9	c		
38	b	53	b	15	c	10	b		
39	b	54	b	16	b	11	a		
40	a	55	b	17	c	12	b		
41	c	56	a	18	c	13	c		
42	c	57	a	19	b	14	c		
43	a	58	c	20	a	15	a		
44	d	59	a	21	c	16	b		
45	b	60	a	22	a	17	b		
46	b	61	c	23	b	18	c		
47	a	62	d	24	a	19	d		
48	c	63	b	25	b	20	b		
49	b	64	b	26	d				
Sharir		65	d	27	a				
1	a	66	c	28	a				
2	c	67	b	29	c				
3	b	68	d	30	a				
4	c	69	b	31	d				
5	b	70	b	32	a				
6	d	71	b	33	b				
7	b	72	b	34	b				
8	b	73	a	35	a				
9	b	74	c	36	a				
10	a	75	b	37	c				
11	c	76	a	38	a				
12	c	77	c	39	c				
13	c	78	d	40	b				
14	c	79	b	41	a				

1	a	66	b	131	b	196	b	261	d	326	c	391	c	456	b	521	b
2	a	67	a	132	b	197	d	262	b	327	b	392	c	457	d	522	a
3	b	68	a	133	d	198	a	263	b	328	b	393	b	458	d	523	c
4	c	69	d	134	a	199	b	264	c	329	c	394	b	459	d	524	d
5	d	70	a	135	b	200	c	265	d	330	b	395	a	460	b	525	c
6	a	71	b	136	b	201	b	266	d	331	b	396	c	461	d	526	b
7	c	72	b	137	c	202	c	267	c	332	c	397	b	462	d	527	c
8	b	73	b	138	b	203	d	268	a	333	d	398	b	463	d	528	b
9	d	74	c	139	b	204	a	269	b	334	c	399	d	464	d	529	a
10	b	75	a	140	c	205	a	270	d	335	d	400	c	465	c	530	c
11	a	76	b	141	d	206	b	271	d	336	a	401	d	466	b	531	a
12	b	77	c	142	a	207	c	272	c	337	a	402	a	467	b	532	b
13	c	78	d	143	c	208	b	273	c	338	b	403	b	468	c	533	c
14	a	79	a	144	a	209	c	274	c	339	b	404	d	469	b	534	c
15	d	80	c	145	d	210	a	275	a	340	c	405	a	470	c	535	c
16	d	81	d	146	d	211	d	276	b	341	d	406	d	471	c	536	b
17	d	82	d	147	b	212	c	277	b	342	a	407	a	472	b	537	a
18	a	83	b	148	c	213	d	278	b	343	d	408	a	473	c	538	b
19	a	84	a	149	c	214	c	279	b	344	a	409	b	474	b	539	c
20	d	85	c	150	c	215	c	280	c	345	d	410	c	475	d	540	d
21	a	86	b	151	d	216	c	281	b	346	b	411	c	476	c	541	b
22	b	87	d	152	b	217	d	282	d	347	d	412	a	477	c	542	c
23	d	88	d	153	b	218	c	283	b	348	b	413	b	478	c	543	c
24	b	89	d	154	c	219	b	284	b	349	c	414	d	479	a	544	d
25	b	90	b	155	a	220	c	285	d	350	d	415	a	480	c	545	d
26	d	91	a	156	b	221	d	286	d	351	d	416	c	481	d	546	b
27	b	92	d	157	c	222	a	287	b	352	c	417	b	482	a	547	c
28	c	93	c	158	d	223	b	288	d	353	b	418	d	483	b	548	a
29	a	94	b	159	c	224	c	289	b	354	d	419	c	484	c	549	c
30	a	95	d	160	a	225	d	290	d	355	d	420	b	485	a	550	d
31	d	96	c	161	d	226	d	291	d	356	c	421	b	486	c	551	c
32	d	97	c	162	b	227	c	292	c	357	a	422	d	487	c	552	c
33	d	98	d	163	b	228	b	293	a	358	b	423	c	488	a	553	b
34	b	99	b	164	c	229	c	294	b	359	c	424	b	489	b	554	b
35	b	100	d	165	a	230	c	295	a	360	d	425	c	490	a	555	b
36	c	101	a	166	d	231	d	296	b	361	d	426	a	491	c	556	b
37	b	102	c	167	a	232	a	297	c	362	c	427	a	492	d	557	a
38	b	103	d	168	a	233	d	298	a	363	c	428	c	493	b	558	b
39	c	104	d	169	c	234	b	299	b	364	c	429	b	494	d	559	c
40	a	105	b	170	b	235	d	300	a	365	d	430	d	495	c	560	c
41	d	106	d	171	c	236	a	301	d	366	c	431	c	496	a	561	d
42	c	107	a	172	d	237	c	302	b	367	d	432	d	497	d	562	a
43	a	108	c	173	d	238	d	303	c	368	a	433	b	498	b	563	b
44	a	109	b	174	a	239	b	304	c	369	a	434	a	499	a	564	d
45	b	110	d	175	c	240	b	305	a	370	d	435	d	500	c	565	c
46	a	111	b	176	b	241	a	306	d	371	c	436	b	501	b	566	d
47	c	112	b	177	c	242	b	307	c	372	c	437	a	502	d	567	c
48	b	113	d	178	c	243	a	308	b	373	b	438	b	503	c	568	a
49	b	114	c	179	d	244	d	309	b	374	d	439	a	504	c	569	b
50	c	115	a	180	c	245	a	310	c	375	d	440	c	505	d	570	c
51	b	116	d	181	b	246	c	311	b	376	a	441	b	506	a	571	a
52	a	117	a	182	a	247	c	312	c	377	d	442	c	507	b	572	c
53	c	118	c	183	a	248	b	313	d	378	d	443	d	508	c	573	c
54	a	119	c	184	b	249	d	314	d	379	a	444	d	509	b	574	b
55	b	120	c	185	a	250	b	315	a	380	a	445	a	510	c	575	c
56	b	121	b	186	d	251	c	316	b	381	b	446	b	511	c	576	a
57	c	122	c	187	c	252	b	317	a	382	c	447	b	512	a	577	d
58	b	123	c	188	d	253	d	318	d	383	a	448	b	513	b	578	a
59	a	124	c	189	c	254	a	319	d	384	a	449	a	514	b	579	d
60	d	125	d	190	c	255	c	320	c	385	d	450	b	515	a	580	b
61	c	126	a	191	d	256	a	321	c	386	c	451	a	516	c	581	c
62	d	127	d	192	b	257	c	322	c	387	d	452	b	517	a	582	b
63	a	128	c	193	c	258	c	323	a	388	b	453	b	518	b	583	c
64	c	129	b	194	c	259	b	324	c	389	b	454	a	519	a	584	c
65	c	130	c	195	b	260	b	325	b	390	c	455	b	520	b	585	c

SUSHRUT SAMHITA						A.S. and A.H.				AYURVED ITIHAS								DRAVYA GUNA							
586	b	651	a	716	d	1	c	66	a	1	a	66	b	131	c	196	d	1	d	66	b	131	b	196	a
587	d	652	b	717	a	2	d	67	a	2	c	67	d	132	b	197	a	2	a	67	c	132	c	197	d
588	b	653	c	718	d	3	c	68	d	3	a	68	c	133	b	198	d	3	c	68	d	133	d	198	a
589	a	654	a	719	c	4	d	69	c	4	b	69	b	134	b	199	b	4	d	69	b	134	c	199	b
590	b	655	b	720	c	5	d	70	a	5	a	70	b	135	b	200	a	5	d	70	a	135	c	200	a
591	c	656	c	721	a	6	b	71	d	6	d	71	c	136	b	201	c	6	d	71	c	136	b	201	c
592	c	657	d	722	c	7	c	72	b	7	c	72	a	137	b	202	a	7	b	72	d	137	a	202	b
593	c	658	c	723	c	8	d	73	d	8	a	73	c	138	c	203	a	8	b	73	d	138	c	203	a
594	c	659	d	724	b	9	d	74	b	9	a	74	c	139	c	204	c	9	d	74	b	139	a	204	b
595	d	660	a	725	a	10	d	75	c	10	c	75	b	140	a	205	b	10	b	75	a	140	d	205	d
596	c	661	b			11	d	76	a	11	d	76	a	141	b	206	a	11	c	76	c	141	d	206	b
597	d	662	b			12	c	77	c	12	b	77	b	142	c	207	d	12	a	77	c	142	c	207	d
598	d	663	b			13	c	78	d	13	c	78	b	143	c	208	a	13	c	78	d	143	a	208	a
599	b	664	c			14	b	79	c	14	a	79	a	144	a	209	c	14	a	79	d	144	b	209	c
600	a	665	b			15	c	80	c	15	b	80	c	145	b			15	d	80	d	145	a	210	d
601	b	666	c			16	c	81	b	16	a	81	c	146	b			16	b	81	c	146	b	211	d
602	c	667	d			17	d	82	d	17	b	82	a	147	c			17	c	82	c	147	b	212	a
603	a	668	b			18	d	83	d	18	c	83	b	148	a			18	a	83	b	148	c	213	b
604	d	669	d			19	d	84	b	19	c	84	a	149	d			19	b	84	a	149	a	214	c
605	c	670	b			20	a	85	d	20	b	85	b	150	b			20	a	85	a	150	b	215	c
606	b	671	c			21	c	86	b	21	b	86	c	151	a			21	a	86	c	151	d	216	b
607	c	672	c			22	b	87	d	22	a	87	b	152	b			22	d	87	b	152	a	217	b
608	b	673	c			23	a	88	b	23	b	88	a	153	b			23	a	88	c	153	d	218	c
609	b	674	b			24	a	89	a	24	c	89	c	154	b			24	a	89	d	154	b	219	b
610	c	675	a			25	a	90	c	25	c	90	a	155	b			25	b	90	c	155	c	220	c
611	b	676	c			26	d	91	c	26	c	91	b	156	a			26	b	91	c	156	b	221	c
612	a	677	d			27	b	92	d	27	c	92	c	157	b			27	b	92	a	157	d	222	d
613	a	678	c			28	d	93	a	28	c	93	b	158	a			28	c	93	c	158	c	223	a
614	b	679	c			29	d	94	b	29	c	94	c	159	b			29	c	94	d	159	b	224	a
615	a	680	a			30	a	95	d	30	b	95	c	160	a			30	d	95	b	160	b	225	b
616	c	681	c			31	c	96	c	31	c	96	a	161	b			31	b	96	b	161	c	226	c
617	b	682	d			32	c	97	c	32	b	97	c	162	b			32	c	97	a	162	b	227	a
618	d	683	c			33	c	98	c	33	b	98	b	163	b			33	a	98	b	163	c	228	b
619	a	684	d			34	a	99	b	34	c	99	a	164	c			34	c	99	c	164	b	229	b
620	c	685	c			35	b	100	a	35	b	100	d	165	c			35	b	100	b	165	b	230	d
621	b	686	c			36	b	101	c	36	b	101	c	166	a			36	d	101	b	166	c	231	b
622	c	687	b			37	c	102	d	37	c	102	a	167	a			37	d	102	c	167	b	232	d
623	b	688	d			38	b			38	b	103	c	168	c			38	c	103	d	168	d	233	c
624	b	689	c			39	d			39	d	104	a	169	a			39	b	104	a	169	a	234	a
625	c	690	d			40	b			40	b	105	b	170	a			40	b	105	c	170	b	235	b
626	b	691	a			41	a			41	b	106	b	171	c			41	d	106	b	171	a	236	a
627	d	692	b			42	c			42	c	107	a	172	b			42	d	107	a	172	a	237	a
628	b	693	c			43	c			43	b	108	c	173	d			43	a	108	d	173	d	238	b
629	c	694	d			44	d			44	a	109	b	174	b			44	b	109	c	174	b	239	d
630	c	695	b			45	d			45	a	110	a	175	d			45	a	110	c	175	b	240	b
631	a	696	c			46	b			46	b	111	a	176	c			46	b	111	d	176	a	241	a
632	b	697	a			47	b			47	c	112	b	177	d			47	b	112	c	177	c	242	b
633	a	698	c			48	b			48	a	113	a	178	d			48	d	113	a	178	d	243	d
634	b	699	d			49	c			49	d	114	b	179	d			49	c	114	c	179	b	244	a
635	c	700	b			50	c			50	b	115	c	180	a			50	a	115	c	180	c		
636	a	701	d			51	b			51	a	116	c	181	b			51	a	116	b	181	a		
637	b	702	a			52	c			52	b	117	b	182	b			52	c	117	d	182	c		
638	a	703	b			53	a			53	c	118	c	183	a			53	b	118	c	183	c		
639	b	704	b			54	b			54	c	119	b	184	a			54	a	119	b	184	c		
640	d	705	d			55	d			55	d	120	b	185	a			55	a	120	a	185	c		
641	b	706	c			56	c			56	a	121	b	186	c			56	d	121	c	186	c		
642	b	707	d			57	b			57	c	122	b	187	c			57	d	122	a	187	d		
643	a	708	d			58	d			58	c	123	a	188	a			58	b	123	d	188	d		
644	b	709	d			59	a			59	b	124	b	189	b			59	c	124	c	189	b		
645	c	710	c			60	c			60	b	125	a	190	a			60	a	125	a	190	a		
646	b	711	b			61	d			61	b	126	b	191	a			61	b	126	b	191	c		
647	c	712	d			62	d			62	d	127	d	192	c			62	a	127	c	192	b		
648	c	713	b			63	c			63	c	128	d	193	a			63	c	128	c	193	b		
649	a	714	a			64	b			64	b	129	a	194	c			64	a	129	b	194	c		
650	a	715	c			65	a			65	c	130	d	195	b			65	b	130	a	195	c		

RAS AND BHAISHJYA K.

1	a	66	a	131	b	196	a
2	a	67	b	132	d	197	c
3	b	68	c	133	a	198	d
4	d	69	c	134	c	199	a
5	c	70	b	135	b	200	c
6	a	71	b	136	d	201	c
7	d	72	d	137	b	202	c
8	b	73	a	138	c	203	b
9	d	74	a	139	b	204	a
10	c	75	d	140	c	205	d
11	a	76	c	141	a		
12	d	77	b	142	b		
13	a	78	d	143	a		
14	d	79	c	144	b		
15	c	80	a	145	c		
16	a	81	b	146	c		
17	c	82	c	147	a		
18	d	83	a	148	b		
19	b	84	c	149	d		
20	a	85	c	150	b		
21	b	86	a	151	a		
22	c	87	a	152	b		
23	d	88	b	153	b		
24	a	89	c	154	b		
25	b	90	c	155	c		
26	b	91	d	156	b		
27	c	92	b	157	c		
28	a	93	a	158	d		
29	c	94	b	159	a		
30	d	95	c	160	c		
31	c	96	c	161	b		
32	c	97	d	162	b		
33	a	98	b	163	a		
34	a	99	d	164	d		
35	d	100	b	165	a		
36	b	101	d	166	b		
37	b	102	c	167	b		
38	b	103	d	168	b		
39	b	104	c	169	b		
40	d	105	b	170	c		
41	b	106	b	171	c		
42	b	107	d	172	c		
43	a	108	b	173	a		
44	d	109	d	174	a		
45	d	110	d	175	b		
46	b	111	b	176	a		
47	c	112	c	177	c		
48	c	113	c	178	b		
49	a	114	b	179	a		
50	d	115	b	180	c		
51	c	116	c	181	c		
52	c	117	a	182	d		
53	d	118	b	183	c		
54	c	119	d	184	a		
55	b	120	d	185	b		
56	a	121	a	186	d		
57	c	122	c	187	c		
58	a	123	b	188	d		
59	d	124	b	189	c		
60	a	125	c	190	a		
61	b	126	b	191	b		
62	d	127	b	192	d		
63	b	128	a	193	c		
64	d	129	c	194	c		
65	c	130	a	195	a		

MADHAV NIDAN

Samprapti		Hetu	
1	b	1	c
2	a	2	d
3	c	3	d
4	c	4	c
5	a	5	b
6	a	6	d
7	c	7	d
8	b	8	a
9	c	9	b
10	c	10	b
11	a	11	c
12	c	12	a
13	a	13	b
14	a	14	b
15	b	15	a
16	c	16	a
17	b	17	c
18	a	18	b
19	b	19	b
20	a	20	d
21	b	21	c
22	c	22	b
23	d	23	a
24	b	24	c
25	b	25	c
26	d	26	c
27	b	27	a
28	c	28	b
29	a	29	c
30	c	30	d
Purvarupa		31	d
1	c	32	d
2	d	33	b
3	b	34	d
4	c	35	b
5	c	36	d
6	d	37	b
7	b	38	a
8	b	39	c
9	c	40	b
10	c	41	a
11	d	42	b
12	d	43	a
13	b	44	c
14	c	45	a
15	c	46	d
16	c	47	c
17	b	48	d
18	c	49	b
19	c	50	d
20	d	51	b
21	b	52	b
22	c	53	b
23	b	54	c
24	d	55	b
25	b	56	d
26	b	57	a
27	b	58	a
28	b	59	b
29	c	60	b
30	c	61	d
		62	b
		63	a
		64	a

MODERN MCQ

65	b	1	a	66	b	131	c	196	c	261	c	326	c	390	a
66	b	2	b	67	b	132	b	197	b	262	d	327	b	391	d
67	d	3	d	68	b	133	b	198	b	263	a	328	c	392	b
68	a	4	d	69	d	134	a	199	b	264	b	329	d	393	d
69	b	5	b	70	a	135	d	200	a	265	c	330	a	394	d
70	c	6	d	71	c	136	c	201	b	266	a	331	c	395	a
71	a	7	c	72	b	137	b	202	c	267	a	332	a	396	c
72	b	8	a	73	b	138	b	203	a	268	b	333	c	397	d
73	a	9	b	74	c	139	b	204	c	269	b	334	a	398	b
74	a	10	a	75	c	140	c	205	a	270	d	335	a	399	d
75	c	11	d	76	c	141	a	206	c	271	d	336	b	400	a
76	b	12	d	77	a	142	d	207	b	272	a	337	c	401	b
77	b	13	d	78	c	143	c	208	b	273	a	338	a	402	b
78	d	14	b	79	a	144	a	209	a	274	b	339	c	403	d
79	d	15	a	80	a	145	d	210	b	275	d	340	d	404	d
80	d	16	b	81	a	146	b	211	a	276	d	341	a	405	a
81	b	17	d	82	d	147	b	212	b	277	d	342	b	406	c
		18	d	83	b	148	c	213	a	278	d	343	a	407	d
		19	a	84	d	149	a	214	c	279	a	344	d	408	b
		20	d	85	a	150	b	215	d	280	b	345	b	409	a
		21	a	86	b	151	b	216	b	281	a	346	b	410	a
		22	d	87	b	152	a	217	c	282	c	347	b	411	c
		23	b	88	a	153	d	218	b	283	b	348	c	412	d
		24	a	89	b	154	b	219	d	284	b	349	a	413	a
		25	c	90	c	155	d	220	c	285	b	350	c	414	a
		26	a	91	c	156	a	221	c	286	c	351	a	415	a
		27	a	92	b	157	a	222	a	287	d	352	d	416	a
		28	d	93	b	158	d	223	d	288	c	353	c	417	d
		29	c	94	b	159	a	224	a	289	c	354	c	418	b
		30	c	95	d	160	d	225	c	290	a	355	a	419	a
		31	d	96	d	161	b	226	a	291	c	356	d	420	a
		32	a	97	d	162	b	227	b	292	a	357	b	421	a
		33	b	98	a	163	a	228	b	293	d	358	b	422	d
		34	a	99	b	164	d	229	b	294	b	359	a	423	d
		35	a	100	b	165	b	230	d	295	c	360	d	424	d
		36	a	101	d	166	c	231	c	296	c	361	b	425	c
		37	d	102	b	167	a	232	b	297	b	362	b	426	a
		38	d	103	a	168	c	233	c	298	c	363	b	427	c
		39	a	104	b	169	d	234	b	299	a	364	d	428	c
		40	c	105	b	170	c	235	c	300	a	365	b	429	b
		41	a	106	a	171	b	236	a	301	b	366	c	430	c
		42	b	107	a	172	a	237	c	302	a	367	c	431	d
		43	a	108	c	173	b	238	b	303	c	368	a	432	c
		44	c	109	b	174	d	239	c	304	b	369	b	433	d
		45	c	110	a	175	b	240	c	305	d	370	c	434	b
		46	c	111	d	176	c	241	d	306	a	371	b	435	b
		47	b	112	d	177	b	242	a	307	d	372	b	436	a
		48	c	113	b	178	b	243	b	308	b	373	d	437	b
		49	b	114	d	179	d	244	b	309	c	374	a	438	d
		50	a	115	a	180	c	245	b	310	c	375	b	439	c
		51	a	116	c	181	a	246	c	311	d	376	a	440	a
		52	a	117	a	182	a	247	a	312	d	377	a	441	c
		53	c	118	d	183	a	248	a	313	b	378	d	442	b
		54	b	119	c	184	b	249	d	314	d	379	c	443	a
		55	d	120	b	185	d	250	b	315	b	380	b	444	a
		56	b	121	c	186	b	251	a	316	b	381	c	445	a
		57	b	122	a	187	a	252	a	317	c	382	c	446	a
		58	a	123	c	188	a	253	c	318	b	383	c	447	a
		59	c	124	c	189	d	254	c	319	d	384	b	448	d
		60	a	125	a	190	b	255	b	320	d	385	c	449	c
		61	d	126	b	191	b	256	b	321	d	386	c	450	a
		62	a	127	a	192	c	257	a	322	d	387	b	451	a
		63	c	128	a	193	a	258	d	323	a	388	b	452	b
		64	b	129	c	194	b	259	a	324	d	389	b	453	d
		65	c	130	b	195	b	260	d	325	a	389	c	454	b

								MODEL I				MODEL II				MODEL III				MODEL IV				MODEL V			
455	a	520	c	585	a	650	c	1	b	51	c	1	d	51	a	1	a	51	a	1	c	51	a	1	b	51	b
456	d	521	a	586	d	651	a	2	c	52	d	2	c	52	c	2	a	52	c	2	a	52	a	2	b	52	a
457	d	522	a	587	b	652	a	3	b	53	b	3	d	53	a	3	a	53	a	3	c	53	a	3	b	53	a
458	a	523	a	588	a	653	c	4	c	54	a	4	b	54	b	4	c	54	b	4	a	54	a	4	b	54	b
459	b	524	c	589	c	654	c	5	d	55	c	5	b	55	b	5	b	55	a	5	c	55	a	5	b	55	a
460	a	525	b	590	c	655	c	6	c	56	a	6	c	56	d	6	b	56	b	6	b	56	b	6	c	56	d
461	d	526	a	591	c	656	c	7	c	57	a	7	a	57	d	7	b	57	a	7	a	57	b	7	c	57	c
462	b	527	b	592	d	657	b	8	c	58	c	8	c	58	d	8	c	58	a	8	b	58	a	8	a	58	c
463	a	528	d	593	d	658	b	9	d	59	c	9	c	59	a	9	a	59	b	9	a	59	c	9	c	59	a
464	c	529	b	594	b	659	c	10	b	60	a	10	b	60	d	10	a	60	b	10	d	60	d	10	b	60	a
465	b	530	b	595	d	660	c	11	c	61	b	11	b	61	c	11	c	61	a	11	c	61	c	11	c	61	b
466	b	531	b	596	b	661	c	12	d	62	b	12	b	62	a	12	b	62	c	12	a	62	d	12	d	62	d
467	d	532	a	597	c	662	a	13	c	63	a	13	b	63	a	13	b	63	a	13	c	63	c	13	c	63	c
468	b	533	b	598	d	663	a	14	a	64	d	14	c	64	c	14	d	64	a	14	c	64	d	14	b	64	b
469	a	534	c	599	a	664	a	15	d	65	a	15	d	65	d	15	b	65	c	15	c	65	c	15	c	65	b
470	b	535	d	600	a	665	a	16	b	66	c	16	d	66	d	16	c	66	c	16	c	66	a	16	c	66	c
471	b	536	d	601	a	666	c	17	a	67	c	17	a	67	c	17	c	67	b	17	b	67	c	17	b	67	d
472	b	537	d	602	b	667	a	18	c	68	a	18	b	68	d	18	a	68	a	18	b	68	a	18	a	68	b
473	b	538	c	603	c	668	a	19	a	69	a	19	b	69	c	19	a	69	a	19	b	69	b	19	b	69	c
474	d	539	d	604	b	669	a	20	d	70	b	20	c	70	a	20	b	70	a	20	c	70	a	20	b	70	d
475	c	540	a	605	d	670	d	21	b	71	d	21	c	71	a	21	c	71	b	21	a	71	b	21	c	71	a
476	b	541	d	606	c	671	a	22	a	72	a	22	c	72	b	22	b	72	a	22	b	72	b	22	d	72	c
477	c	542	a	607	d	672	b	23	b	73	d	23	b	73	b	23	d	73	a	23	c	73	d	23	d	73	b
478	a	543	b	608	d	673	c	24	a	74	d	24	b	74	b	24	b	74	c	24	a	74	b	24	d	74	c
479	b	544	c	609	d	674	a	25	b	75	a	25	c	75	a	25	d	75	a	25	c	75	a	25	b	75	d
480	b	545	c	610	b	675	b	26	c	76	a	26	d	76	a	26	b	76	b	26	a	76	c	26	a	76	c
481	a	546	a	611	d	676	c	27	d	77	b	27	d	77	c	27	a	77	a	27	d	77	c	27	d	77	c
482	d	547	a	612	a	677	d	28	d	78	d	28	b	78	a	28	c	78	b	28	a	78	c	28	b	78	b
483	b	548	c	613	a	678	a	29	b	79	d	29	c	79	b	29	b	79	b	29	c	79	b	29	c	79	b
484	b	549	d	614	b	679	c	30	d	80	c	30	c	80	c	30	b	80	c	30	a	80	c	30	b	80	d
485	d	550	c	615	c	680	a	31	b	81	a	31	c	81	a	31	c	81	a	31	b	81	c	31	c	81	b
486	c	551	b	616	a	681	b	32	b	82	a	32	b	82	c	32	a	82	b	32	c	82	c	32	b	82	c
487	c	552	c	617	a	682	c	33	a	83	b	33	a	83	b	33	d	83	b	33	b	83	c	33	c	83	c
488	b	553	c	618	c	683	d	34	d	84	b	34	a	84	c	34	b	84	c	34	c	84	d	34	a	84	c
489	d	554	c	619	c	684	c	35	b	85	d	35	b	85	a	35	b	85	a	35	b	85	d	35	a	85	a
490	b	555	a	620	a	685	c	36	d	86	b	36	a	86	b	36	b	86	b	36	d	86	b	36	a	86	b
491	a	556	b	621	a	686	c	37	b	87	c	37	d	87	b	37	b	87	b	37	c	87	d	37	c	87	b
492	c	557	b	622	d	687	a	38	c	88	d	38	c	88	b	38	a	88	a	38	b	88	b	38	b	88	c
493	c	558	b	623	b	688	c	39	a	89	b	39	d	89	b	39	a	89	a	39	c	89	c	39	a	89	b
494	d	559	b	624	c	689	b	40	a	90	a	40	a	90	b	40	b	90	a	40	d	90	c	40	a	90	a
495	d	560	c	625	a	690	d	41	b	91	b	41	c	91	c	41	a	91	a	41	d	91	a	41	c	91	d
496	d	561	b	626	a	691	a	42	d	92	c	42	b	92	d	42	c	92	a	42	d	92	a	42	b	92	a
497	b	562	a	627	a			43	d	93	b	43	d	93	a	43	c	93	a	43	a	93	a	43	b	93	c
498	b	563	d	628	b			44	b	94	d	44	c	94	a	44	c	94	b	44	d	94	c	44	c	94	c
499	d	564	b	629	c			45	c	95	d	45	c	95	c	45	c	95	d	45	b	95	b	45	c	95	b
500	a	565	c	630	a			46	c	96	d	46	d	96	b	46	d	96	d	46	d	96	c	46	c	96	d
501	a	566	c	631	d			47	b	97	a	47	b	97	a	47	b	97	a	47	b	97	a	47	c	97	b
502	b	567	c	632	b			48	b	98	c	48	d	98	d	48	a	98	a	48	d	98	a	48	b	98	d
503	a	568	a	633	a			49	c	99	c	49	a	99	a	49	c	99	c	49	a	99	a	49	b	99	c
504	a	569	b	634	c			50	c	100	b	50	a	100	d	50	a	100	b	50	b	100	b	50	a	100	b
505	d	570	d	635	a																						
506	c	571	d	636	b																						
507	d	572	b	637	a																						
508	c	573	a	638	a																						
509	c	574	d	639	d																						
510	a	575	d	640	a																						
511	b	576	a	641	d																						
512	d	577	c	642	a																						
513	d	578	a	643	a																						
514	d	579	a	644	d																						
515	a	580	c	645	a																						
516	a	581	c	646	c																						
517	c	582	d	647	b																						
518	b	583	b	648	d																						
519	b	584	d	649	b																						

MODEL XVI

1	a	51	c	101	c	151	b	201	a
2	b	52	c	102	c	152	c	202	a
3	b	53	b	103	a	153	c	203	b
4	c	54	d	104	b	154	d	204	d
5	c	55	b	105	b	155	c	205	a
6	b	56	d	106	c	156	c	206	b
7	c	57	c	107	d	157	c	207	a
8	c	58	c	108	a	158	d	208	b
9	b	59	b	109	a	159	c	209	c
10	b	60	c	110	b	160	d	210	c
11	a	61	b	111	d	161	d	211	b
12	c	62	b	112	b	162	d	212	b
13	b	63	d	113	b	163	b	213	b
14	d	64	a	114	d	164	d	214	b
15	a	65	c	115	b	165	c	215	c
16	a	66	a	116	d	166	d	216	c
17	c	67	c	117	b	167	b	217	d
18	a	68	b	118	a	168	c	218	a
19	d	69	c	119	c	169	c	219	b
20	b	70	b	120	c	170	b	220	d
21	b	71	c	121	c	171	b	221	c
22	d	72	d	122	c	172	b	222	b
23	d	73	a	123	c	173	d	223	c
24	b	74	b	124	c	174	d	224	b
25	a	75	b	125	c	175	a	225	b
26	a	76	a	126	c	176	b	226	b
27	d	77	a	127	b	177	c	227	b
28	b	78	b	128	d	178	b	228	b
29	b	79	b	129	d	179	a	229	c
30	a	80	d	130	c	180	a	230	c
31	a	81	d	131	c	181	b	231	c
32	c	82	a	132	c	182	b	232	b
33	d	83	c	133	a	183	b	233	a
34	c	84	d	134	c	184	a	234	d
35	b	85	b	135	d	185	c	235	b
36	b	86	c	136	a	186	b	236	b
37	d	87	a	137	c	187	b	237	c
38	a	88	c	138	b	188	b	238	c
39	c	89	c	139	b	189	a	239	b
40	a	90	b	140	b	190	a	240	c
41	b	91	a	141	b	191	c	241	b
42	b	92	c	142	a	192	d	242	c
43	c	93	b	143	a	193	b	243	b
44	b	94	c	144	d	194	b	244	b
45	a	95	c	145	d	195	b	245	c
46	c	96	b	146	c	196	c	246	d
47	b	97	b	147	d	197	a	247	b
48	c	98	c	148	b	198	a	248	a
49	d	99	b	149	b	199	c	249	d
50	c	100	b	150	c	200	b	250	c

MODEL VI				MODEL VII				MODEL VIII				MODEL IX				MODEL X				MODEL XI				MODEL XII			
1	c	51	d	1	b	51	b	1	a	51	c	1	b	51	a	1	a	51	d	1	a	51	c	1	a	51	c
2	b	52	c	2	d	52	d	2	b	52	b	2	a	52	a	2	b	52	b	2	a	52	a	2	b	52	b
3	d	53	c	3	a	53	b	3	a	53	b	3	c	53	b	3	b	53	d	3	a	53	a	3	a	53	a
4	a	54	d	4	b	54	d	4	b	54	b	4	a	54	c	4	c	54	b	4	a	54	d	4	c	54	c
5	d	55	b	5	d	55	a	5	a	55	c	5	d	55	c	5	a	55	b	5	a	55	a	5	d	55	a
6	a	56	b	6	d	56	b	6	a	56	c	6	b	56	a	6	b	56	c	6	a	56	b	6	a	56	a
7	a	57	c	7	d	57	d	7	b	57	a	7	a	57	a	7	b	57	c	7	a	57	c	7	a	57	d
8	d	58	b	8	d	58	a	8	b	58	c	8	a	58	d	8	b	58	d	8	a	58	b	8	d	58	c
9	d	59	c	9	d	59	c	9	b	59	c	9	a	59	d	9	c	59	d	9	b	59	b	9	c	59	b
10	d	60	c	10	b	60	d	10	a	60	c	10	c	60	b	10	a	60	c	10	a	60	a	10	b	60	a
11	a	61	a	11	a	61	c	11	a	61	b	11	a	61	d	11	c	61	c	11	a	61	b	11	a	61	a
12	c	62	c	12	c	62	c	12	d	62	d	12	c	62	d	12	c	62	a	12	a	62	c	12	a	62	a
13	c	63	b	13	b	63	c	13	b	63	d	13	c	63	c	13	c	63	b	13	a	63	b	13	a	63	b
14	b	64	a	14	a	64	c	14	c	64	c	14	d	64	b	14	b	64	b	14	a	64	a	14	a	64	b
15	c	65	b	15	a	65	b	15	b	65	a	15	d	65	b	15	d	65	a	15	a	65	c	15	b	65	a
16	d	66	b	16	c	66	c	16	c	66	c	16	b	66	c	16	d	66	a	16	a	66	a	16	a	66	a
17	b	67	c	17	b	67	b	17	a	67	a	17	a	67	c	17	a	67	a	17	c	67	a	17	b	67	a
18	b	68	b	18	d	68	c	18	b	68	b	18	d	68	b	18	c	68	a	18	b	68	b	18	d	68	a
19	d	69	a	19	c	69	c	19	c	69	c	19	a	69	a	19	a	69	b	19	c	69	b	19	b	69	a
20	d	70	b	20	d	70	b	20	b	70	c	20	c	70	d	20	b	70	d	20	a	70	a	20	b	70	a
21	b	71	c	21	d	71	a	21	b	71	a	21	a	71	b	21	b	71	b	21	b	71	c	21	b	71	d
22	d	72	b	22	c	72	b	22	c	72	d	22	d	72	b	22	a	72	a	22	a	72	c	22	d	72	a
23	d	73	b	23	a	73	b	23	a	73	b	23	c	73	c	23	b	73	d	23	a	73	d	23	a	73	b
24	d	74	d	24	c	74	b	24	b	74	c	24	c	74	b	24	d	74	d	24	a	74	a	24	a	74	c
25	b	75	d	25	b	75	d	25	a	75	a	25	c	75	b	25	d	75	c	25	a	75	c	25	a	75	b
26	d	76	d	26	b	76	a	26	c	76	b	26	c	76	d	26	c	76	b	26	c	76	b	26	b	76	c
27	d	77	d	27	d	77	a	27	d	77	d	27	b	77	a	27	c	77	c	27	a	77	c	27	c	77	a
28	c	78	c	28	a	78	c	28	d	78	a	28	c	78	c	28	d	78	b	28	a	78	d	28	c	78	b
29	d	79	b	29	b	79	a	29	b	79	b	29	b	79	d	29	c	79	c	29	b	79	c	29	a	79	d
30	d	80	c	30	c	80	b	30	b	80	c	30	d	80	a	30	a	80	d	30	a	80	b	30	b	80	c
31	b	81	b	31	d	81	b	31	c	81	c	31	b	81	c	31	c	81	d	31	a	81	a	31	c	81	a
32	b	82	a	32	c	82	b	32	a	82	b	32	a	82	a	32	b	82	c	32	a	82	b	32	b	82	a
33	b	83	c	33	b	83	c	33	b	83	b	33	d	83	c	33	b	83	a	33	b	83	b	33	a	83	a
34	a	84	d	34	a	84	a	34	b	84	a	34	d	84	b	34	b	84	a	34	a	84	c	34	c	84	c
35	b	85	d	35	d	85	d	35	b	85	b	35	a	85	wq	35	a	85	c	35	a	85	a	35	b	85	a
36	d	86	d	36	d	86	d	36	b	86	c	36	a	86	a	36	a	86	c	36	a	86	d	36	c	86	a
37	d	87	a	37	d	87	d	37	d	87	b	37	a	87	c	37	a	87	d	37	b	87	b	37	a	87	a
38	d	88	b	38	d	88	a	38	b	88	b	38	d	88	c	38	b	88	c	38	b	88	a	38	b	88	c
39	b	89	c	39	d	89	b	39	a	89	b	39	b	89	a	39	b	89	d	39	c	89	a	39	d	89	a
40	b	90	a	40	c	90	c	40	b	90	b	40	b	90	d	40	a	90	d	40	d	90	b	40	b	90	a
41	b	91	b	41	c	91	a	41	c	91	a	41	c	91	d	41	d	91	c	41	c	91	d	41	a	91	a
42	a	92	c	42	d	92	a	42	b	92	a	42	b	92	d	42	c	92	c	42	b	92	a	42	a	92	c
43	c	93	b	43	d	93	c	43	b	93	b	43	c	93	d	43	b	93	a	43	a	93	b	43	a	93	b
44	c	94	c	44	b	94	b	44	a	94	d	44	c	94	d	44	d	94	c	44	c	94	b	44	b	94	a
45	b	95	d	45	c	95	a	45	c	95	b	45	a	95	a	45	c	95	c	45	d	95	d	45	a	95	b
46	c	96	a	46	c	96	a	46	b	96	b	46	b	96	a	46	b	96	c	46	a	96	a	46	a	96	c
47	d	97	d	47	d	97	c	47	c	97	a	47	a	97	b	47	a	97	c	47	a	97	b	47	b	97	a
48	c	98	d	48	d	98	a	48	b	98	c	48	d	98	d	48	b	98	c	48	c	98	a	48	a	98	c
49	c	99	b	49	d	99	a	49	b	99	c	49	c	99	b	49	d	99	c	49	a	99	b	49	a	99	c
50	b	100	b	50	b	100	a	50	c	100	c	50	b	100	c	50	d	100	b	50	b	100	b	50	b	100	a

MODEL XIII				MODEL XIV				MODEL XV				UPSC 2010						Maharastra 2009									
1	b	51	b	1	a	51	d	1	a	51	c	1	a	51	wq	101	b	1	a	51	d	101	b	151	a	201	a
2	a	52	a	2	c	52	d	2	a	52	b	2	a	52	b	102	a	2	c	52	a	102	b	152	a	202	a
3	a	53	c	3	c	53	a	3	d	53	d	3	b	53	b	103	d	3	a	53	a	103	a	153	a	203	b
4	c	54	a	4	d	54	a	4	a	54	a	4	b	54	b	104	a	4	b	54	a	104	a	154	c	204	a
5	b	55	c	5	c	55	c	5	b	55	c	5	a	55	b	105	a	5	a	55	b	105	a	155	b	205	a
6	b	56	d	6	a	56	d	6	c	56	a	6	a	56	c	106	d	6	a	56	a	106	a	156	c	206	b
7	c	57	c	7	c	57	b	7	c	57	d	7	d	57	c	107	b	7	b	57	a	107	b	157	b	207	all
8	a	58	b	8	b	58	b	8	b	58	c	8	d	58	a	108	c	8	d	58	d	108	b	158	d	208	a
9	d	59	c	9	c	59	b	9	a	59	b	9	b	59	c	109	d	9	a	59	d	109	N	159	d	209	a
10	b	60	b,c	10	d	60	b	10	d	60	c	10	d	60	c	110	d	10	a	60	a	110	a	160	d	210	a
11	c	61	d	11	c	61	c	11	d	61	a	11	c	61	a	111	b	11	c	61	a	111	a	161	d	211	a
12	b	62	b	12	a	62	a	12	a	62	c	12	b	62	b	112	b	12	a	62	a	112	c	162	a	212	c
13	d	63	c	13	a	63	d	13	d	63	c	13	d	63	a	113	d	13	a	63	a	113	a	163	c	213	c
14	a	64	c	14	c	64	a	14	d	64	c	14	c	64	b	114	a	14	a	64	c	114	b	164	a	214	b
15	a	65	b	15	d	65	a	15	c	65	a	15	a	65	c	115	a	15	b	65	a	115	c	165	a	215	a
16	c	66	b	16	b	66	c	16	c	66	b	16	c	66	d	116	d	16	a	66	c	116	b	166	a	216	b
17	a	67	d	17	d	67	a	17	b	67	c	17	b	67	d	117	c	17	a	67	c	117	b	167	a	217	b
18	c	68	b	18	a	68	b	18	c	68	a	18	b	68	c	118	b	18	a	68	d	118	c	168	a	218	c
19	c	69	c	19	c	69	c	19	c	69	c	19	d	69	b	119	d	19	a	69	a	119	b	169	b		
20	d	70	c	20	b	70	a	20	d	70	b	20	c	70	c	120	wq	20	c	70	a	120	d	170	a		
21	c	71	b	21	a	71	b	21	d	71	c	21	d	71	a			21	a	71	a	121	c	171	b		
22	a	72	c	22	d	72	c	22	a	72	c	22	a	72	b			22	b	72	c	122	c	172	a		
23	a	73	c	23	d	73	c	23	b	73	a	23	b	73	b			23	b	73	a	123	b	173	a		
24	c	74	c	24	d	74	a	24	b	74	b	24	b	74	c			24	b	74	a	124	a	174	a		
25	a	75	c	25	c	75	d	25	d	75	a	25	a	75	b			25	d	75	a	125	a	175	a		
26	c	76	a	26	a	76	b	26	b	76	a	26	c	76	a			26	a	76	a	126	a	176	b		
27	a	77	d	27	d	77	a	27	a	77	a	27	b	77	b			27	a	77	a	127	a	177	c		
28	b	78	a	28	c	78	c	28	b	78	d	28	a	78	c			28	d	78	a	128	a	178	a		
29	a	79	a	29	b	79	c	29	b	79	c	29	a	79	d			29	a	79	a	129	b	179	c		
30	d	80	a	30	a	80	b	30	c	80	a	30	d	80	d			30	a	80	a	130	d	180	a		
31	d	81	a	31	b	81	c	31	b	81	b	31	b	81	b			31	a	81	b	131	d	181	a		
32	a	82	a	32	b	82	a	32	d	82	b	32	c	82	a			32	a	82	a	132	c	182	a		
33	c	83	b	33	c	83	c	33	b	83	b	33	b	83	a			33	c	83	a	133	b	183	c		
34	d	84	a	34	d	84	a	34	d	84	c	34	c	84	a			34	b	84	a	134	c	184	a		
35	d	85	a	35	b	85	a	35	a	85	b	35	c	85	c			35	b	85	b	135	c	185	d		
36	a	86	a	36	c	86	b	36	b	86	d	36	a	86	b			36	b	86	a	136	a	186	a		
37	b	87	a	37	c	87	a	37	c	87	c	37	b	87	c			37	b	87	d	137	a	187	a		
38	b	88	d	38	c	88	b	38	c	88	b	38	a	88	a			38	c	88	a	138	a	188	b		
39	d	89	a	39	a	89	c	39	a	89	b	39	a	89	a			39	a	89	a	139	a	189	a		
40	c	90	b	40	d	90	b	40	c	90	c	40	b	90	d			40	d	90	c	140	b	190	a		
41	d	91	c	41	a	91	c	41	a	91	d	41	c	91	d			41	d	91	a	141	d	191	wq		
42	c	92	b	42	a	92	d	42	b	92	c	42	a	92	wq			42	b	92	c	142	a	192	c		
43	d	93	c	43	a	93	a	43	b	93	a	43	d	93	d			43	a	93	b	143	c	193	a		
44	c	94	b	44	a	94	c	44	c	94	b	44	c	94	c			44	a	94	d	144	d	194	a		
45	a	95	b	45	c	95	a	45	b	95	a	45	d	95	d			45	a	95	b	145	d	195	a		
46	c	96	b	46	c	96	b	46	a	96	d	46	a	96	c			46	a	96	c	146	c	196	c		
47	a	97	c	47	d	97	d	47	c	97	b	47	a	97	a			47	a	97	d	147	a	197	b		
48	c	98	d	48	a	98	a	48	c	98	b	48	b	98	c			48	a	98	a	148	a	198	b		
49	b	99	d	49	b	99	b	49	a	99	a	49	a	99	b			49	a	99	c	149	b	199	d		
50	d	100	a	50	d	100	c	50	b	100	c	50	a	100	c			50	a	100	b	150	d	200	a		

Maharastra 2010

1	b	52	c	103	b	154	c
2	a	53	b	104	b	155	d
3	c	54	c	105	b	156	b
4	d	55	b	106	b	157	c
5	a	56	b	107	b	158	b
6	b	57	b	108	a	159	b
7	a	58	d	109	c	160	b
8	b	59	b	110	a	161	b
9	d	60	a	111	d	162	c
10	b	61	a	112	b	163	a
11	c	62	c	113	b	164	a
12	b	63	c	114	a	165	b
13	c	64	b	115	a	166	a
14	c	65	d	116	b	167	b
15	a	66	c	117	b	168	b
16	a	67	c	118	a	169	c
17	c	68	d	119	d	170	a
18	c	69	d	120	d	171	a
19	c	70	b	121	a	172	b
20	a	71	b	122	a	173	b
21	b	72	b	123	a	174	c
22	b	73	d	124	d	175	b
23	a	74	b	125	c	176	d
24	b	75	a	126	b	177	a
25	b	76	d	127	a	178	b
26	b	77	d	128	a	179	b
27	c	78	b	129	d	180	c
28	a	79	d	130	d	181	a
29	a	80	b	131	a	182	b
30	c	81	a	132	c	183	c
31	b	82	c	133	a	184	b
32	b	83	b	134	c	185	b
33	a	84	b	135	b	186	d
34	a	85	d	136	b	187	b
35	b	86	c	137	b	188	c
36	d	87	b	138	d	189	c
37	b	88	b	139	c	190	a
38	d	89	c	140	b	191	c
39	a	90	a	141	c	192	b
40	b	91	c	142	b	193	c
41	b	92	d	143	b	194	d
42	b	93	b	144	c	195	b
43	b	94	b	145	c	196	a
44	a	95	b	146	a	197	b
45	a	96	b	147	a	198	c
46	b	97	a	148	c	199	d
47	a	98	b	149	b	200	a
48	a	99	a	150	a	201	b
49	b	100	b	151	b	202	a
50	c	101	b	152	a	203	c
51	b	102	a	153	b		

JAMNAGAR 09

1	d	51	b
2	c	52	b
3	b	53	a
4	d	54	a
5	a	55	c
6	d	56	c
7	a	57	c
8	a	58	a
9	c	59	b
10	c	60	a
11	a	61	b
12	c	62	a
13	a	63	c
14	a	64	d
15	b	65	c
16	b	66	c
17	a	67	d
18	b	68	c
19	a	69	a
20	d	70	d
21	b	71	a
22	b	72	a
23	a	73	a
24	d		
25	a		
26	c		
27	b		
28	b		
29	a		
30	c		
31	a		
32	a		
33	d		
34	b		
35	b		
36	a		
37	c		
38	c		
39	a		
40	a		
41	a		
42	a		
43	a		
44	b		
45	a		
46	a		
47	b		
48	a		
49	a		
50	d		

JAM. 10

1	a
2	a
3	b
4	c
5	b
6	b
7	c
8	c
9	b
10	b
11	c
12	b
13	d
14	c
15	a
16	d
17	b
18	b
19	b
20	b
21	a
22	a
23	c
24	a
25	d
26	b
27	a
28	b
29	c
30	c
31	a
32	d
33	a
34	c
35	b
36	d
37	d
38	b
39	b
40	b
41	b
42	b
43	b
44	d
45	d
46	d
47	b
48	d
49	c
50	d
51	c
52	b
53	d
54	d
55	c
56	b
57	d

SHIMALA 2010

1	c	51	c	101	b	151	b
2	c	52	b	102	d	152	a
3	b	53	d	103	c	153	c
4	a	54	a	104	d	154	b
5	a	55	c	105	c	155	d
6	d	56	c	106	b	156	b
7	b	57	a	107	c	157	c
8	a	58	c	108	c	158	b
9	c	59	c	109	a	159	c
10	d	60	d	110	d	160	a
11	b	61	b	111	b	161	d
12	d	62	d	112	a	162	a
13	a	63	b	113	c	163	d
14	b	64	d	114	c	164	c
15	c	65	c	115	b	165	d
16	b	66	a	116	a	166	a
17	d	67	a	117	c	167	c
18	a	68	c	118	b	168	d
19	d	69	d	119	b	169	b
20	b	70	b	120	d	170	a
21	a	71	b	121	b	171	c
22	d	72	a	122	d	172	a
23	d	73	b	123	a	173	d
24	c	74	a	124	d	174	c
25	b	75	d	125	c	175	c
26	c	76	a	126	c	176	b
27	a	77	c	127	b	177	d
28	b	78	b	128	c	178	c
29	a	79	d	129	a	179	b
30	d	80	b	130	c	180	d
31	d	81	a	131	b	181	a
32	b	82	b	132	c	182	a
33	a	83	a	133	b	183	c
34	d	84	d	134	d	184	b
35	b	85	a	135	a	185	d
36	b	86	c	136	a	186	b
37	a	87	b	137	c	187	b
38	c	88	d	138	c	188	a
39	a,b	89	c	139	d	189	d
40	b	90	a	140	b	190	b
41	b	91	c	141	a	191	a
42	d	92	b	142	c	192	d
43	a	93	d	143	b	193	a
44	a	94	c	144	c	194	c
45	d	95	a	145	d	195	a
46	b	96	d	146	b	196	d
47	b	97	c	147	c	197	b
48	c	98	d	148	d	198	c
49	a	99	a	149	a	199	a
50	d	100	c	150	wd	200	b

PGA-CET MAHARASHTRA 2011								JAM. JAIPUR 2011				Kerala CET (2011)		Vijay Wada Entrance(2011)						Himachal Pradesh (2011)				BHU - VARANASI 2011					
1	b	66	d	131	b	196	c	1	b	66	a	1	d	1	b	66	a	131	c	1	c	66	b	1	d	66	d	131	c
2	c	67	a	132	c	197	b	2	b	67	a	2	c	2	d	67	b	132	c	2	a	67	b	2	c	67	a	132	b
3	a	68	c	133	a	198	a	3	c	68	d	3	d	3	c	68	a	133	d	3	d	68	a	3	d	68	b	133	a
4	a	69	b	134	b	199	a	4	a	69	c	4	c	4	b	69	c	134	a	4	d	69	b	4	c	69	c	134	c
5	c	70	b	135	d	200	c	5	a	70	a	5	d	5	d	70	c	135	a	5	c	70	b	5	b	70	b	135	b
6	a	71	b	136	d	201	a	6	a	71	a	6	b	6	c	71	b	136	a	6	a	71	a	6	d	71	a	136	c
7	a	72	b	137	a	202	a	7	a	72	a	7	a	7	d	72	b	137	a	7	b	72	a	7	b	72	c	137	a
8	a	73	c	138	a	203	c	8	a	73	a	8	c	8	c	73	c	138	a	8	b	73	c	8	a	73	a	138	d
9	a	74	a	139	c	204	d	9	a	74	a	9	b	9	a	74	b	139	d	9	b	74	b	9	b	74	d	139	b
10	a	75	c	140	c	205	b	10	a	75	a	10	b	10	d	75	c	140	b	10	d	75	d	10	b	75	d	140	d
11	a	76	c	141	b	206	c	11	c	76	a	11	a	11	b	76	b	141	c	11	c	76	a	11	c	76	d	141	a
12	c	77	a	142	a	207	a	12	d	77	a	12	c	12	b	77	c	142	b	12	a	77	a	12	b	77	c	142	c
13	a	78	a	143	c	208	c	13	b	78	a	13	d	13	d	78	d	143	d	13	b	78	b	13	d	78	d	143	c
14	a	79	d	144	a	209	a	14	a	79	b	14	d	14	c	79	a	144	a	14	a	79	c	14	d	79	b	144	d
15	a	80	a	145	a	210	b	15	d	80	a	15	c	15	b	80	b	145	c	15	c	80	a	15	c	80	b	145	a
16	d	81	b	146	d	211	d	16	a			16	b	16	d	81	c	146	d	16	d	81	d	16	a	81	d	146	c
17	d	82	b	147	b	212	a	17	c			17	a	17	c	82	d	147	d	17	b	82	c	17	c	82	d	147	c
18	a	83	a	148	a	213	c	18	a			18	a	18	b	83	d	148	c	18	d	83	b	18	d	83	a	148	b
19	a	84	a	149	a	214	b	19	b			19	d	19	a	84	a	149	b	19	c	84	d	19	b	84	a	149	d
20	b	85	c	150	c	215	c	20	a			20	a	20	c	85	b	150	c	20	b	85	a	20	a	85	a	150	d
21	a	86	b	151	a	216	c	21	a			21	d	21	c	86	b	151	b	21	c	86	b	21	c	86	b	151	d
22	d	87	b	152	a	217	a	22	a			22	c	22	b	87	a	152	c	22	d	87	b	22	c	87	b	152	d
23	b	88	a	153	b	218	b	23	a			23	a	23	c	88	b	153	b	23	b	88	d	23	c	88	d	153	b
24	c	89	b	154	a	219	b	24	a			24	d	24	c	89	c	154	b	24	b	89	a	24	c	89	b	154	c
25	b	90	a	155	a	220	c	25	c			25	b	25	a	90	a	155	d	25	b	90	c	25	c	90	c	155	d
26	a	91	c	156	a	221	b	26	a			26	a	26	a	91	c	156	b	26	c	91	b	26	d	91	d	156	d
27	b	92	c	157	d	222	a	27	a			27	a	27	b	92	d	157	c	27	c	92	d	27	c	92	d	157	a
28	a	93	a	158	c	223	c	28	a			28	d	28	b	93	d	158	a	28	c	93	c	28	c	93	b	158	d
29	b	94	a	159	a	224	b	29	a			29	a	29	a	94	d	159	b	29	d	94	d	29	d	94	b	159	a
30	b	95	a	160	b	225	a	30	c			30	a	30	c	95	b	160	d	30	d	95	d	30	a	95	a	160	b
31	b	96	a	161	c	226	c	31	a			31	a	31	b	96	a			31	d	96	a	31	c	96	b	161	b
32	c	97	b	162	a	227	a	32	a			32	a	32	a	97	d			32	d	97	a	32	a	97	c	162	c
33	b	98	b	163	a	228	a	33	d			33	c	33	a	98	a			33	d	98	c	33	c	98	a	163	b
34	b	99	d	164	a	229	b	34	a			34	a	34	a	99	d			34	d	99	b	34	a	99	d	164	a
35	a	100	b	165	a	230	d	35	a			35	b	35	b	100	b			35	a	100	c	35	b	100	a	165	d
36	a	101	b	166	d	231	c	36	b			36	b	36	b	101	a			36	d			36	a	101	b	166	a
37	c	102	d	167	a	232	b	37	c			37	a	37	a	102	a			37	a			37	d	102	c	167	d
38	b	103	a	168	b	233	b	38	b			38	d	38	c	103	a			38	a			38	b	103	a	168	c
39	a	104	a	169	b	234	b	39	a			39	a	39	d	104	d			39	d			39	b	104	b	169	c
40	a	105	d	170	a	235	b	40	c			40	c	40	c	105	a			40	d			40	d	105	b	170	a
41	a	106	a	171	a	236	a	41	d			41	a	41	b	106	a			41	d			41	b	106	d	171	c
42	a	107	a	172	a	237	c	42	a			42	a	42	c	107	c			42	a			42	a	107	a	172	b
43	c	108	c	173	a	238	d	43	a			43	b	43	d	108	c			43	b			43	a	108	a	173	d
44	a	109	b	174	c	239	a	44	c			44	c	44	c	109	b			44	c			44	a	109	c	174	d
45	b	110	b	175	b	240	c	45	c			45	b	45	a	110	a			45	a			45	b	110	b	175	d
46	a	111	b	176	b	241	a	46	b			46	a	46	d	111	b			46	c			46	c	111	a	176	c
47	b	112	d	177	a	242	d	47	d			47	b	47	b	112	c			47	c			47	a	112	b	177	c
48	a	113	d	178	c	243	b	48	d			48	b	48	a	113	c			48	d			48	b	113	a	178	d
49	a	114	a	179	c	244	d	49	d			49	a	49	b	114	b			49	d			49	c	114	a	179	c
50	a	115	b	180	a	245	c	50	a			50	c	50	d	115	a			50	a			50	b	115	d	180	a
51	b	116	c	181	b	246	c	51	a			51	d	51	c	116	b			51	a			51	c	116	d		
52	c	117	a	182	a	247	d	52	a			52	d	52	c	117	c			52	c			52	d	117	a		
53	c	118	a	183	a	248	d	53	b			53	a	53	a	118	c			53	a			53	b	118	b		
54	c	119	d	184	b	249	a	54	a					54	b	119	c			54	a			54	d	119	d		
55	b	120	a	185	b	250	a	55	a					55	d	120	c			55	d			55	c	120	d		
56	b	121	b	186	b			56	b					56	b	121	c			56	c			56	d	121	b		
57	a	122	a	187	a			57	c					57	d	122	d			57	c			57	c	122	d		
58	a	123	a	188	d			58	a					58	a	123	c			58	b			58	c	123	b		
59	a	124	a	189	c			59	a					59	c	124	c			59	b			59	a	124	a		
60	a	125	c	190	b			60	a					60	b	125	a			60	c			60	b	125	a		
61	c	126	b	191	a			61	c					61	c	126	a			61	b			61	d	126	b		
62	c	127	c	192	b			62	a					62	b	127	c			62	c			62	c	127	c		
63	b	128	c	193	b			63	d					63	b	128	a			63	d			63	c	128	c		
64	a	129	b	194	a			64	c					64	b	129	c			64	c			64	b	129	b		
65	a	130	a	195	a			65	b					65	b	130	a			65	c			65	c	130	a		

ACKNOWLEDGEMENT

I have pleasure to express my sense of gratitude towards my students, who encourage me to write this book. I am also thankful to my guide Dr. P. Yadaiah. Prof. And HOD, Kayachikitsa Dept. R.T. Ayurved college, Akola, for valuable guidence and experience that enlightened my path.

I am happy to pay respect to chairman Nishikant Patil (Dada) ,principal, Dr.Murty, Administrative officer Dr. Avinash Raje, Dr. Gavali Sir, Dr. Virendra Meenkire, Dr. Lomte sir, Dr. Lad sir, Dr. Salunkhe Sir, Dr. Swami Sir, Dr. Amol Kumbhar, Dr. Vinay Chavan, Dr. Rahul Magdum, Dr. Hemlata Kongi, Dr. Harshal Nikam, Dr. Walvekar, Dr. Ambhore Pramod, Dr. Chavan Dhaneshwar, Dr. Rahul Nakhil, Dr. Vishal Patil, Dr. Anuradha Patil, Dr. Taklikar Jotsna, Dr. Mulik madam, Dr. Jambangi, Dr. Mohite, Dr. Chaudhari madam and other teachers & staff of Loknete Rajaram Bapu Patil Ayurved College, Islampur, Sangli.

My sincere thanks to Dr. Nitesh Shukla, Dr. Kapil Govende, Dr. Ingale Kiran Dr., Ingale Nilesh and Dr. Sandip Kamkhede. for all possible efforts during this work.

Step in Services , Pune; and their Staff , as well as Ajay Xerox deserves a special thanks for their full co-operation, in making better settings and best presentation of this Book.

My sincere thanks to my friends Dr. Kamlesh Pandey, Dr. Sachin Aru, Dr. Abhijeet Ghokhale, Dr.Valmik Nehe, Dr. Nishikant Pagar, Dr.D. Pargaonkar, Dr.Parag Kulkarni, Dr.Amol Jadhav, Dr.Satish Deshmukh, Dr.Prashant chavan, Dr. Suresh Nandan, Dr. Avinash Mohite, Dr. Amol Kadu, Dr.Virendra Bhakare, Dr.Pankaj Lomte, Dr.Bharti Muthal, Dr.Mukesh Rathi, Dr.Jayshri Tayde, Dr.Deepavali Kasare , Dr.Vidya Nanvatkar, Dr.Meha Gaglani, Dr.Megha Padmane, Dr. Geeta Borde, Dr.Aniket Shilwant, Dr.Poonam Mahokar, Dr. Deepali Agrawal, Dr. Pawan Lekurwale, Dr. Prajakta Patil, Dr. Sudhakar Jironkar, Dr. Shrikrushna Patil, , Dr. Pankaj Gupta, Dr. Bandu Daberao, Dr. Sarika Gardi , Dr Kanchan Borkar, Dr. Trushna Tembhekar, Dr. Rashmi Kurawar, Dr. Ashwini Dandge, Dr. Pratibha Halnor, Dr. Ganesh Belorkar, all M.D. aspirants and all who recently joined M.D. course to help me in this work.

The work will be incomplete one, if I fail to remember my father Shri Sakharam Patil, Mother Padmini, wife Dr. Varsharani, brothers Er. Vijay and Dr. Rauba, Vahini Dr. Dipti, Sisters Swati and Tai; Anna and Daji and all in my home, they have taken great pains in providing all my needs.

At last I thanks all those, whose name should not be mentioned here but have helped me directly or indirectly in many ways to complete my work.

Date: 10/11/2012

With a deep sense of gratitude to all

11/11/12

Place: Pune.

Dr. Sanjay Patil

1	C	51	D	101	C	151	B	201	C	1	b	51	a	101	b	151	a	201	b	1	c	51	d	101	b	151	a
2	A	52	B	102	A	152	A	202	D	2	c	52	b	102	d	152	a	202	b	2	a	52	c	102	c	152	a
3	C	53	B	103	A	153	A	203	D	3	d	53	a	103	b	153	d	203	b	3	a	53	d	103	b	153	a
4	A	54	D	104	C	154	A	204	D	4	c	54	c	104	d	154	d	204	d	4	a	54	c	104	d	154	b
5	A	55	A	105	A	155	A	205	A	5	c	55	d	105	c	155	a	205	b	5	b	55	b	105	a	155	d
6	C	56	D	106	B	156	A	206	B	6	d	56	d	106	a	156	d	206	a	6	a	56	b	106	b	156	a
7	B	57	A	107	D	157	C	207	D	7	c	57	b	107	c	157	b	207	d	7	c	57	b	107	c	157	a
8	D	58	A	108	C	158	A	208	C	8	a	58	d	108	b	158	c	208	b	8	c	58	a	108	a	158	b
9	B	59	A	109	C	159	C	209	B	9	c	59	c	109	c	159	a	209	b	9	b	59	c	109	a	159	c
10	C	60	C	110	A	160	C	210	D	10	a	60	c	110	a	160	a	210	d	10	c	60	b	110	b	160	d
11	B	61	B	111	A	161	A	211	A	11	b	61	d	111	d	161	a	211	c	11	b	61	d	111	a	161	a
12	B	62	A	112	D	162	C	212	C	12	a	62	c	112	d	162	b	212	d	12	b	62	d	112	a	162	c
13	A	63	C	113	D	163	A	213	C	13	a	63	a	113	a	163	d	213	b	13	a	63	b	113	b	163	a
14	C	64	C	114	C	164	C	214	A	14	a	64	c	114	d	164	a	214	a	14	a	64	a	114	c	164	d
15	A	65	D	115	C	165	C	215	D	15	c	65	c	115	a	165	d	215	b	15	d	65	c	115	b	165	a
16	A	66	B	116	A	166	D	216	B	16	b	66	c	116	d	166	a	216	a	16	a	66	c	116	b	166	b
17	A	67	B	117	B	167	A	217	B	17	c	67	b	117	a	167	a	217	b	17	b	67	c	117	c	167	b
18	A	68	B	118	A	168	A	218	A	18	a	68	d	118	a	168	c	218	a	18	c	68	b	118	a	168	c
19	C	69	B	119	C	169	A	219	A	19	c	69	d	119	d	169	a	219	b	19	a	69	a	119	c	169	c
20	C	70	B	120	B	170	A	220	B	20	a	70	a	120	b	170	c	220	a	20	a	70	b	120	b	170	c
21	B	71	A	121	A	171	B	221	C	21	a	71	a	121	c	171	c	221	d	21	a	71	a	121	d	171	c
22	A	72	B	122	A	172	D	222	C	22	b	72	b	122	c	172	c	222	d	22	a	72	b	122	b	172	d
23	C	73	C	123	B	173	A	223	C	23	c	73	b	123	b	173	b	223	c	23	c	73	b	123	c	173	c
24	B	74	B	124	D	174	B	224	A	24	c	74	a	124	c	174	b	224	a	24	a	74	c	124	d	174	a
25	D	75	D	125	C	175	A	225	A	25	d	75	a	125	c	175	d	225	a	25	b	75	d	125	b	175	b
26	B	76	D	126	B	176	C	226	B	26	d	76	a	126	a	176	d	226	b	26	b	76	b	126	a	176	c
27	A	77	A	127	A	177	D	227	D	27	d	77	a	127	b	177	c	227	c	27	c	77	a	127	a	177	a
28	A	78	B	128	C	178	D	228	B	28	c	78	a	128	a	178	c	228	a	28	a	78	c	128	b	178	d
29	A	79	B	129	B	179	D	229	C	29	b	79	d	129	b	179	d	229	b	29	a	79	c	129	a	179	b
30	B	80	A	130	D	180	A	230	D	30	d	80	b	130	b	180	c	230	d	30	b	80	c	130	a	180	d
31	A	81	B	131	C	181	D	231	C	31	a	81	a	131	d	181	d	231	b	31	c	81	b	131	a		
32	C	82	C	132	A	182	D	232	C	32	d	82	b	132	a	182	c	232	c	32	b	82	c	132	a		
33	A	83	C	133	C	183	A	233	B	33	a	83	c	133	a	183	a	233	d	33	b	83	a	133	d		
34	B	84	A	134	A	184	C	234	B	34	c	84	d	134	a	184	c	234	c	34	c	84	c	134	d		
35	C	85	D	135	D	185	A	235	C	35	d	85	a	135	a	185	a	235	b	35	c	85	d	135	b		
36	B	86	A	136	A	186	A	236	B	36	b	86	b	136	c	186	d	236	a	36	c	86	c	136	a		
37	D	87	A	137	A	187	C	237	A	37	a	87	d	137	c	187	a	237	a	37	c	87	b	137	b		
38	B	88	B	138	B	188	A	238	C	38	c	88	a	138	d	188	a			38	a	88	b	138	b		
39	B	89	A	139	C	189	A	239	A	39	d	89	a	139	a	189	d			39	d	89	c	139	d		
40	A	90	B	140	B	190	A	240	D	40	a	90	b	140	c	190	d			40	c	90	a	140	a		
41	C	91	C	141	A	191	B	241	C	41	d	91	d	141	c	191	a			41	b	91	b	141	c		
42	C	92	C	142	A	192	C	242	C	42	a	92	d	142	c	192	a			42	a	92	a	142	b		
43	D	93	D	143	B	193	A	243	B	43	d	93	a	143	a	193	b			43	b	93	d	143	b		
44	B	94	C	144	A	194	A	244	B	44	a	94	b	144	c	194	b			44	a	94	d	144	b		
45	B	95	A	145	A	195	A	245	A	45	b	95	c	145	b	195	a			45	d	95	a	145	b		
46	A	96	C	146	B	196	A	246	C	46	c	96	c	146	a	196	c			46	a	96	c	146	b		
47	A	97	A	147	A	197	A	247	B	47	b	97	d	147	d	197	c			47	c	97	b	147	a		
48	A	98	A	148	D	198	D	248	B	48	b	98	c	148	a	198	c			48	b	98	c	148	b		
49	A	99	D	149	B	199	C	249	C	49	c	99	b	149	c	199	b			49	b	99	b	149	c		
50	C	100	B	150		200	A	250	A	50	d	100	a	150	d	200	d			50	b	100	d	150	a		

JamNagar 2012				Demostrator RAU				Jadhapur 2012 KLE BELGAON								Kerala Cet 2012													
1	d	51	a	01	d	51	a	101	b	1	b	51	a	01	a	51	b	01	A	51	C	101	A	01	A	51	C	101	D
2	b	52	a	02	c	52	b	102	a	2	c	52	d	02	c	52	d	02	B	52	A	102	A	02	A	52	D	102	D
3	c	53	a	03	b	53	d	103	d	3	b	53	b	03	b	53	d	03	A	53	A	103	A	03	B	53	A	103	D
4	d	54	d	04	a	54	b	104	c	4	a	54	c	04	b	54	d	04	A	54	B	104	D	04	D	54	D	104	B
5	a	55	d	05	a	55	b	105	b	5	d	55	d	05	a	55	c	05	D	55	D	105	B	05	C	55	D	105	A
6	b	56	c	06	d	56	a	106	a	6	b	56	a	06	b	56	d	06	D	56	D	106	A	06	A	56	A	106	D
7	b	57	b	07	c	57	d	107	b	7	b	57	b	07	d	57	d	07	D	57	A	107	D	07	C	57	D	107	A
8	c	58	a	08	b	58	a	108	a	8	a	58	d	08	c	58	c	08	B	58	D	108	D	08	C	58	A	108	A
9	a	59	c	09	d	59	c	109	d	9	c	59	c	09	c	59	c	09	C	59	D	109	D	09	A	59	D	109	A
10	d	60	d	10	c	60	a	110	b	10	b	60	d	10	a	60	b	10	A	60	C	110	C	10	B	60	D	110	B
11	a	61	c	11	c	61	a	111	b	11	a	61	a	11	d	61	d	11	A	61	D	111	C	11	B	61	C	111	B
12	a	62	c	12	a	62	a	112	b	12	b	62	a	12	a	62	b	12	B	62	D	112	B	12	C	62	D	112	A
13	c	63	c	13	d	63	c	113	a	13	c	63	c	13	b	63	b	13	D	63	A	113	D	13	C	63	C	113	B
14	b	64	a	14	d	64	b	114	d	14	c	64	c	14	c	64	d	14	D	64	C	114	A	14	B	64	C	114	D
15	a	65	a	15	d	65	a	115	b	15	d	65	a	15	d	65	b	15	D	65	A	115	B	15	B	65	D	115	C
16	a	66	a	16	a	66	b	116	d	16	b	66	a	16	b	66	b	16	A	66	C	116	C	16	A	66	C	116	D
17	d	67	d	17	c	67	b	117	b	17	d	67	d	17	d	67	c	17	B	67	C	117	C	17	B	67	B	117	A
18	a	68	a	18	a	68	c	118	c	18	d	68	a	18	b	68	a	18	A	68	C	118	B	18	D	68	C	118	A
19	a	69	a	19	c	69	a	119	c	19	a	69	d	19	d	69	c	19	B	69	B	119	C	19	C	69	B	119	A
20	c	70	c	20	a	70	a	120	d	20	b	70	c	20	c	70	a	20	C	70	A	120	B	20	D	70	D	120	A
21	b	71	d	21	d	71	c			21	c	71	a	21	b	71	c	21	D	71	A	121	A	21	B	71	A	121	A
22	b	72	a	22	b	72	a			22	a	72	d	22	a	72	c	22	C	72	A	122	B	22	A	72	C	122	A
23	a	73	d	23	c	73	a			23	c	73	c	23	d	73	c	23	B	73	A	123	C	23	B	73	A	123	D
24	c	74	a	24	b	74	a			24	b	74	c	24	d	74	c	24	D	74	C	124	A	24	C	74	D	124	A
25	d	75	d	25	c	75	a			25	c	75	a	25	b	75	c	25	A	75	B	125	B	25	B	75	D	125	A
26	a	76	b	26	c	76	c			26	a	76	b	26	a	76	b	26	A	76	B	126	B	26	A	76	A	126	A
27	b	77	d	27	a	77	a			27	a	77	c	27	b	77	c	27	D	77	A	127	B	27	B	77	B	127	D
28	a	78	d	28	d	78	c			28	c	78	b	28	b	78	c	28	B	78	D	128	D	28	D	78	B	128	C
29	c	79	a	29	b	79	a			29	b	79	c	29	c	79	c	29	A	79	B	129	D	29	A	79	A	129	A
30	a	80	c	30	d	80	a			30	b	80	c	30	c	80	d	30	D	80	D	130	C	30	A	80	D	130	D
31	a	81	a	31	c	81	c			31	a	81	b	31	b	81	a	31	B	81	C	131	A	31	A	81	C	131	B
32	a	82	a	32	b	82	b			32	c	82	b	32	d	82	d	32	B	82	D	132	C	32	C	82	A	132	C
33	b	83	a	33	b	83	b			33	d	83	b	33	a	83	b	33	D	83	B	133	D	33	A	83	B	133	A
34	b	84	a	34	a	84	a			34	d	84	b	34	a	84	b	34	A	84	C	134	A	34	B	84	D	134	B
35	b	85	a	35	c	85	c			35	b	85	b	35	c	85	b	35	C	85	B	135	B	35	A	85	A	135	D
36	c	86	b	36	b	86	c			36	a	86	a	36	a	86	b	36	B	86	C	136	B	36	D	86	A	136	C
37	b	87	b	37	a	87	a			37	c	87	c	37	b	87	d	37	D	87	C	137	B	37	C	87	B	137	A
38	a	88	a	38	a	88	d			38	a	88	c	38	b	88	a	38	C	88	D	138	B	38	A	88	D	138	B
39	a	89	a	39	c	89	a			39	b	89	b	39	b	89	d	39	A	89	D	139	A	39	A	89	A	139	D
40	a	90	c	40	a	90	a			40	d	90	c	40	a	90	c	40	A	90	A	140	A	40	B	90	A	140	C
41	b	91	b	41	c	91	a			41	c	91	b	41	a	91	b	41	C	91	A	141	D	41	C	91	D		
42	b	92	c	42	d	92	b			42	b	92	c	42	c	92	a	42	D	92	D	142	A	42	B	92	D		
43	a	93	b	43	d	93	c			43	c	93	d	43	c	93	b	43	D	93	B	143	B	43	A	93	B		
44	c	94	a	44	c	94	c			44	b	94	a	44	a	94	c	44	D	94	D	144	B	44	C	94	D		
45	d	95	b	45	b	95	b			45	d	95	a	45	c	95	b	45	D	95	A	145	A	45	C	95	A		
46	a	96	a	46	c	96	c			46	c	96	a	46	a	96	d	46	C	96	D	146	A	46	D	96	C		
47	a			47	a	97	d			47	d	97	a	47	b	97	a	47	B	97	A	147	D	47	B	97	b		
48	b			48	a	98	d			48	a	98	b	48	b	98	a	48	C	98	D	148	D	48	D	98	C		
49	c			49	d	99	c			49	b	99	b	49	b	99	a	49	B	99	B	149	C	49	C	99	B		
50	b			50	c	100	c			50	b			50	c	100	c	50	B	100	A	150	A	50	D	100	A		

Abrevatious used

1. A - Akash mahabhut
2. C/I - contraindication
3. Adv. - Adverse reacton
4. e.g.-Example
5. Ant. - Anterior
6. Post-Posterior
7. Lat - Lateral
8. Sup-Saperiro
9. T/t - Treatment
10. C/F-Clinical feature
11. Def - Definition
12. B.B.B - Blood Brain Barrier
13. Abd. - Ab domen
14. Inj-Injection
15. Bet - Between
16. S/C - Subcutaneous
17. Req - Requirement
18. Defi -Deficiency
19. V - Vata/Vayu Mahabhut
20. P - Pitta/Prithavi mahabhut
21. K - Kapha
22. VP - Vata pitta
23. PK - Pitta Kapha
24. VK - Vata Kapha
25. T -Tridosh/ Tej Mahabhut
26. S - Sannipata
27. R - Raktaj
28. RA - Right forearm
29. LA - Left forearm
30. L.L. - Left Leg
31. M - Madhur Ras
32. L - Lavan Ras
33. K - Katu Ras
34. Kh - Kashaya Ras
35. T - Tikta Ras
36. KU - Katu ushna
37. FMT - Forensic Medicine & Toxicology
38. J - Jala Mahabhut
39. Cha - Charak
40. Sa/Sm - Samhita
41. Su - Sushrut
42. A.S - Astanga Sangraha
43. A.H - Astanga Hridaya
44. Ka - Kashypa
45. B.P - Bhav Prakash

COLLECTION OF PAINTING

- HUMAN ACTIVITIES
- HUMANS
- HUMAN
- ANIMAL
- ANIMALS

FIND ALL AT HTTPS://DISCORD.GG/DHEMAL

Dhemal Handicraft Handicraft Dhemal

REFERENCES

1. Acharya Vidyadhar Shukla and Prof. Ravidatta Tripathi, "Vaidya Manorama" Hindi Commentary, Second Edition, vol. 1 and 2, "Charak Samhita".
2. Kaviraj Ambika Datta Shastri, "Ayurved Tatva Sandipika" Hindi Commentary, "Sushrut Samhita", Edition 2005, Part I and II.
3. Kaviraj Atridev Gupta, Hindi Commentary, "Asthanga Samgraha", vol.1 and 2 , Edition 2005.
4. Dr. Brahmanand Tripathi, "Nirmala" Hindi Commentary, "Asthanga Hrudayam", Edition 2007,
5. Sudarshan Shastri, "Vitihotini" Hindi Commentary, "Madhava Nidan",Part I and II.
6. Pandit Shree Lalchandraji Vaidya, "Sarvanga Sundari Vyakhya" Commentary, "Bhav Prakash".
7. Vd. Shri. Laxmipati Shastri Vyothotini Commentary, "Yogaratnakar".
8. Vd. Shri. Laxmipati Shastri Vyothotini Commentary, "Yogaratnakar", Part II, 2045 Edition, Medoroga Chikitsa.P.P.97.
9. Vd Haridas S. Kasture, "Ayurvediya Panchakarma Vidnyan" .
10. Dr. P. Yadaiah, "Clinical Panchakarma" 2nd Edition 2008.
11. Pandit Parsuram Sastri Vidyasagar, Hindi Commentary on ," Sarngadhar Samhita".
12. Pandit Sri Bramha Sankar Misra, Hindi Commentary, "Bhav Prakash".
13. Kaviraj Sri Ambika Datta Shastri,"Vidyotini" Hindi Commentary, "Bhaishajya Ratnavali".
14. "Harrisons Principles of Internal Medicine", Part I and II
15. Siddharth N. Shah, "API text book of Medicine".
16. Prof. P. V. Sharma, "Dravya Guna Vinyan", vol. 1 and 2.
17. A. K. Nadkarni, "Indian Materia Medica", vol.1 and 2.
18. K.R. Kirtikar, B. D. Basu, "Indian Medicinal Plants".
19. K. Sembuligam and Prema Sembuligam, "Essential of Medical Physiology ".
20. Dr. Raj Gopal Shenoy K, "Manipal Manual of Surgery."
21. Dr. A. K. Nan, "Undergraduate Surgery."
22. K. D. Bhargava, " Short text of ENT disease."
23. Dr. Harsh Mohan, "Text Book of Pathology."
24. Dr. B.D. Chorasiya, "Human Anatomy".
25. Dr. D. C.Datta, "Text Book of Gynaecology and Obstetrics".
26. Dr. O.P. Ghai, "Text Book of Paediatrics".
27. Dr. R.S. Satoskar, , "Pharmacology and Pharmacotherapeutics".
28. Parikh, "Forensic Medicine and Toxicology".
29. K. Park, "Preventive and Social Medicine ".
30. Vd. R.D. Padade, "Vyavharika Ayurved Itihasa".
31. Prof. P.V. Sharma, "Ayurved ka Vaidnyanik Itihasa" .
32. Shree, Satyapal Bhishagacharya, "Kashyapa Samhita" .
33. Pandit Parsuram Sastri Vidyasagar, Hindi Commentary on , "Sharngadhar Samhita".
34. "Harit Samhita".
35. "Bhela Samhita".
36. Vd. Shivaji Vavhal , "Sharir Rachana Vidnyan" .
37. "Padarth Vidnyan".
38. Vd. Shiddhi nandan Mishra , "Ras Shastra and Bhaishyjya Kalpana" .
39. Dr. Pravin Kumar Chaudhari , "Bruhattrayi Tantra Manjusha" .
40. Dr. Govinda Parika , "Ayurved Sangraha."
41. Dr. J.L. N.Shashtri , "Competative Examination in Ayurveda" .
42. Suman , "Entrance made Easy" .
43. Shrinath Acadamy Test Series.